बे वुज़ू (या जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस) के लिये
कुरआने मजीद या इस की किसी आयत का छूना ह़राम है।
बे वुज़ू (जब कि ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हो) बे छूए ज़बानी या देख कर तिलावत कर सकता है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 326, मक्तबतुल मदीना)

القرآن الكريم

तरजमा

कन्ज़ुल ईमान

मअ़

तफ़्सीर

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

तरजमा : आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए़ रिसालत शाह
इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद
मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى

नाशिर : मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

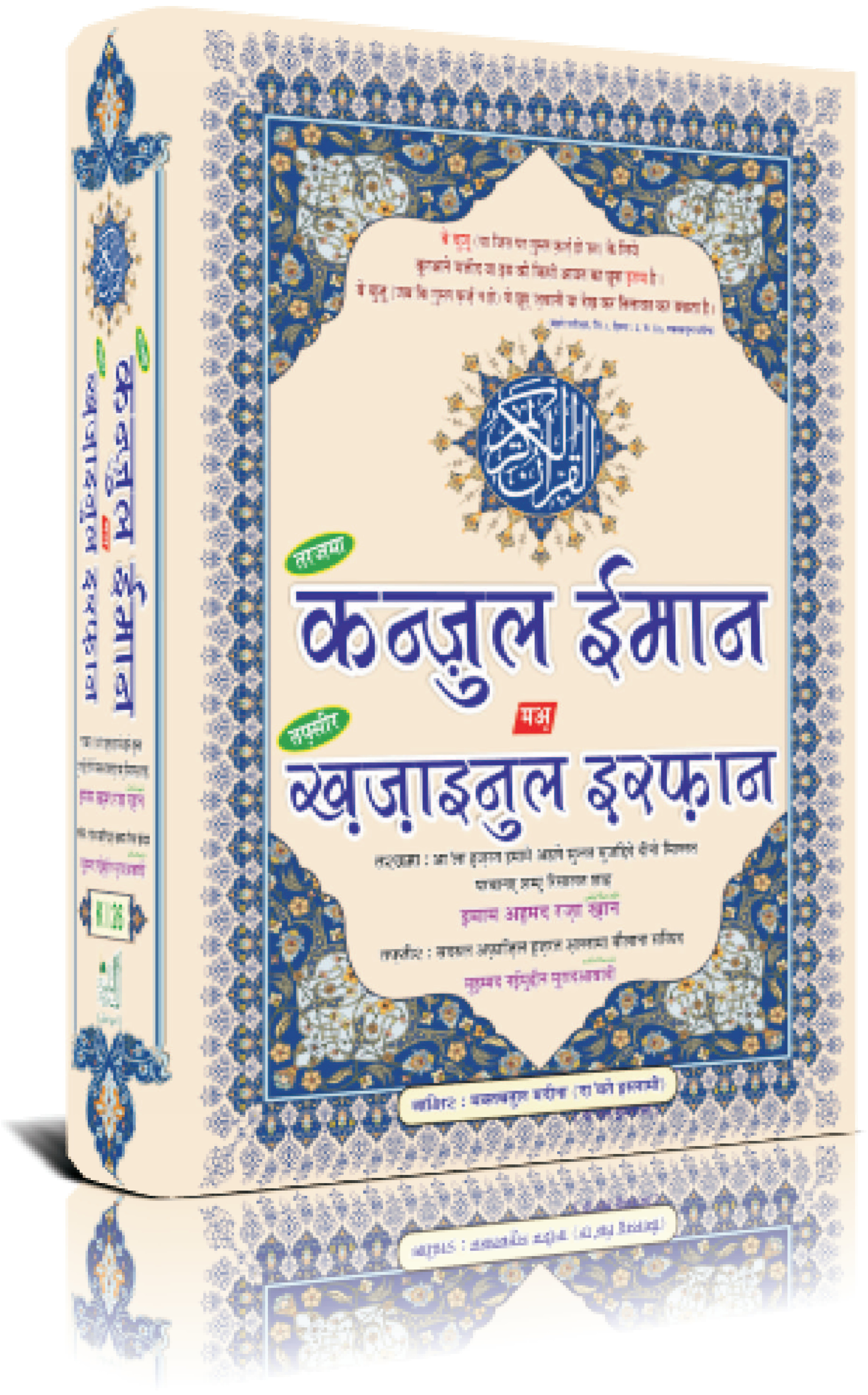
तर्जमा
कन्ज़ुल ईमान
मअ़
तफ़्सीर
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
इमाम अहमद रज़ा ख़ान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

तरजमा कन्ज़ुल ईमान मअ़ तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

क़ुरआने करीम के इस तरजमे **(कन्ज़ुल ईमान)** को आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن और इस की तफ़्सीर **(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)** को सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने इस मुबारक तरजमे और तफ़्सीर पर जदीद अन्दाज़ में काम करने की सआदत ह़ासिल की है और **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी) ने इस तरजमे और तफ़्सीर को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस (हिन्दी एडीशन) में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

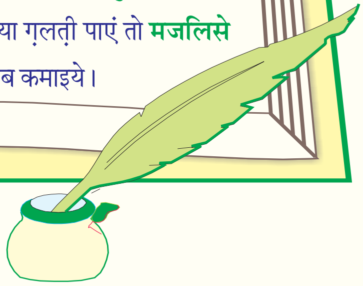

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئُ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"कन्ज़ुल ईमान शरीफ़" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस "कन्ज़ुल ईमान" के बारे में 14 वज़ाह़ती मदनी फूल

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत, परवानए शम्ए रिसालत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमए कु़रआन "**कन्ज़ुल ईमान**" को जुम्ला उर्दू तराजिमे क़ुरआन में जो बुलन्द मक़ाम और खु़सूसी इम्तियाज़ ह़ासिल है वोह अज़्हर मिनश्शम्स है, नीज़ इस पर सदरुल अफ़ाज़िल, मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى की मुख़्तलिफ़ अ़रबी तफ़ासीर की जामेअ़ निहायत ही इल्मी व तह़क़ीक़ी तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" ने "**कन्ज़ुल ईमान**" की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत को मज़ीद बारह चांद लगा दिये हैं, इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रोज़ाना "**कन्ज़ुल ईमान**" की तिलावत की सआ़दत ह़ासिल करते होंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़ैज़ान से "**दा'वते इस्लामी**" ने सारे जहान में "**कन्ज़ुल ईमान**" की धूम मचा दी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰى اِحْسَانِهٖ... ! इस ग़ैर मा'मूली अहम्मिय्यत व इफ़ादियत और आ़लमगीर मक़्बूलिय्यत के पेशे नज़र "**दा'वते इस्लामी**" के इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" पर जदीद अन्दाज़ में काम करने की सई की है और कमो बेश छ[6] माह के क़लील अ़र्से में इस तारीख़ी व अ़ज़ीमुश्शान काम की तक्मील हुई। इन मदनी फूलों के तह़्त इस पर काम किया गया :

﴾1﴿....मत्न, तरजमा और तफ़्सीर तीनों पर आ़लमी मे'यार के मुत़ाबिक़ जदीद फ़ोर्मेशन / फ़ोर्मेटिंग की गई है और ह़त्तल मक़्दूर हर ए'तिबार से इन्तिहाई एह़तियात़ के साथ इस के हुस्ने सुवरी (या'नी ज़ाहिरी हुस्नो जमाल) का एहतिमाम किया गया है।

﴾2﴿....मतने क़ुरआन का बिल इस्तीआ़ब तक़ाबुल कमो बेश आठ बार करवाया गया है। तक़ाबुल में नफ़्से मतन, रुमूज़े अवक़ाफ़, अत़राफ़ की अ़लामात व इ़बारात, अ़रबी रस्मुल ख़त़ का खु़सूसी इल्तिज़ाम और कमो बेश चार बार तक़ाबुल बिल किताब भी शामिल है।

﴾3﴿....मत्न के तक़ाबुल के लिये पाक व हिन्द के मुख़्तलिफ़ इदारों के कई नुस्ख़े पेशे नज़र रखे गए।

﴾4﴿....रस्मुल ख़त़ के ह़वाले से रहनुमाई और अग़लात़ की दुरुस्ती के लिये "**अल इत्क़ान**", "**फ़तावा रज़विय्या**" और दीगर कुतुबे उ़लमाए अहले सुन्नत से इस्तिफ़ादा और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के जय्यिद मुफ़्तियाने इ़ज़ाम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से शरई रहनुमाई भी ली गई है।

﴾5﴿....मत्न के तक़ाबुल के दौरान अ़रब शरीफ़ के मत़्बूआ़ मुतअ़द्दिद नुस्ख़ों को भी पेशे नज़र रखा गया है और उन नुस्ख़ों के इ़लावा "**المكتبة الشاملة**", "**المصحف الرقمى**", "**مصحف المدينة النبوية**", "Quran Searcher", "**خزائن الهدايت**", "**القرآن الكريم بالرسم العثمانى**" और इस जैसे दीगर क़ुरआनी सॉफ़्टवेज़ को भी पेशे नज़र रखा गया है।

﴾6﴿....मत्न के तक़ाबुल के लिये अल मदीनतुल इल्मिय्या के माहिर ह़ुफ़्फ़ाज़ व ग़ैर ह़ुफ़्फ़ाज़ मदनी इस्लामी भाइयों كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की ख़िदमात ली गई हैं, नीज़ जय्यिद क़ुर्रा व ह़ुफ़्फ़ाज़ زِيْدَ مَجْدُهُمْ से मुशावरत की तरकीब भी बनाई गई है।

﴾7﴿....तरजमा व तफ़्सीर के तक़ाबुल के लिये रज़ा एकेडमी बम्बई (हिन्द) के मत़्बूआ़ तस्ह़ीह़ शुदा नुस्ख़े को मे'यार बनाया गया है, और पाको हिन्द के क़दीम व जदीद कई नुस्ख़ों को भी पेशे नज़र रखा गया है।

﴾8﴿....तरजमा व तफ़्सीर के तक़ाबुल के दौरान पाक व हिन्द के मत़्बूआ़ कमो बेश बारह नुस्ख़ों की तक़रीबन 500 से ज़ाइद लफ़्ज़ी, किताबत, त़बाअ़त, क़दीम रस्मुल ख़त़ और नज़रे सानी में रह जाने वाली अग़लात़ की तस्ह़ीह़ भी की गई है।

www.dawateislami.net

﴾9﴿....तफ़्सीर के तक़ाबुल के बा'द नज़्रे सानी, अ़लामाते तरक़ीम, तस्हील और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब की तरकीब भी बनाई गई है, नीज़ ऐसे अल्फ़ाज़ जिन की हैअत ए'राब की वज्ह से बदल जाती है उन के रस्मुल ख़त़ को तब्दील कर के उन पर भी ए'राब लगा दिये गए हैं।

﴾10﴿....اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" के इस नुस्ख़े में कमो बेश 2000 मुश्किल व हल त़लब मक़ामात की तस्हील भी की गई है।

﴾11﴿....क़ारी की सहूलत के लिये तरजमे के मुश्किल अल्फ़ाज़ की तस्हील तरजमे ही में कर दी गई है और मुश्किल लफ़्ज़ को बर क़रार रखते हुए इस की तस्हील को हिलालैन "()" में वाज़ेह़ कर दिया गया है ताकि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के अल्फ़ाज़े मुबारका बिऐनिही तरजमे में मौजूद रहें और क़ारी को भी तरजमा समझने में कोई दुश्वारी मह़सूस न हो, नीज़ तरजमे की तस्हील करते वक़्त ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, अदीबे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा **अ़ब्दुल ह़कीम ख़ान अख़्तर शाह जहानपूरी** رَحِمَهُ اللّٰهُ تَعَالٰی की किताब "तस्हीले कन्ज़ुल ईमान" से भी मदद ली गई है।

﴾12﴿....तरजमा व तफ़्सीर की तस्हील करते हुए अ़रबी व उर्दू लुग़ात, लुग़ातुल क़ुरआन, मो'जमुल क़ुरआन, मुफ़्रदातुल क़ुरआन, अ़रबी तफ़ासीर, मा'रूफ़ सुन्नी तराजिम व तफ़ासीर को पेशे नज़्र रखते हुए इबारात के रब्त़ पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी गई है।

﴾13﴿....तस्हील करते वक़्त मुतवस्सित़ त़बक़े को सामने रखा गया है, चूंकि तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान एक मुख़्तसर, जामेअ़, इल्मी व तह़क़ीक़ी तफ़्सीर है और सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस तफ़्सीर में इल्मी इस्तिलाह़ात का ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाया है जिसे अ़वामुन्नास का समझना निहायत ही दुश्वार है, लिहाज़ा ह़त्तल मक़्दूर उन्ही मक़ामात की तस्हील की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ अ़वाम से है, और ऐसी दक़ीक़, ख़ालिस इल्मी अब्ह़ास जिन का तअ़ल्लुक़ उ़लमा से है उन की तस्हील नहीं की गई।

﴾14﴿....ह़त्तल मक़्दूर क़ारी की आसानी के लिये फ़ोर्मेशन / फ़ोर्मेटिंग इस अन्दाज़ पर की गई है कि तरजमे में जो तफ़्सीरी ह़ाशिया नम्बर है उस की तफ़्सीर उसी सफ़ह़े से शुरूअ़ हो, दीगर नुस्ख़ों की त़रह़ आख़िरी सफ़ह़ात पर तफ़्सीर की तरकीब नहीं बनाई गई, इसी वज्ह से हर सफ़ह़े पर मतने क़ुरआन की लाइनों को मख़्सूस नहीं किया गया बल्कि तफ़्सीर व तरजमे की मुनासबत से जितने मतन की ह़ाजत थी उतना ही लाया गया है। इसी त़रह़ हर पारह नए सफ़ह़े से शुरूअ़ किया गया है।

मदनी इल्तिजा : اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी इस काविश में जो ह़ुस्नो ख़ूबी नज़्र आए वोह **क़ुरआने पाक** का ख़ास ए'जाज़ और **आ'ला ह़ज़रत** व **सदरुल अफ़ाज़िल** رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی और अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ख़ुसूसी फ़ैज़ान है और जहां कोई ख़ामी हो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही को दख़्ल है। क़ारिईन व अहले इल्म ह़ज़रात से मदनी इल्तिजा है कि जहां कहीं किताबत, त़बाअ़त या कोई और ग़लत़ी देखें तो ब ज़रीअ़ए **ईमेल** या **मक्तूब** हमारी रहनुमाई फ़रमाएं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयिन्दा एडीशन में उस की तस्ह़ीह़ कर दी जाएगी।

"**कन्ज़ुल ईमान और दा'वते इस्लामी**", "**तिलावत के ख़ुश्बूदार मदनी फूल**" और "**मत़ालिबुल क़ुरआन**" आख़िर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। या रब्बे मुस्त़फ़ा ! **दा'वते इस्लामी** के इल्मी व तह़क़ीक़ी शो'बे "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की इस अ़ज़ीम काविश को क़बूल फ़रमा, और इस कारे ख़ैर में ह़िस्सा लेने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को दो जहां की भलाइयां अ़त़ा फ़रमा और "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन पच्चीसवीं, रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
तारीख़ : 29 रजबुल मुरज्जब 1432 हि.

www.dawateislami.net

तरजमा

कन्ज़ुल ईमान

मअ़

तफ़्सीर

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

तरजमा : आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
परवानए शम्ए़ रिसालत शाह

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद

मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی

तबाअ़ते अव्वल : 25, सफ़रुल मुज़फ़्फ़र, 1441 सि.हि.
ता'दाद : 10,000 (दस हज़ार)
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

अ़र्ज़े नाशिर

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे **"मक्तबतुल मदीना"** का आग़ाज़ आज से तक़रीबन 25 साल क़ब्ल 1406 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1986 सि.ई. में शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने बयानात की ऑडियो केसिटें जारी करने से फ़रमाया। बा'द में **"मक्तबतुल मदीना"** के मज़ीद शो'बे भी क़ाइम हुए और सुन्नतों भरे बयानात व मदनी मुज़ाकरात की लाखों केसिटें, सीडीज़ और वीसीडीज़ दुन्या भर में पहुंचने के साथ साथ फ़िक़्ह व ह़दीस, तसव्वुफ़ व ह़िकायात पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और दीगर उ़लमाए किराम دَامَتْ فُیُوْضُہُم की सेंकड़ों किताबें ब शुमूल रसाइल ज़ेहरे त़ब्अ़ से आरास्ता हो कर लाखों की ता'दाद में अ़वाम के हाथों में पहुंच कर सुन्नतों के फूल खिला रही हैं। अब **"मक्तबतुल मदीना"** कु़रआने मजीद के बा'द **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** की त़बाअ़त की सआ़दत भी ह़ासिल कर रहा है। यक़ीनन **कु़रआने पाक** छापने का काम बहुत एह़तियात़ त़लब और मुश्किल है मगर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़्वाहिश पर मजलिसे **"मक्तबतुल मदीना"** ने इस अहम ज़िम्मेदारी को क़बूल किया।

कु़रआने पाक छापने के मदनी फूल

जब सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने तरजमए कु़रआने पाक के लिये आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की बारगाहे अ़ज़्मत में दरख़्वास्त पेश की तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **कु़रआने पाक** छापने के ह़वाले से मदनी फूल अ़त़ा करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "येह तो बहुत ज़रूरी है मगर छपने की क्या सूरत होगी ? इस की त़बाअ़त का कौन एहतिमाम करेगा ? ﴾1﴿ बा वुज़ू कॉपियों को लिखना, ﴾2﴿ बा वुज़ू कॉपियों और हुरूफ़ों की तस्ह़ीह़ करना और ﴾3﴿ तस्ह़ीह़ भी ऐसी हो कि ए'राब नुक़्ते या अ़लामतों की भी ग़लत़ी न रह जाए फिर येह सब चीज़ें हो जाने के बा'द सब से बड़ी मुश्किल तो येह है कि ﴾4﴿ प्रेस में हमा वक़्त बा वुज़ू रहे, ﴾5-6﴿ बिग़ैर वुज़ू न पथ्थर को छूए और न काटे, ﴾7﴿ पथ्थर काटने में भी एह़तियात़ की जाए और ﴾8﴿ छपने में जो जोड़ियां निकली हैं उन को भी बहुत एह़तियात़ से रखा जाए। (तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह, स. 17, मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और बहनो.....! अगर्चे फ़ी ज़माना छपाई के लिये जदीद तरीन मशीनें आ चुकी हैं, फिर भी हम ने आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت के अ़त़ा कर्दा इन मदनी फूलों पर अ़मल करने की ह़त्तल मक्दूर कोशिश की है।

मदनी इल्तिजा :

हमारी हर मुम्किना कोशिश रही है कि **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** के इस नुस्ख़े में किताबत वग़ैरा में किसी क़िस्म की कोई ग़लत़ी न रह जाए फिर भी ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत ख़त़ा होना ख़ारिज अज़ इम्कान नहीं, लिहाज़ा अगर कोई इस्लामी भाई इस में किसी क़िस्म की कैसी ही ग़लत़ी पाए तो पहली फ़ुरसत में **"मक्तबतुल मदीना"** पर राबित़ा कर के तह़रीरन मुत्त़लअ़ फ़रमा दे।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

ایاتها ٧ ﴿١﴾ سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ ٥ ﴿ رکوعها ١

सूरए फ़ातिहा मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह्मत वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेह्रबान रह्मत वाला रोज़े जज़ा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ

सूरए फ़ातिहा के अस्मा : इस सूरह के मुतअ़द्दद नाम हैं : फ़ातिहा, फ़ातिहतुल किताब, उम्मुल क़ुरआन, सूरतुल कन्ज़, काफ़िया, वाफ़िया, शाफ़िया, शिफ़ा, सब्अ़ मसानी, नूर, रुक़्या, सूरतुल ह़म्द, सूरतुद्दुआ, ता'लीमुल मस्अला, सूरतुल मुनाजात, सूरतुत्तफ़्वीज़, सूरतुस्सुआल, उम्मुल किताब, फ़ातिहतुल क़ुरआन, सूरतुस्सलाह। इस सूरह में सात आयतें, सत्ताईस कलिमे, एक सो चालीस ह़र्फ़ हैं, कोई आयत नासिख़ या मन्सूख़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरह मक्कए मुकर्रमा या मदीनए मुनव्वरह, या दोनों में नाज़िल हुई। अ़म्र बिन शुरह़बील से मन्क़ूल है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : "मैं एक निदा सुना करता हूं जिस में "اِقْرَأْ" कहा जाता है।" वरक़ा बिन नौफ़ल को ख़बर दी गई, अ़र्ज़ किया : जब येह निदा आए आप ब इत़्मीनान सुनें। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रील ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : फ़रमाइये "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" । इस से मा'लूम होता है कि नुज़ूल में येह पहली सूरत है मगर दूसरी रिवायात से मा'लूम होता है कि पहले "सूरए इक़्रअ" नाज़िल हुई। इस सूरत में ता'लीमन बन्दों की ज़बान में कलाम फ़रमाया गया है। **अह़काम :- मस्अला :** नमाज़ में इस सूरत का पढ़ना वाजिब है इमाम व मुन्फ़रिद के लिये तो ह़क़ीक़तन अपनी ज़बान से और मुक़्तदी के लिये ब क़िराअते ह़ुक्मिया या'नी इमाम की ज़बान से। सह़ीह़ ह़दीस में है : "قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" इमाम का पढ़ना ही मुक़्तदी का पढ़ना है। क़ुरआने पाक में मुक़्तदी को ख़ामोश रहने और इमाम की क़िराअत सुनने का ह़ुक्म दिया है : "اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا" (जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश हो जाओ)। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : "اِذَا قَرَاَ فَاَنْصِتُوْا" जब इमाम क़िराअत करे तुम ख़ामोश रहो। और बहुत अह़ादीस में येही मज़्मून है। **मस्अला :** नमाज़े जनाज़ा में दुआ याद न हो तो सूरए फ़ातिहा ब निय्यते दुआ पढ़ना जाइज़ है, ब निय्यते क़िराअत जाइज़ नहीं। (عالمگیری) **सूरए फ़ातिहा के फ़ज़ाइल :** अह़ादीस में इस सूरह की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : तौरैत व इन्जील व ज़बूर में इस की मिस्ल सूरत न नाज़िल हुई। (ترمذی) एक फ़िरिश्ते ने आस्मान से नाज़िल हो कर ह़ुज़ूर पर सलाम अ़र्ज़ किया और दो ऐसे नूरों की बिशारत दी जो ह़ुज़ूर से पहले किसी नबी को अ़त़ा न हुए : एक सूरए फ़ातिहा, दूसरे सूरए बक़र की आख़िरी आयतें। (مسلم شریف) "सूरए फ़ातिहा" हर मरज़ के लिये शिफ़ा है। (دارمی) "सूरए फ़ातिहा" सो मरतबा पढ़ कर जो दुआ मांगे **अल्लाह** तआला क़बूल फ़रमाता है। (دارمی) **इस्तिआ़ज़ा :- मस्अला :** तिलावत से पहले "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" पढ़ना सुन्नत है। (خازن) लेकिन शागिर्द उस्ताद से पढ़ता हो तो उस के लिये सुन्नत नहीं। (شامی) **मस्अला :** नमाज़ में इमाम व मुन्फ़रिद के लिये "सुब्ह़ान" (सना) से फ़ारिग़ हो कर आहिस्ता "اَعُوْذُ...الخ" पढ़ना सुन्नत है। (شامی) **तस्मिया :- मस्अला :** "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" क़ुरआने पाक की आयत है मगर सूरए फ़ातिहा या और किसी सूरह का जुज़ नहीं इसी लिये नमाज़ में जहर (बुलन्द आवाज़) के साथ न पढ़ी जाए, बुख़ारी व मुस्लिम में मरवी है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नमाज़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" से शुरूअ़ फ़रमाते थे। **मस्अला :** तरावीह़ में जो ख़त्म किया जाता है उस में कहीं एक मरतबा "بِسْمِ اللّٰه" जहर के साथ ज़रूर पढ़ी जाए ताकि एक आयत बाक़ी न रह जाए। **मस्अला :** क़ुरआने पाक की हर सूरत "بِسْمِ اللّٰه" से शुरूअ़ की जाए सिवाए सूरए बराअत के। **मस्अला :** सूरए नम्ल में आयते सज्दा के बा'द जो "بِسْمِ اللّٰه" आई है वोह मुस्तक़िल आयत नहीं बल्कि जुज़्वे आयत है बिला ख़िलाफ़ इस आयत के साथ ज़रूर पढ़ी जाएगी! नमाज़े जहरी में जहरन, सिर्री में सिर्रन। **मस्अला :** हर मुबाह़ काम "بِسْمِ اللّٰه" से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है, ना जाइज़ काम पर "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ना मम्नूअ़ है। **सूरए फ़ातिहा के मज़ामीन :** इस सूरत में **अल्लाह** तआला की ह़म्दो सना, रुबूबिय्यत, रह़मत, मालिकिय्यत, इस्तिह़्क़ाक़े इबादत, तौफ़ीक़े ख़ैर, बन्दों की हिदायत, तवज्जोह इलल्लाह, इख़्तिसासे इबादत, इस्तिआनत, त़लबे रुश्द, आदाबे दुआ, सालिह़ीन के ह़ाल से मुवाफ़क़त, गुमराहों से इज्तिनाब व नफ़रत, दुन्या की ज़िन्दगानी का ख़ातिमा, जज़ा और रोज़े जज़ा का मुसर्रह़ व मुफ़स्सल बयान है और जुम्ला मसाइल का इज्मालन। **ह़म्द :- मस्अला :** हर काम की

www.dawateislami.net

ع ۱

الدِّيْنِ ۝٣ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ

का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा

الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ

रास्ता चला रास्ता उन का जिन पर तूने एहसान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝٧ ع

हुवा और न बहके हुओं का

इब्तिदा में तस्मिया की तरह़ ह़म्दे इलाही बजा लाना चाहिये। **मस्अला :** कभी ह़म्द वाजिब होती है जैसे ख़ुत्बए जुमुआ में, कभी मुस्तह़ब जैसे ख़ुत्बए निकाह़ व दुआ व हर अम्रे ज़ीशान में और हर खाने पीने के बा'द, कभी सुन्नते मुअक्कदा जैसे छींक आने के बा'द। (طحطاوی) ''رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'' में तमाम काएनात के ह़ादिस, मुम्किन, मोह़ताज होने और **अल्लाह** तआ़ला के वाजिब, क़दीम, अज़ली, अबदी, ह़य्य, क़य्यूम, क़ादिर, अ़लीम होने की त़रफ़ इशारा है जिन को ''رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ'' मुस्तल्ज़िम है, दो लफ़्ज़ों में इल्मे इलाहिय्यात के अहम मबाह़िस तै हो गए। ''مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ'' मिल्क के ज़ुहूरे ताम का बयान और येह दलील है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं क्यूं कि सब उस के मम्लूक हैं और मम्लूक मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता। इसी से मा'लूम हुवा कि दुन्या दारुल अ़मल है और इस के लिये एक आख़िर है, जहान के सिल्सिले को अज़ली व क़दीम कहना बात़िल है। इख़्तितामे दुन्या के बा'द एक जज़ा का दिन है, इस से तनासुख़ बात़िल हो गया। ''اِيَّاكَ نَعْبُدُ'' ज़िक्रे ज़ातो सिफ़ात के बा'द येह फ़रमाना इशारा करता है कि ए'तिक़ाद अ़मल पर मुक़द्दम है और इबादत की मक़्बूलिय्यत अ़क़ीदे की सिह़्ह़त पर मौक़ूफ़ है। **मस्अला :** ''نَعْبُدُ'' के सीग़ए जम्अ़ से अदा ब जमाअ़त भी मुस्तफ़ाद होती है और येह भी कि अ़वाम की इबादतें मह़बूबों और मक़्बूलों की इबादतों के साथ दरजए क़बूल पाती हैं। **मस्अला :** इस में रद्दे शिर्क भी है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा इबादत किसी के लिये नहीं हो सकती। ''وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ'' में येह ता'लीम फ़रमाई कि इस्तिआ़नत ख़्वाह ब वासित़ा हो या बे वासित़ा हर त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है ह़क़ीक़ी मुस्तआ़न (मददगार) वोही है, बाक़ी आलात व ख़ुद्दाम व अह़बाब वग़ैरा सब औ़ने इलाही के मज़्हर हैं, बन्दे को चाहिये कि इस पर नज़र रखे और हर चीज़ में दस्ते क़ुदरत को कारकुन देखे। इस से येह समझना कि औलिया व अम्बिया से मदद चाहना शिर्क है अ़क़ीदए बात़िला है क्यूं कि मुक़र्रबाने ह़क़ की इमदाद, इमदादे इलाही है इस्तिआ़नत बिलग़ैर नहीं। अगर इस आयत के वोह मा'ना होते जो वहाबिया ने समझे तो क़ुरआने पाक में ''اَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ'' (मेरी मदद त़ाक़त से करो) और ''اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ'' (सब्र और नमाज़ से मदद चाहो) क्यूं वारिद होता, और अह़ादीस में अहलुल्लाह से इस्तिआ़नत की ता'लीम क्यूं दी जाती। ''اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ'' मा'रिफ़ते ज़ातो सिफ़ात के बा'द इबादत, इस के बा'द दुआ़ ता'लीम फ़रमाई, इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि बन्दे को इबादत के बा'द मश्ग़ूले दुआ़ होना चाहिये, ह़दीस शरीफ़ में भी नमाज़ के बा'द दुआ़ की ता'लीम फ़रमाई गई है। (الطبرانی فی الکبیر والبیہقی فی السنن) ''सिरात़े मुस्तक़ीम'' से मुराद इस्लाम या क़ुरआन, या ख़ुल्क़े नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या ह़ुज़ूर, या ह़ुज़ूर के आल व अस्ह़ाब हैं। इस से साबित होता है कि सिरात़े मुस्तक़ीम त़रीक़े अहले सुन्नत है जो अहले बैत व अस्ह़ाब और सुन्नत व क़ुरआन व सवादे आ'ज़म सब को मानते हैं। ''صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ'' जुम्लए ऊला की तफ़्सीर है कि सिरात़े मुस्तक़ीम से त़रीक़े मुस्लिमीन मुराद है। इस से बहुत से मसाइल ह़ल होते हैं कि जिन उमूर पर बुज़ुर्गाने दीन का अ़मल रहा हो वोह सिरात़े मुस्तक़ीम में दाख़िल है। ''غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ'' इस में हिदायत है कि **मस्अला :** त़ालिबे ह़क़ को दुश्मनाने ख़ुदा से इज्तिनाब और उन के राहो रस्म वज़्अ़ व अत़्वार से परहेज़ लाज़िम है। तिरमिज़ी की रिवायत है कि مَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ से यहूद, और ضَآلِّيْن से नसारा मुराद हैं। **मस्अला :** ''ضاد'' और ''ظاء'' में मुबाइनते ज़ाती है बा'ज़ सिफ़ात का इश्तिराक इन्हें मुत्तह़िद नहीं कर सकता लिहाज़ा غَيْرِ الْمَغْظُوْب ''ب ظا'' पढ़ना अगर ब क़स्द हो तो तह़रीफ़े क़ुरआन व कुफ़्र हैं, वरना ना जाइज़। **मस्अला :** जो शख़्स ''ضاد'' की जगह ''ظا'' पढ़े उस की इमामत जाइज़ नहीं। (محیط برہانی) ''اٰمِيْن'' इस के मा'ना हैं : ऐसा ही कर, या क़बूल फ़रमा। **मस्अला :** येह कलिमए क़ुरआन नहीं। **मस्अला :** सूरए फ़ातिह़ा के ख़त्म पर ''आमीन कहना'' सुन्नत है नमाज़ के अन्दर भी और नमाज़ के बाहर भी। **मस्अला :** ह़ज़रत इमामे आ'ज़म का मज़्हब येह है कि नमाज़ में ''आमीन'' इख़्फ़ा के साथ या'नी आहिस्ता कही जाए। तमाम अह़ादीस पर नज़र और तन्क़ीद से येही नतीजा निकलता है कि जहर की रिवायतों में सिर्फ़ वाइल की रिवायत सह़ीह़ है उस में ''مَدَّ بِهَا'' का लफ़्ज़ है जिस की दलालत जहर पर क़त़्ई नहीं, जैसा जहर का एह़तिमाल है वैसा ही बल्कि इस से क़वी मद्दे हम्ज़ह का एह़तिमाल है, इस लिये येह रिवायत जहर के लिये ह़ुज्जत नहीं हो सकती। दूसरी रिवायतें जिन में जहर व रफ़्अ़ के अल्फ़ाज़ हैं उन की इस्नाद में कलाम है, इलावा बरीं वोह रिवायत बिलमा'ना हैं और फ़ह्मे रावी, ह़दीस नहीं लिहाज़ा ''आमीन'' का आहिस्ता ही पढ़ना सह़ीह़ तर है।

www.dawateislami.net

ایاتها ٢٨٦ ٢ سورۃ البقرۃ مدنیۃ ٨٧ رکوعاتها ٤٠

सूरए बक़रह मदनिय्या है, इस में दो सो छियासी आयतें और चालीस रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला[1]

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَيۡبَ ۚۖ فِيۡهِ ۚ هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيۡنَ

[2] वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं[3] इस में हिदायत है डर वालों को[4] वोह जो

1 : सूरए बक़रह : येह सूरत मदनी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मदीनए त़य्यिबा में सब से पहले येही सूरत नाज़िल हुई सिवाए आयत "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ" के कि ह़ज्जे विदाअ़ में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई। (خازن) इस सूरत में दो सो छियासी आयतें, चालीस रुकूअ़, छ[6] हज़ार एक सो इक्कीस कलिमे, पच्चीस हज़ार पांच सो ह़र्फ़ हैं। (خازن) पहले क़ुरआने पाक में सूरतों के नाम न लिखे जाते थे येह त़रीक़ा ह़ज्जाज ने निकाला। इब्ने अ़रबी का क़ौल है कि सूरए बक़र में हज़ार अम्र, हज़ार नह्य, हज़ार हुक्म, हज़ार ख़बरें हैं, इस के अख़्ज़ में बरकत, तर्क में ह़सरत है, अहले बात़िल जादूगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते, जिस घर में येह सूरत पढ़ी जाए तीन दिन तक सरकश शैत़ान उस में दाख़िल नहीं होता। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि शैत़ान उस घर से भागता है जिस में येह सूरत पढ़ी जाए। (جمل) बैहक़ी व सईद बिन मन्सूर ने ह़ज़रते मुग़ीरा से रिवायत की, कि जो शख़्स सोते वक़्त सूरए बक़रह की दस आयतें पढ़ेगा क़ुरआन शरीफ़ को न भूलेगा, वोह आयतें येह हैं : चार आयतें अव्वल की और आयतुल कुर्सी और दो इस के बा'द की, और तीन आख़िरे सूरत की। **मस्अला :** त़बरानी व बैहक़ी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से रिवायत की, कि हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام ने फ़रमाया : मय्यित को दफ़्न कर के क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़र के अव्वल की आयतें और पाउं की त़रफ़ आख़िर की आयतें पढ़ो। **शाने नुज़ूल : अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से एक ऐसी किताब नाज़िल फ़रमाने का वा'दा फ़रमाया था जो न पानी से धो कर मिटाई जा सके न पुरानी हो, जब क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा तो फ़रमाया : "ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" कि वोह किताबे मौऊ़द (जिस का वा'दा किया गया था) येह है। एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने बनी इसराईल से एक किताब नाज़िल फ़रमाने और बनी इस्माईल में से एक रसूल भेजने का वा'दा फ़रमाया था जब हुज़ूर ने मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई जहां यहूद ब कसरत थे तो "الٓمّٓ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ" नाज़िल फ़रमा कर उस वा'दे के पूरे होने की ख़बर दी। (خازن) **2 :** "الٓمّٓ" सूरतों के अव्वल जो ह़ुरूफ़े मुक़त्तआ़ आते हैं उन की निस्बत क़ौले राजेह़ येही है कि वोह असरारे इलाही और मुतशाबिहात से हैं, इन की मुराद **अल्लाह** और रसूल जानें हम इस के ह़क़ होने पर ईमान लाते हैं। **3 :** इस लिये कि शक उस में होता है जिस पर दलील न हो, क़ुरआने पाक ऐसी वाज़ेह़ और क़वी दलीलें रखता है जो आ़क़िल, मुन्सिफ़ को इस के किताबे इलाही और ह़क़ होने के यक़ीन पर मजबूर करती हैं तो येह किताब किसी त़रह़ क़ाबिले शक नहीं, जिस त़रह़ अन्धे के इन्कार से आफ़्ताब का वुजूद मुश्तबह नहीं होता ऐसे ही मुआ़निद सियाह दिल के शक व इन्कार से येह किताब मश्कूक नहीं हो सकती। **4 :** "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" (इस में हिदायत है डर वालों को) अगर्चे क़ुरआने करीम की हिदायत हर नाज़िर के लिये आ़म है मोमिन हो या काफ़िर जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "هُدًى لِّلنَّاسِ" (लोगों के लिये हिदायत) लेकिन चूंकि इन्तिफ़ाअ़ इस से अहले तक़्वा को होता है इस लिये "هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ" इर्शाद हुवा, जैसे कहते हैं बारिश सब्ज़े के लिये है या'नी मुन्तफ़ेअ़ इस से सब्ज़ा होता है अगर्चे बरस्ती कल्लर ज़मीन बे गियाह (बेकार व बन्जर) पर भी है। तक़्वा के कई मा'ना आते हैं : नफ़्स को ख़ौफ़ की चीज़ से बचाना, और उ़र्फ़े शरअ़ में मम्नूआ़त छोड़ कर नफ़्स को गुनाह से बचाना, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : मुत्तक़ी वोह है जो शिर्क व कबाइर व फ़वाहिश से बचे। बा'ज़ों ने कहा : मुत्तक़ी वोह है जो अपने आप को दूसरों से बेहतर न समझे। बा'ज़ का क़ौल है : तक़्वा ह़राम चीज़ों का तर्क और फ़राइज़ का अदा करना है। बा'ज़ के नज़्दीक मा'सियत पर इसरार और त़ाअ़त पर ग़ुरूर का तर्क तक़्वा है। बा'ज़ ने कहा : तक़्वा येह है कि तेरा मौला तुझे वहां न पाए जहां उस ने मन्अ़ फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि तक़्वा हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام और सह़ाबा رضی اللہ تعالٰی عنہم की पैरवी का नाम है। (خازن) येह तमाम मा'ना बाहम मुनासबत रखते हैं और मआल (या'नी अस्ल) के ए'तिबार से इन में कुछ मुख़ालफ़त नहीं। तक़्वा के मरातिब बहुत हैं : अ़वाम का तक़्वा ईमान ला कर कुफ़्र से बचना, मुतवस्सित़ीन का अवामिर व नवाही की इत़ाअ़त, ख़वास का हर ऐसी चीज़ को छोड़ना जो **अल्लाह** तआ़ला से ग़ाफ़िल करे। (جمل) ह़ज़रते मुतर्जिम قدس سرہ ने फ़रमाया : **तक़्वा सात क़िस्म है :** (1) कुफ़्र से बचना, येह बि फ़ज़्लिही तआ़ला हर मुसल्मान को ह़ासिल है (2) बद मज़्हबी से बचना, येह हर सुन्नी को नसीब है (3) हर कबीरा से बचना (4) सग़ाइर से भी बचना (5) शुबुहात से एह़तिराज़ (6) शहवात से बचना (7) ग़ैर की त़रफ़ इल्तिफ़ात से बचना, येह अख़स्सुल ख़वास का मन्सब है। और क़ुरआने अ़ज़ीम सातों मर्तबों का हादी है।

www.dawateislami.net

يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾

बे देखे ईमान लाएं[5] और नमाज़ क़ाइम रखें[6] और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं[7]

وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ महबूब तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[8]

5 : ''اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' यहां से ''مُفْلِحُوْن'' तक आयतें मोमिनीने बा इख़्लास के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन ईमानदार हैं, इस के बा'द दो आयतें खुले काफ़िरों के हक़ में हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन काफ़िर हैं। इस के बा'द ''وَمِنَ النَّاس'' से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन के हक़ में हैं जो बातिन में काफ़िर हैं और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। (جمل) ''ग़ैब'' मस्दर, या इस्मे फ़ाइल के मा'ना में है इस तक़्दीर पर ''ग़ैब'' वोह है जो हवास व अक़्ल से बदीही तौर पर मा'लूम न हो सके, इस की दो क़िस्में हैं : एक वोह जिस पर कोई दलील न हो, येह इल्मे ग़ैब ज़ाती है, और येही मुराद है आयए ''عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ'' (और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की उन्हें वोही जानता है) में और उन तमाम आयात में जिन में इल्मे ग़ैब की ग़ैरे ख़ुदा से नफ़ी की गई है, इस क़िस्म का इल्मे ग़ैब या'नी ज़ाती जिस पर कोई दलील न हो **अल्लाह** तआला के साथ ख़ास है। ''ग़ैब'' की दूसरी क़िस्म वोह है जिस पर दलील हो जैसे सानेए आलम और उस की सिफ़ात, नुबुव्वात और उन के मुतअ़ल्लिक़ात, अहकाम व शराएअ़ व रोज़े आख़िर और उस के अह्वाल, बा'स, नश्र, हिसाब, जज़ा वग़ैरा का इल्म जिस पर दलीलें क़ाइम हैं, और जो ता'लीमे इलाही से हासिल होता है यहां येही मुराद है। इस दूसरे क़िस्म के ग़ुयूब जो ईमान से अ़लाक़ा रखते हैं उन का इल्म व यक़ीन हर मोमिन को हासिल है, अगर न हो आदमी मोमिन न हो सके, और **अल्लाह** तआला अपने मुक़र्रब बन्दों अम्बिया व औलिया पर जो ग़ुयूब के दरवाज़े खोलता है वोह इसी क़िस्म का ग़ैब है। या ''ग़ैब'' मा'निये मस्दरी में रखा जाए और ग़ैब का सिला ''مُؤْمَنٌ بِهٖ'' क़रार दिया जाए, या ''بَاء'' को मुतलब्बिसीन मह्ज़ूफ़ के मुतअ़ल्लिक़ कर के हाल क़रार दिया जाए। **पहली** सूरत में आयत के मा'ना येह होंगे जो बे देखे ईमान लाएं जैसा कि हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने तरजमा किया है। **दूसरी** सूरत में मा'ना येह होंगे जो मोमिनीन के पसे ग़ैबत ईमान लाएं या'नी उन का ईमान मुनाफ़िक़ों की तरह मोमिनीन के दिखाने के लिये न हो बल्कि वोह मुख़्लिस हों, ग़ाइब, हाज़िर हर हाल में मोमिन रहें। ''ग़ैब'' की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि ग़ैब से क़ल्ब या'नी दिल मुराद है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह दिल से ईमान लाएं। (جمل) ''ईमान'' जिन चीज़ों की निस्बत हिदायत व यक़ीन से मा'लूम है कि येह दीने मुहम्मदी से हैं इन सब को मानने और दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करने का नाम ईमाने सहीह है, अ़मल ईमान में दाख़िल नहीं इसी लिये ''يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ'' के बा'द ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ'' फ़रमाया। **6 :** नमाज़ के क़ाइम रखने से येह मुराद है कि इस पर मुदावमत करते हैं और ठीक वक़्तों पर पाबन्दी के साथ इस के अरकान पूरे पूरे अदा करते, और फ़राइज़, सुनन, मुस्तहब्बात की हिफ़ाज़त करते हैं किसी में ख़लल नहीं आने देते, मुफ़्सिदात व मक्रूहात से इस को बचाते हैं और इस के हुक़ूक़ अच्छी तरह अदा करते हैं। नमाज़ के हुक़ूक़ दो तरह के हैं : एक ज़ाहिरी वोह तो येही हैं जो ज़िक्र हुए, दूसरे बातिनी वोह ख़ुशूअ़ और हुज़ूर या'नी दिल को फ़ारिग़ कर के हमा तन बारगाहे हक़ में मुतवज्जेह हो जाना और अर्ज़ो नियाज़ व मुनाजात में महविय्यत पाना। **7 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या ज़कात मुराद है जैसा दूसरी जगह फ़रमाया : ''يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ'' या मुत्लक़ इन्फ़ाक़ ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अहल का नफ़्क़ा वग़ैरा, ख़्वाह मुस्तहब जैसे सदक़ाते नाफ़िला, अम्वात का ईसाले सवाब। **मस्अला :** ग्यारहवीं, फ़ातिहा, तीजा, चालीसवां वग़ैरा भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब सदक़ाते नाफ़िला हैं और कुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज्रो सवाब बढ़ाता है। **मस्अला :** ''مِمَّا'' में ''مِن'' तब्ईज़िया इस तरफ़ इशारा करता है कि इन्फ़ाक़ में इसराफ़ मम्नूअ़ है या'नी इन्फ़ाक़ ख़्वाह अपने नफ़्स पर हो, या अपने अहल पर, या किसी और पर ए'तिदाल के साथ हो इसराफ़ न होने पाए। ''رَزَقْنٰهُمْ'' की तक़्दीम और रिज़्क़ को अपनी तरफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि माल तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं हमारा अ़ता फ़रमाया हुवा है, इस को अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो, और येह बुख़्ल निहायत क़बीह है। **8 :** इस आयत में अहले किताब से वोह मोमिनीन मुराद हैं जो अपनी किताब और तमाम पिछली आस्मानी किताबों और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की वह्यों पर भी ईमान लाए और कुरआने पाक पर भी, और ''مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ'' से तमाम कुरआने पाक और पूरी शरीअ़त मुराद है। (جمل) **मस्अला :** जिस तरह कुरआने पाक पर ईमान लाना हर मुकल्लफ़ पर फ़र्ज़ है इसी तरह कुतुबे साबिक़ा पर ईमान लाना भी ज़रूरी है जो **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से क़ब्ल अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाईं, अलबत्ता उन के जो अहकाम हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ हो गए उन पर अ़मल दुरुस्त नहीं मगर ईमान ज़रूरी है मसलन पिछली शरीअ़तों में बैतुल मक़्दिस क़िब्ला था इस पर ईमान लाना तो हमारे लिये ज़रूरी है मगर अ़मल या'नी नमाज़ में बैतुल मक़्दिस की तरफ़ मुंह करना जाइज़ नहीं मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** कुरआने करीम से पहले जो कुछ **अल्लाह** तआला की तरफ़ से उस के अम्बिया पर नाज़िल हुवा उन सब पर इज्मालन ईमान लाना फ़र्ज़े ऐन है और कुरआन शरीफ़ पर तफ़्सीलन फ़र्ज़े किफ़ाया है लिहाज़ा अ़वाम पर इस की तफ़्सीलात के इल्म की तहसील फ़र्ज़ नहीं जब कि उ़लमा मौजूद हों जिन्हों ने इस की तहसीले इल्म में पूरी जोहद सर्फ़ की हो।

www.dawateislami.net

وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ

और आख़िरत पर यक़ीन रखे[9] वोही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और वोही

هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ

मुराद को पहुंचने वाले बेशक वोह जिन की क़िस्मत में कुफ़्र है[10] उन्हें बराबर है चाहे तुम उन्हें डराओ

اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ

या न डराओ वोह ईमान लाने के नहीं अल्लाह ने उन के दिलों पर और कानों पर मोहर कर दी

وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٧﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ ع

और उन की आंखों पर घटाटोप है[11] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब और कुछ लोग कहते हैं[12]

يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾ يُخٰدِعُوْنَ وقف لازم

कि हम अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाए और वोह ईमान वाले नहीं फ़रेब दिया चाहते हैं

اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩﴾ ط

अल्लाह और ईमान वालों को[13] और ह़क़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को और उन्हें शुऊ़र नहीं

9 : या'नी दारे आख़िरत और जो कुछ उस में है जज़ा व ह़िसाब वग़ैरा सब पर ऐसा यक़ीन व इत़्मीनान रखते हैं कि ज़रा शको शुबा नहीं। इस में अहले किताब वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जिन के ए'तिक़ाद आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ फ़ासिद हैं। **10 :** औलिया के बा'द आ'दा का ज़िक्र फ़रमाना ह़िक्मते हिदायत है कि इस मुक़ाबले से हर एक को अपने किरदार की ह़क़ीक़त और उस के नताइज पर नज़र हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल, अबू लहब वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं इसी लिये इन के ह़क़ में अल्लाह तआ़ला की मुख़ालफ़त से डराना न डराना दोनों बराबर हैं इन्हें नफ़्अ़ न होगा मगर ह़ुज़ूर की सअ़्य बेकार नहीं क्यूं कि मन्सबे रिसालते आ़म्मा का फ़र्ज़ रहनुमाई व इक़ामते ह़ुज्जत व तब्लीग़ अ़ला वज्हिल कमाल है। **मस्अला :** अगर क़ौम पन्द पज़ीर न हो (या'नी नसीह़त क़बूल न करे) तब भी हादी को हिदायत का सवाब मिलेगा। इस आयत में ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली और दिलजोई) है कि कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से आप मग़मूम न हों आप की सअ़्ये तब्लीग़ कामिल है इस का अज्र मिलेगा, मह़रूम तो येह बद नसीब हैं जिन्हों ने आप की इत़ाअ़त न की। "कुफ़्र" के मा'ना अल्लाह तआ़ला के वुजूद या उस की वह़दानिय्यत, या किसी नबी की नुबुव्वत, या ज़रूरिय्याते दीन से किसी अम्र का इन्कार, या कोई ऐसा फ़े'ल जो इन्दश्शरअ़ इन्कार की दलील हो कुफ़्र है। **11 :** ख़ुलासए मत़लब येह है कि कुफ़्फ़ार ज़लालत व गुमराही में ऐसे डूबे हुए हैं कि ह़क़ के देखने, सुनने, समझने से इस त़रह़ मह़रूम हो गए जैसे किसी के दिल और कानों पर मोह्र लगी हो और आंखों पर पर्दा पड़ा हो। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बन्दों के अफ़्आ़ल भी तह़्ते क़ुदरते इलाही हैं। **12 :** इस से मा'लूम हुवा कि हिदायत की राहें उन के लिये अव्वल ही से बन्द न थीं कि जाए उ़ज़्र होती बल्कि उन के कुफ़्रो इ़नाद और सरकशी व बे दीनी और मुख़ालफ़्ते ह़क़ व अ़दावते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का येह अन्जाम है जैसे कोई शख़्स त़बीब की मुख़ालफ़त करे और ज़हरे क़ातिल खा ले और उस के लिये दवा से इन्तिफ़ाअ़ की सूरत न रहे तो ख़ुद वोही मुस्तह़िक़्क़े मलामत है। **13 : शाने नुज़ूल :** यहां से तेरह आयतें मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुईं जो बात़िन में काफ़िर थे और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते थे, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : "مَاهُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ" वोह ईमान वाले नहीं या'नी कलिमा पढ़ना, इस्लाम का मुद्दई होना, नमाज़ रोज़ा अदा करना मोमिन होने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दिल में तस्दीक़ न हो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जितने फ़िर्क़े ईमान का दा'वा करते हैं और कुफ़्र का ए'तिक़ाद रखते हैं सब का येही ह़ुक्म है कि काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम हैं, शरअ़ में ऐसों को मुनाफ़िक़ कहते हैं इन का ज़रर खुले काफ़िरों से ज़ियादा है। "مِنَ النَّاسِ" फ़रमाने में लत़ीफ़ रम्ज़ येह है कि येह गुरौह बेहतर सिफ़ात व इन्सानी कमालात से ऐसा आ़री है कि इस का ज़िक्र किसी वस्फ़ व ख़ूबी के साथ नहीं किया जाता, यूं कहा जाता है कि वोह भी आदमी हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी को बशर कहने में उस के फ़ज़ाइलो कमालात के इन्कार का पहलू निकलता है। इस लिये

www.dawateislami.net

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ۬ بِمَا

उन के दिलों में बीमारी है[14] तो अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ाई और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है बदला

كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ۝۱۰ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ ۙ قَالُوْۤا

उन के झूट का[15] और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो[16] तो कहते हैं

اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝۱۱ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَ لٰكِنْ لَّا

हम तो संवारने वाले हैं सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें

یَشْعُرُوْنَ ۝۱۲ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ

शुऊ़र नहीं और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं[17] तो कहें क्या हम

كَمَاۤ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَ لٰكِنْ لَّا یَعْلَمُوْنَ ۝۱۳

अह़्मक़ों की त़रह़ ईमान ले आएं[18] सुनता है वोही अह़्मक़ हैं मगर जानते नहीं[19]

क़ुरआने पाक में जा बजा अम्बियाए किराम के बशर कहने वालों को काफ़िर फ़रमाया गया, और दर ह़क़ीक़त अम्बिया की शान में ऐसा लफ़्ज़ अदब से दूर और कुफ़्फ़ार का दस्तूर है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : ''مِنَ النَّاسِ'' सामिईन को तअ़ज्जुब दिलाने के लिये फ़रमाया गया कि ऐसे फ़रेबी मक्कार और ऐसे अह़्मक़ भी आदमियों में हैं। **14 :** अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस को कोई धोका दे सके वोह असरार व मख़्फ़ियात का जानने वाला है। मुराद येह है कि मुनाफ़िक़ अपने गुमान में ख़ुदा को फ़रेब देना चाहते हैं, या येह कि ख़ुदा को फ़रेब देना येही है कि रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को धोका देना चाहें क्यूं कि वोह उस के ख़लीफ़ा हैं और अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब को असरार का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया है वोह उन मुनाफ़िक़ीन के छुपे कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हैं और मुसल्मान उन के इत्तिलाअ़ देने से बा ख़बर, तो उन बे दीनों का फ़रेब न ख़ुदा पर चले न रसूल पर न मोमिनीन पर बल्कि दर ह़क़ीक़त वोह अपनी जानों को फ़रेब दे रहे हैं। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक़िय्या बड़ा ऐ़ब है जिस मज़हब की बिना तक़िय्ये पर हो वोह बात़िल है, तक़िय्ये वाले का ह़ाल क़ाबिले ए'तिमाद नहीं होता, तौबा ना क़ाबिले इत़्मीनान होती है इस लिये उ़लमा ने फ़रमाया : ''لَا تُقْبَلُ تَوْبَةُ الزِّنْدِيْقِ'' (ज़िन्दीक़ की तौबा क़बूल नहीं होती)। **15 :** बद अ़क़ीदगी को क़ल्बी मरज़ फ़रमाया गया। इस से मा'लूम हुवा कि बद अ़क़ीदगी रूहानी ज़िन्दगी के लिये तबाह कुन है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूट ह़राम है इस पर अ़ज़ाबे अलीम मुरत्तब होता है। **16 : मस्अला :** कुफ़्फ़ार से मेलजोल, उन की ख़ात़िर दीन में मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन्हें बात़िल से न रोकना) और अहले बात़िल के साथ तमल्लुक़ व चापलूसी और उन की ख़ुशी के लिये सुल्ह़े कुल बन जाना और इज़्हारे ह़क़ से बाज़ रहना शाने मुनाफ़िक़ और ह़राम है, इसी को मुनाफ़िक़ीन का फ़साद फ़रमाया गया। आज कल बहुत लोगों ने येह शेवा कर लिया है कि जिस जल्से में गए वैसे ही हो गए इस्लाम में इस की मुमानअ़त है, ज़ाहिरो बात़िन का यक्सां न होना बड़ा ऐ़ब है। **17 :** यहां ''اَلنَّاسُ'' से या सह़ाबए किराम मुराद हैं या मोमिनीन क्यूं कि ख़ुदा शनासी, फ़रमां बरदारी व आ़क़िबत अन्देशी की बदौलत वोही इन्सान कहलाने के मुस्तह़िक़ हैं। **मस्अला :** ''اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ'' (ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं) से साबित हुवा कि सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ मह़्मूद व मत़्लूब है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मज़्हबे अहले सुन्नत ह़क़ है क्यूं कि इस में सालिह़ीन का इत्तिबाअ़ है। **मस्अला :** बाक़ी तमाम फ़िर्क़े सालिह़ीन से मुन्ह़रिफ़ हैं लिहाज़ा गुमराह हैं। **मस्अला :** बा'ज़ उ़लमा ने इस आयत को ''ज़िन्दीक़'' की तौबा मक़्बूल होने की दलील क़रार दिया है। (بیضاوی) ''ज़िन्दीक़'' वोह है जो नुबुव्वत का मुक़िर (इक़रार करता) हो, शआइरे इस्लाम का इज़्हार करे और बात़िन में ऐसे अ़क़ीदे रखे जो बिल इत्तिफ़ाक़ कुफ़्र हों येह भी मुनाफ़िक़ों में दाख़िल है। **18 :** इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन को बुरा कहना अहले बात़िल का क़दीम त़रीक़ा है, आज कल के बात़िल फ़िर्क़े भी पिछले बुज़ुर्गों को बुरा कहते हैं रवाफ़िज़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन और बहुत से सह़ाबा को, ख़वारिज ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन के रुफ़क़ा को, ग़ैर मुक़ल्लिद अइम्मए मुज्तहिदीन बिल ख़ुसूस इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को, वहाबिया ब कसरत औलिया व मक़्बूलाने बारगाह को, मिरज़ाई अम्बियाए साबिक़ीन तक को, क़ुरआनी (चकड़ाली) सह़ाबा व मुह़द्दिसीन को, नेचरी तमाम अकाबिरे दीन को बुरा कहते और ज़बाने त़ा'न दराज़ करते हैं, इस आयत से मा'लूम हुवा कि येह सब गुमराही में हैं। इस में दीनदार आ़लिमों के लिये तसल्ली है कि वोह गुमराहों की बद ज़बानियों से बहुत रन्जीदा न हों समझ लें कि येह अहले बात़िल का क़दीम दस्तूर है। (مدارک) **19 :** मुनाफ़िक़ीन की येह बद ज़बानी मुसल्मानों के सामने न थी इन से तो वोह येही कहते थे कि हम ब इख़्लास मोमिन हैं जैसा कि अगली आयत में है

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ

और जब ईमान वालों से मिलें तो कहें हम ईमान लाए और जब अपने शैत़ानों के पास अकेले हों[20]

قَالُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ

तो कहें हम तुम्हारे साथ हैं हम तो यूंही हंसी करते हैं[21] अल्लाह उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है[22] (जैसा उस

وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

की शान के लाइक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें येह वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही

بِالْهُدٰى ۠ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ

ख़रीदी[23] तो उन का सौदा कुछ नफ़्अ़ न लाया और वोह सौदे की राह जानते ही न थे[24] उन की कहावत

كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّاۤ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ

उस की त़रह़ है जिस ने आग रोशन की तो जब उस से आस पास सब जगमगा उठा अल्लाह उन का

اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْۤا اٰمَنَّا येह तबर्रा बाज़ियां अपनी ख़ास मजलिसों में करते थे अल्लाह तआ़ला ने उन का पर्दा फ़ाश कर दिया। (خازن) इसी त़रह़ आज कल के गुमराह फ़िर्क़े मुसल्मानों से अपने ख़यालाते फ़ासिदा को छुपाते हैं मगर अल्लाह तआ़ला उन की किताबों और तह़रीरों से उन के राज़ फ़ाश कर देता है। इस आयत से मुसल्मानों को ख़बरदार किया जाता है कि बे दीनों की फ़रेब कारियों से होशियार रहें धोका न खाएं। **20 :** यहां "शयात़ीन" से कुफ़्फ़ार के वोह सरदार मुराद हैं जो इग़्वा (वरग़लाने) में मसरूफ़ रहते हैं। (خازن وبیضاوی) येह मुनाफ़िक़ जब उन से मिलते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और मुसल्मानों से मिलना मह़ज़ बराहे फ़रेब व इस्तिहज़ा, इस लिये है कि उन के राज़ मा'लूम हों और उन में फ़साद अंगेज़ी के मवाक़ेअ़ मिलें। (خازن) **21 :** या'नी इज़्हारे ईमान तमस्ख़ुर के त़ौर पर किया। येह इस्लाम का इन्कार हुवा। **मस्अला :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और दीन के साथ इस्तिहज़ा व तमस्ख़ुर कुफ़्र है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई एक रोज़ उन्हों ने सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त को आते देखा तो इब्ने उबय ने अपने यारों से कहा देखो तो मैं इन्हें कैसा बनाता हूं ? जब वोह ह़ज़रात क़रीब पहुंचे तो इब्ने उबय ने पहले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर का दस्ते मुबारक अपने हाथ में ले कर आप की ता'रीफ़ की फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अ़ली की ता'रीफ़ की (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم)। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : ऐ इब्ने उबय ख़ुदा से डर निफ़ाक़ से बाज़ आ क्यूं कि मुनाफ़िक़ीन बद तरीन ख़ल्क़ हैं, इस पर वोह कहने लगा कि येह बातें निफ़ाक़ से नहीं की गईं बख़ुदा हम आप की त़रह़ मोमिने सादिक़ हैं, जब येह ह़ज़रात तशरीफ़ ले गए तो आप अपने यारों में अपनी चालबाज़ी पर फ़ख़्र करने लगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मुनाफ़िक़ीन मोमिनीन से मिलते वक़्त इज़्हारे ईमान व इख़्लास करते हैं और उन से अ़लाह़दा हो कर अपनी ख़ास मजलिसों में उन की हंसी उड़ाते और इस्तिहज़ा करते हैं। (اخرجه الثعلبی والواحدی و ضعفه ابن حجر والسیوطی فی لباب النقول) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सह़ाबए किराम व पेशवायाने दीन का तमस्ख़ुर उड़ाना कुफ़्र है। **22 :** अल्लाह तआ़ला इस्तिहज़ा और तमाम नक़ाइस व उ़यूब से मुनज़्ज़ह व पाक है, यहां "जज़ाए इस्तिहज़ा" को इस्तिहज़ा फ़रमाया गया ताकि ख़ूब दिल नशीन हो जाए कि येह सज़ा उस ना कर्दनी फ़े'ल की है। ऐसे मौक़अ़ पर जज़ा को उसी फ़े'ल से ता'बीर करना आईने फ़साह़त है जैसे "جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ" में। कमाले ह़ुस्ने बयान येह है कि इस जुम्ले को जुम्लए साबिक़ा पर मा'तूफ़ न फ़रमाया क्यूं कि वहां इस्तिहज़ा ह़क़ीक़ी मा'नी में था। **23 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदना या'नी बजाए ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करना निहायत ख़सारे और टोटे की बात है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत या उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ईमान लाने के बा'द काफ़िर हो गए, या यहूद के ह़क़ में जो पहले से तो ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे मगर जब ह़ुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो मुन्किर हो गए, या तमाम कुफ़्फ़ार के ह़क़ में कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें फ़ित़रते सलीमा अ़त़ा फ़रमाई, ह़क़ के दलाइल वाज़ेह़ किये, हिदायत की राहें खोलीं लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया और गुमराही इख़्तियार की। **मस्अला :** इस आयत से बैए तआ़त़ी का जवाज़ साबित हुवा या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त के अल्फ़ाज़ कहे बिग़ैर मह़ज़ रिज़ामन्दी से एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ लेना जाइज़ है। **24 :** क्यूं कि अगर तिजारत का त़रीक़ा जानते तो अस्ल पूंजी (हिदायत) न खो बैठते।

www.dawateislami.net

بِنُوۡرِهِمۡ وَتَرَكَهُمۡ فِىۡ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۷﴾ صُمٌّۢ بُكۡمٌ عُمۡىٌ فَهُمۡ

नूर ले गया और उन्हें अंधेरियों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं सूझता[25] बहरे गूंगे अन्धे तो वोह

لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۱۸﴾ اَوۡ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيۡهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعۡدٌ وَّبَرۡقٌ

फिर आने वाले नहीं या जैसे आस्मान से उतरता पानी कि उस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक[26]

يَجۡعَلُوۡنَ اَصَابِعَهُمۡ فِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الۡمَوۡتِ ؕ وَاللّٰهُ

अपने कानों में उंग्लियां ठोंस रहे हैं कड़क के सबब मौत के डर से[27] और अल्लाह

مُحِيۡطٌۢ بِالۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۱۹﴾ يَكَادُ الۡبَرۡقُ يَخۡطَفُ اَبۡصَارَهُمۡ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمۡ

काफ़िरों को घेरे हुए है[28] बिजली यूं मा'लूम होती है कि उन की निगाहें उचक ले जाएगी[29] जब कुछ चमक हुई

مَّشَوۡا فِيۡهِ ۙ وَاِذَآ اَظۡلَمَ عَلَيۡهِمۡ قَامُوۡا ؕ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ

उस में चलने लगे[30] और जब अंधेरा हुवा खड़े रह गए और अगर अल्लाह चाहता तो उन के

25 : येह उन की मिसाल है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने कुछ हिदायत दी या इस पर कुदरत बख़्शी फिर उन्हों ने इस को ज़ाएअ़ कर दिया और अबदी दौलत को ह़ासिल न किया, उन का मआल (अन्जाम) ह़स्रतो अफ़्सोस, हैरतो ख़ौफ़ है। इस में वोह मुनाफ़िक़ भी दाख़िल हैं जिन्हों ने इज़्हारे ईमान किया और दिल में कुफ़्र रख कर इक़रार की रोशनी को ज़ाएअ़ कर दिया, और वोह भी जो मोमिन होने के बा'द मुरतद हो गए, और वोह भी जिन्हें फ़ित्रते सलीमा अ़ता हुई और दलाइल की रोशनी ने ह़क़ को वाज़ेह़ किया मगर उन्हों ने इस से फ़ाएदा न उठाया और गुमराही इख़्तियार की और जब ह़क़ सुनने मानने कहने, राहे ह़क़ देखने से मह़रूम हुए तो कान, ज़बान, आंख सब बेकार हैं। **26 :** हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदने वालों की येह दूसरी तम्सील है कि जैसे बारिश ज़मीन की ह़यात का सबब होती है और उस के साथ ख़ौफ़नाक तारीकियां और मुहीब गरज और चमक होती है इसी त़रह़ "क़ुरआन व इस्लाम" क़ुलूब की ह़यात का सबब हैं, और ज़िक्रे "कुफ़्र व शिर्क व निफ़ाक़" ज़ुल्मत के मुशाबेह जैसे तारीकी रह रव (राह चलने वाले) को मन्ज़िल तक पहुंचने से मानेअ़ होती है ऐसे ही कुफ़्र व निफ़ाक़ राहयाबी (राह पाने) से मानेअ़ हैं, और "वईदात" गरज के, और "ह़ुजजे बय्यिना" चमक के मुशाबेह हैं। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ों में से दो आदमी ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास से मुश्रिकीन की त़रफ़ भागे राह में येही बारिश आई जिस का आयत में ज़िक्र है उस में शिद्दत की गरज, कड़क और चमक थी, जब गरज होती तो कानों में उंग्लियां ठोंस लेते कि कहीं येह कानों को फाड़ कर मार न डाले, जब चमक होती चलने लगते, जब अंधेरी होती अन्धे रह जाते, आपस में कहने लगे : ख़ुदा ख़ैर से सुब्ह़ करे तो ह़ुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपने हाथ ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस में दें, चुनान्चे उन्हों ने ऐसा ही किया और इस्लाम पर साबित क़दम रहे। उन के ह़ाल को अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन के लिये मसल (कहावत) बनाया जो मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो कानों में उंग्लियां ठोंस लेते कि कहीं ह़ुज़ूर का कलाम उन में असर न कर जाए जिस से मर ही जाएं, और जब उन के माल व औलाद ज़ियादा होते और फ़ुतूह़ व ग़नीमत मिलती तो बिजली की चमक वालों की त़रह़ चलते और कहते कि अब तो दीने मुह़म्मदी सच्चा है, और जब माल व औलाद हलाक होते और कोई बला आती तो बारिश की अंधेरियों में ठिटक रहने वालों की त़रह़ कहते कि येह मुसीबतें इसी दीन की वज्ह से हैं और इस्लाम से पलट जाते। (لباب النقول للسیوطی) **27 :** जैसे अंधेरी रात में काली घटा छाई हो और बिजली की गरज व चमक जंगल में मुसाफ़िर को ह़ैरान करती हो, और वोह कड़क की वह़शत नाक आवाज़ से ब अन्देशए हलाक कानों में उंग्लियां ठोंसता हो। ऐसे ही कुफ़्फ़ार क़ुरआने पाक के सुनने से कान बन्द करते हैं और उन्हें येह अन्देशा होता है कि कहीं इस के दिल नशीन मज़ामीन इस्लाम व ईमान की त़रफ़ माइल कर के बाप दादा का कुफ़्री दीन तर्क न करा दें जो उन के नज़्दीक मौत के बराबर है। **28 :** लिहाज़ा येह गुरेज़ उन्हें कुछ फ़ाएदा नहीं दे सकती क्यूं कि वोह कानों में उंग्लियां ठोंस कर क़हरे इलाही से ख़लास (छुटकारा) नहीं पा सकते। **29 :** जैसे बिजली की चमक मा'लूम होता है कि बीनाई को ज़ाइल कर देगी ऐसे ही दलाइले बाहिरा के अन्वार उन की बसर व बसीरत को ख़ीरा (तारीक) करते हैं। **30 :** जिस त़रह़ अंधेरी रात और अब्र व बारिश की तारीकियों में मुसाफ़िर मुतह़य्यिर होता है जब बिजली चमक्ती है तो कुछ चल लेता है जब अंधेरा होता है खड़ा रह जाता है इसी त़रह़ इस्लाम के ग़लबे और मो'जिज़ात की रोशनी और आराम के वक़्त मुनाफ़िक़ इस्लाम की त़रफ़ राग़िब होते हैं और जब कोई मशक़्क़त पेश आती

بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۠ ﴿۲۰﴾ یٰۤاَیُّهَا ٢ ع ١٣ ٢

कान और आंखें ले जाता[31] बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है[32] ऐ

النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ

लोगो[33] अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए

تَتَّقُوْنَ ﴿۲۱﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪

कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले[34] जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना और आस्मान को इमारत बनाया

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا

और आस्मान से पानी उतारा[35] तो उस से कुछ फल निकाले तुम्हारे खाने को तो

تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا

अल्लाह के लिये जान बूझ कर बराबर वाले न ठहराओ[36] और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो

نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ

हम ने अपने इन ख़ास बन्दे[37] पर उतारा तो उस जैसी एक सूरत तो ले आओ[38] और **अल्लाह** के सिवा अपने सब

है तो कुफ़्र की तारीकी में खड़े रह जाते हैं और इस्लाम से हटने लगते हैं, इसी मज़्मून को दूसरी आयत में इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ○ وَاِنْ یَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ یَاْتُوْٓا اِلَیْهِ مُذْعِنِیْنَ○ (خازن صاوی وغیرہ) **31 :** या'नी अगर्चे मुनाफ़िक़ीन का त़र्ज़े अ़मल इस का मुक़्तज़ी था मगर **अल्लाह** तआ़ला ने उन के सम्अ़ व बसर को बात़िल न किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अस्बाब की तासीर मशिय्यते इलाहिय्यह के साथ मशरूत़ है, बिग़ैर मशिय्यत तन्हा अस्बाब कुछ नहीं कर सकते। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मशिय्यत अस्बाब की मोह़ताज नहीं वोह बे सबब जो चाहे कर सकता है। **32 :** "शै" उसी को कहते हैं जिसे **अल्लाह** चाहे और जो तह़्ते मशिय्यत आ सके, तमाम मुम्किनात "शै" में दाख़िल हैं इस लिये वोह तह़्ते क़ुदरत हैं, और जो मुम्किन नहीं वाजिब या मम्तनेअ़ है उस से क़ुदरत व इरादा मुतअ़ल्लिक़ नहीं होता जैसे **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात वाजिब हैं इस लिये मक़्दूर नहीं। **मस्अला :** बारी तआ़ला के लिये झूट और तमाम उ़यूब मुह़ाल हैं इसी लिये क़ुदरत को इन से कुछ वासित़ा नहीं। **33 :** अव्वले सूरत में कुछ बताया गया कि येह किताब मुत्तक़ीन की हिदायत के लिये नाज़िल हुई, फिर मुत्तक़ीन के औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया, इस के बा'द इस से मुन्ह़रिफ़ होने वाले फ़िर्क़ों का और उन के अह़्वाल का ज़िक्र फ़रमाया कि सआ़दत मन्द इन्सान हिदायत व तक़्वा की त़रफ़ राग़िब हो और ना फ़रमानी व बग़ावत से बचे, अब त़रीक़े तह़सीले तक़्वा ता'लीम फ़रमाया जाता है। "یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ" (ऐ लोगो) का ख़ित़ाब अक्सर अहले मक्का को और "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا" (ऐ ईमान वालो) का अहले मदीना को होता है मगर यहां येह ख़ित़ाब मोमिन, काफ़िर सब को आ़म है, इस में इशारा है कि इन्सानी शराफ़त इसी में है कि आदमी तक़्वा ह़ासिल करे और मसरूफ़े इ़बादत रहे। "इ़बादत" वोह ग़ायते ता'ज़ीम है जो बन्दा अपनी अ़ब्दिय्यत और मा'बूद की उलूहिय्यत के ए'तिक़ाद व ए'तिराफ़ के साथ बजा लाए, यहां इ़बादत आ़म है, अपने तमाम अन्वाओ़ अक़्साम व उसूलो फ़ुरूअ़ को शामिल है। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार इ़बादत के मामूर हैं जिस त़रह़ बे वुज़ू होना नमाज़ के फ़र्ज़ होने का मानेअ़ नहीं इसी त़रह़ काफ़िर होना वुजूबे इ़बादत को मन्अ़ नहीं करता, और जैसे बे वुज़ू शख़्स पर नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत रफ़्ए ह़दस लाज़िम करती है ऐसे ही काफ़िर पर वुजूबे इ़बादत से तर्के कुफ़्र लाज़िम आता है। **34 :** इस से मा'लूम हुवा कि इ़बादत का फ़ाएदा आ़बिद ही को मिलता है, **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि उस को इ़बादत या और किसी चीज़ से नफ़्अ़ ह़ासिल हो। **35 :** पहली आयत में ने'मते ईजाद का बयान फ़रमाया कि तुम्हें और तुम्हारे आबा को मा'दूम से मौजूद किया और दूसरी आयत में अस्बाबे मईशत व आसाइश व आबो ग़िज़ा का बयान फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि वोही वलिय्ये ने'मत है तो ग़ैर की परस्तिश मह़्ज़ बात़िल है। **36 :** तौह़ीदे इलाही के बा'द ह़ुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के किताबे इलाही व मो'जिज़ (आ़जिज़ कर देने वाली किताब) होने की वोह क़ाहिर दलील बयान फ़रमाई जाती है जो त़ालिबे सादिक़ को इत़्मीनान बख़्शे और मुन्किरों को आ़जिज़ कर दे। **37 :** बन्दए ख़ास से ह़ुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं। **38 :** या'नी ऐसी सूरत बना कर

www.dawateislami.net

دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۳﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا

हिमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो

النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۴﴾ وَبَشِّرِ

उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं[39] तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये[40] और ख़ुश ख़बरी दे

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ

नहरें रवां[41] जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा सूरत देख कर कहेंगे येह तो वोही

رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ

रिज़्क़ है जो हमें पहले मिला था[42] और वोह सूरत में मिलता जुलता उन्हें दिया गया और उन के लिये उन बाग़ों में सुथरी बीबियां हैं[43]

وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا

और वोह उन में हमेशा रहेंगे[44] बेशक अल्लाह इस से ह़या नहीं फ़रमाता कि मिसाल समझाने को कैसी ही चीज़ का ज़िक्र फ़रमाए

بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

मच्छर हो या उस से बढ़ कर[45] तो वोह जो ईमान लाए वोह तो जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़

رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ (وقف لازم)

से ह़क़ है[46] रहे काफ़िर वोह कहते हैं ऐसी कहावत में अल्लाह का क्या मक़्सूद है

लाओ जो फ़साह़तो बलाग़त और हुस्ने नज़्म व तरतीब और ग़ैब की ख़बरें देने में क़ुरआने पाक की मिस्ल हो। **39 :** पथ्थर से वोह बुत मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार पूजते हैं और उन की मह़ब्बत में क़ुरआने पाक और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इनादन इन्कार करते हैं। **40 : मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दोज़ख़ पैदा हो चुकी है। **मस्अला :** येह भी इशारा है कि मोमिनीन के लिये बि करमिही तआ़ला ख़ुलूदे नार या'नी हमेशा जहन्नम में रहना नहीं। **41 :** सुन्नते इलाही है कि किताब में तरहीब के साथ तरग़ीब ज़िक्र फ़रमाता है इसी लिये कुफ़्फ़ार और उन के आ'माल व अ़ज़ाब के ज़िक्र के बा'द मोमिनीन और उन के आ'माल का ज़िक्र फ़रमाया और उन्हें जन्नत की बिशारत दी। "صٰلِحٰت" या'नी नेकियां वोह अ़मल हैं जो शरअ़न अच्छे हों, इन में फ़राइज़ व नवाफ़िल सब दाख़िल हैं। (جلالین) **मस्अला :** अ़मले सालेह़ का ईमान पर अ़त्फ़ दलील है इस की, कि अ़मल जुज़्वे ईमान नहीं। **मस्अला :** येह बिशारत मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिला क़ैद है और गुनहगारों को जो बिशारत दी गई है वोह मुक़य्यद ब मशिय्यते इलाही है कि चाहे अ़फ़्व़ राहे करम मुआफ़ फ़रमाए, चाहे गुनाहों की सज़ा दे कर जन्नत अ़ता करे। (مدارک) **42 :** जन्नत के फल बाहम मुशाबेह होंगे और ज़ाएक़े उन के जुदा जुदा, इस लिये जन्नती कहेंगे कि येही फल तो हमें पहले मिल चुका है, मगर खाने से नई लज़्ज़त पाएंगे तो उन का लुत़्फ़ बहुत ज़ियादा हो जाएगा। **43 :** जन्नती बीबियां, ख़्वाह हूरें हों या और, सब ज़नाने अ़वारिज़ और तमाम नापाकियों और गन्दगियों से मुबर्रा होंगी, न जिस्म पर मैल होगा न बौलो बराज़, इस के साथ ही वोह बद मिज़ाजी व बद ख़ुल्क़ी से भी पाक होंगी। (مدارک وخازن) **44 :** या'नी अहले जन्नत न कभी फ़ना होंगे न जन्नत से निकाले जाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जन्नत व अहले जन्नत के लिये फ़ना नहीं। **45 : शाने नुज़ूल :** जब अल्लाह तआ़ला ने आयए "مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ" और आयए "اَوْكَصَيِّبٍ" में मुनाफ़िक़ों की दो मिसालें बयान फ़रमाई तो मुनाफ़िक़ों ने येह ए'तिराज़ किया कि अल्लाह तआ़ला इस से बालातर है कि ऐसी मिसालें बयान फ़रमाए, इस के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **46 :** चूंकि मिसालों का बयान

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّ يَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَ مَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ۙ﴿۲۶﴾

अल्लाह बहुतेरों को इस से गुमराह करता है[47] और बहुतेरों को हिदायत फ़रमाता है और इस से उन्हें गुमराह करता है जो बे हुक्म हैं[48]

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَ يَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ

वोह जो अल्लाह के अ़हद को तोड़ देते हैं[49] पक्का होने के बा'द और काटते हैं उस चीज़ को जिस के

اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۲۷﴾

जोड़ने का खुदा ने हुक्म दिया और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[50](الف) वोही नुक़्सान में हैं

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ

भला तुम क्यूंकर खुदा के मुन्किर होगे हालां कि तुम मुर्दा थे उस ने तुम्हें जिलाया फिर तुम्हें मारेगा फिर

يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۸﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ

तुम्हें जिलाएगा फिर उसी की त़रफ़ पलट कर जाओगे[50](ب) वोही है जिस ने तुम्हारे लिये बनाया जो कुछ ज़मीन

मुक़्तज़ाए हिक्मत और मज़्मून को दिल नशीन करने वाला होता है और फ़ुसहाए अ़रब का दस्तूर है इस लिये इस पर ए'तिराज़ ग़लत़ व बे जा है और बयाने अम्सिला हक़ है। **47 :** "يُضِلُّ بِهٖ" कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का जवाब है कि अल्लाह तआ़ला का इस मसल से क्या मक़्सूद है और "اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" और "اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا" जो दो जुम्ले ऊपर इर्शाद हुए उन की तफ़्सीर है कि इस मसल से बहुतों को गुमराह करता है जिन की अ़क़्लों पर जहल ने ग़लबा किया है और जिन की आ़दत मुकाबरा व इनाद (तकब्बुर व सरकशी) है और जो अम्रे ह़क़ और खुली हिक्मत के इन्कार व मुख़ालफ़त के ख़ूगर हैं, और बा वुजूदे कि येह मसल निहायत ही बर मह़ल है फिर भी इन्कार करते हैं। और इस से अल्लाह तआ़ला बहुतों को हिदायत फ़रमाता है जो ग़ौर व तह़क़ीक़ के आ़दी हैं और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ बात नहीं कहते वोह जानते हैं कि हिक्मत येही है कि अ़ज़ीमुल मर्तबा चीज़ की तम्सील किसी क़द्र वाली चीज़ से और ह़क़ीर चीज़ की अदना शै से दी जाए जैसा कि ऊपर की आयत में ह़क़ की नूर से और बात़िल की ज़ुल्मत से तम्सील दी गई। **48 :** शरअ़ में फ़ासिक़ उस ना फ़रमान को कहते हैं जो कबीरा का मुरतकिब हो, **फ़िस्क़ के तीन दरजे हैं :** एक "**तग़ाबी**" वोह येह कि आदमी इत्तिफ़ाक़िया किसी कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुवा और उस को बुरा ही जानता रहा। दूसरा "**इन्हिमाक**" कि कबीरा का आ़दी हो गया और उस से बचने की परवाह न रही। तीसरा "**जुहूद**" कि ह़राम को अच्छा जान कर इरतिकाब करे, इस दरजे वाला ईमान से मह़रूम हो जाता है, पहले दो दरजों में जब तक अक्बरे कबाइर (कुफ़्र व शिर्क) का इरतिकाब न करे उस पर मोमिन का इत़्लाक़ होता है। यहां "फ़ासिक़ीन" से वोही ना फ़रमान मुराद हैं जो ईमान से ख़ारिज हो गए, क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार पर भी फ़ासिक़ का इत़्लाक़ हुवा है : "اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां फ़ासिक़ से काफ़िर मुराद लिये, बा'ज़ ने मुनाफ़िक़, बा'ज़ ने यहूद। **49 :** इस से वोह अ़हद मुराद है जो अल्लाह तआ़ला ने कुतुबे साबिक़ा में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने की निस्बत फ़रमाया। एक क़ौल येह है कि अ़हद तीन हैं : **पहला अ़हद** वोह जो अल्लाह तआ़ला ने तमाम औलादे आदम से लिया कि उस की रुबूबिय्यत का इक़रार करें, इस का बयान इस आयत में है "وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ ...الاية"। **दूसरा अ़हद** अम्बिया के साथ मख़्सूस है कि रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाएं और दीन की इक़ामत करें, इस का बयान आयए "وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ" में है। **तीसरा अ़हद** उ़लमा के साथ ख़ास है कि ह़क़ को न छुपाएं, इस का बयान "وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ" में है। **50** (الف) **:** रिश्ता व क़राबत के तअ़ल्लुक़ात, मुसल्मानों की दोस्ती व मह़ब्बत, तमाम अम्बिया का मानना, कुतुबे इलाही की तस्दीक़, ह़क़ पर जम्अ़ होना येह वोह चीज़ें हैं जिन के मिलाने का हुक्म फ़रमाया गया इन में क़त्अ़ करना, बा'ज़ को बा'ज़ से नाह़क़ जुदा करना, तफ़र्रुक़ों की बिना डालना मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **50** (ب) **:** दलाइले तौह़ीदो नुबुव्वत और जज़ाए कुफ़्रो ईमान के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपनी आ़म व ख़ास ने'मतों का और आसारे क़ुदरत व अ़जाइबो हिक्मत का ज़िक्र फ़रमाया और क़बाह़ते कुफ़्र दिल नशीं करने के लिये कुफ़्फ़ार को ख़ित़ाब फ़रमाया कि तुम किस त़रह़ खुदा के मुन्किर होते हो बा वुजूदे कि तुम्हारा अपना ह़ाल उस पर ईमान लाने का मुक़्तज़ी है कि तुम मुर्दा थे। मुर्दा से जिस्मे बेजान मुराद है, हमारे उ़र्फ़ में भी बोलते हैं ज़मीन मुर्दा हो गई, अ़रबी में भी मौत इस मा'नी में आई, खुद क़ुरआने पाक में इर्शाद हुवा : "يُحْيِي الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا"

www.dawateislami.net

جَمِیۡعًا ۗ ثُمَّ اسۡتَوٰۤی اِلَی السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَ هُوَ بِکُلِّ

में है[51] फिर आस्मान की त़रफ़ इस्तवा (क़स्द) फ़रमाया तो ठीक सात आस्मान बनाए और वोह सब

شَیۡءٍ عَلِیۡمٌ ﴿۲۹﴾ وَ اِذۡ قَالَ رَبُّکَ لِلۡمَلٰٓئِکَۃِ اِنِّیۡ جَاعِلٌ فِی الۡاَرۡضِ

कुछ जानता है[52] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने

خَلِیۡفَۃً ؕ قَالُوۡۤا اَتَجۡعَلُ فِیۡهَا مَنۡ یُّفۡسِدُ فِیۡهَا وَ یَسۡفِکُ الدِّمَآءَ ۚ

वाला हूं[53] बोले क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे[54]

وَ نَحۡنُ نُسَبِّحُ بِحَمۡدِکَ وَ نُقَدِّسُ لَکَ ؕ قَالَ اِنِّیۡۤ اَعۡلَمُ مَا لَا

और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं फ़रमाया मुझे मा'लूम है जो तुम

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ کُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمۡ عَلَی الۡمَلٰٓئِکَۃِ ٭

नहीं जानते[55] और अल्लाह तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए[56] फिर सब अश्या मलाएका पर पेश कर के

तो मत़लब येह है कि तुम बेजान जिस्म थे उन्सुर की सूरत में, फिर ग़िज़ा की शक्ल में, फिर अख़्लात़ की शान में, फिर नुत़्फ़े की ह़ालत में, उस ने तुम को जान दी, ज़िन्दा फ़रमाया, फिर उम्र की मीआद पूरी होने पर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा इस से या क़ब्र की ज़िन्दगी मुराद है जो सुवाल के लिये होगी या ह़श्र की, फिर तुम ह़िसाब व जज़ा के लिये उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे, अपने इस ह़ाल को जान कर तुम्हारा कुफ़्र करना निहायत अ़जीब है। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि کَیۡفَ تَکۡفُرُوۡنَ का ख़ित़ाब मोमिनीन से है और मत़लब येह है कि तुम किस त़रह़ काफ़िर हो सकते हो दरआं ह़ाले कि तुम जह्ल की मौत से मुर्दा थे अल्लाह तआला ने तुम्हें इ़ल्म व ईमान की ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाई, इस के बा'द तुम्हारे लिये वोही मौत है जो उम्र गुज़रने के बा'द सब को आया करती है, इस के बा'द वोह तुम्हें ह़क़ीक़ी दाइमी ह़यात अ़त़ा फ़रमाएगा फिर तुम उस की त़रफ़ लौटाए जाओगे और वोह तुम्हें ऐसा सवाब देगा जो न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी दिल पर उस का ख़त़रा गुज़रा। **51 :** या'नी कानें, सब्ज़े, जानवर, दरिया, पहाड़ जो कुछ ज़मीन में हैं सब अल्लाह तआला ने तुम्हारे दीनी व दुन्यवी नफ़्अ़ के लिये बनाए, दीनी नफ़्अ़ इस त़रह़ कि ज़मीन के अ़जाइबात देख कर तुम्हें अल्लाह तआला की ह़िक्मतो क़ुदरत की मा'रिफ़त हो, और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ येह कि खाओ पियो आराम करो अपने कामों में लाओ, तो इन ने'मतों के बा वुजूद तुम किस त़रह़ कुफ़्र करोगे। **मस्अला :** कर्ख़ी व अबू बक्र राज़ी वग़ैरा ने "خَلَقَ لَکُمۡ" को क़ाबिले इन्तिफ़ाअ़ अश्या के मुबाह़ुल अस्ल होने की दलील क़रार दिया है। **52 :** या'नी येह ख़िल्क़त व ईजाद अल्लाह तआला के आ़लिमे जमीअ़ अश्या होने की दलील है क्यूं कि ऐसी पुर ह़िक्मत मख़्लूक़ का पैदा करना बिग़ैर इ़ल्मे मुह़ीत़ के मुम्किन व मुतसव्वर नहीं। मरने के बा'द ज़िन्दा होना काफ़िर मुह़ाल जानते थे इन आयतों में उन के बुत़लान पर क़वी बुरहान क़ाइम फ़रमा दी कि जब अल्लाह तआला क़ादिर है, अ़लीम है और अबदान के माद्दे जम्अ़ व ह़यात की सलाह़िय्यत भी रखते हैं तो मौत के बा'द ह़यात कैसे मुह़ाल हो सकती है? पैदाइशे आस्मानो ज़मीन के बा'द अल्लाह तआला ने आस्मान में फ़िरिश्तों को और ज़मीन में जिन्नात को सुकूनत दी, जिन्नात ने फ़साद अंगेज़ी की तो मलाएका की एक जमाअ़त भेजी जिस ने इन्हें पहाड़ों और जज़ीरों में निकाल भगाया। **53 :** "ख़लीफ़ा" अह़काम व अवामिर के इजरा व दीगर तसर्रुफ़ात में अस्ल का नाइब होता है, यहां ख़लीफ़ा से ह़ज़रते आदम عَلَیۡهِ السَّلَام मुराद हैं अगर्चे और तमाम अम्बिया भी अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा हैं, ह़ज़रते दावूद عَلَیۡهِ السَّلَام के ह़क़ में फ़रमाया : "یٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلۡنٰکَ خَلِیۡفَۃً فِی الۡاَرۡضِ"। फ़िरिश्तों को ख़िलाफ़ते आदम की ख़बर इस लिये दी गई कि वोह इन के ख़लीफ़ा बनाए जाने की ह़िक्मत दरयाफ़्त कर के मा'लूम कर लें और उन पर ख़लीफ़ा की अ़ज़मतो शान ज़ाहिर हो कि इन को पैदाइश से क़ब्ल ही ख़लीफ़ा का लक़ब अ़त़ा हुवा और आस्मान वालों को इन की पैदाइश की बिशारत दी गई। **मस्अला :** इस में बन्दों को ता'लीम है कि वोह काम से पहले मश्वरा किया करें और अल्लाह तआला इस से पाक है कि उस को मश्वरे की ह़ाजत हो। **54 :** मलाएका का मक़्सद ए'तिराज़ या ह़ज़रते आदम पर त़ा'न नहीं बल्कि ह़िक्मते ख़िलाफ़त दरयाफ़्त करना है और इन्सानों की त़रफ़ फ़साद अंगेज़ी की निस्बत करना इस का इ़ल्म या उन्हें अल्लाह तआला की त़रफ़ से दिया गया हो, या लौह़े मह़फ़ूज़ से ह़ासिल हुवा हो, और या ख़ुद उन्हों ने जिन्नात पर क़ियास किया हो। **55 :** या'नी मेरी ह़िक्मतें तुम पर ज़ाहिर नहीं। बात येह है कि इन्सानों में अम्बिया भी होंगे, औलिया भी, उ़लमा भी और वोह इ़ल्मी व अ़मली दोनों फ़ज़ीलतों के जामेअ़ होंगे। **56 :** अल्लाह तआला ने ह़ज़रते आदम عَلَیۡهِ السَّلَام पर तमाम अश्या व जुम्ला मुसम्मयात पेश फ़रमा

www.dawateislami.net

فَقَالَ اَنۡۢبِـُٔوۡنِىۡ بِاَسۡمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٣١﴾ قَالُوۡا

फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ[57] बोले

سُبۡحٰنَكَ لَا عِلۡمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمۡتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ﴿٣٢﴾

पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तूने हमें सिखाया बेशक तू ही इल्म व हिक्मत वाला है[58]

قَالَ يٰٓـاٰدَمُ اَنۡۢبِئۡهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۚ فَلَمَّآ اَنۡۢبَاَهُمۡ بِاَسۡمَآئِهِمۡ ۙ قَالَ

फ़रमाया ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये[59] फ़रमाया

اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكُمۡ اِنِّىۡۤ اَعۡلَمُ غَيۡبَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۙ وَاَعۡلَمُ مَا

मैं न कहता था कि मैं जानता हूं आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूं जो कुछ

تُبۡدُوۡنَ وَمَا كُنۡتُمۡ تَكۡتُمُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَاِذۡ قُلۡنَا لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ

तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो[60] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوۡۤا اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰى وَاسۡتَكۡبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٣٤﴾ وَقُلۡنَا

तो सब ने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और गुरूर किया और काफ़िर हो गया[61] और हम ने फ़रमाया

कर आप को उन के अस्मा व सिफ़ात व अफ़्आल व ख़वास व उसूले उ़लूम व सनाआ़त सब का इल्म ब त़रीक़े इल्हाम अ़ता फ़रमाया। **57 :** या'नी अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो कि मैं कोई मख़्लूक़ तुम से ज़ियादा आ़लिम पैदा न करूंगा और ख़िलाफ़त के तुम ही मुस्तहिक़ हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ क्यूं कि ख़लीफ़ा का काम तसर्रुफ़ व तदबीर और अ़दलो इन्साफ़ है और येह बिग़ैर इस के मुम्किन नहीं कि ख़लीफ़ा को उन तमाम चीज़ों का इल्म हो जिन पर उस को मुतसर्रिफ़ फ़रमाया गया और जिन का उस को फ़ैसला करना है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام के मलाएका पर अफ़्ज़ल होने का सबब इल्म ज़ाहिर फ़रमाया, इस से साबित हुवा कि इल्मे अस्मा ख़ल्वतों और तन्हाइयों की इ़बादत से अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام मलाएका से अफ़्ज़ल हैं। **58 :** इस में मलाएका की त़रफ़ से अपने इ़ज्ज़ व क़ुसूर का ए'तिराफ़ इस अम्र का इज़्हार है कि उन का सुवाल इस्तिफ़्सारन था न कि ए'तिराज़न। और अब उन्हें इन्सान की फ़ज़ीलत और इस की पैदाइश की ह़िक्मत मा'लूम हो गई जिस को वोह पहले न जानते थे। **59 :** या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام ने हर चीज़ का नाम और उस की पैदाइश की ह़िक्मत बता दी। **60 :** मलाएका ने जो बात ज़ाहिर की थी वोह येह थी कि इन्सान फ़साद अंगेज़ी व ख़ूनरेज़ी करेगा और जो बात छुपाई थी वोह येह थी कि मुस्तह़िक़्क़े ख़िलाफ़त वोह ख़ुद हैं और **अल्लाह** तआ़ला उन से अफ़्ज़लो आ'लम कोई मख़्लूक़ पैदा न फ़रमाएगा। **मस्अला :** इस आयत से इन्सान की शराफ़त और इल्म की फ़ज़ीलत साबित होती है और येह भी कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ता'लीम की निस्बत करना सह़ीह़ है अगर्चे उस को मुअ़ल्लिम न कहा जाएगा क्यूं कि मुअ़ल्लिम पेशावर ता'लीम देने वाले को कहते हैं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि जुम्ला लुग़ात और कुल ज़बानें **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से हैं। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि मलाएका के उ़लूम व कमालात में ज़ियादती होती है। **61 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام को तमाम मौजूदात का नमूना और आ़लमे रूह़ानी व जिस्मानी का मज्मूआ़ बनाया और मलाएका के लिये हुसूले कमालात का वसीला किया तो उन्हें हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते आदम को सज्दा करें क्यूं कि इस में शुक्र गुज़ारी और ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام की फ़ज़ीलत के ए'तिराफ़ और अपने मक़ूले की मा'ज़िरत की शान पाई जाती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام को पैदा करने से पहले ही मलाएका को सज्दे का हुक्म दिया था, उन की सनद येह आयत है : "فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا لَهٗ سَاجِدِيۡنَ ط"। (بیضاوی) सज्दे का हुक्म तमाम मलाएका को दिया गया था येही असह़ह़ है। (خازن) **मस्अला :** सज्दा दो त़रह़ का होता है एक सज्दए इ़बादत जो ब क़स्दे परस्तिश किया जाता है, दूसरा सज्दए तह़िय्यत जिस से मस्जूद की ता'ज़ीम मन्ज़ूर होती है न कि इ़बादत। **मस्अला :** सज्दए इ़बादत **अल्लाह** तआ़ला के लिये ख़ास है किसी और के लिये नहीं हो सकता, न किसी शरीअ़त में कभी जाइज़ हुवा। यहां जो मुफ़स्सिरीन सज्दए इ़बादत मुराद लेते हैं वोह फ़रमाते हैं कि सज्दा ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये था और ह़ज़रते आदम عَلَيۡهِ السَّلَام क़िब्ला बनाए गए थे तो वोह मस्जूद इलैह थे न कि मस्जूद लहू,

www.dawateislami.net

يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ شِئْتُمَا۪

ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे

وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِیْنَ (۳۵) فَاَزَلَّهُمَا

मगर उस पेड़ के पास न जाना[62] कि हद से बढ़ने वालों में हो जाओगे[63] तो शैतान ने

الشَّیْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

जन्नत से उन्हें लग़्ज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया[64] और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो[65] आपस में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ (۳۶) فَتَلَقّٰۤى

तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है[66] फिर सीख लिये

اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ (۳۷) قُلْنَا

आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की[67] बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान हम ने फ़रमाया

मगर येह क़ौल ज़ईफ़ है क्यूं कि इस सज्दे से ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का फ़ज़्लो शरफ़ ज़ाहिर फ़रमाना मक़्सूद था और मस्जूद इलैह का साजिद से अफ़्ज़ल होना कुछ ज़रूर नहीं। जैसा कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़िब्ला व मस्जूद इलैह है बा वुजूदे कि हुज़ूर उस से अफ़्ज़ल हैं। दूसरा क़ौल येह है कि यहां सज्दए इबादत न था सज्दए तह़िय्यत था और ख़ास ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये था, ज़मीन पर पेशानी रख कर था न कि सिर्फ़ झुकना, येही क़ौल सह़ीह़ है और इसी पर जम्हूर हैं। (مدارک) **मस्अला :** सज्दए तह़िय्यत पहली शरीअ़तों में जाइज़ था, हमारी शरीअ़त में मन्सूख़ किया गया अब किसी के लिये जाइज़ नहीं है क्यूं कि जब ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सज्दा करने का इरादा किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मख़्लूक़ को न चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को सज्दा करे। (مدارک) मलाएका में सब से पहले सज्दा करने वाले ह़ज़रते जिब्रील हैं फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फिर इ़ज़्राईल फिर और मलाइकए मुक़र्रबीन, येह सज्दा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया। एक क़ौल येह भी है कि मलाइकए मुक़र्रबीन सो बरस और एक क़ौल में पांच सो बरस सज्दे में रहे, शैत़ान ने सज्दा न किया और बराहे तकब्बुर येह ए'तिक़ाद करता रहा कि वोह ह़ज़रते आदम से अफ़्ज़ल है, उस के लिये सज्दे का हुक्म مَعَاذَاللّٰہ تَعَالٰی तआ़ला ख़िलाफ़े ह़िक्मत है, इस ए'तिक़ादे बात़िल से वोह काफ़िर हो गया। **मस्अला :** आयत में दलालत है कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल हैं कि उन से इन्हें सज्दा कराया गया। **मस्अला :** तकब्बुर निहायत क़बीह़ है इस से कभी मुतकब्बिर की नौबत कुफ़्र तक पहुंचती है। (بیضاوی وجمل) **62 :** इस से गन्दुम या अंगूर वग़ैरा मुराद है। (جلالین) **63 :** ज़ुल्म के मा'ना हैं : किसी शै को बे मह़ल वज़्अ़ करना, येह मम्नूअ़ है और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह सरज़द नहीं होता, यहां ज़ुल्म ख़िलाफ़े औला के मा'नी में है। **मस्अला :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को ज़ालिम कहना इहानत व कुफ़्र है जो कहे वोह काफ़िर हो जाएगा, **अल्लाह** तआ़ला मालिको मौला है जो चाहे फ़रमाए इस में उन की इ़ज़्ज़त है, दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कलिमा ज़बान पर लाए और ख़ित़ाबे ह़ज़रते ह़क़ को अपनी जुरअत के लिये सनद बनाए, हमें ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदब व त़ाअ़त का हुक्म फ़रमाया हम पर येही लाज़िम है। **64 :** शैत़ान ने किसी त़रह़ ह़ज़रते आदम व ह़व्वा (عَلَیْہِمَا السَّلَام) के पास पहुंच कर कहा कि मैं तुम्हें शजरे ख़ुल्द बता दूं ! ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने इन्कार फ़रमाया, उस ने क़सम खाई कि मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं, उन्हें ख़याल हुवा कि **अल्लाह** पाक की झूटी क़सम कौन खा सकता है ? बईं ख़याल ह़ज़रते ह़व्वा ने उस में से कुछ खाया फिर ह़ज़रते आदम को दिया उन्हों ने भी तनावुल किया, ह़ज़रते आदम को ख़याल हुवा कि لَاتَقْرَبَا की नह्य तन्ज़ीही है तह़रीमी नहीं क्यूं कि अगर वोह तह़रीमी समझते तो हरगिज़ ऐसा न करते कि अम्बिया मा'सूम होते हैं, यहां ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से इज्तिहाद में ख़त़ा हुई और ख़त़ाए इज्तिहादी मा'सियत नहीं होती। **65 :** ह़ज़रते आदम व ह़व्वा और उन की ज़ुर्रिय्यत को जो उन के सुल्ब में थी जन्नत से ज़मीन पर जाने का हुक्म हुवा, ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ज़मीने हिन्द में ''सरान्दीप'' के पहाड़ों पर और ह़ज़रते ह़व्वा ''जद्दे'' में उतारे गए। (خازن) ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की बरकत से ज़मीन के अश्जार में पाकीज़ा ख़ुश्बू पैदा हुई। (روح البیان) **66 :** इस से इख़्तितामे उ़म्र या'नी मौत का वक़्त मुराद है और ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये बिशारत है कि वोह दुन्या में सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये हैं इस के बा'द फिर उन्हें जन्नत की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाना है और आप की औलाद के लिये मआ़द पर दलालत है कि दुन्या की ज़िन्दगी मुअ़य्यन वक़्त तक है उ़म्र तमाम होने के बा'द उन्हें आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़ करना है। **67 :** आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ज़मीन पर आने

www.dawateislami.net

اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا

तुम सब जन्नत से उतर जाओ फिर अगर तुम्हारे पास मेरी त़रफ़ से कोई हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा उसे

خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ

न कोई अन्देशा न कुछ ग़म[68] और वोह जो कुफ़्र करें और मेरी आयतें झुटलाएंगे

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

वोह दोज़ख़ वाले हैं उन को हमेशा उस में रहना ऐ या'क़ूब की औलाद[69] याद करो

نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ

मेरा वोह एह़सान जो मैं ने तुम पर किया[70] और मेरा अ़ह्द पूरा करो मैं तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा[71] और ख़ास मेरा

के बा'द तीन सो बरस तक ह़या से आस्मान की त़रफ़ सर न उठाया अगर्चे ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام "कसीरुल बुका" (या'नी बहुत ज़ियादा रोने वाले) थे, आप के आंसू तमाम ज़मीन वालों के आंसूओं से ज़ियादा हैं मगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام इस क़दर रोए कि आप के आंसू ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम अहले ज़मीन के आंसूओं के मज्मूए से बढ़ गए। (خازن) त़बरानी व ह़ाकिम व अबू नुऐम व बैहक़ी ने ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि जब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताब हुवा तो आप फ़िक्रे तौबा में ह़ैरान थे, इस परेशानी के आ़लम में याद आया कि वक़्ते पैदाइश मैं ने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा है : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" मैं समझा था कि बारगाहे इलाही में वोह रुत्बा किसी को मुयस्सर नहीं जो ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़ासिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन का नाम अपने नामे अक़्दस के साथ अ़र्श पर मक्तूब फ़रमाया, लिहाज़ा आप ने अपनी दुआ़ में "رَبَّنَا ظَلَمْنَا...الآيه" के साथ येह अ़र्ज़ किया : "اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تَغْفِرَلِيْ۔" इब्ने मुन्ज़िर की रिवायत में येह कलिमे हैं : "اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِجَاهِ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَكَرَامَتِهٖ عَلَيْكَ اَنْ تَغْفِرَلِيْ خَطِيْئَتِيْ" या'नी या रब ! मैं तुझ से तेरे बन्दए ख़ास मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के जाहो मर्तबत के तुफ़ैल में और उस करामत के सदक़े में जो उन्हें तेरे दरबार में ह़ासिल है मग़्फ़िरत चाहता हूं। येह दुआ़ करनी थी कि ह़क़ तआ़ला ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमाई। **मस्अला :** इस रिवायत से साबित है कि मक़्बूलाने बारगाह के वसीले से दुआ़ ब ह़क़्क़े फुलां और ब जाहे फुलां कह कर मांगना जाइज़ और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला पर किसी का ह़क़ वाजिब नहीं होता लेकिन वोह अपने मक़्बूलों को अपने फ़ज़्लो करम से ह़क़ देता है इसी तफ़ज़्ज़ुलिये ह़क़ के वसीले से दुआ़ की जाती है, सह़ीह़ अह़ादीस से येह ह़क़ साबित है जैसे वारिद हुवा : "مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّدْخِلَهُ الْجَنَّةَ" (जो ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के रसूल पर और नमाज़ क़ाइम की और रमज़ान के रोज़े रखे, **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर है कि उसे जन्नत में दाख़िल करे)। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुह़र्रम को क़बूल हुई। जन्नत से इख़्राज के वक़्त और ने'मतों के साथ अ़रबी ज़बान भी आप से सल्ब कर ली गई थी बजाए इस के ज़बान मुबारक पर सुरयानी जारी कर दी गई थी क़बूले तौबा के बा'द फिर ज़बाने अ़रबी अ़त़ा हुई। (فتح العزيز) **मस्अला :** तौबा की अस्ल "रुजूअ़ इलल्लाह" है, इस के तीन रुक्न हैं : **एक** ए'तिराफ़े जुर्म, **दूसरे** नदामत, **तीसरे** अ़ज़्मे तर्क। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन तारिके सलात की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। तौबा के बा'द ह़ज़रते जिब्रईल ने ज़मीन के तमाम जानवरों में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िलाफ़त का ए'लान किया और सब पर उन की फ़रमां बरदारी लाज़िम होने का हुक्म सुनाया, सब ने क़बूले त़ाअ़त का इज़्हार किया। (فتح العزيز) **68 :** येह मोमिनीने सालिह़ीन के लिये बिशारत है कि न उन्हें फ़ज़्ए़ अक्बर (सब से बड़ी घबराहट) के वक़्त ख़ौफ़ हो न आख़िरत में ग़म, वोह बे ग़म जन्नत में दाख़िल होंगे। **69 :** इसराईल ब मा'ना अ़ब्दुल्लाह अ़बरी ज़बान का लफ़्ज़ है, येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है। (مدارک) कल्बी मुफ़स्सिर ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला ने "يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا" (ऐ लोगो ! अपने रब को पूजो) फ़रमा कर पहले तमाम इन्सानों को उ़मूमन दा'वत दी, फिर "اِذْ قَالَ رَبُّكَ" फ़रमा कर उन के मब्दअ (पैदाइश) का ज़िक्र किया, इस के बा'द ख़ुसूसिय्यत के साथ बनी इसराईल को दा'वत दी, येह लोग यहूदी हैं और यहां से "سَيَقُوْلُ" तक इन से कलाम जारी है। कभी ब मुलात़फ़त (इनायत व मेहरबानी करते हुए) इन्आ़म याद दिला कर दा'वत दी जाती है कभी ख़ौफ़ दिलाया जाता है, कभी हुज्जत क़ाइम की जाती है कभी उन की बद अ़मली पर तौबीख़ होती है, कभी गुज़श्ता उ़क़ूबात का ज़िक्र किया जाता है। **70 :** येह एह़सान कि तुम्हारे आबा को फ़िरऔ़न से नजात दिलाई, दरिया को फाड़ा, अब्र को साएबान बनाया, इन के इ़लावा और एह़सानात जो आगे आते हैं उन सब को याद करो, और याद करना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व बन्दगी कर के शुक्र बजा लाओ क्यूं कि किसी ने'मत का शुक्र न करना ही उस का भुलाना है। **71 :** या'नी तुम ईमान व त़ाअ़त बजा ला कर मेरा अ़ह्द पूरा करो, मैं जज़ा व सवाब दे कर तुम्हारा अ़ह्द पूरा करूंगा, इस अ़ह्द का बयान आयए "وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ" में है।

www.dawateislami.net

فَارْهَبُوْنِ ﴿۴۰﴾ وَ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَ لَا تَكُوْنُوْۤا

ही डर रखो[72] और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक़ करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से

اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ ۪ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ۫ وَّ اِیَّایَ فَاتَّقُوْنِ ﴿۴۱﴾

पहले उस के मुन्किर न बनो[73] और मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो[74] और मुझी से डरो

وَ لَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۲﴾

और हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदा व दानिस्ता हक़ न छुपाओ

وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِیْنَ ﴿۴۳﴾ اَتَاْمُرُوْنَ

और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो[75] क्या लोगों को

النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا

भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालां कि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें

تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ وَ اِنَّهَا لَكَبِیْرَةٌ اِلَّا عَلَى

अ़क़्ल नहीं[76] और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर

الْخٰشِعِیْنَ ﴿۴۵﴾ۙ الَّذِیْنَ یَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَیْهِ

जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं[77] जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की

72 : मस्अला : इस आयत में शुक्रे ने'मत व वफ़ाए अ़हद के वाजिब होने का बयान है और येह भी कि मोमिन को चाहिये कि **अल्लाह** के सिवा किसी से न डरे। **73 :** या'नी क़ुरआने पाक और तौरैत व इन्जील पर जो तुम्हारे साथ हैं ईमान लाओ और अहले किताब में पहले काफ़िर न बनो कि जो तुम्हारे इत्तिबाअ़ में कुफ़्र इख़्तियार करे उस का वबाल भी तुम पर हो। **74 :** इन आयात से तौरैत व इन्जील की वोह आयात मुराद हैं जिन में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है, मक़्सद येह है कि हुज़ूर की ना'त दौलते दुन्या के लिये मत छुपाओ कि मताए दुन्या समने क़लील और ने'मते आख़िरत के मुक़ाबिल बे हक़ीक़त है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत का'ब बिन अशरफ़ और दूसरे रुअसा व उ़लमाए यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो अपनी क़ौम के जाहिलों और कमीनों से टके वुसूल कर लेते और उन पर सालाने मुक़र्रर करते थे और उन्हों ने फलों और नक़्द मालों में अपने हक़ मुअ़य्यन कर लिये थे उन्हें अन्देशा हुवा कि तौरैत में जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है अगर उस को ज़ाहिर करें तो क़ौम हुज़ूर पर ईमान ले आएगी और उन की कुछ पुरसिश न रहेगी, येह तमाम मनाफ़ेअ़ जाते रहेंगे, इस लिये उन्हों ने अपनी किताबों में तग़्यीर की और हुज़ूर की ना'त को बदल डाला, जब उन से लोग दरयाफ़्त करते कि तौरैत में हुज़ूर के क्या औसाफ़ मज़्कूर हैं? तो वोह छुपा लेते और हरगिज़ न बताते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وغیرہ) **75 :** इस आयत में नमाज़ व ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस तरफ़ भी इशारा है कि नमाज़ों को उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत और अरकान की हिफ़ाज़त के साथ अदा करो। **मस्अला :** जमाअ़त की तरग़ीब भी है, हदीस शरीफ़ में है जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा पढ़ने से सत्ताईस दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है। **76 : शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद से उन के मुसल्मान रिश्तेदारों ने दीने इस्लाम की निस्बत दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने कहा कि तुम इस दीन पर क़ाइम रहो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन हक़ और कलाम सच्चा है! इस पर येह आयत नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि आयत उन यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुश्रिकीने अ़रब को हुज़ूर के मबऊ़स होने की ख़बर दी थी और हुज़ूर की इत्तिबाअ़ करने की हिदायत की थी फिर जब हुज़ूर मब्ऊ़स हुए तो येह हिदायत करने वाले हसद से ख़ुद काफ़िर हो गए और इस पर इन्हें तौबीख़ की गई। (خازن ومدارک) **77 :** या'नी अपनी हाजतों में सब्र और नमाज़ से मदद चाहो। سُبْحٰنَ الله क्या पाकीज़ा ता'लीम है! सब्र मुसीबतों का अख़्लाक़ी

www.dawateislami.net

رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ

तरफ़ फिरना[78] ऐ औलादे या'कूब याद करो मेरा वोह एहसान जो मैं ने तुम पर किया

وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ

और येह कि इस सारे ज़माने पर तुम्हें बड़ाई दी[79] और डरो उस दिन से जिस दिन कोई जान दूसरे का बदला

نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ

न हो सकेगी[80] और न काफ़िर के लिये कोई सिफ़ारिश मानी जाए और न कुछ ले कर उस की जान छोड़ी जाए और न उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

मदद हो[81] और याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी[82] कि तुम पर बुरा अज़ाब करते थे[83]

يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ

तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते[84] और उस में तुम्हारे रब की तरफ़ से

मुक़ाबला है इन्सान अ़द्लो अ़ज़्म, ह़क़ परस्ती पर बिग़ैर इस के क़ाइम नहीं रह सकता। सब्र की तीन क़िस्में हैं (1) शिद्दत व मुसीबत पर नफ़्स को रोकना। (2) ताअ़त व इ़बादत की मशक़्क़तों में मुस्तक़िल रहना। (3) मा'सियत की त़रफ़ माइल होने से त़बीअ़त को बाज़ रखना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने यहां सब्र से रोज़ा मुराद लिया है, वोह भी सब्र का एक फ़र्द है। इस आयत में मुसीबत के वक़्त नमाज़ के साथ इस्तिआ़नत की ता'लीम भी फ़रमाई क्यूं कि वोह इ़बादते बदनिय्या व नफ़्सानिय्या की जामेअ़ है और इस में क़ुर्बे इलाही ह़ासिल होता है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अहम उमूर के पेश आने पर मश्ग़ूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिक़ीन के सिवा औरों पर नमाज़ गिरां है। **78 :** इस में बिशारत है कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही की ने'मत मिलेगी। **79 :** "اَلْعٰلَمِيْنَ" का इस्तिग़राक़ ह़क़ीक़ी नहीं, मुराद येह है कि मैं ने तुम्हारे आबा को उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत दी या फ़ज़्ले जुज़्ई मुराद है जो और किसी उम्मत की फ़ज़ीलत का नाफ़ी नहीं हो सकता, इसी लिये उम्मते मुह़म्मदिय्यह के ह़क़ में इर्शाद हुवा : "كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ"। (روح البیان جمل وغیرہ) **80 :** वोह रोज़े क़ियामत है। आयत में नफ़्स दो मरतबा आया है पहले से नफ़्से मोमिन दूसरे से नफ़्से काफ़िर मुराद है। (مدارک) **81 :** यहां से रुकूअ़ के आख़िर तक दस ने'मतों का बयान है जो उन बनी इसराईल के आबा को मिलीं। **82 :** क़ौमे क़िब्त़ व अ़मालीक़ से जो मिस्र का बादशाह हुवा उस को फ़िरऔ़न कहते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने के फ़िरऔ़न का नाम वलीद बिन मुस्अ़ब बिन रय्यान है, यहां इसी का ज़िक्र है, इस की उ़म्र चार सो बरस से ज़ियादा हुई, आले फ़िरऔ़न से इस के मुत्तबिई़न मुराद हैं। (جمل وغیرہ) **83 :** अ़ज़ाब सब बुरे होते हैं "سُوْٓءَ الْعَذَابِ" वोह कहलाएगा जो और अ़ज़ाबों से शदीद हो, इस लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने "बुरा अ़ज़ाब" तरजमा किया। (کما فی الجلالین وغیرہ) फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल पर निहायत बे दर्दी से मेह़नतो मशक़्क़त के दुश्वार काम लाज़िम किये थे, पथ्थरों की चटानें काट कर ढोते ढोते उन की कमरें गरदनें ज़ख़्मी हो गई थीं, ग़रीबों पर टेक्स मुक़र्रर किये थे जो ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल ब जब्र (ज़बर दस्ती) वुसूल किये जाते थे, जो नादार किसी दिन टेक्स अदा न कर सका उस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाते थे और महीने भर तक इसी मुसीबत में रखा जाता था और त़रह़ त़रह़ की बे रह़माना सख़्तियां थीं। (خازن وغیرہ) **84 :** फ़िरऔ़न ने ख़्वाब देखा कि बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ से आग आई उस ने मिस्र को घेर कर तमाम क़िब्त़ियों को जला डाला बनी इसराईल को कुछ ज़रर न पहुंचाया इस से उस को बहुत वह़्शत हुई, काहिनों ने ता'बीर दी कि बनी इसराईल में एक लड़का पैदा होगा जो तेरे हलाक और ज़वाले सल्त़नत का बाइ़स होगा, येह सुन कर फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो लड़का पैदा हो क़त्ल कर दिया जाए, दाइयां तफ़्तीश के लिये मुक़र्रर हुईं, बारह हज़ार व ब रिवायते (और एक रिवायत के मुत़ाबिक़) सत्तर हज़ार लड़के क़त्ल कर डाले गए और नव्वे हज़ार ह़म्ल गिरा दिये गए, और मशिय्यते इलाही से उस क़ौम के बूढ़े जल्द जल्द मरने लगे, क़ौमे क़िब्त़ के रुअसा ने घबरा कर फ़िरऔ़न से शिकायत की, कि बनी इसराईल में मौत की गर्म बाज़ारी है, इस पर उन के बच्चे भी क़त्ल किये जाते हैं तो हमें ख़िदमत गार कहां से मुयस्सर आएंगे ? फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि एक साल बच्चे क़त्ल किये जाएं और एक साल छोड़े जाएं तो जो साल छोड़ने का था उस में ह़ज़रते हारून पैदा हुए और क़त्ल के साल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई।

www.dawateislami.net

رَبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ

बड़ी बला थी या बड़ा इन्आम[85] और जब हम ने तुम्हारे लिये दरिया फाड़ दिया तो तुम्हें बचा लिया और फ़िरऔन

فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ

वालों को तुम्हारी आंखों के सामने डुबो दिया[86] और जब हम ने मूसा से चालीस रात का वा'दा फ़रमाया फिर

اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ

उस के पीछे तुम ने बछड़े की पूजा शुरूअ़ कर दी और तुम ज़ालिम थे[87] फिर इस के बा'द हम ने

بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ

तुम्हें मुआ़फ़ी दी[88] कि कहीं तुम एह्सान मानो[89] और जब हम ने मूसा को किताब अ़ता की और ह़क़ व बातिल में तमीज़ कर देना

85 : "बला" इम्तिहान व आज़्माइश को कहते हैं, आज़्माइश ने'मत से भी होती है और शिद्दतो मेह्नत से भी, ने'मत से बन्दे की शुक्र गुज़ारी और मेह्नत से उस के सब्र का ह़ाल ज़ाहिर होता है। अगर "ذٰلِكُمْ" का इशारा फ़िरऔन के मज़ालिम की त़रफ़ हो तो "बला" से मेह्नतो मुसीबत मुराद होगी और अगर उन मज़ालिम से नजात देने की त़रफ़ हो तो ने'मत। **86 :** येह दूसरी ने'मत का बयान है जो बनी इसराईल पर फ़रमाई कि उन्हें फ़िरऔनियों के ज़ुल्मो सितम से नजात दी और फ़िरऔन को मअ़ उस की क़ौम के उन के सामने ग़र्क़ किया, यहां "आले फ़िरऔन" से फ़िरऔन मअ़ अपनी क़ौम के मुराद है जैसे कि "كَرَّمْنَا بَنِیْۤ اٰدَمَ" में ह़ज़रते आदम व औलादे आदम दोनों दाख़िल हैं। (جمل) मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब हुक्मे इलाही शब में बनी इसराईल को मिस्र से ले कर रवाना हुए, सुब्ह़ को फ़िरऔन उन की जुस्तजू में लश्करे गिरां ले कर चला और उन्हें दरिया के किनारे जा पाया, बनी इसराईल ने लश्करे फ़िरऔन देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रियाद की, आप ने ब हुक्मे इलाही दरिया में अपना अ़सा मारा, इस की बरकत से ऐन दरिया में बारह ख़ुश्क रस्ते पैदा हो गए, पानी दीवारों की त़रह़ खड़ा हो गया, उन आबी दीवारों में जाली की मिस्ल रोशन दान बन गए, बनी इसराईल की हर जमाअ़त उन रस्तों में एक दूसरे को देखती और बाहम बातें करती गुज़र गई। फ़िरऔन दरियाई रस्ते देख कर उन में चल पड़ा जब इस का तमाम लश्कर दरिया के अन्दर आ गया तो दरिया ह़ालते अस्ली पर आया और तमाम फ़िरऔनी उस में ग़र्क़ हो गए। दरिया का अ़र्ज़ चार फ़रसंग (बारह मील से ज़ाइद फ़ासिला) था येह वाक़िआ़ बह़रे क़ुल्ज़ुम का है जो बह़रे फ़ार्स के किनारे पर है, या बह़रे मा वराए मिस्र का जिस को इसाफ़ कहते हैं। बनी इसराईल लबे दरिया फ़िरऔनियों के ग़र्क़ का मन्ज़र देख रहे थे। येह ग़र्क़ मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दिन शुक्र का रोज़ा रखा, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक भी यहूद इस दिन का रोज़ा रखते थे, ह़ुज़ूर ने भी इस दिन का रोज़ा रखा और फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की फ़त्ह़ की ख़ुशी मनाने और इस की शुक्र गुज़ारी करने के हम यहूद से ज़ियादा ह़क़दार हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आ़शूरे का रोज़ा सुन्नत है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया पर जो इन्आ़मे इलाही हो उस की यादगार क़ाइम करना और शुक्र बजा लाना मस्नून है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि ऐसे उमूर में दिन का तअ़य्युन सुन्नते रसूलुल्लाह है صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि अम्बिया की यादगार अगर कुफ़्फ़ार भी क़ाइम करते हों जब भी इस को छोड़ा न जाएगा। **87 :** फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के हलाक के बा'द जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बनी इसराईल को ले कर मिस्र की त़रफ़ लौटे और इन की दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने अ़त़ाए तौरैत का वा'दा फ़रमाया और इस के लिये मीक़ात मुअ़य्यन किया जिस की मुद्दत मअ़ इज़ाफ़ा एक माह दस रोज़ थी, महीना ज़ुल क़ा'दा और दस दिन ज़ुल ह़िज्जा के, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ौम में अपने भाई हारून عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लीफ़ा व जा नशीन बना कर तौरैत ह़ासिल करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए, चालीस शब वहां ठहरे इस अ़र्से में किसी से बात न की, **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बर जदी अल्वाह़ में तौरैत आप पर नाज़िल फ़रमाई। यहां सामरी ने सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ़ बछड़ा बना कर क़ौम से कहा कि येह तुम्हारा मा'बूद है। वोह लोग एक माह ह़ज़रत का इन्तिज़ार कर के सामरी के बहकाने से बछड़ा पूजने लगे सिवाए ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और आप के बारह हज़ार हम राहियों के, तमाम बनी इसराईल ने गौसाला (बछड़े) को पूजा। (خازن) **88 :** "अ़फ़्व" की कैफ़िय्यत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तौबा की सूरत येह है कि जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह परस्तिश करने वालों को क़त्ल करें और मुजरिम ब रिज़ा व तस्लीम सुकून के साथ क़त्ल हो जाएं, वोह इस पर राज़ी हो गए, सुब्ह़ से शाम तक सत्तर हज़ार क़त्ल हो गए, तब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ब तज़र्रोअ़ व ज़ारी (रोते गिड़गिड़ाते) बारगाहे ह़क़ की त़रफ़ मुल्तजी हुए, वह़्य आई कि जो क़त्ल हो चुके शहीद हुए, बाक़ी मग़्फ़ूर फ़रमाए गए, इन में के क़ातिल व मक़्तूल सब जन्नती हैं। **मस्अला :** शिर्क

www.dawateislami.net

لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ

कि कहीं तुम राह पर आओ और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम तुम ने बछड़ा बना

اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْۤا اِلٰى بَارِىٕكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْؕ

कर अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो अपने पैदा करने वाले की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो[90]

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىٕكُمْؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ

येह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़्दीक तुम्हारे लिये बेहतर है तो उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً

मेहरबान[91] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अ़लानिया ख़ुदा को न देख लें

فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें

مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ

ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एह़सान मानो और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया[92] और तुम पर

से मुसल्मान मुरतद हो जाता है। **मस्अला :** मुरतद की सज़ा क़त्ल है क्यूं कि **अल्लाह** तआला से बग़ावत क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से सख़्त तर जुर्म है। **फ़ाएदा :** गौसाला बना कर पूजने में बनी इसराईल के कई जुर्म थे **एक** तस्वीर साज़ी जो ह़राम है, **दूसरे** ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की ना फ़रमानी, **तीसरे** गौसाला पूज कर मुश्रिक हो जाना, येह ज़ुल्म आले फ़िरऔन के मज़ालिम से भी ज़ियादा शदीद हैं क्यूं कि येह अफ़्आ़ल उन से बा'दे ईमान सरज़द हुए इस लिये मुस्तह़िक़ तो इस के थे कि अ़ज़ाबे इलाही उन्हें मोहलत न दे और फ़िलफ़ौर हलाकत से कुफ़्र पर उन का ख़ातिमा हो जाए लेकिन ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام की बदौलत उन्हें तौबा का मौक़अ़ दिया गया, येह **अल्लाह** तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। **89 :** इस में इशारा है कि बनी इसराईल की इस्ति'दाद फ़िरऔ़नियों की त़रह बातिल न हुई थी और इन की नस्ल से सालिह़ीन पैदा होने वाले थे चुनान्चे इन में हज़ारहा नबी व सालेह़ पैदा हुए। **90 :** येह क़त्ल उन के लिये कफ़्फ़ारा था। **91 :** जब बनी इसराईल ने तौबा की और कफ़्फ़ारे में अपनी जानें दे दीं तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इन्हें गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही के लिये ह़ाज़िर लाएं, ह़ज़रत उन में से सत्तर आदमी मुन्तख़ब कर के तूर पर ले गए वहां वोह कहने लगे : ऐ मूसा ! हम आप का यक़ीन न करेंगे जब तक ख़ुदा को अ़लानिया न देख लें, इस पर आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस की हैबत से वोह मर गए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ब तज़र्रोअ़ (आ़जिज़ी के साथ) अ़र्ज़ की, कि मैं बनी इसराईल को क्या जवाब दूंगा ? इस पर **अल्लाह** तआला ने उन्हें यके बा'द दीगरे ज़िन्दा फ़रमा दिया। **मस्अला :** इस से शाने अम्बिया मा'लूम होती है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से "لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ" (हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे) कहने की शामत में बनी इसराईल हलाक किये गए। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़ह्द वालों को आगाह किया जाता है कि अम्बिया की जनाब में तर्के अदब ग़ज़बे इलाही का बाइ़स होता है इस से डरते रहें। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआला अपने मक़्बूलाने बारगाह की दुआ़ से मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाता है। **92 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़ारिग़ हो कर लश्करे बनी इसराईल में पहुंचे और आप ने उन्हें हुक्मे इलाही सुनाया कि मुल्के शाम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की औलाद का मदफ़न है, उसी में बैतुल मक़्दिस है, उस को अ़मालक़ा से आज़ाद कराने के लिये जिहाद करो और मिस्र छोड़ कर वहीं वत़न बनाओ, मिस्र का छोड़ना बनी इसराईल पर निहायत शाक़ था अव्वल तो उन्हों ने इसी में पसो पेश किया और जब ब जब्रो इक्राह ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام की रिकाबे सआ़दत में रवाना हुए तो राह में जो कोई सख़्ती व दुश्वारी पेश आती ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से शिकायतें करते, जब उस सह़रा में पहुंचे जहां न सब्ज़ा था न साया न ग़ल्ला हमराह था वहां धूप की गरमी और भूक की शिकायत की, **अल्लाह** तआला ने ब दुआ़ए ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अब्रे सफ़ेद को उन का साएबान बनाया जो रात दिन उन के साथ चलता, शब को उन के लिये नूरी सुतून उतरता जिस की रोशनी में काम करते, उन के कपड़े मैले और पुराने

www.dawateislami.net

الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ

मन्न और सल्वा उतारा खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें[93] और उन्हों ने कुछ हमारा न बिगाड़ा हां

كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ فَكُلُوْا

अपनी ही जानों का बिगाड़ करते थे और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ[94] फिर उस में

مِنْهَا حَیْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ

जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो[95] और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हों

نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۸﴾ فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا

हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और क़रीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दें[96] तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी

قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ

जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा[97] तो हम ने आस्मान से उन पर अ़ज़ाब

ع السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا

उतारा[98] बदला उन की बे हुक्मी का और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया

न होते, नाख़ुन और बाल न बढ़ते, उस सफ़र में जो लड़का पैदा होता उस का लिबास उस के साथ पैदा होता जितना वोह बढ़ता लिबास भी बढ़ता। **93 :** "मन्न" तुरन्जबीन की त़रह़ एक शीरीं चीज़ थी रोज़ाना सुब्ह़े सादिक़ से त़ुलूए आफ़्ताब तक हर शख़्स के लिये एक साअ़ की क़दर आस्मान से नाज़िल होती, लोग उस को चादरों में ले कर दिन भर खाते रहते। "सल्वा" एक छोटा परिन्द होता है उस को "हवा" लाती, येह शिकार कर के खाते, दोनों चीज़ें शम्बा को तो मुत़्लक़ न आतीं, बाक़ी हर रोज़ पहुंचतीं जुमुआ़ को और दिनों से दूनी आतीं। हुक्म येह था कि जुमुआ़ को शम्बा के लिये भी ह़स्बे ज़रूरत जम्अ़ कर लो मगर एक दिन से ज़ियादा का जम्अ़ न करो, बनी इसराईल ने इन ने'मतों की नाशुक्री की, ज़ख़ीरे जम्अ़ किये, वोह सड़ गए और उन की आमद बन्द कर दी गई, येह उन्हों ने अपना ही नुक़्सान किया कि दुन्या में ने'मत से मह़रूम और आख़िरत में सज़ावार अ़ज़ाब के हुए। **94 :** उस बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है या अरीह़ा जो बैतुल मक़्दिस के क़रीब है जिस में अ़मालक़ा आबाद थे और उस को ख़ाली कर गए, वहां ग़ल्ले मेवे ब कसरत थे। **95 :** येह दरवाज़ा उन के लिये ब मन्ज़िला का'बा के था कि इस में दाख़िल होना और इस की त़रफ़ सज्दा करना सबबे कफ़्फ़ारए ज़ुनूब क़रार दिया गया। **96 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़बान से इस्तिग़्फ़ार करना और बदनी इबादत सज्दा वग़ैरा बजा लाना तौबा का मुतम्मिम (कामिल व पूरा करने वाला) है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मश्हूर गुनाह की तौबा ब ए'लान होनी चाहिये। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि मक़ामाते मुतबर्रका जो रह़मते इलाही के मौरिद हों वहां तौबा करना और त़ाअ़त बजा लाना समराते नेक और सुरअ़ते क़बूल का सबब होता है। (فتح العزیز) इसी लिये सालिहीन का दस्तूर रहा है कि अम्बिया व औलिया के मवालिद (पैदाइश गाह) व मज़ारात पर ह़ाज़िर हो कर इस्तिग़्फ़ार व त़ाअ़त बजा लाते हैं। उ़र्स व ज़ियारत में भी येह फ़ाएदा मुतसव्वर है। **97 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बनी इसराईल को हुक्म हुवा था कि दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हों और ज़बान से "حِطَّةٌ" कलिमए तौबा व इस्तिग़्फ़ार कहते जाएं, उन्हों ने दोनों हुक्मों की मुख़ालफ़त की, दाख़िल तो हुए सुरीनों के बल घिसटते और बजाए कलिमए तौबा के तमस्ख़ुर से "حَبَّةٌ فِیْ شَعْرَةٍ" कहा जिस के मा'ना हैं बाल में दाना। **98 :** येह अ़ज़ाब त़ाऊ़न था जिस से एक साअ़त में चौबीस हज़ार हलाक हो गए। **मस्अला :** सिह़ाह़ की ह़दीस में है कि त़ाऊ़न पिछली उम्मतों के अ़ज़ाब का बक़िय्या है, जब तुम्हारे शह्र में वाक़ेअ़ हो वहां से न भागो, दूसरे शह्र में हो तो वहां न जाओ। **मस्अला :** सह़ीह़ ह़दीस में है कि जो लोग मक़ामे वबा में रिज़ाए इलाही पर साबिर रहें अगर वोह वबा से मह़फ़ूज़ रहें जब भी उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।

اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ

इस पथ्थर पर अपना अ़सा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले[99] हर

عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا

गुरोह ने अपना घाट पहचान लिया खाओ और पियो ख़ुदा का दिया[100] और

تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝۶۰ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى

ज़मीन में फ़साद उठाते न फिरो[101] और जब तुम ने कहा ऐ मूसा[102] हम से तो एक खाने पर[103]

طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ

हरगिज़ सब्र न होगा तो आप अपने रब से दुआ़ कीजिये कि ज़मीन की उगाई हुई चीज़ें हमारे लिये निकाले

بَقْلِهَا وَ قِثَّآئِهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ

कुछ साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और पियाज़ फ़रमाया क्या अदना चीज़

الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا

को बेहतर के बदले मांगते हो[104] अच्छा मिस्र[105] या किसी शहर में उतरो वहां तुम्हें मिलेगा

سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَ الْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ

जो तुम ने मांगा[106] और उन पर मुक़र्रर कर दी गई ख़्वारी और नादारी[107] और ख़ुदा के ग़ज़ब में

99 : जब बनी इसराईल ने सफ़र में पानी न पाया शिद्दते प्यास की शिकायत की तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म हुवा कि अपना अ़सा पथ्थर पर मारो आप के पास एक मुरब्बअ़ पथ्थर था जब पानी की ज़रूरत होती आप उस पर अ़सा मारते उस से बारह चश्मे जारी हो जाते और सब सैराब होते। येह बड़ा मो'जिज़ा है लेकिन सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अंगुश्ते मुबारक से चश्मे जारी फ़रमा कर जमाअ़ते कसीरा को सैराब फ़रमाना इस से बहुत आ'ज़म व आ'ला है क्यूं कि उ़ज़्वे इन्सानी से चश्मे जारी होना पथ्थर की निस्बत ज़ियादा आ'जब (तअ़ज्जुब खेज़) है। (خازن ومدارک) **100 :** या'नी आस्मानी त़आ़म "मन्न व सल्वा" खाओ और इस पथ्थर के चश्मों का पानी पियो जो तुम्हें फ़ज़्ले इलाही से बे मेहनत मुयस्सर है। **101 :** ने'मतों के ज़िक्र के बा'द बनी इसराईल की ना लियाक़ती (ना अहली), दूं हिम्मती (बुज़दिली) और ना फ़रमानी के चन्द वाक़िआ़त बयान फ़रमाए जाते हैं। **102 :** बनी इसराईल की येह अदा भी निहायत बे अदबाना थी कि पैग़म्बरे ऊलुल अ़ज़्म को नाम ले कर पुकारा, या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह ! या और कोई ता'ज़ीम का कलिमा न कहा। (فتح العزيز) जब अम्बिया का ख़ाली नाम लेना बे अदबी है तो इन को बशर और एलची कहना किस त़रह़ गुस्ताख़ी न होगा ! ग़रज़ अम्बिया के ज़िक्र में बे ता'ज़ीमी का शाएबा भी ना जाइज़ है। **103 :** "एक खाने" से एक क़िस्म का खाना मुराद है। **104 :** जब वोह इस पर भी न माने तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की इर्शाद हुवा "اِهْبِطُوْا"। **105 :** "मिस्र" अ़रबी में शहर को भी कहते हैं कोई शहर हो, और ख़ास शहर या'नी मिस्रे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का नाम भी है, यहां दोनों में से हर एक मुराद हो सकता है। बा'ज़ का ख़याल है कि यहां ख़ास शहरे मिस्र मुराद नहीं हो सकता क्यूं कि इस के लिये येह लफ़्ज़ ग़ैर मुन्सरिफ़ हो कर मुस्ता'मल होता है और इस पर तन्वीन नहीं आती जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : "اَلَيْسَ لِیْ مُلْكُ مِصْرَ" और "اُدْخُلُوْا مِصْرَ" मगर येह ख़याल सह़ीह़ नहीं क्यूं कि सुकूने औसत़ की वज्ह से लफ़्ज़े हिन्द की त़रह़ इस को मुन्सरिफ़ पढ़ना दुरुस्त है नह्व में इस की तसरीह़ मौजूद है। इलावा बरीं ह़सन वग़ैरा की क़िराअत में मिस्र बिला तन्वीन आया है और बा'ज़ मसाहिफ़े ह़ज़रते उ़स्मान और मुस्ह़फ़े उबय رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में भी ऐसा ही है इसी लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने तरजमे में दोनों एह़तिमालों को अख़्ज़ फ़रमाया है और शहरे मुअ़य्यन के एह़तिमाल को मुक़द्दम किया। **106 :** या'नी साग, ककड़ी वग़ैरा गो इन चीज़ों की त़लब गुनाह

www.dawateislami.net

اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

लौटे[108] येह बदला था इस का कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते और अम्बिया को नाहक़ शहीद

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

करते[109] येह बदला था उन की ना फ़रमानियों और हद से बढ़ने का बेशक ईमान वाले

وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

नीज़ यहूदियों और नसरानियों और सितारा परस्तों में से वोह कि सच्चे दिल से अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाएं

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और नेक काम करें उन का सवाब उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न

يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا

कुछ ग़म[110] और जब हम ने तुम से अह्द लिया[111] और तुम पर तूर को ऊंचा किया[112] लो जो कुछ

مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

हम तुम को देते हैं ज़ोर से[113] और उस के मज़्मून याद करो इस उम्मीद पर कि तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर इस के

न थी लेकिन "मन्न व सल्वा" जैसी ने'मते बे मेहनत छोड़ कर इन की तरफ़ माइल होना पस्त ख़याली है, हमेशा इन लोगों का मैलाने तब्अ़ पस्ती ही की तरफ़ रहा, और हज़रते मूसा व हारून वग़ैरा जलीलुल क़द्र बुलन्द हिम्मत अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के बा'द बनी इसराईल की लईमी (कमीनगी) व कम हौसलगी का पूरा ज़ुहूर हुवा, और तसल्लुते जालूत व हादिसए बुख़्ते नस्सर के बा'द तो वोह बहुत ही ज़लीलो ख़्वार हो गए, इस का बयान "ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ" में है। **107 :** यहूद की ज़िल्लत तो येह कि दुन्या में कहीं नाम को इन की सल्तनत नहीं और नादारी येह कि माल मौजूद होते हुए भी हिर्स से मोहताज ही रहते हैं। **108 :** अम्बिया व सुलहा की बदौलत जो रुत्बे इन्हें हासिल हुए थे उन से महरूम हो गए, इस ग़ज़ब का बाइस सिर्फ़ येही नहीं कि इन्हों ने आस्मानी ग़िज़ाओं के बदले अर्ज़ी पैदावार की ख़्वाहिश की या इसी तरह की और ख़ताएं जो ज़मानए हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में सादिर हुईं बल्कि अह्दे नुबुव्वत से दूर होने और ज़मानए दराज़ गुज़रने से इन की इस्ति'दादें बातिल हुईं और निहायत क़बीह अफ़्आ़ल और अ़ज़ीम जुर्म इन से सरज़द हुए, येह इन की इस ज़िल्लतो ख़्वारी का बाइस हुए। **109 :** जैसा कि इन्हों ने हज़रते ज़करिय्या व यह्या व शा'या عَلَيْهِمُ السَّلَام को शहीद किया और येह क़त्ल ऐसे नाहक़ थे जिन की वज्ह ख़ुद येह क़ातिल भी नहीं बता सकते। **110 : शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर व इब्ने अबी हातिम ने सुद्दी से रिवायत की, कि येह आयत सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई। (لباب النقول) **111 :** कि तुम तौरैत मानोगे और उस पर अ़मल करोगे। फिर तुम ने उस के अहकाम को शाक़ व गिरां जान कर क़बूल से इन्कार कर दिया या बा वुजूदे कि तुम ने ख़ुद ब इल्हाह़ (गिड़गिड़ा कर) हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से ऐसी आस्मानी किताब की इस्तिद्आ़ की थी जिस में क़वानीने शरीअ़त व आईने इबादत मुफ़स्सल मज़्कूर हों और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तुम से बार बार उस के क़बूल करने और उस पर अ़मल करने का अ़हद लिया था, जब वोह किताब अ़ता हुई तुम ने उस के क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अ़हद पूरा न किया। **112 :** बनी इसराईल की अ़हद शिकनी के बा'द हज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही तूर पहाड़ को उठा कर उन के सरों पर क़दरे क़ामत फ़ासिले पर मुअ़ल्लक़ कर दिया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : या तो तुम अ़हद क़बूल करो, वरना पहाड़ तुम पर गिरा दिया जाएगा और तुम कुचल डाले जाओगे, इस में सूरतन वफ़ाए अ़हद पर इक्राह था और दर हक़ीक़त पहाड़ का सरों पर मुअ़ल्लक़ कर देना आयते इलाही और क़ुदरते हक़ की बुरहाने क़वी है, इस से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है कि बेशक येह रसूल मज़्हरे क़ुदरते इलाही हैं। येह इत्मीनान इन को मानने और अ़हद पूरा करने का अस्ल सबब है। **113 :** या'नी ब कोशिश तमाम।

www.dawateislami.net

مِّنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوۡلَا فَضۡلُ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ وَرَحۡمَتُهٗ لَكُنۡتُمۡ مِّنَ

बा'द तुम फिर गए तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर न होती तो तुम टोटे (नुक़्सान)

الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۶۴﴾ وَلَقَدۡ عَلِمۡتُمُ الَّذِيۡنَ اعۡتَدَوۡا مِنۡكُمۡ فِى السَّبۡتِ فَقُلۡنَا

वालों में हो जाते[114] और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्हों ने हफ़्ते में सरकशी की[115] तो हम ने उन

لَهُمۡ كُوۡنُوۡا قِرَدَةً خٰسِـِٕيۡنَ ﴿۶۵﴾ ۚ فَجَعَلۡنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهَا وَمَا

से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुत्कारे हुए तो हम ने उस बस्ती का येह वाक़िआ़ उस के आगे और

خَلۡفَهَا وَمَوۡعِظَةً لِّلۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۶۶﴾ وَاِذۡ قَالَ مُوۡسٰى لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ

पीछे वालों के लिये इ़ब्रत कर दिया और परहेज़ गारों के लिये नसीह़त और जब मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया ख़ुदा तुम्हें

يَاۡمُرُكُمۡ اَنۡ تَذۡبَحُوۡا بَقَرَةً ؕ قَالُوۡۤا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوۡذُ

हुक्म देता है कि एक गाय ज़ब्ह़ करो[116] बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं[117] फ़रमाया ख़ुदा की

بِاللّٰهِ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوا ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنۡ لَّنَا مَا

पनाह कि मैं जाहिलों से होउं[118] बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाय

114 : यहां फ़ज़्लो रह़मत से या तौफ़ीक़े तौबा मुराद है या ताख़ीरे अ़ज़ाब। (مدارک وغیرہ) एक क़ौल येह है कि फ़ज़्ले इलाही व रह़मते ह़क़ से ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक मुराद है, मा'ना येह हैं कि अगर तुम्हें ख़ातमुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के वुजूद की दौलत न मिलती और आप की हिदायत नसीब न होती तो तुम्हारा अन्जाम हलाक व ख़ुसरान होता। 115 : शहरे "ऐला" में बनी इसराईल आबाद थे उन्हें हुक्म था कि शम्बा का दिन इ़बादत के लिये ख़ास कर दें, इस रोज़ शिकार न करें और दुन्यावी मशाग़िल तर्क कर दें, उन के एक गुरौह ने येह चाल की, कि जुमुआ़ को दरिया के किनारे किनारे बहुत से गढ़े खोदते और शम्बा की सुब्ह़ को दरिया से उन गढ़ों तक नालियां बनाते जिन के ज़रीए पानी के साथ आ कर मछलियां गढ़ों में क़ैद हो जातीं, यकशम्बा (इतवार) को उन्हें निकालते और कहते कि हम मछली को पानी से शम्बा (हफ़्ते) के रोज़ नहीं निकालते, चालीस या सत्तर साल तक येही अ़मल रहा, जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत का अ़हद आया आप ने उन्हें इस से मन्अ़ किया और फ़रमाया क़ैद करना ही शिकार है जो शम्बा को करते हो इस से बाज़ आओ वरना अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाओगे, वोह बाज़ न आए, आप ने दुआ़ फ़रमाई अल्लाह तआ़ला ने उन्हें बन्दरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया, अ़क़्लो ह़वास तो उन के बाक़ी रहे मगर क़ुव्वते गोयाई ज़ाइल हो गई, बदनों से बदबू निकलने लगी, अपने इस ह़ाल पर रोते रोते तीन रोज़ में सब हलाक हो गए उन की नस्ल बाक़ी न रही, येह सत्तर हज़ार के क़रीब थे। बनी इसराईल का दूसरा गुरौह जो बारह हज़ार के क़रीब था उन्हें इस अ़मल से मन्अ़ करता रहा जब येह न माने तो उन्हों ने उन के और अपने मह़ल्लों के दरमियान दीवार बना कर अ़लाह़दगी कर ली उन सब ने नजात पाई। बनी इसराईल का तीसरा गुरौह साकित (ख़ामोश) रहा। उस के ह़क़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास के सामने इ़क्रिमा ने कहा कि वोह मग़फ़ूर हैं क्यूं कि अम्र्न बिल मा'रूफ़ फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ का अदा करना कुल का हुक्म रखता है, उन के सुकूत की वज्ह येह थी कि येह उन के पन्द पज़ीर होने (नसीह़त क़बूल करने) से मायूस थे, इ़क्रिमा की येह तक़रीर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास को बहुत पसन्द आई और आप ने सुरूर से उठ कर उन से मुआ़नक़ा किया और उन की पेशानी को बोसा दिया। (فتح العزیز) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सुरूर का मुआ़नक़ा सुन्नते सह़ाबा है इस के लिये सफ़र से आना और ग़ैबत के बा'द मिलना शर्त़ नहीं। 116 : बनी इसराईल में आ़मील नामी एक मालदार था उस के चचाज़ाद भाई ने ब त़मए विरासत उस को क़त्ल कर के दूसरी बस्ती के दरवाज़े पर डाल दिया और ख़ुद सुब्ह़ को उस के ख़ून का मुद्दई बना, वहां के लोगों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि आप दुआ़ फ़रमाएं कि अल्लाह तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल ज़ाहिर फ़रमाए, इस पर हुक्म सादिर हुवा कि एक गाय ज़ब्ह़ कर के उस का कोई हिस्सा मक़्तूल के मारें वोह ज़िन्दा हो कर क़ातिल को बता देगा। 117 : क्यूं कि मक़्तूल का ह़ाल मा'लूम होने और गाय के ज़ब्ह़ में कोई मुनासबत मा'लूम नहीं होती। 118 : ऐसा जवाब जो सुवाल से रब्त़ न रखे जाहिलों का काम है या येह मा'ना हैं कि मुहा़कमा

www.dawateislami.net

هِيَ ۭ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ۭ عَوَانٌۢ بَيْنَ

कैसी है कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है न बूढ़ी और न औसर (बछिया) बल्कि इन दोनों के

ذٰلِكَ ۭ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۸﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا

बीच में तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये हमें बता दे उस

لَوْنُهَا ۭ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ

का रंग क्या है कहा वोह फ़रमाता है वोह एक पीली गाय है जिस की रंगत डहडहाती (गहरी चमकदार)

النّٰظِرِيْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ

देखने वालों को ख़ुशी देती बोले अपने रब से दुआ़ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाय कैसी है बेशक गायों में हम को

عَلَيْنَا ۭ وَاِنَّآ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ

शुबा पड़ गया और **अल्लाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे[119] कहा वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाय है

لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ۭ

जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे बे ऐब है जिस में कोई दाग़ नहीं

ع ۸ قَالُوا الْــٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۭ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع وَاِذْ

बोले अब आप ठीक बात लाए[120] तो उसे ज़ब्ह किया और ज़ब्ह करते मा'लूम न होते थे[121] और जब

(इन्साफ़ त़लबी) के मौक़अ़ पर इस्तिहज़ा जाहिलों का काम है अम्बिया की शान इस से बरतर है। अल क़िस्सा जब बनी इसराईल ने समझ लिया कि गाय का ज़ब्ह करना लाज़िम है तो उन्हों ने आप से उस के औसाफ़ दरयाफ़्त किये। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर बनी इसराईल बह़स न निकालते तो जो गाय ज़ब्ह कर देते काफ़ी हो जाती। **119 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया अगर वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه न कहते तो कभी वोह गाय न पाते। **मस्अला :** हर नेक काम में اِنْ شَآءَ اللّٰه कहना मुस्तह़ब व बाइसे बरकत है। **120 :** या'नी अब तशफ़्फ़ी हुई और पूरी शान व सिफ़त मा'लूम हुई। फिर उन्हों ने गाय की तलाश शुरूअ़ की, उन अत़राफ़ में ऐसी सिर्फ़ एक गाय थी, उस का ह़ाल येह है कि बनी इसराईल में एक सालेह़ शख़्स थे उन का एक सग़ीरुस्सिन बच्चा था और उन के पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ न रहा था, उन्हों ने उस की गरदन पर मोहर लगा कर **अल्लाह** के नाम पर छोड़ दिया और बारगाहे ह़क़ में अ़र्ज़ किया : या रब ! मैं इस बछिया को इस फ़रज़न्द के लिये तेरे पास वदीअ़त (अमानत) रखता हूं जब येह फ़रज़न्द बड़ा हो येह इस के काम आए, उन का तो इन्तिक़ाल हो गया, बछिया जंगल में ब ह़िफ़्ज़े इलाही परवरिश पाती रही। येह लड़का बड़ा हुवा और बि फ़ज़्लिही सालेह़ व मुत्तक़ी हुवा, मां का फ़रमां बरदार था, एक रोज़ इस की वालिदा ने कहा : ऐ नूरे नज़र ! तेरे बाप ने तेरे लिये फ़ुलां जंगल में ख़ुदा के नाम एक बछिया छोड़ दी है, वोह अब जवान हो गई उस को जंगल से ला और **अल्लाह** से दुआ़ कर कि वोह तुझे अ़त़ा फ़रमाए, लड़के ने गाय को जंगल में देखा और वालिदा की बताई हुई अ़लामतें उस में पाईं और उस को **अल्लाह** की क़सम दे कर बुलाया वोह ह़ाज़िर हुई, जवान उस को वालिदा की ख़िदमत में लाया, वालिदा ने बाज़ार में ले जा कर तीन दीनार पर फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और येह शर्त़ की, कि सौदा होने पर फिर इस की इजाज़त ह़ासिल की जाए, उस ज़माने में गाय की क़ीमत उन अत़राफ़ में तीन दीनार ही थी, जवान जब उस गाय को बाज़ार में लाया तो एक फ़िरिश्ता ख़रीदार की सूरत में आया और उस ने गाय की क़ीमत छ[6] दीनार लगा दी मगर इस शर्त़ से कि जवान वालिदा की इजाज़त का पाबन्द न हो, जवान ने येह मन्ज़ूर न किया और वालिदा से तमाम क़िस्सा कहा, उस की वालिदा ने छ[6] दीनार क़ीमत मन्ज़ूर करने की तो इजाज़त दी मगर बैअ़ में फिर दोबारा अपनी मरज़ी दरयाफ़्त करने की शर्त़ की। जवान फिर बाज़ार में आया इस मरतबा फ़िरिश्ते ने बारह दीनार क़ीमत लगाई और कहा कि वालिदा की इजाज़त पर मौक़ूफ़ न

www.dawateislami.net

قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿۷۲﴾ ج

तुम ने एक ख़ून किया तो एक दूसरे पर उस की तोहमत डालने लगे और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ

तो हम ने फ़रमाया उस मक़्तूल को इस गाय का एक टुकड़ा मारो[122] **अल्लाह** यूंही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۷۳﴾ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ

कि कहीं तुम्हें अ़क़्ल हो[123] फिर इस के बा'द तुम्हारे दिल सख़्त हो गए[124] तो वोह

كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ

पथ्थरों की मिस्ल हैं बल्कि उन से भी ज़ियादा करें (सख़्त) और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह

الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا

निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं जो

يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ اَفَتَطْمَعُوْنَ

अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं[125] और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं तो ऐ मुसल्मानो ! क्या तुम्हें येह त़मअ़ है

रखो, जवान ने न माना और वालिदा को इत्तिलाअ़ दी वोह साहिबे फ़िरासत समझ गई कि येह ख़रीदार नहीं कोई फ़िरिश्ता है जो आज़्माइश के लिये आता है, बेटे से कहा कि अब की मरतबा उस ख़रीदार से येह कहना कि आप हमें इस गाय के फ़रोख़्त करने का हुक्म देते हैं या नहीं ? लड़के ने येही कहा, फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि अभी इस को रोके रहो, जब बनी इसराईल ख़रीदने आएं तो इस की क़ीमत येह मुक़र्रर करना कि इस की खाल में सोना भर दिया जाए, जवान गाय को घर लाया और जब बनी इसराईल जुस्तजू करते हुए उस के मकान पर पहुंचे तो येही क़ीमत तै की और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़मानत पर वोह गाय बनी इसराईल के सिपुर्द की। **मसाइल :** इस वाक़िए़ से कई मस्अले मा'लूम हुए (1) जो अपने इयाल को **अल्लाह** के सिपुर्द करे **अल्लाह** तआ़ला उस की ऐसी उ़म्दा परवरिश फ़रमाता है। (2) जो अपना माल **अल्लाह** के भरोसे पर उस की अमानत में दे **अल्लाह** उस में बरकत देता है। (3) वालिदैन की फ़रमां बरदारी **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है। (4) ग़ैबी फ़ैज़ क़ुरबानी व ख़ैरात करने से ह़ासिल होता है। (5) राहे ख़ुदा में नफ़ीस माल देना चाहिये। (6) गाय की क़ुरबानी अफ़्ज़ल है। **121 :** बनी इसराईल के मुसल्सल सुवालात और अपनी रुस्वाई के अन्देशे और गाय की गिरानिये क़ीमत से येह ज़ाहिर होता था कि वोह ज़ब्ह़ का क़स्द नहीं रखते मगर जब उन के सुवालात शाफ़ी जवाबों से ख़त्म कर दिये गए तो उन्हें ज़ब्ह़ करना ही पड़ा। **122 :** बनी इसराईल ने गाय ज़ब्ह़ कर के उस के किसी उ़ज़्व से मुर्दा को मारा वोह ब हुक्मे इलाही ज़िन्दा हुवा उस के ह़ल्क़ से ख़ून के फ़व्वारे जारी थे उस ने अपने चचाज़ाद भाई का बताया कि इस ने मुझे क़त्ल किया, अब उस को भी इक़रार करना पड़ा और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर क़िसास का हुक्म फ़रमाया, इस के बा'द शरअ़ का हुक्म हुवा कि **मस्अला :** क़ातिल मक़्तूल की मीरास से मह़रूम रहेगा। **मस्अला :** लेकिन अगर आ़दिल ने बाग़ी को क़त्ल किया या किसी ह़म्ला आवर से जान बचाने के लिये मुदाफ़अ़त की उस में वोह क़त्ल हो गया तो मक़्तूल की मीरास से मह़रूम न होगा। **123 :** और तुम समझो कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला मुर्दे ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और रोज़े जज़ा मुर्दों को ज़िन्दा करना और ह़िसाब लेना ह़क़ है। **124 :** और ऐसे बड़े निशानहाए क़ुदरत से तुम ने इब्रत ह़ासिल न की। **125 :** ब ईं हमा तुम्हारे दिल असर पज़ीर नहीं, पथ्थरों में भी **अल्लाह** ने इदराक व शुऊ़र दिया है उन्हें ख़ौफ़े इलाही होता है वोह तस्बीह़ करते हैं "اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ" मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो बि'सत से पहले मुझे सलाम किया करता था।" तिरमिज़ी में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है : मैं सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ अत़राफ़े मक्का में गया जो दरख़्त या पहाड़ सामने आता था "اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ" (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) अ़र्ज़ करता था।

www.dawateislami.net

اَنۡ یُّؤۡمِنُوۡا لَکُمۡ وَ قَدۡ کَانَ فَرِیۡقٌ مِّنۡهُمۡ یَسۡمَعُوۡنَ کَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ

कि येह यहूदी तुम्हारा यक़ीन लाएंगे और इन में का तो एक गुरोह वोह था कि अल्लाह का कलाम सुनते फिर

یُحَرِّفُوۡنَهٗ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا عَقَلُوۡهُ وَ هُمۡ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۵﴾ وَ اِذَا لَقُوا الَّذِیۡنَ

समझने के बा'द उसे दानिस्ता बदल देते[126] और जब मुसलमानों से

اٰمَنُوۡا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَا بَعۡضُهُمۡ اِلٰی بَعۡضٍ قَالُوۡۤا اَتُحَدِّثُوۡنَهُمۡ

मिलें तो कहें हम ईमान लाए[127] और जब आपस में अकेले हों तो कहें वोह इल्म जो अल्लाह ने तुम पर खोला मुसल्मानों

بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَیۡکُمۡ لِیُحَآجُّوۡکُمۡ بِهٖ عِنۡدَ رَبِّکُمۡ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۷۶﴾

से बयान किये देते हो कि उस से तुम्हारे रब के यहां तुम्हीं पर हुज्जत लाएं क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं

اَوَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ یَعۡلَمُ مَا یُسِرُّوۡنَ وَ مَا یُعۡلِنُوۡنَ ﴿۷۷﴾ وَ مِنۡهُمۡ

क्या नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं और उन में कुछ

النصف

اُمِّیُّوۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ الۡکِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِیَّ وَ اِنۡ هُمۡ اِلَّا یَظُنُّوۡنَ ﴿۷۸﴾

अनपढ़ हैं जो किताब[128] को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना[129] या कुछ अपनी मन घड़त और वोह निरे गुमान में हैं

فَوَیۡلٌ لِّلَّذِیۡنَ یَکۡتُبُوۡنَ الۡکِتٰبَ بِاَیۡدِیۡهِمۡ ٭ ثُمَّ یَقُوۡلُوۡنَ هٰذَا

तो ख़राबी है उन के लिये जो किताब अपने हाथ से लिखें फिर कहें येह

مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ لِیَشۡتَرُوۡا بِهٖ ثَمَنًا قَلِیۡلًا ؕ فَوَیۡلٌ لَّهُمۡ مِّمَّا کَتَبَتۡ

ख़ुदा के पास से है कि इस के इवज़ थोड़े दाम हासिल करें[130] तो ख़राबी है उन के लिये उन के

126 : जैसे उन्हों ने तौरैत में तह़रीफ़ की और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم की ना'त बदल डाली। **127 : शाने नुज़ूल :** येह आयत उन यहूदियों की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم के ज़माने में थे। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : यहूदी मुनाफ़िक़ जब सह़ाबए किराम से मिलते तो कहते कि जिस पर तुम ईमान लाए उस पर हम भी ईमान लाए, तुम ह़क़ पर हो और तुम्हारे आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم सच्चे हैं उन का क़ौल ह़क़ है, हम उन की ना'त व सिफ़त अपनी किताब तौरैत में पाते हैं उन लोगों पर रुअसाए यहूद मलामत करते थे, इस का बयान "وَاِذَا خَلَا بَعۡضُهُمۡ" में है। (خازن) **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ह़क़पोशी और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم के औसाफ़ का छुपाना और कमालात का इन्कार करना यहूद का त़रीक़ा है आज कल के बहुत से गुमराहों की येही आ़दत है। **128 :** किताब से तौरैत मुराद है। **129 :** "اَمَانِی" (अमानी) اُمۡنِیَّہ (उम्निय्या) की जम्अ़ है और इस के मा'नी ज़बानी पढ़ने के हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि आयत के मा'ना येह हैं कि किताब को नहीं जानते मगर सिर्फ़ ज़बानी पढ़ लेना बिग़ैर मा'ना समझे। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना भी बयान किये हैं कि اَمَانِی से वोह झूटी घड़ी हुई बातें मुराद हैं जो यहूदियों ने अपने उ़लमा से सुन कर बे तह़क़ीक़ मान ली थीं। **130 : शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उ़लमाए तौरैत व रुअसाए यहूद को क़वी अन्देशा हो गया कि उन की रोज़ी जाती रहेगी और सरदारी मिट जाएगी क्यूं कि तौरैत में ह़ुज़ूर का ह़ुल्या और औसाफ़ मज़्कूर हैं जब लोग ह़ुज़ूर को इस के मुत़ाबिक़ पाएंगे फ़ौरन ईमान ले आएंगे और अपने उ़लमा व रुअसा को छोड़ देंगे, इस अन्देशे से उन्हों ने तौरैत में

www.dawateislami.net

أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا

हाथों के लिखे से और ख़राबी उन के लिये उस कमाई से और बोले हमें तो आग न छूएगी मगर

أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ

गिनती के दिन[131] तुम फ़रमा दो क्या ख़ुदा से तुम ने कोई अ़हद ले रखा है जब तो **अल्लाह** हरगिज़ अपना अ़हद ख़िलाफ़ न

عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً

करेगा[132] या ख़ुदा पर वोह बात कहते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं हां क्यूं नहीं जो गुनाह कमाए

وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾

और उस की ख़ता उसे घेर ले[133] वोह दोज़ख़ वालों में है उन्हें हमेशा उस में रहना

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا

और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं उन्हें हमेशा

خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا ع ۹

उस में रहना और जब हम ने बनी इसराईल से अ़हद लिया कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न

اللَّهَ قف وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ

पूजो और मां बाप के साथ भलाई करो[134] और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों से

तह़रीफ़ व तग़्यीर कर डाली और हुल्या शरीफ़ बदल दिया, मसलन तौरैत में आप के औसाफ़ येह लिखे थे कि आप ख़ूबरू हैं, बाल ख़ूब सूरत, आंखें सुर्मगीं, क़द मियाना है, इस को मिटा कर उन्हों ने येह बनाया कि वोह बहुत दराज़ क़ामत हैं, आंखें कन्जी नीली, बाल उलझे हैं येही अ़वाम को सुनाते येही किताबे इलाही का मज़मून बताते और समझते कि लोग हुज़ूर को इस के ख़िलाफ़ पाएंगे तो आप पर ईमान न लाएंगे हमारे गिरवीदा रहेंगे और हमारी कमाई में फ़र्क़ न आएगा। **131 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہ से मरवी है कि यहूद कहते थे कि वोह दोज़ख़ में हरगिज़ दाख़िल न होंगे मगर सिर्फ़ इतनी मुद्दत के लिये जितने अ़र्से उन के आबाओ अज्दाद ने गौसाला (बछड़ा) पूजा था और वोह चालीस रोज़ हैं इस के बा'द वोह अ़ज़ाब से छूट जाएंगे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **132 :** क्यूं कि किज़्ब बड़ा ऐ़ब है और ऐ़ब **अल्लाह** तआ़ला पर मुह़ाल, लिहाज़ा उस का किज़्ब तो मुम्किन नहीं लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला ने तुम से सिर्फ़ चालीस रोज़ के अ़ज़ाब के बा'द छोड़ देने का वा'दा ही नहीं फ़रमाया तो तुम्हारा क़ौल बात़िल हुवा। **133 :** इस आयत में गुनाह से शिर्क व कुफ़्र मुराद है और इह़ात़ा करने से येह मुराद है कि नजात की तमाम राहें बन्द हो जाएं और कुफ़्र व शिर्क ही पर उस को मौत आए क्यूं कि मोमिन ख़्वाह कैसा भी गुनाहगार हो गुनाहों से घिरा नहीं होता इस लिये कि ईमान जो आ'ज़म ताअ़त है वोह इस के साथ है। **134 : अल्लाह** तआ़ला ने अपनी इ़बादत का हुक्म फ़रमाने के बा'द वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया इस से मा'लूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है। वालिदैन के साथ भलाई के येह मा'ना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से इन्हें ईज़ा हो और अपने बदन व माल से इन की ख़िदमत में दरेग़ न करे जब इन्हें ज़रूरत हो इन के पास ह़ाज़िर रहे। **मस्अला :** अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिये नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे इन की ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है। **मस्अला :** वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जा सकते। वालिदैन के साथ एह़सान के त़रीक़े जो अह़ादीस से साबित हैं येह हैं कि तहे दिल से उन के साथ मह़ब्बत रखे रफ़्तारो गुफ़्तार, निशस्तो बरख़ास्त में अदब लाज़िम जाने, उन की शान में ता'ज़ीम के लफ़्ज़ कहे, उन को राज़ी करने की सई करता रहे, अपने नफ़ीस माल को उन से न बचाए, उन के मरने के बा'द उन की वसिय्यतें जारी करे, उन के लिये फ़ातिह़ा, सदक़ात, तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे, **अल्लाह** तआ़ला

www.dawateislami.net

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ

और लोगों से अच्छी बात कहो[135] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर तुम फिर गए[136]

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ

मगर तुम में के थोड़े[137] और तुम रू गर्दां हो[138] और जब हम ने तुम से अ़हद लिया

لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ

कि अपनों का ख़ून न करना और अपनों को अपनी बस्तियों से न निकालना फिर

اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ

तुम ने इस का इक़रार किया और तुम गवाह हो फिर येह जो तुम हो अपनों को क़त्ल करने लगे

وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ

और अपने में एक गुरौह को उन के वत़न से निकालते हो उन पर मदद देते हो (उन के मुख़ालिफ़ को) गुनाह

وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ

और ज़ियादती में और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आएं तो बदला दे कर छुड़ा लेते हो और उन का निकालना तुम पर

اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا

हराम है[139] तो क्या ख़ुदा के कुछ हुक्मों पर ईमान लाते और कुछ से इन्कार करते हो तो जो

से उन की मग़्फ़िरत की दुआ़ करे, हफ़्तावार उन की क़ब्र की ज़ियारत करे। (فتح العزیز) वालिदैन के साथ भलाई करने में येह भी दाख़िल है कि अगर वोह गुनाहों के आ़दी हों या किसी बद मज़्हबी में गिरिफ़्तार हों तो उन को ब नरमी इस्लाह़ व तक़्वा और अ़क़ीदए ह़क़्क़ा की त़रफ़ लाने की कोशिश करता रहे। (خازن) **135 :** अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदियों से रोकना है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की शान में ह़क़ और सच बात कहो, अगर कोई दरयाफ़्त करे तो हुज़ूर के कमालात व औसाफ़ सच्चाई के साथ बयान कर दो, आप की ख़ूबियां न छुपाओ। **136 :** अ़ह्द के बा'द **137 :** जो ईमान ले आए मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब कि इन्हों ने तो अ़ह्द पूरा किया। **138 :** और तुम्हारी क़ौम की आ़दत ही ए'राज़ करना और अ़ह्द से फिर जाना है। **139 : शाने नुज़ूल :** तौरैत में बनी इसराईल से अ़ह्द लिया गया था कि वोह आपस में एक दूसरे को क़त्ल न करें, वत़न से न निकालें और जो बनी इसराईल किसी की क़ैद में हो उस को माल दे कर छुड़ा लें, इस अ़ह्द पर उन्हों ने इक़रार भी किया, अपने नफ़्स पर शाहिद भी हुए लेकिन क़ाइम न रहे और इस से फिर गए। सूरते वाक़िआ़ येह है कि नवाह़े मदीना में यहूद के दो फ़िर्क़े ''बनी क़ुरैज़ा'' और ''बनी नज़ीर'' सुकूनत रखते थे और मदीना शरीफ़ में दो फ़िर्क़े ''औस व ख़ज़रज'' रहते थे, बनी क़ुरैज़ा औस के ह़लीफ़ थे और बनी नज़ीर ख़ज़रज के या'नी हर एक क़बीले ने अपने ह़लीफ़ के साथ क़समा क़समी की थी (यक़ीन दिहानी कराई थी) कि अगर हम में से किसी पर कोई ह़म्ला आवर हो तो दूसरा उस की मदद करेगा। औस और ख़ज़रज बाहम जंग करते थे, बनी क़ुरैज़ा औस की और बनी नज़ीर ख़ज़रज की मदद के लिये आते थे और ह़लीफ़ के साथ हो कर आपस में एक दूसरे पर तलवार चलाते थे, बनी क़ुरैज़ा बनी नज़ीर को और वोह बनी क़ुरैज़ा को क़त्ल करते थे और उन के घर वीरान कर देते थे, उन्हें उन के मसाकिन से निकाल देते थे लेकिन जब उन की क़ौम के लोगों को उन के ह़लीफ़ क़ैद करते थे तो वोह उन को माल दे कर छुड़ा लेते थे। मसलन अगर बनी नज़ीर का कोई शख़्स औस के हाथ में गिरिफ़्तार होता तो बनी क़ुरैज़ा औस को माली मुआ़वज़ा दे कर उस को छुड़ा लेते बा वुजूदे कि अगर वोही शख़्स लड़ाई के वक़्त उन के मौक़ुअ़ पर आ जाता तो उस के क़त्ल

جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

तुम में ऐसा करे उस का बदला क्या है मगर येह कि दुन्या में रुस्वा हो[140]

وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰۤى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا

और क़ियामत में सख़्त तर अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से

تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫

बे ख़बर नहीं[141] येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली

فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾ ع وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى ع ۱۰ ۱۰

तो न उन पर से अ़ज़ाब हलका और न उन की मदद की जाए और बेशक हम ने मूसा को

الْكِتٰبَ وَ قَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۫ وَ اٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

किताब अ़त़ा की[142] और इस के बा'द पै दर पै रसूल भेजे[143] और हम ने ईसा बिन मरयम को

الْبَيِّنٰتِ وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى

खुली निशानियां अ़त़ा फ़रमाईं[144] और पाक रूह़ से[145] उस की मदद की[146] तो क्या जब तुम्हारे पास कोई रसूल वोह ले कर आए जो तुम्हारे

में हरगिज़ दरेग़ न करते। इस फ़े'ल पर मलामत की जाती है कि जब तुम ने अपनों की ख़ूनरेज़ी न करने, उन को बस्तियों से न निकालने, उन के असीरों को छुड़ाने का अ़हद किया था तो इस के क्या मा'ना कि क़त्ल व इख़्राज में तो दर गुज़र न करो और गिरिफ़्तार हो जाएं तो छुटाते फिरो, अ़हद में से कुछ मानना और कुछ न मानना क्या मा'ना रखता है? जब तुम क़त्ल व इख़्राज से बाज़ न रहे तो तुम ने अ़हद शिकनी की और ह़राम के मुरतकिब हुए और इस को ह़लाल जान कर काफ़िर हो गए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि ज़ुल्म व ह़राम पर इमदाद करना भी ह़राम है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि ह़रामे क़त़्ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि किताबे इलाही के एक हुक्म का न मानना भी सारी किताब का न मानना और कुफ़्र है। **फ़ाएदा :** इस में येह तम्बीह भी है कि जब अह़कामे इलाही में से बा'ज़ का मानना बा'ज़ का न मानना कुफ़्र हुवा तो यहूद का ह़ज़रते सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इन्कार करने के साथ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत को मानना कुफ़्र से नहीं बचा सकता। **140 :** दुन्या में तो येह रुस्वाई हुई कि बनी क़ुरैज़ा 3 हिजरी में मारे गए, एक रोज़ में इन के सात सो आदमी क़त्ल किये गए थे और बनी नज़ीर इस से पहले ही जला वत़न कर दिये गए, ह़लीफ़ों की ख़ात़िर अ़हदे इलाही की मुख़ालफ़त का येह वबाल था। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी की त़रफ़ दारी में दीन की मुख़ालफ़त करना इलावा उख़्रवी अ़ज़ाब के दुन्या में भी ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइ़स होता है। **141 :** इस में जैसी ना फ़रमानों के लिये वई़दे शदीद है कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे अफ़्आ़ल से बे ख़बर नहीं है तुम्हारी ना फ़रमानियों पर अ़ज़ाबे शदीद फ़रमाएगा ऐसे ही इस आयत में मोमिनीन व सालिह़ीन के लिये मुज़्दा है कि उन्हें आ'माले ह़सना की बेहतरीन जज़ा मिलेगी। (تفسیر کبیر) **142 :** इस किताब से तौरैत मुराद है जिस में **अल्लाह** तआ़ला के तमाम अ़हद मज़्कूर थे सब से अहम अ़हद येह थे कि हर ज़माने के पैग़म्बरों की इत़ाअ़त करना, उन पर ईमान लाना और उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना। **143 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक मुतवातिर अम्बिया आते रहे, उन की ता'दाद चार हज़ार बयान की गई है, येह सब ह़ज़रात शरीअ़ते मूसवी के मुह़ाफ़िज़ और उस के अह़काम जारी करने वाले थे, चूंकि ख़ातमुल अम्बिया के बा'द नुबुव्वत किसी को नहीं मिल सकती इस लिये शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह की ह़िफ़ाज़त व इशाअ़त की ख़िदमत रब्बानी उ़लमा और मुजद्दिदीने मिल्लत को अ़त़ा हुई। **144 :** इन निशानियों से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात मुराद हैं जैसे मुर्दे ज़िन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरा। **145 :** "रूहे़ क़ुदुस" से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं कि रूह़ानी हैं वह़्य लाते हैं जिस से क़ुलूब की ह़यात है, वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ रहने पर मामूर थे, आप 33 साल की उ़म्र शरीफ़ में आस्मान पर उठा लिये गए उस वक़्त तक ह़ज़रते जिब्रील सफ़र, ह़ज़र में कभी आप से जुदा न हुए, ताईदे रूहु़ल क़ुदुस ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की जलील फ़ज़ीलत है। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े में हु़ज़ूर के बा'ज़ उम्मतियों को भी ताईदे रूहु़ल क़ुदुस मुयस्सर हुई। सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में है कि ह़ज़रते ह़स्सान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के लिये मिम्बर बिछाया जाता

www.dawateislami.net

اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ؗ وَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قَالُوْا

नफ़्स की ख़्वाहिश नहीं तकब्बुर करते हो तो उन (अम्बिया) में एक गुरोह को तुम झुटलाते और एक गुरोह को शहीद करते हो[147] और यहूदी बोले हमारे

قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَ

दिलों पर पर्दे पड़े हैं[148] बल्कि **अल्लाह** ने उन पर ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो उन में थोड़े ईमान लाते हैं[149] और

لَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ

जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है[150] और इस से पहले उसी नबी

يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا

के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे[151] तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो

بِهٖ ؗ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ

बैठे[152] तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर किस बुरे मोलों उन्हों ने अपनी जानों को ख़रीदा कि

يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ

अल्लाह के उतारे से मुन्किर हों[153] इस की जलन से कि **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से अपने जिस बन्दे पर चाहे

مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ

वह्य उतारे[154] तो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के सज़ावार हुए[155] और काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का

वोह ना'त शरीफ़ पढ़ते, हुज़ूर उन के लिये फ़रमाते : ''اَللّٰهُمَّ اَيِّدْهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ۔'' (ऐ **अल्लाह** ! हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए इन की मदद फ़रमा) **146 :** फिर भी ऐ यहूद ! तुम्हारी सरकशी में फ़र्क़ न आया। **147 :** यहूद पैग़म्बरों के अह़काम अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पा कर उन्हें झुटलाते और मौक़अ़ पाते तो क़त्ल कर डालते थे जैसे कि उन्हों ने हज़रते शा'या व ज़करिय्या (عَلَيْهِمَا السَّلَام) और बहुत से अम्बिया को शहीद किया, सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के भी दर पै रहे, कभी आप पर जादू किया, कभी ज़ह्र दिया, त़रह़ त़रह़ के फ़रेब ब इरादए क़त्ल किये। **148 :** यहूद ने येह इस्तिह्ज़ाअन कहा था उन की मुराद येह थी कि हुज़ूर की हिदायत को इन के दिलों तक राह नहीं है, **अल्लाह** तआ़ला ने इस का रद फ़रमाया कि बे दीन झूटे हैं, कुलूब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ित़रत पर पैदा फ़रमाए इन में क़बूले ह़क़ की लियाक़त रखी, इन के कुफ़्र की शामत है कि इन्हों ने सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का ए'तिराफ़ करने के बा'द इन्कार किया, **अल्लाह** तआ़ला ने इन पर ला'नत फ़रमाई इस का असर है कि क़बूले ह़क़ की ने'मत से मह़रूम हो गए। **149 :** येही मज़्मून दूसरी जगह इर्शाद हुवा : ''بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا۔'' (बल्कि **अल्लाह** ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोह्र लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े) **150 :** सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के औसाफ़ के बयान में। (کبیر وخازن) **151 : शाने नुज़ूल :** सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत और कुरआने करीम के नुज़ूल से क़ब्ल यहूद अपने ह़ाजात के लिये हुज़ूर के नामे पाक के वसीले से दुआ़ करते और काम्याब होते थे और इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे : ''اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا وَانْصُرْنَا بِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ'' या रब ! हमें नबिय्ये उम्मी के सदक़े में फ़त्ह़ो नुसरत अ़त़ा फ़रमा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूलाने ह़क़ के वसीले से दुआ़ क़बूल होती है। येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर से क़ब्ल जहान में हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी का शोहरा था उस वक़्त भी हुज़ूर के वसीले से ख़ल्क़ की ह़ाजत रवाई होती थी। **152 :** येह इन्कार इनाद व ह़सद और हुब्बे रियासत की वज्ह से था। **153 :** या'नी आदमी को अपनी जान की ख़लासी के लिये वोही करना चाहिये जिस से रिहाई की उम्मीद हो। यहूद ने येह बुरा सौदा किया कि **अल्लाह** के नबी और उस की किताब के मुन्किर हो गए। **154 :** यहूद की ख़्वाहिश थी कि ख़त्मे नुबुव्वत का मन्सब बनी इसराईल में से किसी को मिलता जब देखा कि वोह मह़रूम रहे, बनी इस्माईल नवाज़े गए तो ह़सद से मुन्किर हो गए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ह़सद ह़राम और मह़रूमियों का बाइ़स है। **155 :** या'नी अन्वाओ़ अक़्साम के ग़ज़ब के

مُّهِيۡنٌ ﴿۹۰﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ اٰمِنُوۡا بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ قَالُوۡا نُؤۡمِنُ

अ़ज़ाब है[156] और जब उन से कहा जाए कि अल्लाह के उतारे पर ईमान लाओ[157] तो कहते हैं वोह जो हम पर उतरा

بِمَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا وَيَكۡفُرُوۡنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الۡحَـقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا

उस पर ईमान लाते हैं[158] और बाक़ी से मुन्किर होते हैं हालां कि वोह ह़क़ है उन के पास वाले की तस्दीक़

مَعَهُمۡ ؕ قُلۡ فَلِمَ تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنۡ قَبۡلُ اِنۡ كُنۡتُمۡ

फ़रमाता हुवा[159] तुम फ़रमाओ कि फिर अगले अम्बिया को क्यूं शहीद किया अगर तुम्हें अपनी किताब

مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۹۱﴾ وَلَقَدۡ جَآءَكُمۡ مُّوۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ

पर ईमान था[160] और बेशक तुम्हारे पास मूसा खुली निशानियां ले कर तशरीफ़ लाया फिर तुम ने इस के बा'द[161] बछड़े

مِنۡۢ بَعۡدِهٖ وَاَنۡتُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۹۲﴾ وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَكُمۡ وَرَفَعۡنَا فَوۡقَكُمُ

को मा'बूद बना लिया और तुम ज़ालिम थे[162] और याद करो जब हम ने तुम से पैमान लिया[163] और कोहे तूर को तुम्हारे सरों पर

الطُّوۡرَ ؕ خُذُوۡا مَاۤ اٰتَيۡنٰكُمۡ بِقُوَّةٍ وَّاسۡمَعُوۡا ؕ قَالُوۡا سَمِعۡنَا وَعَصَيۡنَا ۗ

बुलन्द किया लो जो हम तुम्हें देते हैं ज़ोर से और सुनो बोले हम ने सुना और न माना

وَاُشۡرِبُوۡا فِىۡ قُلُوۡبِهِمُ الۡعِجۡلَ بِكُفۡرِهِمۡ ؕ قُلۡ بِئۡسَمَا يَاۡمُرُكُمۡ بِهٖۤ

और उन के दिलों में बछड़ा रच रहा था उन के कुफ़्र के सबब तुम फ़रमा दो क्या बुरा हुक्म देता है तुम को

اِيۡمَانُكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۹۳﴾ قُلۡ اِنۡ كَانَتۡ لَـكُمُ الدَّارُ الۡاٰخِرَةُ

तुम्हारा ईमान अगर ईमान रखते हो[164] तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर

عِنۡدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنۡ دُوۡنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الۡمَوۡتَ اِنۡ كُنۡتُمۡ

अल्लाह के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर

सज़ावार हुए। 156 : इस से मा'लूम हुवा कि ज़िल्लतो इहानत वाला अ़ज़ाब कुफ़्फ़ार के साथ ख़ास है, मोमिनीन को गुनाहों की वज्ह से अ़ज़ाब हुवा भी तो ज़िल्लतो इहानत के साथ न होगा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : "وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ۔" (और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है) 157 : इस से क़ुरआने पाक और तमाम वोह किताबें और सह़ाइफ़ मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाए या'नी सब पर ईमान लाओ। 158 : इस से उन की मुराद तौरैत है। 159 : या'नी तौरैत पर ईमान लाने का दा'वा ग़लत़ है चूंकि क़ुरआने पाक जो तौरैत का मुसद्दिक़ (तस्दीक़ करने वाला) है इस का इन्कार तौरैत का इन्कार हो गया। 160 : इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि अगर तौरैत पर ईमान रखते तो अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को हरगिज़ शहीद न करते। 161 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बा'द। 162 : इस में भी उन की तक्ज़ीब है कि शरीअ़ते मूसवी के मानने का दा'वा झूटा है अगर तुम मानते तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के अ़सा और यदे बैज़ा वग़ैरा खुली निशानियों के देखने के बा'द गौसाला परस्ती (बछड़े की पूजा) न करते। 163 : तौरैत के अह़काम पर अ़मल करने का। 164 : इस में भी उन के दा'वाए ईमान की तक्ज़ीब है।

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

सच्चे हो[165] और हरगिज़ कभी इस की आरज़ू न करेंगे[166] उन बद आ'मालियों के सबब जो आगे कर चुके[167] और **अल्लाह** ख़ूब जानता है

بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ

ज़ालिमों को और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْا ۛۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ

एक को तमन्ना है कि कहीं हज़ार बरस जिये[168] और वोह उसे अ़ज़ाब

مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ ع قُلْ مَنْ كَانَ

से दूर न करेगा इतनी उ़म्र दिया जाना और **अल्लाह** उन के कौतक (बुरे अ़मल) देख रहा है तुम फ़रमा दो जो कोई

عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

जिब्रील का दुश्मन हो[169] तो उस (जिब्रील) ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह क़ुरआन उतारा अगली किताबों की

يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बिशारत मुसल्मानों को[170] जो कोई दुश्मन हो **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों

معانقة ٢

165 : यहूद के बातिल दआवी (झूटे दा'वों) में से एक येह दा'वा था कि जन्नत ख़ास उन्हीं के लिये है इस का रद फ़रमाया जाता है कि अगर तुम्हारे ज़ो'म में जन्नत तुम्हारे लिये ख़ास है और आख़िरत की त़रफ़ से तुम्हें इत़्मीनान है, आ'माल की ह़ाजत नहीं तो जन्नती ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्यवी मसाइब क्यूं बरदाश्त करते हो ? मौत की तमन्ना करो कि तुम्हारे दा'वे की बिना पर तुम्हारे लिये बाइसे राह़त है, अगर तुम ने मौत की तमन्ना न की तो येह तुम्हारे किज़्ब की दलील होगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह मौत की तमन्ना करते तो सब हलाक हो जाते और रूए ज़मीन पर कोई यहूदी बाक़ी न रहता। **166 :** येह ग़ैब की ख़बर और मो'जिज़ा है कि यहूद बा वुजूद निहायत ज़िद और शिद्दते मुख़ालफ़त के भी तमन्नाए मौत का लफ़्ज़ ज़बान पर न ला सके। **167 :** जैसे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान और क़ुरआन के साथ कुफ़्र और तौरैत की तह़रीफ़ वग़ैरा। **मस्अला :** मौत की मह़ब्बत और लिक़ाए परवर दगार का शौक़ **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ हर नमाज़ के बा'द दुआ़ फ़रमाते : ''اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَوَفَاةً بِبَلَدِ رَسُوْلِكَ'' या रब ! मुझे अपनी राह में शहादत और अपने रसूल के शहर में वफ़ात नसीब फ़रमा। बिल उ़मूम तमाम सह़ाबए किबार और बिल ख़ुसूस शुहदाए बद्रो उहुद अस्ह़ाबे बैअ़ते रिज़्वान मौत फ़ी सबीलिल्लाह की मह़ब्बत रखते थे, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार रुस्तम बिन फ़र्रुख़ ज़ाद के पास जो ख़त़ भेजा उस में तह़रीर फ़रमाया था : ''اِنَّ مَعِیَ قَوْمًا یُحِبُّوْنَ الْمَوْتَ كَمَا یُحِبُّ الْاَعَاجِمُ الْخَمْرَ'' या'नी मेरे साथ ऐसी क़ौम है जो मौत को इतना मह़बूब रखती है जितना अ़जमी शराब को। इस में लत़ीफ़ इशारा था कि शराब की नाक़िस मस्ती को मह़ब्बते दुन्या के दीवाने पसन्द करते हैं और अहलुल्लाह मौत को मह़बूबे ह़क़ीक़ी के विसाल का ज़रीआ़ समझ कर मह़बूब जानते हैं। फ़िल जुम्ला अहले ईमान आख़िरत की रग़बत रखते हैं और अगर तूले ह़यात की तमन्ना भी करें तो वोह इस लिये होती है कि नेकियां करने के लिये कुछ और अ़र्सा मिल जाए जिस से आख़िरत के लिये ज़ख़ीरए सआ़दत ज़ियादा कर सकें अगर गुज़श्ता अय्याम में गुनाह हुए हैं तो उन से तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लें। **मस्अला :** सिह़ाह़ की ह़दीस में है कोई दुन्यवी मुसीबत से परेशान हो कर मौत की तमन्ना न करे। और दर ह़क़ीक़त ह़वादिसे दुन्या से तंग आ कर मौत की दुआ़ करना सब्रो रिज़ा व तस्लीमो तवक्कुल के ख़िलाफ़ व ना जाइज़ है। **168 :** मुश्रिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं : ''जिह हज़ार साल'' या'नी हज़ार बरस जियो, मत़लब येह है कि मजूसी मुश्रिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं, यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें ह़िर्से ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है। **169 : शाने नुज़ूल :** यहूद के आ़लिम अ़ब्दुल्लाह बिन सूरिय्या ने ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से कहा : आप के पास आस्मान से कौन फ़िरिश्ता आता है ? फ़रमाया : जिब्रील। इब्ने सूरिय्या ने कहा : वोह हमारा दुश्मन है, अ़ज़ाबे शिद्दत और ख़स्फ़ उतारता है, कई मरतबा हम से अ़दावत कर चुका है, अगर आप के पास मीकाईल आते तो हम आप पर ईमान ले आते। **170 :** तो यहूद की अ़दावत जिब्रील के साथ बे मा'ना है बल्कि अगर उन्हें इन्साफ़ होता तो वोह जिब्रीले अमीन से मह़ब्बत करते और उन के शुक्र गुज़ार होते कि वोह ऐसी किताब लाए जिस से उन की किताबों की तस्दीक़ होती है। और ''بُشْرٰی لِلْمُؤْمِنِیْنَ'' (बिशारत मुसल्मानों को)

www.dawateislami.net

وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۸﴾ وَلَقَدْ

और उस के रसूलों और जिब्रील और मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफ़िरों का[171] और बेशक

اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿۹۹﴾ اَوَكُلَّمَا

हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें उतारीं[172] और इन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग और क्या जब कभी

عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

कोई अ़हद करते हैं उन में एक फ़रीक़ इसे फेंक देता है बल्कि उन में बहुतेरों को ईमान नहीं[173]

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ

और जब उन के पास तशरीफ़ लाया अल्लाह के यहां से एक रसूल[174] उन की किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता[175] तो किताब

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙۗ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ

वालों से एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी[176] गोया वोह

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ

कुछ इल्म ही नहीं रखते[177] और उस के पैरव हुए जो शैत़ान पढ़ा करते थे सल्त़नते सुलैमान के ज़माने में[178] और

फ़रमाने में यहूद का रद है कि अब तो जिब्रील हिदायत व बिशारत ला रहे हैं फिर भी तुम अ़दावत से बाज़ नहीं आते। **171 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया व मलाएका की अ़दावत कुफ़्र और ग़ज़बे इलाही का सबब है और महबूबाने ह़क़ से दुश्मनी ख़ुदा से दुश्मनी करना है। **172 : शाने नुज़ूल :** येह आयत इब्ने सूरिय्या यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न लाए जिसे हम पहचानते और न आप पर कोई वाज़ेह़ आयत नाज़िल हुई जिस का हम इत्तिबाअ़ करते। **173 : शाने नुज़ूल :** येह आयत मालिक बिन सैफ़ यहूदी के जवाब में नाज़िल हुई जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूद को अल्लाह तआ़ला के वोह अ़हद याद दिलाए जो हुज़ूर पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ किये थे तो इब्ने सैफ़ ने अ़हद ही का इन्कार कर दिया। **174 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। **175 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तौरैत व ज़बूर वग़ैरा की तस्दीक़ फ़रमाते थे और ख़ुद इन किताबों में भी हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी की बिशारत और आप के औसाफ़ व अह़वाल का बयान था इस लिये हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी और आप का वुजूदे मुबारक ही इन किताबों की तस्दीक़ है तो ह़ाल इस का मुक़्तज़ी था कि हुज़ूर की आमद पर अहले किताब का ईमान अपनी किताबों के साथ और ज़ियादा पुख़्ता होता मगर इस के बर अ़क्स उन्हों ने अपनी किताबों के साथ भी कुफ़्र किया। सुद्दी का क़ौल है कि जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो यहूद ने तौरैत से मुक़ाबला कर के तौरैत व क़ुरआन को मुत़ाबिक़ पाया तो तौरैत को भी छोड़ दिया। **176 :** या'नी उस किताब की त़रफ़ बे इल्तिफ़ाती की। सुफ़्यान बिन उ़यैना का क़ौल है कि यहूद ने तौरैत को ह़रीर व दीबा के रेशमी ग़िलाफ़ों में ज़र व सीम के साथ मुत़ल्ला व मुज़य्यन कर के रख लिया और उस के अह़काम को न माना। **177 :** इन आयात से मा'लूम होता है कि यहूद के चार फ़िर्क़े थे : **एक** तौरैत पर ईमान लाया और उस ने उस के हुक़ूक़ को भी अदा किया, येह मोमिनीने अहले किताब हैं इन की ता'दाद थोड़ी है और "اَكْثَرُهُمْ" से इन का पता चलता है। **दूसरा** फ़िर्क़ा जिस ने बिल ए'लान तौरैत के अ़हद तोड़े उस की ह़ुदूद से बाहर हुए, सरकशी इख़्तियार की "نَبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ" (एक गुरौह ने अल्लाह की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी) में उन का बयान है। **तीसरा** फ़िर्क़ा वोह जिस ने अ़हद शिकनी का ए'लान तो न किया लेकिन अपनी जहालत से अ़हद शिकनी करते रहे उन का ज़िक्र "بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ" (बल्कि उन में से बहुतेरों को ईमान नहीं) में है। **चौथे** फ़िर्क़े ने ज़ाहिरी त़ौर पर तो अ़हद माने और बात़िन में बग़ावत व इनाद से मुख़ालफ़त करते रहे येह तसन्नोअ़ से जाहिल बनते थे "كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ" (गोया वोह कुछ इल्म ही नहीं रखते) में इन पर दलालत है। **178 : शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में बनी इसराईल जादू सीखने में मश्ग़ूल हुए तो आप ने उन को इस से रोका और उन की किताबें ले कर अपनी कुरसी के नीचे दफ़्न कर दीं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बा'द शयात़ीन ने वोह किताबें निकलवा कर लोगों से कहा कि सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام इसी

مَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ق

सुलैमान ने कुफ़्र न किया[179] हां शैतान काफ़िर हुए[180] लोगों को जादू सिखाते हैं

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ

और वोह (जादू) जो बाबिल में दो फ़िरिश्तों हारूत व मारूत पर उतरा और वोह दोनों किसी को कुछ

مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ

न सिखाते जब तक येह न कह लेते कि हम तो निरी आज़्माइश हैं तो अपना ईमान न खो[181] तो उन से

مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ

सीखते वोह जिस से जुदाई डालें मर्द और उस की औरत में और इस से ज़रर नहीं पहुंचा सकते

مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَ

किसी को मगर ख़ुदा के हुक्म से[182] और वोह सीखते हैं जो उन्हें नुक़्सान देगा नफ़्अ न देगा और

لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ قف وَلَبِئْسَ مَا

बेशक ज़रूर उन्हें मा'लूम है कि जिस ने येह सौदा लिया आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और बेशक क्या बुरी चीज़ है वोह

شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

जिस के बदले उन्हों ने अपनी जानें बेचीं किसी त़रह़ उन्हें इल्म होता[183] और अगर वोह ईमान लाते[184] और परहेज़ गारी करते

ع لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

तो अल्लाह के यहां का सवाब बहुत अच्छा है किसी त़रह़ उन्हें इल्म होता ऐ ईमान वालो[185]

के ज़ोर से सल्त़नत करते थे, बनी इसराईल के सुलह़ा व उ़लमा ने तो इस का इन्कार किया, लेकिन उन के जुह्हाल जादू को ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का इल्म बता कर इस के सीखने पर टूट पड़े अम्बिया की किताबें छोड़ दीं और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर मलामत शुरूअ़ की, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक इसी ह़ाल पर रहे अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **179 :** क्यूं कि वोह नबी हैं और अम्बिया कुफ़्र से मा'सूम होते हैं उन की त़रफ़ सेह़र की निस्बत बात़िल व ग़लत़ है क्यूं कि सेह़र का कुफ़्रिय्यात से ख़ाली होना नादिर है। **180 :** जिन्हों ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर जादूगरी की झूटी तोहमत लगाई। **181 :** या'नी जादू सीख कर और इस पर अ़मल व ए'तिक़ाद कर के और इस को मुबाह़ जान कर काफ़िर न बन। येह जादू फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के दरमियान इम्तियाज़ व आज़्माइश के लिये नाज़िल हुवा, जो इस को सीख कर इस पर अ़मल करे काफ़िर हो जाएगा, बशर्ते़ कि इस जादू में मुनाफ़िये ईमान कलिमात व अफ़्आ़ल हों और जो इस से बचे न सीखे, या सीखे और इस पर अ़मल न करे और इस के कुफ़्रिय्यात का मो'तक़िद न हो वोह मोमिन रहेगा, येही इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी का क़ौल है। **मस्अला :** जो सेह़र कुफ़्र है उस का आ़मिल अगर मर्द हो क़त्ल कर दिया जाएगा। **मस्अला :** जो सेह़र कुफ़्र नहीं मगर उस से जानें हलाक की जाती हैं उस का आ़मिल क़ुत्ताए़ त़रीक़ (डाकू, राहज़नों) के हुक्म में है मर्द हो या औ़रत। **मस्अला :** जादूगर की तौबा क़बूल है। (مدارک) **182 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह तआ़ला है और तासीरे अस्बाब तह़ते मशिय्यत है। **183 :** अपने अन्जामे कार व शिद्दते अ़ज़ाब का। **184 :** ह़ज़रत सय्यिदे काएनात صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआने पाक पर **185 : शाने नुज़ूल :** जब हुज़ूरे

www.dawateislami.net

لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَ قُوْلُوا انْظُرْنَا وَ اسْمَعُوْا ؕ وَ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝۱۰۴

राइना न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो[186] और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[187]

مَا یَوَدُّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ لَا الْمُشْرِكِیْنَ اَنْ یُّنَزَّلَ

वोह जो काफ़िर हैं किताबी या मुश्रिक[188] वोह नहीं चाहते

عَلَیْكُمْ مِّنْ خَیْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ

कि तुम पर कोई भलाई उतरे तुम्हारे रब के पास से[189] और **अल्लाह** अपनी रह़मत से ख़ास करता है जिसे चाहे

وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ۝۱۰۵ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰیَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَیْرٍ

और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है जब कोई आयत हम मन्सूख़ फ़रमाएं या भुला दें[190] तो उस से

مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝۱۰۶ اَلَمْ تَعْلَمْ

बेहतर या उस जैसी ले आएंगे क्या तुझे ख़बर नहीं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है क्या तुझे ख़बर नहीं

اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

कि **अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा

अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم सहाबा को कुछ ता'लीम व तल्क़ीन फ़रमाते तो वोह कभी कभी दरमियान में अ़र्ज़ किया करते : ''رَاعِنَا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ'' इस के येह मा'ना थे कि या रसूलल्लाह ! हमारे हाल की रिआ़यत फ़रमाइये या'नी कलामे अक़्दस को अच्छी त़रह़ समझ लेने का मौक़अ़ दीजिये, यहूद की लुग़त में येह कलिमा सूए अदब के मा'ना रखता था उन्हों ने इस निय्यत से कहना शुरूअ़ किया। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ यहूद की इस्त़िलाह़ से वाक़िफ़ थे, आप ने एक रोज़ येह कलिमा उन की ज़बान से सुन कर फ़रमाया : ऐ दुश्मनाने ख़ुदा ! तुम पर **अल्लाह** की ला'नत, अगर मैं ने अब किसी की ज़बान से येह कलिमा सुना उस की गरदन मार दूंगा, यहूद ने कहा : हम पर तो आप बरहम होते हैं मुसल्मान भी तो येही कहते हैं, इस पर आप रन्जीदा हो कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए ही थे कि येह आयत नाज़िल हुई जिस में ''رَاعِنَا'' कहने की मुमानअ़त फ़रमा दी गई और इस मा'नी का दूसरा लफ़्ज़ ''اُنْظُرْنَا'' (हुज़ूर हम पर नज़र रखें) कहने का हुक्म हुवा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की ता'ज़ीमो तौक़ीर और इन की जनाब में कलिमाते अदब अ़र्ज़ करना फ़र्ज़ है और जिस कलिमे में तर्के अदब का शाइबा भी हो वोह ज़बान पर लाना मम्नूअ़। **186 :** और हमा तन गोश हो जाओ (इन्तिहाई तवज्जोह के साथ सुनो) ताकि येह अ़र्ज़ करने की ज़रूरत ही न रहे कि हुज़ूर ! तवज्जोह फ़रमाएं, क्यूं कि दरबारे नुबुव्वत का येही अदब है। **मस्अला :** दरबारे अम्बिया में आदमी को अदब के आ'ला मरातिब का लिह़ाज़ लाज़िम है। **187 : मस्अला :** ''لِلْكٰفِرِيْنَ'' (और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है) में इशारा है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है। **188 : शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त मुसल्मानों से दोस्ती व ख़ैर ख़्वाही का इज़्हार करती थी उन की तक्ज़ीब में येह आयत नाज़िल हुई, मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार ख़ैर ख़्वाही के दा'वे में झूटे हैं। (جمل) **189 :** या'नी कुफ़्फ़ार अहले किताब और मुश्रिकीन दोनों मुसल्मानों से बुग़्ज़ रखते हैं और इस रन्ज में हैं कि इन के नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत व वह़्य अ़त़ा हुई और मुसल्मानों को येह ने'मते उ़ज़्मा मिली। (خازن وغيره) **190 : शाने नुज़ूल :** क़ुरआने करीम ने शराइए साबिक़ा (पहली शरीअ़तों) व कुतुबे क़दीमा को मन्सूख़ फ़रमाया तो कुफ़्फ़ार को बहुत तवह़्ह़ुश (दुख) हुवा और उन्हों ने इस पर त़ा'न किये, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि मन्सूख़ भी **अल्लाह** की त़रफ़ से है और नासिख़ भी दोनों ऐन ह़िक्मत हैं। और नासिख़ कभी मन्सूख़ से ज़ियादा सहल व अन्फ़अ़ (आसान और फ़ाएदे मन्द) होता है क़ुदरते इलाही पर यक़ीन रखने वाले को इस में जाए तरद्दुद नहीं, काएनात में मुशाहदा किया जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला दिन से रात को, गरमा से सरमा को, जवानी से बचपन को, बीमारी से तन्दुरुस्ती को, बहार से ख़ज़ां को मन्सूख़ फ़रमाता है, येह तमाम नस्ख़ व तब्दील उस की क़ुदरत के दलाइल हैं तो एक आयत और एक हुक्म के मन्सूख़ होने में क्या तअ़ज्जुब ? नस्ख़ दर ह़क़ीक़त हुक्मे साबिक़ की मुद्दत का बयान होता है कि वोह हुक्म उस मुद्दत के लिये था और ऐन ह़िक्मत था, कुफ़्फ़ार की ना फ़हमी कि नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते

www.dawateislami.net

وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ

न कोई हिमायती न मददगार क्या येह चाहते हो कि अपने रसूल से वैसा सुवाल करो जो पहले

مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ

मूसा से हुवा था[191] और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले[192] वोह ठीक रास्ते (से)

السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बहक गया बहुत किताबियों ने चाहा[193] काश तुम्हें ईमान के बा'द कुफ़्र की

اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

तरफ़ फेर दें अपने दिलों की जलन से[194] बा'द इस के कि हक़ उन पर ख़ूब ज़ाहिर हो

الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

चुका है तो तुम छोड़ो और दर गुज़र करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए बेशक **अल्लाह** हर

हैं। और अहले किताब का ए'तिराज़ उन के मो'तक़िदात के लिहाज़ से भी ग़लत़ है, उन्हें ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअ़त के अह़काम की मन्सूख़ियत तस्लीम करना पड़ेगी, येह मानना ही पड़ेगा कि शम्बा के रोज़ दुन्यवी काम इन से पहले ह़राम न थे इन पर ह़राम हुए, येह भी इक़रार ना गुज़ीर होगा कि तौरैत में ह़ज़रते नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की उम्मत के लिये तमाम चौपाए ह़लाल होना बयान किया गया और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर बहुत से ह़राम कर दिये गए, इन उमूर के होते हुए नस्ख़ का इन्कार किस त़रह़ मुम्किन है। **मस्अला :** जिस त़रह़ आयत दूसरी आयत से मन्सूख़ होती है इसी त़रह़ ह़दीसे मुतवातिर से भी होती है। **मस्अला :** नस्ख़ कभी सिर्फ़ तिलावत का होता है कभी सिर्फ़ हुक्म का, कभी तिलावत व हुक्म दोनों का। बैहक़ी ने अबू उमामा से रिवायत की, कि एक अन्सारी सह़ाबी शब को तहज्जुद के लिये उठे और सूरए फ़ातिह़ा के बा'द जो सूरत हमेशा पढ़ा करते थे उस को पढ़ना चाहा लेकिन वोह बिल्कुल याद न आई और सिवाए "بِسْمِ اللّٰه" के कुछ न पढ़ सके, सुब्ह़ को दूसरे अस्ह़ाब से इस का ज़िक्र किया उन ह़ज़रात ने फ़रमाया हमारा भी येही ह़ाल है वोह सूरत हमें भी याद थी और अब हमारे ह़ाफ़िज़े में भी न रही, सब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, हुज़ूरे अक़रम ने फ़रमाया : आज शब वोह सूरत उठा ली गई उस के हुक्म व तिलावत दोनों मन्सूख़ हुए, जिन काग़ज़ों पर वोह लिखी गई थी उन पर नक़्श तक बाक़ी न रहे। **191 शाने नुज़ूल :** यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमारे पास आप ऐसी किताब लाइये जो आस्मान से एक बारगी नाज़िल हो, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **192 :** या'नी जो आयतें नाज़िल हो चुकी हैं उन के क़बूल करने में बे जा बह़्स करे और दूसरी आयतें त़लब करे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस सुवाल में मफ़्सदा (फ़साद) हो वोह बुज़ुर्गों के सामने पेश करना जाइज़ नहीं और सब से बड़ा मफ़्सदा येह है कि उस से ना फ़रमानी ज़ाहिर होती हो। **193 : शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद के बा'द यहूद की जमाअ़त ने ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से कहा कि अगर तुम ह़क़ पर होते तो तुम्हें शिकस्त न होती, तुम हमारे दीन की त़रफ़ वापस आ जाओ, ह़ज़रते अ़म्मार ने फ़रमाया तुम्हारे नज़्दीक अ़ह्द शिकनी कैसी है ? उन्हों ने कहा निहायत बुरी। आप ने फ़रमाया मैं ने अ़ह्द किया है कि ज़िन्दगी के आख़िर लम्ह़े तक सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से न फिरूंगा और कुफ़्र न इख़्तियार करूंगा और ह़ज़रते हुज़ैफ़ा ने फ़रमाया मैं राज़ी हुवा **अल्लाह** के रब होने, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के रसूल होने, इस्लाम के दीन होने, क़ुरआन के इमाम होने, का'बे के क़िब्ला होने, मोमिनीन के भाई होने से, फिर येह दोनों साह़िब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप को वाक़िए की ख़बर दी, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बेहतर किया और फ़लाह़ पाई। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **194 :** इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत जानने के बा'द यहूद का मुसल्मानों के कुफ़्र व इरतिदाद की तमन्ना करना और येह चाहना कि वोह ईमान से मह़रूम हो जाएं ह़सद था, ह़सद बड़ा ही ऐब है। **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़सद से बचो वोह नेकियों को इस त़रह़ खाता है जैसे आग ख़ुश्क लकड़ी को।" **मस्अला :** ह़सद ह़राम है। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स अपने मालो दौलत या असरो वजाहत से गुमराही व बे दीनी फैलाता हो तो उस के फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहने के लिये उस के ज़वाले ने'मत की तमन्ना ह़सद में दाख़िल नहीं और ह़राम भी नहीं।

www.dawateislami.net

النّصف

شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوۡا

चीज़ पर क़ादिर है और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो[195] और अपनी जानों के लिये

لِاَنۡفُسِكُمۡ مِّنۡ خَیۡرٍ تَجِدُوۡهُ عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां पाओगे बेशक अल्लाह तुम्हारे काम

بَصِیۡرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَ قَالُوۡا لَنۡ یَّدۡخُلَ الۡجَنَّةَ اِلَّا مَنۡ كَانَ هُوۡدًا اَوۡ نَصٰرٰی ؕ

देख रहा है और अहले किताब बोले हरगिज़ जन्नत में न जाएगा मगर वोह जो यहूदी या नसरानी हो[196]

تِلۡكَ اَمَانِیُّهُمۡ ؕ قُلۡ هَاتُوۡا بُرۡهَانَكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۱۱۱﴾ بَلٰی ۗ مَنۡ

येह उन की ख़याल बन्दियां हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील[197] अगर सच्चे हो हां क्यूं नहीं जिस ने

اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحۡسِنٌ فَلَهٗۤ اَجۡرُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ ۪ وَ لَا خَوۡفٌ

अपना मुंह झुकाया अल्लाह के लिये और वोह नेकोकार है[198] तो उस का नेग (बदला) उस के रब के पास है और उन्हें

عَلَیۡهِمۡ وَ لَا هُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۱۲﴾ؑ وَ قَالَتِ الۡیَهُوۡدُ لَیۡسَتِ النَّصٰرٰی عَلٰی ع ۱۴ ۳

न कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म[199] और यहूदी बोले नसरानी कुछ

شَیۡءٍ ۪ وَّ قَالَتِ النَّصٰرٰی لَیۡسَتِ الۡیَهُوۡدُ عَلٰی شَیۡءٍ ۙ وَّ هُمۡ یَتۡلُوۡنَ

नहीं और नसरानी बोले यहूदी कुछ नहीं[200] हालां कि वोह किताब

الۡكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیۡنَ لَا یَعۡلَمُوۡنَ مِثۡلَ قَوۡلِهِمۡ ۚ فَاللّٰهُ یَحۡكُمُ

पढ़ते हैं[201] इसी तरह जाहिलों ने उन की सी बात कही[202] तो अल्लाह क़ियामत

195 : मोमिनीन को यहूद से दर गुज़र का हुक्म देने के बा'द उन्हें अपने इस्लाहे नफ़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह फ़रमाता है। **196 :** या'नी यहूद कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ़ यहूदी दाख़िल होंगे और नसरानी कहते हैं कि फ़क़त़ नसरानी और येह मुसल्मानों को दीन से मुन्हरिफ़ करने के लिये कहते हैं, जैसे नस्ख़ वग़ैरा के लचर (बेहूदा) शुबुहात उन्हों ने इस उम्मीद पर पेश किये थे कि मुसल्मानों को अपने दीन में कुछ तरद्दुद हो जाए, इसी त़रह़ इन को जन्नत से मायूस कर के इस्लाम से फेरने की कोशिश करते हैं, चुनान्चे आख़िरे पारह में उन का येह मक़ूला मज़्कूर है : ''وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْنَصٰرٰى تَهْتَدُوْا'' (और किताबी बोले यहूदी या नसरानी हो जाओ राह पाओगे) अल्लाह तआला उन के इस ख़याल का रद फ़रमाता है। **197 : मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि नफ़ी के मुद्दई को भी दलील लाना ज़रूर है बिग़ैर इस के दा'वा बातिल व ना मस्मूअ़ (ना मक़्बूल) होगा। **198 :** ख़्वाह वोह किसी ज़माने, किसी नस्ल, किसी क़ौम का हो। **199 :** इस में इशारा है कि यहूदो नसारा का येह दा'वा कि जन्नत के फ़क़त़ वोही मालिक हैं बिल्कुल ग़लत़ है क्यूं कि दुख़ूले जन्नत मुरत्तब है अ़क़ीदए सह़ीह़ा व अ़मले सालेह़ पर और येह उन्हें मुयस्सर नहीं। **200 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा का वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया तो उ़लमाए यहूद आए और दोनों में मुनाज़रा शुरूअ़ हो गया, आवाज़ें बुलन्द हुईं शोर मचा, यहूद ने कहा कि नसारा का दीन कुछ नहीं और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और इन्जील शरीफ़ का इन्कार किया, इसी त़रह़ नसारा ने यहूद से कहा कि तुम्हारा दीन कुछ नहीं और तौरैत शरीफ़ व ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का इन्कार किया। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **201 :** या'नी बा वुजूद इल्म के उन्हों ने ऐसी जाहिलाना गुफ़्तगू की। हालां कि इन्जील शरीफ़ जिस को नसारा मानते हैं उस में तौरैत शरीफ़ व ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की नुबुव्वत की तस्दीक़ है, इसी त़रह़ तौरैत जिस

www.dawateislami.net

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ रहे हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन[203] जो

مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا

अल्लाह की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से[204] और उन की वीरानी में कोशिश करे[205] उन को न

كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّ لَهُمْ

पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुए उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है[206] और उन के लिये

فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾ وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ۗ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا

आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब[207] और पूरब व पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब अल्लाह ही का है तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह

فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ

(ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है बेशक अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है और बोले ख़ुदा ने अपने लिये औलाद रखी

को यहूदी मानते हैं उस में ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की नुबुव्वत और उन तमाम अह़काम की तस्दीक़ है जो आप को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अ़त़ा हुए। **202 :** उ़लमाए अहले किताब की त़रह़। उन जाहिलों ने जो न इ़ल्म रखते थे न किताब जैसा कि बुत परस्त, आतश परस्त वग़ैरा उन्हों ने हर एक दीन वाले की तक्ज़ीब शुरूअ़ की और कहा कि वोह कुछ नहीं, उन्हीं जाहिलों में से मुश्रिकीने अ़रब भी हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के दीन की शान में ऐसे ही कलिमात कहे। **203 : शाने नुज़ूल :** येह आयत बैतुल मक़्दिस की बे हुरमती के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि रूम के नसरानियों ने बनी इसराईल पर फ़ौज कशी की उन के मर्दाने कार आज़्मा को क़त्ल किया, ज़ुर्रिय्यत को क़ैद किया, तौरैत शरीफ़ को जलाया, बैतुल मक़्दिस को वीरान किया उस में नजासतें डालीं, ख़िन्ज़ीर ज़ब्ह़ किये مَعَاذَاللّٰه, बैतुल मक़्दिस ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी तक इसी वीरानी में रहा, आप के अ़ह्दे मुबारक में मुसल्मान ने इस को बिना (आबाद) किया। एक क़ौल येह भी है कि येह आयत मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को का'बे में नमाज़ पढ़ने से रोका था और जंगे हुदैबिया के वक़्त इस में नमाज़ व ह़ज से मन्अ़ किया था। **204 :** "ज़िक्र" नमाज़, ख़ुत़्बा, तस्बीह़, वा'ज़, ना'त शरीफ़ सब को शामिल है और "ज़िक्रुल्लाह" को मन्अ़ करना हर जगह बुरा है ख़ास कर मस्जिदों में जो इसी काम के लिये बनाई जाती हैं। **मस्अला :** जो शख़्स मस्जिद को ज़िक्र व नमाज़ से मुअ़त्त़ल कर दे वोह मस्जिद का वीरान करने वाला और बहुत ज़ालिम है। **205 : मस्अला :** मस्जिद की वीरानी जैसे ज़िक्र व नमाज़ के रोकने से होती है ऐसे ही इस की इमारत के नुक़्सान पहुंचाने और बे हुरमती करने से भी। **206 :** दुन्या में उन्हें येह रुस्वाई पहुंची कि क़त्ल किये गए, गिरिफ़्तार हुए, जला वत़न किये गए, ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी व उ़स्मानी में मुल्के शाम उन के क़ब्ज़े से निकल गया, बैतुल मक़्दिस से ज़िल्लत के साथ निकाले गए। **207 : शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ एक अंधेरी रात सफ़र में थे, जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सकी, हर एक शख़्स ने जिस त़रफ़ उस का दिल जमा नमाज़ पढ़ी, सुब्ह़ को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाल अ़र्ज़ किया तो येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिहते क़िब्ला मा'लूम न हो सके तो जिस त़रफ़ दिल जमे कि येह क़िब्ला है उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़े। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि येह उस मुसाफ़िर के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सुवारी पर नफ़्ल अदा करे उस की सुवारी जिस त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए उसी त़रफ़ उस की नमाज़ दुरुस्त है, बुख़ारी व मुस्लिम की अह़ादीस से येह साबित है। एक क़ौल येह है कि जब तह़्वीले क़िब्ला का हुक्म दिया गया तो यहूद ने मुसल्मानों पर त़ा'ना ज़नी की उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई बताया गया कि मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह का है, जिस त़रफ़ चाहे क़िब्ला मुअ़य्यन फ़रमाए किसी को ए'तिराज़ का क्या ह़क़। (خازن) एक क़ौल येह है कि येह आयत दुआ़ के ह़क़ में वारिद हुई, हुज़ूर से दरयाफ़्त किया गया कि किस त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ की जाए? उस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़क़ से गुरेज़ व फ़िरार में है और "اَيْنَمَا تُوَلُّوْا" (तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह है) का ख़ित़ाब उन लोगों को है जो ज़िक्रे इलाही से रोकते और मस्जिदों की वीरानी में सई करते हैं वोह दुन्या की रुस्वाई और अ़ज़ाबे आख़िरत से कहीं भाग नहीं सकते क्यूं कि मशरिक़ो मग़रिब सब अल्लाह का है जहां भागेंगे वोह गिरिफ़्त फ़रमाएगा। इस तक़्दीर पर "वज्हुल्लाह" के मा'ना ख़ुदा का क़ुर्ब

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

पाकी है उसे[208] बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[209] सब उस के हुज़ूर गरदन डाले हैं

بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का[210] और जब किसी बात का हुक्म फ़रमाए तो उस से येही फ़रमाता है कि हो जा

فَیَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ لَوْ لَا یُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِیْنَاۤ

वोह फ़ौरन हो जाती है[211] और जाहिल बोले[212] **अल्लाह** हम से क्यूं नहीं कलाम करता[213] या हमें कोई

اٰیَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ

निशानी मिले[214] इन से अगलों ने भी ऐसी ही कही इन की सी बात इन के उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَیَّنَّا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

एक से हैं[215] बेशक हम ने निशानियां खोल दीं यक़ीन वालों के लिये[216] बेशक हम ने तुम्हें ह़क़ के साथ भेजा

بَشِیْرًا وَّ نَذِیْرًا ۙ وَّ لَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِیْمِ ﴿۱۱۹﴾ وَ لَنْ تَرْضٰی

ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और तुम से दोज़ख़ वालों का सुवाल न होगा[217] और हरगिज़ तुम से

عَنْكَ الْیَهُوْدُ وَ لَا النَّصٰرٰی حَتّٰی تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَی اللّٰهِ

यहूद और नसारा राज़ी न होंगे जब तक तुम उन के दीन की पैरवी न करो[218] तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** ही की हिदायत

व हुज़ूर है। (ت) एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि अगर कुफ़्फ़ार ख़ानए का'बा में नमाज़ से मन्अ़ करें तो तुम्हारे लिये तमाम ज़मीन मस्जिद बना दी गई है जहां से चाहो क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। **208 : शाने नुज़ूल :** यहूद ने ह़ज़रते उ़ज़ैर (عَلَیْهِ السَّلَام) को और नसारा ने ह़ज़रते मसीह़ (عَلَیْهِ السَّلَام) को ख़ुदा का बेटा कहा, मुश्रिकीने अ़रब ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताया उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई फ़रमाया : "سُبْحٰنَهٗ" वोह पाक है इस से कि उस के औलाद हो, उस की त़रफ़ औलाद की निस्बत करना उस को ऐ़ब लगाना और बे अदबी है, ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : इब्ने आदम ने मुझे गाली दी, मेरे लिये औलाद बताई, मैं औलाद और बीवी से पाक हूं। **209 :** और मम्लूक होना औलाद होने के मुनाफ़ी है, जब तमाम जहान उस का मम्लूक है तो कोई औलाद कैसे हो सकता है। **मस्अला :** अगर कोई अपनी औलाद का मालिक हो जाए वोह उसी वक़्त आज़ाद हो जाएगी। **210 :** जिस ने बिग़ैर किसी मिसाले साबिक़ के अश्या को अ़दम से वुजूद अ़त़ा फ़रमाया। **211 :** या'नी काएनात उस के इरादा फ़रमाते ही वुजूद में आ जाती है। **212 :** या'नी अहले किताब या मुश्रिकीन। **213 :** या'नी बे वासित़ा ख़ुद क्यूं नहीं फ़रमाता जैसा कि मलाएका व अम्बिया से कलाम फ़रमाता है। येह उन का कमाले तकब्बुर और निहायत सरकशी थी, उन्हों ने अपने आप को अम्बिया व मलाएका के बराबर समझा। **शाने नुज़ूल :** राफ़ेअ़ बिन ख़ुज़ैमा ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से कहा : अगर आप **अल्लाह** के रसूल हैं तो **अल्लाह** से फ़रमाइये वोह हम से कलाम करे हम ख़ुद सुनें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **214 :** येह उन आयात का इ़नादन इन्कार है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अ़त़ा फ़रमाईं। **215 :** कोरी व नाबीनाई और कुफ़्र व क़सावत में। इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर फ़रमाई गई कि आप उन की सरकशी और मुआ़निदाना (दुश्मनाना) इन्कार से रन्जीदा न हों पिछले कुफ़्फ़ार भी अम्बिया के साथ ऐसा ही करते थे। **216 :** या'नी आयाते क़ुरआनी व मो'जिज़ाते बाहिरात इन्साफ़ वाले को सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का यक़ीन दिलाने के लिये काफ़ी हैं मगर जो त़ालिबे यक़ीन न हो वोह दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठा सकता। **217 :** कि वोह क्यूं ईमान न लाए ? इस लिये कि आप ने अपना फ़र्ज़े तब्लीग़ पूरे तौ़र पर अदा फ़रमा दिया। **218 :** और येह

www.dawateislami.net

هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِیْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

हिदायत है[219] और (ऐ सुनने वाले कसे बाशद) अगर तू उन की ख़्वाहिशों का पैरव हुवा बा'द इस के कि तुझे इल्म आ चुका

مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ﴿۱۲۰﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

तो अल्लाह से तेरा कोई बचाने वाला न होगा और न मददगार[220] जिन्हें हम ने किताब दी है

وقف منزل

یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓىِٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ

वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं वोही इस पर ईमान रखते हैं और जो इस के मुन्किर हों तो वोही

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتُ

ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाले) हैं[221] ऐ औलादे या'क़ूब याद करो मेरा एहसान जो मैं ने

عَلَیْكُمْ وَاَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ

तुम पर किया और वोह जो मैं ने उस ज़माने के सब लोगों पर तुम्हें बड़ाई दी और डरो उस दिन से कि कोई

نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَیْـًٔا وَّلَا یُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ

जान दूसरे का बदला न होगी और न उस को कुछ ले कर छोड़ें और न काफ़िर को कोई सिफ़ारिश नफ़्अ़ दे[222]

وَّلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ

और न उन की मदद हो और जब[223] इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आज़्माया[224] तो उस ने वोह पूरी कर दिखाई[225] फ़रमाया

اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ

मैं तुम्हें लोगों का पेशवा बनाने वाला हूं अ़र्ज़ की और मेरी औलाद से फ़रमाया मेरा अ़हद

ना मुम्किन क्यूं कि वोह बातिल पर हैं। **219 :** वोही क़ाबिले इत्तिबाअ़ है और उस के सिवा हर एक राह बातिल व ज़लालत। **220 :** येह ख़िताब उम्मते मुहम्मदिय्यह को है कि जब तुम ने जान लिया कि सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم तुम्हारे पास हक़ व हिदायत लाए तो तुम हरगिज़ कुफ़्फ़ार की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ़ न करना, अगर ऐसा किया तो तुम्हें कोई अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। (خازن) **221 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अहले सफ़ीना के बाब में नाज़िल हुई जो जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हाज़िरे बारगाहे रिसालत हुए थे, उन की ता'दाद चालीस थी, बत्तीस अहले हबशा और आठ शामी राहिब, उन में बहीरा राहिब भी थे। मा'ना येह हैं कि दर हक़ीक़त तौरैत शरीफ़ पर ईमान लाने वाले वोही हैं जो इस की तिलावत का हक़ अदा करते हैं और बिग़ैर तहरीफ़ व तब्दील पढ़ते हैं और इस के मा'ना समझते और मानते हैं और इस में हुज़ूर सय्यिदे काएनात मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर हुज़ूर पर ईमान लाते हैं और जो हुज़ूर के मुन्किर होते हैं वोह तौरैत शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते। **222 :** इस में यहूद का रद है जो कहते थे हमारे बाप दादा बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हमें शफ़ाअ़त कर के छुड़ा लेंगे, उन्हें मायूस किया जाता है कि शफ़ाअ़त काफ़िर के लिये नहीं। **223 :** हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की विलादत सर ज़मीने अहवाज़ में ब मक़ामे सूस हुई, फिर आप के वालिद आप को बाबिल मुल्के नमरूद में ले आए, यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अ़रब सब आप के फ़ज़्लो शरफ़ के मो'तरिफ़ और आप की नस्ल में होने पर फ़ख़्र करते हैं, अल्लाह तआ़ला ने आप के वोह हालात बयान फ़रमाए जिन से सब पर इस्लाम का क़बूल करना लाज़िम हो जाता है क्यूं कि जो चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने आप पर वाजिब कीं वोह इस्लाम के ख़साइस में से हैं। **224 :** ख़ुदाई आज़्माइश येह है कि बन्दे पर कोई पाबन्दी लाज़िम फ़रमा कर दूसरों पर उस के खरे खोटे होने का इज़्हार कर दे। **225 :** जो बातें अल्लाह तआ़ला

www.dawateislami.net

عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ

ज़ालिमों को नहीं पहुंचता[226] और याद करो जब हम ने इस घर को[227] लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया[228] और

اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ وَ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤی اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ اَنْ

इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ[229] और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि

طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآئِفِیْنَ وَ الْعٰكِفِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾ وَ اِذْ قَالَ

मेरा घर खूब सुथरा करो तवाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह त़रह के फलों से रोज़ी दे जो

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَ مَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِیْلًا ثُمَّ

इन में से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं[230] फ़रमाया और जो काफ़िर हुवा थोड़ा बरत्ने को उसे भी दूंगा फिर

اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰی عَذَابِ النَّارِ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَ اِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ

उसे अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ मजबूर करूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है पलटने की और जब उठाता था इब्राहीम

الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَیْتِ وَ اِسْمٰعِیْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ

इस घर की नीवें (बुन्यादें) और इस्माईल येह कहते हुए कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा[231] बेशक तू ही है

ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर आज़्माइश के लिये वाजिब की थीं उन में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं, क़तादा का क़ौल है कि वोह मनासिके ह़ज हैं। मुजाहिद ने कहा इस से वोह दस चीज़ें मुराद हैं जो अगली आयात में मज़्कूर हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास का एक क़ौल येह है कि वोह दस चीज़ें येह हैं : (1) मूंछें कतरवाना (2) कुल्ली करना (3) नाक में सफ़ाई के लिये पानी इस्ति'माल करना (4) मिस्वाक करना (5) सर में मांग निकालना (6) नाखुन तरश्वाना (7) बग़ल के बाल दूर करना (8) मूए ज़ेरे नाफ़ की सफ़ाई (9) ख़तना (10) पानी से इस्तिन्जा करना। येह सब चीज़ें ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर वाजिब थीं और हम पर इन में से बा'ज़ वाजिब हैं बा'ज़ सुन्नत। **226 मस्अला :** या'नी आप की औलाद में जो ज़ालिम (काफ़िर) हैं वोह इमामत का मन्सब न पाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर मुसल्मानों का पेश्वा नहीं हो सकता और मुसल्मानों को उस का इत्तिबाअ़ जाइज़ नहीं। **227 :** "बैत" से का'बा शरीफ़ मुराद है और इस में तमाम ह़रम शरीफ़ दाख़िल है। **228 :** अम्न बनाने से येह मुराद है कि ह़रमे का'बा में क़त्लो ग़ारत ह़राम है या येह कि वहां शिकार तक को अम्न है यहां तक कि ह़रम शरीफ़ में शेर भेड़िये भी शिकार का पीछा नहीं करते छोड़ कर लौट जाते हैं। एक क़ौल येह है कि मोमिन इस में दाख़िल हो कर अ़ज़ाब से मामून हो जाता है। "ह़रम" को ह़रम इस लिये कहा जाता है कि इस में क़त्ल, ज़ुल्म, शिकार ह़राम व मम्नूअ़ है। (احمدی) अगर कोई मुजरिम भी दाख़िल हो जाए तो वहां उस से तअ़र्रुज़ न किया जाएगा। (مدارک) **229 :** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बिना (ता'मीर) फ़रमाई और उस में आप के क़दम मुबारक का निशान था, उस को नमाज़ का मक़ाम बनाने का अम्र इस्तिह़बाब के लिये है। एक क़ौल येह भी है कि इस नमाज़ से त़वाफ़ की दो रक्अ़तें मुराद हैं। (احمدی وغیرہ) **230 :** चूंकि इमामत के बाब में "لَايَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِيْنَ" (मेरा अ़हद ज़ालिमों को नहीं पहुंचता) इर्शाद हो चुका था इस लिये ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस दुआ़ में मोमिनीन को ख़ास फ़रमाया और येही शाने अदब थी, **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि रिज़्क़ सब को दिया जाएगा मोमिन को भी काफ़िर को भी लेकिन काफ़िर का रिज़्क़ थोड़ा है या'नी सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी में वोह बहरा मन्द हो सकता है। **231 :** पहली मरतबा का'बए मुअ़ज़्ज़मा की बुन्याद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने रखी और बा'दे तूफ़ाने नूह फिर

www.dawateislami.net

السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَ اجۡعَلۡنَا مُسۡلِمَيۡنِ لَكَ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِنَاۤ

सुनता जानता ऐ रब हमारे और कर हमें तेरे हुज़ूर गरदन रखने वाले[232] और हमारी औलाद में से

اُمَّةً مُّسۡلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبۡ عَلَيۡنَا ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ

एक उम्मत तेरी फ़रमां बरदार और हमें इबादत के क़ाइदे बता और हम पर अपनी रहमत के साथ रुजूअ़ फ़रमा[233] बेशक तू ही है

التَّوَّابُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۲۸﴾ رَبَّنَا وَابۡعَثۡ فِيۡهِمۡ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ

बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान ऐ रब हमारे और भेज इन में[234] एक रसूल इन्हीं में से कि इन पर तेरी आयतें तिलावत

اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَيُزَكِّيۡهِمۡ ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ

फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब[235] और पुख़्ता इल्म सिखाए[236] और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे[237] बेशक तू ही है ग़ालिब

الۡحَكِيۡمُ ﴿۱۲۹﴾ وَمَنۡ يَّرۡغَبُ عَنۡ مِّلَّةِ اِبۡرٰهٖمَ اِلَّا مَنۡ سَفِهَ نَفۡسَهٗ ؕ وَلَقَدِ ١٥ ع ٨ ١٥

हिक्मत वाला और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेरे[238] सिवा उस के जो दिल का अहमक़ है और बेशक ज़रूर

हज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام ने उसी बुन्याद पर ता'मीर फ़रमाई, येह ता'मीर ख़ास आप के दस्ते मुबारक से हुई, इस के लिये पथ्थर उठा कर लाने की ख़िदमत व सआदत हज़रते इस्माईल عَلَيۡهِ السَّلَام को मुयस्सर हुई, दोनों हज़रात ने उस वक़्त येह दुआ की, कि या रब हमारी येह ताअ़त व ख़िदमत क़बूल फ़रमा। **232 :** वोह हज़रात **अल्लाह** तआला के मुतीओ मुख़्लिस बन्दे थे फिर भी येह दुआ इस लिये है कि ताअ़त व इख़्लास में और ज़ियादा कमाल की तलब रखते हैं, जौक़े ताअ़त सैर नहीं होता। سُبۡحٰنَ اللّٰه : فكرِ ہر كس بقدرِ ہمّتِ اُوست (हर कोई अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ ही ग़ौरो फ़िक्र करता है)। **233 :** हज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيۡهِمَا السَّلَام मा'सूम हैं आप की तरफ़ से तो येह तवाज़ोअ़ है और **अल्लाह** वालों के लिये ता'लीम है। **मस्अला :** कि येह मक़ाम क़बूले दुआ का है और यहां दुआ व तौबा सुन्नते इब्राहीमी है। **234 :** या'नी हज़रते इब्राहीम व हज़रते इस्माईल की ज़ुर्रिय्यत में। येह दुआ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم के लिये थी, या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ता'मीर की अ़ज़ीम ख़िदमत बजा लाने और तौबा व इस्तिग़फ़ार करने के बा'द हज़रते इब्राहीम व इस्माईल ने येह दुआ की, कि या रब ! अपने महबूब नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم को हमारी नस्ल में ज़ाहिर फ़रमा और येह शरफ़ हमें इनायत कर, येह दुआ क़बूल हुई और इन दोनों साहिबों की नस्ल में हुज़ूर के सिवा कोई नबी नहीं हुवा, औलादे हज़रते इब्राहीम में बाक़ी अम्बिया हज़रते इस्हाक़ की नस्ल से हैं। **मस्अला :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने अपना मीलाद शरीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाया, इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की, कि हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** तआला के नज़्दीक "ख़ातमुन्नबिय्यीन" लिखा हुवा था ब हाले कि हज़रते आदम (عَلَيۡهِ السَّلَام) के पुतला का ख़मीर हो रहा था, मैं तुम्हें अपने इब्तिदाए हाल की ख़बर दूं, मैं दुआए इब्राहीम हूं, बिशारते ईसा हूं, अपनी वालिदा के उस ख़्वाब की ता'बीर हूं जो उन्हों ने मेरी विलादत के वक़्त देखा और उन के लिये एक नूरे सातेअ़ (फैलता हुवा नूर) ज़ाहिर हुवा जिस से मुल्के शाम के ऐवान व क़ुसूर उन के लिये रोशन हो गए। इस हदीस में दुआए इब्राहीम से येही दुआ मुराद है जो इस आयत में मज़्कूर है, **अल्लाह** तआला ने येह दुआ क़बूल फ़रमाई और आख़िर ज़माने में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाया اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحۡسَانِهٖ (جمل وخازن) **235 :** इस किताब से क़ुरआने पाक और इस की ता'लीम से इस के हक़ाइक़ व मआनी का सिखाना मुराद है। **236 :** हिक्मत के मा'ना में बहुत अक़्वाल हैं बा'ज़ के नज़्दीक हिक्मत से फ़िक़्ह मुराद है, क़तादा का क़ौल है कि हिक्मत सुन्नत का नाम है, बा'ज़ कहते हैं कि हिक्मत इल्मे अहकाम को कहते हैं, ख़ुलासा येह कि हिक्मत इल्मे असरार है। **237 :** सुथरा करने के येह मा'ना हैं कि लौहे नुफ़ूस व अरवाह को कदूरात (आलूदगियों) से पाक कर के हिजाब उठा दें और आईनए इस्ति'दाद की जिला फ़रमा कर इन्हें इस क़ाबिल कर दें कि इन में हक़ाइक़ की जल्वा गरी हो सके। **238 शाने नुज़ूल :** उलमाए यहूद में से हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने इस्लाम लाने के बा'द अपने दो भतीजों मुहाजिर व सलमा को इस्लाम की दा'वत दी और उन से फ़रमाया कि तुम को मा'लूम है कि **अल्लाह** तआला ने तौरैत में फ़रमाया है कि मैं औलादे इस्माईल से एक नबी पैदा करूंगा जिन का नाम अहमद होगा जो उन पर ईमान लाएगा राहयाब (रास्ता पाने वाला) होगा, जो उन पर ईमान न लाएगा मल्ऊ़न है, येह सुन कर सलमा ईमान ले आए और मुहाजिर ने इस्लाम से इन्कार कर दिया, इस पर **अल्लाह** तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर ज़ाहिर कर दिया कि जब हज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام ने ख़ुद उस रसूले मुअ़ज़्ज़म के मब्ऊ़स होने की दुआ फ़रमाई तो जो उन के दीन

www.dawateislami.net

اصْطَفَيْنٰهُ فِی الدُّنْیَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ

हम ने दुन्या में उसे चुन लिया[239] और बेशक वोह आखिरत में हमारे खास कुर्ब की काबिलिय्यत वालों में है[240] जब कि उस से

لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿١٣١﴾ وَ وَصّٰی بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ

उस के रब ने फ़रमाया गरदन रख अर्ज़ की मैं ने गरदन रखी उस के लिये जो रब है सारे जहान का और इसी दीन की वसिय्यत की इब्राहीम ने

بَنِیْهِ وَ یَعْقُوْبُ ؕ یٰبَنِیَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰی لَكُمُ الدِّیْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا

अपने बेटों को और या'कूब ने कि ऐ मेरे बेटो ! बेशक **अल्लाह** ने येह दीन तुम्हारे लिये चुन लिया तो न मरना

وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ؕ ﴿١٣٢﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ یَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ

मगर मुसल्मान बल्कि तुम में के खुद मौजूद थे[241] जब या'कूब को मौत आई जब कि

قَالَ لِبَنِیْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ

उस ने अपने बेटों से फ़रमाया मेरे बा'द किस की पूजा करोगे बोले हम पूजेंगे उसे जो खुदा है आप का और आप के

اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ وَّ نَحْنُ لَهٗ

वालिदों इब्राहीम व इस्माईल[242] व इस्हाक़ का एक खुदा और हम उस के

مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا

हुज़ूर गरदन रखे हैं येह[243] एक उम्मत है कि गुज़र चुकी[244] उन के लिये है जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिये है जो

كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا

तुम कमाओ और उन के कामों की तुम से पुरसिश न होगी और किताबी बोले[245] यहूदी

से फिरे वोह हज़रते इब्राहीम के दीन से फिरा। इस में यहूदो नसारा व मुश्रिकीने अरब पर ता'रीज़ है जो अपने आप को इफ़्तिख़ारन (फ़ख्र करते हुए) हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ मन्सूब करते थे, जब उन के दीन से फिर गए तो शराफ़त कहां रही ? **239 :** रिसालत व खुल्लत के साथ रसूल व ख़लील बनाया। **240 :** जिन के लिये बुलन्द दरजे हैं। तो जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام करामते दारैन के जामेअ़ हैं तो उन की तरीक़त व मिल्लत से फिरने वाला ज़रूर नादान व अहमक़ है। **241 : शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने कहा था कि हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी वफ़ात के रोज़ अपनी औलाद को यहूदी रहने की वसिय्यत की थी, **अल्लाह** तआला ने उन के इस बोहतान के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (خازن) मा'ना येह हैं कि ऐ बनी इसराईल ! तुम्हारे पहले लोग हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के आख़िर वक़्त उन के पास मौजूद थे जिस वक़्त उन्हों ने अपने बेटों को बुला कर उन से इस्लाम व तौहीद का इक़रार लिया था और येह इक़रार लिया था जो आयत में मज़्कूर है। **242 :** हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के आबा में दाख़िल करना तो इस लिये है कि आप उन के चचा हैं और चचा ब मन्ज़िला बाप के होता है जैसा कि हदीस शरीफ़ में है। और आप का नाम हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से पहले ज़िक्र फ़रमाना दो वज्ह से है **एक** तो येह कि आप हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام से चौदह साल बड़े हैं, **दूसरे** इस लिये कि आप सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के जद हैं **243 :** या'नी हज़रते इब्राहीम व या'कूब عَلَيْهِمَا السَّلَام और इन की मुसल्मान औलाद। **244 :** ऐ यहूद ! तुम इन पर बोहतान मत उठाओ। **245 : शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत रुअसाए यहूद और नजरान

www.dawateislami.net

اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ

या नसरानी हो जाओ राह पाओगे तुम फ़रमाओ बल्कि हम तो इब्राहीम का दीन लेते हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिकों

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤى

से न थे[246] यूं कहो कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो उतारा गया

اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى

इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब और इन की औलाद पर और जो अ़त़ा किये गए मूसा

وَعِيْسٰى وَمَاۤ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

व ईसा और जो अ़त़ा किये गए बाक़ी अम्बिया अपने रब के पास से हम इन में किसी पर ईमान में फ़र्क़

مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ

नहीं करते और हम **अल्लाह** के हुज़ूर गरदन रखे हैं फिर अगर वोह भी यूंही ईमान लाए जैसा तुम लाए जब तो

اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ

वोह हिदायत पा गए और अगर मुंह फेरें तो वोह निरी ज़िद में हैं[247] तो ऐ मह़बूब अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾ ؕ صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫

सुनता जानता[248] हम ने **अल्लाह** की रैनी (रंगाई) ली[249] और **अल्लाह** से बेहतर किस की रैनी (रंगाई)

के नसरानियों के जवाब में नाज़िल हुई, यहूदियों ने तो मुसल्मानों से येह कहा था कि ह़ज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं और तौरैत तमाम किताबों से अफ़्ज़ल है और यहूदी दीन तमाम अद्यान से आ'ला है, इस के साथ उन्हों ने ह़ज़रत सय्यिदे काएनात मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन्जील शरीफ़ व क़ुरआन शरीफ़ के साथ कुफ़्र कर के मुसल्मानों से कहा था कि यहूदी बन जाओ, इसी त़रह़ नसरानियों ने भी अपने ही दीन को ह़क़ बता कर मुसल्मानों से नसरानी होने को कहा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **246 :** इस में यहूदो नसारा वग़ैरा पर ता'रीज़ है कि तुम मुश्रिक हो इस लिये मिल्लते इब्राहीम पर होने का दा'वा जो तुम करते हो वोह बातिल है। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है कि वोह उन यहूदो नसारा से येह कह दें "قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا...الْاٰيَة" **247 :** और उन में त़लबे ह़क़ का शाएबा भी नहीं। **248 :** येह **अल्लाह** की त़रफ़ से ज़िम्मा है कि वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएगा और इस में ग़ैब की ख़बर है कि आयिन्दा ह़ासिल होने वाली फ़त्ह़ो ज़फ़र का पहले से इज़्हार फ़रमाया, इस में नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है कि **अल्लाह** तआ़ला का येह ज़िम्मा पूरा हुवा और येह ग़ैबी ख़बर सादिक़ हो कर रही, कुफ़्फ़ार के ह़सद व इ़नाद और उन के मकाइद (मक्रो फ़रेब) से हुज़ूर को ज़रर न पहुंचा, हुज़ूर की फ़त्ह़ हुई, बनी क़ुरैज़ा क़त्ल हुए, बनी नज़ीर जला वत़न किये गए, यहूदो नसारा पर जिज़्या मुक़र्रर हुवा। **249 :** या'नी जिस त़रह़ रंग कपड़े के ज़ाहिरो बात़िन में नुफ़ूज़ (सरायत) करता है इसी त़रह़ दीने इलाही के ए'तिक़ादाते ह़क़्क़ा हमारे रगो पै में समा गए, हमारा ज़ाहिरो बात़िन क़ल्बो क़ालिब उस के रंग में रंग गया, हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह नुफ़ूस को पाक करता है, ज़ाहिर में उस के आसार औज़ाअ़ व अफ़्आ़ल से नुमूदार होते हैं। नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को ग़ोत़ा देते और कहते कि अब येह सच्चा नसरानी हुवा, इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं।

www.dawateislami.net

وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِی اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ

और हम उसी को पूजते हैं तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के बारे में हम से झगड़ते हो[250] हालां कि वोह हमारा भी मालिक और तुम्हारा भी[251]

وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ ۙ اَمْ

और हमारी करनी हमारे साथ और तुम्हारी करनी तुम्हारे साथ और हम निरे उसी के हैं[252] बल्कि

تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ

तुम यूं कहते हो कि इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब और इन के बेटे

كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ

यहूदी या नसरानी थे तुम फ़रमाओ क्या तुम्हें इल्म ज़ियादा है या **अल्लाह** को[253] और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

जिस के पास **अल्लाह** की तरफ़ की गवाही हो और वोह उसे छुपाए[254] और ख़ुदा तुम्हारे कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْــَٔلُوْنَ

वोह एक गुरोह है कि गुज़र गया उन के लिये उन की कमाई और तुम्हारे लिये तुम्हारी कमाई और उन के कामों की

عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع ١٦

तुम से पुरसिश न होगी

250 : शाने नुज़ूल : यहूद ने मुसल्मानों से कहा हम पहली किताब वाले हैं, हमारा क़िब्ला पुराना है, हमारा दीन क़दीम है, अम्बिया हम में से हुए हैं, अगर सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم नबी होते तो हम में से ही होते, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **251 :** उसे इख़्तियार है कि अपने बन्दों में से जिसे चाहे नबी बनाए, अ़रब में से हो या दूसरों में से। **252 :** किसी दूसरे को **अल्लाह** के साथ शरीक नहीं करते और इबादतो ताअ़त ख़ालिस उसी के लिये करते हैं तो हम मुस्तहिक़्क़े इकराम हैं। **253 :** इस का क़त्ई जवाब येह है कि **अल्लाह** ही आ'लम (ज़ियादा इल्म वाला) है तो जब उस ने फ़रमाया : "مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا وَّلَا نَصْرَانِیًّا" (इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी) तो तुम्हारा येह क़ौल बातिल हुवा। **254 :** येह यहूद का हाल है, जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की शहादतें छुपाईं जो तौरैत शरीफ़ में मज़्कूर थीं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के नबी हैं और उन की येह ना'त व सिफ़ात हैं और हज़रते इब्राहीम मुसल्मान हैं और दीने मक़्बूल इस्लाम है न यहूदिय्यत व नसरानिय्यत।

www.dawateislami.net

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا

अब कहेंगे[255] बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसल्मानों को उन के उस क़िब्ले से जिस पर

عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ

थे[256] तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) सब **अल्लाह** ही का है[257] जिसे चाहे सीधी राह

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى

चलाता है और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर

النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ

गवाह हो[258] और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह[259] और ऐ महबूब तुम पहले जिस

255 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जब बजाए बैतुल मक़्दिस के का'बए मुअज़्ज़मा को क़िब्ला बनाया गया इस पर उन्हों ने ता'न किये क्यूं कि येह उन्हें ना गवार था और वोह नस्ख़ के क़ाइल न थे। एक क़ौल पर येह आयत मुश्रिकीने मक्का के और एक क़ौल पर मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई और येह भी हो सकता है कि इस से कुफ़्फ़ार के येह सब गुरौह मुराद हों क्यूं कि ता'नो तश्नीअ में सब शरीक थे और कुफ़्फ़ार के ता'न करने से क़ब्ल क़ुरआने पाक में इस की ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बरों में से है। ता'न करने वालों को बे वुक़ूफ़ इस लिये कहा गया कि वोह निहायत वाज़ेह बात पर मो'तरिज़ हुए बा वुजूदे कि अम्बियाए साबिक़ीन ने नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां के ख़साइस में आप का लक़ब ज़ुल क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाला) ज़िक्र फ़रमाया और तह्वीले क़िब्ला (क़िब्ले का तब्दील होना) उस की दलील है कि येही वोह नबी हैं जिन की पहले अम्बिया ख़बर देते आए! ऐसे रोशन निशान से फ़ाएदा न उठाना और मो'तरिज़ होना कमाले हमाक़त है। **256 :** क़िब्ला उस जिहत को कहते हैं जिस की तरफ़ आदमी नमाज़ में मुंह करता है, यहां क़िब्ला से बैतुल मक़्दिस मुराद है। **257 :** उसे इख़्तियार है जिसे चाहे क़िब्ला बनाए किसी को क्या जाए ए'तिराज़! बन्दे का काम फ़रमां बरदारी है। **258 :** दुन्या व आख़िरत में। **मस्अला :** दुन्या में तो येह कि मुसल्मान की शहादत मोमिन काफ़िर सब के हक़ में शरअन मो'तबर है और काफ़िर की शहादत मुसल्मान पर मो'तबर नहीं। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि इस उम्मत का इज्माअ हुज्जते लाज़िमुल क़बूल है। **मस्अला :** अम्वात के हक़ में भी इस उम्मत की शहादत मो'तबर है रहमत व अज़ाब के फ़िरिश्ते इस के मुताबिक़ अमल करते हैं। सिहाह की हदीस में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने एक जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की ता'रीफ़ की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई, फिर दूसरा जनाज़ा गुज़रा सहाबा ने उस की बुराई की हुज़ूर ने फ़रमाया : वाजिब हुई। हज़रते उमर ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर क्या चीज़ वाजिब हुई? फ़रमाया : पहले जनाज़े की तुम ने ता'रीफ़ की उस के लिये जन्नत वाजिब हुई, दूसरे की तुम ने बुराई बयान की उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हुई, तुम ज़मीन में **अल्लाह** के शुहदा (गवाह) हो, फिर हुज़ूर ने येह आयत तिलावत फ़रमाई। **मस्अला :** येह तमाम शहादतें सुलहाए उम्मत और अहले सिद्क़ के साथ ख़ास हैं और इन के मो'तबर होने के लिये ज़बान की निगह दाश्त शर्त है। जो लोग ज़बान की एहतियात नहीं करते और बे जा ख़िलाफ़े शरअ कलिमात उन की ज़बान से निकलते हैं और नाहक़ ला'नत करते हैं सिहाह की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत न वोह शाफ़ेअ होंगे न शाहिद। इस उम्मत की एक शहादत येह भी है कि आख़िरत में जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन जम्अ होंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा : क्या तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से डराने और अहकाम पहुंचाने वाले नहीं आए? तो वोह इन्कार करेंगे और कहेंगे कोई नहीं आया। हज़राते अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा। वोह अर्ज़ करेंगे कि येह झूटे हैं हम ने इन्हें तब्लीग़ की, इस पर उन से اِقَامَةً لِّلْحُجَّة दलील तलब की जाएगी! वोह अर्ज़ करेंगे कि उम्मते मुहम्मदिय्यह हमारी शाहिद है, येह उम्मत पैग़म्बरों की शहादत देगी कि इन हज़रात ने तब्लीग़ फ़रमाई, इस पर गुज़श्ता उम्मत के कुफ़्फ़ार कहेंगे इन्हें क्या मा'लूम येह हम से बा'द हुए थे, दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा : तुम कैसे जानते हो? येह अर्ज़ करेंगे या रब! तूने हमारी तरफ़ अपने रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को भेजा, क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया, उन के ज़रीए से हम क़त्ई व यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि हज़राते अम्बिया ने फ़र्ज़े तब्लीग़ अ'ला वज्हिल कमाल अदा किया। फिर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से आप की उम्मत की निस्बत दरयाफ़्त फ़रमाया जाएगा, हुज़ूर उन की तस्दीक़ फ़रमाएंगे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अश्याए मा'रूफ़ा में शहादत तसामोअ (सुनने) के साथ भी मो'तबर है या'नी जिन चीज़ों का इल्मे यक़ीनी सुनने से हासिल हो उस पर भी शहादत दी जा सकती है। **259 :** उम्मत को तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत्तिलाअ के ज़रीए से अहवाले उमम व तब्लीग़े अम्बिया का इल्मे क़त्ई व यक़ीनी हासिल है और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ब करमे इलाही नूरे नुबुव्वत से हर शख़्स के हाल और उस

كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ

क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाउं फिर जाता है[260]

وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ

और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की और **अल्लाह** की शान नहीं

لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾ قَدْ نَرٰى

कि तुम्हारा ईमान अकारत (ज़ाएअ़) करे[261] बेशक **अल्लाह** आदमियों पर बहुत मेहरबान मेहर (रहम) वाला है हम देख रहे हैं

تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ

बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना[262] तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसल्मानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की त़रफ़ करो[263]

وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَ مَا اللّٰهُ

और वोह जिन्हें किताब मिली है ज़रूर जानते हैं कि येह उन के रब की त़रफ़ से ह़क़ है[264] और **अल्लाह** उन के

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَ لَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ

कौतकों (बुरे आ'माल) से बे ख़बर नहीं और अगर तुम उन किताबियों के पास हर निशानी ले कर

की ह़क़ीक़ते ईमान और आ'माले नेको बद और इख़्लासो निफ़ाक़ सब पर मुत्तलअ़ हैं। **मस्अला :** इसी लिये हुज़ूर की शहादत दुन्या में ब हुक्मे शरअ़ उम्मत के ह़क़ में मक़्बूल है। येही वज्ह है कि हुज़ूर ने अपने ज़माने के ह़ाज़िरीन के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया मसलन सह़ाबा व अज़्वाज व अहले बैत के फ़ज़ाइलो मनाक़िब या ग़ाइबों और बा'द वालों के लिये मिस्ल ह़ज़रते उवैस व इमाम महदी वग़ैरा के, उस पर ए'तिक़ाद वाजिब है। **मस्अला :** हर नबी को उन की उम्मत के आ'माल पर मुत्तलअ़ किया जाता है ताकि रोज़े क़ियामत शहादत दे सकें चूंकि हमारे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शहादत आ़म होगी इस लिये हुज़ूर तमाम उम्मतों के अह़वाल पर मुत्तलअ़ हैं। **फ़ाएदा :** यहां शहीद ब मा'ना मुत्तलअ़ भी हो सकता है क्यूं कि शहादत का लफ़्ज़ इल्म व इत्तिलाअ़ के मा'ना में भी आया है قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْد (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : और **अल्लाह** हर चीज़ पर गवाह है)। **260 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पहले का'बे की त़रफ़ (मुंह कर के) नमाज़ पढ़ते थे, बा'दे हिजरत बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुवा, सतरह महीने के क़रीब इस त़रफ़ नमाज़ पढ़ी, फिर का'बे शरीफ़ की त़रफ़ मुंह करने का हुक्म हुवा। इस तह़वील (क़िब्ला तब्दील करने) की एक येह ह़िक्मत इर्शाद हुई कि इस से मोमिन व काफ़िर में फ़र्क़ व इम्तियाज़ हो जाएगा, चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **261 शाने नुज़ूल :** बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ने के ज़माने में जिन सह़ाबा ने वफ़ात पाई उन के रिश्तेदारों ने तह़वीले क़िब्ला के बा'द उन की नमाज़ों का हुक्म दरयाफ़्त किया ! इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इत्मीनान दिलाया गया कि उन की नमाज़ें ज़ाएअ़ नहीं, उन पर सवाब मिलेगा। **फ़ाएदा :** नमाज़ को ईमान से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि इस की अदा और ब जमाअ़त पढ़ना दलीले ईमान है। **262 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को का'बे का क़िब्ला बनाया जाना पसन्दे ख़ातिर (मह़बूब) था और हुज़ूर इस उम्मीद में आस्मान की त़रफ़ नज़र फ़रमाते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई, आप नमाज़ ही में का'बे की त़रफ़ फिर गए मुसल्मानों ने भी आप के साथ इसी त़रफ़ रुख़ किया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला को आप की रिज़ा मन्ज़ूर है और आप ही की ख़ातिर का'बे को क़िब्ला बनाया गया। **263 :** इस से साबित हुवा कि नमाज़ में रू ब क़िब्ला होना फ़र्ज़ है। **264 :** क्यूं कि उन की किताबों में हुज़ूर के औसाफ़ के सिल्सिले में येह भी मज़्कूर था कि आप बैतुल मक़्दिस से का'बे की त़रफ़ फिरेंगे और उन

www.dawateislami.net

اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَ مَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ

आओ वोह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करेंगे[265] और न तुम उन के क़िब्ले की पैरवी करो[266] और वोह आपस में भी एक दूसरे

قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَ لَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ

के क़िब्ले के ताबेअ़ नहीं[267] और [ऐ सुनने वाले कसे बाशद] अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चला बा'द इस के कि तुझे इल्म मिल चुका

وقف لازم

اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۴۵﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا

तो उस वक़्त तू ज़रूर सितमगार (ज़ालिम) होगा जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई[268] वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे

یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنْهُمْ لَیَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ

आदमी अपने बेटों को पहचानता है[269] और बेशक उन में एक गुरौह जान बूझ कर हक़ छुपाते

ع ۱۷ / ۱ — وقف منزل

یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿۱۴۷﴾ ع وَ لِكُلٍّ

हैं[270] (ऐ सुनने वाले) येह हक़ है तेरे रब की त़रफ़ से (या हक़ वोही है जो तेरे रब की त़रफ़ से हो) तो ख़बरदार तू शक न करना और हर एक के लिये तवज्जोह की

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّیْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَیْرٰتِ ؕ؃ اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا یَاْتِ بِكُمُ

एक सम्त है कि वोह उसी की त़रफ़ मुंह करता है तो येह चाहो कि नेकियों में औरों से आगे निकल जाएं तुम कहीं हो **अल्लाह** तुम सब को

اللّٰهُ جَمِیْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۴۸﴾ وَ مِنْ حَیْثُ خَرَجْتَ

इकठ्ठा ले आएगा[271] बेशक **अल्लाह** जो चाहे करे और जहां से आओ[272]

अम्बिया ने बिशारतों के साथ हुज़ूर का येह निशान बताया था कि आप बैतुल मक़्दिस और का'बा दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। **265 :** क्यूं कि निशानी उस को नाफ़ेअ़ हो सकती है जो किसी शुबे की वज्ह से मुन्किर हो, येह तो ह़सद व इनाद से इन्कार करते हैं इन्हें इस से क्या नफ़्अ़ होगा। **266 :** मा'ना येह हैं कि येह क़िब्ला मन्सूख़ न होगा तो अब अहले किताब को येह त़मअ़ न रखना चाहिये कि आप इन में से किसी के क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करेंगे। **267 :** हर एक का क़िब्ला जुदा है। यहूद तो सख़्रए बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस में रखी एक चटान) को अपना क़िब्ला क़रार देते हैं और नसारा बैतुल मक़्दिस के उस मकाने शर्क़ी को जहां नफ़्ख़े रूहे ह़ज़रत मसीह़ (ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की रूह़ मुबारक फूंकना) वाक़ेअ़ हुवा। (ख़) **268 :** या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा। **269 :** मत़लब येह है कि कुतुबे साबिक़ा में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ ऐसे वाज़ेह़ और साफ़ बयान किये गए हैं जिन से उ़लमाए अहले किताब को हुज़ूर के ख़ातमुल अम्बिया होने में कुछ शक बाक़ी नहीं रह सकता और वोह हुज़ूर के इस मन्सबे आ़ली को अतम (पूरे) यक़ीन के साथ जानते हैं। अह़बारे यहूद (यहूदियों के उ़लमा) में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए तो ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْه ने उन से दरयाफ़्त किया कि आयए "يَعْرِفُوْنَهٗ" (या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है) में जो मा'रिफ़त बयान की गई है उस की क्या शान है? उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ उ़मर! मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा तो बे इश्तिबाह (बिग़ैर किसी शको शुबा के) पहचान लिया और मेरा हुज़ूर को पहचानना अपने बेटों के पहचानने से ब दरजहा ज़ियादा अतम व अक्मल है! ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : येह कैसे? उन्हों ने कहा कि मैं गवाही देता हूं कि हुज़ूर **अल्लाह** की त़रफ़ से उस के भेजे रसूल हैं, इन के औसाफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने हमारी किताब तौरैत में बयान फ़रमाए हैं, बेटे की त़रफ़ से ऐसा यक़ीन किस त़रह़ हो! औरतों का ह़ाल ऐसा क़त़्ई किस त़रह़ मा'लूम हो सकता है! ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللهُ عَنْه ने उन का सर चूम लिया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ग़ैर मह़ल्ले शह्वत में दीनी मह़ब्बत से पेशानी चूमना जाइज़ है। **270 :** या'नी तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त है उ़लमाए अहले किताब का एक गुरौह उस को ह़सदन व इनादन दीदा व दानिस्ता छुपाता है। **मस्अला :** हक़ का छुपाना मा'सियत व गुनाह है। **271 :** रोज़े क़ियामत सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और आ'माल की जज़ा देगा। **272 :** या'नी

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ مَا

अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और वोह ज़रूर तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है और

اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

अल्लाह तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं और ऐ महबूब तुम जहां से आओ अपना मुंह

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ

मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह इसी की तरफ़ करो

لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۗ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا

कि लोगों को तुम पर कोई हुज्जत न रहे[273] मगर जो उन में ना इन्साफ़ी करें[274] तो उन से न

تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِيْ ۗ وَ لِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ ۛ

डरो और मुझ से डरो और येह इस लिये है कि मैं अपनी ने'मत तुम पर पूरी करूं और किसी तरह तुम हिदायत पाओ

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ

जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से[275] कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता[276]

وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ ؕ معانقة ۳

और किताब और पुख़्ता इल्म सिखाता है[277] और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था

فَاذْكُرُوْنِيْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ۱۸ ع ۵ ۲

तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा[278] और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो ऐ ईमान

ख़्वाह किसी शहर से सफ़र के लिये निकलो नमाज़ में अपना मुंह मस्जिदे हराम (का'बे) की तरफ़ करो। **273 :** और कुफ़्फ़ार को येह ता'न करने का मौक़अ़ न मिले कि इन्हों ने क़ुरैश की मुख़ालफ़त में ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला भी छोड़ दिया बा वुजूदे कि नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उन की औलाद में हैं और उन की अ़ज़्मतो बुज़ुर्गी मानते भी हैं। **274 :** और बराहे इनाद बे जा ए'तिराज़ करें। **275 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **276 :** नजासते शिर्क व ज़ुनूब से। **277 :** हिक्मत से मुफ़स्सिरीन ने फ़िक़्ह मुराद ली है। **278 :** ज़िक्र तीन तरह का होता है : (1) लिसानी (2) क़ल्बी (3) बिल जवारेह़। **ज़िक्रे लिसानी :** तस्बीह़, तक़्दीस, सना वग़ैरा बयान करना है, ख़ुत़्बा, तौबा, इस्तिग़्फ़ार, दुआ़ वग़ैरा इस में दाख़िल हैं। **ज़िक्रे क़ल्बी : अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का याद करना, उस की अ़ज़्मतो किब्रियाई और उस के दलाइले क़ुदरत में ग़ौर करना, उ़लमा का इस्तिम्बात़, मसाइल में ग़ौर करना भी इसी में दाख़िल है। **ज़िक्र बिल जवारेह़ :** येह है कि आ'ज़ा त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल हों जैसे ह़ज के लिये सफ़र करना, येह ज़िक्र बिल जवारेह़ में दाख़िल है। नमाज़ तीनों क़िस्म के ज़िक्र पर मुश्तमिल है तस्बीह़ व तक्बीर सना व क़िराअत तो ज़िक्रे लिसानी है, और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ व इख़्लास ज़िक्रे क़ल्बी, और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद वग़ैरा ज़िक्र बिल जवारेह़ है। इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : तुम त़ाअ़त बजा ला कर मुझे याद करो मैं तुम्हें अपनी इमदाद के साथ याद करूंगा। सह़ीह़ैन की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि अगर बन्दा मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उस को ऐसे ही याद फ़रमाता हूं और अगर वोह मुझे जमाअ़त में याद करता है तो मैं उस को उस से बेहतर जमाअ़त में याद करता हूं। क़ुरआनो ह़दीस में ज़िक्र के बहुत फ़ज़ाइल वारिद हैं और येह हर त़रह के ज़िक्र को शामिल हैं, ज़िक्र बिल जहर (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने) को भी और

www.dawateislami.net

اٰمَنُوا اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا

वालो सब्र और नमाज़ से मदद चाहो[279] बेशक अल्लाह साबिरों के साथ है और जो

تَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا

ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो[280] बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें

تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ

ख़बर नहीं[281] और ज़रूर हम तुम्हें आज़्माएंगे कुछ डर और भूक से[282] और कुछ

الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِیْنَ اِذَآ

मालों और जानों और फलों की कमी से[283] और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को कि जब उन पर

اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْۤا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓىِٕكَ

कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना[284] येह लोग हैं

बिल इख़्फ़ा को भी। **279 :** हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जब कोई सख़्त मुहिम पेश आती तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते, और नमाज़ से मदद चाहने में नमाज़े इस्तिस्क़ा व सलाते हाजत दाख़िल है। **280 शाने नुज़ूल :** येह आयत शुहदाए बद्र के हक़ में नाज़िल हुई। लोग शुहदा के हक़ में कहते थे कि फ़ुलां का इन्तिक़ाल हो गया वोह दुन्यवी आसाइश से महरूम हो गया ! उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **281 :** मौत के बा'द ही अल्लाह तआला शुहदा को हयात अता फ़रमाता है, उन की अरवाह पर रिज़्क़ पेश किये जाते हैं, उन्हें राहतें दी जाती हैं, उन के अमल जारी रहते हैं, अज्रो सवाब बढ़ता रहता है, हदीस शरीफ़ में है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (रूप) में जन्नत की सैर करती और वहां के मेवे और ने'मतें खाती हैं। **मस्अला :** अल्लाह तआला के फ़रमां बरदार बन्दों को क़ब्र में जन्नती ने'मतें मिलती हैं। शहीद वोह मुसल्मान मुकल्लफ़ ताहिर है जो तेज़ हथियार से ज़ुल्मन मारा गया हो और उस के क़त्ल से माल भी वाजिब न हुवा हो, या मा'रिकए जंग में मुर्दा या ज़ख़्मी पाया गया और उस ने कुछ आसाइश न पाई। उस पर दुन्या में येह अहकाम हैं कि न उस को ग़ुस्ल दिया जाए न कफ़न, अपने कपड़ों में ही रखा जाए, इसी तरह उस पर नमाज़ पढ़ी जाए, इसी हालत में दफ़्न किया जाए। आख़िरत में शहीद का बड़ा रुत्बा है। बा'ज़ शुहदा वोह हैं कि उन पर दुन्या के येह अहकाम तो जारी नहीं होते लेकिन आख़िरत में उन के लिये शहादत का दरजा है जैसे डूब कर या जल कर, या दीवार के नीचे दब कर मरने वाला, तलबे इल्म, सफ़रे हज, ग़रज़ राहे ख़ुदा में मरने वाला, और निफ़ास में मरने वाली औरत, और पेट के मरज़ और ताऊन और ज़ातुल जम्ब और सिल (पस्ली के दर्द और फेफड़ों की बीमारी व पुराने बुख़ार) में, और जुमुआ के रोज़ मरने वाले वग़ैरा। **282 :** आज़्माइश से फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के हाल का ज़ाहिर करना मुराद है। **283 :** इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ख़ौफ़ से अल्लाह का डर, भूक से रमज़ान के रोज़े, मालों की कमी से ज़कात व सदक़ात देना, जानों की कमी से अमराज़ के ज़रीए मौतें होना, फलों की कमी से औलाद की मौत मुराद है इस लिये कि औलाद दिल का फल होती है हदीस शरीफ़ में है सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब किसी बन्दे का बच्चा मरता है अल्लाह तआला मलाएका से फ़रमाता है तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ की ? वोह अर्ज़ करते हैं कि हां या रब ! फिर फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल ले लिया ? अर्ज़ करते हैं हां या रब ! फ़रमाता है : इस पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? अर्ज़ करते हैं उस ने तेरी हम्द की और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ" पढ़ा ! फ़रमाता है : उस के लिये जन्नत में मकान बनाओ और उस का नाम "बैतुल हम्द" रखो। **हिक्मत :** मुसीबत के पेश आने से क़ब्ल ख़बर देने में कई हिक्मतें हैं एक तो येह कि इस से आदमी को वक़्ते मुसीबत सब्र आसान हो जाता है। एक येह कि जब काफ़िर देखें कि मुसल्मान बला व मुसीबत के वक़्त साबिरो शाकिर और इस्तिक़्लाल के साथ अपने दीन पर क़ाइम रहता है तो उन्हें दीन की ख़ूबी मा'लूम और इस की तरफ़ रग़बत हो। एक येह कि आने वाली मुसीबत की क़ब्ले वुक़ूअ इत्तिलाअ ग़ैबी ख़बर और नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है। एक हिक्मत येह कि मुनाफ़िक़ीन के क़दम इब्तिला (मुसीबत में मुब्तला होने) की ख़बर से उखड़ जाएं और मोमिन व मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ हो जाए। **284 :** हदीस शरीफ़ में है कि वक़्त मुसीबत के "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ"

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِمۡ صَلَوٰتٌ مِّن رَّبِّهِمۡ وَرَحۡمَةٌ ۖ وَأُولَـٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُهۡتَدُونَ ﴿١٥٧﴾ إِنَّ

जिन पर इन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं बेशक

ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ۖ فَمَنۡ حَجَّ ٱلۡبَيۡتَ أَوِ ٱعۡتَمَرَ فَلَا

सफ़ा और मर्वह[285] **अल्लाह** के निशानों से हैं[286] तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ

جُنَاحَ عَلَيۡهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرًا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ

गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे[287] और जो कोई भली बात अपनी त़रफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला

عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَـٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ

ख़बरदार है बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रोशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं[288]

بَعۡدِ مَا بَيَّنَّـٰهُ لِلنَّاسِ فِى ٱلۡكِتَـٰبِ ۙ أُولَـٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ

बा'द इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर **अल्लाह** की ला'नत है और ला'नत करने वालों

पढ़ना रह़मते इलाही का सबब होता है, येह भी ह़दीस में है कि मोमिन की तक्लीफ़ को **अल्लाह** तआ़ला कफ़्फ़ारए गुनाह बनाता है। **285 :** सफ़ा व मर्वह मक्कए मुकर्रमा के दो पहाड़ हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के मुक़ाबिल जानिबे शर्क़ वाक़ेअ़ हैं, मर्वह शिमाल की त़रफ़ माइल, और सफ़ा जुनूब की त़रफ़ जबले अबी क़ुबैस के दामन में है ह़ज़रते हाजिरा और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इन दोनों पहाड़ों के क़रीब इस मक़ाम पर जहां चाहे ज़मज़म है ब हुक्मे इलाही सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई, उस वक़्त येह मक़ाम संगलाख़ बयाबान था, न यहां सब्ज़ा था न पानी न ख़ुर्दो नोश का कोई सामान, रिज़ाए इलाही के लिये इन मक़्बूल बन्दों ने सब्र किया। ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ख़ुर्द साल (कम उ़म्र) थे तिश्नगी से जब उन की जां बलबी की ह़ालत हुई तो ह़ज़रते हाजिरा बेताब हो कर कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गईं वहां भी पानी न पाया तो उतर कर नशेब के मैदान में दौड़ती हुई मर्वह तक पहुंचीं इस त़रह़ सात मरतबा गर्दिश हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने "إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِينَ" का जल्वा इस त़रह़ ज़ाहिर फ़रमाया कि ग़ैब से एक चश्मा "ज़मज़म" नुमूदार किया और इन के सब्रो इख़्लास की बरकत से इन के इत्तिबाअ़ में इन दोनों पहाड़ों के दरमियान दौड़ने वालों को मक़्बूले बारगाह किया और इन दोनों को मह़ल्ले इजाबते दुआ़ बनाया। **286 :** "شَعَآئِرِ اللّٰه" से दीन के आ'लाम या'नी निशानियां मुराद हैं ख़्वाह वोह मकानात हों जैसे का'बा, अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, जिमारे सलासा, सफ़ा, मर्वह, मिना, मसाजिद। या अज़्मिनह जैसे रमज़ान, अश्हुरे ह़राम, ईदे फ़ित्र व अज़्ह़ा, जुमुआ़, अय्यामे तशरीक़। या दूसरे अ़लामात जैसे अज़ान, इक़ामत, नमाज़े बा जमाअ़त, नमाज़े जुमुआ़, नमाज़े ईदैन, ख़तना येह सब शआइरे दीन हैं। **287 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में सफ़ा व मर्वह पर दो बुत रखे थे, सफ़ा पर जो बुत था उस का नाम असाफ़ और जो मर्वह पर था उस का नाम नाइला था, कुफ़्फ़ार जब सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करते तो इन बुतों पर ता'ज़ीमन हाथ फेरते, अ़ह्दे इस्लाम में बुत तो तोड़ दिये गए लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार यहां मुश्रिकाना फ़े'ल करते थे इस लिये मुसल्मानों को सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई करना गिरां हुवा कि इस में कुफ़्फ़ार के मुश्रिकाना फ़े'ल के साथ कुछ मुशाबहत है। इस आयत में उन का इत़्मीनान फ़रमा दिया गया कि चूंकि तुम्हारी निय्यत ख़ालिस इबादते इलाही की है तुम्हें अन्देशए मुशाबहत नहीं ! और जिस त़रह़ का'बे के अन्दर ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार ने बुत रखे थे, अब अ़ह्दे इस्लाम में बुत उठा दिये गए और का'बा शरीफ़ का त़वाफ़ दुरुस्त रहा और वोह शआइरे दीन में से रहा इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार की बुत परस्ती से सफ़ा व मर्वह के शआइरे दीन होने में कुछ फ़र्क़ नहीं आया। **मस्अला :** सई (या'नी सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ना) वाजिब है ह़दीस से साबित है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस पर मुदावमत फ़रमाई है, इस के तर्क से दम देना या'नी क़ुरबानी वाजिब होती है। **मस्अला :** सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई ह़ज व उ़मरह दोनों में लाज़िम है। फ़र्क़ येह है कि ह़ज के अन्दर अ़रफ़ात में जाना और वहां से त़वाफ़े का'बा के लिये आना शर्त़ है, और उ़मरह के लिये अ़रफ़ात में जाना शर्त़ नहीं। **मस्अला :** उ़मरह करने वाला अगर बैरूने मक्का से आए उस को बराहे रास्त मक्कए मुकर्रमा में आ कर त़वाफ़ करना चाहिये और अगर मक्के का साकिन (रहने वाला) हो तो उस को चाहिये कि ह़रम से बाहर जाए वहां से त़वाफ़े का'बा का एह़राम बांध कर आए। ह़ज व उ़मरह में एक फ़र्क़ येह भी है कि ह़ज साल में एक ही मरतबा हो सकता है क्यूं कि अ़रफ़ात में अ़रफ़ा के दिन या'नी नवीं ज़िल ह़िज्जा को जाना जो ह़ज में शर्त़ है साल में एक ही मरतबा मुम्किन है और उ़मरह हर दिन हो सकता है इस के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं। **288 :** येह आयत उन उ़लमाए यहूद की शान में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ और आयते रज्म और तौरैत के दूसरे अह़काम को छुपाया

اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ

की ला'नत[289] मगर वोह जो तौबा करें और संवारें (इस्लाह करें) और ज़ाहिर कर दें तो मैं उन की तौबा क़बूल

عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ

फ़रमाऊंगा और मैं ही हूं बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और काफ़िर

كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

ही मरे उन पर ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों सब की[290]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

हमेशा रहेंगे उस में न उन पर से अ़ज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾ اِنَّ فِيْ خَلْقِ ع ٣/١٩

और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[291] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेहरबान बेशक

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ

आस्मानों[292] और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि

करते थे। **मस्अला :** उ़लूमे दीन का इज़्हार फ़र्ज़ है। **289 :** ला'नत करने वालों से मलाएका व मोमिनीन मुराद हैं, एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** के तमाम बन्दे मुराद हैं। **290 :** मोमिन तो काफ़िरों पर ला'नत करेंगे ही, काफ़िर भी रोज़े क़ियामत बाहम एक दूसरे पर ला'नत करेंगे। **मस्अला :** इस आयत में उन पर ला'नत फ़रमाई गई जो कुफ़्र पर मरे। इस से मा'लूम हुवा कि जिस की मौत कुफ़्र पर मा'लूम हो उस पर ला'नत करनी जाइज़ है। **मस्अला :** गुनहगार मुसल्मान पर बित्ता'यीन (उस का नाम ले कर) ला'नत करना जाइज़ नहीं लेकिन अ़लल इत़्लाक़ जाइज़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में चोर और सूद ख़्वार वग़ैरा पर ला'नत आई है। **291 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : आप अपने रब की शान व सिफ़त बयान फ़रमाइये ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बता दिया कि मा'बूद सिर्फ़ एक है, न वोह मुतजज़्ज़ी होता है न मुन्क़सिम, न उस के लिये मिस्ल न नज़ीर, उलूहिय्यत व रबूबिय्यत में कोई उस का शरीक नहीं, वोह यक्ता है अपने अफ़्आ़ल में, मस्नूआ़त को तन्हा उसी ने बनाया, वोह अपनी ज़ात में अकेला है कोई उस का क़सीम (शरीक) नहीं, अपने सिफ़ात में यगाना है कोई उस का शबीह नहीं। अबू दावूद व तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तआ़ला का इस्मे आ'ज़म इन दो आयतों में है एक येही आयत "وَاِلٰـهُكُمْ" दूसरी "الٓمّٓ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّاهُوَ"...الآيه **292 :** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द मुश्रिकीन के तीन सो साठ बुत थे जिन्हें वोह मा'बूद ए'तिक़ाद करते थे, उन्हें येह सुन कर बड़ी ह़ैरत हुई कि मा'बूद सिर्फ़ एक ही है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! इस लिये उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ऐसी आयत त़लब की जिस से वह़दानिय्यत पर इस्तिद्लाल सह़ीह़ हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें येह बताया गया कि आस्मान और उस की बुलन्दी और उस का बिग़ैर किसी सुतून और अ़लाक़े के क़ाइम रहना और जो कुछ उस में नज़र आता है आफ़्ताब महताब सितारे वग़ैरा येह तमाम, और ज़मीन और इस की दराज़ी और पानी पर मफ़्रूश (बिछा हुवा) होना, और पहाड़ दरिया चश्मे, मआ़दिन जवाहिर दरख़्त सब्ज़ा फल, और शबो रोज़ का आना जाना घटना बढ़ना, कश्तियां और उन का मुसख़्ख़र होना बा वुजूद बहुत से वज़्न और बोझ के रूए आब (पानी की सत़्ह़) पर रहना और आदमियों का उन में सुवार हो कर दरिया के अ़जाइब देखना और तिजारतों में उन से बार बरदारी (वज़्न उठाने) का काम लेना, और बारिश और उस से ख़ुश्क व मुर्दा हो जाने के बा'द ज़मीन का सर सब्ज़ो शादाब करना और ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाना, और ज़मीन को अन्वाओ़ अक़्साम के जानवरों से भर देना जिन में बे शुमार अ़जाइबे ह़िक्मत वदीअ़त (रखे हुए) हैं, इसी त़रह़ हवाओं की गर्दिश और इन के ख़वास और हवा के अ़जाइबात, और अब्र (बादल) और उस का इतने कसीर पानी के साथ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहना, येह आठ अन्वाअ़ हैं जो ह़ज़रते क़ादिर मुख़्तार के इल्मो ह़िक्मत और उस की वह़दानिय्यत पर बुरहाने क़वी (मज़बूत़ दलाइल) हैं और इन की दलालत वह़दानिय्यत पर बे शुमार वुजूह से है। इज्माली बयान येह है कि येह सब उमूरे मुम्किना हैं और इन का वुजूद बहुत से मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से मुम्किन था मगर वोह मख़्सूस शान से वुजूद में

www.dawateislami.net

فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ

दरिया में लोगों के फ़ाएदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान से पानी उतार कर

فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ

मुर्दा ज़मीन को उस से जिला दिया और ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और

تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ

हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

इन सब में अक़्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं और कुछ लोग **अल्लाह** के सिवा और मा'बूद बना

اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ

लेते हैं कि उन्हें **अल्लाह** की तरह महबूब रखते हैं और ईमान वालों को **अल्लाह** के बराबर किसी की महब्बत नहीं और कैसी हो अगर

يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ

देखें ज़ालिम वोह वक़्त जब कि अ़ज़ाब उन की आंखों के सामने आएगा इस लिये कि सारा ज़ोर खुदा को है और इस लिये कि

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

अल्लाह का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है जब बेज़ार होंगे पेशवा अपने पैरवों से[293]

आए, येह दलालत करता है कि ज़रूर इन के लिये मूजिद है क़ादिर व हकीम जो ब मुक़्तज़ाए हिक्मतो मशिय्यत जैसा चाहता है बनाता है, किसी को दख़्ल व ए'तिराज़ की मजाल नहीं। वोह मा'बूद बिल यक़ीन वाहिदो यक्ता है क्यूं कि अगर उस के साथ कोई दूसरा मा'बूद भी फ़र्ज़ किया जाए तो उस को भी इन मक़्दूरात पर क़ादिर मानना पड़ेगा ! अब दो हाल से ख़ाली नहीं या तो ईजाद व तासीर में दोनों मुत्तफ़िक़ुल इरादा होंगे, या न होंगे अगर हों तो एक ही शै के वुजूद में दो मुअस्सिरों का तासीर करना लाज़िम आएगा और येह मुहाल है क्यूं कि येह मुस्तल्ज़िम है मा'लूल के दोनों से मुस्तग़्नी होने को और दोनों की तरफ़ मुफ़्तक़िर होने को। क्यूं कि इल्लत जब मुस्तक़िल्ला हो तो मा'लूल सिर्फ़ उसी की तरफ़ मोहताज होता है दूसरे की तरफ़ मोहताज नहीं होता, और दोनों को इल्लते मुस्तक़िल्ला फ़र्ज़ किया गया है तो लाज़िम आएगा कि मा'लूल दोनों में से हर एक की तरफ़ मोहताज हो और हर एक से ग़नी हो, तो नक़ीज़ैन मुज्तमअ़ हो गईं और येह मुहाल है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि तासीर उन में से एक की है तो तरजीह बिला मुरज्जिह लाज़िम आएगी और दूसरे का इज्ज़ लाज़िम आएगा जो इलाह होने के मुनाफ़ी है। और अगर येह फ़र्ज़ करो कि दोनों के इरादे मुख़्तलिफ़ होते हैं तो तमानोअ़ व तत़ारुद लाज़िम आएगा कि एक किसी शै के वुजूद का इरादा करे और दूसरा उसी हाल में उस के अ़दम का, तो वोह शै एक ही हाल में मौजूद व मा'दूम दोनों होगी या दोनों न होगी, येह दोनों तक़्दीरें बातिल हैं तो ज़रूर है कि या मौजूद होगी या मा'दूम एक ही बात होगी, अगर मौजूद हुई तो अ़दम का चाहने वाला आ़जिज़ हुवा इलाह न रहा और अगर मा'दूम हुई तो वुजूद का इरादा करने वाला मजबूर रहा इलाह न रहा ! साबित हो गया कि इलाह एक ही हो सकता है और येह तमाम अन्वाअ़ बे निहायत वुजूह से उस की तौहीद पर दलालत करते हैं **293 :** येह रोज़े क़ियामत का बयान है जब मुश्रिकीन और उन के पेशवा जिन्हों ने उन्हें कुफ़्र की तरग़ीब दी थी एक जगह जम्अ़ होंगे और अ़ज़ाब नाज़िल होता हुवा देख कर एक दूसरे से बेज़ार हो जाएंगे।

www.dawateislami.net

وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْا

और देखेंगे अ़ज़ाब और कट जाएंगी उन की सब डोरें[294] और कहेंगे पैरव

لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ یُرِیْهِمُ اللّٰهُ

काश हमें लौट कर जाना होता (दुन्या में) तो हम उन से तोड़ देते (जुदा हो जाते) जैसे उन्हों ने हम से तोड़ दी यूंही **अल्लाह** उन्हें दिखाएगा

اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَیْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِیْنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾ یٰۤاَیُّهَا

ع ٢ ٢٠

उन के काम उन पर ह़स्रतें हो कर[295] और वोह दोज़ख़ से निकलने वाले नहीं ऐ

النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِی الْاَرْضِ حَلٰلًا طَیِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّیْطٰنِ ؕ

लोगो खाओ जो कुछ ज़मीन में[296] ह़लाल पाकीज़ा है और शैत़ान के क़दम पर क़दम न रखो

اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۶۸﴾ اِنَّمَا یَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ

बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है वोह तो तुम्हें येही हुक्म देगा बदी और बे ह़याई का और येह कि

تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَاِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ

अल्लाह पर वोह बात जोड़ो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं और जब उन से कहा जाए **अल्लाह** के उतारे पर

اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَیْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا

चलो[297] तो कहें बल्कि हम तो उस पर चलेंगे जिस पर अपने बाप दादा को पाया क्या अगर्चे उन के बाप दादा न

یَعْقِلُوْنَ شَیْــٴًـا وَّلَا یَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَمَثَلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِیْ

कुछ अ़क़्ल रखते हों न हिदायत[298] और काफ़िरों की कहावत उस की सी है जो

294 : या'नी वोह तमाम तअ़ल्लुक़ात जो दुन्या में उन के माबैन थे ख़्वाह वोह दोस्तियां हों या रिश्तेदारियां, या बाहमी मुवाफ़क़त के अ़ह्द। **295 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला उन के बुरे आ'माल उन के सामने करेगा तो उन्हें निहायत ह़सरत होगी कि उन्हों ने येह काम क्यूं किये थे, एक क़ौल येह है कि जन्नत के मक़ामात दिखा कर उन से कहा जाएगा कि अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला की फ़रमां बरदारी करते तो येह तुम्हारे लिये थे, फिर वोह मसाकिन व मनाज़िल मोमिनीन को दिये जाएंगे इस पर उन्हें ह़स्रतो नदामत होगी। **296 :** येह आयत उन अश्ख़ास के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने बिजार (ज़मानए जाहिलिय्यत के नामज़द मख़्सूस जानवरों) वग़ैरा को ह़राम क़रार दिया था। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम क़रार देना उस की रज़्ज़ाक़ियत से बग़ावत है, मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जो माल मैं अपने बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता हूं वोह उन के लिये ह़लाल है, और इसी में है कि मैं ने अपने बन्दों को बात़िल से बे तअ़ल्लुक़ पैदा किया, फिर उन के पास शयात़ीन आए और उन्हों ने दीन से बहकाया और जो मैं ने उन के लिये ह़लाल किया था उस को ह़राम ठहराया। एक और ह़दीस में है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मैं ने येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने तिलावत की तो ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात कर दे ! हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'द अपनी ख़ूराक पाक करो मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे ! उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुक़्मा डालता है तो चालीस रोज़ तक क़बूलिय्यत से मह़रूमी रहती है। (تفسیر ابن کثیر) **297 :** तौह़ीद व क़ुरआन पर ईमान लाओ और पाक चीज़ों को ह़लाल जानो जिन्हें **अल्लाह** ने ह़लाल किया। **298 :** जब बाप दादा दीन के उमूर को

يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْیٌ فَهُمْ لَا

पुकारे ऐसे को कि ख़ाली चीख़ पुकार के सिवा कुछ न सुने[299] बहरे गूंगे अन्धे तो उन्हें

يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ

समझ नहीं[300] ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीजे़ं और

اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ

अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो[301] उस ने येही तुम पर ह़राम किये हैं मुर्दार[302]

وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

और ख़ून[303] और सुअर का गोश्त[304] और वोह जानवर जो ग़ैरे ख़ुदा का नाम ले कर ज़ब्ह़ किया गया[305] तो जो नाचार हो[306] न यूं कि

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

ख़्वाहिश से खाए और न यूं कि ज़रूरत से आगे बढ़े तो उस पर गुनाह नहीं, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है वोह जो

يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ

छुपाते हैं[307] **अल्लाह** की उतारी किताब और उस के बदले ज़लील क़ीमत ले लेते हैं[308]

न समझते हों और राहे रास्त पर न हों तो उन की पैरवी करना ह़माक़त व गुमराही है। **299 :** या'नी जिस त़रह़ चौपाए चराने वाले की सिर्फ़ आवाज़ ही सुनते हैं कलाम के मा'ना नहीं समझते येही ह़ाल इन कुफ़्फ़ार का है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सदाए मुबारक को सुनते हैं लेकिन उस के मा'ना दिल नशीन कर के इर्शादे फ़ैज़ बुन्याद से फ़ाएदा नहीं उठाते। **300 :** येह इस लिये कि वोह ह़क़ बात सुन कर मुन्तफ़ेअ़ न हुए, कलामे ह़क़ उन की ज़बान पर जारी न हुवा, नसीह़तों से उन्हों ने फ़ाएदा न उठाया। **301 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों पर शुक्र वाजिब है। **302 :** जो ह़लाल जानवर बिग़ैर ज़ब्ह़ किये मर जाए या उस को त़रीक़े शरअ़ के ख़िलाफ़ मारा गया हो मसलन गला घोंट कर, या लाठी पथ्थर ढेले गुल्ले गोली से मार कर हलाक किया गया हो, या वोह गिर कर मर गया हो, या किसी जानवर ने सींग से मारा हो, या किसी दरिन्दे ने हलाक किया हो उस को मुर्दार कहते हैं, और इसी के हु़क्म में दाख़िल है ज़िन्दा जानवर का वोह उ़ज़्व जो काट लिया गया हो। **मस्अला :** मुर्दार जानवर का खाना ह़राम है मगर उस का पका हुवा चमड़ा काम में लाना और उस के बाल, सींग, हड्डी, पठ्ठे, सुम (खुर) से फ़ाएदा उठाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی) **303 मस्अला :** ख़ून हर जानवर का ह़राम है अगर बहने वाला हो, दूसरी आयत में फ़रमाया : "اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا"। **304 मस्अला :** ख़िन्ज़ीर नजिसुल ऐ़न (बिल्कुल नापाक) है इस का गोश्त, पोस्त, बाल, नाख़ुन वग़ैरा तमाम अज्ज़ा नजिस व ह़राम हैं किसी को काम में लाना जाइज़ नहीं। चूंकि ऊपर से खाने का बयान हो रहा है इस लिये यहां गोश्त के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा फ़रमाया गया। **305 मस्अला :** जिस जानवर पर वक़्ते ज़ब्ह़ ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया जाए ख़्वाह तन्हा या ख़ुदा के नाम के साथ अ़त़्फ़ से मिला कर (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ وَمُحَمَّدٍ رَسُوْلِ اللّٰهِ) वोह ह़राम है। **मस्अला :** और अगर नामे ख़ुदा के साथ ग़ैर का नाम बिग़ैर अ़त़्फ़ मिलाया (मसलन : بِسْمِ اللّٰهِ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللّٰهِ) तो मकरूह है। **मस्अला :** अगर ज़ब्ह़ फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर किया और इस से क़ब्ल या बा'द ग़ैर का नाम लिया मसलन येह कहा कि अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का दुम्बा, या जिस की त़रफ़ से वोह ज़बीह़ा है उसी का नाम लिया, या जिन औलिया के लिये ईसाले सवाब मन्ज़ूर है उन का नाम लिया तो येह जाइज़ है इस में कुछ ह़रज नहीं। (تفسیر احمدی) **306 :** "मुज़्त़र" (नाचार) वोह है जो ह़राम चीज़ के खाने पर मजबूर हो और उस को न खाने से ख़ौफ़े जान हो ख़्वाह शिद्दत की भूक या नादारी की वज्ह से जान पर बन जाए और कोई ह़लाल चीज़ हाथ न आए, या कोई शख़्स ह़राम खाने पर जब्र करता हो और उस से जान का अन्देशा हो ऐसी ह़ालत में जान बचाने के लिये ह़राम चीज़ का क़दरे ज़रूरत या'नी इतना खा लेना जाइज़ है कि ख़ौफ़े हलाकत न रहे। **307 शाने नुज़ूल :** यहूद के उ़लमा व रुअसा जो उम्मीद रखते थे कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इन में से मब्ऊ़स होंगे जब उन्हों ने देखा कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم दूसरी क़ौम में से मब्ऊ़स फ़रमाए गए तो उन्हें येह अन्देशा हुवा कि लोग तौरैत व इन्जील में हु़ज़ूर के

www.dawateislami.net

أُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

वोह अपने पेट में आग ही भरते हैं[309] और अल्लाह क़ियामत के दिन उन से बात न करेगा

وَ لَا يُزَكِّيْهِمْ ۚۖ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

और न उन्हें सुथरा करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले

بِالْهُدٰى وَ الْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَاۤ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿۱۷۵﴾ ذٰلِكَ

गुमराही मोल ली और बख़्शिश के बदले अ़ज़ाब तो किस दरजे उन्हें आग की सहार (बरदाश्त) है येह

بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ

इस लिये कि अल्लाह ने किताब ह़क़ के साथ उतारी और बेशक जो लोग किताब में इख़्तिलाफ़ डालने लगे[310] वोह ज़रूर

ع ۵ ۲۱ الربع

شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۱۷۶﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

परले सिरे के झगड़ालू हैं कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़

وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ

करो[311] हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए अल्लाह और क़ियामत और फ़िरिश्तों

وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ

और किताब और पैग़म्बरों पर[312] और अल्लाह की महब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और

औसाफ़ देख कर आप की फ़रमां बरदारी की त़रफ़ झुक पड़ेंगे और इन के नज़राने हदिये तोह़फ़े तह़ाइफ़ सब बन्द हो जाएंगे हुकूमत जाती रहेगी ! इस ख़याल से उन्हें ह़सद पैदा हुवा और तौरैत व इन्जील में जो हुज़ूर की ना'त व सिफ़त और आप के वक़्ते नुबुव्वत का बयान था उन्हों ने उस को छुपाया इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **मस्अला :** छुपाना येह भी है कि किताब के मज़्मून पर किसी को मुत्तलअ़ न होने दिया जाए न वोह किसी को पढ़ कर सुनाया जाए न दिखाया जाए, और येह भी छुपाना है कि ग़लत़ तावीलें कर के मा'ना बदलने की कोशिश की जाए और किताब के अस्ल मा'ना पर पर्दा डाला जाए। **308 :** या'नी दुन्या के ह़क़ीर नफ़्अ़ के लिये इख़्फ़ाए ह़क़ करते हैं। **309 :** क्यूं कि येह रिश्वतें और येह माले ह़राम जो ह़क़पोशी के इवज़ उन्हों ने लिया है उन्हें आतशे जहन्नम में पहुंचाएगा। **310 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत में इख़्तिलाफ़ किया बा'ज़ ने इस को ह़क़ कहा, बा'ज़ ने बात़िल, बा'ज़ ने ग़लत़ तावीलें कीं, बा'ज़ ने तह़रीफ़ें। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई ! इस सूरत में किताब से क़ुरआन मुराद है, और उन का इख़्तिलाफ़ येह है कि बा'ज़ उन में से इस को शे'र कहते थे, बा'ज़ सेह़र, बा'ज़ कहानत। **311 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूं कि यहूद ने बैतुल मक़्दिस के मशरिक़ को और नसारा ने उस के मग़रिब को क़िब्ला बना रखा था, और हर फ़रीक़ का गुमान था कि सिर्फ़ इस क़िब्ले ही की त़रफ़ मुंह करना काफ़ी है, इस आयत में इन का रद फ़रमा दिया गया कि बैतुल मक़्दिस का क़िब्ला होना मन्सूख़ हो गया। (مدارک) मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह ख़ित़ाब अहले किताब और मोमिनीन सब को आ़म है और मा'ना येह हैं कि सिर्फ़ रू ब क़िब्ला होना अस्ल नेकी नहीं जब तक अ़क़ाइद दुरुस्त न हों और दिल इख़्लास के साथ रब्बे क़िब्ला की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो। **312 :** इस आयत में नेकी के छ[6] त़रीक़े इर्शाद फ़रमाए (1) ईमान लाना (2) माल देना (3) नमाज़ क़ाइम करना (4) ज़कात देना (5) अ़ह्द पूरा करना (6) सब्र करना। ईमान की तफ़्सील येह है कि **एक** तो अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए कि वोह ह़य्यो क़य्यूम, अ़लीम, ह़कीम, समीअ़, बसीर, ग़नी, क़दीर, अज़ली, अबदी, वाह़िद, لَاشَرِيْکَ لَهٗ है। **दूसरे** क़ियामत पर ईमान लाए कि वोह ह़क़ है उस में बन्दों का ह़िसाब होगा, आ'माल की जज़ा दी जाएगी, मक़्बूलाने ह़क़ शफ़ाअ़त करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم सआ़दत मन्दों को हौज़े कौसर पर सैराब फ़रमाएंगे, पुल सिरात़ पर गुज़र होगा, और उस रोज़ के तमाम अह़वाल जो क़ुरआन में आए या सय्यिदे अम्बिया ने बयान फ़रमाए सब ह़क़ हैं। **तीसरे**

الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में[313] और नमाज़ क़ाइम रखे

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي

और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें और सब्र वाले

الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ

मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ

येही परहेज़ गार हैं ऐ ईमान वालो तुम पर फ़र्ज़ है[314] कि जो नाहक़ मारे जाएं

الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى

उन के ख़ून का बदला लो[315] आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के

بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ

बदले औ़रत[316] तो जिस के लिये उस के भाई की त़रफ़ से कुछ मुआ़फ़ी हुई[317] तो भलाई से तक़ाज़ा हो और

फ़िरिश्तों पर ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** की मख़्लूक़ और फ़रमां बरदार बन्दे हैं, न मर्द हैं न औ़रत, उन की ता'दाद **अल्लाह** जानता है, चार उन में से बहुत मुक़र्रब हैं जिब्रईल, मीकाईल, इसराफ़ील, इज़्राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام । **चौथे** कुतुबे इलाहिय्यह पर ईमान लाना कि जो किताब **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई ह़क़ है, उन में चार बड़ी किताबें हैं (1) तौरैत जो ह़ज़रते मूसा पर (2) इन्जील जो ह़ज़रते ईसा पर (3) ज़बूर ह़ज़रते दावूद पर (4) कुरआन ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा पर नाज़िल हुई, और पचास सह़ीफ़े ह़ज़रते शीस पर, तीस ह़ज़रते इदरीस पर, दस ह़ज़रते आदम पर, दस ह़ज़रते इब्राहीम पर नाज़िल हुए । عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام । **पांचवें** तमाम अम्बिया पर ईमान लाना कि वोह सब **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और मा'सूम या'नी गुनाहों से पाक हैं, उन की सह़ीह़ ता'दाद **अल्लाह** जानता है, उन में से तीन सो तेरह रसूल हैं । "نَبِيّٖن" ब सीग़ए जम्अ़ मुज़क्कर सालिम ज़िक्र फ़रमाना इशारा करता है कि अम्बिया मर्द होते हैं कोई औ़रत कभी नबी नहीं हुई जैसा कि وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا...الآيه से साबित है । ईमाने मुज्मल येह है اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَبِجَمِيْعِ مَاجَآءَ بِهِ النَّبِيُّ (صلی اللّٰہ علیہ وسلم) या'नी मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और उन तमाम उमूर पर जो सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** के पास से लाए । (تفسیر احمدی)
313 : ईमान के बा'द आ'माल का और इस सिल्सिले में माल देने का बयान फ़रमाया, इस के छ[6] मसरफ़ ज़िक्र किये । गरदनें छुड़ाने से गुलामों का आज़ाद करना मुराद है, येह सब मुस्तह़ब त़ौर पर माल देने का बयान था । **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम होता है कि सदक़ा देना ब ह़ालते तन्दुरुस्ती ज़ियादा अज्र रखता है ब निस्बत इस के कि मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर दे । (كَذَا فِيْ حَدِيْثٍ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَة) **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदार को सदक़ा देने में दो सवाब हैं : एक सदक़े का, एक सिलए रेह़्म का । (نسائی شریف) **314 शाने नुज़ूल :** येह आयत औस व ख़ज़रज के बारे में नाज़िल हुई, इन में से एक क़बीला दूसरे से कुव्वते ता'दाद, माल व शरफ़ में ज़ियादा था उस ने क़सम खाई थी कि वोह अपने गुलाम के बदले दूसरे क़बीले के आज़ाद को और औ़रत के बदले मर्द को, और एक के बदले दो को क़त्ल करेगा ! ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग इस क़िस्म की तअ़द्दी (ज़ियादती) के आ़दी थे, अ़ह्दे इस्लाम में येह मुआ़मला हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई और अ़द्ल व मुसावात का हुक्म दिया गया और इस पर वोह लोग राज़ी हुए । कुरआने करीम में क़िसास (ख़ून का बदला लेने) का मस्अला कई आयतों में बयान हुवा है, इस आयत में क़िसास व अ़फ़्व दोनों के मस्अले हैं और **अल्लाह** तआ़ला के इस एह़सान का बयान है कि उस ने अपने बन्दों को क़िसास व अ़फ़्व में मुख़्तार किया चाहें क़िसास लें या अ़फ़्व करें । आयत के अव्वल में क़िसास के वुजूब का बयान है । **315 :** इस से हर क़ातिल बिल अ़मद (जान बूझ कर क़त्ल करने वाले) पर क़िसास का वुजूब साबित होता है ख़्वाह उस ने आज़ाद को क़त्ल किया हो या गुलाम को, मुसल्मान को या काफ़िर को, मर्द को या औ़रत को क्यूं कि قَتْلٰى जो قَتِيْل की जम्अ़ है वोह सब को शामिल है, हां जिस को दलीले शरई ख़ास करे वोह मख़्सूस हो जाएगा । (احکام القرآن) **316 :** इस आयत में बताया गया जो क़त्ल

اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ رَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى

अच्छी तरह अदा   येह तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारा बोझ हलका करना है और तुम पर रहमत   तो इस के बा'द जो ज़ियादती

بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾ وَ لَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰۤاُولِي

करे[318] उस के लिये दर्दनाक अज़ाब है   और खून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है ऐ

الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ

अक़्ल मन्दो[319] कि तुम कहीं बचो   तुम पर फ़र्ज़ हुवा कि जब तुम में किसी को मौत आए

اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا

अगर कुछ माल छोड़े तो वसिय्यत कर जाए अपने मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों के लिये मुवाफ़िक़े दस्तूर[320] येह वाजिब है

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۸۰﴾ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَاۤ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

परहेज़ गारों पर   तो जो वसिय्यत को सुन सुना कर बदल दे[321] उस का गुनाह उन्हीं बदलने

يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۸۱﴾ؕ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ

वालों पर है[322]   बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है   फिर जिसे अन्देशा हुवा कि वसिय्यत करने वाले ने कुछ बे इन्साफ़ी या

ع ۲۲ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۸۲﴾ؑ يٰۤاَيُّهَا

गुनाह किया तो उस ने उन में सुल्ह करा दी उस पर कुछ गुनाह नहीं[323]   बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है   ऐ

करेगा वोही क़त्ल किया जाएगा ख़्वाह आज़ाद हो या ग़ुलाम, मर्द हो या औरत, और अहले जाहिलिय्यत का येह तरीक़ा ज़ुल्म है जो उन में राइज था कि आज़ादों में लड़ाई होती तो वोह एक के बदले दो को क़त्ल करते, ग़ुलामों में होती तो बजाए ग़ुलाम के आज़ाद को मारते, औरतों में होती तो औरत के बदले मर्द को क़त्ल करते और महज़ क़ातिल के क़त्ल पर इक्तिफ़ा न करते, इस को मन्अ फ़रमाया गया। **317 :** मा'ना येह हैं कि जिस क़ातिल को वलिये मक़्तूल कुछ मुआफ़ करें और उस के ज़िम्मे माल लाज़िम किया जाए उस पर औलियाए मक़्तूल तक़ाज़ा करने में नेक रविश इख़्तियार करें और क़ातिल ख़ूंबहा ख़ुश मुआमलगी के साथ अदा करे इस में सुल्ह बर माल (माल पर सुल्ह करने) का बयान है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को इख़्तियार है कि ख़्वाह क़ातिल को बे इवज़ मुआफ़ करे या माल पर सुल्ह करे, अगर वोह इस पर राज़ी न हो और क़िसास चाहे तो क़िसास ही फ़र्ज़ रहेगा। (جمل) **मस्अला :** अगर मक़्तूल के तमाम औलिया क़िसास मुआफ़ कर दें तो क़ातिल पर कुछ लाज़िम नहीं रहता। **मस्अला :** अगर माल पर सुल्ह करें तो क़िसास साक़ित हो जाता है और माल वाजिब होता है। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** वलिये मक़्तूल को क़ातिल का भाई फ़रमाने में दलालत है इस पर कि क़त्ल अगर्चे बड़ा गुनाह है मगर इस से अख़ुव्वते ईमानी क़त्अ नहीं होती, इस में ख़वारिज का इब्ताल है जो मुरतकिबे कबीरा को काफ़िर कहते हैं। **318 :** या'नी ब दस्तूरे जाहिलिय्यत ग़ैर क़ातिल को क़त्ल करे, या दियत क़बूल करने और मुआफ़ करने के बा'द क़त्ल करे **319 :** क्यूं कि क़िसास मुक़र्रर होने से लोग क़त्ल से बाज़ रहेंगे और जानें बचेंगी। **320 :** या'नी मुवाफ़िक़ दस्तूरे शरीअ़त के अ़द्ल करे और एक तिहाई माल से ज़ियादा की वसिय्यत न करे, और मोहताजों पर मालदारों को तरजीह न दे। **मस्अला :** इब्तिदाए इस्लाम में येह वसिय्यत फ़र्ज़ थी, जब मीरास के अह़काम नाज़िल हुए मन्सूख़ की गई, अब ग़ैर वारिस के लिये तिहाई से कम में वसिय्यत करना मुस्तहब है बशर्ते कि वारिस मोहताज न हों या तर्का मिलने पर मोहताज न रहें, वरना तर्का वसिय्यत से अफ़्ज़ल है। (تفسیر احمدی) **321 :** ख़्वाह वसी हो या वली या शाहिद। और वोह तब्दील किताबत में करे या तक़्सीम में या अदाए शहादत में, अगर वोह वसिय्यत मुवाफ़िक़े शरअ़ है तो बदलने वाला गुनहगार है। **322 :** और दूसरे ख़्वाह वोह मूसी हों या मूसालहू बरी हैं। **323 :** मा'ना येह हैं कि वारिस, या वसी, या इमाम, या क़ाज़ी जिस को भी मूसी की तरफ़ से ना इन्साफ़ी या नाहक़ कारवाई का अन्देशा हो वोह अगर

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ

ईमान वालो[324] तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए

قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ

थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले[325] गिनती के दिन हैं[326] तो तुम में जो कोई

مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَ عَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ

बीमार या सफ़र में हो[327] तो इतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की ताक़त न हो

فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَ اَنْ

वोह बदला दें एक मिस्कीन का खाना[328] फिर जो अपनी तरफ़ से नेकी ज़ियादा करे[329] तो वोह उस के लिये बेहतर है और

تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ

रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो[330] रमज़ान का महीना जिस में

فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ

क़ुरआन उतरा[331] लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें तो तुम में जो कोई

मूसालहू या वारिसों में शरअ़ के मुवाफ़िक़ सुल्ह़ करा दे तो गुनहगार नहीं क्यूं कि उस ने ह़क़ की ह़िमायत के लिये बात़िल को बदला। एक क़ौल येह भी है कि मुराद वोह शख़्स है जो वक़्ते वसिय्यत देखे कि मूसी ह़क़ से तजावुज़ करता और ख़िलाफ़े शरअ़ त़रीक़ा इख़्तियार करता है तो उस को रोक दे और ह़क़ व इन्साफ़ का हुक्म करे। **324 :** इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है। रोज़ा शरअ़ में इस का नाम है कि मुसल्मान ख़्वाह मर्द हो या ह़ैज़ व निफ़ास से ख़ाली औ़रत सुब्ह़े सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक ब निय्यते इ़बादत ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त (खाना पीना और जिमाअ़ करना) तर्क करे। (عالمگیری وغیرہ) रमज़ान के रोज़े 10 शा'बान 2 हि. को फ़र्ज़ किये गए। (درمختار وخازن) इस आयत से साबित होता है कि रोज़े इ़बादते क़दीमा हैं ज़मानए आदम عَلَيْهِ السَّلَام से तमाम शरीअ़तों में फ़र्ज़ होते चले आए अगर्चे अय्याम व अह़काम मुख़्तलिफ़ थे मगर अस्ल रोज़े सब उम्मतों पर लाज़िम रहे। **325 :** और तुम गुनाहों से बचो। क्यूं कि येह कस्रे नफ़्स का सबब और मुत्तक़ीन का शिआ़र है। **326 :** या'नी सिर्फ़ रमज़ान का एक महीना। **327 :** सफ़र से वोह मुराद है जिस की मसाफ़त तीन दिन से कम न हो। इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने मरीज़ व मुसाफ़िर को रुख़्सत दी कि अगर उस को रमज़ान मुबारक में रोज़ा रखने से मरज़ की ज़ियादती या हलाक का अन्देशा हो, या सफ़र में शिद्दतो तक्लीफ़ का तो वोह मरज़ व सफ़र के अय्याम में इफ़्त़ार करे और बजाए इस के अय्यामे मन्हिय्या के सिवा और दिनों में इस की क़ज़ा करे, अय्यामे मन्हिय्या पांच दिन हैं जिन में रोज़ा रखना जाइज़ नहीं दोनों ई़दें और ज़िल ह़िज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तारीख़ें। **मस्अला :** मरीज़ को मह़्ज़ वह्म पर रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं जब तक दलील या तजरिबे या ग़ैर ज़ाहिरुल फ़िस्क़ त़बीब की ख़बर से इस का ग़लबए ज़न न हो कि रोज़ा मरज़ के तूल या ज़ियादती का सबब होगा। **मस्अला :** जो बिलफ़े'ल बीमार न हो लेकिन मुसल्मान त़बीब येह कहे कि वोह रोज़ा रखने से बीमार हो जाएगा वोह भी मरीज़ के हुक्म में है। **मस्अला :** ह़ामिला या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर रोज़ा रखने से अपनी या बच्चे की जान का या उस के बीमार हो जाने का अन्देशा हो तो उस को भी इफ़्त़ार जाइज़ है : **मस्अला :** जिस मुसाफ़िर ने तुलूए फ़ज्र से क़ब्ल सफ़र शुरूअ़ किया उस को तो रोज़े का इफ़्त़ार जाइज़ है लेकिन जिस ने बा'दे तुलूअ़ सफ़र किया उस को उस दिन का इफ़्त़ार जाइज़ नहीं। **328 मस्अला :** जिस बूढ़े मर्द या औ़रत को पीरानासाली (बुढ़ापे) के ज़ो'फ़ से रोज़ा रखने की क़ुदरत न रहे और आयिन्दा क़ुव्वत ह़ासिल होने की उम्मीद भी न हो उस को शैख़े फ़ानी कहते हैं, उस के लिये जाइज़ है कि इफ़्त़ार करे और हर रोज़े के बदले निस्फ़ साअ़ या'नी एक सो पछत्तर रुपिया और एक अठन्नी भर गेहूं या गेहूं का आटा या इस से दूने जव या इस की क़ीमत बत़ौरे फ़िदया दे। **मस्अला :** अगर फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की क़ुव्वत आ गई तो रोज़ा वाजिब होगा। **मस्अला :** अगर शैख़े फ़ानी नादार हो और फ़िदया देने की क़ुदरत न रखे तो **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे और अपने अ़फ़्वे तक़्सीर (कोताही की बख़्शिश) की दुआ़ करता रहे। **329 :** या'नी फ़िदये की मिक्दार से ज़ियादा दे **330 :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे मुसाफ़िर व मरीज़ को इफ़्त़ार

www.dawateislami.net

شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۭ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ

येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो

فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ

तो इतने रोज़े और दिनों में अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी

الْعُسْرَ ۡ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ

नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो[332] और अल्लाह की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۭ اُجِيْبُ

हक़ गुज़ार हो और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं[333] दुआ क़बूल करता हूं

دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ

पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे[334] तो उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लाएं कि कहीं

يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾ اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ۭ هُنَّ

राह पाएं रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुवा[335] वोह

की इजाज़त है लेकिन ज़ियादा बेहतर व अफ़्ज़ल रोज़ा रखना ही है। **331 :** इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : (1) येह कि रमज़ान वोह है जिस की शानो शराफ़त में क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा (2) येह कि क़ुरआने करीम के नुज़ूल की इब्तिदा रमज़ान में हुई (3) येह कि क़ुरआने करीम बि तमामिही रमज़ान मुबारक की शबे क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से आस्माने दुन्या की तरफ़ उतारा गया और बैतुल इज़्ज़त में रहा, येह इसी आस्मान पर एक मक़ाम है यहां से वक़्तन फ़ वक़्तन हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत जितना जितना मन्ज़ूरे इलाही हुवा जिब्रीले अमीन लाते रहे, येह नुज़ूल तेईस साल के अ़र्से में पूरा हुवा। **332 :** हदीस में है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है तो चांद देख कर रोज़े शुरूअ़ करो और चांद देख कर इफ़्तार करो, अगर 29 रमज़ान को चांद की रूयत न हो तो तीस दिन की गिनती पूरी करो। **333 :** इस में तालिबाने हक़ की तलबे मौला का बयान है जिन्हों ने इश्क़े इलाही पर अपने हवाइज को क़ुरबान कर दिया, वोह उसी के तलब गार हैं उन्हें क़ुर्बो विसाल के मुज़्दे से शादकाम फ़रमाया। **शाने नुज़ूल :** एक जमाअ़ते सहाबा ने जज़्बए इश्क़े इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि हमारा रब कहां है ? इस पर नवीदे क़ुर्ब से सरफ़राज़ कर के बताया गया कि अल्लाह तआ़ला मकान से पाक है जो चीज़ किसी से मकानी क़ुर्ब रखती हो वोह उस के दूर वाले से ज़रूर बो'द रखती है और अल्लाह तआ़ला सब बन्दों से क़रीब है मकानी की येह शान नहीं। मनाज़िले क़ुर्ब में रसाई बन्दे को अपनी ग़फ़्लत दूर करने से मुयस्सर आती है। دوست نزدیک تر از من بمن است۔ ویں عجب تر کہ من از وے دورم (दोस्त तो मुझ से भी ज़ियादा मेरे क़रीब है। और येह अ़जब तर है कि मैं उस से दूर हूं)। **334 :** "दुआ़" अ़र्ज़े हाजत है, और इजाबत येह है कि परवर दगार अपने बन्दे की दुआ़ पर "لَبَّیْکَ عَبْدِیْ" फ़रमाता है। मुराद अ़ता फ़रमाना दूसरी चीज़ है वोह भी कभी उस के करम से फ़िलफ़ौर होती है कभी ब मुक़्तज़ाए हिक्मत किसी ताख़ीर से, कभी बन्दे की हाजत दुन्या में रवा फ़रमाई जाती है कभी आख़िरत में, कभी बन्दे का नफ़्अ़ दूसरी चीज़ में होता है वोह अ़ता की जाती है कभी बन्दा महबूब होता है उस की हाजत रवाई में इस लिये देर की जाती है कि वोह अ़र्से तक दुआ़ में मश्ग़ूल रहे, कभी दुआ़ करने वाले में सिद्क़ो इख़्लास वग़ैरा शराइते क़बूल नहीं होते इसी लिये अल्लाह के नेक और मक़्बूल बन्दों से दुआ़ कराई जाती है। **मस्अला :** ना जाइज़ अम्र की दुआ़ करना जाइज़ नहीं। दुआ़ के आदाब में से है कि हुज़ूरे क़ल्ब के साथ क़बूल का यक़ीन रखते हुए दुआ़ करे और शिकायत न करे कि मेरी दुआ़ क़बूल न हुई, तिरमिज़ी की हदीस में है कि नमाज़ के बा'द हम्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ़ करे। **335 शाने नुज़ूल :** शराइए साबिक़ा में इफ़्तार के बा'द खाना पीना मुजामअ़त करना नमाज़े इशा तक हलाल था बा'द नमाज़े इशा येह सब चीज़ें शब में भी हराम हो जाती थीं, येह हुक्म ज़मानए अक़्दस तक बाक़ी था, बा'ज़ सहाबा से रमज़ान की रातों में बा'दे इशा मुबाशरत वुक़ूअ़ में आई उन में हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ भी थे इस पर वोह हज़रात नादिम

www.dawateislami.net

لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ

तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास अल्लाह ने जाना कि तुम अपनी जानों को ख़ियानत में

اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا

डालते थे तो उस ने तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हें मुआफ़ फ़रमाया[336] तो अब उन से सोहबत करो[337] और तलब करो जो अल्लाह ने

كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ

तुम्हारे नसीब में लिखा हो[338] और खाओ और पियो[339] यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा

مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا

सियाही के डोरे से पौ फट कर[340] फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो[341] और

تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِى الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا

औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में ए'तिकाफ़ से हो[342] येह अल्लाह की हदें हैं उन के

تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ وَلَا

पास न जाओ अल्लाह यूं ही बयान करता है लोगों से अपनी आयतें कि कहीं उन्हें परहेज़ गारी मिले और

हुए और दरगाहे रिसालत में अ़र्ज़े ह़ाल किया अल्लाह तआ़ला ने मुआ़फ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल हुई, और बयान कर दिया गया कि आयिन्दा के लिये रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्हे सादिक़ तक मुजामअ़त करना ह़लाल किया गया। **336 :** इस ख़ियानत से वोह मुजामअ़त मुराद है जो क़ब्ले इबाह़त रमज़ान की रातों में मुसल्मानों से सरज़द हुई थी, उस की मुआ़फ़ी का बयान फ़रमा कर उन की तस्कीन फ़रमा दी गई। **337 :** येह अम्र इबाह़त के लिये है कि अब वोह मुमानअ़त उठा दी गई और लयालिये रमज़ान (रमज़ान की रातों) में मुबाशरत मुबाह़ कर दी गई। **338 :** इस में हिदायत है कि मुबाशरत नस्ल व औलाद ह़ासिल करने की निय्यत से होनी चाहिये जिस से मुसल्मान बढ़ें और दीन क़वी हो। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि मुबाशरत मुवाफ़िक़े हुक्मे शरअ़ हो जिस मह़ल में जिस त़रीक़े से मुबाह़ फ़रमाई उस से तजावुज़ न हो। (تفسیر احمدی) एक क़ौल येह भी है जो अल्लाह ने लिखा उस को त़लब करने के मा'ना हैं रमज़ान की रातों में कसरते इबादत और बेदार रह कर शबे क़द्र की जुस्तजू करना। **339 :** येह आयत सिरमा बिन क़ैस के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप मेह़नती आदमी थे एक दिन ब ह़ालते रोज़ा दिन भर अपनी ज़मीन में काम कर के शाम को घर आए बीवी से खाना मांगा वोह पकाने में मसरूफ़ हुईं येह थके थे आंख लग गई जब खाना तय्यार कर के इन्हें बेदार किया इन्हों ने खाने से इन्कार कर दिया क्यूं कि उस ज़माने में सो जाने के बा'द रोज़ादार पर खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था और इसी ह़ालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, ज़ो'फ़ इन्तिहा को पहुंच गया था दोपहर को ग़शी आ गई, इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और रमज़ान की रातों में इन के सबब से खाना पीना मुबाह़ फ़रमाया गया जैसे कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ की इनाबत व रुजूअ़ के बाइ़स क़ुरबत ह़लाल हुई। **340 :** रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई, मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये खाना पीना रमज़ान की रातों में मग़रिब से सुब्ह़े सादिक़ तक मुबाह़ फ़रमाया गया। (تفسیر احمدی) **मस्अला :** सुब्ह़े सादिक़ तक इजाज़त देने में इशारा है कि जनाबत रोज़े के मुनाफ़ी नहीं, जिस शख़्स को ब ह़ालते जनाबत सुब्ह़ हुई वोह ग़ुस्ल कर ले उस का रोज़ा जाइज़ है (تفسیر احمدی) **मस्अला :** इसी से उ़लमा ने येह मस्अला निकाला कि रमज़ान के रोज़े की निय्यत दिन में जाइज़ है। **341 :** इस से रोज़े की आख़िर ह़द मा'लूम होती है और येह मस्अला साबित होता है कि ब ह़ालते रोज़ा ख़ुर्दो नोश व मुजामअ़त में से हर एक के इरतिकाब से कफ़्फ़ारा लाज़िम हो जाता है। (مدارک) **मस्अला :** उ़लमा ने इस आयत को सौमे विसाल या'नी तह के रोज़े के मम्नूअ़ होने की दलील क़रार दिया है। **342 :** इस में बयान है कि रमज़ान की रातों में रोज़ादार के लिये जिमाअ़ ह़लाल है जब कि वोह मो'तकिफ़ न हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में औरतों से क़ुरबत और बोसो किनार ह़राम है। **मस्अला :** मर्दों के ए'तिकाफ़ के लिये मस्जिद ज़रूरी है। **मस्अला :** मो'तकिफ़ को मस्जिद

www.dawateislami.net

تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا

आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उन का मुक़द्मा इस लिये पहुंचाओ कि लोगों का

فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ

٢٣ ع ٧

कुछ माल ना जाइज़ तौर पर खा लो[343] जान बूझ कर तुम से नए चांद

الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِیَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا

को पूछते हैं[344] तुम फ़रमा दो वोह वक़्त की अ़लामतें हैं लोगों और हज के लिये[345] और येह कुछ भलाई नहीं कि[346] घरों में

الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ

पच्छीत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ हां भलाई तो परहेज़ गारी है और घरों में दरवाज़ों

اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾ وَقَاتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

से आओ[347] और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ और **अल्लाह** की राह में लड़ो[348]

में खाना पीना सोना जाइज़ है। **मस्अला :** औ़रतों का ए'तिकाफ़ उन के घरों में जाइज़ है। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ हर ऐसी मस्जिद में जाइज़ है जिस में जमाअ़त क़ाइम हो। **मस्अला :** ए'तिकाफ़ में रोज़ा शर्त़ है। **343 :** इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल खाना ह़राम फ़रमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से, या जूए से या ह़राम तमाशों या ह़राम कामों या ह़राम चीज़ों के बदले, या रिश्वत या झूटी गवाही या चुग़ल ख़ोरी से येह सब मम्नूअ़ व ह़राम है। **मस्अला** इस से मा'लूम हुवा कि ना जाइज़ फ़ाएदे के लिये किसी पर मुक़द्मा बनाना और उस को हुक्काम तक ले जाना ना जाइज़ व ह़राम है, इसी त़रह़ अपने फ़ाएदे की ग़रज़ से दूसरे को ज़रर पहुंचाने के लिये हुक्काम पर असर डालना रिश्वतें देना ह़राम है। जो हुक्काम रस लोग हैं (या'नी जिन की पहुंच हुक्मरानों तक है) वोह इस आयत के हुक्म को पेशे नज़र रखें, ह़दीस शरीफ़ में मुसल्मानों के ज़रर पहुंचाने वाले पर ला'नत आई है। **344 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल और सा'लबा बिन ग़न्म अन्सारी के जवाब में नाज़िल हुई, इन दोनों ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! चांद का क्या ह़ाल है ? इब्तिदा में बहुत बारीक निकलता है फिर रोज़ बरोज़ बढ़ता है यहां तक कि पूरा रोशन हो जाता है, फिर घटने लगता है और यहां तक घटता है कि पहले की त़रह़ बारीक हो जाता है एक ह़ाल पर नहीं रहता। इस सुवाल से मक़्सद चांद के घटने बढ़ने की ह़िक्मतें दरयाफ़्त करना था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि सुवाल का मक़्सूद चांद के इख़्तिलाफ़ात का सबब दरयाफ़्त करना था। **345 :** चांद के घटने बढ़ने के फ़वाइद बयान फ़रमाए कि वोह वक़्त की अ़लामतें हैं और आदमियों के हज़ारहा दीनी व दुन्यावी काम इस से मुतअ़ल्लिक़ हैं ज़राअ़त, तिजारत लैन दैन के मुआ़मलात, रोज़े और ईद के अवक़ात, औ़रतों की इ़द्दतें, ह़ैज़ के अय्याम, ह़म्ल और दूध पिलाने की मुद्दतें और दूध छुड़ाने के वक़्त, और ह़ज के अवक़ात इस से मा'लूम होते हैं क्यूं कि अव्वल में जब चांद बारीक होता है तो देखने वाला जान लेता है कि येह इब्तिदाई तारीख़ें हैं और जब चांद पूरा रोशन होता है तो मा'लूम हो जाता है कि येह महीने की दरमियानी तारीख़ है और जब चांद छुप जाता है तो मा'लूम होता है कि महीना ख़त्म पर है इसी त़रह़ इन के माबैन अय्याम में चांद की ह़ालतें दलालत किया करती हैं, फिर महीनों से साल का ह़िसाब होता है। येह वोह क़ुदरती जन्तरी है जो आस्मान के सफ़्ह़े पर हमेशा खुली रहती है और हर मुल्क और हर ज़बान के लोग पढ़े भी और बे पढ़े भी सब इस से अपना ह़िसाब मा'लूम करते हैं। **346 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों की येह आ़दत थी कि जब वोह ह़ज के लिये एह़राम बांधते तो किसी मकान में उस के दरवाज़े से दाख़िल न होते, अगर ज़रूरत होती तो पच्छीत (मकान की पिछली दीवार) तोड़ कर आते और इस को नेकी जानते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **347 :** ख़्वाह ह़ालते एह़राम हो या ग़ैर एह़राम। **348 :** 6 सि.हि. में हुदैबिया का वाक़िआ़ पेश आया उस साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा से ब क़स्दे उ़मरह मक्कए मुकर्रमा रवाना हुए मुश्रिकीन ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका और इस पर सुल्ह़ हुई कि आप साले आयिन्दा तशरीफ़ लाएं तो आप के लिये तीन रोज़ मक्कए मुकर्रमा ख़ाली कर दिया जाएगा। चुनान्चे अगले साल 7 सि.हि. में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उ़म्रए क़ज़ा के लिये तशरीफ़ लाए अब हुज़ूर के साथ एक हज़ार चार सो की जमाअ़त थी मुसल्मानों को येह अन्देशा हुवा कि कुफ़्फ़ार वफ़ाए अ़हद न करेंगे और ह़रमे मक्का में शहरे ह़राम या'नी माहे ज़िल क़ा'दा में जंग करेंगे और मुसल्मान ब ह़ालते एह़राम हैं, इस

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

उन से जो तुम से लड़ते हैं[349] और हद से न बढ़ो[350] अल्लाह पसन्द नहीं रखता हद से बढ़ने वालों को

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

और काफ़िरों को जहां पाओ मारो[351] और उन्हें निकाल दो[352] जहां से उन्हों ने तुम्हें निकाला था[353]

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

और उन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है[354] और मस्जिदे हराम के पास उन से न लड़ो

حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ

जब तक वोह तुम से वहां न लड़ें[355] और अगर तुम से लड़ें तो उन्हें क़त्ल करो[356] काफ़िरों की येही

الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۱﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۲﴾ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى

सज़ा है फिर अगर वोह बाज़ रहें[357] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और उन से लड़ो यहां तक कि

لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى

कोई फ़ितना न रहे और एक अल्लाह की पूजा हो फिर अगर वोह बाज़ आएं[358] तो ज़ियादती नहीं मगर

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ

ज़ालिमों पर माहे हराम के बदले माहे हराम और अदब के बदले अदब है[359]

हालत में जंग करना गिरां है क्यूं कि ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए इस्लाम तक न हरम में जंग जाइज़ थी न माहे हराम में न हालते एहराम में तो इन्हें तरद्दुद हुवा कि इस वक़्त जंग की इजाज़त मिलती है या नहीं ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **349 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि जो कुफ़्फ़ार तुम से लड़ें या जंग की इब्तिदा करें तुम उन से दीन की हिमायत और ए'ज़ाज़ के लिये लड़ो ! येह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में था फिर मन्सूख़ किया गया और कुफ़्फ़ार से क़िताल करना वाजिब हुवा ख़्वाह वोह इब्तिदा करें या न करें, या येह मा'ना हैं कि जो तुम से लड़ने का इरादा रखते हैं। येह बात सारे ही कुफ़्फ़ार में है क्यूं कि वोह सब दीन के मुख़ालिफ़ और मुसल्मानों के दुश्मन हैं, ख़्वाह उन्हों ने किसी वज्ह से जंग न की हो लेकिन मौक़अ़ पाने पर चूकने वाले नहीं। येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जो काफ़िर मैदान में तुम्हारे मुक़ाबिल आएं और तुम से लड़ने वाले हों उन से लड़ो ! इस सूरत में ज़ईफ़, बूढ़े, बच्चे मजनून, अन्धे, बीमार, औ़रतें वग़ैरा जो जंग की क़ुदरत नहीं रखते इस हुक्म में दाख़िल न होंगे उन को क़त्ल करना जाइज़ नहीं। **350 :** जो जंग के क़ाबिल नहीं उन से न लड़ो, या जिन से तुम ने अ़हद किया हो, या बिग़ैर दा'वत के जंग न करो क्यूं कि त़रीक़ए शरअ़ येह है कि पहले कुफ़्फ़ार को इस्लाम की दा'वत दी जाए अगर इन्कार करें तो जिज़्या त़लब किया जाए, इस से भी मुन्किर हों तब जंग की जाए ! इस मा'ना पर आयत का हुक्म बाक़ी है मन्सूख़ नहीं। (تفسیر احمدی) **351 :** ख़्वाह हरम हो या ग़ैरे हरम **352 :** मक्कए मुकर्रमा से **353 :** साले गुज़श्ता। चुनान्चे रोज़े फ़त्हे मक्का जिन लोगों ने इस्लाम क़बूल न किया उन के साथ येही किया गया। **354 :** फ़साद से शिर्क मुराद है या मुसल्मानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोकना। **355 :** क्यूं कि येह हुरमते हरम (हरम की ता'ज़ीम) के ख़िलाफ़ है। **356 :** कि उन्हों ने हरम शरीफ़ की बे हुरमती की। **357 :** क़त्ल व शिर्क से **358 :** कुफ़्र व बातिल परस्ती से **359 :** जब गुज़श्ता साल ज़िल क़ा'दा 6 सि.हि. में मुश्रिकीने अ़रब ने माहे हराम की हुरमत व अदब का लिहाज़ न रखा और तुम्हें अदाए उ़मरह से रोका तो येह बे हुरमती उन से वाक़ेअ़ हुई और उस के बदले ब तौफ़ीक़े इलाही 7 सि.हि. के ज़िल क़ा'दा में तुम्हें मौक़अ़ मिला कि तुम उ़म्रए क़ज़ा को अदा करो।

www.dawateislami.net

فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪

तो जो तुम पर ज़ियादती करे उस पर ज़ियादती करो उतनी ही जितनी उस ने की

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** डर वालों के साथ है और **अल्लाह** की राह में ख़र्च

مع

اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

करो[360] और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो[361] और भलाई वाले हो जाओ बेशक भलाई वाले

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ

अल्लाह के महबूब हैं और हज और उमरह **अल्लाह** के लिये पूरा करो[362] फिर अगर तुम रोके जाओ[363] तो कुरबानी भेजो

مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ

जो मुयस्सर आए[364] और अपने सर न मुंडाओ जब तक कुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए[365]

360 : इस से तमाम दीनी उमूर में ताअ़त व रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करना मुराद है ख़्वाह जिहाद हो या और नेकियां। **361 :** राहे ख़ुदा में इन्फ़ाक़ का तर्क भी सबबे हलाक है और इसराफ़े बे जा भी, और इस तरह और चीज़ भी जो ख़तरा व हलाक का बाइस हो उन सब से बाज़ रहने का हुक्म है हत्ता कि बे हथियार मैदाने जंग में जाना या ज़हर खाना या किसी तरह ख़ुदकुशी करना। **मस्अला :** उलमा ने इस से येह मस्अला अख़्ज़ किया है कि जिस शहर में ताऊन हो वहां न जाएं अगर्चे वहां के लोगों को वहां से भागना मम्नूअ़ है। **362 :** और इन दोनों को इन के फ़राइज़ व शराइत़ के साथ ख़ास **अल्लाह** के लिये बे सुस्ती व नुक़्सान कामिल करो। हज नाम है एहराम बांध कर नवीं ज़िल हिज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के तवाफ़ का। इस के लिये ख़ास वक़्त मुक़र्रर है जिस में येह अफ़्आ़ल किये जाएं तो हज है। **मस्अला :** हज बक़ौले राजेह 9 हि. में फ़र्ज़ हुवा इस की फ़र्ज़िय्यत क़त़्ई है। **हज** के फ़राइज़ येह हैं (1) एहराम (2) अ़रफ़ा में वुक़ूफ़ (3) तवाफ़े ज़ियारत। **हज** के वाजिबात (1) मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ (2) सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई (3) रम्ये जिमार (शयातीन को कंकरियां मारना) और (4) आफ़ाक़ी (मक्का के बाहर रहने वाले) के लिये तवाफ़े रुजूअ़ और (5) हल्क़ या तक़्सीर (सर के बाल मूंडना या छोटे करवाना)। **उमरह** के रुक्न तवाफ़ व सई हैं, और इस की शर्त़ एहराम व हल्क़ है। **हज व उमरह** के चार तरीक़े हैं (1) इफ़्राद बिल हज : वोह येह है कि हज के महीनों में या इन से क़ब्ल, मीक़ात से या इस से पहले हज का एहराम बांधे और दिल से इस की निय्यत करे ख़्वाह ज़बान से तल्बिया के वक़्त इस का नाम ले या न ले। (2) इफ़्राद बिल उमरह : वोह येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इन से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और दिल से इस का क़स्द करे ख़्वाह वक़्ते तल्बिया ज़बान से इस का ज़िक्र करे या न करे, और इस के लिये अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल तवाफ़ करे ख़्वाह इस साल में हज करे या न करे मगर हज व उमरह के दरमियान इलमामे सहीह करे इस तरह कि अपने अह्ल की तरफ़ हलाल हो कर वापस हो। (इलमामे सहीह येह है कि उमरह के बा'द एहराम खोल कर अपने वतन को वापस जाए।) (3) क़िरान : येह है कि हज व उमरह दोनों को एक एहराम में जम्अ़ करे वोह एहराम मीक़ात से बांधा हो या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, अव्वल से हज व उमरह दोनों की निय्यत हो ख़्वाह वक़्ते तल्बिया, ज़बान से दोनों का ज़िक्र करे या न करे, पहले उमरह के अफ़्आ़ल अदा करे फिर हज के। (4) तमत्तोअ़ : येह है कि मीक़ात से या इस से पहले, अश्हुरे हज में या इस से क़ब्ल, उमरह का एहराम बांधे और अश्हुरे हज में उमरह करे या अक्सर तवाफ़ इस के अश्हुरे हज में हों ! और हलाल हो कर हज के लिये एहराम बांधे और इसी साल हज करे, और हज व उमरह के दरमियान अपने अह्ल के साथ इलमामे सहीह न करे। (مسکین وغیرہ) **मस्अला :** इस आयत से उलमा ने क़िरान साबित किया है। **363 :** हज या उमरह से। बा'द शुरूअ़ करने और घर से निकलने और मोहरिम हो जाने के या'नी तुम्हें कोई मानेअ़ अदाए हज या उमरह से पेश आए ख़्वाह वोह दुश्मन का ख़ौफ़ हो या मरज़ वग़ैरा, ऐसी हालत में तुम एहराम से बाहर आ जाओ। **364 :** ऊंट या गाय या बकरी और येह कुरबानी भेजना वाजिब है। **365 :** या'नी हरम में जहां इस के ज़ब्ह का हुक्म है। **मस्अला :** येह कुरबानी बैरूने हरम नहीं हो सकती।

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ

फिर जो तुम में बीमार हो या उस के सर में कुछ तक्लीफ़ है[366] तो बदला दे रोज़े[367]

اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۫ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ

या ख़ैरात[368] या क़ुरबानी फिर जब तुम इत्मीनान से हो तो जो हज से उ़मरह मिलाने का फ़ाइदा उठाए[369]

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي

उस पर क़ुरबानी है जैसी मुयस्सर आए[370] फिर जिसे मक़्दूर न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में

الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ

रखे[371] और सात जब अपने घर पलट कर जाओ येह पूरे दस हुए येह हुक्म उस

يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ

के लिये है जो मक्का का रहने वाला न हो[372] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि

اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾ ع اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ

अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है हज के कई महीने हैं जाने हुए[373] तो जो उन में हज की निय्यत

الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ

करे[374] तो न औ़रतों के सामने सोह़बत का तज़्किरा हो न कोई गुनाह न किसी से झगड़ा[375] हज के वक़्त तक और तुम जो भलाई

366 : जिस से वोह सर मुंडाने के लिये मजबूर हो और सर मुंडा ले **367 :** तीन दिन के **368 :** छ[6] मिस्कीनों का खाना हर मिस्कीन के लिये पौने दो सेर गेहूं। (दो किलो में अस्सी (80) ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत") **369 :** या'नी तमत्तोअ़ करे **370 :** येह क़ुरबानी तमत्तोअ़ की है हज के शुक्र में वाजिब हुई ख़्वाह तमत्तोअ़ करने वाला फ़क़ीर हो, ईदे अज़्हा की क़ुरबानी नहीं जो फ़क़ीर व मुसाफ़िर पर वाजिब नहीं होती। **371 :** या'नी यकुम शव्वाल से नवीं ज़िल हिज्जा तक एह़राम बांधने के बा'द इस दरमियान में जब चाहे रख ले ख़्वाह एक साथ या मुतफ़र्रिक़ कर के, बेहतर येह है कि 7, 8, 9 ज़िल हिज्जा को रखे। **372 मस्अला :** अहले मक्का के लिये न तमत्तोअ़ है न क़िरान, और ह़ुदूदे मवाक़ीत के अन्दर के रहने वाले अहले मक्का में दाख़िल हैं। **मवाक़ीत :** पांच हैं (1) ज़ुल हुलैफ़ा (2) ज़ाते इर्क़ (3) जुह़फ़ा (4) क़र्न (5) यलम्लम। "ज़ुल हुलैफ़ा" अहले मदीना के लिये, "ज़ाते इर्क़" अहले इराक़ के लिये, "जुह़फ़ा" अहले शाम के लिये, "क़र्न" अहले नज्द के लिये, "यलम्लम" अहले यमन के लिये। **373 :** शव्वाल, ज़ुल क़ा'दा और दस तारीख़ें ज़िल हिज्जा की। हज के अफ़्आ़ल इन्ही अय्याम में दुरुस्त हैं। **मस्अला :** अगर किसी ने इन अय्याम से पहले हज का एह़राम बांधा तो जाइज़ है लेकिन ब कराहत। **374 :** या'नी हज को अपने ऊपर लाज़िम व वाजिब करे एह़राम बांध कर या तल्बिया कह कर या हदी (क़ुरबानी का जानवर) चला कर। उस पर येह चीज़ें लाज़िम हैं जिन का आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **375 :** "رَفَث" जिमाअ़ या औ़रतों के सामने ज़िक्रे जिमाअ़ या कलामे फ़ोह़्श करना है, निकाह़ इस में दाख़िल नहीं। **मस्अला :** मोह़रिम व मोह़रिमा (एह़राम वाले अजनबी मर्द व औ़रत) का निकाह़ जाइज़ है मुजामअ़त जाइज़ नहीं। "فُسُوق" से मआ़सी व सय्यिआत, और "جِدال" से झगड़ा मुराद है ख़्वाह वोह अपने रफ़ीक़ों या ख़ादिमों के साथ हो या ग़ैरों के साथ।

www.dawateislami.net

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ

करो **अल्लाह** उसे जानता है[376] और तोशा (सफ़र का ख़र्च) साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है[377] और मुझ से डरते रहो

يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

ऐ अक़्ल वालो[378] तुम पर कुछ गुनाह नहीं[379] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो

فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ

तो जब अ़रफ़ात से पलटो[380] तो **अल्लाह** की याद करो[381] मश्अ़रे ह़राम के पास[382] और

اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ

उस का ज़िक्र करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और बेशक तुम इस से पहले बहके हुए थे[383] फिर बात

اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

येह है कि ऐ कुरैशियो तुम भी वहीं से पलटो जहां से लोग पलटते हैं[384] और **अल्लाह** से मुआफ़ी मांगो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ

मेहरबान है फिर जब अपने ह़ज के काम पूरे कर चुको[385] तो **अल्लाह** का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे[386] बल्कि

376 : बदियों की मुमानअ़त के बा'द नेकियों की तरग़ीब फ़रमाई कि बजाए फ़िस्क़ के तक़्वा और बजाए जिदाल के अख़्लाक़े ह़मीदा इख़्तियार करो। **377 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ यमनी ह़ज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मुतवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर सुवाल शुरूअ़ करते और कभी ग़स्ब व ख़ियानत के मुरतकिब होते उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो ! औरों पर बार न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़ गारी है। एक क़ौल येह है कि तक़्वा का तोशा साथ लो जिस त़रह़ दुन्यवी सफ़र के लिये तोशा ज़रूरी है ऐसे ही सफ़रे आख़िरत के लिये परहेज़ गारी का तोशा लाज़िम है। **378 :** या'नी अ़क़्ल का मुक़्तज़ा ख़ौफ़े इलाही है जो **अल्लाह** से न डरे वोह बे अ़क़्लों की त़रह़ है। **379 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मानों ने ख़याल किया कि राहे ह़ज में जिस ने तिजारत की या ऊंट किराए पर चलाए उस का ह़ज ही क्या ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** जब तक तिजारत से अफ़्आ़ले ह़ज की अदा में फ़र्क़ न आए उस वक़्त तक तिजारत मुबाह़ है। **380 :** ''अ़रफ़ात'' एक मक़ाम का नाम है जो मौक़िफ़ (ह़ाजियों के ठहरने की जगह) है। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि ह़ज़रते आदम और ह़ज़रते ह़व्वा जुदाई के बा'द 9 ज़िल ह़िज्जा को अ़रफ़ात के मक़ाम पर जम्अ़ हुए और दोनों में तआ़रुफ़ हुवा, इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा और मक़ाम का नाम अ़रफ़ात हुवा। एक क़ौल येह है कि चूंकि इस रोज़ बन्दे अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं इस लिये इस दिन का नाम अ़रफ़ा है। **मस्अला :** अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़र्ज़ है क्यूं कि इफ़ाज़ा (मश्अ़रे ह़राम की त़रफ़ जाना) बिला वुक़ूफ़ मुतसव्वर नहीं। **381 :** तल्बिया व तह्लील (''لَبَّیْکَ اللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ'' और ''لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ'' कहना) व तक्बीर व सना व दुआ़ के साथ या नमाज़े मग़रिब व इ़शा के साथ **382 :** मश्अ़रे ह़राम जबले क़ुज़ह है जिस पर इमाम वुक़ूफ़ करता है। **मस्अला :** वादिये मुह़स्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा मौक़िफ़ है इस में वुक़ूफ़ वाजिब है बे उ़ज़्र तर्क करने से दम लाज़िम आता है, और मश्अ़रे ह़राम के पास वुक़ूफ़ अफ़्ज़ल है। **383 :** त़रीक़े ज़िक्र व इ़बादत कुछ न जानते थे। **384 :** क़ुरैश मुज़्दलिफ़ा में ठहर रहते थे और सब लोगों के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ न करते, जब लोग अ़रफ़ात से पलटते तो येह मुज़्दलिफ़ा से पलटते और इस में अपनी बड़ाई समझते, इस आयत में उन्हें हुक्म दिया गया कि सब के साथ अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करें और एक साथ पलटें येही ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَیْہِمَا السَّلَام की सुन्नत है। **385 :** त़रीक़े ह़ज का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ाजी 8 ज़िल ह़िज्जा की सुब्ह़ को मक्कए मुकर्रमा से मिना की त़रफ़ रवाना हो वहां अ़रफ़ा या'नी 9 ज़िल ह़िज्जा की फ़ज्र तक ठहरे, उसी रोज़ मिना से अ़रफ़ात आए। बा'दे ज़वाल इमाम दो ख़ुत़्बे पढ़े यहां ह़ाजी ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ इमाम के साथ ज़ोहर के वक़्त में जम्अ़ कर के पढ़े, इन दोनों नमाज़ों के लिये अज़ान एक होगी और तक्बीरें दो और दोनों नमाज़ों के दरमियान सुन्नते ज़ोहर के सिवा कोई नफ़्ल न पढ़ा जाए, इस जम्अ़ के लिये इमामे आ'ज़म ज़रूरी है अगर इमामे

www.dawateislami.net

أَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي

इस से ज़ियादा और कोई आदमी यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में दे और

الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا

आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में

النصف

حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ

भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा[387] ऐसों को उन की कमाई से

مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ

भाग है[388] और अल्लाह जल्द हिसाब करने वाला है[389] और अल्लाह की याद करो गिने हुए

مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ

दिनों में[390] तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस

اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾

पर गुनाह नहीं परहेज़ गार के लिये[391] और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

आ'ज़म न हो, या गुमराह बद मज़्हब हो तो हर एक नमाज़ अ़लाहदा अपने अपने वक़्त में पढ़ी जाए। और अ़रफ़ात में ग़ुरूब तक ठहरे फिर मुज़्दलिफ़ा की त़रफ़ लौटे और जबले क़ुज़ह के क़रीब उतरे, मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इशा की नमाज़ें जम्अ़ कर के इशा के वक़्त पढ़े और फ़ज्र की नमाज़ ख़ूब अव्वल वक़्त अंधेरे में पढ़े। वादिये मुहस्सिर के सिवा तमाम मुज़्दलिफ़ा और बत़्ने उ़रना के सिवा तमाम अ़रफ़ात मौक़िफ़ है। जब सुब्ह ख़ूब रोशन हो तो रोज़े नह़्र या'नी 10 ज़िल हिज्जा को मिना की त़रफ़ आए और बत़्ने वादी से जमरए अ़क़बा की 7 मर्तबा रमी करे। फिर अगर चाहे क़ुरबानी करे फिर बाल मुंडाए या कतराए, फिर अय्यामे नह़्र में से किसी दिन त़वाफ़े ज़ियारत करे। फिर मिना आ कर तीन रोज़ इक़ामत करे और ग्यारहवीं के ज़वाल के बा'द तीनों जमरों की रमी करे उस जमरे से शुरूअ़ करे जो मस्जिद के क़रीब है फिर जो उस के बा'द है फिर जमरए अ़क़बा, हर एक की सात सात मरतबा, फिर अगले रोज़ ऐसा ही करे, फिर अगले रोज़ ऐसा ही, फिर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ चला आए। (तफ़्सील क़ुतुबे फ़िक़्ह में मज़्कूर है)। **386 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब हज के बा'द का'बे के क़रीब अपने बाप दादा के फ़ज़ाइल बयान किया करते थे, इस्लाम में बताया गया कि येह शोहरत व ख़ुदनुमाई की बेकार बातें हैं, बजाए इस के ज़ौक़ो शौक़ के साथ ज़िक्रे इलाही करो। **मस्अला :** इस आयत से ज़िक्रे जह्र व ज़िक्रे जमाअ़त साबित होता है। **387 :** दुआ़ करने वालों की दो क़िस्में बयान फ़रमाईं : **एक** वोह काफ़िर जिन की दुआ़ में सिर्फ़ त़लबे दुन्या होती थी आख़िरत पर उन का ए'तिक़ाद न था, उन के हक़ में इर्शाद हुवा कि आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं। **दूसरे** वोह ईमानदार जो दुन्या व आख़िरत दोनों की बेहतरी की दुआ़ करते हैं। **मस्अला :** मोमिन दुन्या की बेहतरी जो त़लब करता है वोह भी अम्रे जाइज़ और दीन की ताईद व तक़्वियत के लिये, इस लिये इस की येह दुआ़ भी उमूरे दीन से है। **388 : मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि दुआ़ कस्ब व आ'माल में दाख़िल है। ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक्सर येही दुआ़ फ़रमाते थे "اَللّٰهُمَّ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ"। **389 :** अ़न्क़रीब क़ियामत क़ाइम कर के बन्दों का हिसाब फ़रमाएगा। तो चाहिये कि बन्दे ज़िक्रो दुआ़ व त़ाअ़त में जल्दी करें। (مدارک وخازن) **390 :** उन दिनों से अय्यामे तशरीक़ (ज़िल हिज्जा के तीन दिन 11, 12, 13), और ज़िक्रुल्लाह से नमाज़ों के बा'द और रम्ये जिमार के वक़्त तक्बीर कहना मुराद है। **391 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग दो फ़रीक़ थे बा'ज़ जल्दी करने वालों को गुनहगार बताते थे, बा'ज़ रह जाने वालों को। क़ुरआने पाक ने बयान फ़रमा दिया कि इन दोनों में कोई गुनहगार नहीं।

www.dawateislami.net

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا

और बा'ज़ आदमी वोह है कि दुन्या की ज़िन्दगी में उस की बात तुझे भली लगे[392] और अपने दिल की बात पर **अल्लाह** को

فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿۲۰۴﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ

गवाह लाए और वोह सब से बड़ा झगड़ालू है और जब पीठ फेरे तो ज़मीन में फ़साद डालता

فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿۲۰۵﴾ وَاِذَا قِيْلَ

फिरे और खेती और जानें तबाह करे और **अल्लाह** फ़साद से राज़ी नहीं और जब उस से कहा

لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

जाए कि **अल्लाह** से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की[393] ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ

और कोई आदमी अपनी जान बेचता है[394] **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर

بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे दाख़िल हो[395] और शैतान

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

के क़दमों पर न चलो[396] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है और अगर इस के बा'द भी बिचलो (बहको) कि

392 शाने नुज़ूल : येह और इस से अगली आयत अख़्नस बिन शुरैक़ मुनाफ़िक़ के हक़ में नाज़िल हुई जो हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत लजाजत (ख़ुशामद) से मीठी मीठी बातें करता था और अपने इस्लाम और आप की महब्बत का दा'वा करता और इस पर क़समें खाता, और दरपर्दा फ़साद अंगेज़ी में मसरूफ़ रहता था, मुसल्मानों के मवेशी को इस ने हलाक किया और उन की खेती को आग लगा दी। **393 :** गुनाह से ज़ुल्म व सरकशी (करना) और नसीहत की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना मुराद है। (خازن) **394 शाने नुज़ूल :** हज़रते सुहैब इब्ने सिनान रूमी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत कर के हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में मदीनए तय्यिबा की तरफ़ रवाना हुए, मुश्रिकीने क़ुरैश की एक जमाअ़त ने आप का तआ़क़ुब किया तो आप सुवारी से उतरे और तरकश से तीर निकाल कर फ़रमाने लगे कि ऐ क़ुरैश ! तुम में से कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि मैं तीर मारते मारते तमाम तरकश ख़ाली न कर दूं, और फिर जब तक तलवार मेरे हाथ में रहे उस से मारूं ! उस वक़्त तक तुम्हारी जमाअ़त का खेत (ख़ातिमा) हो जाएगा ! अगर तुम मेरा माल चाहो जो मक्कए मुकर्रमा में मदफ़ून है तो मैं तुम्हें उस का पता बता दूं तुम मुझ से तअर्रुज़ (छेड़छाड़) न करो ! वोह इस पर राज़ी हो गए और आप ने अपने तमाम माल का पता बता दिया, जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो येह आयत नाज़िल हुई, हुज़ूर ने तिलावत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारी येह जान फ़रोशी बड़ी नाफ़ेअ़ तिजारत है। **395 शाने नुज़ूल :** अहले किताब में से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्हाब हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने के बा'द शरीअ़ते मूसवी के बा'ज़ अह्काम पर क़ाइम रहे, शम्बा (हफ़्ते के दिन) की ता'ज़ीम करते इस रोज़ शिकार से इज्तिनाब लाज़िम जानते, और ऊंट के दूध और गोश्त से परहेज़ करते, और येह ख़याल करते कि येह चीज़ें इस्लाम में तो मुबाह हैं इन का करना ज़रूरी नहीं और तौरैत में इन से इज्तिनाब लाज़िम किया गया है तो इन के तर्क करने में इस्लाम की मुख़ालफ़त भी नहीं है और शरीअ़ते मूसवी पर अ़मल भी होता है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि इस्लाम के अह्काम का पूरा इत्तिबाअ़ करो या'नी तौरैत के अह्काम मन्सूख़ हो गए अब उन से तमस्सुक (या'नी उन पर अ़मल) न करो। (خازن) **396 :** उस के वसाविस व शुबुहात में न आओ।

www.dawateislami.net

جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۰۹﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ

तुम्हारे पास रोशन हुक्म आ चुके[397] तो जान लो कि अल्लाह ज़बर दस्त हिक्मत वाला है   काहे के इन्तिज़ार में हैं[398]

اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ ؕ

मगर येही कि अल्लाह का अ़ज़ाब आए छाए हुए बादलों में और फ़िरिश्ते उतरें[399] और काम हो चुके

وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾ سَلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۭ ع

और सब कामों की रुजूअ़ अल्लाह ही की त़रफ़ है   बनी इसराईल से पूछो हम ने कितनी रोशन निशानियां उन्हें

بَيِّنَةٍ ؕ وَ مَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

दीं[400]   और जो अल्लाह की आई हुई ने'मत को बदल दे[401] तो बेशक अल्लाह का अ़ज़ाब

الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ يَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ

सख़्त है   काफ़िरों की निगाह में दुन्या की ज़िन्दगी आरास्ता की गई[402] और मुसल्मानों से हंसते

اٰمَنُوْا ۘ وَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ وقف لازم

हैं[403]   और डर वाले उन से ऊपर होंगे क़ियामत के दिन[404] और ख़ुदा जिसे

يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ

चाहे बे गिनती दे   लोग एक दीन पर थे[405]   फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۪ وَ اَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ

ख़ुश ख़बरी देते[406] और डर सुनाते[407]   और उन के साथ सच्ची किताब उतारी[408] कि वोह लोगों में

---

397 : और बा वुजूद वाज़ेह़ दलीलों के इस्लाम की राह के ख़िलाफ़ रविश इख़्तियार करो 398 : मिल्लते इस्लाम के छोड़ने और शैत़ान की फ़रमां बरदारी करने वाले 399 : जो अ़ज़ाब पर मामूर हैं। 400 : कि उन के अम्बिया के मो'जिज़ात को उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील बनाया, उन के इर्शाद और उन की किताबों को दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का शाहिद किया। 401 : अल्लाह की ने'मत से आयाते इलाहिय्यह मुराद हैं जो सबबे रुश्दो हिदायत हैं और इन की बदौलत गुमराही से नजात ह़ासिल होती है, इन्हीं में से वोह आयात हैं जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और हु़ज़ूर की नुबुव्वत व रिसालत का बयान है। यहूदो नसारा की तह़रीफ़ें उस ने'मत की तब्दील है। 402 : वोह इसी की क़द्र करते और इसी पर मरते हैं 403 : और सामाने दुन्यवी से इन की बे रग़बती देख कर इन की तह़क़ीर करते हैं, जैसा कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द और अ़म्मार बिन यासिर और सुहैब व बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को देख कर कुफ़्फ़ार तमस्ख़ुर (मज़ाक़) करते थे और दौलते दुन्या के ग़ुरूर में अपने आप को ऊंचा समझते थे। 404 : या'नी ईमानदार रोज़े क़ियामत जन्नाते आ़लिया में होंगे और मग़रूर कुफ़्फ़ार जहन्नम में ज़लीलो ख़्वार। 405 : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने से अ़ह्दे नूह़ तक सब लोग एक दीन और एक शरीअ़त पर थे, फिर इन में इख़्तिलाफ़ हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, येह बि'सत में पहले रसूल हैं। (خازن) 406 : ईमानदारों और फ़रमां बरदारों को सवाब की। (مدارک وخازن) 407 : काफ़िरों और ना फ़रमानों को अ़ज़ाब का। (خازن) 408 : जैसा कि ह़ज़रते आदम व शीस व इदरीस पर सह़ाइफ़ और ह़ज़रते मूसा पर तौरैत, ह़ज़रते दावूद पर ज़बूर, ह़ज़रते ईसा पर इन्जील और ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ुरआन।

www.dawateislami.net

النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ

उन के इख़्तिलाफ़ों का फ़ैसला कर दे और किताब में इख़्तिलाफ़ उन्हीं ने डाला जिन को दी गई थी[409] बा'द इस के कि

بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۖ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا

उन के पास रोशन हुक्म आ चुके[410] आपस की सरकशी से तो अल्लाह ने ईमान वालों को वोह हक़ बात सुझा दी

اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ

जिस में झगड़ रहे थे अपने हुक्म से और अल्लाह जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢١٣﴾ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ

सीधी राह दिखाए क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर

مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۖ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا

अगलों की सी रूदाद न आई[411] पहुंची उन्हें सख़्ती और शिद्दत और हिला हिला डाले गए

حَتَّىٰ يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَىٰ نَصْرُ اللَّهِ ۗ أَلَا إِنَّ

यहां तक कि कह उठा रसूल[412] और उस के साथ के ईमान वाले कब आएगी अल्लाह की मदद[413] सुन लो बेशक

نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۖ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ

अल्लाह की मदद क़रीब है तुम से पूछते हैं[414] क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च

خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ

करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों और राहगीर के लिये है

409 : येह इख़्तिलाफ़ तब्दील व तहरीफ़ और ईमान व कुफ़्र के साथ था जैसा कि यहूदो नसारा से वाक़ेअ़ हुवा। (خازن) **410 :** या'नी येह इख़्तिलाफ़ नादानी से न था बल्कि **411 :** और जैसी सख़्तियां उन पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए अह़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं, इस में इन्हें सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि राहे ख़ुदा में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं हैं। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رضی اللہ عنہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم सायए का'बा में अपनी चादर मुबारक से तक्या किये हुए तशरीफ़ फ़रमा थे हम ने ह़ुज़ूर से अ़र्ज़ की, कि ह़ुज़ूर हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते, हमारी क्यूं मदद नहीं करते ? फ़रमाया : तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबाए जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर डाले जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे, और इन में की कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी। **412 :** या'नी शिद्दत इस निहायत (ह़द) को पहुंच गई कि उन उम्मतों के रसूल और उन के फ़रमां बरदार मोमिन भी त़लबे मदद में जल्दी करने लगे बा वुजूदे कि रसूल बड़े साबिर होते हैं और उन के अस्ह़ाब भी। लेकिन बा वुजूद इन इन्तिहाई मुसीबतों के वोह लोग अपने दीन पर क़ाइम रहे और कोई मुसीबत व बला उन के हाल को मुतग़य्यर न कर सकी। **413 :** इस के जवाब में उन्हें तसल्ली दी गई और येह इर्शाद हुवा **414 शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्र बिन जमूह़ के जवाब में नाज़िल हुई जो बूढ़े शख़्स थे और बड़े मालदार थे, इन्हों ने ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से सुवाल किया था

www.dawateislami.net

وَمَا تَفۡعَلُوۡا مِنۡ خَيۡرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيۡمٌ ﴿۲۱۵﴾ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الۡقِتَالُ

और जो भलाई करो[415] बेशक अल्लाह उसे जानता है[416] तुम पर फ़र्ज़ हुवा ख़ुदा की राह में लड़ना

وَهُوَ كُرۡهٌ لَّكُمۡ ۚ وَعَسٰٓى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـــًٔا وَّهُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ ۚ وَعَسٰٓى اَنۡ

और वोह तुम्हें ना गवार है[417] और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और क़रीब है कि

تُحِبُّوۡا شَيۡـــًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ وَاَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۱۶﴾ ع ٢٦

कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[418]

يَسۡـــَٔلُوۡنَكَ عَنِ الشَّهۡرِ الۡحَرَامِ قِتَالٍ فِيۡهِ ؕ قُلۡ قِتَالٌ فِيۡهِ كَبِيۡرٌ ؕ

तुम से पूछते हैं माहे हराम में लड़ने का हुक्म[419] तुम फ़रमाओ इस में लड़ना बड़ा गुनाह है[420]

وَصَدٌّ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَكُفۡرٌۢ بِهٖ وَالۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ق وَاِخۡرَاجُ

और अल्लाह की राह से रोकना और उस पर ईमान न लाना और मस्जिदे हराम से रोकना और उस के बसने

اَهۡلِهٖ مِنۡهُ اَكۡبَرُ عِنۡدَ اللّٰهِ ۚ وَالۡفِتۡنَةُ اَكۡبَرُ مِنَ الۡقَتۡلِ ؕ وَلَا

वालों को निकाल देना[421] अल्लाह के नज़्दीक येह गुनाह इस से भी बड़े हैं और इन का फ़साद[422] क़त्ल से सख़्त तर है[423] और

يَزَالُوۡنَ يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ حَتّٰى يَرُدُّوۡكُمۡ عَنۡ دِيۡنِكُمۡ اِنِ اسۡتَطَاعُوۡا ؕ وَمَنۡ

हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर बन पड़े[424] और तुम में

कि क्या ख़र्च करें और किस पर ख़र्च करें ? इस आयत में उन्हें बता दिया गया कि जिस क़िस्म का और जिस क़दर माल क़लील या कसीर ख़र्च करो उस में सवाब है और मसारिफ़ उस के येह हैं। **मस्अला :** आयत में सदक़ए नाफ़िला का बयान है, मां बाप को ज़कात और सदक़ाते वाजिबा देना जाइज़ नहीं (جمل وغیرہ) **415 :** येह हर नेकी को आम है इन्फ़ाक़ हो या और कुछ, और बाक़ी मसारिफ़ भी इस में आ गए। **416 :** उस की जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। **417 मस्अला :** जिहाद फ़र्ज़ है जब इस की शराइत़ पाई जाएं, अगर काफ़िर मुसल्मानों के मुल्क पर चढ़ाई करें तो जिहाद फ़र्ज़े ऐन होता है वरना फ़र्ज़े किफ़ाया। **418 :** कि तुम्हारे हक़ में क्या बेहतर है। तो तुम पर लाज़िम है हुक्मे इलाही की इत़ाअ़त करो और उसी को बेहतर समझो चाहे वोह तुम्हारे नफ़्स पर गिरां हो। **419 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम ﷺ ने अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श की सरकर्दगी में मुजाहिदीन की एक जमाअ़त रवाना फ़रमाई थी उस ने मुश्रिकीन से क़िताल किया, उन का ख़याल था कि वोह रोज़ जुमादल उख़्रा का आख़िर दिन है मगर दर ह़क़ीक़त चांद 29 को हो गया था और वोह रजब की पहली तारीख़ थी, इस पर कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को आ़र दिलाई कि तुम ने माहे ह़राम में जंग की और हुज़ूर से इस के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होने लगे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **420 :** मगर सह़ाबा से येह गुनाह वाक़ेअ़ नहीं हुवा क्यूं कि उन्हें चांद होने की ख़बर ही न थी उन के नज़्दीक वोह दिन माहे ह़राम रजब का न था। **मस्अला :** माह हाए ह़राम में जंग की ह़ुरमत का हुक्म आयए "فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ" (तो मुश्रिकों को मारो जहां पाओ) से मन्सूख़ हो गया। **421 :** जो मुश्रिकीन से वाक़ेअ़ हुवा कि उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ और आप के अस्ह़ाब को साले हुदैबिया का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रोका और आप के ज़मानए क़ियामे मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आप को और आप के अस्ह़ाब को इतनी ईज़ाएं दीं कि वहां से हिजरत करना पड़ी **422 :** या'नी मुश्रिकीन का। कि वोह शिर्क करते हैं और सय्यिदे आ़लम ﷺ और मोमिनीन को मस्जिदे ह़राम से रोकते और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं देते हैं **423 :** क्यूं कि क़त्ल तो बा'ज़ ह़ालात में मुबाह़ होता है और कुफ़्र किसी ह़ाल में मुबाह़ नहीं, और यहां तारीख़ का मश्कूक होना उ़ज़्रे मा'क़ूल है और कुफ़्फ़ार के कुफ़्र के लिये तो कोई उ़ज़्र ही नहीं। **424 :** इस में ख़बर दी गई है कि कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से हमेशा अ़दावत रखेंगे कभी इस के ख़िलाफ़ न होगा और जहां तक उन से मुम्किन होगा वोह मुसल्मानों को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने की सई करते

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

दुन्या में और आख़िरत में[425] (الف) और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने अल्लाह के लिये अपने घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में लड़े

اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۱۸﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ

वोह रहमते इलाही के उम्मीद वार हैं और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[425] (ب) तुम से शराब

عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ

और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और

اِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ

इन का गुनाह इन के नफ़्अ़ से बड़ा है[426] और तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें[427] तुम फ़रमाओ जो फ़ाज़िल बचे[428]

रहेंगे। "اِنِ اسْتَطَاعُوْا" से मुस्तफ़ाद होता है कि बि करमिही तआ़ला वोह अपनी इस मुराद में नाकाम रहेंगे। **425 (الف) मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम आ'माल बातिल हो जाते हैं। आख़िरत में तो इस त़रह़ कि उन पर कोई अज्रो सवाब नहीं, और दुन्या में इस त़रह़ कि शरीअ़त मुरतद के क़त्ल का हुक्म देती है, उस की औ़रत उस पर ह़लाल नहीं रहती, वोह अपने अक़ारिब का वरसा पाने का मुस्तह़िक़ नहीं रहता, उस का माल मा'सूम नहीं रहता, उस की मद्ह़ो सना व इमदाद जाइज़ नहीं। (روح البیان وغیرہ) **425 (ب) शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श की सरकर्दगी में जो मुजाहिदीन भेजे गए थे उन की निस्बत बा'ज़ लोगों ने कहा कि चूंकि उन्हें ख़बर न थी कि येह दिन रजब का है इस लिये उस रोज़ क़िताल करना गुनाह तो न हुवा लेकिन इस का कुछ सवाब भी न मिलेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि उन का येह अ़मले जिहाद मक़्बूल है और इस पर उन्हें उम्मीद वारे रह़मते इलाही रहना चाहिये और येह उम्मीद क़त़्अ़न पूरी होगी। (خازن) **मस्अला :** "يَرْجُوْنَ" से ज़ाहिर हुवा कि अ़मल से अज्र वाजिब नहीं होता बल्कि सवाब देना मह़्ज़ फ़ज़्ले इलाही है। **426 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि अगर शराब का एक क़त़रा कूंएं में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं, और अगर दरिया में शराब का क़त़रा पड़े फिर दरिया ख़ुश्क हो और वहां घास पैदा हो उस में अपने जानवरों को न चराऊं। سُبْحٰنَ اللّٰه ! गुनाह से किस क़दर नफ़रत है। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى اِتِّبَاعَهُمْ (अल्लाह तआ़ला हमें इन की इत्तिबाअ़ नसीब फ़रमाए)। शराब 3 सि.हि. में ग़ज़्वए अह़ज़ाब से चन्द रोज़ बा'द ह़राम की गई इस से क़ब्ल येह बताया गया था कि जूए और शराब का गुनाह इन के नफ़्अ़ से ज़ियादा है। नफ़्अ़ तो येही है कि शराब से कुछ सुरूर पैदा होता है या इस की ख़रीदो फ़रोख़्त से तिजारती फ़ाएदा होता है, और जूए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है। और गुनाहों और मफ़्सदों का क्या शुमार ! अ़क़्ल का ज़वाल, ग़ैरत व ह़मिय्यत का ज़वाल, इबादात से मह़रूमी, लोगों से अ़दावतें, सब की नज़र में ख़्वार होना, दौलतो माल की इज़ाअ़त। **एक रिवायत** में है कि जिब्रीले अमीन ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के हुज़ूर में अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला को जा'फ़रे त़य्यार की चार ख़स्लतें पसन्द हैं हुज़ूर ने ह़ज़रते जा'फ़र رضی اللہ عنہ से दरयाफ़्त फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि **एक** तो येह है कि मैं ने शराब कभी नहीं पी या'नी हुक्मे हुरमत से पहले भी और इस की वज्ह येह थी कि मैं जानता था कि इस से अ़क़्ल ज़ाइल होती है और मैं चाहता था कि अ़क़्ल और भी तेज़ हो, **दूसरी ख़स्लत** येह है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मैं ने कभी बुत की पूजा नहीं की क्यूं कि मैं जानता था कि येह पथ्थर है न नफ़्अ़ दे सके न ज़रर, **तीसरी** ख़स्लत येह है कि कभी मैं ज़िना में मुब्तला न हुवा कि इस को बे ग़ैरती समझता था, **चौथी** ख़स्लत येह कि मैं ने कभी झूट नहीं बोला क्यूं कि मैं इस को कमीना पन ख़याल करता था। **मस्अला :** शत़रन्ज, ताश वग़ैरा हार जीत के खेल और जिन पर बाज़ी लगाई जाए सब जूए में दाख़िल और ह़राम हैं। (روح البیان) **427 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने मुसल्मानों को सदक़ा देने की रग़बत दिलाई तो आप से दरयाफ़्त किया गया कि मिक़्दार इर्शाद फ़रमाएं कितना माल राहे ख़ुदा में दिया जाए ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **428 :** या'नी जितना

www.dawateislami.net

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱۹﴾ فِي الدُّنْيَا وَ

इसी तरह अल्लाह तुम से आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम दुन्या और आख़िरत के काम सोच

الْاٰخِرَةِ ؕ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَ اِنْ

कर करो[429] और तुम से यतीमों का मस्अला पूछते हैं[430] तुम फ़रमाओ उन का भला करना बेहतर है और अगर

تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ

अपना उन का ख़र्च मिला लो तो वोह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है बिगाड़ने वाले को संवारने वाले से और अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۲۰﴾ وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ

तो तुम्हें मशक़्क़त में डालता बेशक अल्लाह ज़बर दस्त हिक्मत वाला है और शिर्क वाली औ़रतों से निकाह़ न करो

حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَ لَا

जब तक मुसल्मान न हो जाएं[431] और बेशक मुसल्मान लौंडी मुश्रिका से अच्छी[432] अगर्चे वोह तुम्हें भाती हो और

تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ

मुश्रिकों के निकाह़ में न दो जब तक वोह ईमान न लाएं[433] और बेशक मुसल्मान ग़ुलाम मुश्रिक से अच्छा

तुम्हारी ह़ाजत से ज़ाइद हो। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ाजत से ज़ाइद माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ था, सह़ाबए किराम अपने माल में से अपनी ज़रूरत की क़द्र ले कर बाक़ी सब राहे ख़ुदा में तसद्दुक़ कर देते थे! येह हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ हो गया। **429 :** कि जितना तुम्हारी दुन्यवी ज़रूरत के लिये काफ़ी हो वोह ले कर बाक़ी सब अपने नफ़्ए आख़िरत के लिये ख़ैरात कर दो। (خازن) **430 :** कि इन के अम्वाल को अपने माल से मिलाने का क्या हुक्म है। **शाने नुज़ूल :** आयत "اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا" के नुज़ूल के बा'द लोगों ने यतीमों के माल जुदा कर दिये और उन का खाना पीना अ़लाहदा कर दिया, इस में येह सूरतें भी पेश आईं कि जो खाना यतीम के लिये पकाया और उस में से कुछ बच रहा वोह ख़राब हो गया और किसी के काम न आया उस में यतीमों का नुक़्सान हुवा, येह सूरतें देख कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अगर यतीम के माल की ह़िफ़ाज़त की नज़र से उस का खाना, उस के औलिया अपने खाने के साथ मिला लें तो इस का क्या हुक्म है? इस पर येह आयत नाज़िल हुई और यतीमों के फ़ाएदे के लिये मिलाने की इजाज़त दी गई। **431 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते मरसद ग़नवी एक बहादुर शख़्स थे सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें मक्कए मुकर्रमा रवाना फ़रमाया ताकि वहां से तदबीर के साथ मुसल्मानों को निकाल लाएं! वहां अ़नाक़ नामी एक मुश्रिका औ़रत थी ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के साथ मह़ब्बत रखती थी ह़सीन और मालदार थी, जब उस को इन की आमद की ख़बर हुई तो वोह आप के पास आई और त़ालिबे विसाल हुई, आप ने बख़ौफ़े इलाही उस से ए'राज़ किया और फ़रमाया कि इस्लाम इस की इजाज़त नहीं देता! तब उस ने निकाह़ की दरख़्वास्त की, आप ने फ़रमाया कि येह भी रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इजाज़त पर मौक़ूफ़ है, अपने काम से फ़ारिग़ हो कर जब आप ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो ह़ाल अ़र्ज़ कर के निकाह़ की बाबत दरयाफ़्त किया! इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : जो कोई नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र करे वोह मुश्रिक है ख़्वाह अल्लाह को वाह़िद ही कहता हो और तौह़ीद का मुद्दई हो। (خازن) **432 शाने नुज़ूल :** एक रोज़ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने किसी ख़त़ा पर अपनी बांदी के त़मांचा मारा फिर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर इस का ज़िक्र किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस का ह़ाल दरयाफ़्त किया। अ़र्ज़ किया कि वोह अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और हुज़ूर की रिसालत की गवाही देती है, रमज़ान के रोज़े रखती है, ख़ूब वुज़ू करती और नमाज़ पढ़ती है! हुज़ूर ने फ़रमाया : वोह मोमिना है। आप ने अ़र्ज़ किया तो उस की क़सम! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर मब्ऊ़स फ़रमाया मैं उस को आज़ाद कर के उस के साथ निकाह़ करूंगा! और आप ने ऐसा ही किया, इस पर लोगों ने त़ा'ना ज़नी की, कि तुम ने एक सियाह फ़ाम बांदी के साथ निकाह़ किया बा वुजूदे कि फ़ुलां मुश्रिका हुर्रा (आज़ाद) औ़रत तुम्हारे लिये ह़ाज़िर है वोह ह़सीन भी है मालदार भी है, इस पर नाज़िल हुवा "وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ" या'नी मुसल्मान बांदी मुश्रिका से बेहतर है ख़्वाह मुश्रिका आज़ाद हो और हुस्न व माल की वज्ह से अच्छी मा'लूम होती हो। **433 :** येह औ़रत के

www.dawateislami.net

وَلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ

अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो वोह दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाते हैं[434] और **अल्लाह** जन्नत और बख़्शिश की त़रफ़

۲۷ ع۵ ۱۱ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾

बुलाता है अपने हुक्म से और अपनी आयतें लोगों के लिये बयान करता है कि कहीं वोह नसीह़त मानें

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي

और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक्म[435] तुम फ़रमाओ वोह नापाकी है तो औ़रतों से अलग रहो

الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ

हैज़ के दिनों और उन से नज़्दीकी न करो जब तक पाक न हो लें फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ

حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾

जहां से तुम्हें **अल्लाह** ने हुक्म दिया बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ؗ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ

तुम्हारी औ़रतें तुम्हारे लिये खेतियां हैं तो आओ अपनी खेती में जिस त़रह़ चाहो[436] और अपने भले का काम पहले करो[437]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَلَا

और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है और ऐ मह़बूब बिशारत दो ईमान वालों को और

تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ

अल्लाह को अपनी क़समों का निशाना न बना लो[438] कि एह़सान और परहेज़ गारी और लोगों में सुल्ह़ करने

औलिया को ख़ित़ाब है। **मस्अला :** मुसल्मान औ़रत का निकाह़ मुश्रिक व काफ़िर के साथ बात़िल व ह़राम है। **434 :** तो उन से इज्तिनाब ज़रूरी और उन के साथ दोस्ती व क़राबत ना रवा। **435 शाने नुज़ूल :** अ़रब के लोग यहूद व मजूस की त़रह़ हाइज़ा औ़रतों से कमाले नफ़रत करते थे, साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था, बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की त़रफ़ देखना और उन से कलाम भी ह़राम समझते थे, और नसारा इस के बर अ़क्स हैज़ के अय्याम में औ़रतों के साथ बड़ी मह़ब्बत से मश्ग़ूल होते थे और इख़्तिलात़ (मेलजोल) में बहुत मुबालग़ा करते थे। मुसल्मानों ने हु़ज़ूर से हैज़ का हुक्म दरयाफ़्त किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इफ़रात़ो तफ़रीत़ की राहें छोड़ कर ए'तिदाल की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि ह़ालते हैज़ में औ़रतों से मुजामअ़त मम्नूअ़ है। **436 :** या'नी औ़रतों की क़ुरबत से नस्ल का क़स्द करो, न क़ज़ाए शह्वत का। **437 :** या'नी आ'माले सालिह़ा या जिमाअ़ से पहले "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ना। **438 :** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ने अपने बहनोई नो'मान बिन बशीर के घर जाने और उन से कलाम करने और उन के ख़ुसूम (दुश्मनों) के साथ उन की सुल्ह़ कराने से क़सम खा ली थी, जब इस के मुतअ़ल्लिक़ उन से कहा जाता था तो कह देते थे कि मैं क़सम खा चुका हूं इस लिये येह काम कर ही नहीं सकता ! इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई और नेक काम करने से क़सम खा लेने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स नेकी से बाज़ रहने की क़सम खा ले तो उस को चाहिये कि क़सम को पूरा न करे बल्कि वोह नेक काम करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने किसी अम्र पर क़सम खा ली फिर मा'लूम हुवा कि ख़ैर और बेहतरी इस के ख़िलाफ़ में है तो चाहिये कि उस अम्रे ख़ैर को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है

www.dawateislami.net

النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ

की क़सम कर लो और अल्लाह सुनता जानता है अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता उन क़समों में जो बे इरादा ज़बान से निकल जाए

وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾

हां इस पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जो काम तुम्हारे दिल ने किये[439] और अल्लाह बख़्शने वाला हि़ल्म वाला है

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

वोह जो क़सम खा बैठते हैं अपनी औ़रतों के पास जाने की उन्हें चार महीने की मोहलत है पस अगर इस मुद्दत में फिर आए

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲۶﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ

तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और अगर छोड़ देने का इरादा पक्का कर लिया तो अल्लाह सुनता

عَلِيْمٌ ﴿۲۲۷﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا

जानता है[440] और त़लाक़ वालियां अपनी जानों को रोके रहें तीन हैज़ तक[441] और

يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْۤ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ

उन्हें ह़लाल नहीं कि छुपाएं वोह जो अल्लाह ने उन के पेट में पैदा किया[442] अगर अल्लाह और

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ

क़ियामत पर ईमान रखती हैं[443] और उन के शोहरों को इस मुद्दत के अन्दर उन के फेर लेने का ह़क़ पहुंचता है अगर

कि इस आयत से ब कसरत क़सम खाने की मुमानअ़त साबित होती है। **439 मस्अला :** क़सम तीन त़रह़ की होती है। (1) लग़्व (2) ग़मूस (3) मुन्अ़क़िदा। **लग़्व :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह इस के ख़िलाफ़ हो ! येह मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं। **ग़मूस :** येह है कि किसी गुज़रे हुए अम्र पर दानिस्ता झूटी क़सम खाए ! इस में गुनहगार होगा। **मुन्अ़क़िदा :** येह है कि किसी आयिन्दा अम्र पर क़स्द कर के क़सम खाए ! इस क़सम को अगर तोड़े तो गुनहगार भी है और कफ़्फ़ारा भी लाज़िम। **440 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोगों का येह मा'मूल था कि अपनी औ़रतों से माल त़लब करते अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो एक साल दो साल तीन साल या इस से ज़ियादा अ़र्सा उन के पास न जाने और सोह़बत तर्क करने की क़सम खा लेते थे और उन्हें परेशानी में छोड़ देते थे, न वोह बेवा ही थीं कि कहीं अपना ठिकाना कर लेतीं न शोहर दार कि शोहर से आराम पातीं, इस्लाम ने इस ज़ुल्म को मिटाया और ऐसी क़सम खाने वालों के लिये चार महीने की मुद्दत मुअ़य्यन फ़रमा दी कि अगर औ़रत से चार महीने या इस से ज़ाइद अ़र्से के लिये या ग़ैर मुअ़य्यन मुद्दत के लिये तर्के सोह़बत की क़सम खा ले जिस को ''ईला'' कहते हैं तो इस के लिये चार माह इन्तिज़ार की मोहलत है, इस अ़र्से में ख़ूब सोच समझ ले कि औ़रत को छोड़ना इस के लिये बेहतर है या रखना, अगर रखना बेहतर समझे और इस मुद्दत के अन्दर रुजूअ़ करे तो निकाह़ बाक़ी रहेगा और क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा, और अगर इस मुद्दत में रुजूअ़ न किया और क़सम न तोड़ी तो औ़रत निकाह़ से बाहर हो गई और उस पर त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ हो गई। **मस्अला :** अगर मर्द सोह़बत पर क़ादिर हो तो रुजूअ़ सोह़बत ही से होगा और अगर किसी वज्ह से क़ुदरत न हो तो बा'दे क़ुदरत सोह़बत का वा'दा रुजूअ़ है। (تفسیر احمدی) **441 :** इस आयत में मुत़ल्लक़ा औ़रतों की इ़द्दत का बयान है जिन औ़रतों को उन के शोहरों ने त़लाक़ दी, अगर वोह शोहर के पास न गई थीं और उन से ख़ल्वते सह़ीह़ा न हुई थी जब तो उन पर त़लाक़ की इ़द्दत ही नहीं है जैसा कि आयए "مَالَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ" में इर्शाद है। और जिन औ़रतों को ख़ुर्द साली (कम उ़म्री) या किब्र सिनी (बुढ़ापे) की वज्ह से हैज़ न आता हो या जो ह़ामिला हो उन की इ़द्दत का बयान सूरए त़लाक़ में आएगा, बाक़ी जो आज़ाद औ़रतें हैं यहां उन की इ़द्दत व त़लाक़ का बयान है कि उन की इ़द्दत तीन हैज़ है। **442 :** वोह ह़म्ल हो या ख़ूने हैज़। क्यूं कि उस के छुपाने से रज्अ़त और वलद में जो शोहर का ह़क़ है वोह ज़ाएअ़ होगा। **443 :** या'नी येही मुक़्तज़ाए ईमानदारी है।

www.dawateislami.net

اَرَادُوْۤا اِصْلَاحًا ؕ وَ لَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَ

मिलाप चाहें[444] और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा इन पर है शरअ़ के मुवाफ़िक़[445] और

ع ۲۸ ۷ ۱۲ لِلرِّجَالِ عَلَیْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۲۸﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪

मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है येह त़लाक़[446] दो बार तक है

فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَ لَا یَحِلُّ لَكُمْ اَنْ

फिर भलाई के साथ रोक लेना है[447] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ देना है[448] और तुम्हें रवा नहीं कि

تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ شَیْـًٔا اِلَّاۤ اَنْ یَّخَافَاۤ اَلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ

जो कुछ औ़रतों को दिया[449] उस में से कुछ वापस लो[450] मगर जब दोनों को अन्देशा हो कि अल्लाह की ह़दें क़ाइम न

اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا یُقِیْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِمَا فِیْمَا

करेंगे[451] फिर अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो कि वोह दोनों ठीक इन्ही ह़दों पर न रहेंगे तो उन पर कुछ गुनाह नहीं उस में जो बदला

افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَ مَنْ یَّتَعَدَّ حُدُوْدَ

दे कर औ़रत छुट्टी ले[452] येह अल्लाह की ह़दें हैं इन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की ह़दों से आगे

اللّٰهِ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۲۹﴾ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰی

बढ़े तो वोही लोग ज़ालिम हैं फिर अगर तीसरी त़लाक़ उसे दी तो अब वोह औ़रत इसे ह़लाल न होगी जब तक

444 : या'नी त़लाक़े रज्ई में इ़द्दत के अन्दर शोहर औ़रत से रुजूअ़ कर सकता है ख़्वाह औ़रत राज़ी हो या न हो लेकिन अगर शोहर को मिलाप मन्ज़ूर हो तो ऐसा करे, ज़रर रसानी का क़स्द न करे जैसा कि अहले जाहिलिय्यत औ़रत को परेशान करने के लिये करते थे। **445 :** या'नी जिस त़रह़ औ़रतों पर शोहरों के हुक़ूक़ की अदा वाजिब है इसी त़रह़ शोहरों पर औ़रतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत लाज़िम है। **446 :** या'नी त़लाक़े रज्ई। **शाने नुज़ूल :** एक औ़रत ने सय्यिदे आ़लम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि उस के शोहर ने कहा है कि वोह इस को त़लाक़ देता और रज्अ़त करता रहेगा हर मरतबा जब त़लाक़ की इ़द्दत गुज़रने के क़रीब होगी रज्अ़त कर लेगा फिर त़लाक़ दे देगा इसी त़रह़ उ़म्र भर इस को क़ैद रखेगा ! इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमा दिया कि त़लाक़े रज्ई दो बार तक है इस के बा'द फिर त़लाक़ देने पर रज्अ़त का ह़क़ नहीं। **447 :** रज्अ़त कर के **448 :** इस त़रह़ कि रज्अ़त न करे और इ़द्दत गुज़र कर औ़रत बाइना हो जाए। **449 :** या'नी महर **450 :** त़लाक़ देते वक़्त **451 :** जो हुक़ूक़े ज़ौजैन के मुतअ़ल्लिक़ हैं। **452 :** या'नी त़लाक़ ह़ासिल करे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत जमीला बिन्ते अ़ब्दुल्लाह के बाब में नाज़िल हुई, येह जमीला साबित इब्ने क़ैस इब्ने शम्मास के निकाह़ में थीं और शोहर से कमाले नफ़रत रखती थीं, रसूले ख़ुदा ﷺ के ह़ुज़ूर में अपने शोहर की शिकायत लाईं और किसी त़रह़ उन के पास रहने पर राज़ी न हुईं, तब साबित ने कहा कि मैं ने इन को एक बाग़ दिया है अगर येह मेरे पास रहना गवारा नहीं करतीं और मुझ से अ़लाह़दगी चाहती हैं तो वोह बाग़ मुझे वापस करें मैं इन को आज़ाद कर दूं ! जमीला ने इस को मन्ज़ूर किया ! साबित ने बाग़ ले लिया और त़लाक़ दे दी। इस त़रह़ की त़लाक़ को ख़ुलअ़ कहते हैं। **मस्अला :** ख़ुलअ़ त़लाक़े बाइन होता है। **मस्अला :** ख़ुलअ़ में लफ़्ज़े ''ख़ुलअ़'' का ज़िक्र ज़रूरी है। **मस्अला :** अगर जुदाई की त़लब गार औ़रत हो तो ख़ुलअ़ में मिक़्दारे महर से ज़ाइद लेना मक्रूह है, और अगर औ़रत की त़रफ़ से नुशूज़ (ना इत्तिफ़ाक़ी) न हो मर्द ही अ़लाह़दगी चाहे तो मर्द को त़लाक़ के इ़वज़ माल लेना मुत़्लक़न मक्रूह है।

www.dawateislami.net

تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ

दूसरे ख़ावन्द के पास न रहे[453] फिर वोह दूसरा अगर उसे तलाक़ दे दे तो इन दोनों पर गुनाह नहीं कि फिर आपस में मिल जाएं[454] अगर

ظَنَّاۤ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ

समझते हों कि **अल्लाह** की हदें निबाहेंगे और येह **अल्लाह** की हदें हैं जिन्हें बयान करता है

يَّعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۰﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ

दानिश मन्दों के लिये और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद आ लगे[455] तो उस वक़्त तक या भलाई के

بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ

साथ रोक लो[456] या निकोई (अच्छे सुलूक) के साथ छोड़ दो[457] और उन्हें ज़रर देने के लिये रोकना न हो कि हद से बढ़ो

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ٝ

और जो ऐसा करे वोह अपना ही नुक़्सान करता है[458] और **अल्लाह** की आयतों को ठट्ठा न बना लो[459]

وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَاۤ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

और याद करो **अल्लाह** का एहसान जो तुम पर है[460] और वोह जो तुम पर किताब

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ

व हिक्मत[461] उतारी तुम्हें नसीहत देने को और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۲۳۱﴾ ع وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ الربع ٢٩ ١٣

जानता है[462] और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और उन की मीआद पूरी हो जाए[463] तो ऐ औरतों के वालियो उन्हें न रोको इस से कि

يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ

अपने शोहरों से निकाह़ कर लें[464] जब कि आपस में मुवाफ़िक़े शरअ़ रिज़ा मन्द हो जाएं[465] येह नसीहत उसे दी जाती है

---

453 मस्अला : तीन तलाक़ों के बा'द औरत शोहर पर ब हुर्मते मुग़ल्लज़ा ह़राम हो जाती है अब न उस से रुजूअ़ हो सकता है न दोबारा निकाह़ जब तक कि ह़लाला न हो या'नी बा'दे इद्दत दूसरे से निकाह़ करे और वोह बा'दे सोह़बत तलाक़ दे फिर इद्दत गुज़रे। **454 :** दोबारा निकाह़ कर लें। **455 :** या'नी इद्दत तमाम होने के क़रीब हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत साबित बिन यसार अन्सारी के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन्हों ने अपनी औ़रत को तलाक़ दी थी और जब इद्दत क़रीबे ख़त्म होती थी रज्अ़त कर लिया करते थे ताकि औ़रत क़ैद में पड़ी रहे। **456 :** या'नी निबाहने और अच्छा मुआ़मला करने की निय्यत से रज्अ़त करो **457 :** और इद्दत गुज़र जाने दो ताकि बा'दे इद्दत वोह आज़ाद हो जाएं। **458 :** कि हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त कर के गुनहगार होता है। **459 :** कि इन की परवाह न करो और इन के ख़िलाफ़ अ़मल करो। **460 :** कि तुम्हें मुसल्मान किया और सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का उम्मती बनाया। **461 :** किताब से क़ुरआन और ह़िक्मत से अह़कामे क़ुरआन व सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद है। **462 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं। **463 :** या'नी उन की इद्दत गुज़र चुके **464 :** जिन को उन्हों ने अपने निकाह़ के लिये तजवीज़ किया हो ख़्वाह वोह नए हों या येही तलाक़ देने वाले, या इन से पहले जो तलाक़ दे चुके थे। **465 :** अपने कुफ़ू में महरे मिस्ल पर। क्यूं कि इस के ख़िलाफ़ की सूरत में औलिया ए'तिराज़ व

www.dawateislami.net

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ

जो तुम में से अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता हो येह तुम्हारे लिये ज़ियादा सुथरा और

اَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ

पाकीज़ा है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते और माएं दूध पिलाएं अपने

اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى

बच्चों को[466] पूरे दो बरस उस के लिये जो दूध की मुद्दत पूरी करनी चाहे[467] और जिस का

الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا

बच्चा है[468] उस पर औरतों का खाना पहनना है हस्बे दस्तूर[469] किसी जान पर बोझ न रखा जाएगा मगर उस के

وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى

मक़्दूर भर मां को ज़रर न दिया जाए उस के बच्चे से[470] और न औलाद वाले को उस की औलाद से[471] या मां ज़रर न दे अपने बच्चे को और न औलाद वाला अपनी औलाद को[472] और जो

الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا

बाप का क़ाइम मक़ाम है उस पर भी ऐसा ही वाजिब है फिर अगर मां बाप दोनों आपस की रिज़ा

तअ़र्रुज़ का हक़ रखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मा'क़िल बिन यसार मुज़नी की बहन का निकाह़ आ़सिम बिन अ़दी के साथ हुवा था, उन्हों ने त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़रने के बा'द फिर आ़सिम ने दरख़्वास्त की तो मा'क़िल बिन यसार मानेअ़ हुए ! उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (بخاری شریف) **466 :** बयाने त़लाक़ के बा'द येह सुवाल त़ब्अ़न सामने आता है कि अगर त़लाक़ वाली औ़रत की गोद में शीर ख़्वार बच्चा हो तो इस जुदाई के बा'द उस की परवरिश का क्या त़रीक़ा होगा ? इस लिये येह क़रीने ह़िक्मत है कि बच्चे की परवरिश के मुतअ़ल्लिक़ मां बाप पर जो अह़काम हैं वोह इस मौक़अ़ पर बयान फ़रमा दिये जाएं ! लिहाज़ा यहां उन मसाइल का बयान हुवा। **मस्अला :** मां ख़्वाह मुत़ल्लक़ा हो या न हो उस पर अपने बच्चे को दूध पिलाना वाजिब है बशर्ते कि बाप को उजरत पर दूध पिलवाने की क़ुदरत व इस्तित़ाअ़त न हो या कोई दूध पिलाने वाली मुयस्सर न आए या बच्चा मां के सिवा और किसी का दूध क़बूल न करे, अगर येह बातें न हों या'नी बच्चे की परवरिश ख़ास मां के दूध पर मौक़ूफ़ न हो तो मां पर दूध पिलाना वाजिब नहीं मुस्तह़ब है। (تفسیر احمدی وجمل وغیرہ) **467 :** या'नी इस मुद्दत का पूरा करना लाज़िम नहीं। अगर बच्चे को ज़रूरत न रहे और दूध छुड़ाने में उस के लिये ख़त़रा न हो तो इस से कम मुद्दत में भी छुड़ाना जाइज़ है। (تفسیر احمدی خازن وغیرہ) **468 :** या'नी वालिद। इस अन्दाज़े बयान से मा'लूम हुवा कि नसब बाप की त़रफ़ रुजूअ़ करता है। **469 मस्अला :** बच्चे की परवरिश और उस को दूध पिलवाना बाप के ज़िम्मे वाजिब है इस के लिये वोह दूध पिलाने वाली मुक़र्रर करे लेकिन अगर मां अपनी रग़बत से बच्चे को दूध पिलाए तो मुस्तह़ब है। **मस्अला :** शोहर अपनी ज़ौजा पर बच्चे के दूध पिलाने के लिये जब्र नहीं कर सकता और न औ़रत शोहर से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत त़लब कर सकती है जब तक कि उस के निकाह़ या इ़द्दत में रहे। **मस्अला :** अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़ौजा को त़लाक़ दी और इ़द्दत गुज़र चुकी तो वोह उस से बच्चे के दूध पिलाने की उजरत ले सकती है। **मस्अला :** अगर बाप ने किसी औ़रत को अपने बच्चे के दूध पिलाने पर ब उजरत मुक़र्रर किया और उस की मां उसी उजरत पर या बे मुआ़वज़ा दूध पिलाने पर राज़ी हुई तो मां ही दूध पिलाने की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है, और अगर मां ने ज़ियादा उजरत त़लब की तो बाप को उस से दूध पिलवाने पर मजबूर न किया जाएगा। (تفسیر احمدی ومدارک) "اَلْمَعْرُوْف" से मुराद येह है कि ह़स्बे ह़ैसिय्यत हो बिग़ैर तंगी और फ़ुज़ूल ख़र्ची के। **470 :** या'नी उस को उस के ख़िलाफ़े मरज़ी दूध पिलाने पर मजबूर न किया जाए। **471 :** ज़ियादा उजरत त़लब करे **472 :** मां का बच्चे को ज़रर देना येह है कि उस को वक़्त पर दूध न दे और उस की निगरानी न रखे या अपने साथ मानूस कर लेने के बा'द छोड़ दे, और बाप का बच्चे को ज़रर देना येह है कि मानूस बच्चे को मां से छीन ले या मां के ह़क़ में कोताही करे जिस से बच्चे को नुक़्सान पहुंचे।

www.dawateislami.net

وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَ اِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْۤا

और मश्वरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर गुनाह नहीं और अगर तुम चाहो कि दाइयों से अपने बच्चों को

اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّاۤ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَ

दूध पिलवाओ तो भी तुम पर मुज़ायक़ा नहीं जब कि जो देना ठहरा था भलाई के साथ उन्हें अदा कर दो और

اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۳۳﴾ وَ الَّذِيْنَ

अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है और तुम में जो

يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَ يَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ

मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को

اَشْهُرٍ وَّ عَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا

रोके रहें[473] तो जब उन की इद्दत पूरी हो जाए तो ऐ वालियो तुम पर मुआख़ज़ा नहीं उस काम में

فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۳۴﴾ وَ لَا

जो औ़रतें अपने मुआ़मले में मुवाफ़िक़े शरअ़ करें और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْۤ

तुम पर गुनाह नहीं इस बात में जो पर्दा रख कर तुम औ़रतों के निकाह़ का पयाम दो या अपने दिल में

اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَ لٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ

छुपा रखो[474] **अल्लाह** जानता है कि अब तुम उन की याद करोगे[475] हां उन से ख़ुफ़्या वा'दा न

سِرًّا اِلَّاۤ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ۬ وَ لَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى

कर रखो मगर येह कि इतनी ही बात कहो जो शरअ़ में मा'रूफ़ है और निकाह़ की गिरह पक्की न करो जब तक

473 : ह़ामिला की इ़द्दत तो वज़्ए़ ह़म्ल है जैसा कि सूरए त़लाक़ में मज़्कूर है। यहां ग़ैरे ह़ामिला का बयान है जिस का शोहर मर जाए उस की इ़द्दत चार माह दस रोज़ है इस मुद्दत में न वोह निकाह़ करे न अपना मस्कन छोड़े न बे उ़ज़्र तेल लगाए न ख़ुश्बू लगाए न सिंगार करे न रंगीन और रेशमी कपड़े पहने न मेहंदी लगाए न जदीद निकाह़ की बातचीत खुल कर करे, और जो त़लाक़े बाइन की इ़द्दत में हो उस का भी येही हुक्म है। अलबत्ता जो औ़रत त़लाक़े रज्ई़ की इ़द्दत में हो उस को ज़ीनत और सिंगार करना मुस्तह़ब है। **474 :** या'नी इ़द्दत में निकाह़ और निकाह़ का खुला हुवा पयाम तो मम्नूअ़ है लेकिन पर्दे के साथ ख़्वाहिशे निकाह़ का इज़्हार गुनाह नहीं मसलन येह कहे कि तुम बहुत नेक औ़रत हो, या अपना इरादा दिल ही में रखे और ज़बान से किसी त़रह़ न कहे। **475 :** और तुम्हारे दिलों में ख़्वाहिश होगी इसी लिये तुम्हारे वासित़े ता'रीज़ मुबाह़ की गई।

www.dawateislami.net

يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ

लिखा हुवा हुक्म अपनी मीआ़द को न पहुंच ले[476] और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे दिल की जानता है

فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ۠ ﴿۲۳۵﴾ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اِنْ ع ١٢ ٣٠

तो उस से डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला ह़िल्म वाला है तुम पर कुछ मुत़ालबा नहीं[477] अगर

طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِیْضَةً ۖۚ

तुम औ़रतों को त़लाक़ दो जब तक तुम ने उन को हाथ न लगाया हो या कोई महर मुक़र्रर न कर लिया हो[478]

وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَی الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَ عَلَی الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا

और उन को कुछ बरत्ने को दो[479] मक़्दूर वाले पर उस के लाइक़ और तंगदस्त पर उस के लाइक़ ह़स्बे दस्तूर

بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۲۳۶﴾ وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कुछ बरत्ने की चीज़ येह वाजिब है भलाई वालों पर[480] और अगर तुम ने औ़रतों को बे छूए

تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِیْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّاۤ اَنْ

त़लाक़ दे दी और उन के लिये कुछ महर मुक़र्रर कर चुके थे तो जितना ठहरा था उस का आधा वाजिब है मगर येह कि औ़रतें

یَّعْفُوْنَ اَوْ یَعْفُوَا الَّذِیْ بِیَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَ اَنْ تَعْفُوْۤا اَقْرَبُ

कुछ छोड़ दें[481] या वोह ज़ियादा दे[482] जिस के हाथ में निकाह़ की गिरह है[483] और ऐ मर्दो तुम्हारा ज़ियादा देना परहेज़ गारी से

لِلتَّقْوٰی ؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَیْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۲۳۷﴾

नज़्दीक तर है और आपस में एक दूसरे पर एह़सान को भुला न दो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[484]

حٰفِظُوْا عَلَی الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰی ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِیْنَ ﴿۲۳۸﴾ فَاِنْ

निगहबानी करो सब नमाज़ों[485] और बीच की नमाज़ की[486] और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से[487] फिर अगर

476 : या'नी इ़द्दत गुज़र चुके। **477 :** महर का **478 शाने नुज़ूल :** येह आयत एक अन्सारी के बाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने क़बीलए बनी ह़नीफ़ा की एक औ़रत से निकाह़ किया और कोई महर मुअ़य्यन न किया फिर हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दे दी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो अगर उस को हाथ लगाने से पहले त़लाक़ दी तो महर लाज़िम नहीं। हाथ लगाने से मुजामअ़त मुराद है, और ख़ल्वते सह़ीह़ा इसी के हुक्म में है। येह भी मा'लूम हुवा कि बे ज़िक्रे महर भी निकाह़ दुरुस्त है मगर इस सूरत में बा'दे निकाह़ महर मुअ़य्यन करना होगा अगर न किया तो बा'दे दुख़ूल महरे मिस्ल लाज़िम हो जाएगा। **479 :** तीन कपड़ों का एक जोड़ा। **480 :** जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया हो और उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी हो उस को तो जोड़ा देना वाजिब है, और इस के सिवा हर मुत़ल्लक़ा के लिये मुस्तह़ब है। (مدارک) **481 :** अपने उस निस्फ़ में से **482 :** निस्फ़ से। जो इस सूरत में वाजिब है। **483 :** या'नी शोहर। **484 :** इस में हुस्ने सुलूक व मकारिमे अख़्लाक़ (अच्छे अख़्लाक़) की तरग़ीब है। **485 :** या'नी पन्जगाना फ़र्ज़ नमाज़ों को उन के अवक़ात पर अरकान व शराइत़ के साथ अदा करते रहो। इस में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और औलाद व अज़्वाज के मसाइल व अह़काम के दरमियान में नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाना इस नतीजे पर पहुंचाता है कि इन को अदाए

خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا

ख़ौफ़ में हो तो पियादा या सुवार जैसे बन पड़े फिर जब इत्मीनान से हो तो **अल्लाह** की याद करो जैसा उस ने सिखाया जो

لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۹﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ

तुम न जानते थे और जो तुम में मरें और बीबियां छोड़

اَزْوَاجًا ۖۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ

जाएं वोह अपनी औरतों के लिये वसिय्यत कर जाएं[488] साल भर तक नान व नफ़क़ा देने की बे निकाले[489] फिर अगर

خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ

वोह ख़ुद निकल जाएं तो तुम पर उस का मुआख़ज़ा नहीं जो उन्हों ने अपने मुआमले में मुनासिब तौर पर किया

وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۰﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى

और **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है और तलाक़ वालियों के लिये भी मुनासिब तौर पर नान व नफ़क़ा है येह वाजिब है

الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۴۱﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۲﴾ ع اَلَمْ ع ٣١ ٧ ١٥

परहेज़ गारों पर **अल्लाह** यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतें कि कहीं तुम्हें समझ हो ऐ महबूब क्या

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪

तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴۳﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

मगर अक्सर लोग नाशुक्रे हैं[490] और लड़ो **अल्लाह** की राह में[491] और जान लो

नमाज़ से ग़ाफ़िल न होने दो, और नमाज़ की पाबन्दी से क़ल्ब की इस्लाह़ होती है जिस के बिग़ैर मुआ़मलात का दुरुस्त होना मुतसव्वर नहीं। **486 :** ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा और जम्हूर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم का मज़्हब येह है कि इस से नमाज़े अ़स्र मुराद है और अह़ादीस भी इस पर दलालत करती हैं। **487 :** इस से नमाज़ के अन्दर क़ियाम का फ़र्ज़ होना साबित हुवा। **488 :** अपने अक़ारिब को **489 :** इब्तिदाए इस्लाम में बेवा की इ़द्दत एक साल की थी और एक साल कामिल वोह शोहर के यहां रह कर नान व नफ़क़ा पाने की मुस्तह़िक़ होती थी फिर एक साल की इ़द्दत तो ''يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا'' से मन्सूख़ हुई जिस में बेवा की इ़द्दत चार माह दस दिन मुक़र्रर फ़रमाई गई, और साल भर का नफ़क़ा आयते मीरास से मन्सूख़ हुवा जिस में औ़रत का ह़िस्सा शोहर के तर्के से मुक़र्रर किया गया ! लिहाज़ा अब इस वसिय्यत का हुक्म बाक़ी न रहा। ह़िक्मत इस की येह है कि अ़रब के लोग अपने मूरिस (या'नी मरने वाले) की बेवा का निकलना या ग़ैर से निकाह़ करना बिल्कुल गवारा ही न करते थे और इस को आ़र समझते थे इस लिये अगर एक दम चार माह दस रोज़ की इ़द्दत मुक़र्रर की जाती तो येह उन पर बहुत शाक़ होती ! लिहाज़ा ब तदरीज उन्हें राह पर लाया गया। **490 :** बनी

www.dawateislami.net

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌ عَلِيۡمٌ ﴿۲۴۴﴾ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يُقۡرِضُ اللّٰهَ قَرۡضًا حَسَنًا

कि अल्लाह सुनता जानता है है कोई जो अल्लाह को क़र्ज़े हसन दे[492]

فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضۡعَافًا كَثِيۡرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقۡبِضُ وَيَبۡصُۜطُ ۖ وَاِلَيۡهِ

तो अल्लाह उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और अल्लाह तंगी और कशाइश करता है[493] और तुम्हें उसी की तरफ़

تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۲۴۵﴾ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الۡمَلَاِ مِنۡۢ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مُوۡسٰى ۘ

वقف لازم

फिर जाना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा बनी इसराईल के एक गुरोह को जो मूसा के बा'द हुवा[494]

اِذۡ قَالُوۡا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابۡعَثۡ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلۡ

जब अपने एक पैग़म्बर से बोले हमारे लिये खड़ा कर दो एक बादशाह कि हम ख़ुदा की राह में लड़ें नबी ने फ़रमाया क्या

عَسَيۡتُمۡ اِنۡ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الۡقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوۡا ؕ قَالُوۡا وَمَا لَنَاۤ اَلَّا

तुम्हारे अन्दाज़ ऐसे हैं कि तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो फिर न करो बोले हमें क्या हुवा कि

نُقَاتِلَ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَقَدۡ اُخۡرِجۡنَا مِنۡ دِيَارِنَا وَاَبۡنَآٮِٕنَا ؕ فَلَمَّا

हम अल्लाह की राह में न लड़ें हालां कि हम निकाले गए हैं अपने वतन और अपनी औलाद से[495] तो फिर जब

इसराईल की एक जमाअ़त थी जिस के बिलाद (शहरों) में ताऊ़न हुवा तो वोह मौत के डर से अपनी बस्तियां छोड़ कर भागे और जंगल में जा पड़े, ब हुक्मे इलाही सब वहीं मर गए ! कुछ अ़र्से के बा'द हज़रते हिज़्क़ील عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ से उन्हें अल्लाह तआ़ला ने ज़िन्दा फ़रमाया और वोह मुद्दतों ज़िन्दा रहे। इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि आदमी मौत के डर से भाग कर जान नहीं बचा सकता तो भागना बेकार है जो मौत मुक़द्दर है वोह ज़रूर पहुंचेगी बन्दे को चाहिये कि रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहे, मुजाहिदीन को भी समझना चाहिये कि जिहाद से बैठ रहना मौत को दफ़्अ़ नहीं कर सकता लिहाज़ा दिल मज़बूत रखना चाहिये। **491 :** और मौत से न भागो जैसा बनी इसराईल भागे थे क्यूं कि मौत से भागना काम नहीं आता। **492 :** या'नी राहे ख़ुदा में इख़्लास के साथ ख़र्च करे। राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाले लुत्फ़ो करम है, बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़ता फ़रमाया हुवा, ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़ता से मजाज़ी मिल्क रखता है, मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन पाएगा और बहुत ज़ियादा पाएगा। **493 :** जिस के लिये चाहे रोज़ी तंग करे जिस के लिये चाहे वसीअ़ फ़रमाए तंगी व फ़राख़ी उस के क़ब्ज़े में है और वोह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुस्अ़त का वा'दा करता है। **494 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन्हों ने अ़हदे इलाही को फ़रामोश किया बुत परस्ती में मुब्तला हुए सरकशी और बद अफ़्आ़ली इन्तिहा को पहुंची, उन पर क़ौमे जालूत मुसल्लत़ हुई जिस को अ़मालिक़ा कहते हैं क्यूं कि जालूत इ़मलीक़ बिन आ़द की औलाद से एक निहायत जाबिर बादशाह था उस की क़ौम के लोग मिस्र व फ़िलिस्तीन के दरमियान बह़रे रूम के साह़िल पर रहते थे। उन्हों ने बनी इसराईल के शहर छीन लिये आदमी गिरिफ़्तार किये त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां कीं, उस ज़माने में कोई नबी क़ौमे बनी इसराईल में मौजूद न थे, ख़ानदाने नुबुव्वत से सिर्फ़ एक बीबी बाक़ी रही थीं जो ह़ामिला थीं उन के फ़रज़न्द तवल्लुद (पैदा) हुए उन का नाम इश्मवील रखा, जब वोह बड़े हुए तो उन्हें इ़ल्मे तौरैत ह़ासिल करने के लिये बैतुल मक़्दिस में एक कबीरुस्सिन (बुज़ुर्ग) आ़लिम के सिपुर्द किया वोह आप के साथ कमाले शफ़्क़त करते और आप को फ़रज़न्द कहते, जब आप सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे तो एक शब आप उस आ़लिम के क़रीब आराम फ़रमा रहे थे कि हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने उसी आ़लिम की आवाज़ में या इश्मवील कह कर पुकारा, आप आ़लिम के पास गए और फ़रमाया कि आप ने मुझे पुकारा है ? आ़लिम ने ब ईं ख़याल कि इन्कार करने से कहीं आप डर न जाएं येह कह दिया कि फ़रज़न्द तुम सो जाओ ! फिर दोबारा हज़रते जिब्रील ने इसी त़रह़ पुकारा और हज़रते इश्मवील عَلَيْهِ السَّلَام आ़लिम के पास गए आ़लिम ने कहा ऐ फ़रज़न्द अब अगर मैं तुम्हें

www.dawateislami.net

كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ

उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया मुंह फेर गए मगर उन में के थोड़े[496] और अल्लाह ख़ूब जानता है

بِالظَّالِمِينَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ

ज़ालिमों को और उन से उन के नबी ने फ़रमाया बेशक अल्लाह ने ताूलूत को तुम्हारा बादशाह बना कर

مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ

भेजा है[497] बोले उसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी[498] और हम उस से ज़ियादा सल्तनत के मुस्तहिक़

مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَ

हैं और उसे माल में भी वुस्अ़त नहीं दी गई[499] फ़रमाया उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया[500] और

زَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَ

उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी[501] और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे[502] और

اللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ

अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है[503] और उन से उन के नबी ने फ़रमाया उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास

التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ

ताबूत[504] जिस में तुम्हारे रब की त़रफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअ़ज़्ज़ज़ मूसा और मुअ़ज़्ज़ज़

फिर पुकारूं तो तुम जवाब न देना, तीसरी मरतबा में ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ज़ाहिर हो गए और उन्हों ने बिशारत दी कि अल्लाह तआ़ला ने आप को नुबुव्वत का मन्सब अ़ता फ़रमाया आप अपनी क़ौम की त़रफ़ जाइये और अपने रब के अह़काम पहुंचाइये जब आप क़ौम की त़रफ़ तशरीफ़ लाए उन्हों ने तक्ज़ीब की और कहा कि आप इतनी जल्दी नबी बन गए ! अच्छा अगर आप नबी हैं तो हमारे लिये एक बादशाह क़ाइम कीजिये। (خازن وغیرہ) **495 :** कि क़ौमे जालूत ने हमारी क़ौम के लोगों को उन के वत़न से निकाला उन की औलाद को क़त्लो ग़ारत किया चार सो चालीस शाही ख़ानदान के फ़रज़न्दों को गिरिफ़्तार किया जब ह़ालत यहां तक पहुंच चुकी तो अब हमें जिहाद से क्या चीज़ मानेअ़ हो सकती है ? तब नबिय्युल्लाह की दुआ़ से अल्लाह तआ़ला ने उन की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाई और उन के लिये एक बादशाह मुक़र्रर किया और जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया (خازن) **496 :** जिन की ता'दाद अहले बद्र के बराबर तीन सो तेरह थी। **497 :** ''त़ालूत'' बिन्यामीन बिन ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से हैं आप का नाम तूले क़ामत की वज्ह से त़ालूत है, ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से एक अ़सा मिला था और बताया गया था कि जो शख़्स तुम्हारी क़ौम का बादशाह होगा उस का क़द इस अ़सा के बराबर होगा ! आप ने उस अ़सा से त़ालूत का क़द नाप कर फ़रमाया कि मैं तुम को ब हुक्मे इलाही बनी इसराईल का बादशाह मुक़र्रर करता हूं ! और बनी इसराईल से फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने त़ालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है। (خازن وجمل) **498 :** बनी इसराईल के सरदारों ने अपने नबी ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि नुबुव्वत तो लावा बिन या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में चली आती है और सल्त़नत यहूद बिन या'क़ूब की औलाद में, और त़ालूत इन दोनों ख़ानदानों में से नहीं हैं तो बादशाह कैसे हो सकते हैं। **499 :** वोह ग़रीब शख़्स हैं बादशाह को साहि़बे माल होना चाहिये **500 :** या'नी सल्त़नत वरसा नहीं कि किसी नस्ल व ख़ानदान के साथ ख़ास हो येह मह़ज़ फ़ज़्ले इलाही पर है। इस में शीआ़ का रद है जिन का ए'तिक़ाद येह है कि इमामत विरासत है। **501 :** या'नी ''नस्ल व दौलत'' पर सल्त़नत का इस्तिह़्क़ाक़ नहीं ''इल्म व क़ुव्वत'' सल्त़नत के लिये बड़े मुईन हैं। और त़ालूत उस ज़माने में तमाम बनी इसराईल से ज़ियादा इल्म रखते थे और सब से जसीम और तुवाना थे। **502 :** इस में विरासत को कुछ दख़्ल नहीं। **503 :** जिसे चाहे ग़नी कर दे और वुस्अ़ते माल अ़ता फ़रमा दे। इस के बा'द बनी इसराईल ने ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सल्त़नत के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है तो इस की

هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

हारून के तर्के की उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर

مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۴۸﴾ ع فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِیْكُمْ ٣٢ ع ٢ ١٦

ईमान रखते हो फिर जब ता़लूत लश्करों को ले कर शहर से जुदा हुवा[505] बोला बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर से

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَیْسَ مِنِّیْ ۚ وَ مَنْ لَّمْ یَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّیْۤ

आज़्माने वाला है तो जो उस का पानी पिये वोह मेरा नहीं और जो न पिये वोह मेरा है

اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِیَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا

मगर वोह जो एक चुल्लू अपने हाथ से ले ले[506] तो सब ने उस से पिया मगर थोड़ों ने[507] फिर जब

جَاوَزَهٗ هُوَ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْیَوْمَ بِجَالُوْتَ

ता़लूत और उस के साथ के मुसल्मान नहर के पार गए बोले हम में आज ता़क़त नहीं जालूत

निशानी क्या है ? (خازن ومدارک) **504 :** येह ताबूत शमशाद की लकड़ी का एक ज़र अन्दूद (सोने का काम किया हुवा) सन्दूक़ था जिस का तूल तीन हाथ का और अ़र्ज़ दो हाथ का था, इस को अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया था, इस में तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्वीरें थीं इन के मसाकिन व मकानात की तस्वीरें थीं और आख़िर में हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की, और हुज़ूर की दौलत सराए अक़्दस की तस्वीर एक याक़ूते सुर्ख़ में थी कि हुज़ूर ब ह़ालते नमाज़ क़ियाम में हैं और गिर्द आप के आप के अस्ह़ाब। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इन तमाम तस्वीरों को देखा, येह सन्दूक़ विरासतन मुन्तक़िल होता हुवा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तक पहुंचा, आप इस में तौरैत भी रखते थे और अपना मख़्सूस सामान भी चुनान्चे इस ताबूत में अल्वाह़े तौरैत के टुकड़े भी थे और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़सा और आप के कपड़े और आप की ना'लैने शरीफ़ैन और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का इमामा और उन का अ़सा और थोड़ा सा "मन्न" जो बनी इसराईल पर नाज़िल होता था। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जंग के मौक़ओं पर इस सन्दूक़ को आगे रखते थे इस से बनी इसराईल के दिलों को तस्कीन रहती थी। आप के बा'द येह ताबूत बनी इसराईल में मुतवारिस (बतौ़रे विरासत मुन्तक़िल) होता चला आया जब उन्हें कोई मुश्किल दरपेश होती वोह इस ताबूत को सामने रख कर दुआएं करते और काम्याब होते, दुश्मनों के मुक़ाबले में इस की बरकत से फ़त्ह़ पाते, जब बनी इसराईल की ह़ालत ख़राब हुई और उन की बद अ़मली बहुत बढ़ गई और अल्लाह तआ़ला ने उन पर अ़मालिक़ा को मुसल्लत़ किया तो वोह उन से ताबूत छीन कर ले गए और इस को नजिस और गन्दे मक़ामात में रखा और इस की बे हुरमती की और इन गुस्ताख़ियों की वज्ह से वोह त़रह़ त़रह़ के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला हुए उन की पांच बस्तियां हलाक हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि ताबूत की इहानत उन की बरबादी का बाइस है तो उन्हों ने ताबूत एक बेलगाड़ी पर रख कर बेलों को छोड़ दिया और फ़िरिश्ते इस को बनी इसराईल के सामने त़ालूत के पास लाए और इस ताबूत का आना बनी इसराईल के लिये त़ालूत की बादशाही की निशानी क़रार दिया गया था, बनी इसराईल येह देख कर उस की बादशाही के मुक़िर हुए और बे दरंग जिहाद के लिये आमादा हो गए क्यूं कि ताबूत पा कर उन्हें अपनी फ़त्ह़ का यक़ीन हो गया, त़ालूत ने बनी इसराईल में से सत्तर हज़ार जवान मुन्तख़ब किये जिन में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी थे। (جلالین وجمل وخازن ومدارک وغیرہ)

फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात का ए'ज़ाज़ो एह़तिराम लाज़िम है इन की बरकत से दुआएं क़बूल होती और ह़ाजतें रवा होती हैं और तबर्रुकात की बे हुरमती गुमराहों का त़रीक़ा और बरबादी का सबब है। **फ़ाएदा :** ताबूत में अम्बिया की जो तस्वीरें थीं वोह किसी आदमी की बनाई हुई न थीं अल्लाह की त़रफ़ से आई थीं। **505 :** या'नी बैतुल मक़्दिस से दुश्मन की त़रफ़ रवाना हुवा वोह वक़्त निहायत शिद्दत की गरमी का था, लश्करियों ने त़ालूत से इस की शिकायत की और पानी के त़लब गार हुए **506 :** येह इम्तिहान मुक़र्रर फ़रमाया गया था कि शिद्दते तिश्नगी के वक़्त जो इत़ाअ़ते हुक्म पर मुस्तक़िल रहा वोह आयिन्दा भी मुस्तक़िल रहेगा और सख़्तियों का मुक़ाबला कर सकेगा और जो इस वक़्त अपनी ख़्वाहिश से मग़्लूब हो और ना फ़रमानी करे वोह आयिन्दा सख़्तियों को क्या बरदाश्त करेगा। **507 :** जिन की ता'दाद तीन सो तेरह थी उन्हों ने सब्र किया और एक चुल्लू उन के और उन के जानवरों के लिये काफ़ी हो गया और उन के क़ल्बो ईमान को क़ुव्वत हुई और नहर से सलामत गुज़र गए, और जिन्हों ने ख़ूब पिया था उन के होंट सियाह हो गए तिश्नगी और बढ़ गई और हिम्मत हार गए।

www.dawateislami.net

وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ

और उस के लश्करों की बोले वोह जिन्हें **अल्लाह** से मिलने का यक़ीन था कि बारहा कम

قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾ وَلَمَّا

जमाअ़त ग़ालिब आई है ज़ियादा गुरौह पर **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह** साबिरों के साथ है[508] फिर जब

بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ

सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे

اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ

पाउं जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर तो इन्हों ने उन को भगा दिया **अल्लाह** के

اللّٰهِ ۙ۫ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ

हुक्म से और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को[509] और **अल्लाह** ने उसे सल्त़नत और हिक्मत[510] अ़त़ा फ़रमाई और उसे जो

مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ

चाहा सिखाया[511] और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे[512] तो ज़रूर ज़मीन

الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

तबाह हो जाए मगर **अल्लाह** सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम ऐ मह़बूब

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

तुम पर ठीक ठीक पढ़ते हैं और तुम बेशक रसूलों में हो

508 : उन की मदद फ़रमाता है और उसी की मदद काम आती है। **509 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद "ईशा" त़ालूत के लश्कर में थे और उन के साथ उन के तमाम फ़रज़न्द भी, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام उन सब में छोटे थे बीमार थे रंग ज़र्द था बकरियां चराते थे, जब जालूत ने बनी इसराईल से मुक़ाबिल त़लब किया वोह उस की क़ुव्वते जसामत देख कर घबराए क्यूं कि वोह बड़ा जाबिर क़वी शहज़ोर अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े और मोटे जिस्म वाला) क़दआवर था, त़ालूत ने अपने लश्कर में ए'लान किया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करे मैं अपनी बेटी उस के निकाह़ में दूंगा और निस्फ़ मुल्क उस को दूंगा मगर किसी ने इस का जवाब न दिया तो त़ालूत ने अपने नबी ह़ज़रते इशमवील عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि बारगाहे इलाही में दुआ़ करें, आप ने दुआ़ की तो बताया गया कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام जालूत को क़त्ल करेंगे, त़ालूत ने आप से अ़र्ज़ किया कि अगर आप जालूत को क़त्ल करें तो मैं अपनी लड़की आप के निकाह़ में दूं और निस्फ़ मुल्क पेश करूं ! आप ने क़बूल फ़रमाया और जालूत की त़रफ़ रवाना हो गए, सफ़े क़िताल क़ाइम हुई और ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام दस्ते मुबारक में फ़लाख़न (पथ्थर फेंकने का आला) ले कर मुक़ाबिल हुए, जालूत के दिल में आप को देख कर दहशत पैदा हुई मगर उस ने बातें बहुत मुतकब्बिराना कीं और आप को अपनी क़ुव्वत से मरऊ़ब करना चाहा आप ने फ़लाख़न में पथ्थर रख कर मारा वोह उस की पेशानी को तोड़ कर पीछे से निकल गया और जालूत मर कर गिर गया ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को ला कर त़ालूत के सामने डाल दिया, तमाम बनी इसराईल ख़ुश हुए और त़ालूत ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ह़स्बे वा'दा निस्फ़ मुल्क दिया और अपनी बेटी का आप के साथ निकाह़ कर दिया, एक मुद्दत के बा'द त़ालूत ने वफ़ात पाई तमाम मुल्क पर ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सल्त़नत हुई। (جمل وغیرہ) **510 :** हिक्मत से नुबुव्वत मुराद है। **511 :** जैसे कि ज़िरह बनाना और जानवरों का कलाम समझना। **512 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला

www.dawateislami.net

الجزء الثالث (3) وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ

येह[513] रसूल हैं कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया[514] इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया[515] और कोई वोह है

بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ

जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया[516] और हम ने मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दीं[517] और पाकीज़ा रूह से

الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

उस की मदद की[518] और **अल्लाह** चाहता तो उन के बा'द वाले आपस में न लड़ते बा'द इस के कि

جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ

उन के पास खुली निशानियां आ चुकीं[519] लेकिन वोह तो मुख़्तलिफ़ हो गए उन में कोई ईमान पर रहा और कोई काफ़िर हो गया[520]

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ قف وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿۲۵۳﴾ ع يٰۤاَيُّهَا ع ٣٣ ١٥

और **अल्लाह** चाहता तो वोह न लड़ते मगर **अल्लाह** जो चाहे करे[521] ऐ

नेकों के सदक़े में दूसरों की बलाएं भी दफ़्अ़ फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡھُمَا से मरवी है कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला एक सालेह़ मुसल्मान की बरकत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है। سُبۡحٰنَ اللّٰہ नेकों का क़ुर्ब भी फ़ाएदा पहुंचाता है। (خازن) **513 :** येह ह़ज़रात जिन का ज़िक्र मा सबक़ (गुज़श्ता आयात) में और ख़ास आयए ''اِنَّکَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ'' में फ़रमाया गया। **514 :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام के मरातिब जुदागाना हैं, बा'ज़ ह़ज़रात से बा'ज़ अफ़्ज़ल हैं अगर्चे नुबुव्वत में कोई तफ़्रिक़ा नहीं, वस्फ़े नुबुव्वत में सब शरीके यक दिगर (बराबर के शरीक) हैं मगर ख़साइस व कमालात में दरजे मुतफ़ावित (अलग अलग) हैं, येही आयत का मज़्मून है और इसी पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है। (خازن ومدارک) **515 :** या'नी बे वासित़ा जैसे कि ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام को तूर पर कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم को मे'राज में। (جمل) **516 :** वोह हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم हैं कि आप को ब दरजाते कसीरा तमाम अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام पर अफ़्ज़ल किया। इस पर तमाम उम्मत का इज्माअ़ है और ब कसरत अह़ादीस से साबित है। आयत में हुज़ूर की इस रिफ़्अ़ते मर्तबत का बयान फ़रमाया गया और नामे मुबारक की तसरीह़ (वज़ाह़त) न की गई। इस से भी हुज़ूरे अक़्दस عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उ़लुव्वे शान (मरातिब की बुलन्दी) का इज़्हार मक़्सूद है कि ज़ाते वाला की येह शान है कि जब तमाम अम्बिया पर फ़ज़ीलत का बयान किया जाए तो सिवाए ज़ाते अक़्दस के येह वस्फ़ किसी पर सादिक़ ही न आए और कोई इश्तिबाह राह न पा सके। हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वोह ख़साइस व कमालात जिन में आप तमाम अम्बिया पर फ़ाइक़ व अफ़्ज़ल हैं और आप का कोई शरीक नहीं, बे शुमार हैं कि क़ुरआने करीम में येह इर्शाद हुवा : ''दरजों बुलन्द किया।'' इन दरजों की कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाई, तो अब कौन ह़द लगा सकता है। इन बे शुमार ख़साइस में से बा'ज़ का इज्माली व मुख़्तसर बयान येह है कि आप की रिसालत आ़म्मा है, तमाम काएनात आप की उम्मत है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ''وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا کَآفَّۃً لِّلنَّاسِ بَشِیۡرًا وَّ نَذِیۡرًا'', दूसरी आयत में फ़रमाया : ''لِیَکُوۡنَ لِلۡعٰلَمِیۡنَ نَذِیۡرًا'', मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में इर्शाद हुवा : ''اُرۡسِلۡتُ اِلَی الۡخَلَآئِقِ کَآفَّۃً'' और आप पर नुबुव्वत ख़त्म की गई। क़ुरआने पाक में आप को ख़ातमुन्नबिय्यीन फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा ''خُتِمَ بِیَ النَّبِیُّوۡنَ'' आयाते बय्यिनात व मो'जिज़ाते बाहिरात में आप को तमाम अम्बिया पर अफ़्ज़ल फ़रमाया गया, आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़्ज़ल किया गया, शफ़ाअ़ते कुब्रा आप को मर्ह़मत हुई, क़ुर्बे ख़ास मे'राज आप को मिला, इ़ल्मी व अ़मली कमालात में आप को सब से आ'ला किया और इस के इ़लावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को अ़त़ा हुए। (مدارک، جمل، خازن، بیضاوی وغیرہ) **517 :** जैसे मुर्दे को ज़िन्दा करना, बीमारों को तन्दुरुस्त करना, मिट्टी से परिन्द बनाना, ग़ैब की ख़बरें देना वग़ैरा। **518 :** या'नी जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام से जो हमेशा आप के साथ रहते थे। **519 :** या'नी अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام के मो'जिज़ात। **520 :** या'नी अम्बियाए साबिक़ीन की उम्मतें भी ईमान व कुफ़्र में मुख़्तलिफ़ रहीं, येह न हुवा कि तमाम उम्मत मुत़ीअ़ हो जाती। **521 :** उस के मुल्क में उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता और येही ख़ुदा की शान है।

الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقۡنٰكُمۡ مِّنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا بَيۡعٌ

ईमान वालो अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो वोह दिन आने से पहले जिस में न ख़रीदो फ़रोख़्त

فِيۡهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالۡكٰفِرُوۡنَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ۝٢٥٤ اَللّٰهُ لَاۤ

है न काफ़िरों के लिये दोस्ती न शफ़ाअ़त और काफ़िर ख़ुद ही ज़ालिम हैं[522] अल्लाह है जिस

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَـىُّ الۡقَيُّوۡمُ ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِى

के सिवा कोई मा'बूद नहीं[523] वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला[524] उसे न ऊंघ आए न नींद[525] उसी का है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[526] वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के[527]

يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ ۚ وَلَا يُحِيۡطُوۡنَ بِشَىۡءٍ مِّنۡ عِلۡمِهٖۤ

जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[528] और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से

اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرۡسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ وَلَا يَـُٔوۡدُهٗ

मगर जितना वोह चाहे[529] उस की कुरसी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन[530] और उसे भारी नहीं

حِفۡظُهُمَا ۚ وَهُوَ الۡعَلِىُّ الۡعَظِيۡمُ ۝٢٥٥ لَاۤ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ

इन की निगहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला[531] कुछ ज़बर दस्ती नहीं दीन में[532] बेशक ख़ूब जुदा हो गई है

522 : कि उन्हों ने ज़िन्दगानिये दुन्या में रोज़े ह़ाजत या'नी क़ियामत के लिये कुछ न किया। **523 :** इस में अल्लाह तआ़ला की उलूहिय्यत और उस की तौह़ीद का बयान है। इस आयत को आयतुल कुरसी कहते हैं, अह़ादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं। **524 :** या'नी वाजिबुल वुजूद और आ़लम का ईजाद करने और तदबीर फ़रमाने वाला। **525 :** क्यूं कि येह नक़्स है और वोह नक़्स व ऐ़ब से पाक। **526 :** इस में उस की मालिकिय्यत और नफ़ाज़े अम्र व तसर्रुफ़ का बयान है और निहायत लत़ीफ़ पैराए में रद्दे शिर्क है कि जब सारा जहान उस की मिल्क है तो शरीक कौन हो सकता है ! मुश्रिकीन या तो कवाकिब को पूजते हैं जो आस्मानों में हैं या दरियाओं, पहाड़ों, पथ्थरों, दरख़्तों, जानवरों, आग वग़ैरा को जो ज़मीन में हैं। जब आस्मान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह की मिल्क है तो येह कैसे पूजने के क़ाबिल हो सकते हैं। **527 :** इस में मुश्रिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बता दिया गया कि कुफ़्फ़ार के लिये शफ़ाअ़त नहीं। अल्लाह के हु़ज़ूर माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता लोगों) के सिवा कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इज़्न वाले अम्बिया व मलाएका व मोमिनीन हैं। **528 :** या'नी मा क़ब्ल व मा बा'द या उमूरे दुन्या व आख़िरत। **529 :** और जिन को वोह मुत्त़लअ़ फ़रमाए वोह अम्बिया व रुसुल हैं जिन को ग़ैब पर मुत्त़लअ़ फ़रमाना उन की नुबुव्वत की दलील है। दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : "فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ" (خازن) **530 :** इस में उस की अ़ज़मते शान का इज़्हार है और कुरसी से या इल्मो क़ुदरत मुराद है या अ़र्श या वोह जो अ़र्श के नीचे और सातों आस्मानों के ऊपर है और मुम्किन है कि येह वोही हो जो "फ़लकुल बुरूज" के नाम से मश्हूर है। **531 :** इस आयत में इलाहिय्यात के आ'ला मसाइल का बयान है और इस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला मौजूद है, इलाहिय्यत में वाह़िद है, ह़यात के साथ मुत्तसिफ़ है, वाजिबुल वुजूद अपने मा सिवा का मूजिद है, तह़य्युज़ व हुलूल से मुनज़्ज़ा और तग़य्युर और फ़ुतूर से मुबर्रा है, न किसी को उस से मुशाबहत, न अ़वारिज़े मख़्लूक़ को उस तक रसाई, मुल्क व मलकूत का मालिक, उसूल व फ़ुरूअ़ का मुब्दिअ़, क़वी गिरिफ़्त वाला, जिस के हु़ज़ूर सिवाए माज़ून (इजाज़त याफ़्ता) के कोई शफ़ाअ़त के लिये लब न हिला सके, तमाम अश्या का जानने वाला, जली (ज़ाहिर) का भी और ख़फ़ी का भी, कुल्ली का भी और जुज़्ई का भी, وَاسِعُ الْمُلْكِ وَالْقُدْرَةِ, इदराक व वहमो फ़ह्म से बर तरो बाला। **532 :** सिफ़ाते इलाहिय्यह के बा'द "لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ" फ़रमाने में येह इश्आ़र (बता देना) है कि अब आ़क़िल के लिये क़बूले ह़क़ में तअम्मुल की कोई वज्ह बाक़ी न रही।

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ

नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाए[533] उस ने

اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾

बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं और अल्लाह सुनता जानता है

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ۬

अल्लाह वाली है मुसल्मानों का इन्हें अंधेरियों से[534] नूर की तरफ़ निकालता है

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى

और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वोह उन्हें नूर से अंधेरियों की तरफ़

الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى ع ٣٤

निकालते हैं येही लोग दोज़ख़ वाले हैं इन्हें हमेशा उस में रहना ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था

الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ وقف لازم

उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में इस पर[535] कि अल्लाह ने उसे बादशाही दी[536] जब कि इब्राहीम ने कहा कि

رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ

मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है[537] बोला मैं जिलाता और मारता हूं[538] इब्राहीम ने फ़रमाया

533 : इस में इशारा है कि काफ़िर के लिये अव्वल अपने कुफ़्र से तौबा व बेज़ारी ज़रूर है, इस के बा'द ईमान लाना सहीह होता है। **534 :** कुफ़्रो ज़लालत की, ईमान व हिदायत की रोशनी और **535 :** गुरूरो तकब्बुर पर। **536 :** और तमाम ज़मीन की सल्तनत अ़ता फ़रमाई, इस पर उस ने बजाए शुक्र व ताअ़त के तकब्बुर व तजब्बुर किया और रबूबिय्यत का दा'वा करने लगा। इस का नाम नमरूद बिन किन्आ़न था। सब से पहले सर पर ताज रखने वाला येही है। जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस को ख़ुदा परस्ती की दा'वत दी, ख़्वाह आग में डाले जाने से क़ब्ल या इस के बा'द तो वोह कहने लगा कि तुम्हारा रब कौन है जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो ? **537 :** या'नी अज्साम में मौत व हयात पैदा करता है। एक ख़ुदा ना शनास के लिये येह बेहतरीन हिदायत थी और इस में बताया गया था कि ख़ुद तेरी ज़िन्दगी उस के वुजूद की शाहिद है कि तू एक बेजान नुत्फ़ा था, जिस (ज़ात) ने इस को इन्सानी सूरत दी और हयात अ़ता फ़रमाई वोह रब है और ज़िन्दगी के बा'द फिर ज़िन्दा अज्साम को जो मौत देता है वोह परवर दगार है, उस की क़ुदरत की शहादत ख़ुद तेरी अपनी मौत व हयात में मौजूद है, उस के वुजूद से बे ख़बर रहना कमाले जहालत व सफ़ाहत (बे वुक़ूफ़ी) और इन्तिहाई बद नसीबी है। येह दलील ऐसी ज़बर दस्त थी कि इस का जवाब नमरूद से बन न पड़ा और इस ख़याल से कि मज्मअ़ के सामने उस को ला जवाब और शरमिन्दा होना पड़ता है उस ने कज बह़्सी (फ़ुज़ूल तक्रार) इख़्तियार की। **538 :** नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया, उन में से एक को क़त्ल किया, एक को छोड़ दिया और कहने लगा कि मैं भी जिलाता मारता हूं, या'नी किसी को गिरिफ़्तार कर के छोड़ देना उस को जिलाना है, येह उस की निहायत अह़मक़ाना बात थी, कहां क़त्ल करना और छोड़ना और कहां मौत व हयात पैदा करना ! क़त्ल किये हुए शख़्स को ज़िन्दा करने से आ़जिज़ रहना, और बजाए इस के ज़िन्दा के छोड़ने को जिलाना कहना ही उस की ज़िल्लत के लिये काफ़ी था। उ़क़ला पर इसी से ज़ाहिर हो गया कि जो हुज्जत हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ाइम फ़रमाई वोह क़ातेअ़ है और उस का जवाब मुम्किन नहीं, लेकिन चूंकि नमरूद के जवाब में शाने दा'वा पैदा हो गई तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उस पर मुनाज़राना गिरिफ़्त फ़रमाई कि मौत व हयात का पैदा करना तो तेरे मक़्दूर (इख़्तियार) में नहीं, ऐ रबूबिय्यत के झूटे मुद्दई ! तू इस से सहल (आसान) काम ही कर दिखा जो एक मुतहर्रिक जिस्म की हरकत का बदलना है।

www.dawateislami.net

فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ

तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब (मशरिक़) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ[539] तो होश उड़ गए

الَّذِيْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۚ﴿۲۵۸﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى

काफ़िर के और अल्लाह राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को या उस की तरह जो गुज़रा

قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ

एक बस्ती पर[540] और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर[541] बोला इसे क्यूंकर जिलाएगा अल्लाह इस की

539 : येह भी न कर सके तो रबूबिय्यत का दा'वा किस मुंह से करता है ! **मस्अला :** इस आयत से इल्मे कलाम में मुनाज़रा करने का सुबूत होता है। **540 :** बक़ौले अक्सर येह वाक़िआ हज़रते उज़ैर عَلَیْهِ السَّلَام का है और बस्ती से बैतुल मक़्दिस मुराद है। जब बख़्ते नस्र बादशाह ने बैतुल मक़्दिस को वीरान किया और बनी इसराईल को क़त्ल किया, गिरिफ़्तार किया, तबाह कर डाला, फिर हज़रते उज़ैर عَلَیْهِ السَّلَام वहां गुज़रे, आप के साथ एक बरतन, खजूर और एक पियाला अंगूर का रस था और आप एक दराज़ गोश पर सुवार थे तमाम बस्ती में फिरे किसी शख़्स को वहां न पाया। बस्ती की इमारतों को मुन्हदिम देखा तो आप ने बराहे तअज्जुब कहा : ''اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا'' (इसे क्यूंकर जिलाएगा अल्लाह इस की मौत के बा'द !) और आप ने अपनी सुवारी के हिमार को वहां बांध दिया और आप ने आराम फ़रमाया, इसी हालत में आप की रूह क़ब्ज़ कर ली गई और गधा भी मर गया। येह सुब्ह के वक़्त का वाक़िआ है, इस से सत्तर बरस बा'द अल्लाह तआला ने शाहाने फ़ार्स में से एक बादशाह को मुसल्लत किया और वोह अपनी फ़ौजें ले कर बैतुल मक़्दिस पहुंचा और उस को पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया और बनी इसराईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे अल्लाह तआला उन्हें फिर यहां लाया और वोह बैतुल मक़्दिस और उस के नवाह में आबाद हुए और उन की ता'दाद बढ़ती रही, उस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रते उज़ैर عَلَیْهِ السَّلَام को दुन्या की आंखों से पोशीदा रखा और कोई आप को न देख सका। जब आप की वफ़ात को सो बरस गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने आप को ज़िन्दा किया, पहले आंखों में जान आई, अभी तक तमाम जिस्म मुर्दा था, वोह आप के देखते देखते ज़िन्दा किया गया। येह वाक़िआ शाम के वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के क़रीब हुवा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : तुम यहां कितने दिन ठहरे ? आप ने अन्दाज़े से अ़र्ज़ किया कि एक दिन या कुछ कम। आप का ख़याल येह हुवा कि येह उसी दिन की शाम है जिस की सुब्ह को सोए थे। फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम सो बरस ठहरे, अपने खाने और पानी या'नी खजूर और अंगूर के रस को देखिये कि वैसा ही है उस में बू तक न आई और अपने गधे को देखिये। देखा तो वोह मर गया था, गल गया, आ'ज़ा बिखर गए थे, हड्डियां सफ़ेद चमक रही थीं, आप की निगाह के सामने उस के आ'ज़ा जम्अ हुए, आ'ज़ा अपने अपने मवाक़ेअ़ पर आए, हड्डियों पर गोश्त चढ़ा, गोश्त पर खाल आई, बाल निकले, फिर उस में रूह फूंकी, वोह उठ खड़ा हुवा और आवाज़ करने लगा। आप ने अल्लाह तआला की क़ुदरत का मुशाहदा किया और फ़रमाया : मैं ख़ूब जानता हूं कि अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है, फिर आप अपनी उस सुवारी पर सुवार हो कर अपने महल्ले में तशरीफ़ लाए, सरे अक़्दस और रीश मुबारक के बाल सफ़ेद थे, उम्र वोही चालीस साल की थी, कोई आप को न पहचानता था। अन्दाज़े से अपने मकान पर पहुंचे एक ज़ईफ़ बुढ़िया मिली जिस के पाउं रह गए थे, वोह नाबीना हो गई थी, वोह आप के घर की बांदी थी और उस ने आप को देखा था। आप ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह उज़ैर का मकान है ? उस ने कहा : हां, और उज़ैर कहां ! उन्हें मफ़्क़ूद (गुम) हुए सो बरस गुज़र गए येह कह कर ख़ूब रोई। आप ने फ़रमाया : मैं उज़ैर हूं। उस ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه येह कैसे हो सकता है ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने मुझे सो बरस मुर्दा रखा, फिर ज़िन्दा किया। उस ने कहा : हज़रते उज़ैर ''मुस्तजाबुद्दा'वात'' थे, जो दुआ करते क़बूल होती, आप दुआ कीजिये कि मैं बीना हो जाऊं ताकि मैं अपनी आंखों से आप को देखूं। आप ने दुआ फ़रमाई, वोह बीना हुई, आप ने उस का हाथ पकड़ कर फ़रमाया ? उठ ख़ुदा के हुक्म से। येह फ़रमाते ही उस के मारे हुए पाउं दुरुस्त हो गए। उस ने आप को देख कर पहचाना और कहा मैं गवाही देती हूं कि आप बेशक हज़रते उज़ैर हैं। वोह आप को बनी इसराईल के महल्ले में ले गई वहां एक मजलिस में आप के फ़रज़न्द थे जिन की उम्र एक सो अठ्ठारह साल की हो चुकी थी और आप के पोते भी थे जो बूढ़े हो चुके थे, बुढ़िया ने मजलिस में पुकारा कि येह हज़रते उज़ैर तशरीफ़ ले आए, अहले मजलिस ने उस को झुटलाया, उस ने कहा : मुझे देखो ! आप की दुआ से मेरी येह हालत हो गई। लोग उठे और आप के पास आए आप के फ़रज़न्द ने कहा कि मेरे वालिद साहिब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक हिलाल था। जिस्मे मुबारक खोल कर दिखाया गया तो वोह मौजूद था। उस ज़माने में तौरैत का कोई नुस्ख़ा न रहा था, कोई उस का जानने वाला मौजूद न था, आप ने तमाम तौरैत हिफ़्ज़ पढ़ दी। एक शख़्स ने कहा कि मुझे अपने वालिद से मा'लूम हुवा कि बख़्ते नस्र की सितम अंगेज़ियों के बा'द गिरिफ़्तारी के ज़माने में मेरे दादा ने तौरैत एक जगह दफ़्न कर दी थी उस का पता मुझे मा'लूम है, उस पते पर जुस्तजू कर के तौरैत का वोह मदफ़ून नुस्ख़ा निकाला गया और हज़रते उज़ैर عَلَیْهِ السَّلَام ने अपनी याद से जो तौरैत लिखाई थी उस से मुक़ाबला किया गया तो एक हर्फ़ का फ़र्क़ न था। (جمل) **541 :** कि पहले छतें गिरीं फिर उन पर दीवारें आ पड़ीं।

مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ

मौत के बा'द तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया फ़रमाया तू यहां कितना ठहरा अ़र्ज़ की

لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى

दिन भर ठहरा होउंगा या कुछ कम फ़रमाया नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने

طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ

खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों

اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ

के वासिते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ

जब येह मुआमला उस पर ज़ाहिर हो गया बोला मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और जब अ़र्ज़ की

اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى

इब्राहीम ने[542] ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं[543] अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं

وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ

मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए[544] फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ

اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ

हिला ले[545] फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते[546]

542 : मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि समुन्दर के किनारे एक आदमी मरा पड़ा था। जुवार भाटे में समुन्दर का पानी चढ़ता उतरता रहता है, जब पानी चढ़ता तो मछलियां उस लाश को खातीं, जब उतर जाता तो जंगल के दरिन्दे खाते, जब दरिन्दे जाते तो परिन्द खाते, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह मुलाहज़ा फ़रमाया तो आप को शौक़ हुवा कि आप मुलाहज़ा फ़रमाएं कि मुर्दे किस त़रह ज़िन्दा किये जाएंगे। आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया : या रब ! मुझे यक़ीन है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाएगा और उन के अज्ज़ा दरियाई जानवरों और दरिन्दों के पेट और परिन्दों के पोटों से जम्अ़ फ़रमाएगा, लेकिन मैं येह अ़जीब मन्ज़र देखने की आरज़ू रखता हूं। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपना ख़लील किया, मलकुल मौत हज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त से इज़्न ले कर आप को येह बिशारत सुनाने आए, आप ने बिशारत सुन कर **अल्लाह** की हम्द की और मलकुल मौत से फ़रमाया कि इस ख़ुल्लत की अ़लामत क्या है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह कि **अल्लाह** तआ़ला आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाए और आप के सुवाल पर मुर्दे ज़िन्दा करे। तब आप ने येह दुआ़ की। (خازن) **543 :** **अल्लाह** तआ़ला आ़लिमे ग़ैब व शहादत है उस को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के कमाले ईमानो यक़ीन का इ़ल्म है बा वुजूद इस के येह सुवाल फ़रमाना कि क्या तुझे यक़ीन नहीं ? इस लिये है कि सामिईन को सुवाल का मक़्सद मा'लूम हो जाए और वोह जान लें कि येह सुवाल किसी शको शुबे की बिना पर न था। (بیضاوی وجمل وغیرہ) **544 :** और इन्तिज़ार की बेचैनी रफ़्अ़ हो। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि इस अ़लामत से मेरे दिल को तस्कीन हो जाए कि तूने मुझे अपना ख़लील बनाया। **545 :** ताकि अच्छी त़रह शनाख़्त हो जाए। **546 :** हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने चार परिन्दे लिये : मोर, मुर्ग़, कबूतर, कव्वा। उन्हें ब हुक्मे इलाही ज़ब्ह

www.dawateislami.net

وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ ع ٣٥

और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में

سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ

ख़र्च करते हैं[547] उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें[548] हर बाल में सो

حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِیْنَ

दाने[549] और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है वोह जो

یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَاۤ

अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं[550] फिर दिये पीछे न एह़सान रखें न

اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ

तक्लीफ़ दें[551] उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न

یَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَاۤ

कुछ ग़म अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना[552] उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द

किया, उन के पर उखाड़े और क़ीमा कर के उन के अज्ज़ा बाहम ख़ल्त़ कर दिये और उस मज्मूए़ के कई ह़िस्से किये। एक एक ह़िस्सा एक एक पहाड़ पर रखा और सर सब के अपने पास मह़फ़ूज़ रखे फिर फ़रमाया : चले आओ ! हुक्मे इलाही से। येह फ़रमाते ही वोह अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर अपनी तरतीब से जम्अ़ हुए और परिन्दों की शक्लें बन कर अपने पाउं से दौड़ते ह़ाज़िर हुए और अपने अपने सरों से मिल कर बिऐ़निही पहले की त़रह़ मुकम्मल हो कर उड़ गए। سُبْحٰنَ الله **547 :** ख़्वाह ख़र्च करना वाजिब हो या नफ़्ल, तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है ख़्वाह किसी त़ालिबे इ़ल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या अम्वात के ईसाले सवाब के लिये तीजे, दसवें, बीसवें, चालीसवें के त़रीक़े पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए। **548 :** उगाने वाला ह़क़ीक़त में अल्लाह ही है दाने की त़रफ़ निस्बत मजाज़ी है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इस्नादे मजाज़ी जाइज़ है जब कि इस्नाद करने वाला ग़ैरे ख़ुदा को "मुस्तक़िल फ़ित्तसर्रुफ़" ए'तिक़ाद न करता हो। इसी लिये येह कहना जाइज़ है कि येह दवा नाफ़ेअ़ है, येह मुज़िर है, येह दर्द की दाफ़ेअ़ है, मां बाप ने पाला, आ़लिम ने गुमराही से बचाया, बुज़ुर्गों ने ह़ाजत रवाई की वग़ैरा, सब में इस्नादे मजाज़ी है और मुसल्मान के ए'तिक़ाद में फ़ाइले ह़क़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला है बाक़ी सब वसाइल। **549 :** तो एक दाने के सात सो दाने हो गए, इसी त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से सात सो गुना अज्र हो जाता है। **550 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर लश्करे इस्लाम के लिये एक हज़ार ऊंट मअ़ सामान पेश किये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने चार हज़ार दिरहम सदक़े के बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर किये और अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुल आठ हज़ार दिरहम थे, निस्फ़ मैं ने अपने अहलो इ़याल के लिये रख लिये और निस्फ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर हैं, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो तुम ने दिये और जो तुम ने रखे अल्लाह तआ़ला दोनों में बरकत फ़रमाए। **551 :** एह़सान रखना तो येह कि देने के बा'द दूसरों के सामने इज़्हार करें कि हम ने तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये और उस को मुकद्दर (रन्जीदा व ग़मगीन) करें और तक्लीफ़ देना येह कि उस को आ़र दिलाएं कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था, हम ने तेरी ख़बरगीरी की या और त़रह़ दबाव दें, येह मम्नूअ़ फ़रमाया गया। **552 :** या'नी अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ जवाब देना जो उस को ना गवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र करना।

اَذًى ۙ وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿۲۶۳﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

सताना हो[553] और अल्लाह बे परवा हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो अपने सदक़े

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰىۙ كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا

बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर[554] उस की तरह जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और

یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ

अल्लाह और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है

فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ؕ لَا یَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा[555] अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे

وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۶۴﴾ وَمَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ

और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता और उन की कहावत जो अपने माल

اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِیْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ

अल्लाह की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को[556] उस बाग़ की सी है

بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَیْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ یُصِبْهَا وَابِلٌ

जो भूड़ (रेतली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे

فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۲۶۵﴾ اَیَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ

तो ओस काफ़ी है[557] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[558] क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा[559] कि उस के पास

جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِیْهَا مِنْ كُلِّ

एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का[560] जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये उस में हर क़िस्म के

553 : आ़र दिला कर या एह़सान जता कर या और कोई तक्लीफ़ पहुंचा कर। 554 : या'नी जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती, वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो। 555 : येह मुनाफ़िक़ रियाकार के अ़मल की मिसाल है कि जिस त़रह़ पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है ख़ाली पथ्थर रह जाता है, येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है और रोज़े क़ियामत वोह तमाम अ़मल बात़िल होंगे क्यूं कि रिज़ाए इलाही के लिये न थे। 556 : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने पर। 557 : येह मोमिने मुख़्लिस के आ'माल की एक मिसाल है कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित़्त़े की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फलता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा, ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इन्फ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा हो, अल्लाह तआला उस को बढ़ाता है। 558 : और तुम्हारी निय्यत व इख़्लास को जानता है। 559 : या'नी कोई पसन्द न करेगा क्यूं कि येह बात किसी आ़क़िल के गवारा करने के क़ाबिल नहीं है। 560 : गर्चे उस बाग़ में भी क़िस्म क़िस्म के दरख़्त होंगे मगर खजूर और अंगूर का ज़िक्र इस लिये किया कि येह नफ़ीस मेवे हैं।

الثَّمَرٰتِ ۙ وَ اَصَابَهُ الْكِبَرُ وَ لَهٗ ذُرِّیَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَاۤ اِعْصَارٌ

फलों से है[561] और उसे बुढ़ापा आया[562] और उस के नातुवां बच्चे हैं[563] तो आया उस पर एक बगूला (इन्तिहाई तेज़ हवा का चक्कर)

فِیْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ

जिस में आग थी तो जल गया[564] ऐसा ही बयान करता है **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ۠ ﴿۲۶۶﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ ع ٣٦/٤

ध्यान लगाओ[565] ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो[566]

وَ مِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَ لَا تَیَمَّمُوا الْخَبِیْثَ مِنْهُ

और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला[567] और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि

تُنْفِقُوْنَ وَ لَسْتُمْ بِاٰخِذِیْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِیْهِ ؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

दो तो उस में से[568] और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक उस में चश्म पोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह**

غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۲۶۷﴾ اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ یَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ

बे परवा सराहा गया है शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है[569] मोह्ताजी का और हुक्म देता है बे हयाई का[570]

وَ اللّٰهُ یَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۶۸﴾ ۙۖ یُّؤْتِی

और **अल्लाह** तुम से वा'दा फ़रमाता है बख़्शिश और फ़ज़्ल का[571] और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इल्म वाला है **अल्लाह**

---

561 : या'नी वोह बाग़ फ़रह़त अंगेज़ व दिलकुशा भी है और नाफ़ेअ़ और उ़म्दा जाएदाद भी। **562 :** जो ह़ाजत का वक़्त होता है और आदमी कस्बो मआ़श के क़ाबिल नहीं रहता। **563 :** जो कमाने के क़ाबिल नहीं और उन की परवरिश की ह़ाजत है। ग़रज़ वक़्त निहायत शिद्दते ह़ाजत का है और दारो मदार सिर्फ़ बाग़ पर और बाग़ भी निहायत उ़म्दा है। **564 :** वोह बाग़। तो उस वक़्त उस के रन्जो ग़म और ह़स्रतो यास की क्या इन्तिहा है, येही ह़ाल उस का है जिस ने आ'माले ह़सना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से, और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते ह़ाजत का वक़्त या'नी क़ियामत का दिन आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन आ'माल को ना मक़्बूल कर दे, उस वक़्त उस को कितना रन्ज और कितनी ह़सरत होगी। एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने सह़ाबए किराम से फ़रमाया कि आप के इल्म में येह आयत किस बाब में नाज़िल हुई ? ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह मिसाल है एक दौलत मन्द शख़्स के लिये जो नेक अ़मल करता हो फिर शैत़ान के इग़्वा से गुमराह हो कर अपनी तमाम नेकियों को ज़ाएअ़ कर दे। (مدارک وخازن)
565 : और समझो कि दुन्या फ़ानी और आ़क़िबत आनी है। **566 मस्अला :** इस से कस्ब की इबाह़त और अम्वाले तिजारत में ज़कात साबित होती है। (خازن ومدارک) येह भी हो सकता है कि आयत सदक़ए नाफ़िला व फ़र्ज़िया दोनों को आ़म हो। (تفسیر احمدی) **567 :** ख़्वाह वोह ग़ल्ले हों या फल या मआ़दिन वग़ैरा। **568 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग ख़राब माल सदक़े में देते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** मुसद्दिक़ या'नी सदक़ा वुसूल करने वाले को चाहिये कि वोह मुतवस्सित़ माल ले, न बिल्कुल ख़राब न सब से आ'ला। **569 :** कि अगर ख़र्च करोगे, सदक़ा दोगे तो नादार हो जाओगे। **570 :** या'नी बुख़्ल का और ज़कात व सदक़ा न देने का। इस आयत में येह लत़ीफ़ा है कि शैत़ान किसी त़रह़ बुख़्ल की ख़ूबी ज़ेह्न नशीन नहीं कर सकता इस लिये वोह येही करता है कि ख़र्च करने से नादारी का अन्देशा दिला कर रोके। आज कल जो लोग ख़ैरात को रोकने पर मुसिर (डटे हुए) हैं वोह भी इसी ह़ीले से काम लेते हैं। **571 :** सदक़ा देने पर और ख़र्च करने पर।

www.dawateislami.net

الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ

हिक्मत देता है[572] जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली

وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले और तुम जो ख़र्च करो[573] या मन्नत

مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾ اِنْ تُبْدُوا

मानो[574] **अल्लाह** को उस की ख़बर है[575] और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं अगर ख़ैरात

الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ

अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है[576]

وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۷۱﴾ لَيْسَ

और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है उन्हें राह

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ

देना तुम्हारे ज़िम्मे लाज़िम नहीं[577] हां **अल्लाह** राह देता है जिसे चाहता है और तुम जो अच्छी चीज़ दो

خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तो तुम्हारा ही भला है[578] और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर **अल्लाह** की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो

مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۲﴾ لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ

तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे उन फ़क़ीरों के लिये जो

---

572 : हिक्मत से या कुरआनो ह़दीस व फ़िक़्ह का इल्म मुराद है या तक़्वा या नुबुव्वत। (مدارک وخازن) **573 :** नेकी में ख़्वाह बदी में। **574 :** ताअ़त की या गुनाह की। "नज़्र" उ़र्फ़ में हदिय्या और पेशकश को कहते हैं और शरअ़ में नज़्र इबादत और कु़र्बते मक़्सूदा है, इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह सहीह़ नहीं हुई। नज़्र ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि **अल्लाह** के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को नज़्र के सर्फ़ का महल (ख़र्च करने की जगह) मुक़र्रर करे, मसलन किसी ने येह कहा : या रब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फ़ुलां मक़्सद पूरा कर दे कि फ़ुलां बीमार को तन्दुरुस्त कर दे तो मैं फ़ुलां वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रुपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये तेल या बोरिया हाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है। (ردالمحتار) **575 :** वोह तुम्हें उस का बदला देगा। **576 :** सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से **अल्लाह** के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं। **मस्अला :** लेकिन सदक़ा फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर। **मस्अला :** और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़्हार भी अफ़्ज़ल है। (مدارک) **577 :** आप बशीरो नज़ीर व दाई बना कर भेजे गए हैं, आप का फ़र्ज़ दा'वत पर तमाम हो जाता है, इस से ज़ियादा जोहद (कोशिश करना) आप पर लाज़िम नहीं। **शाने नुज़ूल :** क़ब्ले इस्लाम मुसल्मानों की यहूद से रिश्तेदारियां थीं इस वज्ह से वोह उन के साथ सुलूक किया करते थे, मुसल्मान होने के बा'द उन्हें यहूद के साथ सुलूक करना ना गवार होने लगा और उन्हों ने इस लिये हाथ रोकना चाहा कि उन के इस तर्ज़े अ़मल से यहूद इस्लाम की त़रफ़ माइल हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **578 :** तो दूसरों पर इस का एह़सान न जताओ।

www.dawateislami.net

أُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ

राहे ख़ुदा में रोके गए[579] ज़मीन में चल नहीं सकते[580] नादान उन्हें

الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْـَٔلُوْنَ

तवंगर समझे बचने के सबब[581] तू उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा[582] लोगों से सुवाल

النَّاسَ اِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾ اَلَّذِيْنَ

नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो अल्लाह उसे जानता है वोह जो

يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ

अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर[583] उन के लिये उन का नेग (अज्र) है

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾ اَلَّذِيْنَ

उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म वोह जो

يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ

सूद खाते हैं[584] क़ियामत के दिन न खड़े होंगे मगर जैसे खड़ा होता है वोह जिसे आसेब ने

579 : या'नी सदक़ाते मज़्कूरा जो आयए "وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ" में ज़िक्र हुए उन का बेहतरीन मसरफ़ वोह फ़ुक़रा हैं जिन्हों ने अपने नुफ़ूस को जिहाद व ताअ़ते इलाही पर रोका। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई। इन हज़रात की ता'दाद चार सो के क़रीब थी, येह हिजरत कर के मदीनए तय्यिबा हाज़िर हुए थे, न यहां इन का मकान था, न क़बीला कुम्बा, न इन हज़रात ने शादी की थी, इन के तमाम अवक़ात इबादत में सर्फ़ होते थे, रात में क़ुरआने करीम सीखना, दिन में जिहाद के काम में रहना। आयत में इन के बा'ज़ औसाफ़ का बयान है। **580 :** क्यूं कि उन्हें दीनी कामों से इतनी फ़ुरसत नहीं कि वोह चल फिर कर कस्बे मआ़श कर सकें। **581 :** या'नी चूंकि वोह किसी से सुवाल नहीं करते इस लिये ना वाक़िफ़ लोग उन्हें मालदार ख़याल करते हैं। **582 :** कि मिज़ाज में तवाज़ोअ़ व इन्किसारी है, चेहरों पर ज़ो'फ़ के आसार हैं, भूक से रंग ज़र्द पड़ गए हैं। **583 :** या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का निहायत शौक़ रखते हैं और हर हाल में ख़र्च करते रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के हक़ में नाज़िल हुई जब कि आप ने राहे ख़ुदा में चालीस हज़ार दीनार ख़र्च किये थे, दस हज़ार रात में और दस हज़ार दिन में और दस हज़ार पोशीदा और दस हज़ार ज़ाहिर। एक क़ौल येह है कि येह आयत हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہٗ के हक़ में नाज़िल हुई, जब कि आप के पास फ़क़त चार दिरहम थे और कुछ न था। आप ने उन चारों को ख़ैरात कर दिया, एक रात में, एक दिन में, एक को पोशीदा, एक को ज़ाहिर। **फ़ाएदा :** आयते करीमा में नफ़्क़ए लैल को नफ़्क़ए नहार (रात के ख़र्च करने को दिन के ख़र्च करने) पर और नफ़्क़ए सिर को नफ़्क़ए अ़लानिया (छुपा कर ख़र्च करने को दिखा कर ख़र्च करने) पर मुक़द्दम फ़रमाया गया। इस में इशारा है कि छुपा कर देना ज़ाहिर कर के देने से अफ़्ज़ल है। **584 :** इस आयत में सूद की हुरमत और सूद ख़्वारों की शामत का बयान है। सूद को हराम फ़रमाने में बहुत हिक्मतें हैं, बा'ज़ उन में से येह हैं कि सूद में जो ज़ियादती ली जाती है वोह मुआ़वज़ए मालिया में **एक** मिक़्दारे माल का बिग़ैर बदल व इवज़ के लेना है येह सरीह ना इन्साफ़ी है। **दुवुम** सूद का रवाज तिजारतों को ख़राब करता है कि सूद ख़्वार को बे मेहनत माल का हासिल होना तिजारत की मशक़्क़तों और ख़तरों से कहीं ज़ियादा आसान मा'लूम होता है और तिजारतों की कमी इन्सानी मुआ़शरत को ज़रर पहुंचाती है। **सिवुम** सूद के रवाज से बाहमी मुवद्दत के सुलूक को नुक़्सान पहुंचता है कि जब आदमी सूद का आ़दी हुवा तो वोह किसी को क़र्ज़े हसन से इमदाद पहुंचाना गवारा नहीं करता। **चहारुम** सूद से इन्सान की तबीअ़त में दरिन्दों से ज़ियादा बे रहमी पैदा होती है और सूद ख़्वार अपने मदयून (मक़रूज़ों) की तबाही व बरबादी का ख़्वाहिश मन्द रहता है। इस के इलावा भी सूद में और बड़े बड़े नुक़्सान हैं और शरीअ़त की मुमानअ़त ऐन हिक्मत है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सूद

www.dawateislami.net

وقف لازم

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْۤا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ

छू कर मख़्बूत़ बना दिया हो[585] येह इस लिये कि उन्हों ने कहा बैअ़ भी तो सूद ही के मानिन्द है

وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ

और अल्लाह ने ह़लाल किया बैअ़ और ह़राम किया सूद तो जिसे उस के रब के पास से नसीह़त आई

فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

और वोह बाज़ रहा तो उसे ह़लाल है जो पहले ले चुका[586] और उस का काम ख़ुदा के सिपुर्द है[587] और जो अब ऐसी ह़रकत करेगा तो वोह

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ

दोज़ख़ी है वोह उस में मुद्दतों रहेंगे[588] अल्लाह हलाक करता है सूद को[589] और बढ़ाता है ख़ैरात को[590]

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और अल्लाह को पसन्द नहीं आता कोई ना शुक्रा बड़ा गुनहगार बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग (अज्रो सवाब) उन के रब के पास है

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا

और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ऐ ईमान वालो अल्लाह से

اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰۤوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷۸﴾ فَاِنْ لَّمْ

डरो और छोड़ दो जो बाक़ी रह गया है सूद अगर मुसल्मान हो[591] फिर अगर ऐसा

ख़्वार और इस के कार परदाज़ और सूदी दस्तावेज़ के कातिब और इस के गवाहों पर ला'नत की और फ़रमाया : वोह सब गुनाह में बराबर हैं। **585 :** मा'ना येह हैं कि जिस त़रह़ आसेब ज़दा सीधा खड़ा नहीं हो सकता गिरता पड़ता चलता है क़ियामत के रोज़ सूद ख़्वार का ऐसा ही हाल होगा कि सूद से उस का पेट बहुत भारी और बोझल हो जाएगा और वोह उस के बोझ से गिर गिर पड़ेगा। सईद बिन जुबैर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह अ़लामत उस सूद ख़्वार की है जो सूद को ह़लाल जाने। **586 :** या'नी ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल जो लिया उस पर मुआख़ज़ा नहीं। **587 :** जो चाहे अम्र फ़रमाए, जो चाहे मम्नूअ़ व ह़राम करे, बन्दे पर उस की इत़ाअ़त लाज़िम है। **588 मस्अला :** जो सूद को ह़लाल जाने वोह काफ़िर है हमेशा जहन्नम में रहेगा क्यूं कि हर एक ह़रामे क़त़ई का ह़लाल जानने वाला काफ़िर है। **589 :** और उस को बरकत से मह़रूम करता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस से न सदक़ा क़बूल करे, न ह़ज, न जिहाद, न सिला (रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक करना)। **590 :** उस को ज़ियादा करता है और उस में बरकत फ़रमाता है दुन्या में और आख़िरत में उस का अज्रो सवाब बढ़ाता है। **591 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने से क़ब्ल सूदी लैन दैन करते थे और उन की गिरां क़द्र सूदी रक़्में दूसरों के ज़िम्मे बाक़ी थीं। इस में ह़ुक्म दिया गया कि सूद की ह़ुरमत नाज़िल होने के बा'द साबिक़ के मुत़ालबे भी वाजिबुत्तर्क हैं और पहला मुक़र्रर किया हुवा सूद भी अब लेना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ

न करो तो यक़ीन कर लो अल्लाह और अल्लाह के रसूल से लड़ाई का[592] और अगर तुम तौबा करो तो अपना

رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿۲۷۹﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

अस्ल माल ले लो न तुम किसी को नुक़्सान पहुंचाओ[593] न तुम्हें नुक़्सान हो[594] और अगर क़र्ज़दार

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर

تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸۰﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ

जानो[595] और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की तरफ़ फिरोगे और हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ع ٣٨ ٨ ٢

उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा[596] ऐ ईमान वालो जब

تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ

तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक किसी दैन का लेन देन करो[597] तो उसे लिख लो[598] और चाहिये कि तुम्हारे दरमियान कोई लिखने वाला

بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ

ठीक ठीक लिखे[599] और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा कि उसे अल्लाह ने सिखाया है[600] तो उसे लिख देना चाहिये

592 : येह वईदो तहदीद में मुबालग़ा व तश्दीद है, किस की मजाल कि अल्लाह और उस के रसूल से लड़ाई का तसव्वुर भी करे, चुनान्चे उन अस्हाब ने अपने सूदी मुतालबे छोड़े और येह अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उस के रसूल से लड़ाई की हमें क्या ताब ! और ताइब हुए। **593 :** ज़ियादा ले कर। **594 :** रासुल माल घटा कर। **595 :** क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या क़र्ज़ का जुज़्व या कुल मुआफ़ कर देना सबबे अज्रे अ़ज़ीम है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस का क़र्ज़ा मुआफ़ किया अल्लाह तआ़ला उस को अपना सायए रहमत अ़ता फ़रमाएगा जिस रोज़ उस के साए के सिवा कोई साया न होगा। **596 :** या'नी न उन की नेकियां घटाई जाएं न बदियां बढ़ाई जाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि येह सब से आखि़री आयत है जो हुज़ूर पर नाज़िल हुई। इस के बा'द हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इक्कीस रोज़ दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा रहे और एक क़ौल में नव शब और एक में सात, लेकिन शअ़बी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه से येह रिवायत की है कि सब से आखि़र आयते 'रिबा' नाज़िल हुई। **597 :** ख़्वाह वोह दैन मबीअ़ हो या समन, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि इस से बैए सलम मुराद है। बैए सलम येह है कि किसी चीज़ को पेशगी क़ीमत ले कर फ़रोख़्त किया जाए और मबीअ़ मुश्तरी (ख़रीदार) को सिपुर्द करने के लिये एक मुद्दत मुअ़य्यन कर ली जाए। इस बैअ़ के जवाज़ के लिये जिन्स, नौअ़, सिफ़त, मिक़्दार, मुद्दत और मकाने अदा और मिक़्दारे रासुल माल इन चीज़ों का मा'लूम होना शर्त़ है। **598 :** येह लिखना मुस्तह़ब है। **फ़ाएदा** इस का येह है कि भूलचूक और मदयून के इन्कार का अन्देशा नहीं रहता। **599 :** अपनी त़रफ़ से कोई कमी बेशी न करे, न फ़रीक़ैन में से किसी की रू व रिआ़यत। **600 :** ह़ासिल मा'ना येह कि कोई कातिब लिखने से मन्अ़ न करे, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इस को वसीक़ा नवीसी (अ़हदो पैमान लिखने) का इल्म दिया, बे तग़य्युरो तब्दील दियानत व अमानत के साथ लिखे। येह किताबत एक क़ौल पर फ़र्ज़े किफ़ाया है, और एक क़ौल पर फ़र्ज़े ऐन बशर्त़ फ़राग़े कातिब जिस सूरत में इस के सिवा और न पाया जाए, और एक क़ौल पर मुस्तह़ब, क्यूं कि इस में मुसलमान की ह़ाजत बरआरी (ह़ाजत पूरी करने) और ने'मते इल्म का शुक्र है, और एक क़ौल येह है कि पहले येह किताबत फ़र्ज़ थी फिर "لَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ" से मन्सूख़ हुई।

www.dawateislami.net

وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ

और जिस पर हक़ आता है वोह लिखाता जाए और **अल्लाह** से डरे जो उस का रब है और हक़ में से कुछ रख न

شَيْــًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ

छोड़े फिर जिस पर हक़ आता है अगर बे अ़क़्ल या नातुवां हो या लिखा न

اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ

सके[601] तो उस का वली इन्साफ़ से लिखाए और दो गवाह कर लो अपने

رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ

मर्दों में से[602] फिर अगर दो मर्द न हों[603] तो एक मर्द और दो औ़रतें ऐसे गवाह जिन को

مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ

पसन्द करो[604] कि कहीं उन में एक औ़रत भूले तो उस एक को दूसरी याद दिलावे

وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْــٴَـمُوْۤا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا

और गवाह जब बुलाए जाएं तो आने से इन्कार न करें[605] और इसे भारी न जानो कि दैन छोटा हो

اَوْ كَبِيْرًا اِلٰۤى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

या बड़ा उस की मीआ़द तक लिखत कर लो येह **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा इन्साफ़ की बात है और इस में गवाही खूब ठीक रहेगी

وَاَدْنٰۤى اَلَّا تَرْتَابُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا

और येह इस से क़रीब है कि तुम्हें शुबा न पड़े मगर येह कि कोई सरे दस्त का सौदा दस्त ब दस्त

601 : या'नी अगर मदयून मज्नून या नाक़िसुल अ़क़्ल या बच्चा या शैख़े फ़ानी हो या गूंगा होने या ज़बान न जानने की वज्ह से अपने मुद्दआ़ का बयान न कर सकता हो। **602 :** गवाह के लिये हुर्रिय्यत व बुलूग़ मअ़ इस्लाम शर्त़ है। कुफ़्फ़ार की गवाही सिर्फ़ कुफ़्फ़ार पर मक़्बूल है। **603 मस्अला :** तन्हा औ़रतों की शहादत जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह चार क्यूं न हों मगर जिन उमूर पर मर्द मुत्तलअ़ नहीं हो सकते जैसे कि बच्चा जनना, बाकिरा होना और निसाई उ़यूब उन में एक औ़रत की शहादत भी मक़्बूल है। **मस्अला :** हुदूद व क़िसास में औ़रतों की शहादत बिल्कुल मो'तबर नहीं, सिर्फ़ मर्दों की शहादत ज़रूरी है। इस के सिवा और मुआ़मलात में एक मर्द और दो औ़रतों की शहादत भी मक़्बूल है। (مدارک واحمدی) **604 :** जिन का आ़दिल होना तुम्हें मा'लूम हो और जिन के सालेह़ होने पर तुम ए'तिमाद रखते हो। **605 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अदाए शहादत फ़र्ज़ है। जब मुद्दई गवाहों को त़लब करे तो उन्हें गवाही का छुपाना जाइज़ नहीं। येह हुक्म हुदूद के सिवा और उमूर में है, लेकिन हुदूद में गवाह को इज़्हार व इख़्फ़ा का इख़्तियार है बल्कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसल्मान की पर्दापोशी करे **अल्लाह** तबारक व तआ़ला दुन्या व आख़िरत में उस की सत्तारी करेगा, लेकिन चोरी में माल लेने की शहादत देना वाजिब है ताकि जिस का माल चोरी किया गया है उस का ह़क़ तलफ़ न हो। गवाह इतनी एह़तियात़ कर सकता है कि चोरी का लफ़्ज़ न कहे, गवाही में येह कहने पर इक्तिफ़ा करे कि येह माल फ़ुलां शख़्स ने लिया है।

www.dawateislami.net

بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَ اَشْهِدُوْۤا اِذَا

(हाथों हाथ) हो तो उस के न लिखने का तुम पर गुनाह नहीं[606] और जब ख़रीदो फ़रोख़्त

تَبَايَعْتُمْ ۪ وَ لَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّ لَا شَهِيْدٌ ؕ۬ وَ اِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ

करो तो गवाह कर लो[607] और न किसी लिखने वाले को ज़रर दिया जाए न गवाह को (या न लिखने वाला ज़रर दे न गवाह)[608] और जो ऐसा करो तो येह

فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَ يُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ

तुम्हारा फ़िस्क़ होगा और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है और **अल्लाह** सब कुछ

عَلِيْمٌ ﴿۲۸۲﴾ وَ اِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّ لَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ

जानता है और अगर तुम सफ़र में हो[609] और लिखने वाला न पाओ[610] तो गिरव हो क़ब्ज़े में दिया हुवा[611]

فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِی اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَ لْيَتَّقِ اللّٰهَ

और अगर तुम में एक दूसरे पर इत्मीनान हो तो वोह जिसे इस ने अमीन समझा था[612] अपनी अमानत अदा करे[613] और **अल्लाह** से डरे जो

رَبَّهٗ ؕ وَ لَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَ مَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَ اللّٰهُ

उस का रब है और गवाही न छुपाओ[614] और जो गवाही छुपाएगा तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है[615] और **अल्लाह**

بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸۳﴾ ع لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اِنْ ع ٣٩ ٧

तुम्हारे कामों को जानता है **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और अगर

606 : चूंकि इस सूरत में लेन देन हो कर मुआमला ख़त्म हो गया और कोई अन्देशा बाक़ी न रहा नीज़ ऐसी तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त ब कसरत जारी रहती है, इस में किताबत व अश्हाद (लिखत पढ़त और गवाह बनाने) की पाबन्दी शाक़ व गिरां होगी। **607 :** येह मुस्तहब है, क्यूं कि इस में एहतियात है। **608 :** "يُضَآرَّ" में दो एहतिमाल हैं मज्हूल व मा'रूफ़ होने के, क़िराअते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا अव्वल की और क़िराअते उमर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ सानी की मुअय्यिद है। **पहली** तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि अहले मुआमला कातिबों और गवाहों को ज़रर न पहुंचाएं, इस तरह कि वोह अगर अपनी ज़रूरतों में मश्ग़ूल हों तो उन्हें मजबूर करें और उन के काम छुड़ाएं या हक़्क़े किताबत न दें या गवाह को सफ़र ख़र्च न दें अगर वोह दूसरे शहर से आया हो। **दूसरी** तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि कातिब व शाहिद अहले मुआमला को ज़रर न पहुंचाएं इस तरह कि बा वुजूद फ़ुरसत व फ़राग़त के न आएं या किताबत में तहरीफ़ व तब्दील, ज़ियादती व कमी करें। **609 :** और क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आए **610 :** और वसीक़ा व दस्तावेज़ की तहरीर का मौक़अ़ न मिले तो इत्मीनान के लिये। **611 :** या'नी कोई चीज़ दाइन (क़र्ज़ देने वाले) के क़ब्ज़े में गिरवी के तौर पर दे दो। **मस्अला :** येह मुस्तहब है और हालते सफ़र में रहन आयत से साबित हुवा और ग़ैरे सफ़र की हालत में हदीस से साबित है, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मदीनए तय्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस साअ़ जव लिये। **मस्अला :** इस आयत से रहन का जवाज़ और क़ब्ज़े का शर्त होना साबित होता है। **612 :** या'नी मदयून जिस को दाइन ने अमीन समझा था। **613 :** इस अमानत से दैन मुराद है। **614 :** क्यूं कि इस में साहिबे हक़ के हक़ का इब्ताल है। येह ख़िताब गवाहों को है कि वोह जब शहादत की इक़ामत व अदा के लिये तलब किये जाएं तो हक़ को न छुपाएं और एक क़ौल येह है कि येह ख़िताब मदयूनों को है कि वोह अपने नफ़्स पर शहादत देने में तअम्मुल न करें। **615 :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से एक हदीस मरवी है कि कबीरा गुनाहों में सब से बड़ा गुनाह **अल्लाह** के साथ शरीक करना और झूटी गवाही देना और गवाही को छुपाना है।

www.dawateislami.net

تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ

तुम ज़ाहिर करो जो कुछ[616] तुम्हारे जी में है या छुपाओ **अल्लाह** तुम से उस का हिसाब लेगा[617] तो जिसे चाहेगा

يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ

बख़्शेगा[618] और जिसे चाहेगा सज़ा देगा[619] और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है रसूल

الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना[620] **अल्लाह** और उस के

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ قف

फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को[621] येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते[622]

وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ

और अ़र्ज़ की, कि हम ने सुना और माना[623] तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है **अल्लाह** किसी

616 : बदी **617 :** इन्सान के दिल में दो त़रह़ के ख़यालात आते हैं **: एक** बत़ौर वस्वसा के, इन से दिल का ख़ाली करना इन्सान की मक़्दिरत (त़ाक़त व इख़्तियार) में नहीं, लेकिन वोह इन को बुरा जानता है और अ़मल में लाने का इरादा नहीं करता इन को ह़दीसे नफ़्स और वस्वसा कहते हैं, इस पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है **:** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के दिलों में जो वस्वसे गुज़रते हैं **अल्लाह** तआ़ला इन से तजावुज़ फ़रमाता है जब तक कि वोह इन्हें अ़मल में न लाएं या उन के साथ कलाम न करें, येह वस्वसे इस आयत में दाख़िल नहीं। **दूसरे** वोह ख़यालात जिन को इन्सान अपने दिल में जगह देता है और उन को अ़मल में लाने का क़स्द व इरादा करता है उन पर मुआख़ज़ा होगा, और उन्हीं का बयान इस आयत में है। **मस्अला :** कुफ़्र का अ़ज़्म करना कुफ़्र है और गुनाह का अ़ज़्म कर के अगर आदमी उस पर साबित रहे और उस का क़स्द व इरादा रखे लेकिन उस गुनाह को अ़मल में लाने के अस्बाब उस को बहम न पहुंचें और मजबूरन वोह उस को कर न सके तो जम्हूर के नज़्दीक उस से मुआख़ज़ा किया जाएगा। शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी और शम्सुल अइम्मा ह़लवानी इसी त़रफ़ गए हैं और उन की दलील आयए ''اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ'' और ह़दीसे ह़ज़रते आ़इशा है जिस का मज़्मून येह है कि बन्दा जिस गुनाह का क़स्द करता है अगर वोह अ़मल में न आए जब भी उस पर इ़क़ाब किया जाता है। **मस्अला :** अगर बन्दे ने किसी गुनाह का इरादा किया, फिर उस पर नादिम हुवा, इस्तिग़फ़ार किया तो **अल्लाह** उस को मुआ़फ़ फ़रमाएगा। **618 :** अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को। **619 :** अपने अ़द्ल से। **620 :** ज़ज्जाज ने कहा कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने इस सूरत में नमाज़, ज़कात, रोज़े, ह़ज की फ़र्ज़िय्यत और त़लाक़, ईला, ह़ैज़ व जिहाद के अह़काम और अम्बिया के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए तो सूरत के आख़िर में येह ज़िक्र फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और मोमिनीन ने उस तमाम की तस्दीक़ फ़रमाई और क़ुरआन और इस के जुम्ला शराएअ़ व अह़काम के मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (**अल्लाह** की त़रफ़ से नाज़िल) होने की तस्दीक़ की। **621 :** येह उसूल व ज़रूरिय्याते ईमान के चार मर्तबे हैं **:** (1) **''अल्लाह पर ईमान लाना''** येह इस त़रह़ कि ए'तिक़ाद व तस्दीक़ करे कि **अल्लाह** वाह़िद, अह़द है, उस का कोई शरीक व नज़ीर नहीं, उस के तमाम अस्माए ह़ुस्ना व सिफ़ाते उ़ल्या पर ईमान लाए और यक़ीन करे और माने कि वोह अ़लीम और हर शै पर क़दीर है और उस के इ़ल्मो क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं। (2) **''मलाएका पर ईमान लाना''** येह इस त़रह़ पर है कि यक़ीन करे और माने कि वोह मौजूद हैं, मा'सूम हैं, पाक हैं, **अल्लाह** के और उस के रसूलों के दरमियान अह़काम व पयाम के वसाइत़ (वासित़े) हैं। (3) **''अल्लाह की किताबों पर ईमान लाना''** इस त़रह़ कि जो किताबें **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाईं और अपने रसूलों के पास ब त़रीक़े वह़्य भेजीं बे शको शुबा सब ह़क़ व सिद्क़ और **अल्लाह** की त़रफ़ से हैं और क़ुरआने करीम तग़य्युर, तब्दील, तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है और मोह़कम और मुतशाबह पर मुश्तमिल है। (4) **''रसूलों पर ईमान लाना''** इस त़रह़ पर कि ईमान लाए कि वोह **अल्लाह** के रसूल हैं जिन्हें उस ने अपने बन्दों की त़रफ़ भेजा, उस की वह़्य के अमीन हैं, गुनाहों से पाक मा'सूम हैं, सारी ख़ल्क़ से अफ़्ज़ल हैं, उन में बा'ज़ ह़ज़रात बा'ज़ से अफ़्ज़ल हैं। **622 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए, बा'ज़ का इन्कार किया। **623 :** तेरे ह़ुक्म व इर्शाद को।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا

जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई[624] ऐ रब हमारे

تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا

हमें न पकड़ अगर हम भूलें[625] या चूकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा

حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا

तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (त़ाक़त)

بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ٚ وَاغْفِرْ لَنَا ٚ وَارْحَمْنَا ٚ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا

न हो और हमें मुआ़फ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मेहर (रह़्म) कर तू हमारा मौला है तो

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

काफ़िरों पर हमें मदद दे

ایاتها ٢٠٠ ﴿٣ سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ ٨٩﴾ رکوعاتها ٢٠

सूरए आले इमरान मदनिय्या है[1], इस में दो सो आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ﴿٢﴾ ؕ نَزَّلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की पूजा नहीं[2] आप ज़िन्दा औरों का क़ाइम रखने वाला उस ने तुम पर येह सच्ची किताब

بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ﴿٣﴾ ۙ مِنْ

उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरैत और इन्जील

624 : या'नी हर जान को अ़मले नेक का अज्रो सवाब और अ़मले बद का अ़ज़ाब व इ़क़ाब होगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को त़रीक़े दुआ़ की तल्क़ीन फ़रमाई कि वोह इस त़रह़ अपने परवर दगार से अ़र्ज़ करें। **625 :** और सह्व से तेरे किसी हुक्म की ता'मील में क़ासिर रहें। **1 :** सूरए आले इमरान मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में दो सो आयतें, तीन हज़ार चार सो अस्सी कलिमे, चौदह हज़ार पांच सो बीस हुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वफ़्दे नजरान के ह़क़ में नाज़िल हुई जो साठ सुवारों पर मुश्तमिल था, उस में चौदह सरदार थे और तीन उस क़ौम के बड़े अकाबिर व मुक़्तदा, **एक आ़क़िब** जिस का नाम अ़ब्दुल मसीह़ था, येह शख़्स अमीरे क़ौम था और बिग़ैर इस की राय के नसारा कोई काम नहीं करते थे। **दूसरा सय्यिद** जिस का नाम ऐहम था, येह शख़्स अपनी क़ौम का मो'तमदे आ'ज़म और मालियात का अफ़्सरे आ'ला था। ख़ुर्दो नोश और रसदों (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) के तमाम इन्तिज़ामात इसी के हुक्म से होते थे। **तीसरा अबू ह़ारिसा** इब्ने अ़ल्क़मा था, येह शख़्स नसारा के तमाम उ़लमा और पादरियों का पेश्वाए आ'ज़म था। सलात़ीने रूम इस के इ़ल्म और इस की दीनी अ़ज़्मत के लिह़ाज़ से इस का इक्राम व अदब करते थे। येह तमाम लोग उ़म्दा और क़ीमती पोशाकें पहन कर बड़ी शानो शकोह से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ से मुनाज़रा करने के क़स्द से आए और मस्जिदे अक़्दस में दाख़िल हुए, हुज़ूरे

قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

उतारी लोगों को राह दिखाती और फ़ैसला उतारा बेशक वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर हुए[3]

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** ग़ालिब बदला लेने वाला है **अल्लाह** पर कुछ छुपा

عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ؕ ﴿۵﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي

नहीं ज़मीन में न आस्मान में वोही है कि तुम्हारी तस्वीर बनाता है

الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶﴾ هُوَ الَّذِيْٓ

माओं के पेट में जैसी चाहे[4] उस के सिवा किसी की इ़बादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला ह़िक्मत वाला[5] वोही है जिस ने

اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ

तुम पर येह किताब उतारी इस की कुछ आयतें साफ़ मा'ना रखती हैं[6] वोह किताब की अस्ल हैं[7] और दूसरी वोह हैं जिन के

अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات उस वक़्त नमाज़े अ़स्र अदा फ़रमा रहे थे, इन लोगों की नमाज़ का वक़्त भी आ गया और इन्हों ने भी मस्जिद शरीफ़ ही में जानिबे शर्क़ मुतवज्जेह हो कर नमाज़ शुरूअ़ कर दी। फ़राग़ के बा'द हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات से गुफ़्तगू शुरूअ़ की। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : तुम इस्लाम लाओ ! कहने लगे : हम आप से पहले इस्लाम ला चुके। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : येह ग़लत़ है, येह दा'वा झूटा है, तुम्हें इस्लाम से तुम्हारा येह दा'वा रोकता है कि **अल्लाह** की औलाद है, और तुम्हारी सलीब परस्ती रोकती है और तुम्हारा ख़िन्ज़ीर खाना रोकता है। उन्हों ने कहा कि अगर ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा के बेटे न हों तो बताइये उन का बाप कौन है ? और सब के सब बोलने लगे। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि बेटा बाप से ज़रूर मुशाबेह होता है ! उन्हों ने इक़रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब ह़य्युन ला यमूत है, उस के लिये मौत मुह़ाल है और ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات पर मौत आने वाली है ! उन्हों ने इस का भी इक़रार किया। फिर फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि हमारा रब बन्दों का कारसाज़ और उन का ह़ाफ़िज़े ह़क़ीक़ी और रोज़ी देने वाला है ! उन्हों ने कहा : हां। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या ह़ज़रते ईसा भी ऐसे ही हैं ? कहने लगे : नहीं। फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि **अल्लाह** तआ़ला पर आस्मान व ज़मीन की कोई चीज़ पोशीदा नहीं ! उन्हों ने इक़रार किया। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा बिग़ैर ता'लीमे इलाही इस में से कुछ जानते हैं ? उन्हों ने कहा : नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम नहीं जानते कि ह़ज़रते ईसा ह़म्ल में रहे, पैदा होने वालों की त़रह़ पैदा हुए, बच्चों की त़रह़ ग़िज़ा दिये गए, खाते, पीते थे, अ़वारिज़े बशरी रखते थे, उन्हों ने इस का इक़रार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर वोह कैसे इलाह हो सकते हैं ! जैसा कि तुम्हारा गुमान है। इस पर वोह सब साकित रह गए और उन से कोई जवाब बन न आया। इस पर सूरए आले इमरान की अव्वल से कुछ ऊपर अस्सी आयतें नाज़िल हुईं। **फ़ाएदा :** सिफ़ाते इलाहिय्यह में ''ह़य्युन'' ब मा'ना दाइम बाक़ी के है या'नी ऐसा हमेशगी रखने वाला जिस की मौत मुम्किन न हो। क़य्यूम वोह है जो क़ाइम बिज़्ज़ात हो और ख़ल्क़ अपनी दुन्यवी और उख़्रवी ज़िन्दगी में जो ह़ाजतें रखती है उस की तदबीर फ़रमाए। **3 :** इस में वफ़्दे नजरान के नसरानी भी दाख़िल हैं **4 :** मर्द, औ़रत, गोरा, काला, ख़ूब सूरत, बद शक्ल वग़ैरा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारा माद्दए पैदाइश मां के पेट में चालीस रोज़ जम्अ़ होता है, फिर इतने ही दिन अ़लक़ह या'नी ख़ून बस्ता (जमे हुए ख़ून) की शक्ल में होता है, फिर इतने ही दिन पारए गोश्त की सूरत में रहता है, फिर **अल्लाह** तआ़ला एक फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़, उस की उ़म्र, उस के अ़मल, उस का अन्जामे कार या'नी उस की सआ़दत व शक़ावत लिखता है, फिर उस में रूह़ डालता है। तो उस की क़सम ! जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं आदमी जन्नतियों के से अ़मल करता रहता है, यहां तक कि उस में और जन्नत में हाथ भर का या'नी बहुत ही कम फ़र्क़ रह जाता है तो किताब सब्क़त करती है और वोह दोज़ख़ियों के से अ़मल करता है, उसी पर उस का ख़ातिमा हो जाता है और दाख़िले जहन्नम होता है, और कोई ऐसा होता है कि दोज़ख़ियों के से अ़मल करता रहता है यहां तक कि उस में और दोज़ख़ में एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है फिर किताब सब्क़त करती है और उस की ज़िन्दगी का नक़्शा बदलता है और वोह जन्नतियों के से अ़मल करने लगता है, इसी पर उस का ख़ातिमा होता है और दाख़िले जन्नत हो जाता है। **5 :** इस में भी नसारा का रद है जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को ख़ुदा का बेटा कहते और उन की इ़बादत करते थे। **6 :** जिस में कोई एह़तिमाल व इश्तिबाह नहीं। **7 :** कि अह़काम में

مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ

मा'ना में इश्तिबाह है[8] वोह जिन के दिलों में कजी है[9] वोह इश्तिबाह वाली के पीछे पड़ते

مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا

हैं[10] गुमराही चाहने[11] और उस का पहलू ढूंढने को[12] और उस का ठीक पहलू **अल्लाह** ही को मा'लूम

اللّٰهُ ۘؔ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ

है[13] और पुख़्ता इल्म वाले[14] कहते हैं हम उस पर ईमान लाए[15] सब हमारे रब के पास से है[16]

وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۷ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ

और नसीहत नहीं मानते मगर अक़्ल वाले[17] ऐ रब हमारे दिल टेढ़े न कर बा'द इस के कि तूने

هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝۸ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ

हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रह़मत अ़ता कर बेशक तू है बड़ा देने वाला ऐ रब हमारे बेशक तू

جَامِعُ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ۝۹ ع

सब लोगों को जम्अ़ करने वाला है[18] उस दिन के लिये जिस में कोई शुब्हा नहीं[19] बेशक **अल्लाह** का वा'दा नहीं बदलता[20]

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ

बेशक वोह जो काफ़िर हुए[21] उन के माल और उन की औलाद **अल्लाह** से उन्हें कुछ

اللّٰهِ شَیْــٴًـا ؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝۱۰ ۙ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

न बचा सकेंगे और वोही दोज़ख़ के ईंधन हैं जैसे फ़िरऔन वालों

उन की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाता है, और ह़लाल व ह़राम में उन्हीं पर अ़मल। **8 :** वोह चन्द वुजूह का एह़तिमाल रखती हैं। उन में से कौन सी वज्ह मुराद है येह **अल्लाह** ही जानता है, या जिस को **अल्लाह** तआ़ला इस का इल्म दे। **9 :** या'नी गुमराह और बद मज़हब लोग जो हवाए नफ़्सानी के पाबन्द हैं। **10 :** और उस के ज़ाहिर पर हुक्म करते हैं या तावीले बात़िल करते हैं और येह नेक निय्यती से नहीं बल्कि (جمل) **11 :** और शको शुबा में डालने (جمل) **12 :** अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ बा वुजूदे कि वोह तावील के अहल नहीं। (جمل وخازن) **13 :** ह़क़ीक़त में (جمل) और अपने करम व अ़त़ा से जिस को वोह नवाज़े। **14 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है : आप फ़रमाते थे कि मैं "रासिख़ीन फ़िल इल्म" से हूं, और मुजाहिद से मरवी है कि मैं उन में से हूं जो मुतशाबह की तावील जानते हैं। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से मरवी है कि "रासिख़ फ़िल इल्म" वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इल्म का मुत्तबेअ़ हो, और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह है कि "रासिख़ फ़िल इल्म" वोह हैं जिन में चार सिफ़्तें हों : तक़्वा **अल्लाह** का, तवाज़ोअ़ लोगों से, ज़ोहद दुन्या से, मुजाहदा नफ़्स के साथ। (خازن) **15 :** कि वोह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और जो मा'ना उस की मुराद हैं ह़क़ हैं और उस का नाज़िल फ़रमाना ह़िक्मत है। **16 :** मोह़कम हो या मुतशाबह। **17 :** और रासिख़ इल्म वाले कहते हैं **18 :** ह़िसाब या जज़ा के वासित़े। **19 :** वोह रोज़े क़ियामत है। **20 :** तो जिस के दिल में कजी हो वोह हलाक होगा और जो तेरे मिन्नतो एह़सान से हिदायत पाए वोह सईद होगा, नजात पाएगा। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि किज़्ब "मुनाफ़िये उलूहिय्यत" है, लिहाज़ा ह़ज़रते क़ुद्दूस क़दीर का किज़्ब मुह़ाल और उस की त़रफ़ इस की निस्बत सख़्त बे अदबी। (مدارک وابوسعود وغیرہ) **21 :** रसूले अकरम صلی اللہ علیہ وسلم से मुन्ह़रिफ़ हो कर।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

और उन से अगलों का तरीक़ा उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो अल्लाह ने उन के गुनाहों पर उन को पकड़ा

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ

और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब होगे

وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ

और दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाओगे[22] और वोह बहुत ही बुरा बिछोना बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी[23]

فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ

दो गुरौहों में जो आपस में भिड़ पड़े[24] एक जथ्था (गुरौह) अल्लाह की राह में लड़ता[25] और दूसरा काफ़िर[26]

يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

कि उन्हें आंखों देखा अपने से दूना समझें और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है[27]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۱۳﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ

बेशक इस में अ़क़्ल मन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत[28]

مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ

औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर

وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी

22 शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जब बद्र में कुफ़्फ़ार को रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم शिकस्त दे कर मदीनए तय्यिबा वापस हुए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूद को जम्अ़ कर के फ़रमाया कि तुम अल्लाह से डरो और इस से पहले इस्लाम लाओ कि तुम पर ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जैसी बद्र में क़ुरैश पर हुई, तुम जान चुके हो मैं नबिय्ये मुरसल हूं, तुम अपनी किताब में येह लिखा पाते हो। इस पर उन्हों ने कहा कि क़ुरैश तो फ़ुनूने हर्ब (जंगी हुनर व महारत) से ना आशना हैं, अगर हम से मुक़ाबला हुवा तो आप को मा'लूम हो जाएगा कि लड़ने वाले ऐसे होते हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें ख़बर दी गई कि वोह मग़लूब होंगे और क़त्ल किये जाएंगे, गिरिफ़्तार किये जाएंगे, उन पर जिज़्या मुक़र्रर होगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक रोज़ में छ[6] सो की ता'दाद को क़त्ल फ़रमाया और बहुतों को गिरिफ़्तार किया और अहले ख़ैबर पर जिज़्या मुक़र्रर फ़रमाया। **23 :** इस के मुख़ात़ब यहूद हैं और बा'ज़ के नज़्दीक तमाम कुफ़्फ़ार और बा'ज़ के नज़्दीक मोमिनीन (جمل) **24 :** जंगे बद्र में। **25 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब इन की कुल ता'दाद तीन सो तेरह थी, सतत्तर मुहाजिर और दो सो छत्तीस अन्सार, मुहाजिरीन के साहिबे रायत (जिन के हाथ में परचम था वोह) हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा थे और अन्सार के हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا। इस कुल लश्कर में दो घोड़े सत्तर ऊंट और छ[6] ज़िरह, आठ तलवारें थीं और इस वाक़िए में चौदह सहाबा शहीद हुए छ[6] मुहाजिर और आठ अन्सार। **26 :** कुफ़्फ़ार की ता'दाद नव सो पचास थी उन का सरदार उत्बा बिन रबीआ़ था और उन के पास सो घोड़े थे और सात सो ऊंट और ब कसरत ज़िरह और हथियार थे। (جمل) **27 :** ख़्वाह उस की ता'दाद क़लील ही हो और सरो सामान की कितनी ही कमी हो। **28 :** ताकि शह्वत परस्तों और ख़ुदा परस्तों के

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿۱۴﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ

है[29] और अल्लाह है जिस के पास अच्छा ठिकाना[30] तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इस से[31] बेहतर चीज़

ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

बता दूं परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ

हमेशा उन में रहेंगे और सुथरी बीबियां[32] और अल्लाह की ख़ुशनूदी[33] और अल्लाह बन्दों को

بِالْعِبَادِ ۚ ﴿۱۵﴾ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا

देखता है[34] वोह जो कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमारे गुनाह मुआफ़ कर

وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۶﴾ ۚ اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ

और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले सब्र वाले[35] और सच्चे[36] और अदब वाले और राहे ख़ुदा में ख़र्चने वाले

وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿۱۷﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ

और पिछले पहरे मुआ़फ़ी मांगने वाले[37] अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं[38]

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने[39] इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इ़ज़्ज़त वाला

दरमियान फ़र्क़ व इम्तियाज़ ज़ाहिर हो, जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : "اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا" । **29 :** इस से कुछ अ़र्से नफ़्अ़ पहुंचता है फिर फ़ना हो जाती है। इन्सान को चाहिये कि मताए़ दुन्या को ऐसे काम में ख़र्च करे जिस में उस की आ़क़िबत की दुरुस्ती और सआ़दते आख़िरत हो। **30 :** जन्नत। तो चाहिये कि इस की रग़बत की जाए और दुन्याए ना पाएदार की फ़ानी मरग़ूबात से दिल न लगाया जाए। **31 :** मताए़ दुन्या से। **32 :** जो ज़नाना अ़वारिज़ और हर ना पसन्द व क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक। **33 :** और येह सब से आ'ला ने'मत है। **34 :** और उन के आ'माल व अह़वाल जानता और उन की जज़ा देता है। **35 :** जो ता़अ़तों और मुसीबतों पर सब्र करें और गुनाहों से बाज़ रहें। **36 :** जिन के क़ौल और इरादे और निय्यतें सब सच्ची हों। **37 :** इस में आख़िर शब में नमाज़ पढ़ने वाले भी दाख़िल हैं और वक़्ते सह़र के दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करने वाले भी, येह वक़्त ख़ल्वत व इजाबते दुआ़ का है। ह़ज़रते लुक़्मान عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया कि मुर्ग़ से कम न रहना कि वोह तो सह़र से निदा करे और तुम सोते रहो। **38 शाने नुज़ूल :** अह़बारे शाम में से दो शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। जब उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा देखा तो एक दूसरे से कहने लगा कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मा के शह्र की येही सिफ़त है जो इस शह्र में पाई जाती है। जब आस्तानए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने हु़ज़ूर के शक्लो शमाइल तौरैत के मुत़ाबिक़ देख कर हु़ज़ूर को पहचान लिया और अ़र्ज़ किया : आप मुह़म्मद हैं ? हु़ज़ूर ने फ़रमाया : हां। फिर अ़र्ज़ किया कि आप अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं ? फ़रमाया : हां। अ़र्ज़ किया : हम एक सुवाल करते हैं अगर आप ने ठीक जवाब दे दिया तो हम आप पर ईमान ले आएंगे। फ़रमाया : सुवाल करो ! उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि किताबुल्लाह में सब से बड़ी शहादत कौन सी है ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस को सुन कर वोह दोनों ह़ब्र (यहूदी आ़लिम) मुसल्मान हो गए। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा में तीन सो साठ बुत थे, जब मदीनए त़य्यिबा में येह आयत नाज़िल हुई तो का'बे के अन्दर वोह सब सज्दे में गिर गए। **39 :** या'नी अम्बिया व औलिया ने।

www.dawateislami.net

النصف

الْحَكِيْمُ ۟ؕ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۫ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ

हिक्मत वाला बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है[40] और फूट में न पड़े

اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

किताबी[41] मगर बा'द इस के कि उन्हें इल्म आ चुका[42] अपने दिलों की जलन से[43] और जो अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۟ فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ

आयतों का मुन्किर हो तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है फिर ऐ महबूब अगर वोह तुम से हुज्जत करें तो फ़रमा दो मैं अपना मुंह अल्लाह

وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ

के हुज़ूर झुकाए हूं और जो मेरे पैरव हुए[44] और किताबियों और अनपढ़ों से फ़रमाओ[45]

ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ

क्या तुम ने गरदन रखी[46] पस अगर वोह गरदन रखें जब तो राह पा गए और अगर मुंह फेरें तो तुम पर तो येही हुक्म पहुंचा

الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۟ع اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

ع ٢٠

देना है[47] और अल्लाह बन्दों को देख रहा है वोह जो अल्लाह की आयतों से मुन्किर होते

وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ

और पैग़म्बरों को नाहक़ शहीद करते[48] और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को

بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

क़त्ल करते हैं उन्हें खुश ख़बरी दो दर्दनाक अ़ज़ाब की येह हैं वोह जिन के

40 : इस के सिवा कोई और दीन मक़्बूल नहीं। यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार जो अपने दीन को अफ़्ज़ल व मक़्बूल कहते हैं इस आयत में उन के दा'वे को बातिल कर दिया। **41 :** येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में वारिद हुई, जिन्हों ने इस्लाम को छोड़ा और उन्हों ने सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ किया। **42 :** वोह अपनी किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख चुके और उन्हों ने पहचान लिया कि येही वोह नबी हैं जिन की कुतुबे इलाहिय्यह में ख़बरें दी गई हैं। **43 :** या'नी उन के इख़्तिलाफ़ का सबब उन का ह़सद और मनाफ़ेए दुन्यविया की त़मअ़ है। **44 :** या'नी मैं और मेरे मुत्तबिईन हमातन (यक्सूई से पूरे त़ौर पर) अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार और मुत़ीअ़ हैं, "हमारा दीन" दीने तौह़ीद है, जिस की सिह़्ह़त तुम्हें खुद अपनी किताबों से भी साबित हो चुकी है तो इस में तुम्हारा हम से झगड़ा करना बिल्कुल बातिल है। **45 :** जितने काफ़िर ग़ैर किताबी हैं वोह उम्मिय्यीन में दाख़िल हैं, इन्हीं में से अ़रब के मुश्रिकीन भी हैं। **46 :** और दीने इस्लाम के हुज़ूर सरे नियाज़ ख़म किया या बा वुजूद बराहीने बय्यिना क़ाइम होने के तुम अभी तक अपने कुफ़्र पर हो। येह दा'वते इस्लाम का एक पैराया है, और इस त़रह़ उन्हें दीने ह़क़ की त़रफ़ बुलाया जाता है। **47 :** वोह तुम ने पूरा कर ही दिया इस से उन्हों ने नफ़्अ़ न उठाया तो नुक़्सान में वोह रहे। इस में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर है कि आप उन के ईमान न लाने से रन्जीदा न हों। **48 :** जैसा कि बनी इसराईल ने सुब्ह़ को एक साअ़त के अन्दर तेंतालीस नबियों को क़त्ल किया, फिर जब उन में से एक सो बारह आ़बिदों ने उठ कर उन्हें नेकियों का हुक्म दिया और बदियों से मन्अ़ किया तो उसी रोज़ शाम को उन्हें भी क़त्ल कर दिया। इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के यहूद को तौबीख़ है क्यूं कि वोह अपने आबाओ अज्दाद के ऐसे बद तरीन फ़े'ल से राज़ी हैं।

حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ

अ़मल अकारत गए दुन्या व आख़िरत में[49] और उन का कोई मददगार नहीं[50] क्या तुम ने

تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ

उन्हें न देखा जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला[51] किताबुल्लाह की त़रफ़ बुलाए जाते हैं

لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ ثُمَّ یَتَوَلّٰى فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ وَ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾ ذٰلِكَ

कि वोह उन का फ़ैसला करे फिर उन में का एक गुरोह इस से रूगर्दां हो कर फिर जाता है[52] येह जुरअत[53]

بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ۪ وَّ غَرَّهُمْ فِیْ

उन्हें इस लिये हुई कि वोह कहते हैं हरगिज़ हमें आग न छूएगी मगर गिनती के दिनों[54] और उन के

دِیْنِهِمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَیْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ

दीन में उन्हें फ़रेब दिया उस झूट ने जो बांधते थे[55] तो कैसी होगी जब हम उन्हें इकठ्ठा करेंगे उस दिन के लिये जिस में शक

فِیْهِ۫ وَ وُفِّیَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ

नहीं[56] और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा यूं अ़र्ज़ कर

49 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की जनाब में बे अदबी कुफ़्र है और येह भी कि कुफ़्र से तमाम आ'माल अकारत हो जाते हैं। **50 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचाए। **51 :** या'नी यहूद को कि उन्हें तौरैत शरीफ़ के उ़लूम व अह़काम सिखाए गए थे जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के औसाफ़ व अह़वाल और दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का बयान है। इस से लाज़िम आता था कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों और उन्हें कुरआने करीम की त़रफ़ दा'वत दें तो वोह हुज़ूर पर और कुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएं और इस के अह़काम की ता'मील करें लेकिन उन में से बहुतों ने ऐसा नहीं किया। इस तक़्दीर पर आयत में ''مِنَ الْكِتٰب'' से तौरैत और ''كتاب الله'' से कुरआन शरीफ़ मुराद है। **52 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से एक रिवायत येह आई है कि एक मरतबा सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم बैतुल मदरास में तशरीफ़ ले गए और वहां यहूद को इस्लाम की दा'वत दी। नुऐ़म इब्ने अ़म्र और ह़ारिस इब्ने ज़ैद ने कहा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) आप किस दीन पर हैं ? फ़रमाया : मिल्लते इब्राहीमी पर। वोह कहने लगे : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام तो यहूदी थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तौरैत लाओ ! अभी हमारे तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो जाएगा। इस पर न जमे और मुन्किर हो गए, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत में ''كتاب الله'' से तौरैत मुराद है। इन्हीं ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से एक रिवायत येह भी मरवी है कि यहूदे ख़ैबर में से एक मर्द ने एक औ़रत के साथ ज़िना किया था और तौरैत में ऐसे गुनाह की सज़ा पथ्थर मार मार कर हलाक कर देना है लेकिन चूंकि येह लोग यहूदियों में ऊंचे ख़ानदान के थे इस लिये उन्हों ने उन का संगसार करना गवारा न किया और इस मुआ़मले को ब ई उम्मीद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास लाए कि शायद आप संगसार करने का हुक्म न दें मगर हुज़ूर ने उन दोनों के संगसार करने का हुक्म दिया, इस पर यहूद तै़श में आए और कहने लगे कि इस गुनाह की येह सज़ा नहीं आप ने ज़ुल्म किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि फ़ैसला तौरैत पर रखो। कहने लगे : येह इन्साफ़ की बात है। तौरैत मंगाई गई और अ़ब्दुल्लाह बिन सौर या यहूद के बड़े आ़लिम ने उस को पढ़ा, उस में आयते रज्म आई, जिस में संगसार करने का हुक्म था, अ़ब्दुल्लाह ने उस पर हाथ रख लिया और उस को छोड़ गया। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने उस का हाथ हटा कर आयत पढ़ दी यहूदी ज़लील हुए और वोह यहूदी मर्द व औ़रत जिन्हों ने ज़िना किया था हुज़ूर के हुक्म से संगसार किये गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **53 :** किताबे इलाही से रू गर्दानी करने की। **54 :** या'नी चालीस दिन या एक हफ़्ता फिर कुछ ग़म नहीं। **55 :** और उन का येह क़ौल था कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, वोह हमें गुनाहों पर अ़ज़ाब न करेगा मगर बहुत थोड़ी मुद्दत **56 :** और वोह रोज़े क़ियामत है।

اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

ऐ अल्लाह मुल्क के मालिक तू जिसे चाहे सल्त़नत दे और जिस से चाहे सल्त़नत

تَشَآءُ٘ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِیَدِكَ الْخَیْرُ ؕ اِنَّكَ

छीन ले और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे सारी भलाई तेरे ही हाथ है बेशक तू

عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی

सब कुछ कर सकता है[57] तू रात का हिस्सा दिन में डाले और दिन का हिस्सा रात में

الَّیْلِ٘ وَ تُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ٘

डाले[58] और मुर्दा से ज़िन्दा निकाले और ज़िन्दा से मुर्दा निकाले[59]

وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾ لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ

और जिसे चाहे बे गिनती दे मुसल्मान काफ़िरों को अपना दोस्त

اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ

न बना लें मुसल्मानों के सिवा[60] और जो ऐसा करेगा उसे अल्लाह से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़)

فِیْ شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اِلَی

न रहा मगर येह कि तुम उन से कुछ डरो[61] और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह

اللّٰهِ الْمَصِیْرُ ﴿۲۸﴾ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ یَعْلَمْهُ

ही की त़रफ़ फिरना है तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने जी की बात छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह को सब

---

57 शाने नुज़ूल : फ़त्हे मक्का के वक़्त सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को मुल्के फ़ारस व रूम की सल्त़नत का वा'दा दिया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने इस को बहुत बईद समझा और कहने लगे : कहां मुहम्मदे मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) और कहां फ़ारस व रूम के मुल्क ! वोह बड़े ज़बर दस्त और निहायत महफ़ूज़ हैं। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और आख़िर कार हुज़ूर का वोह वा'दा पूरा हो कर रहा।
58 : या'नी कभी रात को बढ़ाए दिन को घटाए और कभी दिन को बढ़ा कर रात को घटाए येह तेरी क़ुदरत है, तो फ़ारस व रूम से मुल्क ले कर ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) को अ़त़ा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद है ! **59 :** "मुर्दा से ज़िन्दा का निकालना" इस त़रह है जैसे कि ज़िन्दा इन्सान को नुत़्फ़ए बेजान से, और परिन्द के ज़िन्दा बच्चे को बे रूह अन्डे से, और ज़िन्दा दिल मोमिन को मुर्दा दिल काफ़िर से, और "ज़िन्दा से मुर्दा निकालना" इस त़रह जैसे कि ज़िन्दा इन्सान से नुत़्फ़ए बेजान, और ज़िन्दा परिन्द से बेजान अन्डा, और ज़िन्दा दिल ईमानदार से मुर्दा दिल काफ़िर। **60 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने जंगे अह़ज़ाब के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरे साथ पांच सो यहूदी हैं जो मेरे ह़लीफ़ हैं, मेरी राय है कि मैं दुश्मन के मुक़ाबिल उन से मदद ह़ासिल करूं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और काफ़िरों को दोस्त और मददगार बनाने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **61 :** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मह़ब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है, इन्हें राज़दार बनाना, इन से मुवालात करना ना जाइज़ है, अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ ؕ وَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

मा'लूम है और जानता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और हर चीज़ पर **अल्लाह** का

قَدِيْرٌ ۲۹ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚۛ وَّ مَا

क़ाबू है जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया हाज़िर पाएगी[62] और जो

عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَ بَيْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِيْدًا ؕ

बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझ में और इस में दूर का फ़ासिला होता[63]

وَ يُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۳۰ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ

और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम

تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा[64] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۳۱ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

बख़्शने वाला मेहरबान है तुम फ़रमा दो कि हुक्म मानो **अल्लाह** और रसूल का[65] फिर अगर वोह मुंह फेरें तो **अल्लाह**

لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۳۲ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَ نُوْحًا وَّ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ

को ख़ुश नहीं आते काफ़िर बेशक **अल्लाह** ने चुन लिया आदम और नूह और इब्राहीम की आल

وَ اٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۳۳ ۙ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَ اللّٰهُ

और इमरान की आल को सारे जहान से[66] येह एक नस्ल है एक दूसरे से[67] और **अल्लाह**

62 : या'नी रोज़े क़ियामत हर नफ़्स को आ'माल की जज़ा मिलेगी और इस में कुछ कमी व कोताही न होगी। **63 :** या'नी मैं ने येह बुरा काम न किया होता। **64 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** की महब्बत का दा'वा जब ही सच्चा हो सकता है जब आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुत्तबेअ़ हो और हुज़ूर की इताअ़त इख़्तियार करे। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم क़ुरैश के पास ठहरे, जिन्हों ने ख़ानए का'बा में बुत नस्ब किये थे और उन्हें सजा सजा कर उन को सज्दा कर रहे थे। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ गुरोहे क़ुरैश ! ख़ुदा की क़सम ! तुम अपने आबा हज़रते इब्राहीम और हज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام के दीन के ख़िलाफ़ हो गए। क़ुरैश ने कहा कि हम इन बुतों को **अल्लाह** की महब्बत में पूजते हैं ताकि येह हमें **अल्लाह** से क़रीब करें। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि महब्बते इलाही का दा'वा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ व फ़रमां बरदारी के बिग़ैर क़ाबिले क़बूल नहीं, जो इस दा'वे का सुबूत देना चाहे हुज़ूर की ग़ुलामी करे। और हुज़ूर ने बुत परस्ती को मन्अ़ फ़रमाया तो बुत परस्ती करने वाला हुज़ूर का ना फ़रमान और महब्बते इलाही के दा'वे में झूटा है। **65 :** येही **अल्लाह** की महब्बत की निशानी है और **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त बिग़ैर इताअ़ते रसूल नहीं हो सकती। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **66 :** यहूद ने कहा था कि हम हज़रते इब्राहीम व इस्हाक़ व या'क़ूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद से हैं और उन्हीं के दीन पर हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बता दिया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन हज़रात को इस्लाम के साथ बरगुज़ीदा किया था और तुम ऐ यहूद ! इस्लाम पर नहीं हो तो तुम्हारा येह दा'वा ग़लत़ है। **67 :** इन में बाहम नस्ली तअ़ल्लुक़ात भी हैं और आपस में येह हज़रात एक दूसरे के मुआ़विनो मददगार भी।

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ

सुनता जानता है जब इमरान की बीबी ने अ़र्ज़ की[68] ऐ रब मेरे मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट

بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا

में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे[69] तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता फिर जब

وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ

उसे जना बोली ऐ रब मेरे येह तो मैं ने लड़की जनी[70] और **अल्लाह** को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी

وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ

और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं[71] और मैं ने इस का नाम मरयम रखा[72] और मैं इसे और इस की औलाद को तेरी

وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ

पनाह में देती हूं रांदे हुए शैतान से तो उसे उस के रब ने अच्छी त़रह क़बूल किया[73]

وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

और उसे अच्छा परवान चढ़ाया[74] और उसे ज़करिय्या की निगहबानी में दिया जब ज़करिय्या उस के पास उस की

---

68 : इमरान दो हैं : **एक** इमरान बिन यस्हुर बिन फ़ाहस बिन लावा बिन या'क़ूब येह तो ह़ज़रते मूसा व हारून के वालिद हैं, **दूसरे** इमरान बिन मासान येह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा मरयम के वालिद हैं। दोनों इमरानों के दरमियान एक हज़ार आठ सो बरस का फ़र्क़ है। यहां दूसरे इमरान मुराद हैं, इन की बीबी साह़िबा का नाम ह़न्ना बिन्ते फ़ाक़ूज़ा है, येह मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की वालिदा हैं। **69 :** और तेरी इ़बादत के सिवा दुन्या का कोई काम उस के मुतअ़ल्लिक़ न हो, बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत उस के ज़िम्मे हो। उ़लमा ने वाक़िआ़ इस त़रह ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते ज़करिय्या व इमरान दोनों हम ज़ुल्फ़ थे। फ़ाक़ूज़ा की दुख़्तर ईशाअ़ जो ह़ज़रते यह़्या की वालिदा हैं और इन की बहन ह़न्ना जो फ़ाक़ूज़ा की दूसरी दुख़्तर और ह़ज़रते मरयम की वालिदा हैं, वोह इमरान की बीबी थीं। एक ज़माने तक ह़न्ना के औलाद नहीं हुई यहां तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई। येह सालिह़ीन का ख़ानदान था और येह सब लोग **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दे थे। एक रोज़ ह़न्ना ने एक दरख़्त के साए में एक चिड़िया देखी जो अपने बच्चे को भरा (खिला) रही थी। येह देख कर आप के दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुवा और बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि या रब ! अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उस को बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम बनाऊं और उस की ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर कर दूं। जब वोह ह़ामिला हुईं और उन्हों ने येह नज़्र मान ली तो उन के शोहर ने फ़रमाया कि येह तुम ने क्या किया ? अगर लड़की हो गई तो ! वोह इस क़ाबिल कहां है ? उस ज़माने में लड़कों को ख़िदमते बैतुल मक़्दिस के लिये दिया जाता था और लड़कियां अ़वारिज़े निसाई और ज़नाना कमज़ोरियों और मर्दों के साथ न रह सकने की वज्ह से इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं, इस लिये इन साहिबों को शदीद फ़िक्र लाह़िक़ हुई और ह़न्ना के वज़्ए ह़म्ल से क़ब्ल इमरान का इन्तिक़ाल हो गया। **70 :** ह़न्ना ने येह कलिमा ए'तिज़ार के त़ौर पर (या'नी उ़ज़्र बयान करते हुए) कहा और उन को ह़स्रतो ग़म हुवा कि लड़की हुई तो नज़्र किस त़रह पूरी हो सकेगी ? **71 :** क्यूं कि येह लड़की **अल्लाह** की अ़त़ा है और उस के फ़ज़्ल से फ़रज़न्द से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखने वाली है। येह साहिब ज़ादी ह़ज़रते मरयम थीं और अपने ज़माने की औ़रतों में सब से अज्मल व अफ़्ज़ल थीं। **72 :** मरयम के मा'ना आ़बिदा हैं। **73 :** और नज़्र में लड़के की जगह ह़ज़रते मरयम को क़बूल फ़रमाया। ह़न्ना ने विलादत के बा'द ह़ज़रते मरयम को एक कपड़े में लपेट कर बैतुल मक़्दिस में अह़बार के सामने रख दिया। येह अह़बार ह़ज़रते हारून की औलाद में थे और बैतुल मक़्दिस में इन का मन्सब ऐसा था जैसा कि का'बा शरीफ़ में ह़जबा का, चूंकि ह़ज़रते मरयम इन के इमाम और इन के साहिबे क़ुरबान की दुख़्तर थीं और इन का ख़ानदान बनी इसराईल में बहुत आ'ला और अहले इ़ल्म का ख़ानदान था, इस लिये इन सब ने जिन की ता'दाद सत्ताईस थी, ह़ज़रते मरयम को लेने और और इन का तकफ़्फ़ुल (देखभाल) करने की रग़बत की। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इन का सब से ज़ियादा ह़क़दार हूं क्यूं कि मेरे घर में इन की ख़ाला हैं। मुआ़मला इस पर ख़त्म हुवा कि क़ुरआ़ डाला जाए, क़ुरआ़ ह़ज़रते ज़करिय्या ही के नाम पर निकला। **74 :** ह़ज़रते मरयम एक दिन में इतना बढ़ती थीं

www.dawateislami.net

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۭ قَالَتْ

नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते[75] कहा ऐ मरयम येह तेरे पास कहां से आया बोलीं

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٧

वोह **अल्लाह** के पास से है बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे[76]

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

यहां[77] पुकारा ज़करिय्या अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝٣٨ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي

औलाद बेशक तू ही है दुआ़ सुनने वाला तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़

الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ

पढ़ रहा था[78] बेशक **अल्लाह** आप को मुज़्दा देता है यहूया का जो **अल्लाह** की त़रफ़ के एक कलिमे की[79] तस्दीक़ करेगा

وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٣٩ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ

और सरदार[80] और हमेशा के लिये औ़रतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से[81] बोला ऐ मेरे रब मेरे लड़का कहां

غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا

से होगा मुझे तो पहुंच गया बुढ़ापा[82] और मेरी औ़रत बांझ[83] फ़रमाया **अल्लाह** यूं ही करता है जो

जितना और बच्चे एक साल में। **75 :** बे फ़स्ल मेवे जो जन्नत से उतरते और ह़ज़रते मरयम ने किसी औ़रत का दूध न पिया। **76 :** ह़ज़रते मरयम ने सिग़र सिनी में कलाम किया जब कि वोह पालने (झूले) में परवरिश पा रही थीं, जैसा कि इन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसी ह़ाल में कलाम फ़रमाया। **मस्अला :** येह आयत करामाते औलिया के सुबूत की दलील है कि **अल्लाह** तआ़ला इन के हाथों पर ख़वारिक़ (करामात) ज़ाहिर फ़रमाता है। ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने जब येह देखा तो फ़रमाया : जो ज़ाते पाक मरयम को बे वक़्त, बे फ़स्ल और बिग़ैर सबब के मेवा अ़त़ा फ़रमाने पर क़ादिर है, वोह बेशक इस पर क़ादिर है कि मेरी बांझ बीबी को नई तन्दुरुस्ती दे और मुझे इस बुढ़ापे की उ़म्र में उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो जाने के बा'द फ़रज़न्द अ़त़ा करे। ब ईं ख़याल आप ने दुआ़ की जिस का अगली आयत में बयान है। **77 :** या'नी मेह़राबे बैतुल मक़्दिस में दरवाज़े बन्द कर के दुआ़ की। **78 :** ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام आ़लिमे कबीर थे। क़ुरबानियां बारगाहे इलाही में आप ही पेश किया करते थे और मस्जिद शरीफ़ में बिग़ैर आप के इज़्न के कोई दाख़िल नहीं हो सकता था। जिस वक़्त मेह़राब में आप नमाज़ में मश्ग़ूल थे और बाहर आदमी दुख़ूल की इजाज़त का इन्तिज़ार कर रहे थे, दरवाज़ा बन्द था, अचानक आप ने एक सफ़ेद पोश जवान देखा, वोह ह़ज़रते जिब्रील थे, उन्हों ने आप को फ़रज़न्द की बिशारत दी, जो "اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ" में बयान फ़रमाई गई। **79 :** कलिमे से मुराद ह़ज़रते ईसा इब्ने मरयम हैं कि इन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने "कुन" फ़रमा कर बिग़ैर बाप के पैदा किया, और इन पर सब से पहले ईमान लाने वाले और इन की तस्दीक़ करने वाले ह़ज़रते यहूया हैं, जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से उ़म्र में छ[6] माह बड़े थे। येह दोनों ह़ज़रात ख़ालाज़ाद भाई थे। ह़ज़रते यहूया की वालिदा अपनी बहन ह़ज़रते मरयम से मिलीं तो उन्हें अपने ह़ामिला होने पर मुत्त़लअ़ किया। ह़ज़रते मरयम ने फ़रमाया : मैं भी ह़ामिला हूं। ह़ज़रते यहूया की वालिदा ने कहा : ऐ मरयम ! मुझे मा'लूम होता है कि मेरे पेट का बच्चा तुम्हारे पेट के बच्चे को सज्दा करता है। **80 :** "सय्यिद" उस रईस को कहते हैं जो मख़्दूम व मुत़ाअ़ हो। ह़ज़रते यहूया मोमिनीन के सरदार और इ़ल्मो ह़िल्म व दीन में उन के रईस थे। **81 :** ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने बराहे तअ़ज्जुब अ़र्ज़ किया : **82 :** और उ़म्र एक सो बीस साल की हो चुकी। **83 :** उन की उ़म्र अठानवे साल की। मक़्सूद सुवाल से येह है कि बेटा किस त़रह़ अ़त़ा होगा ? आया मेरी जवानी लौटाई जाएगी और बीबी का

www.dawateislami.net

يَشَآءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

चाहे[84] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये कोई निशानी कर दे[85] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तीन दिन तू लोगों

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ

से बात न करे मगर इशारे से और अपने रब की बहुत याद कर[86] और कुछ दिन रहे (शाम) और तड़के (सुब्ह़)

وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ

उस की पाकी बोल और जब फ़िरिश्तों ने कहा ऐ मरयम बेशक **अल्लाह** ने तुझे चुन लिया[87] और खूब सुथरा किया[88]

وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ

और आज सारे जहां की औ़रतों से तुझे पसन्द किया[89] ऐ मरयम अपने रब के हुज़ूर अदब से खड़ी हो[90] और उस के लिये सज्दा कर

وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ

और रुकूअ़ वालों के साथ रुकूअ़ कर येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम खु़फ़्या तौ़र पर तुम्हें बताते हैं[91]

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا

और तुम उन के पास न थे जब वोह अपनी क़लमों से कुरआ़ डालते थे कि मरयम किस की परवरिश में रहें और तुम

كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ

उन के पास न थे जब वोह झगड़ रहे थे[92] और याद करो जब फ़िरिश्तों ने मरयम से कहा ऐ मरयम **अल्लाह**

يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي

तुझे बिशारत देता है अपने पास से एक कलिमे की[93] जिस का नाम है मसीह़ ईसा मरयम का बेटा रूदार होगा[94]

बांझ होना दूर किया जाएगा या हम दोनों अपने ह़ाल पर रहेंगे। **84 :** बुढ़ापे में फ़रज़न्द अ़त़ा करना उस की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं। **85 :** जिस से मुझे अपनी बीबी के ह़म्ल का वक़्त मा'लूम हो ताकि मैं और ज़ियादा शुक्र व इबादत में मसरूफ़ होउं। **86 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि आदमियों के साथ गुफ़्तगू करने से ज़बाने मुबारक तीन रोज़ तक बन्द रही और तस्बीह़ व ज़िक्र पर आप क़ादिर रहे और येह एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि जिस में जवारेह़ (आ'ज़ा) सह़ीह़ो सालिम हों और ज़बान से तस्बीह़ो तक़्दीस के कलिमात अदा होते रहें मगर लोगों के साथ गुफ़्तगू न हो सके और येह अ़लामत इस लिये मुक़र्रर की गई कि इस ने'मते अ़ज़ीमा के अदाए ह़क़ में ज़बान ज़िक्रो शुक्र के सिवा और किसी बात में मश्ग़ूल न हो। **87 :** कि बा वुजूद औ़रत होने के बैतुल मक़्दिस की ख़िदमत के लिये नज़्र में क़बूल फ़रमाया और येह बात इन के सिवा किसी औ़रत को मुयस्सर न आई। इसी त़रह़ इन के लिये जन्नती रिज़्क़ भेजना, ह़ज़रते ज़करिय्या को इन का कफ़ील बनाना, येह ह़ज़रते मरयम की बरगुज़ीदगी है। **88 :** मर्द रसीदगी से और गुनाहों से और बक़ौल बा'ज़े ज़नाने अ़वारिज़ से। **89 :** कि बिग़ैर बाप के बेटा दिया और मलाएका का कलाम सुनवाया। **90 :** जब फ़िरिश्तों ने येह कहा तो ह़ज़रते मरयम ने इतना त़वील क़ियाम किया कि आप के क़दमे मुबारक पर वरम आ गया और पाउं फट कर ख़ून जारी हो गया। **91 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़ैब के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए। **92 :** बा वुजूद इस के आप का इन वाक़िआ़त की इत्तिलाअ़ देना दलीले क़वी है इस की, कि आप को ग़ैबी उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए गए। **93 :** या'नी एक फ़रज़न्द की। **94 :** साहिबे जाहो मन्ज़िलत।

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ

दुन्या और आख़िरत में और क़ुर्ब वाला[95] और लोगों से बात करेगा पालने (झूले) में[96]

وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ

और पक्की उम्र में[97] और ख़ासों में होगा बोली ऐ मेरे रब मेरे बच्चा कहां से होगा मुझे तो

يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا

किसी शख़्स ने हाथ न लगाया[98] फ़रमाया अल्लाह यूं ही पैदा करता है जो चाहे जब किसी काम का हुक्म फ़रमाए

فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

तो उस से येही कहता है कि हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और अल्लाह उसे सिखाएगा किताब और हिक्मत

وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّيْ قَدْ

और तौरैत और इन्जील और रसूल होगा बनी इसराईल की त़रफ़ येह फ़रमाता हुवा कि

جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ

मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूं[99] तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्द की सी मूरत बनाता हूं

فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ

फिर उस में फूंक मारता हूं तो वोह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से[100] और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को[101]

وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ

और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं अल्लाह के हुक्म से[102] और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़

95 : बारगाहे इलाही में। 96 : बात करने की उम्र से क़ब्ल 97 : आस्मान से नुज़ूल के बा'द। इस आयत से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से ज़मीन की त़रफ़ उतरेंगे, जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है और दज्जाल को क़त्ल करेंगे। 98 : और दस्तूर येह है कि बच्चा औ़रत व मर्द के इख़्तिलात़ (मिलाप) से होता है, तो मुझे बच्चा किस त़रह़ अ़त़ा होगा निकाह़ से या यूंही बिग़ैर मर्द के? 99 : जो मेरे दा'वाए नुबुव्वत के सिद्क़ की दलील है। 100 : जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नुबुव्वत का दा'वा किया और मो'जिज़ात दिखाए तो लोगों ने दरख़्वास्त की, कि आप एक चमगादड़ पैदा करें। आप ने मिट्टी से चमगादड़ की सूरत बनाई, फिर उस में फूंक मारी, तो वोह उड़ने लगी। चमगादड़ की ख़ुसूसिय्यत येह है कि वोह उड़ने वाले जानवरों में बहुत अक्मल और अ़जीब तर है और क़ुदरत पर दलालत करने में औरों से अब्लग़ (ज़ियादा क़वी है) क्यूं कि वोह बिग़ैर परों के तो उड़ती है और दांत रखती है और हंसती है और उस की मादा के छाती होती है और बच्चा जनती है बा वुजूदे कि उड़ने वाले जानवरों में येह बातें नहीं हैं। 101 : जिस का बरस आ़म हो गया हो और अत़िब्बा उस के इलाज से आ़जिज़ हों, चूंकि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में त़िब इन्तिहाए उ़रूज पर थी और इस के माहिरीन अम्रे इ़लाज में यदे तूला (बड़ी महारत) रखते थे, इस लिये उन को इसी क़िस्म के मो'जिज़े दिखाए गए ताकि मा'लूम हो कि त़िब के त़रीक़े से जिस का इलाज मुम्किन नहीं है उस को तन्दुरुस्त कर देना यक़ीनन मो'जिज़ा और नबी के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील है। वह्ब का क़ौल है कि अक्सर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक एक दिन में पचास पचास हज़ार मरीज़ों का इज्तिमाअ़ हो जाता था, उन में जो चल सकता था वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत होता था और जिसे चलने की त़ाक़त न होती उस के पास ख़ुद ह़ज़रत तशरीफ़ ले जाते और दुआ़ फ़रमा कर उस को तन्दुरुस्त करते और अपनी रिसालत पर ईमान लाने की शर्त़ कर लेते। 102 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने चार शख़्सों को ज़िन्दा किया :

بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۴۹﴾ۚ وَ مُصَدِّقًا

कर रखते हो[103] बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो और तस्दीक़ करता

لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ لِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِیْ حُرِّمَ عَلَیْكُمْ

आया हूं अपने से पहली किताब तौरैत की और इस लिये कि हलाल करूं तुम्हारे लिये कुछ वोह चीज़ें जो तुम पर हराम थीं[104]

وَ جِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ

और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी लाया हूं तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक मेरा तुम्हारा

وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى

सब का रब **अल्लाह** है तो उसी को पूजो[105] येह है सीधा रास्ता फिर जब ईसा ने

مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ

उन से कुफ़्र पाया[106] बोला कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** की तरफ़ हवारियों ने कहा[107] हम

एक आज़र जिस को आप के साथ इख़्लास था, जब उस की हालत नाजुक हुई तो उस की बहन ने आप को इत्तिलाअ़ दी मगर वोह आप से तीन रोज़ की मसाफ़त के फ़ासिले पर था, जब आप तीन रोज़ में वहां पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि उस के इन्तिक़ाल को तीन रोज़ हो चुके, आप ने उस की बहन से फ़रमाया : हमें उस की क़ब्र पर ले चल वोह ले गई। आप ने **अल्लाह** तआला से दुआ़ फ़रमाई आज़र बि इज़्ने इलाही ज़िन्दा हो कर क़ब्र से बाहर आया और मुद्दत तक ज़िन्दा रहा और उस के औलाद हुई। एक बुढ़िया का लड़का जिस का जनाज़ा हज़रत के सामने जा रहा था, आप ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई, वोह ज़िन्दा हो कर ना'श बरदारों के कन्धों से उतर पड़ा कपड़े पहने घर आया ज़िन्दा रहा, औलाद हुई। एक आ़शिर की लड़की शाम को मरी **अल्लाह** तआला ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उस को ज़िन्दा किया। एक साम बिन नूह जिन की वफ़ात को हज़ारों बरस गुज़र चुके थे, लोगों ने ख़्वाहिश की, कि आप उन को ज़िन्दा करें। आप उन की निशान देही से क़ब्र पर पहुंचे और **अल्लाह** तआला से दुआ़ की साम ने सुना कोई कहने वाला कहता है : "اَجِبْ رُوْحَ اللّٰهِ" (या'नी ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को जवाब दें) येह सुनते ही वोह मरऊ़ब और ख़ौफ़ज़दा उठ खड़े हुए और उन्हें गुमान हुवा कि क़ियामत क़ाइम हो गई, इस होल (ख़ौफ़) से उन का निस्फ़ सर सफ़ेद हो गया, फिर वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से दरख़्वास्त की, कि दोबारा उन्हें सकराते मौत की तक्लीफ़ न हो बिग़ैर इस के वापस किया जाए चुनान्चे उसी वक़्त उन का इन्तिक़ाल हो गया, और बि इज़्निल्लाह फ़रमाने में रद है नसारा का जो हज़रते मसीह की उलूहिय्यत के क़ाइल थे। **103 :** जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने बीमारों को अच्छा किया और मुर्दों को ज़िन्दा किया तो बा'ज़ लोगों ने कहा कि येह तो जादू है और कोई मो'जिज़ा दिखाइये ! तो आप ने फ़रमाया कि जो तुम खाते हो और जो जम्अ़ कर रखते हो, मैं उस की तुम्हें ख़बर देता हूं। इसी से साबित हुवा कि ग़ैब के उ़लूम अम्बिया का मो'जिज़ा हैं, और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक पर येह मो'जिज़ा भी ज़ाहिर हुवा, आप आदमी को बता देते थे जो वोह कल खा चुका और आज खाएगा और जो अगले वक़्त के लिये तय्यार कर रखा। आप के पास बच्चे बहुत से जम्अ़ हो जाते थे, आप उन्हें बताते थे कि तुम्हारे घर फ़ुलां चीज़ तय्यार हुई है, तुम्हारे घर वालों ने फ़ुलां फ़ुलां चीज़ खाई है, फ़ुलां चीज़ तुम्हारे लिये उठा रखी है, बच्चे घर जाते रोते घर वालों से वोह चीज़ मांगते घर वाले वोह चीज़ देते और उन से कहते कि तुम्हें किस ने बताया ? बच्चे कहते : हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने, तो लोगों ने अपने बच्चों को आप के पास आने से रोका और कहा : वोह जादूगर हैं, उन के पास न बैठो और एक मकान में सब बच्चों को जम्अ़ कर दिया। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बच्चों को तलाश करते तशरीफ़ लाए तो लोगों ने कहा : वोह यहां नहीं हैं। आप ने फ़रमाया कि फिर इस मकान में कौन है ? उन्हों ने कहा : सुअर हैं। फ़रमाया : ऐसा ही होगा। अब जो दरवाज़ा खोलते हैं तो सब सुअर ही सुअर थे। अल हासिल ग़ैब की ख़बरें देना अम्बिया का मो'जिज़ा है और बे वसातते अम्बिया कोई बशर उमूरे ग़ैब पर मुत्तलअ़ नहीं हो सकता। **104 :** जो शरीअ़ते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में हराम थीं जैसे कि ऊंट के गोश्त, मछली, कुछ परिन्द। **105 :** येह अपनी अ़ब्दिय्यत का इक़रार और अपनी रबूबिय्यत की नफ़ी है। इस में नसारा का रद है। **106 :** या'नी जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि यहूद अपने कुफ़्र पर क़ाइम हैं और आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं और इतनी आयाते बाहिरात और मो'जिज़ात से असर पज़ीर नहीं हुए और इस का सबब येह था कि उन्हों ने पहचान लिया था कि आप ही वोह मसीह हैं जिन

اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ

दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम **अल्लाह** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसल्मान हैं[108] ऐ रब हमारे हम उस पर ईमान लाए जो

اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ

तूने उतारा और रसूल के ताबेअ़ हुए तो हमें ह़क़ पर गवाही देने वालों में लिख ले और काफ़िरों ने मक्र किया[109] और **अल्लाह** ने उन के हलाक की

اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ع اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰۤى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ

ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई और **अल्लाह** सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है[110] याद करो जब **अल्लाह** ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं तुझे पूरी उ़म्र तक पहुंचाऊंगा[111]

وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ

और तुझे अपनी त़रफ़ उठा लूंगा[112] और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे

اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

पैरवों को[113] क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर[114] ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी त़रफ़ पलट कर आओगे

فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तो मैं तुम में फ़ैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो तो वोह जो काफ़िर हुए

की तौरैत में बिशारत दी गई है और आप उन के दीन को मन्सूख़ करेंगे तो जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दा'वत का इज़्हार फ़रमाया तो येह उन पर बहुत शाक़ गुज़रा और वोह आप के ईज़ा व क़त्ल के दरपै हुए और आप के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया। **107 :** ह़वारी वोह मुख़्लिसीन हैं जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दीन के मददगार थे और आप पर अव्वल ईमान लाए येह बारह अश्ख़ास थे। **108 मस्अला :** इस आयत से ईमान व इस्लाम के एक होने पर इस्तिद्लाल किया जाता है और येह भी मा'लूम होता है कि पहले अम्बिया का दीन इस्लाम था न कि यहूदिय्यत व नसरानिय्यत। **109 :** या'नी कुफ़्फ़ारे बनी इसराईल ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ मक्र किया कि धोके के साथ आप के क़त्ल का इन्तिज़ाम किया और अपने एक शख़्स को इस काम पर मुक़र्रर कर दिया। **110 : अल्लाह** तआ़ला ने उन के मक्र का येह बदला दिया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठा लिया, और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शबाहत (शक्लो सूरत) उस शख़्स पर डाल दी जो उन के क़त्ल के लिये आमादा हुवा था चुनान्चे यहूद ने उस को इसी शुबे पर क़त्ल कर दिया। **मस्अला :** लफ़्ज़ "मक्र" लुग़ते अ़रब में "सित्र" या'नी पोशीदगी के मा'ना में है। इसी लिये ख़ुफ़्या तदबीर को भी मक्र कहते हैं और वोह तदबीर अगर अच्छे मक़्सद के लिये हो तो महमूद और किसी क़बीह़ ग़रज़ के लिये हो तो मज़्मूम होती है, मगर उर्दू ज़बान में येह लफ़्ज़ फ़रेब के मा'ना में मुस्ता'मल होता है, इस लिये हरगिज़ शाने इलाही में न कहा जाएगा, और अब चूंकि अ़रबी में भी ब मा'ना ख़द्अ़ के मा'रूफ़ हो गया है, इस लिये अ़रबी में भी शाने इलाही में इस का इत़्लाक़ जाइज़ नहीं, आयत में जहां कहीं वारिद हुवा वोह ख़ुफ़्या तदबीर के मा'ना में है। **111 :** या'नी तुम्हें कुफ़्फ़ार क़त्ल न कर सकेंगे। (مدارک وغیرہ) **112 :** आस्मान पर मह़ल्ले करामत और मक़र्रे मलाएका में बिग़ैर मौत के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़ज़रते ईसा मेरी उम्मत पर ख़लीफ़ा हो कर नाज़िल होंगे, सलीब तोड़ेंगे, ख़नाज़ीर को क़त्ल करेंगे, चालीस साल रहेंगे, निकाह़ फ़रमाएंगे, औलाद होगी, फिर आप का विसाल होगा, वोह उम्मत कैसे हलाक हो जिस के अव्वल मैं हूं और आख़िर ईसा और वस्त़ में मेरे अहले बैत में से महदी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मनाराए शर्क़ी दिमश्क़ पर नाज़िल होंगे। येह भी वारिद हुवा कि ह़ुज्रए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में मदफ़ून होंगे। **113 :** या'नी मुसल्मानों को जो आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने वाले हैं। **114 :** जो यहूद हैं।

www.dawateislami.net

فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

मैं उन्हें दुन्या व आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब करूंगा और उन का कोई

نّٰصِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ

मददगार न होगा और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अल्लाह उन का नेग (अज्र)

اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۷﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ

उन्हें भरपूर देगा और ज़ालिम अल्लाह को नहीं भाते येह हम तुम पर पढ़ते हैं कुछ

الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿۵۸﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ

आयतें और हिक्मत वाली नसीहत ईसा की कहावत अल्लाह के नज़्दीक आदम की त़रह है[115]

خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۵۹﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا

उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है ऐ सुनने वाले येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तो

تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ

शक वालों में न होना फिर ऐ महबूब जो तुम से ईसा के बारे में हु़ज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म

الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ

आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें

وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى

और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर अल्लाह की

الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

ला'नत डालें[116] येही बेशक सच्चा बयान है[117] और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं[118]

115 शाने नुज़ूल : नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और वोह लोग हुज़ूर से कहने लगे : आप गुमान करते हैं कि ईसा अल्लाह के बन्दे हैं ? फ़रमाया : हां, उस के बन्दे और उस के रसूल और उस के कलिमे जो कुंवारी बतूल अ़ज़्रा की त़रफ़ इल्क़ा किये गए। नसारा येह सुन कर बहुत गुस्से में आए और कहने लगे या मुहम्मद ! क्या तुम ने कभी बे बाप का इन्सान देखा है ? इस से उन का मत़लब येह था कि वोह ख़ुदा के बेटे हैं। (مَعَاذَ اللّٰه) इस पर येह आयत नाज़िल हुई और येह बताया गया कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام सिर्फ़ बिग़ैर बाप ही के हुए और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तो मां और बाप दोनों के बिग़ैर मिट्टी से पैदा किये गए। तो जब उन्हें अल्लाह की मख़्लूक़ और बन्दा मानते हो तो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को अल्लाह की मख़्लूक़ व बन्दा मानने में क्या तअ़ज्जुब है। **116 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने नसाराए नजरान को येह आयत पढ़ कर सुनाई और मुबाहले की दा'वत दी (या'नी फ़रीक़ैन का एक दूसरे के लिये इस त़रह बद दुआ़ करना कि जो झूटा हो वोह हलाक हो जाए मुबाहला कहलाता है।) तो कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें कल आप को जवाब देंगे। जब वोह जम्अ़ हुए तो उन्हों ने अपने सब से बड़े आ़लिम और साहिबे राय शख़्स आ़क़िब से कहा कि ऐ अ़ब्दुल

www.dawateislami.net

وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۲﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ

और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब है हिक्मत वाला फिर अगर वोह मुंह फेरें तो अल्लाह फ़सादियों को

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۳﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۭ بَيْنَنَا

जानता है तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो ऐसे कलिमे की त़रफ़ आओ जो हम में तुम में

وَ بَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَ لَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّ لَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا

यक्सां है[119] येह कि इबादत न करें मगर ख़ुदा की और उस का शरीक किसी को न करें[120] और हम में कोई एक दूसरे

بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا

को रब न बना ले अल्लाह के सिवा[121] फिर अगर वोह न मानें तो कह दो तुम गवाह रहो कि हम

مُسْلِمُوْنَ ﴿۶۴﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ مَاۤ اُنْزِلَتِ

मुसल्मान हैं ऐ किताब वालो इब्राहीम के बारे में क्यूं झगड़ते हो तौरैत व

التَّوْرٰىةُ وَ الْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۵﴾ هٰۤاَنْتُمْ

इन्जील तो न उतरी मगर उन के बा'द तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] सुनते हो येह जो

मसीह़ आप की क्या राय है ? उस ने कहा कि ऐ जमाअ़ते नसारा तुम पहचान चुके कि मुह़म्मद नबिय्ये मुरसल तो ज़रूर हैं, अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे। अब अगर नसरानिय्यत पर क़ाइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ो और घर को लौट चलो। येह मश्वरा होने के बा'द वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि हुज़ूर की गोद में तो इमामे हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में ह़सन का हाथ और फ़ातिमा और अ़ली हुज़ूर के पीछे हैं (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) और हुज़ूर उन सब से फ़रमा रहे हैं कि जब मैं दुआ़ करूं तो तुम सब आमीन कहना। नजरान के सब से बड़े नसरानी आ़लिम (पादरी) ने जब इन ह़ज़रात को देखा तो कहने लगा : ऐ जमाअ़ते नसारा ! मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर येह लोग अल्लाह से पहाड़ को हटा देने की दुआ़ करें तो अल्लाह तआ़ला पहाड़ को जगह से हटा दे। इन से मुबाहला न करना हलाक हो जाओगे और क़ियामत तक रूए ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा। येह सुन कर नसारा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि मुबाहले की तो हमारी राय नहीं है। आख़िर कार उन्हों ने जिज़्या देना मन्ज़ूर किया मगर मुबाहले के लिये तय्यार न हुए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! नजरान वालों पर अ़ज़ाब क़रीब आ ही चुका था अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दरों और सुअरों की सूरत में मस्ख़ कर दिये जाते और जंगल आग से भड़क उठता, और नजरान और वहां के रहने वाले परिन्द तक नेस्तो नाबूद हो जाते और एक साल के अ़र्से में तमाम नसारा हलाक हो जाते। **117 :** कि ह़ज़रते ईसा अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं और इन का वोह ह़ाल है जो ऊपर मज़्कूर हो चुका। **118 :** इस में नसारा का भी रद है और तमाम मुश्रिकीन का भी। **119 :** और क़ुरआन और तौरैत और इन्जील इस में मुख़्तलिफ़ नहीं। **120 :** न ह़ज़रते ईसा को न ह़ज़रते उ़ज़ैर को न और किसी को। **121 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने अह़बार व रहबान (यहूदी उ़लमा व ईसाई राहिबों) को बनाया कि उन्हें सज्दे करते और उन की इबादतें करते। (جمل) **122 शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा और यहूद के अह़बार में मुबाह़सा हुवा यहूदियों का दा'वा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام यहूदी थे और नसरानियों का येह दा'वा था कि आप नसरानी थे। येह निज़ाअ़ बहुत बढ़ा तो फ़रीक़ैन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ह़कम माना और आप से फ़ैसला चाहा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर उन का कमाले जह्ल ज़ाहिर कर दिया गया कि इन में से हर एक का दा'वा इन के कमाले जह्ल की दलील है। यहूदिय्यत व नसरानिय्यत तौरैत व इन्जील के नुज़ूल के बा'द पैदा हुई और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़माना जिन पर तौरैत नाज़िल हुई ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से सदहा बरस बा'द है और ह़ज़रते ईसा जिन पर इन्जील नाज़िल हुई, इन का ज़माना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द दो हज़ार बरस के क़रीब हुवा है और तौरैत व इन्जील किसी में आप को यहूदी या नसरानी नहीं फ़रमाया गया बा वुजूद इस के आप की निस्बत येह दा'वा जह्ल व ह़माक़त की इन्तिहा है।

www.dawateislami.net

هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ

तुम हो[123] उस में झगड़े जिस का तुम्हें इ़ल्म था[124] तो उस में[125] मुझ से क्यूं झगड़ते हो जिस का

لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ

तुम्हें इ़ल्म ही नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[126] इब्राहीम न

يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ

यहूदी थे न नसरानी बल्कि हर बात़िल से जुदा मुसल्मान थे और मुश्रिकों से

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۶۷﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا

न थे[127] बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरव हुए[128] और येह

النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ

नबी[129] और ईमान वाले[130] और ईमान वालों का वाली अल्लाह है किताबियों का एक गुरौह

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا

दिल से चाहता है कि किसी त़रह़ तुम्हें गुमराह कर दें और वोह अपने ही आप को गुमराह करते हैं और

يَشْعُرُوْنَ ﴿۶۹﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ

उन्हें शुऊ़र नहीं[131] ऐ किताबियो अल्लाह की आयतों से क्यूं कुफ़्र करते हो ह़ालां कि तुम ख़ुद

تَشْهَدُوْنَ ﴿۷۰﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ

गवाह हो[132] ऐ किताबियो ह़क़ में बात़िल क्यूं मिलाते हो[133] और ह़क़ क्यूं

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۱﴾ ع وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا ع ۷ ۸ ۱۵

छुपाते हो ह़ालां कि तुम्हें ख़बर है और किताबियों का एक गुरौह बोला[134] वोह जो

123 : ऐ अहले किताब ! तुम **124 :** और तुम्हारी किताबों में इस की ख़बर दी गई थी या'नी नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ज़ुहूर और आप की ना'त व सिफ़त की, जब येह सब कुछ जान पहचान कर भी तुम हुज़ूर पर ईमान न लाए और तुम ने इस में झगड़ा किया। **125 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को यहूदी या नसरानी कहते हैं। **126 :** ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि **127 :** तो न किसी यहूदी या नसरानी का अपने आप को दीन में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ मन्सूब करना सह़ीह़ हो सकता है न किसी मुश्रिक का। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में यहूदो नसारा पर ता'रीज़ है कि वोह मुश्रिक हैं। **128 :** और उन के अ़ह्दे नुबुव्वत में उन पर ईमान लाए और उन की शरीअ़त पर आ़मिल रहे। **129 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم **130 :** और आप के उम्मती। **131 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल व हु़ज़ैफ़ा बिन यमान और अ़म्मार बिन यासिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन को यहूद अपने दीन में दाख़िल करने की कोशिश करते और यहूदिय्यत की दा'वत देते थे। इस में बताया गया कि येह उन की हवस ख़ाम (फ़ुज़ूल ख़्वाहिश) है, वोह इन को गुमराह न कर सकेंगे। **132 :** और तुम्हारी किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मौजूद है और तुम जानते हो कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं और उन का दीन सच्चा दीन। **133 :** अपनी किताबों में तह़रीफ़ व तब्दील कर के। **134 :** और उन्हों ने बाहम मश्वरा कर के येह मक्र सोचा

www.dawateislami.net

بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ

ईमान वालों पर उतरा[135] सुब्ह को उस पर ईमान लाओ और शाम को मुन्किर हो जाओ

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ

शायद वोह फिर जाएं[136] और यक़ीन न लाओ मगर उस का जो तुम्हारे दीन का पैरव है तुम फ़रमा दो कि

الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[137] (यक़ीन काहे का न लाओ) उस का कि किसी को मिले[138] जैसा तुम्हें मिला या कोई तुम पर हुज्जत ला सके

عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

तुम्हारे रब के पास[139] तुम फ़रमा दो कि फ़ज़्ल तो अल्लाह ही के हाथ है जिसे चाहे दे और अल्लाह

وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ

वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है अपनी रह़मत से[140] ख़ास करता है जिसे चाहे[141] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल

الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖۤ

वाला है और किताबियों में कोई वोह है कि अगर तू उस के पास एक ढेर अमानत रखे तो वोह तुझे अदा

اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖۤ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ

कर देगा[142] और उन में कोई वोह है कि अगर एक अशरफ़ी उस के पास अमानत रखे तो वोह तुझे फेर कर न देगा मगर जब तक तू उस के

عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ

सर पर खड़ा रहे[143] येह इस लिये कि वोह कहते हैं कि अनपढ़ों[144] के मुआमले में हम पर कोई मुआख़ज़ा नहीं

135 : या'नी क़ुरआन शरीफ़। **136 शाने नुज़ूल :** यहूद इस्लाम की मुख़ालफ़त में रात दिन नए नए मक्र किया करते थे। ख़ैबर के उ़लमाए यहूद के बारह शख़्सों ने बाहमी मश्वरे से एक येह मक्र सोचा कि इन की एक जमाअ़त सुब्ह़ को इस्लाम ले आए और शाम को मुरतद हो जाए और लोगों से कहे कि हम ने अपनी किताबों में जो देखा तो साबित हुवा कि मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم वोह नबिय्ये मौऊ़द नहीं हैं जिन की हमारी किताबों में ख़बर है ताकि इस ह़रकत से मुसल्मानों को दीन में शुबा पैदा हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन का येह राज़ फ़ाश कर दिया और उन का येह मक्र न चल सका और मुसल्मान पहले से ख़बरदार हो गए। **137 :** और जो इस के सिवा है वोह बातिल व गुमराही है। **138 :** दीन व हिदायत और किताब व ह़िक्मत और शरफ़े फ़ज़ीलत। **139 :** रोज़े क़ियामत। **140 :** या'नी नुबुव्वत व रिसालत से। **141 : मस्अला :** इस से साबित होता है कि नुबुव्वत जिस किसी को मिलती है अल्लाह के फ़ज़्ल से मिलती है, इस में इस्तिह़्क़ाक़ का दख़्ल नहीं। (خازن) **142 शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब के ह़क़ में नाज़िल हुई और इस में ज़ाहिर फ़रमाया गया कि इन में दो क़िस्म के लोग हैं : अमीन व ख़ाइन। बा'ज़ तो ऐसे हैं कि कसीर माल उन के पास अमानत रखा जाए तो बे कमो कास्त वक़्त पर अदा कर दें जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जिन के पास एक क़ुरैशी ने बारह सो ऊक़िया (तक़रीबन 2 मन 12 किलो) सोना अमानत रखा था आप ने उस को वैसा ही अदा किया और बा'ज़ अहले किताब में इतने बद दियानत हैं कि थोड़े पर भी उन की निय्यत बिगड़ जाती है जैसे कि फ़िन्ह़ास बिन आ़ज़ूरा जिस के पास किसी ने एक अशरफ़ी अमानत रखी थी, मांगते वक़्त इस से मुकर गया। **143 :** और जब ही देने वाला उस के पास से हटे वोह माले अमानत हज़्म कर जाता है। **144 :** या'नी ग़ैर किताबियों।

www.dawateislami.net

وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ

और **अल्लाह** पर जान बूझ कर झूट बांधते हैं[145] हां क्यूं नहीं जिस ने अपना अ़हद पूरा किया

وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۷۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

और परहेज़ गारी की और बेशक परहेज़ गार **अल्लाह** को ख़ुश आते हैं वोह जो **अल्लाह** के अ़हद और अपनी क़समों के

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ

बदले ज़लील दाम लेते हैं[146] आख़िरत में उन का कुछ हिस्सा नहीं और **अल्लाह** न उन से बात

اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ

करे न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक

اَلِيْمٌ ﴿۷۷﴾ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

अ़ज़ाब है[147] और उन में कुछ वोह हैं जो ज़बान फेर कर किताब में मेल (मिलावट) करते हैं कि तुम समझो

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا

येह भी किताब में है और वोह किताब में नहीं और कहते हैं येह **अल्लाह** के पास से है और

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۸﴾ مَا

वोह **अल्लाह** के पास से नहीं और **अल्लाह** पर दीदा व दानिस्ता झूट बांधते हैं[148] किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ

आदमी का येह ह़क़ नहीं कि **अल्लाह** उसे किताब और हुक्म व पैग़म्बरी दे[149] फिर वोह लोगों

145 : कि उस ने अपनी किताबों में दूसरे दीन वालों के माल हज़्म कर जाने का हुक्म दिया है, बा वुजूदे कि वोह ख़ूब जानते हैं कि उन की किताबों में कोई ऐसा हुक्म नहीं। **146 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के अह़बार और उन के रुअसा अबू राफ़ेअ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ और का'ब बिन अशरफ़ व ह़य्य बिन अख़्त़ब के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला का वोह अ़हद छुपाया था जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ उन से तौरैत में लिया गया। उन्हों ने उस को बदल दिया और बजाए इस के अपने हाथों से कुछ का कुछ लिख दिया और झूटी क़सम खाई कि येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है और येह सब कुछ उन्हों ने अपनी जमाअ़त के जाहिलों से रिश्वतें और ज़र ह़ासिल करने के लिये किया। **147 :** मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन लोग ऐसे हैं कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला न उन से कलाम फ़रमाए और न उन की त़रफ़ नज़रे रह़मत करे, न उन्हें गुनाहों से पाक करे और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस आयत को तीन मरतबा पढ़ा। ह़ज़रते अबू ज़र रावी ने कहा कि वोह लोग टोटे और नुक़्सान में रहे, **या रसूलल्लाह!** वोह कौन लोग हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया : इज़ार को टख़्नों से नीचे लटकाने वाला और एह़सान जताने वाला और अपने तिजारती माल को झूटी क़सम से रवाज देने वाला। ह़ज़रते अबू उमामा की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान का ह़क़ मारने के लिये क़सम खाए, **अल्लाह** उस पर जन्नत ह़राम करता है और दोज़ख़ लाज़िम करता है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** अगर्चे थोड़ी ही चीज़ हो। फ़रमाया : अगर्चे बबूल की शाख़ ही क्यूं न हो। **148 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उन्हों ने तौरैत व इन्जील की तह़रीफ़ की और किताबुल्लाह में अपनी त़रफ़ से जो चाहा मिलाया। **149 :** और कमाले इल्मो अ़मल अ़त़ा फ़रमाए और गुनाहों से मा'सूम करे।

www.dawateislami.net

لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ[150] हां येह कहेगा कि अल्लाह वाले[151] हो जाओ इस सबब से कि

كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ

तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो[152] और न तुम्हें येह हुक्म देगा[153] कि

تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓىٕكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ

फ़िरिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा ठहरा लो क्या तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा बा'द इस के कि

اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَاۤ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ

तुम मुसल्मान हो लिये[154] और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से उन का अ़हद लिया[155] जो मैं तुम को

كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ

किताब और हिक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल[156] कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए[157] तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना

وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْۤا

और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना फ़रमाया क्यूं तुम ने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सब ने अ़र्ज़ की

اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى

हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं तो जो कोई

بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗۤ

इस[158] के बा'द फिरे[159] तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं[160] तो क्या अल्लाह के दीन के सिवा और दीन चाहते हैं[161] और उसी के हुज़ूर

150 : येह अम्बिया से ना मुम्किन है और इन की त़रफ़ ऐसी निस्बत बोहतान है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसारा ने कहा कि हमें ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हुक्म दिया है कि हम उन्हें रब मानें। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन के इस क़ौल की तक्ज़ीब की और बताया कि अम्बिया की शान से ऐसा कहना मुम्किन ही नहीं। इस आयत के शाने नुज़ूल में दूसरा क़ौल येह है कि अबू राफ़ेअ़ यहूदी और सय्यिद नसरानी ने सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा : या मुह़म्मद ! आप चाहते हैं कि हम आप की इ़बादत करें और आप को रब मानें ? हुज़ूर ने फ़रमाया : अल्लाह की पनाह कि मैं ग़ैरुल्लाह की इ़बादत का हुक्म करूं, न मुझे अल्लाह ने इस का हुक्म दिया, न मुझे इस लिये भेजा। **151 :** रब्बानी के मा'ना आ़लिम फ़क़ीह और आ़लिमे बा अ़मल और निहायत दीनदार के हैं। **152 :** इस से साबित हुवा कि इ़ल्म व ता'लीम का समरा येह होना चाहिये कि आदमी अल्लाह वाला हो जाए जिसे इ़ल्म से येह फ़ाएदा न हुवा उस का इ़ल्म ज़ाएअ़ और बेकार है। **153 :** अल्लाह तआ़ला या उस का कोई नबी। **154 :** ऐसा किसी त़रह़ नहीं हो सकता। **155 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) और इन के बा'द जिस किसी को नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई उन से सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत अ़ह्द लिया और उन अम्बिया ने अपनी क़ौमों से अ़ह्द लिया कि अगर उन की ह़यात में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हों तो आप पर ईमान लाएं और आप की नुसरत करें। इस से साबित हुवा कि हुज़ूर तमाम अम्बिया में सब से अफ़्ज़ल हैं। **156 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **157 :** इस त़रह़ कि उन के सिफ़ात व अह़वाल उस के मुत़ाबिक़ हों जो कुतुबे अम्बिया में बयान फ़रमाए गए हैं। **158 :** अ़ह्द **159 :** और आने वाले नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से ए'राज़ करे **160 :** ख़ारिज अज़ ईमान **161 :** बा'द अ़ह्द लिये जाने के और दलाइल वाजे़ह होने

www.dawateislami.net

اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّاِلَيْهِ

गरदन रखे हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं[162] खुशी से[163] और मजबूरी से[164] और उसी की तरफ़

يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ

फिरेंगे यूं कहो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो उतरा इब्राहीम

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى

और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब और उन के बेटों पर और जो कुछ मिला मूसा और ईसा

وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ

और अम्बिया को उन के रब से हम उन में किसी पर ईमान में फ़र्क़ नहीं करते[165] और हम उसी के हुज़ूर

مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ

गरदन झुकाए हैं और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा

وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا

और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों (नुक़सान उठाने वालों में) से है क्यूंकर अल्लाह ऐसी क़ौम की हिदायत चाहे जो ईमान

بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ

ला कर काफ़िर हो गए[166] और गवाही दे चुके थे कि रसूल[167] सच्चा है और उन्हें खुली निशानियां आ चुकी थीं[168]

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ

और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं करता उन का बदला येह है कि उन पर

لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ

ला'नत है अल्लाह और फ़िरिश्तों और आदमियों की सब की हमेशा इस में रहें न उन पर से

के बा वुजूद। **162 :** मलाएका और इन्सान व जिन्नात। **163 :** दलाइल में नज़र कर के और इन्साफ़ इख़्तियार कर के और येह इताअत उन को फ़ाएदा देती और नफ़्अ पहुंचाती है। **164 :** किसी ख़ौफ़ से या अज़ाब के देख लेने से, जैसा कि काफ़िर इन्दल मौत वक़्ते यास (मरते वक़्त ज़िन्दगी से मायूस हो कर) ईमान लाता है, येह ईमान उस को क़ियामत में नफ़्अ न देगा। **165 :** जैसा कि यहूदो नसारा ने किया कि बा'ज़ पर ईमान लाए बा'ज़ के मुन्किर हो गए। **166 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई कि यहूद हुज़ूर की बि'सत से क़ब्ल आप के वसीले से दुआएं करते थे और आप की नुबुव्वत के मुक़िर (मानने और तस्लीम करने वाले) थे, और आप की तशरीफ़ आवरी का इन्तिज़ार करते थे। जब हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी हुई तो हसदन आप का इन्कार करने लगे और काफ़िर हो गए। मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआला ऐसी क़ौम को कैसे तौफ़ीक़े ईमान दे कि जो जान पहचान कर और मान कर मुन्किर हो गई। **167 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم **168 :** और वोह रोशन मो'जिज़ात देख चुके थे।

www.dawateislami.net

عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۙ﴿۸۸﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

अज़ाब हलका हो और न उन्हें मोहलत दी जाए मगर जिन्हों ने इस के बा'द तौबा की[169]

وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ

और आपा (ख़ुद को) संभाला तो ज़रूर अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक वोह जो ईमान ला कर

اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[170] उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी[171] और वोही हैं

الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ

बहके हुए वोह जो काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे उन में किसी से

اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

ज़मीन भर सोना हरगिज़ क़बूल न किया जाएगा अगर्चे अपनी ख़लासी को दे उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۹۱﴾ ع ع ٩ ١٧

दर्दनाक अज़ाब है और उन का कोई यार नहीं

169 : और कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** हारिस इब्ने सुवैद अन्सारी को कुफ़्फ़ार के साथ जा मिलने के बा'द नदामत हुई तो उन्हों ने अपनी क़ौम के पास पयाम भेजा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करें कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। तब वोह मदीनए मुनव्वरह में ताइब हो कर हाज़िर हुए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई।

170 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई, जिन्हों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने के बा'द हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और इन्जील के साथ कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र में और बढ़े, और सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआन के साथ कुफ़्र किया, और एक क़ौल येह है कि येह आयत यहूदो नसारा के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से क़ब्ल तो अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त देख कर आप पर ईमान रखते थे और आप के ज़ुहूर के बा'द काफ़िर हो गए और फिर कुफ़्र में और शदीद हो गए। **171 :** इस हाल में या वक़्ते मौत या अगर वोह कुफ़्र पर मरे।

www.dawateislami.net

لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰى تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ؕ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَىۡءٍ

तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो[172] और तुम जो कुछ ख़र्च करो

فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيۡمٌ ۝٩٢ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اِلَّا مَا

अल्लाह को मा'लूम है सब खाने बनी इसराईल को हलाल थे मगर वोह जो

حَرَّمَ اِسۡرَآءِيۡلُ عَلٰى نَفۡسِهٖ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ تُنَزَّلَ التَّوۡرٰٮةُ ؕ قُلۡ فَاۡتُوۡا

या'क़ूब ने अपने ऊपर हराम कर लिया था तौरैत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरैत

بِالتَّوۡرٰٮةِ فَاتۡلُوۡهَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝٩٣ فَمَنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो[173] तो इस के बा'द जो

الۡكَذِبَ مِنۡۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ فَاُولٰۤٮِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ۝٩٤ قُلۡ صَدَقَ اللّٰهُ ۚ

अल्लाह पर झूट बांधे[174] तो वोही ज़ालिम हैं तुम फ़रमाओ **अल्लाह** सच्चा है

فَاتَّبِعُوۡا مِلَّةَ اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ۝٩٥ اِنَّ اَوَّلَ

तो इब्राहीम के दीन पर चलो[175] जो हर बातिल से जुदा थे और शिर्क वालों में न थे बेशक सब में पहला

172 : "بِرّ" से तक़्वा व ताअ़त मुराद है। हज़रते इब्ने उमर رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि यहां ख़र्च करना आ़म है तमाम सदक़ात का या'नी वाजिबा हों या नाफ़िला सब इस में दाख़िल हैं। हसन का क़ौल है कि जो माल मुसल्मानों को महबूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो। (خازن) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ शकर की बोरियां ख़रीद कर सदक़ा करते थे, उन से कहा गया : इस की क़ीमत ही क्यूं नहीं सदक़ा कर देते ? फ़रमाया : शकर मुझे महबूब व मरग़ूब है येह चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ ख़र्च करूं। (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि हज़रते अबू त़ल्हा अन्सारी मदीने में बड़े मालदार थे उन्हें अपने अम्वाल में बैरुहा (बाग़) बहुत प्यारा था, जब येह आयत नाज़िल हुई तो उन्हों ने बारगाहे रिसालत में खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : मुझे अपने अम्वाल में बैरुहा सब से प्यारा है मैं उस को राहे ख़ुदा में सदक़ा करता हूं, हुज़ूर ने इस पर मसर्रत का इज़्हार फ़रमाया और हज़रते अबू त़ल्हा ने ब ईमाए हुज़ूर (आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم के कहने पर) अपने अक़ारिब और बनी अ़म (चचा की औलाद) में उस को तक़्सीम कर दिया। हज़रत उ़मरे फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने अबू मूसा अश्अ़री को लिखा कि मेरे लिये एक बांदी ख़रीद कर भेज दो ! जब वोह आई तो आप को बहुत पसन्द आई, आप ने येह आयत पढ़ कर **अल्लाह** के लिये उस को आज़ाद कर दिया। **173 शाने नुज़ूल :** यहूद ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से कहा कि हुज़ूर अपने आप को मिल्लते इब्राहीमी पर ख़याल करते हैं बा वुजूदे कि हज़रते इब्राहीम علیہ السلام ऊंट का गोश्त और दूध नहीं खाते थे, आप खाते हैं ! तो आप मिल्लते इब्राहीमी पर कैसे हुए ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि येह चीज़ें हज़रते इब्राहीम पर हलाल थीं, यहूद कहने लगे कि येह हज़रते नूह़ पर भी ह़राम थीं, हज़रते इब्राहीम पर भी ह़राम थीं और हम तक ह़राम ही चली आईं, इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया गया कि यहूद का येह दा'वा ग़लत़ है बल्कि येह चीज़ें हज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब पर ह़लाल थीं, हज़रते या'क़ूब ने किसी सबब से इन को अपने ऊपर ह़राम फ़रमाया और येह हुरमत उन की औलाद में बाक़ी रही, यहूद ने इस का इन्कार किया तो हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि तौरैत इस मज़्मून पर नात़िक़ है अगर तुम्हें इन्कार है तो तौरैत लाओ इस पर यहूद को अपनी फ़ज़ीहत व रुस्वाई का ख़ौफ़ हुवा और वोह तौरैत न ला सके, उन का किज़्ब ज़ाहिर हो गया और उन्हें शरमिन्दगी उठानी पड़ी। **फ़ाएदा :** इस से साबित हुवा कि पिछली शरीअ़तों में अह़काम मन्सूख़ होते थे, इस में यहूद का रद है जो नस्ख़ के क़ाइल न थे। **फ़ाएदा :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم उम्मी थे बा वुजूद इस के यहूद को तौरैत से इल्ज़ाम देना और तौरैत के मज़ामीन से इस्तिद्लाल फ़रमाना आप का मो'जिज़ा और नुबुव्वत की दलील है और इस से आप के वह्बी और ग़ैबी उ़लूम का पता चलता है। **174 :** और कहे कि मिल्लते इब्राहीमी में ऊंटों के गोश्त और दूध **अल्लाह** तआ़ला ने ह़राम किये थे **175 :** कि वोही इस्लाम और दीने मुह़म्मदी है।

بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۶﴾ ج

घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्के में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा[176]

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَ لِلّٰهِ عَلَى

इस में खुली निशानियां हैं[177] इब्राहीम के खड़े होने की जगह[178] और जो इस में आए अमान में हो[179] और **अल्लाह** के लिये

النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ

लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके[180] और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह**

غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖۗ

सारे जहान से बे परवाह है[181] तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो **अल्लाह** की आयतें क्यूं नहीं मानते[182]

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۸﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ

और तुम्हारे काम **अल्लाह** के सामने हैं तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो क्यूं **अल्लाह** की राह

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

से रोकते हो[183] उसे जो ईमान लाए उसे टेढ़ा किया चाहते हो और तुम खुद इस पर गवाह हो[184] और **अल्लाह**

---

176 शाने नुज़ूल : यहूद ने मुसल्मानों से कहा था कि बैतुल मक्दिस हमारा क़िब्ला है का'बे से अफ़्ज़ल और इस से पहला है, अम्बिया का मक़ामे हिजरत व क़िब्लए इबादत है, मुसल्मानों ने कहा कि का'बा अफ़्ज़ल है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि सब से पहला मकान जिस को **अल्लाह** तआला ने ताअत व इबादत के लिये मुक़र्रर किया नमाज़ का क़िब्ला हज और तवाफ़ का मौज़अ बनाया जिस में नेकियों के सवाब ज़ियादा होते हैं वोह का'बए मुअज़्ज़मा है जो शहर मक्कए मुअज़्ज़मा में वाक़ेअ है। हदीस शरीफ़ में है कि का'बए मुअज़्ज़मा बैतुल मक्दिस से चालीस साल क़ब्ल बनाया गया। **177 :** जो इस की हुरमत व फ़ज़ीलत पर दलालत करती हैं उन निशानियों में से बा'ज़ येह हैं कि परिन्द का'बे शरीफ़ के ऊपर नहीं बैठते और इस के ऊपर से परवाज़ नहीं करते बल्कि परवाज़ करते हुए आते हैं तो इधर उधर हट जाते हैं और जो परिन्द बीमार हो जाते हैं वोह अपना इलाज येही करते हैं कि हवाए का'बा में हो कर गुज़र जाएं इसी से उन्हें शिफ़ा होती है और वुहूश (जंगली जानवर) एक दूसरे को हरम में ईज़ा नहीं देते हत्ता कि कुत्ते इस सर ज़मीन में हिरन पर नहीं दौड़ते और वहां शिकार नहीं करते और लोगों के दिल का'बए मुअज़्ज़मा की तरफ़ खिचते हैं और इस की तरफ़ नज़र करने से आंसू जारी होते हैं और हर शबे जुमुआ को अरवाहे औलिया इस के गिर्द हाज़िर होती हैं और जो कोई इस की बे हुरमती का क़स्द करता है बरबाद हो जाता है। उन्हीं आयात (निशानियों) में से मक़ामे इब्राहीम वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन का आयत में बयान फ़रमाया गया। (مدارک وخازن واحمدی) **178 :** मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का'बे शरीफ़ की ता'मीर के वक़्त खड़े होते थे और उस में आप के क़दम मुबारक के निशान थे जो बा वुजूद तवील ज़माना गुज़रने और ब कसरत हाथों से मस होने के अभी तक कुछ बाक़ी हैं। **179 :** यहां तक कि अगर कोई शख़्स क़त्ल व जिनायत कर के हरम में दाख़िल हो तो वहां न उस को क़त्ल किया जाए न उस पर हद क़ाइम की जाए। हज़रत उमरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने वालिद ख़त्ताब के क़ातिल को भी हरम शरीफ़ में पाऊं तो उस को हाथ न लगाऊं यहां तक कि वोह वहां से बाहर आए। **180 मस्अला :** इस आयत में हज की फ़र्ज़िय्यत का बयान है और इस का कि इस्तिताअत शर्त है। हदीस शरीफ़ में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर ज़ाद व राहिला से फ़रमाई। ज़ाद या'नी तोशा खाने पीने का इन्तिज़ाम इस क़दर होना चाहिये कि जा कर वापस आने तक के लिये काफ़ी हो और येह वापसी के वक़्त तक अहलो इयाल के नफ़क़े के इलावा होना चाहिये, राह का अम्न भी ज़रूरी है क्यूं कि बिग़ैर इस के इस्तिताअत साबित नहीं होती। **181 :** इस से **अल्लाह** तआला की नाराज़ी ज़ाहिर होती है और येह मस्अला भी साबित होता है कि फ़र्ज़े क़त्ई का मुन्किर काफ़िर है। **182 :** जो सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिद्क़े नुबुव्वत पर दलालत करती हैं। **183 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के और आप की ना'त व सिफ़त छुपा कर जो तौरैत में मज़्कूर है। **184 :** कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

तुम्हारे कौतकों (बुरे कामों) से बे ख़बर नहीं ऐ ईमान वालो अगर तुम कुछ

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾ وَكَيْفَ

किताबियों के कहे पर चले तो वोह तुम्हारे ईमान के बा'द तुम्हें काफ़िर कर छोड़ेंगे[185] और तुम क्यूंकर

تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ط وَمَنْ

कुफ़्र करोगे तुम पर तो **अल्लाह** की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में उस का रसूल तशरीफ़ फ़रमा है और जिस ने

يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अल्लाह का सहारा लिया तो ज़रूर वोह सीधी राह दिखाया गया ऐ ईमान

اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

वालो **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसल्मान

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ص وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

और **अल्लाह** की रस्सी मज़बूत़ थाम लो[186] सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में बट न जाना)[187] और **अल्लाह** का एह़सान

عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ

अपने ऊपर याद करो जब तुम में बैर था (दुश्मनी थी) उस ने तुम्हारे दिलों में मिलाप कर दिया तो उस के फ़ज़्ल से तुम आपस में

ना'त तौरैत में मक्तूब है और **अल्लाह** को जो दीन मक़्बूल है वोह सिर्फ़ दीने इस्लाम ही है। **185 शाने नुज़ूल :** औस व ख़ज़रज के क़बीलों में पहले बड़ी अ़दावत थी और मुद्दतों इन के दरमियान जंग जारी रही, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सदक़े में इन क़बीलों के लोग इस्लाम ला कर बाहम शीरो शकर हुए। एक रोज़ वोह एक मजलिस में बैठे हुए उन्सो मह़ब्बत की बातें कर रहे थे, शास बिन क़ैस यहूदी जो बड़ा दुश्मने इस्लाम था इस त़रफ़ गुज़रा और इन के बाहमी रवाबित़ देख कर जल गया और कहने लगा कि जब येह लोग आपस में मिल गए तो हमारा क्या ठिकाना है, एक जवान को मुक़र्रर किया कि इन की मजलिस में बैठ कर इन की पिछली लड़ाइयों का ज़िक्र छेड़े और उस ज़माने में हर एक क़बीला जो अपनी मद्ह़ और दूसरों की ह़क़ारत के अश्आ़र लिखता था, पढ़े। चुनान्चे उस यहूदी ने ऐसा ही किया और उस की शर अंगेज़ी से दोनों क़बीलों के लोग तै़श में आ गए और हथियार उठा लिये क़रीब था कि ख़ूनरेज़ी हो जाए सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم येह ख़बर पा कर मुहाजिरीन के साथ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ऐ जमाअ़ते अहले इस्लाम येह क्या जाहिलिय्यत की ह़रकात हैं, मैं तुम्हारे दरमियान हूं **अल्लाह** तआ़ला ने तुम को इस्लाम की इ़ज़्ज़त दी, जाहिलिय्यत की बला से नजात दी, तुम्हारे दरमियान उल्फ़तो मह़ब्बत डाली, तुम फिर ज़मानए कुफ़्र की ह़ालत की त़रफ़ लौटते हो, हु़ज़ूर के इर्शाद ने उन के दिलों पर असर किया और उन्हों ने समझा कि येह शैत़ान का फ़रेब और दुश्मन का मक्र था, उन्हों ने हाथों से हथियार फेंक दिये और रोते हुए एक दूसरे से लिपट गए और हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ फ़रमां बरदाराना चले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **186 :** حَبْلِ اللّٰهِ की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं बा'ज़ कहते हैं इस से क़ुरआन मुराद है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि क़ुरआने पाक "حَبْلُ اللّٰه" (**अल्लाह** की रस्सी) है जिस ने इस का इत्तिबाअ़ किया वोह हिदायत पर है जिस ने इस को छोड़ा वोह गुमराही पर। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि حَبْلُ اللّٰه से जमाअ़त मुराद है और फ़रमाया कि तुम जमाअ़त को लाज़िम कर लो कि वोह حَبْلُ اللّٰه है जिस को मज़बूत़ थामने का हुक्म दिया गया है। **187 :** जैसे कि यहूदो नसारा मुतफ़र्रिक़ हो गए, इस आयत में उन अफ़्आ़ल व ह़रकात की मुमानअ़त की गई जो मुसल्मानों के दरमियान तफ़र्रुक़ का सबब हों। त़रीक़ए मुस्लिमीन मज़्हबे अहले सुन्नत है इस के सिवा कोई राह इख़्तियार करना दीन में तफ़्रीक़ और मम्नूअ़ है।

www.dawateislami.net

إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ

भाई हो गए[188] और तुम एक ग़ारे दोज़ख़ के किनारे पर थे[189] तो उस ने तुम्हें उस से बचा दिया[190] अल्लाह तुम

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أُمَّةٌ

से यूं ही अपनी आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम हिदायत पाओ और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि

يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ

भलाई की तरफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें[191]

وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا

और येही लोग मुराद को पहुंचे[192] और उन जैसे न होना जो आपस में फट गए और उन में फूट पड़ गई[193]

مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾ يَوْمَ

बा'द इस के कि रोशन निशानियां उन्हें आ चुकी थीं[194] और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ ۚ قف

कुछ मुंह उन्जाले (चमक्ते) होंगे और कुछ मुंह काले तो वोह जिन के मुंह काले हुए[195]

أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हुए[196] तो अब अ़ज़ाब चखो अपने कुफ़्र का बदला

188 : और इस्लाम की बदौलत अ़दावत दूर हो कर आपस में दीनी महब्बत पैदा हुई, हत्ता कि औस और ख़ज़रज की वोह मश्हूर लड़ाई जो एक सो बीस साल से जारी थी और इस के सबब रात दिन क़त्लो ग़ारत की गर्म बाज़ारी रहती थी सय्यिदे आ़लम ﷺ के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला ने मिटा दी और जंग की आग ठन्डी कर दी और जंगजू क़बीलों में उल्फ़तो महब्बत के जज़्बात पैदा कर दिये। **189 :** या'नी हा़लते कुफ़्र में कि अगर इसी हा़ल पर मर जाते तो दोज़ख़ में पहुंचते। **190 :** दौलते ईमान अ़त़ा कर के। **191 :** इस आयत से अम्रे मा'रूफ़ व नह्ये मुन्कर की फ़र्ज़िय्यत और इज्माअ़ के हुज्जत होने पर इस्तिद्लाल किया गया है। **192 :** ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने फ़रमाया कि नेकियों का हुक्म करना और बदियों से रोकना बेहतरीन जिहाद है। **193 :** जैसा कि यहूदो नसारा आपस में मुख़्तलिफ़ हुए और उन में एक दूसरे के साथ इनाद व दुश्मनी रासिख़ हो गई या जैसा कि ख़ुद तुम ज़मानए इस्लाम से पहले जाहिलिय्यत के वक़्त में मुतफ़र्रिक़ थे तुम्हारे दरमियान बुग़्ज़ो इनाद था। **मस्अला :** इस आयत में मुसल्मानों को आपस में इत्तिफ़ाक़ व इज्तिमाअ़ का हुक्म दिया गया और इख़्तिलाफ़ और इस के अस्बाब पैदा करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। अहा़दीस में भी इस की बहुत ताकीदें वारिद हैं और जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा होने की सख़्ती से मुमानअ़त फ़रमाई गई है जो फ़िर्क़ा पैदा होता है इस हुक्म की मुख़ालफ़त कर के ही पैदा होता है और जमाअ़ते मुस्लिमीन में तफ़्रिक़ा अन्दाज़ी के जुर्म का मुरतकिब होता है और ह़स्बे इर्शादे ह़दीस वोह शैत़ान का शिकार है। أَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى مِنْهُ **194 :** और हक़ वाज़ेह हो चुका था। **195 :** या'नी कुफ़्फ़ार। उन से तौबीख़न (झिड़क्ते हुए) कहा जाएगा : **196 :** इस के मुख़ात़ब या तो तमाम कुफ़्फ़ार हैं इस सूरत में ईमान से रोज़े मीसाक़ का ईमान मुराद है जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन से फ़रमाया था क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब ने بَلٰى कहा था और ईमान लाए थे अब जो दुन्या में काफ़िर हुए तो उन से फ़रमाया जाता है कि रोज़े मीसाक़ ईमान लाने के बा'द तुम काफ़िर हो गए। ह़सन का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जिन्हों ने ज़बान से इज़्हारे ईमान किया था और उन के दिल मुन्किर थे। इक्रिमा ने कहा कि वोह अहले किताब हैं जो सय्यिदे आ़लम ﷺ की बि'सत से क़ब्ल तो हुज़ूर पर ईमान लाए और हुज़ूर के ज़ुहूर के बा'द आप का इन्कार कर के काफ़िर हो गए, एक क़ौल येह है कि इस के मुख़ात़ब मुरतद्दीन हैं जो इस्लाम ला कर फिर गए और काफ़िर हो गए।

www.dawateislami.net

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا

और वोह जिन के मुंह उन्जाले (रोशन) हुए[197] वोह **अल्लाह** की रहमत में हैं वोह हमेशा उस में

خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ

रहेंगे येह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम ठीक ठीक तुम पर पढ़ते हैं और **अल्लाह** जहान वालों पर

ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

जुल्म नहीं चाहता[198] और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** ही की

١١ ع ٢

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۱۰۹﴾ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ

तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तुम बेहतर हो[199] उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई

بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ

भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो और अगर किताबी ईमान

الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

लाते[200] तो उन का भला था उन में कुछ मुसल्मान हैं[201] और ज़ियादा काफ़िर

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟ قف ثُمَّ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर येही सताना[202] और अगर तुम से लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे[203] फिर

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ

उन की मदद न होगी उन पर जमा दी गई ख़्वारी (ज़िल्लत) जहां हों अमान न पाएं[204] मगर **अल्लाह** की डोर[205]

197 : या'नी अहले ईमान, कि उस रोज़ बि करमिही तआ़ला वोह फ़रहानो शादां होंगे और उन के चेहरे चमकते दमकते होंगे, दाहने बाएं और सामने नूर होगा। **198 :** और किसी को बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं देता और किसी की नेकी का सवाब कम नहीं करता। **199 :** ऐ उम्मते मुहम्मद ﷺ ! **शाने नुज़ूल :** यहूदियों में से मालिक बिन सैफ़ और वहब बिन यहूदा ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द वग़ैरा अस्हाबे रसूलुल्लाह ﷺ से कहा : हम तुम से अफ़्ज़ल हैं और हमारा दीन तुम्हारे दीन से बेहतर है जिस की तुम हमें दा'वत देते हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। तिरमिज़ी की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला मेरी उम्मत को गुमराही पर जम्अ़ न करेगा और **अल्लाह** तआ़ला का दस्ते रह़मत जमाअ़त पर है जो जमाअ़त से जुदा हुवा दोज़ख़ में गया। **200 :** सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्त़फ़ा ﷺ पर **201 :** जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब यहूद में से और नज्जाशी और इन के अस्ह़ाब नसारा में से। **202 :** ज़बानी त़ा'नो तश्नीअ़ और धमकी वग़ैरा से। **शाने नुज़ूल :** यहूद में से जो लोग इस्लाम लाए थे जैसे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के हमराही, रुअसाए यहूद उन के दुश्मन हो गए और उन्हें ईज़ा देने की फ़िक्र में रहने लगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान लाने वालों को मुत़्मइन कर दिया कि ज़बानी क़ीलो क़ाल के सिवा वोह मुसल्मानों को कोई आज़ार न पहुंचा सकेंगे, ग़लबा मुसल्मानों ही को रहेगा और यहूद का अन्जाम ज़िल्लतो रुस्वाई है। **203 :** और तुम्हारे मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे, येह ग़ैबी ख़बरें ऐसी ही वाक़ेअ़ हुईं। **204 :** हमेशा ज़लील ही रहेंगे इ़ज़्ज़त कभी न पाएंगे इसी का असर है कि आज तक यहूद को कहीं की सल्त़नत मुयस्सर न आई जहां रहे रिआ़या व ग़ुलाम ही बन कर रहे। **205 :** थाम कर या'नी ईमान ला कर।

اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ

और आदमियों की डोर से[206] और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुए और उन पर जमा दी गई

الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ

मोह़ताजी[207] येह इस लिये कि वोह अल्लाह की आयतों से कुफ़्र करते और पैग़म्बरों

الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ۙ لَيْسُوْا

को नाह़क़ शहीद करते येह इस लिये कि ना फ़रमां बरदार और सरकश थे सब एक

سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

से नहीं किताबियों में कुछ वोह हैं कि ह़क़ पर क़ाइम हैं[208] अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ

और सज्दा करते हैं[209] अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ

का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं[210] और नेक कामों पर दौड़ते हैं

وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

और येह लोग लाइक़ हैं और वोह जो भलाई करें उन का ह़क़ न मारा जाएगा

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

और अल्लाह को मा'लूम हैं डर वाले[211] वोह जो काफ़िर हुए उन के माल और औलाद[212]

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ

उन को अल्लाह से कुछ न बचाएंगे और वोह जहन्नमी हैं उन को

206 : या'नी मुसल्मानों की पनाह ले कर और इन्हें जिज़्या दे कर। 207 : चुनान्चे यहूदी को मालदार हो कर भी ग़नाए क़ल्बी मुयस्सर नहीं होता। 208 **शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब ईमान लाए तो अह़बारे यहूद ने जल कर कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर हम में से जो ईमान लाए हैं वोह बुरे लोग हैं अगर बुरे न होते तो अपने बाप दादा का दीन न छोड़ते, इस पर येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। अ़त़ा का क़ौल है कि مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ (किताबियों में कुछ वोह हैं कि ह़क़ पर क़ाइम हैं) से चालीस मर्द अहले नजरान के, बत्तीस ह़बशा के, आठ रूम के मुराद हैं, जो दीने ईसवी पर थे फिर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। 209 : या'नी नमाज़ पढ़ते हैं, इस से या तो नमाज़े इशा मुराद है जो अहले किताब नहीं पढ़ते या नमाज़े तहज्जुद। 210 : और दीन में मुदाहनत (ह़क़ बात कहने में किसी की परवाह) नहीं करते। 211 : यहूद ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब से कहा था कि तुम दीने इस्लाम क़बूल कर के टोटे (नुक़्सान) में पड़े, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़बर दी कि वोह दरजाते आ़लिया के मुस्तह़िक़ हुए और अपनी नेकियों की जज़ा पाएंगे, यहूद की बक्वास बेहूदा है। 212 : जिन पर उन्हें बहुत नाज़ है।

فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ

हमेशा उस में रहना[213] कहावत उस की जो इस दुन्या की ज़िन्दगी में[214] ख़र्च करते हैं उस हवा

رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا

की सी है जिस में पाला (सख़्त ठन्डक) हो वोह एक ऐसी क़ौम की खेती पर पड़ी जो अपना ही बुरा करते थे तो उसे बिल्कुल मार गई[215] और

ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद अपनी जान पर ज़ुल्म करते हैं ऐ ईमान वालो ग़ैरों को

تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ

अपना राज़दार न बनाओ[216] वोह तुम्हारी बुराई में गई (कमी) नहीं करते उन की आरज़ू है जितनी ईज़ा तुम्हें पहुंचे

بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚۖ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ

बैर (बुग़्ज़) उन की बातों से झलक उठा और वोह[217] जो सीने में छुपाए हैं और बड़ा है

بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا

हम ने निशानियां तुम्हें खोल कर सुना दीं अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[218] सुनते हो येह जो तुम हो तुम तो उन्हें चाहते हो[219] और

يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا

वोह तुम्हें नहीं चाहते[220] और हाल येह कि तुम सब किताबों पर ईमान लाते हो[221] और वोह जब तुम से मिलते हैं कहते हैं हम ईमान लाए[222] और

213 शाने नुज़ूल : येह आयत बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के हक़ में नाज़िल हुई, यहूद के रुअसा ने तह़सीले रियासत व माल की ग़रज़ से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ दुश्मनी की थी **अल्लाह** तआ़ला ने इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि उन के माल व औलाद कुछ काम न आएंगे, वोह रसूल की दुश्मनी में नाहक़ अपनी आक़िबत बरबाद कर रहे हैं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुश्रिकीने क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि अबू जह्ल को अपनी दौलत व माल पर बड़ा फ़ख़्र था और अबू सुफ़्यान ने बद्र व उहुद में मुश्रिकीन पर बहुत कसीर माल ख़र्च किया था। एक क़ौल येह है कि येह आयत तमाम कुफ़्फ़ार के हक़ में आ़म है इन सब को बताया गया कि माल व औलाद में से कोई भी काम आने वाला और अ़ज़ाबे इलाही से बचाने वाला नहीं। **214 :** मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से यहूद का वोह ख़र्च मुराद है जो अपने उ़लमा और रुअसा पर करते थे। एक क़ौल येह है कि कुफ़्फ़ार के तमाम नफ़क़ात व सदक़ात मुराद हैं। एक क़ौल येह है कि रियाकार का ख़र्च करना मुराद है क्यूं कि इन सब लोगों का ख़र्च करना या नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये होगा या नफ़्ए़ उख़्रवी के लिये, अगर महज़ नफ़्ए़ दुन्यवी के लिये हो तो आख़िरत में इस से क्या फ़ाएदा और रियाकार को तो आख़िरत और रिज़ाए इलाही मक़्सूद ही नहीं होती इस का अ़मल दिखावे और नुमूद के लिये होता है ऐसे अ़मल का आख़िरत में क्या नफ़्अ़ और काफ़िर के तमाम अ़मल अकारत हैं वोह अगर आख़िरत की निय्यत से भी ख़र्च करे तो नफ़्अ़ नहीं पा सकता, इन लोगों के लिये वोह मिसाल बिल्कुल मुताबिक़ है जो आयत में ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **215 :** या'नी जिस त़रह कि बर्फ़ानी हवा खेती को बरबाद कर देती है इसी त़रह कुफ़्र इन्फ़ाक़ को बातिल कर देता है। **216 :** उन से दोस्ती न करो, महब्बत के तअ़ल्लुक़ात न रखो, वोह क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुसल्मान यहूद से क़राबत और दोस्ती और पड़ोस वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर मेलजोल रखते थे उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **मस्अला :** कुफ़्फ़ार से दोस्ती व महब्बत करना और उन्हें अपना राज़दार बनाना ना जाइज़ व मम्नूअ़ है। **217 :** ग़ैज़ो इनाद **218 :** तो उन से दोस्ती न करो। **219 :** रिश्तेदारी और दोस्ती वग़ैरा तअ़ल्लुक़ात की बिना पर **220 :** और दीनी मुख़ालफ़त की बिना पर तुम से दुश्मनी रखते हैं। **221 :** और वोह तुम्हारी किताब पर ईमान नहीं रखते। **222 :** येह मुनाफ़िक़ीन का हाल है।

www.dawateislami.net

خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ

अकेले हों तो तुम पर उंगलियां चबाएं गुस्से से तुम फ़रमा दो कि मर जाओ अपनी घुटन (क़ल्बी जलन) में[223]

اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫

अल्लाह खूब जानता है दिलों की बात तुम्हें कोई भलाई पहुंचे तो उन्हें बुरा लगे[224]

وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ

और तुम को बुराई पहुंचे तो इस पर खुश हों और अगर तुम सब्र और परहेज़ गारी किये रहो[225] तो उन का

كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ

दाउं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा बेशक उन के सब काम खुदा के घेरे में हैं और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुब्ह को[226]

اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ لا

अपने दौलत खाने से बरआमद हुए मुसल्मानों को लड़ाई के मोरचों पर क़ाइम करते[227] और अल्लाह सुनता जानता है

223 : بمیر تا برہی اے حسود کیں رنجیست کہ از مشقت او جز بمرگ نتواں رست (ऐ हासिद ! हसद की बीमारी से नजात हासिल करने के लिये मर जा क्यूं कि मौत के सिवा इस से छुटकारा पाना बहुत मुश्किल है) । 224 : और इस पर वोह रन्जीदा हों । 225 : और उन से दोस्ती व महब्बत न करो । **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दुश्मन के मुक़ाबले में सब्रो तक़्वा काम आता है । 226 : ब मक़ामे मदीनए तृय्यिबा ब क़स्दे उहुद 227 : जम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह बयान जंगे उहुद का है जिस का इज्माली वाक़िआ येह है कि जंगे बद्र में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रन्ज था इस लिये उन्हों ने ब क़स्दे इन्तिक़ाम लश्करे गिरां मुरत्तब कर के फ़ौज कशी की, जब रसूले करीम ﷺ को खबर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार उहुद में उतरा है तो आप ने अस्हाब से मश्वरा फ़रमाया, इस मश्वरत में अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को भी बुलाया गया जो इस से क़ब्ल कभी किसी मश्वरत के लिये बुलाया न गया था, अक्सर अन्सार की और इस अब्दुल्लाह की येह राय हुई कि हुज़ूर मदीनए तृय्यिबा में ही क़ाइम रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आएं तब उन से मुक़ाबला किया जाए, येही सय्यिदे आलम ﷺ की मरज़ी थी, लेकिन बा'ज़ अस्हाब की राय येह हुई कि मदीनए तृय्यिबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्हों ने इसरार किया, सय्यिदे आलम ﷺ दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए और अस्लहा ज़ैबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए, अब हुज़ूर को देख कर उन अस्हाब को नदामत हुई और उन्हों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर को राय देना और इस पर इसरार करना हमारी ग़लती थी इस को मुआफ़ फ़रमाइये और जो मरज़िये मुबारक हो वोही कीजिये । हुज़ूर ने फ़रमाया कि नबी के लिये सज़ावार नहीं कि हथियार पहन कर क़ब्ले जंग उतार दे । मुश्रिकीन उहुद में चहार शम्बा (बुध) पन्जशम्बा (जुमा'रात) को पहुंचे थे और रसूले करीम ﷺ जुमुआ के रोज़ बा'द नमाज़े जुमुआ एक अन्सारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर रवाना हुए और पन्द्रह शव्वाल 3 सि.हि. रोज़ यकशम्बा (इतवार के दिन) उहुद में पहुंचे, यहां नुज़ूल फ़रमाया और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे इस्लाम के पीछे था उस तरफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आ कर हम्ला करे इस लिये हुज़ूर ने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को पचास तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मामूर फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस तरफ़ से हम्ला आवर हो तो तीर बारी कर के उस को दफ़्अ कर दिया जाए और हुक्म दिया कि किसी हाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना ख़्वाह फ़त्ह हो या शिकस्त हो । अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ जिस ने मदीनए तृय्यिबा में रह कर जंग करने की राय दी थी अपनी राय के खिलाफ़ किये जाने की वज्ह से बरहम हुवा और कहने लगा कि हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ ने नौ उम्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवा न की इस अब्दुल्लाह बिन उबय के साथ तीन सो मुनाफ़िक़ थे उन से इस ने कहा कि जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त भाग पड़ो ताकि लश्करे इस्लाम में अब्तरी (इन्तिशार व गड़बड़) हो जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भाग निकलें, मुसल्मानों के लश्कर की कुल ता'दाद मअ इन मुनाफ़िक़ीन के हज़ार थी और मुश्रिकीन तीन हज़ार, मुक़ाबला होते ही अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सो मुनाफ़िक़ों को ले कर भाग निकला और हुज़ूर के सात सो अस्हाब हुज़ूर के साथ रह गए, अल्लाह तआला ने इन को साबित रखा यहां तक कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हुई, अब सहाबा भागते हुए मुश्रिकीन के पीछे पड़ गए और हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ ने जहां क़ाइम रहने के लिये फ़रमाया था वहां क़ाइम न रहे तो अल्लाह तआला ने इन्हें दिखा दिया कि बद्र में अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी की बरकत से फ़त्ह हुई थी यहां हुज़ूर के हुक्म की मुखालफ़त का नतीजा येह

www.dawateislami.net

اِذْ هَمَّتْ طَّآىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَ اللّٰهُ وَلِیُّهُمَا ؕ وَ عَلَی اللّٰهِ

जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं[228] और अल्लाह उन का संभालने वाला है और मुसल्मानों को

فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे[229]

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِیْنَ اَلَنْ یَّكْفِیَكُمْ

तो अल्लाह से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो जब ऐ महबूब तुम मुसल्मानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं

اَنْ یُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ مُنْزَلِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ؕ بَلٰۤی ۙ اِنْ

कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर हां क्यूं नहीं अगर

تَصْبِرُوْا وَ تَتَّقُوْا وَ یَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا یُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ

तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को

بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ مُسَوِّمِیْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰی

पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा[230] और येह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी ख़ुशी

لَكُمْ وَ لِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ؕ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ

के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले[231] और मदद नहीं मगर अल्लाह ग़ालिब हिक्मत

الْحَكِیْمِ ﴿۱۲۶﴾ۙ لِیَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْ یَكْبِتَهُمْ فَیَنْقَلِبُوْا

वाले के पास से[232] इस लिये कि काफ़िरों का एक हिस्सा काट दे[233] या उन्हें ज़लील करे कि ना मुराद

خَآىِٕبِیْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَیْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ اَوْ یَتُوْبَ عَلَیْهِمْ اَوْ

फिर (लौट) जाएं येह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या

हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन के दिलों से रो'बो हैबत दूर फ़रमाई और वोह पलट पड़े और मुसल्मानों को हज़ीमत हुई। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ एक जमाअ़त रही जिस में ह़ज़रते अबू बक्र व अ़ली व अ़ब्बास व त़ल्ह़ा व सा'द थे, इसी जंग में दन्दाने अक़्दस शहीद हुवा और चेहरए अक़्दस पर ज़ख़्म आया, इसी के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **228 :** येह दोनों गुरौह अन्सार में से थे, एक बनी सलमा ख़ज़रज में से और एक बनी ह़ारिसा औस में से येह दोनों लश्कर के बाज़ू थे, जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ भागा तो उन्हों ने भी वापस जाने का क़स्द किया अल्लाह तआ़ला ने करम किया और उन्हें इस से मह़फ़ूज़ रखा और वोह हुज़ूर के साथ साबित रहे यहां इस ने'मतो एह़सान का ज़िक्र फ़रमाया है। **229 :** तुम्हारी ता'दाद भी कम थी तुम्हारे पास हथियारों और सुवारों की भी कमी थी। **230 :** चुनान्चे मोमिनीन ने रोज़े बद्र सब्रो तक़्वा से काम लिया अल्लाह तआ़ला ने ह़स्बे वा'दा पांच हज़ार फ़िरिश्तों की मदद भेजी और मुसल्मानों की फ़त्ह़ और काफ़िरों की शिकस्त हुई। **231 :** और दुश्मन की कसरत और अपनी क़िल्लत से परेशानी और इज़्तिराब न हो। **232 :** तो चाहिये कि बन्दा मुसब्बिबुल अस्बाब (रब عَزَّوَجَلَّ) पर नज़र रखे और उसी पर तवक्कुल रखे। **233 :** इस त़रह़ कि इन के बड़े बड़े सरदार मक़्तूल हों और गिरिफ़्तार किये जाएं जैसा कि बद्र में पेश आया।

www.dawateislami.net

يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ

उन पर अ़ज़ाब करे कि वोह ज़ालिम हैं और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۹﴾ ع

जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰۤوا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّ اتَّقُوا

ऐ ईमान वालो सूद दूना दून न खाओ[234] और **अल्लाह** से

اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ ۚ وَ اتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ ۚ

डरो इस उम्मीद पर कि तुम्हें फ़लाह मिले और उस आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तय्यार रखी है[235]

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ ۚ وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

और **अल्लाह** व रसूल के फ़रमां बरदार रहो[236] इस उम्मीद पर कि तुम रह़्म किये जाओ और दौड़ो[237] अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ ۙ

बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं[238] परहेज़ गारों के लिये तय्यार रखी है[239]

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِی السَّرَّآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ

वोह जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं ख़ुशी में और रन्ज में[240] और गुस्सा पीने वाले और लोगों

---

234 **मस्अला :** इस आयत में सूद की मुमानअ़त फ़रमाई गई मअ़ तौबीख़ के उस ज़ियादती पर जो उस ज़माने में मा'मूल थी कि जब मीआ़द आ जाती थी और क़र्ज़दार के पास अदा की कोई शक्ल न होती तो क़र्ज़ ख़्वाह माल ज़ियादा कर के मुद्दत बढ़ा देता और ऐसा बार बार करते जैसा कि इस मुल्क के सूद ख़्वार करते हैं और इस को सूद दर सूद कहते **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा गुनाहे कबीरा से आदमी ईमान से ख़ारिज नहीं होता। 235 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस में ईमानदारों को तह्दीद (ख़बरदार करना) है कि सूद वग़ैरा जो चीज़ें **अल्लाह** ने ह़राम फ़रमाई उन को ह़लाल न जानें क्यूं कि ह़रामे क़त़ई को ह़लाल जानना कुफ़्र है। 236 : कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़ाअ़त त़ाअ़ते इलाही है और रसूल की ना फ़रमानी करने वाला **अल्लाह** का फ़रमां बरदार नहीं हो सकता। 237 : तौबा व अदाए फ़राइज़ व त़ाआ़त व इख़्लासे अ़मल इख़्तियार कर के 238 : येह जन्नत की वुस्अ़त का बयान है इस त़रह़ कि लोग समझ सकें क्यूं कि इन्हों ने सब से वसीअ़ चीज़ जो देखी है वोह आस्मान व ज़मीन ही है इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर आस्मान व ज़मीन के त़बक़े त़बक़े और परत परत बना कर जोड़ दिये जाएं और सब का एक परत कर दिया जाए इस से जन्नत के अ़र्ज़ का अन्दाज़ा होता है कि जन्नत कितनी वसीअ़ है। हरक़ुल बादशाह ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लिखा कि जब जन्नत की येह वुस्अ़त है कि आस्मान व ज़मीन इस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है? ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰه ! जब दिन आता है तो रात कहां होती है, इस कलामे बलाग़त निज़ाम के मा'ना निहायत दक़ीक़ हैं, ज़ाहिर पहलू येह है कि दौरए फ़लकी से एक जानिब में दिन ह़ासिल होता है तो इस के जानिबे मुक़ाबिल में शब होती है इसी त़रह़ जन्नत जानिबे बाला में है और दोज़ख़ जिहते पस्ती में, यहूद ने येही सुवाल ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से किया था तो आप ने भी येही जवाब दिया था, इस पर उन्हों ने कहा कि तौरैत में भी इसी त़रह़ समझाया गया है, मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** की क़ुदरत व इख़्तियार से कुछ बई़द नहीं जिस शै को जहां चाहे रखे येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ की वुस्अ़त से ह़ैरान होता है तो पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से दरयाफ़्त किया गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान है जिस में जन्नत समा सके। अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर ज़ेरे अ़र्श। 239 : इस आयत और इस से ऊपर की आयत "وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْۤ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ" से साबित हुवा कि जन्नत व दोज़ख़ पैदा हो चुकीं मौजूद हैं। 240 : या'नी हर ह़ाल में ख़र्च करते

www.dawateislami.net

عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا

से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं और वोह कि जब कोई

فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ قف

बे हयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें[241] अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें[242]

وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪ قف وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ

और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ

जाएं ऐसों का बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं[243] जिन के

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ ؕ قَدْ خَلَتْ

नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (बदला) है[244] तुम से

مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

पहले कुछ तरीक़े बरताव में आ चुके हैं[245] तो ज़मीन में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

झुटलाने वालों का[246] येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़ गारों को नसीहत है

हैं। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है : सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा, या'नी ख़ुदा की राह में दो तुम्हें अल्लाह की रहमत से मिलेगा। **241 :** या'नी उन से कोई कबीरा या सग़ीरा गुनाह सरज़द हो। **242 :** और तौबा करें और गुनाह से बाज़ आएं और आयिन्दा के लिये उस से बाज़ रहने का अ़ज़्म पुख़्ता करें कि येह तौबए मक़्बूला के शराइत़ में से है। **243 शाने नुज़ूल :** तैहान ख़ुरमा फ़रोश (खजूर बेचने वाले) के पास एक हसीन औ़रत ख़ुरमे ख़रीदने आई, इस ने कहा : येह ख़ुरमे तो अच्छे नहीं हैं उ़म्दा ख़ुरमे मकान के अन्दर हैं, इस ह़ीले से उस को मकान में ले गया और पकड़ कर लिपटा लिया और मुंह चूम लिया, औ़रत ने कहा : ख़ुदा से डर ! येह सुनते ही उस को छोड़ दिया और शरमिन्दा हुवा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत "وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا" नाज़िल हुई, एक क़ौल येह है कि एक अन्सारी और एक सक़फ़ी दोनों में महब्बत थी और हर एक ने एक दूसरे को भाई बनाया था, सक़फ़ी जिहाद में गया था और अपने मकान की निगरानी अपने भाई अन्सारी के सिपुर्द कर गया था, एक रोज़ अन्सारी गोश्त लाया जब सक़फ़ी की औ़रत ने गोश्त लेने के लिये हाथ बढ़ाया तो अन्सारी ने उस का हाथ चूम लिया और चूमते ही उस को सख़्त नदामत व शरमिन्दगी हुई और वोह जंगल में निकल गया, अपने सर पर ख़ाक डाली और मुंह पर त़मांचे मारे जब सक़फ़ी जिहाद से वापस आया तो उस ने अपनी बीबी से अन्सारी का ह़ाल दरयाफ़्त किया : उस ने कहा : ख़ुदा ऐसे भाई न बढ़ाए और वाक़िआ़ बयान किया, अन्सारी पहाड़ों में रोता व इस्तिग़्फ़ार व तौबा करता फिरता था सक़फ़ी उस को तलाश कर के सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया उस के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं। **244 :** या'नी इताअ़त शिआ़रों के लिये बेहतर जज़ा है। **245 :** पिछली उम्मतों के साथ जिन्हों ने हिर्स़े दुन्या और इस की लज़्ज़ात की त़लब में अम्बिया व मुरसलीन की मुख़ालफ़त की अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मोहलतें दीं फिर भी वोह राहे रास्त पर न आए तो उन्हें हलाको बरबाद कर दिया। **246 :** ताकि तुम्हें इब्रत हो।

www.dawateislami.net

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ

और न सुस्ती करो और न ग़म खाओ[247] तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो अगर

يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

तुम्हें[248] कोई तक्लीफ़ पहुंची तो वोह लोग भी वैसी ही तक्लीफ़ पा चुके हैं[249] और येह दिन हैं

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ

जिन में हम ने लोगों के लिये बारियां रखी हैं[250] और इस लिये कि **अल्लाह** पहचान करा दे ईमान वालों की[251] और तुम में से कुछ लोगों

شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ۙ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

को शहादत का मर्तबा दे और **अल्लाह** दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को और इस लिये कि **अल्लाह** मुसल्मानों का निखार कर दे[252]

وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ

और काफ़िरों को मिटा दे[253] क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी **अल्लाह** ने

الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ

तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया और न सब्र वालों की आज़्माइश की[254] और तुम तो मौत की तमन्ना किया

الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۪ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۱۴۳﴾ؑ وَمَا ع ١٤ ٥

करते थे उस के मिलने से पहले[255] तो अब वोह तुम्हें नज़र आई आंखों के सामने और

مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ

मुहम्मद तो एक रसूल हैं[256] इन से पहले और रसूल हो चुके[257] तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या

247 : उस का जो जंगे उहुद में पेश आया। **248 :** जंगे उहुद में **249 :** जंगे बद्र में, बा वुजूद इस के उन्हों ने पस्त हिम्मती न की और तुम से मुक़ाबला करने में सुस्ती से काम न लिया तो तुम्हें भी सुस्ती व कम हिम्मती न चाहिये। **250 :** कभी किसी की बारी है कभी किसी की। **251 :** सब्रो इख़्लास के साथ कि इन को मशक़्क़त व नाकामी जगह से नहीं हटा सकती और इन के पाए सबात में लग़्ज़िश नहीं आ सकती। **252 :** और इन्हें गुनाहों से पाक कर दे। **253 :** या'नी काफ़िरों से जो मुसल्मानों को तक्लीफ़ें पहुंचती हैं वोह तो मुसल्मानों के लिये शहादत व तत्हीर (गुनाहों से पाकी) हैं और मुसल्मान जो कुफ़्फ़ार को क़त्ल करें तो येह कुफ़्फ़ार की बरबादी और उन का इस्तीसाल (ख़ातिमा करना) है। **254 :** कि **अल्लाह** की रिज़ा के लिये कैसे ज़ख़्म खाते और तक्लीफ़ उठाते हैं इस में उन पर इताब है जो रोज़े उहुद कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागे। **255 शाने नुज़ूल :** जब शुहदाए बद्र के दरजे और मर्तबे और उन पर **अल्लाह** तआला के इन्आमो एहसान बयान फ़रमाए गए तो जो मुसल्मान वहां हाज़िर न थे उन्हें हसरत हुई और उन्हों ने आरज़ू की, कि काश किसी जिहाद में उन्हें हाज़िरी मुयस्सर आए और शहादत के दरजात मिलें, उन्हीं लोगों ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से उहुद पर जाने के लिये इसरार किया था उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई। **256 :** और रसूलों की बि'सत का मक़्सूद रिसालत की तब्लीग़ और हुज्जत का लाज़िम कर देना है न कि अपनी क़ौम के दरमियान हमेशा मौजूद रहना। **257 :** और उन के मुत्तबिईन उन के बा'द उन के दीन पर बाक़ी रहे। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में जब काफ़िरों ने पुकारा कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم शहीद हो गए और शैतान ने येह झूटी अफ़्वाह मश्हूर की तो सहाबा को बहुत इज़्तिराब हुवा और उन में से कुछ लोग भाग निकले फिर जब निदा की गई कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ रखते हैं तो सहाबए किराम की एक जमाअत

www.dawateislami.net

قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ

शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा **अल्लाह** का कुछ नुक़्सान न

شَيْـًٔاؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ

करेगा और अ़न्क़रीब **अल्लाह** शुक्र वालों को सिला देगा[258] और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًاؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَاۚ

नहीं सकती[259] सब का वक़्त लिखा रखा है[260] और जो दुन्या का इन्आ़म चाहे[261] हम उस में से उसे दें

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَاؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ وَ

और जो आख़िरत का इन्आ़म चाहे हम उस में से उसे दें[262] और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला अ़ता करें और

كَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ

कितने ही अम्बिया ने जिहाद किया उन के साथ बहुत ख़ुदा वाले थे तो न सुस्त पड़े उन मुसीबतों से जो

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْاؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۶﴾

अल्लाह की राह में उन्हें पहुंचीं और न कमज़ोर हुए और न दबे[263] और सब्र वाले **अल्लाह** को महबूब हैं

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْۤ

वोह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ़ के[264] कि ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने

اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ فَاٰتٰىهُمُ

काम में कीं[265] और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे[266] तो **अल्लाह** ने उन्हें

वापस आई हुज़ूर ने उन्हें हज़ीमत पर मलामत की, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हमारे मां और बाप आप पर फ़िदा हों आप की शहादत की ख़बर सुन कर हमारे दिल टूट गए और हम से ठहरा न गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अम्बिया के बा'द भी उम्मतों पर उन के दीन का इत्तिबाअ़ लाज़िम रहता है तो अगर ऐसा होता भी तो हुज़ूर के दीन का इत्तिबाअ़ और इस की हिमायत लाज़िम रहती। **258 :** जो न फिरे और अपने दीन पर साबित रहे उन को शाकिरीन फ़रमाया क्यूं कि उन्हों ने अपने सबात से ने'मते इस्लाम का शुक्र अदा किया। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते थे कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अमीनुश्शाकिरीन हैं। **259 :** इस में जिहाद की तरग़ीब है और मुसल्मानों को दुश्मन के मुक़ाबले पर जरी (बहादुर) बनाया जाता है कि कोई शख़्स बिग़ैर हुक्मे इलाही के मर नहीं सकता चाहे वोह महालिक व मआ़रिक (ख़ौफ़नाक जगहों और जंगों) में घुस जाए, और जब मौत का वक़्त आता है तो कोई तदबीर नहीं बचा सकती। **260 :** उस से आगे पीछे नहीं हो सकता। **261 :** और उस को अपने अ़मल व ताअ़त से हुसूले दुन्या मक़्सूद हो। **262 :** इस से साबित हुवा कि मदार निय्यत पर है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में आया है। **263 :** ऐसा ही हर ईमानदार को चाहिये। **264 :** या'नी हिमायते दीन व मक़ामाते ह़र्ब (जंग के मैदानों) में उन की ज़बान पर कोई ऐसा कलिमा न आता जिस में घबराहट परेशानी और तज़ल्ज़ुल का शाएबा भी होता, बल्कि वोह इस्तिक़्लाल (मज़बूती) के साथ साबित क़दम रहते और दुआ़ करते **265 :** या'नी तमाम सग़ाइर व कबाइर बा वुजूदे कि वोह लोग रब्बानी या'नी अत्क़िया थे फिर भी गुनाहों का अपनी त़रफ़ निस्बत करना शाने तवाज़ोअ़ व इन्किसार और आदाबे अ़ब्दिय्यत में से है। **266 :** इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि त़लबे हाजत से क़ब्ल तौबा व इस्तिग़फ़ार आदाबे दुआ़ में से है।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ
दुन्या का इन्आ़म दिया[267] और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी[268] और नेकी वाले **अल्लाह** को

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
प्यारे हैं ऐ ईमान वालो अगर तुम काफ़िरों के कहे पर चले[269]

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ
तो वोह तुम्हें उलटे पाउं लौटा देंगे[270] फिर टोटा खा के (नुक़्सान उठा के) पलट जाओगे[271] बल्कि **अल्लाह** तुम्हारा मौला है

وَ هُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
और वोह सब से बेहतर मददगार कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे[272]

بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ
कि उन्हों ने **अल्लाह** का शरीक ठहराया जिस पर उस ने कोई समझ न उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा

مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ
ठिकाना ना इन्साफ़ों का और बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वा'दा जब कि तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को

بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
क़त्ल करते थे[273] यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला[274] और ना फ़रमानी की[275] बा'द इस के

مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ
कि **अल्लाह** तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात[276] तुम में कोई दुन्या चाहता था[277] और तुम में कोई आख़िरत

267 : या'नी फ़त्हो ज़फ़र और दुश्मनों पर ग़लबा **268 :** मग़्फ़िरत व जन्नत और इस्तिह़्क़ाक़ से ज़ियादा इन्आ़मो इक्राम **269 :** ख़्वाह वोह यहूदो नसारा हों या मुनाफ़िक़ व मुश्रिक **270 :** कुफ़्र व बे दीनी की त़रफ़ **271 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों पर लाज़िम है कि वोह कुफ़्फ़ार से अ़लाह़दगी इख़्तियार करें और हरगिज़ उन की राय व मश्वरे पर अ़मल न करें और उन के कहे पर न चलें। **272 :** जंगे उहुद से वापस हो कर जब अबू सुफ़्यान वग़ैरा अपने लश्करियों के साथ मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुए तो उन्हें इस पर अफ़्सोस हुवा कि हम ने मुसल्मानों को बिल्कुल ख़त्म क्यूं न कर डाला, आपस में मश्वरा कर के इस पर आमादा हुए कि चल कर उन्हें ख़त्म कर दें, जब येह क़स्द पुख़्ता हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन्हें ख़ौफ़े शदीद पैदा हुवा और वोह मक्कए मुकर्रमा ही की त़रफ़ वापस हो गए, अगर्चे सबब तो ख़ास था लेकिन रो'ब तमाम कुफ़्फ़ार के दिलों में डाल दिया गया कि दुन्या के सारे कुफ़्फ़ार मुसल्मानों से डरते हैं और بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی दीने इस्लाम तमाम अदयान पर ग़ालिब है। **273 :** जंगे उहुद में **274 :** कुफ़्फ़ार की हज़ीमत के बा'द। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ जो तीर अन्दाज़ थे वोह आपस में कहने लगे कि मुश्रिकीन को हज़ीमत हो चुकी अब यहां ठहर कर क्या करें चलो कुछ माले ग़नीमत ह़ासिल करने की कोशिश करें, बा'ज़ ने कहा : मर्कज़ मत छोड़ो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ब ताकीद हुक्म फ़रमाया है कि तुम अपनी जगह क़ाइम रहना किसी हाल में मर्कज़ न छोड़ना जब तक मेरा हुक्म न आए, मगर लोग ग़नीमत के लिये चल पड़े और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ दस से कम अस्ह़ाब रह गए। **275 :** कि मर्कज़ छोड़ दिया और ग़नीमत ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो गए। **276 :** या'नी कुफ़्फ़ार की हज़ीमत। **277 :** जो मर्कज़ छोड़ कर ग़नीमत के लिये चला गया।

الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

चाहता था[278] फिर तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया कि तुम्हें आज़्माए[279] और बेशक उस ने तुम्हें मुआफ़ कर दिया और अल्लाह

ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّ

मुसल्मानों पर फ़ज़्ल करता है जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और

الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِیْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى

दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे[280] तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया[281] और मुआ़फ़ी इस लिये सुनाई कि जो हाथ

مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ

से गया और जो उफ़्ताद (मुसीबत) पड़ी उस का रन्ज न करो और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है फिर ग़म के बा'द

عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ

तुम पर चैन की नींद उतारी[282] कि तुम्हारी एक जमाअ़त को घेरे थी[283] और

طَآىِٕفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ

एक गुरोह को[284] अपनी जान की पड़ी थी[285] अल्लाह पर बे जा गुमान करते थे[286] जाहिलिय्यत के

الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

से गुमान कहते क्या इस काम में कुछ हमारा भी इख़्तियार है तुम फ़रमा दो कि इख़्तियार तो

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

सारा अल्लाह का है[287] अपने दिलों में छुपाते हैं[288] जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं

278 : जो अपने अमीर अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के साथ अपनी जगह पर क़ाइम रह कर शहीद हो गया। **279 :** और मुसीबतों पर तुम्हारे साबिर व साबित रहने का इम्तिहान हो। **280 :** कि ख़ुदा के बन्दो मेरी त़रफ़ आओ। **281 :** या'नी तुम ने जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म की मुख़ालफ़त कर के आप को ग़म पहुंचाया था उस के बदले तुम को हज़ीमत के ग़म में मुब्तला किया। **282 :** जो रो'ब व ख़ौफ़ दिलों में था उस को अल्लाह तआ़ला ने दूर किया और अम्नो राह़त के साथ उन पर नींद उतारी यहां तक कि मुसल्मानों को ग़ुनूदगी आ गई और नींद ने उन पर ग़लबा किया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा फ़रमाते हैं कि रोज़े उहुद नींद हम पर छा गई हम मैदान में थे तलवार हमारे हाथ से छूट जाती थी फिर उठाते थे फिर छूट जाती थी। **283 :** और वोह जमाअ़त मोमिनीने सादिक़ुल ईमान की थी। **284 :** जो मुनाफ़िक़ थे। **285 :** और वोह ख़ौफ़ से परेशान थे। अल्लाह तआ़ला ने वहां मोमिनीन को मुनाफ़िक़ीन से इस त़रह़ मुमताज़ किया था कि मोमिनीन पर तो अम्नो इत़्मीनान की नींद का ग़लबा था और मुनाफ़िक़ीन ख़ौफ़ो हिरास में अपने जानों के ख़ौफ़ से परेशान थे और येह आयते अ़ज़ीमा और मो'जिज़ए बाहिरा था। **286 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को येह गुमान हो रहा था कि अल्लाह तआ़ला सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मदद न फ़रमाएगा या येह कि हुज़ूर शहीद हो गए अब आप का दीन बाक़ी न रहेगा। **287 :** फ़त्ह़ो ज़फ़र क़ज़ा व क़दर सब उस के हाथ है। **288 :** मुनाफ़िक़ीन अपना कुफ़्र और वा'दए इलाही में अपना मुतरद्दिद होना और जिहाद में मुसल्मानों के साथ चले आने पर मुतअस्सिफ़ (अफ़्सुर्दा) होना।

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِیْ بُیُوْتِكُمْ لَبَرَزَ

हमारा कुछ बस होता[289] तो हम यहां न मारे जाते तुम फ़रमा दो कि अगर तुम अपने घरों में होते जब भी

الَّذِیْنَ كُتِبَ عَلَیْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَ لِیَبْتَلِیَ اللّٰهُ مَا فِیْ

जिन का मारा जाना लिखा जा चुका था अपनी क़त्ल गाहों तक निकल कर आते[290] और इस लिये कि **अल्लाह** तुम्हारे

صُدُوْرِكُمْ وَ لِیُمَحِّصَ مَا فِیْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ

सीनों की बात आज़्माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है[291] उसे खोल दे और **अल्लाह** दिलों की बात

الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا

जानता है[292] बेशक वोह जो तुम में से फिर गए[293] जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं

اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ

उन्हें शैतान ही ने लग़्ज़िश दी उन के बा'ज़ आ'माल के बाइस[294] और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया बेशक

اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۵۵﴾ ع یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ ع

अल्लाह बख़्शने वाला हिल्म वाला है ऐ ईमान वालो उन काफ़िरों[295] की तरह

كَفَرُوْا وَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِی الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى

न होना जिन्हों ने अपने भाइयों की निस्बत कहा जब वोह सफ़र या जिहाद को गए[296]

لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَ مَا قُتِلُوْا ۚ لِیَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِیْ

कि हमारे पास होते तो न मरते न मारे जाते इस लिये कि **अल्लाह** उन के दिलों में इस का

قُلُوْبِهِمْ ؕ وَ اللّٰهُ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۱۵۶﴾ وَ

अफ़्सोस रखे और **अल्लाह** जिलाता और मारता है[297] और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है और

289 : और हमें समझ होती तो हम घर से न निकलते, मुसलमानों के साथ अहले मक्का से लड़ाई के लिये न आते और हमारे सरदार न मारे जाते। पहले मक़ूले का क़ाइल अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ है और इस मक़ूले का क़ाइल मुअत्तिब बिन क़ुशैर। **290 :** और घरों में बैठ रहना कुछ काम न आता क्यूं कि क़ज़ा व क़दर के सामने तदबीर व हीला बेकार है। **291 :** इख़्लास या निफ़ाक़ **292 :** उस से कुछ छुपा नहीं और येह आज़्माइश दूसरों को ख़बरदार करने के लिये है। **293 :** और जंगे उहुद में भाग गए और नबिय्ये करीम के साथ तेरह या चौदह अस्हाब के सिवा कोई बाक़ी न रहा। **294 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म के बर ख़िलाफ़ मर्कज़ छोड़ा। **295 :** या'नी इब्ने उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन **296 :** और उस सफ़र में मर गए या जिहाद में शहीद हो गए। **297 :** मौत व हयात उसी के इख़्तियार में है, वोह चाहे तो मुसाफ़िर व ग़ाज़ी को सलामत लाए और महफ़ूज़ घर में बैठे हुए को मौत दे, इन मुनाफ़िक़ीन के पास बैठ रहना क्या किसी को मौत से बचा सकता है, और जिहाद में जाने से कब मौत लाज़िम है और अगर आदमी जिहाद में मारा जाए तो वोह मौत घर की मौत से बदरजहा बेहतर, लिहाज़ा मुनाफ़िक़ीन का येह क़ौल बातिल और फ़रेब देही है और इन का मक़्सद मुसल्मानों को जिहाद से नफ़रत दिलाना

www.dawateislami.net

وَ لَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَحْمَةٌ خَيْرٌ

बेशक अगर तुम **अल्लाह** की राह में मारे जाओ या मर जाओ[298] तो **अल्लाह** की बख़्शिश और रह़मत[299] उन के

مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَ لَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ فَبِمَا

सारे धन दौलत से बेहतर है और अगर तुम मरो या मारे जाओ तो **अल्लाह** ही की त़रफ़ उठना है[300] तो कैसी कुछ

رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَ لَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا

अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ मह़बूब तुम उन के लिये नर्म दिल हुए[301] और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते[302] तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द

مِنْ حَوْلِكَ ۠ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ

से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआ़फ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअ़त करो[303] और कामों में उन से मश्वरा लो[304]

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِنْ

और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो[305] बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं अगर

يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَ اِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ

अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता[306] और अगर वोह तुम्हें छोड़ दे तो ऐसा कौन है जो फिर

مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ

तुम्हारी मदद करे और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये और किसी नबी पर येह गुमान नहीं हो सकता कि

يَّغُلَّ ؕ وَ مَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا

वोह कुछ छुपा रखे[307] और जो छुपा रखे वोह क़ियामत के दिन अपनी छुपाई चीज़ ले कर आएगा फिर हर जान को उन की

है, जैसा कि अगली आयत में इर्शाद होता है। **298 :** और बिलफ़र्ज़ वोह सूरत पेश ही आ जाए जिस का तुम्हें अन्देशा दिलाया जाता है **299 :** जो राहे ख़ुदा में मरने पर हासिल होती है। **300 :** यहां मक़ामाते अ़ब्दिय्यत के तीनों मक़ामों का बयान फ़रमाया गया। **पहला मक़ाम** तो येह है कि बन्दा ब ख़ौफ़े दोज़ख़ **अल्लाह** की इबादत करे तो उस को अ़ज़ाबे नार से अम्न दी जाती है इस की त़रफ़ "لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ" में इशारा है। **दूसरी क़िस्म** वोह बन्दे हैं जो जन्नत के शौक़ में **अल्लाह** की इबादत करते हैं इस की त़रफ़ "وَرَحْمَةٌ" में इशारा है क्यूं कि रह़मत भी जन्नत का एक नाम है। **तीसरी क़िस्म** वोह मुख़्लिस बन्दे हैं जो इ़श्क़े इलाही और उस की ज़ाते पाक की मह़ब्बत में उस की इबादत करते हैं और उन का मक़्सूद उस की ज़ात के सिवा और कुछ नहीं है, उन्हें ह़क़ سُبْحَانَهٗ تَعَالٰی अपने दाइरए करामत में अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा इस की त़रफ़ "لَاِالَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ" में इशारा है। **301 :** और आप के मिज़ाज में इस दरजे लुत़्फ़ो करम और राफ़्तो रह़मत हुई कि रोज़े उह़ुद ग़ज़ब न फ़रमाया। **302 :** और शिद्दतो ग़िल्ज़त से काम लेते **303 :** ताकि **अल्लाह** तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमाए। **304 :** कि इस में उन की दिलदारी भी है और इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई भी और येह फ़ाएदा भी कि मश्वरा सुन्नत हो जाएगा और आयिन्दा उम्मत इस से नफ़्अ़ उठाती रहेगी। मश्वरे के मा'ना हैं किसी अम्र में राय दरयाफ़्त करना। **मस्अला :** इस से इज्तिहाद का जवाज़ और क़ियास का हुज्जत होना साबित हुवा। (مدارک وخازن) **305 :** तवक्कुल के मा'ना हैं **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना। मक़्सूद येह है कि बन्दे का ए'तिमाद तमाम कामों में **अल्लाह** पर होना चाहिये। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मश्वरा तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। **306 :** और मददे इलाही वोही पाता है जो अपनी क़ुव्वतो त़ाक़त पर भरोसा नहीं करता **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व रह़मत का उम्मीद वार रहता है। **307 :** क्यूं कि येह शाने नुबुव्वत के ख़िलाफ़ है और अम्बिया सब मा'सूम हैं इन से ऐसा मुम्किन नहीं न वह़्य में न ग़ैर वह़्य में और जो कोई

www.dawateislami.net

كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ

कमाई भरपूर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा तो क्या जो **अल्लाह** की मरज़ी पर चला[308] वोह उस जैसा होगा जिस ने

بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ

अल्लाह का ग़ज़ब ओढ़ा (हक़दार बना)[309] और उस का ठिकाना जहन्नम है और क्या बुरी जगह पलटने की वोह **अल्लाह** के यहां

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

दरजा दरजा हैं[310] और **अल्लाह** उन के काम देखता है बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा[311] मुसल्मानों पर

اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

कि उन में उन्हीं में से[312] एक रसूल[313] भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है[314] और उन्हें पाक करता[315]

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

और उन्हें किताब व ह़िक्मत सिखाता है[316] और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿۱۶۴﴾ اَوَلَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى النصف

में थे[317] क्या जब तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[318] कि इस से दूनी तुम पहुंचा चुके हो[319] तो कहने लगो कि येह कहां

هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۶۵﴾

से आई[320] तुम फ़रमा दो कि वोह तुम्हारी ही त़रफ़ से आई[321] बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है

शख़्स कुछ छुपा रखे उस का हुक्म इसी आयत में आगे बयान फ़रमाया जाता है। **308 :** और उस की इत़ाअ़त की, ना फ़रमानी से बचा जैसे कि मुहाजिरीन व अन्सार व सालिह़ीने उम्मत **309 :** या'नी **अल्लाह** का ना फ़रमान हुवा जैसे मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार **310 :** हर एक की मन्ज़िलत और उस का मक़ाम जुदा, नेक का अलग, बद का अलग **311 :** मिन्नत ने'मते अ़ज़ीमा को कहते हैं और बेशक सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत ने'मते अ़ज़ीमा है क्यूं कि ख़ल्क़ की पैदाइश जहल व अ़दमे दिरायत व क़िल्लते फ़ह्म व नुक़्साने अ़क़्ल पर है तो **अल्लाह** तआ़ला ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन में मबऊ़स फ़रमा कर उन्हें गुमराही से रिहाई दी और हुज़ूर की बदौलत उन्हें बीनाई अ़त़ा फ़रमा कर जहल से निकाला और आप के सदक़े में राहे रास्त की हिदायत फ़रमाई और आप के त़ुफ़ैल में बे शुमार ने'मतें अ़त़ा कीं। **312 :** या'नी उन के हाल पर शफ़क़तो करम फ़रमाने वाला और उन के लिये बाइसे फ़ख़्रो शरफ़ जिस के अह़वाल, ज़ोहद, वरअ़, रास्त बाज़ी, दियानत दारी, ख़साइले जमीला, अख़्लाक़े ह़मीदा से वोह वाक़िफ़ हैं। **313 :** सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **314 :** और उस की किताबे मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद उन को सुनाता है बा वुजूदे कि उन के कान पहले कभी कलामे ह़क़ व वह़्ये समावी से आशना न हुए थे। **315 :** कुफ़्रो ज़लालत और इरतिकाबे मुह़र्रमात व मआ़सी और ख़साइले ना पसन्दीदा व मलकाते रज़ीला (बुरी आ़दतों) व ज़ुल्माते नफ़्सानिया (गुमराहियों) से **316 :** और नफ़्स की क़ुव्वते अ़मलिय्या और इल्मिय्या दोनों की तक्मील फ़रमाता है। **317 :** कि ह़क़ व बात़िल व नेक व बद में इम्तियाज़ न रखते थे और जहल व नाबीनाई में मुब्तला थे। **318 :** जैसी कि जंगे उहुद में पहुंची कि तुम में से सत्तर क़त्ल हुए। **319 :** बद्र में कि तुम ने सत्तर को क़त्ल किया सत्तर को गिरिफ़्तार किया। **320 :** और क्यूं पहुंची जब कि हम मुसल्मान हैं और हम में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। **321 :** कि तुम ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मरज़ी के ख़िलाफ़ मदीनए त़य्यिबा से बाहर निकल कर जंग करने पर इसरार किया फिर वहां पहुंचने के बा'द बा वुजूद हुज़ूर की शदीद मुमानअ़त के ग़नीमत के लिये मर्कज़ छोड़ा येह सबब तुम्हारे क़त्लो हज़ीमत का हुवा।

www.dawateislami.net

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۶۶﴾ لا

और वोह मुसीबत जो तुम पर आई[322] जिस दिन दोनों फ़ौजें[323] मिली थीं वोह अल्लाह के हुक्म से थी और इस लिये कि पहचान करा दे ईमान वालों की

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

और इस लिये कि पहचान करा दे उन की जो मुनाफ़िक़ हुए[324] और उन से[325] कहा गया कि आओ[326] अल्लाह की राह में लड़ो

اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ

या दुश्मन को हटाओ[327] बोले अगर हम लड़ाई होती जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते और उस दिन ज़ाहिरी ईमान की ब निस्बत

اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

खुले कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब हैं अपने मुंह से कहते हैं जो उन के दिल में नहीं

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿۱۶۷﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ

और अल्लाह को मा'लूम है जो छुपा रहे हैं[328] वोह जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में[329] कहा और आप बैठ रहे कि

اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

वोह हमारा कहना मानते[330] तो न मारे जाते तुम फ़रमा दो तो अपनी ही मौत टाल दो अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ

सच्चे हो[331] और जो अल्लाह की राह में मारे गए[332] हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि

اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ لا فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ لا

वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं[333] शाद हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया[334]

322 : उहुद में 323 : मोमिनीन व मुश्रिकीन की 324 : या'नी मोमिन व मुनाफ़िक़ मुमताज़ हो गए 325 : या'नी अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन से 326 : मुसल्मानों की ता'दाद बढ़ाओ और हिफ़ाज़ते दीन के लिये 327 : अपने अहलो माल को बचाने के लिये 328 : या'नी निफ़ाक़। 329 : या'नी शुहदाए उहुद, जो नसबी तौर पर उन के भाई थे उन के हक़ में अब्दुल्लाह बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन ने 330 : और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में न जाते या वहां से फिर आते 331 : मरवी है कि जिस रोज़ मुनाफ़िक़ीन ने येह बात कही उसी दिन सत्तर मुनाफ़िक़ मर गए। 332 **शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत शुहदाए उहुद के हक़ में नाज़िल हुई। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम्हारे भाई उहुद में शहीद हुए अल्लाह तआला ने उन की अरवाह को सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब (जिस्म) अ़ता फ़रमाए वोह जन्नती नहरों पर सैर करते फिरते हैं जन्नती मेवे खाते हैं तिलाई क़नादील जो ज़ेरे अर्श मुअल्लक़ हैं उन में रहते हैं जब उन्हों ने खाने पीने रहने के पाकीज़ा ऐश पाए तो कहा कि हमारे भाइयों को कौन ख़बर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं ताकि वोह जन्नत से बे रग़बती न करें और जंग से बैठ न रहें अल्लाह तआला ने फ़रमाया : मैं उन्हें तुम्हारी ख़बर पहुंचाऊंगा, पस येह आयत नाज़िल फ़रमाई। (ابوداؤد) इस से साबित हुवा कि अरवाह बाक़ी हैं जिस्म के फ़ना के साथ फ़ना नहीं होतीं। 333 : और ज़िन्दों की तरह खाते पीते ऐश करते हैं। सियाक़े आयत इस पर दलालत करता है कि हयात रूह व जिस्म दोनों के लिये है। उ़लमा ने फ़रमाया कि शुहदा के जिस्म क़ब्रों में महफ़ूज़ रहते हैं मिट्टी उन को नुक़्सान नहीं पहुंचाती और ज़मानए सहाबा में और इस के बा'द ब कसरत मुआयना हुवा है कि अगर कभी शुहदा की क़ब्रें खुल गईं तो उन के जिस्म तरो ताज़ा पाए गए। (خازن وغیرہ) 334 : फ़ज़्लो

www.dawateislami.net

وَ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ

और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले[335] कि उन पर न कुछ

عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ ۙ (وقف لازم)

अन्देशा है और न कुछ ग़म ख़ुशियां मनाते हैं अल्लाह की ने'मत और फ़ज़्ल की

وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ۚۛ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ (ع ۱۷)

और येह कि अल्लाह ज़ाएअ़ नहीं करता अज्र मुसल्मानों का[336] वोह जो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर

وَ الرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ (مع)

हाज़िर हुए बा'द इस के कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुका था[337] उन के निकोकारों

وَ اتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾ۚ اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ

और परहेज़ गारों के लिये बड़ा सवाब है वोह जिन से लोगों ने कहा[338] कि लोगों ने[339]

جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖۗ وَّ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ

तुम्हारे लिये जथ्था जोड़ा तो उन से डरो तो उन का ईमान और ज़ाइद हुवा और बोले अल्लाह हम को बस है और क्या अच्छा

الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّ

कारसाज़[340] तो पलटे अल्लाह के एहसान और फ़ज़्ल से[341] कि उन्हें कोई बुराई न पहुंची और

करामत और इन्आमो एह़सान, मौत के बा'द ह़यात दी, अपना मुक़र्रब किया, जन्नत का रिज़्क़ और उस की ने'मतें अ़ता फ़रमाईं और इन मनाज़िल के ह़ासिल करने के लिये तौफ़ीक़े शहादत दी। **335 :** और दुन्या में वोह ईमान व तक़्वा पर हैं जब शहीद होंगे उन के साथ मिलेंगे और रोज़े क़ियामत अम्न और चैन के साथ उठाए जाएंगे। **336 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : हुज़ूर ने फ़रमाया : जिस किसी के राहे ख़ुदा में ज़ख़्म लगा वोह रोज़े क़ियामत वैसा ही आएगा जैसा ज़ख़्म लगने के वक़्त था उस के ख़ून में ख़ुश्बू मुश्क की होगी और रंग ख़ून का। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि शहीद को क़त्ल से तक्लीफ़ नहीं होती मगर ऐसी जैसी किसी को एक ख़राश लगे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है शहीद के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं सिवाए क़र्ज़ के। **337 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से फ़ारिग़ होने के बा'द जब अबू सुफ़्यान मअ़ अपने हमराहियों के मक़ामे रौह़ा में पहुंचे तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि वोह वापस क्यूं आ गए मुसल्मानों का बिल्कुल ख़ातिमा ही क्यूं न कर दिया येह ख़याल कर के उन्हों ने फिर वापस होने का इरादा किया सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब के लिये अपनी रवानगी का ए'लान फ़रमा दिया सह़ाबा की एक जमाअ़त जिन की ता'दाद सत्तर थी और जो जंगे उहुद के ज़ख़्मों से चूर हो रहे थे हुज़ूर के ए'लान पर ह़ाज़िर हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उस जमाअ़त को ले कर अबू सुफ़्यान के तआ़क़ुब में रवाना हो गए जब हुज़ूर मक़ामे ह़मरा अल असद पर पहुंचे जो मदीने से आठ मील है तो वहां मा'लूम हुवा कि मुश्रिकीन मरऊ़ब व ख़ौफ़ज़दा हो कर भाग गए इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **338 :** या'नी नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई ने। **339 :** या'नी अबू सुफ़्यान वग़ैरा मुश्रिकीन ने **340 शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद से वापस होते हुए अबू सुफ़्यान ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पुकार कर कह दिया था कि अगले साल हमारी आप की मक़ामे बद्र में जंग होगी हुज़ूर ने उन के जवाब में फ़रमाया : اِنْ شَآءَ اللّٰه, जब वोह वक़्त आया और अबू सुफ़्यान अहले मक्का को ले कर जंग के लिये रवाना हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उन के दिल में ख़ौफ़ डाला और उन्हों ने वापस हो जाने का इरादा किया इस मौक़अ़ पर अबू सुफ़्यान की नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई से मुलाक़ात हुई जो उ़मरह करने आया था अबू सुफ़्यान ने उस से कहा कि ऐ नुऐ़म ! इस ज़माने में मेरी लड़ाई मक़ामे बद्र में मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ तै हो चुकी है और इस वक़्त मुझे मुनासिब येह मा'लूम होता है कि मैं जंग

www.dawateislami.net

اتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۷۴﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّیْطٰنُ

अल्लाह की ख़ुशी पर चले[342] और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है[343] वोह तो शैत़ान ही है कि

یُخَوِّفُ اَوْلِیَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَ خَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۷۵﴾

अपने दोस्तों से धमकाता है[344] तो उन से न डरो[345] और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो[346]

وَ لَا یَحْزُنْكَ الَّذِیْنَ یُسَارِعُوْنَ فِی الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰهَ

और ऐ मह़बूब तुम उन का कुछ ग़म न करो जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[347] वोह अल्लाह का कुछ न

شَیْــٴًـا ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ اَلَّا یَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِی الْاٰخِرَةِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

बिगाड़ेंगे अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उन का कोई हिस्सा न रखे[348] और उन के लिये बड़ा

عَظِیْمٌ ﴿۱۷۶﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِیْمَانِ لَنْ یَّضُرُّوا اللّٰهَ شَیْــٴًـا ۚ

अ़ज़ाब है वोह जिन्हों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया[349] अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे

وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۱۷۷﴾ وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ

और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं

خَیْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِیْ لَهُمْ لِیَزْدَادُوْۤا اِثْمًا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें[350] और उन के लिये ज़िल्लत का

में न जाऊं वापस जाऊं तू मदीने जा और तदबीर के साथ मुसल्मानों को मैदाने जंग में जाने से रोक दे इस के इवज़ मैं तुझ को दस ऊंट दूंगा, नुऐ़म ने मदीने पहुंच कर देखा कि मुसल्मान जंग की तय्यारी कर रहे हैं उन से कहने लगा कि तुम जंग के लिये जाना चाहते हो अहले मक्का ने तुम्हारे लिये बड़े लश्कर जम्अ़ किये हैं, ख़ुदा की क़सम ! तुम में से एक भी फिर कर न आएगा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़रूर जाऊंगा चाहे मेरे साथ कोई भी न हो। पस हुज़ूर सत्तर सुवारों को हमराह ले कर "حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِیْلُ" पढ़ते हुए रवाना हुए बद्र में पहुंचे वहां आठ शब क़ियाम किया माले तिजारत साथ था उस को फ़रोख़्त किया ख़ूब नफ़्अ़ हुवा और सालिम ग़ानिम मदीनए त़य्यिबा वापस हुए जंग नहीं हुई चूंकि अबू सुफ़्यान और अहले मक्का ख़ौफ़ज़दा हो कर मक्का शरीफ़ को वापस हो गए थे इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **341 :** ब अम्नो आ़फ़िय्यत मनाफ़ेए तिजारत ह़ासिल कर के **342 :** और दुश्मन के मुक़ाबले के लिये जुरअत से निकले और जिहाद का सवाब पाया। **343 :** कि उस ने इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आमादगिये जिहाद की तौफ़ीक़ दी और मुश्रिकीन के दिलों को ख़ौफ़ज़दा कर दिया कि वोह मुक़ाबले की हिम्मत न कर सके और राह में से वापस हो गए। **344 :** और मुसल्मानों को मुश्रिकीन की कसरत से डराता है जैसा कि नुऐ़म बिन मस्ऊ़द अश्जई ने किया। **345 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन जो शैत़ान के दोस्त हैं उन का ख़ौफ़ न करो। **346 :** क्यूं कि ईमान का मुक़्तज़ा ही येह है कि बन्दे को ख़ुदा ही का ख़ौफ़ हो। **347 :** ख़्वाह वोह कुफ़्फ़ारे कुरैश हों या मुनाफ़िक़ीन या रुअसाए यहूद या मुरतद्दीन वोह आप के मुक़ाबले के लिये कितने ही लश्कर जम्अ़ करें काम्याब न होंगे। **348 :** इस में क़दरिय्या व मो'तज़िला का रद है और आयत दलील है इस पर कि ख़ैर व शर ब इरादए इलाही है। **349 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन जो कलिमए ईमान पढ़ने के बा'द काफ़िर हुए या वोह लोग जो बा वुजूद ईमान पर क़ादिर होने के काफ़िर ही रहे और ईमान न लाए। **350 :** ह़क़ से इनाद और रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ख़िलाफ़ कर के। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया कौन शख़्स अच्छा है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल अच्छे हों, अ़र्ज़ किया गया और बदतर कौन है ? फ़रमाया : जिस की उ़म्र दराज़ हो और अ़मल ख़राब।

www.dawateislami.net

مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

अ़ज़ाब है अल्लाह मुसल्मानों को इस हाल पर छोड़ने का नहीं जिस पर तुम हो[351] जब तक

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

जुदा न कर दे गन्दे को[352] सुथरे से[353] और अल्लाह की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे[354] तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूलों पर

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और अगर ईमान लाओ[355] और परहेज़ गारी करो तो तुम्हारे लिये बड़ा सवाब है और जो बुख़्ल करते हैं[356] उस चीज़ में

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ

जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है

سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

अ़न्क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौ़क़ होगा[357] और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों

351 : ऐ कलिमा गोयाने इस्लाम ! **352 :** या'नी मुनाफ़िक़ को **353 :** मोमिने मुख़्लिस से यहां तक कि अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को तुम्हारे अह़वाल पर मुत्तलअ़ कर के मोमिन व मुनाफ़िक़ हर एक को मुमताज़ फ़रमा दे। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़िल्क़त व आफ़्रीनिश (पैदाइश) से क़ब्ल जब कि मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उसी वक़्त वोह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि ह़ज़रते आदम पर पेश की गई और मुझे इ़ल्म दिया गया, कौन मुझ पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा। येह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्हों ने बराहे इस्तिहज़ा कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का गुमान है कि वोह येह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुए उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा, कौन कुफ़्र करेगा बा वुजूदे कि हम उन के साथ हैं वोह हमें नहीं पहचानते। इस पर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मिम्बर पर क़ियाम फ़रमा कर अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो मेरे इ़ल्म में ता'न करते हैं ! आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उस में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझ से सुवाल करो और मैं तुम्हें उस की ख़बर न दे दूं। अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े हो कर कहा : मेरा बाप कौन है ? **या रसूलल्लाह !** फ़रमाया : हुज़ाफ़ा, फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुए उन्हों ने कहा : **या रसूलल्लाह !** हम अल्लाह की रुबूबिय्यत पर राज़ी हुए, इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हुए, क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी हुए, आप के नबी होने पर राज़ी हुए, हम आप से मुआ़फ़ी चाहते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम बाज़ आओगे क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए। इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस ह़दीस से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया गया है और हुज़ूर के इ़ल्मे ग़ैब में ता'न करना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। **354 :** तो उन बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब का इ़ल्म देता है और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم रसूलों में सब से अफ़्ज़ल और आ'ला हैं इस आयत से और इस के सिवा ब कसरत आयात व ह़दीस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ग़ुयूब के उ़लूम अ़ता फ़रमाए और ग़ुयूब के इ़ल्म आप का मो'जिज़ा हैं। **355 :** और तस्दीक़ करो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा रसूलों को ग़ैब पर मुत्तलअ़ किया है। **356 :** बुख़्ल के मा'ना में अक्सर उ़लमा इस त़रफ़ गए हैं कि वाजिब का अदा न करना बुख़्ल है इसी लिये बुख़्ल पर शदीद वई़दें आई हैं। चुनान्चे इस आयत में भी एक वई़द आ रही है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : बुख़्ल और बद ख़ुल्क़ी येह दो ख़स्लतें ईमानदार में जम्अ़ नहीं होतीं, अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यहां बुख़्ल से ज़कात का न देना मुराद है। **357 :** बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जिस को अल्लाह ने माल दिया और उस ने ज़कात अदा न की रोज़े क़ियामत वोह माल सांप बन कर उस को त़ौक़ की त़रह़ लिपटेगा और येह कह कर डसता जाएगा कि मैं तेरा माल हूं मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।

www.dawateislami.net

وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٨٠ۧ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ

और ज़मीन का[358] और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है बेशक अल्लाह ने सुना

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَاۗءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا

जिन्हों ने कहा कि अल्लाह मोहताज है और हम ग़नी[359] अब हम लिख रखेंगे उन का कहा[360]

وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝١٨١

और अम्बिया को उन का नाहक़ शहीद करना[361] और फ़रमाएंगे कि चखो आग का अ़ज़ाब

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٨٢ۚ

येह बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वोह जो कहते हैं अल्लाह ने हम से क़रार कर लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब तक ऐसी

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

क़ुरबानी का हुक्म न लाए जिसे आग खाए[362] तुम फ़रमा दो मुझ से पहले बहुत रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْھُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٨٣ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ

और येह हुक्म ले कर आए जो तुम कहते हो फिर तुम ने उन्हें क्यूं शहीद किया अगर सच्चे हो[363] तो ऐ महबूब अगर वोह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं

فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاۗءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ

तो तुम से अगले रसूलों की भी तक्ज़ीब की गई है जो साफ़ निशानियां[364] और सहीफ़े और चमक्ती किताब[365]

358 : वोही दाइम बाक़ी है और सब मख़्लूक़ फ़ानी, इन सब की मिल्क बातिल होने वाली है तो निहायत नादानी है कि इस माले ना पाएदार पर बुख़्ल किया जाए और राहे ख़ुदा में न दिया जाए। **359 :** यहूद ने येह आयत "مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" सुन कर कहा था कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मा'बूद हम से क़र्ज़ मांगता है तो हम ग़नी हुए वोह फ़क़ीर हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **360 :** आ'माल नामों में **361 :** क़त्ले अम्बिया को इस मक़ूले पर मा'तूफ़ करने से मा'लूम होता है कि येह दोनों जुर्म बहुत अ़ज़ीम तरीन हैं और क़बाहत में बराबर हैं और शाने अम्बिया में गुस्ताख़ी करने वाला शाने इलाही में बे अदब हो जाता है। **362 शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हम से तौरैत में अ़हद लिया गया है कि जो मुद्दइये रिसालत ऐसी क़ुरबानी न लाए जिस को आस्मान से सफ़ेद आग उतर कर खाए उस पर हम हरगिज़ ईमान न लाएं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस किज़्बे महज़ और इफ़्तिराए ख़ालिस का इब्ताल किया गया क्यूं कि इस शर्त का तौरैत में नामो निशान भी नहीं है और ज़ाहिर है कि नबी की तस्दीक़ के लिये मो'जिज़ा काफ़ी है कोई मो'जिज़ा हो, जब नबी ने कोई मो'जिज़ा दिखाया उस के सिद्क़ पर दलील क़ाइम हो गई और उस की तस्दीक़ करना और उस की नुबुव्वत को मानना लाज़िम हो गया अब किसी ख़ास मो'जिज़े का इसरार हुज्जत क़ाइम होने के बा'द नबी की तस्दीक़ का इन्कार है। **363 :** जब तुम ने येह निशानी लाने वाले अम्बिया को क़त्ल किया और उन पर ईमान न लाए तो साबित हो गया कि तुम्हारा येह दा'वा झूटा है। **364 :** या'नी मो'जिज़ाते बाहिरा (रोशन और ला जवाब कर देने वाले मो'जिज़ात) **365 :** तौरैत व इन्जील।

www.dawateislami.net

الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ

ले कर आए थे हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे

الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا

मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ قف

दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है[366] बेशक ज़रूर तुम्हारी आज़्माइश होगी तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में[367]

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ

और बेशक ज़रूर तुम अगले किताब वालों[368] और मुश्रिकों से

اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ

बहुत कुछ बुरा सुनोगे और अगर तुम सब्र करो और बचते रहो[369] तो येह बड़ी हिम्मत का

الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

काम है और याद करो जब **अल्लाह** ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़ता हुई कि तुम ज़रूर इसे

لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ز فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا

लोगों से बयान कर देना और न छुपाना[370] तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उस के बदले ज़लील दाम

قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ

हासिल किये[371] तो कितनी बुरी ख़रीदारी है[372] हरगिज़ न समझना उन्हें जो ख़ुश होते हैं अपने

366 : दुन्या की हक़ीक़त इस मुबारक जुम्ले ने बे हिजाब कर दी, आदमी ज़िन्दगानी पर मफ़्तून (शैदाई व दीवाना) होता है इसी को सरमाया समझता है और इस फ़ुरसत को बेकार ज़ाएअ़ कर देता है, वक़्ते अख़ीर उसे मा'लूम होता है कि इस में बक़ा न थी और इस के साथ दिल लगाना हयाते बाक़ी और उख़्रवी ज़िन्दगी के लिये सख़्त मज़र्रत रसां (नुक़्सान देह साबित) हुवा। हज़रते सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया कि दुन्या तालिबे दुन्या के लिये मताए ग़ुरूर और धोके का सरमाया है लेकिन आख़िरत के तलब गार के लिये दौलते बाक़ी के हुसूल का ज़रीआ़ और नफ़्अ़ देने वाला सरमाया है, येह मज़्मून इस आयत के ऊपर के जुम्लों से मुस्तफ़ाद होता है। **367 :** हुक़ूक़ व फ़राइज़ और नुक़्सान और मसाइब और अमराज़ व ख़त़रात व क़त्ल व रन्जो ग़म वग़ैरा से ताकि मोमिन व ग़ैर मोमिन में इम्तियाज़ हो जाए, मुसलमानों को येह ख़िताब इस लिये फ़रमाया गया कि आने वाले मसाइब व शदाइद पर इन्हें सब्र आसान हो जाए। **368 :** यहूदो नसारा **369 :** मा'सियत से **370 :** **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लमाए तौरैत व इन्जील पर वाजिब किया था कि इन दोनों किताबों में सय्यिदे आ़लम ﷺ की नुबुव्वत पर दलालत करने वाले जो दलाइल हैं वोह लोगों को ख़ूब अच्छी त़रह़ मुशर्रह़ (वाज़ेह़ तशरीह़) कर के समझा दें और हरगिज़ न छुपाएं। **371 :** और रिश्वतें ले कर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम ﷺ के औसाफ़ को छुपाया जो तौरैत व इन्जील में मज़्कूर थे। **372 :** इल्मे दीन का छुपाना मम्नूअ़ है। ह़दीस शरीफ़ में आया कि जिस शख़्स से कुछ दरयाफ़्त किया गया जिस को वोह जानता है और उस ने उस को छुपाया रोज़े क़ियामत उस के आग की लगाम लगाई जाएगी। **मस्अला :** उ़लमा पर वाजिब है कि अपने इ़ल्म से फ़ाएदा पहुंचाएं और ह़क़ ज़ाहिर करें और किसी ग़रज़े फ़ासिद के लिये उस में से कुछ न छुपाएं।

www.dawateislami.net

اَتَوْا وَّ يُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ
किये पर और चाहते हैं कि बे किये उन की ता'रीफ़ हो[373] ऐसों को हरगिज़ अ़ज़ाब से
مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
दूर न जानना और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और अल्लाह ही के लिये है आस्मानों
ع ۱۹ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
और ज़मीन की बादशाही[374] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है बेशक आस्मानों और ज़मीन
وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ الَّذِیْنَ
की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं[375] अ़क़्ल मन्दों के लिये[376] जो
یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ
अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लेटे[377] और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا
में ग़ौर करते हैं[378] ऐ रब हमारे तूने येह बेकार न बनाया[379] पाकी है तुझे तो हमें
عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَیْتَهٗ ؕ وَمَا
दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ऐ रब हमारे बेशक जिसे तू दोज़ख़ में ले जाए उसे ज़रूर तूने रुस्वाई दी और
لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِیًا یُّنَادِیْ لِلْاِیْمَانِ
ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं ऐ रब हमारे हम ने एक मुनादी को सुना[380] कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है
اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖۗ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَیِّاٰتِنَا
कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब हमारे तो हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां मह़्व फ़रमा (मिटा) दे

373 शाने नुज़ूल : येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो लोगों को धोका देने और गुमराह करने पर ख़ुश होते और बा वुजूद नादान होने के येह पसन्द करते कि उन्हें आ़लिम कहा जाए। **मस्अला :** इस आयत में वईद है ख़ुद पसन्दी करने वाले के लिये और उस के लिये जो लोगों से अपनी झूटी ता'रीफ़ चाहे। जो लोग बिग़ैर इल्म अपने आप को आ़लिम कहलवाते हैं या इसी त़रह़ और कोई ग़लत़ वस्फ़ अपने लिये पसन्द करते हैं उन्हें इस से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये। **374 :** इस में उन गुस्ताख़ों का रद है जिन्हों ने कहा था कि अल्लाह फ़क़ीर है। **375 :** सानेअ़, क़दीम, अ़लीम, ह़कीम, क़ादिर के वुजूद पर दलालत करने वाली **376 :** जिन की अ़क़्ल कदूरत से पाक हो और मख़्लूक़ात के अ़जाइबो ग़राइब को ए'तिबार व इस्तिद्लाल की नज़्र से देखते हों। **377 :** या'नी तमाम अह़वाल में। मुस्लिम शरीफ़ में मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अह़यान (अवक़ात) में अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाते थे। बन्दे का कोई ह़ाल यादे इलाही से ख़ाली न होना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में है : जो बिहिश्ती बाग़ों की ख़ोशाचीनी पसन्द करे उसे चाहिये कि ज़िक्रे इलाही की कसरत करे। **378 :** और इस से इन के सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर इस्तिद्लाल करते हैं येह कहते हुए कि **379 :** बल्कि अपनी मा'रिफ़त की दलील बनाया। **380 :** इस मुनादी से मुराद

www.dawateislami.net

وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا

और हमारी मौत अच्छों के साथ कर[381] ऐ रब हमारे और हमें दे वोह[382] जिस का तूने हम से वा'दा किया है अपने रसूलों की मा'रिफ़त और हमें

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ

क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता तो उन की दुआ़ सुन ली उन के रब ने कि

لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

मैं तुम में काम वाले की मेह़नत अकारत नहीं करता मर्द हो या औ़रत तुम आपस में एक हो[383]

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ وَقٰتَلُوْا

तो वोह जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े

وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

और मारे गए मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا

नहरें रवां[384] अल्लाह के पास का सवाब और अल्लाह ही के पास अच्छा सवाब है ऐ सुनने

يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۫ ثُمَّ

वाले काफ़िरों का शहरों में अहले गहले (इतराते) फिरना हरगिज़ तुझे धोका न दे[385] थोड़ा बरत्ना है फिर

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरा बिछोना लेकिन वोह जो अपने रब से डरते हैं उन के लिये

جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में रहें अल्लाह की त़रफ़ की मेहमानी

या सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं जिन की शान में "دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ" वारिद है या क़ुरआने करीम **381 :** अम्बिया व सालिह़ीन के, कि हम इन के फ़रमां बरदारों में दाख़िल किये जाएं। **382 :** वोह फ़ज़्लो रह़मत **383 :** और जज़ाए आ'माल में औ़रत व मर्द के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। **शाने नुज़ूल :** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मैं हिजरत में औ़रतों का कुछ ज़िक्र ही नहीं सुनती या'नी मर्दों के फ़ज़ाइल तो मा'लूम हुए लेकिन येह भी मा'लूम हो कि औ़रतों को भी हिजरत का कुछ सवाब मिलेगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन की तस्कीन फ़रमा दी गई कि सवाब अ़मल पर मुरत्तब है औ़रत का हो या मर्द का। **384 :** येह सब अल्लाह का फ़ज़्लो करम है। **385 शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों की एक जमाअ़त ने कहा कि कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन अल्लाह के दुश्मन तो ऐ़शो आराम में हैं और हम तंगी व मशक़्क़त में, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि कुफ़्फ़ार का येह ऐ़श मताए़ क़लील है और अन्जाम ख़राब।

www.dawateislami.net

الثلثة

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ

और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला[386] और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि **अल्लाह** पर

بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ

ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो उन की त़रफ़ उतरा[387] उन के दिल **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए[388] **अल्लाह** की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते[389] येह वोह हैं जिन का सवाब उन के रब के पास है और **अल्लाह** जल्द

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۫ قف

हिसाब करने वाला है ऐ ईमान वालो सब्र करो[390] और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो

ع ۲۰

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾ ع

और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो

اٰياتها ۱۷۶ | (۴) سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ (۹۲) | ركوعاتها ۲۴

सूरए निसाअ मदनिय्या है, इस में एक सो छिहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

386 : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की दौलत सराए अक़्दस में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने देखा कि सुल्ताने कौनैन एक बोरिये पर आराम फ़रमा हैं, चमड़े का तक्या जिस में नारियल के रेशे भरे हुए हैं ज़ेरे सरे मुबारक है, जिस्मे अक़्दस में बोरिये के नक़्श हो गए हैं, येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते फ़ारूक़ रो पड़े, सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! क़ैसरो किस्रा तो ऐशो राह़त में हों और आप रसूले ख़ुदा हो कर इस ह़ालत में, फ़रमाया : क्या तुम्हें पसन्द नहीं कि उन के लिये दुन्या हो और हमारे लिये आख़िरत। **387 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : येह आयत नज्जाशी बादशाहे ह़बशा के बाब में नाज़िल हुई, उन की वफ़ात के दिन सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : चलो और अपने भाई की नमाज़ पढ़ो जिस ने दूसरे मुल्क में वफ़ात पाई है, हुज़ूर बक़ीअ़ शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए और ज़मीने ह़बशा आप के सामने की गई और नज्जाशी बादशाह का जनाज़ा पेशे नज़र हुवा उस पर आप ने चार तक्बीरों के साथ नमाज़ पढ़ी और उस के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाया। سبحان اللہ! क्या नज़र है क्या शान है सर ज़मीने ह़बशा हिजाज़ में सामने पेश कर दी जाती है। मुनाफ़िक़ीन ने इस पर ता'न किया और कहा देखो ह़बशा के नसरानी पर नमाज़ पढ़ते हैं जिस को आप ने कभी देखा भी नहीं और वोह आप के दीन पर भी न था, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **388 :** इज्ज़ो इन्किसार और तवाज़ोअ़ व इख़्लास के साथ। **389 :** जैसा कि यहूद के रुअसा लेते हैं। **390 :** अपने दीन पर और इस को किसी शिद्दत व तक्लीफ़ वग़ैरा की वज्ह से न छोड़ो। सब्र के मा'ना में ह़ज़रते जुनैद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि सब्र नफ़्स को ना गवार अम्र पर रोकना है बिग़ैर जज़अ़ के। बा'ज़ हुकमा ने कहा सब्र की तीन क़िस्में हैं : (1) तर्के शिकायत (2) क़बूले क़ज़ा (3) सिद्क़े रिज़ा। **1 :** सूरए निसाअ मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई, इस में एक सो छिहत्तर आयतें हैं और तीन हज़ार पेंतालीस कलिमे और सोलह हज़ार तीस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ

ऐ लोगो[2] अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया[3] और उसी में

مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ

से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औ़रत फैला दिये और **अल्लाह** से डरो जिस के

تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا

नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो[4] बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है और

الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا

यतीमों को उन के माल दो[5] और सुथरे[6] के बदले गन्दा न लो[7] और उन के

اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

माल अपने मालों में मिला कर न खा जाओ बेशक येह बड़ा गुनाह है और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि

2 : येह ख़िताब आ़म है तमाम बनी आदम को। **3 :** अबुल बशर ह़ज़रते आदम से जिन को बिग़ैर मां बाप के मिट्टी से पैदा किया था। इन्सान की इब्तिदाए पैदाइश का बयान कर के क़ुदरते इलाहिय्यह की अ़ज़मत का बयान फ़रमाया गया, अगर्चे दुन्या के बे दीन बद अ़क़्ली व ना फ़हमी से इस का मज़्हका उड़ाते हैं लेकिन अस्ह़ाबे फ़हमो ख़िरद जानते हैं कि येह मज़मून ऐसी ज़बर दस्त बुरहान से साबित है जिस का इन्कार मुहाल है। मर्दम शुमारी का ह़िसाब पता देता है कि आज से सो बरस क़ब्ल दुन्या में इन्सानों की ता'दाद आज से बहुत कम थी और इस से सो बरस पहले और भी कम तो इस त़रह़ जानिबे माज़ी में चलते चलते इस कमी की ह़द एक ज़ात क़रार पाएगी, या यूं कहिये कि क़बाइल की कसीर ता'दादें एक शख़्स की त़रफ़ मुन्तहा हो जाती हैं मसलन सय्यिद दुन्या में करोड़ों पाए जाएंगे मगर जानिबे माज़ी में इन की निहायत सय्यिदे आलम ﷺ की एक ज़ात पर होगी और बनी इसराईल कितने भी कसीर हों मगर इस तमाम कसरत का मरजअ़ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की एक ज़ात होगी, इसी त़रह़ और ऊपर को चलना शुरूअ़ करें तो इन्सान के तमाम शुऊ़ब व क़बाइल की इन्तिहा एक ज़ात पर होगी, उस का नाम कुतुबे इलाहिय्यह में आदम عَلَيْهِ السَّلَام है और मुम्किन नहीं कि वोह एक शख़्स तवालुदो तनासुल के मा'मूली त़रीक़े से पैदा हो सके, अगर उस के लिये बाप फ़र्ज़ भी किया जाए तो मां कहां से आए लिहाज़ा ज़रूरी है कि उस की पैदाइश बिग़ैर मां बाप के हो और जब बिग़ैर मां बाप के पैदा हुवा तो बिल यक़ीन उन्हीं अ़नासिर से पैदा होगा जो उस के वुजूद में पाए जाते हैं, फिर अ़नासिर में से जो उ़न्सर उस का मस्कन हो और जिस के सिवा दूसरे में वोह न रह सके लाज़िम है कि वोही उस के वुजूद में ग़ालिब हो इस लिये पैदाइश की निस्बत उसी उ़न्सर की त़रफ़ की जाएगी, येह भी ज़ाहिर है कि तवालुदो तनासुल का मा'मूली त़रीक़ा एक शख़्स से जारी नहीं हो सकता इस लिये उस के साथ एक और भी हो कि जोड़ा हो जाए और वोह दूसरा शख़्से इन्सानी जो उस के बा'द पैदा हो मुक़्तज़ाए ह़िक्मत येही है कि उसी के जिस्म से पैदा किया जाए क्यूं कि एक शख़्स के पैदा होने से नौअ़ मौजूद हो चुकी, मगर येह भी लाज़िम है (कि) उस की ख़िल्क़त पहले इन्सान से तवालुदे मा'मूली के सिवा किसी और त़रीक़े से हो क्यूं कि तवालुदे मा'मूली बिग़ैर दो के मुम्किन ही नहीं और यहां एक ही है, लिहाज़ा ह़िक्मते इलाहिय्यह ने ह़ज़रते आदम की एक बाईं पस्ली उन के ख़्वाब के वक़्त निकाली और उन से उन की बीबी ह़ज़रते ह़व्वा को पैदा किया, चूंकि ह़ज़रते ह़व्वा ब त़रीक़े तवालुदे मा'मूली (आ़म बच्चों की त़रह़) पैदा नहीं हुईं इस लिये वोह औलाद नहीं हो सकतीं जिस त़रह़ कि इस त़रीक़े के ख़िलाफ़ जिस्मे इन्सानी से बहुत से कीड़े पैदा हुवा करते हैं वोह उस की औलाद नहीं हो सकते हैं, ख़्वाब से बेदार हो कर ह़ज़रते आदम ने अपने पास ह़ज़रते ह़व्वा को देखा तो मह़ब्बते जिन्सिय्यत दिल में मोज्ज़न हुई उन से फ़रमाया : तुम कौन हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : औ़रत। फ़रमाया : किस लिये पैदा की गई हो ? अ़र्ज़ किया : आप की तस्कीने ख़ात़िर के लिये तो आप उन से मानूस हुए। **4 :** इन्हें क़त़्अ़ न करो। ह़दीस शरीफ़ में है : जो रिज़्क़ की कशाइश चाहे उस को चाहिये कि सिलए रेह़्मी करे और रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ की रिआ़यत रखे। **5 शाने नुज़ूल :** एक शख़्स की निगरानी में उस के यतीम भतीजे का कसीर माल था जब वोह यतीम बालिग़ हुवा और उस ने अपना माल त़लब किया तो चचा ने देने से इन्कार कर दिया। इस पर येह आयत नाज़िल हुई, इस को सुन कर उस शख़्स ने यतीम का माल उस के ह़वाले किया और कहा कि हम **अल्लाह** और उस के रसूल की इत़ाअ़त करते हैं। **6 :** या'नी अपने ह़लाल माल **7 :** यतीम का माल जो तुम्हारे लिये

www.dawateislami.net

تُقْسِطُوْا فِی الْیَتٰمٰی فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰی وَ ثُلٰثَ

यतीम लड़कियों में इन्साफ़ न करोगे[8] तो निकाह़ में लाओ जो औ़रतें तुम्हें ख़ुश आएं दो दो और तीन तीन

وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ؕ

और चार चार[9] फिर अगर डरो कि दो बीबियों को बराबर न रख सकोगे तो एक ही करो या कनीज़ें जिन के तुम मालिक हो

ذٰلِكَ اَدْنٰۤی اَلَّا تَعُوْلُوْا ؕ ﴿۳﴾ وَ اٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ

येह इस से ज़ियादा क़रीब है कि तुम से ज़ुल्म न हो[10] और औ़रतों को उन के महर ख़ुशी से दो[11] फिर अगर

طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا ﴿۴﴾ وَ لَا تُؤْتُوا

वोह अपने दिल की ख़ुशी से महर में से तुम्हें कुछ दे दें तो उसे खाओ रचता पचता (ख़ुश गवार और मज़े से)[12] और बे अ़क़्लों

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّ ارْزُقُوْهُمْ فِیْهَا وَ اكْسُوْهُمْ

को[13] उन के माल न दो जो तुम्हारे पास हैं जिन को **अल्लाह** ने तुम्हारी बसरे अवक़ात किया है और उन्हें उस में से खिलाओ और पहनाओ

ह़राम है उस को अच्छा समझ कर अपने रद्दी माल से न बदलो क्यूं कि वोह रद्दी तुम्हारे लिये ह़लाल व त़य्यिब है और येह ह़राम व ख़बीस। **8 :** और उन के हुक़ूक़ की रिआ़यत न रख सकोगे **9 :** आयत के मा'ना में चन्द क़ौल हैं। ह़सन का क़ौल है कि पहले ज़माने में मदीने के लोग अपनी ज़ेरे विलायत यतीम लड़की से उस के माल की वज्ह से निकाह़ कर लेते बा वुजूदे कि उस की त़रफ़ रग़बत न होती फिर उस के साथ सोह़बत व मुआ़शरत में अच्छा सुलूक न करते और उस के माल के वारिस बनने के लिये उस की मौत के मुन्तज़िर रहते, इस आयत में उन्हें इस से रोका गया। एक क़ौल येह है कि लोग यतीमों की विलायत से तो बे इन्साफ़ी हो जाने के अन्देशे से घबराते थे और ज़िना की परवा न करते थे। उन्हें बताया गया कि अगर तुम ना इन्साफ़ी के अन्देशे से यतीमों की विलायत से गुरेज़ करते हो तो ज़िना से भी ख़ौफ़ करो और इस से बचने के लिये जो औ़रतें तुम्हारे लिये ह़लाल हैं उन से निकाह़ करो और ह़राम के क़रीब मत जाओ। एक क़ौल येह है कि लोग यतीमों की विलायत व सर परस्ती में तो ना इन्साफ़ी का अन्देशा करते थे और बहुत से निकाह़ करने में कुछ बाक (ख़ौफ़) नहीं रखते थे, उन्हें बताया गया कि जब ज़ियादा औ़रतें निकाह़ में हों तो उन के ह़क़ में ना इन्साफ़ी से भी डरो, उतनी ही औ़रतों से निकाह़ करो जिन के हुक़ूक़ अदा कर सको। इ़क्रिमा ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास से रिवायत की, कि क़ुरैश दस दस बल्कि इस से ज़ियादा औ़रतें करते थे और जब उन का बार न उठ सकता तो जो यतीम लड़कियां उन की सर परस्ती में होतीं उन के माल ख़र्च कर डालते। इस आयत में फ़रमाया गया कि अपनी इस्तित़ाअ़त देख लो और चार से ज़ियादा न करो ताकि तुम्हें यतीमों का माल ख़र्च करने की ह़ाजत पेश न आए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि आज़ाद मर्द के लिये एक वक़्त में चार औ़रतों तक से निकाह़ जाइज़ है ख़्वाह वोह ह़ुर्रा (आज़ाद) हों या अमह या'नी बांदी। **मस्अला :** तमाम उम्मत का इज्माअ़ है कि एक वक़्त में चार औ़रतों से ज़ियादा निकाह़ में रखना किसी के लिये जाइज़ नहीं सिवाए रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के, येह आप के ख़साइस में से है। अबू दावूद की ह़दीस में है कि एक शख़्स इस्लाम लाए उन की आठ बीबियां थीं ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : उन में से चार रखना। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि ग़ैलान बिन सलमा सक़फ़ी इस्लाम लाए उन के दस बीबियां थीं वोह साथ मुसल्मान हुईं, ह़ुज़ूर ने हुक्म दिया कि इन में से चार रखो। **10 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बीबियों के दरमियान अ़द्ल फ़र्ज़ है। नई, पुरानी, बाकिरा (कुंवारी), सय्यिबा (शादी शुदा) सब इस इस्तिह़्क़ाक़ (ह़क़दारी) में बराबर हैं। येह अ़द्ल लिबास में, खाने पीने में, सक्ना या'नी रहने की जगह में और रात को रहने में लाज़िम है, इन उमूर में सब के साथ यक्सां सुलूक हो। **11 :** इस से मा'लूम हुवा कि महर की मुस्तह़िक़ औ़रतें हैं न कि इन के औलिया, अगर औलिया ने महर वुसूल कर लिया हो तो उन्हें लाज़िम है कि वोह महर उस की मुस्तह़िक़ औ़रत को पहुंचा दें। **12 मस्अला :** औ़रतों को इख़्तियार है कि वोह अपने शोहरों को महर का कोई जुज़्व हिबा करें या कुल महर मगर महर बख़्शवाने के लिये उन्हें मजबूर करना उन के साथ बद ख़ुल्क़ी करना न चाहिये क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने طِبْنَ لَكُمْ फ़रमाया जिस के मा'ना हैं दिल की ख़ुशी से मुआ़फ़ करना। **13 :** जो इतनी समझ नहीं रखते कि माल का मसरफ़ पहचानें, इस को बे मह़ल ख़र्च करते हैं और अगर उन पर छोड़ दिया जाए तो वोह जल्द ज़ाएअ़ कर देंगे।

www.dawateislami.net

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝٥ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ

और उन से अच्छी बात कहो[14] और यतीमों को आज़्माते रहो[15] यहां तक कि जब वोह निकाह के क़ाबिल हों

فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

तो अगर तुम उन की समझ ठीक देखो तो उन के माल उन्हें सिपुर्द कर दो और उन्हें न खाओ

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ

हद से बढ़ कर और इस जल्दी में कि कहीं बड़े न हो जाएं और जिसे हाजत न हो वोह बचता रहे[16] और जो

كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ

हाजत मन्द हो वोह ब क़दरे मुनासिब खाए फिर जब तुम उन के माल उन्हें सिपुर्द करो

فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

तो उन पर गवाह कर लो और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने को मर्दों के लिये हिस्सा है

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ

उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले और औरतों के लिये हिस्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप

وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧ وَاِذَا حَضَرَ

और क़राबत वाले तर्का थोड़ा हो या बहुत हिस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुवा[17] फिर बांटते वक़्त

الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا

अगर रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन[18] आ जाएं तो उस में से उन्हें भी कुछ दो[19] और उन से

لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً

अच्छी बात कहो[20] और डरें[21] वोह लोग कि अगर अपने बा'द नातुवान औलाद छोड़ते तो उन का कैसा उन्हें

14 : जिस से उन के दिल को तसल्ली हो और वोह परेशान न हों, मसलन येह कि माल तुम्हारा है और तुम होशियार हो जाओगे तो तुम्हें सिपुर्द किया जाएगा। 15 : कि उन में होशियारी और मुआमला फ़हमी पैदा हुई या नहीं 16 : यतीम का माल खाने से 17 : ज़मानए जाहिलिय्यत में औरतों और बच्चों को विरसा न देते थे इस आयत में इस रस्म को बातिल किया गया। 18 : अजनबी जिन में से कोई मय्यित का वारिस न हो 19 : क़ब्ले तक़्सीम और येह देना मुस्तहब है। 20 : इस में उज़्रे जमील, वा'दए हसना और दुआए ख़ैर सब दाख़िल हैं। इस आयत में मय्यित के तर्के से ग़ैर वारिस रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों को कुछ बतौरे सदक़ा देने और क़ौले मा'रूफ़ (अच्छी बात) कहने का हुक्म दिया, ज़मानए सहाबा में इस पर अमल था। मुहम्मद बिन सीरीन से मरवी है कि इन के वालिद ने तक़्सीमे मीरास के वक़्त एक बकरी ज़ब्ह करा के खाना पकाया और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों को खिलाया और येह आयत पढ़ी, इब्ने सीरीन ने इसी मज़्मून की उ़बैदा सलमानी से भी रिवायत की है उस में येह भी है कि कहा कि अगर येह आयत न आई होती तो येह सदक़ा मैं अपने माल से करता। तीजा जिस को सिवुम कहते हैं और मुसल्मानों में मा'मूल है वोह भी इसी आयत का इत्तिबाअ़ है कि इस में रिश्तेदारों, यतीमों व मिस्कीनों पर तसद्दुक़

www.dawateislami.net

ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩ اِنَّ

ख़त्रा होता तो चाहिये कि अल्लाह से डरें[22] और सीधी बात करें[23] वोह

الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ

जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं[24]

وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠ يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْۤ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ

और कोई दम जाता है कि भड़कते धड़े (भड़कती आग) में जाएंगे अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है[25] तुम्हारी औलाद के बारे में[26] बेटे का हिस्सा

الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ

दो[2] बेटियों बराबर[27] फिर अगर निरी लड़कियां हों अगर्चे दो से ऊपर[28] तो उन को तर्के की दो तिहाई

وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ؕ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

और अगर एक लड़की तो उस का आधा[29] और मय्यित के मां बाप को हर एक को

السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗۤ

उस के तर्के से छटा अगर मय्यित के औलाद हो[30] फिर अगर उस की औलाद न हो और मां बाप

اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗۤ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ

छोड़े[31] तो मां का तिहाई फिर अगर उस के कई बहन भाई (हों)[32] तो मां का छटा[33] बा'द उस

होता है और कलिमे का ख़त्म और क़ुरआने पाक की तिलावत और दुआ क़ौले मा'रूफ़ है, इस में बा'ज़ लोगों को बे जा इसरार हो गया है जो बुज़ुर्गों के इस अ़मल का माख़ज़ तो तलाश न कर सके बा वुजूदे कि इतना साफ़ क़ुरआने पाक में मौजूद था लेकिन उन्हों ने अपनी राय को दीन में दख़्ल दिया और अ़मले ख़ैर को रोकने पर मुसिर हो गए। अल्लाह हिदायत करे। **21 :** वसी और यतीमों के वली और वोह लोग जो क़रीबे मौत मरने वाले के पास मौजूद हों। **22 :** और मरने वाले की ज़ुर्रिय्यत के साथ ख़िलाफ़े शफ़्क़त कोई कारवाई न करें जिस से उस की औलाद परेशान हो। **23 :** मरीज़ के पास उस की मौत के क़रीब मौजूद होने वालों की सीधी बात तो येह है कि उसे सदक़ा व वसिय्यत में येह राय दें कि वोह इतने माल से करे जिस से उस की औलाद तंगदस्त नादार न रह जाए और वसी व वली की सीधी बात येह है कि वोह मरने वाले की ज़ुर्रिय्यत से हुस्ने ख़ुल्क़ के साथ कलाम करें जैसा अपनी औलाद के साथ करते हैं। **24 :** या'नी यतीमों का माल नाहक़ खाना गोया आग खाना है क्यूं कि वोह सबब है अ़ज़ाब का। ह़दीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत यतीमों का माल खाने वाले इस त़रह़ उठाए जाएंगे कि उन की क़ब्रों से और उन के मुंह से और उन के कानों से धूआं निकलता होगा तो लोग पहचानेंगे कि येह यतीम का माल खाने वाला है। **25 :** विरसे के मुतअ़ल्लिक़ **26 :** अगर मय्यित ने बेटे बेटियां दोनों छोड़ी हों तो **27 :** या'नी दुख़्तर का हिस्सा पिसर से आधा है और अगर मरने वाले ने सिर्फ़ लड़के छोड़े हों तो कुल माल उन का। **28 :** या दो **29 :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर अकेला लड़का वारिस रहा हो तो कुल माल उस का होगा क्यूं कि ऊपर बेटे का हिस्सा बेटियों से दूना बताया गया है तो जब अकेली लड़की का निस्फ़ हुवा तो अकेले लड़के का इस से दूना हुवा और वोह कुल है। **30 :** ख़्वाह लड़का हो या लड़की कि इन में से हर एक को औलाद कहा जाता है। **31 :** या'नी सिर्फ़ मां बाप छोड़े और अगर मां बाप के साथ ज़ौज या ज़ौजा में से किसी को छोड़ा तो मां का हिस्सा ज़ौज का हिस्सा निकालने के बा'द जो बाक़ी बचे उस का तिहाई होगा न कि कुल का तिहाई। **32 :** सगे ख़्वाह सोतेले **33 :** और एक ही भाई हो तो वोह मां का हिस्सा नहीं घटा सकता।

وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ

वसिय्यत के जो कर गया और दैन के[34] तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तुम क्या जानो कि इन में कौन

اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱﴾

तुम्हारे ज़ियादा काम आएगा[35] येह हिस्सा बांधा हुवा है अल्लाह की तरफ़ से बेशक अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है

وَ لَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ

और तुम्हारी बीबियां जो छोड़ जाएं उस में से तुम्हें आधा है अगर उन की औलाद न हो फिर अगर

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَاۤ

उन की औलाद हो तो उन के तर्के में से तुम्हें चौथाई है जो वसिय्यत वोह कर गईं और दैन

اَوْ دَيْنٍ ؕ وَ لَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ

निकाल कर और तुम्हारे तर्के में औरतों का चौथाई है[36] अगर तुम्हारे औलाद न हो फिर अगर

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ

तुम्हारे औलाद हो तो उन का तुम्हारे तर्के में से आठवां[37] जो वसिय्यत तुम कर जाओ

بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَ اِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّ لَهٗۤ اَخٌ اَوْ

और दैन निकाल कर और अगर किसी ऐसे मर्द या औरत का तर्का बटता हो जिस ने मां बाप औलाद कुछ न छोड़े और मां की तरफ़ से उस का भाई या

اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ

बहन है तो उन में से हर एक को छटा फिर अगर वोह बहन भाई एक से ज़ियादा हों

فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ

तो सब तिहाई में शरीक हैं[38] मय्यित की वसिय्यत और दैन निकाल कर जिस में उस ने नुक़्सान न

مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ

पहुंचाया हो[39] येह अल्लाह का इर्शाद है और अल्लाह इल्म वाला हिल्म वाला है येह अल्लाह की हदें हैं

34 : क्यूं कि वसिय्यत और दैन या'नी क़र्ज़ विरसे की तक़्सीम से मुक़द्दम है और दैन वसिय्यत पर भी मुक़द्दम है। हदीस शरीफ़ में है "اِنَّ الدَّيْنَ قَبْلَ الْوَصِيَّةِ"। 35 : इस लिये हिस्सों की ता'यीन तुम्हारी राय पर नहीं छोड़ी। 36 : ख़्वाह एक बीबी हो या कई, एक होगी तो वोह अकेली चौथाई पाएगी, कई होंगी तो सब उस चौथाई में बराबर शरीक होंगी ख़्वाह बीबी एक हो या कई हों हिस्सा येही रहेगा। 37 : ख़्वाह बीबी एक हो या ज़ियादा। 38 : क्यूं कि वोह मां के रिश्ते की बदौलत मुस्तहिक़ हुए और मां तिहाई से ज़ियादा नहीं पाती और इसी लिये इन में मर्द का हिस्सा औरत से ज़ियादा नहीं है। 39 : अपने वारिसों को तिहाई से ज़ियादा वसिय्यत कर के या किसी वारिस के हक़ में वसिय्यत

www.dawateislami.net

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी काम्याबी और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे

ع ٢ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾ ع

और उस की कुल हृदों से बढ़ जाए **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है[40]

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً

और तुम्हारी औ़रतों में जो बदकारी करें उन पर ख़ास अपने में के[41] चार मर्दों की

مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ

गवाही लो फिर अगर वोह गवाही दे दें तो उन औ़रतों को घर में बन्द रखो[42] यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले

कर के। **मसाइले फ़राइज़ :–** वारिस कई क़िस्म हैं, **अस्हाबे फ़राइज़ :** येह वोह लोग हैं जिन के लिये हिस्से मुक़र्रर हैं मसलन बेटी एक हो तो आधे माल की मालिक, ज़ियादा हों तो सब के लिये दो तिहाई, पोती और परपोती और इस से नीचे की हर पोती अगर मय्यित के औलाद न हो तो बेटी के हुक्म में है और अगर मय्यित ने एक बेटी छोड़ी हो तो येह उस के साथ छटा पाएगी और अगर मय्यित ने बेटा छोड़ा तो साक़ित हो जाएगी कुछ न पाएगी और अगर मय्यित ने दो बेटियां छोड़ीं तो भी पोती साक़ित होगी लेकिन अगर उस के साथ या उस के नीचे दरजे में कोई लड़का होगा तो वोह उस को अ़सबा बना देगा। सगी बहन मय्यित के बेटा या पोता न छोड़ने की सूरत में बेटियों के हुक्म में है। अ़ल्लाती बहनें जो बाप में शरीक हों और उन की माएं अ़लाहृदा अ़लाहृदा हों वोह हक़ीक़ी बहनों के न होने की सूरत में उन की मिस्ल हैं और दोनों क़िस्म की बहनें या'नी अ़ल्लाती व हक़ीक़ी मय्यित की बेटी या पोती के साथ अ़सबा हो जाती हैं और बेटे और पोते और इस के मा तहृत के पोते और बाप के साथ साक़ित और इमाम साहिब के नज़्दीक दादा के साथ भी महरूम हैं। सोतेले भाई बहन जो फ़क़त मां में शरीक हों उन में से एक हो तो छटा और ज़ियादा हों तो तिहाई और उन में मर्द व औ़रत बराबर हिस्सा पाएंगे और बेटे पोते और उस के मा तहृत के पोते और बाप दादा के होते साक़ित हो जाएंगे। बाप छटा हिस्सा पाएगा अगर मय्यित ने बेटा या पोता या इस से नीचे के पोते छोड़े हों और अगर मय्यित ने बेटी या पोती, या और नीचे की कोई पोती छोड़ी हो तो बाप छटा और वोह बाक़ी भी पाएगा जो अस्हाबे फ़र्ज़ को दे कर बचे। दादा या'नी बाप का बाप बाप के न होने की सूरत में मिस्ल बाप के है सिवाए इस के कि मां को सुल्स मा बक़ा की त़रफ़ रद न कर सकेगा। मां का छटा हिस्सा है अगर मय्यित ने अपनी औलाद या अपने बेटे या पोते या परपोते की औलाद या बहन भाई में से दो छोड़े हों ख़्वाह वोह भाई सगे हों या सोतेले और अगर इन में से कोई न छोड़ा हो तो मां कुल माल का तिहाई पाएगी और अगर मय्यित ने ज़ौज या ज़ौजा और मां बाप छोड़े हों तो मां को ज़ौज या ज़ौजा का हिस्सा देने के बा'द जो बाक़ी रहे उस का तिहाई मिलेगा और जद्दा का छटा हिस्सा है ख़्वाह वोह मां की त़रफ़ से हो या'नी नानी या बाप की त़रफ़ से हो या'नी दादी एक हो या ज़ियादा हों और क़रीब वाली दूर वाली के लिये हाजिब हो जाती है और मां हर एक जद्दा को महजूब करती है और बाप की त़रफ़ की जद्दात बाप के होने से महजूब होती हैं इस सूरत में कुछ न मिलेगा। ज़ौज चहारुम पाएगा अगर मय्यित ने अपनी या अपने बेटे पोते परपोते वग़ैरा की औलाद छोड़ी हो और अगर इस क़िस्म की औलाद न छोड़ी हो तो शोहर निस्फ़ पाएगा। ज़ौजा मय्यित की और उस के बेटे पोते वग़ैरा की औलाद होने की सूरत में आठवां हिस्सा पाएगी और न होने की सूरत में चौथाई। **अ़सबात :** वोह वारिस हैं जिन के लिये कोई हिस्सा मुअ़य्यन नहीं अस्हाबे फ़र्ज़ से जो बाक़ी बचता है वोह पाते हैं, इन में सब से औला बेटा है फिर उस का बेटा फिर और नीचे के पोते फिर बाप फिर दादा फिर आबाई सिल्सिले में जहां तक कोई पाया जाए, फिर हक़ीक़ी भाई, फिर सोतेला या'नी बाप शरीक भाई फिर सगे भाई का बेटा फिर बाप शरीक भाई का बेटा, फिर चचा फिर बाप के चचा फिर दादा के चचा फिर आज़ाद करने वाला फिर उस के अ़सबात तरतीब वार और जिन औ़रतों का हिस्सा निस्फ़ या दो तिहाई है वोह अपने भाइयों के साथ अ़सबा हो जाती हैं और जो ऐसी न हों वोह नहीं। **ज़विल अरहाम :** अस्हाबे फ़र्ज़ और अ़सबात के सिवा जो अक़ारिब हैं वोह ज़विल अरहाम में दाख़िल हैं और इन की तरतीब अ़सबात की मिस्ल है। **40 :** क्यूं कि कुल हृदों से तजावुज़ करने वाला काफ़िर है इस लिये कि मोमिन कैसा भी गुनहगार हो ईमान की हृद से तो न गुज़रेगा। **41 :** या'नी मुसल्मानों में के **42 :** कि वोह बदकारी न

www.dawateislami.net

أَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿۱۵﴾ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ

या अल्लाह उन की कुछ राह निकाले[43] और तुम में जो मर्द औ़रत ऐसा काम करें उन को ईज़ा दो[44]

فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۱۶﴾

फिर अगर वोह तौबा कर लें और नेक हो जाएं तो उन का पीछा छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है[45]

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ

वोह तौबा जिस का क़बूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में

مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓىِٕكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾

तौबा कर लें[46] ऐसों पर अल्लाह अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और अल्लाह इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं[47] यहां तक कि जब उन में किसी को

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓىِٕكَ

मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की[48] और न उन की जो काफ़िर मरें उन के लिये

اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ

हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[49] ऐ ईमान वालो तुम्हें ह़लाल नहीं कि

تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ

औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बर दस्ती[50] और औ़रतों को रोको नहीं इस निय्यत से कि जो महर उन को दिया था उस में से कुछ ले लो[51]

करने पाएं **43 :** या'नी ह़द मुक़र्रर फ़रमाए या तौबा और निकाह़ की तौफ़ीक़ दे। जो मुफ़स्सिरीन इस आयत में "اَلْفَاحِشَةَ" (बदकारी) से ज़िना मुराद लेते हैं वोह कहते हैं कि ह़ब्स (औ़रतों को घर में क़ैद रखने) का हुक्म हुदूद नाज़िल होने से क़ब्ल था, हुदूद के साथ मन्सूख़ किया गया। (خازن وجلالین واحمدی) **44 :** झिड़को घुड़को बुरा कहो शर्म दिलाओ जूतियां मारो। (جلالین ومدارک وخازن وغیرہ) **45 :** ह़सन का क़ौल है कि ज़िना की सज़ा पहले ईज़ा मुक़र्रर की गई फिर ह़ब्स फिर कोड़े मारना या संगसार करना। इब्ने बह़र का क़ौल है कि पहली आयत "وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ" उन औ़रतों के बाब में है जो औ़रतों के साथ (ब त़रीक़े मुसाह़क़त) बदकारी करती हैं और दूसरी आयत "وَالَّذٰنِ" लिवात़त करने वालों के ह़क़ में है और ज़ानी और ज़ानिया का हुक्म सूरए नूर में बयान फ़रमाया गया, इस तक़्दीर पर येह आयतें ग़ैर मन्सूख़ हैं और इन में इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के लिये दलील ज़ाहिर है इस पर जो वोह फ़रमाते हैं कि लिवात़त में ता'ज़ीर है ह़द नहीं। **46 :** ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि जो तौबा मौत से पहले हो वोह क़रीब है। **47 :** और तौबा में ताख़ीर करते जाते हैं। **48 :** क़बूले तौबा का वा'दा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वोह ऐसे लोगों के लिये नहीं है। अल्लाह मालिक है जो चाहे करे उन की तौबा क़बूल करे या न करे बख़्शे या अ़ज़ाब फ़रमाए उस की मरज़ी। (احمدی) **49 :** इस से मा'लूम हुवा कि वक़्ते मौत काफ़िर की तौबा और उस का ईमान मक़्बूल नहीं। **50 शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग माल की त़रह़ अपने अक़ारिब की बीबियों के भी वारिस बन जाते थे फिर अगर चाहते तो बे महर उन्हें अपनी ज़ौजिय्यत में रखते या किसी और के साथ शादी कर देते और ख़ुद महर ले लेते या उन्हें क़ैद कर रखते कि जो विरसा उन्हों ने पाया है वोह दे कर रिहाई ह़ासिल करें या मर जाएं तो येह उन के वारिस हो जाएं, ग़रज़ वोह औ़रतें बिल्कुल उन के हाथ में मजबूर होती थीं और अपने इख़्तियार से कुछ भी

www.dawateislami.net

إِلَّآ أَن يَأْتِينَ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِٱلْمَعْرُوفِ ۚ فَإِن

मगर इस सूरत में कि सरीह़ बे ह़याई का काम करें[52] और उन से अच्छा बरताव करो[53] फिर अगर

كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰٓ أَن تَكْرَهُوا۟ شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ ٱللَّهُ فِيهِ خَيْرًا

वोह तुम्हें पसन्द न आएं[54] तो क़रीब है कि कोई चीज़ तुम्हें ना पसन्द हो और **अल्लाह** उस में बहुत भलाई

كَثِيرًا ﴿١٩﴾ وَإِنْ أَرَدتُّمُ ٱسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَءَاتَيْتُمْ

रखे[55] और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो[56] और उसे ढेरों

إِحْدَىٰهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا۟ مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ أَتَأْخُذُونَهُۥ بُهْتَٰنًا وَإِثْمًا

माल दे चुके हो[57] तो उस में से कुछ वापस न लो[58] क्या उसे वापस लोगे झूट बांध कर और खुले

مُّبِينًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُۥ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ

गुनाह से[59] और क्यूंकर उसे वापस लोगे ह़ालां कि तुम में एक दूसरे के सामने बे पर्दा हो लिया और वोह तुम

مِنكُم مِّيثَٰقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنكِحُوا۟ مَا نَكَحَ ءَابَآؤُكُم مِّنَ ٱلنِّسَآءِ إِلَّا مَا

से गाढ़ा अ़ह्द ले चुकीं[60] और बाप दादा की मन्कूहा से निकाह़ न करो[61] मगर जो

ع

قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ فَٰحِشَةً وَمَقْتًا وَسَآءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ

हो गुज़रा वोह बेशक बे ह़याई[62] और ग़ज़ब का काम है और बहुत बुरी राह[63] ह़राम हुईं

न कर सकती थीं इस रस्म को मिटाने के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई। **51 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह उस के मुतअ़ल्लिक़ है जो अपनी बीबी से नफ़रत रखता हो और इस लिये बद सुलूकी करता हो कि औ़रत परेशान हो कर महर वापस कर दे या छोड़ दे इस की **अल्लाह** तआ़ला ने मुमानअ़त फ़रमाई। एक क़ौल येह है कि लोग औ़रत को त़लाक़ देते फिर रज्अ़त करते फिर त़लाक़ देते इस त़रह़ उस को मुअ़ल्लक़ रखते थे कि न वोह उन के पास आराम पा सकती न दूसरी जगह ठिकाना कर सकती इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। एक क़ौल येह है कि मय्यित के औलिया को ख़ित़ाब है कि वोह अपने मूरिस की बीबी को न रोकें। **52 :** शोहर की ना फ़रमानी या उस की या उस के घर वालों की ईज़ा व बद ज़बानी या ह़राम कारी ऐसी कोई ह़ालत हो तो खुलअ़ चाहने में मुज़ायक़ा नहीं। **53 :** खिलाने पहनाने में बातचीत में और ज़ौजिय्यत के उमूर में **54 :** बद खुल्क़ी या सूरत ना पसन्द होने की वज्ह से तो सब्र करो और जुदाई मत चाहो। **55 :** वलदे सालेह़ वग़ैरा। **56 :** या'नी एक को त़लाक़ दे कर दूसरी से निकाह़ करना। **57 :** इस आयत से गिरां महर मुक़र्रर करने के जवाज़ पर दलील लाई गई है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया कि औ़रतों के महर गिरां न करो। एक औ़रत ने येह आयत पढ़ कर कहा कि ऐ इब्ने ख़त़्त़ाब ! **अल्लाह** हमें देता है और तुम मन्अ़ करते हो, इस पर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! तुझ से हर शख़्स ज़ियादा समझदार है जो चाहो मुक़र्रर करो, سُبْحٰنَ اللّٰہ ! ख़लीफ़ए रसूल की शाने इन्साफ़ और नफ़्स शरीफ़ की पाकी رَزَقَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَہٗ۔آمین। **58 :** क्यूं कि जुदाई तुम्हारी त़रफ़ से है। **59 :** येह अहले जाहिलिय्यत के उस फ़े'ल का रद है जब उन्हें कोई दूसरी औ़रत पसन्द आती तो वोह अपनी बीबी पर तोहमत लगाते ताकि वोह इस से परेशान हो कर जो कुछ ले चुकी है वापस दे दे, इस त़रीक़े को इस आयत में मन्अ़ फ़रमाया और झूट और गुनाह बताया। **60 :** वोह अ़ह्द **अल्लाह** तआ़ला का येह इर्शाद है ''فَاِمْسَاکٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ''। **मस्अला :** येह आयत दलील है इस पर कि ख़ल्वते सह़ीह़ा से महर मुअक्कद हो जाता है। **61 :** जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में रवाज था कि अपनी मां के सिवा बाप के बा'द उस की दूसरी औ़रत को बेटा बियाह लेता था। **62 :** क्यूं कि बाप की बीबी ब मन्ज़िलए मां के है, कहा गया है निकाह़ से वत़ी मुराद है। इस से साबित होता है कि बाप की मौत़ूअह या'नी जिस से उस ने सोह़बत की हो ख़्वाह निकाह़ कर के या ब त़रीक़े ज़िना या वोह बांदी हो उस का वोह मालिक हो कर इन में से हर सूरत में बेटे का उस से निकाह़ ह़राम है। **63 :** अब इस के बा'द जिस क़दर औ़रतें

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

तुम पर तुम्हारी माएं[64] और बेटियां[65] और बहनें और फूफियां और ख़ालाएं और भतीजियां

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

और भान्जियां[66] और तुम्हारी माएं जिन्हों ने दूध पिलाया[67] और दूध की बहनें

وَاُمَّهٰتُ نِسَآىِٕكُمْ وَرَبَآىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕكُمُ الّٰتِيْ

और औरतों की माएं[68] और उन की बेटियां जो तुम्हारी गोद में हैं[69] उन बीबियों से जिन से

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫

तुम सोहबत कर चुके हो तो फिर अगर तुम ने उन से सोहबत न की हो तो उन की बेटियों में हरज नहीं[70]

وَحَلَآىِٕلُ اَبْنَآىِٕكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ

और तुम्हारी नस्ली बेटों की बीबियें[71] और दो बहनें इकट्ठी

الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۟ۙ ﴿۲۳﴾

करना[72] मगर जो हो गुज़रा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

हराम हैं उन का बयान फ़रमाया जाता है इन में सात तो नसब से हराम हैं। **64 :** और हर औरत जिस की तरफ़ बाप या मां के ज़रीए से नसब रुजूअ़ करता हो या'नी दादियां व नानियां ख़्वाह क़रीब की हों या दूर की सब माएं हैं और अपनी वालिदा के हुक्म में दाख़िल हैं। **65 :** पोतियां और नवासियां किसी दरजे की हों बेटियों में दाख़िल हैं। **66 :** येह सब सगी हों या सोतेली। इन के बा'द उन औरतों का बयान किया जाता है जो सबब से हराम हैं। **67 : दूध के रिश्ते :** शीर ख़्वारी की मुद्दत में क़लील दूध पिया जाए या कसीर इस के साथ हुरमत मुतअ़ल्लिक़ होती है। शीर ख़्वारी की मुद्दत हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा رضی اللہ عنہ के नज़्दीक तीस माह और साहिबैन के नज़्दीक दो साल हैं। शीर ख़्वारी की मुद्दत के बा'द जो दूध पिया जाए उस से हुरमत मुतअ़ल्लिक़ नहीं होती। अल्लाह तआ़ला ने रज़ाअ़त (दूध पिलाने) को नसब के क़ाइम मक़ाम किया है और दूध पिलाने वाली को शीर ख़्वार की मां और उस की लड़की को शीर ख़्वार की बहन फ़रमाया, इसी तरह दूध पिलाई का शोहर शीर ख़्वार का बाप और उस का बाप शीर ख़्वार का दादा और उस की बहन उस की फूफी और उस का हर बच्चा जो दूध पिलाई के सिवा और किसी औरत से भी हो ख़्वाह वोह क़ब्ल शीर ख़्वारी के पैदा हुवा या इस के बा'द वोह सब इस के सोतेले भाई बहन हैं और दूध पिलाई की मां शीर ख़्वार की नानी और उस की बहन इस की ख़ाला और उस शोहर से उस के जो बच्चे पैदा हों वोह शीर ख़्वार के रज़ाई भाई बहन और उस शोहर के इलावा दूसरे शोहर से जो हों वोह इस के सोतेले भाई बहन। इस में अस्ल येह हदीस है कि रज़ाअ़ से वोह रिश्ते हराम हो जाते हैं, जो नसब से हराम हैं इस लिये शीर ख़्वार पर उस के रज़ाई मां बाप और उन के नसबी व रज़ाई उसूल व फ़ुरूअ़ सब हराम हैं। **68 :** यहां से मुहर्रमात बिस्सेहरिय्यह (सुसराली रिश्तेदारी की वज्ह से जो औरतें हराम हैं उन) का बयान है वोह तीन ज़िक्र फ़रमाई गईं बीबियों की माएं बीबियों की बेटियां और बेटों की बीबियां, बीबियों की माएं सिर्फ़ अ़क़्दे निकाह से हराम हो जाती हैं ख़्वाह वोह बीबियां मदख़ूला हों या ग़ैर मदख़ूला (या'नी उन से हम बिस्तरी हुई हो या न हुई हो)। **69 :** गोद में होना ग़ालिब हाल का बयान है हुरमत के लिये शर्त नहीं। **70 :** उन की मांओं से तलाक़ या मौत वग़ैरा के ज़रीए से क़ब्ले सोहबत जुदाई होने की सूरत में उन के साथ निकाह जाइज़ है। **71 :** इस से मुतबन्ना (मुंहबोले बेटे) निकल गए। इन की औरतों के साथ निकाह जाइज़ है और रज़ाई बेटे की बीबी भी हराम है क्यूं कि वोह नसबी के हुक्म में है और पोते परपोते बेटों में दाख़िल हैं। **72 :** येह भी हराम है ख़्वाह दोनों बहनों को निकाह में जम्अ़ किया जाए या मिल्के यमीन के ज़रीए से वती में, और हदीस शरीफ़ में फूफी भतीजी और ख़ाला भान्जी का निकाह में

www.dawateislami.net

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ

और हराम हैं शोहर दार औ़रतें मगर काफ़िरों की औ़रतें जो तुम्हारी मिल्क में आ जाएं[73] येह **अल्लाह** का नविश्ता (मुक़र्रर कर्दा) है तुम पर

وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ

और उन[74] के सिवा जो रहीं वोह तुम्हें ह़लाल हैं कि अपने मालों के इ़वज़ तलाश करो क़ैद लाते[75] न

مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ

पानी गिराते[76] तो जिन औ़रतों को निकाह़ में लाना चाहो उन के बंधे हुए महर उन्हें दो

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और क़रार दाद (तै़ शुदा) के बा'द अगर तुम्हारे आपस में कुछ रिज़ा मन्दी हो जाए तो इस में गुनाह नहीं[77] बेशक **अल्लाह**

كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ

इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और तुम में बे मक़्दूरी के बाइ़स जिन के निकाह़ में

الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

आज़ाद औ़रतें ईमान वालियां न हों तो उन से निकाह़ करे जो तुम्हारे हाथ की मिल्क हैं ईमान वाली

जम्अ़ करना भी ह़राम फ़रमाया गया और ज़ाबित़ा येह है कि निकाह़ में हर ऐसी दो औ़रतों का जम्अ़ करना ह़राम है जिन में से हर एक को मर्द फ़र्ज़ करने से दूसरी उस के लिये ह़लाल न हो, जैसे कि फूफी भतीजी, कि अगर फूफी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो चचा हुवा भतीजी उस पर ह़राम है और अगर भतीजी को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो भतीजा हुवा फूफी इस पर ह़राम है, ह़ुरमत दोनों त़रफ़ है और अगर सिर्फ़ एक त़रफ़ से हो तो जम्अ़ ह़राम न होगी, जैसे कि औ़रत और उस के शोहर की लड़की इन दोनों को जम्अ़ करना ह़लाल है क्यूं कि शोहर की लड़की को मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो इस के लिये बाप की बीबी तो ह़राम रहती है। मगर दूसरी त़रफ़ से येह बात नहीं है या'नी शोहर की बीबी को अगर मर्द फ़र्ज़ किया जाए तो येह अजनबी होगा और कोई रिश्ता ही न रहेगा। **73 :** गिरिफ़्तार हो कर बिग़ैर अपने शोहरों के वोह तुम्हारे लिये बा'दे इस्तिब्रा (या'नी ह़ैज़ आ जाने और बच्चा जनने के बा'द) ह़लाल हैं अगर्चे दारुल ह़र्ब में उन के शोहर मौजूद हों क्यूं कि तबायुने दारैन (मुल्क बदल जाने) की वज्ह से उन की शोहरों से फ़ुरक़त हो चुकी। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया हम ने एक रोज़ बहुत सी क़ैदी औ़रतें पाईं जिन के शोहर दारुल ह़र्ब में मौजूद थे तो हम ने उन से क़ुरबत में तअम्मुल किया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से मस्अला दरयाफ़्त किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **74 :** मुह़र्रमाते मज़्कूरा **75 :** निकाह़ से या मिल्के यमीन से। इस आयत से कई मस्अले साबित हुए। **मस्अला :** निकाह़ में महर ज़रूरी है। **मस्अला :** अगर महर मुअ़य्यन न किया हो जब भी वाजिब होता है। **मस्अला :** महर माल ही होता है न कि ख़िदमत व ता'लीम वग़ैरा जो चीजें माल नहीं हैं। **मस्अला :** इतना क़लील जिस को माल न कहा जाए महर होने की सलाह़िय्यत नहीं रखता। ह़ज़रते जाबिर और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि महर की अदना मिक़्दार दस दिरहम हैं इस से कम नहीं हो सकता। **76 :** इस से ह़राम कारी मुराद है और इस ता'बीर (मा'ना बयान करने) में तम्बीह है कि ज़ानी मह़ज़ शह्वत रानी करता और मस्ती निकालता है और उस का फ़े'ल ग़रज़े सह़ीह़ और मक़्सदे ह़सन से ख़ाली होता है न औलाद ह़ासिल करना न नस्ल व नसब मह़फ़ूज़ रखना न अपने नफ़्स को ह़राम से बचाना इन में से कोई बात उस को मद्दे नज़र नहीं होती, वोह अपने नुत़्फ़े व माल को ज़ाएअ़ कर के दीनो दुन्या के ख़सारे में गिरिफ़्तार होता है। **77 :** ख़्वाह औ़रत महर मुक़र्रर शुदा से कम कर दे या बिल्कुल बख़्श दे या मर्द मिक़्दार महर की और ज़ियादा कर दे।

www.dawateislami.net

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ

कनीज़ें[78] और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है तुम में एक दूसरे से है तो उन से निकाह़ करो[79]

بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ

उन के मालिकों की इजाज़त से[80] और ह़स्बे दस्तूर उन के महर उन्हें दो[81] क़ैद में आतियां न

مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ

मस्ती निकालती और न यार बनाती[82] जब वोह क़ैद में आ जाएं[83] फिर बुरा काम करें

فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ

तो उन पर उस सज़ा की आधी है जो आज़ाद औ़रतों पर है[84] येह[85] उस के लिये जिसे तुम में से ज़िना का

الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾ يُرِيْدُ ع

अन्देशा है और सब्र करना तुम्हारे लिये बेहतर है[86] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ

है कि अपने अह़काम तुम्हारे लिये साफ़ बयान कर दे और तुम्हें अगलों की रविशें (त़ौर त़रीक़े) बतावे[87] और तुम पर अपनी रह़मत से

عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ قف وَ

रुजूअ़ फ़रमाए और अल्लाह इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और अल्लाह तुम पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाना चाहता है और

يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيْدُ

जो अपने मज़ों के पीछे पड़े हैं वोह चाहते हैं कि तुम सीधी राह से बहुत अलग हो जाओ[88] अल्लाह चाहता

78 : या'नी मुसल्मानों की ईमानदार कनीज़ें, क्यूं कि निकाह़ अपनी कनीज़ से नहीं होता वोह बिग़ैर निकाह़ ही मौला के लिये ह़लाल है, मा'ना येह हैं कि जो शख़्स हु़र्रए मोमिना से निकाह़ की मक्दिरत (त़ाक़त) व वुस्अ़त न रखता हो वोह ईमानदार कनीज़ से निकाह़ करे येह बात आ़र की नहीं है। **मस्अला :** जो शख़्स हु़र्रा से निकाह़ की वुस्अ़त रखता हो उस को भी मुसल्मान बांदी से निकाह़ करना जाइज़ है, येह मस्अला इस आयत में तो नहीं है मगर ऊपर की आयत "وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّاوَرَآءَ ذٰلِكُمْ" (और इन ह़राम की गई औ़रतों के सिवा जो रहीं वोह तुम्हें ह़लाल हैं) से साबित है। **मस्अला :** ऐसे ही किताबिया बांदी से भी निकाह़ जाइज़ है और मोमिना के साथ अफ़्ज़ल व मुस्तह़ब है जैसा कि इस आयत से साबित हुवा। **79 :** येह कोई आ़र की बात नहीं, फ़ज़ीलत ईमान से है इसी को काफ़ी समझो। **80 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बांदी को अपने मौला की इजाज़त के बिग़ैर निकाह़ का ह़क़ नहीं, इसी त़रह़ ग़ुलाम को **81 :** अगर्चे मालिक उन के महर के मौला हैं लेकिन बांदियों को देना मौला ही को देना है क्यूं कि ख़ुद वोह और जो कुछ उन के क़ब्ज़े में हो सब मौला की मिल्क है, या येह मा'ना हैं कि उन के मालिकों की इजाज़त से महर उन्हें दो। **82 :** या'नी अ़लानिया व ख़ुफ़्या किसी त़रह़ बदकारी नहीं करतीं **83 :** और शोहर दार हो जाएं **84 :** जो शोहर दार न हों या'नी पचास ताज़ियाने (कोड़े) क्यूं कि हु़र्रा के लिये सो ताज़ियाने हैं और बांदियों को रज्म नहीं किया जाता क्यूं कि "रज्म" क़ाबिले तन्सीफ़ (दो हि़स्सों में तक़्सीम के क़ाबिल) नहीं है। **85 :** बांदी से निकाह़ करना **86 :** बांदी के साथ निकाह़ करने से क्यूं कि उस से औलाद मम्लूक (ग़ुलाम) पैदा होगी। **87 :** अम्बिया व सालिह़ीन की **88 :** और ह़राम में मुब्तला हो कर उन्हीं की त़रह़ हो जाओ।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ اَنْ یُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِیْفًا ﴿۲۸﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

है कि तुम पर तख़्फ़ीफ़ (आसानी) करे[89] और आदमी कमज़ोर बनाया गया[90] ऐ ईमान वालो

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَیْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً

आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ[91] मगर येह कि कोई सौदा

عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۫ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِیْمًا ﴿۲۹﴾

तुम्हारी बाहमी रिज़ा मन्दी का हो[92] और अपनी जानें क़त्ल न करो[93] बेशक **अल्लाह** तुम पर मेहरबान है

وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِیْهِ نَارًا ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ

और जो ज़ुल्मो ज़ियादती से ऐसा करेगा तो अन्क़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और येह

عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرًا ﴿۳۰﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآىٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ

अल्लाह को आसान है अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमानअ़त है[94] तो तुम्हारे

عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَ نُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِیْمًا ﴿۳۱﴾ وَ لَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ

और गुनाह[95] हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे और उस की आरज़ू न करो जिस से **अल्लाह**

اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِیْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَ

ने तुम में एक को दूसरे पर बड़ाई दी[96] मर्दों के लिये उन की कमाई से हिस्सा है और

89 : और अपने फ़ज़्ल से अह़काम सहल (आसान) करे। **90 :** इस को औ़रतों से और शहवात से सब्र दुश्वार है। ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : औ़रतों में भलाई नहीं और उन की त़रफ़ से सब्र भी नहीं हो सकता, नेकों पर वोह ग़ालिब आती हैं, बद उन पर ग़ालिब आ जाते हैं। **91 :** चोरी, ख़ियानत, ग़स्ब, जुवा, सूद जितने ह़राम त़रीक़े हैं सब नाह़क़ हैं सब की मुमानअ़त है **92 :** वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है **93 :** ऐसे अफ़्आ़ल इख़्तियार कर के जो दुन्या या आख़िरत में हलाकत का बाइ़स हों, इस में मुसल्मानों को क़त्ल करना भी आ गया और मोमिन का क़त्ल ख़ुद अपना ही क़त्ल है क्यूं कि तमाम मोमिन नफ़्से वाह़िद की त़रह़ हैं। **मस्अला :** इस आयत से ख़ुदकुशी की ह़ुरमत भी साबित हुई और नफ़्स का इत्तिबाअ़ कर के ह़राम में मुब्तला होना भी अपने आप को हलाक करना है। **94 :** और जिन पर वई़द आई या'नी वा'दए अ़ज़ाब दिया गया मिस्ले क़त्ल, ज़िना, चोरी वग़ैरा के। **95 :** सग़ाइर। **मस्अला :** कुफ़्रो शिर्क तो न बख़्शा जाएगा अगर आदमी इसी पर मरा (**अल्लाह** की पनाह) बाक़ी तमाम गुनाह सग़ीरा हों या कबीरा **अल्लाह** की मशिय्यत में हैं चाहे उन पर अ़ज़ाब करे चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए। **96 :** ख़्वाह दुन्या की जिहत से या दीन की, कि आपस में ह़सद व बुग़्ज़ न पैदा हो। ह़सद निहायत बुरी सिफ़त है ह़सद वाला दूसरे को अच्छे ह़ाल में देखता है तो अपने लिये उस की ख़्वाहिश करता है और साथ में येह भी चाहता है कि उस का भाई इस ने'मत से मह़रूम हो जाए येह मम्नूअ़ है, बन्दे को चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला की तक़्दीर पर राज़ी रहे, उस ने जिस बन्दे को जो फ़ज़ीलत दी ख़्वाह दौलत व ग़ना की या दीनी मनासिब व मदारिज की, येह उस की ह़िक्मत है। **शाने नुज़ूल :** जब आयते मीरास में "لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَیَیْنِ" (बेटों का ह़िस्सा दो बेटियों बराबर है) नाज़िल हुवा और मय्यित के तर्के में मर्द का ह़िस्सा औ़रत से दूना मुक़र्रर किया गया तो मर्दों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि आख़िरत में नेकियों का सवाब भी हमें औ़रतों से दूना मिलेगा और औ़रतों ने कहा कि हमें उम्मीद है कि गुनाह का अ़ज़ाब हमें मर्दों से आधा होगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस को जो फ़ज़्ल दिया वोह ऐ़न ह़िक्मत है, बन्दे को चाहिये कि वोह उस की क़ज़ा पर राज़ी रहे।

لِلنِّسَآءِ نَصِیْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

औऱतों के लिये उन की कमाई से हिस्सा[97] और **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो बेशक **अल्लाह**

بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۳۲﴾ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ

सब कुछ जानता है और हम ने सब के लिये माल के मुस्तहिक़ बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां बाप

وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِیْنَ عَقَدَتْ اَیْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِیْبَهُمْ ؕ اِنَّ

और क़राबत वाले और वोह जिन से तुम्हारा हल्फ़ बंध चुका[98] उन्हें उन का हिस्सा दो बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدًا ﴿۳۳﴾ ع اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَی النِّسَآءِ بِمَا ع ٥ ٨ ٢

हर चीज़ **अल्लाह** के सामने है मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर[99] इस लिये कि

فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰی بَعْضٍ وَّبِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ

अल्लाह ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी[100] और इस लिये कि मर्दों ने उन पर अपने माल ख़र्च किये[101] तो नेक बख़्त औ़रतें

قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَیْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ

अदब वालियां हैं ख़ावन्द के पीछे हिफ़ाज़त रखती हैं[102] जिस त़रह **अल्लाह** ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो

فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ

तो उन्हें समझाओ[103] और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो[104] फिर अगर वोह तुम्हारे हुक्म में आ जाएं

97 : हर एक को उस के आ'माल की जज़ा। **शाने नुज़ूल :** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि हम भी अगर मर्द होते तो जिहाद करते और मर्दों की त़रह़ जान फ़िदा करने का सवाबे अ़ज़ीम पाते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि मर्द जिहाद से सवाब ह़ासिल कर सकते हैं तो औ़रतें शोहरों की इत़ाअ़त और पाक दामनी से सवाब ह़ासिल कर सकती हैं। **98 :** इस से अ़क़्दे मुवालात मुराद है, इस की सूरत येह है कि कोई मज्हूलुन्नसब शख़्स (जिस के नसब का कुछ पता न हो वोह) दूसरे से येह कहे कि तू मेरा मौला है मैं मर जाऊं तो तू मेरा वारिस होगा और मैं कोई जिनायत करूं तो तुझे दियत देनी होगी, दूसरा कहे मैं ने क़बूल किया इस सूरत में येह अ़क़्द सह़ीह़ हो जाता है और क़बूल करने वाला वारिस बन जाता है और दियत भी उस पर आ जाती है और दूसरा भी उसी की त़रह़ से मज्हूलुन्नसब हो और ऐसा ही कहे और येह भी क़बूल कर ले तो इन में से हर एक दूसरे का वारिस और उस की दियत का ज़िम्मादार होगा, येह अ़क़्द साबित है, सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم इस के क़ाइल हैं। **99 :** तो औ़रतों को उन की इत़ाअ़त लाज़िम और मर्दों को ह़क़ है कि वोह औ़रतों पर रिआ़या की त़रह़ हुक्मरानी करें और उन के मसालेह़ और तदाबीर और तादीब व ह़िफ़ाज़त की सर अन्जाम देही करें। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ ने अपनी बीबी ह़बीबा को किसी ख़त़ा पर एक त़मांचा मारा, उन के वालिद उन्हें सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए और उन के शोहर की शिकायत की, इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। **100 :** या'नी मर्दों को औ़रतों पर अ़क़्लो दानाई और जिहाद और नुबुव्वत व ख़िलाफ़त व इमामत व अज़ान व ख़ुत़्बा व जमाअ़त व जुमुआ़ व तक्बीर व तशरीक़ और ह़द व क़िसास की शहादत के और विरसे में दूने हिस्से और ता'सीब और निकाह़ व त़लाक़ के मालिक होने और नसबों के इन की त़रफ़ निस्बत किये जाने और नमाज़ व रोज़े के कामिल त़ौर पर क़ाबिल होने के साथ कि इन के लिये कोई ज़माना ऐसा नहीं है कि नमाज़ व रोज़े के क़ाबिल न हों और दाढ़ियों और इमामों के साथ फ़ज़ीलत दी। **101 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि औ़रतों के नफ़क़े मर्दों पर वाजिब हैं। **102 :** अपनी इफ़्फ़त और शोहरों के घर, माल और उन के राज़ की **103 :** उन्हें शोहर की ना फ़रमानी और उस के इत़ाअ़त न करने और उस के ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ न रखने के नताइज समझाओ जो दुन्या व आख़िरत में पेश आते हैं और **अल्लाह** के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाओ और बताओ कि हमारा तुम पर शरअ़न ह़क़ है और हमारी इत़ाअ़त तुम पर फ़र्ज़ है अगर इस पर भी न मानें **104 :** ज़र्बे ग़ैर शदीद

www.dawateislami.net

فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿۳۴﴾ وَ اِنْ خِفْتُمْ

तो उन पर ज़ियादती की कोई राह न चाहो बेशक **अल्लाह** बुलन्द बड़ा है[105] और अगर तुम को मियां बीबी के

شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ

झगड़े का ख़ौफ़ हो[106] तो एक पन्च मर्द वालों की त़रफ़ से भेजो और एक पन्च औ़रत वालों की त़रफ़ से[107] येह दोनों

يُّرِيْدَاۤ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

अगर सुल्ह़ कराना चाहेंगे तो **अल्लाह** उन में मेल (मुवाफ़क़त पैदा) कर देगा बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है[108]

وَ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ لَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّ بِذِی

और **अल्लाह** की बन्दगी करो और उस का शरीक किसी को न ठहराओ[109] और मां बाप से भलाई करो[110] और

الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ الْجَارِ ذِی الْقُرْبٰى وَ الْجَارِ الْجُنُبِ

रिश्तेदारों[111] और यतीमों और मोह़ताजों[112] और पास के हमसाए और दूर के हमसाए[113]

وَ الصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और करवट के साथी[114] और राहगीर[115] और अपनी बांदी ग़ुलाम से[116] बेशक **अल्लाह**

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ﴿۳۶﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ

को ख़ुश (पसन्द) नहीं आता कोई इतराने वाला बड़ाई मारने वाला[117] जो आप बुख़्ल करें और औरों

105 : और तुम गुनाह करते हो फिर भी वोह तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाता है तो तुम्हारी ज़ेरे दस्त औ़रतें अगर क़ुसूर करने के बा'द मुआ़फ़ी चाहें तो तुम्हें ब त़रीक़े औला मुआ़फ़ करना चाहिये और **अल्लाह** की क़ुदरत व बरतरी का लिह़ाज़ रख कर ज़ुल्म से मुज्तनिब (बचते) रहना चाहिये। **106 :** और तुम देखो कि समझाना, अ़लाह़दा सोना, मारना कुछ भी कारआमद न हुवा और दोनों की ना इत्तिफ़ाक़ी रफ़्अ़ न हुई। **107 :** क्यूं कि अक़ारिब अपने रिश्तेदारों के ख़ानगी ह़ालात से वाक़िफ़ होते हैं और ज़ौजैन के दरमियान मुवाफ़क़त की ख़्वाहिश भी रखते हैं और फ़रीक़ैन को उन पर इत़्मीनान भी होता है और उन से अपने दिल की बात कहने में तअम्मुल भी नहीं होता है। **108 :** जानता है कि ज़ौजैन में ज़ालिम कौन है। **मस्अला :** पन्चों (किसी भी बिरादरी में फ़ैसले के लिये मुक़र्रर कर्दा अफ़राद) को ज़ौजैन में तफ़रीक़ कर देने का इख़्तियार नहीं। **109 :** न जानदार को न बेजान को न उस की रबूबिय्यत में न उस की इ़बादत में। **110 :** अदबो ता'ज़ीम के साथ और उन की ख़िदमत में मुस्तइद रहना और उन पर ख़र्च करने में कमी न करो। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तीन मरतबा फ़रमाया : उस की नाक ख़ाक आलूद हो। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : किस की **या रसूलल्लाह**? फ़रमाया : जिस ने बूढ़े मां बाप पाए या उन में से एक को पाया और जन्नती न हो गया। **111 :** ह़दीस शरीफ़ में है : रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक करने वालों की उ़म्र दराज़ और रिज़्क़ वसीअ़ होता है। (بخاری و مسلم) **112 ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं और यतीम की सर परस्ती करने वाला ऐसे क़रीब होंगे जैसे अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली। (بخاری شریف) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेवा और मिस्कीन की इमदाद व ख़बर गीरी करने वाला मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह के मिस्ल है। **113 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया की जिब्रील मुझे हमेशा हमसायों के साथ एह़सान करने की ताकीद करते रहे इस ह़द तक कि गुमान होता था कि इन को वारिस क़रार दें। (بخاری و مسلم) **114 :** या'नी बीबी या जो सोह़बत में रहे या रफ़ीक़े सफ़र हो या साथ पढ़े या मजलिस व मस्जिद में बराबर बैठे **115 :** और मुसाफ़िर व मेहमान। **ह़दीस :** जो **अल्लाह** और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखे उसे चाहिये कि मेहमान का इकराम करे। (بخاری و مسلم) **116 :** कि उन्हें त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ न दो और सख़्त कलामी न करो और खाना कपड़ा ब क़दरे ज़रूरत दो। **ह़दीस :** रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जन्नत में बद ख़ुल्क़ दाख़िल न होगा। (ترمذی) **117 :** मुतकब्बिर ख़ुदबीं जो रिश्तेदारों और हमसायों को ज़लील समझे।

www.dawateislami.net

النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ط وَاَعْتَدْنَا

से बुख़्ल के लिये कहें[118] और **अल्लाह** ने जो उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है उसे छुपाएं[119] और काफ़िरों के लिये

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ

हम ने ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है और वोह जो अपने माल लोगों के दिखावे को ख़र्च करते हैं[120]

وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ

और ईमान नहीं लाते **अल्लाह** और न क़ियामत पर और जिस का मुसाहिब (साथी व मुशीर) शैतान हुवा[121]

قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

तो कितना बुरा मुसाहिब है और उन का क्या नुक़्सान था अगर ईमान लाते **अल्लाह** और क़ियामत पर

وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ط وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ

और **अल्लाह** के दिये में से उस की राह में ख़र्च करते[122] और **अल्लाह** उन को जानता है **अल्लाह** एक ज़र्रा भर

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا

ज़ुल्म नहीं फ़रमाता और अगर कोई नेकी हो तो उसे दूनी करता और अपने पास से बड़ा सवाब

عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ

देता है तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं[123] और ऐ महबूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान

شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ ط يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى

وقف النبي عليه السلام

बना कर लाएं[124] उस दिन तमन्ना करेंगे वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रसूल की ना फ़रमानी की काश उन्हें मिट्टी में

118 : बुख़्ल येह है कि खुद खाए दूसरे को न दे। "शुह" येह है कि न खाए न खिलाए, **सख़ा** येह है कि खुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए, **जूद** येह है कि आप न खाए दूसरे को खिलाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद के हक़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की सिफ़त बयान करने में बुख़्ल करते और छुपाते थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इल्म को छुपाना मज़्मूम है। **119 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो। **मस्अला : अल्लाह** की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है और इस लिये आदमी को अपनी हैसिय्यत के लाइक़ जाइज़ लिबासों में बेहतर पहनना मुस्तह़ब है। **120 :** बुख़्ल के बा'द सर्फ़े बे जा की बुराई बयान फ़रमाई कि जो लोग मह़ज़ नुमूदो नुमाइश और नाम आवरी के लिये ख़र्च करते हैं और रिज़ाए इलाही उन्हें मक़्सूद नहीं होती जैसे कि मुश्रिकीन व मुनाफ़िक़ीन, येह भी उन्हीं के हुक्म में हैं जिन का हुक्म ऊपर गुज़र गया। **121 :** दुन्या व आख़िरत में। दुन्या में तो इस त़रह़ कि वोह शैत़ानी काम कर के उस को खुश करता रहा और आख़िरत में इस त़रह़ कि हर काफ़िर एक शैत़ान के साथ आतिशी ज़न्जीर में जकड़ा हुवा होगा (خازن) **122 :** इस में सरासर उन का नफ़्अ़ ही था। **123 :** उस नबी को और वोह अपनी उम्मत के ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ और तमाम अफ़्आ़ल पर गवाही दें क्यूं कि अम्बिया अपनी उम्मतों के अफ़्आ़ल से बा ख़बर होते हैं। **124 :** कि तुम नबिय्युल अम्बिया और सारा आ़लम तुम्हारी उम्मत।

www.dawateislami.net

ع ٦

بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا یَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِیْثًا۠ ﴿٤٢﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

दबा कर ज़मीन बराबर कर दी जाए और कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे[125] ऐ ईमान वालो

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا

नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ[126] जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और न नापाकी की

اِلَّا عَابِرِیْ سَبِیْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ

हालत में बे नहाए मगर मुसाफ़िरी में[127] और अगर तुम बीमार हो[128] या सफ़र में या तुम में

اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآىٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَیَمَّمُوْا

से कोई क़ज़ाए हाजत से आया[129] या तुम ने औरतों को छुवा[130] और पानी न पाया[131] तो पाक मिट्टी

صَعِیْدًا طَیِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَیْدِیْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا

से तयम्मुम करो[132] तो अपने मुंह और हाथों का मस्ह् करो[133] बेशक अल्लाह मुआफ़ फ़रमाने वाला

125 : क्यूं कि जब वोह अपनी ख़ता से मुकरेंगे और क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे और हम ने ख़ता न की थी तो उन के मूंहों पर मोहर लगा दी जाएगी और उन के आ'ज़ा व जवारेह़ को गोयाई दी जाएगी, वोह उन के ख़िलाफ़ शहादत देंगे। **126 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने एक जमाअ़ते सह़ाबा की दा'वत की, उस में खाने के बा'द शराब पेश की गई, बा'ज़ों ने पी क्यूं कि उस वक़्त तक शराब ह़राम न हुई थी, फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इमाम नशे में ''قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ وَاَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ'' पढ़ गए और दोनों जगह ''لَا'' तर्क कर दिया और नशे में ख़बर न हुई और मा'ना फ़ासिद हो गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें नशे की ह़ालत में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया तो मुसल्मानों ने नमाज़ के अवक़ात में शराब तर्क कर दी इस के बा'द शराब बिल्कुल ह़राम कर दी गई। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि आदमी नशे की ह़ालत में कलिमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर नहीं होता इस लिये कि ''قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ'' में दोनों जगह ''لَا'' का तर्क कुफ़्र है, लेकिन इस ह़ालत में हुज़ूर ने इस पर कुफ़्र का हुक्म न फ़रमाया बल्कि कुरआने पाक में उन को ''یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا'' से ख़ित़ाब फ़रमाया गया। **127 :** जब कि पानी न पाओ तयम्मुम कर लो **128 :** और पानी का इस्ति'माल ज़रर करता हो **129 :** येह किनाया है बे वुज़ू होने से **130 :** या'नी जिमाअ़ किया **131 :** उस के इस्ति'माल पर क़ादिर न होने, ख़्वाह पानी मौजूद न होने के बाइस या दूर होने के सबब या उस के ह़ासिल करने का आला न होने के सबब या सांप, दरिन्दा, दुश्मन वग़ैरा कोई मानेअ़ होने के बाइस **132 :** येह हुक्म मरीज़ों, मुसाफ़िरों, जनाबत और ह़दस वालों को शामिल है जो पानी न पाएं या उस के इस्ति'माल से आ़जिज़ हों। (مدارک) **मस्अला :** हैज़ो निफ़ास से त़हारत के लिये भी पानी से आ़जिज़ होने की सूरत में तयम्मुम जाइज़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है। **133 तरीक़ए तयम्मुम :** तयम्मुम करने वाला दिल से पाकी ह़ासिल करने की निय्यत करे, तयम्मुम में निय्यत बिल इज्माअ़ शर्त़ है क्यूं कि वोह नस्स से साबित है। जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे गर्द, रेता, पथ्थर इन सब पर तयम्मुम जाइज़ है ख़्वाह पथ्थर पर ग़ुबार भी न हो लेकिन पाक होना इन चीज़ों का शर्त़ है। तयम्मुम में दो ज़र्बें हैं : एक मरतबा हाथ मार कर चेहरे पर फेर लें दूसरी मरतबा हाथों पर। **मस्अला :** पानी के साथ त़हारत अस्ल है और तयम्मुम पानी से आ़जिज़ होने की ह़ालत में इस का पूरा पूरा क़ाइम मक़ाम है, जिस त़रह़ ह़दस पानी से ज़ाइल होता है इसी त़रह़ तयम्मुम से, ह़त्ता कि एक तयम्मुम से बहुत से फ़राइज़ो नवाफ़िल पढ़े जा सकते हैं। **मस्अला :** तयम्मुम करने वाले के पीछे ग़ुस्ल और वुज़ू करने वाले की इक़्तिदा सह़ीह़ है। **शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लिक़ में जब लश्करे इस्लाम शब को एक बयाबान में उतरा जहां पानी न था और सुब्ह़ वहां से कूच करने का इरादा था वहां उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रत आइशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का हार गुम हो गया, उस की तलाश के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने वहां इक़ामत फ़रमाई, सुब्ह़ हुई तो पानी न था, अल्लाह तआ़ला ने आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई। उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि ऐ आले अबू बक्र ! येह तुम्हारी पहली ही बरकत नहीं है या'नी तुम्हारी बरकत से मुसल्मानों को बहुत आसानियां हुईं और बहुत फ़वाइद पहुंचे, फिर ऊंट उठाया गया तो उस के नीचे हार मिला। हार गुम होने और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के न बताने में बहुत ह़िक्मतें हैं, ह़ज़रते सिद्दीक़ा के हार की वज्ह से क़ियाम इन की फ़ज़ीलतो मन्ज़िलत का मुश्इर (ज़ाहिर करने वाला) है, सह़ाबा का जुस्तजू फ़रमाना, इस में हिदायत है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत मोमिनीन की सआ़दत है और फिर हुक्मे तयम्मुम होना मा'लूम होता है कि हुज़ूर की अज़्वाज की ख़िदमत का ऐसा सिला है जिस से क़ियामत तक मुसल्मान मुन्तफ़ेअ़ होते रहेंगे, سُبْحٰنَ اللّٰه।

www.dawateislami.net

غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ

बख़्शने वाला है क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन को किताब से एक हिस्सा मिला[134] गुमराही मोल

الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ

लेते हैं[135] और चाहते हैं[136] कि तुम भी राह से बहक जाओ और **अल्लाह** ख़ूब जानता है तुम्हारे दुश्मनों को[137]

وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۟ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا

और **अल्लाह** काफ़ी है वाली[138] और **अल्लाह** काफ़ी है मददगार कुछ यहूदी कलामों (इर्शादाते ख़ुदावन्दी)

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ

को उन की जगह से फेरते हैं[139] और[140] कहते हैं हम ने सुना और न माना और[141] सुनिये

غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ

आप सुनाए न जाएं[142] और राइना कहते हैं[143] ज़बानें फेर कर[144] और दीन में ता'ने के लिये[145] और अगर वोह[146]

قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

कहते कि हम ने सुना और माना और हुज़ूर हमारी बात सुनें और हुज़ूर हम पर नज़र फ़रमाएं तो उन के लिये भलाई और रास्ती में ज़ियादा होता

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾ يٰۤاَيُّهَا

लेकिन उन पर तो **अल्लाह** ने ला'नत की उन के कुफ़्र के सबब तो यक़ीन नहीं रखते मगर थोड़ा[147] ऐ

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ

किताब वालो ईमान लाओ उस पर जो हम ने उतारा तुम्हारे साथ वाली किताब[148] की तस्दीक़ फ़रमाता क़ब्ल इस के

---

134 : वोह येह कि तौरैत से उन्हों ने सिर्फ़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत को पहचाना और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का जो उस में बयान था उस हिस्से से वोह महरूम रहे और आप की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत रिफ़ाआ़ बिन ज़ैद और मालिक बिन दुख़्शुम यहूदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह दोनों जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बात करते तो ज़बान टेढ़ी कर के बोलते **135 :** हुज़ूर की नुबुव्वत का इन्कार कर के। **136 :** ऐ मुसल्मानो ! **137 :** और उस ने तुम्हें भी उन की अ़दावत पर ख़बरदार कर दिया तो चाहिये कि उन से बचते रहो। **138 :** और जिस का कारसाज़ **अल्लाह** हो उसे क्या अन्देशा। **139 :** जो तौरैत शरीफ़ में **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त में फ़रमाए **140 :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم उन्हें कुछ हुक्म फ़रमाते हैं तो **141 :** कहते हैं : **142 :** येह कलिमा ज़ू जिहतैन है (या'नी) मदह़ व ज़म के दोनों पहलू रखता है। **मदह़** का पहलू तो येह है कि कोई ना गवार बात आप के सुनने में न आए और **ज़म** का पहलू येह कि आप को सुनना नसीब न हो। **143 :** बा वुजूदे कि इस कलिमे के साथ ख़िताब की मुमानअ़त की गई है, क्यूं कि येह उन की ज़बान में ख़राब मा'ना रखता है। **144 :** ह़क़ से बात़िल की त़रफ़। **145 :** कि वोह अपने रफ़ीक़ों से कहते थे कि हम हुज़ूर की बदगोई करते हैं अगर आप नबी होते तो आप इस को जान लेते **अल्लाह** तआ़ला ने उन के ख़ुब्से ज़माइर को ज़ाहिर फ़रमा दिया। **146 :** बजाए इन कलिमात के अहले अदब के त़रीक़े पर **147 :** इतना कि **अल्लाह** ने उन्हें पैदा किया और रोज़ी दी और इस क़दर काफ़ी नहीं जब तक कि तमाम ईमानिय्यात को न मानें और सब की तस्दीक़ न करें। **148 :** तौरैत।

www.dawateislami.net

اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ

कि हम बिगाड़ दें कुछ मूंहों को[149] तो उन्हें फेर दें उन की पीठ की त़रफ़ या उन्हें ला'नत करें जैसी ला'नत की

اَصْحٰبَ السَّبْتِؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۴۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ

हफ़्ते वालों पर[150] और ख़ुदा का हुक्म हो कर रहे बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि

یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ ۚ وَ مَنْ یُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है[151] और जिस ने ख़ुदा का शरीक ठहराया

فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِیْمًا ﴿۴۸﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْؕ

उस ने बड़े गुनाह का तूफ़ान बांधा क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ख़ुद अपनी सुथराई बयान करते हैं[152]

بَلِ اللّٰهُ یُزَكِّیْ مَنْ یَّشَآءُ وَ لَا یُظْلَمُوْنَ فَتِیْلًا ﴿۴۹﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ

बल्कि **अल्लाह** जिसे चाहे सुथरा करे और उन पर ज़ुल्म न होगा दानए ख़ुरमा के डोरे बराबर[153] देखो कैसा

یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَؕ وَ كَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۵۰﴾ؑ اَلَمْ تَرَ اِلَى

अल्लाह पर झूट बांध रहे हैं[154] और येह काफ़ी है सरीह़ (खुला) गुनाह क्या तुम ने वोह न देखे

الَّذِیْنَ اُوْتُوْا نَصِیْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ یُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ

जिन्हें किताब का एक हिस्सा मिला ईमान लाते हैं बुत और शैत़ान पर

149 : आंख, नाक, अब्रू वग़ैरा नक़्शा मिटा कर **150 :** इन दोनों बातों में से एक ज़रूर लाज़िम है और ला'नत तो उन पर ऐसी पड़ी कि दुन्या उन्हें मल्ऊ़न कहती है, यहां मुफ़स्सिरीन के चन्द अक़्वाल हैं : बा'ज़ इस वई़द का वुक़ूअ़ दुन्या में बताते हैं, बा'ज़ आख़िरत में, बा'ज़ कहते हैं कि ला'नत हो चुकी और वई़द वाक़ेअ़ हो गई, बा'ज़ कहते हैं : अभी इन्तिज़ार है, बा'ज़ का क़ौल है कि येह वई़द उस सूरत में थी जब कि यहूद में से कोई ईमान न लाता और चूंकि बहुत से यहूद ईमान ले आए इस लिये शर्त़ नहीं पाई गई और वई़द उठ गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम जो आ'ज़म उ़लमाए यहूद से हैं उन्हों ने मुल्के शाम से वापस आते हुए राह में येह आयत सुनी और अपने घर पहुंचने से पहले इस्लाम ला कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! मैं नहीं ख़याल करता था कि मैं अपना मुंह पीठ की त़रफ़ फिर जाने से पहले और चेहरे का नक़्शा मिट जाने से क़ब्ल आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो सकूंगा या'नी इस ख़ौफ़ से ईमान लाने में जल्दी की क्यूं कि तौरैत शरीफ़ से उन्हें आप के रसूले बरह़क़ होने का यक़ीनी इ़ल्म था, इसी ख़ौफ़ से ह़ज़रते का'ब अह़बार जो उ़लमाए यहूद में बड़ी मन्ज़िलत रखते थे ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से येह आयत सुन कर मुसल्मान हो गए। **151 :** मा'ना येह हैं कि जो कुफ़्र पर मरे उस की बख़्शिश नहीं इस के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है और जिस ने कुफ़्र न किया हो वोह ख़्वाह कितना ही गुनाहगार, मुरतकिबे कबाइर हो और बे तौबा भी मर जाए तो उस के लिये ख़ुलूद नहीं उस की मग़्फ़िरत **अल्लाह** की मशिय्यत में है चाहे मुआ़फ़ फ़रमाए या उस के गुनाहों पर अ़ज़ाब करे फिर अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। इस आयत में यहूद को ईमान की तरग़ीब है और इस पर भी दलालत है कि यहूद पर उ़र्फ़े शरअ़ में मुश्रिक का इत्लाक़ दुरुस्त है। **152 :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपने आप को **अल्लाह** का बेटा और उस का प्यारा बताते थे और कहते थे कि यहूदो नसारा के सिवा कोई जन्नत में न दाख़िल होगा। इस आयत में बताया गया कि इन्सान का दीनदारी और सलाह़ व तक़्वा और क़ुर्ब व मक़्बूलिय्यत का मुद्दई होना और अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़ करना काम नहीं आता। **153 :** या'नी बिल्कुल ज़ुल्म न होगा वोही सज़ा दी जाएगी जिस के वोह मुस्तह़िक़ हैं। **154 :** अपने आप को बे गुनाह और मक़्बूले बारगाह बता कर।

www.dawateislami.net

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और काफ़िरों को कहते हैं कि येह मुसल्मानों से ज़ियादा राह

سَبِيْلًا ﴿۵۱﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ

पर हैं येह हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और जिसे ख़ुदा ला'नत करे तो हरगिज़

تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿۵۲﴾ؕ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ

उस का कोई यार न पाएगा[155] क्या मुल्क में उन का कुछ हिस्सा है[156] ऐसा हो तो लोगों

النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿۵۳﴾ۙ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

को तिल भर न दें या लोगों से ह़सद करते हैं[157] उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया[158]

فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾

तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और ह़िक्मत अ़ता फ़रमाई और उन्हें बड़ा मुल्क दिया[159]

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾

तो उन में कोई उस पर ईमान लाया[160] और किसी ने उस से मुंह फेरा[161] और दोज़ख़ काफ़ी है भड़कती आग[162]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ

जिन्हों ने हमारी आयतों का इन्कार किया अ़न्क़रीब हम उन को आग में दाख़िल करेंगे जब कभी उन की खालें

جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें बेशक अल्लाह

155 शाने नुज़ूल : येह आयत का'ब बिन अशरफ़ वग़ैरा उ़लमाए यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सत्तर सुवारों की जम्इय्यत ले कर क़ुरैश से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ जंग करने पर ह़ल्फ़ लेने पहुंचे, क़ुरैश ने इन से कहा चूंकि तुम किताबी हो इस लिये तुम सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ ज़ियादा क़ुर्ब रखते हो हम कैसे इत़्मीनान करें कि तुम हम से फ़रेब के साथ नहीं मिल रहे हो अगर इत़्मीनान दिलाना हो तो हमारे बुतों को सज्दा करो तो उन्हों ने शैत़ान की इत़ाअ़त कर के बुतों को सज्दा किया, फिर अबू सुफ़्यान ने कहा कि हम ठीक राह पर हैं या मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) ? का'ब बिन अशरफ़ ने कहा : तुम ही ठीक राह पर हो। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन पर ला'नत फ़रमाई कि उन्हों ने ह़ुज़ूर की अ़दावत में मुश्रिकीन के बुतों तक को पूजा। **156 :** यहूद कहते थे कि हम मुल्क व नुबुव्वत के ज़ियादा ह़क़दार हैं तो हम कैसे अ़रबों का इत्तिबाअ़ करें ! अल्लाह तआ़ला ने इन के इस दा'वे को झुटला दिया कि इन का मुल्क में ह़िस्सा ही क्या है और अगर बिलफ़र्ज़ कुछ होता तो इन का बुख़्ल इस दरजे का है कि **157 :** नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और अहले ईमान से **158 :** नुबुव्वत व नुसरत व ग़लबा व इ़ज़्ज़त वग़ैरा ने'मतें। **159 :** जैसा कि ह़ज़रते यूसुफ़ और ह़ज़रते दावूद और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمُ السَّلَام को, तो फिर अगर अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर करम किया तो इस से क्यूं जलते और ह़सद करते हो। **160 :** जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के साथ वाले सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **161 :** और ईमान से मह़रूम रहा **162 :** उस के लिये जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान न लाए।

www.dawateislami.net

عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ ع

ग़ालिब हिक्मत वाला है और जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न्क़रीब हम उन्हें

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ

बाग़ों में ले जाएंगे जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे उन के लिये वहां

اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ

सुथरी बीबियां हैं[163] और हम उन्हें वहां दाख़िल करेंगे जहां साया ही साया होगा[164] बेशक **अल्लाह** तुम्हें हुक्म देता है कि

تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا

अमानतें जिन की हैं उन्हीं के सिपुर्द करो[165] और येह कि जब तुम लोगों में फ़ैसला करो तो इन्साफ़ के

بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾

साथ फ़ैसला करो[166] बेशक **अल्लाह** तुम्हें क्या ही ख़ूब नसीहत फ़रमाता है बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ

ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का[167] और उन का जो तुम में हुकूमत

مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ

वाले हैं[168] फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे **अल्लाह** व रसूल के हुज़ूर रुजूअ़ करो अगर

163 : जो हर नजासत व गन्दगी और क़ाबिले नफ़रत चीज़ से पाक हैं। **164 :** या'नी सायए जन्नत जिस की राहत व आसाइश, रसाइये फ़ह्म व इहात़ए बयान से बाला तर है। **165 :** अस्ह़ाबे अमानात और हुक्काम को अमानतें दियानत दारी के साथ ह़क़दार को अदा करने और फ़ैसलों में इन्साफ़ करने का हुक्म दिया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि फ़राइज़ भी **अल्लाह** तआला की अमानतें हैं इन की अदा भी इस हुक्म में दाख़िल है। **166 :** फ़रीक़ैन में से अस्लन किसी की रिआ़यत न हो। उ़लमा ने फ़रमाया कि ह़ाकिम को चाहिये कि पांच बातों में फ़रीक़ैन के साथ बराबर सुलूक करे (1) अपने पास आने में जैसे एक को मौक़अ़ दे दूसरे को भी दे। (2) निशस्त दोनों को एक सी दे (3) दोनों की त़रफ़ बराबर मुतवज्जेह रहे (4) कलाम सुनने में हर एक के साथ एक ही त़रीक़ा रखे (5) फ़ैसला देने में ह़क़ की रिआ़यत करे जिस का दूसरे पर ह़क़ हो पूरा पूरा दिलाए। ह़दीस शरीफ़ में है : इन्साफ़ करने वालों को क़ुर्बे इलाही में नूरी मिम्बर अ़त़ा होंगे। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के शाने नुज़ूल में इस वाक़िए का ज़िक्र किया है कि फ़त्ह़े मक्का के वक़्त सय्यिदे आ़लम ﷺ ने उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा ख़ादिमे का'बा से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की कलीद (चाबी) ले ली, फिर जब येह आयत नाज़िल हुई तो आप ने वोह कलीद उन्हें वापस दी और फ़रमाया कि अब येह कलीद हमेशा तुम्हारी नस्ल में रहेगी, इस पर उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा ह़जबी इस्लाम लाए। अगर्चे येह वाक़िआ़ थोड़े थोड़े तग़य्युरात के साथ बहुत से मुह़द्दिसीन ने ज़िक्र किया है मगर अह़ादीस पर नज़र करने से येह क़ाबिले वुसूक़ (क़ाबिले यक़ीन) नहीं मा'लूम होता क्यूं कि इब्ने अ़ब्दुल्लाह और इब्ने मन्दा और इब्ने असीर की रिवायतों से मा'लूम होता है कि उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा 8 हि. में मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो चुके थे और इन्हों ने फ़त्ह़े मक्का के रोज़ कुन्जी ख़ुद अपनी ख़ुशी से पेश की थी, बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीसों से येही मुस्तफ़ाद होता है। **167 :** कि रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** ही की इत़ाअ़त है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **168 :** इसी ह़दीस में हुज़ूर फ़रमाते हैं : जिस ने अमीर की इत़ाअ़त की उस ने मेरी इत़ाअ़त की और जिस ने अमीर की ना फ़रमानी की उस ने मेरी ना फ़रमानी की, इस आयत से साबित हुवा कि मुस्लिम उमरा व हुक्काम की इत़ाअ़त वाजिब है जब तक

www.dawateislami.net

ع ٨ ٥

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ ع اَلَمْ

अल्लाह व क़ियामत पर ईमान रखते हो[169] येह बेहतर है और इस का अन्जाम सब से अच्छा क्या तुम ने

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ

उन्हें न देखा जिन का दा'वा है कि वोह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उस पर जो तुम

مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ

से पहले उतरा फिर चाहते हैं कि शैत़ान को अपना पन्च बनाएं और उन को तो हुक्म येह था कि

يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾ وَاِذَا

उसे अस्लन न मानें और इब्लीस येह चाहता है कि उन्हें दूर बहका दे[170] और जब

قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ

उन से कहा जाए कि अल्लाह की उतारी किताब और रसूल की त़रफ़ आओ तो तुम देखोगे कि मुनाफ़िक़

يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾ ج فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا

तुम से मुंह मोड़ कर फिर जाते हैं कैसी होगी जब उन पर कोई उफ़्ताद (मुसीबत) पड़े[171] बदला उस का

قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖۗ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا

जो उन के हाथों ने आगे भेजा[172] फिर ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों अल्लाह की क़सम खाते कि हमारा मक़्सूद तो भलाई

वोह ह़क़ के मुवाफ़िक़ रहें और अगर ह़क़ के ख़िलाफ़ हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त नहीं। **169 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अह़काम तीन क़िस्म के हैं : **एक** वोह जो ज़ाहिर किताब या'नी क़ुरआन से साबित हों, **एक** वोह जो ज़ाहिर ह़दीस से, **एक** वोह जो क़ुरआन व ह़दीस की त़रफ़ ब त़रीक़े क़ियास रुजूअ़ करने से। "اُولِی الْاَمْر" में इमाम, अमीर, बादशाह, ह़ाकिम, क़ाज़ी सब दाख़िल हैं। ख़िलाफ़ते कामिला तो ज़मानए रिसालत के बा'द तीस साल रही मगर ख़िलाफ़ते नाक़िसा ख़ुलफ़ाए अ़ब्बासिया में भी थी और अब तो इमामत भी नहीं पाई जाती क्यूं कि इमाम के लिये क़ुरैश में से होना शर्त़ है और येह बात अक्सर मक़ामात में मा'दूम है, लेकिन सल्त़नत व इमारत बाक़ी है और चूंकि सुल्त़ान व अमीर भी اُولِی الْاَمْر में दाख़िल हैं इस लिये हम पर इन की इत़ाअ़त भी लाज़िम है। **170 शाने नुज़ूल :** बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ का एक यहूदी से झगड़ा था यहूदी ने कहा : चलो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से तै़ करा लें, मुनाफ़िक़ ने ख़याल किया कि हुज़ूर तो बे रिआ़यत मह़ज़ ह़क़ फ़ैसला देंगे उस का मत़लब ह़ासिल न होगा इस लिये उस ने बा वुजूद मुद्दइये ईमान होने के येह कहा कि का'ब बिन अशरफ़ यहूदी को पन्च बनाओ (क़ुरआने करीम में त़ाग़ूत से इस का'ब बिन अशरफ़ के पास फ़ैसला ले जाना मुराद है) यहूदी जानता था कि का'ब रिश्वत ख़ोर है इस लिये उस ने बा वुजूद हम मज़्हब होने के उस को पन्च (फ़ैसला करने वाला) तस्लीम न किया, नाचार (मजबूरन) मुनाफ़िक़ को फ़ैसले के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर आना पड़ा। हुज़ूर ने जो फ़ैसला दिया वोह यहूदी के मुवाफ़िक़ हुवा, यहां से फ़ैसला सुनने के बा'द फिर मुनाफ़िक़ यहूदी के दरपै हुवा और उसे मजबूर कर के ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ के पास लाया, यहूदी ने आप से अ़र्ज़ किया कि मेरा इस का मुआ़मला सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तै़ फ़रमा चुके लेकिन येह हुज़ूर के फ़ैसले से राज़ी नहीं आप से फ़ैसला चाहता है, फ़रमाया कि हां मैं अभी आ कर इस का फ़ैसला करता हूं, येह फ़रमा कर मकान में तशरीफ़ ले गए और तलवार ला कर उस को क़त्ल कर दिया और फ़रमाया : जो अल्लाह और उस के रसूल के फ़ैसले से राज़ी न हो उस का मेरे पास येह फ़ैसला है। **171 :** जिस से भागने बचने की कोई राह न हो, जैसी कि बिश्र मुनाफ़िक़ पर पड़ी कि उस को ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने क़त्ल कर दिया। **172 :** कुफ़्र व निफ़ाक़ और मआ़सी, जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़ैसले से ए'राज़ कर के किया।

www.dawateislami.net

وَّتَوْفِيْقًا ﴿۶۲﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ فَاَعْرِضْ

और मेल ही था[173] उन के दिलों की तो बात **अल्लाह** जानता है तो तुम उन से चश्म पोशी

عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيْغًا ﴿۶۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

करो और उन्हें समझाओ और उन के मुआ़मले में उन से रसा (असर करने वाली) बात कहो[174] और हम ने कोई

مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

रसूल न भेजा मगर इस लिये कि **अल्लाह** के हुक्म से उस की इत़ाअ़त की जाए[175] और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें[176]

جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ

तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत

تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ

तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं[177] तो ऐ मह़बूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसल्मान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें

بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا

ह़ाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से

تَسْلِيْمًا ﴿۶۵﴾ وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ

मान लें[178] और अगर हम उन पर फ़र्ज़ करते कि अपने आप को क़त्ल कर दो या अपने घरबार छोड़ कर

173 : और वोह उ़ज़्र व नदामत कुछ काम न दे जैसा कि बिश्र मुनाफ़िक़ के मारे जाने के बा'द उस के औलिया उस के ख़ून का बदला त़लब करने आए और बे जा मा'ज़िरतें करने और बातें बनाने लगे। **अल्लाह** तआ़ला ने उस के ख़ून का कोई बदला नहीं दिलाया क्यूं कि वोह कुश्तनी ही (क़त्ल ही के लाइक़) था। **174 :** जो उन के दिल में असर कर जाए। **175 :** जब कि रसूल का भेजना ही इस लिये है कि वोह मुत़ाअ़ (लाइक़े इत़ाअ़त) बनाए जाएं और उन की इत़ाअ़त फ़र्ज़ हो तो जो उन के हुक्म से राज़ी न हो उस ने रिसालत को तस्लीम न किया वोह काफ़िर वाजिबुल क़त्ल है। **176 :** मा'सियत व ना फ़रमानी कर के **177 :** इस से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का वसीला और आप की शफ़ाअ़त कार बरआरी (ह़ाजत रवाई) का ज़रीआ़ है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर हुवा और रौज़ए शरीफ़ा की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ करने लगा : **या रसूलल्लाह**! जो आप ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا" मैं ने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म किया और मैं आप के हुज़ूर में **अल्लाह** से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने ह़ाज़िर हुवा तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये, इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तेरी बख़्शिश की गई। इस से चन्द मसाइल मा'लूम हुए। **मस्अला :** **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़े ह़ाजत के लिये उस के मक़्बूलों को वसीला बनाना ज़रीअ़ए काम्याबी है। **मस्अला :** क़ब्र पर ह़ाजत के लिये जाना भी "جَآءُوْكَ" में दाख़िल और "ख़ैरुल क़ुरून" का मा'मूल है। **मस्अला :** बा'दे वफ़ात मक़्बूलाने ह़क़ को "**या**" के साथ निदा करना जाइज़ है। **मस्अला :** मक़्बूलाने ह़क़ मदद फ़रमाते हैं और इन की दुआ़ से ह़ाजत रवाई होती है। **178 :** मा'ना येह हैं कि जब तक आप के फ़ैसले और हुक्म को सिद्क़े दिल से न मान लें मुसल्मान नहीं हो सकते। سُبْحٰنَ اللّٰه! इस से रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान मा'लूम होती है। **शाने नुज़ूल :** पहाड़ से आने वाला पानी जिस से बाग़ों में आब रसानी करते हैं उस में एक अन्सारी का ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से झगड़ा हुवा, मुआ़मला सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर पेश किया गया, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ ज़ुबैर! तुम अपने बाग़ को पानी दे कर अपने पड़ोसी की त़रफ़ पानी छोड़ दो, येह अन्सारी को गिरां गुज़रा और उस की ज़बान से येह कलिमा निकला कि ज़ुबैर आप के फूफीज़ाद भाई हैं, बा वुजूदे

دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ

निकल जाओ[179] तो उन में थोड़े ही ऐसा करते और अगर वोह करते जिस बात की उन्हें नसीहत दी जाती

بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ۙ﴿۶۶﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا

है[180] तो उस में उन का भला था और ईमान पर ख़ूब जमना और ऐसा होता तो ज़रूर हम उन्हें अपने पास से बड़ा

عَظِيْمًا ۙ﴿۶۷﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۶۸﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

सवाब देते और ज़रूर उन को सीधी राह की हिदायत करते और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने

فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ

तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया[181] और सिद्दीक़[182]

وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ؕ﴿۶۹﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ

और शहीद[183] और नेक लोग[184] और येह क्या ही अच्छे साथी हैं येह अल्लाह का

مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿۷۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ

फ़ज़्ल है और अल्लाह काफ़ी है जानने वाला ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो[185]

فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿۷۱﴾ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ

फिर दुश्मन की तरफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकट्ठे चलो और तुम में कोई वोह है कि ज़रूर देर लगाएगा[186]

कि फ़ैसले में हज़रते ज़ुबैर को अन्सारी के साथ एहसान की हिदायत फ़रमाई गई थी लेकिन अन्सारी ने इस की क़द्र न की तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ुबैर को हुक्म दिया कि अपने बाग़ को सैराब कर के पानी रोक लो इन्साफ़न क़रीब वाला ही पानी का मुस्तहिक़ है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **179 :** जैसा कि बनी इसराईल को मिस्र से निकल जाने और तौबा के लिये अपने आप को क़त्ल का हुक्म दिया था । **शाने नुज़ूल :** साबित बिन क़ैस बिन शम्मास से एक यहूदी ने कहा कि अल्लाह ने हम पर अपना क़त्ल और घरबार छोड़ना फ़र्ज़ किया था हम उस को बजा लाए, साबित ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह हम पर फ़र्ज़ करता तो हम भी ज़रूर बजा लाते इस पर येह आयत नाज़िल हुई । **180 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इताअ़त और आप की फ़रमां बरदारी की । **181 :** तो अम्बिया के मुख़्लिस फ़रमां बरदार जन्नत में उन की सोहबत व दीदार से महरूम न होंगे । **182 :** "सिद्दीक़" अम्बिया के सच्चे मुत्तबिईन को कहते हैं जो इख़्लास के साथ उन की राह पर क़ाइम रहें, मगर इस आयत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अफ़ाज़िल अस्हाब मुराद हैं जैसे कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ । **183 :** जिन्हों ने राहे ख़ुदा में जानें दीं । **184 :** वोह दीनदार जो हक़्क़ुल इबाद और हक़्क़ुल्लाह दोनों अदा करें और उन के अहवाल व आ'माल और ज़ाहिरो बातिन अच्छे और पाक हों । **शाने नुज़ूल :** हज़रते सौबान सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ कमाले महब्बत रखते थे जुदाई की ताब न थी, एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रन्जीदा हाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदल गया था, हुज़ूर ने फ़रमाया : आज रंग क्यूं बदला हुवा है ? अ़र्ज़ किया : न मुझे कोई बीमारी है न दर्द, बजुज़ इस के कि जब हुज़ूर सामने नहीं होते तो इन्तिहा दरजे की वहशत व परेशानी हो जाती है, जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस तरह दीदार पा सकूंगा, आप आ'ला तरीन मक़ाम में होंगे मुझे अल्लाह तआला ने अपने करम से जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आली तक रसाई कहां, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तस्कीन दी गई कि बा वुजूद फ़र्क़े मनाज़िल के फ़रमां बरदारों को बारयाबी और मइय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा । **185 :** दुश्मन के घात से बचो और उसे अपने ऊपर मौक़अ़ न दो, एक क़ौल येह भी है कि हथियार साथ रखो । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दुश्मन के मुक़ाबले में अपनी हिफ़ाज़त की तदबीरें जाइज़ हैं । **186 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन ।

فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ

फिर अगर तुम पर कोई उफ़्ताद (मुसीबत) पड़े तो कहे ख़ुदा का मुझ पर एहसान था कि मैं उन के साथ

شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ

हाज़िर न था और अगर तुम्हें अल्लाह का फ़ज़्ल मिले[187] तो ज़रूर कहे[188] गोया

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

तुम में उस में कोई दोस्ती न थी ऐ काश मैं उन के साथ होता तो बड़ी मुराद पाता

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ

तो उन्हें अल्लाह की राह में लड़ना चाहिये जो दुन्या की ज़िन्दगी बेच कर आख़िरत लेते हैं

وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا

और जो अल्लाह की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए तो अन्क़रीब हम उसे बड़ा

عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ

सवाब देंगे और तुम्हें क्या हुवा कि न लड़ो अल्लाह की राह में[189] और कमज़ोर

الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ

मर्दों और औ़रतों और बच्चों के वासिते़ जो येह दुआ़ कर रहे हैं कि ऐ रब हमारे हमें इस बस्ती

هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۙۚ وَّاجْعَلْ

से निकाल जिस के लोग ज़ालिम हैं और हमें अपने पास से कोई हि़मायती दे दे और हमें

لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

अपने पास से कोई मददगार दे दे ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं[190]

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ

और कुफ़्फ़ार शैता़न की राह में लड़ते हैं तो शैता़न के दोस्तों

187 : तुम्हारी फ़त्ह़ हो और ग़नीमत हाथ आए 188 : वोही जिस के मक़ूले से येह साबित होता है कि 189 : या'नी जिहाद फ़र्ज़ है और इस के तर्क का तुम्हारे पास कोई उ़ज़्र नहीं 190 : इस आयत में मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दी गई ताकि वोह उन कमज़ोर मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार के पन्जए ज़ुल्म से छुड़ाएं जिन्हें मक्कए मुकर्रमा में मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया था और त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं दे रहे थे और उन की औ़रतों और बच्चों तक पर बे रह़माना मज़ालिम करते थे और वोह लोग उन के हाथों में मजबूर थे, इस ह़ालत में वोह अल्लाह तआ़ला से अपनी ख़लासी और मददे इलाही की दुआएं करते थे। येह दुआ़ क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन का

www.dawateislami.net

الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿۷۶﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ

से[191] लड़ो बेशक शैतान का दाव कमज़ोर है[192] क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन से कहा गया

كُفُّوْۤا اَيْدِيَكُمْ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ

अपने हाथ रोक लो[193] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़

الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ

किया गया[194] तो उन में बा'ज़े लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे **अल्लाह** से डरे या इस से भी ज़ाइद[195]

وَ قَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْ لَاۤ اَخَّرْتَنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ

और बोले ऐ रब हमारे तूने हम पर जिहाद क्यूं फ़र्ज़ कर दिया[196] थोड़ी मुद्दत तक हमें और जीने

قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۫ وَ لَا

दिया होता तुम फ़रमा दो कि दुन्या का बरत्ना थोड़ा है[197] और डर वालों के लिये आख़िरत अच्छी और तुम

تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ

पर तागे बराबर ज़ुल्म न होगा[198] तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी[199] अगर्चे

فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ

मज़बूत क़ल्ओं में हो और उन्हें कोई भलाई पहुंचे[200] तो कहें येह **अल्लाह** की तरफ़ से

اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ

है और उन्हें कोई बुराई पहुंचे[201] तो कहें येह हुज़ूर की तरफ़ से आई[202] तुम फ़रमा दो सब **अल्लाह** की

वली व नासिर किया और उन्हें मुश्रिकीन के हाथों से छुड़ाया और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह कर के उन की ज़बर दस्त मदद फ़रमाई। **191 :** ए'लाए दीन और रिज़ाए इलाही के लिये **192 :** या'नी काफ़िरों का, और वोह **अल्लाह** की मदद के मुक़ाबले में क्या चीज़ है। **193 :** क़िताल से। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा में मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं देते थे, हिजरत से क़ब्ल अस्हाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की एक जमाअत ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमें काफ़िरों से लड़ने की इजाज़त दीजिये उन्हों ने हमें बहुत सताया है और बहुत ईज़ाएं देते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि उन के साथ जंग करने से हाथ रोको, नमाज़ और ज़कात जो तुम पर फ़र्ज़ है वोह अदा करते रहो। **फ़ाएदा :** इस से साबित हुवा कि नमाज़ व ज़कात जिहाद से पहले फ़र्ज़ हुईं। **194 :** मदीनए तृय्यिबा में और बद्र की हाज़िरी का हुक्म दिया गया। **195 :** येह ख़ौफ़ तृब्ई था कि इन्सान की जिबिल्लत (फ़ित्रत) है कि मौत व हलाकत से घबराता और डरता है। **196 :** इस की हिक्मत क्या है ? येह सुवाल वज्हे हिक्मत दरयाफ़्त करने के लिये था न ब तृरीक़े ए'तिराज़, इसी लिये उन को इस सुवाल पर तौबीख़ व ज़ज्र न फ़रमाया गया बल्कि जवाब तस्कीन बख़्श अ़ता फ़रमा दिया गया। **197 :** ज़ाइल व फ़ानी है। **198 :** और तुम्हारे अज्र कम न किये जाएंगे तो जिहाद में अन्देशा व तअम्मुल न करो। **199 :** और इस से रिहाई पाने की कोई सूरत नहीं और जब मौत ना गुज़ीर है तो बिस्तर पर मर जाने से राहे ख़ुदा में जान देना बेहतर है कि येह सआदते आख़िरत का सबब है। **200 :** अरज़ानी व कसरते पैदावार वग़ैरा की **201 :** गिरानी क़हूत-साली वग़ैरा **202 :** येह हाल मुनाफ़िक़ीन का है कि जब उन्हें कोई सख़्ती पेश आती तो उस को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तरफ़ निस्बत करते और कहते जब से येह आए हैं ऐसी ही सख़्तियां पेश आया करती हैं।

www.dawateislami.net

عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝٧٨ مَا

तरफ़ से है[203] तो उन लोगों को क्या हुवा कोई बात समझते मा'लूम ही नहीं होते ऐ सुनने वाले

اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ

तुझे जो भलाई पहुंचे वोह **अल्लाह** की तरफ़ से है[204] और जो बुराई पहुंचे वोह तेरी अपनी तरफ़ से है[205]

وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝٧٩ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हें सब लोगों के लिये रसूल भेजा[206] और **अल्लाह** काफ़ी है गवाह[207] जिस ने रसूल का हुक्म माना

فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝٨٠ ؕ وَ

बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना[208] और जिस ने मुंह फेरा[209] तो हम ने तुम्हें उन के बचाने को न भेजा और

يَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ

कहते हैं हम ने हुक्म माना[210] फिर जब तुम्हारे पास से निकल कर जाते हैं तो उन में एक गुरौह जो कह गया था

الَّذِیْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ

उस के ख़िलाफ़ रात को मन्सूबे गांठता है और **अल्लाह** लिख रखता है उन के रात के मन्सूबे[211] तो ऐ महबूब तुम उन से चश्म पोशी करो और **अल्लाह**

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٨١ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ

पर भरोसा रखो और **अल्लाह** काफ़ी है काम बनाने को तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में[212] और अगर वोह

203 : गिरानी हो या अरज़ानी, क़हत़ हो या फ़राख़ हाली, रन्ज हो या राहत, आराम हो या तक्लीफ़, फ़त्ह़ हो या शिकस्त, ह़क़ीक़त में सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है। **204 :** उस का फ़ज़्लो रह़मत है **205 :** कि तूने ऐसे गुनाहों का इरतिकाब किया कि तू इस का मुस्तह़िक़ हुवा। **मस्अला :** यहां बुराई की निस्बत बन्दे की त़रफ़ मजाज़ है और ऊपर जो मज़्कूर हुवा वोह ह़क़ीक़त थी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बदी की निस्बत बन्दे की त़रफ़ बर सबीले अदब है। ख़ुलासा येह कि बन्दा जब फ़ाइले ह़क़ीक़ी की त़रफ़ नज़र करे तो हर चीज़ को उसी की त़रफ़ से जाने और जब अस्बाब पर नज़र करे तो बुराइयों को अपनी शामते नफ़्स के सबब से समझे। **206 :** अ़रब हों या अ़जम आप तमाम ख़ल्क़ के लिये रसूल बनाए गए और कुल जहान आप का उम्मती किया गया, येह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जलालते मन्सब और रिफ़्अ़ते मन्ज़िलत का बयान है **207 :** आप की रिसालते आ़म्मा पर, तो सब पर आप की इत़ाअ़त और आप का इत्तिबाअ़ फ़र्ज़ है। **208 शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मेरी इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की उस ने **अल्लाह** से मह़ब्बत की। इस पर आज कल के गुस्ताख़ बद दीनों की त़रह़ उस ज़माने के बा'ज़ मुनाफ़िक़ों ने कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم येह चाहते हैं कि हम इन्हें रब मान लें जैसा नसारा ने ईसा बिन मरयम को रब माना, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन के रद में येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कलाम की तस्दीक़ फ़रमा दी कि बेशक रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** की इत़ाअ़त है। **209 :** और आप की इत़ाअ़त से ए'राज़ किया। **210 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ईमान व इत़ाअ़त शिआ़री का इज़्हार करते थे और कहते थे : हम हुज़ूर पर ईमान लाए हैं, हम ने हुज़ूर की तस्दीक़ की है, हुज़ूर जो हमें हुक्म फ़रमाएं उस की इत़ाअ़त हम पर लाज़िम है। **211 :** उन के आ'माल नामों में और इस का उन्हें बदला देगा। **212 :** और इस के उ़लूम व ह़िकम को नहीं देखते कि इस ने अपनी फ़साह़त से तमाम ख़ल्क़ को आ़जिज़ कर दिया है और ग़ैबी ख़बरों से मुनाफ़िक़ीन के अह़वाल और उन के मक्रो कैद का इफ़्शाए राज़ कर दिया है और अव्वलीनो आख़िरीन की ख़बरें दी हैं।

www.dawateislami.net

مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿۸۲﴾ وَ اِذَا جَآءَهُمْ

ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते[213] और जब उन के पास

اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ

कोई बात इत्मीनान[214] या डर[215] की आती है उस का चरचा कर बैठते हैं[216] और अगर उस में रसूल

وَ اِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا

और अपने ज़ी इख़्तियार लोगों[217] की तरफ़ रुजूअ़ लाते[218] तो ज़रूर उन से उस की हक़ीक़त जान लेते येह जो बात में काविश करते हैं[219] और अगर

فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۳﴾ فَقَاتِلْ

तुम पर **अल्लाह** का फ़ज़्ल[220] और उस की रह़मत[221] न होती तो ज़रूर तुम शैत़ान के पीछे लग जाते[222] मगर थोड़े[223] तो ऐ मह़बूब

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى

अल्लाह की राह में लड़ो[224] तुम तक्लीफ़ न दिये जाओगे मगर अपने दम की[225] और मुसल्मानों को आमादा करो[226] क़रीब है

اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ

कि **अल्लाह** काफ़िरों की सख़्ती रोक दे[227] और **अल्लाह** की आंच (गिरिफ़्त) सब से सख़्त तर है और उस का अ़ज़ाब सब

213 : और ज़मानए आयिन्दा के मुतअ़ल्लिक़ ग़ैबी ख़बरें मुत़ाबिक़ न होतीं और जब ऐसा न हुवा और क़ुरआने पाक की ग़ैबी ख़बरें से आयिन्दा पेश आने वाले वाक़िआ़त मुत़ाबक़त करते चले गए तो साबित हुवा कि यक़ीनन वोह किताब **अल्लाह** की त़रफ़ से है। नीज़ उस के मज़ामीन में भी बाहम इख़्तिलाफ़ नहीं इसी त़रह फ़साह़तो बलाग़त में भी क्यूं कि मख़्लूक़ का कलाम फ़सीह़ भी हो तो सब यक्सां नहीं होता कुछ बलीग़ होता है तो कुछ रकीक होता है जैसा कि शुअ़रा और ज़बान दानों के कलाम में देखा जाता है कि कोई बहुत मलीह़ (दिलचस्प) और कोई निहायत फीका। येह **अल्लाह** तआ़ला ही के कलाम की शान है कि इस का तमाम कलाम फ़साह़तो बलाग़त की आ'ला मर्तबत पर है। **214 :** या'नी फ़त्ह़े इस्लाम **215 :** या'नी मुसल्मानों की हज़ीमत की ख़बर **216 :** जो मफ़्सदे (फ़ित्ने फ़साद) का मूजिब होता है कि मुसल्मानों की फ़त्ह़ की शोहरत से तो कुफ़्फ़ार में जोश पैदा होता है और शिकस्त की ख़बर से मुसल्मानों की ह़ौसला शिकनी होती है। **217 :** अकाबिर सह़ाबा जो साह़िबे राय और साह़िबे बसीरत हैं **218 :** और ख़ुद कुछ दख़्ल न देते **219 मस्अला :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस आयत में दलील है जवाज़े क़ियास पर और येह भी मा'लूम होता है कि एक इल्म तो वोह है जो ब नस्से क़ुरआनो ह़दीस ह़ासिल हो, और एक इल्म वोह है जो क़ुरआनो ह़दीस से इस्तिम्बात़ व क़ियास के ज़रीए ह़ासिल होता है। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि उमूरे दीनिया में हर शख़्स को दख़्ल देना जाइज़ नहीं, जो अह्ल हो उस को तफ़्वीज़ (सिपुर्द) करना चाहिये। **220 :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत **221 :** नुज़ूले क़ुरआन **222 :** और कुफ़्रो ज़लाल में गिरिफ़्तार रहते **223 :** वोह लोग जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत और क़ुरआने पाक के नुज़ूल से पहले आप पर ईमान लाए जैसे ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और वरक़ा बिन नौफ़ल और क़ैस बिन साइदा **224 :** ख़्वाह कोई तुम्हारा साथ दे या न दे और तुम अकेले रह जाओ **225 शाने नुज़ूल :** बद्रे सुग़रा की जंग जो अबू सुफ़्यान से ठहर चुकी थी जब उस का वक़्त आ पहुंचा तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वहां जाने के लिये लोगों को दा'वत दी, बा'ज़ों पर येह गिरां हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि वोह जिहाद न छोड़ें अगर्चे तन्हा हों **अल्लाह** आप का नासिर है **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है येह हुक्म पा कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم बद्रे सुग़रा की जंग के लिये रवाना हुए सिर्फ़ सत्तर सुवार हमराह थे। **226 :** उन्हें जिहाद की तरग़ीब दो और बस। **227 :** चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि मुसल्मानों का येह छोटा सा लश्कर काम्याब आया और कुफ़्फ़ार ऐसे मरऊ़ब हुए कि वोह मुसल्मानों के मुक़ाबिल मैदान में न आ सके। **फ़ाएदा :** इस आयत से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم शुजाअ़त में सब से आ'ला हैं कि आप को तन्हा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल तशरीफ़ ले जाने का हुक्म हुवा और आप आमादा हो गए।

www.dawateislami.net

تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ

से कर्रा (ज़बर दस्त सख़्त) जो अच्छी सिफ़ारिश करे[228] उस के लिये उस में से हिस्सा है[229] और

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

जो बुरी सिफ़ारिश करे उस के लिये उस में से हिस्सा है[230] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ

क़ादिर है और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या

النصف

رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

वोही कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है[231] **अल्लाह** है कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं

لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ

और वोह ज़रूर तुम्हें इकठ्ठा करेगा क़ियामत के दिन जिस में कुछ शक नहीं और **अल्लाह** से ज़ियादा किस की बात

ع ٨

حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾ ع فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا

सच्ची[232] तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए[233] और **अल्लाह** ने उन्हें औंधा कर दिया[234] उन के

كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

कौतकों (बुरे आ'माल) के सबब[235] क्या येह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ जिसे **अल्लाह** ने गुमराह किया और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

228 : किसी से किसी की, कि उस को नफ़्अ़ पहुंचाए या किसी मुसीबत व बला से ख़लास कराए और हो वोह मुवाफ़िक़े शरअ़ तो **229 :** अज्र व जज़ा **230 :** अ़ज़ाब व सज़ा **231 मसाइले सलाम :** सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना फ़र्ज़ और जवाब में अफ़्ज़ल येह है कि सलाम करने वाले के सलाम पर कुछ बढ़ाए मसलन पहला शख़्स اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहे तो दूसरा शख़्स وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰه कहे और अगर पहले ने وَرَحْمَةُ اللّٰهِ भी कहा था तो येह وَبَرَكَاتُهٗ और बढ़ाए, पस इस से ज़ियादा सलाम व जवाब में और कोई इज़ाफ़ा नहीं है। काफ़िर, गुमराह, फ़ासिक़ और इस्तिन्जा करते मुसल्मानों को सलाम न करें। जो शख़्स ख़ुत्बा या तिलावते क़ुरआन या ह़दीस या मुज़ाकरए इ़ल्म या अज़ान या तक्बीर में मश्ग़ूल हो, इस ह़ाल में उन को सलाम न किया जाए और अगर कोई सलाम करे तो उन पर जवाब देना लाज़िम नहीं और जो शख़्स शत्‌रन्ज, चोसर, ताश, गन्जिफ़ा वग़ैरा कोई ना जाइज़ खेल खेल रहा हो या गाने बजाने में मश्ग़ूल हो या पाख़ाने या ग़ुस्ल ख़ाने में हो या बे उ़ज़्र बरहना हो उस को सलाम न किया जाए। **मस्अला :** आदमी जब अपने घर में दाख़िल हो तो बीबी को सलाम करे। हिन्दूस्तान में येह बड़ी ग़लत़ रस्म है कि ज़न व शो के इतने गहरे तअ़ल्लुक़ात होते हुए भी एक दूसरे को सलाम से मह़रूम करते हैं बा वुजूदे कि सलाम जिस को किया जाता है उस के लिये सलामती की दुआ़ है। **मस्अला :** बेहतर सुवारी वाला कमतर सुवारी वाले को और कमतर सुवारी वाला पैदल चलने वाले को और पैदल बैठे हुए को और छोटे बड़े को और थोड़े ज़ियादा को सलाम करें। **232 :** या'नी उस से ज़ियादा सच्चा कोई नहीं, इस लिये कि उस का किज़्ब ना मुम्किन व मुह़ाल है क्यूं कि किज़्ब ऐब है और हर ऐब **अल्लाह** पर मुह़ाल है वोह जुम्ला उ़यूब से पाक है। **233 शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन की एक जमाअ़त सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में जाने से रुक गई थी उन के बाब में अस्ह़ाबे किराम के दो फ़िर्क़े हो गए, एक फ़िर्क़ा क़त्ल पर मुसिर था और एक उन के क़त्ल से इन्कार करता था, इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई। **234 :** कि वोह हुज़ूर के साथ जिहाद में जाने से मह़रूम रहे। **235 :** उन के कुफ़्रो इरतिदाद और मुश्रिकीन के साथ मिलने के बाइस तो चाहिये कि मुसल्मान भी उन के कुफ़्र में इख़्तिलाफ़ न करें।

www.dawateislami.net

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِیْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ

तो हरगिज़ तू उस के लिये कोई राह न पाएगा वोह तो येह चाहते हैं कि कहीं तुम भी काफ़िर हो जाओ जैसे वोह काफ़िर हुए तो तुम सब

سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِیَآءَ حَتّٰى یُهَاجِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ

एक से हो जाओ तो उन में किसी को अपना दोस्त न बनाओ[236] जब तक **अल्लाह** की राह में घरबार न छोड़ें[237]

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا

फिर अगर वोह मुंह फेरें[238] तो उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो और उन में किसी को

مِنْهُمْ وَلِیًّا وَّلَا نَصِیْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَیْنَكُمْ

न दोस्त ठहराओ न मददगार[239] मगर वोह जो ऐसी क़ौम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) रखते हैं कि तुम में

وَبَیْنَهُمْ مِّیْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ

उन में मुआ़हदा है[240] या तुम्हारे पास यूं आए कि उन के दिलों में सकत (त़ाक़त) न रही कि तुम से लड़ें[241] या

یُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَیْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ

अपनी क़ौम से लड़ें[242] और **अल्लाह** चाहता तो ज़रूर उन्हें तुम पर क़ाबू देता तो वोह बेशक तुम से लड़ते[243] फिर अगर

اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ یُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَیْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ

वोह तुम से किनारा करें और न लड़ें और सुल्ह़ का पयाम डालें तो **अल्लाह** ने तुम्हें उन पर कोई

عَلَیْهِمْ سَبِیْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِیْنَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّاْمَنُوْكُمْ

राह न रखी[244] अब कुछ और तुम ऐसे पाओगे जो येह चाहते हैं कि तुम से भी अमान में रहें

وَیَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِیْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ

और अपनी क़ौम से भी अमान में रहें[245] जब कभी उन की क़ौम उन्हें फ़साद[246] की त़रफ़ फेरे तो उस पर औंधे गिरते हैं फिर अगर

236 : इस आयत में कुफ़्फ़ार के साथ मुवालात मम्नूअ़ की गई ख़्वाह वोह ईमान का इज़्हार ही करते हों **237 :** और इस से उन के ईमान की तह़क़ीक़ न हो ले। **238 :** ईमान व हिजरत से और अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहें। **239 :** और अगर तुम्हारी दोस्ती का दा'वा करें और मदद के लिये तय्यार हों तो उन की मदद न क़बूल करो। **240 :** येह इस्तिस्ना क़त्ल की त़रफ़ राजेअ़ है क्यूं कि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के साथ मुवालात किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और अ़ह्द से येह अ़ह्द मुराद है कि उस क़ौम को और जो उस क़ौम से जा मिले उस को अम्न है जैसा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले जाते वक़्त हिलाल बिन उ़वैमिर अस्लमी से मुआ़मला किया था। **241 :** अपनी क़ौम के साथ हो कर **242 :** तुम्हारे साथ हो कर **243 :** लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाल दिया और मुसल्मानों को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा। **244 :** कि तुम उन से जंग करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह हुक्म आयत "اُقْتُلُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ" (उन्हें पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल करो) से मन्सूख़ हो गया। **245 शाने नुज़ूल :** मदीनए त़य्यिबा में क़बीलए असद व ग़त़फ़ान के लोग रियाअन कलिमए इस्लाम पढ़ते और अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते और जब उन में से कोई अपनी क़ौम से मिलता और वोह लोग उन से कहते कि तुम किस चीज़ पर ईमान लाए तो वोह लोग कहते कि बन्दरों बिच्छूओं वग़ैरा पर, इस अन्दाज़ से उन का मत़लब येह था कि

يَعْتَزِلُوْكُمْ وَ يُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ يَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَ

वोह तुम से किनारा न करें और[247] सुल्ह की गरदन न डालें और अपने हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो और

اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَ اُولٰٓىٕكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

जहां पाओ क़त्ल करो और येह हैं जिन पर हम ने तुम्हें सरीह़ (खुला)

مُّبِيْنًا (٩١) وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَ مَنْ قَتَلَ

इख़्तियार दिया[248] और मुसल्मानों को नहीं पहुंचता कि मुसल्मान का ख़ून करे मगर हाथ बहक कर[249] और जो किसी मुसल्मान को

مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّ دِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ

ना दानिस्ता क़त्ल करे तो उस पर एक मम्लूक मुसल्मान (मुस्लिम ग़ुलाम) का आज़ाद करना है और ख़ूंबहा कि मक़्तूल के लोगों को सिपुर्द की जाए[250] मगर

اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ

येह कि वोह मुआफ़ कर दें फिर अगर वोह[251] उस क़ौम से हो जो तुम्हारी दुश्मन है[252] और खुद मुसल्मान है तो सिर्फ़ एक

رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَ اِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ

मम्लूक मुसल्मान का आज़ाद करना[253] और अगर वोह उस क़ौम में हो कि तुम में उन में मुआ़हदा है तो उस के लोगों को

مُّسَلَّمَةٌ اِلٰۤى اَهْلِهٖ وَ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

ख़ूं-बहा सिपुर्द की जाए और एक मुसल्मान मम्लूक आज़ाद करना[254] तो जिस का हाथ न पहुंचे[255] वोह लगातार

شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ٘ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (٩٢)

दो महीने के रोज़े रखे[256] येह अल्लाह के यहां उस की तौबा है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है

दोनों त़रफ़ से रस्मो राह रखें और किसी जानिब से उन्हें नुक़्सान न पहुंचे, येह लोग मुनाफ़िक़ीन थे इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **246 :** शिर्क या मुसल्मानों से जंग **247 :** जंग से बाज़ आ कर **248 :** उन के कुफ़्र, ग़द्र और मुसल्मानों की ज़रर रसानी के सबब **249 :** या'नी मोमिन काफ़िर की मिस्ल मुबाहुद्दम नहीं है जिस का हुक्म ऊपर की आयत में मज़्कूर हो चुका तो मुसल्मान का क़त्ल करना बिग़ैर ह़क़ के रवा नहीं और मुसल्मान की शान नहीं कि उस से किसी मुसल्मान का क़त्ल सरज़द हो बजुज़ इस के कि ख़त़ाअन हो इस त़रह़ कि मारता था शिकार को या काफ़िरे ह़र्बी को और हाथ बहक कर ज़द पड़ी मुसल्मान पर या येह कि किसी शख़्स को काफ़िरे ह़र्बी जान कर मारा और था वोह मुसल्मान। **250 :** या'नी उस के वारिसों को दी जाए वोह उसे मिस्ल मीरास के तक़्सीम कर लें। दियत मक़्तूल के तर्के के हुक्म में है इस से मक़्तूल का दैन भी अदा किया जाएगा, वसिय्यत भी जारी की जाएगी। **251 :** जो ख़त़ाअन क़त्ल किया गया **252 :** या'नी काफ़िर **253 :** लाज़िम है और दियत नहीं **254 :** या'नी अगर मक़्तूल ज़िम्मी हो तो इस का वोही हुक्म है जो मुसल्मान का। **255 :** या'नी वोह किसी ग़ुलाम का मालिक न हो **256 :** लगातार रोज़ा रखना येह है कि इन रोज़ों के दरमियान रमज़ान और अय्यामे तशरीक़ न हों और दरमियान में रोज़ों का सिलसिला ब उ़ज़्र या बिला उ़ज़्र किसी त़रह़ तोड़ा न जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अय्याश बिन रबीआ़ मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह क़ब्ले हिजरत मक्कए मुकर्रमा में इस्लाम लाए और घर वालों के ख़ौफ़ से मदीनए त़य्यिबा जा कर पनाह गुज़ीं हुए, उन की मां को इस से बहुत बे क़रारी हुई और उस ने ह़ारिस और अबू जह्ल अपने दोनों बेटों से जो अय्याश के सोतेले भाई थे येह कहा कि ख़ुदा की क़सम न मैं साए में बैठूं न खाना चखूं न पानी पियूं जब तक तुम अय्याश को मेरे पास न ले आओ। वोह दोनों ह़ारिस बिन ज़ैद बिन अबी उनैसा को साथ ले कर तलाश के लिये निकले और मदीनए त़य्यिबा पहुंच कर अय्याश को पा लिया और उन को मां की जज़अ़ फ़ज़अ़ बे क़रारी और

www.dawateislami.net

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ

और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है कि मुद्दतों उस में रहे[257] और **अल्लाह** ने

اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

उस पर ग़ज़ब किया और उस पर ला'नत की और उस के लिये तय्यार रखा बड़ा अ़ज़ाब ऐ ईमान वालो जब

ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ

तुम जिहाद को चलो तो तह़क़ीक़ कर लो और जो तुम्हें सलाम करे उस से येह न

السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ

कहो कि तू मुसलमान नहीं[258] तुम जीती दुन्या का अस्बाब चाहते हो तो **अल्लाह** के पास

مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ

बहुतेरी ग़नीमतें हैं पहले तुम भी ऐसे ही थे[259] फिर **अल्लाह** ने तुम पर एह़सान किया[260] तो तुम पर तह़क़ीक़ करना लाज़िम है[261]

खाना पीना छोड़ने की ख़बर सुनाई और **अल्लाह** को दरमियान दे कर येह अ़ह्द किया कि हम दीन के बाब में तुझ से कुछ न कहेंगे, इस त़रह़ वोह अ़य्याश को मदीने से निकाल लाए और मदीने से बाहर आ कर उस को बांधा और हर एक ने सो सो कोड़े मारे फिर मां के पास लाए तो मां ने कहा कि मैं तेरी मुश्कें न खोलूंगी जब तक तू अपना दीन तर्क न करे, फिर अ़य्याश को धूप में बंधा हुवा डाल दिया और इन मुसीबतों में मुब्तला हो कर अ़य्याश ने उन का कहा मान लिया और अपना दीन तर्क कर दिया तो ह़ारिस बिन ज़ैद ने अ़य्याश को मलामत की और कहा तू इसी दीन पर था अगर येह ह़क़ था तो तूने ह़क़ को छोड़ दिया और अगर बात़िल था तो तू बात़िल दीन पर रहा, येह बात अ़य्याश को बड़ी ना गवार गुज़री और अ़य्याश ने कहा कि मैं तुझ को अकेला पाऊंगा तो ख़ुदा की क़सम ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। इस के बा'द अ़य्याश इस्लाम लाए और उन्हों ने मदीने हिजरत की और इन के बा'द ह़ारिस भी इस्लाम लाए और हिजरत कर के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे लेकिन उस रोज़ अ़य्याश मौजूद न थे न उन्हें ह़ारिस के इस्लाम की इत्तिलाअ़ हुई। क़ुबा के क़रीब अ़य्याश ने ह़ारिस को देख लिया और क़त्ल कर दिया तो लोगों ने कहा कि ऐ अ़य्याश ! तुम ने बहुत बुरा किया ह़ारिस इस्लाम ला चुके थे, इस पर अ़य्याश को बहुत अफ़्सोस हुवा और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया और कहा कि मुझे ता वक़्ते क़त्ल उन के इस्लाम लाने की ख़बर ही न हुई, इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **257 :** मुसल्मान को अ़मदन क़त्ल करना सख़्त गुनाह और अशद कबीरा है। ह़दीस शरीफ़ में है कि दुन्या का हलाक होना **अल्लाह** के नज़्दीक एक मुसल्मान के क़त्ल होने से हलका है। फिर येह क़त्ल अगर ईमान की अ़दावत से हो या क़ातिल उस क़त्ल को ह़लाल जानता हो तो येह कुफ़्र भी है। **फ़ाएदा :** خُلُود मुद्दते दराज़ के मा'ना में भी मुस्ता'मल है और क़ातिल अगर सिर्फ़ दुन्यवी अ़दावत से मुसल्मान को क़त्ल करे और उस के क़त्ल को मुबाह़ न जाने जब भी इस की जज़ा मुद्दते दराज़ के लिये जहन्नम है। **फ़ाएदा :** خُلُود का लफ़्ज़ मुद्दते त़वीला के मा'ना में होता है तो क़ुरआने करीम में इस के साथ लफ़्ज़े اَبَد मज़्कूर नहीं होता और कुफ़्फ़ार के ह़क़ में خُلُود ब मा'ना दवाम (हमेशगी) आया है तो इस के साथ اَبَد भी ज़िक्र फ़रमाया गया है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मक़ीस बिन सुबाबा के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस के भाई क़बीलए बनी नज्जार में मक़्तूल पाए गए थे और क़ातिल मा'लूम न था, बनी नज्जार ने ब हुक्मे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم दियत अदा कर दी, इस के बा'द मक़ीस ने ब इग़्वाए शैत़ान एक मुसल्मान को बे ख़बरी में क़त्ल कर दिया और दियत के ऊंट ले कर मक्का को चलता हो गया और मुरतद हो गया येह इस्लाम में पहला शख़्स है जो मुरतद हुवा। **258 :** या जिस में इस्लाम की अ़लामत व निशानी पाओ उस से हाथ रोको और जब तक उस का कुफ़्र साबित न हो जाए उस पर हाथ न डालो। अबू दावूद व तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जब कोई लश्कर रवाना फ़रमाते हुक्म देते कि अगर तुम मस्जिद देखो या अज़ान सुनो तो क़त्ल न करना। **मस्अला :** अक्सर फ़ुक़हा ने फ़रमाया कि अगर यहूदी या नसरानी येह कहे कि मैं मोमिन हूं तो उस को मोमिन न माना जाएगा क्यूं कि वोह अपने अ़क़ीदे ही को ईमान कहता है और अगर "لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" कहे जब भी उस के मुसल्मान होने का हुक्म न किया जाएगा जब तक कि वोह अपने दीन से बेज़ारी का इज़्हार और उस के बात़िल होने का ए'तिराफ़ न करे। इस से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी कुफ़्र में मुब्तला हो उस के लिये उस कुफ़्र से बेज़ारी और उस को कुफ़्र जानना ज़रूरी है। **259 :** या'नी जब तुम इस्लाम में दाख़िल हुए थे तो तुम्हारी ज़बान से कलिमए शहादत सुन कर तुम्हारे जानो माल मह़फ़ूज़ कर दिये गए थे और तुम्हारा इज़्हार बे ए'तिबार न क़रार दिया गया था, ऐसा ही इस्लाम में दाख़िल होने वालों के साथ तुम्हें भी सुलूक करना चाहिये। **शाने नुज़ूल :** येह आयत

www.dawateislami.net

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾ لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ

बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है बराबर नहीं वोह मुसल्मान कि

الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ

बे उज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों

وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ

से जिहाद करते हैं[262] **अल्लाह** ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद वालों का दरजा बैठने वालों

دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى

से बड़ा किया[263] और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया[264] और **अल्लाह** ने जिहाद वालों को[265] बैठने वालों पर

الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۹۵﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ

बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है उस की तरफ़ से दरजे और बख़्शिश और रहमत[266] और

اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾ ع اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है वोह लोग जिन की जान फ़िरिश्ते निकालते हैं इस हाल में कि वोह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे

قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ

उन से फ़िरिश्ते कहते हैं तुम काहे में थे कहते हैं हम ज़मीन में कमज़ोर थे[267] कहते हैं क्या

मिरदास बिन नहीक के हक़ में नाज़िल हुई जो अहले फ़िदक में से थे और इन के सिवा इन की क़ौम का कोई शख़्स इस्लाम न लाया था, उस क़ौम को ख़बर मिली कि लश्करे इस्लाम उन की तरफ़ आ रहा है तो क़ौम के सब लोग भाग गए मगर मिरदास ठहरे रहे, जब उन्हों ने दूर से लश्कर को देखा तो ब ईं ख़याल कि मबादा (ऐसा न हो कि) कोई ग़ैर मुस्लिम जमाअ़त हो येह पहाड़ की चोटी पर अपनी बकरियां ले कर चढ़ गए, जब लश्कर आया और इन्हों ने अल्लाहु अक्बर के ना'रों की आवाज़ें सुनीं तो ख़ुद भी तक्बीर पढ़ते हुए उतर आए और कहने लगे "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ, لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" मुसल्मानों ने ख़याल किया कि अहले फ़िदक तो सब काफ़िर हैं येह शख़्स मुग़ालता देने के लिये इज़्हारे ईमान करता है, ब ईं ख़याल उसामा बिन ज़ैद ने इन को क़त्ल कर दिया और बकरियां ले आए, जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में हाज़िर हुए तो तमाम माजरा अ़र्ज़ किया, हुज़ूर को निहायत रन्ज हुवा और फ़रमाया : तुम ने उस के सामान के सबब उस को क़त्ल कर दिया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उसामा को हुक्म दिया कि मक़्तूल की बकरियां उस के अहल को वापस करें। **260 :** कि तुम को इस्लाम पर इस्तिक़ामत बख़्शी और तुम्हारा मोमिन होना मश्हूर किया। **261 :** ताकि तुम्हारे हाथ से कोई ईमानदार क़त्ल न हो। **262 :** इस आयत में जिहाद की तरग़ीब है कि बैठ रहने वाले और जिहाद करने वाले बराबर नहीं हैं, मुजाहिदीन के लिये बड़े दरजात व सवाब हैं और येह मस्अला भी साबित होता है कि जो लोग बीमारी या पीरी व ना ताक़ती या नाबीनाई या हाथ पाउं के नाकारा होने और उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में हाज़िर न हों वोह फ़ज़ीलत से महरूम न किये जाएंगे अगर निय्यते सालेह रखते हों। हदीसे बुख़ारी में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक से वापसी के वक़्त फ़रमाया : कुछ लोग मदीने में रह गए हैं, हम किसी घाटी या आबादी में नहीं चलते मगर वोह हमारे साथ होते हैं, उन्हें उ़ज़्र ने रोक लिया है। **263 :** जो उ़ज़्र की वज्ह से जिहाद में हाज़िर न हो सके अगर्चे वोह निय्यत का सवाब पाएंगे लेकिन जिहाद करने वालों को अ़मल की फ़ज़ीलत इस से ज़ियादा हासिल है। **264 :** जिहाद करने वाले हों या उ़ज़्र से रह जाने वाले। **265 :** बिग़ैर उ़ज़्र के **266 :** हदीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआ़ला ने मुजाहिदीन के लिये जन्नत में सो दरजे मुहय्या फ़रमाए, हर दो दरजों में इतना फ़ासिला है जैसे आस्मान व ज़मीन में। **267 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने कलिमए

تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत करते तो ऐसों का ठिकाना जहन्नम है

وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۹۷﴾ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ

और बहुत बुरी जगह पलटने की[268] मगर वोह जो दबा लिये गए मर्द और औ़रतें

وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۹۸﴾ فَاُولٰٓىِٕكَ

और बच्चे जिन्हें न कोई तदबीर बन पड़े[269] न रास्ता जानें तो

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾ وَمَنْ

क़रीब है कि **अल्लाह** ऐसों को मुआ़फ़ फ़रमाए[270] और **अल्लाह** मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है और जो

يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ

अल्लाह की राह में घरबार छोड़ कर निकलेगा वोह ज़मीन में बहुत जगह और गुन्जाइश पाएगा

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ

और जो अपने घर से निकला[271] **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत

الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۰﴾ ع وَ ع

ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया[272] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और

इस्लाम तो ज़बान से अदा किया मगर जिस ज़माने में हिजरत फ़र्ज़ थी उस वक़्त हिजरत न की और जब मुश्रिकीन जंगे बद्र में मुसल्मानों के मुक़ाबले के लिये गए तो येह लोग उन के साथ हुए और कुफ़्फ़ार के साथ ही मारे भी गए उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार के साथ होना और फ़र्ज़ हिजरत तर्क करना अपनी जान पर ज़ुल्म करना है। **268 मस्अला :** येह आयत दलालत करती है कि जो शख़्स किसी शहर में अपने दीन पर क़ाइम न रह सकता हो और येह जाने कि दूसरी जगह जाने से अपने फ़राइज़े दीनी अदा कर सकेगा उस पर हिजरत वाजिब हो जाती है। ह़दीस में है : जो शख़्स अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल हो अगर्चे एक बालिश्त ही क्यूं न हो उस के लिये जन्नत वाजिब हुई और उस को ह़ज़रते इब्राहीम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रफ़ाक़त मुयस्सर होगी। **269 :** ज़मीने कुफ़्र से निकलने और हिजरत करने की। **270 :** कि वोह करीम है और करीम जो उम्मीद दिलाता है पूरी करता है और यक़ीनन मुआ़फ़ फ़रमाएगा। **271 शाने नुज़ूल :** इस से पहली आयत जब नाज़िल हुई तो जुन्दअ़ बिन ज़म्रतुल्लैसी ने इस को सुना येह बहुत बूढ़े शख़्स थे, कहने लगे कि मैं मुस्तस्ना लोगों में तो हूं नहीं क्यूं कि मेरे पास इतना माल है कि जिस से मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर के पहुंच सकता हूं, ख़ुदा की क़सम ! मक्कए मुकर्रमा में अब एक रात न ठहरूंगा मुझे ले चलो। चुनान्चे, उन को चारपाई पर ले कर चले, मक़ामे तन्ईम में आ कर उन का इन्तिक़ाल हो गया, आख़िर वक़्त उन्हों ने अपना दाहना हाथ बाएं हाथ पर रखा और कहा : या रब ! येह तेरा और येह तेरे रसूल का, मैं उस पर बैअ़त करता हूं जिस पर तेरे रसूल ने बैअ़त की, येह ख़बर पा कर सहाबए किराम ने फ़रमाया : काश ! वोह मदीने पहुंचते तो उन का अज्र कितना बड़ा होता और मुश्रिक हंसे और कहने लगे कि जिस मत़लब के लिये निकले थे वोह न मिला, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **272 :** उस के वा'दे और उस के फ़ज़्लो करम से, क्यूं कि ब त़रीक़े इस्तिह़क़ाक़ कोई चीज़ उस पर वाजिब नहीं, उस की शान इस से आ'ली है। **मस्अला :** जो कोई नेकी का इरादा करे और उस को पूरा करने से आ़जिज़ हो जाए वोह उस त़ाअ़त का सवाब पाएगा। **मस्अला :** त़लबे इल्म, जिहाद, ह़ज, ज़ियारत, त़ाअ़त, ज़ोहदो क़नाअ़त और रिज़्क़े ह़लाल की त़लब के लिये तर्के वत़न करना

www.dawateislami.net

اِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ

जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर गुनाह नहीं कि बा'ज़ नमाज़ें क़स्र

الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا

से पढ़ो[273] अगर तुम्हें अन्देशा हो कि काफ़िर तुम्हें ईज़ा देंगे[274] बेशक कुफ़्फ़ार

لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾ وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ

तुम्हारे खुले दुश्मन हैं और ऐ महबूब जब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो[275] फिर नमाज़ में उन की इमामत करो[276] तो चाहिये कि

طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا

उन में एक जमाअ़त तुम्हारे साथ हो[277] और वोह अपने हथियार लिये रहें[278] फिर जब वोह सज्दा कर लें[279] तो हट कर

مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ

तुम से पीछे हो जाएं[280] और अब दूसरी जमाअ़त आए जो उस वक़्त नमाज़ में शरीक न थी[281] अब वोह तुम्हारे मुक़्तदी हों

ख़ुदा व रसूल की त़रफ़ हिजरत है, इस राह में मर जाने वाला अज्र पाएगा। **273 :** या'नी चार रक्अ़त वाली दो रक्अ़त। **274 मस्अला :** ख़ौफ़े कुफ़्फ़ार क़स्र के लिये शर्त़ नहीं। **ह़दीस :** या'ला बिन उमय्या ने ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ से कहा कि हम तो अम्न में हैं, फिर हम क्यूं क़स्र करते हैं? फ़रमाया : इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था तो मैं ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से दरयाफ़्त किया : ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : कि तुम्हारे लिये येह **अल्लाह** की त़रफ़ से सदक़ा है तुम उस का सदक़ा क़बूल करो, इस से येह मस्अला मा'लूम होता है कि सफ़र में चार रक्अ़त वाली नमाज़ को पूरा पढ़ना जाइज़ नहीं है, क्यूं कि जो चीज़ें क़ाबिले तम्लीक नहीं हैं उन का सदक़ा इस्क़ात़े मह़ज़ है, रद का एह़तिमाल नहीं रखता, आयत के नुज़ूल के वक़्त सफ़र अन्देशे से ख़ाली न होते थे इस लिये आयत में इस का ज़िक्र बयाने ह़ाल है शर्त़े क़स्र नहीं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर की क़िराअत भी इस की दलील है जिस में "اَنْ يَّفْتِنَكُمْ" बिग़ैर "اِنْ خِفْتُمْ" के है, सह़ाबा का भी येही अ़मल था कि अम्न के सफ़रों में भी क़स्र फ़रमाते, जैसा कि ऊपर की ह़दीस से साबित होता है और अह़ादीस से भी येह साबित है और पूरी चार पढ़ने में **अल्लाह** तआ़ला के सदक़े का रद करना लाज़िम आता है लिहाज़ा क़स्र ज़रूरी है। **मुद्दते सफ़र :- मस्अला :** जिस सफ़र में क़स्र किया जाता है उस की अदना मुद्दत तीन रात दिन की मसाफ़त है जो ऊंट या पैदल की मुतवस्सित़ रफ़्तार से तै़ की जाती हो और इस की मिक़्दारें ख़ुश्की और दरिया और पहाड़ों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हैं, जो मसाफ़त मुतवस्सित़ रफ़्तार से चलने वाले तीन रोज़ में तै़ करते हों उस के सफ़र में क़स्र होगा। **मस्अला :** मुसाफ़िर की जल्दी और देर का ए'तिबार नहीं ख़्वाह वोह तीन रोज़ की मसाफ़त तीन घन्टे में तै़ करे जब भी क़स्र होगा और अगर एक रोज़ की मसाफ़त तीन रोज़ से ज़ियादा में तै़ करे तो क़स्र न होगा, ग़रज़ ए'तिबार मसाफ़त का है। **275 :** या'नी अपने अस्ह़ाब में **276 :** इस में बा जमाअ़त नमाज़े ख़ौफ़ का बयान है। **शाने नुज़ूल :** जिहाद में जब रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم को मुश्रिकीन ने देखा कि आप ने मअ़ तमाम अस्ह़ाब के नमाज़े ज़ोहर ब जमाअ़त अदा फ़रमाई तो उन्हें अफ़्सोस हुवा कि उन्हों ने इस वक़्त में क्यूं न ह़म्ला किया और आपस में एक दूसरे से कहने लगे कि क्या ही अच्छा मौक़अ़ था, बा'ज़ों ने उन में से कहा : इस के बा'द एक और नमाज़ है जो मुसल्मानों को अपने मां बाप से ज़ियादा प्यारी है या'नी नमाज़े अ़स्र। जब मुसल्मान उस नमाज़ के लिये खड़े हों तो पूरी क़ुव्वत से ह़म्ला कर के उन्हें क़त्ल कर दो, उस वक़्त ह़ज़रते जिब्रील नाज़िल हुए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** येह नमाज़े ख़ौफ़ है और **अल्लाह** عزوجل फ़रमाता है : "وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ" الآيه **277 :** या'नी ह़ाज़िरीन को दो जमाअ़तों में तक़्सीम कर दिया जाए, एक उन में से आप के साथ रहे आप उन्हें नमाज़ पढ़ाएं और एक जमाअ़त दुश्मन के मुक़ाबले में क़ाइम रहे। **278 :** या'नी जो लोग दुश्मन के मुक़ाबिल हों, और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि अगर जमाअ़त के नमाज़ी मुराद हों तो वोह लोग ऐसे हथियार लगाए रहें जिन से नमाज़ में कोई ख़लल न हो जैसे तलवार ख़न्जर वग़ैरा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि हथियार साथ रखने का ह़ुक्म दोनों फ़रीक़ों के लिये है और येह एह़तियात़ के क़रीब है। **279 :** या'नी दोनों सज्दे कर के रक्अ़त पूरी कर लें। **280 :** ताकि दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो सकें। **281 :** और अब तक दुश्मन के मुक़ाबिल थी।

www.dawateislami.net

وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ

और चाहिये कि अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें[282] काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने

عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ

हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक दफ़्आ तुम पर झुक पड़ें[283]

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى

और तुम पर मुज़ायक़ा नहीं अगर तुम्हें मींह (बारिश) के सबब तक्लीफ़ हो या बीमार हो

اَنْ تَضَعُوْۤا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

कि अपने हथियार खोल रखो और अपनी पनाह लिये रहो[284] बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिये ख़्वारी (ज़िल्लत)

عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝١٠٢ فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا

का अज़ाब तय्यार कर रखा है फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ

और करवटों पर लेटे[285] फिर जब मुत्मइन हो जाओ तो ह़स्बे दस्तूर नमाज़ क़ाइम करो बेशक नमाज़

282 : पनाह से ज़िरह वग़ैरा ऐसी चीज़ें मुराद हैं जिन से दुश्मन के ह़म्ले से बचा जा सके, इन का साथ रखना बहर ह़ाल वाजिब है, जैसा कि क़रीब ही इर्शाद होगा "وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ" और हथियार साथ रखना मुस्तह़ब है। **नमाज़े ख़ौफ़ का मुख़्तसर त़रीक़ा** येह है कि पहली जमाअ़त इमाम के साथ एक रक्अ़त पूरी कर के दुश्मन के मुक़ाबिल जाए और दूसरी जमाअ़त जो दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ी थी वोह आ कर इमाम के साथ दूसरी रक्अ़त पढ़े फिर फ़क़त़ इमाम सलाम फेरे और पहली जमाअ़त आ कर दूसरी रक्अ़त बिग़ैर क़िराअत के पढ़े और सलाम फेर दे और दुश्मन के मुक़ाबिल चली जाए फिर दूसरी जमाअ़त अपनी जगह आ कर एक रक्अ़त जो बाक़ी रही थी उस को क़िराअत के साथ पूरा कर के सलाम फेरे क्यूं कि येह लोग मस्बूक़ हैं और पहले लाह़िक़। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का इसी त़रह़ नमाज़े ख़ौफ़ अदा फ़रमाना मरवी है। ह़ुज़ूर के बा'द भी नमाज़े ख़ौफ़ सह़ाबा पढ़ते रहे हैं। ह़ालते ख़ौफ़ में दुश्मन के मुक़ाबिल इस एहतिमाम के साथ नमाज़ अदा करने से मा'लूम होता है कि जमाअ़त किस क़दर ज़रूरी है। **मसाइल :** ह़ालते सफ़र में अगर सूरते ख़ौफ़ पेश आए तो इस का येह बयान हुवा लेकिन अगर मुक़ीम को ऐसी ह़ालत पेश आए तो वोह चार रक्अ़त वाली नमाज़ों में हर हर जमाअ़त को दो दो रक्अ़त पढ़ाए और तीन रक्अ़त वाली नमाज़ में पहली जमाअ़त को दो रक्अ़त और दूसरी को एक। **283 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ से जब फ़ारिग़ हुए और दुश्मन के बहुत आदमियों को गिरिफ़्तार किया और अम्वाले ग़नीमत हाथ आए और कोई दुश्मन मुक़ाबिल बाक़ी न रहा तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जंगल में तन्हा तशरीफ़ ले गए तो दुश्मन की जमाअ़त में से ग़ुवैरिस बिन ह़र्स मुह़ारिबी येह ख़बर पा कर तलवार लिये हुए छुपा छुपा पहाड़ से उतरा और अचानक ह़ज़रत के पास पहुंचा और तलवार खींच कर कहने लगा : या मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) अब तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला, और दुआ़ फ़रमाई, जब ही उस ने ह़ुज़ूर पर तलवार चलाने का इरादा किया औंधे मुंह गिर पड़ा और तलवार हाथ से छूट गई। ह़ुज़ूर ने वोह तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझ को मुझ से कौन बचाएगा ? कहने लगा : मेरा बचाने वाला कोई नहीं है। फ़रमाया : "اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ तो तेरी तलवार तुझे दे दूंगा, उस ने इस से इन्कार किया और कहा कि इस की शहादत देता हूं कि मैं कभी आप से न लड़ूंगा और ज़िन्दगी भर आप के किसी दुश्मन की मदद न करूंगा, आप ने उस की तलवार उस को दे दी, कहने लगा : या मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) आप मुझ से बहुत बेहतर हैं। फ़रमाया : हां हमारे लिये येही सज़ावार है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हथियार और बचाव साथ रखने का ह़ुक्म दिया गया (احمدی) **284 :** कि इस का साथ रखना हमेशा ज़रूरी है। **शाने नुज़ूल :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ज़ख़्मी थे और उस वक़्त हथियार रखना उन के लिये बहुत तक्लीफ़ और बार था, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और ह़ालते उ़ज़्र में हथियार खोल रखने की इजाज़त दी गई। **285 :** या'नी ज़िक्रे इलाही की हर ह़ाल में

www.dawateislami.net

كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾ وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ

मुसल्मानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है[286] और काफ़िरों की तलाश में सुस्ती न करो

اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ

अगर तुम्हें दुख पहुंचता है तो उन्हें भी दुख पहुंचता है जैसा तुम्हें पहुंचता है और तुम **अल्लाह** से

اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ

वोह उम्मीद रखते हो जो वोह नहीं रखते और **अल्लाह** जानने वाला हिक्मत वाला है[287] ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَاۤ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ

सच्ची किताब उतारी कि तुम लोगों में फ़ैसला करो[288] जिस तरह तुम्हें **अल्लाह** दिखाए[289] और दग़ा वालों

لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾ وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

की तरफ़ से न झगड़ो और **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾ ۚ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

मेहरबान है और उन की तरफ़ से न झगड़ो जो अपनी जानों को ख़ियानत में डालते हैं[290] बेशक **अल्लाह**

मुदावमत करो और किसी हाल में **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला ने हर फ़र्ज़ की एक हद मुअय्यन फ़रमाई सिवाए ज़िक्र के, इस की कोई हद न रखी। फ़रमाया : ज़िक्र करो खड़े, बैठे, करवटों पर लैटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्की हो या तरी में, सफ़र में और हज़र में, ग़ना में और फ़क़्र में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में, पोशीदा और ज़ाहिर। **मस्अला :** इस से नमाज़ों के बा'द बिग़ैर फ़स्ल के कलिमए तौहीद पढ़ने पर इस्तिद्लाल किया जा सकता है जैसा कि मशाइख़ की आदत है और अहादीसे सहीहा से साबित है। **मस्अला :** ज़िक्र में तस्बीह, तह्मीद, तह्लील, तक्बीर, सना, दुआ सब दाख़िल हैं। **286 :** तो लाज़िम है कि इस के अवक़ात की रिआयत की जाए। **287 शाने नुज़ूल :** उहुद की जंग से जब अबू सुफ़्यान और उन के साथी वापस हुए तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने जो सहाबा उहुद में हाज़िर हुए थे उन्हें मुश्रिकीन के तआक़ुब में जाने का हुक्म दिया। अस्हाब ज़ख़्मी थे उन्हों ने अपने ज़ख़्मों की शिकायत की, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **288 शाने नुज़ूल :** अन्सार के क़बीले बनी ज़फ़र के एक शख़्स तु'मह बिन उबैरिक़ ने अपने हमसाए क़तादा बिन नो'मान की ज़िरह चुरा कर आटे की बोरी में ज़ैद बिन समीन यहूदी के यहां छुपाई, जब ज़िरह की तलाश हुई और तु'मह पर शुबा किया गया तो वोह इन्कार कर गया और क़सम खा गया। बोरी फटी हुई थी और आटा उस में से गिरता जाता था, उस के निशान से लोग यहूदी के मकान तक पहुंचे और बोरी वहां पाई गई, यहूदी ने कहा कि तु'मह उस के पास रख गया है और यहूद की एक जमाअत ने इस की गवाही दी और तु'मह की क़ौम बनी ज़फ़र ने येह अ़ज़्म कर लिया कि यहूदी को चोर बताएंगे और इस पर क़सम खा लेंगे ताकि क़ौम रुस्वा न हो और उन की ख़्वाहिश थी कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم तु'मह को बरी कर दें और यहूदी को सज़ा दें, इसी लिये उन्हों ने हुज़ूर के सामने तु'मह के मुवाफ़िक़ और यहूदी के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी और इस गवाही पर कोई जर्ह व क़द्ह न हुई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। (इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्दद रिवायात आई हैं और उन में बाहम इख़्तिलाफ़ात भी हैं) **289 :** और इल्म अ़ता फ़रमाए। इल्मे यक़ीनी को क़ुव्वते ज़ुहूर की वज्ह से रूयत से ता'बीर फ़रमाया। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी है कि हरगिज़ कोई न कहे जो **अल्लाह** ने मुझे दिखाया उस पर मैं ने फ़ैसला किया, क्यूं कि **अल्लाह** तआला ने येह मन्सब ख़ास अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم को अ़ता फ़रमाया, आप की राय हमेशा सवाब होती है क्यूं कि **अल्लाह** तआला ने हक़ाइक़ व हवादिस आप के पेशे नज़र कर दिये हैं और दूसरे लोगों की राय ज़न का मर्तबा रखती है। **290 :** मा'सियत का इरतिकाब कर के।

www.dawateislami.net

لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۟ۙ (١٠٧) يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَ لَا

नहीं चाहता किसी बड़े दग़ाबाज़ गुनहगार को आदमियों से छुपते हैं और **अल्लाह**

يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ

से नहीं छुपते[291] और **अल्लाह** उन के पास है[292] जब दिल में वोह बात तज्वीज़ करते हैं जो **अल्लाह**

الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا (١٠٨) هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ

को ना पसन्द है[293] और **अल्लाह** उन के कामों को घेरे हुए है सुनते हो येह जो तुम हो[294]

عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ

दुन्या की ज़िन्दगी में तो उन की त़रफ़ से झगड़े तो उन की त़रफ़ से कौन झगड़ेगा **अल्लाह** से क़ियामत के दिन या कौन

يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا (١٠٩) وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ

उन का वकील होगा और जो कोई बुराई या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर

يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (١١٠) وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا

अल्लाह से बख़्शिश चाहे तो **अल्लाह** को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा और जो गुनाह कमाए तो

يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١١١) وَمَنْ يَّكْسِبْ

उस की कमाई उसी की जान पर पड़े और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है[295] और जो कोई

خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓــًٔـا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا

ख़त़ा या गुनाह कमाए[296] फिर उसे किसी बे गुनाह पर थोप दे उस ने ज़रूर बोहतान और खुला गुनाह

مُّبِيْنًا ۟ع (١١٢) وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ

उठाया और ऐ मह़बूब अगर **अल्लाह** का फ़ज़्लो रह़मत तुम पर न होता[297] तो उन में के कुछ लोग येह चाहते

اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ

कि तुम्हें धोका दे दें और वोह अपने ही आप को बहका रहे हैं[298] और तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[299]

291 : ह़या नहीं करते **292 :** उन का ह़ाल जानता है उस पर उन का कोई राज़ छुप नहीं सकता **293 :** जैसे तु'मह की त़रफ़दारी में झूटी क़सम और झूटी शहादत। **294 :** ऐ क़ौमे तु'मह ! **295 :** किसी को दूसरे के गुनाह पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता। **296 :** सग़ीरा या कबीरा **297 :** तुम्हें नबी व मा'सूम कर के और राज़ों पर मुत्त़लअ़ फ़रमा के **298 :** क्यूं कि इस का वबाल उन्हीं पर है **299 :** क्यूं कि **अल्लाह** ने आप को हमेशा के लिये मा'सूम किया है।

وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ

और **अल्लाह** ने तुम पर किताब[300] और हिक्मत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे[301]

الثلثة وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا

और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है[302] उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं[303] मगर

مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ

जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह़ करने का और जो **अल्लाह** की रिज़ा

ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَمَنْ

चाहने को ऐसा करे उसे अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे और जो

يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ

रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द इस के कि ह़क़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसल्मानों की राह से

ع ١٧ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾ ع اِنَّ

जुदा राह चले हम उसे उस के ह़ाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की[304]

اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ

अल्लाह इसे नहीं बख़्शता कि उस का कोई शरीक ठहराया जाए और इस से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है[305]

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ

और जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए वोह दूर की गुमराही में पड़ा येह शिर्क वाले **अल्लाह** के

300 : या'नी क़ुरआने करीम **301 :** उमूरे दीन व अह़कामे शरअ़ व उ़लूमे ग़ैब। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को तमाम काएनात के उ़लूम अ़ता फ़रमाए और किताबो ह़िक्मत के असरारो ह़क़ाइक़ पर मुत्तलअ़ किया। येह मस्अला क़ुरआने करीम की बहुत आयात और अह़ादीसे कसीरा से साबित है। **302 :** कि तुम्हें इन ने'मतों के साथ मुमताज़ किया। **303 :** येह सब लोगों के ह़क़ में आ़म है। **304 :** येह आयत दलील है इस की, कि इज्माअ़ ह़ुज्जत है इस की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं जैसे कि किताब व सुन्नत की मुख़ालफ़त जाइज़ नहीं। (مدارک) और इस से साबित हुवा कि त़रीक़े मुस्लिमीन ही सिराते़ मुस्तक़ीम है। ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि जमाअ़त पर **अल्लाह** का हाथ है। एक और ह़दीस में है कि सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त का इत्तिबाअ़ करो जो जमाअ़ते मुस्लिमीन से जुदा हुवा वोह दोज़ख़ी है। इस से वाज़ेह़ है कि ह़क़ मज़्हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त है। **305 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا का क़ौल है कि येह आयत एक कुहन साल (उ़म्र रसीदा) आ'राबी के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या नबिय्यल्लाह!** मैं बूढ़ा हूं, गुनाहों में ग़र्क़ हूं, बजुज़ इस के कि जब से मैं ने **अल्लाह** को पहचाना और उस पर ईमान लाया उस वक़्त से कभी मैं ने उस के साथ शिर्क न किया और उस के सिवा किसी और को वली न बनाया और जुर्अत के साथ गुनाहों में मुब्तला न हुवा और एक पल भी मैं ने येह गुमान न किया कि मैं **अल्लाह** से भाग सकता हूं। शरमिन्दा हूं, ताइब हूं, मग़्फ़िरत चाहता हूं, **अल्लाह** के यहां मेरा क्या ह़ाल होगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, येह आयत नस्से सरीह़ है इस पर कि शिर्क से बख़्शा न जाएगा अगर मुश्रिक अपने शिर्क पर मरे, क्यूं कि येह साबित हो चुका है कि मुश्रिक जो अपने शिर्क से तौबा करे और ईमान लाए तो उस की तौबा व ईमान मक़्बूल है।

www.dawateislami.net

وقف لازم

دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ اِنْ یَّدْعُوْنَ اِلَّا شَیْطٰنًا مَّرِیْدًا ﴿۱۱۷﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ

सिवा नहीं पूजते मगर कुछ औ़रतों को[306] और नहीं पूजते मगर सरकश शैत़ान को[307] जिस पर **अल्लाह** ने ला'नत की

وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِیْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۸﴾ وَّ لَاُضِلَّنَّهُمْ

और बोला[308] क़सम है मैं ज़रूर तेरे बन्दों में से कुछ ठहराया हुवा हिस्सा लूंगा[309] क़सम है मैं ज़रूर उन्हें बहका दूंगा

وَ لَاُمَنِّیَنَّهُمْ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَیُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ

और ज़रूर उन्हें आरज़ूएं दिलाऊंगा[310] और ज़रूर उन्हें कहूंगा कि वोह चौपायों के कान चीरेंगे[311] और ज़रूर उन्हें कहूंगा

فَلَیُغَیِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ یَّتَّخِذِ الشَّیْطٰنَ وَلِیًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

कि वोह **अल्लाह** की पैदा की हुई चीज़ बदल देंगे[312] और जो **अल्लाह** को छोड़ कर शैत़ान को दोस्त बनाए

فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِیْنًا ﴿۱۱۹﴾ یَعِدُهُمْ وَ یُمَنِّیْهِمْ ؕ وَ مَا یَعِدُهُمُ

वोह सरीह़ टोटे (खुले नुक़्सान) में पड़ा शैत़ान उन्हें वा'दे देता है और आरज़ूएं दिलाता है[313] और शैत़ान उन्हें

الشَّیْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓىٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ٘ وَ لَا یَجِدُوْنَ عَنْهَا

वा'दे नहीं देता मगर फ़रेब के[314] उन का ठिकाना दोज़ख़ है और उस से बचने की

مَحِیْصًا ﴿۱۲۱﴾ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ

जगह न पाएंगे और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَ مَنْ

जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें **अल्लाह** का सच्चा वा'दा और

306 : या'नी मुअन्नस बुतों को जैसे लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा, येह सब मुअन्नस हैं और अ़रब के हर क़बीले का बुत था जिस की वोह इ़बादत करते थे और उस को उस क़बीले की उन्सा (औ़रत) कहते थे, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की क़िराअत में اِلَّاۤ اَوْثَانًا और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) की क़िराअत में "اِلَّاۤ اُنُثًا" आया है, इस से भी साबित होता है कि "اُنٰث" से मुराद बुत हैं। एक क़ौल येह भी है कि मुश्रिकीने अ़रब अपने बात़िल मा'बूदों को ख़ुदा की बेटियां कहते थे और एक क़ौल येह है कि मुश्रिकीन बुतों को ज़ेवर वग़ैरा पहना कर औ़रतों की त़रह़ सजाते थे **307 :** क्यूं कि उसी के इग़्वा (बहकाने) से बुत परस्ती करते हैं **308 :** शैत़ान **309 :** उन्हें अपना मुत़ीअ़ बनाऊंगा **310 :** त़रह़ त़रह़ की, कभी उ़म्रे त़वील की, कभी लज़्ज़ाते दुन्या की, कभी ख़्वाहिशाते बात़िला की, कभी और कभी और **311 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया कि ऊंटनी जब पांच मरतबा बियाह लेती तो वोह उस को छोड़ देते और उस से नफ़्अ़ उठाना अपने ऊपर ह़राम कर लेते और उस का दूध बुतों के लिये कर लेते और उस को बह़ीरा कहते थे, शैत़ान ने उन के दिल में येह डाल दिया था कि ऐसा करना इ़बादत है। **312 :** मर्दों का औ़रतों की शक्ल में ज़नाना लिबास पहनना, औ़रतों की त़रह़ बातचीत और ह़रकात करना, जिस्म को गोद कर सुरमा या सिन्दूर (सुर्ख़ रंग का एक पाउडर जिसे हिन्दू औ़रतें मांग में लगाती हैं) वग़ैरा जिल्द में पैवस्त कर के नक़्शो निगार बनाना, बालों में बाल जोड़ कर बड़ी बड़ी जटें बनाना भी इस में दाख़िल है। **313 :** और दिल में त़रह़ त़रह़ की उम्मीदें और वस्वसे डालता है ताकि इन्सान गुमराही में पड़े **314 :** कि जिस चीज़ के नफ़्ए़ और फ़ाएदे की तवक़्क़ोअ़ दिलाता है दर ह़क़ीक़त उस में सख़्त ज़रर और नुक़्सान होता है।

أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ط

अल्लाह से ज़ियादा किस की बात सच्ची काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है[315] और न किताब वालों की हवस पर[316]

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ لا وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا

जो बुराई करेगा[317] उस का बदला पाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न

نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

मददगार[318] और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो मुसल्मान[319]

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ

तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा और उस से बेहतर

دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

किस का दीन जिस ने अपना मुंह **अल्लाह** के लिये झुका दिया[320] और वोह नेकी वाला है और इब्राहीम के दीन पर चला[321]

حَنِيْفًا ط وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

जो हर बातिल से जुदा था और **अल्लाह** ने इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया[322] और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है

١٥ ع ١٨ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾ ع وَيَسْتَفْتُوْنَكَ

और जो कुछ ज़मीन में और हर चीज़ पर **अल्लाह** का क़ाबू है[323] और तुम से औरतों के बारे

فِي النِّسَآءِ ط قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ لا وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

में फ़तवा पूछते हैं[324] तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें उन का फ़तवा देता है और वोह जो तुम पर क़ुरआन में पढ़ा जाता है

315 : जो तुम ने सोच रखा है कि बुत तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाएंगे। **316 :** जो कहते कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, हमें आग चन्द रोज़ से ज़ियादा न जलाएगी, यहूदो नसारा का येह ख़याल भी मुश्रिकीन की तरह बातिल है। **317 :** ख़्वाह मुश्रिकीन में से हो या यहूदो नसारा में से **318 :** येह वईद कुफ़्फ़ार के लिये है **319 मस्अला :** इस में इशारा है कि आ'माल दाख़िले ईमान नहीं। **320 :** या'नी इताअ़त व इख़्लास इख़्तियार किया **321 :** जो मिल्लते इस्लाम के मुवाफ़िक़ है। हज़रते इब्राहीम की शरीअ़त व मिल्लत सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्लत में दाख़िल है और ख़ुसूसिय्याते दीने मुहम्मदी कि इस के इलावा हैं, दीने मुहम्मदी का इत्तिबाअ़ करने से शरअ़ व मिल्लते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का इत्तिबाअ़ हासिल होता है, चूंकि अ़रब और यहूदो नसारा सब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इन्तिसाब (निस्बत रखने) पर फ़ख़्र करते थे और आप की शरीअ़त इन सब को मक़्बूल थी और शरए मुहम्मदी इस पर हावी है तो इन सब को दीने मुहम्मदी में दाख़िल होना और इस को क़बूल करना लाज़िम है। **322 :** ख़ुल्लत सफ़ाए मुवद्दत (सच्ची महब्बत) और ग़ैर से इन्क़िताअ़ को कहते हैं, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات येह औसाफ़ रखते थे, इस लिये आप को ख़लील कहा गया, एक क़ौल येह भी है कि ख़लील उस मुहिब को कहते हैं जिस की महब्बत कामिला हो और उस में किसी क़िस्म का ख़लल और नुक़्सान न हो, येह मा'ना भी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات में पाए जाते हैं। तमाम अम्बिया के जो कमालात हैं सब सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हासिल हैं। हुज़ूर **अल्लाह** के ख़लील भी हैं जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। और हबीब भी जैसा कि तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस में है कि मैं **अल्लाह** का हबीब हूं और येह फ़ख़्रन नहीं कहता। **323 :** और वोह उस के इहातए इल्मो क़ुदरत में है। **इहाता बिल इल्म** येह है कि किसी शै के लिये जितने वुजूह हो सकते हैं उन में से कोई वज्ह इल्म से ख़ारिज न हो। **324 : शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब के लोग औरत और छोटे बच्चों को मय्यित के माल का

www.dawateislami.net

فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ

उन यतीम लड़कियों के बारे में कि तुम उन्हें नहीं देते जो उन का मुक़र्रर है[325] और उन्हें निकाह़ में भी

تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى

लाने से मुंह फेरते हो और कमज़ोर[326] बच्चों के बारे में और येह कि यतीमों के ह़क़ में

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾ وَاِنِ

इन्साफ़ पर क़ाइम रहो[327] और तुम जो भलाई करो तो अल्लाह को उस की ख़बर है और अगर

امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ

कोई औरत अपने शोहर की ज़ियादती या बे रग़बती का अन्देशा करे[328] तो उन पर गुनाह नहीं कि

يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ

आपस में सुल्ह़ कर लें[329] और सुल्ह़ ख़ूब है[330] और दिल लालच के फन्दे में हैं[331]

وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾ وَلَنْ

और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो[332] तो अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है[333] और तुम से

تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ

हरगिज़ न हो सकेगा कि औ़रतों को बराबर रखो चाहे कितनी ही ह़िर्स करो[334] तो येह तो न हो कि एक त़रफ़ पूरा

वारिस नहीं क़रार देते थे, जब आयते मीरास नाज़िल हुई तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! क्या औ़रत और छोटे बच्चे वारिस होंगे ? आप ने उन को इस आयत से जवाब दिया। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने फ़रमाया कि यतीमों के औलिया का दस्तूर येह था कि अगर यतीम लड़की साहि़बे मालो जमाल होती तो उस से थोड़े महर पर निकाह़ कर लेते और अगर हुस्नो माल न रखती तो उसे छोड़ देते और अगर हुस्ने सूरत न रखती और होती मालदार तो उस से निकाह़ न करते और इस अन्देशे से दूसरे के निकाह़ में भी न देते कि वोह माल में ह़िस्सेदार हो जाएगा। अल्लाह तआ़ला ने येह आयतें नाज़िल फ़रमा कर उन्हें इन आ़दतों से मन्अ़ फ़रमाया। **325 :** मीरास से **326 :** यतीम **327 :** उन के पूरे हु़क़ूक़ उन को दो। **328 : ज़ियादती** तो इस त़रह कि उस से अ़लाह़दा रहे, खाने पहनने को न दे या कमी करे या मारे या बद ज़बानी करे और **ए'राज़** येह कि मह़ब्बत न रखे, बोलचाल तर्क कर दे या कम कर दे। **329 :** और इस सुल्ह़ के लिये अपने हु़क़ूक़ का बार कम करने पर राज़ी हो जाएं। **330 :** और ज़ियादती और जुदाई दोनों से बेहतर है। **331 :** हर एक अपनी राह़तो आसाइश चाहता और अपने ऊपर कुछ मशक़्क़त गवारा कर के दूसरे की आसाइश को तरजीह़ नहीं देता। **332 :** और बा वुजूद ना मरग़ूब होने के अपनी मौजूदा औ़रतों पर सब्र करो और ब रिआ़यते ह़क़्क़े सोह़बत उन के साथ अच्छा बरताव करो और उन्हें ईज़ा व रन्ज देने से और झगड़ा पैदा करने वाली बातों से बचते रहो और सोह़बतो मुआ़शरत में नेक सुलूक करो और येह जानते रहो कि वोह तुम्हारे पास अमानतें हैं **333 :** वोह तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देगा। **334 :** या'नी अगर कई बीबियां हों तो येह तुम्हारी मक़्दिरत (त़ाक़त) में नहीं कि हर अम्र में तुम उन्हें बराबर रखो और किसी अम्र में किसी को किसी पर तरजीह़ न होने दो न मैलो मह़ब्बत में न ख़्वाहिशो रग़बत में न इ़श्रतो इख़्तिलात़ में न नज़रो तवज्जोह में, तुम कोशिश कर के येह तो कर नहीं सकते, लेकिन अगर इतना तुम्हारे मक़्दूर में नहीं है और इस वज्ह से इन तमाम पाबन्दियों का बार तुम पर नहीं रखा गया और मह़ब्बते क़ल्बी और मैले त़ब्ई जो तुम्हारा इख़्तियारी नहीं है इस में बराबरी करने का तुम्हें हु़क्म नहीं दिया गया।

الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَ اِنْ تُصْلِحُوْا وَ تَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

झुक जाओ कि दूसरी को अधर (दरमियान) में लटक्ती छोड़ दो[335] और अगर तुम नेकी और परहेज़ गारी करो तो बेशक **अल्लाह**

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾ وَ اِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ كَانَ

बख़्शने वाला मेह्रबान है और अगर वोह दोनों[336] जुदा हो जाएं तो **अल्लाह** अपनी कशाइश से तुम में हर एक को दूसरे से बे नियाज़ कर देगा[337] और

اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿۱۳۰﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ

अल्लाह कशाइश वाला हिक्मत वाला है और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और बेशक

وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ اِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि **अल्लाह** से डरते रहो[338]

وَ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

और अगर कुफ़्र करो तो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[339] और **अल्लाह**

غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿۱۳۱﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ

बे नियाज़ है[340] सब ख़ूबियों वाला और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और **अल्लाह** काफ़ी है

وَكِيْلًا ﴿۱۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَ يَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

कारसाज़ (काम बनाने वाला) ऐ लोगो वोह चाहे तो तुम्हें ले जाए[341] और औरों को ले आए और **अल्लाह** को

عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ

इस की कुदरत है जो दुन्या का इन्आ़म चाहे तो **अल्लाह** ही के पास दुन्या व आख़िरत

١٩ ع ٨ ١٢ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

दोनों का इन्आ़म है[342] और **अल्लाह** सुनता देखता है ऐ ईमान वालो

335 : बल्कि येह ज़रूर है कि जहां तक तुम्हें कुदरतो इख़्तियार है वहां तक यक्सां बरताव करो, महब्बत इख़्तियारी शै नहीं तो बातचीत, हुस्ने अख़्लाक़, खाने, पहनने, पास रखने और ऐसे उमूर में बराबरी करना इख़्तियारी है, इन उमूर में दोनों के साथ यक्सां सुलूक करना लाज़िम व ज़रूरी है। **336 :** ज़न व शो (मियां बीवी) बाहम सुल्ह़ न करें और वोह जुदाई ही बेहतर समझें और ख़ुलअ़ के साथ तफ़्रीक़ हो जाए, या मर्द औ़रत को त़लाक़ दे कर उस का महर और इ़द्दत का नफ़्क़ा अदा कर दे और इस त़रह़ वोह **337 :** और हर एक को बेहतर बदल अ़ता फ़रमाएगा **338 :** उस की फ़रमां बरदारी करो और उस के हुक्म के ख़िलाफ़ न करो, तौह़ीद व शरीअ़त पर क़ाइम रहो। इस आयत से मा'लूम हुवा कि तक़्वा और परहेज़ गारी का हुक्म क़दीम है, तमाम उम्मतों को इस की ताकीद होती रही है। **339 :** तमाम जहान उस के फ़रमां बरदारों से भरा है, तुम्हारे कुफ़्र से उस का क्या ज़रर। **340 :** तमाम ख़ल्क़ से और उन की इ़बादत से। **341 :** मा'दूम कर दे **342 :** मा'ना येह हैं कि जिस को अपने अ़मल से दुन्या मक़्सूद हो और उस की मुराद इतनी है जो **अल्लाह** उस को दे देता है और सवाबे आख़िरत से वोह मह़रूम रहता है और जिस ने अ़मल रिज़ाए इलाही और सवाबे आख़िरत के लिये किया तो **अल्लाह** दुन्या व आख़िरत दोनों में सवाब देने वाला

www.dawateislami.net

كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ

इन्साफ़ पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ **अल्लाह** के लिये गवाही देते चाहे इस में तुम्हारा अपना नुक़्सान हो या मां बाप का

وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا

या रिश्तेदारों का जिस पर गवाही दो वोह ग़नी हो या फ़क़ीर हो[343] बहर हाल **अल्लाह** को इस का सब से ज़ियादा इख़्तियार है तो ख़्वाहिश के पीछे

الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا

न जाओ कि हक़ से अलग पड़ो और अगर तुम हेर फेर करो[344] या मुंह फेरो[345] तो **अल्लाह** को तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

कामों की ख़बर है[346] ऐ ईमान वालो ईमान रखो **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल पर[347]

وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ

और उस किताब पर जो अपने इन रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले

قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

उतारी[348] और जो न माने **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और किताबों और रसूलों और क़ियामत को[349]

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ

तो वोह ज़रूर दूर की गुमराही में पड़ा बेशक वोह लोग जो ईमान लाए फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाए फिर

كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ

काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े[350] **अल्लाह** हरगिज़ न उन्हें बख़्शे[351] न उन्हें राह

है तो जो शख़्स **अल्लाह** से फ़क़त् दुन्या का त़ालिब हो वोह नादान ख़सीस और कम हिम्मत है। **343 :** किसी की रिआ़यत व त़रफ़ दारी में इन्साफ़ से न हटो और कोई क़राबत व रिश्ता ह़क़ कहने में मुख़िल न होने पाए। **344 :** ह़क़ के बयान में और जैसा चाहिये न कहो **345 :** अदाए शहादत से **346 :** जैसे अ़मल होंगे वैसा बदला देगा। **347 :** या'नी ईमान पर साबित रहो, येह मा'ना इस सूरत में हैं कि "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا" का ख़ित़ाब मुसल्मानों से हो और अगर ख़ित़ाब यहूदो नसारा से हो तो मा'ना येह हैं कि ऐ बा'ज़ किताबों बा'ज़ रसूलों पर ईमान लाने वालो तुम्हें येह हुक्म है, और अगर ख़ित़ाब मुनाफ़िक़ीन से हो तो मा'ना येह हैं कि ऐ ईमान का ज़ाहिरी दा'वा करने वालो इख़्लास के साथ ईमान ले आओ, यहां रसूल से सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और किताब से कुरआने पाक मुराद है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और असद व उसैद और सा'लबा बिन क़ैस और सलाम व सलमा व यामीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह लोग मोमिनीने अहले किताब में से थे, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : हम आप पर और आप की किताब पर और ह़ज़रते मूसा पर और तौरैत पर और उ़ज़ैर पर ईमान लाते हैं और इस के सिवा बाक़ी किताबों और रसूलों पर ईमान न लाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** पर और उस के रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर और कुरआन पर और इस से पहली हर किताब पर ईमान लाओ, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **348 :** या'नी कुरआने पाक पर और उन तमाम किताबों पर ईमान लाओ जो **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआन से पहले अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाई। **349 :** या'नी इन में से किसी एक का भी इन्कार करे, कि एक रसूल और एक किताब का इन्कार भी सब का इन्कार है। **350 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने

www.dawateislami.net

سَبِيْلًا ۝١٣٧ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ۝١٣٨ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ

दिखाए खुश ख़बरी दो मुनाफ़िक़ों को कि उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है वोह जो मुसल्मानों को

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ

छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं[352] क्या उन के पास इज़्ज़त

الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝١٣٩ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ

ढूंडते हैं तो इज़्ज़त तो सारी **अल्लाह** के लिये है[353] और बेशक **अल्लाह** तुम पर किताब[354] में उतार चुका

اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا

कि जब तुम **अल्लाह** की आयतों को सुनो कि उन का इन्कार किया जाता और उन की हंसी बनाई जाती है तो उन लोगों के साथ

مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न बैठो जब तक वोह और बात में मश्ग़ूल न हों[355] वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो[356] बेशक **अल्लाह**

جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۝١٤٠ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ

काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों सब को जहन्नम में इकठ्ठा करेगा वोह जो तुम्हारी ह़ालत तका (देखा)

بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَ

करते हैं तो अगर **अल्लाह** की त़रफ़ से तुम को फ़त्ह़ मिले कहें क्या हम तुम्हारे साथ न थे[357] और

اِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ

अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो उन से कहें क्या हमें तुम पर क़ाबू न था[358] और हम ने तुम्हें

अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत यहूद के ह़क़ में नाज़िल हुई, जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए फिर बछड़ा पूज कर काफ़िर हुए, फिर इस के बा'द ईमान लाए फिर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और इन्जील का इन्कार कर के काफ़िर हो गए, फिर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم और क़ुरआन का इन्कार कर के और कुफ़्र में बढ़े। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, कि वोह ईमान लाए, फिर काफ़िर हो गए ईमान के बा'द, फिर ईमान लाए या'नी उन्हों ने अपने ईमान का इज़्हार किया ताकि उन पर मोमिनीन के अह़काम जारी हों, फिर कुफ़्र में बढ़े या'नी कुफ़्र पर उन की मौत हुई। **351 :** जब तक कुफ़्र पर रहें और कुफ़्र पर मरें क्यूं कि कुफ़्र बख़्शा नहीं जाता, मगर जब कि काफ़िर तौबा करे और ईमान लाए जैसा कि फ़रमाया : "قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ" (तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआफ़ फ़रमा दिया जाएगा) **352 :** येह मुनाफ़िक़ीन का ह़ाल है जिन का ख़याल था कि इस्लाम ग़ालिब न होगा और इस लिये वोह कुफ़्फ़ार को साहिबे क़ुव्वत और शौकत समझ कर उन से दोस्ती करते थे और उन से मिलने में इज़्ज़त जानते थे, बा वुजूदे कि कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती मम्नूअ़ और उन के मिलने से त़लबे इज़्ज़त बात़िल। **353 :** और उस के लिये जिस को वोह इज़्ज़त दे जैसे कि अम्बिया व मोमिनीन। **354 :** या'नी क़ुरआन **355 :** कुफ़्फ़ार की हम नशीनी और उन की मजलिसों में शिर्कत करना ऐसे ही और बे दीनों और गुमराहों की मजलिसों की शिर्कत और उन के साथ याराना व मुसाह़बत मम्नूअ़ फ़रमाई गई। **356 :** इस से साबित हुवा कि कुफ़्र के साथ राज़ी होने वाला भी काफ़िर है। **357 :** इस से उन की मुराद ग़नीमत में शिर्कत करना और हिस्सा चाहना है। **358 :** कि हम तुम्हें क़त्ल करते गिरिफ़्तार करते, मगर हम ने येह कुछ नहीं किया।

www.dawateislami.net

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ

मुसल्मानों से बचाया[359] तो अल्लाह तुम सब में[360] क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा[361] और अल्लाह काफ़िरों को

اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿۱۴۱﴾ ع اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ

मुसल्मानों पर कोई राह न देगा[362] बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब दिया चाहते

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ

हैं[363] और वोही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा और जब नमाज़ को खड़े हों[364] तो हारे जी से[365] लोगों का

النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۴۲﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖۗ

दिखावा करते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते मगर थोड़ा[366] बीच में डग मगा रहे हैं[367]

لَاۤ اِلٰى هٰۤؤُلَآءِ وَلَاۤ اِلٰى هٰۤؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

न इधर के न उधर के[368] और जिसे अल्लाह गुमराह करे तो उस के लिये कोई राह न

سَبِيْلًا ﴿۱۴۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ

पाएगा ऐ ईमान वालो काफ़िरों को दोस्त न बनाओ

دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۴۴﴾

मुसल्मानों के सिवा[369] क्या येह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह के लिये सरीह़ हुज्जत कर लो[370]

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ

बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे त़बके़ में हैं[371] और तू हरगिज़ उन का कोई

359 : और उन्हें त़रह त़रह के ह़ीलों से रोका और उन के राज़ों पर तुम्हें मुत़्त़लअ़ किया तो अब हमारे इस सुलूक की क़द्र करो और हिस्सा दो। (येह मुनाफ़िक़ों का ह़ाल है) 360 : ऐ ईमानदारो और मुनाफ़िक़ो ! 361 : कि मोमिनीन को जन्नत अ़त़ा करेगा और मुनाफ़िक़ों को दाख़िले जहन्नम करेगा। 362 : या'नी काफ़िर न मुसल्मानों को मिटा सकेंगे न हुज्जत में ग़ालिब आ सकेंगे। उ़लमा ने इस आयत से चन्द मसाइल मुस्तम्बित़ किये हैं (1) काफ़िर मुसल्मान का वारिस नहीं। (2) काफ़िर मुसल्मान के माल पर इस्तीला पा कर मालिक नहीं हो सकता। (3) काफ़िर, मुसल्मान ग़ुलाम के ख़रीदने का मजाज़ नहीं (4) ज़िम्मी के इ़वज़ मुसल्मान क़त्ल न किया जाएगा। (جمل) 363 : क्यूं कि ह़क़ीक़त में तो अल्लाह को फ़रेब देना मुम्किन नहीं। 364 : मोमिनीन के साथ 365 : क्यूं कि ईमान तो है नहीं जिस से ज़ौक़े त़ाअ़त और लुत़्फ़े इ़बादत ह़ासिल हो, मह़्ज़ रियाकारी है, इस लिये मुनाफ़िक़ को नमाज़ बार मा'लूम होती है। 366 : इस त़रह़ कि मुसल्मानों के पास हुए तो नमाज़ पढ़ ली और अ़लाह़दा हुए तो नदारद (छोड़ दी)। 367 : कुफ़्र व ईमान के 368 : न ख़ालिस मोमिन न खुले काफ़िर। 369 : इस आयत में मुसल्मानों को बताया गया कि कुफ़्फ़ार को दोस्त बनाना मुनाफ़िक़ीन की ख़स्लत है, तुम इस से बचो। 370 : अपने निफ़ाक़ की और मुस्तह़िक़्क़े जहन्नम हो जाओ। 371 : मुनाफ़िक़ का अ़ज़ाब काफ़िर से भी ज़ियादा है क्यूं कि वोह दुन्या में इज़्हारे इस्लाम कर के मुजाहिदीन के हाथों से बचा रहा है और कुफ़्र के बा वुजूद मुसल्मानों को मुग़ालत़ा देना और इस्लाम के साथ इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़) करना इस का शेवा रहा है।

www.dawateislami.net

نَصِيۡرًا ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاَصۡلَحُوۡا وَاعۡتَصَمُوۡا بِاللّٰهِ وَاَخۡلَصُوۡا

मददगार न पाएगा मगर वोह जिन्हों ने तौबा की[372] और संवरे (अपनी इस्लाह की) और **अल्लाह** की रस्सी मज़बूत थामी और अपना दीन ख़ालिस

دِيۡنَهُمۡ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ؕ وَسَوۡفَ يُؤۡتِ اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ

अल्लाह के लिये कर लिया तो येह मुसलमानों के साथ हैं[373] और अ़न्क़रीब **अल्लाह** मुसलमानों को

اَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿١٤٦﴾ مَا يَفۡعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمۡ اِنۡ شَكَرۡتُمۡ وَاٰمَنۡتُمۡ ؕ

बड़ा सवाब देगा और **अल्लाह** तुम्हें अ़ज़ाब दे कर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ

وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيۡمًا ﴿١٤٧﴾

और **अल्लाह** है सिला देने वाला जानने वाला

---

372 : निफ़ाक़ से 373 : दारैन में।

www.dawateislami.net

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

अल्लाह पसन्द नहीं करता बुरी बात का ए'लान करना[374] मगर मज़्लूम से[375] और **अल्लाह**

سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ

सुनता जानता है अगर तुम कोई भलाई अ़लानिया करो या छुप कर या किसी की बुराई से दर गुज़रो तो बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ

अल्लाह मुआ़फ़ करने वाला क़ुदरत वाला है[376] वोह जो **अल्लाह** और उस के रसूलों को नहीं मानते और

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ

चाहते हैं कि **अल्लाह** से उस के रसूलों को जुदा कर दें[377] और कहते हैं हम किसी पर ईमान लाए और

نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۵۰﴾ ۙ اُولٰٓئِكَ

किसी के मुन्किर हुए[378] और चाहते हैं कि ईमान व कुफ़्र के बीच में कोई राह निकाल लें येही

هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾ وَالَّذِيْنَ

हैं ठीक ठीक काफ़िर[379] और हम ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है और वोह जो

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ

अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए और उन में से किसी पर ईमान में फ़र्क़ न किया उन्हें अ़न्क़रीब

374 : या'नी किसी के पोशीदा ह़ाल का ज़ाहिर करना। इस में ग़ीबत भी आ गई चुग़ल ख़ोरी भी। आ़क़िल वोह है जो अपने ऐ़बों को देखे, एक क़ौल येह भी है कि बुरी बात से गाली मुराद है। **375 :** कि उस को जाइज़ है कि ज़ालिम के ज़ुल्म बयान करे, वोह चोर या ग़ासिब की निस्बत कह सकता है कि इस ने मेरा माल चुराया, ग़स्ब किया। **शाने नुज़ूल :** एक शख़्स एक क़ौम का मेहमान हुवा था, उन्हों ने अच्छी त़रह उस की मेज़बानी न की, जब वोह वहां से निकला तो उन की शिकायत करता निकला। इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बाब में नाज़िल हुई, एक शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के सामने आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की शान में ज़बान दराज़ी करता रहा, आप ने कई बार सुकूत किया मगर वोह बाज़ न आया तो एक मरतबा आप ने उस को जवाब दिया, इस पर ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उठ खड़े हुए, ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم येह शख़्स मुझ को बुरा कहता रहा तो ह़ुज़ूर ने कुछ न फ़रमाया मैं ने एक मरतबा जवाब दिया तो ह़ुज़ूर उठ गए, फ़रमाया : एक फ़िरिश्ता तुम्हारी त़रफ़ से जवाब दे रहा था जब तुम ने जवाब दिया तो फ़िरिश्ता चला गया और शैत़ान आ गया। इस के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **376 :** तुम उस के बन्दों से दर गुज़र करो वोह तुम से दर गुज़र फ़रमाएगा। **ह़दीस :** तुम ज़मीन वालों पर रह़्म करो आस्मान वाला तुम पर रह़्म करेगा। **377 :** इस त़रह़ कि **अल्लाह** पर ईमान लाएं और उस के रसूलों पर न लाएं। **378 : शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूदो नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई, कि यहूद ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पर ईमान लाए और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया और नसारा ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान लाए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ कुफ़्र किया। **379 :** बा'ज़ रसूलों पर ईमान लाना उन्हें कुफ़्र से नहीं बचाता क्यूं कि एक नबी का इन्कार भी तमाम अम्बिया के इन्कार के बराबर है।

www.dawateislami.net

يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ

अल्लाह उन के सवाब देगा[380] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[381] ऐ महबूब ! अहले किताब[382] तुम

الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰۤى اَكْبَرَ

से सुवाल करते हैं कि उन पर आस्मान से एक किताब उतार दो[383] तो वोह तो मूसा से इस से भी बड़ा

مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْۤا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ

सुवाल कर चुके[384] कि बोले हमें अल्लाह को अ़लानिया (ज़ाहिर कर के) दिखा दो तो उन्हें कड़क ने आ लिया उन के गुनाहों पर फिर

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ

बछड़ा ले बैठे[385] बा'द इस के कि रोशन आयतें[386] उन के पास आ चुकीं तो हम ने येह मुआ़फ़ फ़रमा दिया[387]

وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ

और हम ने मूसा को रोशन ग़लबा दिया[388] फिर हम ने उन पर तूर को ऊंचा किया उन से अ़ह्द लेने को

وَ قُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ

और उन से फ़रमाया कि दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और उन से फ़रमाया कि हफ़्ते में हद से न बढ़ो[389]

وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ

और हम ने उन से गाढ़ा (पुख़्ता) अ़ह्द लिया[390] तो उन की कैसी बद अ़ह्दियों के सबब हम ने उन पर ला'नत की और इस लिये कि वोह

380 : मुरतकिबे कबीरा भी इस में दाख़िल है क्यूं कि वोह अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान रखता है। "मो'तज़िला" साहिबे कबीरा (कबीरा गुनाह करने वाले) के ख़ुलूदे अ़ज़ाब (हमेशा जहन्नम में रहने) का अ़क़ीदा रखते हैं। इस आयत से उन के इस अ़क़ीदे का बुत़लान साबित हुवा। **381 मस्अला :** येह आयत सिफ़ाते फ़े'लिया (जैसे कि मग़्फ़िरत व रह़मत) के क़दीम होने पर दलालत करती है क्यूं कि हुदूस के क़ाइल को कहना पड़ता है कि अल्लाह तआ़ला अज़ल में ग़फ़ूर व रह़ीम नहीं था फिर हो गया (مَعَاذَاللّٰه)। उस के इस क़ौल को येह आयत बात़िल करती है। **382 :** बराहे सरकशी **383 :** यक्बारगी। **शाने नुज़ूल :** यहूद में से का'ब बिन अशरफ़, फ़िन्ह़ास बिन आ़ज़ूरा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि अगर आप नबी हैं तो हमारे पास आस्मान से यक्बारगी किताब लाइये जैसा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत लाए थे। येह सुवाल उन का त़लबे हिदायत व इत्तिबाअ़ के लिये न था बल्कि सरकशी व बग़ावत से था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **384 :** या'नी येह सुवाल उन का कमाले जह्ल (इन्तिहाई जहालत के सबब) से है और इस क़िस्म की जहालतों में उन के बाप दादा भी गिरिफ़्तार थे। अगर सुवाल त़लबे रुश्द (हिदायत त़लब करने) के लिये होता तो पूरा कर दिया जाता मगर वोह तो किसी ह़ाल में ईमान लाने वाले न थे। **385 :** उस को पूजने लगे **386 :** तौरैत और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात जो अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिद्क़ पर वाज़ेहुद्दलालह (वाज़ेह़ दलील) थे और बा वुजूदे कि तौरैत हम ने यक्बारगी ही नाज़िल की थी लेकिन "خُوئے بَد را بَہانہ بِسیار" (बद ख़स्लत के लिये बहाने बहुत) बजाए इत़ाअ़त करने के उन्हों ने ख़ुदा के देखने का सुवाल किया। **387 :** जब उन्हों ने तौबा की। इस में हुज़ूर के ज़माने के यहूदियों के लिये तवक़्क़ोअ़ है कि वोह भी तौबा करें तो अल्लाह उन्हें भी अपने फ़ज़्ल से मुआ़फ़ फ़रमाए। **388 :** ऐसा तसल्लुत़ अ़त़ा फ़रमाया कि जब आप ने बनी इसराईल को तौबा के लिये ख़ुद उन के अपने क़त्ल का हुक्म दिया वोह इन्कार न कर सके और उन्हों ने इत़ाअ़त की। **389 :** या'नी मछली का शिकार वग़ैरा जो अ़मल इस रोज़ तुम्हारे लिये ह़लाल नहीं, न करो। सूरए बक़र में इन तमाम अह़काम की तफ़्सीलें गुज़र चुकीं। **390 :** कि जो उन्हें हुक्म दिया गया है वोह करें और जिस की मुमानअ़त की गई है उस से बाज़ रहें, फिर उन्हों ने इस अ़ह्द को तोड़ा।

www.dawateislami.net

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ

आयाते इलाही के मुन्किर हुए[391] और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते[392] और उन के इस कहने पर कि हमारे दिलों पर गिलाफ़ हैं[393] बल्कि

طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۪ ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ

अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मोहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े और इस लिये कि उन्हों ने कुफ़्र किया[394]

وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ۙ ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ

और मरयम पर बड़ा बोहतान उठाया (बांधा) और उन के इस कहने पर कि हम ने मसीह

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ

ईसा बिन मरयम **अल्लाह** के रसूल को शहीद किया[395] और है येह कि उन्हों ने न उसे क़त्ल किया न उसे सूली दी बल्कि उन के लिये उस की शबीह (शक्लो सूरत) का

لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ

एक बना दिया गया[396] और वोह जो उस के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ज़रूर उस की तरफ़ से शुब्हे में पड़े हुए हैं[397] उन्हें उस की कुछ भी ख़बर नहीं[398]

اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ

मगर येही गुमान की पैरवी[399] और बेशक उन्हों ने उस को क़त्ल न किया[400] बल्कि **अल्लाह** ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया[401] और

اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ

अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है कोई किताबी ऐसा नहीं जो उस की मौत से पहले

قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ

उस पर ईमान न लाए[402] और क़ियामत के दिन वोह उन पर गवाह होगा[403] तो यहूदियों के बड़े

391 : जो अम्बिया के सिद्क़ पर दलालत करते थे, जैसे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात। **392 :** अम्बिया का क़त्ल करना तो नाहक़ है ही, किसी तरह हक़ हो ही नहीं सकता, लेकिन यहां मक़्सूद येह है कि उन के ज़ो'म में भी उन्हें इस का कोई इस्तिहक़ाक़ (हक़ हासिल) न था। **393 :** लिहाज़ा कोई पन्द (नसीहत) व वा'ज़ कारगर नहीं हो सकता। **394 :** हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ भी। **395 :** यहूद ने दा'वा किया कि उन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़त्ल कर दिया और नसारा ने इस की तस्दीक़ की थी, **अल्लाह** तआला ने इन दोनों की तक्ज़ीब फ़रमा दी। **396 :** जिस को उन्हों ने क़त्ल किया और ख़याल करते रहे कि येह हज़रते ईसा हैं, बा वुजूदे कि उन का येह ख़याल ग़लत था। **397 :** और यक़ीनी नहीं कह सकते कि वोह मक़्तूल कौन है। बा'ज़े कहते हैं कि येह मक़्तूल ईसा हैं, बा'ज़ कहते हैं कि येह चेहरा तो ईसा का है और जिस्म ईसा का नहीं, लिहाज़ा येह वोह नहीं। इसी तरद्दुद (शशो पन्ज) में हैं। **398 :** जो हक़ीक़ते हाल है। **399 :** और अट्कलें दौड़ाना। **400 :** उन का दा'वाए क़त्ल झूटा है। **401 :** सहीहो सालिम ब सूए आस्मान (आस्मान की तरफ़)। **अहादीस** में इस की तफ़्सीलें वारिद हैं, सूरए आले इमरान में इस वाक़िए का ज़िक्र गुज़र चुका है। **402 :** इस आयत की तफ़्सीर में चन्द क़ौल हैं : **एक क़ौल** येह है कि यहूदो नसारा को अपनी मौत के वक़्त जब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते नज़र आते हैं तो वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आते हैं जिन के साथ उन्हों ने कुफ़्र किया था और उस वक़्त का ईमान मक़्बूल व मो'तबर नहीं। **दूसरा क़ौल** येह है कि क़रीबे क़ियामत जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से नुज़ूल फ़रमाएंगे उस वक़्त के तमाम अहले किताब उन पर ईमान ले आएंगे, उस वक़्त हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات शरीअ़ते मुहम्मदिय्यह के मुताबिक़ हुक्म करेंगे, और इसी दीन के अइम्मा में से एक इमाम की हैसिय्यत में होंगे और नसारा ने इन की निस्बत

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ عَنْ

ज़ुल्म के[404] सबब हम ने वोह बा'ज़ सुथरी चीज़ें कि उन के लिये ह़लाल थीं[405] उन पर ह़राम फ़रमा दीं और इस लिये कि उन्हों ने बहुतों

سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾ وَّ اَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَ قَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَ اَكْلِهِمْ

(बहुत से लोगों) को **अल्लाह** की राह से रोका और इस लिये कि वोह सूद लेते हालां कि वोह इस से मन्अ़ किये गए थे और लोगों का

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾

माल नाह़क़ खा जाते[406] और उन में जो काफ़िर हुए हम ने उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ

हां जो उन में इ़ल्म में पक्के[407] और ईमान वाले हैं वोह ईमान लाते हैं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी

اِلَيْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَ الْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَ الْمُؤْتُوْنَ

त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा[408] और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا

देने वाले और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब

ع ٢٢ ٢ عَظِيْمًا ۠﴿۱۶۲﴾ اِنَّاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ كَمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّ النَّبِيّٖنَ مِنْۢ

देंगे बेशक ऐ मह़बूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य भेजी जैसे वह़्य नूह़ और उस के बा'द पैग़म्बरों को

بَعْدِهٖ ۚ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطِ

भेजी[409] और हम ने इब्राहीम और इस्माई़ल और इस्ह़ाक़ और या'क़ूब और इन के बेटों

जो गुमान बांध रखे हैं उन का इब्त़ाल (रद) फ़रमाएंगे, दीने मुह़म्मदी की इशाअ़त करेंगे, उस वक़्त यहूदो नसारा को या तो इस्लाम क़बूल करना होगा या क़त्ल कर डाले जाएंगे। जिज़्या क़बूल करने का हुक्म ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल करने के वक़्त तक है। **तीसरा क़ौल** येह है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हर किताबी अपनी मौत से पहले सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ले आएगा। **चौथा क़ौल** येह है कि **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान ले आएगा लेकिन वक़्ते मौत का ईमान मक़्बूल नहीं, नाफ़ेअ़ न होगा। **403 :** या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام यहूद पर तो येह गवाही देंगे कि उन्हों ने आप की तक्ज़ीब की और आप के ह़क़ में ज़बाने त़ा'न दराज़ की और नसारा पर येह कि उन्हों ने आप को रब ठहराया और ख़ुदा का शरीक गर्दाना और अहले किताब में से जो लोग ईमान ले आएं उन के ईमान की भी आप शहादत देंगे। **404 :** नक़्ज़े अ़ह्द (वा'दा ख़िलाफ़ी) वग़ैरा जिन का ऊपर आयात में ज़िक्र हो चुका। **405 :** जिन का सूरए अन्आ़म की आयह "وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا" में बयान है। **406 :** रिश्वत वग़ैरा ह़राम त़रीक़ों से। **407 :** मिस्ल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के, जो इ़ल्मे रासिख़ (ज़बर दस्त इ़ल्म) और अ़क़्ले साफ़ी (या'नी शुकूको शुबुहात से पाक अ़क़्ल) और बसीरते कामिला रखते थे। उन्हों ने अपने इ़ल्म से दीने इस्लाम की ह़क़ीक़त को जाना और सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **408 :** पहले अम्बिया पर। **409 : शाने नुज़ूल :** यहूदो नसारा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जो येह सुवाल किया था कि उन के लिये आस्मान से यक्बारगी किताब नाज़िल की जाए तो वोह आप की नुबुव्वत पर ईमान लाएं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ ۚ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾

और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान को वह्य की और हम ने दावूद को ज़बूर अ़ता फ़रमाई

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ

और रसूलों को जिन का ज़िक्र आगे हम तुम से फ़रमा चुके[410] और उन को जिन का ज़िक्र तुम से

عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ

न फ़रमाया[411] और **अल्लाह** ने मूसा से ह़क़ीक़तन कलाम फ़रमाया[412] रसूल ख़ुश ख़बरी देते[413] और डर सुनाते[414]

لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا

कि रसूलों के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे[415] और **अल्लाह** ग़ालिब

حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾ لَّٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ وَ

हिक्मत वाला है लेकिन ऐ मह़बूब **अल्लाह** इस का गवाह है जो उस ने तुम्हारी त़रफ़ उतारा वोह उस ने अपने इ़ल्म से उतारा है और

الْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ

फ़िरिश्ते गवाह हैं और **अल्लाह** की गवाही काफ़ी वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया[416] और

صَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾ إِنَّ الَّذِينَ

अल्लाह की राह से रोका[417] बेशक वोह दूर की गुमराही में पड़े बेशक जिन्हों

के सिवा ब कसरत अम्बिया हैं जिन में से ग्यारह के अस्माए शरीफ़ा यहां आयत में बयान फ़रमाए गए हैं, अहले किताब इन सब की नुबुव्वत को मानते हैं, इन सब ह़ज़रात में से किसी पर यक्बारगी किताब नाज़िल न हुई तो जब इस वज्ह से इन की नुबुव्वत तस्लीम करने में अहले किताब को कुछ पसो पेश न हुवा तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत तस्लीम करने में क्या उ़ज़्र है और मक़्सूद रसूलों के भेजने से ख़ल्क़ की हिदायत और इन को **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद व मा'रिफ़त का दर्स देना और ईमान की तक्मील और त़रीक़े इबादत की ता'लीम है, किताब के मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर नाज़िल होने से येह मक़्सद बर वज्हे अतम ह़ासिल होता है कि थोड़ा थोड़ा ब आसानी दिल नशीन होता चला जाता है। इस ह़िक्मत को न समझना और ए'तिराज़ करना कमाले ह़माक़त (इन्तिहाई बे वुक़ूफ़ी) है। **410 :** क़ुरआन शरीफ़ में नाम बनाम फ़रमा चुके हैं। **411 :** और अब तक उन के अस्मा की तफ़्सील क़ुरआने पाक में ज़िक्र नहीं फ़रमाई गई। **412 :** तो जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बे वासित़ा कलाम फ़रमाना दूसरे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की नुबुव्वत में क़ादेह़ (ऐ़ब लगाने वाला) नहीं जिन से इस त़रह़ कलाम नहीं फ़रमाया गया, ऐसे ही ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर किताब का यक्बारगी नाज़िल होना दूसरे अम्बिया की नुबुव्वत में कुछ भी क़ादेह़ नहीं हो सकता। **413 :** सवाब की ईमान लाने वालों को **414 :** अ़ज़ाब का कुफ़्र करने वालों को **415 :** और येह कहने का मौक़अ़ न हो कि अगर हमारे पास रसूल आते तो हम ज़रूर उन का हुक्म मानते और **अल्लाह** के मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार होते। इस आयत से येह मस्अला मा'लूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला रसूलों की बि'सत से क़ब्ल ख़ल्क़ पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता जैसा दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया : "وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا" (और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें)। और येह मस्अला भी साबित होता है कि मा'रिफ़ते इलाही बयाने शरअ़ व ज़बाने अम्बिया ही से ह़ासिल होती है अ़क़्ले मह़्ज़ (सिर्फ़ अ़क़्ल) से इस मन्ज़िल तक पहुंचना मुयस्सर नहीं होता। **416 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इन्कार कर के। **417 :** हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त छुपा कर और लोगों के दिलों में शुबा डाल कर (येह ह़ाल यहूद का है।)

www.dawateislami.net

كَفَرُوْا وَ ظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿۱۶۸﴾ اِلَّا

ने कुफ़्र किया[418] और ह़द से बढ़े[419] अल्लाह हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा[420] न उन्हें कोई राह दिखाए मगर

طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۶۹﴾

जहन्नम का रास्ता कि उस में हमेशा हमेशा रहेंगे और येह अल्लाह को आसान है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا

ऐ लोगो तुम्हारे पास येह रसूल[421] ह़क़ के साथ तुम्हारे रब की त़रफ़ से तशरीफ़ लाए तो ईमान लाओ

لَّكُمْ ؕ وَ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

अपने भले को और अगर तुम कुफ़्र करो[422] तो बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और अल्लाह

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷۰﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا

इल्मो हिक्मत वाला है ऐ किताब वालो अपने दीन में ज़ियादती न करो[423] और अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

न कहो मगर सच[424] मसीह़ ईसा मरयम का बेटा[425] अल्लाह का रसूल ही है

وَ كَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَ رُوْحٌ مِّنْهُ ؗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚ۫ وَ

और उस का एक कलिमा[426] कि मरयम की त़रफ़ भेजा और उस के यहां की एक रूह़ तो अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ[427] और

418 : अल्लाह के साथ 419 : किताबे इलाही में ह़ुज़ूर के औसाफ़ बदल कर और आप की नुबुव्वत का इन्कार कर के 420 : जब तक वोह कुफ़्र पर क़ाइम रहें या कुफ़्र पर मरें। 421 : सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم 422 : और सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत का इन्कार करो तो इस में उन का कुछ ज़रर नहीं और अल्लाह तुम्हारे ईमान से बे नियाज़ है। 423 **शाने नुज़ूल :** येह आयत नसारा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन के कई फ़िर्क़े हो गए थे और हर एक ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत जुदागाना कुफ़्री अ़क़ीदा रखता था। नस्तूरी आप को ख़ुदा का बेटा कहते थे, मरकूसी कहते कि वोह तीन में के तीसरे हैं। और इस कलिमे की तौजीहात में भी इख़्तिलाफ़ था : बा'ज़ तीन उक़्नूम मानते थे और कहते थे कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस। बाप से ज़ात, बेटे से ईसा, रूहुल क़ुदुस से इन में ह़ुलूल करने वाली ह़यात मुराद लेते थे। तो उन के नज़्दीक "इलाह" तीन थे और इस तीन को एक बताते थे "तौह़ीद फ़ित्तस्लीस" (तीनों के मज्मूए को ख़ुदा समझने) और "तस्लीस फ़ित्तौह़ीद" (तीनों में से हर एक को ख़ुदा समझने) के चक्कर में गिरिफ़्तार थे। बा'ज़ कहते थे कि ईसा नासूतिय्यत (बशरिय्यत) और उलूहिय्यत (मा'बूदिय्यत) के जामेअ़ हैं, मां की त़रफ़ से इन में "नासूतिय्यत" आई, और बाप की त़रफ़ से "उलूहिय्यत" आई, تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (अल्लाह इन की बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है)। येह फ़िर्क़ा बन्दी नसारा में एक यहूदी ने पैदा की जिस का नाम बौलुस था और उस ने उन्हें गुमराह करने के लिये इस क़िस्म के अ़क़ीदों की ता'लीम की। इस आयत में अहले किताब को हिदायत की गई कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाब में इफ़्रातो तफ़्रीत़ (कमी ज़ियादती) से बाज़ रहें, ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा भी न कहें और इन की तन्क़ीस (शान में कमी) भी न करें। 424 : अल्लाह का शरीक और बेटा भी किसी को न बनाओ और ह़ुलूल व इत्तिह़ाद (या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ात में ख़ुदा के उतर आने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام व ह़ज़रते मरयम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का मिल कर एक ख़ुदा होने) का ऐ़ब भी मत लगाओ और इस ए'तिक़ादे ह़क़ पर रहो कि 425 : है और इस मोह़तरम के लिये इस के सिवा कोई नसब नहीं 426 : कि "कुन" फ़रमाया और वोह बिग़ैर बाप और बिग़ैर नुत़्फ़े के मह़्ज़ अम्रे इलाही से पैदा हो गए। 427 : और तस्दीक़

www.dawateislami.net

لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ

तीन न कहो[428] बाज़ रहो अपने भले को **अल्लाह** तो एक ही ख़ुदा है[429] पाकी उसे

اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى

وقف لازم

इस से कि उस के कोई बच्चा हो उसी का माल है जो आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[430] और **अल्लाह** काफ़ी

بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا

ع ٢٣

कारसाज़ (काम बनाने वाला) है हरगिज़ मसीह **अल्लाह** का बन्दा बनने से कुछ नफ़रत नहीं करता[431] और न

الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ

मुक़र्रब फ़िरिश्ते और जो **अल्लाह** की बन्दगी से नफ़रत और तकब्बुर करे

فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

तो कोई दम जाता है कि वोह उन सब को अपनी त़रफ़ हांकेगा[432] तो वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا

उन की मज़दूरी उन्हें भरपूर दे कर अपने फ़ज़्ल से उन्हें और ज़ियादा देगा और वोह जिन्हों ने[433] नफ़रत

وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और तकब्बुर किया था उन्हें दर्दनाक सज़ा देगा और **अल्लाह** के सिवा न अपना कोई

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ

हिमायती पाएंगे न मददगार ऐ लोगो बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से वाज़ेह़ दलील आई[434] और

اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا

हम ने तुम्हारी त़रफ़ रोशन नूर उतारा[435] तो वोह जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और उस की रस्सी मज़बूत़

करो कि **अल्लाह** वाहि़द है, बेटे और औलाद से पाक है और उस के रसूलों की तस्दीक़ करो और इस की, कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** के रसूलों में से हैं **428 :** जैसा कि नसारा का अ़क़ीदा है कि वोह कुफ़्रे मह़ज़ (ख़ालिस कुफ़्र) है **429 :** कोई उस का शरीक नहीं। **430 :** और वोह सब का मालिक है और जो मालिक हो वोह बाप नहीं हो सकता। **431 शाने नुज़ूल :** नसाराए नजरान का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उस ने हुज़ूर से कहा कि आप ह़ज़रते ईसा को ऐब लगाते हैं कि वोह **अल्लाह** के बन्दे हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ईसा के लिये येह आ़र की बात नहीं। इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। **432 :** या'नी आख़िरत में इस तकब्बुर की सज़ा देगा। **433 :** इबादते इलाही बजा लाने से **434 :** दलीले वाज़ेह़ से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी मुराद है जिन के सिद्क़ पर इन के मो'जिज़े शाहिद हैं और मुन्किरीन की अ़क़्लों को ह़ैरान कर देते हैं। **435 :** या'नी क़ुरआने पाक।

بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا

थामी तो अन्क़रीब **अल्लाह** उन्हें अपनी रहमत और अपने फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा[436] और उन्हें अपनी त़रफ़ सीधी राह

مُّسْتَقِيْمًا ۭ ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ۭ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ۭ اِنِ امْرُؤٌا

दिखाएगा ऐ महबूब तुम से फ़तवा पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि **अल्लाह** तुम्हें कलालह[437] में फ़तवा देता है अगर किसी मर्द

هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ

का इन्तिक़ाल हो जो बे औलाद है[438] और उस की एक बहन हो तो तर्के में से उस की बहन का आधा है[439] और मर्द अपनी बहन का वारिस होगा

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۭ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۭ

अगर बहन की औलाद न हो[440] फिर अगर दो बहनें हों तर्के में उन का दो तिहाई

وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَاۗءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ

और अगर भाई बहन हों मर्द भी और औ़रतें भी तो मर्द का ह़िस्सा दो औ़रतों के बराबर

ع ٢٤ ٥ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ ع

अल्लाह तुम्हारे लिये साफ़ बयान फ़रमाता है कि कहीं बहक न जाओ और **अल्लाह** हर चीज़ जानता है

اٰيَاتُهَا ١٢٠ | ٥ سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ ١١٢ | رُكُوْعَاتُهَا ١٦

सूरए माइदह मदनिय्या है, इस में एक सो बीस आयात और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला

436 : और जन्नत व दरजाते आ़लिया अ़त़ा फ़रमाएगा। 437 : "कलालह" उस को कहते हैं जो अपने बा'द न बाप छोड़े न औलाद। 438 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि वोह बीमार थे तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मअ़ ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते जाबिर बेहोश थे, ह़ज़रत ने वुज़ू फ़रमा कर आबे वुज़ू उन पर डाला, उन्हें इफ़ाक़ा हुवा आंख खोल कर देखा तो हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हैं, अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं अपने माल का क्या इन्तिज़ाम करूं? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई (بخاری و مسلم), अबू दावूद की रिवायत में येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया : ऐ जाबिर! मेरे इ़ल्म में तुम्हारी मौत इस बीमारी से नहीं है। इस ह़दीस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए। **मस्अला :** बुज़ुर्गों का आबे वुज़ू तबर्रुक है और इस को हुसूले शिफ़ा के लिये इस्ति'माल करना सुन्नत है। **मस्अला :** मरीज़ों की इयादत सुन्नत है। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने उ़लूमे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाए हैं, इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मा'लूम था कि ह़ज़रते जाबिर की मौत इस मरज़ में नहीं है। 439 : अगर वोह बहन सगी या बाप शरीक हो। 440 : या'नी अगर बहन बे औलाद मरी और भाई रहा तो वोह भाई उस के कुल माल का वारिस होगा। 1 : सूरए माइदह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई सिवाए आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" के, येह आयत रोज़े अ़रफ़ा, ह़ज्जतुल वदाअ़ में नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे में इस को पढ़ा इस में एक सो बीस आयतें और बारह हज़ार चार सो चौंसठ ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ۬ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِیْمَةُ الْاَنْعَامِ

ऐ ईमान वालो अपने क़ौल (अ़ह्द) पूरे करो[2] तुम्हारे लिये ह़लाल हुए बे ज़बान मवेशी

اِلَّا مَا یُتْلٰى عَلَیْكُمْ غَیْرَ مُحِلِّی الصَّیْدِ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌؕ اِنَّ اللّٰهَ یَحْكُمُ

मगर वोह जो आगे सुनाया जाएगा तुम को[3] लेकिन शिकार ह़लाल न समझो जब तुम एह़राम में हो[4] बेशक अल्लाह हुक्म फ़रमाता है

مَا یُرِیْدُ ﴿۱﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآىٕرَ اللّٰهِ وَ لَا الشَّهْرَ

जो चाहे ऐ ईमान वालो ह़लाल न ठहरा लो अल्लाह के निशान[5] और न अदब

الْحَرَامَ وَ لَا الْهَدْیَ وَ لَا الْقَلَآىٕدَ وَ لَاۤ آٰمِّیْنَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ یَبْتَغُوْنَ

वाले महीने[6] और न ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां और न[7] जिन के गले में अ़लामतें आवेज़ां[8] और न उन का माल आबरू जो इ़ज़्ज़त वाले घर का क़स्द कर के आएं[9]

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًاؕ وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْاؕ وَ لَا یَجْرِمَنَّكُمْ

अपने रब का फ़ज़्ल और उस की ख़ुशी चाहते और जब एह़राम से निकलो तो शिकार कर सकते हो[10] और तुम्हें किसी

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْاۘ وقف لازم

क़ौम की अ़दावत कि उन्हों ने तुम को मस्जिदे ह़राम से रोका था ज़ियादती करने पर न उभारे[11]

2 : उ़क़ूद के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : इब्ने जरीर ने कहा कि अहले किताब को ख़ित़ाब फ़रमाया गया है, मा'ना येह हैं कि ऐ मोमिनीने अहले किताब ! मैं ने कुतुबे मुतक़द्दिमा (साबिक़ा आस्मानी किताबों) में सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की इत़ाअ़त करने के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम से अ़ह्द लिये हैं वोह पूरे करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि ख़ित़ाब मोमिनीन को है, इन्हें उ़क़ूद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन उ़क़ूद से मुराद ईमान और वोह अ़ह्द हैं जो ह़राम व ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक में लिये गए। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस में मोमिनीन के बाहमी मुआ़हदे मुराद हैं। **3 :** या'नी जिन की हुरमत शरीअ़त में वारिद हुई उन के सिवा तमाम चौपाए तुम्हारे लिये ह़लाल किये गए। **4 मस्अला :** कि ख़ुश्की का शिकार ह़ालते एह़राम में ह़राम है और दरियाई शिकार जाइज़ है जैसा कि इस सूरत के आख़िर में आएगा। **5 :** उस के दीन के मआ़लिम (अरकाने ह़ज या अह़कामे इस्लाम)। मा'ना येह हैं कि जो चीज़ें अल्लाह ने फ़र्ज़ कीं और जो मन्अ़ फ़रमाईं सब की हुरमत का लिह़ाज़ रखो। **6 :** माह-हाए ह़ज जिन में "क़िताल" ज़मानए जाहिलिय्यत में भी मम्नूअ़ था और इस्लाम में भी येह हुक्म बाक़ी रहा। **7 :** वोह क़ुरबानियां। **8 :** अ़रब के लोग क़ुरबानियों के गले में ह़रम शरीफ़ के अश्जार की छालों वग़ैरा से गुलूबन्द बुन कर डालते थे ताकि देखने वाले जान लें कि येह ह़रम को भेजी हुई क़ुरबानियां हैं और इन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करें **9 :** ह़ज व उ़मरह करने के लिये। **शाने नुज़ूल :** शुरैह़ बिन हिन्द एक मश्हूर शक़ी (बद बख़्त) था, वोह मदीनए त़य्यिबा में आया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगा कि आप ख़ल्क़े ख़ुदा को क्या दा'वत देते हैं ? फ़रमाया : अपने रब के साथ ईमान लाने और अपनी रिसालत की तस्दीक़ करने और नमाज़ क़ाइम रखने और ज़कात देने की, कहने लगा बहुत अच्छी दा'वत है, मैं अपने सरदारों से राय ले लूं तो मैं भी इस्लाम लाऊंगा और उन्हें भी लाऊंगा, येह कह कर चला गया। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस के आने से पहले ही अपने अस्ह़ाब को ख़बर दे दी थी कि क़बीलए रबीआ़ का एक शख़्स आने वाला है जो शैत़ानी ज़बान बोलेगा। उस के चले जाने के बा'द ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि काफ़िर का चेहरा ले कर आया और ग़ादिर व बद अ़ह्द की त़रह़ पीठ फेर कर गया, येह इस्लाम लाने वाला नहीं। चुनान्चे उस ने ग़द्र (धोका) किया और मदीने शरीफ़ से निकलते हुए वहां के मवेशी और अम्वाल ले गया। अगले साल यमामा के ह़ाजियों के साथ तिजारत का कसीर सामान और ह़ज की क़िलादा पोश (हार व गुलूबन्द पहनाई हुई) क़ुरबानियां ले कर ब इरादए ह़ज निकला, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, राह में सह़ाबा ने शुरैह़ को देखा और चाहा कि मवेशी उस से वापस ले लें, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि जिस की ऐसी शान हो उस से तअ़र्रुज़ न चाहिये। **10 :** येह बयाने इबाह़त है कि एह़राम के बा'द शिकार मुबाह़ हो जाता है। **11 :** या'नी अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप के अस्ह़ाब को रोज़े

www.dawateislami.net

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪

और नेकी और परहेज़ गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो[12]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝۲ حُرِّمَتْ عَلَیْكُمُ الْمَیْتَةُ

ع

और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है तुम पर ह़राम है[13] मुर्दार

وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِیْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَ

और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे और

الْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّیَةُ وَالنَّطِیْحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا

बे धार की चीज़ से मारा हुवा और जो गिर कर मरा और जिसे किसी जानवर ने सींग मारा और जिसे कोई दरिन्दा खा गया मगर जिन्हें

ذَكَّیْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ

तुम ज़ब्ह़ कर लो और जो किसी थान (बात़िल मा'बूदों के मख़्सूस निशानात) पर ज़ब्ह़ किया गया और पांसे डाल कर बांटा करना येह गुनाह

فِسْقٌ ؕ اَلْیَوْمَ یَىٕسَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِیْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

का काम है आज तुम्हारे दीन की त़रफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई[14] तो उन से न डरो

हुदैबिया उ़म्रे से रोका, उन के इस मुआ़निदाना (दुश्मनाना) फ़े'ल का तुम इन्तिक़ाम न लो। **12 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया जिस का हुक्म दिया गया उस का बजा लाना "بِرّ" (नेकी) और जिस से मन्अ़ फ़रमाया गया उस को तर्क करना "तक़्वा" और जिस का हुक्म दिया गया उस को न करना "اِثْم" (गुनाह) और जिस से मन्अ़ किया गया उस को करना "عدوان" (ज़ियादती) कहलाता है। **13 :** आयत "اِلَّا مَا یُتْلٰى عَلَیْكُمْ" में जो इस्तिस्ना ज़िक्र फ़रमाया गया था यहां उस का बयान है और ग्यारह चीज़ों की ह़ुरमत का ज़िक्र किया गया है **एक** मुर्दार या'नी जिस जानवर के लिये शरीअ़त में ज़ब्ह़ का हुक्म हो और वोह बे ज़ब्ह़ मर जाए। **दूसरे** बहने वाला ख़ून। **तीसरे** सुअर का गोश्त और इस के तमाम अज्ज़ा। **चौथे** वोह जानवर जिस के ज़ब्ह़ के वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते थे, और जिस जानवर को ज़ब्ह़ तो सिर्फ़ **अल्लाह** के नाम पर किया गया हो मगर दूसरे अवक़ात में वोह ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ मन्सूब रहा हो वोह ह़राम नहीं जैसे कि अ़ब्दुल्लाह की गाय, अ़क़ीक़े का बकरा, वलीमे का जानवर, या वोह जानवर जिन से औलिया की अरवाह़ को सवाब पहुंचाना मन्ज़ूर हो उन को ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में औलिया के नामों के साथ नामज़द किया जाए मगर ज़ब्ह़ उन का फ़क़त़ **अल्लाह** के नाम पर हो, उस वक़्त किसी दूसरे का नाम न लिया जाए वोह ह़लाल व त़य्यिब हैं। इस आयत में सिर्फ़ उसी को ह़राम फ़रमाया गया है जिस को ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम लिया गया हो, वहाबी जो ज़ब्ह़ की क़ैद नहीं लगाते वोह आयत के मा'ना में ग़लत़ी करते हैं और उन का क़ौल तमाम तफ़ासीरे मो'तबरा के ख़िलाफ़ है और ख़ुद आयत उन के मा'ना को बनने नहीं देती क्यूं कि "مَاۤ اُهِلَّ بِهٖ" को अगर वक़्ते ज़ब्ह़ के साथ मुक़य्यद न करें तो "اِلَّا مَا ذَكَّیْتُمْ" का इस्तिस्ना इस को लाह़िक़ होगा और वोह जानवर जो ग़ैरे वक़्ते ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा के नाम से मौसूम रहा हो वोह "اِلَّا مَا ذَكَّیْتُمْ" से ह़लाल होगा। ग़रज़ वहाबी को आयत से सनद लाने की कोई सबील नहीं। **पांचवां** गला घोंट कर मारा हुवा जानवर। **छटे** वोह जानवर जो लाठी, पथ्थर, ढेले, गोली, छर्रे या'नी बिग़ैर धारदार चीज़ से मारा गया हो। **सातवें** जो गिर कर मरा हो ख़्वाह पहाड़ से या कूंएं वग़ैरा में। **आठवें** वोह जानवर जिसे दूसरे जानवर ने सींग मारा हो और वोह उस के सदमे से मर गया हो। **नवें** वोह जिसे किसी दरिन्दे ने थोड़ा सा खाया हो और वोह उस के ज़ख़्म की तक्लीफ़ से मर गया हो। लेकिन अगर येह जानवर मर न गए हों और बा'द ऐसे वाक़िआ़त के ज़िन्दा बच रहे हों फिर तुम उन्हें बा क़ाइदा ज़ब्ह़ कर लो तो वोह ह़लाल हैं। **दसवें** वोह जो किसी थान पर इ़बादतन ज़ब्ह़ किया गया हो जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने का'बे शरीफ़ के गिर्द तीन सो साठ पथ्थर नस्ब किये थे जिन की वोह इ़बादत करते और उन के लिये ज़ब्ह़ करते थे और इस ज़ब्ह़ से उन की ता'ज़ीम व तक़र्रुब की निय्यत करते थे। **ग्यारहवें** ह़िस्सा और हुक्म मा'लूम करने के लिये पांसा (क़ुरआ़) डालना, ज़मानए जाहिलिय्यत के लोगों को जब सफ़र या जंग या तिजारत या निकाह़ वग़ैरा काम दरपेश होते तो वोह तीन तीरों से पांसे डालते और जो निकलता उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते और इस को हुक्मे इलाही जानते, इन सब की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **14 :** येह आयत ह़ज्जतुल वदाअ़ में अ़रफ़ा के रोज़ जो जुमुआ़ को था बा'दे अ़स्र नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन पर ग़ालिब आने से मायूस हो गए।

www.dawateislami.net

وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ

और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया[15] और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी[16]

وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ

और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया[17] तो जो भूक प्यास की शिद्दत में नाचार (मजबूर) हो यूं कि

مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ

गुनाह की त़रफ़ न झुके[18] तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ मह़बूब तुम से पूछते हैं कि उन के लिये क्या

لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ

ह़लाल हुवा तुम फ़रमा दो कि ह़लाल की गईं तुम्हारे लिये पाक चीज़ें[19] और जो शिकारी जानवर तुम ने सधा (सिखा) लिये[20] उन्हें शिकार पर दौड़ाते

تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّاۤ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَ

जो इल्म तुम्हें ख़ुदा ने दिया उस में से उन्हें सिखाते तो खाओ उस में से जो वोह मार कर तुम्हारे लिये रहने दें[21] और

15 : और उमूरे तक्लीफ़िय्या (बन्दों पर लाज़िम चीज़ों) में ह़राम व ह़लाल के जो अह़काम हैं वोह और क़ियास के क़ानून सब मुकम्मल कर दिये, इसी लिये इस आयत के नुज़ूल के बा'द बयाने ह़लाल व ह़राम की कोई आयत नाज़िल न हुई अगर्चे "وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ" नाज़िल हुई मगर वोह आयते मौइ़ज़त व नसीह़त है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि दीन कामिल करने के मा'ना इस्लाम को ग़ालिब करना है। जिस का येह असर है कि ह़ज्जतुल वदाअ़ में जब येह आयत नाज़िल हुई कोई मुश्रिक मुसल्मानों के साथ ह़ज में शरीक न हो सका। एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि मैं ने तुम्हें दुश्मन से अम्न दी, एक क़ौल येह है कि दीन का इक्माल येह है कि वोह पिछली शरीअ़तों की त़रह मन्सूख़ न होगा और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा। **शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के पास एक यहूदी आया और उस ने कहा कि ऐ अमीरुल मुअमिनीन आप की किताब में एक आयत है अगर वोह हम यहूदियों पर नाज़िल हुई होती तो हम रोज़े नुज़ूल को ई़द मनाते, फ़रमाया : कौन सी आयत ? उस ने येही आयत "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ" पढ़ी, आप ने फ़रमाया : मैं उस दिन को जानता हूं जिस में येह नाज़िल हुई थी और इस के मक़ामे नुज़ूल को भी पहचानता हूं, वोह मक़ाम अ़रफ़ात का था और दिन जुमुआ़ का। आप की मुराद इस से येह थी कि हमारे लिये वोह दिन ई़द है। तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है आप से भी एक यहूदी ने ऐसा ही कहा, आप ने फ़रमाया कि जिस रोज़ येह नाज़िल हुई उस दिन दो ई़दें थीं जुमुआ़ व अ़रफ़ा। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी दीनी काम्याबी के दिन को ख़ुशी का दिन मनाना जाइज़ और सह़ाबा से साबित है वरना ह़ज़रते उ़मर व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ साफ़ फ़रमा देते कि जिस दिन कोई ख़ुशी का वाक़िआ़ हो उस की यादगार क़ाइम करना और उस रोज़ को ई़द मनाना हम बिदअ़त जानते हैं। इस से साबित हुवा कि ई़दे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूं कि वोह "اَعْظَمِ نِعَمِ اِلٰهِيَّه" (**अल्लाह** तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत) की यादगार व शुक्र गुज़ारी है। **16 :** मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर। **17 :** कि इस के सिवा कोई और दीन क़बूल नहीं। **18 :** मा'ना येह हैं कि ऊपर ह़राम चीज़ों का बयान कर दिया गया है लेकिन जब खाने पीने को कोई ह़लाल चीज़ मुयस्सर ही न आए और भूक प्यास की शिद्दत से जान पर बन जाए, उस वक़्त जान बचाने के लिये क़दरे ज़रूरत खाने पीने की इजाज़त है इस त़रह़ कि गुनाह की त़रफ़ माइल न हो या'नी ज़रूरत से ज़ियादा न खाए। और ज़रूरत इसी क़दर खाने से रफ़्अ़ हो जाती है जिस से ख़त़रए जान जाता रहे। **19 :** जिन की ह़ुरमत क़ुरआनो ह़दीस, इज्माअ़ और क़ियास से साबित नहीं है, एक क़ौल येह भी है कि त़य्यिबात वोह चीज़ें हैं जिन को अ़रब और सलीमुत्तब्अ़ (नेक त़बीअ़त) लोग पसन्द करते हैं और ख़बीस वोह चीज़ें हैं जिन से सलीम त़बीअ़तें नफ़रत करती हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी चीज़ की ह़ुरमत (ह़राम होने) पर दलील न होना भी उस की ह़िल्लत (ह़लाल होने) के लिये काफ़ी है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी इब्ने ह़ातिम और ज़ैद बिन मुहल्हिल के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन का नाम रसूले करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ज़ैदुल ख़ैर रखा था, इन दोनों साह़िबों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** हम लोग कुत्ते और बाज़ के ज़रीए शिकार करते हैं तो क्या हमारे लिये ह़लाल है ? तो इस पर आयते करीमा नाज़िल हुई। **20 :** ख़्वाह वोह दरिन्दों में से हों मिस्ल कुत्ते और चीते के या शिकारी परिन्दों में से मिस्ल शिक्रे, बाज़, शाहीन वग़ैरा के। जब उन्हें इस त़रह़ सधा लिया जाए कि जो शिकार करें उस में से न खाएं और जब शिकारी उन को छोड़े तब शिकार पर जाएं जब बुलाए वापस आ जाएं ऐसे शिकारी जानवरों को "मुअ़ल्लम" (सिखाया हुवा) कहते हैं। **21 :** और ख़ुद उस में से

www.dawateislami.net

اذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ④

उस पर **अल्लाह** का नाम लो[22] और **अल्लाह** से डरते रहो बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते देर नहीं लगती

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪

आज तुम्हारे लिये पाक चीज़ें हलाल हुईं और किताबियों का खाना[23] तुम्हारे लिये हलाल है

وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ

और तुम्हारा खाना उन के लिये हलाल है और पारसा (पाक दामन) औरतें मुसल्मान[24] और पारसा औरतें उन में से

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ

जिन को तुम से पहले किताब मिली जब तुम उन्हें उन के महर दो क़ैद में लाते हुए[25]

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ

न मस्ती निकालते और न आशना बनाते[26] और जो मुसल्मान से काफ़िर हो

ع ٥ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ⑤ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

उस का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ) गया और वोह आख़िरत में ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) है[27] ऐ ईमान वालो

اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ

जब नमाज़ को खड़े होना चाहो[28] तो अपने मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ[29]

न खाएं। **22 :** आयत से जो मुस्तफ़ाद (फ़ाएदा हासिल) होता है उस का ख़ुलासा येह है कि जिस शख़्स ने कुत्ता या शिकरा वग़ैरा कोई शिकारी जानवर शिकार पर छोड़ा तो उस का शिकार चन्द शर्तों से हलाल है : (1) शिकारी जानवर मुसल्मान का हो और सिखाया हुवा। (2) उस ने शिकारी को ज़ख़्म लगा कर मारा हो। (3) शिकारी जानवर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर छोड़ा गया हो (4) अगर शिकारी के पास शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो तो उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर ज़ब्ह करे। अगर इन शर्तों में से कोई शर्त न पाई गई तो हलाल न होगा। मसलन अगर शिकारी जानवर मुअ़ल्लम (सिखाया हुवा) न हो या उस ने ज़ख़्म न किया हो या शिकार पर छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा हो या शिकार ज़िन्दा पहुंचा हो और उस को ज़ब्ह न किया हो या मुअ़ल्लम के साथ ग़ैरे मुअ़ल्लम शिकार में शरीक हो गया हो या ऐसा शिकारी जानवर शरीक हो गया हो जिस को छोड़ते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" न पढ़ा गया हो या वोह शिकारी जानवर मजूसी (आतश परस्त) काफ़िर का हो, इन सब सूरतों में वोह शिकार हराम है। **मस्अला :** तीर से शिकार करने का भी येही हुक्म है अगर "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर तीर मारा और उस से शिकार मजरूह (ज़ख़्मी) हो कर मर गया तो हलाल है और अगर न मरा तो दोबारा उस को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ कर ज़ब्ह करे, अगर उस पर بِسْمِ اللّٰه न पढ़ी या तीर का ज़ख़्म उस को न लगा या ज़िन्दा पाने के बा'द उस को ज़ब्ह न किया इन सब सूरतों में हराम है। **23 :** या'नी इन के ज़बीहे। **मस्अला :** मुस्लिम व किताबी का ज़बीहा हलाल है ख़्वाह वोह मर्द हो या औरत या बच्चा। **24 :** निकाह करने में औरत की पारसाई (पाक दामनी) का लिहाज़ मुस्तहब है लेकिन सिह्हते निकाह के लिये शर्त नहीं। **25 :** निकाह कर के **26 :** ना जाइज़ त़रीक़े से मस्ती निकालने से बे धड़क ज़िना करना और आशना बनाने से पोशीदा ज़िना मुराद है। **27 :** क्यूं कि इरतिदाद (दीन से फिर जाने) से तमाम अ़मल अकारत (बरबाद) हो जाते हैं। **28 :** और तुम बे वुज़ू हो तो तुम पर वुज़ू फ़र्ज़ है और फ़राइज़ वुज़ू के येह चार हैं जो आगे बयान किये जाते हैं। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब हर नमाज़ के लिये ताज़ा वुज़ू के आ़दी थे अगर्चे एक वुज़ू से भी बहुत सी नमाज़ें फ़राइज़ व नवाफ़िल दुरुस्त हैं मगर हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू करना ज़ियादा बरकत व सवाब का मूजिब है, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इब्तिदाए इस्लाम में हर नमाज़ के लिये जुदागाना वुज़ू फ़र्ज़ था बा'द में मन्सूख़ किया गया और जब तक ह़दस (वुज़ू का टूटना) वाक़ेअ़ न हो एक ही वुज़ू से फ़राइज़ व नवाफ़िल सब का अदा करना जाइज़ हुवा। **29 :** कोहनियां भी धोने के हुक्म में दाख़िल हैं जैसा कि ह़दीस से साबित है, जम्हूर इसी पर हैं।

www.dawateislami.net

وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا

और सरों का मस्ह़ करो[30] और गट्टों तक पाउं धोओ[31] और अगर तुम्हें नहाने की ह़ाजत हो

فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ

तो ख़ूब सुथरे हो लो[32] और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए ह़ाजत

الْغَآىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا

से आया या तुम ने औ़रतों से सोह़बत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो

فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ

तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह़ करो **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ

مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ

तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۶﴾ وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ

एह़सान मानो और याद करो **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर[33] और वोह अ़ह्द जो उस ने तुम से

بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

लिया[34] जब कि तुम ने कहा हम ने सुना और माना[35] और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** दिलों की

الصُّدُوْرِ ﴿۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ

बात जानता है ऐ ईमान वालो **अल्लाह** के हुक्म पर ख़ूब क़ाइम हो जाओ इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ

गवाही देते[36] और तुम को किसी क़ौम की अ़दावत (दुश्मनी) इस पर न उभारे कि इन्साफ़ न करो इन्साफ़ करो वोह

30 : चौथाई सर का मस्ह़ फ़र्ज़ है येह मिक्दार ह़दीसे मुग़ीरा से साबित है और येह ह़दीस आयत का बयान है। **31 :** येह वुज़ू का चौथा फ़र्ज़ है। ह़दीसे सह़ीह़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कुछ लोगों को पाउं पर मस्ह़ करते देखा तो मन्अ़ फ़रमाया और अ़त़ा से मरवी है वोह ब क़सम फ़रमाते हैं कि मेरे इ़ल्म में अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में से किसी ने भी वुज़ू में पाउं पर मस्ह़ न किया। **32 मस्अला :** जनाबत से त़हारते कामिला लाज़िम होती है। जनाबत कभी बेदारी में दफ़्क़ व शहवत के साथ इन्ज़ाल से होती है और कभी नींद में एह़तिलाम से जिस के बा'द असर पाया जाए ह़त्ता कि अगर ख़्वाब याद आया मगर तरी न पाई तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा, और कभी सबीलैन में से किसी में इदख़ाले ह़शफ़ा से। फ़ाइ़ल व मफ़ऊ़ल दोनों के ह़क़ में ख़्वाह इन्ज़ाल हो या न हो। येह तमाम सूरतें जनाबत में दाख़िल हैं इन से ग़ुस्ल वाजिब हो जाता है। **मस्अला :** ह़ैज़ो निफ़ास से भी ग़ुस्ल लाज़िम होता है। ह़ैज़ का मस्अला सूरए बक़रह में गुज़र गया और निफ़ास का मूजिबे ग़ुस्ल होना इज्माअ़ से साबित है। तयम्मुम का बयान सूरए निसाअ में गुज़र चुका। **33 :** कि तुम्हें मुसल्मान किया। **34 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बैअ़त करते वक़्त शबे उ़क़्बा और बैअ़ते रिज़्वान में **35 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का हर हुक्म हर ह़ाल में। **36 :** इस त़रह़ कि क़राबत व

www.dawateislami.net

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰی ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸﴾ وَعَدَ

परहेज़ गारी से ज़ियादा क़रीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है ईमान

اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۹﴾

वाले नेकोकारों से अल्लाह का वा'दा है कि उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۱۰﴾ یٰۤاَیُّهَا

और वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोही दोज़ख़ वाले हैं[37] ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ یَّبْسُطُوْۤا

ईमान वालो अल्लाह का एह्सान अपने ऊपर याद करो जब एक क़ौम ने चाहा कि तुम पर

اِلَیْكُمْ اَیْدِیَهُمْ فَكَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ

दस्त दराज़ी करें तो उस ने उन के हाथ तुम पर से रोक दिये[38] और अल्लाह से डरो और मुसल्मानों को

٣ ع ٢ ٢ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۚ

अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और बेशक अल्लाह ने बनी इसराईल से अ़हद लिया[39]

وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَیْ عَشَرَ نَقِیْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مَعَكُمْ ؕ لَىٕنْ اَقَمْتُمُ

और हम ने उन में बारह सरदार क़ाइम किये[40] और अल्लाह ने फ़रमाया बेशक मैं[41] तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम

الصَّلٰوةَ وَاٰتَیْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ

नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और अल्लाह को

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ

क़र्ज़े हसन दो[42] तो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा

अ़दावत का कोई असर तुम्हें अ़द्ल से न हटा सके। **37 :** येह आयत नस्से क़ातेअ़ है इस पर कि ख़ुलूदे नार (हमेशा जहन्नम में रहना) सिवाए कुफ़्फ़ार के और किसी के लिये नहीं। (خازن) **38 शाने नुज़ूल :** एक मरतबा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक मन्ज़िल में क़ियाम फ़रमाया, अस्हाब जुदा जुदा दरख़्तों के साए में आराम करने लगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपनी तलवार एक दरख़्त में लटका दी, एक आ'राबी मौक़अ़ पा कर आया और छुप कर उस ने तलवार ली और तलवार खींच कर हुज़ूर से कहने लगा : ऐ मुह़म्मद ! तुम्हें मुझ से कौन बचाएगा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : "अल्लाह" । येह फ़रमाना था ह़ज़रते जिब्रील ने उस के हाथ से तलवार गिरा दी और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तलवार ले कर फ़रमाया कि तुझे मुझ से कौन बचाएगा ? कहने लगा कि कोई नहीं। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। (تفسیر ابو السعود) **39 :** कि अल्लाह की इबादत करेंगे, उस के साथ किसी को शरीक न करेंगे, तौरैत के अह़काम का इत्तिबाअ़ करेंगे। **40 :** हर सिब्त़ (गुरोह) पर एक सरदार जो अपनी क़ौम का ज़िम्मेदार हो कि वोह अ़हदे वफ़ा करेंगे और हुक्म पर चलेंगे। **41 :** मदद व नुसरत से **42 :** या'नी उस की राह में ख़र्च करो।

www.dawateislami.net

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ

जिन के नीचे नहरें रवां फिर इस के बा'द जो तुम में से कुफ़्र करे वोह ज़रूर सीधी

سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّیْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَ جَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ

राह से बहका[43] तो उन की कैसी बद अ़हदियों[44] पर हम ने उन्हें ला'नत की और उन के दिल

قٰسِیَةً ۚ یُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَ نَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا

सख़्त कर दिये **अल्लाह** की बातों को[45] उन के ठिकानों से बदलते हैं और भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी

بِهٖ ۚ وَ لَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ

गईं[46] और तुम हमेशा उन की एक न एक दग़ा पर मुत्तलअ़ होते रहोगे[47] सिवा थोड़ों के[48] तो उन्हें मुआफ़

عَنْهُمْ وَ اصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳﴾ وَ مِنَ الَّذِیْنَ قَالُوْۤا اِنَّا

कर दो और उन से दर गुज़रो[49] बेशक एहसान वाले **अल्लाह** को महबूब हैं और वोह जिन्हों ने दा'वा किया कि हम

نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِیْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَیْنَا

नसारा हैं हम ने उन से अ़हद लिया[50] तो वोह भुला बैठे बड़ा हिस्सा उन नसीहतों का जो उन्हें दी गईं[51] तो हम ने

بَیْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ؕ وَ سَوْفَ یُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ

उन के आपस में क़ियामत के दिन तक बैर (दुश्मनी) और बुग़्ज़ डाल दिया[52] और अ़न्क़रीब **अल्लाह** उन्हें बता देगा

43 : वाक़िआ़ येह था कि **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वा'दा फ़रमाया था कि उन्हें और उन की क़ौम को "अर्ज़े मुक़द्दसा" (बैतुल मक़्दिस) का वारिस बनाएगा जिस में कन्आ़नी जब्बार रहते थे तो फ़िरऔन के हलाक के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्मे इलाही हुवा कि बनी इसराईल को "अर्ज़े मुक़द्दसा" की त़रफ़ ले जाएं मैं ने उस को तुम्हारे लिये दारो क़रार बनाया है तो वहां जाओ और जो दुश्मन वहां हैं उन पर जिहाद करो, मैं तुम्हारी मदद फ़रमाऊंगा और ऐ मूसा ! तुम अपनी क़ौम के हर हर सिब्त़ (गुरोह) में से एक एक सरदार बनाओ, इस त़रह बारह सरदार मुक़र्रर करो हर एक उन में से अपनी क़ौम के हुक्म मानने और अ़हदे वफ़ा करने का ज़िम्मेदार हो, हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सरदार मुन्तख़ब कर के बनी इस्राईल को ले कर रवाना हुए, जब अरीहा (बस्ती) के क़रीब पहुंचे तो उन नक़ीबों को तजस्सुसे अह़वाल (ह़ालात का जाएज़ा लेने) के लिये भेजा, वहां उन्हों ने देखा कि लोग बहुत अ़ज़ीमुल जुस्सा (बड़े बड़े जिस्मों वाले) और निहायत क़वी व तुवाना साहिबे हैबतो शौकत हैं, येह उन से हैबत ज़दा हो कर वापस हुए और आ कर उन्हों ने अपनी क़ौम से सब ह़ाल बयान किया, बा वुजूदे कि उन को इस से मन्अ़ किया गया था लेकिन सब ने अ़हद शिकनी की सिवाए कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून के कि येह अ़हद पर क़ाइम रहे। **44 :** कि उन्हों ने अ़हदे इलाही को तोड़ा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब की और अम्बिया को क़त्ल किया, किताब के अह़काम की मुख़ालफ़त की। **45 :** जिन में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त है और जो तौरैत में बयान की गई हैं। **46 :** तौरैत में कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करें और उन पर ईमान लाएं। **47 :** क्यूं कि दग़ा व ख़ियानत व नक़्ज़े अ़हद और रसूलों के साथ बद अ़हदी उन की और उन के आबा की क़दीम आ़दत है। **48 :** जो ईमान लाए। **49 :** और जो कुछ उन से पहले सरज़द हुवा उस पर गिरिफ़्त न करो। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत उस क़ौम के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़हद किया फिर तोड़ा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस पर मुत्तलअ़ फ़रमाया और येह आयत नाज़िल की, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि उन की इस अ़हद शिकनी से दर गुज़र कीजिये जब तक कि वोह जंग से बाज़ रहें और जिज़्या अदा करने से मन्अ़ न करें। **50 :** **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाने का। **51 :** इन्जील में और उन्हों ने अ़हद शिकनी की। **52 :** क़तादा ने कहा कि जब नसारा ने किताबे इलाही (इन्जील) पर अ़मल करना

www.dawateislami.net

بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ

जो कुछ करते थे[53] ऐ किताब वालो[54] बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[55] तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर

لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ۬ قَدْ

फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं[56] और बहुत सी मुआफ़ फ़रमाते हैं[57] बेशक

جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ

तुम्हारे पास **अल्लाह** की तरफ़ से एक नूर आया[58] और रोशन किताब[59] **अल्लाह** इस से हिदायत देता है उसे जो **अल्लाह** की

رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ

मरज़ी पर चला सलामती के रास्ते और उन्हें अंधेरियों से रोशनी की तरफ़ ले जाता है अपने हुक्म से

وَ يَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ

और उन्हें सीधी राह दिखाता है बेशक काफ़िर हुए वोह जिन्हों ने कहा कि **अल्लाह**

هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ

मसीह बिन मरयम ही है[60] तुम फ़रमा दो फिर **अल्लाह** का कोई क्या कर सकता है अगर वोह चाहे कि

يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَ لِلّٰهِ

हलाक कर दे मसीह बिन मरयम और उस की मां और तमाम ज़मीन वालों को[61] और **अल्लाह**

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ

ही के लिये है सल्तनत आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की जो चाहे पैदा करता है और **अल्लाह**

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَ النَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ

सब कुछ कर सकता है और यहूदी और नसरानी बोले कि हम **अल्लाह** के बेटे

तर्क किया और रसूलों की ना फ़रमानी की, फ़राइज़ अदा न किये, हुदूद की परवाह न की तो **अल्लाह** तआला ने उन के दरमियान अदावत डाल दी। **53 :** या'नी रोज़े क़ियामत वोह अपने किरदार का बदला पाएंगे। **54 :** यहूदियो व नसरानियो ! **55 :** सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **56 :** जैसे कि आयते रज्म और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के औसाफ़ और हुज़ूर का इस को बयान फ़रमाना मो'जिज़ा है। **57 :** और उन का ज़िक्र भी नहीं करते न उन पर मुआख़ज़ा फ़रमाते हैं क्यूं कि आप उसी चीज़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं जिस में मस्लहत हो। **58 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नूर फ़रमाया गया क्यूं कि आप से तारीकिये कुफ़्र दूर हुई और राहे हक़ वाज़ेह हुई। **59 :** या'नी कुरआन शरीफ़। **60 :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि नजरान के नसारा से येह मक़ूला सरज़द हुवा और नसरानियों के फ़िर्क़े या'क़ूबिया व मलकानिया का येह मज़हब है वोह हज़रते मसीह को "**अल्लाह**" बताते हैं क्यूं कि वोह हुलूल के क़ाइल हैं और उन का ए'तिक़ादे बातिल येह है कि **अल्लाह** तआला ने बदने ईसा में हुलूल किया (समा गया)। مَعَاذَ اللّٰه । "وَتَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا" (**अल्लाह** उन की बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है)। **अल्लाह** तआला ने इस आयत में हुक्मे कुफ़्र दिया और इस के बा'द उन के मज़हब का फ़साद बयान फ़रमाया। **61 :** इस का जवाब येही है कि कोई कुछ नहीं कर सकता तो फिर हज़रते मसीह को **अल्लाह** बताना कितना सरीह बातिल है।

www.dawateislami.net

وَ اَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ

और उस के प्यारे हैं[62] तुम फ़रमा दो फिर तुम्हें क्यूं तुम्हारे गुनाहों पर अ़ज़ाब फ़रमाता है[63] बल्कि तुम आदमी हो उस की

خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

मख़्लूक़ात से जिसे चाहे बख़्शता है और जिसे चाहे सज़ा देता है और **अल्लाह** ही के लिये है सल्त़नत

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؗ وَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

आस्मानों और ज़मीन और इन के दरमियान की और उसी की त़रफ़ फिरना है ऐ किताब वालो

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا

बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल[64] तशरीफ़ लाए कि तुम पर हमारे अह़काम ज़ाहिर फ़रमाते हैं बा'द इस के कि रसूलों का आना मुद्दतों बन्द रहा था[65] कि तुम कहो

جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّ لَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّ نَذِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى

हमारे पास कोई ख़ुशी और डर सुनाने वाला न आया तो येह ख़ुशी और डर सुनाने वाले तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए हैं और **अल्लाह** को

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ ع وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ ٣ ع ٨ ٧

सब क़ुदरत है और जब मूसा ने कहा अपनी क़ौम से ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** का एह़सान अपने

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ

ऊपर याद करो कि तुम में से पैग़म्बर किये[66] और तुम्हें बादशाह किया[67] और तुम्हें वोह दिया जो

يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ

आज सारे जहान में किसी को न दिया[68] ऐ क़ौम उस पाक ज़मीन में दाख़िल हो

62 शाने नुज़ूल : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास अहले किताब आए और उन्हों ने दीन के मुआ़मले में आप से गुफ़्तगू शुरूअ़ की आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी और **अल्लाह** की ना फ़रमानी करने से उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! आप हमें क्या डराते हैं हम तो **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस दा'वे का बुत़्लान ज़ाहिर फ़रमाया गया। **63 :** या'नी इस बात का तो तुम्हें भी इक़रार है कि गिनती के दिन तुम जहन्नम में रहोगे तो सोचो कोई बाप अपने बेटे को या कोई शख़्स अपने प्यारे को आग में जलाता है ! जब ऐसा नहीं तो तुम्हारे दा'वे का किज़्ब व बुत़्लान तुम्हारे इक़रार से साबित है। **64 :** मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **65 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने तक पांच सो उन्हत्तर बरस की मुद्दत नबी से ख़ाली रही इस के बा'द हु़ज़ूर के तशरीफ़ लाने की मिन्नत (एह़सान) का इज़्हार फ़रमाया जाता है कि निहायत ह़ाजत के वक़्त तुम पर **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत भेजी गई और इस में इल्ज़ामे हु़ज्जत (दलील क़ाइम करना) व क़त़्ए उ़ज़्र (उ़ज़्र ख़त्म करना) भी है कि अब येह कहने का मौक़अ़ न रहा कि हमारे पास तम्बीह करने वाले तशरीफ़ न लाए। **66 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पैग़म्बरों की तशरीफ़ आवरी ने'मत है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को इस के ज़िक्र का हु़क्म दिया कि वोह बरकातो समरात का सबब है, इस से मह़ाफ़िले मीलादे मुबारक के मूजिबे बरकातो समरात और मह़मूदो मुस्तह़सन होने की सनद मिलती है। **67 :** या'नी आज़ाद व साहि़बे ह़शम व ख़िदम (नोकर चाकर वाला) और फ़िरऔ़नियों के हाथों में मुक़य्यद होने के बा'द उन की ग़ुलामी से नजात ह़ासिल कर के ऐशो आराम की ज़िन्दगी पाना बड़ी ने'मत है ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जो कोई ख़ादिम और औ़रत और सुवारी रखता वोह मलिक (बादशाह) कहलाया जाता। **68 :** जैसे कि दरिया में राह बनाना,

www.dawateislami.net

الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۱﴾

जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है और पीछे न पलटो[69] कि नुक़्सान पर पलटोगे

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ وَ اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى

बोले ऐ मूसा उस में तो बड़े ज़बर दस्त लोग हैं और हम उस में हरगिज़ दाख़िल न होंगे जब तक

يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ رَجُلٰنِ

वोह वहां से निकल न जाएं हां वोह वहां से निकल जाएं तो हम वहां जाएंगे दो मर्द

مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا

कि अल्लाह से डरने वालों में से थे[70] अल्लाह ने उन्हें नवाज़ा[71] बोले कि ज़बर दस्ती दरवाज़े में[72] उन पर दाख़िल हो अगर

دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۬ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾

तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो तुम्हारा ही ग़लबा है[73] और अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है

قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ

बोले[74] ऐ मूसा हम तो वहां[75] कभी न जाएंगे जब तक वोह वहां हैं तो आप जाइये और

رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا

आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं मूसा ने अ़र्ज़ की, कि ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर

نَفْسِيْ وَ اَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَ فَاِنَّهَا

अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख[76] फ़रमाया तो वोह

दुश्मन को ग़र्क़ करना, मन्न और सल्वा उतारना, पथ्थर से चश्मे जारी करना, अब्र को साएबान बनाना वग़ैरा। 69 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को अल्लाह की ने'मतें याद दिलाने के बा'द उन को अपने दुश्मनों पर जिहाद के लिये निकलने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ऐ क़ौम अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल हो जाओ। उस ज़मीन को मुक़द्दस इस लिये कहा गया कि वोह अम्बिया की मस्कन थी। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अम्बिया की सुकूनत से ज़मीनों को भी शरफ़ हासिल होता है और दूसरों के लिये वोह बाइसे बरकत होता है। कल्बी से मन्क़ूल है कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कोहे लुबनान पर चढ़े तो आप से कहा गया देखिये जहां तक आप की नज़र पहुंचे वोह जगह मुक़द्दस है और आप की ज़ुर्रिय्यत की मीरास है, येह सर ज़मीन तूर और उस के गिर्दो पेश की थी और एक क़ौल येह है कि तमाम मुल्के शाम 70 : कालिब बिन यूक़न्ना और यूशअ़ बिन नून जो उन नुक़बा (सरदारों) में से थे जिन्हें हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जबाबिरा का हाल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा था। 71 : हिदायत और वफ़ाए अ़हद के साथ उन्हों ने जबाबिरा का हाल सिर्फ़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया और इस का इफ़्शा (किसी और के सामने इज़्हार) न किया ब ख़िलाफ़ दूसरे नुक़बा के कि उन्हों ने इफ़्शा किया था। 72 : शहर के। 73 : क्यूं कि अल्लाह तआ़ला ने मदद का वा'दा किया है और उस का वा'दा ज़रूर पूरा होना है। तुम जब्बारीन के बड़े बड़े जिस्मों से अन्देशा न करो, हम ने उन्हें देखा है उन के जिस्म बड़े हैं और दिल कमज़ोर हैं। इन दोनों ने जब येह कहा तो बनी इसराईल बहुत बरहम हुए और उन्हों ने चाहा कि इन पर संगबारी करें। 74 : बनी इसराईल 75 : जब्बारीन के शहर में 76 : और हमें इन की सोहबत और

www.dawateislami.net

مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ

ज़मीन इन पर हराम है[77] चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में[78] तो तुम इन

عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ

बे हुक्मों का अफ़्सोस न खाओ और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर[79] जब

قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ

दोनों ने एक एक नियाज़ (कुरबानी) पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई बोला

لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ

क़सम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा[80] कहा **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है[81] बेशक अगर तू अपना हाथ

وقف لازم ، النصف

कुर्ब से बचा। या येह मा'ना कि हमारे इन के दरमियान फ़ैसला फ़रमा। **77 :** उस में न दाख़िल हो सकेंगे **78 :** वोह ज़मीन जिस में येह लोग भटक्ते फिरे नव फ़रसंग थी और क़ौम छ[6] लाख जंगी जो अपने सामान लिये तमाम दिन चलते थे, जब शाम होती तो अपने को वहीं पाते जहां से चले थे येह उन पर उक़ूबत (सज़ा) थी सिवाए हज़रते मूसा व हारून व यूशअ़ व कालिब के कि इन पर **अल्लाह** तआ़ला ने आसानी फ़रमाई और इन की इआ़नत की जैसा कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आग को सर्द और सलामती बनाया और इतनी बड़ी जमाअ़ते अ़ज़ीमा का इतने छोटे हिस्सए ज़मीन में चालीस बरस आवारा व हैरान फिरना और किसी का वहां से निकल न सकना ख़वारिक़े आदात (ख़िलाफ़े आ़दात) में से है। जब बनी इसराईल ने इस जंगल में हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से खाने पीने वग़ैरा ज़रूरिय्यात और तकालीफ़ की शिकायत की तो **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन को आस्मानी ग़िज़ा "मन्न व सल्वा" अ़ता फ़रमाया और लिबास ख़ुद उन के बदन पर पैदा किया जो जिस्म के साथ बढ़ता था और एक सफ़ेद पथ्थर कोहे तूर का इनायत किया कि जब रख़्ते सफ़र (सफ़र का सामान) उतारते और किसी वक़्त ठहरते तो हज़रत उस पथ्थर पर अ़सा मारते उस से बनी इसराईल के बारह अस्बात़ (गुरोहों) के लिये बारह चश्मे जारी हो जाते और साया करने के लिये एक अब्र भेजा और "तीह" (मैदान) में जितने लोग दाख़िल हुए थे उन में से जो बीस साल से ज़ियादा उम्र के थे सब वहीं मर गए सिवाए यूशअ़ बिन नून और कालिब बिन यूक़न्ना के, और जिन लोगों ने अर्ज़े मुक़द्दसा में दाख़िल होने से इन्कार किया उन में से कोई भी दाख़िल न हो सका। और कहा गया है कि तीह में ही हज़रते हारून और हज़रते मूसा عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात हुई। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वफ़ात से चालीस बरस बा'द हज़रते यूशअ़ को नुबुव्वत अ़ता की गई और जब्बारीन पर जिहाद का हुक्म दिया गया। आप बाक़ी मांदा बनी इसराईल को साथ ले कर गए और जब्बारीन पर जिहाद किया। **79 :** जिन का नाम हाबील और क़ाबील था, इस ख़बर को सुनाने से मक़्सद येह है कि हसद की बुराई मा'लूम हो और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से हसद करने वालों को इस से सबक़ हासिल करने का मौक़अ़ मिले। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि हज़रते हव्वा के हम्ल में एक लड़का, एक लड़की पैदा होते थे और एक हम्ल के लड़के का दूसरे हम्ल की लड़की के साथ निकाह किया जाता था और जब कि आदमी सिर्फ़ हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में मुन्हसिर थे तो मुनाकहत (निकाह) की और कोई सबील ही न थी इसी दस्तूर के मुताबिक़ हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़ाबील का निकाह "लियूज़ा" से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी और हाबील का "इक़्लीमा" से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा, क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा और चूंकि इक़्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये उस का त़लब गार हुवा। हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि वोह तेरे साथ पैदा हुई लिहाज़ा तेरी बहन है उस के साथ तेरा निकाह हलाल नहीं। कहने लगा : येह तो आप की राय है, **अल्लाह** तआ़ला ने येह हुक्म नहीं दिया। आप ने फ़रमाया : तो तुम दोनों कुरबानियां लाओ जिस की कुरबानी मक़्बूल हो जाए वोही इक़्लीमा का हक़दार है। उस ज़माने में जो कुरबानी मक़्बूल होती थी आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। क़ाबील ने एक अम्बार गन्दुम और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की, आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को ले लिया और क़ाबील के गेहूं छोड़ गई। इस पर क़ाबील के दिल में बहुत बुग़्ज़ो हसद पैदा हुवा। **80 :** जब हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हज के लिये मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा कि मैं तुझ को क़त्ल करूंगा। हाबील ने कहा : क्यूं ? कहने लगा : इस लिये कि तेरी कुरबानी मक़्बूल हुई मेरी न हुई और तू इक़्लीमा का मुस्तहिक़ ठहरा, इस में मेरी ज़िल्लत है। **81 :** हाबील के इस मक़ूले का येह मतलब है कि कुरबानी का क़बूल करना **अल्लाह** का काम है वोह मुत्तक़ियों की कुरबानी क़बूल फ़रमाता है, तू मुत्तक़ी होता तो तेरी कुरबानी क़बूल होती, येह ख़ुद तेरे अफ़्आ़ल का नतीजा है, इस में मेरा क्या दख़्ल है।

اِلَیَّ یَدَكَ لِتَقْتُلَنِیْ مَاۤ اَنَا بِبَاسِطٍ یَّدِیَ اِلَیْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ

मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं[82] मैं **अल्लाह** से डरता हूं

اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۲۸﴾ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِیْ وَ اِثْمِكَ فَتَكُوْنَ

जो मालिक सारे जहान का मैं तो येह चाहता हूं कि मेरा[83] और तेरा गुनाह[84] दोनों तेरे ही पल्ले पड़े

مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۹﴾ ۚ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ

तो तू दोज़ख़ी हो जाए और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के

قَتْلَ اَخِیْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۳۰﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا

क़त्ल का चाव दिलाया (क़त्ल पर उभारा) तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़्सान में[85] तो **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा

یَّبْحَثُ فِی الْاَرْضِ لِیُرِیَهٗ كَیْفَ یُوَارِیْ سَوْءَةَ اَخِیْهِ ؕ قَالَ یٰوَیْلَتٰۤى

ज़मीन कुरेदता कि उसे दिखाए क्यूंकर (किस त़रह़) अपने भाई की लाश छुपाए[86] बोला हाए ख़राबी

اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِیَ سَوْءَةَ اَخِیْ ۚ

मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता

فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ ۚۛ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ

معانقة
وقف النبي ﷺ

तो पचताता रह गया[87] इस सबब से हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया

اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ

कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के[88] तो गोया उस ने सब

النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ لَقَدْ

लोगों को क़त्ल किया[89] और जिस ने एक जान को जिला लिया[90] उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया और बेशक

82 : और मेरी त़रफ़ से इब्तिदा हो बा वुजूदे कि मैं तुझ से क़वी व तुवाना हूं, येह सिर्फ़ इस लिये कि **83 :** या'नी मुझ को क़त्ल करने का। **84 :** जो इस से पहले तूने किया कि वालिद की ना फ़रमानी की, ह़सद किया और ख़ुदाई फ़ैसले को न माना। **85 :** और मुतह़य्यर (ह़ैरानो परेशान) हुवा कि इस लाश को क्या करे ? क्यूं कि उस वक़्त तक कोई इन्सान मरा ही न था, मुद्दत तक लाश को पुश्त पर लादे फिरा **86 :** मरवी है कि दो कव्वे आपस में लड़े, उन में से एक ने दूसरे को मार डाला, फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी मिन्क़ार (चोंच) और पन्जों से ज़मीन कुरेद कर गढ़ा किया उस में मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया, येह देख कर क़ाबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को दफ़्न करना चाहिये, चुनान्चे उस ने ज़मीन खोद कर दफ़्न कर दिया। (جلالین، مدارک وغیرہ) **87 :** अपनी नादानी व परेशानी पर, और येह नदामत गुनाह पर न थी कि तौबा में शुमार हो सकती या नदामत का तौबा होना सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ही की उम्मत के साथ ख़ास हो (مدارک) **88 :** या'नी ख़ूने नाह़क़ किया कि न तो मक़्तूल को किसी ख़ून के बदले क़िसास के त़ौर पर मारा न शिर्क व कुफ़्र या क़त़्ए त़रीक़ (रहज़नी) वग़ैरा किसी मूजिबे क़त्ल फ़साद की वज्ह से मारा। **89 :** क्यूं कि उस ने ह़क़्क़ुल्लाह की रिआ़यत और हुदूदे शरीअ़त का पास न किया। **90 :** इस त़रह़ कि क़त्ल

www.dawateislami.net

جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي

उन के[91] पास हमारे रसूल रोशन दलीलों के साथ आए[92] फिर बेशक उन में बहुत इस के बा'द

الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ

ज़मीन में ज़ियादती करने वाले हैं[93] वोह कि अल्लाह और उस के रसूल से लड़ते[94]

وَ يَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ

और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के

اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ

एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं येह दुन्या में

خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

उन की रुस्वाई है और आख़िरत में उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब मगर वोह जिन्हों ने तौबा कर ली

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ ع ع ٩

इस से पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ[95] तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَ جَاهِدُوْا

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उस की तरफ़ वसीला ढूंडो[96] और उस की राह में

فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي

जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ बेशक वोह जो काफ़िर हुए जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

ज़मीन में है सब और इस की बराबर और अगर उन की मिल्क हो कि इसे दे कर क़ियामत के अ़ज़ाब से अपनी जान

होने या डूबने या जलने वग़ैरा अस्बाबे हलाकत से बचाया। **91 :** या'नी बनी इसराईल के **92 :** मो'जिज़ाते बाहिरात भी लाए और अह़कामो शराएअ़ भी। **93 :** कि कुफ़्र व क़त्ल वग़ैरा का इरतिकाब कर के हुदूद से तजावुज़ करते हैं। **94 :** अल्लाह तआला से लड़ना येही है कि उस के औलिया से अ़दावत करे जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। इस आयत में क़ुत्ताए त़रीक़ या'नी राहज़नों की सज़ा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** 6 सि.हि. में उ़रैना के चन्द लोग मदीनए त़य्यिबा में आ कर इस्लाम लाए और बीमार हो गए, उन के रंग ज़र्द हो गए, पेट बढ़ गए, हुज़ूर ने हुक्म दिया कि सदक़े के ऊंटों का दूध और पेशाब मिला कर पिया करें, ऐसा करने से वोह तन्दुरुस्त हो गए मगर तन्दुरुस्त हो कर वोह मुरतद हो गए और पन्द्रह ऊंट ले कर वोह अपने वत़न को चलते हो गए। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की त़लब में ह़ज़रते यसार को भेजा। उन लोगों ने इन के हाथ पाउं काटे और ईज़ाएं देते देते शहीद कर डाला, फिर जब येह लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर किये गए तो उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر احمدی) **95 :** या'नी गिरिफ़्तारी से क़ब्ल तौबा कर लेने से वोह अ़ज़ाबे आख़िरत और क़त़्ए त़रीक़ (रहज़नी) की ह़द से तो बच जाएंगे मगर माल की वापसी और क़िसास ह़क़्क़ुल इबाद है येह बाक़ी रहेगा। (احمدی) **96 :** जिस

www.dawateislami.net

مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۳۶﴾ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ

छुड़ाएं तो उन से न लिया जाएगा और उन के लिये दुख का अ़ज़ाब है[97] दोज़ख़ से निकलना चाहेंगे

النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۷﴾ وَالسَّارِقُ

और वोह उस से न निकलेंगे और उन को दवामी (हमेशा हमेशा की) सज़ा है और जो मर्द

وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْۤا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ

या औ़रत चोर हो[98] तो उन का हाथ काटो[99] उन के किये का बदला **अल्लाह** की त़रफ़ से सज़ा और

اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۳۸﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेहर

يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۹﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ

से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा[100] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ

आस्मानों और ज़मीन की बादशाही सज़ा देता है जिसे चाहे और बख़्शता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ

चाहे और **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है[101] ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِی الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ

वोह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं[102] कुछ वोह जो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और

تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ

उन के दिल मुसल्मान नहीं[103] और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं[104] और लोगों

مع ـ الوقف على الاول اجوز. ۱۲

की बदौलत तुम्हें उस का क़ुर्ब ह़ासिल हो। **97 :** या'नी कुफ़्फ़ार के लिये अ़ज़ाब लाज़िम है और इस से रिहाई पाने की कोई सबील नहीं। **98 :** और उस की चोरी दो मरतबा के इक़रार या दो मर्दों की शहादत से ह़ाकिम के सामने साबित हो और जो माल चुराया है वोह दस दिरहम से कम का न हो (كمافى حديث ابن مسعود) **99 :** या'नी दाह्ना, इस लिये कि ह़ज़रत इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ عنہ की क़िराअत में "اَيْمَانَهُمَا" आया है। **मस्अला :** पहली मरतबा की चोरी में दाह्ना हाथ काटा जाएगा फिर दोबारा अगर करे तो बायां पाउं इस के बा'द भी अगर चोरी करे तो क़ैद किया जाए यहां तक कि तौबा करे। **मस्अला :** चोर का हाथ काटना तो वाजिब है और "माले मसरूक़" (चोरी शुदा माल) मौजूद हो तो उस का वापस करना भी वाजिब और अगर वोह ज़ाएअ़ हो गया हो तो ज़मान (तावान) वाजिब नहीं। (تفسیر احمدی) **100 :** और अ़ज़ाबे आख़िरत से उस को नजात देगा। **101 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अ़ज़ाब करना और रह़मत फ़रमाना **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत पर है वोह मालिक है जो चाहे करे किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं। इस से क़दरिय्या व मो'तज़िला का इब्त़ाल हो गया जो मुत़ीअ़ पर रह़मत और आ़सी पर अ़ज़ाब करना **अल्लाह** तआ़ला पर वाजिब कहते हैं। **102 :** **अल्लाह** तआ़ला सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم को "يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ" के

لِقَوۡمٍ اٰخَرِيۡنَ ۙ لَمۡ يَاۡتُوۡكَ ؕ يُحَرِّفُوۡنَ الۡـكَلِمَ مِنۡۢ بَعۡدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ

की ख़ूब सुनते हैं[105] जो तुम्हारे पास हाज़िर न हुए अल्लाह की बातों को उन के ठिकानों के बा'द बदल देते हैं

يَقُوۡلُوۡنَ اِنۡ اُوۡتِيۡتُمۡ هٰذَا فَخُذُوۡهُ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡتَوۡهُ فَاحۡذَرُوۡا ؕ

कहते हैं येह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और येह न मिले तो बचो[106]

وَمَنۡ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتۡنَتَهٗ فَلَنۡ تَمۡلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـئًا ؕ اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ

और जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू अल्लाह से उस का कुछ बना न सकेगा वोह हैं कि

ख़िताबे इज़्ज़त के साथ मुख़ातब फ़रमा कर तस्कीने ख़ातिर फ़रमाता है कि ऐ हबीब ! मैं आप का नासिर व मुईन हूं, मुनाफ़िक़ीन के कुफ़्र में जल्दी करने या'नी उन के इज़्हारे कुफ़्र और कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात कर लेने से आप रन्जीदा न हों। **103 :** येह उन के निफ़ाक़ का बयान है। **104 :** अपने सरदारों से और उन के इफ़्तिराओं को क़बूल करते हैं। **105 :** ماشاءالله हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने बहुत सहीह तरजमा फ़रमाया इस मक़ाम पर बा'ज़ मुतर्जिमीन व मुफ़स्सिरीन से लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई कि उन्हों ने "لِقَوۡمٍ" के "لام" को इल्लत क़रार दे कर आयत के मा'ना येह बयान किये कि मुनाफ़िक़ीन व यहूद अपने सरदारों की झूटी बातें सुनते हैं, आप की बातें दूसरी क़ौम की ख़ातिर से कान धर कर सुनते हैं जिस के वोह जासूस हैं। मगर येह मा'ना सहीह नहीं और नज़्मे क़ुरआनी इस से बिल्कुल मुवाफ़क़त नहीं फ़रमाती बल्कि यहां "لام" "مِنۡ" के मा'ना में है और मुराद येह है कि येह लोग अपने सरदारों की झूटी बातें ख़ूब सुनते हैं और लोगों या'नी यहूदे ख़ैबर की बातों को ख़ूब मानते हैं जिन के अहवाल का आयत शरीफ़ में बयान आ रहा है (تفسیر ابو السعود وجمل) **106 शाने नुज़ूल :** यहूदे ख़ैबर के शुरफ़ा में से एक बियाहे (शादी शुदा) मर्द और बियाही औरत ने ज़िना किया, इस की सज़ा तौरैत में संगसार करना थी, येह उन्हें गवारा न था इस लिये उन्हों ने चाहा कि इस मुक़द्दमे का फ़ैसला हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم से कराएं, चुनान्चे उन दोनों (मुजरिमों) को एक जमाअ़त के साथ मदीनए तृय्यिबा भेजा और कह दिया कि अगर हुज़ूर "हद" का हुक्म दें तो मान लेना और संगसार करने का हुक्म दें तो मत मानना। वोह लोग यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर के पास आए और ख़याल किया कि येह हुज़ूर के हम वतन हैं और इन के साथ आप की सुल्ह भी है इन की सिफ़ारिश से काम बन जाएगा, चुनान्चे सरदाराने यहूद में से का'ब बिन अशरफ़ व का'ब बिन असद व सईद बिन अ़म्र व मालिक बिन सैफ़ व किनाना बिन अबिल हुक़ैक़ वग़ैरा उन्हें ले कर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मस्अला दरयाफ़्त किया। हुज़ूर ने फ़रमाया : मेरा फ़ैसला मानोगे ? उन्हों ने इक़्रार किया, आयते रज्म नाज़िल हुई और संगसार करने का हुक्म दिया गया, यहूद ने इस हुक्म को मानने से इन्कार किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम में एक नौ जवान गोरा यकचश्म (एक आंख वाला) फ़िदक का बाशिन्दा "इब्ने सूरिया" नामी है तुम उस को जानते हो ? कहने लगे : हां। फ़रमाया : वोह कैसा आदमी है ? कहने लगे कि आज रूए ज़मीन पर यहूद में उस के पाए का आ़लिम नहीं, तौरैत का यक्ता माहिर है। फ़रमाया : उस को बुलाओ, चुनान्चे बुलाया गया जब वोह हाज़िर हुवा तो हुज़ूर ने फ़रमाया : तू इब्ने सूरिया है ? उस ने अ़र्ज़ किया : जी हां। फ़रमाया : यहूद में सब से बड़ा आ़लिम तू ही है ? अ़र्ज़ किया : लोग तो ऐसा ही कहते हैं। हुज़ूर ने यहूद से फ़रमाया : इस मुआ़मले में इस की बात मानोगे ? सब ने इक़्रार किया। तब हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से फ़रमाया : मैं तुझे उस अल्लाह की क़सम देता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जिस ने हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई और तुम लोगों को मिस्र से निकाला, तुम्हारे लिये दरिया में राहें बनाईं, तुम्हें नजात दी, फ़िरऔ़नियों को ग़र्क़ किया, तुम्हारे लिये अब्र को साएबान बनाया, मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमाया, अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई जिस में हलाल व हराम का बयान है, क्या तुम्हारी किताब में बियाहे मर्द व औरत के लिये संगसार करने का हुक्म है ? इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बेशक है उसी की क़सम जिस का आप ने मुझ से ज़िक्र किया, अ़ज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं इक़्रार न करता और झूट बोल देता मगर येह फ़रमाइये कि आप की किताब में इस का क्या हुक्म है ? फ़रमाया : जब चार आदिल व मो'तबर शाहिदों की गवाही से ज़िना ब सराहत साबित हो जाए तो संगसार करना वाजिब हो जाता है। इब्ने सूरिया ने अ़र्ज़ किया : बख़ुदा बिऐनिही ऐसा ही तौरैत में है, फिर हुज़ूर ने इब्ने सूरिया से दरयाफ़्त फ़रमाया कि हुक्मे इलाही में तब्दीली किस तरह वाक़ेअ़ हुई ? उस ने अ़र्ज़ किया कि हमारा दस्तूर येह था कि हम किसी शरीफ़ को पकड़ते तो छोड़ देते और ग़रीब आदमी पर हद क़ाइम करते, इस तर्ज़े अ़मल से शुरफ़ा में ज़िना की बहुत कसरत हो गई यहां तक कि एक मरतबा बादशाह के चचाज़ाद भाई ने ज़िना किया तो हम ने उस को संगसार न किया फिर एक दूसरे शख़्स ने अपनी क़ौम की औरत से ज़िना किया तो बादशाह ने उस को संगसार करना चाहा, उस की क़ौम उठ खड़ी हुई और उन्हों ने कहा कि जब तक बादशाह के भाई को संगसार न किया जाए उस वक़्त तक इस को हरगिज़ संगसार न किया जाएगा, तब हम ने जम्अ़ हो कर ग़रीब शरीफ़ सब के लिये बजाए संगसार करने के येह सज़ा निकाली कि चालीस कोड़े मारे जाएं और मुंह काला कर के गधे पर उलटा बिठा कर गश्त कराई जाए। येह सुन कर यहूद बहुत बिगड़े और इब्ने सूरिया से कहने लगे : तूने हज़रत को बड़ी जल्दी ख़बर दे दी और हम

www.dawateislami.net

لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ ۚۖ وَّ لَهُمْ فِی

अल्लाह ने उन का दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुन्या में रुस्वाई है और उन्हें

الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۴۱﴾ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ

आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब बड़े झूट सुनने वाले बड़े ह़राम ख़ोर[107] तो अगर

جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ

तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों[108] तो उन में फ़ैसला फ़रमाओ या उन से मुंह फेर लो[109] और अगर तुम उन से मुंह फेर लोगे तो

یَّضُرُّوْكَ شَیْــٴًـا ؕ وَ اِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَیْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे[110] और अगर उन में फ़ैसला फ़रमाओ तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो बेशक इन्साफ़

یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ ﴿۴۲﴾ وَ كَیْفَ یُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِیْهَا

वाले **अल्लाह** को पसन्द हैं और वोह तुम से क्यूंकर चाहेंगे ह़ालां कि उन के पास तौरैत है जिस में

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ یَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓىٕكَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ۠ ﴿۴۳﴾ ع ٦

अल्लाह का हुक्म मौजूद है[111] ब ई हमा (इस के बा वुजूद) उसी से मुंह फेरते हैं[112] और वोह ईमान लाने वाले नहीं

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِیْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ یَحْكُمُ بِهَا النَّبِیُّوْنَ الَّذِیْنَ

बेशक हम ने तौरैत उतारी उस में हिदायत और नूर है उस के मुताबिक़ यहूद को हुक्म देते थे

اَسْلَمُوْا لِلَّذِیْنَ هَادُوْا وَ الرَّبّٰنِیُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ

हमारे फ़रमां बरदार नबी और आ़लिम और फ़क़ीह कि इन से किताबुल्लाह की ह़िफ़ाज़त

كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا عَلَیْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ اخْشَوْنِ وَ لَا

चाही गई थी[113] और वोह इस पर गवाह थे तो[114] लोगों से ख़ौफ़ न करो और मुझ से डरो और

ने जितनी तेरी ता'रीफ़ की थी तू उस का मुस्तह़िक़ नहीं। इब्ने सूरिया ने कहा कि हुज़ूर ने मुझे तौरैत की क़सम दिलाई अगर मुझे अ़ज़ाब के नाज़िल होने का अन्देशा न होता तो मैं आप को ख़बर न देता। इस के बा'द हुज़ूर के हुक्म से उन दोनों ज़िनाकारों को संगसार किया गया और येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **107 :** येह यहूद के हुक्काम की शान में है जो रिश्वतें ले कर ह़राम को ह़लाल करते और अह़कामे शरअ़ को बदल देते थे। **मस्अला :** रिश्वत का लेना देना दोनों ह़राम हैं। ह़दीस शरीफ़ में रिश्वत लेने देने वाले दोनों पर ला'नत आई है। **108 :** या'नी अहले किताब **109 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم को मुख़य्यर फ़रमाया गया कि अहले किताब आप के पास कोई मुक़द्दमा लाएं तो आप को इख़्तियार है फ़ैसला फ़रमाएं या न फ़रमाएं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह तख़्यीर आयह "وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ" से मन्सूख़ हो गई। इमाम अह़मद ने फ़रमाया कि इन आयतों में कुछ मुनाफ़ात (एक आयत दूसरी के ख़िलाफ़) नहीं क्यूं कि येह आयत मुफ़ीदे तख़्यीर है और आयत "وَاَنِ احْكُمْ...الخ" में कैफ़िय्यते हुक्म का बयान है। (خازن ومدارک وغیرہ) **110 :** क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला आप का निगहबान है। **111 :** कि बियाहे मर्द और शोहर दार औ़रत के ज़िना की सज़ा रज्म या'नी संगसार करना है। **112 :** बा वुजूदे कि तौरैत पर ईमान लाने के मुद्दई भी

www.dawateislami.net

تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ؕ وَ مَنْ لَّمْ یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ

मेरी आयतों के बदले ज़लील क़ीमत न लो[115] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे[116] वोही लोग

هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ كَتَبْنَا عَلَیْهِمْ فِیْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَ الْعَیْنَ

काफ़िर हैं और हम ने तौरैत में उन पर वाजिब किया[117] कि जान के बदले जान[118] और आंख

بِالْعَیْنِ وَ الْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَ الْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَ السِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ

के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत

وَ الْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَ مَنْ لَّمْ

और ज़ख़्मों में बदला है[119] फिर जो दिल की ख़ुशी से बदला करावे तो वोह उस का गुनाह उतार देगा[120] और जो

یَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ قَفَّیْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ

अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करे तो वोही लोग ज़ालिम हैं और हम उन नबियों के पीछे उन के निशाने क़दम

بِعِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَ اٰتَیْنٰهُ

पर ईसा बिन मरयम को लाए तस्दीक़ करता हुवा तौरैत की जो इस से पहले थी[121] और हम ने उसे

الْاِنْجِیْلَ فِیْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ

इन्जील अ़ता की जिस में हिदायत और नूर है और तस्दीक़ फ़रमाती है तौरैत की, कि इस से पहली थी

हैं और उन्हें येह भी मा'लूम है कि तौरैत में रज्म का हुक्म है, उस को न मानना और आप की नुबुव्वत के मुन्किर होते हुए आप से फ़ैसला चाहना निहायत तअ़ज्जुब की बात है। **113 :** कि उस को अपने सीनों में महफ़ूज़ रखें और उस के दर्स में मश्ग़ूल रहें ताकि वोह किताब फ़रामोश न हो और उस के अह़काम ज़ाएअ़ न हों। (خازن) **मस्अला :** तौरैत के मुताबिक़ अम्बिया का हुक्म देना जो इस आयत में मज़्कूर है इस से साबित होता है कि हम से पहली शरीअ़तों के जो अह़काम अल्लाह और रसूल ने बयान फ़रमाए हों और उन के हमें तर्क का हुक्म न दिया हो, मन्सूख़ न किये गए हों वोह हम पर लाज़िम होते हैं। (جمل وابوالسعود) **114 :** ऐ यहूदियो ! तुम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और रज्म का हुक्म जो तौरैत में मज़्कूर है उस के इज़्हार में **115 :** या'नी अह़कामे इलाहिय्यह की तब्दील बहर सूरत मम्नूअ़ है ख़्वाह लोगों के ख़ौफ़ और उन की नाराज़ी के अन्देशे से हो या माल व जाह व रिश्वत की त़मअ़ से। **116 :** उस का मुन्किर हो कर (كَمَا قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا) **117 :** इस आयत में अगर्चे येह बयान है कि तौरैत में यहूद पर क़िसास के येह अह़काम थे लेकिन चूंकि हमें इन के तर्क का हुक्म नहीं दिया गया इस लिये हम पर येह अह़काम लाज़िम रहेंगे, क्यूं कि शराइए साबिक़ा के जो अह़काम ख़ुदा और रसूल के बयान से हम तक पहुंचे और मन्सूख़ न हुए हों वोह हम पर लाज़िम हुवा करते हैं जैसा कि ऊपर की आयत से साबित हुवा। **118 :** या'नी अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो उस की जान मक़्तूल के बदले में माख़ूज़ होगी ख़्वाह वोह मक़्तूल मर्द हो या औ़रत, आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुस्लिम हो या ज़िम्मी। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا से मरवी है कि मर्द को औ़रत के बदले क़त्ल न करते थे इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (مدارک) **119 :** या'नी मुमासलत व मुसावात की रिआ़यत ज़रूरी है। **120 :** या'नी जो क़ातिल या जिनायत करने वाला अपने जुर्म पर नादिम हो कर वबाले मा'सियत से बचने के लिये बख़ुशी अपने ऊपर हुक्मे शरई जारी कराए तो क़िसास उस के जुर्म का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और आख़िरत में उस पर अ़ज़ाब न होगा। (جلالین وجمل) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि जो साहिबे ह़क़ क़िसास को मुआ़फ़ कर दे तो येह मुआ़फ़ी उस के लिये कफ़्फ़ारा है। (مدارک) तफ़्सीरे अह़मदी में है येह तमाम क़िसास जब ही वाजिब होंगे जब कि साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न करे और अगर वोह मुआ़फ़ कर दे तो क़िसास साक़ित़। **121 :** अह़कामे तौरैत के बयान के बा'द अह़कामे इन्जील का ज़िक्र शुरूअ़ हुवा और

www.dawateislami.net

وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۶﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ

और हिदायत[122] और नसीहत परहेज़ गारों को और चाहिये कि इन्जील वाले हुक्म करें उस पर जो अल्लाह ने

اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴۷﴾

उस में उतारा[123] और जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें तो वोही लोग फ़ासिक़ हैं

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती[124]

وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

और उन पर मुहाफ़िज़ व गवाह तो उन में फ़ैसला करो अल्लाह के उतारे से[125] और ऐ सुनने वाले उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना

عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ

अपने पास आया हुवा हक़ छोड़ कर हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा[126] और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا

अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत कर देता मगर मन्ज़ूर येह है कि जो कुछ तुम्हें दिया उस में तुम्हें आज़्माए[127] तो भलाइयों

الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

की तरफ़ सब्क़त चाहो तुम सब का फिरना अल्लाह ही की तरफ़ है तो वोह तुम्हें बता देगा जिस बात में तुम

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

झगड़ते थे और येह कि ऐ मुसल्मान अल्लाह के उतारे पर हुक्म कर और उन की ख़्वाहिशों पर न चल

बताया गया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तौरैत के मुसद्दिक़ थे कि वोह मुनज़्ज़ल मिनल्लाह (अल्लाह की उतारी हुई किताब) है और नस्ख़ से पहले उस पर अ़मल वाजिब था। हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शरीअ़त में इस के बा'ज़ अहकाम मन्सूख़ हुए। **122 :** इस आयत में इन्जील के लिये लफ़्ज़े "هُدًى" दो जगह इर्शाद हुवा, पहली जगह ज़लालत व जहालत से बचाने के लिये रहनुमाई मुराद है, दूसरी जगह هُدًى से सय्यिदे अम्बिया हबीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत मुराद है जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत की तरफ़ लोगों की राहयाबी का सबब है। **123 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप की नुबुव्वत की तस्दीक़ करने का हुक्म। **124 :** जो इस से क़ब्ल हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल हुईं। **125 :** या'नी जब अहले किताब अपने मुक़द्दमात में आप की तरफ़ रुजूअ़ करें तो आप क़ुरआने पाक से फ़ैसला फ़रमाएं। **126 :** या'नी फ़ुरूअ़ व आ'माल हर एक के ख़ास हैं और अस्ल दीन सब का एक। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि ईमान हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने से येही है कि "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" की शहादत और जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आया उस का इक़रार करना और शरीअ़त व तरीक़ हर उम्मत का ख़ास है। **127 :** और इम्तिहान में डाले ताकि ज़ाहिर हो जाए कि हर ज़माने के मुनासिब जो अहकाम दिये क्या तुम उन पर इस यक़ीन व ए'तिक़ाद के साथ अ़मल करते हो कि इन का इख़्तिलाफ़ मशिय्यते इलाहिय्यह के इक़्तिज़ा से हिक्मते बालिग़ा और दुन्यवी व उख़्रवी मसालेहे नाफ़ेआ़ पर मब्नी है, या हक़ को छोड़ कर हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़ करते हो। (تفسیر ابو السعود)

www.dawateislami.net

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ

और उन से बचता रह कि कहीं तुझे लग़्ज़िश न दे दें किसी हुक्म में जो तेरी त़रफ़ उतरा फिर अगर वोह

تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ

मुंह फेरें[128] तो जान लो कि अल्लाह उन के बा'ज़ गुनाहों की[129] सज़ा उन को पहुंचाया चाहता है[130] और बेशक

كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿۴۹﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ

बहुत आदमी बे हुक्म हैं तो क्या जाहिलिय्यत का हुक्म चाहते हैं[131] और

اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह से बेहतर किस का हुक्म यक़ीन वालों के लिये ऐ ईमान वालो

لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ؔ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ

यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ[132] वोह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं[133]

وقف لازم وقف منزل عند البعض وقف غفران

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

और तुम में जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है[134] बेशक अल्लाह बे इन्साफ़ों को राह

128 : अल्लाह के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्म से **129 :** जिन में येह ए'राज़ भी है। **130 :** दुन्या में क़त्ल व गिरिफ़्तारी व जला वत़नी के साथ और तमाम गुनाहों की सज़ा आख़िरत में देगा। **131 :** जो सरासर गुमराही और ज़ुल्म और मुख़ालिफ़े अह़कामे इलाही होता था। **शाने नुज़ूल :** बनी नज़ीर और बनी कुरैज़ा यहूद के दो क़बीले थे, इन में बाहम एक दूसरे का क़त्ल होता रहता था, जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो येह लोग अपना मुक़द्दमा हुज़ूर की ख़िदमत में लाए और बनी कुरैज़ा ने कहा कि बनी नज़ीर हमारे भाई हैं, हम (और) वोह एक जद की औलाद हैं, एक दीन रखते हैं एक किताब (तौरैत) मानते हैं लेकिन अगर बनी नज़ीर हम में से किसी को क़त्ल करें तो उस के ख़ून बहा में हम (को) सत्तर वस्क़ खजूरें देते हैं और अगर हम में से कोई उन के किसी आदमी को क़त्ल करे तो हम से उस के ख़ून बहा में एक सो चालीस वस्क़ लेते हैं, आप इस का फ़ैसला फ़रमा दें। हुज़ूर ने फ़रमाया मैं हुक्म देता हूं कि कुरैज़ी और नज़ीरी का ख़ून बराबर है, किसी को दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं। इस पर बनी नज़ीर बहुत बरहम हुए और कहने लगे हम आप के फ़ैसले से राज़ी नहीं, आप हमारे दुश्मन हैं, हमें ज़लील करना चाहते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि क्या जाहिलिय्यत की गुमराही व ज़ुल्म का हुक्म चाहते हैं। **132 मस्अला :** इस आयत में यहूदो नसारा के साथ दोस्ती व मुवालात या'नी इन की मदद करना इन से मदद चाहना इन के साथ मह़ब्बत के रवाबित़ रखना मम्नूअ़ फ़रमाया गया, येह हुक्म आ़म है अगर्चे आयत का नुज़ूल किसी ख़ास वाक़िए़ में हुवा हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित सह़ाबी और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुनाफ़िक़ीन का सरदार था, ह़ज़रते उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि यहूद में मेरे बहुत कसीरुत्ता'दाद (बहुत ज़ियादा) दोस्त हैं जो बड़ी शौकत व क़ुव्वत वाले हैं, अब मैं उन की दोस्ती से बेज़ार हूं और अल्लाह व रसूल के सिवा मेरे दिल में और किसी की मह़ब्बत की गुन्जाइश नहीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने कहा कि मैं तो यहूद की दोस्ती से बेज़ारी नहीं कर सकता मुझे पेश आने वाले ह़वादिस का अन्देशा है और मुझे उन के साथ रस्मो राह रखनी ज़रूर है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि यहूद की दोस्ती का दम भरना तेरा ही काम है, उ़बादा का येह काम नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **133 :** इस से मा'लूम हुवा कि काफ़िर कोई भी हों उन में बाहम कितने ही इख़्तिलाफ़ हों मुसल्मानों के मुक़ाबले में वोह सब एक हैं "اَلْكُفْرُ مِلَّةٌ وَّاحِدَةٌ" (مدارک) **134 :** इस में बहुत शिद्दत व ताकीद है कि मुसल्मानों पर यहूदो नसारा और हर मुख़ालिफ़े दीने इस्लाम से अ़लाह़दगी और जुदा रहना वाजिब है। (مدارک وخازن)

www.dawateislami.net

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ

नहीं देता[135] अब तुम उन्हें देखोगे जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[136] कि यहूदो नसारा की त़रफ़ दौड़ते हैं

يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآىِٕرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ

कहते हैं हम डरते हैं कि हम पर कोई गर्दिश आ जाए[137] तो नज़्दीक है कि **अल्लाह** फ़त्ह़ लाए[138]

اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

या अपनी त़रफ़ से कोई हुक्म[139] फिर उस पर जो अपने दिलों में छुपाया था[140] पचताते रह जाएं

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ

और[141] ईमान वाले कहते हैं क्या येही हैं जिन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई थी अपने ह़ल्फ़ (अ़हद) में पूरी कोशिश से

الثلثة

اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

कि वोह तुम्हारे साथ हैं उन का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ़) गया तो रह गए नुक़्सान में[142] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ

वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा[143] तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे

وَ يُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ٘ يُجَاهِدُوْنَ

और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآىِٕمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे[144] येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है

135 : जो काफ़िरों से दोस्ती कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का कातिब नसरानी था, ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन से फ़रमाया कि नसरानी से क्या वासित़ा ? तुम ने येह आयत नहीं सुनी "يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ... الآيه" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : उस का दीन उस के साथ मुझे तो उस की किताबत से ग़रज़ है। अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया कि **अल्लाह** ने उन्हें ज़लील किया तुम उन्हें इ़ज़्ज़त न दो, **अल्लाह** ने उन्हें दूर किया तुम उन्हें क़रीब न करो, ह़ज़रते अबू मूसा ने अ़र्ज़ किया कि बिग़ैर उस के हुकूमते बसरा का काम चलाना दुश्वार है, या'नी इस ज़रूरत से ब मजबूरी उस को रखा है कि इस क़ाबिलिय्यत का दूसरा आदमी मुसल्मानों में नहीं मिलता, इस पर ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन ने फ़रमाया : नसरानी मर गया ! वस्सलाम या'नी फ़र्ज़ करो कि वोह मर गया उस वक़्त जो इन्तिज़ाम करोगे वोही अब करो और उस से हरगिज़ काम न लो येह आख़िरी बात है। (خازن) **136 :** या'नी निफ़ाक़। **137 :** जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने कहा। **138 :** और अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मुज़फ़्फ़रो मन्सूर करे और इन के दीन को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करे और मुसल्मानों को इन के दुश्मन यहूदो नसारा वग़ैरा कुफ़्फ़ार पर ग़लबा दे, चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बि करमिही तआ़ला मक्कए मुकर्रमा और यहूद के बिलाद फ़त्ह़ हुए। (خازن وغیرہ) **139 :** जैसे कि सर ज़मीने ह़िजाज़ को यहूद से पाक करना और वहां उन का नामो निशान बाक़ी न रखना या मुनाफ़िक़ीन के राज़ इफ़्शा कर के उन्हें रुस्वा करना। (خازن وجلالین) **140 :** या'नी निफ़ाक़, या मुनाफ़िक़ीन का येह ख़याल कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में काम्याब न होंगे। **141 :** मुनाफ़िक़ीन का पर्दा खुलने पर **142 :** कि दुन्या में ज़लीलो रुस्वा हुए और आख़िरत में अ़ज़ाबे दाइमी के सज़ावार। **143 :** कुफ़्फ़ार के साथ दोस्ती व मुवालात

www.dawateislami.net

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ

जिसे चाहे दे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उस का रसूल और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ

ईमान वाले[145] कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर

رٰكِعُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ

झुके हुए हैं[146] और जो अल्लाह और उस के रसूल और मुसल्मानों को अपना दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह

اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۵۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ

ही का गुरौह ग़ालिब है ऐ ईमान वालो जिन्हों ने तुम्हारे दीन को

اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ

हंसी खेल बना लिया है[147] वोह जो तुम से पहले किताब दिये गए और काफ़िर[148] उन में किसी को

الْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا نَادَيْتُمْ

अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर ईमान रखते हो[149] और जब तुम नमाज़ के

बे दीनी व इरतिदाद की मुस्तद्ई (त़लब) है। इस की मुमानअ़त के बा'द मुरतद्दीन का ज़िक्र फ़रमाया और मुरतद होने से क़ब्ल लोगों के मुरतद होने की ख़बर दी। चुनान्चे येह ख़बर सादिक़ हुई और बहुत लोग मुरतद हुए। **144 :** येह सिफ़त जिन की है वोह कौन हैं ? इस में कई क़ौल हैं : ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा व ह़सन व क़तादा ने कहा कि येह लोग ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उन के अस्ह़ाब हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द मुरतद होने और ज़कात से मुन्किर होने वालों पर जिहाद किया। इयाज़ बिन ग़नम अश्अ़री से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री की निस्बत फ़रमाया कि येह इन की क़ौम है। एक क़ौल येह है कि येह लोग अहले यमन हैं जिन की ता'रीफ़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में आई है। सुद्दी का क़ौल है कि येह लोग अन्सार हैं जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत की और इन अक़्वाल में कुछ मुनाफ़ात (इख़्तिलाफ़) नहीं क्यूं कि इन सब ह़ज़रात का इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ होना सह़ीह़ है। **145 :** जिन के साथ मुवालात ह़राम है उन का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन का बयान फ़रमाया जिन के साथ मुवालात वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते जाबिर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह**! हमारी क़ौम क़ुरैज़ा और नज़ीर ने हमें छोड़ दिया और क़समें खा लीं कि वोह हमारे साथ मुजालसत (हम नशीनी) न करेंगे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने पर, उस के रसूल के नबी होने पर, मोमिनीन के दोस्त होने पर, और हुक्म आयत का तमाम मोमिनीन के लिये आ़म है, सब एक दूसरे के दोस्त और मुह़िब हैं। **146 :** जुम्ला "وَهُمْ رٰكِعُوْنَ" दो वज्ह रखता है, एक येह कि पहले जुम्लों पर मा'तूफ़ हो। दूसरी येह कि ह़ाल वाक़ेअ़ हो, पहली वज्ह अज़्हर व अक़्वा है और ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ का तरजमा भी इसी के मुसाइद है। (جمل عن السمين) दूसरी वज्ह पर दो एह़तिमाल हैं एक येह कि "يُقِيْمُوْنَ", "وَيُؤْتُوْنَ" दोनों फ़े'लों के फ़ाइल से ह़ाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि वोह ब ख़ुशूअ़ व तवाज़ोअ़ नमाज़ क़ाइम करते और ज़कात देते हैं। (تفسیر ابو السعود) दूसरा एह़तिमाल येह है कि सिर्फ़ "يُؤْتُوْنَ" के फ़ाइल से ह़ाल वाक़ेअ़ हो, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और मुतवाज़ेअ़ हो कर ज़कात देते हैं। (جمل) बा'ज़ का क़ौल है कि येह आयत ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه की शान में है कि आप ने नमाज़ में साइल को अंगुश्तरी सदक़तन दी थी, वोह अंगुश्तरी (अंगूठी) अंगुश्ते मुबारक में ढीली थी बे अ़मले कसीर के निकल गई। लेकिन इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने तफ़्सीरे कबीर में इस का बहुत शद्दो मद से रद किया और इस के बुत़्लान पर बहुत वुजूह क़ाइम किये हैं। **147 शाने नुज़ूल :** रुफ़ाआ़ बिन ज़ैद और सुवैद बिन ह़ारिस दोनों इज़्हारे इस्लाम के बा'द मुनाफ़िक़ हो गए, बा'ज़ मुसल्मान इन से मह़ब्बत रखते थे अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बताया कि ज़बान से इस्लाम का इज़्हार करना और दिल में कुफ़्र छुपाए रखना दीन को हंसी और खेल बनाना है। **148 :** या'नी बुत परस्त मुश्रिक जो अहले

www.dawateislami.net

اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّ لَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۵۸﴾

लिये अज़ान दो तो उसे हंसी खेल बनाते हैं[150] येह इस लिये कि वोह निरे बे अक़्ल लोग हैं[151]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ

तुम फ़रमाओ ऐ किताबियो तुम्हें हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी

اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ قُلْ هَلْ

तरफ़ उतरा और उस पर जो पहले उतरा[152] और येह कि तुम में अक्सर बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं तुम फ़रमाओ क्या

اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ

मैं बता दूं जो **अल्लाह** के यहां इस से बदतर दरजे में हैं[153] वोह जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन पर ग़ज़ब

عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ

फ़रमाया और उन में से कर दिये बन्दर और सुअर[154] और शैतान के पुजारी उन का ठिकाना

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾ وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا

ज़ियादा बुरा है[155] और येह सीधी राह से ज़ियादा बहके और जब तुम्हारे पास आएं[156] तो कहते हैं हम मुसल्मान हैं

وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا

और वोह आते वक़्त भी काफ़िर थे और जाते वक़्त भी काफ़िर और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो

किताब से भी बदतर हैं। (خازن) **149 :** क्यूं कि ख़ुदा के दुश्मनों से दोस्ती करना ईमानदार का काम नहीं। **150 शाने नुज़ूल :** कल्बी का क़ौल है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का मुअज़्ज़िन नमाज़ के लिये अज़ान कहता और मुसल्मान उठते तो यहूद हंसते और तमस्ख़ुर (मज़ाक़ उड़ाया) करते, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। सुद्दी का क़ौल है कि मदीनए तय्यिबा में जब मुअज़्ज़िन अज़ान में ''اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه'' और ''اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه'' कहता तो एक नसरानी येह कहा करता कि जल जाए झूटा। एक शब उस का ख़ादिम आग लाया वोह और उस के घर के लोग सो रहे थे, आग से एक शरारा उड़ा और वोह नसरानी और उस के घर के लोग और तमाम घर जल गया। **151 :** जो ऐसी सफ़ीहाना (बे वुक़ूफ़ाना) और जाहिलाना हरकात करते हैं। इस आयत से मा'लूम हुवा कि अज़ान नस्से क़ुरआनी से भी साबित है। **152 शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप अम्बिया में से किस किस को मानते हैं? इस सुवाल से उन का मतलब येह था कि अगर आप हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न मानें तो वोह आप पर ईमान ले आएं लेकिन हुज़ूर ने इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** पर ईमान रखता हूं और जो उस ने हम पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ व या'क़ूब व अस्बात़ पर नाज़िल फ़रमाया और जो हज़रते ईसा व मूसा को दिया गया या'नी तौरैत व इन्जील और जो और नबियों को उन के रब की त़रफ़ से दिया गया सब को मानता हूं, हम अम्बिया में फ़र्क़ नहीं करते कि किसी को मानें और किसी को न मानें। जब उन्हें मा'लूम हुवा कि आप हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को भी मानते हैं तो वोह आप की नुबुव्वत के मुन्किर हो गए और कहने लगे : जो ईसा को माने हम उस पर ईमान न लाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **153 :** कि इस बरहक़ दीन वालों को तो तुम महज़ अपने इनाद व अ़दावत ही से बुरा कहते हो और तुम पर **अल्लाह** तआ़ला ने ला'नत की और ग़ज़ब फ़रमाया और आयत में जो मज़्कूर है वोह तुम्हारा हाल हुवा तो बदतर दरजे में तो तुम ख़ुद हो, कुछ दिल में सोचो ! **154 :** सूरतें मस्ख़ कर के। **155 :** और वोह जहन्नम है। **156 शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद की एक जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपने ईमान व इख़्लास का इज़्हार किया और कुफ़्रो ज़लाल छुपाए रखा **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ

छुपा रहे हैं और उन[157] में तुम बहुतों को देखोगे कि गुनाह और ज़ियादती

وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾ لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ

और ह़राम ख़ोरी पर दौड़ते हैं[158] बेशक बहुत ही बुरे काम करते हैं उन्हें क्यूं नहीं मन्अ़ करते

الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ

उन के पादरी और दरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से बेशक

مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ

बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं[159] और यहूदी बोले **अल्लाह** का हाथ बंधा हुवा है[160] उन्हीं के

اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ

हाथ बांधे जाएं[161] और उन पर इस कहने से ला'नत है बल्कि उस के हाथ कुशादा हैं[162] अ़ता फ़रमाता है जैसे

وقف لازم

يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا

चाहे[163] और ऐ मह़बूब येह[164] जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा इस से उन में बहुतों को शरारत

وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ

और कुफ़्र में तरक़्क़ी होगी[165] और उन में हम ने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर (बुग़्ज़) डाल दिया[166] जब कभी

اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ

लड़ाई की आग भड़काते हैं **अल्लाह** उसे बुझा देता है[167] और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं

को उन के ह़ाल की ख़बर दी। **157 :** या'नी यहूद **158 :** गुनाह हर मा'सियत व ना फ़रमानी को शामिल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गुनाह से तौरैत के मज़ामीन का छुपाना और उस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के जो मह़ासिन व औसाफ़ हैं उन का मख़्फ़ी रखना और उ़दवान या'नी ज़ियादती से तौरैत के अन्दर अपनी त़रफ़ से कुछ बढ़ा देना और ह़राम ख़ोरी से रिश्वतें वग़ैरा मुराद हैं। (خازن) **159 :** कि लोगों को गुनाहों और बुरे कामों से नहीं रोकते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि उ़लमा पर नसीह़त और बदी से रोकना वाजिब है और जो शख़्स बुरी बात से मन्अ़ करने को तर्क करे और नह्ये मुन्कर से बाज़ रहे वोह ब मन्ज़िला मुर्तकिबे गुनाह के है। **160 :** या'नी مَعَاذَ اللّٰه वोह बख़ील है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि यहूद बहुत ख़ुशह़ाल और निहायत दौलत मन्द थे, जब उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त की तो उन की रोज़ी कम हो गई, उस वक़्त फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि **अल्लाह** का हाथ बंधा है या'नी مَعَاذَ اللّٰه वोह रिज़्क़ देने और ख़र्च करने में बुख़्ल करता है, उस के इस क़ौल पर किसी यहूदी ने मन्अ़ न किया बल्कि राज़ी रहे, इसी लिये येह सब का मक़ूला क़रार दिया गया और येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई। **161 :** तंगी और दादो दिहिश (सख़ावत) से। इस इर्शाद का येह असर हुवा कि यहूद दुन्या में सब से ज़ियादा बख़ील हो गए या येह मा'ना हैं कि उन के हाथ जहन्नम में बांधे जाएं और इस त़रह़ उन्हें आतिशे दोज़ख़ में डाला जाए उन की इस बेहूदा गोई और गुस्ताख़ी की सज़ा में। **162 :** वोह जवाद करीम है। **163 :** अपनी ह़िक्मत के मुवाफ़िक़, इस में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं। **164 :** क़ुरआन शरीफ़ **165 :** या'नी जितना क़ुरआने पाक उतरता जाएगा इतना ह़सद व इ़नाद बढ़ता जाएगा और वोह इस के साथ कुफ़्र व सरकशी में बढ़ते रहेंगे। **166 :** वोह हमेशा बाहम मुख़्तलिफ़ रहेंगे और उन के दिल कभी न मिलेंगे। **167 :** और उन की मदद नहीं फ़रमाता, वोह ज़लील होते हैं।

www.dawateislami.net

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۴﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا

और **अल्लाह** फ़सादियों को नहीं चाहता और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते

لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا

तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते और अगर क़ाइम रखते

التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ

तौरैत और इन्जील[168] और जो कुछ उन की त़रफ़ उन के रब की त़रफ़ से उतरा[169] तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से

وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ

और उन के पाउं के नीचे से[170] उन में कोई गुरोह ए'तिदाल पर है[171] और उन में अक्सर बहुत ही बुरे

مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ

काम कर रहे हैं[172] ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से[173] और ऐसा

لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और **अल्लाह** तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से[174] बेशक **अल्लाह**

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۷﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ

काफ़िरों को राह नहीं देता तुम फ़रमा दो ऐ किताबियो तुम कुछ भी नहीं हो[175]

حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

जब तक न क़ाइम करो तौरैत और इन्जील और जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[176]

وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ

और बेशक ऐ महबूब वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा उस से उन में बहुतों को शरारत और कुफ़्र की और तरक़्क़ी होगी[177]

168 : इस त़रह़ कि सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाते और आप का इत्तिबाअ़ करते कि तौरैत व इन्जील में इस का हुक्म दिया गया है। **169 :** या'नी तमाम किताबें जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने रसूलों पर नाज़िल फ़रमाईं सब में सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का ज़िक्र और आप पर ईमान लाने का हुक्म है। **170 :** या'नी रिज़्क़ की कसरत होती और हर त़रफ़ से पहुंचता। **फ़ाएदा :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि दीन की पाबन्दी और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से रिज़्क़ में वुस्अ़त होती है। **171 :** ह़द से तजावुज़ नहीं करता, येह यहूदियों में से वोह लोग हैं जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। **172 :** जो कुफ़्र पर जमे हुए हैं। **173 :** और कुछ अन्देशा न करो। **174 :** या'नी कुफ़्फ़ार से जो आप के क़त्ल का इरादा रखते हैं। सफ़रों में शब को ह़ुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का पहरा दिया जाता था, जब येह आयत नाज़िल हुई पहरा हटा दिया गया और ह़ुज़ूर ने पहरेदारों से फ़रमाया कि तुम लोग चले जाओ ! **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमाई। **175 :** किसी दीन व मिल्लत में नहीं। **176 :** या'नी क़ुरआने पाक। इन तमाम किताबों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त और आप पर ईमान लाने का हुक्म है, जब तक ह़ुज़ूर पर ईमान न लाएं तौरैत

www.dawateislami.net

فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

तो तुम काफ़िरों का कुछ ग़म न खाओ बेशक वोह जो अपने आप को मुसल्मान कहते हैं[178] और इसी त़रह़ यहूदी

وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا

और सितारा परस्त और नसरानी इन में जो कोई सच्चे दिल से **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान लाए और अच्छा काम करे

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْۤ

तो उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म बेशक हम ने बनी इसराईल

اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا

से अ़ह्द लिया[179] और उन की त़रफ़ रसूल भेजे जब कभी उन के पास कोई रसूल वोह बात ले कर आया जो

تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْۤا اَلَّا

उन के नफ़्स की ख़्वाहिश न थी[180] एक गुरोह को झुटलाया और एक गुरोह को शहीद करते हैं[181] और इस गुमान में रहे कि

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا

कोई सज़ा न होगी[182] तो अन्धे और बहरे हो गए[183] फिर **अल्लाह** ने उन की तौबा क़बूल की[184] फिर उन में बहुतेरे (बहुत से)

كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا

अन्धे और बहरे हो गए और **अल्लाह** उन के काम देख रहा है बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है[185] और मसीह़ ने तो येह कहा था ऐ बनी इसराईल

اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ

अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब[186] और तुम्हारा रब बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर

व इन्जील की इक़ामत का दा'वा सह़ीह़ नहीं हो सकता। 177 : क्यूं कि जितना क़ुरआने पाक नाज़िल होता जाएगा येह मुक़ाबरा व इनाद (ग़ुरूर व दुश्मनी की वज्ह) से इस के इन्कार में और शिद्दत करते जाएंगे। 178 : और दिल में ईमान नहीं रखते, मुनाफ़िक़ हैं 179 : तौरैत में कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूलों पर ईमान लाएं और हुक्मे इलाही के मुत़ाबिक़ अ़मल करें। 180 : और उन्हों ने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़काम को अपनी ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ पाया तो उन में से 181 : अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब में तो यहूदो नसारा सब शरीक हैं मगर क़त्ल करना येह ख़ास यहूद का काम है। उन्हों ने बहुत से अम्बिया को शहीद किया जिन में से ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी हैं। 182 : और ऐसे शदीद जुर्मों पर भी अ़ज़ाब न किया जाएगा। 183 : ह़क़ के देखने और सुनने से। येह उन के ग़ायते जहल और निहायते कुफ़्र और क़बूले ह़क़ से ब दरजए ग़ायत ए'राज़ करने का बयान है। 184 : जब उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तौबा की, इस के बा'द दोबारा 185 : नसारा के बहुत फ़िर्क़े हैं, उन में से या'क़ूबिया और मल्कानिया का येह क़ौल था वोह कहते थे कि मरयम ने "इलाह" जना और येह भी कहते थे कि इलाह ने ज़ाते ईसा में ह़ुलूल किया और वोह उन के साथ मुत्तह़िद हो गया तो ईसा इलाह हो गए। تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (**अल्लाह** इन बातों से बहुत ही बरतरो बुलन्द है) (خازن) 186 : और मैं उस का बन्दा

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾ لَقَدْ كَفَرَ

जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक काफ़िर हैं

الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

وقف لازم

वोह जो कहते हैं **अल्लाह** तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है[187] और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा[188]

وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ

और अगर अपनी बात से बाज़ न आए[189] तो जो उन में काफ़िर मरेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब

اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

पहुंचेगा तो क्यूं नहीं रुजूअ़ करते **अल्लाह** की त़रफ़ और उस से बख़्शिश मांगते और **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۷۴﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ

मेहरबान मसीह़ इब्ने मरयम नहीं मगर एक रसूल[190] इस से पहले बहुत

الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

रसूल हो गुज़रे[191] और इस की मां सिद्दीक़ा है[192] दोनों खाना खाते थे[193] देखो तो

نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۷۵﴾ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

हम कैसी साफ़ निशानियां उन के लिये बयान करते हैं फिर देखो वोह कैसे औंधे जाते हैं तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा ऐसे को

اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۶﴾

पूजते हो जो तुम्हारे नुक़्सान का मालिक न नफ़्अ़ का[194] और **अल्लाह** ही सुनता जानता है

हूं इलाह नहीं। **187 :** येह क़ौल नसारा के फ़िर्क़ए मरक़ूसिया व नस्तूरिया का है, अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से उन की मुराद येह थी कि **अल्लाह** और मरयम और ईसा तीनों इलाह हैं और इलाह होना इन सब में मुश्तरक है। मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं कि नसारा कहते हैं कि बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस येह तीनों एक इलाह हैं। **188 :** न उस का कोई सानी न सालिस, वोह वह़दानिय्यत के साथ मौसूफ़ है, उस का कोई शरीक नहीं, बाप बेटे बीवी सब से पाक। **189 :** और तस्लीस (तीन ख़ुदा होने) के मो'तक़िद रहे, तौह़ीद इख़्तियार न की **190 :** इन को इलाह मानना ग़लत़ बात़िल और कुफ़्र है। **191 :** वोह भी मो'जिज़ात रखते थे, येह मो'जिज़ात उन के सिद्क़े नुबुव्वत की दलील थे, इसी त़रह़ ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी रसूल हैं, इन के मो'जिज़ात भी दलीले नुबुव्वत हैं, इन्हें रसूल ही मानना चाहिये, जैसे और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मो'जिज़ात की बिना पर ख़ुदा नहीं मानते इन को भी ख़ुदा न मानो। **192 :** जो अपने रब के कलिमात और उस की किताबों की तस्दीक़ करने वाली हैं। **193 :** इस में नसारा का रद है कि इलाह ग़िज़ा का मोह़ताज नहीं हो सकता तो जो ग़िज़ा खाए, जिस्म रखे, उस जिस्म में तह़लील (लाग़री व कमज़ोरी) वाक़ेअ़ हो, ग़िज़ा उस का बदल बने, वोह कैसे इलाह हो सकता है? **194 :** येह इब्त़ाले शिर्क की एक और दलील है। इस का ख़ुलासा येह है कि इलाह (मुस्तह़िक़्क़े इबादत) वोही हो सकता है जो नफ़्अ़ व ज़रर वग़ैरा हर चीज़ पर ज़ाती क़ुदरत व इख़्तियार रखता हो, जो ऐसा न हो वोह इलाह मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं हो सकता और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नफ़्अ़ व ज़रर के बिज़्ज़ात मालिक न थे **अल्लाह** तआला के मालिक करने से मालिक हुए तो उन की निस्बत उलूहिय्यत का ए'तिक़ाद बात़िल है। (تفسیر ابو السعود)

www.dawateislami.net

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ غَیْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْۤا

तुम फ़रमाओ ऐ किताब वालो अपने दीन में नाहक़ ज़ियादती न करो[195] और ऐसे लोगों की

اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِیْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ

ख़्वाहिश पर न चलो[196] जो पहले गुमराह हो चुके और बहुतों को गुमराह किया और सीधी राह से

السَّبِیْلِ ۧ(۷۷) لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ ع

बहक गए ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इसराईल में दावूद

وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ(۷۸) كَانُوْا لَا

और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर[197] येह[198] बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में

یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ(۷۹) تَرٰى كَثِیْرًا

एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे[199] उन में तुम बहुत को

مِّنْهُمْ یَتَوَلَّوْنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْاؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ

देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये ख़ुद आगे भेजी येह कि

سَخِطَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ فِی الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ(۸۰) وَ لَوْ كَانُوْا یُؤْمِنُوْنَ

अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अज़ाब में हमेशा रहेंगे[200] और अगर वोह ईमान लाते[201]

195 : यहूद की ज़ियादती तो येह कि हज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत ही नहीं मानते, और नसारा की ज़ियादती येह कि उन्हें मा'बूद ठहराते हैं। **196 :** या'नी अपने बद दीन बाप दादा वग़ैरा की। **197 :** बाशिन्दगाने ऐला ने जब हद से तजावुज़ किया और सनीचर के रोज़ शिकार तर्क करने का जो हुक्म था उस की मुख़ालफ़त की तो हज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की और उन के हक़ में बद दुआ फ़रमाई तो वोह बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए और अस्हाबे माइदा ने जब नाज़िल शुदा ख़्वान की ने'मतें खाने के बा'द कुफ़्र किया तो हज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन के हक़ में बद दुआ की तो वोह ख़िन्ज़ीर और बन्दर हो गए और उन की ता'दाद पांच हज़ार थी। (جمل وغیرہ) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहूद अपने आबा पर फ़ख़्र किया करते थे और कहते थे : हम अम्बिया की औलाद हैं। इस आयत में उन्हें बताया गया कि उन अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की है। **एक क़ौल** येह है कि हज़रते दावूद और हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उन पर ला'नत की है। **एक क़ौल** येह है कि हज़रते दावूद और हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की जल्वा अफ़रोज़ी की बिशारत दी और हुज़ूर पर ईमान न लाने और कुफ़्र करने वालों पर ला'नत की। **198 :** ला'नत **199 मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि नह्ये मुन्कर या'नी बुराई से लोगों को रोकना वाजिब है और बदी को मन्अ करने से बाज़ रहना सख़्त गुनाह है। तिरमिज़ी की हदीस में है कि जब बनी इसराईल गुनाहों में मुब्तला हुए तो उन के उलमा ने अव्वल तो उन्हें मन्अ किया, जब वोह बाज़ न आए तो फिर भी उन से मिल गए और खाने पीने उठने बैठने में उन के साथ शामिल हो गए, उन के इस इस्यान व तअद्दी का येह नतीजा हुवा कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते दावूद व हज़रते ईसा عَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़बान से उन पर ला'नत उतारी। **200 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात हराम और **अल्लाह** तआला के ग़ज़ब का सबब है। **201 :** सिद्क़ो इख़्लास के साथ बिग़ैर निफ़ाक़ के।

www.dawateislami.net

بِاللّٰہِ وَالنَّبِیِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَیْہِ مَا اتَّخَذُوْہُمْ اَوْلِیَآءَ وَلٰکِنَّ کَثِیْرًا

अल्लाह और इन नबी पर और उस पर जो उन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते[202] मगर उन में तो बहुतेरे (अक्सर)

مِّنْہُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَۃً لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوا الْیَہُوْدَ

फ़ासिक़ हैं ज़रूर तुम मुसल्मानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों

وَالَّذِیْنَ اَشْرَکُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَہُمْ مَّوَدَّۃً لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوا الَّذِیْنَ

और मुश्रिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसल्मानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा क़रीब उन को पाओगे

قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰی ؕ ذٰلِکَ بِاَنَّ مِنْہُمْ قِسِّیْسِیْنَ وَرُہْبَانًا وَّاَنَّہُمْ

जो कहते थे हम नसारा हैं[203] येह इस लिये कि उन में आ़लिम और दरवेश हैं और येह

لَا یَسْتَکْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

ग़ुरूर नहीं करते[204]

202 : इस से साबित हुवा कि मुश्रिकीन के साथ दोस्ती और मुवालात अ़लामते निफ़ाक़ है। **203 :** इस आयत में उन की मदह़ है जो ज़मानए अक़्दस तक ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीन पर रहे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत मा'लूम होने पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान ले आए। **शाने नुज़ूल :** इब्तिदाए इस्लाम में जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने मुसल्मानों को बहुत ईज़ाएं दीं तो अस्ह़ाबे किराम में से ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने हुज़ूर के हुक्म से ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, उन मुहाजिरीन के अस्मा येह हैं : ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और इन की ज़ौजए त़ाहिरा ह़ज़रते रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते ज़ुबैर, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा और इन की ज़ौजा ह़ज़रते सहला बिन्ते सुहैल और ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़ज़रते अबू सलमा और इन की बीबी ह़ज़रते उम्मे सलमा बिन्ते उमय्या, ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, ह़ज़रते आ़मिर बिन रबीआ़ और इन की बीबी ह़ज़रते लैला बिन्ते अबी ख़ैसमा, ह़ज़रते ह़ातिब बिन उ़मर व ह़ज़रते सुहैल बिन बैज़ा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُم। येह ह़ज़रात नुबुव्वत के पांचवें साल माहे रजब में बह़री सफ़र कर के ह़बशा पहुंचे, इस हिजरत को हिजरते ऊला कहते हैं, इन के बा'द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब गए, फिर और मुसल्मान रवाना होते रहे यहां तक कि बच्चों और औ़रतों के इलावा मुहाजिरीन की ता'दाद बयासी मर्दों तक पहुंच गई, जब क़ुरैश को इस हिजरत का इ़ल्म हुवा तो उन्हों ने एक जमाअ़त तोह़फ़े तह़ाइफ़ दे कर नज्जाशी बादशाह के पास भेजी, उन लोगों ने दरबारे शाही में बारयाबी ह़ासिल कर के बादशाह से कहा कि हमारे मुल्क में एक शख़्स ने नुबुव्वत का दा'वा किया है और लोगों को नादान बना डाला है, उन की जमाअ़त जो आप के मुल्क में आई है वोह यहां फ़साद अंगेज़ी करेगी और आप की रिआ़या को बाग़ी बनाएगी, हम आप को ख़बर देने के लिये आए हैं और हमारी क़ौम दरख़्वास्त करती है कि आप उन्हें हमारे ह़वाले कीजिये। नज्जाशी बादशाह ने कहा : हम उन लोगों से गुफ़्तगू कर लें, येह कह कर मुसल्मानों को त़लब किया और उन से दरयाफ़्त किया कि तुम ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की वालिदा के ह़क़ में क्या ए'तिक़ाद रखते हो ? ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब ने फ़रमाया कि ह़ज़रते ई़सा अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल और कलिमतुल्लाह व रूहुल्लाह हैं और ह़ज़रते मरयम कुंवारी पाक हैं। येह सुन कर नज्जाशी ने ज़मीन से एक लकड़ी का टुकड़ा उठा कर कहा : ख़ुदा की क़सम तुम्हारे आक़ा ने ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कलाम में इतना भी नहीं बढ़ाया जितनी येह लकड़ी या'नी हुज़ूर का इर्शाद कलामे ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। येह देख कर मुश्रिकीने मक्का के चेहरे उतर गए। फिर नज्जाशी ने क़ुरआन शरीफ़ सुनने की ख़्वाहिश की, ह़ज़रते जा'फ़र ने सूरए मरयम तिलावत की, उस वक़्त दरबार में नसरानी आ़लिम और दरवेश मौजूद थे, क़ुरआने करीम सुन कर बे इख़्तियार रोने लगे और नज्जाशी ने मुसल्मानों से कहा : तुम्हारे लिये मेरे क़लम रव (मुल्क) में कोई ख़त़रा नहीं। मुश्रिकीने मक्का नाकाम फिरे और मुसल्मान नज्जाशी के पास बहुत इ़ज़्ज़तो आसाइश के साथ रहे और फ़ज़्ले इलाही से नज्जाशी को दौलते ईमान का शरफ़ ह़ासिल हुवा। इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **204**
मस्अला : इस से साबित हुवा कि इ़ल्म और तर्के तकब्बुर बहुत काम आने वाली चीज़ें हैं और इन की बदौलत हिदायत नसीब होती है।

www.dawateislami.net

وَ اِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की तरफ़ उतरा[205] तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं[206]

مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾

इस लिये कि वोह हक़ को पहचान गए कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए[207] तो हमें हक़ के गवाहों में लिख ले[208]

وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا

और हमें क्या हुवा कि हम ईमान न लाएं **अल्लाह** पर और उस हक़ पर कि हमारे पास आया और हम तृमअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब

رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

नेक लोगों के साथ दाख़िल करे[209] तो **अल्लाह** ने उन के इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَ

जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येह बदला है नेकों का[210] और

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۸۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا

वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह हैं दोज़ख़ वाले ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ

ईमान वालो[211] हराम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये हलाल कीं[212] और हद से न बढ़ो

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ص

बेशक हद से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा

205 : या'नी कुरआन शरीफ़ **206 :** येह उन की रिक़्क़ते क़ल्ब का बयान है कि कुरआने करीम के दिल में असर करने वाले मज़ामीन सुन कर रो पड़ते हैं। चुनान्चे नजाशी बादशाह की दरख़्वास्त पर हज़रते जा'फ़र ने उस के दरबार में सूरए मरयम और सूरए ताहा की आयात पढ़ कर सुनाईं तो नजाशी बादशाह और उस के दरबारी जिन में उस की क़ौम के उलमा मौजूद थे सब ज़ारो क़ितार रोने लगे। इसी तरह नजाशी की क़ौम के सत्तर आदमी जो सय्यिदे आलम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे हुज़ूर से सूरए यासीन सुन कर बहुत रोए। **207 :** सय्यिदे आलम ﷺ पर और हम ने उन के बरहक़ होने की शहादत दी **208 :** और सय्यिदे आलम ﷺ की उम्मत में दाख़िल कर जो रोज़े क़ियामत तमाम उम्मतों के गवाह होंगे। (येह उन्हें इन्जील से मा'लूम हो चुका था) **209 :** जब हबशा का वफ़्द इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर वापस हुवा तो यहूद ने उन्हें इस पर मलामत की, इस के जवाब में उन्हों ने येह कहा कि जब हक़ वाज़ेह हो गया तो हम क्यूं ईमान न लाते, या'नी ऐसी हालत में ईमान न लाना क़ाबिले मलामत है न कि ईमान लाना क्यूं कि येह सबब है फ़लाहे दारैन का। **210 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाएं और हक़ का इक़रार करें। **211 शाने नुज़ूल :** सहाबए किराम की एक जमाअ़त रसूले करीम ﷺ का वा'ज़ सुन कर एक रोज़ हज़रते उस्मान बिन मज़्ऊन के यहां जम्अ़ हुई और उन्हों ने बाहम तर्के दुन्या का अ़हद किया और इस पर इत्तिफ़ाक़ किया कि वोह टाट पहनेंगे, हमेशा दिन में रोज़ा रखेंगे, शब इबादते इलाही में बेदार रह कर गुज़ारा करेंगे, बिस्तर पर न लैटेंगे, गोश्त और चिक्नाई न खाएंगे, औरतों से जुदा रहेंगे, ख़ुश्बू न लगाएंगे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस इरादे से रोक दिया गया। **212 :** या'नी जिस तरह हराम को तर्क किया जाता है उस तरह हलाल चीज़ों को तर्क न करो और न मुबालग़तन किसी हलाल चीज़ को येह

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ لَا یُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِیْۤ

और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हें ईमान है अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत़ फ़हमी

اَیْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ یُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَیْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ

की क़समों पर[213] हां उन क़समों पर गिरिफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम ने मज़बूत़ किया[214] तो ऐसी क़सम का बदला दस

عَشَرَةِ مَسٰكِیْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِیْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ

मिस्कीनों को खाना देना[215] अपने घर वालों को जो खिलाते हो उस के औसत़ में से[216] या उन्हें कपड़े देना[217] या

تَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ ثَلٰثَةِ اَیَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ

एक बरदा (ग़ुलाम) आज़ाद करना तो जो इन में से कुछ न पाए तो तीन दिन के रोज़े[218] येह बदला है

اَیْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَ احْفَظُوْۤا اَیْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُبَیِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तुम्हारी क़समों का जब क़सम खाओ[219] और अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो[220] इसी त़रह़ अल्लाह तुम से अपनी

اٰیٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ

आयतें बयान फ़रमाता है कि कहीं तुम एह़सान मानो ऐ ईमान वालो शराब और जूआ और

الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ

बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ

फ़लाह़ पाओ शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे

कहो कि हम ने इस को अपने ऊपर ह़राम कर लिया। **213 :** ग़लत़ फ़हमी की क़सम या'नी यमीने लग़्व येह है कि आदमी किसी वाक़िए को अपने ख़याल में सह़ीह़ जान कर क़सम खा ले और ह़क़ीक़त में वोह ऐसा न हो, ऐसी क़सम पर कफ़्फ़ारा नहीं। **214 :** या'नी यमीने मुन्अ़क़िदा पर जो किसी आइन्दा अम्र पर क़स्द कर के खाई जाए ऐसी क़सम तोड़ना गुनाह भी है और इस पर कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है। **215 :** दोनों वक़्त का ख़्वाह उन्हें खिलावे या पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जव सदक़ए फ़ित्र की त़रह़ दे दे। (दो किलो में अस्सी 80 ग्राम कम। "फ़तावा अहले सुन्नत") । **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि एक मिस्कीन को दस रोज़ दे दे या खिला दिया करे। **216 :** या'नी न बहुत आ'ला दरजे का न बिल्कुल अदना, बल्कि मुतवस्सित़। **217 :** औसत़ दरजे के जिन से अक्सर बदन ढक सके। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہما से मरवी है कि एक तहबन्द और कुरता या एक तहबन्द और एक चादर हो। **मस्अला :** कफ़्फ़ारे में इन तीनों बातों का इख़्तियार है ख़्वाह खाना दे ख़्वाह कपड़े, ख़्वाह ग़ुलाम आज़ाद करे, हर एक से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। **218 मस्अला :** रोज़े से कफ़्फ़ारा जब ही अदा हो सकता है जब कि खाना, कपड़ा देने और ग़ुलाम आज़ाद करने की क़ुदरत न हो। **मस्अला :** येह भी ज़रूरी है कि येह रोज़े मुतवातिर रखे जाएं। **219 :** और क़सम खा कर तोड़ दो या'नी उस को पूरा न करो। **मस्अला :** क़सम तोड़ने से पहले कफ़्फ़ारा देना दुरुस्त नहीं। **220 :** या'नी उन्हें पूरा करो अगर उस में शरअ़न कोई ह़रज न हो और येह भी ह़िफ़ाज़त है कि क़सम खाने की आ़दत तर्क की जाए।

www.dawateislami.net

فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ وَ یَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ

शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके[221] तो क्या तुम

مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَ احْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّیْتُمْ

बाज़ आए और हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का और होशियार रहो फिर अगर तुम फिर जाओ[222]

فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا عَلٰی رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۹۲﴾ لَیْسَ عَلَی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

तो जान लो कि हमारे रसूल का ज़िम्मा सिर्फ़ वाज़ेह तौर पर हुक्म पहुंचा देना है[223] जो ईमान लाए और नेक

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِیْمَا طَعِمُوْۤا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

काम किये उन पर कुछ गुनाह नहीं है[224] जो कुछ उन्हों ने चखा जब कि डरें और ईमान रखें और

الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ

नेकियां करें फिर डरें और ईमान रखें फिर डरें और नेक रहें और **अल्लाह** नेकों को

الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۹۳﴾ ع یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَیَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَیْءٍ مِّنَ الصَّیْدِ ۱۲ ع ۷ ۲

दोस्त रखता है[225] ऐ ईमान वालो ज़रूर **अल्लाह** तुम्हें आज़्माएगा ऐसे बा'ज़ शिकार से

تَنَالُهٗۤ اَیْدِیْكُمْ وَ رِمَاحُكُمْ لِیَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ یَّخَافُهٗ بِالْغَیْبِ ۚ فَمَنْ

जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुंचें[226] कि **अल्लाह** पहचान करा दे उन की जो उस से बिन देखे डरते हैं फिर इस

221 : इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए बाज़ी का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुग़्ज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवक़ात की पाबन्दी से महरूम हो जाता है। **222 :** इताअ़ते ख़ुदा और रसूल से **223 :** येह वईदो तहदीद है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने हुक्मे इलाही साफ़ साफ़ पहुंचा दिया तो उन का जो फ़र्ज़ था अदा हो चुका अब जो ए'राज़ करे वोह मुस्तहिक़्क़े अ़ज़ाब है। **224 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई जो शराब हराम किये जाने से क़ब्ल वफ़ात पा चुके थे। हुरमते शराब का हुक्म नाज़िल होने के बा'द सहाबए किराम को उन की फ़िक्र हुई कि उन से इस का मुआख़ज़ा होगा या न होगा ? उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से क़ब्ल जिन नेक ईमानदारों ने कुछ खाया पिया वोह गुनहगार नहीं। **225 :** आयत में लफ़्ज़ ''اِتَّقَوْا'' जिस के मा'ना डरने और परहेज़ करने के हैं तीन मरतबा आया है। **पहले** से शिर्क से डरना और परहेज़ करना, **दूसरे** से शराब और जूए से बचना, **तीसरे** से तमाम मुहर्रमात से परहेज़ करना मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि **पहले** से तर्के शिर्क, **दूसरे** से तर्के मआ़सी व मुहर्रमात, **तीसरे** से तर्के शुबुहात मुराद है। बा'ज़ का क़ौल है कि **पहले** से तमाम हराम चीज़ों से बचना और **दूसरे** से इस पर क़ाइम रहना और **तीसरे** से ज़मानए नुज़ूले वह्य में या उस के बा'द जो चीज़ें मन्अ़ की जाएं उन को छोड़ देना मुराद है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) **226 :** 6 हिजरी जिस में हुदैबिया का वाक़िआ पेश आया उस साल मुसल्मान मोहरिम (हालते एहराम में) थे, इस हालत में वोह इस आज़्माइश में डाले गए कि वुहूश व तुयूर (जंगली जानवर और परिन्दे) ब कसरत आए और उन की सुवारियों पर छा गए, हाथ से पकड़ना, हथियार से शिकार कर लेना बिल्कुल इख़्तियार में था। **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस आज़्माइश में वोह ब फ़ज़्ले इलाही फ़रमां बरदार साबित हुए और हुक्मे इलाही की ता'मील में साबित क़दम रहे। (خازن وغیرہ)

www.dawateislami.net

اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا

के बा'द जो हद से बढ़े[227] उस के लिये दर्दनाक सज़ा है ऐ ईमान वालो शिकार

الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا

न मारो जब तुम एहराम में हो[228] और तुम में जो उसे क़स्दन क़त्ल करे[229] तो उस का बदला येह है कि

قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ

वैसा ही जानवर मवेशी से दे[230] तुम में कि दो सिक़ह आदमी इस का हुक्म करें[231] येह क़ुरबानी हो का'बे को पहुंचती[232] या

كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ

कफ़्फ़ारा दे चन्द मिस्कीनों का खाना[233] या इस के बराबर रोज़े कि अपने काम का वबाल चखे

عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

अल्लाह ने मुआफ़ किया जो हो गुज़रा[234] और जो अब करेगा अल्लाह उस से बदला लेगा और अल्लाह ग़ालिब है

ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ

बदला लेने वाला हलाल है तुम्हारे लिये दरिया का शिकार और उस का खाना तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ाएदे को

وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ

और तुम पर हराम है ख़ुश्की का शिकार[235] जब तक तुम एहराम में हो और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम्हें

227 : और बा'द इब्तिला के ना फ़रमानी करे 228 **मस्अला :** मोहरिम पर शिकार या'नी ख़ुश्की के किसी वहशी जानवर को मारना हराम है। **मस्अला :** जानवर की तरफ़ शिकार करने के लिये इशारा करना या किसी तरह बताना भी शिकार में दाख़िल और मम्नूअ है। **मस्अला :** हालते एहराम में हर वहशी जानवर का शिकार मम्नूअ है ख़्वाह वोह हलाल हो या न हो। **मस्अला :** काटने वाला कुत्ता और कव्वा, और बिच्छू और चील और चूहा और भेड़िया और सांप इन जानवरों को अहादीस में फ़वासिक़ फ़रमाया गया और इन के क़त्ल की इजाज़त दी गई। **मस्अला :** मच्छर, पिस्सू, च्यूंटी, मख्खी और हशरातुल अर्द और हम्ला आवर दरिन्दों को मारना मुआफ़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 229 **मस्अला :** हालते एहराम में जिन जानवरों का मारना मम्नूअ है वोह हर हाल में मम्नूअ है अमदन हो या ख़ताअन। अमदन का हुक्म तो इस आयत से मा'लूम हवा और ख़ताअन का हदीस शरीफ़ से साबित है। (مدارک) 330 : वैसा ही जानवर देने से मुराद येह है कि क़ीमत में मारे हुए जानवर के बराबर हो। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا का येही क़ौल है और इमाम मुहम्मद व शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمَا के नज़्दीक ख़िल्क़त व सूरत में मारे हुए जानवर की मिस्ल होना मुराद है। (مدارک واحمدی) 231 : या'नी क़ीमत का अन्दाज़ा करें और क़ीमत वहां की मो'तबर होगी जहां शिकार मारा गया हो या उस के क़रीब के मक़ाम की। 232 : या'नी कफ़्फ़ारे के जानवर का हरमे मक्का शरीफ़ के बाहर ज़ब्ह करना दुरुस्त नहीं, मक्कए मुकर्रमा में होना चाहिये और ऐन का'बे में भी ज़ब्ह जाइज़ नहीं, इसी लिये का'बे को पहुंचती फ़रमाया का'बे के अन्दर न फ़रमाया और कफ़्फ़ारा खाने या रोज़े से अदा किया जाए तो उस के लिये मक्कए मुकर्रमा में होने की क़ैद नहीं बाहर भी जाइज़ है। (تفسیر احمدی وغیرہ) 233 **मस्अला :** येह भी जाइज़ है कि शिकार की क़ीमत का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन को इस तरह दे कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र के बराबर पहुंचे और येह भी जाइज़ है कि इस क़ीमत में जितने मिस्कीनों के ऐसे हिस्से होते थे इतने रोज़े रखे। 234 : या'नी इस हुक्म से क़ब्ल जो शिकार मारे। 235 : इस आयत में येह **मस्अला** बयान फ़रमाया गया कि मोहरिम के लिये दरिया का शिकार हलाल है और ख़ुश्की का हराम। दरिया का शिकार वोह है जिस की पैदाइश दरिया में हो और ख़ुश्की का वोह जिस की पैदाइश ख़ुश्की में हो।

www.dawateislami.net

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَ الشَّهْرَ

उठना है अल्लाह ने अदब वाले घर का'बे को लोगों के क़ियाम का बाइस किया[236] और हुरमत वाले

الْحَرَامَ وَ الْهَدْيَ وَ الْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي

महीने[237] और हरम की क़ुरबानी और गले में अ़लामत आवेज़ां जानवरों को[238] येह इस लिये कि तुम यक़ीन करो कि अल्लाह जानता है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْۤا

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और येह कि अल्लाह सब कुछ जानता है जान रखो कि

اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَ اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ ؕ مَا عَلَى

अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है[239] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान रसूल पर नहीं

الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا

मगर हुक्म पहुंचाना[240] और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो[241] तुम फ़रमा दो

يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَ الطَّيِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

कि सुथरा और गन्दा बराबर नहीं[242] अगर्चे तुझे गन्दे की कसरत भाए तो अल्लाह से डरते रहो

يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا

ऐ अ़क़्ल वालो कि तुम फ़लाह पाओ ऐ ईमान वालो ऐसी बातें न

عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें[243] और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है

236 : कि वहां दीनी व दुन्यवी उमूर का क़ियाम होता है, खाइफ़ वहां पनाह लेता है, ज़ईफ़ों को वहां अमान मिलती है, ताजिर वहां नफ़्अ़ पाते हैं, हज व उ़मरह करने वाले वहां हाज़िर हो कर मनासिक अदा करते हैं। **237 :** या'नी ज़िल हिज्जा को जिस में हज किया जाता है। **238 :** कि इन में सवाब ज़ियादा है, इन सब को तुम्हारे मसालेह के क़ियाम का सबब बनाया। **239 :** तो हरम व एहराम की हुरमत का लिहाज़ रखो, अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमतों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द अपनी सिफ़त "شَدِيْدُ الْعِقَاب" ज़िक्र फ़रमाई ताकि ख़ौफ़ो रजा से तक्मीले ईमान हो, इस के बा'द सिफ़ते ग़फ़ूर व रहीम बयान फ़रमा कर अपनी वुस्अ़ते रहमत का इज़्हार फ़रमाया। **240 :** तो जब रसूल हुक्म पहुंचा कर फ़ारिग़ हो गए तो तुम पर ताअ़त लाज़िम और हुज्जत क़ाइम हो गई और जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **241 :** उस को तुम्हारे ज़ाहिरो बातिन, निफ़ाक़ व इख़्लास सब का इ़ल्म है। **242 :** या'नी हलाल व हराम, नेक व बद, मुस्लिम व काफ़िर और खरा खोटा एक दरजे में नहीं हो सकता। **243 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोग सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से बहुत से बे फ़ाएदा सुवाल किया करते थे, येह ख़ातिरे मुबारक पर गिरां होता था। एक रोज़ फ़रमाया कि जो जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करो मैं हर बात का जवाब दूंगा, एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि मेरा अन्जाम क्या है? फ़रमाया : जहन्नम। दूसरे ने दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है? आप ने उस के अस्ली बाप का नाम बता दिया जिस के नुत्फ़े से वोह था कि सदाक़ा है बा वुजूदे कि उस की मां का शोहर और था, जिस का येह शख़्स बेटा कहलाता था। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि ऐसी बातें न पूछो जो ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें ना गवार गुज़रें। (تفسیر احمدی) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा फ़रमाते हुए फ़रमाया : जिस को जो दरयाफ़्त करना हो दरयाफ़्त करे! अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा

www.dawateislami.net

تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ

तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी **अल्लाह** उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा चुका है[244] और **अल्लाह** बख़्शने वाला हिल्म वाला है तुम से अगली एक क़ौम ने

قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّ لَا

उन्हें पूछा[245] फिर उन से मुन्किर हो बैठे **अल्लाह** ने मुक़र्रर नहीं किया है कान चिरा हुवा और न

سَآئِبَةٍ وَّ لَا وَصِيْلَةٍ وَّ لَا حَامٍ ۙ وَّ لٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى

बिजार और न वसीला और न हामी[246] हां काफ़िर लोग **अल्लाह** पर झूटा

اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى

इफ़्तिरा बांधते हैं[247] और उन में अक्सर निरे बे अ़क़्ल हैं[248] और जब उन से कहा जाए आओ उस त़रफ़

مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ اِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ

जो **अल्लाह** ने उतारा और रसूल की त़रफ़[249] कहें हमें वोह बहुत है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया

सहमी ने खड़े हो कर दरयाफ़्त किया कि मेरा बाप कौन है ? फ़रमाया : हुज़ाफ़ा । फिर फ़रमाया : और पूछो ! ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठ कर इक़रारे ईमान व रिसालत के साथ मा'ज़िरत पेश की । इब्ने शहाब की रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा की वालिदा ने उन से शिकायत की और कहा कि तू बहुत ना लाइक़ बेटा है, तुझे क्या मा'लूम कि ज़मानए जाहिलिय्यत की औ़रतों का क्या ह़ाल था, ख़ुदा न ख़्वास्ता तेरी मां से कोई क़ुसूर हुवा होता तो आज वोह कैसी रुस्वा होती, इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने कहा कि अगर हुज़ूर किसी ह़बशी ग़ुलाम को मेरा बाप बता देते तो मैं यक़ीन के साथ मान लेता । बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि लोग ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा इस क़िस्म के सुवाल किया करते थे कोई कहता : मेरा बाप कौन है ? कोई पूछता मेरी ऊंटनी गुम हो गई है वोह कहां है ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई । मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बे में ह़ज फ़र्ज़ होने का बयान फ़रमाया । इस पर एक शख़्स ने कहा : क्या हर साल फ़र्ज़ है ? ह़ज़रत ने सुकूत फ़रमाया, साइल ने सुवाल की तक्रार की तो इर्शाद फ़रमाया कि जो मैं बयान न करूं उस के दरपै न हो अगर मैं हां कह देता तो हर साल ह़ज करना फ़र्ज़ हो जाता और तुम न कर सकते । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अह़काम हुज़ूर को मुफ़व्वज़ (अ़ता कर दिये गए) हैं, जो फ़र्ज़ फ़रमा दें वोह फ़र्ज़ हो जाए, न फ़रमाएं न हो । **244 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस अम्र की शरअ़ में मुमानअ़त न आई हो वोह मुबाह़ है । ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की ह़दीस में है कि ह़लाल वोह है जो **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़लाल फ़रमाया, ह़राम वोह है जिस को उस ने अपनी किताब में ह़राम फ़रमाया और जिस से सुकूत किया वोह मुआ़फ़ तो कुल्फ़त (तक्लीफ़ व मशक़्क़त) में न पड़ो । (خازن) **245 :** अपने अम्बिया से । और बे ज़रूरत सुवाल किये । ह़ज़राते अम्बिया ने अह़काम बयान फ़रमा दिये तो बजा न ला सके । **246 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर था कि जो ऊंटनी पांच मरतबा बच्चे जनती और आख़िर मरतबा उस के नर होता उस का कान चीर देते, फिर न उस पर सुवारी करते न उस को ज़ब्ह़ करते न पानी और चारे पर से हंकाते, उस को बह़ीरा कहते और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो येह नज़्र करते कि अगर मैं सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी साइबा (बिजार) है और उस से भी नफ़्अ़ उठाना बह़ीरा की त़रह़ ह़राम जानते और उस को आज़ाद छोड़ देते और बकरी जब सात मरतबा बच्चे जन चुकती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उस को मर्द खाते और अगर मादा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर मादा दोनों होते तो कहते कि येह अपने भाई से मिल गई उस को वसीला कहते और जब नर ऊंट से दस गियाभ (ह़म्ल) ह़ासिल हो जाते तो उस को छोड़ देते, न उस पर सुवारी करते, न उस से काम लेते, न उस को चारे पानी पर से रोकते, उस को ह़ामी कहते । (مدارک) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बह़ीरा वोह है जिस का दूध बुतों के लिये रोकते थे, कोई उस जानवर का दूध न दोहता और साइबा वोह जिस को अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे, कोई उन से काम न लेता । येह रस्में ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए अ़हदे इस्लाम तक चली आ रही थीं । इस आयत में इन को बात़िल किया गया । **247 :** क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन जानवरों को ह़राम नहीं किया, उस की त़रफ़ इस की निस्बत ग़लत़ है । **248 :** जो अपने सरदारों के कहने से इन चीज़ों को ह़राम समझते हैं, इतना शुऊ़र नहीं रखते कि जो चीज़ **अल्लाह** और उस के रसूल ने ह़राम न की उस को कोई ह़राम नहीं कर सकता । **249 :** या'नी हुक्मे ख़ुदा और रसूल का इत्तिबाअ़ करो और समझ लो कि येह चीज़ें ह़राम नहीं ।

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

क्या अगर्चे उन के बाप दादा न कुछ जानें और न राह पर हों[250] ऐ ईमान

اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ

वालो तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो[251] तुम सब की रुजूअ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

अल्लाह ही की त़रफ़ है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे ऐ ईमान वालो[252]

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا

तुम्हारी आपस की गवाही जब तुम में किसी को मौत आए[253] वसिय्यत करते वक़्त तुम में के दो

عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ

मो'तबर शख़्स हैं या ग़ैरों में के दो जब तुम मुल्क में सफ़र को जाओ

250 : या'नी बाप दादा का इत्तिबाअ़ जब दुरुस्त होता कि वोह इ़ल्म रखते और सीधी राह पर होते। **251 :** मुसल्मान कुफ़्फ़ार की महरूमी पर अफ़्सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़्फ़ार इ़नाद में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से महरूम रहे **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़रर नहीं अम्र बिल मा'रूफ़, नही अ़निल मुन्कर का फ़र्ज़ अदा कर के तुम बरिय्युज़्ज़िम्मा हो चुके, तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया : इस आयत में अम्र बिल मा'रूफ़ व नही अ़निल मुन्कर के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह हैं कि एक दूसरे की ख़बर गीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए, बदियों से रोके। (خازن) **252 शाने नुज़ूल :** मुहाजिरीन में से बुदैल जो ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स के मवाली (ग़ुलामों) में से थे ब क़स्दे तिजारत मुल्के शाम की त़रफ़ दो नसरानियों के साथ रवाना हुए, उन में से एक का नाम तमीम बिन औस दारी था और दूसरे का अ़दी बिन बद्दाअ, शाम पहुंचते ही बुदैल बीमार हो गए और उन्हों ने अपने तमाम सामान की एक फ़ेहरिस्त लिख कर सामान में डाल दी और हमराहियों को उस की इत्तिलाअ़ न दी, जब मरज़ की शिद्दत हुई तो बुदैल ने तमीम व अ़दी दोनों को वसिय्यत की, कि इन का तमाम सरमाया मदीने शरीफ़ पहुंच कर इन के अहल को दे दें और बुदैल की वफ़ात हो गई। उन दोनों ने उन की मौत के बा'द उन का सामान देखा, उस में एक चांदी का जाम था जिस पर सोने का काम बना था, उस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी थी, बुदैल येह जाम बादशाह को नज़्र करने के क़स्द से लाए थे। उन की वफ़ात के बा'द उन के दोनों साथियों ने उस जाम को ग़ाइब कर दिया और अपने काम से फ़ारिग़ होने के बा'द जब येह लोग मदीनए त़य्यिबा पहुंचे तो उन्हों ने बुदैल का सामान उन के घर वालों के सिपुर्द कर दिया। सामान खोलने पर फ़ेहरिस्त उन के हाथ आ गई जिस में तमाम मताअ़ की तफ़्सील थी। सामान को उस के मुत़ाबिक़ किया तो जाम न पाया। अब वोह तमीम व अ़दी के पास पहुंचे और उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या बुदैल ने कुछ सामान बेचा भी था? उन्हों ने कहा : नहीं। कहा : कोई तिजारती मुआ़मला किया था? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर दरयाफ़्त किया बुदैल बहुत अ़र्सा बीमार रहे और उन्हों ने अपने इ़लाज में कुछ ख़र्च किया? उन्हों ने कहा : नहीं, वोह तो शहर पहुंचते ही बीमार हो गए और जल्द ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। इस पर उन लोगों ने कहा कि उन के सामान में एक फ़ेहरिस्त मिली है, उस में चांदी का एक जाम सोने से मुनक़्क़श किया हुवा जिस में तीन सो मिस्क़ाल चांदी है, येह भी लिखा है। तमीम व अ़दी ने कहा : हमें नहीं मा'लूम, हमें तो जो वसिय्यत की थी उस के मुत़ाबिक़ सामान हम ने तुम्हें दे दिया, जाम की हमें ख़बर भी नहीं। येह मुक़द्दमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के दरबार में पेश हुवा, तमीम व अ़दी वहां भी इन्कार पर जमे रहे और क़सम खा ली, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की रिवायत में है कि फिर वोह जाम मक्कए मुकर्रमा में पकड़ा गया, जिस शख़्स के पास था उस ने कहा कि मैं ने येह जाम तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। मालिके जाम के औलिया में से दो शख़्सों ने खड़े हो कर क़सम खाई कि हमारी शहादत इन की शहादत से ज़ियादा अह़क़ (अहम और दुरुस्त) है, येह जाम हमारे मूरिस का है। इस बाब में येह आयत नाज़िल हुई। (ترمذی) **253 :** या'नी मौत का वक़्त क़रीब आए, ज़िन्दगी की उम्मीद न रहे, मौत के आसार व अ़लामात ज़ाहिर हों।

www.dawateislami.net

فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِیْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَیُقْسِمٰنِ

फिर तुम्हें मौत का हादिसा पहुंचे उन दोनों को नमाज़ के बा'द रोको[254] वोह अल्लाह की

بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِیْ بِهٖ ثَمَنًا وَّ لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَ لَا نَكْتُمُ

क़सम खाएं अगर तुम्हें कुछ शक पड़े[255] हम हल्फ़ के बदले कुछ माल न ख़रीदेंगे[256] अगर्चे क़रीब का रिश्तेदार हो और अल्लाह की गवाही

شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ

न छुपाएंगे ऐसा करें तो हम ज़रूर गुनहगारों में हैं फिर अगर पता चले कि वोह किसी गुनाह के सज़ावार

اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ یَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِیْنَ اسْتَحَقَّ عَلَیْهِمُ

हुए[257] तो उन की जगह दो और खड़े हों उन में से कि इस गुनाह या'नी झूटी गवाही ने उन का हक़ ले कर उन को नुक़्सान पहुंचाया[258] जो मय्यित से

الْاَوْلَیٰنِ فَیُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَ مَا

ज़ियादा क़रीब हों तो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही ज़ियादा ठीक है उन दो की गवाही से और हम

اعْتَدَیْنَاۤ ۖ٘ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۰۷﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ یَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ

हद से न बढ़े[259] ऐसा हो तो हम ज़ालिमों में हों येह क़रीब तर है इस से कि गवाही

عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ یَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَیْمَانٌۢ بَعْدَ اَیْمَانِهِمْ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ

जैसी चाहिये अदा करें या डरें कि कुछ क़समें रद कर दी जाएं उन की क़समों के बा'द[260] और अल्लाह से डरो

ركوع ٤

وَ اسْمَعُوْا ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ ع یَوْمَ یَجْمَعُ اللّٰهُ

और हुक्म सुनो और अल्लाह बे हुक्मों को राह नहीं देता जिस दिन अल्लाह जम्अ फ़रमाएगा

254 : इस नमाज़ से नमाज़े अ़स्र मुराद है क्यूं कि वोह लोगों के इज्तिमाअ़ का वक़्त होता है। ह़सन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया कि नमाज़े ज़ोहर या अ़स्र। क्यूं कि अहले हिजाज़ मुक़द्दमात इसी वक़्त करते थे ह़दीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर अ़दी व तमीम को बुलाया उन दोनों को मिम्बर शरीफ़ के पास क़समें दीं, उन दोनों ने क़समें खाईं, इस के बा'द मक्कए मुकर्रमा में वोह जाम पकड़ा गया तो जिस शख़्स के पास था उस ने कहा : मैं ने तमीम व अ़दी से ख़रीदा है। (مدارک) 255 : उन की अमानत व दियानत में और वोह येह कहें कि 256 : या'नी झूटी क़सम न खाएंगे और किसी की ख़ातिर ऐसा न करेंगे 257 : ख़ियानत के या झूट वग़ैरा के 258 : और वोह मय्यित के अहलो अक़ारिब हैं। 259 : चुनान्चे बुदैल के वाक़िए में जब इन के दोनों हमराहियों की ख़ियानत ज़ाहिर हुई तो बुदैल के वुरसा में से दो शख़्स खड़े हुए और उन्हों ने क़सम खाई कि येह जाम हमारे मूरिस का है और हमारी गवाही इन दोनों की गवाही से ज़ियादा ठीक है। 260 : ह़ासिले मा'ना येह है कि इस मुआ़मले में जो हुक्म दिया गया कि अ़दी व तमीम की क़समों के बा'द माल बरआमद होने पर औलियाए मय्यित की क़समें ली गईं, येह इस लिये कि लोग इस वाक़िए से सबक़ लें और शहादतों में राहे ह़क़्क़ो सवाब न छोड़ें और इस से ख़ाइफ़ रहें कि झूटी गवाही का अन्जाम शरमिन्दगी व रुस्वाई है। **फ़ाएदा :** मुद्दई पर क़सम नहीं, लेकिन यहां जब माल पाया गया तो मुद्दआ़ अ़लैहिमा ने दा'वा किया कि इन्हों ने मय्यित से ख़रीद लिया था, अब उन की ह़ैसिय्यत मुद्दई की हो गई और उन के पास इस का कोई सुबूत न था, लिहाज़ा उन के ख़िलाफ़ औलियाए मय्यित की क़सम ली गई।

الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ

रसूलों को[261] फिर फ़रमाएगा तुम्हें क्या जवाब मिला[262] अ़र्ज़ करेंगे हमें कुछ इ़ल्म नहीं बेशक तू ही है सब ग़ैबों का

الْغُيُوْبِ ﴿۱۰۹﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

ख़ूब जानने वाला[263] जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एह़सान अपने ऊपर और

وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۟ قف تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وقف لازم

अपनी मां पर[264] जब मैं ने पाक रूह़ से तेरी मदद की[265] तू लोगों से बातें करता पालने (झूले) में[266] और पक्की उ़म्र का हो कर[267]

وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

और जब मैं ने तुझे सिखाई किताब और ह़िक्मत[268] और तौरैत और इन्जील और जब तू मिट्टी

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا

से परिन्द की सी मूरत मेरे हुक्म से बनाता फिर उस में फूंक मारता तो वोह मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى

उड़ने लगती[269] और तू मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को मेरे हुक्म से शिफ़ा देता और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से

بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ

ज़िन्दा निकालता[270] और जब मैं ने बनी इसराईल को तुझ से रोका[271] जब तू उन के पास रोशन निशानियां ले कर आया तो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۰﴾ وَاِذْ اَوْحَيْتُ

उन में के काफ़िर बोले कि येह[272] तो नहीं मगर खुला जादू और जब मैं ने ह़वारियों[273]

261 : या'नी रोज़े क़ियामत **262 :** या'नी जब तुम ने अपनी उम्मतों को ईमान की दा'वत दी तो उन्हों ने तुम्हें क्या जवाब दिया ? इस सुवाल में मुन्किरीन की तौबीख़ है। **263 :** अम्बिया का येह जवाब उन के कमाले अदब की शान ज़ाहिर करता है कि वोह इ़ल्मे इलाही के ह़ुज़ूर अपने इ़ल्म को अस्लन नज़र में न लाएंगे और क़ाबिले ज़िक्र क़रार न देंगे और मुआमला **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्मो अ़द्ल पर तफ़्वीज़ फ़रमा (सोंप) देंगे। **264 :** कि मैं ने उन को पाक किया और जहां की औ़रतों पर उन को फ़ज़ीलत दी। **265 :** या'नी ह़ज़रते जिब्रील से कि वोह ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ रहते और ह़वादिस में उन की मदद करते। **266 :** सिग़र सिनी में, और येह मो'जिज़ा है। **267 :** इस आयत से साबित होता है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام क़ियामत से पहले नुज़ूल फ़रमाएंगे क्यूं कि कहूलत (बुढ़ापे) का वक़्त आने से पहले आप उठा लिये गए, नुज़ूल के वक़्त आप तेंतीस साल के जवान की सूरत में जल्वा अफ़रोज़ होंगे और ब मिस्दाक़ इस आयत के कलाम करेंगे और जो पालने (झूले) में फ़रमाया था "اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ" (मैं हूं **अल्लाह** का बन्दा) वोही फ़रमाएंगे। (جمل) **268 :** या'नी असरारे उ़लूम **269 :** येह भी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था। **270 :** अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को बीना और तन्दुरुस्त करना और मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के निकालना येह सब बि इज़्निल्लाह (**अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से) ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ाते जलीला हैं। **271 :** येह एक और ने'मत का बयान है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को यहूद के शर से मह़फ़ूज़ रखा जिन्हों ने ह़ज़रत के मो'जिज़ाते बाहिरात देख कर आप के क़त्ल का इरादा किया, **अल्लाह** तआ़ला ने आप को आस्मान पर उठा लिया और यहूद ना मुराद रह गए। **272 :** या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात। **273 :** ह़वारी ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्ह़ाब और आप के मख़्सूसीन हैं।

إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي ۚ قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا

के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर[274] ईमान लाओ बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि

مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ

हम मुसल्मान हैं[275] जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा बिन मरयम क्या आप का रब ऐसा

رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ

करेगा कि हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतारे[276] कहा **अल्लाह** से डरो अगर

كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَ

ईमान रखते हो[277] बोले हम चाहते हैं[278] कि उस में से खाएं और हमारे दिल ठहरें[279] और

نَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيسَى

हम आंखों देख लें कि आप ने हम से सच फ़रमाया[280] और हम उस पर गवाह हो जाएं[281] ईसा इब्ने मरयम

ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ

ने अ़र्ज़ की ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह

لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ

हमारे लिये ईद हो[282] हमारे अगले पिछलों की[283] और तेरी त़रफ़ से निशानी[284] और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर

---

274 : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर **275 :** ज़ाहिर और बात़िन में मुख़्लिस व मुत़ीअ़ । **276 :** मा'ना येह हैं कि क्या **अल्लाह** तआ़ला इस बाब में आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा । **277 :** और तक़्वा इख़्तियार करो ताकि येह मुराद ह़ासिल हो । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि तमाम उम्मतों से निराला सुवाल करने में **अल्लाह** से डरो या येह मा'ना हैं कि उस की कमाले क़ुदरत पर ईमान रखते हो तो इस में तरद्दुद न करो । ह़वारी मोमिन, आ़रिफ़ और क़ुदरते इलाहिय्यह के मो'तरिफ़ थे । उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : **278 :** ह़ुसूले बरकत के लिये **279 :** और यक़ीन क़वी हो और जैसा कि हम ने क़ुदरते इलाही को दलील से जाना है मुशाहदे से भी इस को पुख़्ता कर लें । **280 :** बेशक आप **अल्लाह** के रसूल हैं । **281 :** अपने बा'द वालों के लिये । ह़वारियों के येह अ़र्ज़ करने पर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें तीस रोज़े रखने का ह़ुक्म दिया और फ़रमाया : जब तुम इन रोज़ों से फ़ारिग़ हो जाओगे तो **अल्लाह** तआ़ला से जो दुआ़ करोगे क़बूल होगी । उन्हों ने रोज़े रख कर ख़्वान उतरने की दुआ़ की उस वक़्त ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल फ़रमाया और मोटा लिबास पहना और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की और सरे मुबारक झुकाया और रो कर येह दुआ़ की जिस का अगली आयत में ज़िक्र है । **282 :** या'नी हम उस के नुज़ूल के दिन को ईद बनाएं, उस की ता'ज़ीम करें, ख़ुशियां मनाएं, तेरी इ़बादत करें, शुक्र बजा लाएं । **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** तआ़ला की ख़ास रह़मत नाज़िल हो उस दिन को ईद बनाना और ख़ुशियां मनाना, इ़बादतें करना, शुक्रे इलाही बजा लाना त़रीक़ए सालिह़ीन है और कुछ शक नहीं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम तरीन ने'मत और बुज़ुर्ग तरीन रह़मत है । इस लिये ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादते मुबारका के दिन ईद मनाना और मीलाद शरीफ़ पढ़ कर शुक्रे इलाही बजा लाना और इज़्हारे फ़रह़ और सुरूर करना मुस्तह़सन व मह़मूद और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है । **283 :** जो दीनदार हमारे ज़माने में हैं उन की और जो हमारे बा'द आएं उन की **284 :** तेरी क़ुदरत की और मेरी नुबुव्वत की ।

www.dawateislami.net

الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ

रोज़ी देने वाला है **अल्लाह** ने फ़रमाया कि मैं उसे तुम पर उतारता हूं फिर अब जो तुम में कुफ़्र करेगा[285]

فَاِنِّيْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ع وَ اِذْ قَالَ

तो बेशक मैं उसे वोह अ़ज़ाब दूंगा कि सारे जहान में किसी पर न करूंगा[286] और जब **अल्लाह**

اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَ اُمِّيَ اِلٰهَيْنِ

फ़रमाएगा[287] ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तू ने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी मां को दो ख़ुदा बना लो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ

अल्लाह के सिवा[288] अ़र्ज़ करेगा पाकी है तुझे[289] मुझे रवा नहीं कि वोह बात कहूं जो मुझे नहीं

بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَ لَاۤ اَعْلَمُ مَا

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

पहुंचती[290] अगर मैं ने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मा'लूम होगा तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो

فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِيْ

तेरे इल्म में है बेशक तू ही सब ग़ैबों का ख़ूब जानने वाला[291] मैं ने तो उन से न कहा मगर वोही जो मुझे तू ने हुक्म

بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ۚ وَ كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ

दिया था कि **अल्लाह** को पूजो जो मेरा भी रब और तुम्हारा भी रब और मैं उन पर मुत्तलअ़ था जब तक मैं

فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ

उन में रहा फिर जब तू ने मुझे उठा लिया[292] तो तू ही उन पर निगाह रखता था और हर चीज़ तेरे

شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۱۷﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ

सामने हाज़िर है[293] अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे

285 : या'नी ख़्वान नाज़िल होने के बा'द **286 :** चुनान्चे आस्मान से ख़्वान नाज़िल हुवा, इस के बा'द जिन्हों ने उन में से कुफ़्र किया वोह सूरतें मस्ख़ कर के ख़िन्ज़ीर बना दिये गए और तीन रोज़ में सब हलाक हो गए। **287 :** रोज़े क़ियामत ईसाइयों की तौबीख़ के लिये **288 :** इस ख़िताब को सुन कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कांप जाएंगे और **289 :** जुम्ला नक़ाइस व उ़यूब से और इस से कि कोई तेरा शरीक हो सके। **290 :** या'नी जब कोई तेरा शरीक नहीं हो सकता तो मैं येह लोगों से कैसे कह सकता था। **291 :** इल्म को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ निस्बत करना और मुआ़मला उस को तफ़्वीज़ कर देना और अ़ज़मते इलाही के सामने अपनी मिस्कीनी का इज़्हार करना येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की शाने अदब है। **292 :** ''تَوَفَّيْتَنِيْ'' के लफ़्ज़ से हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मौत पर दलील लाना सहीह़ नहीं, क्यूं कि अव्वल तो लफ़्ज़ ''توفی'' मौत के लिये ख़ास नहीं, किसी शै के पूरे तौर पर लेने को कहते हैं ख़्वाह वोह बिग़ैर मौत के हो जैसा कि क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा : ''اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا'' (**अल्लाह** जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन के सोए में) (زمر:۴۲) दुवुम जब येह सुवाल व जवाब रोज़े क़ियामत का है तो अगर लफ़्ज़ ''تَوَفّٰى'' मौत के मा'नी में भी फ़र्ज़ कर लिया जाए जब भी

فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِينَ

तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला[294] **अल्लाह** ने फ़रमाया कि येह[295] है वोह दिन जिस में सच्चों को[296]

صِدْقُهُمْ ط لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ط

उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ

अल्लाह उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी **अल्लाह** ही के लिये है

ع ٥ ١٦ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ط وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾ ع

आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्तनत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है[297]

اٰياتها ١٦٥ ﴿٦﴾ سُوْرَةُ الْأَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ ﴿٥٥﴾ رکوعاتها ٢٠

सूरए अन्आम मक्किय्या है, इस में एक सो पेंसठ आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रहम वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّورَ ۵ ط

सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[2] और अंधेरियां और रोशनी पैदा की[3]

हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत क़ब्ले नुज़ूल इस से साबित न हो सकेगी। **293 :** और मेरा उन का किसी का हाल तुझ से पोशीदा नहीं। **294 :** हज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मा'लूम है कि क़ौम में बा'ज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए, इस लिये आप की बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ाइम रहे उन पर तू अ़ज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल हक़ व बजा और अ़द्लो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्हों ने हुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम हिक्मत है। **295 :** रोज़े क़ियामत **296 :** जो दुन्या में सच्चाई पर रहे जैसे कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام। **297 :** सादिक़ को सवाब देने पर भी और काज़िब को अ़ज़ाब फ़रमाने पर भी। **मस्अला :** क़ुदरत मुम्किनात से मुतअ़ल्लिक़ होती है न कि वाजिबात व मुहालात से, तो मा'ना आयत के येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला हर अम्रे मुम्किनुल वुजूद पर क़ादिर है। (جمل) **मस्अला :** किज़्ब वग़ैरा उ़यूबो क़बाएह़ **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى के लिये मुहाल हैं इन को तह़ते क़ुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना ग़लत़ व बात़िल है। **1 :** सूरए अन्आ़म मक्की है इस में बीस रुकूअ़ और एक सो पेंसठ आयतें तीन हज़ार एक सो कलिमे और बारह हज़ार नव सो पेंतीस ह़र्फ़ हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह कुल सूरत एक ही शब में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई और इस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के किनारे भर गए। येह भी एक रिवायत में है कि वोह फ़िरिश्ते तस्बीह़ो तक़्दीस करते आए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم" फ़रमाते हुए सर ब सुजूद हुए। **2 :** ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया तौरैत में सब से अव्वल येही आयत है, इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़्ना के साथ ह़म्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आस्मान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अ़जाइबे क़ुदरत व ग़राइबे हिक्मत और इ़ब्रतें व मनाफ़ेअ़ हैं। **3 :** या'नी हर एक अंधेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जह्ल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इ़ल्म व जन्नत की। ظُلُمَات को जम्अ़ और نُوْر को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बात़िल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे ह़क़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम।

www.dawateislami.net

ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ① هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ

इस पर[4] काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं[5] वोही है जिस ने तुम्हें[6] मिट्टी से पैदा किया

ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ② وَ هُوَ

फिर एक मीआ़द का हुक्म रखा[7] और एक मुक़र्ररा वा'दा उस के यहां है[8] फिर तुम लोग शक करते हो और वोही

اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ فِی الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ يَعْلَمُ مَا

अल्लाह है आस्मानों का और ज़मीन का[9] उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मा'लूम है और तुम्हारे

تَكْسِبُوْنَ ③ وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

काम जानता है और उन के पास कोई भी निशानी उन के रब की निशानियों से नहीं आती मगर उस से मुंह

مُعْرِضِيْنَ ④ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ

फेर लेते हैं तो बेशक उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया[10] जब उन के पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुवा

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑤ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ

चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे[11] क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने उन से पहले[12] कितनी संगतें

مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ

(क़ौमें) खपा दीं उन्हें हम ने ज़मीन में वोह जमाव दिया[13] जो तुम को न दिया और उन पर

عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

मूस्लाधार पानी भेजा[14] और उन के नीचे नहरें बहाईं[15] तो उन्हें हम ने उन के गुनाहों

بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ⑥ وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ

के सबब हलाक किया[16] और उन के बा'द और संगत उठाई[17] और अगर हम तुम पर काग़ज़

4 : या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुत्तलअ़ होने और ऐसे निशानहाए क़ुदरत देखने के 5 : दूसरों को, ह़त्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं बा वुजूदे कि इस के मुक़िर (इक़रारी) हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है। 6 : या'नी तुम्हारी अस्ल ह़ज़रते आदम को जिन की नस्ल से तुम पैदा हुए। फ़ाएदा : इस में मुश्रिकीन का रद है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे ? उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या तअ़ज्जुब ! जिस क़ादिर ने पहले पैदा किया उस की क़ुदरत से बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाने को बईद जानना नादानी है। 7 : जिस के पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे। 8 : मरने के बा'द उठाने का। 9 : उस का कोई शरीक नहीं। 10 : यहां ह़क़ से या क़ुरआने मजीद की आयात मुराद हैं या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के मो'जिज़ात। 11 : कि वोह कैसी अ़ज़्मत वाली है और उस की हंसी बनाने का अन्जाम कैसा वबाल व अ़ज़ाब। 12 : पिछली उम्मतों में से 13 : क़ुव्वत व माल और दुन्या के कसीर सामान दे कर 14 : जिस से खेतियां शादाब हों 15 : जिस से बाग़ परवरिश पाए और दुन्या की ज़िन्दगानी के लिये ऐशो राह़त के अस्बाब बहम पहुंचे 16 : कि उन्हों ने अम्बिया की तक्ज़ीब की और उन का येह सरो सामान उन्हें हलाकत

كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ

में कुछ लिखा हुवा उतारते[18] कि वोह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि येह नहीं

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا

मगर खुला जादू और बोले[19] इन पर[20] कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतारा गया और अगर हम फ़िरिश्ता उतारते[21]

لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا

तो काम तमाम हो गया होता[22] फिर उन्हें मोहलत न दी जाती[23] और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता करते[24] जब भी उसे मर्द ही बनाते[25]

وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

और उन पर वोही शुबा रखते जिस में अब पड़े हैं और ज़रूर ऐ महबूब तुम से पहले रसूलों के साथ भी ठट्टा किया गया

ع ١ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ع قُلْ

तो वोह जो उन से हंसते थे उन की हंसी उन्हीं को ले बैठी[26] तुम फ़रमा दो[27]

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١ قُلْ

ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा[28] तुम फ़रमाओ

से न बचा सका। **17 :** और दूसरे क़र्न (ज़माने) वालों को उन का जा नशीन किया, मुद्दआ़ येह है कि गुज़री हुई उम्मतों के ह़ाल से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल करना चाहिये कि वोह लोग बा वुजूदे कुव्वतो दौलत व कस्रते मालो इ़याल के कुफ़्रो तुग़यान की वज्ह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल कर के ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हों। **18 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने कहा था कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से किताब न लाओ जिस के साथ चार फ़िरिश्ते हों वोह गवाही दें कि येह **अल्लाह** की किताब है और तुम उस के रसूल हो। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि येह सब ह़ीले बहाने हैं अगर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वोह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख भी लेते और येह कहने का मौक़अ़ भी न होता कि नज़र बन्दी कर दी गई थी किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं। तो भी येह बद नसीब ईमान लाने वाले न थे उस को जादू बताते और जिस त़रह़ शक़्क़ुल क़मर को जादू बताया और उस मो'जिज़े को देख कर ईमान न लाए इस त़रह़ इस पर भी ईमान न लाते, क्यूं कि जो लोग इ़नादन इन्कार करते हैं वोह आयात व मो'जिज़ात से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते। **19 :** मुश्रिकीन **20 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **21 :** और फिर भी येह ईमान न लाते **22 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो जाता और येह सुन्नते इलाहिय्यह है कि जब कुफ़्फ़ार कोई निशानी त़लब करें और उस के बा'द भी ईमान न लाएं तो अ़ज़ाब वाजिब हो जाता है और वोह हलाक कर दिये जाते हैं। **23 :** एक लम्ह़े की भी और अ़ज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता तो फ़िरिश्ते का उतारना जिस को वोह त़लब करते हैं उन्हें क्या नाफ़ेअ़ होता। **24 :** येह उन कुफ़्फ़ार का जवाब है जो नबी عَلَيْهِ السَّلَام को कहा करते थे येह हमारी त़रह़ बशर हैं और इसी ख़ब्त़ (जुनून) में वोह ईमान से मह़रूम रहते थे। इन्हें इन्सानों में से रसूल मब्ऊ़स फ़रमाने की ह़िक्मत बताई जाती है कि इन के मुन्तफ़ेअ़ होने और ता'लीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की येही सूरत है कि नबी सूरते बशरी में जल्वा गर हो, क्यूं कि फ़िरिश्ते को उस की अस्ली सूरत में देखने की तो येह लोग ताब न ला सकते, देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते। इस लिये अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फ़िरिश्ता ही बनाया जाता **25 :** और सूरते इन्सानी ही में भेजते, ताकि येह लोग उस को देख सकें उस का कलाम सुन सकें उस से दीन के अह़काम मा'लूम कर सकें, लेकिन अगर फ़िरिश्ता सूरते बशरी में आता तो उन्हें फिर वोही कहने का मौक़अ़ रहता कि येह बशर है तो फ़िरिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ाएदा होता। **26 :** वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली व तस्कीने ख़ात़िर है कि आप रन्जीदा व मलूल न हों, कुफ़्फ़ार का पहले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है और इस का वबाल उन कुफ़्फ़ार को उठाना पड़ा है, नीज़ मुश्रिकीन को तम्बीह है कि पिछली उम्मतों के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल करें और अम्बिया के साथ त़रीक़े अदब मल्ह़ूज़ रखें ताकि पहलों की त़रह़ मुब्तलाए अ़ज़ाब न हों। **27 :** ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! इन तमस्ख़ुर (ठट्ठा) करने वालों से कि तुम **28 :** और

www.dawateislami.net

لِّمَنْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ قُلْ لِّلّٰهِؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَؕ

किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में[29] तुम फ़रमाओ अल्लाह का है[30] उस ने अपने करम के ज़िम्मे पर रह़मत लिख ली है[31]

لَیَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِؕ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

बेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ़ करेगा[32] इस में कुछ शक नहीं वोह जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली[33]

فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَهٗ مَا سَكَنَ فِی الَّیْلِ وَ النَّهَارِؕ وَ هُوَ السَّمِیْعُ

ईमान नहीं लाते और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में[34] और वोही है सुनता

الْعَلِیْمُ ﴿۱۳﴾ قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِیًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

जानता[35] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं[36] वोह अल्लाह जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये

وَ هُوَ یُطْعِمُ وَ لَا یُطْعَمُؕ قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

और वोह खिलाता है और खाने से पाक है[37] तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुवा है कि सब से पहले गरदन रखूं[38]

وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۴﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ

और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे

عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۵﴾ مَنْ یُّصْرَفْ عَنْهُ یَوْمَىٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗؕ

बड़े दिन[39] के अ़ज़ाब का डर है उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया जाए[40] ज़रूर उस पर अल्लाह की मेहर (रह़मत) हुई

وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۶﴾ وَ اِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا

और येही खुली काम्याबी है और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई[41] पहुंचाए तो उस के सिवा उस का कोई दूर करने वाला

उन्हों ने कुफ़्र व तक्ज़ीब का क्या समरा पाया। **29 :** अगर वोह इस का जवाब न दें तो **30 :** क्यूं कि इस के सिवा कोई जवाब ही नहीं है और वोह इस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्यूं कि बुत जिन को मुश्रिकीन पूजते हैं वोह बेजान हैं किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहि़य्यत नहीं रखते खुद दूसरे के मम्लूक हैं, आस्मान व ज़मीन का वोही मालिक हो सकता है जो ह़य्यु व क़य्यूम, अज़ली व अबदी, क़ादिरे मुत़्लक़, हर शै पर मुतसर्रिफ़ व हुक्मरान हो, तमाम चीज़ें उस के पैदा करने से वुजूद में आई हों, ऐसा सिवाए अल्लाह के कोई नहीं, इस लिये तमाम समावी व अर्ज़ी काएनात का मालिक उस के सिवा कोई नहीं हो सकता। **31 :** या'नी उस ने रह़मत का वा'दा किया और उस का वा'दा ख़िलाफ़ नहीं हो सकता क्यूं कि वा'दा ख़िलाफ़ी व किज़्ब उस के लिये मुहा़ल है। और रह़मत आ़म है दीनी हो या दुन्यवी अपनी मा'रिफ़त और तौह़ीद और इ़ल्म की त़रफ़ हिदायत फ़रमाना भी रह़मत में दाख़िल है और कुफ़्फ़ार को मोहलत देना और उ़क़ूबत में ता'जील न फ़रमाना भी, कि इस से उन्हें तौबा और इनाबत का मौक़अ़ भी मिलता है। (جمل وغیرہ) **32 :** और आ'माल का बदला देगा **33 :** कुफ़्र इख़्तियार कर के **34 :** या'नी तमाम मौजूदात उसी की मिल्क है और वोह सब का ख़ालिक़, मालिक, रब है। **35 :** उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं। **36 शाने नुज़ूल :** जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ علیہ وسلم को अपने बाप दादा के दीन की दा'वत दी तो येह आयत नाज़िल हुई। **37 :** या'नी ख़ल्क़ सब उस की मोह़ताज है, वोह सब से बे नियाज़। **38 :** क्यूं कि नबी अपनी उम्मत से दीन में साबिक़ होते हैं। **39 :** या'नी रोज़े क़ियामत **40 :** और नजात दी जाए **41 :** बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला।

www.dawateislami.net

هُوَ ؕ وَ اِنْ یَّمْسَسْكَ بِخَیْرٍ فَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۷﴾ وَ هُوَ الْقَاهِرُ

नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए[42] तो वोह सब कुछ कर सकता है[43] और वोही ग़ालिब है

فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۸﴾ قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ

अपने बन्दों पर और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार तुम फ़रमाओ सब से बड़ी गवाही किस की[44]

قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ۙ۫ وَ اُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ

तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** गवाह है मुझ में और तुम में[45] और मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़्य हुई है

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً

कि मैं इस से तुम्हें डराऊं[46] और जिन जिन को पहुंचे[47] तो क्या तुम[48] येह गवाही देते हो कि **अल्लाह** के साथ

اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا

और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ[49] कि मैं येह गवाही नहीं देता[50] तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है[51] और मैं बेज़ार हूं उन से जिन को

تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ وقف لازم

तुम शरीक ठहराते हो[52] जिन को हम ने किताब दी[53] इस नबी को पहचानते हैं[54] जैसा अपने

42 : मिस्ल सिह़्ह़त व दौलत वग़ैरा के। **43 :** क़ादिरे मुत़्लक़ है हर शै पर ज़ाती क़ुदरत रखता है, कोई उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उस के सिवा मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत कैसे हो सकता है। येह रद्दे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है। **44 शाने नुज़ूल :** अहले मक्का रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहने लगे कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आप की रिसालत की गवाही देता हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **45 :** और इतनी बड़ी और क़ाबिले क़बूल गवाही और किस की हो सकती है। **46 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला मेरी नुबुव्वत की शहादत देता है इस लिये कि उस ने मेरी त़रफ़ इस क़ुरआन की वह़्य फ़रमाई और येह ऐसा मो'जिज़ा है कि तुम बा वुजूद फ़सीह़, बलीग़, साह़िबे ज़बान होने के इस के मुक़ाबले से आ़जिज़ रहे तो इस किताब का मुझ पर नाज़िल होना **अल्लाह** की त़रफ़ से मेरे रसूल होने की शहादत है, जब येह क़ुरआन **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से यक़ीनी शहादत है और मेरी त़रफ़ वह़्य फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त न करो। **47 :** या'नी मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले जिन्हें येह क़ुरआने पाक पहुंचे ख़्वाह वोह इन्सान हों या जिन्न उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को क़ुरआने पाक पहुंचा गोया कि उस ने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा और आप का कलामे मुबारक सुना। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किस्रा और क़ैसर वग़ैरा सलात़ीन को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे। (مدارک وخازن) इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है مَنْ بَلَغَ में "مَنْ" मरफ़ूउ़ल मह़ल है और मा'ना येह हैं कि इस क़ुरआन से मैं तुम को डराऊं और वोह डराएं जिन्हें येह क़ुरआन पहुंचे। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि **अल्लाह** तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया, बहुत से पहुंचाए हुए सुनने वाले से ज़ियादा अह्ल होते हैं। और एक रिवायत में है सुनने वाले से ज़ियादा अफ़्क़ह (ग़ौरो फ़िक्र करने वाले) होते हैं। इस से फ़ुक़हा की मन्ज़िलत मा'लूम होती है। **48 :** ऐ मुश्रिकीन ! **49 :** ऐ ह़बीबे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **50 :** जो गवाही तुम देते हो और **अल्लाह** के साथ दूसरे मा'बूद ठहराते हो। **51 :** उस का कोई शरीक नहीं **52 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स इस्लाम लाए उस को चाहिये कि तौह़ीदो रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़े अ़क़ीदा व दीन से बेज़ारी का इज़्हार करे। **53 :** या'नी उ़लमाए यहूदो नसारा जिन्हों ने तौरैत व इन्जील पाई। **54 :** आप के हुल्ये शरीफ़ और आप की ना'त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़्कूर है।

اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ ع وَ مَنْ

बेटों को पहचानते हैं[55] जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली वोह ईमान नहीं लाते और उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[56] या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह

الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ یَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ

न पाएंगे और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं

شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِیْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ

तुम्हारे वोह शरीक जिन का तुम दा'वा करते थे फिर उन की कुछ बनावट न रही[57] मगर येह कि

قَالُوْا وَ اللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ

बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम कि हम मुश्रिक न थे देखो कैसा झूट बांधा ख़ुद अपने ऊपर[58]

وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُ اِلَیْكَ ج

और गुम गई उन से जो बातें बनाते थे और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाता है[59]

وَ جَعَلْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِنْ

और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उन के कानों में टेंट (ठोंसी हुई रूई) और अगर

یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْكَ یُجَادِلُوْنَكَ یَقُوْلُ

सारी निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हु़ज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों तो

الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۵﴾ وَ هُمْ یَنْهَوْنَ

काफ़िर कहें येह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें[60] और वोह उस से रोकते[61]

55 : या'नी बिग़ैर किसी शको शुबा के। **56 :** उस का शरीक ठहराए या जो बात उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत करे। **57 :** या'नी कुछ मा'ज़िरत न मिली। **58 :** कि उ़म्र भर के शिर्क ही से मुकर गए। **59 :** अबू सुफ़्यान, वलीद व नज़्र और अबू जहल वग़ैरा जम्अ़ हो कर नबिय्ये करीम ﷺ की तिलावते क़ुरआने पाक सुनने लगे तो नज़्र से उस के साथियों ने कहा कि मुह़म्मद (ﷺ) क्या कहते हैं? कहने लगा मैं नहीं जानता ज़बान को ह़रकत देते हैं और पहलों के क़िस्से कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूं। अबू सुफ़्यान ने कहा कि इन की बातें मुझे ह़क़ मा'लूम होती हैं। अबू जहल ने कहा कि इस का इक़रार करने से मर जाना बेहतर है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **60 :** इस से उन का मत़लब कलामे पाक के वह़्ये इलाही होने का इन्कार करना है। **61 :** या'नी मुश्रिकीन लोगों को क़ुरआन शरीफ़ से या रसूले करीम ﷺ से और आप पर ईमान लाने और आप का इत्तिबाअ़ करने से रोकते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो लोगों को सय्यिदे आ़लम ﷺ से और आप पर ईमान लाने और आप की मजलिस में हाज़िर होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकते थे और ख़ुद भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उन के दिल में असर न कर जाए।

عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

और उस से दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें[62] और उन्हें शुऊर नहीं

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ

और कभी तुम देखो जब वोह आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी त़रह़ हम वापस भेजे जाएं[63] और अपने रब की आयतें

رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ

न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं बल्कि उन पर खुल गया जो पहले

مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾

छुपाते थे[64] और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ़ किये गए थे और बेशक वोह ज़रूर झूटे हैं

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ

और बोले[65] वोह तो येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं[66] और कभी

تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ

तुम देखो जब अपने रब के ह़ुज़ूर खड़े किये जाएंगे फ़रमाएगा क्या येह ह़क़ नहीं है[67] कहेंगे क्यूं नहीं हमें

رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ ع ٣

अपने रब की क़सम फ़रमाएगा तो अब अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का बेशक हार में रहे वोह जिन्हों ने अपने

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا

रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर क़ियामत अचानक आ गई बोले हाए अफ़्सोस

عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا

हमारा इस पर कि इस के मानने में तक़्सीर की और वोह अपने[68] बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह आयत ह़ुज़ूर के चचा अबू त़ालिब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुश्रिकीन को तो ह़ुज़ूर की ईज़ा रसानी से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे। 62 : या'नी इस का ज़रर ख़ुद उन्हीं को पहुंचता है। 63 : दुन्या में 64 : जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ़ में मज़्कूर हो चुका कि मुश्रिकीन से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वोह अपने कुफ़्र को छुपा जाएंगे और **अल्लाह** की क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे। इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर हो जाएगा जो वोह छुपाते थे या'नी उन का कुफ़्र इस त़रह़ ज़ाहिर होगा कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाहियां देंगे तब वोह दुन्या में वापस जाने की तमन्ना करेंगे। 65 : या'नी कुफ़्फ़ार जो बअ़्स व आख़िरत के मुन्किर हैं और इस का वाक़िआ़ येह था कि जब नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने कुफ़्फ़ार को क़ियामत के अह़वाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी, ईमानदारों और फ़रमां बरदारों के सवाब, काफ़िरों और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुन्या ही की है। 66 : या'नी मरने के बा'द। 67 : क्या तुम मरने के बा'द ज़िन्दा नहीं किये गए ? 68 : गुनाहों के।

www.dawateislami.net

سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ

बुरा बोझ उठाए हैं[69] और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद[70] और बेशक

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं[71] तो क्या तुम्हें समझ नहीं हमें मा'लूम है कि

لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

तुम्हें रन्ज देती है वोह बात जो येह कह रहे हैं[72] तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते[73] बल्कि ज़ालिम

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا

अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं[74] और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्हों ने सब्र किया

عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ

उस झुटलाने और ईज़ाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई[75] और अल्लाह की बातें बदलने वाला

اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ

कोई नहीं[76] और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं[77] और अगर उन का मुंह

عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ

फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है[78] तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या

69 : हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस के सामने निहायत क़बीह भयानक और बहुत बदबूदार सूरत आएगी वोह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है ? काफ़िर कहेगा कि नहीं, तो वोह काफ़िर से कहेगी : मैं तेरा ख़बीस अ़मल हूं दुन्या में तू मुझ पर सुवार रहा था आज मैं तुझ पर सुवार होउंगा और तुझे तमाम ख़ल्क़ में रुस्वा करूंगा फिर वोह उस पर सुवार हो जाता है। **70 :** जिसे बक़ा नहीं जल्द गुज़र जाती है और नेकियां और त़ाअ़तें अगर्चे मोमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं। **71 :** इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो लअ़ब है। **72 शाने नुज़ूल :** अख़्नस बिन शरीक़ और अबू जहल की बाहम मुलाक़ात हुई तो अख़्नस ने अबू जहल से कहा : ऐ अबुल हकम ! (कुफ़्फ़ार अबू जहल को अबुल हकम कहते थे) येह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ़ हो सके अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हैं या नहीं। अबू जहल ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटा हर्फ़ उन की ज़बान पर न आया मगर बात येह है कि येह क़ुसय की औलाद हैं और लिवा, सिक़ायत, हिजाबत, नदवा वग़ैरा तो सारे ए'ज़ाज़ इन्हें हासिल ही हैं नुबुव्वत भी इन्हीं में हो जाए तो बाक़ी क़ुरशियों के लिये ए'ज़ाज़ क्या रह गया। तिरमिज़ी ने हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से रिवायत की, कि अबू जहल ने हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा हम आप की तक्ज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तक्ज़ीब करते हैं जो आप लाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **73 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर है कि क़ौम हुज़ूर के सिद्क़ का ए'तिक़ाद रखती है लेकिन उन की ज़ाहिरी तक्ज़ीब का बाइ़स उन का हसद व इनाद है। **74 :** आयत के येह मा'ना भी होते हैं कि ऐ हबीबे अकरम आप की तक्ज़ीब आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब है और तक्ज़ीब करने वाले ज़ालिम। **75 :** और तक्ज़ीब करने वाले हलाक किये गए। **76 :** उस के हुक्म को कोई पलट नहीं सकता रसूलों की नुसरत और उन की तक्ज़ीब करने वालों का हलाक उस ने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होगा। **77 :** और आप जानते हैं कि उन्हें कुफ़्फ़ार से कैसी ईज़ाएं पहुंचीं येह पेशे नज़र रख कर आप दिल मुत्मइन रखें। **78 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ख़्वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आएं, जो इस्लाम से महरूम रहते उन की महरूमी आप पर बहुत शाक़ रहती।

www.dawateislami.net

سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى

आस्मान में ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ[79] और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَ

तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन मानते तो वोही हैं जो सुनते हैं[80] और

الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ

उन मुर्दा दिलों[81] को अल्लाह उठाएगा[82] फिर उस की तरफ़ हांके जाएंगे[83] और बोले[84] उन पर कोई निशानी क्यूं न उतरी

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا

उन के रब की तरफ़ से[85] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उन में बहुत निरे

يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ

जाहिल हैं[86] और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों उड़ता है मगर

اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

तुम जैसी उम्मतें[87] हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा[88] फिर अपने रब की तरफ़

يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ

उठाए जाएंगे[89] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गूंगे हैं[90] अंधेरों में[91] अल्लाह

النصف
وقف غفران
وقف منزل
عند البعض على يسمعون

79 : मक़्सूद उन के ईमान की तरफ़ से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मीद मुन्क़तअ़ करना है ताकि आप को उन के ए'राज़ करने और ईमान न लाने से रन्जो तक्लीफ़ न हो। 80 : दिल लगा कर समझने के लिये वोही पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं और दीने हक़ की दा'वत क़बूल करते हैं। 81 : या'नी कुफ़्फ़ार 82 : रोज़े क़ियामत 83 : और अपने आ'माल की जज़ा पाएंगे। 84 : कुफ़्फ़ारे मक्का 85 : कुफ़्फ़ार की गुमराही और उन की सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वोह कसीर आयत व मो'जिज़ात जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुशाहदा किये थे उन पर क़नाअ़त न की और सब से मुकर गए और ऐसी आयत तलब करने लगे जिस के साथ अ़ज़ाबे इलाही हो, जैसा कि उन्हों ने कहा था "اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ" या रब ! अगर येह हक़ है तेरे पास से तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा। (تفسیر ابوالسعود) 86 : नहीं जानते कि उस का नुज़ूल उन के लिये बला है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे। 87 : या'नी तमाम जानदार ख़्वाह वोह बहाइम हों या दरिन्दे या परिन्द तुम्हारी मिस्ल उम्मतें हैं। येह मुमासलत (मिस्ल होना) जमीअ़ वुजूह से तो है नहीं बा'ज़ से है, उन वुजूह के बयान में बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह हैवानात तुम्हारी तरह अल्लाह को पहचानते, वाहिद जानते, उस की तस्बीह पढ़ते, इबादत करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि वोह मख़्लूक़ होने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा कि वोह इन्सान की तरह बाहमी उल्फ़त रखते और एक दूसरे से तफ़्हीमो तफ़हुम (बात समझते और समझाया) करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि रोज़ी तलब करने, हलाकत से बचने, नर मादा का इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा पैदा होने, मरने, मरने के बा'द हिसाब के लिये उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं। 88 : या'नी जुम्ला उ़लूम और तमाम "مَا كَانَ وَمَا يَكُوْن" का इस में बयान है और जमीअ़ अश्या का इल्म इस में है, इस किताब से येह क़ुरआने करीम मुराद है या लौहे़ मह़फ़ूज़। (جمل وغیرہ) 89 : और तमाम दवाब व तुयूर का हिसाब होगा, इस के बा'द वोह ख़ाक कर दिये जाएंगे। 90 : कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं। 91 : जहल और हैरत और कुफ़्र के।

يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٣٩ قُلْ

जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रस्ते डाल दे[92] तुम फ़रमाओ

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ

भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब आए या क़ियामत क़ाइम हो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे[93]

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٠ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ

अगर सच्चे हो[94] बल्कि उसी को पुकारोगे तो वोह अगर चाहे[95] जिस पर उसे पुकारते हो

اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝٤١ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे[96] और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे

فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٤٢ فَلَوْلَاۤ اِذْ

तो उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ से पकड़ा[97] कि वोह किसी त़रह गिड़गिड़ाएं[98] तो क्यूं न हुवा कि जब

جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए[99] और शैत़ान ने उन के काम

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٤٣ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ

उन की निगाह में भले कर दिखाए फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीहतें उन को की गई थीं[100] हम ने उन पर हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

के दरवाज़े खोल दिये[101] यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला[102] तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया[103] अब वोह

مُّبْلِسُوْنَ ۝٤٤ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

आस टूटे रह गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की[104] और सब ख़ूबियां सराहा **अल्लाह** रब

92 : इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। 93 : और जिन को दुन्या में मा'बूद मानते थे उन से ह़ाजत रवाई चाहोगे। 94 : अपने इस दा'वे में कि مَعَاذَ اللّٰه बुत मा'बूद हैं तो इस वक़्त पुकारो मगर ऐसा न करोगे। 95 : तो उस मुसीबत को 96 : जिन्हें अपने ए'तिक़ादे बात़िल में मा'बूद जानते थे और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात भी न करोगे क्यूं कि तुम्हें मा'लूम है कि वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकते। 97 : फ़क़्रो इफ़्लास और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला किया। 98 : **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ करें, अपने गुनाहों से बाज़ आएं। 99 : वोह बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी करने के बजाए कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे। 100 : और वोह किसी त़रह पन्द पज़ीर न हुए न पेश आई हुई मुसीबतों से न अम्बिया की नसीहतों से। 101 : सिह़्ह़तो सलामत और वुस्अ़ते रिज़्क़ व ऐश वग़ैरा के। 102 : और अपने आप को उस का मुस्तह़िक़ समझे और क़ारून की त़रह तकब्बुर करने लगे 103 : और मुब्तलाए अ़ज़ाब किया। 104 : और सब के सब हलाक कर दिये गए कोई बाक़ी न छोड़ा गया।

www.dawateislami.net

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

सारे जहां का[105] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान आंख ले ले और तुम्हारे

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

दिलों पर मोहर कर दे[106] तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें येह चीज़ें ला दे[107] देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं

ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ

फिर वोह मुंह फेर लेते हैं तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आए अचानक[108] या

جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ

खुल्लम खुल्ला[109] तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के[110] और हम नहीं भेजते रसूलों को

اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ

मगर ख़ुशी और डर सुनाते[111] तो जो ईमान लाए और संवरे[112] उन को न कुछ अन्देशा

لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

न कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

बदला उन की बे हुक्मी का तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कहूं कि मैं आप

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ

ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[113] मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मुझे वह्य आती है[114] तुम फ़रमाओ क्या

105 : इस से मा'लूम हुवा कि गुमराहों, बे दीनों, ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआला की ने'मत है इस पर शुक्र करना चाहिये। **106 :** और इल्मो मा'रिफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाए **107 :** इस का जवाब येही है कि कोई नहीं, तो अब तौहीद पर दलील क़ाइम हो गई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी कुदरत व इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वोही है और शिर्क बद तरीन ज़ुल्म व जुर्म है। **108 :** जिस के आसार व अ़लामात पहले से मा'लूम न हों **109 :** आंखों देखते **110 :** या'नी काफ़िरों के, कि उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और येह हलाकत उन के हक़ में अ़ज़ाब है। **111 :** ईमानदारों को जन्नत व सवाब की बिशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अ़ज़ाब से डराते। **112 :** नेक अ़मल करे। **113 :** कुफ़्फ़ार का तरीक़ा था कि वोह सय्यिदे आ़लम ﷺ से तरह तरह के सुवाल किया करते थे, कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोहताज न हों, हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये, कभी कहते कि गुज़श्ता और आयिन्दा की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे मुस्तक़्बिल की ख़बर दीजिये क्या क्या पेश आएगा ? ताकि हम मनाफ़ेअ़ हासिल कर लें और नुक़्सानों से बचने के पहले से इन्तिज़ाम कर लें, कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बताइये कब आएगी ? कभी कहते कि आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं, निकाह भी करते हैं। उन की इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि येह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है, क्यूं कि जो शख़्स किसी अम्र का मुद्दई हो उस से वोही बातें दरयाफ़्त की जा सकती हैं जो उस के दा'वे से तअ़ल्लुक़ रखती हों ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातों का दरयाफ़्त करना और उन को उस दा'वे के ख़िलाफ़ हुज्जत बनाना इन्तिहा दरजे का जहल है। इस लिये इर्शाद हुवा कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दा'वा येह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से

يَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَ الْبَصِیْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ ع ۶

बराबर हो जाएंगे अन्धे और अंख्यारे[115] तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें

یَخَافُوْنَ اَنْ یُّحْشَرُوْۤا اِلٰی رَبِّهِمْ لَیْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّ لَا شَفِیْعٌ

ख़ौफ़ हो कि अपने रब की त़रफ़ यूं उठाए जाएं कि अल्लाह के सिवा न उन का कोई ह़िमायती हो न कोई सिफ़ारिशी

لَّعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ

इस उम्मीद पर कि वोह परहेज़ गार हो जाएं और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और

الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ مَا مِنْ

शाम उस की रिज़ा चाहते[116] तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर

حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۲﴾ وَ

तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं[117] फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बई़द है और

كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّیَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنْۢ

यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ित्ना बनाया कि मालदार काफ़िर मोह़ताज मुसल्मानों को देख कर[118] कहें क्या येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया

بَیْنِنَا ؕ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِیْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ

हम में से[119] क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को और जब तुम्हारे ह़ुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो

मालो दौलत का सुवाल करो और मैं उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करूं तो रिसालत से मुन्किर हो जाओ, न मेरा दा'वा ज़ाती ग़ैबदानी का है कि अगर मैं तुम्हें गुज़श्ता या आयिन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी नुबुव्वत मानने में उ़ज़्र कर सको, न मैं ने फ़िरिश्ता होने का दा'वा किया है कि खाना पीना निकाह़ करना क़ाबिले ए'तिराज़ हो, तो जिन चीज़ों का दा'वा ही नहीं किया उन का सुवाल बे मह़ल है और उस की इजाबत (जवाब देही) मुझ पर लाज़िम नहीं, मेरा दा'वा नुबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बर दस्त दलीलें और क़वी बुरहानें क़ाइम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातें पेश करना क्या मा'नी रखता है। **फ़ाएदा :** इस से साफ़ वाज़ेह़ हो गया कि इस आयते करीमा को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के ग़ैब पर मुत्त़लअ़ किये जाने की नफ़ी के लिये सनद बनाना ऐसा ही बे मह़ल है जैसा कुफ़्फ़ार का इन सुवालात को इन्कारे नुबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे मह़ल था। इ़लावा बरीं इस आयत से ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के इ़ल्मे अ़त़ाई की नफ़ी किसी त़रह़ मुराद ही नहीं हो सकती क्यूं कि इस सूरत में तआ़रुज़ बैनल आयात का क़ाइल होना पड़ेगा وَهُوَ بَاطِلٌ (और येह बात़िल है)। मुफ़स्सिरीन का येह भी क़ौल है कि ह़ुज़ूर का "لَآ اَقُوْلُ لَكُمْ" الآيه फ़रमाना ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) **114 :** और येही नबी का काम है तो मैं तुम्हें वोही दूंगा जिस का मुझे इज़्न होगा, वोही बताऊंगा जिस की इजाज़त होगी, वोही करूंगा जिस का मुझे ह़ुक्म मिला हो। **115 :** मोमिन व काफ़िर, आ़लिम व जाहिल। **116 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई तो उन्हों ने देखा कि ह़ुज़ूर के गिर्द ग़रीब सह़ाबा की एक जमाअ़त ह़ाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुए हैं, येह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहें। ह़ुज़ूर ने इस को मन्ज़ूर न फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **117 :** सब का ह़िसाब अल्लाह पर है वोही तमाम ख़ल्क़ को रोज़ी देने वाला है उस के सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का ह़िसाब नहीं, ह़ासिले मा'ना येह कि वोह ज़ईफ़ फ़ुक़रा जिन का ऊपर ज़िक्र हुवा आप के दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तह़िक़ हैं उन्हें दूर न करना ही बजा है। **118 :** ब त़रीक़े ह़सद **119 :** कि उन्हें ईमान व हिदायत नसीब की बा वुजूदे कि वोह लोग फ़क़ीर ग़रीब हैं और हम रईस सरदार हैं। इस से उन का मत़लब अल्लाह तआ़ला पर ए'तिराज़ करना है कि ग़ुरबा

يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है[120]

اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ

कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ

बख़्शने वाला मेहरबान है और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं[121] और इस लिये कि मुजरिमों का

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ ع قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

रस्ता ज़ाहिर हो जाए[122] तुम फ़रमाओ मुझे मन्अ़ किया गया है कि उन्हें पूजूं जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ

पूजते हो[123] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता[124] यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह

الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾ قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

पर न रहूं तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[125] और तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ

जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[126] हुक्म नहीं मगर **अल्लाह** का वोह ह़क़ फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर

الْفٰصِلِيْنَ ﴿۵۷﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ

फ़ैसला करने वाला तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो[127] तो मुझ में

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

तुम में काम ख़त्म हो चुका होता[128] और **अल्लाह** ख़ूब जानता है सितम गारों को और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की

उमरा पर सब्क़त नहीं रखते तो अगर वोह ह़क़ होता जिस पर येह ग़ुरबा हैं तो वोह हम पर साबिक़ न होते। **120 :** अपने फ़ज़्लो करम से वा'दा फ़रमाया **121 :** ताकि ह़क़ ज़ाहिर हो और उस पर अ़मल किया जाए। **122 :** ताकि उस से इज्तिनाब किया जाए। **123 :** क्यूं कि येह अ़क़्लो नक़्ल दोनों के ख़िलाफ़ है। **124 :** या'नी तुम्हारा त़रीक़ा इत्तिबाए नफ़्स व ख़्वाहिशे हवा है, न कि इत्तिबाए दलील, इस लिये इख़्तियार करने के क़ाबिल नहीं। **125 :** और मुझे उस की मा'रिफ़त ह़ासिल है मैं जानता हूं कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं। रोशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और मो'जिज़ात और तौह़ीद के बराहीने वाज़ेह़ा सब को शामिल है। **126 :** कुफ़्फ़ार इस्तिहज़ाअन हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अ़ज़ाब नाज़िल कराइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से येह सुवाल करना निहायत बे जा है। **127 :** या'नी अ़ज़ाब **128 :** मैं तुम्हें एक साअ़त की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देख कर बे दरंग हलाक कर डालता। लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ह़लीम है उ़क़ूबत में जल्दी नहीं फ़रमाता।

لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ط وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ

उन्हें वोही जानता है[129] और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है

اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ

वोह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक

كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ

रोशन किताब में लिखा न हो[130] और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है[131] और जानता है जो कुछ दिन

بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ج ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो[132] फिर उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है[133] फिर

يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ

वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर

عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ط حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

निगहबान भेजता है[134] यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं[135] और वोह

لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ط اَلَا لَهُ الْحُكْمُ قف وَهُوَ

क़ुसूर नहीं करते[136] फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला **अल्लाह** की त़रफ़ सुनता है उसी का हुक्म है[137] और वोह

129 : तो जिसे वोह चाहे वोही ग़ैब पर मुत्तलअ़ हो सकता है बिग़ैर उस के बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता। (واحدی) **130 :** किताबे मुबीन से लौहे मह़फ़ूज़ मुराद है **अल्लाह** तआ़ला ने مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ (जो कुछ हो चुका और आयिन्दा जो कुछ होगा तमाम) के उ़लूम उस में मक्तूब फ़रमाए। **131 :** तो तुम पर नींद मुसल्लत़ होती है और तुम्हारे तसर्रुफ़ात अपने ह़ाल पर बाक़ी नहीं रहते। **132 :** और उ़म्र अपनी इन्तिहा को पहुंचे। **133 :** आख़िरत में। इस आयत में بَعْث بَعْدَ الْمَوْت या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई, जिस त़रह़ रोज़मर्रा सोने के वक़्त एक त़रह़ की मौत तुम पर वारिद की जाती है जिस से तुम्हारे ह़वास मुअ़त्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और बेदारी के अफ़्आ़ल सब मुअ़त्तल होते हैं इस के बा'द फिर बेदारी के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला तमाम क़ुवा (त़ाक़तें) को उन के तसर्रुफ़ात अ़त़ा फ़रमाता है। येह दलीले बय्यिन है इस बात की, कि वोह ज़िन्दगानी के तसर्रुफ़ात बा'दे मौत अ़त़ा करने पर इसी त़रह़ क़ादिर है। **134 :** फ़िरिश्ते जिन को किरामन कातिबीन कहते हैं वोह बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं, हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते हैं एक दाहने एक बाएं, नेकियां दाहनी त़रफ़ का फ़िरिश्ता लिखता है और बदियां बाईं त़रफ़ का। बन्दों को चाहिये होशियार रहें और बदियों और गुनाहों से बचें क्यूं कि हर एक अ़मल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वोह नामए आ'माल तमाम ख़ल्क़ के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रुस्वाई का सबब होंगे **अल्लाह** पनाह दे। (آمین ثم آمین) **135 :** इन फ़िरिश्तों से मुराद या तन्हा मलकुल मौत हैं इस सूरत में सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है या मलकुल मौत मअ़ उन फ़िरिश्तों के मुराद हैं जो उन के आ'वान (मुआ़विन व मददगार) हैं, जब किसी की मौत का वक़्त आता है मलकुल मौत ब हुक्मे इलाही अपने आ'वान को उस की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं जब रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंचती है तो ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाते हैं। (خازن) **136 :** और ता'मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ़ नहीं होती और उन के अ़मल में सुस्ती और ताख़ीर राह नहीं पाती, अपने फ़राइज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं। **137 :** और उस रोज़ उस के सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं।

www.dawateislami.net

اَسْرَعُ الْحٰسِبِیْنَ ﴿۶۲﴾ قُلْ مَنْ یُّنَجِّیْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ

सब से जल्द हिसाब करने वाला[138] तुम फ़रमाओ वोह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से

تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفْیَةً ۚ لَىِٕنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वोह हमें इस से बचावे तो हम ज़रूर

الشّٰكِرِیْنَ ﴿۶۳﴾ قُلِ اللّٰهُ یُنَجِّیْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

एह्सान मानेंगे[139] तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें नजात देता है इस से और हर बेचैनी से फिर तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ

शरीक ठहराते हो[140] तुम फ़रमाओ वोह क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से

اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ یَلْبِسَكُمْ شِیَعًا وَّ یُذِیْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ

या तुम्हारे पाउं के तले से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती

بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَیْفَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ كَذَّبَ بِهٖ

चखाए देखो हम क्यूंकर त़रह़ त़रह़ से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो[141] और उसे[142] झुटलाया

قَوْمُكَ وَ هُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَیْكُمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۶۶﴾ؕ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ٘

तुम्हारी क़ौम ने और येही ह़क़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[143] हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है[144]

138 : क्यूं कि उस को सोचने, जांचने, शुमार करने की ह़ाजत नहीं जिस में देर हो। **139 :** इस आयत में कुफ़्फ़ार को तम्बीह की गई कि ख़ुश्की और तरी के सफ़रों में जब वोह मुब्तलाए आफ़ात हो कर परेशान होते हैं और ऐसे शदाइद व अहवाल पेश आते हैं जिन से दिल कांप जाते हैं और ख़त़रात क़ुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और अल्लाह तआ़ला ही से दुआ़ करता है उसी की जनाब में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तू ने नजात दी तो मैं शुक्र गुज़ार होउंगा और तेरा ह़क़्क़े ने'मत बजा लाऊंगा। **140 :** और बजाए शुक्र गुज़ारी के ऐसी बड़ी ना शुक्री करते हो और येह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं किसी काम के नहीं फिर उन्हें अल्लाह का शरीक करते हो कितनी बड़ी गुमराही है। **141 :** मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं ? एक जमाअ़त ने कहा कि इस से उम्मते मुह़म्मदिय्यह मुराद है और आयत इन्हीं के ह़क़ में नाज़िल हुई। बुख़ारी की ह़दीस में है कि जब येह नाज़िल हुवा कि वोह क़ादिर है तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा कि या तुम्हारे पाउं के नीचे से तो फ़रमाया : मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा या तुम्हें भिड़ावे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए तो फ़रमाया : येह आसान है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे बनी मुआ़विया में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और इस के बा'द त़वील दुआ़ की, फिर सह़ाबा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मैं ने अपने रब से तीन सुवाल किये उन में से सिर्फ़ दो क़बूल फ़रमाए गए, एक सुवाल तो येह था कि मेरी उम्मत को क़ह़ते आ़म से हलाक न फ़रमाए येह क़बूल हुवा, एक येह था कि इन्हें ग़र्क़ से अ़ज़ाब न फ़रमाए येह भी क़बूल हुवा, तीसरा सुवाल येह था कि इन में बाहम जंगो जिदाल न हो येह क़बूल नहीं हुवा। **142 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को या नुज़ूले अ़ज़ाब को **143 :** मेरा काम हिदायत है क़ुलूब की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं। **144 :** या'नी अल्लाह तआ़ला ने जो ख़बरें दीं उन के लिये वक़्त मुअ़य्यन हैं उन का वुक़ूअ़ ठीक उसी वक़्त होगा।

وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ اِذَا رَاَیْتَ الَّذِیْنَ یَخُوْضُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا فَاَعْرِضْ

और अन्क़रीब जान जाओगे और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं[145] तो उन से मुंह

عَنْهُمْ حَتّٰى یَخُوْضُوْا فِیْ حَدِیْثٍ غَیْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا

फेर ले[146] जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो

تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٦٨﴾ وَ مَا عَلَى الَّذِیْنَ

याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ और परहेज़ गारों पर

یَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन के हिसाब से कुछ नहीं[147] हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएं[148]

وَ ذَرِ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَ

और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और

ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَیْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِیٌّ

क़ुरआन से नसीहत दो[149] कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए[150] अल्लाह के सिवा न उस का कोई हिमायती हो

وَّ لَا شَفِیْعٌ ۚ وَ اِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا یُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ

न सिफ़ारिशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाएं येह हैं[151] वोह जो

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِیْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِیْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के

یَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُنَا وَ لَا یَضُرُّنَا وَ ع ٨/١٤

कुफ़्र का तुम फ़रमाओ[152] क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा[153] और

145 : ता'न, तश्नीअ़, इस्तिहज़ा के साथ 146 : और उन की हम नशीनी तर्क कर। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एहतिराम न किया जाता हो मुसल्मान को वहां बैठना जाइज़ नहीं। इस से साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बे दीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक़रीरें करते हैं उन में जाना सुनने के लिये शिर्कत करना जाइज़ नहीं और रद व जवाब के लिये जाना मुजालसत (शिर्कत करना) नहीं बल्कि इज़्हारे हक़ है वोह मम्नूअ़ नहीं जैसा कि अगली आयत से ज़ाहिर है। 147 : या'नी ता'न व इस्तिहज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इस का हिसाब होगा, परहेज़ गारों पर नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों ने कहा था कि हमें गुनाह का अन्देशा है जब कि हम उन्हें छोड़ दें और मन्अ़ न करें इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 148 **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीहत और इज़्हारे हक़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है। 149 : और अह़कामे शरइय्या बताओ। 150 : और अपने जराइम के सबब अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार न हो। 151 : दीन को हंसी और खेल बनाने वाले और दुन्या के मफ़्तून (शैदाई) 152 : ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! उन मुश्रिकीन से जो अपने बाप दादा के दीन की दा'वत देते हैं। 153 : और उस में कोई क़ुदरत नहीं।

نُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِی اسْتَهْوَتْهُ الشَّیٰطِیْنُ فِی

उलटे पाउं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई[154] उस की त़रह़ जिसे शैत़ानों ने

الْاَرْضِ حَیْرَانَ۪ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ یَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَاؕ قُلْ اِنَّ

ज़मीन में राह भुला दी[155] ह़ैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि

هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰىؕ وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۷۱﴾ وَ اَنْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[156] और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें[157] जो रब है सारे जहान का और येह कि

اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّقُوْهُؕ وَ هُوَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ

नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है और वोही है जिस ने

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّؕ وَ یَوْمَ یَقُوْلُ كُنْ فَیَكُوْنُ۬ؕ قَوْلُهُ

आस्मान व ज़मीन ठीक बनाए[158] और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वोह फ़ौरन हो जाएगी उस की बात

الْحَقُّؕ وَ لَهُ الْمُلْكُ یَوْمَ یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِؕ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِؕ

सच ही है और उसी की सल्त़नत है जिस दिन सूर फूंका जाएगा[159] हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला

وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۷۳﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ

और वोही है ह़िक्मत वाला ख़बरदार और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप[160] आज़र से कहा क्या तुम

الثلثة

154 : और इस्लाम और तौह़ीद की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और बुत परस्ती के बद तरीन वबाल से बचाया। 155 : इस आयत में ह़क़ व बात़िल की दा'वत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस त़रह़ मुसाफ़िर अपने रफ़ीक़ों के साथ था जंगल में भूतों और शैत़ानों ने उस को रस्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़्सूद की येही राह है और उस के रफ़ीक़ उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाने लगे वोह ह़ैरान रह गया किधर जाए ! अन्जाम उस का येही होगा कि अगर वोह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीक़ों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा। येही ह़ाल उस शख़्स का है जो त़रीक़ए इस्लाम से बहका और शैत़ान की राह चला मुसल्मान उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाते हैं अगर इन की बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा। 156 : या'नी जो त़रीक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये वाज़ेह़ फ़रमाया और जो दीन इन के लिये मुक़र्रर किया वोही हिदायत व नूर है और जो उस के सिवा है वोह दीन बात़िल है। 157 : और उसी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करें और ख़ास उसी की इबादत करें। 158 : जिन से उस की क़ुदरते कामिला और उस का इल्मे मुह़ीत़ और उस की ह़िक्मत व सन्अ़त ज़ाहिर है। 159 : कि नाम को भी कोई सल्त़नत का दा'वा करने वाला न होगा। तमाम जबाबिरा फ़राइना (ज़ालिमो जाबिर बादशाह) और सब दुन्या की सल्त़नत का ग़ुरूर करने वाले देखेंगे कि दुन्या में जो वोह सल्त़नत का दा'वा रखते थे वोह बात़िल था। 160 : क़ामूस में है कि आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा का नाम है। इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी ने मसालिकुल ह़ुनफ़ाअ में भी ऐसा ही लिखा है। चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मा'मूल है बिल ख़ुसूस अ़रब में। क़ुरआने करीम में है : ''نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا'' इस में ह़ज़रते इस्माईल को ह़ज़रते या'क़ूब के आबा में ज़िक्र किया गया है बा वुजूदे कि आप अ़म (चचा) हैं। ह़दीस शरीफ़ में भी ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ को اَبْ फ़रमाया। चुनान्चे इर्शाद किया : ''رُدُّوْا عَلَيَّ اَبِيْ'' और यहां अबी से ह़ज़रते अ़ब्बास मुराद हैं। (مفردات راغب وکبیر وغیرہ)

اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّیْۤ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۷۴﴾ وَ كَذٰلِكَ

बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूं[161] और इसी तरह

نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ ﴿۷۵﴾

हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की[162] और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में हो जाए[163]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَیْهِ الَّیْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ

फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा[164] बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे

اُحِبُّ الْاٰفِلِیْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ

ख़ुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वोह डूब गया

---

161 : येह आयत मुश्रिकीने अ़रब पर हुज्जत है जो हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुअ़ज़्ज़म जानते थे और उन की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे, उन्हें दिखाया जाता है कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बुत परस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो। **162 :** या'नी जिस तरह हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को दीन में बीनाई अ़ता फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आस्मानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया इस से आस्मानों और ज़मीन की ख़ल्क़ मुराद है। मुजाहिद और सईद बिन जुबैर कहते हैं कि आयाते समावातो अर्ज़ (ज़मीन व आस्मान के अ़जाइबात) मुराद हैं। येह इस तरह कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सख़्रा (एक चट्टान) पर खड़ा किया गया और आप के लिये समावात मक्शूफ़ किये (खोल दिये) गए, यहां तक कि आप ने अ़र्शो कुर्सी और आस्मानों के तमाम अ़जाइब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआयना फ़रमाया, आप के लिये ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आप ने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अ़जाइब देखे। मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह रूयत ब चश्मे बातिन थी या ब चश्मे सर। (درمنثور وخازن وغیرہ) **163 :** क्यूं कि हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी चीज़ उन के सामने कर दी गई और ख़ल्क़ के आ'माल में से कुछ भी उन से न छुपा रहा। **164 :** उ़लमाए तफ़्सीर और अस्हाबे अख़्बारो सियर का बयान है कि नमरूद इब्ने कन्आ़न बड़ा जाबिर बादशाह था सब से पहले इसी ने ताज सर पर रखा येह बादशाह लोगों से अपनी परस्तिश कराता था, काहिन और मुनज्जिम (नुजूमी) कसरत से इस के दरबार में हाज़िर रहते थे। नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा तुलूअ़ हुवा है, उस की रोशनी के सामने आफ़्ताब महताब बिल्कुल बे नूर हो गए, इस से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा काहिनों से ता'बीर दरयाफ़्त की, उन्हों ने कहा : इस साल तेरी क़लम रव (सल्तनत) में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे ज़वाले मुल्क का बाइस होगा और तेरे दीन वाले उस के हाथ से हलाक होंगे। येह ख़बर सुन कर वोह परेशान हुवा और उस ने हुक्म दे दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाए और मर्द औ़रतों से अ़लाहदा रहें और इस की निगहबानी के लिये एक महकमा क़ाइम कर दिया गया। तक़्दीराते इलाहिय्यह को कौन टाल सकता है हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदए माजिदा हामिला हुईं और काहिनों ने नमरूद को इस की भी ख़बर दी कि वोह बच्चा हम्ल में आ गया लेकिन चूंकि हज़रत की वालिदा साहिबा की उ़म्र कम थी उन का हम्ल किसी तरह पहचाना ही न गया, जब ज़मानए विलादत क़रीब हुवा तो आप की वालिदा उस तहख़ाने में चली गईं जो आप के वालिद ने शहर से दूर खोद कर तय्यार किया था, वहां आप की विलादत हुई और वहीं आप रहे, पथ्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था रोज़ाना वालिदा साहिबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप अपनी सरे अंगुश्त चूस रहे हैं और उस से दूध बरआमद होता है आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इस में इख़्तिलाफ़ है कि आप तहख़ाने में कितना अ़र्सा रहे, बा'ज़ कहते हैं सात बरस, बा'ज़ तेरह बरस, बा'ज़ सतरह बरस। येह **मस्अला** यक़ीनी है कि अम्बिया हर हाल में मा'सूम होते हैं और वोह अपनी इब्तिदाए हस्ती से तमाम अवक़ात वुजूद में आ़रिफ़ होते हैं। एक रोज़ हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी वालिदा से दरयाफ़्त फ़रमाया : मेरा रब (पालने वाला) कौन है ? उन्हों ने कहा : मैं। फ़रमाया : तुम्हारा रब कौन है ? उन्हों ने कहा : तुम्हारे वालिद। फ़रमाया : उन का रब कौन है ? इस पर वालिदा ने कहा : ख़ामोश रहो और अपने शोहर से जा कर कहा कि जिस लड़के की निस्बत येह मश्हूर है कि वोह ज़मीन वालों का दीन बदल देगा वोह तुम्हारा फ़रज़न्द ही है और येह गुफ़्तगू बयान की। हज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने इब्तिदा ही से तौहीद की हिमायत और अ़क़ाइदे कुफ़्रिय्या का इब्ताल शुरूअ़ फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से शब के वक़्त आप ने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो इक़ामते हुज्जत शुरूअ़ कर दी क्यूं कि उस ज़माने के लोग बुत और कवाकिब की परस्तिश करते थे तो आप ने एक निहायत नफ़ीस और दिल नशीन पैराए में उन्हें नज़र व इस्तिद्लाल की तरफ़ राहनुमाई

www.dawateislami.net

قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا

कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता[165] फिर जब

رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَاۤ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتْ قَالَ

सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो[166] येह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया कहा

يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ

ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो[167] मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ ۚ وَحَآجَّهٗ

आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर[168] और मैं मुश्रिकों में नहीं और उन की क़ौम उन से

قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا

झगड़ने लगी कहा क्या अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ते हो वोह तो मुझे राह बता चुका[169] और मुझे उन का डर नहीं

تُشْرِكُوْنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ

जिन्हें तुम शरीक बताते हो[170] हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे[171] मेरे रब का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ مَاۤ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ

तो क्या तुम नसीह़त नहीं मानते और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूंकर डरूं[172] और तुम नहीं डरते कि तुम ने

اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ

अल्लाह का शरीक उस को ठहराया जिस की तुम पर उस ने कोई सनद न उतारी तो दोनों गुरोहों में

की जिस से वोह इस नतीजे पर पहुंचे कि आ़लम बि तमामिही ह़ादिस है, इलाह नहीं हो सकता, वोह ख़ुद मूजिद व मुदब्बिर का मोह़ताज है जिस के क़ुदरतो इख़्तियार से इस में तग़य्युर होते रहते हैं। **165 :** इस में क़ौम को तम्बीह है कि जो क़मर को इलाह ठहराए वोह गुमराह है क्यूं कि उस का एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल होना दलीले ह़ुदूसो इम्कान है। **166 :** शम्स मुअन्नस ग़ैर ह़क़ीक़ी है इस के लिये मुज़क्कर मुअन्नस के दोनों सीग़े इस्ति'माल किये जा सकते हैं, यहां ''هٰذَا'' मुज़क्कर लाया गया इस में ता'लीमे अदब है कि लफ़्ज़ रब की रिआ़यत के लिये लफ़्ज़ तानीस न लाया गया, इसी लिहाज़ से अल्लाह तआ़ला की सिफ़त में अ़ल्लाम आता है न कि अ़ल्लामा। **167 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की सलाह़िय्यत नहीं रखता इन का इलाह होना बात़िल है और क़ौम जिस शिर्क में मुब्तला है आप ने उस से बेज़ारी का इज़्हार किया और इस के बा'द दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया जो आगे आता है। **168 :** या'नी इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अद्यान से जुदा रह कर। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दीने ह़क़ का क़ियाम व इस्तिह़्काम जब ही हो सकता है जब कि तमाम अद्याने बात़िला से बेज़ारी हो। **169 :** अपनी तौह़ीद व मा'रिफ़त की **170 :** क्यूं कि वोह बेजान बुत हैं न ज़रर दे सकते हैं न नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं उन से क्या डरना। येह आप ने मुश्रिकीन से जवाब में फ़रमाया था जिन्हों ने आप से कहा था कि बुतों से डरो, उन के बुरा कहने से कहीं आप को कुछ नुक़्सान न पहुंच जाए। **171 :** वोह होगी क्यूं कि मेरा रब क़ादिरे मुत़्लक़ है। **172 :** जो बेजान जमाद और आ़जिज़े मह़्ज़ हैं।

وقف لازم

اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْۤا

अमान का ज़ियादा सज़ावार कौन है[173] अगर तुम जानते हो वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी

ع ٩ / ١٥

اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع وَتِلْكَ حُجَّتُنَاۤ

नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं और येह हमारी दलील है

اٰتَيْنٰهَاۤ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ

कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़ता फ़रमाई हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[174] बेशक तुम्हारा रब इल्मो हिक्मत

عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا

वाला है और हम ने उन्हें इस्हाक़ और या'क़ूब अ़ता किये उन सब को हम ने राह दिखाई और उन से पहले नूह को

مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَ

राह दिखाई और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और

هٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ لا وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَ

हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को और ज़करिय्या और यह्या और ईसा और

اِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ لا وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ

इल्यास को येह सब हमारे क़ुर्ब के लाइक़ हैं और इस्माईल और यसअ़ और यूनुस और लूत़ को

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ لا وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَ

और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी[175] और कुछ उन के बाप दादा और औलाद और भाइयों में से बा'ज़ को[176] और

173 : मुवह्हिद (तौहीद का क़ाइल) या मुश्रिक, **174 :** इल्मो अ़क़्ल व फ़हमो फ़ज़ीलत के साथ जैसे कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए दुन्या में इल्मो हिक्मत व नुबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्ब व सवाब के साथ। **175 :** नुबुव्वत व रिसालत के साथ। **मस्अला :** इस आयत से इस पर सनद लाई जाती है कि अम्बिया मलाएका से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि आ़लम **अल्लाह** के सिवा तमाम मौजूदात को शामिल है फ़िरिश्ते भी इस में दाख़िल हैं तो जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो मलाएका पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई। यहां **अल्लाह** तआ़ला ने अठ्ठारह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब न ज़माने के ए'तिबार से है न फ़ज़ीलत के न "वाव" तरतीब का मुक़्तज़ी, लेकिन जिस शान से कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए गए इस में एक अ़जीब लत़ीफ़ा है वोह येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया की हर जमाअ़त को एक ख़ास त़रह की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो हज़रते नूह व इब्राहीम व इस्हाक़ व या'क़ूब का अव्वल ज़िक्र किया क्यूं कि येह अम्बिया के उसूल (आबाओ अज्दाद) हैं या'नी इन की औलाद में ब कसरत अम्बिया हुए जिन के अन्साब इन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। नुबुव्वत के बा'द मरातिबे मो'तबरा में से मुल्क व इख़्तियार व सल्त़नत व इक़्तिदार है **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते दावूद व सुलैमान को इस का हज़्ज़े वाफ़िर (बहुत हिस्सा) दिया। और मरातिबे रफ़ीआ़ में से मुसीबतो बला पर साबिर रहना है, **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते अय्यूब को इस के साथ मुमताज़ फ़रमाया, फिर मुल्क व सब्र के दोनों मर्तबे हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इनायत किये कि आप ने शिद्दतो बला पर मुद्दतों सब्र फ़रमाया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अ़ता किया। कस्रते मो'जिज़ात व कुव्वते बराहीन भी मरातिबे मो'तबरा में से हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा व हारून को इस के साथ

www.dawateislami.net

اجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ

हम ने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई येह अल्लाह की हिदायत है

بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वोह शिर्क करते तो ज़रूर उन का किया अकारत जाता

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا

येह हैं जिन को हम ने किताब और हुक्म और नुबुव्वत अ़ता की तो अगर येह लोग[177] इस से

هٰۤؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدَى

मुन्किर हों तो हम ने इस के लिये एक ऐसी क़ौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं[178] येह हैं जिन को अल्लाह ने

اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो[179] तुम फ़रमाओ मैं कुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वोह तो नहीं मगर नसीहत

لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

सारे जहान को[180] और यहूद ने अल्लाह की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[181] जब बोले अल्लाह ने किसी आदमी पर

بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ

कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और

मुशर्रफ़ किया। ज़ोहद व तर्के दुन्या भी मरातिबे मो'तबरा में से है, हज़रते ज़करिय्या व यह्या व ईसा व इल्यास को इस के साथ मख़्सूस फ़रमाया। इन हज़रात के बा'द अल्लाह तआ़ला ने उन अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न मुत्तबिईन बाक़ी रहे न उन की शरीअ़त जैसे कि हज़रते इस्माईल, यसअ़, यूनुस, लूत़ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। इस शान से अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाने में उन की करामतों और ख़ुसूसिय्यतों का एक अ़जीब लत़ीफ़ा नज़र आता है। **176 :** हम ने फ़ज़ीलत दी **177 :** या'नी अहले मक्का **178 :** इस क़ौम से या अन्सार मुराद हैं या मुहाजिरीन या तमाम अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग। **फ़ाएदा :** इस आयत में दलालत है कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुसरत फ़रमाएगा और आप के दीन को कुव्वत देगा और इस को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करेगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और येह ग़ैबी ख़बर वाक़ेअ़ हो गई। **179 मस्अला :** उ़लमाए दीन ने इस आयत से येह मस्अला साबित किया है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अम्बिया से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि ख़िसाले कमाल व औसाफ़े शरफ़ जो जुदा जुदा अम्बिया को अ़ता फ़रमाए गए थे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये सब को जम्अ़ फ़रमा दिया और आप को हुक्म दिया "فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ" (तो तुम इन्हीं की राह चलो) तो जब आप तमाम अम्बिया के औसाफ़े कमालिया के जामेअ़ हैं तो बेशक सब से अफ़्ज़ल हुए। **180 :** इस आयत से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं और आप की दा'वत तमाम ख़ल्क़ को आ़म और कुल जहान आप की उम्मत। (خازن) **181 :** और उस की मा'रिफ़त से मह़रूम रहे और अपने बन्दों पर उस को जो रह़मतो करम है उस को न जाना। **शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त अपने ह़िबरुल अह़बार (बड़े आ़लिम पेश्वा) मालिक इब्ने सैफ़ को ले कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुजादला करने आई, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : मैं तुझे उस परवर्दगार की क़सम देता हूं जिस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई। क्या तौरैत में तू ने येह देखा है "اِنَّ اللّٰهَ يَبْغَضُ الْحَبْرَ السَّمِيْنَ" या'नी अल्लाह को मोटा आ़लिम मबग़ूज़ है, कहने लगा : हां ! येह तौरैत में है, हुज़ूर ने फ़रमाया : तू मोटा आ़लिम ही तो है। इस पर वोह ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में फ़रमाया गया किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे ? तो वोह ला जवाब हुवा और यहूद उस से बरहम हुए और उस को झिड़कने लगे और उस को ह़िब्र के ओ़ह्दे से मा'ज़ूल कर दिया। (مدارک وخازن)

www.dawateislami.net

هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ

लोगों के लिये हिदायत जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो[182] और बहुत सा छुपा लेते हो[183] और

عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَلَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ

तुम्हें वोह सिखाया जाता है[184] जो न तुम को मा'लूम था न तुम्हारे बाप दादा को अल्लाह कहो[185] फिर उन्हें छोड़ दो उन की

خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ

बेहूदगी में खेलता[186] और येह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी[187] तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

जो आगे थीं और इस लिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को[188] और जो कोई सारे जहान में इस के गिर्द हैं और वोह जो आख़िरत पर

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

ईमान लाते हैं[189] इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ

जो अल्लाह पर झूट बांधे[190] या कहे मुझे वह्य हुई और उसे कुछ वह्य न हुई[191] और

مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ

जो कहे अभी मैं उतारता हूं ऐसा जैसा ख़ुदा ने उतारा[192] और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम

182 : उन में से बा'ज़ को जिस का इज़्हार अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ समझते हो **183 :** जो तुम्हारी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरैत के वोह मज़ामीन जिन में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। **184 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'लीम और क़ुरआने करीम से **185 :** या'नी जब वोह उस का जवाब न दे सकें कि वोह किताब किस ने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये अल्लाह ने **186 :** क्यूं कि जब आप ने हुज्जत क़ाइम कर दी और इन्ज़ार व नसीहत निहायत को पहुंचा दी और उन के लिये जाए उज़्र न छोड़ी इस पर भी वोह बाज़ न आएं तो उन्हें उन की बेहूदगी में छोड़ दीजिये, येह कुफ़्फ़ार के हक़ में वईद व तहदीद है। **187 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **188 :** اُمُّ الْقُرٰى मक्कए मुकर्रमा है क्यूं कि वोह तमाम ज़मीन वालों का क़िब्ला है। **189 :** और क़ियामत व आख़िरत और मरने के बा'द उठने का यक़ीन रखते हैं और अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल और बे ख़बर नहीं हैं। **190 :** और नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे। **191 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिस ने यमामा अ़लाक़ए यमन में नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया था। क़बीलए बनी ह़नीफ़ा के चन्द लोग उस के फ़रेब में आ गए थे, येह कज़्ज़ाब ज़मानए ख़िलाफ़ते ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ में वह़शी क़ातिले अमीर ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ के हाथ से क़त्ल हुवा। **192 शाने नुज़ूल :** येह अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ कातिबे वह्य के ह़क़ में नाज़िल हुई। जब आयत ''وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ'' (और बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया) नाज़िल हुई उस ने इस को लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते पैदाइशे इन्सान की तफ़्सील पर मुत्तलअ़ हो कर मुतअ़ज्जिब हुवा और इस हालत में आयत का आख़िर ''فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ'' (तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सब से बेहतर बनाने वाला) बे इख़्तियार उस की ज़बान पर जारी हो गया, इस पर उस को येह घमन्ड हुवा कि मुझ पर वह्य आने लगी और मुरतद हो गया येह न समझा कि नूरे वह्य और क़ुव्वत व ह़ुस्ने कलाम से आयत का आख़िर कलिमा ज़बान पर आ गया इस में उस की क़ाबिलिय्यत का कोई दख़्ल न था ज़ोरे कलाम ख़ुद अपने आख़िर को बता दिया करता है जैसे कभी कोई शाइर नफ़ीस मज़्मून पढ़े वोह मज़्मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शाइर से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शे'र कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उन की क़ाबिलिय्यत नहीं कलाम की क़ुव्वत है और यहां तो नूरे वह्य और नूरे नबी से सीने में रोशनी

غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ

मौत की सख़्तियों में हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं[193] कि निकालो अपनी जानें आज

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ

तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि **अल्लाह** पर झूट लगाते थे[194] और

عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ

उस की आयतों से तकब्बुर करते और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया

مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

था[195] और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मताअ़ हम ने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ

जिन का तुम अपने में साझा बताते थे[196] बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई[197] और तुम से गए

ع ١١ ٢ ١٧ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ

जो दा'वे करते थे[198] बेशक **अल्लाह** दाने और गुठली को चीरने वाला है[199] ज़िन्दा को

مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾

मुर्दा से निकाले[200] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला[201] येह है **अल्लाह** तुम कहां औंधे जाते हो[202]

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया[203] और सूरज और चांद को हिसाब[204] येह

आती थी। चुनान्चे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बा'द फिर वोह एक जुम्ला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुवा जो नज़्मे क़ुरआनी से मिल सकता, आख़िर कार ज़मानए अक़्दस ही में क़ब्ले फ़त्हे मक्का फिर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुवा। **193 :** अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये झिड़क्ते जाते हैं और कहते जाते हैं **194 :** नुबुव्वत और वह़्य के झूटे दा'वे कर के और **अल्लाह** के लिये शरीक और बीबी बच्चे बता कर। **195 :** न तुम्हारे साथ माल है न जाह न औलाद जिन की मह़ब्बत में तुम उम्र भर गिरिफ़्तार रहे न वोह बुत जिन्हें पूजा किये (करते थे) आज उन में से कोई तुम्हारे काम न आया। येह कुफ़्फ़ार से रोज़े क़ियामत फ़रमाया जावेगा। **196 :** कि वोह इबादत के ह़क़दार होने में **अल्लाह** के शरीक हैं। (مَعَاذَاللہ) **197 :** और अ़लाक़े (तअ़ल्लुक़ात) टूट गए जमाअ़त मुन्तशिर हो गई। **198 :** तुम्हारे वोह तमाम झूटे दा'वे जो तुम दुन्या में किया करते थे बातिल हो गए। **199 :** तौह़ीद व नुबुव्वत के बयान के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कमाले क़ुदरत व इल्मो ह़िक्मत के दलाइल ज़िक्र फ़रमाए क्यूं कि मक़्सूदे आ'ज़म **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ और उस के तमाम सिफ़ात व अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त है और येह जानना कि वोही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वोही मुस्तह़िक़्क़े इबादत हो सकता है न कि वोह बुत जिन्हें मुश्रिकीन पूजते हैं। ख़ुश्क दाना और गुठली को चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में इन के नर्म रेशों को रवां करना जहां आहनी मेख़ भी काम न कर सके उस की क़ुदरत के कैसे अ़जाइबात हैं। **200 :** जानदार सब्ज़े को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व ह़ैवान को नुत़्फ़े से और परिन्द को अन्डे से। **201 :** जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को, और इन्सान व ह़ैवान से नुत़्फ़े को और परिन्द से अन्डे को, येह उस के अ़जाइबे क़ुदरतो ह़िक्मत हैं। **202 :** और ऐसे बराहीन क़ाइम होने के बा'द क्यूं ईमान नहीं लाते और मौत के

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا

साधा (मुक़र्रर किया हुवा) है ज़बर दस्त जानने वाले का और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह

بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हम ने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इल्म वालों के लिये

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ

और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया[205] फिर कहीं तुम्हें ठहरना है[206] और कहीं अमानत रहना[207]

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये और वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ

पानी उतारा तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज़ निकाली[208] तो हम ने उस से निकाली सब्ज़ी जिस में

مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ

से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास गुच्छे और अंगूर

مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا

के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उस का

اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

फल देखो जब फले और उस का पकना बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ

और[209] **अल्लाह** का शरीक ठहराया जिन्नों को[210] हालां कि उसी ने इन को बनाया और उस के लिये बेटे और बेटियां गढ़ लीं

बा'द उठने का यक़ीन नहीं करते, जो बेजान नुत़्फ़े से जानदार ह़ैवान पैदा करता है उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा करना क्या बईद है। **203 :** कि ख़ल्क़ इस में चैन पाती है और दिन की तकान व मांदगी को इस्तिराह़त से दूर करती है और शब बेदार ज़ाहिद तन्हाई में अपने रब की इ़बादत से चैन पाते हैं। **204 :** कि इन के दौरे और सैर (गर्दिश करने) से इ़बादात व मुआ़मलात के अवक़ात मा'लूम हों। **205 :** या'नी ह़ज़रते आदम से। **206 :** मां के रेह़्म में या ज़मीन के ऊपर **207 :** बाप की पुश्त में या क़ब्र के अन्दर **208 :** पानी एक, और इस से जो चीज़ें उगाईं वोह क़िस्म क़िस्म और रंगारंग **209 :** बा वुजूदे कि इन दलाइले क़ुदरत व अ़जाइबे ह़िक्मत और इस इन्आ़मो इक्राम और इन ने'मतों के पैदा करने और अ़त़ा फ़रमाने का इक़्तिज़ा था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते बजाए इस के बुत परस्तों ने येह सितम किया (जो आयत में आगे मज़्कूर है) कि **210 :** कि उन की इत़ाअ़त कर के बुत परस्त हो गए।

عِلْمٍ ط سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط ع ١٢

जहालत से पाकी और बर तरी है उस को उन की बातों से बे किसी नुमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला

اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ط وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ج

उस के बच्चा कहां से हो हालां कि उस की औरत नहीं[211] और उस ने हर चीज़ पैदा की[212]

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ج لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج خَالِقُ

और वोह सब कुछ जानता है येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब[213] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का

كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ

बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगहबान है[214] आंखें उसे

الْاَبْصَارُ ز وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ج وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ

इहाता नहीं करतीं[215] और सब आंखें उस के इहाते में हैं और वोही है निहायत बातिन पूरा ख़बरदार तुम्हारे पास

جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ج فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ط

आंखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को

وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا

और मैं तुम पर निगहबान नहीं और हम इसी तरह आयतें तरह तरह से बयान करते हैं[216] और इस लिये कि काफ़िर बोल उठें

211 : और बे औरत औलाद नहीं होती और ज़ौजा उस की शान के लाइक़ नहीं क्यूं कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं। **212 :** तो जो है वोह उस की मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना बातिल है। **213 :** जिस की सिफ़ात मज़्कूर हुईं और जिस की येह सिफ़ात हों वोही मुस्तहिक़्क़े इबादत है। **214 :** ख़्वाह वोह रिज़्क़ हो या अजल या हम्ल। **215 : मसाइल : इदराक** के मा'ना हैं मरई के जवानिब व हुदूद पर वाक़िफ़ होना, इसी को इहाता कहते हैं। इदराक की येही तफ़्सीर हज़रते सईद इब्ने मुसय्यब और हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم से मन्क़ूल है और जम्हूर मुफ़स्सिरीन इदराक की तफ़्सीर इहाता से फ़रमाते हैं और इहाता उसी चीज़ का हो सकता है जिस के हुदूद व जिहात हों, **अल्लाह** तआला के लिये हद व जिहत मुहाल है तो उस का इदराक व इहाता भी ना मुम्किन, येही मज़हब है अहले सुन्नत का। ख़वारिज व मो'तज़िला वग़ैरा गुमराह फ़िर्क़े इदराक और रूयत में फ़र्क़ नहीं करते, इस लिये वोह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्हों ने दीदारे इलाही को मुहाले अक़्ली क़रार दे दिया, बा वुजूदे कि नफ़िये रूयत नफ़िये इल्म को मुस्तल्ज़म है वरना जैसा कि बारी तआला ब ख़िलाफ़ तमाम मौजूदात के बिला कैफ़िय्यत व जिहत जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्यूं कि अगर दूसरी मौजूदात बिग़ैर कैफ़िय्यत व जिहत के देखी नहीं जा सकतीं तो जानी भी नहीं जा सकतीं। राज़ इस का येह है कि रूयत व दीद के मा'ना येह हैं कि बसर किसी शै को जैसी कि वोह हो वैसा जाने तो जो शै जिहत वाली होगी उस की रूयत व दीद जिहत में होगी और जिस के लिये जिहत न होगी उस की दीद बे जिहत होगी। **दीदारे इलाही :** आख़िरत में **अल्लाह** तआला का दीदार मोमिनीन के लिये अहले सुन्नत का अक़ीदा और क़ुरआन व हदीस व इज्माए सहाबा व सलफ़े उम्मत के दलाइले कसीरा से साबित है। क़ुरआने करीम में फ़रमाया : ''وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ'' (कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते) इस से साबित है कि मोमिनीन को रोज़े क़ियामत उन के रब का दीदार मुयस्सर होगा। इस के इलावा और बहुत आयात और सिहाह की कसीर अहादीस से साबित है, अगर दीदारे इलाही ना मुम्किन होता तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दीदार का सुवाल न फ़रमाते, ''رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ'' (ऐ रब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं) इर्शाद न करते और उन के जवाब में ''اِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ'' (येह पहाड़ अगर अपनी जगह ठहरा रहा तो तू अन्क़रीब मुझे देख लेगा) न फ़रमाया जाता। इन दलाइल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिये दीदारे इलाही शरअ़ में साबित है और इस का इन्कार गुमराही। **216 :** कि हुज्जत लाज़िम हो।

دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

कि तुम तो पढ़े हो और इस लिये कि उसे इ़ल्म वालों पर वाज़ेह़ कर दें उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से वह़्य होती है[217]

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ

उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो और अल्लाह चाहता तो वोह

اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَ

शरीक न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (निगहबान) नहीं और

لَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ

उन्हें गाली न दो जिन को वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वोह अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से[218]

كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ

यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है और वोह उन्हें बता देगा

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ

जो करते थे और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उन के पास कोई निशानी

اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا

आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं[219] और तुम्हें[220] क्या ख़बर कि जब

جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वोह आएं तो येह ईमान न लाएंगे और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को[221] जैसा वोह पहली बार उस पर

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع ركوع ١٣

ईमान न लाए थे[222] और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें

217 : और कुफ़्फ़ार की बेहूदा गोइयों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करो। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर है कि आप कुफ़्फ़ार की यावह गोइयों से रन्जीदा न हों, येह उन की बद नसीबी है कि वोह ऐसी वाज़ेह़ बुरहानों से फ़ाएदा न उठाएं। 218 : क़तादा का क़ौल है कि मुसल्मान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीह़त हो और वोह बुत परस्ती के ऐ़ब से बा ख़बर हों मगर उन ना ख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पज़ीर होने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरूअ़ की। इस पर येह आयत नाज़िल हुई अगर्चे बुतों को बुरा कहना और उन की ह़क़ीक़त का इज़्हार त़ाअ़त व सवाब है लेकिन अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कुफ़्फ़ार की बद गोइयों को रोकने के लिये इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि येह हुक्म अव्वल ज़माने में था जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई मन्सूख़ हो गया। 219 : वोह जब चाहता है ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत नाज़िल फ़रमाता है। 220 : ऐ मुसल्मानो ! 221 : ह़क़ के मानने और देखने से 222 : उन आयात पर जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर ज़ाहिर हुई थीं मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरात के।

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَیْهِمُ الْمَلٰٓىٕكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَیْهِمْ

और अगर हम उन की त़रफ़ फ़िरिश्ते उतारते[223] और उन से मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़

كُلَّ شَیْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِیُؤْمِنُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के सामने उठा लाते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे[224] मगर येह कि ख़ुदा चाहता[225] लेकिन उन में बहुत

یَجْهَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا شَیٰطِیْنَ الْاِنْسِ

निरे जाहिल हैं[226] और इसी त़रह़ हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों

وَالْجِنِّ یُوْحِیْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًاؕ وَلَوْ

और जिन्नों में के शैत़ान कि उन में एक दूसरे पर ख़ुफ़्या डालता है बनावट की बात[227] धोके को और तुम्हारा

شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا یَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلِتَصْغٰۤى اِلَیْهِ

रब चाहता तो वोह ऐसा न करते[228] तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो[229] और इस लिये कि उस[230] की त़रफ़

اَفْـِٕدَةُ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِیَرْضَوْهُ وَلِیَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ

उन के दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें

مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ اَفَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِیْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ اِلَیْكُمُ

गुनाह कमाना है तो क्या **अल्लाह** के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वोही है जिस ने तुम्हारी त़रफ़

الْكِتٰبَ مُفَصَّلًاؕ وَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ

मुफ़स्सल किताब उतारी[231] और जिन को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की त़रफ़ से

223 **शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर का क़ौल है कि येह आयत इस्तिहज़ा करने वाले क़ुरैश की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये हम उन से दरयाफ़्त कर लें कि आप जो फ़रमाते हैं येह ह़क़ है या नहीं और हमें फ़िरिश्ते दिखाइये जो आप के रसूल होने की गवाही दें या **अल्लाह** और फ़िरिश्तों को हमारे सामने लाइये। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 224 : वोह अहले शक़ावत हैं। 225 : उस की मशिय्यत जो होती है वोही होता है जो उस के इ़ल्म में अहले सआ़दत हैं वोह ईमान से मुशर्रफ़ होते हैं। 226 : नहीं जानते कि येह लोग वोह निशानियां बल्कि उस से ज़ियादा देख कर भी ईमान लाने वाले नहीं। (جمل ومدارک) 227 : या'नी वस्वसे और फ़रेब की बातें इग़्वा करने (बहकाने) के लिये। 228 : लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है इम्तिह़ान में डालता है ताकि उस के मेह़नत पर साबिर रहने से ज़ाहिर हो जाए कि येह जज़ील सवाब पाने वाला है। 229 : **अल्लाह** उन्हें बदला देगा, रुस्वा करेगा और आप की मदद फ़रमाएगा। 230 : बनावट की बात 231 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में अम्र व नही, वा'दा व वईद और ह़क़ व बात़िल का फ़ैसला और मेरे सिद्क़ की शहादत और तुम्हारे इफ़्तिरा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुश्रिकीन कहा करते थे कि आप हमारे और अपने दरमियान एक ह़कम मुक़र्रर कीजिये। उन के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

सच उतरा है[232] तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो और पूरी है तेरे रब की बात

صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ

सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[233] और वोही है सुनता जानता और ऐ सुनने

تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे **अल्लाह** की राह से बहका दें वोह सिर्फ़ गुमान के

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ

पीछे हैं[234] और निरी अट्कलें [फ़ुज़ूल अन्दाज़े] दौड़ाते हैं[235] तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾ فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ

उस की राह से और वोह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को तो खाओ उस में से जिस पर **अल्लाह** का नाम

عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

लिया गया[236] अगर तुम उस की आयतें मानते हो और तुम्हें क्या हुवा कि उस में से न खाओ जिस[237]

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ

पर **अल्लाह** का नाम लिया गया वोह तो तुम से मुफ़स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर हराम हुवा[238] मगर जब तुम्हें उस से मजबूरी हो[239]

وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने बेशक तेरा रब हद से बढ़ने

---

232 : क्यूं कि उन के पास इस की दलीलें हैं। **233 :** न कोई उस की क़ज़ा का तब्दील करने वाला न हुक्म का रद करने वाला न उस का वा'दा ख़िलाफ़ हो सके। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि कलाम जब ताम है तो वोह क़ाबिले नस्ख़ व तग़्यीर नहीं और वोह क़ियामत तक तह्‌रीफ़ व तग़्यीर से महफ़ूज़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि किसी की क़ुदरत नहीं कि क़ुरआने पाक की तह्‌रीफ़ कर सके क्यूं कि **अल्लाह** तआला इस की हिफ़ाज़त का ज़ामिन है। (تفسیر ابو السعود) **234 :** अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक़्लीद करते हैं, बसीरत व हक़ शनासी से महरूम हैं। **235 :** कि येह हलाल है येह हराम और अट्कल से कोई चीज़ हलाल हराम नहीं होती जिसे **अल्लाह** और उस के रसूल ने हलाल किया वोह हलाल और जिसे हराम किया वोह हराम। **236 :** या'नी जो **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्ह किया गया न वोह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़ब्ह किया गया वोह हराम है, हिल्लत **अल्लाह** के नाम पर ज़ब्ह होने से मुतअ़ल्लिक़ है, येह मुश्रिकीन के उस ए'तिराज़ का जवाब है कि जो उन्हों ने मुसल्मानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुवा तो खाते हो और **अल्लाह** का मारा हुवा या'नी जो अपनी मौत मरे उस को हराम जानते हो। **237 :** ज़बीहा **238 मस्अला :** इस से साबित हुवा कि हराम चीज़ों का मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और सुबूते हुरमत के लिये हुक्मे हुरमत दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअ़त में हुरमत (हराम होने) का हुक्म न हो वोह मुबाह है। **239 :** तो इन्दल इज़्तिरार क़दरे ज़रूरत रवा है। (या'नी शदीद मजबूरी के वक़्त ब क़दरे ज़रूरत जाइज़ है)

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

वालों को ख़ूब जानता है और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह वोह जो

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا

गुनाह कमाते हैं अन्क़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे और उसे न खाओ जिस

لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى

पर **अल्लाह** का नाम न लिया गया[240] और वोह बेशक हुक्म उ़दूली है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के

اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع اَوَمَنْ

दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो[241] तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो[242] और क्या

كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ

वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया[243] और उस के लिये एक नूर कर दिया[244] जिस से लोगों में चलता है[245] वोह उस

مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ

जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है[246] उन से निकलने वाला नहीं यूंही काफ़िरों की आंख में उन के

240 : वक़्ते ज़ब्ह न तह़क़ीक़न न तक़्दीरन, ख़्वाह इस त़रह़ कि वोह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस त़रह़ कि उस को बिग़ैर तस्मिया के या ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब ह़राम हैं लेकिन जहां मुसल्मान ज़ब्ह़ करने वाला वक़्ते ज़ब्ह़ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहना भूल गया वोह ज़ब्ह़ जाइज़ है वहां ज़िक्र तक़्दीरी है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। **241 :** और **अल्लाह** के ह़राम किये हुए को ह़लाल जानो **242 :** क्यूं कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना **अल्लाह** के सिवा और को ह़ाकिम क़रार देना शिर्क है। **243 :** मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्यूं कि कुफ़्र क़ुलूब के लिये मौत है और ईमान ह़यात। **244 :** नूर से ईमान मुराद है जिस की बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है। क़तादा का क़ौल है कि नूर से किताबुल्लाह या'नी क़ुरआन मुराद है। **245 :** और बीनाई ह़ासिल कर के राहे ह़क़ का इम्तियाज़ कर लेता है। **246 :** कुफ़्र व जहल व तीरह बात़िनी की येह एक मिसाल है जिस में मोमिन व काफ़िर का ह़ाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दे की त़रह़ है जिस ने ज़िन्दगानी पाई और उस को नूर मिला जिस से वोह मक़्सूद की राह पाता है और काफ़िर उस की मिस्ल है जो त़रह़ त़रह़ की अंधेरियों में गिरिफ़्तार हुवा और उन से निकल न सके हमेशा ह़ैरत में मुब्तला रहे, येह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिये आ़म हैं अगर्चे बक़ौल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا इन का शाने नुज़ूल येह है कि अबू जहल ने एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर कोई नजिस चीज़ फेंकी थी उस रोज़ ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه शिकार को गए हुए थे जिस वक़्त वोह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस वाक़िए की ख़बर दी गई, गो अभी तक वोह ईमान से मुशर्रफ़ न हुए थे मगर येह ख़बर सुन कर उन को निहायत त़ैश आया वोह अबू जहल पर चढ़ गए और उस को कमान से मारने लगे और अबू जहल आ़जिज़ी व ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा ऐ अबू या'ला ! (ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की कुन्यत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) कैसा दीन लाए और उन्हों ने हमारे मा'बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद अ़क़्ल बताया, इस पर ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा ने फ़रमाया : तुम्हारे बराबर बद अ़क़्ल कौन है कि **अल्लाह** को छोड़ कर पथ्थरों को पूजते हो, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं, उसी वक़्त ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा इस्लाम ले आए। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा का ह़ाल उस के मुशाबेह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और नूरे बात़िन अ़त़ा फ़रमाया और अबू जहल की शान येही है कि वोह कुफ़्र व जहल की तारीकियों में गिरिफ़्तार है और

www.dawateislami.net

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا

आ'माल भले कर दिये गए हैं और इसी त़रह़ हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों के सरग़ने किये

لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَ مَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَ اِذَا

कि उस में दाउं खेलें[247] और दाउं नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊ़र नहीं[248] और जब

جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ وقف غفران

उन के पास कोई निशानी आए कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला[249]

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ

अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे[250] अ़न्क़रीब मुजरिमों को अल्लाह

عِنْدَ اللّٰهِ وَ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अ़ज़ाब बदला उन के मक्र का और जिसे अल्लाह

اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَ مَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ

राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है[251] और जिसे गुमराह करना चाहे उस का

صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ

सीना तंग ख़ूब रुका हुवा कर देता है[252] गोया किसी की ज़बर दस्ती से आस्मान पर चढ़ रहा है अल्लाह यूंही

اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَ هٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ

अ़ज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को और येह[253] तुम्हारे रब की सीधी

مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

राह है हम ने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीह़त मानने वालों के लिये उन के लिये सलामती का घर है

247 : और त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों और फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाते और बात़िल को रवाज देने की कोशिश करते हैं। **248 :** कि इस का वबाल उन्हीं पर पड़ता है। **249 :** या'नी जब तक हमारे पास वह़्य न आए और हमें नबी न बनाया जाए। **शाने नुज़ूल :** वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा था कि अगर नुबुव्वत ह़क़ हो तो इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ मैं हूं क्यूं कि मेरी उ़म्र सय्यिदे आ़लम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) से ज़ियादा है और माल भी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **250 :** या'नी अल्लाह जानता है कि नुबुव्वत की अहलिय्यत और इस का इस्तिह़्क़ाक़ किस को है किस को नहीं, उ़म्र व माल से कोई मुस्तह़िक़े नुबुव्वत नहीं हो सकता, येह नुबुव्वत के त़लब गार तो ह़सद, मक्र, बद अ़हदी वग़ैरा क़बाएह़ अफ़्आ़ल और रज़ाइल ख़िसाल में मुब्तला हैं, येह कहां और नुबुव्वत का मन्सबे आ़ली कहां। **251 :** उस को ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उस के दिल में रोशनी पैदा करता है। **252 :** कि उस में इल्म और दलाइले तौह़ीद व ईमान की गुन्जाइश न हो तो उस की ऐसी ह़ालत होती है कि जब उस को ईमान की दा'वत दी जाती है और इस्लाम की त़रफ़ बुलाया जाता है तो वोह उस पर निहायत शाक़ होता है और उस को बहुत दुश्वार मा'लूम होता है। **253 :** दीने इस्लाम

www.dawateislami.net

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

अपने रब के यहां और वोह उन का मौला है येह उन के कामों का फल है और जिस दिन उन सब को उठाएगा

جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गुरोह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये[254] और उन के

اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا

दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया[255] और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए

الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ

जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी[256] फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे ख़ुदा

اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ

चाहे[257] ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इ़ल्म वाला है और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे

بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का[258] ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरोह क्या तुम्हारे पास

رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें येह दिन[259] देखने से

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا

डराते[260] कहेंगे हम ने अपनी जानों पर गवाही दी[261] और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ

अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वोह काफ़िर थे[262] येह[263] इस लिये कि तेरा रब बस्तियों को[264]

254 : उन को बहकाया और इग़्वा किया। **255 :** इस त़रह़ कि इन्सानों ने शहवात व मआ़सी में उन से मदद पाई और जिन्नों ने इन्सानों को अपना मुत़ीअ़ बनाया आख़िर कार इस का नतीजा पाया। **256 :** वक़्त गुज़र गया क़ियामत का दिन आ गया ह़स्रतो नदामत बाक़ी रह गई। **257 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना उस क़ौम की त़रफ़ राजेअ़ है जिस की निस्बत इ़ल्मे इलाही में है कि वोह इस्लाम लाएंगे और नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم की तस्दीक़ करेंगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे। **258 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुसल्लत़ करता है बुराई चाहता है तो बुरों को, इस से येह नतीजा बरआमद होता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़ किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म तर्क करें। **259 :** या'नी रोज़े क़ियामत **260 :** और अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाते **261 :** काफ़िर जिन्न और इन्सान इक़्रार करेंगे कि रसूल उन के पास आए और उन्हों ने ज़बानी पयाम पहुंचाए और इस दिन के पेश आने वाले ह़ालात का ख़ौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उन की तक्ज़ीब की और उन पर ईमान न लाए, कुफ़्फ़ार का येह इक़्रार उस वक़्त होगा जब कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के शिर्क व कुफ़्र की शहादतें देंगे।

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ لِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَ مَا

ज़ुल्म से तबाह नहीं करता कि उन के लोग बे ख़बर हों[265] और हर एक के लिये[266] उन के कामों से दरजे हैं और

رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَ رَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ

तेरा रब उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवा है रहमत वाला ऐ लोगो वोह चाहे तो

يُذْهِبْكُمْ وَ يَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَاۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

तुम्हें ले जाए[267] और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

की औलाद से पैदा किया[268] बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है[269] ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किस

تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا

का रहता है आख़िरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते और[270] अल्लाह ने जो

ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَ الْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَ هٰذَا

खेती और मवेशी पैदा किये उन में उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले येह अल्लाह का है उन के ख़याल में और येह

لِشُرَكَآىِٕنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآىِٕهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَ مَا كَانَ لِلّٰهِ

हमारे शरीकों का[271] तो वोह जो उन के शरीकों का है वोह तो ख़ुदा को नहीं पहुंचता और जो ख़ुदा का है

262 : क़ियामत का दिन बहुत त़वील होगा और उस में ह़ालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आएंगे। जब कुफ़्फ़ार मोमिनीन के इन्आ़मो इक्राम और इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्रो शिर्क से मुन्किर हो जाएंगे और इस ख़याल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बने येह कहेंगे "وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ" या'नी ख़ुदा की क़सम ! हम मुश्रिक न थे, उस वक़्त उन के मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उन के आ'ज़ा उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाही देंगे इसी की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा : "وَشَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ" **263 :** या'नी रसूलों की बि'सत **264 :** उन की मा'सियत और **265 :** बल्कि रसूल भेजे जाते हैं वोह उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं हुज्जतें क़ाइम करते हैं इस पर भी वोह सरकशी करते हैं तब हलाक किये जाते हैं। **266 :** ख़्वाह वोह नेक हो या बद, नेकी और बदी के दरजे हैं उन्ही के मुताबिक़ सवाब व अ़ज़ाब होगा। **267 :** या'नी हलाक कर दे **268 :** और उन का जा नशीन बनाया। **269 :** वोह चीज़ ख़्वाह क़ियामत हो या मरने के बा'द उठना या हिसाब या सवाब व अ़ज़ाब। **270 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में मुश्रिकीन का त़रीक़ा था कि वोह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह का मुक़र्रर करते थे और एक हिस्सा बुतों का तो जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते थे उस को तो मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिये मुक़र्रर करते थे वोह ख़ास उन पर और उन के ख़ादिमों पर सर्फ़ करते, जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते अगर उस में से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इस में मिलता तो उस को निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते, इस आयत में उन की इस जहालत और बद अ़क़्ली का ज़िक्र फ़रमा कर उन पर तम्बीह फ़रमाई गई। **271 :** या'नी बुतों का।

www.dawateislami.net

فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ

वोह उन के शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं[272] और यूं ही बहुत मुश्रिकों

لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ

की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है[273] कि उन्हें हलाक करें

وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا

और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें[274] और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वोह हैं और

يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَٰذِهِۦٓ أَنْعَٰمٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَن

उन के इफ़्तिरा और बोले[275] येह मवेशी और खेती रोकी हुई[276] है इसे वोही खाए जिसे हम

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَٰمٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَٰمٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ

चाहें अपने झूटे ख़याल से[277] और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना हराम ठहराया[278] और कुछ मवेशी के ज़ब्ह पर

اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾

अल्लाह का नाम नहीं लेते[279] येह सब अल्लाह पर झूट बांधना है अन्क़रीब वोह उन्हें बदला देगा उन के इफ़्तिराओं का

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَٰمِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰٓ

और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वोह निरा [ख़ालिस] हमारे मर्दों का है[280] और हमारी औरतों पर

أَزْوَٰجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ

हराम है और मरा हुवा निकले तो वोह सब[281] उस में शरीक हैं क़रीब है कि अल्लाह उन्हें उन की

272 : और इन्तिहा दरजे के जहल में गिरिफ़्तार हैं, ख़ालिक़े मुन्इम के इज़्ज़तो जलाल की उन्हें ज़रा भी मा'रिफ़त नहीं और फ़सादे अक़्ल इस हद तक पहुंच गया कि उन्हों ने बेजान बुतों पथ्थर की तस्वीरों को कारसाज़े आ़लम के बराबर कर दिया और जैसा उस के लिये हिस्सा मुक़र्रर किया ऐसा ही बुतों के लिये भी किया बेशक येह बहुत ही बुरा फ़े'ल और इन्तिहा का जहल और अ़ज़ीम ख़ता व ज़लाल (गुमराही) है, इस के बा'द उन के जहल और ज़लालत की एक और हालत ज़िक्र फ़रमाई जाती है। 273 : यहां शरीकों से मुराद वोह शयातीन हैं जिन की इताअ़त के शौक़ में मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी और उस की मा'सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बाएह अफ़्आ़ल और जाहिलाना अफ़्आ़ल के मुरतकिब होते थे जिन को अ़क़्ले सहीह़ कभी गवारा न कर सके और जिन की क़बाहत में अदना समझ के आदमी को भी तरद्दुद न हो, बुत परस्ती की शामत से वोह ऐसे फ़सादे अ़क़्ल में मुब्तला हुए कि हैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिस के साथ हर जानदार को फ़ित्रतन मह़ब्बत होती है शयातीन के इत्तिबाअ़ में उस का बे गुनाह ख़ून करना उन्हों ने गवारा किया और इस को अच्छा समझने लगे। 274 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह लोग पहले ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के दीन पर थे शयातीन ने उन को इग़्वा कर के इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें दीने इस्माईली से मुन्ह़रिफ़ करें 275 : मुश्रिकीन अपने बा'ज़ मवेशियों और खेतियों को अपने बातिल मा'बूदों के साथ नामज़द कर के कि 276 : मम्नूउ़ल इन्तिफ़ाअ़ (फ़ाएदा उठाना मन्अ़) 277 : या'नी बुतों की ख़िदमत करने वाले वग़ैरा। 278 : जिन को बह़ीरा, साइबा, ह़ामी कहते हैं। 279 : बल्कि उन बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं और इन तमाम अफ़्आ़ल की निस्बत येह ख़याल करते हैं कि इन्हें अल्लाह ने इस का हुक्म दिया है। 280 : सिर्फ़ उन्हीं के लिये ह़लाल है अगर ज़िन्दा पैदा हो। 281 : मर्द व औ़रत

www.dawateislami.net

وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ

उन बातों का बदला देगा बेशक वोह इ़ल्म, ह़िक्मत वाला है बेशक तबाह हुए वोह जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं

سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ قَدْ

अह़मक़ाना जहालत से[282] और ह़राम ठहराते हैं वोह जो **अल्लाह** ने उन्हें रोज़ी दी[283] **अल्लाह** पर झूट बांधने को[284] बेशक

ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ ع

वोह बहके और राह न पाई[285] और वोही है जिस ने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए [छाए] हुए[286]

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ

और कुछ बे छए [बे फैले] और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने[287] और ज़ैतून

وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ

और अनार किसी बात में मिलते[288] और किसी में अलग[289] खाओ उस का फल जब फल लाए

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ۙ

और उस का ह़क़ दो जिस दिन कटे[290] और बे जा न ख़र्चो[291] बेशक बे जा ख़र्च्ने वाले उसे पसन्द नहीं

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا

और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे[292] खाओ उस में से जो **अल्लाह** ने तुम्हें रोज़ी दी और शैत़ान

282 शाने नुज़ूल : येह आयत ज़मानए जाहिलिय्यत के उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे रह़मी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे, रबीआ़ व मुज़र वग़ैरा क़बाइल में इस का बहुत रवाज था और जाहिलिय्यत के बा'ज़ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे और बे रह़मी का येह आ़लम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को क़त्ल करते थे उन की निस्बत येह इर्शाद हुवा कि तबाह हुए। इस में शक नहीं कि औलाद **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है और इस की हलाकत से अपनी ता'दाद कम होती है अपनी नस्ल मिटती है येह दुन्या का ख़सारा है घर की तबाही है और आख़िरत में इस पर अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है तो येह अ़मल दुन्या और आख़िरत दोनों में तबाही का बाइ़स हुवा और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अ़ज़ीज़ और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िस्म की सफ़्फ़ाकी और बे दर्दी गवारा करना इन्तिहा दरजे की ह़माक़त और जहालत है। **283 :** या'नी बह़ीरे, साइबा, ह़ामी वग़ैरा जो मज़्कूर हो चुके। **284 :** क्यूं कि वोह येह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़्मूम अफ़्आ़ल का **अल्लाह** ने हुक्म दिया है कि उन का येह ख़याल **अल्लाह** पर इफ़्तिरा है। **285 :** ह़क़ व सवाब की। **286 :** या'नी टेटों (सहारे) पर क़ाइम किये हुए मिस्ल अंगूर वग़ैरा के **287 :** रंग और मज़े और मिक़्दार और ख़ुश्बू में बाहम मुख़्तलिफ़ **288 :** मसलन रंग में या पत्तों में **289 :** मसलन ज़ाएक़े और तासीर में। **290 :** मा'ना येह हैं कि येह चीज़ें जब फलें खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये मुबाह़ है और उस की ज़कात या'नी उ़श्र उस के कामिल होने के बा'द वाजिब होता है जब खेती काटी जाए या फल तोड़े जाएं। **मस्अला :** लकड़ी, बांस, घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में अगर येह पैदावार बारिश से हो तो उस में उ़श्र वाजिब होता है और अगर रहट (चरखे) वग़ैरा से हो तो निस्फ़ उ़श्र। **291 :** ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इसराफ़ का तरजमा बे जा ख़र्च करना फ़रमाया, निहायत ही नफ़ीस तरजमा है अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने अ़याल को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो सुद्दी का क़ौल है कि येह ख़र्च बे जा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो येह भी बे जा और दाख़िले इसराफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया। सुफ़्यान का क़ौल है कि **अल्लाह** की त़ाअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जावे वोह क़लील भी हो तो इसराफ़ है। ज़ोहरी का क़ौल है कि इस के मा'ना येह हैं कि मा'सियत में ख़र्च न करो। मुजाहिद ने कहा : ह़क़्क़ुल्लाह

www.dawateislami.net

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ

के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा सरीह़ दुश्मन है आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़

اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ

या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं[293] किसी इ़ल्म से बताओ अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۙ﴿۱۴۳﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ

सच्चे हो और एक जोड़ा ऊंट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ

ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ

क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में

الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

लिये हैं[294] क्या तुम मौजूद थे जब **अल्लाह** ने तुम्हें येह हुक्म दिया[295] तो उस से बढ़ कर ज़ालिम

में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इसराफ़ न हो और एक दिरहम मा'सियत में ख़र्च करो तो इसराफ़। **292 :** चौपाए दो क़िस्म के होते हैं : कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं कुछ छोटे मिस्ल बकरी वग़ैरा के जो इस क़ाबिल नहीं, इन में से जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़लाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहिलिय्यत की त़रह़ **अल्लाह** की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम न ठहराओ। **293 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने न भेड़ बकरी के नर ह़राम किये न उन की मादाएं ह़राम कीं न उन की औलाद, इन में तुम्हारा येह फ़े'ल कि कभी नर ह़राम ठहराओ कभी मादा कभी उन के बच्चे येह सब तुम्हारा इख़्तिराअ़ है (या'नी तुम्हारी ईजाद है) और हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़। कोई ह़लाल चीज़ किसी के ह़राम करने से ह़राम नहीं होती। **294 :** इस आयत में अहले जाहिलिय्यत को तौबीख़ की गई जो अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहरा लिया करते थे जिन का ज़िक्र ऊपर की आयात में आ चुका है। जब इस्लाम में अह़काम का बयान हुवा तो उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जिदाल (झगड़ा) किया और उन का ख़त़ीब मालिक बिन औ़फ़ जुशमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम ने सुना है की आप उन चीज़ों को ह़राम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते चले आए हैं, ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बिग़ैर किसी अस्ल के चन्द क़िस्में चौपायों की ह़राम कर लीं और **अल्लाह** तआ़ला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उन के नफ़्अ़ उठाने के लिये पैदा किये, तुम ने कहां से उन्हें ह़राम किया ? उन में ह़ुरमत नर की त़रफ़ से आई या मादा की त़रफ़ से ? मालिक बिन औ़फ़ येह सुन कर साकित और मुतह़य्यिर (ह़ैरान) रह गया और कुछ न बोल सका, नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बोलता क्यूं नहीं ? कहने लगा : आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा। سُبْحٰنَ اللّٰه ! सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कलाम की क़ुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहिलिय्यत के ख़त़ीब को साकित व ह़ैरान कर दिया और वोह बोल ही क्या सकता था अगर कहता कि नर की त़रफ़ से ह़ुरमत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर ह़राम हों अगर कहता कि मादा की त़रफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा ह़राम हो और अगर कहता जो पेट में है वोह ह़राम है तो फिर सब ही ह़राम हो जाते क्यूं कि जो पेट में रहता है वोह नर होता है या मादा। वोह जो तख़्सीसें क़ाइम करते थे और बा'ज़ को ह़लाल और बा'ज़ को ह़राम क़रार देते थे इस ह़ुज्जत ने उन के इस दा'वए तह़रीम को बात़िल कर दिया, इलावा बरीं उन से येह दरयाफ़्त करना कि **अल्लाह** ने नर ह़राम किये हैं या मादा या उन के बच्चे येह मुन्किरे नुबुव्वत मुख़ालिफ़ को इक़रारे नुबुव्वत पर मजबूर करता था क्यूं कि जब तक नुबुव्वत का वासित़ा न हो तो **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी और उस का किसी चीज़ को ह़राम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है। चुनान्चे अगले जुम्ले ने इस को साफ़ किया है। **295 :** जब येह नहीं है और नुबुव्वत का तो इक़रार नहीं करते तो इन अह़कामे ह़ुरमत को **अल्लाह** की त़रफ़ निस्बत करना किज़्ब व बात़िल व इफ़्तिराए ख़ालिस है।

www.dawateislami.net

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِيْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا ربع

ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता तुम फ़रमाओ[296] मैं नहीं पाता उस में जो मेरी त़रफ़ वह्य हुई किसी खाने

عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ

वाले पर कोई खाना ह़राम[297] मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून[298] या बद जानवर का

خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

गोश्त कि वोह नजासत है या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुवा[299] न यूं कि आप ख़्वाहिश

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا

करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[300] और यहूदियों पर हम ने

حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ

ह़राम किया हर नाख़ुन वाला जानवर[301] और गाय और बकरी की चरबी उन पर ह़राम की

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ

मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत में या हड्डी से मिली हो हम ने

جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ٘ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ

येह उन की सरकशी का बदला दिया[302] और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब

ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

वसीअ़ रह़मत वाला है[303] और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता[304]

296 : उन जाहिल मुश्रिकों से जो ह़लाल चीज़ों को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से ह़राम कर लेते हैं। **297 :** इस में तम्बीह है कि हुरमत जिहते शरअ़ से साबित होती है, न हवाए नफ़्स से। **मस्अला :** तो जिस चीज़ की हुरमत शरअ़ में वारिद न हो उस को ना जाइज़ व ह़राम कहना बात़िल। सुबूते हुरमत ख़्वाह वह्ये क़ुरआनी से हो या वह्ये ह़दीस से येही मो'तबर है। **298 :** तो जो ख़ून बहता न हो मिस्ल जिगर व तिल्ली के वोह ह़राम नहीं। **299 :** और ज़रूरत ने उसे इन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया ऐसी ह़ालत में मुज़्त़र हो कर उस ने कुछ खाया। **300 :** इस पर मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा। **301 :** जो उंगली रखता हो ख़्वाह चौपाया हो या परिन्द इस में ऊंट और शुतुर मुर्ग़ दाख़िल हैं। (مدارک) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहां शुतुर मुर्ग़ और बत़ (बत़ख़) और ऊंट ख़ास त़ौर पर मुराद हैं। **302 :** यहूद अपनी सरकशी के बाइस उन चीज़ों से मह़रूम किये गए लिहाज़ा येह चीज़ें उन पर ह़राम रहीं और हमारी शरीअ़त में गाय बकरी की चरबी और ऊंट और बत़ और शुतुर मुर्ग़ ह़लाल हैं इसी पर स़ह़ाबा और ताबिईन का इज्माअ़ है। (تفسیر احمدی) **303 :** मुकज़्ज़िबीन (झुटलाने वालों) को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़अ़ मिले। **304 :** अपने वक़्त पर आ ही जाता है।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا

अब कहेंगे मुश्रिक कि[305] अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा

وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ؕ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا

न हम कुछ ह़राम ठहराते[306] ऐसा ही इन से अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा

بَأْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ؕ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا

अ़ज़ाब चखा[307] तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इ़ल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान

الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ج فَلَوْ

के पीछे हो और तुम यूंही तख़्मीने करते हो[308] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है[309] तो वोह

شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ

चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता तुम फ़रमाओ लाओ अपने वोह गवाह जो गवाही दें

أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ج فَإِن شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ج وَلَا تَتَّبِعْ

कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया[310] फिर अगर वोह गवाही दे बैठें[311] तो ऐ सुनने वाले उन के साथ गवाही न देना और उन की ख़्वाहिशों

أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم

के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने

١٨ ع ٥ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾ ع قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا

रब का बराबर वाला ठहराते हैं[312] तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया[313] येह कि

تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ج وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُم مِّنْ

उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई[314] और अपनी औलाद क़त्ल न करो

305 : येह ख़बरे ग़ैब है कि जो बात वोह कहने वाले थे वोह बात पहले से बयान फ़रमा दी। **306 :** हम ने जो कुछ किया येह सब अल्लाह की मशिय्यत से हुवा, येह दलील है इस की, कि वोह इस से राज़ी है। **307 :** और येह उ़ज़्रे बात़िल उन के कुछ काम न आया क्यूं कि किसी अम्र का मशिय्यत में होना उस की मरज़ी व मामूर होने को मुस्तल्ज़िम नहीं, मरज़ी वोही है जो अम्बिया के वासित़े से बताई गई और उस का अम्र फ़रमाया गया। **308 :** और ग़लत़ अट्कलें चलाते हो। **309 :** कि उस ने रसूल भेजे किताबें नाज़िल फ़रमाईं और राहे ह़क़ वाज़ेह़ कर दी। **310 :** जिसे तुम अपने लिये ह़राम क़रार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इस का हुक्म दिया है। येह गवाही इस लिये त़लब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वोह कहते हैं वोह उन की तराशीदा बात है। **311 :** इस में तम्बीह है कि अगर येह शहादत वाक़ेअ़ हो भी तो वोह मह़ज़ इत्तिबाए़ हवा और किज़्ब व बात़िल होगी। **312 :** बुतों को मा'बूद मानते हैं और शिर्क में गिरिफ़्तार हैं। **313 :** उस का बयान येह है **314 :** क्यूं कि तुम पर उन के बहुत ह़ुक़ूक़ हैं उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हारे साथ शफ़्क़त और मेह्रबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़त़रे से निगहबानी की, उन के ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ न करना और उन के साथ ह़ुस्ने सुलूक का तर्क करना ह़राम है।

www.dawateislami.net

اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَ اِیَّاهُمْ ۚ وَ لَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ

मुफ़्लिसी के बाइ़स हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे[315] और बे ह़याइयों के पास न जाओ जो इन में

مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ ۚ وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ

खुली हैं और जो छुपी[316] और जिस जान की अल्लाह ने ह़ुरमत रखी उसे नाह़क़ न मारो[317]

ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَ لَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْیَتِیْمِ اِلَّا

येह तुम्हें ह़ुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर

بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى یَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا الْكَیْلَ وَ الْمِیْزَانَ

बहुत अच्छे त़रीक़े से[318] जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे[319] और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَ اِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ لَوْ كَانَ

पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़्दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे

ذَا قُرْبٰى ۚ وَ بِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ۙ

रिश्तेदार का मुआ़मला हो और अल्लाह ही का अ़ह्द पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीह़त मानो

وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ

और येह कि[320] येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो[321] कि तुम्हें

بِكُمْ عَنْ سَبِیْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اٰتَیْنَا

उस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें ह़ुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर हम ने

مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِیْۤ اَحْسَنَ وَ تَفْصِیْلًا لِّكُلِّ شَیْءٍ

मूसा को किताब अ़त़ा फ़रमाई[322] पूरा एह़सान करने को उस पर जो निकोकार है और हर चीज़ की तफ़्सील

315 : इस में औलाद को ज़िन्दा दरगोर करने और मार डालने की ह़ुरमत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि वोह अक्सर नादारी के अन्देशे से औलाद को हलाक करते थे उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा, उन का, सब का अल्लाह है फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतिकाब करते हो। 316 : क्यूं कि इन्सान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उस का ज़ाहिर गुनाह से बचना भी लिल्लाहिय्यत से नहीं लोगों के दिखाने और उन की बदगोई से बचने के लिये है और अल्लाह की रिज़ा व सवाब का मुस्तह़िक़ वोह है जो उस के ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे। 317 : वोह उमूर जिन से क़त्ल मुबाह़ होता है येह हैं : मुरतद होना या क़िसास या बियाहे हुए का ज़िना। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई मुसल्मान जो "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" की गवाही देता हो उस का ख़ून ह़लाल नहीं मगर इन तीन सबबों में से किसी एक सबब से या तो बियाहे होने के बा वुजूद उस से ज़िना सरज़द हुवा हो या उस ने किसी को नाह़क़ क़त्ल किया हो और उस का क़िसास उस पर आता हो या वोह दीन छोड़ कर मुरतद हो गया हो। 318 : जिस से उस का फ़ाएदा हो। 319 : उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। 320 : इन दोनों आयतों में जो ह़ुक्म दिया। 321 : जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदिय्यत हो या

www.dawateislami.net

ع ١٩ ٢ ٦ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ

और हिदायत और रह्मत कि कहीं वोह[323] अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं[324] और येह बरकत वाली किताब[325]

اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَ اتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْۤا

हम ने उतारी तो इस की पैरवी करो और परहेज़ गारी करो कि तुम पर रह्म हो कभी कहो

اِنَّمَاۤ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآىِٕفَتَیْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَ اِنْ كُنَّا عَنْ

कि किताब तो हम से पहले दो गुरोहों पर उतरी थी[326] और हमें उन के

دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِیْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّاۤ

पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी[327] या कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से

اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَیِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ ۚ

ज़ियादा ठीक राह पर होते[328] तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रह्मत आई[329]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ صَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِی الَّذِیْنَ

तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे अन्क़रीब वोह जो हमारी

یَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰیٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا یَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ

आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे बदला उन के मुंह फेरने का काहे के

یَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِیَهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ یَاْتِیَ رَبُّكَ اَوْ یَاْتِیَ بَعْضُ اٰیٰتِ

इन्तिज़ार में हैं[330] मगर येह कि आएं उन के पास फ़िरिश्ते[331] या तुम्हारे रब का अज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी

رَبِّكَ ؕ یَوْمَ یَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

आए[332] जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले

नसरानिय्यत या और कोई मिल्लत **322 :** तौरैत **323 :** या'नी बनी इसराईल **324 :** और बअ्स व हिसाब और सवाब व अ़ज़ाब और दीदारे इलाही की तस्दीक़ करें। **325 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ जो कसीरुल ख़ैर और कसीरुन्नफ़्अ़ और कसीरुल बरकत है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा और तह़रीफ़ व तब्दील व नस्ख़ से मह़फ़ूज़ रहेगा। **326 :** या'नी यहूदो नसारा पर तौरैत और इन्जील **327 :** क्यूं कि वोह हमारी ज़बान ही में न थी न हमें किसी ने उस के मा'ना बताए **अल्लाह** तआला ने क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर उन के इस उ़ज़्र को क़त्अ़ फ़रमा दिया। **328 :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने कहा था कि यहूदो नसारा पर किताबें नाज़िल हुईं मगर वोह बद अ़क़्ली में गिरिफ़्तार रहे उन किताबों से मुन्तफ़ेअ़ (नफ़्अ़ उठाने वाले) न हुए हम उन की त़रह ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल (कम अ़क़्ल) और नादान नहीं हैं हमारी अ़क़्लें सह़ीह़ हैं हमारी अ़क़्लो ज़हानत और फ़हमो फ़िरासत ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते, क़ुरआन नाज़िल फ़रमा कर उन का येह उ़ज़्र भी क़त्अ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे आगे इर्शाद होता है **329 :** या'नी येह क़ुरआने पाक जिस में हुज्जते वाज़ेह़ा और बयाने साफ़ और हिदायत व रह़मत है। **330 :** जब वह़दानिय्यत व रिसालत पर ज़बर दस्त हुज्जतें क़ाइम हो चुकीं और ए'तिक़ादाते कुफ़्रो ज़लाल का बुत़लान ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्यूं तवक़्क़ुफ़ है क्या इन्तिज़ार बाक़ी है? **331 :** उन

اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِیْۤ اِیْمَانِهَا خَیْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْۤا اِنَّا

ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी[333] तुम फ़रमाओ रस्ता देखो[334] हम

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِیَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ

भी देखते हैं वोह जिन्हों ने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गुरौह हो गए[335] ऐ मह़बूब तुम्हें उन से कुछ

فِیْ شَیْءٍ ؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ یُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं उन का मुआ़मला **अल्लाह** ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे[336]

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّیِّئَةِ فَلَا

जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं[337] और जो बुराई लाए तो उसे

یُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِیْ هَدٰىنِیْ رَبِّیْۤ اِلٰى

बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर और उन पर ज़ुल्म न होगा तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने

صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۚ۬ دِیْنًا قِیَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَ مَا كَانَ مِنَ

सीधी राह दिखाई[338] ठीक दीन इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुशरिक

الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۶۱﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ

न थे[339] तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब **अल्लाह** के लिये है

की अरवाह क़ब्ज़ करने के लिये **332 :** क़ियामत की निशानियों में से। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस निशानी से आफ़्ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना मुराद है। तिरमिज़ी की ह़दीस में भी ऐसा ही वारिद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक आफ़्ताब मग़रिब से तुलूअ़ न करे और जब वोह मग़रिब से तुलूअ़ करेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और येह ईमान नफ़्अ़ न देगा **333 :** या'नी ताअ़त न की थी, मा'ना येह हैं कि निशानी आने से पहले जो ईमान न लाए निशानी के बा'द उस का ईमान क़बूल नहीं इसी त़रह़ जो निशानी से पहले तौबा न करे बा'द निशानी के उस की तौबा क़बूल नहीं लेकिन जो ईमानदार पहले से नेक अ़मल करते होंगे निशानी के बा'द भी उन के अ़मल मक़्बूल होंगे। **334 :** उन में से किसी एक का या'नी मौत के फ़िरिश्तों की आमद या अ़ज़ाब या निशानी आने का। **335 :** मिस्ल यहूदो नसारा के। ह़दीस शरीफ़ में है यहूद इक्हत्तर फ़िर्क़े हो गए उन से सिर्फ़ एक नाजी (नजात पाने वाला) है बाक़ी सब नारी और नसारा बहत्तर फ़िर्क़े हो गए एक नाजी बाक़ी सब नारी और मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़े हो जाएगी। वोह सब के सब नारी होंगे सिवाए एक के जो सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त है और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे अस्ह़ाब की राह पर है। **336 :** और आख़िरत में उन्हें अपने किरदार का अन्जाम मा'लूम हो जाएगा। **337 :** या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी ह़द व निहायत के त़रीक़े पर नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो करे या बे ह़िसाब अ़त़ा फ़रमाए, अस्ल येह है कि नेकियों का सवाब मह़ज़ फ़ज़्ल है येही मज़्हब है अहले सुन्नत का और बदी की इतनी ही जज़ा येह अ़द्ल है। **338 :** या'नी दीने इस्लाम जो **अल्लाह** को मक़्बूल है। **339 :** इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वोह दीने इब्राहीमी पर हैं **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام मुशरिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुशरिकीन का येह दा'वा कि वोह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बातिल है।

www.dawateislami.net

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾

जो रब सारे जहान का उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[340]

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّ هُوَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ ؕ وَ لَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा और रब चाहूं हालां कि वोह हर चीज़ का रब है[341] और जो कोई कुछ कमाए वोह

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ

उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[342] फिर तुम्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है[343]

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें

الْاَرْضِ وَ رَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَاۤ

नाइब किया[344] और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[345] कि तुम्हें आज़्माए[346] उस चीज़ में जो

رکوع ٢٠ النصف

اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖؗ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾ ع

तुम्हें अ़ता की बेशक तुम्हारे रब को अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

اٰيَاتُهَا ٢٠٦ | ٧ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ ٣٩ | رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

सूरए आ'राफ़ मक्किय्या है, इस में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

340 : "अव्वलिय्यत" या तो इस ए'तिबार से है कि अम्बिया का इस्लाम उन की उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ए'तिबार से कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अव्वले मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए। **341 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि आप हमारे दीन की त़रफ़ लौट आइये और हमारे मा'बूदों की इबादत कीजिये। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरा कहता था कि मेरा रस्ता इख़्तियार करो इस में अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गरदन पर, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वोह रस्ता बात़िल है ख़ुदा शनास किस त़रह़ गवारा कर सकता है कि अल्लाह के सिवा किसी और को रब बताए और येह भी बात़िल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके। **342 :** हर शख़्स अपने गुनाह में माख़ूज़ (पकड़ा हुवा) होगा दूसरे के गुनाह में नहीं। **343 :** रोज़े क़ियामत **344 :** क्यूं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं आप के बा'द कोई नबी नहीं और आप की उम्मत आख़िरुल उमम है इस लिये इन को ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि इस के मालिक हों और इस में तसर्रुफ़ करें। **345 :** शक्लो सूरत में, हुस्नो जमाल में, रिज़्क़ो माल में, इल्मो अ़क़्ल में, क़ुव्वतो कमाल में **346 :** या'नी आज़्माइश में डाले कि तुम ने'मत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो। **1 :** येह सूरत मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और एक रिवायत में है कि येह सूरत मक्किय्या है सिवा पांच आयतों के जिन में से पहली "وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ" है। इस सूरत में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं और तीन हज़ार तीन सो पच्चीस कलिमे और चौदह हज़ार दस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

الٓمّٓصٓ ۚ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَیْكَ فَلَا یَكُنْ فِیْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ

ऐ महबूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी इस से न रुके[2]

لِتُنْذِرَ بِهٖ وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ مِّنْ

इस लिये कि तुम इस से डर सुनाओ और मुसल्मानों को नसीहत ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास

رَّبِّكُمْ وَ لَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَ كَمْ

से उतरा[3] और उसे छोड़ कर हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो और कितनी

مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَیَاتًا اَوْ هُمْ قَآىٕلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا

ही बस्तियां हम ने हलाक कीं[4] तो उन पर हमारा अ़ज़ाब रात में आया या जब वोह दो पहर को सोते थे[5] तो उन

كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِیْنَ ﴿٥﴾

के मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अ़ज़ाब उन पर आया मगर येही बोले कि हम ज़ालिम थे[6]

فَلَنَسْــٴَـلَنَّ الَّذِیْنَ اُرْسِلَ اِلَیْهِمْ وَ لَنَسْــٴَـلَنَّ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿٦﴾ۙ فَلَنَقُصَّنَّ

तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उन से जिन के पास रसूल गए[7] और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से[8] तो ज़रूर हम उन को

عَلَیْهِمْ بِعِلْمٍ وَّ مَا كُنَّا غَآىٕبِیْنَ ﴿٧﴾ وَ الْوَزْنُ یَوْمَىٕذِ اِلْحَقُّ ۚ فَمَنْ

बता देंगे[9] अपने इ़ल्म से और हम कुछ ग़ाइब न थे और उस दिन तोल ज़रूर होनी है[10] तो जिन

2 : ब ई ख़याल कि शायद लोग न मानें और इस से ए'राज़ करें और इस की तक्ज़ीब के दरपै हों। **3 :** या'नी कुरआन शरीफ़, जिस में हिदायत व नूर का बयान है। ज़ज्जाज ने कहा कि इत्तिबाअ़ करो कुरआन का और उस चीज़ का जो नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم लाए क्यूं कि येह सब **अल्लाह** का नाज़िल किया हुवा है जैसा कि कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : مَاۤ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ...الآیہ या'नी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएं उसे अख़्ज़ (क़बूल) करो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं उस से बाज़ रहो। **4 :** अब हुक्मे इलाही का इत्तिबाअ़ तर्क करने और उस से ए'राज़ करने के नताइज पिछली क़ौमों के हालात में दिखाए जाते हैं। **5 :** मा'ना येह हैं कि हमारा अ़ज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें ख़याल भी न था या तो रात का वक़्त था और वोह आराम की नींद सोते थे या दिन में क़ैलूला का वक़्त था और वोह मसरूफ़े राहत थे न अ़ज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी न क़रीना कि पहले से आगाह होते अचानक आ गया। इस से कुफ़्फ़ार को मुतनब्बेह किया जाता है कि वोह अस्बाबे अम्नो राहत पर मग़रूर न हों अ़ज़ाबे इलाही जब आता है तो दफ़्अ़तन आ जाता है। **6 :** अ़ज़ाब आने पर उन्हों ने अपने जुर्म का ए'तिराफ़ किया और उस वक़्त ए'तिराफ़ भी फ़ाएदा नहीं देता। **7 :** कि उन्हों ने रसूलों की दा'वत का क्या जवाब दिया और उन के हुक्म की क्या ता'मील की। **8 :** कि उन्हों ने अपनी उम्मतों को हमारे पयाम पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हें क्या जवाब दिया। **9 :** रसूलों को भी और उन की उम्मतों को भी कि उन्हों ने दुन्या में क्या किया। **10 :** इस तरह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक मीज़ान क़ाइम फ़रमाएगा जिस का हर एक पल्ला इतनी वुस्अ़त रखेगा जैसी मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान वुस्अ़त है। इब्ने जूज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में मीज़ान देखने की दरख़्वास्त की जब मीज़ान दिखाई गई और आप ने उस के पल्लों की वुस्अ़त देखी तो अ़र्ज़ किया : या रब ! किस का मक़्दूर है कि इन को नेकियों से भर सके। इर्शाद हुवा कि ऐ दावूद मैं जब अपने बन्दों से राज़ी होता हूं तो एक खजूर से इस को भर देता हूं या'नी थोड़ी नेकी भी मक़्बूल हो जाए तो फ़ज़्ले इलाही से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे।

www.dawateislami.net

ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٨ وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ

के पल्ले भारी हुए[11] वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए[12]

فَاُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩ وَ

तो वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे[13] और

لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में जमाव [ठिकाना] दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए[14] बहुत ही कम

تَشْكُرُوْنَ ۝١٠ وَ لَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ

शुक्र करते हो[15] और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हम ने मलाएका से फ़रमाया कि

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖۗ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١

आदम को सज्दा करो तो वोह सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस येह सज्दे वालों में न हुवा

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सज्दा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था[16] बोला मैं उस से बेहतर हूं तू ने मुझे

مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝١٢ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ

आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया[17] फ़रमाया तो यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां

تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٣ قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ

रह कर गुरूर करे निकल[18] तू है ज़िल्लत वालों में[19] बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि

11 : नेकियां ज़ियादा हुईं **12 :** और उन में कोई नेकी न हुई, येह कुफ़्फ़ार का ह़ाल होगा जो ईमान से मह़रूम हैं और इस वज्ह से उन का कोई अमल मक़्बूल नहीं। **13 :** कि उन को छोड़ते थे झुटलाते थे और उन की इत़ाअ़त से मुंह मोड़ते थे। **14 :** और अपने फ़ज़्ल से तुम्हें राह़तें दीं बा वुजूद इस के तुम **15 :** शुक्र की ह़क़ीक़त ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार है और ना शुक्री ने'मत को भूल जाना और उस को छुपाना। **16 मस्अला :** इस से साबित होता है कि अम्र वुजूब के लिये होता है और सज्दा न करने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाना तौबीख़ के लिये है और इस लिये कि शैत़ान की मुआनदत (दुश्मनी) और उस का कुफ़्र व किब्र और अपनी अस्ल पर मुफ़्तख़िर (फ़ख़्र करने वाला) होना और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अस्ल की तह़क़ीर करना ज़ाहिर हो जाए। **17 :** इस से उस की मुराद येह थी कि आग मिट्टी से अफ़्ज़लो आ'ला है तो जिस की अस्ल आग होगी वोह उस से अफ़्ज़ल होगा जिस की अस्ल मिट्टी हो और उस ख़बीस का येह ख़याल ग़लत़ व बात़िल है क्यूं कि अफ़्ज़ल वोह है जिसे मालिको मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का मदार अस्ल व जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी पर है और आग का मिट्टी से अफ़्ज़ल होना येह भी सह़ीह़ नहीं क्यूं कि आग में तैश व तेज़ी और तरफ़्फ़ोअ़ (ऊपर की त़रफ़ उठना) है येह सबब इस्तिक्बार (तकब्बुर व ग़ुरूर पैदा करने) का होता है और मिट्टी से वक़ार, ह़िल्मो ह़या व सब्र ह़ासिल होते हैं मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं, आग से हलाक, मिट्टी अमानत दार है जो चीज़ उस में रखी जाए उस को मह़फ़ूज़ रखे और बढ़ाए, आग फ़ना कर देती है, बा वुजूद इस के लुत़्फ़ येह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फ़ना नहीं कर सकती, इलावा बरीं ह़माक़त व शक़ावत इब्लीस की येह कि उस ने नस्स के मौजूद होते हुए इस के मुक़ाबिल क़ियास किया और जो क़ियास कि नस्स के ख़िलाफ़ हो वोह ज़रूर मरदूद। **18 :** जन्नत से कि येह जगह इत़ाअ़त व तवाज़ोअ़ वालों की है मुन्किर व सरकश की नहीं। **19 :** कि इन्सान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान

www.dawateislami.net

يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ
लोग उठाए जाएं फ़रमाया तुझे मोहलत है[20] बोला तो क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया
لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ
मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा[21] फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآىِٕلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ
उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से[22] और तू उन में
اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ
अक्सर को शुक्र गुज़ार न पाएगा[23] फ़रमाया यहां से निकल जा रद किया गया रांदा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जो
تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ
उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा[24] और ऐ आदम तू और
اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ
तेरा जोड़ा[25] जन्नत में रहो तो उस में से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना
فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا
कि हद से बढ़ने वालों में होगे फिर शैत़ान ने उन के जी (दिल) में ख़त़रा डाला कि उन पर खोल दे
مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ
उन की शर्म की चीज़ें[26] जो उन से छुपी थीं[27] और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस

तुझ पर ला'नत करेगी और येही तकब्बुर वाले का अन्जाम है। **20 :** और मुद्दत इस मोहलत की सूरए हिज्र में बयान फ़रमाई गई ''اِنَّکَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ۝ اِلٰی یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ'' (तो तू मोहलत वालों में है उस जाने हुए वक़्त के दिन तक) और येह वक़्त नफ़्ख़ए ऊला का है जब सब लोग मर जाएंगे शैत़ान ने मुर्दों के ज़िन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और उस से उस का मत़लब येह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए येह क़बूल न हुवा और नफ़्ख़ए ऊला तक की मोहलत दी गई। **21 :** कि बनी आदम के दिल में वस्वसे डालूं और उन्हें बात़िल की त़रफ़ माइल करूं, गुनाहों की रग़बत दिलाऊं, तेरी इत़ाअ़त और इबादत से रोकूं और गुमराही में डालूं। **22 :** या'नी चारों त़रफ़ से उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा। **23 :** चूंकि शैत़ान बनी आदम को गुमराह करने और मुब्तलाए शहवात व क़बाएह़ करने में अपनी इन्तिहाई सई ख़र्च करने का अ़ज़्म कर चुका था इस लिये उसे गुमान था कि वोह बनी आदम को बहका लेगा। उन्हें फ़रेब दे कर ख़ुदावन्दे आ़लम की ने'मतों के शुक्र और उस की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी से रोक देगा। **24 :** तुझ को भी और तेरी ज़ुर्रिय्यत को भी और तेरी इत़ाअ़त करने वाले आदमियों को भी सब को जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। शैत़ान को जन्नत से निकाल देने के बा'द ह़ज़रते आदम को ख़ित़ाब फ़रमाया जो आगे आता है। **25 :** या'नी ह़ज़रते ह़व्वा **26 :** या'नी ऐसा वस्वसा डाला कि जिस का नतीजा येह हो कि वोह दोनों आपस में एक दूसरे के सामने बरह़ना हो जाएं। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि वोह जिस्म जिस को औ़रत कहते हैं उस का छुपाना ज़रूरी और खोलना मन्अ़ है और येह भी साबित हुवा कि इस का खोलना हमेशा से अ़क़्ल के नज़्दीक मज़्मूम और त़बीअ़तों को ना गवार रहा है। **27 :** इस से मा'लूम हुवा कि इन दोनों साहिबों ने अब तक एक दूसरे का सत्र न देखा था।

الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَیْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَ قَاسَمَهُمَاۤ

पेड़ से इसी लिये मन्अ़ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले[28] और उन से क़सम खाई

اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से[29] फिर जब उन्हों ने वोह पेड़ चखा

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ طَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ

उन पर उन की शर्म की चीजें़ खुल गईं[30] और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और

نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ

उन्हें उन के रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें उस पेड़ से मन्अ़ न किया और न फ़रमाया था कि

الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَ اِنْ لَّمْ

शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है दोनों ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू

تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ

हमें न बख़्शे और हम पर रह्म न करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए फ़रमाया उतरो[31] तुम में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِیْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ

दूसरे का दुश्मन और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरत्ना है फ़रमाया

ع ۲ ۹ فِیْهَا تَحْیَوْنَ وَ فِیْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ ع یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ قَدْ

उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाए जाओगे[32] ऐ आदम की औलाद बेशक

اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِیْشًا ؕ وَ لِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ

हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीजें़ छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो[33] और परहेज़ गारी का लिबास

28 : कि जन्नत में रहो और कभी न मरो। **29 :** मा'ना येह हैं कि इब्लीस मल्ऊ़न ने झूटी क़सम खा कर ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को धोका दिया और पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है, ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام को गुमान भी न था कि कोई **अल्लाह** की क़सम खा कर झूट बोल सकता है इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया। **30 :** और जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और उन में एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका, उस वक़्त तक इन साह़िबों में से किसी ने ख़ुद भी अपना सत्र न देखा था और न उस वक़्त तक उन्हें इस की ह़ाजत पेश आई थी। **31 :** ऐ आदम व ह़व्वा ! मअ़ अपनी ज़ुर्रिय्यत के जो तुम में है **32 :** रोजे़ क़ियामत ह़िसाब के लिये। **33 :** या'नी एक लिबास तो वोह है जिस से बदन छुपाया जाए और सत्र किया जाए और एक लिबास वोह है जिस से ज़ीनत हो और येह भी ग़रज़ सह़ीह़ है।

ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ

वोह सब से भला[34] येह अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वोह नसीहत मानें ऐ आदम की औलाद[35]

لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

ख़बरदार तुम्हें शैतान फ़ितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बिहिश्त से निकाला उतरवा दिये उन

لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ

के लिबास कि उन की शर्म की चीज़ें उन्हें नज़र पड़ीं बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि

لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾

तुम उन्हें नहीं देखते[36] बेशक हम ने शैतानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَاۤ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ

और जब कोई बे ह़याई करें[37] तो कहते हैं हम ने इस पर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया[38]

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾

तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह बे ह़याई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वोह बात लगाते हो जिस की तुम्हें ख़बर नहीं

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ

तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उस की इबादत करो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ۬ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿۲۹﴾ؕ فَرِيْقًا هَدٰى

निरे [ख़ालिस] उस के बन्दे हो कर जैसे उस ने तुम्हारा आग़ाज़ किया वैसे ही पलटोगे[39] एक फ़िर्क़े को राह दिखाई[40]

34 : परहेज़ गारी का लिबास ईमान, ह़या, नेक ख़स्लतें, नेक अ़मल हैं येह बेशक लिबासे ज़ीनत से अफ़्ज़ल व बेहतर हैं। 35 : शैत़ान की कय्यादी (मक्कारी) और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ उस की अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जाता है कि वोह शैत़ान के वस्वसे और इग़्वा (बहकावे) और उस की मक्कारियों से बचते रहें, जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है वोह उन की औलाद के साथ कब दर गुज़र करने वाला है। 36 : अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों को ऐसा इदराक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इदराक नहीं मिला कि वोह जिन्नों को देख सकें। ह़दीस शरीफ़ में है कि शैत़ान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर (समा) जाता है। ह़ज़रते ज़ुन्नून رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया कि अगर शैत़ान ऐसा है कि वोह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उस को देखता हो और वोह उसे न देख सके या'नी अल्लाह करीम सत्तार रह़ीम ग़फ़्फ़ार से मदद चाहो। 37 : और कोई क़बीह़ फ़े'ल या गुनाह उन से सादिर हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग मर्द व औ़रत नंगे हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करते थे। अ़त़ा का क़ौल है कि बे ह़याई शिर्क है और ह़क़ीक़त येह है कि हर क़बीह़ फ़े'ल और तमाम मआ़सी व कबाइर इस में दाख़िल हैं अगर्चे येह आयत ख़ास नंगे हो कर त़वाफ़ करने के बारे में आई हो। जब कुफ़्फ़ार की ऐसी बे ह़याई के कामों पर उन की मज़म्मत की गई तो इस पर उन्हों ने जो कहा वोह आगे आता है। 38 : कुफ़्फ़ार ने अपने अफ़्आ़ले क़बीह़ा के दो उ़ज़्र बयान किये एक तो येह कि उन्हों ने अपने बाप दादा को येही फ़े'ल करते पाया लिहाज़ा उन की इत्तिबाअ़ में येह भी करते हैं येह तो जाहिल बदकार की तक़्लीद हुई और येह किसी साह़िबे अ़क़्ल के नज़्दीक जाइज़ नहीं। तक़्लीद की जाती है अहले इल्मो तक़्वा की न कि जाहिल गुमराह की। दूसरा

www.dawateislami.net

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ

और एक फ़िर्क़े की गुमराही साबित हुई[41] उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों

دُوْنِ اللّٰهِ وَ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾ يٰبَنِیْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ

को वाली बनाया[42] और समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

जब मस्जिद में जाओ[43] और खाओ और पियो[44] और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले

ع ٣ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ ع قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِیْۤ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَ الطَّيِّبٰتِ

उसे पसन्द नहीं तुम फ़रमाओ किस ने हराम की अल्लाह की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली[45] और पाक

مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِیَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِی الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

रिज़्क़[46] तुम फ़रमाओ कि वोह ईमान वालों के लिये है दुन्या में और क़ियामत में तो ख़ास

الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ

उन्हीं की है हम यूंही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं[47] इल्म वालों के लिये[48] तुम फ़रमाओ मेरे

उज़्र उन का येह था कि अल्लाह ने उन्हें इन अफ़्आल का हुक्म दिया है येह महूज़ इफ़्तिरा व बोहतान था। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआला रद फ़रमाता है **39 :** या'नी जैसे उस ने तुम्हें नीस्त से हस्त किया ऐसे ही बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाएगा, येह उख़्रवी ज़िन्दगी का इन्कार करने वालों पर हुज्जत है और इस से येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि जब उसी की तरफ़ पलटना है और वोह आ'माल की जज़ा देगा तो ताआत व इबादात को उस के लिये ख़ालिस करना ज़रूरी है। **40 :** ईमान व मा'रिफ़त की और उन्हें ताअत व इबादत की तौफ़ीक़ दी। **41 :** वोह कुफ़्फ़ार हैं **42 :** उन की इताअत की, उन के कहे पर चले, उन के हुक्म से कुफ़्र व मआसी को इख़्तियार किया। **43 :** या'नी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल येह है कि कंघी करना, ख़ुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है। **मस्अला :** और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत के साथ नमाज़ के लिये हाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना, इत्र लगाना मुस्तहब जैसा कि सत्रे औरत वाजिब है। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और रात में औरतें नंगे हो कर तवाफ़ करते थे। इस आयते करीमा में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औरत नमाज़ व तवाफ़ और हर हाल में वाजिब है। **44 शाने नुज़ूल :** कलबी का क़ौल है कि बनी आमिर ज़मानए हज में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोश्त और चिक्नाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को हज की ता'ज़ीम जानते थे, मुसल्मानों ने उन्हें देख कर अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** हमें ऐसा करने का ज़ियादा हक़ है इस पर येह नाज़िल हुवा कि खाओ और पियो गोश्त हो ख़्वाह चिक्नाई हो और इसराफ़ न करो और वोह येह है कि सेर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या हराम की परवाह न करो और येह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ अल्लाह तआला ने हराम नहीं की उस को हराम कर लो। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया : खा जो चाहे और पहन जो चाहे इसराफ़ और तकब्बुर से बचता रह। **मस्अला :** आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें हलाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअत में दलीले हुरमत क़ाइम हो क्यूं कि येह क़ाइदा मुक़र्ररा मुसल्लमा है कि अस्ल तमाम अश्या में इबाहत है मगर जिस पर शारेअ ने मुमानअत फ़रमाई हो और उस की हुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो। **45 :** ख़्वाह लिबास हो या और सामाने ज़ीनत **46 :** और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें। **मस्अला :** आयत अपने उमूम पर है हर खाने की चीज़ इस में दाख़िल है कि जिस की हुरमत पर नस्स वारिद न हुई हो। (خازن) तो जो लोग तोशए ग्यारहवीं शरीफ़, मीलाद शरीफ़, बुज़ुर्गों की फ़ातिहा, उर्स, मजालिसे शहादत वग़ैरा की शीरीनी, सबील के शरबत को मम्नूअ कहते हैं वोह इस आयत के ख़िलाफ़ कर के गुनहगार होते हैं और इस को मम्नूअ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और येही बिदअत व ज़लालत है। **47 :** जिन से हलाल व हराम के अहकाम मा'लूम हों। **48 :** जो येह जानते हैं कि अल्लाह "وَاحِدٌ لَا شَرِيْكَ لَهٗ" है वोह जो हराम करे वोही हराम है।

www.dawateislami.net

رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ
रब ने तो बे हयाइयां हराम फ़रमाई हैं[49] जो उन में खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक़ ज़ियादती
وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا
और येह[50] कि **अल्लाह** का शरीक करो जिस की उस ने सनद न उतारी और येह[51] कि **अल्लाह** पर वोह बात कहो जिस
لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
का इल्म नहीं रखते और हर गुरोह का एक वा'दा है[52] तो जब उन का वा'दा आएगा एक घड़ी न
سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾ يٰبَنِيْۤ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
पीछे हो न आगे ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आएं[53]
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज़ गारी करे[54] और संवरे[55] तो उस पर न कुछ ख़ौफ़ और न
يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَاۤ اُولٰٓىٕكَ
कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया वोह
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى
दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिस ने
اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓىٕكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ
अल्लाह पर झूट बांधा या उस की आयतें झुटलाईं उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा[56]
حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْۤا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ
यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए[57] उन की जान निकालने आएं तो उन से कहते हैं कहां हैं वोह जिन को तुम

49 : येह ख़िताब मुश्रिकीन से है जो बरहना हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और **अल्लाह** तआला की हलाल की हुई पाक चीज़ों को हराम कर लेते थे, उन से फ़रमाया जाता है कि **अल्लाह** ने येह चीज़ें हराम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका, जिन चीज़ों को उस ने हराम फ़रमाया वोह येह हैं जो **अल्लाह** तआला बयान फ़रमाता है, उन में से बे हयाइयां हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई क़ौली हों या फ़े'ली। **50 :** हराम किया **51 :** हराम किया **52 :** वक़्ते मुअ़य्यन जिस पर मोहलत ख़त्म हो जाती है। **53 :** मुफ़स्सिरीन के इस में दो क़ौल हैं : **एक** तो येह कि रुसुल से तमाम मुर्सलीन मुराद हैं। **दूसरा** येह कि ख़ास सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं जो तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाए गए हैं और सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है। **54 :** मम्नूआत से बचे **55 :** त़ाआत व इबादात बजा लाए **56 :** या'नी जितनी उम्र और रोज़ी **अल्लाह** ने उन के लिये लिख दी है उन को पहुंचेगी। **57 :** मलकुल मौत और उन के आ'वान (दूसरे मददगार फ़िरिश्ते) उन लोगों की उम्रें और रोज़ियां पूरी होने के बा'द।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَ شَهِدُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वोह हम से गुम गए[58] और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह

كٰفِرِیْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ

काफ़िर थे अल्लाह उन से[59] फ़रमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअ़तें जिन्न और आदमियों की

وَ الْاِنْسِ فِی النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا

आग में गईं उन्हीं में जाओ जब एक गुरोह[60] दाख़िल होता है दूसरे पर ला'नत करता है[61] यहां तक कि जब

ادَّارَكُوْا فِیْهَا جَمِیْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا

सब उस में जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे[62] ऐ रब हमारे उन्हों ने हम को बहकाया था

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ۬ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾

तो उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे फ़रमाएगा सब को दूना है[63] मगर तुम्हें ख़बर नहीं[64]

وَ قَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا

और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हम से अच्छे न रहे[65] तो चखो

ع ۴ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾ ع اِنَّ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا

अ़ज़ाब बदला अपने किये का[66] वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं

وَ اسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَ لَا یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे[67] और न वोह जन्नत में दाख़िल हों

حَتّٰى یَلِجَ الْجَمَلُ فِیْ سَمِّ الْخِیَاطِ ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۴۰﴾

जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो[68] और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं[69]

58 : उन का कहीं नामो निशान ही नहीं 59 : उन काफ़िरों से रोज़े क़ियामत 60 : दोज़ख़ में 61 : जो उस के दीन पर था तो मुश्रिक मुश्रिकों पर ला'नत करेंगे और यहूद यहूदियों पर और नसारा नसारा पर 62 : या'नी पहलों की निस्बत अल्लाह तआ़ला से कहेंगे 63 : क्यूं कि पहले ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि ख़ुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही इत्तिबाअ़ करते रहे। 64 : कि तुम में से हर फ़रीक़ के लिये कैसा अ़ज़ाब है। 65 : कुफ़्रो ज़लाल में दोनों बराबर हैं। 66 : कुफ़्र का और आ'माले ख़बीसा का। 67 : न उन के आ'माल के लिये न उन की अरवाह़ के लिये क्यूं कि उन के आ'माल व अरवाह़ दोनों ख़बीस हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह़ के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा कि आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएं न अरवाह़ के लिये या'नी न ज़िन्दगी में उन का अ़मल ही आस्मान पर जा सकता है न बा'दे मौत रूह़। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना हैं कि वोह ख़ैरो बरकत और रह़मत के नुज़ूल से मह़रूम रहते हैं। 68 : और येह

www.dawateislami.net

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي

उन्हें आग ही बिछोना और आग ही ओढ़ना[70] और ज़ालिमों को हम ऐसा ही

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا

बदला देते हैं और वोह जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताक़त से ज़ियादा

وُسْعَهَاۤ ؗ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا

बोझ नहीं रखते वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना और हम ने उन के

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ

सीनों में से कीने खींच लिये[71] उन के नीचे नहरें बहेंगी और कहेंगे[72] सब ख़ूबियां अल्लाह को

الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۫ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ

जिस ने हमें उस की राह दिखाई[73] और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता बेशक

جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا

हमारे रब के रसूल हक़ लाए[74] और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली[75]

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ الثلث

सिला तुम्हारे आ'माल का और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا

हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था[76] तो क्या तुम ने भी पाया जो तुम्हारे रब ने[77] सच्चा वा'दा तुम्हें दिया था बोले

मुहाल तो कुफ़्फ़ार का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल क्यूं कि मुहाल पर जो मौक़ूफ़ हो वोह मुहाल होता है, इस से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार का जन्नत से महरूम रहना क़त्ई है। **69 :** मुजरिमीन से यहां कुफ़्फ़ार मुराद हैं क्यूं कि ऊपर इन की सिफ़त में आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब और उन से तकब्बुर करने का बयान हो चुका है। **70 :** या'नी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **71 :** जो दुन्या में उन के दरमियान थे और तबीअतें साफ़ कर दी गईं और उन में आपस में न बाक़ी रही मगर महब्बत व मुवद्दत (प्यार)। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि येह हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुवा और येह भी आप से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तल्हा और ज़ुबैर उन में से हों जिन के हक़ में अल्लाह तआला ने "وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ" फ़रमाया। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा के इस इर्शाद ने रिफ़्ज़ (राफ़िज़ियों के अक़ीदे) की बेख़ो बुन्याद का क़ल्अ क़म्अ कर दिया। **72 :** मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होते वक़्त **73 :** और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिस का येह अज्रो सवाब है और हम पर फ़ज़्लो रहमत फ़रमाई और अपने करम से अज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ किया। **74 :** और जो उन्हों ने हमें दुन्या में सवाब की ख़बरें दीं वोह सब हम ने इयां देख लीं, उन की हिदायत हमारे लिये कमाले लुत्फ़ो करम था। **75 :** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे एक निदा करने वाला पुकारेगा तुम्हारे लिये ज़िन्दगानी है कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये ऐश है कभी तंगहाल न होगे। जन्नत को मीरास फ़रमाया गया इस में इशारा है कि वोह महूज़ अल्लाह के फ़ज़्ल से हासिल हुई। **76 :** और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान व ताअत पर अज्रो सवाब पाओगे। **77 :** कुफ़्र व ना फ़रमानी पर अज़ाब का।

نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ۙ الَّذِيْنَ

हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि अल्लाह की ला'नत ज़ालिमों पर जो

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ

अल्लाह की राह से रोकते हैं[78] और उसे कजी चाहते हैं[79] और आख़िरत का

كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ بَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَ عَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ

इन्कार रखते हैं और जन्नत व दोज़ख़ के बीच में एक पर्दा है[80] और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे[81] कि दोनों फ़रीक़ को

كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَ نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۫ لَمْ

उन की पेशानियों से पहचानेंगे[82] और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर येह[83]

يَدْخُلُوْهَا وَ هُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ اِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ

जन्नत में न गए और इस की तमअ़ रखते हैं और जब उन की[84] आंखें दोज़ख़ियों की तरफ़

النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ؑ وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ

फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर और आ'राफ़ वाले

الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ

कुछ मर्दों को[85] पुकारेंगे जिन्हें उन की पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था

78 : और लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से मन्अ़ करते हैं। 79 : या'नी येह चाहते हैं कि दीने इलाही को बदल दें और जो त़रीक़ा अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है उस में तग़य्युर डाल दें। (خازن) 80 : जिस को आ'राफ़ कहते हैं। 81 : येह किस त़बक़े के होंगे इस में बहुत मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : एक क़ौल तो येह है कि येह वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर हों वोह आ'राफ़ पर ठहरे रहेंगे जब अहले जन्नत की त़रफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़ख़ियों की त़रफ़ देखेंगे तो कहेंगे या रब ! हमें ज़ालिम क़ौम के साथ न कर। आख़िर कार जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे, एक क़ौल येह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उन के वालिदैन उन से नाराज़ थे वोह आ'राफ़ में ठहराए जाएंगे, एक क़ौल येह है : जो लोग ऐसे हैं कि उन के वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो, एक नाराज़ वोह आ'राफ़ में रखे जाएंगे। इन अक़्वाल से मा'लूम होता है कि अहले आ'राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है। मुजाहिद का क़ौल येह है : आ'राफ़ में सुलहा, फ़ुक़रा, उ़लमा होंगे और उन का वहां क़ियाम इस लिये होगा कि दूसरे उन के फ़ज़्लो शरफ़ को देखें। और एक क़ौल येह है कि आ'राफ़ में अम्बिया होंगे और वोह इस मकाने आ़ली में तमाम अहले क़ियामत पर मुमताज़ किये जाएंगे और उन की फ़ज़ीलत और रुत्बए आ़लिया का इज़्हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़ख़ी उन को देखें और वोह उन सब के अह़वाल और सवाब व अ़ज़ाब के मिक़्दार व अह़वाल का मुआयना करें। इन क़ौलों पर अस्ह़ाबे आ'राफ़ जन्नतियों में से अफ़्ज़ल लोग होंगे क्यूं कि वोह बाक़ियों से मर्तबे में आ'ला हैं। इन तमाम अक़्वाल में कुछ तनाक़ुज़ (टकराव) नहीं है इस लिये कि येह हो सकता है कि हर त़बक़े के लोग आ'राफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराने की ह़िक्मत जुदागाना हो। 82 : दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़ख़ी मुराद हैं, जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद और तरो ताज़ा होंगे और दोज़ख़ियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली, येही उन की अ़लामतें हैं। 83 : आ'राफ़ वाले अभी तक 84 : आ'राफ़ वालों की 85 : कुफ़्फ़ार में से

www.dawateislami.net

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ الَّذِیْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا یَنَالُهُمُ اللّٰهُ

और वोह जो तुम ग़ुरूर करते थे[86] क्या येह हैं वोह लोग[87] जिन पर तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन को अपनी रहमत कुछ

بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَیْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

न करेगा[88] उन से तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को अन्देशा न कुछ ग़म

وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِیْضُوْا عَلَیْنَا مِنَ الْمَآءِ

और दोज़ख़ी बिहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो

اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِیْنَ ﴿٥٠﴾ۙ

या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया[89] कहेंगे बेशक अल्लाह ने इन दोनों को काफ़िरों पर ह़राम किया है

الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا دِیْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا ۚ

जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया[90] और दुन्या की ज़ीस्त ने उन्हें फ़रेब दिया[91]

فَالْیَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ یَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا

तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्हों ने उस दिन के मिलने का ख़याल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से

یَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

इन्कार करते थे और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए[92] जिसे हम ने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रह़मत

لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ یَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِیْلَهٗ ؕ یَوْمَ یَاْتِیْ تَاْوِیْلُهٗ

ईमान वालों के लिये काहे की राह देखते हैं मगर उस की, कि इस किताब का कहा हुवा अन्जाम सामने आए जिस दिन इस का बताया अन्जाम वाक़ेअ़ होगा[93]

یَقُوْلُ الَّذِیْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ

बोल उठेंगे वोह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे[94] कि बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लाए थे

86 : और अहले आ'राफ़ ग़रीब मुसल्मानों की त़रफ़ इशारा कर के कुफ़्फ़ार से कहेंगे **87 :** जिन को तुम दुन्या में ह़क़ीर समझते थे और **88 :** अब देख लो कि जन्नत के दाइमी ऐ़शो राह़त में किस इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हैं। **89 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जब आ'राफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़ख़ियों को भी त़मअ़ दामनगीर होगी और वोह अ़र्ज़ करेंगे : या रब ! जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त फ़रमा कि हम उन्हें देखें उन से बात करें, इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की ने'मतों में देखेंगे और पहचानेंगे लेकिन अहले जन्नत उन दोज़ख़ी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्यूं कि दोज़ख़ियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ गई होंगी तो वोह जन्नतियों को नाम ले ले कर पुकारेंगे कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को और कहेगा मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें अल्लाह ने दिया है खाने को दो, इस पर अहले जन्नत **90 :** कि ह़लाल व ह़राम में अपनी हवाए नफ़्स के ताबेअ़ हुए, जब ईमान की त़रफ़ उन्हें दा'वत दी गई मस्ख़रगी करने लगे। **91 :** उस की लज़्ज़तों में आख़िरत को भूल गए। **92 :** क़ुरआन शरीफ़ **93 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **94 :** न उस पर ईमान लाते थे न उस के मुत़ाबिक़ अ़मल

فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا

तो हैं कोई हमारे सिफ़ारिशी जो हमारी शफ़ाअ़त करें या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के ख़िलाफ़

نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ ع

काम करें[95] बेशक उन्हों ने अपनी जानें नुक़्सान में डालीं और उन से खोए गए जो बोहतान उठाते थे[96]

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मान और ज़मीन[97] छ[6] दिन में बनाए[98] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है[99] रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ

और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत

اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

वाला है अल्लाह रब सारे जहान का अपने रब से दुआ़ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾ ج وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ

उसे पसन्द नहीं[100] और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ[101] इस के संवरने के बा'द[102] और उस से दुआ़ करो

करते थे। **95 :** या'नी बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत और ना फ़रमानी के ताअ़त और फ़रमां बरदारी इख़्तियार करें मगर न उन्हें शफ़ाअ़त मुयस्सर आएगी न दुन्या में वापस भेजे जाएंगे। **96 :** और झूट बकते थे कि बुत ख़ुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअ़त करेंगे अब आख़िरत में उन्हें मा'लूम हो गया कि उन के यह दा'वे झूटे थे। **97 :** मअ़ उन तमाम चीज़ों के जो इन के दरमियान हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ''। **98 :** छ[6] दिन से दुन्या के छ[6] दिनों की मिक़्दार मुराद है क्यूं कि येह दिन तो उस वक़्त थे नहीं, आफ़्ताब ही न था जिस से दिन होता और अल्लाह तआ़ला क़ादिर था कि एक लम्हे में या इस से कम में पैदा फ़रमाता लेकिन इतने अ़र्से में उन की पैदाइश फ़रमाना ब तक़ाज़ाए हिक्मत है और इस से बन्दों को अपने कामों में तदरीज इख़्तियार करने का सबक़ मिलता है। **99 :** येह इस्तवा मुतशाबहात में से है हम इस पर ईमान लाते हैं कि अल्लाह की इस से जो मुराद है हक़ है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया कि इस्तवा मा'लूम है और इस की कैफ़िय्यत मज्हूल और इस पर ईमान लाना वाजिब। हज़रते मुतर्जिम قدس سرہٗ ने फ़रमाया : या इस के मा'ना येह हैं कि आफ़रीनिश (काएनात) का ख़ातिमा अ़र्श पर जा ठहरा। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَسْرَارِ كِتَابِهٖ। **100 :** दुआ़ अल्लाह तआ़ला से ख़ैर तलब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इबादत है क्यूं कि दुआ़ करने वाला अपने आप को आ़जिज़ व मोहताज और अपने परवरदगार को हक़ीक़ी क़ादिर व हाजत रवा ए'तिक़ाद करता है, इसी लिये हदीस शरीफ़ में वारिद हुवा : "اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" (या'नी दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है) तजरिबे से इज़्हारे इज्ज़ व ख़ुशूअ़ मुराद है और अदब दुआ़ में येह है कि आहिस्ता हो। हसन رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि आहिस्ता दुआ़ करना अ़लानिया दुआ़ करने से सत्तर दरजे ज़ियादा अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** इस में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है कि इबादात में इज़्हार अफ़्ज़ल है या इख़्फ़ा, बा'ज़ कहते हैं कि इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है क्यूं कि वोह रिया से बहुत दूर है, बा'ज़ कहते हैं कि इज़्हार अफ़्ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रग़्बते इबादत पैदा होती है। तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशए रिया न हो तो इज़्हार अफ़्ज़ल है। बा'ज़ हज़रात येह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज़ इबादतों में इज़्हार अफ़्ज़ल है, नमाज़ फ़र्ज़ मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात

خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَهُوَ

डरते और तमअ करते बेशक अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है और वोही है

الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ بُشْرًۢا بَیْنَ یَدَیْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَقَلَّتْ

कि हवाएं भेजता है उस की रहमत के आगे मुज़्दा सुनाती[103] यहां तक कि जब उठा लाएं

سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ

भारी बादल हम ने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया[104] फिर उस से पानी उतारा फिर उस से

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰی لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

तरह तरह के फल निकाले इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे[105] कहीं तुम नसीहत मानो

وَالْبَلَدُ الطَّیِّبُ یَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا یَخْرُجُ

और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्ज़ा अल्लाह के हुक्म से निकलता है[106] और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता

اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّشْكُرُوْنَ ﴿۵۸﴾ ع لَقَدْ اَرْسَلْنَا

मगर थोड़ा ब मुश्किल[107] हम यूंही तरह तरह से आयतें बयान करते हैं[108] उन के लिये जो एहसान मानें बेशक हम ने

نُوْحًا اِلٰی قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ

नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा[109] तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[111]

का इज़्हार कर के देना ही अफ़्ज़ल है और नफ़्ल इबादात में ख़्वाह वोह नमाज़ हो या सदक़ा वग़ैरा उन में इख़्फ़ा अफ़्ज़ल है। दुआ में हद से बढ़ना कई तरह होता है उस में से एक येह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीख़े। **101 :** कुफ़्रो मा'सियत व ज़ुल्म कर के **102 :** अम्बिया के तशरीफ़ लाने, हक़ की दा'वत फ़रमाने, अहकाम बयान करने, अद्ल क़ाइम फ़रमाने के बा'द। **103 :** बारिश का। और रहमत से यहां मींह मुराद है। **104 :** जहां बारिश न हुई थी सब्ज़ा न जमा था। **105 :** या'नी जिस तरह मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बा'द ज़िन्दगी अता फ़रमाता और उस को सर सब्ज़ और शादाब फ़रमाता है और उस में खेती दरख़्त फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाएगा क्यूं कि जो ख़ुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर क़ादिर है उसे मुर्दों का ज़िन्दा करना क्या बईद है, क़ुदरत की येह निशानी देख लेने के बा'द आ़क़िल, सलीमुल हवास को मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने में कुछ तरद्दुद बाक़ी नहीं रहता। **106 :** येह मोमिन की मिसाल है जिस तरह उ़म्दा ज़मीन पानी से नफ़्अ पाती है और उस में फूल फल पैदा होते हैं इसी तरह जब मोमिन के दिल पर क़ुरआनी अन्वार की बारिश होती है तो वोह उस से नफ़्अ पाता है ईमान लाता है ताआ़त व इबादात से फलता फूलता है। **107 :** येह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़्अ नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर क़ुरआने पाक से मुन्तफ़ेअ (फ़ाइदा हासिल करने वाला) नहीं होता। **108 :** जो तौहीद व ईमान पर हुज्जत व बुरहान हैं। **109 :** हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام के वालिद का नाम लमक है वोह मुतवश्शिलख़ के वोह अख़्नूख़ عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं अख़्नूख़ हज़रते इदरीस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम है, हज़रते नूह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام चालीस या पचास साल की उ़म्र में नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए। आयाते बाला में अल्लाह तआला ने अपने दलाइले क़ुदरत व ग़राइबे सन्अ़त बयान फ़रमाए जिन से उस की तौहीद व रबूबिय्यत साबित होती है और मरने के बा'द उठने और ज़िन्दा होने की सिह्हत पर दलाइले क़ातेआ़ क़ाइम किये इस के बा'द अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाता है और उन के उन मुआमलात का जो उन्हीं उम्मतों के साथ पेश आए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि फ़क़त आप ही की क़ौम ने क़बूले हक़ से ए'राज़ नहीं किया बल्कि पहली उम्मतें भी ए'राज़ करती रहीं और अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का

www.dawateislami.net

إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِۦٓ إِنَّا

बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[112] उस की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम

لَنَرَىٰكَ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ يَٰقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَٰلَةٌ وَلَٰكِنِّي

तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं कहा ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं

رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٦١﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَٰلَٰتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ

मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता

وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن

और मैं **अल्लाह** की त़रफ़ से वोह इ़ल्म रखता हूं जो तुम नहीं रखते और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास

رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا۟ وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीह़त आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त[113] कि वोह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रह़म हो

فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَٰهُ وَالَّذِينَ مَعَهُۥ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا۟

तो उन्हों ने उसे[114] झुटलाया तो हम ने उसे और जो[115] उस के साथ कश्ती में थे नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को

ع ٨ ١٥ بِـَٔايَٰتِنَآ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ ع وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ

डुबो दिया बेशक वोह अन्धा गुरोह था[116] और आ़द की त़रफ़[117] उन की बिरादरी से हूद को भेजा[118] कहा

يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا۟ اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ

ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[119] उस

अन्जाम दुन्या में हलाक और आख़िरत में अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है, इस से ज़ाहिर है कि अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले ग़ज़बे इलाही के सज़ावार होते हैं जो शख़्स सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करेगा उस का भी येही अन्जाम होगा। अम्बिया के इन तज़्किरों में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील है क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मी थे फिर आप का इन वाक़िआ़त को तफ़्सीलन बयान फ़रमाना बिल ख़ुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उ़लमा ब कसरत मौजूद थे और सरगर्मे मुख़ालफ़त भी थे ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते वहां हुज़ूर का इन वाक़िआ़त को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व ह़ैरान रह जाना सरीह़ दलील है कि आप नबिय्ये बरह़क़ हैं और परवर्दगारे आ़लम ने आप पर उ़लूम के दरवाज़े खोल दिये हैं। **110 :** वोही मुस्तह़िक़े इ़बादत है **111 :** तो उस के सिवा किसी को न पूजो। **112 :** रोज़े क़ियामत का या रोज़े तूफ़ान का अगर तुम मेरी नसीह़त क़बूल न करो और राहे रास्त पर न आओ। **113 :** जिस को तुम ख़ूब जानते और उस के नसब को पहचानते हो **114 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को **115 :** उन पर ईमान लाए और **116 :** जिसे ह़क़ नज़र न आता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि उन के दिल अन्धे थे, नूरे मा'रिफ़त से उन को बहरा न था। **117 :** यहां आ़दे ऊला मुराद है येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम है और आ़दे सानिया ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम है उसी को समूद कहते हैं, इन दोनों के दरमियान सो बरस का फ़ासिला है। (جمل) **118 :** हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने **119 :** **अल्लाह** के अ़ज़ाब का।

www.dawateislami.net

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا لَنَظُنُّكَ

की क़ौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों

مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ

में गुमान करते हैं[120] कहा ऐ मेरी क़ौम मुझे बे वुक़ूफ़ी से क्या अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) मैं तो परवर्दगारे

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶۷﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿۶۸﴾

आ़लम का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद ख़ैर ख़्वाह हूं[121]

اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए

وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ زَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ

और याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह़ का जा नशीन किया[122] और तुम्हारे बदन का फैलाव

بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ

बढ़ाया[123] तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो[124] कि कहीं तुम्हारा भला हो बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो[125] कि

اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَ نَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ

हम एक **अल्लाह** को पूजें और जो[126] हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ[127] जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ

सच्चे हो कहा[128] ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अ़ज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया[129]

120 : या'नी रिसालत के दा'वे में सच्चा नहीं जानते। 121 : कुफ़्फ़ार का ह़ज़रते हूद عليه السلام की जनाब में येह गुस्ताख़ाना कलाम कि तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं झूटा गुमान करते हैं इन्तिहा दरजे की बे अदबी और कमीनगी थी और वोह मुस्तह़िक़ इस बात के थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर आप ने अपने अख़्लाक़ो अदब और शाने ह़िल्म से जो जवाब दिया उस में शाने मुक़ाबला ही न पैदा होने दी और उन की जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई। इस से दुन्या को सबक़ मिलता है कि सुफ़हा (बे वुक़ूफ़) और बद ख़िसाल (बुरे) लोगों से इस त़रह़ मुख़ात़बा (कलाम) करना चाहिये। مع هذا (इस के साथ) आप ने अपनी रिसालत और ख़ैर ख़्वाही व अमानत का ज़िक्र फ़रमाया। इस से येह मस्अला मा'लूम हुवा कि अहले इल्मो कमाल को ज़रूरत के मौक़अ़ पर अपने मन्सबो कमाल का इज़्हार जाइज़ है। 122 : येह उस का कितना बड़ा एह़सान है 123 : और बहुत ज़ियादा क़ुव्वत व तूले क़ामत इनायत किया 124 : और ऐसे मुन्इम (ने'मत अ़त़ा फ़रमाने वाले) पर ईमान लाओ और त़ाअ़त व इबादात बजा ला कर उस के एह़सान की शुक्र गुज़ारी करो 125 : या'नी अपने इबादत ख़ाने से। ह़ज़रते हूद عليه السلام अपनी क़ौम की बस्ती से अ़लाह़दा एक तन्हाई के मक़ाम में इबादत किया करते थे, जब आप के पास वह़्य आती तो क़ौम के पास आ कर सुना देते। 126 : बुत 127 : वोह अ़ज़ाब 128 : ह़ज़रते हूद عليه السلام ने 129 : और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अ़ज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया।

www.dawateislami.net

اَتُجَادِلُوْنَنِیْ فِیْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا

क्या मुझ से ख़ाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये[130] अल्लाह ने उन की कोई

مِنْ سُلْطٰنٍؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ﴿۷۱﴾ فَاَنْجَیْنٰهُ

सनद न उतारी तो रास्ता देखो[131] मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूं तो हम ने उसे और उस

وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ مَا

के साथ वालों को[132] अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमा कर नजात दी[133] और जो हमारी आयतें झुटलाते[134] थे उन की जड़ काट दी[135] और वोह

كَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ﴿۷۲﴾ؑ وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًاۘ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا

ईमान वाले न थे और समूद की तरफ़[136] उन की बिरादरी से सालेह को भेजा कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को

ع ٩ / ٨ / ١٦ وقف لازم

130 : और उन्हें पूजने लगे और मा'बूद मानने लगे बा वुजूदे कि इन की कुछ हक़ीक़त ही नहीं है और उलूहिय्यत के मा'ना से क़त्अन ख़ाली व आरी हैं। **131 :** अ़ज़ाबे इलाही का **132 :** जो उन के मुत्तबेअ़ थे और उन पर ईमान लाए थे **133 :** उस अ़ज़ाब से जो क़ौमे हूद पर उतरा। **134 :** और हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करते **135 :** और इस तरह हलाक कर दिया कि उन में एक भी न बचा। मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि क़ौमे आ़द अहक़ाफ़ में रहती थी जो उ़मान व हज़्रमौत के दरमियान अ़लाक़ए यमन में एक रेगिस्तान है, इन्हों ने ज़मीन को फ़िस्क़ से भर दिया था और दुन्या की क़ौमों को अपनी जफ़ाकारियों से अपने ज़ोरे क़ुव्वत के ज़ो'म में पामाल कर डाला था, येह लोग बुत परस्त थे उन के एक बुत का नाम सुदाअ, एक का सुमूद, एक का हबाअ था। अल्लाह तआ़ला ने इन में हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को मब्ऊ़स फ़रमाया, आप ने उन्हें तौहीद का हुक्म दिया शिर्क व बुत परस्ती और ज़ुल्मो जफ़ाकारी की मुमानअ़त की, इस पर वोह लोग मुन्किर हुए आप की तक्ज़ीब करने लगे और कहने लगे : हम से ज़ियादा ज़ोर आवर कौन है, चन्द आदमी उन में से हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए वोह थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रहते थे, उन मोमिनीन में से एक शख़्स का नाम मरसद इब्ने सा'द बिन उफ़ैर था वोह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, जब क़ौम ने सरकशी की और अपने नबी हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितम गारियों में ज़ियादती की और बड़ी मज़बूत इमारतें बनाईं मा'लूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वोह दुन्या में हमेशा ही रहेंगे, जब उन की नौबत यहां तक पहुंची तो अल्लाह तआ़ला ने बारिश रोक दी तीन साल बारिश न हुई अब वोह बहुत मुसीबत में मुब्तला हुए और उस ज़माने में दस्तूर येह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल्लाहिल हराम में हाज़िर हो कर अल्लाह तआ़ला से उस के दफ़्अ़ की दुआ़ करते थे, इसी लिये उन लोगों ने एक वफ़्द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़्द में क़ील बिन अ़नज़ा और नईम बिन हज़्ज़ाल और मरसद बिन सा'द थे येह वोही साहिब हैं जो हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अ़मालीक़ की सुकूनत थी और इन लोगों का सरदार मुआ़विया बिन बक्र था इस शख़्स का नानिहाल क़ौमे आ़द में था इसी अ़लाक़े (तअ़ल्लुक़) से येह वफ़्द मक्कए मुकर्रमा के हवाली (गिर्दो नवाह) में मुआ़विया बिन बक्र के यहां मुक़ीम हुवा, उस ने इन लोगों का बहुत इक्राम किया निहायत ख़ातिरो मदारात की, येह लोग वहां शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे, इस तरह इन्हों ने ऐशो नशात में एक महीना बसर किया मुआ़विया को ख़याल आया कि येह लोग तो राहत में पड़ गए और क़ौम की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआ़विया बिन बक्र को येह ख़याल भी था कि अगर वोह इन लोगों से कुछ कहे तो शायद वोह येह ख़याल करें कि अब इस को मेज़बानी गिरां गुज़रने लगी है इस लिये उस ने गाने वाली बांदी को ऐसे अश्आर दिये जिन में क़ौमे आ़द की हाजत का तज़्किरा था, जब बांदी ने वोह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस क़ौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं, अब उन्हें ख़याल हुवा कि हरम शरीफ़ में दाख़िल हो कर क़ौम के लिये पानी बरसने की दुआ़ करें, उस वक़्त मरसद बिन सा'द ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! तुम्हारी दुआ़ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की इताअ़त करो और अल्लाह तआ़ला से तौबा करो तो बारिश होगी और उस वक़्त मरसद ने अपने इस्लाम का इज़्हार कर दिया, उन लोगों ने मरसद को छोड़ दिया और ख़ुद मक्कए मुकर्रमा जा कर दुआ़ की, अल्लाह तआ़ला ने तीन अब्र (बादल) भेजे एक सफ़ेद एक सुर्ख़ एक सियाह और आस्मान से निदा हुई कि ऐ क़ील ! अपने और अपनी क़ौम के लिये इन में से एक अब्र इख़्तियार कर। उस ने अब्रे सियाह को इख़्तियार किया ब ईं ख़याल कि इस से बहुत पानी बरसेगा। चुनान्चे वोह अब्र क़ौमे आ़द की तरफ़ चला और वोह लोग उस को देख कर बहुत ख़ुश हुए, मगर उस में से एक हवा चली वोह इस शिद्दत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी, येह देख कर वोह लोग घरों में दाख़िल हुए और अपने दरवाज़े बन्द कर लिये मगर हवा की तेज़ी से बच न सके उस ने दरवाज़े भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और क़ुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नुमूदार हुए जिन्हों ने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया, हज़रते हूद मोमिनीन को ले कर क़ौम से जुदा हो गए थे इस लिये वोह सलामत रहे, क़ौम के हलाक होने

www.dawateislami.net

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ هٰذِهٖ

पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से[137] रोशन दलील आई[138] येह

نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ

अल्लाह का नाक़ा है[139] तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि **अल्लाह** की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ[140]

فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ

कि तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब आ लेगा और याद करो[141] जब तुम को आ़द का जा नशीन

عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِی الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में मह़ल बनाते हो[142] और पहाड़ों में

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ

मकान तराशते हो[143] तो **अल्लाह** की ने'मतें याद करो[144] और ज़मीन में फ़साद मचाते

مُفْسِدِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

न फिरो उस की क़ौम के तकब्बुर वाले कमज़ोर

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ

मुसल्मानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह़ अपने रब के रसूल हैं

قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا

बोले वोह जो कुछ ले कर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं[145] मुतकब्बिर बोले जिस

بِالَّذِیْۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

पर तुम ईमान लाए हमें उस से इन्कार है पस[146] नाक़ा की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की

के बा'द ईमानदारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और आख़िर उ़म्र शरीफ़ तक वहीं **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करते रहे। **136 :** जो ह़िजाज़ व शाम के दरमियान सर ज़मीने ह़िज्र में रहते थे। **137 :** मेरे सिद्क़े नुबुव्वत पर **138 :** जिस का बयान येह है कि **139 :** जो न किसी पीठ में रहा न किसी पेट में, न किसी नर से पैदा हुवा न मादा से, न ह़म्ल में रहा न इस की ख़िल्क़त तदरीजन (दरजा ब दरजा पैदाइश) कमाल को पहुंची, बल्कि त़रीक़ए आ़दिया के ख़िलाफ़ वोह पहाड़ के एक पथ्थर से दफ़्अ़तन पैदा हुवा, इस की येह पैदाइश मो'जिज़ा है, फिर वोह एक दिन पानी पीता है और तमाम क़बीलए समूद एक दिन। येह भी मो'जिज़ा है कि एक नाक़ा एक क़बीले के बराबर पी जाए इस के इलावा उस के पीने के रोज़ उस का दूध दोहा जाता था और वोह इतना होता था कि तमाम क़बीले को काफ़ी हो और पानी के क़ाइम मक़ाम हो जाए येह भी मो'जिज़ा और तमाम वुह़ूश व ह़ैवानात उस की बारी के रोज़ पानी पीने से बाज़ रहते थे येह भी मो'जिज़ा। इतने मो'जिज़ात ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام के सिद्क़े नुबुव्वत की ज़बर दस्त हुज्जतें हैं। **140 :** न मारो न हकाओ अगर ऐसा किया तो येही नतीजा होगा **141 :** ऐ क़ौमे समूद ! **142 :** मौसिमे गरमा में आराम करने के लिये **143 :** मौसिमे सरमा के लिये **144 :** और उस का शुक्र बजा लाओ। **145 :** उन के दीन को क़बूल करते हैं उन की रिसालत को मानते हैं। **146 :** क़ौमे समूद ने

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۷۷﴾

और बोले ऐ सालेह़ हम पर ले आओ[147] जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह़ को अपने घरों में औंधे रह गए तो सालेह़ ने उन से मुंह फेरा[148]

وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا

और कहा ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम

تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ

ख़ैर ख़्वाहों के ग़रज़ी [पसन्द करने वाले] ही नहीं और लूत़ को भेजा[149] जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या वोह बे ह़याई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَمَا كَانَ

शह्वत से जाते हो[150] औ़रतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग ह़द से गुज़र गए[151] और उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ

क़ौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन[152] को अपनी बस्ती से निकाल दो येह

147 : वोह अ़ज़ाब **148 :** जब कि उन्हों ने सरकशी की। मन्क़ूल है कि उन लोगों ने चहार शम्बा (बुध) को नाक़ा की कूंचें काटी थीं तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम इस के बा'द तीन रोज़ ज़िन्दा रहोगे पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे ज़र्द हो जाएंगे दूसरे रोज़ सुर्ख़ तीसरे रोज़ सियाह चौथे रोज़ अ़ज़ाब आएगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और यक शम्बा (इतवार) को दोपहर के क़रीब आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक हो गए। **149 :** जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भतीजे हैं, आप अहले सदूम की त़रफ़ भेजे गए और जब आप के चचा ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने शाम की त़रफ़ हिजरत की तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सर ज़मीने फ़िलिस्त़ीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام उर्दुन में उतरे अल्लाह तआ़ला ने आप को अहले सदूम की त़रफ़ मब्ऊ़स किया आप उन लोगों को दीने ह़क़ की दा'वत देते थे और फ़े'ले बद से रोकते थे जैसा कि आयत शरीफ़ में ज़िक्र आता है। **150 :** या'नी उन के साथ बद फ़े'ली करते हो **151 :** कि ह़लाल को छोड़ कर ह़राम में मुब्तला हुए और ऐसे ख़बीस फ़े'ल का इरतिकाब किया। इन्सान को शह्वत बक़ाए नस्ल और दुन्या की आबादी के लिये दी गई है और औ़रतें मह़ल्ले शह्वत व मौज़ए़ नस्ल बनाई गई हैं कि उन से ब त़रीक़ए मा'रूफ़ ह़स्बे इजाज़ते शरअ़ औलाद ह़ासिल की जाए, जब आदमियों ने औ़रतों को छोड़ कर उन का काम मर्दों से लेना चाहा तो वोह ह़द से गुज़र गए और उन्हों ने इस क़ुव्वत के मक़्सदे सह़ीह़ को फ़ौत कर दिया क्यूं कि मर्द को न ह़म्ल रहता है न वोह बच्चा जनता है, तो इस के साथ मश्ग़ूल होना सिवाए शैत़ानियत के और क्या है। उ़लमाए सियर व अख़्बार का बयान है कि क़ौमे लूत़ की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां ग़ल्ले और फल ब कसरत पैदा होते थे ज़मीन का दूसरा ख़ित़्ता उस का मिस्ल न था इस लिये जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे, ऐसे वक़्त में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन से कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो तो जब वोह लोग आएं तो उन के साथ बद फ़े'ली करो, इस त़रह़ येह फ़े'ले बद उन्हों ने शैत़ान से सीखा और उन में राइज हुवा। **152 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ और उन के मुत्तबिईन।

www.dawateislami.net

أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ

लोग तो पाकीज़गी चाहते हैं[153] तो हम ने उसे[154] और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत वोह रह जाने

الْغٰبِرِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

वालों में हुई[155] और हम ने उन पर एक मींह बरसाया[156] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا

मुजरिमों का[157] और मद्यन की त़रफ़ उन की बिरादरी से शुऐ़ब को भेजा[158] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इबादत

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا

करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रोशन दलील आई[159] तो

الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تُفْسِدُوْا فِي

नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीज़ें घटा कर न दो[160] और ज़मीन में

الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸۵﴾ ۚ وَ

इन्तिज़ाम के बा'द फ़साद न फैलाओ येह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ और

لَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ

हर रास्ते पर यूं न बैठो कि राहगीरों को डराओ और अल्लाह की राह से उन्हें रोको[161] जो

اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَ اذْكُرُوْۤا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪

उस पर ईमान लाए और इस में कजी चाहो (टेढ़ा रास्ता ढूंडो) और याद करो जब तुम थोड़े थे उस ने तुम्हें बढ़ा दिया[162]

وَ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَ اِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ

और देखो[163] फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा और अगर तुम में एक गुरोह

153 : और पाकीज़गी ही अच्छी होती है वोही क़ाबिले मद्ह है लेकिन उस क़ौम का ज़ौक़ इतना ख़राब हो गया था कि उन्हों ने इस सिफ़ते मद्ह को ऐब क़रार दिया। 154 : या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 155 : वोह काफ़िरा थी और उस क़ौम से महब्बत रखती थी। 156 : अ़जीब त़रह़ का जिस में ऐसे पथ्थर बरसे कि गन्धक और आग से मुरक्कब थे। एक क़ौल येह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह उस बारिश से हलाक किये गए। 157 : मुजाहिद ने कहा कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल हुए और उन्हों ने अपना बाज़ू क़ौमे लूत़ की बस्तियों के नीचे डाल कर उस ख़ित़्ते को उखाड़ लिया और आस्मान के क़रीब पहुंच कर उस को औंधा कर के गिरा दिया इस के बा'द पथ्थरों की बारिश की गई। 158 : ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने 159 : जिस से मेरी नुबुव्वत व रिसालत यक़ीनी त़ौर पर साबित होती है, इस दलील से मो'जिज़ा मुराद है। 160 : उन के ह़क़ दियानत दारी के साथ पूरे पूरे अदा करो। 161 : और दीन का इत्तिबाअ़ करने में लोगों के लिये सद्दे राह (रुकावट) न बनो। 162 : तुम्हारी ता'दाद ज़ियादा

اٰمَنُوْا بِالَّذِیْۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ طَآىِٕفَةٌ لَّمْ یُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى

उस पर ईमान लाया जो मैं ले कर भेजा गया और एक गुरोह ने न माना[164] तो ठहरे रहो यहां तक कि

یَحْكُمَ اللّٰهُ بَیْنَنَا ۚ وَ هُوَ خَیْرُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿۸۷﴾

अल्लाह हम में फ़ैसला करे[165] और अल्लाह का फ़ैसला सब से बेहतर[166]

कर दी तो उस की ने'मत का शुक्र करो और ईमान लाओ। **163 :** ब निगाहे इब्रत पिछली उम्मतों के अह़वाल और गुज़रे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अन्जाम व मआल देखो और सोचो **164 :** या'नी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़्तिलाफ़ कर के दो फ़िर्क़े हो गए एक फ़िर्क़े ने माना और एक मुन्किर हुवा **165 :** कि तस्दीक़ करने वाले ईमानदारों को इ़ज़्ज़त दे और उन की मदद फ़रमाए और झुटलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अ़ज़ाब दे। **166 :** क्यूं कि वोह ह़ाकिमे ह़क़ीक़ी है।

www.dawateislami.net

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ

उस की क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुऐब क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले

اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا

मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा[167] क्या अगर्चे हम

كٰرِهِيْنَ ۝۸۸ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ

बेज़ार हों[168] ज़रूर हम अल्लाह पर झूट बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जाएं बा'द इस के कि

نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ

अल्लाह ने हमें इस से बचाया है[169] और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि अल्लाह चाहे[170]

رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ

जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया[171] ऐ रब हमारे हम में

بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ۝۸۹ وَقَالَ الْمَلَاُ

और हमारी क़ौम में हक़ फ़ैसला कर[172] और तेरा फ़ैसला सब से बेहतर और उस की क़ौम के

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝۹۰

काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐब के ताबेअ़ हुए तो ज़रूर तुम नुक़्सान में रहोगे

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝۹۱ۚۖ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

तो उन्हें ज़ल्ज़ले ने आ लिया तो सुब्ह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए[173] शुऐब को झुटलाने

167 : हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने 168 : हासिले मत़लब येह है कि हम तुम्हारा दीन न क़बूल करेंगे और अगर तुम ने हम पर जब्र किया जब भी न मानेंगे क्यूं कि 169 : और तुम्हारे दीने बातिल के क़ुब्ह (ऐब) व फ़साद का इल्म दिया है। 170 : और उस को हलाक करना मन्ज़ूर हो और ऐसा ही मुक़द्दर हो। 171 : अपने तमाम उमूर में वोही हमें ईमान पर साबित रखेगा वोही ज़ियादते ईक़ान (ईमान व यक़ीन में इज़ाफ़े) की तौफ़ीक़ देगा। 172 : ज़ज्जाज ने कहा कि इस के येह मा'ना हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे अम्र को ज़ाहिर फ़रमा दे, मुराद इस से येह है कि इन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जिस से इन का बातिल पर होना और हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام और इन के मुत्तबिईन का हक़ पर होना ज़ाहिर हो। 173 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस क़ौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उन पर दोज़ख़ की शदीद गरमी भेजी जिस से सांस बन्द हो गए, अब न उन्हें साया काम देता था न पानी, इस हालत में वोह तहख़ाने में दाख़िल हुए ताकि वहां उन्हें कुछ अम्न मिले लेकिन वहां बाहर से ज़ियादा गरमी थी। वहां से निकल कर जंगल की त़रफ़ भागे अल्लाह तआला ने एक अब्र (बादल) भेजा जिस में निहायत सर्द और ख़ुश गवार हवा थी उस के साए में आए और एक ने दूसरे को पुकार पुकार कर जम्अ़ कर लिया, मर्द औरतें बच्चे सब मुज्तमअ़ हो गए तो वोह ब हुक्मे इलाही आग बन कर भड़क उठा और वोह इस त़रह जल गए जैसे भाड़ (भट्टी) में कोई चीज़ भुन जाती है। क़तादा का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को अस्हाबे ऐका की त़रफ़ भी मब्ऊ़स फ़रमाया था और अहले मद्यन की त़रफ़ भी, अस्हाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़ल्ज़ले में गिरिफ़्तार हुए और एक होलनाक आवाज़ से हलाक हो गए।

www.dawateislami.net

مع شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ

वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐब को झुटलाने वाले वोही

الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۲﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ

तबाही में पड़े तो शुऐब ने उन से मुंह फेरा[174] और कहा ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका

ع ۱۱ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

और तुम्हारे भले को नसीहत की[175] तो क्यूंकर ग़म करूं काफ़िरों का और न भेजा हम ने किसी बस्ती में

مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿۹۴﴾

कोई नबी[176] मगर येह कि उस के लोगों को सख़्ती और तक्लीफ़ में पकड़ा[177] कि वोह किसी त़रह़ ज़ारी (आ़जिज़ी) करें[178]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई बदल दी[179] यहां तक कि वोह बहुत हो गए[180] और बोले बेशक हमारे बाप दादा को

الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَلَوْ اَنَّ

रन्ज व राह़त पहुंचे थे[181] तो हम ने उन्हें अचानक उन की ग़फ़्लत में पकड़ लिया[182] और अगर

اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ

बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते[183] तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें

الْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ

खोल देते[184] मगर उन्हों ने तो झुटलाया[185] तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया[186] क्या बस्तियों वाले[187]

174 : जब उन पर अ़ज़ाब आया। **175 :** मगर तुम किसी त़रह़ ईमान न लाए। **176 :** जिस को उस की क़ौम ने न झुटलाया हो। **177 :** फ़क़्रो तंगदस्ती और मरज़ व बीमारी में गिरिफ़्तार किया **178 :** तकब्बुर छोड़ें, तौबा करें, हुक्मे इलाही के मुत़ीअ़ बनें। **179 :** कि सख़्ती व तक्लीफ़ के बा'द राह़तो आसाइश पहुंचना और बदनी व माली ने'मतें मिलना इत़ाअ़त व शुक्र गुज़ारी का मुस्तदई (चाहने वाला) है। **180 :** उन की ता'दाद भी ज़ियादा हुई और माल भी बढ़े। **181 :** या'नी ज़माने का दस्तूर ही येह है कि कभी तक्लीफ़ होती है कभी राह़त, हमारे बाप दादा पर भी ऐसे अह़वाल गुज़र चुके हैं, इस से उन का मुद्दआ़ येह था कि पिछला ज़माना जो सख़्तियों में गुज़रा है वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कुछ उ़क़ूबत व सज़ा न था तो अपना दीन तर्क करना न चाहिये। न उन लोगों ने शिद्दत व तक्लीफ़ से कुछ नसीह़त ह़ासिल की न राह़तो आराम से उन में कोई जज़्बए शुक्रो त़ाअ़त पैदा हुवा वोह ग़फ़्लत में सरशार रहे। **182 :** जब कि उन्हें अ़ज़ाब का ख़याल भी न था। इन वाक़िआ़त से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और बन्दों को गुनाह व सरकशी तर्क कर के अपने मालिक का रिज़ा जू (रिज़ा मन्दी चाहने वाला) होना चाहिये। **183 :** और ख़ुदा और रसूल की इत़ाअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ को **अल्लाह** और रसूल ने मन्अ़ फ़रमाया उस से बाज़ रहते **184 :** हर त़रफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती, वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फल ब कसरत पैदा होते, रिज़्क़ की फ़राख़ी होती, अम्नो सलामती रहती, आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहते **185 : अल्लाह** के रसूलों को **186 :** और अन्वाए अ़ज़ाब में मुब्तला किया **187 :** कुफ़्फ़ार ख़्वाह वोह मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हों या गिर्दो पेश के या और कहीं के।

الْقُرٰۤى اَنْ یَّاْتِیَهُمْ بَاْسُنَا بَیَاتًا وَّ هُمْ نَآىٕمُوْنَؕ(۹۷) اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى

नहीं डरते कि उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को आए जब वोह सोते हों या बस्तियों वाले नहीं डरते कि

اَنْ یَّاْتِیَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ یَلْعَبُوْنَ(۹۸) اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِۚ-فَلَا یَاْمَنُ

उन पर हमारा अ़ज़ाब दिन चढ़े आए जब वोह खेल रहे हों[188] क्या **अल्लाह** की ख़ुफ़ी तदबीर से निडर हैं[189] तो **अल्लाह** की ख़ुफ़ी तदबीर

مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۠(۹۹) اَوَ لَمْ یَهْدِ لِلَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ ع ۱۲ ۲

से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले[190] और क्या वोह जो ज़मीन के मालिकों के बा'द उस के

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْۚ-وَ

वारिस हुए उन्हें इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं[191] और

نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا یَسْمَعُوْنَ(۱۰۰) تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ

हम उन के दिलों पर मोहर करते हैं कि वोह कुछ नहीं सुनते[192] येह बस्तियां हैं[193] जिन के

عَلَیْكَ مِنْ اَنْۢبَآىٕهَاۚ-وَ لَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِۚ-فَمَا

अह़वाल हम तुम्हें सुनाते हैं[194] और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें[195] ले कर आए तो वोह[196]

كَانُوْا لِیُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُؕ-كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ

इस क़ाबिल न हुए कि वोह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे[197] **अल्लाह** यूंही छाप (मोहर) लगा देता है काफ़िरों

الْكٰفِرِیْنَ(۱۰۱) وَ مَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍۚ-وَ اِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ

के दिलों पर[198] और उन में अक्सर को हम ने क़ौल (वा'दे) का सच्चा न पाया[199] और ज़रूर उन में अक्सर को

لَفٰسِقِیْنَ(۱۰۲) ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰیٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ

बे हुक्म ही पाया फिर उन[200] के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों[201] के साथ फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों

188 : और अ़ज़ाब के आने से ग़ाफ़िल हों। **189 :** और उस के ढील देने और दुन्यवी ने'मत देने पर मग़रूर हो कर उस के अ़ज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं। **190 :** और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ़ बिन ख़ैसम की साहिब ज़ादी ने उन से कहा क्या सबब है मैं देखती हूं सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं ? फ़रमाया ऐ नूरे नज़र तेरा बाप शब को सोने से डरता है। या'नी येह कि ग़ाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अ़ज़ाब न हो। **191 :** जैसा कि हम ने उन के मूरिसों (विरसा छोड़ने वालों) को उन की ना फ़रमानी के सबब हलाक किया। **192 :** और कोई पन्दो नसीह़त नहीं मानते। **193 :** क़ौमे ह़ज़रते नूह़ और आ़द व समूद और क़ौमे ह़ज़रते लूत़ व क़ौमे ह़ज़रते शुऐ़ब की। **194 :** ताकि मा'लूम हो कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों या'नी काफ़िरों के मुक़ाबले में मदद किया करते हैं। **195 :** या'नी मो'जिज़ाते बाहिरात (ज़बर दस्त मो'जिज़ात) **196 :** ता दमे मर्ग **197 :** अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब पर जमे ही रहे। **198 :** जिन की निस्बत उस के इ़ल्म में है कि कुफ़्र पर क़ाइम रहेंगे और कभी ईमान न लाएंगे। **199 :** उन्हों ने **अल्लाह** के अ़हद पूरे न किये, उन पर जब

مَلَا۠ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَقَالَ

की त़रफ़ भेजा तो उन्हों ने उन निशानियों पर ज़ियादती की[202] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) का और मूसा

مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۴﴾ حَقِیْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ

ने कहा ऐ फ़िरऔन मैं परवर्दगारे आ़लम का रसूल हूं मुझे सज़ावार (मुनासिब येही) है कि

اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ

अल्लाह पर न कहूं मगर सच्ची बात[203] मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से निशानी ले कर आया हूं[204] तो तू बनी इसराईल को

مَعِیَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ﴿۱۰۵﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰیَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ

मेरे साथ छोड़ दे[205] बोला अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो लाओ अगर

مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ ثُعْبَانٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّنَزَعَ یَدَهٗ

सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया[206] और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला

فَاِذَا هِیَ بَیْضَآءُ لِلنّٰظِرِیْنَ ﴿۱۰۸﴾ ع قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا

तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा[207] क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले येह तो एक

لَسٰحِرٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۰۹﴾ یُّرِیْدُ اَنْ یُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

इ़ल्म वाला जादूगर है[208] तुम्हें तुम्हारे मुल्क[209] से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मश्वरा है

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ اَرْسِلْ فِی الْمَدَآئِنِ حٰشِرِیْنَ ﴿۱۱۱﴾ یَاْتُوْكَ بِكُلِّ

बोले उन्हें और उन के भाई[210] को ठहरा और शहरों में लोग जम्अ़ करने वाले भेज दे कि हर इ़ल्म वाले

कभी कोई मुसीबत आती तो अ़ह्द करते कि या रब ! तू अगर इस से हमें नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर जब नजात पाते अ़ह्द से फिर जाते। (مدارک) **200 :** अम्बियाए मज़्कूरीन **201 :** या'नी मो'जिज़ाते वाज़ेह़ात मिस्ले यदे बैज़ा व अ़सा वग़ैरा **202 :** उन्हें झुटलाया और कुफ़्र किया। **203 :** क्यूं कि रसूल की येही शान है, वोह कभी ग़लत़ बात नहीं कहते और तब्लीग़े रिसालत में इन का किज़्ब मुम्किन नहीं। **204 :** जिस से मेरी रिसालत साबित है और वोह निशानी मो'जिज़ात हैं। **205 :** और अपनी क़ैद से आज़ाद कर दे ताकि वोह मेरे साथ अर्ज़े मुक़द्दसा में चले जाएं जो उन का वत़न है। **206 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अ़सा डाला तो वोह एक बड़ा अज़्दहा बन गया ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा उस ने ज़मीन पर रखा और एक क़स्रे शाही की दीवार पर फिर उस ने फ़िरऔन की त़रफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔन अपने तख़्त से कूद कर भागा और डर से उस की रीह़ निकल गई और लोगों की त़रफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए फ़िरऔन घर में जा कर चीख़ने लगा : ऐ मूसा ! तुम्हें उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ लो मैं तुम पर ईमान लाता हूं और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को भेजे देता हूं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने उस को उठा लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। **207 :** और उस की रोशनी और चमक नूरे आफ़्ताब पर ग़ालिब हो गई। **208 :** जिस ने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों को अ़सा अज़्दहा नज़र आने लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन मा'लूम होने लगा। **209 :** मिस्र **210 :** ह़ज़रते हारून।

www.dawateislami.net

سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَ جَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْۤا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا

जादूगर को तेरे पास ले आएं[211] और जादूगर फ़िरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इन्आम मिलेगा अगर

نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى

हम ग़ालिब आएं बोला हां और उस वक़्त तुम मुक़र्रब हो जाओगे बोले ऐ मूसा

اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِيَ وَ اِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّاۤ

या तो[212] आप डालें या हम डालने वाले हों[213] कहा तुम्हीं डालो[214] जब

اَلْقَوْا سَحَرُوْۤا اَعْيُنَ النَّاسِ وَ اسْتَرْهَبُوْهُمْ وَ جَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَ

उन्हों ने डाला[215] लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाए और

اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ ۚ

हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि अपना अ़सा डाल तो नागाह वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[216]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَ بَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ ۚ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَ انْقَلَبُوْا

तो हक़ साबित हुवा और उन का काम बातिल हुवा तो यहां वोह मग़्लूब पड़े और ज़लील

صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ ۚ وَ اُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ ۚۖ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾ ۙ

हो कर पलटे और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए[217] बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ

जो रब है मूसा और हारून का फ़िरऔन बोला तुम इस पर ईमान ले आए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं

211 : जो सेहर में माहिर हो और सब से फ़ाइक़, चुनान्चे लोग रवाना हुए और अत्राफ़ व बिलाद में तलाश कर के जादूगरों को ले आए। **212 :** पहले अपना अ़सा **213 :** जादूगरों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह अदब किया कि आप को मुक़द्दम किया और बिग़ैर आप की इजाज़त के अपने अ़मल में मश्ग़ूल न हुए, इस अदब का इवज़ (बदला) उन्हें येह मिला कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ईमान व हिदायत के साथ मुशर्रफ़ किया। **214 :** येह फ़रमाना हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इस लिये था कि आप उन की कुछ परवाह नहीं करते थे और ए'तिमादे कामिल रखते थे कि उन के मो'जिज़े के सामने सेहर नाकाम व मग़्लूब होगा। **215 :** अपना सामान जिस में बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे तो वोह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उन से भरा मा'लूम होने लगा। **216 :** जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा डाला तो वोह एक अ़ज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि येह इज्तिमाअ़ इस्कन्दरिया में हुवा था और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अज़्दहे की दुम समुन्दर के पार पहुंच गई थी वोह जादूगरों की सेहर कारियों को एक एक कर के निगल गया और तमाम रस्से व लठ्ठे जो उन्हों ने जम्अ़ किये थे जो तीन सो ऊंट का बार थे सब का ख़ातिमा कर दिया, जब मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की तरह अ़सा हो गया और उस का हज्म और वज़्न अपने हाल पर रहा, येह देख कर जादूगरों ने पहचान लिया कि अ़साए मूसा सेहर नहीं और क़ुदरते बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती, ज़रूर येह अम्र समावी है, येह बात समझ कर वोह "اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" (हम ईमान लाए जहान के रब पर) कहते हुए सज्दे में गिर गए। **217 :** या'नी येह मो'जिज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुवा कि वोह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गए, मा'लूम होता था कि किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं।

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِی الْمَدِیْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَاۤ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ

येह तो बड़ा जा'ल (मक्रो फ़रेब) है जो तुम सब ने[218] शह्र में फैलाया है कि शह्र वालों को इस से निकाल दो[219] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَیْدِیَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ

जान जाओगे[220] क़सम है कि मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा फिर तुम सब को

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ ۚ وَ مَا تَنْقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ

सूली दूंगा[221] बोले हम अपने रब की त़रफ़ फिरने वाले हैं[222] और तुझे हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि

اٰمَنَّا بِاٰیٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا

हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वोह हमारे पास आईं ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे[223] और हमें

مُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲۶﴾ ع وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ

मुसल्मान उठा[224] और क़ौमे फ़िरऔन के सरदार बोले क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है

لِیُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَ یَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं[225] और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मा'बूदों को छोड़ दे[226] बोला अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे

وَ نَسْتَحْیٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं[227] मूसा ने अपनी क़ौम से फ़रमाया

218 : या'नी तुम ने और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने सब ने मुत्तफ़िक़ हो कर **219 :** और ख़ुद इस पर मुसल्लत़ हो जाओ। **220 :** कि मैं तुम्हारे साथ किस त़रह़ पेश आता हूं। **221 :** नील के किनारे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि दुन्या में पहला सूली देने वाला पहला हाथ पाउं काटने वाला फ़िरऔ़न है। फ़िरऔ़न की इस गुफ़्तगू पर जादूगरों ने येह जवाब दिया जो अगली आयत में मज़्कूर है : **222 :** तो हमें मौत का क्या ग़म, क्यूं कि मर कर हमें अपने रब की लिक़ा (मुलाक़ात व दीदार) और उस की रह़मत नसीब होगी और जब सब को उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो वोह ख़ुद हमारे तेरे दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। **223 :** या'नी हम को सब्रे कामिल ताम अ़त़ा फ़रमा और इस कसरत से अ़त़ा फ़रमा जैसे पानी किसी पर उंडेल दिया जाता है। **224 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद। **225 :** या'नी मिस्र में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदलें और येह उन्हों ने इस लिये कहा था कि साहिरों के साथ छ[6] लाख आदमी ईमान ले आए थे। (مدارک) **226 :** कि न तेरी इ़बादत करें न तेरे मुक़र्रर किये हुए मा'बूदों की। सुद्दी का क़ौल है कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लिये बुत बनवा दिये थे और उन की इ़बादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूं और इन बुतों का भी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न दहरी था या'नी "सानेए़ आ़लम के वुजूद का मुन्किर" उस का ख़याल था कि आ़लमे सिफ़्ली के मुदब्बिर कवाकिब हैं इसी लिये उस ने सितारों की सूरतों पर बुत बनवाए थे, उन की ख़ुद भी इ़बादत करता था और दूसरों को भी उन की इ़बादत का हुक्म देता था और अपने आप को मुत़ाअ़ व मख़्दूम (सरदार व मालिक) ज़मीन का कहता था इसी लिये "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى" (मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं) कहता था। **227 :** क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदारों ने फ़िरऔ़न से येह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उस की क़ौम को इस लिये छोड़ता है कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाएं, इस से उन का मत़लब फ़िरऔ़न को ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के और आप की क़ौम के क़त्ल पर उभारना था, जब उन्हों ने ऐसा किया तो मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने उन को नुज़ूले अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम की ख़्वाहिश पर क़ुदरत नहीं रखता था क्यूं कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के मो'जिज़े की क़ुव्वत से मरऊ़ब हो चुका था इसी लिये उस ने अपनी क़ौम से येह कहा कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे

اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ۫ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ

अल्लाह की मदद चाहो[228] और सब्र करो[229] बेशक ज़मीन का मालिक **अल्लाह** है[230] अपने बन्दों में जिसे चाहे

عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ قَالُوْۤا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَ

वारिस बनाए[231] और आख़िर मैदान परहेज़ गारों के हाथ है[232] बोले हम सताए गए आप के आने से पहले[233] और

مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ

आप के तशरीफ़ लाने के बा'द[234] कहा क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उस की जगह

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ع ١٥

ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो[235] और बेशक हम ने फ़िरऔ़न वालों को

بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ

बरसों के क़ह़त़ और फलों के घटाने से पकड़ा[236] कि कहीं वोह नसीह़त मानें[237] तो जब उन्हें भलाई

الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ

मिलती[238] कहते येह हमारे लिये है[239] और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से

مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰۤىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَقَالُوْا

बद शुगूनी लेते[240] सुन लो उन के नसीबे (मुक़द्दर) की शामत तो **अल्लाह** के यहां है[241] लेकिन उन में अक्सर को ख़बर नहीं और बोले

लड़कियों को छोड़ देंगे, इस से उस का मत़लब येह था कि इस त़रह़ क़ौमे ह़ज़रत मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ता'दाद घटा कर उन की क़ुव्वत कम करेंगे और अ़वाम में अपना भरम रखने के लिये येह भी कह दिया कि हम बेशक उन पर ग़ालिब हैं, लेकिन फ़िरऔ़न के इस क़ौल से कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इस की शिकायत की, इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया (जो इस के बा'द आता है) **228 :** वोह काफ़ी है **229 :** मुसीबतों और बलाओं पर और घबराओ नहीं **230 :** और ज़मीने मिस्र भी इस में दाख़िल है। **231 :** येह फ़रमा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल को तवक़्क़ोअ़ (उम्मीद) दिलाई कि फ़िरऔ़न और उस की क़ौम हलाक होगी और बनी इसराईल उन की ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे। **232 :** उन्हीं के लिये फ़त्ह़ो ज़फ़र है और उन्हीं के लिये आ़क़िबते मह़मूदा। **233 :** कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों ने त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़ियादा क़त्ल किया था **234 :** कि अब वोह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और येह मुसीबतें कब दफ़्अ़ की जाएंगी। **235 :** और किस त़रह़ शुक्रे ने'मत बजा लाते हो। **236 :** और फ़क़्रो फ़ाक़ा की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया **237 :** और कुफ़्रो मा'सियत से बाज़ आएं। फ़िरऔ़न ने अपनी चार सो बरस की उ़म्र में से तीन सो बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुवा अब क़ह़त़ साली की सख़्ती उन पर इस लिये डाली गई कि वोह इस सख़्ती ही से ख़ुदा को याद करें और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हों, लेकिन वोह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ (पुख़्ता) हो चुके थे कि इन तक्लीफ़ों से भी उन की सरकशी ही बढ़ती रही। **238 :** और अरज़ानी व फ़राख़ी (या'नी फलों की कसरत) व अम्नो आ़फ़िय्यत होती **239 :** या'नी हम इस के मुस्तह़िक़ ही हैं और इस को **अल्लाह** का फ़ज़्ल न जानते और शुक्रे इलाही न बजा लाते। **240 :** और कहते कि येह बलाएं उन की वज्ह से पहुंचीं अगर येह न होते तो येह मुसीबतें न आतीं। **241 :** जो उस ने मुक़द्दर किया है वोही पहुंचता है और येह उन के कुफ़्र के सबब है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि बड़ी शामत तो वोह है जो उन के लिये **अल्लाह** के यहां है या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़।

www.dawateislami.net

مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾

तुम कैसी भी निशानी ले कर हमारे पास आओ कि हम पर उस से जादू करो हम किसी त़रह़ तुम पर ईमान लाने वाले नहीं[242]

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَ الْجَرَادَ وَ الْقُمَّلَ وَ الضَّفَادِعَ وَ الدَّمَ

तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान[243] और टीड़ी (टिड्डी) और घुन (किलनी या जूएं) और मेंडक और ख़ून

242 : जब उन की सरकशी यहां तक पहुंची तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन के ह़क़ में बद दुआ़ की, आप मुस्तजाबुद्दा'वात थे, दुआ़ क़बूल हुई । **243 :** जब जादूगरों के ईमान लाने के बा'द भी फ़िरऔ़नी अपने कुफ़्रो सरकशी पर जमे रहे तो उन पर आयाते इलाहिय्यह पयापै (लगातार) वारिद होने लगीं क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की थी कि या रब फ़िरऔ़न ज़मीन में बहुत सरकश हो गया और इस की क़ौम ने अ़ह्द शिकनी की, इन्हें ऐसे अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो इन के लिये सज़ा हो और मेरी क़ौम और बा'द वालों के लिये इ़ब्रत, तो **अल्लाह** तआ़ला ने तूफ़ान भेजा अब्र आया, अंधेरा हुवा, कसरत से बारिश होने लगी, क़िब्त़ियों के घरों में पानी भर गया, यहां तक कि वोह उस में खड़े रह गए और पानी उन की गरदनों की हंस्लियों तक आ गया, उन में से जो बैठा डूब गया, न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे । सनीचर से सनीचर (या'नी एक हफ़्ते से अगले हफ़्ते) तक सात रोज़ तक इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद इस के कि बनी इसराईल के घर उन के घरों से मुत्तसिल थे उन के घरों में पानी न आया, जब येह लोग आ़जिज़ हुए तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया : हमारे लिये दुआ़ फ़रमाइये कि येह मुसीबत रफ़्अ़ हो तो हम आप पर ईमान लाएं और बनी इसराईल को आप के साथ भेज दें । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत रफ़्अ़ हुई, ज़मीन में वोह सर सब्ज़ी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी, खेतियां ख़ूब हुईं, दरख़्त ख़ूब फले तो फ़िरऔ़नी कहने लगे येह पानी तो ने'मत था और ईमान न लाए । एक महीना तो आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने टिड्डी भेजी, वोह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाज़े, छतें, तख़्ते, सामान ह़त्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िब्त़ियों के घरों में भर गईं और बनी इसराईल के यहां न गईं, अब क़िब्त़ियों ने परेशान हो कर फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की, ईमान लाने का वा'दा किया, इस पर अ़ह्दो पैमान किया, सात रोज़ या'नी शम्बा से शम्बा तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे येह हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनान्चे ईमान न लाए, अ़ह्द वफ़ा न किया और अपने आ'माले ख़बीसा में मुब्तला हो गए । एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुम्मल भेजे । इस में मुफ़स्सिरीन का इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ कहते हैं क़ुम्मल घुन है, बा'ज़ कहते हैं जूं, बा'ज़ कहते हैं एक और छोटा सा कीड़ा है, उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिये, कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था, खाने में भर जाता था, अगर कोई दस बोरी गेहूं चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े खा जाते । येह कीड़े फ़िरऔ़नियों के बाल, भवें, पलकें चाट गए । जिस्म पर चेचक की त़रह़ भर जाते, सोना दुश्वार कर दिया था, इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी चीख़ पड़े और उन्हों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया हम तौबा करते हैं, आप इस बला के दफ़्अ़ होने की दुआ़ फ़रमाइये, चुनान्चे सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी ह़ज़रत की दुआ़ से रफ़्अ़ हुई लेकिन फ़िरऔ़नियों ने फिर अ़ह्द शिकनी की और पहले से ज़ियादा ख़बीस तर अ़मल शुरूअ़ किये । एक महीना अम्न में गुज़रने के बा'द फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ़ की तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेंडक भेजे और येह ह़ाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते थे, बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में पहुंचता । हांडियों में मेंडक, खानों में मेंडक, चूल्हों में मेंडक भर जाते थे आग बुझ जाती थी, लैटते थे तो मेंडक ऊपर सुवार होते थे, इस मुसीबत से फ़िरऔ़नी रो पड़े और ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से अ़ह्दो पैमान ले कर दुआ़ की तो सात रोज़ के बा'द येह मुसीबत भी दफ़्अ़ हुई और एक महीना आ़फ़िय्यत से गुज़रा लेकिन फिर उन्हों ने अ़ह्द तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की त़रफ़ लौटे, फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बद दुआ़ फ़रमाई तो तमाम कूंओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी ग़रज़ हर पानी उन के लिये ताज़ा ख़ून बन गया । उन्हों ने फ़िरऔ़न से इस की शिकायत की तो कहने लगा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी, उन्हों ने कहा : कैसी नज़र बन्दी ? हमारे बरतनों में ख़ून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं । फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया कि क़िब्त़ी बनी इसराईल के साथ एक ही बरतन से पानी लें तो जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता क़िब्त़ी निकालते तो उसी बरतन से ख़ून निकलता, यहां तक कि फ़िरऔ़नी औ़रतें प्यास से आ़जिज़ हो कर बनी इसराईल की औ़रतों के पास आईं और उन से पानी मांगा तो वोह पानी उन के बरतन में आते ही ख़ून हो गया । तो फ़िरऔ़नी औ़रत कहने लगी कि तू पानी अपने मुंह में ले कर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे, जब तक वोह पानी इसराईली औ़रत के मुंह में रहा पानी था जब फ़िरऔ़नी औ़रत के मुंह में पहुंचा ख़ून हो गया । फ़िरऔ़न ख़ुद प्यास से मुज़्तर (बेचैन) हुवा तो उस ने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी वोह रतूबत मुंह में पहुंचते ही ख़ून हो गई । सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने

www.dawateislami.net

اٰیٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ لَمَّا وَقَعَ

जुदा जुदा निशानियां[244] तो उन्हों ने तकब्बुर किया[245] और वोह मुजरिम क़ौम थी और जब

عَلَیْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا یٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَىٕنْ

उन पर अ़ज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ़ करो उस अ़हद के सबब जो उस का तुम्हारे पास है[246] बेशक अगर

كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ﴿۱۳۴﴾ ۚ

तुम हम पर से अ़ज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ یَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

फिर जब हम उन से अ़ज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا

तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया[247] इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उन से

غٰفِلِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِیْنَ كَانُوْا یُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ

बे ख़बर थे[248] और हम ने उस क़ौम को[249] जो दबा ली (कमज़ोर समझी) गई थी इस ज़मीन[250] के पूरब

الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَهَا الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَا ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى

पश्चिम (मशरिक़ो मग़रिब) का वारिस किया जिस में हम ने बरकत रखी[251] और तेरे रब का अच्छा वा'दा

عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ دَمَّرْنَا مَا كَانَ یَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ

बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का और हम ने बरबाद कर दिया[252] जो कुछ फ़िरऔ़न और

قَوْمُهٗ وَ مَا كَانُوْا یَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ جٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا

उस की क़ौम बनाती और जो चुनाइयां उठाते (ता'मीर करते) थे और हम ने[253] बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उन का गुज़र

का वा'दा किया। हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई, येह मुसीबत भी रफ़्अ़ हुई मगर ईमान फिर भी न लाए। **244 :** एक के बा'द दूसरी और हर अ़ज़ाब एक हफ़्ता क़ाइम रहता और दूसरे अ़ज़ाब से एक महीने का फ़ासिला होता। **245 :** और हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। **246 :** कि वोह आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा। **247 :** या'नी दरियाए नील में। जब बार बार उन्हें अ़ज़ाबों से नजात दी गई और वोह किसी अ़हद पर क़ाइम न रहे और ईमान न लाए और कुफ़्र न छोड़ा तो वोह मीआ़द पूरी होने के बा'द जो उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाई गई थी उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। **248 :** अस्लन तदब्बुर व इल्तिफ़ात (अन्जाम पर ग़ौर व तवज्जोह) न करते थे। **249 :** या'नी बनी इसराईल को **250 :** या'नी मिस्र व शाम **251 :** नहरों, दरख़्तों, फलों, खेतियों और पैदावार की कसरत से **252 :** उन तमाम इमारतों और ऐवानों और बाग़ों को **253 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को दसवीं मुहर्रम को ग़र्क़ करने के बा'द।

عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰۤى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا

एक ऐसी क़ौम पर हुवा कि अपने बुतों के आगे आसन मारे (इ़बादत के लिये जम कर बैठे) थे[254] बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ

इन के लिये इतने ख़ुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो[255] येह ह़ाल तो बरबादी का है जिस में

فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ

येह[256] लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा (बिल्कुल) बात़िल है कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा तलाश करूं ह़ालां कि उस ने

فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَ اِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ

तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी[257] और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔ़न वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें

سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكُمْ

बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियां बाक़ी रखते और इस में

بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ ع وَ وٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّ اَتْمَمْنٰهَا

तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा[258] और हम ने मूसा से[259] तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में[260] दस और

بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ

बढ़ा कर पूरी कीं तो उस के रब का वा'दा पूरी चालीस रात का हुवा[261] और मूसा ने[262] अपने भाई हारून से कहा

اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَ اَصْلِحْ وَ لَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَ لَمَّا جَآءَ

मेरी क़ौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह़ करना और फ़सादियों की राह को दख़्ल न देना (उन के रास्ते पर न चलना) और जब मूसा हमारे

254 : और उन की इ़बादत करते थे। इब्ने जुरैज ने कहा कि येह बुत गाय की शक्ल के थे, इन को देख कर बनी इसराईल **255 :** कि इतनी निशानियां देख कर भी न समझे कि अल्लाह वाह़िद "لاشریک لہٗ" है, उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं और किसी की इ़बादत जाइज़ नहीं। **256 :** बुत परस्त **257 :** या'नी ख़ुदा वोह नहीं होता जो तलाश कर के बना लिया जाए बल्कि ख़ुदा वोह है जिस ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी क्यूं कि वोह फ़ज़्लो एह़सान पर क़ादिर है तो वोही इ़बादत का मुस्तह़िक़ है। **258 :** या'नी जब उस ने तुम पर ऐसी अ़ज़ीम ने'मतें फ़रमाईं तो तुम्हें कब शायान है कि तुम उस के सिवा और की इ़बादत करो। **259 :** तौरैत अ़त़ा फ़रमाने के लिये माहे ज़ुल क़ा'दह की **260 :** ज़िल ह़िज्जा की **261 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बनी इसराईल से वा'दा था कि जब अल्लाह तआ़ला उन के दुश्मन फ़िरऔ़न को हलाक फ़रमा दे तो वोह उन के पास अल्लाह तआ़ला की जानिब से एक किताब लाएंगे जिस में ह़लाल और ह़राम का बयान होगा, जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔ़न को हलाक किया तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने रब से उस किताब के नाज़िल फ़रमाने की दरख़्वास्त की। हुक्म हुवा कि तीस रोज़े रखें, जब वोह रोज़े पूरे कर चुके तो आप को अपने दहन मुबारक में एक त़रह़ की बू मा'लूम हुई। आप ने मिस्वाक की मलाएका ने अ़र्ज़ किया कि हमें आप के दहने मुबारक से बड़ी मह़बूब ख़ुश्बू आया करती थी आप ने मिस्वाक कर के उस को ख़त्म कर दिया। अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया कि माह ज़िल ह़िज्जा में दस रोज़े और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुश्बू मेरे नज़्दीक ख़ुश्बूए मुश्क से ज़ियादा अत़्यब (पसन्द) है। **262 :** पहाड़ पर मुनाजात के लिये जाते वक़्त।

www.dawateislami.net

مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ

वा'दे पर हाज़िर हुवा और उस से उस के रब ने कलाम फ़रमाया[263] अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न

تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ

देख सकेगा[264] हां इस पहाड़ की त़रफ़ देख येह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अ़न्क़रीब तू मुझे देख लेगा[265]

فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ

फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुवा

قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ يٰمُوْسٰۤى

बोला पाकी है तुझे मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[266] फ़रमाया ऐ मूसा

اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ

मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया और

مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ

शुक्र वालों में हो और हम ने उस के लिये तख़्तियों में[267] लिख दी हर चीज़ की नसीह़त और

263 : आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कलाम फ़रमाया, इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या ह़क़ीक़त है कि हम उस कलाम की ह़क़ीक़त से बह़्स कर सकें, अख़्बार (रिवायतों) में वारिद है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलाम सुनने के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप ने त़हारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में ह़ाज़िर हुए। **अल्लाह** तआ़ला ने एक अब्र नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर त़रफ़ से ब क़दर चार फ़रसंग के ढक लिया। शयात़ीन और ज़मीन के जानवर ह़त्ता कि साथ रहने वाले फ़िरिश्ते तक वहां से अ़लाह़दा कर दिये गए और आप के लिये आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाएका को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आप ने अ़र्शे इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अल्वाह़ पर क़लमों की आवाज़ सुनी और **अल्लाह** तआ़ला ने आप से कलाम फ़रमाया। आप ने उस की बारगाह में अपने मा'रूज़ात पेश किये। उस ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام आप के साथ थे लेकिन जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया वोह उन्हों ने कुछ न सुना। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कलामे रब्बानी की लज़्ज़त ने उस के दीदार का आरज़ू मन्द बनाया। (خازن وغیرہ) **264 :** इन आंखों से, सुवाल कर के। बल्कि दीदारे इलाही बिग़ैर सुवाल के मह़ज़ उस की अ़त़ा व फ़ज़्ल से ह़ासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाक़ी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की त़ाक़त नहीं रखता। **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं। इस से साबित हुवा कि दीदारे इलाही मुम्किन है अगर्चे दुन्या में न हो क्यूं कि सह़ीह़ ह़दीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इलावा बरीं येह कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़रिफ़ बिल्लाह हैं अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। **265 :** और पहाड़ का साबित रहना अम्रे मुम्किन है क्यूं कि इस की निस्बत फ़रमाया : ''جَعَلَهٗ دَكًّا'' उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की मज्ऊ़ल (बनाई हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए, मुम्किन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूं कि वोह अपने फ़े'ल में मुख़्तार है, इस से साबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिक़रार अम्रे मुम्किन है मुह़ाल नहीं और जो चीज़ अम्रे मुम्किन पर मुअ़ल्लक़ की जाए वोह भी मुम्किन ही होती है मुह़ाल नहीं होती लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के साबित रहने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुम्किन हुवा तो उन का क़ौल बात़िल है जो **अल्लाह** तआ़ला का दीदार मुह़ाल बताते हैं। **266 :** बनी इसराईल में से। **267 :** तौरैत की जो सात या दस थीं ज़बर जद की या ज़ुमुर्रुद की।

تَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ

हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें[268]

سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ

अन्क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर[269] और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا

नाहक़ अपनी बड़ाई चाहते हैं[270] और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लाएं और अगर हिदायत

سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ

की राह देखें उस में चलना पसन्द न करें[271] और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उस में चलने को

سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَالَّذِيْنَ

मौजूद हो जाएं येह इस लिये कि उन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन से बे ख़बर बने और जिन्हों ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार (आख़िरत की हाज़िरी) को झुटलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ ع وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا

जो करते थे और मूसा के[272] बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से[273] एक बछड़ा बना बैठी

جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ

वक़्फ़ लाज़िम

बेजान का धड़[274] गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वोह उन से न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए[275]

268 : इस के अह़काम पर आ़मिल हों। **269 :** जो आख़िरत में उन का ठिकाना है। ह़सन व अ़त़ा ने कहा कि बे हुक्मों के घर से जहन्नम मुराद है। क़तादा का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्हों ने **अल्लाह** की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें उस से इब्रत ह़ासिल हो। अ़तिय्या औ़फ़ी का क़ौल है कि ''دَارُ الْفَاسِقِيْن'' से फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं। सुद्दी का क़ौल है कि इस से मनाज़िले कुफ़्फ़ार मुराद हैं। कल्बी ने कहा कि आ़द व समूद और हलाक शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अ़रब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे। **270 :** ज़ुन्नून قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला हिक्मते क़ुरआन से अहले बात़िल के क़ुलूब का इक्राम नहीं फ़रमाता। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुराद येह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर तजब्बुर (तकब्बुर व ज़ियादती की रविश इख़्तियार) करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी आयतों के क़बूल और तस्दीक़ से फेर दूंगा ताकि वोह मुझ पर ईमान न लाएं, येह उन के इनाद (बुग़्ज़ व दुश्मनी) की सज़ा है कि उन्हें हिदायत से मह़रूम किया गया। **271 :** येही तकब्बुर का समरा मुतकब्बिर का अन्जाम है। **272 :** तूर की त़रफ़ अपने रब की मुनाजात के लिये जाने के **273 :** जो उन्हों ने क़ौमे फ़िरऔ़न से अपनी ईद के लिये आ़रिय्यत लिये थे **274 :** और उस के मुंह में ह़ज़रते जिब्रील के घोड़े के क़दम के नीचे की ख़ाक डाली जिस के असर से वोह **275 :** नाक़िस है, आ़जिज़ है, जमाद है या ह़ैवान, दोनों तक़्दीरों पर सलाहि़य्यत नहीं रखता कि पूजा जाए।

www.dawateislami.net

اِتَّخَذُوْهُ وَ كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ﴿۱۴۸﴾ وَ لَمَّا سُقِطَ فِیْۤ اَیْدِیْهِمْ وَ رَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ

उसे लिया और वोह ज़ालिम थे[276] और जब पचताए और समझे कि हम

ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَىٕنْ لَّمْ یَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَ یَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۱۴۹﴾

बहके बोले अगर हमारा रब हम पर मेहर (रहमो करम) न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए

وَ لَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِیْ

और जब मूसा[277] अपनी क़ौम की तरफ़ पलटा गुस्से में भरा झुंजलाया हुवा[278] कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जा नशीनी की

مِنْۢ بَعْدِیْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَ اَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَ اَخَذَ بِرَاْسِ

मेरे बा'द[279] क्या तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी की[280] और तख़्तियां डाल दीं[281] और अपने भाई के सर के बाल

اَخِیْهِ یَجُرُّهٗۤ اِلَیْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِیْ وَ كَادُوْا

पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा[282] कहा ऐ मेरे मां जाए[283] क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि

یَقْتُلُوْنَنِیْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِیَ الْاَعْدَآءَ وَ لَا تَجْعَلْنِیْ مَعَ الْقَوْمِ

मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा[284] और मुझे ज़ालिमों

الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِاَخِیْ وَ اَدْخِلْنَا فِیْ رَحْمَتِكَ ۖ وَ

में न मिला[285] अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे[286] और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और

اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۱۵۱﴾ ع اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَیَنَالُهُمْ غَضَبٌ ع ۱۸ ۸

तू सब मेहर (रह्म करने) वालों से बढ़ कर मेहर वाला बेशक वोह जो बछड़ा ले बैठे अ़न्क़रीब उन्हें उन के रब

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ ذِلَّةٌ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُفْتَرِیْنَ ﴿۱۵۲﴾

का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुन्या की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों (बोहतान बांधने वालों) को

276 : कि उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की इबादत से ए'राज़ किया और ऐसे आ़जिज़ो नाक़िस बछड़े को पूजा। **277 :** अपने रब की मुनाजात से मुशर्रफ़ हो कर तूर से **278 :** इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन को ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उन की क़ौम को गुमराह कर दिया। **279 :** कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका। **280 :** और मेरे तौरैत ले कर आने का इन्तिज़ार न किया। **281 :** तौरैत की। हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने **282 :** क्यूं कि हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपनी क़ौम का ऐसी बद तरीन मा'सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुवा तब हज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से **283 :** मैं ने क़ौम को रोकने और उन को वा'ज़ो नसीहत करने में कमी नहीं की लेकिन **284 :** और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वोह खुश हों। **285 :** हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने भाई का उ़ज़्र क़बूल कर के बारगाहे इलाही में **286 :** अगर हम में से किसी से कोई इफ़रात़ या तफ़रीत़ (कमी या बेशी) हो गई। येह दुआ़ आप ने भाई को राज़ी करने और आ'दा की शमातत रफ़्अ़ (दुश्मन के खुश होने को दूर) करने के लिये फ़रमाई।

www.dawateislami.net

وَ الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَ اٰمَنُوْۤا٘ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ

और जिन्हों ने बुराइयां कीं और उन के बा'द तौबा की और ईमान लाए तो इस के बा'द

بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ

तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[287] और जब मूसा का ग़ुस्सा थमा (दूर हुवा) तख़्तियां

الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَ فِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

उठा लीं और उन की तह़रीर में हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं

وَ اخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ

और मूसा ने अपनी क़ौम से सत्तर मर्द हमारे वा'दे के लिये चुने[288] फिर जब उन्हें

الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَ اِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا

ज़ल्ज़ले ने लिया[289] मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता[290] क्या तू हमें उस काम

بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ

पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अ़क़्लों ने किया[291] वोह नहीं मगर तेरा आज़्माना तू उस से बहकाए जिसे चाहे और

تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ

राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तो हमें बख़्श दे और हम पर मेहर (रह़्मो करम) कर और तू सब से बेहतर

الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَ اكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَاۤ

बख़्शने वाला है और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख[292] और आख़िरत में बेशक हम तेरी त़रफ़

اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْۤ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَ رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ

रुजूअ़ लाए फ़रमाया[293] मेरा अ़ज़ाब मैं जिसे चाहूं दूं[294] और मेरी रह़मत हर चीज़ को

287 मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है। **288 :** कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ **अल्लाह** के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर हो कर क़ौम की गौसाला परस्ती की उ़ज़्र ख़्वाही करें चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन्हें ले कर ह़ाज़िर हुए। **289 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़ल्ज़ले में मुब्तला होने का सबब येह था कि क़ौम ने जब बछड़ा क़ाइम किया था येह उन से जुदा न हुए थे। (خازن) **290 :** या'नी मीक़ात में ह़ाज़िर होने से पहले ताकि बनी इसराईल उन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुझ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़अ़ न मिलता। **291 :** या'नी हमें हलाक न कर और अपना लुत़्फ़ो करम फ़रमा। **292 :** और हमें तौफ़ीक़े त़ाअ़त मर्ह़मत फ़रमा। **293 :** **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **294 :** मुझे इख़्तियार है सब मेरे मम्लूक और बन्दे हैं किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं।

شَیْءٍؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الَّذِیْنَ هُمْ

घेरे है[295] तो अन्क़रीब मैं[296] ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वोह

بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَۚ(۱۵۶) اَلَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वोह जो ग़ुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की[297] जिसे

یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِیْلِ٘ یَاْمُرُهُمْ

लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में[298] वोह उन्हें भलाई

295 : दुन्या में नेक और बद सब को पहुंचती है। **296 :** आख़िरत की **297 :** यहां रसूल से ब इज्माए मुफ़स्सिरीन सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुराद हैं, आप का ज़िक्र वस्फ़े रिसालत से फ़रमाया गया क्यूं कि आप **अल्लाह** और उस की मख़्लूक़ के दरमियान वासित़ा हैं, फ़राइज़े रिसालत अदा फ़रमाते हैं, **अल्लाह** तआला के अवामिर व नहय व शराएअ़ व अह़काम उस के बन्दों को पहुंचाते हैं, इस के बा'द आप की तौसीफ़ में नबी फ़रमाया गया, इस का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने ''ग़ैब की ख़बरें देने वाले'' किया है और येह निहायत ही सह़ीह़ तरजमा है क्यूं कि ''نَبَا'' (उस) ख़बर को कहते हैं जो मुफ़ीदे इल्म हो और शाइबए किज़्ब से ख़ाली हो। क़ुरआने करीम में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में ब कसरत मुस्ता'मल हुवा है, एक जगह इर्शाद हुवा : ''قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِیْمٌ'' (तुम फ़रमाओ वोह बड़ी ख़बर है), एक जगह फ़रमाया : ''تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهَاۤ اِلَیْكَ'' (येह ग़ैब की ख़बरें हम तुम्हारी त़रफ़ वह्य करते हैं), एक जगह फ़रमाया : ''فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآىٕهِمْ'' (जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये) और ब कसरत आयात में येह लफ़्ज़ इस मा'ना में वारिद हुवा है, फिर येह लफ़्ज़ या फ़ाइल के मा'ना में होगा या मफ़्ऊल के मा'ना में, पहली सूरत में इस के मा'ना ग़ैब की ख़बरें देने वाले और दूसरी सूरत में इस के मा'ना होंगे ग़ैब की ख़बरें दिये हुए और दोनों मा'ना को क़ुरआने करीम से ताईद पहुंचती है, पहले मा'ना की ताईद इस आयत से होती है : ''نَبِّئْ عِبَادِیْۤ'' (ख़बर दो मेरे बन्दों को)'', दूसरी आयत में फ़रमाया : ''قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ'' (तुम फ़रमाओ ! क्या मैं तुम्हें ख़बर दूं) और इसी क़बील से है ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इर्शाद जो क़ुरआन में वारिद हुवा : ''وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَ مَا تَدَّخِرُوْنَ'' (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो जम्अ़ कर रखते हो) और दूसरी सूरत की ताईद इस आयत से होती है : ''نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ'' (मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया) और ह़क़ीक़त में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ग़ैब की ख़बरें देने वाले ही होते हैं। तफ़्सीरे ख़ाज़िन में है कि आप के वस्फ़ में नबी फ़रमाया क्यूं कि नबी होना आ'ला और अशरफ़ मरातिब में से है और येह इस पर दलालत करता है कि आप **अल्लाह** के नज़्दीक बहुत बुलन्द दरजे रखने वाले और उस की त़रफ़ से ख़बर देने वाले हैं। ''اُمِّی'' का तरजमा ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने (बे पढ़े) फ़रमाया, येह तरजमा बिल्कुल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के इर्शाद के मुत़ाबिक़ है और यक़ीनन ''उम्मी'' होना आप के मो'जिज़ात में से एक मो'जिज़ा है कि दुन्या में किसी से पढ़े नहीं और किताब वोह लाए जिस में अव्वलीन व आख़िरीन और ग़ैबों के उ़लूम हैं। (خازن)

خاکی و بر اوجِ عرش منزل — اُمّی و کتاب خانہ در دل

बशर ऐसे कि अ़र्श की बुलन्दियों पर आप का मक़ाम है — उम्मी ऐसे कि तमाम उ़लूम का ख़ज़ाना आप के दिल में है

دیگر اُمّی و دقیقہ دانِ عالم — بے سایہ و سائبانِ عالم

उम्मी हैं मगर दक़ीक़ा दाने जहां हैं — बे साया हैं लेकिन साएबाने जहां हैं (صَلٰوةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ سَلَامُهٗ)

298 : या'नी तौरैत व इन्जील में आप की ना'त व सिफ़त व नुबुव्वत लिखी पाएंगे। **ह़दीस :** ह़ज़रते अ़त़ा इब्ने यसार ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के वोह औसाफ़ दरयाफ़्त किये जो तौरैत में मज़्कूर हैं, उन्हों ने फ़रमाया कि हुज़ूर के जो औसाफ़ क़ुरआने करीम में आए हैं उन्हीं में से बा'ज़ औसाफ़ तौरैत में मज़्कूर हैं, इस के बा'द उन्हों ने पढ़ना शुरूअ़ किया ऐ नबी ! हम ने तुम्हें भेजा शाहिद व मुबश्शिर और नज़ीर और उम्मियों का निगहबां बना कर, तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो, मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा, न बद ख़ुल्क़ हो न सख़्त मिज़ाज, न बाज़ारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दफ़्अ़ करो, लेकिन ख़त़ाकारों को मुआ़फ़ करते हो और उन पर एह़सान फ़रमाते हो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से ग़ैर मुस्तक़ीम मिल्लत (सीधे रास्ते से भटके हुए लोगों) को इस त़रह़ रास्त (राहे ह़क़ पर) न फ़रमा दे कि लोग सिद्क़ो यक़ीन के साथ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पुकारने लगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें ''बीना'' और बहरे कान ''शिन्वा'' (सुनने वाले) और पर्दों में लिपटे हुए दिल ''कुशादा'' हो जाएं और ह़ज़रते का'ब अह़बार से हुज़ूर की सिफ़ात में तौरैत शरीफ़ का येह मज़्मून भी मन्क़ूल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की सिफ़त में फ़रमाया कि मैं उन्हें हर ख़ूबी के क़ाबिल करूंगा और हर ख़ुल्क़े करीम अ़त़ा फ़रमाऊंगा और इत़्मीनाने क़ल्ब व वक़ार को उन का लिबास बनाऊंगा

بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ

का हुक्म देगा और बुराई से मन्अ़ फ़रमाएगा और सुथरी चीज़ें उन के लिये ह़लाल फ़रमाएगा और गन्दी चीज़ें

عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِیْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर ह़राम करेगा और उन पर से वोह बोझ[299] और गले के फन्दे[300] जो उन पर थे उतारेगा

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ

तो वोह जो उस पर[301] ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के

और ताआ़त व एह़सान को उन का शिआ़र करूंगा और तक़्वे को उन का ज़मीर और ह़िक्मत को उन का राज़ और सिद्क़ो वफ़ा को उन की त़बीअ़त और अ़फ़्वो करम को उन की आ़दत और अ़द्ल को उन की सीरत और इज़्हारे ह़क़ को उन की शरीअ़त और हिदायत को उन का इमाम और इस्लाम को उन की मिल्लत बनाऊंगा। अह़मद उन का नाम है, ख़ल्क़ को उन के सदक़े में गुमराही के बा'द हिदायत और जहालत के बा'द इल्मो मा'रिफ़त और गुमनामी के बा'द रिफ़्अ़तो मन्ज़िलत अ़ता करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बा'द कसरत और फ़क्र के बा'द दौलत और तफ़्रिक़े के बा'द महब्बत इनायत करूंगा, उन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बाइल, ग़ैर मुज्तमअ़ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और ह़दीस में तौरैत शरीफ़ से हुज़ूर के येह औसाफ़ मन्क़ूल हैं : मेरे बन्दे अह़मदे मुख़्तार, उन का जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीनए त़य्यिबा है, उन की उम्मत हर हाल में **अल्लाह** की कसीर ह़म्द करने वाली है। येह चन्द नुक़ूल अह़ादीस से पेश किये गए। कुतुबे इलाहिय्यह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त से भरी हुई थीं, अहले किताब हर क़र्न (ज़माने) में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उन की बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत़ रही की हुज़ूर का ज़िक्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें। तौरैत इन्जील वग़ैरा उन के हाथ में थीं इस लिये उन्हें इस में कुछ दुश्वारी न थी, लेकिन हज़ारों तब्दीलियां करने के बा'द भी मौजूदा ज़माने की बाईबल में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की बिशारत का कुछ न कुछ निशान बाक़ी रह ही गया, चुनान्चे ब्रिटिश एन्ड फ़ोरन बाईबल सोसायटी लाहोर 1931 सि.ई. की छपी हुई बाईबल में यूह़न्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वोह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे।" लफ़्ज़ "मददगार" पर ह़ाशिया है उस में इस के मा'ने वकील या शफ़ीअ़ लिखे (हैं) तो अब ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ़ हो और अबद तक रहे या'नी उस का दीन कभी मन्सूख़ न हो बजुज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के कौन है ? फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है : "और अब मैं ने तुम से उस के होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यक़ीन करो इस के बा'द मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्यूं कि दुन्या का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बिशारत है और ह़ज़रते मसीह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी उम्मत को हुज़ूर की विलादत का कैसा मुन्तज़िर बनाया और शौक़ दिलाया है और दुन्या का सरदार ख़ास सय्यिदे आ़लम का तरजमा है और येह फ़रमाना कि मुझ में उस का कुछ नहीं हुज़ूर की अ़ज़्मत का इज़्हार और इस के हुज़ूर अपना कमाले अदब व इन्किसार है फिर इसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत है : "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ाएदे मन्द है क्यूं कि अगर मैं न जाऊं तो वोह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हुज़ूर की बिशारत के साथ इस का भी साफ़ इज़्हार है कि हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया हैं आप का ज़ुहूर जब ही होगा जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام भी तशरीफ़ ले जाएं। इस की तेरहवीं आयत है : "लेकिन जब वोह या'नी सच्चाई का रूह़ आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिये कि वोह अपनी त़रफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा और तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की आमद पर दीने इलाही की तक्मील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह या'नी दीने ह़क़ को मुकम्मल कर देंगे इस से येही नतीजा निकलता है कि उन के बा'द कोई नबी न होगा और येह कलिमे कि अपनी त़रफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा ख़ास "مَا یَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰی ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْیٌ یُّوْحٰی" का तरजमा है और येह जुम्ला कि तुम्हें आयिन्दा की ख़बरें देगा इस में साफ़ बयान है कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ग़ैबी उ़लूम ता'लीम फ़रमाएंगे जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया : "یُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ" (और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था) और "مَا هُوَ عَلَی الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ" (येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं) **299 :** या'नी सख़्त तक्लीफ़ें जैसे कि तौबा में अपने आप को क़त्ल करना और जिन आ'ज़ा से गुनाह सादिर हों उन को काट डालना। **300 :** या'नी अह़कामे शाक़्क़ा (वोह अह़काम जिन पर अ़मल करना दुश्वार हो) जैसे कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उस को क़ैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर ज़ाहिर होना वग़ैरा। **301 :** या'नी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर।

مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ ع قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

साथ उतरा[302] वोही बा मुराद हुए तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस

اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا ِ۟الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

अल्लाह का रसूल हूं[303] कि आस्मान व ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ

जिलाए और मारे (ज़िन्दगी और मौत दे) तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि **अल्लाह** और उस की

بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ

बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ और मूसा की क़ौम से एक गुरोह है

یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا

कि ह़क़ की राह बताता और उसी से[304] इन्साफ़ करता और हम ने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले

اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ

गुरोह गुरोह और हम ने वह़्य भेजी मूसा को जब उस से उस की क़ौम ने[305] पानी मांगा कि इस पथ्थर पर अपना

الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

अ़सा मारो तो उस में से बारह चश्मे फूट निकले[306] हर गुरोह ने अपना घाट

مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَ ظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَیْهِمُ الْمَنَّ وَ

पहचान लिया और हम ने उन पर अब्र साएबान किया[307] और उन पर मन्न व सल्वा

السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا

उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्हों ने[308] हमारा कुछ नुक़्सान न किया लेकिन अपनी ही

302 : इस नूर से क़ुरआन शरीफ़ मुराद है जिस से मोमिन का दिल रोशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्मो यक़ीन की ज़िया फैलती है। **303 :** येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : हुज़ूर फ़रमाते हैं : पांच चीज़ें मुझे ऐसी अ़त़ा हुईं जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : (1) हर नबी ख़ास क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होता था और मैं सुर्ख़ व सियाह की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। (2) मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं। (3) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़ाबिले तयम्मुम) और मस्जिद की गई, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहीं पढ़ ले। (4) दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई। (5) और मुझे शफ़ाअ़त इनायत की गई। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में येह भी है कि मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़त्म किये गए। **304 :** या'नी ह़क़ से **305 :** तीह में **306 :** हर गुरोह के लिये एक चश्मा। **307 :** ताकि धूप से अम्न में रहें। **308 :** ना शुक्री कर के।

www.dawateislami.net

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَ اِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا

जानों का बुरा करते थे और याद करो जब उन[309] से फ़रमाया गया उस शहर में बसो[310] और उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे (ऐ अल्लाह हमारे गुनाह बख़्श दे) और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह

خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا

बख़्श देंगे अन्क़रीब नेकों को ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे तो उन में के ज़ालिमों ने बात बदल दी

غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

उस के ख़िलाफ़ जिस का उन्हें हुक्म था[311] तो हम ने उन पर आस्मान से अ़ज़ाब भेजा बदला उन के

ع ۲۰ وقف لازم

يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ ع وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ

ज़ुल्म का[312] और उन से हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी[313] जब

يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا

वोह हफ़्ते के बारे में ह़द से बढ़ते[314] जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन

309 : बनी इसराईल **310 :** या'नी बैतुल मक़्दिस में **311 :** या'नी हुक्म तो येह था कि "حِطَّةٌ" कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों "حِطَّةٌ" तौबा और इस्तिग़्फ़ार का कलिमा है लेकिन वोह बजाए इस के बराहे तमस्ख़ुर "حِنْطَةٌ فِيْ شعيرة" कहते हुए दाख़िल हुए। **312 :** या'नी अ़ज़ाब भेजने का सबब उन का ज़ुल्म और हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त करना है। **313 :** ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब है कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूद से तौबीख़न (मलामत करते हुए) उस बस्ती वालों का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाएं, मक़्सूद इस सुवाल से येह था कि कुफ़्फ़ार पर ज़ाहिर कर दिया जाए कि कुफ़्रो मा'सियत इन का क़दीमी दस्तूर है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के मो'जिज़ात का इन्कार करना येह उन के लिये कोई नई बात नहीं है इन के पहले भी कुफ़्र पर मुसिर रहे हैं। इस के बा'द उन के अस्लाफ़ का ह़ाल बयान फ़रमाया कि वोह हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त के सबब बन्दरों और सुअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिये गए, उस बस्ती में इख़्तिलाफ़ है कि वोह कौन सी थी ? ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह एक क़र्या मिस्र व मदीने के दरमियान है। एक क़ौल है कि मद्यन व तूर के दरमियान। ज़ोहरी ने कहा कि वोह क़र्या त़बरिया शाम है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की एक रिवायत में है कि वोह मद्यन है। बा'ज़ ने कहा : ऐला है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم **314 :** कि बा वुजूद मुमानअ़त के हफ़्ते के रोज़ शिकार करते, उस बस्ती के लोग तीन गुरौह में मुन्क़सिम हो गए थे एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मन्अ़ करते थे और एक तिहाई ख़ामोश थे दूसरों को मन्अ़ न करते थे और मन्अ़ करने वालों से कहते थे ऐसी क़ौम को क्यूं नसीह़त करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है, और एक गुरौह वोह ख़त़ाकार लोग थे जिन्हों ने हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और शिकार किया और खाया और बेचा और जब वोह इस मा'सियत से बाज़ न आए तो मन्अ़ करने वाले गुरौह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ बूदो बाश (रहना सहना इकट्ठा) न रखेंगे और गाउं को तक़्सीम कर के दरमियान में एक दीवार खींच दी। मन्अ़ करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिस से आते जाते थे। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़त़ाकारों पर ला'नत की। एक रोज़ मन्अ़ करने वालों ने देखा कि ख़त़ाकारों में से कोई नहीं निकला तो उन्हों ने ख़याल किया कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे, उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह बन्दरों की सूरतों में मस्ख़ हो गए थे। अब येह लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़े सूंघते थे और येह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे उन लोगों ने उन से कहा क्या हम लोगों ने तुम को मन्अ़ नहीं किया था ! उन्हों ने सर के इशारे से कहा : हां। और वोह सब हलाक हो गए और मन्अ़ करने वाले सलामत रहे।

www.dawateislami.net

معانقة النصف

يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚۛ كَذٰلِكَ ۚۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَ اِذْ

हफ़्ते का न होता न आतीं इस त़रह़ हम उन्हें आज़्माते थे उन की बे हु़क्मी के सबब और जब

قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब

شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا

देने वाला बोले तुम्हारे रब के ह़ुज़ूर मा'ज़िरत को[315] और शायद उन्हें डर हो[316] फिर जब वोह भुला बैठे

مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَ اَخَذْنَا الَّذِيْنَ

जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को

ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا

बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की

عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ

हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे (धुत्कारे) हुए[317] और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर

عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ

क़ियामत के दिन तक उन[318] पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए[319] बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द

الْعِقَابِ ۚۖ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَ قَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ

अ़ज़ाब वाला है[320] और बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है[321] और उन्हें हम ने ज़मीन में मुतफ़र्रिक़ कर दिया गुरौह गुरौह उन में कुछ

الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ٘ وَ بَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ

नेक हैं[322] और कुछ और त़रह़ के[323] और हम ने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आज़्माया कि कहीं

يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ

वोह रुजूअ़ लाएं[324] फिर उन की जगह उन के बा'द वोह[325] ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए[326] इस दुन्या

315 : ताकि हम पर "नही अ़निल मुन्कर" तर्क करने का इल्ज़ाम न रहे। **316 :** और वोह नसीह़त से नफ़्अ़ उठा सकें। **317 :** वोह बन्दर हो गए और तीन रोज़ इसी ह़ाल में मुब्तला रह कर हलाक हो गए। **318 :** यहूद **319 :** चुनान्चे उन पर अल्लाह तआ़ला ने बुख़्ते नस्सर और सिन्जारीब और शाहाने रूम को भेजा जिन्हों ने उन्हें सख़्त ईज़ाएं और तक्लीफ़ें दीं और क़ियामत तक के लिये उन पर जिज़्या और ज़िल्लत लाज़िम हुई। **320 :** उन के लिये जो कुफ़्र पर क़ाइम रहें। इस आयत से साबित हुवा कि उन पर अ़ज़ाब मुस्तमिर (हमेशा) रहेगा दुन्या में भी और आख़िरत में भी। **321 :** उन को जो अल्लाह की इत़ाअ़त करें और ईमान लाएं। **322 :** जो अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और दीन पर साबित रहे। **323 :** जिन्हों ने ना फ़रमानी

www.dawateislami.net

عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَ يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

का माल लेते हैं[327] और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी[328] और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए

يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

तो ले लें[329] क्या उन पर किताब में अ़ह्द न लिया गया कि अल्लाह की त़रफ़ निस्बत न करें

اِلَّا الْحَقَّ وَ دَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ

मगर ह़क़ और उन्हों ने उसे पढ़ा[330] और बेशक पिछला घर (आख़िरत) बेहतर है परहेज़ गारों को[331]

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَ الَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا

तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं और वोह जो किताब को मज़बूत़ थामते हैं[332] और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम रखी हम

لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّ

नेकों का नेग (सवाब) नहीं गंवाते (ज़ाएअ़ नहीं करते) और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साएबान है और

ظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ

समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा[333] लो जो हम ने तुम्हें दिया ज़ोर से[334] और याद करो जो उस में है कि कहीं

की और जिन्हों ने कुफ़्र किया और दीन को बदला और मुतग़य्यर किया। **324 :** भलाइयों से ने'मतो राह़त और बुराइयों से शिद्दतो तक्लीफ़ मुराद है। **325 :** जिन की दो क़िस्में बयान फ़रमाई गईं। **326 :** या'नी तौरैत के, जो उन्हों ने अपने अस्लाफ़ से पाई और उस के अवामिर व नवाही और तह़लील व तह़रीम वग़ैरा मज़ामीन पर मुत्तलअ़ हुए। मदारिक में है कि येह वोह लोग हैं जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने में थे उन की ह़ालत येह है कि **327 :** बत़ौर रिश्वत के अह़काम की तब्दील और कलाम की तग़्यीर पर और वोह जानते भी हैं कि येह ह़राम है लेकिन फिर भी इस गुनाहे अ़ज़ीम पर मुसिर हैं। **328 :** और इन गुनाहों पर हम से कुछ मुआख़ज़ा न होगा। **329 :** और आयिन्दा भी गुनाह करते चले जाएं। सुद्दी ने कहा कि बनी इसराईल में कोई क़ाज़ी ऐसा न होता था जो रिश्वत न ले, जब उस से कहा जाता था कि तुम रिश्वत लेते हो तो कहता था कि येह गुनाह बख़्श दिया जाएगा। उस के ज़माने में दूसरे उस पर त़ा'न करते थे लेकिन जब वोह मर जाता या मा'ज़ूल कर दिया जाता और वोही त़ा'न करने वाले उस की जगह ह़ाकिम व क़ाज़ी होते तो वोह भी इसी त़रह़ रिश्वत लेते। **330 :** लेकिन बा वुजूद इस के उन्हों ने उस के ख़िलाफ़ किया। तौरैत में गुनाह पर इसरार करने वाले के लिये मग़्फ़िरत का वा'दा न था तो उन का गुनाह किये जाना तौबा न करना और इस पर येह कहना कि हम से मुआख़ज़ा न होगा येह अल्लाह पर इफ़्तिरा है। **331 :** जो अल्लाह के अ़ज़ाब से डरें और रिश्वत व ह़राम से बचें और उस की फ़रमां बरदारी करें **332 :** और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हैं और उस के तमाम अह़काम को मानते हैं और उस में तग़्यीर व तब्दील रवा (जाइज़) नहीं रखते। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले किताब में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा ऐसे अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहली किताब का इत्तिबाअ़ किया उस की तह़रीफ़ न की, उस के मज़ामीन को न छुपाया और उस किताब के इत्तिबाअ़ की बदौलत उन्हें क़ुरआने पाक पर ईमान नसीब हुवा। (خازن ومدارک) **333 :** जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्क़ा की वज्ह से अह़कामे तौरैत को क़बूल करने से इन्कार किया तो ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही एक पहाड़ जिस की मिक़्दार उन के लश्कर के बराबर एक फ़रसंग त़वील एक फ़रसंग अ़रीज़ थी उठा कर साएबान की त़रह़ उन के सरों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि अह़कामे तौरैत क़बूल करो वरना येह तुम पर गिरा दिया जाएगा, पहाड़ को सरों पर देख कर सब के सब सज्दे में गिर गए मगर इस त़रह़ कि बायां रुख़्सारा व अब्रू तो उन्हों ने सज्दे में रख दी और दाहनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े चुनान्चे अब तक यहूदियों के सज्दे की शान येही है। **334 :** अ़ज़्म व कोशिश से।

www.dawateislami.net

تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ

तुम परहेज़ गार हो और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और

اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا

उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं[335] सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुए[336] कि कहीं

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۷۲﴾ اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ

क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की ख़बर न थी[337] या कहो कि शिर्क तो पहले

اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا ذُرِّیَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द बच्चे हुए[338] तो क्या तू हमें उस पर हलाक फ़रमाएगा जो

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَ اتْلُ

अहले बातिल ने किया[339] और हम इसी तरह आयतें रंग रंग (तफ़्सील) से बयान करते हैं[340] और इस लिये कि कहीं वोह फिर आएं[341] और ऐ महबूब

عَلَیْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْۤ اٰتَیْنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّیْطٰنُ فَكَانَ

उन्हें उस का अह़वाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं[342] तो वोह उन से साफ़ निकल गया[343] तो शैत़ान उस के पीछे लगा तो

---

335 : ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلام की पुश्त से उन की ज़ुर्रिय्यत निकाली और उन से अ़हद लिया। आयात व ह़दीस दोनों पर नज़र करने से येह मा'लूम होता है कि ज़ुर्रिय्यत का निकालना उस सिल्सिले के साथ था जिस त़रह़ कि दुन्या में एक दूसरे से पैदा होंगे और उन के लिये रबूबिय्यत और वह़दानिय्यत के दलाइल क़ाइम फ़रमा कर और अ़क़्ल दे कर उन से अपनी रबूबिय्यत की शहादत त़लब फ़रमाई **336 :** अपने ऊपर और हम ने तेरी रबूबिय्यत और वह़दानिय्यत का इक़रार किया। येह शाहिद करना इस लिये है **337 :** हमें कोई तम्बीह नहीं की गई थी। **338 :** जैसा उन्हें देखा उन के इत्तिबाअ़ व इक़्तिदा में वैसा ही करते रहे। **339 :** येह उ़ज़्र करने का मौक़अ़ न रहा जब कि उन से अ़हद ले लिया गया और उन के पास रसूल आए और उन्हों ने उस अ़हद को याद दिलाया और तौह़ीद पर दलाइल क़ाइम हुए। **340 :** ताकि बन्दे तदब्बुर व तफ़क्कुर कर के ह़क़ व ईमान क़बूल करें **341 :** शिर्को कुफ़्र से तौह़ीदो ईमान की त़रफ़ और नबी साहि़बे मो'जिज़ात के बताने से अपने अ़हदे मीसाक़ को याद करें और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करें। **342 :** या'नी बल्अ़म बाऊ़र जिस का वाक़िआ़ मुफ़स्सिरीन ने इस त़रह़ बयान किया है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلام ने जब्बारीन से जंग का क़स्द किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फ़रमाया तो बल्अ़म बाऊ़र की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلام बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ कसीर लश्कर है वोह यहां आए हैं, हमें हमारे बिलाद से निकालेंगे और क़त्ल करेंगे और बजाए हमारे बनी इसराईल को इस सर ज़मीन में आबाद करेंगे, तेरे पास इस्मे आ'ज़म है और तेरी दुआ़ क़बूल होती है तू निकल और **अल्लाह** तआला से दुआ़ कर कि **अल्लाह** तआला उन्हें यहां से हटा दे। बल्अ़म बाऊ़र ने कहा : तुम्हारा बुरा हो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلام नबी हैं और उन के साथ फ़िरिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं मैं कैसे उन पर दुआ़ करूं, मैं जानता हूं जो **अल्लाह** तआला के नज़्दीक उन का मर्तबा है, अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी, मगर क़ौम उस से इसरार करती रही और बहुत इल्ह़ाह़ो ज़ारी (रोने पीटने) के साथ उन्हों ने अपना येह सुवाल जारी रखा तो बल्अ़म बाऊ़र ने कहा कि मैं अपने रब की मरज़ी मा'लूम कर लूं और इस का येही त़रीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ़ करता पहले मरज़िये इलाही मा'लूम कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे इस मरतबा भी उस को येही जवाब मिला कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلام और उन के हमराहियों के ख़िलाफ़ दुआ़ न करना उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन पर दुआ़ करने की मुमानअ़त फ़रमा दी, तब क़ौम ने उस को हदिये और नज़राने दिये जो उस ने क़बूल किये और क़ौम ने अपना सुवाल जारी रखा तो फिर दूसरी मरतबा बल्अ़म बाऊ़र ने रब तबारक व तआला से इजाज़त चाही उस का कुछ जवाब न मिला उस ने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही न मिला तो क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर **अल्लाह** को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की त़रह़ दोबारा

مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَ لٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ

गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते[344] मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया[345] और

اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हुवा तो उस का हाल कुत्ते की त़रह़ है तू उस पर ह़म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो

یَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ

ज़बान निकाले[346] येह हाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं तो तुम नसीहत

الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلَا ِۨالْقَوْمُ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا

सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें क्या बुरी कहावत है उन की जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰیٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِیْ ۚ وَ

झुटलाईं और अपनी ही जान का बुरा करते थे जिसे अल्लाह राह दिखाए तो वोही राह पर है और

مَنْ یُّضْلِلْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾ وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِیْرًا مِّنَ

जिसे गुमराह करे तो वोही नुक़्सान में रहे और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत

الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖ ۗ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا یَفْقَهُوْنَ بِهَا ۗ وَ لَهُمْ اَعْیُنٌ لَّا یُبْصِرُوْنَ

जिन्न और आदमी[347] वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं[348] और वोह आंखें जिन से देखते नहीं[349]

بِهَا ۗ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا یَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ

और वोह कान जिन से सुनते नहीं[350] वोह चौपायों की त़रह़ हैं[351] बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह[352]

भी मन्अ़ फ़रमाता और क़ौम का इल्ह़ाह़ व इसरार और भी ज़ियादा हुवा, ह़त्ता कि उन्हों ने उस को फ़ितने में डाल दिया और आख़िर कार वोह बद दुआ़ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बद दुआ़ करता था अल्लाह तआ़ला उस की ज़बान को उस की क़ौम की त़रफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआ़ए ख़ैर करता था बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा : ऐ बल्अ़म ! येह क्या कर रहा है ? बनी इसराईल के लिये दुआ़ करता है हमारे लिये बद दुआ़। कहा : येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े में नहीं है और उस की ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गईं। इस आयत में इस का बयान है। **343 :** और उन का इत्तिबाअ़ न किया। **344 :** और बुलन्द दरजा अ़ता फ़रमा कर अबरार (फ़रमां बरदारों) की मनाज़िल में पहुंचाते **345 :** और दुन्या का मफ़्तूं हो गया **346 :** येह एक ज़लील जानवर के साथ तश्बीह है कि दुन्या की ह़िर्स रखने वाला अगर उस को नसीह़त करो तो मुफ़ीद नहीं, मुब्तलाए ह़िर्स रहता है, छोड़ दो तो उसी ह़िर्स का गिरिफ़्तार। जिस त़रह़ ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़िमी त़बीअ़त है ऐसी ही ह़िर्स उन के लिये लाज़िम हो गई है। **347 :** या'नी कुफ़्फ़ार जो आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर से ए'राज़ करते हैं और उन का काफ़िर होना अल्लाह के इल्मे अज़ली में है। **348 :** या'नी ह़क़ से ए'राज़ कर के आयाते इलाहिय्यह में तदब्बुर करने से मह़रूम हो गए और येही दिल का ख़ास काम था। **349 :** राहे ह़क़ व हिदायत और आयाते इलाहिय्यह और दलाइले तौह़ीद। **350 :** मौइज़त व नसीह़त को बगोश (वा'ज़ नसीह़त को ग़ौर व तवज्जोह से सुन कर) क़बूल और बा वुजूद क़ल्बो ह़वास रखने के वोह उमूरे दीन में उन से नफ़्अ़ नहीं उठाते लिहाज़ा **351 :** कि अपने क़ल्बो ह़वास से मदारिके इ़ल्मिय्या व मआ़रिफ़े रब्बानिया का इदराक नहीं करते हैं। खाने पीने के दुन्यवी कामों में तमाम ह़ैवानात भी अपने ह़वास से काम लेते हैं, इन्सान भी इतना ही करता रहा तो इस को बहाइम पर क्या फ़ज़ीलत।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ وَ لِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ ذَرُوا

वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं और **अल्लाह** ही के हैं बहुत अच्छे नाम[353] तो उसे उन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो

الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ اَسْمَآىِٕهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ

जो उस के नामों में हक़ से निकलते हैं[354] वोह जल्द अपना किया पाएंगे और

مِمَّنْ خَلَقْنَاۤ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ۲۲ ۱۲

हमारे बनाए हुओं में एक गुरोह वोह है कि हक़ बताएं और उस पर इन्साफ़ करें[355] और जिन्हों ने हमारी आयतें

بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ

झुटलाईं जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता[356] अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा[357] बेशक

كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾ اَوَ لَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ

मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है[358] क्या सोचते नहीं कि उन के साहिब को जुनून से कुछ अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं वोह तो साफ़

اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَ لَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا

डर सुनाने वाले हैं[359] क्या उन्हों ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत में और जो जो

---

352 : क्यूं कि चौपाया भी अपने नफ़्अ़ की त़रफ़ बढ़ता है और ज़रर से बचता और उस से पीछे हटता है और काफ़िर जहन्नम की राह चल कर अपना ज़रर इख़्तियार करता है तो इस से बदतर हुवा। आदमी रूहानी, शहवानी, समावी, अर्ज़ी है जब इस की रूह़ शहवानी पर ग़ालिब हो जाती है तो मलाएका से फ़ाइक़ हो जाता है और जब शहवात रूह़ पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है। **353 :** ह़दीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआ़ला के निनानवे99 नाम जिस किसी ने याद कर लिये जन्नती हुवा। उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहिय्यह निनानवे में मुन्ह़सर नहीं हैं, ह़दीस का मक़्सूद सिर्फ़ येह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्नती हो जाता है। **शाने नुज़ूल :** अबू जह्ल ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) का दा'वा तो येह है कि वोह एक परवर्दगार की इबादत करते हैं फिर वोह **अल्लाह** और रह़मान दो को क्यूं पुकारते हैं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस जाहिले बे ख़िरद (बे अ़क़्ल) को बताया गया कि मा'बूद तो एक ही है नाम उस के बहुत हैं। **354 :** उस के नामों में ह़क़ व इस्तिक़ामत से निकलना कई त़रह़ पर है। **मसाइल : एक** तो येह कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत़्लाक़ करना जैसा कि मुश्रिकीन ने "इलाह" का "लात" और "अ़ज़ीज़" का "उ़ज़्ज़ा" और "मन्नान" का "मनात" कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में ह़क़ से तजावुज़ और ना जाइज़ है। **दूसरे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जो क़ुरआन व ह़दीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं, जैसे कि सख़ी या रफ़ीक़ कहना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के अस्माए तौक़ीफ़िया (या'नी शरीअ़त से ही मा'लूम हो सकते) हैं। **तीसरे** ह़ुस्ने अदब की रिआ़यत करना, तो फ़क़त़ ياضارّ يامانع ياخالق القردة कहना जाइज़ नहीं बल्कि दूसरे अस्मा के साथ मिला कर कहा जाएगा يا ضارُّ يانافع يامعطى ياخالق الخلق। **चौथे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये कोई ऐसा नाम मुक़र्रर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों, येह भी बहुत सख़्त ना जाइज़ है जैसे कि लफ़्ज़ "राम" और "परमात्मा" वग़ैरा। **पन्जुम** ऐसे अस्मा का इत़्लाक़ जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं **355 :** येह गुरोह ह़क़ पज़ोह (अहले ह़क़) उ़लमा और हादियाने दीन का है। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि हर ज़माने के अहले ह़क़ का इज्माअ़ ह़ुज्जत है और येह भी साबित हुवा कि कोई ज़माना ह़क़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि एक गुरोह मेरी उम्मत का ता क़ियामत दीने ह़क़ पर क़ाइम रहेगा, उस को किसी की अ़दावत व मुख़ालफ़त ज़रर न पहुंचा सकेगी। **356 :** या'नी तदरीजी **357 :** उन की उ़म्रें दराज़ कर के **358 :** और मेरी गिरिफ़्त सख़्त। **359 शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर शब के वक़्त क़बीले क़बीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराने वाला हूं और आप ने उन्हें **अल्लाह** का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले ह़वादिस का ज़िक्र किया तो उन में से किसी ने आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत की इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया क्या उन्हों ने फ़िक्रो तअम्मुल से काम न लिया

www.dawateislami.net

خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّ اَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ

चीज़ अल्लाह ने बनाई[360] और येह कि शायद उन का वा'दा नज़्दीक आ गया हो[361]

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَ

तो इस के बा'द और कौन सी बात पर यक़ीन लाएंगे[362] जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और

يَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ

उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें तुम से क़ियामत को पूछते हैं[363] कि वोह कब को ठहरी है

مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔ ثَقُلَتْ

وقف منزل وقف لازم

(कब आएगी) तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा[364] भारी पड़ रही है

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ

आस्मानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तह्क़ीक़

عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ قُلْ

कर रखा है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो अल्लाह ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं[365] तुम फ़रमाओ

لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ

मैं अपनी जान के भले बुरे का ख़ुद मुख़्तार नहीं[366] मगर जो अल्लाह चाहे[367] और अगर मैं ग़ैब जान

और आक़िबत अन्देशी व दूरबीनी बिल्कुल बालाए ताक़ रख दी और येह देख कर कि सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अक़्वाल व अफ़्आल में उन के मुख़ालिफ़ हैं और दुन्या और इस की लज़्ज़तों से आप ने मुंह फेर लिया है, आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ दा'वत देने और उस का ख़ौफ़ दिलाने में शबो रोज़ मश्गूल हैं, उन लोगों ने आप की तरफ़ जुनून की निस्बत कर दी, येह उन की ग़लती है। **360 :** उन सब में उस की वह्दानिय्यत और कमाले हिक्मतो क़ुदरत की रोशन दलीलें हैं। **361 :** और वोह कुफ़्र पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्नमी हो जाएं, ऐसे हाल में आक़िल पर ज़रूरी है कि वोह सोचे समझे दलाइल पर नज़र करे। **362 :** या'नी क़ुरआने पाक के बा'द और कोई किताब और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तिज़ार हो क्यूं कि आप ख़ातमुल अम्बिया हैं। **363 शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़ियामत कब क़ाइम होगी ? क्यूं कि हमें इस का वक़्त मा'लूम है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **364 :** क़ियामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुम ने क़रार दिया और ऐ यहूद ! तुम ने जो इस का वक़्त जानने का दा'वा किया येह भी ग़लत है, अल्लाह तआला ने इस को मख़्फ़ी किया है और इस में उस की हिक्मत है। **365 :** इस के इख़्फ़ा की हिक्मत तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि बा'ज़ मशाइख़ इस तरफ़ गए हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ब ए'लामे इलाही (अल्लाह तआला की अ़ता से) वक़्ते क़ियामत का इल्म है और येह हस्र आयत के मुनाफ़ी नहीं। **366 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए बनी मुस्तलिक़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली चौपाए भागे तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि मदीनए तय्यिबा में रिफ़ाआ का इन्तिक़ाल हो गया और येह भी फ़रमाया कि देखो मेरा नाक़ा कहां है, अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इन का कैसा अजीब हाल है कि मदीने में मरने वाले की तो ख़बर दे रहे हैं और अपनी नाक़ा मा'लूम ही नहीं कि कहां है, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस का येह क़ौल भी मख़्फ़ी न रहा, हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरा नाक़ा उस घाटी में है उस की नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था उसी शान से वोह नाक़ा पाया गया इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (تفسیر کبیر) **367 :** वोह मालिके हक़ीक़ी है जो कुछ है उस की

الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ معانقة ٨

लिया करता तो यूं होता कि मैं ने बहुत भलाई जम्अ़ कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुंची[368] मैं तो येही डर[369]

وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ ع ٢٣ / ١٣

और ख़ुशी सुनाने वाला हूं उन्हें जो ईमान रखते हैं वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया[370] और

جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا

उसी में से उस का जोड़ा बनाया[371] कि उस से चैन (आराम) पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया[372] तो उसे लिये

فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ

फिरा की (चलती फिरती रही) फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब **अल्लाह** से दुआ़ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ

शुक्र गुज़ार होंगे फिर जब उस ने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अ़ता फ़रमाया उन्हों ने उस की अ़ता में उस के साझी (शरीक) ठहराए

فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ

तो **अल्लाह** को बरतरी है उन के शिर्क से[373] क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए[374] और वोह

अ़ता से है। **368 :** येह कलाम बराहे अदब व तवाज़ोअ़ है, मा'ना येह हैं कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता जो जानता हूं वोह **अल्लाह** तआ़ला की इत्तिलाअ़ और उस की अ़ता से। (خازن) हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया भलाई जम्अ़ करना और बुराई न पहुंचना उसी के इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती कुदरत रखे और ज़ाती कुदरत वोही रखेगा जिस का इल्म भी ज़ाती हो क्यूं कि जिस की एक सिफ़त ज़ाती है उस के तमाम सिफ़ात ज़ाती, तो मा'ना येह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो कुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जम्अ़ कर लेता और बुराई न पहुंचने देता, भलाई से मुराद राहतें और काम्याबियां और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराइयों से तंगी व तक्लीफ़ और दुश्मनों का ग़ालिब आना है। येह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ़ और ना फ़रमानों का फ़रमां बरदार और काफ़िरों का मोमिन कर लेना हो और बुराई से बद बख़्त लोगों का बा वुजूद दा'वत के महरूम रह जाना, तो हासिले कलाम येह होगा कि अगर मैं नफ़्अ़ व ज़रर का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरीन ! तुम्हें सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्री हालत देखने की तक्लीफ़ मुझे न पहुंचती। **369 :** सुनाने वाला हूं काफ़िरों को **370 :** इक्रिमा का क़ौल है कि इस आयत में ख़िताब आ़म है हर एक शख़्स को और मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** वोही है जिस ने तुम में से हर एक को एक जान से या'नी उस के बाप से पैदा किया और उस की जिन्स से उस की बीबी को बनाया फिर जब वोह दोनों जम्अ़ हुए और हम्ल ज़ाहिर हुवा और उन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ़ की और ऐसा बच्चा मिलने पर अदाए शुक्र का अ़हद किया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया। उन की हालत येह हुई कि कभी तो वोह उस बच्चे को तबाएअ़ की तरफ़ निस्बत करते हैं जैसे दहरियों का हाल है, कभी सितारों की तरफ़ जैसा कवाकिब परस्तों का तरीक़ा है, कभी बुतों की तरफ़ जैसा बुत परस्तों का दस्तूर है **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि वोह उन के इस शिर्क से बरतर है। (کبیر) **371 :** या'नी उस के बाप की जिन्स से उस की बीबी बनाई। **372 :** मर्द का छाना किनाया है जिमाअ़ करने से और हलका सा पेट रहना इब्तिदाए हम्ल की हालत का बयान है। **373 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में कुरैश को ख़िताब है जो कुसय की औलाद हैं उन से फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स कुसय से पैदा किया और उस की बीबी उसी की जिन्स से अ़रबी कुरशी की ताकि उस से चैन व आराम पाए फिर जब उन की दरख़्वास्त के मुताबिक़ उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्हों ने **अल्लाह** की इस अ़ता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अ़ब्दे मनाफ़, अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा, अ़ब्दे कुसय और अ़ब्दुद्दार रखा। **374 :** या'नी बुतों को जिन्हों ने कुछ नहीं बनाया।

www.dawateislami.net

يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ

ख़ुद बनाए हुए हैं और न वोह उन को कोई मदद पहुंचा सकें और न अपनी जानों की मदद करें[375] और अगर

تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ

तुम उन्हें[376] राह की त़रफ़ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आएं[377] तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या

صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

चुप रहो[378] बेशक वोह जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी त़रह़ बन्दे हैं[379] तो उन्हें पुकारो

فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ز

फिर वोह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो क्या उन के पाउं हैं जिन से चलें

اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ

या उन के हाथ हैं जिन से गिरिफ़्त करें या उन के आंखें हैं जिन से देखें या उन के

اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

कान हैं जिन से सुनें[380] तुम फ़रमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाउं चलो और मुझे मोहलत न दो[381]

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِيْنَ

बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी[382] और वोह नेकों को दोस्त रखता है[383] और जिन्हें

375 : इस में बुतों की बे क़द्री और बुत्लाने शिर्क का बयान और मुश्रिकीन के कमाले जहल का इज़्हार है और बताया गया है कि इबादत का मुस्तह़िक़ वोही हो सकता है जो आ़बिद को नफ़्अ़ पहुंचाने और उस का ज़रर दफ़्अ़ करने की क़ुदरत रखता हो। मुश्रिकीन जिन बुतों को पूजते हैं उन की बे क़ुदरती इस दरजे की है कि वोह किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते ख़ुद अपनी ज़ात में दूसरे से बे नियाज़ नहीं, आप मख़्लूक़ हैं, बनाने वाले के मोहताज हैं, इस से बढ़ कर बे इख़्तियारी येह है कि वोह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें ख़ुद उन्हें ज़रर पहुंचे तो दफ़्अ़ नहीं कर सकते, कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे, जो चाहे करे, वोह उस से अपनी ह़िफ़ाज़त नहीं कर सकते ऐसे मजबूर बे इख़्तियार को पूजना इन्तिहा दरजे का जहल है। **376 :** या'नी बुतों को **377 :** क्यूं कि वोह न सुन सकते हैं न समझ सकते हैं **378 :** वोह बहर ह़ाल आ़जिज़ हैं, ऐसे को पूजना और मा'बूद बनाना बड़ी बे ख़िरदी (बे अ़क़्ली) है **379 :** और **अल्लाह** के मम्लूक व मख़्लूक़, किसी त़रह़ पूजने के क़ाबिल नहीं, इस पर भी अगर तुम उन्हें मा'बूद कहते हो **380 :** येह कुछ भी नहीं, तो फिर अपने से कमतर को पूज कर क्यूं ज़लील होते हो। **381 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब बुत परस्ती की मज़म्मत की और बुतों की आ़जिज़ी और बे इख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने धमकाया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बरबाद हो जाते हैं, येह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई कि अगर बुतों में कुछ क़ुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो ! और मेरी नुक़्सान रसानी में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्रो फ़रेब कर सकते हो वोह मेरे मुक़ाबले में करो और इस में देर न करो, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। **382 :** और मेरी त़रफ़ वह़्य भेजी और मेरी इ़ज़्ज़त की। **383 :** और उन का ह़ाफ़िज़ो नासिर है, उस पर भरोसा रखने वालों को मुश्रिकीन वग़ैरा का क्या अन्देशा तुम और तुम्हारे मा'बूद मुझे कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते।

تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ لَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ نَصۡرَکُمۡ وَ لَاۤ اَنۡفُسَهُمۡ یَنۡصُرُوۡنَ ﴿۱۹۷﴾ وَ

उस के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न ख़ुद अपनी मदद करें[384] और

اِنۡ تَدۡعُوۡهُمۡ اِلَی الۡهُدٰی لَا یَسۡمَعُوۡا ؕ وَ تَرٰىهُمۡ یَنۡظُرُوۡنَ اِلَیۡکَ وَ هُمۡ

अगर उन्हें राह की त़रफ़ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वोह तेरी त़रफ़ देख रहे हैं[385] और उन्हें

لَا یُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۹۸﴾ خُذِ الۡعَفۡوَ وَ اۡمُرۡ بِالۡعُرۡفِ وَ اَعۡرِضۡ عَنِ الۡجٰهِلِیۡنَ ﴿۱۹۹﴾

कुछ भी नहीं सूझता ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो

وَ اِمَّا یَنۡزَغَنَّکَ مِنَ الشَّیۡطٰنِ نَزۡغٌ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۰۰﴾

और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए)[386] तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है

اِنَّ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا اِذَا مَسَّهُمۡ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیۡطٰنِ تَذَکَّرُوۡا فَاِذَا هُمۡ

बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की

مُّبۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۱﴾ۚ وَ اِخۡوَانُهُمۡ یَمُدُّوۡنَهُمۡ فِی الۡغَیِّ ثُمَّ لَا یُقۡصِرُوۡنَ ﴿۲۰۲﴾ وَ اِذَا

आंखें खुल जाती हैं[387] और वोह जो शैत़ानों के भाई हैं[388] शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर गई (कोताही) नहीं करते और ऐ मह़बूब

لَمۡ تَاۡتِهِمۡ بِاٰیَةٍ قَالُوۡا لَوۡ لَا اجۡتَبَیۡتَهَا ؕ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا یُوۡحٰۤی اِلَیَّ مِنۡ

जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुम ने दिल से क्यूं न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरी त़रफ़ मेरे रब से

رَّبِّیۡ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنۡ رَّبِّکُمۡ وَ هُدًی وَّ رَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾ وَ

वह़्य होती है येह तुम्हारे रब की त़रफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रह़मत मुसल्मानों के लिये और

اِذَا قُرِئَ الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ وَ اَنۡصِتُوۡا لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۲۰۴﴾ وَ اذۡکُرۡ

जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़म हो[389] और अपने रब

384 : तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे। **385 :** क्यूं कि बुतों की तस्वीरें इस शक्ल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है। **386 :** कोई वस्वसा डाले **387 :** और वोह उस वस्वसे को दूर कर देते हैं और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। **388 :** या'नी कुफ़्फ़ार। **389 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त क़ुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है, जुम्हूर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ इस त़रफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है और एक क़ौल येह है कि इस में ख़ुत़्बा सुनने के लिये गोश बर आवाज़ होने (ख़ुत़्बा बग़ौर सुनने) और ख़ामोश रहने का हुक्म है और एक क़ौल येह है कि इस से नमाज़ व ख़ुत़्बा दोनों में बग़ौर सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की ह़दीस में है आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो। ग़रज़ इस आयत से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम (नमाज़े बा जमाअ़त में इमाम के पीछे क़िराअत) की मुमानअ़त साबित होती है और कोई ह़दीस ऐसी नहीं है जिस को इस के मुक़ाबिल ह़ुज्जत क़रार दिया जा सके। क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम की ताईद में सब से ज़ियादा

www.dawateislami.net

رَبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِيْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

को अपने दिल में याद करो[390] ज़ारी (आ़जिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह़

وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿۲۰۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا

और शाम[391] और ग़ाफ़िलों में न होना बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं[392]

يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ ع السجدة

उस की इ़बादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं[393]

اٰياتها ۷۵ ۸ سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ ۸۸ رکوعاتها ۱۰

सूरए अन्फ़ाल मदनिय्या है, इस में पछत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ

ऐ मह़बूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं[2] तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह व रसूल हैं[3] तो अल्लाह से डरो[4] और

ए'तिमाद जिस ह़दीस पर किया जाता है वोह येह है : "لَاصَلٰوةَ اِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ" मगर इस ह़दीस से क़िराअत ख़ल्फ़ुल इमाम का वुजूब तो साबित नहीं होता सिर्फ़ इतना साबित होता है कि बिग़ैर फ़ातिह़ा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि ह़दीस : "قِرَاءَةُ الْاِمَامِ لَهٗ قِرَاءَةٌ" से साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़्तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़्तदी साकित रहा तो उस की क़िराअत ह़ुक्मिया हुई उस की नमाज़ बे क़िराअत कहां रही, येह क़िराअत ह़ुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से क़ुरआन व ह़दीस दोनों पर अ़मल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तिबाअ़ तर्क होता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिह़ा वग़ैरा कुछ न पढ़े। **390 :** ऊपर की आयत के बा'द इस आयत के देखने से मा'लूम होता है कि क़ुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना या'नी अ़ज़्मतो जलाले इलाही का इस्तिह़ज़ार (मौजूद होना) लाज़िम है كَذَا فِىْ تَفْسِيْرِ ابْنِ جَرِيْر। इस से इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअ़त साबित होती है और दिल में अ़ज़्मतो जलाले ह़क़ का इस्तिह़ज़ार ज़िक्रे क़ल्बी है। **मस्अला :** ज़िक्र बिल जहर और ज़िक्र बिल इख़्फ़ा दोनों में नुसूस वारिद हैं जिस शख़्स को जिस क़िस्म के ज़िक्र में ज़ौक़ो शौक़े ताम व इख़्लासे कामिल मुयस्सर हो उस के लिये वोही अफ़्ज़ल है, كذا فى ردالمحتار वग़ैरा। **391 :** शाम अ़स्र व मग़रिब के दरमियान का वक़्त है, इन दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़्ज़ल है क्यूं कि नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए आफ़्ताब तक और इसी त़रह़ नमाज़े अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक नमाज़ मम्नूअ़ है इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तह़ब हुवा ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात क़ुरबत व त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहें। **392 :** या'नी मलाइकए मुक़र्रबीन **393 :** येह आयत आयाते सज्दा में से है, इन के पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्दा लाज़िम हो जाता है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैत़ान रोता है और कहता है अफ़्सोस बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया वोह सज्दा कर के जन्नती हुवा और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार कर के जहन्नमी हो गया। **1 :** येह सूरत मदनी है बजुज़ सात आयतों के जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं और "اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ" से शुरूअ़ होती हैं, इस में पछत्तर आयतें और एक हज़ार पछत्तर कलिमे और पांच हज़ार अस्सी ह़ुरूफ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : उन्हों ने फ़रमाया कि येह आयत हम अहले बद्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआ़मले में हमारे दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हुवा और बद मज़गी की नौबत आ गई तो अल्लाह तआ़ला ने मुआ़मला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिपुर्द किया। आप ने वोह माल बराबर तक़्सीम कर दिया। **3 :** जैसे चाहें तक़्सीम फ़रमाएं। **4 :** और बाहम इख़्तिलाफ़ न करो।

www.dawateislami.net

اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَیْنِكُمْ ۪ وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ①

अपने आपस में मेल (सुल्ह सफ़ाई) रखो और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَ جِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِیَتْ

ईमान वाले वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए[5] उन के दिल डर जाएं और जब उन पर

عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ۚۖ② الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ

उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें[6] वोह जो नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ؕ③ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ۚ④ كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ

दरजे हैं इन के रब के पास[7] और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[8] जिस त़रह़ ऐ मह़बूब तुम्हें तुम्हारे रब ने

مِنْۢ بَیْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَ اِنَّ فَرِیْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ⑤

तुम्हारे घर से ह़क़ के साथ बरआमद किया[9] और बेशक मुसल्मानों का एक गुरौह इस पर नाख़ुश था[10]

5 : तो उस के अ़ज़मतो जलाल से **6 :** और अपने तमाम कामों को उस के सिपुर्द करें। **7 :** ब क़दर उन के आ'माल के क्यूं कि मोमिनीन के अह़वाल इन औसाफ़ में मुतफ़ावित हैं इस लिये उन के मरातिब भी जुदागाना हैं। **8 :** जो हमेशा इक्राम व ता'ज़ीम के साथ बे मेह़नतो मशक़्क़त अ़ता की जाए। **9 :** या'नी मदीनए त़य्यिबा से बद्र की त़रफ़। **10 :** क्यूं कि वोह देख रहे थे कि उन की ता'दाद कम है, हथियार थोड़े हैं, दुश्मन की ता'दाद भी ज़ियादा है और वोह अस्लह़ा वग़ैरा का बड़ा सामान रखता है। मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि अबू सुफ़्यान के मुल्के शाम से एक क़ाफ़िले के साथ आने की ख़बर पा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ उन के मुक़ाबले के लिये रवाना हुए मक्कए मुकर्रमा से अबू जह्ल क़ुरैश का एक लश्करे गिरां ले कर क़ाफ़िले की इमदाद के लिये रवाना हुवा। अबू सुफ़्यान तो रस्ते से कतरा कर मअ़ अपने क़ाफ़िले के साह़िले बह़्र की राह चल पड़े और अबू जह्ल से उस के रफ़ीक़ों ने कहा कि क़ाफ़िला तो बच गया अब मक्कए मुकर्रमा वापस चल, तो उस ने इन्कार कर दिया और वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग करने के क़स्द से बद्र की त़रफ़ चल पड़ा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ार के दोनों गुरौहों में से एक पर मुसल्मानों को फ़त्ह़ मन्द करेगा ख़्वाह क़ाफ़िला हो या क़ुरैश का लश्कर। सह़ाबा ने इस में मुवाफ़क़त की मगर बा'ज़ को येह उ़ज़्र हुवा कि हम इस तय्यारी से नहीं चले थे और न हमारी ता'दाद इतनी है न हमारे पास काफ़ी सामाने अस्लह़ा है, येह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा और हु़ज़ूर ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला तो साह़िल की त़रफ़ निकल गया और अबू जह्ल सामने आ रहा है। इस पर उन लोगों ने फिर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! क़ाफ़िले ही का तआ़क़ुब कीजिये और लश्करे दुश्मन को छोड़ दीजिये। येह बात ना गवार ख़ात़िरे अक़्दस हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने खड़े हो कर अपने इख़्लास व फ़रमां बरदारी और रिज़ाजूई व जां निसारी का इज़्हार किया और बड़ी क़ुव्वत व इस्तिह़्काम के साथ अ़र्ज़ की, कि वोह किसी त़रह़ मरज़िये मुबारक के ख़िलाफ़ सुस्ती करने वाले नहीं हैं फिर और सह़ाबा ने भी अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को जो अम्र फ़रमाया उस के मुत़ाबिक़ तशरीफ़ ले चलें, हम साथ हैं, कभी तख़ल्लुफ़ न करें (पीछे न रहें)गे, हम आप पर ईमान लाए, हम ने आप की तस्दीक़ की, हम ने आप के इत्तिबाअ़ के अ़ह्द किये, हमें आप की इत्तिबाअ़ में समुन्दर के अन्दर कूद जाने से भी उ़ज़्र नहीं है। हु़ज़ूर ने फ़रमाया : चलो **अल्लाह** की बरकत पर भरोसा करो, उस ने मुझे वा'दा दिया है, मैं तुम्हें बिशारत देता हूं, मुझे दुश्मनों के गिरने की जगह नज़र आ रही है और हु़ज़ूर ने कुफ़्फ़ार के मरने और गिरने की जगह नाम बनाम बता दीं और एक एक की जगह पर निशानात लगा दिये और येह मो'जिज़ा देखा गया कि उन में से जो मर कर गिरा उसी निशान पर गिरा, उस से ख़त़ा न की।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَ هُمْ

सच्ची बात में तुम से झगड़ते थे[11] बा'द इस के कि ज़ाहिर हो चुकी[12] गोया वोह आंखों देखी मौत की तरफ़

يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾ وَ اِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىِٕفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ

हांके जाते हैं[13] और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि इन दोनों गुरौहों[14] में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे

اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ

कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका (किसी नुक़्सान का डर) नहीं[15] और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए[16]

وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَ يُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَ لَوْ كَرِهَ

और काफ़िरों की जड़ काट दे (हलाक कर दे)[17] कि सच को सच करे और झूट को झूटा[18] पड़े बुरा

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨﴾ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ

मानें मुजरिम जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे[19] तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार

مِّنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَ لِتَطْمَىِٕنَّ بِهٖ

फ़िरिश्तों की क़ितार से[20] और येह तो **अल्लाह** ने न किया मगर तुम्हारी ख़ुशी को और इस लिये कि तुम्हारे दिल

قُلُوْبُكُمْ ۚ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾ اِذْ ع ١٥

चैन पाएं और मदद नहीं मगर **अल्लाह** की तरफ़ से[21] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है जब

11 : और कहते थे कि हमें लश्करे क़ुरैश का हाल ही मा'लूम न था कि हम उन के मुक़ाबले की तय्यारी कर के चलते। **12 :** येह बात कि हज़रत सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم जो कुछ करते हैं हुक्मे इलाही से करते हैं और आप ने ए'लान फ़रमा दिया है कि मुसल्मानों को ग़ैबी मदद पहुंचेगी। **13 :** या'नी क़ुरैश से मुक़ाबला उन्हें ऐसा मुहीब (बड़ा भयानक) मा'लूम होता है। **14 :** या'नी अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले और अबू जह्ल के लश्कर। **15 :** या'नी अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला **16 :** दीने हक़ को ग़लबा दे, इस को बुलन्दो बाला करे। **17 :** और उन्हें इस तरह हलाक करे कि उन में से कोई बाक़ी न बचे। **18 :** या'नी इस्लाम को ज़ुहूरो सबात अ़ता फ़रमाए और कुफ़्र को मिटाए। **19 शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है रोज़े बद्र रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हज़ार हैं और आप के अस्हाब तीन सो दस से कुछ ज़ियादा तो हुज़ूर क़िब्ले की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और अपने मुबारक हाथ फैला कर अपने रब से येह दुआ़ करने लगे या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है पूरा कर, या रब ! जो तू ने मुझ से वा'दा किया इनायत फ़रमा, या रब ! अगर तू अहले इस्लाम की इस जमाअ़त को हलाक कर देगा तो ज़मीन में तेरी परस्तिश न होगी। इसी तरह हुज़ूर दुआ़ करते रहे यहां तक कि दोशे (शानए) मुबारक से चादर शरीफ़ उतर गई तो हज़रते अबू बक्र हाज़िर हुए और चादरे मुबारक दोशे अक़्दस पर डाली और अ़र्ज़ किया **: या नबिय्यल्लाह !** आप की मुनाजात अपने रब के साथ काफ़ी हो गई, वोह बहुत जल्द अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा, इस पर येह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। **20 :** चुनान्चे अव्वल हज़ार फ़िरिश्ते आए फिर तीन हज़ार फिर पांच हज़ार, हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुसल्मान उस रोज़ काफ़िरों का तआ़क़ुब करते थे और काफ़िर मुसल्मान के आगे आगे भागता जाता था अचानक ऊपर से कोड़े की आवाज़ आती थी और सुवार का येह कलिमा सुना जाता था : (اَقْدِمْ حَيْزُوْم) या'नी आगे बढ़ ऐ हैज़ूम ! (हैज़ूम हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े का नाम है) और नज़र आता था कि काफ़िर गिर कर मर गया और उस की नाक तलवार से उड़ा दी गई और चेहरा ज़ख़्मी हो गया। सहाबा ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अपने येह मुआ़यने बयान किये तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि येह आस्माने सिवुम की मदद है। अबू जह्ल ने हज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ से कहा कि कहां से ज़र्ब आती थी ? मारने वाला तो हम को नज़र नहीं आता था। आप ने फ़रमाया : फ़िरिश्तों की तरफ़ से, तो कहने लगा : फिर वोही तो ग़ालिब हुए तुम तो ग़ालिब नहीं हुए। **21 :** तो बन्दे को चाहिये कि उसी पर भरोसा करे और अपने ज़ोर व क़ुव्वत और अस्बाब व

www.dawateislami.net

يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً

उस ने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उस की त़रफ़ से चैन (तस्कीन) थी[22] और आस्मान से तुम पर पानी उतारा

لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ

कि तुम्हें उस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों की ढारस बंधाए और

يُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا

उस से तुम्हारे क़दम जमा दे[23] जब ऐ मह़बूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़्य भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसल्मानों

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا

को साबित रखो[24] अ़न्क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों

فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا

की गरदनों से ऊपर मारो और उन की एक एक पोर (जोड़) पर ज़र्ब लगाओ[25] येह इस लिये कि उन्हों ने **अल्लाह** और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

उस के रसूल से मुख़ालफ़त की और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब

जमाअ़त पर नाज़ न करे। 22 : ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि ग़ुनूदगी अगर जंग में हो तो अम्न है और **अल्लाह** की त़रफ़ से है और नमाज़ में हो तो शैत़ान की त़रफ़ से है, जंग में ग़ुनूदगी का अम्न होना इस से ज़ाहिर है कि जिसे जान का अन्देशा हो उसे नींद और ऊंघ नहीं आती वोह ख़त़रे और इज़्तिराब में रहता है। ख़ौफ़े शदीद के वक़्त ग़ुनूदगी आना ह़ुसूले अम्न और ज़वाले ख़ौफ़ की दलील है बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब मुसल्मानों को दुश्मनों की कसरत और मुसल्मानों की क़िल्लत से जानों का ख़ौफ़ हुवा और बहुत ज़ियादा प्यास लगी तो उन पर ग़ुनूदगी डाल दी गई जिस से उन्हें राह़त ह़ासिल हुई और तकान और प्यास रफ़्अ़ हुई और वोह दुश्मन से जंग करने पर क़ादिर हुए। येह ऊंघ उन के ह़क़ में ने'मत थी और यकबारगी सब को आई, जमाअ़ते कसीर का ख़ौफ़े शदीद की ह़ालत में इस त़रह़ यकबारगी ऊंघ जाना ख़िलाफ़े आ़दत है इसी लिये बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : येह ऊंघ मो'जिज़े के ह़ुक्म में है। (خازن) 23 : रोज़े बद्र मुसल्मान रेगिस्तान में उतरे उन के और उन के जानवरों के पाउं रैत में धंसे जाते थे और मुश्रिकीन इन से पहले लबे आब क़ब्ज़ा कर चुके थे। सह़ाबा में बा'ज़ ह़ज़रात को वुज़ू की बा'ज़ को ग़ुस्ल की ज़रूरत थी और प्यास की शिद्दत थी तो शैत़ान ने वस्वसा डाला कि तुम गुमान करते हो कि तुम ह़क़ पर हो तुम में **अल्लाह** के नबी हैं और तुम अल्लाह वाले हो और ह़ाल येह है कि मुश्रिकीन ग़ालिब हो कर पानी पर पहुंच गए तुम बिग़ैर वुज़ू और ग़ुस्ल किये नमाज़ें पढ़ते हो तो तुम्हें दुश्मन पर फ़त्ह़ याब होने की किस त़रह़ उम्मीद है तो **अल्लाह** तआ़ला ने मींह भेजा जिस से जंगल सैराब हो गया और मुसल्मानों ने उस से पानी पिया और ग़ुस्ल किये और वुज़ू किये और अपनी सुवारियों को पिलाया और अपने बरतनों को भरा और ग़ुबार बैठ गया और ज़मीन इस क़ाबिल हो गई कि उस पर क़दम जमने लगे और शैत़ान का वस्वसा ज़ाइल हुवा और सह़ाबा के दिल ख़ुश हुए और येह ने'मते फ़त्ह़ो ज़फ़र ह़ासिल होने की दलील हुई। 24 : इन की इआ़नत कर के और इन्हें बिशारत दे कर 25 : अबू दावूद माज़नी जो बद्र में ह़ाज़िर हुए थे फ़रमाते हैं कि मैं मुश्रिक की गरदन मारने के लिये उस के दरपै हुवा, उस का सर मेरी तलवार पहुंचने से पहले ही कट कर गिर गया तो मैं ने जान लिया कि इस को किसी और ने क़त्ल किया। सह्ल बिन ह़ुनैफ़ फ़रमाते हैं कि रोज़े बद्र हम में से कोई तलवार से इशारा करता था तो उस की तलवार पहुंचने से पहले ही मुश्रिक का सर जिस्म से जुदा हो कर गिर जाता था। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने यकमुश्त संगरेज़े कुफ़्फ़ार पर फेंक कर मारे तो कोई काफ़िर ऐसा न बचा जिस की आंखों में उस में से कुछ पड़ा न हो। बद्र का येह वाक़िआ़ सुब्ह़े जुमुआ़ सतरह रमज़ान मुबारक 2 सिने हिजरी में पेश आया।

www.dawateislami.net

الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَ اَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا

सख़्त है   येह तो चखो[26] और इस के साथ येह है कि काफ़िरों को आग का अ़ज़ाब है[27]   ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾ ج

ईमान वालो जब काफ़िरों के लाम (लश्कर) से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दो[28]

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

और जो उस दिन उन्हें पीठ देगा मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ

तो वोह **अल्लाह** के ग़ज़ब में पलटा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है   और क्या बुरी जगह है पलटने की[29]   तो तुम

تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

ने उन्हें क़त्ल न किया बल्कि **अल्लाह** ने[30] उन्हें क़त्ल किया   और ऐ महबूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी बल्कि **अल्लाह** ने

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

फेंकी   और इस लिये कि मुसल्मानों को इस से अच्छा इन्आ़म अ़ता फ़रमाए   बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ

येह[31] तो लो और इस के साथ येह है कि **अल्लाह** काफ़िरों का दाउं सुस्त करने वाला है   ऐ काफ़िरो अगर तुम फ़ैसला मांगते हो तो येह फ़ैसला

الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ

तुम पर आ चुका[32]   और अगर बाज़ आओ[33] तो तुम्हारा भला है   और अगर तुम फिर शरारत करो तो हम फिर सज़ा देंगे   और तुम्हारा जथ्था (गुरोह)

26 : जो बद्र में पेश आया और कुफ़्फ़ार मक़्तूल और मुक़य्यद (क़ैद) हुए येह तो अ़ज़ाबे दुन्या है। **27 :** आख़िरत में **28 :** या'नी अगर कुफ़्फ़ार तुम से ज़ियादा भी हों तो उन के मुक़ाबले से न भागो। **29 :** या'नी मुसल्मानों में से जो जंग में कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले से भागा वोह ग़ज़बे इलाही में गिरिफ़्तार हुवा, उस का ठिकाना दोज़ख़ है, सिवाए दो ह़ालतों के : **एक** तो येह कि लड़ाई का हुनर या करतब करने के लिये पीछे हटा हो वोह पीठ देने और भागने वाला नहीं है। **दूसरे** जो अपनी जमाअ़त में मिलने के लिये पीछे हटा वोह भी भागने वाला नहीं है। **30 शाने नुज़ूल :** जब मुसल्मान जंगे बद्र से वापस हुए तो उन में से एक कहता था कि मैं ने फुलां को क़त्ल किया, दूसरा कहता था कि मैं ने फुलां को क़त्ल किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि इस क़त्ल को तुम अपने ज़ोर व क़ुव्वत की त़रफ़ निस्बत न करो कि येह दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** की इमदाद और उस की तक़्विय्यत और ताईद है। **31 :** फ़त्ह़ो नुसरत **32 शाने नुज़ूल :** येह ख़िताब मुश्रिकीन को है जिन्हों ने बद्र में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग की और उन में से अबू जह्ल ने अपनी और हुज़ूर की निस्बत येह दुआ़ की, कि या रब ! हम में जो तेरे नज़्दीक अच्छा हो उस की मदद कर और जो बुरा हो उसे मुब्तलाए मुसीबत कर और एक रिवायत में है कि मुश्रिकीन ने मक्कए मुकर्रमा से बद्र को चलते वक़्त का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दों से लिपट कर येह दुआ़ की थी कि या रब ! अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ह़क़ पर हों तो उन की मदद फ़रमा और अगर हम ह़क़ पर हों तो हमारी मदद कर, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि जो फ़ैसला तुम ने चाहा था वोह कर दिया गया और जो गुरोह ह़क़ पर था उस को फ़त्ह़ दी गई, येह तुम्हारा मांगा हुवा फ़ैसला है, अब आस्मानी फ़ैसले से भी जो उन का त़लब किया हुवा था इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत साबित हुई। अबू जह्ल भी इस जंग में ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ मारा गया और उस का सर रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर किया गया। **33 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत और हुज़ूर

www.dawateislami.net

ع ٢ ٩ ١٢

عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾ يٰۤاَيُّهَا

तुम्हें कुछ काम न देगा चाहे कितना ही बहुत हो और इस के साथ येह है कि अल्लाह मुसल्मानों के साथ है ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾

ईमान वालो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म मानो[34] और सुन सुना कर उस से न फिरो

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ شَرَّ

और उन जैसे न होना जिन्हों ने कहा हम ने सुना और वोह नहीं सुनते[35] बेशक सब जानवरों

الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَوْ عَلِمَ

में बदतर अल्लाह के नज़्दीक वोह हैं जो बहरे गूंगे हैं जिन को अ़क़्ल नहीं[36] और अगर अल्लाह उन में

اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

कुछ भलाई[37] जानता तो उन्हें सुना देता और अगर[38] सुना देता जब भी अन्जाम कार मुंह फेर कर पलट जाते[39]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ

ऐ ईमान वालो अल्लाह व रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो[40] जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी[41]

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

और जान लो कि अल्लाह का हुक्म आदमी और उस के दिली इरादों में ह़ाइल हो जाता है और येह कि तुम्हें उसी की त़रफ़ उठना है

के साथ जंग करने से **34 :** क्यूं कि रसूल की इत़ाअ़त और अल्लाह की इत़ाअ़त एक ही चीज़ है, जिस ने रसूल की इत़ाअ़त की उस ने अल्लाह की इत़ाअ़त की। **35 :** क्यूं कि जो सुन कर नफ़्अ़ न उठाए और नसीह़त पज़ीर न हो उस का सुनना सुनना ही नहीं है, येह मुनाफ़िक़ीन व मुश्रिकीन का ह़ाल है, मुसल्मानों को इस ह़ाल से दूर रहने का हुक्म दिया जाता है। **36 :** न वोह ह़क़ सुनते हैं, न ह़क़ बोलते हैं, न ह़क़ को समझते हैं, कान और ज़बान व अ़क़्ल से फ़ाइदा नहीं उठाते, जानवरों से भी बदतर हैं क्यूं कि येह दीदा दानिस्ता बहरे गूंगे बनते हैं और अ़क़्ल से दुश्मनी करते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी अ़ब्दुद्दार बिन क़ुसय के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि जो कुछ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ लाए हम उस से बहरे, गूंगे, अन्धे हैं। येह सब लोग जंगे उहुद में मक़्तूल हुए और उन में से सिर्फ़ दो शख़्स ईमान लाए : मुस्अ़ब बिन उ़मैर और सुवैबित़ बिन ह़र्मला। **37 :** या'नी सिद्क़ो रग़बत **38 :** ब ह़ालते मौजूदा येह जानते हुए कि उन में सिद्क़ो रग़बत नहीं है **39 :** अपने इनाद (बुग़्ज़) और ह़क़ से दुश्मनी के बाइस **40 :** क्यूं कि रसूल का बुलाना अल्लाह ही का बुलाना है। बुख़ारी शरीफ़ में सईद बिन मुअ़ल्ला से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था, मुझे रसूले अकरम ﷺ ने पुकारा मैं ने जवाब न दिया फिर मैं ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** मैं नमाज़ पढ़ रहा था, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि क्या अल्लाह तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया है कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो? ऐसा ही दूसरी ह़दीस में है कि ह़ज़रते उबय बिन का'ब नमाज़ पढ़ते थे, हुज़ूर ने उन्हें पुकारा, उन्हों ने जल्दी नमाज़ तमाम कर के सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम्हें जवाब देने से क्या बात मानेअ़ हुई? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर मैं नमाज़ में था। हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम ने क़ुरआने पाक में येह नहीं पाया कि अल्लाह और रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो? अ़र्ज़ किया : बेशक आयिन्दा ऐसा न होगा। **41 :** उस चीज़ से या ईमान मुराद है क्यूं कि काफ़िर मुर्दा होता है, ईमान से उस को ज़िन्दगी ह़ासिल होती है। क़तादा ने कहा कि वोह चीज़ क़ुरआन है क्यूं कि इस से दिलों की ज़िन्दगी है और इस में नजात है और इस्मते दारैन है। मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि वोह चीज़ जिहाद है क्यूं कि इस की बदौलत अल्लाह तआ़ला ज़िल्लत के बा'द इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाता

www.dawateislami.net

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا

और उस फ़ितने से डरते रहो जो हरगिज़ तुम में ख़ास ज़ालिमों ही को न पहुंचेगा[42] और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ

कि अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है और याद करो[43] जब तुम थोड़े थे मुल्क में

فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ

दबे हुए[44] डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक न ले जाएं तो उस ने तुम्हें[45] जगह दी और अपनी मदद से ज़ोर दिया

وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

और सुथरी चीज़ें तुम्हें रोज़ी दीं[46] कि कहीं तुम एहसान मानो ऐ ईमान वालो अल्लाह

تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ

व रसूल से दग़ा न करो[47] और न अपनी अमानतों में दानिस्ता ख़ियानत और

है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि वोह शहादत है इस लिये कि शुहदा अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं। **42 :** बल्कि अगर तुम उस से न डरे और उस के अस्बाब या'नी मम्नूआ़त को तर्क न किया और फ़ितना नाज़िल हुवा तो येह न होगा कि उस में ख़ास ज़ालिम और बदकार ही मुब्तला हों बल्कि वोह नेक और बद सब को पहुंच जाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिनीन को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपने दरमियान मम्नूआ़त न होने दें या'नी अपने मक़्दूर (ताक़त) तक बुराइयों को रोकें और गुनाह करने वालों को गुनाह से मन्अ़ करें, अगर उन्हों ने ऐसा न किया तो अ़ज़ाब उन सब को आ़म होगा, ख़ताकार और ग़ैर ख़ताकार सब को पहुंचेगा। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला मख़्सूस लोगों के अ़मल पर अ़ज़ाब आ़म नहीं करता जब तक कि आ़म तौर पर लोग ऐसा न करें कि मम्नूआ़त को अपने दरमियान होता देखते रहें और उस के रोकने और मन्अ़ करने पर क़ादिर हों बा वुजूद इस के न रोकें न मन्अ़ करें, जब ऐसा होता है तो अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब में आ़म व ख़ास सब को मुब्तला करता है। अबू दावूद की ह़दीस में है कि जो शख़्स किसी क़ौम में सरगर्मे मआ़सी हो और वोह लोग बा वुजूद क़ुदरत के उस को न रोकें तो अल्लाह तआ़ला मरने से पहले उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करता है। इस से मा'लूम हुवा कि जो क़ौम नही अ़निल मुन्कर तर्क करती है और लोगों को गुनाहों से नहीं रोकती वोह अपने इस तर्के फ़र्ज़ की शामत में मुब्तलाए अ़ज़ाब होती है। **43 :** ऐ मोमिनीने मुहाजिरीन! इब्तिदाए इस्लाम में हिजरत करने से पहले मक्कए मुकर्रमा में **44 :** क़ुरैश तुम पर ग़ालिब थे और तुम **45 :** मदीनए त़य्यिबा में **46 :** या'नी अम्वाले ग़नीमत जो तुम से पहले किसी उम्मत के लिय ह़लाल नहीं किये गए थे। **47 :** फ़राइज़ का छोड़ देना अल्लाह तआ़ला से ख़ियानत करना है और सुन्नत का तर्क करना रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू लुबाबा हारून बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर अन्सारी के ह़क़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ़ येह था कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूदे बनी क़ुरैज़ा का दो हफ़्ते से ज़ियादा अ़र्से तक मुह़ासरा फ़रमाया वोह इस मुह़ासरे से तंग आ गए और उन के दिल ख़ाइफ़ हो गए तो उन से उन के सरदार का'ब बिन असद ने येह कहा कि अब तीन शक्लें (सूरतें) हैं या इस शख़्स या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करो और इन की बैअ़त कर लो क्यूं कि क़सम ब ख़ुदा वोह नबिय्ये मुरसल हैं, येह ज़ाहिर हो चुका और येह वोही रसूल हैं जिन का ज़िक्र तुम्हारी किताब में है, इन पर ईमान ले आए तो जान, माल, अहलो औलाद सब मह़फ़ूज़ रहेंगे, मगर इस बात को क़ौम ने न माना तो का'ब ने दूसरी शक्ल (सूरत) पेश की और कहा कि तुम अगर इसे नहीं मानते तो आओ पहले हम अपने बीबी बच्चों को क़त्ल कर दें फिर तलवारें खींच कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के अस्ह़ाब के मुक़ाबिल आएं कि अगर हम इस मुक़ाबले में हलाक भी हो जाएं तो हमारे साथ अपने अहलो औलाद का ग़म तो न रहे। इस पर क़ौम ने कहा कि अहलो औलाद के बा'द जीना ही किस काम का? तो का'ब ने कहा कि येह भी मन्ज़ूर नहीं है तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से सुल्ह़ की दरख़्वास्त करो शायद इस में कोई बेहतरी की सूरत निकले, तो उन्हों ने ह़ुज़ूर से सुल्ह़ की दरख़्वास्त की लेकिन ह़ुज़ूर ने मन्ज़ूर न फ़रमाया सिवाए इस के कि अपने ह़क़ में सा'द बिन मुआ़ज़ के फ़ैसले को मन्ज़ूर करें, इस पर उन्हों ने कहा कि हमारे पास अबू लुबाबा को भेज दीजिये क्यूं कि अबू लुबाबा से उन के तअ़ल्लुक़ात थे और अबू लुबाबा का माल और उन की औलाद और उन के इ़याल सब बनी क़ुरैज़ा के पास थे। ह़ुज़ूर ने अबू लुबाबा को भेज दिया बनी क़ुरैज़ा ने उन से राय दरयाफ़्त की, कि क्या हम सा'द बिन मुआ़ज़ का फ़ैसला मन्ज़ूर कर लें कि जो कुछ वोह हमारे ह़क़ में फ़ैसला दें वोह हमें

اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۠ (۲۸) ع ۳/۱۷

जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फ़ितना है[48] और **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है[49]

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ یُكَفِّرْ

ऐ ईमान वालो अगर **अल्लाह** से डरोगे[50] तो तुम्हें वोह देगा जिस से हक़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी

عَنْكُمْ سَیِّاٰتِكُمْ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ (۲۹) وَ اِذْ یَمْكُرُ

बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है और ऐ महबूब याद करो जब काफ़िर

بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ اَوْ یُخْرِجُوْكَ ؕ وَ یَمْكُرُوْنَ

तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द (क़ैद) कर लें या शहीद कर दें या निकाल (जला वत़न कर) दें[51] और वोह अपना सा मक्र करते थे

क़बूल हो ? अबू लुबाबा ने अपनी गरदन पर हाथ फेर कर इशारा किया कि येह तो गले कटवाने की बात है, अबू लुबाबा कहते हैं कि मेरे क़दम अपनी जगह से हटने न पाए थे कि मेरे दिल में येह बात जम गई कि मुझ से **अल्लाह** और उस के रसूल की ख़ियानत वाक़ेअ़ हुई, येह सोच कर वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में तो न आए सीधे मस्जिद शरीफ़ पहुंचे और मस्जिद शरीफ़ के एक सुतून से अपने आप को बंधवा लिया और **अल्लाह** की क़सम खाई कि न कुछ खाएंगे न पियेंगे यहां तक कि मर जाएं या **अल्लाह** तआ़ला उन की तौबा क़बूल करे। वक़्तन फ़ वक़्तन उन की बीबी आ कर उन्हें नमाज़ों के लिये और इन्सानी ह़ाजतों के लिये खोल दिया करती थीं और फिर बांध दिये जाते थे। हुज़ूर को जब येह ख़बर पहुंची तो फ़रमाया कि अबू लुबाबा मेरे पास आते तो मैं उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करता लेकिन जब उन्हों ने येह किया है तो मैं उन्हें न खोलूंगा जब तक **अल्लाह** उन की तौबा क़बूल न करे। वोह सात रोज़ बंधे रहे न कुछ खाया न पिया यहां तक कि बेहोश हो कर गिर गए, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन की तौबा क़बूल की। सह़ाबा ने उन्हें तौबा क़बूल होने की बिशारत दी तो उन्हों ने कहा : मैं ख़ुदा की क़सम ! न खुलूंगा जब तक रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मुझे ख़ुद न खोलें। ह़ज़रत ने उन्हें अपने दस्ते मुबारक से खोल दिया। अबू लुबाबा ने कहा मेरी तौबा उस वक़्त पूरी होगी जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती छोड़ दूं जिस में मुझ से येह ख़त़ा सरज़द हुई और मैं अपने कुल माल को अपने मिल्क से निकाल दूं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तिहाई माल का सदक़ा करना काफ़ी है। उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **48 :** कि आख़िरत के कामों में सद्दे राह (रुकावट) होता है। **49 :** तो आ़क़िल को चाहिये कि उसी का त़लब गार रहे और माल व औलाद के सबब से उस से मह़रूम न हो। **50 :** इस त़रह़ कि गुनाह तर्क करो और त़ाअ़त बजा लाओ। **51 :** इस में उस वाक़िए़ का बयान है जो ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने ज़िक्र फ़रमाया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश दारुन्नद्वा (कमेटी घर) में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत मश्वरा करने के लिये जम्अ़ हुए और इब्लीसे लईन एक बुड्ढे की सूरत में आया और कहने लगा कि मैं शैख़े नज्द हूं मुझे तुम्हारे इस इज्तिमाअ़ की इत्तिलाअ़ हुई तो मैं आया, मुझ से तुम कुछ न छुपाना, मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूं और इस मुआ़मले में बेहतर राय से तुम्हारी मदद करूंगा, उन्हों ने इस को शामिल कर लिया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ राय ज़नी शुरूअ़ हुई, अबुल बख़्तरी ने कहा कि मेरी राय येह है कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को पकड़ कर एक मकान में क़ैद कर दो और मज़बूत़ बन्दिशों से बांध दो दरवाज़ा बन्द कर दो सिर्फ़ एक सूराख़ छोड़ दो जिस से कभी कभी खाना पानी दिया जाए और वहीं वोह हलाक हो कर रह जाएं, इस पर शैत़ाने लईन जो शैख़े नज्दी बना हुवा था बहुत नाख़ुश हुवा और कहा निहायत नाक़िस राय है, येह ख़बर मश्हूर होगी और उन के अस्ह़ाब आएंगे और तुम से मुक़ाबला करेंगे और उन को तुम्हारे हाथ से छुड़ा लेंगे। लोगों ने कहा : शैख़े नज्दी ठीक कहता है। फिर हिशाम बिन अ़म्र खड़ा हुवा उस ने कहा मेरी राय येह है कि उन को (या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ऊंट पर सुवार कर के अपने शहर से निकाल दो फिर वोह जो कुछ भी करें उस से तुम्हें कुछ ज़रर नहीं। इब्लीस ने इस राय को भी ना पसन्द किया और कहा : जिस शख़्स ने तुम्हारे होश उड़ा दिये और तुम्हारे दानिश मन्दों को हैरान बना दिया उस को तुम दूसरों की त़रफ़ भेजते हो ! तुम ने उस की शीरीं कलामी, सैफ़े ज़बानी, दिलकशी नहीं देखी है ! अगर तुम ने ऐसा किया तो वोह दूसरी क़ौम के क़ुलूब तस्ख़ीर कर के उन लोगों के साथ तुम पर चढ़ाई करेंगे, अहले मज्मअ़ ने कहा : शैख़े नज्दी की राय ठीक है, इस पर अबू जह्ल खड़ा हुवा और उस ने येह राय दी कि क़ुरैश के हर हर ख़ानदान से एक एक आ़ली नसब जवान मुन्तख़ब किया जाए और उन को तेज़ तलवारें दी जाएं वोह सब यकबारगी ह़ज़रत पर ह़म्ला आवर हो कर क़त्ल कर दें तो बनी हाशिम क़ुरैश के तमाम क़बाइल से न लड़ सकेंगे। ग़ायत येह है कि ख़ून का मुआ़वज़ा देना पड़े वोह दे दिया जाएगा। इब्लीसे लईन ने इस तज्वीज़ को पसन्द किया और अबू जह्ल

وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا

और अल्लाह अपनी खुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़्या तदबीर सब से बेहतर और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो कहते हैं

قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

हां हम ने सुना हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते येह तो नहीं मगर अगलों

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ

के क़िस्से[52] और जब बोले[53] कि ऐ अल्लाह अगर येही (कुरआन) तेरी त़रफ़ से ह़क़ है

فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَا كَانَ

तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या कोई दर्दनाक अ़ज़ाब हम पर ला और अल्लाह का काम

اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ

नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो[54] और अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब करने वाला नहीं जब तक वोह

की बहुत ता'रीफ़ की और इसी पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर वाक़िआ़ गुज़ारिश किया और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर अपनी ख़्वाब गाह में शब को न रहें, अल्लाह तआ़ला ने इज़्न दिया है मदीनए त़य्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाएं, हुज़ूर ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को शब में अपनी ख़्वाब गाह में रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि हमारी चादर शरीफ़ ओढ़ो तुम्हें कोई ना गवार बात पेश न आएगी और हुज़ूर दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए और एक मुश्त ख़ाक दस्ते मुबारक में ली और आयत ''اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا'' पढ़ कर मुह़ासरा करने वालों पर मारी सब की आंखों और सरों पर पहुंची सब अन्धे हो गए और हुज़ूर को न देख सके और हुज़ूर मअ़ अबू बक्र सिद्दीक़ के ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को लोगों की अमानतें पहुंचाने के लिये मक्कए मुकर्रमा छोड़ा मुश्रिकीन रात भर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दौलत सराए का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को जब क़त्ल के इरादे से ह़म्ला आवर हुए तो देखा कि ह़ज़रते अ़ली हैं उन से हुज़ूर को दरयाफ़्त किया कि कहां हैं उन्हों ने फ़रमाया कि हमें मा'लूम नहीं तो तलाश के लिये निकले, जब ग़ार पर पहुंचे तो मकड़ी के जाले देख कर कहने लगे कि अगर इस में दाख़िल होते तो येह जाले बाक़ी न रहते, हुज़ूर इस ग़ार में तीन रोज़ ठहरे फिर मदीनए त़य्यिबा रवाना हुए। **52 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ुरआने पाक सुन कर कहा था कि हम चाहते तो हम भी ऐसी ही किताब कह लेते। अल्लाह तआ़ला ने उन का येह मक़ूला नक़्ल किया कि इस में उन की कमाल बेशर्मी व बे ह़याई है कि क़ुरआने पाक के तह़द्दी फ़रमाने (ललकारने) और फ़ुसह़ाए अ़रब को क़ुरआने करीम के मिस्ल एक सूरत बना लाने की दा'वतें देने और उन सब के आ़जिज़ो दरमांदा (मजबूर) रह जाने के बा'द येह कलिमा कहना और ऐसा इद्दिआए बात़िल (बात़िल दा'वा) करना निहायत ज़लील ह़रकत है। **53 :** कुफ़्फ़ार और उन में येह कहने वाला या नज़्र बिन ह़ारिस था या अबू जहल जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है। **54 :** क्यूं कि रह़्मतुल्लिल आ़लमीन बना कर भेजे गए हो और सुन्नते इलाहिय्यह येह है कि जब तक किसी क़ौम में उस के नबी मौजूद हों उन पर आ़म बरबादी का अ़ज़ाब नहीं भेजता जिस से सब के सब हलाक हो जाएं और कोई न बचे। एक जमाअ़ते मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर उस वक़्त नाज़िल हुई जब आप मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम थे, फिर जब आप ने हिजरत फ़रमाई और कुछ मुसल्मान रह गए जो इस्तिग़्फ़ार किया करते थे तो ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ'' नाज़िल हुवा, जिस में बताया गया कि जब तक इस्तिग़्फ़ार करने वाले ईमानदार मौजूद हैं उस वक़्त तक भी अ़ज़ाब न आएगा, फिर जब वोह ह़ज़रात भी मदीनए त़य्यिबा को रवाना हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने फ़त्ह़े मक्का का इज़्न दिया और येह अ़ज़ाबे मौऊ़द (जिस का वा'दा किया गया वोह) आ गया जिस की निस्बत इस आयत में फ़रमाया : ''وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ'' मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि ''مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ'' भी कुफ़्फ़ार का मक़ूला है जो उन से ह़िकायतन नक़्ल किया गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की जहालत का ज़िक्र फ़रमाया कि इस क़दर अह़मक़ हैं, आप ही तो येह कहते हैं कि या रब ! अगर येह तेरी त़रफ़ से ह़क़ है तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल कर, और आप ही येह कहते हैं कि या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! जब तक आप हैं अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। क्यूं कि कोई उम्मत अपने नबी की मौजूदगी में हलाक नहीं की जाती। किस क़दर मुआ़रिज़ (एक दूसरे के मुख़ालिफ़) अक़्वाल हैं।

www.dawateislami.net

يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ

बख़्शिश मांग रहे हैं[55] और उन्हें क्या है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न करे वोह तो मस्जिदे ह़राम

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

से रोक रहे हैं[56] और वोह इस के अह्ल नहीं[57] उस के औलिया तो परहेज़ गार ही हैं

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا

मगर उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर

مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सीटी और ताली[58] तो अब अ़ज़ाब चखो[59] बदला अपने कुफ़्र का बेशक

كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا

काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें[60] तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे

ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ

फिर वोह उन पर पछतावा होंगे[61] फिर मग़्लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों का ह़श्र

يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ

जहन्नम की त़रफ़ होगा इस लिये कि अल्लाह गन्दे को सुथरे से जुदा फ़रमा दे[62] और नजासतों को

بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

तले ऊपर रख कर सब एक ढेर बना कर जहन्नम में डाल दे वोही नुक़्सान

الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ ع ۱۸

पाने वाले हैं[63] तुम काफ़िरों से फ़रमाओ अगर वोह बाज़ रहे तो जो हो गुज़रा वोह उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया जाएगा[64]

55 : इस आयत से साबित हुवा कि "इस्तिग़फ़ार" अ़ज़ाब से अम्न में रहने का ज़रीआ़ है। ह़दीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिये दो अमानें उतारीं, एक मेरा उन में तशरीफ़ फ़रमा होना, एक उन का इस्तिग़फ़ार करना 56 : और मोमिनीन को त़वाफ़े का'बा के लिये नहीं आने देते जैसा कि वाक़िअ़ए हुदैबिया के साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को रोका। 57 : और का'बे के उमूर में तसर्रुफ़ व इन्तिज़ाम का कोई इख़्तियार नहीं रखते क्यूं कि मुश्रिक हैं। 58 : या'नी नमाज़ की जगह सीटी और ताली बजाते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि क़ुरैश नंगे हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते थे और सीटियां और तालियां बजाते थे और येह फ़े'ल उन का या तो इस ए'तिक़ादे बात़िल से था कि सीटी और ताली बजाना इ़बादत है या इस शरारत से कि उन के इस शोर से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ में परेशानी हो। 59 : क़त्ल व क़ैद का बद्र में 60 : या'नी लोगों को अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाने से मानेअ़ हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ार में से उन बारह क़ुरैशियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने लश्करे कुफ़्फ़ार का खाना अपने ज़िम्मे लिया था और हर एक उन में से लश्कर को खाना देता था हर रोज़ दस ऊंट। 61 : कि माल भी गया और काम भी न बना। 62 : या'नी गुरोहे

www.dawateislami.net

وَ اِنْ یَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ قَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا

और अगर फिर वोही करें तो अगलों का दस्तूर गुज़र चुका है[65] और उन से लड़ो यहां तक

تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ یَكُوْنَ الدِّیْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا

कि कोई फ़साद[66] बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही का हो जाए फिर अगर वोह बाज़ रहें तो अल्लाह

یَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۳۹﴾ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى

उन के काम देख रहा है और अगर वोह फिरें[67] तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है[68] तो क्या ही अच्छा मौला

وَ نِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿۴۰﴾

और क्या ही अच्छा मददगार

कुफ़्फ़ार को गुरौहे मोमिनीन से मुमताज़ कर दे। **63 :** कि दुन्या व आख़िरत के टोटे में रहे और अपने माल ख़र्च कर के अज़ाबे आख़िरत मोल लिया। **64 मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि काफ़िर जब कुफ़्र से बाज़ आए और इस्लाम लाए तो उस का पहला कुफ़्र और मआसी (तमाम गुनाह) मुआफ़ हो जाते हैं। **65** कि अल्लाह तआला अपने दुश्मनों को हलाक करता है और अपने अम्बिया और औलिया की मदद फ़रमाता है। **66 :** या'नी शिर्क **67 :** ईमान लाने से **68 :** तुम उस की मदद पर भरोसा रखो।

www.dawateislami.net

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی
और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो[69] तो उस का पांचवां हिस्सा ख़ास अल्लाह और रसूल और क़राबत

الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
वालों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों का है[70] अगर तुम ईमान लाए हो अल्लाह पर

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی
और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसले के दिन उतारा जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं[71] और अल्लाह

كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی
सब कुछ कर सकता है जब तुम नाले के उस किनारे थे[72] और काफ़िर परले किनारे

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَ
और क़ाफ़िला[73] तुम से तराई में[74] और अगर तुम आपस में कोई वा'दा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते[75]

لٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ
लेकिन येह इस लिये कि अल्लाह पूरा करे जो काम होना है[76] कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो[77]

وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾ ۙ اِذْ یُرِیْكَهُمُ
और जो जिये दलील से जिये[78] और बेशक अल्लाह ज़रूर सुनता जानता है जब कि ऐ महबूब अल्लाह तुम्हें

69 : ख़्वाह क़लील या कसीर। "ग़नीमत" वोह माल है जो मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार से जंग में ब त़रीक़े क़हरो ग़लबा ह़ासिल हो। **मस्अला :** माले ग़नीमत पांच हिस्सों पर तक़्सीम किया जाए उस में से चार हिस्से ग़ानिमीन (ग़ाज़ियों) के। **70 मस्अला :** ग़नीमत का पांचवां हिस्सा फिर पांच हिस्सों पर तक़्सीम होगा उन में से एक हिस्सा जो कुल माल का पच्चीसवां हिस्सा हुवा वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये है और एक हिस्सा आप के अहले क़राबत के लिये और तीन हिस्से यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिये। **मस्अला :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द हुज़ूर और आप के अहले क़राबत के हिस्से भी यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों को मिलेंगे और येह पांचवां हिस्सा उन्हीं तीन पर तक़्सीम हो जाएगा। येही क़ौल है इमाम अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का। **71 :** इस दिन से रोज़े बद्र मुराद है और दोनों फ़ौजों से मुसल्मानों और काफ़िरों की फ़ौजें और येह वाक़िआ़ सतरह या उन्नीस रमज़ान को पेश आया। अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'दाद तीन सो दस से कुछ ज़ियादा थी और मुश्रिकीन हज़ार के क़रीब थे। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हज़ीमत (शिकस्त) दी उन में से सत्तर से ज़ियादा मारे गए और इतने ही गिरिफ़्तार हुए। **72 :** जो मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ है **73 :** क़ुरैश का जिस में अबू सुफ़्यान वग़ैरा थे। **74 :** तीन मील के फ़ासिले पर साहिल की त़रफ़। **75 :** या'नी अगर तुम और वोह बाहम जंग का कोई वक़्त मुअ़य्यन करते फिर तुम्हें अपनी क़िल्लत व बे सामानी और उन की कसरत व सामान का ह़ाल मा'लूम होता तो ज़रूर तुम हैबत व अन्देशे से मीआ़द में इख़्तिलाफ़ करते। **76 :** या'नी इस्लाम और मुस्लिमीन की नुसरत और दीन का ए'ज़ाज़ और दुश्मनाने दीन की हलाकत, इस लिये तुम्हें उस ने बे मीआ़द (वक़्त मुक़र्रर किये बिग़ैर) ही जम्अ़ कर दिया। **77 :** या'नी हुज्जते ज़ाहिरा क़ाइम होने और इ़ब्रत का मुआ़यना कर लेने के बा'द। **78 :** मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि हलाक से कुफ़्र, हयात से ईमान मुराद है। मा'ना येह हैं कि जो कोई काफ़िर हो उस को चाहिये कि पहले हुज्जत क़ाइम करे और ऐसे ही जो ईमान लाए वोह यक़ीन के साथ ईमान लाए और हुज्जत व बुरहान से जान ले कि येह दीन ह़क़ है और बद्र का वाक़िआ़ आयाते वाज़ेह़ा में से है, इस के बा'द जिस ने कुफ़्र इख़्तियार किया वोह मकाबिर (बड़ा मग़रूर) है, अपने नफ़्स को मुग़ालत़ा (धोका) देता है।

اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ وَ لَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَ لَتَنَازَعْتُمْ

काफ़िरों को तुम्हारी ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था[79] और ऐ मुसल्मानो अगर वोह तुम्हें बहुत कर के दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआमले में

فِی الْاَمْرِ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَ اِذْ

झगड़ा डालते[80] मगर **अल्लाह** ने बचा लिया[81] बेशक वोह दिलों की बात जानता है और

یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ فِیْۤ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّ یُقَلِّلُكُمْ فِیْۤ اَعْیُنِهِمْ

जब लड़ते वक़्त[82] तुम्हें काफ़िर थोड़े कर के दिखाए[83] और तुम्हें उन की निगाहों में थोड़ा किया[84]

لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ ع یٰۤاَیُّهَا

कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है[85] और **अल्लाह** की तरफ़ सब कामों की रुजूअ़ है ऐ

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ

ईमान वालो जब किसी फ़ौज से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और **अल्लाह** की याद बहुत करो[86] कि तुम

تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾ ج وَ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَ تَذْهَبَ

मुराद को पहुंचो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो और आपस में झगड़ो नहीं कि फिर बुज़दिली करोगे और तुम्हारी बंधी हुई

رِیْحُكُمْ وَ اصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۴۶﴾ ج وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ

हवा जाती रहेगी[87] और सब्र करो बेशक **अल्लाह** सब्र वालों के साथ है[88] और उन जैसे न होना जो

79 : येह **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत थी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की ता'दाद थोड़ी दिखाई गई और आप ने अपना येह ख़्वाब अस्हाब से बयान किया इस से उन की हिम्मतें बढ़ीं और अपने ज़ो'फ़ व कमज़ोरी का अन्देशा न रहा और उन्हें दुश्मन पर जुरअत पैदा हुई और क़ल्ब क़वी हुए। अम्बिया का ख़्वाब हक़ होता है आप को कुफ़्फ़ार दिखाए गए थे और ऐसे कुफ़्फ़ार जो दुन्या से बे ईमान जाएं और कुफ़्र ही पर उन का ख़ातिमा हो वोह थोड़े ही थे क्यूं कि जो लश्कर मुक़ाबिल आया था उस में कसीर लोग वोह थे जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में ईमान नसीब हुवा और ख़्वाब में क़िल्लत की ता'बीर ज़ो'फ़ से है। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों को ग़ालिब फ़रमा कर कुफ़्फ़ार का ज़ो'फ़ ज़ाहिर कर दिया। **80 :** और सबात व फ़िरार (साबित क़दम रहने और मैदान से भागने) में मुतरद्दिद रहते। **81 :** तुम को बुज़दिली और तरद्दुद और बाहमी इख़्तिलाफ़ से। **82 :** ऐ मुसल्मानो ! **83 :** हज़रते इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि वोह हमारी निगाहों में इतने कम जचे कि मैं ने अपने बराबर वाले एक शख़्स से कहा क्या तुम्हारे गुमान में काफ़िर सत्तर होंगे उस ने कहा कि मेरे ख़याल में सो हैं और थे हज़ार। **84 :** यहां तक कि अबू जह्ल ने कहा कि इन्हें रस्सियों में बांध लो गोया कि वोह मुसल्मानों की जमाअ़त को इतना क़लील देख रहा था कि मुक़ाबला करने और जंग आज़्मा होने के लाइक़ भी ख़याल नहीं करता था और मुश्रिकीन को मुसल्मानों की ता'दाद थोड़ी दिखाने में येह हिक्मत थी कि मुश्रिकीन मुक़ाबले पर जम जाएं भाग न पड़ें और येह बात इब्तिदा में थी, मुक़ाबला होने के बा'द उन्हें मुसल्मान बहुत ज़ियादा नज़र आने लगे। **85 :** या'नी इस्लाम का ग़लबा और मुसल्मानों की नुसरत और शिर्क का इब्त़ाल और मुश्रिकीन की ज़िल्लत और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मो'जिज़े का इज़्हार कि जो फ़रमाया था वोह हुवा कि जमाअ़ते क़लीला लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) पर फ़त्ह याब हुई। **86 :** उस से मदद चाहो और कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब होने की दुआएं करो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इन्सान को हर हाल में लाज़िम है कि वोह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो। **87 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ ज़ो'फ़ व कमज़ोरी और बे वक़ारी का सबब है और येह भी मा'लूम हुवा कि बाहमी तनाज़ोअ़ से महफ़ूज़ रहने की तदबीर ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी और दीन का इत्तिबाअ़ है। **88 :** उन का मुईन व मददगार।

www.dawateislami.net

خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और अल्लाह की राह से रोकते[89]

وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۴۷﴾ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ

और उन के सब काम अल्लाह के क़ाबू में हैं और जब कि शैतान ने उन की निगाह में उन के काम भले कर दिखाए[90] और बोला

لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

आज तुम पर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुए

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ

उलटे पाउं भागा और बोला मैं तुम से अलग हूं[91] मैं वोह देखता हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता[92] मैं

اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴۸﴾ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ ع ٢

अल्लाह से डरता हूं[93] और अल्लाह का अ़ज़ाब सख़्त है जब कहते थे मुनाफ़िक़[94] और वोह जिन के

89 शाने नुज़ूल : येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हक़ में नाज़िल हुई जो बद्र में बहुत इतराते और तकब्बुर करते आए थे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ की : या रब ! येह क़ुरैश आ गए, तकब्बुर व ग़ुरूर में सरशार और जंग के लिये तय्यार, तेरे रसूल को झुटलाते हैं, या रब ! अब वोह मदद इनायत हो जिस का तू ने वा'दा किया था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब अबू सुफ़्यान ने देखा कि क़ाफ़िले को कोई ख़त़रा नहीं रहा तो उन्हों ने क़ुरैश के पास पयाम भेजा कि तुम क़ाफ़िले की मदद के लिये आए थे, अब इस के लिये कोई ख़त़रा नहीं है लिहाज़ा वापस जाओ, इस पर अबू जह्ल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम हम वापस न होंगे यहां तक कि हम बद्र में उतरें, तीन रोज़ क़ियाम करें, ऊंट ज़ब्ह़ करें, बहुत से खाने पकाएं, शराबें पियें, कनीज़ों का गाना बजाना सुनें, अ़रब में हमारी शोहरत हो और हमारी हैबत हमेशा बाक़ी रहे, लेकिन ख़ुदा को कुछ और ही मन्ज़ूर था, जब वोह बद्र में पहुंचे तो जामे शराब की जगह उन्हें साग़रे मौत पीना पड़ा और कनीज़ों की साज़ो नवा की जगह रोने वालियां उन्हें रोईं। अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को हुक्म फ़रमाता है कि इस वाक़िए से इ़ब्रत ह़ासिल करें और समझ लें कि फ़ख़्रो रिया और ग़ुरूरो तकब्बुर का अन्जाम ख़राब है बन्दे को इख़्लास और इताअ़ते ख़ुदा व रसूल चाहिये। **90 :** और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत और मुसल्मानों की मुख़ालफ़त में जो कुछ उन्हों ने किया था इस पर उन की ता'रीफ़ें कीं और उन्हें ख़बीस आ'माल पर क़ाइम रहने की रग़बत दिलाई और जब क़ुरैश ने बद्र में जाने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया तो उन्हें याद आया कि उन के और क़बीलए बनी बक्र के दरमियान अ़दावत है मुम्किन था कि वोह येह ख़याल कर के वापसी का क़स्द करते, येह शैत़ान को मन्ज़ूर न था इस लिये उस ने येह फ़रेब किया कि वोह सुराक़ा बिन मालिक बिन जु'शुम बनी किनाना के सरदार की सूरत में नुमूदार हुवा और एक लश्कर और एक झन्डा साथ ले कर मुश्रिकीन से आ मिला और उन से कहने लगा कि मैं तुम्हारा ज़िम्मादार हूं आज तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं। जब मुसल्मानों और काफ़िरों के दोनों लश्कर सफ़ आरा हुए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक मुश्ते ख़ाक मुश्रिकीन के मुंह पर मारी और वोह पीठ फेर कर भागे और ह़ज़रते जिब्रील इब्लीसे लईन की त़रफ़ बढ़े जो सुराक़ा की शक्ल में ह़ारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था, वोह हाथ छुड़ा कर मअ़ अपने गुरौह के भागा, ह़ारिस पुकारता रह गया सुराक़ा ! सुराक़ा ! तुम तो हमारे ज़ामिन हुए थे कहां जाते हो ? कहने लगा : मुझे वोह नज़र आता है जो तुम्हें नज़र नहीं आता, इस आयत में इस वाक़िए का बयान है। **91 :** और अम्न की जो ज़िम्मादारी ली थी उस से सुबुक दोश (बरिय्युज़्ज़िम्मा) होता हूं, इस पर ह़ारिस बिन हिशाम ने कहा कि हम तेरे भरोसे पर आए थे तू इस ह़ालत में हमें रुस्वा करेगा ! कहने लगा : **92 :** या'नी लश्करे मलाएका। **93 :** कहीं वोह मुझे हलाक न कर दे। जब कुफ़्फ़ार को हज़ीमत (हार) हुई और वोह शिकस्त खा कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे तो उन्हों ने येह मश्हूर किया कि हमारी शिकस्त व हज़ीमत का बाइस सुराक़ा हुवा। सुराक़ा को येह ख़बर पहुंची तो उसे ह़ैरत हुई और उस ने कहा : येह लोग क्या कहते हैं ! न मुझे इन के आने की ख़बर न जाने की। हज़ीमत हो गई जब मैं ने सुना है। तो क़ुरैश ने कहा कि तू फ़ुलां फ़ुलां रोज़ हमारे पास आया था। उस ने क़सम खाई कि येह ग़लत़ है, तब उन्हें मा'लूम हुवा कि वोह शैत़ान था। **94 :** मदीने के।

www.dawateislami.net

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰۤؤُلَآءِ دِیْنُهُمْ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

दिलों में आज़ार (बीमारी) है[95] कि येह मुसल्मान अपने दीन पर मग़रूर हैं[96] और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे[97] तो बेशक **अल्लाह**[98]

عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذْ یَتَوَفَّى الَّذِیْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓىٕكَةُ یَضْرِبُوْنَ

ग़ालिब हिक्मत वाला है और कभी तू देखे जब फ़िरिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं मार रहे हैं

وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ۚ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ﴿۵۰﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

उन के मुंह पर और उन की पीठ पर[99] और चखो आग का अ़ज़ाब येह[100] बदला है उस का जो तुम्हारे हाथों ने

اَیْدِیْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿ۙ۵۱﴾ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ

आगे भेजा[101] और **अल्लाह** बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता[102] जैसे फ़िरऔ़न वालों

وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ

और उन से अगलों का दस्तूर[103] वोह **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर हुए तो **अल्लाह** ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा

اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۵۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا نِّعْمَةً

बेशक **अल्लाह** कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब वाला है येह इस लिये कि **अल्लाह** किसी क़ौम से जो ने'मत उन्हें

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿ۙ۵۳﴾

दी थी बदलता नहीं जब तक वोह ख़ुद न बदल जाएं[104] और बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ

जैसे फ़िरऔ़न वालों और उन से अगलों का दस्तूर उन्हों ने अपने रब की आयतें झुटलाईं

95 : येह मक्कए मुकर्रमा के कुछ लोग थे जिन्हों ने कलिमए इस्लाम तो पढ़ लिया था मगर अभी तक उन के दिलों में शक व तरद्दुद बाक़ी था। जब कुफ़्फ़ारे कुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से जंग के लिये निकले येह भी उन के साथ बद्र में पहुंचे, वहां जा कर मुसल्मानों को क़लील देखा तो शक और बढ़ा और मुरतद हो गए और कहने लगे : **96 :** कि बा वुजूद अपनी ऐसी क़लील ता'दाद के ऐसे लश्करे गिरां (बड़े लश्कर) के मुक़ाबिल हो गए, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **97 :** और अपना काम उस के सिपुर्द कर दे और उस के फ़ज़्लो एहसान पर मुत्मइन हो **98 :** उस का हाफ़िज़ो नासिर है। **99 :** लोहे के गुर्ज़ जो आग में लाल किये हुए हैं और उन से जो ज़ख़्म लगता है उस में आग पड़ती है और सोज़िश होती है, उन से मार कर फ़िरिश्ते काफ़िरों से कहते हैं : **100 :** मुसीबतें और अ़ज़ाब **101 :** या'नी जो तुम ने कस्ब किया कुफ़्र और इस्यान। **102 :** किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब नहीं करता और काफ़िर पर अ़ज़ाब करना अ़द्ल है। **103 :** या'नी इन काफ़िरों की आ़दत कुफ़्र व सरकशी में फ़िरऔ़नी और इन से पहलों की मिस्ल है तो जिस त़रह़ वोह हलाक किये गए येह भी रोज़े बद्र क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किये गए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जिस त़रह़ फ़िरऔ़नियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत को ब यक़ीन जान कर उन की तक्ज़ीब की येही हाल इन लोगों का है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की रिसालत को जान पहचान कर तक्ज़ीब करते हैं। **104 :** और ज़ियादा बदतर हाल में मुब्तला न हों जैसे कि **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे मक्का को रोज़ी दे कर भूक की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की, अम्न दे कर ख़ौफ़ से नजात दी और उन की त़रफ़ अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को नबी बना कर मब्ऊ़स किया। उन्हों ने इन ने'मतों पर शुक्र तो न किया बजाए इस के येह सरकशी की,

www.dawateislami.net

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَ كُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ﴿۵۴﴾

तो हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब हलाक किया और हम ने फ़िरऔ़न वालों को डुबो दिया[105] और वोह सब ज़ालिम थे

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۵﴾ ۖۚ اَلَّذِیْنَ

बेशक सब जानवरों में बदतर अल्लाह के नज़्दीक वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और ईमान नहीं लाते वोह जिन से

عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِیْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّ هُمْ لَا یَتَّقُوْنَ ﴿۵۶﴾

तुम ने मुआ़हदा किया था फिर हर बार अपना अ़हद तोड़ देते हैं[106] और डरते नहीं[107]

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِی الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَذَّكَّرُوْنَ ﴿۵۷﴾

तो अगर तुम कहीं उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसा क़त्ल करो जिस से उन के पसमांदों को भगाओ[108] इस उम्मीद पर कि शायद उन्हें इ़ब्रत हो[109]

وَ اِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِیَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَیْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

और अगर तुम किसी क़ौम से दग़ा (अ़हद शिकनी) का अन्देशा करो[110] तो उन का अ़हद उन की त़रफ़ फेंक दो बराबरी पर[111] बेशक दग़ा वाले

یُحِبُّ الْخَآىٕنِیْنَ ﴿۵۸﴾ ۧ وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ ع

अल्लाह को पसन्द नहीं और हरगिज़ काफ़िर इस घमन्ड में न रहें कि वोह[112] हाथ से निकल गए बेशक वोह

لَا یُعْجِزُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ اَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّ مِنْ رِّبَاطِ

आ़जिज़ नहीं करते[113] और उन के लिये तय्यार रखो जो क़ुव्वत तुम्हें बन पड़े[114] और जितने घोड़े

कि नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, इन की ख़ूंरेज़ी के दरपै हुए और लोगों को राहे ह़क़ से रोका। सुद्दी ने कहा कि अल्लाह की ने'मत ह़ज़रत सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं। **105 :** ऐसे ही येह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हैं जिन्हें बद्र में हलाक किया गया। **106 शाने नुज़ूल :** "اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ" और इस के बा'द की आयतें बनी क़ुरैज़ा के यहूदियों के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन का रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़हद था कि वोह आप से न लड़ेंगे न आप के दुश्मनों की मदद करेंगे। उन्हों ने अ़हद तोड़ा और मुश्रिकीने मक्का ने जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जंग की तो उन्हों ने हथियारों से उन की मदद की फिर ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मा'ज़िरत की, कि हम भूल गए थे और हम से क़ुसूर हुवा, फिर दोबारा अ़हद किया और उस को भी तोड़ा। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सब जानवरों से बदतर बताया क्यूं कि कुफ़्फ़ार सब जानवरों से बदतर हैं और बा वुजूद कुफ़्र के अ़हद शिकन भी हों तो और भी ख़राब। **107 :** ख़ुदा से, न अ़हद शिकनी के ख़राब नतीजे से और न इस से शरमाते हैं, बा वुजूदे कि अ़हद शिकनी हर आ़क़िल के नज़्दीक शर्मनाक जुर्म है और अ़हद शिकनी करने वाला सब के नज़्दीक बे ए'तिबार हो जाता है, जब उन की बे ग़ैरती इस दरजे पहुंच गई तो यक़ीनन वोह जानवरों से बदतर हैं। **108 :** और उन की हिम्मतें तोड़ दो और उन की जमाअ़तें मुन्तशिर कर दो। **109 :** और वोह पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) हों। **110 :** और ऐसे आसार व क़राइन पाए जाएं जिन से साबित हो कि वोह ग़द्र करेंगे और अ़हद पर क़ाइम न रहेंगे **111 :** या'नी उन्हें उस अ़हद की मुख़ालफ़त करने से पहले आगाह कर दो कि तुम्हारी बद अ़हदी के क़राइन पाए गए लिहाज़ा वोह अ़हद क़ाबिले ए'तिबार न रहा, उस की पाबन्दी न की जाएगी। **112 :** जंगे बद्र से भाग कर क़त्ल व क़ैद से बच गए और मुसल्मानों के **113 :** अपने गिरिफ़्तार करने वाले को। इस के बा'द मुसल्मानों को ख़ित़ाब होता है। **114 :** ख़्वाह वोह हथियार हों या क़ल्ए या तीर अन्दाज़ी। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस आयत की तफ़्सीर में क़ुव्वत के मा'ना रमी या'नी तीर अन्दाज़ी बताए।

www.dawateislami.net

الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا
बांध सको कि उन से उन के दिलों में धाक बिठाओ जो अल्लाह के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं[115] और उन के सिवा कुछ औरों के दिलों में

تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
जिन्हें तुम नहीं जानते[116] अल्लाह उन्हें जानता है और अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करोगे

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝٦٠ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا
तुम्हें पूरा दिया जाएगा[117] और किसी त़रह घाटे में नहीं रहोगे और अगर वोह सुल्ह़ की त़रफ़ झुकें तो तुम भी झुको[118]

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦١ وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ
और अल्लाह पर भरोसा रखो बेशक वोही है सुनता जानता और अगर वोह तुम्हें

يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ
फ़रेब दिया चाहें[119] तो बेशक अल्लाह तुम्हें काफ़ी है वोही है जिस ने तुम्हें ज़ोर दिया अपनी मदद का और

بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢ۙ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ
मुसल्मानों का और उन के दिलों में मैल कर दिया (उल्फ़त पैदा कर दी)[120] अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है

جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ
सब ख़र्च कर देते उन के दिल न मिला सकते[121] लेकिन अल्लाह ने उन के दिल मिला दिये बेशक वोही है ग़ालिब

حَكِيْمٌ ۝٦٣ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٤ ع
हिक्मत वाला ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) अल्लाह तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसल्मान तुम्हारे पैरव हुए[122]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) मुसल्मानों को जिहाद की तरग़ीब दो अगर तुम में के

115 : या'नी कुफ़्फ़ार अहले मक्का हों या दूसरे। 116 : इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि यहां औरों से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं। ह़सन का क़ौल है कि काफ़िर जिन्न। 117 : उस की जज़ा वाफ़िर मिलेगी 118 : उन से सुल्ह़ क़बूल कर लो। 119 : और सुल्ह़ का इज़्हार मक्र (फ़रेब देने) के लिये करें 120 : जैसा कि क़बीलए औस व ख़ज़रज में मह़ब्बत व उल्फ़त पैदा कर दी बा वुजूदे कि इन में सो बरस से ज़ियादा की अ़दावतें थीं और बड़ी बड़ी लड़ाइयां होती रहती थीं, येह मह़ज़ अल्लाह का करम है। 121 : या'नी उन की बाहमी अ़दावत इस ह़द तक पहुंच गई थी कि उन्हें मिला देने के लिये तमाम सामान (ह़र्बे) बेकार हो चुके थे और कोई सूरत बाक़ी न रही थी, ज़रा ज़रा सी बात में बिगड़ जाते और सदियों तक जंग बाक़ी रहती, किसी त़रह़ दो दिल न मिल सकते। जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए और अ़रब लोग आप पर ईमान लाए और उन्हों ने आप का इत्तिबाअ़ किया तो येह ह़ालत बदल गई और दिलों से देरीना अ़दावतें (पुरानी दुश्मनियां) और कीने दूर हुए और ईमानी मह़ब्बतें पैदा हुईं, येह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का रोशन मो'जिज़ा है। 122 **शाने नुज़ूल :** सईद बिन जुबैर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि येह आयत ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ के ईमान लाने के बारे

عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ یَغْلِبُوْا مِائَتَیْنِ ۚ وَ اِنْ یَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ یَّغْلِبُوْۤا

बीस सब्र वाले होंगे दो सो पर गालिब होंगे और अगर तुम में के सो हों तो काफ़िरों के

اَلْفًا مِّنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا یَفْقَهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ

हज़ार पर गालिब आएंगे इस लिये कि वोह समझ नहीं रखते[123] अब **अल्लाह** ने तुम पर से तख़्फ़ीफ़

عَنْكُمْ وَ عَلِمَ اَنَّ فِیْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ یَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ یَّغْلِبُوْا

फ़रमा दी और उसे मा'लूम है कि तुम कमज़ोर हो तो अगर तुम में सो सब्र वाले हों दो सो पर गालिब

مِائَتَیْنِ ۚ وَ اِنْ یَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ یَّغْلِبُوْۤا اَلْفَیْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ

आएंगे और अगर तुम में के हज़ार हों तो दो हज़ार पर गालिब होंगे **अल्लाह** के हुक्म से और **अल्लाह**

مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۶۶﴾ مَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى یُثْخِنَ فِی

सब्र वालों के साथ है किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब

الْاَرْضِ ؕ تُرِیْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْیَا ۖۗ وَ اللّٰهُ یُرِیْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَ اللّٰهُ

न बहाए[124] तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो[125] और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है[126] और **अल्लाह**

में नाज़िल हुई। ईमान से सिर्फ़ तेंतीस मर्द और छ[6] औरतें मुशर्रफ़ हो चुके थे, तब हज़रते उमर رضی اللہ عنہ इस्लाम लाए। इस क़ौल की बिना पर येह आयत मक्की है, नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم के हुक्म से मदनी सूरत में लिखी गई। एक क़ौल येह है कि येह आयत ग़ज़्वए बद्र में क़ब्ले क़िताल नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर आयत मदनी है और मोमिनीन से यहां एक क़ौल में अन्सार, एक में तमाम मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं। **123 :** येह **अल्लाह** तआला की तरफ़ से वा'दा और बिशारत है कि मुसल्मानों की जमाअ़त साबिर रहे तो ब मददे इलाही दस गुने काफ़िरों पर गालिब रहेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार जाहिल हैं और उन की ग़रज़ जंग से न हुसूले सवाब है न ख़ौफ़े अ़ज़ाब, जानवरों की तरह लड़ते भिड़ते हैं, तो वोह लिल्लाहिय्यत (इख़्लास) के साथ लड़ने वाले के मुक़ाबिल क्या ठहर सकेंगे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो मुसल्मानों पर फ़र्ज़ कर दिया गया कि मुसल्मानों का एक दस के मुक़ाबले से न भागे फिर आयत "اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ" नाज़िल हुई तो येह लाज़िम किया गया कि एक सो दो सो के मुक़ाबिल क़ाइम रहें या'नी दस गुने से मुक़ाबले की फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ हुई और दो गुने के मुक़ाबले से भागना मम्नूअ़ रखा गया। **124 :** और क़त्ले कुफ़्फ़ार में मुबालग़ा कर के कुफ़्र की ज़िल्लत और इस्लाम की शौकत का इज़्हार न करे। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरा की अह़ादीस में है कि जंगे बद्र में सत्तर काफ़िर क़ैद कर के सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के हुज़ूर में लाए गए, हुज़ूर ने उन के मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबा से मश्वरा त़लब फ़रमाया। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम व क़बीले के लोग हैं, मेरी राय में इन्हें फ़िदया ले कर छोड़ दिया जाए इस से मुसल्मानों को क़ुव्वत भी पहुंचेगी और क्या अ़जब है कि **अल्लाह** तआला इन लोगों को इस्लाम नसीब करे। हज़रते उमर رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि इन लोगों ने आप की तक्ज़ीब की, आप को मक्कए मुकर्रमा में न रहने दिया, येह कुफ़्र के सरदार और सर परस्त हैं, इन की गरदनें उड़ाइये **अल्लाह** तआला ने आप को फ़िदये से ग़नी किया है, अ़लिय्ये मुर्तज़ा को अ़क़ील पर और हज़रते हम्ज़ा को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे क़राबती पर मुक़र्रर कीजिये कि इन की गरदनें मार दें। आख़िर कार फ़िदया ही लेने की राय क़रार पाई और जब फ़िदया लिया गया तो आयत नाज़िल हुई। **125 :** येह ख़िताब मोमिनीन को है और माल से फ़िदया मुराद है। **126 :** या'नी तुम्हारे लिये आख़िरत का सवाब जो क़त्ले कुफ़्फ़ार व ए'ज़ाज़े इस्लाम पर मुरत्तब है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह हुक्म बद्र में था जब कि मुसल्मान थोड़े थे फिर जब मुसल्मानों की ता'दाद ज़ियादा हुई और वोह फ़ज़्ले इलाही से क़वी हुए तो क़ैदियों के ह़क़ में नाज़िल हुई "فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً" और **अल्लाह** तआला ने अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم और मोमिनीन को इख़्तियार दिया कि चाहे काफ़िरों को क़त्ल करें, चाहे उन्हें ग़ुलाम बनाएं, चाहे फ़िदया लें, चाहे आज़ाद करें। बद्र के क़ैदियों का फ़िदया चालीस ऊक़िया सोना फ़ी कस था जिस के सोलह सो दिरहम हुए।

www.dawateislami.net

عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ

ग़ालिब हिक्मत वाला है अगर अल्लाह पहले एक बात लिख न चुका होता[127] तो ऐ मुसल्मानो तुम ने जो काफ़िरों से बदले का माल ले लिया उस में

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖۗ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तुम पर बड़ा अज़ाब आता तो खाओ जो ग़नीमत तुम्हें मिली हलाल पाकीज़ा[128] और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ

बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उन से फ़रमाओ[129]

اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में भलाई जानी[130] तो जो तुम से लिया गया[131] इस से बेहतर तुम्हें अता फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ

और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[132] और ऐ महबूब अगर वोह[133] तुम से दग़ा चाहेंगे[134] तो इस से पहले अल्लाह ही की ख़ियानत कर चुके हैं

127 : येह कि इज्तिहाद पर अमल करने वाले से मुआख़ज़ा (पूछगछ) न फ़रमाएगा और यहां सहाबा ने इज्तिहाद ही किया था और उन की फ़िक्र में येही बात आई थी कि काफ़िरों को ज़िन्दा छोड़ देने में इन के इस्लाम लाने की उम्मीद है और फ़िद्या लेने में दीन को तक़्वियत होती है और इस पर नज़र नहीं की गई कि क़त्ल में इज़्ज़ते इस्लाम और तहदीदे कुफ़्फ़ार (काफ़िरों के दिलों में ख़ौफ़ और दबदबा बिठाना) है। **मस्अला :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इस दीनी मुआमले में सहाबा की राय दरयाफ़्त फ़रमाना मश्रूइय्यते इज्तिहाद की दलील है या "كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ" से वोह मुराद है जो उस ने लौहे महफ़ूज़ में लिखा कि अहले बद्र पर अज़ाब न किया जाएगा। **128 :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो अस्हाबे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जो फ़िद्ये लिये थे उन से हाथ रोक लिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी ग़नीमतें हलाल की गईं उन्हें खाओ। सहीहैन की हदीस में है अल्लाह तआला ने हमारे लिये ग़नीमतें हलाल कीं, हम से पहले किसी के लिये हलाल न की गई थीं। **129 शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه के बारे में नाज़िल हुई है जो सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा हैं, येह कुफ़्फ़ारे कुरैश के उन दस सरदारों में से थे जिन्हों ने जंगे बद्र में लश्करे कुफ़्फ़ार के खाने की ज़िम्मादारी ली थी और येह इस ख़र्च के लिये बीस ऊक़िया सोना साथ ले कर चले थे (एक ऊक़िया चालीस दिरहम का होता है) लेकिन इन के ज़िम्मे जिस दिन खिलाना तज्वीज़ हुवा था ख़ास उसी रोज़ जंग का वाक़िआ पेश आया और क़िताल में खाने खिलाने की फ़ुरसत व मोहलत न मिली तो येह बीस ऊक़िया सोना इन के पास बच रहा, जब वोह गिरिफ़्तार हुए और येह सोना इन से ले लिया गया तो इन्हों ने दरख़्वास्त की, कि येह सोना उन के फ़िद्ये में महसूब (शुमार) कर लिया जाए, मगर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्कार फ़रमाया इर्शाद किया जो चीज़ हमारी मुख़ालफ़त में सर्फ़ करने के लिये लाए थे वोह न छोड़ी जाएगी और हज़रते अब्बास पर इन के दोनों भतीजों अक़ील बिन अबी तालिब और नौफ़ल बिन हारिस के फ़िद्ये का बार भी डाला गया तो हज़रते अब्बास ने अर्ज़ किया या मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) तुम मुझे इस हाल में छोड़ोगे कि मैं बाक़ी उम्र कुरैश से मांग मांग कर बसर किया करूं ? तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर वोह सोना कहां है जिस को तुम्हारे मक्कए मुकर्रमा से चलते वक़्त तुम्हारी बीबी उम्मुल फ़ज़्ल ने दफ़्न किया है और तुम उन से कह कर आए हो कि ख़बर नहीं है कि मुझे क्या हादिसा पेश आए अगर मैं जंग में काम आ जाऊं (मारा जाऊं) तो येह तेरा है और अब्दुल्लाह और उबैदुल्लाह का और फ़ज़्ल और कुसम का (येह सब इन के बेटे थे)। हज़रते अब्बास ने अर्ज़ किया कि आप को कैसे मा'लूम हुवा ? हुज़ूर ने फ़रमाया : मुझे मेरे रब ने ख़बरदार किया है। इस पर हज़रते अब्बास ने अर्ज़ किया : मैं गवाही देता हूं बेशक आप सच्चे हैं और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक आप उस के बन्दे और रसूल हैं, मेरे इस राज़ पर अल्लाह के सिवा कोई मुत्तलअ न था और हज़रते अब्बास ने अपने भतीजों अक़ील व नौफ़ल को हुक्म दिया वोह भी इस्लाम लाए। **130 :** ख़ुलूसे ईमान और सिह्हते निय्यत से **131 :** या'नी फ़िद्या। **132 :** जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास बहरीन का माल आया जिस की मिक़्दार अस्सी हज़ार थी तो हुज़ूर ने नमाज़े ज़ोहर के लिये वुज़ू किया और नमाज़ से पहले पहले कुल का कुल तक़्सीम कर दिया और हज़रते अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه को हुक्म दिया कि इस में से ले लो। तो जितना उन से उठ सका उतना उन्हों ने ले लिया। वोह फ़रमाते थे कि येह उस से बेहतर है कि जो अल्लाह ने मुझ से लिया और मैं उस की मग़्फ़िरत की उम्मीद रखता हूं और उन के तमव्वुल (दौलत मन्द होने) का येह हाल हुवा कि उन के बीस ग़ुलाम थे सब के सब ताजिर और उन में सब से कम सरमाया जिस का था उस का बीस हज़ार का था। **133 :** वोह क़ैदी **134 :** तुम्हारी बैअत से फिर कर और कुफ़्र इख़्तियार कर के।

قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

जिस पर उस ने इतने तुम्हारे क़ाबू में दे दिये[135] और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है बेशक जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

अल्लाह के लिये[136] घरबार छोड़े और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से लड़े[137] और वोह जिन्हों ने जगह दी

وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا

और मदद की[138] वोह एक दूसरे के वारिस हैं[139] और वोह जो ईमान लाए[140] और हिजरत न की

مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ

तुम्हें उन का तर्का कुछ नहीं पहुंचता जब तक हिजरत न करें और अगर वोह दीन में

فِی الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ

तुम से मदद चाहें तो तुम पर मदद देना वाजिब है मगर ऐसी क़ौम पर कि तुम में उन में मुआ़हदा है और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا

तुम्हारे काम देख रहा है और काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस हैं[141] ऐसा

تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِی الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद होगा[142] और वोह जो ईमान लाए और

هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓىٕكَ هُمُ

हिजरत की और अल्लाह की राह में लड़े और जिन्हों ने जगह दी और मदद की वोही

الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۴﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ

सच्चे ईमान वाले हैं उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[143] और जो बा'द को ईमान

135 : जैसा कि वोह बद्र में देख चुके हैं कि क़त्ल हुए, गिरिफ़्तार हुए, आयिन्दा भी अगर उन के अत्वार वोही रहे तो उन्हें इसी का उम्मीद वार रहना चाहिये। **136 :** और उसी के रसूल की महब्बत में उन्हों ने अपने **137 :** येह मुहाजिरीने अव्वलीन हैं। **138 :** मुसल्मानों की और उन्हें अपने मकानों में ठहराया, येह अन्सार हैं। इन मुहाजिरीन और अन्सार दोनों के लिये इर्शाद होता है : **139 :** मुहाजिर अन्सार के और अन्सार मुहाजिर के। येह विरासत आयत "وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ" से मन्सूख़ हो गई। **140 :** और मक्कए मुकर्रमा ही में मुक़ीम रहे **141 :** उन के और मोमिनीन के दरमियान विरासत नहीं। इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मानों को कुफ़्फ़ार की मुवालात व मुवारसत से मन्अ़ किया गया और उन से जुदा रहने का हुक्म दिया गया और मुसल्मानों पर बाहम मेलजोल रखना लाज़िम किया गया। **142 :** या'नी अगर मुसल्मानों में बाहम तआ़वुन व तनासुर न हो और वोह एक दूसरे के मददगार हो कर एक कुव्वत न बन जाएं तो कुफ़्फ़ार क़वी होंगे और मुसल्मान ज़ईफ़ और येह बड़ा फ़ितना व फ़साद है। **143 :** पहली आयत में मुहाजिरीन व अन्सार के बाहमी तअ़ल्लुक़ात और उन में से हर एक के दूसरे के मुईन व नासिर होने का बयान था। इस आयत में इन दोनों के ईमान की तस्दीक़ और इन के मूरिदे रह़मते इलाही होने का ज़िक्र है।

www.dawateislami.net

بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया वोह भी तुम्हीं में से हैं[144] और रिश्ते वाले

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۷۵﴾ ع

एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक हैं अल्लाह की किताब में[145] बेशक अल्लाह सब कुछ जानता है

اٰیَاتُهَا ۱۲۹ ۹ سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِیَّةٌ ۱۱۳ رُكُوْعَاتُهَا ۱۶

सूरए तौबह मदनिय्या है इस में एक सो उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं[1]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ؕ ﴿۱﴾

बेज़ारी का हुक्म सुनाना है अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ से उन मुश्रिकों को जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था और वोह क़ाइम न रहे[2]

فَسِیْحُوْا فِی الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی

तो चार महीने ज़मीन पर चलो फिरो और जान रखो कि तुम अल्लाह को थका नहीं

144 : और तुम्हारे ही हुक्म में हैं ऐ मुहाजिरीन व अन्सार। **मुहाजिरीन के कई त़बक़े हैं :** एक वोह हैं जिन्हों ने पहली मरतबा मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की उन्हें मुहाजिरीने अव्वलीन कहते हैं। कुछ वोह ह़ज़रात हैं जिन्हों ने पहले ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की, फिर मदीनए त़य्यिबा उन्हें अस्ह़ाबुल हिज्रतैन कहते हैं। बा'ज़ ह़ज़रात वोह हैं जिन्हों ने सुल्ह़े ह़ुदैबिया के बा'द फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल हिजरत की येह अस्ह़ाबे हिजरते सानिया कहलाते हैं। पहली आयत में मुहाजिरीने अव्वलीन का ज़िक्र है और इस आयत में अस्ह़ाबे हिजरते सानिया का। **145 :** इस आयत से तवारुस बिल हिजरत (हिजरत की वज्ह से जो विरासत में ह़िस्सा मिलता था) मन्सूख़ किया गया और ज़विल अरह़ाम (रिश्ते वालों) की विरासत साबित हुई। **1 :** सूरए तौबह मदनिय्या है मगर इस के अख़ीर की आयतें "لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ" से अख़ीर तक इन को बा'ज़ उ़लमा मक्की कहते हैं। इस सूरत में सोलह 16 रुकूअ़ एक सो उन्तीस 129 आयतें चार हज़ार अठत्तर 4078 कलिमे दस हज़ार चार सो अठासी 10488 ह़र्फ़ हैं। इस सूरत के दस नाम हैं उन में से तौबह और बराअत दो नाम मश्हूर हैं। इस सूरत के अव्वल में "بِسْمِ اللّٰه" नहीं लिखी गई इस की अस्ल वज्ह येह है कि जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इस सूरत के साथ "بِسْمِ اللّٰه" ले कर नाज़िल ही नहीं हुए थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने "بِسْمِ اللّٰه" लिखने का हुक्म नहीं फ़रमाया। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से मरवी है कि "بِسْمِ اللّٰه" अमान है और येह सूरत तलवार के साथ अम्न उठा देने के लिये नाज़िल हुई। बुख़ारी ने ह़ज़रते बराअ से रिवायत किया कि क़ुरआने करीम की सूरतों में सब से आख़िर येही सूरत नाज़िल हुई। **2 :** मुश्रिकीने अ़रब और मुसल्मानों के दरमियान अ़ह्द था, उन में से चन्द के सिवा सब ने अ़ह्द शिकनी की तो उन अ़ह्द शिकनों का अ़ह्द साक़ित़ कर दिया गया और हुक्म दिया गया कि चार महीने वोह अम्न के साथ जहां चाहें गुज़ारें उन से कोई तअ़र्रुज़ न किया जाएगा, इस अ़र्से में उन्हें मौक़अ़ा है कि ख़ूब सोच समझ लें कि उन के लिये क्या बेहतर है और अपनी एह़तियातें कर लें और जान लें कि इस मुद्दत के बा'द इस्लाम मन्ज़ूर करना होगा या क़त्ल। येह सूरत 9 सि. हिजरी में फ़त्ह़े मक्का से एक साल बा'द नाज़िल हुई, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस सनह में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को अमीरे ह़ज मुक़र्रर फ़रमाया था और इन के बा'द अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मज्मए़ ह़ुज्जाज में येह सूरत सुनाने के लिये भेजा। चुनान्चे ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने दस ज़िल ह़िज्जा को जम्रए अ़क़बा के पास खड़े हो कर निदा की "يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ" मैं तुम्हारी त़रफ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़िरिस्तादा (भेजा हुवा) आया हूं। लोगों ने कहा : आप क्या पयाम लाए हैं? तो आप ने तीस या चालीस आयतें इस सूरते मुबारका की तिलावत फ़रमाईं, फिर फ़रमाया मैं चार हुक्म लाया हूं : (1) इस साल के बा'द कोई मुश्रिक का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पास न आए। (2) कोई शख़्स बरहना हो कर का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ न करे। (3) जन्नत में मोमिन के सिवा कोई दाख़िल न होगा। (4) जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़ह्द है वोह अ़ह्द अपनी मुद्दत तक रहेगा और जिस की मुद्दत मुअ़य्यन नहीं है उस की मीआ़द चार माह पर तमाम हो जाएगी। मुश्रिकीन ने येह सुन कर कहा कि ऐ अ़ली! अपने चचा के फ़रज़न्द (या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ख़बर दे दीजिये कि हम ने अ़ह्द पसे पुश्त फेंक दिया हमारे उन के दरमियान कोई अ़ह्द नहीं है बजुज़ नेज़ा बाज़ी और तैग़ ज़नी के। इस वाक़िए में ख़िलाफ़ते ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की त़रफ़ एक लत़ीफ़ इशारा है कि ह़ुज़ूर ने ह़ज़रते अबू बक्र को तो अमीरे ह़ज बनाया और ह़ज़रते अ़लिय्ये मुर्तज़ा को उन के पीछे सूरए बराअत पढ़ने के लिये भेजा तो ह़ज़रते अबू बक्र इमाम हुए और

اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِی الْكٰفِرِیْنَ ۝٢ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَى

सकते[3] और येह कि **अल्लाह** काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है[4] और मुनादी पुकार देना है **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ से

النَّاسِ یَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۙ۬ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ

सब लोगों में बड़े ह़ज के दिन[5] कि **अल्लाह** बेज़ार है मुश्रिकों से और उस का रसूल

فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ غَیْرُ مُعْجِزِی

तो अगर तुम तौबा करो[6] तो तुम्हारा भला है और अगर मुंह फेरो[7] तो जान लो कि तुम **अल्लाह** को न थका

اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ۝٣ۙ اِلَّا الَّذِیْنَ عٰهَدْتُّمْ

सकोगे[8] और काफ़िरों को ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की मगर वोह मुश्रिक जिन से तुम्हारा

مِّنَ الْمُشْرِكِیْنَ ثُمَّ لَمْ یَنْقُصُوْكُمْ شَیْـًٔا وَّ لَمْ یُظَاهِرُوْا عَلَیْكُمْ اَحَدًا

मुआ़हदा था फिर उन्हों ने तुम्हारे अ़ह्द में कुछ कमी न की[9] और तुम्हारे मुक़ाबिल किसी को मदद न दी

فَاَتِمُّوْۤا اِلَیْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ۝٤

तो उन का अ़ह्द ठहरी हुई मुद्दत तक पूरा करो बेशक **अल्लाह** परहेज़ गारों को दोस्त रखता है

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِیْنَ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ

फिर जब हुरमत वाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो[10] जहां पाओ[11]

وَ خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ

और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उन की ताक में बैठो फिर अगर वोह तौबा करें[12] और

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِیْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उन की राह छोड़ दो[13] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा मुक़्तदी। इस से ह़ज़रते अबू बक्र की तक़्दीम ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा पर साबित हुई। **3 :** और बा वुजूद इस मोहलत के उस की गिरिफ़्त से नहीं बच सकते। **4 :** दुन्या में क़त्ल के साथ और आख़िरत में अ़ज़ाब के साथ। **5 :** ह़ज को ह़ज्जे अक्बर फ़रमाया इस लिये कि उस ज़माने में उ़मरह को ह़ज्जे असग़र कहा जाता था और एक क़ौल येह है कि उस ह़ज को ह़ज्जे अक्बर इस लिये कहा गया कि उस साल रसूले करीम ﷺ ने ह़ज फ़रमाया था और चूंकि येह जुमुआ़ को वाक़ेअ़ हुवा था इस लिये मुसल्मान उस ह़ज को जो रोज़े जुमुआ़ हो ह़ज्जे वदाअ़ का मुज़क्किर (याद दिलाने वाला) जान कर ह़ज्जे अक्बर कहते हैं। **6 :** कुफ़्र व ग़द्र से **7 :** ईमान लाने और तौबा करने से **8 :** येह वई़दे अ़ज़ीम है और इस में येह ए'लाम (जताना मक़्सूद) है कि **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब नाज़िल करने पर क़ादिर है। **9 :** और उस को उस की शर्तों के साथ पूरा किया। येह लोग बनी ज़मुरा थे जो किनाना का एक क़बीला है और इन की मुद्दत के नव महीने बाक़ी रहे थे। **10 :** जिन्हों ने अ़ह्द शिकनी की **11 :** ह़िल में ख़्वाह ह़रम में किसी वक़्त व मकान की तख़्सीस नहीं। **12 :** शिर्को कुफ़्र से और ईमान क़बूल करें **13 :** और क़ैद से रिहा कर दो और उन से तअ़र्रुज़ (छेड़छाड़) न करो।

www.dawateislami.net

رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ

मेहरबान है और ऐ महबूब अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह मांगे[14] तो उसे पनाह दो कि वोह अल्लाह का

كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ كَيْفَ

कलाम सुने फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुंचा दो[15] येह इस लिये कि वोह नादान लोग हैं[16] मुश्रिकों

يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ

के लिये अल्लाह और उस के रसूल के पास कोई अ़हद क्यूंकर होगा[17] मगर वोह जिन से तुम्हारा मुआ़हदा

عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ

मस्जिदे ह़राम के पास हुवा[18] तो जब तक वोह तुम्हारे लिये अ़हद पर क़ाइम रहें तुम उन के लिये क़ाइम रहो बेशक

يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧﴾ كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَ

परहेज़ गार अल्लाह को ख़ुश आते हैं भला क्यूंकर[19] उन का ह़ाल तो येह है कि तुम पर क़ाबू पाएं तो न क़राबत का लिह़ाज़ करें

لَا ذِمَّةً ۚ يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾

न अ़हद का अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं[20] और उन के दिलों में इन्कार है और उन में अक्सर बे हुक्म हैं[21]

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا

अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम मोल लिये[22] तो उस की राह से रोका[23] बेशक वोह बहुत

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ

ही बुरे काम करते हैं किसी मुसल्मान में न क़राबत का लिह़ाज़ करें न अ़हद का[24] और वोही

الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ

सरकश हैं फिर अगर वोह[25] तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो वोह तुम्हारे

14 : मोहलत के महीने गुज़रने के बा'द ताकि आप से तौह़ीद के मसाइल और क़ुरआने पाक सुनें जिस की आप दा'वत देते हैं। **15 :** अगर ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि मुस्तामिन को ईज़ा न दी जाए और मुद्दत गुज़रने के बा'द उस को दारुल इस्लाम में इक़ामत का ह़क़ नहीं। **16 :** इस्लाम और इस की ह़क़ीक़त को नहीं जानते तो उन्हें अम्न देनी ऐन ह़िक्मत है ताकि कलामुल्लाह सुनें और समझें। **17 :** कि वोह ग़द्र व अ़हद शिकनी किया करते हैं। **18 :** और उन से कोई अ़हद शिकनी ज़ुहूर में न आई, मिस्ल बनी किनाना व बनी ज़मुरा के। **19 :** अ़हद पूरा करेंगे और कैसे क़ौल पर क़ाइम रहेंगे। **20 :** ईमान और वफ़ाए अ़हद के वा'दे कर के। **21 :** अ़हद शिकन कुफ़्र में सरकश बे मुरव्वत झूट से न शरमाने वाले, उन्हों ने **22 :** और दुन्या के थोड़े से नफ़्अ़ के पीछे ईमान व क़ुरआन छोड़ बैठे और जो अ़हद रसूले करीम ﷺ से किया था वोह अबू सुफ़्यान के थोड़े से लालच देने से तोड़ दिया। **23 :** और लोगों को दीने इलाही में दाख़िल होने से मानेअ़ हुए। **24 :** जब मौक़अ़ पाएं क़त्ल कर डालें। तो मुसल्मानों को भी चाहिये कि जब मुश्रिकीन पर दस्त रस हो (क़ाबू) पाएं तो उन से दर गुज़र न करें। **25 :** कुफ़्र व अ़हद शिकनी से बाज़ आएं और ईमान क़बूल कर के।

فِي الدِّيْنِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَاِنْ نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ

दीनी भाई हैं[26] और हम आयतें मुफ़स्सल (खोल खोल कर) बयान करते हैं जानने वालों के लिये[27] और अगर अ़ह्द कर के

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَاۤ

अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुंह आएं (ए'तिराज़ व ता'न करें) तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो[28] बेशक उन की

اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ﴿۱۲﴾ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ

क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वोह बाज़ आएं[29] क्या उस क़ौम से न लड़ोगे जिन्हों ने अपनी क़समें तोड़ीं[30]

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۗ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ

और रसूल के निकालने का इरादा किया[31] ह़ालां कि उन्हीं की त़रफ़ से पहल हुई है क्या उन से डरते हो

فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ

तो **अल्लाह** इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि उस से डरो अगर ईमान रखते हो तो उन से लड़ो **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब

اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ

देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा[32] और तुम्हें उन पर मदद देगा[33] और ईमान वालों का जी

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۗ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ

ठन्डा करेगा और उन के दिलों की घुटन (जलन व ग़ुस्सा) दूर फ़रमाएगा[34] और **अल्लाह** जिस की चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए[35]

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

और **अल्लाह** इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है क्या इस गुमान में हो कि यूंही छोड़ दिये जाओगे और अभी **अल्लाह** ने पहचान न कराई उन की जो

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ

तुम में से जिहाद करेंगे[36] और **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों के सिवा किसी को अपना मह़रमे राज़

26 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित हुवा कि अहले क़िब्ला के ख़ून ह़राम हैं। **27 :** इस से साबित हुवा कि तफ़्सीले आयात पर जिस को नज़र हो वोह आ़लिम है। **28 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो काफ़िरे ज़िम्मी दीने इस्लाम पर ज़ाहिर ता'न करे उस का अ़ह्द बाक़ी नहीं रहता और वोह ज़िम्मे से ख़ारिज हो जाता है उस को क़त्ल करना जाइज़ है। **29 :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने से मुसल्मानों की ग़रज़ उन्हें कुफ़्र व बद आ'माली से रोक देना है। **30 :** और सुल्हे़ हुदैबिया का अ़ह्द तोड़ा और मुसल्मानों के ह़लीफ़ ख़ज़ाआ़ के मुक़ाबिल बनी बक्र की मदद की **31 :** मक्कए मुकर्रमा से दारुन्नदवा में मश्वरा कर के। **32 :** क़त्ल व क़ैद से **33 :** और उन पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएगा **34 :** येह तमाम मवाईद (वा'दे) पूरे हुए और नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ख़बरें सादिक़ हुईं और नुबुव्वत का सुबूत वाज़ेह़ तर हो गया। **35 :** इस में अश्आर है कि बा'ज़ अहले मक्का कुफ़्र से बाज़ आ कर ताइब होंगे, येह ख़बर भी ऐसी ही वाक़ेअ़ हो गई। चुनान्चे अबू सुफ़्यान और इ़क्रिमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अ़म्र ईमान से मुशर्रफ़ हुए। **36 :** इख़्लास के साथ **अल्लाह** की राह में।

ع ٢/٨

وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا

न बनाएंगे[37] और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है मुश्रिकों को नहीं पहुंचता कि **अल्लाह** की

مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ

मस्जिदें आबाद करें[38] ख़ुद अपने कुफ़्र की गवाही दे कर[39] उन का तो सब किया धरा अकारत (ज़ाएअ़) है

وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ

और वोह हमेशा आग में रहेंगे[40] **अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और

الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى

क़ियामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और ज़कात देते हैं[41] और **अल्लाह** के सिवा किसी से नहीं डरते[42] तो क़रीब है कि

اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۸﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۗجِّ وَ

येह लोग हिदायत वालों में हों तो क्या तुम ने हाजियों की सबील और

عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ

मस्जिदे हराम की ख़िदमत उस के बराबर ठहरा ली जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाया और **अल्लाह** की राह

37 : इस से मा'लूम हुवा कि मुख़्लिस और ग़ैर मुख़्लिस में इम्तियाज़ कर दिया जाएगा और मक़्सूद इस से मुसल्मानों को मुश्रिकीन की मुवालात (आपस की दोस्ती व तअ़ल्लुक़) और उन के पास मुसल्मानों के राज़ पहुंचाने से मुमानअ़त करना है। **38 :** मस्जिदों से मस्जिदे हराम का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है, इस को जम्अ़ के सीग़े से इस लिये ज़िक्र फ़रमाया कि वोह तमाम मस्जिदों का क़िब्ला और इमाम है, इस का आबाद करने वाला ऐसा है जैसे तमाम मस्जिदों को आबाद करने वाला और जम्अ़ का सीग़ा लाने की येह वज्ह भी हो सकती है कि हर बुक़्आ (हर हिस्सा व टुकड़ा) मस्जिदे हराम का मस्जिद है। और येह भी हो सकता है कि मस्जिदों से जिन्स मुराद हो और का'बए मुअ़ज़्ज़मा इस में दाख़िल हो क्यूं कि वोह इस जिन्स का सद्र है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के रुअसा की एक जमाअ़त जो बद्र में गिरिफ़्तार हुई और उन में हुज़ूर के चचा हज़रते अ़ब्बास भी थे उन को अस्हाबे किराम ने शिर्क पर आ़र दिलाई और हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा ने तो ख़ास हज़रते अ़ब्बास को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुक़ाबिल आने पर बहुत सख़्त सुस्त कहा। हज़रते अ़ब्बास कहने लगे कि तुम हमारी बुराइयां तो बयान करते हो और हमारी ख़ूबियां छुपाते हो ! उन से कहा गया कि क्या आप की कुछ ख़ूबियां भी हैं ? उन्हों ने कहा : हां, हम तुम से अफ़्ज़ल हैं, हम मस्जिदे हराम को आबाद करते हैं, का'बे की ख़िदमत करते हैं, हाजियों को सैराब करते हैं, असीरों को रिहा कराते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई कि मस्जिदों का आबाद करना काफ़िरों को नहीं पहुंचता क्यूं कि मस्जिद आबाद की जाती है **अल्लाह** की इबादत के लिये तो जो ख़ुदा ही का मुन्किर हो उस के साथ कुफ़्र करे वोह क्या मस्जिद आबाद करेगा। और आबाद करने के मा'ना में भी कई क़ौल हैं : **एक** तो येह कि आबाद करने से मस्जिद का बनाना, बुलन्द करना, मरम्मत करना मुराद है काफ़िर को इस से मन्अ़ किया जाएगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मस्जिद आबाद करने से इस में दाख़िल होना, बैठना मुराद है। **39 :** और बुत परस्ती का इक़रार कर के, या'नी येह दोनों बातें किस तरह जम्अ़ हो सकती हैं कि आदमी काफ़िर भी हो और ख़ास इस्लामी और तौहीद के इबादत ख़ाने को आबाद भी करे **40 :** क्यूं कि हालते कुफ़्र के आ'माल मक़्बूल नहीं, न मेहमान दारी, न हाजियों की ख़िदमत, न क़ैदियों का रिहा कराना, इस लिये कि काफ़िर का कोई फ़े'ल **अल्लाह** के लिये तो होता नहीं लिहाज़ा उस का अ़मल सब अकारत (ज़ाएअ़) है और अगर वोह इसी कुफ़्र पर मर जाए तो जहन्नम में उन के लिये हमेशगी का अ़ज़ाब है। **41 :** इस आयत में येह बयान किया गया कि मस्जिदों के आबाद करने के मुस्तहिक़ मोमिनीन हैं। मस्जिदों के आबाद करने में येह उमूर भी दाख़िल हैं : झाड़ू देना, सफ़ाई करना, रोशनी करना और मस्जिदों को दुन्या की बातों से और ऐसी चीज़ों से महफ़ूज़ रखना जिन के लिये वोह नहीं बनाई गईं। मस्जिदें इबादत करने और ज़िक्र करने के लिये बनाई गई हैं और इल्म का दर्स भी ज़िक्र में दाख़िल है। **42 :** या'नी किसी की रिज़ा को रिज़ाए इलाही पर किसी अन्देशे से भी मुक़द्दम नहीं करते। येही मा'ना हैं **अल्लाह** से डरने और ग़ैर से न डरने के।

www.dawateislami.net

سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

में जिहाद किया वोह अल्लाह के नज़्दीक बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिमों को राह

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وقف لازم

नहीं देता[43] वोह जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल जान से

بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

अल्लाह की राह में लड़े अल्लाह के यहां उन का दरजा बड़ा है[44] और वोही

الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ رِضْوَانٍ وَّ جَنّٰتٍ لَّهُمْ

मुराद को पहुंचे[45] उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रहमत और अपनी रिज़ा की[46] और उन बाग़ों की

فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿۲۱﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۲﴾

जिन में उन्हें दाइमी ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक अल्लाह के पास बड़ा सवाब है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا

ऐ ईमान वालो अपने बाप और अपने भाइयों को दोस्त न समझो अगर वोह ईमान पर

الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾

कुफ़्र पसन्द करें और तुम में जो कोई उन से दोस्ती करेगा तो वोही ज़ालिम हैं[47]

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ

तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुम्बा

وَ اَمْوَالُ اِقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ

और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान

43 : मुराद येह है कि कुफ़्फ़ार को मोमिनीन से कुछ निस्बत नहीं न उन के आ'माल को इन के आ'माल से, क्यूं कि काफ़िर के आ'माल राएगां हैं ख़्वाह वोह हाजियों के लिये सबील लगाएं या मस्जिदे हराम की ख़िदमत करें, उन के आ'माल को मोमिन के आ'माल के बराबर क़रार देना ज़ुल्म है। **शाने नुज़ूल :** रोज़े बद्र जब हज़रते अ़ब्बास गिरिफ़्तार हो कर आए तो उन्हों ने अस्हाबे रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा कि तुम को इस्लाम और हिजरत व जिहाद में सब्क़त हासिल है तो हम को भी मस्जिदे हराम की ख़िदमत और हाजियों के लिये सबीलें लगाने का शरफ़ हासिल है। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और आगाह किया गया कि जो अ़मल ईमान के साथ न हों वोह बेकार हैं। **44 :** दूसरों से **45 :** और उन्हीं को दुन्या व आख़िरत की सआ़दत मिली **46 :** और येह आ'ला तरीन बिशारत है क्यूं कि मालिक की रहमत व रिज़ा बन्दे का सब से बड़ा मक़्सद और प्यारी मुराद है। **47 :** जब मुसल्मानों को मुश्रिकीन से तर्के मुवालात (तअ़ल्लुक़ात ख़त्म करने) का हुक्म दिया गया तो बा'ज़ लोगों ने कहा येह कैसे मुम्किन है कि आदमी अपने बाप भाई वग़ैरा क़राबत दारों से तर्के तअ़ल्लुक़ करे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि कुफ़्फ़ार से मुवालात जाइज़ नहीं चाहे उन से कोई भी रिश्ता हो। चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया।

اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى

येह चीज़ें अल्लाह और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि

يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ

अल्लाह अपना हुक्म लाए[48] और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह नहीं देता बेशक अल्लाह ने

اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ

बहुत जगह तुम्हारी मदद की[49] और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो

تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ

वोह तुम्हारे कुछ काम न आई[50] और ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर तुम पर तंग हो गई[51] फिर तुम पीठ दे कर

مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

फिर गए फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर[52] और मुसल्मानों पर[53]

وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ

और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे[54] और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया[55] और मुन्किरों की

48 : और जल्दी आने वाले अ़ज़ाब में मुब्तला करे या देर में आने वाले में। इस आयत से साबित हुवा कि दीन के मह़फ़ूज़ रखने के लिये दुन्या की मशक़्क़त बरदाश्त करना मुसल्मान पर लाज़िम है और अल्लाह और उस के रसूल की इत़ाअ़त के मुक़ाबिल दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात कुछ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं और ख़ुदा और रसूल की मह़ब्बत ईमान की दलील है। **49 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ग़ज़वात में मुसल्मानों को काफ़िरों पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाया, जैसा कि वाक़िअ़ए बद्र और क़ुरैज़ा और नज़ीर और हुदैबिया और ख़ैबर और फ़त्ह़े मक्का में। **50 :** हुनैन एक वादी है त़ाइफ़ के क़रीब मक्कए मुकर्रमा से चन्द मील के फ़ासिले पर, यहां फ़त्ह़े मक्का से थोड़े ही रोज़ बा'द क़बीलए हवाज़ुन व सक़ीफ़ से जंग हुई। इस जंग में मुसल्मानों की ता'दाद बहुत कसीर बारह हज़ार या इस से ज़ाइद थी और मुश्रिकीन चार हज़ार थे, जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसल्मानों में से किसी शख़्स ने अपनी कसरत पर नज़र कर के येह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़्लूब न होंगे। येह कलिमा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत गिरां गुज़रा क्यूं कि हुज़ूर हर ह़ाल में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और ता'दाद की क़िल्लत व कसरत पर नज़र न रखते थे। जंग शुरूअ़ हुई और क़िताले शदीद हुवा मुश्रिकीन भागे और मुसल्मान ग़नीमत लेने में मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस को ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरूअ़ कर दी और तीर अन्दाज़ी में वोह बहुत महारत रखते थे। नतीजा येह हुवा कि इस हंगामे में मुसल्मानों के क़दम उखड़ गए लश्कर भाग पड़ा और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास सिवाए हुज़ूर के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास और आप के इब्ने अ़म अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिस के और कोई बाक़ी न रहा, हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सुवारी को कुफ़्फ़ार की त़रफ़ आगे बढ़ाया और ह़ज़रते अ़ब्बास को हुक्म दिया कि वोह बुलन्द आवाज़ से अपने अस्ह़ाब को पुकारें, उन के पुकारने से वोह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और कुफ़्फ़ार से जंग (फिर से) शुरूअ़ हो गई, जब लड़ाई ख़ूब गर्म हुई हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक में संगरेज़े ले कर कुफ़्फ़ार के मूंहों पर मारे और फ़रमाया : रब्बे मुह़म्मद की क़सम भाग निकले, संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़्फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की ग़नीमतें मुसल्मानों को तक़्सीम फ़रमा दीं। इन आयतों में इस वाक़िए का बयान है। **51 :** और तुम वहां न ठहर सके। **52 :** कि इत़्मीनान के साथ अपनी जगह क़ाइम रहे। **53 :** कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के पुकारने से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस आए। **54 :** या'नी फ़िरिश्ते जिन्हें कुफ़्फ़ार ने अब्लक़ घोड़ों पर सफ़ेद लिबास पहने इ़मामा बांधे देखा। येह फ़िरिश्ते मुसल्मानों की शौकत बढ़ाने के लिये आए थे, इस जंग में उन्हों ने क़िताल नहीं किया क़िताल सिर्फ़ बद्र में किया था। **55 :** कि पकड़े गए, मारे गए, उन के इ़याल व अम्वाल मुसल्मानों के हाथ आए।

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

येही सज़ा है फिर इस के बा'द **अल्लाह** जिसे चाहेगा तौबा देगा[56] और **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا

मेहरबान है ऐ ईमान वालो मुश्रिक निरे (बिल्कुल) नापाक हैं[57] तो इस बरस के बा'द वोह

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ

मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं[58] और अगर तुम्हें मोह़ताजी का डर है[59] तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** तुम्हें दौलत मन्द

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا

कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे[60] बेशक **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है लड़ो उन से जो

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ

ईमान नहीं लाते **अल्लाह** पर और क़ियामत पर[61] और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया **अल्लाह** और

رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا

उस के रसूल ने[62] और सच्चे दीन[63] के ताबेअ़ नहीं होते या'नी वोह जो किताब दिये गए जब तक

56 : और तौफ़ीक़े इस्लाम अ़ता फ़रमाएगा। चुनान्चे हवाज़ुन के बाक़ी लोगों को तौफ़ीक़ दी और वोह मुसल्मान हो कर रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और हुज़ूर ने उन के असीरों को रिहा फ़रमा दिया। **57 :** कि उन का बातिन ख़बीस है और वोह न त़हारत करते हैं न नजासतों से बचते हैं। **58 :** न ह़ज के लिये न उ़मरह के लिये और इस साल से मुराद 9 हिजरी है और मुश्रिकीन के मन्अ़ करने के मा'ना येह हैं कि मुसल्मान उन को रोकें। **59 :** कि मुश्रिकीन को ह़ज से रोक देने से तिजारतों को नुक़्सान पहुंचेगा और अहले मक्का को तंगी पेश आएगी। **60 :** इक्रिमा ने कहा : ऐसा ही हुवा, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ग़नी कर दिया, बारिशें ख़ूब हुईं, पैदावार कसरत से हुई। मक़ातिल ने कहा कि ख़ित्त़ाहाए यमन के लोग मुसल्मान हुए और उन्हों ने अहले मक्का पर अपनी कसीर दौलतें ख़र्च कीं "अगर चाहे" फ़रमाने में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये कि त़लबे ख़ैर और दफ़्ए आफ़ात के लिये हमेशा **अल्लाह** की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे और तमाम उमूर को उसी की मशिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ जाने। **61 :** **अल्लाह** पर ईमान लाना येह है कि उस की ज़ात और जुम्ला सिफ़ात व तन्ज़ीहात को माने और जो उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत न करे और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने रसूलों पर ईमान लाना भी **अल्लाह** पर ईमान लाने में दाख़िल क़रार दिया है तो यहूदो नसारा अगर्चे **अल्लाह** पर ईमान लाने के मुद्दई हैं लेकिन उन का येह दा'वा बातिल है क्यूं कि यहूद तज्सीम व तश्बीह (ख़ुदा के इन्सानों की त़रह़ मुजस्सम व मिस्ल होने) के और नसारा ह़ुलूल (ख़ुदा का ईसा के जिस्म में उतर आने) के मो'तक़िद हैं तो वोह किस त़रह़ **अल्लाह** पर ईमान लाने वाले हो सकते हैं ? ऐसे ही यहूद में से जो ह़ज़रते उ़ज़ैर को और नसारा ह़ज़रते मसीह़ को ख़ुदा का बेटा कहते हैं तो इन में से कोई भी **अल्लाह** पर ईमान लाने वाला न हुवा, इसी त़रह़ जो एक रसूल की तक्ज़ीब करे वोह **अल्लाह** पर ईमान लाने वाला नहीं। यहूदो नसारा बहुत अम्बिया की तक्ज़ीब करते हैं लिहाज़ा वोह **अल्लाह** पर ईमान लाने वालों में नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुजाहिद का क़ौल है कि येह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि नबी ﷺ को रूम से क़िताल करने का हुक्म दिया गया और इसी के नाज़िल होने के बा'द ग़ज़्वए तबूक हुवा। कल्बी का क़ौल है कि येह आयत यहूद के क़बीले क़ुरैज़ा और नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम ﷺ ने उन से सुल्ह़ मन्ज़ूर फ़रमाई और येही पहला जिज़्या है जो अहले इस्लाम को मिला और पहली ज़िल्लत है जो कुफ़्फ़ार को मुसल्मानों के हाथ से पहुंची। **62 :** क़ुरआनो ह़दीस में, और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मा'ना येह हैं कि तौरैत व इन्जील के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करते उन की तह़रीफ़ (रद्दो बदल) करते हैं और अह़काम अपने दिल से घड़ते हैं। **63 :** इस्लाम दीने इलाही।

ع٥

الْجِزْیَةَ عَنْ یَّدٍ وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَ قَالَتِ الْیَهُوْدُ عُزَیْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَ

अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील हो कर[64] और यहूदी बोले उज़ैर **अल्लाह** का बेटा है[65] और

قَالَتِ النَّصٰرَی الْمَسِیْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ یُضَاهِـُٔوْنَ

नसरानी बोले मसीह **अल्लाह** का बेटा है येह बातें वोह अपने मुंह से बकते हैं[66] अगले

قَوْلَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ٘ اَنّٰی یُؤْفَكُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِتَّخَذُوْۤا

काफ़िरों की सी बात बनाते हैं **अल्लाह** उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं[67] उन्हों ने

اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ الْمَسِیْحَ ابْنَ مَرْیَمَ ۚ

अपने पादरियों और जोगियों को **अल्लाह** के सिवा खुदा बना लिया[68] और मसीह इब्ने मरयम को[69]

وَ مَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِیَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا

और उन्हें हुक्म न था[70] मगर येह कि एक **अल्लाह** को पूजें उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसे पाकी है

یُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ یَاْبَی اللّٰهُ

उन के शिर्क से चाहते हैं कि **अल्लाह** का नूर[71] अपने मुंह से बुझा दें और **अल्लाह** न मानेगा

اِلَّاۤ اَنْ یُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ

मगर अपने नूर का पूरा करना[72] पड़े (अगर्चे) बुरा मानें काफ़िर वोही है जिस ने अपना रसूल[73]

بِالْهُدٰی وَ دِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ كُلِّهٖ ۙ وَ لَوْ كَرِهَ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[74] पड़े बुरा मानें

---

64 : मुआहिदे अहले किताब से जो ख़िराज लिया जाता है उस का नाम जिज़्या है। **मसाइल :** येह जिज़्या नक़्द लिया जाता है इस में उधार नहीं। **मस्अला :** जिज़्या देने वाले को ख़ुद हाज़िर हो कर देना चाहिये। **मस्अला :** पियादा पा (पैदल बिग़ैर सुवारी के) ले कर हाज़िर हो, खड़े हो कर पेश करे। **मस्अला :** क़बूले जिज़्या में तुर्क व हिन्दू वग़ैरा अहले किताब के साथ मुल्हिक़ हैं सिवा मुश्रिकीने अ़रब के, कि इन से जिज़्या क़बूल नहीं। **मस्अला :** इस्लाम लाने से जिज़्या साक़ित हो जाता है। हिक्मत जिज़्या मुक़र्रर करने की येह है कि कुफ़्फ़ार को मोहलत दी जाए ताकि वोह इस्लाम के महासिन और दलाइल की क़ुव्वत देखें और कुतुबे क़दीमा में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़बर और हुज़ूर की ना'त व सिफ़त देख कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का मौक़अ़ पाएं। **65 :** अहले किताब की बे दीनी का जो ऊपर ज़िक्र फ़रमाया गया येह उस की तफ़्सील है कि वोह **अल्लाह** की जनाब में ऐसे फ़ासिद ए'तिक़ाद रखते हैं और मख़्लूक़ को **अल्लाह** का बेटा बना कर पूजते हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में यहूद की एक जमाअ़त आई वोह लोग कहने लगे कि हम आप का किस तरह इत्तिबाअ़ करें आप ने हमारा क़िब्ला छोड़ दिया और आप हज़रते उज़ैर को ख़ुदा का बेटा नहीं समझते इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **66 :** जिन पर न कोई दलील न बुरहान और फिर अपने जहल से इस बातिले सरीह के मो'तक़िद भी हैं। **67 :** और **अल्लाह** तआ़ला की वहदानिय्यत पर हुज्जतें क़ाइम होने और दलीलें वाज़ेह होने के बा वुजूद इस कुफ़्र में मुब्तला होते हैं। **68 :** हुक्मे इलाही को छोड़ कर उन के हुक्म के पाबन्द हुए। **69 :** कि उन्हें भी ख़ुदा बनाया और उन की निस्बत येह ए'तिक़ादे बातिल किया कि वोह ख़ुदा या ख़ुदा के बेटे हैं या ख़ुदा ने उन में हुलूल किया है। **70 :** उन की किताबों में न उन के अम्बिया की तरफ़ से **71 :** या'नी दीने इस्लाम या सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत के दलाइल। **72 :** और अपने दीन को ग़लबा देना **73 :** मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم। **74 :** और उस की हुज्जत

النصف

الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَ الرُّهْبَانِ

मुशरिक ऐ ईमान वालो बेशक बहुत पादरी और जोगी

لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَ

लोगों का माल नाहक़ खा जाते हैं[75] और अल्लाह की राह से[76] रोकते हैं और

الَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَ لَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते[77]

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا

उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में[78] फिर उस से दाग़ेंगे

جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ ظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

उन की पेशानियां और करवटें और पीठें[79] येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा

مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا

इस जोड़ने का बेशक महीनों की गिनती अल्लाह के नज़्दीक बारह महीने हैं[80]

فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ

अल्लाह की किताब में[81] जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार हुरमत वाले हैं[82]

क़वी करे और दूसरे दीनों को इस से मन्सूख़ करे। चुनान्चे اَلْحَمْدُ لِلّٰه ऐसा ही हुवा। ज़ह्हाक का क़ौल है कि येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के नुज़ूल के वक़्त ज़ाहिर होगा जब कि कोई दीन वाला ऐसा न होगा जो इस्लाम में दाख़िल न हो जाए। हज़रते अबू हुरैरा की ह़दीस में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इस्लाम के सिवा हर मिल्लत हलाक हो जाएगी। **75 :** इस त़रह़ कि दीन के अह़काम बदल कर लोगों से रिश्वतें लेते हैं और अपनी किताबों में त़मए ज़र (दुन्यवी माल की लालच) के लिये तह़रीफ़ व तब्दील करते हैं और कुतुबे साबिक़ा की जिन आयात में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है माल ह़ासिल करने के लिये उन में फ़ासिद तावीलें और तह़रीफ़ें करते हैं। **76 :** इस्लाम से और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से **77 :** बुख़्ल करते हैं और माल के हुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात नहीं देते। **शाने नुज़ूल :** सुद्दी का क़ौल है कि येह आयत मानिईने ज़कात के ह़क़ में नाज़िल हुई जब कि अल्लाह तआ़ला ने अह़बार और रुहबान (यहूदी व ईसाई उ़लमा) की ह़िर्स माल का ज़िक्र फ़रमाया तो मुसल्मानों को माल जम्अ़ करने और उस के हुक़ूक़ अदा न करने से हज़र (ख़ौफ़) दिलाया। हज़रते इब्ने उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि जिस माल की ज़कात दी गई वोह ''कन्ज़'' नहीं ख़्वाह दफ़ीना ही हो और जिस की ज़कात न दी गई वोह ''कन्ज़'' है, जिस का ज़िक्र क़ुरआन में हुवा कि उस के मालिक को उस से दाग़ दिया जाएगा। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि सोने चांदी का तो येह ह़ाल मा'लूम हुवा तो फिर कौन सा माल बेहतर है जिस को जम्अ़ किया जाए ? फ़रमाया : ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीबी जो ईमानदार की उस के ईमान पर मदद करे या'नी परहेज़ गार हो कि उस की सोह़बत से त़ाअ़त व इ़बादत का शौक़ बढ़े। (رواہ الترمذی) **मस्अला :** माल का जम्अ़ करना मुबाह़ है मज़्मूम नहीं जब कि उस के हुक़ूक़ अदा किये जाएं। हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और हज़रते त़ल्ह़ा वग़ैरा अस्ह़ाब मालदार थे और जो अस्ह़ाब कि जम्ए़ माल से नफ़्रत रखते थे वोह इन पर ए'तिराज़ न करते थे। **78 :** और शिद्दते ह़रारत से सफ़ेद हो जाएगा। **79 :** जिस्म के तमाम अत़राफ़ो जवानिब और कहा जाएगा : **80 :** यहां येह बयान फ़रमाया गया कि अह़कामे शरअ़ की बिना क़मरी महीनों पर है जिन का ह़िसाब चांद से है। **81 :** यहां अल्लाह की किताब से या लौहे मह़फ़ूज़ मुराद है या क़ुरआन या वोह जो उस ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया। **82 :** तीन मुत्तसिल ज़ुल क़ा'दह

ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ

येह सीधा दीन है तो इन महीनों में[83] अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त

كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنَّمَا

लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह परहेज़ गारों के साथ है[84] उन का

النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّ

महीने पीछे हटाना नहीं मगर और कुफ़्र में बढ़ना[85] इस से काफ़िर बहकाए जाते हैं एक बरस उसे[86] हलाल ठहराते हैं और

يُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ

दूसरे बरस उसे हराम मानते हैं कि उस गिनती के बराबर हो जाएं जो अल्लाह ने हराम फ़रमाई[87] और अल्लाह के हराम किये हुए हलाल कर लें

۵ ع ۸ ۱۱ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के बुरे काम उन की आंखों में भले लगते हैं और अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ

ईमान वालो तुम्हें क्या हुवा जब तुम से कहा जाए कि राहे ख़ुदा में कूच करो तो बोझ के मारे

اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ

ज़मीन पर बैठ जाते हो[88] क्या तुम ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले पसन्द कर ली और जीती दुन्या (दुन्या की ज़िन्दगी)

व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम और एक जुदा रजब। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन महीनों की ता'ज़ीम करते थे और इन में क़िताल हराम जानते थे, इस्लाम में इन महीनों की हुरमत व अ़ज़मत और ज़ियादा की गई। **83 :** गुनाह व ना फ़रमानी से **84 :** उन की नुसरत व मदद फ़रमाएगा। **85 :** نَسِیْٓءُ लुग़त में वक़्त के मुअख़्ख़र करने को कहते हैं और यहां शहरे हराम की हुरमत का दूसरे महीने की तरफ़ हटा देना मुराद है। ज़मानए जाहिलिय्यत में अ़रब अश्हुरे हुरुम (या'नी ज़ुल क़ा'दह व ज़ुल हिज्जा, मुहर्रम, रजब) की हुरमतो अ़ज़मत के मो'तक़िद थे तो जब कभी लड़ाई के ज़माने में येह हुरमत वाले महीने आ जाते तो उन को बहुत शाक़ गुज़रते, इस लिये उन्हों ने येह किया कि एक महीने की हुरमत दूसरे की तरफ़ हटाने लगे, मुहर्रम की हुरमत सफ़र की तरफ़ हटा कर मुहर्रम में जंग जारी रखते और बजाए इस के सफ़र को माहे हराम बना लेते और जब इस से भी तहरीम हटाने की हाजत समझते तो इस में भी जंग हलाल कर लेते और रबीउ़ल अव्वल को माहे हराम क़रार देते, इस तरह तहरीम साल के तमाम महीनों में घूमती और उन के इस तर्ज़े अ़मल से माहहाए हराम की तख़्सीस ही बाक़ी न रही, इसी तरह हज को मुख़्तलिफ़ महीनों में घुमाते फिरते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमाया कि نَسِیْٓءُ के महीने गए गुज़रे हुए, अब महीनों के अवक़ात की वज़्ए इलाही के मुताबिक़ हिफ़ाज़त की जाए और कोई महीना अपनी जगह से न हटाया जाए और इस आयत में نَسِیْٓءُ को मम्नूअ़ क़रार दिया गया और कुफ़्र पर कुफ़्र की ज़ियादती बताया गया क्यूं कि इस में माहहाए हराम में तहरीमे क़िताल को हलाल जानना और ख़ुदा के हराम किये हुए को हलाल कर लेना पाया जाता है। **86 :** या'नी माहे हराम को या इस हटाने को **87 :** या'नी माहे हराम चार ही रहें इस की तो पाबन्दी करते हैं और इन की तख़्सीस तोड़ कर हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त, जो महीना हराम था उसे हलाल कर लिया इस की जगह दूसरे को हराम क़रार दिया। **88 :** और सफ़र से घबराते हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ग़ज़्वए तबूक की तरग़ीब में नाज़िल हुई। तबूक एक मक़ाम है अतराफ़े शाम में मदीनए तय्यिबा से चौदह मन्ज़िल फ़ासिले पर। रजब 9 सि. हिजरी में ताइफ़ से वापसी के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़बर पहुंची कि अ़रब के नसरानियों की तहरीक से हरक़ुल शाहे रूम ने रूमियों और शामियों की फ़ौजे गिरां (कसीर फ़ौज) जम्अ़ की है और वोह मुसल्मानों पर हम्ले का इरादा रखता है तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुसल्मानों को जिहाद का हुक्म दिया। येह ज़माना निहायत तंगी क़हत

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

का अस्बाब आख़िरत के सामने नहीं मगर थोड़ा[89] अगर न कूच करोगे तो[90] तुम्हें सख़्त

اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

सज़ा देगा और तुम्हारी जगह और लोग ले आएगा[91] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे और **अल्लाह** सब कुछ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कर सकता है अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा[92]

ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ

सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों[93] ग़ार में थे जब अपने यार से[94] फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह**

مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ

हमारे साथ है तो **अल्लाह** ने उस पर अपना सकीना (इत्मीनान) उतारा[95] और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखीं[96] और काफ़िरों

साली और शिद्दते गरमी का था यहां तक कि दो दो आदमी एक एक खजूर पर बसर करते थे, सफ़र दूर का था दुश्मन कसीर और क़वी थे, इस लिये बा'ज़ क़बीले बैठ रहे और उन्हें इस वक़्त जिहाद में जाना गिरां मा'लूम हुवा और इस ग़ज़्वे में बहुत से मुनाफ़िक़ीन का पर्दा फ़ाश और हाल ज़ाहिर हो गया। हज़रते उस्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इस ग़ज़्वे में बड़ी आ़ली हिम्मती से ख़र्च किया, दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़्वे पर ख़र्च किये नव सो ऊंट और सो घोड़े मअ़ साज़ो सामान के इस के इलावा हैं और अस्ह़ाब ने भी ख़ूब ख़र्च किया, इन में सब से पहले ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ हैं जिन्हों ने अपना कुल माल ह़ाज़िर कर दिया जिस की मिक़्दार चार हज़ार दिरहम थी और ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने अपना निस्फ़ माल ह़ाज़िर किया और सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم तीस हज़ार का लश्कर ले कर रवाना हुए। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा को मदीनए तृय्यिबा में छोड़ा अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और उस के हमराही मुनाफ़िक़ीन सनिय्यतुल वदाअ़ तक चल कर रह गए, जब लश्करे इस्लाम तबूक में उतरा तो उन्हों ने देखा कि चश्मे में पानी बहुत थोड़ा है। रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने उस के पानी से उस में कुल्ली फ़रमाई जिस की बरकत से पानी जोश में आया और चश्मा भर गया लश्कर और उस के तमाम जानवर अच्छी त़रह सैराब हुए, ह़ज़रत ने काफ़ी अ़र्सा यहां क़ियाम फ़रमाया। हिरक़्ल अपने दिल में आप को सच्चा नबी जानता था इस लिये उसे ख़ौफ़ हुवा और उस ने आप से मुक़ाबला न किया, ह़ज़रत ने अत़राफ़ में लश्कर भेजे चुनान्चे ह़ज़रते ख़ालिद को चार सो से ज़ाइद सुवारों के साथ उकैदिर ह़ाकिमे दूमतुल जन्दल के मुक़ाबिल भेजा और फ़रमाया कि तुम उस को नील गाय के शिकार में पकड़ लो। चुनान्चे ऐसा ही हुवा जब वोह नील गाय के शिकार के लिये अपने क़ल्अ़ से उतरा और ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ उस को गिरिफ़्तार कर के ख़िदमते अक़्दस में लाए हुज़ूर ने जिज़्या मुक़र्रर फ़रमा कर उस को छोड़ दिया, इसी त़रह ह़ाकिमे ऐला पर इस्लाम पेश किया और जिज़्ये पर सुल्ह़ फ़रमाई। वापसी के वक़्त जब हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم मदीने के क़रीब तशरीफ़ लाए तो जो लोग जिहाद में साथ होने से रह गए थे वोह ह़ाज़िर हुए हुज़ूर ने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि इन में से किसी से कलाम न करें और अपने पास न बिठाएं जब तक हम इजाज़त न दें तो मुसल्मानों ने उन से ए'राज़ किया यहां तक कि बाप और भाई की त़रफ़ भी इल्तिफ़ात न किया, इसी बाब में येह आयतें नाज़िल हुईं। **89 :** कि दुन्या और इस की तमाम मताअ़ फ़ानी है और आख़िरत और इस की तमाम ने'मतें बाक़ी हैं। **90 :** ऐ मुसल्मानो ! रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم के ह़स्बे हुक्म **अल्लाह** तआ़ला **91 :** जो तुम से बेहतर और फ़रमां बरदार होंगे। मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم की नुसरत और उन के दीन को इ़ज़्ज़त देने का ख़ुद कफ़ील है तो अगर तुम इत़ाअ़ते फ़रमाने रसूल में जल्दी करोगे तो येह सआ़दत तुम्हें नसीब होगी और अगर तुम ने सुस्ती की तो **अल्लाह** तआ़ला दूसरों को अपने नबी के शरफ़े ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। **92 :** या'नी वक़्ते हिजरत मक्कए मुकर्रमा से। जब कि कुफ़्फ़ार ने दारुन्दवा में हुज़ूर के लिये क़त्ल व क़ैद वग़ैरा के बुरे बुरे मश्वरे किये थे। **93 :** सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ। **94 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ह़ज़रते अबू बक्र رضی اللہ عنہ से। **मस्अला :** ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की सह़ाबिय्यत इस आयत से साबित है। ह़सन बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया : जो शख़्स ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की सह़ाबिय्यत का इन्कार करे वोह नस्से क़ुरआनी का मुन्किर हो कर काफ़िर हुवा। **95 :** और क़ल्ब को इत्मीनान अ़त़ा फ़रमाया **96 :** इन से मुराद मलाएका की फ़ौजें हैं जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के रुख़ फेर दिये और वोह आप को देख न सके और बद्र व अह़ज़ाब व हुनैन में भी इन्हीं ग़ैबी फ़ौजों से मदद फ़रमाई।

www.dawateislami.net

كَلِمَةَ الَّذِیْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَ كَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الْعُلْیَا ؕ وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ

की बात नीचे डाली[97] अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब

حَكِیْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّ ثِقَالًا وَّ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ فِیْ

हिक्मत वाला है कूच करो हलकी जान से चाहे भारी दिल से[98] और अल्लाह की राह में लड़ो अपने

سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا

माल और जान से येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर जानो[99] अगर कोई क़रीब

قَرِیْبًا وَّ سَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَ لٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَیْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَ

माल या मुतवस्सित् सफ़र होता[100] तो ज़रूर तुम्हारे साथ जाते[101] मगर उन पर तो मशक़्क़त का रास्ता दूर पड़ गया और

سَیَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ یُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَ

अब अल्लाह की क़सम खाएंगे[102] कि हम से बन पड़ता तो ज़रूर तुम्हारे साथ चलते[103] अपनी जानों को हलाक करते हैं[104] और

ع ٦ ١٢ اللّٰهُ یَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى

अल्लाह जानता है कि वोह बेशक ज़रूर झूटे हैं अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे[105] तुम ने उन्हें क्यूं इज़्न (इजाज़त) दे दिया जब तक

یَتَبَیَّنَ لَكَ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿٤٣﴾ لَا یَسْتَاْذِنُكَ الَّذِیْنَ

न खुले थे तुम पर सच्चे और ज़ाहिर न हुए थे झूटे वोह जो अल्लाह और क़ियामत

97 : दा'वते कुफ़्रो शिर्क को पस्त फ़रमाया। 98 : या'नी खुशी से या गिरानी से। और एक क़ौल येह है कि क़ुव्वत के साथ या ज़ो'फ़ के साथ और बे सामानी से या सरो सामान से 99 : कि जिहाद का सवाब बैठ रहने से बेहतर है तो मुस्तइद्दी (पूरी आमादगी) के साथ तय्यार हो और काहिली न करो। 100 : और दुन्यवी नफ़्अ़ की उम्मीद होती और शदीद मेह्नतो मशक़्क़त का अन्देशा न होता 101 **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने ग़ज़्वए तबूक में जाने से तख़ल्लुफ़ (पीछे बैठ जाना इख़्तियार) किया था। 102 : येह मुनाफ़िक़ीन, और इस त़रह़ मा'ज़िरत करेंगे 103 : मुनाफ़िक़ीन की इस मा'ज़िरत से पहले ख़बर दे देना ग़ैबी ख़बर और दलाइले नुबुव्वत में से है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था वैसा ही पेश आया और उन्हों ने येही मा'ज़िरत की और झूटी क़समें खाईं। 104 : झूटी क़सम खा कर। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि झूटी क़समें खाना सबबे हलाकत है। 105 : "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" से इब्तिदाए कलाम व इफ़्तिताहे ख़ित़ाब, मुख़ात़ब की ता'ज़ीमो तौक़ीर में मुबालग़े के लिये है और ज़बाने अ़रब में येह उ़र्फ़ शाएअ़ है कि मुख़ात़ब की ता'ज़ीम के मौक़अ़ पर ऐसे कलिमे इस्ति'माल किये जाते हैं। क़ाज़ी इयाज़ رضی اللہ عنہ ने (अपनी किताब) शिफ़ा में फ़रमाया : जिस किसी ने इस सुवाल को इताब क़रार दिया उस ने ग़लती की क्यूं कि ग़ज़्वए तबूक में हाज़िर न होने और घर रह जाने की इजाज़त मांगने वालों को इजाज़त देना न देना दोनों ह़ज़रत के इख़्तियार में थे और आप इस में मुख़्तार थे। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : "فَأْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ" आप इन में से जिसे चाहें इजाज़त दीजिये तो "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाना इताब के लिये नहीं है बल्कि येह इज़्हार है कि अगर आप इन्हें इजाज़त न देते तो भी वोह जिहाद में जाने वाले न थे और "عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ" के मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें मुआ़फ़ करे, गुनाह से तो तुम्हें वासिता ही नहीं, इस में सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की कमाले तक्रीमो तौक़ीर और तस्कीनो तसल्ली है कि क़ल्बे मुबारक पर "لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ" फ़रमाने से कोई बार न हो।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ

पर ईमान रखते हैं तुम से छुट्टी न मांगेंगे इस से कि अपने माल और जान से जिहाद करें और

اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۴﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह ख़ूब जानता है परहेज़ गारों को तुम से येह छुट्टी वोही मांगते हैं जो **अल्लाह**

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَوْ

और क़ियामत पर ईमान नहीं रखते[106] और उन के दिल शक में पड़े हैं तो वोह अपने शक में डांवांडोल हैं[107] उन्हें

اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ

निकलना मन्ज़ूर होता[108] तो इस का सामान करते मगर ख़ुदा ही को उन का उठना ना पसन्द हुवा तो उन में काहिली भर दी

وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

और[109] फ़रमाया गया कि बैठ रहो बैठ रहने वालों के साथ[110] अगर वोह तुम में निकलते तो उन से सिवा नुक़्सान के तुम्हें कुछ न बढ़ता

وَّلَاۡاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ

और तुम में फ़ितना डालने को तुम्हारे बीच में ग़ुराबें दौड़ाते (फ़साद फैलाते)[111] और तुम में उन के जासूस मौजूद हैं[112] और **अल्लाह**

عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

ख़ूब जानता है ज़ालिमों को बेशक उन्हों ने पहले ही फ़ितना चाहा था[113] और ऐ महबूब तुम्हारे लिये तदबीरें उलटी पलटीं[114]

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ

यहां तक कि हक़ आया[115] और **अल्लाह** का हुक्म ज़ाहिर हुवा[116] और उन्हें ना गवार था और उन में कोई तुम से यूं अर्ज़ करता है

ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ

कि मुझे रुख़्सत दीजिये और फ़ितने में न डालिये[117] सुन लो वोह फ़ितने ही में पड़े[118] और बेशक जहन्नम घेरे हुए है

106 : या'नी मुनाफ़िक़ीन **107 :** न इधर के हुए न उधर के हुए न कुफ़्फ़ार के साथ रह सके न मोमिनीन का साथ दे सके। **108 :** और जिहाद का इरादा रखते **109 :** उन के इजाज़त चाहने पर **110 :** बैठ रहने वालों से औरतें बच्चे बीमार और अपाहज लोग मुराद हैं। **111 :** और झूटी झूटी बातें बना कर फ़साद अंगेज़ियां करते। **112 :** जो तुम्हारी बातें उन तक पहुंचाएं। **113 :** और वोह आप के अस्हाब को दीन से रोकने की कोशिश करते जैसा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ ने रोज़े उहुद किया कि मुसल्मानों को इग़्वा करने के लिये अपनी जमाअ़त ले कर वापस हुवा। **114 :** और उन्हों ने तुम्हारा काम बिगाड़ने और दीन में फ़साद डालने के लिये बहुत मक्रो ह़ीले किये **115 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ताईद व नुसरत। **116 :** और उस का दीन ग़ालिब हुवा। **117 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक के लिये तय्यारी फ़रमाई तो जद बिन क़ैस ने कहा : **या रसूलल्लाह**! मेरी क़ौम जानती है कि मैं औ़रतों का बड़ा शैदाई हूं मुझे अन्देशा है कि मैं रूमी औ़रतों को देखूंगा तो मुझ से सब्र न हो सकेगा इस लिये आप मुझे यहीं ठहर जाने की इजाज़त दीजिये और उन औ़रतों के फ़ितने में न डालिये मैं आप की

www.dawateislami.net

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۹﴾ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

काफ़िरों को अगर तुम्हें भलाई पहुंचे[119] तो उन्हें बुरा लगे और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे[120]

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۰﴾ قُلْ

तो कहें[121] हम ने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और ख़ुशियां मनाते फिर जाएं तुम फ़रमाओ

لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

हमें न पहुंचेगा मगर जो **अल्लाह** ने हमारे लिये लिख दिया वोह हमारा मौला है और मुसल्मानों को **अल्लाह** ही

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَ

पर भरोसा चाहिये तुम फ़रमाओ तुम हम पर किस चीज़ का इन्तिज़ार करते हो मगर दो ख़ूबियों में से एक का[122] और

نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ

हम तुम पर इस इन्तिज़ार में हैं कि **अल्लाह** तुम पर अ़ज़ाब डाले अपने पास से[123] या हमारे हाथों[124]

فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿۵۲﴾ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ

तो अब राह देखो (इन्तिज़ार करो) हम भी तुम्हारे साथ राह देख रहे हैं[125] तुम फ़रमाओ कि दिल से ख़र्च करो या ना गवारी से तुम से हरगिज़

يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ مَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ

क़बूल न होगा[126] बेशक तुम बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हो और वोह जो ख़र्च करते हैं

مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

उस का क़बूल होना बन्द न हुवा मगर इसी लिये कि वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और नमाज़ को नहीं आते

अपने माल से मदद करूंगा। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं कि येह उस का ह़ीला था और इस में सिवाए निफ़ाक़ के और कोई इ़ल्लत न थी। रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने उस की त़रफ़ से मुंह फेर लिया और उसे इजाज़त दे दी, उस के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई **118 :** क्यूं कि जिहाद से रुक रहना और रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم के हुक्म की मुख़ालफ़त करना बहुत बड़ा फ़ितना है। **119 :** और तुम दुश्मन पर फ़त्ह़ याब हो और ग़नीमत तुम्हारे हाथ आए **120 :** और किसी त़रह़ की शिद्दत पेश आए **121 :** मुनाफ़िक़ीन कि चालाकी से जिहाद में न जा कर **122 :** या तो फ़त्ह़ व ग़नीमत मिलेगी या शहादत व मग़्फ़िरत। क्यूं कि मुसल्मान जब जिहाद में जाता है तो वोह अगर ग़ालिब हो जब तो फ़त्ह़ व ग़नीमत और अज्रे अ़ज़ीम पाता है और अगर राहे ख़ुदा में मारा जाए तो उस को शहादत ह़ासिल होती है जो उस की आ'ला मुराद है। **123 :** और तुम्हें आ़द व समूद वग़ैरा की त़रह़ हलाक करे **124 :** तुम को क़त्ल व असीरी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करे **125 :** कि तुम्हारा क्या अन्जाम होता है। **126 शाने नुज़ूल :** येह आयत जद बिन क़ैस मुनाफ़िक़ के जवाब में नाज़िल हुई जिस ने जिहाद में न जाने की इजाज़त त़लब करने के साथ येह कहा था कि मैं अपने माल से मदद करूंगा। इस पर ह़ज़रते ह़क़ तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم से फ़रमाया (ऐ मह़बूब आप फ़रमा दीजिये) कि तुम ख़ुशी से दो या नाख़ुशी से तुम्हारा माल क़बूल न किया जाएगा या'नी रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم उस को न लेंगे क्यूं कि येह देना **अल्लाह** के लिये नहीं है।

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۵۴﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ

मगर जी हारे (सुस्ती की ह़ालत में) और ख़र्च नहीं करते मगर ना गवारी से[127] तो तुम्हें उन के माल और उन की

وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

औलाद का तअ़ज्जुब न आए **अल्लाह** येही चाहता है कि दुन्या की ज़िन्दगी में इन चीज़ों से उन पर वबाल डाले और

تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ

कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए[128] और **अल्लाह** की क़सम़ें खाते हैं[129] कि वोह तुम में से हैं[130] और

مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿۵۶﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ

तुम में से हैं नहीं[131] हां वोह लोग डरते हैं[132] अगर पाएं कोई पनाह या ग़ार

اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى

या समा जाने की जगह तो रस्सियां तुड़ाते (पूरी कोशिश करते) उधर फिर जाएंगे[133] और उन में कोई वोह है कि सदके़ बांटने

الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ

में तुम पर त़ा'न करता है[134] तो अगर उन[135] में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जभी

يَسْخَطُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا

वोह नाराज़ हैं और क्या अच्छा होता अगर वोह उस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह**

اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع اِنَّمَا ع ٧ ١٧ ١٣

काफ़ी है अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का रसूल हमें **अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़बत है[136] ज़कात

127 : क्यूं कि उन्हें रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं। 128 : तो वोह माल उन के ह़क़ में सबबे राह़त न हुवा बल्कि वबाल हुवा। 129 : मुनाफ़िक़ीन इस पर 130 : या'नी तुम्हारे दीनो मिल्लत पर हैं, मुसल्मान हैं। 131 : तुम्हें धोका देते और झूट बोलते हैं। 132 : कि अगर उन का निफ़ाक़ ज़ाहिर हो जाए तो मुसल्मान उन के साथ वोही मुआ़मला करेंगे जो मुश्रिकीन के साथ करते हैं, इस लिये वोह बराहे तक़य्या अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करते हैं। 133 : क्यूं कि उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ और मुसल्मानों से इन्तिहा दरजे का बुग़्ज़ है। 134 **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ुल ख़ुवैसिरा तमीमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। इस शख़्स का नाम हुरक़ूस बिन ज़ुहैर है और येही ख़वारिज की अस्ल व बुन्याद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम ﷺ माले ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो ज़ुल ख़ुवैसिरा ने कहा : **या रसूलल्लाह !** अ़द्ल कीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुझे ख़राबी हो, मैं न अ़द्ल करूंगा तो अ़द्ल कौन करेगा ? ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने अ़र्ज़ किया : मुझे इजाज़त दीजिये कि इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो, इस के और भी हमराही हैं कि तुम उन की नमाज़ों के सामने अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के सामने अपने रोज़ों को ह़क़ीर देखोगे, वोह क़ुरआन पढ़ेंगे और उन के गलों से न उतरेगा, वोह दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार से। 135 : सदक़ात 136 : कि हम पर अपना फ़ज़्ल वसीअ़ करे और हमें ख़ल्क़ के अम्वाल से ग़नी और बे नियाज़ कर दे।

www.dawateislami.net

الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ

तो इन्हीं लोगों के लिये है[137] मोहताज और निरे नादार और जो इसे तह़सील (वुसूल) कर के लाएं और जिन के दिलों को इस्लाम से उल्फ़त दी जाए

وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ

और गरदनें छुड़ाने में और क़र्ज़दारों को और **अल्लाह** की राह में और मुसाफ़िर को येह ठहराया हुवा है

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۰﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ

अल्लाह का और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और उन में कोई वोह हैं कि इन ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) को सताते हैं[138] और कहते हैं

هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ

वोह तो कान हैं तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और मुसल्मानों की बात पर यक़ीन करते हैं[139] और

رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ

जो तुम में मुसल्मान हैं उन के वासिते रह़मत हैं और वोह जो रसूलुल्लाह को ईज़ा देते हैं उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۱﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ

दर्दनाक अ़ज़ाब है तुम्हारे सामने **अल्लाह** की क़सम खाते हैं[140] कि तुम्हें राज़ी कर लें[141] और **अल्लाह** व रसूल का ह़क़ ज़ाइद था

137 : जब मुनाफ़िक़ीन ने तक़्सीमे सदक़ात में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ता'न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस आयत में बयान फ़रमा दिया कि सदक़ात के मुस्तह़िक़ सिर्फ़ येही आठ क़िस्म के लोग हैं इन्हीं पर सदक़ात सर्फ़ किये जाएंगे इन के सिवा और कोई मुस्तह़िक़ नहीं और रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को अम्वाले सदक़ा से कोई वासिता ही नहीं आप पर और आप की औलाद पर सदक़ात ह़राम हैं तो ता'न करने वालों को ए'तिराज़ का क्या मौक़अ़ ? **सदक़े** से इस आयत में ज़कात मुराद है। **मस्अला :** ज़कात के मुस्तह़िक़ आठ क़िस्म के लोग क़रार दिये गए हैं उन में से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब ब इज्माए सह़ाबा साक़ित हो गए क्यूं कि जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इस की ह़ाजत न रही, येह इज्माअ़ ज़मानए सिद्दीक़ में मुन्अ़क़िद हुवा। **मस्अला : फ़क़ीर** वोह है जिस के पास अदना चीज़ हो और जब तक उस के पास एक वक़्त के लिये कुछ हो उस को सुवाल ह़लाल नहीं। **मिस्कीन** वोह है जिस के पास कुछ न हो, वोह सुवाल कर सकता है। **आ़मिलीन** वोह लोग हैं जिन को इमाम ने सदक़े तह़सील करने पर मुक़र्रर किया हो, उन्हें इमाम इतना दे जो उन के और उन के मुतअ़ल्लिक़ीन के लिये काफ़ी हो। **मस्अला :** अगर आ़मिल ग़नी हो तो भी उस को लेना जाइज़ है। **मस्अला :** आ़मिल सय्यिद या हाशिमी हो तो वोह ज़कात में से न ले। **गरदनें छुड़ाने** से मुराद येह है कि जिन ग़ुलामों को उन के मालिकों ने मुकातब कर दिया हो और एक मिक़्दार माल की मुक़र्रर कर दी हो कि इस क़दर वोह अदा कर दें तो आज़ाद हैं वोह भी मुस्तह़िक़ हैं उन को आज़ाद कराने के लिये माले ज़कात दिया जाए। **क़र्ज़दार** जो बिग़ैर किसी गुनाह के मुब्तलाए क़र्ज़ हुए हों और इतना माल न रखते हों जिस से क़र्ज़ अदा करें उन्हें अदाए क़र्ज़ में माले ज़कात से मदद दी जाए। **अल्लाह की राह** में ख़र्च करने से बे सामान मुजाहिदीन और नादार ह़ाजियों पर सर्फ़ करना मुराद है। **इब्ने सबील** से वोह मुसाफ़िर मुराद है जिस के पास माल न हो। **मस्अला :** ज़कात देने वाले को येह भी जाइज़ है कि वोह इन तमाम अक़्साम के लोगों को ज़कात दे और येह भी जाइज़ है कि इन में से किसी एक ही क़िस्म को दे। **मस्अला :** ज़कात इन्हीं लोगों के साथ ख़ास की गई तो इन के इलावा और दूसरे मसरफ़ में ख़र्च न की जाएगी न मस्जिद की ता'मीर में न मुर्दे के कफ़न में न उस के क़र्ज़ की अदा में। **मस्अला :** ज़कात बनी हाशिम और ग़नी और उन के ग़ुलामों को न दी जाए और न आदमी अपनी बीबी और औलाद और ग़ुलामों को दे। (تفسیر احمدی و مدارک) **138 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को। **शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपने जल्सों में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में ना शाइस्ता बातें बका करते थे, उन में से बा'ज़ों ने कहा कि अगर ह़ुज़ूर को ख़बर हो गई तो हमारे ह़क़ में अच्छा न होगा। जुलास बिन सुवैद मुनाफ़िक़ ने कहा : हम जो चाहें कहें, ह़ुज़ूर के सामने मुकर जाएंगे और क़सम खा लेंगे वोह तो कान हैं उन से जो कह दिया जाए सुन कर मान लेते हैं। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और येह फ़रमाया कि अगर वोह सुनने वाले भी हैं तो ख़ैर और सलाह़ के सुनने और मानने वाले हैं शर और फ़साद के नहीं। **139 :** न मुनाफ़िक़ों की बात पर। **140 :** मुनाफ़िक़ीन, इस लिये **141 शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन अपनी मजलिसों में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ता'न किया करते थे और मुसल्मानों के पास आ कर उस से मुकर जाते थे

www.dawateislami.net

أَنْ يُّرْضُوْهُ إِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ

कि उसे राज़ी करते अगर ईमान रखते थे क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे **अल्लाह**

وَرَسُوْلَهٗ فَأَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾

और उस के रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है कि हमेशा उस में रहेगा येही बड़ी रुस्वाई है

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

मुनाफ़िक़ डरते हैं कि उन[142] पर कोई सूरत ऐसी उतरे जो उन[143] के दिलों की छुपी[144] जता दे

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ

तुम फ़रमाओ हंसे जाओ **अल्लाह** को ज़रूर ज़ाहिर करना है जिस का तुम्हें डर है और ऐ महबूब अगर तुम उन से पूछो

لَيَقُوْلُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ أَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ

तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे[145] तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल

كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ ؕ إِنْ

से हंसते हो बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसल्मान हो कर[146] अगर

نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِأَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ ع

हम तुम में से किसी को मुआफ़ करें[147] तो औरों को अज़ाब देंगे इस लिये कि वोह मुजरिम थे[148]

और क़समें खा खा कर अपनी बरिय्यत (बे गुनाही) साबित करते थे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मुसल्मानों को राज़ी करने के लिये क़समें खाने से ज़ियादा अहम **अल्लाह** और उस के रसूल को राज़ी करना था अगर ईमान रखते थे तो ऐसी हरकतें क्यूं कीं जो ख़ुदा और रसूल की नाराज़ी का सबब हों। **142 :** मुसल्मानों **143 :** मुनाफ़िक़ों **144 :** दिलों की छुपी चीज़ उन का निफ़ाक़ है और वोह बुग़्ज़ो अ़दावत जो वोह मुसल्मानों के साथ रखते थे और उस को छुपाया करते थे। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात देखने और आप की ग़ैबी ख़बरें सुनने और उन को वाक़ेअ़ के मुताबिक़ पाने के बा'द मुनाफ़िक़ों को अन्देशा हो गया कि कहीं **अल्लाह** तआ़ला कोई ऐसी सूरत नाज़िल न फ़रमाए जिस से उन के असरार ज़ाहिर कर दिये जाएं और उन की रुस्वाई हो। इस आयत में इसी का बयान है। **145 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए तबूक में जाते हुए मुनाफ़िक़ीन के तीन नफ़रों में से दो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत तमस्ख़ुरन कहते थे कि इन का ख़याल है कि येह रूम पर ग़ालिब आ जाएंगे कितना बईद ख़याल है और एक नफ़र बोलता तो न था मगर इन बातों को सुन कर हंसता था। हुज़ूर ने उन को त़लब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि तुम ऐसा ऐसा कह रहे थे ? उन्हों ने कहा : हम रास्ता काटने के लिये हंसी खेल के त़ौर पर दिललगी की बातें कर रहे थे। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन का येह उ़ज़्र व ह़ीला क़बूल न किया गया और उन के लिये येह फ़रमाया गया जो आगे इर्शाद होता है : **146 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी कुफ़्र है जिस त़रह भी हो उस में उ़ज़्र क़बूल नहीं। **147 :** उस के ताइब होने और ब इख़्लास ईमान लाने से। मुहम्मद बिन इस्ह़ाक़ का क़ौल है कि इस से वोही शख़्स मुराद है जो हंसता था मगर उस ने अपनी ज़बान से कोई कलिमए गुस्ताख़ी न कहा था जब येह आयत नाज़िल हुई तो वोह ताइब हुवा और इख़्लास के साथ ईमान लाया और उस ने दुआ़ की, कि या रब ! मुझे अपनी राह में मक़्तूल कर के ऐसी मौत दे कि कोई येह कहने वाला न हो कि मैं ने ग़ुस्ल दिया मैं ने कफ़न दिया मैं ने दफ़्न किया, चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि वोह जंगे यमामा में शहीद हुए और उन का पता ही न चला। उन का नाम यह़्या बिन हुमैर अश्जई था और चूंकि उन्हों ने हुज़ूर की बदगोई से ज़बान रोकी थी इस लिये उन्हें तौबा व ईमान की तौफ़ीक़ मिली। **148 :** और अपने जुर्म पर क़ाइम रहे और ताइब न हुए।

www.dawateislami.net

وقف لازم

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें एक थेली के चट्टे बट्टे (एक जैसे) हैं[149] बुराई का हुक्म दें[150] और

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ

भलाई से मन्अ़ करें[151] और अपनी मुठ्ठी बन्द रखें (ख़र्च न करें)[152] वोह **अल्लाह** को छोड़ बैठे[153] तो **अल्लाह** ने उन्हें छोड़ दिया[154] बेशक

الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْكُفَّارَ

मुनाफ़िक़ वोही पक्के बे हुक्म (ना फ़रमान) हैं **अल्लाह** ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औ़रतों और काफ़िरों को

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ

जहन्नम की आग का वा'दा दिया है जिस में हमेशा रहेंगे वोह उन्हें बस (काफ़ी) है और **अल्लाह** की उन पर ला'नत है और उन के लिये क़ाइम रहने वाला

مُّقِيْمٌ ﴿۶۸﴾ ۙ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّ اَكْثَرَ اَمْوَالًا

अ़ज़ाब है जैसे वोह जो तुम से पहले थे तुम से ज़ोर में बढ़ कर थे और उन के माल और औलाद

وَّ اَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ

तुम से ज़ियादा तो वोह अपना हिस्सा[155] बरत (फ़ाएदा उठा) गए तो तुम ने अपना हिस्सा बरता जैसे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَ خُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

अगले अपना हिस्सा बरत गए और तुम बेहूदगी में पड़े जैसे वोह पड़े थे[156] उन के अ़मल

اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ

अकारत (ज़ाएअ़) गए दुन्या और आख़िरत में और वोही लोग घाटे में हैं[157] क्या उन्हें[158] अपने

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۙ۬ وَ قَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَ اَصْحٰبِ

से अगलों की ख़बर न आई[159] नूह़ की क़ौम[160] और आद[161] और समूद[162] और इब्राहीम की क़ौम[163] और मद्यन

149 : वोह सब निफ़ाक़ और आ'माले ख़बीसा में यक्सां हैं। उन का ह़ाल येह है कि **150 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और रसूल ﷺ की तक्ज़ीब का। (خازن) **151 :** या'नी ईमान व त़ाअ़त व तस्दीक़े रसूल से **152 :** राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से **153 :** और उन्हों ने उस की इत़ाअ़त व रिज़ा त़लबी न की। **154 :** और सवाब व फ़ज़्ल से मह़रूम कर दिया। **155 :** लज़्ज़ात व शहवाते दुन्यविय्या का **156 :** और तुम ने इत्तिबाए बात़िल और तक्ज़ीबे ख़ुदा व रसूल और मोमिनीन के साथ इस्तिहज़ा (ठठ्ठा मज़ाक़) करने में उन की राह इख़्तियार की। **157 :** उन्हीं कुफ़्फ़ार की त़रह़ ऐ मुनाफ़िक़ीन ! तुम टोटे में हो और तुम्हारे अ़मल बात़िल हैं। **158 :** या'नी मुनाफ़िक़ों को। **159 :** गुज़री हुई उम्मतों का ह़ाल मा'लूम न हुवा कि हम ने उन्हें अपने हुक्म की मुख़ालफ़त और अपने रसूलों की ना फ़रमानी करने पर किस त़रह़ हलाक किया। **160 :** जो तूफ़ान से हलाक की गई। **161 :** जो हवा से हलाक किये गए। **162 :** जो ज़ल्ज़ले से हलाक किये गए। **163 :** जो सल्बे ने'मत से हलाक की गई और नमरूद मच्छर से हलाक किया गया।

www.dawateislami.net

مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ

वाले[164] और वोह बस्तियां कि उलट दी गईं[165] उन के रसूल रोशन दलीलें उन के पास लाए थे[166] तो अल्लाह की शान न थी

لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ

कि उन पर ज़ुल्म करता[167] बल्कि वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ालिम थे[168] और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें

بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وقف لازم

एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं[169] भलाई का हुक्म दें[170] और बुराई से मन्अ़ करें

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें

اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

येह हैं जिन पर अ़न्क़रीब अल्लाह रह़्म करेगा बेशक अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है अल्लाह ने मुसलमान मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ

और मुसलमान औ़रतों को बाग़ों का वा'दा दिया है जिन के नीचे नहरें रवां उन में हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा

طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

मकानों का[171] बसने के बाग़ों में और अल्लाह की रिज़ा सब से बड़ी[172] येही है बड़ी

الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾ ع يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ ع ٩ ١٥

मुराद पानी ऐ ग़ैब की ख़बरें देने वाले (नबी) जिहाद फ़रमाओ काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर[173] और उन पर सख़्ती करो और

مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ

उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या ही बुरी जगह पलटने की अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा[174] और बेशक

164 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम जो रोज़े अब्र (ग़ैबी आग) के अ़ज़ाब से हलाक की गई। **165 :** और ज़ेरो ज़बर कर डाली गईं वोह क़ौमे लूत़ की बस्तियां थीं अल्लाह तआ़ला ने इन छ[6] का ज़िक्र फ़रमाया इस लिये कि बिलादे शाम व इराक़ व यमन जो सर ज़मीने अ़रब के बिल्कुल क़रीब हैं इन में उन हलाक शुदा क़ौमों के निशान बाक़ी हैं और अ़रब लोग इन मक़ामात पर अक्सर गुज़रते रहते हैं। **166 :** उन लोगों ने बजाए तस्दीक़ करने के अपने रसूलों की तक्ज़ीब की जैसा कि ऐ मुनाफ़िक़ीन, कुफ़्फ़ार ! तुम कर रहे हो, डरो कि उन्हीं की त़रह़ मुब्तलाए अ़ज़ाब न किये जाओ। **167 :** क्यूं कि वोह ह़कीम है बिग़ैर जुर्म के सज़ा नहीं फ़रमाता। **168 :** कि कुफ़्र और तक्ज़ीबे अम्बिया कर के अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ बने। **169 :** और बाहम दीनी मह़ब्बत व मुवालात (दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात) रखते हैं और एक दूसरे के मुईनो मददगार हैं। **170 :** या'नी अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करने का। **171 :** ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ से मरवी है कि जन्नत में मोती और याक़ूते सुर्ख़ और ज़बर जद के मह़ल मोमिनीन को अ़ता होंगे। **172 :** और तमाम ने'मतों से आ'ला और आ़शिक़ाने इलाही की सब से बड़ी तमन्ना। رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰى بِجَاهِ حَبِيْبِهٖ صلى الله عليه وسلم। **173 :** काफ़िरों पर तो तलवार और ह़र्ब से और मुनाफ़िक़ों पर इक़ामते हुज्जत से। **174** **शाने नुज़ूल :** इमाम बग़वी ने कलबी से नक़्ल किया कि येह आयत

قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَ مَا

ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए और वोह चाहा था जो उन्हें न मिला[175] और उन्हें

نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ

क्या बुरा लगा येही ना कि **अल्लाह** व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया[176] तो अगर वोह तौबा करें

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ

तो उन का भला है और अगर मुंह फेरें[177] तो **अल्लाह** उन्हें सख़्त अ़ज़ाब करेगा दुन्या और आख़िरत में

وَ مَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ

और ज़मीन में कोई न उन का हिमायती होगा न मददगार[178] और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने **अल्लाह** से अ़हद किया था

لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ

कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे[179] तो जब

जुलास बिन सुवैद के हक़ में नाज़िल हुई। वाक़िआ़ येह था कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम ﷺ ने तबूक में ख़ुत्बा फ़रमाया उस में मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र किया और उन की बदहाली व बद मआली का ज़िक्र फ़रमाया। येह सुन कर जुलास ने कहा कि अगर मुहम्मद (ﷺ) सच्चे हैं तो हम लोग गधों से बदतर। जब हुज़ूर मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो आ़मिर बिन क़ैस ने हुज़ूर से जुलास का मक़ूला बयान किया, जुलास ने इन्कार किया और कहा कि **या रसूलल्लाह!** आ़मिर ने मुझ पर झूट बोला। हुज़ूर ने दोनों को हुक्म फ़रमाया कि मिम्बर के पास क़सम खाएं। जुलास ने बा'दे अ़स्र मिम्बर के पास खड़े हो कर **अल्लाह** की क़सम खाई कि येह बात इस ने नहीं कही और आ़मिर ने इस पर झूट बोला। फिर आ़मिर ने खड़े हो कर क़सम खाई कि बेशक येह मक़ूला जुलास ने कहा और मैं ने इस पर झूट नहीं बोला। फिर आ़मिर ने हाथ उठा कर **अल्लाह** के हुज़ूर में दुआ़ की : या रब ! अपने नबी पर सच्चे की तस्दीक़ नाज़िल फ़रमा। उन दोनों के जुदा होने से पहले ही हज़रते जिब्रील येह आयत ले कर नाज़िल हुए आयत में "فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ" सुन कर जुलास खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** सुनिये **अल्लाह** ने मुझे तौबा का मौक़अ़ दिया, आ़मिर बिन क़ैस ने जो कुछ कहा सच कहा, मैं ने वोह कलिमा कहा था और अब मैं तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूं। हुज़ूर ने उन की तौबा क़बूल फ़रमाई और वोह तौबा पर साबित रहे। **175 :** मुजाहिद ने कहा कि जुलास ने इफ़्शाए राज़ (भेद खुल जाने) के अन्देशे से आ़मिर के क़त्ल का इरादा किया था, इस की निस्बत **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि वोह पूरा न हुवा। **176 :** ऐसी हालत में उन पर शुक्र वाजिब था न कि ना सिपासी (ना शुक्री)। **177 :** तौबा व ईमान से। और कुफ़्र व निफ़ाक़ पर मुसिर रहें। **178 :** कि उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। **179 शाने नुज़ूल :** सा'लबा बिन हातिब ने सय्यिदे आ़लम ﷺ से दरख़्वास्त की, कि इस के लिये मालदार होने की दुआ़ फ़रमाएं। हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ सा'लबा थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिस का शुक्र अदा न कर सके। दोबारा फिर सा'लबा ने हाज़िर हो कर येही दरख़्वास्त की और कहा : उसी की क़सम ! जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वोह मुझे माल देगा तो मैं हर हक़ वाले का हक़ अदा करूंगा। हुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उन की गुन्जाइश न हुई तो सा'लबा उन को ले कर जंगल में चला गया और जुमुआ़ व जमाअ़त की हाज़िरी से भी महरूम हो गया। हुज़ूर ने उस का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि उस का माल बहुत कसीर हो गया है और अब जंगल में भी उस के माल की गुन्जाइश न रही। हुज़ूर ने फ़रमाया कि सा'लबा पर अफ़्सोस ! फिर जब हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने ज़कात के तहसील (हासिल) करने वाले भेजे लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये जब सा'लबा से जा कर उन्हों ने सदक़ा मांगा उस ने कहा येह तो टेक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूं। जब येह लोग रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर ने उन के कुछ अ़र्ज़ करने से क़ब्ल दो मरतबा फ़रमाया : सा'लबा पर अफ़्सोस ! तो येह आयत नाज़िल हुई। फिर सा'लबा सदक़ा ले कर हाज़िर हुवा तो सय्यिदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस के क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी, वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुवा, फिर उस सदक़े को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में हज़रते अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास लाया। उन्हों ने भी उसे क़बूल न फ़रमाया। फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में हज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ के पास लाया, उन्हों ने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में येह शख़्स हलाक हो गया। (مدارک)

[आ'ला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ की तहक़ीक़ के मुताबिक़ इस मुनाफ़िक़ का दुरुस्त नाम "सा'लबा इब्ने अबी हातिब" था। फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 453। इल्मिय्या]

www.dawateislami.net

اٰتٰىهُمۡ مِّنۡ فَضۡلِهٖ بَخِلُوۡا بِهٖ وَتَوَلَّوۡا وَّهُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعۡقَبَهُمۡ

अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो उस के पीछे

نِفَاقًا فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ اِلٰى يَوۡمِ يَلۡقَوۡنَهٗ بِمَاۤ اَخۡلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوۡهُ وَبِمَا

अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने **अल्लाह** से वा'दा झूटा किया और बदला इस

كَانُوۡا يَكۡذِبُوۡنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ سِرَّهُمۡ وَنَجۡوٰٮهُمۡ وَ

का कि झूट बोलते थे[180] क्या उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** उन के दिल की छुपी और उन की सरगोशी को जानता है और

اَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيۡنَ يَلۡمِزُوۡنَ الۡمُطَّوِّعِيۡنَ مِنَ

येह कि **अल्लाह** सब ग़ैबों का बहुत जानने वाला है[181] वोह जो ऐब लगाते हैं उन मुसल्मानों को

الۡمُؤۡمِنِيۡنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيۡنَ لَا يَجِدُوۡنَ اِلَّا جُهۡدَهُمۡ

कि दिल से ख़ैरात करते हैं[182] और उन को जो नहीं पाते मगर अपनी मेह्नत से[183]

فَيَسۡخَرُوۡنَ مِنۡهُمۡ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنۡهُمۡ ۫ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿٧٩﴾ اِسۡتَغۡفِرۡ

तो उन से हंसते हैं[184] **अल्लाह** उन की हंसी की सज़ा देगा और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है तुम उन की मुआ़फ़ी

لَهُمۡ اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ

चाहो या न चाहो अगर तुम सत्तर बार उन की मुआ़फ़ी चाहोगे तो **अल्लाह** हरगिज़ उन्हें नहीं

180 : इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि इस आयत से साबित होता है कि अ़ह्द शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी से निफ़ाक़ पैदा होता है तो मुसल्मान पर लाज़िम है कि इन बातों से एह्तिराज़ करे और अ़ह्द पूरा करने और वा'दा वफ़ा करने में पूरी कोशिश करे। ह़दीस शरीफ़ में है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे झूट बोले, जब वा'दा करे ख़िलाफ़ करे, जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे। **181 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं मुनाफ़िक़ीन के दिलों की बात भी जानता है और जो आपस में वोह एक दूसरे से कहें वोह भी। **182 शाने नुज़ूल :** जब आयते सदक़ा नाज़िल हुई तो लोग सदक़ा लाए उन में कोई बहुत कसीर लाए उन्हें तो मुनाफ़िक़ीन ने रियाकार कहा और कोई एक साअ़ (3 ½ सेर) (3840 ग्राम या'नी चार किलो में 20 ग्राम कम। दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, बाबुल मदीना कराची) लाए तो उन्हें कहा : **अल्लाह** को इस की क्या परवाह, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने लोगों को सदक़े की रग़्बत दिलाई तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ चार हज़ार दिरहम लाए और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** मेरा कुल माल आठ हज़ार दिरहम था चार हज़ार तो येह राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर है और चार हज़ार मैं ने घर वालों के लिये रोक लिये हैं। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : जो तुम ने दिया **अल्लाह** उस में भी बरकत फ़रमाए और जो रोक लिया उस में भी बरकत फ़रमाए। ह़ुज़ूर की दुआ़ का येह असर हुवा कि इन का माल बहुत बढ़ा यहां तक कि जब इन की वफ़ात हुई तो इन्हों ने दो बीबियां छोड़ीं उन्हें आठवां ह़िस्सा मिला जिस की मिक़्दार एक लाख साठ हज़ार दिरहम थी। **183 :** अबू अ़क़ील अन्सारी एक साअ़ खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि मैं ने आज रात पानी खींचने की मज़दूरी की उस की उजरत दो साअ़ खजूरें मिलीं एक साअ़ तो मैं घर वालों के लिये छोड़ आया और एक साअ़ राहे ख़ुदा में ह़ाज़िर है। ह़ुज़ूर ने येह सदक़ा क़बूल फ़रमाया और उस की क़द्र की। **184 :** मुनाफ़िक़ीन। और सदक़े की क़िल्लत पर आ़र दिलाते हैं।

www.dawateislami.net

لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ

बख़्शेगा[185] येह इस लिये कि वोह अल्लाह और उस के रसूल से मुन्किर हुए और अल्लाह फ़ासिक़ों को राह

ع ۱۰ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۸۰﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ كَرِهُوْۤا

नहीं देता[186] पीछे रह जाने वाले इस पर ख़ुश हुए कि वोह रसूल के पीछे बैठ रहे[187] और उन्हें गवारा न हुवा

اَنْ یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ قَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِی

कि अपने माल और जान से अल्लाह की राह में लड़ें और बोले इस गरमी

الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا یَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَلْیَضْحَكُوْا

में न निकलो तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है किसी त़रह उन्हें समझ होती[188] तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा

قَلِیْلًا وَّ لْیَبْكُوْا كَثِیْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَاِنْ رَّجَعَكَ

हंसें और बहुत रोएं[189] बदला उस का जो कमाते थे[190] फिर ऐ महबूब[191] अगर अल्लाह तुम्हें

اللّٰهُ اِلٰى طَآىٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا

उन[192] में से किसी गुरोह की त़रफ़ वापस ले जाए और वोह[193] तुम से जिहाद को निकलने की इजाज़त मांगें तो तुम फ़रमाना कि तुम कभी

مَعِیَ اَبَدًا وَّ لَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِیْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ

मेरे साथ न चलो और हरगिज़ मेरे साथ किसी दुश्मन से न लड़ो तुम ने पहली दफ़्आ बैठ रहना

مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِیْنَ ﴿۸۳﴾ وَ لَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا

पसन्द किया तो बैठ रहो पीछे रह जाने वालों के साथ[194] और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना

185 शाने नुज़ूल : ऊपर की आयतें जब नाज़िल हुईं और मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ खुल गया और मुसल्मानों पर ज़ाहिर हो गया तो मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप से मा'ज़िरत कर के कहने लगे कि आप हमारे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिये। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि अल्लाह तआ़ला हरगिज़ उन की मग़्फ़िरत न फ़रमाएगा चाहे आप इस्तिग़फ़ार में मुबालग़ा करें। **186 :** जो ईमान से ख़ारिज हों जब तक कि वोह कुफ़्र पर रहें। (مدارك) **187 :** और ग़ज़्वए तबूक में न गए **188 :** तो थोड़ी देर की गरमी बरदाश्त करते और हमेशा की आग में जलने से अपने आप को बचाते। **189 :** या'नी दुन्या में ख़ुश होना और हंसना चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिये हो मगर वोह आख़िरत के रोने के मुक़ाबिल थोड़ा है क्यूं कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत दाइम और बाक़ी है। **190 :** या'नी आख़िरत का रोना दुन्या में हंसने और ख़बीस अमल करने का बदला है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वोह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते। **191 :** ग़ज़्वए तबूक के बा'द **192 :** मुतख़ल्लिफ़ीन (पीछे रह जाने वालों) **193 :** अगर वोह मुनाफ़िक़ जो तबूक में जाने से बैठ रहा था। **194 :** औ़रतों, बच्चों, बीमारों और अपाहजों के। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि जिस शख़्स से मक्र व ख़द्अ़ (धोका और फ़रेब) ज़ाहिर हो उस से इन्क़िता़अ़ और अ़लाह़दगी करना चाहिये और मह़ज़ इस्लाम के मुद्दई होने से मुसाह़बत व मुवाफ़क़त (या'नी हम नशीनी और दोस्ती) जाइज़ नहीं होती, इसी लिये अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मुनाफ़िक़ीन के जिहाद में जाने को मन्अ़ फ़रमा दिया। आज कल जो लोग कहते हैं कि हर कलिमा गो को मिला लो और उस के साथ इत्तिफ़ाक़ो इत्तिहाद करो येह इस हुक्मे क़ुरआनी के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

www.dawateislami.net

وَلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ

और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह अल्लाह व रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ ही

فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ

में मर गए[195] और उन के माल या औलाद पर तअ़ज्जुब न करना अल्लाह येही चाहता है कि

يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَاۤ

इसे दुन्या में उन पर वबाल करे और कुफ़्र ही पर उन का दम निकल जाए और जब

اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا

कोई सूरत उतरे कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल के हमराह जिहाद करो तो उन के मक़्दूर (त़ाक़त रखने) वाले

الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

तुम से रुख़्सत मांगते हैं और कहते हैं हमें छोड़ दीजिये कि बैठ रहने वालों के साथ हो लें उन्हें पसन्द आया कि पीछे रहने वाली

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ

औ़रतों के साथ हो जाएं और उन के दिलों पर मोहर कर दी गई[196] तो वोह कुछ नहीं समझते[197] लेकिन रसूल

---

195 : इस आयत में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मुनाफ़िक़ीन के जनाज़े की नमाज़ और उन के दफ़्न में शिर्कत करने से मन्अ़ फ़रमाया गया। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ़ है और येह जो फ़रमाया "और फ़िस्क़ ही में मर गए" यहां फ़िस्क़ से कुफ़्र मुराद है, क़ुरआने करीम में और जगह भी फ़िस्क़ ब मा'ना कुफ़्र वारिद हुवा है जैसे कि आयत "اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا" में। **मस्अला :** फ़ासिक़ के जनाज़े की नमाज़ जाइज़ है इस पर सह़ाबा और ताबिईन का इज्माअ़ है और इस पर उ़लमाए सालिह़ीन का अ़मल और येही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़्हब है। **मस्अला :** इस आयत से मुसल्मानों के जनाज़े की नमाज़ का जवाज़ भी साबित होता है और इस का फ़र्ज़े किफ़ाया होना ह़दीसे मश्हूर से साबित है। **मस्अला :** जिस शख़्स के मोमिन या काफ़िर होने में शुबा हो उस के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ी जाए। **मस्अला :** जब कोई काफ़िर मर जाए और उस का वली मुसल्मान हो तो उस को चाहिये कि ब त़रीक़े मस्नून ग़ुस्ल न दे बल्कि नजासत की त़रह़ उस पर पानी बहा दे और न कफ़ने मस्नून दे बल्कि इतने कपड़े में लपेट दे जिस से सत्र छुप जाए और न सुन्नत त़रीक़े पर दफ़्न करे न ब त़रीक़े सुन्नत क़ब्र बनाए सिर्फ़ गढ़ा खोद कर दबा दे। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ों का सरदार था जब वोह मर गया तो उस के बेटे अ़ब्दुल्लाह ने जो मुसल्मान सालेह़ मुख़्लिस सह़ाबी और कसीरुल इ़बादत थे। इन्हों ने येह ख़्वाहिश की, कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم इन के बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल को कफ़न के लिये अपना क़मीसे मुबारक इनायत फ़रमा दें और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें। ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه की राय इस के ख़िलाफ़ थी लेकिन चूंकि उस वक़्त तक मुमानअ़त नहीं हुई थी और हुज़ूर को मा'लूम था कि हुज़ूर का येह अ़मल एक हज़ार आदमियों के ईमान लाने का बाइस होगा इस लिये हुज़ूर ने अपनी क़मीस भी इनायत फ़रमाई और जनाज़े की शिर्कत भी की। क़मीस देने की एक वज्ह येह भी थी कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास जो बद्र में असीर हो कर आए थे तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ने अपना कुरता उन्हें पहनाया था हुज़ूर को उस का बदला कर देना भी मन्ज़ूर था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, और इस के बा'द फिर कभी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की शिर्कत न फ़रमाई और हुज़ूर की वोह मस्लह़त भी पूरी हुई। चुनान्चे जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि ऐसा शदीदुल अ़दावत शख़्स जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कुरते से बरकत ह़ासिल करना चाहता है तो उस के अ़क़ीदे में भी आप अल्लाह के ह़बीब और उस के सच्चे रसूल हैं येह सोच कर हज़ार काफ़िर मुसल्मान हो गए। **196 :** उन के कुफ़्र व निफ़ाक़ इख़्तियार करने के बाइस। **197 :** कि जिहाद में क्या फ़ौज़ व सआ़दत (काम्याबी व ख़ुश बख़्ती) और बैठ रहने में कैसी हलाकत व शक़ावत (नाकामी व बद बख़्ती) है।

www.dawateislami.net

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

और जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों जानों से जिहाद किया और उन्हीं के लिये

الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸۸﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

भलाइयां हैं[198] और येही मुराद को पहुंचे अल्लाह ने उन के लिये तय्यार कर रखी हैं बिहिश्तें जिन

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۸۹﴾ ع وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ

के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येही बड़ी मुराद मिलनी है और बहाने बनाने वाले

مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

गंवार आए[199] कि उन्हें रुख़्सत दी जाए और बैठ रहे वोह जिन्हों ने अल्लाह व रसूल से झूट बोला था[200]

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۰﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ

जल्द उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[201] ज़ईफ़ों पर कुछ ह़रज नहीं[202]

وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا

और न बीमारों पर[203] और उन पर जिन्हें ख़र्च का मक़्दूर (त़ाक़त) न हो[204] जब

نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

कि अल्लाह व रसूल के ख़ैर ख़्वाह रहें[205] नेकी वालों पर कोई राह नहीं[206] और अल्लाह बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۹۱﴾ لا وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ

मेहरबान है और न उन पर जो तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों कि तुम उन्हें सुवारी अ़त़ा फ़रमाओ[207] तुम से येह जवाब पाएं कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस

198 : दोनों जहान की 199 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में जिहाद से रह जाने का उ़ज़्र करने। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि येह आ़मिर बिन त़ुफ़ैल की जमाअ़त थी, इन्हों ने सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अ़र्ज़ किया कि **या नबिय्यल्लाह!** अगर हम आप के साथ जिहाद में जाएं तो क़बीलए त़य के अ़रब हमारी बीबियों, बच्चों और जानवरों को लूट लेंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया मुझे अल्लाह ने तुम्हारे ह़ाल से ख़बरदार किया है और वोह मुझे तुम से बे नियाज़ करेगा। अ़म्र बिन अ़ला ने कहा कि उन लोगों ने उ़ज़्रे बात़िल बना कर पेश किया था। 200 : येह दूसरे गुरोह का ह़ाल है जो बिग़ैर किसी उ़ज़्र के बैठ रहे, येह मुनाफ़िक़ीन थे इन्हों ने ईमान का दा'वा झूटा किया था। 201 : दुन्या में क़त्ल होने का और आख़िरत में जहन्नम का। 202 : बात़िल वालों का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द सच्चे उ़ज़्र वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि इन पर से जिहाद की फ़र्ज़िय्यत साक़ित़ है। येह कौन लोग हैं? उन के चन्द त़बक़े बयान फ़रमाए : पहले ज़ईफ़ जैसे कि बूढ़े, बच्चे, औ़रतें और वोह शख़्स भी इन्ही में दाख़िल है जो पैदाइशी कमज़ोर ज़ईफ़ नह़ीफ़ नाकारा हो। 203 : येह दूसरा त़बक़ा है जिस में अन्धे, लंगड़े, अपाहज भी दाख़िल हैं। 204 : और सामाने जिहाद न कर सकें, येह लोग रह जाएं तो इन पर कोई गुनाह नहीं। 205 : इन की इत़ाअ़त करें और मुजाहिदीन के घर वालों की ख़बर गीरी रखें। 206 : मुआख़ज़े की। 207 **शाने नुज़ूल :** अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم में से चन्द ह़ज़रात जिहाद में जाने के लिये ह़ाज़िर हुए, उन्हों ने हुज़ूर से सुवारी की दरख़्वास्त की। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं जिस पर मैं तुम्हें सुवार करूं तो वोह रोते वापस हुए उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

اَحۡمِلُكُمۡ عَلَيۡهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّ اَعۡيُنُهُمۡ تَفِيۡضُ مِنَ الدَّمۡعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوۡا

पर तुम्हें सुवार करूं इस पर यूं वापस जाएं कि उन की आंखों से आंसू उबलते हों इस ग़म से कि ख़र्च का

مَا يُنۡفِقُوۡنَ ؕ﴿۹۲﴾ اِنَّمَا السَّبِيۡلُ عَلَى الَّذِيۡنَ يَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ وَهُمۡ

मक़्दूर न पाया मुआख़ज़ा (पकड़) तो उन से है जो तुम से रुख़्सत मांगते हैं और वोह

اَغۡنِيَآءُ ۚ رَضُوۡا بِاَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مَعَ الۡخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى

दौलत मन्द हैं[208] उन्हें पसन्द आया कि औ़रतों के साथ पीछे बैठ रहें और अल्लाह ने उन के दिलों पर

قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۹۳﴾

मोहर कर दी तो वोह कुछ नहीं जानते[209]

208 : जिहाद में जाने की क़ुदरत रखते हैं बा वुजूद इस के 209 : कि जिहाद में क्या नफ़्अ़ व सवाब है।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ

तुम से बहाने बनाएंगे[210] जब तुम उन की त़रफ़ लौट कर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़

نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ

तुम्हारा यक़ीन न करेंगे **अल्लाह** ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब **अल्लाह** व रसूल तुम्हारे काम

وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

देखेंगे[211] फिर उस की त़रफ़ पलट कर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सब को जानता है वोह तुम्हें जता देगा जो कुछ

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ

तुम करते थे अब तुम्हारे आगे **अल्लाह** की क़सम खाएंगे जब[212] तुम उन की त़रफ़ पलट कर जाओगे

لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ٚ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ

इस लिये कि तुम उन के ख़याल में न पड़ो[213] तो हां तुम उन का ख़याल छोड़ो[214] वोह तो निरे (बिल्कुल) पलीद हैं[215] और उन का ठिकाना जहन्नम है

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾ يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ

बदला उस का जो कमाते थे[216] तुम्हारे आगे क़समें खाते हैं कि तुम उन से राज़ी हो जाओ तो अगर

تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾ اَلْاَعْرَابُ

तुम उन से राज़ी हो जाओ[217] तो बेशक **अल्लाह** तो फ़ासिक़ लोगों से राज़ी न होगा[218] गंवार[219]

210 : और बात़िल उ़ज़्र पेश करेंगे येह जिहाद से रह जाने वाले मुनाफ़िक़ तुम्हारे इस सफ़र से वापस होने के वक़्त **211 :** कि तुम निफ़ाक़ से तौबा करते हो या इस पर क़ाइम रहते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उन्हों ने वा'दा किया था कि ज़मानए मुस्तक़्बिल में वोह मोमिनीन की मदद करेंगे हो सकता है कि इसी की निस्बत फ़रमाया गया हो कि **अल्लाह** व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे कि तुम अपने इस अ़ह्द को भी वफ़ा करते हो या नहीं। **212 :** अपने इस सफ़र से वापस हो कर मदीनए त़य्यिबा में **213 :** और उन पर मलामत व इ़ताब न करो। **214 :** और उन से इज्तिनाब करो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मुराद येह है कि उन के साथ बैठना, उन से बोलना तर्क कर दो चुनान्चे जब नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर ने मुसल्मानों को हुक्म दिया कि मुनाफ़िक़ीन के पास न बैठें, उन से बात न करें क्यूं कि उन के बात़िन ख़बीस और आ'माल क़बीह़ (बुरे) हैं और मलामत व इ़ताब से उन की इस्लाह़ न होगी इस लिये कि **215 :** और पलीदी के पाक होने का कोई त़रीक़ा नहीं। **216 :** दुन्या में ख़बीस अ़मल। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत जद बिन क़ैस और मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर और इन के साथियों के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह अस्सी मुनाफ़िक़ थे। नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन के पास न बैठो, इन से कलाम न करो। मक़ातिल ने कहा कि येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय के ह़क़ में नाज़िल हुई, इस ने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने क़सम खाई थी कि अब कभी वोह जिहाद में जाने से सुस्ती न करेगा और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की थी कि हुज़ूर उस से राज़ी हो जाएं इस पर येह आयत और इस के बा'द वाली आयत नाज़िल हुई **217 :** और उन के उ़ज़्र क़बूल कर लो तो इस से उन्हें कुछ नफ़्अ़ न होगा, क्यूं कि तुम अगर उन की क़समों का ए'तिबार भी कर लो **218 :** इस लिये कि वोह उन के दिल के कुफ़्रो निफ़ाक़ को जानता है। **219 :** जंगल के रहने वाले।

www.dawateislami.net

أَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़ियादा सख़्त हैं[220] और इसी क़ाबिल हैं कि **अल्लाह** ने जो हुक्म अपने रसूल पर उतारे उस

رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۹۷﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا

से जाहिल रहें और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है और कुछ गंवार वोह हैं कि जो **अल्लाह** की राह में ख़र्च करें

يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَ

तो उसे तावान समझें[221] और तुम पर गर्दिशें (मसाइब) आने के इन्तिज़ार में रहें[222] उन्हीं पर है बुरी गर्दिश[223] और

اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۹۸﴾ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

अल्लाह सुनता जानता है और कुछ गाउं वाले वोह हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान

الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ

रखते हैं[224] और जो ख़र्च करें उसे **अल्लाह** की नज़्दीकियों और रसूल से दुआएं लेने का ज़रीआ समझें[225]

اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

हां हां वोह उन के लिये बाइसे क़ुर्ब है **अल्लाह** जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿۹۹﴾ ع وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَ ع

मेहरबान है और सब में अगले पहले मुहाजिर[226] और अन्सार[227] और

الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ

जो भलाई के साथ उन के पैरव (पैरवी करने वाले) हुए[228] **अल्लाह** उन से राज़ी[229] और वोह **अल्लाह** से राज़ी[230] और उन के लिये

---

220 : क्यूं कि वोह मजालिसे इल्म और सोह़बते उ़लमा से दूर रहते हैं। **221 :** क्यूं कि वोह जो कुछ ख़र्च करते हैं रिज़ाए इलाही और त़लबे सवाब के लिये तो करते नहीं रियाकारी और मुसल्मानों के ख़ौफ़ से ख़र्च करते हैं। **222 :** और येह राह देखते हैं कि कब मुसल्मानों का ज़ोर कम हो और कब वोह मग़्लूब हों, उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** को क्या मन्ज़ूर है वोह बतला दिया जाता है। **223 :** और वोही रन्जो बला और बदह़ाली में गिरिफ़्तार होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत क़बीलए असद व ग़त़फ़ान व तमीम के आ'राबियों (दीहातियों) के ह़क़ में नाज़िल हुई फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने इन में से जिन को मुस्तस्ना किया उन का ज़िक्र अगली आयत में है। (خازن) **224 :** मुजाहिद ने कहा कि येह लोग क़बीलए मुज़ैना में से बनी मुक़र्रिन हैं। कल्बी ने कहा : वोह अस्लम और ग़िफ़ार और जुहैना के क़बीले हैं। बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ुरैश और अन्सार और जुहैना और मुज़ैना और अस्लम और शुजाअ़ और ग़िफ़ार मवाली हैं, **अल्लाह** और रसूल के सिवा इन का कोई मौला नहीं। **225 :** कि जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में सदक़ा लाएं तो हुज़ूर उन के लिये ख़ैरो बरकत व मग़्फ़िरत की दुआ़ फ़रमाएं, येही रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का त़रीक़ा था। **मस्अला :** येही फ़ातिह़ा की अस्ल है कि सदक़े के साथ दुआ़ए मग़्फ़िरत की जाती है, लिहाज़ा फ़ातिह़ा को बिद्अ़त व ना रवा (ना जाइज़) बताना क़ुरआन व ह़दीस के ख़िलाफ़ है। **226 :** वोह ह़ज़रात जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं या अहले बद्र या अहले बैअ़ते रिज़्वान **227 :** अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए ऊला जो छ[6] ह़ज़रात थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सानिया जो बारह थे और अस्ह़ाबे बैअ़ते अ़क़्बए सालिसा जो सत्तर अस्ह़ाब हैं, येह ह़ज़रात साबिक़ीने अन्सार कहलाते हैं। (خازن) **228 :** कहा गया है कि इन से बाक़ी मुहाजिरीन व अन्सार मुराद हैं, तो अब तमाम अस्ह़ाब

www.dawateislami.net

لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें यही बड़ी

الْعَظِیْمُ ﴿۱۰۰﴾ وَ مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَ مِنْ اَهْلِ

काम्याबी है और तुम्हारे आस पास[231] के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीना

الْمَدِیْنَةِ ۛؔ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ

وقف منزل ع

वाले उन की ख़ू (आदत) हो गई है निफ़ाक़ तुम उन्हें नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं[232]

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَیْنِ ثُمَّ یُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۰۱﴾ وَ اٰخَرُوْنَ

जल्द हम उन्हें दो बार[233] अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे[234] और कुछ और हैं जो

اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَیِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ

अपने गुनाहों के मुक़िर (इक़रारी) हुए[235] और मिलाया एक काम अच्छा[236] और दूसरा बुरा[237] क़रीब है कि

یَّتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۰۲﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ

अल्लाह उन की तौबा क़बूल करे बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ मह़बूब उन के माल में से

इस में आ गए और एक क़ौल येह है कि पैरव होने वालों से क़ियामत तक के वोह ईमानदार मुराद हैं जो ईमान व त़ाअ़त व नेकी में अन्सार व मुहाजिरीन की राह चलें। **229 :** उस को उन के नेक अ़मल क़बूल **230 :** उस के सवाब व अ़त़ा से ख़ुश **231 :** या'नी मदीनए त़य्यिबा के क़ुर्बो जवार **232 :** इस के मा'ना या तो येह हैं कि ऐसा जानना जिस का असर उन्हें मा'लूम हो वोह हमारा जानना है कि हम उन्हें अ़ज़ाब करेंगे या हुज़ूर से मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल जानने की नफ़ी ब ए'तिबारे मा सबक़ है और इस का इ़ल्म बा'द को अ़त़ा हुवा जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : ''وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِیْ لَحْنِ الْقَوْلِ'' (جمل) कल्बी व सुद्दी ने कहा कि नबिय्ये करीम ﷺ ने रोज़े जुमुआ़ ख़ुत़्बे के लिये क़ियाम कर के नाम बनाम फ़रमाया : निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है, निकल ऐ फ़ुलां ! तू मुनाफ़िक़ है। तो मस्जिद से चन्द लोगों को रुस्वा कर के निकाला। इस से भी मा'लूम होता है कि हुज़ूर को इस के बा'द मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया गया। **233 :** एक बार तो दुन्या में रुस्वाई और क़त्ल के साथ और दूसरी मरतबा क़ब्र में **234 :** या'नी अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ जिस में हमेशा गिरिफ़्तार रहेंगे। **235 :** और उन्हों ने दूसरों की त़रह झूटे उ़ज़्र न किये और अपने फ़े'ल पर नादिम हुए। **शाने नुज़ूल :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह आयत मदीनए त़य्यिबा के मुसल्मानों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ग़ज़्वए तबूक में ह़ाज़िर न हुए थे, इस के बा'द नादिम हुए और तौबा की और कहा : अफ़्सोस हम गुमराहों के साथ या औ़रतों के साथ रह गए और रसूले करीम ﷺ और आप के अस्ह़ाब जिहाद में हैं, जब हुज़ूर अपने सफ़र से वापस हुए और क़रीबे मदीना पहुंचे तो उन लोगों ने क़सम खाई कि हम अपने आप को मस्जिद के सुतूनों से बांध देंगे और हरगिज़ न खोलेंगे यहां तक कि रसूले करीम ﷺ ही खोलें, येह क़समें खा कर वोह मस्जिद के सुतूनों से बंध गए। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए और उन्हें मुलाह़ज़ा किया तो फ़रमाया : येह कौन हैं ? अ़र्ज़ किया गया : येह वोह लोग हैं जो जिहाद में ह़ाज़िर होने से रह गए थे, इन्हों ने **अल्लाह** से अ़ह्द किया है कि येह अपने आप को न खोलेंगे जब तक हुज़ूर इन से राज़ी हो कर इन्हें ख़ुद न खोलें। हुज़ूर ने फ़रमाया : और मैं **अल्लाह** की क़सम खाता हूं कि मैं इन्हें न खोलूंगा न इन का उ़ज़्र क़बूल करूं जब तक कि मुझे **अल्लाह** की त़रफ़ से इन के खोलने का हुक्म दिया जाए। तब येह आयत नाज़िल हुई और रसूले करीम ﷺ ने उन्हें खोला तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** येह माल हमारे रह जाने के बाइ़स हुए, इन्हें ले लीजिये और सदक़ा कीजिये और हमें पाक कर दीजिये और हमारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाइये। हुज़ूर ने फ़रमाया : मुझे तुम्हारे माल लेने का हुक्म नहीं दिया गया। इस पर अगली आयत नाज़िल हुई ''خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ''। **236 :** यहां अ़मले सालेह़ से या ए'तिराफ़े क़ुसूर और तौबा मुराद है या इस तख़ल्लुफ़ (जिहाद से रह जाने) से पहले ग़ज़्वात में नबिय्ये करीम ﷺ के साथ ह़ाज़िर होना या त़ाअ़त व तक़्वा के तमाम आ'माल इस तक़्दीर पर आयत तमाम मुसल्मानों के ह़क़ में होगी। **237 :** इस से तख़ल्लुफ़ या'नी जिहाद से रह जाना मुराद है।

صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ

ज़कात तहसील (वुसूल) करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उन के हक़ में दुआए ख़ैर करो[238] बेशक तुम्हारी दुआ

سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ

उन के दिलों का चैन है और **अल्लाह** सुनता जानता है क्या उन्हें ख़बर नहीं कि **अल्लाह** ही अपने

التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

बन्दों की तौबा क़बूल करता और सदक़े ख़ुद अपने दस्ते मुबारक में लेता है और येह कि **अल्लाह** ही तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَ

मेहरबान है[239] और तुम फ़रमाओ काम करो अब तुम्हारे काम देखेगा **अल्लाह** और उस के रसूल और

الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا

मुसलमान और जल्द उस की त़रफ़ पलटोगे जो छुपा और खुला सब जानता है तो वोह तुम्हारे काम

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ ج وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ

तुम्हें जता देगा और कुछ[240] मौक़ूफ़ रखे गए हैं **अल्लाह** के हुक्म पर या उन पर अ़ज़ाब करे

وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

या उन की तौबा क़बूल करे[241] और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और वोह जिन्हों ने मस्जिद

مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا

बनाई[242] नुक़्सान पहुंचाने को[243] और कुफ़्र के सबब[244] और मुसलमानों में तफ़्रिक़ा डालने को[245] और उस के इन्तिज़ार में

238 : आयत में जो सदक़ा वारिद हुवा है इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं : **एक** तो येह कि वोह सदक़ा ग़ैर वाजिबा था जो बत़ौर कफ़्फ़ारा के उन साह़िबों ने दिया था जिन का ज़िक्र ऊपर की आयत में है। **दूसरा** क़ौल येह है कि इस सदक़े से मुराद वोह ज़कात है जो उन के ज़िम्मे वाजिब थी, वोह ताइब हुए और उन्हों ने ज़कात अदा करनी चाही तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस के लेने का हुक्म दिया। इमाम अबू बक्र राज़ी जसास ने इस क़ौल को तरजीह़ दी है कि सदक़े से ज़कात मुराद है। (خازن واحکام القرآن) मदारिक में है कि सुन्नत येह है कि सदक़ा लेने वाला सदक़ा देने वाले के लिये दुआ़ करे और बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की ह़दीस है कि जब कोई नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास सदक़ा लाता आप उस के ह़क़ में दुआ़ करते। मेरे बाप ने सदक़ा ह़ाज़िर किया तो ह़ुज़ूर ने दुआ़ फ़रमाई "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اٰلِ اَبِىْ اَوْفٰى" (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबी औफ़ा पर रह़मत फ़रमा)। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि फ़ातिह़ा में जो सदक़ा लेने वाले सदक़ा पा कर दुआ़ करते हैं येह क़ुरआन व ह़दीस के मुत़ाबिक़ है। **239 :** इस में तौबा करने वालों को बिशारत दी गई कि इन की तौबा और इन के सदक़ात मक़्बूल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि जिन लोगों ने अब तक तौबा नहीं की इस आयत में उन्हें तौबा और सदक़े की तरग़ीब दी गई। **240 :** मुतख़ल्लिफ़ीन में से **241 :** मुतख़ल्लिफ़ीन या'नी ग़ज़्वए तबूक से रह जाने वाले तीन क़िस्म के थे : **एक** मुनाफ़िक़ीन जो निफ़ाक़ के ख़ूगर और आ़दी थे। **दूसरे** वोह लोग जिन्हों ने क़ुसूर के ए'तिराफ़ और तौबा में जल्दी की जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका। **तीसरे** वोह जिन्हों ने तवक़्क़ुफ़ किया और जल्दी तौबा न की, येही इस आयत से मुराद हैं। **242 शाने नुज़ूल :** येह आयत एक जमाअ़ते मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मस्जिदे क़ुबा को नुक़्सान पहुंचाने और उस की जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ करने के लिये उस

لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَیَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا

जो पहले से **अल्लाह** और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है[246] और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो

الْحُسْنٰی ؕ وَاللّٰهُ یَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِیْهِ اَبَدًا ؕ

भलाई चाही और **अल्लाह** गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना[247]

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَی التَّقْوٰی مِنْ اَوَّلِ یَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِیْهِ ؕ

बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़ गारी पर रखी गई है[248] वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो

فِیْهِ رِجَالٌ یُّحِبُّوْنَ اَنْ یَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ یُحِبُّ الْمُطَّهِّرِیْنَ ﴿۱۰۸﴾

उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं[249] और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं

के क़रीब एक मस्जिद बनाई थी, इस में एक बड़ी चाल थी वोह येह कि अबू आ़मिर जो ज़मानए जाहिलिय्यत में नसरानी राहिब हो गया था सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाने पर हुज़ूर से कहने लगा : येह कौन सा दीन है जो आप लाए हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं मिल्लते ह़नीफ़िय्या दीने इब्राहीम लाया हूं। कहने लगा : मैं उसी दीन पर हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया : नहीं। उस ने कहा कि आप ने इस में कुछ और मिला दिया है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि नहीं, मैं ख़ालिस साफ़ मिल्लत लाया हूं। अबू आ़मिर ने कहा : हम में से जो झूटा हो **अल्लाह** उस को मुसाफ़रत में तन्हा और बेकस कर के हलाक करे। हुज़ूर ने आमीन फ़रमाया। लोगों ने उस का नाम अबू आ़मिर फ़ासिक़ रख दिया। रोज़े उहुद अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने हुज़ूर से कहा कि जहां कहीं कोई क़ौम आप से जंग करने वाली मिलेगी मैं उस के साथ हो कर आप से जंग करूंगा चुनान्चे जंगे हुनैन तक उस का येही मा'मूल रहा और वोह हुज़ूर के साथ मसरूफ़े जंग रहा। जब हवाज़ुन को शिकस्त हुई और वोह मायूस हो कर मुल्के शाम की त़रफ़ भागा तो उस ने मुनाफ़िक़ीन को ख़बर भेजी कि तुम से जो सामाने जंग हो सके क़ुव्वत व सिलाह़ सब जम्अ़ करो और मेरे लिये एक मस्जिद बनाओ मैं शाहे रूम के पास जाता हूं वहां से रूमी लश्कर ले कर आऊंगा और (सय्यिदे आ़लम) मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) और इन के अस्ह़ाब को निकालूंगा, येह ख़बर पा कर उन लोगों ने मस्जिदे ज़िरार बनाई थी और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया था येह मस्जिद हम ने आसानी के लिये बना दी है कि जो लोग बूढ़े ज़ईफ़ कमज़ोर हैं वोह इस में ब फ़राग़त नमाज़ पढ़ लिया करें आप उस में एक नमाज़ पढ़ दीजिये और बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिये। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अब तो मैं सफ़रे तबूक के लिये पा ब रकाब (चलने को तय्यार) हूं वापसी पर **अल्लाह** की मरज़ी होगी तो वहां नमाज़ पढ़ लूंगा। जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस हो कर मदीने शरीफ़ के क़रीब एक मौज़अ़ (गाउं) में ठहरे तो मुनाफ़िक़ीन ने आप से दरख़्वास्त की, कि इन की मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन के फ़ासिद इरादों का इज़्हार फ़रमाया गया, तब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बा'ज़ अस्ह़ाब को हुक्म दिया कि उस मस्जिद को जा कर ढा दें और जला दें चुनान्चे ऐसा ही किया गया और अबू आ़मिर राहिब मुल्के शाम में ब ह़ालते सफ़र बे कसी व तन्हाई में हलाक हुवा। **243 :** मस्जिदे क़ुबा वालों के। **244 :** कि वहां ख़ुदा और रसूल के साथ कुफ़्र करें और निफ़ाक़ को क़ुव्वत दें। **245 :** जो मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ के लिये मुज्तमअ़ होते हैं। **246 :** या'नी अबू आ़मिर राहिब। **247 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को मस्जिदे ज़िरार में नमाज़ पढ़ने की मुमानअ़त फ़रमाई गई। **मस्अला :** जो मस्जिद फ़ख़्रो रिया और नुमूदो नुमाइश या रिज़ाए इलाही के सिवा और किसी ग़रज़ के लिये या ग़ैरे त़य्यिब माल से बनाई गई हो वोह मस्जिदे ज़िरार के साथ लाह़िक़ है। (مدارک) **248 :** इस से मुराद मस्जिदे क़ुबा है जिस की बुन्याद रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रखी और जब तक हुज़ूर ने क़ुबा में क़ियाम फ़रमाया उस में नमाज़ पढ़ी। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाते थे। दूसरी ह़दीस में है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब उ़मरह के बराबर है। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि इस से मस्जिदे मदीना मुराद है और इस में भी ह़दीसें वारिद हैं, इन दोनों बातों में कुछ तआ़रुज़ नहीं क्यूं कि आयत का मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल होना इस को मुस्तल्ज़िम नहीं है कि मस्जिदे मदीना में येह औसाफ़ न हों। **249 :** तमाम नजासतों से या गुनाहों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले मस्जिदे क़ुबा के ह़क़ में नाज़िल हुई। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ गुरौहे अन्सार ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी सना फ़रमाई, तुम वुज़ू और इस्तिन्जे के वक़्त क्या अ़मल करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم हम बड़ा इस्तिन्जा तीन ढेलों से करते हैं, इस के बा'द फिर पानी से त़हारत करते हैं।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ

तो क्या जिस ने अपनी बुन्याद रखी अल्लाह से डर और उस की रिज़ा पर[250] वोह भला या वोह जिस

أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ

ने अपनी नीव चुनी (बुन्याद रखी) एक गिराउ गढ़े के कनारे[251] तो वोह उसे ले कर जहन्नम की आग में ढै पड़ा[252] और अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي

ज़ालिमों को राह नहीं देता वोह ता'मीर जो चुनी हमेशा उन के दिलों में खटक्ती

قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ ع إِنَّ اللَّهَ

रहेगी[253] मगर येह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं[254] और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है बेशक अल्लाह ने

اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ

मुसल्मानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है[255]

يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي

अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें[256] और मरें[257] उस के ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा

التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا

तौरैत और इन्जील और क़ुरआन में[258] और अल्लाह से ज़ियादा क़ौल का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ

मस्अला : नजासत अगर जाए ख़ुरूज से मुतजाविज़ हो जाए तो पानी से इस्तिन्जा वाजिब है वरना मुस्तहब। **मस्अला :** ढेलों से इस्तिन्जा सुन्नत है, नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने इस पर मुवाज़बत् (हमेशगी) फ़रमाई और कभी तर्क भी किया। **250 :** जैसे कि मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे मदीना। **251 :** जैसे कि मस्जिदे ज़िरार वाले। **252 :** मुराद येह है कि जिस शख़्स ने अपने दीन की बिना (बुन्याद) तक़्वा और रिज़ाए इलाही की मज़्बूत् सत्ह पर रखी वोह बेहतर है न कि वोह जिस ने अपने दीन की बिना बातिल व निफ़ाक़ के गिराउ गढ़े पर रखी। **253 :** और उस के गिराए जाने का सदमा बाक़ी रहेगा। **254 :** ख़्वाह क़त्ल हो कर या मर कर या क़ब्र में या जहन्नम में। मा'ना येह हैं कि उन के दिलों का ग़मो ग़ुस्सा ता मर्ग बाक़ी रहेगा : بمیرتا برہی اے حسود کیں رنجیست کہ از مشقت اوجز بمرگ نتواں رست (ऐ हासिद! हसद की बीमारी से छुटकारा पाने के लिये मर जा क्यूं कि इस से नजात पाने के लिये तेरे पास मौत के सिवा कोई रास्ता नहीं) और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि जब तक उन के दिल अपने क़ुसूर की नदामत और अफ़्सोस से पारह पारह न हों और वोह इख़्लास से ताइब न हों उस वक़्त तक वोह इसी रन्जो ग़म में रहेंगे। (مدارک) **255 :** राहे ख़ुदा में जानो माल ख़र्च कर के जन्नत पाने वाले ईमानदारों की एक तम्सील है जिस से कमाले लुत्फ़ो करम का इज़्हार होता है कि परवर्दगारे आलम ने उन्हें जन्नत अ़ता फ़रमाना उन के जानो माल का इवज़ क़रार दिया और अपने आप को ख़रीदार फ़रमाया येह कमाले इज़्ज़त अफ़्ज़ाई है कि वोह हमारा ख़रीदार बने और हम से ख़रीदे किस चीज़ को जो न हमारी बनाई हुई न हमारी पैदा की हुई, जान है तो उस की पैदा की हुई, माल है तो उस का अ़ता फ़रमाया हुवा। **शाने नुज़ूल :** जब अन्सार ने रसूले करीम صلی اللہ علیہ وسلم से शबे अ़क़्बा बैअ़त की तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رضی اللہ عنہ ने अ़र्ज़ की, कि **या रसूलल्लाह!** अपने रब के लिये और अपने लिये कुछ शर्त़ फ़रमा लीजिये जो आप चाहें। फ़रमाया : मैं अपने रब के लिये तो येह शर्त़ करता हूं कि तुम उस की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने लिये येह कि जिन चीज़ों से तुम अपने जानो माल को बचाते और मह़फ़ूज़ रखते हो उस को मेरे लिये भी गवारा न करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम ऐसा करें तो हमें क्या मिलेगा? फ़रमाया : जन्नत। **256 :** ख़ुदा के दुश्मनों को **257 :** राहे ख़ुदा में **258 :** इस से साबित हुवा कि तमाम शरीअ़तों और मिल्लतों में जिहाद का हुक्म था।

بِبَیۡعِکُمُ الَّذِیۡ بَایَعۡتُمۡ بِہٖ ؕ وَ ذٰلِکَ ہُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِیۡمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّآئِبُوۡنَ

अपने सौदे की जो तुम ने उस से किया है और येही बड़ी काम्याबी है तौबा वाले[259]

الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ السَّآئِحُوۡنَ الرّٰکِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ

इबादत वाले[260] सराहने वाले[261] रोज़े वाले रुकूअ़ वाले सज्दा वाले[262] भलाई के

بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ النَّاہُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡکَرِ وَ الۡحٰفِظُوۡنَ لِحُدُوۡدِ اللّٰہِ ؕ وَ

बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और **अल्लाह** की हदें निगाह रखने वाले[263] और

بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا کَانَ لِلنَّبِیِّ وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ یَّسۡتَغۡفِرُوۡا

ख़ुशी सुनाओ मुसल्मानों को[264] नबी और ईमान वालों को लाइक़ नहीं कि मुश्रिकों की

لِلۡمُشۡرِکِیۡنَ وَ لَوۡ کَانُوۡۤا اُولِیۡ قُرۡبٰی مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَیَّنَ لَہُمۡ اَنَّہُمۡ اَصۡحٰبُ

बख़्शिश चाहें अगर्चे वोह रिश्तेदार हों[265] जब कि उन्हें खुल चुका कि वोह

الۡجَحِیۡمِ ﴿۱۱۳﴾ وَ مَا کَانَ اسۡتِغۡفَارُ اِبۡرٰہِیۡمَ لِاَبِیۡہِ اِلَّا عَنۡ مَّوۡعِدَۃٍ

दोज़ख़ी हैं[266] और इब्राहीम का अपने बाप[267] की बख़्शिश चाहना वोह तो न था मगर एक वा'दे के सबब

وَّعَدَہَاۤ اِیَّاہُ ۚ فَلَمَّا تَبَیَّنَ لَہٗۤ اَنَّہٗ عَدُوٌّ لِّلّٰہِ تَبَرَّاَ مِنۡہُ ؕ اِنَّ اِبۡرٰہِیۡمَ

जो उस से कर चुका था[268] फिर जब इब्राहीम को खुल गया कि वोह **अल्लाह** का दुश्मन है उस से तिन्का तोड़ दिया (ला तअ़ल्लुक़ हो गया)[269] बेशक इब्राहीम ज़रूर

259 : तमाम गुनाहों से **260 : अल्लाह** के फ़रमां बरदार बन्दे जो इख़्लास के साथ उस की इबादत करते हैं और इबादत को अपने ऊपर लाज़िम जानते हैं **261 :** जो हर हाल में **अल्लाह** की हम्द करते हैं। **262 :** या'नी नमाज़ों के पाबन्द और इन को ख़ूबी से अदा करने वाले **263 :** और उस के अह़काम बजा लाने वाले येह लोग जन्नती हैं **264 :** कि वोह **अल्लाह** का अ़हद वफ़ा करेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। **265 शाने नुज़ूल :** इस आयत के शाने नुज़ूल में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं : (1) नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने अपने चचा अबू त़ालिब से फ़रमाया था कि मैं तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार करूंगा जब तक कि मुझे मुमानअ़त न की जाए तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर मुमानअ़त फ़रमा दी। (2) सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने अपने रब से अपनी वालिदा की ज़ियारते क़ब्र की इजाज़त चाही उस ने मुझे इजाज़त दी फिर मैं ने उन के लिये इस्तिग़्फ़ार की इजाज़त चाही तो मुझे इजाज़त न दी और मुझ पर येह आयत नाज़िल हुई ''مَا کَانَ لِلنَّبِیِّ'' अक़ूलु (मैं कहता हूं) : येह वज्ह शाने नुज़ूल की सहीह़ नहीं है क्यूं कि येह ह़दीस ह़ाकिम ने रिवायत की और इस को सहीह़ बताया और ज़हबी ने ह़ाकिम पर ए'तिमाद कर के मीज़ान में इस की तस्ह़ीह़ की लेकिन ''मुख़्तसरुल मुस्तदरक'' में ज़हबी ने इस ह़दीस की तज़्ईफ़ की और कहा कि अय्यूब बिन हानी को इब्ने मुईन ने ज़ईफ़ बताया है, इलावा बरीं येह ह़दीस बुख़ारी की ह़दीस के मुख़ालिफ़ भी है जिस में इस आयत के नुज़ूल का सबब आप का वालिदा के लिये इस्तिग़्फ़ार करना नहीं बताया गया बल्कि बुख़ारी की ह़दीस से येही साबित है कि अबू त़ालिब के लिये इस्तिग़्फ़ार करने के बाब में येह ह़दीस वारिद हुई, इस के इलावा और ह़दीसें जो इस मज़्मून की हैं जिन को त़बरानी और इब्ने सा'द और इब्ने शाहीन वग़ैरा ने रिवायत किया है वोह सब ज़ईफ़ हैं, इब्ने सा'द ने त़बक़ात में ह़दीस की तख़्रीज के बा'द इस को ग़लत़ बताया और सनदुल मुह़द्दिसीन इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी ने अपने रिसाले अत्ता'ज़ीम वल मिन्नह में इस मज़्मून की तमाम अह़ादीस को मा'लूल बताया, लिहाज़ा येह वज्हे शाने नुज़ूल में सहीह़ नहीं और येह साबित है इस पर बहुत दलाइल क़ाइम हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा मुवह्ह़िदा और दीने इब्राहीमी पर थीं। (3) बा'ज़ अस्ह़ाब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم से अपने आबा के लिये इस्तिग़्फ़ार करने की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई **266 :** शिर्क पर मरे **267 :** या'नी आज़र **268 :** इस से या तो वोह वा'दा मुराद है

www.dawateislami.net

لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ

बहुत आहें करने वाला[270] मुतहम्मिल है और **अल्लाह** की शान नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत कर के गुमराह फ़रमाए[271]

حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ

जब तक उन्हें साफ़ न बता दे कि किस चीज़ से उन्हें बचना चाहिये[272] बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है बेशक **अल्लाह**

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिलाता है और मारता है और **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

तुम्हारा कोई वाली और न मददगार बेशक **अल्लाह** की रहमतें मुतवज्जेह हुईं इन ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) और उन मुहाजिरीन

وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ

और अन्सार पर जिन्हों ने मुश्किल की घड़ी में इन का साथ दिया[273] बा'द इस के कि क़रीब था कि

قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ۙ

उन में कुछ लोगों के दिल फिर जाएं[274] फिर उन पर रहमत से मुतवज्जेह हुवा[275] बेशक वोह उन पर निहायत मेहरबान रहम वाला है

जो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र से किया था कि मैं अपने रब से तेरी मग़्फ़िरत की दुआ करूंगा या वोह वा'दा मुराद है जो आज़र ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से इस्लाम लाने का किया था। **शाने नुज़ूल :** हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई "سَاَسْتَغْفِرُ لَکَ رَبِّیْ" तो मैं ने सुना कि एक शख़्स अपने वालिदैन के लिये दुआए मग़्फ़िरत कर रहा है बा वुजूदे कि वोह दोनों मुश्रिक थे तो मैं ने कहा तू मुश्रिकों के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता है उस ने कहा क्या इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने आज़र के लिये दुआ न की थी वोह भी तो मुश्रिक था, येह वाक़िआ मैं ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से ज़िक्र किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इस्तिग़्फ़ार ब उम्मीदे इस्लाम था जिस का आज़र आप से वा'दा कर चुका था और आप आज़र से इस्तिग़्फ़ार का वा'दा कर चुके थे जब वोह उम्मीद मुन्क़तअ़ हो गई तो आप ने उस से अपना अ़लाक़ा क़त्अ़ (तअ़ल्लुक़ ख़त्म) कर दिया **269 :** और इस्तिग़्फ़ार करना तर्क फ़रमा दिया। **270 :** "कसीरुदुआ मुतज़र्रेअ़" (बहुत ज़ियादा दुआ और इज़्हारे इज्ज़ो ख़ुशूअ़ करने वाला) **271 :** या'नी उन पर गुमराही का हुक्म करे और उन्हें गुमराहों में दाख़िल फ़रमा दे **272 :** मा'ना येह हैं कि जो चीज़ मम्नूअ़ है और उस से इज्तिनाब वाजिब है इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस वक़्त तक अपने बन्दों की गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता जब तक कि उस की मुमानअ़त का साफ़ बयान **अल्लाह** की त़रफ़ से न आ जाए लिहाज़ा क़ब्ले मुमानअ़त उस फ़े'ल के करने में ह़रज नहीं। (مدارک وخازن) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जिस चीज़ की जानिब शरअ़ से मुमानअ़त न हो वोह जाइज़ है। **शाने नुज़ूल :** जब मोमिनीन को मुश्रिकीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करने से मन्अ़ फ़रमाया गया तो उन्हें अन्देशा हुवा कि हम पहले जो इस्तिग़्फ़ार कर चुके हैं कहीं उस पर गिरिफ़्त न हो, इस आयत से उन्हें तस्कीन दी गई और बताया गया कि मुमानअ़त का बयान होने के बा'द उस पर अ़मल करने से मुआख़ज़ा होता है। **273 :** या'नी ग़ज़्वए तबूक में जिस को ग़ज़्वए उ़सरत भी कहते हैं। इस ग़ज़्वे में उ़सरत (मुफ़्लिसी व तंगी) का येह ह़ाल था कि दस दस आदमियों में सुवारी के लिये एक एक ऊंट था, नौबत ब नौबत (बारी बारी) उसी पर सुवार हो लेते थे और खाने की क़िल्लत का येह ह़ाल था कि एक एक खजूर पर कई कई आदमी बसर करते थे, इस त़रह़ कि हर एक ने थोड़ी थोड़ी चूस कर एक घूंट पानी पी लिया, पानी की भी निहायत क़िल्लत थी, गरमी शिद्दत की थी, प्यास का ग़लबा और पानी नापैद, इस ह़ाल में सह़ाबा अपने सिद्क़ो यक़ीन और ईमानो इख़्लास के साथ हुज़ूर की जां निसारी में साबित क़दम रहे। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह! अल्लाह** तआ़ला से दुआ फ़रमाइये। फ़रमाया : क्या तुम्हें येह ख़्वाहिश है? अ़र्ज़ किया : जी हां। तो हुज़ूर ने दस्ते मुबारक उठा कर दुआ फ़रमाई और अभी दस्ते मुबारक उठे ही हुए थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने अब्र भेजा, बारिश हुई, लश्कर सैराब हुवा, लश्कर वालों ने अपने बरतन भर लिये, इस के बा'द जब आगे चले तो ज़मीन ख़ुश्क थी, अब्र ने लश्कर के बाहर बारिश ही नहीं की, वोह ख़ास उसी लश्कर को सैराब करने के लिये भेजा गया था। **274 :** और वोह इस शिद्दत व सख़्ती में रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से जुदा होना गवारा करें। **275 :** और वोह साबिर व साबित रहे और उन का

www.dawateislami.net

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ

और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ रखे गए थे[276] यहां तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर उन पर

بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ

तंग हो गई[277] और वोह अपनी जान से तंग आए[278] और उन्हें यक़ीन हुवा कि **अल्लाह** से पनाह

اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ

नहीं मगर उसी के पास फिर[279] उन की तौबा क़बूल की, कि ताइब रहें बेशक **अल्लाह** ही तौबा क़बूल करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ ١٤ ع ٨ ٣

मेहरबान है ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो[280] और सच्चों के साथ हो[281]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا

मदीने वालों[282] और उन के गिर्द दीहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से

عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

पीछे बैठ रहें[283] और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें[284] येह इस लिये कि उन्हें

لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ

जो प्यास या तक्लीफ़ या भूक **अल्लाह** की राह में पहुंचती है और जहां ऐसी जगह क़दम

इख़्लास महफ़ूज़ रहा और जो ख़त़रा दिल में गुज़रा था उस पर नादिम हुए। **276 :** तौबा से, जिन का ज़िक्र आयत "وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ" में है और येह तीन साहिब का'ब बिन मालिक और हिलाल बिन उमय्या और मरारह बिन रबीअ़ हैं येह सब अन्सारी थे। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबूक से वापस हो कर इन से जिहाद में हाज़िर न होने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई और फ़रमाया : ठहरो ! जब तक **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे लिये कोई फ़ैसला फ़रमाए और मुसल्मानों को इन लोगों से मिलने जुलने कलाम करने से मुमानअ़त फ़रमा दी ह़त्ता कि इन के रिश्तेदारों और दोस्तों ने इन से कलाम तर्क कर दिया यहां तक कि ऐसा मा'लूम होता था कि इन को कोई पहचानता ही नहीं और इन की किसी से शनासाई (वाक़िफ़िय्यत) ही नहीं, इस हाल पर इन्हें पचास रोज़ गुज़रे। **277 :** और उन्हें कोई ऐसी जगह न मिल सकी जहां एक लम्हे के लिये उन्हें क़रार होता, हर वक़्त परेशानी और रन्जो ग़म बेचैनी व इज़्तिराब में मुब्तला थे। **278 :** शिद्दते रन्जो ग़म से, न कोई अनीस (दोस्त) है जिस से बात करें न कोई ग़म ख़्वार जिसे हाले दिल सुनाएं, वह़्शतो तन्हाई है और शबो रोज़ की गिर्या व ज़ारी। **279 :** **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर रह़्म फ़रमाया और **280 :** मआ़सी तर्क करो **281 :** जो सादिक़ुल ईमान हैं, मुख़्लिस हैं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की इख़्लास के साथ तस्दीक़ करते हैं। सईद बिन जुबैर का क़ौल है कि सादिक़ीन से ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا मुराद हैं। इब्ने जरीर कहते हैं कि मुहाजिरीन। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह लोग जिन की निय्यतें साबित रहीं और क़ल्ब व आ'माल मुस्तक़ीम और वोह इख़्लास के साथ ग़ज़्वए तबूक में हाज़िर हुए। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि इज्माअ़ हुज्जत है क्यूं कि सादिक़ीन के साथ रहने का हुक्म फ़रमाया, इस से उन के क़ौल का क़बूल करना लाज़िम आता है। **282 :** यहां अहले मदीना से मदीनए त़य्यिबा में सुकूनत रखने वाले मुराद हैं ख़्वाह वोह मुहाजिरीन हों या अन्सार। **283 :** और जिहाद में हाज़िर न हों **284 :** बल्कि उन्हें हुक्म था कि शिद्दतो तक्लीफ़ में हुज़ूर का साथ न छोड़ें और सख़्ती के मौक़अ़ पर अपनी जानें आप पर फ़िदा करें।

www.dawateislami.net

مَوۡطِئًا یَّغِیۡظُ الۡکُفَّارَ وَ لَا یَنَالُوۡنَ مِنۡ عَدُوٍّ نَّیۡلًا اِلَّا کُتِبَ لَہُمۡ بِہٖ

रखते हैं[285] जिस से काफ़िरों को ग़ैज़ (ग़ुस्सा) आए और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं[286] इस सब के बदले उन के लिये

عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۱۲۰﴾ۙ وَ لَا یُنۡفِقُوۡنَ

नेक अ़मल लिखा जाता है[287] बेशक **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र व इन्आ़म) ज़ाएअ़ नहीं करता और जो कुछ ख़र्च करते

نَفَقَۃً صَغِیۡرَۃً وَّ لَا کَبِیۡرَۃً وَّ لَا یَقۡطَعُوۡنَ وَادِیًا اِلَّا کُتِبَ لَہُمۡ

हैं छोटा[288] या बड़ा[289] और जो नाला तै करते हैं सब उन के लिये लिखा जाता है

لِیَجۡزِیَہُمُ اللّٰہُ اَحۡسَنَ مَا کَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۲۱﴾ وَ مَا کَانَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ

ताकि **अल्लाह** उन के सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे[290] और मुसल्मानों से येह तो हो नहीं सकता

لِیَنۡفِرُوۡا کَآفَّۃً ؕ فَلَوۡ لَا نَفَرَ مِنۡ کُلِّ فِرۡقَۃٍ مِّنۡہُمۡ طَآئِفَۃٌ

कि सब के सब निकलें[291] तो क्यूं न हुवा कि उन के हर गुरौह में से[292] एक जमाअ़त निकले

لِّیَتَفَقَّہُوۡا فِی الدِّیۡنِ وَ لِیُنۡذِرُوۡا قَوۡمَہُمۡ اِذَا رَجَعُوۡۤا اِلَیۡہِمۡ لَعَلَّہُمۡ

कि दीन की समझ ह़ासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं[293] इस उम्मीद पर कि

---

285 : और कुफ़्फ़ार की ज़मीन को अपने घोड़ों के सुमों (पाउं के खुरों) से रौंदते हैं **286 :** क़ैद कर के या क़त्ल कर के या ज़ख़्मी कर के या हज़ीमत (शिकस्त) दे कर। **287 :** इस से साबित हुवा कि जो शख़्स इत़ाअ़ते इलाही का क़स्द करे उस का उठना, बैठना, चलना, ह़रकत करना, साकिन रहना, सब नेकियां हैं, **अल्लाह** के यहां लिखी जाती हैं। **288 :** या'नी क़लील मसलन एक खजूर। **289 :** जैसा कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जैशे उ़सरत में ख़र्च किया। **290 :** इस आयत से जिहाद की फ़ज़ीलत और इस का ह़ुस्नुल आ'माल होना साबित हुवा **291 :** और एक दम अपने वत़न ख़ाली कर दें। **292 :** एक जमाअ़त वत़न में रहे और **293 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि क़बाइले अ़रब में से हर हर क़बीले से जमाअ़तें सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में ह़ाज़िर होतीं और वोह ह़ुज़ूर से दीन के मसाइल सीखते और तफ़क़्क़ोह (दीन में समझ बूझ) ह़ासिल करते और अपने लिये अह़काम दरयाफ़्त करते और अपनी क़ौम के लिये ह़ुज़ूर उन्हें **अल्लाह** और रसूल की फ़रमां बरदारी का ह़ुक्म देते और नमाज़, ज़कात, वग़ैरा की ता'लीम के लिये उन्हें उन की क़ौम पर मामूर फ़रमाते। जब वोह लोग अपनी क़ौम में पहुंचते तो ए'लान कर देते कि जो इस्लाम लाए वोह हम में से है और लोगों को ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाते और दीन की मुख़ालफ़त से डराते यहां तक कि लोग अपने वालिदैन को छोड़ देते और रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उ़लूम ता'लीम फ़रमा देते। (خازن) येह रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है कि बिल्कुल बे पढ़े लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अह़काम का आ़लिम और क़ौम का हादी (राहनुमा) बना देते थे। इस आयत से चन्द मसाइल मा'लूम हुए : **मस्अला :** इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना फ़र्ज़ है। जो चीज़ें बन्दे पर फ़र्ज़ व वाजिब हैं और जो इस के लिये मम्नूअ़ व ह़राम हैं उस का सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है और इस से ज़ाइद इ़ल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़े किफ़ाया। ह़दीस शरीफ़ में है : इ़ल्म सीखना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है। इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि इ़ल्म सीखना नफ़्ल नमाज़ से अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** त़लबे इ़ल्म के लिये सफ़र का ह़ुक्म ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स त़लबे इ़ल्म के लिये राह चले **अल्लाह** उस के लिये जन्नत की राह आसान करता है। (ترمذی) **मस्अला :** फ़िक़्ह अफ़्ज़ल तरीन उ़लूम है। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये बेहतरी चाहता है उस को दीन में फ़क़ीह बनाता है, मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** तआ़ला देने वाला है। (بخاری ومسلم) ह़दीस में है : एक ''फ़क़ीह'' शैत़ान पर हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा सख़्त है। (ترمذی) ''फ़िक़्ह'' अह़कामे दीन के इ़ल्म को कहते हैं। फ़िक़्हे मुस्त़लह़ इस का सह़ीह़ मिस्दाक़ है।

يَحْذَرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ

वोह बचें[294] ऐ ईमान वालो जिहाद करो उन काफ़िरों से जो तुम्हारे क़रीब

الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

हैं[295] और चाहिये कि वोह तुम में सख़्ती पाएं और जान रखो कि **अल्लाह** परहेज़ गारों के साथ है[296]

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ

और जब कोई सूरत उतरती है तो उन में कोई कहने लगता है कि उस ने तुम में किस के ईमान को तरक़्क़ी

اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ وَ

दी[297] तो वोह जो ईमान वाले हैं उन के ईमान को उस ने तरक़्क़ी दी और वोह खुशियां मना रहे हैं और

اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا

जिन के दिलों में आज़ार (बीमारी) है[298] उन्हें और पलीदी पर पलीदी बढ़ाई[299] और कुफ़्र ही

وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ

पर मर गए क्या उन्हें[300] नहीं सूझता कि हर साल एक या दो बार आज़्माए

مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ

जाते हैं[301] फिर न तो तौबा करते हैं न नसीहत मानते हैं और जब कोई सूरत

سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ

उतरती है उन में एक दूसरे को देखने लगता है[302] कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं[303] फिर पलट जाते हैं[304]

صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ

अल्लाह ने उन के दिल पलट दिये[305] कि वोह ना समझ लोग हैं[306] बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़

294 : अज़ाबे इलाही से अह़कामे दीन का इत्तिबाअ़ कर के। **295 :** क़िताल तमाम काफ़िरों से वाजिब है क़रीब के हों या दूर के लेकिन क़रीब वाले मुक़द्दम हैं फिर जो उन से मुत्तसिल हों ऐसे ही दरजा ब दरजा। **296 :** उन्हें ग़लबा देता है और उन की नुसरत फ़रमाता है। **297 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन आपस में ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा ऐसी बातें कहते हैं, उन के जवाब में इर्शाद होता है : **298 :** शक व निफ़ाक़ का **299 :** कि पहले जितना नाज़िल हुवा था उसी के इन्कार के वबाल में गिरिफ़्तार थे, अब जो और नाज़िल हुवा उस के इन्कार की ख़बासत में भी मुब्तला हुए। **300 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को **301 :** अमराज़ व शदाइद और क़ह़त़ वग़ैरा के साथ। **302 :** और आंखों से निकल भागने के इशारे करता है और कहता है : **303 :** अगर देखता हुवा तो बैठ गए वरना निकल गए। **304 :** कुफ़्र की त़रफ़ **305 :** इस सबब से **306 :** अपने नफ़्अ़ व ज़रर को नहीं सोचते।

رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ

लाए तुम में से वोह रसूल[307] जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले

بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ

मुसल्मानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान[308] फिर अगर वोह मुंह फेरें[309] तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफ़ी है

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ ع

उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है[310]

اٰياتها ١٠٩ ﴿١٠ سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ ٥١﴾ ركوعاتها ١١

सूरए यूनुस मक्किय्या है इस में एक सो नव आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ

येह ह़िक्मत वाली किताब की आयतें हैं क्या लोगों को इस का अचम्भा (तअ़ज्जुब) हुवा कि हम ने उन में से

اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ

एक मर्द को वह़्य भेजी कि लोगों को डर सुनाओ[2] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये

قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

उन के रब के पास सच का मक़ाम है काफ़िर बोले बेशक येह तो खुला जादूगर है[3]

307 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ अ़रबी क़ुरशी जिन के ह़सब व नसब को तुम ख़ूब पहचानते हो कि तुम में सब से आ़ली नसब हैं और तुम उन के सिदक़ो अमानत, ज़ोहदो तक़्वा, त़हारतो तक़्दुस और अख़्लाक़े ह़मीदा को भी ख़ूब जानते हो और एक क़िराअत में "اَنفَسِكُمْ" ब फ़त्ह़ "فا" आया है, इस के मा'ना हैं कि तुम में सब से नफ़ीस तर और अशरफ़ो अफ़्ज़ल। इस आयते करीमा में सय्यिदे आ़लम ﷺ की तशरीफ़ आवरी या'नी आप के मीलादे मुबारक का बयान है। तिरमिज़ी की ह़दीस से भी साबित है कि सय्यिदे आ़लम ﷺ ने अपनी पैदाइश का बयान क़ियाम कर के फ़रमाया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मह़फ़िले मीलादे मुबारक की अस्ल क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। **308 :** इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब ﷺ को अपने दो नामों से मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह कमाले तक्रीम है इस सरवरे अन्वर ﷺ की **309 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप पर ईमान लाने से ए'राज़ करें **310 :** ह़ाकिम ने मुस्तदरक में उबय इब्ने का'ब से एक ह़दीस रिवायत की है कि "لَقَدْ جَآءَكُمْ" से आख़िर सूरत तक दोनों आयतें क़ुरआने करीम में सब के बा'द नाज़िल हुईं। **1 :** सूरए यूनुस मक्किय्या है सिवाए तीन आयतों के "فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ" से। इस में ग्यारह रुकूअ़ और एक सो नव आयतें और एक हज़ार आठ सो बत्तीस कलिमे और नव हज़ार निनानवे ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम ﷺ को रिसालत से मुशर्रफ़ फ़रमाया और आप ने इस का इज़्हार किया तो अ़रब मुन्किर हो गए और उन में से बा'ज़ों ने येह कहा कि **अल्लाह** इस से बरतर है कि किसी बशर को रसूल बनाए। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **3 :** कुफ़्फ़ार ने पहले तो बशर का रसूल होना क़ाबिले तअ़ज्जुब व इन्कार क़रार दिया और फिर जब हुज़ूर के मो'जिज़ात

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ[6] दिन में बनाए फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ

अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है काम की तदबीर फ़रमाता है[4] कोई सिफ़ारिशी नहीं मगर उस की इजाज़त

اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۳ اِلَيْهِ

के बा'द[5] येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब[6] तो उस की बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते उसी की त़रफ़

مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

तुम सब को फिरना है[7] **अल्लाह** का सच्चा वा'दा बेशक वोह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ

कि उन को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला दे[8] और काफ़िरों

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۴ هُوَ

के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के कुफ़्र का वोही

الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا

है जिस ने सूरज को जगमगाता बनाया और चांद चमकता और इस के लिये मन्ज़िलें ठहराईं[9] कि तुम

عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ

बरसों की गिनती और[10] हिसाब जानो **अल्लाह** ने इसे न बनाया मगर ह़क़[11] निशानियां

देखे और यक़ीन हुवा कि येह बशर के मक़्दिरत (इन्सान की त़ाक़त) से बालातर हैं तो आप को साहि़र (जादूगर) बताया, उन का येह दा'वा तो किज़्ब व बात़िल है मगर इस में भी हुज़ूर के कमाल और अपने इज्ज़ का ए'तिराफ़ पाया जाता है। **4 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ के उमूर का ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत सर अन्जाम फ़रमाता है। **5 :** इस में बुत परस्तों के इस क़ौल का रद है कि बुत उन की शफ़ाअ़त करेंगे, उन्हें बताया गया कि "शफ़ाअ़त" माज़ूनीन (इजाज़त याफ़्ता) के सिवा कोई नहीं करेगा और माज़ून सिर्फ़ उस के मक़्बूल बन्दे होंगे। **6 :** जो आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ और तमाम उमूर का मुदब्बिर है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं फ़क़त़ वोही मुस्तह़िक़े इबादत है। **7 :** रोज़े क़ियामत और येही है **8 :** इस आयत में ह़श्रो नश्र व मआद का बयान और मुन्किरीन का रद है और इस पर निहायत लत़ीफ़ पैराए में दलील क़ाइम फ़रमाई गई है कि वोह पहली बार बनाता है और आ'ज़ाए मुरक्कबा को पैदा करता है और तरकीब देता है तो मौत के साथ मुतफ़र्रिक़ व मुन्तशिर होने के बा'द उन को दोबारा फिर तरकीब देना और बने हुए इन्सान को फ़ना के बा'द फिर दोबारा बना देना और वोही जान जो उस के बदन से मुतअ़ल्लिक़ थी उस को उस बदन की दुरुस्ती के बा'द फिर उसी बदन से मुतअ़ल्लिक़ कर देना उस की क़ुदरत से क्या बईद है और इस दोबारा पैदा करने का मक़्सूद जज़ाए आ'माल या'नी मुत़ीअ़ को सवाब और आ़सी (ना फ़रमान) को अ़ज़ाब देना है। **9 :** अठ्ठाईस मन्ज़िलें जो बारह बुर्जों पर मुन्क़सिम हैं हर बुर्ज के लिये $2\frac{1}{3}$ मन्ज़िलें हैं, चांद हर शब एक मन्ज़िल में रहता है और महीना तीस दिन का हो तो दो शब, वरना एक शब छुपता है। **10 :** महीनों, दिनों, साअ़तों का **11 :** कि इस से उस की क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत के दलाइल ज़ाहिर हों।

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵﴾ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَا خَلَقَ

मुफ़स्सल बयान फ़रमाता है इ़ल्म वालों के लिये[12] बेशक रात और दिन का बदलता आना और जो कुछ

اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ﴿۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا

अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन में पैदा किया उन में निशानियां हैं डर वालों के लिये बेशक वोह जो

يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِيْنَ هُمْ

हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते[13] और दुन्या की ज़िन्दगी पसन्द कर बैठे और इस पर मुत्मइन हो गए[14] और वोह जो

عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ﴿۷﴾ اُولٰٓىِٕكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸﴾

हमारी आयतों से ग़फ़्लत करते हैं[15] उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उन की कमाई का

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन का रब उन के ईमान के सबब उन्हें राह देगा[16]

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۹﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا

उन के नीचे नहरें बहती होंगी ने'मत के बाग़ों में उन की दुआ़ उस में येह होगी कि

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ

अल्लाह तुझे पाकी है[17] और उन के मिलते वक़्त ख़ुशी का पहला बोल सलाम है[18] और उन की दुआ़ का ख़ातिमा येह है कि सब ख़ूबियों सराहा (ख़ूबियों वाला)

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ ع وَ لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ ركوع

अल्लाह जो रब है सारे जहान का[19] और अगर अल्लाह लोगों पर बुराई ऐसी जल्द भेजता जैसी वोह भलाई की

---

12 : कि इन में ग़ौर कर के नफ़्अ़ उठाएं। **13 :** रोज़े क़ियामत और सवाब व अ़ज़ाब के क़ाइल नहीं। **14 :** और इस फ़ानी (दुन्या) को जाविदानी (हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत) पर तरजीह़ दी और उ़म्र इस की त़लब में गुज़ारी। **15 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि यहां आयात से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم की ज़ाते पाक और क़ुरआन शरीफ़ मुराद है और ग़फ़्लत करने से मुराद इन से ए'राज़ करना है। **16 :** जन्नतों की त़रफ़। क़तादा का क़ौल है कि मोमिन जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस का अ़मल ख़ूब सूरत शक्ल में उस के सामने आएगा। येह शख़्स कहेगा : तू कौन है? वोह कहेगा : मैं तेरा अ़मल हूं और उस के लिये नूर होगा और जन्नत तक पहुंचाएगा और काफ़िर का मुआ़मला बर अ़क्स होगा कि उस का अ़मल बुरी शक्ल में नुमूदार हो कर उसे जहन्नम पहुंचाएगा। **17 :** या'नी अहले जन्नत अल्लाह तआ़ला की तस्बीह़, तह़मीद, तक़्दीस में मश्ग़ूल रहेंगे और उस के ज़िक्र से उन्हें फ़रह़त व सुरूर और इन्तिहा दरजे की लज़्ज़त ह़ासिल होगी, سُبۡحٰنَ اللّٰہ। **18 :** या'नी अहले जन्नत आपस में एक दूसरे की तह़िय्यत व तक्रीम (ता'ज़ीम) सलाम से करेंगे या मलाएका उन्हें बत़ौरे तह़िय्यत सलाम अ़र्ज़ करेंगे या मलाएका रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के पास सलाम लाएंगे। **19 :** उन के कलाम की इब्तिदा अल्लाह की ता'ज़ीम व तन्ज़ीह (पाकी) से होगी और कलाम का इख़्तिताम उस की ह़म्दो सना पर होगा।

بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

जल्दी करते हैं तो उन का वा'दा पूरा हो चुका होता[20] तो हम छोड़ते उन्हें जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते

فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ

कि अपनी सरकशी में भटका करें[21] और जब आदमी को[22] तक्लीफ़ पहुंचती है हमें पुकारता है लैटे और

قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى

बैठे और खड़े[23] फिर जब हम उस की तक्लीफ़ दूर कर देते हैं चल देता है[24] गोया कभी किसी तक्लीफ़ के

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَقَدْ

पहुंचने पर हमें पुकारा ही न था यूंही भले कर दिखाए हैं हृद से बढ़ने वालों को[25] उन के काम[26] और बेशक

اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

हम ने तुम से पहली संगतें[27] हलाक फ़रमा दीं जब वोह हृद से बढ़े[28] और उन के रसूल उन के पास

بِالْبَيِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۳﴾

रोशन दलीलें ले कर आए[29] और वोह ऐसे थे ही नहीं कि ईमान लाते हम यूंही बदला देते हैं मुजरिमों को

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾

फिर हम ने उन के बा'द तुम्हें ज़मीन में जा नशीन किया कि देखें तुम कैसे काम करते हो[30]

20 : या'नी अगर **अल्लाह** तआ़ला लोगों की बद दुआ़एं जैसे कि वोह ग़ज़ब के वक़्त अपने लिये और अपने अहल व औलाद व माल के लिये करते हैं और कहते हैं हम हलाक हो जाएं, ख़ुदा हमें ग़ारत करे, बरबाद करे और ऐसे कलिमे ही अपनी औलाद व अक़ारिब के लिये कह गुज़रते हैं जिसे हिन्दी में कोसना कहते हैं अगर वोह दुआ़ ऐसी जल्दी क़बूल कर ली जाती जैसी जल्दी वोह दुआ़ए ख़ैर के क़बूल होने में चाहते हैं तो उन लोगों का ख़ातिमा हो चुका होता और वोह कब के हलाक हो गए होते लेकिन **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने करम से दुआ़ए ख़ैर क़बूल फ़रमाने में जल्दी करता है, दुआ़ए बद के क़बूल में नहीं, येह उस की रहमत है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन हारिस ने कहा था : या रब ! येह दीने इस्लाम अगर तेरे नज़्दीक हक़ है तो हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थर बरसा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि अगर **अल्लाह** तआ़ला काफ़िरों के लिये अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता जैसा कि उन के लिये माल व औलाद वग़ैरा दुन्या की भलाई देने में जल्दी फ़रमाई तो वोह सब हलाक हो चुके होते। **21 :** और हम उन्हें मोहलत देते हैं और उन के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाते। **22 :** यहां आदमी से काफ़िर मुराद है। **23 :** हर हाल में और जब तक उस की तक्लीफ़ ज़ाइल न हो दुआ़ में मश्ग़ूल रहता है। **24 :** अपने पहले तरीक़े पर और वोही कुफ़्र की राह इख़्तियार करता है और तक्लीफ़ के वक़्त को भूल जाता है। **25 :** या'नी काफ़िरों को **26 :** मक़्सद येह है कि इन्सान बला के वक़्त बहुत ही बे सब्रा है और राहत के वक़्त निहायत नाशुक्रा, जब तक्लीफ़ पहुंचती है तो खड़े, लैटे, बैठे हर हाल में दुआ़ करता है, जब **अल्लाह** तक्लीफ़ दूर कर दे तो शुक्र बजा नहीं लाता और अपनी हालते साबिक़ा की तरफ़ लौट जाता है, येह हाल ग़ाफ़िल का है, मोमिने आ़क़िल का हाल इस के ख़िलाफ़ है, वोह मुसीबत व बला पर सब्र करता है, राहतो आसाइश में शुक्र करता है, तक्लीफ़ व राहत के जुम्ला अह़वाल में **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर तज़र्रोअ़ (गिर्या) व ज़ारी और दुआ़ करता है और एक मक़ाम इस से भी आ'ला है जो मोमिनों में भी मख़्सूस बन्दों को हासिल है कि जब कोई मुसीबत व बला आती है उस पर सब्र करते हैं, क़ज़ाए इलाही पर दिल से राज़ी रहते हैं और जमीअ़ अह़वाल पर शुक्र करते हैं। **27 :** या'नी उम्मतें **28 :** और कुफ़्र में मुब्तला हुए। **29 :** जो उन के सिद्क़ की बहुत वाज़ेह दलीलें थीं लेकिन उन्हों ने न माना और अम्बिया की तस्दीक़ न की। **30 :** ताकि तुम्हारे साथ तुम्हारे अ़मल के लाइक़ मुआ़मला

www.dawateislami.net

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا

और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[31] पढ़ी जाती हैं वोह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं[32] कि

ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ

इस के सिवा और कुरआन ले आइये[33] या इसी को बदल दीजिये[34] तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं इसे अपनी त़रफ़

تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ

से बदल दूं मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मेरी त़रफ़ वह्य होती है[35] मैं अगर अपने रब की ना फ़रमानी करूं[36]

رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ

तो मुझे बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[37] तुम फ़रमाओ अगर **अल्लाह** चाहता तो मैं इसे तुम पर न पढ़ता न वोह

اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾

तुम को इस से ख़बरदार करता[38] तो मैं इस से पहले तुम में अपनी एक उ़म्र गुज़ार चुका हूं[39] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[40]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे[41] या उस की आयतें झुटलाए बेशक

يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا

मुजरिमों का भला न होगा और **अल्लाह** के सिवा ऐसी चीज़[42] को पूजते हैं जो उन का न कुछ नुक़्सान करे और न

फ़रमाएं **31 :** जिन में हमारी तौह़ीद और बुत परस्ती की बुराई और बुत परस्तों की सज़ा का बयान है। **32 :** और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। **33 :** जिस में बुतों की बुराई न हो। **34 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने नबिय्ये करीम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप पर ईमान ले आएं तो आप इस क़ुरआन के सिवा दूसरा क़ुरआन लाइये ! जिस में लात व उ़ज़्ज़ा व मनात वग़ैरा बुतों की बुराई और इन की इ़बादत छोड़ने का हुक्म न हो और अगर **अल्लाह** ऐसा क़ुरआन नाज़िल न करे तो आप अपनी त़रफ़ से बना लीजिये या इसी क़ुरआन को बदल कर हमारी मरज़ी के मुताबिक़ कर दीजिये तो हम ईमान ले आएंगे। उन का येह कलाम या तो ब त़रीक़े तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा था या उन्हों ने तजरिबा व इम्तिह़ान के लिये ऐसा कहा था कि अगर येह दूसरा क़ुरआन बना लाएं या इस को बदल दें तो साबित हो जाएगा कि क़ुरआन कलामे रब्बानी नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब ﷺ को हुक्म दिया कि इस का येह जवाब दें जो आयत में मज़्कूर होता है **: 35 :** मैं इस में कोई तग़य्युर व तब्दील कमी बेशी नहीं कर सकता, येह मेरा कलाम नहीं कलामे इलाही है। **36 :** या उस की किताब के अह़काम को बदलूं **37 :** और दूसरा क़ुरआन बनाना इन्सान की मक़्दिरत (त़ाक़त) ही से बाहर है और ख़ल्क़ का इस से आ़जिज़ होना खूब ज़ाहिर हो चुका। **38 :** या'नी इस की तिलावत मह़ज़ **अल्लाह** की मरज़ी से है। **39 :** और चालीस साल तुम में रहा हूं, इस ज़माने में मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं लाया और मैं ने तुम्हें कुछ नहीं सुनाया तुम ने मेरे अह़वाल का ख़ूब मुशाहदा किया है, मैं ने किसी से एक ह़र्फ़ नहीं पढ़ा, किसी किताब का मुत़ालआ़ न किया, इस के बा'द येह किताबे अ़ज़ीम लाया जिस के हु़ज़ूर हर एक कलामे फ़सीह़ पस्त और बे ह़क़ीक़त हो गया, इस किताब में नफ़ीस उ़लूम हैं, उसूल व फ़ुरूअ़ का बयान है, अह़काम व आदाब हैं, मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम है, ग़ैबी ख़बरें हैं, इस की फ़साह़तो बलाग़त ने मुल्क भर के फ़ुसह़ा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया है, हर साह़िबे अ़क़्ले सलीम के लिये येह बात अज़्हर मिनश्शम्स (सूरज से ज़ियादा रोशन) हो गई है कि येह बिग़ैर वह़्ये इलाही के मुम्किन ही नहीं। **40 :** कि इतना समझ सको कि येह क़ुरआन **अल्लाह** की त़रफ़ से है मख़्लूक़ की क़ुदरत में नहीं कि इस की मिस्ल बना सके **41 :** उस के लिये शरीक बताए **42 :** बुत।

www.dawateislami.net

يَنۡفَعُهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ قُلۡ اَتُنَبِّـُٔوۡنَ اللّٰهَ

कुछ भला और कहते हैं कि येह अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं[43] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह को वोह बात जताते हो

بِمَا لَا يَعۡلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

जो उस के इ़ल्म में न आस्मानों में है न ज़मीन में[44] उसे पाकी और बरतरी है उन के

يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۱۸﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخۡتَلَفُوۡا ؕ وَلَوۡلَا

शिर्क से और लोग एक ही उम्मत थे[45] फिर मुख़्तलिफ़ हुए और अगर तेरे

كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ فِيۡمَا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۹﴾

रब की त़रफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती[46] तो यहीं उन के इख़्तिलाफ़ों का उन पर फ़ैसला हो गया होता[47]

وَيَقُوۡلُوۡنَ لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ اٰيَةٌ مِّنۡ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلۡ اِنَّمَا الۡغَيۡبُ لِلّٰهِ

और कहते हैं उन पर उन के रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[48] तुम फ़रमाओ ग़ैब तो अल्लाह के लिये है

43 : या'नी दुन्यवी उमूर में क्यूं कि आख़िरत और मरने के बा'द उठने का तो वोह ए'तिक़ाद ही नहीं रखते। **44 :** या'नी उस का वुजूद ही नहीं क्यूं कि जो चीज़ मौजूद है वोह ज़रूर इ़ल्मे इलाही में है। **45 :** एक दीने इस्लाम पर जैसा कि ज़मानए ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में क़ाबील के हाबील को क़त्ल करने के वक़्त तक ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की ज़ुर्रिय्यत एक ही दीन पर थे इस के बा'द उन में इख़्तिलाफ़ हुवा, और एक क़ौल येह है कि ज़मानए नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام तक एक दीन पर रहे फिर इख़्तिलाफ़ हुवा तो नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मब्ऊ़स फ़रमाए गए। एक क़ौल येह है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के वक़्त सब लोग एक दीने इस्लाम पर थे। एक क़ौल येह है कि अ़हदे ह़ज़रते इब्राहीम से सब लोग एक दीन पर थे यहां तक कि अ़म्र बिन लुह़य्य ने दीन को मुतग़य्यर किया। इस तक़्दीर पर "اَلنَّاس" से मुराद ख़ास अ़रब होंगे। एक क़ौल येह है कि लोग एक दीन पर थे या'नी कुफ़्र पर फिर अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया को भेजा तो बा'ज़ उन में से ईमान लाए और बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोग अव्वले ख़िल्क़त में फ़ित़रते सलीमा पर थे फिर इन में इख़्तिलाफ़ात हुए। ह़दीस शरीफ़ में है हर बच्चा फ़ित़रत पर पैदा होता है फिर उस के मां बाप उस को यहूदी बनाते हैं या नसरानी बनाते हैं या मजूसी बनाते हैं और ह़दीस में फ़ित़रत से फ़ित़रते इस्लाम मुराद है। **46 :** और हर उम्मत के लिये एक मीआ़द मुअ़य्यन न कर दी गई होती या जज़ाए आ'माल क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमाई गई होती **47 :** नुज़ूले अ़ज़ाब से। **48 :** अहले बात़िल का त़रीक़ा है कि जब उन के ख़िलाफ़ बुरहाने क़वी क़ाइम होती है और वोह जवाब से आ़जिज़ हो जाते हैं तो उस बुरहान का ज़िक्र इस त़रह छोड़ देते हैं जैसे कि वोह पेश ही नहीं हुई और येह कहा करते हैं कि दलील लाओ ताकि सुनने वाले इस मुग़ालते में पड़ जाएं कि इन के मुक़ाबिल अब तक कोई दलील ही नहीं क़ाइम की गई है, इस त़रह कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर के मो'जिज़ात और बिल ख़ुसूस क़ुरआने करीम जो मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है इस की त़रफ़ से आंखें बन्द कर के येह कहना शुरूअ़ किया कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी गोया कि मो'जिज़ात उन्हों ने देखे ही नहीं और क़ुरआने पाक को वोह निशानी शुमार ही नहीं करते। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि आप फ़रमा दीजिये कि ग़ैब तो अल्लाह के लिये है अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं। तक़रीर जवाब येह है कि दलालते क़ाहिरा (ज़बर दस्त दलील) इस पर क़ाइम है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर क़ुरआने पाक का ज़ाहिर होना बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है क्यूं कि हुज़ूर उन में पैदा हुए, उन के दरमियान हुज़ूर बढ़े, तमाम ज़माने हुज़ूर के उन की आंखों के सामने गुज़रे, वोह ख़ूब जानते हैं कि आप ने न किसी किताब का मुत़ालआ़ किया, न किसी उस्ताद की शागिर्दी की, यकबारगी क़ुरआने करीम आप पर ज़ाहिर हुवा और ऐसी बे मिसाल आ'ला तरीन किताब का ऐसी शान के साथ नुज़ूल बिग़ैर वह़्य के मुम्किन ही नहीं, येह क़ुरआने करीम के मो'जिज़ए क़ाहिरा होने की बुरहान है और जब ऐसी क़वी बुरहान क़ाइम है तो इस्बाते नुबुव्वत के लिये किसी दूसरी निशानी का त़लब करना क़त्अ़न ग़ैर ज़रूरी है, ऐसी ह़ालत में इस निशानी का नाज़िल करना न करना अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत पर है चाहे करे चाहे न करे तो येह अम्र ग़ैब हुवा और इस के लिये इन्तिज़ार लाज़िम आया कि अल्लाह क्या करता है। लेकिन वोह येह ग़ैर ज़रूरी निशानी जो कुफ़्फ़ार ने त़लब की है नाज़िल फ़रमाए या न फ़रमाए नुबुव्वत साबित हो चुकी और रिसालत का सुबूते क़ाहिरा मो'जिज़ात से कमाल को पहुंच चुका।

www.dawateislami.net

فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ۝۲۰ وَ اِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ ع ۲

अब रास्ता देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं और जब हम आदमियों को रह्मत का

رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِیْۤ اٰیَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ

मज़ा देते हैं किसी तक्लीफ़ के बा'द जो उन्हें पहुंची थी जभी वोह हमारी आयतों के साथ दाउं चलते हैं[49] तुम फ़रमा दो अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर

اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا یَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ۝۲۱ هُوَ الَّذِیْ

सब से जल्द हो जाती है[50] बेशक हमारे फ़िरिश्ते तुम्हारे मक्र लिख रहे हैं[51] वोही है कि

یُسَیِّرُكُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا كُنْتُمْ فِی الْفُلْكِ ۚ وَ جَرَیْنَ بِهِمْ

तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है[52] यहां तक कि जब तुम कश्ती में हो और वोह[53] अच्छी हवा

بِرِیْحٍ طَیِّبَةٍ وَّ فَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِیْحٌ عَاصِفٌ وَّ جَآءَهُمُ الْمَوْجُ

से उन्हें ले कर चलें और इस पर ख़ुश हुए[54] उन पर आंधी का झोंका आया और हर त़रफ़ लहरों

مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اُحِیْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ

ने उन्हें आ लिया और समझ लिये कि हम घिर गए उस वक़्त अल्लाह को पुकारते हैं निरे (ख़ालिस) उस के

الدِّیْنَ ۚ۬ لَىٕنْ اَنْجَیْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ۝۲۲ فَلَمَّاۤ

बन्दे हो कर कि अगर तू इस से हमें बचा लेगा तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे[55] फिर अल्लाह जब

اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا

उन्हें बचा लेता है जभी वोह ज़मीन में नाहक़ ज़ियादती करने लगते हैं[56] ऐ लोगो

بَغْیُكُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۫ ثُمَّ اِلَیْنَا مَرْجِعُكُمْ

तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारी ही जानों का वबाल है दुन्या के जीते जी बरत लो (फ़ाएदा उठा लो) फिर तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना है

49 : अहले मक्का पर अल्लाह तआ़ला ने क़ह़त़ मुसल्लत़ किया जिस की मुसीबत में वोह सात बरस गिरिफ़्तार रहे यहां तक कि क़रीब हलाकत के पहुंचे फिर उस ने रह़्म फ़रमाया, बारिश हुई, ज़मीनें सर सब्ज़ हुईं तो अगर्चे इस तक्लीफ़ व राह़त दोनों में क़ुदरत की निशानियां थीं और तक्लीफ़ के बा'द राह़त बड़ी अ़ज़ीम ने'मत थी, इस पर शुक्र लाज़िम था मगर बजाए इस के वोह पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) न हुए और फ़साद व कुफ़्र की त़रफ़ पलटे 50 : और उस का अ़ज़ाब देर नहीं करता 51 : और तुम्हारी ख़ुफ़्या तदबीरें कातिबे आ'माल फ़िरिश्तों पर भी मख़्फ़ी नहीं हैं तो अल्लाह अ़लीम व ख़बीर से कैसे छुप सकती हैं। 52 : और तुम्हें क़त़्ए मसाफ़त (रास्ता त़ै करने) की क़ुदरत देता है ख़ुश्की में तुम पियादा और सुवार मन्ज़िलें त़ै करते हो और दरियाओं में कश्तियों और जहाज़ों से सफ़र करते हो वोह तुम्हें ख़ुश्की और तरी दोनों में अस्बाबे सैर अ़त़ा फ़रमाता है। 53 : या'नी कश्तियां 54 : कि हवा मुवाफ़िक़ है अचानक 55 : तेरी ने'मतों के, तुझ पर ईमान ला कर और ख़ास तेरी इबादत कर के। 56 : और वा'दे के ख़िलाफ़ कर के कुफ़्र व मा'सियत में मुब्तला होते हैं।

فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ

उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[57] दुन्या की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वोह पानी

اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ

कि हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें घनी (ज़ियादा) हो कर निकलें जो कुछ आदमी और

وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ

चौपाए खाते हैं[58] यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया[59] और ख़ूब आरास्ता हो गई और उस के

اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا

मालिक समझे कि येह हमारे बस में आ गई[60] हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में[61] तो हम ने उसे कर दिया

حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

काटी हुई गोया कल थी ही नहीं[62] हम यूंही आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं ग़ौर करने

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ

वालों के लिये[63] और **अल्लाह** सलामती के घर की तरफ़ पुकारता है[64] और जिसे चाहे

يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۵﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ

सीधी राह चलाता है[65] भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद[66]

57 : और उन की तुम्हें जज़ा देंगे। **58 :** ग़ल्ले और फल और सब्ज़ा। **59 :** ख़ूब फूली फली सर सब्ज़ो शादाब हुई **60 :** कि खेतियां तय्यार हो गईं फल रसीदा (तय्यार) हो गए ऐसे वक़्त **61 :** या'नी अचानक हमारा अ़ज़ाब आया ख़्वाह बिजली गिरने की शक्ल में या ओले बरसने या आंधी चलने की सूरत में। **62 :** येह उन लोगों के हाल की एक तम्सील है जो दुन्या के शेफ़्ता (आ़शिक़) हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवा नहीं। इस में बहुत दिल पज़ीर त़रीक़े पर ख़ातिर गुज़ीं किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है इस में उ़म्र खो कर जब आदमी इस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को हुसूले मुराद का इत़्मीनान हो और वोह काम्याबी के नशे में मस्त हो अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से महरूम हो जाता है। क़तादा ने कहा कि दुन्या का त़लब गार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है। **63 :** ताकि वोह नफ़्अ़ हासिल करें और ज़ुल्माते शुकूको अवहाम से नजात पाएं और दुन्याए ना पाएदार की बे सबाती (ना पाएदारी) से बा ख़बर हों। **64 :** दुन्या की बे सबाती बयान फ़रमाने के बा'द दारे बाक़ी (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की त़रफ़ दा'वत दी। क़तादा ने कहा कि दारुस्सलाम जन्नत है, येह **अल्लाह** का कमाले रह़मतो करम है कि अपने बन्दों को जन्नत की दा'वत दी। **65 :** सीधी राह दीने इस्लाम है। बुख़ारी की ह़दीस में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर हुए, आप ख़्वाब में थे, उन में से बा'ज़ ने कहा कि आप ख़्वाब में हैं और बा'ज़ों ने कहा कि आंखें ख़्वाब में हैं दिल बेदार है। बा'ज़ कहने लगे कि इन की कोई मिसाल बयान करो तो उन्हों ने कहा : जिस त़रह़ किसी शख़्स ने एक मकान बनाया और उस में त़रह़ त़रह़ की ने'मतें मुहय्या कीं और एक बुलाने वाले को भेजा कि लोगों को बुलाए, जिस ने उस बुलाने वाले की इत़ाअ़त की उस मकान में दाख़िल हुवा और उन ने'मतों को खाया पिया और जिस ने बुलाने वाले की इत़ाअ़त न की वोह न मकान में दाख़िल हो सका न कुछ खा सका, फिर वोह कहने लगे कि इस मिसाल की तत़्बीक़ करो कि समझ में आए। तत़्बीक़ येह है कि मकान जन्नत है दाई मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हैं जिस ने इन की इत़ाअ़त की उस ने **अल्लाह** की इत़ाअ़त की जिस ने इन की ना फ़रमानी की उस ने **अल्लाह** की ना फ़रमानी की। **66 :** भलाई वालों से **अल्लाह** के फ़रमां बरदार बन्दे मोमिनीन मुराद हैं और येह जो

www.dawateislami.net

وَلَا يَرۡهَقُ وُجُوۡهَهُمۡ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَنَّةِ ۚ هُمۡ

और उन के मुंह पर न चढ़ेगी सियाही और न ख़्वारी[67] वोही जन्नत वाले हैं वोह

فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيۡنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثۡلِهَا ۙ وَ

उस में हमेशा रहेंगे और जिन्हों ने बुराइयां कमाईं[68] तो बुराई का बदला उसी जैसा[69] और

تَرۡهَقُهُمۡ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغۡشِيَتۡ وُجُوۡهُهُمۡ

उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी उन्हें **अल्लाह** से बचाने वाला कोई न होगा गोया उन के चेहरों पर अंधेरी

قِطَعًا مِّنَ الَّيۡلِ مُظۡلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ النَّارِ ۚ هُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٢٧﴾

रात के टुकड़े चढ़ा दिये हैं[70] वोही दोज़ख़ वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे

وَيَوۡمَ نَحۡشُرُهُمۡ جَمِيۡعًا ثُمَّ نَقُوۡلُ لِلَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا مَكَانَكُمۡ اَنۡتُمۡ

और जिस दिन हम उन सब को उठाएंगे[71] फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे अपनी जगह रहो तुम

وَ شُرَكَآؤُكُمۡ ۚ فَزَيَّلۡنَا بَيۡنَهُمۡ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمۡ مَّا كُنۡتُمۡ اِيَّانَا

और तुम्हारे शरीक[72] तो हम उन्हें मुसल्मानों से जुदा कर देंगे और उन के शरीक उन से कहेंगे तुम हमें

تَعۡبُدُوۡنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًۢا بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمۡ اِنۡ كُنَّا عَنۡ

कब पूजते थे[73] तो **अल्लाह** गवाह काफ़ी है हम में और तुम में कि हमें

عِبَادَتِكُمۡ لَغٰفِلِيۡنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبۡلُوۡا كُلُّ نَفۡسٍ مَّآ اَسۡلَفَتۡ وَرُدُّوۡٓا

तुम्हारे पूजने की ख़बर भी न थी यहां हर जान जांच लेगी जो आगे भेजा[74] और **अल्लाह** की तरफ़

फ़रमाया कि उन के लिये भलाई है। इस भलाई से जन्नत मुराद है और ज़ियादत इस पर दीदारे इलाही है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि तुम पर और ज़ियादा इनायत करूं वोह अ़र्ज़ करेंगे या रब ! क्या तू ने हमारे चेहरे सफ़ेद नहीं किये, क्या तू ने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमाया, क्या तू ने हमें दोज़ख़ से नजात नहीं दी। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर पर्दा उठा दिया जाएगा तो दीदारे इलाही उन्हें हर ने'मत से ज़ियादा प्यारा होगा। सिह़ाह़ की बहुत ह़दीसें येह साबित करती हैं कि ज़ियादत से आयत में दीदारे इलाही मुराद है। **67 :** कि येह बात जहन्नम वालों के लिये है। **68 :** या'नी कुफ़्र व मआ़सी में मुब्तला हुए। **69 :** ऐसा नहीं कि जैसे नेकियों का सवाब दस गुना और सात सो गुना किया जाता है ऐसे ही बदियों का अ़ज़ाब भी बढ़ा दिया जाए बल्कि जितनी बदी होगी उतना ही अ़ज़ाब किया जाएगा। **70 :** येह ह़ाल होगा उन की रू सियाही का, ख़ुदा की पनाह। **71 :** और तमाम ख़ल्क़ को मौक़िफ़े ह़िसाब में जम्अ़ करेंगे **72 :** या'नी वोह बुत जिन को तुम पूजते थे। **73 :** रोज़े क़ियामत एक साअ़त ऐसी शिद्दत की होगी कि बुत अपने पुजारियों के पूजा का इन्कार कर देंगे और **अल्लाह** की क़सम खा कर कहेंगे कि हम न सुनते थे, न देखते थे, न जानते थे, न समझते थे कि तुम हमें पूजते हो, इस पर बुत परस्त कहेंगे कि **अल्लाह** की क़सम ! हम तुम्हीं को पूजते थे तो बुत कहेंगे : **74 :** या'नी इस मौक़िफ़ में सब को मा'लूम हो जाएगा कि इन्हों ने पहले जो अ़मल किये थे वोह कैसे थे अच्छे या बुरे मुज़िर या मुफ़ीद।

ع ۳ ۸ النصف

إِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۳۰ قُلْ مَنْ

फेरे जाएंगे जो उन का सच्चा मौला है और उन की सारी बनावटें[75] उन से गुम हो जाएंगी[76] तुम फ़रमाओ तुम्हें

يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

कौन रोज़ी देता है आस्मान और ज़मीन से[77] या कौन मालिक है कान और आंखों का[78] और

مَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ

कौन निकालता है ज़िन्दा को मुर्दे से और निकालता है मुर्दा को ज़िन्दे से[79] और कौन तमाम कामों की

الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۳۱ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ

तदबीर करता है तो अब कहेंगे कि **अल्लाह**[80] तो तुम फ़रमाओ तो क्यूं नहीं डरते[81] तो येह **अल्लाह** है

رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۳۲

तुम्हारा सच्चा रब[82] फिर हक़ के बा'द क्या है मगर गुमराही[83] फिर कहां फिरे जाते हो

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۳۳

यूंही साबित हो चुकी है तेरे रब की बात फ़ासिक़ों पर[84] तो वोह ईमान नहीं लाएंगे

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में[85] कोई ऐसा है कि अव्वल बनाए फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाए[86] तुम फ़रमाओ **अल्लाह**

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۳۴ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

अव्वल बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा तो कहां औंधे जाते हो[87] तुम फ़रमाओ तुम्हारे शरीकों में

75 : बुतों को ख़ुदा का शरीक बताना और मा'बूद ठहराना। 76 : और बातिल व बे हक़ीक़त साबित होंगी। 77 : आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। 78 : और येह हवास तुम्हें किस ने दिये हैं? किस ने येह अ़जाइब तुम्हें इनायत किये हैं? कौन इन्हें मुद्दतों महफ़ूज़ रखता है? 79 : इन्सान को नुत्फ़े से और नुत्फ़े को इन्सान से, परिन्द को अन्डे से और अन्डे को परिन्दे से, मोमिन को काफ़िर से और काफ़िर को मोमिन से, आ़लिम को जाहिल से और जाहिल को आ़लिम से। 80 : और उस की क़ुदरते कामिला का ए'तिराफ़ करेंगे और इस के सिवा कुछ चारह न होगा। 81 : उस के अ़ज़ाब से और क्यूं बुतों को पूजते और इन को मा'बूद बनाते हो बा वुजूदे कि वोह कुछ क़ुदरत नहीं रखते। 82 : जिस की ऐसी क़ुदरते कामिला है 83 : या'नी जब ऐसे बराहीने वाज़ेहा और दलाइले क़त्इय्या से साबित हो गया कि मुस्तहिक़्क़े इबादत सिर्फ़ **अल्लाह** है तो मा सिवा उस के सब बातिल व ज़लाल (गुमराही) है और जब तुम ने उस की क़ुदरत को पहचान लिया और उस की कारसाज़ी का ए'तिराफ़ कर लिया तो 84 : जो कुफ़्र में रासिख़ हो गए और रब की बात से मुराद या क़ज़ाए इलाही है या **अल्लाह** तआ़ला का इर्शाद لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ الآيه (बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा.....الخ) 85 : जिन्हें ऐ मुश्रिकीन! तुम मा'बूद ठहराते हो। 86 : इस का जवाब ज़ाहिर है कि कोई ऐसा नहीं क्यूं कि मुश्रिकीन भी येह जानते हैं कि पैदा करने वाला **अल्लाह** ही है, लिहाज़ा ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم! 87 : और ऐसी रोशन दलीलें क़ाइम होने के बा'द राहे रास्त से मुन्हरिफ़ होते हो।

مَّنْ یَّهْدِیْۤ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ یَهْدِیْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ یَّهْدِیْۤ اِلَى

कोई ऐसा है कि ह़क़ की राह दिखाए[88] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह ह़क़ की राह दिखाता है तो क्या जो ह़क़ राह

الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ یُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا یَهِدِّیْۤ اِلَّاۤ اَنْ یُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫

दिखाए उस के हुक्म पर चलना चाहिये या उस के जो ख़ुद ही राह न पाए जब तक राह न दिखाया जाए[89] तो तुम्हें क्या हुवा

كَیْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ مَا یَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا یُغْنِیْ

कैसा हुक्म लगाते हो और उन[90] में अक्सर नहीं चलते मगर गुमान पर[91] बेशक गुमान ह़क़

مِنَ الْحَقِّ شَیْــٴًـا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِمَا یَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ مَا كَانَ هٰذَا

का कुछ काम नहीं देता बेशक अल्लाह उन के कामों को जानता है और इस क़ुरआन की

الْقُرْاٰنُ اَنْ یُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ لٰكِنْ تَصْدِیْقَ الَّذِیْ بَیْنَ

येह शान नहीं कि कोई अपनी त़रफ़ से बना ले बे अल्लाह के उतारे[92] हां वोह अगली किताबों की

یَدَیْهِ وَ تَفْصِیْلَ الْكِتٰبِ لَا رَیْبَ فِیْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۫ ﴿۳۷﴾ اَمْ

तस्दीक़ है[93] और लौह़ में जो कुछ लिखा है सब की तफ़्सील है इस में कुछ शक नहीं परवर्दगारे आ़लम की त़रफ़ से है क्या

یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ

येह कहते हैं[94] कि उन्हों ने इसे बना लिया है तुम फ़रमाओ[95] तो इस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सकें

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۸﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ یُحِیْطُوْا

सब को बुला लाओ[96] अगर तुम सच्चे हो बल्कि इसे झुटलाया जिस के इ़ल्म पर क़ाबू

---

88 : हुज्जतें और दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, मुकल्लिफ़ीन को अ़क़्लो नज़र अ़त़ा फ़रमा कर, इस का वाज़ेह़ जवाब येह है कि कोई नहीं तो ऐ ह़बीब ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) **89 :** जैसे कि तुम्हारे बुत हैं कि किसी जगह जा नहीं सकते जब तक कि कोई उठा ले जाने वाला उन्हें उठा कर ले न जाए और न किसी चीज़ की ह़क़ीक़त को समझें और राहे ह़क़ को पहचानें बिग़ैर इस के कि अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़िन्दगी, अ़क़्ल और इदराक दे तो जब उन की मजबूरी का येह आ़लम है तो वोह दूसरों को क्या राह बता सकें ! ऐसों को मा'बूद बनाना, उन का मुत़ीअ़ बनना कितना बात़िल और बेहूदा है। **90 :** मुश्रिकीन **91 :** जिस की उन के पास कोई दलील नहीं, न उस की सिह़ह़त का जज़्मो यक़ीन, शक में पड़े हुए हैं और येह गुमान करते हैं कि पहले लोग भी बुत परस्ती करते थे उन्हों ने कुछ तो समझा होगा। **92 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह वह्म किया था कि क़ुरआने करीम सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुद बना लिया है, इस आयत में उन का येह वह्म दफ़्अ़ फ़रमाया गया कि क़ुरआने करीम ऐसी किताब ही नहीं जिस की निस्बत तरद्दुद हो सके, इस की मिसाल बनाने से सारी मख़्लूक़ आ़जिज़ है तो यक़ीनन वोह अल्लाह की नाज़िल फ़रमाई हुई किताब है। **93 :** तौरैत व इन्जील वग़ैरा की **94 :** कुफ़्फ़ार सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत **95 :** कि अगर तुम्हारा येह ख़याल है तो तुम भी अ़रब हो, फ़साह़तो बलाग़त के दा'वेदार हो, दुन्या में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिस के कलाम के मुक़ाबिल कलाम बनाने को तुम ना मुम्किन समझते हो, अगर तुम्हारे गुमान में येह इन्सानी कलाम है **96 :** और उन से मददें लो और सब मिल कर क़ुरआन जैसी एक सूरत तो बनाओ।

www.dawateislami.net

بِعِلْمِهٖ وَ لَمَّا یَاْتِهِمْ تَاْوِیْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ

न पाया[97] और अभी उन्हों ने इस का अन्जाम नहीं देखा है[98] ऐसे ही उन से अगलों ने झुटलाया था[99] तो देखो

كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۹﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یُّؤْمِنُ بِهٖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّا

ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा[100] और उन[101] में कोई इस[102] पर ईमान लाता है और उन में कोई इस पर

یُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَ رَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِیْنَ ﴿۴۰﴾ وَ اِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّیْ

ईमान नहीं लाता है और तुम्हारा रब मुफ़्सिदों (फ़साद करने वालों) को ख़ूब जानता है[103] और अगर वोह तुम्हें झुटलाएं[104] तो फ़रमा दो कि मेरे

عَمَلِیْ وَ لَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِیْٓــٴُـوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَ اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا

लिये मेरी करनी और तुम्हारे लिये तुम्हारी करनी[105] तुम्हें मेरे काम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं और मुझे तुम्हारे काम

تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُوْنَ اِلَیْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَ لَوْ

से तअ़ल्लुक़ नहीं[106] और उन में कोई वोह हैं जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाते हैं[107] तो क्या तुम बहरों को सुना दोगे अगर्चे

كَانُوْا لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّنْظُرُ اِلَیْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِی

उन्हें अ़क़्ल न हो[108] और उन में कोई तुम्हारी त़रफ़ तकता है[109] क्या तुम अन्धों को

الْعُمْیَ وَ لَوْ كَانُوْا لَا یُبْصِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَظْلِمُ النَّاسَ شَیْــٴًـا وَّ

राह दिखा दोगे अगर्चे वोह न सूझें (न देख सकें) बेशक **अल्लाह** लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता[110]

لٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ یَوْمَ یَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ یَلْبَثُوْۤا

हां लोग ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं[111] और जिस दिन उन्हें उठाएगा[112] गोया दुन्या में न रहे थे

97 : या'नी कुरआने पाक को समझने और जानने के बिग़ैर उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और येह कमाले जहल है कि किसी शै को जाने बिग़ैर उस का इन्कार किया जाए। कुरआने करीम का ऐसे उ़लूम पर मुश्तमिल होना जिन का मुद्दइयाने इल्मो ख़िरद (इल्मो अ़क़्ल के दा'वेदार) इह़ात़ा न कर सकें इस किताब की अ़ज़्मतो जलालत ज़ाहिर करता है तो ऐसी आ'ला उ़लूम वाली किताब को मानना चाहिये था न कि इस का इन्कार करना **98 :** या'नी उस अ़ज़ाब को जिस की कुरआने पाक में वईदें हैं। **99 :** इनाद से अपने रसूलों को बिग़ैर इस के कि उन के मो'जिज़ात और आयात देख कर नज़र व तदब्बुर से काम लेते। **100 :** और पहली उम्मतें अपने अम्बिया को झुटला कर कैसे कैसे अ़ज़ाबों में मुब्तला हुईं तो ऐ सय्यिदे अम्बिया ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप की तक्ज़ीब करने वालों को डरना चाहिये। **101 :** अहले मक्का **102 :** नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या कुरआने करीम **103 :** जो इनाद से ईमान नहीं लाते और कुफ़्र पर मुसिर रहते हैं। **104 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! और उन की राह पर आने और ह़क़ व हिदायत क़बूल करने की उम्मीद मुन्क़त़अ़ हो जाए **105 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा **106 :** किसी के अ़मल पर दूसरा माख़ूज़ (गिरिफ़्तार) न होगा जो पकड़ा जाएगा ख़ुद अपने अ़मल पर पकड़ा जाएगा, येह फ़रमाना बत़ौर ज़ज्र (तम्बीह) के है कि तुम नसीह़त नहीं मानते और हिदायत क़बूल नहीं करते तो इस का वबाल ख़ुद तुम पर होगा किसी दूसरे का इस से ज़रर नहीं। **107 :** और आप से कुरआने पाक और अह़कामे दीन सुनते हैं और बुग़्ज़ो अ़दावत की वज्ह से दिल में जगह नहीं देते और क़बूल नहीं करते तो येह सुनना बेकार है और वोह हिदायत से नफ़्अ़ न पाने में बहरों की मिस्ल हैं। **108 :** और वोह न ह़वास से काम लें न अ़क़्ल से। **109 :** और दलाइले सिद्क़ और ए'लामे नुबुव्वत को देखता है लेकिन तस्दीक़ नहीं करता और इस देखने से नतीजा नहीं निकालता, फ़ाएदा नहीं उठाता, दिल की बीनाई से मह़रूम और बात़िन का अन्धा है। **110 :** बल्कि उन्हें

www.dawateislami.net

إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ

मगर इस दिन की एक घड़ी[113] आपस में पहचान करेंगे[114] पूरे घाटे में रहे वोह

كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

जिन्हों ने अल्लाह से मिलने को झुटलाया और हिदायत पर न थे[115] और अगर हम तुम्हें दिखा दें कुछ[116] उस में से

الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا

जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[117] या तुम्हें पहले ही अपने पास बुला लें[118] बहर हाल उन्हें हमारी त़रफ़ पलट कर आना है फिर अल्लाह गवाह है[119] उन

يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ

के कामों पर और हर उम्मत में एक रसूल हुवा[120] जब उन का रसूल उन के पास आता[121] उन पर

بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ

इन्साफ़ का फ़ैसला कर दिया जाता[122] और उन पर ज़ुल्म न होता और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम

صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ

सच्चे हो[123] तुम फ़रमाओ मैं अपनी जान के भले बुरे का ज़ाती इख़्तियार नहीं रखता मगर जो अल्लाह

हिदायत और राह पाने के तमाम सामान अ़त़ा फ़रमाता है और रोशन दलाइल क़ाइम फ़रमाता है। **111 :** कि इन दलाइल में ग़ौर नहीं करते और हक़ वाज़ेह़ हो जाने के बा वुजूद ख़ुद गुमराही में मुब्तला होते हैं। **112 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े ह़िसाब (ह़िसाबो किताब की जगह) में ह़ाज़िर करने के लिये तो उस रोज़ की हैबतो वहशत से येह ह़ाल होगा कि वोह दुन्या में रहने की मुद्दत को बहुत थोड़ा समझेंगे और येह ख़याल करेंगे कि **113 :** और इस की वज्ह येह है कि चूंकि कुफ़्फ़ार ने त़लबे दुन्या में उ़म्रें ज़ाएअ़ कर दीं और अल्लाह की त़ाअ़त जो आज कारआमद होती बजा न लाए तो उन की ज़िन्दगानी का वक़्त उन के काम न आया इस लिये वोह इसे बहुत ही कम समझेंगे। **114 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त तो एक दूसरे को पहचानेंगे जैसा दुन्या में पहचानते थे फिर रोज़े क़ियामत के अहवाल और दहशत नाक मनाज़िर देख कर येह मा'रिफ़त बाक़ी न रहेगी और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत दम बदम ह़ाल बदलेंगे, कभी ऐसा ह़ाल होगा कि एक दूसरे को पहचानेंगे, कभी ऐसा कि न पहचानेंगे और जब पहचानेंगे तो कहेंगे : **115 :** जो उन्हें घाटे से बचाती। **116 :** अ़ज़ाब **117 :** दुन्या ही में आप के ज़मानए ह़यात में तो वोह मुलाह़ज़ा कीजिये **118 :** तो आख़िरत में आप को उन का अ़ज़ाब दिखाएंगे। इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह तआ़ला अपने रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को काफ़िरों के बहुत से अ़ज़ाब और उन की ज़िल्लतो रुस्वाइयां आप की ह़याते दुन्या ही में आप को दिखाएगा चुनान्चे बद्र वग़ैरा में दिखाई गईं और जो अ़ज़ाब काफ़िरों के लिये ब सबबे कुफ़्र व तक्ज़ीब के आख़िरत में मुक़र्रर फ़रमाया है वोह आख़िरत में दिखाएगा। **119 :** मुत्त़लअ़ है, अ़ज़ाब देने वाला है **120 :** जो उन्हें दीने ह़क़ की दा'वत देता और त़ाअ़त व ईमान का हुक्म करता। **121 :** और अह़कामे इलाही की तब्लीग़ करता तो कुछ लोग ईमान लाते और कुछ तक्ज़ीब करते और मुन्किर हो जाते तो **122 :** कि रसूल को और उन पर ईमान लाने वालों को नजात दी जाती और तक्ज़ीब करने वालों को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया जाता। आयत की तफ़्सीर में दूसरा क़ौल येह है कि इस में आख़िरत का बयान है और मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर उम्मत के लिये एक रसूल होगा जिस की त़रफ़ वोह मन्सूब होगी जब वोह रसूल मौक़िफ़ (ह़िसाबो किताब की जगह) में आएगा और मोमिन व काफ़िर पर शहादत देगा तब उन में फ़ैसला किया जाएगा कि मोमिनों को नजात होगी और काफ़िर गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होंगे। **123 शाने नुज़ूल :** जब आयत "اِمَّا نُرِيَنَّكَ" में अ़ज़ाब की वई़द दी गई तो काफ़िरों ने बराहे सरकशी येह कहा कि ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) जिस अ़ज़ाब का आप वा'दा देते हैं वोह कब आएगा ? उस में क्या ताख़ीर है ? उस अ़ज़ाब को जल्द लाइये, इस पर येह आयत नाज़िल हुई।

اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ

चाहे[124] हर गुरौह का एक वा'दा है[125] जब उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न पीछे हटें

لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

न आगे बढ़ें तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर उस का अ़ज़ाब[126] तुम पर रात को आए[127] या दिन को[128]

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ

तो उस में वोह कौन सी चीज़ है कि मुजरिमों को जिस की जल्दी है तो क्या जब[129] हो पड़ेगा उस वक़्त इस का यक़ीन करोगे[130]

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

क्या अब मानते हो पहले तो[131] इस की जल्दी मचा रहे थे फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा हमेशा

عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۵۲﴾

का अ़ज़ाब चखो तुम्हें कुछ और बदला न मिलेगा मगर वोही जो कमाते थे[132]

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؔۚ وَمَاۤ اَنْتُمْ

और तुम से पूछते हैं क्या वोह[133] हक़ है तुम फ़रमाओ हां मेरे रब की क़सम बेशक वोह ज़रूर हक़ है और तुम कुछ थका

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۵۳﴾ ع وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ

न सकोगे[134] और अगर हर ज़ालिम जान ज़मीन में जो कुछ है[135] सब की मालिक होती ज़रूर अपनी जान छुड़ाने में

بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

देती[136] और दिल में चुपके चुपके पशेमान हुए जब अ़ज़ाब देखा और उन में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दिया गया

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ

और उन पर ज़ुल्म न होगा सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और ज़मीन में[137] सुन लो

124 : या'नी दुश्मनों पर अ़ज़ाब नाज़िल करना और दोस्तों की मदद करना और उन्हें ग़लबा देना येह सब ब मशिय्यते इलाही है और मशिय्यते इलाही में **125 :** उस के हलाक व अ़ज़ाब का एक वक़्त मुअय्यन है, लौहे महफ़ूज़ में मक्तूब है। **126 :** जिस की तुम जल्दी करते हो **127 :** जब तुम ग़ाफ़िल पड़े सोते हो। **128 :** जब तुम मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो। **129 :** वोह अ़ज़ाब तुम पर नाज़िल **130 :** उस वक़्त का यक़ीन कुछ फ़ाएदा न देगा और कहा जाएगा : **131 :** ब तरीक़े तक्ज़ीब व इस्तिहज़ा **132 :** या'नी दुन्या में जो अ़मल करते थे और कुफ़्र व तक्ज़ीबे अम्बिया में मसरूफ़ रहते थे उसी का बदला। **133 :** बअ़्स और अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने की आप ने हमें ख़बर दी **134 :** या'नी वोह अ़ज़ाब तुम्हें ज़रूर पहुंचेगा **135 :** मालो मताअ़ ख़ज़ाना व दफ़ीना **136 :** और रोज़े क़ियामत उस को अपनी रिहाई के लिये फ़िदया कर डालती, मगर येह फ़िदया क़बूल नहीं और तमाम दुन्या की दौलत ख़र्च कर के भी अब रिहाई मुम्किन नहीं, जब क़ियामत में येह मन्ज़र पेश आया और कुफ़्फ़ार की उम्मीदें टूटीं **137 :** तो काफ़िर किसी चीज़ का मालिक ही नहीं बल्कि वोह ख़ुद भी **अल्लाह** का मम्लूक है, इस का फ़िदया देना मुम्किन ही नहीं।

www.dawateislami.net

إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ

बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं वोह जिलाता और

يُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۶﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ

मारता है और उसी की तरफ़ फिरोगे ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत

رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾

आई[138] और दिलों की सिह्हत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا

तुम फ़रमाओ अल्लाह ही के फ़ज़्ल और उसी की रहमत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें[139] वोह उन के सब

يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ

धन दौलत से बेहतर है तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये रिज़्क़ उतारा उस में तुम ने

مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ

अपनी तरफ़ से हराम व हलाल ठहरा लिया[140] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह ने इस की तुम्हें इजाज़त दी या अल्लाह पर झूट बांधते हो[141] और

مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

क्या गुमान है उन का जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं कि क़ियामत में उन का क्या हाल होगा बेशक अल्लाह

138 : इस आयत में कुरआने करीम के आने और इस के मौइज़त व शिफ़ा व हिदायत व रहमत होने का बयान है कि येह किताब इन फ़वाइदे अज़ीमा की जामेअ़ है। **मौइज़त** के मा'ना हैं वोह चीज़ जो इन्सान को मरगूब की तरफ़ बुलाए और ख़तरे से बचाए। ख़लील ने कहा कि मौइज़त नेकी की नसीहत करना है जिस से दिल में नरमी पैदा हो। **शिफ़ा** से मुराद येह है कि कुरआने पाक क़ल्बी अमराज़ को दूर करता है। दिल के अमराज़, अख़्लाक़े ज़मीमा, अक़ाइदे फ़ासिदा और जहालते मोहलिका हैं, कुरआने पाक इन तमाम अमराज़ को दूर करता है। कुरआने करीम की सिफ़त में हिदायत भी फ़रमाया क्यूं कि वोह गुमराही से बचाता और राहे हक़ दिखाता है और ईमान वालों के लिये रहमत इस लिये फ़रमाया कि वोही इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **139 : फ़रह :** किसी प्यारी और महबूब चीज़ के पाने से दिल को जो लज़्ज़त हासिल होती है उस को फ़रह कहते हैं। मा'ना येह हैं कि ईमान वालों को अल्लाह के फ़ज़्लो रहमत पर ख़ुश होना चाहिये कि उस ने इन्हें मवाइज़ और शिफ़ाए सुदूर और ईमान के साथ दिल की राहत व सुकून अ़ता फ़रमाए। हज़रते इब्ने अ़ब्बास व हसन व क़तादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ने कहा कि अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम और उस की रहमत से कुरआन मुराद है। एक क़ौल येह है कि फ़ज़्लुल्लाह से कुरआन और रहमत से अहादीस मुराद हैं। **140 :** जैसे कि अहले जाहिलिय्यत ने बहीरा साइबा वग़ैरा को अपनी तरफ़ से हराम क़रार दे लिया था। **141 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि किसी चीज़ को अपनी तरफ़ से हलाल या हराम करना मम्नूअ़ और ख़ुदा पर इफ़्तिरा है (अल्लाह की पनाह) आज कल बहुत लोग इस में मुब्तला हैं मम्नूआत को हलाल कहते हैं और मुबाहात को हराम, बा'ज़ सूद को हलाल करने पर मुसिर हैं, बा'ज़ तस्वीरों को, बा'ज़ खेल तमाशों को, बा'ज़ औ़रतों की बे क़ैदियों और बे पर्दगियों को, बा'ज़ भूक हड़ताल को जो ख़ुदकुशी है मुबाह समझते हैं और हलाल ठहराते हैं और बा'ज़ लोग हलाल चीज़ों को हराम ठहराने पर मुसिर हैं जैसे महफ़िले मीलाद को, फ़ातिहा को, ग्यारहवीं को और दीगर तरीक़ाहाए ईसाले सवाब को, बा'ज़ मीलाद शरीफ़ व फ़ातिहा व तोशे की शीरीनी व तबर्रुक को जो सब हलाल व तय्यिब चीज़ें हैं ना जाइज़ व मम्नूअ़ बताते हैं, इसी को कुरआने पाक ने ख़ुदा पर इफ़्तिरा करना बताया है।

www.dawateislami.net

ع

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۶۰﴾ وَمَا تَكُوْنُ

लोगों पर फ़ज़्ल करता है[142] मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते और तुम किसी

فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا

काम में हो[143] और उस की तरफ़ से कुछ कुरआन पढ़ो और तुम लोग[144] कोई काम करो हम

عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ

तुम पर गवाह होते हैं जब तुम उस को शुरूअ़ करते हो और तुम्हारे रब से

مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ

ज़र्रा भर कोई चीज़ ग़ाइब नहीं ज़मीन में न आस्मान में और न इस से छोटी और न इस

اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۶۱﴾ اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

से बड़ी कोई चीज़ जो एक रोशन किताब में न हो[145] सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى

न कुछ ग़म[146] वोह जो ईमान लाए और परहेज़ गारी करते हैं उन्हें ख़ुश ख़बरी है

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ

दुन्या की ज़िन्दगी में[147] और आख़िरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं[148] येही

142 : कि रसूल भेजता है किताबें नाज़िल फ़रमाता है और ह़लाल व ह़राम से बा ख़बर फ़रमाता है। 143 : ऐ ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! 144 : ऐ मुसल्मानो ! 145 : किताबे मुबीन से लौहे़ मह़फ़ूज़ मुराद है। 146 : वली की अस्ल विला से है जो कुर्ब व नुसरत के मा'ना में है। वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से कुर्बे इलाही ह़ासिल करे और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ हो, जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब ह़रकत करे त़ाअ़ते इलाही में ह़रकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए कुर्बे इलाही हो, अल्लाह के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल से ख़ुदा के सिवा किसी ग़ैर को न देखे येह सिफ़त औलिया की है, बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो अल्लाह उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है। मुतकल्लिमीन कहते हैं : वली वोह है जो ए'तिक़ादे सह़ीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो। बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया कि विलायत नाम है कुर्बे इलाही और हमेशा अल्लाह के साथ मश्ग़ूल रहने का, जब बन्दा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और न किसी शै के फ़ौत होने का ग़म होता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वली वोह है जिस को देखने से अल्लाह याद आए। येही त़बरी की ह़दीस में भी है। इब्ने ज़ैद ने कहा कि वली वोही है जिस में वोह सिफ़त हो जो इस आयत में मज़्कूर है "اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ" या'नी ईमान व तक़्वा दोनों का जामेअ़ हो। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि वली वोह हैं जो ख़ालिस अल्लाह के लिये मह़ब्बत करें। औलिया की येह सिफ़त अह़ादीसे कसीरा में वारिद हुई है। बा'ज़ अकाबिर ने फ़रमाया : वली वोह हैं जो त़ाअ़त से कुर्बे इलाही की त़लब करते हैं और अल्लाह तआ़ला करामत से उन की कारसाज़ी फ़रमाता है या वोह जिन की हिदायत का बुरहान के साथ अल्लाह कफ़ील हो और वोह उस का ह़क़्क़े बन्दगी अदा करने और उस की ख़ल्क़ पर रह़्म करने के लिये वक़्फ़ हो गए। येह मआ़नी और इ़बारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन इन में इख़्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है, क्यूं कि हर एक इ़बारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे कुर्बे इलाही ह़ासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होते हैं, विलायत के दरजे और मरातिब में हर एक ब क़द्र अपने दरजे के फ़ज़्लो शरफ़ रखता है 147 : इस ख़ुश ख़बरी

www.dawateislami.net

وقف لازم

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ

बड़ी काम्याबी है और तुम उन की बातों का ग़म न करो[149] बेशक इज़्ज़त सारी अल्लाह के लिये है[150] वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ

सुनता जानता है सुन लो बेशक अल्लाह ही की मिल्क हैं जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीनों में[151]

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا

और काहे के पीछे जा रहे हैं[152] वोह जो अल्लाह के सिवा शरीक पुकार रहें हैं वोह तो पीछे नहीं जाते मगर

الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ

गुमान के और वोह तो नहीं मगर अट्कलें दौड़ाते (अन्दाज़े करते)[153] वोही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई

لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

कि इस में चैन पाओ[154] और दिन बनाया तुम्हारी आंखें खोलता[155] बेशक इस में निशानियां हैं सुनने

يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي

वालों के लिये[156] बोले अल्लाह ने अपने लिये औलाद बनाई[157] पाकी उस को वोही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ

से या तो वोह मुराद है जो परहेज़ गार ईमानदारों को कुरआने करीम में जा ब जा दी गई है या बेहतरीन ख़्वाब मुराद है जो मोमिन देखता है या उस के लिये देखा जाता है जैसा कि कसीर अहादीस में वारिद हुवा है और इस का सबब येह है कि वली का क़ल्ब और उस की रूह दोनों ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ रहते हैं तो वक़्ते ख़्वाब उस के दिल में सिवाए ज़िक्रो मा'रिफ़ते इलाही के और कुछ नहीं होता। इस लिये वली जब ख़्वाब देखता है तो उस का ख़्वाब हक़ और अल्लाह तआला की तरफ़ से उस के हक़ में बिशारत होती है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस बिशारत से दुन्या की नेकनामी भी मुराद ली है। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से अर्ज़ किया गया : उस शख़्स के लिये क्या इर्शाद फ़रमाते हैं जो नेक अमल करता है और लोग उस की ता'रीफ़ करते हैं। फ़रमाया : येह मोमिन के लिये बिशारते आजिला है। उलमा फ़रमाते हैं कि येह बिशारते आजिला रिज़ाए इलाही और अल्लाह की महब्बत फ़रमाने और ख़ल्क़ के दिल में महब्बत डाल देने की दलील है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है कि उस को ज़मीन में मक़्बूल कर दिया जाता है। क़तादा ने कहा कि मलाएका वक़्ते मौत अल्लाह तआला की तरफ़ से बिशारत देते हैं। अता का क़ौल है कि दुन्या की बिशारत तो वोह है जो मलाएका वक़्ते मौत सुनाते हैं और आख़िरत की बिशारत वोह है जो मोमिन को जान निकलने के बा'द सुनाई जाती है कि इस से अल्लाह राज़ी है। **148 :** उस के वा'दे ख़िलाफ़ नहीं हो सकते जो उस ने अपनी किताब में और अपने रसूलों की ज़बान से अपने औलिया और अपने फ़रमां बरदार बन्दों से फ़रमाए। **149 :** इस में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीन फ़रमाई गई कि कुफ़्फ़ारे ना बकार जो आप की तक्ज़ीब करते हैं और आप के ख़िलाफ़ बुरे बुरे मश्वरे करते हैं आप उस का कुछ ग़म न फ़रमाएं। **150 :** वोह जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। ऐ सय्यिदे अम्बिया ! वोह आप का नासिर व मददगार है उस ने आप को और आप के सदक़े में आप के फ़रमां बरदारों को इज़्ज़त दी, जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह के लिये इज़्ज़त है और उस के रसूल के लिये और ईमानदारों के लिये। **151 :** सब उस के मम्लूक हैं उस के तहते क़ुदरतो इख़्तियार और मम्लूक रब नहीं हो सकता, इस लिये कि अल्लाह के सिवा हर एक की परस्तिश बातिल है, येह तौहीद की एक उम्दा बुरहान है। **152 :** या'नी किस दलील का इत्तिबाअ़ करते हैं। मुराद येह है कि उन के पास कोई दलील नहीं। **153 :** और बे दलील महज़ गुमाने फ़ासिद से अपने बातिल मा'बूदों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं, इस के बा'द अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत व ने'मत का इज़्हार फ़रमाता है। **154 :** और आराम कर के दिन की तकान दूर करो। **155 :** रोशन ताकि तुम अपने हवाइज (हाजात) व अस्बाबे मआश का सर अन्जाम कर सको। **156 :** जो सुनें और समझें कि जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया वोही मा'बूद है उस का कोई शरीक नहीं, इस के बा'द मुश्रिकीन का एक मक़ूला ज़िक्र फ़रमाता है **157 :** कुफ़्फ़ार का येह कलिमा निहायत क़बीह और इन्तिहा दरजे के जहल का है, अल्लाह तआला इस का रद फ़रमाता है।

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ

आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[158] तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۸﴾ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى

क्या **अल्लाह** पर वोह बात बताते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं तुम फ़रमाओ वोह जो **अल्लाह** पर

اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۶۹﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ

झूट बांधते हैं उन का भला न होगा दुन्या में कुछ बरत लेना (फ़ाएदा उठाना) है फिर उन्हें हमारी त़रफ़ वापस आना फिर

نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ

हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे बदला उन के कुफ़्र का और उन्हें नूह की ख़बर

الربع الثلثة

نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ

وقف لازم

पढ़ कर सुनाओ जब उस ने अपनी क़ौम से कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम पर शाक़ (ना गवार) गुज़रा है मेरा खड़ा होना[159]

وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ

और **अल्लाह** की निशानियां याद दिलाना[160] तो मैं ने **अल्लाह** ही पर भरोसा किया[161] तो मिल कर काम करो

وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَيَّ وَلَا

और अपने झूटे मा'बूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गुन्जलक (उल्झन व पोशीदगी) न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और

تُنْظِرُوْنِ ﴿۷۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا

मुझे मोहलत न दो[162] फिर अगर तुम मुंह फेरो[163] तो मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[164] मेरा अज्र तो नहीं मगर

158 : यहां मुश्रिकीन के इस मकूले (**अल्लाह** ने अपने लिये औलाद बनाई) के तीन रद फ़रमाए **पहला** रद तो कलिमा "سُبْحٰنَهٗ" में है जिस में बताया गया कि उस की ज़ात वलद से मुनज़्ज़ा है कि वोह वाहिदे ह़क़ीक़ी है। **दूसरा** रद "هُوَ الْغَنِيُّ" फ़रमाने में है कि वोह तमाम ख़ल्क़ से बे नियाज़ है तो औलाद उस के लिये कैसे हो सकती है? औलाद तो या कमज़ोर चाहता है जो उस से क़ुव्वत ह़ासिल करे या फ़क़ीर चाहता है जो उस से मदद ले या ज़लील चाहता है जो उस के ज़रीए से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करे ग़रज़ जो चाहता है वोह ह़ाजत रखता है तो जो ग़नी हो या ग़ैर मोह़ताज हो उस के लिये वलद किस त़रह़ हो सकता है, नीज़ वलद वालिद का एक जुज़्व होता है तो वालिद होना मुरक्कब होने को मुस्तल्ज़िम और मुरक्कब होना मुम्किन होने को और हर मुम्किन ग़ैर का मोह़ताज है तो ह़ादिस हुवा, लिहाज़ा मुह़ाल हुवा कि ग़नी क़दीम के वलद हो। **तीसरा** रद "لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ" में है कि तमाम ख़ल्क़ उस की मम्लूक है और मम्लूक होना बेटा होने के साथ नहीं जम्अ़ होता, लिहाज़ा इन में से कोई उस की औलाद नहीं हो सकता। 159 : और मुद्दते दराज़ तक तुम में ठहरना 160 : और इस पर तुम ने मेरे क़त्ल करने और निकाल देने का इरादा किया है 161 : और अपना मुआ़मला उस वाह़िद لَاشَرِيْكَ لَهٗ के सिपुर्द किया। 162 : मुझे कुछ परवाह नहीं है, ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह कलाम ब त़रीक़े ता'जीज़ (आ़जिज़ कर देने के लिये) है, मुद्दआ़ येह है कि मुझे अपने क़वी व क़ादिर परवर्दगार पर कामिल भरोसा है तुम और तुम्हारे बे इख़्तियार मा'बूद मुझे कुछ भी ज़रर नहीं पहुंचा सकते। 163 : मेरी नसीह़त से 164 : जिस के फ़ौत होने का मुझे अफ़्सोस हो।

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَ

अल्लाह पर[165] और मुझे हुक्म है कि मैं मुसल्मानों से हूं तो उन्हों ने उसे[166] झुटलाया तो हम ने उसे और

مَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓىِٕفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

जो उस के साथ कश्ती में थे उन को नजात दी और उन्हें हम ने नाइब किया[167] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन को

بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ

हम ने डुबो दिया तो देखो डराए हुओं का अन्जाम कैसा हुवा फिर इस के बा'द और

رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا

रसूल[168] हम ने उन की क़ौमों की त़रफ़ भेजे तो वोह उन के पास रोशन दलीलें लाए तो वोह ऐसे न थे कि ईमान लाते उस पर

كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ

जिसे पहले झुटला चुके थे हम यूंही मोहर लगा देते हैं सरकशों के दिलों पर फिर

بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ بِاٰيٰتِنَا

उन के बा'द हम ने मूसा और हारून को फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़ अपनी निशानियां दे कर भेजा

فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ

तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे तो जब उन के पास हमारी त़रफ़ से

عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ

ह़क़ आया[169] बोले येह तो ज़रूर खुला जादू है मूसा ने कहा क्या ह़क़ की निस्बत ऐसा कहते हो

لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا

जब वोह तुम्हारे पास आया क्या येह जादू है[170] और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते बोले[171] क्या तुम हमारे पास

لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِی

इस लिये आए हो कि हमें उस[172] से फेर दो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया और ज़मीन में तुम्हीं दोनों

165 : वोही मुझे जज़ा देगा, मुद्दआ येह है कि मेरा वा'ज़ो नसीह़त ख़ास अल्लाह के लिये है किसी दुन्यवी ग़रज़ से नहीं। 166 : या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को 167 : और हलाक होने वालों के बा'द ज़मीन में साकिन किया। 168 : हूद, सालेह, इब्राहीम, लूत़, शुऐब वग़ैरहुम عَلَيْهِمُ السَّلَام। 169 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वासित़े से और फ़िरऔ़नियों ने पहचान लिया कि येह ह़क़ है अल्लाह की त़रफ़ से है तो बराहे नफ़्सानिय्यत 170 : हरगिज़ नहीं 171 : फ़िरऔ़नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से 172 : दीनो मिल्लत और बुत परस्ती व फ़िरऔ़न परस्ती

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۸﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ

की बड़ाई रहे और हम तुम पर ईमान लाने के नहीं और फ़िरऔन[173] बोला हर जादूगर

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۷۹﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ

इल्म वाले को मेरे पास ले आओ फिर जब जादूगर आए उन से मूसा ने कहा डालो जो

اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ

तुम्हें डालना है[174] फिर जब उन्हों ने डाला मूसा ने कहा येह जो तुम लाए येह जादू है[175]

اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَيُحِقُّ

अब अल्लाह उसे बातिल कर देगा अल्लाह मुफ़्सिदों का काम नहीं बनाता और अल्लाह अपनी

ع ۸ ۱۲ ۱۳ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ

बातों से[176] हक़ को हक़ कर दिखाता है पड़े बुरा मानें मुजरिम तो मूसा पर ईमान न लाए मगर उस की क़ौम की औलाद से

مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ

कुछ लोग[177] फ़िरऔन और उस के दरबारियों से डरते हुए कि कहीं उन्हें[178] हटने पर मजबूर न कर दें और बेशक

فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَقَالَ

फ़िरऔन ज़मीन में सर उठाने वाला था और बेशक वोह हद से गुज़र गया[179] और मूसा

173 : सरकश व मुतकब्बिर ने चाहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े का मुक़ाबला बातिल से करे और दुन्या को इस मुग़ालते में डाले कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात (مَعَاذَ الله) जादू की क़िस्म से हैं इस लिये वोह **174 :** रस्से शहतीर वग़ैरा और जो तुम्हें जादू करना है करो। येह आप ने इस लिये फ़रमाया कि हक़ व बातिल ज़ाहिर हो जाए और जादू के करिश्मे जो वोह करने वाले हैं उन का फ़साद वाज़ेह हो। **175 :** न कि वोह आयाते इलाहिय्यह जिन को फ़िरऔन ने अपनी बे ईमानी से जादू बताया। **176 :** या'नी अपने हुक्म अपनी क़ज़ा व क़दर और अपने इस वा'दे से कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जादूगरों पर ग़ालिब करेगा। **177 :** इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप अपनी उम्मत के ईमान लाने का निहायत एहतिमाम फ़रमाते थे और उन के ए'राज़ करने से मग़्मूम होते थे आप की तस्कीन फ़रमाई गई कि बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इतना बड़ा मो'जिज़ा दिखाया फिर भी थोड़े लोगों ने ईमान क़बूल किया, ऐसी हालतें अम्बिया को पेश आती रही हैं आप अपनी उम्मत के ए'राज़ से रन्जीदा न हों ''مِنْ قَوْمِهٖ'' में जो ज़मीर है वोह या तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ राजेअ़ है। इस सूरत में क़ौम की ज़ुर्रिय्यत से बनी इसराईल मुराद होंगे जिन की औलाद मिस्र में आप के साथ थी और एक क़ौल येह है कि इस से वोह लोग मुराद हैं जो फ़िरऔन के क़त्ल से बच रहे थे क्यूं कि जब बनी इसराईल के लड़के ब हुक्मे फ़िरऔन क़त्ल किये जाते थे तो बनी इसराईल की बा'ज़ औरतें जो क़ौमे फ़िरऔन की औरतों के साथ कुछ रस्मो राह रखती थीं वोह जब बच्चा जनतीं तो उस की जान के अन्देशे से वोह बच्चा फ़िरऔनी क़ौम की औरतों को दे डालतीं, ऐसे बच्चे जो फ़िरऔनियों के घरों में पले थे उस रोज़ हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आप को जादूगरों पर ग़लबा दिया था और एक क़ौल येह है कि येह ज़मीर फ़िरऔन की तरफ़ राजेअ़ है और क़ौमे फ़िरऔन की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) मुराद है। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि वोह क़ौमे फ़िरऔन के थोड़े लोग थे जो ईमान लाए। **178 :** दीन से **179 :** कि बन्दा हो कर ख़ुदाई का मुद्दई हुवा।

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ

ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो[180] अगर इस्लाम

مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ

रखते हो बोले हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया इलाही हम को ज़ालिम लोगों के लिये

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَاۤ

आज़्माइश न बना[181] और अपनी रह़मत फ़रमा कर हमें काफ़िरों से नजात दे[182] और हम ने

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ

मूसा और उस के भाई को वह़्य भेजी कि मिस्र में अपनी क़ौम के लिये मकानात बनाओ और अपने घरों को नमाज़ की जगह

قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَاۤ

करो[183] और नमाज़ क़ाइम रखो और मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरी सुना[184] और मूसा ने अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे

اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا

तू ने फ़िरऔ़न और उस के सरदारों को आराइश[185] और माल दुन्या की ज़िन्दगी में दिये ऐ रब हमारे

لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰۤى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

इस लिये कि तेरी राह से बहकावें ऐ रब हमारे इन के माल बरबाद कर दे[186] और इन के दिल सख़्त कर दे

فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ

कि ईमान न लाएं जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[187] फ़रमाया तुम दोनों की दुआ़

دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

क़बूल हुई[188] तो साबित क़दम रहो[189] और नादानों की राह न चलो[190]

180 : वोह अपने फ़रमां बरदारों की मदद करता और दुश्मनों को हलाक फ़रमाता है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि अल्लाह पर भरोसा करना कमाले ईमान का मुक़्तज़ा है **181 :** या'नी उन्हें हम पर ग़ालिब न कर ताकि वोह येह गुमान न करें कि वोह ह़क़ पर हैं। **182 :** और उन के ज़ुल्मो सितम से बचा। **183 :** कि क़िब्ला रू हो, ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام का क़िब्ला का'बा शरीफ़ था और इब्तिदा में बनी इसराईल को येही हुक्म था कि वोह घरों में छुप कर नमाज़ पढ़ें ताकि फ़िरऔ़नियों के शर व ईज़ा से मह़फ़ूज़ रहें। **184 :** मददे इलाही की और जन्नत की **185 :** उ़म्दा लिबास नफ़ीस फ़र्श क़ीमती ज़ेवर त़रह़ त़रह़ के सामान **186 :** कि वोह तेरी ने'मतों पर बजाए शुक्र के जरी हो कर मा'सियत करते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ क़बूल हुई और फ़िरऔ़नियों के दिरहमो दीनार वग़ैरा पथ्थर हो कर रह गए ह़त्ता कि फल और खाने की चीज़ें भी और येह उन नव निशानियों में से एक है जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दी गई थीं। **187 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हो गए तब आप ने उन के लिये येह दुआ़ की और ऐसा ही हुवा कि वोह ग़र्क़ होने के वक़्त तक ईमान न लाए। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी शख़्स के लिये कुफ़्र पर मरने की दुआ़ करना कुफ़्र नहीं है। (مدارک) **188 :** दुआ़ की निस्बत ह़ज़रते मूसा

وَجَاوَزۡنَا بِبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ الۡبَحۡرَ فَاَتۡبَعَهُمۡ فِرۡعَوۡنُ وَجُنُوۡدُهٗ بَغۡیًا وَّ
और हम बनी इसराईल को दरिया पार ले गए तो फ़िरऔन और उस के लश्करों ने उन का पीछा किया सरकशी और
عَدۡوًا ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَدۡرَكَهُ الۡغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنۡتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیۡۤ
ज़ुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया[191] बोला मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के
اٰمَنَتۡ بِهٖ بَنُوۡۤا اِسۡرَآءِیۡلَ وَاَنَا مِنَ الۡمُسۡلِمِیۡنَ ﴿۹۰﴾ آٰلۡـٰٔنَ وَقَدۡ
जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए और मैं मुसल्मान हूं[192] क्या अब[193] और
عَصَیۡتَ قَبۡلُ وَكُنۡتَ مِنَ الۡمُفۡسِدِیۡنَ ﴿۹۱﴾ فَالۡیَوۡمَ نُنَجِّیۡكَ بِبَدَنِكَ
पहले से ना फ़रमान रहा और तू फ़सादी था[194] आज हम तेरी लाश को उतरा दें (बाक़ी रखें)गे
لِتَكُوۡنَ لِمَنۡ خَلۡفَكَ اٰیَةً ؕ وَاِنَّ كَثِیۡرًا مِّنَ النَّاسِ عَنۡ اٰیٰتِنَا
कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो[195] और बेशक लोग हमारी आयतों से
لَغٰفِلُوۡنَ ﴿۹۲﴾ ع وَلَقَدۡ بَوَّاۡنَا بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ مُبَوَّاَ صِدۡقٍ وَّرَزَقۡنٰهُمۡ
ग़ाफ़िल हैं और बेशक हम ने बनी इसराईल को इज़्ज़त की जगह दी[196] और उन्हें
مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡا حَتّٰی جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقۡضِیۡ
सुथरी रोज़ी अ़ता की तो इख़्तिलाफ़ में न पड़े[197] मगर इल्म आने के बा'द[198] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत

व हारून عَلَیۡہِمَا السَّلَام दोनों की तरफ़ की गई बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام दुआ करते थे और हज़रते हारून عَلَیۡہِ السَّلَام आमीन कहते थे। इस से मा'लूम हुवा कि आमीन कहने वाला भी दुआ करने वालों में शुमार किया जाता है। **मस्अला :** येह भी साबित हुवा कि आमीन दुआ है लिहाज़ा इस के लिये इख़्फ़ा (आहिस्ता कहना) ही मुनासिब है। (مدارک) हज़रते मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ और उस की मक़्बूलिय्यत के दरमियान चालीस बरस का फ़ासिला हुवा। **189 :** दा'वतो तब्लीग़ पर **190 :** जो क़बूले दुआ में देर होने की हिक्मत नहीं जानते। **191 :** तब फ़िरऔन **192 :** फ़िरऔन ने ब तमन्नाए क़बूल ईमान का मज़्मून तीन मरतबा तक्रार के साथ अदा किया लेकिन येह ईमान क़बूल न हुवा क्यूं कि मलाएका और अ़ज़ाब के देखने के बा'द ईमान मक़्बूल नहीं, अगर हालते इख़्तियार में वोह एक मरतबा भी येह कलिमा कहता तो उस का ईमान क़बूल कर लिया जाता लेकिन उस ने वक़्त खो दिया इस लिये उस से येह कहा गया जो आयत में आगे मज़्कूर है। **193 :** हालते इज़्तिरार में जब कि ग़र्क़ में मुब्तला हो चुका है और ज़िन्दगानी की उम्मीद बाक़ी नहीं रही उस वक़्त ईमान लाता है **194 :** ख़ुद गुमराह था, दूसरों को गुमराह करता था। मरवी है कि एक मरतबा हज़रते जिब्रील عَلَیۡہِ السَّلَام फ़िरऔन के पास एक इस्तिफ़्ता लाए जिस का मज़्मून येह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के हक़ में जिस ने एक शख़्स के माल व ने'मत में परवरिश पाई फिर उस की नाशुक्री की और उस के हक़ का मुन्किर हो गया और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया ? इस पर फ़िरऔन ने येह जवाब लिखा कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा की ने'मतों का इन्कार करे और उस के मुक़ाबिल आए उस की सज़ा येह है कि उस को दरिया में डुबो दिया जाए जब फ़िरऔन डूबने लगा तो हज़रते जिब्रील ने उस का वोही फ़तवा उस के सामने कर दिया और उस ने उस को पहचान लिया। (سُبۡحٰنَ اللّٰہ) **195 :** उ़लमाए तफ़्सीर कहते हैं कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने फ़िरऔन और उस की क़ौम को ग़र्क़ किया और मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम को उन की हलाकत की ख़बर दी तो बा'ज़ बनी इसराईल को शुबा रहा और उस की अ़ज़्मतो हैबत जो उन के क़ुलूब में थी उस के बाइस उन्हें उस की हलाकत का यक़ीन न आया, ब अम्रे इलाही दरिया ने फ़िरऔन की लाश साहिल पर फेंक दी, बनी इसराईल ने उस को देख कर पहचाना **196 :** इ़ज़्ज़त की जगह से या तो मुल्के मिस्र और फ़िरऔन व फ़िरऔनियों के अम्लाक (जाएदाद) मुराद हैं या सर ज़मीने शाम व क़ुदुस व उर्दुन जो निहायत सर सब्ज़ो शादाब और ज़रख़ेज़ बिलाद (शहर) हैं। **197 :** बनी इसराईल जिन के

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ

के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में झगड़ते थे[199] और ऐ सुनने वाले अगर तुझे कुछ शुबा हो

مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْــَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ

उस में जो हम ने तेरी त़रफ़ उतारा[200] तो उन से पूछ देख जो तुझ से पहले किताब पढ़ने वाले हैं[201] बेशक

جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَكُوْنَنَّ

तेरे पास तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ आया[202] तो तू हरगिज़ शक वालों में न हो और हरगिज़ उन

مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۹۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

में न होना जिन्हों ने अल्लाह की आयतें झुटलाईं कि तू ख़सारे वालों में हो जाएगा बेशक वोह

حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ

जिन पर तेरे रब की बात ठीक पड़ चुकी है[203] ईमान न लाएंगे अगर्चे सब निशानियां उन के पास आएं

حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۹۷﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَاۤ

जब तक दर्दनाक अ़ज़ाब न देख लें[204] तो हुई होती न कोई बस्ती[205] कि ईमान लाती[206] तो उस का ईमान

اِيْمَانُهَاۤ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۭ لَمَّاۤ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي

काम आता हां यूनुस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अ़ज़ाब

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۹۸﴾ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي

दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरत्ने दिया[207] और अगर तुम्हारा रब चाहता ज़मीन में

साथ येह वाक़िआत हो चुके **198 :** इल्म से मुराद यहां या तो तौरैत है जिस के मा'ना में यहूद बाहम इख़्तिलाफ़ करते थे या सय्यिदे आ़लम ﷺ की तशरीफ़ आवरी है कि इस से पहले तो यहूद सब आप के मुक़िर (मानने वाले) और आप की नुबुव्वत पर मुत्तफ़िक़ थे और तौरैत में जो आप की सिफ़ात मज़्कूर थीं उन को मानते थे लेकिन तशरीफ़ आवरी के बा'द इख़्तिलाफ़ करने लगे कुछ ईमान ले आए और कुछ लोगों ने ह़सद व अ़दावत से कुफ़्र किया। एक क़ौल येह है कि इल्म से क़ुरआन मुराद है। **199 :** इस त़रह़ कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! आप पर ईमान लाने वालों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और आप का इन्कार करने वालों को जहन्नम में अ़ज़ाब फ़रमाएगा। **200 :** ब वासित़ा अपने रसूल मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ﷺ के **201 :** या'नी उ़लमाए अहले किताब मिस्ले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और इन के अस्ह़ाब के ताकि वोह तुझ को सय्यिदे आ़लम ﷺ की नुबुव्वत का इत़्मीनान दिलाएं और आप की ना'त व सिफ़त जो तौरैत में मज़्कूर है वोह सुना कर शक रफ़्अ़ (दूर) करें। **फ़ाएदा :** शक इन्सान के नज़्दीक किसी अम्र में दोनों त़रफ़ों का बराबर होना है ख़्वाह इस त़रह़ हो कि दोनों जानिब बराबर क़रीने पाए जाएं ख़्वाह इस त़रह़ कि किसी त़रफ़ भी कोई क़रीना न हो। मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक शक अक़्सामे जहल से है और जहल व शक में आ़म व ख़ास मुत़्लक़ की निस्बत है कि हर एक शक जहल है और हर जहल शक नहीं। **202 :** जो बराहीने लाइह़ा व आयाते वाज़ेह़ा से इतना रोशन है कि इस में शक की मजाल नहीं। (خازن) **203 :** या'नी वोह क़ौल उन पर साबित हो चुका जो लौह़े मह़फ़ूज़ में लिख दिया गया है और जिस की मलाएका ने ख़बर दी है कि येह लोग काफ़िर मरेंगे वोह **204 :** और उस वक़्त का ईमान नाफ़ेअ़ नहीं। **205 :** उन बस्तियों में से जिन को हम ने हलाक किया। **206 :** और इख़्लास के साथ तौबा करती अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले। (مدارک) **207 :** क़ौमे यूनुस का वाक़िआ़ येह है कि नैनवा

الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۹﴾

जितने हैं सब के सब ईमान ले आते[208] तो क्या तुम लोगों को ज़बर दस्ती करोगे यहां तक कि मुसल्मान हो जाएं[209]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى

और किसी जान की कुदरत नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से[210] और अ़ज़ाब उन पर

الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

डालता है जिन्हें अ़क्ल नहीं तुम फ़रमाओ देखो[211] आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है[212]

وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ

और आयतें और रसूल उन्हें कुछ नहीं देते जिन के नसीब में ईमान नहीं तो उन्हें काहे का इन्तिज़ार है

اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ

मगर उन्हीं लोगों के से दिनों का जो उन से पहले हो गुज़रे[213] तुम फ़रमाओ तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا

इन्तिज़ार में हूं[214] फिर हम अपने रसूलों और ईमान वालों को नजात देंगे बात येही है हमारे

अ़लाक़ा मौसिल में येह लोग रहते थे और कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला थे। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उन की त़रफ़ भेजा आप ने बुत परस्ती छोड़ने और ईमान लाने का उन को हुक्म दिया। उन लोगों ने इन्कार किया, ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तक्ज़ीब की, आप ने उन्हें ब हुक्मे इलाही नुज़ूले अ़ज़ाब की ख़बर दी, उन लोगों ने आपस में कहा कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी कोई बात ग़लत़ नहीं कही है देखो अगर वोह रात को यहां रहे जब तो कोई अन्देशा नहीं और अगर उन्हों ने रात यहां न गुज़ारी तो समझ लेना चाहिये कि अ़ज़ाब आएगा। शब में ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام वहां से तशरीफ़ ले गए सुब्ह़ को आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हो गए, आस्मान पर सियाह हैबत नाक अब्र आया और धूआं कसीर जम्अ़ हुवा, तमाम शह्‌र पर छा गया, येह देख कर उन्हें यक़ीन हुवा कि अ़ज़ाब आने वाला है तो उन्हों ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام की जुस्तजू की और आप को न पाया, अब उन्हें और ज़ियादा अन्देशा हुवा तो वोह मअ़ अपनी औ़रतों बच्चों और जानवरों के जंगल को निकल गए, मोटे कपड़े पहने और तौबा व इस्लाम का इज़्हार किया, शोहर से बीबी और मां से बच्चे जुदा हो गए और सब ने बारगाहे इलाही में गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ की और कहा कि जो यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام लाए उस पर हम ईमान लाए और तौबए सादिक़ा (सच्ची तौबा) की, जो मज़ालिम उन से हुए थे उन को दफ़्अ़ किया, पराए माल वापस किये, ह़त्ता कि अगर एक पथ्थर दूसरे का किसी की बुन्याद में लग गया था तो बुन्याद उखाड़ कर पथ्थर निकाल दिया और वापस कर दिया और अल्लाह तआ़ला से इख़्लास के साथ मग़्फ़िरत की दुआ़एं कीं। परवर्दगारे आ़लम ने उन पर रह़्म किया, दुआ़ क़बूल फ़रमाई अ़ज़ाब उठा दिया गया। यहां येह सुवाल पैदा होता है कि जब नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द फ़िरऔ़न का ईमान और उस की तौबा क़बूल न हुई तो क़ौमे यूनुस की तौबा क़बूल फ़रमाने और अ़ज़ाब उठा देने में क्या ह़िक्मत है? उ़लमा ने इस के कई जवाब दिये हैं : **एक** तो येह करमे ख़ास था क़ौमे ह़ज़रते यूनुस के साथ। **दूसरा** जवाब येह है कि फ़िरऔ़न अ़ज़ाब में मुब्तला होने के बा'द ईमान लाया जब उम्मीदे ज़िन्दगानी ही बाक़ी न रही और क़ौमे यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام से जब अ़ज़ाब क़रीब हुवा तो वोह उस में मुब्तला होने से पहले ईमान ले आए और अल्लाह क़ुलूब का जानने वाला है, इख़्लास मन्दों के सिद्क़ो इख़्लास का उस को इ़ल्म है। **208 :** या'नी ईमान लाना सआ़दते अज़ली पर मौक़ूफ़ है, ईमान वोही लाएंगे जिन के लिये तौफ़ीक़े इलाही मुसाइद (मददगार) हो, इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप चाहते हैं कि सब ईमान ले आएं और राहे रास्त इख़्तियार करें फिर जो ईमान से मह़रूम रह जाते हैं उन का आप को ग़म होता है इस का आप को ग़म न होना चाहिये क्यूं कि अज़ल से जो शक़ी है वोह ईमान न लाएगा। **209 :** और ईमान में ज़बर दस्ती नहीं हो सकती क्यूं कि ईमान होता है तस्दीक़ व इक़रार से और जब्रो इक्राह (ज़बर दस्ती करने) से तस्दीक़े क़ल्बी ह़ासिल नहीं होती। **210 :** उस की मशिय्यत से **211 :** दिल की आंखों से और ग़ौर करो कि **212 :** जो अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद पर दलालत करता है। **213 :** मिस्ल नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा। **214 :** तुम्हारी हलाकत और अ़ज़ाब के। रबीअ़ बिन अनस ने कहा कि अ़ज़ाब का ख़ौफ़ दिलाने के बा'द अगली आयत में येह बयान फ़रमाया कि जब अ़ज़ाब वाक़ेअ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला रसूल को और

www.dawateislami.net

عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ع ١٥
जि़म्मए करम पर हक़ है मुसल्मानों को नजात देना तुम फ़रमाओ ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन की त़रफ़ से
دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ
किसी शुबे में हो तो मैं तो उसे न पूजूंगा जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[215] हां उस अल्लाह को पूजता हूं
الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾ لا وَاَنْ اَقِمْ
जो तुम्हारी जान निकालेगा[216] और मुझे हुक्म है कि ईमान वालों में होउं और येह कि अपना मुंह
وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ
दीन के लिये सीधा रख सब से अलग हो कर[217] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना और अल्लाह के सिवा
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ
उस की बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा फिर अगर ऐसा करे तो उस वक़्त तू
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ
ज़ालिमों से होगा और अगर तुझे अल्लाह कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उस का कोई टालने वाला नहीं उस के सिवा और अगर तेरा
يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ
भला चाहे तो उस के फ़ज़्ल का रद करने वाला कोई नहीं[218] उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे
وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है तुम फ़रमाओ ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا
से हक़ आया[219] तो जो राह पर आया वोह अपने भले को राह पर आया[220] और जो बहका वोह अपने
يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ ؕ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ
बुरे को बहका[221] और कुछ मैं तुम पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[222] और उस पर चलो जो तुम पर वह्य होती है और

उन के साथ ईमान लाने वालों को नजात अ़ता फ़रमाता है। 215 : क्यूं कि वोह मख़्लूक़ है इबादत के लाइक़ नहीं। 216 : क्यूं कि वोह क़ादिर, मुख़्तार, इलाहे बरहक़ मुस्तहि़क़े इबादत है। 217 : या'नी मुख़्लिस मोमिन रहो 218 : वोही नफ़्अ़ व ज़रर का मालिक है, तमाम काएनात उसी की मोह़ताज है, वोही हर चीज़ पर क़ादिर और जूदो करम वाला है, बन्दों को उस की त़रफ़ रग़बत और उस का ख़ौफ़ और उसी पर भरोसा और उसी पर ए'तिमाद चाहिये और नफ़्अ़ व ज़रर जो कुछ भी है वोही 219 : ह़क़ से यहां क़ुरआन मुराद है या इस्लाम या सय्यिदे आ़लम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام। 220 : क्यूं कि इस का नफ़्अ़ उसी को पहुंचेगा। 221 : क्यूं कि इस का वबाल उसी पर है। 222 : कि तुम पर जब्र करूं

www.dawateislami.net

اصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع

सब्र करो[223] यहां तक कि **अल्लाह** हुक्म फ़रमाए[224] और वोह सब से बेहतर हुक्म फ़रमाने वाला है[225]

اٰيَاتُهَا ١٢٣ | ١١ سُوْرَةُ هُوْدٍ مَكِّيَّةٌ ٥٢ | رُكُوْعَاتُهَا ١٠

सूरए हूद मक्किय्या है, इस में एक सो तेईस आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ قف كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾ لا

येह एक किताब है जिस की आयतें हिक्मत भरी हैं[2] फिर तफ़्सील की गईं[3] हिक्मत वाले ख़बरदार की त़रफ़ से

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾ لا وَّاَنِ

कि बन्दगी न करो मगर **अल्लाह** की बेशक मैं तुम्हारे लिये उस की त़रफ़ से डर और ख़ुशी सुनाने वाला हूं और येह कि

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना (फ़ाएदा) देगा[4] एक ठहराए

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِیْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّیْۤ اَخَافُ

वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को[5] उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा[6] और अगर मुंह फेरो तो मैं तुम पर

223 : कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब और उन की ईज़ा पर 224 : मुश्रिकीन से क़िताल करने और किताबियों से जिज़्या लेने का। 225 : कि उस के हुक्म में ख़त़ा व ग़लत़ का एह़तिमाल नहीं और वोह बन्दों के असरार व मख़्फ़ी ह़ालात सब का जानने वाला है, उस का फ़ैसला दलील व गवाह का मोह़ताज नहीं। 1 : सूरए हूद मक्किय्या है ह़सन व इक्रिमा वग़ैरहुम मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आयत "وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ" के सिवा बाक़ी तमाम सूरत मक्किय्या है। मक़ातिल ने कहा कि आयत "فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ" और "اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ" और "اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ" के इलावा तमाम सूरत मक्की है, इस में दस रुकूअ़ और एक सो तेईस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और नव हज़ार पांच सो सरसठ ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم हुज़ूर पर पीरी के आसार नुमूदार हो गए। फ़रमाया : मुझे सूरए हूद, सूरए वाक़िआ़, सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" और सूरए "اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ" ने बूढ़ा कर दिया। (ترمذی) ग़ालिबन येह इस वज्ह से फ़रमाया कि इन सूरतों में क़ियामत व बअ़्स व ह़िसाब व जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र है। 2 : जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा : "تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ"। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि "اُحْكِمَتْ" के मा'ना येह हैं कि इन की नज़्म मोह़कम व उस्तुवार की गई। इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि इस में नक़्स व ख़लल राह नहीं पा सकता वोह बिनाए मोह़कम है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कोई किताब इन की नासिख़ नहीं जैसा कि येह दूसरी किताबों और शरीअ़तों की नासिख़ हैं। 3 : और सूरत सूरत और आयत आयत जुदा जुदा ज़िक्र की गई या अ़लाह़दा अ़लाह़दा नाज़िल हुई या अ़क़ाइद व अह़काम व मवाइज़ व क़िसस और ग़ैबी ख़बरें इन में ब तफ़्सील बयान फ़रमाई गईं 4 : उ़म्रे दराज़ और ऐ़शे वसीअ़ व रिज़्क़े कसीर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़्फ़ार करना दराज़िये उ़म्र व कशाइशे रिज़्क़ के लिये बेहतर अ़मल है। 5 : जिस ने दुन्या में आ'माले फ़ाज़िला किये हों और उस की त़ाअ़ात व ह़सनात ज़ियादा हों 6 : उस को जन्नत में ब क़दरे आ'माल दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : आयत के मा'ना येह हैं कि जिस ने **अल्लाह** के लिये अ़मल किया, **अल्लाह** तआ़ला आयिन्दा के लिये उसे अ़मले नेक व त़ाअ़त की तौफ़ीक़ देता है।

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ③ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

बड़े दिन[7] के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करता हूं तुम्हें अल्लाह ही की त़रफ़ फिरना है[8] और वोह हर शै पर

قَدِيْرٌ ④ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا

क़ादिर है[9] सुनो वोह अपने सीने दोहरे करते (मुंह छुपाते) हैं कि अल्लाह से पर्दा करें[10] सुनो

حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ

जिस वक़्त वोह अपने कपड़ों से सारा बदन ढांप लेते हैं उस वक़्त भी अल्लाह उन का छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है

اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑤

बेशक वोह दिलों की बात जानने वाला है

7 : या'नी रोज़े क़ियामत 8 : आख़िरत में वहां नेकियों और बदियों की जज़ा व सज़ा मिलेगी। 9 : दुन्या में रोज़ी देने पर भी, मौत देने पर भी, मौत के बा'द ज़िन्दा करने और सवाब व अ़ज़ाब पर भी। 10 **शाने नुज़ूल :** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अख़्नस बिन शरीक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई येह बहुत शीरीं गुफ़्तार शख़्स था, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم के सामने आता तो बहुत ख़ुशामद की बातें करता और दिल में बुग़्ज़ो अ़दावत छुपाए रखता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि वोह अपने सीनों में अ़दावत छुपाए रखते हैं जैसे कपड़े की तह में कोई चीज़ छुपाई जाती है, एक क़ौल येह है कि बा'ज़े मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم का सामना होता तो सीना और पीठ झुकाते और सर नीचा करते चेहरा छुपा लेते ताकि उन्हें रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم देख न पाएं इस पर येह आयत नाज़िल हुई। बुख़ारी ने अफ़्राद में एक ह़दीस रिवायत की, कि मुसल्मान बौलो बराज़ व मुजामअ़त के वक़्त अपने बदन खोलने से शरमाते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह से बन्दे का कोई ह़ाल छुपा ही नहीं है लिहाज़ा चाहिये कि वोह शरीअ़त की इजाज़तों पर आ़मिल रहे।

www.dawateislami.net

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا

और ज़मीन पर चलने वाला कोई[11] ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो[12] और जानता है कि कहां ठहरेगा[13]

وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

और कहां सिपुर्द होगा[14] सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब[15] में है और वोही है जिस ने आस्मानों और

الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ

ज़मीन को छ[6] दिन में बनाया और उस का अ़र्श पानी पर था[16] कि तुम्हें आज़्माए[17] तुम में

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ

किस का काम अच्छा है और अगर तुम फ़रमाओ कि बेशक तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे

لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا

तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे कि येह[18] तो नहीं मगर खुला जादू[19] और अगर हम उन से

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰۤى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ

अ़ज़ाब[20] कुछ गिनती की मुद्दत तक हटा दें तो ज़रूर कहेंगे किस चीज़ ने उसे रोका है[21] सुन लो जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۸﴾ ع

उन पर आएगा उन से फेरा न जाएगा और उन्हें घेर लेगा वोही अ़ज़ाब जिस की हंसी उड़ाते थे

وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ

और अगर हम आदमी को अपनी किसी रहमत का मज़ा दें[22] फिर उसे उस से छीन लें ज़रूर वोह बड़ा ना उम्मीद

كَفُوْرٌ ﴿۹﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ

नाशुक्रा है[23] और अगर हम उसे ने'मत का मज़ा दें उस मुसीबत के बा'द जो उसे पहुंची तो ज़रूर कहेगा कि बुराइयां

11 : जानदार हो **12 :** या'नी वोह अपने फ़ज़्ल से हर जानदार के रिज़्क़ का कफ़ील है। **13 :** या'नी उस के जाए सुकूनत को जानता है। **14 :** सिपुर्द होने की जगह से या मदफ़न मुराद है या मकान या मौत या क़ब्र। **15 :** या'नी लौहे महफ़ूज़ **16 :** या'नी अ़र्श के नीचे पानी के सिवा और कोई मख़्लूक़ न थी। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि अ़र्श और पानी आस्मानों और ज़मीनों की पैदाइश से क़ब्ल पैदा फ़रमाए गए। **17 :** या'नी आस्मान व ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात को पैदा किया जिस में तुम्हारे मनाफ़ेअ़ व मसालेह़ (भलाइयां) हैं ताकि तुम्हें आज़्माइश में डाले और ज़ाहिर हो कि कौन शुक्र गुज़ार, मुत्तक़ी, फ़रमां बरदार है और **18 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में मरने के बा'द उठाए जाने का बयान है येह **19 :** या'नी बातिल और धोका। **20 :** जिस का वा'दा किया है **21 :** वोह अ़ज़ाब क्यूं नाज़िल नहीं होता? क्या देर है? कुफ़्फ़ार का येह जल्दी करना बराहे तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा है। **22 :** सिह्हत व अम्न का या वुस्अ़ते रिज़्क़ व दौलत का **23 :** कि दोबारा उस ने'मत के पाने से मायूस हो जाता है और **अल्लाह** के फ़ज़्ल से अपनी उम्मीद क़त्अ़ (ख़त्म) कर लेता है और सब्रो रिज़ा पर साबित नहीं रहता और गुज़श्ता ने'मत की नाशुक्री करता है।

www.dawateislami.net

السَّيِّاٰتُ عَنِّیْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا

मुझ से दूर हुई बेशक वोह ख़ुश होने वाला बड़ाई मारने वाला है[24] मगर जिन्हों ने सब्र किया और

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿۱۱﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ

अच्छे काम किये[25] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या जो वह्य तुम्हारी त़रफ़

مَا یُوْحٰۤى اِلَیْكَ وَ ضَآىٕقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ یَّقُوْلُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ

होती है उस में से कुछ तुम छोड़ दोगे और उस पर दिलतंग होगे[26] इस बिना पर कि वोह कहते हैं इन के साथ

كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ نَذِیْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

कोई ख़ज़ाना क्यूं न उतरा या इन के साथ कोई फ़िरिश्ता आता तुम तो डर सुनाने वाले हो[27] और **अल्लाह** हर चीज़ पर

وَّكِیْلٌ ﴿۱۲﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَیٰتٍ

मुहाफ़िज़ है क्या[28] येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे जी से बना लिया तुम फ़रमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ[29]

وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۳﴾ فَاِلَّمْ

और **अल्लाह** के सिवा जो मिल सकें[30] सब को बुला लो अगर सच्चे हो[31] तो ऐ मुसल्मानो

یَسْتَجِیْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

अगर वोह तुम्हारी इस बात का जवाब न दे सकें तो समझ लो कि वोह **अल्लाह** के इल्म ही से उतरा है और येह कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا وَ زِیْنَتَهَا نُوَفِّ

तो क्या अब तुम मानोगे[32] जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो[33] हम इस में

24 : बजाए शुक्र गुज़ार होने और हक़्क़े ने'मत अदा करने के। **25 :** मुसीबत पर साबिर और ने'मत पर शाकिर रहे **26 :** तिरमिज़ी ने कहा कि इस्तिफ़्हाम "नह्य" के मा'ना में है या'नी आप की त़रफ़ जो वह्य होती है वोह सब आप उन्हें पहुंचाएं और दिलतंग न हों। येह तब्लीग़े रिसालत की ताकीद है बा वुजूदे कि **अल्लाह** तआला जानता है कि उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم अदाए रिसालत में कमी करने वाले नहीं और उस ने इन को इस से मा'सूम फ़रमाया है। इस ताकीद में नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर भी है और कुफ़्फ़ार की मायूसी भी कि उन का इस्तिहज़ा तब्लीग़ के काम में मुख़िल नहीं हो सकता। **शाने नुज़ूल :** अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या मख़्ज़ूमी ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप सच्चे रसूल हैं और आप का ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है तो उस ने आप पर ख़ज़ाना क्यूं नहीं उतारा? या आप के साथ कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा? जो आप की रिसालत की गवाही देता, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **27 :** तुम्हें क्या परवाह अगर कुफ़्फ़ार न मानें या तमस्ख़ुर करें। **28 :** कुफ़्फ़ारे मक्का क़ुरआने करीम की निस्बत **29 :** क्यूं कि इन्सान अगर ऐसा कलाम बना सकता है तो इस के मिस्ल बनाना तुम्हारे मक़्दूर से बाहर न होगा! तुम भी अ़रब हो फ़सीह़ो बलीग़ हो कोशिश करो। **30 :** अपनी मदद के लिये **31 :** इस में कि येह कलाम इन्सान का बनाया हुवा है। **32 :** और यक़ीन रखोगे कि येह **अल्लाह** की त़रफ़ से है, या'नी ए'जाज़े क़ुरआन देख लेने के बा'द ईमान व इस्लाम पर साबित रहो। **33 :** और अपनी दून हिम्मती (ग़फ़्लत) से आख़िरत पर नज़र न रखता हो।

www.dawateislami.net

إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾ أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ
उन का पूरा फल दे देंगे[34] और इस में कमी न देंगे येह हैं वोह जिन के लिये
لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوا
आख़िरत में कुछ नहीं मगर आग और अकारत गया जो कुछ वहां करते थे और नाबूद (बरबाद) हुए जो उन के
يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ
अ़मल थे[35] तो क्या वोह जो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हो[36] और उस पर अल्लाह की त़रफ़ से गवाह आए[37] और उस
قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ
से पहले मूसा की किताब[38] पेश्वा और रह़मत वोह इस पर[39] ईमान लाते हैं और जो इस का मुन्किर हो
بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ إِنَّهُ الْحَقُّ
सारे गुरौहों में[40] तो आग उस का वा'दा है तो ऐ सुनने वाले तुझे कुछ उस में शक न हो बेशक वोह ह़क़ है
مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
तेरे रब की त़रफ़ से लेकिन बहुत आदमी ईमान नहीं रखते और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُونَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ
झूट बांधे[41] वोह अपने रब के हुज़ूर पेश किये जाएंगे[42] और गवाह कहेंगे येह हैं
الَّذِينَ كَذَبُوا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِينَ ﴿١٨﴾ الَّذِينَ
जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला था अरे ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत[43] जो

34 : और जो आ'माल उन्हों ने त़लबे दुन्या के लिये किये हैं उस का अज्र सिह़ह़तो दौलत, वुस्अ़ते रिज़्क़, कस्रते औलाद वग़ैरा से दुन्या ही में पूरा कर देंगे। **35 शाने नुज़ूल :** ज़ह़्ह़ाक ने कहा कि येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में है कि वोह अगर सिलए रेह़मी करें या मोह़ताजों को दें या किसी परेशान ह़ाल की मदद करें या इस त़रह़ की कोई और नेकी करें तो अल्लाह तआ़ला वुस्अ़ते रिज़्क़ वग़ैरा से उन के अ़मल की जज़ा दुन्या ही में दे देता है और आख़िरत में उन के लिये कोई ह़िस्सा नहीं। एक क़ौल येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सवाबे आख़िरत के तो मो'तक़िद न थे और जिहादों में माले ग़नीमत ह़ासिल करने के लिये शामिल होते थे। **36 :** वोह उस की मिस्ल हो सकता है जो दुन्या की ज़िन्दगी और इस की आराइश चाहता हो, ऐसा नहीं, इन दोनों में अ़ज़ीम फ़र्क़ है। रोशन दलील से वोह दलीले अ़क़्ली मुराद है जो इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर दलालत करे और उस शख़्स से जो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हो वोह यहूद मुराद हैं जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम। **37 :** और उस की सिह़ह़त की गवाही दे। येह गवाह क़ुरआने मजीद है। **38 :** या'नी तौरैत। **39 :** या'नी क़ुरआन पर **40 :** ख़्वाह कोई भी हों। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जान है! इस उम्मत में जो कोई भी है यहूदी हो या नसरानी जिस को भी मेरी ख़बर पहुंचे और वोह मेरे दीन पर ईमान लाए बिग़ैर मर जाए, वोह ज़रूर जहन्नमी है। **41 :** और उस के लिये शरीक व औलाद बताए। इस आयत से साबित होता है कि अल्लाह तआ़ला पर झूट बोलना बद तरीन ज़ुल्म है। **42 :** रोज़े क़ियामत और उन से उन के आ'माल दरयाफ़्त किये जाएंगे और अम्बिया व मलाएका उन पर गवाही देंगे। **43 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन

www.dawateislami.net

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस में कजी चाहते हैं और वोही आख़िरत के

كٰفِرُوْنَ ۝١٩ اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ

मुन्किर हैं वोह थकाने वाले नहीं ज़मीन में[44] और न अल्लाह से जुदा

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ وقف لازم

उन के कोई हिमायती[45] उन्हें अज़ाब पर अज़ाब होगा[46] वोह न सुन सकते

السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ

थे और न देखते[47] वोही हैं जिन्हों ने अपनी जान घाटे में डाली और

ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ

उन से खोई गईं जो बातें जोड़ते थे ख़्वाह न ख़्वाह (यक़ीनन) वोही आख़िरत में सब से

الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى

ज़ियादा नुक़्सान में हैं[48] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और अपने रब की तरफ़

رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ

रुजूअ़ लाए वोह जन्नत वाले हैं वोह उस में हमेशा रहेंगे दोनों फ़रीक़[49] का हाल ऐसा है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا

जैसे एक अन्धा और बहरा और दूसरा देखता और सुनता[50] क्या इन दोनों का हाल एक सा है[51] तो क्या

تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٤ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ ۫ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ ع ٢

तुम ध्यान नहीं करते और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा[52] कि मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर

को तमाम ख़ल्क़ के सामने कहा जाएगा कि येह वोह हैं जिन्हों ने अपने रब पर झूट बोला, ज़ालिमों पर ख़ुदा की ला'नत, इस तरह़ वोह तमाम ख़ल्क़ के सामने रुस्वा किये जाएंगे। **44 :** अल्लाह को। अगर वोह उन पर अ़ज़ाब करना चाहे क्यूं कि वोह उस के क़ब्ज़े और उस की मिल्क में हैं, न उस से भाग सकते हैं न बच सकते हैं। **45 :** कि उन की मदद करें और उन्हें उस के अ़ज़ाब से बचाएं। **46 :** क्यूं कि उन्हों ने लोगों को राहे ख़ुदा से रोका और मरने के बा'द उठने का इन्कार किया। **47 :** क़तादा ने कहा कि वोह ह़क़ सुनने से बहरे हो गए तो कोई ख़ैर की बात सुन कर नफ़्अ़ नहीं उठाते और न वोह आयाते क़ुदरत को देख कर फ़ाएदा उठाते हैं। **48 :** कि उन्हों ने बजाए जन्नत के जहन्नम को इख़्तियार किया। **49 :** या'नी काफ़िर और मोमिन **50 :** काफ़िर उस की मिस्ल है जो न देखे न सुने, येह नाक़िस है और मोमिन उस की मिस्ल है जो देखता भी है और सुनता भी है, वोह कामिल है ह़क़ व बातिल में इम्तियाज़ रखता है। **51 :** हरगिज़ नहीं **52 :** उन्हों ने क़ौम से फ़रमाया।

مُّبِیۡنٌ ﴿ۙ۲۵﴾ اَنۡ لَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّا اللّٰہَ ؕ اِنِّیۡۤ اَخَافُ عَلَیۡکُمۡ عَذَابَ یَوۡمٍ

सुनाने वाला हूं कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बेशक मैं तुम पर एक मुसीबत वाले दिन के अ़ज़ाब से

اَلِیۡمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ الۡمَلَاُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡ قَوۡمِہٖ مَا نَرٰىکَ اِلَّا بَشَرًا

डरता हूं[53] तो उस की क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए थे बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते

مِّثۡلَنَا وَ مَا نَرٰىکَ اتَّبَعَکَ اِلَّا الَّذِیۡنَ ہُمۡ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاۡیِ ۚ وَ

हैं[54] और हम नहीं देखते कि तुम्हारी पैरवी किसी ने की हो मगर हमारे कमीनों ने[55] सरसरी नज़र से[56] और

مَا نَرٰی لَکُمۡ عَلَیۡنَا مِنۡ فَضۡلٍۭ بَلۡ نَظُنُّکُمۡ کٰذِبِیۡنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ یٰقَوۡمِ

हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते[57] बल्कि हम तुम्हें[58] झूटा ख़याल करते हैं बोला ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَیۡتُمۡ اِنۡ کُنۡتُ عَلٰی بَیِّنَۃٍ مِّنۡ رَّبِّیۡ وَ اٰتٰىنِیۡ رَحۡمَۃً مِّنۡ عِنۡدِہٖ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[59] और उस ने मुझे अपने पास से रह़मत बख़्शी[60]

فَعُمِّیَتۡ عَلَیۡکُمۡ ؕ اَنُلۡزِمُکُمُوۡہَا وَ اَنۡتُمۡ لَہَا کٰرِہُوۡنَ ﴿۲۸﴾ وَ یٰقَوۡمِ لَاۤ اَسۡـَٔلُکُمۡ

तो तुम उस से अन्धे रहे क्या हम उसे तुम्हारे गले चपेट दें और तुम बेज़ार हो[61] और ऐ क़ौम मैं तुम से कुछ इस पर[62]

عَلَیۡہِ مَالًا ؕ اِنۡ اَجۡرِیَ اِلَّا عَلَی اللّٰہِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ

माल नहीं मांगता[63] मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[64]

اِنَّہُمۡ مُّلٰقُوۡا رَبِّہِمۡ وَ لٰکِنِّیۡۤ اَرٰىکُمۡ قَوۡمًا تَجۡہَلُوۡنَ ﴿۲۹﴾ وَ یٰقَوۡمِ مَنۡ

बेशक वोह अपने रब से मिलने वाले हैं[65] लेकिन मैं तुम को निरे जाहिल लोग पाता हूं[66] और ऐ क़ौम

53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام चालीस साल के बा'द मब्ऊ़स हुए और नव सो पचास साल अपनी क़ौम को दा'वत फ़रमाते रहे और तूफ़ान के बा'द साठ बरस दुन्या में रहे तो आप की उ़म्र एक हज़ार पचास साल की हुई, इस के इलावा उ़म्र शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ और भी क़ौल हैं। (خازن) 54 : इस गुमराही में बहुत सी उम्मतें मुब्तला हो कर इस्लाम से मह़रूम रहीं, क़ुरआने पाक में जा ब जा उन के तज़्किरे हैं। इस उम्मत में भी बहुत से बद नसीब सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बशर कहते और हमसरी का ख़याले फ़ासिद रखते हैं। अल्लाह तआ़ला उन्हें गुमराही से बचाए। 55 : कमीनों से मुराद उन की वोह लोग थे जो उन की नज़र में ख़सीस (अदना व मा'मूली) पेशे रखते थे और ह़क़ीक़त येह है कि उन का येह क़ौल जहले ख़ालिस था क्यूं कि इन्सान का मर्तबा दीन की इत्तिबाअ़ और रसूल की फ़रमां बरदारी से है मालो मन्सब व पेशे को इस में दख़्ल नहीं। दीनदार नेक सीरत पेशावर को नज़रे ह़क़ारत से देखना और ह़क़ीर जानना जाहिलाना फ़े'ल है। 56 : या'नी बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के। 57 : माल और रियासत में, उन का येह क़ौल भी जह्ल था क्यूं कि अल्लाह के नज़्दीक बन्दे के लिये ईमान व त़ाअ़त सबबे फ़ज़ीलत है न कि माल व रियासत। 58 : नुबुव्वत के दा'वे में और तुम्हारे मुत्तबिईन को इस की तस्दीक़ में 59 : जो मेरे दा'वे के सिद्क़ पर गवाह हो 60 : या'नी नुबुव्वत अ़त़ा की 61 : और इस ह़ुज्जत को ना पसन्द रखते हो। 62 : या'नी तब्लीग़े रिसालत पर 63 : कि तुम पर उस का अदा करना गिरां हो 64 : येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने उन की इस बात के जवाब में फ़रमाया था जो वोह लोग कहते थे कि ऐ नूह़ ! रज़ील (ह़क़ीर व कमीन) लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हमें आप की मजलिस में बैठने से शर्म न आए। 65 : और उस के क़ुर्ब से फ़ाइज़ होंगे तो मैं उन्हें कैसे निकाल दूं 66 : ईमानदारों को रज़ील कहते हो और

يَنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ

मुझे अल्लाह से कौन बचा लेगा अगर मैं उन्हें दूर करूंगा तो क्या तुम्हें ध्यान नहीं और मैं तुम से नहीं कहता कि

عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ

मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कि मैं ग़ैब जान लेता हूं और न येह कहता हूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[67] और मैं उन्हें नहीं कहता

لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ

जिन को तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं कि हरगिज़ उन्हें अल्लाह कोई भलाई न देगा अल्लाह ख़ूब जानता है जो

اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّيْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۳۱ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

उन के दिलों में है[68] ऐसा करूं[69] तो ज़रूर मैं ज़ालिमों में से हूं[70] बोले ऐ नूह तुम हम से झगड़े

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۳۲ قَالَ

और बहुत ही झगड़े तो ले आओ जिस[71] का हमें वा'दा दे रहे हो अगर सच्चे हो बोला

اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝۳۳ وَلَا يَنْفَعُكُمْ

वोह तो अल्लाह तुम पर लाएगा अगर चाहे और तुम थका न सकोगे[72] और तुम्हें मेरी नसीहत

نُصْحِيْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ

नफ़्अ़ न देगी अगर मैं तुम्हारा भला चाहूं जब कि अल्लाह तुम्हारी गुमराही चाहे वोह

उन की क़द्र नहीं करते और नहीं जानते कि वोह तुम से बेहतर हैं। **67 :** हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की क़ौम ने आप की नुबुव्वत में तीन शुब्हे किये थे : **एक** शुबा तो येह कि "مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ" कि हम तुम में अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं पाते या'नी तुम मालो दौलत में हम से ज़ियादा नहीं हो। इस के जवाब में हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने फ़रमाया : "لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ" या'नी मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, तो तुम्हारा येह ए'तिराज़ बिल्कुल बे महल है। मैं ने कभी माल की फ़ज़ीलत नहीं जताई और दुन्यवी दौलत का तुम को मुतवक़्क़ेअ़ नहीं किया और अपनी दा'वत को माल के साथ वाबस्ता नहीं किया फिर तुम येह कहने के कैसे मुस्तहिक़ हो कि हम तुम में कोई माली फ़ज़ीलत नहीं पाते और तुम्हारा येह ए'तिराज़ महज़ बेहूदा है। **दूसरा** शुबा क़ौमे नूह ने येह किया था : "مَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ" या'नी हम नहीं देखते कि तुम्हारी किसी ने पैरवी की हो मगर हमारे कमीनों ने सरसरी नज़र से। मत़लब येह था कि वोह भी सिर्फ़ ज़ाहिर में मोमिन हैं बातिन में नहीं। इस के जवाब में हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब जानता हूं तो मेरे अह़काम ग़ैब पर मब्नी हैं ताकि तुम्हें येह ए'तिराज़ करने का मौक़अ़ होता। जब मैं ने येह कहा ही नहीं, तो ए'तिराज़ बे महल है, और शरअ़ में ज़ाहिर ही का ए'तिबार है, लिहाज़ा तुम्हारा ए'तिराज़ बिल्कुल बे जा है नीज़ "لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ" फ़रमाने में क़ौम पर एक लत़ीफ़ ता'रीज़ भी है कि किसी के बातिन पर हुक्म करना उस का काम है जो ग़ैब का इल्म रखता हो। मैं ने तो इस का दा'वा नहीं किया बा वुजूदे कि नबी हूं ! तुम किस त़रह़ कहते हो कि वोह दिल से ईमान नहीं लाए। **तीसरा** शुबा उस क़ौम का येह था कि "مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا" या'नी हम तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं। इस के जवाब में फ़रमाया कि मैं तुम से येह नहीं कहता कि मैं फ़िरिश्ता हूं या'नी मैं ने अपनी दा'वत को अपने फ़िरिश्ता होने पर मौक़ूफ़ नहीं किया था कि तुम्हें येह ए'तिराज़ का मौक़अ़ मिलता कि जताते तो थे वोह अपने आप को फ़िरिश्ता और थे बशर लिहाज़ा तुम्हारा येह ए'तिराज़ भी बातिल है। **68 :** नेकी या बदी, इख़्लास या निफ़ाक़। **69 :** या'नी अगर मैं उन के ईमाने ज़ाहिर को झुटला कर उन के बातिन पर इल्ज़ाम लगाऊं और उन्हें निकाल दूं **70 :** और मैं ज़ालिमों में से हरगिज़ नहीं हूं तो ऐसा कभी न करूंगा। **71 :** अ़ज़ाब **72 :** उस को अ़ज़ाब करने से, या'नी न उस अ़ज़ाब बِحَمْدِاللّٰه

www.dawateislami.net

رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ

तुम्हारा रब है और उसी की त़रफ़ फिरोगे[73] क्या येह कहते हैं कि इन्हों ने इसे अपने जी से बना लिया[74] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने बना लिया होगा

ع ۳ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَ اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ اُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ

तो मेरा गुनाह मुझ पर है[75] और मैं तुम्हारे गुनाह से अलग हूं और नूह़ को वह़्य हुई कि तुम्हारी

يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾

क़ौम से मुसल्मान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं[76]

وَ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَ لَا تُخَاطِبْنِیْ فِی الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ

और कश्ती बना हमारे सामने[77] और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना[78] वोह ज़रूर

مُّغْرَقُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ يَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَ كُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا

डुबाए जाएंगे[79] और नूह़ कश्ती बनाता है और जब उस की क़ौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर

مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ فَسَوْفَ

हंसते[80] बोला अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे[81] जैसा तुम हंसते हो[82] तो अब

تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۳۹﴾

जान जाओगे किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करे[83] और उतरता है वोह अ़ज़ाब जो हमेशा रहे[84]

को रोक सकोगे न उस से बच सकोगे। **73 :** आख़िरत में वोही तुम्हारे आ'माल का बदला देगा। **74 :** और इस त़रह़ ख़ुदा के कलाम और उस के अह़काम मानने से गुरेज़ करते हैं और उस के रसूल पर बोहतान उठाते हैं और उन की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत करते हैं जिन का सिद्क़ (सच्चा होना) बराहीने बय्यिना और ह़ुज्जते क़विय्या (इन्तिहाई वाज़ेह़ और मज़्बूत़ दलाइल) से साबित हो चुका है, लिहाज़ा अब उन से **75 :** ज़रूर इस का वबाल आएगा लेकिन "بِحَمْدِاللّٰہ" मैं सादिक़ हूं, तो तुम समझ लो कि तुम्हारी तक्ज़ीब का वबाल तुम पर पड़ेगा। **76 :** या'नी कुफ़्र और आप की तक्ज़ीब और आप की ईज़ा क्यूं कि अब आप के आ'दा से इन्तिक़ाम लेने का वक़्त आ गया। **77 :** हमारी ह़िफ़ाज़त में, हमारी ता'लीम से **78 :** या'नी उन की शफ़ाअ़त और दफ़्ए अ़ज़ाब की दुआ़ न करना क्यूं कि उन का ग़र्क़ मुक़द्दर हो चुका है **79 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ब हुक्मे इलाही साल के दरख़्त बोए, बीस साल में येह दरख़्त तय्यार हुए। इस अ़र्से में मुत़्लक़न कोई बच्चा पैदा न हुवा, इस से पहले जो बच्चे पैदा हो चुके थे वोह बालिग़ हो गए और उन्हों ने भी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दा'वत क़बूल करने से इन्कार कर दिया और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कश्ती बनाने में मश्ग़ूल हुए। **80 :** और कहते ऐ नूह़ ! क्या करते हो ? आप फ़रमाते : ऐसा मकान बनाता हूं जो पानी पर चले। येह सुन कर हंसते क्यूं कि आप कश्ती जंगल में बनाते थे जहां दूर दूर तक पानी न था और वोह लोग तमस्ख़ुर (मज़ाक़) से येह भी कहते थे कि पहले तो आप नबी थे अब बढ़ई हो गए। **81 :** तुम्हें हलाक होता देख कर **82 :** कश्ती देख कर। मरवी है कि येह कश्ती दो साल में तय्यार हुई, इस की लम्बाई तीन सो गज़, चौड़ाई पचास गज़, ऊंचाई तीस गज़ थी, इस में और भी अक़्वाल हैं। इस कश्ती में तीन दरजे बनाए गए थे। त़ब्क़ए ज़ेरीं (निचली मन्ज़िल) में वुह़ूश (जंगली जानवर) और दरिन्दे (चीर फाड़ करने वाले जानवर) और हवाम (ज़मीन पर रींगने वाले जानवर) और दरमियानी त़बक़े में चौपाए वग़ैरा, और त़ब्क़ए आ'ला में ख़ुद ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और आप के साथी और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का जसदे मुबारक जो औ़रतों और मर्दों के दरमियान ह़ाइल था और खाने वग़ैरा का सामान था। परिन्दे भी ऊपर ही के त़ब्क़े में थे। (خازن ومدارک) **83 :** दुन्या में और वोह अ़ज़ाबे ग़र्क़ है। **84 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُۙ قُلْنَا احْمِلْ فِیْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَیْنِ

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया[85] और तन्नूर उबला[86] हम ने फ़रमाया कश्ती में सुवार कर ले हर जिन्स में से एक जोड़ा

اثْنَیْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَیْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ اٰمَنَؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ

नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है[87] उन के सिवा अपने घर वालों और बाक़ी मुसल्मानों को और उस के साथ मुसल्मान न थे

اِلَّا قَلِیْلٌ ۝۴۰ وَ قَالَ ارْكَبُوْا فِیْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَاؕ اِنَّ

मगर थोड़े[88] और बोला इस में सुवार हो[89] अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना[90] बेशक

قرء حفص بفتح الميم وامالة الراء ١٢

رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝۴۱ وَ هِیَ تَجْرِیْ بِهِمْ فِیْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ قف وَ نَادٰى

मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़[91] और नूह ने

نُوْحُ-ِ ابْنَهٗ وَ كَانَ فِیْ مَعْزِلٍ یّٰبُنَیَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَ لَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِیْنَ ۝۴۲

अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से कनारे था[92] ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो[93]

قَالَ سَاٰوِیْۤ اِلٰى جَبَلٍ یَّعْصِمُنِیْ مِنَ الْمَآءِؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْیَوْمَ مِنْ

बोला अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वोह मुझे पानी से बचा लेगा कहा आज अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई बचाने वाला

اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَۚ وَ حَالَ بَیْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِیْنَ ۝۴۳

नहीं मगर जिस पर वोह रह़्म करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया[94]

وَ قِیْلَ یٰۤاَرْضُ ابْلَعِیْ مَآءَكِ وَ یٰسَمَآءُ اَقْلِعِیْ وَ غِیْضَ الْمَآءُ وَ قُضِیَ

और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम

85 : अ़ज़ाब व हलाक का **86 :** और पानी ने उस में से जोश मारा। तन्नूर से या रूए ज़मीन मुराद है या येही तन्नूर जिस में रोटी भी पकाई जाती है। इस में भी चन्द क़ौल है : एक क़ौल येह है कि वोह तन्नूर पथ्थर का था, ह़ज़रते ह़व्वा का जो आप को तर्के में पहुंचा था और वोह या शाम में था या हिन्द में और तन्नूर का जोश मारना अ़ज़ाब आने की अ़लामत थी। **87 :** या'नी उन के हलाक का हुक्म हो चुका है और उन से मुराद आप की बीबी वाइला जो ईमान न लाई थी और आप का बेटा कन्आन है। चुनान्चे ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन सब को सुवार किया। जानवर आप के पास आते थे और आप का दाहना हाथ नर पर और बायां मादा पर पड़ता था और आप सुवार करते जाते थे। **88 :** मुक़ातिल ने कहा कि कुल मर्द व औ़रत बहत्तर 72 थे और इस में और अक़्वाल भी हैं, सह़ीह़ ता'दाद अल्लाह जानता है उन की ता'दाद किसी सह़ीह़ ह़दीस में वारिद नहीं है। **89 :** येह कहते हुए कि **90 :** इस में ता'लीम है कि बन्दे को चाहिये जब कोई काम करना चाहे तो उस को ''بِسْمِ اللّٰه'' पढ़ कर शुरूअ़ करे ताकि उस काम में बरकत हो और वोह सबबे फ़लाह़ हो। ज़ह़ह़ाक ने कहा कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام चाहते थे कि कश्ती चले तो ''بِسْمِ اللّٰه'' फ़रमाते थे कश्ती चलने लगती थी और जब चाहते थे कि ठहर जाए ''بِسْمِ اللّٰه'' फ़रमाते थे ठहर जाती थी। **91 :** चालीस शबो रोज़ आस्मान से मींह बरसता रहा और ज़मीन से पानी उबलता रहा यहां तक कि तमाम पहाड़ ग़र्क़ हो गए। **92 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام से जुदा था, आप के साथ सुवार न हुवा था। **93 :** कि हलाक हो जाएगा। येह लड़का मुनाफ़िक़ था, अपने वालिद पर अपने आप को मुसल्मान ज़ाहिर करता था और बातिन में काफ़िरों के साथ मुत्तफ़िक़ था। (خزائن) **94 :** जब तूफ़ान अपनी निहायत (इन्तिहा) पर पहुंचा और कुफ़्फ़ार ग़र्क़ हो चुके तो हुक्मे इलाही आया।

www.dawateislami.net

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَ

हुवा और कश्ती[95] कोहे जूदी पर ठहरी[96] और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग और

نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِیْ مِنْ اَهْلِیْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ

नूह़ ने अपने रब को पुकारा अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है[97] और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है

وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِیْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ یٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَیْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ

और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला[98] फ़रमाया ऐ नूह़ वोह तेरे घर वालों में नहीं[99] बेशक उस के

عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ﳓ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّیْۤ اَعِظُكَ اَنْ

काम बड़े ना लाइक़ हैं तो मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इ़ल्म नहीं[100] मैं तुझे नसीह़त फ़रमाता हूं कि

تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَیْسَ

नादान न बन अ़र्ज़ की ऐ रब मेरे मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वोह चीज़ मांगूं जिस का

لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۴۷﴾ قِیْلَ

मुझे इ़ल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्शे और रह़्म न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक़्सान उठाने वाला) हो जाऊं फ़रमाया गया

یٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَیْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ

ऐ नूह़ कश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ[101] जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर[102] और

اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ یَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ

कुछ गुरौह वोह हैं जिन्हें हम दुन्या बरत्ने देंगे[103] फिर उन्हें हमारी त़रफ़ से दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा[104] येह ग़ैब की ख़बरें हैं

95 : छ[6] महीने तमाम ज़मीन का त़वाफ़ कर के 96 : जो मौसिल या शाम की ह़ुदूद में वाक़ेअ़ है, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام कश्ती में दसवीं रजब को बैठे और दसवीं मुह़र्रम को कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी तो आप ने उस के शुक्र का रोज़ा रखा और अपने तमाम साथियों को भी रोज़े का हुक्म फ़रमाया। 97 : और तू ने मुझ से मेरे और मेरे घर वालों की नजात का वा'दा फ़रमाया है 98 : तो इस में क्या ह़िक्मत है ? शैख़ अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का बेटा कन्आ़न मुनाफ़िक़ था और आप के सामने अपने आप को मोमिन ज़ाहिर करता था अगर वोह अपना कुफ़्र ज़ाहिर कर देता तो आप अल्लाह तआ़ला से उस के नजात की दुआ़ न करते। (مدارک)
99 : इस से साबित हुवा कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है। 100 : कि वोह मांगने के क़ाबिल है या नहीं। 101 : इन बरकतों से आप की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) और आप के मुत्तबिईन की कसरत मुराद है कि ब कसरत अम्बिया और अइम्मए दीन आप की नस्ले पाक से हुए, उन की निस्बत फ़रमाया कि येह बरकात। 102 : मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने कहा कि इन गुरौहों में क़ियामत तक होने वाला हर एक मोमिन दाख़िल है। 103 : इस से ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द पैदा होने वाले काफ़िर गुरौह मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला उन की मीआ़दों तक फ़राख़िये ऐश (लम्बी ज़िन्दगी) और वुस्अ़ते रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा। 104 : आख़िरत में।

نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ؕ

कि हम तुम्हारी त़रफ़ वह्‌य करते हैं[105] उन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस[106] से पहले

فَاصْبِرْ ؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾ ع وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ

तो सब्र कर[107] बेशक भला अन्जाम परहेज़ गारों का[108] और आ़द की त़रफ़ उन के हमक़ौम हूद को[109] कहा

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿۵۰﴾

ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो[110] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तुम तो निरे मुफ़्तरी (बिल्कुल झूटे इल्ज़ाम आइद करने वाले) हो[111]

يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا

ऐ क़ौम मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया[112] तो क्या

تَعْقِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[113] और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो[114] फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर

السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा[115] और जुर्म करते हुए

(हाशिया: معانقة ۹ — الوقف على فاصبر احسن والبق ۱۲ — ع ۴)

105 : येह ख़िताब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाया। **106 :** ख़बर देने **107 :** अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर जैसा कि नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर सब्र किया। **108 :** कि दुन्या में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर और आख़िरत में मुसाब व माजूर (अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़)। **109 :** नबी बना कर भेजा, ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام को ''اَخ'' (भाई) ब ए'तिबारे नसब फ़रमाया गया, इसी लिये ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इस लफ़्ज़ का तरजमा हमक़ौम किया ''اَعْلَی اللّٰہُ مَقَامَہٗ'' (**अल्लाह** तआ़ला इन के दरजात बुलन्द फ़रमाए)। **110 :** उस की तौह़ीद के मो'तक़िद रहो, उस के साथ किसी को शरीक न करो। **111 :** जो बुतों को ख़ुदा का शरीक बताते हो। **112 :** जितने रसूल तशरीफ़ लाए सब ने अपनी क़ौमों से येही फ़रमाया और नसीह़ते ख़ालिसा वोही है जो किसी त़मअ़ से न हो। **113 :** इतना समझ सको कि जो मह्‌ज़ बे ग़रज़ नसीह़त करता है वोह यक़ीनन ख़ैर ख़्वाह और सच्चा है। बात़िल कार जो किसी को गुमराह करता है ज़रूर किसी न किसी ग़रज़ और किसी न किसी मक़्सद से करता है। इस से ह़क़ व बात़िल में ब आसानी तमीज़ की जा सकती है। **114 :** ईमान ला कर। जब क़ौमे आ़द ने ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام की दा'वत क़बूल न की तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौक़ूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़ह़त नुमूदार हुवा और उन की औरतों को बांझ कर दिया, जब येह लोग बहुत परेशान हुए तो ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने वा'दा फ़रमाया कि अगर वोह **अल्लाह** पर ईमान लाएं और उस के रसूल की तस्दीक़ करें और उस के हुज़ूर तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें तो **अल्लाह** तआ़ला बारिश भेजेगा और उन की ज़मीनों को सर सब्ज़ो शादाब कर के ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाएगा और कुव्वत व औलाद देगा। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मरतबा अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से (ह़ज़रते) अमीरे मुआ़विया के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे कोई औलाद नहीं, मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से **अल्लाह** मुझे औलाद दे। आप ने फ़रमाया : इस्तिग़्फ़ार पढ़ा करो। उस ने इस्तिग़्फ़ार की यहां तक कसरत की, कि रोज़ाना सात सो मरतबा इस्तिग़्फ़ार पढ़ने लगा, इस की बरकत से उस शख़्स के दस बेटे हुए। येह ख़बर ह़ज़रते मुआ़विया को हुई तो उन्हों ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रत इमाम से येह क्यूं न दरयाफ़्त किया कि येह अ़मल हुज़ूर ने कहां से फ़रमाया ? दूसरी मरतबा जब उस शख़्स को इमाम से नियाज़ ह़ासिल हुवा तो उस ने येह दरयाफ़्त किया : इमाम ने फ़रमाया कि तू ने ह़ज़रते हूद का क़ौल नहीं सुना जो उन्हों ने फ़रमाया : ''يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ'' (तुम में जितनी कुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा) और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का येह इर्शाद : ''يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ'' (माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) **फ़ाएदा :** कस्रते रिज़्क़ और ह़ुसूले औलाद के लिये इस्तिग़्फ़ार का ब कसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है। **115 :** माल व औलाद के साथ।

www.dawateislami.net

مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْۤ اٰلِهَتِنَا

रू गर्दानी न करो[116] बोले ऐ हूद तुम कोई दलील ले कर हमारे पास न आए[117] और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने

عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ

के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं हम तो येही कहते हैं कि हमारे किसी ख़ुदा की

اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّيْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَ اشْهَدُوْۤا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

तुम्हें बुरी झपट (पकड़) पहुंची[118] कहा मैं अल्लाह को गवाह करता हूं और तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं बेज़ार हूं उन सब से जिन्हें

تُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۵۵﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ

तुम अल्लाह के सिवा उस का शरीक ठहराते हो तुम सब मिल कर मेरा बुरा चाहो[119] फिर मुझे मोहलत न दो[120] मैं ने अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ

भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब कोई चलने वाला नहीं[121] जिस की चोटी उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में न हो[122] बेशक मेरा रब

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۶﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ

सीधे रास्ते पर मिलता है फिर अगर तुम मुंह फेरो तो मैं तुम्हें पहुंचा चुका जो तुम्हारी तरफ़

اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ

ले कर भेजा गया[123] और मेरा रब तुम्हारी जगह औरों को ले आएगा[124] और तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे[125] बेशक

رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۵۷﴾ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ

मेरा रब हर शै पर निगहबान है[126] और जब हमारा हुक्म आया हम ने हूद और उस के

116 : मेरी दा'वत से। 117 : जो तुम्हारे दा'वे की सिह्हत पर दलालत करती और येह बात उन्हों ने बिल्कुल ग़लत् और झूट कही थी। हज़रते हूद عَلَیْهِ السَّلَام ने उन्हें जो मो'जिज़ात दिखाए थे उन सब से मुकर गए। 118 : या'नी तुम जो बुतों को बुरा कहते हो, इस लिये उन्हों ने तुम्हें दीवाना कर दिया, मुराद येह है कि अब जो कुछ कहते हो येह दीवानगी की बातें हैं। (مَعَاذَ اللّٰه) 119 : या'नी तुम और वोह जिन्हें तुम मा'बूद समझते हो सब मिल कर मुझे ज़रर पहुंचाने की कोशिश करो। 120 : मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की और तुम्हारी मक्कारियों की कुछ परवाह नहीं और मुझे तुम्हारी शौकतो कुव्वत से कुछ अन्देशा नहीं, जिन को तुम मा'बूद कहते हो वोह जमाद व बेजान हैं, न किसी को नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न ज़रर, उन की क्या हक़ीक़त कि वोह मुझे दीवाना कर सकते। येह हज़रते हूद عَلَیْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि आप ने एक ज़बर दस्त जब्बार साहिबे कुव्वतो शौकत क़ौम से जो आप के ख़ून की प्यासी और जान की दुश्मन थी, इस त़रह के कलिमात फ़रमाए और अस्लन ख़ौफ़ न किया और वोह क़ौम बा वुजूद इन्तिहाई अ़दावत और दुश्मनी के आप को ज़रर पहुंचाने से आ़जिज़ रही। 121 : इस में बनी आदम और हैवान सब आ गए। 122 : या'नी वोह सब का मालिक है और सब पर ग़ालिब और क़ादिर व मुतसर्रिफ़ है। 123 : और हुज्जत साबित हो चुकी। 124 : या'नी अगर तुम ने ईमान से ए'राज़ किया और जो अहकाम मैं तुम्हारी त़रफ़ लाया हूं उन्हें क़बूल न किया तो अल्लाह तुम्हें हलाक करेगा और बजाए तुम्हारे एक दूसरी क़ौम को तुम्हारे दियार व अम्वाल का वाली बनाएगा जो उस की तौह़ीद के मो'तक़िद हों और उस की इबादत करें। 125 : क्यूं कि वोह इस से पाक है कि उसे कोई ज़रर पहुंच सके, लिहाज़ा तुम्हारे ए'राज़ का जो ज़रर है वोह तुम्हीं को पहुंचेगा। 126 : और किसी का क़ौल, फ़े'ल उस से मख़्फ़ी नहीं। जब क़ौमे हूद नसीहत पज़ीर न हुई तो बारगाहे क़दीरे बरहक़ से उन के अ़ज़ाब का हुक्म नाफ़िज़ हुवा।

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ نَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۵۸﴾ وَ تِلْكَ عَادٌ ۙۗ

साथ के मुसल्मानों को[127] अपनी रहमत फ़रमा कर बचा लिया[128] और उन्हें[129] सख़्त अ़ज़ाब से नजात दी और येह आ़द हैं[130]

جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ عَصَوْا رُسُلَهٗ وَ اتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ

कि अपने रब की आयतों से मुन्किर हुए और उस के रसूलों की ना फ़रमानी की और हर बड़े सरकश हटधर्म के

عَنِيْدٍ ﴿۵۹﴾ وَ اُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا

कहने पर चले और उन के पीछे लगी इस दुन्या में ला'नत और क़ियामत के दिन सुन लो बेशक आ़द

كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ﴿۶۰﴾ ع وَ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ ركوع ٥

अपने रब से मुन्किर हुए अरे दूर हों आ़द हूद की क़ौम और समूद की त़रफ़ उन के हमक़ौम

صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ وقف لازم

सालेह़ को[131] कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो[132] उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[133] उस ने तुम्हें

مِّنَ الْاَرْضِ وَ اسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ

ज़मीन से पैदा किया[134] और इस में तुम्हें बसाया[135] तो उस से मुआफ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक

رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿۶۱﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ

मेरा रब क़रीब है दुआ़ सुनने वाला बोले ऐ सालेह़ इस से पहले तो तुम हम में होनहार मा'लूम होते थे[136]

اَتَنْهٰىنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ

क्या तुम हमें इस से मन्अ़ करते हो कि अपने बाप दादा के मा'बूदों को पूजें और बेशक जिस बात की त़रफ़ हमें बुलाते हो हम उस से एक बड़े धोका डालने वाले

مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ اٰتٰىنِيْ

शक में हैं बोला ऐ मेरी क़ौम भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं और उस ने मुझे

127 : जिन की ता'दाद चार हज़ार थी। 128 : और क़ौमे आ़द को हवा के अ़ज़ाब से हलाक कर दिया 129 : या'नी जैसे मुसल्मानों को अ़ज़ाबे दुन्या से बचाया ऐसे ही आख़िरत के 130 : येह ख़ित़ाब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत को, और تِلْكَ इशारा है क़ौमे आ़द की क़ुबूर व आसार की त़रफ़। मक़्सद येह है कि ज़मीन में चलो इन्हें देखो और इ़ब्रत ह़ासिल करो 131 : भेजा, तो ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से 132 : और उस की वह़दानिय्यत मानो 133 : सिर्फ़ वोही मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है क्यूं कि 134 : तुम्हारे जद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस से पैदा कर के और तुम्हारी नस्ल की अस्ल नुत़्फ़ों के माद्दों को इस से बना कर। 135 : और ज़मीन को तुम से आबाद किया। ज़ह़्ह़ाक ने ''اِسْتَعْمَرَكُمْ'' के मा'ना येह बयान किये हैं कि तुम्हें त़वील उ़म्रें दीं, ह़त्ता कि उन की उ़म्रें तीन सो बरस से ले कर हज़ार बरस तक की हुई। 136 : और हम उम्मीद करते थे कि तुम हमारे सरदार बनोगे क्यूं कि आप कमज़ोरों की मदद करते थे, फ़क़ीरों पर सख़ावत फ़रमाते थे, जब आप ने तौह़ीद की दा'वत दी और बुतों की बुराइयां बयान कीं तो क़ौम की उम्मीदें आप से मुन्क़त़अ़ हो गईं और कहने लगे।

www.dawateislami.net

مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ قف فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ

अपने पास से रहमत बख़्शी[137] तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं[138] तो तुम मुझे सिवा नुक़्सान के कुछ न

تَخْسِيْرٍ ۝۶۳ وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ

बढ़ाओगे[139] और ऐ मेरी क़ौम येह अल्लाह का नाक़ा (ऊंटनी) है तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में

اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝۶۴ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ

खाए और इसे बुरी तरह हाथ न लगाना कि तुम को नज़्दीक अज़ाब पहुंचेगा[140] तो उन्हों ने[141] उस की कूचें काटीं (पाउं काट दिये) तो सालेह ने कहा

تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝۶۵ فَلَمَّا جَآءَ

अपने घरों में तीन दिन और बरत लो (फ़ाएदा उठा लो)[142] येह वा'दा है कि झूटा न होगा[143] फिर जब

اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ

हमारा हुक्म आया हम ने सालेह और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रहमत फ़रमा कर[144] बचा लिया और उस दिन की

يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝۶۶ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ

रुस्वाई से बेशक तुम्हारा रब क़वी इ़ज़्ज़त वाला है और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[145]

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝۶۷ لا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ

तो सुब्ह़ अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए गोया कभी यहां बसे ही न थे सुन लो बेशक समूद

ع ۸ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ۝۶۸ ع وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ

अपने रब से मुन्किर हुए अरे ला'नत हो समूद पर और बेशक हमारे फ़िरिश्ते इब्राहीम के पास[146]

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ۝۶۹

मुज़्दा ले कर आए बोले सलाम कहा[147] सलाम फिर कुछ देर न की, कि एक बछड़ा भुना ले आए[148]

137 : हिक्मत व नुबुव्वत अ़ता की। **138 :** रिसालत की तब्लीग़ और बुत परस्ती से रोकने में। **139 :** या'नी मुझे तुम्हारे ख़सारे का तजरिबा और ज़ियादा होगा। **140 :** समूद ने हज़रते सालेह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मो'जिज़ा तलब किया था (जिस का बयान सूरए आ'राफ़ में हो चुका है)। आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो पथ्थर से ब हुक्मे इलाही नाक़ा पैदा हुवा, येह नाक़ा उन के लिये आयत (निशानी) व मो'जिज़ा था। इस आयत में उस नाक़ा (ऊंटनी) के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम इर्शाद फ़रमाए गए कि इसे ज़मीन में चरने दो और कोई आज़ार (तक्लीफ़) न पहुंचाओ वरना दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगे और मोहलत न पाओगे। **141 :** हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और चहार शम्बा (बुध) को **142 :** या'नी जुमुआ़ तक जो कुछ दुन्या का ऐश करना है कर लो शम्बा (हफ़्ते) को तुम पर अ़ज़ाब आएगा। पहले रोज़ तुम्हारे चेहरे ज़र्द हो जाएंगे, दूसरे रोज़ सुर्ख़ और तीसरे रोज़ या'नी जुमुआ़ को सियाह और शम्बा को अ़ज़ाब नाज़िल हो जाएगा। **143 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा। **144 :** इन बलाओं से **145 :** या'नी होलनाक आवाज़ ने जिस की हैबत से उन के दिल फट गए और वोह सब के सब मर गए। **146 :** सादा रू नौ जवानों की ह़सीन शक्लों में ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام की पैदाइश का **147 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **148 :** मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि ह़ज़रते

فَلَمَّا رَاٰۤ اَیْدِیَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَیْهِ نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةًؕ قَالُوْا

फिर जब देखा कि उन के हाथ खाने की त़रफ़ नहीं पहुंचते उन को ऊपरी (अजनबी) समझा और जी ही जी में उन से डरने लगा बोले

لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍؕ ﴿۷۰﴾ وَ امْرَاَتُهٗ قَآىٕمَةٌ فَضَحِكَتْ

डरिये नहीं हम क़ौमे लूत़ की त़रफ़[149] भेजे गए हैं और उस की बीबी[150] खड़ी थी वोह हंसने लगी

فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ یَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ یٰوَیْلَتٰۤى ءَاَلِدُ

तो हम ने उसे[151] इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी दी और इस्ह़ाक़ के पीछे[152] या'क़ूब की[153] बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा

وَ اَنَا عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِیْ شَیْخًاؕ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عَجِیْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا

और मैं बूढ़ी हूं[154] और येह हैं मेरे शोहर बूढ़े[155] बेशक येह तो अचम्भे (तअ़ज्जुब) की बात है फ़िरिश्ते बोले

اَتَعْجَبِیْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَیْكُمْ اَهْلَ الْبَیْتِؕ

क्या **अल्लाह** के काम का अचम्भा (तअ़ज्जुब) करती हो **अल्लाह** की रह़मत और उस की बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो[156]

اِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِیْمَ الرَّوْعُ وَ جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى

बेशक वोही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ़ ज़ाइल (दूर) हुवा और उसे ख़ुश ख़बरी मिली

یُجَادِلُنَا فِیْ قَوْمِ لُوْطٍؕ ﴿۷۴﴾ اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَحَلِیْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِیْبٌ ﴿۷۵﴾ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ

हम से क़ौमे लूत़ के बारे में झगड़ने लगा[157] बेशक इब्राहीम तह़म्मुल वाला बहुत आहें करने वाला रुजूअ़ लाने वाला है[158] ऐ इब्राहीम

इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات बहुत ही मेहमान नवाज़ थे, बिग़ैर मेहमान के खाना तनावुल न फ़रमाते। उस वक़्त ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि पन्दरह रोज़ से कोई मेहमान न आया था, आप इस ग़म में थे, उन मेहमानों को देखते ही आप ने उन के लिये खाना लाने में जल्दी फ़रमाई, चूंकि आप के यहां गाएं ब कसरत थीं इस लिये बछड़े का भुना हुवा गोश्त सामने लाया गया। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि गाय का गोश्त ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات के दस्तर ख़्वान पर ज़ियादा आता था और आप उस को पसन्द फ़रमाते थे, गाय का गोश्त खाने वाले अगर सुन्नते इब्राहीमी अदा करने की निय्यत करें तो मज़ीद सवाब पाएं। **149 :** अ़ज़ाब करने के लिये **150 :** ह़ज़रते सारह पसे पर्दा **151 :** उस के फ़रज़न्द **152 :** ह़ज़रते इस्ह़ाक़ के फ़रज़न्द **153 :** ह़ज़रते सारह को ख़ुश ख़बरी देने की वज्ह येह थी कि औलाद की ख़ुशी औ़रतों को मर्दों से ज़ियादा होती है और नीज़ येह भी सबब था कि ह़ज़रते सारह के कोई औलाद न थी और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام मौजूद थे, इस बिशारत के ज़िम्न में एक बिशारत येह भी थी कि ह़ज़रते सारह की उ़म्र इतनी दराज़ होगी कि वोह पोते को भी देखेंगी। **154 :** मेरी उ़म्र नव्वे से मुतजाविज़ हो चुकी है। **155 :** जिन की उ़म्र एक सो बीस साल की हो गई है। **156 :** फ़िरिश्तों के कलाम के मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये क्या ''जाए तअ़ज्जुब'' (तअ़ज्जुब की बात) है ! तुम उस घर में हो जो मो'जिज़ात और ख़वारिक़े आ़दात (करामात) और **अल्लाह** तआला की रह़मतों और बरकतों का मौरिद (मक़ामे नुज़ूल) बना हुवा है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि बीबियां अहले बैत में दाख़िल हैं। **157 :** या'नी कलाम व सुवाल करने लगा और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मुजादला (तकरार करना) येह था कि आप ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि क़ौमे लूत़ की बस्तियों में अगर पचास ईमानदार हों तो भी उन्हें हलाक करोगे ? फ़िरिश्तों ने कहा नहीं। फ़रमाया : अगर चालीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप ने फ़रमाया : अगर तीस हों ? उन्हों ने कहा : जब भी नहीं। आप इस त़रह़ फ़रमाते रहे यहां तक कि आप ने फ़रमाया : अगर एक मर्द मुसल्मान मौजूद हो तब हलाक कर दोगे ? उन्हों ने कहा नहीं। तो आप ने फ़रमाया : उस में लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं। इस पर फ़िरिश्तों ने कहा : हमें मा'लूम है जो वहां हैं, हम ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन

www.dawateislami.net

اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ

इस ख़याल में न पड़ बेशक तेरे रब का हुक्म आ चुका और बेशक उन पर अ़ज़ाब आने वाला है

غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾ وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ

कि फेरा न जाएगा और जब लूत़ के पास हमारे फ़िरिश्ते आए[159] उसे उन का ग़म हुवा और उन के सबब दिलतंग

ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَ جَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ

हुवा और बोला येह बड़ी सख़्ती का दिन है[160] और उस के पास उस की क़ौम दौड़ती आई

وَ مِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ

और उन्हें आगे ही से बुरे कामों की आ़दत पड़ी थी[161] कहा ऐ क़ौम येह मेरी क़ौम की बेटियां हैं येह

اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ

तुम्हारे लिये सुथरी हैं तो अल्लाह से डरो[162] और मुझे मेरे मेहमानों में रुस्वा न करो क्या तुम में एक आदमी भी

رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ

नेक चलन नहीं बोले तुम्हें मा'लूम है कि तुम्हारी क़ौम की बेटियों में हमारा कोई ह़क़ नहीं[163] और तुम ज़रूर जानते हो

مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا

जो हमारी ख़्वाहिश है बोला ऐ काश मुझे तुम्हारे मुक़ाबिल ज़ोर होता या किसी मज़बूत़ पाए की पनाह लेता[164] फ़िरिश्ते बोले

के घर वालों को बचाएंगे सिवाए उन की औ़रत के। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मक़्सद येह था कि आप अ़ज़ाब में ताख़ीर चाहते थे ताकि उस बस्ती वालों को कुफ़्र व मआ़सी से बाज़ आने के लिये एक फ़ुरसत और मिल जाए, चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़त में इर्शाद होता है : **158 :** इन सिफ़ात से आप की रिक़्क़ते क़ल्ब और आप की राफ़त व रह़मत मा'लूम होती है जो इस मुबाह़से का सबब हुई। फ़िरिश्तों ने कहा : **159 :** ह़सीन सूरतों में। और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की हैअत और जमाल को देखा तो क़ौम की ख़बासत व बद अ़मली का ख़याल कर के **160 :** मरवी है कि मलाएका को हुक्मे इलाही येह था कि वोह क़ौमे लूत़ को उस वक़्त तक हलाक न करें जब तक कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद उस क़ौम की बद अ़मली पर चार मरतबा गवाही न दें, चुनान्चे जब येह फ़िरिश्ते ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से मिले तो आप ने उन से फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बस्ती वालों का हाल मा'लूम न था ! फ़िरिश्तों ने कहा : इन का क्या हाल है ? आप ने फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि अ़मल के ए'तिबार से रूए ज़मीन पर येह बद तरीन बस्ती है और येह बात आप ने चार मरतबा फ़रमाई, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औ़रत जो काफ़िरा थी निकली और उस ने अपनी क़ौम को जा कर ख़बर दी कि ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام के यहां ऐसे ख़ूबरू और ह़सीन मेहमान आए हैं जिन की मिस्ल अब तक कोई शख़्स नज़र नहीं आया। **161 :** और कुछ शर्मो ह़या बाक़ी न रही थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **162 :** और अपनी बीबियों से तमत्तोअ़ (फ़ाएदा ह़ासिल) करो कि येह तुम्हारे लिये ह़लाल है। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की औ़रतों को जो क़ौम की बेटियां थीं बुज़ुर्गाना शफ़्क़त से अपनी बेटियां फ़रमाया ताकि इस हुस्ने अख़्लाक़ से वोह फ़ाएदा उठाएं और ह़मिय्यत (ग़ैरत) सीखें। **163 :** या'नी हमें उन की त़रफ़ रग़बत नहीं। **164 :** या'नी मुझे अगर तुम्हारे मुक़ाबले की त़ाक़त होती या ऐसा क़बीला रखता जो मेरी मदद करता तो तुम से मुक़ाबला व मुक़ातला करता। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने मकान का दरवाज़ा बन्द कर लिया था और अन्दर से येह गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, क़ौम ने चाहा कि दीवार तोड़े, फ़िरिश्तों ने आप का रन्जो इज़्तिराब देखा तो।

يٰلُوۡطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنۡ يَّصِلُوۡۤا اِلَيۡكَ فَاَسۡرِ بِاَهۡلِكَ بِقِطۡعٍ مِّنَ الَّيۡلِ

ऐ लूत़ हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं[165] वोह तुम तक नहीं पहुंच सकते[166] तो अपने घर वालों को रातों रात ले जाओ

وَلَا يَلۡتَفِتۡ مِنۡكُمۡ اَحَدٌ اِلَّا امۡرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيۡبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمۡ ؕ اِنَّ

और तुम में कोई पीठ फेर कर न देखे[167] सिवाए तुम्हारी औ़रत के उसे भी वोही पहुंचना है जो इन्हें पहुंचेगा[168] बेशक

مَوۡعِدَهُمُ الصُّبۡحُ ؕ اَلَيۡسَ الصُّبۡحُ بِقَرِيۡبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا جَعَلۡنَا

इन का वा'दा सुब्ह़ के वक़्त है[169] क्या सुब्ह़ क़रीब नहीं फिर जब हमारा हुक्म आया हम ने

عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهَا حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۙ مَّنۡضُوۡدٍ ﴿۸۲﴾ ۙ

उस बस्ती के ऊपर को उस का नीचा कर दिया[170] और उस पर कंकर के पथ्थर लगातार बरसाए

مُّسَوَّمَةً عِنۡدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ بِبَعِيۡدٍ ﴿۸۳﴾ ع وَاِلٰى مَدۡيَنَ

النصف ع ۱۵

जो निशान किये हुए तेरे रब के पास हैं[171] और वोह पथ्थर कुछ ज़ालिमों से दूर नहीं[172] और[173] मद्यन की त़रफ़

اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ وَلَا

उन के हमक़ौम शुऐ़ब को[174] कहा ऐ मेरी क़ौम **अल्लाह** को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं[175] और

تَنۡقُصُوا الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ اِنِّىۡۤ اَرٰٮكُمۡ بِخَيۡرٍ وَّاِنِّىۡۤ اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ

नाप और तोल में कमी न करो बेशक मैं तुम्हें आसूदा ह़ाल (मालदार व ख़ुशह़ाल) देखता हूं[176] और मुझे तुम पर

165 : तुम्हारा पाया मज़बूत़ है, हम इन लोगों को अ़ज़ाब करने के लिये आए हैं, तुम दरवाज़ा खोल दो और हमें और इन्हें छोड़ दो **166 :** और तुम्हें कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। ह़ज़रते ने दरवाज़ा खोल दिया, क़ौम के लोग मकान में घुस आए। ह़ज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही अपना बाज़ू उन के मुंह पर मारा सब अन्धे हो गए और ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मकान से निकल कर भागे, उन्हें रास्ता नज़र नहीं आता था और येह कहते जाते थे : हाए हाए लूत़ के घर में बड़े जादूगर हैं, उन्हों ने हमें जादू कर दिया। फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام से कहा : **167 :** इस त़रह़ आप के घर के तमाम लोग चले जाएं **168 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام ने कहा : येह अ़ज़ाब कब होगा ? ह़ज़रते जिब्रील ने कहा : **169 :** ह़ज़रते लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام ने कहा कि मैं तो इस से जल्दी चाहता हूं। ह़ज़रते जिब्रील عَلَيۡهِ السَّلَام ने कहा : **170 :** या'नी उलट दिया इस त़रह़ कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَيۡهِ السَّلَام ने क़ौमे लूत़ के शहर जिस त़ब्क़ए ज़मीन पर थे उस के नीचे अपना बाज़ू डाला और उन पांचों शहरों को जिन में सब से बड़ा सदूम था और उन में चार लाख आदमी बसते थे, इतना ऊंचा उठाया कि वहां के कुत्तों और मुर्ग़ों की आवाज़ें आस्मान पर पहुंचने लगीं और इस आहिस्तगी से उठाया कि किसी बरतन का पानी न गिरा और कोई सोने वाला बेदार न हुवा, फिर उस बुलन्दी से उस को औंधा कर के पलटा **171 :** उन पथ्थरों पर ऐसा निशान था जिस से वोह दूसरों से मुमताज़ थे। क़तादा ने कहा कि उन पर सुर्ख़ ख़ुत़ूत़ थे। ह़सन व सुद्दी का क़ौल है कि उन पर मोहरें लगी हुई थीं और एक क़ौल येह है कि जिस पथ्थर से जिस शख़्स की हलाकत मन्ज़ूर थी उस का नाम उस पथ्थर पर लिखा था। **172 :** या'नी अहले मक्का से। **173 :** हम ने भेजा बाशिन्दगाने शहर **174 :** आप ने अपनी क़ौम से **175 :** पहले तो आप ने तौह़ीद व इबादत की हिदायत फ़रमाई कि वोह तमाम उमूर में सब से अहम है। इस के बा'द जिन आ़दाते क़बीह़ा में वोह मुब्तला थे उस से मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद किया **176 :** ऐसे ह़ाल में आदमी को चाहिये कि ने'मत की शुक्र गुज़ारी करे और दूसरों को अपने माल से फ़ाएदा पहुंचाए न कि उन के ह़ुक़ूक़ में कमी करे, ऐसी ह़ालत में इस ख़ियानत की आ़दत से अन्देशा है कि कहीं इस ने'मत से मह़रूम न कर दिये जाओ।

www.dawateislami.net

عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾ وَ يٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَ الْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَ

घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब का डर है[177] और ऐ मेरी क़ौम नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो और

لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۸۵﴾

लोगों को उन की चीज़ें घटा कर न दो और ज़मीन में फ़साद मचाते न फिरो

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ۬ وَ مَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۸۶﴾

अल्लाह का दिया जो बच रहे वोह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो[178] और मैं कुछ तुम पर निगहबान नहीं[179]

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَاۤ اَوْ اَنْ

बोले ऐ शुऐ़ब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें येह हुक्म देती है कि हम अपने बाप दादा के ख़ुदाओं को छोड़ दें[180] या

نَّفْعَلَ فِیْۤ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿۸۷﴾ قَالَ يٰقَوْمِ

अपने माल में जो चाहें न करें[181] हां जी तुम्हीं बड़े अ़क़्ल मन्द नेक चलन हो कहा ऐ मेरी क़ौम

اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ رَزَقَنِیْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ

भला बताओ तो अगर मैं अपने रब की त़रफ़ से एक रोशन दलील पर हूं[182] और उस ने मुझे अपने पास से अच्छी रोज़ी दी[183]

وَ مَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ

और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस का ख़िलाफ़ करने लगूं[184] मैं तो जहां तक बने संवारना ही

مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَ مَا تَوْفِيْقِیْۤ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿۸۸﴾

चाहता हूं और मेरी तौफ़ीक़ **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़ रुजूअ़ होता हूं

177 : कि जिस से किसी को रिहाई मुयस्सर न हो और सब के सब हलाक हो जाएं, येह भी हो सकता है कि इस दिन के अ़ज़ाब से अ़ज़ाबे आख़िरत मुराद हो। **178 :** या'नी माले ह़राम तर्क करने के बा'द ह़लाल जिस क़दर भी बचे वोही तुम्हारे लिये बेहतर है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि पूरा तोलने और नापने के बा'द जो बचे वोह बेहतर है। **179 :** कि तुम्हारे अफ़्आ़ल पर दारो गीर (मुआख़ज़ा) करूं। उ़लमा ने फ़रमाया कि बा'ज़ अम्बिया को ह़र्ब (जिहाद व क़िताल) की इजाज़त थी जैसे ह़ज़रते मूसा, ह़ज़रते दावूद, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمُ السَّلَام वग़ैरहुम, बा'ज़ वोह थे जिन्हें ह़र्ब (क़िताल) का हुक्म न था, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हीं में से हैं, तमाम दिन वा'ज़ फ़रमाते और शब तमाम नमाज़ में गुज़ारते, क़ौम आप से कहती कि इस नमाज़ से आप को क्या फ़ाएदा ? आप फ़रमाते : नमाज़ ख़ूबियों का हुक्म देती है बुराइयों से मन्अ़ करती है, तो इस पर वोह तमस्ख़ुर से (मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह कहते जो अगली आयत में मज़्कूर है। **180 :** बुत परस्ती न करें **181 :** मत़लब येह था कि हम अपने माल के मुख़्तार हैं, चाहे कम नापें चाहे कम तोलें। **182 :** बसीरत व हिदायत पर **183 :** या'नी नुबुव्वत व रिसालत या माले ह़लाल और हिदायत व मा'रिफ़त, तो येह कैसे हो सकता है कि मैं तुम्हें बुत परस्ती और गुनाहों से मन्अ़ न करूं क्यूं कि अम्बिया इसी लिये भेजे जाते हैं। **184 :** इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَه ने फ़रमाया कि क़ौम ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के ह़लीम व रशीद होने का ए'तिराफ़ किया था और उन का येह कलाम इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़) न था, बल्कि मुद्दआ़ येह था कि आप बा वुजूद ह़िल्म व कमाले अ़क़्ल के हम को अपने माल में अपने ह़स्बे मरज़ी तसर्रुफ़ करने से क्यूं मन्अ़ फ़रमाते हैं ? इस का जवाब जो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया उस का ह़ासिल येह है कि जब तुम मेरे कमाले अ़क़्ल के मो'तरिफ़ हो तो तुम्हें येह समझ लेना चाहिये कि मैं ने अपने लिये जो

www.dawateislami.net

وَ يٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِیْۤ اَنْ یُّصِیْبَكُمْ مِّثْلُ مَاۤ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ

और ऐ मेरी क़ौम तुम्हें मेरी ज़िद येह न कमवा दे (बुरा काम करा दे) कि तुम पर पड़े जो पड़ा था नूह़ की क़ौम या

قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍؕ وَ مَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِیْدٍ ﴿۸۹﴾ وَ اسْتَغْفِرُوْا

हूद की क़ौम या सालेह़ की क़ौम पर और लूत़ की क़ौम तो कुछ तुम से दूर नहीं[185] और अपने रब से

رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَیْهِؕ اِنَّ رَبِّیْ رَحِیْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا یٰشُعَیْبُ مَا

मुआफ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ बेशक मेरा रब मेहरबान मह़ब्बत वाला है बोले ऐ शुऐब

نَفْقَهُ كَثِیْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْنَا ضَعِیْفًاۚ وَ لَوْ لَا رَهْطُكَ

हमारी समझ में नहीं आतीं तुम्हारी बहुत सी बातें और बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं[186] और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता[187]

لَرَجَمْنٰكَ٘ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْنَا بِعَزِیْزٍ ﴿۹۱﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَهْطِیْۤ اَعَزُّ عَلَیْكُمْ

तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इ़ज़्ज़त नहीं कहा ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाव

مِّنَ اللّٰهِؕ وَ اتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِیًّاؕ اِنَّ رَبِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

अल्लाह से ज़ियादा है[188] और उसे तुम ने अपनी पीठ पीछे डाल रखा[189] बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के

مُحِیْطٌ ﴿۹۲﴾ وَ یٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ

बस में है और ऐ क़ौम तुम अपनी जगह अपना काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं अब जाना (जानना) चाहते हो

مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ مَنْ هُوَ كَاذِبٌؕ وَ ارْتَقِبُوْۤا اِنِّیْ مَعَكُمْ

किस पर आता है वोह अ़ज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा और कौन झूटा है[190] और इन्तिज़ार करो[191] मैं भी तुम्हारे साथ

رَقِیْبٌ ﴿۹۳﴾ وَ لَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا شُعَیْبًا وَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

इन्तिज़ार में हूं और जब[192] हमारा हुक्म आया हम ने शुऐब और उस के साथ के मुसल्मानों को अपनी रह़मत फ़रमा कर

बात पसन्द की है वोह वोही होगी जो सब से बेहतर हो और वोह ख़ुदा की तौह़ीद और नाप तोल में तर्के ख़ियानत है, मैं इस का पाबन्दी से आ़मिल हूं तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि येही त़रीक़ा बेहतर है। **185 :** उन्हें कुछ ज़ियादा ज़माना नहीं गुज़रा है न वोह कुछ दूर के रहने वाले थे तो उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल करो। **186 :** कि अगर हम आप के साथ कुछ ज़ियादती करें तो आप में मुदाफ़अ़त की त़ाक़त नहीं। **187 :** जो दीन में हमारा मुवाफ़िक़ है और जिस को हम अ़ज़ीज़ रखते हैं। **188 :** कि **अल्लाह** के लिये तो तुम मेरे क़त्ल से बाज़ न रहे और मेरे कुम्बे की वज्ह से बाज़ रहे और तुम ने **अल्लाह** के नबी का तो एह़तिराम न किया और कुम्बे का एह़तिराम किया। **189 :** और उस के हुक्म की कुछ परवाह न की। **190 :** अपने दआ़वी (दा'वों) में या'नी तुम्हें जल्द मा'लूम हो जाएगा कि मैं ह़क़ पर हूं या तुम और अ़ज़ाबे इलाही से शक़ी की शक़ावत (बद बख़्त की बद बख़्ती) ज़ाहिर हो जाएगी। **191 :** आ़क़िबते अम्र और अन्जामे कार का **192 :** उन के अ़ज़ाब और हलाक के लिये।

www.dawateislami.net

مِنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۴﴾ۙ

बचा लिया और ज़ालिमों को चिंघाड़ ने आ लिया[193] तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿۹۵﴾ ع وَلَقَدْ

गोया कभी वहां बसे ही न थे अरे दूर हों मद्यन जैसे दूर हुए समूद[194] और बेशक

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۶﴾ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

हम ने मूसा को अपनी आयतों[195] और सरीह़ ग़लबे के साथ फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़ भेजा

فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿۹۷﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ

तो वोह फ़िरऔ़न के कहने पर चले[196] और फ़िरऔ़न का काम रास्ती (दुरुस्त व दियानत दारी) का न था[197] अपनी क़ौम के आगे होगा क़ियामत के

الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿۹۸﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ

दिन तो उन्हें दोज़ख़ में ला उतारेगा[198] और वोह क्या ही बुरा घाट उतरने का और उन के पीछे पड़ी इस जहान में

لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿۹۹﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى

ला'नत और क़ियामत के दिन[199] क्या ही बुरा इन्आ़म जो उन्हें मिला येह बस्तियों[200] की ख़बरें हैं

نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿۱۰۰﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْۤا

कि हम तुम्हें सुनाते हैं[201] उन में कोई खड़ी है[202] और कोई कट गई[203] और हम ने उन पर ज़ुल्म न किया बल्कि ख़ुद उन्हों ने[204]

اَنْفُسَهُمْ فَمَاۤ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ

अपना बुरा किया तो उन के मा'बूद जिन्हें[205] अल्लाह के सिवा पूजते थे उन के कुछ काम न

193 : ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हैबत नाक आवाज़ से कहा : "مُوْتُوْا جَمِيْعًا" सब मर जाओ ! इस आवाज़ की दहशत से उन के दम निकल गए और सब मर गए। **194 :** अल्लाह की रह़मत से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कभी दो उम्मतें एक ही अ़ज़ाब में मुब्तला नहीं की गईं बजुज़ ह़ज़रते शुऐ़ब व सालेह़ عَلَيْهِمَا السَّلَام की उम्मतों के, लेकिन क़ौमे सालेह़ को उन के नीचे से होलनाक आवाज़ ने हलाक किया और क़ौमे शुऐ़ब को ऊपर से। **195 :** या'नी मो'जिज़ात **196 :** और कुफ़्र में मुब्तला हुए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाए। **197 :** वोह खुली गुमराही में था क्यूं कि बा वुजूद बशर होने के ख़ुदाई का दा'वा करता था और अ़लानिया ऐसे ज़ुल्म और ऐसी सितम गारियां करता था जिस का शैत़ानी काम होना ज़ाहिर और यक़ीनी है, वोह कहां और ख़ुदाई कहां ! और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रुश्दो ह़क़्क़ानिय्यत थी, आप की सच्चाई की दलीलें, आयाते ज़ाहिरा व मो'जिज़ाते बाहिरा (साफ़ साफ़ आयतें और ज़बर दस्त मो'जिज़ात) वोह लोग मुआ़यना कर चुके थे, फिर भी उन्हों ने आप की इत्तिबाअ़ से मुंह फेरा और ऐसे गुमराह की इत़ाअ़त की, तो जब वोह दुन्या में कुफ़्रो ज़लाल में अपनी क़ौम का पेश्वा था ऐसे ही जहन्नम में उन का इमाम होगा और **198 :** जैसा कि उन्हें दरियाए नील में ला डाला था। **199 :** या'नी दुन्या में भी मल्ऊ़न और आख़िरत में भी मल्ऊ़न। **200 :** या'नी गुज़री हुई उम्मतों **201 :** कि तुम अपनी उम्मत को उन की ख़बरें दो ताकि वोह उन से इ़ब्रत ह़ासिल करें, उन बस्तियों की ह़ालत खेतियों की त़रह़ है कि **202 :** उस के मकानों की दीवारें मौजूद हैं, खन्डर पाए जाते हैं, निशान बाक़ी हैं जैसे कि आ़द व समूद के दियार (बस्तियां)। **203 :** या'नी कटी हुई खेती की त़रह़ बिल्कुल बे नामो निशान हो गई और उस का कोई असर बाक़ी न रहा जैसे कि क़ौमे नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के दियार। **204 :** कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के **205 :** जहल व गुमराही से

www.dawateislami.net

شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ وَ مَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ

आए[206] जब तुम्हारे रब का हुक्म आया और उन[207] से उन्हें हलाक के सिवा कुछ न बढ़ा और ऐसी ही पकड़ है

رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ

तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर बेशक उस की पकड़ दर्दनाक कर्री (सख़्त) है[208] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ

इस में निशानी[209] है उस के लिये जो आख़िरत के अ़ज़ाब से डरे वोह दिन है जिस में सब लोग[210]

النَّاسُ وَ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَ مَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ﴿۱۰۴﴾

इकठ्ठे होंगे और वोह दिन हाज़िरी का है[211] और हम उसे[212] पीछे नहीं हटाते मगर एक गिनी हुई मुद्दत के लिये[213]

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّ سَعِيْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا

जब वोह दिन आएगा कोई बे हुक्मे ख़ुदा बात न करेगा[214] तो उन में कोई बद बख़्त है और कोई ख़ुश नसीब[215] तो

الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ شَهِيْقٌ ۙ﴿۱۰۶﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

वोह जो बद बख़्त हैं वोह तो दोज़ख़ में हैं वोह उस में गधे की तरह रैंकें (चीख़ें चिल्लाएं)गे वोह उस में रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ

जब तक आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[216] बेशक तुम्हारा रब

لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ

जब जो चाहे करे और वोह जो ख़ुश नसीब हुए वोह जन्नत में हैं हमेशा उस में रहेंगे जब तक

السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿۱۰۸﴾

आस्मान व ज़मीन रहें मगर जितना तुम्हारे रब ने चाहा[217] येह बख़्शिश है कभी ख़त्म न होगी

206 : और एक शम्मा (थोड़ा सा भी) अ़ज़ाब दफ़्अ़ न कर सके। **207 :** बुतों और झूटे मा'बूदों **208 :** तो हर ज़ालिम को चाहिये कि इन वाक़िआत से इब्रत पकड़े और तौबा में जल्दी करे। **209 :** इब्रत व नसीहत **210 :** अगले पिछले हिसाब के लिये **211 :** जिस में आस्मान वाले और ज़मीन वाले सब हाज़िर होंगे। **212 :** या'नी रोज़े क़ियामत को **213 :** या'नी जो मुद्दत हम ने बक़ाए दुन्या के लिये मुक़र्रर फ़रमाई है उस के तमाम होने तक। **214 :** तमाम ख़ल्क़ साकित होगी, क़ियामत का दिन बहुत त़वील होगा, उस में अह़वाल मुख़्तलिफ़ होंगे, बा'ज़ अह़वाल में तो शिद्दते हैबत से किसी को बे इज़्ने इलाही बात ज़बान पर लाने की क़ुदरत न होगी और बा'ज़ अह़वाल में इज़्न दिया जाएगा कि लोग इज़्न (इजाज़त) से कलाम करेंगे और बा'ज़ अह़वाल में होल व दहशत कम होगी उस वक़्त लोग अपने मुआमलात में झगड़ेंगे और अपने मुक़द्दमात पेश करेंगे। **215 :** शक़ीक़ बल्ख़ी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने फ़रमाया : सआ़दत की पांच अ़लामतें हैं : (1) दिल की नरमी (2) कस्रते गिर्या (3) दुन्या से नफ़रत (4) उम्मीदों का कोताह होना (5) हया। और बद बख़्ती की अ़लामतें भी पांच चीज़ें हैं : (1) दिल की सख़्ती (2) आंख की ख़ुश्की या'नी अ़दमे गिर्या (न रोना) (3) दुन्या की रग़बत (4) दराज़ उम्मीदें (5) बे हयाई। **216 :** इतना और ज़ियादा रहेंगे और

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ

तो ऐ सुनने वाले धोके में न पड़ उस से जिसे येह काफ़िर पूजते हैं[218] येह वैसा ही पूजते हैं जैसा पहले

اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَ اِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿۱۰۹﴾ وَ لَقَدْ

इन के बाप दादा पूजते थे[219] और बेशक हम इन का हिस्सा इन्हें पूरा फेर देंगे जिस में कमी न होगी और बेशक

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ

हम ने मूसा को किताब दी[220] तो उस में फूट पड़ गई[221] अगर तुम्हारे रब की एक बात[222] पहले न हो चुकी होती

لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۱۰﴾ وَ اِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ

तो जभी उन का फ़ैसला कर दिया जाता[223] और बेशक वोह उस की त़रफ़ से[224] धोका डालने वाले शक में हैं[225] और बेशक जितने हैं[226] एक एक को

رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۱۱۱﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَاۤ اُمِرْتَ وَ

तुम्हारा रब उस का अ़मल पूरा भर देगा उसे उन के कामों की ख़बर है[227] तो क़ाइम रहो[228] जैसा तुम्हें हुक्म है और

مَنْ تَابَ مَعَكَ وَ لَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾ وَ لَا تَرْكَنُوْۤا

जो तुम्हारे साथ रुजूअ़ लाया है[229] और ऐ लोगो सरकशी न करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है और ज़ालिमों की त़रफ़

اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ

न झुको[230] कि तुम्हें आग छूएगी और **अल्लाह** के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती नहीं[231]

इस ज़ियादती की कोई इन्तिहा नहीं, तो मा'ना येह हुए कि हमेशा रहेंगे, कभी इस से रिहाई न पाएंगे। (جلالین) **217 :** इतना और ज़ियादा रहेंगे। इस ज़ियादती की कुछ इन्तिहा नहीं इस से हमेशगी मुराद है चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : **218 :** बेशक येह इस बुत परस्ती पर अ़ज़ाब दिये जाएंगे जैसे कि पहली उम्मतें मुब्तलाए अ़ज़ाब हुईं। **219 :** और तुम्हें मा'लूम हो चुका कि उन का क्या अन्जाम होगा। **220 :** या'नी तौरैत। **221 :** बा'ज़े उस पर ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। **222 :** कि इन के ह़िसाब में जल्दी न फ़रमाएगा। मख़्लूक़ के ह़िसाब व जज़ा का दिन रोज़े क़ियामत है। **223 :** और दुन्या ही में गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब किये जाते। **224 :** या'नी आप की उम्मत के कुफ़्फ़ार क़ुरआने करीम की त़रफ़ से। **225 :** जिस ने उन की अ़क़्लों को ह़ैरान कर दिया है। **226 :** तमाम ख़ल्क़, तस्दीक़ करने वाले हों या तक्ज़ीब करने वाले रोज़े क़ियामत **227 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। इस में नेकों और तस्दीक़ करने वालों के लिये तो बिशारत है कि वोह नेकी की जज़ा पाएंगे और काफ़िरों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये वईद है कि वोह अपने अ़मल की सज़ा में गिरिफ़्तार होंगे। **228 :** अपने रब के हुक्म और उस के दीन की दा'वत पर **229 :** और उस ने तुम्हारा दीन क़बूल किया है, वोह दीन व त़ाअ़त पर क़ाइम रहे। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : सुफ़्यान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे दीन में एक ऐसी बात बता दीजिये कि फिर किसी से दरयाफ़्त करने की ह़ाजत न रहे। फ़रमाया : "اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ" कह और क़ाइम रह। **230 :** "किसी की त़रफ़ झुकना" उस के साथ मेल मह़ब्बत रखने को कहते हैं, अबुल आ़लिया ने कहा कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों के आ'माल से राज़ी न हो। सुद्दी ने कहा : उन के साथ मुदाहनत (बा वुजूदे क़ुदरत उन के सामने दीन में पिलपिला पन इख़्तियार) न करो। क़तादा ने कहा : मुशरिकीन से न मिलो। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ख़ुदा के ना फ़रमानों के साथ या'नी काफ़िरों और बे दीनों और गुमराहों के साथ मेलजोल, रस्मो राह, मवद्दत (प्यार) व मह़ब्बत, उन की हां में हां मिलाना, उन की ख़ुशामद में रहना मम्नूअ़ है। **231 :** कि तुम्हें उस के अ़ज़ाब से बचा सके। येह ह़ाल तो उन का है जो ज़ालिमों से रस्मो राह मेल व मह़ब्बत रखें और इसी से उन का ह़ाल क़ियास करना चाहिये जो ख़ुद ज़ालिम हैं।

www.dawateislami.net

ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ

फिर मदद न पाओगे और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों[232] और कुछ रात के हिस्सों में[233] बेशक

الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾ ۚ وَاصْبِرْ فَاِنَّ

नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं[234] येह नसीहत है नसीहत मानने वालों को और सब्र करो कि

اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ

अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता तो क्यूं न हुए तुम में से अगली संगतों (क़ौमों) में[235] ऐसे जिन में

اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا

भलाई का कुछ हिस्सा लगा रहा होता कि ज़मीन में फ़साद से रोकते[236] हां उन में थोड़े थे वोही जिन को हम ने नजात

مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَ

दी[237] और ज़ालिम उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जो उन्हें दिया गया[238] और वोह गुनहगार थे और

مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَآءَ

तुम्हारा रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को बे वज्ह हलाक कर दे और उन के लोग अच्छे हों और अगर

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ ۙ اِلَّا مَنْ

तुम्हारा रब चाहता तो सब आदमियों को एक ही उम्मत कर देता[239] और वोह हमेशा इख़्तिलाफ़ में रहेंगे[240] मगर जिन

رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ

पर तुम्हारे रब ने रह़म किया[241] और लोग इसी लिये बनाए हैं[242] और तुम्हारे रब की बात पूरी हो चुकी कि बेशक ज़रूर जहन्नम भर दूंगा

232 : दिन के दो किनारों से सुब्ह़ व शाम मुराद हैं। ज़वाल से क़ब्ल का वक़्त सुब्ह़ में और बा'द का शाम में दाख़िल है। सुब्ह़ की नमाज़ "फ़ज्र" और शाम की नमाज़ "ज़ोहर व अ़स्र" हैं। 233 : और रात के हिस्सों की नमाज़ें "मग़रिब व इशा" हैं। 234 : नेकियों से मुराद या येही पन्जगाना नमाज़ें हैं जो आयत में ज़िक्र हुईं या मुत्लक़ ताअ़तें या "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" पढ़ना। **मस्अला :** आयत से मा'लूम हुवा कि नेकियां सग़ीरा गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा होती हैं ख़्वाह वोह नेकियां नमाज़ हों या सदक़ा या ज़िक्र व इस्तिग़फ़ार या और कुछ। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ दूसरे जुमुआ़ तक और एक रिवायत में है कि रमज़ान दूसरे रमज़ान तक येह सब कफ़्फ़ारा हैं उन गुनाहों के लिये जो इन के दरमियान वाक़ेअ़ हों जब कि आदमी कबीरा गुनाहों से बचे। **शाने नुज़ूल :** एक शख़्स ने किसी औ़रत को देखा और उस से कोई ख़फ़ीफ़ सी ह़रकत बे ह़िजाबी की सरज़द हुई इस पर वोह नादिम हुवा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि सग़ीरा गुनाहों के लिये नेकियों का कफ़्फ़ारा होना क्या ख़ास मेरे लिये है? फ़रमाया : नहीं, सब के लिये। 235 : या'नी पहली उम्मतों में जो हलाक की गईं। 236 : मा'ना येह हैं कि उन उम्मतों में ऐसे अहले ख़ैर नहीं हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते और गुनाहों से मन्अ़ करते, इसी लिये हम ने उन्हें हलाक कर दिया। 237 : वोह अम्बिया पर ईमान लाए, उन के अह़काम पर फ़रमां बरदार रहे और लोगों को फ़साद से रोकते रहे। 238 : और तनअ़्उ़म व तलज़्ज़ुज़ (ऐश व लज़्ज़ात) और ख़्वाहिशात व शहवात के आ़दी हो गए और कुफ़्र व मआ़सी में डूबे रहे। 239 : तो सब एक दीन पर होते 240 : कोई किसी दीन पर कोई किसी पर 241 : वोह दीने ह़क़ पर मुत्तफ़िक़ रहेंगे और इस में इख़्तिलाफ़

www.dawateislami.net

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ

जिन्नों और आदमियों को मिला कर[243] और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें सुनाते हैं

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى

जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं[244] और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया[245] और मुसलमानों को

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا

पन्दो नसीहत[246] और काफ़िरों से फ़रमाओ तुम अपनी जगह काम किये जाओ[247] हम अपना

عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ

काम करते हैं[248] और राह देखो हम भी राह देखते हैं[249] और अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ

ज़मीन के ग़ैब[250] और उसी की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ है तो उस की बन्दगी करो और उस पर भरोसा रखो और तुम्हारा रब

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع

तुम्हारे कामों से ग़ाफ़िल नहीं

اٰيَاتُهَا ١١١ | ١٢ سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ ٥٣ | رُكُوْعَاتُهَا ١٢

सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है, इस में एक सो ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ ۟ اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ

येह रोशन किताब की आयतें हैं[2] बेशक हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा

न करेंगे। **242 :** या'नी इख़्तिलाफ़ वाले इख़्तिलाफ़ के लिये और रह़मत वाले इत्तिफ़ाक़ के लिये। **243 :** क्यूं कि उस को इल्म है कि बात़िल के इख़्तियार करने वाले बहुत होंगे। **244 :** और अम्बिया के ह़ाल और उन की उम्मतों के सुलूक देख कर आप को अपनी क़ौम की ईज़ा का बरदाश्त करना और उस पर सब्र फ़रमाना आसान हो। **245 :** और अम्बिया और उन की उम्मतों के तज़्किरे वाक़ेअ़ के मुत़ाबिक़ बयान हुए जो दूसरी किताबों और दूसरे लोगों को ह़ासिल नहीं या'नी जो वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए वोह ह़क़ भी हैं। **246 :** भी, कि गुज़री हुई उम्मतों के ह़ालात और उन के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करें। **247 :** अ़न्क़रीब इस का नतीजा पा लोगे। **248 :** जिस का हमें हमारे रब ने हुक्म दिया। **249 :** तुम्हारे अन्जामे कार की। **250 :** उस से कुछ छुप नहीं सकता। **1 :** सूरए यूसुफ़ मक्किय्या है इस में बारह रुकूअ़ और एक सो ग्यारह आयतें और एक हज़ार छ[6] सो कलिमे और सात हज़ार एक सो छियासठ ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** उ़लमाए यहूद ने अशराफ़े अ़रब से कहा था कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करो कि औलादे ह़ज़रते या'क़ूब मुल्के शाम से मिस्र में किस त़रह पहुंची और उन के वहां जा कर आबाद होने का क्या सबब हुवा और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का वाक़िआ़

www.dawateislami.net

تَعْقِلُوْنَ ۝۲ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ

कि तुम समझो हम तुम्हें सब से अच्छा बयान सुनाते हैं[3] इस लिये कि हम ने तुम्हारी तरफ़

هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖۗ وَ اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝۳ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ

इस क़ुरआन की वह्‌य भेजी अगर्चे बेशक इस से पहले तुम्हें ख़बर न थी याद करो जब यूसुफ़ ने

لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ

अपने बाप[4] से कहा ऐ मेरे बाप मैं ने ग्यारह तारे और सूरज और चांद देखे उन्हें

لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝۴ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا

अपने लिये सज्दा करते देखा[5] कहा ऐ मेरे बच्चे अपना ख़्वाब अपने भाइयों से न कहना[6] कि वोह तेरे साथ कोई चाल

لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝۵ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ

चलेंगे[7] बेशक शैतान आदमी का खुला दुश्मन है[8] और इसी तरह तुझे तेरा रब चुन लेगा[9]

क्या है ? इस पर येह सूरए मुबारका नाज़िल हुई। **2 :** जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर और मिन इन्दिल्लाह (**अल्लाह** की तरफ़ से) होना वाज़ेह और मआनी अहले इल्म के नज़्दीक ग़ैर मुश्तबह हैं और इस में हलाल व हराम हुदूद व अहकाम साफ़ बयान फ़रमाए गए हैं और एक क़ौल येह है कि इस में मुतक़द्दिमीन के अहवाल रोशन तौर पर मज़्कूर हैं और हक़ व बातिल को मुमताज़ कर दिया गया है। **3 :** जो बहुत से अजाइब व ग़राइब और हिक्मतों और इब्रतों पर मुश्तमिल है और इस में दीन व दुन्या के बहुत फ़वाइद और सलातीन व रिआया और उलमा के अहवाल और औरतों के ख़साइस और दुश्मनों की ईज़ाओं पर सब्र और उन पर क़ाबू पाने के बा'द उन से तजावुज़ करने का नफ़ीस बयान है, जिस से सुनने वाले में नेक सीरती और पाकीज़ा ख़साइल पैदा होते हैं। साहिबे बहरुल हक़ाइक़ ने कहा कि इस बयान का अहसन होना इस सबब से है कि येह क़िस्सा इन्सान के अहवाल के साथ कमाले मुशाबहत रखता है, अगर यूसुफ़ से दिल को और या'क़ूब से रूह को और राहील से नफ़्स को, बिरादराने यूसुफ़ से क़वी हवास को ता'बीर किया जाए और तमाम क़िस्से को इन्सानों के हालात से मुताबक़त दी जाए, चुनान्चे उन्हों ने वोह मुताबक़त बयान भी की है जो यहां ब नज़रे इख़्तिसार दर्ज नहीं की जा सकती। **4 :** हज़रते या'क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِمُ السَّلَام **5 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़्वाब देखा कि आस्मान से ग्यारह सितारे उतरे और उन के साथ सूरज और चांद भी हैं, उन सब ने आप को सज्दा किया। येह ख़्वाब शबे जुमुआ को देखा, येह रात शबे क़द्र थी। सितारों की ता'बीर आप के ग्यारह भाई हैं और सूरज आप के वालिद और चांद आप की वालिदा या ख़ाला, आप की वालिदए माजिदा का नाम राहील है। सुद्दी का क़ौल है कि चूंकि राहील का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये क़मर से आप की ख़ाला मुराद हैं और सज्दा करने से तवाज़ोअ़ करना और मुतीअ़ होना मुराद है और एक क़ौल येह है कि हक़ीक़तन सज्दा ही मुराद है क्यूं कि उस ज़माने में सलाम की तरह सज्दए तहिय्यत (ता'ज़ीमी सज्दा) था। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्र शरीफ़ उस वक़्त बारह साल की थी और सात और सतरह के क़ौल भी आए हैं। हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बहुत ज़ियादा महब्बत थी इस लिये उन के साथ उन के भाई हसद करते थे और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इस पर मुत्तलअ़ थे इस लिये जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह ख़्वाब देखा तो हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **6 :** क्यूं कि वोह इस की ता'बीर को समझ लेंगे। हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि **अल्लाह** तआला हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नुबुव्वत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमाएगा और दारैन की ने'मतें और शरफ़ इनायत करेगा इस लिये आप को भाइयों के हसद का अन्देशा हुवा और आप ने फ़रमाया : **7 :** और तुम्हारी हलाकत की कोई तदबीर सोचेंगे। **8 :** उन को कैद व हसद पर उभारेगा। इस में ईमा (इशारा) है कि बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अगर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये ईज़ा व ज़रर पर इक़्दाम करेंगे तो इस का सबब वस्वसए शैतान होगा। (خازن) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छा ख़्वाब **अल्लाह** की तरफ़ से है, चाहिये कि उस को मुहिब से बयान किया जावे और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से है जब कोई देखने वाला वोह ख़्वाब देखे तो चाहिये कि अपनी बाईं तरफ़ तीन मरतबा थुत्कारे और येह पढ़े : ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرُّؤْيَا'' **9 :** इज्तिबा या'नी **अल्लाह** तआला का किसी बन्दे को

وَ يُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اٰلِ

और तुझे बातों का अन्जाम निकालना सिखाएगा[10] और तुझ पर अपनी ने'मत पूरी करेगा और या'क़ूब के

يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

घर वालों पर[11] जिस त़रह़ तेरे पहले दोनों बाप दादा इब्राहीम और इस्ह़ाक़ पर पूरी की[12] बेशक तेरा रब

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۠(۶) لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ (۷) اِذْ

इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है बेशक यूसुफ़ और उस के भाइयों में[13] पूछने वालों के लिये निशानियां हैं[14] जब

قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا

बोले[15] कि ज़रूर यूसुफ़ और उस का भाई[16] हमारे बाप को हम से ज़ियादा प्यारे हैं और हम एक जमाअ़त हैं[17] बेशक हमारे बाप

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ (۸) ۚۖ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ

सराह़तन इन की मह़ब्बत में डूबे हुए हैं[18] यूसुफ़ को मार डालो या कहीं ज़मीन में फेंक आओ[19] कि तुम्हारे बाप का मुंह सिर्फ़ तुम्हारी ही

बरगुज़ीदा कर लेना या'नी चुन लेना, इस के मा'ना येह हैं कि किसी बन्दे को फ़ैज़े रब्बानी के साथ मख़्सूस करे जिस से उस को त़रह़ त़रह़ के करामात व कमालात बे सअ़्यो मेह़नत ह़ासिल हों। येह मर्तबा अम्बिया के साथ ख़ास है और उन की बदौलत उन के मुक़र्रबीन, सिद्दीक़ीन व शुहदा व सालिह़ीन भी इस ने'मत से सरफ़राज़ किये जाते हैं। **10 :** इ़ल्मो ह़िक्मत अ़त़ा करेगा और कुतुबे साबिक़ा और अह़ादीसे अम्बिया के ग़वामिज़ कश्फ़ (भेद ज़ाहिर) फ़रमाएगा और मुफ़स्सिरीन ने इस से ता'बीरे ख़्वाब भी मुराद ली है। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ता'बीरे ख़्वाब के बड़े माहिर थे। **11 :** नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमा कर, जो आ'ला मनासिब में से है और ख़ल्क़ के तमाम मन्सब इस से फ़रोतर (कमतर) हैं और सल्त़नतें दे कर दीन व दुन्या की ने'मतों से सरफ़राज़ कर के। **12 :** कि उन्हें नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस ने'मत से मुराद येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नारे नमरूद से ख़लासी दी और अपना ख़लील बनाया और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते या'क़ूब और अस्बात़ इनायत किये। **13 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पहली बीबी लया बिन्ते लयान आप के मामूं की बेटी हैं, उन से आप के छ[6] फ़रज़न्द हुए : रूबील, शम्ऊ़न, लावी, यहूज़ा, ज़बूलून, यश्जुर और चार बेटे ह़रम (बांदियों) से हुए : दान, नफ़्ताली, जाद, आशिर, इन की माएं ज़ुल्फ़ा और बुल्हा। "लया" के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इन की बहन राह़ील से निकाह़ फ़रमाया, इन से दो फ़रज़न्द हुए : यूसुफ़, बिन्यामीन। येह ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के बारह साह़िब ज़ादे हैं। इन्हीं को "अस्बात़" कहते हैं। **14 :** पूछने वालों से यहूद मुराद हैं जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ह़ाल और औलादे ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ित़्त़ए कन्आ़न से सर ज़मीने मिस्र की त़रफ़ मुन्तक़िल होने का सबब दरयाफ़्त किया था। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़ालात बयान फ़रमाए और यहूद ने उन को तौरैत के मुत़ाबिक़ पाया तो उन्हें ह़ैरत हुई कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किताबें पढ़ने और उ़लमा व अह़बार की मजलिस में बैठने और किसी से कुछ सीखने के बिग़ैर इस क़दर सह़ीह़ वाक़िआ़त कैसे बयान फ़रमाए! येह दलील है कि आप ज़रूर नबी हैं और क़ुरआने पाक ज़रूर वह़्ये इलाही है और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इ़ल्मे क़ुद्स से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इलावा बरीं इस वाक़िए़ में बहुत सी इ़ब्रतें और नसीह़तें और ह़िक्मतें हैं। **15 :** बिरादराने ह़ज़रते यूसुफ़ **16 :** ह़क़ीक़ी बिन्यामीन **17 :** क़वी हैं, ज़ियादा काम आ सकते हैं, ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचा सकते हैं, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام छोटे हैं क्या काम कर सकते हैं? **18 :** और येह बात उन के ख़याल में न आई कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की वालिदा का उन की सिग़र सिनी में इन्तिक़ाल हो गया इस लिये वोह मज़ीद शफ़्क़त व मह़ब्बत के मौरिद (मुस्तह़िक़) हुए और उन में रुश्दो नजाबत (बुज़ुर्गी) की वोह निशानियां पाई जाती हैं जो दूसरे भाइयों में नहीं हैं। येह सबब है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ ज़ियादा मह़ब्बत है। येह सब बातें ख़याल में न ला कर उन्हें अपने वालिदे माजिद का ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा मह़ब्बत फ़रमाना शाक़ गुज़रा और उन्हों ने बाहम मिल कर येह मश्वरा किया कि कोई ऐसी तदबीर सोचनी चाहिये जिस से हमारे वालिद साह़िब को हमारी त़रफ़ ज़ियादा इल्तिफ़ात हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि शैत़ान भी उस मजलिसे मश्वरा में शरीक हुवा और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल की राय दी और गुफ़्तगूए मश्वरा इस त़रह़ हुई **19 :** आबादियों से दूर। बस येही सूरतें हैं जिन से

اَبِیْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِیْنَ ۝۹ قَالَ قَآىِٕلٌ مِّنْهُمْ لَا

तरफ़ रहे[20] और इस के बा'द फिर नेक हो जाना[21] उन में एक कहने वाला[22] बोला

تَقْتُلُوْا یُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِیْ غَیٰبَتِ الْجُبِّ یَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّیَّارَةِ

यूसुफ़ को मारो नहीं[23] और उसे अन्धे (गहरे तारीक) कूंएं में डाल दो कि कोई राह चलता उसे आ कर ले जाए[24]

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِیْنَ ۝۱۰ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰی یُوْسُفَ وَ اِنَّا لَهٗ

अगर तुम्हें करना है[25] बोले ऐ हमारे बाप आप को क्या हुवा कि यूसुफ़ के मुआमले में हमारा ए'तिबार नहीं करते और हम तो इस के

لَنٰصِحُوْنَ ۝۱۱ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا یَّرْتَعْ وَ یَلْعَبْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝۱۲

ख़ैर ख़्वाह हैं कल इसे हमारे साथ भेज दीजिये कि मेवे खाए और खेले[26] और बेशक हम इस के निगहबान हैं[27]

قَالَ اِنِّیْ لَیَحْزُنُنِیْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَ اَخَافُ اَنْ یَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَ اَنْتُمْ

बोला बेशक मुझे रन्ज देगा कि तुम इसे ले जाओ[28] और डरता हूं कि इसे भेड़िया खा ले[29] और तुम

عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ۝۱۳ قَالُوْا لَىِٕنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَ نَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا

इस से बे ख़बर रहो[30] बोले अगर इसे भेड़िया खा जाए और हम एक जमाअ़त हैं जब तो हम किसी

لَّخٰسِرُوْنَ ۝۱۴ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَ اَجْمَعُوْۤا اَنْ یَّجْعَلُوْهُ فِیْ غَیٰبَتِ الْجُبِّ ۚ

मसरफ़ (काम) के नहीं[31] फिर जब उसे ले गए[32] और सब की राय येही ठहरी कि इसे अन्धे (तारीक गहरे) कूंएं में डाल दें[33]

20 : और उन्हें फ़क़त़ तुम्हारी ही महब्बत हो और की नहीं। 21 : और तौबा कर लेना। 22 : या'नी यहूज़ा या रूबील 23 : क्यूं कि क़त्ल गुनाहे अ़ज़ीम है। 24 : या'नी कोई मुसाफ़िर वहां गुज़रे और किसी मुल्क को उन्हें ले जाए, इस से भी ग़रज़ ह़ासिल है कि न वोह यहां रहेंगे न वालिद साहिब की नज़रे इनायत इस त़रह़ उन पर होगी। 25 : इस में इशारा है कि चाहिये तो येह कि कुछ भी न करो लेकिन अगर तुम ने इरादा ही कर लिया है तो बस इतने ही पर इक्तिफ़ा करो। चुनान्चे सब इस पर मुत्तफ़िक़ हो गए और अपने वालिद से 26 : या'नी तफ़रीह़ के ह़लाल मशाग़िल से लुत्फ़ अन्दोज़ हों मिस्ल शिकार और तीर अन्दाज़ी वग़ैरा के। 27 : इन की पूरी निगहदाश्त रखेंगे। 28 : क्यूं कि इन की एक साअ़त की जुदाई गवारा नहीं है। 29 : क्यूं कि इस सर ज़मीन में भेड़िये और दरिन्दे बहुत हैं। 30 : और अपनी सैरो तफ़रीह़ में मश्ग़ूल हो जाओ। 31 : लिहाज़ा इन्हें हमारे साथ भेज दीजिये। तक़्दीरे इलाही यूंही थी ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने इजाज़त दी और वक़्ते रवानगी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़मीस जो ह़रीरे जन्नत (जन्नती रेशम) की थी और जिस वक़्त कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को कपड़े उतार कर आग में डाला गया था ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह क़मीस आप को पहनाई थी, वोह क़मीसे मुबारक ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन से उन के फ़रज़न्द ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंची थी, वोह क़मीस ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ता'वीज़ बना कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के गले में डाल दी। 32 : इस त़रह़ कि जब तक ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हें देखते रहे वहां तक तो वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को अपने कन्धों पर सुवार किये हुए इ़ज़्ज़तो आराम के साथ ले गए, जब दूर निकल गए और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की नज़रों से ग़ाइब हो गए तो उन्हों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अ़दावत थी वोह ज़ाहिर हुई, जिस की त़रफ़ जाते थे वोह मारता था और त़ा'ने देता था और ख़्वाब जो किसी त़रह़ उन्हों ने सुन पाया था उस पर तश्नीअ़ करते थे और कहते थे अपने ख़्वाब को बुला वोह अब तुझे हमारे हाथों छुटाए (छुड़ाए)। जब सख़्तियां ह़द को पहुंचीं तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने यहूज़ा से कहा : ख़ुदा से डर! और इन लोगों को इन ज़ियादतियों से रोक! यहूज़ा ने अपने भाइयों से कहा कि तुम ने मुझ से

www.dawateislami.net

وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَجَآءُوْٓ

और हम ने उसे वह्य भेजी[34] कि ज़रूर तू उन्हें उन का येह काम जता देगा[35] ऐसे वक़्त कि वोह न जानते होंगे[36] और रात हुए

اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

अपने बाप के पास रोते आए[37] बोले ऐ हमारे बाप हम दौड़ करते निकल गए[38] और यूसुफ़ को

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا

अपने अस्बाब के पास छोड़ा तो उसे भेड़िया खा गया और आप किसी त़रह़ हमारा यक़ीन न करेंगे अगर्चे

الثلثة

صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ

हम सच्चे हों[39] और उस के कुरते पर एक झूटा ख़ून लगा लाए[40] कहा बल्कि तुम्हारे दिलों ने

اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ

एक बात तुम्हारे वासिते़ बना ली है[41] तो सब्र अच्छा और **अल्लाह** ही से मदद चाहता हूं उन बातों पर जो तुम बता रहे हो[42] और

क्या अ़ह्द किया था ? याद करो, क़त्ल की नहीं ठहरी थी, तब वोह इन ह़रकतों से बाज़ आए। **33 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया। येह कूंवां कन्आ़न से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर ह़वाली बैतुल मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस के इर्द गिर्द) या सर ज़मीने उरदुन में वाक़ेअ़ था। ऊपर से इस का मुंह तंग था और अन्दर से फ़राख़। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हाथ पाउं बांध कर, क़मीस उतार कर, कूंएं में छोड़ा, जब वोह उस की निस्फ़ गहराई तक पहुंचे तो रस्सी छोड़ दी ताकि आप पानी में गिर कर हलाक हो जाएं। ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ब हुक्मे इलाही पहुंचे और उन्हों ने आप को एक पथ्थर पर बिठा दिया जो कूंएं में था और आप के हाथ खोल दिये और रवानगी के वक़्त ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो ता'वीज़ बना कर आप के गले में डाल दिया था वोह खोल कर आप को पहना दिया, उस से अंधेरे कूंएं में रोशनी हो गई। سُبْحٰنَ اللّٰه अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक अज्सादे शरीफ़ा में क्या बरकत है कि एक क़मीस जो उस बा बरकत बदन से मस हुवा उस ने अंधेरे कूंएं को रोशन कर दिया। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मल्बूसात और आसारे मक़्बूलाने ह़क़ से बरकत ह़ासिल करना शरअ़ से साबित और अम्बिया की सुन्नत है। **34 :** ब वासिते़ ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के या ब त़रीक़े इल्हाम कि आप ग़मगीन न हों हम आप को अ़मीक़ चाह (गहरे कूंएं) से बुलन्द जाह (बुलन्द मर्तबे) पर पहुंचाएंगे और तुम्हारे भाइयों को ह़ाजत मन्द बना कर तुम्हारे पास लाएंगे और उन्हें तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान करेंगे और ऐसा होगा **35 :** जो उन्हों ने इस वक़्त तुम्हारे साथ किया। **36 :** कि तुम यूसुफ़ हो। क्यूं कि उस वक़्त आप की शान ऐसी रफ़ीअ़ होगी, आप उस मस्नदे सल्त़नत व हुकूमत पर होंगे कि वोह आप को न पहचानेंगे। अल ह़ासिल बिरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डाल कर वापस हुए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का क़मीस जो उतार लिया था उस को एक बकरी के बच्चे के ख़ून में रंग कर साथ ले लिया। **37 :** जब मकान के क़रीब पहुंचे उन के चीख़ने की आवाज़ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनी तो घबरा कर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ मेरे फ़रज़न्दो ! क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नुक़्सान हुवा ? उन्हों ने कहा : नहीं। फ़रमाया फिर क्या मुसीबत पहुंची और यूसुफ़ कहां हैं ? **38 :** या'नी हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे कि कौन आगे निकले इस दौड़ में हम दूर निकल गए **39 :** क्यूं कि न हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील व अ़लामत है जिस से हमारी रास्त गोई (सच्चाई) साबित हो। **40 :** और क़मीस को फाड़ना भूल गए। ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام वोह क़मीस अपने चेहरए मुबारक पर रख कर बहुत रोए और फ़रमाया : अ़जब त़रह़ का होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को खा तो गया और क़मीस को फाड़ा तक नहीं। एक रिवायत में येह भी है कि वोह एक भेड़िया पकड़ लाए और ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि येह भेड़िया है जिस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को खाया है आप ने उस भेड़िये से दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह ब हुक्मे इलाही गोया हो कर कहने लगा : हुज़ूर न मैं ने आप के फ़रज़न्द को खाया और न अम्बिया के साथ कोई भेड़िया ऐसा कर सकता है। ह़ज़रत ने उस भेड़िये को छोड़ दिया और बेटों से **41 :** और वाक़िआ़ इस के ख़िलाफ़ है। **42 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन रोज़ कूंएं में रहे, इस के बा'द **अल्लाह** ने उन्हें इस से नजात अ़त़ा फ़रमाई।

www.dawateislami.net

جَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا

एक क़ाफ़िला आया[43] उन्हों ने अपना पानी लाने वाला भेजा[44] तो उस ने अपना डोल डाला[45] बोला आहा कैसी ख़ुशी की बात है येह तो

غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ

एक लड़का है और उसे एक पूंजी बना कर छुपा लिया[46] और अल्लाह जानता है जो वोह करते हैं और भाइयों ने उसे खोटे

بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ ع وَقَالَ

दामों गिनती के रुपों पर बेच डाला[47] और उन्हें उस में कुछ रग़बत न थी[48] और मिस्र के

الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ

जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा वोह अपनी औरत से बोला[49] इन्हें इ़ज़्ज़त से रख[50] शायद इन से हमें नफ़्अ़ पहुंचे[51]

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۡ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ

या इन को हम बेटा बना लें[52] और इसी त़रह़ हम ने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाव (रहने को ठिकाना) दिया और इस लिये कि उसे

تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

बातों का अन्जाम सिखाएं[53] और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब है मगर अक्सर आदमी

43 : जो मद्यन से मिस्र की त़रफ़ जा रहा था वोह रास्ता बहक कर इस जंगल में आ पड़ा जहां आबादी से बहुत दूर येह कूंवां था और इस का पानी खारी था मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बरकत से मीठा हो गया, जब वोह क़ाफ़िले वाले इस कूंएं के क़रीब उतरे तो 44 : जिस का नाम मालिक बिन ज़ुअ़र ख़ुज़ाई था, येह शख़्स मद्यन का रहने वाला था, जब वोह कूंएं पर पहुंचा 45 : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वोह डोल पकड़ लिया और उस में लटक गए, मालिक ने डोल खींचा, आप बाहर तशरीफ़ लाए, उस ने आप का हुस्ने आ़लम अफ़रोज़ देखा तो निहायत ख़ुशी में आ कर अपने यारों को मुज़्दा दिया 46 : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई जो इस जंगल में अपनी बकरियां चराते थे वोह देखभाल रखते थे, आज जो उन्हों ने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में न देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़िले में पहुंचे वहां उन्हों ने मालिक बिन ज़ुअ़र के पास ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को देखा तो वोह उस से कहने लगे कि येह ग़ुलाम है, हमारे पास से भाग आया है, किसी काम का नहीं है, ना फ़रमान है, अगर ख़रीदो तो हम इसे सस्ता बेच देंगे, फिर इसे कहीं इतनी दूर ले जाना कि इस की ख़बर भी हमारे सुनने में न आए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام उन के ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और आप ने कुछ न फ़रमाया। 47 : जिन की ता'दाद बक़ौल क़तादा बीस दिरहम थी। 48 : फिर मालिक बिन ज़ुअ़र और उस के साथी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मिस्र में लाए, उस ज़माने में मिस्र का बादशाह रय्यान बिन वलीद बिन नज़्वान अ़मलीक़ी था और उस ने अपनी इ़नाने सल्त़नत क़ित़्फ़ीर मिस्री के हाथ में दे रखी थी, तमाम ख़ज़ाइन उस के तह़्ते तसर्रुफ़ थे, उस को अ़ज़ीज़े मिस्र कहते थे और वोह बादशाह का वज़ीरे आ'ज़म था, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिये लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आप की त़लब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरूअ़ की ता आंकि आप के वज़्न के बराबर सोना, इतनी ही चांदी, इतना ही मुश्क, इतना ही ह़रीर, क़ीमत मुक़र्रर हुई और आप का वज़्न चार सो रत़्ल था और उ़म्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सतरह साल की थी, अ़ज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया, दूसरे ख़रीदार उस के मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए। 49 : जिस का नाम ज़ुलैख़ा था 50 : क़ियाम गाह नफ़ीस हो, लिबास व ख़ूराक आ'ला क़िस्म की हो। 51 : और वोह हमारे कामों में अपने तदब्बुर व दानाई से हमारे लिये नाफ़ेअ़ और बेहतर मददगार हों और उमूरे सल्त़नत व मुल्क दारी के सर अन्जाम में हमारे काम आएं क्यूं कि रुश्द के आसार इन के चेहरे से नुमूदार हैं। 52 : येह क़ित़्फ़ीर ने इस लिये कहा कि उस के कोई औलाद न थी। 53 : या'नी ख़्वाबों की ता'बीर।

يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی

नहीं जानते और जब अपनी पूरी कुव्वत को पहुंचा[54] हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया[55] और हम ऐसा ही सिला देते हैं

الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۲۲﴾ وَ رَاوَدَتْهُ الَّتِیْ هُوَ فِیْ بَیْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَ غَلَّقَتِ

नेकों को और वोह जिस औ़रत[56] के घर में था उस ने उसे लुभाया कि अपना आपा न रोके[57] और दरवाज़े सब बन्द

الْاَبْوَابَ وَ قَالَتْ هَیْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّیْۤ اَحْسَنَ

कर दिये[58] और बोली आओ तुम्हीं से कहती हूं[59] कहा अल्लाह की पनाह[60] वोह अ़ज़ीज़ तो मेरा रब या'नी परवरिश करने वाला है

مَثْوَایَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ لَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَ هَمَّ بِهَا لَوْ لَاۤ

उस ने मुझे अच्छी त़रह रखा[61] बेशक ज़ालिमों का भला नहीं होता और बेशक औ़रत ने उस का इरादा किया और वोह भी औ़रत का इरादा करता अगर

اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَ الْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ

अपने रब की दलील न देख लेता[62] हम ने यूं ही किया कि उस से बुराई और बे ह़याई को फेर दें[63] बेशक वोह

مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۲۴﴾ وَ اسْتَبَقَا الْبَابَ وَ قَدَّتْ قَمِیْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ

हमारे चुने हुए बन्दों में से है[64] और दोनों दरवाज़े की त़रफ़ दौड़े[65] और औ़रत ने उस का कुरता पीछे से चीर लिया

وَّ اَلْفَیَا سَیِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا

और दोनों को औ़रत का मियां[66] दरवाज़े के पास मिला[67] बोली क्या सज़ा है इस की जिस ने तेरी घर वाली से बदी चाही[68]

54 : शबाब अपनी निहायत (उ़रूज) पर आया और उ़म्र शरीफ़ बक़ौले ज़ह़्ह़ाक बीस साल की और बक़ौले सुद्दी तीस की और बक़ौले कलबी अठ्ठारह और तीस के दरमियान हुई 55 : या'नी इल्मे बा अ़मल और फ़क़ाहत फ़िद्दीन (दीन की कामिल पहचान) इनायत की। बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि हुक्म से क़ौले सवाब और इल्म से ता'बीरे ख़्वाब मुराद है। बा'ज़ ने फ़रमाया : इल्म ह़क़ाइक़े अश्या का जानना और ह़िक्मत इल्म के मुत़ाबिक़ अ़मल करना है। 56 : या'नी ज़ुलैख़ा 57 : और उस के साथ मश्ग़ूल हो कर उस की ना जाइज़ ख़्वाहिश को पूरा करें। ज़ुलैख़ा के मकान में यके बा'द दीगरे सात दरवाज़े थे। उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام पर तो येह ख़्वाहिश पेश की 58 : मुक़फ़्फ़ल कर डाले (ताले लगा दिये) 59 : ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام ने 60 : वोह मुझे इस क़बाह़त से बचाए जिस की तू त़लब गार है, मुद्दआ़ येह था कि येह फ़े'ले ह़राम है, मैं इस के पास जाने वाला नहीं। 61 : उस का बदला येह नहीं कि मैं उस के अह्ल में ख़ियानत करूं, जो ऐसा करे वोह ज़ालिम है 62 : मगर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने रब की बुरहान देखी और इस इरादए फ़ासिदा से मह़फ़ूज़ रहे और बुरहान इस्मते नुबुव्वत है। अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नुफ़ूसे त़ाहिरा को अख़्लाक़े ज़मीमा (बुरे अख़्लाक़) व अफ़्आ़ले रज़ीला (घटिया कामों) से पाक पैदा किया है और अख़्लाक़े शरीफ़ा त़ाहिरा मुक़द्दसा पर इन की ख़िल्क़त फ़रमाई है इस लिये वोह हर ना कर्दनी (ना क़ाबिले अ़मल) फ़े'ल से बाज़ रहते हैं। एक रिवायत येह भी है कि जिस वक़्त ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई उस वक़्त आप ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْهِ السَّلَام को देखा कि अंगुश्ते मुबारक दन्दाने अक़्दस के नीचे दबा कर इज्तिनाब का इशारा फ़रमाते हैं। 63 : और ख़ियानत व ज़िना से मह़फ़ूज़ रखें 64 : जिन्हें हम ने बरगुज़ीदा किया है और जो हमारी त़ाअ़त में इख़्लास रखते हैं। अल ह़ासिल जब ज़ुलैख़ा आप के दरपै हुई तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भागे और ज़ुलैख़ा उन के पीछे उन्हें पकड़ने भागी, ह़ज़रत जिस जिस दरवाज़े पर पहुंचते जाते थे उस का क़ुफ़्ल खुल कर गिरता चला जाता था। 65 : आख़िर कार ज़ुलैख़ा ह़ज़रत तक पहुंची और उस ने आप का कुरता पीछे से पकड़ कर आप को खींचा कि आप निकलने न पाएं मगर आप ग़ालिब आए। 66 : या'नी अ़ज़ीज़े मिस्र 67 : फ़ौरन ही ज़ुलैख़ा ने अपनी बराअत ज़ाहिर करने और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने मक्र से ख़ाइफ़ करने के लिये ह़ीला तराशा और शोहर से 68 : इतना कह कर उसे अन्देशा हुवा कि कहीं

اِلَّآ اَنۡ يُّسۡجَنَ اَوۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۲۵﴾ قَالَ هِىَ رَاوَدَتۡنِىۡ عَنۡ نَّفۡسِىۡ وَ

मगर येह कि क़ैद किया जाए या दुख की मार[69] कहा इस ने मुझ को लुभाया कि मैं अपनी हिफ़ाज़त न करूं[70] और

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡ اَهۡلِهَا ۚ اِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ قُبُلٍ فَصَدَقَتۡ

औरत के घर वालों में से एक गवाह ने[71] गवाही दी अगर इन का कुरता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है

وَهُوَ مِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ﴿۲۶﴾ وَاِنۡ كَانَ قَمِيۡصُهٗ قُدَّ مِنۡ دُبُرٍ فَكَذَبَتۡ وَهُوَ

और इन्हों ने ग़लत कहा[72] और अगर इन का कुरता पीछे से चाक हुवा तो औरत झूटी है और येह

مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۲۷﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيۡصَهٗ قُدَّ مِنۡ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنۡ كَيۡدِكُنَّ ؕ

सच्चे[73] फिर जब अज़ीज़ ने उस का कुरता पीछे से चिरा देखा[74] बोला बेशक येह तुम औरतों का चरित्र (फ़रेब) है

اِنَّ كَيۡدَكُنَّ عَظِيۡمٌ ﴿۲۸﴾ يُوۡسُفُ اَعۡرِضۡ عَنۡ هٰذَا ٚ وَاسۡتَغۡفِرِىۡ

बेशक तुम्हारा चरित्र (फ़रेब) बड़ा है[75] ऐ यूसुफ़ तुम इस का ख़याल न करो[76] और ऐ औरत तू अपने गुनाह की

لِذَنۢۡبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنۡتِ مِنَ الۡخٰطِـِٕيۡنَ ﴿۲۹﴾ ع وَقَالَ نِسۡوَةٌ فِى الۡمَدِيۡنَةِ امۡرَاَتُ ع ۳ ۱۳

मुआफ़ी मांग[77] बेशक तू ख़ताकारों में है[78] और शहर में कुछ औरतें बोलीं[79] कि अज़ीज़ की

अज़ीज़ तैश में आ कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़त्ल के दरपै न हो जाए और येह ज़ुलैख़ा की शिद्दते महब्बत कब गवारा कर सकती थी इस लिये उस ने येह कहा : **69** : या'नी इस को कोड़े लगाए जाएं। जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़ुलैख़ा उलटा आप पर इल्ज़ाम लगाती है और आप के लिये क़ैद व सज़ा की सूरत पैदा करती है तो आप ने अपनी बराअत का इज़्हार और हक़ीक़ते हाल का बयान ज़रूरी समझा और **70** : या'नी येह मुझ से फ़े'ले क़बीह की त़लब गार हुई मैं ने उस से इन्कार किया और मैं भागा। अज़ीज़ ने कहा : येह बात किस त़रह बावर की जाए? हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि घर में एक चार महीने का बच्चा पालने में था जो ज़ुलैख़ा के मामूं का लड़का है उस से दरयाफ़्त करना चाहिये। अज़ीज़ ने कहा कि चार महीने का बच्चा क्या जाने और कैसे बोले? हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला उस को गोयाई देने और उस से मेरी बे गुनाही की शहादत अदा करा देने पर क़ादिर है। अज़ीज़ ने उस बच्चे से दरयाफ़्त किया : क़ुदरते इलाही से वोह बच्चा गोया हुवा और उस ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ की और ज़ुलैख़ा के क़ौल को बात़िल बताया। चुनान्चे **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : **71** : या'नी उस बच्चे ने **72** : क्यूं कि येह सूरत बताती है कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आगे बढ़े और ज़ुलैख़ा ने इन को दफ़्अ किया तो कुरता आगे से फटा **73** : इस लिये कि येह हाल साफ़ बताता है कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से भागते थे और ज़ुलैख़ा पीछे से पकड़ती थी इस लिये कुरता पीछे से फटा। **74** : और जान लिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सच्चे हैं और ज़ुलैख़ा झूटी है। **75** : फिर हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर अज़ीज़ ने इस त़रह मा'ज़िरत की **76** : और इस पर मग़्मूम न हो बेशक तुम पाक हो और इस कलाम से येह भी मत़लब था कि इस का किसी से ज़िक्र न करो ताकि चरचा न हो और शोहरा आम न हो जाए। **फ़ाएदा :** इस के इलावा भी हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बराअत की बहुत सी अलामतें मौजूद थीं : एक तो येह कि कोई शरीफ़ त़बीअत इन्सान अपने मोहसिन के साथ इस त़रह की ख़ियानत रवा नहीं रखता, हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब ई करामते अख़्लाक़ किस त़रह ऐसा कर सकते थे। दुवुम येह कि देखने वालों ने आप को भागते आते देखा और त़ालिब की येह शान नहीं होती, वोह दरपै होता है, भागता नहीं, भागता वोही है जो किसी बात पर मजबूर किया जाए और वोह उसे गवारा न करे। सिवुम येह कि औरत ने इन्तिहा दरजे का सिंगार किया था और वोह ग़ैर मा'मूली ज़ैबो ज़ीनत की हालत में थी। इस से मा'लूम होता है कि रग़बत व एहतिमाम महज़ उस की त़रफ़ से था। चहारुम हज़रते यूसुफ़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسۡلِيۡمَات का तक़्वा व त़हारत जो एक दराज़ मुद्दत तक देखा जा चुका था इस से आप की त़रफ़ ऐसे अम्रे क़बीह (बुरे फ़े'ल) की निस्बत किसी त़रह क़ाबिले ए'तिबार नहीं हो सकती थी, फिर अज़ीज़े मिस्र ज़ुलैख़ा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहने लगा : **77** : कि तू ने बे गुनाह पर तोहमत लगाई। **78** : अज़ीज़े मिस्र ने अगर्चे इस क़िस्से को बहुत दबाया लेकिन येह ख़बर छुप न सकी और इस का चरचा और शोहरा हो ही गया **79** : या'नी शुरफ़ाए मिस्र की औरतें

www.dawateislami.net

الْعَزِیْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِیْ

बीबी अपने नौ जवान का दिल लुभाती है   बेशक उन की महब्बत इस के दिल में पेर (समा) गई है   हम तो इसे सरीह

ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۳۰﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَیْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ

खुद रफ़्ता पाते हैं[80]   तो जब ज़ुलैख़ा ने उन का चकरवा (चे मी गोई व ता'न) सुना तो उन औ़रतों को बुला भेजा[81] और उन के लिये

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ اٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّیْنًا وَّ قَالَتِ اخْرُجْ

मस्नदें तय्यार कीं[82] और उन में हर एक को एक छुरी दी[83] और यूसुफ़[84] से कहा इन पर निकल

عَلَیْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَیْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ قَطَّعْنَ اَیْدِیَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ

आओ[85]   जब औ़रतों ने यूसुफ़ को देखा उस की बड़ाई बोलने लगीं[86] और अपने हाथ काट लिये[87] और बोलीं **अल्लाह** को

لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِیْمٌ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِیْ

पाकी है येह तो जिन्से बशर से नहीं[88]   येह तो नहीं मगर कोई मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ता   ज़ुलैख़ा ने कहा तो येह हैं वोह जिन पर

لُمْتُنَّنِیْ فِیْهِ ؕ وَ لَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَ لَىِٕنْ لَّمْ یَفْعَلْ

तुम मुझे ता'ना देती थीं[89]   और बेशक मैं ने इन का जी लुभाना चाहा तो इन्हों ने अपने आप को बचाया[90]   और बेशक अगर वोह येह काम न करेंगे

مَاۤ اٰمُرُهٗ لَیُسْجَنَنَّ وَ لَیَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِیْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ

जो मैं इन से कहती हूं तो ज़रूर क़ैद में पड़ेंगे और वोह ज़रूर ज़िल्लत उठाएंगे[91]   यूसुफ़ ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे क़ैदख़ाना ज़ियादा पसन्द

80 : कि इस आशुफ़्तगी में इस को अपने नंगो नामूस (इ़ज़्ज़त व मर्तबे) और पर्दे व इ़फ़्फ़त (पाक दामनी) का लिहाज़ भी न रहा। **81 :** या'नी जब उस ने सुना कि अशराफ़े मिस्र की औ़रतें उस को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की महब्बत पर मलामत करती हैं तो उस ने चाहा कि वोह अपना उ़ज़्र उन्हें ज़ाहिर कर दे, इस लिये उस ने उन की दा'वत की और अशराफ़े मिस्र की चालीस औ़रतों को मद्ऊ़ कर दिया, उन में वोह सब भी थीं जिन्हों ने इस पर मलामत की थी, ज़ुलैख़ा ने उन औ़रतों को बहुत इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ मेहमान बनाया **82 :** निहायत पुर तकल्लुफ़, जिन पर वोह बहुत इ़ज़्ज़तो आराम से तक्ये लगा कर बैठीं और दस्तर ख़्वान बिछाए गए और क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवे चुने गए। **83 :** ताकि खाने के लिये उस से गोश्त काटें और मेवे तराशें **84 :** को उ़म्दा लिबास पहना कर उन **85 :** पहले तो आप ने इस से इन्कार किया लेकिन जब इसरार व ताकीद ज़ियादा हुई तो उस की मुख़ालफ़त के अन्देशे से आप को आना ही पड़ा। **86 :** क्यूं कि उन्हों ने इस जमाले आ़लम अफ़रोज़ के साथ नुबुव्वत व रिसालत के अन्वार और तवाज़ोअ़ व इन्किसार के आसार व शाहाना हैबत व इक़्तिदार और लज़ाइज़े अत़इमा (लज़ीज़ खानों) और सुवरे जमीला (ह़सीन चेहरों) की त़रफ़ से बे नियाज़ी की शान देखी तअ़ज्जुब में आ गईं और आप की अ़ज़मतो हैबत दिलों में भर गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारफ़्ता किया कि उन औ़रतों को ख़ुद फ़रामोशी हो गई **87 :** बजाए लीमूं के और दिल ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ ऐसे मश्ग़ूल हुए कि हाथ काटने की तक्लीफ़ का अस्लन एह़सास न हुवा **88 :** कि ऐसा हुस्नो जमाल बशर में देखा ही नहीं गया और इस के साथ नफ़्स की येह त़हारत कि मिस्र के आ़ली ख़ानदान, जमीलए मुख़द्दरात (ख़ूब सूरत पर्दा नशीन औ़रतें) त़रह़ त़रह़ के नफ़ीस लिबासों और ज़ेवरों से आरास्ता व पैरास्ता सामने मौजूद हैं और आप किसी की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाते और क़त़्अ़न इल्तिफ़ात नहीं करते। **89 :** अब तुम ने देख लिया और तुम्हें मा'लूम हो गया कि मेरी शेफ़्तगी (महब्बत) कुछ क़ाबिले तअ़ज्जुब और जाए मलामत नहीं। **90 :** और किसी त़रह़ मेरी त़रफ़ माइल न हुए। इस पर मिस्री औ़रतों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा कि आप ज़ुलैख़ा का कहना मान लीजिये ! ज़ुलैख़ा बोली : **91 :** और चोरों और क़ातिलों और ना फ़रमानों के साथ जेल में रहेंगे क्यूं कि इन्हों ने मेरा दिल लिया और मेरी ना फ़रमानी की और फ़िराक़ की तलवार से मेरा ख़ून बहाया तो यूसुफ़ عَلَیْهِ السَّلَام को भी ख़ुश गवार खाना पीना

www.dawateislami.net

اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ ۚ وَ اِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ

है उस काम से जिस की त़रफ़ येह मुझे बुलाती हैं और अगर तू मुझ से इन का मक्र न फेरेगा[92] तो मैं इन की त़रफ़ माइल होउंगा

وَ اَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۳﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ

और नादान बनूंगा तो उस के रब ने उस की सुन ली और उस से औ़रतों का मक्र फेर दिया

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۴﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ

बेशक वोही है सुनता जानता[93] फिर सब कुछ निशानियां देख दिखा कर पिछली मत इन्हें येही आई (येही मुनासिब समझा) कि ज़रूर

لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۳۵﴾ وَ دَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ ع

एक मुद्दत तक इसे क़ैदख़ाने में डालें[94] और उस के साथ क़ैदख़ाने में दो जवान दाख़िल हुए[95] उन में एक[96] बोला

اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَ قَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْۤ اَرٰىنِيْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ

मैं ने ख़्वाब देखा कि[97] शराब निचोड़ता हूं और दूसरा बोला[98] मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे सर पर

رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ

कुछ रोटियां हैं जिन में से परिन्द खाते हैं हमें इस की ता'बीर बताइये बेशक हम आप को नेकोकार

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ

देखते हैं[99] यूसुफ़ ने कहा जो खाना तुम्हें मिला करता है वोह तुम्हारे पास न आने पाएगा कि मैं इस की ता'बीर उस के आने से

और आराम की नींद सोना मुयस्सर न होगा, जैसा मैं जुदाई की तक्लीफ़ों में मुसीबतें झेलती और सदमों में परेशानी के साथ वक़्त काटती हूं, येह भी तो कुछ तक्लीफ़ उठाएं, मेरे साथ ह़रीर (नर्म व मुलायम रेशमी बिस्तर) में शाहाना सरीर (शाही पलंग) पर ऐ़श गवारा नहीं है तो क़ैदख़ाने के चुभने वाले बोरिये पर नंगे जिस्म को दुखाना गवारा करें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह सुन कर मजलिस से उठ गए और मिस्री औ़रतें मलामत करने के बहाने से बाहर आईं और एक एक ने आप से अपनी तमन्नाओं और मुरादों का इज़्हार किया, आप को उन की गुफ़्त्गू बहुत ना गवार हुई (خازن ومدارک وحسینی) तो बारगाहे इलाही में **92 :** और अपनी इ़स्मत की पनाह में न लेगा **93 :** जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उम्मीद पूरी होने की कोई शक्ल न देखी तो मिस्री औ़रतों ने ज़ुलैख़ा से कहा कि मुनासिब येह मा'लूम होता है कि अब दो तीन रोज़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को क़ैदख़ाने में रखा जाए ताकि वहां की मेह़नतो मशक़्क़त देख कर उन्हें ने'मतो राह़त की क़द्र हो और वोह तेरी दरख़्वास्त क़बूल करें, ज़ुलैख़ा ने इस राय को माना और अ़ज़ीज़े मिस्र से कहा कि मैं उस इ़बरी ग़ुलाम की वज्ह से बदनाम हो गई हूं और मेरी त़बीअ़त उस से नफ़रत करने लगी है, मुनासिब येह है कि उन को क़ैद किया जाए ताकि लोग समझ लें कि वोह ख़त़ावार हैं और मैं मलामत से बरी होउं, येह बात अ़ज़ीज़ के ख़याल में आ गई। **94 :** चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया और आप को क़ैदख़ाने में भेज दिया। **95 :** उन में से एक तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद बिन नज़्वान अ़मलीक़ी का मोह्तमिमे मत़्बख़ (बावर्ची ख़ाने का ज़िम्मेदार) था और दूसरा उस का साक़ी (शराब पिलाने वाला) उन दोनों पर येह इल्ज़ाम था कि इन्हों ने बादशाह को ज़ह्र देना चाहा, इस जुर्म में दोनों क़ैद किये गए। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام जब क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए तो आप ने अपने इ़ल्म का इज़्हार शुरूअ़ कर दिया और फ़रमाया कि मैं ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म रखता हूं। **96 :** जो बादशाह का साक़ी था **97 :** मैं एक बाग़ में हूं वहां एक अंगूर के दरख़्त में तीन ख़ोशे रसीदा लगे हुए हैं, बादशाह का कासा मेरे हाथ में है, मैं उन ख़ोशों से **98 :** या'नी मोह्तमिमे मत़्बख़ **99 :** कि आप दिन में रोज़ादार रहते हैं, रात तमाम नमाज़ में गुज़ारते हैं, जब कोई जेल में बीमार होता है उस की इ़यादत करते हैं, उस की ख़बर गीरी रखते हैं, जब किसी पर तंगी होती है उस के लिये कशाइश

www.dawateislami.net

قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا

पहले तुम्हें बता दूंगा[100] येह उन इल्मों में से है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है बेशक मैं ने उन लोगों का दीन न माना जो

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ اتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِیْۤ

अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वोह आख़िरत से मुन्किर हैं और मैं ने अपने बाप दादा

اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ

इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब का दीन इख़्तियार किया[101] हमें नहीं पहुंचता कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक

شَیْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

ठहराएं येह[102] अल्लाह का एक फ़ज़्ल है हम पर और लोगों पर मगर अक्सर लोग

لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ اَمِ اللّٰهُ

शुक्र नहीं करते[103] ऐ मेरे क़ैदख़ाने के दोनों साथियो क्या जुदा जुदा रब[104] अच्छे या एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿ؕ۳۹﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَاۤ

अल्लाह जो सब पर ग़ालिब[105] तुम उस के सिवा नहीं पूजते मगर निरे नाम जो तुम ने और तुम्हारे

اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ

बाप दादा ने तराश लिये हैं[106] अल्लाह ने उन की कोई सनद न उतारी हुक्म नहीं मगर अल्लाह का

की राह निकालते हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन को ता'बीर देने से पहले अपने मो'जिज़े का इज़्हार और तौहीद की दा'वत शुरूअ़ कर दी और येह ज़ाहिर फ़रमा दिया कि इल्म में आप का दरजा इस से ज़ियादा है जितना वोह लोग आप की निस्बत ए'तिक़ाद रखते हैं, क्यूं कि इल्मे ता'बीर ज़न पर मब्नी है इस लिये आप ने चाहा कि उन्हें ज़ाहिर फ़रमा दें कि आप ग़ैब की यक़ीनी ख़बरें देने पर क़ुदरत रखते हैं और इस से मख़्लूक़ आ़जिज़ है। जिस को अल्लाह ने ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाए हों उस के नज़्दीक ख़्वाब की ता'बीर क्या बड़ी बात है। उस वक़्त मो'जिज़े का इज़्हार आप ने इस लिये फ़रमाया कि आप जानते थे कि इन दोनों में एक अ़न्क़रीब सूली दिया जाएगा तो आप ने चाहा कि इस को कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में दाख़िल करें और जहन्नम से बचावें। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर आ़लिम अपनी इल्मी मन्ज़िलत का इस लिये इज़्हार करे कि लोग इस से नफ़्अ़ उठाएं तो येह जाइज़ है। (مدارک وخازن) **100 :** उस की मिक़्दार और उस का रंग और उस के आने का वक़्त और येह कि तुम ने क्या खाया या कितना खाया, कब खाया। **101 :** हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने मो'जिज़े का इज़्हार फ़रमाने के बा'द येह भी ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप ख़ानदाने नुबुव्वत से हैं और आप के आबाओ अज्दाद अम्बिया हैं, जिन का मर्तबए उ़ल्या (बुलन्द तरीन मर्तबा) दुन्या में मश्हूर है। इस से आप का मक़्सद येह था कि सुनने वाले आप की दा'वत क़बूल करें और आप की हिदायत को मानें। **102 :** तौहीद इख़्तियार करना और शिर्क से बचना **103 :** उस की इबादत बजा नहीं लाते और मख़्लूक़ परस्ती करते हैं। **104 :** जैसे कि बुत परस्तों ने बना रखे हैं। कोई सोने का कोई चांदी का, कोई तांबे का, कोई लोहे का, कोई लकड़ी का, कोई पथ्थर का, कोई और किसी चीज़ का, कोई छोटा, कोई बड़ा, मगर सब के सब निकम्मे, बेकार, न नफ़्अ़ दे सकें, न ज़रर पहुंचा सकें, ऐसे झूटे मा'बूद **105 :** कि न कोई उस का मुक़ाबिल हो सकता है न उस के हुक्म में दख़्ल दे सकता है न उस का कोई शरीक है न नज़ीर, सब पर उस का हुक्म जारी और सब उस के मम्लूक (बन्दे)। **106 :** और उन का नाम मा'बूद रख लिया है, बा वुजूदे कि वोह बे हक़ीक़त पथ्थर हैं।

اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

उस ने फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी को न पूजो[107] येह सीधा दीन है[108] लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ

नहीं जानते[109] ऐ क़ैदख़ाने के दोनों साथियो तुम में एक तो अपने रब (बादशाह) को शराब पिलाएगा[110]

وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ

रहा दूसरा[111] वोह सूली दिया जाएगा तो परिन्दे उस का सर खाएंगे[112] हुक्म हो चुका उस बात का

فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ؕ﴿۴۱﴾ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ

जिस का तुम सुवाल करते थे[113] और यूसुफ़ ने उन दोनों में से जिसे बचता समझा[114] उस से कहा अपने रब (बादशाह) के पास मेरा

رَبِّكَ ؗ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ

ज़िक्र करना[115] तो शैतान ने उसे भुला दिया कि अपने रब (बादशाह) के सामने यूसुफ़ का ज़िक्र करे तो यूसुफ़ कई बरस और जेलख़ाने में

سِنِيْنَ ؑ﴿۴۲﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ ع ۵/۱۵

रहा[116] और बादशाह ने कहा मैं ने ख़्वाब में देखीं सात गाएं फ़रबा (मोटी ताज़ी) कि उन्हें सात दुबली गाएं खा

سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ

रही हैं और सात बालें हरी और दूसरी सात सूखी[117] ऐ दरबारियो

اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ

मेरे ख़्वाब का जवाब दो अगर तुम्हें ख़्वाब की ता'बीर आती हो बोले परेशान

---

107 : क्यूं कि सिर्फ़ वोही मुस्तहिक़्क़े इबादत है। **108 :** जिस पर दलाइल व बराहीन क़ाइम हैं। **109 :** तौहीद व इबादते इलाही की दा'वत देने के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ता'बीरे ख़्वाब की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इर्शाद किया : **110 :** या'नी बादशाह का साक़ी तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा और पहले की तरह बादशाह को शराब पिलाएगा और तीन ख़ोशे जो ख़्वाब में बयान किये गए हैं येह तीन दिन हैं इतने ही अय्याम क़ैदख़ाने में रहेगा, फिर बादशाह उस को बुला लेगा। **111 :** या'नी मोहतमिमे मत्बख़ व तआम **112 :** हज़रते इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ता'बीर सुन कर उन दोनों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि ख़्वाब तो हम ने कुछ भी नहीं देखा हम तो हंसी कर रहे थे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **113 :** जो मैं ने कह दिया येह ज़रूर वाक़ेअ़ होगा तुम ने ख़्वाब देखा हो या न देखा हो, अब येह हुक्म टल नहीं सकता। **114 :** या'नी साक़ी को। **115 :** और मेरा हाल बयान करना कि क़ैदख़ाने में एक मज़्लूम बे गुनाह क़ैद है और उस की क़ैद को एक ज़माना गुज़र चुका है। **116 :** अक्सर मुफ़स्सिरीन इस तरफ़ हैं कि इस वाक़िए के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام सात बरस और क़ैद में रहे और पांच बरस पहले रह चुके थे और इस मुद्दत के गुज़रने के बा'द जब **अल्लाह** तआला को हज़रते यूसुफ़ का क़ैद से निकालना मन्ज़ूर हुवा तो मिस्र के शाहे आ'ज़म रय्यान बिन वलीद ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा, जिस से उस को बहुत परेशानी हुई और उस ने मुल्क के साहिरों और काहिनों और ता'बीर देने वालों को जम्अ़ कर के उन से अपना ख़्वाब बयान किया। **117 :** जो हरी पर लिपटीं और उन्हों ने हरी को सुखा दिया।

اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَقَالَ الَّذِيْ

ख़्वाबें हैं और हम ख़्वाब की ता'बीर नहीं जानते और बोला वोह जो

نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿۴۵﴾

उन दोनों में से बचा था[118] और एक मुद्दत बा'द उसे याद आया[119] मैं तुम्हें इस की ता'बीर बताऊंगा मुझे भेजो[120]

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ

ऐ यूसुफ़ ऐ सिद्दीक़ हमें ता'बीर दीजिये सात फ़रबा गायों की जिन्हें सात दुबली खाती

عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى

हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात सूखी[121] शायद मैं लोगों की त़रफ़

النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا

लौट कर जाऊं शायद वोह आगाह हों[122] कहा तुम खेती करोगे सात बरस लगातार[123] तो जो

حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿۴۷﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ

काटो उसे उस की बाल में रहने दो[124] मगर थोड़ा जितना खा लो[125] फिर इस के

بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا

बा'द सात करें (सख़्त तंगी वाले) बरस आएंगे[126] कि खा जाएंगे जो तुम ने उन के लिये पहले जम्अ़ कर रखा था[127] मगर थोड़ा जो

تُحْصِنُوْنَ ﴿۴۸﴾ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ

बचा लो[128] फिर इन के बा'द एक बरस आएगा जिस में लोगों को मींह दिया जाएगा और उस में

يَعْصِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ ۧ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ

रस निचोड़ेंगे[129] और बादशाह बोला कि उन्हें मेरे पास ले आओ तो जब उस के पास एलची आया[130] कहा

118 : या'नी साक़ी **119 :** कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया था कि अपने आक़ा के सामने मेरा ज़िक्र करना। साक़ी ने कहा कि **120 :** क़ैदख़ाने में वहां ता'बीरे ख़्वाब के एक आ़लिम हैं, बस बादशाह ने उस को भेज दिया, वोह क़ैदख़ाने में पहुंच कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ करने लगा : **121 :** येह ख़्वाब बादशाह ने देखा है और मुल्क के तमाम उ़लमा व हुकमा इस की ता'बीर से आ़जिज़ रहे हैं, ह़ज़रत इस की ता'बीर इर्शाद फ़रमाएं। **122 :** ख़्वाब की ता'बीर से और आप के इल्मो फ़ज़्ल और मर्तबतो मन्ज़िलत को जानें और आप को इस मेह़नत से रिहा कर के अपने पास बुलाएं। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ता'बीर दी और **123 :** इस ज़माने में ख़ूब पैदावार होगी, सात मोटी गायों और सात सब्ज़ बालियों से इसी की त़रफ़ इशारा है। **124 :** ताकि ख़राब न हो और आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहे **125 :** उस पर से भूसी उतार लो और उसे साफ़ कर लो, बाक़ी को ज़ख़ीरा बना कर मह़फ़ूज़ कर लो। **126 :** जिन की त़रफ़ दुबली गायों और सूखी बालों में इशारा है **127 :** और ज़ख़ीरा कर लिया था। **128 :** बीज के लिये ताकि उस से काश्त करो। **129 :** अंगूर का और तिल, ज़ैतून के तेल निकालेंगे, येह साल कसीरुल ख़ैर होगा, ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब होगी, दरख़्त ख़ूब फलेंगे। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से येह

ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِیْ قَطَّعْنَ اَیْدِیَهُنَّ ؕ

अपने रब (बादशाह) के पास पलट जा फिर उस से पूछ[131] क्या हाल है उन औ़रतों का जिन्हों ने अपने हाथ काटे थे

اِنَّ رَبِّیْ بِكَیْدِهِنَّ عَلِیْمٌ ﴿۵۰﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ یُوْسُفَ

बेशक मेरा रब उन का फ़रेब जानता है[132] बादशाह ने कहा ऐ औ़रतो तुम्हारा क्या काम था जब तुम ने यूसुफ़ का

عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَیْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ

जी (दिल) लुभाना चाहा बोलीं अल्लाह को पाकी है हम ने उन में कोई बदी न पाई अ़ज़ीज़ की औ़रत[133]

الْعَزِیْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ٘ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ

बोली अब अस्ली बात खुल गई मैं ने उन का जी लुभाना चाहा था और वोह बेशक

الصّٰدِقِیْنَ ﴿۵۱﴾ ذٰلِكَ لِیَعْلَمَ اَنِّیْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَیْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ

सच्चे हैं[134] यूसुफ़ ने कहा येह मैं ने इस लिये किया कि अ़ज़ीज़ को मा'लूम हो जाए कि मैं ने पीठ पीछे ख़ियानत न की और अल्लाह

كَیْدَ الْخَآىٕنِیْنَ ﴿۵۲﴾

दग़ाबाज़ों का मक्र नहीं चलने देता

ता'बीर सुन कर वापस हुवा और बादशाह की ख़िदमत में जा कर ता'बीर बयान की, बादशाह को येह ता'बीर बहुत पसन्द आई और उसे यक़ीन हुवा कि जैसा ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया है ज़रूर वैसा ही होगा, बादशाह को शौक़ पैदा हुवा कि इस ख़्वाब की ता'बीर ख़ुद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़बाने मुबारक से सुने। **130 :** और उस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया तो आप ने **131 :** या'नी उस से दरख़्वास्त कर कि वोह पूछे तफ़्तीश करे **132 :** येह आप ने इस लिये फ़रमाया ताकि बादशाह के सामने आप की बराअत और बे गुनाही मा'लूम हो जाए और येह उस को मा'लूम हो कि येह क़ैदे त़वील बे वज्ह हुई ताकि आयिन्दा ह़ासिदों को नेश ज़नी (बुराई करने) का मौक़अ़ न मिले। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दफ़्ए़ तोहमत में कोशिश करना ज़रूरी है। अब क़ासिद ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास से येह पयाम ले कर बादशाह की ख़िदमत में पहुंचा। बादशाह ने सुन कर औ़रतों को जम्अ़ किया और उन के साथ अ़ज़ीज़ की औ़रत को भी। **133 :** ज़ुलैख़ा **134 :** बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास पयाम भेजा कि औ़रतों ने आप की पाकी बयान की और अ़ज़ीज़ की औ़रत ने अपने गुनाह का इक़रार कर लिया, इस पर ह़ज़रत।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ؕ

और मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता[135] बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रहम करे[136]

إِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ أَسْتَخْلِصْهُ

बेशक मेरा रब बख़्शने वाला मेहरबान है[137] और बादशाह बोला उन्हें मेरे पास ले आओ कि मैं उन्हें ख़ास अपने

لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ أَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ

लिये चुन लूं[138] फिर जब उस से बात की कहा बेशक आज आप हमारे यहां मुअ़ज़्ज़ मो'तमद हैं[139] यूसुफ़ ने कहा

اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْأَرْضِ ۚ إِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا

मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं[140] और यूंही हम ने

135 : ज़ुलैख़ा के इक़रार व ए'तिराफ़ के बा'द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जो येह फ़रमाया था कि मैं ने अपनी बराअत का इज़्हार इस लिये चाहा था ताकि अ़ज़ीज़ को येह मा'लूम हो जाए कि मैं ने उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में उस की ख़ियानत नहीं की है और उस के अहल की हुरमत (इ़ज़्ज़त) ख़राब करने से मुज्तनिब (दूर) रहा हूं और जो इल्ज़ाम मुझ पर लगाए गए हैं मैं उन से पाक हूं, इस के बा'द आप का ख़याल मुबारक इस त़रफ़ गया कि इस में अपनी त़रफ़ पाकी की निस्बत और अपनी नेकी का बयान है ऐसा न हो कि इस में शाने ख़ुदबीनी और ख़ुद पसन्दी (अपने फ़ख़्रो कमाल और ता'रीफ़) का शाएबा भी आए। इसी लिये **अल्लाह** तआला की जनाब में तवाज़ोअ़ व इन्किसार (आ़जिज़ी) से अ़र्ज़ किया कि मैं अपने नफ़्स को बे क़ुसूर नहीं बताता, मुझे अपनी बे गुनाही पर नाज़ नहीं है और मैं गुनाह से बचने को अपने नफ़्स की ख़ूबी क़रार नहीं देता, नफ़्स की जिन्स का येह ह़ाल है कि **136 :** या'नी अपने जिस मख़्सूस बन्दे को अपने करम से मा'सूम करे तो उस का बुराइयों से बचना **अल्लाह** के फ़ज़्लो रहमत से है और मा'सूम करना उसी का करम है। **137 :** जब बादशाह को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इल्म और आप की अमानत का ह़ाल मा'लूम हुवा, और वोह आप के हुस्ने सब्र, हुस्ने अदब, क़ैदख़ाने वालों के साथ एह़सान, मेहनतों और तक्लीफ़ों पर सबात व इस्तिक़्लाल (साबित क़दमी) रखने पर मुत्तलअ़ हुवा तो उस के दिल में आप का बहुत ही अ़ज़ीम ए'तिक़ाद पैदा हुवा **138 :** और अपना मख़्सूस बना लूं। चुनान्चे उस ने मुअ़ज़्ज़ज़ीन की एक जमाअ़त बेहतरीन सुवारियां और शाहाना साज़ो सामान और नफ़ीस लिबास ले कर क़ैदख़ाने भेजी ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को निहायत ता'ज़ीमो तक्रीम के साथ ऐवाने शाही में लाएं, उन लोगों ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बादशाह का पयाम अ़र्ज़ किया, आप ने क़बूल फ़रमाया और क़ैदख़ाने से निकलते वक़्त क़ैदियों के लिये दुआ़ फ़रमाई, जब क़ैदख़ाने से बाहर तशरीफ़ लाए तो उस के दरवाज़े पर लिखा : येह बला का घर, ज़िन्दों की क़ब्र और दुश्मनों की बदगोई और सच्चों के इम्तिह़ान की जगह है, फिर ग़ुस्ल फ़रमाया और पोशाक पहन कर ऐवाने शाही की त़रफ़ रवाना हुए, जब क़ल्ए के दरवाज़े पर पहुंचे तो फ़रमाया : मेरा रब मुझे काफ़ी है उस की पनाह बड़ी और उस की सना बरतर और उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर क़ल्ए में दाख़िल हुए बादशाह के सामने पहुंचे तो येह दुआ़ की, कि या रब मेरे ! तेरे फ़ज़्ल से इस की भलाई त़लब करता हूं और इस की और दूसरों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूं, जब बादशाह से नज़र मिली तो आप ने अ़रबी में सलाम फ़रमाया, बादशाह ने दरयाफ़्त किया : येह क्या ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अ़म (चचा) ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बान है, फिर आप ने उस को इब्रानी ज़बान में दुआ़ दी। उस ने दरयाफ़्त किया : येह कौन सी ज़बान है ? फ़रमाया : येह मेरे अब्बा की ज़बान है। बादशाह येह दोनों ज़बानें न समझ सका बा वुजूदे कि वोह सत्तर ज़बानें जानता था, फिर उस ने जिस ज़बान में ह़ज़रत से गुफ़्तगू की आप ने उसी ज़बान में उस को जवाब दिया, उस वक़्त आप की उ़म्र शरीफ़ तीस साल की थी, इस उ़म्र में येह वुस्अ़ते उ़लूम देख कर बादशाह को बहुत ह़ैरत हुई और उस ने आप को अपने बराबर जगह दी। **139 :** बादशाह ने दरख़्वास्त की, कि ह़ज़रत इस के ख़्वाब की ता'बीर अपनी ज़बान मुबारक से सुना दें, ह़ज़रत ने उस ख़्वाब की पूरी तफ़्सील भी सुना दी जिस जिस शान से कि उस ने देखा था, बा वुजूदे कि आप से येह ख़्वाब पहले मुज्मलन (मुख़्तसरन) बयान किया गया था। इस पर बादशाह को बहुत तअ़ज्जुब हुवा ! कहने लगा कि आप ने मेरा ख़्वाब हू बहू बयान फ़रमा दिया, ख़्वाब तो अ़जीब था ही मगर आप का इस त़रह बयान फ़रमा देना इस से भी ज़ियादा अ़जीब तर है, अब ता'बीर इर्शाद हो जाए, आप ने ता'बीर बयान फ़रमाने के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि अब लाज़िम येह है कि ग़ल्ले जम्अ़ किये जाएं और इन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाए और ग़ल्ले मअ़ बालियों के मह़फ़ूज़ रखे जाएं और रिआ़या की पैदावार में से ख़ुमुस (पांचवां हिस्सा) लिया जाए, इस से जो जम्अ़ होगा वोह मिस्र व ह़वालिये मिस्र (मिस्र के इर्द गिर्द) के बाशिन्दों के लिये काफ़ी होगा और फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर हर त़रफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाइन व अम्वाल जम्अ़ होंगे जो तुझ से पहलों के लिये जम्अ़ न हुए, बादशाह ने कहा : येह इन्तिज़ाम कौन करेगा ? **140 :** या'नी अपनी क़लम रव (सल्त़नत) के तमाम

www.dawateislami.net

لِيُوسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا

यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी उस में जहां चाहे रहे[141] हम अपनी रह़मत[142] जिसे

مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۵۶ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

चाहें पहुंचाएं और हम नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते और बेशक आख़िरत का सवाब उन के लिये बेहतर जो

ख़ज़ाने मेरे सिपुर्द कर दे, बादशाह ने कहा : आप से ज़ियादा इस का मुस्तह़िक़ और कौन हो सकता है और उस ने इस को मन्ज़ूर किया। **मसाइल :** अह़ादीस में त़लबे इमारत (हुकूमत) की मुमानअ़त आई है, उस के येह मा'ना हैं कि जब मुल्क में अहल मौजूद हों और इक़ामते अह़कामे इलाही किसी एक शख़्स के साथ ख़ास न हो उस वक़्त इमारत त़लब करना मकरूह है, लेकिन जब एक ही शख़्स अहल हो तो उस को अह़कामे इलाहिय्यह की इक़ामत के लिये इमारत त़लब करना जाइज़ बल्कि वाजिब है और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी ह़ाल में थे, आप रसूल थे, उम्मत के मसालेह़ (फ़ाएदों) के आ़लिम थे, येह जानते थे कि क़ह़त़ शदीद होने वाला है जिस में ख़ल्क़ को राह़तो आसाइश पहुंचाने की येही सबील (राह) है कि इनाने हुकूमत (निज़ामे हुकूमत) को आप अपने हाथ में लें, इस लिये आप ने इमारत त़लब फ़रमाई। **मस्अला :** ज़ालिम बादशाह की त़रफ़ से ओ़ह्दे क़बूल करना ब निय्यते इक़ामते अ़द्ल जाइज़ है। **मस्अला :** अगर अह़कामे दीन का इज्रा (नफ़ाज़) काफ़िर या फ़ासिक़ बादशाह की तम्कीन (त़ाक़त) के बिग़ैर न हो सके तो उस में उस से मदद लेना जाइज़ है। **मस्अला :** अपनी ख़ूबियों का बयान तफ़ाख़ुर व तकब्बुर के लिये ना जाइज़ है लेकिन दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाने या ख़ल्क़ के हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करने के लिये अगर इज़्हार की ज़रूरत पेश आए तो मम्नूअ़ नहीं, इसी लिये ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बादशाह से फ़रमाया कि मैं ह़िफ़ाज़त व इल्म वाला हूं। **141 :** सब इन के तह़्ते तसर्रुफ़ (इख़्तियार में) है। इमारत त़लब करने के एक साल बा'द बादशाह ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बुला कर आप की ताजपोशी की और तलवार और मोहर आप के सामने पेश की और आप को त़िलाई तख़्त पर तख़्त नशीन किया जो जवाहिरात से मुरस्सअ़ था और अपना मुल्क आप को तफ़्वीज़ (सिपुर्द) किया और क़ित़्फ़ीर (अ़ज़ीज़े मिस्र) को मा'ज़ूल कर के आप को उस की जगह वाली बनाया और तमाम ख़ज़ाइन आप को तफ़्वीज़ किये और सल्त़नत के तमाम उमूर आप के हाथ में दे दिये और ख़ुद मिस्ल ताबेअ़ के हो गया कि आप की राय में दख़्ल न देता और आप के हर हुक्म को मानता। उसी ज़माने में अ़ज़ीज़े मिस्र का इन्तिक़ाल हो गया, बादशाह ने उस के इन्तिक़ाल के बा'द ज़ुलैख़ा का निकाह़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के साथ कर दिया, जब यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़ुलैख़ा के पास पहुंचे और उस से फ़रमाया : क्या येह उस से बेहतर नहीं जो तू चाहती थी ! ज़ुलैख़ा ने अ़र्ज़ किया : ऐ सिद्दीक़ ! मुझे मलामत न कीजिये, मैं ख़ूबरू थी, नौ जवान थी, ऐ़श में थी और अ़ज़ीज़े मिस्र औ़रतों से सरोकार ही न रखता था और आप को **अल्लाह** तआ़ला ने येह ह़ुस्नो जमाल अ़त़ा किया है, मेरा दिल इख़्तियार से बाहर हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को मा'सूम किया है आप मह़फ़ूज़ रहे। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ुलैख़ा को बाकिरा (कुंवारी) पाया और उस से आप के दो फ़रज़न्द हुए इफ़्रासीम और मीशा और मिस्र में आप की हुकूमत मज़बूत़ हुई, आप ने अ़द्ल की बुन्यादें क़ाइम कीं, हर ज़न व मर्द के दिल में आप की मह़ब्बत पैदा हुई और आप ने क़ह़त़ साली के अय्याम के लिये ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जम्अ़ करने की तदबीर फ़रमाई, इस के लिये बहुत वसीअ़ और आ़लीशान अम्बार ख़ाने (गोदाम) ता'मीर फ़रमाए और बहुत कसीर ज़ख़ाइर जम्अ़ किये, जब फ़राख़ी के साल गुज़र गए और क़ह़त़ का ज़माना आया तो आप ने बादशाह और उस के ख़ुद्दाम के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा दिया, एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने ह़ज़रत (यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام) से भूक की शिकायत की, आप ने फ़रमाया : येह क़ह़त़ की इब्तिदा का वक़्त है। **पहले** साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गए, बाज़ार ख़ाली रह गए, अहले मिस्र ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से जिन्स (ग़ल्ला) ख़रीदने लगे और उन के तमाम दिरहम, दीनार आप के पास आ गए। **दूसरे** साल ज़ेवर और जवाहिरात से ग़ल्ला ख़रीदा और वोह तमाम आप के पास आ गए, लोगों के पास ज़ेवर व जवाहिर की क़िस्म से कोई चीज़ न रही। **तीसरे** साल चौपाए और जानवर दे कर ग़ल्ले ख़रीदे और मुल्क में कोई किसी जानवर का मालिक न रहा। **चौथे** साल में ग़ल्ले के लिये तमाम ग़ुलाम और बांदियां बेच डालीं। **पांचवें** साल तमाम अराज़ी व अ़मला व जागीरें फ़रोख़्त कर के ह़ज़रत से ग़ल्ला ख़रीदा और येह तमाम चीज़ें ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंच गईं। **छटे** साल जब कुछ न रहा तो उन्हों ने अपनी औलादें बेचीं, इस त़रह़ ग़ल्ले ख़रीद कर वक़्त गुज़ारा। **सातवें** साल वोह लोग ख़ुद बिक गए और ग़ुलाम बन गए और मिस्र में कोई आज़ाद मर्द व औ़रत बाक़ी न रहा जो मर्द था वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का ग़ुलाम था जो औ़रत थी वोह आप की कनीज़ थी और लोगों की ज़बान पर था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सी अ़ज़मत व जलालत कभी किसी बादशाह को मुयस्सर न आई। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने बादशाह से कहा कि तू ने देखा **अल्लाह** का मुझ पर कैसा करम है, उस ने मुझ पर ऐसा एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाया, अब इन के ह़क़ में तेरी क्या राय है ? बादशाह ने कहा : जो ह़ज़रत की राय और हम आप के ताबेअ़ हैं। आप ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** को गवाह करता हूं और तुझ को गवाह करता हूं कि मैं ने तमाम अहले मिस्र को आज़ाद किया और इन के तमाम अम्लाक (माल व मकानात) और कुल जागीरें वापस कीं। उस ज़माने में ह़ज़रत ने कभी शिकम सेर हो कर खाना नहीं मुलाह़ज़ा फ़रमाया, आप से अ़र्ज़ किया गया कि इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक हो कर आप भूके रहते हैं ? फ़रमाया : इस अन्देशे से कि सेर हो जाऊं तो कहीं भूकों को न भूल जाऊं। سُبْحٰنَ الله ! क्या पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं

www.dawateislami.net

آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝٥٧ وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ ع ٨

ईमान लाए और परहेज़ गार रहे[143] और यूसुफ़ के भाई आए तो उस के पास हाज़िर हुए तो यूसुफ़ ने उन्हें[144] पहचान लिया

وَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ۝٥٨ وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ

और वोह उस से अन्जान रहे[145] और जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[146] कहा अपना सोतेला भाई[147]

لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ۝٥٩

मेरे पास ले आओ क्या नहीं देखते कि मैं पूरा मापता हूं[148] और मैं सब से बेहतर मेहमान नवाज़ हूं

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝٦٠ قَالُوا

फिर अगर उसे ले कर मेरे पास न आओ तो तुम्हारे लिये मेरे यहां माप नहीं और मेरे पास न फटक्ना बोले

سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝٦١ وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ

हम इस की ख़्वाहिश करेंगे उस के बाप से और हमें येह ज़रूर करना और यूसुफ़ ने अपने ग़ुलामों से कहा इन की पूंजी इन की

فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ

ख़ुरजियों (थेलों) में रख दो[149] शायद वोह इसे पहचानें जब अपने घर की त़रफ़ लौट कर जाएं[150] शायद वोह

कि मिस्र के तमाम ज़न व मर्द को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ख़रीदे हुए ग़ुलाम और कनीज़ें बनाने में **अल्लाह** तआ़ला की येह ह़िक्मत थी कि किसी को येह कहने का मौक़अ़ न हो कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ग़ुलाम की शान में आए थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं, बल्कि सब मिस्री इन के ख़रीदे और आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हों और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जो उस ह़ालत में सब्र किया उस की येह जज़ा दी गई। **142 :** या'नी मुल्क व दौलत या नुबुव्वत **143 :** इस से साबित हुवा कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये आख़िरत का अज्रो सवाब इस से बहुत ज़ियादा अफ़्ज़लो आ'ला है जो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें दुन्या में अ़त़ा फ़रमाया और इब्ने उ़यैना ने कहा कि मोमिन अपनी नेकियों का समरा दुन्या व आख़िरत दोनों में पाता है और काफ़िर जो कुछ पाता है दुन्या ही में पाता है आख़िरत में उस का कोई ह़िस्सा नहीं। मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि जब क़ह़्त़ की शिद्दत हुई और बलाए अ़ज़ीम आ़म हो गई तमाम बिलाद व अम्सार (शह्र) क़ह़्त़ की सख़्त तर मुसीबत में मुब्तला हुए और हर जानिब से लोग ग़ल्ला ख़रीदने के लिये मिस्र पहुंचने लगे, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام किसी को एक ऊंट के बार से ज़ियादा ग़ल्ला नहीं देते थे ताकि मुसावात (बराबरी) रहे और सब की मुसीबत रफ़्अ़ हो। क़ह़्त़ की जैसी मुसीबत मिस्र और तमाम बिलाद में आई, ऐसी ही कन्आ़न में भी आई, उस वक़्त ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन (ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के छोटे भाई) के सिवा अपने दसों बेटों को ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र भेजा। **144 :** देखते ही **145 :** क्यूं कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में डालने से अब तक चालीस साल का त़वील ज़माना गुज़र चुका था और उन का ख़याल येह था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का इन्तिक़ाल हो चुका होगा और यहां आप तख़्ते सल्त़नत पर शाहाना लिबास में शौकतो शान के साथ जल्वा फ़रमा थे इस लिये उन्हों ने आप को न पहचाना और आप से इबरानी ज़बान में गुफ़्त्गू की, आप ने भी इसी ज़बान में जवाब दिया, आप ने फ़रमाया : तुम कौन लोग हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हम शाम के रहने वाले हैं जिस मुसीबत में दुन्या मुब्तला है उसी में हम भी हैं, आप से ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। आप ने फ़रमाया : कहीं तुम जासूस तो नहीं हो ? उन्हों ने कहा : हम **अल्लाह** की क़सम खाते हैं हम जासूस नहीं हैं हम सब भाई हैं, एक बाप की औलाद हैं, हमारे वालिद बहुत बुज़ुर्ग मुअ़म्मर (बड़ी उ़म्र के) सिद्दीक़ हैं और उन का नामे नामी ह़ज़रते या'क़ूब है वोह **अल्लाह** के नबी हैं। आप ने फ़रमाया : तुम कितने भाई हो ? कहने लगे : थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारा हमारे साथ जंगल गया था हलाक हो गया और वोह वालिद साह़िब को हम सब से ज़ियादा प्यारा था। फ़रमाया : अब तुम कितने हो ? अ़र्ज़ किया : दस। फ़रमाया : ग्यारहवां कहां है ? कहा : वोह वालिद साह़िब के पास है क्यूं कि जो हलाक हो गया वोह उसी का ह़क़ीक़ी भाई था, अब वालिद साह़िब की उसी से कुछ तसल्ली होती है। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन भाइयों की बहुत इ़ज़्ज़त की और बहुत ख़ात़िरो मुदारात (अच्छी त़रह़) से उन की मेज़बानी फ़रमाई। **146 :** हर एक का ऊंट भर दिया और ज़ादे सफ़र दे दिया। **147 :** या'नी बिन्यामीन **148 :** उस को ले आओगे तो एक ऊंट ग़ल्ला उस के ह़िस्से का और ज़ियादा दूंगा। **149 :** जो उन्हों ने क़ीमत

يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ

वापस आएं   फिर जब वोह अपने बाप की त़रफ़ लौट कर गए[151] बोले ऐ हमारे बाप हम से ग़ल्ला रोक दिया गया[152]

فَاَرْسِلْ مَعَنَاۤ اَخَانَا نَكْتَلْ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ

तो हमारे भाई को हमारे साथ भेज दीजिये कि ग़ल्ला लाएं और हम ज़रूर इस की हिफ़ाज़त करेंगे   कहा क्या इस के बारे में तुम पर

عَلَيْهِ اِلَّا كَمَاۤ اَمِنْتُكُمْ عَلٰۤى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّ هُوَ

वैसा ही ए'तिबार कर लूं जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था[153] तो अल्लाह सब से बेहतर निगहबान   और वोह

اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ لَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ

हर मेहरबान से बढ़ कर मेहरबान   और जब उन्हों ने अपना अस्बाब खोला अपनी पूंजी पाई कि उन को फेर

اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَ نَمِيْرُ

दी गई है   बोले ऐ हमारे बाप अब हम और क्या चाहें   येह है हमारी पूंजी कि हमें वापस कर दी गई   और हम अपने घर के

اَهْلَنَا وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَ نَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

लिये ग़ल्ला लाएं और अपने भाई की हिफ़ाज़त करें और एक ऊंट का बोझ और ज़ियादा पाएं   येह देना बादशाह के सामने कुछ नहीं[154]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ

कहा मैं हरगिज़ इसे तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम मुझे अल्लाह का येह अ़ह्द न दे दो[155] कि ज़रूर इसे ले कर आओगे मगर

اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

येह कि तुम घिर जाओ (मजबूर हो जाओ)[156] फिर जब उन्हों ने या'क़ूब को अ़ह्द दे दिया कहा[157] अल्लाह का ज़िम्मा है उन बातों पर जो हम कह रहे हैं

وَ قَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّ ادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ

और कहा ऐ मेरे बेटो[158] एक दरवाज़े से न दाख़िल होना और जुदा जुदा दरवाज़ों से जाना[159]

में दी थी ताकि जब वोह अपना सामान खोलें तो अपनी पूंजी उन्हें मिल जाए और क़ह़त़ के ज़माने में काम आए और मख़्फ़ी (पोशीदा) त़ौर पर उन के पास पहुंचे ताकि उन्हें लेने में शर्म भी न आए और येह करम व एह़सान दोबारा आने के लिये उन की रग़बत का बाइ़स भी हो। **150 :** और इस का वापस करना ज़रूरी समझें। **151 :** और बादशाह के ह़ुस्ने सुलूक और उस के एह़सान का ज़िक्र किया, कहा कि उस ने हमारी वोह इ़ज़्ज़तो तक्रीम की, कि अगर आप की औलाद में से कोई होता तो भी ऐसा न कर सकता। फ़रमाया : अब अगर तुम बादशाहे मिस्र के पास जाओ तो मेरी त़रफ़ से सलाम पहुंचाना और कहना कि हमारे वालिद तेरे ह़क़ में तेरे इस सुलूक की वज्ह से दुआ़ करते हैं। **152 :** अगर आप हमारे भाई बिन्यामीन को न भेजेंगे तो ग़ल्ला न मिलेगा। **153 :** उस वक़्त भी तुम ने हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया था। **154 :** क्यूं कि उस ने इस से ज़ियादा एह़सान किये हैं। **155 :** या'नी अल्लाह की क़सम न खाओ **156 :** और इस को ले कर आना तुम्हारी त़ाक़त से बाहर हो जाए। **157 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने **158 :** मिस्र में **159 :** ताकि नज़रे बद से मह़फ़ूज़ रहो। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि नज़र ह़क़ है। पहली मरतबा ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह नहीं फ़रमाया था इस लिये कि उस वक़्त तक कोई येह न जानता था कि

www.dawateislami.net

وَمَآ اُغْنِیْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ

और मैं तुम्हें अल्लाह से बचा नहीं सकता[160] हुक्म तो सब अल्लाह ही का है मैं ने उसी पर भरोसा किया

وَعَلَیْهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَیْثُ اَمَرَهُمْ

और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा चाहिये और जब वोह दाख़िल हुए जहां से उन के बाप

اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ یُغْنِیْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِیْ نَفْسِ

ने हुक्म दिया था[161] वोह कुछ उन्हें अल्लाह से बचा न सकता हां या'क़ूब के जी की

یَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

एक ख़्वाहिश थी जो उस ने पूरी कर ली और बेशक वोह साहिबे इल्म है हमारे सिखाए से मगर अक्सर लोग नहीं

ع ٨ یَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ ع وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى یُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَیْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّیْۤ اَنَا

जानते[162] और जब वोह यूसुफ़ के पास गए[163] उस ने अपने भाई को अपने पास जगह दी[164] कहा यक़ीन जान मैं ही

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ

तेरा भाई[165] हूं तो येह जो कुछ करते हैं इस का ग़म न खा[166] फिर जब उन का सामान मुहय्या कर दिया[167]

جَعَلَ السِّقَایَةَ فِیْ رَحْلِ اَخِیْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَیَّتُهَا الْعِیْرُ اِنَّكُمْ

पियाला अपने भाई के कजावे में रख दिया[168] फिर एक मुनादी ने निदा की ऐ क़ाफ़िले वालो ! बेशक

येह सब भाई और एक बाप की औलाद हैं, लेकिन अब चूंकि जान चुके थे इस लिये नज़र हो जाने (लग जाने) का एह़तिमाल था, इस वासिते आप ने अ़लाह़दा अ़लाह़दा हो कर दाख़िल होने का हुक्म दिया। इस से मा'लूम हुवा कि आफ़तों और मुसीबतों से दफ़्अ़ की तदबीर और मुनासिब एह़तियातें अम्बिया का त़रीक़ा हैं और इस के साथ ही आप ने अम्रुल्लाह को तफ़्वीज़ कर दिया कि बा वुजूद एह़तियातों के तवक्कुल व ए'तिमाद अल्लाह पर है अपनी तदबीर पर भरोसा नहीं। **160 :** या'नी जो मुक़द्दर है वोह तदबीर से टाला नहीं जा सकता। **161 :** या'नी शह्र के मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से तो उन का मुतफ़र्रिक़ हो कर दाख़िल होना **162 :** जो अल्लाह तआ़ला अपने अस्फ़िया (ख़ास बन्दों) को इल्म देता है। **163 :** और उन्हों ने कहा कि हम आप के पास अपने भाई बिन्यामीन को ले आए तो ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : तुम ने बहुत अच्छा किया, फिर उन्हें इ़ज़्ज़त के साथ मेहमान बनाया और जा बजा दस्तर ख़्वान लगाए गए और हर दस्तर ख़्वान पर दो दो साह़िबों को बिठाया गया, बिन्यामीन अकेले रह गए तो वोह रो पड़े और कहने लगे कि आज अगर मेरे भाई यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) ज़िन्दा होते तो मुझे अपने साथ बिठाते, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया और आप ने बिन्यामीन को अपने दस्तर ख़्वान पर बिठाया। **164 :** और फ़रमाया कि तुम्हारे हलाक शुदा भाई की जगह मैं तुम्हारा भाई हो जाऊं तो क्या तुम पसन्द करोगे ? बिन्यामीन ने कहा कि आप जैसा भाई किस को मुयस्सर आए लेकिन या'क़ूब (عَلَيْهِ السَّلَام) का फ़रज़न्द और राह़ील (मादरे ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام) का नूरे नज़र होना तुम्हें कैसे ह़ासिल हो सकता है, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام रो पड़े और बिन्यामीन को गले से लगाया और **165 :** यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) **166 :** बेशक अल्लाह ने हम पर एह़सान किया और हमें ख़ैर के साथ जम्अ़ फ़रमाया और अभी इस राज़ की भाइयों को इत्तिलाअ़ न देना, येह सुन कर बिन्यामीन फ़र्ते मसर्रत से बेख़ुद हो गए और ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे : अब मैं आप से जुदा न होउंगा आप ने फ़रमाया : वालिद साह़िब को मेरी जुदाई का बहुत ग़म पहुंच चुका है अगर मैं ने तुम्हें भी रोक लिया तो उन्हें और ज़ियादा ग़म होगा, इलावा बरीं रोकने की बजुज़ इस के और कोई सबील भी नहीं है कि तुम्हारी त़रफ़ कोई ग़ैर पसन्दीदा बात मन्सूब हो। बिन्यामीन ने कहा : इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं। **167 :** और हर एक को एक बारे शुतुर (एक ऊंट का बोझ) ग़ल्ला दे दिया और एक बारे शुतुर बिन्यामीन के नाम ख़ास कर दिया **168 :** जो बादशाह के पानी पीने का सोने का जवाहिरात से मुरस्सअ़ किया हुवा था और उस वक़्त उस से ग़ल्ला नापने

لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ

तुम चोर हो बोले और उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तुम क्या नहीं पाते बोले बादशाह का

صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ اَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا

पैमाना नहीं मिलता और जो उसे लाएगा उस के लिये एक ऊंट का बोझ है और मैं इस का ज़ामिन हूं बोले

تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

ख़ुदा की क़सम तुम्हें ख़ूब मा'लूम है कि हम ज़मीन में फ़साद करने न आए और न हम चोर

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ

बोले फिर क्या सज़ा है उस की अगर तुम झूटे हो[169] बोले उस की सज़ा येह है कि जिस के

رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ

अस्बाब (सामान) में मिले वोही उस के बदले में ग़ुलाम बने[170] हमारे यहां ज़ालिमों की येही सज़ा है[171] तो अव्वल उन की ख़ुरजियों (थेलों) से तलाशी शुरूअ़

قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا

की अपने भाई[172] की ख़ुरजी से पहले फिर उसे अपने भाई की ख़ुरजी से निकाल लिया[173] हम ने यूसुफ़ को

لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ

येही तदबीर बताई[174] बादशाही क़ानून में उसे नहीं पहुंचता था कि अपने भाई को ले ले[175] मगर येह कि ख़ुदा चाहे[176]

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْۤا اِنْ

हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[177] और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है[178] भाई बोले अगर

का काम लिया जाता था, येह पियाला बिन्यामीन के कजावे में रख दिया गया और क़ाफ़िला कन्आ़न के क़स्द से रवाना हो गया, जब शहर के बाहर जा चुका तो अम्बार ख़ाने के कारकुनों को मा'लूम हुवा कि पियाला नहीं है, उन के ख़याल में येही आया कि येह क़ाफ़िले वाले ले गए, उन्हों ने इस की जुस्तजू के लिये आदमी भेजे। **169 :** इस बात में और पियाला तुम्हारे पास निकले। **170 :** और शरीअ़ते हज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام में चोरी की येही सज़ा मुक़र्रर थी। चुनान्चे उन्हों ने कहा कि **171 :** फिर येह क़ाफ़िला मिस्र लाया गया और उन साहिबों को हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में हाज़िर किया गया **172 :** या'नी बिन्यामीन **173 :** या'नी बिन्यामीन की ख़ुरजी से पियाला बरआमद किया। **174 :** अपने भाई के लेने की। इस मुआ़मले में भाइयों से इस्तिफ़्सार करें ताकि वोह शरीअ़ते हज़रत या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म बताएं जिस से भाई मिल सके। **175 :** क्यूं कि बादशाहे मिस्र के क़ानून में चोरी की सज़ा मारना और दूना माल ले लेना मुक़र्रर थी। **176 :** या'नी येह बात ख़ुदा की मशिय्यत (मरज़ी) से हुई कि इन के दिल में डाल दिया कि सज़ा भाइयों से दरयाफ़्त करें और उन के दिल में डाल दिया कि वोह अपनी सुन्नत के मुताबिक़ जवाब दें। **177 :** इल्म में जैसे कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए। **178 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हर आ़लिम के ऊपर उस से ज़ियादा इल्म रखने वाला आ़लिम होता है यहां तक कि येह सिलसिला **अल्लाह** तआ़ला तक पहुंचता है, उस का इल्म सब के इल्म से बरतर है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के भाई उ़लमा थे और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उन से आ'लम (बड़े आ़लिम) थे। जब पियाला बिन्यामीन के सामान से निकला तो भाई शरमिन्दा हुए और उन्हों ने सर झुकाए और।

www.dawateislami.net

يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ

येह चोरी करे[179] तो बेशक इस से पहले एक भाई चोरी कर चुका है[180] तो यूसुफ़ ने येह बात अपने दिल में रखी और उन

يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿۷۷﴾ قَالُوْا

पर ज़ाहिर न की जी में कहा तुम बदतर जगह हो[181] और अल्लाह ख़ूब जानता है जो बातें बनाते हो बोले

يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا

ऐ अ़ज़ीज़ ! इस के एक बाप हैं बूढ़े बड़े[182] तो हम में इस की जगह किसी को ले लो बेशक हम

نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۷۸﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا

तुम्हारे एह़सान देख रहे हैं कहा[183] ख़ुदा की पनाह कि हम लें मगर उसी को जिस के पास

مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ ع فَلَمَّا اسْتَايْــٴَـسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ

हमारा माल मिला[184] जब तो हम ज़ालिम होंगे फिर जब इस से ना उम्मीद हुए अलग जा कर सरगोशी करने लगे

قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ

उन का बड़ा भाई बोला क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का अ़ह्द ले लिया था

وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ

और इस से पहले यूसुफ़ के ह़क़ में तुम ने कैसी तक़्सीर की तो मैं यहां से न टलूंगा यहां तक कि मेरे बाप[185]

اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا

मुझे इजाज़त दें या अल्लाह मुझे हुक्म फ़रमाए[186] और उस का हुक्म सब से बेहतर अपने बाप के पास लौट कर जाओ फिर अ़र्ज़ करो

يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ

ऐ हमारे बाप बेशक आप के बेटे ने चोरी की[187] और हम तो इतनी ही बात के गवाह हुए थे जितनी हमारे इ़ल्म में थी[188] और हम ग़ैब के

179 : या'नी सामान में पियाला निकलने से सामान वाले का चोरी करना तो यक़ीनी नहीं लेकिन अगर येह फ़े'ल इस का हो **180 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और जिस को उन्हों ने चोरी क़रार दे कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ निस्बत किया वोह वाक़िआ येह था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के नाना का एक बुत था जिस को वोह पूजते थे, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने चुपके से वोह बुत लिया और तोड़ कर रास्ते में नजासत के अन्दर डाल दिया, येह ह़क़ीक़त में चोरी न थी बुत परस्ती का मिटाना था, भाइयों का इस ज़िक्र से येह मुद्आ (मक़्सद) था कि हम लोग बिन्यामीन के सोतेले भाई हैं, येह फ़े'ल हो तो शायद बिन्यामीन का हो, न हमारी इस में शिर्कत न हमें इस की इत्तिलाअ़। **181 :** उस से जिस की त़रफ़ चोरी की निस्बत करते हो। क्यूं कि चोरी की निस्बत ह़ज़रते यूसुफ़ की त़रफ़ तो ग़लत़ है वोह फ़े'ल तो शिर्क का इब्त़ाल (मिटाना) और इबादत था और तुम ने जो यूसुफ़ के साथ किया वोह बड़ी ज़ियादतियां हैं। **182 :** इन से मह़ब्बत रखते हैं और इन्हीं से उन के दिल की तसल्ली है **183 :** ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने **184 :** क्यूं कि तुम्हारे फ़ैसले से हम उसी को लेने के मुस्तह़िक़ हैं जिस के कजावे में हमारा माल मिला, अगर हम बजाए इस के दूसरे को लें **185 :** मेरे वापस आने की **186 :** मेरे भाई को ख़लासी दे कर या इस को छोड़

www.dawateislami.net

حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ

निगहबान न थे[189] और उस बस्ती से पूछ देखिये जिस में हम थे और उस क़ाफ़िले से जिस में हम आए

وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ

और हम बेशक सच्चे हैं[190] कहा[191] तुम्हारे नफ़्स ने तुम्हें कुछ ह़ीला बना दिया तो अच्छा सब्र है

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ

क़रीब है कि अल्लाह उन सब को मुझ से ला मिलाए[192] बेशक वोही इल्म व ह़िक्मत वाला है और

تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

उन से मुंह फेरा[193] और कहा हाए अफ़्सोस यूसुफ़ की जुदाई पर और उस की आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं[194]

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا

तो वोह गुस्सा खाता रहा बोले[195] ख़ुदा की क़सम आप हमेशा यूसुफ़ की याद करते रहेंगे यहां तक कि गोर कनारे (मौत के क़रीब) जा लगें

اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ

या जान से गुज़र जाएं कहा मैं तो अपनी परेशानी और ग़म की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूं[196]

وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ

और मुझे अल्लाह की वोह शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[197] ऐ बेटो ! जाओ यूसुफ़ और उस के भाई

وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا

का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद न हो बेशक अल्लाह की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर

कर तुम्हारे साथ चलने का। **187 :** या'नी उन की त़रफ़ चोरी की निस्बत की गई **188 :** कि पियाला उन के कजावे में निकला **189 :** और हमें ख़बर न थी कि येह सूरत पेश आएगी, ह़क़ीक़ते ह़ाल अल्लाह ही जाने कि क्या है और पियाला किस त़रह़ बिन्यामीन के सामान से बरआमद हुवा। **190 :** फिर येह लोग अपने वालिद के पास वापस आए और सफ़र में जो कुछ पेश आया था उस की ख़बर दी और बड़े भाई ने जो कुछ बता दिया था वोह सब वालिद से अ़र्ज़ किया। **191 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कि चोरी की निस्बत बिन्यामीन की त़रफ़ ग़लत़ है और चोरी की सज़ा ग़ुलाम बनाना येह भी कोई क्या जाने अगर तुम फ़तवा न देते और तुम्हीं न बताते, तो **192 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ को और इन के दोनों भाइयों को। **193 :** ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन की ख़बर सुन कर और आप का ग़मो अन्दोह (रन्जो अलम) इन्तिहा को पहुंच गया **194 :** रोते रोते आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई ज़ईफ़ हो गई। ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जुदाई में ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अस्सी बरस रोते रहे। और अह़िब्बा (प्यारों) के ग़म में रोना जो तक्लीफ़ और नुमाइश से न हो और उस के साथ अल्लाह की शिकायत व बे सब्री न पाई जाए रह़मत है, इन ग़म के अय्याम में ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बाने मुबारक पर कभी कोई कलिमा बे सब्री का न आया। **195 :** बिरादराने यूसुफ़ अपने वालिद से **196 :** तुम से या और किसी से नहीं **197 :** इस से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानते थे कि यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं और उन से मिलने की तवक़्क़ोअ़ रखते थे और येह भी जानते थे कि उन का ख़्वाब ह़क़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा। एक रिवायत येह भी है कि आप ने ह़ज़रते मलकुल मौत से दरयाफ़्त किया कि क्या तुम ने मेरे बेटे यूसुफ़ की रूह़ क़ब्ज़ की है ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं ! इस से भी आप को उन की ज़िन्दगानी

www.dawateislami.net

الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ

काफ़िर लोग[198] फिर जब वोह यूसुफ़ के पास पहुंचे बोले ऐ अ़ज़ीज़ हमें और हमारे घर वालों को मुसीबत पहुंची[199] और

اَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ تَصَدَّقْ

हम बे क़दर पूंजी ले कर आए हैं[200] तो आप हमें पूरा माप दीजिये[201] और हम पर

عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ

ख़ैरात कीजिये[202] बेशक **अल्लाह** ख़ैरात वालों को सिला देता है[203] बोले कुछ ख़बर है तुम ने यूसुफ़ और

بِيُوْسُفَ وَ اَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ

उस के भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे[204] बोले क्या सचमुच आप ही यूसुफ़ हैं

قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَ هٰذَاۤ اَخِيْ٘ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ

कहा मैं यूसुफ़ हूं और येह मेरा भाई बेशक **अल्लाह** ने हम पर एह़सान किया[205] बेशक जो परहेज़ गारी और

يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ

सब्र करे तो **अल्लाह** नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता[206] बोले ख़ुदा की क़सम बेशक **अल्लाह** ने आप को

اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ

हम पर फ़ज़ीलत दी और बेशक हम ख़त़ावार थे[207] कहा आज[208] तुम पर कुछ मलामत नहीं

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ٘ وَ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ

अल्लाह तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है[209] मेरा येह कुरता ले जाओ[210] इसे मेरे बाप के

का इत़्मीनान हुवा और आप ने अपने फ़रज़न्दों से फ़रमाया **198 :** येह सुन कर बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام फिर मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए। **199 :** या'नी तंगी और भूक की सख़्ती और जिस्मों का दुबला हो जाना। **200 :** रद्दी खोटी जिसे कोई सौदागर माल की क़ीमत में क़बूल न करे, वोह चन्द खोटे दिरहम थे और असासुल बैत (घरेलू सामान) की चन्द पुरानी बोसीदा चीज़ें। **201 :** जैसा खरे दामों से देते थे **202 :** येह नाक़िस पूंजी क़बूल कर के। **203 :** उन का येह ह़ाल सुन कर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर गिर्या त़ारी हुवा और चश्मे गौहर फ़िशां से अश्क रवां हो गए और **204 :** या'नी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को मारना, कूंएं में गिराना, बेचना, वालिद से जुदा करना और उन के बा'द उन के भाई को तंग रखना, परेशान करना तुम्हें याद है ? और येह फ़रमाते हुए ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को तबस्सुम आ गया और उन्हों ने आप के गौहरे दन्दान (मोती जैसे दांतों) का हुस्न देख कर पहचाना कि येह तो जमाले यूसुफ़ी की शान है। **205 :** हमें जुदाई के बा'द सलामती के साथ मिलाया और दुन्या व दीन की ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। **206 :** बिरादराने ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ब त़रीक़े उ़ज़्र ख़्वाही (मुआ़फ़ी चाहते हुए) **207 :** इसी का नतीजा है कि **अल्लाह** ने आप को इ़ज़्ज़त दी, बादशाह बनाया और हमें मिस्कीन बना कर आप के सामने लाया। **208 :** अगर्चे मलामत करने का दिन है मगर मेरी जानिब से **209 :** इस के बा'द ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से अपने वालिदे माजिद का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने कहा : आप की जुदाई के ग़म में रोते रोते उन की बीनाई बह़ाल नहीं रही आप ने फ़रमाया **210 :** जो मेरे वालिदे माजिद ने ता'वीज़ बना कर मेरे गले में डाल दिया था।

عَلٰی وَجْهِ اَبِیْ یَاْتِ بَصِیْرًا ۚ وَ اْتُوْنِیْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۹۳﴾ وَ لَمَّا فَصَلَتِ ع

मुंह पर डालो उन की आंखें खुल जाएंगी और अपने सब घरभर (घर वालों) को मेरे पास ले आओ जब क़ाफ़िला मिस्र से

الْعِیْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّیْ لَاَجِدُ رِیْحَ یُوْسُفَ لَوْ لَاۤ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾

जुदा हुवा[211] यहां उन के बाप ने[212] कहा बेशक मैं यूसुफ़ की ख़ुश्बू पाता हूं अगर मुझे येह न कहो कि सठ (बहक) गया

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِیْ ضَلٰلِكَ الْقَدِیْمِ ﴿۹۵﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَ الْبَشِیْرُ

बेटे बोले ख़ुदा की क़सम आप अपनी उसी पुरानी ख़ुद रफ़्तगी (महब्बत) में हैं[213] फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया[214]

اَلْقٰىهُ عَلٰی وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِیْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚۙ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ

उस ने वोह कुरता या'क़ूब के मुंह पर डाला उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रोशन हो गईं) कहा मैं न कहता था कि मुझे **अल्लाह** की वोह

مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوْا یٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا

शानें मा'लूम हैं जो तुम नहीं जानते[215] बोले ऐ हमारे बाप हमारे गुनाहों की मुआफ़ी मांगिये बेशक हम

خٰطِـِٕیْنَ ﴿۹۷﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۹۸﴾

ख़ताकार हैं कहा जल्द मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब से चाहूंगा बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है[216]

211 : और कन्आन की तरफ़ रवाना हुवा। **212 :** अपने पोतों और पास वालों से **213 :** क्यूं कि वोह इस गुमान में थे कि अब हज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) कहां, उन की वफ़ात भी हो चुकी होगी। **214 :** लश्कर के आगे आगे वोह हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई यहूदा थे, उन्हों ने कहा कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास ख़ून आलूदा क़मीस भी मैं ही ले कर गया था, मैं ने ही कहा था कि यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) को भेड़िया खा गया, मैं ने ही उन्हें ग़मगीन किया था, आज कुरता भी मैं ही ले कर जाऊंगा और हज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की ज़िन्दगानी की फ़रहत अंगेज़ (ख़ुशी पहुंचाने वाली) ख़बर भी मैं ही सुनाऊंगा तो यहूदा बरहना सर, बरहना पा, कुरता ले कर अस्सी फ़रसंग (दो सो चालीस मील) दौड़ते आए, रास्ते में खाने के लिये सात रोटियां साथ लाए थे, फ़र्ते शौक़ का येह आलम था कि उन को भी रास्ते में खा कर तमाम न कर सके। **215 :** हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया : यूसुफ़ कैसे हैं ? यहूदा ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर वोह मिस्र के बादशाह हैं। फ़रमाया : मैं बादशाही को क्या करूं येह बताओ किस दीन पर हैं ? अ़र्ज़ किया : दीने इस्लाम पर। फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **अल्लाह** की ने'मत पूरी हुई। बिरादराने हज़रत यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام **216 :** हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने वक़्ते सहर बा'दे नमाज़ हाथ उठा कर **अल्लाह** तआ़ला के दरबार में अपने साहिब ज़ादों के लिये दुआ़ की, वोह क़बूल हुई और हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को वह्य फ़रमाई गई कि साहिब ज़ादों की ख़ता बख़्श दी गई। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे माजिद को मअ़ उन के अहलो औलाद के बुलाने के लिये अपने भाइयों के साथ दो सो सुवारियां और कसीर सामान भेजा था, हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र का इरादा फ़रमाया और अपने अहल को जम्अ़ किया, कुल मर्द व ज़न बहत्तर या तिहत्तर तन थे, **अल्लाह** तआ़ला ने उन में येह बरकत फ़रमाई कि उन की नस्ल इतनी बढ़ी कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ बनी इसराईल मिस्र से निकले तो छ[6] लाख से ज़ियादा थे, बा वुजूदे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़माना इस से सिर्फ़ चार सो साल बा'द है। अल हासिल (क़िस्सा मुख़्तसर येह कि) जब हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने मिस्र के बादशाहे आ'ज़म को अपने वालिदे माजिद की तशरीफ़ आवरी की इत्तिलाअ़ दी और चार हज़ार लश्करी और बहुत से मिस्री सुवारों को हमराह ले कर आप अपने वालिद साहिब के इस्तिक़्बाल के लिये सदहा रेशमी फरेरे उड़ाते (झन्डे लहराते), क़ितारें बांधे रवाना हुए, हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द यहूदा के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे, जब आप की नज़र लश्कर पर पड़ी और आप ने देखा कि सहरा ज़र्क़ बर्क़ (रंग बरंगे) सुवारों से पुर हो रहा है। फ़रमाया : ऐ यहूदा ! क्या येह फ़िरऔ़ने मिस्र है जिस का लश्कर इस शौकतो शिकोह से आ रहा है ? अ़र्ज़ किया : नहीं ! येह हुज़ूर के फ़रज़न्द यूसुफ़ हैं। "عَلَيْهِمُ السَّلَام" हज़रते जिब्रील ने आप को मुतअ़ज्जिब देख कर अ़र्ज़

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ

फिर जब वोह सब यूसुफ़ के पास पहुंचे उस ने अपने मां[217] बाप को अपने पास जगह दी और कहा मिस्र में[218] दाख़िल हो

شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ

अल्लाह चाहे तो अमान के साथ[219] और अपने मां बाप को तख़्त पर बिठाया और वोह सब[220] उस के लिये सज्दे में गिरे[221] और

قَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَ

यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप येह मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है[222] बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और

قَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ

बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया कि मुझे क़ैद से निकाला[223] और आप सब को गाउं से ले आया बा'द इस के

اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ

कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ

बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है[224] ऐ मेरे रब बेशक तू ने मुझे एक सल्तनत दी और मुझे कुछ

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ قف اَنْتَ وَلِيّٖ فِي

बातों का अन्जाम निकालना सिखाया ऐ आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले तू मेरा काम बनाने वाला है

किया : हवा की तरफ़ नज़र फ़रमाइये आप के सुरूर में शिर्कत के लिये मलाएका हाज़िर हुए हैं जो मुद्दतों आप के ग़म के सबब रोते रहे हैं। मलाएका की तस्बीह ने और घोड़ों के हिनहिनाने ने और तब्लो बूक़ की आवाज़ों ने अजीब कैफ़िय्यत पैदा कर दी थी, येह मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों हज़रात वालिदो वल्द, पिदरो पिसर (बाप और बेटा) क़रीब हुए। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सलाम अ़र्ज़ करने का इरादा ज़ाहिर किया, हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि आप तवक्कुफ़ कीजिये और वालिद साहिब को इब्तिदा ब सलाम का मौक़अ़ दीजिये। चुनान्चे हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَامُذْهِبَ الْاَحْزَان (या'नी ऐ ग़मो अन्दोह के दूर करने वाले सलाम हो) और दोनों साहिबों ने उतर कर मुआनक़ा किया और मिल कर ख़ूब रोए, फिर उस मुज़य्यन फ़िरूद गाह (क़ियाम गाह) में दाख़िल हुए जो पहले से आप के इस्तिक़्बाल के लिये नफ़ीस ख़ैमे वग़ैरा नस्ब कर के आरास्ता की गई थी। येह दुख़ूल हुदूदे मिस्र में था इस के बा'द दूसरा दुख़ूल ख़ास शहर में है जिस का बयान अगली आयत में है। **217 :** मां से या ख़ास वालिदा मुराद हैं अगर उस वक़्त तक ज़िन्दा हों या ख़ाला। मुफ़स्सिरीन के इस बाब में कई अक़्वाल हैं। **218 :** या'नी ख़ास शहर में **219 :** जब मिस्र में दाख़िल हुए और हज़रते यूसुफ़ अपने तख़्त पर जल्वा अफ़्रोज़ हुए आप ने अपने वालिदैन का इक्राम फ़रमाया। **220 :** या'नी वालिदैन और सब भाई **221 :** येह सज्दा तहिय्यत व तवाज़ोअ़ (सलाम व आ़जिज़ी) का था जो उन की शरीअ़त में जाइज़ था जैसे कि हमारी शरीअ़त में किसी मुअ़ज़्ज़म (बुज़ुर्ग) की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम और मुसाफ़हा और दस्त बोसी जाइज़ है। सज्दए इबादत अल्लाह तआ़ला के सिवा और किसी के लिये कभी जाइज़ नहीं हुवा न हो सकता है क्यूं कि येह शिर्क है और सज्दए तहिय्यत व ता'ज़ीम भी हमारी शरीअ़त में जाइज़ नहीं। **222 :** जो मैं ने सिग़र सिनी या'नी बचपन की हालत में देखा था। **223 :** इस मौक़अ़ पर आप ने कूंएं का ज़िक्र न किया ताकि भाइयों को शरमिन्दगी न हो। **224 :** अस्हाबे तवारीख़ का बयान है कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास मिस्र में चौबीस 24 साल बेहतरीन ऐशो आराम में ख़ुशहाली के साथ रहे, क़रीबे वफ़ात आप ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को वसिय्यत की, कि आप का जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर अर्ज़े मुक़द्दसा में आप के वालिद हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र शरीफ़ के पास दफ़्न किया जाए, इस वसिय्यत की ता'मील की गई और बा'दे

www.dawateislami.net

الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكَ مِنْ

दुन्या और आख़िरत में मुझे मुसल्मान उठा और उन से मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं[225] येह कुछ

اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ اِلَیْكَ ۚ وَ مَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ

ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी त़रफ़ वह़्य करते हैं और तुम उन के पास न थे[226] जब उन्हों ने अपना काम पक्का किया था

وَ هُمْ یَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ مَاۤ اَكْثَرُ النَّاسِ وَ لَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ مَا

और वोह दाउं चल रहे थे[227] और अक्सर आदमी तुम कितना ही चाहो ईमान न लाएंगे और तुम

تَسْـَٔلُهُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۴﴾ ع وَ كَاَیِّنْ مِّنْ ع ۱۱ ۵

इस पर उन से कुछ उजरत नहीं मांगते येह[228] तो नहीं मगर सारे जहान को नसीह़त और कितनी निशानियां

اٰیَةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ یَمُرُّوْنَ عَلَیْهَا وَ هُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ وَ

हैं[229] आस्मानों और ज़मीन में कि लोग उन पर गुज़रते हैं[230] और उन से बे ख़बर रहते हैं और

مَا یُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَ هُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۶﴾ اَفَاَمِنُوْۤا اَنْ تَاْتِیَهُمْ

उन में अक्सर वोह हैं कि **अल्लाह** पर यक़ीन नहीं लाते मगर शिर्क करते हुए[231] क्या इस से निडर हो बैठे कि

غَاشِیَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِیَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۱۰۷﴾

अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें आ कर घेर ले या क़ियामत उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

वफ़ात साल (एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त) की लकड़ी के ताबूत में आप का जसदे अत़्हर शाम में लाया गया, उसी वक़्त आप के भाई ईस की वफ़ात हुई और आप दोनों भाइयों की विलादत भी साथ हुई थी और दफ़्न भी एक ही क़ब्र में किये गए और दोनों साहिबों की उम्र एक सो पेंतालीस साल की थी, जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़्न कर के मिस्र की त़रफ़ वापस हुए तो आप ने येह दुआ़ की जो अगली आयत में मज़्कूर है। **225 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِمُ السَّلَام। अम्बिया सब मा'सूम हैं, ह़ज़रत यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की येह दुआ़ ता'लीमे उम्मत के लिये है कि वोह हुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ मांगते रहें। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام अपने वालिदे माजिद के बा'द तेईस साल रहे इस के बा'द आप की वफ़ात हुई, आप के मक़ामे दफ़्न में अहले मिस्र के अन्दर सख़्त इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा, हर मह़ल्ले वाले ह़ुसूले बरकत के लिये अपने ही मह़ल्ले में दफ़्न करने पर मुसिर (इसरार कर रहे) थे, आख़िर येह राय क़रार पाई कि आप को दरियाए नील में दफ़्न किया जाए ताकि पानी आप की क़ब्र से छूता हुवा गुज़रे और उस की बरकत से तमाम अहले मिस्र फ़ैज़याब हों। चुनान्चे आप को संगे रुख़ाम, या संगे मरमर के सन्दूक़ में दरियाए नील के अन्दर दफ़्न किया गया और आप वहीं रहे यहां तक कि चार सो बरस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने आप का ताबूत शरीफ़ निकाला और आप को आप के आबाए किराम के पास मुल्के शाम में दफ़्न किया। **226 :** या'नी बिरादराने यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के **227 :** बा वुजूद इस के ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم आप का इन तमाम वाक़िआत को इस तफ़्सील से बयान फ़रमाना ग़ैबी ख़बर और मो'जिज़ा है। **228 :** क़ुरआन शरीफ़ **229 :** ख़ालिक़ और उस की तौह़ीद व सिफ़ात पर दलालत करने वाली, इन निशानियों से हलाक शुदा उम्मतों के आसार मुराद हैं। (مدارک) **230 :** और उन का मुशाहदा करते हैं लेकिन तफ़क्कुर (सोच बिचार) नहीं करते, इब्रत नहीं ह़ासिल करते **231 :** जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह आयत मुश्रिकीन के रद में नाज़िल हुई जो **अल्लाह** तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत व रज़्ज़ाक़िय्यत का इक़रार करने के साथ बुत परस्ती कर के ग़ैरों को इबादत में उस का शरीक करते थे।

وقف النبي عليه الصلوة والسلام

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ

तुम फ़रमाओ[232] येह मेरी राह है मैं **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाता हूं मैं और जो मेरे क़दमों पर चलें दिल की आंखें रखते हैं[233]

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और **अल्लाह** को पाकी है[234] और मैं शरीक करने वाला नहीं और हम ने तुम से पहले जितने रसूल भेजे

اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

सब मर्द ही थे[235] जिन्हें हम वह्य करते और सब शहर के साकिन थे[236] तो क्या येह लोग ज़मीन में चले नहीं

فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ

तो देखते इन से पहलों का क्या अन्जाम हुवा[237] और बेशक आख़िरत का घर

لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْــَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا

परहेज़ गारों के लिये बेहतर तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं यहां तक कि जब रसूलों को ज़ाहिरी अस्बाब की उम्मीद न रही[238] और लोग समझे

اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاۗءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاۗءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا

कि रसूलों ने उन से ग़लत़ कहा था[239] उस वक़्त हमारी मदद आई तो जिसे हम ने चाहा बचा लिया गया[240] और हमारा अ़ज़ाब

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي

मुजरिम लोगों से फेरा नहीं जाता बेशक उन की ख़बरों से[241] अ़क़्ल मन्दों की आंखें

الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ

खुलती हैं[242] येह कोई बनावट की बात नहीं[243] लेकिन अपने से अगले कामों की[244]

232 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन मुश्रिकीन से कि तौह़ीदे इलाही और दीने इस्लाम की दा'वत देना 233 : इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन के अस्ह़ाब अह़सन त़रीक़ और अफ़्ज़ल हिदायत पर हैं, येह इ़ल्म के मा'दिन (सरचश्मे), ईमान के ख़ज़ाने, रह़मान के लश्कर हैं। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : त़रीक़ा इख़्तियार करने वालों को चाहिये कि गुज़रे हुओं का त़रीक़ा इख़्तियार करें वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब हैं जिन के दिल उम्मत में सब से ज़ियादा पाक, इ़ल्म में सब से अ़मीक़ (कामिल), तकल्लुफ़ (नुमूदो नुमाइश) में सब से कम, ऐसे ह़ज़रात हैं जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सोह़बत और उन के दीन की इशाअ़त के लिये बरगुज़ीदा किया। 234 : तमाम उ़यूबो नक़ाइस और शुरका व अज़्दाद व अन्दाद (मुख़ालिफ़ व हमपल्ला) से। 235 : न फ़िरिश्ते न किसी औ़रत को नबी बनाया गया। येह अहले मक्का का जवाब है जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** ने फ़िरिश्तों को क्यूं न नबी बना कर भेजा ? उन्हें बताया गया कि येह क्या तअ़ज्जुब की बात है पहले ही से कभी फ़िरिश्ते नबी हो कर न आए। 236 : ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि अहले बादिया (दीहातियों) और जिन्नात और औ़रतों में से कभी कोई नबी नहीं किया गया। 237 : अम्बिया के झुटलाने से किस त़रह़ हलाक किये गए 238 : या'नी लोगों को चाहिये कि अ़ज़ाबे इलाही में ताख़ीर होने और ऐ़शो आसाइश के देर तक रहने पर मग़रूर न हो जाएं क्यूं कि पहली उम्मतों को भी बहुत मोहलतें दी जा चुकी हैं यहां तक कि जब उन के अ़ज़ाबों में बहुत ताख़ीर हुई और ब अस्बाबे ज़ाहिर रसूलों को क़ौम पर दुन्या में ज़ाहिर अ़ज़ाब आने की उम्मीद न रही। (ابوالسعود) 239 : या'नी क़ौमों ने गुमान किया कि रसूलों ने उन्हें जो अ़ज़ाब के वा'दे दिये थे वोह पूरे होने वाले नहीं। (مدارک وغیرہ) 240 : अपने बन्दों में से या'नी इत़ाअ़त करने

www.dawateislami.net

يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾ ع

तस्दीक़ है और हर चीज़ का मुफ़स्सल बयान और मुसल्मानों के लिये हिदायत व रह़मत

اٰيَاتُهَا ٤٣ ﴿١٣ سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ ٩٦﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٦

सूरए रा'द मदनिय्या है, इस में तेंतालीस आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓمّٓرٰ ۚ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَ

येह किताब की आयतें हैं[2] और वोह जो तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[3] ह़क़ है[4]

لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

मगर अक्सर आदमी ईमान नहीं लाते[5] **अल्लाह** है जिस ने आस्मानों को बुलन्द किया बे सुतूनों के कि

تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ

तुम देखो[6] फिर अ़र्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया[7] हर एक एक ठहराए हुए

لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ

वा'दे तक चलता है[8] **अल्लाह** काम की तदबीर फ़रमाता और मुफ़स्सल निशानियां बताता है[9] कहीं तुम अपने रब का मिलना

वाले ईमानदारों को बचा लिया। **241 :** या'नी अम्बिया की और उन की क़ौमों की **242 :** जैसे कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िए से बड़े बड़े नताइज निकलते हैं और मा'लूम होता है कि सब्र का नतीजा सलामत व करामत है और ईज़ा रसानी व बद ख़्वाही का अन्जाम नदामत और **अल्लाह** पर भरोसा रखने वाला काम्याब होता है और बन्दे को सख़्तियों के पेश आने से मायूस न होना चाहिये, रह़मते इलाही दस्त गीरी करे तो किसी की बद ख़्वाही कुछ नहीं कर सकती। इस के बा'द क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है : **243 :** जिस को किसी इन्सान ने अपनी त़रफ़ से बना लिया हो क्यूं कि इस का ए'जाज़ (आ़जिज़ कर देना) इस के मिनल्लाह (**अल्लाह** की त़रफ़ से) होने को क़त़ई त़ौर पर साबित करता है। **244 :** तौरैत इन्जील वग़ैरा कुतुबे इलाहिय्यह की **1 :** सूरए रा'द मक्किय्या है और **एक** रिवायत ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से येह है कि दो आयतों ''لَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ'' और ''يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا'' के सिवा बाक़ी सब मक्की हैं, और **दूसरा** क़ौल येह है कि येह सूरह मदनी है, इस में छ[6] रुकूअ़ तेंतालीस या पैंतालीस आयतें और आठ सो पचपन कलिमे और तीन हज़ार पांच सो छ[6] ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ की **3 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **4 :** कि इस में कुछ शुबा नहीं **5 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का जो येह कहते हैं कि येह कलाम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है इन्हों ने ख़ुद बनाया, इस आयत में उन का रद फ़रमाया और इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी रबूबिय्यत के दलाइल और अपने अ़जाइबे क़ुदरत बयान फ़रमाए जो उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं **6 :** इस के दो मा'ना हो सकते हैं, **एक** येह कि आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बुलन्द किया जैसा कि तुम इन को देखते हो या'नी ह़क़ीक़त में कोई सुतून ही नहीं है और येह **मा'ना** भी हो सकते हैं कि तुम्हारे देखने में आने वाले सुतूनों के बिग़ैर बुलन्द किया, इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि सुतून तो हैं मगर तुम्हारे देखने में नहीं आते और क़ौले अव्वल सह़ीह़ तर है इसी पर जुम्हूर हैं। (خازن وجمل) **7 :** अपने बन्दों के मनाफ़ेअ़ और अपने बिलाद के मसालेह़ के लिये, वोह ह़स्बे ह़ुक्म गर्दिश में हैं। **8 :** या'नी फ़नाए दुन्या के वक़्त तक। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि اَجَلٍ مُّسَمًّى से इन के दरजात व मनाज़िल मुराद हैं या'नी वोह अपनी मनाज़िल व दरजात में एक ग़ायत (ह़द) तक गर्दिश करते हैं जिस से तजावुज़ नहीं कर सकते, शम्सो क़मर में से हर एक के लिये सैरे ख़ास जिहते ख़ास की त़रफ़ सुरअ़त व बत़ू व ह़रकत की मिक़्दारे ख़ास से मुक़र्रर फ़रमाई है। **9 :** अपनी वह़दानिय्यत व कमाले क़ुदरत की।

تُوْقِنُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ

यक़ीन करो[10] और वोही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और इस में लंगर[11] और नहरें बनाईं

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ

और ज़मीन में हर क़िस्म के फल दो दो त़रह़ के बनाए[12] रात से दिन को छुपा लेता है

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ

बेशक इस में निशानियां हैं ध्यान करने वालों को[13] और ज़मीन के मुख़्तलिफ़ क़ित़ए (टुकड़े) हैं और हैं पास पास[14]

وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِیْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَیْرُ صِنْوَانٍ یُّسْقٰی بِمَآءٍ

और बाग़ हैं अंगूरों के और खेती और खजूर के पेड़ एक थाले (गढ़े) से उगे और अलग अलग सब को एक ही पानी

وَّاحِدٍ ۫ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰی بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ

दिया जाता है और फलों में हम एक को दूसरे से बेहतर करते हैं बेशक इस में निशानियां हैं

یَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ

अ़क़्ल मन्दों के लिये[15] और अगर तुम तअ़ज्जुब करो[16] तो अचम्बा (तअ़ज्जुब) तो उन के इस कहने का है कि क्या हम मिट्टी हो कर फिर

جَدِیْدٍ ؕ۬ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓىٕكَ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ

नए बनेंगे[17] वोह हैं जो अपने रब से मुन्किर हुए और वोह हैं जिन की गरदनों में

اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَیَسْتَعْجِلُوْنَكَ

तौक़ होंगे[18] और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उसी में रहना और तुम से अ़ज़ाब की

10 : और जानो कि जो इन्सान को नीस्ती के बा'द हस्त (या'नी जब वोह था ही नहीं तो उस को पैदा) करने पर क़ादिर है वोह उस को मौत के बा'द भी ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **11 :** या'नी मज़बूत़ पहाड़ **12 :** सियाह व सफ़ेद, तुर्श व शीरीं, सग़ीर व कबीर, बर्री व बुस्तानी (सहराई व बाग़ाती), गर्म व सर्द, तर व ख़ुश्क वग़ैरा। **13 :** जो समझें कि येह तमाम आसार सानेए ह़कीम (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) के वुजूद पर दलालत करते हैं। **14 :** एक दूसरे से मिले हुए, इन में कोई क़ाबिले ज़राअ़त है कोई ना क़ाबिले ज़राअ़त, कोई पथरीला कोई रेतीला। **15 :** ह़सन बसरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इस में बनी आदम के क़ुलूब की एक तम्सील (मिसाल) है कि जिस त़रह़ ज़मीन एक थी इस के मुख़्तलिफ़ क़ित़आत (टुकड़े) हुए, उन पर आस्मान से एक ही पानी बरसा, उस से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल फूल बेल बूटे अच्छे बुरे पैदा हुए, इसी त़रह़ आदमी ह़ज़रते आदम से पैदा किये गए, इन पर आस्मान से हिदायत उतरी, उस से बा'ज़ दिल नर्म हुए उन में ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ पैदा हुवा, बा'ज़ सख़्त हो गए वोह लह्वो लग़्व में मुब्तला हुए तो जिस त़रह़ ज़मीन के क़ित़आत अपने फूल फल में मुख़्तलिफ़ हैं इसी त़रह़ इन्सानी क़ुलूब अपने आसार व अन्वार व असरार में मुख़्तलिफ़ हैं। **16 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब करने से बा वुजूदे कि आप इन में सादिक़ो अमीन मा'रूफ़ थे **17 :** और उन्हों ने कुछ न समझा कि जिस ने इब्तिदाअन बिग़ैर मिसाल के पैदा कर दिया उस को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है। **18 :** रोज़े क़ियामत।

بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ

जल्दी करते हैं रहमत से पहले[19] और इन से अगलों की सज़ाएं हो चुकीं[20] और बेशक तुम्हारा रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۶﴾ وَ

तो लोगों के ज़ुल्म पर भी उन्हें एक त़रह़ की मुआफ़ी देता है[21] और बेशक तुम्हारे रब का अ़ज़ाब सख़्त है[22] और

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ

काफ़िर कहते हैं इन पर इन के रब की त़रफ़ से कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी[23] तुम तो

مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿۷﴾ ع اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ ع

डर सुनाने वाले हो और हर क़ौम के हादी[24] **अल्लाह** जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है[25] और पेट जो

19 : मुश्रिकीने मक्का और येह जल्दी करना ब त़रीक़े तमस्ख़ुर (बत़ौरे मज़ाक़) था और रहमत से सलामतो आ़फ़िय्यत मुराद है। **20 :** वोह भी रसूलों की तक्ज़ीब और अ़ज़ाब का तमस्ख़ुर किया करते थे, उन का ह़ाल देख कर इब्रत ह़ासिल करना चाहिये। **21 :** कि उन के अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता और उन्हें मोहलत देता है। **22 :** जब अ़ज़ाब फ़रमाए। **23 :** काफ़िरों का येह क़ौल निहायत बे ईमानी का क़ौल था जितनी आयात नाज़िल हो चुकी थीं और मो'जिज़ात दिखाए जा चुके थे सब को उन्हों ने कल्अ़दम क़रार दे दिया, येह इन्तिहा दरजे की ना इन्साफ़ी और ह़क़ दुश्मनी है, जब ह़ुज्जत क़ाइम हो चुके और ना क़ाबिले इन्कार बराहीन पेश कर दिये जाएं और ऐसे दलाइल से मुद्दआ़ साबित कर दिया जाए जिस के जवाब से मुख़ालिफ़ीन के तमाम अहले इल्मो हुनर आ़जिज़ो मुतह़य्यर (ह़ैरान) रहें और उन्हें लब हिलाना और ज़बान खोलना मुह़ाल हो जाए। ऐसे आयाते बय्यिना और बराहीने वाज़ेह़ा (रोशन दलाइल) व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा देख कर येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरती रोज़े रोशन में दिन का इन्कार कर देने से भी ज़ियादा बदतर और बात़िल तर है और ह़क़ीक़त में येह ह़क़ को पहचान कर उस से इनाद (सरकशी) व फ़िरार है, किसी मुद्दआ़ पर जब बुरहाने क़वी (मज़बूत़ दलील) क़ाइम हो जाए फिर उस पर दोबारा दलील क़ाइम करनी ज़रूरी नहीं रहती और ऐसी ह़ालत में त़लबे दलील इनाद व मुकाबरा (सरकशी व झगड़ा करना) होता है, जब तक कि दलील को मजरूह़ (बात़िल) न कर दिया जाए कोई शख़्स दूसरी दलील के त़लब करने का ह़क़ नहीं रखता और अगर येह सिल्सिला क़ाइम कर दिया जाए कि हर शख़्स के लिये नई बुरहान क़ाइम की जाए जिस को वोह त़लब करे और वोही निशानी लाई जाए जो वोह मांगे तो निशानियों का सिल्सिला कभी ख़त्म न होगा, इस लिये ह़िक्मते इलाहिय्यह येह है कि अम्बिया को ऐसे मो'जिज़ात दिये जाते हैं जिन से हर शख़्स उन के सिद्क़ व नुबुव्वत का यक़ीन कर सके और बेश्तर वोह उस क़बील (क़िस्म) से होते हैं जिस में उन की उम्मत और उन के अ़ह्द (ज़माने) के लोग ज़ियादा मश्क़ व महारत रखते हैं, जैसे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में इल्मे सेह़र (जादू का इल्म) अपने कमाल को पहुंचा हुवा था और उस ज़माने के लोग सेह़र के बड़े माहिरे कामिल थे तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को वोह मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा जिस ने सेह़र को बात़िल कर दिया और साह़िरों (जादूगरों) को यक़ीन दिला दिया कि जो कमाल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दिखाया वोह रब्बानी निशान है, सेह़र (जादू) से उस का मुक़ाबला मुम्किन नहीं। इसी त़रह़ ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़माने में त़िब इन्तिहाए उ़रूज पर थी, ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को शिफ़ाए अमराज़ व एह़याए अम्वात (बीमारियों से शिफ़ा और मुर्दों को ज़िन्दा करने) का वोह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया गया जिस से त़िब के माहिर आ़जिज़ हो गए और वोह इस यक़ीन पर मजबूर थे कि येह काम त़िब से ना मुम्किन है ज़रूर येह क़ुदरते इलाही का ज़बर दस्त निशान है, इसी त़रह़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में अ़रब की फ़साह़तो बलाग़त औजे कमाल पर पहुंची हुई थी और वोह लोग ख़ुश बयानी में आ़लम पर फ़ाइक़ थे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वोह मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस ने उन्हें आ़जिज़ व ह़ैरान कर दिया और उन के बड़े से बड़े लोग और उन के अहले कमाल की जमाअ़तें क़ुरआने करीम के मुक़ाबिल एक छोटी सी इ़बारत पेश करने से भी आ़जिज़ व क़ासिर रहीं और क़ुरआन के इस कमाल ने येह साबित कर दिया कि बेशक येह रब्बानी अ़ज़ीम निशान है और इस का मिस्ल बना लाना बशरी क़ुव्वत के इम्कान में नहीं, इस के इ़लावा और सदहा मो'जिज़ात सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पेश फ़रमाए जिन्हों ने हर त़बक़े के इन्सानों को आप के सिद्क़े रिसालत का यक़ीन दिला दिया इन मो'जिज़ात के होते हुए येह कह देना कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी किस क़दर इनाद और ह़क़ से मुकरना है। **24 :** अपनी नुबुव्वत के दलाइल पेश करने और इत़्मीनान बख़्श मो'जिज़ात दिखा कर अपनी रिसालत साबित कर देने के बा'द अह़कामे इलाहिय्यह पहुंचाने और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाने के सिवा आप पर कुछ लाज़िम नहीं और हर हर शख़्स के लिये उस की त़ल्बीदा (मांगी हुई) जुदा जुदा निशानियां पेश करना आप पर ज़रूरी नहीं जैसा कि आप से पहले हादियों (अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام) का त़रीक़ा रहा है। **25 :** नर, मादा एक या ज़ियादा وَغَيْرُ ذَالِكَ ।

www.dawateislami.net

الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۸ عٰلِمُ الْغَیْبِ

कुछ घटते और बढ़ते हैं[26] और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है[27] हर छुपे और

وَالشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ۹ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ

खुले का जानने वाला सब से बड़ा बुलन्दी वाला[28] बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो

جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۭ بِالَّیْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۱۰ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ

आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है[29] आदमी के लिये बदली वाले

مِّنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

फ़िरिश्ते हैं उस के आगे और पीछे[30] कि ब हुक्मे ख़ुदा उस की हिफ़ाज़त करते हैं[31] बेशक अल्लाह

یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ

किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब तक वोह ख़ुद[32] अपनी ह़ालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम से बुराई

سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۱۱ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمُ

चाहे[33] तो वोह फिर नहीं सकती और उस के सिवा उन का कोई ह़िमायती नहीं[34] वोही है कि तुम्हें बिजली

الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۱۲ وَیُسَبِّحُ الرَّعْدُ

दिखाता है डर को और उम्मीद को[35] और भारी बदलियां उठाता है और गरज उसे सराहती (ख़ुदा की ता'रीफ़ करती) हुई

بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ ۚ وَیُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَیُصِیْبُ بِهَا مَنْ

उस की पाकी बोलती है[36] और फ़िरिश्ते उस के डर से[37] और कड़क भेजता है[38] तो उसे डालता है जिस पर

26 : या'नी मुद्दत में किस का ह़म्ल जल्द वज़्अ़ (बच्चा जल्द पैदा) होगा किस का देर में। ह़म्ल की कम से कम मुद्दत जिस में बच्चा पैदा हो कर ज़िन्दा रह सके छ[6] माह है और ज़ियादा से ज़ियादा दो साल येही ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया और इसी के ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ाइल हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह भी कहा है कि पेट के घटने बढ़ने से बच्चे का क़वी, ताम्मुल ख़िल्क़त और नाक़िसुल ख़िल्क़त (आ'ज़ा का तमाम और ना तमाम) होना मुराद है। **27 :** कि उस से घट बढ़ नहीं सकती। **28 :** हर नक़्स से मुनज़्ज़ा (पाक)। **29 :** या'नी दिल की छुपी बातें और ज़बान से ब ए'लान कही हुई और रात को छुप कर किये हुए अ़मल और दिन को ज़ाहिर तौर पर किये हुए काम सब अल्लाह तआ़ला जानता है कोई उस के इ़ल्म से बाहर नहीं। **30 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि तुम में फ़िरिश्ते नौबत ब नौबत (बारी बारी) आते हैं रात और दिन में और नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े अ़स्र में जम्अ़ होते हैं नए फ़िरिश्ते रह जाते हैं और जो फ़िरिश्ते रह चुके हैं वोह चले जाते हैं। अल्लाह तआ़ला उन से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि तुम ने मेरे बन्दे को किस ह़ाल में छोड़ा वोह अ़र्ज़ करते हैं कि नमाज़ पढ़ते पाया और नमाज़ पढ़ते छोड़ा। **31 :** मुजाहिद ने कहा : हर बन्दे के साथ एक फ़िरिश्ता हिफ़ाज़त पर मामूर है जो सोते जागते जिन्नो इन्स और मूज़ी (तक्लीफ़ पहुंचाने वाले) जानवरों से उस की हिफ़ाज़त करता है और हर सताने वाली चीज़ को उस से रोक देता है बजुज़ उस के जिस का पहुंचना मशिय्यत में हो। **32 :** मआ़सी में मुब्तला हो कर **33 :** उस के अ़ज़ाब व हलाक का इरादा फ़रमाए **34 :** जो उस के अ़ज़ाब को रोक सके। **35 :** कि उस से गिर कर नुक़्सान पहुंचाने का ख़ौफ़ होता है और बारिश से नफ़्अ़ उठाने की उम्मीद या बा'ज़ों को ख़ौफ़ होता है जैसे मुसाफ़िरों को जो सफ़र में हों और बा'ज़ों को फ़ाएदे की उम्मीद जैसे कि काश्तकार वग़ैरा। **36 :** गरज या'नी बादल

يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ

चाहे और वोह अल्लाह में झगड़ते होते हैं[39] और उस की पकड़ सख़्त है उसी का पुकारना सच्चा है[40]

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ

और उस के सिवा जिन को पुकारते हैं[41] वोह उन की कुछ भी नहीं सुनते मगर उस की त़रह जो पानी

كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا

के सामने अपनी हथेलियां फैलाए बैठा है कि उस के मुंह में पहुंच जाए[42] और वोह हरगिज़ न पहुंचेगा और काफ़िरों की हर दुआ

فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّ

भटक्ती फिरती है और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से[43] ख़्वाह मजबूरी से[44] और

से जो आवाज़ होती है। इस के तस्बीह़ करने के मा'ना येह हैं कि इस आवाज़ का पैदा होना ख़ालिक़, क़ादिर, हर नक़्स से मुनज़्ज़ा के वुजूद की दलील है। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीहे़ रा'द से वोह मुराद है कि इस आवाज़ को सुन कर अल्लाह के बन्दे उस की तस्बीह़ करते हैं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि रा'द एक फ़िरिश्ते का नाम है जो बादल पर मामूर है इस को चलाता है। **37 :** या'नी उस की हैबतो जलाल से उस की तस्बीह़ करते हैं। **38 :** साइक़ा वोह शदीद आवाज़ है जो जव्व (आस्मान व ज़मीन के दरमियान) से उतरती है फिर उस में आग पैदा हो जाती है या अज़ाब या मौत और वोह अपनी ज़ात में एक ही चीज़ है और येह तीनों चीज़ें उसी से पैदा होती हैं। (خازن) **39 शाने नुज़ूल :** ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़रब के एक निहायत सरकश काफ़िर को इस्लाम की दा'वत देने के लिये अपने अस्ह़ाब की एक जमाअ़त भेजी उन्हों ने उस को दा'वत दी कहने लगा : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) का रब कौन है जिस की तुम मुझे दा'वत देते हो क्या वोह सोने का है या चांदी का या लोहे का या तांबे का? मुसल्मानों को येह बात बहुत गिरां गुज़री और उन्हों ने वापस हो कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि ऐसा अक्फ़र (सख़्त काफ़िर) सियाह दिल, सरकश देखने में नहीं आया। हुज़ूर ने फ़रमाया : उस के पास फिर जाओ! उस ने फिर वोही गुफ़्त्गू की और इतना और कहा कि मैं मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल कर के ऐसे रब को मान लूं जिसे न मैं ने देखा है न पहचाना। येह ह़ज़रात फिर वापस हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर उस का ख़ुब्स (शर) तो और तरक़्क़ी पर है। फ़रमाया : फिर जाओ! ब ता'मीले इर्शाद (हुक्म बजा लाते हुए) फिर गए जिस वक़्त उस से गुफ़्त्गू कर रहे थे और वोह ऐसी ही सियाह दिली की बातें बक रहा था एक अब्र आया उस से बिजली चमकी और कड़क हुई और बिजली गिरी और उस काफ़िर को जला दिया। येह ह़ज़रात उस के पास बैठे रहे जब वहां से वापस हुए तो राह में उन्हें अस्ह़ाबे किराम की एक और जमाअ़त मिली वोह कहने लगे कहिये वोह शख़्स जल गया? उन ह़ज़रात ने कहा कि आप साह़िबों को कैसे मा'लूम हो गया? उन्हों ने फ़रमाया : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास वह़्य आई है "وَ يُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ"। (خازن) **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने अरबद बिन रबीआ़ से कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के पास चलो मैं उन्हें बातों में लगाऊंगा तू पीछे से तलवार से ह़म्ला करना, येह मश्वरा कर के वोह हुज़ूर के पास आए और आ़मिर ने हुज़ूर से गुफ़्त्गू शुरूअ़ की, बहुत त़वील गुफ़्त्गू के बा'द कहने लगा कि अब हम जाते हैं और एक बड़ा जर्रार लश्कर आप पर लाएंगे, येह कह कर चला आया, बाहर आ कर अरबद से कहने लगा कि तू ने तलवार क्यूं नहीं मारी? उस ने कहा : जब मैं तलवार मारने का इरादा करता था तो तू दरमियान में आ जाता था, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन लोगों के निकलते वक़्त येह दुआ़ फ़रमाई : "اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمَا بِمَا شِئْتَ" जब येह दोनों मदीने शरीफ़ से बाहर आए तो उन पर बिजली गिरी अरबद जल गया और आ़मिर भी इसी राह में बहुत बदतर ह़ालत में मरा। (حسینی) **40 :** या'नी उस की तौह़ीद की शहादत देना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना या येह मा'ना हैं कि वोह दुआ़ क़बूल करता है और उसी से दुआ़ करना सज़ावार है। **41 :** मा'बूद जान कर या'नी कुफ़्फ़ार जो बुतों की इ़बादत करते हैं और उन से मुरादें मांगते हैं **42 :** तो हथेलियां फैलाने और बुलाने से पानी कूंएं से निकल कर उस के मुंह में न आएगा क्यूं कि पानी को न इ़ल्म है न शुऊ़र जो उस की ह़ाजत और प्यास को जाने और उस के बुलाने को समझे और पहचाने न उस में येह क़ुदरत है कि अपनी जगह से ह़रकत करे और अपने मुक़्तज़ाए त़बीअ़त (या'नी त़बीअ़त की ख़्वाहिश) के ख़िलाफ़ ऊपर चढ़ कर बुलाने वाले के मुंह में पहुंच जाए, येही ह़ाल बुतों का है कि न उन्हें बुत परस्तों के पुकारने की ख़बर है न उन की ह़ाजत का शुऊ़र न वोह उन के नफ़्अ़ पर कुछ क़ुदरत रखते हैं। **43 :** जैसे कि मोमिन **44 :** जैसे कि मुनाफ़िक़ व काफ़िर।

السجدة ٢

ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ۩ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ

उन की परछाइयां हर सुब्ह व शाम[45] तुम फ़रमाओ कौन रब है आस्मानों और ज़मीन का

قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ

तुम ख़ुद ही फ़रमाओ **अल्लाह**[46] तुम फ़रमाओ तो क्या उस के सिवा तुम ने वोह हिमायती बना लिये हैं जो अपना

نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَ الْبَصِیْرُ ۙ۬ اَمْ هَلْ تَسْتَوِی

भला बुरा नहीं कर सकते हैं[47] तुम फ़रमाओ क्या बराबर हो जाएंगे अन्धा और अंख्यारा[48] या क्या बराबर हो जाएंगी

الظُّلُمٰتُ وَ النُّوْرُ ۚ۬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ

अंधेरियां और उजाला[49] क्या **अल्लाह** के लिये ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्हों ने **अल्लाह** की त़रह कुछ बनाया तो उन्हें उन का और उस का बनाना

عَلَیْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾ اَنْزَلَ مِنَ

एक सा मा'लूम हुवा[50] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** हर चीज़ का बनाने वाला है[51] और वोह अकेला सब पर ग़ालिब है[52] उस ने

السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَدًا رَّابِیًا ؕ وَ

आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रौ (धार) उस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और

مِمَّا یُوْقِدُوْنَ عَلَیْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْیَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

जिस पर आग दहकाते हैं[53] गहना (ज़ेवर) या और अस्बाब[54] बनाने को उस से भी वैसे ही झाग उठते हैं **अल्लाह**

یَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَ الْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَیَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ

बताता है कि ह़क़ और बात़िल की येही मिसाल है तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है और

45 : उन की तब्इय्यत में **अल्लाह** को सज्दा करती हैं। ज़ुज्जाज ने कहा कि काफ़िर "ग़ैरुल्लाह" को सज्दा करता है और उस का साया **अल्लाह** को। इब्ने अम्बारी ने कहा कि कुछ बईद नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला परछाइयों (या'नी साए) में ऐसी फ़ह्म (समझ) पैदा करे कि वोह उस को सज्दा करें। **बा'ज़** का क़ौल है : सज्दे से साए का एक त़रफ़ से दूसरी त़रफ़ माइल होना और आफ़्ताब के इरतिफ़ाअ़ व नुज़ूल (बुलन्द होने व ढलने) के साथ दराज़ व कोताह (लम्बा और छोटा) होना मुराद है। (خازن) **46 :** क्यूं कि इस सुवाल का इस के सिवा और कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन बा वुजूद ग़ैरुल्लाह की इ़बादत करने के इस के मुक़िर (इक़्रार करने वाले) हैं कि आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ **अल्लाह** है, जब येह अम्र मुसल्लम (माना हुवा) है तो **47 :** या'नी बुत। जब उन की येह बे क़ुदरती व बेचारगी है तो वोह दूसरे को क्या नफ़्अ़ व ज़रर पहुंचा सकते हैं ऐसों को मा'बूद बनाना और ख़ालिक़, राज़िक़, क़वी व क़ादिर को छोड़ना इन्तिहा दरजे की गुमराही है। **48 :** या'नी काफ़िर व मोमिन **49 :** या'नी कुफ़्र व ईमान **50 :** और इस वज्ह से ह़क़ उन पर मुश्तबह (मश्कूक) हो गया और वोह बुत परस्ती करने लगे, ऐसा तो नहीं है बल्कि जिन बुतों को वोह पूजते हैं **अल्लाह** की मख़्लूक़ की त़रह कुछ बनाना तो कुजा वोह बन्दों की मस्नूआत (तय्यार की हुई चीज़ों) के मिस्ल भी नहीं बना सकते आ़जिज़े मह़ज़ हैं, ऐसे पथ्थरों का पूजना अ़क़्लो दानिश के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। **51 :** जो मख़्लूक़ होने की सलाहिय्यत रखे उस सब का ख़ालिक़ **अल्लाह** ही है और कोई नहीं तो दूसरे को शरीके इ़बादत करना आ़क़िल किस त़रह गवारा कर सकता है। **52 :** सब उस के तह़्ते क़ुदरतो इख़्तियार हैं। **53 :** जैसे कि सोना, चांदी, तांबा वग़ैरा **54 :** बरतन वग़ैरा

www.dawateislami.net

اَمَّا مَا یَنْفَعُ النَّاسَ فَیَمْكُثُ فِی الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ یَضْرِبُ اللّٰهُ

वोह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है[55] अल्लाह यूं ही मिसालें बयान

الْاَمْثَالَ ﴿۱۷﴾ لِلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰی ؕ وَ الَّذِیْنَ لَمْ یَسْتَجِیْبُوْا

फ़रमाता है जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना उन्हीं के लिये भलाई है[56] और जिन्हों ने उस का हुक्म न माना[57]

وقف النبي عليه السلام

لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓىٕكَ

अगर ज़मीन में जो कुछ है वोह सब और इस जैसा और उन की मिल्क में होता तो अपनी जान छुड़ाने को दे देते येही हैं

لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ۬ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ یَّعْلَمُ

ع ۲ النصف ۸

जिन का बुरा हिसाब होगा[58] और उन का ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा बिछोना तो क्या वोह जो जानता है

اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰی ؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ

जो कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा ह़क़ है[59] वोह उस जैसा होगा जो अन्धा है[60] नसीहत वोही मानते हैं

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِیْنَ یُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَ لَا یَنْقُضُوْنَ الْمِیْثَاقَ ﴿۲۰﴾

जिन्हें अ़क़्ल है वोह जो अल्लाह का अ़ह्द पूरा करते हैं[61] और क़ौल बांध कर (वा'दा कर के) फिरते नहीं

وَ الَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ

और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया[62] और अपने रब से डरते और

یَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَ الَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَ

ह़िसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं[63] और वोह जिन्हों ने सब्र किया[64] अपने रब की रिज़ा चाहने को और

---

55 : ऐसे ही बात़िल अगर्चे कितना ही उभर जाए और बा'ज़ अवक़ात व अह़वाल में झाग की त़रह़ ह़द से ऊंचा हो जाए मगर अन्जामे कार मिट जाता है और ह़क़ अस्ले शै और जौहरे साफ़ की त़रह़ बाक़ी व साबित रहता है। **56 :** या'नी जन्नत **57 :** और कुफ़्र किया **58 :** कि हर अम्र पर मुआख़ज़ा किया जाएगा और उस में से कुछ न बख़्शा जाएगा। (جلالین وخازن) **59 :** और उस पर ईमान लाता है और उस के मुत़ाबिक़ अ़मल करता है **60 :** ह़क़ को नहीं जानता, क़ुरआन पर ईमान नहीं लाता, उस के मुत़ाबिक़ अ़मल नहीं करता। येह आयत ह़ज़रते ह़म्ज़ा इब्ने अ़ब्दुल मुत्त़लिब और अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई। **61 :** उस की रबूबिय्यत की शहादत देते हैं और उस का हुक्म मानते हैं **62 :** या'नी अल्लाह की तमाम किताबों और उस के कुल रसूलों पर ईमान लाते हैं और बा'ज़ को मान कर बा'ज़ से मुन्किर हो कर उन में तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं करते या येह मा'ना हैं कि हुक़ूक़े क़राबत की रिआ़यत रखते हैं और रिश्ता क़त्अ़ नहीं करते, इसी में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की क़राबतें और ईमानी क़राबतें भी दाख़िल हैं, सादाते किराम का एह़तिराम और मुसल्मानों के साथ मवद्दत (प्यार व मह़ब्बत) व एह़सान और उन की मदद और उन की त़रफ़ से मुदाफ़अ़त (दिफ़ाअ़) और उन के साथ शफ़्क़त और सलाम व दुआ़ और मुसल्मान मरीज़ों की इ़यादत और अपने दोस्तों ख़ादिमों हमसायों, सफ़र के साथियों के हुक़ूक़ की रिआ़यत भी इस में दाख़िल है और शरीअ़त में इस का लिह़ाज़ रखने की बहुत ताकीदें आई हैं ब कसरत अह़ादीसे सह़ीह़ा इस बाब में वारिद हैं। **63 :** और वक़्ते ह़िसाब से पहले ख़ुद अपने नफ़्सों से मुह़ासबा करते हैं **64 :** त़ाअ़तों और मुसीबतों पर और मा'सियत से बाज़ रहे।

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ

नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया[65] और बुराई के बदले

بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا

भलाई कर के टालते हैं[66] उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे

وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ

और जो लाइक़ हों[67] उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में[68] और फ़िरिश्ते[69] हर दरवाज़े से

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

उन पर[70] येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ

और वोह जो **अल्लाह** का अ़ह्द उस के पक्के होने[71] के बा'द तोड़ते और जिस के जोड़ने को **अल्लाह** ने फ़रमाया

بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ

उसे क़त्अ़ करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[72] उन का हिस्सा ला'नत ही है और उन का नसीबा बुरा

الدَّارِ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ

घर[73] **अल्लाह** जिस के लिये चाहे रिज़्क़ कुशादा और[74] तंग करता है और काफ़िर दुन्या की ज़िन्दगी पर

الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ

इतरा गए[75] और दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबिल नहीं मगर कुछ दिन बरत लेना और काफ़िर कहते

كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

इन पर कोई निशानी इन के रब की तरफ़ से क्यूं न उतरी तुम फ़रमाओ बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे गुमराह करता है[76]

65 : नवाफ़िल का छुपाना और फ़राइज़ का ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है। **66 :** बद कलामी का जवाब शीरीं सुख़नी (ख़ुश कलामी) से देते हैं और जो उन्हें महरूम करता है उस पर अ़ता करते हैं, जब उन पर ज़ुल्म किया जाता है मुआफ़ करते हैं, जब उन से पैवन्द (तअ़ल्लुक़) क़त्अ़ किया जाता है मिलाते हैं और जब गुनाह करते हैं तौबा करते हैं, जब ना जाइज़ काम देखते हैं उसे बदलते हैं, जहल के बदले हिल्म और ईज़ा के बदले सब्र करते हैं। **67 :** या'नी मोमिन हों **68 :** अगर्चे लोगों ने उन के से अ़मल न किये हों जब भी **अल्लाह** तआ़ला उन के इक्राम के लिये इन को उन के दरजे में दाख़िल फ़रमाएगा **69 :** हर एक रोज़ो शब में हदाया (तोहफ़े) और रिज़ा की बिशारतें ले कर जन्नत के **70 :** ब तरीक़े तहिय्यतो तक्रीम (इज़्ज़तो एह्तिराम) **71 :** और उस को क़बूल कर लेने **72 :** कुफ़्र व मआसी का इरतिकाब कर के **73 :** या'नी जहन्नम। **74 :** जिस के लिये चाहे **75 :** और शुक्र गुज़ार न हुए। **मस्अला :** दौलते दुन्या पर इतराना और मग़रूर होना हराम है। **76 :** कि वोह आयात व मो'जिज़ात नाज़िल होने के बा'द भी येह कहता रहता है कि कोई निशानी क्यूं नहीं उतरी, कोई मो'जिज़ा क्यूं नहीं आया, मो'जिज़ाते कसीरा के बा वुजूद गुमराह रहता है।

www.dawateislami.net

وَ يَهۡدِيۡۤ اِلَيۡهِ مَنۡ اَنَابَ ۝۲۷ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ تَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِكۡرِ

और अपनी राह उसे देता है जो उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाए वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन

اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ؕ ۝۲۸ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا

पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है[77] वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ طُوۡبٰى لَهُمۡ وَ حُسۡنُ مَاٰبٍ ۝۲۹ كَذٰلِكَ اَرۡسَلۡنٰكَ فِىۡۤ اُمَّةٍ

काम किये उन को ख़ुशी है और अच्छा अन्जाम[78] इसी त़रह़ हम ने तुम को इस उम्मत में भेजा

قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتۡلُوَا۟ عَلَيۡهِمُ الَّذِىۡۤ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ وَهُمۡ

जिस से पहले उम्मतें हो गुज़रीं[79] कि तुम उन्हें पढ़ कर सुनाओ[80] जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य की और वोह

يَكۡفُرُوۡنَ بِالرَّحۡمٰنِ ؕ قُلۡ هُوَ رَبِّىۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَ اِلَيۡهِ

रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं[81] तुम फ़रमाओ वोह मेरा रब है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और उसी की त़रफ़

مَتَابِ ۝۳۰ وَلَوۡ اَنَّ قُرۡاٰنًا سُيِّرَتۡ بِهِ الۡجِبَالُ اَوۡ قُطِّعَتۡ بِهِ الۡاَرۡضُ

मेरी रुजूअ़ है और अगर कोई ऐसा क़ुरआन आता जिस से पहाड़ टल जाते[82] या ज़मीन फट जाती

اَوۡ كُلِّمَ بِهِ الۡمَوۡتٰى ؕ بَلۡ لِّلّٰهِ الۡاَمۡرُ جَمِيۡعًا ؕ اَفَلَمۡ يَايۡـَٔسِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا

या मुर्दे बातें करते जब भी येह काफ़िर न मानते[83] बल्कि सब काम **अल्लाह** ही के इख़्तियार में हैं[84] तो क्या मुसल्मान इस से ना उम्मीद न हुए[85]

77 : उस के रह़मतो फ़ज़्ल और उस के एह़सानो करम को याद कर के बे क़रार दिलों को क़रार व इत़्मीनान ह़ासिल होता है। अगर्चे उस के अ़द्ल व इ़ताब (ग़ज़ब) की याद दिलों को ख़ाइफ़ कर देती है जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया : "اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ" ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि मुसल्मान जब **अल्लाह** का नाम ले कर क़सम खाता है दूसरे मुसल्मान उस का ए'तिबार कर लेते हैं और उन के दिलों को इत़्मीनान हो जाता है। **78 :** "तूबा" बिशारत है राह़तो ने'मत और ख़ुर्रमी व ख़ुशह़ाली की। सईद बिन जुबैर ने कहा कि तूबा ज़बाने ह़बशी में जन्नत का नाम है। ह़ज़रते अबू हुरैरा और दीगर अस्ह़ाब से मरवी है कि तूबा जन्नत के एक दरख़्त का नाम है जिस का साया हर जन्नत में पहुंचेगा, येह दरख़्त जन्नते अ़द्न में है और इस की अस्ल (जड़) सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ऐवाने मुअ़ल्ला में और इस की शाख़ें जन्नत के हर ग़ुरफ़ा (कमरे) और क़स्र (मह़ल) में, इस में सिवा सियाही के हर क़िस्म के रंग और ख़ुशनुमाइयां हैं हर त़रह़ के फल और मेवे इस में फले हैं, इस की बेख़ (जड़) से काफ़ूर सल्सबील (एक चश्मा) की नहरें रवां हैं। **79 :** तो तुम्हारी उम्मत सब से पिछली उम्मत है और तुम ख़ातमुल अम्बिया हो तुम्हें बड़े शानो शिकोह से रिसालत अ़त़ा की **80 :** वोह किताबे अ़ज़ीम **81 शाने नुज़ूल :** क़तादा व मुक़ातिल वग़ैरा का क़ौल है कि येह आयत सुल्ह़े हुदैबिया में नाज़िल हुई जिस का मुख़्तसर वाक़िआ़ येह है कि सुहैल बिन अ़म्र जब सुल्ह़ के लिये आया और सुल्ह़ नामा लिखने पर इत्तिफ़ाक़ हो गया तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : लिखो "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" कुफ़्फ़ार ने इस में झगड़ा किया और कहा कि आप हमारे दस्तूर के मुत़ाबिक़ "بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ" (या'नी ऐ **अल्लाह** तेरे नाम से शुरूअ़) लिखवाइये। इस के मुतअ़ल्लिक़ आयत में इर्शाद होता है कि वोह रह़मान के मुन्किर हो रहे हैं। **82 :** अपनी जगह से **83 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप येह चाहें कि हम आप की नुबुव्वत मानें और आप का इत्तिबाअ़ करें तो आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर इस की तासीर से मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ हटा दीजिये ताकि हमें खेतियां करने (काश्त कारी) के लिये वसीअ़ मैदान मिल जाएं और ज़मीन फाड़ कर चश्मा जारी कीजिये ताकि हम खेतों और बाग़ों को उन से सैराब करें और क़ुसय बिन किलाब वग़ैरा हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये

اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कि **अल्लाह** चाहता तो सब आदमियों को हिदायत कर देता[86] और काफ़िरों को हमेशा उन के किये

تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ

पर सख़्त धमक (इन्तिहाई सख़्त मुसीबत) पहुंचती रहेगी[87] या उन के घरों के नज़्दीक उतरेगी[88] यहां तक कि

وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۳۱﴾ ع وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ ع ۱۵

अल्लाह का वा'दा आए[89] बेशक **अल्लाह** वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता[90] और बेशक तुम से अगले रसूलों

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ قف فَكَيْفَ كَانَ

पर भी हंसी की गई तो मैं ने काफ़िरों को कुछ दिनों ढील दी फिर उन्हें पकड़ा[91] तो मेरा अ़ज़ाब

عِقَابِ ﴿۳۲﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

कैसा था तो क्या वोह जो हर जान पर उस के आ'माल की निगहदाश्त रखता है[92] और वोह **अल्लाह** के शरीक

شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ

ठहराते हैं तुम फ़रमाओ उन का नाम तो लो[93] या उसे वोह बताते हो जो उस के इ़ल्म में सारी ज़मीन में नहीं[94] या यूंही ऊपरी

वोह हम से कह जाएं कि आप नबी हैं। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि येह ह़ीले ह़वाले करने वाले किसी ह़ाल में भी ईमान लाने वाले नहीं। **84 :** तो ईमान वोही लाएगा जिस को **अल्लाह** चाहे और तौफ़ीक़ दे, उस के सिवा और कोई ईमान लाने वाला नहीं अगर्चे उन्हें वोही निशान दिखा दिये जाएं जो वोह त़लब करें **85 :** या'नी कुफ़्फ़ार के ईमान लाने से ख़्वाह उन्हें कितनी ही निशानियां दिखला दी जाएं और क्या मुसल्मानों को इस का यक़ीनी इ़ल्म नहीं **86 :** बिग़ैर किसी निशानी के लेकिन वोह जो चाहता है करता है और वोही ह़िक्मत है, येह जवाब है उन मुसल्मानों का जिन्हों ने कुफ़्फ़ार के नई नई निशानियां त़लब करने पर येह चाहा था कि जो काफ़िर भी कोई निशानी त़लब करे वोही उस को दिखा दी जाए। इस में उन्हें बता दिया गया कि जब ज़बर दस्त निशान आ चुके और शुकूको अवहाम की तमाम राहें बन्द कर दी गईं, दीन की ह़क़्क़ानिय्यत रोज़े रोशन से ज़ियादा वाज़ेह़ हो चुकी, इन जली बुरहानों (रोशन दलीलों) के बा वुजूद जो लोग मुकर गए, ह़क़ के मो'तरिफ़ न हुए (ह़क़ को न माने) ज़ाहिर हो गया कि वोह मुआ़निद (बुग़्ज़ो कीना रखने वाले) हैं और मुआ़निद किसी दलील से भी माना नहीं करता तो मुसल्मानों को अब उन से क़बूले ह़क़ की क्या उम्मीद। क्या अब तक उन का इ़नाद देख कर और आयातो बय्यिनाते वाज़ेह़ा (साफ़ और रोशन दलीलों) से ए'राज़ मुशाहदा कर के भी उन से क़बूले ह़क़ की उम्मीद रखी जा सकती है? अलबत्ता अब उन के ईमान लाने और मान जाने की येही सूरत है कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें मजबूर करे और उन का इख़्तियार सल्ब फ़रमा ले। इस त़रह़ की हिदायत चाहता तो तमाम आदमियों को हिदायत फ़रमा देता और कोई काफ़िर न रहता मगर दारुल इब्तिला व दारुल इम्तिह़ान की ह़िक्मत इस की मुतक़ाज़ी नहीं। **87 :** या'नी वोह इस तक्ज़ीब व इ़नाद की वज्ह से त़रह़ त़रह़ के ह़वादिस व मसाइब और आफ़तों और बलाओं में मुब्तला रहेंगे कभी क़ह़त़ में, कभी लुटने में, कभी मारे जाने में, कभी क़ैद में। **88 :** और उन के इज़्तिराब व परेशानी का बाइ़स होगी और उन तक उन मसाइब के ज़रर (नुक़्सानात) पहुंचेंगे **89 : अल्लाह** की त़रफ़ से फ़त्ह़ो नुसरत आए और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन का दीन ग़ालिब हो और मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ किया जाए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस वा'दे से रोज़े क़ियामत मुराद है जिस में आ'माल की जज़ा दी जाएगी। **90 :** इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली व दिलजूई) फ़रमाता है कि इस क़िस्म के बेहूदा सुवाल और ऐसे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा (ठठ्ठे और मज़ाक़) से आप रन्जीदा न हों क्यूं कि हादियों को ऐसे वाक़िआ़त पेश आया ही करते हैं। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **91 :** और दुन्या में उन्हें क़ह़त़ व क़त्ल व क़ैद में मुब्तला किया और आख़िरत में उन के लिये अ़ज़ाबे जहन्नम है **92 :** नेक की भी बद की भी या'नी **अल्लाह** तआ़ला क्या वोह उन बुतों की मिस्ल हो सकता है जो ऐसे नहीं, न उन्हें इ़ल्म है न क़ुदरत, आ़जिज़ बे शुऊ़र हैं **93 :** वोह हैं कौन **94 :** और जो उस के इ़ल्म में न हो वोह बात़िले मह़्ज़ है, हो ही नहीं सकता क्यूं कि उस का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है लिहाज़ा उस के लिये शरीक होना बात़िल व ग़लत़।

www.dawateislami.net

مِنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ

(बे मा'ना) बात[95] बल्कि काफ़िरों की निगाह में उन का फ़रेब अच्छा ठहरा है और राह से रोके गए[96]

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं उन्हें दुन्या के जीते अ़ज़ाब होगा[97] और

لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۳۴﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ

बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त है और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं अह़वाल उस जन्नत का

الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ

कि डर वालों के लिये जिस का वा'दा है उस के नीचे नहरें बहती हैं उस के मेवे हमेशा और उस का साया[98]

تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖۗ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

डर वालों का तो येह अन्जाम है[99] और काफ़िरों का अन्जाम आग और जिन को हम ने

الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ

किताब दी[100] वोह उस पर खुश होते जो तुम्हारी त़रफ़ उतरा और उन गुरौहों में[101] कुछ वोह हैं कि इस के बा'ज़ से मुन्किर हैं

قُلْ اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ

तुम फ़रमाओ मुझे तो येही हुक्म है कि अल्लाह की बन्दगी करूं और उस का शरीक न ठहराऊं मैं उसी की त़रफ़ बुलाता हूं और उसी की त़रफ़

مَاٰبِ ﴿۳۶﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ

मुझे फिरना[102] और इसी त़रह़ हम ने इसे अ़रबी फ़ैसला उतारा[103] और ऐ सुनने वाले अगर तू उन की ख़्वाहिशों पर चलेगा[104]

بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿۳۷﴾ ع وَلَقَدْ

बा'द इस के कि तुझे इ़ल्म आ चुका तो अल्लाह के आगे न तेरा कोई हिमायती होगा न बचाने वाला और बेशक

95 : के दरपै होते हो जिस की कुछ अस्ल व ह़क़ीक़त नहीं 96 : या'नी रुश्दो हिदायत और दीन की राह से 97 : क़त्ल व क़ैद का 98 : या'नी उस के मेवे और उस का साया दाइमी है इन में से कोई मुन्क़त़अ़ और ज़ाइल होने वाला नहीं। जन्नत का हाल अ़जीब है इस में न सूरज है न चांद न तारीकी, बा वुजूद इस के ग़ैर मुन्क़त़अ़ दाइमी (न ख़त्म होने वाला हमेशा का) साया है। 99 : या'नी तक़्वा वालों के लिये जन्नत है 100 : या'नी वोह यहूदो नसारा जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरा और ह़बशा व नजरान के नसरानी। 101 : यहूदो नसारा व मुश्रिकीन के जो आप की अ़दावत में सरशार हैं और आप पर उन्हों ने चढ़ाइयां की हैं। 102 : इस में क्या बात क़ाबिले इन्कार है क्यूं नहीं मानते 103 : या'नी जिस त़रह़ पहले अम्बिया को उन की ज़बानों में अह़काम दिये थे इसी त़रह़ हम ने येह क़ुरआन ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप की ज़बान अ़रबी में नाज़िल फ़रमाया। क़ुरआने करीम को हुक्म इस लिये फ़रमाया कि इस में अल्लाह की इ़बादत और उस की तौह़ीद और उस के दीन की त़रफ़ दा'वत और तमाम तकालीफ़ व अह़काम और ह़लाल व ह़राम का बयान है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : चूंकि अल्लाह तआ़ला ने तमाम ख़ल्क़ पर क़ुरआन शरीफ़ के क़बूल करने और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने का हुक्म फ़रमाया इस लिये इस का नाम हुक्म रखा। 104 : या'नी काफ़िरों की जो अपने दीन की

www.dawateislami.net

اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِكَ وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ اَزۡوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ

हम ने तुम से पहले रसूल भेजे और उन के लिये बीबियां[105] और बच्चे किये और किसी

لِرَسُوۡلٍ اَنۡ يَّاۡتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾ يَمۡحُوا

रसूल का काम नहीं कि कोई निशानी ले आए मगर **अल्लाह** के हुक्म से हर वा'दे की एक लिखत (तह़रीर) है[106] **अल्लाह** जो

اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثۡبِتُ ۖۚ وَعِنۡدَهٗۤ اُمُّ الۡكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ وَاِنۡ مَّا نُرِيَنَّكَ

चाहे मिटाता और साबित करता है[107] और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है[108] और अगर हमीं तुम्हें दिखा दें

بَعۡضَ الَّذِىۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ وَعَلَيۡنَا

कोई वा'दा[109] जो उन्हें दिया जाता है या पहले ही[110] अपने पास बुला लें तो बहर ह़ाल तुम पर तो सिर्फ़ पहुंचाना है और हि़साब लेना[111]

الۡحِسَابُ ﴿۴۰﴾ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّا نَاۡتِى الۡاَرۡضَ نَنۡقُصُهَا مِنۡ اَطۡرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ

हमारा ज़िम्मा[112] क्या उन्हें नहीं सूझता कि हम हर त़रफ़ से उन की आबादी घटाते आ रहे हैं[113] और **अल्लाह**

يَحۡكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكۡمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيۡعُ الۡحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَقَدۡ مَكَرَ الَّذِيۡنَ مِنۡ

हुक्म फ़रमाता है उस का हुक्म पीछे डालने वाला कोई नहीं[114] और उसे हि़साब लेते देर नहीं लगती और उन से अगले[115] फ़रेब

قَبۡلِهِمۡ فَلِلّٰهِ الۡمَكۡرُ جَمِيۡعًا ؕ يَعۡلَمُ مَا تَكۡسِبُ كُلُّ نَفۡسٍ ؕ وَسَيَعۡلَمُ الۡكُفّٰرُ

कर चुके हैं तो सारी ख़ुफ़्या तदबीर का मालिक तो **अल्लाह** ही है[116] जानता है जो कुछ कोई जान कमाए[117] और अब जानना चाहते हैं काफ़िर

त़रफ़ बुलाते हैं **105 शाने नुज़ूल :** काफ़िरों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर येह ऐ़ब लगाया था कि वोह निकाह़ करते हैं अगर नबी होते तो दुन्या तर्क कर देते, बीबी बच्चे से कुछ वासित़ा न रखते। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि बीबी बच्चे होना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, लिहाज़ा येह ए'तिराज़ मह़ज़ बे जा है और पहले जो रसूल आ चुके हैं वोह भी निकाह़ करते थे उन के भी बीबियां और बच्चे थे **106 :** उस से मुक़द्दम व मुअख़्ख़र नहीं हो सकता ख़्वाह वोह वा'दा अ़ज़ाब का हो या कोई और **107 :** सई़द बिन जुबैर और क़तादा ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि **अल्लाह** जिन अह़काम को चाहता है मन्सूख़ फ़रमाता है, जिन्हें चाहता है बाक़ी रखता है। इन्हीं इब्ने जुबैर का एक क़ौल येह है कि बन्दों के गुनाहों में से **अल्लाह** जो चाहता है मग़्फ़िरत फ़रमा कर मिटा देता है और जो चाहता है साबित रखता है। इक्रिमा का क़ौल है कि **अल्लाह** तआ़ला तौबा से जिस गुनाह को चाहता है मिटाता है और उस की जगह नेकियां क़ाइम फ़रमाता है और इस की तफ़्सीर में और भी बहुत अक़्वाल हैं **108 :** जिस को उस ने अज़ल में लिखा। येह इ़ल्मे इलाही है या उम्मुल किताब से लौह़े मह़फ़ूज़ मुराद है जिस में तमाम काएनात और आ़लम में होने वाले जुम्ला ह़वादिस व वाक़िआ़त और तमाम अश्या मक्तूब हैं और इस में तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता। **109 :** अ़ज़ाब का **110 :** हम तुम्हें **111 :** और आ'माल की जज़ा देना **112 :** तो आप काफ़िरों के ए'राज़ करने से रन्जीदा न हों और अ़ज़ाब की जल्दी न करें। **113 :** और ज़मीने शिर्क की वुस्अ़त दम बदम कम कर रहे हैं और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के लिये कुफ़्फ़ार के गिर्दो पेश की अराज़ी यके बा'द दीगरे फ़त्ह़ होती चली जाती है और येह सरीह़ दलील है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब की मदद फ़रमाता है और इन के लश्कर को फ़त्ह़ मन्द करता है और इन के दीन को ग़लबा देता है। **114 :** उस का हुक्म नाफ़िज़ है किसी की मजाल नहीं कि उस में चूं चरा या तग़्यीर व तब्दील कर सके, जब वोह इस्लाम को ग़लबा देना चाहे और कुफ़्र को पस्त करना तो किस की ताब व मजाल कि उस के हुक्म में दख़्ल दे सके। **115 :** या'नी गुज़री हुई उम्मतों के कुफ़्फ़ार अपने अम्बिया के साथ **116 :** फिर बिग़ैर उस की मशिय्यत के किसी की क्या चल सकती है और जब ह़क़ीक़त येह है तो मख़्लूक़ का क्या अन्देशा। **117 :** हर एक का कस्ब **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है और उस के नज़्दीक उन की जज़ा मुक़र्रर है।

www.dawateislami.net

لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ

किसे मिलता है पिछला घर[118] और काफ़िर कहते हैं तुम रसूल नहीं तुम फ़रमाओ

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ ع

अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में[119] और वोह जिसे किताब का इल्म है[120]

اٰيَاتُهَا ٥٢ ﴿١٤ سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ ٧٢﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٧

सूरए इब्राहीम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

एक किताब है[2] कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी कि तुम लोगों को[3] अंधेरियों से[4] उजाले में लाओ[5]

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿١﴾ ۙ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

उन के रब के हुक्म से उस की राह[6] की त़रफ़ जो इ़ज़्ज़त वाला सब ख़ूबियों वाला है अल्लाह कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿٢﴾ ۙ الَّذِيْنَ

और जो कुछ ज़मीन में[7] और काफ़िरों की ख़राबी है एक सख़्त अ़ज़ाब से जिन्हें

يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

आख़िरत से दुन्या की ज़िन्दगी प्यारी है और अल्लाह की राह से रोकते[8]

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ

और इस में कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं वोह दूर की गुमराही में हैं[9] और हम ने हर रसूल

118 : या'नी काफ़िर अ़न्क़रीब जान लेंगे कि राहते आख़िरत मोमिनीन के लिये है और वहां की ज़िल्लतो ख़्वारी कुफ़्फ़ार के लिये है। 119 : जिस ने मेरे हाथों में मो'जिज़ाते बाहिरा व आयाते क़ाहिरा ज़ाहिर फ़रमा कर मेरे नबिय्ये मुरसल होने की शहादत दी। 120 : ख़्वाह वोह उ़लमाए यहूद में से तौरैत का जानने वाला हो या नसारा में से इन्जील का आ़लिम, वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत को अपनी किताबों में देख कर जानता है, इन उ़लमा में से अक्सर आप की रिसालत की शहादत देते हैं। 1 : सूरए इब्राहीम मक्किय्या है सिवाए आयत ''اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا'' और इस के बा'द वाली आयत के। इस सूरत में सात रुकूअ़ बावन आयतें आठ सो इक्सठ कलिमे, तीन हज़ार चार सो चौंतीस ह़र्फ़ हैं 2 : येह क़ुरआन शरीफ़ 3 : कुफ़्रो ज़लालत व जहलो ग़वायत (जहालत व गुमराहिय्यत) की 4 : ईमान के 5 : ज़ुल्मात को जम्अ़ और नूर को वाहिद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में ईमा (इशारा) है कि दीने ह़क़ की राह एक है और कुफ़्रो ज़लालत के त़रीक़े कसीर। 6 : या'नी दीने इस्लाम 7 : वोह सब का ख़ालिक़ो मालिक है, सब उस के बन्दे और मम्लूक (क़ब्ज़े में हैं) तो उस की इ़बादत सब पर लाज़िम और उस के सिवा किसी की इ़बादत रवा नहीं। 8 : और लोगों को दीने इलाही

www.dawateislami.net

رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِیُبَیِّنَ لَهُمْ ؕ فَیُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ وَ

उस की क़ौम ही की ज़बान में भेजा[10] कि वोह उन्हें साफ़ बताए[11] फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और

یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝۴ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

वोह राह दिखाता है जिसे चाहे और वोही इ़ज़्ज़त ह़िक्मत वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियां[12]

بِاٰیٰتِنَاۤ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَیّٰىمِ

दे कर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरियों से[13] उजाले में ला और उन्हें अल्लाह के दिन

اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝۵ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى

याद दिला[14] बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले शुक्र गुज़ार को और जब मूसा ने अपनी क़ौम

لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

से कहा[15] याद करो अपने ऊपर अल्लाह का एह़सान जब उस ने तुम्हें फ़िरऔ़न वालों से नजात दी

یَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ یُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ یَسْتَحْیُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ

जो तुम को बुरी मार देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियां ज़िन्दा रखते

क़बूल करने से मानेअ़ होते हैं **9 :** कि ह़क़ से बहुत दूर हो गए हैं। **10 :** जिस में वोह रसूल मब्ऊ़स हुवा ख़्वाह उस की दा'वत आ़म हो और दूसरी क़ौमों और दूसरे मुल्कों पर भी उस का इत्तिबाअ़ लाज़िम हो जैसा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रिसालत तमाम आदमियों और जिन्नों बल्कि सारी ख़ल्क़ की त़रफ़ है और आप सब के नबी हैं जैसा कि क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया ''لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرًا''। **11 :** और जब उस की क़ौम अच्छी त़रह़ समझ ले तो दूसरी क़ौमों को तरजमों के ज़रीए़ से वोह अह़काम पहुंचा दिये जाएं और उन के मा'ना समझा दिये जाएं। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी फ़रमाया है कि ''قَوْمِهٖ'' की ज़मीर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ राजेअ़ है और मा'ना येह हैं कि हम ने हर रसूल को सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़बान या'नी अ़रबी में वह़्य फ़रमाई और येह मा'ना एक रिवायत में भी आए हैं कि वह़्य हमेशा अ़रबी ज़बान ही में नाज़िल हुई फिर अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام ने अपनी क़ौमों के लिये उन की ज़बानों में तरजमा फ़रमा दिया। (اتقان، حسینی) **मस्अला :** इस से मा'लूम होता है कि अ़रबी तमाम ज़बानों में सब से अफ़्ज़ल है। **12 :** मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरा के **13 :** कुफ़्र की निकाल कर ईमान के **14 :** क़ामूस में है कि ''اَیَّامُ اللّٰہ'' से अल्लाह की ने'मतें मुराद हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व उबय बिन का'ब व मुजाहिद व क़तादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने भी اَیَّامُ اللّٰہ की तफ़्सीर (अल्लाह की ने'मतें) फ़रमाई। मुक़ातिल का क़ौल है कि اَیَّامُ اللّٰہ से वोह बड़े बड़े वक़ाएअ़ (ह़ादिसात व वाक़िआ़त) मुराद हैं जो अल्लाह के अम्र से वाक़ेअ़ हुए। **बा'ज़** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि اَیَّامُ اللّٰہ से वोह दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। (خازن و مدارک و مفردات راغب) इन اَیَّامُ اللّٰہ में सब से बड़ी ने'मत के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की विलादत व मे'राज के दिन हैं, इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है, इसी त़रह़ और बुज़ुर्गों पर जो अल्लाह तआ़ला की ने'मतें हुईं या जिन अय्याम में वाक़िआ़ते अ़ज़ीमा पेश आए जैसा कि दसवीं मुह़र्रम को करबला का वाक़िअ़ए हाइला (होलनाक वाक़िआ़) इन की यादगार क़ाइम करना भी तज़्कीर ब اَیَّامُ اللّٰہ में दाख़िल है, बा'ज़ लोग मीलाद शरीफ़, मे'राज शरीफ़ और ज़िक्रे शहादत के अय्याम की तख़्सीस (तारीख़ मख़्सूस करने) में कलाम करते हैं उन्हें इस आयत से नसीह़त पज़ीर होना चाहिये। **15 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات का अपनी क़ौम को येह इर्शाद फ़रमाना तज़्कीर ब اَیَّامُ اللّٰہ की ता'मील है।

www.dawateislami.net

وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۶ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ

और इस में[16] तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़्ल हुवा और याद करो जब तुम्हारे रब ने सुना दिया कि अगर एहसान मानोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۷ وَقَالَ مُوْسٰۤى اِنْ

तो मैं तुम्हें और दूंगा[17] और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है और मूसा ने कहा अगर

تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۸ اَلَمْ

तुम और ज़मीन में जितने हैं सब काफ़िर हो जाओ[18] तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह सब ख़ूबियों वाला है क्या

يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ

तुम्हें उन की ख़बरें न आईं जो तुम से पहले थे नूह की क़ौम और आ़द और समूद और जो उन के

بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا

बा'द हुए उन्हें **अल्लाह** ही जाने[19] उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें ले कर आए[20] तो वोह अपने

اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ

हाथ[21] अपने मुंह की त़रफ़ ले गए[22] और बोले हम मुन्किर हैं उस के जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और जिस राह[23] की

شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۹ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ

त़रफ़ हमें बुलाते हो उस में हमें वोह शक है कि बात खुलने नहीं देता उन के रसूलों ने कहा क्या **अल्लाह** में शक है[24] आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ

और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हें बुलाता है[25] कि तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्शे[26] और मौत के मुक़र्रर वक़्त

---

16 : या'नी नजात देने में **17 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है। शुक्र की अस्ल येह है कि आदमी ने'मत का तसव्वुर और उस का इज़्हार करे और ह़क़ीक़ते शुक्र येह है कि मुन्इ़म (ने'मत देने वाले) की ने'मत का उस की ता'ज़ीम के साथ ए'तिराफ़ करे और नफ़्स को इस का ख़ूगर बनाए, यहां एक बारीकी (अहम बात) है वोह येह कि बन्दा जब **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों और उस के त़रह़ त़रह़ के फ़ज़्लो करम व एह़सान का मुत़ालआ़ करता है तो उस के शुक्र में मश्ग़ूल होता है इस से ने'मतें ज़ियादा होती हैं और बन्दे के दिल में **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत बढ़ती चली जाती है, येह मक़ाम बहुत बरतर है और इस से आ'ला मक़ाम येह है कि मुन्इ़म की मह़ब्बत यहां तक ग़ालिब हो कि क़ल्ब को ने'मतों की त़रफ़ इल्तिफ़ात (रग़बत) बाक़ी न रहे, येह मक़ाम सिद्दीक़ों का है। **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें शुक्र की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **18 :** तो तुम ही ज़रर पाओगे और तुम ही ने'मतों से मह़रूम रहोगे। **19 :** कितने थे **20 :** और उन्हों ने मो'जिज़ात दिखाए **21 :** शिद्दते ग़ैज़ (सख़्त ग़ुस्से) से **22 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि वोह ग़ुस्से में आ कर अपने हाथ काटने लगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि उन्हों ने किताबुल्लाह सुन कर तअ़ज्जुब से अपने मुंह पर हाथ रखे। ग़रज़ येह कोई न कोई इन्कार की अदा थी। **23 :** या'नी तौह़ीद व ईमान **24 :** क्या उस की तौह़ीद में तरद्दुद है ? येह कैसे हो सकता है उस की दलीलें तो निहायत ज़ाहिर हैं। **25 :** अपनी त़ाअ़त व ईमान की त़रफ़ **26 :** जब तुम ईमान ले आओ। इस लिये कि इस्लाम लाने के बा'द पहले के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं सिवाए हुक़ूक़े इबाद के और इसी लिये कुछ गुनाह फ़रमाया।

www.dawateislami.net

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِیْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا

तक तुम्हारी ज़िन्दगी बे अ़ज़ाब काट दे बोले तुम तो हमीं जैसे आदमी हो[27] तुम चाहते हो कि हमें उस से बाज़ रखो

عَمَّا كَانَ یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱۰﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ

जो हमारे बाप दादा पूजते थे[28] अब कोई रोशन सनद हमारे पास ले आओ[29] उन के रसूलों ने उन से कहा[30]

اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ یَمُنُّ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

हम हैं तो तुम्हारी तरह इन्सान मगर अल्लाह अपने बन्दों में जिस पर चाहे एह़सान फ़रमाता है[31]

وَ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نَّاْتِیَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ

और हमारा काम नहीं कि हम तुम्हारे पास कुछ सनद ले आएं मगर अल्लाह के हुक्म से और मुसल्मानों को अल्लाह ही पर

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ

भरोसा चाहिये[32] और हमें क्या हुवा कि अल्लाह पर भरोसा न करें[33] उस ने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं[34] और

لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَیْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ ع وَ

तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये और

قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِیْ

काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा हम ज़रूर तुम्हें अपनी ज़मीन[35] से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन

مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَیْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۳﴾ۙ وَ لَنُسْكِنَنَّكُمُ

पर हो जाओ तो उन्हें उन के रब ने वह्य भेजी कि हम ज़रूर उन ज़ालिमों को हलाक करेंगे और ज़रूर हम तुम को उन के

الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَ خَافَ وَعِیْدِ ﴿۱۴﴾ وَ

बा'द ज़मीन में बसाएंगे[36] येह उस के लिये है जो[37] मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे और

27 : ज़ाहिर में हमें अपनी मिस्ल मा'लूम होते हो, फिर कैसे माना जाए कि हम तो नबी न हुए और तुम्हें येह फ़ज़ीलत मिल गई। 28 : या'नी बुत परस्ती से 29 : जिस से तुम्हारे दा'वे की सिह़्ह़त साबित हो। येह कलाम उन का इनाद व सरकशी से था और बा वुजूदे कि अम्बिया आयात ला चुके थे मो'जिज़ात दिखा चुके थे फिर भी उन्हों ने नई सनद मांगी और पेश किये हुए मो'जिज़ात को कल्अ़दम (ना क़ाबिले क़बूल) क़रार दिया। 30 : अच्छा येही मानो कि 31 : और नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है और इस मन्सबे अ़ज़ीम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाता है। 32 : वोही आ'दा का शर दफ़्अ़ करता और उस से मह़फ़ूज़ रखता है 33 : हम से ऐसा हो ही नहीं सकता क्यूं कि हम जानते हैं कि जो कुछ क़ज़ाए इलाही में है वोही होगा, हमें उस पर पूरा भरोसा और कामिल ए'तिमाद है। अबू तुराब رضی اللہ تعالیٰ عنہ का क़ौल है कि तवक्कुल बदन को उ़बूदिय्यत में डालना, क़ल्ब को रबूबिय्यत के साथ मुतअ़ल्लिक़ रखना, अ़ता पर शुक्र, बला पर सब्र का नाम है। 34 : और रुश्द व नजात के त़रीक़े हम पर वाज़ेह़ फ़रमा दिये और हम जानते हैं कि तमाम उमूर उस के क़ुदरतो इख़्तियार में हैं। 35 : या'नी अपने दियार 36 : ह़दीस शरीफ़ में है जो अपने हमसाए को ईज़ा देता है अल्लाह उस के घर का उसी हमसाए को मालिक बनाता है। 37 : क़ियामत के दिन।

اسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ﴿۱۵﴾ مِّنْ وَّرَآىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ

उन्हों ने[38] फ़ैसला मांगा और हर सरकश हटधर्म ना मुराद हुवा[39] जहन्नम उस के पीछे लगी और उसे पीप का पानी

مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۙ﴿۱۶﴾ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ

पिलाया जाएगा ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी[40] और उसे हर त़रफ़ से

كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾ مَثَلُ

मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब[41] अपने रब

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ

से मुन्किरों का ह़ाल ऐसा है कि उन के काम हैं[42] जैसे राख कि उस पर हवा का सख़्त झोंका आया आंधी

عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ

के दिन में[43] सारी कमाई में से कुछ हाथ न लगा येही है दूर की

الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ

गुमराही क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान व ज़मीन ह़क़ के साथ बनाए[44] अगर

يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ﴿۱۹﴾ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾ وَ

चाहे तो तुम्हें ले जाए[45] और एक नई मख़्लूक़ ले आए[46] और येह[47] अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और

بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا

सब अल्लाह के हुज़ूर[48] अ़लानिया ह़ाज़िर होंगे तो जो कमज़ोर थे वोह[49] बड़ाई वालों से कहेंगे[50] हम तुम्हारे ताबेअ़ थे

38 : या'नी अम्बिया ने अल्लाह तआ़ला से मदद त़लब की या उम्मतों ने अपने और रसूलों के दरमियान अल्लाह तआ़ला से 39 : मा'ना येह हैं कि अम्बिया की नुसरत फ़रमाई गई और उन्हें फ़त्ह़ दी गई और ह़क़ के मुआनिद, सरकश, काफ़िर ना मुराद हुए और उन के ख़लास (छुटकारे) की कोई सबील न रही। 40 : ह़दीस शरीफ़ में है कि जहन्नमी को पीप का पानी पिलाया जाएगा जब वोह मुंह के पास आएगा तो उस को बहुत ना गवार मा'लूम होगा जब और क़रीब होगा तो उस से चेहरा भुन जाएगा और सर तक की खाल जल कर गिर पड़ेगी जब पियेगा तो आंतें कट कर निकल जाएंगी। (अल्लाह की पनाह) 41 : या'नी हर अ़ज़ाब के बा'द उस से ज़ियादा शदीद व ग़लीज़ अ़ज़ाब होगा। (نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ غَضَبِ الْجَبَّارِ) 42 : जिन को वोह नेक अ़मल समझते थे जैसे कि मोहताजों की इमदाद, मुसाफ़िरों की इआनत और बीमारों की ख़बर गीरी वग़ैरा। चूंकि ईमान पर मब्नी नहीं इस लिये वोह सब बेकार हैं और उन की ऐसी मिसाल है 43 : और वोह सब उड़ गई और उस के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और उस में से कुछ बाक़ी न रहा, येही ह़ाल है कुफ़्फ़ार के आ'माल का कि उन के शिर्क व कुफ़्र की वज्ह से सब बरबाद और बात़िल हो गए 44 : इन में बड़ी ह़िक्मतें हैं और इन की पैदाइश अ़बस (बेकार) नहीं है। 45 : मा'दूम कर दे 46 : बजाए तुम्हारे जो फ़रमां बरदार हो, उस की क़ुदरत से येह क्या बईद है जो आस्मान व ज़मीन पैदा करने पर क़ादिर है 47 : मा'दूम करना और मौजूद फ़रमाना 48 : रोज़े क़ियामत 49 : और दौलत मन्दों और बा असर लोगों की इत्तिबाअ़ में उन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया था 50 : कि दीन व ए'तिक़ाद में।

www.dawateislami.net

فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا
क्या तुम से हो सकता है कि अल्लाह के अ़ज़ाब में से कुछ हम पर से टाल दो[51] कहेंगे अल्लाह हमें हिदायत
اللّٰهُ لَهَدَیْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِیْصٍ ﴿٢١﴾ ع
करता तो हम तुम्हें करते[52] हम पर एक सा है चाहे बे क़रारी करें या सब्र से रहें हमें कहीं पनाह नहीं
وَ قَالَ الشَّیْطٰنُ لَمَّا قُضِیَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ
और शैतान कहेगा जब फ़ैसला हो चुकेगा[53] बेशक अल्लाह ने तुम को सच्चा वा'दा दिया था[54] और
وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا كَانَ لِیَ عَلَیْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ
मैं ने जो तुम को वा'दा दिया था[55] वोह मैं ने तुम से झूटा किया और मेरा तुम पर कुछ क़ाबू न था[56] मगर येही कि मैं ने तुम को[57] बुलाया
فَاسْتَجَبْتُمْ لِیْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِیْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ
तुम ने मेरी मान ली[58] तो अब मुझ पर इल्ज़ाम न रखो[59] ख़ुद अपने ऊपर इल्ज़ाम रखो न मैं तुम्हारी फ़रियाद को पहुंच सकूं न
اَنْتُمْ بِمُصْرِخِیَّ ؕ اِنِّیْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ
तुम मेरी फ़रियाद को पहुंच सको वोह जो पहले तुम ने मुझे शरीक ठहराया था[60] मैं उस से सख़्त बेज़ार हूं बेशक ज़ालिमों
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٢٢﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह बाग़ों में दाख़िल किये जाएंगे
تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا
जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें अपने रब के हुक्म से उस में उन के मिलते वक़्त का

51 : येह कलाम उन का तौबीख़ व इनाद के तौ़र पर होगा कि दुन्या में तुम ने गुमराह किया था और राहे हक़ से रोका था और बढ़ बढ़ कर बातें किया करते थे अब वोह दा'वे क्या हुए अब इस अ़ज़ाब में से ज़रा सा तो टालो ! काफ़िरों के सरदार इस के जवाब में **52 :** जब ख़ुद ही गुमराह हो रहे थे तो तुम्हें क्या राह दिखाते, अब ख़लासी की कोई राह नहीं न काफ़िरों के लिये शफ़ाअ़त। आओ रोएं और फ़रियाद करें, पांच सो बरस फ़रियाद व ज़ारी करेंगे और कुछ काम न आएगी तो कहेंगे कि अब सब्र कर के देखो शायद इस से कुछ काम निकले, पांच सो बरस सब्र करेंगे वोह भी काम न आएगा तो कहेंगे कि **53 :** और हिसाब से फ़राग़त हो जाएगी। जन्नती जन्नत का और दोज़ख़ी दोज़ख़ का हुक्म पा कर जन्नत व दोज़ख़ में दाख़िल हो जाएंगे और दोज़ख़ी शैतान पर मलामत करेंगे और उस को बुरा कहेंगे कि बद नसीब तू ने हमें गुमराह कर के इस मुसीबत में गिरिफ़्तार किया तो वोह जवाब देगा कि **54 :** कि मरने के बा'द फिर उठना है और आख़िरत में नेकियों और बदियों का बदला मिलेगा अल्लाह का वा'दा सच्चा था सच्चा हुवा **55 :** कि न मरने के बा'द उठना, न जज़ा, न जन्नत, न दोज़ख़ **56 :** न मैं ने तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर किया था या येह कि मैं ने अपने वा'दे पर तुम्हारे सामने कोई हुज्जत व बुरहान पेश नहीं की थी। **57 :** वस्वसे डाल कर गुमराही की त़रफ़ **58 :** और बिग़ैर हुज्जत व बुरहान के तुम मेरे बहकाए में आ गए बा वुजूदे कि अल्लाह तआला ने तुम से फ़रमा दिया था कि शैतान के बहकाए में न आना और उस के रसूल उस की त़रफ़ से दलाइल ले कर तुम्हारे पास आए और उन्हों ने हुज्जतें पेश कीं और बुरहानें क़ाइम कीं तो तुम पर ख़ुद लाज़िम था कि तुम उन का इत्तिबाअ़ करते और उन के रोशन दलाइल और ज़ाहिर मो'जिज़ात से मुंह न फेरते और मेरी बात न मानते और मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात न करते मगर तुम ने ऐसा न किया **59 :** क्यूं कि मैं दुश्मन

سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ

इक्राम सलाम है[61] क्या तुम ने न देखा **अल्लाह** ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की[62] जैसे पाकीज़ा दरख़्त

اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ

जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आस्मान में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के

رَبِّهَا ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَ مَثَلُ

हुक्म से[63] और **अल्लाह** लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह समझें[64] और गन्दी

كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا

बात[65] की मिसाल जैसे एक गन्दा पेड़[66] कि ज़मीन के ऊपर से काट दिया गया अब उसे

مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ

कोई क़ियाम नहीं[67] **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात[68] पर दुन्या की ज़िन्दगी

الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙۛ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ ع ٤ ١٢

में[69] और आख़िरत में[70] और **अल्लाह** ज़ालिमों को गुमराह करता है[71] और **अल्लाह** जो चाहे करे

हूं और मेरी दुश्मनी ज़ाहिर है और दुश्मन से ख़ैर ख़्वाही की उम्मीद रखना ही हमाक़त है तो **60 :** **अल्लाह** का उस की इबादत में (خازن) **61 :** **अल्लाह** तआला की तरफ़ से और फ़िरिश्तों की तरफ़ से और आपस में एक दूसरे की तरफ़ से। **62 :** या'नी कलिमए तौहीद की **63 :** ऐसे ही कलिमए ईमान है कि इस की जड़ क़ल्बे मोमिन की ज़मीन में साबित और मज़बूत होती है और इस की शाख़ें या'नी अमल आस्मान में पहुंचते हैं और इस के समरात बरकत व सवाब हर वक़्त हासिल होते हैं। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अस्हाबे किराम से फ़रमाया : वोह दरख़्त बताओ जो मोमिन के मिस्ल है उस के पत्ते नहीं गिरते और वोह हर वक़्त फल देता है (या'नी जिस तरह मोमिन के अमल अकारत नहीं होते और उस की बरकतें हर वक़्त हासिल रहती हैं) सहाबा ने फ़िक्रें कीं कि ऐसा कौन सा दरख़्त है जिस के पत्ते न गिरते हों और उस का फल हर वक़्त मौजूद रहता है। चुनान्चे जंगल के दरख़्तों के नाम लिये जब ऐसा कोई दरख़्त ख़याल में न आया तो हुज़ूर से दरयाफ़्त किया, फ़रमाया : वोह खजूर का दरख़्त है। हज़रते इब्ने उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अपने वालिदे माजिद हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अर्ज़ किया कि जब हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया था तो मेरे दिल में आया था कि येह खजूर का दरख़्त है लेकिन बड़े बड़े सहाबा तशरीफ़ फ़रमा थे मैं छोटा था इस लिये मैं अदबन ख़ामोश रहा, हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि अगर तुम बता देते तो मुझे बहुत ख़ुशी होती। **64 :** और ईमान लाएं क्यूं कि मिसालों से मा'ना अच्छी तरह ख़ातिर गुज़ीं (ज़ेहन नशीन) हो जाते हैं **65 :** या'नी कुफ़्री कलाम **66 :** मिस्ल इन्दिराइन (एक फल) के जिस का मज़ा कड़वा, बू ना गवार या मिस्ले लहसन के बदबूदार **67 :** क्यूं कि जड़ उस की ज़मीन में साबित व मुस्तहकम नहीं शाख़ें उस की बुलन्द नहीं होतीं येही हाल है कुफ़्री कलाम का कि उस की कोई अस्ल साबित नहीं और कोई हुज्जत व बुरहान नहीं रखता जिस से इस्तिहकाम (मज़बूती) हो, न उस में कोई ख़ैरो बरकत कि वोह बुलन्दिये क़बूल पर पहुंच सके। **68 :** या'नी कलिमए ईमान **69 :** कि वोह इब्तिला (आज़्माइश) और मुसीबत के वक़्तों में भी साबिर व क़ाइम रहते हैं और राहे हक़ व दीने क़वीम से नहीं हटते हत्ता कि उन की हयात का ख़ातिमा ईमान पर होता है। **70 :** या'नी क़ब्र में कि अव्वल मनाज़िले आख़िरत है, जब मुन्कर नकीर आ कर उन से पूछते हैं कि तुम्हारा रब कौन है, तुम्हारा दीन क्या है और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तरफ़ इशारा कर के दरयाफ़्त करते हैं कि इन की निस्बत तू क्या कहता है? तो मोमिन इस मन्ज़िल में ब फ़ज़्ले इलाही साबित रहता है और कह देता है कि मेरा रब **अल्लाह** है, मेरा दीन इस्लाम और येह मेरे नबी हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم, **अल्लाह** के बन्दे और उस के रसूल। फिर उस की क़ब्र वसीअ़ कर दी जाती है और उस में जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बूएं आती हैं और वोह मुनव्वर कर दी जाती है और आस्मान से निदा होती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा। **71 :** वोह क़ब्र में मुन्कर नकीर को जवाब सहीह नहीं दे सकते और हर सुवाल के जवाब में

www.dawateislami.net

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ

क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हों ने अल्लाह की ने'मत नाशुक्री से बदल दी[72] और अपनी क़ौम को तबाही के घर

الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا

ला उतारा वोह जो दोज़ख़ है उस के अन्दर जाएंगे और क्या ही बुरी ठहरने की जगह और अल्लाह के लिये बराबर वाले ठहराए[73]

لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ

कि उस की राह से बहकावें तुम फ़रमाओ[74] कुछ बरत लो कि तुम्हारा अन्जाम आग है[75] मेरे उन

لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَ

बन्दों से फ़रमाओ जो ईमान लाए कि नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में छुपे और

عَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿٣١﴾ اللَّهُ الَّذِي

ज़ाहिर ख़र्च करें उस दिन के आने से पहले जिस में न सौदागरी होगी[76] न याराना[77] अल्लाह है जिस

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ

ने आस्मान और ज़मीन बनाए और आस्मान से पानी उतारा तो उस से कुछ फल

الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ

तुम्हारे खाने को पैदा किये और तुम्हारे लिये कश्ती को मुसख़्ख़र किया कि उस के हुक्म से दरिया में चले[78]

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿٣٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَ

और तुम्हारे लिये नदियां मुसख़्ख़र कीं[79] और तुम्हारे लिये सूरज और चांद मुसख़्ख़र किये जो बराबर चल रहे हैं[80] और

येही कहते हैं हाए हाए मैं नहीं जानता। आस्मान से निदा होती है मेरा बन्दा झूटा है इस के लिये आग का फ़र्श बिछाओ, दोज़ख़ का लिबास पहनाओ, दोज़ख़ की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो। उस को दोज़ख़ की गरमी और दोज़ख़ की लपट पहुंचती है और क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि एक तरफ़ की पस्लियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं, अज़ाब करने वाले फ़िरिश्ते उस पर मुक़र्रर किये जाते हैं जो उसे लोहे के गुरज़ों से मारते हैं। (اَعَاذَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَثَبَّتَنَا عَلَى الْاِيْمَانِ) **72 :** बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि उन लोगों से मुराद कुफ़्फ़ारे मक्का हैं और वोह ने'मत जिस की शुक्र गुज़ारी उन्हों ने न की वोह अल्लाह के हबीब हैं सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि अल्लाह तआला ने इन के वुजूद से इस उम्मत को नवाज़ा और इन की ज़ियारत सरापा करामत की सआदत से मुशर्रफ़ किया, लाज़िम था कि इस ने'मते जलीला का शुक्र बजा लाते और इन का इत्तिबाअ़ कर के मज़ीद करम के मूरिद (क़ाबिल) होते। बजाए इस के उन्हों ने नाशुक्री की और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इन्कार किया और अपनी क़ौम को जो दीन में उन के मुवाफ़िक़ थे दारुल हलाक (या'नी दोज़ख़) में पहुंचाया। **73 :** या'नी बुतों को उस का शरीक किया **74 :** ऐ मुस्तफ़ा ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इन कुफ़्फ़ार से कि थोड़े दिन दुन्या की ख़्वाहिशात को **75 :** आख़िरत में। **76 :** कि ख़रीदो फ़रोख़्त या'नी माली मुआवज़े और फ़िदये ही से कुछ नफ़अ़ उठाया जा सके **77 :** कि इस से नफ़अ़ उठाया जाए बल्कि बहुत से दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे। इस आयत में नफ़्सानी व तब्ई दोस्ती की नफ़ी है और ईमानी दोस्ती जो महब्बते इलाही के सबब से हो वोह बाक़ी रहेगी जैसा कि सूरए ज़ुख़रुफ़ में फ़रमाया : "اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ"। **78 :** और उस से तुम फ़ाएदा उठाओ **79 :** कि उन से काम लो। **80 :** न थकें न रुकें तुम

www.dawateislami.net

سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ

तुम्हारे लिये रात और दिन मुसख़्ख़र किये[81] और तुम्हें बहुत कुछ मुंह मांगा दिया और अगर

تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ ع وَاِذْ

अल्लाह की ने'मतें गिनो तो शुमार न कर सकोगे बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा नाशुक्रा है[82] और याद करो

قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ

जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर[83] को अमान वाला कर दे[84] और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के

الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

पूजने से बचा[85] ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये[86] तो जिस ने मेरा साथ दिया[87]

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ اَسْكَنْتُ

वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है[88] ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद

مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا

एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती तेरे हुरमत वाले घर के पास[89] ऐ हमारे रब इस लिये कि वोह[90]

उन से नफ़्अ़ उठाते हो **81 :** आराम और काम के लिये **82 :** कि कुफ़्र व मा'सियत का इरतिकाब कर के अपने ऊपर ज़ुल्म करता है और अपने रब की ने'मत और उस के एह़सान का ह़क़ नहीं मानता। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इन्सान से यहां अबू जहल मुराद है। ज़ुज्जाज का क़ौल है कि इन्सान इस्मे जिन्स है (या'नी मुसल्मान हो या काफ़िर) और यहां इस से काफ़िर मुराद है। **83 :** मक्कए मुकर्रमा **84 :** कि क़ुर्बे क़ियामत दुन्या के वीरान होने के वक़्त तक येह वीरानी से मह़फ़ूज़ रहे या इस शहर वाले अम्न में हों। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई अल्लाह तआ़ला ने मक्कए मुकर्रमा को वीरान होने से अम्न दिया और कोई भी इस के वीरान करने पर क़ादिर न हो सका और इस को अल्लाह तआ़ला ने ह़रम बनाया कि इस में न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न किसी पर ज़ुल्म किया जाए न वहां शिकार मारा जाए न सब्ज़ा काटा जाए। **85 :** अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام बुत परस्ती और तमाम गुनाहों से मा'सूम हैं, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह दुआ़ करना बारगाहे इलाही में तवाज़ोअ़ व इज़्हारे एह़तियाज के लिये है कि बा वुजूदे कि तू ने अपने करम से मा'सूम किया लेकिन हम तेरे फ़ज़्लो रह़मत की त़रफ़ दस्ते एह़तियाज दराज़ रखते हैं। **86 :** या'नी उन की गुमराही का सबब हुए कि वोह उन्हें पूजने लगे **87 :** और मेरे अ़क़ीदे व दीन पर रहा **88 :** चाहे तो उसे हिदायत करे और तौफ़ीक़े तौबा अ़त़ा फ़रमाए। **89 :** या'नी उस वादी में जहां अब मक्कए मुकर्रमा है। और ज़ुर्रिय्यत से मुराद ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام हैं, आप सर ज़मीने शाम में ह़ज़रते हाजिरा के बत़्ने पाक से पैदा हुए, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की बीवी ह़ज़रते सारह के कोई औलाद न थी इस वज्ह से उन्हें रश्क पैदा हुवा और उन्हों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से कहा कि आप हाजिरा और इन के बेटे को मेरे पास से जुदा कर दीजिये, ह़िक्मते इलाही ने येह एक सबब पैदा किया था। चुनान्चे वह़्य आई कि आप ह़ज़रते हाजिरा व इस्माईल को उस सर ज़मीन में ले जाएं (जहां अब मक्कए मुकर्रमा है) आप इन दोनों को अपने साथ बुराक़ पर सुवार कर के शाम से सर ज़मीने ह़रम में लाए और का'बए मुक़द्दसा के नज़्दीक उतारा, यहां उस वक़्त न कोई आबादी थी, न कोई चश्मा, न पानी, एक तोशादान में खजूरें और एक बरतन में पानी उन्हें दे कर आप वापस हुए और मुड़ कर उन की त़रफ़ न देखा, ह़ज़रते हाजिरा वालिदए इस्माईल ने अ़र्ज़ किया कि आप कहां जाते हैं और हमें इस वादी में बे अनीस व रफ़ीक़ (बे यारो मददगार) छोड़े जाते हैं ? लेकिन आप ने इस का कुछ जवाब न दिया और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात (ध्यान) न फ़रमाया। ह़ज़रते हाजिरा ने चन्द मरतबा येही अ़र्ज़ किया और जवाब न पाया तो कहा कि क्या अल्लाह ने आप को इस का हुक्म दिया है ? आप ने फ़रमाया : हां ! उस वक़्त उन्हें इत़्मीनान हुवा। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام चले गए और उन्हों ने बारगाहे इलाही में हाथ उठा कर येह दुआ़ की जो आयत में मज़्कूर है। ह़ज़रते हाजिरा

www.dawateislami.net

الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْۤ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ

नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल इन की त़रफ़ माइल कर दे[91] और इन्हें कुछ फल खाने को दे[92]

لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ۝٣٧ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى

शायद वोह एह़सान मानें ऐ हमारे रब तू जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते और **अल्लाह** पर

عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ ۝٣٨ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ

कुछ छुपा नहीं ज़मीन में न आस्मान में[93] सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने

وَهَبَ لِیْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَآءِ ۝٣٩

मुझे बुढ़ापे में इस्माईल व इस्ह़ाक़ दिये बेशक मेरा रब दुआ़ सुनने वाला है

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖۗ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝٤٠

ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को[94] ऐ हमारे रब और मेरी दुआ़ सुन ले

ع ٦ ١٨
رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝٤١ ع وَلَا

ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[95] और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा और हरगिज़

अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को दूध पिलाने लगीं, जब वोह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की शिद्दत हुई और साहिब ज़ादे का ह़ल्क़ शरीफ़ भी प्यास से ख़ुश्क हो गया तो आप पानी की जुस्तजू या आबादी की तलाश में सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ीं, ऐसा सात मरतबा हुवा। यहां तक कि फ़िरिश्ते के पर मारने से या ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के क़दमे मुबारक से उस ख़ुश्क ज़मीन में एक चश्मा (ज़मज़म) नुमूदार हुवा। आयत में ह़ुरमत वाले घर से बैतुल्लाह मुराद है जो तूफ़ाने नूह़ से पहले का'बए मुक़द्दसा की जगह था और तूफ़ान के वक़्त आस्मान पर उठा लिया गया, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का येह वाक़िआ़ आप के आग में डाले जाने के बा'द हुवा, आग के वाक़िए में आप ने दुआ़ न फ़रमाई थी और इस वाक़िए में दुआ़ की और तज़र्रोअ़ किया (या'नी गिर्या व ज़ारी की)। **अल्लाह** तआ़ला की कारसाज़ी पर ए'तिमाद कर के दुआ़ न करना भी तवक्कुल और बेहतर है लेकिन मक़ामे दुआ़ इस से भी अफ़्ज़ल है तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات का इस आख़िर वाक़िए में दुआ़ फ़रमाना इस लिये है कि आप मदारिजे कमाल (कमाल के दरजात) में दम बदम तरक़्क़ी पर हैं। **90 :** या'नी ह़ज़रते इस्माईल और इन की औलाद इस वादिये बे ज़राअ़त में तेरे ज़िक्र व इबादत में मश्ग़ूल हों और तेरे बैते ह़राम के पास **91 :** अत़राफ़ व बिलाद से यहां आएं और उन के क़ुलूब इस मकाने त़ाहिर के शौक़े ज़ियारत में खिंचें। इस में ईमानदारों के लिये येह दुआ़ है कि उन्हें बैतुल्लाह का ह़ज मुयस्सर आए और अपनी यहां रहने वाली ज़ुर्रिय्यत (नस्ल) के लिये येह कि वोह ज़ियारत के लिये आने वालों से मुन्तफ़ेअ़ होते रहें, ग़रज़ येह दुआ़ दीनी दुन्यवी बरकात पर मुश्तमिल है। ह़ज़रत की दुआ़ क़बूल हुई और क़बीलए जुरहुम ने इस त़रफ़ से गुज़रते हुए एक परिन्द देखा तो उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि बयाबान में परिन्द कैसा शायद कहीं चश्मा नुमूदार हुवा, जुस्तजू की तो देखा कि ज़मज़म शरीफ़ में पानी है, येह देख कर उन लोगों ने ह़ज़रते हाजिरा से वहां बसने की इजाज़त चाही, उन्हों ने इस शर्त़ से इजाज़त दी कि पानी में तुम्हारा ह़क़ न होगा, वोह लोग वहां बसे और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जवान हुए तो उन लोगों ने आप के सलाह़ व तक़्वा को देख कर अपने ख़ानदान में आप की शादी कर दी और ह़ज़रते हाजिरा का विसाल हो गया। इस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ पूरी हुई और आप ने दुआ़ में येह भी फ़रमाया **92 :** इसी का समरा (नतीजा) है कि फ़ुसूले मुख़्तलिफ़ा (मुख़्तलिफ़ मौसिमों) रबीअ़ व ख़रीफ़ व सैफ़ व शिता (बहार व ख़ज़ां, गर्मी व सर्दी) के मेवे वहां बयक वक़्त मौजूद मिलते हैं। **93 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक और फ़रज़न्द की दुआ़ की थी **अल्लाह** तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई तो आप ने उस का शुक्र अदा किया और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया **94 :** क्यूं कि बा'ज़ की निस्बत तो आप को ब ए'लामे इलाही (रब तआ़ला के आगाह फ़रमा देने से) मा'लूम था कि काफ़िर होंगे, इस लिये बा'ज़ ज़ुर्रिय्यत के वासित़े नमाज़ों की पाबन्दी व मुह़ाफ़ज़त की दुआ़ की। **95 :** बशर्ते ईमान या मां बाप से ह़ज़रते आदम व ह़व्वा मुराद हैं।

www.dawateislami.net

تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ

अल्लाह को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से[96] उन्हें ढील नहीं दे रहा है मगर ऐसे दिन के लिये

تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ(۴۲) مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ

जिस में[97] आंखें खुली की खुली रह जाएंगी बे तहाशा दौड़ते निकलेंगे[98] अपने सर उठाए हुए कि उन की पलक

اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ(۴۳) وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ

उन की तरफ़ लौटती नहीं[99] और उन के दिलों में कुछ सकत (ताक़त) न होगी[100] और लोगों को उस दिन से डराओ[101] जब उन पर

الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ

अज़ाब आएगा तो ज़ालिम[102] कहेंगे ऐ हमारे रब थोड़ी देर हमें[103] मोहलत दे कि हम तेरा

دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ

बुलाना मानें[104] और रसूलों की गुलामी करें[105] तो क्या तुम पहले[106] क़सम न खा चुके थे कि हमें दुन्या से कहीं

زَوَالٍ ۙ(۴۴) وَّ سَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ

हट कर जाना नहीं[107] और तुम उन के घरों में बसे जिन्हों ने अपना बुरा किया था[108] और तुम पर ख़ूब खुल गया

كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ(۴۵) وَ قَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ

हम ने उन के साथ कैसा किया[109] और हम ने तुम्हें मिसालें दे दे कर बता दिया[110] और बेशक वोह[111] अपना सा दाउं (फ़रेब) चले[112]

وَ عِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَ اِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ(۴۶) فَلَا

और उन का दाउं अल्लाह के क़ाबू में है और उन का दाउं कुछ ऐसा न था कि जिस से येह पहाड़ टल जाएं[113] तो हरगिज़

96 : इस में मज़्लूम को तसल्ली दी गई कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम से उस का इन्तिक़ाम लेगा **97 :** होल व दहशत से **98 :** ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ जो उन्हें अ़र्सए मह़शर की त़रफ़ बुलाएंगे। **99 :** कि अपने आप को देख सकें **100 :** शिद्दते ह़ैरत व दहशत से। क़तादा ने कहा कि दिल सीनों से निकल कर गलों में आ फंसेंगे न बाहर निकल सकेंगे न अपनी जगह वापस जा सकेंगे। मा'ना येह हैं कि उस दिन की शिद्दते होल व दहशत का येह आ़लम होगा कि सर ऊपर उठे होंगे, आंखें खुली की खुली रह जाएंगी दिल अपनी जगह पर क़रार न पा सकेंगे। **101 :** या'नी कुफ़्फ़ार को क़ियामत के दिन का ख़ौफ़ दिलाओ **102 :** या'नी काफ़िर **103 :** दुन्या में वापस भेज दे और **104 :** और तेरी तौह़ीद पर ईमान लाएं **105 :** और हम से जो क़ुसूर हो चुके उस की तलाफ़ी करें, इस पर उन्हें ज़ज्रो तौबीख़ की जाएगी और फ़रमाया जाएगा **106 :** दुन्या में **107 :** और क्या तुम ने बअ़्स व आख़िरत का इन्कार न किया था **108 :** कुफ़्र व मआ़सी का इरतिकाब कर के जैसे कि क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा। **109 :** और तुम ने अपनी आंखों से उन की मनाज़िल में अ़ज़ाब के आसार और निशान देखे और तुम्हें उन की हलाकत व बरबादी की ख़बरें मिलीं, येह सब कुछ देख कर और जान कर तुम ने इ़ब्रत न ह़ासिल की और तुम कुफ़्र से बाज़ न आए। **110 :** ताकि तुम तदबीर करो और समझो और अ़ज़ाब व हलाक से अपने आप को बचाओ। **111 :** इस्लाम के मिटाने और कुफ़्र की ताईद करने के लिये नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ **112 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़त्ल करने या क़ैद करने या निकाल देने का इरादा किया। **113 :** या'नी आयाते इलाही और अह़कामे शरए मुस्त़फ़ाई जो अपने क़ुव्वतो सबात में ब मन्ज़िला मज़बूत़ पहाड़ों के हैं। मुह़ाल है कि काफ़िरों के मक्र और उन की ह़ीला अंगेज़ियों से अपनी जगह से टल सकें।

تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ؕ ﴿۴۷﴾

ख़याल न करना कि **अल्लाह** अपने रसूलों से वा'दा ख़िलाफ़ करेगा[114] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला

یَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَیْرَ الْاَرْضِ وَ السَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ

जिस दिन[115] बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आस्मान[116] और लोग सब निकल खड़े होंगे[117] एक **अल्लाह** के सामने

الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَ تَرَى الْمُجْرِمِیْنَ یَوْمَىٕذٍ مُّقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ۚ ﴿۴۹﴾

जो सब पर ग़ालिब है और उस दिन तुम मुजरिमों[118] को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे[119]

سَرَابِیْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ ﴿۵۰﴾ لِیَجْزِیَ اللّٰهُ كُلَّ

उन के कुरते राल के होंगे[120] और उन के चेहरे आग ढांप लेगी इस लिये कि **अल्लाह** हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ

उस की कमाई का बदला दे बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती येह[121] लोगों को हुक्म पहुंचाना है और

ع ۱۹ لِیُنْذَرُوْا بِهٖ وَ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِیَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۠ ﴿۵۲﴾

इस लिये कि वोह इस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है[122] और इस लिये कि अ़क़्ल वाले नसीहत मानें

اٰیاتها ۹۹ | ۱۵ سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ ۵۴ | رکوعاتها ۶

सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में निनानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱﴾

येह आयतें हैं किताब और रोशन क़ुरआन की

114 : येह तो मुम्किन ही नहीं वोह ज़रूर वा'दा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा, इन के दीन को ग़ालिब करेगा, इन के दुश्मनों को हलाक करेगा **115 :** इस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **116 :** ज़मीन व आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं : **एक** येह कि इन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे मसलन ज़मीन एक सत़्ह हो जाएगी न इस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और इक़्लीम का निशान और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़्ताब, माहताब की रोशनियां मा'दूम होंगी, येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। **दूसरा** क़ौल येह है कि आस्मान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी, इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी, सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे ब ज़ाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सह़ीह़ है और वज्हे जम्अ़ येह है कि अव्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'दे हिसाब तब्दीले सानी होगी इस में ज़मीन व आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी। **117 :** अपनी क़ब्रों से **118 :** या'नी काफ़िरों **119 :** अपने शयात़ीन के साथ बंधे हुए **120 :** सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं। (مدارک وخازن)

www.dawateislami.net

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿٢﴾ ذَرۡهُمۡ يَاۡكُلُوۡا وَيَتَمَتَّعُوۡا

बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर[2] काश मुसल्मान होते उन्हें छोड़ो[3] कि खाएं और बरतें[4]

وَيُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣﴾ وَمَاۤ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

और उम्मीद[5] उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं[6] और जो बस्ती हम ने हलाक की उस का एक

كِتَابٌ مَّعۡلُوۡمٌ ﴿٤﴾ مَا تَسۡبِقُ مِنۡ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ ﴿٥﴾ وَ

जाना हुवा नविश्ता (लिखा हुवा फ़ैसला) था[7] कोई गुरोह अपने वा'दे से न आगे बढ़े न पीछे हटे और

قَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡ نُزِّلَ عَلَيۡهِ الذِّكۡرُ اِنَّكَ لَمَجۡنُوۡنٌ ﴿٦﴾ لَوۡ مَا تَاۡتِيۡنَا

बोले[8] कि ऐ वोह जिन पर कुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो[9] हमारे पास फ़िरिश्ते क्यूं

بِالۡمَلٰۤئِكَةِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿٧﴾ مَا نُنَزِّلُ الۡمَلٰۤئِكَةَ اِلَّا بِالۡحَقِّ

नहीं लाते[10] अगर तुम सच्चे हो[11] हम फ़िरिश्ते बेकार नहीं उतारते

وَمَا كَانُوۡۤا اِذًا مُّنۡظَرِيۡنَ ﴿٨﴾ اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ

और वोह उतरें तो उन्हें मोहलत न मिले[12] बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद

لَحٰفِظُوۡنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ فِيۡ شِيَعِ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿١٠﴾ وَمَا

इस के निगहबान हैं[13] और बेशक हम ने तुम से पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे और

तफ़्सीरे बैज़ावी में है कि उन के बदनों पर राल (एक ख़ास गोंद) लेप दी जाएगी वोह मिस्ल कुरते के हो जाएगी उस की सोज़िश और उस के रंग की वहशत व बदबू से तक्लीफ़ पाएंगे। **121 :** कुरआन शरीफ़ **122 :** या'नी इन आयात से **अल्लाह** तआला की तौहीद की दलीलें पाएं। **1 :** सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ निनानवे आयतें, छ[6] सो चव्वन कलिमे, दो हज़ार सात सो साठ हर्फ़ हैं। **2 :** येह आरज़ूएं या वक़्ते नज़्अ़ अ़ज़ाब देख कर होंगी जब काफ़िर को मा'लूम हो जाएगा कि वोह गुमराही में था या आख़िरत में रोज़े क़ियामत के शदाइद और अहवाल और अपना अन्जाम व मआल देख कर। ज़ज्जाज का क़ौल है कि काफ़िर जब कभी अपने अहवाल, अ़ज़ाब और मुसल्मानों पर **अल्लाह** की रहमत देखेंगे हर मरतबा आरज़ूएं करेंगे कि **3 :** ऐ मुस्तफ़ा ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **4 :** दुन्या की लज़्ज़तें **5 :** तनअ़ुउम व तलज़्ज़ुज़ (ऐशो लज़्ज़त) व तूले हयात की जिस के सबब वोह ईमान से महरूम हैं। **6 :** अपना अन्जामे कार, इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुन्या की तलब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ़ हक़ से रोकता है। **7 :** लौहे महफ़ूज़ में इसी मुअ़य्यन वक़्त पर वोह हलाक हुई। **8 :** कुफ़्फ़ारे मक्का हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से **9 :** उन का येह क़ौल तमस्ख़ुर और इस्तिहज़ा (या'नी मज़ाक़) के तौर पर था जैसा कि फ़िरऔ़न ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत कहा था : "اِنَّ رَسُوۡلَكُمُ الَّذِيۡۤ اُرۡسِلَ اِلَيۡكُمۡ لَمَجۡنُوۡنٌ"। **10 :** जो तुम्हारे रसूल होने और कुरआन शरीफ़ के किताबे इलाही होने की गवाही दें **11 : अल्लाह** तआला इस के जवाब में फ़रमाता है **12 :** फ़िलहाल अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिये जाएं। **13 :** कि तहरीफ़ व तब्दील व ज़ियादती व कमी से इस की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं, तमाम जिन्नो इन्स और सारी ख़ल्क़ के मक़्दूर (बस) में नहीं है कि इस में एक हर्फ़ की कमी बेशी करे या तग़्यीर व तब्दील कर सके और चूंकि **अल्लाह** तआला ने कुरआने करीम की हिफ़ाज़त का वा'दा फ़रमाया है इस लिये येह ख़ुसूसिय्यत सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ ही की है दूसरी किसी किताब को येह बात मुयस्सर नहीं। येह हिफ़ाज़त कई तरह पर है एक येह कि कुरआने करीम को मो'जिज़ा बनाया कि बशर का कलाम इस में मिल ही न सके, एक येह कि इस को मुआ़रज़े और मुक़ाबले से महफ़ूज़ किया कि कोई इस की मिस्ल कलाम बनाने पर क़ादिर न हो, एक येह कि सारी ख़ल्क़ को इस के नेस्तो

www.dawateislami.net

يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑪ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ

उन के पास कोई रसूल नहीं आता मगर उस से हंसी करते हैं[14] ऐसे ही हम उस हंसी को उन

قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ⑫ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

मुजरिमों[15] के दिलों में राह देते हैं वोह इस पर[16] ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है[17]

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ⑭ لَقَالُوْٓا

और अगर हम उन के लिये आस्मान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन को उस में चढ़ते जब भी येही

اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ⑮ وَلَقَدْ جَعَلْنَا

कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुवा[18] और बेशक हम ने

فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ⑯ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

आस्मान में बुर्ज बनाए[19] और उसे देखने वालों के लिये आरास्ता किया[20] और उसे हम ने हर शैतान

رَّجِيْمٍ ⑰ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ⑱ وَ

मरदूद से मह़फ़ूज़ रखा[21] मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उस के पीछे पड़ता है रोशन शो'ला[22] और

الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने ज़मीन फैलाई और इस में लंगर डाले[23] और इस में हर चीज़ अन्दाज़े

ع ١٥

नाबूद और मा'दूम करने से आ़जिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बा वुजूद कमाले अ़दावत के इस किताबे मुक़द्दस को मा'दूम करने से आ़जिज़ हैं।
14 : इस आयत में बताया गया कि जिस त़रह कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यिदे आ़लम ﷺ से जाहिलाना बातें कीं और बे अदबी से आप को मजनून कहा, क़दीम ज़माने से कुफ़्फ़ार की अम्बिया के साथ येही आदत रही है और वोह रसूलों के साथ तमस्ख़ुर करते रहे। इस में नबिय्ये करीम ﷺ की तस्कीने ख़ात़िर (तसल्ली व दिलजूई) है। **15 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का **16 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया ﷺ या क़ुरआन पर **17 :** कि वोह अम्बिया की तक्ज़ीब कर के अ़ज़ाबे इलाही से हलाक होते रहे हैं, येही ह़ाल इन का है तो इन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डरते रहना चाहिये। **18 :** या'नी इन कुफ़्फ़ार का इनाद इस दरजे पर पहुंच गया है कि अगर इन के लिये आस्मान में दरवाज़ा खोल दिया जाए और इन्हें उस में चढ़ना मुयस्सर हो और दिन में उस से गुज़रें और आंखों से देखें जब भी न मानें और येह कह दें कि हमारी नज़र बन्दी की गई और हम पर जादू हुवा, तो जब ख़ुद अपने मुआ़यने से उन्हें यक़ीन ह़ासिल न हुवा तो मलाएका के आने और गवाही देने से जिस को येह त़लब करते हैं उन्हें क्या फ़ाएदा होगा। **19 :** जो कवाकिब सय्यारा के मनाज़िल हैं, वोह बारह हैं : [1]ह़मल, [2]सौर, [3]जौज़ा, [4]सरत़ान, [5]असद, [6]सुम्बुला, [7]मीज़ान, [8]अ़क़्रब, [9]क़ौस, [10]जद्य, [11]दल्व, [12]हूत। **20 :** सितारों से **21 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : शयात़ीन आस्मानों में दाख़िल होते थे और वहां की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे जब ह़ज़रते ईसा علیہ السلام पैदा हुए तो शयात़ीन तीन आस्मानों से रोक दिये गए। जब सय्यिदे आ़लम ﷺ की विलादत हुई तो तमाम आस्मानों से मन्अ़ कर दिये गए। **22 :** शिहाब उस सितारे को कहते हैं जो शो'ले के मिस्ल रोशन होता है और फ़िरिश्ते उस से शयात़ीन को मारते हैं। **23 :** पहाड़ों के ताकि साबित व क़ाइम रहे और जुम्बिश न करे।

www.dawateislami.net

مَّوۡزُوۡنٍ ﴿۱۹﴾ وَ جَعَلۡنَا لَکُمۡ فِیۡہَا مَعَایِشَ وَ مَنۡ لَّسۡتُمۡ لَہٗ بِرٰزِقِیۡنَ ﴿۲۰﴾ وَ

से उगाई और तुम्हारे लिये इस में रोज़ियां कर दीं[24] और वोह कर दिये जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते[25] और

اِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآئِنُہٗ ۫ وَ مَا نُنَزِّلُہٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۲۱﴾

कोई चीज़ नहीं जिस के हमारे पास ख़ज़ाने न हों[26] और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मा'लूम अन्दाज़े से

وَ اَرۡسَلۡنَا الرِّیٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَیۡنٰکُمُوۡہُ ۚ

और हम ने हवाएं भेजीं बादलों को बार वर करने वालियां[27] तो हम ने आस्मान से पानी उतारा फिर वोह तुम्हें पीने को दिया

وَ مَاۤ اَنۡتُمۡ لَہٗ بِخٰزِنِیۡنَ ﴿۲۲﴾ وَ اِنَّا لَنَحۡنُ نُحۡیٖ وَ نُمِیۡتُ وَ نَحۡنُ

और तुम कुछ उस के ख़ज़ान्ची नहीं[28] और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम

الۡوٰرِثُوۡنَ ﴿۲۳﴾ وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِیۡنَ مِنۡکُمۡ وَ لَقَدۡ عَلِمۡنَا

ही वारिस हैं[29] और बेशक हमें मा'लूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मा'लूम हैं

الۡمُسۡتَاۡخِرِیۡنَ ﴿۲۴﴾ وَ اِنَّ رَبَّکَ ہُوَ یَحۡشُرُہُمۡ ؕ اِنَّہٗ حَکِیۡمٌ عَلِیۡمٌ ﴿۲۵﴾ ع ٢ ٢

जो तुम में पीछे रहे[30] और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़ियामत में उठाएगा[31] बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है

وَ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۲۶﴾ ۚ وَ الۡجَآنَّ

और बेशक हम ने आदमी को[32] बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी[33] और जिन्न को

---

24 : ग़ल्ले फल वग़ैरा। **25 :** बांदी ग़ुलाम चौपाए और ख़ुद्दाम वग़ैरा। **26 :** ख़ज़ाने होना इबारत है इक़्तिदार व इख़्तियार से मा'ना येह हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर हैं जितनी चाहें और जो अन्दाज़ा मुक़्तज़ाए हिक्मत हो। **27 :** जो आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं। **28 :** कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो बा वुजूदे कि तुम्हें इस की हाजत है। इस में **अल्लाह** तआला की क़ुदरत और बन्दों के इज्ज़ पर दलालते अज़ीमा है। **29 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ फ़ना होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुद्दइये मुल्क की मिल्क ज़ाएअ़ हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा। **30 :** या'नी पहली उम्मतें और उम्मते मुहम्मदिय्यह जो सब उम्मतों में पिछली है या वोह जो ताअ़त व ख़ैर में सब्क़त करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वोह जो फ़ज़ीलत हासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उ़ज़्र से पीछे रह जाने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जमाअ़ते नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सहाबा सफ़े अव्वल हासिल करने में निहायत कोशां हुए और उन का इज़्दिहाम होने लगा और जिन हज़रात के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकान बेच कर क़रीब मकान ख़रीदने पर आमादा हो गए ताकि सफ़े अव्वल में जगह मिलने से कभी महरूम न हों, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब निय्यतों पर है और **अल्लाह** तआला अगलों को भी जानता है और जो उ़ज़्र से पीछे रह गए हैं उन को भी जानता है और उन की निय्यतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **31 :** जिस हाल पर वोह मरे होंगे। **32 :** या'नी हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को सूखी
33 : **अल्लाह** तआला ने जब हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक ली उस को पानी में ख़मीर किया जब वोह गारा सियाह हो गया और उस में बू पैदा हुई तो उस में सूरते इन्सानी बनाई, फिर वोह सूख कर ख़ुश्क हो गया तो जब हवा उस में जाती तो वोह बजता और उस में आवाज़ पैदा होती जब आफ़्ताब की तमाज़त (गरमी) से वोह पुख़्ता हो गया तो उस में रूह फूंकी और वोह इन्सान हो गया।

www.dawateislami.net

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ

इस से पहले बनाया बे धूएं की आग से[34] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۸﴾ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ

आदमी को बनाने वाला हूं बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उस में

فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿۲۹﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ

अपनी तरफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह फूंक लूं[35] तो उस[36] के लिये सज्दे में गिर पड़ना तो जितने फ़िरिश्ते थे सब के सब

اَجْمَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَؕ اَبٰۤی اَنْ یَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ

सज्दे में गिरे सिवा इब्लीस के उस ने सज्दे वालों का साथ न माना[37] फ़रमाया

یٰۤاِبْلِیْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ

ऐ इब्लीस तुझे क्या हुवा कि सज्दा करने वालों से अलग रहा बोला मुझे ज़ैबा नहीं कि बशर को

لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۳۳﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا

सज्दा करूं जिसे तू ने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा

فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ﴿۳۴﴾ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿۳۵﴾ قَالَ رَبِّ

कि तू मरदूद है और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है[38] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۳۷﴾ اِلٰی

तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[39] फ़रमाया तू उन में है जिन को उस मा'लूम

یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۳۸﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ لَاُزَیِّنَنَّ لَهُمْ فِی

वक़्त के दिन तक मोहलत है[40] बोला ऐ रब मेरे क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन

34 : जो अपनी ह़रारत व लत़ाफ़त से मसामों में नुफ़ूज़ (सरायत) कर जाती है। **35 :** और उस को ह़यात अ़त़ा फ़रमा दूं **36 :** की तह़िय्यत व ता'ज़ीम **37 :** और ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को सज्दा न किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने **38 :** कि आस्मान व ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो इस ला'नत के साथ हमेशगी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी, येह सुन कर शैत़ान **39 :** या'नी क़ियामत के दिन तक। इस से शैत़ान का मत़लब येह था कि वोह कभी न मरे क्यूं कि क़ियामत के बा'द कोई न मरेगा और क़ियामत तक की इस ने मोहलत मांग ही ली लेकिन इस की इस दुआ़ को **अल्लाह** तआ़ला ने इस त़रह़ क़बूल किया कि **40 :** जिस में तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी और वोह नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा फूंका जाने वाला सूर) है तो शैत़ान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़्ख़ए ऊला से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरे सूर फूंकने) तक चालीस बरस है और इस को इस क़दर मोहलत देना इस के इक्राम के लिये नहीं बल्कि इस की बला व शक़ावत और अ़ज़ाब की ज़ियादती के लिये है, येह सुन कर शैत़ान।

الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

में भुलावे दूंगा[41] और ज़रूर मैं उन सब को[42] बे राह कर दूंगा मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं[43]

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَیَّ مُسْتَقِیْمٌ ﴿٤١﴾ اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ

फ़रमाया येह रास्ता सीधा मेरी तरफ़ आता है बेशक मेरे[44] बन्दों पर तेरा कुछ

سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿٤٢﴾ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें[45] और बेशक जहन्नम उन सब का

اَجْمَعِیْنَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾ ع

वा'दा है[46] इस के सात दरवाज़े हैं[47] हर दरवाज़े के लिये उन में से एक हिस्सा बटा हुवा है[48]

اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿٤٥﴾ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِیْنَ ﴿٤٦﴾ وَ

बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं[49] उन में दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में[50] और

نَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿٤٧﴾ لَا

हम ने उन के सीनों में जो कुछ[51] कीने थे सब खींच लिये[52] आपस में भाई हैं[53] तख़्तों पर रू बरू बैठे न

یَمَسُّهُمْ فِیْهَا نَصَبٌ وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِیْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِیْۤ اَنِّیْۤ اَنَا

उन्हें उस में कुछ तक्लीफ़ पहुंचे न वोह उस में से निकाले जाएं ख़बर दो[54] मेरे बन्दों को कि बेशक

الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿٤٩﴾ وَ اَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِیْمُ ﴿٥٠﴾ وَ نَبِّئْهُمْ عَنْ

मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन्हें अह़वाल सुनाओ

41 : या'नी दुन्या में गुनाहों की रग़्बत दिलाऊंगा **42 :** दिलों में वस्वसा डाल कर **43 :** जिन्हें तू ने अपनी तौह़ीद व इबादत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उन पर शैत़ान का वस्वसा और उस का कैद (धोका) न चलेगा। **44 :** ईमानदार **45 :** या'नी जो काफ़िर कि तेरे मुत़ीओ फ़रमां बरदार हो जाएं और तेरे इत्तिबाअ़ का क़स्द कर लें। **46 :** इब्लीस का भी और उस के इत्तिबाअ़ करने वालों का भी। **47 :** या'नी सात त़बक़े। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दरकात (त़बक़ात) हैं : अव्वल [1]जहन्नम, [2]लज़ा, [3]हु़त़मह, [4]सई़र, [5]सक़र, [6]जह़ीम, [7]हाविय‌ह। **48 :** या'नी शैत़ान की पैरवी करने वाले भी सात हि़स्सों में मुन्क़सिम हैं इन में से हर एक के लिये जहन्नम का एक दरका (त़बक़ा) मुअ़य्यन है। **49 :** उन से कहा जाएगा कि **50 :** या'नी जन्नत में दाख़िल हो अम्नो सलामती के साथ न यहां से निकाले जाओ न मौत आए न कोई आफ़त रूनुमा हो न कोई ख़ौफ़ न परेशानी। **51 :** दुन्या में **52 :** और उन के नुफ़ूस को हि़क़्दो ह़सद व इनादो अ़दावत वग़ैरा मज़्मूम ख़स्लतों से पाक कर दिया वोह **53 :** एक दूसरे के साथ मह़ब्बत करने वाले ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर इन ही में से हैं या'नी हमारे सीनों से इनादो अ़दावत और बुग़्ज़ो ह़सद निकाल दिया गया है, हम आपस में ख़ालिस मह़ब्बत रखने वाले हैं। इस में रवाफ़िज़ का रद है। **54 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم।

وقف لازم

ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۵۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ

इब्राहीम के मेहमानों का[55] जब वोह उस के पास आए तो बोले सलाम[56] कहा हमें तुम से

وَجِلُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿۵۳﴾ قَالَ

डर मा'लूम होता है[57] उन्हों ने कहा डरिये नहीं हम आप को एक इ़ल्म वाले लड़के की बिशारत देते हैं[58] कहा

اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿۵۴﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

क्या इस पर मुझे बिशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बिशारत देते हो[59] कहा हम ने आप को सच्ची

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ وَ مَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ

बिशारत दी है[60] आप ना उम्मीद न हों कहा अपने रब की रह़मत से कौन ना उम्मीद हो

اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿۵۶﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ

मगर वोही जो गुमराह हुए[61] कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़िरिश्तो[62] बोले हम

اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۵۸﴾ اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

एक मुजरिम क़ौम की त़रफ़ भेजे गए हैं[63] मगर लूत़ के घर वाले उन सब को हम

ع ٤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ

बचा लेंगे[64] मगर उस की औ़रत हम ठहरा चुके हैं कि वोह पीछे रह जाने वालों में है[65] तो जब

اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾ قَالُوْا بَلْ

लूत़ के घर फ़िरिश्ते आए[66] कहा तुम तो कुछ बेगाना लोग हो[67] कहा बल्कि

55 : जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने इस लिये भेजा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़रज़न्द की बिशारत दें और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम को हलाक करें। येह मेहमान ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام थे मअ़ कई फ़िरिश्तों के। **56 :** या'नी फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को सलाम किया और आप की तह़िय्यतो तक्रीम बजा लाए तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से **57 :** इस लिये कि बे इज़्न और बे वक़्त आए और खाना नहीं खाया। **58 :** या'नी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की, इस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **59 :** या'नी ऐसी पीराना साली (बुढ़ापे) में औलाद होना अ़जीबो ग़रीब है किस त़रह़ औलाद होगी, क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी ह़ालत में बेटा अ़त़ा फ़रमाया जाएगा? फ़िरिश्तों ने **60 :** क़ज़ाए इलाही इस पर जारी हो चुकी कि आप के बेटा हो और उस की ज़ुर्रिय्यत बहुत फैले **61 :** या'नी मैं उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं क्यूं कि रह़मत से ना उम्मीद काफ़िर होते हैं, हां उस की सुन्नत जो आ़लम में जारी है उस से येह बात अ़जीब मा'लूम हुई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरिश्तों से **62 :** या'नी इस बिशारत के सिवा और क्या काम है जिस के लिये तुम भेजे गए हो। **63 :** या'नी क़ौमे लूत़ की त़रफ़ कि हम उन्हें हलाक करें **64 :** क्यूं कि वोह ईमानदार हैं **65 :** अपने कुफ़्र के सबब। **66 :** ख़ूब सूरत नौ जवानों की शक्ल में और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को अन्देशा हुवा कि क़ौम इन के दरपै होगी तो आप ने फ़िरिश्तों से **67 :** न तो यहां के बाशिन्दे हो न कोई मुसाफ़रत की अ़लामत तुम में पाई जाती है क्यूं आए हो? फ़िरिश्तों ने।

www.dawateislami.net

جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا

हम तो आप के पास वोह[68] लाए हैं जिस में येह लोग शक करते थे[69] और हम आप के पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا

बेशक सच्चे हैं तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे ले कर बाहर जाइये और आप उन के पीछे चलिये और

يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ ذٰلِكَ

तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे[70] और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये[71] और हम ने उसे उस

الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰۤؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ

हुक्म का फ़ैसला सुना दिया कि सुब्ह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी[72] और शहर वाले[73]

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

ख़ुशियां मनाते आए लूत़ ने कहा येह मेरे मेहमान हैं[74] मुझे फ़ज़ीहत न करो[75] और अल्लाह से डरो

وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْۤا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰۤؤُلَآءِ

और मुझे रुस्वा न करो[76] बोले क्या हम ने तुम्हें मन्अ़ न किया था कि औरों के मुआमले में दख़्ल न दो कहा येह क़ौम की औरतें

بَنٰتِيْۤ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है[77] ऐ मह़बूब तुम्हारी जान की क़सम[78] बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا

तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया[79] तो हम ने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उस के नीचे का हिस्सा कर दिया[80]

68 : अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे 69 : और आप को झुटलाते थे। 70 : कि क़ौम पर क्या बला नाज़िल हुई और वोह किस अ़ज़ाब में मुब्तला किये गए। 71 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हुक्म मुल्के शाम को जाने का था। 72 : और तमाम क़ौम अ़ज़ाब से हलाक कर दी जाएगी। 73 : या'नी शहर सदूम के रहने वाले। ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम के लोग ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के यहां ख़ूब सूरत नौ जवानों के आने की ख़बर सुन कर ब इरादए फ़ासिद व ब निय्यते नापाक 74 : और मेहमान का इक्राम लाज़िम होता है, तुम इन की बे हुरमती का क़स्द कर के 75 : कि मेहमान की रुस्वाई मेज़बान के लिये ख़जालत व शरमिन्दगी का सबब होती है। 76 : इन के साथ बुरा इरादा कर के, इस पर क़ौम के लोग ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام से 77 : तो इन से निकाह़ करो और ह़राम से बाज़ रहो। अब अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से ख़िता़ब फ़रमाता है 78 : और मख़्लूक़े इलाही में से कोई जान बारगाहे इलाही में आप की जाने पाक की त़रह इ़ज़्ज़तो हुरमत नहीं रखती और अल्लाह तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उ़म्र के सिवा किसी की उ़म्र व ह़यात की क़सम नहीं फ़रमाई, येह मर्तबा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है। अब इस क़सम के बा'द इर्शाद फ़रमाता है 79 : या'नी होलनाक आवाज़ ने। 80 : इस त़रह कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام उस ख़ित़्ते को उठा कर आस्मान के क़रीब ले गए और वहां से औंधा कर के ज़मीन पर डाल दिया।

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾

और उन पर कंकर के पथ्थर बरसाए बेशक इस में निशानियां हैं फ़िरासत वालों के लिये

وَ اِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَ اِنْ كَانَ

और बेशक वोह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है[81] बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को और बेशक

اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَ اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ

झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे[82] तो हम ने उन से बदला लिया[83] और बेशक येह दोनों बस्तियां[84]

وقف لازم

مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَ لَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾ وَ اٰتَيْنٰهُمْ

खुले रास्ते पर पड़ती हैं[85] और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुटलाया[86] और हम ने उन को

اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَ كَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا

अपनी निशानियां दीं[87] तो वोह उन से मुंह फेरे रहे[88] और वोह पहाड़ों में घर तराशते थे

اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

बे ख़ौफ़[89] तो उन्हें सुब्ह होते चिंघाड़ ने आ लिया[90] तो उन की कमाई कुछ

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا

उन के काम न आई[91] और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है

بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ

अ़बस (बेकार) न बनाया और बेशक क़ियामत आने वाली है[92] तो तुम अच्छी त़रह़ दर गुज़र करो[93] बेशक तुम्हारा रब

81 : और क़ाफ़िले उस पर गुज़रते हैं और ग़ज़बे इलाही के आसार उन के देखने में आते हैं। **82 :** या'नी काफ़िर थे। ''اَيْكَة'' झाड़ी को कहते हैं, उन लोगों का शहर सर सब्ज़ जंगलों और मर्ग़ज़ारों (सब्ज़ा ज़ारों) के दरमियान था अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को उन पर रसूल बना कर भेजा, उन लोगों ने ना फ़रमानी की और ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को झुटलाया। **83 :** या'नी अ़ज़ाब भेज कर हलाक किया। **84 :** या'नी क़ौमे लूत़ के शहर और अस्ह़ाबे ऐका के **85 :** जहां आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं, तो ऐ अहले मक्का तुम इन को देख कर क्यूं इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **86 :** ''हिज्र'' एक वादी है मदीने और शाम के दरमियान जिस में क़ौमे समूद रहते थे, उन्हों ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और एक नबी की तक्ज़ीब तमाम अम्बिया की तक्ज़ीब है क्यूं कि हर रसूल तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देता है। **87 :** कि पथ्थर से नाक़ा (ऊंटनी को) पैदा किया जो बहुत से अ़जाइब पर मुश्तमिल था, मसलन उस का अ़ज़ीमुल जुस्सा (क़दो क़ामत का बड़ा) होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि तमाम क़ौमे समूद को काफ़ी हो वग़ैरा, येह सब ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात और क़ौमे समूद के लिये हमारी निशानियां थीं **88 :** और ईमान न लाए। **89 :** कि उन्हें उस के गिरने और उस में नक़्ब लगाए जाने का अन्देशा न था और वोह समझते थे कि येह घर तबाह नहीं हो सकते इन पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। **90 :** और वोह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। **91 :** और उन के मालो मताअ़ और उन के मज़बूत़ मकान उन्हें अ़ज़ाब से न बचा सके। **92 :** और हर एक को उस के अ़मल की जज़ा मिलेगी। **93 :** ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم और अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर तह़म्मुल करो। येह हुक्म आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गया।

www.dawateislami.net

هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَ الْقُرْاٰنَ

ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है[94] और बेशक हम ने तुम को सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं[95] और अ़ज़मत

الْعَظِيْمَ ﴿۸۷﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَ لَا

वाला क़ुरआन अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने उन के कुछ जोड़ों को बरत्ने को दी[96] और

تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾ وَ قُلْ اِنِّيْۤ اَنَا

उन का कुछ ग़म न खाओ[97] और मुसल्मानों को अपने रह़मत के परों में ले लो[98] और फ़रमाओ कि मैं ही हूं

النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۹﴾ كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿۹۰﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا

साफ़ डर सुनाने वाला (उस अ़ज़ाब से) जैसा हम ने बांटने वालों पर उतारा जिन्हों ने कलामे इलाही को

الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿۹۱﴾ فَوَ رَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۲﴾ عَمَّا كَانُوْا

तिक्के बोटी कर लिया[99] तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे[100] जो कुछ वोह

يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۹۴﴾ اِنَّا

करते थे[101] तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है[102] और मुश्रिकों से मुंह फेर लो[103] बेशक

94 : उसी ने सब को पैदा किया और वोह अपनी मख़्लूक़ के तमाम ह़ाल जानता है। **95 :** नमाज़ की रक्अ़तों में या'नी हर रक्अ़त में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरते फ़ातिह़ा मुराद है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में वारिद हुवा। **96 :** मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हम ने आप को ऐसी ने'मतें अ़ता फ़रमाईं जिन के सामने दुन्यवी ने'मतें ह़क़ीर हैं तो आप मताए़ दुन्या से मुस्तग़्नी रहें जो यहूदो नसारा वग़ैरा मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को दी गईं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो क़ुरआन की बदौलत हर चीज़ से मुस्तग़्नी न हो गया या'नी क़ुरआन ऐसी ने'मत है जिस के सामने दुन्यवी ने'मतें हेच हैं। **97 :** कि वोह ईमान न लाए **98 :** और उन्हें अपने करम से नवाज़ो **99 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूदो नसारा मुराद हैं, चूंकि वोह क़ुरआने करीम के कुछ हिस्से पर ईमान लाए जो उन के ख़याल में उन की किताबों के मुवाफ़िक़ था और कुछ के मुन्किर हो गए। क़तादा व इब्ने साइब का क़ौल है कि बांटने वालों से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं जिन में बा'ज़ क़ुरआन को सेह़्र बा'ज़ कहानत बा'ज़ अफ़्साना कहते थे। इस त़रह उन्हों ने क़ुरआने करीम के ह़क़ में अपने अक़्वाल तक़्सीम कर रखे थे और एक क़ौल येह है कि बांटने वालों से वोह बारह अश्ख़ास मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर मुक़र्रर किया था, ह़ज के ज़माने में हर हर रास्ते पर उन में का एक एक शख़्स बैठ जाता था और वोह आने वालों को बहकाने और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये एक एक बात मुक़र्रर कर लेता था कि कोई आने वालों से येह कहता था कि उन की बातों में न आना कि वोह जादूगर हैं, कोई कहता वोह कज़्ज़ाब हैं, कोई कहता वोह मजनून हैं, कोई कहता वोह काहिन हैं, कोई कहता वोह शाइ़र हैं, येह सुन कर लोग जब ख़ानए का'बा के दरवाज़े पर आते वहां वलीद बिन मुग़ीरा बैठा रहता, उस से नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते और कहते कि हम ने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शहर के कनारे उन की निस्बत ऐसा सुना वोह कह देता कि ठीक सुना, इस त़रह ख़ल्क़ को बहकाते और गुमराह करते, उन लोगों को **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया। **100 :** रोज़े क़ियामत **101 :** और जो कुछ वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआन की निस्बत कहते थे। **102 :** इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दा'वत के इज़्हार का हुक्म दिया गया, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदा का क़ौल है कि इस आयत के नुज़ूल के वक़्त तक दा'वते इस्लाम ए'लान के साथ नहीं की जाती थी। **103 :** या'नी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्रिकों की मलामत करने की परवाह न करो और उन की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न हो और उन के तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा का ग़म न करो।

كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ

उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं[104] जो अल्लाह के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब

يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जान जाएंगे[105] और बेशक हमें मा'लूम है कि उन की बातों से तुम दिलतंग होते हो[106]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى

तो अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो[107] और मरते दम तक अपने रब की

ع ٦

يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾ ع

इबादत में रहो

اٰيَاتُهَا ١٢٨ | ١٦ سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ ٧٠ | رُكُوْعَاتُهَا ١٦

सूरए नह्ल मक्किय्या है इस में एक सो अठ्ठाईस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़म वाला[1]

104 : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार [1]आ़स बिन वाइल सहमी और [2]अस्वद बिन मुत्तलिब और [3]अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस और [4]ह़ारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़्सर [5]वलीद इब्ने मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, येह लोग नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ईज़ा देते और आप के साथ तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा करते थे। अस्वद बिन मुत्तलिब के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ की थी कि या रब ! इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ फ़रमा थे येह पांचों आए और इन्हों ने ह़स्बे दस्तूर ता'नो तमस्ख़ुर के कलिमात कहे और त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो गए। इसी ह़ाल में ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ह़ज़रत की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की त़रफ़ और आ़स के कफ़े पा (पाउं के तल्वों) की त़रफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की त़रफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के पेट की त़रफ़ और ह़ारिस बिन क़ैस के सर की त़रफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़्अ़ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अ़र्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उस के तहबन्द में एक पैकान चुभा (या'नी नेज़े की नोक चुभी) मगर उस ने तकब्बुर से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, उस से उस की पिंडली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया, आ़स इब्ने वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया, अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था, इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुझ को मुह़म्मद ने क़त्ल किया (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस को इस्तिस्क़ा हुवा (या'नी प्यास लगने की बीमारी हो गई) और कल्बी की रिवायत में है कि इस को लू लगी और इस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया, इसी ह़ाल में येह कहता मर गया कि मुझ को मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के रब ने क़त्ल किया और ह़ारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुवा इसी में हलाक हो गया, इन्हीं के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **105 :** अपना अन्जामे कार **106 :** और उन के त़ा'न और इस्तिह्ज़ा और शिर्को कुफ़्र की बातों से आप को मलाल होता है **107 :** कि ख़ुदा परस्तों के लिये तस्बीह़ व इ़बादत में मश्ग़ूल होना ग़म का बेहतरीन इ़लाज है। ह़दीस शरीफ़ में है कि जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कोई अहम वाक़िआ़ पेश आता तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते। **1 :** सूरए नह्ल मक्किय्या है मगर आयत ''فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ'' से आख़िर सूरत तक जो आयात हैं वोह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुईं और इस में और अक़्वाल भी हैं, इस सूरत में सोलह रुकूअ़ और एक सो अठ्ठाईस आयतें और दो हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सो सात ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ①

अब आता है अल्लाह का हुक्म तो उस की जल्दी न करो[2] पाकी और बरतरी है उसे उन के शरीकों से[3]

یُنَزِّلُ الْمَلٰٓىٕكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ

मलाएका को ईमान की जान या'नी वह्य ले कर अपने जिन बन्दों पर चाहे उतारता है[4] कि

اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ② خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

डर सुनाओ कि मेरे सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो मुझ से डरो[5] उस ने आस्मान और ज़मीन

بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ③ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ

बजा बनाए[6] वोह उन के शिर्क से बरतर है (उस ने) आदमी को एक निथरी बूंद से बनाया[7] तो जभी

خَصِیْمٌ مُّبِیْنٌ ④ وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِیْهَا دِفْءٌ وَّ مَنَافِعُ وَ مِنْهَا

खुला झगड़ालू है और चौपाए पैदा किये उन में तुम्हारे लिये गर्म लिबास और मन्फ़अ़तें हैं[8] और उन में से

تَاْكُلُوْنَ ⑤ وَ لَكُمْ فِیْهَا جَمَالٌ حِیْنَ تُرِیْحُوْنَ وَ حِیْنَ تَسْرَحُوْنَ ۪ ⑥

खाते हो और तुम्हारा उन में तजम्मुल है जब उन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो

وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِیْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ

और वोह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर की त़रफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अधमरे हो कर बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ۙ ⑦ وَّ الْخَیْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِیْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ

तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रह़म वाला है[9] और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि इन पर सुवार हो और

2 शाने नुज़ूल : जब कुफ़्फ़ार ने अ़ज़ाबे मौऊ़द (मुक़र्ररा अ़ज़ाब) के नुज़ूल और क़ियामत के क़ाइम होने की ब त़रीक़े तक्ज़ीब व इस्तिह्ज़ा जल्दी की इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बता दिया गया कि जिस की तुम जल्दी करते हो वोह कुछ दूर नहीं बहुत ही क़रीब है और अपने वक़्त पर बिल यक़ीन वाक़ेअ़ होगा और जब वाक़ेअ़ होगा तो तुम्हें उस से ख़लास की कोई राह न मिलेगी और वोह बुत जिन्हें तुम पूजते हो तुम्हारे कुछ काम न आएंगे। **3 :** वोह वाहिद ''لَاشَرِیْکَ لَهٗ'' है उस का कोई शरीक नहीं **4 :** और उन्हें नुबुव्वत व रिसालत के साथ बरगुज़ीदा करता है **5 :** और मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को न पूजो क्यूं कि मैं वोह हूं कि **6 :** जिन में उस की तौह़ीद के बे शुमार दलाइल हैं। **7 :** या'नी मनी से, जिस में न हिस है न ह़रकत, फिर उस को अपनी क़ुदरते कामिला से इन्सान बनाया, क़ुव्वतो त़ाक़त अ़त़ा की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उबय बिन ख़लफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करता था। एक मरतबा वोह किसी मुर्दे की गली हुई हड्डी उठा लाया और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से कहने लगा कि आप का येह ख़याल है कि अल्लाह तआ़ला इस हड्डी को ज़िन्दगी देगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और निहायत नफ़ीस जवाब दिया गया कि हड्डी तो कुछ न कुछ उ़ज़्वी शक्ल रखती भी है अल्लाह तआ़ला तो मनी के एक छोटे से बे हिसो ह़रकत क़त़रे से तुझ जैसा झगड़ालू इन्सान पैदा कर देता है, येह देख कर भी तू उस की क़ुदरत पर ईमान नहीं लाता। **8 :** कि उन की नस्ल से दौलत बढ़ाते हो, उन के दूध पीते हो और उन पर सुवारी करते हो **9 :** कि उस ने तुम्हारे नफ़्अ़ और आराम के लिये येह चीज़ें पैदा कीं।

www.dawateislami.net

زِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا

ज़ीनत के लिये और वोह पैदा करेगा[10] जिस की तुम्हें ख़बर नहीं[11] और बीच की राह[12] ठीक **अल्लाह** तक है और कोई राह

جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۹﴾ ع هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ ع ۹ ۷

टेढ़ी है[13] और चाहता तो तुम सब को राह पर लाता[14] वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿۱۰﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ

पानी उतारा इस से तुम्हारा पीना है और इस से दरख़्त हैं जिन से चराते हो[15] इस पानी से तुम्हारे लिये

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ

खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल[16] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ

इस में निशानी है[17] ध्यान करने वालों को और उस ने तुम्हारे लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये रात और दिन

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

और सूरज और चांद और सितारे उस के हुक्म के बांधे हैं बेशक इस में निशानियां हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ

अ़क़्ल मन्दों को[18] और वोह जो तुम्हारे लिये ज़मीन में पैदा किया रंग बरंग[19] बेशक

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا

इस में निशानी है याद करने वालों को और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये दरिया मुसख़्ख़र किया[20] कि उस में से

10 : ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें **11 :** इस में वोह तमाम चीज़ें आ गईं जो आदमी के नफ़्अ़ व राहत व आरामो आसाइश के काम आती हैं और उस वक़्त तक मौजूद नहीं हुई थीं। **अल्लाह** तआ़ला को उन का आयिन्दा पैदा करना मन्ज़ूर था जैसे की दुख़ानी (भाप से चलने वाले) जहाज़, रेलें, मोटर, हवाई जहाज़, बर्क़ी (बिजली की) क़ुव्वतों से काम करने वाले आलात, दुख़ानी (धूएं वाली) और बर्क़ी (बिजली वाली) मशीनें, ख़बर रसानी व नश्रे सौत (आवाज़ फैलाने) के सामान और ख़ुदा जाने इस के इलावा उस को क्या क्या पैदा करना मन्ज़ूर है। **12 :** या'नी सिराते़ मुस्तक़ीम और दीने इस्लाम क्यूं कि दो मक़ामों के दरमियान जितनी राहें निकाली जाएं उन में से जो बीच की राह होगी वोही सीधी होगी। **13 :** जिस पर चलने वाला मन्ज़िले मक़्सूद को नहीं पहुंच सकता, कुफ़्र की तमाम राहें ऐसी ही हैं। **14 :** राहे रास्त पर **15 :** अपने जानवरों को और **अल्लाह** तआ़ला **16 :** मुख़्तलिफ़ सूरत व रंग, मज़े, बू, ख़ासिय्यत वाले कि सब एक ही पानी से पैदा होते हैं और हर एक के औसाफ़ दूसरे से जुदा हैं, येह सब **अल्लाह** की ने'मतें हैं। **17 :** उस की क़ुदरतो हिक्मत और वह्दानिय्यत की **18 :** जो इन चीज़ों में ग़ौर कर के समझें कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ाइले मुख़्तार है और उ़ल्विय्यात (बुलन्दियां) व सिफ़्लिय्यात (पस्तियां) सब उस के तह़ते क़ुदरतो इख़्तियार **19 :** ख़्वाह हैवानों की क़िस्म से हो या दरख़्तों की या फलों की। **20 :** कि उस में कश्तियों पर सुवार हो कर सफ़र करो या ग़ोते़ लगा कर उस की तह तक पहुंचो या उस से शिकार करो।

مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ

ताज़ा गोश्त खाते हो[21] और उस में से गहना (ज़ेवर) निकालते हो जिसे पहनते हो[22] और तू उस में कश्तियां देखे

مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاَلْقٰى فِي

कि पानी चीर कर चलती हैं और इस लिये कि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो और कहीं एह़सान मानो और उस ने

الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ ۙ

ज़मीन में लंगर डाले[23] कि कहीं तुम्हें ले कर न कांपे और नदियां और रस्ते कि तुम राह पाओ[24]

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ

और अ़लामतें[25] और सितारे से वोह राह पाते हैं[26] तो क्या जो बनाए[27] वोह ऐसा हो जाएगा जो न बनाए[28]

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

तो क्या तुम नसीह़त नहीं मानते और अगर अल्लाह की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे[29] बेशक अल्लाह

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ

बख़्शने वाला मेहरबान है[30] और अल्लाह जानता है[31] जो छुपाते और ज़ाहिर करते हो और

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ ؕ اَمْوَاتٌ

अल्लाह के सिवा जिन को पूजते हैं[32] वोह कुछ भी नहीं बनाते और[33] वोह ख़ुद बनाए हुए हैं[34] मुर्दे हैं[35]

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ ع ٢ ١١ ٨

ज़िन्दा नहीं और उन्हें ख़बर नहीं लोग कब उठाए जाएंगे[36] तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[37]

فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

तो वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन के दिल मुन्किर हैं[38] और वोह मग़रूर[39]

21 : या'नी मछली। 22 : या'नी गौहर व मरजान। 23 : भारी पहाड़ों के 24 : अपने मक़ासिद की त़रफ़ 25 : बनाईं जिन से तुम्हें रस्ते का पता चले। 26 : ख़ुश्की और तरी में और इस से उन्हें रस्ते और क़िब्ले की पहचान होती है। 27 : इन तमाम चीज़ों को अपनी क़ुदरतो ह़िक्मत से या'नी अल्लाह तआ़ला। 28 : किसी चीज़ को और आ़जिज़ व बे क़ुदरत हो जैसे कि बुत तो आ़क़िल को कब सज़ावार (लाइक़) है कि ऐसे ख़ालिक़ो मालिक की इबादत छोड़ कर आ़जिज़ व बे इख़्तियार बुतों की परस्तिश करे या उन्हें इबादत में उस का शरीक ठहराए। 29 : चे जाए कि उन के शुक्र से ओ़हदा बरआ हो सको। 30 : कि तुम्हारे अदाए शुक्र से क़ासिर होने के बा वुजूद अपनी ने'मतों से तुम्हें मह़रूम नहीं फ़रमाता। 31 : तुम्हारे तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल 32 : या'नी बुतों को 33 : बनाएं क्या कि 34 : और अपने वुजूद में बनाने वाले के मोह़ताज और वोह 35 : बे जान 36 : तो ऐसे मजबूर और बे जान बे इल्म मा'बूद कैसे हो सकते हैं इन दलाइले क़ातेआ़ से साबित हो गया कि 37 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो अपनी ज़ात व सिफ़ात में नज़ीर व शरीक से पाक है। 38 : वह़दानिय्यत के 39 : कि ह़क़ ज़ाहिर हो जाने के बा वुजूद उस का इत्तिबाअ़ नहीं करते।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

फ़िल हक़ीक़त **अल्लाह** जानता है जो छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं बेशक वोह मग़रूरों

الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿۲۳﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَاۤ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ

को पसन्द नहीं फ़रमाता और जब उन से कहा जाए[40] तुम्हारे रब ने क्या उतारा[41] कहें अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۴﴾ ۙ لِيَحْمِلُوْۤا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَ مِنْ اَوْزَارِ

कहानियां हैं[42] कि क़ियामत के दिन अपने[43] बोझ पूरे उठाएं और कुछ बोझ

الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۲۵﴾ ع قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ

उन के जिन्हें अपनी जहालत से गुमराह करते हैं सुन लो क्या ही बुरा बोझ उठाते हैं बेशक उन से अगलों ने[44]

مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ

फ़रेब किया था तो **अल्लाह** ने उन की चुनाई को नीव (बुन्याद) से लिया तो ऊपर से उन पर छत गिर

فَوْقِهِمْ وَ اَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

पड़ी और अ़ज़ाब उन पर वहां से आया जहां की उन्हें ख़बर न थी[45] फिर क़ियामत के दिन

يُخْزِيْهِمْ وَ يَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ

उन्हें रुस्वा करेगा और फ़रमाएगा कहां हैं मेरे वोह शरीक[46] जिन में तुम झगड़ते थे[47]

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَ السُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۷﴾ ۙ

इ़ल्म वाले[48] कहेंगे आज सारी रुस्वाई और बुराई[49] काफ़िरों पर है

40 : या'नी लोग उन से दरयाफ़्त करें कि **41 :** मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर तो **42 :** या'नी झूटे अफ़्साने, कोई मानने की बात नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस की शान में नाज़िल हुई, उस ने बहुत सी कहानियां याद कर ली थीं, उस से जब कोई क़ुरआने करीम की निस्बत दरयाफ़्त करता तो वोह येह जानने के बा वुजूद कि क़ुरआन शरीफ़ किताबे मो'जिज़ (आ़जिज़ करने वाली) और ह़क़ व हिदायत से मम्लू (भरी हुई) है। लोगों को गुमराह करने के लिये येह कह देता कि येह पहले लोगों की कहानियां हैं ऐसी कहानियां मुझे भी बहुत याद हैं। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि लोगों को इस त़रह़ गुमराह करने का अन्जाम येह है **43 :** गुनाहों और गुमराही व गुमराह गरी के **44 :** या'नी पहली उम्मतों ने अपने अम्बिया के साथ **45 :** येह एक तम्सील (मिसाल) है कि पिछली उम्मतों ने अपने रसूलों के साथ मक्र करने के लिये कुछ मन्सूबे बनाए थे **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ख़ुद उन्हीं के मन्सूबों में हलाक किया और उन का ह़ाल ऐसा हुवा जैसे किसी क़ौम ने कोई बुलन्द इ़मारत बनाई, फिर वोह इ़मारत उन पर गिर पड़ी और वोह हलाक हो गए, इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार अपनी मक्कारियों से ख़ुद बरबाद हुए। मुफ़स्सिरीन ने येह भी ज़िक्र किया है कि इस आयत में अगले मक्र करने वालों से नमरूद बिन कन्आ़न मुराद है जो ज़मानए इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام में रूए ज़मीन का सब से बड़ा बादशाह था। उस ने बाबिल में बहुत ऊंची एक इ़मारत बनाई थी जिस की बुलन्दी पांच हज़ार गज़ थी और उस का मक्र येह था कि उस ने येह बुलन्द इ़मारत अपने ख़याल में आस्मान पर पहुंचने और आस्मानों वालों से लड़ने के लिये बनाई थी **अल्लाह** तआ़ला ने हवा चलाई और वोह इ़मारत उन पर गिर पड़ी और वोह लोग हलाक हो गए। **46 :** जो तुम ने घड़ लिये थे और **47 :** मुसल्मानों से **48 :** या'नी उन उम्मतों के अम्बिया व उ़लमा जो उन्हें दुन्या में ईमान की दा'वत देते और नसीह़त करते थे और येह लोग उन की बात न मानते थे **49 :** या'नी अ़ज़ाब।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ

वोह कि फ़िरिश्ते उन की जान निकालते हैं इस ह़ाल पर कि वोह अपना बुरा कर रहे थे[50] अब सुल्ह़ डालेंगे[51] कि हम तो कुछ

مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ

बुराई न करते थे[52] हां क्यूं नहीं बेशक अल्लाह ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) थे[53] अब जहन्नम के दरवाज़ों

جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ

में जाओ कि हमेशा उस में रहो तो क्या ही बुरा ठिकाना मग़रूरों का और डर वालों[54] से

اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ

कहा गया तुम्हारे रब ने क्या उतारा बोले ख़ूबी[55] जिन्हों ने इस दुन्या में भलाई की[56] उन के

الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ

लिये भलाई है[57] और बेशक पिछला घर सब से बेहतर और ज़रूर[58] क्या ही अच्छा घर परहेज़ गारों का बसने के

عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ

बाग़ जिन में जाएंगे उन के नीचे नहरें रवां उन्हें वहां मिलेगा जो चाहें[59]

كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ

अल्लाह ऐसा ही सिला देता है परहेज़ गारों को वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में[60]

50 : या'नी कुफ़्र में मुब्तला थे। **51 :** और वक़्ते मौत अपने कुफ़्र से मुकर जाएंगे और कहेंगे **52 :** इस पर फ़िरिश्ते कहेंगे **53 :** लिहाज़ा येह इन्कार तुम्हें मुफ़ीद नहीं। **54 :** या'नी ईमानदारों **55 :** या'नी "क़ुरआन शरीफ़" जो तमाम ख़ूबियों का जामेअ़ और ह़सनातो बरकात का मम्बअ़ और दीनी व दुन्यवी और ज़ाहिरी व बातिनी कमालात का सरचश्मा है। **शाने नुज़ूल :** क़बाइले अ़रब अय्यामे ह़ज में ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये मक्कए मुकर्रमा को क़ासिद भेजते थे, येह क़ासिद जब मक्कए मुकर्रमा पहुंचते और शहर के कनारे रास्तों पर उन्हें कुफ़्फ़ार के कारन्दे मिलते (जैसा कि साबिक़ में ज़िक्र हो चुका है) उन से येह क़ासिद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते तो वोह बहकाने पर मामूर ही होते थे। उन में से कोई ह़ज़रत को साहिर कहता, कोई काहिन, कोई शाइर, कोई कज़्ज़ाब, कोई मजनून और इस के साथ येह भी कह देते कि तुम उन से न मिलना येही तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है, इस पर क़ासिद कहते कि अगर हम मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर बिग़ैर उन से मिले अपनी क़ौम की त़रफ़ वापस हों तो हम बुरे क़ासिद होंगे और ऐसा करना क़ासिद के मन्सबी फ़राइज़ का तर्क और क़ौम की ख़ियानत होगी, हमें तह़क़ीक़ के लिये भेजा गया है हमारा फ़र्ज़ है कि हम उन के अपने और बेगानों सब से उन के ह़ाल की तह़क़ीक़ करें और जो कुछ मा'लूम हो उस से बे कमो कास्त (बिग़ैर कमी बेशी के) क़ौम को मुत्तलअ़ करें, इस ख़याल से वोह लोग मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हो कर अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से भी मिलते थे और उन से आप के ह़ाल की तह़क़ीक़ करते थे, अस्ह़ाबे किराम उन्हें तमाम ह़ाल बताते थे और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ालातो कमालात और क़ुरआने करीम के मज़ामीन से मुत्तलअ़ करते थे। उन का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया गया। **56 :** या'नी ईमान लाए और नेक अ़मल किये **57 :** या'नी ह़याते त़य्यिबा है और फ़त्ह़ो ज़फ़र व रिज़्क़े वसीअ़ वग़ैरा ने'मतें। **58 :** दारे आख़िरत **59 :** और येह बात जन्नत के सिवा किसी को कहीं भी ह़ासिल नहीं। **60 :** कि वोह शिर्क व कुफ़्र से पाक होते हैं और उन के अक़्वालो अफ़्आ़ल और अख़्लाक़ व ख़िसाल पाकीज़ा होते हैं, त़ाअ़तें साथ होती हैं, मुह़र्रमात व मम्नूआ़त के दाग़ों से उन का दामने अ़मल मैला नहीं होता, क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त उन को जन्नत व रिज़्वान व रह़मतो करामत की बिशारतें दी जाती हैं, इस ह़ालत में मौत उन्हें ख़ुश गवार मा'लूम होती है और जान फ़रह़तो सुरूर के साथ जिस्म से निकलती है और मलाएका इ़ज़्ज़त के साथ उस को क़ब्ज़

يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ

येह कहते हुए कि सलामती हो तुम पर[61] जन्नत में जाओ बदला अपने किये का काहे के

يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

इन्तिज़ार में हैं[62] मगर इस के कि फ़िरिश्ते इन पर आएं[63] या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए[64] इन से अगलों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾

ने भी ऐसा ही किया[65] और अल्लाह ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद ही[66] अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे

ع ٩ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾ ع

तो उन की बुरी कमाइयां उन पर पड़ीं[67] और उन्हें घेर लिया उस[68] ने जिस पर हंसते थे

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ

और मुश्रिक बोले अल्लाह चाहता तो उस के सिवा कुछ न पूजते

نَّحْنُ وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ

न हम और न हमारे बाप दादा और न उस से जुदा हो कर हम कोई चीज़ ह़राम ठहराते[69] ऐसा ही

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ

इन से अगलों ने किया[70] तो रसूलों पर क्या है मगर साफ़ पहुंचा देना[71] और बेशक

بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ

हर उम्मत में से हम ने एक रसूल भेजा[72] कि अल्लाह को पूजो और शैतान से बचो

فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي

तो उन[73] में किसी को अल्लाह ने राह दिखाई[74] और किसी पर गुमराही ठीक उतरी[75] तो ज़मीन में चल

करते हैं। (خازن) 61 : मरवी है कि क़रीबे मौत बन्दए मोमिन के पास फ़िरिश्ता आ कर कहता है : ऐ अल्लाह के दोस्त ! तुझ पर सलाम और अल्लाह तआ़ला तुझे सलाम फ़रमाता है और आख़िरत में उन से कहा जाएगा : 62 : कुफ़्फ़ार क्यूं ईमान नहीं लाते ? किस चीज़ के इन्तिज़ार में हैं 63 : इन की अरवाह़ क़ब्ज़ करने 64 : दुन्या में या रोज़े क़ियामत। 65 : या'नी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार ने भी, कि कुफ़्र व तक्ज़ीब पर क़ाइम रहे। 66 : कुफ़्र इख़्तियार कर के 67 : और उन्हों ने अपने आ'माले ख़बीसा की सज़ा पाई 68 : अ़ज़ाब 69 : मिस्ल बह़ीरा व साइबा वग़ैरा के, इस से उन की मुराद येह थी कि इन का शिर्क करना और इन चीज़ों को ह़राम क़रार दे लेना अल्लाह की मशिय्यत व मरज़ी से है, इस पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : 70 : कि रसूलों की तक्ज़ीब की और ह़लाल को ह़राम किया और ऐसे ही तमस्ख़ुर की बातें कहीं। 71 : ह़क़ का ज़ाहिर कर देना और शिर्क के बात़िल व क़बीह़ होने पर मुत़्तलअ़ कर देना। 72 : और हर रसूल को हुक्म दिया कि वोह अपनी क़ौम से फ़रमाएं 73 : उम्मतों 74 : वोह ईमान से मुशर्रफ़ हुए 75 : वोह अपनी अज़ली शक़ावत से कुफ़्र पर मरे और ईमान से मह़रूम रहे।

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى

फिर कर देखो कैसा अन्जाम हुवा झुटलाने वालों का[76] अगर तुम उन की

هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

हिदायत की ह़िर्स करो[77] तो बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं देता जिसे गुमराह करे और उन का कोई मददगार नहीं

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا

और उन्हों ने **अल्लाह** की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में ह़द की कोशिश से कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा[78] हां क्यूं नहीं[79]

عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ ۙ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ

सच्चा वा'दा उस के ज़िम्मे पर लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[80] इस लिये कि उन्हें साफ़ बता दे जिस

يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا

बात में झगड़ते थे[81] और इस लिये कि काफ़िर जान लें कि वोह झूटे थे[82] जो चीज़

قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾ ع وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا ع ٥

हम चाहें उस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[83] और जिन्हों ने **अल्लाह** की

فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ

राह में[84] अपने घरबार छोड़े मज़्लूम हो कर ज़रूर हम उन्हें दुन्या में अच्छी जगह देंगे[85] और बेशक

الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ وقف لازم

आख़िरत का सवाब बहुत बड़ा है किसी त़रह़ लोग जानते[86] वोह जिन्हों ने सब्र किया[87] और अपने रब ही पर

---

76 : जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया और उन के शह्‌र वीरान किये, उजड़ी हुई बस्तियां उन के हलाक की ख़बर देती हैं, इस को देख कर समझो कि अगर तुम भी उन की त़रह़ कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे तो तुम्हारा भी ऐसा ही अन्जाम होना है। **77 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ब ह़ाले कि येह लोग उन में से हैं जिन की गुमराही साबित हो चुकी और उन की शक़ावत अज़ली है। **78 शाने नुज़ूल :** एक मुश्रिक एक मुसल्मान का मक़्रूज़ था मुसल्मान ने मुश्रिक पर तक़ाज़ा किया, दौराने गुफ़्त्गू में उस ने इस त़रह़ **अल्लाह** की क़सम खाई कि "उस की क़सम जिस से मैं मरने के बा'द मिलने की तमन्ना रखता हूं" इस पर मुश्रिक ने कहा कि तेरा येह ख़याल है कि तू मरने के बा'द उठेगा और मुश्रिक ने क़सम खा कर कहा कि **अल्लाह** मुर्दे न उठाएगा। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया **79 :** या'नी ज़रूर उठाएगा। **80 :** इस उठाने की ह़िक्मत और उस की क़ुदरत बेशक वोह मुर्दों को उठाएगा। **81 :** या'नी मुर्दों को उठाने में कि वोह ह़क़ है **82 :** और मुर्दों के ज़िन्दा किये जाने का इन्कार ग़लत़। **83 :** तो हमें मुर्दों को ज़िन्दा कर देना क्या दुश्वार। **84 :** उस के दीन की ख़ात़िर हिजरत की। **शाने नुज़ूल :** क़तादा ने कहा कि येह आयत अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन पर अहले मक्का ने बहुत ज़ुल्म किये और उन्हें दीन की ख़ात़िर वत़न छोड़ना ही पड़ा, बा'ज़ उन में से ह़बशा चले गए फिर वहां से मदीनए त़य्यिबा आए और बा'ज़ मदीना शरीफ़ ही को हिजरत कर गए उन्हों ने **85 :** वोह मदीनए त़य्यिबा है जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये दारुल हिजरत (हिजरत गाह) बनाया। **86 :** या'नी कुफ़्फ़ार या वोह लोग जो हिजरत करने से रह गए कि इस का अज्र कितना अ़ज़ीम है। **87 :** वत़न की मुफ़ारक़त और कुफ़्फ़ार की ईज़ा और जान व माल के ख़र्च करने पर।

یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْۤ اِلَیْهِمْ

भरोसा करते हैं[88] और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द[89] जिन की त़रफ़ हम वह्य करते

فَسْــٴَـلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَیِّنٰتِ وَ الزُّبُرِ ؕ

तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं[90] रोशन दलीलें और किताबें ले कर[91]

وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الذِّكْرَ لِتُبَیِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیْهِمْ وَ لَعَلَّهُمْ

और ऐ मह़बूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ येह यादगार उतारी[92] कि तुम लोगों से बयान कर दो जो[93] उन की त़रफ़ उतरा और कहीं वोह

النصف

یَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾ اَفَاَمِنَ الَّذِیْنَ مَكَرُوا السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ

ध्यान करें तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं[94] इस से नहीं डरते कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में

الْاَرْضَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَیْثُ لَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ یَاْخُذَهُمْ

धंसा दे[95] या उन्हें वहां से अ़ज़ाब आए जहां से उन्हें ख़बर न हो[96] या उन्हें चलते फिरते[97]

فِیْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ یَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ

पकड़ ले कि वोह थका नहीं सकते[98] या उन्हें नुक़्सान देते देते गिरिफ़्तार कर ले कि बेशक

رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ

तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रह़्म वाला है[99] और क्या उन्हों ने न देखा कि जो[100] चीज़ अल्लाह ने बनाई है

یَّتَفَیَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْیَمِیْنِ وَ الشَّمَآىِٕلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَ هُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

उस की परछाइयां दाहने और बाएं झुकती हैं[101] अल्लाह को सज्दा करती और वोह उस के हुज़ूर ज़लील हैं[102]

88 : और उस के दीन की वज्ह से जो पेश आए उस पर राज़ी हैं और ख़ल्क़ से इन्क़िताअ़ (अ़लाहदगी इख़्तियार) कर के बिल्कुल ह़क़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हैं और सालिक के लिये येह इन्तिहाए सुलूक का मक़ाम है। **89 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीने मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत का इस त़रह़ इन्कार किया था कि अल्लाह तआ़ला की शान इस से बरतर है कि वोह किसी बशर को रसूल बनाए। उन्हें बताया गया कि सुन्नते इलाही इसी त़रह़ जारी है, हमेशा उस ने इन्सानों में से मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा। **90 :** ह़दीस शरीफ़ में है : बीमारिये जह्ल की शिफ़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करना है, लिहाज़ा उ़लमा से दरयाफ़्त करो, वोह तुम्हें बता देंगे कि सुन्नते इलाहिय्यह यूंही जारी रही कि उस ने मर्दों को रसूल बना कर भेजा। **91 :** मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि रोशन दलीलों और किताबों के जानने वालों से पूछो अगर तुम को दलील व किताब का इ़ल्म न हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीदे अइम्मा का वुजूब साबित होता है। **92 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **93 :** हुक्म **94 :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब के साथ और इन की ईज़ा के दरपै रहते हैं और छुप छुप कर फ़साद अंगेज़ी की तदबीरें किया करते हैं जैसे कि कुफ़्फ़ारे मक्का। **95 :** जैसे क़ारून को धंसा दिया था **96 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि बद्र में हलाक किये गए बा वुजूदे कि वोह येह नहीं समझते थे। **97 :** सफ़रो ह़ज़र में हर एक ह़ाल में **98 :** ख़ुदा को अ़ज़ाब करने से। **99 :** कि ह़िल्म करता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **100 :** सायादार **101 :** सुब्ह़ और शाम **102 :** ख़्वार व आ़जिज़ व मुतीअ़ व मुसख़्ख़र।

www.dawateislami.net

وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ

और **अल्लाह** ही को सज्दा करते हैं जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में चलने वाला है[103] और फ़िरिश्ते और

هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا

वोह ग़ुरूर नहीं करते अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो

يُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴿۵۰﴾ وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْۤا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

उन्हें हुक्म हो[104] और **अल्लाह** ने फ़रमाया दो ख़ुदा न ठहराओ[105] वोह तो एक ही

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿۵۱﴾ وَ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَهُ

मा'बूद है तो मुझी से डरो[106] और उसी का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और उसी की

الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ مَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ

फ़रमां बरदारी लाज़िम है तो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी दूसरे से डरोगे[107] और तुम्हारे पास जो ने'मत है सब **अल्लाह** की त़रफ़ से है

ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ۚ ﴿۵۳﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا

फिर जब तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचती है[108] तो उसी की त़रफ़ पनाह ले जाते हो[109] फिर जब वोह तुम से बुराई टाल देता है तो

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۙ ﴿۵۴﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫

तुम में एक गुरौह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है[110] कि हमारी दी ने'मतों की नाशुक्री करें तो कुछ बरत लो[111]

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ

कि अन्क़रीब जान जाओगे[112] और अन्जानी चीज़ों के लिये[113] हमारी दी हुई रोज़ी में से[114] ह़िस्सा मुक़र्रर करते हैं

تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ

ख़ुदा की क़सम तुम से ज़रूर सुवाल होना है जो कुछ झूट बांधते थे[115] और **अल्लाह** के लिये बेटियां ठहराते हैं[116]

السجدة ٤

103 : सज्दा दो त़रह़ पर है : **एक** सज्दए त़ाअ़तो इबादत जैसा कि मुसल्मानों का सज्दा **अल्लाह** के लिये, **दूसरा** सज्दए इन्क़ियाद (फ़रमां बरदारी) व ख़ुज़ूअ़ जैसा कि साया वग़ैरा का सज्दा, हर चीज़ का सज्दा उस के ह़स्बे ह़ैसिय्यत है, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों का सज्दा, सज्दए त़ाअ़तो इबादत है और इन के मा सिवा का सज्दा सज्दए इन्क़ियाद व ख़ुज़ूअ़। **104 :** इस आयत से साबित हुवा कि फ़िरिश्ते मुकल्लफ़ हैं और जब साबित कर दिया गया कि तमाम आस्मान व ज़मीन की काएनात **अल्लाह** के ह़ुज़ूर ख़ाज़ेअ़ व मुतवाज़ेअ़ और आ़बिद व मुत़ीअ़ है और सब उस के मम्लूक और उसी के तह़्ते क़ुदरतो तसर्रुफ़ हैं तो शिर्क से मुमानअ़त फ़रमाई। **105 :** क्यूं कि दो तो ख़ुदा हो ही नहीं सकते। **106 :** मैं ही वोह मा'बूदे बरह़क़ हूं जिस का कोई शरीक नहीं है। **107 :** बा वुजूदे कि मा'बूदे बरह़क़ सिर्फ़ वोही है। **108 :** ख़्वाह फ़क़्र की या मरज़ की या और कोई **109 :** उसी से दुआ़ मांगते हो उसी से फ़रियाद करते हो। **110 :** और उन लोगों का अन्जाम येह होता है **111 :** और चन्द रोज़ इस ह़ालत में ज़िन्दगी गुज़ार लो **112 :** कि इस का क्या नतीजा हुवा। **113 :** या'नी बुतों के लिये जिन का इलाह और मुस्तह़िक़ और नाफ़ेअ़ व ज़ार (फ़ाएदा मन्द व नुक़्सान देह) होना उन्हें मा'लूम नहीं। **114 :** या'नी खेतियों और चौपायों वग़ैरा में से **115 :** बुतों को मा'बूद और अहले तक़र्रुब और बुत परस्ती को ख़ुदा का हुक्म बता कर **116 :** जैसे कि ख़ुज़ाआ़ व किनाना कहते थे कि फ़िरिश्ते **अल्लाह**

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ

पाकी है उस को[117] और अपने लिये जो अपना जी चाहता है[118] और जब उन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर

وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۵۸﴾ ج يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ

उस का मुंह[119] काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है लोगों से[120] छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या

بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا

इसे ज़िल्लत के साथ रखेगा या इसे मिट्टी में दबा देगा[121] अरे बहुत ही बुरा

يَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ

हुक्म लगाते हैं[122] जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उन्हीं का बुरा हाल है और **अल्लाह**

ع ٧ ١٠ ١٣
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۰﴾ ع وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

की शान सब से बुलन्द[123] और वोही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है और अगर **अल्लाह** लोगों को उन के ज़ुल्म पर गिरिफ़्त करता[124]

بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ

तो ज़मीन पर कोई चलने वाला नहीं छोड़ता[125] लेकिन उन्हें एक ठहराए वा'दे तक मोहलत देता है[126]

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۶۱﴾

फिर जब उन का वा'दा आएगा न एक घड़ी पीछे हटें न आगे बढ़ें

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ

और **अल्लाह** के लिये वोह ठहराते हैं जो अपने लिये ना गवार है[127] और उन की ज़बानें झूटी कहती हैं कि उन के लिये

की बेटियां हैं। (مَعَاذَ الله) **117 :** वोह बरतर है औलाद से और उस की शान में ऐसा कहना निहायत बे अदबी व कुफ़्र है। **118 :** या'नी कुफ़्र के साथ येह कमाले बद तमीज़ी भी है कि अपने लिये बेटे पसन्द करते हैं बेटियां ना पसन्द करते हैं और **अल्लाह** तआला के लिये जो मुत्लक़न औलाद से मुनज़्ज़ा और पाक है और उस के लिये औलाद ही का साबित करना ऐब लगाना है, उस के लिये औलाद में भी वोह साबित करते हैं जिस को अपने लिये हक़ीर और सबबे आ़र जानते हैं। **119 :** ग़म से **120 :** शर्म के मारे **121 :** जैसा कि कुफ़्फ़ारे मुज़र व ख़ुज़ाआ़ व तमीम (क़बीले) लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ देते थे। **122 :** कि **अल्लाह** तआला के लिये बेटियां साबित करते हैं जो अपने लिये उन्हें इस क़दर ना गवार हैं। **123 :** कि वोह वालिद व वलद (औलाद) सब से पाक और मुनज़्ज़ा कोई उस का शरीक नहीं, तमाम सिफ़ात जलाल व कमाल से मुत्तसिफ़ **124 :** या'नी मआ़सी पर पकड़ता और अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाता **125 :** सब को हलाक कर देता। ज़मीन पर चलने वाले से या काफ़िर मुराद हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद है : "اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا" या येह मा'ना हैं कि रूए ज़मीन पर किसी चलने वाले को बाक़ी नहीं छोड़ता जैसा कि नूह عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में जो कोई ज़मीन पर था उन सब को हलाक कर दिया सिर्फ़ वोही बाक़ी रहे जो ज़मीन पर न थे हज़रते नूह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ कश्ती में थे और एक क़ौल येह भी है कि मा'ना येह हैं कि ज़ालिमों को हलाक कर देता और उन की नस्लें मुन्क़तअ़ हो जातीं फिर ज़मीन में कोई बाक़ी नहीं रहता। **126 :** अपने फ़ज़्लो करम और हिल्म से, ठहराए वा'दे से या इख़्तितामे उ़म्र मुराद है या क़ियामत। **127 :** या'नी बेटियां और शरीक।

www.dawateislami.net

الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ اَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿۶۲﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ

भलाई है[128] तो आप ही हुवा कि उन के लिये आग है और वोह हद से गुज़ारे हुए हैं[129] ख़ुदा की क़सम हम ने तुम से पहले

اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ

कितनी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे तो शैतान ने उन के कौतक (बुरे आ'माल) उन की आंखों में भले कर दिखाए[130] तो आज वोही उन का रफ़ीक़ है[131]

وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۳﴾ وَ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ

और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[132] और हम ने तुम पर येह किताब न उतारी[133] मगर इस लिये कि तुम लोगों पर रोशन कर दो

الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَ اللّٰهُ

जिस बात में इख़्तिलाफ़ करें[134] और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये और **अल्लाह**

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

ने आस्मान से पानी उतारा तो उस से ज़मीन को[135] ज़िन्दा कर दिया उस के मरे पीछे[136] बेशक इस में

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۵﴾ ع وَ اِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا

निशानी है उन को जो कान रखते हैं[137] और बेशक तुम्हारे लिये चौपायों में निगाह ह़ासिल होने की जगह है[138] हम तुम्हें पिलाते हैं उस चीज़ में से

فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿۶۶﴾

जो उन के पेट में है गोबर और ख़ून के बीच में से ख़ालिस दूध गले से सहल उतरता पीने वालों के लिये[139]

128 : या'नी जन्नत। कुफ़्फ़ार बा वुजूद अपने कुफ़्र व बोहतान के और ख़ुदा के लिये बेटियां बताने के भी अपने आप को ह़क़ पर गुमान करते थे और कहते थे कि अगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हों और ख़ल्क़त मरने के बा'द फिर उठाई जाए तो जन्नत हमीं को मिलेगी क्यूं कि हम ह़क़ पर हैं उन के ह़क़ में **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **129 :** जहन्नम ही में छोड़ दिये जाएंगे। **130 :** और उन्हों ने अपनी बदियों को नेकियां समझा **131 :** दुन्या में उसी के कहे पर चलते हैं और जो शैतान को अपना रफ़ीक़ और मुख़ारे कार बनाए वोह ज़रूर ज़लीलो ख़्वार हो या येह मा'ना हैं कि रोज़े आख़िरत शैतान के सिवा उन्हें कोई रफ़ीक़ न मिलेगा और शैतान ख़ुद ही गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा उन की क्या मदद कर सकेगा। **132 :** आख़िरत में। **133 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **134 :** उमूरे दीन से **135 :** रूईदगी (नबातात) से सर सब्ज़ी व शादाबी बख़्श कर **136 :** या'नी ख़ुश्क और बे सब्ज़ा व बे गियाह होने के बा'द। **137 :** और सुन कर समझते और ग़ौर करते हैं वोह इस नतीजे पर पहुंचते हैं जो क़ादिरे बरह़क़ ज़मीन को उस की मौत या'नी क़ुव्वते नामिया (बढ़ने की क़ुव्वत) फ़ना हो जाने के बा'द फिर ज़िन्दगी देता है वोह इन्सान को उस के मरने के बा'द बेशक ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** अगर तुम इस में ग़ौर करो तो बेहतर नताइज ह़ासिल कर सकते हो और ह़िक्मते इलाहिय्यह के अ़जाइब पर तुम्हें आगाही ह़ासिल हो सकती है। **139 :** जिस में कोई शाएबा किसी चीज़ की आमेज़िश का नहीं बा वुजूदे कि हैवान के जिस्म में गिज़ा का एक ही मक़ाम है जहां चारा, घास, भूसा वग़ैरा पहुंचता है और दूध, ख़ून, गोबर सब उसी गिज़ा से पैदा होते हैं, उन में से एक दूसरे से मिलने नहीं पाता। दूध में न ख़ून की रंगत का शाएबा होता है न गोबर की बू का, निहायत साफ़ लत़ीफ़ बरआमद होता है। इस से ह़िक्मते इलाहिय्यह की अ़जीब कारी ज़ाहिर है। ऊपर मस्अला बअ़्स का बयान हो चुका है या'नी मुर्दों को ज़िन्दा किये जाने का, कुफ़्फ़ार इस के मुन्किर थे और उन्हें इस में दो शुब्हे दरपेश थे : **एक** तो येह कि जो चीज़ फ़ासिद हो गई और उस की ह़यात जाती रही उस में दोबारा फिर ज़िन्दगी किस त़रह़ लौटेगी, इस शुब्हे का इज़ाला तो इस से पहली आयत में फ़रमा दिया गया कि तुम देखते रहते हो कि हम मुर्दा ज़मीन को ख़ुश्क होने के बा'द आस्मान से पानी बरसा कर ह़यात अ़त़ा फ़रमा दिया करते हैं तो क़ुदरत का येह फ़ैज़ देखने के बा'द किसी मख़्लूक़ का मरने के बा'द ज़िन्दा होना ऐसे क़ादिरे मुत़्लक़ की क़ुदरत से बईद नहीं। **दूसरा** शुब्हा कुफ़्फ़ार का येह था कि जब आदमी मर गया और उस के जिस्म के अज्ज़ा मुन्तशिर हो गए और ख़ाक में मिल गए वोह अज्ज़ा किस त़रह़ जम्अ़ किये

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا

और खजूर और अंगूर के फलों में से[140] कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा

حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ

रिज़्क़[141] बेशक इस में निशानी है अ़क़्ल वालों को और तुम्हारे रब ने शहद की मख्खी को इल्हाम किया

اَنِ اتَّخِذِیْ مِنَ الْجِبَالِ بُیُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا یَعْرِشُوْنَ ﴿۶۸﴾ ۙ ثُمَّ

कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छतों में फिर

كُلِیْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِیْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ یَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا

हर क़िस्म के फल में से खा और[142] अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं[143] उस के पेट से एक

شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِیْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ

पीने की चीज़[144] रंग बरंग निकलती है[145] जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है[146] बेशक इस में निशानी है[147]

یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ یَتَوَفّٰىكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ

ध्यान करने वालों को[148] और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया[149] फिर तुम्हारी जान क़ब्ज़ करेगा[150] और तुम में कोई सब से नाक़िस उ़म्र की त़रफ़

जाएंगे और ख़ाक के ज़र्रों से उन को किस त़रह़ मुमताज़ किया जाएगा ? इस आयते करीमा में जो साफ़ दूध का बयान फ़रमाया उस में ग़ौर करने से वोह शुब्हा बिल्कुल नेस्तो नाबूद हो जाता है कि क़ुदरते इलाही की येह शान तो रोज़ाना देखने में आती है कि वोह ग़िज़ा के मख़्लूत़ अज्ज़ा में से ख़ालिस दूध निकालता है और इस के क़ुर्बो जवार की चीज़ों की आमेज़िश का शाएबा भी इस में नहीं आता, उस ह़कीमे बरह़क़ की क़ुदरत से क्या बई़द कि इन्सानी जिस्म के अज्ज़ा को मुन्तशिर होने के बा'द फिर मुज्तमअ़ फ़रमा दे। शक़ीक़ बल्ख़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ने'मत का इत्माम येही है कि दूध साफ़ ख़ालिस आए और उस में ख़ून और गोबर के रंग व बू का नामो निशान न हो वरना ने'मत ताम न होगी और त़ब्अ़ सलीम इस को क़बूल न करेगी, जैसी साफ़ ने'मत परवर्दगार की त़रफ़ से पहुंचती है बन्दे को लाज़िम है कि वोह भी परवर्दगार के साथ इख़्लास से मुआ़मला करे और उस के अ़मल रिया और हवाए नफ़्स की आमेज़िशों से पाको साफ़ हों ताकि शरफ़े क़बूल से मुशर्रफ़ हों। **140 :** हम तुम्हें रस पिलाते हैं **141 :** या'नी सिर्का और रुब (पका हुवा रस जो जमा लिया गया हो) और ख़ुरमा (खजूर) और मवीज़ (बड़े सूखे हुए अंगूर)। **मस्अला :** मवीज़ और अंगूर वग़ैरा का रस जब इस क़दर पका लिया जाए कि दो तिहाई जल जाए और एक तिहाई बाक़ी रहे और तेज़ हो जाए इस को नबीज़ कहते हैं, येह ह़द सुक्र तक न पहुंचे और नशा न लाए तो शैख़ैन के नज़्दीक ह़लाल है और येही आयत और बहुत सी अह़ादीस इन की दलील है। **142 :** फलों की तलाश में **143 :** फ़ज़्ले इलाही से जिन का तुझे इल्हाम किया गया है ह़त्ता कि तुझे चलना फिरना दुश्वार नहीं और तू कितनी ही दूर निकल जाए राह नहीं बहक्ती और अपने मक़ाम पर वापस आ जाती है। **144 :** या'नी शहद **145 :** सफ़ेद और ज़र्द और सुर्ख़। **146 :** और नाफ़ेअ़ तरीन दवाओं में से है और ब कसरत मआ़जीन में शामिल किया जाता है। **147 :** **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरतो ह़िक्मत पर **148 :** कि उस ने एक कमज़ोर ना तुवान मख्खी को ऐसी ज़ीरकी व दानाई (अ़क़्ल मन्दी) अ़त़ा फ़रमाई और ऐसी दक़ीक़ सन्अ़तें मर्ह़मत कीं, पाक है वोह और अपनी ज़ातो सिफ़ात में शरीक से मुनज़्ज़ा, इस से फ़िक्र करने वालों को इस पर भी तम्बीह हो जाती है कि वोह अपनी क़ुदरते कामिला से एक अदना ज़ईफ़ सी मख्खी को येह सिफ़त अ़त़ा फ़रमाता है कि वोह मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फूलों और फलों से ऐसे लत़ीफ़ अज्ज़ा ह़ासिल करे जिन से नफ़ीस शहद बने जो निहायत ख़ुश गवार हो, त़ाहिर व पाकीज़ा हो, फ़ासिद होने और सड़ने की उस में क़ाबिलिय्यत न हो, तो जो क़ादिर ह़कीम एक मख्खी को इस माद्दे के जम्अ़ करने की क़ुदरत देता है वोह अगर मरे हुए इन्सान के मुन्तशिर अज्ज़ा को जम्अ़ कर दे तो उस की क़ुदरत से क्या बई़द है कि मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को मुह़ाल (ना मुम्किन) समझने वाले किस क़दर अह़मक़ हैं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों पर अपनी क़ुदरत के वोह आसार ज़ाहिर फ़रमाता है जो ख़ुद उन में और उन के अह़वाल में नुमायां हैं। **149 :** अ़दम से और नीस्ती (जब तुम्हारा वुजूद ही न था इस) के बा'द हस्ती अ़त़ा फ़रमाई, कैसी अ़जीब क़ुदरत है। **150 :** और तुम्हें ज़िन्दगी के बा'द मौत देगा जब तुम्हारी अजल पूरी हो जो उस ने मुक़र्रर फ़रमाई है ख़्वाह बचपन में या जवानी में या बुढ़ापे में।

www.dawateislami.net

الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾ ع وَاللّٰهُ ع ۱۵ ۹

फेरा जाता है[151] कि जानने के बा'द कुछ न जाने[152] बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** ने

فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ

तुम में एक को दूसरे पर रिज़्क़ में बड़ाई दी[153] तो जिन्हें बड़ाई दी है

رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

वोह अपना रिज़्क़ अपने बांदी ग़ुलामों को न फेर देंगे कि वोह सब उस में बराबर हो जाएं[154] तो क्या **अल्लाह** की ने'मत से

يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ

मुकरते हैं[155] और **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से औ़रतें बनाईं और तुम्हारे लिये

اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ

तुम्हारी औ़रतों से बेटे और पोते नवासे पैदा किये और तुम्हें सुथरी चीज़ों से रोज़ी दी[156] तो क्या झूटी बात[157] पर

يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ۙ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

यक़ीन लाते हैं और **अल्लाह** के फ़ज़्ल[158] से मुन्किर होते हैं और **अल्लाह** के सिवा ऐसों को पूजते हैं[159] जो

لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾ ۚ

उन्हें आस्मान और ज़मीन से कुछ भी रोज़ी देने का इख़्तियार नहीं रखते न कुछ कर सकते हैं

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾ ضَرَبَ

तो **अल्लाह** के लिये मानिन्द न ठहराओ[160] बेशक **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते **अल्लाह** ने एक

151 : जिस का ज़माना उ़म्रे इन्सानी के मरातिब में साठ साल के बा'द आता है कि क़ुवा (त़ाक़तें) और ह़वास सब नाकारा हो जाते हैं और इन्सान की येह ह़ालत हो जाती है **152 :** और नादानी में बच्चों से ज़ियादा बदतर हो जाए। इन तग़य्युरात में क़ुदरते इलाही के कैसे अ़जाइब मुशाहदे में आते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मुसल्मान ब फ़ज़्ले इलाही इस से मह़फ़ूज़ हैं, तूले उ़म्र व बक़ा से इन्हें **अल्लाह** के ह़ुज़ूर में करामत और अ़क़्लो मा'रिफ़त की ज़ियादती ह़ासिल होती है और हो सकता है कि तवज्जोह इलल्लाह का ऐसा ग़लबा हो कि इस आ़लम से इन्क़ित़ाअ़ हो जाए और बन्दए मक़्बूल दुन्या की त़रफ़ इल्तिफ़ात से मुज्तनिब हो। इक्रिमा का क़ौल है कि जिस ने क़ुरआने पाक पढ़ा वोह इस अरज़ल (नाक़िस) उ़म्र की ह़ालत को न पहुंचेगा कि इल्म के बा'द मह़ज़ बे इल्म हो जाए। **153 :** तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को मालदार किसी को नादार किसी को मालिक किसी को मम्लूक। **154 :** और बांदी ग़ुलाम आक़ाओं के शरीक हो जाएं, जब तुम अपने ग़ुलामों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं करते तो **अल्लाह** के बन्दों और उस के मम्लूकों को उस का शरीक ठहराना किस त़रह़ गवारा करते हो سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह बुत परस्ती का कैसा नफ़ीस दिल नशीन और ख़ात़िर गुज़ीन रद है। **155 :** कि उस को छोड़ कर मख़्लूक़ को पूजते हैं। **156 :** क़िस्म क़िस्म के ग़ल्लों, फलों, मेवों, खाने पीने की चीज़ों से। **157 :** या'नी शिर्क व बुत परस्ती **158 :** **अल्लाह** के फ़ज़्लो ने'मत से सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ज़ाते गिरामी या इस्लाम मुराद है। (مدارک) **159 :** या'नी बुतों को **160 :** उस का किसी को शरीक न करो।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا

कहावत बयान फ़रमाई[161] एक बन्दा है दूसरे की मिल्क आप कुछ मक्दूर (ताक़त) नहीं रखता और एक वोह जिसे हम ने अपनी तरफ़ से अच्छी रोज़ी

حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ

अ़ता फ़रमाई तो वोह उस में से ख़र्च करता है छुपे और ज़ाहिर[162] क्या वोह बराबर हो जाएंगे[163] सब ख़ूबियां **अल्लाह** को हैं बल्कि

اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ

उन में अक्सर को ख़बर नहीं[164] और **अल्लाह** ने कहावत बयान फ़रमाई दो मर्द एक गूंगा

لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ

जो कुछ काम नहीं कर सकता[165] और वोह अपने आक़ा पर बोझ है जिधर भेजे कुछ भलाई न लाए[166]

ع ١٠

هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ وَ

क्या बराबर हो जाएगा येह और वोह जो इन्साफ़ का हुक्म करता है और वोह सीधी राह पर है[167] और

لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ

अल्लाह ही के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[168] और क़ियामत का मुआ़मला नहीं मगर जैसे एक पलक का मारना

اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ

बल्कि इस से भी क़रीब[169] बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** ने तुम्हें तुम्हारी

بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

माओं के पेट से पैदा किया कि कुछ न जानते थे[170] और तुम्हें कान और आंख और

161 : येह कि **162 :** जैसे चाहता है तसर्रुफ़ करता है, तो वोह आ़जिज़ मम्लूक गु़लाम और येह आज़ाद मालिक साहि़बे माल जो ब फ़ज़्ले इलाही क़ुदरतो इख़्तियार रखता है। **163 :** हरगिज़ नहीं तो जब गु़लाम व आज़ाद बराबर नहीं हो सकते बा वुजूदे कि दोनों **अल्लाह** के बन्दे हैं तो **अल्लाह** ख़ालिक़, मालिक, क़ादिर के साथ बे क़ुदरतो इख़्तियार बुत कैसे शरीक हो सकते हैं और इन को उस के मिस्ल क़रार देना कैसा बड़ा ज़ुल्म व जहल है। **164 :** कि ऐसे बराहीने बय्यिना और हुज्जते वाज़ेह़ा (रोशन और वाज़ेह़ दलाइल) के होते हुए शिर्क करना कितने बड़े वबाल व अ़ज़ाब का सबब है। **165 :** न अपनी किसी से कह सके न दूसरे की समझ सके **166 :** और किसी काम न आए येह मिसाल काफ़िर की है। **167 :** येह मिसाल मोमिन की है। मा'ना येह हैं कि काफ़िर नाकारा गूंगे गु़लाम की त़रह है वोह किसी त़रह मुसल्मान की मिस्ल नहीं हो सकता जो अ़द्ल का हुक्म करता है और सिरात़े मुस्तक़ीम पर क़ाइम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि गूंगे नाकारा गु़लाम से बुतों को तम्सील दी गई और इन्साफ़ का हुक्म देना शाने इलाही का बयान हुवा, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला के साथ बुतों को शरीक करना बाति़ल है क्यूं कि इन्साफ़ क़ाइम करने वाले बादशाह के साथ गूंगे और नाकारा गु़लाम को क्या निस्बत। **168 :** इस में **अल्लाह** तआ़ला के कमाले इल्म का बयान है कि वोह जमीअ़ गु़यूब का जानने वाला है, उस पर कोई छुपने वाली चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस से मुराद इल्मे क़ियामत है। **169 :** क्यूं कि पलक मारना भी ज़माना चाहता है जिस में पलक की ह़रकत ह़ासिल हो और **अल्लाह** तआ़ला जिस चीज़ का होना चाहे वोह "कुन" फ़रमाते ही हो जाती है। **170 :** और अपनी पैदाइश की इब्तिदा और अव्वल फ़ित़रत में इल्मो मा'रिफ़त से ख़ाली थे।

www.dawateislami.net

الْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ

दिल दिये[171] कि तुम एहसान मानो[172] क्या उन्हों ने परिन्दे न देखे हुक्म के बांधे आस्मान की

السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾

फ़ज़ा में उन्हें कोई नहीं रोकता[173] सिवा ख़ुदा के बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को[174]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ

और अल्लाह ने तुम्हें घर दिये बसने को[175] और तुम्हारे चौपायों की खालों से कुछ

بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا

घर बनाए[176] जो तुम्हें हलके पड़ते हैं तुम्हारे सफ़र के दिन और मन्ज़िलों पर ठहरने के दिन और उन की ऊन

وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿۸۰﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ

और बबरी (ऊंट के बाल) और बालों से कुछ गिरस्ती (घरेलू ज़रूरिय्यात) का सामान[177] और बरत्ने की चीज़ें एक वक़्त तक और अल्लाह ने तुम्हें अपनी बनाई हुई

مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ

चीज़ों[178] से साए दिये[179] और तुम्हारे लिये पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई[180] और तुम्हारे लिये कुछ पहनावे बनाए

تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ

कि तुम्हें गरमी से बचाएं और कुछ पहनावे[181] कि लड़ाई में तुम्हारी हिफ़ाज़त करें[182] यूंही अपनी ने'मत तुम पर पूरी करता है[183]

لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۸۲﴾

कि तुम फ़रमान मानो[184] फिर अगर वोह मुंह फेरें[185] तो ऐ महबूब तुम पर नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[186]

171 : कि इन से अपना पैदाइशी जह्ल दूर करो **172 :** और इल्मो अ़मल से फ़ैज़याब हो कर मुन्इम (ने'मत देने वाले) का शुक्र बजा लाओ और उस की इबादत में मश्ग़ूल हो और उस के हुक़ूक़े ने'मत अदा करो। **173 :** गिरने से बा वुजूदे कि जिस्मे सक़ील (भारी जिस्म) बित्तबअ़ गिरना चाहता है। **174 :** कि उस ने इन्हें ऐसा पैदा किया कि वोह हवा में परवाज़ कर सकते हैं और अपने जिस्मे सक़ील की तबीअ़त के ख़िलाफ़ हवा में ठहरे रहते हैं गिरते नहीं और हवा को ऐसा पैदा किया कि इस में उन की परवाज़ मुम्किन है, ईमानदार इस में ग़ौर कर के क़ुदरते इलाही का ए'तिराफ़ करते हैं। **175 :** जिन में तुम आराम करते हो **176 :** मिस्ल ख़ैमा वग़ैरा के **177 :** बिछाने ओढ़ने की चीज़ें। **मस्अला :** येह आयत अल्लाह की ने'मतों के बयान में है मगर इस से इशारतन ऊन और पश्मीने (ऊनी कपड़े) और बालों की तहारत और इन से नफ़्अ़ उठाने की हिल्लत साबित होती है। **178 :** मकानों, दीवारों, छतों, दरख़्तों और अब्र (बादलों) वग़ैरा **179 :** जिस में तुम आराम करते हो **180 :** ग़ार वग़ैरा, कि अमीर व ग़रीब सब आराम कर सकें **181 :** ज़िरह व जौशन वग़ैरा **182 :** कि तीर, तलवार, नेज़े वग़ैरा से बचाव का सामान हो। **183 :** दुन्या में तुम्हारे हवाइज व ज़रूरिय्यात का सामान पैदा फ़रमा कर **184 :** और उस की ने'मतों का ए'तिराफ़ कर के इस्लाम लाओ और दीने बरहक़ क़बूल करो। **185 :** और ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वोह आप पर ईमान लाने और आप की तस्दीक़ करने से ए'राज़ करें और अपने कुफ़्र पर जमे रहें **186 :** और जब आप ने पयामे इलाही पहुंचा दिया तो आप का काम पूरा हो चुका और न मानने का वबाल उन की गरदन पर रहा।

www.dawateislami.net

ع ١٧

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَيَوْمَ

अल्लाह की ने'मत पहचानते हैं[187] फिर उस से मुन्किर होते हैं[188] और उन में अक्सर काफ़िर हैं[189] और जिस दिन[190]

نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ

हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह[191] फिर काफ़िरों को न इजाज़त हो[192] न वोह

يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَ

मनाए जाएं[193] और ज़ुल्म करने वाले[194] जब अ़ज़ाब देखेंगे उसी वक़्त से न वोह उन पर से हलका हो

لَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا

न उन्हें मोहलत मिले और शिर्क करने वाले जब अपने शरीकों को देखेंगे[195] कहेंगे ऐ हमारे रब

هٰۤؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ

येह हैं हमारे शरीक कि हम तेरे सिवा पूजते थे तो वोह उन पर बात फेंकेंगे

الثلثة

الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۸۶﴾ۚ وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىٕذِ نِ السَّلَمَ وَضَلَّ

कि तुम बेशक झूटे हो[196] और उस दिन[197] अल्लाह की त़रफ़ आ़जिज़ी से गिरेंगे[198] और उन से

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۷﴾ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

गुम हो जाएंगी जो बनावटें करते थे[199] जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका

زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ

हम ने अ़ज़ाब पर अ़ज़ाब बढ़ाया[200] बदला उन के फ़साद का और जिस दिन हम

كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ ؕ

हर गुरोह में एक गवाह उन्हीं में से उठाएंगे कि उन पर गवाही दे[201] और ऐ मह़बूब तुम्हें उन सब पर[202] शाहिद बना कर लाएंगे

187 : या'नी जो ने'मतें कि ज़िक्र की गईं उन सब को पहचानते हैं और जानते हैं कि येह सब अल्लाह की त़रफ़ से हैं फिर भी उस का शुक्र बजा नहीं लाते। सुद्दी का क़ौल है कि अल्लाह की ने'मत से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि वोह हुज़ूर को पहचानते हैं और समझते हैं कि आप का वुजूद अल्लाह तआ़ला की बड़ी ने'मत है और बा वुजूद इस के 188 : और दीने इस्लाम क़बूल नहीं करते 189 : मुआ़निद (ह़ासिदीन) कि ह़सद व इनाद से कुफ़्र पर क़ाइम रहते हैं। 190 : या'नी रोज़े क़ियामत 191 : जो उन की तस्दीक़ व तक्ज़ीब और ईमान व कुफ़्र की गवाही दे और येह गवाह अम्बिया हैं عَلَيْهِمُ السَّلَام। 192 : मा'ज़िरत की या किसी कलाम की या दुन्या की त़रफ़ लौटने की 193 : या'नी न उन से इताब व मलामत दूर की जाए। 194 : या'नी कुफ़्फ़ार 195 : बुतों वग़ैरा को जिन्हें पूजते थे 196 : जो हमें मा'बूद बताते हो, हम ने तुम्हें अपनी इबादत की दा'वत नहीं दी। 197 : मुश्रिकीन 198 : और उस के फ़रमां बरदार होना चाहेंगे 199 : दुन्या में बुतों को ख़ुदा का शरीक बता कर 200 : उन के कुफ़्र का अ़ज़ाब और दूसरों को ख़ुदा की राह से रोकने और गुमराह करने का अ़ज़ाब 201 : येह गवाह अम्बिया होंगे जो अपनी अपनी उम्मतों पर गवाही देंगे। 202 : उम्मतों और उन के शाहिदों पर जो अम्बिया होंगे

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى

और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रोशन बयान है[203] और हिदायत और रहमत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى ع ١٢ ١٨

मुसल्मानों को बेशक **अल्लाह** हुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी[204] और रिश्तेदारों के देने का[205]

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

और मन्अ़ फ़रमाता है बे हयाई[206] और बुरी बात[207] और सरकशी से[208] तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا

और **अल्लाह** का अ़हद पूरा करो[209] जब क़ौल बांधो और क़समें मज़बूत कर के न तोड़ो

जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : ''فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا'' (ابوالسعود وغیرہ) 203 : जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया : ''مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ'' और तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने पेश आने वाले फ़ितनों की ख़बर दी, सह़ाबा ने उन से ख़लास (छुटकारे) का त़रीक़ा दरयाफ़्त किया। फ़रमाया : किताबुल्लाह में तुम से पहले वाक़िआ़त की भी ख़बर है तुम से बा'द के वाक़िआ़त की भी और तुम्हारे माबैन का इ़ल्म भी। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है फ़रमाया : जो इ़ल्म चाहे वोह क़ुरआन को लाज़िम कर ले, इस में अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें हैं। इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि उम्मत के सारे उ़लूम ह़दीस की शर्ह़ हैं और ह़दीस क़ुरआन की और येह भी फ़रमाया कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जो कोई हुक्म भी फ़रमाया वोह वोही था जो आप को क़ुरआने पाक से मफ़्हूम हुवा। अबू बक्र बिन मुजाहिद से मन्क़ूल है : उन्हों ने एक रोज़ फ़रमाया कि आ़लम में कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किताबुल्लाह या'नी क़ुरआन शरीफ़ में मज़्कूर न हो, इस पर किसी ने उन से कहा : सराओं (मुसाफ़िर ख़ाने) का ज़िक्र कहां है ? फ़रमाया : इस आयत में ''لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ...الخ'' (इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत के नहीं।) इब्ने अबुल फ़ज़्ल मुरसी ने कहा कि अव्वलीन व आख़िरीन के तमाम उ़लूम क़ुरआने पाक में हैं। ग़रज़ येह किताब जामेअ़ है जमीअ़ उ़लूम की जिस किसी को इस का जितना इ़ल्म मिला है उतना ही जानता है। 204 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन्साफ़ तो येह है कि आदमी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही दे और नेकी और फ़राइज़ का अदा करना और आप ही से एक और रिवायत है कि इन्साफ़ शिर्क का तर्क करना और नेकी **अल्लाह** की इस त़रह़ इ़बादत करना गोया वोह तुम्हें देख रहा है और दूसरों के लिये वोही पसन्द करना जो अपने लिये पसन्द करते हो, अगर वोह मोमिन हो तो उस के बरकाते ईमान की तरक़्क़ी तुम्हें पसन्द हो और अगर काफ़िर हो तो तुम्हें येह पसन्द आए कि वोह तुम्हारा इस्लामी भाई हो जाए। इन्हीं से एक और रिवायत है : उस में है कि इन्साफ़ तौह़ीद है और नेकी इख़्लास और इन तमाम रिवायतों का त़र्ज़े बयान अगर्चे जुदा जुदा है लेकिन मआल व मुद्दआ एक ही है। 205 : और उन के साथ सिलए रेह़मी और नेक सुलूक करने का 206 : या'नी हर शर्मनाक मज़्मूम क़ौल व फ़े'ल 207 : या'नी शिर्क व कुफ़्र व मआ़सी तमाम मम्नूआ़ते शरइय्या 208 : या'नी ज़ुल्म व तकब्बुर से। इब्ने उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा कि अ़द्ल ज़ाहिरो बात़िन दोनों में बराबर ह़क़ व त़ाअ़त बजा लाने को कहते हैं और एह़सान येह है कि बात़िन का ह़ाल ज़ाहिर से बेहतर हो और ''فَحْشَاء وَمُنْكَر وَبَغْي'' येह है कि ज़ाहिर अच्छा हो और बात़िन ऐसा न हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इस आयत में **अल्लाह** तआला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया और तीन से मन्अ़ फ़रमाया : अ़द्ल का हुक्म दिया और वोह इन्साफ़ व मुसावात है अक़्वाल व अफ़्आ़ल में, इस के मुक़ाबिल فَحْشَاء या'नी बे हयाई है वोह क़बीह़ अक़्वाल व अफ़्आ़ल हैं और एह़सान का हुक्म फ़रमाया, वोह येह है कि जिस ने ज़ुल्म किया उस को मुआ़फ़ करो और जिस ने बुराई की उस के साथ भलाई करो, इस के मुक़ाबिल مُنْكَر है या'नी मोह़सिन के एह़सान का इन्कार करना और तीसरा हुक्म इस आयत में रिश्तेदारों को देने और उन के साथ सिलए रेह़मी और शफ़्क़तो मह़ब्बत का फ़रमाया, इस के मुक़ाबिल بَغْي है और वोह अपने आप को ऊंचा खींचना और अपने अ़लाक़ादारों के ह़ुक़ूक़ तलफ़ करना है। इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि येह आयत तमाम ख़ैर व शर के बयान को जामेअ़ है। येही आयत ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न के इस्लाम का सबब हुई जो फ़रमाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल से ईमान मेरे दिल में जगह पकड़ गया। इस आयत का असर इतना ज़बर दस्त हुवा कि वलीद बिन मुग़ीरा और अबू जहल जैसे सख़्त दिल कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर भी इस की ता'रीफ़ आ ही गई, इस लिये येह आयत हर ख़ुत़्बे के आख़िर में पढ़ी जाती है। 209 : येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस्लाम पर बैअ़त की थी, उन्हें अपने अ़हद के वफ़ा करने का हुक्म दिया गया और येह हुक्म इन्सान के हर अ़हदे नेक और वा'दे को शामिल है।

وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَلَا

और तुम अल्लाह को[210] अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक अल्लाह तुम्हारे काम जानता है और[211]

تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ

उस औरत की तरह न हो जिस ने अपना सूत मज़बूती के बा'द रेज़ा रेज़ा कर के तोड़ दिया[212] अपनी क़समें आपस में

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ

एक बे अस्ल बहाना बनाते हो कि कहीं एक गुरौह दूसरे गुरौह से ज़ियादा न हो[213] अल्लाह तो इस से तुम्हें आज़्माता

بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَلَوْ شَآءَ

है[214] और ज़रूर तुम पर साफ़ ज़ाहिर कर देगा क़ियामत के दिन[215] जिस बात में झगड़ते थे[216] और अल्लाह चाहता

اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ

तो तुम को एक ही उम्मत करता[217] लेकिन अल्लाह गुमराह करता है[218] जिसे चाहे और राह देता है[219] जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْۤا اَيْمَانَكُمْ

चाहे और ज़रूर तुम से[220] तुम्हारे काम पूछे जाएंगे[221] और अपनी क़समें आपस में बे अस्ल

دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ

बहाना न बना लो कि कहीं कोई पाउं[222] जमने के बा'द लग़्ज़िश न करे और तुम्हें बुराई चखनी हो[223] बदला इस का

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۹۴﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا

कि अल्लाह की राह से रोकते थे और तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब हो[224] और अल्लाह के अ़हद पर थोड़े दाम

قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنْدَكُمْ

मोल न लो[225] बेशक वोह[226] जो अल्लाह के पास है तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो जो तुम्हारे पास है[227]

210 : उस के नाम की क़सम खा कर 211 : तुम अ़हद और क़समें तोड़ कर 212 : मक्कए मुकर्रमा में रैता़ बिन्ते अ़म्र एक औ़रत थी जिस की त़बीअ़त में बहुत वहम था और अ़क़्ल में फ़ुतूर, वोह दोपहर तक मेहनत कर के सूत काता करती और अपनी बांदियों से भी कतवाती और दोपहर के वक़्त उस काते हुए को तोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर डालती और बांदियों से भी तुड़वाती, येही उस का मा'मूल था। मा'ना येह हैं कि अपने अ़हद को तोड़ कर उस औ़रत की त़रह बे वुक़ूफ़ न बनो। 213 : मुजाहिद का क़ौल है कि लोगों का त़रीक़ा येह था कि एक क़ौम से ह़ल्फ़ करते और जब दूसरी क़ौम उस से ज़ियादा ता'दाद या माल या क़ुव्वत में पाते तो पहलों से जो ह़ल्फ़ किये थे तोड़ देते और अब दूसरे से ह़ल्फ़ करते अल्लाह तआ़ला ने इस को मन्अ़ फ़रमाया और अ़हद के वफ़ा करने का हुक्म दिया। 214 : कि मुत़ीअ़ और आ़सी ज़ाहिर हो जाए 215 : आ'माल की जज़ा दे कर 216 : दुन्या के अन्दर 217 : कि तुम सब एक दीन पर होते 218 : अपने अ़द्ल से 219 : अपने फ़ज़्ल से 220 : रोज़े क़ियामत 221 : जो तुम ने दुन्या में किये 222 : राहे ह़क़ व त़रीक़ए इस्लाम से 223 : या'नी अ़ज़ाब 224 : आख़िरत में 225 : इस त़रह़ कि दुन्याए ना पाएदार के क़लील नफ़्अ़ पर उस को तोड़ दो। 226 : जज़ा व सवाब 227 : सामाने दुन्या येह सब फ़ना हो जाएगा और ख़त्म।

يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है[228] हमेशा रहने वाला है और ज़रूर हम सब्र करने वालों को उन का वोह सिला देंगे

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

जो उन के सब से अच्छे काम के क़ाबिल हो[229] जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसल्मान[230]

فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे[231] और ज़रूर उन्हें उन का नेग (अज्र) देंगे जो उन के सब से बेहतर काम के

يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۷﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ

लाइक़ हो तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह मांगो शैत़ान

الرَّجِيْمِ ﴿۹۸﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ

मरदूद से[232] बेशक उस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर

يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۹۹﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ

भरोसा रखते हैं[233] उस का क़ाबू तो उन्हीं पर है जो उस से दोस्ती करते हैं और उसे

مُشْرِكُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ ع وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا ع ۱۳ ۱۹

शरीक ठहराते हैं और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलें[234] और अल्लाह ख़ूब जानता है जो उतारता है[235] काफ़िर कहें

اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ

तुम तो दिल से बना लाते हो[236] बल्कि उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं[237] तुम फ़रमाओ इसे पाकीज़गी

228 : उस का ख़ज़ानए रह़मत व सवाबे आख़िरत **229 :** या'नी उन की अदना सी अदना नेकी पर भी वोह अज्रो सवाब दिया जाएगा जो वोह अपनी आ'ला नेकी पर पाते। (ابوالسعود) **230 :** येह ज़रूर शर्त़ है क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बेकार हैं, अ़मले सालेह़ के मूजिबे सवाब होने के लिये ईमान शर्त़ है। **231 :** दुन्या में रिज़्क़े ह़लाल और क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा कर और आख़िरत में जन्नत की ने'मतें दे कर। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि अच्छी ज़िन्दगी से लज़्ज़ते इ़बादत मुराद है। **ह़िक्मत :** मोमिन अगर्चे फ़क़ीर भी हो इस की ज़िन्दगानी दौलत मन्द काफ़िर के ऐ़श से बेहतर और पाकीज़ा है क्यूं कि मोमिन जानता है कि इस की रोज़ी अल्लाह की त़रफ़ से है जो उस ने मुक़द्दर किया उस पर राज़ी होता है और मोमिन का दिल ह़िर्स की परेशानियों से मह़फ़ूज़ और आराम में रहता है और काफ़िर जो अल्लाह पर नज़र नहीं रखता वोह ह़रीस रहता है और हमेशा रन्जो तअ़ब (दुख) और तह़सीले माल की फ़िक्र में परेशान रहता है। **232 :** या'नी कुरआने करीम की तिलावत शुरूअ़ करते वक़्त "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم" पढ़ो, येह मुस्तह़ब है। اَعُوْذُ...اِلَخ के मसाइल सूरए फ़ातिह़ा की तफ़्सीर में मज़्कूर हो चुके। **233 :** वोह शैत़ानी वस्वसे क़बूल नहीं करते। **234 :** और अपनी ह़िक्मत से एक हुक्म को मन्सूख़ कर के दूसरा हुक्म दें। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का अपनी जहालत से नस्ख़ पर ए'तिराज़ करते थे और इस की ह़िक्मतों से ना वाक़िफ़ होने के बाइस इस को तमस्ख़ुर बनाते थे और कहते थे कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) एक रोज़ एक हुक्म देते हैं दूसरे रोज़ और दूसरा ही हुक्म देते हैं, वोह अपने दिल से बातें बनाते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **235 :** कि इस में क्या ह़िक्मत और उस के बन्दों के लिये इस में क्या मस्लह़त है। **236 :** अल्लाह तआ़ला ने इस पर कुफ़्फ़ार की तज्हील फ़रमाई और इर्शाद किया **237 :** और वोह नस्ख़ो तब्दील की ह़िक्मत व फ़वाइद से ख़बरदार नहीं और येह भी नहीं जानते कि कुरआने करीम की त़रफ़ इफ़्तिरा की निस्बत हो ही नहीं सकती क्यूं कि जिस कलाम के मिस्ल बनाना

الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى

की रूह[238] ने उतारा तुम्हारे रब की त़रफ़ से ठीक ठीक कि इस से ईमान वालों को साबित क़दम करे और हिदायत और बिशारत

لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ لَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ

मुसल्मानों को और बेशक हम जानते हैं कि वोह कहते हैं येह तो कोई आदमी सिखाता है जिस की

الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّ هٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ

त़रफ़ ढालते (इशारा करते) हैं उस की ज़बान अ़जमी है और येह रोशन अ़रबी ज़बान[239] बेशक

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾

वोह जो **अल्लाह** की आयतों पर ईमान नहीं लाते[240] **अल्लाह** उन्हें राह नहीं देता और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[241]

اِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

झूट बोहतान वोही बांधते हैं जो **अल्लाह** की आयतों पर ईमान नहीं रखते[242] और वोही

الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ

झूटे हैं जो ईमान ला कर **अल्लाह** का मुन्किर हो[243] सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल

مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ

ईमान पर जमा हुवा हो[244] हां वोह जो दिल खोल कर[245] काफ़िर हो उन पर **अल्लाह** का

क़ुदरते बशरी से बाहर है, वोह किसी इन्सान का बनाया हुवा कैसे हो सकता है ! लिहाज़ा सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़िताब हुवा **238 :** या'नी ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام **239 :** क़ुरआने करीम की ह़लावत और इस के उ़लूम की नूरानिय्यत जब क़ुलूब की तस्ख़ीर (दिलों को अपनी त़रफ़ माइल) करने लगी और कुफ़्फ़ार ने देखा कि दुन्या इस की गिरवीदा होती चली जाती है और कोई तदबीर इस्लाम की मुख़ालफ़त में काम्याब नहीं होती तो उन्हों ने त़रह़ त़रह़ के इफ़्तिरा उठाने (बोहतान लगाने) शुरूअ़ किये कभी इस को सेह़र बताया तो कभी पहलों के क़िस्से और कहानियां कहा, कभी येह कहा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने येह ख़ुद बना लिया है और हर त़रह़ कोशिश की, कि किसी त़रह़ लोग इस किताबे मुक़द्दस की त़रफ़ से बद गुमान हों, इन्हीं मक्कारियों में से एक मक्र येह भी था कि उन्हों ने एक अ़जमी ग़ुलाम की निस्बत कहा कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सिखाता है। इस के रद में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि ऐसी बात़िल बातें दुन्या में कौन क़बूल कर सकता है, जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार निस्बत करते हैं वोह तो अ़जमी है ऐसा कलाम बनाना उस के तो क्या इम्कान में होता तुम्हारे फ़ुसह़ा व बुलग़ा जिन की ज़बान दानी पर अहले अ़रब को फ़ख़्रो नाज़ है वोह सब के सब ह़ैरान हैं और चन्द जुम्ले क़ुरआन की मिस्ल बनाना उन्हें मुह़ाल और उन की क़ुदरत से बाहर है तो एक अ़जमी की त़रफ़ एसी निस्बत किस क़दर बात़िल और बेशर्मी का फ़े'ल है, ख़ुदा की शान जिस ग़ुलाम की त़रफ़ कुफ़्फ़ार येह निस्बत करते थे उस को भी इस कलाम के ए'जाज़ ने तस्ख़ीर किया और वोह भी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का ह़ल्क़ा बगोशे त़ाअ़त हुवा और सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाया। **240 :** और इस की तस्दीक़ नहीं करते **241 :** ब सबब इन्कारे क़ुरआन व तक्ज़ीबे रसूल عَلَیْہِ السَّلَام के। **242 :** या'नी झूट बोलना और इफ़्तिरा करना बे ईमानों ही का काम है। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि झूट कबीरा गुनाहों में बद तरीन गुनाह है। **243 :** उस पर **अल्लाह** का ग़ज़ब, **244 :** वोह मग़ज़ूब नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़म्मार बिन यासिर के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हें और उन के वालिद यासिर और उन की वालिदा सुमय्या और सुहैब और बिलाल और ख़ब्बाब और सालिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को पकड़ कर कुफ़्फ़ार ने सख़्त सख़्त ईज़ाएं दीं ताकि वोह इस्लाम से फिर जाएं लेकिन येह ह़ज़रात न फिरे, तो कुफ़्फ़ार ने ह़ज़रते अ़म्मार के वालिदैन को बहुत बे रह़मियों से क़त्ल किया और अ़म्मार

www.dawateislami.net

مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

ग़ज़ब है और उन को बड़ा अ़ज़ाब है   येह इस लिये कि उन्हों ने दुन्या की ज़िन्दगी आख़िरत से

عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

प्यारी जानी[246]   और इस लिये कि अल्लाह (ऐसे) काफ़िरों को राह नहीं देता   येह हैं वोह जिन के

طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾

दिल और कान और आंखों पर अल्लाह ने मोहर कर दी है[247]   और वोही ग़फ़्लत में पड़े हैं[248]

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ

आप ही हुवा कि आख़िरत में वोही ख़राब हैं[249]   फिर बेशक तुम्हारा रब उन के लिये जिन्हों ने

هَاجَرُوْا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا

अपने घर छोड़े[250] बा'द इस के कि सताए गए[251] फिर उन्हों ने[252] जिहाद किया और साबिर रहे   बेशक तुम्हारा रब इस[253] के बा'द

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ ع يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ

ज़रूर बख़्शने वाला है मेहरबान   जिस दिन हर जान अपनी ही त़रफ़ झगड़ती आएगी[254] और हर जान को

نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً

उस का किया पूरा भर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा[255]   और अल्लाह ने कहावत बयान फ़रमाई[256] एक बस्ती[257]

ज़ईफ़ थे भाग नहीं सकते थे, उन्हों ने मजबूर हो कर जब देखा कि जान पर बन गई तो बा दिले न ख़्वास्ता कलिमए कुफ़्र का तलफ़्फ़ुज़ कर दिया। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी गई कि अ़म्मार काफ़िर हो गए। फ़रमाया : हरगिज़ नहीं ! अ़म्मार सर से पाउं तक ईमान से पुर हैं और उस के गोश्त और ख़ून में ज़ौक़े ईमानी सरायत कर गया है, फिर ह़ज़रते अ़म्मार रोते हुए ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए, हुज़ूर ने फ़रमाया : क्या हुवा ? अ़म्मार ने अ़र्ज़ किया : ऐ ख़ुदा के रसूल ! बहुत ही बुरा हुवा और बहुत ही बुरे कलिमे मेरी ज़बान पर जारी हुए। इर्शाद फ़रमाया : उस वक़्त तेरे दिल का क्या ह़ाल था ? अ़र्ज़ किया : दिल ईमान पर ख़ूब जमा हुवा था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शफ़्क़तो रह़मत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो येही करना चाहिये, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। (خازن) **मस्अला :** आयत से मा'लूम हुवा कि ह़ालाते इक्राह (कुफ़्र पर मजबूर किये जाने की ह़ालत) में अगर दिल ईमान पर जमा हुवा हो तो कलिमए कुफ़्र का इज्रा (ज़बान पर जारी करना) जाइज़ है जब कि आदमी को अपने जान या किसी उ़ज़्व के तलफ़ (ज़ाएअ़) होने का ख़ौफ़ हो। **मस्अला :** अगर इस ह़ालत में भी सब्र करे और क़त्ल कर डाला जाए तो वोह माजूर (सवाब पाएगा) और शहीद होगा, जैसा कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सब्र किया और वोह सूली पर चढ़ा कर शहीद कर डाले गए। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें सय्यिदुश्शुहदा फ़रमाया। **मस्अला :** जिस शख़्स को मजबूर किया जाए अगर उस का दिल ईमान पर जमा हुवा न हो, वोह कलिमए कुफ़्र ज़बान पर लाने से काफ़िर हो जाएगा। **मस्अला :** अगर कोई शख़्स बिग़ैर मजबूरी के तमस्ख़ुर या जह्ल से कलिमए कुफ़्र ज़बान पर जारी करे काफ़िर हो जाएगा। (تفسیر احمدی) **245 :** रिज़ा मन्दी और ए'तिक़ाद के साथ **246 :** और येह दुन्या इरतिदाद (मुरतद होने) पर इक़्दाम करने का सबब है। **247 :** न वोह तदब्बुर (अन्जाम पर ग़ौर) करते हैं, न मवाइज़ व नसाएह़ पर कान रखते हैं, न त़रीक़े रुश्दो सवाब को देखते हैं। **248 :** कि अपनी आ़क़िबत व अन्जामे कार को नहीं सोचते। **249 :** कि उन के लिये दाइमी अ़ज़ाब है। **250 :** और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए त़य्यिबा को हिजरत की **251 :** कुफ़्फ़ार ने उन पर सख़्तियां कीं और उन्हें कुफ़्र पर मजबूर किया। **252 :** हिजरत के बा'द **253 :** हिजरत व जिहाद व सब्र **254 :** वोह रोज़े क़ियामत है जब हर एक नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और सब को अपनी अपनी पड़ी होगी। **255 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत लोगों में ख़ुसूमत (दुश्मनी) यहां तक बढ़ेगी कि रूह़ व

www.dawateislami.net

كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَىٕنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ

कि अमान व इत्मीनान से थी[258] हर त़रफ़ से उस की रोज़ी कसरत से आती तो वोह अल्लाह की ने'मतों की नाशुक्री करने लगी[259]

بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾

तो अल्लाह ने उसे येह सज़ा चखाई कि उसे भूक और डर का पहनावा पहनाया[260] बदला उन के किये का

وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَ هُمْ

और बेशक उन के पास उन्हीं में से एक रसूल तशरीफ़ लाया[261] तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें अ़ज़ाब ने पकड़ा[262] और वोह

ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّ اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

बे इन्साफ़ थे तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी[263] ह़लाल पाकीज़ा खाओ[264] और अल्लाह की ने'मत का शुक्र करो

اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ

अगर तुम उसे पूजते हो तुम पर तो येही ह़राम किया है मुर्दार और ख़ून और सुअर का

الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ

गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया[265] फिर जो लाचार हो[266] न ख़्वाहिश करता और न ह़द से बढ़ता[267] तो बेशक

जिस्म में झगड़ा होगा। रूह़ कहेगी : या रब ! न मेरे हाथ था कि मैं किसी को पकड़ती न पाउं था कि चलती न आंख थी कि देखती। जिस्म कहेगा : या रब ! मैं तो लकड़ी की त़रह़ था न मेरा हाथ पकड़ सकता था न पाउं चल सकता था न आंख देख सकती थी, जब येह रूह़ नूरी शुआ़अ़ की त़रह़ आई तो इस से मेरी ज़बान बोलने लगी, आंख बीना हो गई, पाउं चलने लगे, जो कुछ किया इस ने किया। अल्लाह तआ़ला एक मिसाल बयान फ़रमाएगा कि एक अन्धा और एक लूला दोनों एक बाग़ में गए, अन्धे को तो फल नज़र नहीं आते थे और लूले का हाथ उन तक नहीं पहुंचता था तो अन्धे ने लूले को अपने ऊपर सुवार कर लिया, इस त़रह़ उन्हों ने फल तोड़े तो सज़ा के वोह दोनों मुस्तह़िक़ हुए, इस लिये रूह़ और जिस्म दोनों मुल्ज़म हैं। **256 :** ऐसे लोगों के लिये जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इन्आ़म किया और वोह उस ने'मत पर मग़रूर हो कर नाशुक्री करने लगे काफ़िर हो गए। येह सबब अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का हुवा, उन की मिसाल ऐसी समझो जैसे कि **257 :** मिस्ल मक्का के **258 :** न उस पर ग़नीम चढ़ता (दुश्मन ह़म्ला करता) न वहां के लोग क़त्ल व क़ैद की मुसीबत में गिरिफ़्तार किये जाते। **259 :** और उस ने अल्लाह के नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की। **260 :** कि सात बरस नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बद दुआ़ से क़ह़त़ और ख़ुश्क साली की मुसीबत में गिरिफ़्तार रहे, यहां तक कि मुर्दार खाते थे, फिर अम्नो इत्मीनान के बजाए ख़ौफ़ो हिरास उन पर मुसल्लत़ हुवा और हर वक़्त मुसल्मानों के ह़म्ले और लश्कर कशी का अन्देशा रहने लगा। **261 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **262 :** भूक और ख़ौफ़ के **263 :** जो उस ने सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक से अ़त़ा फ़रमाई। **264 :** बजाए उन ह़राम और ख़बीस अम्वाल के जो खाया करते थे लूट, ग़स्ब और ख़बीस मकासिब (पेशे) से ह़ासिल किये हुए। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस आयत में मुख़ात़ब मुसल्मान हैं और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि मुख़ात़ब मुश्रिकीने मक्का हैं। कलबी ने कहा कि जब अहले मक्का क़ह़त़ के सबब भूक से परेशान हुए और तक्लीफ़ की बरदाश्त न रही तो उन के सरदारों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप से दुश्मनी तो मर्द करते हैं औ़रतों और बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंच रही है उस का ख़याल फ़रमाइये। इस पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इजाज़त दी कि उन के लिये त़आ़म ले जाया जाए, इस आयत में इस का बयान हुवा। इन दोनों क़ौलों में अव्वल सह़ीह़ तर है। (خازن) **265 :** या'नी उस को बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो। **266 :** और इन ह़राम चीज़ों में से कुछ खाने पर मजबूर हो **267 :** या'नी क़दरे ज़रूरत पर सब्र कर के।

اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं येह

حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

हलाल है और येह हराम है कि अल्लाह पर झूट बांधो[268] बेशक जो

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ

अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा थोड़ा बरत्ना है[269] और उन के लिये

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ

दर्दनाक अज़ाब[270] और ख़ास यहूदियों पर हम ने हराम फ़रमाई वोह चीज़ें जो पहले तुम्हें

قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ

सुनाईं[271] और हम ने उन पर ज़ुल्म न किया हां वोही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[272] फिर बेशक तुम्हारा रब

لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْۤا

उन के लिये जो नादानी से[273] बुराई कर बैठें फिर उस के बा'द तौबा करें और संवर जाएं

اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ع اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا ١٥ ع ٢١

बेशक तुम्हारा रब इस के बा'द[274] ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक इब्राहीम एक इमाम था[275] अल्लाह का फ़रमां बरदार

لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ۙ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰهُ

और सब से जुदा[276] और मुशरिक न था[277] उस के एहसानों पर शुक्र करने वाला अल्लाह ने उसे चुन लिया[278]

وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ

और उसे सीधी राह दिखाई और हम ने उसे दुन्या में भलाई दी[279] और बेशक वोह

268 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग अपनी तरफ़ से बा'ज़ चीज़ों को हलाल बा'ज़ चीज़ों को हराम कर लिया करते थे और उस की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ कर दिया करते थे, इस की मुमानअत फ़रमाई गई और इस को अल्लाह पर इफ़्तिरा फ़रमाया गया। आज कल भी जो लोग अपनी तरफ़ से हलाल चीज़ों को हराम बता देते हैं जैसे मीलाद शरीफ़ की शीरीनी, फ़ातिहा, ग्यारहवीं, उर्स वग़ैरा ईसाले सवाब की चीज़ें जिन की हुरमत शरीअत में वारिद नहीं हुई, उन्हें इस आयत के हुक्म से डरना चाहिये कि ऐसी चीज़ों की निस्बत येह कह देना कि येह शरअन हराम हैं अल्लाह तआला पर इफ़्तिरा करना है। **269 :** और दुन्या की चन्द रोज़ा आसाइश है जो बाक़ी रहने वाली नहीं। **270 :** है आख़िरत में **271 :** सूरए अन्आम में आयत "وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ الآية" में **272 :** बग़ावत व मा'सियत का इरतिकाब कर के जिस की सज़ा में वोह चीज़ें उन पर हराम हुईं, जैसा कि आयत "فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ" में इर्शाद फ़रमाया गया। **273 :** बिग़ैर अन्जाम सोचे **274 :** या'नी तौबा के **275 :** नेक ख़साइल और पसन्दीदा अख़्लाक़ और हमीदा सिफ़ात का जामेअ़ **276 :** दीने इस्लाम पर क़ाइम **277 :** इस में कुफ़्फ़ारे कुरैश की तक्ज़ीब है जो अपने आप को दीने इब्राहीमी पर ख़याल करते थे। **278 :** अपनी नुबुव्वत व ख़ुल्लत के लिये **279 :** रिसालत

www.dawateislami.net

فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۲۲﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ

आख़िरत में शायाने क़ुर्ब है फिर हम ने तुम्हें वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى

करो जो हर बातिल से अलग था और मुश्रिक न था[280] हफ़्ता तो उन्हीं पर रखा गया था

الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

जो इस में मुख़्तलिफ़ हो गए[281] और बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ

इख़्तिलाफ़ करते थे[282] अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ[283] पक्की तदबीर और अच्छी

الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

नसीह़त से[284] और उन से उस त़रीक़े पर बह़्स करो जो सब से बेहतर हो[285] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ

राह से बहका और वोह ख़ूब जानता है राह वालों को और अगर तुम सज़ा दो तो वैसी ही सज़ा दो

مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاصْبِرْ

जैसी तक्लीफ़ तुम्हें पहुंचाई थी[286] और अगर तुम सब्र करो[287] तो बेशक सब्र वालों को सब्र सब से अच्छा और ऐ मह़बूब तुम सब्र करो

व अम्वाल व औलाद व सनाए ह़सन व क़बूले आ़म कि तमाम अद्यान वाले मुसल्मान और यहूद और नसारा और अ़रब के मुश्रिकीन सब इन की अ़ज़मत करते और इन से मह़ब्बत रखते हैं। **280 :** इत्तिबाअ़ से मुराद यहां अ़क़ाइद व उसूले दीन में मुवाफ़क़त करना है। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस इत्तिबाअ़ का हुक्म किया गया, इस में आप की अ़ज़मतो मन्ज़िलत और रिफ़्अ़ते दरजत (बुलन्द दरजात) का इज़्हार है कि आप का दीने इब्राहीमी की मुवाफ़क़त फ़रमाना ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये उन के तमाम फ़ज़ाइलो कमालात में सब से आ'ला फ़ज़्लो शरफ़ है क्यूं कि आप अक्रमुल अव्वलीन वल आख़िरीन हैं जैसा कि सह़ीह़ ह़दीस में वारिद हुवा और तमाम अम्बिया और कुल ख़ल्क़ से आप का मर्तबा अफ़्ज़लो आ'ला है : تو اصلی وباقی طفیل تواند: تو شاہی ومجموع خیل تواند (सब से पहले आप हैं और बाक़ी सब आप के तुफ़ैल, आप बादशाह हैं बाक़ी सब आप की रिआ़या है) **281 :** या'नी शम्बे की ता'ज़ीम और इस रोज़ शिकार तर्क करना और वक़्त को इ़बादत के लिये फ़ारिग़ करना यहूद पर फ़र्ज़ किया गया था और इस का वाक़िआ़ इस त़रह़ हुवा था कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन्हें रोज़े जुमुआ़ की ता'ज़ीम का हुक्म फ़रमाया था और इर्शाद किया था कि हफ़्ते में एक दिन **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत के लिये ख़ास करो, इस दिन में कुछ काम न करो, इस में उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया और कहा वोह दिन जुमुआ़ नहीं बल्कि सनीचर होना चाहिये बजुज़ एक छोटी सी जमाअ़त के जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हुक्म की ता'मील में जुमुआ़ पर ही राज़ी हो गई थी। **अल्लाह** तआ़ला ने यहूद को सनीचर की इजाज़त दे दी और शिकार ह़राम फ़रमा कर इब्तिला (इम्तिह़ान) में डाल दिया तो जो लोग जुमुआ़ पर राज़ी हो गए थे वोह तो मुत़ीअ़ रहे और उन्हों ने इस हुक्म की फ़रमां बरदारी की। बाक़ी लोग सब्र न कर सके उन्हों ने शिकार किये और नतीजा येह हुवा कि मस्ख़ किये गए। येह वाक़िआ़ तफ़्सील के साथ सूरए आ'राफ़ में बयान हो चुका है। **282 :** इस त़रह़ कि मुत़ीअ़ को सवाब देगा और आ़सी को इ़क़ाब (अ़ज़ाब) फ़रमाएगा। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है : **283 :** या'नी ख़ल्क़ को दीने इस्लाम की दा'वत दो **284 :** पक्की तदबीर से वोह दलीले मोह़्कम मुराद है जो ह़क़ को वाज़ेह़ और शुबुहात को ज़ाइल कर दे और अच्छी नसीह़त से तरग़ीबात व तरहीबात मुराद हैं। **285 :** बेहतर त़रीक़ से मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ उस की आयात और दलाइल से बुलाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दा'वते ह़क़ और इज़्हारे ह़क़्क़ानिय्यते दीन के लिये मुनाज़रा जाइज़ है।

www.dawateislami.net

وَ مَا صَبۡرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحۡزَنۡ عَلَيۡهِمۡ وَ لَا تَكُ فِىۡ ضَيۡقٍ مِّمَّا

और तुम्हारा सब्र अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है और उन का ग़म न खाओ[288] और उन के फ़रेबों से दिलतंग

يَمۡكُرُوۡنَ ﴿١٢٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا وَّ الَّذِيۡنَ هُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ ﴿١٢٨﴾ ع

ركوع ١٦ / ٢٢

न हो[289] बेशक अल्लाह उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं

286 : या'नी सज़ा ब क़दरे जनायत (जुर्म के बराबर) हो उस से ज़ाइद न हो। **शाने नुज़ूल :** जंगे उहुद में कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों के शुहदा के चेहरों को ज़ख़्मी कर के उन की शक्लों को तब्दील किया था और उन के पेट चाक किये थे उन के आ'ज़ा काटे थे उन शुहदा में हज़रते हम्ज़ा भी थे। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब उन्हें देखा तो हुज़ूर को बहुत सदमा हुवा और हुज़ूर ने क़सम खाई कि एक हज़रते हम्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बदला सत्तर काफ़िरों से लिया जाएगा और सत्तर का येही हाल किया जाएगा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो हुज़ूर ने वोह इरादा तर्क फ़रमाया और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दिया। **मस्अला :** मुस्लह या'नी नाक, कान वग़ैरा काट कर किसी की हैअत को तब्दील करना शरअ़ में हराम है। (مدارک) **287 :** और इन्तिक़ाम न लो **288 :** अगर वोह ईमान न लाएं **289 :** क्यूं कि हम तुम्हारे मुईन व नासिर हैं।

www.dawateislami.net

اٰیاتھا ۱۱۱ | ۱۷ سُوْرَۃُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ مَکِّیَّۃٌ ۵۰ | رکوعاتھا ۱۲

सूरए बनी इसराईल मक्किय्या है, इस में 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ

पाकी है उसे[2] जो रातों रात अपने बन्दे[3] को ले गया[4] मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे

الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ

अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) तक[5] जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी[6] कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता

1 : सूरए बनी इसराईल इस का नाम सूरए असरा और सूरए सुब्ह़ान भी है, येह सूरत मक्किय्या है मगर आठ आयतें "وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ" से "نَصِيْرًا" तक, येह क़ौल क़तादा का है। बैज़ावी ने जज़्म किया है कि येह सूरत तमाम की तमाम मक्किय्या है। इस सूरत में बारह रुकूअ़ और एक सो दस आयतें बसरी हैं और कूफ़ी एक सो ग्यारह और पांच सो तैंतीस कलिमे और तीन हज़ार चार सो साठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** मुनज़्ज़ा (पाक) है उस की ज़ात हर ऐ़ब व नक़्स से। **3 :** मह़बूब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **4 :** शबे मे'राज **5 :** जिस का फ़ासिला चालीस मन्ज़िल या'नी सवा महीने से ज़ियादा की राह है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم शबे मे'राज दरजाते आ़लिया व मरातिबे रफ़ीआ़ (बुलन्द तरीन मर्तबों) पर फ़ाइज़ हुए तो रब عَزَّوَجَلَّ ने ख़ित़ाब फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) येह फ़ज़ीलत व शरफ़ मैं ने तुम्हें क्यूं अ़त़ा फ़रमाया ? हुज़ूर ने अ़र्ज़ किया : इस लिये कि तू ने मुझे अ़ब्दिय्यत के साथ अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाया, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (خازن) **6 :** दीनी भी दुन्यवी भी कि वोह सर ज़मीने पाक, वह़्य की जाए नुज़ूल और अम्बिया की इ़बादत गाह और उन का जाए क़ियाम व क़िब्लए इ़बादत है और कस्रते अन्हार व अश्जार (दरियाओं और दरख़्तों की कसरत) से वोह ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब और मेवों और फलों की कसरत से बेहतरीन ऐ़शो राह़त का मक़ाम है। मे'राज शरीफ़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का एक जलील मो'जिज़ा और **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम ने'मत है और इस से हुज़ूर का वोह कमाले क़ुर्ब ज़ाहिर होता है जो मख़्लूक़े इलाही में आप के सिवा किसी को मुयस्सर नहीं, नुबुव्वत के बारहवें साल सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मे'राज से नवाज़े गए, महीने में इख़्तिलाफ़ है मगर अश्हर (ज़ियादा मश्हूर) येह है कि सत्ताईसवीं रजब को मे'राज हुई। मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर का बैतुल मक़्दिस तक शब के छोटे हिस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है इस का मुन्किर काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मश्हूरा से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं, इस का मुन्किर गुमराह है। मे'राज शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जुम्हूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर के अजल्ला अस्ह़ाब (जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम) इसी के मो'तक़िद हैं, नुसूसे आयात व अह़ादीस से भी येही मुस्तफ़ाद होता है। तीरह दिमाग़ाने फ़ल्सफ़ा (बे वुक़ूफ़ फ़ल्सफ़ियों) के अवहामे फ़ासिदा (फ़ासिद ख़यालात व गुमान) मह़ज़ बात़िल हैं, क़ुदरते इलाही के मो'तक़िद (पुख़्ता यक़ीन रखने वाले) के सामने वोह तमाम शुबुहात मह़ज़ बे ह़क़ीक़त हैं। ह़ज़रते जिब्रील का बुराक़ ले कर ह़ाज़िर होना, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ग़ायत (इन्तिहाई) इकराम व एह़तिराम के साथ सुवार कर के ले जाना, बैतुल मक़्दिस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अम्बिया की इमामत फ़रमाना, फिर वहां से सैरे समावात (आस्मानों की सैर) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, जिब्रीले अमीन का हर हर आस्मान के दरवाज़े खुलवाना, हर हर आस्मान पर वहां के साह़िबे मक़ाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का शरफ़े ज़ियारत से मुशर्रफ़ होना और हुज़ूर की तक्रीम करना, एह़तिराम बजा लाना, तशरीफ़ आवरी की मुबारक बादें देना, हुज़ूर का एक आस्मान से दूसरे आस्मान की त़रफ़ सैर फ़रमाना, वहां के अ़जाइब देखना और तमाम मुक़र्रबीन की निहायते मनाज़िल (मनाज़िल की इन्तिहा) **"सिद्‌रतुल मुन्तहा"** को पहुंचना जहां से आगे बढ़ने की किसी मलके मुक़र्रब को भी मजाल नहीं है, जिब्रीले अमीन का वहां मा'ज़िरत कर के रह जाना, फिर मक़ामे क़ुर्बे ख़ास में हुज़ूर का तरक़्क़ियां फ़रमाना और उस क़ुर्बे आ'ला में पहुंचना कि जिस के तसव्वुर तक ख़ल्क़ के अवहाम व अफ़्कार (फ़िक्रो ख़याल) भी परवाज़ से आ़जिज़ हैं, वहां मूरिदे रह़मतो करम होना और इन्आ़माते इलाहिय्यह और ख़साइसे निअ़म (ख़ुसूसी ने'मतों) से सरफ़राज़ फ़रमाया जाना और मलकूते समावात व अर्ज़ और उन से अफ़्ज़लो बरतर उ़लूम पाना और उम्मत के लिये नमाज़ें फ़र्ज़ होना, हुज़ूर का शफ़ाअ़त फ़रमाना, जन्नत व दोज़ख़ की सैरें और फिर अपनी जगह वापस तशरीफ़ लाना और इस वाक़िए की ख़बरें देना, कुफ़्फ़ार का इस पर शोरिशें मचाना और बैतुल मक़्दिस की इमारत का ह़ाल और मुल्के शाम जाने वाले क़ाफ़िलों की कैफ़िय्यतें हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त करना, हुज़ूर का सब कुछ बताना और क़ाफ़िलों के जो अह़वाल हुज़ूर ने बताए क़ाफ़िलों के आने पर उन

www.dawateislami.net

الْبَصِيْرُ ۝١ وَ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ

देखता है और हम ने मूसा को किताब[7] अ़ता फ़रमाई और उसे बनी इसराईल के लिये हिदायत किया

اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝٢ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ

कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ (काम बनाने वाला) न ठहराओ ऐ उन की औलाद जिन को हम ने नूह़ के साथ[8] सुवार किया बेशक वोह

كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝٣ وَ قَضَيْنَاۤ اِلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ

बड़ा शुक्र गुज़ार बन्दा था[9] और हम ने बनी इसराईल को किताब[10] में वह्य भेजी कि ज़रूर तुम ज़मीन में

فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَ لَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝٤ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا

दो बार फ़साद मचाओगे[11] और ज़रूर बड़ा गुरूर करोगे[12] फिर जब उन में पहली बार[13] का वा'दा आया[14]

بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ

हम ने तुम पर अपने कुछ बन्दे भेजे सख़्त लड़ाई वाले[15] तो वोह शहरों के अन्दर तुम्हारी तलाश को घुसे[16]

وَ كَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝٥ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَ اَمْدَدْنٰكُمْ

और येह एक वा'दा था[17] जिसे पूरा होना फिर हम ने उन पर उलट कर तुम्हारा ह़म्ला कर दिया[18] और तुम को

بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِيْنَ وَ جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝٦ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ

मालों और बेटों से मदद दी और तुम्हारा जथ्था बढ़ा दिया अगर तुम भलाई करोगे

لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَ اِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا

अपना भला करोगे[19] और बुरा करोगे तो अपना फिर जब दूसरी बार का वा'दा आया[20] कि दुश्मन

की तस्दीक़ होना, येह तमाम सिह़ाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और ब कसरत अह़ादीस इन तमाम उमूर के बयान और इन की तफ़सील से मम्लू (भरी हुई) हैं। **7 :** या'नी तौरैत **8 :** कश्ती में **9 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام कसीरुश्शुक्र (बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाले) थे, जब कुछ खाते पीते पहनते तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करते और उस का शुक्र बजा लाते और उन की ज़ुर्रिय्यत (औलाद) पर लाज़िम है कि वोह अपने जद्दे मोह़तरम के त़रीक़े पर क़ाइम रहे। **10 :** तौरैत **11 :** इस से ज़मीने शाम व बैतुल मक़्दिस मुराद है और दो मरतबा के फ़साद का बयान अगली आयत में आता है। **12 :** और ज़ुल्मो बग़ावत में मुब्तला होगे। **13 :** के फ़साद के अ़ज़ाब **14 :** और उन्हों ने अह़कामे तौरैत की मुख़ालफ़त की और महारिम व मआ़सी (ह़राम व गुनाह) का इरतिकाब किया और ह़ज़रते शा'या पैग़म्बर عَلَيْهِ السَّلَام (व बक़ौले) (और दूसरे क़ौल के मुताबिक़) ह़ज़रते अरमिया को क़त्ल किया। (بیضاوی وغیرہ) **15 :** बहुत ज़ोर व क़ुव्वत वाले, उन को तुम पर मुसल्लत़ किया और वोह सिन्जारीब और उस की अफ़्वाज हैं या बुख़्ते नसर या जालूत जिन्हों ने बनी इसराईल के उ़लमा को क़त्ल किया, तौरैत को जलाया, मस्जिद को ख़राब किया और सत्तर हज़ार को उन में से गिरिफ़्तार किया। **16 :** कि तुम्हें लूटें और क़त्ल व क़ैद करें। **17 :** अ़ज़ाब का कि लाज़िम था। **18 :** जब तुम ने तौबा की और तकब्बुर व फ़साद से बाज़ आए तो हम ने तुम को दौलत दी और उन पर ग़लबा इनायत फ़रमाया जो तुम पर मुसल्लत़ हो चुके थे। **19 :** तुम्हें उस भलाई की जज़ा मिलेगी। **20 :** और तुम ने फिर फ़साद बरपा किया, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल के दरपै हुए, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें बचाया और अपनी त़रफ़ उठा लिया और तुम ने ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِمُ السَّلَام को क़त्ल किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर अहले फ़ारस और रूम को मुसल्लत़ किया कि तुम्हारे वोह दुश्मन तुम्हें क़त्ल करें, क़ैद करें और तुम्हें इतना परेशान करें

وُجُوْهَكُمْ وَ لِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ لِيُتَبِّرُوْا

तुम्हारा मुंह बिगाड़ दें[21] और मस्जिद में दाख़िल हों[22] जैसे पहली बार दाख़िल हुए थे[23] और जिस चीज़ पर क़ाबू

وقف لازم

مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۷ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَ اِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ

पाएं[24] तबाह कर के बरबाद कर दें क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे[25] और अगर तुम फिर शरारत करो[26] तो हम फिर अज़ाब करेंगे[27]

وَ جَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۸ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ

और हम ने जहन्नम को काफ़िरों का क़ैदख़ाना बनाया है बेशक येह क़ुरआन वोह राह दिखाता है जो

اَقْوَمُ وَ يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا

सब से सीधी है[28] और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उन के लिये बड़ा

كَبِيْرًا ۹ وَّ اَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا

सवाब है और येह कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के लिये दर्दनाक अज़ाब तय्यार

ع ١

اَلِيْمًا ۱۰ وَ يَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ

कर रखा है और आदमी बुराई की दुआ करता है[29] जैसे भलाई मांगता है[30] और आदमी बड़ा

عَجُوْلًا ۱۱ وَ جَعَلْنَا الَّيْلَ وَ النَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَاۤ اٰيَةَ الَّيْلِ وَ جَعَلْنَاۤ

जल्द बाज़ है[31] और हम ने रात और दिन को दो निशानियां बनाया[32] तो रात की निशानी मिटी हुई रखी[33] और दिन की

اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

निशानी दिखाने वाली की[34] कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो[35] और[36] बरसों की गिनती और

21 : कि रन्जो परेशानी के आसार तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर हों 22 : या'नी बैतुल मक़्दिस में और उस को वीरान करें 23 : और उस को वीरान किया था तुम्हारे पहले फ़साद के वक़्त 24 : बिलादे बनी इसराईल से उस को 25 : दूसरी मरतबा के बा'द भी अगर तुम दोबारा तौबा करो और मआसी से बाज़ आओ। 26 : तीसरी मरतबा। 27 : चुनान्चे ऐसा हुवा और उन्हों ने फिर अपनी शरारत की तरफ़ औद किया (पलटे) और ज़मानए पाके मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की तक्ज़ीब की तो क़ियामत तक के लिये उन पर ज़िल्लत लाज़िम कर दी गई और मुसल्मान उन पर मुसल्लत़ फ़रमा दिये गए जैसा कि क़ुरआने करीम में यहूद की निस्बत वारिद हुवा : "ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ" الآيه। 28 : वोह अल्लाह तआला की तौहीद और उस के रसूलों पर ईमान लाना और उन की इताअ़त करना है। 29 : अपने लिये और अपने घर वालों के लिये और अपने माल के लिये और अपनी औलाद के लिये और ग़ुस्से में आ कर उन सब को कोसता है और उन के लिये बद दुआएं करता है। 30 : अगर अल्लाह तआला उस की येह बद दुआ क़बूल कर ले तो वोह शख़्स या उस के अहलो माल हलाक हो जाएं लेकिन अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से उस को क़बूल नहीं फ़रमाता। 31 : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में इन्सान से काफ़िर मुराद है और बुराई की दुआ से उस का अज़ाब की जल्दी करना और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि नज़्र बिन हारिस काफ़िर ने कहा : या रब ! अगर येह दीने इस्लाम तेरे नज़्दीक हक़ है तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा या दर्दनाक अज़ाब भेज अल्लाह तआला ने उस की येह दुआ क़बूल कर ली और उस की गरदन मारी गई। 32 : अपनी वह्दानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने वाली 33 : या'नी शब को तारीक किया ताकि उस में आराम किया जाए। 34 : रोशन कि उस में सब चीज़ें नज़र आएं। 35 : और कस्बो मआश के काम ब आसानी अन्जाम दे सको। 36 : रात दिन के दौरे से

www.dawateislami.net

وَ الْحِسَابَ ؕ وَ كُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِیْلًا ﴿۱۲﴾ وَ كُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓىٕرَهٗ

हिसाब जानो[37] और हम ने हर चीज़ ख़ूब जुदा जुदा ज़ाहिर फ़रमा दी[38] और हर इन्सान की क़िस्मत हम ने उस के

فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَ نُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ

गले से लगा दी है[39] और उस के लिये क़ियामत के दिन एक नविश्ता (तह़रीर) निकालेंगे जिसे खुला हुवा पाएगा[40] फ़रमाया जाएगा कि अपना

كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ﴿۱۴﴾ ؕ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا

नामा (आ'माल) पढ़ आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है जो राह पर आया वोह

یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ؕ وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ

अपने ही भले को राह पर आया[41] और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका[42] और कोई बोझ उठाने वाली जान

وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَ مَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾ وَ اِذَاۤ

दूसरे का बोझ न उठाएगी[43] और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें[44] और जब

اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْیَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِیْهَا فَفَسَقُوْا فِیْهَا فَحَقَّ عَلَیْهَا

हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं उस के ख़ुशह़ालों (अमीरों)[45] पर अह़काम भेजते हैं फिर वोह उस में बे हुक्मी करते हैं तो उस पर

الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِیْرًا ﴿۱۶﴾ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ

बात पूरी हो जाती है तो हम उसे तबाह कर के बरबाद कर देते हैं और हम ने कितनी ही संगतें (क़ौमें)[46] नूह़ के बा'द हलाक

نُوْحٍ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ

कर दीं[47] और तुम्हारा रब काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बरदार देखने वाला[48] जो येह जल्दी वाली

الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِیْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ

चाहे[49] हम उसे उस में जल्द दे दें जो चाहें जिसे चाहें[50] फिर उस के लिये जहन्नम कर दें

37 : दीनी व दुन्यवी कामों के अवक़ात का। 38 : ख़्वाह उस की ह़ाजत दीन में हो या दुन्या में। मुद्दआ़ येह है कि हर एक चीज़ की तफ़्सील फ़रमा दी जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद फ़रमाया "مَافَرَّطْنَا فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ" हम ने किताब में कुछ छोड़ न दिया और एक और आयत में इर्शाद किया "وَنَزَّلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ تِبْیَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ" ग़रज़ इन आयात से साबित है कि कुरआने करीम में जमीअ़ अश्या का बयान है। "سُبْحٰنَ اللّٰه" क्या किताब है ! कैसी इस की जामिइय्यत ! (جمل،خازن،مدارک وغیرہ) 39 : या'नी जो कुछ उस के लिये मुक़द्दर किया गया है ख़ैर या शर, सआ़दत या शक़ावत वोह उस को इस त़रह़ लाज़िम है जैसे गले का हार जहां जाए साथ रहे कभी जुदा न हो। मुजाहिद ने कहा कि हर इन्सान के गले में उस की सआ़दत या शक़ावत का नविश्ता (लिखा हुवा) डाल दिया जाता है। 40 : वोह उस का आ'माल नामा होगा। 41 : उस का सवाब वोही पाएगा। 42 : उस के बहकने का गुनाह और वबाल उस पर 43 : हर एक के गुनाहों का बार उसी पर होगा। 44 : जो उम्मत को उस के फ़राइज़ से आगाह फ़रमाए और राहे ह़क़ उन पर वाज़ेह़ करे और हुज्जत क़ाइम फ़रमाए।

www.dawateislami.net

يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا

कि उस में जाए मज़म्मत किया हुवा धक्के खाता और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे[51]

وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَ

और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी[52] हम सब को मदद देते हैं इन को भी[53] और

هٰۤؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَ مَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿۲۰﴾ اُنْظُرْ

उन को भी[54] तुम्हारे रब की अ़ता से[55] और तुम्हारे रब की अ़ता पर रोक नहीं[56] देखो

كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَ لَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّ اَكْبَرُ

हम ने उन में एक को एक पर कैसी बड़ाई दी[57] और बेशक आख़िरत दरजों में सब से बड़ी और फ़ज़्ल में सब

تَفْضِيْلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ ع

से आ'ला ऐ सुनने वाले **अल्लाह** के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू बैठ रहेगा मज़म्मत किया जाता बेकस[58]

وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَ بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने

عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ

उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं[59] तो उन से हूं (उफ़ तक) न कहना[60] और उन्हें न झिड़कना और

45 : और सरदारों **46 :** या'नी तक्ज़ीब करने वाली उम्मतें **47 :** मिस्ल आ़द व समूद वग़ैरा के। **48 :** ज़ाहिर व बातिन का आ़लिम, उस से कुछ छुपाया नहीं जा सकता। **49 :** या'नी दुन्या का त़लब गार हो। **50 :** येह ज़रूरी नहीं कि त़ालिबे दुन्या की हर ख़्वाहिश पूरी की जाए और उसे दिया ही जाए और जो वोह मांगे वोही दिया जाए, ऐसा नहीं है, बल्कि उन में से जिसे चाहते हैं देते हैं और जो चाहते हैं देते हैं, कभी ऐसा होता है कि महरूम कर देते हैं और कभी ऐसा होता है कि वोह बहुत चाहता है और थोड़ा देते हैं, कभी ऐसा कि ऐ़श चाहता है तक्लीफ़ देते हैं, इन ह़ालतों में काफ़िर दुन्या व आख़िरत दोनों के टोटे (नुक़्सान) में रहा और अगर दुन्या में उस को उस की पूरी मुराद दे दी गई तो आख़िरत की बद नसीबी व शक़ावत जब भी है, ब ख़िलाफ़ मोमिन के जो आख़िरत का त़लब गार है अगर वोह दुन्या में फ़क़्र से भी बसर कर गया तो आख़िरत की दाइमी ने'मत उस के लिये है और अगर दुन्या में भी फ़ज़्ले इलाही से उस को ऐ़श मिला तो दोनों जहान में काम्याब, ग़रज़ मोमिन हर ह़ाल में काम्याब है और काफ़िर अगर दुन्या में आराम पा भी ले तो भी क्या ? क्यूं कि **51 :** और अ़मले सालेह़ बजा लाए **52 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि अ़मल की मक़्बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : **एक** तो त़ालिबे आख़िरत होना या'नी निय्यत नेक। **दूसरे** सई या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के हुक़ूक़ के साथ अदा करना। **तीसरी** ईमान जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है। **53 :** जो दुन्या चाहते हैं **54 :** जो त़ालिबे आख़िरत हैं **55 :** दुन्या में सब को रोज़ी देते हैं और अन्जाम हर एक का उस के ह़स्बे ह़ाल। **56 :** दुन्या में सब उस से फ़ैज़ उठाते हैं नेक हों या बद। **57 :** माल व कमाल व जाह व सरवत में। **58 :** बे यारो मददगार। **59 :** ज़ो'फ़ का ग़लबा हो आ'ज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे त़ाक़त था ऐसे ही वोह आख़िर उ़म्र में तेरे पास नातुवां रह जाएं **60 :** या'नी ऐसा कोई कलिमा ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी (बोझ) है।

www.dawateislami.net

قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ

उन से ता'ज़ीम की बात कहना[61] और उन के लिये आजिज़ी का बाज़ू बिछा[62] नर्म दिली से और

قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ

अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उम्र) में पाला[63] तुम्हारा रब खूब जानता है जो तुम्हारे

نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾ وَ

दिलों में है[64] अगर तुम लाइक़ हुए[65] तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है और

اٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ

रिश्तेदारों को उन का हक़ दे[66] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[67] और फ़ुज़ूल न उड़ा[68] बेशक

الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

उड़ाने वाले (फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले) शैतानों के भाई हैं[69] और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है[70]

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا

और अगर तू उन से[71] मुंह फेरे अपने रब की रहमत के इन्तिज़ार में जिस की तुझे उम्मीद है तो उन से आसान

61 : और हुस्ने अदब के साथ उन से ख़िताब करना। **मस्अला :** मां बाप को उन का नाम ले कर न पुकारे येह ख़िलाफ़े अदब है और इस में उन की दिल आज़ारी है लेकिन वोह सामने न हों तो उन का ज़िक्र नाम ले कर करना जाइज़ है। **मस्अला :** मां बाप से इस तरह कलाम करे जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है। **62 :** या'नी ब नरमी व तवाज़ोअ़ (आजिज़ी व इन्किसारी से) पेश आ और उन के साथ थके वक़्त (बुढ़ापे) में शफ़्क़त व महब्बत का बरताव कर कि उन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त (बचपन में) तुझे महब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ उन्हें दरकार हो वोह उन पर ख़र्च करने में दरेग़ न कर। **63 :** मुद्दआ येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एहसान का हक़ अदा नहीं होता, इस लिये बन्दे को चाहिये कि बारगाहे इलाही में इन पर फ़ज़्लो रहमत फ़रमाने की दुआ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब! मेरी ख़िदमतें इन के एहसान की जज़ा नहीं हो सकतीं तू इन पर करम कर कि इन के एहसान का बदला हो। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि मुसल्मान के लिये रहमत व मग़िफ़रत की दुआ जाइज़ और उसे फ़ाएदा पहुंचाने वाली है। मुर्दों के ईसाले सवाब में भी उन के लिये दुआए रहमत होती है लिहाज़ा उस के लिये येह आयत अस्ल है। **मस्अला :** वालिदैन काफ़िर हों तो उन के लिये हिदायत व ईमान की दुआ करे कि येही उन के हक़ में रहमत है। हदीस शरीफ़ में है कि वालिदैन की रिज़ा में **अल्लाह** तआला की रिज़ा और उन की नाराज़ी में **अल्लाह** तआला की नाराज़ी है। दूसरी हदीस में है : वालिदैन का फ़रमां बरदार जहन्नमी न होगा और उन का ना फ़रमान कुछ भी अ़मल करे गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब होगा। एक और हदीस में है : सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन की ना फ़रमानी से बचो इस लिये कि जन्नत की ख़ुश्बू हज़ार बरस की राह तक आती है और ना फ़रमान वोह ख़ुश्बू न पाएगा, न क़ातेए रेहम, न बूढ़ा ज़िनाकार, न तकब्बुर से अपनी इज़ार टख़्नों से नीचे लटकाने वाला। **64 :** वालिदैन की इताअ़त का इरादा और उन की ख़िदमत का ज़ौक़। **65 :** और तुम से वालिदैन की ख़िदमत में तक़्सीर वाक़ेअ़ हुई तो तुम ने तौबा की। **66 :** उन के साथ सिलए रेहमी कर और महब्बत और मेलजोल और ख़बरगीरी और मौक़अ़ पर मदद और हुस्ने मुआ़शरत। **मस्अला :** और अगर वोह महारिम में से हों और मोहताज हो जाएं तो उन का ख़र्च उठाना, येह भी उन का हक़ है और साहिबे इस्तिताअ़त रिश्तेदार पर लाज़िम है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा है कि रिश्तेदारों से सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ क़राबत रखने वाले मुराद हैं और उन का हक़्क़े ख़ुमुस देना और उन की ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाना है। **67 :** उन का हक़ दो या'नी ज़कात। **68 :** या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च न कर। हज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "तब्ज़ीर" माल का नाहक़ में ख़र्च करना है। **69 :** कि उन की राह चलते हैं। **70 :** तो उस की राह इख़्तियार करना न चाहिये। **71 :** या'नी रिश्तेदारों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मिहजअ़ व बिलाल व सुहैब व सालिम व ख़ब्बाब

www.dawateislami.net

مَّيْسُوْرًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ

बात कह[72] और अपना हाथ अपनी गरदन से बंधा हुवा न रख और न पूरा

الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿٢٩﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा[73] बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा

يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿٣٠﴾ ع وَلَا تَقْتُلُوْۤا

देता और[74] कस्ता है (तंगी देता है) बेशक वोह अपने बन्दों को खूब जानता[75] देखता है और अपनी औलाद

اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ

को क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के डर से[76] हम तुम्हें भी और उन्हें भी रोज़ी देंगे बेशक उन का क़त्ल

خِطْاً كَبِيْرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ

बड़ी ख़ता है और बदकारी के पास न जाओ बेशक वोह बे हयाई है और बहुत ही बुरी

سَبِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ

राह और कोई जान जिस की हुरमत **अल्लाह** ने रखी है नाहक़ न मारो और जो नाहक़

مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

मारा जाए तो बेशक हम ने उस के वारिस को क़ाबू दिया है[77] तो वोह क़त्ल में हद से न बढ़े[78] ज़रूर उस की

अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में नाज़िल हुई जो वक़्तन फ़ वक़्तन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अपने हवाइज (हाजात) व ज़रूरिय्यात के लिये सुवाल करते रहते थे, अगर किसी वक़्त हुज़ूर के पास कुछ न होता तो आप "हयाअन" उन से एराज़ करते और ख़ामोश हो जाते ब ई इन्तिज़ार कि **अल्लाह** तआ़ला कुछ भेजे तो उन्हें अ़ता फ़रमाएं। **72 :** या'नी उन की ख़ुशदिली के लिये उन से वा'दा कीजिये या उन के हक़ में दुआ फ़रमाइये। **73 :** येह तम्सील है जिस से इन्फ़ाक़ या'नी ख़र्च करने में ए'तिदाल मल्हूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस तरह हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है देने के लिये हिल ही नहीं सकता, ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बख़ील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरिय्यात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे। **शाने नुज़ूल :** एक मुसल्मान बीबी के सामने एक यहूदिया ने हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की सख़ावत का बयान किया और इस में इस हद तक मुबालग़ा किया कि हज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर तरजीह दे दी और कहा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की सख़ावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरिय्यात के इलावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते, येह बात मुसल्मान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्हों ने कहा कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام सब साहिबे फ़ज़्लो कमाल हैं, हज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं, लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्हों ने चाहा कि यहूदिया को हज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के जूदो करम की आज़्माइश करा दी जाए। चुनान्चे उन्हों ने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات की ख़िदमत में भेजा कि हुज़ूर से क़मीस मांग लाए उस वक़्त हुज़ूर के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ैबे तन थी वोही उतार कर अ़ता फ़रमा दी और अपने आप दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ रखी शर्म से बाहर तशरीफ़ न लाए, यहां तक कि अज़ान का वक़्त आया अज़ान हुई, सहाबा ने इन्तिज़ार किया, हुज़ूर तशरीफ़ न लाए तो सब को फ़िक्र हुई, हाल मा'लूम करने के लिये दौलत सराए अक़्दस में हाज़िर हुए तो देखा कि जिस्मे मुबारक पर क़मीस नहीं है इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **74 :** जिसे चाहे उस के लिये तंगी करता और उस को **75 :** और उन के अह़वाल व मसालेह़ को **76 :** ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग अपनी लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे और इस

www.dawateislami.net

مَنۡصُوۡرًا ﴿۳۳﴾ وَ لَا تَقۡرَبُوۡا مَالَ الۡیَتِیۡمِ اِلَّا بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ حَتّٰی یَبۡلُغَ

मदद होनी है[79] और यतीम के माल के पास न जाओ मगर उस राह से जो सब से भली है[80] यहां तक कि वोह अपनी

اَشُدَّہٗ ۪ وَ اَوۡفُوۡا بِالۡعَہۡدِ ۚ اِنَّ الۡعَہۡدَ کَانَ مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۴﴾ وَ اَوۡفُوا الۡکَیۡلَ

जवानी को पहुंचे[81] और अ़ह्द पूरा करो[82] बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है और मापो तो

اِذَا کِلۡتُمۡ وَ زِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِیۡمِ ؕ ذٰلِکَ خَیۡرٌ وَّ اَحۡسَنُ تَاۡوِیۡلًا ﴿۳۵﴾

पूरा मापो और बराबर तराज़ू से तोलो येह बेहतर है और इस का अन्जाम अच्छा

وَ لَا تَقۡفُ مَا لَیۡسَ لَکَ بِہٖ عِلۡمٌ ؕ اِنَّ السَّمۡعَ وَ الۡبَصَرَ وَ الۡفُؤَادَ کُلُّ

और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इ़ल्म नहीं[83] बेशक कान और आंख और दिल इन सब

اُولٰٓئِکَ کَانَ عَنۡہُ مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۶﴾ وَ لَا تَمۡشِ فِی الۡاَرۡضِ مَرَحًا ۚ اِنَّکَ لَنۡ

से सुवाल होना है[84] और ज़मीन में इतराता न चल[85] बेशक तू हरगिज़

تَخۡرِقَ الۡاَرۡضَ وَ لَنۡ تَبۡلُغَ الۡجِبَالَ طُوۡلًا ﴿۳۷﴾ کُلُّ ذٰلِکَ کَانَ سَیِّئُہٗ

ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा[86] येह जो कुछ गुज़रा इन में की बुरी बात

عِنۡدَ رَبِّکَ مَکۡرُوۡہًا ﴿۳۸﴾ ذٰلِکَ مِمَّاۤ اَوۡحٰۤی اِلَیۡکَ رَبُّکَ مِنَ الۡحِکۡمَۃِ ؕ

तेरे रब को ना पसन्द है येह उन वह्‌यों में से है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी त़रफ़ भेजी ह़िक्मत की बातें[87]

وَ لَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰہِ اِلٰـہًا اٰخَرَ فَتُلۡقٰی فِیۡ جَہَنَّمَ مَلُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿۳۹﴾

और ऐ सुनने वाले **अल्लाह** के साथ दूसरा ख़ुदा न ठहरा कि तू जहन्नम में फेंका जाएगा त़ा'ना पाता धक्के खाता

के कई सबब थे नादारी व मुफ़्लिसी का ख़ौफ़, लूट का ख़ौफ़, **अल्लाह** तआला ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई । **77 :** क़िसास लेने का । **मस्अला :** आयत से साबित हुवा कि क़िसास लेने का ह़क़ वली को है और वोह ब तरतीबे अ़सबात हैं । **मस्अला :** और जिस का वली न हो उस का वली सुल्तान है । **78 :** और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह़ एक मक़्तूल के इवज़ में कई कई को या बजाए क़ातिल के उस की क़ौम व जमाअ़त के और किसी शख़्स को क़त्ल न करे । **79 :** या'नी वली की या मक़्तूल मज़्लूम की या उस शख़्स की जिस को वली नाह़क़ क़त्ल करे । **80 :** वोह येह है कि उस की ह़िफ़ाज़त करो और उस को बढ़ाओ । **81 :** और वोह अठ्ठारह साल की उ़म्र है । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما के नज़्दीक येही मुख़्तार है और ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़लामात ज़ाहिर न होने की ह़ालत में इन्तिहाए मुद्दते बुलूग़ इसी से तमस्सुक कर के अठ्ठारह साल क़रार दी । (احمدی) (अ़लामाते बुलूग़ ज़ाहिर न होने की सूरत में लड़का लड़की के लिये इन्तिहाई मुद्दते बुलूग़ 15 साल और अक़ल मुद्दत लड़के के लिये 12 और लड़की के लिये 9 साल है, और इसी क़ौल पर फ़तवा है । ''फ़तावा रज़विय्या, जि. 11, स. 560'' मुलख़्ख़सन) **82 : अल्लाह** का भी बन्दों का भी । **83 :** या'नी जिस चीज़ को देखा न हो उसे येह न कहो कि मैं ने देखा, जिस को सुना न हो उस की निस्बत न कहो कि मैं ने सुना । इब्ने ह़नीफ़ा से मन्क़ूल है कि झूटी गवाही न दो । इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : किसी पर वोह इल्ज़ाम न लगाओ जो तुम न जानते हो । **84 :** कि तुम ने इन से क्या काम लिया ? **85 :** तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से । **86 :** मा'ना येह हैं कि तकब्बुर व ख़ुदनुमाई से कुछ फ़ाएदा नहीं । **87 :** जिन की सिह़ह़त पर अ़क़्ल गवाही दे और उन से नफ़्स की इस्लाह़ हो उन की रिआ़यत लाज़िम है । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन आयात का ह़ासिल तौह़ीद और नेकियों और त़ाअ़तों का हुक्म देना और दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की त़रफ़ रग़बत दिलाना है ।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِیْنَ وَ اتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓىٕكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ

क्या तुम्हारे रब ने तुम को बेटे चुन दिये और अपने लिये फ़िरिश्तों से बेटियां बनाईं[88] बेशक तुम

لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِیْمًا ۠ ﴿۴۰﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِیَذَّكَّرُوْا ؕ وَ

बड़ा बोल बोलते हो[89] और बेशक हम ने इस कुरआन में त़रह़ त़रह़ से बयान फ़रमाया[90] कि वोह समझें[91] और

مَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا یَقُوْلُوْنَ اِذًا

इस से उन्हें नहीं बढ़ती मगर नफ़रत[92] तुम फ़रमाओ अगर उस के साथ और ख़ुदा होते जैसा येह बकते हैं जब तो वोह

لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِی الْعَرْشِ سَبِیْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا یَقُوْلُوْنَ

अ़र्श के मालिक की त़रफ़ कोई राह ढूंड निकालते[93] उसे पाकी और बरतरी उन की बातों से

عُلُوًّا كَبِیْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِیْهِنَّ ؕ

बड़ी बरतरी उस की पाकी बोलते हैं सातों आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं[94]

وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ

और कोई चीज़ नहीं[95] जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले[96] हां तुम उन की तस्बीह़ नहीं समझते[97] बेशक वोह

كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ

ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है[98] और ऐ मह़बूब तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह अठ्ठारह आयतें ''لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ'' से ''مَدْحُوْرًا'' तक ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अल्वाह़ में थीं, उन की इब्तिदा तौह़ीद के हुक्म से हुई और इन्तिहा शिर्क की मुमानअ़त पर, इस से मा'लूम हुवा कि हर ह़िक्मत की अस्ल तौह़ीद व ईमान है और कोई क़ौल व अ़मल बिग़ैर इस के क़ाबिले पज़ीराई नहीं। **88 :** येह ख़िलाफ़े ह़िक्मत बात किस त़रह़ कहते हो। **89 :** कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये औलाद साबित करते हो जो ख़वासे अज्साम से है और **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक, फिर इस में भी अपनी बड़ाई रखते हो कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हो और उस के लिये बेटियां तज्वीज़ करते हो, कितनी बे अदबी और गुस्ताख़ी है। **90 :** दलीलों से भी, मिसालों से भी, ह़िक्मतों से भी, इब्रतों से भी और जा बजा इस मज़्मून को क़िस्म क़िस्म के पैरायों में बयान फ़रमाया। **91 :** और पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाले) हों। **92 :** और ह़क़ से दूरी। **93 :** और उस से बर सरे मुक़ाबला होते जैसा बादशाहों का त़रीक़ा है। **94 :** ज़बाने ह़ाल से, इस त़रह़ कि उन के वुजूद सानेअ़ की क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करते हैं या ज़बाने क़ाल से और येही सह़ीह़ है, अह़ादीसे कसीरा इस पर दलालत करती हैं और सलफ़ से येही मन्क़ूल है। **95 :** जमाद व नबात व ह़ैवान से ज़िन्दा। **96 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : हर ज़िन्दा चीज़ **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ करती है और हर चीज़ की ज़िन्दगी उस के ह़स्बे ह़ैसिय्यत है। मुफ़स्सिरीन ने कहा कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटख़्ना येह भी तस्बीह़ करना है और इन सब की तस्बीह़ ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ'' है। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अंगुश्ते मुबारक से पानी के चश्मे जारी होते हम ने देखे और येह भी हम ने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह़ करता था। (بخاری شریف) ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं उस पथ्थर को पहचानता हूं जो मेरी बि'सत के ज़माने में मुझे सलाम किया करता था। (مسلم شریف) इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم लकड़ी के एक सुतून से तक्या फ़रमा कर ख़ुत़्बा फ़रमाया करते थे, जब मिम्बर बनाया गया और हुज़ूर मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए तो वोह सुतून रोया, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات ने उस पर दस्ते करम फेरा और शफ़्क़त फ़रमाई और तस्कीन दी। (بخاری شریف) इन तमाम अह़ादीस से जमाद का कलाम और तस्बीह़ करना साबित हुवा।

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿۴۵﴾ وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया[99] और हम ने उन के दिलों पर

اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ

ग़िलाफ़ डाल दिये हैं कि इसे न समझें और उन के कानों में टेंट (रूई)[100] और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की

وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿۴۶﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ

याद करते हो वोह पीठ फेर कर भागते हैं नफ़रत करते हम ख़ूब जानते हैं जिस लिये वोह सुनते हैं[101]

اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَ اِذْ هُمْ نَجْوٰۤى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ

जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और जब आपस में मश्वरा करते हैं जब कि ज़ालिम कहते हैं तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द

اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا

के जिस पर जादू हुवा[102] देखो उन्हों ने तुम्हें कैसी तश्बीहें दीं तो गुमराह हुए कि

يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۴۸﴾ وَ قَالُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ع

राह नहीं पा सकते और बोले क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे क्या सचमुच

خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۴۹﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۙ﴿۵۰﴾ اَوْ خَلْقًا مِّمَّا

नए बन कर उठेंगे[103] तुम फ़रमाओ कि पथ्थर या लोहा हो जाओ या और कोई मख़्लूक़ जो

يَكْبُرُ فِیْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِیْ فَطَرَكُمْ

तुम्हारे ख़याल में बड़ी हो[104] तो अब कहेंगे हमें कौन फिर पैदा करेगा तुम फ़रमाओ वोही जिस ने तुम्हें

97 : इख़्तिलाफ़े लुग़ात के बाइस या दुश्वारिये इदराक के सबब **98 :** कि बन्दों की ग़फ़्लत पर अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। **99 :** कि वोह आप को देख न सकें। **शाने नुज़ूल :** जब आयत "تَبَّتْ يَدَا" नाज़िल हुई तो अबू लहब की औ़रत पथ्थर ले कर आई, हुज़ूर मअ़ हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तशरीफ़ रखते थे, उस ने हुज़ूर को न देखा और हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहने लगी तुम्हारे आक़ा कहां हैं ? मुझे मा'लूम हुवा है उन्हों ने मेरी हज्व की है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : वोह शे'र गोई नहीं करते हैं। तो वोह येह कहती हुई वापस हुई कि मैं उन का सर कुचलने के लिये येह पथ्थर लाई थी। हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि उस ने हुज़ूर को देखा नहीं। फ़रमाया : मेरे और उस के दरमियान एक फ़िरिश्ता हाइल रहा, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। **100 :** गिरानी जिस के बाइस वोह क़ुरआन शरीफ़ नहीं सुनते। **101 :** या'नी सुनते भी हैं तो तमस्ख़ुर और तक्ज़ीब (मज़ाक़ और झुटलाने) के लिये। **102 :** तो बा'ज़ उन में से आप को मजनूं कहते हैं, बा'ज़ साहिर, बा'ज़ काहिन, बा'ज़ शाइर। **103 :** येह बात उन्हों ने बहुत तअ़ज्जुब से कही और मरने और ख़ाक में मिल जाने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को उन्हों ने बहुत बईद समझा, **अल्लाह** तआ़ला ने उन का रद किया और अपने हबीब عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इर्शाद फ़रमाया : **104 :** और हयात से दूर हो, जान उस से कभी मुतअ़ल्लिक़ न हुई हो तो भी **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुम्हें ज़िन्दा करेगा और पहली हालत की तरफ़ वापस फ़रमाएगा चे जाए कि हड्डियां और इस जिस्म के ज़र्रे, उन्हें ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद है, इन से तो जान पहले मुतअ़ल्लिक़ रह चुकी है।

www.dawateislami.net

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنۡغِضُوۡنَ اِلَيۡكَ رُءُوۡسَهُمۡ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلۡ

पहली बार पैदा किया था तो अब तुम्हारी त़रफ़ मस्ख़रगी से सर हिला कर कहेंगे येह कब है[105] तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنۡ يَّكُوۡنَ قَرِيۡبًا ﴿۵۱﴾ يَوۡمَ يَدۡعُوۡكُمۡ فَتَسۡتَجِيۡبُوۡنَ بِحَمۡدِهٖ وَ

शायद नज़्दीक ही हो जिस दिन वोह तुम्हें बुलाएगा[106] तो तुम उस की ह़म्द करते चले आओगे और[107]

تَظُنُّوۡنَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ﴿۵۲﴾ ع وَقُلۡ لِّعِبَادِىۡ يَقُوۡلُوا الَّتِىۡ هِىَ

समझोगे कि न रहे थे[108] मगर थोड़ा और मेरे[109] बन्दों से फ़रमाओ[110] वोह बात कहें जो सब से

اَحۡسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ يَنۡزَغُ بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ كَانَ لِلۡاِنۡسَانِ عَدُوًّا

अच्छी हो[111] बेशक शैत़ान उन के आपस में फ़साद डाल देता है बेशक शैत़ान आदमी का खुला दुश्मन

مُّبِيۡنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ بِكُمۡ ؕ اِنۡ يَّشَاۡ يَرۡحَمۡكُمۡ اَوۡ اِنۡ يَّشَاۡ يُعَذِّبۡكُمۡ ؕ

है तुम्हारा रब तुम्हें ख़ूब जानता है वोह चाहे तो तुम पर रह़्म करे[112] या चाहे तो तुम्हें अ़ज़ाब करे

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ عَلَيۡهِمۡ وَكِيۡلًا ﴿۵۴﴾ وَرَبُّكَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَ

और हम ने तुम को उन पर कड़ोड़ा (ज़िम्मेदार) बना कर न भेजा[113] और तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कोई आस्मानों और

الۡاَرۡضِ ؕ وَلَقَدۡ فَضَّلۡنَا بَعۡضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعۡضٍ وَّاٰتَيۡنَا دَاوٗدَ

ज़मीन में हैं[114] और बेशक हम ने नबियों में एक को एक पर बड़ाई दी[115] और दावूद को ज़बूर

زَبُوۡرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادۡعُوا الَّذِيۡنَ زَعَمۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ فَلَا يَمۡلِكُوۡنَ كَشۡفَ

अ़त़ा फ़रमाई[116] तुम फ़रमाओ पुकारो उन्हें जिन को **अल्लाह** के सिवा गुमान करते हो तो वोह इख़्तियार नहीं रखते तुम से

105 : या'नी क़ियामत कब क़ाइम होगी और मुर्दे कब उठाए जाएंगे ? **106 :** क़ब्रों से मौक़िफ़े क़ियामत (क़ियामत क़ाइम होने की जगह) की त़रफ़ **107 :** अपने सरों से ख़ाक झाड़ते और "سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ" कहते और येह इक़रार करते कि **अल्लाह** ही पैदा करने वाला और मरने के बा'द उठाने वाला है। **108 :** दुन्या में या क़ब्रों में **109 :** ईमानदार **110 :** कि वोह काफ़िरों से **111 :** नर्म हो या पाकीज़ा हो अदब और तहज़ीब की हो, इर्शाद व हिदायत की हो, कुफ़्फ़ार अगर बेहूदगी करें तो उन का जवाब उन्हीं के अन्दाज़ में न दिया जाए। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन मुसल्मानों के साथ बद कलामियां करते और उन्हें ईज़ाएं देते थे, उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم से इस की शिकायत की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और मुसल्मानों को बताया गया कि वोह कुफ़्फ़ार की जाहिलाना बातों का वैसा ही जवाब न दें, सब्र करें और "یَھۡدِیۡکُمُ اللّٰہُ" कह दें। येह हुक्म क़िताल व जिहाद के हुक्म से पहले था, बा'द को मन्सूख़ हो गया और इर्शाद फ़रमाया गया "یٰۤاَیُّھَا النَّبِیُّ جَاھِدِ الۡکُفَّارَ وَالۡمُنٰفِقِیۡنَ وَاغۡلُظۡ عَلَیۡھِمۡ" और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई, एक काफ़िर ने उन की शान में बेहूदा कलिमा ज़बान से निकाला था, **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें सब्र करने और मुआ़फ़ फ़रमाने का हुक्म दिया। **112 :** और तुम्हें तौबा और ईमान की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **113 :** कि तुम उन के आ'माल के ज़िम्मेदार होते। **114 :** सब के अह़वाल को और इस को कि कौन किस लाइक़ है। **115 :** मख़्सूस फ़ज़ाइल के साथ जैसे कि ह़ज़रते इब्राहीम को ख़लील किया और ह़ज़रते मूसा عَلَیۡہِ السَّلَام को कलीम और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को ह़बीब। **116 :** ज़बूर किताबे इलाही है जो ह़ज़रते दावूद عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुई, इस में एक सो पचास सूरतें हैं, सब में दुआ़ और **अल्लाह** तआ़ला की सना और उस की तह़मीद व तम्जीद है, न उस

الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿۵۶﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ

तक्लीफ़ दूर करने और न फेर देने का[117] वोह मक़्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं[118] वोह आप ही अपने रब की त़रफ़

الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ

वसीला ढूंडते हैं कि उन में कौन ज़ियादा मुक़र्रब है[119] उस की रह़मत की उम्मीद रखते और उस के अ़ज़ाब से डरते हैं[120] बेशक

عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا

तुम्हारे रब का अ़ज़ाब डर की चीज़ है और कोई बस्ती नहीं मगर येह कि हम उसे रोज़े क़ियामत

قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ

से पहले नेस्त (हलाक) कर देंगे या उसे सख़्त अ़ज़ाब देंगे[121] येह किताब में[122]

مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

लिखा हुवा है और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ

झुटलाया[123] और हम ने समूद को[124] नाक़ा दिया (ऊंटनी दी) आंखें खोलने को[125] तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया[126] और हम ऐसी निशानियां

में हलाल व ह़राम का बयान न फ़राइज़ न हुदूद व अह़काम, इस आयत में ख़ुसूसिय्यत के साथ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ले कर ज़िक्र फ़रमाया गया। **मुफ़स्सिरीन** ने इस के चन्द वुजूह बयान किये हैं : **एक** येह कि इस आयत में बयान फ़रमाया गया कि अम्बिया में **अल्लाह** तआ़ला ने बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत दी, फिर इर्शाद किया कि ह़ज़रते दावूद को ज़बूर अ़ता की बा वुजूदे कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को नुबुव्वत के साथ मुल्क भी अ़ता किया था लेकिन उस का ज़िक्र न फ़रमाया, इस में तम्बीह है कि आयत में जिस फ़ज़ीलत का ज़िक्र है वोह फ़ज़ीलत इल्म है न कि फ़ज़ीलते मुल्क व माल। **दूसरी** वज्ह येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बूर में फ़रमाया है कि मुह़म्मद ख़ातमुल अम्बिया हैं और उन की उम्मत ख़ैरुल उमम, इसी सबब से आयत में ह़ज़रते दावूद और ज़बूर का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **तीसरी** वज्ह येह है कि यहूद का गुमान था कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द कोई नबी नहीं और तौरैत के बा'द कोई किताब नहीं, इस आयत में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को ज़बूर अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र कर के यहूद की तक्ज़ीब कर दी गई और इन के दा'वे का बुत़लान ज़ाहिर फ़रमा दिया गया ग़रज़ कि येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलते कुब्रा पर दलालत करती है।

क़त्आ़ : اے وصف تو در کتاب موسیٰ وے نعت تو در زبور داود مقصود توئی ز آفرینش باقی بہ طفیل تست موجود

(**तरजमा : या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ही के औसाफ़े बा कमाल तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब तौरात में हैं और वाह ! इसी त़रह आप की ना'त दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की किताब ज़बूर में मौजूद है, पस आप ही तो इस काएनात का मक़्सूद हैं, बाक़ी तो सब कुछ फ़क़त़ आप के तुफ़ैल से है)। **117 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार जब क़ह़त़े शदीद में मुब्तला हुए और नौबत यहां तक पहुंची कि कुत्ते और मुर्दार खा गए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में फ़रियाद लाए और आप से दुआ़ की इल्तिजा की, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जब बुतों को ख़ुदा मानते हो तो इस वक़्त उन्हें पुकारो और वोह तुम्हारी मदद करें और जब तुम जानते हो कि वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो क्यूं उन्हें मा'बूद बनाते हो। **118 :** जैसे कि ह़ज़रते ई़सा और ह़ज़रते उ़ज़ैर और मलाएका। **शाने नुज़ूल :** इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : येह आयत एक जमाअ़ते अ़रब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो जिन्नात के एक गुरोह को पूजते थे, वोह जिन्नात इस्लाम ले आए और उन के पूजने वालों को ख़बर न हुई **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और उन्हें आ़र दिलाई। **119 :** ताकि जो सब से ज़ियादा मुक़र्रब हो उस को वसीला बनाएं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुक़र्रब बन्दों को बारगाहे इलाही में वसीला बनाना जाइज़ और **अल्लाह** के मक़्बूल बन्दों का त़रीक़ा है। **120 :** काफ़िर इन्हें किस त़रह मा'बूद समझते हैं। **121 :** क़त्ल वग़ैरा के साथ जब वोह कुफ़्र करें और मआ़सी में मुब्तला हों। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जब किसी बस्ती में ज़िना और सूद की कसरत होती है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के हलाक का हुक्म देता है। **122 :** लौह़े मह़फ़ूज़ में। **123 :** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि सफ़ा पहाड़

بِالْاٰیٰتِ اِلَّا تَخْوِیْفًا ﴿۵۹﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَ مَا

नहीं भेजते मगर डराने को[127] और जब हम ने तुम से फ़रमाया कि सब लोग तुम्हारे रब के क़ाबू में हैं[128] और हम

جَعَلْنَا الرُّءْیَا الَّتِیْۤ اَرَیْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِی

ने न किया वोह दिखावा[129] जो तुम्हें दिखाया था[130] मगर लोगों की आज़्माइश को[131] और वोह पेड़ जिस पर क़ुरआन

الْقُرْاٰنِ ؕ وَ نُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا طُغْیَانًا كَبِیْرًا ﴿۶۰﴾ ۧ وَ اِذْ قُلْنَا

में ला'नत है[132] और हम उन्हें डराते हैं[133] तो उन्हें नहीं बढ़ती मगर बड़ी सरकशी और याद करो जब हम ने

لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ

फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो[134] तो उन सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस के बोला क्या मैं इसे सज्दा करूं

لِمَنْ خَلَقْتَ طِیْنًا ﴿۶۱﴾ ۚ قَالَ اَرَءَیْتَكَ هٰذَا الَّذِیْ كَرَّمْتَ عَلَیَّ ٚ لَىِٕنْ

जिसे तू ने मिट्टी से बनाया बोला[135] देख तो जो येह तू ने मुझ से मुअ़ज़्ज़ज़ रखा[136] अगर

اَخَّرْتَنِ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّیَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ

तू ने मुझे क़ियामत तक मोहलत दी तो ज़रूर मैं इस की औलाद को पीस डालूं (बरबाद कर डालूं)गा[137] मगर थोड़ा[138] फ़रमाया

اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾

दूर हो[139] तो उन में जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक तुम सब का बदला जहन्नम है भरपूर सज़ा

को सोना कर दें और पहाड़ों को सर ज़मीने मक्का से हटा दें। इस पर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वह्य फ़रमाई कि आप फ़रमाएं तो आप की उम्मत को मोहलत दी जाए और अगर आप फ़रमाएं तो जो उन्हों ने त़लब किया है वोह पूरा किया जाए लेकिन अगर फिर भी वोह ईमान न लाए तो उन को हलाक कर के नेस्तो नाबूद कर दिया जाएगा इस लिये कि हमारी सुन्नत येही है कि जब कोई क़ौम निशानी त़लब कर के ईमान नहीं लाती तो हम उसे हलाक कर देते हैं और मोहलत नहीं देते, ऐसा ही हम ने पहलों के साथ किया है, इसी बयान में येह आयत नाज़िल हुई। **124 :** उन के ह़स्बे त़लब **125 :** या'नी हुज्जते वाज़ेह़ा (वाज़ेह़ व ज़बर दस्त दलाइल) **126 :** और कुफ़्र किया कि उस के مِنَ الله होने से मुन्किर हो गए। **127 :** जल्द आने वाले अ़ज़ाब से। **128 :** उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में तो आप तब्लीग़ फ़रमाइये और किसी का ख़ौफ़ न कीजिये अल्लाह आप का निगहबान है। **129 :** या'नी मुआयना अ़जाइबे आयाते इलाहिय्यह का। **130 :** शबे मे'राज ब ह़ालते बेदारी **131 :** या'नी अहले मक्का की। चुनान्चे जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें वाक़िआ़ए मे'राज की ख़बर दी तो उन्हों ने इस की तक्ज़ीब की और बा'ज़ मुरतद हो गए और तमस्ख़ुर से इमारते बैतुल मक़्दिस का नक़्शा दरयाफ़्त करने लगे। हुज़ूर ने सारा नक़्शा बता दिया तो इस पर कुफ़्फ़ार आप को साहिर कहने लगे। **132 :** या'नी दरख़्ते ज़क़्क़ूम जो जहन्नम में पैदा होता है, इस को सबबे आज़्माइश बना दिया यहां तक कि अबू जहल ने कहा कि मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम को जहन्नम की आग से डराते हैं कि वोह पथ्थरों को जला देगी फिर येह भी फ़रमाते हैं कि उस में दरख़्त उगेंगे, आग में दरख़्त कहां रह सकता है? येह ए'तिराज़ उन्हों ने किया और क़ुदरते इलाही से ग़ाफ़िल रहे, न समझे कि उस क़ादिरे मुख़्तार की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना कुछ बईद नहीं, समन्दल एक कीड़ा होता है जो आग में पैदा होता है आग ही में रहता है। बिलादे तुर्क में इस के ऊन की तोलियां बनाई जाती थीं जो मैली हो जाने पर आग में डाल कर साफ़ कर ली जातीं और जलती न थीं। शुतुर मुर्ग़ अंगारे खा जाता है अल्लाह की क़ुदरत से आग में दरख़्त पैदा करना क्या बईद है। **133 :** दीनी और दुन्यवी ख़ौफ़नाक उमूर से **134 :** तहिय्यत का **135 :** शैत़ान **136 :** और इस को मुझ पर फ़ज़ीलत दी और इस को सज्दा कराया तो मैं क़सम खाता हूं कि **137 :** गुमराह कर के **138 :** जिन्हें अल्लाह बचाए और मह़फ़ूज़ रखे, वोह उस के मुख़्लिस बन्दे हैं, शैत़ान के इस कलाम पर अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उस से **139 :** तुझे नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा सूर फूंके जाने) तक मोहलत दी गई।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ

और डिगा दे (बहका दे) उन में से जिस पर क़ुदरत पाए अपनी आवाज़ से[140] और उन पर लाम बांध ला (फ़ौजी लश्कर चढ़ा ला) अपने सुवारों और

رَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ

अपने पियादों का[141] और उन का साझी हो मालों और बच्चों में[142] और उन्हें वा'दा दे[143] और शैतान उन्हें वा'दा

الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَ

नहीं देता मगर फ़रेब से बेशक जो मेरे बन्दे हैं[144] उन पर तेरा कुछ क़ाबू नहीं और

كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ

तेरा रब काफ़ी है काम बनाने को[145] तुम्हारा रब वोह है कि तुम्हारे लिये दरिया में कश्ती रवां करता है

لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ

कि[146] तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो बेशक वोह तुम पर मेहरबान है और जब तुम्हें दरिया

فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ

में मुसीबत पहुंचती है[147] तो उस के सिवा जिन्हें पूजते हो सब गुम हो जाते हैं[148] फिर जब वोह तुम्हें ख़ुश्की की त़रफ़ नजात देता है

اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ

तो मुंह फेर लेते हो[149] और आदमी बड़ा नाशुक्रा है क्या तुम[150] इस से निडर हुए कि वोह ख़ुश्की ही का

جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ ۙ اَمْ

कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे[151] या तुम पर पथराव भेजे[152] फिर अपना कोई हिमायती न पाओ[153] या

140 : वस्वसे डाल कर और मा'सियत की त़रफ़ बुला कर। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि मुराद इस से गाने बाजे, लह्वो लअ़ब की आवाजें हैं। इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मन्क़ूल है कि जो आवाज़ अल्लाह तआ़ला की मरज़ी के ख़िलाफ़ मुंह से निकले वोह शैत़ानी आवाज़ है। 141 : या'नी अपने सब मक्र तमाम (फ़रेब मुकम्मल) कर ले और अपने तमाम लश्करों से मदद ले। 142 : ज़ुज्जाज ने कहा कि जो गुनाह माल में हो या औलाद में हो इब्लीस उस में शरीक है जैसे कि सूद और माल ह़ासिल करने के दूसरे ह़राम त़रीक़े और फ़िस्क़ व मम्नूआ़त में ख़र्च करना और ज़कात न देना येह माली उमूर हैं जिन में शैत़ान की शिर्कत है और ज़िना व ना जाइज़ त़रीक़े से औलाद ह़ासिल करना येह औलाद में शैत़ान की शिर्कत है। 143 : अपनी त़ाअ़त पर 144 : नेक मुख़्लिस अम्बिया और अस्ह़ाबे फ़ज़्लो सलाह़। 145 : उन्हें तुझ से मह़फ़ूज़ रखेगा और शैत़ानी मकाइद और वसाविस (शैत़ानी मक्रो फ़रेब और वस्वसों) को दफ़्अ़ फ़रमाएगा। 146 : इन में तिजारतों के लिये सफ़र कर के 147 : और डूबने का अन्देशा होता है 148 : और उन झूटे मा'बूदों में से किसी का नाम ज़बान पर नहीं आता, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला से ह़ाजत रवाई चाहते हैं। 149 : उस की तौह़ीद से और फिर उन्हीं नाकारा बुतों की परस्तिश शुरूअ़ कर देते हो। 150 : दरिया से नजात पा कर 151 : जैसा कि क़ारून को धंसा दिया था। मक़्सद येह है कि ख़ुश्की व तरी सब उस के तह़्ते क़ुदरत हैं जैसा वोह समुन्दर में ग़र्क़ करने और बचाने दोनों पर क़ादिर है ऐसा ही ख़ुश्की में भी ज़मीन के अन्दर धंसा देने और मह़फ़ूज़ रखने दोनों पर क़ादिर है। ख़ुश्की हो या तरी हर कहीं बन्दा उस की रह़मत का मोह़ताज है। वोह ज़मीन में धंसाने पर भी क़ादिर है और येह भी क़ुदरत रखता है कि 152 : जैसा क़ौमे लूत़ पर भेजा था। 153 : जो तुम्हें बचा सके।

www.dawateislami.net

اَمِنۡتُمۡ اَنۡ يُّعِيۡدَكُمۡ فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا مِّنَ

इस से निडर (बे ख़ौफ़) हुए कि तुम्हें दोबारा दरिया में ले जाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली

الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ﴿۶۹﴾ وَ

आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि इस पर हमारा पीछा करे[154] और

لَقَدۡ كَرَّمۡنَا بَنِىۡۤ اٰدَمَ وَحَمَلۡنٰهُمۡ فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ وَرَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ

बेशक हम ने औलादे आदम को इ़ज़्ज़त दी[155] और इन को ख़ुश्की और तरी में[156] सुवार किया और इन को सुथरी चीज़ें

الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلۡنٰهُمۡ عَلٰى كَثِيۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا تَفۡضِيۡلًا ﴿۷۰﴾ ع يَوۡمَ نَدۡعُوۡا كُلَّ

रोज़ी दीं[157] और इन को अपनी बहुत मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल किया[158] जिस दिन हम हर जमाअ़त को

اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمۡ ۚ فَمَنۡ اُوۡتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيۡنِهٖ فَاُولٰۤـئِكَ يَقۡرَءُوۡنَ كِتٰبَهُمۡ

उस के इमाम के साथ बुलाएंगे[159] तो जो अपना नामा दाहने हाथ में दिया गया येह लोग अपना नामा पढ़ेंगे[160]

وَلَا يُظۡلَمُوۡنَ فَتِيۡلًا ﴿۷۱﴾ وَمَنۡ كَانَ فِىۡ هٰذِهٖۤ اَعۡمٰى فَهُوَ فِى الۡاٰخِرَةِ اَعۡمٰى

और तागे भर उन का ह़क़ न दबाया जाएगा[161] और जो इस ज़िन्दगी में[162] अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है[163]

154 : और हम से दरयाफ़्त कर सके कि हम ने ऐसा क्यूं किया क्यूं कि हम क़ादिरे मुख़्तार हैं जो चाहते हैं करते हैं हमारे काम में कोई दख़्ल देने वाला और दम मारने वाला नहीं। **155 :** अ़क़्ल व इ़ल्म व गोयाई, पाकीज़ा सूरत, मो'तदिल क़ामत और मआ़श व मआ़द की तदाबीर और तमाम चीज़ों पर इस्तीला व तस्ख़ीर (ग़लबा व क़ाबू) अ़ता फ़रमा कर और इस के इलावा और बहुत सी फ़ज़ीलतें दे कर **156 :** जानवरों और दूसरी सुवारियों और कश्तियों और जहाज़ों वग़ैरा में **157 :** लत़ीफ़ ख़ुश ज़ाएक़ा ह़ैवानी और नबाती हर त़रह की गिज़ाएं ख़ूब अच्छी त़रह पकी हुई क्यूं कि इन्सान के सिवा ह़ैवानात में पकी हुई गिज़ा और किसी की ख़ूराक नहीं। **158 :** ह़सन का क़ौल है कि अक्सर से कुल मुराद है और अक्सर का लफ़्ज़ कुल के मा'ना में बोला जाता है। क़ुरआने करीम में भी इर्शाद हुवा : ''وَاَكۡثَرُهُمۡ كٰذِبُوۡنَ'' और ''مَا يَتَّبِعُ اَكۡثَرُهُمۡ اِلَّا ظَنًّا'' में ''अक्सर'' ब मा'ना ''कुल'' है, लिहाज़ा मलाएका भी इस में दाख़िल हैं और ख़वासे बशर या'नी अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام ख़वासे मलाएका से अफ़्ज़ल हैं और सुलह़ाए बशर (नेक व मुत्तक़ी इन्सान) अ़वामे मलाएका (आ़म फ़िरिश्तों) से। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन **अल्लाह** के नज़्दीक मलाएका से ज़ियादा करामत रखता है। वज्ह येह है कि **फ़िरिश्ते** त़ाअ़त पर मजबूर हैं येही इन की सिरिश्त (फ़ित़रत) है इन में अ़क़्ल है शहवत नहीं और **बहाइम** (जानवरों) में शहवत है अ़क़्ल नहीं और **आदमी** शहवत व अ़क़्ल दोनों का जामेअ़ है तो जिस ने अ़क़्ल को शहवत पर ग़ालिब किया वोह मलाएका से अफ़्ज़ल है और जिस ने शहवत को अ़क़्ल पर ग़ालिब किया वोह बहाइम से बदतर है। **159 :** जिस का वोह दुन्या में इत्तिबाअ़ करता था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह इमामे ज़मां मुराद है जिस की दा'वत पर दुन्या में लोग चले ख़्वाह उस ने ह़क़ की दा'वत की हो या बात़िल की। ह़ासिल येह है कि हर क़ौम अपने सरदार के पास जम्अ़ होगी जिस के हुक्म पर दुन्या में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फ़ुलां के मुत्तबिईन। **160 :** नेक लोग जो दुन्या में साह़िबे बसीरत थे और राहे रास्त पर रहे उन को उन का नामए आ'माल दाहने हाथ में दिया जाएगा, वोह उस में नेकियां और त़ाअ़तें देखेंगे तो उस को ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ेंगे और जो बद बख़्त हैं कुफ़्फ़ार हैं उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे वोह उन्हें देख कर शरमिन्दा होंगे और दहशत से पूरी त़रह पढ़ने पर क़ादिर न होंगे। **161 :** या'नी सवाबे आ'माल में उन से अदना भी कमी न की जाएगी। **162 :** दुन्या की ह़क़ के देखने से **163 :** नजात की राह से। मा'ना येह हैं कि जो दुन्या में काफ़िर गुमराह है वोह आख़िरत में अन्धा होगा, क्यूं कि दुन्या में तौबा मक़्बूल है और आख़िरत में तौबा मक़्बूल नहीं।

www.dawateislami.net

وَاَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۷۲﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَیَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِیْٓ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ

और और भी ज़ियादा गुमराह और वोह तो क़रीब था कि तुम्हें कुछ लग़्ज़िश देते हमारी वह्य से जो हम ने तुम को भेजी

لِتَفْتَرِیَ عَلَیْنَا غَیْرَهٗ ۖۗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِیْلًا ﴿۷۳﴾ وَلَوْلَاۤ اَنْ

कि तुम हमारी त़रफ़ कुछ और निस्बत कर दो और ऐसा होता तो वोह तुम को अपना गहरा दोस्त बना लेते[164] और अगर हम तुम्हें[165]

ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَیْهِمْ شَیْـًٔا قَلِیْلًا ﴿۷۴﴾ۗۙ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ

साबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उन की त़रफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते और ऐसा होता तो हम तुम को दूनी

الْحَیٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَیْنَا نَصِیْرًا ﴿۷۵﴾ وَاِنْ

उ़म्र और दो चन्द मौत[166] का मज़ा देते फिर तुम हमारे मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाते और बेशक

كَادُوْا لَیَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِیُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا یَلْبَثُوْنَ

क़रीब था कि वोह तुम्हें इस ज़मीन से[167] डिगा दें (हटा दें) कि तुम्हें इस से बाहर कर दें और ऐसा होता तो वोह तुम्हारे

خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۷۶﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا

पीछे न ठहरते मगर थोड़ा[168] दस्तूर उन का जो हम ने तुम से पहले रसूल भेजे[169] और

تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِیْلًا ﴿۷۷﴾ؒ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّیْلِ ع ۸

तुम हमारा क़ानून बदलता न पाओगे नमाज़ क़ाइम रखो सूरज ढलने से रात की अंधेरी तक[170]

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿۷۸﴾ وَمِنَ الَّیْلِ فَتَهَجَّدْ

और सुब्ह़ का क़ुरआन[171] बेशक सुब्ह़ के क़ुरआन में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं[172] और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद

164 शाने नुज़ूल : (क़बीलए) सक़ीफ़ का एक वफ़्द सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के पास आ कर कहने लगा कि अगर आप तीन बातें मन्ज़ूर कर लें तो हम आप की बैअ़त कर लें : **एक** तो येह कि नमाज़ में झुकेंगे नहीं या'नी रुकूअ़ सज्दा न करेंगे। **दूसरी** येह कि हम अपने बुत अपने हाथों से न तोड़ेंगे। **तीसरे** येह कि लात को पूजेंगे तो नहीं मगर एक साल उस से नफ़्अ़ उठा लें कि उस के पूजने वाले जो नज़्रें चढ़ावे लाएं उस को वुसूल कर लें। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उस दीन में कुछ भलाई नहीं जिस में रुकूअ़ सज्दा न हो और बुतों को तोड़ने की बाबत तुम्हारी मरज़ी और लात व उ़ज़्ज़ा से फ़ाएदा उठाने की इजाज़त मैं हरगिज़ न दूंगा। वोह कहने लगे : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) हम चाहते येह हैं कि आप की त़रफ़ से हमें ऐसा ए'ज़ाज़ मिले जो दूसरों को न मिला हो ताकि हम फ़ख़्र कर सकें, इस में अगर आप को अन्देशा हो कि अ़रब शिकायत करेंगे तो आप उन से कह दीजियेगा कि **अल्लाह** का हुक्म ही ऐसा था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **165 :** मा'सूम कर के **166 :** के अ़ज़ाब **167 :** या'नी अ़रब से। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने इत्तिफ़ाक़ कर के चाहा कि सब मिल कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सर ज़मीने अ़रब से बाहर कर दें लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन का येह इरादा पूरा न होने दिया और उन की येह मुराद बर न आई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **168 :** और जल्द हलाक कर दिये जाते। **169 :** या'नी जिस क़ौम ने अपने दरमियान से अपने रसूल को निकाला उन के लिये सुन्नते इलाही येही रही कि उन्हें हलाक कर दिया। **170 :** इस में ज़ोहर से इशा तक की चार नमाज़ें आ गईं। **171 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है और इस को क़ुरआन इस लिये फ़रमाया गया कि क़िराअत एक रुक्न है और जुज़ से कुल ता'बीर किया जाता है जैसा कि क़ुरआने करीम में नमाज़ को रुकूअ़ व सुजूद से भी ता'बीर किया गया है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि क़िराअत नमाज़ का रुक्न है। **172 :** या'नी नमाज़े फ़ज्र में रात

بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾ وَ قُلْ رَّبِّ

करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है[173] क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें[174] और यूं अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब

اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّىْ مِنْ

मुझे सच्ची तरह दाख़िल कर और सच्ची तरह बाहर ले जा[175] और मुझे

لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾ وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ

अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे[176] और फ़रमाओ कि ह़क़ आया और बात़िल मिट गया[177] बेशक

الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ

बात़िल को मिटना ही था[178] और हम क़ुरआन में उतारते हैं वोह चीज़[179] जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَ لَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾ وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى

है[180] और इस से ज़ालिमों को[181] नुक़्सान ही बढ़ता है और जब हम आदमी पर

के फ़िरिश्ते भी मौजूद होते हैं और दिन के फ़िरिश्ते भी आ जाते हैं। **173 तहज्जुद :** नमाज़ के लिये नींद को छोड़ने या बा'द इशा सोने के बा'द जो नमाज़ पढ़ी जाए उस को कहते हैं। नमाज़े तहज्जुद की ह़दीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ीलतें आई हैं, नमाज़े तहज्जुद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी, जुम्हूर का येही क़ौल है हुज़ूर की उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नत है। **मस्अला :** तहज्जुद की कम से कम दो रक्अ़तें और मुतवस्सित़ चार और ज़ियादा आठ हैं और सुन्नत येह है कि दो दो रक्अ़त की निय्यत से पढ़ी जाएं। **मस्अला :** अगर आदमी शब की एक तिहाई इ़बादत करना चाहे और दो तिहाई सोना तो शब के तीन हिस्से कर ले दरमियानी तिहाई में तहज्जुद पढ़ना अफ़्ज़ल है और अगर चाहे कि आधी रात सोए आधी रात इ़बादत करे तो निस्फ़े अख़ीर अफ़्ज़ल है। **मस्अला :** जो शख़्स नमाज़े तहज्जुद का आ़दी हो उस के लिये तहज्जुद तर्क करना मक्रूह है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है। (ردالمحتار) **174 :** और मक़ामे मह़मूद मक़ामे शफ़ाअ़त है कि इस में अव्वलीन व आख़िरीन हुज़ूर की ह़म्द करेंगे, इसी पर जुम्हूर हैं। **175 :** जहां भी मैं दाख़िल होऊं और जहां से भी मैं बाहर आऊं ख़्वाह वोह कोई मकान हो या मन्सब हो या काम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मुराद येह है कि मुझे क़ब्र में अपनी रिज़ा और त़हारत के साथ दाख़िल कर और वक़्ते बि'सत इ़ज़्ज़त व करामत के साथ बाहर ला। बा'ज़ ने कहा : मा'ना येह हैं कि मुझे अपनी त़ाअ़त में सिद्क़ के साथ दाख़िल कर और अपने मनाही (मम्नूअ़ कामों) से सिद्क़ के साथ ख़ारिज फ़रमा और इस के मा'ना में एक क़ौल येह भी है कि मन्सबे नुबुव्वत में मुझे सिद्क़ के साथ दाख़िल और सिद्क़ के साथ दुन्या से रुख़्सत के वक़्त नुबुव्वत के हुक़ूक़े वाजिबा से ओ़हदा बरआ फ़रमा। एक क़ौल येह भी है कि मुझे मदीनए त़य्यिबा में पसन्दीदा दाख़िला इनायत कर और मक्कए मुकर्रमा से मेरा ख़ुरूज सिद्क़ के साथ कर कि इस से मेरा दिल ग़मगीन न हो, मगर येह तौजीह इस सूरत में सह़ीह़ हो सकती है जब कि येह आयत मदनी न हो जैसा कि अ़ल्लामा सुयूत़ी ने "قِیْلَ" फ़रमा कर इस आयत के मदनी होने का क़ौल ज़ईफ़ होने की त़रफ़ इशारा किया। **176 :** वोह क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा जिस से मैं तेरे दुश्मनों पर ग़ालिब होऊं और वोह हुज्जत जिस से मैं हर मुख़ालिफ़ पर फ़त्ह़ पाऊं और वोह ग़लबए ज़ाहिरा जिस से मैं तेरे दीन को तक़्वियत दूं, येह दुआ़ क़बूल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब से उन के दीन को ग़ालिब करने और उन्हें दुश्मनों से मह़फ़ूज़ रखने का वा'दा फ़रमाया। **177 :** या'नी इस्लाम आया और कुफ़्र मिट गया या क़ुरआन आया और शैत़ान हलाक हुवा। **178 :** क्यूं कि अगर्चे बात़िल को किसी वक़्त में दौलत व सौलत (रो'ब व दबदबा) ह़ासिल हो मगर इस को पाएदारी नहीं, इस का अन्जाम बरबादी व ख़्वारी है। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रोज़े फ़त्ह़ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो का'बए मुक़द्दसा के गिर्द तीन सो साठ बुत नस्ब किये हुए थे जिन को लोहे और रांग (क़लई धात) से जोड़ कर मज़्बूत़ किया गया था, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी हुज़ूर येह आयत पढ़ कर इस लकड़ी से जिस बुत की त़रफ़ इशारा फ़रमाते जाते थे वोह गिरता जाता था। **179 :** सूरतें और आयतें **180 :** कि इस से अमराज़े ज़ाहिरा और बात़िना, ज़लालत व जहालत वग़ैरा दूर होते हैं और ज़ाहिरी व बात़िनी सिह़्ह़त ह़ासिल होती है, ए'तिक़ादाते बात़िला व अख़्लाक़े रज़ीला (ग़लत़ अ़क़ीदे और बुरे अख़्लाक़) दफ़्अ़ होते हैं और अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह व सिफ़ाते ह़मीदा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला (सह़ीह़ अ़क़ीदे, **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त व पहचान, बेहतरीन सिफ़ात और ज़बर दस्त अख़्लाक़) ह़ासिल होते हैं क्यूं कि येह किताबे मजीद ऐसे उ़लूम व दलाइल पर मुश्तमिल है जो वहमानी व शैत़ानी ज़ुल्मतों को

الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿۸۳﴾ قُلْ

एहसान करते हैं[182] मुंह फेर लेता है और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[183] और जब उसे बुराई पहुंचे[184] तो ना उम्मीद हो जाता है[185] तुम फ़रमाओ

كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿۸۴﴾ وَ ۹ ع ۹

सब अपने कैंडे (अन्दाज़) पर काम करते हैं[186] तो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कौन ज़ियादा राह पर है और

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

तुम से रूह़ को पूछते हैं तुम फ़रमाओ रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इल्म न मिला

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۸۵﴾ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ

मगर थोड़ा[187] और अगर हम चाहते तो येह वह्य जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ की उसे ले जाते[188] फिर तुम कोई न पाते कि

لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿۸۶﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ

तुम्हारे लिये हमारे हुज़ूर उस पर वकालत करता मगर तुम्हारे रब की रह़मत[189] बेशक तुम पर उस का

عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿۸۷﴾ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا

बड़ा फ़ज़्ल है[190] तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि[191] इस क़ुरआन

अपने अन्वार से नेस्तो नाबूद कर देते हैं और इस का एक एक ह़र्फ़ बरकात का गन्जीना है जिस से जिस्मानी अमराज़ और आसेब दूर होते हैं। **181 :** या'नी काफ़िरों को जो इस की तक्ज़ीब करते हैं। **182 :** या'नी काफ़िर पर कि उस को सिह़्ह़त और वुस्अ़त अ़त़ा फ़रमाते हैं तो वोह हमारे ज़िक्र व दुआ़ और त़ाअ़त व अदाए शुक्र से **183 :** या'नी तकब्बुर करता है। **184 :** कोई शिद्दत व ज़रर (तक्लीफ़ व नुक़्सान) और कोई फ़क़्र व ह़ादिसा (मुफ़्लिसी व सदमा) तो तज़र्रोअ़ व ज़ारी से (गिड़गिड़ाते और रोते हुए) दुआ़एं करता है और उन दुआ़ओं के क़बूल का असर ज़ाहिर नहीं होता। **185 :** मोमिन को ऐसा न चाहिये अगर इजाबते दुआ़ में ताख़ीर हो तो वोह मायूस न हो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहे। **186 :** हम अपने त़रीक़े पर तुम अपने त़रीक़े पर जिस का जौहरे ज़ात, शरीफ़ व त़ाहिर है, उस से अफ़्आ़ले जमीला व अख़्लाक़े पाकीज़ा सादिर होते हैं और जिस का नफ़्स ख़बीस है उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा रदिय्या सरज़द होते हैं। **187 :** क़ुरैश मश्वरे के लिये जम्अ़ हुए और उन में बाहम गुफ़्तगू येह हुई कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम में रहे और कभी हम ने उन को सिद्क़ो अमानत में कमज़ोर न पाया, कभी उन पर तोहमत लगाने का मौक़अ़ हाथ न आया, अब उन्हों ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया तो उन की सीरत और उन के चाल चलन पर कोई ऐ़ब लगाना तो मुम्किन नहीं है, यहूद से पूछना चाहिये कि ऐसी ह़ालत में क्या किया जाए? इस मत़लब के लिये एक जमाअ़त यहूद के पास भेजी गई, यहूद ने कहा कि उन से तीन सुवाल करो अगर तीनों के जवाब न दें तो वोह नबी नहीं और अगर तीनों का जवाब दे दें जब भी नबी नहीं और अगर दो का जवाब दे दें एक का जवाब न दें तो वोह सच्चे नबी हैं, वोह तीन सुवाल येह हैं : अस्ह़ाबे कह्फ़ का वाक़िआ़, ज़ुल क़रनैन का वाक़िआ़ और रूह़ का ह़ाल? चुनान्चे क़ुरैश ने हुज़ूर से येह सुवाल किये। आप ने अस्ह़ाबे कह्फ़ और ज़ुल क़रनैन के वाक़िआ़त तो मुफ़स्सल बयान फ़रमा दिये और रूह़ का मुआ़मला इब्हाम में रखा (या'नी पोशीदा रखा) जैसा कि तौरैत में मुब्हम रखा गया था। क़ुरैश येह सुवाल कर के नादिम हुए। इस में इख़्तिलाफ़ है कि सुवाल ह़क़ीक़ते रूह़ से था या इस की मख़्लूक़िय्यत से। जवाब दोनों का हो गया और आयत में येह भी बता दिया गया कि मख़्लूक़ का इल्म इल्मे इलाही के सामने क़लील है अगर्चे "مَآ اُوْتِيْتُمْ" का ख़ित़ाब यहूद के साथ ख़ास हो। **188 :** या'नी क़ुरआने करीम को सीनों और सह़ीफ़ों से मह़्व कर देते (मिटा देते) और इस का कोई असर बाक़ी न छोड़ते। **189 :** कि क़ियामत तक इस को बाक़ी रखा और हर तग़य्युर व तबद्दुल से मह़फ़ूज़ फ़रमाया। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि क़ुरआने पाक ख़ूब पढ़ो! इस से पहले कि क़ुरआने पाक उठा लिया जाए क्यूं कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक कि क़ुरआने पाक न उठाया जाए। **190 :** कि उस ने आप पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया और उस को बाक़ी व मह़फ़ूज़ रखा और आप को तमाम बनी आदम का सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन किया और मक़ामे मह़मूद अ़त़ा फ़रमाया। **191 :** बलाग़त और हुस्ने नज़्म व तरतीब और उ़लूमे ग़ैबिया व मआ़रिफ़े इलाहिय्यह में से किसी कमाल में।

www.dawateislami.net

بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

की मानिन्द ले आएं तो इस का मिस्ल न ला सकेंगे अगर्चे उन में एक दूसरे का

ظَهِیْرًا ﴿۸۸﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ٘ فَاَبٰۤى

मददगार हो[192] और बेशक हम ने लोगों के लिये इस कुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई तो अक्सर

اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۸۹﴾ وَ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ

आदमियों ने न माना मगर नाशुक्र करना[193] और बोले कि हम हरगिज़ तुम पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि तुम हमारे लिये

الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًاۙ ﴿۹۰﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ

ज़मीन से कोई चश्मा बहा दो[194] या तुम्हारे लिये खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो फिर तुम उस के अन्दर

192 शाने नुज़ूल : मुश्रिकीन ने कहा था कि हम चाहें तो इस कुरआन की मिस्ल बना लें, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने उन की तक्ज़ीब की, कि ख़ालिक़ के कलाम के मिस्ल मख़्लूक़ का कलाम हो ही नहीं सकता अगर वोह सब बाहम मिल कर कोशिश करें जब भी मुम्किन नहीं कि इस कलाम के मिस्ल ला सकें। चुनान्चे ऐसा ही हुवा तमाम कुफ़्फ़ार आ़जिज़ हुए और उन्हें रुस्वाई उठाना पड़ी और वोह एक सत़्र भी कुरआने करीम के मुक़ाबिल बना कर पेश न कर सके। **193 :** और ह़क़ से मुन्किर होना इख़्तियार किया। **194 शाने नुज़ूल :** जब कुरआने करीम का ए'जाज़ (मो'जिज़ा) ख़ूब ज़ाहिर हो चुका और मो'जिज़ाते वाज़ेह़ात ने हुज्जत क़ाइम कर दी और कुफ़्फ़ार के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही तो वोह लोगों को मुग़ालते में डालने के लिये त़रह़ त़रह़ की निशानियां त़लब करने लगे और उन्हों ने कह दिया कि हम हरगिज़ आप पर ईमान न लाएंगे। मरवी है कि कुफ़्फ़ारे कुरैश के सरदार का'बए मुअ़ज़्ज़मा में जम्अ़ हुए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुलवाया। हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने कहा कि हम ने आप को इस लिये बुलाया है कि आज गुफ़्तगू कर के आप से मुआ़मला तै कर लें ताकि हम फिर आप के ह़क़ में मा'ज़ूर समझे जाएं, अ़रब में कोई आदमी ऐसा नहीं हुवा जिस ने अपनी क़ौम पर वोह शदाइद किये हों जो आप ने किये हैं, आप ने हमारे बाप दादा को बुरा कहा, हमारे दीन को ऐब लगाए, हमारे दानिश मन्दों को कम अ़क़्ल ठहराया, मा'बूदों की तौहीन की, जमाअ़त मुतफ़र्रिक़ कर दी, कोई बुराई उठा न रखी, इस से तुम्हारी ग़रज़ क्या है? अगर तुम माल चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये इतना माल जम्अ़ कर दें कि हमारी क़ौम में तुम सब से ज़ियादा मालदार हो जाओ, अगर ए'ज़ाज़ चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें, अगर मुल्क व सल्त़नत चाहते हो तो हम तुम्हें बादशाह तस्लीम कर लें, येह सब बातें करने के लिये हम तय्यार हैं और अगर तुम्हें कोई दिमाग़ी बीमारी हो गई है या कोई ख़लिश (चुभन व दर्द) हो गया है तो हम तुम्हारा इ़लाज करें और इस में जिस क़दर ख़र्च हो उठाएं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन में से कोई बात नहीं और मैं माल व सल्त़नत व सरदारी किसी चीज़ का त़लब गार नहीं, वाक़िआ़ सिर्फ़ इतना है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे रसूल बना कर भेजा और मुझ पर अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि मैं तुम्हें उस के मानने पर **अल्लाह** की रिज़ा और ने'मते आख़िरत की बिशारत दूं और इन्कार करने पर अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाऊं, मैं ने तुम्हें अपने रब का पयाम पहुंचाया अगर तुम इसे क़बूल करो तो येह तुम्हारे लिये दुन्या व आख़िरत की ख़ुश नसीबी है और न मानो तो मैं सब्र करूंगा और **अल्लाह** के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। इस पर उन लोगों ने कहा : ऐ मुह़म्मद! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अगर आप हमारे मा'रूज़ात (पेशकश) को क़बूल नहीं करते हैं तो इन पहाड़ों को हटा दीजिये और मैदान साफ़ निकाल दीजिये और नहरें जारी कर दीजिये और हमारे मरे हुए बाप दादा को ज़िन्दा कर दीजिये हम उन से पूछ देखें कि आप जो फ़रमाते हैं क्या येह सच है? अगर वोह कह देंगे तो हम मान लेंगे। हुज़ूर ने फ़रमाया : मैं इन बातों के लिये नहीं भेजा गया, जो पहुंचाने के लिये मैं भेजा गया था वोह मैं ने पहुंचा दिया अगर तुम मानो तुम्हारा नसीब न मानो तो मैं ख़ुदाई फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा। कुफ़्फ़ार ने कहा : फिर आप अपने रब से अ़र्ज़ कर के एक फ़िरिश्ता बुलवा लीजिये जो आप की तस्दीक़ करे और अपने लिये बाग़ और मह़ल और सोने चांदी के ख़ज़ाने त़लब कीजिये। फ़रमाया कि मैं इस लिये नहीं भेजा गया, मैं बशीर व नज़ीर (ख़ुश ख़बरी देने और डर सुनाने वाला) बना कर भेजा गया हूं। इस पर कहने लगे : तो हम पर आस्मान गिरवा दीजिये और बा'ज़े उन में से येह बोले कि हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक आप **अल्लाह** को और फ़िरिश्तों को हमारे सामने न लाएं। इस पर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस मजलिस से उठ आए और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या आप के साथ उठा और आप से कहने लगा : ख़ुदा की क़सम! मैं कभी आप पर ईमान न लाऊंगा जब तक तुम सीढ़ी लगा कर आस्मान पर न चढ़ो और मेरी नज़रों के सामने वहां से एक किताब और फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त ले कर न आओ और ख़ुदा की क़सम! अगर येह भी करो तो मैं समझता हूं कि मैं फिर भी न मानूंगा। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब देखा कि येह लोग इस क़दर ज़िद और इनाद में हैं और इन की ह़क़ दुश्मनी ह़द से गुज़र गई है तो आप को उन की ह़ालत पर रन्ज हुवा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

اَلْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًاۙ(۹۱) اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَیْنَا

बहती नहरें रवां करो या तुम हम पर आस्मान गिरा दो जैसा तुम ने कहा है

كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ قَبِیْلًاۙ(۹۲) اَوْ یَكُوْنَ لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ

टुकड़े टुकड़े या अल्लाह और फ़िरिश्तों को ज़ामिन ले आओ[195] या तुम्हारे लिये तिलाई (सोने का) घर हो

اَوْ تَرْقٰى فِی السَّمَآءِؕ وَ لَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا

या तुम आस्मान में चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ जाने पर भी हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हम पर एक किताब न उतारो

نَّقْرَؤُهٗؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا۠(۹۳) وَ مَا مَنَعَ

जो हम पढ़ें तुम फ़रमाओ पाकी है मेरे रब को मैं कौन हूं मगर आदमी अल्लाह का भेजा हुवा[196] और किस बात ने

النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا

लोगों को ईमान लाने से रोका जब उन के पास हिदायत आई मगर उसी ने कि बोले क्या अल्लाह ने आदमी को रसूल

رَّسُوْلًا(۹۴) قُلْ لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓىٕكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَىٕنِّیْنَ لَنَزَّلْنَا

बना कर भेजा[197] तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते होते[198] चैन (इत्मीनान) से चलते तो उन पर

عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا(۹۵) قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَ

हम रसूल भी फ़िरिश्ता उतारते[199] तुम फ़रमाओ अल्लाह बस है गवाह मेरे

بَیْنَكُمْؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرًۢا بَصِیْرًا(۹۶) وَ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

तुम्हारे दरमियान[200] बेशक वोह अपने बन्दों को जानता देखता है और जिसे अल्लाह राह दे वोही

الْمُهْتَدِۚ وَ مَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِهٖؕ وَ نَحْشُرُهُمْ

राह पर है और जिसे गुमराह करे[201] तो उन के लिये उस के सिवा कोई हिमायत वाले न पाओगे[202] और हम उन्हें

195 : जो हमारे सामने तुम्हारे सिद्क़ (सच्चा होने) की गवाही दें। **196 :** मेरा काम अल्लाह का पयाम पहुंचा देना है, वोह मैं ने पहुंचा दिया, अब जिस क़दर मो'जिज़ात व आयात यक़ीन व इत्मीनान के लिये दरकार हैं उन से बहुत ज़ियादा मेरा परवर्दगार ज़ाहिर फ़रमा चुका, हुज्जत ख़त्म हो गई, अब येह समझ लो कि रसूल के इन्कार करने और आयाते इलाहिय्यह से मुकरने का क्या अन्जाम होता है। **197 :** रसूलों को बशर ही जानते रहे और उन के मन्सबे नुबुव्वत और अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए कमालात के मुक़िर और मो'तरिफ़ (इक़रार व ए'तिराफ़ करने वाले) न हुए, येही उन के कुफ़्र की अस्ल थी और इसी लिये वोह कहा करते थे कि कोई फ़िरिश्ता क्यूं नहीं भेजा गया, इस पर अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि ऐ ह़बीब ! इन से **198 :** वोही इस में बसते **199 :** क्यूं कि वोह उन की जिन्स से होता, लेकिन जब ज़मीन में आदमी बसते हैं तो उन का मलाएका में से रसूल त़लब करना निहायत ही बे जा है। **200 :** मेरे सिद्क़ व अदाए फ़र्ज़े रिसालत और तुम्हारे किज़्बो अ़दावत पर **201 :** और तौफ़ीक़ न दे **202 :** जो उन्हें हिदायत करें।

www.dawateislami.net

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا

क़ियामत के दिन उन के मुंह के बल[203] उठाएंगे अन्धे और गूंगे और बहरे[204] उन का ठिकाना जहन्नम है जब कभी

النصف

خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ قَالُوْۤا

बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे येह उन की सज़ा है उस पर कि उन्हों ने हमारी आयतों से इन्कार किया और बोले

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۹۸﴾ اَوَ لَمْ

क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तो क्या सचमुच हम नए बन कर उठाए जाएंगे और क्या

يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ يَّخْلُقَ

वोह नहीं देखते कि वोह अल्लाह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[205] उन लोगों की मिस्ल बना

مِثْلَهُمْ وَ جَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾

सकता है[206] और उस ने उन के लिये[207] एक मीआद ठहरा रखी है जिस में कुछ शुबा नहीं तो ज़ालिम नहीं मानते बे नाशुक्री किये[208]

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْۤ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ

तुम फ़रमाओ अगर तुम लोग मेरे रब की रह़मत के ख़ज़ानों के मालिक होते[209] तो उन्हें भी रोक रखते इस डर से कि ख़र्च

ع ۷

الْاِنْفَاقِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿۱۰۰﴾ ع وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ

न हो जाएं और आदमी बड़ा कन्जूस है और बेशक हम ने मूसा को नव रोशन

بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ

निशानियां दीं[210] तो बनी इसराईल से पूछो जब वोह[211] उन के पास आया तो उस से फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल

يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَاۤ اَنْزَلَ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ

में तो तुम पर जादू हुवा[212] कहा यक़ीनन तू ख़ूब जानता है[213] कि इन्हें न उतारा मगर

203 : घिसटता **204 :** जैसे वोह दुन्या में ह़क़ के देखने बोलने और सुनने से अन्धे, गूंगे, बहरे बने रहे, ऐसे ही उठाए जाएंगे। **205 :** ऐसे अ़ज़ीम व वसीअ़ वोह **206 :** येह उस की क़ुदरत से कुछ अ़जीब नहीं **207 :** अ़ज़ाब की या मौत व बअ़्स की **208 :** बा वुजूद दलीले वाज़ेह़ और ह़ुज्जत क़ाइम होने के **209 :** जिन की कुछ इन्तिहा नहीं **210 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : वोह नव निशानियां येह हैं : अ़सा, यदे बैज़ा, वोह उ़क़्दा जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की ज़बान मुबारक में था, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस को ह़ल फ़रमाया और दरिया का फटना और उस में रस्ते बनना, तूफ़ान, टीड़ी (टिड्डी दल), घुन, मेंडक, ख़ून। इन में से छ[6] आख़िर का मुफ़स्सल बयान नवें पारे के छटे रुकूअ़ में गुज़र चुका। **211 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام। **212 :** या'नी مَعَاذَ اللّٰہ जादू के असर से तुम्हारी अ़क़्ल बजा (दुरुस्त) न रही या "मस्ह़ूर" साह़िर के मा'ना में है और मतलब येह है कि येह अ़जाइब जो आप दिखलाते हैं येह जादू के करिश्मे हैं, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने **213 :** ऐ फ़िरऔ़न मुआ़निद ! (दुश्मनी रखने वाले)।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿۱۰۲﴾

आस्मानों और ज़मीन के मालिक ने दिल की आंखें खोलने वालियां[214] और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔन तू ज़रूर हलाक होने वाला है[215]

فَاَرَادَ اَنْ یَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِیْعًا ﴿۱۰۳﴾ۙ وَّ

तो उस ने चाहा कि उन को[216] ज़मीन से निकाल दे तो हम ने उसे और उस के साथियों सब को डुबो दिया[217] और

قُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ

इस के बा'द हम ने बनी इसराईल से फ़रमाया उस ज़मीन में बसो[218] फिर जब आख़िरत का वा'दा

الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِیْفًا ﴿۱۰۴﴾ؕ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ

आएगा[219] हम तुम सब को घालमेल ले आएंगे[220] और हम ने कुरआन को हक़ ही के साथ उतारा और हक़ ही के साथ उतरा[221] और

اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِیْرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ

وقف لازم

हम ने तुम्हें न भेजा मगर ख़ुशी और डर सुनाता और कुरआन हम ने जुदा जुदा कर के[222] उतारा कि तुम इसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो[223]

عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِیْلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ

और हम ने इसे ब तदरीज रह रह कर उतारा[224] तुम फ़रमाओ कि तुम लोग इस पर ईमान लाओ या न लाओ[225] बेशक वोह जिन्हें

اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾ۙ

इस के उतरने से पहले इल्म मिला[226] जब उन पर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं

214 : कि इन आयात से मेरा सिद्क़ और मेरा ग़ैर मस्हूर (जादू किया हुवा न) होना और इन आयात का ख़ुदा की त़रफ़ से होना ज़ाहिर है। **215 :** येह हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ से फ़िरऔन के उस क़ौल का जवाब है कि उस ने आप को मस्हूर कहा था मगर उस का क़ौल किज़्ब व बात़िल था जिसे वोह ख़ुद भी जानता था मगर उस के इनाद ने उस से कहलाया और आप का इर्शादे हक़ व सह़ीह़। चुनान्चे वैसा ही वाक़ेअ़ हुवा। **216 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को मिस्र की **217 :** और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को और उन की क़ौम को हम ने सलामती अ़त़ा फ़रमाई। **218 :** या'नी ज़मीने मिस्र व शाम में। (خازن وقرطبی) **219 :** या'नी क़ियामत। **220 :** मौक़िफ़ (मैदाने) क़ियामत में फिर सअ़दा (सआदत मन्दों) और अश्क़िया (बद बख़्तों) को एक दूसरे से मुमताज़ कर देंगे। **221 :** शयात़ीन के ख़ल्त़ (मिलने) से मह़फ़ूज़ रहा और किसी तग़य्युर ने इस में राह न पाई। तिब्यान में है कि ह़क़ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक है। **फ़ाएदा :** आयते शरीफ़ा का येह जुम्ला हर एक बीमारी के लिये अ़मले मुजर्रब है, मौज़ए मरज़ (मरज़ की जगह) पर हाथ रख कर पढ़ कर दम कर दिया जाए तो باذن اللہ बीमारी दूर हो जाती है। मुहम्मद बिन सम्माक बीमार हुए तो उन के मुतवस्सिलीन (अ़क़ीदत मन्द) क़ारूरा (पेशाब की शीशी) ले कर एक नसरानी त़बीब के पास ब ग़रज़े इलाज गए, राह में एक साहिब मिले, निहायत ख़ुशरू व ख़ुश लिबास (या'नी हश्शास बश्शास चेहरे और साफ़ सुथरे लिबास वाले), उन के जिस्म मुबारक से निहायत पाकीज़ा ख़ुश्बू आ रही थी, उन्हों ने फ़रमाया : कहां जाते हो ? उन लोगों ने कहा : इब्ने सम्माक का क़ारूरा दिखाने के लिये फ़ुलां त़बीब के पास जाते हैं। उन्हों ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! अल्लाह के वली के लिये ख़ुदा के दुश्मन से मदद चाहते हो ! क़ारूरा फेंको, वापस जाओ ! और उन से कहो कि मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर पढ़ो "بِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ" येह फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए। उन साह़िबों ने वापस हो कर इब्ने सम्माक से वाक़िआ़ बयान किया। उन्हों ने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर येह कलिमे पढ़े, फ़ौरन आराम हो गया और इब्ने सम्माक ने फ़रमाया कि वोह हज़रते ख़िज़्र थे عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ السَّلَام। **222 :** तेईस साल के अ़र्से में **223 :** ताकि इस के मज़ामीन ब आसानी सुनने वालों के ज़ेह्न नशीन होते रहें। **224 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए मसालेह़ व ह़वादिस (या'नी मुख़्तलिफ़ मस्लहतों और वाक़िआ़त की ज़रूरत के पेशे नज़र) **225 :** और अपने लिये ने'मते आख़िरत इख़्तियार करो या अ़ज़ाबे जहन्नम।

www.dawateislami.net

وَيَقُولُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّوْنَ

और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वा'दा पूरा होना था[227] और ठोड़ी

السجدة ٢ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا

के बल गिरते हैं[228] रोते हुए और येह क़ुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है[229] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** कह कर पुकारो या

الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

रह़मान कह कर जो कह कर पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं[230] और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न बिल्कुल आहिस्ता और इन दोनों के बीच में रास्ता चाहो[231] और यूं कहो सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस

لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

ने अपने लिये बच्चा इख़्तियार न फ़रमाया[232] और बादशाही में कोई उस का शरीक नहीं[233] और कमज़ोरी से कोई

ع ١٢ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾ ع

उस का ह़िमायती नहीं[234] और उस की बड़ाई बोलने को तक्बीर कहो[235]

اٰياتها ١١٠ ١٨ سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ ٦٩ ركوعاتها ١٢

सूरए कह्फ़ मक्किय्या है, इस में 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं

226 : या'नी मोमिनीन अहले किताब जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले इन्तिज़ार व जुस्तजू में थे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बि'सत के बा'द शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए जैसे कि ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल और सलमान फ़ारसी और अबू ज़र वग़ैरहुम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم । **227 :** जो उस ने अपनी पहली किताबों में फ़रमाया था कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को मब्ऊ़स फ़रमाएंगे। **228 :** अपने रब के हुज़ूर इज्ज़ो नियाज़ से नर्म दिली से **229 मस्अला :** क़ुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तह़ब है। तिरमिज़ी व नसाई की ह़दीस में है कि वोह शख़्स जहन्नम में न जाएगा जो ख़ौफ़े इलाही से रोए। **230 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने त़वील सज्दा किया और अपने सज्दे में "يَا اللهُ يَا رَحْمٰنُ" फ़रमाते रहे। अबू जहल ने सुना तो कहने लगा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें तो कई मा'बूदों के पूजने से मन्अ़ करते हैं और अपने आप दो को पुकारते हैं **अल्लाह** को और रह़मान को (مَعَاذَ الله)। इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया **अल्लाह** और रह़मान दो नाम एक ही मा'बूदे बरह़क़ के हैं ख़्वाह किसी नाम से पुकारो। **231 :** या'नी मुतवस्सित़ आवाज़ से पढ़ो जिस से मुक़्तदी ब आसानी सुन लें। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में जब अपने अस्ह़ाब की इमामत फ़रमाते तो क़िराअत बुलन्द आवाज़ से फ़रमाते। मुश्रिकीन सुनते तो क़ुरआने पाक को और उस के नाज़िल फ़रमाने वाले को और जिन पर नाज़िल हुवा उन सब को गालियां देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **232 :** जैसा कि यहूदो नसारा का गुमान है। **233 :** जैसा कि मुश्रिकीन कहते हैं। **234 :** या'नी वोह कमज़ोर नहीं कि उस को किसी ह़िमायती और मददगार की ह़ाजत हो। **235 :** ह़दीस शरीफ़ में है : रोज़े क़ियामत जन्नत की त़रफ़ सब से पहले वोही लोग बुलाए जाएंगे जो हर ह़ाल में **अल्लाह** की ह़म्द करते हैं। एक और ह़दीस में है कि बेहतरीन दुआ़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" है और बेहतरीन ज़िक्र "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه"। (ترمذی) मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक चार कलिमे बहुत प्यारे हैं "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه، اَللّٰهُ اَكْبَر، سُبْحَانَ اللّٰه، اَلْحَمْدُ لِلّٰه"। **फ़ाएदा :** इस आयत का नाम आयतुल इ़ज़्ज़ है। बनी अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बच्चे जब बोलना शुरूअ़ करते थे तो उन को सब से पहले येही आयत "قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ" सिखाई जाती थी।

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह़रबान निहायत रह़्म वाला[1]

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَنۡزَلَ عَلٰی عَبۡدِہِ الۡکِتٰبَ وَ لَمۡ یَجۡعَلۡ لَّہٗ عِوَجًا ؕ سکتۃ ﴿۱﴾

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपने बन्दे[2] पर किताब उतारी[3] और उस में अस्लन कजी न रखी (ज़रा भी टेढ़ापन न रखा)[4]

قَیِّمًا لِّیُنۡذِرَ بَاۡسًا شَدِیۡدًا مِّنۡ لَّدُنۡہُ وَ یُبَشِّرَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الَّذِیۡنَ

अ़द्ल वाली किताब कि[5] अल्लाह के सख़्त अ़ज़ाब से डराए और ईमान वालों को जो

یَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَہُمۡ اَجۡرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاکِثِیۡنَ فِیۡہِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

नेक काम करें बिशारत दे कि उन के लिये अच्छा सवाब है जिस में हमेशा रहेंगे

وَّ یُنۡذِرَ الَّذِیۡنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰہُ وَلَدًا ٭﴿۴﴾ مَا لَہُمۡ بِہٖ مِنۡ عِلۡمٍ وَّ لَا

और उन[6] को डराए जो कहते हैं कि अल्लाह ने अपना कोई बच्चा बनाया इस बारे में न वोह कुछ इ़ल्म रखते हैं न

لِاٰبَآئِہِمۡ ؕ کَبُرَتۡ کَلِمَۃً تَخۡرُجُ مِنۡ اَفۡوَاہِہِمۡ ؕ اِنۡ یَّقُوۡلُوۡنَ اِلَّا

उन के बाप दादा[7] कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह से निकलता है निरा (बिल्कुल) झूट कह

کَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّکَ بَاخِعٌ نَّفۡسَکَ عَلٰۤی اٰثَارِہِمۡ اِنۡ لَّمۡ یُؤۡمِنُوۡا بِہٰذَا

रहे हैं तो कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के पीछे अगर वोह इस बात पर[8] ईमान न लाएं

الۡحَدِیۡثِ اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلۡنَا مَا عَلَی الۡاَرۡضِ زِیۡنَۃً لَّہَا لِنَبۡلُوَہُمۡ

ग़म से[9] बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है[10] कि उन्हें आज़्माएं

اَیُّہُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَ اِنَّا لَجٰعِلُوۡنَ مَا عَلَیۡہَا صَعِیۡدًا جُرُزًا ؕ﴿۸﴾ اَمۡ

उन में किस के काम बेहतर हैं[11] और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर (चट्यल, बेकार) मैदान कर छोड़ेंगे[12] क्या

1 : इस सूरत का नाम सूरए कह्फ़ है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में एक सो दस आयतें और एक हज़ार पांच सो सतत्तर कलिमे और छ[6] हज़ार तीन सो साठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم। 3 : या'नी क़ुरआने पाक जो उस की बेहतरीन ने'मत और बन्दों के लिये नजात व फ़लाह़ का सबब है। 4 : न लफ़्ज़ी न मा'नवी न इस में इख़्तिलाफ़ न तनाक़ुज़। 5 : कुफ़्फ़ार को 6 : कुफ़्फ़ार 7 : ख़ालिस जहालत से येह बोहतान उठाते और ऐसी बात़िल बात बकते हैं। 8 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ पर। 9 : इस में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्लिये क़ल्ब फ़रमाई गई कि आप इन बे ईमानों के ईमान से मह़रूम रहने पर इस क़दर रन्जो ग़म न कीजिये और अपनी जाने पाक को इस ग़म से हलाकत में न डालिये। 10 : वोह ख़्वाह ह़ैवान हो या नबात या मआ़दिन (पहाड़ की कानें) या अन्हार (नहरें)। 11 : और कौन ज़ोहद इख़्तियार करता और मुह़र्रमात व मम्नूआ़त (ह़राम कर्दा और मन्अ़ की हुई चीज़ों) से बचता है। 12 : और आबाद होने के बा'द वीरान कर देंगे और नबात व अश्जार वग़ैरा जो चीज़ें ज़ीनत की थीं उन में से कुछ भी बाक़ी न रहेगा तो दुन्या की ना पाएदार ज़ीनत पर शेफ़्ता न हो।

حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝٩ اِذْ

तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के कनारे वाले[13] हमारी एक अ़जीब निशानी थे जब

اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ

उन जवानों ने[14] ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रह़मत दे[15] और हमारे

13 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रक़ीम उस वादी का नाम है जिस में अस्ह़ाबे कह्फ़ हैं। आयत में उन अस्ह़ाब की निस्बत फ़रमाया कि वोह **14 :** अपनी काफ़िर क़ौम से अपना ईमान बचाने के लिये **15 :** और हिदायत व नुसरत और रिज़्क़ व मग़्फ़िरत और दुश्मन से अम्न अ़ता फ़रमा। ''अस्ह़ाबे कह्फ़'' क़वी तरीन क़ौल येह है कि सात ह़ज़रात थे अगर्चे इन के नामों में किसी क़दर इख़्तिलाफ़ है लेकिन ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत पर जो ख़ाज़िन में है इन के नाम येह हैं : मक्सिलमीना, यम्लीख़ा, मरतूनस, बैनूनस, सारीनूनुस, ज़ू नवानिस, कश्फ़ैततूनूनस और उन के कुत्ते का नाम क़ित्मीर है। **ख़वास :** येह अस्मा लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मह़फ़ूज़ रहता है, सरमाए पर रख दिये जाएं तो चोरी नहीं होता, कश्ती या जहाज़ इन की बरकत से ग़र्क़ नहीं होता, भागा हुवा शख़्स इन की बरकत से वापस आ जाता है, कहीं आग लगी हो और येह अस्मा कपड़े में लिख कर डाल दिये जाएं तो वोह बुझ जाती है, बच्चे के रोने, बारी के बुख़ार, दर्दे सर, उम्मुस्सिब्यान, ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जान व माल की ह़िफ़ाज़त, अ़क़्ल की तेज़ी, क़ैदियों की आज़ादी के लिये येह अस्मा लिख कर ब त़रीक़े ता'वीज़ बाज़ू में बांधे जाएं। (جمل) **वाक़िआ़ :** ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द अहले इन्जील की ह़ालत अब्तर हो गई, वोह बुत परस्ती में मुब्तला हुए और दूसरों को बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे, उन में दक़्यानूस बादशाह बड़ा जाबिर था, जो बुत परस्ती पर राज़ी न होता उस को क़त्ल कर डालता, अस्ह़ाबे कह्फ़ शहर उफ़्सूस के शुरफ़ा व मुअ़ज़्ज़ीन में से ईमानदार लोग थे। दक़्यानूस के जब्रो ज़ुल्म से अपना ईमान बचाने के लिये भागे और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हुए, वहां सो गए, तीन सो बरस से ज़ियादा अ़र्से तक इसी ह़ाल में रहे। बादशाह को जुस्तजू से मा'लूम हुवा कि वोह ग़ार के अन्दर हैं तो उस ने हुक्म दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाए ताकि वोह उस में मर कर रह जाएं और वोह उन की क़ब्र हो जाए, येही उन की सज़ा है। उ़म्माले ह़ुकूमत (ह़ुकूमती ओ़ह्दे दारान) में से येह काम जिस के सिपुर्द किया गया वोह नेक आदमी था, उस ने उन अस्ह़ाब के नाम ता'दाद पूरा वाक़िआ़ रांग (एक नर्म धात) की तख़्ती पर कन्दा करा कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुन्याद के अन्दर मह़फ़ूज़ कर दिया। येह भी बयान किया गया है कि उसी त़रह़ एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मह़फ़ूज़ करा दी गई। कुछ अ़र्से बा'द दक़्यानूस हलाक हुवा, ज़माने गुज़रे, सल्त़नतें बदलीं, ता आंकि (यहां तक कि) एक नेक बादशाह फ़रमां रवा हुवा, उस का नाम बैदरूस था जिस ने अड़सठ साल ह़ुकूमत की, फिर मुल्क में फ़िर्क़ा बन्दी पैदा हुई और बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत आने के मुन्किर हो गए, बादशाह एक तन्हा मकान में बन्द हो गया और उस ने गिर्या व ज़ारी से बारगाहे इलाही में दुआ़ की : या रब ! कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिस से ख़ल्क़ को मुर्दों के उठने और क़ियामत आने का यक़ीन ह़ासिल हो, उसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह ह़ासिल करने के वासित़े उसी ग़ार को तज्वीज़ किया और दीवार गिरा दी, दीवार गिरने के बा'द कुछ ऐसी हैबत त़ारी हुई कि गिराने वाले भाग गए। अस्ह़ाबे कह्फ़ ब हुक्मे इलाही फ़रहां व शादां (मसरूर व ख़ुशहाल) उठे चेहरे शिगुफ़्ता, त़बीअ़तें ख़ुश, ज़िन्दगी की तरो ताज़गी मौजूद, एक ने दूसरे को सलाम किया नमाज़ के लिये खड़े हो गए, फ़ारिग़ हो कर यम्लीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइये और येह ख़बर भी लाइये कि दक़्यानूस का हम लोगों की निस्बत क्या इरादा है ? वोह बाज़ार गए और शहर पनाह के दरवाज़े पर इस्लामी अ़लामत देखी, नए नए लोग पाए, उन्हें ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के नाम की क़सम खाते सुना, तअ़ज्जुब हुवा येह क्या मुआ़मला है ? कल तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था, ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का नाम लेने से क़त्ल कर दिया जाता था, आज इस्लामी अ़लामतें शहर पनाह पर ज़ाहिर हैं, लोग बे ख़ौफ़ो ख़त़र ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के नाम की क़सम खाते हैं, फिर आप नान पुज़ (नानबाई) की दुकान पर गए, खाना ख़रीदने के लिये उस को दक़्यानूसी सिक्के का रुपिया दिया, जिस का चलन सदियों से मौक़ूफ़ हो गया था और इस का देखने वाला कोई भी बाक़ी न रहा था। बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना इन के हाथ आ गया है, उन्हें पकड़ कर ह़ाकिम के पास ले गए वोह नेक शख़्स था, उस ने भी उन से दरयाफ़्त किया कि ख़ज़ाना कहां है ? उन्हों ने कहा : ख़ज़ाना कहीं नहीं है, येह रुपिया हमारा अपना है। ह़ाकिम ने कहा : येह बात किसी त़रह़ क़ाबिले यक़ीन नहीं, इस में जो सनह (सिन) मौजूद है वोह तीन सो बरस से ज़ियादा का है और आप नौ जवान हैं, हम लोग बूढ़े हैं, हम ने तो कभी येह सिक्का देखा ही नहीं, आप ने फ़रमाया मैं जो दरयाफ़्त करूं वोह ठीक ठीक बताओ तो उ़क़्दा (मुआ़मला) ह़ल हो जाएगा, येह बताओ कि दक़्यानूस बादशाह किस ह़ाल व ख़याल में है ? ह़ाकिम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं, सेकड़ों बरस हुए जब एक बे ईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है। आप ने फ़रमाया : कल ही तो हम उस के ख़ौफ़ से जान बचा कर भागे हैं, मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीन हैं, चलो ! मैं तुम्हें उन से मिला दूं, ह़ाकिम और शहर के अ़माइद (मुअ़ज़्ज़ीन) और एक ख़ल्क़े कसीर उन के हमराह सरे ग़ार पहुंचे, अस्ह़ाबे कह्फ़ यम्लीख़ा के इन्तिज़ार में थे, कसीर लोगों के आने की आवाज़ और खटके सुन कर समझे कि यम्लीख़ा पकड़े गए और दक़्यानूसी फ़ौज हमारी जुस्तजू में आ रही है **अल्लाह** की ह़म्द और शुक्र बजा लाने लगे, इतने में येह लोग पहुंचे, यम्लीख़ा ने तमाम

www.dawateislami.net

لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِی الْكَهْفِ سِنِیْنَ

काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस

عَدَدًا ﴿۱۱﴾ ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾ ع

थपका[16] फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें[17] दो गुरौहों में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ

हम उन का ठीक ठीक ह़ाल तुम्हें सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और

زِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿۱۳﴾ وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ

हम ने उन को हिदायत बढ़ाई और हम ने उन के दिलों की ढारस बंधाई जब[18] खड़े हो कर बोले कि हमारा रब वोह है जो

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا

आस्मान और ज़मीन का रब है हम उस के सिवा किसी मा'बूद को न पूजेंगे ऐसा हो तो हम ने ज़रूर ह़द से गुज़री हुई

شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ

बात कही येह जो हमारी क़ौम है उस ने अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना रखे हैं क्यूं नहीं लाते

عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ وَ اِذِ

इन पर कोई रोशन सनद तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[19] और जब

क़िस्सा सुनाया, उन ह़ज़रात ने समझ लिया कि हम ब हुक्मे इलाही इतना त़वील ज़माना सोए और अब इस लिये उठाए गए हैं कि लोगों के लिये बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी हों, ह़ाकिम सरे ग़ार पहुंचा तो उस ने तांबे का सन्दूक़ देखा, उस को खोला तो तख़्ती बरआमद हुई, उस तख़्ती में उन अस्ह़ाब के अस्मा और उन के कुत्ते का नाम लिखा था, येह भी लिखा था कि येह जमाअ़त अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये दक़्यानूस के डर से इस ग़ार में पनाह गुज़ीन हुई। दक़्यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया। हम येह ह़ाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी ग़ार खुले तो लोग ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो जाएं, येह लौह़ पढ़ कर सब को तअ़ज्जुब हुवा और लोग अल्लाह की ह़म्दो सना बजा लाए कि उस ने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी जिस से मौत के बा'द उठने का यक़ीन ह़ासिल होता है। ह़ाकिम ने अपने बादशाह बैदरूस को वाक़िए़ की इत्तिलाअ़ दी, वोह उमरा व अ़माइद को ले कर ह़ाज़िर हुवा और सज्दए शुक्रे इलाही बजा लाया कि अल्लाह तआ़ला ने इस की दुआ़ क़बूल की। अस्ह़ाबे कह्फ़ ने बादशाह से मुआ़नक़ा किया और फ़रमाया हम तुम्हें अल्लाह के सिपुर्द करते हैं وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ अल्लाह तेरी और तेरे मुल्क की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नो इन्स के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वोह ह़ज़रात अपनी ख़्वाब गाहों की त़रफ़ वापस हो कर मसरूफ़े ख़्वाब हुए और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें वफ़ात दी। बादशाह ने साल (नामी एक दरख़्त) के सन्दूक़ में उन के अज्साद (जिस्मों) को मह़फ़ूज़ किया और अल्लाह तआ़ला ने रो'ब (जलाल व शानो शौकत) से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहां पहुंच सके। बादशाह ने सरे ग़ार (ग़ार के सिरे पर) मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक सुरूर (ख़ुशी) का दिन मुअ़य्यन किया, हर साल लोग ई़द की त़रह़ वहां आया करें। (خازن وغیرہ)

मस्अला : इस से मा'लूम हुवा कि सालिह़ीन में उ़र्स का मा'मूल क़दीम (पहले) से है। **16 :** या'नी उन्हें ऐसी नींद सुला दिया कि कोई आवाज़ बेदार न कर सके। **17 :** कि अस्ह़ाबे कह्फ़ के **18 :** दक़्यानूस बादशाह के सामने **19 :** और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराए फिर उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा।

www.dawateislami.net

اِعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ

तुम उन से और जो कुछ वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिये

مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا

अपनी रह़मत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ मह़बूब तुम सूरज को देखोगे कि जब

طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ

निकलता है तो उन के ग़ार से दहनी त़रफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन्हें बाईं त़रफ़

الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ

कतरा जाता है[20] ह़ालां कि वोह उस ग़ार के खुले मैदान में हैं[21] येह अल्लाह की निशानियों से है जिसे अल्लाह राह दे तो वोही

الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾ ع وَتَحْسَبُهُمْ

राह पर और जिसे गुमराह करे तो हरगिज़ उस का कोई ह़िमायती राह दिखाने वाला न पाओगे और तुम उन्हें

اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ وَكَلْبُهُمْ

जागता समझो[22] और वोह सोते हैं और हम उन की दाह्नी बाईं करवटें बदलते हैं[23] और उन का कुत्ता

بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا

अपनी कलाइयां फैलाए हुए है ग़ार की चौखट पर[24] ऐ सुनने वाले अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फेर कर भागे

وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ

और उन से हैबत में भर जाए[25] और यूंही हम ने उन को जगाया[26] कि आपस में एक दूसरे से अह़वाल पूछें[27] उन में

قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

एक कहने वाला बोला[28] तुम यहां कितनी देर रहे कुछ बोले कि एक दिन रहे या दिन से कम[29] दूसरे बोले तुम्हारा रब

20 : या'नी उन पर तमाम दिन साया रहता है और तुलूअ़ से ग़ुरूब तक किसी वक़्त भी धूप की गरमी उन्हें नहीं पहुंचती 21 : और ताज़ा हवाएं उन को पहुंचती हैं। 22 : क्यूं कि उन की आंखें खुली हैं। 23 : साल में एक मरतबा दसवीं मुह़र्रम को 24 : जब वोह करवट लेते हैं वोह भी करवट बदलता है। **फ़ाएदा :** तफ़्सीरे सा'लबी में है कि जो कोई इन कलिमात "وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ" को लिख कर अपने साथ रखे कुत्ते के ज़रर से अम्न में रहे। 25 : अल्लाह तआ़ला ने ऐसी हैबत से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई है कि उन तक कोई जा नहीं सकता। ह़ज़रते मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) जंगे रूम के वक़्त कह्फ़ की त़रफ़ गुज़रे तो उन्हों ने अस्ह़ाबे कह्फ़ पर दाख़िल होना चाहा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन्हें मन्अ़ किया और येह आयत पढ़ी, फिर एक जमाअ़त ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के हुक्म से दाख़िल हुई तो अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसी हवा चलाई कि सब जल गए। 26 : एक मुद्दते दराज़ के बा'द 27 : और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा देख कर उन का यक़ीन ज़ियादा हो और वोह उस की ने'मतों का शुक्र अदा करें। 28 : या'नी मक्सलमीना जो उन में सब से बड़े और उन के सरदार हैं। 29 : क्यूं कि वोह ग़ार में तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त दाख़िल हुए थे और जब उठे तो आफ़्ताब

أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوٓا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ إِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ

ख़ूब जानता है जितना तुम ठहरे[30] तो अपने में एक को येह चांदी ले कर[31] शहर में भेजो फिर वोह ग़ौर करे कि

أَيُّهَآ أَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ

वहां कौन सा खाना ज़ियादा सुथरा है[32] कि तुम्हारे लिये उस में से खाने को लाए और चाहिये कि नरमी करे और हरगिज़ किसी को तुम्हारी इत्तिलाअ़

أَحَدًا ﴿١٩﴾ إِنَّهُمْ إِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ أَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ

न दे बेशक अगर वोह तुम्हें जान लेंगे तो तुम्हें पथराव करेंगे[33] या अपने दीन[34] में फेर लेंगे

وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا أَنَّ

और ऐसा हुवा तो तुम्हारा कभी भला न होगा और इसी त़रह़ हम ने उन की इत्तिलाअ़ कर दी[35] कि लोग जान लें[36] कि

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ إِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ

अल्लाह का वा'दा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शुबा नहीं जब वोह लोग उन के मुआ़मले में बाहम

أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَّبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ

झगड़ने लगे[37] तो बोले इन के ग़ार पर कोई इमारत बनाओ इन का रब इन्हें ख़ूब जानता है वोह बोले जो

غَلَبُوْا عَلٰٓى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ

उस काम में ग़ालिब रहे थे[38] क़सम है कि हम तो इन पर मस्जिद बनाएंगे[39] अब कहेंगे[40] कि वोह तीन हैं

رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَ

चौथा उन का कुत्ता और कुछ कहेंगे पांच हैं छटा उन का कुत्ता बे देखे अलाव तुक्का (बे तुकी) बात[41] और

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بأنّ الثاء بعد الياء من النصف الأول و اللام الثانية من النصف الآخير ١٢

क़रीबे ग़ुरूब था, इस से उन्हों ने गुमान किया कि येह वोही दिन है। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि इज्तिहाद जाइज़ और ज़न्ने ग़ालिब की बिना पर क़ौल करना दुरुस्त है। **30 :** उन्हें या तो इल्हाम से मा'लूम हुवा कि मुद्दते दराज़ गुज़र चुकी या उन्हें कुछ ऐसे दलाइल व क़राइन मिले जैसे कि बालों और नाख़ुनों का बढ़ जाना। जिस से उन्हों ने येह ख़याल किया कि अ़र्सा बहुत गुज़र चुका। **31 :** या'नी दक़्यानूसी सिक्के के रुपे जो घर से ले कर आए थे और सोते वक़्त अपने सिरहाने रख लिये थे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसाफ़िर को ख़र्च साथ में रखना त़रीक़ए तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है चाहिये कि भरोसा **अल्लाह** पर रखे। **32 :** और उस में कोई शुबा हुरमत नहीं। **33 :** और बुरी त़रह़ क़त्ल करेंगे **34 :** या'नी जब्रो सितम से कुफ़्री मिल्लत **35 :** लोगों को दक़्यानूस के मरने और मुद्दत गुज़र जाने के बा'द **36 :** और बैदरूस की क़ौम में जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा होने का इन्कार करते हैं उन्हें मा'लूम हो जाए **37 :** या'नी उन की वफ़ात के बा'द उन के गिर्द इमारत बनाने में। **38 :** या'नी बैदरूस बादशाह और उस के साथी। **39 :** जिस में मुसल्मान नमाज़ पढ़ें और इन के क़ुर्ब से बरकत ह़ासिल करें। (مدارک) **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना अहले ईमान का क़दीम त़रीक़ा है और क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र फ़रमाना और इस को मन्अ़ न करना इस फ़े'ल के दुरुस्त होने की क़वी तरीन दलील है। **मस्अला :** इस से येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के जवार में बरकत ह़ासिल होती है इसी लिये अहलुल्लाह के मज़ारात पर लोग ह़ुसूले बरकत के लिये जाया करते हैं और इसी लिये क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और मूजिबे सवाब है। **40 :** नसरानी जैसा कि इन में से सय्यिद और आ़क़िब ने कहा **41 :** जो बे जाने कह दी किसी त़रह़ सह़ीह़ नहीं हो सकती।

يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّ ثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ

कुछ कहेंगे सात हैं[42] और आठवां उन का कुत्ता तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है[43] उन्हें नहीं जानते

اِلَّا قَلِيْلٌ ڬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَاۗءً ظَاهِرًا ۠ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ

मगर थोड़े[44] तो उन के बारे में[45] बहस न करो मगर इतनी ही बहस जो ज़ाहिर हो चुकी[46] और उन के[47] बारे में किसी किताबी से

ع ٣ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ

कुछ न पूछो और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह**

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ

चाहे[48] और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए[49] और यूं कह कि क़रीब है मेरा रब मुझे इस[50] से नज़्दीक तर

مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا

रास्ती (हिदायत) की राह दिखाए[51] और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस ठहरे

تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ

नव ऊपर[52] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ख़ूब जानता है वोह जितना ठहरे[53] उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब वोह क्या ही

42 : और येह कहने वाले मुसल्मान हैं **अल्लाह** तआला ने इन के क़ौल को साबित रखा क्यूं कि इन्हों ने जो कुछ कहा वोह नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इल्म हासिल कर के कहा। **43 :** क्यूं कि जहानों की तफ़ासील और काएनाते माज़िया व मुस्तक़्बिला का इल्म **अल्लाह** ही को है या जिस को वोह अ़ता फ़रमाए। **44 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं क़लील में से हूं जिन का आयत में इस्तिस्ना फ़रमाया। **45 :** अहले किताब से **46 :** और कुरआन में नाज़िल फ़रमा दी गई, आप इतने ही पर इक्तिफ़ा करें, इस मुआ़मले में यहूद के जहल का इज़्हार करने के दरपै न हों। **47 :** या'नी अस्हाबे कह्फ़ के **48 :** या'नी जब किसी काम का इरादा हो तो येह कहना चाहिये कि اِنْ شَآءَ اللّٰه ऐसा करूंगा, बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰه के न कहे। **शाने नुज़ूल :** अहले मक्का ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से जब अस्हाबे कह्फ़ का हाल दरयाफ़्त किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया : कल बताऊंगा और اِنْ شَآءَ اللّٰه नहीं फ़रमाया था, कई रोज़ वह्य नहीं आई फिर येह आयत नाज़िल हुई। **49 :** या'नी اِنْ شَآءَ اللّٰه कहना याद न रहे तो जब याद आए कह ले। हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जब तक उस मजलिस में रहे। इस आयत की तफ़्सीरों में कई क़ौल हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अगर किसी नमाज़ को भूल गया तो याद आते ही अदा करे। (بخاری و مسلم) बा'ज़ आ़रिफ़ीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अपने रब को याद कर जब तू अपने आप को भूल जाए। क्यूं कि ज़िक्र का कमाल येही है कि ज़ाकिर (ज़िक्र करने वाला) मज़्कूर (ज़िक्र किये जाने वाले) में फ़ना हो जाए :

ذکرو ذاکر محو گردد بالتمام جملگی مذکورماند والسلام

(**तरजमा :** ज़िक्र और ज़ाकिर दोनों मज़्कूर की ज़ात में इस त़रह फ़ना हो जाएं कि सिर्फ़ मज़्कूर ही बाक़ी रह जाए)

50 : वाक़िआए अस्हाबे कह्फ़ के बयान और इस की ख़बर देने **51 :** या'नी ऐसे मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए जो मेरी नुबुव्वत पर इस से भी ज़ियादा ज़ाहिर दलालत करें जैसे कि अम्बियाए साबिक़ीन के अह़वाल का बयान और ग़ुयूब का इल्म और क़ियामत तक पेश आने वाले हवादिस व वक़ाएअ़ का बयान और शक़्क़ुल क़मर और हैवानात से अपनी शहादतें दिलवाना वग़ैरहा। (خازن و جمل) **52 :** और अगर वोह इस मुद्दत में झगड़ा करें तो **53 :** उसी का फ़रमाना ह़क़ है। **शाने नुज़ूल :** नजरान के नसरानियों ने कहा था तीन सो बरस तो ठीक हैं और नव की ज़ियादती कैसी है इस का हमें इल्म नहीं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

بِهٖ وَ اَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ٘ وَّ لَا یُشْرِكُ فِیْ حُكْمِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾

देखता और क्या ही सुनता है[54] उस के सिवा उन का[55] कोई वाली नहीं और वोह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता

وَ اتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ۫ وَ لَنْ

और तिलावत करो जो तुम्हारे रब की किताब[56] तुम्हें वह्य हुई इस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[57] और हरगिज़

تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ

तुम उस के सिवा पनाह न पाओगे और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्हो शाम अपने रब को

بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ

पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते[58] और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम

زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَ اتَّبَعَ

दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार (ज़ीनत) चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह

هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ الثلث

अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हद से गुज़र गया और फ़रमा दो कि ह़क़ तुम्हारे रब की त़रफ़ से है[59] तो जो चाहे

فَلْیُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ

ईमान लाए और जो चाहे कुफ़्र करे[60] बेशक हम ने ज़ालिमों[61] के लिये वोह आग तय्यार कर रखी है जिस की दीवारें उन्हें घेर

سُرَادِقُهَا ؕ وَ اِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی الْوُجُوْهَ ؕ

लेंगी और अगर[62] पानी के लिये फ़रियाद करें तो उन की फ़रियाद रसी होगी उस पानी से कि चर्ख़ दिये (पिघले) हुए धात की त़रह है कि उन के मुंह भून (जला) देगा

بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَ سَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

क्या ही बुरा पीना[63] और दोज़ख़ क्या ही बुरी ठहरने की जगह बेशक जो ईमान लाए और नेक काम

54 : कोई ज़ाहिर और कोई बात़िन उस से छुपा नहीं। 55 : आस्मान और ज़मीन वालों का 56 : या'नी क़ुरआन शरीफ़। 57 : और किसी को इस के तब्दील व तग़य्युर की क़ुदरत नहीं 58 : या'नी इख़्लास के साथ हर वक़्त **अल्लाह** की त़ाअ़त में मश्ग़ूल रहते हैं। **शाने नुज़ूल :** सरदाराने कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हमें ग़ुरबा और शिकस्ता हालों के साथ बैठते शर्म आती है अगर आप उन्हें अपनी सोह़बत से जुदा कर दें तो हम इस्लाम ले आएं और हमारे इस्लाम ले आने से ख़ल्क़े कसीर इस्लाम ले आएगी। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 59 : या'नी उस की तौफ़ीक़ से और ह़क़ व बात़िल ज़ाहिर हो चुका, मैं तो मुसल्मानों को इन की ग़ुर्बत के बाइस तुम्हारी दिलजूई के लिये अपनी मजलिसे मुबारक से जुदा नहीं करूंगा। 60 : अपने अन्जाम व मआल को सोच ले और समझ ले कि 61 : या'नी काफ़िरों 62 : प्यास की शिद्दत से 63 : **अल्लाह** की पनाह। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : वोह ग़लीज़ पानी है रौग़ने ज़ैतून की तलछट की त़रह। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि जब वोह मुंह के क़रीब किया जाएगा तो मुंह की खाल उस से जल कर गिर पड़ेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि वोह पिघलाया हुवा रांग (सीसा) और पीतल है।

الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ جَنّٰتُ

किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों[64] उन के लिये बसने के

عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

बाग़ हैं उन के नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे[65]

وَّ یَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَى

और सब्ज़ कपड़े करेब (रेशम के बारीक) और क़नादीज़ (मोटे) के पहनेंगे वहां तख़्तों पर

الْاَرَآىِٕكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَ حَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَ اضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا ع ٤ ٩ ١٦

तक्या लगाए[66] क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह और उन के सामने

رَّجُلَیْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَیْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّ حَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ

दो मर्दों का हाल बयान करो[67] कि उन में एक को[68] हम ने अंगूरों के दो बाग़ दिये और उन को खजूरों से ढांप लिया और

جَعَلْنَا بَیْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَیْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَ لَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ

उन के बीच बीच में खेती रखी[69] दोनों बाग़ अपने फल लाए और उस में कुछ कमी

شَیْـًٔا ۙ وَّ فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَّ كَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَ هُوَ

न दी[70] और दोनों के बीच में हम ने नहर बहाई और वोह[71] फल रखता था[72] तो अपने साथी[73] से बोला और वोह

یُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّ اَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَ دَخَلَ جَنَّتَهٗ وَ هُوَ ظَالِمٌ

इस से रद्दो बदल (तबादलए ख़याल) करता था[74] मैं तुझ से माल में ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं[75] अपने बाग़ में गया[76] और अपनी जान पर ज़ुल्म

لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِیْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ

करता हुवा[77] बोला मुझे गुमान नहीं कि येह कभी फ़ना हो और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत

64 : बल्कि उन्हें उन की नेकियों की जज़ा देते हैं। 65 : हर जन्नती को तीन तीन कंगन पहनाए जाएंगे सोने और चांदी और मोतियों के। ह़दीसे सह़ीह़ में है कि वुज़ू का पानी जहां जहां पहुंचता है वोह तमाम आ'ज़ा बिहिश्ती ज़ेवरों से आरास्ता किये जाएंगे। 66 : शाहाना शानो शकोह के साथ होंगे। 67 : कि काफ़िर व मोमिन इस में ग़ौर कर के अपना अपना अन्जाम व मआल समझें और उन दो मर्दों का ह़ाल येह है 68 : या'नी काफ़िर को 69 : या'नी उन्हें निहायत बेहतरीन तरतीब के साथ मुरत्तब किया। 70 : बहार ख़ूब आई 71 : बाग़ वाला इस के इलावा और भी 72 : या'नी अम्वाले कसीरा, सोना, चांदी वग़ैरा हर क़िस्म की चीज़ें 73 : ईमानदार 74 : और इतरा कर और अपने माल पर फ़ख़्र कर के कहने लगा कि 75 : मेरा कुम्बा क़बीला बड़ा है, मुलाज़िम ख़िदमत गार नोकर चाकर बहुत हैं। 76 : और मुसल्मान का हाथ पकड़ कर उस को साथ ले गया, वहां उस को इफ़्तिख़ारन हर त़रफ़ लिये फिरा और हर हर चीज़ दिखाई। 77 : कुफ़्र के साथ और बाग़ की ज़ीनत व ज़ेबाइश और रौनक़ व बहार देख कर मग़रूर हो गया और।

قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ

क़ाइम हो और अगर मैं[78] अपने रब की त़रफ़ फिर कर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा[79] उस के साथी[80]

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ

ने उस से उलट फेर (बह़सो मुबाह़सा) करते हुए जवाब दिया क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे (साफ़ शफ़्फ़ाफ़) पानी की

نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿۳۷﴾ؕ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّىْۤ

बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया[81] लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि वोह **अल्लाह** ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं

اَحَدًا ﴿۳۸﴾ وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا

करता हूं और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर

بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿۳۹﴾ۚ فَعَسٰى رَبِّىْۤ اَنْ

अल्लाह की मदद का[82] अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता था[83] तो क़रीब है कि मेरा रब

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ

मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे[84] और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर

صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿۴۰﴾ۙ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۱﴾ وَ

मैदान (चट्यल बेकार) हो कर रह जाए[85] या इस का पानी ज़मीन में धंस जाए[86] फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके[87] और

اُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَاۤ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

उस के फल घेर लिये गए[88] तो अपने हाथ मलता रह गया[89] उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपनी टट्टियों (छप्परों) पर

عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّىْۤ اَحَدًا ﴿۴۲﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

गिरा हुवा था[90] और कह रहा है ऐ काश मैं ने अपने रब का किसी को शरीक न किया होता और उस के पास कोई जमाअ़त

78 : जैसा कि तेरा गुमान है बिलफ़र्ज़ 79 : क्यूं कि दुन्या में भी मैं ने बेहतरीन जगह पाई है। 80 : मुसल्मान 81 : अ़क़्लो बुलूग़ क़ुव्वतो त़ाक़त अ़त़ा की और तू सब कुछ पा कर काफ़िर हो गया। 82 : अगर तू बाग़ देख कर مَاشَآءَاللّٰه कहता और ए'तिराफ़ करता कि येह बाग़ और इस के तमाम मह़ासिल (पैदावार) व मनाफ़ेअ़ **अल्लाह** तआ़ला की मशिय्यत और उस के फ़ज़्लो करम से हैं और सब कुछ उस के इख़्तियार में है, चाहे इस को आबाद रखे चाहे वीरान करे, ऐसा कहता तो येह तेरे ह़क़ में बेहतर होता, तू ने ऐसा क्यूं नहीं कहा ? 83 : इस वज्ह से तकब्बुर में मुब्तला था और अपने आप को बड़ा समझता था 84 : दुन्या में या उ़क़्बा में 85 : कि इस में सब्ज़े का नामो निशान बाक़ी न रहे 86 : नीचे चला जाए कि किसी त़रह़ निकाला न जा सके 87 : चुनान्चे ऐसा ही हुवा अ़ज़ाब आया 88 : और बाग़ बिल्कुल वीरान हो गया। 89 : पशेमानी और ह़सरत से 90 : इस ह़ाल को पहुंच कर उस को मोमिन की नसीह़त याद आती है और अब वोह समझता है कि येह उस के कुफ़्र व सरकशी का नतीजा है।

فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿۴۳﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

न थी कि **अल्लाह** के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने (के) क़ाबिल था[91] यहां खुलता है[92] कि इख़्तियार

ع ٥ ١٧ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ عُقْبًا ﴿۴۴﴾ ع وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ

सच्चे **अल्लाह** का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सब से भला और उन के सामने[93] ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत

الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ

बयान करो[94] जैसे एक पानी हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर निकला[95] कि सूखी घास

هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ

हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं[96] और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ाबू वाला है[97] माल

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ

और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार (ज़ीनत) है[98] और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें[99] उन का सवाब

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ

तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे[100] और तुम ज़मीन को साफ़ खुली हुई

بَارِزَةً ۙ وَّ حَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ ج وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ

देखोगे[101] और हम उन्हें उठाएंगे[102] तो उन में से किसी को छोड़ न देंगे और सब तुम्हारे रब के हुज़ूर परा बांधे (सफ़ें बनाए) पेश

صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ

होंगे[103] बेशक तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार बनाया था[104] बल्कि तुम्हारा गुमान था कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वा'दे का

---

91 : कि ज़ाएअ़ शुदा चीज़ को वापस कर सकता। **92 :** और ऐसे हालात में मा'लूम होता है **93 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **94 :** कि इस की हालत ऐसी है **95 :** ज़मीन तरो ताज़ा हुई फिर क़रीब ही ऐसा हुवा **96 :** और परागन्दा कर दें। **97 :** पैदा करने पर भी और फ़ना करने पर भी, इस आयत में दुन्या की तरी व ताज़गी और बहजत व शादमानी (ख़ुशी व मसर्रत) और इस के फ़ना व हलाक होने की सब्ज़ा से तम्सील फ़रमाई गई कि जिस त़रह सब्ज़ा शादाब हो कर फ़ना हो जाता है और उस का नामो निशान बाक़ी नहीं रहता येही हालत दुन्या की हयाते बे ए'तिबार की है, इस पर मग़रूर व शैदा होना अ़क़्ल का काम नहीं। **98 :** राहे क़ब्रो आख़िरत के लिये तोशा नहीं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि माल व औलाद दुन्या की खेती हैं और आ'माले सालिहा आख़िरत की और **अल्लाह** तआ़ला अपने बहुत से बन्दों को येह सब अ़ता फ़रमाता है। **99 :** बाक़ियाते सालिहात से आ'माले ख़ैर मुराद हैं जिन के समरे इन्सान के लिये बाक़ी रहते हैं जैसे कि पन्जगाना नमाज़ें और तस्बीह व तह़मीद। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बाक़ियाते सालिहात की कसरत का हुक्म फ़रमाया। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि वोह क्या हैं? फ़रमाया : ''اَللّٰهُ اَكْبَر، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه'' पढ़ना। **100 :** कि अपनी जगह से उखड़ कर अब्र (बादलों) की त़रह रवाना होंगे **101 :** न इस पर कोई पहाड़ होगा न इमारत न दरख़्त **102 :** क़ब्रों से और मौक़िफ़ हिसाब (ह़श्र के मैदान) में हाज़िर करेंगे। **103 :** हर हर उम्मत की जमाअ़त की क़ित़ारें अ़लाहदा अ़लाहदा, **अल्लाह** तआ़ला उन से फ़रमाएगा **104 :** ज़िन्दा बरहना तन (नंगे बदन) व बरहना पा (नंगे पाउं) बे ज़रो माल।

لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا
वक़्त न रखेंगे[105] और नामए आ'माल रखा जाएगा[106] तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उस के लिखे से डरते

فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا
होंगे और[107] कहेंगे हाए ख़राबी हमारी इस नविश्ते (तहरीर) को क्या हुवा न इस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न

كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
बड़ा जिसे घेर न लिया हो और अपना सब किया उन्हों ने सामने पाया और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म

اَحَدًا ﴿٤٩﴾ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ ع ٦ ٥ ١٨
नहीं करता[108] और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो[109] तो सब ने सज्दा किया सिवा इब्लीस

كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ
कि क़ौमे जिन्न से था तो अपने रब के हुक्म से निकल गया[110] भला क्या उसे और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ
बनाते हो[111] और वोह तुम्हारे दुश्मन हैं ज़ालिमों को क्या ही बुरा बदल (बदला) मिला[112] न मैं ने

خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
आस्मानों और ज़मीन को बनाते वक़्त उन्हें सामने बिठा लिया था न ख़ुद उन के बनाते वक़्त और न मेरी शान कि

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
गुमराह करने वालों को बाज़ू बनाऊं[113] और जिस दिन फ़रमाएगा[114] कि पुकारो मेरे शरीकों को जो तुम गुमान करते थे

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ
तो उन्हें पुकारेंगे वोह उन्हें जवाब न देंगे और हम उन के[115] दरमियान एक हलाकत का मैदान कर देंगे[116] और मुजरिम दोज़ख़ को

105 : जो वा'दा कि हम ने ज़बाने अम्बिया पर फ़रमाया था, येह उन से फ़रमाया जाएगा जो लोग मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने और क़ियामत क़ाइम होने के मुन्किर थे। 106 : हर शख़्स का आ'माल नामा उस के हाथ में, मोमिन का दाहने में, काफ़िर का बाएं में। 107 : उस में अपनी बदियां लिखी देख कर 108 : न किसी पर बे जुर्म अ़ज़ाब करे न किसी की नेकियां घटाए। 109 : तहिय्यत का 110 : और बा वुजूद मामूर होने के उस ने सज्दा न किया, तो ऐ बनी आदम ! 111 : और उन की इत़ाअ़त इख़्तियार करते हो। 112 : कि बजाए त़ाअ़ते इलाही बजा लाने के त़ाअ़ते शैत़ान में मुब्तला हुए। 113 : मा'ना येह हैं कि अश्या के पैदा करने में मुतफ़र्रिद और यगाना हूं, न मेरा कोई शरीके अ़मल न कोई मुशीरे कार, फिर मेरे सिवा और किसी की इबादत किस त़रह दुरुस्त हो सकती है। 114 : अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार से 115 : या'नी बुतों और बुत परस्तों के या अहले हुदा और अहले ज़लाल (गुमराहों) के 116 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि "मौबिक़" जहन्नम की एक वादी का नाम है।

www.dawateislami.net

ع ۷ ۱۹

النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَ لَمْ یَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿۵۳﴾ع وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا

देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि उन्हें इस में गिरना है और उस से फिरने की कोई जगह न पाएंगे और बेशक हम ने

فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ

लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मसल (मिसालें) त़रह़ त़रह़ बयान फ़रमाई[117] और आदमी हर चीज़ से बढ़ कर

جَدَلًا ﴿۵۴﴾ وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَ یَسْتَغْفِرُوْا

झगड़ालू है[118] और आदमियों को किस चीज़ ने इस से रोका कि ईमान लाते जब हिदायत[119] उन के पास आई और अपने रब से मुआफ़ी

رَبَّهُمْ اِلَّاۤ اَنْ تَاْتِیَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ اَوْ یَاْتِیَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿۵۵﴾ وَ

मांगते[120] मगर येह कि उन पर अगलों का दस्तूर आए[121] या उन पर क़िस्म क़िस्म का अ़ज़ाब आए और

مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَۚ وَ یُجَادِلُ الَّذِیْنَ

हम रसूलों को नहीं भेजते मगर[122] खु़शी और[123] डर सुनाने वाले और जो काफ़िर हैं

كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِیُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَ اتَّخَذُوْۤا اٰیٰتِیْ وَ مَاۤ اُنْذِرُوْا

वोह बात़िल के साथ झगड़ते हैं[124] कि उस से ह़क़ को हटावें और उन्हों ने मेरी आयतों की और जो डर उन्हें सुनाए गए थे[125] उन की

هُزُوًا ﴿۵۶﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَ نَسِیَ مَا

हंसी बना ली और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो वोह उन से मुंह फेर ले[126] और उस के हाथ जो आगे भेज चुके[127]

قَدَّمَتْ یَدٰهُؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ

उसे भूल जाए हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिये हैं कि क़ुरआन न समझें और उन के कानों में

وَقْرًاؕ وَ اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ یَّهْتَدُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿۵۷﴾ وَ رَبُّكَ

गिरानी (नक़्स)[128] और अगर तुम उन्हें हिदायत की त़रफ़ बुलाओ तो जब भी हरगिज़ कभी राह न पाएंगे[129] और तुम्हारा रब

117 : ताकि समझें और पन्द पज़ीर हों। **118 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि यहां आदमी से मुराद नज़्र इब्ने ह़ारिस है और झगड़े से इस का क़ुरआने पाक में झगड़ा करना। बा'ज़ ने कहा : उबय बिन ख़लफ़ मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तमाम कुफ़्फ़ार मुराद हैं। बा'ज़ के नज़्दीक आयत उ़मूम पर है और येही असह़्ह़ (ज़ियादा सह़ीह़ क़ौल) है। **119 :** या'नी "क़ुरआने करीम" या "रसूले मुकर्रम" صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की ज़ाते मुबारक **120 :** मा'ना येह हैं कि उन के लिये जाए उ़ज़्र नहीं है क्यूं कि उन्हें ईमान व इस्तिग़फ़ार से कोई मानेअ़ नहीं। **121 :** या'नी वोह हलाकत जो मुक़द्दर है उस के बा'द **122 :** ईमानदारों इत़ाअ़त शिआ़रों के लिये सवाब की **123 :** बे ईमानों ना फ़रमानों के लिये अ़ज़ाब का **124 :** और रसूलों को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। **125 :** अ़ज़ाब के **126 :** और पन्द पज़ीर न हो और उन पर ईमान न लाए **127 :** या'नी मा'सियत और गुनाह और ना फ़रमानी जो कुछ उस ने किया **128 :** कि ह़क़ बात नहीं सुनते **129 :** येह उन के ह़क़ में है जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं।

الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ یُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ

बख़्शने वाला मेह्र (रह्मत) वाला है अगर वोह उन्हें[130] उन के किये पर पकड़ता तो जल्द उन पर अ़ज़ाब भेजता[131]

بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ یَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىٕلًا ۝٥٨ وَ تِلْكَ الْقُرٰۤى اَهْلَكْنٰهُمْ

बल्कि उन के लिये एक वा'दे का वक़्त है[132] जिस के सामने कोई पनाह न पाएंगे और येह बस्तियां हम ने तबाह कर दीं[133]

لَمَّا ظَلَمُوْا وَ جَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝٥٩ ع وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ

ع ٨ ٢٠

जब उन्हों ने ज़ुल्म किया[134] और हम ने उन की बरबादी का एक वा'दा रखा था और याद करो जब मूसा[135] ने अपने ख़ादिम से कहा[136] मैं

اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَیْنِ اَوْ اَمْضِیَ حُقُبًا ۝٦٠ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

बाज़ न रहूंगा जब तक वहां न पहुंचूं जहां दो समुन्दर मिले हैं[137] या क़रनों चला (मुद्दतों चलता) जाऊं[138] फिर जब वोह दोनों उन दरियाओं के

بَیْنِهِمَا نَسِیَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ سَرَبًا ۝٦١ فَلَمَّا جَاوَزَا

मिलने की जगह पहुंचे[139] अपनी मछली भूल गए और उस ने समुन्दर में अपनी राह ली सुरंग बनाती फिर जब वहां से गुज़र गए[140]

قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ؗ لَقَدْ لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝٦٢ قَالَ

मूसा ने ख़ादिम से कहा हमारा सुब्ह का खाना लाओ बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा[141] बोला

اَرَءَیْتَ اِذْ اَوَیْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّیْ نَسِیْتُ الْحُوْتَ ؗ وَ مَاۤ اَنْسٰنِیْهُ

भला देखिये तो जब हम ने उस चट्टान के पास जगह ली थी तो बेशक मैं मछली को भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुला दिया

اِلَّا الشَّیْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَ اتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝٦٣ قَالَ

कि मैं उस का मज़्कूर (ज़िक्र) करूं और उस ने[142] तो समुन्दर में अपनी राह ली अचम्बा (अ़जीब बात) है मूसा ने कहा

130 : दुन्या ही में **131 :** लेकिन उस की रह़मत है कि उस ने मोहलत दी और अ़ज़ाब में जल्दी न फ़रमाई। **132 :** या'नी रोज़े क़ियामत बअ़्स व ह़िसाब का दिन **133 :** वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया और वोह बस्तियां वीरान हो गईं। इन बस्तियों से क़ौमे लूत़ व आ़द व समूद वग़ैरा की बस्तियां मुराद हैं। **134 :** ह़क़ को न माना और कुफ़्र इख़्तियार किया। **135 :** इब्ने इमरान नबिय्ये मोह़तरम साह़िबे तौरैत व मो'जिज़ाते ज़ाहिरा **136 :** जिन का नाम यूशअ़ इब्ने नून है जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत व सोह़बत में रहते थे और आप से इ़ल्म अख़्ज़ करते थे और आप के बा'द आप के वली अ़ह्द हैं। **137 :** बह़्रे फ़ारस व बह़्रे रूम जानिबे मशरिक़ में और मज्मउ़ल बह़्रैन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की मुलाक़ात का वा'दा दिया गया था, इस लिये आप ने वहां पहुंचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया और फ़रमाया कि मैं अपनी सई जारी रखूंगा जब तक कि वहां पहुंचूं। **138 :** अगर वोह जगह दूर हो, फिर येह ह़ज़रात रोटी और नमकीन भुनी मछली ज़म्बील में तोशे के त़ौर पर ले कर रवाना हुए **139 :** जहां एक पथ्थर की चट्टान थी और चश्मए ह़यात था तो वहां दोनों ह़ज़रात ने इस्तिराह़त की और मसरूफ़े ख़्वाब हो गए, भुनी हुई मछली ज़म्बील में ज़िन्दा हो गई और तड़प कर दरिया में गिरी और उस पर से पानी का बहाव रुक गया और एक मेह़राब सी बन गई। ह़ज़रते यूशअ़ को बेदार होने के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से उस का ज़िक्र करना याद न रहा। चुनान्चे, इर्शाद होता है **140 :** और चलते रहे यहां तक कि दूसरे रोज़ खाने का वक़्त आया तो ह़ज़रत **141 :** थकान भी है भूक की शिद्दत भी है और येह बात जब तक मज्मउ़ल बह़्रैन पहुंचे थे पेश न आई थी, मन्ज़िले मक़्सूद से आगे बढ़ कर तकान और भूक मा'लूम हुई, इस में **अल्लाह** तआ़ला की ह़िक्मत थी कि मछली याद करें और उस की त़लब में मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ वापस हों, ह़ज़रते

www.dawateislami.net

الكهف ١٨ 561 سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ ١٥

ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿۶۴﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا

यही तो हम चाहते थे[143] तो पीछे पलटे अपने क़दमों के निशान देखते तो हमारे बन्दों

مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿۶۵﴾ قَالَ

में से एक बन्दा पाया[144] जिसे हम ने अपने पास से रहमत दी[145] और उसे अपना इल्मे लदुन्नी अ़ता किया[146] उस से

لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿۶۶﴾ قَالَ اِنَّكَ

मूसा ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ रहूं इस शर्त़ पर कि तुम मुझे सिखा दोगे नेक बात जो तुम्हें ता'लीम हुई[147] कहा आप

لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۶۷﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿۶۸﴾

मेरे साथ हरगिज़ न ठहर सकेंगे[148] और उस बात पर क्यूंकर सब्र करेंगे जिसे आप का इल्म मुहीत़ नहीं[149]

قَالَ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَاۤ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿۶۹﴾ قَالَ فَاِنِ

कहा अ़न्क़रीब **अल्लाह** चाहे तो तुम मुझे साबिर पाओगे और मैं तुम्हारे किसी हुक्म के ख़िलाफ़ न करूंगा कहा तो अगर आप मेरे

ع ۹/۱۱/۲۱ اتَّبَعْتَنِیْ فَلَا تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿۷۰﴾ ع

साथ रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र न करूं[150]

मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के येह फ़रमाने पर ख़ादिम ने मा'ज़िरत की और **142 :** या'नी मछली ने **143 :** मछली का जाना ही तो हमारे हुसूले मक़्सद की अ़लामत है और जिन की त़लब में हम चले हैं उन की मुलाक़ात वहीं होगी। **144 :** जो चादर ओढ़े आराम फ़रमा रहा था, येह ह़ज़रते ख़िज़्र थे عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, लफ़्ज़े ख़िज़्र लुग़त में तीन त़रह आया है ब कसरे **خا** व सुकूने **ضاد** और ब फ़त्हे **خا** व सुकूने **ضاد** और ब फ़त्हे **خا** व कसरे **ضاد**, येह लक़ब है और वज्ह इस लक़ब की येह है कि जहां बैठते या नमाज़ पढ़ते हैं वहां अगर घास ख़ुश्क हो तो सर सब्ज़ हो जाती है, नाम आप का बल्या बिन मल्कान और कुन्यत अबुल अ़ब्बास है। एक क़ौल येह है कि आप बनी इसराईल में से हैं, एक क़ौल येह है कि आप शाहज़ादे हैं, आप ने दुन्या तर्क कर के ज़ोहद इख़्तियार फ़रमाया। **145 :** इस रह़मत से या नुबुव्वत मुराद है या विलायत या इल्म या तूले ह़यात, आप वली तो बिल यक़ीन हैं, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। **146 :** या'नी ग़ुयूब का इल्म। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया **: इल्मे लदुन्नी** वोह है जो बन्दे को ब त़रीक़े इल्हाम ह़ासिल हो। ह़दीस शरीफ़ में है : जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि सफ़ेद चादर में लिपटे हुए हैं तो आप ने उन्हें सलाम किया। उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी सर ज़मीन में सलाम कहां? आप ने फ़रमाया कि मैं मूसा हूं। उन्हों ने कहा कि बनी इसराईल के मूसा? फ़रमाया कि जी हां फिर **147 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को इल्म की त़लब में रहना चाहिये ख़्वाह कितना ही बड़ा आ़लिम हो। **मस्अला :** येह भी मा'लूम हुवा कि जिस से इल्म सीखे उस के साथ ब तवाज़ोअ़ व अदब पेश आए। (مدارک) ख़िज़्र ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जवाब में **148 :** ह़ज़रते ख़िज़्र ने येह इस लिये फ़रमाया कि वोह जानते थे कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उमूरे मुन्करा व मम्नूआ़ देखेंगे और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से मुम्किन ही नहीं कि वोह मुन्करात देख कर सब्र कर सकें, फिर ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इस तर्के सब्र का उ़ज़्र भी ख़ुद ही बयान फ़रमा दिया और फ़रमाया **149 :** और ज़ाहिर में वोह मुन्कर हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि एक इल्म **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ को ऐसा अ़त़ा फ़रमाया जो आप नहीं जानते और एक इल्म आप को ऐसा अ़त़ा फ़रमाया जो मैं नहीं जानता। मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन कहते हैं कि जो इल्म ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने लिये ख़ास फ़रमाया वोह इल्मे बात़िन व मुकाशफ़ा है और अहले कमाल के लिये येह बाइ़से फ़ज़्ल है। चुनान्चे वारिद हुवा है कि सिद्दीक़ को नमाज़ वग़ैरा आ'माल की बिना पर सह़ाबा पर फ़ज़ीलत नहीं बल्कि उन की फ़ज़ीलत इस चीज़ से है जो उन के सीने में है या'नी इल्मे बात़िन व इल्मे असरार, क्यूं कि जो अफ़्आ़ल सादिर होंगे वोह ह़िक्मत से होंगे अगर्चे ब ज़ाहिर ख़िलाफ़ मा'लूम हों। **150 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शागिर्द और मुस्तर्शिद (मुरीद) के आदाब में से है कि वोह शैख़ व उस्ताद के अफ़्आ़ल पर ज़बाने ए'तिराज़ न खोले और मुन्तज़िर रहे कि वोह ख़ुद ही उस की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमावें। (مدارک وابوالسعود)

اَلْمَنْزِلُ الرَّابِع ﴿4﴾

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ

अब दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सुवार हुए[151] उस बन्दे ने उसे चीर डाला[152] मूसा ने कहा क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को

اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا اِمْرًا (۷۱) قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ

डुबा दो बेशक येह तुम ने बुरी बात की[153] कहा मैं न कहता था कि आप मेरे साथ हरगिज़ न

مَعِیَ صَبْرًا (۷۲) قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ بِمَا نَسِیْتُ وَ لَا تُرْهِقْنِیْ مِنْ اَمْرِیْ

ठहर सकेंगे[154] कहा मुझ से मेरी भूल पर गिरिफ़्त न करो[155] और मुझ पर मेरे काम में मुश्किल

عُسْرًا (۷۳) فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤى اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا

न डालो फिर दोनों चले[156] यहां तक कि जब एक लड़का मिला[157] उस बन्दे ने उसे क़त्ल कर दिया मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी

زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَیْــٴًـا نُّكْرًا (۷۴)

जान[158] बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की

151 : और कश्ती वालों ने हज़रते ख़िज़्र عَلَیْهِ السَّلَام को पहचान कर बिग़ैर मुआवज़ा के सुवार कर लिया। 152 : और बसूले (लकड़ी छीलने के औज़ार) या कुल्हाड़ी से उस का एक तख़्ता या दो तख़्ते उखाड़ डाले लेकिन बा वुजूद इस के पानी कश्ती में न आया। 153 : हज़रते ख़िज़्र ने 154 : हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने 155 : क्यूं कि भूल पर शरीअ़त में गिरिफ़्त नहीं। 156 : या'नी कश्ती से उतर कर एक मक़ाम पर गुज़रे जहां लड़के खेल रहे थे। 157 : जो उन में ख़ूब सूरत था और हृदे बुलूग़ को न पहुंचा था। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा जवान था और रहज़नी किया करता था। 158 : जिस का कोई गुनाह साबित न था।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۵﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ

कहा[159] मैं ने आप से न कहा था कि आप हरगिज़ मेरे साथ न ठहर सकेंगे[160] कहा इस के बा'द

عَنْ شَیْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِیْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّیْ عُذْرًا ﴿۷۶﴾

मैं तुम से कुछ पूछूं तो फिर मेरे साथ न रहना बेशक मेरी त़रफ़ से तुम्हारा उ़ज़्र पूरा हो चुका

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَتَیَاۤ اَهْلَ قَرْیَةِ ِۣاسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ

फिर दोनों चले यहां तक कि जब एक गाउं वालों के पास आए[161] उन देह्क़ानों (किसानों) से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्हें दा'वत

یُّضَیِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِیْهَا جِدَارًا یُّرِیْدُ اَنْ یَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ

देनी क़बूल न की[162] फिर दोनों ने उस गाउं में एक दीवार पाई कि गिरा चाहती है उस बन्दे ने[163] उसे सीधा कर दिया मूसा ने कहा

شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَیْهِ اَجْرًا ﴿۷۷﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَیْنِیْ وَ بَیْنِكَ ۚ

तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते[164] कहा येह[165] मेरी और आप की जुदाई है

سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِیْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَیْهِ صَبْرًا ﴿۷۸﴾ اَمَّا السَّفِیْنَةُ

अब मैं आप को उन बातों का फेर (भेद) बताऊंगा जिन पर आप से सब्र न हो सका[166] वोह जो कश्ती थी

فَكَانَتْ لِمَسٰكِیْنَ یَعْمَلُوْنَ فِی الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِیْبَهَا وَ كَانَ

वोह कुछ मोह्ताजों की थी[167] कि दरिया में काम करते थे तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं और उन के

وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ یَّاْخُذُ كُلَّ سَفِیْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ وَ اَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ

पीछे एक बादशाह था[168] कि हर साबित कश्ती ज़बर दस्ती छीन लेता[169] और वोह जो लड़का था उस के मां बाप

مُؤْمِنَیْنِ فَخَشِیْنَاۤ اَنْ یُّرْهِقَهُمَا طُغْیَانًا وَّ كُفْرًا ﴿۸۰﴾ ۚ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ

मुसल्मान थे तो हमें डर हुवा कि वोह उन को सरकशी और कुफ़्र पर चढ़ावे[170] तो हम ने चाहा कि

159 : ह़ज़रते ख़िज़्र ने कि ऐ मूसा ! 160 : इस के जवाब में ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने 161 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस गाउं से मुराद अन्ताकिया है। वहां इन ह़ज़रात ने 162 : और मेज़बानी पर आमादा न हुए। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि वोह बस्ती बहुत बदतर है जहां मेहमानों की मेज़बानी न की जाए। 163 : या'नी ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक लगा कर अपनी करामत से 164 : क्यूं कि येह हमारी तो ह़ाजत का वक़्त है और बस्ती वालों ने हमारी कुछ मुदारात (ख़ात़िर तवाज़ोअ़) नहीं की ऐसी ह़ालत में उन का काम बनाने पर उजरत लेना मुनासिब था ! इस पर ह़ज़रते ख़िज़्र ने 165 : वक़्त या इस मरतबा का इन्कार। 166 : और उन के अन्दर जो राज़ थे उन का इज़्हार कर दूंगा। 167 : जो दस भाई थे उन में पांच तो अपाहज थे जो कुछ नहीं कर सकते थे और पांच तन्दुरुस्त थे जो 168 : कि उन्हें वापसी में उस की त़रफ़ गुज़रना होता, उस बादशाह का नाम जुलन्दी था, कश्ती वालों को उस का ह़ाल मा'लूम न था और उस का त़रीक़ा येह था 169 : और अगर ऐबदार होती छोड़ देता, उस लिये मैं ने उस कश्ती को ऐबदार कर दिया कि वोह उन ग़रीबों के लिये बच रहे। 170 : और वोह इस की मह़ब्बत में दीन से फिर जाएं और गुमराह हो जाएं और ह़ज़रते ख़िज़्र का येह अन्देशा इस सबब से था

www.dawateislami.net

يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّ اَقْرَبَ رُحْمًا ﴿۸۱﴾ وَ اَمَّا الْجِدَارُ

उन दोनों का रब उस से बेहतर[171] सुथरा और उस से ज़ियादा मेहरबानी में क़रीब अ़ता करे[172] रही वोह दीवार

فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِي الْمَدِيْنَةِ وَ كَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ كَانَ اَبُوْهُمَا

वोह शहर के दो यतीम लड़कों की थी[173] और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था[174] और उन का बाप

صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَ يَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖۗ

नेक आदमी था[175] तो आप के रब ने चाहा कि वोह दोनों अपनी जवानी को पहुंचें[176] और अपना ख़ज़ाना निकालें

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَ مَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِيْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ

आप के रब की रह़मत से और येह कुछ मैं ने अपने हुक्म से न किया[177] येह फेर (भेद) है उन बातों का

تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿۸۲﴾ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا

जिस पर आप से सब्र न हो सका[178] और तुम से[179] ज़ुल क़रनैन को पूछते हैं[180] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें इस का

कि वोह ब ए'लामे इलाही (**अल्लाह** तआ़ला के ख़बर देने की वज्ह से) उस के ह़ाले बात़िन को जानते थे। ह़दीसे मुस्लिम में है कि येह लड़का काफ़िर ही पैदा हुवा था। इमाम सुब्की ने फ़रमाया कि ह़ाले बात़िन जान कर बच्चे को क़त्ल कर देना ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ख़ास है, उन्हें इस की इजाज़त थी, अगर कोई वली किसी बच्चे के ऐसे ह़ाल पर मुत्तलअ़ हो तो उस को क़त्ल जाइज़ नहीं है। किताब अ़राइस में है कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते ख़िज़्र से फ़रमाया कि तुम ने सुथरी जान को क़त्ल कर दिया तो येह उन्हें गिरां गुज़रा, और उन्हों ने उस लड़के का कन्धा तोड़ कर उस का गोश्त चीरा तो उस के अन्दर लिखा हुवा था : काफ़िर है, कभी **अल्लाह** पर ईमान न लाएगा। (جمل) **171 :** बच्चा गुनाहों और नजासतों से पाक और **172 :** जो वालिदैन के साथ त़रीक़े अदब व हुस्ने सुलूक और मवद्दत (प्यार) व मह़ब्बत रखता हो। मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें एक बेटी अ़ता की जो एक नबी के निकाह़ में आई और उस से नबी पैदा हुए जिन के हाथ पर **अल्लाह** तआ़ला ने एक उम्मत को हिदायत दी। बन्दे को चाहिये कि **अल्लाह** की क़ज़ा पर राज़ी रहे इसी में बेहतरी होती है। **173 :** जिन के नाम अस़रम और सरीम थे। **174 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि उस दीवार के नीचे सोना, चांदी मदफ़ून था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि उस में सोने की एक तख़्ती थी, उस पर एक त़रफ़ लिखा था : उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे मौत का यक़ीन हो उस को ख़ुशी किस त़रह़ होती है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जो क़ज़ा व क़दर का यक़ीन रखे उस को ग़ुस्सा कैसे आता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे रिज़्क़ का यक़ीन हो वोह क्यूं तअ़ब (मशक़्क़त) में पड़ता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिसे ह़िसाब का यक़ीन हो वोह कैसे ग़ाफ़िल रहता है ! उस का ह़ाल अ़जीब है जिस को दुन्या के ज़वाल व तग़य्युर का यक़ीन हो वोह कैसे मुत़्मइन होता है ! और इस के साथ लिखा था : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और दूसरी जानिब उस लौह़ (तख़्ती) पर लिखा था : मैं **अल्लाह** हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं यक्ता हूं मेरा कोई शरीक नहीं, मैं ने ख़ैरो शर पैदा की। उस के लिये ख़ुशी जिसे मैं ने ख़ैर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर ख़ैर जारी की। उस के लिये तबाही जिस को शर के लिये पैदा किया और उस के हाथों पर शर जारी की। **175 :** उस का नाम काशिह़ था और येह शख़्स परहेज़ गार था। ह़ज़रते मुह़म्मद इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला बन्दे की नेकी से उस की औलाद को और उस की औलाद की औलाद को और उस के कुम्बे वालों को और उस के मह़ल्ले दारों को अपनी ह़िफ़ाज़त में रखता है। (سُبْحٰنَ اللّٰه) **176 :** और उन की अ़क़्ल कामिल हो जाए और वोह क़वी व तुवाना हो जाएं। **177 :** बल्कि ब अम्रे इलाही व इल्हामे ख़ुदावन्दी किया। **178 :** बा'ज़े लोग वली को नबी पर फ़ज़ीलत दे कर गुमराह हो गए और उन्हों ने येह ख़याल किया कि ह़ज़रते मूसा को ह़ज़रते ख़िज़्र से इल्म ह़ासिल करने का हुक्म दिया गया बा वुजूदे कि ह़ज़रते ख़िज़्र वली हैं और दर ह़क़ीक़त वली को नबी पर फ़ज़ीलत देना कुफ़्रे जली है और ह़ज़रते ख़िज़्र नबी हैं और अगर ऐसा न हो जैसा कि बा'ज़ का गुमान है तो येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के ह़क़ में इब्तिला है। इलावा बरीं येह कि अहले किताब इस के क़ाइल हैं कि येह ह़ज़रते मूसा पैग़म्बरे बनी इसराईल का वाक़िआ़ ही नहीं बल्कि मूसा बिन मासान का वाक़िआ़ है और वली तो नबी पर ईमान लाने से मर्तबए विलायत पर पहुंचता है तो येह ना मुम्किन है कि वोह नबी से बढ़ जाए। (مدارک) अक्सर उ़लमा इस पर हैं और मशाइख़े सूफ़िया व अस्ह़ाबे इरफ़ान का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं। शैख़ अबू अ़म्र बिन सलाह़ ने अपने फ़तावा में फ़रमाया कि ह़ज़रते ख़िज़्र जुम्हूर उ़लमा व सालिह़ीन के नज़्दीक ज़िन्दा हैं, येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते ख़िज़्र व इल्यास

www.dawateislami.net

عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ

मज़्कूर पढ़ कर सुनाता हूं बेशक हम ने उसे ज़मीन में क़ाबू दिया और हर चीज़ का

شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

एक सामान अ़ता फ़रमाया[181] तो वोह एक सामान के पीछे चला[182] यहां तक कि जब सूरज डूबने की जगह पहुंचा उसे एक सियाह

تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ

कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया[183] और वहां[184] एक क़ौम मिली[185] हम ने फ़रमाया ऐ ज़ुल क़रनैन

اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

या तो तू उन्हें सज़ा दे[186] या उन के साथ भलाई इख़्तियार कर[187] अ़र्ज़ की, कि वोह जिस ने ज़ुल्म किया[188]

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا

उसे तो हम अ़न्क़रीब सज़ा देंगे[189] फिर अपने रब की त़रफ़ फेरा जाएगा[190] वोह उसे बुरी मार देगा और

مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۟ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا

जो ईमान लाया और नेक काम किया तो उस का बदला भलाई है[191] और अ़न्क़रीब हम उसे आसान काम

दोनों ज़िन्दा हैं और हर साल ज़मानए ह़ज में मिलते हैं। येह भी मन्क़ूल है कि ह़ज़रते ख़िज़्र ने चश्मए ह़यात में ग़ुस्ल फ़रमाया और उस का पानी पिया। (خازن) وَاللہُ تَعَالٰی اَعْلَم 179 : अबू जहल वग़ैरा कुफ़्फ़ारे मक्का या यहूद ब त़रीक़े इम्तिह़ान 180 : ज़ुल क़रनैन का नाम इस्कन्दर है, येह ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ालाज़ाद भाई हैं, इन्हों ने इस्कन्दरिय्या बनाया और इस का नाम अपने नाम पर रखा, ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام इन के वज़ीर और साह़िबे लिवा (परचम उठाने वाले) थे। दुन्या में ऐसे चार बादशाह हुए हैं जो तमाम दुन्या पर हुक्मरान थे : दो मोमिन : ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन और ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمَا السَّلَام, और दो काफ़िर : नमरूद और बुख़्त नस्सर, और अ़न्क़रीब एक पांचवें बादशाह और इस उम्मत से होने वाले हैं जिन का इस्मे मुबारक ह़ज़रते इमाम महदी है, इन की ह़ुकूमत तमाम रूए ज़मीन पर होगी, ज़ुल क़रनैन की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि वोह न नबी थे न फ़िरिश्ते, अल्लाह से मह़ब्बत करने वाले बन्दे थे अल्लाह ने उन्हें मह़बूब बनाया। 181 : जिस चीज़ की ख़ल्क़ को ह़ाजत होती है और जो कुछ बादशाहों को दियार व अम्सार (बस्तियों और शहरों के) फ़त्ह़ करने और दुश्मनों के मुह़ारबे (लड़ाई व मा'रिके) में दरकार होता है वोह सब इनायत किया। 182 : "सबब" वोह चीज़ है जो मक़्सूद तक पहुंचने का ज़रीआ़ हो ख़्वाह वोह इल्म हो या क़ुदरत, तो ज़ुल क़रनैन ने जिस मक़्सद का इरादा किया उसी का सबब इख़्तियार किया। 183 : ज़ुल क़रनैन ने किताबों में देखा था कि औलादे साम में से एक शख़्स चश्मए ह़यात से पानी पियेगा और उस को मौत न आएगी, येह देख कर वोह चश्मए ह़यात की त़लब में मग़रिब व मशरिक़ की त़रफ़ रवाना हुए और आप के साथ ह़ज़रते ख़िज़्र भी थे, वोह तो चश्मए ह़यात तक पहुंच गए और उन्हों ने पी भी लिया, मगर ज़ुल क़रनैन के मुक़द्दर में न था उन्हों ने न पाया, इस सफ़र में जानिबे मग़रिब रवाना हुए तो जहां तक आबादी है वोह सब मनाज़िल क़त़्अ़ कर डाले और सम्ते मग़रिब में वहां पहुंचे जहां आबादी का नामो निशान बाक़ी न रहा, वहां उन्हें आफ़्ताब वक़्ते ग़ुरूब ऐसा नज़र आया गोया कि वोह सियाह चश्मे में डूबता है जैसा कि दरियाई सफ़र करने वाले को पानी में डूबता मा'लूम होता है। 184 : उस चश्मे के पास 185 : जो शिकार किये हुए जानवरों के चमड़े पहने थे, इस के सिवा उन के बदन पर और कोई लिबास न था और दरियाई मुर्दा जानवर उन की ग़िज़ा थे, येह लोग काफ़िर थे। 186 : और उन में से जो इस्लाम में दाख़िल न हो उस को क़त्ल कर दे 187 : और उन्हें अह़कामे शरअ़ की ता'लीम दे अगर वोह ईमान लाएं 188 : या'नी कुफ़्रो शिर्क इख़्तियार किया, ईमान न लाया 189 : क़त्ल करेंगे। येह तो उस की दुन्यवी सज़ा है 190 : क़ियामत में 191 : या'नी जन्नत।

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا

कहेंगे[192] फिर एक सामान के पीछे चला[193] यहां तक कि जब सूरज निकलने की जगह पहुंचा उसे ऐसी

تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا

क़ौम पर निकलता पाया जिन के लिये हम ने सूरज से कोई आड़ नहीं रखी[194] बात येही है और जो कुछ उस के

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

पास था[195] सब को हमारा इल्म मुहीत़ है[196] फिर एक सामान के पीछे चला[197] यहां तक कि जब दो पहाड़ों के बीच पहुंचा

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا

उन से उधर कुछ लोग पाए कि कोई बात समझते मा'लूम न होते थे[198] उन्हों ने कहा

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ

ऐ ज़ुल क़रनैन बेशक याजूज व माजूज[199] ज़मीन में फ़साद मचाते हैं तो क्या

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰۤى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّيْ

हम आप के लिये कुछ माल मुक़र्रर कर दें इस पर कि आप हम में और उन में एक दीवार बना दें[200] कहा वोह जिस पर मुझे मेरे

فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ ۙ

रब ने क़ाबू दिया है बेहतर है[201] तो मेरी मदद त़ाक़त से करो[202] मैं तुम में और उन में एक मज़बूत़ आड़ बना दूं[203]

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ

मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ[204] यहां तक कि वोह जब दीवार दोनों पहाड़ों के किनारों से बराबर कर दी कहा धोंको

192 : और उस को ऐसी चीज़ों का हुक्म देंगे जो उस पर सहल हों, दुश्वार न हों। अब ज़ुल क़रनैन की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है कि वोह **193 :** जानिबे मशरिक़ में **194 :** उस मक़ाम पर जिस के और आफ़्ताब के दरमियान कोई चीज़ पहाड़ दरख़्त वग़ैरा ह़ाइल न थी, न वहां कोई इमारत क़ाइम हो सकती थी और वहां के लोगों का येह ह़ाल था कि त़ुलूए आफ़्ताब के वक़्त ग़ारों में घुस जाते थे और ज़वाल के बा'द निकल कर अपना कामकाज करते थे। **195 :** फ़ौज, लश्कर, आलाते ह़र्ब, सामाने सल्त़नत और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : सल्त़नत व मुल्क दारी की क़ाबिलिय्यत और उमूरे मम्लुकत के सर अन्जाम की लियाक़त **196 :** मुफ़स्सिरीन ने "كَذٰلِكَ" के मा'ना में येह भी कहा है कि मुराद येह है कि ज़ुल क़रनैन ने जैसा मग़रिबी क़ौम के साथ सुलूक किया था ऐसा ही अहले मशरिक़ के साथ भी किया क्यूं कि येह लोग भी उन की त़रह़ काफ़िर थे तो जो उन में से ईमान लाए उन के साथ एह़सान किया और जो कुफ़्र पर मुसिर (अड़े) रहे उन को ता'ज़ीब की। **197 :** जानिबे शिमाल में। (خازن) **198 :** क्यूं कि उन की ज़बान अ़जीबो ग़रीब थी, उन के साथ इशारे वग़ैरा की मदद से ब मशक़्क़त बात की जा सकती थी। **199 :** येह याफ़िस बिन नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद से फ़सादी गुरौह हैं, इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है, ज़मीन में फ़साद करते थे, रबीअ़ के ज़माने में निकलते थे तो खेतियां और सब्ज़े सब खा जाते थे, कुछ न छोड़ते थे और ख़ुश्क चीज़ें लाद कर ले जाते थे, आदमियों को खा लेते थे, दरिन्दों वह़शी जानवरों सांपों बिच्छूओं तक को खा जाते थे, ह़ज़रते ज़ुल क़रनैन से लोगों ने उन की शिकायत की, कि वोह **200 :** ताकि वोह हम तक न पहुंच सकें और हम उन के शर व ईज़ा से मह़फ़ूज़ रहें **201 :** या'नी अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरे पास माले कसीर और हर क़िस्म का सामान मौजूद है, तुम से कुछ लेने की ह़ाजत नहीं **202 :** और जो काम मैं बताऊं वोह अन्जाम दो **203 :** उन लोगों ने

حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِیْۤ اُفْرِغْ عَلَیْهِ قِطْرًا ؕ ﴿٩٦﴾ فَمَا اسْطَاعُوْۤا

यहां तक कि जब उसे आग कर दिया कहा लाओ मैं इस पर गला हुवा तांबा ऊंडेल दूं तो याजूज व माजूज

اَنْ یَّظْهَرُوْهُ وَ مَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّیْ ۚ

उस पर न चढ़ सके और न उस में सूराख़ कर सके कहा[205] येह मेरे रब की रह़मत है

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّیْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَ كَانَ وَعْدُ رَبِّیْ حَقًّا ؕ ﴿٩٨﴾ وَ تَرَكْنَا

फिर जब मेरे रब का वा'दा आएगा[206] इसे पाश पाश कर देगा और मेरे रब का वा'दा सच्चा है[207] और उस दिन हम उन्हें

بَعْضَهُمْ یَوْمَىٕذٍ یَّمُوْجُ فِیْ بَعْضٍ وَّ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ ﴿٩٩﴾ وَّ

छोड़ देंगे कि उन का एक गुरोह दूसरे पर रेला देगा और सूर फूंका जाएगा[208] तो हम उन सब को[209] इकठ्ठा कर लाएंगे और

عَرَضْنَا جَهَنَّمَ یَوْمَىٕذٍ لِّلْكٰفِرِیْنَ عَرْضَا ۙ ﴿١٠٠﴾ الَّذِیْنَ كَانَتْ اَعْیُنُهُمْ فِیْ

हम उस दिन जहन्नम काफ़िरों के सामने लाएंगे[210] वोह जिन की आंखों पर मेरी

ع ١١ ١٩ ٢ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِیْ وَ كَانُوْا لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَمْعًا ۠ ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِیْنَ

याद से पर्दा पड़ा था[211] और ह़क़ बात सुन न सकते थे[212] तो क्या काफ़िर

كَفَرُوْۤا اَنْ یَّتَّخِذُوْا عِبَادِیْ مِنْ دُوْنِیْۤ اَوْلِیَآءَ ؕ اِنَّاۤ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ

येह समझे हैं कि मेरे बन्दों को[213] मेरे सिवा ह़िमायती बना लेंगे[214] बेशक हम ने काफ़िरों की मेहमानी

अ़र्ज़ किया फिर हमारे मुतअ़ल्लिक़ क्या ख़िदमत है ? फ़रमाया : **204 :** और बुन्याद खुदवाई, जब पानी तक पहुंची तो उस में पथ्थर पिघलाए हुए तांबे से जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन कर उन के दरमियान लकड़ी और कोएला भरवा दिया और आग दे दी इस त़रह़ येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई, ऊपर से पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया येह सब मिल कर एक सख़्त जिस्म बन गया **205 :** ज़ुल क़रनैन ने कि **206 :** और याजूज माजूज के ख़ुरूज का वक़्त आ पहुंचेगा क़रीबे क़ियामत **207 :** ह़दीस शरीफ़ है कि याजूज माजूज रोज़ाना उस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेहनत करते करते जब उस के तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उन में कोई कहता है : अब चलो बाक़ी कल तोड़ लेंगे। दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वोह ब हुक्मे इलाही पहले से ज़ियादा मज़बूत़ हो जाती है, जब उन के ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में कहने वाला कहेगा कि अब चलो बाक़ी दीवार कल तोड़ लेंगे اِنْ شَآءَ الله । ''اِنْ شَآءَ الله'' कहने का येह समरा होगा कि उस दिन की मेह़नत राएगां न जाएगी और अगले दिन उन्हें दीवार उतनी टूटी मिलेगी जितनी पहले रोज़ तोड़ गए थे। अब वोह निकल आएंगे और ज़मीन में फ़साद उठाएंगे, क़त्लो ग़ारत करेंगे और चश्मों का पानी पी जाएंगे, जानवरों दरख़्तों को और जो आदमी हाथ आएंगे उन को खा जाएंगे, मक्कए मुकर्रमा, मदीनए त़य्यिबा और बैतुल मक़्दिस में दाख़िल न हो सकेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ब दुआए ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام उन्हें हलाक करेगा, इस त़रह़ कि उन की गरदनों में कीड़े पैदा होंगे जो उन की हलाकत का सबब होंगे। **208 :** इस से साबित होता है कि याजूज माजूज का निकलना क़ुर्बे क़ियामत की अ़लामात में से है। **209 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ को अ़ज़ाब व सवाब के लिये रोज़े क़ियामत **210 :** कि उस को साफ़ देखें। **211 :** और वोह आयाते इलाहिय्यह और क़ुरआन व हिदायत व बयान और दलाइले क़ुदरत व ईमान से अन्धे बने रहे और इन में से किसी चीज़ को वोह न देख सके। **212 :** अपनी बद बख़्ती से रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखने के बाइस **213 :** मिस्ल ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते उ़ज़ैर व मलाएका के **214 :** और इस से कुछ नफ़्अ़ पाएंगे, येह गुमान फ़ासिद है बल्कि वोह बन्दे उन से बेज़ार हैं और बेशक हम उन के इस शिर्क पर अ़ज़ाब करेंगे।

لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿۱۰۳﴾ اَلَّذِيْنَ

को जहन्नम तय्यार कर रखी है तुम फ़रमाओ क्या हम तुम्हें बता दें कि सब से बढ़ कर नाक़िस अ़मल किन के हैं[215] उन के जिन

ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ

की सारी कोशिश दुन्या की ज़िन्दगी में गुम गई[216] और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम

صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ

कर रहे हैं यह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें और उस का मिलना न माना[217] तो उन का किया धरा सब

اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿۱۰۵﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ

अकारत (ज़ाएअ़) तो हम उन के लिये क़ियामत के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे[218] यह उन का बदला है जहन्नम इस

بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿۱۰۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ

पर कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों की हंसी बनाई बेशक जो ईमान लाए और

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है[219] वोह हमेशा उन में रहेंगे

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

उन से जगह बदलना न चाहेंगे[220] तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ

ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और इस की मदद को ले आएं[221] तुम फ़रमाओ ज़ाहिर

215 : या'नी वोह कौन लोग हैं जो अ़मल कर के थके और मशक़्क़तें उठाईं और यह उम्मीद करते रहे कि इन आ'माल पर फ़ज़्लो नवाल से नवाज़े जाएंगे, मगर बजाए इस के हलाकत व बरबादी में पड़े। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : वोह यहूदो नसारा हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह राहिब लोग हैं जो सवामेअ़ (गिरजों) में उ़ज़्लत गुज़ीन (तन्हा) रहते थे। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि यह लोग अहले हरूरा या'नी ख़वारिज हैं। **216 :** और अ़मल बातिल हो गए **217 :** रसूल व कुरआन पर ईमान न लाए और बअ़्स (क़ियामत में दोबारा उठाए जाने) व हिसाब व सवाब व अ़ज़ाब के मुन्किर रहे **218 :** हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बा'ज़े लोग ऐसे आ'माल लाएंगे जो उन के ख़यालों में मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों से ज़ियादा बड़े होंगे लेकिन जब वोह तोले जाएंगे तो उन में वज़्न कुछ न होगा। **219 :** हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** से मांगो तो फ़िरदौस मांगो ! क्यूं कि वोह जन्नतों में सब के दरमियान और सब से बुलन्द है और उस पर अ़र्शे रहमान है और उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं। हज़रते का'ब ने फ़रमाया कि फ़िरदौस जन्नतों में सब से आ'ला है, उस में नेकियों का हुक्म करने वाले और बदियों से रोकने वाले ऐश करेंगे। **220 :** जिस त़रह दुन्या में इन्सान कैसी ही बेहतर जगह हो इस से और आ'ला व अरफ़अ़ की त़लब रखता है यह बात वहां न होगी क्यूं कि वोह जानते होंगे कि फ़ज़्ले इलाही से इन्हें बहुत आ'ला व अरफ़अ़ मकान व मकानत (रिहाइश) हासिल है। **221 :** या'नी अगर **अल्लाह** तआ़ला के इल्मो हिक्मत के कलिमात लिखे जाएं और उन के लिये तमाम समुन्दरों का

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا

सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं[222] मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है[223] तो जिसे अपने रब से

لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ۠ ﴿۱۱۰﴾ ع

मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे[224]

اٰيَاتُهَا ٩٨ ｜ ١٩ سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ ٤٤ ｜ رُكُوْعَاتُهَا ٦

सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में अठानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़म वाला[1]

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿۱﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿۲﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

येह मज़्कूर है तेरे रब की उस रह़मत का जो उस ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की जब उस ने अपने रब को

पानी सियाही बना दिया जाए और तमाम ख़ल्क़ लिखे तो वोह कलिमात ख़त्म न हों और येह तमाम पानी ख़त्म हो जाए और इतना ही और भी ख़त्म हो जाए। मुद्दआ़ येह है कि उस के इल्मो ह़िक्मत की निहायत (इन्तिहा) नहीं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने इ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यहूद ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) आप का ख़याल है कि हमें ह़िक्मत दी गई और आप की किताब में है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई, फिर आप कैसे फ़रमाते हैं कि तुम्हें नहीं दिया गया मगर थोड़ा इल्म ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। एक क़ौल येह है कि जब आयए ''وَمَاۤ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا'' नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा कि हमें तौरैत का इल्म दिया गया और इस में हर शै का इल्म है, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। मुद्दआ़ येह है कि कुल शै का इल्म भी इल्मे इलाही के हुज़ूर क़लील है और इतनी भी निस्बत नहीं रखता जितनी एक क़त़रे को समुन्दर से हो। **222 :** कि मुझ पर बशरी आ'राज़ व अमराज़ त़ारी होते हैं और सूरते ख़ास्सा में कोई भी आप का मिस्ल नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हुस्नो सूरत में भी सब से आ'ला व बाला किया और ह़क़ीक़त व रूह़ व बात़िन के ए'तिबार से तो तमाम अम्बिया औसाफ़े बशर से आ'ला हैं जैसा कि शिफ़ाए क़ाज़ी इयाज़ में है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने शर्हे मिश्कात में फ़रमाया कि अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के अज्साम व ज़वाहिर तो ह़द्दे बशरिय्यत पर छोड़े गए और उन के अरवाह़ व बवात़िन बशरिय्यत से बाला और मलाए आ'ला से मुतअ़ल्लिक़ हैं। शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साहिब मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने सूरए وَالضُّحٰی की तफ़्सीर में फ़रमाया कि आप की बशरिय्यत का वुजूद अस्लन न रहे और ग़लबए अन्वारे ह़क़ आप पर अ़लद्दवाम ह़ासिल हो। बहर ह़ाल आप की ज़ात व कमाल में आप का कोई भी मिस्ल नहीं। इस आयते करीमा में आप को अपनी ज़ाहिरी सूरते बशरिय्या के बयान का इज़्हारे तवाज़ोअ़ के लिये हुक्म फ़रमाया गया, येही फ़रमाया है ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने। (خازن) **मस्अला :** किसी को जाइज़ नहीं कि हुज़ूर को अपने मिस्ल बशर कहे क्यूं कि जो कलिमात अस्ह़ाबे इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ फ़रमाते हैं उन का कहना दूसरों के लिये रवा (जाइज़) नहीं होता। दुवुम येह कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ज़ाइले जलीला व मरातिबे रफ़ीआ़ अ़त़ा फ़रमाए हों उस के उन फ़ज़ाइल व मरातिब का ज़िक्र छोड़ कर ऐसे वस्फ़े आ़म से ज़िक्र करना जो हर किह व मिह (छोटे, बड़े, अदना व आ'ला) में पाया जाए उन कमालात के न मानने का मुश्इर (इशारा देता) है। सिवुम येह कि क़ुरआने करीम में जा बजा कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा बताया गया है कि वोह अम्बिया को अपने मिस्ल बशर कहते थे और इसी से गुमराही में मुब्तला हुए। फिर इस के बा'द आयत ''یُوْحٰۤی اِلَیَّ'' में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मख़्सूस बिल इ़ल्म और मुकर्रम इन्दल्लाह (या'नी उ़लूम के साथ ख़ास होने और **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला) होने का बयान है। **223 :** उस का कोई शरीक नहीं **224 :** शिर्के अक्बर से भी बचे और रिया से भी जिस को शिर्के असग़र कहते हैं। मुस्लिम शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें ह़िफ़्ज़ करे **अल्लाह** तआ़ला उस को फ़ित्नए दज्जाल से मह़फ़ूज़ रखेगा, येह भी ह़दीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरए कहफ़ को पढ़े वोह आठ रोज़ तक हर फ़ित्ने से मह़फ़ूज़ रहेगा।
1 : सूरए मरयम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, अठानवे आयतें, सात सो अस्सी कलिमे हैं।

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿۳﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّیْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَیْبًا

आहिस्ता पुकारा[2] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी हड्डी कमज़ोर हो गई[3] और सर से बुढ़ापे का भभूका फूटा (सफ़ेदी ज़ाहिर हुई)[4]

وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآىٕكَ رَبِّ شَقِیًّا ﴿۴﴾ وَ اِنِّیْ خِفْتُ الْمَوَالِیَ مِنْ وَّرَآءِیْ

और ऐ मेरे रब मैं तुझे पुकार कर कभी ना मुराद न रहा[5] और मुझे अपने बा'द अपने क़राबत वालों का डर है[6]

وَ كَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا فَهَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِیًّا ﴿۵﴾ یَّرِثُنِیْ وَ یَرِثُ

और मेरी औ़रत बांझ है तो मुझे अपने पास से कोई ऐसा दे डाल जो मेरा काम उठा ले[7] वोह मेरा जा नशीन हो और औलादे

مِنْ اٰلِ یَعْقُوْبَ ۖ وَ اجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا ﴿۶﴾ یٰزَكَرِیَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

या'क़ूब का वारिस हो और ऐ मेरे रब उसे पसन्दीदा कर[8] ऐ ज़करिय्या हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं

بِغُلٰمِ ِۣاسْمُهٗ یَحْیٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا ﴿۷﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

एक लड़के की जिन का नाम यह्या है इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे

یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّ كَانَتِ امْرَاَتِیْ عَاقِرًا وَّ قَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِیًّا ﴿۸﴾

लड़का कहां से होगा मेरी औ़रत तो बांझ है और मैं बुढ़ापे से सूख जाने की ह़ालत को पहुंच गया[9]

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَیَّ هَیِّنٌ وَّ قَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَ لَمْ

फ़रमाया ऐसा ही है[10] तेरे रब ने फ़रमाया वोह मुझे आसान है और मैं ने तो इस से पहले तुझे उस वक़्त बनाया

تَكُ شَیْــٴًـا ﴿۹﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً ؕ قَالَ اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

जब तू कुछ भी न था[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे कोई निशानी दे दे[12] फ़रमाया तेरी निशानी येह है कि तू तीन रात दिन लोगों

2 : क्यूं कि इख़्फ़ा (आहिस्ता पुकारना) रिया से दूर और इख़्लास से मा'मूर होता है, नीज़ येह भी फ़ाएदा था कि पीराना साली (बुढ़ापे) की उ़म्र में जब कि सिन शरीफ़ पछत्तर या अस्सी बरस का था औलाद का त़लब करना एह़तिमाल रखता था कि अ़वाम इस पर मलामत करें, इस लिये भी इस दुआ़ का इख़्फ़ा (आहिस्ता करना) मुनासिब था। एक क़ौल येह भी है कि ज़ो'फ़े पीरी (बुढ़ापे की कमज़ोरी) के बाइस ह़ज़रत की आवाज़ भी ज़ईफ़ हो गई थी। (مدارک خازن) **3 :** या'नी पीराना साली का ज़ो'फ़ ग़ायत (इन्तिहा) को पहुंच गया कि हड्डी जो निहायत मज़बूत उ़ज़्व है इस में कमज़ोरी आ गई तो बाक़ी आ'ज़ा व क़ुवा (त़ाक़त) का ह़ाल मोहताजे बयान ही नहीं। **4 :** कि तमाम सर सफ़ेद हो गया **5 :** हमेशा तू ने मेरी दुआ़ क़बूल की और मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात किया। **6 :** चचाज़ाद वग़ैरा का, कि वोह शरीर लोग हैं, कहीं मेरे बा'द दीन में रख़्ना अन्दाज़ी न करें, जैसा कि बनी इसराईल से मुशाहदे में आ चुका है। **7 :** और मेरे इ़ल्म का ह़ामिल (संभालने वाला) हो **8 :** कि तू अपने फ़ज़्ल से उस को नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाए। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام की येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : **9 :** येह सुवाल इस्तिब्आ़द (मुह़ाल जान कर) नहीं बल्कि मक़्सूद येह दरयाफ़्त करना है कि अ़त़ाए फ़रज़न्द किस त़रीक़े पर होगा, क्या दोबारा जवानी मर्ह़मत होगी या इसी ह़ाल में फ़रज़न्द अ़त़ा किया जाएगा ? **10 :** तुम्हीं दोनों से लड़का पैदा फ़रमाना मन्ज़ूर है **11 :** तो जो मा'दूम के मौजूद करने पर क़ादिर है उस को बुढ़ापे में औलाद अ़त़ा फ़रमाना क्या अ़जब है। **12 :** जिस से मुझे अपनी बीबी के ह़ामिला होने की मा'रिफ़त हो।

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ

से कलाम न करे भला चंगा हो कर[13] तो अपनी क़ौम पर मस्जिद से बाहर आया[14] तो उन्हें इशारे से कहा

اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ﴿١١﴾ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ

कि सुब्ह़ो शाम तस्बीह़ करते रहो[15] ऐ यह़्या किताब[16] मज़बूत़ थाम और हम ने उसे बचपन ही में

صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَّ حَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ زَكٰوةً ؕ وَ كَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَ

नुबुव्वत दी[17] और अपनी त़रफ़ से मेहरबानी[18] और सुथराई[19] और कमाल डर वाला था[20] और अपने मां बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था और

لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ يَمُوْتُ وَ يَوْمَ

ज़बर दस्त व ना फ़रमान न था[21] और सलामती है उस पर जिस दिन पैदा हुवा और जिस दिन मरेगा और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾ ع وَ اذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا

ع ٥ وقف لازم

ज़िन्दा उठाया जाएगा[22] और किताब में मरयम को याद करो[23] जब अपने घर वालों से पूरब (मशरिक़)

مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا قف فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا

की त़रफ़ एक जगह अलग गई[24] तो उन से इधर[25] एक पर्दा कर लिया तो उस की त़रफ़ हम ने अपना

13 : सह़ीह़ सालिम हो कर बिग़ैर किसी बीमारी के और बिग़ैर गूंगा होने के। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि इन अय्याम में आप लोगों से कलाम करने पर क़ादिर न हुए, जब **अल्लाह** का ज़िक्र करना चाहते ज़बान खुल जाती। **14 :** जो उस की नमाज़ की जगह थी और लोग पसे मेह़राब इन्तिज़ार में थे कि आप उन के लिये दरवाज़ा खोलें तो वोह दाख़िल हों और नमाज़ पढ़ें, जब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام बाहर आए तो आप का रंग बदला हुवा था, गुफ़्तगू नहीं फ़रमा सकते थे, येह ह़ाल देख कर लोगों ने दरयाफ़्त किया क्या ह़ाल है? **15 :** और ह़स्बे आ़दत फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ें अदा करते रहो। अब ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने कलाम न कर सकने से जान लिया कि आप की बीवी साहि़बा ह़ामिला हो गईं और ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत से दो साल बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : **16 :** या'नी तौरैत को **17 :** जब कि आप की उ़म्र शरीफ़ तीन साल की थी, इस वक़्त में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने आप को अ़क़्ले कामिल अ़त़ा फ़रमाई और आप की त़रफ़ वह़्य की, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का येही क़ौल है और इतनी सी उ़म्र में फ़हमो फ़िरासत और कमाले अ़क़्लो दानिश ख़वारिक़े आ़दात (करामात) में से है और जब बि करमिही तआ़ला (**अल्लाह** तआ़ला के करम से) येह ह़ासिल हो तो इस ह़ाल में नुबुव्वत मिलना कुछ भी बईद नहीं, लिहाज़ा इस आयत में हुक्म से नुबुव्वत मुराद है, येही क़ौल सह़ीह़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से हिक्मत या'नी फ़हमे तौरैत (तौरैत का जानना) और फ़िक़्ह फ़िद्दीन (दीन में समझ बूझ) भी मुराद ली है। (خازن ومدارک کبیر) मन्क़ूल है कि इस कमसिनी के ज़माने में बच्चों ने आप को खेल के लिये बुलाया तो आप ने फ़रमाया : "مَالِلَّعِبِ خُلِقْنَا" हम खेल के लिये पैदा नहीं किये गए। **18 :** अ़त़ा की और इन के दिल में रिक़्क़त व रह़मत रखी कि लोगों पर मेहरबानी करें। **19 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि "ज़कात" से यहां त़ाअ़त व इख़्लास मुराद है। **20 :** और आप ख़ौफ़े इलाही से बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे, यहां तक कि आप के रुख़्सारे मुबारक पर आंसूओं से निशान बन गए थे। **21 :** या'नी आप निहायत मुतवाज़ेअ़ और ख़लीक़ (तवाज़ोअ़ करने वाले और ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़) थे और **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म के मुत़ीअ़। **22 :** कि येह तीनों दिन बहुत अन्देशा नाक हैं क्यूं कि इन में आदमी वोह देखता है जो इस से पहले इस ने नहीं देखा, इस लिये इन तीनों मौक़ओं पर निहायत वह़्शत होती है। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام का इक्राम फ़रमाया कि इन्हें इन तीनों मौक़ओं पर अम्न व सलामती अ़त़ा की। **23 :** या'नी ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क़ुरआने करीम में ह़ज़रते मरयम का वाक़िआ़ पढ़ कर इन लोगों को सुनाइये ताकि इन्हें उन का ह़ाल मा'लूम हो। **24 :** और अपने मकान में या बैतुल मक़्दिस की शर्क़ी जानिब में लोगों से जुदा हो कर इबादत के लिये ख़ल्वत (तन्हाई) में बैठीं **25 :** या'नी अपने और घर वालों के दरमियान।

www.dawateislami.net

رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ

रूह़ानी भेजा[26] वोह उस के सामने एक तन्दुरुस्त आदमी के रूप में ज़ाहिर हुवा बोली मैं तुझ से रह़मान की पनाह मांगती हूं

اِنْ كُنْتَ تَقِیًّا ﴿١٨﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

अगर तुझे ख़ुदा का डर है बोला मैं तेरे रब का भेजा हुवा हूं कि मैं तुझे एक सुथरा

زَكِیًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّلَمْ یَمْسَسْنِیْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِیًّا ﴿٢٠﴾

बेटा दूं बोली मेरे लड़का कहां से होगा मुझे तो न किसी आदमी ने हाथ लगाया न मैं बदकार हूं

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَیَّ هَیِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَ

कहा यूंही है[27] तेरे रब ने फ़रमाया है कि येह[28] मुझे आसान है और इस लिये कि हम इसे लोगों के वासिते़ निशानी[29] करें और

رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِیًّا ﴿٢١﴾ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا

अपनी त़रफ़ से एक रह़मत[30] और येह काम ठहर चुका है[31] अब मरयम ने उसे पेट में लिया फिर उसे लिये हुए एक दूर जगह

قَصِیًّا ﴿٢٢﴾ فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰی جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ یٰلَیْتَنِیْ مِتُّ

चली गई[32] फिर उसे जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया[33] बोली हाए किसी त़रह मैं इस से पहले

26 : जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام 27 : येही मन्ज़ूरे इलाही है कि तुम्हें बिग़ैर मर्द के छूए ही लड़का इनायत फ़रमाए। 28 : या'नी बिग़ैर बाप के बेटा देना 29 : और अपनी कु़दरत की बुरहान (दलील) 30 : उन के लिये जो उस के दीन का इत्तिबाअ़ करें, उस पर ईमान लाएं 31 : इल्मे इलाही में, अब न रद हो सकता है न बदल सकता है। जब ह़ज़रते मरयम को इत़्मीनान हो गया और उन की परेशानी जाती रही तो ह़ज़रते जिब्रील ने उन के गिरेबान में या आस्तीन में या दामन में या मुंह में दम किया और वोह ब कु़दरते इलाही फ़िलह़ाल ह़ामिला हो गईं, उस वक़्त ह़ज़रते मरयम की उ़म्र तेरह साल या दस की थी। 32 : अपने घर वालों से और वोह जगह बैतुल्लह़्म थी। वह्ब का क़ौल है कि सब से पहले जिस शख़्स को ह़ज़रते मरयम के ह़म्ल का इल्म हुवा वोह उन का चचाज़ाद भाई यूसुफ़ नज्जार है जो मस्जिदे बैतुल मक़्दिस का ख़ादिम था और बहुत बड़ा आ़बिद शख़्स था, उस को जब मा'लूम हुवा कि मरयम ह़ामिला हैं तो निहायत ह़ैरत हुई। जब चाहता था कि इन पर तोहमत लगाए तो इन की इ़बादत व तक़्वा, हर वक़्त का ह़ाज़िर रहना, किसी वक़्त ग़ाइब न होना, याद कर के ख़ामोश हो जाता था और जब ह़म्ल का ख़याल करता था तो इन को बरी समझना मुश्किल मा'लूम होता था ! बिल आख़िर उस ने ह़ज़रते मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है, हर चन्द चाहता हूं कि ज़बान पर न लाऊं मगर अब सब्र नहीं होता है, आप इजाज़त दीजिये कि मैं कह गुज़रूं ताकि मेरे दिल की परेशानी रफ़्अ़ (दूर) हो। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि अच्छी बात कहो ! तो उस ने कहा कि ऐ मरयम ! मुझे बताओ कि क्या खेती बिग़ैर तुख़्म और दरख़्त बिग़ैर बारिश के और बच्चा बिग़ैर बाप के हो सकता है ? ह़ज़रते मरयम ने फ़रमाया कि हां, तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने जो सब से पहले खेती पैदा की बिग़ैर तुख़्म ही के पैदा की और दरख़्त अपनी कु़दरत से बिग़ैर बारिश के उगाए, क्या तू येह कह सकता है कि **अल्लाह** तआ़ला पानी की मदद के बिग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं। यूसुफ़ ने कहा : मैं येह तो नहीं कहता बेशक मैं इस का क़ाइल हूं कि **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है, जिसे ''كُنْ'' फ़रमाए वोह हो जाती है। ह़ज़रते मरयम ने कहा कि क्या तुझे मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदम और उन की बीबी को बिग़ैर मां बाप के पैदा किया ! ह़ज़रते मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबा रफ़्अ़ हो गया और ह़ज़रते मरयम ह़म्ल के सबब से ज़ईफ़ हो गई थीं, इस लिये वोह ख़िदमते मस्जिद में इन की नयाबत अन्जाम देने लगा, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मरयम को इल्हाम किया कि वोह अपनी क़ौम से अ़लाह़िदा चली जाएं, इस लिये वोह बैतुल्लह़्म में चली गईं। 33 : जिस का दरख़्त जंगल में ख़ुश्क हो गया था, वक़्त तेज़ सर्दी का था, आप उस दरख़्त की जड़ में आईं ताकि उस से टेक लगाएं और फ़ज़ीह़त (रुस्वाई व बदनामी) के अन्देशे से।

قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ

मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती तो उसे[34] उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा[35] बेशक

جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ

तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है[36] और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी

عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

पकी खजूरें गिरेंगी[37] तो खा और पी और आंख ठन्डी रख[38] फिर अगर तू किसी

الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ

आदमी को देखे[39] तो कह देना मैं ने आज रहमान का रोज़ा माना है तो आज हरगिज़ किसी आदमी से बात न

اِنْسِيًّا ۚ ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا

करूंगी[40] तो उसे गोद में लिये अपनी क़ौम के पास आई[41] बोले ऐ मरयम बेशक तू ने बहुत

فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ

बड़ी बात की ऐ हारून की बहन[42] तेरा बाप[43] बुरा आदमी न था और न तेरी मां[44]

بَغِيًّا ۖۚ ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

बदकार इस पर मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया[45] वोह बोले हम कैसे बात करें उस से जो पालने में बच्चा है[46]

34 : जिब्रील ने वादी के नशेब से **35 :** अपनी तन्हाई का और खाने पीने की कोई चीज़ मौजूद न होने का और लोगों की बदगोई करने का **36 :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने या हज़रते जिब्रील ने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी तो आबे शीरीं का एक चश्मा जारी हो गया और खजूर का दरख़्त सर सब्ज़ हो गया फल लाया वोह फल पुख़्ता और रसीदा (पक कर तय्यार) हो गए और हज़रते मरयम से कहा गया : **37 :** जो ज़च्चा के लिये बेहतरीन गिज़ा हैं। **38 :** अपने फ़रज़न्द ईसा से। **39 :** कि तुझ से बच्चे को दरयाफ़्त करता है **40 :** पहले ज़माने में बोलने और कलाम करने का भी रोज़ा होता था जैसा कि हमारी शरीअ़त में खाने और पीने का रोज़ा होता है, हमारी शरीअ़त में चुप रहने का रोज़ा मन्सूख़ हो गया। हज़रते मरयम को सुकूत (ख़ामोशी इख़्तियार करने) की नज़्र मानने का इस लिये हुक्म दिया गया ताकि कलाम हज़रते ईसा फ़रमाएं और इन का कलाम हुज्जते क़विय्या (मज़बूत दलील साबित) हो जिस से तोहमत ज़ाइल हो जाए। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए : **मस्अला :** सफ़ीह (जाहिल व बे वुक़ूफ़) के जवाब में सुकूत व ए'राज़ चाहिये, جوابِ جاہلاں باشد خموشی (जाहिलों की बात का जवाब ख़ामोशी है)। **मस्अला :** कलाम को अफ़्ज़ल शख़्स की तरफ़ तफ़्वीज़ करना (फेरना) औला है। हज़रते मरयम ने येह भी इशारे से कहा कि मैं किसी आदमी से बात न करूंगी। **41 :** जब लोगों ने हज़रते मरयम को देखा कि इन की गोद में बच्चा है तो रोए और ग़मगीन हुए क्यूं कि वोह सालिहीन के घराने के लोग थे और **42 :** और हारून या तो हज़रते मरयम के भाई का नाम था या बनी इसराईल में और निहायत बुज़ुर्ग और सालेह़ शख़्स का नाम था जिन के तक़्वा और परहेज़ गारी से तश्बीह देने के लिये इन लोगों ने हज़रते मरयम को हारून की बहन कहा या हज़रते हारून बरादरे हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ही की तरफ़ निस्बत की बा वुजूदे कि इन का ज़माना बहुत बईद था और हज़ार बरस का अ़र्सा हो चुका था, मगर चूंकि येह उन की नस्ल से थीं इस लिये हारून की बहन कह दिया जैसा कि अ़रबों का मुहावरा है कि वोह तमीमी को **या अख़ा तमीम** कहते हैं। **43 :** या'नी इमरान **44 :** ह़न्ना **45 :** कि जो कुछ कहना है ख़ुद इन से कहो ! इस पर क़ौम के लोगों को ग़ुस्सा आया और **46 :** येह गुफ़्तगू सुन कर हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बाएं हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और दाहने दस्ते मुबारक से इशारा कर के कलाम शुरूअ़ किया।

www.dawateislami.net

قَالَ اِنِّیْ عَبْدُ اللّٰهِ ۟ؕ اٰتٰىنِیَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِیْ نَبِیًّا ﴿۳۰﴾ۙ وَّ جَعَلَنِیْ مُبٰرَكًا

बच्चे ने फ़रमाया मैं हूं अल्लाह का बन्दा[47] उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया[48] और उस ने मुझे मुबारक किया[49]

اَیْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَ اَوْصٰنِیْ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَیًّا ﴿۳۱﴾ۖ وَّ بَرًّۢا

मैं कहीं होउं और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूं और अपनी मां से

بِوَالِدَتِیْ ۫ وَ لَمْ یَجْعَلْنِیْ جَبَّارًا شَقِیًّا ﴿۳۲﴾ وَ السَّلٰمُ عَلَیَّ یَوْمَ وُلِدْتُّ وَ

अच्छा सुलूक करने वाला[50] और मुझे ज़बर दस्त बद बख़्त न किया और वोही सलामती मुझ पर[51] जिस दिन मैं पैदा हुवा और

یَوْمَ اَمُوْتُ وَ یَوْمَ اُبْعَثُ حَیًّا ﴿۳۳﴾ ذٰلِكَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ

जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊंगा[52] येह है ईसा मरयम का बेटा सच्ची बात

الَّذِیْ فِیْهِ یَمْتَرُوْنَ ﴿۳۴﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ یَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ

जिस में शक करते हैं[53] अल्लाह को लाइक़ नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए पाकी है उस को[54]

اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۳۵﴾ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبُّكُمْ

जब किसी काम का हुक्म फ़रमाता है तो यूंही कि उस से फ़रमाता है हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है और ईसा ने कहा बेशक अल्लाह रब है मेरा और तुम्हारा[55]

فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۳۶﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَیْنِهِمْ ۚ

तो उस की बन्दगी करो येह राह सीधी है फिर जमाअ़तें आपस में मुख़्तलिफ़ हो गईं[56]

47 : पहले अपने बन्दा होने का इक़रार फ़रमाया ताकि कोई इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा न कहे क्यूं कि आप की निस्बत येह तोहमत लगाई जाने वाली थी और येह तोहमत अल्लाह तबारक व तआ़ला पर लगती थी, इस लिये मन्सबे रिसालत का इक़्तिज़ा येही था कि वालिदा की बराअत बयान करने से पहले उस तोहमत को रफ़्अ़ फ़रमा दें जो अल्लाह तआ़ला की जनाबे पाक में लगाई जाएगी और इसी से वोह तोहमत भी रफ़्अ़ हो गई जो वालिदा पर लगाई जाती क्यूं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला इस मर्तबए अ़ज़ीमा के साथ जिस बन्दे को नवाज़ता है बिल यक़ीन उस की विलादत और उस की सिरिश्त (फ़ित़रत) निहायत पाक व त़ाहिर है। **48 :** किताब से इन्जील मुराद है। ह़सन का क़ौल है कि आप बत़्ने वालिदा ही में थे कि आप को तौरैत का इल्हाम फ़रमा दिया गया था और पालने में थे जब आप को नुबुव्वत अ़त़ा कर दी गई और इस ह़ालत में आप का कलाम फ़रमाना आप का मो'जिज़ा है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने आयत के मा'ना में येह भी बयान किया है कि येह नुबुव्वत और किताब मिलने की ख़बर थी जो अ़न्क़रीब आप को मिलने वाली थी। **49 :** या'नी लोगों के लिये नफ़्अ़ पहुंचाने वाला और ख़ैर की ता'लीम देने वाला और अल्लाह तआ़ला और उस की तौह़ीद की दा'वत देने वाला। **50 :** बनाया **51 :** जो ह़ज़रते यह़्या पर हुई **52 :** जब ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह कलाम फ़रमाया तो लोगों को ह़ज़रते मरयम की बराअत व त़हारत का यक़ीन हो गया और ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इतना फ़रमा कर ख़ामोश हो गए और इस के बा'द कलाम न किया जब तक कि उस उ़म्र को पहुंचे जिस में बच्चे बोलने लगते हैं। (خازن) **53 :** कि यहूद तो इन्हें साह़िर, कज़्ज़ाब कहते हैं (مَعَاذَاللّٰه) और नसारा इन्हें ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा और तीन में का तीसरा कहते हैं। تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (अल्लाह बहुत ही बुलन्दो बाला, पाक व मुनज़्ज़ा है उन की बातों से)। इस के बा'द अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाता है : **54 :** इस से **55 :** और उस के सिवा कोई रब नहीं **56 :** और ह़ज़रते ईसा के बाब में नसारा के कई फ़िर्क़े हो गए : एक या'क़ूबिया, एक नस्तूरिया, एक मलकानिया। या'क़ूबिया कहता था कि वोह अल्लाह है ज़मीन पर उतर आया था फिर आस्मान पर चढ़ गया। नस्तूरिया का क़ौल है कि वोह ख़ुदा का बेटा है जब तक चाहा उसे ज़मीन पर रखा फिर उठा लिया और तीसरा फ़िर्क़ा येह कहता था कि वोह अल्लाह के बन्दे हैं मख़्लूक़ हैं नबी हैं येह मोमिन था। (مدارک)

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۳۷﴾ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙلا

तो ख़राबी है काफ़िरों के लिये एक बड़े दिन की हाज़िरी से[57] कितना सुनेंगे और कितना देखेंगे

يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۸﴾ وَاَنْذِرْهُمْ

जिस दिन हमारे पास हाज़िर होंगे[58] मगर आज ज़ालिम खुली गुमराही में हैं[59] और उन्हें डर सुनाओ

يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۳۹﴾

وقف لازم

पछतावे के दिन का[60] जब काम हो चुकेगा[61] और वोह ग़फ़लत में हैं[62] और वोह नहीं मानते

اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۴۰﴾ ع وَاذْكُرْ فِي

बेशक ज़मीन और जो कुछ इस पर है सब के वारिस हम होंगे[63] और वोह हमारी ही त़रफ़ फिरेंगे[64] और किताब में[65]

الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۴۱﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ

इब्राहीम को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़[66] था ग़ैब की ख़बरें बताता जब अपने बाप से बोला[67] ऐ मेरे बाप

لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْــًٔا ﴿۴۲﴾ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ

क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए[68] ऐ मेरे बाप बेशक

جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْۤ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿۴۳﴾

मेरे पास[69] वोह इल्म आया जो तुझे न आया तो तू मेरे पीछे चला आ[70] मैं तुझे सीधी राह दिखाऊं[71]

يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَبَتِ

ऐ मेरे बाप शैत़ान का बन्दा न बन[72] बेशक शैत़ान रहमान का ना फ़रमान है ऐ मेरे बाप

57 : बड़े दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **58 :** और उस दिन का देखना और सुनना कुछ नफ़्अ़ न देगा जब उन्हों ने दुन्या में दलाइले हक़ को नहीं देखा और **अल्लाह** के मवाईद को नहीं सुना। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह कलाम ब त़रीक़े तहदीद (बत़ौरे तम्बीह और डराने के) है कि उस रोज़ ऐसी होलनाक बातें सुनें और देखेंगे जिन से दिल फट जाएं। **59 :** न हक़ देखें न हक़ सुनें बहरे, अन्धे बने हुए हैं, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को इलाह और मा'बूद ठहराते हैं बा वुजूदे कि उन्हों ने ब सराह़त अपने बन्दा होने का ए'लान फ़रमाया। **60 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि जब काफ़िर मनाज़िले जन्नत देखेंगे जिन से वोह मह़रूम किये गए तो उन्हें नदामत व ह़सरत होगी कि काश वोह दुन्या में ईमान ले आए होते। **61 :** और जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में पहुंचेंगे, ऐसा सख़्त दिन दरपेश है **62 :** और उस दिन के लिये कुछ फ़िक्र नहीं करते **63 :** या'नी सब फ़ना हो जाएंगे हम ही बाक़ी रह जाएंगे। **64 :** हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे। **65 :** या'नी क़ुरआन में। **66 :** या'नी कसीरुस्सिद्क़ (हमेशा सच बोलने वाले)। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि सिद्दीक़ के मा'ना हैं कसीरुत्तस्दीक़ जो **अल्लाह** तआ़ला और उस की वह़दानिय्यत और उस के अम्बिया और उस के रसूलों की और मरने के बा'द उठने की तस्दीक़ करे और अह़कामे इलाहिय्यह बजा लाए। **67 :** या'नी आज़र बुत परस्त से। **68 :** या'नी इबादत मा'बूद की ग़ायत (इन्तिहा दरजे की) ता'ज़ीम है, इस का वोही मुस्तह़िक़ हो सकता है जो साहिबे औसाफ़े कमाल और वलिय्ये नेअ़म हो न कि बुत जैसी नाकारा मख़्लूक़, मुद्दआ येह है कि **अल्लाह** وَاحِدٌ، لَاشَرِيْكَ لَهٗ के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं। **69 :** मेरे रब की त़रफ़ से मा'रिफ़ते इलाही का **70 :** मेरा दीन क़बूल कर ! **71 :** जिस से तू क़ुर्बे इलाही की मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंच सके। **72 :** और उस की फ़रमां

www.dawateislami.net

اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّیْطٰنِ وَلِیًّا ﴿۴۵﴾

मैं डरता हूं कि तुझे रह़मान का कोई अ़ज़ाब पहुंचे तो तू शैत़ान का रफ़ीक़ हो जाए[73]

قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ

बोला क्या तू मेरे ख़ुदाओं से मुंह फेरता है ऐ इब्राहीम बेशक अगर तू[74] बाज़ न आया तो मैं तुझे पथराव करूंगा

وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿۴۶﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

और मुझ से ज़माना दराज़ तक बे अ़लाक़ा हो जा[75] कहा बस तुझे सलाम है[76] क़रीब है कि मैं तेरे लिये अपने रब से मुआ़फ़ी मांगूंगा[77] बेशक वोह

بِیْ حَفِیًّا ﴿۴۷﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۫ۖ

मुझ पर मेहरबान है और मैं एक किनारे हो जाऊंगा[78] तुम से और उन सब से जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो और अपने रब को पूजूंगा[79]

عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿۴۸﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ

क़रीब है कि मैं अपने रब की बन्दगी से बद बख़्त न होउं[80] फिर जब उन से और अल्लाह के सिवा उन के

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ﴿۴۹﴾ وَ

मा'बूदों से किनारा कर गया[81] हम ने उसे इस्ह़ाक़[82] और या'क़ूब[83] अ़त़ा किये और हर एक को ग़ैब की ख़बरें बताने वाला किया और

وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ﴿۵۰﴾ ع وَاذْكُرْ

हम ने उन्हें अपनी रह़मत अ़त़ा की[84] और उन के लिये सच्ची बुलन्द नामवरी रखी[85] और किताब में

فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۚ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿۵۱﴾ وَنَادَیْنٰهُ

मूसा को याद करो बेशक वोह चुना हुवा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला और उसे हम ने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ﴿۵۲﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ

तूर की दाहनी जानिब से निदा फ़रमाई[86] और उसे अपना राज़ कहने को क़रीब किया[87] और अपनी रह़मत से उसे उस का भाई हारून

बरदारी कर के कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला न हो। **73 :** और ला'नत व अ़ज़ाब में उस का साथी हो। इस नसीहते लुत़्फ़ आमेज़ और हिदायते दिल पज़ीर से आज़र ने नफ़्अ़ न उठाया और इस के जवाब में **74 :** बुतों की मुख़ालफ़त और उन को बुरा कहने और उन के उ़यूब बयान करने से **75 :** ताकि मेरे हाथ और ज़बान से अम्न में रहे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने **76 :** येह सलामे मुतारकत था। **77 :** कि वोह तुझे तौफ़ीक़े तौबा व ईमान दे कर तेरी मग़्फ़िरत करे। **78 :** शहरे बाबिल से शाम की त़रफ़ हिजरत कर के **79 :** जिस ने मुझे पैदा किया और मुझ पर एह़सान फ़रमाए। **80 :** इस में ता'रीज़ है कि जैसे तुम बुतों की पूजा कर के बद नसीब हुए, ख़ुदा के परस्तार के लिये येह बात नहीं, उस की बन्दगी करने वाला शक़ी व मह़रूम नहीं होता। **81 :** अर्ज़े मुक़द्दसा की त़रफ़ हिजरत कर के **82 :** फ़रज़न्द **83 :** फ़रज़न्द के फ़रज़न्द या'नी पोते। **फ़ाएदा :** इस में इशारा है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ इतनी दराज़ हुई कि आप ने अपने पोते ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْهِ السَّلَام को देखा। इस आयत में येह बताया गया कि अल्लाह के लिये हिजरत करने और अपने घरबार को छोड़ने की येह जज़ा मिली कि अल्लाह तआ़ला ने बेटे और पोते अ़त़ा फ़रमाए। **84 :** कि अम्वाल व औलाद ब कसरत इनायत किये। **85 :** कि हर दीन वाले मुसल्मान हों ख़्वाह

www.dawateislami.net

اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿۵۳﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ

अ़ता किया ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी)[88] और किताब में इस्माईल को याद करो[89] बेशक वोह वा'दे

الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪

का सच्चा था[90] और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताता और अपने घर वालों को[91] नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता

وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ

और अपने रब को पसन्द था[92] और किताब में इदरीस को याद करो[93] बेशक वोह

صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ

सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया[94] येह हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान

यहूदी ख़्वाह नसरानी सब उन की सना करते हैं और नमाज़ों में उन पर और उन की आल पर दुरूद पढ़ा जाता है। **86 :** "तूर" एक पहाड़ का नाम है जो मिस्र व मद्यन के दरमियान है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को मद्यन से आते हुए तूर की उस जानिब से जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दाहनी तरफ़ थी एक दरख़्त से निदा दी गई : "يٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ" ऐ मूसा मैं ही अल्लाह हूं तमाम जहानों का पालने वाला। **87 :** मर्तबए क़ुर्ब अ़ता फ़रमाया हिजाब मुर्तफ़अ़ किये यहां तक कि आप ने सरीरे अक़्लाम (क़लमों के लिखने की आवाज़) सुनी और आप की क़द्रो मन्ज़िलत बुलन्द की गई और आप से अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़रमाया। **88 :** जब कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब ! मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना। अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बड़े थे। **89 :** जो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के जद हैं। **90 :** अम्बिया सब ही सच्चे होते हैं लेकिन आप इस वस्फ़ में ख़ास शोहरत रखते हैं। एक मरतबा किसी मक़ाम पर आप से कोई शख़्स कह गया था कि आप यहीं ठहरे रहिये जब तक मैं वापस आऊं। आप उस जगह उस के इन्तिज़ार में तीन रोज़ ठहरे रहे। आप ने सब्र का वा'दा किया था, ज़ब्ह के मौक़अ़ पर इस शान से इस को वफ़ा फ़रमाया कि سُبْحٰنَ اللّٰه। **91 :** और अपनी क़ौम जुरहुम को जिन की तरफ़ आप मब्ऊ़स थे **92 :** ब सबब अपने ताअ़त व आ'माल व सब्रो इस्तिक़्लाल व अह्वाल व ख़िसाल के। **93 :** आप का नाम अख़्नूख़ है, आप हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद के दादा हैं, हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आप ही पहले रसूल हैं, आप के वालिद हज़रते शीस बिन आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वोह आप ही हैं, कपड़ों के सीने और सिले कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई, आप से पहले लोग खालें पहनते थे। सब से पहले हथियार बनाने वाले तराज़ू और पैमाने क़ाइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने वाले भी आप ही हैं, येह सब काम आप ही से शुरूअ़ हुए। अल्लाह तआ़ला ने आप पर तीस सहीफ़े नाज़िल किये और कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्स के बाइस आप का नाम इदरीस हुवा। **94 :** दुन्या में उन्हें उ़लुव्वे मर्तबत अ़ता किया या येह मा'ना हैं कि आस्मान पर उठा लिया और येही सहीह़ तर है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को आस्माने चहारुम पर देखा। हज़रते का'ब अह़बार वग़ैरा से मरवी है कि हज़रते इदरीस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मैं मौत का मज़ा चखना चाहता हूं कैसा होता है, तुम मेरी रूह क़ब्ज़ कर के दिखाओ ! उन्हों ने इस हुक्म की ता'मील की और रूह क़ब्ज़ कर के उसी वक़्त आप की तरफ़ लौटा दी आप ज़िन्दा हो गए। फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, येह भी किया गया, जहन्नम देख कर आप ने मालिक दारोग़ए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो मैं इस पर गुज़रना चाहता हूं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप उस पर गुज़रे, फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ ! वोह आप को जन्नत में ले गए, आप दरवाज़े खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुए, थोड़ी देर इन्तिज़ार कर के मलकुल मौत ने कहा कि आप अब अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये ! फ़रमाया : अब मैं यहां से कहीं न जाऊंगा, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है : "كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ" वोह मैं चख ही चुका हूं और येह फ़रमाया है : "وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا" कि हर शख़्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका, अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है : "وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ" कि वोह जन्नत से निकाले न जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यूं कहते हो ? अल्लाह तआ़ला ने मलकुल मौत को वह़्य फ़रमाई कि हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام ने जो कुछ किया मेरे इज़्न से किया और वोह मेरे इज़्न से जन्नत में दाख़िल हुए, उन्हें छोड़ दो ! वोह जन्नत ही में रहेंगे, चुनान्चे, आप वहां ज़िन्दा हैं।

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ

किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से[95] और उन में जिन को हम ने नूह़ के साथ सुवार किया था[96] और

ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى

इब्राहीम[97] और या'क़ूब की औलाद से[98] और उन में से जिन्हें हम ने राह दिखाई और चुन लिया[99] जब उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿۵۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ

السجدة ۵

रह़मान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते[100] तो उन के बा'द उन की जगह वोह ना ख़ल्फ़

خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۙ ﴿۵۹﴾

आए[101] जिन्हों ने नमाज़ें गंवाईं (ज़ाएअ़ कीं) और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[102] तो अ़न्क़रीब वोह दोज़ख़ में ग़य्य का जंगल पाएंगे[103]

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا

मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें

يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ ﴿۶۰﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा[104] बसने के बाग़ जिन का वा'दा रह़मान ने अपने[105] बन्दों से ग़ैब में किया[106]

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿۶۱﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ

बेशक उस का वा'दा आने वाला है वोह उस में कोई बेकार बात न सुनेंगे मगर सलाम[107] और उन्हें

رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿۶۲﴾ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا

उस में उन का रिज़्क़ है सुब्ह़ो शाम[108] येह वोह बाग़ है जिस का वारिस हम अपने बन्दों में से उसे करेंगे

95 : या'नी ह़ज़रते इदरीस व ह़ज़रते नूह़। 96 : या'नी इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के पोते और आप के फ़रज़न्द साम के फ़रज़न्द हैं। 97 : की औलाद से ह़ज़रते इस्माईल व ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते या'क़ूब 98 : ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून और ह़ज़रते ज़करिय्या और ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ईसा صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ وَسَلَامُهٗ 99 : शर्हे शरीअ़त व कश्फ़े ह़क़ीक़त के लिये। 100 : अल्लाह तआ़ला ने इन आयात में ख़बर दी कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अल्लाह तआ़ला की आयतों को सुन कर ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ और ख़ौफ़ से रोते और सज्दे करते थे। **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि क़ुरआने पाक ब ख़ुशूए क़ल्ब सुनना और रोना मुस्तह़ब है। 101 : मिस्ले यहूदो नसारा वग़ैरा के 102 : और बजाए ताअ़ते इलाही के मआसी को इख़्तियार किया 103 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : **ग़य्य** जहन्नम में एक वादी है जिस की गरमी से जहन्नम की वादियां भी पनाह मांगती हैं। येह उन लोगों के लिये है जो ज़िना के आ़दी और इस पर मुसिर (डटे हुए) हों और जो शराब के आ़दी हों और जो सूद ख़्वार सूद के ख़ूगर (आ़दी) हों और जो वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले हों और जो झूटी गवाही देने वाले हों। 104 : और उन के आ'माल की जज़ा में कुछ भी कमी न की जाएगी। 105 : ईमानदार सालेह़ व ताइब 106 : या'नी इस ह़ाल में कि जन्नत उन से ग़ाइब है और उन की नज़र के सामने नहीं या इस ह़ाल में कि वोह जन्नत से ग़ाइब हैं इस का मुशाहदा नहीं करते। 107 : मलाएका का या आपस में एक दूसरे का। 108 : या'नी अ़लद्दवाम क्यूं कि जन्नत में रात और दिन नहीं हैं, अहले जन्नत हमेशा नूर ही में रहेंगे या मुराद येह है कि दुन्या के दिन की मिक़्दार में दो मरतबा बिहिश्ती ने'मतें उन के सामने पेश की जाएंगी।

www.dawateislami.net

مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾ وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَ

जो परहेज़ गार है (और जिब्रील ने महबूब से अ़र्ज़ की)[109] हम फ़िरिश्ते नहीं उतरते मगर हुज़ूर के रब के हुक्म से उसी का है जो हमारे आगे है और

مَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ ۚ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

जो हमारे पीछे और जो इस के दरमियान है[110] और हुज़ूर का रब भूलने वाला नहीं[111] आस्मानों और ज़मीन और

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ

जो कुछ इन के बीच में है सब का मालिक तो उसे पूजो और उस की बन्दगी पर साबित रहो क्या उस के नाम का दूसरा

سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ ع وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا

जानते हो[112] और आदमी कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो ज़रूर अ़न्क़रीब जिला कर निकाला जाऊंगा[113] और क्या

يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ

आदमी को याद नहीं कि हम ने इस से पहले उसे बनाया और वोह कुछ न था[114] तो तुम्हारे रब की क़सम हम

لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ۚ ثُمَّ

इन्हें[115] और शैतानों सब को घेर लाएंगे[116] और इन्हें दोज़ख़ के आस पास हाज़िर करेंगे घुटनों के बल गिरे फिर

لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ۚ ثُمَّ لَنَحْنُ

हम[117] हर गुरोह से निकालेंगे जो उन में रहमान पर सब से ज़ियादा बेबाक होगा[118] फिर हम ख़ूब

اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ

जानते हैं जो उस आग में भूनने के ज़ियादा लाइक़ हैं और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो[119] तुम्हारे

109 शाने नुज़ूल : बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जिब्रील से फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! तुम जितना हमारे पास आया करते हो इस से ज़ियादा क्यूं नहीं आते ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **110 :** या'नी तमाम अमाकिन का वोही मालिक है, हम एक मकान से दूसरे मकान की त़रफ़ नक़्लो ह़रकत करने में उस के हुक्म व मशिय्यत के ताबेअ़ हैं, वोह हर ह़रकत व सुकून का जानने वाला और ग़फ़्लत व निस्यान से पाक है। **111 :** जब चाहे हमें आप की ख़िदमत में भेजे। **112 :** या'नी किसी को उस के साथ इस्मी शिर्कत भी नहीं और उस की वह़्दानिय्यत इतनी ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने भी अपने किसी मा'बूदे बाति़ल का नाम "**अल्लाह**" नहीं रखा। **113 :** इन्सान से यहां मुराद वोह कुफ़्फ़ार हैं जो मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के मुन्किर थे जैसे कि उबय बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा, इन्हीं लोगों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और येही इस का शाने नुज़ूल है। **114 :** तो जिस ने मा'दूम (ग़ैर मौजूद) को मौजूद फ़रमाया उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा कर देना क्या तअ़ज्जुब। **115 :** या'नी मुन्किरीने बअ़्स को **116 :** या'नी कुफ़्फ़ार को उन के गुमराह करने वाले शयात़ीन के साथ। इस त़रह़ कि हर काफ़िर शैत़ान के साथ एक ज़न्जीर में जकड़ा होगा **117 :** कुफ़्फ़ार के **118 :** या'नी दुख़ूले नार में जो सब से ज़ियादा सरकश और कुफ़्र में अशद (ज़ियादा सख़्त) होगा वोह मुक़द्दम किया जाएगा। बा'ज़ रिवायात में है कि कुफ़्फ़ार सब के सब जहन्नम के गिर्द ज़न्जीरों में जकड़े तौक़ डाले हुए ह़ाज़िर किये जाएंगे फिर जो कुफ़्रो सरकशी में अशद होंगे वोह पहले जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **119 :** नेक हो या बद, मगर नेक सलामत रहेंगे और जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन ! गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। ह़सन व क़तादा से मरवी है कि दोज़ख़ पर गुज़रने

عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ

रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है[120] फिर हम डर वालों को बचा लेंगे[121] और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे

فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

घुटनों के बल गिरे और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाती हैं काफ़िर[122] मुसल्मानों

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّ اَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَ كَمْ

से कहते हैं कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है[123] और हम

اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّ رِءْيًا ﴿٧٤﴾ قُلْ مَنْ كَانَ

ने उन से पहले कितनी संगतें खपा दीं[124] कि वोह उन से भी सामान और नुमूद (देखने) में बेहतर थे तुम फ़रमाओ जो गुमराही

فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ۬ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا

में हो तो उसे रह़मान ख़ूब ढील दे[125] यहां तक कि जब वोह देखें वोह चीज़ जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है या

الْعَذَابَ وَ اِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضْعَفُ

तो अ़ज़ाब[126] या क़ियामत[127] तो अब जान लेंगे कि किस का बुरा दरजा है और किस की फ़ौज

جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَ يَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَ الْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ

कमज़ोर[128] और जिन्हों ने हिदायत पाई[129] अल्लाह उन्हें और हिदायत बढ़ाएगा[130] और बाक़ी रहने वाली नेक बातों का[131]

خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَ

तेरे रब के यहां सब से बेहतर सवाब और सब से भला अन्जाम[132] तो क्या तुम ने उसे देखा जो हमारी आयतों से मुन्किर हुवा और

قَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ

कहता है मुझे ज़रूर माल व औलाद मिलेंगे[133] क्या ग़ैब को झांक आया है[134] या रह़मान के पास कोई क़रार

से पुल सिरात़ पर गुज़रना मुराद है जो दोज़ख़ पर है। 120 : या'नी वुरूदे जहन्नम (दोज़ख़ पर से गुज़रना) क़ज़ाए लाज़िम है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर लाज़िम किया है। 121 : या'नी ईमानदारों को 122 : मिस्ल नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बनाव सिंघार कर के बालों में तेल डाल कर कंघियां कर के उ़म्दा लिबास पहन कर फ़ख़्रो तकब्बुर के साथ ग़रीब फ़क़ीर 123 : मुद्आ येह है कि जब आयात नाज़िल की जाती हैं और दलाइल व बराहीन पेश किये जाते हैं तो कुफ़्फ़ार उन में तो फ़िक्र नहीं करते और उन से फ़ाएदा नहीं उठाते और बजाए इस के दौलतो माल और लिबास व मकान पर फ़ख़्रो तकब्बुर करते हैं। 124 : उम्मतें हलाक कर दीं 125 : दुन्या में उस की उ़म्र दराज़ कर के और उस को उस की गुमराही व तुग़यान में छोड़ कर 126 : दुन्या का क़त्ल व गिरिफ़्तारी 127 : जो त़रह़ त़रह़ की रुस्वाई और अ़ज़ाब पर मुश्तमिल है। 128 : कुफ़्फ़ार की शैत़ानी फ़ौज या मुसल्मानों का मलकी लश्कर। इस में मुश्रिकीन के इस क़ौल का रद है जो उन्हों ने कहा था कि कौन से गुरौह का मकान अच्छा और मजलिस बेहतर है। 129 : और ईमान से मुशर्रफ़ हुए 130 : इस पर इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा कर और मज़ीद बसीरत व तौफ़ीक़ दे कर। 131 : त़ाअ़तें और आख़िरत के तमाम आ'माल और पंजगाना नमाज़ें और अल्लाह तआला की

عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

(अ़हद) रखा है हरगिज़ नहीं[135] अब हम लिख रखेंगे जो वोह कहता है और उसे ख़ूब लम्बा अ़ज़ाब देंगे

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

और जो चीज़ें कह रहा है[136] उन के हमीं वारिस होंगे और हमारे पास अकेला आएगा[137] और अल्लाह के सिवा और ख़ुदा बना लिये[138]

لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ

कि वोह उन्हें ज़ोर दें[139] हरगिज़ नहीं[140] कोई दम जाता है कि वोह[141] उन की बन्दगी से मुन्किर होंगे और उन के मुख़ालिफ़

ركوع ٥ / ٨

ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾

हो जाएंगे[142] क्या तुम ने न देखा कि हम ने काफ़िरों पर शैत़ान भेजे[143] कि वोह इन्हें ख़ूब उछालते हैं[144]

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى

तो तुम इन पर जल्दी न करो हम तो इन की गिनती पूरी करते हैं[145] जिस दिन हम परहेज़ गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे

وقف لازم

الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُوْنَ

मेहमान बना कर[146] और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे[147] लोग शफ़ाअ़त

وقف لازم

الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ

के मालिक नहीं मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार कर रखा है[148] और काफ़िर बोले[149]

तस्बीह़ व तह़मीद और उस का ज़िक्र और तमाम आ'माले सालिह़ा येह सब बाक़ियाते सालिह़ात हैं कि मोमिन के लिये बाक़ी रहते हैं और काम आते हैं। **132 :** ब ख़िलाफ़े आ'माले कुफ़्फ़ार के कि वोह सब निकम्मे और बात़िल हैं। **133 शाने नुज़ूल :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अरत का ज़मानए जाहिलिय्यत में आ़स बिन वाइल सहमी पर क़र्ज़ था, वोह उस के पास तक़ाज़े को गए तो आ़स ने कहा कि मैं तुम्हारा क़र्ज़ न अदा करूंगा जब तक कि तुम सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फिर न जाओ और कुफ़्र इख़्तियार न करो। ह़ज़रते ख़ब्बाब ने फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता यहां तक कि तू मरे और मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठे। वोह कहने लगा कि क्या मैं मरने के बा'द फिर उठूंगा? ह़ज़रते ख़ब्बाब ने कहा : हां। आ़स ने कहा : तो फिर मुझे छोड़िये यहां तक कि मैं मर जाऊं और मरने के बा'द फिर ज़िन्दा होउं और मुझे माल व औलाद मिले जब ही आप का क़र्ज़ अदा करूंगा, इस पर येह आयाते करीमा नाज़िल हुईं। **134 :** और उस ने लौह़े मह़फ़ूज़ में देख लिया है कि आख़िरत में इस को माल व औलाद मिलेगी **135 :** ऐसा नहीं है। तो **136 :** या'नी माल व औलाद इन सब से उस की मिल्क और उस का तसर्रुफ़ उस के हलाक होने से उठ जाएगा और **137 :** कि न उस के पास माल होगा न औलाद और उस का येह दा'वा करना झूटा हो जाएगा। **138 :** या'नी मुश्रिकों ने बुतों को मा'बूद बनाया और उन की इबादत करने लगे इस उम्मीद पर **139 :** और उन की मदद करें और उन्हें अ़ज़ाब से बचाएं **140 :** ऐसा हो ही नहीं सकता **141 :** बुत जिन्हें येह पूजते थे **142 :** उन्हें झुटलाएंगे और उन पर ला'नत करेंगे अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़बान देगा और वोह कहेंगे : या रब ! इन्हें अ़ज़ाब कर। **143 :** या'नी शयात़ीन को इन पर छोड़ दिया और मुसल्लत़ कर दिया **144 :** और मआ़सी (ना फ़रमानी) पर उभारते हैं **145 :** आ'माल की जज़ा के लिये या सांसों की फ़ना के लिये या दिनों महीनों और बरसों की उस मीआ़द के लिये जो इन के अ़ज़ाब के वासित़े मुक़र्रर है। **146 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मोमिनीने मुत्तक़ीन ह़श्र में अपनी क़ब्रों से सुवार कर के उठाए जाएंगे और उन की सुवारियों पर त़िलाई मुरस्सअ़ ज़ीनें और पालान होंगे। **147 :** ज़िल्लतो इहानत के साथ ब सबब उन के कुफ़्र के। **148 :** या'नी जिन्हें शफ़ाअ़त का इज़्न मिल चुका है वोही शफ़ाअ़त करेंगे या येह मा'ना हैं कि शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिनीन की होगी और वोही इस से फ़ाएदा उठाएंगे। ह़दीस शरीफ़ में है : जो ईमान लाया

www.dawateislami.net

الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ؕ ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا ۙ ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ

रह़मान ने औलाद इख़्तियार की बेशक तुम ह़द की भारी बात लाए[150] क़रीब है कि आस्मान इस से फट

مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ ﴿٩٠﴾ اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ

पड़ें और ज़मीन शक़ हो जाए और पहाड़ गिर जाएं ढ (मिस्मार हो) कर[151] इस पर कि उन्हों ने रह़मान के लिये

وَلَدًا ۚ ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ؕ ﴿٩٢﴾ اِنْ كُلُّ مَنْ فِي

औलाद बताई और रह़मान के लिये लाइक़ नहीं कि औलाद इख़्तियार करे[152] आस्मानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّاۤ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ؕ ﴿٩٣﴾ لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ

में जितने हैं सब उस के हुज़ूर बन्दे हो कर ह़ाज़िर होंगे[153] बेशक वोह उन का शुमार जानता है और उन को एक एक कर के

عَدًّا ؕ ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

गिन रखा है[154] और उन में हर एक रोज़े क़ियामत उस के हुज़ूर अकेला ह़ाज़िर होगा[155] बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ

काम किये अ़न्क़रीब उन के लिये रह़मान मह़ब्बत कर देगा[156] तो हम ने येह क़ुरआन तुम्हारी ज़बान में यूंही आसान फ़रमाया कि तुम इस

بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ

से डर वालों को ख़ुश ख़बरी दो और झगड़ालू लोगों को इस से डर सुनाओ और हम ने इन से पहली कितनी संगतें खपाईं[157]

जिस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله" कहा उस के लिये **अल्लाह** के नज़्दीक अ़ह्द है। **149 :** या'नी यहूदी व नसरानी व मुश्रिकीन जो फ़िरिश्तों को **अल्लाह** की बेटियां कहते थे कि **150 :** और इन्तिहा दरजे का बात़िल व निहायत सख़्त व शनीअ़ कलिमा तुम ने मुंह से निकाला **151 :** या'नी येह कलिमा ऐसी बे अदबी व गुस्ताख़ी का है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाए तो इस पर तमाम जहान का निज़ाम दरहम बरहम कर दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार ने जब येह गुस्ताख़ी की और ऐसा बे बाकाना कलिमा मुंह से निकाला तो जिन्नो इन्स के सिवा आस्मान, ज़मीन, पहाड़ वग़ैरा तमाम ख़ल्क़ परेशानी से बेचैन हो गई और क़रीब हलाकत के पहुंच गई, मलाएका को ग़ज़ब हुवा और जहन्नम को जोश आया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी तन्ज़ीह (पाकी) बयान फ़रमाई। **152 :** वोह इस से पाक है और उस के लिये औलाद होना मुह़ाल है मुम्किन नहीं। **153 :** बन्दा होने का इक़रार करते हुए और बन्दा होना और औलाद होना जम्अ़ हो ही नहीं सकता और औलाद मम्लूक (ग़ुलाम) नहीं होती तो जो मम्लूक है हरगिज़ औलाद नहीं। **154 :** सब उस के इ़ल्म में मह़सूर व मुह़ात़ (घिरे हुए) हैं और हर एक के अन्फ़ास, अय्याम, आसार और तमाम अह़वाल और जुम्ला उमूर उस के शुमार में हैं, उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं, सब उस की तदबीरो क़ुदरत के तह़्त में हैं। **155 :** बिग़ैर माल व औलाद और मुईन व नासिर के। **156 :** या'नी अपना मह़बूब बनाएगा और अपने बन्दों के दिल में उन की मह़ब्बत डाल देगा। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला किसी बन्दे को मह़बूब करता है तो जिब्रील से फ़रमाता है कि फ़ुलाना मेरा मह़बूब है, जिब्रील उस से मह़ब्बत करने लगते हैं, फिर ह़ज़रते जिब्रील आस्मानों में निदा करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला फ़ुलां को मह़बूब रखता है, सब उस को मह़बूब रखें, तो आस्मान वाले उस को मह़बूब रखते हैं, फिर ज़मीन में उस की मक़्बूलिय्यते आ़म कर दी जाती है। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मोमिनीने सालिह़ीन व औलियाए कामिलीन की मक़्बूलिय्यते आ़म्मा उन की मह़बूबिय्यत की दलील है जैसे कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सुल्त़ान निज़ामुद्दीन देहलवी और ह़ज़रते सुल्त़ान सय्यिद अशरफ़ जहांगीर सिमनानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ और दीगर ह़ज़राते औलियाए कामिलीन की आ़म मक़्बूलिय्यतें उन की मह़बूबिय्यत की दलील हैं। **157 :** तक्ज़ीबे अम्बिया की वज्ह से कितनी बहुत सी उम्मतें हलाक कीं।

www.dawateislami.net

ركوع ٦ النصف

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾ ع

क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो[158]

اٰیاتها ١٣٥ ﴿٢٠﴾ سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ ﴿٤٥﴾ رکوعاتها ٨

सूरए ताहा मक्किय्या है, इस में एक सो पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

ऐ मह़बूब हम ने तुम पर येह कुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो[2] हां उस को नसीह़त जो

یَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِیْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ

डर रखता हो[3] उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला

عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَمَا

उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है उस का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ

بَیْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ یَعْلَمُ السِّرَّ وَ

इन के बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है[4] और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वोह तो भेद को जानता है और

اَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ

उसे जो उस से भी ज़ियादा छुपा है[5] अल्लाह कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम[6] और कुछ तुम्हें

158 : वोह सब नेस्तो नाबूद (हलाक व बरबाद) कर दिये गए, इसी त़रह़ येह लोग अगर वोही त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे तो इन का भी वोही अन्जाम होगा। 1 : सूरए त़ाहा मक्किय्या है। इस में आठ रुकूअ़, एक सो पैंतीस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो इक्तालीस कलिमे और पांच हज़ार दो सो बयालीस हुरूफ़ हैं। 2 : और तमाम शब के क़ियाम की तक्लीफ़ उठाओ। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इबादत में बहुत जुहद फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर ब हुक्मे इलाही अ़र्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राह़त दीजिये इस का भी ह़क़ है। एक क़ौल येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लोगों के कुफ़्र और उन के ईमान से मह़रूम रहने पर बहुत ज़ियादा मुतअस्सिफ़ व मुतह़स्सिर (अफ़्सुर्दा) रहते थे और ख़ात़िरे मुबारक पर इस सबब से रन्जो मलाल रहा करता था, इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्जो मलाल की कोफ़्त न उठाएं, कुरआने पाक आप की मशक़्क़त के लिये नाज़िल नहीं किया गया है। 3 : वोह इस से नफ़्अ़ उठाएगा और हिदायत पाएगा। 4 : जो सातों ज़मीनों के नीचे है। मुराद येह है कि काएनात में जो कुछ है अ़र्श व समावात, ज़मीन व तह़्तुस्सरा कुछ हो, कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है। 5 : "سِر" या'नी भेद वोह है जिस को आदमी रखता और छुपाता है और इस से ज़ियादा पोशीदा वोह है जिस को इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उस से उस का इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुवा न उस तक ख़याल पहुंचा। एक क़ौल येह है कि भेद से मुराद वोह है जिस को इन्सानों से छुपाता है और इस से ज़ियादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है। एक क़ौल येह है कि भेद बन्दे का वोह है जिसे बन्दा ख़ुद जानता है और अल्लाह तआ़ला जानता है, इस से ज़ियादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिन को अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता।

وقف لازم

حَدِیْثُ مُوْسٰی ﴿۹﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا

मूसा की ख़बर आई[7] जब उस ने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है

لَّعَلِّیْۤ اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَی النَّارِ هُدًی ﴿۱۰﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا

शायद मैं तुम्हारे लिये उस में से कोई चिंगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं फिर जब आग के पास आया[8]

نُوْدِیَ یٰمُوْسٰی ﴿۱۱﴾ اِنِّیْۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَیْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ

निदा फ़रमाई गई कि ऐ मूसा बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल[9] बेशक तू पाक

الْمُقَدَّسِ طُوًی ﴿۱۲﴾ وَ اَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا یُوْحٰی ﴿۱۳﴾ اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ

जंगल तुवा में है[10] और मैं ने तुझे पसन्द किया[11] अब कान लगा कर सुन जो तुझे वह्य होती है बेशक मैं ही हूं अल्लाह

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾ اِنَّ السَّاعَةَ

कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख[12] बेशक क़ियामत आने

اٰتِیَةٌ اَكَادُ اُخْفِیْهَا لِتُجْزٰی كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰی ﴿۱۵﴾ فَلَا یَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

वाली है क़रीब था कि मैं उसे सब से छुपाऊं[13] कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए[14] तो हरगिज़ तुझे[15] इस के मानने से वोह

आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह अफ़्आल से परहेज़ करना चाहिये वोह ज़ाहिरा हों या बातिना क्यूं कि अल्लाह तआला से कुछ छुपा नहीं और इस में नेक आ'माल पर तरग़ीब भी है कि ताअत ज़ाहिर हो या बातिन अल्लाह से छुपी नहीं वोह जज़ा अता फ़रमाएगा। तफ़्सीरे बैज़ावी में "क़ौल" से ज़िक्रे इलाही और दुआ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में इस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्रो दुआ में जहर (बुलन्द आवाज़ करना) अल्लाह तआला को सुनाने के लिये नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासिख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मश्ग़ूली से रोकने और बाज़ रखने के लिये है। **6 :** वोह वाहिद बिज़्ज़ात है और अस्मा व सिफ़ात इबारात हैं और ज़ाहिर है कि तअ़द्दुदे इबारात तअ़द्दुदे मा'ना को मुक़्तज़ी नहीं। **7 :** हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अहवाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام जो दरजए उ़ल्या पाते हैं वोह अदाए फ़राइज़े नुबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मशक़्क़तें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं। यहां हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उस सफ़र का वाक़िआ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मद्यन से मिस्र की तरफ़ हज़रते शुऐब عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इजाज़त ले कर अपनी वालिदए माजिदा से मिलने के लिये रवाना हुए थे, आप के अहले बैत हमराह थे और आप ने बादशाहाने शाम के अन्देशे से सड़क छोड़ कर जंगल में क़त्ए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई, बीबी साहिबा हामिला थीं चलते चलते तूर के ग़र्बी जानिब पहुंचे, यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हुवा, येह रात अंधेरी थी, बर्फ़ पड़ रही थी, सर्दी शिद्दत की थी, आप को दूर से आग मा'लूम हुई **8 :** वहां एक दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था, जितना उस के क़रीब जाते हैं दूर होता है, जब ठहर जाते हैं क़रीब होता है, उस वक़्त आप को **9 :** कि इस में तवाज़ोअ़ और बुक़्अ़ए मुअ़ज़्ज़मा का एहतिराम और वादिये मुक़द्दस की ख़ाक से हुसूले बरकत का मौक़अ़ है। **10 :** "तुवा" वादिये मुक़द्दस का नाम है जहां येह वाक़िआ पेश आया। **11 :** तेरी क़ौम में से नुबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह निदा हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने हर जुज़्वे बदन से सुनी और क़ुव्वते सामिआ ऐसी आम हुई कि तमाम जिस्मे अक़्दस कान बन गया। سُبْحٰنَ اللہ। **12 :** ताकि तू उस में मुझे याद करे और मेरी याद में इख़्लास और मेरी रिज़ा मक़्सूद हो, कोई दूसरी ग़रज़ न हो, इसी तरह रिया का दख़्ल न हो या येह मा'ना हैं कि तू मेरी नमाज़ क़ाइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रह़मत से याद फ़रमाऊं। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ईमान के बा'द आ'ज़मे फ़राइज़ नमाज़ है। **13 :** और बन्दों को उस के आने की ख़बर न दूं और उस के आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में येह हिक्मत न होती **14 :** और उस के ख़ौफ़ से मआसी तर्क करे नेकियां ज़ियादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे। **15 :** ऐ उम्मते मूसा ! ख़िताब ब ज़ाहिर हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को है और मुराद इस से आप की उम्मत है। (مدارک)

www.dawateislami.net

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿١٦﴾ وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ

बाज़ न रखे जो इस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला[16] फिर तो हलाक हो जाए और येह तेरे दाहने हाथ में क्या है

يٰمُوْسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَ

ऐ मूसा[17] अ़र्ज़ की येह मेरा अ़सा है[18] मैं इस पर तक्या (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और

لِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ

मेरे इस में और काम हैं[19] फ़रमाया इसे डाल दे ऐ मूसा तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वोह दौड़ता हुवा

تَسْعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ وقفة سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿٢١﴾ وَ

सांप हो गया[20] फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली त़रह कर देंगे[21] और

اضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ﴿٢٢﴾ لا

अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला[22] ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज़ के[23] एक और निशानी[24]

ع ٢٤ ١٠ لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿٢٣﴾ ج اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٢٤﴾ ع قَالَ

कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं फ़िरऔ़न के पास जा[25] उस ने सर उठाया[26] अ़र्ज़ की

رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ﴿٢٥﴾ لا وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ ﴿٢٦﴾ لا وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ

ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे[27] और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की

16 : अगर तू उस का कहना माने और क़ियामत पर ईमान न लाए तो **17 :** इस सुवाल की हिक्मत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अ़सा को देख लें और येह बात क़ल्ब में ख़ूब रासिख़ हो जाए कि येह अ़सा है ताकि जिस वक़्त वोह सांप की शक्ल में हो तो आप के ख़ातिरे मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह हिक्मत है कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत (**अल्लाह** तआ़ला से हम कलामी करते हुए रो'ब व दहशत) का असर कम हो (مدارک وغیرہ) **18 :** इस अ़सा में ऊपर की जानिब दो शाख़ें थीं और उस का नाम नब्आ़ था। **19 :** मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूज़ी जानवरों को दफ़्अ़ करने और आ'दा से मुह़ारबा में काम लेने वग़ैरा के, इन फ़वाइद का ज़िक्र करना ब त़रीक़े शुक्रे नेअ़मे इलाहिय्यह था। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **20 :** और क़ुदरते इलाही दिखाई गई कि जो अ़सा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वोह ऐसा हैबतनाक अज़्दहा बन गया। येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ौफ़ हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन से **21 :** येह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा ह़त्ता कि आप ने अपना दस्ते मुबारक उस के मुंह में डाल दिया और वोह आप के हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक़ अ़सा बन गया, अब उस के बा'द एक और मो'जिज़ा अ़ता फ़रमाया जिस की निस्बत इर्शाद फ़रमाया : **22 :** या'नी कफ़े दस्ते रास्त (सीधे हाथ की हथेली) बाएं बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो आफ़्ताब की त़रह़ चमकता निगाहों को ख़ीरा करता (चुंधयाता हुवा) और **23 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आफ़्ताब की त़रह़ नूर ज़ाहिर होता था और येह मो'जिज़ा आप के आ'ज़म मो'जिज़ात में से है, जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बग़ल के नीचे रख कर बाज़ू से मिलाते तो वोह दस्ते अक़्दस ह़ालते साबिक़ा पर आ जाता। **24 :** आप के सिद्क़े नुबुव्वत की अ़सा के बा'द इस निशानी को भी लीजिये। **25 :** रसूल हो कर **26 :** और कुफ़्र में ह़द से गुज़र गया और उलूहिय्यत का दा'वा करने लगा। **27 :** और इसे तह़म्मुले रिसालत के लिये वसीअ़ फ़रमा दे।

www.dawateislami.net

لِّسَانِيْ ﴿۲۷﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ﴿۲۸﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ

गिरह खोल दे[28] कि वोह मेरी बात समझें और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे[29] वोह कौन मेरा

اَخِي ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِيْ ﴿۳۱﴾ وَاَشْرِكْهُ فِيْۤ اَمْرِيْ ﴿۳۲﴾ كَيْ نُسَبِّحَكَ

भाई हारून उस से मेरी कमर मज़्बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर[30] कि हम ब कसरत तेरी

كَثِيْرًا ﴿۳۳﴾ وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿۳۴﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ

पाकी बोलें और ब कसरत तेरी याद करें[31] बेशक तू हमें देख रहा है[32] फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग

سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰۤى ﴿۳۷﴾ اِذْ اَوْحَيْنَاۤ

तुझे अ़ता हुई और बेशक हम ने[33] तुझ पर एक बार और एह़सान फ़रमाया जब हम ने तेरी

اِلٰۤى اُمِّكَ مَا يُوْحٰۤى ﴿۳۸﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ

मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था[34] कि इस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में[35] डाल दे

فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ

तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन[36] और मैं ने तुझ पर अपनी

مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ۬ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ﴿۳۹﴾ اِذْ تَمْشِيْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ وقف لازم

त़रफ़ की मह़ब्बत डाली[37] और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो[38] तेरी बहन चली[39] फिर कहा क्या

---

28 : जो ख़ुर्द साली (बचपन) में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और इस का वाक़िआ़ येह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔ़न की गोद में थे आप ने उस की दाढ़ी पकड़ कर उस के मुंह पर ज़ोर से त़मांचा मारा, इस पर उसे ग़ुस्सा आया और उस ने आप के क़त्ल का इरादा किया। आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह येह नादान बच्चा है क्या समझे ? तू चाहे तो तजरिबा कर ले ! इस तजरिबे के लिये एक त़श्त में आग और एक त़श्त में याक़ूते सुर्ख़ आप के सामने पेश किये गए, आप ने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़िरिश्ते ने आप का हाथ अंगारे पर रख दिया और वोह अंगारा आप के मुंह में दे दिया, इस से ज़बाने मुबारक जल गई और लुक्नत पैदा हो गई, इस के लिये आप ने येह दुआ़ की। **29 :** जो मेरा मुआ़विन व मो'तमद हो। **30 :** या'नी अम्रे नुबुव्वत व तब्लीग़े रिसालत में। **31 :** नमाज़ों में भी और ख़ारिजे नमाज़ भी। **32 :** हमारे अह़वाल का आ़लिम है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने **33 :** इस से क़ब्ल **34 :** दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रीए से, जब कि उन्हें आप की विलादत के वक़्त फ़िरऔ़न की त़रफ़ से आप को क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुवा। **35 :** या'नी नील में **36 :** या'नी फ़िरऔ़न। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उस में रूई बिछाई और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को उस में रख कर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उस की दरज़ें (झिरयां) रोग़ने क़ीर (तारकोल) से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक़ के अन्दर पानी में पहुंचे, फिर उस सन्दूक़ को दरियाए नील में बहा दिया, इस दरिया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔ़न के मह़ल में गुज़रती थी, फ़िरऔ़न मअ़ अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारे बैठा था, नहर में सन्दूक़ आता देख कर उस ने ग़ुलामों और कनीज़ों को उस के निकालने का हुक्म दिया। वोह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया, खोला तो उस में एक नूरानी शक्ल फ़रज़न्द जिस की पेशानी से वजाहत व इक़्बाल के आसार नुमूदार थे नज़र आया, देखते ही फ़िरऔ़न के दिल में ऐसी मह़ब्बत पैदा हुई कि वोह वारफ़्ता हो गया और अ़क़्ल व ह़वास बजा न रहे, अपने इख़्तियार से बाहर हो गया, इस की निस्बत **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **37 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मह़बूब बनाया और ख़ल्क़ का मह़बूब कर दिया और जिस को **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपनी मह़बूबिय्यत से नवाज़ता है क़ुलूब में उस की मह़ब्बत पैदा हो जाती है, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा, येही ह़ाल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का था जो आप को देखता था उसी के दिल में आप की मह़ब्बत पैदा हो जाती थी। क़तादा ने कहा कि ह़ज़रते

www.dawateislami.net

اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ یَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤى اُمِّكَ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ ؕ

मैं तुम्हें वोह लोग बता दूं जो इस बच्चे की परवरिश करें[40] तो हम तुझे तेरी मां के पास फेर लाए कि उस की आंख[41] ठन्डी हो और ग़म न करे[42]

وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّیْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَ فَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۫ فَلَبِثْتَ سِنِیْنَ

और तू ने एक जान को क़त्ल किया[43] तो हम ने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया[44] तो तू कई बरस

فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ ۙ۬ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ یّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾ وَ اصْطَنَعْتُكَ

मद्यन वालों में रहा[45] फिर तू एक ठहराए वा'दे पर हाज़िर हुवा ऐ मूसा[46] और मैं ने तुझे ख़ास

لِنَفْسِیْ ﴿۴۱﴾ ۚ اِذْهَبْ اَنْتَ وَ اَخُوْكَ بِاٰیٰتِیْ وَ لَا تَنِیَا فِیْ ذِكْرِیْ ﴿۴۲﴾ ۚ اِذْهَبَاۤ

अपने लिये बनाया[47] तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां[48] ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना दोनों

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۴۳﴾ ۚۖ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ

फ़िरऔन के पास जाओ बेशक उस ने सर उठाया तो उस से नर्म बात कहना[49] इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या

یَخْشٰى ﴿۴۴﴾ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ یَّفْرُطَ عَلَیْنَاۤ اَوْ اَنْ یَّطْغٰى ﴿۴۵﴾

कुछ डरे[50] दोनों ने अ़र्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वोह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए

मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आंखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर देखने वाले के दिल में महब्बत जोश मारने लगती थी। **38 :** या'नी मेरी हिफ़ाज़त व निगहबानी में परवरिश पाए। **39 :** जिस का नाम मरयम था ताकि वोह आप के हाल का तजस्सुस करे और मा'लूम करे कि सन्दूक़ कहां पहुंचा ? आप किस के हाथ आए ? जब उस ने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔन के पास पहुंचा और वहां दूध पिलाने के लिये दाइयां हाज़िर की गईं और आप ने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आप की बहन ने **40 :** उन लोगों ने इस को मन्ज़ूर किया, वोह अपनी वालिदा को ले गई, आप ने उन का दूध क़बूल फ़रमाया। **41 :** आप के दीदार से **42 :** या'नी ग़मे फ़िराक़ दूर हो। इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के एक और वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है **43 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔन की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था वोह मर गया, कहा गया है कि उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ बारह साल की थी, इस वाक़िए पर आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुवा। **44 :** मेहनतों में डाल कर और उन से ख़लासी अ़ता फ़रमा कर। **45 :** मद्यन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फ़ासिले पर, यहां हज़रते शुऐब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रहते थे, हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मिस्र से मद्यन आए और कई बरस तक हज़रते शुऐब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास इक़ामत फ़रमाई और उन की साहिब ज़ादी सफ़ूरा के साथ आप का निकाह हुवा। **46 :** या'नी अपनी उम्र के चालीसवें साल, और येह वोह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वह्य की जाती है। **47 :** अपनी वह्य और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी महब्बत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ाइम रहे और मेरे और मेरी ख़ल्क़ के दरमियान ख़िताब पहुंचाने वाला हो। **48 :** या'नी मो'जिज़ात **49 :** या'नी उस को ब नरमी नसीहत फ़रमाना और नरमी का हुक्म इस लिये था कि उस ने बचपन में आप की ख़िदमत की थी और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नरमी से मुराद येह है कि आप उस से वा'दा करें कि अगर वोह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उस की सल्तनत बाक़ी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें ता दमे मर्ग बाक़ी रहेंगी और बा'दे मौत दुख़ूले जन्नत मुयस्सर आएगा। जब हज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔन से येह वा'दे किये तो उस को येह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वोह किसी काम पर बिग़ैर मश्वरए हामान के क़त्ई फ़ैसला नहीं करता था, हामान मौजूद न था जब वोह आया तो फ़िरऔन ने उस को येह ख़बर दी और कहा कि मैं चाहता हूं कि हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं। हामान कहने लगा : मैं तो तुझ को आ़क़िल व दाना समझता था ! तू रब है, बन्दा बना चाहता है ! तू मा'बूद है, आ़बिद बनने की ख़्वाहिश करता है ! फ़िरऔन ने कहा : तू ने ठीक कहा और हज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام मिस्र में थे, **अल्लाह** तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को हुक्म किया कि वोह हज़रते हारून के पास आएं और हज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام को वह्य की, कि हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से मिलें। चुनान्चे वोह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वह्य उन्हें हुई थी उस की हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को इत्तिलाअ़ दी। **50 :** या'नी आप की ता'लीम व नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिये ताकि आप के लिये अज्र और उस पर इल्ज़ामे हुज्जत और

قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا

फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं[51] सुनता और देखता[52] तो उस के पास जाओ और उस से कहो कि हम तेरे रब

رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ

के भेजे हुए हैं तो औलादे या'क़ूब को हमारे साथ छोड़ दे[53] और उन्हें तक्लीफ़ न दे[54] बेशक हम तेरे पास

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ

तेरे रब की त़रफ़ से निशानी लाए हैं[55] और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे[56] बेशक हमारी त़रफ़ वह्य हुई है

اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾

कि अ़ज़ाब उस पर है जो झुटलाए[57] और मुंह फेरे[58] बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा

قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ

कहा हमारा रब वोह है जिस ने हर चीज़ को उस के लाइक़ सूरत दी[59] फिर राह दिखाई[60] बोला[61] अगली संगतों

الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ

का क्या ह़ाल है[62] कहा उन का इ़ल्म मेरे रब के पास एक किताब में है[63] मेरा रब न बहके

وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا

न भूले वोह जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये इस में चलती राहें रखीं

وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

और आस्मान से पानी उतारा[64] तो हम ने उस से त़रह त़रह के सब्ज़े के जोड़े निकाले[65]

क़त्ए़ उ़ज़्र हो जाए और ह़क़ीक़त में होना तो वोही है जो तक़्दीरे इलाही है। **51 :** अपनी मदद से **52 :** उस के क़ौल व फ़े'ल को **53 :** और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे **54 :** मेह़नत व मशक़्क़त के सख़्त काम ले कर। **55 :** या'नी मो'जिज़े जो हमारे सिद्क़े नुबुव्वत की दलील हैं। फ़िरऔ़न ने कहा : वोह क्या हैं ? तो आप ने मो'जिज़ए यदे बैज़ा (सूरज की त़रह हाथ चमकने का मो'जिज़ा) दिखाया। **56 :** या'नी दोनों जहान में उस के लिये सलामती है वोह अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेगा। **57 :** हमारी नुबुव्वत को और उन अह़काम को जो हम लाए। **58 :** हमारी हिदायत से। ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ने फ़िरऔ़न को येह पैग़ाम पहुंचा दिया तो वोह **59 :** हाथ को इस के लाइक़ ऐसी कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पाउं को इस के क़ाबिल कि चल सके, ज़बान को इस के मुनासिब कि बोल सके, आंख को इस के मुवाफ़िक़ कि देख सके, कान को ऐसी कि सुन सके। **60 :** और इस की मा'रिफ़त दी कि दुन्या की ज़िन्दगानी और आख़िरत की सआदत के लिये **अल्लाह** की अ़त़ा की हुई ने'मतों को किस त़रह काम में लाया जाए। **61 :** फ़िरऔ़न **62 :** या'नी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअ़्से बा'दल मौत या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा कर के उठाए जाने के मुन्किर थे, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **63 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में उन के तमाम अह़वाल मक्तूब हैं, रोज़े क़ियामत उन्हें इन आ'माल पर जज़ा दी जाएगी। **64 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का कलाम तो यहां तमाम हो गया अब **अल्लाह** तआला अहले मक्का को ख़िता़ब कर के इस की तत्मीम फ़रमाता है **65 :** या'नी क़िस्म क़िस्म के सब्ज़े मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुश्बूओं शक्लों के, बा'ज़ आदमियों के लिये बा'ज़ जानवरों के लिये।

www.dawateislami.net

ع٢

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿۵۴﴾ مِنْهَا

तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ[66] बेशक इस में निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को हम ने ज़मीन

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿۵۵﴾ وَلَقَدْ

ही से तुम्हें बनाया[67] और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे[68] और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे[69] और बेशक हम

اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿۵۶﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

ने उसे[70] अपनी सब निशानियां[71] दिखाईं तो उस ने झुटलाया और न माना[72] बोला क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी

بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿۵۷﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा[73] तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे[74] तो हम में और अपने में एक

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿۵۸﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

वा'दा ठहरा दो जिस से न हम बदला लें (आगे पीछे हों) न तुम हमवार जगह हो मूसा ने कहा तुम्हारा वा'दा

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿۵۹﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ

मेले का दिन है[75] और येह कि लोग दिन चढ़े जम्अ़ किये जाएं[76] तो फ़िरऔ़न फिरा और अपने दाउं (मक्रो फ़रेब) इकठ्ठे किये[77]

ثُمَّ اَتٰى ﴿۶۰﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ

फिर आया[78] उन से मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो अल्लाह पर झूट न बांधो[79] कि वोह तुम्हें अ़ज़ाब

بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿۶۱﴾ فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا

से हलाक कर दे और बेशक ना मुराद रहा जिस ने झूट बांधा[80] तो अपने मुआ़मले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए[81] और छुप कर

66 : येह अम्रे इबाहत और तज़्कीरे ने'मत के लिये है या'नी हम ने येह सब्ज़े निकाले तुम्हारे लिये इन का खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह कर के। **67 :** तुम्हारे जद्दे आ'ला हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **68 :** तुम्हारी मौत व दफ़्न के वक़्त **69 :** रोज़े क़ियामत। **70 :** या'नी फ़िरऔ़न को **71 :** या'नी कुल आयाते तिस्अ़ (नव निशानियां) जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अ़ता फ़रमाई थीं। **72 :** और उन आयात को सेहर बताया और क़बूले हक़ से इन्कार किया और **73 :** या'नी हमें मिस्र से निकाल कर खुद इस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ। **74 :** और जादू में हमारा और तुम्हारा मुक़ाबला होगा **75 :** इस मेले से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उन की ई़द थी और उस में वोह ज़ीनतें कर कर के जम्अ़ होते थे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह दिन आ़शूरा या'नी दसवीं मुहर्रम था और उस साल येह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ़ हुई थी। इस रोज़ को हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस लिये मुअ़य्यन फ़रमाया कि येह रोज़ उन की ग़ायते शौकत का दिन था, इस को मुक़र्रर करना अपने कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है, नीज़ इस में येह भी हिक्मत थी कि हक़ का ज़ुहूर और बातिल की रुस्वाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जब कि अत़राफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुज्तमअ़ हों। **76 :** ताकि ख़ूब रोशनी फैल जाए और देखने वाले ब इत़्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए। **77 :** कसीरुत्ता'दाद जादूगरों को जम्अ़ किया **78 :** वा'दे के दिन उन सब को ले कर **79 :** किसी को उस का शरीक कर के **80 :** अल्लाह तआ़ला पर। **81 :** या'नी जादूगर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का येह कलाम सुन कर आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए। बा'ज़ कहने लगे कि येह भी हमारी मिस्ल जादूगर हैं। बा'ज़ ने कहा कि येह बातें ही जादूगरों की नहीं, वोह अल्लाह पर झूट बांधने को मन्अ़ करते हैं।

www.dawateislami.net

النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ

मश्वरत की बोले बेशक येह दोनों[82] ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी

اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ

ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएं तो अपना दाउं (फ़रेब) पक्का कर लो फिर

ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِمَّاۤ اَنْ

परा बांध (सफ़ बना) कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा बोले[83] ऐ मूसा या तो

تُلْقِيَ وَاِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا

तुम डालो[84] या हम पहले डालें[85] मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो[86] जभी

حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ

उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं[87] तो अपने

نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا

जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो

فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفْلِحُ

तेरे दहने हाथ में है[88] वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर

السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ

का भला नहीं होता कहीं आवे[89] तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा

وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ

का रब है[90] फ़िरऔन बोला क्या तुम इस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने

82 : या'नी हज़रते मूसा व हज़रते हारून (عَلَيْهِمَا السَّلَام) 83 : जादूगर 84 : पहले अपना अ़सा 85 : अपने सामान। इब्तिदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की राए मुबारक पर छोड़ा और इस की बरकत से आख़िर कार अल्लाह तआला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। 86 : येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस लिये फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वोह सब ज़ाहिर कर चुकें इस के बा'द आप मो'जिज़ा दिखाएं और हक़ बातिल को मिटाए और मो'जिज़ा सेहर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इब्रत हासिल हो। चुनान्चे, जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वग़ैरा जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी। 87 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़मीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी से मस्हूर हो गए, कहीं ऐसा न हो कि बा'ज़ मो'जिज़ा देखने से पहले ही इस के गिरवीदा हो जाएं और मो'जिज़ा न देखें। 88 : या'नी अपना अ़सा 89 : फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات ने अपना अ़सा डाला वोह जादूगरों के तमाम अज़्दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उस के ख़ौफ़ से घबरा गए। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया, येह देख कर जादूगरों को यक़ीन

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ

तुम सब को जादू सिखाया[91] तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटूंगा[92] और

لَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَ لَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَاۤ اَشَدُّ عَذَابًا وَّ اَبْقٰى ﴿۷۱﴾

तुम्हें खजूर के डुन्ड (सूखे तने) पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अ़ज़ाब सख़्त और देर पा है[93]

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ

बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे उन रोशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं[94] हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तो तू कर चुक

مَاۤ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ ﴿۷۲﴾ اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا

जो तुझे करना है[95] तू इस दुन्या ही की ज़िन्दगी में तो करेगा[96] बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए

لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَ مَاۤ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرٌ وَّ

कि वोह हमारी ख़ताएं बख़्श दे और वोह जो तू ने हमें मजबूर किया जादू पर[97] और अल्लाह बेहतर है[98] और

اَبْقٰى ﴿۷۳﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[99] बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम[100] हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे[101]

وَ لَا يَحْيٰى ﴿۷۴﴾ وَ مَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

न जिये[102] और जो उस के हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों[103] तो उन्हीं के

हुवा कि येह मो'जिज़ा है जिस से सेहर मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेब कारी इस के सामने क़ाइम नहीं रह सकती। **90 :** سُبْحٰنَ اللہ क्या अ़जीब हाल था, जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुहूद के लिये रस्सियां और अ़सा डाले थे अभी मो'जिज़ा देख कर उन्हों ने शुक्र व सुजूद के लिये सर झुका दिये और गरदनें डाल दीं, मन्क़ूल है कि इस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और इन्हों ने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये। **91 :** या'नी जादू में वोह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ाइक़ है। (مَعَاذَ اللہ) **92 :** या'नी दहने हाथ और बाएं पाउं **93 :** इस से फ़िरऔ़न मल्ऊ़न की मुराद येह थी कि उस का अ़ज़ाब सख़्त तर है, या रब्बुल आ़लमीन का। फ़िरऔ़न का येह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वोह जादूगर **94 :** यदे बैज़ा और अ़साए मूसा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि उन का इस्तिद्लाल येह था कि अगर तू हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े को भी सेहर कहता है तो बता वोह रस्से और लाठियां कहां गईं ? बा'ज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उस में अपने मनाज़िल का देखना है। **95 :** हमें इस की कुछ परवा नहीं **96 :** आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुन्या ज़ाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है, तू मेहरबान भी हो तो बक़ाए दवाम नहीं दे सकता, फिर ज़िन्दगानिये दुन्या और इस की राहतों के ज़वाल का क्या ग़म, बिल ख़ुसूस उस को जो जानता है कि आख़िरत में आ'माले दुन्या की जज़ा मिलेगी। **97 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न ने जब जादूगरों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा था कि हम हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सोता हुवा देखना चाहते हैं, चुनान्चे इस की कोशिश की गई और उन्हें ऐसा मौक़अ़ बहम पहुंचा दिया गया, उन्हों ने देखा कि हज़रत ख़्वाब में हैं और अ़सा शरीफ़ पहरा दे रहा है, येह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्यूं कि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उस का जादू काम नहीं करता, मगर फ़िरऔ़न ने उन्हें जादू करने पर मजबूर किया, उस की मग़्फ़िरत के वोह अल्लाह तआ़ला से ता़लिब और उम्मीद वार हैं। **98 :** फ़रमां बरदारों को सवाब देने में **99 :** ब लिहाज़ अ़ज़ाब करने के ना फ़रमानों पर। **100 :** या'नी काफ़िर मिस्ल फ़िरऔ़न के **101 :** कि मर कर ही इस से छूट सके। **102 :** ऐसा जीना जिस से कुछ नफ़्अ़ उठा सके। **103 :** या'नी जिन का ईमान पर ख़ातिमा हुवा हो और उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में नेक अ़मल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाए हों।

الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿۷۵﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

दरजे ऊंचे बसने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में

فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿۷٦﴾ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ ع ۳ ۲۲ ۱۲

रहें और येह सिला है उस का जो पाक हुवा[104] और बेशक हम ने मूसा को वह्‌य की[105] कि रातों रात मेरे

بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا

बन्दों को ले चल[106] और उन के लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे[107] तुझे डर न होगा कि फ़िरऔन आ ले और न

تَخْشٰى ﴿۷۷﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ؕ ﴿۷۸﴾

ख़तरा[108] तो उन के पीछे फ़िरऔन पड़ा अपने लश्कर ले कर[109] तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया[110]

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿۷۹﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई[111] ऐ बनी इसराईल बेशक हम ने तुम को तुम्हारे

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ

दुश्मन[112] से नजात दी और तुम्हें तूर की दहनी त़रफ़ का वा'दा दिया[113] और तुम पर मन्न और

وَالسَّلْوٰى ﴿۸۰﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ

सल्वा उतारा[114] खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दीं और इस में ज़ियादती न करो[115] कि तुम पर

عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿۸۱﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ

मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वोह गिरा[116] और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं

لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿۸۲﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ

उसे जिस ने तौबा की[117] और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा[118] और तू ने अपनी क़ौम से

104 : कुफ़्र की नजासत और मआसी की गन्दगी से। 105 : जब कि फ़िरऔन मो'जिज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुवा और बनी इसराईल पर ज़ुल्मो सितम और ज़ियादा करने लगा। 106 : मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फ़िरऔनी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर 107 : अपना अ़सा मार कर 108 : दरिया में ग़र्क़ होने का। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हुक्मे इलाही पा कर शब के अव्वल वक़्त सत्तर हज़ार बनी इसराईल को हमराह ले कर मिस्र से रवाना हो गए। 109 : जिन में छ^{6} लाख क़िब्ती थे। 110 : वोह ग़र्क़ हो गए और पानी उन के सरों से ऊंचा हो गया। 111 : इस के बा'द अल्लाह तआला ने अपने और एहसान का ज़िक्र किया और फ़रमाया : 112 : या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम 113 : कि हम मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वहां तौरैत अ़ता फ़रमाएंगे जिस पर अ़मल किया जाए 114 : तीह में और फ़रमाया : 115 : नाशुक्री और कुफ़्राने ने'मत कर के और इन ने'मतों को मआसी और गुनाहों में ख़र्च कर के या एक दूसरे पर ज़ुल्म कर के 116 : जहन्नम में और हलाक हुवा। 117 : शिर्क से 118 : ता दमे आख़िर।

www.dawateislami.net

قَوْمِكَ یٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰۤى اَثَرِیْ وَ عَجِلْتُ اِلَیْكَ رَبِّ

क्यूं जल्दी की ऐ मूसा[119] अ़र्ज़ की कि वोह येह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी त़रफ़ मैं जल्दी कर के ह़ाज़िर हुवा

لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَ اَضَلَّهُمُ

कि तू राज़ी हो[120] फ़रमाया तो हम ने तेरे आने के बा'द तेरी क़ौम को[121] बला में डाला और उन्हें सामिरी

السَّامِرِیُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ۬ قَالَ یٰقَوْمِ

ने गुमराह कर दिया[122] तो मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा[123] गुस्से में भरा अफ़्सोस करता[124] कहा ऐ मेरी क़ौम

اَلَمْ یَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ؕ۬ اَفَطَالَ عَلَیْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वा'दा न किया था[125] क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुम ने चाहा

اَنْ یَّحِلَّ عَلَیْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِیْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَاۤ

कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुम ने मेरा वा'दा ख़िलाफ़ किया[126] बोले हम ने

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَ لٰكِنَّا حُمِّلْنَاۤ اَوْزَارًا مِّنْ زِیْنَةِ الْقَوْمِ

आप का वा'दा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए इस क़ौम के गहने के[127]

فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِیُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا

तो हम ने उन्हें[128] डाल दिया फिर इसी त़रह़ सामिरी ने डाला[129] तो उस ने उन के लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़

لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَاۤ اِلٰهُكُمْ وَ اِلٰهُ مُوْسٰى ۙ۬ فَنَسِیَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا یَرَوْنَ

गाय की त़रह़ बोलता[130] तो बोले[131] येह है तुम्हारा मा'बूद और मूसा का मा'बूद मूसा तो भूल गए[132] तो क्या नहीं देखते

119 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब कर के तौरैत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए फिर कलामे परवर्दगार के शौक़ में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ, इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : وَمَاۤ اَعْجَلَكَ (और तू ने अपनी क़ौम से क्यूं जल्दी की ऐ मूसा !) तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **120 :** या'नी तेरी रिज़ा और ज़ियादा हो। **मस्अला :** इस आयत से इज्तिहाद का जवाज़ साबित हुवा। (مدارک) **121 :** जिन्हें आप ने ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के साथ छोड़ा है। **122 :** गौसाला परस्ती की दा'वत दे कर। **मस्अला :** इस आयत में इज़्लाल या'नी गुमराह करने की निस्बत सामिरी की त़रफ़ फ़रमाई गई क्यूं कि वोह इस का सबब व बाइ़स हुवा, इस से साबित हुवा कि किसी चीज़ को सबब की त़रफ़ निस्बत करना जाइज़ है। इसी त़रह़ कह सकते हैं कि मां बाप ने परवरिश की, दीनी पेश्वाओं ने हिदायत की, औलिया ने ह़ाजत रवाई फ़रमाई, बुज़ुर्गों ने बला दफ़्अ़ की। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि उमूर ज़ाहिर में मन्शा व सबब की त़रफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगर्चे ह़क़ीक़त में इन का मूजिद **अल्लाह** तआ़ला है और क़ुरआने करीम में ऐसी निस्बतें ब कसरत वारिद हैं। (خازن) **123 :** चालीस दिन पूरे कर के तौरैत ले कर **124 :** उन के ह़ाल पर **125 :** कि वोह तुम्हें तौरैत अ़त़ा फ़रमाएगा जिस में हिदायत है, नूर है, हज़ार सूरतें हैं, हर सूरत में हज़ार आयतें हैं। **126 :** और ऐसा नाक़िस काम किया कि गौसाला को पूजने लगे, तुम्हारा वा'दा तो मुझ से येह था कि मेरे हुक्म की इत़ाअ़त करोगे और मेरे दीन पर क़ाइम रहोगे **127 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आ़रियत के त़ौर पर मांग लिये थे। **128 :** सामिरी के हुक्म से आग में **129 :** उन ज़ेवरों को जो उस के पास थे और उस ख़ाक को जो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के क़दम के नीचे से उस ने ह़ासिल की थी। **130 :** येह बछड़ा सामिरी ने बनाया और उस में कुछ सूराख़ इस त़रह़ रखे कि जब उन में हवा दाख़िल हो तो उस से बछड़े की

www.dawateislami.net

ع ١٣ ١٢

اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّ لَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَ لَقَدْ

कि वोह[133] उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उन के किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता[134] और बेशक

قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ

उन से हारून ने इस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूंही है कि तुम इस के सबब फ़ितने में पड़े[135] और बेशक तुम्हारा रब रह़मान है

فَاتَّبِعُوْنِيْ وَ اَطِيْعُوْۤا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى

तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहेंगे[136] जब तक

يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْۤا ۙ ﴿٩٢﴾

हमारे पास मूसा लौट के आएं[137] मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَ

कि मेरे पीछे आते[138] तो क्या तुम ने मेरा हुक्म न माना कहा ऐ मेरे मां जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और

لَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَ لَمْ

न मेरे सर के बाल मुझे येह डर हुवा कि तुम कहोगे तुम ने बनी इसराईल में तफ़्रिक़ा डाल दिया और तुम ने

تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ

मेरी बात का इन्तिज़ार न किया[139] मूसा ने कहा अब तेरा क्या ह़ाल है ऐ सामिरी[140] बोला मैं ने वोह देखा जो

يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ

लोगों ने न देखा[141] तो एक मुठ्ठी भर ली फ़िरिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया[142] और

आवाज़ की त़रह़ आवाज़ पैदा हो। एक क़ौल येह भी है कि वोह अस्पे जिब्रील की ख़ाके ज़ेरे क़दम डालने से ज़िन्दा हो कर बछड़े की त़रह़ बोलता था। **131 :** सामिरी और उस के मुत्तबिईन **132 :** या'नी मूसा मा'बूद को भूल गए और इस को यहां छोड़ कर इस की जुस्तजू में तूर पर चले गए। (مَعَاذَاللّٰه) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि نَسِیَ का फ़ाइल सामिरी है और मा'ना येह हैं कि सामिरी ने जो बछड़े को मा'बूद बनाया वोह अपने रब को भूल गया या वोह ह़ुदूसे अज्साम से इस्तिद्लाल करना भूल गया। **133 :** बछड़ा **134 :** ख़िताब से भी आ़जिज़ और नफ़्अ़ व ज़रर से भी, वोह किस त़रह़ मा'बूद हो सकता है। **135 :** तो इसे न पूजो **136 :** गौसाला परस्ती पर क़ाइम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे **137 :** इस पर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام उन से अ़लाह़दा हो गए और उन के साथ बारह हज़ार वोह लोग जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश न की थी, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने उन के शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे, तब आप ने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया येह फ़ितने की आवाज़ है, जब क़रीब पहुंचे और ह़ज़रते हारून को देखा तो ग़ैरते दीनी से जो आप की सिरिश्त (फ़ित़रत) थी जोश में आ कर उन के सर के बाल दाहने हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और **138 :** और मुझे ख़बर दे देते या'नी जब इन्हों ने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यूं नहीं आ मिले कि तुम्हारा इन से जुदा होना भी इन के ह़क़ में एक ज़ज्र होता। **139 :** येह सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सामिरी की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए चुनान्चे **140 :** तू ने ऐसा क्यूं किया इस की वज्ह बता **141 :** या'नी मैं ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को देखा और उन को पहचान लिया, वोह अस्पे ह़यात (जन्नती घोड़े बुराक़) पर सुवार थे, मेरे दिल में येह बात आई कि मैं इन के घोड़े के निशाने क़दम की ख़ाक ले लूं **142 :** उस बछड़े में जिस को बनाया था।

سَوَّلَتْ لِیْ نَفْسِیْ ﴿۹۶﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِی الْحَیٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا

मेरे जी को येही भला लगा[143] कहा तू चलता बन[144] कि दुन्या की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा येह है कि[145] तू कहे

مِسَاسَ ۪ وَ اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰۤی اِلٰهِكَ الَّذِیْ ظَلْتَ

छू न जा[146] और बेशक तेरे लिये एक वा'दे का वक़्त है[147] जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मा'बूद को देख जिस के सामने तू दिन भर आसन

عَلَیْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِی الْیَمِّ نَسْفًا ﴿۹۷﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ

मारे (पूजा के लिये बैठा) रहा[148] क़सम है हम ज़रूर इसे जलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहाएंगे[149] तुम्हारा मा'बूद तो वोही

اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ﴿۹۸﴾ كَذٰلِكَ نَقُصُّ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उस का इल्म मुहीत़ है हम ऐसा ही

عَلَیْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَ قَدْ اٰتَیْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۖۚ ﴿۹۹﴾ مَنْ

तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हम ने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अ़त़ा फ़रमाया[150] जो

اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ یَحْمِلُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وِزْرًا ۙ ﴿۱۰۰﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهِ ؕ وَ سَآءَ

उस से मुंह फेरे[151] तो बेशक वोह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा[152] वोह हमेशा उस में रहेंगे[153] और वोह क़ियामत

لَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ حِمْلًا ۙ ﴿۱۰۱﴾ یَّوْمَ یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ وَ نَحْشُرُ الْمُجْرِمِیْنَ

के दिन उन के हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा जिस दिन सूर फूंका जाएगा[154] और हम उस दिन मुजरिमों को[155] उठाएंगे

یَوْمَىٕذٍ زُرْقًا ۚۖ ﴿۱۰۲﴾ یَّتَخَافَتُوْنَ بَیْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿۱۰۳﴾ نَحْنُ

नीली आंखें[156] आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुन्या में न रहे मगर दस रात[157] हम

143 : और येह फ़े'ल मैं ने अपने ही हवाए नफ़्स से किया, कोई दूसरा इस का बाइस व मुह़र्रिक न था। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **144 :** दूर हो जा **145 :** जब तुझ से कोई मिलना चाहे तो तेरे ह़ाल से वाक़िफ़ न हो तो उस से **146 :** या'नी सब से अ़लाह़दा रहना न तुझ से कोई छूए न तू किसी से छूए। लोगों से मिलना उस के लिये कुल्ली त़ौर पर मम्नूअ़ क़रार दिया गया और मुलाक़ात मुकालमत ख़रीदो फ़रोख़्त हर एक के साथ ह़राम कर दी गई और अगर इत्तिफ़ाक़न कोई उस से छू जाता तो वोह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते, वोह जंगल में येही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वह़शियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तल्ख़ी व वह़शत में गुज़ारता था। **147 :** या'नी अ़ज़ाब के वा'दे का आख़िरत में बा'द इस अ़ज़ाबे दुन्या के, तेरे शिर्को फ़साद अंगेज़ी पर **148 :** और इस की इ़बादत पर क़ाइम रहा **149 :** चुनान्चे, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ऐसा किया और जब आप सामिरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराईल से मुख़ात़बा फ़रमा कर दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया और इर्शाद किया **150 :** या'नी क़ुरआने पाक कि वोह ज़िक्रे अ़ज़ीम है और जो इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो उस के लिये इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया (गुज़श्ता उम्मतों) के ऐसे ह़ालात का ज़िक्र व बयान है जो फ़िक्र करने और इ़ब्रत ह़ासिल करने के लाइक़ हैं। **151 :** या'नी क़ुरआन से और उस पर ईमान न लाए और उस की हिदायतों से फ़ाएदा न उठाए **152 :** गुनाहों का बारे गिरां **153 :** या'नी इस गुनाह के अ़ज़ाब में **154 :** लोगों को मह़शर में ह़ाज़िर करने के लिये, मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर का फूंका जाना) है। **155 :** या'नी काफ़िरों को इस ह़ाल में **156 :** और काले मुंह **157 :** आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दगानिये दुन्या की मुद्दत बहुत क़लील मा'लूम होगी।

اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ ع ٥ ١٥ ١٤

ख़ूब जानते हैं जो वोह[158] कहेंगे जब कि उन में सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे[159]

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं[160] तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा रेज़ा कर के उड़ा देगा तो ज़मीन को पट पर

صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّ لَاۤ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ

हमवार कर छोड़ेगा कि तू उस में नीचा ऊंचा कुछ न देखे उस दिन पुकारने वाले

الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا

के पीछे दौड़ेंगे[161] उस में कजी न होगी[162] और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर[163] पस्त हो कर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत

هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ

आहिस्ता आवाज़[164] उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उस की जिसे रहमान ने[165] इज़्न दे दिया है और उस की

لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ

बात पसन्द फ़रमाई वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[166] और उन का इ़ल्म उसे नहीं

عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

घेर सकता[167] और सब मुंह झुक जाएंगे उस ज़िन्दा क़ाइम रखने वाले के हुज़ूर[168] और बेशक ना मुराद रहा जिस ने ज़ुल्म का बोझ लिया[169]

158 : आपस में एक दूसरे से **159 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुन्या में रहने की मिक़्दार भूल जाएंगे। **160 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि क़बीलए सक़ीफ़ के एक आदमी ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **161 :** जो उन्हें रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ (मैदाने महशर) की त़रफ़ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रह़मान के हुज़ूर पेश होने को और येह पुकारने वाले ह़ज़रते इसराफ़ील होंगे। **162 :** और इस दा'वत से कोई इन्ह़िराफ़ न कर सकेगा। **163 :** हैबत व जलाल से **164 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया ऐसी कि उस में सिर्फ़ लबों की जुम्बिश होगी। **165 :** शफ़ाअ़त करने का **166 :** या'नी तमाम माज़ियात व मुस्तक़्बिलात और जुम्ला उमूरे दुन्या व आख़िरत या'नी **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म बन्दों की ज़ातो सिफ़ात और जुम्ला ह़ालात को मुह़ीत़ है। **167 :** या'नी तमाम काएनात का इ़ल्म ज़ाते इलाही का इह़ात़ा नहीं कर सकता, उस की ज़ात का इदराक उ़लूमे काएनात की रसाई से बरतर है, वोह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे क़ुदरत व शुयूने ह़िक्मत से पहचाना जाता है :

کجا دریابد او را عقل چالاک — کہ او بالاتر است از حد ادراک
نظر کن اندر اسماء و صفاتش — کہ واقف نیست کس از کنہ ذاتش

(या'नी तेज़ अ़क़्ल भी उस की ज़ात का इदराक कैसे कर सकती है ? जब कि वोह तो फ़हमो इदराक से बरतर है, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व अस्मा में ग़ौरो फ़िक्र करो कि उस की ज़ात व ह़क़ीक़त से कोई आश्ना नहीं) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के मा'ना येह बयान किये हैं कि उ़लूमे ख़ल्क़ मा'लूमाते इलाहिय्यह का इह़ात़ा नहीं कर सकते, ब ज़ाहिर येह इबारतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब आसानी समझ लेते हैं कि फ़र्क़ सिर्फ़ ता'बीर का है। **168 :** और हर एक शाने इ़ज्ज़ो नियाज़ के साथ ह़ाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी, **अल्लाह** तआ़ला के क़हरो हुकूमत का ज़ुहूरे ताम होगा। **169 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने शिर्क किया टोटे (नुक़्सान) में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन ज़ुल्म है और जो इस ज़ुल्म का ज़ेरे बार हो कर (बोझ उठा कर) मौक़िफ़े क़ियामत में आए उस से बढ़ कर ना मुराद कौन ?

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसल्मान तो उसे न ज़ियादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का[170]

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ

और यूंही हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा और इस में तरह़ तरह़ से अ़ज़ाब के वा'दे दिये[171] कि कहीं

يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا

उन्हें डर हो या उन के दिल में कुछ सोच पैदा करे[172] तो सब से बुलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह[173] और

تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ

क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक उस की वह़्य तुम्हें पूरी न हो ले[174] और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे

عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾ ع

इ़ल्म ज़ियादा दे और बेशक हम ने आदम को इस से पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था[175] तो वोह भूल गया और हम ने उस का क़स्द न पाया

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾

और जब हम ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस उस ने न माना

فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ

तो हम ने फ़रमाया ऐ आदम बेशक येह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है[176] तो ऐसा न हो कि वोह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे

فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ ۙ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا

फिर तू मशक़्क़त में पड़े[177] बेशक तेरे लिये जन्नत में येह है कि न तू भूका हो न नंगा हो और येह कि तुझे न उस में प्यास लगे

وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى

न धूप[178] तो शैत़ान ने उसे वस्वसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूं

170 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि त़ाअ़त और नेक आ'माल सब की क़बूलिय्यत ईमान के साथ मशरूत़ है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अ़मल बेकार। **171 :** फ़राइज़ के छोड़ने और मम्नूआ़त का इरतिकाब करने पर। **172 :** जिस से उन्हें नेकियों की रग़बत और बदियों से नफ़रत हो और वोह पन्दो नसीह़त ह़ासिल करें। **173 :** जो अस्ल मालिक है और तमाम बादशाह उस के मोह़ताज। **174 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते जिब्रील क़ुरआने करीम ले कर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, फ़रमाया गया कि आप मशक़्क़त न उठाएं और सूरए क़ियामह में अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ज़िम्मा ले कर आप की और ज़ियादा तसल्ली फ़रमा दी। **175 :** कि शजरे मम्नूआ़ के पास न जाएं। **176 :** इस से मा'लूम हुवा कि साह़िबे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उस की ता'ज़ीमो एह़तिराम बजा लाने से ए'राज़ करना दलीले ह़सदो अ़दावत है। इस आयत में शैत़ान का ह़ज़रते आदम को सज्दा न करना आप के साथ उस की दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया। **177 :** और अपनी ग़िज़ा और ख़ूराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेह़नत में मुब्तला हो और चूंकि औ़रत का नफ़क़ा मर्द के ज़िम्मे है इस लिये इस तमाम मेह़नत की निस्बत सिर्फ़ ह़ज़रते आदम

www.dawateislami.net

شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿۱۲۰﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ

हमेशा जीने का पेड़[179] और वोह बादशाही कि पुरानी न पड़े[180] तो उन दोनों ने उस में से खा लिया अब उन पर उन की शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं[181] और

طَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؗ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾ ۖ

जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे[182] और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई तो जो मत़लब चाहा था उस की राह न पाई[183]

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿۱۲۲﴾ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًۢا

फिर उसे उस के रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाई और अपने क़ुर्बे ख़ास की राह दिखाई फ़रमाया कि तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ

तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी त़रफ़ से हिदायत आए[184] तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा

فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً

वोह न बहके[185] न बद बख़्त हो[186] और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा[187] तो बेशक उस के लिये तंग

ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿۱۲۴﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى

ज़िन्दगानी है[188] और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तू ने क्यूं अन्धा उठाया

وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿۱۲۵﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ

मैं तो अंख्यारा (देखने वाला) था[189] फ़रमाएगा यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं[190] तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही

عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ फ़रमाई गई। **178 :** हर त़रह़ का ऐश व राह़त जन्नत में मौजूद है कस्ब व मेह़नत से बिल्कुल अम्न है। **179 :** जिस को खा कर खाने वाले को दाइमी ज़िन्दगी ह़ासिल हो जाती है **180 :** और उस में ज़वाल न आए। **181 :** या'नी बिहिश्ती लिबास उन के जिस्म से उतर गए। **182 :** सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिये। **183 :** और उस दरख़्त के खाने से दाइमी ह़यात न मिली, फिर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام तौबा व इस्तिग़्फ़ार में मश्ग़ूल हुए और बारगाहे इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ की। **184 :** या'नी किताब और रसूल। **185 :** या'नी दुन्या में। **186 :** आख़िरत में क्यूं कि आख़िरत की बद बख़्ती दुन्या में त़रीक़े ह़क़ से बहक्ने का नतीजा है तो जो कोई किताबे इलाही और रसूले बरह़क़ का इत्तिबाअ़ करे और उन के हुक्म के मुत़ाबिक़ चले वोह दुन्या में बहक्ने से और आख़िरत में उस के अ़ज़ाब व वबाल से नजात पाएगा। **187 :** और मेरी हिदायत से रू गर्दानी की **188 :** दुन्या में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में। दुन्या की तंग ज़िन्दगानी येह है कि हिदायत का इत्तिबाअ़ न करने से अ़मले बद और ह़राम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से मह़रूम हो कर गिरिफ़्तारे ह़िर्स हो जाए और कस्रते मालो अस्बाब से भी उस को फ़राग़े ख़ात़िर (बे फ़िक्री) और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो, दिल हर चीज़ की त़लब में आवारा हो और ह़िर्स के ग़मों से कि येह नहीं वोह नहीं, ह़ाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिने मुतवक्किल की त़रह़ उस को सुकून व फ़राग़ ह़ासिल ही न हो जिस को ह़याते त़य्यिबा कहते हैं قَالَ تَعَالٰی : فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً (तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे)। और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी येह है कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि काफ़िर पर निनानवे अज़्दहे उस की क़ब्र में मुसल्लत़ किये जाते हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अस्वद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिस से एक त़रफ़ की पस्लियां दूसरी त़रफ़ आ जाती हैं। और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब हैं जहां ज़क़्क़ूम (थूहड) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उन के पीप खाने पीने को दी जाएगी। और दीन में तंग ज़िन्दगानी येह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी कस्बे ह़राम में मुब्तला हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उस में कुछ भलाई नहीं और येह तंग ज़िन्दगानी है। (تفسیر کبیر و خازن و مدارک وغیرہ) **189 :** दुन्या में। **190 :** तू उन पर ईमान न लाया और

اَلْیَوْمَ تُنْسٰی ﴿۱۲۶﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِیْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ یُؤْمِنْۢ بِاٰیٰتِ رَبِّهٖ ؕ

आज तेरी कोई ख़बर न लेगा[191] और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰی ﴿۱۲۷﴾ اَفَلَمْ یَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त तर और सब से देर पा है तो क्या उन्हें इस से राह न मिली कि हम ने उन से पहले कितनी

مِّنَ الْقُرُوْنِ یَمْشُوْنَ فِیْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰی ﴿۱۲۸﴾ ع

संगतें (क़ौमें) हलाक कर दीं[192] कि येह उन के बसने की जगह चलते फिरते हैं[193] बेशक इस में निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को[194]

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّی ﴿۱۲۹﴾ ؕ فَاصْبِرْ

और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती[195] तो ज़रूर अ़ज़ाब उन्हें[196] लिपट जाता और अगर न होता एक वा'दा ठहराया हुवा[197] तो उन की

عَلٰی مَا یَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले[198] और उस के

غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّیْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰی ﴿۱۳۰﴾

डूबने से पहले[199] और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो[200] और दिन के किनारों पर[201] इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो[202]

وَلَا تَمُدَّنَّ عَیْنَیْكَ اِلٰی مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَیٰوةِ

और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की तरफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरत्ने के लिये दी है जीती दुन्या की

الدُّنْیَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ فِیْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَیْرٌ وَّاَبْقٰی ﴿۱۳۱﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ

ताज़गी[203] कि हम उन्हें उस के सबब फ़ित्ने में डालें[204] और तेरे रब का रिज़्क़[205] सब से अच्छा और सब से देर पा है और अपने घर वालों

191 : जहन्नम की आग में जला करेगा। **192 :** जो रसूलों को नहीं मानती थीं। **193 :** या'नी क़ुरैश अपने सफ़रों में उन के दियार (मकानात व बस्तियों) पर गुज़रते हैं और उन की हलाकत के निशान देखते हैं। **194 :** जो इब्रत हासिल करें और समझें कि अम्बिया की तक्ज़ीब और उन की मुख़ालफ़त का अन्जाम बुरा है। **195 :** या'नी येह कि उम्मते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के अ़ज़ाब में ताख़ीर की जाएगी। **196 :** दुन्या ही में **197 :** या'नी रोज़े क़ियामत। **198 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है। **199 :** इस से ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़े आख़िर में आफ़्ताब के ज़वाल व ग़ुरूब के दरमियान वाक़ेअ़ हैं। **200 :** या'नी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो। **201 :** फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ें, इन की ताकीदन तकरार फ़रमाई गई। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन क़ब्ले ग़ुरूब से नमाज़े अ़स्र और अत़राफ़े नहार से ज़ोहर मुराद लेते हैं, उन की तौजीह येह है कि नमाज़े ज़ोहर ज़वाल के बा'द है और इस वक़्त दिन के निस्फ़े अव्वल और निस्फ़े आख़िर के अत़राफ़ मिलते हैं। निस्फ़े अव्वल की इन्तिहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तिदा। (مدارک وخازن) **202 :** अल्लाह के फ़ज़्लो अ़ता और उस के इन्आमो इक्राम से कि तुम्हें उम्मत के ह़क़ में शफ़ीअ़ बना कर तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उस ने फ़रमाया है : وَلَسَوْفَ یُعْطِیْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰی (और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे)। **203 :** या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम कुफ़्फ़ार यहूदो नसारा वग़ैरा को जो दुन्यवी साज़ो सामान दिया है मोमिन को चाहिये कि उस को इस्तिहसान व ए'जाब (तअ़ज्जुब व अच्छाई) की नज़र से न देखे। हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि ना फ़रमानों के तुम्तुराक़ (शानो शौकत, ठाट बाट) न देखो लेकिन येह देखो कि गुनाह और मा'सियत की ज़िल्लत किस तरह उन की गरदनों से नुमूदार है। **204 :** इस तरह कि जितनी उन पर ने'मत ज़ियादा हो उतनी ही उन की

بِالصَّلٰوةِ وَ اصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَ الْعَاقِبَةُ

को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते[206] हम तुझे रोज़ी देंगे[207] और अन्जाम का भला

لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَ لَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا

परहेज़ गारी के लिये और काफ़िर बोले येह[208] अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते[209] और क्या उन्हें इस का बयान न आया जो

فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾ وَ لَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

अगले सहीफ़ों में है[210] और अगर हम उन्हें किसी अज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो[211] ज़रूर कहते

رَبَّنَا لَوْ لَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ

ऐ हमारे रब तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इस के कि ज़लील

وَ نَخْزٰى ﴿١٣٤﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ

व रुस्वा होते तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं[212] तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे[213] कि कौन हैं

الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَ مَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾ ع ١٧

सीधी राह वाले और किस ने हिदायत पाई

सरकशी और उन का तुग़्यान बढ़े और वोह सज़ाए आख़िरत के सज़ावार हों। **205 :** या'नी जन्नत और उस की ने'मतें **206 :** और इस का मुकल्लफ़ नहीं करते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने अहल की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो बल्कि **207 :** और उन्हें भी, तू रोज़ी के ग़म में न पड़, अपने दिल को अम्रे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ रख कि जो **अल्लाह** के काम में होता है **अल्लाह** उस की कारसाज़ी करता है। **208 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **209 :** जो इन की सिह़्ह़ते नुबुव्वत पर दलालत करे, बा वुजूदे कि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मो'जिज़ात का मुतवातिर ज़ुहूर हो रहा था फिर कुफ़्फ़ार उन सब से अन्धे बने और उन्हों ने हुज़ूर की निस्बत येह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते ? इस के जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **210 :** या'नी क़ुरआन और सय्यिदे आ़लम की बिशारत और आप की नुबुव्वत व बि'सत का ज़िक्र, येह कैसी आ'ज़म आयात हैं ! इन के होते हुए और किसी निशानी की त़लब करने का क्या मौक़अ़ है ! **211 :** रोज़े क़ियामत **212 :** हम भी और तुम भी। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने कहा था कि हम ज़माने के ह़वादिस और इन्क़िलाब का इन्तिज़ार करते हैं कि कब मुसल्मानों पर आएं और इन का क़िस्सा तमाम हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसल्मानों की तबाही व बरबादी का इन्तिज़ार कर रहे हो और मुसल्मान तुम्हारे उ़क़ूबत (अन्जाम) व अ़ज़ाब का इन्तिज़ार कर रहे हैं। **213 :** जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत क़ाइम होगी।

ايَاتُهَا ١١٢ | ٢١ سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاءِ مَكِّيَّةٌ ٧٣ | رُكُوعَاتُهَا ٧

सूरए अम्बियाअ मक्किय्या है इस में एक सो बारह आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَ هُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ﴿۱﴾ مَا یَاْتِیْهِمْ

लोगों का ह़िसाब नज़्दीक और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं[2] जब उन के

مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَ هُمْ یَلْعَبُوْنَ ۙ﴿۲﴾ لَاهِیَةً

रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए[3] उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اَسَرُّوا النَّجْوَى ۖۗ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ

खेल में पड़े हैं[4] और ज़ालिमों ने आपस में ख़ुफ़्या मश्वरत की[5] कि येह कौन हैं एक तुम ही

مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَ اَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۳﴾ قٰلَ رَبِّیْ یَعْلَمُ الْقَوْلَ

जैसे आदमी तो हैं[6] क्या जादू के पास जाते हो देखभाल कर नबी ने फ़रमाया मेरा रब जानता है आस्मानों

فِی السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۫ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۴﴾ بَلْ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ

और ज़मीन में हर बात को और वोही है सुनता जानता[7] बल्कि बोले परेशान

1 : सूरते अम्बियाअ मक्किय्या है इस में सात रुकूअ़ और एक सो बारह 112 आयतें और एक हज़ार एक सो छियासी 1186 कलिमे और चार हज़ार आठ सो नव्वे 4890 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी ह़िसाबे आ'माल का वक़्त रोज़े क़ियामत क़रीब आ गया और लोग अभी तक ग़फ़्लत में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को नहीं मानते थे और रोज़े क़ियामत को गुज़रे हुए ज़माने के ए'तिबार से क़रीब फ़रमाया गया क्यूं कि जितने दिन गुज़रते जाते हैं आने वाला दिन क़रीब होता जाता है। 3 : न उस से पन्द पज़ीर हों, न इब्रत ह़ासिल करें, न आने वाले वक़्त के लिये कुछ तय्यारी करें। 4 : अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हैं। 5 : और उस के इख़्फ़ा (छुपाने) में बहुत मुबालग़ा किया मगर अल्लाह तआ़ला ने उन का राज़ फ़ाश कर दिया और बयान फ़रमा दिया कि वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की निस्बत येह कहते हैं 6 : येह कुफ़्र का एक उसूल था कि जब येह बात लोगों के ज़ेह्न नशीन कर दी जाएगी कि वोह तुम जैसे बशर हैं तो फिर कोई उन पर ईमान न लाएगा। ह़ुज़ूर के ज़माने के कुफ़्फ़ार ने येह बात कही और इस को छुपाया लेकिन आज कल के बा'ज़ बेबाक येह कलिमा ए'लान के साथ कहते हैं और नहीं शरमाते, कुफ़्फ़ार येह मक़ूला कहते वक़्त जानते थे कि उन की बात किसी के दिल में जमेगी नहीं क्यूं कि लोग रात दिन मो'जिज़ात देखते हैं वोह किस त़रह़ बावर कर सकेंगे कि ह़ुज़ूर हमारी त़रह़ बशर हैं इस लिये उन्हों ने मो'जिज़ात को जादू बता दिया और कहा 7 : उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती ख़्वाह कितने ही पर्दे और राज़ में रखी गई हो उन का राज़ भी इस में ज़ाहिर फ़रमा दिया। इस के बा'द क़ुरआने करीम से उन्हें सख़्त परेशानी व ह़ैरानी लाह़िक़ थी कि उस का किस त़रह़ इन्कार करें, वोह ऐसा बय्यिन मो'जिज़ा है जिस ने तमाम मुल्क के मायानाज़ माहिरों को आ़जिज़ व मुतह़य्यिर कर दिया है और वोह इस की दो चार आयतों की मिस्ल कलाम बना कर नहीं ला सके, इस परेशानी में उन्हों ने क़ुरआने करीम की निस्बत मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें कहीं जिन का बयान अगली आयत में है।

www.dawateislami.net

اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْیَاْتِنَا بِاٰیَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ

ख़्वाबें हैं[8] बल्कि इन की गढ़त [घड़ी हुई चीज़] है[9] बल्कि येह शाइर हैं[10] तो हमारे पास कोई निशानी लाएं जैसे

الْاَوَّلُوْنَ ۝٥ مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ یُؤْمِنُوْنَ ۝٦

अगले भेजे गए थे[11] इन से पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हम ने हलाक किया तो क्या येह ईमान लाएंगे[12]

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْۤ اِلَیْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ

और हम ने तुम से पहले न भेजे मगर मर्द जिन्हें हम वह्य करते[13] तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो

اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا یَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ

अगर तुम्हें इ़ल्म न हो[14] और हम ने उन्हें[15] ख़ाली बदन न बनाया कि खाना न खाएं[16] और

مَا كَانُوْا خٰلِدِیْنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَیْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَ

न वोह दुन्या में हमेशा रहें फिर हम ने अपना वा'दा उन्हें सच्चा कर दिखाया[17] तो उन्हें नजात दी और जिन को चाही[18] और

اَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِیْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ كِتٰبًا فِیْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا

ह़द से बढ़ने वालों को[19] हलाक कर दिया बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[20] एक किताब उतारी जिस में तुम्हारी नामवरी है[21] तो क्या

تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْیَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا ع ١

तुम्हें अ़क़्ल नहीं[22] और कितनी ही बस्तियां हम ने तबाह कर दीं कि वोह सितमगार थीं[23] और उन के बा'द

8 : उन को नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم वह्ये इलाही समझ गए हैं। कुफ़्फ़ार ने येह कह कर सोचा कि येह बात चस्पां नहीं हो सकेगी तो अब उस को छोड़ कर कहने लगे **9 :** येह कह कर ख़याल हुवा कि लोग कहेंगे कि अगर येह कलाम ह़ज़रत का बनाया हुवा है और तुम उन्हें अपने मिस्ल बशर भी कहते हो तो तुम ऐसा कलाम क्यूं नहीं बना सकते। येह ख़याल कर के इस बात को भी छोड़ा और कहने लगे **10 :** और येह कलाम शे'र है। इसी त़रह़ की बातें बनाते रहे, किसी एक बात पर क़ाइम न रह सके और अहले बात़िल कज़्ज़ाबों का येही ह़ाल होता है। अब इन्हों ने समझा कि इन बातों में से कोई बात भी चलने वाली नहीं है तो कहने लगे **11 :** इस के रद व जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है **12 :** मा'ना येह हैं कि इन से पहले लोगों के पास जो निशानियां आईं तो वोह उन पर ईमान न लाए और उन की तक्ज़ीब करने लगे और इस सबब से हलाक कर दिये गए तो क्या येह लोग निशानी देख कर ईमान ले आएंगे बा वुजूदे कि इन की सरकशी उन से बढ़ी हुई है। **13 :** येह उन के कलामे साबिक़ का रद है कि अम्बिया का सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमाना नुबुव्वत के मुनाफ़ी नहीं, हमेशा ऐसा ही होता रहा है। **14 :** क्यूं कि ना वाक़िफ़ को इस से चारा ही नहीं कि वाक़िफ़ से दरयाफ़्त करे और मरज़े जह्ल का इलाज येही है कि आ़लिम से सुवाल करे और उस के हुक्म पर आ़मिल हो। **मस्अला :** इस आयत से तक़्लीद का वुजूब साबित होता है। यहां उन्हें इ़ल्म वालों से पूछने का हुक्म दिया गया कि उन से दरयाफ़्त करो कि **अल्लाह** के रसूल सूरते बशरी में ज़ुहूर फ़रमा हुए थे या नहीं ? इस से तुम्हारे तरद्दुद का ख़ातिमा हो जाएगा। **15 :** या'नी अम्बिया को **16 :** तो उन पर खाने पीने का ए'तिराज़ करना और येह कहना कि "مَا لِهٰذَا الرَّسُوْلِ یَاْكُلُ الطَّعَامَ" मह़ज़ बेजा है, तमाम अम्बिया का येही ह़ाल था, वोह सब खाते भी थे पीते भी थे। **17 :** उन के दुश्मनों को हलाक करने और उन्हें नजात देने का। **18 :** या'नी ईमानदारों को जिन्हों ने अम्बिया की तस्दीक़ की। **19 :** जो अम्बिया की तक्ज़ीब करते थे। **20 :** ऐ गुरौहे क़ुरैश **21 :** अगर तुम इस पर अ़मल करो या येह मा'ना हैं कि वोह किताब तुम्हारी ज़बान में है या येह कि इस में तुम्हारे लिये नसीह़त है या येह कि इस में तुम्हारे दीनी और दुन्यवी उमूर और ह़वाइज का बयान है **22 :** कि ईमान ला कर इस इ़ज़्ज़तो करामत और सआ़दत को ह़ासिल करो। **23 :** या'नी काफ़िर थीं।

قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۱۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوْا بَاْسَنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿۱۲﴾ لَا

और क़ौम पैदा की तो जब उन्हों ने[24] हमारा अ़ज़ाब पाया जभी वोह उस से भागने लगे[25] न

تَرْكُضُوْا وَ ارْجِعُوْۤا اِلٰى مَاۤ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَ مَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿۱۳﴾

भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की त़रफ़ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की त़रफ़ शायद तुम से पूछना हो[26]

قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴﴾ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे[27] तो वोह येही पुकारते रहे यहां तक

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَ الْاَرْضَ وَ مَا

कि हम ने उन्हें कर दिया काटे हुए[28] बुझे हुए और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ

بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۱۶﴾ لَوْ اَرَدْنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّاۤ ﴿ق﴾

इन के दरमियान है अ़बस न बनाए[29] अगर हम कोई बहलावा इख़्तियार करना चाहते[30] तो अपने पास से इख़्तियार करते

اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۷﴾ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا

अगर हमें करना होता[31] बल्कि हम ह़क़ को बात़िल पर फेंक मारते हैं तो वोह उस का भेजा निकाल देता है तो जभी

هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَ لَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

वोह मिट कर रह जाता है[32] और तुम्हारी ख़राबी है[33] उन बातों से जो बनाते हो[34] और उसी के हैं जितने आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ وَ مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾ ج

ज़मीन में हैं[35] और उस के पास वाले[36] उस की इ़बादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें

24 : या'नी उन ज़ालिमों ने **25 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है कि सर ज़मीने यमन में एक बस्ती है जिस का नाम "ह़ुसूर" है वहां के रहने वाले अ़रब थे, उन्हों ने अपने नबी की तक्ज़ीब की और उन को क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर बुख़्त नस्सर को मुसल्लत़ किया उस ने उन्हें क़त्ल किया और गिरिफ़्तार किया और उस का येह अ़मल जारी रहा, तो येह लोग बस्ती छोड़ कर भागे तो मलाएका ने उन से ब त़रीक़े त़न्ज़ कहा (जो अगली आयत में है) **26 :** कि तुम पर क्या गुज़री और तुम्हारे अम्वाल क्या हुए तो तुम दरयाफ़्त करने वाले को अपने इ़ल्मो मुशाहदे से जवाब दे सको। **27 :** अ़ज़ाब देखने के बा'द उन्हों ने गुनाह का इक़रार किया और नादिम हुए, इस लिये येह ए'तिराफ़ उन्हें काम न आया **28 :** खेत की त़रह़ कि तलवारों से टुकड़े टुकड़े कर दिये गए और बुझी हुई आग की त़रह़ हो गए। **29 :** कि इन से कोई फ़ाइदा न हो बल्कि इस में हमारी ह़िक्मतें हैं, मिन जुम्ला इन के येह है कि हमारे बन्दे इन से हमारी क़ुदरत व ह़िक्मत पर इस्तिद्लाल करें और उन्हें हमारे औसाफ़ व कमाल की मा'रिफ़त हो **30 :** मिस्ल ज़न व फ़रज़न्द के, जैसा कि नसारा कहते हैं और हमारे लिये बीबी और बेटियां बताते हैं, अगर येह हमारे ह़क़ में मुम्किन होता **31 :** क्यूं कि ज़न व फ़रज़न्द वाले ज़न व फ़रज़न्द अपने पास रखते हैं मगर हम इस से पाक हैं, हमारे लिये येह मुम्किन ही नहीं **32 :** मा'ना येह हैं कि हम अहले बात़िल के किज़्ब को बयाने ह़क़ से मिटा देते हैं **33 :** ऐ कुफ़्फ़ारे ना बकार **34 :** शाने इलाही में कि उस के लिये बीवी व बच्चा ठहराते हो। **35 :** वोह सब का मालिक है और सब उस के मम्लूक, तो कोई उस की औलाद कैसे हो सकता है ? मम्लूक होने और औलाद होने में मुनाफ़ात है। **36 :** उस के मुक़र्रबीन जिन्हें उस के करम से उस के ह़ुज़ूर क़ुर्बो मन्ज़िलत ह़ासिल है।

www.dawateislami.net

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمِ اتَّخَذُوْۤا اٰلِهَةً مِّنَ

रात दिन उस की पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते[37] क्या उन्हों ने ज़मीन में से कुछ ऐसे ख़ुदा

الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ

बना लिये हैं[38] कि वोह कुछ पैदा करते हैं[39] अगर आस्मान व ज़मीन में **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह[40] तबाह हो जाते[41]

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۲۲﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ

तो पाकी है **अल्लाह** अ़र्श के मालिक को उन बातों से जो येह बनाते हैं[42] उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे[43]

وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

और उन सब से सुवाल होगा[44] क्या **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा बना रखे हैं तुम फ़रमाओ[45] अपनी दलील लाओ[46]

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ

येह क़ुरआन मेरे साथ वालों का ज़िक्र है[47] और मुझ से अगलों का तज़्किरा[48] बल्कि उन में अक्सर ह़क़ को नहीं जानते

فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ

तो वोह रू गर्दां हैं[49] और हम ने तुम से पहले कोई रसूल न भेजा मगर येह कि हम उस की त़रफ़

---

37 : हर वक़्त उस की तस्बीह़ में रहते हैं। ह़ज़रते का'ब अह़बार ने फ़रमाया कि मलाएका के लिये तस्बीह़ ऐसी है जैसी कि बनी आदम के लिये सांस लेना। **38 :** जवाहिरे अर्ज़िया से मिस्ल सोने चांदी पथ्थर वग़ैरा के **39 :** ऐसा तो नहीं है और न येह हो सकता है कि जो ख़ुद बेजान हो वोह किसी को जान दे सके, तो फिर उस को मा'बूद ठहराना और इलाह क़रार देना कितना खुला बात़िल है, इलाह वोही है जो हर मुम्किन पर क़ादिर हो, जो क़ादिर नहीं वोह इलाह कैसा। **40 :** आस्मान व ज़मीन **41 :** क्यूं कि अगर ख़ुदा से वोह ख़ुदा मुराद लिये जाएं जिन की ख़ुदाई के बुत परस्त मो'तक़िद हैं तो फ़सादे आ़लम का लुज़ूम ज़ाहिर है क्यूं कि वोह जमादात हैं तदबीरे आ़लम पर अस्लन क़ुदरत नहीं रखते, और अगर ता'मीम की जाए तो भी लुज़ूमे फ़साद यक़ीनी है क्यूं कि अगर दो ख़ुदा फ़र्ज़ किये जाएं तो दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या वोह दोनों मुत्तफ़िक़ होंगे या मुख़्तलिफ़, अगर शै वाह़िद पर मुत्तफ़िक़ हुए तो लाज़िम आएगा कि एक चीज़ दोनों की मक़्दूर हो और दोनों की क़ुदरत से वाक़ेअ़ हो येह मुह़ाल है और अगर मुख़्तलिफ़ हुए तो एक शै के मुतअ़ल्लिक़ दोनों के इरादे या मअ़न वाक़ेअ़ होंगे और एक ही वक़्त में वोह मौजूद व मा'दूम दोनों हो जाएगी या दोनों के इरादे वाक़ेअ़ न हों और शै न मौजूद हो न मा'दूम या एक का इरादा वाक़ेअ़ हो दूसरे का वाक़ेअ़ न हो, येह तमाम सूरतें मुह़ाल हैं तो साबित हुवा कि फ़साद हर तक़्दीर पर लाज़िम है, तौह़ीद की येह निहायत क़वी बुरहान है और इस की तक़रीरें बहुत बस्त़ के साथ अइम्मए कलाम की किताबों में मज़्कूर हैं, यहां इख़्तिसारन इसी क़दर पर इक्तिफ़ा किया गया। (تفسیر کبیر وغیرہ)
42 : कि उस के लिये औलाद व शरीक ठहराते हैं। **43 :** क्यूं कि वोह मालिके ह़क़ीक़ी है जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत दे जिसे चाहे सआ़दत दे जिसे चाहे शक़ी करे, वोह सब का ह़ाकिम है, कोई उस का ह़ाकिम नहीं जो उस से पूछ सके **44 :** क्यूं कि सब उस के बन्दे हैं मम्लूक हैं, सब पर उस की फ़रमां बरदारी और इत़ाअ़त लाज़िम है, इस से तौह़ीद की एक और दलील मुस्तफ़ाद होती है, जब सब मम्लूक हैं तो उन में से कोई ख़ुदा कैसे हो सकता है ? इस के बा'द ब त़रीक़े इस्तिफ़्हाम तौबीख़न फ़रमाया **45 :** ऐ ह़बीब ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इन मुश्रिकीन से कि तुम अपने इस बात़िल दा'वे पर **46 :** और ह़ुज्जत क़ाइम करो ख़्वाह अ़क़्ली हो या नक़्ली, मगर न कोई दलीले अ़क़्ली ला सकते हो जैसा कि बराहीने मज़्कूरा से ज़ाहिर हो चुका और न कोई दलीले नक़्ली पेश कर सकते हो क्यूं कि तमाम कुतुबे समाविया में **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद का बयान है और सब में शिर्क का इब्त़ाल किया गया है। **47 :** साथ वालों से मुराद आप की उम्मत है। क़ुरआने करीम में इस का ज़िक्र है कि इस को त़ाअ़त पर क्या सवाब मिलेगा और मा'सियत पर क्या अ़ज़ाब किया जाएगा। **48 :** या'नी पहले अम्बिया की उम्मतों का और इस का कि दुन्या में उन के साथ क्या किया गया और आख़िरत में क्या किया जाएगा। **49 :** और ग़ौरो तअम्मुल नहीं करते और नहीं सोचते कि तौह़ीद पर ईमान लाना उन के लिये ज़रूरी है।

www.dawateislami.net

إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا

वह्‌य फ़रमाते कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मुझी को पूजो और बोले रह्‌मान ने बेटा इख़्तियार किया[50]

سُبْحٰنَهُ ط بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ

पाक है वोह[51] बल्कि बन्दे हैं इ़ज़्ज़त वाले[52] बात में उस से सब्क़त नहीं करते और वोह उसी के हुक्म पर

يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا

कारबन्द होते हैं वोह जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[53] और शफ़ाअ़त नहीं करते मगर

لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ إِنِّيٓ

उस के लिये जिसे वोह पसन्द फ़रमाए[54] और वोह उस के ख़ौफ़ से डर रहे हैं और उन में जो कोई कहे कि मैं

ع ٢ ١٩ ٢ إِلٰهٌ مِّنْ دُونِهِ فَذٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ط كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾ ع

अल्लाह के सिवा मा'बूद हूं[55] तो उसे हम जहन्नम की जज़ा देंगे हम ऐसी ही सज़ा देते हैं सितमगारों को

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا

क्या काफ़िरों ने येह ख़याल न किया कि आस्मान और ज़मीन बन्द थे

فَفَتَقْنٰهُمَا ط وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ط أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾ وَ

तो हम ने उन्हें खोला[56] और हम ने हर जानदार चीज़ पानी से बनाई[57] तो क्या वोह ईमान न लाएंगे और

جَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا

ज़मीन में हम ने लंगर डाले[58] कि उन्हें ले कर न कांपे और हम ने उस में कुशादा राहें रखीं

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ج وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا

कि कहीं वोह राह पाएं[59] और हम ने आस्मान को छत बनाया निगाह रखी गई[60] और वोह[61] उस की निशानियों

50 शाने नुज़ूल : येह आयत ख़ुज़ाआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा था। **51 :** उस की ज़ात इस से मुनज़्ज़ा है कि उस के औलाद हो। **52 :** या'नी फ़िरिश्ते उस के बरगुज़ीदा और मुकर्रम बन्दे हैं। **53 :** या'नी जो कुछ उन्हों ने किया और जो कुछ वोह आयिन्दा करेंगे। **54 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया या'नी जो तौह़ीद का क़ाइल हो। **55 :** येह कहने वाला इब्लीस है जो अपनी इ़बादत की दा'वत देता है, फ़िरिश्तों में कोई ऐसा नहीं जो येह कलिमा कहे। **56 :** बन्द होना या तो येह है कि एक दूसरे से मिला हुवा था उन में फ़स्ल पैदा कर के उन्हें खोला या येह मा'ना हैं कि आस्मान बन्द था ब ई मा'ना कि उस से बारिश नहीं होती थी, ज़मीन बन्द थी ब ई मा'ना कि उस से रूईदगी पैदा नहीं होती थी, तो आस्मान का खोलना येह है कि उस से बारिश होने लगी और ज़मीन का खोलना येह है कि उस से सब्ज़ा पैदा होने लगा। **57 :** या'नी पानी को जानदारों की ह़यात का सबब किया, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा मा'ना येह हैं कि हर जानदार पानी से पैदा किया हुवा है और बा'ज़ों ने कहा इस से नुत़्फ़ा मुराद है। **58 :** मज़बूत़ पहाड़ों के **59 :** अपने सफ़रों में और जिन मक़ामात का क़स्द करें वहां तक पहुंच सकें। **60 :** गिरने से। **61 :** या'नी कुफ़्फ़ार।

www.dawateislami.net

مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ

से रू गर्दां हैं[62] और वोही है जिस ने बनाए रात[63] और दिन[64] और सूरज और चांद

كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَ مَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ

हर एक एक घेरे में पैर (तैर) रहा है[65] और हम ने तुम से पहले किसी आदमी के लिये दुन्या में हमेशगी न बनाई[66]

اَفَاۡىٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآىٕقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ نَبْلُوْكُمْ

तो क्या अगर तुम इन्तिक़ाल फ़रमाओ तो येह हमेशा रहेंगे[67] हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हारी आज़्माइश करते हैं

بِالشَّرِّ وَ الْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَ اِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَ اِذَا رَاٰكَ الَّذِیْنَ

बुराई और भलाई से[68] जांचने को[69] और हमारी ही त़रफ़ तुम्हें लौट कर आना है[70] और जब काफ़िर तुम्हें

كَفَرُوْۤا اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِیْ یَذْكُرُ

देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठठ्ठा (मज़ाक़)[71] क्या येह हैं वोह जो तुम्हारे ख़ुदाओं को

اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَ هُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ

बुरा कहते हैं और वोह[72] रह़मान ही की याद से मुन्किर हैं[73] आदमी जल्द बाज़

عَجَلٍ ؕ سَاُورِیْكُمْ اٰیٰتِیْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

बनाया गया अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो[74] और कहते हैं कब होगा

62 : या'नी आस्मानी काएनात सूरज, चांद, सितारे और अपने अपने अफ़्लाक में इन की ह़रकतों की कैफ़िय्यत और अपने अपने मत़ालेअ़ से इन के तुलूअ़ और ग़ुरूब और इन के अ़जाइबे अह़वाल जो सानेए़ आ़लम (या'नी **अल्लाह** तआ़ला) के वुजूद और उस की वह़दत और उस के कमाले क़ुदरत व ह़िक्मत पर दलालत करते हैं, कुफ़्फ़ार इन सब से ए'राज़ करते हैं और इन दलाइल से फ़ाएदा नहीं उठाते। **63 :** तारीक कि इस में आराम करें **64 :** रोशन कि इस में मआ़श (रोज़ी कमाने) वग़ैरा के काम अन्जाम दें। **65 :** जिस त़रह़ कि तैराक पानी में। **66 शाने नुज़ूल :** रसूले करीम ﷺ के दुश्मन अपने ज़लाल व इनाद (गुमराही व दुश्मनी) से कहते थे कि हम ह़वादिसे ज़माना का इन्तिज़ार कर रहे हैं अन्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला है कि ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम ﷺ की वफ़ात हो जाएगी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि दुश्मनाने रसूल के लिये येह कोई ख़ुशी की बात नहीं, हम ने दुन्या में किसी आदमी के लिये हमेशगी नहीं रखी **67 :** और इन्हें मौत के पन्जे से रिहाई मिल जाएगी, जब ऐसा नहीं है तो फिर ख़ुश किस बात पर होते हैं? ह़क़ीक़त येह है कि **68 :** या'नी राह़त व तक्लीफ़, तन्दुरुस्ती व बीमारी, दौलत मन्दी व नादारी, नफ़्अ़ और नुक़्सान से **69 :** ताकि ज़ाहिर हो जाए कि सब्रो शुक्र में तुम्हारा क्या दरजा है। **70 :** हम तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा देंगे। **71 शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जहल के ह़क़ में नाज़िल हुई, ह़ुज़ूर तशरीफ़ लिये जाते थे, वोह आप को देख कर हंसा और कहने लगा कि येह बनी अ़ब्दे मनाफ़ के नबी हैं, और आपस में एक दूसरे से कहने लगे **72 :** कुफ़्फ़ार **73 :** कहते हैं कि हम रह़मान को जानते ही नहीं, इस जहल व ज़लाल में मुब्तला होने के बा वुजूद आप के साथ तमस्ख़ुर करते हैं और नहीं देखते कि हंसी के क़ाबिल ख़ुद उन का अपना ह़ाल है। **74 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहता था कि जल्द अ़ज़ाब नाज़िल कराइये। इस आयत में फ़रमाया गया कि अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा या'नी जो वा'दे अ़ज़ाब के दिये गए हैं उन का वक़्त क़रीब आ गया है, चुनान्चे रोज़े बद्र वोह मन्ज़र उन की नज़र के सामने आ गया।

www.dawateislami.net

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ

येह वा'दा[75] अगर तुम सच्चे हो किसी त़रह़ जानते काफ़िर उस वक़्त को जब न रोक सकेंगे

عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ

अपने मूंहों से आग[76] और न अपनी पीठों से और न उन की मदद हो[77] बल्कि

تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَ

वोह उन पर अचानक आ पड़ेगी[78] तो उन्हें बे ह़वास कर देगी फिर न वोह उसे फेर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी[79] और

لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا

बेशक तुम से अगले रसूलों के साथ ठठ्ठा किया गया[80] तो मस्ख़रगी (ठठ्ठा) करने वालों

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ ع قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ

का ठठ्ठा उन्ही को ले बैठा[81] तुम फ़रमाओ शबाना रोज़ तुम्हारी कौन निगहबानी करता है

الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ

रह़मान से[82] बल्कि वोह अपने रब की याद से मुंह फेरे हैं[83] क्या उन के कुछ ख़ुदा हैं[84]

تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

जो उन को हम से बचाते हैं[85] वोह अपनी ही जानों को नहीं बचा सकते[86] और न हमारी त़रफ़ से उन की यारी हो

بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا

बल्कि हम ने उन को[87] और उन के बाप दादा को बरतावा दिया[88] यहां तक कि ज़िन्दगी उन पर दराज़ हुई[89] तो क्या नहीं देखते कि हम[90]

نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ

ज़मीन को उस के किनारों से घटाते आ रहे हैं[91] तो क्या येह ग़ालिब होंगे[92] तुम फ़रमाओ कि मैं

75 : अ़ज़ाब का या क़ियामत का, येह उन के इस्ति'जाल (जल्दी अ़ज़ाब मांगने) का बयान है। **76 :** दोज़ख़ की **77 :** अगर वोह येह जानते होते तो कुफ़्र पर क़ाइम न रहते और अ़ज़ाब में जल्दी न करते **78 :** क़ियामत **79 :** तौबा व मा'ज़िरत की **80 :** ऐ सय्यिदे आलम ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **81 :** और वोह अपने इस्तिह्ज़ा और मस्ख़रगी के वबाल व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाई गई कि आप के साथ इस्तिह्ज़ा करने वालों का भी येही अन्जाम होना है। **82 :** या'नी उस के अ़ज़ाब से **83 :** जब ऐसा है तो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही का क्या ख़ौफ़ हो और वोह अपनी ह़िफ़ाज़त करने वाले को क्या पहचानें। **84 :** हमारे सिवा उन के ख़याल में **85 :** और हमारे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रखते हैं ऐसा तो नहीं है और अगर वोह अपने बुतों की निस्बत येह ए'तिक़ाद रखते हैं तो उन का ह़ाल येह है कि **86 :** अपने पूजने वालों को क्या बचा सकेंगे। **87 :** या'नी कुफ़्फ़ार को **88 :** और दुन्या में उन्हें ने'मत व मोहलत दी **89 :** और वोह इस से और मग़रूर हुए और उन्हों ने गुमान किया कि वोह हमेशा ऐसे ही रहेंगे। **90 :** कुफ़्रिस्तान की **91 :** रोज़ बरोज़ मुसल्मानों को इस पर तसल्लुत़ दे रहे हैं और एक शहर के बा'द दूसरा शहर फ़त्ह़ होता चला आ रहा है, ह़ुदूदे इस्लाम बढ़ रही हैं और सर ज़मीने कुफ़्र घटती

www.dawateislami.net

أُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ إِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ

तुम को सिर्फ़ वह्य से डराता हूं[93] और बहरे पुकारना नहीं सुनते जब डराए जाएं[94] और

لَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا

अगर उन्हें तुम्हारे रब के अ़ज़ाब की हवा छू जाए तो ज़रूर कहेंगे हाए ख़राबी हमारी बेशक हम

ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ

ज़ालिम थे[95] और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म

شَيْـًٔا ؕ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا

न होगा और अगर कोई चीज़[96] राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे और हम काफ़ी हैं

حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا

हिसाब को और बेशक हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला दिया[97] और उजाला[98] और परहेज़ गारों

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ

को नसीहत[99] वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और उन्हें क़ियामत का अन्देशा

مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ أَنْزَلْنٰهُ ؕ أَفَأَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع

लगा हुवा है और येह है बरकत वाला ज़िक्र कि हम ने उतारा[100] तो क्या तुम इस के मुन्किर हो

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ إِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ إِذْ قَالَ

और बेशक हम ने इब्राहीम को[101] पहले ही से उस की नेक राह अ़ता कर दी और हम उस से ख़बरदार थे[102] जब उस ने अपने

لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ أَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا

बाप और क़ौम से कहा येह मूरतें क्या हैं[103] जिन के आगे तुम आसन मारे (जम कर बैठे) हो[104] बोले

चली आती है और हवालिये मक्कए मुकर्रमा (मक्कए मुकर्रमा के गिर्दो नवाह) पर मुसल्मानों का तसल्लुत़ होता जाता है। क्या मुश्रिकीन जो अ़ज़ाब त़लब करने में जल्दी करते हैं इस को नहीं देखते और इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **92 :** जिन के क़ब्ज़े से ज़मीन दम ब दम निकलती जा रही है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब जो ब फ़ज़्ले इलाही फ़त्ह़ पर फ़त्ह़ पा रहे हैं और उन के मक़्बूज़ात दम ब दम बढ़ते चले जाते हैं। **93 :** और अ़ज़ाबे इलाही का उसी की त़रफ़ से ख़ौफ़ दिलाता हूं। **94 :** या'नी काफ़िर हिदायत करने वाले और ख़ौफ़ दिलाने वाले के कलाम से नफ़्अ़ न उठाने में बहरे की त़रह़ हैं। **95 :** नबी की बात पर कान न रखा और उन पर ईमान न लाए। **96 :** आ'माल में से **97 :** या'नी तौरैत अ़त़ा की जो ह़क़ व बात़िल में तफ़्रिक़ा (इम्तियाज़) करने वाली है। **98 :** या'नी रोशनी है कि इस से नजात की राह मा'लूम होती है। **99 :** जिस से वोह पन्द पज़ीर (फ़ाइदा उठाते) होते हैं और दीनी उमूर का इ़ल्म ह़ासिल करते हैं **100 :** अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर या'नी क़ुरआने पाक। येह कसीरुल ख़ैर (ख़ैर ही ख़ैर) है और ईमान लाने वालों के लिये इस में बड़ी बरकतें हैं। **101 :** उन की इब्तिदाई उ़म्र में बालिग़ होने के **102 :** कि वोह हिदायत व नुबुव्वत के अहल हैं। **103 :** या'नी बुत, जो दरिन्दों परिन्दों

www.dawateislami.net

وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ

हम ने अपने बाप दादा को इन की पूजा करते पाया[105] कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब

ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ

खुली गुमराही में हो बोले क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो या यूंही खेलते हो[106] कहा

بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ

बल्कि तुम्हारा रब वोह है जो रब है आस्मानों और ज़मीन का जिस ने इन्हें पैदा किया और मैं इस पर गवाहों

مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا

में से हूं और मुझे अल्लाह की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बा'द इस के कि तुम फिर जाओ

مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

पीठ दे कर[107] तो उन सब को[108] चूरा कर दिया मगर एक को जो उन सब का बड़ा था[109] कि शायद वोह उस से कुछ पूछें[110]

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا

बोले किस ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया बेशक वोह ज़ालिम है उन में के कुछ बोले हम

فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ

ने एक जवान को इन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं[111] बोले तो उसे लोगों के सामने लाओ

और इन्सानों की सूरतों के बने हुए हैं **104 :** और इन की इबादत में मश्ग़ूल हो। **105 :** तो हम भी उन की इक़्तिदा में वैसा ही करने लगे। **106 :** चूंकि उन्हें अपने त़रीक़े का गुमराही होना बहुत ही बईद मा'लूम होता था और उस का इन्कार करना वोह बहुत बड़ी बात जानते थे, इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से येह कहा कि क्या आप येह बात वाक़ेई त़ौर पर हमें बता रहे हैं या ब त़रीक़ खेल के फ़रमाते हैं ? इस के जवाब में आप ने ह़ज़रते मलिक अ़ल्लाम (या'नी अल्लाह तआला) की रबूबिय्यत का इस्बात फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमा दिया कि आप खेल के त़रीक़े पर कलाम फ़रमाने वाले नहीं हैं बल्कि ह़क़ का इज़्हार फ़रमाते हैं चुनान्चे, आप ने **107 :** अपने मेले को। वाक़िआ़ येह है कि उस क़ौम का सालाना एक मेला लगता था, जंगल में जाते थे और शाम तक वहां लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल रहते थे, वापसी के वक़्त बुतख़ाने में आते थे और बुतों की पूजा करते थे, इस के बा'द अपने मकानों को वापस जाते थे, जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की एक जमाअ़त से बुतों के मुतअ़ल्लिक़ मुनाज़रा किया तो उन लोगों ने कहा कि कल को हमारी ईद है, आप वहां चलें देखें कि हमारे दीन और त़रीक़े में क्या बहार हैं और कैसे लुत़्फ़ आते हैं, जब वोह मेले का दिन आया और आप से मेले में चलने को कहा गया तो आप उ़ज़्र कर के रह गए, वोह लोग रवाना हो गए, जब उन के बाक़ी मांदा और कमज़ोर लोग जो आहिस्ता आहिस्ता जा रहे थे गुज़रे तो आप ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा, इस को बा'ज़ लोगों ने सुना और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बुतख़ाने की त़रफ़ लौटे। **108 :** या'नी बुतों को तोड़ कर **109 :** छोड़ दिया और बसूला उस के कांधे पर रख दिया **110 :** या'नी बड़े बुत से कि इन छोटे बुतों का क्या ह़ाल है ? येह क्यूं टूटे और बसूला तेरी गरदन पर कैसा रखा है ? और उन्हें उस का इ़ज्ज़ ज़ाहिर हो और उन्हें होश आए कि ऐसे आ़जिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते या येह मा'ना हैं कि वोह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त करें और आप को ह़ुज्जत क़ाइम करने का मौक़अ़ मिले, चुनान्चे जब क़ौम के लोग शाम को वापस हुए और बुतख़ाने में पहुंचे और उन्हों ने देखा कि बुत टूटे पड़े हैं तो **111 :** येह ख़बर नमरूद जब्बार और उस के उमरा को पहुंची तो।

لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

शायद वोह गवाही दें[112] बोले क्या तुम ने हमारे ख़ुदाओं के साथ येह काम किया ऐ इब्राहीम[113]

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖۗ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

फ़रमाया बल्कि इन के उस बड़े ने किया होगा[114] तो उन से पूछो अगर बोलते हों[115]

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى

तो अपने जी की त़रफ़ पलटे[116] और बोले बेशक तुम्हीं सितमगार हो[117] फिर अपने सरों के बल

رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

औंधाए गए[118] कि तुम्हें ख़ूब मा'लूम है येह बोलते नहीं[119] कहा तो क्या अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا

ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़्अ़ दे[120] और न नुक़्सान पहुंचाए[121] तुफ़ है तुम पर और इन

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْٓا

बुतों पर जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[122] बोले इन को जला दो और अपने ख़ुदाओं

اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓى

की मदद करो अगर तुम्हें करना है[123] हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती

112 : कि येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام ही का फ़े'ल है या इन से बुतों की निस्बत ऐसा कलाम सुना गया है, मुद्दआ़ येह था कि शहादत क़ाइम हो तो वोह आप के दरपै हों, चुनान्चे ह़ज़रत बुलाए गए और वोह लोग 113 : आप ने इस का तो कुछ जवाब न दिया और शाने मुनाज़राना से ता'रीज़ के त़ौर पर एक अ़जीबो ग़रीब हुज्जत क़ाइम की। 114 : इस गुस्से से कि इस के होते तुम इस के छोटों को पूजते हो, इस के कन्धे पर बसूला होने से ऐसा ही क़ियास किया जा सकता है, मुझ से क्या पूछना, पूछना हो 115 : वोह खुद बताएं कि उन के साथ येह किस ने किया, मुद्दआ़ येह था कि क़ौम ग़ौर करे कि जो बोल नहीं सकता जो कुछ कर नहीं सकता वोह ख़ुदा नहीं हो सकता उस की ख़ुदाई का ए'तिक़ाद बात़िल है, चुनान्चे जब आप ने येह फ़रमाया 116 : और समझे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام ह़क़ पर हैं 117 : जो ऐसे मजबूरों और बे इख़्तियारों को पूजते हो, जो अपने कांधे से बसूला न हटा सके वोह अपने पुजारी को मुसीबत से क्या बचा सके और उस के क्या काम आ सके। 118 : और कलिमए ह़क़ कहने के बा'द फिर उन की बद बख़्ती उन के सरों पर सुवार हुई और वोह कुफ़्र की त़रफ़ पलटे और बात़िल मुजादला व मुकाबरा (बे जा बह़सो मुबाह़सा) शुरूअ़ किया और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام से कहने लगे 119 : तो हम इन से कैसे पूछें और ऐ इब्राहीम तुम हमें इन से पूछने का कैसे हुक्म देते हो। 120 : अगर उसे पूजो 121 : अगर उस का पूजना मौक़ूफ़ कर दो। 122 : कि इतना भी समझ सको कि येह बुत पूजने के क़ाबिल नहीं। जब हुज्जत तमाम हो गई और वोह लोग जवाब से आ़जिज़ आए तो 123 : नमरूद और उस की क़ौम ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيۡهِ السَّلَام को जला डालने पर मुत्तफ़िक़ हो गई और उन्हों ने आप को एक मकान में क़ैद कर दिया और क़र्यए कूसा में एक इमारत बनाई और एक महीने तक ब कोशिश तमाम क़िस्म क़िस्म की लकड़ियां जम्अ़ कीं और एक अ़ज़ीम आग जलाई जिस की तपिश से हवा में परवाज़ करने वाले परिन्दे जल जाते थे और एक मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने की तोप) खड़ी की और आप को बांध कर उस में रख कर आग में फेंका, उस वक़्त आप की ज़बाने मुबारक पर था حَسۡبِیَ اللّٰہُ وَ نِعۡمَ الۡوَکِیۡلُ। जिब्रईले अमीन ने आप से अ़र्ज़ किया कि क्या कुछ काम है ? आप ने फ़रमाया : तुम से नहीं, जिब्रईल ने अ़र्ज़ किया : तो अपने रब से सुवाल कीजिये, फ़रमाया : सुवाल करने से उस का मेरे ह़ाल को जानना मेरे लिये किफ़ायत करता है।

اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿۷۰﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَ

इब्राहीम पर[124] और उन्हों ने उस का बुरा चाहा तो हम ने उन्हें सब से बढ़ कर ज़ियांकार कर दिया[125] और हम ने उसे और

لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ

लूत़ को[126] नजात बख़्शी[127] उस ज़मीन की त़रफ़[128] जिस में हम ने जहान वालों के लिये बरकत रखी[129] और हम ने उसे इस्ह़ाक़ अ़त़ा फ़रमाया[130]

وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ

और या'क़ूब पोता और हम ने उन सब को अपने क़ुर्बे ख़ास का सज़ावार (अहल) किया और हम ने उन्हें इमाम किया कि[131] हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ

से बुलाते हैं और हम ने उन्हें वह़्य भेजी अच्छे काम करने और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने और ज़कात

الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَ لُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ نَجَّيْنٰهُ

देने की और वोह हमारी बन्दगी करते थे और लूत़ को हम ने हुकूमत और इ़ल्म दिया और उसे उस

مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓىِٕثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी[132] बेशक वोह बुरे लोग

ع ۵ ۵ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَ اَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَ نُوْحًا

बे हुक्म (ना फ़रमान) थे और हम ने उसे[133] अपनी रह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है और नूह़ को

اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ

जब उस से पहले उस ने हमें पुकारा तो हम ने उस की दुआ़ क़बूल की और उसे और उस के घर वालों को बड़ी सख़्ती से

الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَ نَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

नजात दी[134] और हम ने उन लोगों पर उस को मदद दी जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बेशक वोह

124 : तो आग ने सिवा आप की बन्दिश के और कुछ न जलाया और आग की गरमी ज़ाइल हो गई और रोशनी बाक़ी रही। 125 : कि उन की मुराद पूरी न हुई और सई नाकाम रही और अल्लाह तआ़ला ने उस क़ौम पर मच्छर भेजे जो उन के गोश्त खा गए और ख़ून पी गए और एक मच्छर नमरूद के दिमाग़ में घुस गया और उस की हलाकत का सबब हुवा। 126 : जो उन के भतीजे उन के भाई हारान के फ़रज़न्द थे, नमरूद और उस की क़ौम से 127 : और इ़राक़ से 128 : रवाना किया 129 : उस ज़मीन से ज़मीने शाम मुराद है, इस की बरकत येह है कि यहां कसरत से अम्बिया हुए और तमाम जहान में उन के दीनी बरकात पहुंचे और सर सब्ज़ी व शादाबी के ए'तिबार से भी येह ख़ित्ता दूसरे ख़ित्तों पर फ़ाइक़ है, यहां कसरत से नहरें हैं, पानी पाकीज़ा और ख़ुश गवार है, अश्जार व सिमार (दरख़्तों और फलों) की कसरत है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने मक़ामे फ़िलिस्तीन में नुज़ूल फ़रमाया और ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام ने मुअ्तफ़िका में। 130 : और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने अल्लाह तआ़ला से बेटे की दुआ़ की थी। 131 : लोगों को हमारे दीन की त़रफ़ 132 : उस बस्ती का नाम सदूम था 133 : या'नी लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام को 134 : या'नी तूफ़ान से और तक्ज़ीबे अहले तुग़्यान (बाग़ी व सरकश की तक्ज़ीब) से।

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي

बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया   और दावूद और सुलैमान को याद करो जब खेती का एक झगड़ा चुकाते

الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾

(फ़ैसला करते) थे जब रात को उस में कुछ लोगों की बकरियां छूटीं[135]   और हम उन के हुक्म के वक़्त हाज़िर थे

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ

हम ने वोह मुआमला सुलैमान को समझा दिया[136]   और दोनों को हुकूमत और इल्म अ़ता किया[137]   और दावूद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये

يُسَبِّحْنَ وَ الطَّيْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ

कि तस्बीह़ करते और परिन्दे[138]   और येह हमारे काम थे   और हम ने उसे तुम्हारा एक पहनावा बनाना सिखाया

لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ

कि तुम्हें तुम्हारी आंच से [ज़ख़्मी होने से] बचाए[139]   तो क्या तुम शुक्र करोगे   और सुलैमान के लिये तेज़ हवा

عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ

मुसख़्ख़र कर दी कि उस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की त़रफ़ जिस में हम ने बरकत रखी[140]   और हम को हर

شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

चीज़ मा'लूम है   और शैत़ानों में से वोह जो उस के लिये ग़ोत़ा लगाते[141]   और इस के सिवा

135 : उन के साथ कोई चराने वाला न था, वोह खेती खा गईं, येह मुक़द्दमा ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सामने पेश हुवा आप ने तज्वीज़ की, कि बकरियां खेती वाले को दे दी जाएं, बकरियों की क़ीमत खेती के नुक़्सान के बराबर थी। **136 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के सामने जब येह मुआमला पेश हुवा तो आप ने फ़रमाया कि फ़रीक़ैन के लिये इस से ज़ियादा आसानी की शक्ल भी हो सकती है, उस वक़्त ह़ज़रत की उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की थी, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने आप पर लाज़िम किया कि वोह सूरत बयान फ़रमाएं, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने येह तज्वीज़ पेश की, कि बकरी वाला काश्त करे और जब तक खेती उस ह़ालत को पहुंचे जिस ह़ालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरा से नफ़्अ़ उठाए और खेती उस ह़ालत पर पहुंच जाने के बा'द खेती वाले को खेती दे दी जाए बकरी वाले को उस की बकरियां वापस कर दी जावें, येह तज्वीज़ ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने पसन्द फ़रमाई, इस मुआमले में येह दोनों हुक्म इज्तिहादी थे और उस शरीअ़त के मुत़ाबिक़ थे। हमारी शरीअ़त में हुक्म येह है कि अगर चराने वाला साथ न हो तो जानवर जो नुक़्सानात करे उस का ज़मान लाज़िम नहीं। मुजाहिद का क़ौल है कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने जो फ़ैसला किया था वोह उस मस्अले का हुक्म था और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने जो तज्वीज़ फ़रमाई येह सूरते सुल्ह़ थी। **137 :** वुजूहे इज्तिहाद व त़रीक़े अह़काम वग़ैरा का। **मस्अला :** जिन उ़लमा को इज्तिहाद की अहलिय्यत ह़ासिल हो उन्हें उन उमूर में इज्तिहाद का ह़क़ है जिस में वोह किताब व सुन्नत के हुक्म न पावें और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा भी हो जावे तो भी उन पर मुआख़ज़ा नहीं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जब हुक्म करने वाला इज्तिहाद के साथ हुक्म करे और उस हुक्म में मुसीब हो तो उस के लिये दो अज्र हैं और अगर इज्तिहाद में ख़त़ा वाक़ेअ़ हो जाए तो एक अज्र। **138 :** पथ्थर और परिन्दे आप के साथ आप की मुवाफ़क़त में तस्बीह़ करते थे। **139 :** या'नी जंग में दुश्मन के मुक़ाबिल काम आए और वोह ज़िरह है, सब से पहले ज़िरह बनाने वाले ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام हैं। **140 :** इस ज़मीन से मुराद शाम है जो आप का मस्कन था। **141 :** दरिया की गहराई में दाख़िल हो कर समुन्दर की तह से आप के लिये जवाहिर निकाल कर लाते।

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ﴿۸۲﴾ وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ

और काम करते[142] और हम उन्हें रोके हुए थे[143] और अय्यूब को [याद करो] जब उस ने अपने रब को पुकारा[144] कि मुझे

مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚۖ﴿۸۳﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ

तक्लीफ़ पहुंची और तू सब मेहर वालों से बढ़ कर मेहर वाला है तो हम ने उस की दुआ़ सुन ली तो हम ने दूर कर दी जो

مِنْ ضُرٍّ وَّ اٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ ذِكْرٰى

तक्लीफ़ उसे थी[145] और हम ने उसे उस के घर वाले और उन के साथ इतने ही और अ़ता किये[146] अपने पास से रह़मत फ़रमा कर और बन्दगी

لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِدْرِيْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚۖ﴿۸۵﴾

वालों के लिये नसीह़त[147] और इस्माईल और इदरीस और ज़ुल किफ़्ल को [याद करो] वोह सब सब्र वाले थे[148]

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ

और उन्हें हम ने अपनी रह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं और ज़ुन्नून को [याद करो][149] जब

ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ

चला ग़ुस्से में भरा[150] तो गुमान किया कि हम उस पर तंगी न करेंगे[151] तो अंधेरियों में पुकारा[152] कोई

---

142 : अ़जीब अ़जीब सन्अ़तें, इमारतें, मह़ल, बरतन, शीशे की चीज़ें, साबून वग़ैरा बनाना। **143 :** कि आप के हुक्म से बाहर न हों। **144 :** या'नी अपने रब से दुआ़ की। ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से हैं **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर त़रह़ की ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं, ह़ुस्ने सूरत भी कस्रते औलाद भी कसरते अम्वाल भी। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इब्तिला में डाला और आप के फ़रज़न्द व औलाद मकान के गिरने से दब कर मर गए, तमाम जानवर जिस में हज़ारहा ऊंट हज़ारहा बकरियां थीं सब मर गए, तमाम खेतियां और बाग़ात बरबाद हो गए, कुछ भी बाक़ी न रहा और जब आप को उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाएअ़ होने की ख़बर दी जाती थी तो आप ह़म्दे इलाही बजा लाते थे और फ़रमाते थे : मेरा क्या है जिस का था उस ने लिया, जब तक मुझे दिया और मेरे पास रखा उस का शुक्र ही अदा नहीं हो सकता मैं उस की मरज़ी पर राज़ी हूं, फिर आप बीमार हुए, तमाम जिस्म शरीफ़ में आबले पड़े, बदन मुबारक सब का सब ज़ख़्मों से भर गया, सब लोगों ने छोड़ दिया बजुज़ आप की बीबी साहिबा के कि वोह आप की ख़िदमत करती रहीं और येह ह़ालत सालहा साल रही, आख़िरकार कोई ऐसा सबब पेश आया कि आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की : **145 :** इस त़रह़ कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि आप ज़मीन में पाउं मारिये। उन्हों ने पाउं मारा एक चश्मा ज़ाहिर हुवा, हुक्म दिया गया इस से ग़ुस्ल कीजिये, ग़ुस्ल किया तो ज़ाहिर बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम चले फिर दोबारा ज़मीन में पाउं मारने का हुक्म हुवा फिर आप ने पाउं मारा उस से भी एक चश्मा ज़ाहिर हुवा जिस का पानी निहायत सर्द था, आप ने ब हुक्मे इलाही पिया उस से बात़िन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं और आप को आ'ला दरजे की सिह़्ह़त ह़ासिल हुई। **146 :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तमाम औलाद को ज़िन्दा फ़रमा दिया और आप को उतनी ही औलाद और इनायत की। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की दूसरी रिवायत में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की बीबी साहिबा को दोबारा जवानी इनायत की और उन के कसीर औलादें हुईं। **147 :** कि वोह इस वाक़िए़ से बलाओं पर सब्र करने और इस के सवाबे अ़ज़ीम से बा ख़बर हों और सब्र करें और सवाब पाएं। **148 :** कि उन्हों ने मेह़नतों और बलाओं और इ़बादतों की मशक़्क़तों पर सब्र किया। **149 :** या'नी ह़ज़रते यूनुस इब्ने मत्ता को **150 :** अपनी क़ौम से जिस ने उन की दा'वत न क़बूल की थी और नसीह़त न मानी थी और कुफ़्र पर क़ाइम रही थी, आप ने गुमान किया कि येह हिजरत आप के लिये जाइज़ है क्यूं कि इस का सबब सिर्फ़ कुफ़्र और अहले कुफ़्र के साथ बुग़्ज़ और **अल्लाह** के लिये ग़ज़ब करना है लेकिन आप ने इस हिजरत में हुक्मे इलाही का इन्तिज़ार न किया **151 :** तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मछली के पेट में डाला। **152 :** कई क़िस्म की अंधेरियां थीं दरिया की अंधेरी, रात की अंधेरी, मछली के पेट की अंधेरी। इन अंधेरियों में ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने परवर्दगार से इस त़रह़ दुआ़ की, कि

www.dawateislami.net

إِلٰهَ إِلَّآ أَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ إِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ

मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा[153] तो हम ने उस की पुकार सुन ली

وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـۨجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادٰى

और उसे ग़म से नजात बख़्शी[154] और ऐसी ही नजात देंगे मुसल्मानों को[155] और ज़करिय्या को जब उस ने अपने

رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫

रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़[156] और तू सब से बेहतर वारिस[157] तो हम ने उस की दुआ क़बूल की

وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَأَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ إِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى

और उसे[158] यह्या अ़ता फ़रमाया और उस के लिये उस की बीबी संवारी[159] बेशक वोह[160] भले कामों में जल्दी

الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَالَّتِىْٓ

करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं और उस औ़रत

أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً

को जिस ने अपनी पारसाई (पर) निगाह रखी[161] तो हम ने उस में अपनी रूह़ फूंकी[162] और उसे और उस के बेटे को सारे जहां

لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ إِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّأَنَا رَبُّكُمْ

के लिये निशानी बनाया[163] बेशक तुम्हारा येह दीन एक ही दीन है[164] और मैं तुम्हारा रब हूं[165]

فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنْ ع ١٨ ٦

तो मेरी इबादत करो और औरों ने अपने काम आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिये[166] सब को हमारी त़रफ़ फिरना है[167] तो जो

يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَإِنَّا لَهٗ

कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उस की कोशिश की बे क़दरी नहीं और हम उसे

153 : कि मैं अपनी क़ौम से क़ब्ल तेरा इज़्न पाने के जुदा हुवा, ह़दीस शरीफ़ में है कि जो कोई मुसीबत ज़दा बारगाहे इलाही में इन कलिमात से दुआ करे तो अल्लाह तआ़ला उस की दुआ क़बूल फ़रमाता है। 154 : और मछली को हुक्म दिया तो उस ने ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को दरिया के किनारे पर पहुंचा दिया। 155 : मुसीबतों और तक्लीफ़ों से जब वोह हम से फ़रियाद करें और दुआ करें। 156 : या'नी बे औलाद, बल्कि वारिस अ़ता फ़रमा 157 : ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द बाक़ी रहने वाला। मुद्दआ येह है कि अगर तू मुझे वारिस न दे तो भी कुछ ग़म नहीं क्यूं कि तू बेहतर वारिस है। 158 : फ़रज़न्दे सईद 159 : जो बांझ थी उस को क़ाबिले विलादत किया। 160 : या'नी अम्बियाए मज़्कूरीन। 161 : पूरे त़ौर पर कि किसी त़रह़ कोई बशर उस की पारसाई को छू न सका। मुराद इस से ह़ज़रते मरयम हैं। 162 : और उस के पेट में ह़ज़रते ईसा को पैदा किया। 163 : अपने कमाले क़ुदरत की, कि ह़ज़रते ईसा को उस के बत़्न से बिग़ैर बाप के पैदा किया। 164 : दीने इस्लाम, येही तमाम अम्बिया का दीन है, इस के सिवा जितने अद्यान हैं सब बात़िल, सब को इसी दीन पर क़ाइम रहना लाज़िम है। 165 : न मेरे सिवा कोई दूसरा रब, न मेरे दीन के सिवा और कोई दीन 166 : या'नी दीन में इख़्तिलाफ़ किया और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। 167 : हम उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देंगे।

www.dawateislami.net

كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَ حَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰۤى

लिख रहे हैं और हराम है उस बस्ती पर जिसे हम ने हलाक कर दिया कि फिर लौट कर आएं[168] यहां तक

اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَ مَاْجُوْجُ وَ هُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ

कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज[169] और वोह हर बुलन्दी से ढलक्ते होंगे और

اقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِیَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ

क़रीब आया सच्चा वा'दा[170] तो जभी आंखें फट कर रह जाएंगी काफ़िरों की[171] कि

يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِیْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَ مَا

हाए हमारी ख़राबी बेशक हम[172] इस से ग़फ़्लत में थे बल्कि हम ज़ालिम थे[173] बेशक तुम[174] और जो

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ

कुछ अल्लाह के सिवा तुम पूजते हो[175] सब जहन्नम के ईंधन हो तुम्हें उस में जाना अगर येह[176]

هٰۤؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَ كُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّ

ख़ुदा होते जहन्नम में न जाते और उन सब को हमेशा उस में रहना[177] वोह उस में रैंकें (चीखें चिल्लाएं)गे[178] और

هُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤى ۙ

वोह उस में कुछ न सुनेंगे[179] बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका

اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَ هُمْ فِیْ مَا

वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं[180] वोह उस की भिनक [हलकी सी आवाज़ भी] न सुनेंगे[181] और वोह अपनी मन मानती

168 : दुन्या की त़रफ़ तलाफ़िये आ'माल व तदारुके अह़वाल के लिये। या'नी इस लिये कि उन का वापस आना ना मुम्किन है। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि जिस बस्ती वालों को हम ने हलाक किया उन का शिर्को कुफ़्र से वापस आना मुह़ाल है, येह मा'ना इस तक़्दीर पर हैं जब कि "لَا" को ज़ाइदा क़रार दिया जाए और अगर "لَا" ज़ाइदा न हो तो मा'ना येह होंगे कि दारे आख़िरत में उन का ह़यात की त़रफ़ न लौटना ना मुम्किन है। इस में मुन्किरीने बअ़्स का इब्त़ाल है और ऊपर जो كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ और لَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ फ़रमाया गया इस की ताकीद है। (تفسیر کبیر وغیرہ) **169 :** क़रीबे क़ियामत। और याजूज माजूज दो क़बीलों के नाम हैं। **170 :** या'नी क़ियामत **171 :** उस दिन के होल और दहशत से, और कहेंगे **172 :** दुन्या के अन्दर **173 :** कि रसूलों की बात न मानते थे और उन्हें झुटलाते थे। **174 :** ऐ मुश्रिको ! **175 :** या'नी तुम्हारे बुत **176 :** बुत जैसा कि तुम्हारा गुमान है **177 :** बुतों को भी और उन के पूजने वालों को भी। **178 :** और अ़ज़ाब की शिद्दत से चीख़ेंगे और दहाड़ेंगे। **179 :** जहन्नम के शिद्दते जोश की वज्ह से। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया जब जहन्नम में वोह लोग रह जाएंगे जिन्हें उस में हमेशा रहना है तो वोह आग के ताबूतों में बन्द किये जाएंगे वोह ताबूत और ताबूतों में फिर वोह ताबूत और ताबूतों में और उन ताबूतों पर आग की मेख़ें जड़ दी जाएंगी तो वोह कुछ न सुनेंगे और न कोई उन में किसी को देखेगा। **180 :** इस में ईमान वालों के लिये बिशारत है। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم ने येह आयत पढ़ कर फ़रमाया कि मैं उन्हीं में से हूं और अबू बक्र और उ़मर और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर और सा'द और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم एक रोज़ का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, उस वक़्त क़ुरैश के सरदार ह़त़ीम में मौजूद थे और का'बा शरीफ़ के गिर्द तीन सौ साठ बुत थे, नज़्र बिन ह़ारिस

www.dawateislami.net

اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ

ख़्वाहिशों में[182] हमेशा रहेंगे उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट[183] और फ़िरिश्ते उन की पेशवाई

الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ يَوْمَ نَطْوِی السَّمَآءَ

को आएंगे[184] कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था जिस दिन हम आस्मान को लपेटेंगे

كَطَیِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ كَمَا بَدَاْنَاۤ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِیْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَیْنَا ؕ

जैसे सिजिल फ़िरिश्ता[185] नामए आ'माल को लपेटता है हम ने जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे[186] येह वा'दा है हमारे ज़िम्मे

اِنَّا كُنَّا فٰعِلِیْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَ لَقَدْ كَتَبْنَا فِی الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ

हम को इस का ज़रूर करना और बेशक हम ने ज़बूर में नसीहत के बा'द लिख दिया कि

الْاَرْضَ یَرِثُهَا عِبَادِیَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ فِیْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ

इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे[187] बेशक येह कुरआन काफ़ी है

عٰبِدِیْنَ ﴿۱۰۶﴾ؕ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۷﴾ قُلْ اِنَّمَا یُوْحٰۤی

इबादत वालों को[188] और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये[189] तुम फ़रमाओ मुझे तो येही वह्य

सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सामने आया और आप से कलाम करने लगा, हुज़ूर ने उस को जवाब दे कर साकित कर दिया और येह आयत तिलावत फ़रमाई : اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं, येह फ़रमा कर हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़िबा'रा सहमी आया और उस को वलीद बिन मुग़ीरा ने उस गुफ़्तगू की ख़बर दी कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम मैं होता तो उन से मुबाहसा करता इस पर लोगों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बुलाया इब्ने ज़िबा'रा येह कहने लगा कि आप ने येह फ़रमाया है कि तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हैं ? हुज़ूर ने फ़रमाया कि हां। कहने लगा यहूद तो हज़रते उ़ज़ैर को पूजते हैं और नसारा हज़रते मसीह को पूजते हैं और बनी मलीह फ़िरिश्तों को पूजते हैं। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और बयान फ़रमा दिया कि हज़रते उ़ज़ैर और मसीह और फ़िरिश्ते वोह हैं जिन के लिये भलाई का वा'दा हो चुका और वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दर हक़ीक़त यहूदो नसारा वग़ैरा शैतान की परस्तिश करते हैं। इन जवाबों के बा'द उस को मजाले दम ज़दन न रही और वोह साकित रह गया और दर हक़ीक़त उस का ए'तिराज़ कमाले इनाद (सख़्त दुश्मनी की वज्ह) से था क्यूं कि जिस आयत पर उस ने ए'तिराज़ किया उस में ''مَا تَعْبُدُوْنَ'' है और ''مَا'' ज़बाने अ़रबी में ग़ैर ज़विल उ़क़ूल के लिये बोला जाता है, येह जानते हुए उस ने अन्धा बन कर ए'तिराज़ किया, येह ए'तिराज़ तो अहले ज़बान की निगाहों में खुला हुवा बातिल था मगर मज़ीद बयान के लिये इस आयत में तौज़ीह फ़रमा दी गई। **181 :** और उस के जोश की आवाज़ भी उन तक न पहुंचेगी वोह मनाज़िले जन्नत में आराम फ़रमा होंगे। **182 :** ख़ुदावन्दी ने'मतों और करामतों में **183 :** या'नी नफ़्ख़ए अख़ीरा **184 :** क़ब्रों से निकलते वक़्त मुबारक बादें देते तहनियत पेश करते और येह कहते **185 :** जो कातिबे आ'माल है आदमी की मौत के वक़्त उस के **186 :** या'नी हम ने जैसे पहले अ़दम से बनाया था वैसे ही फिर मा'दूम करने के बा'द पैदा कर देंगे या येह मा'ना हैं कि जैसा मां के पेट से बरहना, ग़ैर मख़्तून पैदा किया था ऐसा ही मरने के बा'द उठाएंगे। **187 :** इस ज़मीन से मुराद ज़मीने जन्नत है और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार की ज़मीनें मुराद हैं जिन को मुसल्मान फ़त्ह करेंगे और एक क़ौल येह है ज़मीने शाम मुराद है। **188 :** कि जो इस का इत्तिबाअ़ करे और इस के मुताबिक़ अ़मल करे जन्नत पाए और मुराद को पहुंचे और इबादत वालों से मोमिनीन मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि उम्मते मुहम्मदिय्यह मुराद है जो पांचों नमाज़ें पढ़ते हैं रमज़ान के रोज़े रखते हैं हज करते हैं। **189 :** कोई हो, जिन्न हो या इन्स, मोमिन हो या काफ़िर। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुज़ूर का रहमत होना आ़म है ईमान वाले के लिये भी और उस के लिये भी जो ईमान न लाया, मोमिन के लिये तो आप दुन्या व आख़िरत दोनों में रहमत हैं और जो ईमान न लाया उस के लिये आप दुन्या में रहमत

إِلَىٰٓ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ

होती है कि तुम्हारा ख़ुदा नहीं मगर एक **अल्लाह** तो क्या तुम मुसल्मान होते हो फिर अगर वोह मुंह फेरें[190] तो फ़रमा दो

ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

मैं ने तुम्हें लड़ाई का ए'लान कर दिया बराबरी पर और मैं क्या जानूं[191] कि पास है या दूर है वोह जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[192]

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلْجَهْرَ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِى

बेशक **अल्लाह** जानता है आवाज़ की बात[193] और जानता है जो तुम छुपाते हो[194] और मैं क्या जानूं

لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾ قَٰلَ رَبِّ ٱحْكُم بِٱلْحَقِّ ۗ وَ

शायद वोह[195] तुम्हारी जांच हो[196] और एक वक़्त तक बरतवाना[197] नबी ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब ह़क़ फ़ैसला फ़रमा दे[198] और

رَبُّنَا ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾ ع

ع ٧ النصف

हमारे रब रह़मान ही की मदद दरकार है उन बातों पर जो तुम बताते हो[199]

ايـاتها ٧٨ ﴿٢٢﴾ سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ ﴿١٠٣﴾ ركوعاتها ١٠

सूरए ह़ज्ज मदनिय्या है इस में अठत्तर आयतें और दस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

हैं कि आप की बदौलत ताख़ीरे अ़ज़ाब हुई और ख़सफ़ व मस्ख़ और इस्तीसाल के अ़ज़ाब उठा दिये गए। तफ़्सीरे रूहुल बयान में इस आयत की तफ़्सीर में अकाबिर का येह क़ौल नक़्ल किया है कि आयत के मा'ना येह हैं कि हम ने आप को नहीं भेजा मगर रह़मते मुत्लक़ा, ताम्मा, कामिला, आ़म्मा, शामिला, जामिआ़, मुह़ीता़ ब जमीअ़ मुक़य्यदात, रह़मते ग़ैबिया व शहादते इ़ल्मिय्या व ऐ़निया व वुजूदिया व शुहूदिया व साबिक़ा व लाहिक़ा وغیرذالک तमाम जहानों के लिये आ़लमे अरवाह़ हों या आ़लमे अज्साम ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल और जो तमाम आ़लमों के लिये रह़मत हो लाज़िम है कि वोह तमाम जहान से अफ़्ज़ल हो। **190 :** और इस्लाम न लाएं **191 :** बे ख़ुदा के बताए। या'नी येह बात अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नहीं है। यहां दिरायत की नफ़ी फ़रमाई गई "दिरायत" कहते हैं अन्दाज़े और क़ियास से जानने को जैसा कि मुफ़रदाते राग़िब और रद्दुल मुह़तार में है, इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला के वासिते़ लफ़्ज़ "दिरायत" इस्ति'माल नहीं किया जाता और क़ुरआने करीम के इत़्लाक़ात इस पर दलालत करते हैं जैसा कि फ़रमाया مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ लिहाज़ा यहां बे ता'लीमे इलाही मह़्ज़ अपने अ़क़्ल व क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि मुत़्लक़ इ़ल्म की और मुत़्लक़ इ़ल्म की नफ़ी कैसे हो सकती है जब कि इसी रुकूअ़ के अव्वल में आ चुका है وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ या'नी क़रीब आया सच्चा वा'दा, तो कैसे कहा जा सकता है कि वा'दे का क़ुर्ब व बो'द किसी त़रह़ मा'लूम नहीं, ख़ुलासा येह है कि अपने अ़क़्लो क़ियास से जानने की नफ़ी है न कि ता'लीमे इलाही से जानने की। **192 :** अ़ज़ाब का या क़ियामत का। **193 :** जो ऐ कुफ़्फ़ार तुम ए'लान के साथ इस्लाम पर ब त़रीक़े त़ा'न कहते हो **194 :** अपने दिलों में या'नी नबी की अ़दावत और मुसल्मानों से ह़सद जो तुम्हारे दिलों में पोशीदा है **अल्लाह** उस को भी जानता है सब का बदला देगा। **195 :** या'नी दुन्या में अ़ज़ाब को मुअख़्ख़र करना **196 :** जिस से तुम्हारा ह़ाल ज़ाहिर हो जाए। **197 :** या'नी वक़्ते मौत तक। **198 :** मेरे और उन के दरमियान जो मुझे झुटलाते हैं, इस त़रह़ कि मेरी मदद कर और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और कुफ़्फ़ार बद्र व अह़ज़ाब व हुनैन वग़ैरा में मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। **199 :** शिर्क व कुफ़्र और बे ईमानी की। **1 :** सूरए ह़ज्ज बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنھما व मुजाहिद मक्किय्या है सिवाए छ[6] आयतों के जो هٰذٰنِ خَصْمٰنِ से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दस रुकूअ़ और अठत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो इकानवे कलिमात

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِیْمٌ ① یَوْمَ

ऐ लोगो ! अपने रब से डरो[2] बेशक क़ियामत का ज़ल्ज़ला[3] बड़ी सख़्त चीज़ है जिस दिन

تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ

तुम उसे देखोगे हर दूध पिलाने वाली[4] अपने दूध पीते को भूल जाएगी और हर गाभनी[5] अपना गाभ डाल

حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰی وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰی وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ

देगी[6] और तू लोगों को देखेगा जैसे नशे में हैं और वोह नशे में न होंगे[7] मगर है येह कि अल्लाह की मार

شَدِیْدٌ ② وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ یَتَّبِـعُ كُلَّ

कड़ी है और कुछ लोग वोह हैं कि अल्लाह के मुआमले में झगड़ते हैं बे जाने बूझे और हर सरकश शैतान

شَیْطٰنٍ مَّرِیْدٍ ③ۙ كُتِبَ عَلَیْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ یُضِلُّهٗ وَ یَهْدِیْهِ

के पीछे हो लेते हैं[8] जिस पर लिख दिया गया है कि जो इस की दोस्ती करेगा तो येह ज़रूर उसे गुमराह कर देगा और उसे

اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ④ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ

अज़ाबे दोज़ख़ की राह बताएगा[9] ऐ लोगो ! अगर तुम्हें क़ियामत के दिन जीने में कुछ शक हो तो येह ग़ौर करो

فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

कि हम ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[10] फिर पानी की बूंद से[11] फिर ख़ून की फटक से[12] फिर गोश्त की बोटी से

مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَیْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَیِّنَ لَكُمْ ؕ وَ نُقِرُّ فِی الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ

नक़्शा बनी और बे बनी[13] ताकि हम तुम्हारे लिये अपनी निशानियां ज़ाहिर फ़रमाएं[14] और हम ठहराए रखते हैं माओं के पेट में जिसे चाहें

और पांच हज़ार पछत्तर हर्फ़ हैं। **2 :** उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ करो और उस की ताअ़त में मश्ग़ूल हो। **3 :** जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के नज़्दीक वाक़ेअ़ होगा **4 :** उस की हैबत से **5 :** या'नी ह़म्ल वाली उस दिन के होल से **6 :** ह़म्ल साक़ित़ हो जाएंगे। **7 :** बल्कि अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से लोगों के होश जाते रहेंगे। **8 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के बारे में नाज़िल हुई जो बड़ा ही झगड़ालू था और फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां और क़ुरआन को पहलों के क़िस्से बताता था और मौत के बा'द उठाए जाने का मुन्किर था। **9 :** शैत़ान के इत्तिबाअ़ से ज़ज्र फ़रमाने के बा'द मुन्किरीने बअ़्स पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाई जाती है। **10 :** तुम्हारी नस्ल की अस्ल या'नी तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **11 :** या'नी क़त़रए मनी से उन की तमाम ज़ुर्रिय्यत को। **12 :** कि नुत़्फ़ा ख़ूने ग़लीज़ हो जाता है। **13 :** या'नी मुसव्वर और ग़ैर मुसव्वर, बुख़ारी और मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया तुम लोगों का माद्दए पैदाइश मां के शिकम में चालीस रोज़ तक नुत़्फ़ा रहता है, फिर इतनी ही मुद्दत ख़ून बस्ता (जमा हुवा ख़ून) हो जाता है, फिर इतनी ही मुद्दत गोश्त की बोटी की त़रह रहता है, फिर अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्ता भेजता है जो उस का रिज़्क़ उस की उ़म्र उस के अ़मल उस का शक़ी या सईद होना लिखता है, फिर उस में रूह़ फूंकता है (الحديث) अल्लाह तआ़ला इन्सान की पैदाइश इस त़रह फ़रमाता है और उस को एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल करता है, येह इस लिये बयान फ़रमाया गया **14 :** और तुम अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत व ह़िक्मत को जानो

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ

एक मुक़र्रर मीआ़द तक[15] फिर तुम्हें निकालते हैं बच्चा फिर[16] इस लिये कि तुम अपनी जवानी को पहुंचो[17] और तुम में

مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ

कोई पहले ही मर जाता है और कोई सब में निकम्मी उ़म्र तक डाला जाता है[18] कि जानने के बा'द

عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ

कुछ न जाने[19] और तू ज़मीन को देखे मुरझाई हुई[20] फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तरो ताज़ा हुई

وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ

और उभर आई और हर रौनक़ दार जोड़ा[21] उगा लाई[22] येह इस लिये है कि **अल्लाह** ही ह़क़ है[23] और

اَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا

येह कि वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और येह कि वोह सब कुछ कर सकता है और इस लिये कि क़ियामत आने वाली इस में

رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ

कुछ शक नहीं और येह कि **अल्लाह** उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं और कोई आदमी वोह है कि

يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾ ثَانِيَ عِطْفِهٖ

अल्लाह के बारे में यूं झगड़ता है कि न तो इ़ल्म न कोई दलील और न कोई रोशन नविश्ता (तह़रीर)[24] ह़क़ से अपनी गरदन मोड़े हुए

لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

ताकि **अल्लाह** की राह से बहका दे[25] उस के लिये दुन्या में रुस्वाई है[26] और क़ियामत के दिन हम उसे आग का

और अपनी इब्तिदाए पैदाइश के ह़ालात पर नज़र कर के समझ लो कि जो क़ादिरे बरह़क़ बेजान मिट्टी में इतने इन्क़िलाब कर के जानदार आदमी बना देता है वोह मरे हुए इन्सान को ज़िन्दा करे तो उस की क़ुदरत से क्या बईद। **15 :** या'नी वक़्ते विलादत तक। **16 :** तुम्हें उ़म्र देते हैं **17 :** और तुम्हारी अ़क़्ल व क़ुव्वत कामिल हो। **18 :** और उस को इतना बुढ़ापा आ जाता है कि अ़क़्लो ह़वास बजा नहीं रहते और ऐसा हो जाता है **19 :** और जो जानता हो वोह भूल जाए। इ़क्रिमा ने कहा : जो क़ुरआन की मुदावमत रखेगा इस ह़ालत को न पहुंचेगा। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला बअ़्स या'नी मरने के बा'द उठने पर दूसरी दलील बयान फ़रमाता है। **20 :** ख़ुश्क बे गियाह। **21 :** या'नी हर क़िस्म का ख़ुशनुमा सब्ज़ा **22 :** येह दलीलें बयान फ़रमाने के बा'द नतीजा मुरत्तब फ़रमाया जाता है। **23 :** और येह जो कुछ ज़िक्र किया गया आदमी की पैदाइश और ख़ुश्क बे गियाह ज़मीन को सर सब्ज़ो शादाब कर देना उस के वुजूद व ह़िक्मत की दलीलें हैं इन से उस का वुजूद भी साबित होता है। **24 शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जहल वग़ैरा एक जमाअ़ते कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़ात में झगड़ा करते थे और उस की त़रफ़ ऐसे औसाफ़ की निस्बत करते थे जो उस की शान के लाइक़ नहीं। इस आयत में बताया गया कि आदमी को कोई बात बिग़ैर इ़ल्म और बे सनद व दलील के कहनी न चाहिये ख़ास कर शाने इलाही में और जो बात इ़ल्म वाले के ख़िलाफ़ बे इ़ल्मी से कही जाएगी वोह बात़िल होगी, फिर इस पर येह अन्दाज़ कि इसरार करे और बराहे तकब्बुर **25 :** और उस के दीन से मुन्ह़रिफ़ कर दे **26 :** चुनान्चे बद्र में वोह ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ क़त्ल हुवा।

www.dawateislami.net

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝۹ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ

अज़ाब चखाएंगे[27] येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा[28] और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म

لِّلْعَبِيْدِ ۝۱۰ع وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ

नहीं करता[29] और कुछ आदमी अल्लाह की बन्दगी एक किनारे पर करते हैं[30] फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई

خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ۫ خَسِرَ الدُّنْيَا

जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच आ पड़ी[31] मुंह के बल पलट गए[32] दुन्या और आख़िरत

وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝۱۱ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

दोनों का घाटा[33] येही है सरीह़ नुक़्सान[34] अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हैं जो

لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝۱۲ۚ يَدْعُوْا لَمَنْ

उन का बुरा भला कुछ न करे[35] येही है दूर की गुमराही ऐसे को पूजते हैं जिस

ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۝۱۳ اِنَّ اللّٰهَ

के नफ़्अ़ से[36] नुक़्सान की तवक़्क़ोअ़ ज़ियादा है[37] बेशक[38] क्या ही बुरा मौला और बेशक क्या ही बुरा रफ़ीक़ बेशक अल्लाह

يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और भले काम किये बाग़ों में जिन के नीचे

الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝۱۴ مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ

नहरें रवां बेशक अल्लाह करता है जो चाहे[39] जो येह ख़याल करता हो कि अल्लाह अपने नबी[40] की मदद न

27 : और उस से कहा जाएगा 28 : या'नी जो तू ने दुन्या में किया कुफ़्रो तक्ज़ीब। 29 : और किसी को बे जुर्म नहीं पकड़ता। 30 : इस में इत़्मीनान से दाख़िल नहीं होते और उन्हें सबात व क़रार ह़ासिल नहीं होता शक व तरद्दुद में रहते हैं जिस त़रह पहाड़ के किनारे खड़ा हुवा शख़्स तज़ल्ज़ुल की ह़ालत में होता है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत आ'राबियों की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अत़राफ़ से आ कर मदीने में दाख़िल होते और इस्लाम लाते थे, उन की ह़ालत येह थी कि अगर वोह ख़ूब तन्दुरुस्त रहे और उन की दौलत बढ़ी और उन के बेटा हुवा तब तो कहते थे इस्लाम अच्छा दीन है इस में आ कर हमें फ़ाएदा हुवा और अगर कोई बात अपनी उम्मीद के ख़िलाफ़ पेश आई मसलन बीमार हो गए या लड़की हो गई या माल की कमी हुई तो कहते थे जब से हम इस दीन में दाख़िल हुए हैं हमें नुक़्सान ही हुवा और दीन से फिर जाते थे। येह आयत उन के ह़क़ में नाज़िल हुई और बताया गया कि उन्हें अभी दीन में सबात ही ह़ासिल नहीं हुवा, उन का ह़ाल येह है 31 : किसी क़िस्म की सख़्ती पेश आई 32 : मुरतद हो गए और कुफ़्र की त़रफ़ लौट गए। 33 : दुन्या का घाटा तो येह कि जो उन की उम्मीदें थीं वोह पूरी न हुईं और इरतिदाद की वज्ह से उन का ख़ून मुबाह हुवा और आख़िरत का घाटा हमेशा का अ़ज़ाब। 34 : वोह लोग मुरतद होने के बा'द बुत परस्ती करते हैं और 35 : क्यूं कि वोह बेजान है। 36 : या'नी जिस की परस्तिश के ख़याली नफ़्अ़ से उस को पूजने के 37 : या'नी अ़ज़ाबे दुन्या व आख़िरत की। 38 : वोह बुत 39 : फ़रमां बरदारों पर इन्आ़म और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब। 40 : ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ

फ़रमाएगा दुन्या[41] और आख़िरत में[42] तो उसे चाहिये कि ऊपर को एक रस्सी ताने फिर अपने आप को फांसी दे ले फिर देखे

هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ

कि उस का येह दाउं कुछ ले गया उस बात को जिस की उसे जलन है[43] और बात येही है कि हम ने येह कुरआन उतारा रोशन आयतें और येह कि

اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ

अल्लाह राह देता है जिसे चाहे बेशक मुसल्मान और यहूदी और सितारा परस्त

وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ

और नसरानी और आतश परस्त और मुश्रिक बेशक **अल्लाह** इन सब में क़ियामत के दिन

الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ

फ़ैसला करेगा[44] बेशक हर चीज़ **अल्लाह** के सामने है क्या तुम ने न देखा[45] कि **अल्लाह** के लिये सज्दा करते हैं

مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَ

वोह जो आस्मानों और ज़मीन में हैं और सूरज और चांद और तारे और

الْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ

पहाड़ और दरख़्त और चौपाए[46] और बहुत आदमी[47] और बहुत वोह हैं जिन पर अ़ज़ाब

الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا

मुक़र्रर हो चुका[48] और जिसे **अल्लाह** ज़लील करे[49] उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं बेशक **अल्लाह** जो चाहे

السجدة ٧

يَشَآءُ ﴿١٨﴾ ۩ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ؗ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

करे येह दो फ़रीक़ हैं[50] कि अपने रब में झगड़े[51] तो जो काफ़िर हुए

قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾ ج

उन के लिये आग के कपड़े बियोंते (काटे) गए हैं[52] और उन के सरों पर खौलता हुवा पानी डाला जाएगा[53]

41 : में उन के दीन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर 42 : उन के दरजे बुलन्द कर के 43 : या'नी **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी की मदद ज़रूर फ़रमाएगा, जिसे उस से जलन हो वोह अपनी इन्तिहाई सअ़्य ख़त्म कर दे और जलन में मर भी जाए तो भी कुछ नहीं कर सकता। 44 : मोमिनीन को जन्नत अ़ता फ़रमाएगा और कुफ़्फ़ार को किसी क़िस्म के भी हों जहन्नम में दाख़िल करेगा। 45 : ऐ ह़बीबे अकरम ! صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم 46 : सज्दए ख़ुज़ूअ़ जैसा **अल्लाह** चाहे। 47 : या'नी मोमिनीन, मज़ीद बरआं सज्दए ताअ़त व इबादत भी। 48 : या'नी कुफ़्फ़ार। 49 : उस की शक़ावत के सबब 50 : या'नी मोमिनीन और पांचों क़िस्म के कुफ़्फ़ार जिन का ज़िक्र ऊपर किया गया है। 51 : या'नी उस के दीन के बारे में और उस की सिफ़ात में 52 : या'नी आग उन्हें हर त़रफ़ से घेर लेगी 53 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास

www.dawateislami.net

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَ الْجُلُوْدُ ﴿۲۰﴾ وَ لَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿۲۱﴾

जिस से गल जाएगा जो कुछ उन के पेटों में है और उन की खालें[54] और उन के लिये लोहे के गुर्ज़ हैं[55]

كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَ ذُوْقُوْا

जब घुटन के सबब उस में से निकलना चाहेंगे[56] फिर उस में लौटा दिये जाएंगे और हुक्म होगा कि चखो

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ع ۹

आग का अ़ज़ाब बेशक **अल्लाह** दाख़िल करेगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

बिहिश्तों में जिन के नीचे नहरें बहें उस में पहनाए जाएंगे सोने के कंगन

وَّ لُؤْلُؤًا ۭ وَ لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۲۳﴾ وَ هُدُوْۤا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚۖ

और मोती[57] और वहां उन की पोशाक रेशम है[58] और उन्हें पाकीज़ा बात की हिदायत की गई[59]

وَ هُدُوْۤا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿۲۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ

और सब ख़ूबियों सराहे की राह बताई गई[60] बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रोकते हैं

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨ الْعَاكِفُ

अल्लाह की राह[61] और उस अदब वाली मस्जिद से[62] जिसे हम ने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया कि उस में एक सा हक़ है वहां के रहने वाले

54 : हदीस शरीफ़ में है : फिर उन्हें वैसा ही कर दिया जाएगा। (ترمذی) **55 :** जिन से उन को मारा जाएगा। **56 :** या'नी दोज़ख़ में से तो गुर्ज़ों से मार कर **57 :** ऐसे जिन की चमक मशरिक़ से मग़रिब तक रोशन कर डाले। (ترمذی) **58 :** जिस का पहनना दुन्या में मर्दों को ह़राम है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दुन्या में रेशम पहना आख़िरत में न पहनेगा। **59 :** या'नी दुन्या में। और पाकीज़ा बात से कलिमए तौह़ीद मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा क़ुरआन मुराद है। **60 :** या'नी **अल्लाह** का दीने इस्लाम। **61 :** या'नी उस के दीन और उस की इत़ाअ़त से **62 :** या'नी उस में दाख़िल होने से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत सुफ़्यान बिन ह़र्ब वग़ैरा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से रोका था। मस्जिदे ह़राम से या ख़ास का'बए मुअ़ज़्ज़मा मुराद है जैसा कि इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि वोह तमाम लोगों का क़िब्ला है वहां के रहने वाले और परदेसी सब बराबर हैं सब के लिये इस की ता'ज़ीम व ह़ुरमत और इस में अदाए मनासिके ह़ज यक्सां है और त़वाफ़ व नमाज़ की फ़ज़ीलत में शहरी और परदेसी के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं। और इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के नज़्दीक यहां मस्जिदे ह़राम से मक्कए मुकर्रमा या'नी जमीअ़ ह़रम मुराद है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि ह़रम शरीफ़ शहरी और परदेसी सब के लिये यक्सां है, इस में रहने और ठहरने का सब किसी को ह़क़ है बजुज़ इस के कि कोई किसी को निकाले नहीं, इसी लिये इमाम साह़िब मक्कए मुकर्रमा की अराज़ी की बैअ़ और इस के किराए को मन्अ़ फ़रमाते हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मक्कए मुकर्रमा ह़राम है इस की अराज़ी फ़रोख़्त न की जाएं। (تفسیر احمدی)

فِيْهِ وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۵﴾

और परदेसी का और जो इस में किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे[63]

وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّ طَهِّرْ

और जब कि हम ने इब्राहीम को उस घर का ठिकाना ठीक बता दिया[64] और हुक्म दिया कि मेरा कोई शरीक न कर और मेरा घर

بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْقَآئِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۲۶﴾ وَ اَذِّنْ فِي النَّاسِ

सुथरा रख[65] तवाफ़ वालों और ए'तिकाफ़ वालों और रुकूअ़ सज्दे वालों के लिये[66] और लोगों में हज की आ़म

بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿۲۷﴾

निदा कर दे[67] वोह तेरे पास हाज़िर होंगे पियादा और हर दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं[68]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْۤ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا

ताकि वोह अपना फ़ाइदा पाएं[69] और अल्लाह का नाम लें[70] जाने हुए दिनों में[71] इस पर कि

رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ

उन्हें रोज़ी दी बे ज़बान चौपाए[72] तो उन में से खुद खाओ और मुसीबत ज़दा मोहताज

63 : اِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ नाहक़ ज़ियादती से या शिर्क व बुत परस्ती मुराद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि हर मम्नूअ़ क़ौल व फ़े'ल मुराद है हत्ता कि ख़ादिम को गाली देना भी। बा'ज़ ने कहा इस से मुराद है हरम में बिग़ैर एह़राम के दाख़िल होना या मम्नूआ़ते हरम का इरतिकाब करना मिस्ल शिकार मारने और दरख़्त काटने के और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया मुराद येह है कि जो तुझे न क़त्ल करे तू उसे क़त्ल करे या जो तुझ पर ज़ुल्म न करे तू उस पर ज़ुल्म करे। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को दो आदमियों के साथ भेजा था जिन में एक मुहाजिर था दूसरा अन्सारी, उन लोगों ने अपने अपने मुफ़ाख़िरे नसब बयान किये तो अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस को गुस्सा आया और उस ने अन्सारी को क़त्ल कर दिया और खुद मुरतद हो कर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ भाग गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **64 :** ता'मीरे का'बा शरीफ़ के वक़्त पहले इमारते का'बा हज़रते आदम عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनाई थी और तूफ़ाने नूह़ के वक़्त वोह आस्मान पर उठा ली गई अल्लाह तआ़ला ने एक हवा मुक़र्रर की जिस ने उस की जगह को साफ़ कर दिया और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने एक अब्र भेजा जो ख़ास उस बुक़्ए (ज़मीन के टुकड़े) के मुक़ाबिल था जहां का'बए मुअ़ज़्ज़मा की इमारत थी, इस त़रह हज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام को का'बा शरीफ़ की जगह बताई गई और आप ने उस की क़दीम बुन्याद पर इमारते का'बा ता'मीर की और अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य फ़रमाई। **65 :** शिर्क से और बुतों से और हर क़िस्म की नजासतों से **66 :** या'नी नमाज़ियों के लिये। **67 :** चुनान्चे हज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام ने अबू क़ुबैस पहाड़ पर चढ़ कर जहान के लोगों को निदा कर दी कि बैतुल्लाह का हज करो। जिन के मक़्दूर में हज है उन्हों ने बापों की पुश्तों और माओं के पेटों से जवाब दिया لَبَّیۡکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیۡکَ। हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का क़ौल है कि इस आयत में اَذِّنْ का ख़िताब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को है, चुनान्चे हज्जतुल वदाअ़ में ए'लान फ़रमा दिया और इर्शाद किया कि ऐ लोगो अल्लाह ने तुम पर हज फ़र्ज़ किया तो हज करो। **68 :** और कसरते सैर व सफ़र से दुबली हो जाती हैं। **69 :** दीनी भी दुन्यवी भी जो इस इबादत के साथ ख़ास हैं दूसरी इबादत में नहीं पाए जाते। **70 :** वक़्ते ज़ब्ह़। **71 :** जाने हुए दिनों से ज़िल हिज्जा का अ़शरा मुराद है (या'नी पहले दस दिन) जैसा कि हज़रते अ़ली और इब्ने अ़ब्बास व हसन व क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم का क़ौल है और येही मज़हब है हमारे इमामे आ'ज़म हज़रते अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का। और साहिबैन के नज़्दीक जाने हुए दिनों से अय्यामे नह़्र (दस, ग्यारह, बारह ज़िल हिज्जा) मुराद हैं येह क़ौल है हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का और हर तक़्दीर पर यहां उन दिनों से ख़ास रोज़े ईद मुराद है। (تفسیر احمدی) **72 :** ऊंट, गाय, बकरी, भेड़।

الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ

को खिलाओ[73] फिर अपना मैल कुचैल उतारें[74] और अपनी मन्नतें पूरी करें[75] और उस आज़ाद घर का

الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ

तवाफ़ करें[76] बात येह है और जो **अल्लाह** की हुरमतों की ता'ज़ीम करे[77] तो वोह उस के लिये उस के रब के यहां भला है और

اُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ

तुम्हारे लिये हलाल किये गए बे ज़बान चौपाए[78] सिवा उन के जिन की मुमानअत तुम पर पढ़ी जाती है[79] तो दूर हो बुतों की

الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾ ۙ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَ

गन्दगी से[80] और बचो झूटी बात से एक **अल्लाह** के हो कर कि उस का साझी (शरीक) किसी को न करो और

مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ

जो **अल्लाह** का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परिन्दे उसे उचक ले जाते हैं[81] या हवा

بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا

उसे किसी दूर जगह फेंकती है[82] बात येह है और जो **अल्लाह** के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह

مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ

दिलों की परहेज़ गारी से है[83] तुम्हारे लिये चौपायों में फ़ाएदे हैं[84] एक मुक़र्रर मीआद तक[85] फिर उन का पहुंचना है

اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾ ع وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ ع ٨ ١١

उस आज़ाद घर तक[86] और हर उम्मत के लिये[87] हम ने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि **अल्लाह** का नाम लें

73 : ततव्वोअ़ और मुतआ़ व क़िरान व हर एक हदी से जिन का इस आयत में बयान है खाना जाइज़ है, बाक़ी हदाया से जाइज़ नहीं। (تفسیر احمدی و مدارک) **74 :** मूंछें कतरवाएं नाखुन तराशें बग़लों और ज़ेरे नाफ़ के बाल दूर करें। **75 :** जो इन्हों ने मानी हों। **76 :** इस से तवाफ़े ज़ियारत मुराद है। मसाइले हज बित्तफ़्सील सूरए बक़र पारह दो में ज़िक्र हो चुके। **77 :** या'नी उस के अहकाम की ख़्वाह वोह मनासिके हज हों या इन के सिवा और अहकाम। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से मनासिके हज मुराद लिये हैं और बा'ज़ ने बैते हराम व मश्अ़रे हराम व शहरे हराम व बलदे हराम व मस्जिदे हराम मुराद लिये हैं। **78 :** कि उन्हें ज़ब्ह कर के खाओ। **79 :** कुरआने पाक में जैसे कि सूरए माइदह की आयत حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ में बयान फ़रमाई गई। **80 :** जिन की परस्तिश करना बद तरीन गन्दगी से आलूदा होना है। **81 :** और बोटी बोटी कर के खा जाते हैं **82 :** मुराद येह है कि शिर्क करने वाला अपनी जान को बद तरीन हलाकत में डालता है। ईमान को बुलन्दी में आस्मान से तश्बीह दी गई और ईमान तर्क करने वाले को आस्मान से गिरने वाले के साथ और उस की ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को जो उस की फ़िक्रों को मुन्तशिर करती हैं बोटी बोटी ले जाने वाले परिन्दे के साथ और शयातीन को जो उस को वादिये ज़लालत में फेंकते हैं हवा के साथ तश्बीह दी गई और इस नफ़ीस तश्बीह से शिर्क का अन्जामे बद समझाया गया। **83 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि شعائر اللہ से मुराद बुदने और हदाया हैं और इन की ता'ज़ीम येह है कि फ़र्बा ख़ूब सूरत क़ीमती लिये जाएं। **84 :** वक़्ते ज़रूरत इन पर सुवार होने और वक़्ते हाजत इन के दूध पीने के **85 :** या'नी उन के ज़ब्ह के वक़्त तक। **86 :** या'नी हरम शरीफ़ तक जहां वोह ज़ब्ह किये जाएं। **87 :** पिछली ईमानदार उम्मतों में से।

www.dawateislami.net

عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ

उस के दिये हुए बे ज़बान चौपायों पर[88] तो तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है[89] तो उसी के हुज़ूर गरदन रखो[90]

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ

और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब **अल्लाह** का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं[91] और

الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

जो उफ़्ताद पड़े उस के सहने वाले और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च

يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ

करते हैं[92] और क़ुरबानी के डीलदार (भारी जसामत वाले) जानवर ऊंट और गाय हम ने तुम्हारे लिये **अल्लाह** की निशानियों से किये[93] तुम्हारे लिये उन में भलाई है[94]

فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ

तो उन पर **अल्लाह** का नाम लो[95] एक पाउं बंधे तीन पाउं से खड़े[96] फिर जब उन की करवटें गिर जाएं[97] तो उन में से ख़ुद खाओ[98] और

اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾

सब्र से बैठने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ हम ने यूंही उन को तुम्हारे बस में दे दिया कि तुम एहसान मानो

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ

अल्लाह को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के ख़ून हां तुम्हारी परहेज़ गारी उस तक बारयाब होती है[99]

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ

यूंही उन को तुम्हारे बस में कर दिया कि तुम **अल्लाह** की बड़ाई बोलो इस पर कि तुम को हिदायत फ़रमाई और ऐ महबूब ख़ुश ख़बरी सुनाओ

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا

नेकी वालों को[100] बेशक **अल्लाह** बलाएं टालता है मुसल्मानों की[101] बेशक **अल्लाह** दोस्त

88 : उन के ज़ब्ह़ के वक़्त। **89 :** तो ज़ब्ह़ के वक़्त सिर्फ़ उसी का नाम लो, इस आयत में दलील है इस पर कि नाम ख़ुदा का ज़िक्र करना ज़ब्ह़ के लिये शर्त है। **अल्लाह** तआ़ला ने हर एक उम्मत के लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया था कि उस के लिये ब त़रीक़े तक़र्रुब क़ुरबानी करें और तमाम क़ुरबानियों पर उसी का नाम लिया जाए। **90 :** और इख़्लास के साथ उस की इत़ाअ़त करो। **91 :** उस के हैबतो जलाल से। **92 :** या'नी सदक़ा देते हैं। **93 :** या'नी उस के आ'लामे दीन से। **94 :** दुन्या में नफ़्अ़ और आख़िरत में अज्रो सवाब। **95 :** उन के ज़ब्ह़ के वक़्त जिस ह़ाल में कि वोह हों **96 :** ऊंट के ज़ब्ह़ का येही मस्नून त़रीक़ा है। **97 :** या'नी बा'दे ज़ब्ह़ उन के पहलू ज़मीन पर गिरें और उन की ह़रकत साकिन हो जाए **98 :** अगर तुम चाहो। **99 :** या'नी क़ुरबानी करने वाले सिर्फ़ निय्यत के इख़्लास और शुरूत़े तक़्वा की रिआ़यत से **अल्लाह** तआ़ला को राज़ी कर सकते हैं। **शाने नुज़ूल :** ज़मानए जाहिलिय्यत के कुफ़्फ़ार अपनी क़ुरबानियों के ख़ून से का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारों को आलूदा करते थे और इस को सबबे तक़र्रुब जानते थे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **100 :** सवाब की। **101 :** और उन की मदद फ़रमाता है।

www.dawateislami.net

يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ ع ٥ ١٢

नहीं रखता हर बड़े दग़ाबाज़ नाशुक्रे को[102] परवानगी [इजाज़त] अ़ता हुई उन्हें जिन से काफ़िर लड़ते हैं[103] इस बिना पर कि उन पर ज़ुल्म हुवा[104] और

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۨ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ

बेशक **अल्लाह** उन की मदद करने पर ज़रूर क़ादिर है वोह जो अपने घरों से नाहक़

حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

निकाले गए[105] सिर्फ़ इतनी बात पर कि उन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है[106] और **अल्लाह** अगर आदमियों में एक को दूसरे से

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَ بِيَعٌ وَّ صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ

दफ़्अ़ न फ़रमाता[107] तो ज़रूर ढा दी जातीं ख़ानक़ाहें[108] और गिरजा[109] और कलीसा[110] और मस्जिदें[111] जिन में **अल्लाह** का ब कसरत

اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾

नाम लिया जाता है और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मदद फ़रमाएगा उस की जो उस के दीन की मदद करेगा बेशक ज़रूर **अल्लाह** क़ुदरत वाला ग़ालिब है

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ

वोह लोग कि अगर हम उन्हें ज़मीन में क़ाबू दें[112] तो नमाज़ बरपा रखें और ज़कात दें और

اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ وَ

भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोकें[113] और **अल्लाह** ही के लिये सब कामों का अन्जाम और

اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ ثَمُوْدُ ۙ ﴿۴۲﴾ وَ قَوْمُ

अगर येह तुम्हारी तक्ज़ीब करते हैं[114] तो बेशक इन से पहले झुटला चुकी है नूह की क़ौम और आ़द[115] और समूद[116] और इब्राहीम

102 : या'नी कुफ़्फ़ार को जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ख़ियानत और ख़ुदा की ने'मतों की नाशुक्री करते हैं। **103 :** जिहाद की। **104 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे मक्का अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रोज़मर्रा हाथ और ज़बान से शदीद ईज़ाएं देते और आज़ार पहुंचाते रहते थे और सहाबा हुज़ूर के पास इस हाल में पहुंचते थे कि किसी का सर फटा है किसी का हाथ टूटा है किसी का पाउं बंधा हुवा है, रोज़मर्रा इस क़िस्म की शिकायतें बारगाहे अक़्दस में पहुंचती थीं और अस्हाबे किराम कुफ़्फ़ार के मज़ालिम की हुज़ूर के दरबार में फ़रियादें करते, हुज़ूर येह फ़रमा दिया करते कि सब्र करो मुझे अभी जिहाद का हुक्म नहीं दिया गया है, जब हुज़ूर ने मदीनए तय्यिबा को हिजरत फ़रमाई तब येह आयत नाज़िल हुई और येह वोह पहली आयत है जिस में कुफ़्फ़ार के साथ जंग करने की इजाज़त दी गई है। **105 :** और बे वतन किये गए **106 :** और येह कलाम हक़ है और हक़ पर घरों से निकालना और बे वतन करना क़त्अ़न नाहक़। **107 :** जिहाद की इजाज़त दे कर और हुदूद क़ाइम फ़रमा कर तो नतीजा येह होता कि मुश्रिकीन का इस्तीला (क़ब्ज़ा) हो जाता और कोई दीनो मिल्लत वाला उन के दस्ते तअ़द्दी (ज़ुल्म) से न बचता। **108 :** राहिबों की **109 :** नसरानियों के **110 :** यहूदियों के **111 :** मुसल्मानों की **112 :** और उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल उन की मदद फ़रमाएं **113 :** इस में ख़बर दी गई है कि आयिन्दा मुहाजिरीन को ज़मीन में तसर्रुफ़ अ़ता फ़रमाने के बा'द उन की सीरतें ऐसी पाकीज़ा रहेंगी और वोह दीन के कामों में इख़्लास के साथ मश्ग़ूल रहेंगे। इस में ख़ुलफ़ाए राशिदीन महदिय्यीन के अ़द्ल और उन के तक़्वा व परहेज़ गारी की दलील है जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने तम्कीन व हुकूमत अ़ता फ़रमाई और सीरते आ़दिला अ़ता की। **114 :** ऐ हबीबे अकरम ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **115 :** हज़रते हूद की क़ौम **116 :** हज़रते सालेह की क़ौम।

www.dawateislami.net

اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ

की क़ौम और लूत़ की क़ौम और मद्यन वाले[117] और मूसा की तक्ज़ीब हुई[118] तो मैं ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

को ढील दी[119] फिर उन्हें पकड़ा[120] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[121] और कितनी ही बस्तियां हम ने

اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ

खपा दीं[122] कि वोह सितमगार थीं[123] तो अब वोह अपनी छतों पर ढई (गिरी) पड़ी हैं और कितने कूंएं बेकार पड़े[124] और कितने महल

مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ

गच किये हुए[125] तो क्या ज़मीन में न चले[126] कि उन के दिल हों जिन से समझें[127]

بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى

या कान हों जिन से सुनें[128] तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं[129] बल्कि वोह दिल

الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ

अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं[130] और येह तुम से अ़ज़ाब मांगने में जल्दी करते हैं[131] और अल्लाह

يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا

हरगिज़ अपना वा'दा झूटा न करेगा[132] और बेशक तुम्हारे रब के यहां[133] एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की

تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ

गिनती में हज़ार बरस[134] और कितनी बस्तियां कि हम ने उन को ढील दी इस हाल पर कि वोह सितमगार थीं फिर मैं ने उन्हें पकड़ा[135]

117 : या'नी ह़ज़रते शुऐ़ब की क़ौम। 118 : यहां मूसा की क़ौम न फ़रमाया क्यूं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम बनी इसराईल ने आप की तक्ज़ीब न की थी बल्कि फ़िरऔन की क़ौम क़िब्त़ियों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की थी। इन क़ौमों का तज़्किरा और हर एक के अपने रसूल की तक्ज़ीब करने का बयान सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तस्कीने ख़ात़िर (दिली तसल्ली) के लिये है कि कुफ़्फ़ार का येह क़दीमी त़रीक़ा है पिछले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है। 119 : और उन के अ़ज़ाब में ताख़ीर की और उन्हें मोहलत दी 120 : और उन के कुफ़्रो सरकशी की सज़ा दी 121 : आप की तक्ज़ीब करने वालों को चाहिये कि अपने अन्जाम को सोचें और इ़ब्रत ह़ासिल करें। 122 : और वहां के रहने वालों को हलाक कर दिया 123 : या'नी वहां के रहने वाले काफ़िर थे। 124 : कि उन से कोई पानी भरने वाला नहीं 125 : वीरान पड़े हैं। 126 : कुफ़्फ़ार कि इन ह़ालात का मुशाहदा करें 127 : कि अम्बिया की तक्ज़ीब का क्या अन्जाम हुवा और इ़ब्रत ह़ासिल करें। 128 : पिछली उम्मतों के ह़ालात और उन का हलाक होना और उन की बस्तियों की वीरानी कि इस से इ़ब्रत ह़ासिल हो। 129 : या'नी कुफ़्फ़ार की ज़ाहिरी ह़िस बात़िल नहीं हुई है वोह इन आंखों से देखने की चीज़ें देखते हैं। 130 : और दिलों ही का अन्धा होना ग़ज़ब है इसी लिये आदमी दीन की राह पाने से मह़रूम रहता है। 131 : या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का मिस्ल नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा के और येह जल्दी करना उन का इस्तिहज़ा के त़रीक़े पर था। 132 : और ज़रूर ह़स्बे वा'दा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा। चुनान्चे येह वा'दा बद्र में पूरा हवा। 133 : आख़िरत में अ़ज़ाब का 134 : तो येह कुफ़्फ़ार क्या समझ कर अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। 135 : और दुन्या में उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया।

www.dawateislami.net

وَ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۴۸﴾ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۴۹﴾ ع ٦ ١٣

और मेरी ही त़रफ़ पलट कर आना है[136] तुम फ़रमा दो कि ऐ लोगो ! मैं तो येही तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ﴿۵۰﴾ وَ

तो जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी[137] और

الَّذِیْنَ سَعَوْا فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۵۱﴾ وَ مَاۤ

वोह जो कोशिश करते हैं हमारी आयतों में हार जीत के इरादे से[138] वोह जहन्नमी हैं और

اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِیٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّیْطٰنُ

हम ने तुम से पहले जितने रसूल या नबी भेजे[139] सब पर येह वाक़िआ़ गुज़रा है कि जब उन्हों ने पढ़ा तो शैत़ान ने उन के पढ़ने में लोगों

فِیْۤ اُمْنِیَّتِهٖ ۚ فَیَنْسَخُ اللّٰهُ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ ثُمَّ یُحْكِمُ اللّٰهُ اٰیٰتِهٖ ؕ وَ

पर कुछ अपनी त़रफ़ से मिला दिया तो मिटा देता है **अल्लाह** उस शैत़ान के डाले हुए को फिर **अल्लाह** अपनी आयतें पक्की कर देता है[140] और

اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۵۲﴾ لِّیَجْعَلَ مَا یُلْقِی الشَّیْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ فِیْ

अल्लाह इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है ताकि शैत़ान के डाले हुए को फ़ित्ना कर दे[141] उन के लिये

قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِیَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ لَفِیْ شِقَاقٍۭ

जिन के दिलों में बीमारी है[142] और जिन के दिल सख़्त हैं[143] और बेशक सितमगार[144] धुर के (इन्तिहाई सख़्त)

بَعِیْدٍ ﴿۵۳﴾ وَّ لِیَعْلَمَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَیُؤْمِنُوْا

झगड़ालू हैं और इस लिये कि जान लें वोह जिन को इ़ल्म मिला है[145] कि वोह[146] तुम्हारे रब के पास से ह़क़ है तो उस पर ईमान लाएं

بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ

तो झुक जाएं उस के लिये उन के दिल और बेशक **अल्लाह** ईमान वालों को सीधी राह

136 : आख़िरत में । **137 :** जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो वोह जन्नत है । **138 :** कि कभी इन आयात को सेह़र कहते हैं कभी शे'र कभी पिछलों के क़िस्से और वोह येह ख़याल करते हैं कि इस्लाम के साथ उन का येह मक्र चल जाएगा । **139 :** नबी और रसूल में फ़र्क़ है नबी आ़म है और रसूल ख़ास । बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि रसूल शरअ़ के वाज़ेअ़ होते हैं और नबी इस के ह़ाफ़िज़ और निगहबान । **शाने नुज़ूल :** जब सूरए वन्नज्म नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे ह़राम में इस की तिलावत फ़रमाई और बहुत आहिस्ता आहिस्ता आयतों के दरमियान वक़्फ़ा फ़रमाते हुए जिस से सुनने वाले ग़ौर भी कर सकें और याद करने वालों को याद करने में मदद भी मिले, जब आप ने आयत وَ مَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى पढ़ कर ह़स्बे दस्तूर वक़्फ़ा फ़रमाया तो शैत़ान ने मुश्रिकीन के कान में इस से मिला कर दो कलिमे ऐसे कह दिये जिन से बुतों की ता'रीफ़ निकलती थी । जिब्रीले अमीन ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह ह़ाल अ़र्ज़ किया, इस से हु़ज़ूर को रन्ज हुवा । **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तसल्ली के लिये येह आयत नाज़िल फ़रमाई । **140 :** जो पैग़म्बर पढ़ते हैं और उन्हें शैत़ानी कलिमात के ख़ल्त़ से मह़फ़ूज़ फ़रमाता है । **141 :** और इब्तिला व आज़्माइश बना दे **142 :** शक और निफ़ाक़ की । **143 :** ह़क़ को क़बूल नहीं करते और येह मुश्रिकीन हैं । **144 :** या'नी मुश्रिकीन व

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

चलाने वाला है और काफ़िर उस से[147] हमेशा शक में रहेंगे यहां तक कि उन पर

السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ

क़ियामत आ जाए अचानक[148] या उन पर ऐसे दिन का अ़ज़ाब आए जिस का फल उन के लिये कुछ अच्छा न हो[149] बादशाही उस दिन[150]

لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ

अल्लाह ही की है वोह उन में फ़ैसला कर देगा तो जो ईमान लाए और[151] अच्छे काम किये वोह चैन के

النَّعِيْمِ ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

बाग़ों में हैं और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं उन के लिये ज़िल्लत का

ع ٩ ١٤ مُّهِيْنٌ ﴿۵۷﴾ ع وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْۤا اَوْ مَاتُوْا

अ़ज़ाब है और वोह जिन्हों ने अल्लाह की राह में अपने घरबार छोड़े[152] फिर मारे गए या मर गए

لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۵۸﴾

तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा[153] और बेशक अल्लाह की रोज़ी सब से बेहतर है

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَ

ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वोह पसन्द करेंगे[154] और बेशक अल्लाह इ़ल्म और ह़िल्म वाला है बात येह है और

مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

जो बदला ले[155] जैसी तक्लीफ़ पहुंचाई गई थी फिर उस पर ज़ियादती की जाए[156] तो बेशक अल्लाह उस की मदद फ़रमाएगा[157] बेशक अल्लाह

मुनाफ़िक़ीन। **145 :** अल्लाह के दीन का और उस की आयात का। **146 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **147 :** या'नी कुरआन से या दीने इस्लाम से **148 :** या मौत कि वोह भी क़ियामते सुग़रा है। **149 :** इस से बद्र का दिन मुराद है जिस में काफ़िरों के लिये कुछ कशाइश व राह़त न थी। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **150 :** या'नी क़ियामत के दिन **151 :** उन्हों ने **152 :** और उस की रिज़ा के लिये अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को छोड़ कर वत़न से निकले और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ हिजरत की **153 :** या'नी रिज़्क़े जन्नत जो कभी मुन्क़त़अ़ न हो। **154 :** वहां उन की हर मुराद पूरी होगी और कोई ना गवार बात पेश न आएगी। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से आप के बा'ज़ अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हमारे जो अस्ह़ाब शहीद हो गए हम जानते हैं कि बारगाहे इलाही में उन के बड़े दरजे हैं और हम जिहादों में हुज़ूर के साथ रहेंगे लेकिन अगर हम आप के साथ रहे और बे शहादत के मौत आई तो आख़िरत में हमारे लिये क्या है ? इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं ''وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ''। **155 :** कोई मोमिन ज़ुल्म का मुश्रिक से **156 :** ज़ालिम की त़रफ़ से उस को बे वत़न कर के **157 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो माहे मुह़र्रम की अख़ीर तारीख़ों में मुसल्मानों पर ह़म्ला आवर हुए और मुसल्मानों ने माहे मुबारक की ह़ुरमत के ख़याल से लड़ना न चाहा मगर मुश्रिक न माने और उन्हों ने क़िताल शुरूअ़ कर दिया मुसल्मान उन के मुक़ाबिल साबित रहे अल्लाह तआ़ला ने उन की मदद फ़रमाई।

www.dawateislami.net

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

मुआफ़ करने वाला बख़्शने वाला है येह[158] इस लिये कि अल्लाह तआ़ला रात को डालता है दिन के हिस्से में और दिन को लाता है

فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا

रात के हिस्से में[159] और इस लिये कि अल्लाह सुनता देखता है येह इस लिये[160] कि अल्लाह ही ह़क़ है और उस के

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ تَرَ

सिवा जिसे पूजते हैं[161] वोही बातिल है और इस लिये कि अल्लाह ही बुलन्दी बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा

اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ

कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा तो सुब्ह़ को ज़मीन[162] हरियाली (हरी भरी) हो गई बेशक

اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ ج لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह पाक ख़बरदार है उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और बेशक अल्लाह

لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ ع ٨ ١٥

ही बे नियाज़ सब ख़ूबियों सराहा है क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे बस में कर दिया जो कुछ ज़मीन में है[163]

وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى

और किश्ती कि दरिया में उस के हुक्म से चलती है[164] और वोह रोके हुए है आस्मान को कि ज़मीन पर

الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ

न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से बेशक अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहर (रह़मत) वाला मेहरबान है[165] और वोही है जिस ने

اَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ

तुम्हें ज़िन्दा किया[166] फिर तुम्हें मारेगा[167] फिर तुम्हें जिलाएगा[168] बेशक आदमी बड़ा नाशुक्रा है[169] हर

158 : या'नी मज़्लूम की मदद फ़रमाना इस लिये है कि अल्लाह जो चाहे उस पर क़ादिर है और उस की क़ुदरत की निशानियां ज़ाहिर हैं। **159 :** या'नी कभी दिन को बढ़ाता रात को घटाता है और कभी रात को बढ़ाता दिन को घटाता है, उस के सिवा कोई इस पर क़ुदरत नहीं रखता, जो ऐसा क़ुदरत वाला है वोह जिस की चाहे मदद फ़रमाए और जिसे चाहे ग़ालिब करे। **160 :** या'नी और येह मदद इस लिये भी है **161 :** या'नी बुत **162 :** सब्ज़े से **163 :** जानवर वग़ैरा जिन पर तुम सुवार होते हो और जिस से तुम काम लेते हो। **164 :** तुम्हारे लिये इस के चलाने के वासिते हवा और पानी को मुसख़्ख़र किया। **165 :** कि उस ने उन के लिये मन्फ़अ़तों के दरवाज़े खोले और त़रह़ त़रह़ की मज़र्रतों से उन को मह़फ़ूज़ किया। **166 :** बेजान नुत़्फ़े से पैदा फ़रमा कर **167 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने पर **168 :** रोज़े बअ़्स सवाब व अ़ज़ाब के लिये। **169 :** कि बा वुजूद इतनी ने'मतों के उस की इ़बादत से मुंह फेरता है और बेजान मख़्लूक़ की परस्तिश करता है।

اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى

उम्मत के लिये[170] हम ने इबादत के क़ाइदे बना दिये कि वोह उन पर चले[171] तो हरगिज़ वोह तुम से इस मुआमले में झगड़ा न करें[172] और अपने रब

رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ

की तरफ़ बुलाओ[173] बेशक तुम सीधी राह पर हो और अगर वोह[174] तुम से झगड़ें तो फ़रमा दो कि अल्लाह ख़ूब जानता है

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ

तुम्हारे कौतक (करतूत) अल्लाह तुम में फ़ैसला कर देगा क़ियामत के दिन जिस बात में

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हो[175] क्या तू ने न जाना कि अल्लाह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है बेशक

ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

येह सब एक किताब में है[176] बेशक येह[177] अल्लाह पर आसान है[178] और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते

اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

हैं[179] जिन की कोई सनद उस ने न उतारी और ऐसों को जिन का ख़ुद उन्हें कुछ इल्म नहीं[180] और सितमगारों का[181]

مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ

कोई मददगार नहीं[182] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें पढ़ी जाएं[183] तो तुम उन के चेहरों पर बिगड़ने के आसार देखोगे

كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ

जिन्हों ने कुफ़्र किया क़रीब है कि लिपट पड़ें उन को जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं

قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ

तुम फ़रमा दो क्या मैं तुम्हें बता दूं जो तुम्हारे इस हाल से भी[184] बदतर है वोह आग है अल्लाह ने इस का वा'दा दिया है काफ़िरों को

170 : अहले दीन व मिलल में से। **171 :** और आमिल हो। **172 :** या'नी अम्रे दीन में या ज़बीहा के अम्र में। **शाने नुज़ूल :** येह आयत बुदैल इब्ने वरक़ा और बिशर बिन सुफ़्यान और यज़ीद इब्ने ख़ुनैस के हक़ में नाज़िल हुई। इन लोगों ने अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था क्या सबब है जिस जानवर को तुम ख़ुद क़त्ल करते हो उसे तो खाते हो और जिस को अल्लाह मारता है उस को नहीं खाते ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **173 :** और लोगों को उस पर ईमान लाने और उस का दीन क़बूल करने और उस की इबादत में मश्ग़ूल होने की दा'वत दो। **174 :** बा वुजूद तुम्हारे तरह देने के भी **175 :** और तुम पर हक़ीक़ते हाल ज़ाहिर हो जाएगी। **176 :** या'नी लौहे महफ़ूज़ में। **177 :** या'नी इन सब का इल्म या तमाम हवादिस का लौहे महफ़ूज़ में सब्त फ़रमाना **178 :** इस के बा'द कुफ़्फ़ार की जहालतों का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह ऐसों की इबादत करते हैं जो इबादत के मुस्तहिक़ नहीं। **179 :** या'नी बुतों को **180 :** या'नी उन के पास अपने इस फे'ल की न कोई दलीले अक़्ली है न नक़्ली, महूज़ जहल व नादानी से गुमराही में पड़े हुए हैं और जो किसी तरह पूजे जाने के मुस्तहिक़ नहीं उन को पूजते हैं, येह शदीद ज़ुल्म है। **181 :** या'नी मुश्रिकीन का **182 :** जो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचा सके। **183 :** और क़ुरआने करीम उन्हें सुनाया

ع ٨/١٦

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ

और क्या ही बुरी पलटने की जगह ऐ लोगो ! एक कहावत फ़रमाई जाती है इसे कान लगा कर सुनो[185] वोह

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ

जिन्हें **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो[186] एक मखी न बना सकेंगे अगर्चे सब इस पर इकठ्ठे हो जाएं[187]

وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ

और अगर मखी उन से कुछ छीन कर ले जाए[188] तो उस से छुड़ा न सकें[189] कितना कमज़ोर चाहने वाला

وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾

और वोह जिस को चाहा[190] **अल्लाह** की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[191] बेशक **अल्लाह** क़ुव्वत वाला ग़ालिब है

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ

अल्लाह चुन लेता है फ़िरिश्तों में से रसूल[192] और आदमियों में से[193] बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है

بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

जानता है जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है[194] और सब कामों की रुजूअ़ **अल्लाह**

الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ

की तरफ़ है ऐ ईमान वालो ! रुकूअ़ और सज्दा करो[195] और अपने रब की बन्दगी करो[196]

وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ ۩ وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ

السجدة عند الامام الشافعی علیہ رحمۃ اللہ الکافی

और भले काम करो[197] इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो और **अल्लाह** की राह में जिहाद करो जैसा हक़ है जिहाद करने का[198]

जाए जिस में बयाने अहकाम और तफ़्सीले हलाल व हराम है। **184 :** या'नी तुम्हारे इस गै़ज़ व ना गवारी से भी जो कुरआने पाक सुन कर तुम में पैदा होती है **185 :** और इस में ख़ूब ग़ौर करो, वोह कहावत येह है कि तुम्हारे बुत **186 :** उन की आजिज़ी और बे कुदरती का येह हाल है कि वोह निहायत छोटी सी चीज़ **187 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि ऐसे को मा'बूद ठहराए, ऐसे को पूजना और इलाह क़रार देना कितना इन्तिहा दरजे का जहल है। **188 :** वोह शहद व ज़ा'फ़रान वग़ैरा जो मुश्रिकीन बुतों के मुंह और सरों पर मलते हैं जिस पर मख्खियां भिनक्ती हैं। **189 :** ऐसे को ख़ुदा बनाना और मा'बूद ठहराना कितना अ़जीब और अ़क़्ल से दूर है। **190 :** चाहने वाले से बुत परस्त और चाहे हुए से बुत मुराद है या चाहने वाले से मख्खी मुराद है जो बुत पर से शहद व ज़ा'फ़रान की त़ालिब है और मत़्लूब से बुत। और बा'ज़ ने कहा कि त़ालिब से बुत मुराद है और मत़्लूब से मख्खी। **191 :** और उस की अ़ज़्मत न पहचानी जिन्हों ने ऐसों को ख़ुदा का शरीक किया जो मख्खी से भी कमज़ोर हैं, मा'बूद वोही है जो कुदरते कामिला रखे। **192 :** मिस्ल जिब्रील व मीकाईल वग़ैरा के **193 :** मिस्ल हज़रते इब्राहीम व हज़रते मूसा व हज़रते ईसा व हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ وَسَلَّمَ के। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन कुफ़्फ़ार के रद में नाज़िल हुई जिन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया था और कहा था कि बशर कैसे रसूल हो सकता है ? इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** मालिक है जिसे चाहे अपना रसूल बनाए वोह इन्सानों में से भी रसूल बनाता है और मलाएका में से भी जिन्हें चाहे। **194 :** या'नी उमूरे दुन्या को भी और उमूरे आख़िरत को भी या उन के गुज़रे हुए आ'माल को भी और आयिन्दा के अह़वाल को भी। **195 :** अपनी नमाज़ों में। इस्लाम के अव्वल अ़हद में नमाज़ बिग़ैर रुकूअ़ व सुजूद के थी फिर नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद का हुक्म फ़रमाया गया। **196 :** या'नी रुकूअ़ व सुजूद

www.dawateislami.net

هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ

उस ने तुम्हें पसन्द किया[199] और तुम पर दीन में कुछ तंगी न रखी[200] तुम्हारे बाप

اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ

इब्राहीम का दीन[201] अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है अगली किताबों में और इस कुरआन में ताकि रसूल

الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا

तुम्हारा निगहबान व गवाह हो[202] और तुम और लोगों पर गवाही दो[203] तो नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى

बरपा रखो[204] और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो[205] वोह तुम्हारा मौला है तो क्या ही अच्छा मौला

وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾ ع

और क्या ही अच्छा मददगार

ع ١٠ ١٧

ख़ास अल्लाह के लिये हों और इबादत में इख़्लास इख़्तियार करो। **197 :** सिलए रेह्‌मी मकारिमुल अख़्लाक़ वग़ैरा नेकियां। **198 :** या'नी निय्यते सादिक़ा ख़ालिसा के साथ ए'लाए दीन के लिये **199 :** अपने दीन व इबादत के लिये। **200 :** बल्कि ज़रूरत के मौक़ओं पर तुम्हारे लिये सहूलत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज़ का क़स्र और रोज़े के इफ़्तार की इजाज़त और पानी न पाने या पानी के ज़रर करने की ह़ालत में ग़ुस्ल और वुज़ू की जगह तयम्मुम, तो तुम दीन की पैरवी करो। **201 :** जो दीने मुह़म्मदी में दाख़िल है। **202 :** रोज़े क़ियामत कि तुम्हारे पास ख़ुदा का पयाम पहुंचा दिया। **203 :** कि उन्हें उन रसूलों ने अह़कामे ख़ुदावन्दी पहुंचा दिये, अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें येह इ़ज़्ज़तो करामत अ़ता फ़रमाई। **204 :** इस पर मुदावमत करो **205 :** और उस के दीन पर क़ाइम रहो।

www.dawateislami.net

آياتها ١١٨ ﴿٢٣ سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ مَكِّيَّةٌ ٧٤﴾ ركوعاتها ٦

सूरए मुअमिनून मक्किय्या है, इस में एक सो अठ्ठारह आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ

बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं[2] और

الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴿۴﴾

वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते[3] और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं[4]

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ

और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शरई बांदियों पर

اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿۶﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि इन पर कोई मलामत नहीं[5] तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही

هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿۷﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ

ह़द से बढ़ने वाले हैं[6] और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं[7] और वोह जो

هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۘ﴿۹﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ

अपनी नमाज़ों की निगह्बानी करते हैं[8] येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस

1 : सूरए मुअमिनून मक्किय्या है इस में छ[6] रुकूअ़ और एक सो अठ्ठारह आयतें हैं और एक हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और चार हज़ार आठ सो दो ह़र्फ़ हैं। **2 :** उन के दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है और उन के आ'ज़ा साकिन होते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नमाज़ में ख़ुशूअ़ येह है कि इस में दिल लगा हो और दुन्या से तवज्जोह हटी हुई हो और नज़र जाए नमाज़ से बाहर न जाए और गोशए चश्म से किसी त़रफ़ न देखे और कोई अ़बस (फ़ुज़ूल) काम न करे और कोई कपड़ा शानों पर न लटकाए इस त़रह़ कि इस के दोनों किनारे लटक्ते हों और आपस में मिले न हों और उंग्लियां न चटख़ाए और इस क़िस्म के ह़रकात से बाज़ रहे। बा'ज़ ने फ़रमाया कि ख़ुशूअ़ येह है कि आस्मान की त़रफ़ नज़र न उठाए। **3 :** हर लह्व व बात़िल से मुज्तनिब रहते हैं। **4 :** या'नी इस के पाबन्द हैं और मुदावमत (हमेशा अदा) करते हैं। **5 :** अपनी बीबियों और बांदियों के साथ जाइज़ त़रीक़े पर क़ुरबत करने में। **6 :** कि ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि हाथ से क़ज़ाए शह्वत करना ह़राम है। सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने एक उम्मत को अ़ज़ाब किया जो अपनी शर्मगाहों से खेल करते थे। **7 :** ख़्वाह अमानतें अल्लाह की हों या ख़ल्क़ की और इसी त़रह़ अ़ह्द ख़ुदा के साथ हों या मख़्लूक़ के साथ सब की वफ़ा लाज़िम है। **8 :** और उन्हें उन के वक़्तों में उन के शराइत़ो आदाब के साथ अदा करते हैं और फ़राइज़ व वाजिबात और सुनने नवाफ़िल सब की निगह्बानी रखते हैं।

www.dawateislami.net

يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ

की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे और बेशक हम ने आदमी को

مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ ج ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿۱۳﴾ ص ثُمَّ

चुनी हुई मिट्टी से बनाया[9] फिर उसे[10] पानी की बूंद किया एक मज़बूत ठहराव में[11] फिर

خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا

हम ने उस पानी की बूंद को ख़ून की फटक किया फिर ख़ून की फटक को गोश्त की बोटी फिर गोश्त की बोटी को हड्डियां

فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ق ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

फिर उन हड्डियों पर गोश्त पहनाया फिर उसे और सूरत में उठान दी[12] तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह सब से बेहतर

الْخٰلِقِيْنَ ﴿۱۴﴾ ؕ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿۱۵﴾ ؕ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

बनाने वाला है फिर उस के बा'द तुम ज़रूर[13] मरने वाले हो फिर तुम सब क़ियामत के दिन[14]

تُبْعَثُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَ لَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ ق وَ مَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ

उठाए जाओगे और बेशक हम ने तुम्हारे ऊपर सात राहें बनाईं[15] और हम ख़ल्क़ से

غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ ق

बे ख़बर नहीं[16] और हम ने आस्मान से पानी उतारा[17] एक अन्दाज़े पर[18] फिर उसे ज़मीन में ठहराया

وَ اِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ ج فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

और बेशक हम उस के ले जाने पर क़ादिर हैं[19] तो उस से हम ने तुम्हारे लिये बाग़ पैदा किये खजूरों

وَّ اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۱۹﴾ لا وَ شَجَرَةً

और अंगूरों के तुम्हारे लिये उन में बहुत से मेवे हैं[20] और उन में से खाते हो[21] और वोह पेड़

وقف لازم

9 : मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन्सान से मुराद यहां हज़रते आदम हैं। **10 :** या'नी उस की नस्ल को **11 :** या'नी रेहम में **12 :** या'नी उस में रूह डाली, उस बेजान को जानदार किया, नुत्क़ और सम्अ़ और बसर (बोलने, सुनने, देखने की सलाहिय्यत) इनायत की। **13 :** अपनी उ़म्रें पूरी होने पर **14 :** हिसाब व जज़ा के लिये **15 :** इन से मुराद सात आस्मान हैं जो मलाएका के चढ़ने उतरने के रस्ते हैं। **16 :** सब के आ'माल, अक़्वाल, ज़माइर को जानते हैं, कोई चीज़ हम से छुपी नहीं। **17 :** या'नी मींह बरसाया **18 :** जितना हमारे इल्मो हिक्मत में ख़ल्क़ की हाजतों के लिये चाहिये। **19 :** जैसा अपनी क़ुदरत से नाज़िल फ़रमाया ऐसा ही इस पर भी क़ादिर हैं कि उस को ज़ाइल कर दें, तो बन्दों को चाहिये कि इस ने'मत की शुक्र गुज़ारी से हिफ़ाज़त करें। **20 :** तरह तरह के। **21 :** जाड़े और गरमी वग़ैरा मौसिमों में और ऐ़श करते हो।

تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَ صِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝٢٠ وَ اِنَّ

पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है[22] ले कर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन[23] और बेशक

لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِیْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهَا وَ لَكُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ

तुम्हारे लिये चौपायों में समझने का मक़ाम है हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेट में है[24] और तुम्हारे लिये उन में बहुत

كَثِیْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢١ وَ عَلَیْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝٢٢ وَ لَقَدْ

ع ٢٢

फ़ाएदे हैं[25] और उन से तुम्हारी ख़ूराक है[26] और उन पर[27] और किश्ती पर[28] सुवार किये जाते हो और बेशक

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा तो उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह को पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई

غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٢٣ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا

ख़ुदा नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं[29] तो उस की क़ौम के जिन सरदारों ने कुफ़्र किया बोले[30]

هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ یُرِیْدُ اَنْ یَّتَفَضَّلَ عَلَیْكُمْ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ

येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी चाहता है कि तुम्हारा बड़ा बने[31] और अल्लाह चाहता[32]

لَاَنْزَلَ مَلٰٓىٕكَةً ۚۖ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ۝٢٤ اِنْ هُوَ اِلَّا

तो फ़िरिश्ते उतारता हम ने तो येह अपने अगले बाप दादाओं में न सुना[33] वोह तो नहीं मगर

رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِیْنٍ ۝٢٥ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا

एक दीवाना मर्द तो कुछ ज़माने तक उस का इन्तिज़ार किये रहो[34] नूह ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा[35] इस पर कि

كَذَّبُوْنِ ۝٢٦ فَاَوْحَیْنَاۤ اِلَیْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَ وَحْیِنَا فَاِذَا

इन्हों ने मुझे झुटलाया तो हम ने उसे वह्य भेजी कि हमारी निगाह के सामने[36] और हमारे हुक्म से किश्ती बना फिर जब

22 : उस दरख़्त से मुराद ज़ैतून है। 23 : येह उस में अ़जीब सिफ़त है कि वोह तेल भी है कि मनाफ़ेअ़ और फ़वाइद तेल के उस से ह़ासिल किये जाते हैं, जलाया भी जाता है, दवा के त़रीक़े पर भी काम में लाया जाता है और सालन का भी काम देता है कि तन्हा उस से रोटी खाई जा सकती है। 24 : या'नी दूध ख़ुश गवार मुवाफ़िक़े त़ब्अ़ जो लत़ीफ़ ग़िज़ा होता है। 25 : कि उन के बाल खाल ऊन वग़ैरा से काम लेते हो। 26 : कि उन्हें ज़ब्ह़ कर के खा लेते हो। 27 : ख़ुश्की में 28 : दरियाओं में 29 : उस के अ़ज़ाब का जो उस के सिवा औरों को पूजते हो। 30 : अपनी क़ौम के लोगों से कि 31 : और तुम्हें अपना ताबेअ़ बनाए। 32 : कि रसूल को भेजे और मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाए 33 : कि बशर भी रसूल होता है। येह उन की कमाले ह़माक़त थी कि बशर का रसूल होना तो तस्लीम न किया पथ्थरों को ख़ुदा मान लिया और उन्हों ने ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام की निस्बत येह भी कहा 34 : ता आं कि (यहां तक कि) उस का जुनून दूर हो, ऐसा हुवा तो ख़ैर वरना उस को क़त्ल कर डालना। जब ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام उन लोगों के ईमान लाने से मायूस हुए और उन के हिदायत पाने की उम्मीद न रही तो ह़ज़रते 35 : और इस क़ौम को हलाक कर 36 : या'नी हमारी ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त में।

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ

हमारा हुक्म आए[37] और तन्नूर उबले[38] तो उस में बिठा ले[39] हर जोड़े में से दो[40]

وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ

और अपने घर वाले[41] मगर उन में से वोह जिन पर बात पहले पड़ चुकी[42] और उन ज़ालिमों के मुआमले में मुझ से

ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى

बात न करना[43] येह ज़रूर डुबोए जाएंगे फिर जब ठीक बैठे किश्ती पर तू और तेरे साथ

الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۸﴾ وَقُلْ

वाले तो कह सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमें उन ज़ालिमों से नजात दी और अ़र्ज़ कर[44]

رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

कि ऐ मेरे रब मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू सब से बेहतर उतारने वाला है बेशक इस में[45]

لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۳۱﴾ ۚ

ज़रूर निशानियां हैं[46] और बेशक ज़रूर हम जांचने वाले थे[47] फिर उन के[48] बा'द हम ने और संगत (क़ौम) पैदा की[49]

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

तो उन में एक रसूल उन्हीं में से भेजा[50] कि **अल्लाह** की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं

ع ٢ ٢ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۳۲﴾ ع وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

तो क्या तुम्हें डर नहीं[51] और बोले उस क़ौम के सरदार जिन्हों ने कुफ़्र किया और आख़िरत की हाज़िरी[52]

37 : उन की हलाकत का और आसारे अ़ज़ाब नुमूदार हों **38 :** और उस में से पानी बरआमद हो तो येह अ़लामत है अ़ज़ाब के शुरूअ़ होने की **39 :** या'नी किश्ती में हैवानात के **40 :** नर और मादा। **41 :** या'नी अपनी मोमिना बीबी और ईमानदार औलाद या तमाम मोमिनीन। **42 :** और कलामे अज़ली में उन का अ़ज़ाब और हलाक मुअ़य्यन हो चुका। वोह आप का एक बेटा था कन्आन नाम (का) और एक औ़रत कि येह दोनों काफ़िर थे। आप ने अपने तीन फ़रज़न्दों साम, हाम, याफ़िस और उन की बीबियों को और दूसरे मोमिनीन को सुवार किया कुल लोग जो किश्ती में थे उन की ता'दाद अठत्तर थी। निस्फ़ मर्द और निस्फ़ औ़रतें। **43 :** और उन के लिये नजात न त़लब करना, दुआ़ न फ़रमाना। **44 :** किश्ती से उतरते वक़्त या उस में सुवार होते वक़्त **45 :** या'नी हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए में और उस में जो दुश्मनाने हक़ के साथ किया गया **46 :** और इब्रतें और नसीहतें और क़ुदरते इलाही के दलाइल हैं। **47 :** उस क़ौम के हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को उस में भेज कर और उन को वा'ज़ो नसीहत पर मामूर फ़रमा कर ताकि ज़ाहिर हो जाए कि नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले कौन नसीहत क़बूल करता और तस्दीक़ व इताअ़त करता है और कौन ना फ़रमान तक्ज़ीब व मुख़ालफ़त पर मुसिर रहता है। **48 :** या'नी क़ौमे नूह के अ़ज़ाब व हलाक के **49 :** या'नी आ़द व क़ौमे हूद। **50 :** या'नी हूद عَلَيْهِ السَّلَام और उन की मा'रिफ़त उस क़ौम को हुक्म दिया **51 :** उस के अ़ज़ाब का कि शिर्क छोड़ो और ईमान लाओ। **52 :** और वहां के सवाब व अ़ज़ाब वग़ैरा।

بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ

को झुटलाया और हम ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में चैन दिया[53] कि येह तो नहीं मगर तुम जैसा आदमी जो तुम

یَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَیَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَىِٕنْ اَطَعْتُمْ

खाते हो उसी में से खाता है और जो तुम पीते हो उसी में से पीता है[54] और अगर तुम किसी अपने जैसे

بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَیَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ

आदमी की इताअ़त करो जब तो तुम ज़रूर घाटे में हो क्या तुम्हें येह वा'दा देता है कि तुम जब मर जाओगे और

تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَیْهَاتَ هَیْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾

मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे इस के बा'द फिर[55] निकाले जाओगे कितनी दूर है कितनी दूर है जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[56]

اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَنَحْیَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِیْنَ ﴿٣٧﴾

वोह तो नहीं मगर हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[57] कि हम मरते जीते हैं[58] और हमें उठना नहीं[59]

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِافْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِیْنَ ﴿٣٨﴾

वोह तो नहीं मगर एक मर्द जिस ने अल्लाह पर झूट बांधा[60] और हम उसे मानने के नहीं[61]

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِیْلٍ لَّیُصْبِحُنَّ

अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी मदद फ़रमा इस पर कि उन्हों ने मुझे झुटलाया अल्लाह ने फ़रमाया कुछ देर जाती है कि येह सुब्ह़ करेंगे

نٰدِمِیْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّیْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا

पचताते हुए[62] तो उन्हें आ लिया सच्ची चिंघाड़ ने[63] तो हम ने उन्हें घास कूड़ा कर दिया[64] तो दूर हों[65]

53 : या'नी बा'ज़ कुफ़्फ़ार जिन्हें अल्लाह तआला ने फ़राग़िये ऐश और ने'मते दुन्या अ़ता फ़रमाई थी अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगे : 54 : या'नी येह अगर नबी होते तो मलाएका की त़रह खाने पीने से पाक होते। उन बात़िन के अन्धों ने कमालाते नुबुव्वत को न देखा और खाने पीने के औसाफ़ देख कर नबी को अपनी त़रह बशर कहने लगे। येह बुन्याद उन की गुमराही की हुई चुनान्चे इसी से उन्हों ने नतीजा निकाला कि आपस में कहने लगे : 55 : क़ब्रों से ज़िन्दा 56 : या'नी उन्हों ने मरने के बा'द ज़िन्दा होने को बहुत बईद जाना और समझा कि ऐसा कभी होने वाला ही नहीं और इसी ख़याले बात़िल की बिना पर कहने लगे 57 : इस से उन का मत़लब येह था कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी नहीं सिर्फ़ इतना ही है 58 : कि हम में कोई मरता है कोई पैदा होता है। 59 : मरने के बा'द, और अपने रसूल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की निस्बत उन्हों ने येह कहा 60 : कि अपने आप को उस का नबी बताया और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी। 61 : पैग़म्बर عَلَیْہِ السَّلَام जब उन के ईमान से मायूस हुए और उन्हों ने देखा कि क़ौम इन्तिहाई सरकशी पर है तो उन के हक़ में बद दुआ की और बारगाहे इलाही में 62 : अपने कुफ़्र व तक्ज़ीब पर जब कि अ़ज़ाबे इलाही देखेंगे। 63 : या'नी वोह अ़ज़ाब व हलाक में गिरिफ़्तार किये गए। 64 : या'नी वोह हलाक हो कर घास कूड़े की त़रह हो गए। 65 : या'नी ख़ुदा की रह़मत से दूर हों अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले।

www.dawateislami.net

لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۱﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِیْنَ ﴿۴۲﴾ مَا

ज़ालिम लोग फिर उन के बा'द हम ने और संगतें (क़ौमें) पैदा कीं[66] कोई

تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا یَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا

उम्मत अपनी मीआ़द से न पहले जाए न पीछे रहे[67] फिर हम ने अपने रसूल भेजे

تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ

एक पीछे दूसरा जब किसी उम्मत के पास उस का रसूल आया उन्हों ने उसे झुटलाया[68] तो हम ने अगलों से पिछले मिला दिये[69] और

جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِیْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۴﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى

उन्हें कहानियां कर डाला[70] तो दूर हों वोह लोग कि ईमान नहीं लाते फिर हम ने मूसा

وَ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ۬ بِاٰیٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۵﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَاۡىِٕهٖ

और उस के भाई हारून को अपनी आयतों और रोशन सनद[71] के साथ भेजा फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों की त़रफ़

فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا عَالِیْنَ ﴿۴۶﴾ ج فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَیْنِ مِثْلِنَا

तो उन्हों ने गु़रूर किया[72] और वोह लोग ग़लबा पाए हुए थे[73] तो बोले क्या हम ईमान ले आएं अपने जैसे दो आदमियों पर[74]

وَ قَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿۴۷﴾ ج فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِیْنَ ﴿۴۸﴾ وَ لَقَدْ

और उन की क़ौम हमारी बन्दगी कर रही है[75] तो उन्हों ने उन दोनों को झुटलाया तो हलाक किये हुओं में हो गए[76] और बेशक

اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ جَعَلْنَا ابْنَ مَرْیَمَ وَ اُمَّهٗۤ

हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[77] कि उन को[78] हिदायत हो और हम ने मरयम और उस के बेटे को[79]

ع اٰیَةً وَّ اٰوَیْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِیْنٍ ﴿۵۰﴾ ع یٰۤاَیُّهَا الرُّسُلُ

निशानी किया और उन्हें ठिकाना दिया एक बुलन्द ज़मीन[80] जहां बसने का मक़ाम[81] और निगाह के सामने बहता पानी ऐ पैग़म्बरो

66 : मिस्ल क़ौमे सालेह़ और क़ौमे लूत़ और क़ौमे शुऐ़ब वग़ैरा के। 67 : जिस के लिये हलाक का जो वक़्त मुक़र्रर है वोह ठीक उसी वक़्त हलाक होगी उस में कुछ भी तक़्दीम व ताख़ीर नहीं हो सकती। 68 : और उस की हिदायत को न माना और उस पर ईमान न लाए 69 : और बा'द वालों को पहलों की त़रह़ हलाक कर दिया 70 : कि बा'द वाले अफ़्साने की त़रह़ उन का ह़ाल बयान किया करें और उन के अ़ज़ाब व हलाक का बयान सबबे इ़ब्रत हो। 71 : मिस्ल अ़सा व यदे बैज़ा वग़ैरा मो'जिज़ात 72 : और अपने तकब्बुर के बाइ़स ईमान न लाए। 73 : बनी इसराईल पर अपने ज़ुल्मो सितम से। जब ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَیْهِمَا السَّلَام ने उन्हें ईमान की दा'वत दी 74 : या'नी ह़ज़रते मूसा और ह़ज़रते हारून पर। 75 : या'नी बनी इसराईल हमारे ज़ेरे फ़रमान हैं तो येह कैसे गवारा हो कि उसी क़ौम के दो आदमियों पर ईमान ला कर उन के मुत़ीअ़ बन जाएं। 76 : और ग़र्क़ कर डाले गए। 77 : या'नी तौरैत शरीफ़, फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की हलाकत के बा'द। 78 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام की क़ौम बनी इसराईल को 79 : या'नी ह़ज़रते ई़सा عَلَیْهِ السَّلَام को बिग़ैर बाप के पैदा फ़रमा कर अपनी क़ुदरत की 80 : इस से मुराद या बैतुल मक़्दिस है या दिमश्क़ या फ़िलिस्त़ीन, कई क़ौल हैं। 81 : या'नी ज़मीन हमवार फ़राख़ फलों वाली

www.dawateislami.net

كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۵۱﴾ؕ وَاِنَّ

पाकीज़ा चीज़ें खाओ[82] और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं[83] और बेशक

هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ

येह तुम्हारा दीन एक ही दीन है[84] और मैं तुम्हारा रब हूं तो मुझ से डरो तो उन की उम्मतों ने अपना काम

بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ

आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया[85] हर गुरोह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[86] तो तुम उन को छोड़ दो उन के नशे में[87]

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۵۴﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۵۵﴾ۙ

एक वक़्त तक[88] क्या येह ख़याल कर रहे हैं कि वोह जो हम उन की मदद कर रहे हैं माल और बेटों से[89]

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ

येह जल्द जल्द उन को भलाइयां देते हैं[90] बल्कि उन्हें ख़बर नहीं[91] बेशक वोह जो अपने रब

خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿۵۷﴾ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۸﴾ۙ وَ

के डर से सहमे हुए हैं[92] और वोह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं[93] और

الَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ

वोह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते और वोह जो देते हैं जो कुछ दें[94] और उन के दिल

وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿۶۰﴾ۙ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

डर रहे हैं यूं कि उन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है[95] येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं

जिस में रहने वाले ब आसाइश बसर करते हैं। **82 :** यहां पैग़म्बरों से मुराद या तमाम रसूल हैं और हर एक रसूल को उन के ज़माने में येह निदा फ़रमाई गई या रसूलों से मुराद ख़ास सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं या ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कई क़ौल हैं। **83 :** उन की जज़ा अ़ता फ़रमाऊंगा। **84 :** या'नी इस्लाम। **85 :** और फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए यहूदी, नसरानी, मजूसी वग़ैरा। **86 :** और अपने ही आप को ह़क़ पर जानता है और दूसरों को बात़िल पर समझता है इस त़रह़ उन के दरमियान दीनी इख़्तिलाफ़ात हैं। अब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब होता है : **87 :** या'नी उन के कुफ़्र व ज़लाल और उन की जहालत व ग़फ़्लत में **88 :** या'नी उन की मौत के वक़्त तक। **89 :** दुन्या में। **90 :** और हमारी येह ने'मतें उन के आ'माल की जज़ा हैं या हमारे राज़ी होने की दलील हैं ऐसा ख़याल करना ग़लत़ है। वाक़िआ़ येह नहीं है **91 :** कि हम उन्हें ढील दे रहे हैं। **92 :** उन्हें उस के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि मोमिन नेकी करता है और ख़ुदा से डरता है और काफ़िर बदी करता है और निडर रहता है। **93 :** और उस की किताबों को मानते हैं। **94 :** ज़कात व सदक़ात या येह मा'ना हैं कि आ'माले सालिह़ा बजा लाते हैं। **95 :** तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क्या इस आयत में उन लोगों का बयान है जो शराबें पीते हैं और चोरी करते हैं ? फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़ की नूरदीदा ! ऐसा नहीं, येह उन लोगों का बयान है जो रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और डरते रहते हैं कि कहीं येह आ'माल ना मक़्बूल न हो जाएं।

www.dawateislami.net

وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝٦١ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ

और येही सब से पहले उन्हें पहुंचे[96] और हम किसी जान पर बोझ नहीं रखते मगर उस की ताक़त भर और हमारे पास एक किताब है

يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٢ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا

कि हक़ बोलती है[97] और उन पर ज़ुल्म न होगा[98] बल्कि उन के दिल उस से[99] ग़फ़्लत में हैं

وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ۝٦٣ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذْنَا

और उन के काम उन कामों से जुदा हैं[100] जिन्हें वोह कर रहे हैं यहां तक कि जब हम ने

مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ۝٦٤ؕ لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ قف اِنَّكُمْ

उन के अमीरों को अ़ज़ाब में पकड़ा[101] तो जभी वोह फ़रियाद करने लगे[102] आज फ़रियाद न करो हमारी तरफ़

مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٦٥ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ

से तुम्हारी मदद न होगी बेशक मेरी आयतें[103] तुम पर पढ़ी जाती थीं तो तुम अपनी एड़ियों के बल

تَنْكِصُوْنَ ۝٦٦ لا مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖۗ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ۝٦٧ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ

उलटे पलटते थे[104] ख़िदमते हरम पर बड़ाई मारते हो[105] रात को वहां बेहूदा कहानियां बकते[106] हक़ को छोड़े हुए[107] क्या उन्हों ने बात को सोचा नहीं[108]

اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٦٨ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا

या उन के पास वोह आया जो उन के बाप दादा के पास न आया था[109] या उन्हों ने अपने

96 : या'नी नेकियों को, मा'ना येह हैं कि वोह नेकियों में और उम्मतों पर सब्क़त करते हैं। **97 :** उस में हर शख़्स का अ़मल मक्तूब (लिखा हुवा) है और वोह लौहे़ मह़फ़ूज़ है। **98 :** न किसी की नेकी घटाई जाएगी, न बदी बढ़ाई जाएगी। इस के बा'द कुफ़्फ़ार का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **99 :** या'नी कु़रआन शरीफ़ से **100 :** जो ईमानदारों के ज़िक्र किये गए। **101 :** और वोह रोज़ बरोज़ तहे तेग़ (क़त्ल) किये गए। और एक क़ौल येह है कि इस अ़ज़ाब से मुराद फ़ाक़ों और भूक की वोह मुसीबत है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दुआ़ से उन पर मुसल्लत़ की गई थी और इस क़ह़त़ से उन की ह़ालत यहां तक पहुंच गई थी कि वोह कुत्ते और मुर्दार तक खा गए थे। **102 :** अब उन का जवाब येह है कि **103 :** या'नी आयाते कु़रआने मजीद **104 :** और उन आयात को न मानते थे और उन पर ईमान न लाते थे। **105 :** और येह कहते हुए कि हम अहले ह़रम हैं और बैतुल्लाह के हमसाया हैं हम पर कोई ग़ालिब न होगा हमें किसी का ख़ौफ़ नहीं। **106 :** का'बए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जम्अ़ हो कर। और उन कहानियों में अक्सर कु़रआने पाक पर त़ा'न और उस को सेह़्र और शे'र कहना और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में बेजा बातें कहना होता था। **107 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप पर ईमान लाने को और कु़रआने करीम को। **108 :** या'नी कु़रआने पाक में ग़ौर नहीं किया और इस के ए'जाज़ पर नज़र नहीं डाली जिस से उन्हें मा'लूम होता कि येह कलाम ह़क़ है इस की तस्दीक़ लाज़िम है और जो कुछ इस में इर्शाद फ़रमाया गया वोह सब ह़क़ और वाजिबुत्तस्लीम है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ो ह़क़्क़ानिय्यत पर इस में दलालाते वाज़ेह़ा मौजूद हैं। **109 :** या'नी रसूल का तशरीफ़ लाना ऐसी निराली बात नहीं है जो कभी पहले अ़ह्द में हुई ही न हो और वोह येह कह सकें कि हमें ख़बर ही न थी कि ख़ुदा की त़रफ़ से रसूल आया भी करते हैं, कभी पहले कोई रसूल आया होता और हम ने उस का तज़्किरा सुना होता तो हम क्यूं इस रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को न मानते ? येह उ़ज़्र करने का मौक़अ़ भी नहीं है क्यूं कि पहली उम्मतों में रसूल आ चुके हैं और ख़ुदा की किताबें नाज़िल हो चुकी हैं।

رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌؕ بَلْ جَآءَهُمْ

रसूल को न पहचाना[110] तो वोह उसे बेगाना समझ रहे हैं[111] या कहते हैं उसे सौदा (दीवाना पन) है[112] बल्कि वोह तो उन के पास

بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ

हक़ लाए[113] और उन में अक्सर को हक़ बुरा लगता है[114] और अगर हक़[115] उन की ख़्वाहिशों की पैरवी करता[116]

لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

तो ज़रूर आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं सब तबाह हो जाते[117] बल्कि हम तो उन के पास वोह चीज़ लाए[118] जिस में उन की नाम वरी थी

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ؕ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ

तो वोह अपनी इज़्ज़त से ही मुंह फेरे हुए हैं क्या तुम उन से कुछ उजरत मांगते हो[119] तो तुम्हारे रब का अज्र सब

خَيْرٌ ۖۗ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ

से भला और वोह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला[120] और बेशक तुम उन्हें सीधी राह की तरफ़

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ

बुलाते हो[121] और बेशक जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते ज़रूर सीधी राह से[122]

لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

कतराए हुए हैं और अगर हम उन पर रहम करें और जो मुसीबत[123] उन पर पड़ी है टाल दें तो ज़रूर भट पना (एहसान फ़रामोशी) करेंगे अपनी सरकशी

110 : और हुज़ूर की उम्र शरीफ़ के जुम्ला अहवाल को न देखा और आप के नसबे आली और सिद्क़ो अमानत और वुफ़ूरे अक़्ल (कस्रते दानाई) व हुस्ने अख़्लाक़ और कमाले हिल्म और वफ़ा व करम व मुरव्वत वग़ैरा पाकीज़ा अख़्लाक़ व महासिने सिफ़ात और बिग़ैर किसी से सीखे आप के इल्म में कामिल और तमाम जहान से आ'लम (ज़ियादा इल्म वाले) और फ़ाइक़ होने को न जाना क्या ऐसा है **111 :** हक़ीक़त में येह बात तो नहीं बल्कि वोह सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और आप के औसाफ़ो कमालात को ख़ूब जानते हैं और आप के बरगुज़ीदा सिफ़ात शोहरए आफ़ाक़ हैं। **112 :** येह भी सरासर ग़लत और बातिल है क्यूं कि वोह जानते हैं कि आप जैसा दाना और कामिलुल अक़्ल शख़्स उन के देखने में नहीं आया। **113 :** या'नी क़ुरआने करीम जो तौहीदे इलाही व अहकामे दीन पर मुश्तमिल है। **114 :** क्यूं कि उस में उन के ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या की मुख़ालफ़त है इस लिये वोह रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के सिफ़ातो कमालात को जानने के बा वुजूद हक़ की मुख़ालफ़त करते हैं। "अक्सर" की क़ैद से साबित होता है कि येह हाल उन में बेश्तर लोगों का है चुनान्चे बा'ज़ उन में ऐसे भी थे जो आप को हक़ पर जानते थे और हक़ उन्हें बुरा भी नहीं लगता था लेकिन वोह अपनी क़ौम की मुवाफ़क़त या उन के ता'न व तश्नीअ़ के ख़ौफ़ से ईमान न लाए जैसे कि अबू तालिब। **115 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **116 :** इस तरह कि इस में वोह मज़ामीन मज़्कूर होते जिन की कुफ़्फ़ार ख़्वाहिश करते हैं जैसे कि चन्द ख़ुदा होना और ख़ुदा के बेटा और बेटियां होना वग़ैरा कुफ़्रिय्यात। **117 :** और तमाम आलम का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता। **118 :** या'नी क़ुरआने पाक **119 :** उन्हें हिदायत करने और राहे हक़ बताने पर। ऐसा तो नहीं और वोह क्या हैं और आप को क्या दे सकते हैं ? तुम अगर अज्र चाहो **120 :** और उस का फ़ज़्ल आप पर अज़ीम और जो जो ने'मतें उस ने आप को अता फ़रमाईं वोह बहुत कसीर और आ'ला, तो आप को उन की क्या परवाह, फिर जब वोह आप के औसाफ़ो कमालात से वाक़िफ़ भी हैं क़ुरआने पाक का ए'जाज़ भी उन की निगाहों के सामने है और आप उन से हिदायत व इर्शाद का कोई अज्र व इवज़ भी तलब नहीं फ़रमाते तो अब उन्हें ईमान लाने में क्या उज़्र रहा। **121 :** तो उन पर लाज़िम है कि आप की दा'वत क़बूल करें और इस्लाम में दाख़िल हों। **122 :** या'नी दीने हक़ से **123 :** हफ़्त सालह (सात सालह) क़हत साली की।

يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا

में बहकते हुए[124] और बेशक हम ने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा[125] तो न वोह अपने रब के हुज़ूर में झुके और न

يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰۤى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا

गिड़गिड़ाते हैं[126] यहां तक कि जब हम ने उन पर खोला किसी सख़्त अ़ज़ाब का दरवाज़ा[127] तो

هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَ

वोह अब उस में ना उम्मीद पड़े हैं और वोही है जिस ने बनाए तुम्हारे लिये कान और आंखें और

الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ

दिल[128] तुम बहुत ही कम हक़ मानते हो[129] और वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया

وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ

और उसी की तरफ़ उठना है[130] और वोही जिलाए और मारे और उसी के लिये हैं रात और दिन

وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

की तब्दीलें[131] तो क्या तुम्हें समझ नहीं[132] बल्कि उन्हों ने वोही कही जो अगले[133] कहते थे

قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ

बोले क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे बेशक

124 : या'नी अपने कुफ़्रो इनाद और सरकशी की तरफ़ लौट जाएंगे और येह तमल्लुक़ (खुशामद) व चापलूसी जाती रहेगी और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और मोमिनीन की अ़दावत और तकब्बुर जो उन का पहला त़रीक़ा था वोही इख़्तियार करेंगे। **शाने नुज़ूल :** जब कुरैश सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ़ से सात बरस के क़ह़त़ में मुब्तला हुए और ह़ालत बहुत अब्तर हो गई तो अबू सुफ़्यान उन की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क्या आप अपने ख़याल में ''رَحْمَةً لِّلْعَالَمِيْنَ'' बना कर नहीं भेजे गए ? सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक। अबू सुफ़्यान ने कहा कि बड़ों को तो आप ने बद्र में तहे तेग़ (क़त्ल) कर दिया, औलाद जो रही वोह आप की बद दुआ़ से इस ह़ालत को पहुंची कि मुसीबते क़ह़त़ में मुब्तला हुई फ़ाक़ों से तंग आ गई, लोग भूक की बेताबी से हड्डियां चाब गए, मुर्दार तक खा गए, मैं आप को अल्लाह की क़सम देता हूं और क़राबत की। आप अल्लाह से दुआ़ कीजिये कि हम से इस क़ह़त़ को दूर फ़रमाए। हुज़ूर ने दुआ़ की और उन्हों ने इस बला से रिहाई पाई, इस वाक़िए के मुतअ़ल्लिक़ येह आयतें नाज़िल हुईं। **125 :** क़ह़त़ साली के या क़त्ल के **126 :** बल्कि अपने तमर्रुद (बग़ावत) व सरकशी पर हैं। **127 :** इस अ़ज़ाब से या क़ह़त़ साली मुराद है जैसा कि रिवायते मज़्कूरा शाने नुज़ूल का मुक़्तज़ी है या रोज़े बद्र का क़त्ल। येह इस क़ौल की बिना पर है कि वाक़िअ़ए क़ह़त़ वाक़िअ़ए बद्र से पहले हो। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इस सख़्त अ़ज़ाब से मौत मुराद है। बा'ज़ ने कहा कि क़ियामत। **128 :** ताकि सुनो और देखो और समझो और दीनी और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करो। **129 :** कि तुम ने इन ने'मतों की क़द्र न जानी और इन से फ़ाएदा न उठाया और कानों आंखों और दिलों से आयाते इलाहिय्यह के सुनने देखने समझने और मा'रिफ़ते इलाही ह़ासिल करने और मुन्इमे ह़क़ीक़ी का ह़क़ पहचान कर शुक्र गुज़ार बनने का नफ़्अ़ न उठाया। **130 :** रोज़े क़ियामत। **131 :** इन में से हर एक का दूसरे के बा'द आना और तारीकी व रोशनी और ज़ियादती व कमी में हर एक का दूसरे से मुख़्तलिफ़ होना येह सब उस की क़ुदरत के निशान हैं। **132 :** कि इन से इ़ब्रत ह़ासिल करो और इन में ख़ुदा की क़ुदरत का मुशाहदा कर के मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को तस्लीम करो और ईमान लाओ। **133 :** या'नी उन से पहले काफ़िर।

وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

येह वा'दा हम को और हम से पहले हमारे बाप दादा को दिया गया येह तो नहीं मगर वोही अगली

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

दास्तानें[134] तुम फ़रमाओ किस का माल है ज़मीन और जो कुछ इस में है अगर तुम जानते हो[135]

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ

अब कहेंगे कि **अल्लाह** का[136] तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं सोचते[137] तुम फ़रमाओ कौन है मालिक सातों आस्मानों का

وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ

और मालिक बड़े अ़र्श का अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर क्यूं नहीं डरते[138] तुम फ़रमाओ

مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ

किस के हाथ है हर चीज़ का क़ाबू[139] और वोह पनाह देता है और उस के ख़िलाफ़ कोई पनाह नहीं दे सकता अगर तुम्हें

تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ

इ़ल्म हो[140] अब कहेंगे येह **अल्लाह** ही की शान है तुम फ़रमाओ फिर किस जादू के फ़रेब में पड़े हो[141] बल्कि हम उन के पास

بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

ह़क़ लाए[142] और वोह बेशक झूटे हैं[143] **अल्लाह** ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया[144] और न उस के साथ

مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ

कोई दूसरा ख़ुदा[145] यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता[146] और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली (बड़ाई) चाहता[147]

134 : जिन की कुछ भी ह़क़ीक़त नहीं। कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाने और उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाने के लिये **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब ﷺ से इर्शाद फ़रमाया **135 :** इस के ख़ालिक़ो मालिक को तो बताओ। **136 :** क्यूं कि बजुज़ इस के कोई जवाब ही नहीं और मुश्रिकीन **अल्लाह** तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत के मुक़िर भी हैं, जब वोह येह जवाब दें **137 :** कि जिस ने ज़मीन को और उस की काएनात को इब्तिदाअन पैदा किया वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **138 :** उस के ग़ैर को पूजने और शिर्क करने से और उस के मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर होने का इन्कार करने से। **139 :** और हर चीज़ पर ह़क़ीक़ी क़ुदरत व इख़्तियार किस का है। **140 :** तो जवाब दो। **141 :** या'नी किस शैत़ानी धोके में हो कि तौह़ीद व त़ाअ़ते इलाही को छोड़ कर ह़क़ को बात़िल समझ रहे हो, जब तुम इक़्रार करते हो कि क़ुदरते ह़क़ीक़ी उसी की है और उस के ख़िलाफ़ कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता तो दूसरे की इबादत क़त़्अ़न बात़िल है। **142 :** कि **अल्लाह** के न औलाद हो सकती है न उस का शरीक, येह दोनों बातें मुह़ाल हैं। **143 :** जो उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **144 :** वोह इस से मुनज़्ज़ा है क्यूं कि नौअ़ और जिन्स से पाक है और औलाद वोही हो सकती है जो हम जिन्स हो। **145 :** जो उलूहिय्यत में शरीक हो। **146 :** और उस को दूसरे के तह़्ते तसर्रुफ़ न छोड़ता। **147 :** और दूसरे पर अपनी बरतरी और अपना ग़लबा पसन्द करता क्यूं कि मुतक़ाबिल हुकूमतें इसी की मुक़्तज़ी हैं, इस से मा'लूम हुवा कि दो ख़ुदा होना बात़िल है ख़ुदा एक ही है और हर चीज़ उसी के तह़्ते तसर्रुफ़ है।

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۹۱﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا

पाकी है अल्लाह को उन बातों से जो येह बनाते हैं[148] जानने वाला हर निहां व इयां (पोशीदा व ज़ाहिर) का तो उसे बुलन्दी है उन के

ع ١٥/٥ يُشْرِكُوْنَ ﴿۹۲﴾ قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿۹۳﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ

शिर्क से तुम अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब अगर तू मुझे दिखाए[149] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है तो ऐ मेरे रब मुझे

فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۹۴﴾ وَ اِنَّا عَلٰۤى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿۹۵﴾

उन ज़ालिमों के साथ न करना[150] और बेशक हम क़ादिर हैं कि तुम्हें दिखा दें जो उन्हें वा'दा दे रहे हैं[151]

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ قُلْ

सब से अच्छी भलाई से बुराई को दफ़्अ़ करो[152] हम खूब जानते हैं जो बातें येह बनाते हैं[153] और तुम अ़र्ज़ करो

رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۹۷﴾ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ

कि ऐ मेरे रब तेरी पनाह शयात़ीन के वस्वसों से[154] और ऐ मेरे रब तेरी पनाह कि

يَّحْضُرُوْنِ ﴿۹۸﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾

वोह मेरे पास आएं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए[155] तो कहता है कि ऐ मेरे रब मुझे वापस फेर दीजिये[156]

لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَ مِنْ

शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊं उस में जो छोड़ आया हूं[157] हिश्त (हरगिज़ नहीं) येह तो एक बात है जो वोह अपने मुंह से कहता है[158] और

وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَاۤ

उन के आगे एक आड़ है[159] उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे तो जब सूर फूंका जाएगा[160] तो न

148 : कि उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **149 :** वोह अ़ज़ाब **150 :** और उन का क़रीन और साथी न बनाना। येह दुआ़ ब त़रीके़ तवाज़ोअ़ व इज़्हारे अ़ब्दिय्यत है बा वुजूदे कि मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला आप को उन का क़रीन व साथी न करेगा। इसी त़रह़ अम्बिया मा'सूमीन इस्तिग़्फ़ार किया करते हैं बा वुजूदे कि उन्हें अपनी मग़्फ़िरत और इक्रामे ख़ुदावन्दी का इल्मे यक़ीनी होता है येह सब ब त़रीके़ तवाज़ोअ़ व इज़्हारे बन्दगी है। **151 :** येह जवाब है उन कुफ़्फ़ार का जो अ़ज़ाबे मौऊ़द का इन्कार करते और उस की हंसी उड़ाते थे उन्हें बताया गया कि अगर तुम ग़ौर करो तो समझ लोगे कि अल्लाह तआ़ला उस वा'दे के पूरा करने पर क़ादिर है फिर वज्हे इन्कार और सबबे इस्तिहज़ा क्या ? और अ़ज़ाब में जो ताख़ीर हो रही है इस में अल्लाह की ह़िक्मतें हैं कि उन में से जो ईमान लाने वाले हैं वोह ईमान ले आएं और जिन की नस्लें ईमान लाने वाली हैं उन से वोह नस्लें पैदा हो लें। **152 :** इस जुम्लए जमीला के मा'ना बहुत वसीअ़ हैं, इस के येह मा'ना भी हैं कि तौह़ीद जो आ'ला बेहतरी है उस से शिर्क की बुराई को दफ़्अ़ फ़रमाइये और येह भी कि त़ाअ़त व तक़्वा को रवाज दे कर मा'सियत और गुनाह की बुराई दफ़्अ़ कीजिये और येह भी कि अपने मकारिमे अख़्लाक़ से ख़त़ाकारों पर इस त़रह़ अ़फ़्वो रह़मत फ़रमाइये जिस से दीन में कोई सुस्ती न हो। **153 :** अल्लाह और उस के रसूल की शान में तो हम इस का बदला देंगे। **154 :** जिन से वोह लोगों को फ़रेब दे कर मआ़सी और गुनाहों में मुब्तला करते हैं। **155 :** या'नी काफ़िर वक़्ते मौत तक तो अपने कुफ़्र व सरकशी और ख़ुदा और रसूल की तक्ज़ीब और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के इन्कार पर मुसिर रहता है और जब मौत का वक़्त आता है और उस को जहन्नम में उस का जो मक़ाम है दिखाया जाता है और जन्नत का वोह मक़ाम भी दिखाया जाता है कि अगर वोह ईमान लाता तो येह मक़ाम उसे दिया जाता **156 :** दुन्या की त़रफ़ **157 :** और आ'माले नेक बजा ला कर अपनी तक़्सीरात का

www.dawateislami.net

اَنۡسَابَ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾ فَمَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ

उन में रिश्ते रहेंगे[161] और न एक दूसरे की बात पूछे[162] तो जिन की तोलें[163] भारी हुई

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۱۰۲﴾ وَمَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِيۡنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ

वोही मुराद को पहुंचे और जिन की तोलें हलकी पड़ीं[164] वोही हैं जिन्हों ने

خَسِرُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ فِىۡ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿۱۰۳﴾ تَلۡفَحُ وُجُوۡهَهُمُ النَّارُ وَهُمۡ

अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे उन के मुंह पर आग लपट मारेगी और वोह

فِيۡهَا كٰلِحُوۡنَ ﴿۱۰۴﴾ اَلَمۡ تَكُنۡ اٰيٰتِىۡ تُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ فَكُنۡتُمۡ بِهَا تُكَذِّبُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾

उस में मुंह चड़ाए होंगे[165] क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं[166] तो तुम उन्हें झुटलाते थे

قَالُوۡا رَبَّنَا غَلَبَتۡ عَلَيۡنَا شِقۡوَتُنَا وَكُنَّا قَوۡمًا ضَآلِّيۡنَ ﴿۱۰۶﴾ رَبَّنَاۤ

कहेंगे ऐ रब हमारे हम पर हमारी बद बख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे ऐ हमारे रब

اَخۡرِجۡنَا مِنۡهَا فَاِنۡ عُدۡنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾ قَالَ اخۡسَـُٔوۡا فِيۡهَا وَلَا

हम को दोज़ख़ से निकाल दे फिर अगर हम वैसे ही करें तो हम ज़ालिम हैं[167] रब फ़रमाएगा दुत्कारे (ज़लील हो कर) पड़े रहो इस में और

تُكَلِّمُوۡنِ ﴿۱۰۸﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيۡقٌ مِّنۡ عِبَادِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا

मुझ से बात न करो[168] बेशक मेरे बन्दों का एक गुरोह कहता था ऐ हमारे रब हम ईमान लाए तो हमें बख़्श दे

तदारुक करूं। इस पर उस को फ़रमाया जाएगा **158 :** हस्रतो नदामत से। येह होने वाली नहीं और इस का कुछ फ़ाएदा नहीं। **159 :** जो उन्हें दुन्या की तरफ़ वापस होने से मानेअ़ है और वोह मौत है। (خازن) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि बरज़ख़ वक़्ते मौत से वक़्ते बअ़्स तक की मुद्दत को कहते हैं। **160 :** पहली मरतबा जिस को नफ़्ख़ए ऊला कहते हैं जैसा कि हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है। **161 :** जिन पर दुन्या में फ़ख़्र किया करते थे और आपस के नसबी तअ़ल्लुक़ात मुन्क़तअ़ हो जाएंगे और क़राबत की महब्बतें बाक़ी न रहेंगी और येह हाल होगा कि आदमी अपने भाई और मां और बाप और बीबी और बेटों से भागेगा। **162 :** जैसे कि दुन्या में पूछते थे क्यूं कि हर एक अपने ही हाल में मुब्तला होगा। फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा और बा'दे हिसाब लोग एक दूसरे का हाल दरयाफ़्त करेंगे। **163 :** आ'माले सालिहा और नेकियों से **164 :** नेकियां न होने के बाइस और वोह कुफ़्फ़ार हैं। **165 :** तिरमिज़ी की हदीस में है कि आग उन को भून डालेगी और ऊपर का होंट सुकड़ कर निस्फ़ सर तक पहुंचेगा और नीचे का नाफ़ तक लटक जाएगा, दांत खुले रह जाएंगे (ख़ुदा की पनाह) और उन से फ़रमाया जाएगा **166 :** दुन्या में **167 :** तिरमिज़ी की हदीस में है कि दोज़ख़ी लोग जहन्नम के दारोग़ा मालिक को चालीस बरस तक पुकारते रहेंगे उस के बा'द वोह कहेगा कि तुम जहन्नम ही में पड़े रहोगे। फिर वोह परवर्दगार को पुकारेंगे और कहेंगे ऐ रब हमारे हमें दोज़ख़ से निकाल और येह पुकार उन की दुन्या से दूनी उम्र की मुद्दत तक जारी रहेगी, इस के बा'द उन्हें येह जवाब दिया जाएगा जो अगली आयत में है। (خازن) और दुन्या की उम्र कितनी है ? इस में कई क़ौल हैं : बा'ज़ ने कहा कि दुन्या की उम्र सात हज़ार बरस है। बा'ज़ ने कहा : बारह हज़ार बरस। बा'ज़ ने कहा : तीन लाख साठ बरस। (تذکرہ قرطبی) واللہ تعالٰی اعلم **168 :** अब उन की उम्मीदें मुन्क़तअ़ हो जाएंगी और येह अहले जहन्नम का आख़िर कलाम होगा फिर इस के बा'द उन्हें कलाम करना नसीब न होगा रोते चीख़ते डकराते (चिल्लाते) भोंकते रहेंगे।

وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾ۚۖ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى

और हम पर रह्म कर और तू सब से बेहतर रह्म करने वाला है तो तुम ने उन्हें ठट्ठा बना लिया[169] यहां तक

اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا

कि उन्हें बनाने के शुग़्ल में[170] मेरी याद भूल गए और तुम उन से हंसा करते बेशक आज मैं ने उन के सब्र का

صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ

उन्हें येह बदला दिया कि वोही काम्याब हैं फ़रमाया[171] तुम ज़मीन में कितना ठहरे[172] बरसों की

سِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قٰلَ

गिनती से बोले हम एक दिन रहे या दिन का हिस्सा[173] तो गिनने वालों से दरयाफ़्त फ़रमा[174] फ़रमाया

اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا

तुम न ठहरे मगर थोड़ा[175] अगर तुम्हें इल्म होता तो क्या येह समझते हो कि

خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं[176] तो बहुत बुलन्दी वाला है अल्लाह सच्चा बादशाह

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ

कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के इ़ज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे

لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

जिस की उस के पास कोई सनद नहीं[177] तो उस का ह़िसाब उस के रब के यहां है बेशक काफ़िरों को छुटकारा नहीं

ع ٦ ١٦ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ع

और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे[178] और रह्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह्म करने वाला

169 शाने नुज़ूल : येह आयतें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुईं जो ह़ज़रते बिलाल व ह़ज़रते अ़म्मार व ह़ज़रते सुहैब व ह़ज़रते ख़ब्बाब वग़ैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم फ़ुक़रा अस्ह़ाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم से तमस्ख़ुर करते थे। **170 :** या'नी उन के साथ तमस्ख़ुर करने में इतने मश्ग़ूल हुए कि **171 :** अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से **172 :** या'नी दुन्या में और क़ब्र में **173 :** येह जवाब इस वज्ह से देंगे कि उस दिन की दह्शत और अ़ज़ाब की हैबत से उन्हें अपने दुन्या में रहने की मुद्दत याद न रहेगी और उन्हें शक हो जाएगा इसी लिये कहेंगे : **174 :** या'नी उन मलाएका से जिन को तू ने बन्दों की उ़म्रें और उन के आ'माल लिखने पर मामूर किया। इस पर अल्लाह तआ़ला ने **175 :** ब निस्बत आख़िरत के। **176 :** और आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं, बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें। **177 :** या'नी ग़ैरुल्लाह की परस्तिश मह़ज़ बात़िल बे सनद है। **178 :** ईमान वालों को।

اٰیاتها ٦٤ | ٢٤ سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٢ | رکوعاتها ٩

सूरए नूर मदनिय्या है, इस में चौंसठ आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَ فَرَضْنٰهَا وَ اَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ

येह एक सूरत है कि हम ने उतारी और हम ने उस के अह़काम फ़र्ज़ किये[2] और हम ने उस में रोशन आयतें नाज़िल फ़रमाईं कि

تَذَكَّرُوْنَ ۝١ اَلزَّانِيَةُ وَ الزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ

तुम ध्यान करो जो औ़रत बदकार हो और जो मर्द तो उन में हर एक को सो कोड़े

جَلْدَةٍ ۪ وَّ لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ

लगाओ[3] और तुम्हें उन पर तर्स न आए अल्लाह के दीन में[4] अगर तुम ईमान लाते हो

بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَ لْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآىِٕفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

अल्लाह और पिछले दिन पर और चाहिये कि उन की सज़ा के वक़्त मुसल्मानों का एक गुरौह ह़ाज़िर हो[5]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّ الزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَاۤ اِلَّا زَانٍ

बदकार मर्द निकाह़ न करे मगर बदकार औ़रत या शिर्क वाली से और बदकार औ़रत से निकाह़ न करे मगर बदकार मर्द

1 : सूरए नूर मदनिय्या है, इस में नव रुकूअ़ चौंसठ आयतें हैं। **2 :** और उन पर अ़मल करना बन्दों पर लाज़िम किया। **3 :** येह ख़ित़ाब हुक्काम को है कि जिस मर्द या औ़रत से ज़िना सरज़द हो उस की "ह़द" येह है कि उस के सो 100 कोड़े लगाओ, येह "ह़द" हुर ग़ैर मुह़सन (आज़ाद कुंवारे) की है क्यूं कि हुर मुह़सन (आज़ाद शादी शुदा) का हुक्म येह है कि उस को रज्म किया जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि माइज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब हुक्मे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रज्म किया गया, और मुह़सन वोह आज़ाद मुसल्मान है जो मुकल्लफ़ हो और निकाह़े सह़ीह़ के साथ सोह़बत कर चुका हो ख़्वाह एक ही मरतबा, ऐसे शख़्स से ज़िना साबित हो तो रज्म किया जाएगा और अगर इन में से एक बात भी न हो मसलन हुर न हो या मुसल्मान न हो या आ़क़िल बालिग़ न हो या उस ने कभी अपनी बीबी के साथ सोह़बत न की हो या जिस के साथ की हो उस के साथ निकाह़ फ़ासिद हुवा हो तो येह सब ग़ैर मुह़सन में दाख़िल हैं और इन सब का हुक्म कोड़े मारना है। **मसाइल :** मर्द को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा किया जाए और उस के तमाम कपड़े उतार दिये जाएं सिवा तहबन्द के और उस के तमाम बदन पर कोड़े लगाए जाएं सिवाए सर चेहरे और शर्मगाह के, कोड़े इस त़रह़ लगाए जाएं कि अलम (दर्द) गोश्त तक न पहुंचे और कोड़ा मुतवस्सित़ दरजे का हो और औ़रत को कोड़े लगाने के वक़्त खड़ा न किया जाए न उस के कपड़े उतारे जाएं अलबत्ता अगर पोस्तीन (चमड़े का जुब्बा) या रूएंदार कपड़े पहने हुए हो तो उतार दिये जाएं। येह हुक्म हुर और हुर्रा का है या'नी आज़ाद मर्द और औ़रत का। और बांदी ग़ुलाम की ह़द इस से निस्फ़ या'नी पचास कोड़े हैं जैसा कि सूरए निसाअ में मज़्कूर हो चुका। सुबूते ज़िना या तो चार मर्दों की गवाहियों से होता है या ज़िना करने वाले के चार मरतबा इक़रार कर लेने से। फिर भी इमाम बार बार सुवाल करेगा और दरयाफ़्त करेगा कि ज़िना से क्या मुराद है ? कहां किया, किस से किया, कब किया, अगर इन सब को बयान कर दिया तो ज़िना साबित होगा वरना नहीं। और गवाहों को सराह़तन अपना मुआयना बयान करना होगा बिग़ैर इस के सुबूत न होगा। लिवातत ज़िना में दाख़िल नहीं लिहाज़ा इस फ़े'ल से ह़द वाजिब नहीं होती, लेकिन ता'ज़ीर वाजिब होती है और इस ता'ज़ीर में सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के चन्द क़ौल मरवी हैं : आग में जला देना, ग़र्क़ कर देना, बुलन्दी से गिराना और ऊपर से पथ्थर बरसाना, फ़ाइल व मफ़ऊ़ल दोनों का एक ही हुक्म है। (تفسیر احمدی) **4 :** या'नी ह़ुदूद के पूरा करने में कमी न करो और दीन में मज़बूत़ और मुतसल्लिब (सख़्ती से कारबन्द) रहो। **5 :** ताकि इब्रत ह़ासिल हो।

اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

या मुश्रिक[6] और येह काम[7] ईमान वालों पर हराम है[8] और जो पारसा औ़रतों को

الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً

ऐ़ब लगाएं फिर चार गवाह मुआ़यना के न लाएं तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ

وَّ لَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ

और उन की कोई गवाही कभी न मानो[9] और वोही फ़ासिक़ हैं मगर जो

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾ وَ الَّذِيْنَ

इस के बा'द तौबा कर लें और संवर जाएं[10] तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेह़रबान है और वोह जो

يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّاۤ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ

अपनी औ़रतों को ऐ़ब लगाएं[11] और उन के पास अपने बयान के सिवा गवाह न हों तो ऐसे किसी की

6 : क्यूं कि ख़बीस का मैलान ख़बीस ही की त़रफ़ होता है नेकों को ख़बीसों की त़रफ़ रग़्बत नहीं होती। **शाने नुज़ूल :** मुहाजिरीन में बा'ज़े बिल्कुल नादार थे न उन के पास कुछ माल था न उन का कोई अ़ज़ीज़ क़रीब था और बदकार मुश्रिका औ़रतें दौलत मन्द और मालदार थीं येह देख कर किसी मुहाजिर को ख़याल आया कि अगर उन से निकाह़ कर लिया जाए तो उन की दौलत काम में आएगी। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से उन्हों ने इस की इजाज़त चाही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें इस से रोक दिया गया। **7 :** या'नी बदकारों से निकाह़ करना **8 :** इब्तिदाए इस्लाम में ज़ानिया से निकाह़ करना ह़राम था बा'द में आयत وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ से मन्सूख़ हो गया। **9 :** इस आयत से चन्द मसाइल साबित हुए। **मस्अला 1 :** जो शख़्स किसी पारसा मर्द या औ़रत को ज़िना की तोहमत लगाए और इस पर चार मुआ़यना के गवाह पेश न कर सके तो उस पर ह़द वाजिब हो जाती है अस्सी कोड़े। आयत में "मुह़सनात" लफ़्ज़ ख़ुसूसे वाक़िआ़ के सबब से वारिद हुवा या इस लिये कि औ़रतों को तोहमत लगाना कसीरुल वुक़ूअ़ है। **मस्अला 2 :** और ऐसे लोग जो ज़िना की तोहमत में सज़ायाब हों और उन पर ह़द जारी हो चुकी हो मर्दूदुश्शहादह हो जाते हैं, कभी उन की गवाही मक़्बूल नहीं होती। पारसा से मुराद वोह हैं जो मुसल्मान मुकल्लफ़, आज़ाद और ज़िना से पाक हों। **मस्अला 3 :** ज़िना की शहादत का निसाब चार गवाह हैं। **मस्अला 4 :** ह़द्दे क़ज़्फ़ मुत़ालबे पर मश्रूत़ है, जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह मुत़ालबा न करे तो क़ाज़ी पर ह़द क़ाइम करना लाज़िम नहीं। **मस्अला 5 :** मुत़ालबे का ह़क़ उसी को है जिस पर तोहमत लगाई गई है अगर वोह ज़िन्दा हो, और अगर मर गया हो तो उस के बेटे पोते को भी है। **मस्अला 6 :** ग़ुलाम अपने मौला पर और बेटा बाप पर क़ज़्फ़ या'नी अपनी मां पर ज़िना की तोहमत लगाने का दा'वा नहीं कर सकता। **मस्अला 7 :** क़ज़्फ़ के अल्फ़ाज़ येह हैं कि वोह सराह़तन किसी को या ज़ानी कहे या येह कहे कि तू अपने बाप से नहीं है या उस के बाप का नाम ले कर कहे कि तू फ़ुलां का बेटा नहीं है या उस को ज़ानिया का बेटा कह कर पुकारे और हो उस की मां पारसा तो ऐसा शख़्स क़ाज़िफ़ हो जाएगा और उस पर तोहमत की ह़द आएगी। **मस्अला 8 :** अगर ग़ैर मुह़सन को ज़िना की तोहमत लगाई मसलन किसी ग़ुलाम को या काफ़िर को या ऐसे शख़्स को जिस का कभी ज़िना करना साबित हो तो उस पर ह़द्दे क़ज़्फ़ क़ाइम न होगी, बल्कि उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी और येह ता'ज़ीर तीन से उन्तालीस तक ह़स्बे तज्वीज़े ह़ाकिमे शरअ़ कोड़े लगाना है। इसी त़रह़ अगर किसी शख़्स ने ज़िना के सिवा और किसी फ़ुजूर की तोहमत लगाई और पारसा मुसल्मान को ऐ फ़ासिक़, ऐ काफ़िर, ऐ ख़बीस, ऐ चोर, ऐ बदकार, ऐ मुख़न्नस, ऐ बद दियानत, ऐ लूत़ी, ऐ ज़िन्दीक़, ऐ दय्यूस, ऐ शराबी, ऐ सूद ख़्वार, ऐ बदकार औ़रत के बच्चे, ऐ ह़राम ज़ादे, इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ कहे तो भी उस पर ता'ज़ीर वाजिब होगी। **मस्अला 9 :** इमाम या'नी ह़ाकिमे शरअ़ को और उस शख़्स को जिसे तोहमत लगाई गई हो सुबूत से क़ब्ल मुआ़फ़ करने का ह़क़ है। **मस्अला 10 :** अगर तोहमत लगाने वाला आज़ाद न हो बल्कि ग़ुलाम हो तो उस को चालीस कोड़े लगाए जाएंगे। **मस्अला 11 :** तोहमत लगाने के जुर्म में जिस को ह़द लगाई गई हो उस की गवाही किसी मुआ़मले में मो'तबर नहीं, चाहे वोह तौबा करे। लेकिन रमज़ान का चांद देखने के बाब में तौबा करने और आ़दिल होने की सूरत में उस का क़ौल क़बूल कर लिया जाएगा क्यूं कि येह दर ह़क़ीक़त शहादत नहीं है इसी लिये इस में लफ़्ज़े शहादत और निसाबे शहादत भी शर्त़ नहीं। **10 :** अपने अह़वाल व अफ़्आ़ल को दुरुस्त कर लें **11 :** ज़िना का।

www.dawateislami.net

اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۶﴾ وَ الْخَامِسَةُ

गवाही येह है कि चार बार गवाही दे **अल्लाह** के नाम से कि वोह सच्चा है[12] और पांचवीं

اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَیْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۷﴾ وَ یَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ

येह कि **अल्लाह** की ला'नत हो उस पर अगर झूटा हो और औ़रत से यूं सज़ा टल जाएगी

اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِیْنَ ۙ﴿۸﴾ وَ الْخَامِسَةَ

कि वोह **अल्लाह** का नाम ले कर चार बार गवाही दे कि मर्द झूटा है[13] और पांचवीं

اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَیْهَاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿۹﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

यूं कि औ़रत पर ग़ज़ब **अल्लाह** का अगर मर्द सच्चा हो[14] और अगर **अल्लाह** का फ़ज़्ल

عَلَیْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰﴾ع اِنَّ الَّذِیْنَ جَآءُوْ ع ۸

और उस की रह़मत तुम पर न होती और येह कि **अल्लाह** तौबा क़बूल फ़रमाता ह़िक्मत वाला है तो तुम्हारा पर्दा खोल देता बेशक वोह कि येह बड़ा

بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ

बोहतान लाए हैं तुम्हीं में की एक जमाअ़त है[15] उसे अपने लिये बुरा न समझो बल्कि वोह तुम्हारे लिये बेहतर है[16]

12 : औ़रत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में। **13 :** उस पर ज़िना की तोहमत लगाने में। **14 :** इस को "लिआ़न" कहते हैं। **मस्अला :** जब मर्द अपनी बीबी पर ज़िना की तोहमत लगाए तो अगर मर्द व औ़रत दोनों शहादत के अहल हों और औ़रत इस पर मुत़ालबा करे तो मर्द पर लिआ़न वाजिब हो जाता है। अगर वोह लिआ़न से इन्कार करे तो उस को उस वक़्त तक क़ैद रखा जाएगा जब तक वोह लिआ़न करे या अपने झूट का मुक़िर हो। अगर झूट का इक़रार करे तो उस को ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी जिस का बयान ऊपर गुज़र चुका है। और अगर लिआ़न करना चाहे तो उस को चार मरतबा **अल्लाह** की क़सम के साथ कहना होगा कि वोह इस औ़रत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है और पांचवीं मरतबा येह कहना होगा कि **अल्लाह** की ला'नत मुझ पर अगर मैं येह इल्ज़ाम लगाने में झूटा होउं। इतना करने के बा'द मर्द पर से ह़द्दे क़ज़्फ़ साक़ित़ हो जाएगी और औ़रत पर लिआ़न वाजिब होगा, इन्कार करेगी तो क़ैद की जाएगी यहां तक कि लिआ़न मन्ज़ूर करे या शोहर के इल्ज़ाम लगाने की तस्दीक़ करे। अगर तस्दीक़ की तो औ़रत पर ज़िना की ह़द लगाई जाएगी और अगर लिआ़न करना चाहे तो इस को चार मरतबा **अल्लाह** की क़सम के साथ कहना होगा कि मर्द इस पर ज़िना की तोहमत लगाने में झूटा है और पांचवीं मरतबा येह कहना होगा कि अगर मर्द इस इल्ज़ाम लगाने में सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो। इतना कहने के बा'द औ़रत से ज़िना की ह़द साक़ित़ हो जाएगी और लिआ़न के बा'द क़ाज़ी के तफ़्रीक़ करने से फ़ुरक़त वाक़ेअ़ होगी बिग़ैर इस के नहीं। और येह तफ़्रीक़ त़लाक़े बाइना होगी। और अगर मर्द अहले शहादत में से न हो मसलन ग़ुलाम हो या काफ़िर हो या उस पर क़ज़्फ़ की ह़द लग चुकी हो तो लिआ़न न होगा और तोहमत लगाने से मर्द पर ह़द्दे क़ज़्फ़ लगाई जाएगी। और अगर मर्द अहले शहादत में से हो और औ़रत में येह अहलिय्यत न हो इस त़रह़ कि वोह बांदी हो या काफ़िरा हो या उस पर क़ज़्फ़ की ह़द लग चुकी हो या बच्ची हो या मजनूना हो या ज़ानिया हो इस सूरत में न मर्द पर ह़द होगी और न लिआ़न। **शाने नुज़ूल :** येह आयत एक सह़ाबी के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया था कि अगर आदमी अपनी औ़रत को ज़िना में मुब्तला देखे तो क्या करे न उस वक़्त गवाहों के तलाश करने की फ़ुरसत है और न बिग़ैर गवाही के वोह येह बात कह सकता है क्यूं कि इसे ह़द्दे क़ज़्फ़ का अन्देशा है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और लिआ़न का हुक्म दिया गया। **15 :** बड़े बोहतान से मुराद ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पर तोहमत लगाना है। 5 सिने हिजरी ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लिक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं, वहां हार आप का टूट गया, उस की तलाश में मसरूफ़ हो गईं। इधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आप का मह़मल (कजावा) शरीफ़ ऊंट पर कस दिया और उन्हें येही ख़याल रहा कि उम्मुल मुअमिनीन इस में हैं। क़ाफ़िला चल दिया आप आ कर क़ाफ़िले की जगह बैठ

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِیْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ

उन में हर शख़्स के लिये वोह गुनाह है जो उस ने कमाया[17] और उन में वोह जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया[18]

لَهٗ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتُ

उस के लिये बड़ा अ़ज़ाब है[19] क्यूं न हुवा जब तुम ने उसे सुना था कि मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों ने

بِاَنْفُسِهِمْ خَیْرًا ۙ وَّ قَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْ لَا جَآءُوْ عَلَیْهِ

अपनों पर नेक गुमान किया होता[20] और कहते येह खुला बोहतान है[21] इस पर चार गवाह

بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ یَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓىٕكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ

क्यूं न लाए तो जब गवाह न लाए तो वोही **अल्लाह** के नज़्दीक

गईं और आप ने ख़याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा। क़ाफ़िले के पीछे पड़ी गिरी चीज़ उठाने के लिये एक साहिब रहा करते थे, उस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सफ़्वान इस काम पर थे। जब वोह आए और उन्हों ने आप को देखा तो बुलन्द आवाज़ से "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ" पुकारा। आप ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई आप उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंचीं। मुनाफ़िक़ीने सियाह बातिन ने अवहामे फ़ासिदा फैलाए और आप की शान में बदगोई शुरूअ़ की। बा'ज़ मुसल्मान भी उन के फ़रेब में आ गए और उन की ज़बान से भी कोई कलिमए बेजा सरज़द हुवा। उम्मुल मुअमिनीन बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं, उस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ़ न हुई कि उन की निस्बत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मिस्त़ह़ से उन्हें येह ख़बर मा'लूम हुई और इस से आप का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस त़रह़ रोईं कि आप का आंसू न थमता था और न एक लम्ह़े के लिये नींद आती थी। इस ह़ाल में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर वह्य नाज़िल हुई और ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त़हारत में येह आयतें उतरीं और आप का शरफ़ो मर्तबा **अल्लाह** तआ़ला ने इतना बढ़ाया कि क़ुरआन की बहुत सी आयात में आप की त़हारत व फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई। इस दौरान में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था : मुझे अपने अहल की पाकी व ख़ूबी बिल यक़ीन मा'लूम है तो जिस शख़्स ने इन के ह़क़ में बदगोई की है उस की त़रफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़िरत पेश कर सकता है ? ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन बिल यक़ीन झूटे हैं उम्मुल मुअमिनीन बिल यक़ीन पाक हैं **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के जिस्मे पाक को मख्खी के बैठने से मह़फ़ूज़ रखा कि वोह नजासतों पर बैठती है, कैसे हो सकता है कि वोह आप को बद औ़रत की सोह़बत से मह़फ़ूज़ न रखे ! ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी इस त़रह़ आप की त़हारत बयान की और फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया ताकि इस साए पर किसी का क़दम न पड़े तो जो परवर्दगार आप के साए को मह़फ़ूज़ रखता है किस त़रह़ मुम्किन है कि वोह आप के अहल को मह़फ़ूज़ न फ़रमाए। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि एक जूं का ख़ून लगने से परवर्दगारे आ़लम ने आप को ना'लैन उतार देने का हुक्म दिया, जो परवर्दगार आप की ना'ल शरीफ़ की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फ़रमाए मुम्किन नहीं कि वोह आप के अहल की आलूदगी गवारा करे। इस त़रह़ बहुत से सह़ाबा और बहुत सी सह़ाबिय्यात ने क़समें खाईं, आयत नाज़िल होने से क़ब्ल ही ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की त़रफ़ से क़ुलूब मुत़्मइन थे, आयत के नुज़ूल ने उन का इ़ज़्ज़ो शरफ़ और ज़ियादा कर दिया। तो बदगोयों की बदगोई **अल्लाह** और उस के रसूल और सह़ाबए किबार के नज़्दीक बात़िल है और बदगोई करने वालों के लिये सख़्त तरीन मुसीबत है। **16 :** कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला तुम्हें इस पर जज़ा देगा और ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन की शान और उन की बराअत ज़ाहिर फ़रमाएगा। चुनान्चे इस बराअत में उस ने अठ्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमाईं। **17 :** या'नी ब क़दर उस के अ़मल के कि किसी ने तूफ़ान उठाया किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़बानी मुवाफ़क़त की कोई हंस दिया किसी ने ख़ामोशी के साथ सुन ही लिया जिस ने जो किया उस का बदला पाएगा। **18 :** कि अपने दिल से येह तूफ़ान घड़ा और इस को मश्हूर करता फिरा और वोह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ है। **19 :** आख़िरत में। मरवी है कि उन बोहतान लगाने वालों पर ब हुक्मे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़द क़ाइम की गई और अस्सी अस्सी कोड़े लगाए गए। **20 :** क्यूं कि मुसल्मान को येही हुक्म है कि मुसल्मान के साथ नेक गुमान करे और बद गुमानी मम्नूअ़ है। बा'ज़े गुमराह बेबाक येह कह गुज़रते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰه इस मुआ़मले में बद गुमानी हो गई थी। वोह मुफ़्तरी कज़्ज़ाब हैं और शाने रिसालत में ऐसा कलिमा कहते हैं जो मोमिनीन के ह़क़ में भी लाइक़ नहीं है। **अल्लाह** तआ़ला मोमिनीन से फ़रमाता है कि तुम ने नेक गुमान क्यूं न किया, तो कैसे मुम्किन था कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बद गुमानी करते। और हु़ज़ूर की निस्बत बद गुमानी का लफ़्ज़ कहना बड़ी सियाह बात़िनी है ख़ास कर ऐसी ह़ालत में जब कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि हु़ज़ूर ने ब क़सम फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि मेरे अहल पाक हैं जैसा कि ऊपर मज़्कूर हो चुका। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मान पर बद

www.dawateislami.net

الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

झूटे हैं और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर दुन्या और आख़िरत में न होती[22]

لَمَسَّكُمْ فِيْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۚ﴿۱۴﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ

तो जिस चरचे में तुम पड़े उस पर तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब पहुंचता जब तुम ऐसी बात अपनी ज़बानों पर एक दूसरे से सुन कर लाते थे

وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ

और अपने मुंह से वोह निकालते थे जिस का तुम्हें इल्म नहीं और उसे सह्ल समझते थे[23] और वोह

عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ وَلَوْلَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी बात है[24] और क्यूं न हुवा जब तुम ने सुना था कहा होता कि हमें नहीं पहुंचता कि ऐसी बात

بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا

कहें[25] इलाही पाकी है तुझे[26] येह बड़ा बोहतान है अल्लाह तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि अब कभी

لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ﴿۱۷﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ

ऐसा न कहना अगर ईमान रखते हो और अल्लाह तुम्हारे लिये आयतें साफ़ बयान फ़रमाता है और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ

इल्मो ह़िक्मत वाला है वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा

اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या[27] और आख़िरत में[28] और अल्लाह जानता है[29] और तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ

नहीं जानते और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर न होती और येह कि अल्लाह तुम पर निहायत मेह्रबान

गुमानी करना ना जाइज़ है और जब किसी नेक शख़्स पर तोहमत लगाई जाए तो बिग़ैर सुबूत मुसल्मान को इस की मुवाफ़क़त और तस्दीक़ करना रवा नहीं। **21 :** बिल्कुल झूट है बे ह़क़ीक़त है। **22 :** और तुम पर फ़ज़्लो करम मन्ज़ूर न होता, जिस में से तौबा के लिये मोहलत देना भी है और आख़िरत में अ़फ़्वो मग़्फ़िरत फ़रमाना भी। **23 :** और ख़याल करते थे कि इस में बड़ा गुनाह नहीं **24 :** जुर्मे अ़ज़ीम है। **25 :** येह हमारे लिये रवा नहीं क्यूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। **26 :** इस से कि तेरे नबी की ह़रम को फ़ुजूर की आलूदगी पहुंचे। **मस्अला :** येह मुम्किन ही नहीं कि किसी नबी की बीबी बदकार हो सके अगर्चे उस का मुब्तलाए कुफ़्र होना मुम्किन है क्यूं कि अम्बिया कुफ़्फ़ार की त़रफ़ मब्ऊ़स होते हैं तो ज़रूरी है कि जो चीज़ कुफ़्फ़ार के नज़्दीक भी क़ाबिले नफ़्रत हो उस से वोह पाक हों और ज़ाहिर है कि औ़रत की बदकारी उन के नज़्दीक क़ाबिले नफ़्रत है। (کبیر وغیرہ) **27 :** या'नी इस जहान में, और वोह ह़द क़ाइम करना है चुनान्चे इब्ने उबय और ह़स्सान और मिस्त़ह़ के ह़द लगाई गई। (مدارک) **28 :** दोज़ख़। अगर बे तौबा मर जाएं। **29 :** दिलों के राज़ और बात़िन के अह़वाल।

ع ٨/٢ النصف

رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ

मेहर वाला है तो तुम इस का मज़ा चखते[30] ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमों पर न चलो और जो

يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ

शैतान के क़दमों पर चले तो वोह तो बे ह़याई और बुरी ही बात बताएगा[31] और अगर **अल्लाह** का

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ

फ़ज़्ल और उस की रह़मत तुम पर न होती तो तुम में कोई भी कभी सुथरा न हो सकता[32] हां **अल्लाह** सुथरा कर देता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ

जिसे चाहे[33] और **अल्लाह** सुनता जानता है और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले[34] और

السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ

गुन्जाइश वाले हैं[35] क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को

اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

देने की और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह**

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ

बख़्शने वाला मेहरबान है[36] बेशक वोह जो ऐ़ब लगाते हैं अन्जान[37] पारसा ईमान वालियों को[38]

لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ ۙ يَّوْمَ تَشْهَدُ

उन पर ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और उन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है[39] जिस दिन[40] उन पर

30 : और अ़ज़ाबे इलाही तुम्हें मोहलत न देता। **31 :** उस के वस्वसों में न पड़ो और बोहतान उठाने वालों की बातों पर कान न लगाओ। **32 :** और **अल्लाह** तआ़ला उस को तौबा व हु़स्ने अ़मल की तौफ़ीक़ न देता और अ़फ़्वो मग़्फ़िरत न फ़रमाता। **33 :** तौबा क़बूल फ़रमा कर। **34 :** और मन्ज़िलत वाले हैं दीन में। **35 :** सरवत व माल में। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई। आप ने क़सम खाई थी कि मिस्त़ह़ के साथ सुलूक न करेंगे और वोह आप की ख़ाला के बेटे थे, नादार थे मुहाजिर थे बद्री थे। आप ही उन का ख़र्च उठाते थे, मगर चूंकि उम्मुल मुअमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ उन्हों ने मुवाफ़क़त की थी इस लिये आप ने येह क़सम खाई, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **36 :** जब येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने पढ़ी तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** मेरी मग़्फ़िरत करे और मैं मिस्त़ह़ के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी मौक़ूफ़ न करूंगा। चुनान्चे आप ने उस को जारी फ़रमा दिया। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि जो शख़्स किसी काम पर क़सम खाए फिर मा'लूम हो कि उस का करना ही बेहतर है तो चाहिये कि उस काम को करे और क़सम का कफ़्फ़ारा दे। ह़दीसे सह़ीह़ में येही वारिद है। **मस्अला :** इस आयत से ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत साबित हुई, इस से आप की उ़लूए शानो मर्तबत ज़ाहिर होती है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को उलुल फ़ज़्ल फ़रमाया और **37 :** औ़रतों को जो बदकारी और फ़ुजूर को जानती भी नहीं और बुरा ख़याल उन के दिल में भी नहीं गुज़रता और **38 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात के औसाफ़ हैं। एक क़ौल येह है कि इस से तमाम ईमानदार पारसा औ़रतें मुराद हैं, इन के ऐ़ब लगाने वालों पर **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ يَوْمَئِذٍ

गवाही देंगी उन की ज़बानें[41] और उन के हाथ और उन के पाउं जो कुछ करते थे उस दिन

يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿۲۵﴾

अल्लाह उन्हें उन की सच्ची सज़ा पूरी देगा[42] और जान लेंगे कि अल्लाह ही सरीह़ ह़क़ है[43]

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَ الْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ

गन्दियां गन्दों के लिये और गन्दे गन्दियों के लिये[44] और सुथरियां सुथरों के लिये और

الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓىِٕكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

सुथरे सुथरियों के लिये वोह[45] पाक हैं उन बातों से जो येह[46] कह रहे हैं उन के लिये बख़्शिश

وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۶﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ ع ۳ ۶ ۹

और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है[47] ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ

حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ

जब तक इजाज़त न ले लो[48] और उन के साकिनों पर सलाम न कर लो[49] येह तुम्हारे लिये बेहतर है कि तुम

तआ़ला ला'नत फ़रमाता है। **39 :** येह अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में है। (خازن) **40 :** या'नी रोज़े क़ियामत **41 :** ज़बानों का गवाही देना तो उन के मूंहों पर मोहरें लगाए जाने से क़ब्ल होगा और इस के बा'द मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी जिस से ज़बानें बन्द हो जाएंगी और आ'ज़ा बोलने लगेंगे और दुन्या में जो अ़मल किये थे उन की ख़बर देंगे जैसे कि आगे इर्शाद है। **42 :** जिस के वोह मुस्तह़िक़ हैं। **43 :** या'नी मौजूद ज़ाहिर है, उसी की क़ुदरत से हर चीज़ का वुजूद है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार दुन्या में अल्लाह तआ़ला के वा'दों में शक करते थे अल्लाह तआ़ला आख़िरत में उन्हें उन के आ'माल की जज़ा दे कर उन वा'दों का ह़क़ होना ज़ाहिर फ़रमा देगा। **फ़ाएदा :** क़ुरआने करीम में किसी गुनाह पर ऐसी तग़्लीज़ व तश्दीद और तक्रार व ताकीद नहीं फ़रमाई गई जैसी कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ऊपर बोहतान बांधने पर फ़रमाई गई। इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रिफ़्अ़ते मन्ज़िलत ज़ाहिर होती है। **44 :** या'नी ख़बीस के लिये ख़बीस लाइक़ है, ख़बीसा औ़रत ख़बीस मर्द के लिये और ख़बीस मर्द ख़बीसा औ़रत के लिये और ख़बीस आदमी ख़बीस बातों के दरपै होते हैं और ख़बीस बातें ख़बीस आदमी का वत़ीरा होती हैं। **45 :** या'नी पाक मर्द और औ़रतें जिन में से ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और सफ़्वान हैं। **46 :** तोहमत लगाने वाले ख़बीस **47 :** या'नी सुथरों और सुथरियों के लिये जन्नत में। इस आयत से ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का कमाले फ़ज़्लो शरफ़ साबित हुवा कि वोह त़य्यिबा और पाक पैदा की गईं और क़ुरआने करीम में उन की पाकी का बयान फ़रमाया गया और उन्हें मग़्फ़िरत और रिज़्क़े करीम का वा'दा दिया गया। ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अल्लाह ने बहुत ख़साइस अ़त़ा फ़रमाए जो आप के लिये क़ाबिले फ़ख़्र हैं, उन में से बा'ज़ येह हैं कि जिब्रीले अमीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ह़ुज़ूर में एक ह़रीर (रेशमी कपड़े) पर आप की तस्वीर लाए और अ़र्ज़ किया कि येह आप की ज़ौजा हैं और येह कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आप के सिवा किसी कुंवारी से निकाह़ न फ़रमाया और येह कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वफ़ात आप की गोद में और आप की नौबत के दिन हुई और आप ही का ह़ुज्रए शरीफ़ा सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का आराम गाह और आप का रौज़ए त़ाहिरा हुवा और येह कि बा'ज़ अवक़ात ऐसी ह़ालत में ह़ुज़ूर पर वह़्य नाज़िल हुई कि ह़ज़रते सिद्दीक़ा आप के साथ आप के लिह़ाफ़ में होतीं और येह कि आप ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुख़्तर हैं और येह कि आप पाक पैदा की गईं और आप से मग़्फ़िरत व रिज़्क़े करीम का वा'दा फ़रमाया गया। **48 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि ग़ैर के घर में बे इजाज़त दाख़िल न हो और इजाज़त लेने का त़रीक़ा येह भी है कि बुलन्द आवाज़ से "سُبْحٰنَ اللّٰه" या

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَاۤ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ

ध्यान करो फिर अगर उन में किसी को न पाओ[50] जब भी बे मालिकों की इजाज़त के उन में न

لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

जाओ[51] और अगर तुम से कहा जाए वापस जाओ तो वापस हो[52] येह तुम्हारे लिये बहुत सुथरा है **अल्लाह** तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ

कामों को जानता है इस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन घरों में जाओ जो ख़ास किसी की सुकूनत

مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾

के नहीं[53] और उन के बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और **अल्लाह** जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى

मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें[54] और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें[55] येह उन के लिये बहुत

لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ

सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और मुसल्मान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ

"اَلْحَمْدُ لِلّٰه" या "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहे या खन्कारे जिस से मकान वालों को मा'लूम हो कि कोई आना चाहता है या येह कहे कि क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है। ग़ैर के घर से वोह घर मुराद है जिस में ग़ैर सुकूनत रखता हो ख़्वाह उस का मालिक हो या न हो। **49 मस्अला :** ग़ैर के घर जाने वाले की अगर साहिबे मकान से पहले ही मुलाक़ात हो जाए तो अव्वल सलाम करे फिर इजाज़त चाहे और अगर वोह मकान के अन्दर हो तो सलाम के साथ इजाज़त चाहे इस तरह कि कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" क्या मुझे अन्दर आने की इजाज़त है? ह़दीस शरीफ़ में है कि सलाम को कलाम पर मुक़द्दम करो। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह की क़िराअत भी इसी पर दलालत करती है। उन की क़िराअत यूं है : "حَتّٰى تُسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَهْلِهَا وَتَسْتَاْذِنُوْا" और येह भी कहा गया है कि पहले इजाज़त चाहे फिर सलाम करे। (مدارک، کشاف، احمدی) **मस्अला :** अगर दरवाज़े के सामने खड़े होने में बे पर्दगी का अन्देशा हो तो दाईं या बाईं जानिब खड़े हो कर इजाज़त त़लब करे। **मस्अला :** ह़दीस शरीफ़ में है अगर घर में मां हो जब भी इजाज़त त़लब करे। (موطا امام مالک) **50 :** या'नी मकान में इजाज़त देने वाला मौजूद न हो **51 :** क्यूं कि मिल्के ग़ैर में तसर्रुफ़ करने के लिये उस की रिज़ा ज़रूरी है। **52 :** और इजाज़त त़लब करने में इसरार व इल्ह़ाह़ (तकरार) न करो। **मस्अला :** किसी का दरवाज़ा बहुत ज़ोर से खटखटाना और शदीद आवाज़ से चीख़ना ख़ास कर उ़लमा और बुज़ुर्गों के दरवाज़ों पर ऐसा करना उन को ज़ोर से पुकारना मक्रूह व ख़िलाफ़े अदब है। **53 :** मिस्ल सराए और मुसाफ़िर ख़ाने वग़ैरा के कि इस में जाने के लिये इजाज़त ह़ासिल करने की ह़ाजत नहीं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन अस्ह़ाब के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने आयते इस्तीज़ान या'नी ऊपर वाली आयत नाज़िल होने के बा'द दरयाफ़्त किया था कि मक्कए मुकर्रमा और मदीनए त़य्यिबा के दरमियान और शाम की राह में जो मुसाफ़िर ख़ाने बने हुए हैं क्या उन में दाख़िल होने के लिये भी इजाज़त लेना ज़रूरी है। **54 :** और जिस चीज़ का देखना जाइज़ नहीं उस पर नज़र न डालें। **मसाइल :** मर्द का बदन ज़ेरे नाफ़ से घुटने के नीचे तक औ़रत (छुपाने की जगह) है इस का देखना जाइज़ नहीं और औ़रतों में से अपने मह़ारिम और ग़ैर की बांदी का भी येही हुक्म है मगर इतना और है कि उन के पेट और पीठ का देखना भी जाइज़ नहीं और हु़र्रा अज्नबिय्या के तमाम बदन का देखना मम्नूअ़ है "اِنْ لَّمْ يَاْمَنْ مِّنَ الشَّهْوَةِ، وَاِنْ اٰمِنَ مِنْهَا فَالْمَمْنُوْعُ النَّظَرُ اِلٰى مَاسِوَى الْوَجْهِ وَالْكَفِّ وَالْقَدَمِ، وَمَنْ يَّاْمَنْ فَاِنَّ الزَّمَانَ زَمَانُ الْفَسَادِ فَلَا يَحِلُّ النَّظَرُ اِلَى الْحُرَّةِ الْاَجْنَبِيَّةِ مُطْلَقًا مِّنْ غَيْرِ ضَرُوْرَةٍ" मगर ब ह़ालते ज़रूरत क़ाज़ी व गवाह को और उस औ़रत से निकाह़ की ख़्वाहिश रखने वाले को चेहरा देखना जाइज़ है और अगर किसी औ़रत के ज़रीए से ह़ाल मा'लूम कर सकता हो तो न देखे और त़बीब को मौज़ए मरज़ का ब क़दरे ज़रूरत देखना जाइज़ है। **मस्अला :** अम्रद लड़के की त़रफ़ भी शह्वत से देखना ह़राम है। (مدارک و احمدی) **55 :** और ज़िना व ह़राम से बचें या येह मा'ना हैं कि अपनी शर्मगाहों और उन के लवाहिक़ या'नी तमाम बदने औ़रत को छुपाएं और पर्दे का एहतिमाम रखें।

www.dawateislami.net

اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ

नीची रखें[56] और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं[57] मगर जितना खुद ही ज़ाहिर

مِنْهَا وَ لْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا

है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर

لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآىٕهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآىٕهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ

अपने शोहरों पर या अपने बाप[58] या शोहरों के बाप[59] या अपने बेटे[60] या शोहरों

بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِیْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِیْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآىٕهِنَّ

के बेटे[61] या अपने भाई या अपने भतीजे या अपने भान्जे[62] या अपने दीन की औ़रतें

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِیْنَ غَیْرِ اُولِی الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ

या अपनी कनीज़ें जो अपने हाथ की मिल्क हों[63] या नोकर बशर्ते कि शहवत वाले मर्द न हों[64]

اَوِ الطِّفْلِ الَّذِیْنَ لَمْ یَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَ لَا یَضْرِبْنَ

या वोह बच्चे जिन्हें औ़रतों की शर्म की चीज़ों की ख़बर नहीं[65] और ज़मीन पर

بِاَرْجُلِهِنَّ لِیُعْلَمَ مَا یُخْفِیْنَ مِنْ زِیْنَتِهِنَّ ؕ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا

पाउं ज़ोर से न रखें कि जाना जाए उन का छुपा हुवा सिंगार[66] और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो

---

56 : और ग़ैर मर्दों को न देखें। ह़दीस शरीफ़ में है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से बा'ज़ उम्महातुल मुअमिनीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में थीं, उसी वक़्त इब्ने उम्मे मक्तूम आए, हुज़ूर ने अज़्वाज को पर्दे का हुक्म फ़रमाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह तो नाबीना हैं। फ़रमाया : तुम तो नाबीना नहीं हो। (ترمذی وابوداود) इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि औ़रतों को भी ना मह़रम का देखना और उस के सामने होना जाइज़ नहीं। 57 : अज़्हर (ज़ियादा ज़ाहिर बात) येह है कि येह हुक्म नमाज़ का है, न नज़र का, क्यूं कि हु़र्रा का तमाम बदन औ़रत है, शोहर और मह़रम के सिवा और किसी के लिये इस के किसी ह़िस्से का देखना बे ज़रूरत जाइज़ नहीं और मुआ़लजा वग़ैरा की ज़रूरत से क़दरे ज़रूरत जाइज़ है। (تفسیر احمدی) 58 : और इन्हीं के हुक्म में दादा परदादा वग़ैरा तमाम उसूल। 59 : कि वोह भी मह़रम हो जाते हैं। 60 : और इन्हीं के हुक्म में है इन की औलाद। 61 : कि वोह भी मह़रम हो गए। 62 : और इन्हीं के हुक्म में हैं चचा मामूं वग़ैरा तमाम मह़ारिम। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ को लिखा था कि कुफ़्फ़ार अहले किताब की औ़रतों को मुसल्मान औ़रतों के साथ ह़म्माम में दाख़िल होने से मन्अ़ करें। इस से मा'लूम हुवा कि मुस्लिमा औ़रत को काफ़िरा औ़रत के सामने अपना बदन खोलना जाइज़ नहीं। **मस्अला :** औ़रत अपने ग़ुलाम से भी मिस्ल अज्नबी के पर्दा करे। (مدارک وغیرہ) 63 : इन पर अपना सिंगार ज़ाहिर करना मम्नूअ़ नहीं और ग़ुलाम इन के हुक्म में नहीं, इस को अपनी मालिका के मवाज़ेए ज़ीनत को देखना जाइज़ नहीं। 64 : मसलन ऐसे बूढ़े हों जिन्हें अस्लन शह्वत बाक़ी नहीं रही हो और हों सालेह़। **मस्अला :** अइम्मए ह़नफ़िय्या के नज़्दीक ख़सी और इन्नीन ह़ुरमते नज़र में अज्नबी का हुक्म रखते हैं। **मस्अला :** इसी त़रह़ क़बीहुल अफ़्आ़ल मुख़न्नस से भी पर्दा किया जाए जैसा कि ह़दीसे मुस्लिम से साबित है। 65 : वोह अभी नादान ना बालिग़ हैं। 66 : या'नी औ़रतें घर के अन्दर चलने फिरने में भी पाउं इस क़दर आहिस्ता रखें कि उन के ज़ेवर की झन्कार न सुनी जाए। **मस्अला :** इसी लिये चाहिये कि औ़रतें बाजेदार झांझन न पहनें। ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला उस क़ौम की दुआ़ नहीं क़बूल फ़रमाता जिन की औ़रतें झांझन पहनती हों। इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ का सबब है तो ख़ास औ़रत की आवाज़ और उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी, पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई तबाही का सबब है (**अल्लाह** की पनाह)। (تفسیر احمدی وغیرہ)

www.dawateislami.net

أَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ

ऐ मुसल्मानो सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ और निकाह़ कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह़ हों[67] और

الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ

अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का अगर वोह फ़क़ीर हों तो **अल्लाह** उन्हें ग़नी कर देगा

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۲﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ

अपने फ़ज़्ल के सबब[68] और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है चाहिये कि बचे रहें[69] वोह जो निकाह़ का मक़्दूर

نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا

नहीं रखते[70] यहां तक कि **अल्लाह** उन्हें मक़्दूर वाला कर दे अपने फ़ज़्ल से[71] और तुम्हारे हाथ की मिल्क बांदी ग़ुलामों में से

مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّ اٰتُوْهُمْ مِّنْ

जो येह चाहें कि कुछ माल कमाने की शर्त़ पर उन्हें आज़ादी लिख दो तो लिख दो[72] अगर उन में कुछ भलाई जानो[73] और इस पर उन की मदद करो

مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ لَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ

अल्लाह के माल से जो तुम को दिया[74] और मजबूर न करो अपनी कनीज़ों को बदकारी पर जब कि वोह

تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ مَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ

बचना चाहें ताकि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का कुछ माल चाहो[75] और जो उन्हें मजबूर करेगा तो बेशक **अल्लाह**

67 : ख़्वाह मर्द या औ़रत, कुंवारे या ग़ैर कुंवारे। **68 :** इस ग़ना से मुराद या क़नाअ़त है कि वोह बेहतरीन ग़ना है जो क़ानेअ़ (क़नाअ़त करने वाले) को तरद्दुद से बे नियाज़ कर देता है। या किफ़ायत कि एक का खाना दो के लिये काफ़ी हो जाए जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा है या ज़ौज व ज़ौजा के दो रिज़्क़ों का जम्अ़ हो जाना या फ़राख़ी ब बरकते निकाह़ जैसा कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है। **69 :** ह़राम कारी से **70 :** जिन्हें महर व नफ़क़ा मुयस्सर नहीं। **71 :** और महर व नफ़क़ा अदा करने के क़ाबिल हो जाएं। ह़दीस शरीफ़ में है सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : जो निकाह़ की क़ुदरत रखे वोह निकाह़ करे कि निकाह़ पारसाई व पाकबाज़ी का मुईन (मददगार) है और जिसे निकाह़ की क़ुदरत न हो वोह रोज़े रखे कि येह शह्वतों के तोड़ने वाले हैं। **72 :** कि वोह इस क़दर माल अदा कर के आज़ाद हो जाएं, और इस त़रह़ की आज़ादी को किताबत कहते हैं और आयत में इस का अम्र इस्तिह़बाब के लिये है और येह इस्तिह़बाब उस शर्त़ के साथ मश्रूत़ है जो इस के बा'द ही आयत में मज़्कूर है। **शाने नुज़ूल :** हुवैत़िब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा के ग़ुलाम सुबैह़ ने अपने मौला से किताबत की दरख़्वास्त की, मौला ने इन्कार किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो हुवैत़िब ने उस को सो दीनार पर मुकातब कर दिया और उन में से बीस उस को बख़्श दिये, बाक़ी उस ने अदा कर दिये। **73 :** भलाई से मुराद अमानत व दियानत और कमाई पर क़ुदरत रखना है कि वोह ह़लाल रोज़ी से माल ह़ासिल कर के आज़ाद हो सके और मौला को माल दे कर आज़ादी ह़ासिल करने के लिये भीक न मांगता फिरे। इसी लिये ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने ग़ुलाम को मुकातब करने से इन्कार फ़रमा दिया जो सिवाए भीक के कोई ज़रीआ़ कस्ब का न रखता था। **74 :** मुसल्मानों को इर्शाद है कि वोह मुकातब ग़ुलामों को ज़कात वग़ैरा दे कर मदद करें जिस से वोह बदले किताबत दे कर अपनी गरदन छुड़ा सकें और आज़ाद हो सकें। **75 :** या'नी तुमए माल में अन्धे हो कर कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर न करें। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो माल ह़ासिल करने के लिये अपनी कनीज़ों को बदकारी पर मजबूर करता था, उन कनीज़ों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से इस की शिकायत की, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई।

بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ

बा'द इस के कि वोह मजबूरी ही की ह़ालत पर रहें बख़्शने वाला मेहरबान है[76] और बेशक हम ने उतारीं तुम्हारी त़रफ़ रोशन आयतें[77]

وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾ ع اَللّٰهُ

और कुछ उन लोगों का बयान जो तुम से पहले हो गुज़रे और डर वालों के लिये नसीह़त अल्लाह

نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ

नूर है[78] आस्मानों और ज़मीन का उस के नूर की[79] मिसाल ऐसी जैसे एक त़ाक़ कि उस में चराग़ है

اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ

वोह चराग़ एक फ़ानूस में है वोह फ़ानूस गोया एक सितारा है मोती सा चमकता रोशन होता है

شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِیْٓءُ

बरकत वाले पेड़ ज़ैतून से[80] जो न पूरब (मशरिक़) का न पश्चिम (मग़रिब) का[81] क़रीब है कि उस का तेल[82] भड़क उठे

وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِی اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

अगर्चे उसे आग न छूए नूर पर नूर है[83] अल्लाह अपने नूर की राह बताता है जिसे चाहता है

76 : और वबाले गुनाह मजबूर करने वाले पर। **77 :** जिन्हों ने ह़लाल व ह़राम, ह़ुदूद व अह़काम सब को वाज़ेह़ कर दिया। **78 :** "नूर" अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अल्लाह आस्मान व ज़मीन का हादी है तो अहले समावात व अर्ज़ उस के नूर से ह़क़ की राह पाते हैं और उस की हिदायत से गुमराही की ह़ैरत से नजात ह़ासिल करते हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला आस्मान व ज़मीन का मुनव्वर फ़रमाने वाला है उस ने आस्मानों को मलाएका से और ज़मीन को अम्बिया से मुनव्वर किया। **79 :** अल्लाह के नूर से या तो क़ल्बे मोमिन की वोह नूरानिय्यत मुराद है जिस से वोह हिदायत पाता और राहयाब होता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह के उस नूर की मिसाल जो उस ने मोमिन को अ़त़ा फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने उस नूर से क़ुरआन मुराद लिया और एक तफ़्सीर येह है कि उस नूर से मुराद सय्यिदे काएनात अफ़्ज़ले मौजूदात ह़ज़रत रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हैं। **80 :** येह दरख़्त निहायत कसीरुल बरकत है क्यूं कि इस का रोग़न जिस को "ज़ैत" कहते हैं निहायत साफ़ व पाकीज़ा रोशनी देता है, सर में भी लगाया जाता है, सालन और नान ख़ोरिश (गोश्त, मछली वग़ैरा) की जगह रोटी से भी खाया जाता है। दुन्या के और किसी तेल में येह वस्फ़ नहीं और दरख़्ते ज़ैतून के पत्ते नहीं गिरते। (خازن) **81 :** बल्कि वस्त़ का है कि न उसे गरमी से ज़रर पहुंचे न सरदी से। और वोह निहायत अज्वदो आ'ला है और उस के फल ग़ायत ए'तिदाल में। **82 :** अपनी सफ़ा व लत़ाफ़त के बाइ़स ख़ुद **83 :** इस तम्सील के मा'ना में अहले इ़ल्म के कई क़ौल हैं एक येह कि नूर से मुराद हिदायत है और मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला की हिदायत ग़ायते ज़ुहूर में है कि आ़लमे मह़सूसात में इस की तश्बीह ऐसे रोशन दान से हो सकती है जिस में साफ़ शफ़्फ़ाफ़ फ़ानूस हो उस फ़ानूस में ऐसा चराग़ हो जो निहायत ही बेहतर और मुसफ़्फ़ा ज़ैतून से रोशन हो कि इस की रोशनी निहायत आ'ला और साफ़ हो। और एक क़ौल येह है कि येह तम्सील नूरे सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने का'ब अह़बार से फ़रमाया कि इस आयत के मा'ना बयान करो, उन्हों ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मिसाल बयान फ़रमाई रोशन दान (त़ाक़) तो ह़ुज़ूर का सीना शरीफ़ है और फ़ानूस क़ल्बे मुबारक और चराग़ नुबुव्वत कि शजरे नुबुव्वत से रोशन है और उस नूरे मुह़म्मदी की रोशनी व इज़ाअत इस मर्तबए कमाले ज़ुहूर पर है कि अगर आप अपने नबी होने का बयान भी न फ़रमाएं जब भी ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाए। और ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रोशन दान तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का सीना मुबारक है और फ़ानूस क़ल्बे अत़्हर और चराग़ वोह नूर जो अल्लाह तआ़ला ने उस में रखा कि शर्क़ी है न

www.dawateislami.net

وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝۳۵ فِيْ بُيُوْتٍ

और अल्लाह मिसालें बयान फ़रमाता है लोगों के लिये और अल्लाह सब कुछ जानता है उन घरों में

اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ

जिन्हें बुलन्द करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है[84] और उन में उस का नाम लिया जाता है अल्लाह की तस्बीह करते हैं उन में सुब्ह

وَالْاٰصَالِ ۝۳۶ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

और शाम[85] वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद[86]

وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءِ الزَّكٰوةِ ۽ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ

और नमाज़ बरपा रखने[87] और ज़कात देने से[88] डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे

الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝۳۷ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ

दिल और आंखें[89] ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें

مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۳۸ وَالَّذِيْنَ

इन्आम ज़ियादा दे और अल्लाह रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती और जो

كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَاۗءً ۭ حَتّٰٓي اِذَا

काफ़िर हुए उन के काम ऐसे हैं जैसे धूप में चमकता रेता किसी जंगल में कि प्यासा उसे पानी समझे यहां तक जब

ग़र्बी, न यहूदी न नसरानी, एक शजरए मुबारका से रोशन है वोह शजर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, नूरे क़ल्बे इब्राहीम पर नूरे मुहम्मदी नूर पर नूर है। और मुहम्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने कहा कि रोशन दान व फ़ानूस तो हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام हैं और चराग़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और शजरए मुबारका हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام कि अक्सर अम्बिया आप की नस्ल से हैं और शर्क़ी व ग़र्बी न होने के येह मा'ना हैं कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام न यहूदी थे न नसरानी, क्यूं कि यहूद मग़रिब की त़रफ़ नमाज़ पढ़ते हैं और नसारा मशरिक़ की त़रफ़। क़रीब है कि मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के महासिन व कमालात नुज़ूले वह्य से क़ब्ल ही ख़ल्क़ पर ज़ाहिर हो जाएं, नूर पर नूर येह कि नबी हैं नस्ले नबी से नूरे मुहम्मदी है नूरे इब्राहीमी पर। इस के इ़लावा और भी बहुत अक़्वाल हैं। (خازن) **84 :** और उन की ता'ज़ीम व तत़्हीर लाज़िम की। मुराद उन घरों से मस्जिदें हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मस्जिदें बैतुल्लाह हैं ज़मीन में। **85 :** तस्बीह से मुराद नमाज़ें हैं, सुब्ह की तस्बीह से फ़ज्र और शाम से ज़ोहर व अ़स्र व मग़रिब व इशा मुराद हैं। **86 :** और उस के ज़िक्रे क़ल्बी व लिसानी और अवक़ाते नमाज़ पर मस्जिदों की ह़ाज़िरी से **87 :** और उन्हें वक़्त पर अदा करने से। हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बाज़ार में थे, मस्जिद में नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई, आप ने देखा कि बाज़ार वाले उठे और दुकानें बन्द कर के मस्जिद में दाख़िल हो गए। तो फ़रमाया कि आयत ''رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ'' ऐसे ही लोगों के हक़ में है। **88 :** उस के वक़्त पर। **89 :** दिलों का उलट जाना येह है कि शिद्दते ख़ौफ़ व इज़्तिराब से उलट कर गले तक चढ़ जाएंगे, न बाहर निकलें न नीचे उतरें और आंखें ऊपर चढ़ जाएंगी। या येह मा'ना हैं कुफ़्फ़ार के दिल कुफ़्र व शक से ईमान व यक़ीन की त़रफ़ पलट जाएंगे और आंखों से पर्दे उठ जाएंगे येह तो उस दिन का बयान है, आयत में येह इर्शाद फ़रमाया गया कि वोह फ़रमां बरदार बन्दे जो ज़िक्रो त़ाअ़त में निहायत मुस्तइ़द रहते हैं और इ़बादत की अदा में सरगर्म रहते हैं बा वुजूद इस हुस्ने अ़मल के इस रोज़ से ख़ाइफ़ रहते हैं और समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत का ह़क़ अदा न हो सका।

جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ

उस के पास आया तो उसे कुछ न पाया[90] और अल्लाह को अपने क़रीब पाया तो उस ने उस का हिसाब पूरा भर दिया और अल्लाह

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ

जल्द हिसाब कर लेता है या[91] जैसे अंधेरियां किसी कुन्डे के दरिया में[92] उस के ऊपर मौज मौज के ऊपर और

مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ

मौज उस के ऊपर बादल अंधेरे हैं एक पर एक[93] जब अपना हाथ निकाले

يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَ مَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾

तो सुझाई देता मा'लूम न हो[94] और जिसे अल्लाह नूर न दे उस के लिये कहीं नूर नहीं[95]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ

क्या तुम ने न देखा कि अल्लाह की तस्बीह़ करते हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं और परिन्दे[96] पर फैलाए

كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ تَسْبِيْحَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ لِلّٰهِ

सब ने जान रखी है अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह़ और अल्लाह उन के कामों को जानता है और अल्लाह ही

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ اِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन की और अल्लाह ही की त़रफ़ फिर जाना क्या तू ने न देखा कि अल्लाह

يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ

नर्म नर्म चलाता है बादल को[97] फिर उन्हें आपस में मिलाता है[98] फिर उन्हें तह पर तह कर देता है तो तू देखे कि उस के

90 : या'नी पानी समझ कर उस की तलाश में चला, जब वहां पहुंचा तो पानी का नामो निशान न था, ऐसे ही काफ़िर अपने ख़याल में नेकियां करता है और समझता है कि अल्लाह तआला से इस का सवाब पाएगा, जब अ़रसाते क़ियामत (क़ियामत के मैदान) में पहुंचेगा तो सवाब न पाएगा बल्कि अ़ज़ाबे अ़ज़ीम में गिरिफ़्तार होगा और उस वक़्त उस की ह़सरत और उस का अन्दोह व ग़म उस प्यास से ब दरजहा ज़ियादा होगा। **91 :** आ'माले कुफ़्फ़ार की मिसाल ऐसी है **92 :** समुन्दरों की गहराई में **93 :** एक अंधेरा दरिया की गहराई का इस पर एक और अंधेरा मौजों के तराकुम (इकट्ठा होने) का इस पर और अंधेरा बादलों की घिरी हुई घटा का, इन अंधेरियों की शिद्दत का येह आ़लम कि जो इस में हो वोह **94 :** बा वुजूदे कि अपना हाथ निहायत ही क़रीब और अपने जिस्म का जुज़्व है जब वोह भी नज़र न आए तो और दूसरी चीज़ क्या नज़र आएगी, ऐसा ही ह़ाल है काफ़िर का कि वोह ए'तिक़ादे बात़िल और क़ौले नाह़क़ और अ़मले क़बीह़ की तारीकियों में गिरिफ़्तार है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दरिया के कुन्डे और उस की गहराई से काफ़िर के दिल को और मौजों से जहल व शक व ह़ैरत को जो काफ़िर के दिल पर छाए हुए हैं और बादलों से मोहर को जो उन के दिलों पर है तश्बीह दी गई। **95 :** राहयाब वोही होता है जिस को वोह राह दे। **96 :** जो आस्मान व ज़मीन के दरमियान में हैं **97 :** जिस सर ज़मीन और जिन बिलाद की त़रफ़ चाहे। **98 :** और उन के मुतफ़र्रिक़ टुकड़ों को यक्जा कर देता है।

www.dawateislami.net

يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ

बीच में से मींह निकलता है और उतारता है आस्मान से उस में जो बर्फ़ के पहाड़ हैं उन में से कुछ ओले[99]

فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ

फिर डालता है उन्हें जिस पर चाहे[100] और फेर देता है उन्हें जिस से चाहे[101] क़रीब है कि उस की बिजली

يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ؕ ﴿۴۳﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

की चमक आंख ले जाए[102] **अल्लाह** बदली करता है रात और दिन की[103] बेशक इस में

لَعِبْرَةً لِّاُولِی الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾ وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ

समझने का मक़ाम है निगाह वालों को और **अल्लाह** ने ज़मीन पर हर चलने वाला पानी से बनाया[104] तो उन में

مَّنْ يَّمْشِیْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِیْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ

कोई अपने पेट पर चलता है[105] और उन में कोई दो पाउं पर चलता है[106] और उन में कोई

يَّمْشِیْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

चार पाउं पर चलता है[107] **अल्लाह** बनाता है जो चाहे बेशक **अल्लाह** सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى

कर सकता है बेशक हम ने उतारीं साफ़ बयान करने वाली आयतें[108] और **अल्लाह** हिदायत देता है जिसे चाहे

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ اَطَعْنَا ثُمَّ

सीधी राह दिखाए[109] और कहते हैं हम ईमान लाए **अल्लाह** और रसूल पर और हुक्म माना फिर

99 : इस के मा'ना या तो येह हैं कि जिस त़रह़ ज़मीन में पथ्थर के पहाड़ हैं ऐसे ही आस्मान में बर्फ़ के पहाड़ **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा किये हैं और येह उस की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं, उन पहाड़ों से ओले बरसाता है। या येह मा'ना हैं कि आस्मान से ओलों के पहाड़ के पहाड़ बरसाता है या'नी ब कसरत ओले बरसाता है। (مدارک وغیرہ) **100 :** और जिस के जान व माल को चाहता है उन से हलाक व तबाह करता है। **101 :** उस के जान व माल को मह़फ़ूज़ रखता है। **102 :** और रोशनी की तेज़ी से आंखों को बेकार कर दे। **103 :** कि रात के बा'द दिन लाता है और दिन के बा'द रात। **104 :** या'नी तमाम अज्नासे ह़ैवान को पानी की जिन्स से पैदा किया और पानी इन सब की अस्ल है और येह सब बा वुजूद मुत्तह़िदुल अस्ल होने के बाहम किस क़दर मुख़्तलिफ़ुल ह़ाल हैं, येह ख़ालिक़े आ़लम के इल्मो ह़िक्मत और उस के कमाले क़ुदरत की दलीले रोशन है। **105 :** जैसे कि सांप और मछली और बहुत से कीड़े। **106 :** जैसे कि आदमी और परिन्द। **107 :** मिस्ल बहाइम और दरिन्दों के। **108 :** या'नी क़ुरआने करीम जिस में हिदायत व अह़काम और ह़लाल व ह़राम का वाज़ेह़ बयान है। **109 :** और सीधी राह जिस पर चलने से रिज़ाए इलाही व ने'मते आख़िरत मुयस्सर हो दीने इस्लाम है। आयात का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द येह बताया जाता है कि इन्सान तीन फ़िर्क़ों में मुन्क़सिम हो गए, एक वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में तस्दीक़े ह़क़ की और बात़िन में तक्ज़ीब करते रहे, वोह मुनाफ़िक़ हैं। दूसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तस्दीक़ की और बात़िन में भी मो'तक़िद रहे, येह मुख़्लिसीन हैं। तीसरे वोह जिन्हों ने ज़ाहिर में भी तक्ज़ीब की और बात़िन में भी वोह कुफ़्फ़ार हैं, उन का ज़िक्र बित्तरतीब फ़रमाया जाता है।

يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓىٕكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا

कुछ उन में के इस के बा'द फिर जाते हैं[110] और वोह मुसल्मान नहीं[111] और जब

دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾

बुलाए जाएं अल्लाह और उस के रसूल की त़रफ़ कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो जभी उन का एक फ़रीक़ मुंह फेर जाता है

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ ؕ اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

और अगर उन की डिग्री हो (उन के ह़क़ में फ़ैसला हो) तो उस की त़रफ़ आएं मानते हुए[112] क्या उन के दिलों में बीमारी है[113]

اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ

या शक रखते हैं[114] या येह डरते हैं कि अल्लाह व रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे[115] बल्कि

اُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ ع ٦ ١٢

वोह ख़ुद ही ज़ालिम हैं मुसल्मानों की बात तो येही है[116] जब अल्लाह और रसूल की त़रफ़

وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓىٕكَ هُمُ

बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए तो अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ

मुराद को पहुंचे और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़ गारी करे तो येही

هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىٕنْ اَمَرْتَهُمْ

लोग काम्याब हैं और उन्हों ने[117] अल्लाह की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में ह़द की कोशिश से कि अगर तुम उन्हें हुक्म दोगे

110 : और अपने क़ौल की पाबन्दी नहीं करते। **111 :** मुनाफ़िक़ हैं क्यूं कि उन के दिल उन की ज़बानों के मुवाफ़िक़ नहीं। **112 :** कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन बारहा तजरिबा कर चुके थे और उन्हें कामिल यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़ैसला सरासर ह़क़ व अ़द्ल होता है इस लिये उन में जो सच्चा होता वोह तो ख़्वाहिश करता था कि हुज़ूर उस का फ़ैसला फ़रमाएं और जो नाह़क़ पर होता वोह जानता था कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सच्ची अ़दालत से वोह अपनी ना जाइज़ मुराद नहीं पा सकता, इस लिये वोह हुज़ूर के फ़ैसले से डरता और घबराता था। **शाने नुज़ूल :** बिश्र नामी एक मुनाफ़िक़ था, एक ज़मीन के मुआ़मले में इस का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी जानता था कि इस मुआ़मले में वोह सच्चा है और उस को यक़ीन था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़क़ व अ़द्ल का फ़ैसला फ़रमाते हैं, इस लिये उस ने ख़्वाहिश की, कि येह मुक़द्दमा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़ैसल (हल) कराया जाए, लेकिन मुनाफ़िक़ भी जानता था कि वोह बात़िल पर है और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ में किसी की रू रिआ़यत नहीं फ़रमाते, इस लिये वोह हुज़ूर के फ़ैसले पर तो राज़ी न हुवा और का'ब बिन अशरफ़ यहूदी से फ़ैसला कराने पर मुसिर हुवा और हुज़ूर की निस्बत कहने लगा कि वोह हम पर ज़ुल्म करेंगे, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **113 :** कुफ़्र या निफ़ाक़ की। **114 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत में। **115 :** ऐसा तो है नहीं क्यूं कि येह वोह ख़ूब जानते हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़ैसला ह़क़ से मुतजाविज़ हो ही नहीं सकता और कोई बद दियानत आप की अ़दालत से पराया ह़क़ मारने में काम्याब नहीं हो सकता, इसी वज्ह से वोह आप के फ़ैसले से ए'राज़ करते हैं। **116 :** और उन को येह त़रीक़े अदब लाज़िम है कि **117 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन ने। (مدارک)

www.dawateislami.net

لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا

तो वोह ज़रूर जिहाद को निकलेंगे तुम फ़रमा दो क़समें न खाओ[118] मुवाफ़िक़े शरअ़ हुक्म बरदारी चाहिये अल्लाह जानता है जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۳﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

तुम करते हो[119] तुम फ़रमाओ हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का[120] फिर अगर तुम मुंह फेरो[121] तो रसूल के ज़िम्मे वोही है

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا

जो उस पर लाज़िम किया गया[122] और तुम पर वोह है जिस का बोझ तुम पर रखा गया[123] और अगर रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे राह पाओगे और

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۵۴﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ

रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[124] अल्लाह ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और

عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ

अच्छे काम किये[125] कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा[126] जैसी उन से पहलों

قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

को दी[127] और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है[128] और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को

خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ

अम्न से बदल देगा[129] मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो इस के बा'द नाशुक्री करे

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا

तो वोही लोग बे हुक्म हैं और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की

118 : कि झूटी क़सम गुनाह है। 119 : ज़बानी इताअ़त और अ़मली मुख़ालफ़त उस से कुछ छुपा नहीं। 120 : सच्चे दिल और सच्ची निय्यत से। 121 : रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की फ़रमां बरदारी से, तो इस में उन का कुछ ज़रर नहीं। 122 : या'नी दीन की तब्लीग़ और अह़कामे इलाही का पहुंचा देना, इस को रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अच्छी त़रह अदा कर दिया और वोह अपने फ़र्ज़ से ओह्दा बरआ हो चुके। 123 : या'नी रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इताअ़त व फ़रमां बरदारी। 124 : चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बहुत वाज़ेह़ त़ौर पर पहुंचा दिया। 125 **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वह्य नाज़िल होने से दस साल तक मक्कए मुकर्रमा में मअ़ अस्ह़ाब के क़ियाम फ़रमाया और कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं पर जो शबो रोज़ होती रहती थीं सब्र किया, फिर ब हुक्मे इलाही मदीनए त़य्यिबा को हिजरत फ़रमाई और अन्सार के मनाज़िल (घरों) को अपनी सुकूनत से सरफ़राज़ किया, मगर क़ुरैश इस पर भी बाज़ न आए, रोज़मर्रा उन की त़रफ़ से जंग के ए'लान होते और त़रह त़रह की धमकियां दी जातीं, अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हर वक़्त ख़त़रे में रहते और हथियार साथ रखते, एक रोज़ एक सह़ाबी ने फ़रमाया : कभी ऐसा भी ज़माना आएगा कि हमें अम्न मुयस्सर हो और हथियारों के बार से हम सुबुक दोश हों, इस पर येह आयत नाज़िल हुई 126 : और बजाए कुफ़्फ़ार के तुम्हारी फ़रमां रवाई होगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस जिस चीज़ पर शबो रोज़ गुज़रे हैं उन सब पर दीने इस्लाम दाख़िल होगा। 127 : ह़ज़रते दावूद व सुलैमान वग़ैरा अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को और जैसी कि जबाबिरए मिस्र व शाम को हलाक कर के बनी इसराईल को ख़िलाफ़त दी और इन ममालिक पर उन को मुसल्लत़ किया। 128 : या'नी दीने इस्लाम को तमाम अद्यान पर ग़ालिब फ़रमाएगा। 129 : चुनान्चे येह वा'दा पूरा हुवा और सर ज़मीन

www.dawateislami.net

الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ

फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो हरगिज़ काफ़िरों को ख़याल न करना कि वोह कहीं हमारे क़ाबू से निकल जाएं

فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۵۷﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ ۷/۱۳

ज़मीन में और उन का ठिकाना आग है और ज़रूर क्या ही बुरा अन्जाम ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ

वालो चाहिये कि तुम से इज़्न लें तुम्हारे हाथ के माल गुलाम[130] और वोह जो तुम में अभी जवानी को न पहुंचे[131]

مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ

तीन वक़्त[132] नमाज़े सुब्ह से पहले[133] और जब तुम अपने कपड़े उतार रखते हो

مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ

दोपहर को[134] और नमाज़े इशा के बा'द[135] येह तीन वक़्त तुम्हारी शर्म के हैं[136] इन

عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى

तीन के बा'द कुछ गुनाह नहीं तुम पर न उन पर[137] आमदो रफ़्त रखते हैं तुम्हारे यहां एक दूसरे

अ़रब से कुफ़्फ़ार मिटा दिये गए, मुसल्मानों का तसल्लुत़ हुवा, मशरिक़ व मग़रिब के ममालिक **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये फ़त्ह फ़रमाए, अकासिरा के ममालिक व ख़ज़ाइन उन के क़ब्ज़े में आए, दुन्या पर उन का रो'ब छा गया। **फ़ाएदा :** इस आयत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ और आप के बा'द होने वाले ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की दलील है क्यूं कि इन के ज़माने में फ़ुतूह़ाते अ़ज़ीमा हुईं और किस्रा वग़ैरा मुलूक के ख़ज़ाइन (बादशाहों के ख़ज़ाने) मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आए और अम्न व तम्कीन और दीन को ग़लबा ह़ासिल हुवा। तिरमिज़ी व अबू दावूद की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم ने फ़रमाया : ख़िलाफ़त मेरे बा'द तीस साल है फिर मुल्क होगा। इस की तफ़्सील येह है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह और ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त दस साल छ[6] माह और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त बारह साल और ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त चार साल नव माह और ह़ज़रते इमाम ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त छ[6] माह हुई। (خازن) **130 :** और बांदियां। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم ने एक अन्सारी गुलाम मुदलिज बिन अ़म्र को दोपहर के वक़्त ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ के बुलाने के लिये भेजा। वोह गुलाम वैसे ही ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ के मकान में चला गया, जब कि ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ बे तकल्लुफ़ अपने दौलत सराए में तशरीफ़ रखते थे, गुलाम के अचानक चले आने से आप के दिल में ख़याल हुवा कि काश गुलामों को इजाज़त ले कर मकानों में दाख़िल होने का हुक्म होता। इस पर येह आयए करीमा नाज़िल हुई। **131 :** बल्कि अभी क़रीबे बुलूग़ हैं। सिन्ने बुलूग़ ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ के नज़्दीक लड़के के लिये अठ्ठारह साल और लड़की के लिये सत्तरह साल और आ़म्मए उ़लमा के नज़्दीक लड़के और लड़की दोनों के लिये पन्दरह साल है। (تفسیر احمدی) **132 :** या'नी इन तीनों वक़्तों में इजाज़त ह़ासिल करें जिन का बयान इसी आयत में फ़रमाया जाता है। **133 :** कि वोह वक़्त है ख़्वाब गाहों से उठने और शब ख़्वाबी का लिबास उतार कर बेदारी के कपड़े पहनने का। **134 :** क़ैलूला करने के लिये और तहबन्द बांध लेते हो। **135 :** कि वोह वक़्त है बेदारी का लिबास उतारने और ख़्वाब का लिबास पहनने का। **136 :** कि इन अवक़ात में ख़ल्वत व तन्हाई होती है, बदन छुपाने का बहुत एहतिमाम नहीं होता, मुम्किन है कि बदन का कोई हिस्सा खुल जाए जिस के ज़ाहिर होने से शर्म आती है। लिहाज़ा इन अवक़ात में गुलाम और बच्चे भी बे इजाज़त दाख़िल न हों और इन के इ़लावा जवान लोग तमाम अवक़ात में इजाज़त ह़ासिल करें किसी वक़्त भी बे इजाज़त दाख़िल न हों। (خازن وغیرہ) **137 : मस्अला :** या'नी इन तीन वक़्तों के सिवा बाक़ी अवक़ात में गुलाम और बच्चे बे इजाज़त दाख़िल हो सकते हैं क्यूं कि वोह।

بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۸﴾ وَ اِذَا

के पास[138] अल्लाह यूंही बयान करता है तुम्हारे लिये आयतें और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और जब

بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ

तुम में लड़के[139] जवानी को पहुंच जाएं तो वोह भी इज़्न मांगें[140] जैसे उन के अगलों[141] ने इज़्न

قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَ

मांगा अल्लाह यूंही बयान फ़रमाता है तुम से अपनी आयतें और अल्लाह इल्मो हिक्मत वाला है और

الْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ

बूढ़ी ख़ाना नशीन औरतें[142] जिन्हें निकाह की आरज़ू नहीं उन पर कुछ गुनाह नहीं

اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَ اَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ

कि अपने बालाई कपड़े उतार रखें जब कि सिंगार न चमकाएं[143] और इस से बचना[144] उन के लिये और

لَّهُنَّ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى

बेहतर है और अल्लाह सुनता जानता है न अन्धे पर तंगी[145] और न

الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا

लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर रोक और न तुम में किसी पर कि खाओ अपनी

مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ

औलाद के घर[146] या अपने बाप के घर या अपनी मां के घर या अपने भाइयों के यहां

138 : काम व ख़िदमत के लिये, तो इन पर हर वक़्त इस्तीज़ान (इजाज़त लेने) का लाज़िम होना सबबे हरज होगा और शरअ़ में हरज मदफ़ूअ़ (दूर किया गया) है। (مدارک) **139 :** या'नी आज़ाद। **140 :** तमाम अवक़ात में **141 :** उन से बड़े मर्दों **142 :** जिन का सिन ज़ियादा हो चुका और औलाद होने की उम्र न रही और पीराना साली (बुढ़ापे) के बाइस **143 :** और बाल सीना पिंडली वग़ैरा न खोलें। **144 :** बालाई कपड़ों को पहने रहना। **145 शाने नुज़ूल :** सईद बिन मुसय्यब رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि सहाबए किराम नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم के साथ जिहाद को जाते तो अपने मकानों की चाबियां नाबीना और बीमारों और अपाहजों को दे जाते जो इन आ'ज़ार के बाइस जिहाद में न जा सकते और उन्हें इजाज़त देते कि इन के मकानों से खाने की चीज़ें ले कर खाएं, मगर वोह लोग इस को गवारा न करते ब ईं ख़याल कि शायद येह उन को दिल से पसन्द न हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें इस की इजाज़त दी गई। और एक क़ौल येह है कि अन्धे अपाहज और बीमार लोग तन्दुरुस्तों के साथ खाने से बचते कि कहीं किसी को नफ़रत न हो, इस आयत में उन्हें इजाज़त दी गई। और एक क़ौल येह है कि जब अन्धे नाबीना अपाहज किसी मुसल्मान के पास जाते और उस के पास इन के खिलाने के लिये कुछ न होता तो वोह इन्हें किसी रिश्तेदार के यहां खिलाने के लिये ले जाता, येह बात इन लोगों को गवारा न होती। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इन्हें बताया गया कि इस में कोई हरज नहीं है। **146 :** कि औलाद का घर अपना ही घर है। हदीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : तू और तेरा माल तेरे बाप का है। इसी त़रह शोहर के लिये बीवी का और बीवी के लिये शोहर का घर भी अपना ही घर है।

اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

या अपनी बहनों के घर या अपने चचाओं के यहां या अपनी फूपियों के घर या अपने मामूओं

اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ

के यहां या अपनी ख़ालाओं के घर या जहां की कुन्जियां तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं[147] या अपने दोस्त के यहां[148]

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا

तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि मिल कर खाओ या अलग अलग[149] फिर जब किसी घर में जाओ

فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ

तो अपनों को सलाम करो[150] मिलते वक़्त की अच्छी दुआ **अल्लाह** के पास से मुबारक पाकीज़ा **अल्लाह** यूंही

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۠ ﴿۶۱﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ ع

बयान फ़रमाता है तुम से आयतें कि तुम्हें समझ हो ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह**

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى

और उस के रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में हाज़िर हुए हों जिस के लिये जम्अ़ किये गए हों[151] तो न जाएं जब तक

يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

उन से इजाज़त न ले लें वोह जो तुम से इजाज़त मांगते हैं वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल

وَ رَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ

पर ईमान लाते हैं[152] फिर जब वोह तुम से इजाज़त मांगें अपने किसी काम के लिये तो उन में जिसे तुम चाहो इजाज़त

147 : हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस से मुराद आदमी का वकील और उस का कार परदाज़ है। **148 :** मा'ना येह हैं कि इन सब लोगों के घर खाना जाइज़ है ख़्वाह वोह मौजूद हों या न हों जब कि मा'लूम हो कि वोह इस से राज़ी हैं। सलफ़ (पहले के लोगों) का तो येह हाल था कि आदमी अपने दोस्त के घर उस की ग़ैबत (ग़ैर मौजूदगी) में पहुंचता तो उस की बांदी से उस का कीसा (रक़म रखने का थेला) त़लब करता और जो चाहता उस में से ले लेता, जब वोह दोस्त घर आता और बांदी उस को ख़बर देती तो इस ख़ुशी में वोह बांदी को आज़ाद कर देता। मगर इस ज़माने में येह फ़य्याज़ी कहां ! लिहाज़ा बे इजाज़त खाना न चाहिये। (مدارک وجلالین) **149 शाने नुज़ूल :** क़बीलए बनी लैस बिन अ़म्र के लोग तन्हा बिग़ैर मेहमान के खाना न खाते थे, कभी कभी मेहमान न मिलता तो सुब्ह से शाम तक खाना लिये बैठे रहते उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **150 मस्अला :** जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो तो अपने अहल को सलाम करे और उन लोगों को जो मकान में हों बशर्ते कि उन के दीन में ख़लल न हो। (خازن) **मस्अला :** अगर ख़ाली मकान में दाख़िल हो जहां कोई नहीं है तो कहे : ''اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَبَرَكَاتُهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَ بَرَكَاتُهٗ'' हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मकान से यहां मस्जिदें मुराद हैं। नख़ई ने कहा कि जब मस्जिद में कोई न हो तो कहे : اَلسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم (شفاء شریف) मुल्ला अ़ली क़ारी ने शर्हे शिफ़ा में लिखा कि ख़ाली मकान में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर सलाम अ़र्ज़ करने की वज्ह येह है कि अहले इस्लाम के घरों में रूहे अक़्दस जल्वा फ़रमा होती है। **151 :** जैसे कि जिहाद और तदबीरे

www.dawateislami.net

مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۶۲﴾ لَا تَجْعَلُوْا

दे दो और उन के लिये **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगो[153] बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है रसूल के

دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है[154] बेशक **अल्लाह** जानता है जो

يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ

तुम में चुपके निकल जाते हैं किसी चीज़ की आड़ ले कर[155] तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ करते हैं कि

تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۳﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

उन्हें कोई फ़ितना पहुंचे[156] या उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब पड़े[157] सुन लो बेशक **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ

और ज़मीन में है बेशक वोह जानता है जिस ह़ाल पर तुम हो[158] और उस दिन को जिस में उस की त़रफ़ फेरे जाएंगे[159]

ع ۹ ۱۵ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۶۴﴾

तो वोह उन्हें बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया और **अल्लाह** सब कुछ जानता है[160]

اٰيَاتُهَا ۷۷ ﴿۲۵ سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ ۴۲﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۶

सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में सतत्तर आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

जंग और जुमुआ़ व ईदैन और मश्वरा और हर इज्तिमाअ़ जो **अल्लाह** के लिये हो। **152 :** उन का इजाज़त चाहना निशाने फ़रमां बरदारी और दलीले सिह्हते ईमान है। **153 :** इस से मा'लूम हुवा कि अफ़्ज़ल येही है कि ह़ाज़िर रहें और इजाज़त त़लब न करें। **मस्अला :** इमामों और दीनी पेश्वाओं की मजलिस से भी बे इजाज़त न जाना चाहिये। (مدارک) **154 :** क्यूं कि जिस को रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पुकारें उस पर इजाबत व ता'मील वाजिब हो जाती है और अदब से ह़ाज़िर होना लाज़िम होता है और क़रीब ह़ाज़िर होने के लिये इजाज़त त़लब करे और इजाज़त से ही वापस हो। और एक मा'ना मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान फ़रमाए हैं कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को निदा करे तो अदबो तक्रीम और तौक़ीरो ता'ज़ीम के साथ, आप के मुअ़ज़्ज़म अल्क़ाब से, नर्म आवाज़ के साथ, मुतवाज़िआ़ना व मुन्कसिराना लहजे में "या नबिय्यल्लाह, या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह" कह कर। **155 : शाने नुज़ूल :** मुनाफ़िक़ीन पर रोज़े जुमुआ़ मस्जिद में ठहर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ख़ुत़्बे का सुनना गिरां होता था तो वोह चुपके चुपके आहिस्ता आहिस्ता सह़ाबा की आड़ ले कर सरक्ते सरक्ते मस्जिद से निकल जाते थे। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **156 :** दुन्या में तक्लीफ़ या क़त्ल या ज़ल्ज़ले या और होलनाक ह़वादिस या ज़ालिम बादशाह का मुसल्लत़ होना या दिल का सख़्त हो कर मा'रिफ़ते इलाही से मह़रूम रहना। **157 :** आख़िरत में। **158 :** ईमान पर या निफ़ाक़ पर। **159 :** जज़ा के लिये, और वोह दिन रोज़े क़ियामत है। **160 :** उस से कुछ छुपा नहीं। **1 :** सूरए फ़ुरक़ान मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ और सतत्तर आयतें और आठ सो बानवे कलिमे और तीन हज़ार सात सो तीन ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ ۝۱

बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा कुरआन अपने बन्दे पर[2] जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो[3]

الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ

वोह जिस के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत और उस ने न इख़्तियार फ़रमाया बच्चा[4] और उस की

لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ۝۲

सल्तनत में कोई साझी (शरीक) नहीं[5] उस ने हर चीज़ पैदा कर के ठीक अन्दाज़े पर रखी

وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا

और लोगों ने उस के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[6] कि वोह कुछ नहीं बनाते और ख़ुद पैदा किये गए हैं और

یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً

ख़ुद अपनी जानों के बुरे भले के मालिक नहीं और न मरने का इख़्तियार न जीने का

وَّ لَا نُشُوْرًا ۝۳ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ

न उठने का और काफ़िर बोले[7] येह तो नहीं मगर एक बोहतान जो उन्हों ने बना लिया है[8]

وَ اَعَانَهٗ عَلَیْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚۛ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۚۛ ۝۴ وَ قَالُوْۤا

और इस पर और लोगों ने[9] उन्हें मदद दी है बेशक वोह[10] ज़ुल्म और झूट पर आए और बोले[11]

معانقة ١٠

اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِیَ تُمْلٰی عَلَیْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ۝۵ قُلْ

अगलों की कहानियां हैं जो उन्हों ने[12] लिख ली हैं तो वोह उन पर सुब्हो शाम पढ़ी जाती हैं तुम फ़रमाओ

---

2 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर। **3 :** इस में हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के उ़मूमे रिसालत का बयान है कि आप तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए जिन्न हों या बशर या फ़िरिश्ते या दीगर मख़्लूक़ात सब आप के उम्मती हैं क्यूं कि "आ़लम" मा सिवा **अल्लाह** को कहते हैं इस में येह सब दाख़िल हैं, मलाएका को इस से ख़ारिज करना जैसा कि जलालैन में शैख़ मह़ल्ली से और कबीर में इमामे राज़ी से और शुअ़बुल ईमान में बैहक़ी से सादिर हुवा बे दलील है और दा'वए इज्माअ़ ग़ैर साबित, चुनान्चे इमाम सुबकी व बाज़िरी व इब्ने ह़ज़्म व सुयूती़ ने इस का तआ़क़ुब किया और ख़ुद इमामे राज़ी को तस्लीम है कि आ़लम मा सिवा **अल्लाह** को कहते हैं, पस वोह तमाम ख़ल्क़ को शामिल है मलाएका को इस से ख़ारिज करने पर कोई दलील नहीं, इलावा बरीं मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : اُرْسِلْتُ اِلَى الْخَلْقِ كَآفَّةً या'नी मैं तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया। अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ने मिर्क़ात में इस की शर्ह़ में फ़रमाया : या'नी तमाम मौजूदात की त़रफ़ जिन्न हों या इन्सान या फ़िरिश्ते या ह़ैवानात या जमादात। इस मस्अले की कामिल तन्क़ीह़ व तह़क़ीक़ शर्ह़ व बस्त़ के साथ इमामे क़स्त़लानी की मवाहिबे लदुन्निय्या में है। **4 :** इस में यहूदो नसारा का रद है जो ह़ज़रते उ़ज़ैर व मसीह़ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते हैं। مَعَاذَ الله **5 :** इस में बुत परस्तों का रद है जो बुतों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। **6 :** या'नी बुत परस्तों ने बुतों को ख़ुदा ठहराया जो ऐसे आ़जिज़ व बे क़ुदरत हैं **7 :** या'नी नज़्र बिन ह़ारिस और इस के साथी क़ुरआने करीम की निस्बत कि **8 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। **9 :** और लोगों से नज़्र बिन ह़ारिस की मुराद यहूदी थे और अ़द्दास व यसार वग़ैरा अहले किताब। **10 :** नज़्र बिन ह़ारिस वग़ैरा मुश्रिकीन जो येह बेहूदा बात कहने वाले थे। **11 :** वोही मुश्रिकीन क़ुरआने करीम की

أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا

उसे तो उस ने उतारा है जो आस्मानों और ज़मीन की हर छुपी बात जानता है[13] बेशक वोह बख़्शने वाला

رَّحِيْمًا ۝٦ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي

मेह्रबान है[14] और बोले[15] इस रसूल को क्या हुवा खाना खाता है और बाज़ारों में

الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧ اَوْ يُلْقٰۤى

चलता है[16] क्यूं न उतारा गया इन के साथ कोई फ़िरिश्ता कि इन के साथ डर सुनाता[17] या ग़ैब से

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ

इन्हें कोई ख़ज़ाना मिल जाता या इन का कोई बाग़ होता जिस में से खाते[18] और ज़ालिम बोले[19] तुम

تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ

तो पैरवी नहीं करते मगर एक ऐसे मर्द की जिस पर जादू हुवा[20] ऐ मह्बूब देखो कैसी कहावतें तुम्हारे लिये बना रहे हैं

ع ١/١٦
فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ

तो गुमराह हुए कि अब कोई राह नहीं पाते बड़ी बरकत वाला है वोह कि अगर चाहे तो तुम्हारे लिये

خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ

बहुत बेहतर इस से कर दे[21] जन्नतें जिन के नीचे नहरें बहें और कर दे तुम्हारे लिये ऊंचे ऊंचे

قُصُوْرًا ۝١٠ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ

महल बल्कि येह तो क़ियामत को झुटलाते हैं और जो क़ियामत को झुटलाए हम ने उस के लिये तय्यार कर रखी है भड़क्ती हुई

سَعِيْرًا ۝١١ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝١٢

आग जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी[22] तो सुनेंगे उस का जोश मारना और चिंघाड़ना

निस्बत कि येह रुस्तम व इस्फ़न्दयार वग़ैरा के क़िस्सों की तरह् 12 : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने। 13 : या'नी क़ुरआने करीम उ़लूमे ग़ैबी पर मुश्तमिल है। येह दलीले सरीह़ है इस की, कि वोह ह़ज़रते अ़ल्लामुल ग़ुयूब की त़रफ़ से है। 14 : इसी लिये कुफ़्फ़ार को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता। 15 : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश 16 : इस से उन की मुराद येह थी कि आप नबी होते तो न खाते, न बाज़ारों में चलते और येह भी न होता तो 17 : और इन की तस्दीक़ करता और इन की नुबुव्वत की शहादत देता। 18 : मालदारों की त़रह्। 19 : मुसल्मानों से 20 : और مَعَاذَ اللہ उस की अ़क़्ल बजा न रही। ऐसी त़रह् त़रह् की बेहूदा बातें उन्हों ने बकीं। 21 : या'नी जल्द आप को इस ख़ज़ाने और बाग़ से बेहतर अ़त़ा फ़रमावे जो येह काफ़िर कहते हैं। 22 : एक बरस की राह से या सो बरस की राह से, दोनों क़ौल हैं और आग का देखना कुछ बईद नहीं अल्लाह तआ़ला चाहे तो इस को ह़यात व अ़क़्ल और रूयत अ़त़ा फ़रमाए। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद मलाइकए जहन्नम का देखना है।

www.dawateislami.net

وَ اِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿۱۳﴾

और जब उस की किसी तंग जगह में डाले जाएंगे[23] ज़न्जीरों में जकड़े हुए[24] तो वहां मौत मांगेंगे[25]

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۴﴾ قُلْ اَذٰلِكَ

फ़रमाया जाएगा आज एक मौत न मांगो और बहुत सी मौतें मांगो[26] तुम फ़रमाओ क्या येह[27]

خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً

भला या वोह हमेशगी के बाग़ जिस का वा'दा डर वालों को है वोह उन का सिला

وَّ مَصِيْرًا ﴿۱۵﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا

और अन्जाम है उन के लिये वहां मन मानी मुरादें हैं जिन में हमेशा रहेंगे तुम्हारे रब के ज़िम्मे वा'दा है

مَّسْـُٔوْلًا ﴿۱۶﴾ وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ

मांगा हुवा[28] और जिस दिन इकठ्ठा करेगा उन्हें[29] और जिन को अल्लाह के सिवा पूजते हैं[30] फिर उन मा'बूदों से फ़रमाएगा

ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۱۷﴾ قَالُوْا

क्या तुम ने गुमराह कर दिये येह मेरे बन्दे या येह ख़ुद ही राह भूले[31] वोह अ़र्ज़ करेंगे

سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَاۤ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَ

पाकी है तुझ को[32] हमें सज़ावार (हक़) न था कि तेरे सिवा किसी और को मौला बनाएं[33]

لٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَ كَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۸﴾

लेकिन तू ने उन्हें और उन के बाप दादाओं को बरत्ने दिया[34] यहां तक कि वोह तेरी याद भूल गए और येह लोग थे ही हलाक होने वाले[35]

23 : जो निहायत कर्ब व बेचैनी पैदा करने वाली हो। **24 :** इस त़रह कि उन के हाथ गरदनों से मिला कर बांध दिये गए हों या इस त़रह कि हर हर काफ़िर अपने अपने शैत़ान के साथ ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा हो। **25 :** और "واثُبُوراه واثُبوراه" का शोर मचाएंगे ब ई मा'ना कि हाए ऐ मौत आ जा। ह़दीस शरीफ़ में है कि पहले जिस शख़्स को आतिशी लिबास पहनाया जाएगा वोह इब्लीस है और इस की ज़ुर्रिय्यत इस के पीछे होगी और येह सब मौत मौत पुकारते होंगे उन से **26 :** क्यूं कि तुम त़रह त़रह के अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाओगे। **27 :** अ़ज़ाब और अहवाले जहन्नम जिस का ज़िक्र किया गया। **28 :** या'नी मांगने के लाइक़ या वोह जो मोमिनीन ने दुन्या में येह अ़र्ज़ कर के मांगा : "رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً" या येह अ़र्ज़ कर के "رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰی رُسُلِکَ" **29 :** या'नी मुश्रिकीन को **30 :** या'नी उन के बात़िल मा'बूदों को ख़्वाह ज़विल उ़क़ूल हों या ग़ैर ज़विल उ़क़ूल। कल्बी ने कहा कि उन मा'बूदों से बुत मुराद हैं, उन्हें अल्लाह तआ़ला गोयाई देगा। **31 :** अल्लाह तआ़ला ह़क़ीक़ते ह़ाल का जानने वाला है उस से कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। येह सुवाल मुश्रिकीन को ज़लील करने के लिये है कि इन के मा'बूद इन्हें झुटलाएं तो इन की ह़सरत व ज़िल्लत और ज़ियादा हो। **32 :** इस से कि कोई तेरा शरीक हो। **33 :** तो हम दूसरे को क्या तेरे ग़ैर के मा'बूद बनाने का हुक्म दे सकते थे, हम तेरे बन्दे हैं। **34 :** और उन्हें अम्वाल व औलाद व तूले उ़म्र व सिह़ह़त व सलामत इनायत की **35 :** शक़ी, बा'दे अज़ीं कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा।

www.dawateislami.net

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ

तो अब मा'बूदों ने तुम्हारी बात झुटला दी तो अब तुम न अ़ज़ाब फेर सको न अपनी मदद कर सको और तुम में

يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿۱۹﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ

जो ज़ालिम है हम उसे बड़ा अ़ज़ाब चखाएंगे और हम ने तुम से पहले जितने

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَ

रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते[36] और

جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿۲۰﴾ ع ٢ ١٧

हम ने तुम में एक को दूसरे की जांच किया है[37] और ऐ लोगो क्या तुम सब्र करोगे[38] और ऐ महबूब तुम्हारा रब देखता है[39]

36 : येह कुफ़्फ़ार के उस ता'न का जवाब है जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर किया था कि वोह बाज़ारों में चलते हैं खाना खाते हैं, यहां बताया गया कि येह उमूर मुनाफ़िये नुबुव्वत नहीं बल्कि येह तमाम अम्बिया की आ़दते मुस्तमिर्रह थी, लिहाज़ा येह ता'न महूज़ जहल व इनाद है। **37 शाने नुज़ूल :** शुरफ़ा जब इस्लाम लाने का क़स्द करते थे तो ग़ुरबा को देख कर येह ख़याल करते कि येह हम से पहले इस्लाम ला चुके इन को हम पर एक फ़ज़ीलत रहेगी, ब ईं ख़याल वोह इस्लाम से बाज़ रहते और शुरफ़ा के लिये ग़ुरबा आज़्माइश बन जाते। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अबू जहल व वलीद बिन उ़क़्बा और आ़स बिन वाइल सहमी और नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन लोगों ने ह़ज़रते अबू ज़र व इब्ने मस्ऊ़द व अ़म्मार इब्ने यासिर व बिलाल व सुहैब व आ़मिर बिन फ़ुहैरा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) को देखा कि पहले से इस्लाम लाए हैं तो ग़ुरूर से कहा कि हम भी इस्लाम ले आएं तो इन्हीं जैसे हो जाएंगे तो हम में और इन में फ़र्क़ क्या रह जाएगा। और एक क़ौल येह है कि येह आयत फ़ुक़राए मुस्लिमीन की आज़्माइश में नाज़िल हुई जिन का कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इस्तिह्ज़ा करते थे और कहते थे कि सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करने वाले येह लोग हैं जो हमारे ग़ुलाम और अरज़ल (ज़लील व ह़क़ीर) हैं। अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की और उन मोमिनीन से फ़रमाया (خازن) **38 :** इस फ़क़्रो शिद्दत पर और कुफ़्फ़ार की इस बदगोई पर। **39 :** उस को जो सब्र करे और उस को जो बे सब्री करे।

www.dawateislami.net

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى

और बोले वोह लोग जो[40] हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते हम पर फ़िरिश्ते क्यूं न उतारे[41] या हम अपने रब को

رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ

देखते[42] बेशक अपने जी में बहुत ही ऊंची खींची और बड़ी सरकशी पर आए[43] जिस दिन फ़िरिश्तों को

الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

देखेंगे[44] वोह दिन मुजरिमों की कोई ख़ुशी का न होगा[45] और कहेंगे इलाही हम में उन में कोई आड़ कर दे रुकी हुई[46]

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ

और जो कुछ उन्हों ने काम किये थे[47] हम ने क़स्द फ़रमा कर उन्हें बारीक बारीक ग़ुबार के बिखरे हुए ज़र्रे कर दिया कि रोज़न की धूप में नज़र आते हैं[48] जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ

वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना[49] और हिसाब के दोपहर के बा'द अच्छी आराम की जगह और जिस दिन फट जाएगा आस्मान

بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ

बादलों से और फ़िरिश्ते उतारे जाएंगे पूरी त़रह[50] उस दिन सच्ची बादशाही रहमान की है

وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त है[51] और जिस दिन ज़ालिम अपने हाथ चबा चबा लेगा[52]

40 : काफ़िर हैं, ह़श्र व बअ़्स के मो'तक़िद नहीं, इसी लिये **41 :** हमारे लिये रसूल बना कर या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत व रिसालत के गवाह बना कर **42 :** वोह ख़ुद हमें ख़बर दे देता कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। **43 :** और उन का तकब्बुर इन्तिहा को पहुंच गया और सरकशी ह़द से गुज़र गई कि मो'जिज़ात का मुशाहदा करने के बा'द मलाएका के अपने ऊपर उतरने और **अल्लाह** तआ़ला को देखने का सुवाल किया। **44 :** या'नी मौत के दिन या क़ियामत के दिन **45 :** रोज़े क़ियामत फ़िरिश्ते मोमिनीन को बिशारत सुनाएंगे और कुफ़्फ़ार से कहेंगे तुम्हारे लिये कोई ख़ुश ख़बरी नहीं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरिश्ते कहेंगे कि मोमिन के सिवा किसी के लिये जन्नत में दाख़िल होना ह़लाल नहीं, इस लिये वोह दिन कुफ़्फ़ार के वासिते़ निहायत ह़स्रतो अन्दोह और रन्जो ग़म का दिन होगा। **46 :** इस कलिमे से वोह मलाएका से पनाह चाहेंगे **47 :** ह़ालते कुफ़्र में मिस्ल सिलए रेह़मी व मेहमान दारी व यतीम नवाज़ी वग़ैरा के **48 :** न हाथ से छूए जाएं न उन का साया हो, मुराद येह है कि वोह आ'माल बाति़ल कर दिये गए उन का कुछ समरा और कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत के लिये ईमान शर्त़ है और वोह उन्हें मुयस्सर न था, इस के बा'द अहले जन्नत की फ़ज़ीलत इर्शाद होती है। **49 :** और उन की क़रार गाह उन मग़रूर मुतकब्बिर मुशरिकों से बुलन्दो बाला बेहतर व आ'ला **50 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : आस्माने दुन्या फटेगा और वहां के रहने वाले (फ़िरिश्ते) उतरेंगे और वोह तमाम अहले ज़मीन से ज़ियादा हैं जिन्नो इन्स सब से। फिर दूसरा आस्मान फटेगा वहां के रहने वाले उतरेंगे वोह आस्माने दुन्या के रहने वालों से और जिन्नो इन्स सब से ज़ियादा हैं। इसी त़रह़ आस्मान फटते जाएंगे और हर आस्मान वालों की ता'दाद अपने मा तह़तों से ज़ियादा है यहां तक कि सातवां आस्मान फटेगा फिर करूबी उतरेंगे फिर ह़ामिलीने अ़र्श और येह रोज़े क़ियामत होगा। **51 :** और **अल्लाह** के फ़ज़्ल से मुसल्मानों पर सहल। ह़दीस शरीफ़ में है कि क़ियामत का दिन मुसल्मानों पर आसान किया जाएगा यहां तक कि वोह उन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से हलका होगा जो दुन्या में पढ़ी थी। **52 :** ह़स्रतो नदामत से। येह ह़ाल अगर्चे कुफ़्फ़ार के लिये आ़म है मगर उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ से इस का ख़ास तअ़ल्लुक़ है। **शाने नुज़ूल :** उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ उबय बिन ख़लफ़ का गहरा दोस्ता था, हुज़ूर

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِی اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿۲۷﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِیْ لَمْ

कि हाए किसी तरह से मैं ने रसूल के साथ राह ली होती[53] वाए ख़राबी मेरी हाए किसी तरह मैं ने

اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿۲۸﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِیْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِیْ ؕ وَ

फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीहत से[54] और

كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِی

शैतान आदमी को बे मदद छोड़ देता है[55] और रसूल ने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने

اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا مِّنَ

इस क़ुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया[56] और इसी तरह हम ने हर नबी के लिये दुश्मन बना दिये थे

الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

मुजरिम लोग[57] और तुम्हारा रब काफ़ी है हिदायत करने और मदद देने को और काफ़िर बोले

لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ مع

क़ुरआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया[58] हम ने यूंही ब तदरीज उसे उतारा है कि उस से तुम्हारा दिल

فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ

मज़बूत करें[59] और हम ने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा[60] और वोह कोई कहावत तुम्हारे पास न लाएंगे[61] मगर हम हक़ और

सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रमाने से उस ने "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" की शहादत दी और इस के बा'द उबय बिन ख़लफ़ के ज़ोर डालने से फिर मुरतद हो गया और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस को मक़्तूल होने की ख़बर दी । चुनान्चे बद्र में मारा गया येह आयत उस के हक़ में नाज़िल हुई कि रोज़े क़ियामत उस को इन्तिहा दरजे की ह़सरतो नदामत होगी, इस ह़सरत में वोह अपने हाथ चाब चाब लेगा । **53 :** जन्नत व नजात की और उन का इत्तिबाअ़ किया होता और उन की हिदायत क़बूल की होती **54 :** या'नी क़ुरआन व ईमान से **55 :** और बला व अ़ज़ाब नाज़िल होने के वक़्त उस से अ़लाह़दगी करता है । ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से अबू दावूद व तिरमिज़ी में एक ह़दीस मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है । तो देखना चाहिये किस को दोस्त बनाता है और ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम नशीनी न करो मगर ईमानदार के साथ और खाना न खिलाओ मगर परहेज़ गार को । **मस्अला :** बे दीन और बद मज़हब की दोस्ती और उस के साथ सोह़बत व इख़्तिलात़ और उल्फ़त व एह़तिराम मम्नूअ़ है । **56 :** किसी ने इस को सेह़र कहा, किसी ने शे'र और वोह लोग ईमान लाने से मह़रूम रहे, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को तसल्ली दी और आप से मदद का वा'दा फ़रमाया जैसा कि आगे इर्शाद होता है । **57 :** या'नी अम्बिया के साथ बद नसीबों का येही मा'मूल रहा है । **58 :** जैसे कि तौरैत व इन्जील व ज़बूर में से हर एक किताब एक साथ उतरी थी । कुफ़्फ़ार का येह ए'तिराज़ बिल्कुल फ़ुज़ूल और मोहमल है क्यूं कि क़ुरआने करीम का मो'जिज़ा व मुह़तज बिही होना हर हाल में यक्सां है, चाहे यक्बारगी नाज़िल हो या ब तदरीज बल्कि ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने में इस के ए'जाज़ का और भी कामिल इज़्हार है कि जब एक आयत नाज़िल हुई और तह़द्दी की गई और ख़ल्क़ का इस के मिस्ल बनाने से आ़जिज़ होना ज़ाहिर हुवा फिर दूसरी उतरी इसी त़रह़ इस का ए'जाज़ ज़ाहिर हुवा, इस त़रह़ बराबर आयत आयत हो कर क़ुरआने पाक नाज़िल होता रहा और हर हर दम इस की बे मिसाली और ख़ल्क़ की आ़जिज़ी ज़ाहिर होती रही । ग़रज़ कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ मह़ज़ लग़्व व बे मा'ना है, आयत में **अल्लाह** तआ़ला ब तदरीज नाज़िल फ़रमाने की ह़िक्मत ज़ाहिर फ़रमाता है । **59 :** और पयाम का सिल्सिला जारी रहने से आप के क़ल्बे मुबारक को तस्कीन होती रहे और कुफ़्फ़ार को हर हर मौक़अ़ पर जवाब मिलते रहें । इलावा बरीं येह भी फ़ाइदा है कि उस का ह़िफ़्ज़ सहल और आसान हो । **60 :** ब ज़बाने जिब्रील थोड़ा

www.dawateislami.net

اَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿۳۳﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ

इस से बेहतर बयान ले आएंगे वोह जो जहन्नम की त़रफ़ हांके जाएंगे अपने मुंह के बल

اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۳۴﴾ ع وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ ع

उन का ठिकाना सब से बुरा[62] और वोह सब से गुमराह और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई और

جَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿۳۵﴾ ۚ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

इस के भाई हारून को वज़ीर किया तो हम ने फ़रमाया तुम दोनों जाओ उस क़ौम की त़रफ़ जिस ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿۳۶﴾ ؕ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

हमारी आयतें झुटलाईं[63] फिर हम ने उन्हें तबाह कर के हलाक कर दिया और नूह़ की क़ौम को[64] जब उन्हों ने रसूलों को

الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا

झुटलाया[65] हम ने उन को डुबो दिया और उन्हें लोगों के लिये निशानी कर दिया[66] और हम ने ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार

اَلِيْمًا ﴿۳۷﴾ ۚ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿۳۸﴾

कर रखा है और आ़द और समूद[67] और कूंएं वालों को[68] और इन के बीच में बहुत सी संगतें[69]

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿۳۹﴾ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى

और हम ने सब से मिसालें बयान फ़रमाईं[70] और सब को तबाह कर के मिटा दिया और ज़रूर येह[71] हो आए हैं उस

थोड़ा बीस या तेईस बरस की मुद्दत में, या येह मा'ना हैं कि हम ने आयत के बा'द आयत ब तदरीज नाज़िल फ़रमाई। और बा'ज़ ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें क़िराअत में तरतील करने या'नी ठहर ठहर कर ब इत़्मीनान पढ़ने और क़ुरआन शरीफ़ को अच्छी त़रह अदा करने का हुक्म फ़रमाया जैसा कि दूसरी आयत में इर्शाद हुवा ''وَرَتِّلِ الْقُراٰنَ تَرْتِيْلًا'' **61 :** या'नी मुश्रिकीन आप के दीन के ख़िलाफ़ या आप की नुबुव्वत में क़द्ह़ (ऐबजूई) करने वाला कोई सुवाल पेश न कर सकेंगे। **62 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि आदमी रोज़े क़ियामत तीन त़रीक़े पर उठाए जाएंगे : **एक** गुरौह सुवारियों पर, **एक** गुरौह पियादा पा और **एक** जमाअ़त मुंह के बल घिसटती। अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! वोह मुंह के बल कैसे चलेंगे ? फ़रमाया : जिस ने पाउं पर चलाया है वोही मुंह के बल चलाएगा। **63 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न की त़रफ़। चुनान्चे वोह दोनों ह़ज़रात उन की त़रफ़ गए और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया और अपनी रिसालत की तब्लीग़ की, लेकिन उन बद बख़्तों ने उन ह़ज़रात को झुटलाया। **64 :** भी हलाक कर दिया। **65 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ और ह़ज़रते इदरीस को और ह़ज़रते शीस को या येह बात है कि एक रसूल की तक्ज़ीब तमाम रसूलों की तक्ज़ीब है तो जब उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ को झुटलाया तो सब रसूलों को झुटलाया। **66 :** कि बा'द वालों के लिये इ़ब्रत हों। **67 :** और आ़द ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम और समूद ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम, इन दोनों क़ौमों को भी हलाक किया। **68 :** येह ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम थी जो बुत परस्ती करते थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन की त़रफ़ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा। आप ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी, उन्हों ने सरकशी की, ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और आप को ईज़ा दी। उन लोगों के मकान कूंएं के गिर्द थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें हलाक किया और येह तमाम क़ौम मअ़ अपने मकानों के उस कूंएं के साथ ज़मीन में धंस गई। इस के इलावा और अक़्वाल भी हैं। **69 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद और कूंएं वालों के दरमियान में बहुत सी उम्मतें हैं जिन को अम्बिया की तक्ज़ीब करने के सबब से **अल्लाह** तआ़ला ने हलाक किया। **70 :** और ह़ुज्जतें क़ाइम कीं और उन में से किसी को बिग़ैर इन्ज़ार हलाक न किया। **71 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का अपनी तिजारतों में शाम के सफ़र करते हुए बार बार।

www.dawateislami.net

الْقَرْيَةِ الَّتِیْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ یَكُوْنُوْا یَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا

बस्ती पर जिस पर बुरा बरसाव बरसा था[72] तो क्या येह उसे देखते न थे[73] बल्कि उन्हें जी

لَا یَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿۴۰﴾ وَ اِذَا رَاَوْكَ اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا

उठने की उम्मीद थी ही नहीं[74] और जब तुम्हें देखते हैं तो तुम्हें नहीं ठहराते मगर ठठ्ठा (मज़ाक़)[75] क्या येह हैं

الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿۴۱﴾ اِنْ كَادَ لَیُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْ لَاۤ اَنْ صَبَرْنَا

जिन को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा क़रीब था कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें अगर हम इन पर सब्र न

عَلَیْهَا ؕ وَ سَوْفَ یَعْلَمُوْنَ حِیْنَ یَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۴۲﴾

करते[76] और अब जाना चाहते हैं जिस दिन अ़ज़ाब देखेंगे[77] कि कौन गुमराह था[78]

اَرَءَیْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَیْهِ وَكِیْلًا ﴿۴۳﴾ لا اَمْ

क्या तुम ने उसे देखा जिस ने अपने जी की ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया[79] तो क्या तुम उस की निगहबानी का ज़िम्मा लोगे[80] या

تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ یَسْمَعُوْنَ اَوْ یَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ

येह समझते हो कि उन में बहुत कुछ सुनते या समझते हैं[81] वोह तो नहीं मगर जैसे चौपाए

ع ۲ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِیْلًا ﴿۴۴﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَیْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَ لَوْ شَآءَ

बल्कि उन से भी बदतर गुमराह[82] ऐ महबूब क्या तुम ने अपने रब को न देखा[83] कि कैसा फैलाया साया[84] और अगर चाहता

72 : उस बस्ती से मुराद सदूम है जो क़ौमे लूत़ की पांच बस्तियों में सब से बड़ी बस्ती थी, उन बस्तियों में एक सब से छोटी बस्ती के लोग तो उस ख़बीस बदकारी के आ़मिल न थे जिस में बाक़ी चार बस्तियों के लोग मुब्तला थे। इसी लिये उन्हों ने नजात पाई और वोह चार बस्तियां अपनी बद अ़मली के बाइ़स आस्मान से पथ्थर बरसा कर हलाक कर दी गईं। 73 : कि इ़ब्रत पकड़ते और ईमान लाते। 74 : या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने के क़ाइल न थे कि उन्हें आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब की परवाह होती। 75 : और कहते हैं : 76 : इस से मा'लूम हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की दा'वत और आप के इज़्हारे मो'जिज़ात ने कुफ़्फ़ार पर इतना असर किया था और दीने ह़क़ को इस क़दर वाज़ेह़ कर दिया था कि ख़ुद कुफ़्फ़ार को इक़्रार है कि अगर वोह अपनी हट पर जमे न रहते तो क़रीब था कि बुत परस्ती छोड़ दें और दीने इस्लाम इख़्तियार करें या'नी दीने इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो चुकी थी और शुकूको शुबुहात मिटा डाले गए थे लेकिन वोह अपनी हट और ज़िद की वज्ह से महरूम रहे। 77 : आख़िरत में 78 : येह उस का जवाब है कि कुफ़्फ़ार ने येह कहा था कि क़रीब है कि येह हमें हमारे ख़ुदाओं से बहका दें, यहां बताया गया कि बहके हुए तुम ख़ुद हो और आख़िरत में येह तुम को ख़ुद मा'लूम हो जाएगा और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ बहकाने की निस्बत महज़ बे जा है। 79 : और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजने लगा, उसी का मुत़ीअ़ हो गया, वोह हिदायत किस त़रह क़बूल करेगा। मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग एक पथ्थर को पूजते थे और जब कहीं उन्हें कोई दूसरा पथ्थर उस से अच्छा नज़र आता तो पहले को फेंक देते और दूसरे को पूजने लगते। 80 : कि ख़्वाहिश परस्ती से रोक दो 81 : या'नी वोह अपने शिद्दते इ़नाद से न आप की बात सुनते हैं न दलाइल व बराहीन को समझते हैं, बहरे और ना समझ बने हुए हैं। 82 : क्यूं कि चौपाए भी अपने रब की तस्बीह़ करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उस के मुत़ीअ़ रहते हैं और एह़सान करने वाले को पहचानते हैं और तक्लीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नाफ़ेअ़ की त़लब करते हैं, मुज़िर से बचते हैं, चरागाहों की राहें जानते हैं, येह कुफ़्फ़ार उन से भी बदतर हैं कि न रब की इत़ाअ़त करते हैं न उस के एह़सान को पहचानते हैं न शैत़ान जैसे दुश्मन की ज़रर रसानी को समझते हैं न सवाब जैसी अ़ज़ीमुल मन्फ़अ़त चीज़ के त़ालिब हैं न अ़ज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मोहलिका से बचते हैं। 83 : कि उस की सन्अ़त व क़ुदरत कैसी अ़जीब है। 84 : सुब्ह़े सादिक़ के तुलूअ़

www.dawateislami.net

لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿۴۵﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

तो उसे ठहराया हुवा कर देता[85] फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी

قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّ

तरफ़ समेटा[86] और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और

جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿۴۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ

दिन बनाया उठने के लिये[87] और वोही है जिस ने हवाएं भेजीं अपनी रह़मत के आगे

رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿۴۸﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ

मुज़्दा सुनाती हुई[88] और हम ने आस्मान से पानी उतारा पाक करने वाला ताकि हम उस से ज़िन्दा करें किसी मुर्दा शहर को[89] और

نُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿۴۹﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ

उसे पिलाएं अपने बनाए हुए बहुत से चौपाए और आदमियों को और बेशक हम ने उन में पानी के फेरे

لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۵۰﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ

रखे[90] कि वोह ध्यान करें[91] तो बहुत लोगों ने न माना मगर नाशुक्री करना और हम चाहते तो हर बस्ती में

قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿۵۱﴾ ۖ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿۵۲﴾

एक डर सुनाने वाला भेजते[92] तो काफ़िरों का कहा न मान और इस क़ुरआन से उन पर जिहाद कर बड़ा जिहाद

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَ

और वोही है जिस ने मिले हुए रवां किये दो समुन्दर येह मीठा है निहायत शीरीं और येह खारी है निहायत तल्ख़ और

جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ

उन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़[93] और वोही है जिस ने पानी से[94] बनाया

के बा'द से आफ़्ताब के तुलूअ़ तक कि उस वक़्त तमाम ज़मीन में साया ही साया होता है न धूप है न अंधेरा है। **85 :** कि आफ़्ताब के तुलूअ़ से भी ज़ाइल न होता। **86 :** कि तुलूअ़ के बा'द आफ़्ताब जितना ऊंचा होता गया साया सिमटता गया। **87 :** कि इस में रोज़ी तलाश करो और कामों में मश्ग़ूल हो। ह़ज़रते लुक़्मान ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : जैसे सोते हो फिर उठते हो ऐसे ही मरोगे और मौत के बा'द फिर उठोगे। **88 :** यहां रह़मत से मुराद बारिश है **89 :** जहां की ज़मीन ख़ुश्की से बेजान हो गई **90 :** कि कभी किसी शहर में बारिश हो कभी किसी में, कभी कहीं ज़ियादा हो कभी कहीं। मुख़्तलिफ़ त़ौर पर ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत। एक ह़दीस में है कि आस्मान से रोज़ो शब की तमाम साअ़तों में बारिश होती रहती है **अल्लाह** तआ़ला उसे जिस ख़ित्ते की जानिब चाहता है फेरता है और जिस ज़मीन को चाहता है सैराब करता है। **91 :** और **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व ने'मत में ग़ौर करें **92 :** और आप पर से इन्ज़ार (डराने) का बार कम कर देते, लेकिन हम ने तमाम बस्तियों के इन्ज़ार का बार आप ही पर रखा ताकि आप तमाम जहान के रसूल हो कर कुल रसूलों की फ़ज़ीलतों के जामेअ़ हों और नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो कि आप के बा'द फिर कोई नबी न हो **93 :** कि न मीठा खारी हो न खारी मीठा, न कोई किसी के ज़ाएक़े को बदल सके जैसे कि दिज्ला दरियाए शोर में मीलों तक चला

www.dawateislami.net

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ

आदमी फिर उस के रिश्ते और सुसराल मुक़र्रर की[95] और तुम्हारा रब क़ुदरत वाला है[96] और **अल्लाह** के सिवा ऐसों

دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾

को पूजते हैं[97] जो उन का भला बुरा कुछ न करें और काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है[98]

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ

और हम ने तुम्हें न भेजा मगर[99] ख़ुशी और[100] डर सुनाता तुम फ़रमाओ मैं इस[101] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता

اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ

मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले[102] और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो

مع ٨ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٨﴾ۚۛ

कभी न मरेगा[103] और उसे सराहते हुए उस की पाकी बोलो[104] और वोही काफ़ी है अपने बन्दों के गुनाहों पर ख़बरदार[105]

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

जिस ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है छ[6] दिन में बनाए[106] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۛۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ

अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है[107] वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला तो किसी जानने वाले से उस की ता'रीफ़ पूछ[108] और जब उन से कहा जाए[109]

اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ

रह़मान को सज्दा करो कहते हैं रह़मान क्या है क्या हम सज्दा कर लें जिसे तुम कहो[110] और इस हुक्म ने उन्हें और बिदक्ना

जाता है और उस के ज़ाएक़े में कोई तग़य्युर नहीं आता, अ़जब शाने इलाही है। **94 :** या'नी नुत़्फ़े से **95 :** कि नस्ल चले **96 :** कि उस ने एक नुत़्फ़े से दो क़िस्म के इन्सान पैदा किये मुज़क्कर और मुअन्नस, फिर भी काफ़िरों का येह हाल है कि उस पर ईमान नहीं लाते। **97 :** या'नी बुतों को **98 :** क्यूं कि बुत परस्ती करना शैत़ान को मदद देना है **99 :** ईमान व त़ाअ़त पर जन्नत की **100 :** कुफ़्रो मा'सियत पर अ़ज़ाबे जहन्नम का **101 :** तब्लीग़ व इर्शाद **102 :** और उस का क़ुर्ब और उस की रिज़ा ह़ासिल करे, मुराद येह है कि ईमानदारों का ईमान लाना और उन का त़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल होना ही मेरा अज्र है क्यूं कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला मुझे इस पर जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा, इस लिये कि सुलहाए उम्मत के ईमान और उन की नेकियों के सवाब उन्हें भी मिलते हैं और उन के अम्बिया को जिन की हिदायत से वोह इस रुत्बे पर पहुंचे। **103 :** उसी पर भरोसा करना चाहिये क्यूं कि मरने वाले पर भरोसा करना आ़क़िल की शान नहीं। **104 :** उस की तस्बीह़ व तह़मीद करो, उस की त़ाअ़त और शुक्र बजा लाओ। **105 :** न उस से किसी का गुनाह छुपे न कोई उस की गिरिफ़्त से अपने को बचा सके। **106 :** या'नी इतनी मिक़्दार में क्यूं कि लैलो नहार और आफ़्ताब तो थे ही नहीं और इतनी मिक़्दार में पैदा करना अपनी मख़्लूक़ को आहिस्तगी और इत्मीनान की ता'लीम के लिये है, वरना वोह एक लम्हे में सब कुछ पैदा कर देने पर क़ादिर है। **107 :** सलफ़ का मज़्हब येह है कि इस्तिवा और इस के अम्साल जो वारिद हुए हम उस पर ईमान रखते हैं और इस की कैफ़िय्यत के दरपै नहीं होते, इस को **अल्लाह** जाने। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस्तिवा को बुलन्दी और बरतरी के मा'ना में लेते हैं और बा'ज़ इस्तीला (ग़लबा) के मा'ना में लेकिन क़ौले अव्वल ही अस्लम व अक़्वा है। **108 :** इस में इन्सान को ख़ित़ाब है कि ह़ज़रते रह़मान की सिफ़ात मर्दे आ़रिफ़ से दरयाफ़्त करे। **109 :** या'नी जब सय्यिदे आ़लम

السجدة ع ٦ ١٦

نُفُوۡرًا ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِىۡ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوۡجًا وَّجَعَلَ فِيۡهَا سِرٰجًا وَّ

बढ़ाया[111] बड़ी बरकत वाला है वोह जिस ने आस्मान में बुर्ज बनाए[112] और उन में चराग़ रखा[113] और

قَمَرًا مُّنِيۡرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ جَعَلَ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ خِلۡفَةً لِّمَنۡ اَرَادَ

चमक्ता चांद और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी[114] उस के लिये

اَنۡ يَّذَّكَّرَ اَوۡ اَرَادَ شُكُوۡرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحۡمٰنِ الَّذِيۡنَ يَمۡشُوۡنَ عَلَى

जो ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे और रह्मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर

الۡاَرۡضِ هَوۡنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الۡجٰهِلُوۡنَ قَالُوۡا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيۡنَ

आहिस्ता चलते हैं[115] और जब जाहिल उन से बात करते हैं[116] तो कहते हैं बस सलाम[117] और वोह जो

يَبِيۡتُوۡنَ لِرَبِّهِمۡ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيۡنَ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا اصۡرِفۡ

रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़ियाम में[118] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हम से

عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا سَآءَتۡ مُسۡتَقَرًّا

फेर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक उस का अ़ज़ाब गले का ग़ुल (फन्दा) है[119] बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم मुश्रिकीन से फ़रमाएं कि **110 :** इस से उन का मक़्सद येह है कि रह्मान को जानते नहीं और येह बातिल है जो उन्हों ने बराहे इनाद कहा क्यूं कि लुग़ते अ़रब जानने वाला ख़ूब जानता है कि रह्मान के मा'ना निहायत रहम वाला हैं और येह **अल्लाह** तआ़ला ही की सिफ़त है। **111 :** या'नी सज्दे का हुक्म उन के लिये और ज़ियादा ईमान से दूरी का बाइस हुवा। **112 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि बुरूज से कवाकिबे सब्अ़ा सय्यारा के मनाज़िल मुराद हैं, जिन की ता'दाद बारह 12 है : ह़म्ल[1], सौर[2], जौज़ा[3], सरत़ान[4], असद[5], सुम्बुला[6], मीज़ान[7], अ़क़्रब[8], क़ौस[9], जद्य[10], दल्व[11], ह़ूत[12]। **113 :** चराग़ से यहां आफ़्ताब मुराद है। **114 :** कि उन में एक के बा'द दूसरा आता है और उस का क़ाइम मक़ाम होता है कि जिस का अ़मल रात या दिन में से किसी एक में क़ज़ा हो जाए तो दूसरे में अदा करे ऐसा ही फ़रमाया ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمَا ने और रात और दिन का एक दूसरे के बा'द आना और क़ाइम मक़ाम होना **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत व ह़िक्मत की दलील है। **115 :** इत़्मीनान व वक़ार के साथ मुतवाज़ेआ़ना शान से, न कि मुतकब्बिराना त़रीक़े पर जूते खट खटाते पाउं ज़ोर से मारते इतराते कि येह मुतकब्बिरीन की शान है और शर्अ़ ने इस को मन्अ़ फ़रमाया। **116 :** और कोई ना गवार कलिमा या बेहूदा या ख़िलाफ़े अदब व तहज़ीब बात कहते हैं **117 :** येह सलामे मुतारकत है या'नी जाहिलों के साथ मुजादला करने से ए'राज़ करते हैं या येह मा'ना है कि ऐसी बात कहते हैं जो दुरुस्त हो और उस में ईज़ा और गुनाह से सालिम रहें। ह़सन बसरी ने फ़रमाया कि येह तो उन बन्दों के दिन का ह़ाल है और उन की रात का बयान आगे आता है। मुराद येह है कि उन की मजलिसी ज़िन्दगी और ख़ल्क़ के साथ मुआ़मला ऐसा पाकीज़ा है और उन की ख़ल्वत की ज़िन्दगानी और ह़क़ के साथ राबित़ा येह है जो आगे बयान फ़रमाया जाता है। **118 :** या'नी नमाज़ और इबादत में शब बेदारी करते हैं और रात अपने रब की इबादत में गुज़ारते हैं और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने करम से थोड़ी इबादत वालों को भी शब बेदारी का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا ने फ़रमाया कि जिस किसी ने बा'दे इशा दो रक्अ़त या ज़ियादा नफ़्ल पढ़े वोह शब बेदारी करने वालों में दाख़िल है। मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से मरवी है जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने निस्फ़ शब के क़ियाम का सवाब पाया और जिस ने फ़ज्र भी बा जमाअ़त अदा की वोह तमाम शब के इबादत करने वाले की मिस्ल है। **119 :** या'नी लाज़िम, जुदा न होने वाला। इस आयत में उन बन्दों की शब बेदारी और इबादत का ज़िक्र फ़रमाने के बा'द उन की इस दुआ़ का बयान किया, इस से येह इज़्हार मक़्सूद है कि वोह बा वुजूद कस्रते इबादत के **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ रखते हैं और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ करते हैं।

www.dawateislami.net

وَّ مُقَامًا ﴿۶۶﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ

जगह है और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें[120] और इन दोनों के बीच

ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿۶۷﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ

ए'तिदाल पर रहें[121] और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते[122] और उस जान को

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

जिस की **अल्लाह** ने ह़ुरमत रखी[123] नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते[124] और जो येह काम करे

يَلْقَ اَثَامًا ﴿۶۸﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ

वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन[125] और हमेशा उस में ज़िल्लत से

مُهَانًا ﴿۶۹﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ

रहेगा मगर जो तौबा करे[126] और ईमान लाए[127] और अच्छा काम करे[128] तो ऐसों की बुराइयों को

اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۰﴾ وَمَنْ تَابَ وَ

अल्लाह भलाइयों से बदल देगा[129] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और

عَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿۷۱﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ

अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं

120 : इसराफ़ मा'सियत में ख़र्च करने को कहते हैं। एक बुज़ुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं। दूसरे बुज़ुर्ग ने कहा : नेकी में इसराफ़ ही नहीं। और तंगी करना येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के मुक़र्रर किये हुए हुक़ूक़ के अदा करने में कमी करे, येही ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी ह़क़ को मन्अ़ किया उस ने इक़्तार किया या'नी तंगी की और जिस ने नाह़क़ में ख़र्च किया उस ने इसराफ़ किया। यहां उन बन्दों के ख़र्च करने का ह़ाल ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह इसराफ़ व इक़्तार के दोनों मज़मूम त़रीक़ों से बचते हैं। **121 :** अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अपनी बेटी बियाहते वक़्त ख़र्च का ह़ाल दरयाफ़्त किया तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि नेकी दो बदियों के दरमियान है। इस से मुराद येह थी कि ख़र्च में ए'तिदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक़्तार के दरमियान है जो दोनों बदियां हैं, इस से अ़ब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह इस आयत के मज़मून की त़रफ़ इशारा करते हैं। मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में जिन ह़ज़रात का ज़िक्र है वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किबार हैं जो न लज़्ज़त व तनअ़ुम के लिये खाते, न ख़ूब सूरती और ज़ीनत के लिये पहनते, भूक रोकना सत्र छुपाना सरदी गरमी की तक्लीफ़ से बचना इतना उन का मक़्सद था। **122 :** शिर्क से बरी और बेज़ार हैं। **123 :** और उस का ख़ून मुबाह़ न किया जैसे कि मोमिन व मुआ़हिद उस को **124 :** सालिह़ीन से इन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है जो इन बदियों में गिरिफ़्तार थे। **125 :** या'नी वोह शिर्क के अ़ज़ाब में भी गिरिफ़्तार होगा और इन मआ़सी का अ़ज़ाब उस अ़ज़ाब पर और ज़ियादा किया जाएगा। **126 :** शिर्क व कबाइर से **127 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर **128 :** या'नी बा'दे तौबा नेकी इख़्तियार करे **129 :** या'नी बदी करने के बा'द नेकी की तौफ़ीक़ दे कर या येह मा'ना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उन की जगह ईमान व त़ाअ़त वग़ैरा नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (مدارک) मुस्लिम की ह़दीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख़्स ह़ाज़िर किया जाएगा मलाएका ब हुक्मे इलाही उस के सग़ीरा गुनाह एक एक कर के उस को याद दिलाते जाएंगे वोह इक़रार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश होने से डरता होगा। इस के बा'द कहा जाएगा कि हर एक बदी के इवज़ तुझ को नेकी दी गई। येह बयान फ़रमाते हुए सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

الزُّوْرَ ۙ وَ اِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿۷۲﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ

देते[130] और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं[131] और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّ عُمْيَانًا ﴿۷۳﴾ وَ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर[132] बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते[133] और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक[134] और हमें परहेज़ गारों का

اِمَامًا ﴿۷۴﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَ يُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً

पेश्वा बना[135] उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे (दुआ़ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेश्वाई

وَّ سَلٰمًا ﴿۷۵﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿۷۶﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ

होगी[136] हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फ़रमाओ[137] तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं

رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿۷۷﴾ ع

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया[138] तो अब होगा वोह अ़ज़ाब कि लिपट रहेगा[139]

الربع

اياتها ٢٢٧ | ٢٦ سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ ٤٧ | رکوعاتها ١١

सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला की बन्दा नवाज़ी और उस की शाने करम पर ख़ुशी हुई और चेहरए अक़्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए। **130 :** और झूटों की मजलिस से अ़लाह़दा रहते हैं और उन के साथ मुख़ालत़त नहीं करते **131 :** और अपने आप को लह्व व बात़िल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजालिस से ए'राज़ करते हैं। **132 :** ब त़रीक़े तग़ाफ़ुल (ग़फ़्लत करते हुए) **133 :** कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीह़त से पन्द पज़ीर होते (नसीह़त क़बूल करते) हैं, नफ़्अ़ उठाते हैं और उन आयतों पर फ़रमां बरदाराना गिरते हैं। **134 :** या'नी फ़रह़त व सुरूर। मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह़ मुत्तक़ी अ़त़ा फ़रमा कि उन के ह़ुस्ने अ़मल और उन की इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल ख़ुश हों। **135 :** या'नी हमें ऐसा परहेज़ गार और ऐसा आ़बिद व ख़ुदा परस्त बना कि हम परहेज़ गारों की पेश्वाई के क़ाबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़्तिदा करें। **मस्अला :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेश्वाई और सरदारी की रग़बत व त़लब चाहिये। इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने अपने सालिह़ीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फ़रमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **136 :** मलाएका तह़िय्यत व तस्लीम के साथ उन की तक्रीम करेंगे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ सलाम भेजेगा। **137 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से कि **138 :** मेरे रसूल और मेरी किताब को **139 :** या'नी अ़ज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम। **1 :** सूरए शुअ़राअ मक्किय्या है सिवाए आख़िर की चार आयतों के जो "وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُم" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में ग्यारह 11 रुकूअ़ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनासी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के ग़म में कि वोह ईमान नहीं

مُؤْمِنِيْنَ ﴿۳﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا

लाए[3] अगर हम चाहें तो आस्मान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हु़ज़ूर झुके रह

خٰضِعِيْنَ ﴿۴﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا

जाएं[4] और नहीं आती उन के पास रह़मान की त़रफ़ से कोई नई नसीह़त मगर उस से मुंह

عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ﴿۵﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

फेर लेते हैं[5] तो बेशक उन्हों ने झुटलाया तो अब उन पर आया चाहती हैं ख़बरें उन के

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ

ठठ्ठे (मज़ाक़) की[6] क्या उन्हों ने ज़मीन को न देखा हम ने उस में कितने इ़ज़्ज़त वाले जोड़े

كَرِيْمٍ ﴿۷﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۸﴾ وَاِنَّ

उगाए[7] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[8] और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं और बेशक

ع ۹ ۵

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۹﴾ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰۤى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ

तुम्हारा रब ज़रूर वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है[9] और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰﴾ لا قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿۱۱﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَخَافُ

पास जा जो फ़िरऔ़न की क़ौम है[10] क्या वोह न डरेंगे[11] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं डरता हूं कि

2 : या'नी क़ुरआने पाक की, जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर है और जो ह़क़ को बात़िल से मुमताज़ करने वाला है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बराहे रह़मत व करम ख़ित़ाब होता है। 3 : जब अहले मक्का ईमान न लाए और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की तो हुज़ूर पर उन की मह़रूमी बहुत शाक़ हुई, इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई कि आप इस क़दर ग़म न करें। 4 : और कोई मा'सियत व ना फ़रमानी के साथ गरदन न उठा सके। 5 : या'नी दम बदम उन का कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो मौइ़ज़त व तज़्कीर (वा'ज़ो नसीह़त) और जो वह़्य नाज़िल होती है वोह उस का इन्कार करते चले जाते हैं। 6 : येह वई़द है और इस में इन्ज़ार है कि रोज़े बद्र या रोज़े क़ियामत जब उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि क़ुरआन और रसूल की तक्ज़ीब का येह अन्जाम है। 7 : या'नी क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन और नाफ़ेअ़ नबातात पैदा किये और शअ़बी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावार हैं। जो जन्नती है वोह इ़ज़्ज़त वाला और करीम और जो जहन्नमी है वोह बद बख़्त लईम है। 8 : अल्लाह तआ़ला के कमाले क़ुदरत पर 9 : काफ़िरों से इन्तिक़ाम लेता और मोमिनीन पर रह़मत फ़रमाता है। 10 : जिन्हों ने कुफ़्र व मआ़सी से अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और बनी इसराईल को ग़ुलाम बना कर और उन्हें त़रह़ त़रह़ की ईज़ाएं पहुंचा कर उन पर ज़ुल्म किया, उस क़ौम का नाम क़िब्त़ है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उन की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा गया कि उन्हें उन की बद किरदारी पर ज़ज्र फ़रमाएं। 11 : अल्लाह से, और अपनी जानों को अल्लाह तआ़ला पर ईमान ला कर और उस की फ़रमां बरदारी कर के उस के अ़ज़ाब से न बचाएंगे। इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में।

www.dawateislami.net

اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۱۲﴾ وَ يَضِيْقُ صَدْرِىْ وَ لَا يَنْطَلِقُ لِسَانِىْ فَاَرْسِلْ اِلٰى

वोह मुझे झुटलाएंगे और मेरा सीना तंगी करता है[12] और मेरी ज़बान नहीं चलती[13] तो तू हारून को भी

هٰرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَهُمْ عَلَىَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۱۴﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

रसूल कर[14] और उन का मुझ पर एक इल्ज़ाम है[15] तो मैं डरता हूं कहीं मुझे[16] क़त्ल कर दें फ़रमाया यूं नहीं[17] तुम दोनों मेरी आयतें

بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿۱۵﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ

ले कर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं[18] तो फ़िरऔन के पास जाओ फिर उस से कहो हम दोनों उस के रसूल हैं

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ

जो रब है सारे जहां का कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे[19] बोला क्या हम ने तुम्हें

فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ

अपने यहां बचपन में न पाला और तुम ने हमारे यहां अपनी उ़म्र के कई बरस गुज़ारे[20] और तुम ने किया अपना वोह काम

الَّتِىْ فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ

जो तुम ने किया[21] और तुम नाशुक्र थे[22] मूसा ने फ़रमाया मैं ने वोह काम किया जब कि मुझे राह की

الضَّآلِّيْنَ ﴿۲۰﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِىْ رَبِّىْ حُكْمًا وَّ

ख़बर न थी[23] तो मैं तुम्हारे यहां से निकल गया जब कि तुम से डरा[24] तो मेरे रब ने मुझे हुक्म अ़ता फ़रमाया[25] और

12 : उन के झुटलाने से **13 :** या'नी गुफ़्तगू करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है उस उ़क़्दह (गिरह) की वज्ह से जो ज़बान में ब अय्यामे सिग्र सिनी मुंह में आग का अंगारा रख लेने से हो गया है। **14 :** ताकि वोह तब्लीग़े रिसालत में मेरी मदद करें। जिस वक़्त ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को (मुल्के) शाम में नुबुव्वत अ़ता की गई उस वक़्त ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में थे। **15 :** कि मैं ने क़िब्ती को मारा था। **16 :** उस के बदले में **17 :** तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और **अल्लाह** तआला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को भी नबी कर दिया और दोनों को हुक्म दिया **18 :** जो तुम कहो और जो तुम्हें जवाब दिया जाए। **19 :** ताकि हम उन्हें सर ज़मीने शाम में ले जाएं। फ़िरऔन ने चार सो बरस तक बनी इसराईल को गुलाम बनाए रखा था और उस वक़्त बनी इसराईल की ता'दाद छ[6] लाख तीस हज़ार 630000 थी। **अल्लाह** तआला का येह हुक्म पा कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र की त़रफ़ रवाना हुए, आप पश्मीना (ऊन) का जुब्बा पहने हुए थे, दस्ते मुबारक में अ़सा था, अ़सा के सिरे में ज़म्बील लटकी थी जिस में सफ़र का तोशा था, इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाख़िल हुए। ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام वहीं थे आप ने उन्हें ख़बर दी कि **अल्लाह** तआला ने मुझे रसूल बना कर फ़िरऔन की त़रफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फ़िरऔन को ख़ुदा की त़रफ़ दा'वत दो। येह सुन कर आप की वालिदा साहिबा घबराई और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगीं कि फ़िरऔन तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है, जब तुम उस के पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा। लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उन के येह फ़रमाने से न रुके और ह़ज़रते हारून को साथ ले कर शब के वक़्त फ़िरऔन के दरवाज़े पर पहुंचे, दरवाज़ा खट खटाया, पूछा : आप कौन हैं ? ह़ज़रत ने फ़रमाया : मैं हूं मूसा, रब्बुल आ़लमीन का रसूल। फ़िरऔन को ख़बर दी गई और सुब्ह़ के वक़्त आप बुलाए गए आप ने पहुंच कर **अल्लाह** तआला की रिसालत अदा की और फ़िरऔन के पास जो हुक्म पहुंचाने पर आप मामूर किये गए थे वोह पहुंचाया, फ़िरऔन ने आप को पहचाना। **20 :** मुफ़स्सिरीन ने कहा : तीस बरस, उस ज़माने में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़िरऔन के लिबास पहनते थे और उस की सुवारियों में सुवार होते थे और उस के फ़रज़न्द मश्हूर थे। **21 :** क़िब्ती को क़त्ल किया **22 :** कि तुम ने हमारी ने'मत की सिपास गुज़ारी न की और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया। **23 :** मैं न जानता था कि

www.dawateislami.net

جَعَلَنِیۡ مِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۲۱﴾ وَ تِلۡكَ نِعۡمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَیَّ اَنۡ عَبَّدۡتَّ بَنِیۡۤ

मुझे पैग़म्बरों से किया और येह कोई ने'मत है जिस का तू मुझ पर एह़सान जताता है कि तू ने ग़ुलाम बना कर रखे बनी

اِسۡرَآءِیۡلَ ﴿۲۲﴾ قَالَ فِرۡعَوۡنُ وَ مَا رَبُّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

इसराईल[26] फ़िरऔ़न बोला और सारे जहान का रब क्या है[27] मूसा ने फ़रमाया रब आस्मानों

وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا بَیۡنَهُمَا ؕ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِیۡنَ ﴿۲۴﴾ قَالَ لِمَنۡ حَوۡلَهٗۤ اَلَا

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[28] अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम

تَسۡتَمِعُوۡنَ ﴿۲۵﴾ قَالَ رَبُّكُمۡ وَ رَبُّ اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنَّ

ग़ौर से सुनते नहीं[29] मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का[30] बोला

رَسُوۡلَكُمُ الَّذِیۡۤ اُرۡسِلَ اِلَیۡكُمۡ لَمَجۡنُوۡنٌ ﴿۲۷﴾ قَالَ رَبُّ الۡمَشۡرِقِ وَ

तुम्हारे येह रसूल जो तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अ़क़्ल नहीं रखते[31] मूसा ने फ़रमाया रब पूरब (मशरिक़) और

الۡمَغۡرِبِ وَ مَا بَیۡنَهُمَا ؕ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۲۸﴾ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذۡتَ اِلٰهًا

पश्चिम (मग़रिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है[32] अगर तुम्हें अ़क़्ल हो[33] बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को ख़ुदा

घूंसा मारने से वोह शख़्स मर जाएगा, मेरा मारना तादीब के लिये था, न क़त्ल के लिये **24 :** कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और शह्र मद्यन को चला गया। **25 :** मद्यन से वापसी के वक़्त। "हुक्म" से यहां या नुबुव्वत मुराद है या इल्म। **26 :** या'नी इस में तेरा क्या एह़सान है कि तुम ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया क्यूं कि मेरे तुझ तक पहुंचने का सबब तो येही हुवा कि तू ने बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाया उन की औलादों को क़त्ल किया, येह तेरा ज़ुल्मे अ़ज़ीम इस का बाइस हुवा कि मेरे वालिदैन मुझे परवरिश न कर सके और मेरे दरिया में डालने पर मजबूर हुए, तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालिदैन के पास रहता, इस लिये येह बात क्या इस क़ाबिल है कि इस का एह़सान जताया जाए? फ़िरऔ़न, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस तक़रीर से ला जवाब हुवा और उस ने उस्लूबे कलाम बदला और येह गुफ़्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरूअ़ की। **27 :** जिस के तुम अपने आप को रसूल बताते हो। **28 :** या'नी अगर तुम अश्या को दलील से जानने की सलाहि़य्यत रखते हो तो इन चीज़ों की पैदाइश उस के वुजूद की काफ़ी दलील है। ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिद्लाल से ह़ासिल हो इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला की शान में मूक़िन नहीं कहा जाता। **29 :** उस वक़्त उस के गिर्द उस की क़ौम के अशराफ़ में से पांच सो शख़्स ज़ेवरों से आरास्ता ज़र्री कुर्सियों पर बैठे थे, उन से फ़िरऔ़न का येह कहना क्या तुम ग़ौर से नहीं सुनते ब ईं मा'ना था कि वोह आस्मान और ज़मीन को क़दीम समझते थे और इन के हुदूस के मुन्किर थे, मत़लब येह था कि जब येह चीज़ें क़दीम हैं तो इन के लिये रब की क्या ह़ाजत? अब ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन चीज़ों से इस्तिद्लाल पेश करना चाहा जिन का हुदूस और जिन की फ़ना मुशाहदे में आ चुकी है। **30 :** या'नी अगर तुम दूसरी चीज़ों से इस्तिद्लाल नहीं कर सकते तो ख़ुद तुम्हारे नुफ़ूस से इस्तिद्लाल पेश किया जाता है, अपने आप को जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वोह फ़ना हो गए तो अपनी पैदाइश से और उन की फ़ना से पैदा करने और फ़ना कर देने वाले के वुजूद का सुबूत मिलता है। **31 :** फ़िरऔ़न ने येह इस लिये कहा कि वोह अपने सिवा किसी मा'बूद के वुजूद का क़ाइल न था और जो इस के मा'बूद होने का ए'तिक़ाद न रखे उस को ख़ारिज अज़ अ़क़्ल कहता था और ह़क़ीक़तन इस त़रह़ की गुफ़्तगू इज्ज़ के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है, लेकिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़र्ज़े हिदायत व इर्शाद को अ़ला वज्हिल कमाल अदा किया और उस की तमाम ला या'नी (फ़ुज़ूल) गुफ़्तगू के बा वुजूद फिर मज़ीद बयान की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए। **32 :** क्यूं कि पूरब से आफ़्ताब का तुलूअ़ करना और पश्चिम में ग़ुरूब हो जाना और साल की फ़स्लों में एक हि़साबे मुअ़य्यन पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरा के निज़ाम येह सब उस के वुजूद व क़ुदरत पर दलालत करते हैं। **33 :** अब फ़िरऔ़न मुतह़य्यिर हो गया और आसारे क़ुदरते इलाही के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उस से बन न आया।

www.dawateislami.net

غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿۲۹﴾ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ैद कर दूंगा[34] फ़रमाया क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन चीज़

مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا

लाऊं[35] कहा तो लाओ अगर सच्चे हो तो मूसा ने अपना अ़सा डाल दिया जभी

هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۳۲﴾ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَ

वोह सरीह़ अज़्दहा हो गया[36] और अपना हाथ निकाला[37] तो जभी वोह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा[38] बोला

لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक येह दाना जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने

بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ

जादू के ज़ोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है[39] वोह बोले उन्हें और उन के भाई को ठहराए रहो और शहरों में

حٰشِرِيْنَ ﴿۳۶﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۳۷﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ

जम्अ़ करने वाले भेजो कि वोह तेरे पास ले आएं हर बड़े जादूगर दाना को[40] तो जम्अ़ किये गए जादूगर एक मुक़र्रर

يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۳۸﴾ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿۳۹﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ

दिन के वा'दे पर[41] और लोगों से कहा गया क्या तुम जम्अ़ हो गए[42] शायद हम इन

السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ

जादूगरों ही की पैरवी करें अगर येह ग़ालिब आएं[43] फिर जब जादूगर आए फ़िरऔ़न से बोले

34 : फ़िरऔ़न की क़ैद क़त्ल से बदतर थी, उस का जेलख़ाना तंगो तारीक अ़मीक़ गढ़ा था, उस में अकेला डाल देता था, न वहां कोई आवाज़ सुनाई आती थी न कुछ नज़र आता था। **35 :** जो मेरी रिसालत की बुरहान हो। मुराद इस से मो'जिज़ा है इस पर फ़िरऔ़न ने **36 :** अ़सा अज़्दहा बन कर आस्मान की त़रफ़ ब क़दर एक मील के उड़ा, फिर उतर कर फ़िरऔ़न की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ मूसा मुझे जो चाहिये हुक्म दीजिये। फ़िरऔ़न ने घबरा कर कहा : उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ो। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया। फ़िरऔ़न कहने लगा : इस के सिवा और भी कोई मो'जिज़ा है ? आप ने फ़रमाया : हां और उस को यदे बैज़ा दिखाया। **37 :** गिरेबान में डाल कर **38 :** उस से आफ़्ताब की सी शुआ़अ़ ज़ाहिर हुई। **39 :** क्यूं कि उस ज़माने में जादू का बहुत रवाज था, इस लिये फ़िरऔ़न ने ख़याल किया कि येह बात चल जाएगी और उस की क़ौम के लोग इस धोके में आ कर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुतनफ़्फ़िर हो जाएंगे और उन की बात क़बूल न करेंगे। **40 :** जो इल्मे सेह़र में बक़ौल उन के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बढ़ कर हो और वोह लोग अपने जादू से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात का मुक़ाबला करें ताकि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये हुज्जत बाक़ी न रहे और फ़िरऔ़नियों को येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि येह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नुबुव्वत की दलील नहीं। **41 :** वोह दिन फ़िरऔ़नियों की ईद का था और उस मुक़ाबले के लिये वक़्ते चाश्त मुक़र्रर किया गया था। **42 :** ताकि देखो कि दोनों फ़रीक़ क्या करते हैं और उन में कौन ग़ालिब आता है। **43 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर, इस से मक़्सूद उन का जादूगरों का इत्तिबाअ़ करना न था, बल्कि ग़रज़ येह थी कि इस ह़ीले से लोगों को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से रोकें।

اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۱﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ

क्या हमें कुछ मज़्दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए बोला हां और उस वक़्त तुम मेरे मुक़र्रब

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَاَلْقَوْا

हो जाओगे[44] मूसा ने उन से फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है[45] तो उन्हों ने

حِبَالَهُمْ وَ عِصِیَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَاَلْقٰى

अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम बेशक हमारी ही जीत है[46] तो

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ تَلْقَفُ مَا یَاْفِكُوْنَ ﴿۴۵﴾ فَاُلْقِیَ السَّحَرَةُ

मूसा ने अपना अ़सा डाला जभी वोह उन की बनावटों को निगलने लगा[47] अब सज्दे में

سٰجِدِیْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۷﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾

गिरे जादूगर बोले हम ईमान लाए उस पर जो सारे जहान का रब है जो मूसा और हारून का रब है

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِیْرُكُمُ الَّذِیْ عَلَّمَكُمُ

फ़िरऔन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू

السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ۬ لَاُقَطِّعَنَّ اَیْدِیَكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ

सिखाया[48] तो अब जाना चाहते हो[49] मुझे क़सम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटूंगा

وَّ لَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۴۹﴾ۚ قَالُوْا لَا ضَیْرَ٘ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۵۰﴾ۚ

और तुम सब को सूली दूंगा[50] वोह बोले कुछ नुक़्सान नहीं[51] हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं[52]

44 : तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें ख़ास ए'ज़ाज़ दिये जाएंगे। सब से पहले दाख़िल होने की इजाज़त दी जाएगी, सब से बा'द तक दरबार में रहोगे, इस के बा'द जादूगरों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि क्या हज़रत पहले अपना अ़सा डालेंगे या हमें इजाज़त है कि हम अपना सामाने सेहर डालें। **45 :** ताकि तुम उस का अन्जाम देख लो। **46 :** उन्हें अपने ग़लबे का इत्मीनान था क्यूं कि सेहर के आ'माल में जो इन्तिहा के अ़मल थे वोह उन को काम में लाए थे और यक़ीने कामिल रखते थे कि अब कोई सेहर इस का मुक़ाबला नहीं कर सकता। **47 :** जो उन्हों ने जादू के ज़रीए से बनाई थीं या'नी उन की रस्सियां और लाठियां जो जादू से अज़्दहे बन कर दौड़ते नज़र आ रहे थे। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा अज़्दहा बन कर उन सब को निगल गया फिर उस को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दस्ते मुबारक में लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ अ़सा था। जब जादूगरों ने येह देखा तो उन्हें यक़ीन हो गया कि येह जादू नहीं है। **48 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारे उस्ताद हैं इसी लिये वोह तुम से बढ़ गए। **49 :** कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए। **50 :** इस से मक़्सूद येह था कि आ़म ख़ल्क़ डर जाए और जादूगरों को देख कर लोग हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न ले आएं। **51 :** ख़्वाह दुन्या में कुछ भी पेश आए क्यूं कि **52 :** ईमान के साथ और हमें **अल्लाह** तआ़ला से रह़मत की उम्मीद है।

www.dawateislami.net

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ أَنْ كُنَّآ أَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ۛ وَ ع ٣/١٨

हमें तम्अ़ है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे इस पर कि हम सब से पहले ईमान लाए[53] और

أَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰٓى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِيْٓ إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَأَرْسَلَ

हम ने मूसा को वह्य भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को[54] ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है[55] अब फ़िरऔ़न ने

فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ۚ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ۙ وَ

शहरों में जम्अ़ करने वाले भेजे[56] कि येह लोग एक थोड़ी जमाअ़त हैं और

إِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ۙ وَ إِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ؕ فَأَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ

बेशक वोह हम सब का दिल जलाते हैं[57] और बेशक हम सब चोकन्ने हैं[58] तो हम ने उन्हें[59] बाहर निकाला

جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ۙ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ۙ كَذٰلِكَ ؕ وَأَوْرَثْنٰهَا

बाग़ों और चश्मों और ख़ज़ानों और उ़म्दा मकानों से हम ने ऐसा ही किया और उन का वारिस कर दिया

بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ؕ فَأَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ

बनी इसराईल को[60] तो फ़िरऔ़नियों ने उन का तआ़क़ुब किया दिन निकले फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरोहों का[61] मूसा

أَصْحٰبُ مُوْسٰٓى إِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ۚ قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾

वालों ने कहा हम को उन्हों ने आ लिया[62] मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं[63] बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है

فَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰٓى أَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ

तो हम ने मूसा को वह्य फ़रमाई कि दरिया पर अपना अ़सा मार[64] तो जभी दरिया फट गया[65] तो हर हिस्सा हो गया

كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ۚ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ۚ وَأَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ

जैसे बड़ा पहाड़[66] और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को[67] और हम ने बचा लिया मूसा और उस

53 : रइय्यते फ़िरऔ़न में से या इस मज्मअ़ के हाज़िरीन में से। इस वाक़िए के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कई साल वहां इक़ामत फ़रमाई और उन लोगों को हक़ की दा'वत देते रहे लेकिन उन की सरकशी बढ़ती गई। 54 : या'नी बनी इसराईल को मिस्र से 55 : फ़िरऔ़न और उस के लश्कर पीछा करेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाख़िल होंगे, हम तुम्हें नजात देंगे और उन्हें ग़र्क़ करेंगे। 56 : लश्करों को जम्अ़ करने के लिये। जब लश्कर जम्अ़ हो गए तो उन की कसरत के मुक़ाबिल बनी इसराईल की ता'दाद थोड़ी मा'लूम होने लगी। चुनान्चे फ़िरऔ़न ने बनी इसराईल की निस्बत कहा : 57 : हमारी मुख़ालफ़त कर के और बे हमारी इजाज़त के हमारी सर ज़मीन से निकल कर 58 : मुस्तइद हैं हथियार बन्द हैं। 59 : या'नी फ़िरऔ़नियों को 60 : फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के ग़र्क़ के बा'द। 61 : और उन में से हर एक ने दूसरे को देखा। 62 : अब वोह हम पर क़ाबू पा लेंगे न हम उन के मुक़ाबले की ताक़त रखते हैं न भागने की जगह है क्यूं कि आगे दरिया है। 63 : वा'दए इलाही पर कामिल भरोसा है। 64 : चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दरिया पर अ़सा मारा 65 : और उस के बारह हिस्से नुमूदार हुए 66 : और उन के दरमियान ख़ुश्क राहें। 67 : या'नी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों को ता आं कि वोह बनी इसराईल के रास्तों में

www.dawateislami.net

مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۶۵﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۶۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا

के सब साथ वालों को[68] फिर दूसरों को डुबो दिया[69] बेशक इस में ज़रूर निशानी है[70] और उन

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۶۷﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۶۸﴾ ع

रुकूअ़ ८

में अक्सर मुसलमान न थे[71] और बेशक तुम्हारा रब वोही इ़ज़्ज़त वाला[72] मेहरबान है[73]

وقف لازم

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۶۹﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۷۰﴾

और उन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की[74] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो[75]

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿۷۱﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ

बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उन के सामने आसन मारे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहते हैं फ़रमाया क्या वोह तुम्हारी सुनते हैं जब

تَدْعُوْنَ ﴿۷۲﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿۷۳﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا

तुम पुकारो या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं[76] बोले बल्कि हम ने अपने बाप दादा को

كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿۷۵﴾ اَنْتُمْ وَ

ऐसा ही करते पाया फ़रमाया तो क्या देखते हो जिन्हें पूज रहे हो तुम और

اٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۷﴾ الَّذِيْ

तुम्हारे अगले बाप दादा[77] बेशक वोह सब मेरे दुश्मन हैं[78] मगर परवर्दगारे आ़लम[79] वोह जिस

خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿۷۸﴾ وَ الَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَ يَسْقِيْنِ ﴿۷۹﴾ وَ اِذَا

ने मुझे पैदा किया[80] तो वोह मुझे राह देगा[81] और वोह जो मुझे खिलाता और पिलाता है[82] और जब

चल पड़े जो उन के लिये दरिया में ब क़ुदरते इलाही पैदा हुए थे। **68 :** दरिया से सलामत निकाल कर **69 :** या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को, इस त़रह़ कि जब बनी इसराईल कुल के कुल दरिया से बाहर हो गए और तमाम फ़िरऔ़नी दरिया के अन्दर आ गए तो दरिया ब हुक्मे इलाही मिल गया और मिस्ले साबिक़ हो गया और फ़िरऔ़न मअ़ अपनी क़ौम के डूब गया। **70 :** **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत पर और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है। **71 :** या'नी अहले मिस्र में सिर्फ़ आसिया फ़िरऔ़न की बीबी और ह़िज़्क़ील जिन को मोमिन आले फ़िरऔ़न कहते हैं वोह अपना ईमान छुपाए रहते थे और फ़िरऔ़न के चचाज़ाद थे और मरयम जिस ने ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ब्र का निशान बताया था जब कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के ताबूत को दरिया से निकाला। **72 :** कि उस ने काफ़िरों को ग़र्क़ कर के उन से इन्तिक़ाम लिया। **73 :** मोमिनीन पर जिन्हें ग़र्क़ से नजात दी **74 :** या'नी मुश्रिकीन पर **75 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जानते थे कि वोह लोग बुत परस्त हैं बा वुजूद इस के आप का सुवाल फ़रमाना इस लिये था ताकि उन्हें दिखा दें कि जिन चीज़ों को वोह लोग पूजते हैं वोह किसी त़रह़ इस के मुस्तह़िक़ नहीं। **76 :** जब येह कुछ नहीं तो इन्हें तुम ने मा'बूद किस त़रह़ क़रार दिया **77 :** कि न येह इ़ल्म रखते हैं न क़ुदरत न कुछ सुनते हैं न कोई नफ़्अ़ या ज़रर पहुंचा सकते हैं। **78 :** मैं उन का पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता। **79 :** मेरा रब है, मेरा कारसाज़ है, मैं उस की इ़बादत करता हूं, वोह मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है, उस के औसाफ़ येह हैं **80 :** नेस्त से हस्त (अ़दम से वुजूद अ़त़ा) फ़रमाया और अपनी त़ाअ़त के लिये बनाया **81 :** आदाबे ख़ुल्लत की जैसी कि साबिक़ में हिदायत फ़रमा चुका है मसालेह़े दुन्या व दीन की **82 :** और मेरा रोज़ी देने वाला है।

www.dawateislami.net

مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿۸۰﴾ وَالَّذِىْ يُمِيْتُنِىْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿۸۱﴾ وَالَّذِىْٓ

मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है[83] और वोह मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा[84] और वोह जिस

اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِىْ خَطِيْٓـَٔتِىْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿۸۲﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ حُكْمًا وَّ

की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा[85] ऐ मेरे रब मुझे हुक्म अ़ता कर[86] और

اَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَاجْعَلْ لِّىْ لِسَانَ صِدْقٍ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۸۴﴾

मुझे उन से मिला दे जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं[87] और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में[88]

وَاجْعَلْنِىْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿۸۵﴾ وَاغْفِرْ لِاَبِىْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ

और मुझे उन में कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं[89] और मेरे बाप को बख़्श दे[90] बेशक वोह

الضَّآلِّيْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخْزِنِىْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۸۷﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا

गुमराह है और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे[91] जिस दिन न माल काम आएगा न

بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۹۰﴾

बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर[92] और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के लिये[93]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿۹۱﴾ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿۹۲﴾ مِنْ

और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिये और उन से कहा जाएगा[94] कहां हैं वोह जिन को तुम पूजते थे **अल्लाह**

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿۹۴﴾

के सिवा क्या वोह तुम्हारी मदद करेंगे[95] या बदला लेंगे तो औंधा दिये गए जहन्नम में वोह और सब गुमराह[96]

83 : मेरे अमराज़ दूर करता है। इब्ने अ़ता ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब मैं ख़ल्क़ की दीद से बीमार होता हूं तो मुशाहदए हक़ से मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है। **84 :** मौत और हयात उस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। **85 :** अम्बिया मा'सूम हैं गुनाह उन से सादिर नहीं होते, उन का इस्तिग़्फ़ार अपने रब के हुज़ूर तवाज़ोअ़ है और उम्मत के लिये त़लबे मग़्फ़िरत की ता'लीम है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इन सिफ़ाते इलाहिय्यह को बयान करना अपनी क़ौम पर इक़ामते हुज्जत है कि मा'बूद वोही हो सकता है जिस की येह सिफ़ात हों। **86 :** "हुक्म" से या इल्म मुराद है या हिक्मत या नुबुव्वत। **87 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام, और आप की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ" **88 :** या'नी उन उम्मतों में जो मेरे बा'द आईं। चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने उन को येह अ़ता फ़रमाया कि तमाम अहले अद्यान उन से महब्बत रखते हैं और उन की सना करते हैं। **89 :** जिन्हें तू जन्नत अ़ता फ़रमाएगा **90 :** तौबा व ईमान अ़ता फ़रमा कर। और येह दुआ़ आप ने इस लिये फ़रमाई कि वक़्ते मुफ़ारक़त आप के वालिद ने आप से ईमान लाने का वा'दा किया था, जब ज़ाहिर हो गया कि वोह ख़ुदा का दुश्मन है उस का वा'दा झूटा था तो आप उस से बेज़ार हो गए जैसा कि सूरए बराअत में है : "وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ" । **91 :** या'नी रोज़े क़ियामत **92 :** जो शिर्क, कुफ़्र व निफ़ाक़ से पाक हो, उस को उस का माल भी नफ़्अ़ देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह हो। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उस के अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाते हैं सिवा तीन के, **एक** सदक़ए जारिया। **दूसरा** वोह माल जिस से लोग नफ़्अ़ उठाएं। **तीसरी** नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करे। **93 :** कि उस को देखेंगे **94 :** ब त़रीक़ ज़ज्रो तौबीख़ के उन के शिर्क व कुफ़्र पर **95 :** अ़ज़ाबे

وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾ تَاللَّهِ

और इब्लीस के लश्कर सारे[97] कहेंगे और वोह उस में बाहम झगड़ते होंगे ख़ुदा की क़सम

إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾ إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٩٨﴾ وَمَآ أَضَلَّنَآ

बेशक हम खुली गुमराही में थे जब कि तुम्हें रब्बुल आ़लमीन के बराबर ठहराते थे और हमें न बहकाया

إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَٰفِعِينَ ﴿١٠٠﴾ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَوْ

मगर मुजरिमों ने[98] तो अब हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं[99] और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त[100] तो

أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ

किसी त़रह़ हमें फिर जाना होता[101] कि हम मुसल्मान होते बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में

ع ٥ ٣٦ ٩ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾ كَذَّبَتْ

बहुत ईमान वाले न थे और बेशक तुम्हारा रब वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है नूह़ की

قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया[102] जब कि उन से उन के हमक़ौम नूह़ ने कहा क्या तुम डरते नहीं[103]

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ

बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का भेजा हुवा अमीन हूं[104] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो[105] और मैं इस पर

عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ

तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है तो **अल्लाह** से डरो और

इलाही से बचा कर **96 :** या'नी बुत और उन के पुजारी सब औंधे कर के जहन्नम में डाल दिये जाएंगे। **97 :** या'नी उस के इत्तिबाअ़ करने वाले जिन्न हों या इन्सान। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्लीस के लश्करों से उस की ज़ुर्रिय्यत मुराद है। **98 :** जिन्हों ने बुत परस्ती की दा'वत दी या वोह पहले लोग जिन का हम ने इत्तिबाअ़ किया या इब्लीस और उस की ज़ुर्रिय्यत ने **99 :** जैसे कि मोमिनीन के लिये अम्बिया और औलिया और मलाएका और मोमिनीन शफ़ाअ़त करने वाले हैं। **100 :** जो काम आए। येह बात कुफ़्फ़ार उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे कि अम्बिया और औलिया और मलाएका और सालिह़ीन ईमानदारों की शफ़ाअ़त कर रहे हैं और उन की दोस्तियां काम आ रही हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा : मेरे फ़ुलां दोस्त का क्या ह़ाल है और वोह दोस्त गुनाहों की वज्ह से जहन्नम में होगा, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि इस के दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो। तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जाएंगे वोह येह कहेंगे कि हमारा कोई सिफ़ारिशी नहीं है और न कोई ग़म ख़्वार दोस्त। ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्यूं कि वोह रोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त करेंगे। **101 :** दुन्या में **102 :** या'नी नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब तमाम पैग़म्बरों की तक्ज़ीब है क्यूं कि दीन तमाम रसूलों का एक है और हर एक नबी लोगों को तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देते हैं। **103 :** **अल्लाह** तआ़ला से, कुफ़्रो मआ़सी तर्क करो। **104 :** उस की वह़्य व रिसालत की तब्लीग़ पर। और आप की अमानत आप की क़ौम को मुसल्लम थी जैसे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अमानत पर अ़रब को इत्तिफ़ाक़ था। **105 :** जो मैं तौह़ीद व ईमान व त़ाअ़ते इलाही के मुतअ़ल्लिक़ देता हूं।

اَطِيْعُوْنِ ﴿۱۱۰﴾ؕ قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَ اتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ؕ قَالَ وَ مَا

मेरा हुक्म मानो   बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएं और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं[106]   फ़रमाया मुझे

عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ۚ اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ۚ

क्या ख़बर उन के काम क्या हैं[107]   उन का हिसाब तो मेरे रब ही पर है[108] अगर तुम्हें हिस (शुऊर) हो[109]

وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۵﴾ؕ قَالُوْا لَئِنْ

और मैं मुसल्मानों को दूर करने वाला नहीं[110]   मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला[111]   बोले ऐ नूह

لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ؕ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ

अगर तुम बाज़ न आए[112] तो ज़रूर संगसार किये जाओगे[113]   अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी क़ौम

كَذَّبُوْنِ ﴿۱۱۷﴾ۚۖ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَ بَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّ نَجِّنِيْ وَ مَنْ مَّعِيَ مِنَ   النصف

ने मुझे झुटलाया[114]   तो मुझ में और उन में पूरा फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसल्मानों को

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۱۹﴾ۚ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

नजात दे[115]   तो हम ने बचा लिया उसे और उस के साथ वालों को भरी हुई किश्ती में[116]   फिर इस के बा'द[117]

بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾

हम ने बाक़ियों को डुबो दिया   बेशक इस में ज़रूर निशानी है   और उन में अक्सर मुसल्मान न थे

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۲﴾ؑ كَذَّبَتْ عَادُ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ۚۖ اِذْ   ۶ ع ۱۸ ۱۰

और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है   आद ने रसूलों को झुटलाया[118]   जब कि

106 : येह बात उन्हों ने ग़ुरूर से कही, ग़ुरबा के पास बैठना उन्हें गवारा न था, इस में वोह अपनी कस्रे शान (बे इज़्ज़ती) समझते थे, इस लिये ईमान जैसी ने'मत से महरूम रहे। कमीने से मुराद उन की ग़ुरबा और पेशावर लोग थे और उन को रज़ील और कमीन कहना येह कुफ़्फ़ार का मुतकब्बिराना फ़े'ल था, वरना दर हक़ीक़त सन्अत और पेशा हैसिय्यते दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता। ग़ना अस्ल में दीनी ग़ना है और नसब तक़्वा का नसब। **मस्अला :** मोमिन को रज़ील कहना जाइज़ नहीं ख़्वाह वोह कितना ही मोहताज व नादार हो या वोह किसी नसब का हो। (مدارک) **107 :** वोह क्या पेशे करते हैं मुझे इस से क्या मतलब, मैं उन्हें **अल्लाह** की तरफ़ दा'वत देता हूं। **108 :** वोही उन्हें जज़ा देगा। **109 :** तो न तुम उन्हें ऐब लगाओ न पेशों के बाइस उन से आर करो। फिर क़ौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएं और आप की बात मानें, इस के जवाब में फ़रमाया **110 :** येह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी ख़्वाहिशों को पूरा करूं और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसल्मानों को अपने पास से निकाल दूं। **111 :** बुरहाने सहीह के साथ जिस से हक़ व बातिल में इम्तियाज़ हो जाए तो जो ईमान लाए वोही मेरा मुक़र्रब है और जो ईमान न लाए वोही दूर। **112 :** दा'वत व इन्ज़ार से **113 :** हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में **114 :** तेरी वह्य व रिसालत में, मुराद आप की येह थी कि मैं जो उन के हक़ में बद दुआ करता हूं उस का सबब येह नहीं कि उन्हों ने मुझे संगसार करने की धम्की दी, न येह कि उन्हों ने मेरे मुत्तबिईन को रज़ील कहा, बल्कि मेरी दुआ का सबब येह है कि उन्हों ने तेरे कलाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को क़बूल करने से इन्कार किया **115 :** उन लोगों की शामते आ'माल से **116 :** जो आदमियों, परिन्दों और हैवानों से भरी हुई थी। **117 :** या'नी हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथियों को नजात देने के बा'द **118 :** आद एक

www.dawateislami.net

قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۲۵﴾

उन से उन के हमक़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۲۶﴾ وَ مَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِیَ

तो अल्लाह से डरो[119] और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۲۷﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ تَتَّخِذُوْنَ

उसी पर है जो सारे जहान का रब क्या हर बुलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को[120] और मज़बूत महल

مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ وَ اِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاتَّقُوا

चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे[121] और जब किसी पर गिरिफ़्त हो तो बड़ी बे दर्दी से गिरिफ़्त करते हो[122] तो अल्लाह से

اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِیْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمَدَّكُمْ

डरो और मेरा हुक्म मानो और उस से डरो जिस ने तुम्हारी मदद की उन चीज़ों से कि तुम्हें मा'लूम हैं[123] तुम्हारी मदद की

بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ

चौपायों और बेटों और बाग़ों और चश्मों से बेशक मुझे तुम पर डर है

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳۵﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِیْنَ ﴿۱۳۶﴾

एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का[124] बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीह़त करो या नासिह़ों में न हो[125]

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ﴿۱۳۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ

येह तो नहीं मगर वोही अगलों की रीत (रस्मो रवाज)[126] और हमें अ़ज़ाब होना नहीं[127] तो उन्हों ने उसे झुटलाया[128]

فَاَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ وَ

तो हम ने उन्हें हलाक किया[129] बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और

क़बीला है और दर अस्ल येह एक शख़्स का नाम है जिस की औलाद से येह क़बीला है। **119 :** और मेरी तक्ज़ीब न करो **120 :** कि उस पर चढ़ कर गुज़रने वालों से तमस्ख़ुर करो और येह उस क़ौम का मा'मूल था, उन्हों ने सरे राह बुलन्द बिनाएं बना ली थीं वहां बैठ कर राह चलने वालों को परेशान करते और खेल करते। **121 :** और कभी न मरोगे **122 :** तलवार से क़त्ल कर के दुर्रे मार कर निहायत बे रह़मी से **123 :** या'नी वोह ने'मतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उन का बयान फ़रमाया जाता है। **124 :** अगर तुम मेरी ना फ़रमानी करो। इस का जवाब उन की त़रफ़ से येह हुवा कि **125 :** हम किसी त़रह तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दा'वत क़बूल न करेंगे। **126 :** या'नी जिन चीज़ों का आप ने ख़ौफ़ दिलाया येह पहलों का दस्तूर है वोह भी ऐसी ही बातें कहा करते थे। इस से उन की मुराद येह थी कि हम इन बातों का ए'तिबार नहीं करते, इन्हें झूट जानते हैं। या आयत के मा'ना येह हैं कि येह मौत व ह़यात और इमारतें बनाना पहलों का त़रीक़ा है। **127 :** दुन्या में न मरने के बा'द उठना न आख़िरत में हिसाब **128 :** या'नी हूद عَلَیْهِ السَّلَام को **129 :** हवा के अ़ज़ाब से।

www.dawateislami.net

ع ٨ إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾ إِذْ

बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है समूद ने रसूलों को झुटलाया जब कि

قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

उन से उन के हमक़ौम सालेह़ ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ

तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٤٥﴾ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾ فِي

उसी पर है जो सारे जहान का रब है क्या तुम यहां की[130] ने'मतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे[131]

جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾ وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ

बाग़ों और चश्मों और खेतों और खजूरों में जिन का शिगूफ़ा नर्म नाज़ुक और पहाड़ों

الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ

में से घर तराशते हो उस्तादी से[132] तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और ह़द से बढ़ने वालों के कहने पर

الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوا

न चलो[133] वोह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं[134] और बनाव नहीं करते[135] बोले

إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ

तुम पर तो जादू हुवा है[136] तुम तो हमीं जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ[137] अगर

كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ

सच्चे हो[138] फ़रमाया येह नाक़ा है एक दिन इस के पीने की बारी[139] और एक मुअ़य्यन दिन

130 : या'नी दुन्या की **131 :** कि येह ने'मतें कभी ज़ाइल न हों और कभी अ़ज़ाब न आए कभी मौत न आए, आगे उन की ने'मतों का बयान है। **132 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया कि فرِہ ब मा'ना फ़ख़्रो गुरूर है। मा'ना येह हुए कि अपनी सन्अ़त पर गुरूर करते इतराते। **133 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया कि "مسرفین" से मुराद मुश्रिकीन हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि "مسرفین" से मुराद वोह नव शख़्स हैं जिन्हों ने नाक़ा को क़त्ल किया था। **134 :** कुफ़्रो ज़ुल्म और मआ़सी के साथ **135 :** ईमान ला कर और अ़द्ल क़ाइम कर के और अल्लाह के मुत़ीअ़ हो कर। मा'ना येह हैं कि इन का फ़साद ठोस है जिस में किसी त़रह़ नेकी का शाएबा भी नहीं और बा'ज़ मुफ़्सिदीन ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं कुछ नेकी भी उन में होती है मगर येह ऐसे नहीं। **136 :** या'नी बार बार ब कसरत जादू हुवा है जिस की वज्ह से अ़क़्ल बजा नहीं रही (معاذ اللہ) **137 :** अपनी सच्चाई की **138 :** रिसालत के दा'वे में। **139 :** इस में इस से मुज़ाह़मत न करो, येह एक ऊंटनी थी जो उन के मो'जिज़ा त़लब करने पर उन के ह़स्बे ख़्वाहिशे ब दुआ़ए ह़ज़रते सालेह़ علیہ السلام पथ्थर से निकली थी, उस का सीना साठ गज़ का था, जब उस के पीने का दिन होता तो वोह वहां का तमाम पानी पी जाती और

www.dawateislami.net

مَّعۡلُوۡمٍ ﴿۱۵۵﴾ وَ لَا تَمَسُّوۡهَا بِسُوۡٓءٍ فَیَاۡخُذَكُمۡ عَذَابُ یَوۡمٍ عَظِیۡمٍ ﴿۱۵۶﴾

तुम्हारी बारी और इसे बुराई के साथ न छूओ[140] कि तुम्हें बड़े दिन का अ़ज़ाब आ लेगा[141]

فَعَقَرُوۡهَا فَاَصۡبَحُوۡا نٰدِمِیۡنَ ﴿۱۵۷﴾ فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ

इस पर उन्हों ने उस की कूंचें काट दीं[142] फिर सुब्ह़ को पछताते रह गए[143] तो उन्हें अ़ज़ाब ने आ लिया[144] बेशक इस में ज़रूर निशानी है

ع ۸ ۱۹ ۱۲ وَ مَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۵۹﴾

और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है

كَذَّبَتۡ قَوۡمُ لُوۡطِ ۣ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۱۶۰﴾ اِذۡ قَالَ لَهُمۡ اَخُوۡهُمۡ لُوۡطٌ اَلَا

लूत़ की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया जब कि उन से उन के हमक़ौम लूत़ ने फ़रमाया क्या

تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۶۱﴾ اِنِّیۡ لَكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِیۡنٌ ﴿۱۶۲﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیۡعُوۡنِ ﴿۱۶۳﴾ وَ

तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और

مَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَیۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ ۚ اِنۡ اَجۡرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۶۴﴾

मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है

اَتَاۡتُوۡنَ الذُّكۡرَانَ مِنَ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۶۵﴾ وَ تَذَرُوۡنَ مَا خَلَقَ لَكُمۡ رَبُّكُمۡ

क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो[145] और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने

مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ عٰدُوۡنَ ﴿۱۶۶﴾ قَالُوۡا لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهِ یٰلُوۡطُ

जोरूएं (बीवियां) बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो[146] बोले ऐ लूत़ अगर तुम बाज़ न आए[147]

لَتَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُخۡرَجِیۡنَ ﴿۱۶۷﴾ قَالَ اِنِّیۡ لِعَمَلِكُمۡ مِّنَ الۡقَالِیۡنَ ﴿۱۶۸﴾ رَبِّ

तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे[148] फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूं[149] ऐ मेरे रब

जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती। (مدارک) **140 :** न इस को मारो न इस की कूंचें काटो। **141 :** नुज़ूले अ़ज़ाब की वज्ह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि वोह अ़ज़ाब इस क़दर अ़ज़ीम और सख़्त था कि जिस दिन में वोह वाक़ेअ़ हुवा उस को उस की वज्ह से बड़ा फ़रमाया गया। **142 :** कूंचें काटने वाले शख़्स का नाम क़ुदार था और वोह लोग उस के इस फ़े'ल से राज़ी थे, इस लिये कूंचें काटने की निस्बत उन सब की त़रफ़ की गई। **143 :** कूंचें काटने पर नुज़ूले अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से, न कि मा'सियत पर ताइबाना नादिम हुए हों, या येह बात कि आसारे अ़ज़ाब देख कर नादिम हुए, ऐसे वक़्त की नदामत नाफ़ेअ़ नहीं। **144 :** जिस की उन्हें ख़बर दी गई थी तो हलाक हो गए। **145 :** इस के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक़ में ऐसे क़बीह़ और ज़लील फ़े'ल के लिये तुम्हीं रह गए हो, जहां के और लोग भी तो हैं उन्हें देख कर तुम्हें शरमाना चाहिये। और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि ब कसरत औ़रतें होते हुए इस फ़े'ले क़बीह़ का मुरतकिब होना इन्तिहा दरजे की ख़बासत है। **146 :** कि ह़लाल त़य्यिब को छोड़ कर ह़राम ख़बीस में मुब्तला होते हो। **147 :** नसीह़त करने और इस फ़े'ल को बुरा कहने से **148 :** शहर से और तुम्हें यहां न रहने दिया जाएगा। **149 :** और मुझे इस से निहायत दुश्मनी है, फिर आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की।

www.dawateislami.net

نَجِّنِيْ وَ اَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

मुझे और मेरे घर वालों को इन के काम से बचा[150] तो हम ने उसे और उस के सब घर वालों को नजात बख़्शी[151] मगर एक बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ

कि पीछे रह गई[152] फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[153] तो क्या ही बुरा

مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

बरसाव था डराए गयों का बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ ع ١٦ ١٣

न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है बन (जंगल)

لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ

वालों ने रसूलों को झुटलाया[154] जब उन से शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ

अल्लाह का अमानत दार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत

اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ لَا تَكُوْنُوْا

नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है[155] नाप पूरा करो और घटाने

مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَ زِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

वालों में न हो[156] और सीधी तराज़ू से तोलो और लोगों की चीज़ें कम कर के

اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो[157] और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया

150 : इस की शामते आ'माल से महफ़ूज़ रख। **151 :** या'नी आप की बेटियों को और उन तमाम लोगों को जो आप पर ईमान लाए। **152 :** जो आप की बीवी थी और वोह अपनी क़ौम के फ़े'ल पर राज़ी थी और जो मा'सियत पर राज़ी हो वोह आ़सी के हुक्म में होता है, इसी लिये वोह बुढ़िया गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब हुई और उस ने नजात न पाई। **153 :** पथ्थरों का या गन्धक और आग का **154 :** येह बन (जंगल) मद्यन के क़रीब था, इस में बहुत से दरख़्त और झाड़ियां थीं अल्लाह तआ़ला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को उन की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया था जैसा कि अह्ले मद्यन की त़रफ़ मब्ऊ़स किया था और येह लोग हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के न थे। **155 :** उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की दा'वत का येही उ़न्वान रहा क्यूं कि वोह सब हज़रात अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ और उस की इत़ाअ़त और इख़्लास फ़िल इ़बादत का हुक्म देते और तब्लीग़े रिसालत पर कोई अज्र नहीं लेते थे। लिहाज़ा सब ने येही फ़रमाया। **156 :** लोगों के हुक़ूक़ कम न करो नाप और तोल में **157 :** रहज़नी और लूटमार कर के और खेतियां तबाह कर के, येही उन लोगों की आ़दतें थीं। हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इन से मन्अ़ फ़रमाया।

www.dawateislami.net

وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۸۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَمَاۤ اَنْتَ

और अगली मख़्लूक़ को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۱۸۶﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

मगर हम जैसे आदमी[158] और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۷﴾ قَالَ رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

गिरा दो अगर तुम सच्चे हो[159] फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं[160]

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۸۹﴾

तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अ़ज़ाब ने आ लिया बेशक वोह बड़े दिन का अ़ज़ाब था[161]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ

बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही

ع ١٠ ١٦ ١٤ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ

इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है और बेशक येह क़ुरआन रब्बुल आ़लमीन का उतारा हुवा है इसे रूहुल अमीन ले

الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

कर उतरा[162] तुम्हारे दिल पर[163] कि तुम डर सुनाओ रोशन अ़रबी

مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ

ज़बान में और बेशक इस का चरचा अगली किताबों में है[164] और क्या येह उन के लिये निशानी न थी[165] कि उस

158 : नुबुव्वत का इन्कार करने वाले अम्बिया की निस्बत बिल ड़मूम येही कहा करते थे। जैसा कि आज कल के बा'ज़े फ़ासिदुल अ़क़ीदा कहते हैं। **159 :** नुबुव्वत के दा'वे में। **160 :** और जिस अ़ज़ाब के तुम मुस्तहिक़ हो, वोह जो अ़ज़ाब चाहेगा तुम पर नाज़िल फ़रमाएगा। **161 :** जो कि इस त़रह़ हुवा कि उन्हें शदीद गरमी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गरमी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार रहे, तहख़ानों में जाते वहां और ज़ियादा गरमी पाते। इस के बा'द एक अब्र आया सब उस के नीचे आ के जम्अ़ हो गए, उस से आग बरसी और सब जल गए। (इस वाक़िए का बयान सूरए आ'राफ़ और सूरए हूद में गुज़र चुका है)। **162 :** रूहुल अमीन से ह़ज़रते जिब्रील मुराद हैं जो वह़्य के अमीन हैं। **163 :** ताकि आप उसे मह़फ़ूज़ रखें और समझें और न भूलें। दिल की तख़्सीस इस लिये है कि दर ह़क़ीक़त वोही मुख़ात़ब है और तमीज़ व अ़क़्ल व इख़्तियार का मक़ाम भी वोही है, तमाम आ'ज़ा उस के मुसख़्ख़र व मुत़ीअ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम बदन दुरुस्त हो जाता है और इस के ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब। और फ़रह़ व सुरूर व रन्जो ग़म का मक़ाम दिल ही है, जब दिल को ख़ुशी होती है तमाम आ'ज़ा पर इस का असर पड़ता है, तो वोह मिस्ल रईस के है, वोही मौज़अ़ है अ़क़्ल का, तो अमीरे मुत़्लक़ हुवा और तक्लीफ़ जो अ़क़्ल व फ़ह्म के साथ मश्रूत़ है इसी की त़रफ़ राजेअ़ हुई। **164 :** "اِنَّهٗ" की ज़मीर का मरजअ़ अगर क़ुरआन हो तो इस के मा'ना येह होंगे कि इस का ज़िक्र तमाम कुतुबे समाविया में है और अगर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ ज़मीर राजेअ़ हो तो मा'ना येह होंगे कि अगली किताबों में आप की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। **165 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत पर।

www.dawateislami.net

يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۹۷﴾ وَ لَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۸﴾

नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आ़लिम[166] और अगर हम उसे किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर उतारते

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

कि वोह उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उस पर ईमान न लाते[167] हम ने यूंही झुटलाना पैरा दिया (पैवस्त कर दिया) है मुजरिमों के

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۰۰﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۲۰۱﴾ فَيَاْتِيَهُمْ

दिलों में[168] वोह इस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि देखें दर्दनाक अ़ज़ाब तो वोह अचानक उन पर

بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ اَفَبِعَذَابِنَا

आ जाएगा और उन्हें ख़बर न होगी तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी[169] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की

يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿۲۰۵﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا

जल्दी करते हैं भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरत्ने दें[170] फिर आए उन पर वोह जिस का वोह वा'दा

يُوْعَدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾ وَ مَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ

दिये जाते हैं[171] तो क्या काम आएगा उन के वोह जो बरत्ते थे[172] और हम ने कोई बस्ती हलाक

قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾ ذِكْرٰى وَ مَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَ مَا مع

न की जिसे डर सुनाने वाले न हों नसीहत के लिये और हम ज़ुल्म नहीं करते[173] और इस

166 : अपनी किताबों से, और लोगों को ख़बरें देते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि अहले मक्का ने यहूदे मदीना के पास अपने मो'तमिदीन को येह दरयाफ़्त करने भेजा कि क्या नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान सय्यिदे काएनात मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत उन की किताबों में कोई ख़बर है ? इस का जवाब उ़लमाए यहूद ने येह दिया कि येही उन का ज़माना है और उन की ना'त व सिफ़त तौरैत में मौजूद है। उ़लमाए यहूद में से ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने सलाम और इब्ने यामीन और सा'लबा और असद और उसैद येह ह़ज़रात जिन्हों ने तौरैत में हुज़ूर के औसाफ़ पढ़े थे हुज़ूर पर ईमान लाए। **167 :** मा'ना येह हैं कि हम ने येह कुरआने करीम एक फ़सीह़ बलीग़ अ़रबी नबी पर उतारा जिस की फ़साह़त अहले अ़रब को मुसल्लम है और वोह जानते हैं कि कुरआने करीम मो'जिज़ है और इस की मिस्ल एक सूरत बनाने से भी तमाम दुन्या आ़जिज़ है, इलावा बरीं उ़लमाए अहले किताब का इत्तिफ़ाक़ है कि इस के नुज़ूल से क़ब्ल इस के नाज़िल होने की बिशारत और इस नबी की सिफ़त उन की किताबों में उन्हें मिल चुकी है, इस से क़त़ई त़ौर पर साबित होता है कि येह "नबी" **अल्लाह** के भेजे हुए हैं और येह किताब उस की नाज़िल फ़रमाई हुई है, और कुफ़्फ़ार जो त़रह़ त़रह़ की बेहूदा बातें इस किताब के मुतअ़ल्लिक़ कहते हैं सब बात़िल हैं और ख़ुद कुफ़्फ़ार भी मुतह़य्यिर (ह़ैरान) हैं कि इस के ख़िलाफ़ क्या बात कहें। इस लिये कभी इस को पहलों की दास्तानें कहते हैं, कभी शे'र कभी सेह़र और कभी येह कि مَعَاذَ اللّٰہ इस को ख़ुद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बना लिया है और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ इस की ग़लत़ निस्बत कर दी है। इस त़रह़ के बेहूदा ए'तिराज़ मुआ़निद (ह़ासिद) हर ह़ाल में कर सकता है, ह़त्ता कि अगर बिलफ़र्ज़ येह कुरआन किसी ग़ैर अ़रबी शख़्स पर नाज़िल किया जाता जो अ़रबी की महारत न रखता और बा वुजूद इस के वोह ऐसा मो'जिज़ कुरआन पढ़ कर सुनाता, जब भी येह लोग इसी त़रह़ कुफ़्र करते जिस त़रह़ उन्हों ने अब कुफ़्र व इन्कार किया क्यूं कि उन के कुफ़्र व इन्कार का बाइस इनाद है। **168 :** या'नी उन काफ़िरों के जिन का कुफ़्र इख़्तियार करना और इस पर मुसिर रहना हमारे इ़ल्म में है, तो उन के लिये हिदायत का कोई भी त़रीक़ा इख़्तियार किया जाए किसी ह़ाल में वोह कुफ़्र से पलटने वाले नहीं। **169 :** ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक़ करें। लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार को उस अ़ज़ाब की ख़बर दी तो बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहने लगे कि येह अ़ज़ाब कब आएगा ? इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : **170 :** और फ़ौरन हलाक न कर दें **171 :** या'नी अ़ज़ाबे इलाही **172 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी और इस का ऐ़श ख़्वाह त़वील भी हो लेकिन न वोह अ़ज़ाब को दफ़्अ़ कर सकेगा न उस की शिद्दत कम कर सकेगा। **173 :** पहले

www.dawateislami.net

تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ٢١٠ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ٢١١ اِنَّهُمْ عَنِ

क़ुरआन को ले कर शैत़ान न उतरे[174] और वोह इस क़ाबिल नहीं[175] और न वोह ऐसा कर सकते हैं[176] वोह तो

السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ٢١٢ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ

सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं[177] तो तू **अल्लाह** के सिवा दूसरा ख़ुदा न पूज कि तुझ पर

الْمُعَذَّبِيْنَ ٢١٣ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ٢١٤ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ

अ़ज़ाब होगा और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ[178] और अपनी रह़मत का बाज़ू बिछाओ[179]

لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ٢١٥ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا

अपने पैरव (ताबेअ़) मुसल्मानों के लिये[180] तो अगर वोह तुम्हारा हुक्म न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे कामों से

تَعْمَلُوْنَ ٢١٦ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ٢١٧ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ

बे अ़लाक़ा (ला तअ़ल्लुक़) हूं और उस पर भरोसा करो जो इ़ज़्ज़त वाला मेहर वाला है[181] जो तुम्हें देखता है जब

تَقُوْمُ ٢١٨ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ٢١٩ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٢٢٠ هَلْ

तुम खड़े होते हो[182] और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को[183] बेशक वोही सुनता जानता है[184] क्या

اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ٢٢١ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ٢٢٢

मैं तुम्हें बता दूं कि किस पर उतरते हैं शैत़ान उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनाहगार पर[185]

हुज्जत क़ाइम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं। इस के बा'द भी जो लोग राह पर नहीं आते और ह़क़ को क़बूल नहीं करते उन पर अ़ज़ाब करते हैं। **174 :** इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो कहते थे कि जिस त़रह़ शयात़ीन काहिनों के पास आस्मानी ख़बरें लाते हैं इसी त़रह़ مَعَاذَ اللّٰه ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास क़ुरआन लाते हैं। इस आयत में उन के इस ख़याल को बात़िल कर दिया कि येह ग़लत़ है। **175 :** कि क़ुरआन लाएं **176 :** क्यूं कि येह उन के मक़्दूर (बस) से बाहर है। **177 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات की त़रफ़ जो वह़्य होती है उस को **अल्लाह** तआ़ला ने मह़फ़ूज़ कर दिया, जब तक फ़िरिश्ता उस को बारगाहे रिसालत में पहुंचाए इस से पहले शयात़ीन उस को नहीं सुन सकते। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों से फ़रमाता है : **178 :** ह़ुज़ूर के क़रीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत़्त़लिब हैं, ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें ए'लान के साथ इन्ज़ार फ़रमाया और ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि अह़ादीसे सह़ीह़ा में वारिद है। **179 :** या'नी लुत़्फ़ो करम फ़रमाओ। **180 :** जो सिद्क़ो इख़्लास से आप पर ईमान लाएं ख़्वाह वोह आप से क़राबत रखते हों या न रखते हों। **181 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला, तुम अपने तमाम काम उस को तफ़्वीज़ करो (या'नी **अल्लाह** तआ़ला को सोंप दो)। **182 :** नमाज़ के लिये या दुआ़ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहां तुम हो। **183 :** जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले अस्ह़ाब के अह़वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाने के लिये शब को दौरा करते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब तुम इमाम हो कर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम रुकूअ़ व सुजूद व क़ुऊ़द में गुज़रते हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि वोह आप की गर्दिशे चश्म को देखता है नमाज़ों में, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पसो पेश (आगे, पीछे) यक्सां मुलाह़ज़ा फ़रमाते थे। और ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़दीस में है बख़ुदा मुझ पर तुम्हारा ख़ुशूअ़ व रुकूअ़ मख़्फ़ी नहीं, मैं तुम्हें अपने पसे पुश्त देखता हूं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और मा'ना येह हैं कि ज़मानए ह़ज़रते आदम व ह़व्वा عَلَيْهِمَا السَّلَام से ले कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन की अस्लाब व अरह़ाम में आप के दौरे को मुलाह़ज़ा फ़रमाता है। इस से साबित हुवा कि आप के तमाम उसूल आबाओ अज्दाद ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तक सब के सब मोमिन हैं। (مدارک وجمل وغیرہ) **184 :** तुम्हारे क़ौल व अ़मल और तुम्हारी निय्यत को।

يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَ اَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾ؕ وَ الشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾ؕ

शैतान अपनी सुनी हुई[186] उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं[187] और शाइरों की पैरवी गुमराह करते हैं[188]

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ۙ وَ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾ۙ

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दां फिरते हैं[189] और वोह कहते हैं जो नहीं करते[190]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ ذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ انْتَصَرُوْا مِنْۢ

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[191] और ब कसरत अल्लाह की याद की[192] और बदला लिया[193] बा'द

بَعْدِ مَا ظُلِمُوْاؕ وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾ع ع ١١ ١٥

इस के कि उन पर ज़ुल्म हुवा[194] और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम[195] कि किस करवट पर पलटा खाएंगे[196]

اٰياتها ٩٣ | ٢٧ سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ ٤٨ | رکوعاتها ٧

सूरए नम्ल मक्किय्या है, इस में तिरानवे आयतें और सात रुकूअ़ हैं

इस के बा'द अल्लाह तआ़ला उन मुश्रिकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर शैतान उतरते हैं, येह इर्शाद फ़रमाता है : **185 :** मिस्ल मुसैलमा वग़ैरा काहिनों के। **186 :** जो उन्हों ने मलाएका से सुनी होती है। **187 :** क्यूं कि वोह फ़िरिश्तों से सुनी हुई बातों में अपनी त़रफ़ से बहुत झूट मिला देते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलाते हैं और येह भी उस वक़्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। **188 :** उन के अश्आ़र में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अश्आ़र किज़्ब व बात़िल होते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत शुअ़राए कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व में शे'र कहते थे और कहते थे कि जैसा मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कहते हैं ऐसा हम भी कह लेते हैं और उन की क़ौम के गुमराह लोग उन से उन अश्आ़र को नक़्ल करते थे, उन लोगों की आयत में मज़म्मत फ़रमाई गई। **189 :** और हर त़रह़ की झूटी बातें बनाते हैं और हर लग़्व व बात़िल में सुख़न आराई करते हैं, झूटी मद्ह़ करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। **190 :** बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शे'र से पुर हो। मुसल्मान शुअ़रा जो इस त़रीक़े से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तस्ना किये गए। **191 :** इस में शुअ़राए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त लिखते हैं, अल्लाह तआ़ला की ह़म्द लिखते हैं, इस्लाम की मद्ह़ लिखते हैं, पन्दो नसाएह़ लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में है कि मस्जिदे नबवी में ह़ज़रते ह़स्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुफ़ाख़र पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़्फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाते थे। बुख़ारी की ह़दीस में है : हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बा'ज़ शे'र ह़िक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस मुबारक में अक्सर शे'र पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि शे'र कलाम है बा'ज़ अच्छा होता है बा'ज़ बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअ़बी ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ शे'र कहते थे। ह़ज़रते अ़ली उन सब से ज़ियादा शे'र फ़रमाने वाले थे। رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ। **192 :** और शे'र उन के लिये ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शे'र कहा भी तो अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना और उस की तौह़ीद और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त और अस्ह़ाबे किराम व सुलह़ाए उम्मत की मद्ह़ और ह़िक्मत व मौइज़त और ज़ोह्दो अदब में। **193 :** कुफ़्फ़ार से उन की हज्व का **194 :** कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से कि उन्हों ने मुसल्मानों की और उन के पेशवाओं की हज्व की। उन ह़ज़रात ने उस को दफ़्अ़ किया और उस के जवाब दिये, येह मज़्मूम नहीं हैं बल्कि मुस्तह़िक़्क़े अज्रो सवाब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन ह़ज़रात का जिहाद है। **195 :** या'नी मुश्रिकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्ताहिरीन अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हज्व की। **196 :** मौत के बा'द। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया जहन्नम की त़रफ़ और वोह बुरा ही ठिकाना है।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ ① هُدًى وَّبُشْرٰى

येह आयतें हैं क़ुरआन और रोशन किताब की[2] हिदायत और ख़ुश ख़बरी

لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ ② الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ

ईमान वालों को वोह जो नमाज़ बरपा रखते हैं[3] और ज़कात देते हैं[4] और वोह

بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ③ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا

आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के

لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ ④ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَ

कौतक (बुरे आ'माल) उन की निगाह में भले कर दिखाए हैं[5] तो वोह भटक रहे हैं येह वोह हैं जिन के लिये बुरा अ़ज़ाब है[6] और

هُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ⑤ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ

येही आख़िरत में सब से बढ़ कर नुक़्सान में[7] और बेशक तुम क़ुरआन सिखाए जाते हो हिक्मत

الثلثة

حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ⑥ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ

वाले इ़ल्म वाले की त़रफ़ से[8] जब कि मूसा ने अपनी घर वाली से कहा[9] मुझे एक आग नज़र पड़ी है अ़न्क़रीब मैं तुम्हारे पास

مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ⑦ فَلَمَّا جَآءَهَا

उस की कोई ख़बर लाता हूं या उस में से कोई चमक्ती चिंगारी लाऊंगा कि तुम तापो[10] फिर जब आग के पास आया

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ

निदा की गई कि बरकत दिया गया वोह जो इस आग की जल्वा गाह में है या'नी मूसा और जो इस के आस पास हैं या'नी फ़िरिश्ते[11] और पाकी है **अल्लाह** को

---

1 : सूरए नम्ल मक्किय्या है इस में सात 7 रुकूअ़ और तिरानवे 93 आयतें और एक हज़ार तीन सो सतरह 1317 कलिमे और चार हज़ार सात सो निनानवे 4799 ह़र्फ़ हैं। 2 : जो ह़क़ व बात़िल में इम्तियाज़ करती है और जिस में उ़लूमो ह़िकम वदीअ़त रखे गए हैं। 3 : और इस पर मुदावमत करते हैं और इस के शराइत़ व आदाब व जुम्ला हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं 4 : ख़ुशदिली से 5 : कि वोह अपनी बुराइयों को शहवात के सबब से भलाई जानते हैं। 6 : दुन्या में क़त्ल और गिरिफ़्तारी 7 : कि इन का अन्जाम दाइमी अ़ज़ाब है। इस के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब होता है : 8 : इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जाता है जो दक़ाइक़े इ़ल्म व लत़ाइफ़े ह़िक्मत पर मुश्तमिल है। 9 : मद्‌यन से मिस्र को सफ़र करते हुए, तारीक रात में, जब कि बर्फ़बारी से निहायत सरदी हो रही थी और रास्ता गुम हो गया था और बीबी साह़िबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो गया था। 10 : और सरदी की तक्लीफ़ से अम्न पाओ। 11 : येह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तह़िय्यत है **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से बरकत के साथ।

www.dawateislami.net

الْعٰلَمِیْنَ ﴿۸﴾ یٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۹﴾ وَ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ

जो रब है सारे जहां का ऐ मूसा बात येह है कि मैं ही हूं अल्लाह इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला और अपना अ़सा डाल दे[12]

فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰى

फिर मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा हम ने फ़रमाया ऐ मूसा

لَا تَخَفْ ۫ اِنِّیْ لَا یَخَافُ لَدَیَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ

डर नहीं बेशक मेरे हुज़ूर रसूलों को ख़ौफ़ नहीं होता[13] हां जो कोई ज़ियादती करे[14] फिर बुराई के

حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۱﴾ وَ اَدْخِلْ یَدَكَ فِیْ جَیْبِكَ

बा'द भलाई से बदले तो बेशक मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं[15] और अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल

تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِیْ تِسْعِ اٰیٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ قَوْمِهٖ ؕ

निकलेगा सफ़ेद चमकता बे ऐब[16] नव निशानियों में[17] फ़िरऔ़न और उस की क़ौम की त़रफ़

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ﴿۱۲﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰیٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا

बेशक वोह बे हुक्म लोग हैं फिर जब हमारी निशानियां आंखें खोलती उन के पास आईं[18] बोले येह तो

سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۱۳﴾ وَ جَحَدُوْا بِهَا وَ اسْتَیْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّ عُلُوًّا ؕ

सरीह़ जादू है और उन के मुन्किर हुए और उन के दिलों में उन का यक़ीन था[19] ज़ुल्म और तकब्बुर से

فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۱۴﴾ وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَیْمٰنَ عِلْمًا ۚ ع ١٤/١٦

तो देखो कैसा अन्जाम हुवा फ़सादियों का[20] और बेशक हम ने दावूद और सुलैमान को बड़ा इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया[21]

وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِیْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵﴾ وَ

और दोनों ने कहा सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत बख़्शी[22] और

12 : चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही अ़सा डाल दिया और वोह सांप हो गया। 13 : न सांप का न किसी और चीज़ का या'नी जब मैं उन्हें अम्न दूं तो फिर क्या अन्देशा। 14 : उस को डर होगा और वोह भी जब तौबा करे 15 : तौबा क़बूल फ़रमाता हूं और बख़्श देता हूं। इस के बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِیْمَات को दूसरी निशानी दिखाई गई और फ़रमाया गया 16 : येह निशानी है उन 17 : जिन के साथ रसूल बना कर भेजे गए हो। 18 : या'नी उन्हें मो'जिज़े दिखाए गए। 19 : और वोह जानते थे कि बेशक येह निशानियां अल्लाह की त़रफ़ से हैं लेकिन बा वुजूद इस के अपनी ज़बानों से इन्कार करते रहे। 20 : कि ग़र्क़ कर के हलाक किये गए 21 : या'नी इ़ल्मे क़ज़ा व सियासत। और ह़ज़रते दावूद को पहाड़ों और परिन्दों की तस्बीह़ का इ़ल्म दिया और ह़ज़रते सुलैमान को चौपायों और परिन्दों की बोली का। (خازن) 22 : नुबुव्वत व मुल्क अ़त़ा फ़रमा कर और जिन्न व इन्स और शयात़ीन को मुसख़्ख़र कर के।

www.dawateislami.net

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا

सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा[23] और कहा ऐ लोगो हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में

مِنْ كُلِّ شَيْءٍؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ

से हम को अ़ता हुवा[24] बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़्ल है[25] और जम्अ़ किये गए सुलैमान के लिये

جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا

उस के लश्कर जिन्नों और आदमियों और परिन्दों से तो वोह रोके जाते थे[26] यहां तक कि जब च्यूंटियों

عَلٰى وَادِ النَّمْلِۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْۚ لَا

के नाले पर आए[27] एक च्यूंटी बोली[28] ऐ च्यूंटियो अपने घरों में चली जाओ तुम्हें

يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ

कुचल न डालें सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में[29] तो उस की बात से मुस्कुरा कर

قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ

हंसा[30] और अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूं तेरे एह्सान का जो तू ने[31] मुझ पर और

عَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ

मेरे मां बाप पर किये और येह कि मैं वोह भला काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मुझे अपनी रह़मत से अपने उन बन्दों में शामिल कर जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के

23 : नुबुव्वत व इ़ल्म व मुल्क में **24 :** या'नी ब कसरत ने'मतें दुन्या व आख़िरत की हम को अ़ता फ़रमाई गईं। **25 :** मरवी है कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات को **अल्लाह** तआ़ला ने मशारिक़ व मग़ारिब अर्ज़ का मुल्क अ़ता फ़रमाया, चालीस साल आप इस के मालिक रहे फिर तमाम दुन्या की मम्लुकत अ़ता फ़रमाई। जिन्न, इन्सान, शैतान, परिन्द, चौपाए, दरिन्दे सब पर आप की हुकूमत थी और हर एक शै की ज़बान आप को अ़ता फ़रमाई और अ़जीबो ग़रीब सन्अ़तें आप के ज़माने में बरूए कार आईं। **26 :** आगे बढ़ने से, ताकि सब मुज्तमअ़ हो जाएं फिर चलाए जाते थे। **27 :** या'नी ताइफ़ या शाम में उस वादी पर गुज़रे जहां च्यूंटियां ब कसरत थीं। **28 :** जो च्यूंटियों की मलिका थी वोह लंगड़ी थी। **लत़ीफ़ा :** जब ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कूफ़ा में दाख़िल हुए और वहां की ख़ल्क़ आप की गिरवीदा हुई तो आप ने लोगों से कहा : जो चाहो दरयाफ़्त करो। ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस वक़्त नौ जवान थे, आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की च्यूंटी मादा थी या नर ? ह़ज़रते क़तादा साकित हो गए, तो इमाम साह़िब ने फ़रमाया कि वोह मादा थी। आप से दरयाफ़्त किया गया कि येह आप को किस त़रह़ मा'लूम हुवा ? आप ने फ़रमाया : क़ुरआने करीम में इर्शाद हुवा : ''قَالَتْ نَمْلَةٌ''। अगर नर होती तो क़ुरआन शरीफ़ में ''قَالَ نَمْلَةٌ'' वारिद होता। (سُبْحٰنَ اللّٰه इस से ह़ज़रते इमाम की शाने इ़ल्म मा'लूम होती है) ग़रज़ जब उस च्यूंटियों की मलिका ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लश्कर को देखा तो कहने लगी : **29 :** येह उस ने इस लिये कहा कि वोह जानती थी कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं, साह़िबे अ़द्ल हैं, जब्र और ज़ियादती आप की शान नहीं है। इस लिये अगर आप के लश्कर से च्यूंटियां कुचल जाएंगी तो बे ख़बरी ही में कुचल जाएंगी कि वोह गुज़रते हों और इस त़रफ़ इल्तिफ़ात न करें। च्यूंटी की येह बात ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील से सुन ली और हवा हर शख़्स का कलाम आप के सम्ए मुबारक तक पहुंचाती थी। जब आप च्यूंटियों की वादी पर पहुंचे तो आप ने अपने लश्करों को ठहरने का हुक्म दिया यहां तक कि च्यूंटियां अपने घरों में दाख़िल हो गईं। सैर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अगर्चे हवा पर थी मगर बई़द नहीं है कि येह मक़ाम आप का जाए नुज़ूल हो। **30 :** अम्बिया का हंसना तबस्सुम ही होता है जैसा कि अह़ादीस में वारिद हुवा है, वोह ह़ज़रात क़ह्क़हा मार कर नहीं हंसते। **31 :** नुबुव्वत व मुल्क व इ़ल्म अ़ता फ़रमा कर।

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ

सज़ावार हैं[32] और परिन्दों का जाएज़ा लिया तो बोला मुझे क्या हुवा कि मैं हुदहुद को नहीं देखता या वोह

مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ

वाक़ेई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूंगा[33] या ज़ब्ह कर दूंगा या कोई रोशन सनद

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَ

मेरे पास लाए[34] तो हुदहुद कुछ ज़ियादा देर न ठहरा और आ कर[35] अ़र्ज़ की कि मैं वोह बात देख आया हूं जो हुज़ूर ने न देखी और

جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ

मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं मैं ने एक औ़रत देखी[36] कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ

हर चीज़ में से मिला है[37] और उस का बड़ा तख़्त है[38] मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया कि अल्लाह को छोड़ कर

لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

सूरज को सज्दा करते हैं[39] और शैत़ान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से

السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ

रोक दिया[40] तो वोह राह नहीं पाते क्यूं नहीं सज्दा करते अल्लाह को जो निकालता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ

आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें[41] और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो[42] अल्लाह है कि उस के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ السجدة ٨

सच्चा मा'बूद नहीं वोह बड़े अ़र्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू

32 : हज़राते अम्बिया व औलिया **33 :** उस के पर उखाड़ कर या उस को उस के प्यारों से जुदा कर के या उस को उस के अक़रान का ख़ादिम बना कर या उस को ग़ैर जानवरों के साथ क़ैद कर के। और हुदहुद को हस्बे मस्लहत अ़ज़ाब करना आप के लिये हलाल था और जब परिन्द आप के लिये मुसख़्ख़र (ताबेअ़) किये गए थे तो तादीब व सियासत मुक़्तज़ाए तस्ख़ीर है। **34 :** जिस से उस की मा'ज़ूरी ज़ाहिर हो। **35 :** निहायत इज्ज़ व इन्किसार और अदब व तवाज़ोअ़ के साथ मुआ़फ़ी चाह कर **36 :** जिस का नाम बिल्क़ीस है **37 :** जो बादशाहों के लिये शायान होता है **38 :** जिस का तूल अस्सी गज़, अ़र्ज़ चालीस गज़, सोने चांदी का जवाहिरात के साथ मुरस्सअ़ (जड़ा हुवा) **39 :** क्यूं कि वोह लोग आफ़्ताब परस्त मजूसी थे। **40 :** सीधी राह से मुराद त़रीक़े हक़ व दीने इस्लाम है। **41 :** आस्मान की छुपी चीज़ों से मींह और ज़मीन की छुपी चीज़ों से नबातात मुराद हैं। **42 :** इस में आफ़्ताब परस्तों बल्कि तमाम बातिल परस्तों का रद है जो अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को भी पूजें। मक़्सूद येह है कि इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वोही है जो काएनाते अ़र्ज़ी व समावी पर क़ुदरत रखता हो और जमीअ़ मा'लूमात का आ़लिम हो, जो ऐसा नहीं वोह किसी त़रह मुस्तहिक़े इबादत नहीं।

الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ

झूटों में है[43] मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۹﴾

कि वोह क्या जवाब देते हैं[44] वोह औरत बोली ऐ सरदारो बेशक मेरी त़रफ़ एक इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ डाला गया[45]

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۳۰﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ

बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़म वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो[46]

ع ٢/١٧

وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ

और गरदन रखते मेरे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हो[47] बोली ऐ सरदारो मेरे इस मुआ़मले में मुझे राय दो मैं किसी मुआ़मले में

قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿۳۲﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ

कोई क़त़ई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास ह़ाज़िर न हो वोह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई

شَدِيْدٍ ۙ۬ وَّ الْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ

वाले हैं[48] और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या ह़ुक्म देती है[49] बोली बेशक जब बादशाह

اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ

किसी बस्ती में[50] दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इ़ज़्ज़त वालों को[51] ज़लील और ऐसा ही

يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ اِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

करते हैं[52] और मैं उन की त़रफ़ एक तोह़फ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब

---

43 : फिर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मक्तूब लिखा जिस का मज़्मून येह था कि अज़ जानिब बन्दए ख़ुदा सुलैमान बिन दावूद ब सूए बिल्क़ीस मलिकए शहरे सबा। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم उस पर सलाम जो हिदायत क़बूल करे, इस के बा'द मुद्दआ़ येह कि तुम मुझ पर बुलन्दी न चाहो और मेरे ह़ुज़ूर मुत़ीअ़ हो कर ह़ाज़िर हो। उस पर आप ने अपनी मोह्र लगाई और हुदहुद से फ़रमाया **44 :** चुनान्चे हुदहुद वोह मक्तूबे गिरामी ले कर बिल्क़ीस के पास पहुंचा, उस वक़्त बिल्क़ीस के गिर्द उस के आ'यान व वुज़रा का मज्मअ़ था। हुदहुद ने वोह मक्तूब बिल्क़ीस की गोद में डाल दिया और वोह उस को देख कर ख़ौफ़ से लरज़ गई और फिर उस पर मोह्र देख कर **45 :** उस ने उस ख़त़ को इ़ज़्ज़त वाला या इस लिये कहा कि उस पर मोह्र लगी हुई थी, इस से उस ने जाना कि किताब का भेजने वाला जलीलुल मन्ज़िलत बादशाह है या उस मक्तूब की इब्तिदा **अल्लाह** तआ़ला के नामे पाक से थी। फिर उस ने बताया कि वोह मक्तूब किस की त़रफ़ से आया है। चुनान्चे कहा : **46 :** या'नी मेरी ता'मीले इर्शाद करो और तकब्बुर न करो जैसा कि बा'ज़ बादशाह किया करते हैं। **47 :** फ़रमां बरदाराना शान से। मक्तूब का येह मज़्मून सुना कर बिल्क़ीस अपने आ'याने दौलत की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई। **48 :** इस से उन की मुराद येह थी कि अगर तेरी राय जंग की हो तो हम लोग इस के लिये तय्यार हैं बहादुर और शुजाअ़ हैं, साह़िबे क़ुव्वत व तुवानाई हैं, कसीर फ़ौजें रखते हैं, जंग आज़्मा हैं। **49 :** ऐ मलिका ! हम तेरी इत़ाअ़त करेंगे तेरे ह़ुक्म के मुन्तज़िर हैं। इस जवाब में उन्हों ने येह इशारा किया कि उन की राय जंग की है या उन का मुद्दआ़ येह हो कि हम जंगी लोग हैं राय और मश्वरा हमारा काम नहीं तू ख़ुद साह़िबे अ़क़्ल व तदबीर है हम बहर ह़ाल तेरा इत्तिबाअ़ करेंगे। जब बिल्क़ीस ने देखा कि येह लोग जंग की त़रफ़ माइल हैं तो इस ने उन्हें उन की राय की ख़त़ा पर आगाह किया और जंग के नताइज सामने किये। **50 :** अपने ज़ोरो क़ुव्वत से **51 :** क़त्ल और

www.dawateislami.net

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَیْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ

ले कर पलटे[53] फिर जब वोह[54] सुलैमान के पास आया सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे अल्लाह ने दिया[55]

خَیْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِیَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿۳۶﴾ اِرْجِعْ اِلَیْهِمْ

वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया[56] बल्कि तुम ही अपने तोह़फ़े पर ख़ुश होते हो[57] पलट जा उन की त़रफ़

فَلَنَاْتِیَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَ لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّ هُمْ

तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें त़ाक़त न होगी और ज़रूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह

صٰغِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَیُّكُمْ یَاْتِیْنِیْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ

पस्त होंगे[58] सुलैमान ने फ़रमाया ऐ दरबारियो तुम में कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि

یَّاْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ عِفْرِیْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ

वोह मेरे हुज़ूर मुत़ीअ़ हो कर ह़ाज़िर हों[59] एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि वोह तख़्त हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि

تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَ اِنِّیْ عَلَیْهِ لَقَوِیٌّ اَمِیْنٌ ﴿۳۹﴾ قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ

हुज़ूर इज्लास बरख़ास्त करें[60] और मैं बेशक इस पर क़ुव्वत वाला अमानत दार हूं[61] उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास

क़ैद और इहानत के साथ **52 :** येही बादशाहों का त़रीक़ा है। बादशाहों की आ़दत का जो उस को इ़ल्म था उस की बिना पर उस ने येह कहा और मुराद उस की येह थी कि जंग मुनासिब नहीं है इस में मुल्क और अहले मुल्क की तबाही व बरबादी का ख़त़रा है। इस के बा'द उस ने अपनी राय का इज़्हार किया और कहा **53 :** इस से मा'लूम हो जाएगा कि वोह बादशाह हैं या नबी क्यूं कि बादशाह इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ हदिय्या क़बूल करते हैं, अगर वोह बादशाह हैं तो हदिय्या क़बूल कर लेंगे और अगर नबी हैं तो हदिय्या क़बूल न करेंगे और सिवा इस के कि हम उन के दीन का इत्तिबाअ़ करें वोह और किसी बात से राज़ी न होंगे। तो इस ने पांच सो ग़ुलाम और पांच सो बांदियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों के साथ आरास्ता कर के ज़र निगार ज़ीनों पर सुवार कर के भेजे और पांच सो ईंटें सोने की और जवाहिर से मुरस्सअ़ ताज और मुश्को अम्बर वग़ैरा मअ़ एक ख़त़ के अपने क़ासिद के साथ रवाना किये। हुदहुद येह देख कर चल दिया और उस ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के पास सब ख़बर पहुंचाई, आप ने हुक्म दिया कि सोने चांदी की ईंटें बना कर नव फ़रसंग के मैदान में बिछा दी जाएं और उस के गिर्द सोने चांदी से इह़ाते़ की बुलन्द दीवार बना दी जाए और बर्रो बह़्र के ख़ूब सूरत जानवर और जिन्नात के बच्चे मैदान के दाएं बाएं ह़ाज़िर किये जाएं। **54 :** या'नी बिल्क़ीस का पयामी मअ़ अपनी जमाअ़त के हदिय्या ले कर **55 :** या'नी दीन और नुबुव्वत और ह़िक्मत व मुल्क **56 :** माल व अस्बाबे दुन्या **57 :** या'नी तुम अहले मुफ़ाख़रत (मग़रूर) हो ज़ख़ारिफ़े दुन्या (दुन्या की ज़ीनतों) पर फ़ख़्र करते हो और एक दूसरे के हदिय्ये पर ख़ुश होते हो, मुझे न दुन्या से ख़ुशी होती है न इस की ह़ाजत, अल्लाह तआ़ला ने मुझे इतना कसीर अ़त़ा फ़रमाया कि औरों को न दिया, बा वुजूद इस के दीन और नुबुव्वत से मुझ को मुशर्रफ़ किया। इस के बा'द ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने वफ़्द के अमीर मुन्ज़िर बिन अ़म्र से फ़रमाया कि येह हदिय्ये ले कर **58 :** या'नी अगर वोह मेरे पास मुसल्मान हो कर ह़ाज़िर न हुए तो येह अन्जाम होगा। जब क़ासिद हदिय्ये ले कर बिल्क़ीस के पास वापस गए और तमाम वाक़िआ़त सुनाए तो उस ने कहा बेशक वोह नबी हैं और हमें उन से मुक़ाबले की त़ाक़त नहीं और उस ने अपना तख़्त अपने सात मह़लों में से सब से पिछले मह़ल में मह़फ़ूज़ कर के तमाम दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल कर दिये और उन पर पहरेदार मुक़र्रर कर दिये और ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने का इन्तिज़ाम किया ताकि देखे कि आप उस को क्या हुक्म फ़रमाते हैं और वोह एक लश्करे गिरां ले कर आप की त़रफ़ रवाना हुई, जिस में बारह हज़ार नवाब थे और हर नवाब के साथ हज़ारों लश्करी। जब इतने क़रीब पहुंच गई कि ह़ज़रत से सिर्फ़ एक फ़रसंग का फ़ासिला रह गया **59 :** इस से आप का मुद्दआ येह था कि उस का तख़्त ह़ाज़िर कर के उस को अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और अपनी नुबुव्वत पर दलालत करने वाला मो'जिज़ा दिखावें। बा'ज़ों ने कहा है कि आप ने चाहा कि उस के आने से क़ब्ल उस की वज़्अ़ बदल दें और उस से उस की अ़क़्ल का इम्तिह़ान फ़रमाएं कि पहचान सकती है या नहीं। **60 :** और आप का इज्लास सुब्ह़ से दोपहर तक होता था। **61 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इस से जल्द चाहता हूं।

عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا

किताब का इल्म था[62] कि मैं उसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले[63] फिर जब

رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ

सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि मुझे आज़्माए कि मैं शुक्र करता हूं

اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ

या नाशुक्री और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है[64] और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है

كَرِيْمٌ ﴿۴۰﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ

सब ख़ूबियों वाला सुलैमान ने हुक्म दिया औरत का तख़्त उस के सामने वज़्अ़ बदल कर बेगाना कर दो कि हम देखें कि वोह राह पाती है या उन में

الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۱﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ

होती है जो ना वाक़िफ़ रहे फिर जब वोह आई उस से कहा गया क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है बोली

كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَصَدَّهَا مَا

गोया येह वोही है[65] और हम को इस वाक़िए से पहले ख़बर मिल चुकी[66] और हम फ़रमां बरदार हुए[67] और उसे रोका[68] उस

كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۴۳﴾ قِيْلَ

चीज़ ने जिसे वोह **अल्लाह** के सिवा पूजती थी बेशक वोह काफ़िर लोगों में से थी उस से कहा

لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ

गया सहन में आ[69] फिर जब उस ने उसे देखा उसे गहरा पानी समझी और अपनी साक़ें (पिंडलियां) खोलीं[70]

قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ

सुलैमान ने फ़रमाया येह तो एक चिक्ना सहन है शीशों जड़ा[71] औरत ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया[72] और

62 : या'नी आप के वज़ीर आसफ़ बिन बरख़िया जो **अल्लाह** तआ़ला का इस्मे आ'ज़म जानते थे। **63 :** हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : लाओ हाज़िर करो। आसफ़ ने अ़र्ज़ किया : आप नबी इब्ने नबी हैं और जो रुत्बा बारगाहे इलाही में आप को हासिल है यहां किस को मुयस्सर है, आप दुआ़ करें तो वोह आप के पास ही होगा। आप ने फ़रमाया : तुम सच कहते हो और दुआ़ की उसी वक़्त तख़्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की कुरसी के क़रीब नुमूदार हुवा। **64 :** कि इस शुक्र का नफ़्अ़ ख़ुद उस शुक्र गुज़ार की तरफ़ आइद होता है। **65 :** इस जवाब से उस का कमाले अ़क़्ल मा'लूम हुवा। अब उस से कहा गया कि येह तेरा ही तख़्त है दरवाज़ा बन्द करने क़ुफ़्ल लगाने पहरेदार मुक़र्रर करने से क्या फ़ाएदा हुवा ? इस पर उस ने कहा **66 : अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत और आप की सिह्हते नुबुव्वत की, हुदहुद के वाक़िए से और अमीरे वफ़्द से **67 :** हम ने आप की इत़ाअ़त और आप की फ़रमां बरदारी इख़्तियार की **68 : अल्लाह** की इबादत व तौह़ीद से या इस्लाम की तरफ़ तक़द्दुम से **69 :** वोह सहन शफ़्फ़ाफ़ आबगीने का था, उस के नीचे आब जारी था, उस में मछलियां थीं और उस के वस्त़ में हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त था जिस पर आप जल्वा अफ़रोज़ थे। **70 :** ताकि पानी में चल कर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में हाज़िर हो। **71 :** येह पानी नहीं है। येह सुन कर बिल्क़ीस ने अपनी साक़ें (पिंडलियां) छुपा लीं और इस

اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۴﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ ع ٣ ١٣ ١٨

अब सुलैमान के साथ अल्लाह के हुज़ूर गरदन रखती हूं जो रब सारे जहान का[73] और बेशक हम ने समूद की तरफ़

اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۵﴾ قَالَ

उन के हमक़ौम सालेह़ को भेजा कि अल्लाह को पूजो[74] तो जभी वोह दो गुरौह हो गए[75] झगड़ा करते[76] सालेह़ ने फ़रमाया

يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ

ऐ मेरी क़ौम क्यूं बुराई की जल्दी करते हो[77] भलाई से पहले[78] अल्लाह से बख़्शिश क्यूं नहीं मांगते[79]

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

शायद तुम पर रह़्म हो[80] बोले हम ने बुरा शुगून लिया तुम से और तुम्हारे साथियों से[81] फ़रमाया तुम्हारी बद शुगूनी

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ

अल्लाह के पास है[82] बल्कि तुम लोग फ़ितने में पड़े हो[83] और शहर में नव शख़्स थे[84]

يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ

कि ज़मीन में फ़साद करते और संवार न चाहते आपस में अल्लाह की क़समें खा कर बोले हम ज़रूर

لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا

रात को छापा मारेंगे सालेह़ और उस के घर वालों पर[85] फिर उस के वारिस से[86] कहेंगे उस घर वालों के क़त्ल के वक़्त हम ह़ाज़िर न थे और बेशक हम

से उस को बहुत तअ़ज्जुब हुवा और उस ने यक़ीन किया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मुल्क व हुकूमत अल्लाह की त़रफ़ से है और इन अ़जाइबात से उस ने अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और आप की नुबुव्वत पर इस्तिद्लाल किया। अब ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को इस्लाम की दा'वत दी। **72 :** कि तेरे ग़ैर को पूजा आफ़्ताब की परस्तिश की **73 :** चुनान्चे उस ने इख़्लास के साथ तौह़ीद व इस्लाम को क़बूल किया और ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की इबादत इख़्तियार की। **74 :** और किसी को उस का शरीक न करो **75 :** एक मोमिन और एक काफ़िर **76 :** हर फ़रीक़ अपने ही को ह़क़ पर कहता और दोनों बाहम झगड़ते। काफ़िर गुरौह ने कहा : ऐ सालेह़ ! जिस अ़ज़ाब का तुम वा'दा देते हो उस को लाओ अगर रसूलों में से हो। **77 :** या'नी बला व अ़ज़ाब की **78 :** भलाई से मुराद आ़फ़िय्यत व रह़मत है। **79 :** अ़ज़ाब नाज़िल होने से पहले, कुफ़्र से तौबा कर के, ईमान ला कर **80 :** और दुन्या में अ़ज़ाब न किया जाए। **81 :** ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब मब्ऊ़स हुए और क़ौम ने तक्ज़ीब की इस के बाइ़स बारिश रुक गई, क़ह़त़ हो गया, लोग भूके मरने लगे, इस को उन्हों ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी की त़रफ़ निस्बत किया और आप की आमद को बद शुगूनी समझा। **82 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि बद शुगूनी जो तुम्हारे पास आई येह तुम्हारे कुफ़्र के सबब अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आई। **83 :** आज़्माइश में डाले गए या अपने दीन के बाइ़स अ़ज़ाब में मुब्तला हो। **84 :** या'नी समूद के शहर में जिस का नाम ह़िज्र है, उन के शरीफ़ ज़ादों में से नव शख़्स थे जिन का सरदार क़ुदार बिन सालिफ़ था, येही लोग हैं जिन्हों ने नाक़ा (ऊंटनी) की कूंचें काटने में सई की थी। **85 :** या'नी रात के वक़्त उन को और उन की औलाद को और उन के मुत्तबिईन को जो उन पर ईमान लाए हैं क़त्ल कर देंगे। **86 :** जिस को उन के ख़ून का बदला त़लब करने का ह़क़ होगा।

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ

सच्चे हैं और उन्हों ने अपना सा मक्र किया और हम ने अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाई[87] और वोह ग़ाफ़िल रहे तो देखो

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَ قَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتِلْكَ

कैसा अन्जाम हुवा उन के मक्र का हम ने हलाक कर दिया उन्हें[88] और उन की सारी क़ौम को[89] तो येह हैं

بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ

उन के घर ढए पड़े बदला उन के ज़ुल्म का बेशक इस में निशानी है जानने वालों के लिये और

اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ

हम ने उन को बचा लिया जो ईमान लाए[90] और डरते थे[91] और लूत़ को जब उस ने अपनी क़ौम से कहा

اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَ اَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً

क्या बे ह़याई पर आते हो[92] और तुम सूझ रहे हो[93] क्या तुम मर्दों के पास मस्ती से जाते हो

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ

औरतें छोड़ कर[94] बल्कि तुम जाहिल लोग हो[95] तो उस की क़ौम का कुछ जवाब

قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ

न था मगर येह कि बोले लूत़ के घराने को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो

يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

सुथरा पन चाहते हैं[96] तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औ़रत को हम ने ठहरा दिया था कि वोह रह जाने वालों में है[97]

87 : या'नी उन के मक्र की जज़ा येह दी कि उन के अ़ज़ाब में जल्दी फ़रमाई 88 : या'नी उन नव शख़्सों को । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस शब ह़ज़रते सालेह علیہ السلام के मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़िरिश्ते भेजे तो वोह नव शख़्स हथियार बांध कर तलवारें खींच कर ह़ज़रते सालेह علیہ السلام के दरवाज़े पर आए, फ़िरिश्तों ने उन को पथ्थर मारे, वोह पथ्थर लगते थे और मारने वाले नज़र न आते थे, इस त़रह उन नव को हलाक किया । 89 : होलनाक आवाज़ से । 90 : ह़ज़रते सालेह علیہ السلام पर 91 : उन की ना फ़रमानी से, उन लोगों की ता'दाद चार हज़ार थी । 92 : इस बे ह़याई से मुराद उन की बदकारी है । 93 : या'नी इस फ़े'ल की क़बाह़त जानते हो या येह मा'ना हैं कि एक दूसरे के सामने बे पर्दा बिल ए'लान बद फ़े'ली का इरतिकाब करते हो या येह कि तुम अपने से पहले ना फ़रमानी करने वालों की तबाही और उन के अ़ज़ाब के आसार देखते हो फिर भी इस बद आ'माली में मुब्तला हो । 94 : बा वुजूदे कि मर्दों के लिये औ़रतें बनाई गई हैं, मर्दों के लिये मर्द और औ़रतों के लिये औ़रतें नहीं बनाई गईं, लिहाज़ा येह फ़े'ल ह़िक्मते इलाही की मुख़ालफ़त है । 95 : जो ऐसा फ़े'ल करते हो 96 : और इस गन्दे काम को मन्अ़ करते हैं । 97 : अ़ज़ाब में ।

www.dawateislami.net

ع
١٩

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿۵۸﴾ قُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ

और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया[98] तो क्या ही बुरा बरसाव था डराए हुओं का तुम कहो सब ख़ूबियां अल्लाह को[99]

وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيۡنَ اصۡطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيۡرٌ اَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۵۹﴾ؕ

और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर[100] क्या अल्लाह बेहतर[101] या उन के साख़्ता (मन घड़त) शरीक[102]

98 : पथ्थरों का । **99 :** येह ख़ित़ाब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कि पिछली उम्मतों के हलाक पर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द बजा लाएं । **100 :** या'नी अम्बिया व मुर्सलीन पर । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि चुने हुए बन्दों से हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब मुराद हैं । **101 :** ख़ुदा परस्तों के लिये जो ख़ास उस की इबादत करें और उस पर ईमान लाएं और वोह उन्हें अ़ज़ाब व हलाक से बचाए । **102 :** या'नी बुत जो अपने परस्तारों के कुछ काम न आ सकें, तो जब उन में कोई भलाई नहीं वोह कोई नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो उन को पूजना और मा'बूद मानना निहायत बेजा है । इस के बा'द चन्द अन्वाअ़ ज़िक्र फ़रमाए जाते हैं जो अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत और उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं ।

www.dawateislami.net

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ

या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[103] और तुम्हारे लिये आस्मान से पानी उतारा

فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآىِٕقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا

तो हम ने उस से बाग़ उगाए रौनक़ वाले तुम्हारी त़ाक़त न थी कि उन के पेड़

شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ؕ ﴿۶۰﴾ اَمَّنْ جَعَلَ

उगाते[104] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है[105] बल्कि वोह लोग राह से कतराते हैं[106] या वोह जिस ने

الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ

ज़मीन बसने को बनाई और उस के बीच में नहरें निकालीं और उस के लिये लंगर बनाए[107] और दोनों

بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ ﴿۶۱﴾

समुन्दरों में आड़ रखी[108] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बल्कि उन में अक्सर जाहिल हैं[109]

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ

या वोह जो लाचार की सुनता है[110] जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई और तुम्हें ज़मीन के

الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ ﴿۶۲﴾ اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ

वारिस करता है[111] क्या अल्लाह के साथ और ख़ुदा है बहुत ही कम ध्यान करते हो या वोह जो तुम्हें राह

فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

दिखाता है[112] ख़ुश्की और तरी की अंधेरियों में[113] और वोह कि हवाएं भेजता है अपनी रह़मत के आगे ख़ुश ख़बरी सुनाती[114]

ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ؕ ﴿۶۳﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ

क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है बरतर है अल्लाह उन के शिर्क से या वोह जो ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है फिर उसे

103 : अ़ज़ीम तरीन अश्या जो मुशाहदे में आती हैं और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करती हैं उन का ज़िक्र फ़रमाया। मा'ना येह हैं कि क्या बुत बेहतर हैं या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन जैसी अ़ज़ीम और अ़जीब मख़्लूक़ बनाई। 104 : येह तुम्हारी क़ुदरत में न था। 105 : क्या येह दलाइले क़ुदरत देख कर ऐसा कहा जा सकता है ? हरगिज़ नहीं, वोह वाह़िद है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 106 : जो उस के लिये शरीक ठहराते हैं। 107 : वज़्नी पहाड़ जो उसे जुम्बिश से रोकते हैं। 108 : कि खारी मीठे मिलने न पाएं। 109 : जो अपने रब की तौह़ीद और उस के क़ुदरत व इख़्तियार को नहीं जानते और उस पर ईमान नहीं लाते। 110 : और ह़ाजत रवाई फ़रमाता है। 111 : कि तुम इस में सुकूनत करो और क़रनन बअ्-द क़रनिन इस में मुतसर्रिफ़ रहो। 112 : तुम्हारे मनाज़िल व मक़ासिद की 113 : सितारों से और अ़लामतों से। 114 : रह़मत से मुराद यहां बारिश है।

www.dawateislami.net

يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

दोबारा बनाएगा[115] और वोह जो तुम्हें आस्मानों और ज़मीन से रोज़ी देता है[116] क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है तुम फ़रमाओ

هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۶۴﴾ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ

कि अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो[117] तुम फ़रमाओ ख़ुद ग़ैब नहीं जानते जो कोई आस्मानों और

الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿۶۵﴾ بَلِ

ज़मीन में हैं मगर अल्लाह[118] और उन्हें ख़बर नहीं कि कब उठाए जाएंगे क्या

ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا

उन के इल्म का सिलसिला आख़िरत के जानने तक पहुंच गया[119] कोई नहीं वोह उस की तरफ़ से शक में हैं[120] बल्कि वोह उस से

عَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا ع ۸

अन्धे हैं और काफ़िर बोले क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जाएंगे क्या हम फिर

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿۶۷﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَاۤ

निकाले जाएंगे[121] बेशक इस का वा'दा दिया गया हम को और हम से पहले हमारे बाप दादाओं को येह तो

اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۶۸﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ

नहीं मगर अगलों की कहानियां[122] तुम फ़रमाओ ज़मीन में चल कर देखो कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۶۹﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا

हुवा अन्जाम मुजरिमों का[123] और तुम इन पर ग़म न खाओ[124] और इन के मक्र से दिलतंग

115 : उस की मौत के बा'द। अगर्चे मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने के कुफ़्फ़ार मुक़िर व मो'तरिफ़ न थे, लेकिन जब कि इस पर बराहीन क़ाइम हैं तो उन का इक़रार न करना कुछ क़ाबिले लिहाज़ नहीं बल्कि जब वोह इब्तिदाई पैदाइश के क़ाइल हैं तो उन्हें इआ़दे का क़ाइल होना पड़ेगा क्यूं कि इब्तिदा इआ़दे पर दलालते क़विय्या करती है, तो अब उन के लिये कोई जाए उ़ज़्र व इन्कार बाक़ी नहीं रही। **116 :** आस्मान से बारिश और ज़मीन से नबातात। **117 :** अपने इस दा'वे में कि अल्लाह के सिवा और भी मा'बूद हैं, तो बताओ जो जो सिफ़ात व कमालात ऊपर ज़िक्र किये गए वोह किस में हैं और जब अल्लाह के सिवा ऐसा कोई नहीं तो फिर किसी दूसरे को किस तरह मा'बूद ठहराते हो ? यहां ''هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ'' फ़रमा कर उन के इ़ज्ज़ व बुत्लान का इज़्हार मन्ज़ूर है। **118 :** वोही जानने वाला है, ग़ैब का उस को इख़्तियार है, जिसे चाहे बताए, चुनान्चे अपने प्यारे अम्बिया को बताता है जैसा कि सूरए आले इमरान में है। ''وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ'' या'नी अल्लाह की शान नहीं कि तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे, हां अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों में से जिसे चाहे। और ब कसरत आयात में अपने प्यारे रसूलों को ग़ैबी उ़लूम अ़ता फ़रमाने का ज़िक्र फ़रमाया गया और ख़ुद इसी पारे में इस से अगले रुकूअ़ में वारिद है। ''وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ'' या'नी जितने ग़ैब हैं आस्मान व ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत के आने का वक़्त दरयाफ़्त किया था। **119 :** और उन्हें क़ियामत क़ाइम होने का इ़ल्म व यक़ीन ह़ासिल हो गया जो वोह उस का वक़्त दरयाफ़्त करते हैं ? **120 :** उन्हें अभी तक क़ियामत के आने का यक़ीन नहीं है **121 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा ? **122 :** या'नी (مَعَاذَ اللّٰه) झूटी बातें। **123 :** कि वोह इन्कार के सबब अ़ज़ाब से

www.dawateislami.net

يَمْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۷۱﴾ قُلْ

न हो[125] और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[126] अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ

عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ

क़रीब है कि तुम्हारे पीछे आ लगी हो बा'ज़ वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[127] और बेशक तेरा रब

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़्ल वाला है आदमियों पर[128] लेकिन अक्सर आदमी हक़ नहीं मानते[129] और बेशक तुम्हारा रब

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَ مَا مِنْ غَآىِٕبَةٍ فِي السَّمَآءِ

जानता है जो उन के सीनों में छुपी है और जो वोह ज़ाहिर करते हैं[130] और जितने ग़ैब हैं आस्मान

وَ الْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۵﴾ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْۤ

और ज़मीन के सब एक बताने वाली किताब में हैं[131] बेशक येह क़ुरआन ज़िक्र फ़रमाता है बनी

اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۷۶﴾ وَ اِنَّهٗ لَهُدًى وَّ

इसराईल से अक्सर वोह बातें जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं[132] और बेशक वोह हिदायत और

رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۷﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ

रह़मत है मुसल्मानों के लिये बेशक तुम्हारा रब उन के आपस में फ़ैसला फ़रमाता है अपने हुक्म से और वोही है इ़ज़्ज़त वाला

الْعَلِيْمُ ﴿۷۸﴾ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿۷۹﴾ اِنَّكَ لَا

इ़ल्म वाला तो तुम अल्लाह पर भरोसा करो बेशक तुम रोशन ह़क़ पर हो बेशक तुम्हारे

تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَ لَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿۸۰﴾ وَ مَاۤ

सुनाए नहीं सुनते मुर्दे[133] और न तुम्हारे सुनाए बहरे पुकार सुनें जब फिरें पीठ दे कर[134] और

हलाक किये गए। **124 :** इन के ए'राज़ व तक्ज़ीब करने और इस्लाम से मह़रूम रहने के सबब **125 :** क्यूं कि **अल्लाह** आप का ह़ाफ़िज़ो नासिर है। **126 :** या'नी येह वा'दए अ़ज़ाब कब पूरा होगा **127 :** या'नी अ़ज़ाबे इलाही। चुनान्चे वोह अ़ज़ाब रोज़े बद्र उन पर आ ही गया और बाक़ी को वोह बा'दे मौत पाएंगे। **128 :** इसी लिये अ़ज़ाब में ताख़ीर फ़रमाता है। **129 :** और शुक्र गुज़ारी नहीं करते और अपनी जहालत से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं। **130 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखना और आप की मुख़ालफ़त में मक्कारियां करना सब कुछ **अल्लाह** तआ़ला को मा'लूम है, वोह इस की सज़ा देगा। **131 :** या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़ में सब्त हैं और जिन्हें उन का देखना ब फ़ज़्ले इलाही मुयस्सर है उन के लिये ज़ाहिर हैं। **132 :** दीनी उमूर में। अहले किताब ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया उन के बहुत फ़िर्क़े हो गए और आपस में ला'न ता'न करने लगे तो क़ुरआने करीम ने इस का बयान फ़रमाया। ऐसा बयान किया कि अगर वोह इन्साफ़ करें और इस को क़बूल करें और इस्लाम लाएं तो उन में येह बाहमी इख़्तिलाफ़ बाक़ी न रहे। **133 :** मुर्दों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं जिन के दिल मुर्दा हैं। चुनान्चे इसी आयत में उन के मुक़ाबिल अहले ईमान का ज़िक्र फ़रमाया। ''اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا'' जो लोग इस आयत से मुर्दों के न सुनने

اَنْتَ بِهٰدِی الْعُمْیِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ یُّؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا

अन्धों को[135] उन की गुमराही से तुम हिदायत करने वाले नहीं तुम्हारे सुनाए तो वोही सुनते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं[136]

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ

और वोह मुसल्मान हैं और जब बात उन पर आ पड़ेगी[137] हम ज़मीन से उन के लिये एक चौपाया निकालेंगे[138]

الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع وَ یَوْمَ

जो लोगों से कलाम करेगा[139] इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे[140] और जिस दिन

نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ یُّكَذِّبُ بِاٰیٰتِنَا فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿۸۳﴾

उठाएंगे हम हर गुरौह में से एक फ़ौज जो हमारी आयतों को झुटलाती है[141] तो उन के अगले रोके जाएंगे कि पिछले उन से आ मिलें

حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰیٰتِیْ وَ لَمْ تُحِیْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا

यहां तक कि जब सब हाज़िर हो लेंगे[142] फ़रमाएगा क्या तुम ने मेरी आयतें झुटलाईं हालां कि तुम्हारा इल्म उन तक न पहुंचता था[143] या क्या

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَیْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۸۵﴾

काम करते थे[144] और बात पड़ चुकी उन पर[145] उन के ज़ुल्म के सबब तो वोह अब कुछ नहीं बोलते[146]

اَلَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّیْلَ لِیَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ

क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने रात बनाई कि इस में आराम करें और दिन को बनाया सुझाने (दिखाने) वाला बेशक

पर इस्तिद्लाल करते हैं उन का इस्तिद्लाल ग़लत़ है, चूंकि यहां मुर्दा कुफ़्फ़ार को फ़रमाया गया और इन से भी मुत़्लक़न हर कलाम के सुनने की नफ़ी मुराद नहीं है बल्कि पन्दो मौइज़त और कलामे हिदायत के ब सम्ए क़बूल सुनने की नफ़ी है (या'नी सुन कर क़बूल नहीं करते) और मुराद येह है कि काफ़िर मुर्दा दिल हैं कि नसीहत से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते। इस आयत के मा'ना येह बताना कि मुर्दे नहीं सुनते बिल्कुल ग़लत़ है, सहीह़ अह़ादीस से मुर्दों का सुनना साबित है। **134 :** मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ायते ए'राज़ व रू गर्दानी से मुर्दे और बहरे के मिस्ल हो गए हैं कि उन्हें पुकारना और ह़क़ की दा'वत देना किसी त़रह नाफ़ेअ़ नहीं होता। **135 :** जिन की बसीरत जाती रही और दिल अन्धे हो गए। **136 :** जिन के पास समझने वाले दिल हैं और जो इल्मे इलाही में सआ़दते ईमान से बहरा अन्दोज़ होने वाले हैं। (بیضاوی وکبیر وابوالسعود ومدارک)। **137 :** या'नी उन पर ग़ज़बे इलाही होगा और अ़ज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी इस त़रह कि लोग امر بالمعروف और نہی عن المنکر तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ़ न देगी। **138 :** उस चौपाए को दाब्बतुल अर्द कहते हैं। येह अ़जीब शक्ल का जानवर होगा जो कोहे सफ़ा से बरआमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा, फ़साह़त के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से नूरानी ख़त़ खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगुश्तरी से सियाह मोहर लगाएगा। **139 :** ब ज़बाने फ़सीह़ और कहेगा "هٰذَا مُؤْمِنٌ وَهٰذَا كَافِرٌ" येह मोमिन है और येह काफ़िर है। **140 :** या'नी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे जिस में बअ़्स व ह़िसाब व अ़ज़ाब व ख़ुरूजे दाब्बतुल अर्द का बयान है। इस के बा'द की आयत में क़ियामत का बयान फ़रमाया जाता है। **141 :** जो कि हम ने अपने अम्बिया पर नाज़िल फ़रमाईं। फ़ौज से मुराद जमाअ़ते कसीरा है। **142 :** रोज़े क़ियामत मौक़िफ़े ह़िसाब में। **143 :** और तुम ने उन की मा'रिफ़त ह़ासिल न की थी बिग़ैर सोचे समझे ही उन आयतों का इन्कार कर दिया। **144 :** जब तुम ने उन आयतों को भी नहीं, सोचा तुम बेकार तो नहीं पैदा किये गए थे। **145 :** अ़ज़ाब साबित हो चुका **146 :** कि उन के लिये कोई हुज्जत और कोई गुफ़्तगू बाक़ी नहीं है। एक क़ौल येह भी है कि अ़ज़ाब उन पर इस त़रह छा जाएगा कि वोह बोल न सकेंगे।

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ
इस में ज़रूर निशानियां हैं उन लोगों के लिये कि ईमान रखते हैं[147] और जिस दिन फूंका जाएगा सूर[148] तो घबराए जाएंगे
فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ كُلٌّ اَتَوْهُ
जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में हैं[149] मगर जिसे ख़ुदा चाहे[150] और सब उस के हुज़ूर हाज़िर हुए
دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ تَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ هِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ
आजिज़ी करते[151] और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वोह जमे हुए हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल[152]
صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ مَنْ
येह काम है **अल्लाह** का जिस ने हिक्मत से बनाई हर चीज़ बेशक उसे ख़बर है तुम्हारे कामों की जो
جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَ هُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَ
नेकी लाए[153] उस के लिये उस से बेहतर सिला है[154] और उन को उस दिन की घबराहट से अमान है[155] और
مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
जो बदी लाए[156] तो उन के मुंह औंधाए गए आग में[157] तुम्हें क्या बदला मिलेगा मगर उसी का
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ
जो करते थे[158] मुझे तो येही हुक्म हुवा है कि पूजूं उस शहर के रब को[159] जिस ने उसे

147 : और आयत में बअ्स बा'दल मौत पर दलील है, इस लिये कि जो दिन की रोशनी को शब की तारीकी से और शब की तारीकी को दिन की रोशनी से बदलने पर क़ादिर है वोह मुर्दे को ज़िन्दा करने पर भी क़ादिर है। नीज़ इन्क़िलाबे लैलो नहार से येह भी मा'लूम होता है कि इस में उन की दुन्यवी ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम है तो येह अ़बस नहीं किया गया, बल्कि इस ज़िन्दगानी के आ'माल पर अ़ज़ाब व सवाब का तरत्तुब मुक़्तज़ाए हिक्मत है। और जब दुन्या दारुल अ़मल है तो ज़रूरी है कि एक दारे आख़िरत भी हो वहां की ज़िन्दगानी में यहां के आ'माल की जज़ा मिले। **148 :** और इस के फूंकने वाले हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام होंगे। **149 :** ऐसा घबराना जो सबबे मौत होगा। **150 :** और जिस के क़ल्ब को **अल्लाह** तआ़ला सुकून अ़ता फ़रमाए। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि येह शुहदा हैं जो अपनी तलवारें गलों में हमाइल किये अ़र्श के गिर्द हाज़िर होंगे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया वोह शुहदा हैं इस लिये कि वोह अपने रब के नज़्दीक ज़िन्दा हैं فَزَعٌ (ऐसा ख़ौफ़ जो मौत का सबब हो) उन को न पहुंचेगा। एक क़ौल येह है कि नफ़्ख़े के बा'द हज़रते जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व इज़्राईल ही बाक़ी रहेंगे। **151 :** या'नी रोज़े क़ियामत, सब लोग बा'दे मौत ज़िन्दा किये जाएंगे और मौक़िफ़ में **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर आ़जिज़ी करते हाज़िर होंगे। सीग़ए माज़ी से ता'बीर फ़रमाना तहक़्क़ुक़ व वुक़ूअ़ के लिये है। **152 :** मा'ना येह हैं कि नफ़्ख़े के वक़्त पहाड़ देखने में तो अपनी जगह साबित व क़ाइम मा'लूम होंगे और हक़ीक़त में वोह मिस्ल बादलों के निहायत तेज़ चलते होंगे जैसे कि बादल वग़ैरा बड़े जिस्म चलते हैं मुतहर्रिक मा'लूम नहीं होते यहां तक कि वोह पहाड़ ज़मीन पर गिर कर उस के बराबर हो जाएंगे। फिर रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर जाएंगे। **153 :** नेकी से मुराद कलिमए तौहीद की शहादत है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इख़्लासे अ़मल। और बा'ज़ ने कहा कि हर ताअ़त जो **अल्लाह** के लिये की हो। **154 :** जन्नत और सवाब **155 :** जो ख़ौफ़े अ़ज़ाब से होगी। पहली घबराहट जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र हुवा है वोह इस के इलावा है। **156 :** या'नी शिर्क **157 :** या'नी वोह औंधे मुंह आग में डाले जाएंगे और जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे **158 :** या'नी शिर्क और मआ़सी। और **अल्लाह** तआ़ला अपने रसूल से फ़रमाएगा कि आप फ़रमा दीजिये कि **159 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा के। और अपनी इबादत उस रब के साथ ख़ास करूं। मक्कए मुकर्रमा का ज़िक्र इस लिये है कि वोह नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیْءٍ٘ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۱﴾ وَ اَنْ

हुरमत वाला किया है[160] और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुवा है कि फ़रमां बरदारों में होउं और येह कि

اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूं[161] तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई[162] और जो बहके[163]

فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ﴿۹۲﴾ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَیُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूं[164] और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं अन्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع

तो उन्हें पहचान लोगे[165] और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

اٰیاتها ۸۸ ﴿۲۸ سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّیَّةٌ ۴۹﴾ رکوعاتها ۹

सूरए क़सस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِی الْاَرْضِ وَ

और फ़िरऔ़न की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔ़न ने ज़मीन में ग़लबा पाया था[3] और

جَعَلَ اَهْلَهَا شِیَعًا یَّسْتَضْعِفُ طَآىِٕفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ़ बना लिया उन में एक गुरोह को[4] कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्ह़ करता और

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का वत़न और वह्य का जाए नुज़ूल है। **160 :** कि वहां न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न कोई शिकार मारा जाए न वहां की घांस काटी जाए। **161 :** मख़्लूक़े ख़ुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। **162 :** उस का नफ़्अ़ व सवाब वोह पाएगा **163 :** और रसूले ख़ुदा की इत़ाअ़त न करे और ईमान न लाए **164 :** मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्जाम दिया (هٰذه اٰية نسختها اٰية القتال) **165 :** इन निशानियों से मुराद शक़्क़े क़मर वग़ैरा मो'जिज़ात हैं और वोह उ़क़ूबतें जो दुन्या में आईं जैसे कि बद्र में कुफ़्फ़ार का क़त्ल होना, क़ैद होना, मलाएका का उन्हें मारना। **1 :** सूरए क़सस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो ''اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ'' से शुरूअ़ हो कर ''لَا نَبْتَغِی الْجٰهِلِیْنَ'' पर ख़त्म होती हैं, और इस सूरत में एक आयत ''اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ'' ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए त़य्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई। इस सूरत में नव 9 रुकूअ़ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800 ह़र्फ़ हैं। **2 :** जो ह़क़ को बात़िल से मुमताज़ करती है। **3 :** या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत़ था और वोह ज़ुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा को पहुंच गया था, ह़त्ता कि उस ने अपनी अ़ब्दिय्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। **4 :** या'नी बनी इसराईल को।

يَسْتَحْيِ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى

उन की औरतों को ज़िन्दा रखता[5] बेशक वोह फ़सादी था और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों

الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ

पर एहसान फ़रमाएं और उन को पेश्वा बनाएं[6] और उन के मुल्क व माल का उन्हीं

الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَ

को वारिस बनाएं[7] और उन्हें[8] ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उन के लश्करों

جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اُمِّ مُوْسٰۤى اَنْ

को वोही दिखा दें जिस का उन्हें इन की तरफ़ से ख़तरा है[9] और हम ने मूसा की मां को इल्हाम फ़रमाया[10] कि

اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ

उसे दूध पिला[11] फिर जब तुझे उस से अन्देशा हो[12] तो उसे दरिया में डाल दे और न डर[13] और न ग़म कर[14]

اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧﴾ فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ

बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे[15] तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के

فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

घर वालों ने[16] कि वोह उन का दुश्मन और उन पर ग़म हो[17] बेशक फ़िरऔन और हामान[18] और उन के लश्कर

5 : या'नी लड़कियों को ख़िदमत गारी के लिये ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़ब्ह करने का सबब येह था कि काहिनों ने उस से कह दिया था कि बनी इसराईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा, इस लिये वोह ऐसा करता था और येह उस की निहायत हमाक़त थी क्यूं कि वोह अगर अपने ख़याल में काहिनों को सच्चा समझता था तो येह बात होनी ही थी, लड़कों के क़त्ल कर देने से क्या नतीजा था और अगर सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी लग्व बात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या मा'ना रखता था। **6 :** कि वोह लोगों को नेकी की राह बताएं और लोग नेकी में उन की इक़्तिदा करें **7 :** या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम के अम्लाक व अम्वाल उन ज़ईफ़ बनी इसराईल को दे दें **8 :** मिस्र और शाम की **9 :** कि बनी इसराईल के एक फ़रज़न्द के हाथ से उन के मुल्क का ज़वाल और उन का हलाक हो। **10 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम यूहानिज़ है, आप लावा बिन या'क़ूब की नस्ल से हैं, **अल्लाह** तआला ने उन को ख़्वाब के या फ़िरिश्ते के ज़रीए या उन के दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया **11 :** चुनान्चे वोह चन्द रोज़ आप को दूध पिलाती रहीं, इस अ़र्से में न आप रोते थे न उन की गोद में कोई हरकत करते थे, न आप की हमशीरा के सिवा और किसी को आप की विलादत की इत्तिलाअ़ थी। **12 :** कि हमसाया वाक़िफ़ हो गए हैं वोह ग़म्माज़ी और चुग़ुल ख़ोरी करेंगे और फ़िरऔन इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द के क़त्ल के दरपै हो जाएगा **13 :** या'नी नीले मिस्र में बे ख़ौफ़ो ख़तर डाल दे और इस के ग़र्क़ व हलाक का अन्देशा न कर। **14 :** उस की जुदाई का **15 :** तो उन्हों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तीन माह दूध पिलाया और जब आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुवा तो एक सन्दूक़ में रख कर (जो ख़ास तौर पर इस मक़्सद के लिये बनाया गया था) शब के वक़्त दरियाए नील में बहा दिया **16 :** उस शब की सुब्ह को और उस सन्दूक़ को फ़िरऔन के सामने रखा और वोह खोला गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बरआमद हुए जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे। **17 :** आख़िर कार **18 :** जो उस का वज़ीर था।

كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝۸ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَ لَكَ ؕ لَا

ख़त़ाकार थे[19] और फ़िरऔ़न की बीबी ने कहा[20] येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे

تَقْتُلُوْهُ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ یَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ۝۹ وَ

क़त्ल न करो शायद येह हमें नफ़्अ़ दे या हम इसे बेटा बना लें[21] और वोह बे ख़बर थे[22] और

اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِیْ بِهٖ لَوْ لَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا

सुब्ह़ को मूसा की मां का दिल बे सब्र हो गया[23] ज़रूर क़रीब था कि वोह उस का ह़ाल खोल देती[24] अगर हम न ढारस

عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۰ وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّیْهِ٘ فَبَصُرَتْ

बंधाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यक़ीन रहे[25] और (उस की मां ने) उस की बहन से कहा[26] उस के पीछे चली जा तो वोह उसे

بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ ۝۱۱ۙ وَ حَرَّمْنَا عَلَیْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी[27] और हम ने पहले ही सब दाइयां उस पर ह़राम कर दी थीं[28]

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَیْتٍ یَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝۱۲

तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं[29]

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

तो हम ने उसे उस की मां की त़रफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि **अल्लाह** का वा'दा

19 : या'नी ना फ़रमान, तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें येह सज़ा दी कि उन के हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई। **20 :** जब कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लोगों के वरग़लाने से मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के क़त्ल का इरादा किया। **21 :** क्यूं कि येह इसी क़ाबिल है। फ़िरऔ़न की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं, अम्बिया की नस्ल से थीं, ग़रीबों और मिस्कीनों पर रह़मो करम करती थीं। उन्हों ने फ़िरऔ़न से कहा कि येह बच्चा साल भर से ज़ियादा उ़म्र का मा'लूम होता है और तू ने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है, इलावा बरीं मा'लूम नहीं येह बच्चा दरिया में किस सर ज़मीन से आया, तुझे जिस बच्चे का अन्देशा है वोह इसी मुल्क के बनी इसराईल से बताया गया है। आसिया की येह बात उन लोगों ने मान ली **22 :** उस से जो अन्जाम होने वाला था। **23 :** जब उन्हों ने सुना कि उन के फ़रज़न्द फ़िरऔ़न के हाथ में पहुंच गए। **24 :** और जोशे मह़ब्बते मादरी में ''وَاابْنَاهُ وَاابْنَاهُ'' (हाए बेटे हाए बेटे) पुकार उठतीं **25 :** जो वा'दा हम कर चुके हैं कि तेरे इस फ़रज़न्द को तेरी त़रफ़ फेर लाएंगे। **26 :** जिन का नाम मरयम था कि ह़ाल मा'लूम करने के लिये **27 :** कि येह इस बच्चे की बहन है और इस की निगरानी करती है। **28 :** चुनान्चे जिस क़दर दाइयां ह़ाज़िर की गईं उन में से किसी की छाती आप ने मुंह में न ली। इस से उन लोगों को बहुत फ़िक्र हुई कि कहीं कोई ऐसी दाई मुयस्सर आए जिस का दूध आप पी लें। दाइयों के साथ आप की हमशीरा भी येह ह़ाल देखने चली गई थीं। अब उन्हों ने मौक़अ़ पाया **29 :** चुनान्चे वोह उन की ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام फ़िरऔ़न की गोद में थे और दूध के लिये रोते थे, फ़िरऔ़न आप को शफ़्क़त के साथ बहलाता था। जब आप की वालिदा आईं और आप ने उन की ख़ुश्बू पाई तो आप को क़रार आया और आप ने उन का दूध मुंह में लिया। फ़िरऔ़न ने कहा तू इस बच्चे की कौन है कि इस ने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया ? उन्हों ने कहा मैं एक औ़रत हूं पाक साफ़ रहती हूं, मेरा दूध ख़ुश गवार है जिस्म ख़ुश्बूदार है इस लिये जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है, वोह और औ़रतों का दूध नहीं लेते हैं, मेरा दूध पी लेते हैं। फ़िरऔ़न ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर कर के फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दी चुनान्चे आप अपने मकान पर ले आईं और **अल्लाह**

www.dawateislami.net

حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى

सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[30] और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर आया[31]

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَدَخَلَ

हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़ता फ़रमाया[32] और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को और उस शहर में

الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ

दाख़िल हुवा[33] जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़्वाब में बे ख़बर थे[34] तो उस में दो मर्द

يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ

लड़ते पाए एक मूसा के गुरौह से था[35] और दूसरा उस के दुश्मनों से[36] तो वोह जो उस के गुरौह से था[37] उस ने मूसा से मदद

مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ

मांगी उस पर जो उस के दुश्मनों से था तो मूसा ने उस के घूंसा मारा[38] तो उस का काम तमाम कर दिया[39] कहा

هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

येह काम शैत़ान की त़रफ़ से हुवा[40] बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने

ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ

अपनी जान पर ज़ियादती की[41] तो मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है अ़र्ज़ की

तआ़ला का वा'दा पूरा हुवा, उस वक़्त उन्हें इत़्मीनाने कामिल हो गया कि येह फ़रज़न्दे अरजुमन्द ज़रूर नबी होंगे। **अल्लाह** तआ़ला इस वा'दे का ज़िक्र फ़रमाता है। **30 :** और शक में रहते हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फ़िरऔ़न उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा, दूध छूटने के बा'द आप ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरऔ़न के पास ले आईं और आप वहां परवरिश पाते रहे। **31 :** उ़म्र शरीफ़ तीस साल से ज़ियादा हो गई। **32 :** या'नी मसालेह़े दीन व दुन्या का इ़ल्म। **33 :** वोह शहर या तो "मन्फ़" था जो हुदूदे मिस्र में है, अस्ल इस की माफ़ह है ज़बान क़िब्त़ी में इस लफ़्ज़ के मा'ना हैं तीस[30]। येह पहला शहर है जो तूफ़ाने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आबाद हुवा, इस सर ज़मीन में मिस्र बिन ह़ाम ने इक़ामत की, येह इक़ामत करने वाले कुल तीस[30] थे, इस लिये इस का नाम माफ़ह हुवा, फिर इस की अ़रबी मन्फ़ हुई। या वोह शहर "ह़ाबीन" था जो मिस्र से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर था। एक क़ौल येह भी है कि वोह शहर "ऐ़ने शम्स" था। (جمل وخازن) **34 :** और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पोशीदा त़ौर पर दाख़िल होने का सबब येह था कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जवान हुए तो आप ने ह़क़ का बयान और फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों की गुमराही का रद शुरूअ़ किया। बनी इसराईल के लोग आप की बात सुनते और आप का इत्तिबाअ़ करते, आप फ़िरऔ़नियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते। शुदा शुदा (रफ़्ता रफ़्ता) इस का चरचा हुवा और फ़िरऔ़नी जुस्त्जू में हुए, इस लिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहां के लोग ग़फ़्लत में हों। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि वोह दिन ई़द का था, लोग अपने लह्वो लअ़ब में मश्ग़ूल थे। (مدارک وخازن) **35 :** बनी इसराईल में से **36 :** या'नी क़िब्त़ी क़ौमे फ़िरऔ़न से, येह इसराईली पर जब्र कर रहा था ताकि इस पर लकड़ियों का अम्बार लाद कर फ़िरऔ़न के मत़्बख़ में ले जाए **37 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के **38 :** पहले आप ने क़िब्त़ी से कहा कि इसराईली पर ज़ुल्म न कर इस को छोड़ दे लेकिन वोह बाज़ न आया और बद ज़बानी करने लगा तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को इस ज़ुल्म से रोकने के लिये घूंसा मारा **39 :** या'नी वोह मर गया और आप ने उस को रेत में दफ़्न कर दिया, आप का इरादा क़त्ल करने का न था। **40 :** या'नी उस क़िब्त़ी का इसराईली पर ज़ुल्म करना जो उस की हलाकत का बाइ़स हुवा। (خازن) **41 :** येह कलाम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है क्यूं कि आप से कोई मा'सियत

www.dawateislami.net

رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِیْرًا لِّلْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِی

ऐ मेरे रब जैसा तू ने मुझ पर एह़सान किया तो अब[42] हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न होउंगा तो सुब्ह़ की

الْمَدِیْنَةِ خَآىٕفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ

उस शहर में डरते हुए इस इन्तिज़ार में कि क्या होता है[43] जभी देखा कि वोह जिस ने कल इन से मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है[44]

قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ یَّبْطِشَ

मूसा ने उस से फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है[45] तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरिफ़्त करे

بِالَّذِیْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ یٰمُوْسٰۤى اَتُرِیْدُ اَنْ تَقْتُلَنِیْ كَمَا قَتَلْتَ

जो उन दोनों का दुश्मन है[46] वोह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुम ने कल

نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ۖۗ اِنْ تُرِیْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِی الْاَرْضِ وَ مَا

एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो येही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और

تُرِیْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِیْنَ ﴿۱۹﴾ وَ جَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ

इस्लाह़ करना नहीं चाहते[47] और शहर के परले कनारे से एक शख़्स[48]

یَسْعٰى٘ قَالَ یٰمُوْسٰۤى اِنَّ الْمَلَاَ یَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِیَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّیْ

दौड़ता आया कहा ऐ मूसा ! बेशक[49] दरबार वाले आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये[50] मैं

सरज़द नहीं हुई, और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह नहीं होते। क़िब्ती का मारना आप का दफ़्ए ज़ुल्म और इमदादे मज़्लूम थी, येह किसी मिल्लत में भी गुनाह नहीं, फिर भी अपनी त़रफ़ तक़्सीर की निस्बत करना और इस्तिग़्फ़ार चाहना येह मुक़र्रबीन (अल्लाह वालों) का दस्तूर ही है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में ताख़ीर औला थी इस लिये ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने तर्के औला को ज़ियादती फ़रमाया और इस पर ह़क़ तआला से मग़्फ़िरत त़लब की। **42 :** येह करम भी कर कि मुझे फ़िरऔन की सोह़बत और इस के यहां रहने से भी बचा कि इस ज़ुमरे में शुमार किया जाना येह भी एक त़रह़ का मददगार होना है। **43 :** कि ख़ुदा जाने उस क़िब्त़ी के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उस की क़ौम के लोग क्या करें। **44 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरऔन की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔन को इत्तिलाअ़ दी कि किसी बनी इसराईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है। इस पर फ़िरऔन ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो। फ़िरऔनी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सुबूत नहीं मिलता था, दूसरे रोज़ जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वोही बनी इसराईल जिस ने एक रोज़ पहले इन से मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔनी से लड़ रहा है और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को देख कर इन से फ़रियाद करने लगा तब ह़ज़रते **45 :** मुराद येह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है, अपने आप को भी मुसीबत व परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी, क्यूं ऐसे मौक़ओं से नहीं बचता और क्यूं एह़तियात़ नहीं करता। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को रह़्म आया और आप ने चाहा कि इस को फ़िरऔनी के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई दिलाएं। **46 :** या'नी फ़िरऔनी पर। तो इसराईली ग़लत़ी से येह समझा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام मुझ से ख़फ़ा हैं मुझे पकड़ना चाहते हैं येह समझ कर **47 :** फ़िरऔनी ने येह बात सुनी और जा कर फ़िरऔन को इत्तिलाअ़ दी कि कल के फ़िरऔनी मक़्तूल के क़ातिल ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام हैं। फ़िरऔन ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को ढूंडने निकले **48 :** जिस को मोमिने आले फ़िरऔन कहते हैं, येह ख़बर सुन कर क़रीब की राह से **49 :** फ़िरऔन के **50 :** शहर से।

لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ

आप का ख़ैर ख़्वाह हूं[51] तो उस शहर से निकला डरता हुवा इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब

نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾ ع وَ لَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ

मुझे सितम गारों से बचा ले[52] और जब मद्यन की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा[53] कहा

عَسٰى رَبِّيْۤ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۲۲﴾ وَ لَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ

क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए[54] और जब मद्यन के पानी पर आया[55]

وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ وَ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ

वहां लोगों के एक गुरोह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उन से उस तरफ़[56] दो औ़रतें देखीं

تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ سكتة وَ

कि अपने जानवरों को रोक रही हैं[57] मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या ह़ाल है[58] वोह बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिला कर फेर न ले जाएं[59] और

اَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿۲۳﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ

हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं[60] तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साए की तरफ़ फिरा[61] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿۲۴﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى

उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोह़ताज हूं[62] तो उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म

51 : येह बात ख़ैर ख़्वाही और मस्लह़त अन्देशी से कहता हूं। **52 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न से। **53 :** मद्यन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ रखते थे। इस को मद्यन इब्ने इब्राहीम कहते हैं, मिस्र से यहां तक आठ रोज़ की मसाफ़त है, येह शहर फ़िरऔ़न के हुदूदे क़लम रव (सल्त़नत की हुदूद) से बाहर था, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस का रास्ता भी न देखा था न कोई सुवारी साथ थी न तोशा न कोई हमराही, राह में दरख़्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्ज़े के सिवा ख़ूराक की और कोई चीज़ न मिलती थी। **54 :** चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता भेजा जो आप को मद्यन तक ले गया। **55 :** या'नी कूंएं पर जिस से वहां के लोग पानी लेते और अपने जानवरों को सैराब करते थे, येह कूंवां शहर के कनारे था। **56 :** या'नी मर्दों से अ़लाह़दा **57 :** इस इन्तिज़ार में कि लोग फ़ारिग़ हों और कूंवां ख़ाली हो क्यूं कि कूंएं को क़वी और ज़ोर आवर लोगों ने घेर रखा था, उन के हुजूम में औ़रतों से मुम्किन न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सकतीं। **58 :** या'नी अपने जानवरों को पानी क्यूं नहीं पिलातीं ? **59 :** क्यूं कि न हम मर्दों के अम्बोह (हुजूम) में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं, जब येह लोग अपने जानवरों को पानी पिला कर वापस हो जाते हैं तो ह़ौज़ में जो पानी बच रहता है वोह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं। **60 :** ज़ईफ़ हैं ख़ुद येह काम नहीं कर सकते इस लिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई। जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की बातें सुनीं तो आप को रिक़्क़त आई और रह़्म आया और वहीं दूसरा कूंवां जो उस के क़रीब था और एक बहुत भारी पथ्थर उस पर ढका हुवा था जिस को बहुत से आदमी मिल कर हटा सकते थे आप ने तन्हा उस को हटा दिया। **61 :** धूप और गरमी की शिद्दत थी और आप ने कई रोज़ से खाना भी नहीं खाया था, भूक का ग़लबा था इस लिये आराम ह़ासिल करने की ग़रज़ से एक दरख़्त के साए में बैठ गए और बारगाहे इलाही में **62 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को खाना मुलाह़ज़ा फ़रमाए पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था, इस दरमियान में एक लुक़्मा तक न खाया था, शिकमे मुबारक पुश्ते अक़्दस से मिल गया था, इस ह़ालत में अपने रब से ग़िज़ा त़लब की और बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में निहायत क़ुर्ब मन्ज़िलत रखते हैं इस इज्ज़ो इन्किसारी के साथ रोटी का एक टुकड़ा त़लब किया। और जब वोह दोनों साह़िब ज़ादियां उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उन के वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि आज इस क़दर जल्द वापस आ जाने का क्या सबब हुवा ? अ़र्ज़ किया कि हम ने एक

اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِیْ یَدْعُوْكَ لِیَجْزِیَكَ اَجْرَ مَا سَقَیْتَ لَنَا ؕ

से चलती हुई[63] बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उस की जो तुम ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है[64]

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَ قَصَّ عَلَیْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٙ نَجَوْتَ مِنَ

जब मूसा उस के पास आया और उसे बातें कह सुनाईं[65] उस ने कहा डरिये नहीं आप बच गए

الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا یٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَیْرَ

ज़ालिमों से[66] उन में की एक बोली[67] ऐ मेरे बाप इन को नोकर रख लो[68] बेशक बेहतर

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

नोकर वोह जो ताक़त वर अमानत दार हो[69] कहा मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनों बेटियों में

اِحْدَى ابْنَتَیَّ هٰتَیْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِیْ ثَمٰنِیَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

से एक तुम्हें बियाह दूं[70] इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो[71] फिर अगर पूरे दस

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَیْكَ ؕ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ

बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है[72] और मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता[73] क़रीब है

नेक मर्द पाया, उस ने हम पर रहम किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया। इस पर उन के वालिद साहिब ने एक साहिब ज़ादी से फ़रमाया कि जाओ और उस मर्दे सालेह को मेरे पास बुला लाओ **63 :** चेहरा आस्तीन से ढके जिस्म छुपाए, यह बड़ी साहिब ज़ादी थीं, इन का नाम सफ़ूरा है। और एक क़ौल येह है कि वोह छोटी साहिब ज़ादी थीं। **64 :** हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام उजरत लेने पर राज़ी न हुए लेकिन हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام की ज़ियारत और उन की मुलाक़ात के क़स्द से चले और उन साहिब ज़ादी साहिबा से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाइये। येह आप ने पर्दे के एहतिमाम के लिये फ़रमाया, और इस तरह तशरीफ़ लाए। जब हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام के पास पहुंचे तो खाना हाज़िर था, हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया बैठिये खाना खाइये। हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने मन्ज़ूर न किया और اَعُوْذُ بِاللّٰه फ़रमाया। हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया क्या सबब खाने में क्यूं उज़्र है क्या आप को भूक नहीं है? फ़रमाया कि मुझे येह अन्देशा है कि येह खाना मेरे उस अ़मल का इवज़ न हो जाए जो मैं ने आप के जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है क्यूं कि हम वोह लोग हैं कि अ़मले ख़ैर पर इवज़ लेना क़बूल नहीं करते। हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ जवान! ऐसा नहीं है, येह खाना आप के अ़मल के इवज़ में नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबाओ अज्दाद की आ़दत है कि हम मेहमान ख़्वानी किया करते हैं और खाना खिलाते हैं। तो आप बैठे और आप ने खाना तनावुल फ़रमाया। **65 :** और तमाम वाक़िआत व अह़वाल जो फ़िरऔ़न के साथ गुज़रे थे अपनी विलादत शरीफ़ से ले कर क़िब्त़ी के क़त्ल और फ़िरऔ़नियों के आप के दरपै जान होने तक के सब हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام से बयान कर दिये **66 :** या'नी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों से क्यूं कि यहां मद्यन में फ़िरऔ़न की हुकूमत व सल्तनत नहीं। **मसाइल :** इस से साबित हुवा कि एक शख़्स की ख़बर पर अ़मल करना जाइज़ है। ख़्वाह वोह गुलाम हो या औ़रत हो और येह भी साबित हुवा कि अज्नबिय्या के साथ वरअ़ व एहतियात़ के साथ चलना जाइज़ है। (مدارک)। **67 :** जो हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को बुलाने के वासित़े भेजी गई थी, बड़ी या छोटी। **68 :** येह हमारी बकरियां चराया करें और येह काम हमें न करना पड़े। **69 :** हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام ने साहिब ज़ादी से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन की कुव्वत व अमानत का क्या इ़ल्म? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि कुव्वत तो इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने तन्हा कूंएं पर से वोह पथ्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने हमें देख कर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा नुमूदार हो। येह सुन कर हज़रते शुऐब عَلَیْهِ السَّلَام ने हज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से **70 :** येह वा'दा निकाह़ का था अल्फ़ाज़े अ़क़्द न थे क्यूं कि **मस्अला :** अ़क़्द के लिये सीग़ए माज़ी ज़रूरी है। **मस्अला :** और ऐसे ही मन्कूह़ा की ता'यीन भी ज़रूरी है। **71 मस्अला :** आज़ाद मर्द का आज़ाद औ़रत से निकाह़ किसी दूसरे आज़ाद शख़्स

www.dawateislami.net

شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا

मैं तुम मुझे नेकों में पाओगे[74] मूसा ने कहा येह मेरे और आप के दरमियान इक़रार हो चुका إِنْ شَآءَ اللّٰه تعالى

الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾ ع

इन दोनों में जो मीआ़द पूरी कर दूं[75] तो मुझ पर कोई मुत़ालबा नहीं और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है[76]

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ

फिर जब मूसा ने अपनी मीआ़द पूरी कर दी[77] और अपनी बीबी को ले कर चला[78] तूर की त़रफ़ से एक आग

نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ

देखी[79] अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की त़रफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ ख़बर लाऊं[80]

اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊं कि तुम तापो फिर जब आग के पास ह़ाज़िर हुवा निदा की गई

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى

मैदान के दहने कनारे से[81] बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से[82] कि ऐ मूसा

اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

बेशक मैं ही हूं अल्लाह रब सारे जहान का[83] और येह कि डाल दे अपना अ़सा[84] फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा

की ख़िदमत करने या बकरियां चराने को महर क़रार दे कर जाइज़ है। **मस्अला :** और अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्दत तक औ़रत की ख़िदमत करने को या कुरआन की ता'लीम को महर क़रार दे कर निकाह़ किया तो निकाह़ जाइज़ है और येह चीज़ें महर न हो सकेंगी बल्कि इस सूरत में महरे मिस्ल लाज़िम होगा। (ہدایہ واحمدی)। **72 :** या'नी येह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब न होगा **73 :** कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूं। **74 :** तो मेरी त़रफ़ से हुस्ने मुआ़मलत और वफ़ाए अ़हद ही होगी और إِنْ شَآءَ اللّٰه تعالى आप ने अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ व मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया। **75 :** ख़्वाह दस साल की या आठ साल की **76 :** फिर जब आप का अ़क़्द हो चुका तो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी साह़िब ज़ादी को हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को एक अ़सा दें जिस से वोह बकरियों की निगहबानी करें और दरिन्दों को दफ़्अ़ करें। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के पास अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के कई अ़सा थे, साह़िब ज़ादी साह़िबा का हाथ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा पर पड़ा जो आप जन्नत से लाए थे और अम्बिया उस के वारिस होते चले आए थे और वोह ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंचा था। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह अ़सा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दिया। **77 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि आप ने बड़ी मीआ़द या'नी दस साल पूरे किये फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام से मिस्र की त़रफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही, आप ने इजाज़त दी। **78 :** उन के वालिद की इजाज़त से मिस्र की त़रफ़। **79 :** जब कि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सरदी शिद्दत की पड़ रही थी, रास्ता गुम हो गया था, उस वक़्त आप ने आग देख कर **80 :** राह की, कि किस त़रफ़ है। **81 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते रास्त की त़रफ़ था। **82 :** वोह दरख़्त उ़न्नाब का था या औ़सज का (औ़सज एक ख़ारदार दरख़्त है जो जंगलों में होता है)। **83 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सर सब्ज़ दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि अल्लाह तआ़ला के सिवा येह किसी की क़ुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का अल्लाह तआ़ला ही मुतकल्लिम है। येह भी मन्क़ूल है कि येह कलाम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सिर्फ़ गोशे मुबारक ही से नहीं बल्कि अपने जिस्मे अक़्दस के हर हर जुज़ से सुना। **84 :** चुनान्चे आप ने अ़सा डाल दिया वोह सांप बन गया।

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ قف اِنَّكَ

गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा[85] ऐ मूसा सामने आ और डर नहीं बेशक तुझे

مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ

अमान है[86] अपना हाथ[87] गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे

سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ

ऐब[88] और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले ख़ौफ़ दूर करने को[89] तो येह दो हुज्जतें हैं तेरे रब की[90]

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ

फ़िरऔन और उस के दरबारियों की तरफ़ बेशक वोह बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हैं अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۳۳﴾ وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ

ने उन में एक जान मार डाली है[91] तो डरता हूं कि मुझे क़त्ल कर दें और मेरा भाई हारून उस की ज़बान

مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْۤ ۫ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾

मुझ से ज़ियादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक़ करे मुझे डर है कि वोह[92] मुझे झुटलाएंगे

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से क़ुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़लबा अ़ता फ़रमाएंगे तो वोह तुम दोनों का कुछ नुक़्सान

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَاۤ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ معانقة ١١

न कर सकेंगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे[93] फिर जब मूसा उन के

مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا

पास हमारी रोशन निशानियां लाया बोले येह तो नहीं मगर बनावट का जादू[94] और हम ने अपने अगले

85 : तब निदा की गई **86 :** कोई ख़त्रा नहीं **87 :** अपनी क़मीस के **88 :** शुआ़ए आफ़्ताब की त़रह़। तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक गिरेबान में डाल कर निकाला तो उस में ऐसी तेज़ चमक थी जिस से निगाहें झपकीं। **89 :** ताकि हाथ अपनी अस्ली ह़ालत पर आए और ख़ौफ़ रफ़्अ़ हो जाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सीने पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो ख़ौफ़ सांप देखने के वक़्त पैदा हो गया था रफ़्अ़ हो जाए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जो ख़ौफ़ज़दा अपना हाथ सीने पर रखेगा उस का ख़ौफ़ दफ़्अ़ हो जाएगा। **90 :** या'नी अ़सा और यदे बैज़ा तुम्हारी रिसालत की बुरहानें हैं **91 :** या'नी क़िब्ती़ मेरे हाथ से मारा गया है **92 :** या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम **93 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर। **94 :** उन बद नसीबों ने मो'जिज़ात का इन्कार कर दिया और उन को जादू बता दिया। मत़लब येह था कि जिस त़रह़ तमाम अन्वाए़ सेह़र बात़िल होते हैं इसी त़रह़ مَعَاذَ اللّٰه येह भी है।

بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۶﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ

बाप दादाओं में ऐसा न सुना[95] और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उस के

بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ

पास से हिदायत लाया[96] और जिस के लिये आख़िरत का घर होगा[97] बेशक ज़ालिम मुराद

الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

को नहीं पहुंचते[98] फ़िरऔन बोला ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा

غَیْرِیْۚ فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَى الطِّیْنِ فَاجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْۤ اَطَّلِعُ

कोई ख़ुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पक्का कर[99] एक महल बना[100] कि शायद मैं मूसा

اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ

के ख़ुदा को झांक आऊं[101] और बेशक मेरे गुमान में तो वोह[102] झूटा है[103] और उस ने और उस के

جُنُوْدُهٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا لَا یُرْجَعُوْنَ ﴿۳۹﴾

लश्करियों ने ज़मीन में बे जा बड़ाई चाही[104] और समझे कि उन्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं

فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِی الْیَمِّۚ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

तो हम ने उसे और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया[105] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً یَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ لَا

सितम गारों का और उन्हें हम ने[106] दोज़ख़ियों का पेशवा बनाया कि आग की त़रफ़ बुलाते हैं[107] और क़ियामत के दिन

یُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةًۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ هُمْ

उन की मदद न होगी और इस दुन्या में हम ने उन के पीछे ला'नत लगाई[108] और क़ियामत के दिन उन

95 : या'नी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया। या येह मा'ना हैं कि जो दा'वत आप हमें देते हैं वोह ऐसी नई है कि हमारे आबाओ अज्दाद में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी 96 : या'नी जो ह़क़ पर है और जिस को अल्लाह तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया। 97 : और वोह वहां की ने'मतों और रह़मतों के साथ नवाज़ा जाएगा। 98 : या'नी काफ़िरों को आख़िरत की फ़लाह़ मुयस्सर नहीं। 99 : ईंट तय्यार कर। कहते हैं कि येही दुन्या में सब से पहले ईंट बनाने वाला है, येह सन्अ़त इस से पहले न थी। 100 : निहायत बुलन्द 101 : चुनान्चे हामान ने हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जम्अ़ किये, ईंटें बनवाईं और इमारती सामान जम्अ़ कर के इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि दुन्या में उस के बराबर कोई इमारत बुलन्द न थी, फ़िरऔन ने येह गुमान किया कि (مَعَاذَ الله) अल्लाह तआ़ला के लिये भी मकान है और वोह जिस्म है कि उस तक पहुंचना इस के लिये मुम्किन होगा। 102 : या'नी मूसा عَلَیْهِ السَّلَام 103 : अपने इस दा'वे में कि उस का एक मा'बूद है जिस ने उस को अपना रसूल बना कर हमारी त़रफ़ भेजा। 104 : और ह़क़ को न माना और बात़िल पर रहे 105 : और सब ग़र्क़ हो गए। 106 : दुन्या में 107 : या'नी कुफ़्र व मआ़सी की दा'वत देते हैं जिस से अ़ज़ाबे जहन्नम के मुस्तह़िक़ हों और जो इन की इत़ाअ़त करें वोह भी जहन्नमी हो जाए। 108 : या'नी रुस्वाई और रह़मत से दूरी।

www.dawateislami.net

مِّنَ الْمَقْبُوْحِیْنَ ۝۴۲ؑ وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا ع

का बुरा है और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109] बा'द इस के कि अगली संगतें (क़ौमें)[110]

الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآىٕرَ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ۝۴۳

हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आंखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रह़मत ताकि वोह नसीह़त मानें

وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِیِّ اِذْ قَضَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَ مَا كُنْتَ

और तुम[111] तूर की जानिबे मग़रिब में न थे[112] जब कि हम ने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा[113] और उस वक़्त तुम

مِنَ الشّٰهِدِیْنَ ۝۴۴ وَ لٰكِنَّاۤ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَیْهِمُ الْعُمُرُۚ وَ

ह़ाज़िर न थे मगर हुवा येह कि हम ने संगतें पैदा कीं[114] कि उन पर ज़मानए दराज़ गुज़रा[115] और

مَا كُنْتَ ثَاوِیًا فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ تَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِنَاۙ وَ لٰكِنَّا كُنَّا

न तुम अहले मद्यन में मुक़ीम थे उन पर हमारी आयतें पढ़ते हुए हां हम

مُرْسِلِیْنَ ۝۴۵ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَیْنَا وَ لٰكِنْ رَّحْمَةً

रसूल बनाने वाले हुए[116] और न तुम तूर के कनारे थे जब हम ने निदा फ़रमाई[117] हां तुम्हारे रब की

مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِیْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इ़ल्म दिये)[118] कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिस के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[119] येह उम्मीद करते हुए कि

یَتَذَكَّرُوْنَ ۝۴۶ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ تُصِیْبَهُمْ مُّصِیْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ

उन को नसीह़त हो और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत[120] उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा[121]

فَیَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَیْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰیٰتِكَ وَ نَكُوْنَ

तो कहते ऐ हमारे रब तू ने क्यूं न भेजा हमारी त़रफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और

109 : या'नी तौरैत। **110 :** मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा के **111 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **112 :** वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मीक़ात था। **113 :** और उन से कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़र्रब किया। **114 :** या'नी बहुत सी उम्मतें, बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के **115 :** तो वोह अल्लाह का अ़ह्द भूल गए और उन्हों ने उस की फ़रमां बरदारी तर्क की, और इस की ह़क़ीक़त येह है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की क़ौम से सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में और आप पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ अ़ह्द लिये थे। जब दराज़ ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बा'द उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वोह लोग उन अ़ह्दों को भूल गए और उस की वफ़ा तर्क कर दी। **116 :** तो हम ने आप को इ़ल्म दिया और पहलों के ह़ालात पर मुत्तलअ़ किया। **117 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तौरैत अ़त़ा फ़रमाने के वक़्त। **118 :** जिन से तुम उन के अह़वाल बयान फ़रमाते हो, आप का इन उमूर की ख़बर देना आप की नुबुव्वत की ज़ाहिर दलील है। **119 :** इस क़ौम से मुराद अहले मक्का हैं जो ज़मानए फ़ित्रत (दो पैग़म्बरों के दरमियान के ज़माने) में थे, जो ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान पांच सो पचास बरस की मुद्दत का है। **120 :** अ़ज़ाब व सज़ा **121 :** या'नी जो कुफ़्रो

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۴۷﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَاۤ اُوْتِیَ

ईमान लाते[122] फिर जब उन के पास हक़ आया[123] हमारी तरफ़ से बोले[124] इन्हें क्यूं न दिया गया

مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰی ؕ اَوَلَمْ یَكْفُرُوْا بِمَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰی مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا

जो मूसा को दिया गया[125] क्या उस के मुन्किर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया[126] बोले

سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْۤا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ

दो जादू हैं एक दूसरे की पुश्ती (इमदाद) पर और बोले हम इन दोनों के मुन्किर हैं[127] तुम फ़रमाओ तो **अल्लाह** के पास से कोई

عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰی مِنْهُمَاۤ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ لَّمْ

किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़ियादा हिदायत की हो[128] मैं उस की पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो[129] फिर अगर

یَسْتَجِیْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ

वोह येह तुम्हारा फ़रमाना क़बूल न करें[130] तो जान लो कि[131] बस वोह अपनी ख़्वाहिशों ही के पीछे हैं और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की

ع ۵ ۸ هَوٰىهُ بِغَیْرِ هُدًی مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۰﴾ ع

पैरवी करे **अल्लाह** की हिदायत से जुदा बेशक **अल्लाह** हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾ ؕ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ

और बेशक हम ने उन के लिये बात मुसल्सल उतारी[132] कि वोह ध्यान करें जिन को हम ने इस से पहले[133]

इस्यान उन्हें ने किया **122 :** मा'ना आयत के येह हैं कि रसूलों का भेजना ही इल्ज़ामे हुज्जत के लिये है कि उन्हें येह उ़ज्र करने की गुन्जाइश न मिले कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए, इस लिये गुमराह हो गए, अगर रसूल आते तो हम ज़रूर मुतीअ़ होते और ईमान लाते। **123 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **124 :** मक्का के कुफ़्फ़ार **125 :** या'नी उन्हें कुरआने करीम यक्बारगी क्यूं नहीं दिया गया जैसा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को पूरी तौरैत एक ही बार में अ़ता की गई थी। या येह मा'ना हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़सा और यदे बैज़ा जैसे मो'जिज़ात क्यूं न दिये गए ? **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **126 :** यहूद ने कुरैश को पैग़ाम भेजा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के से मो'जिज़ात त़लब करें। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जिन यहूद ने येह सुवाल किया है क्या वोह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के और जो उन्हें **अल्लाह** की तरफ़ से दिया गया है उस के मुन्किर न हुए ? **127 :** या'नी तौरैत के भी और कुरआन के भी, इन दोनों को उन्हों ने जादू कहा। और एक क़िराअत में ''سَاحِرَانِ'' है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि दोनों जादूगर हैं या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का ने यहूदे मदीना के सरदारों के पास क़ासिद भेज कर दरयाफ़्त किया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कुतुबे साबिक़ा में कोई ख़बर है ? उन्हों ने जवाब दिया कि हां हुज़ूर की ना'त व सिफ़त उन की किताब तौरैत में मौजूद है। जब येह ख़बर कुरैश को पहुंची तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام व सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहने लगे कि वोह दोनों जादूगर हैं, उन में एक दूसरे का मुईनो मददगार है। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : **128 :** या'नी तौरैत व कुरआन से। **129 :** अपने इस क़ौल में कि येह दोनों जादू या जादूगर हैं। इस में तम्बीह है कि वोह इस के मिस्ल किताब लाने से आ़जिज़े महूज़ हैं, चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया जाता है **130 :** और ऐसी किताब न ला सकें **131 :** उन के पास कोई हुज्जत नहीं है। **132 :** या'नी कुरआने करीम उन के पास पयापै (मुतवातिर) और मुसल्सल आया, वा'द और वईद और क़सस और इब्रतें और मौइज़तें ताकि समझें और ईमान लाएं। **133 :** या'नी कुरआन शरीफ़ से या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मोमिनीने अहले किताब हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई। और

النصف

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖۤ

किताब दी वोह उस पर ईमान लाते हैं   और जब उन पर येह आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इस पर ईमान लाए

اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿۵۳﴾ اُولٰٓىِٕكَ يُؤْتَوْنَ

बेशक येही ह़क़ है हमारे रब के पास से हम इस से पहले ही गरदन रख चुके थे[134]   उन को उन का अज्र

اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ مِمَّا

दोबाला दिया जाएगा[135] बदला उन के सब्र का[136] और वोह भलाई से बुराई को टालते हैं[137] और हमारे दिये

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَ اِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا لَنَاۤ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं[138]   और जब बेहूदा बात सुनते हैं उस से तग़ाफ़ुल करते हैं[139] और कहते हैं हमारे लिये

اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ٘ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ٘ لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿۵۵﴾ اِنَّكَ

हमारे अ़मल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अ़मल   बस तुम पर सलाम[140]   हम जाहिलों के ग़रज़ी (चाहने वाले) नहीं[141]   बेशक

لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ هُوَ اَعْلَمُ

येह नहीं कि तुम जिसे अपनी त़रफ़ से चाहो हिदायत कर दो हां **अल्लाह** हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे   और वोह ख़ूब जानता है

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾ وَ قَالُوْۤا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ

हिदायत वालों को[142]   और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक

एक क़ौल येह है कि येह उन अहले इन्जील के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़बशा से आ कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। येह चालीस ह़ज़रात थे, ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के साथ आए। जब उन्हों ने मुसल्मानों की ह़ाजत और तंगिये मआ़श देखी तो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जा कर अपने माल ले आएं और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत करें। हुज़ूर ने इजाज़त दी और वोह जा कर अपने माल ले आए और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत की, उन के ह़क़ में येह आयात "مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ" तक नाज़िल हुईं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयतें अस्सी[80] अहले किताब के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन में चालीस नजरान के और बत्तीस ह़बशा के और आठ शाम के थे। **134 :** या'नी नुज़ूले क़ुरआन से क़ब्ल ही हम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं क्यूं कि तौरैत व इन्जील में उन का ज़िक्र है। **135 :** क्यूं कि वोह पहली किताब पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी। **136 :** कि उन्हों ने अपने दीन पर भी सब्र किया और मुश्रिकीन की ईज़ा पर भी। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अज्र मिलेंगे **एक** अहले किताब का वोह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर भी। **दूसरा** वोह ग़ुलाम जिस ने **अल्लाह** का ह़क़ भी अदा किया और मौला का भी। **तीसरा** वोह जिस के पास बांदी थी जिस से क़ुर्बत करता था फिर उस को अच्छी त़रह़ अदब सिखाया अच्छी ता'लीम दी और आज़ाद कर के उस से निकाह़ कर लिया उस के लिये भी दो अज्र हैं। **137 :** त़ाअ़त से मा'सियत को और ह़िल्म से ईज़ा को, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि तौह़ीद की शहादत या'नी "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" से शिर्क को। **138 :** त़ाअ़त में, या'नी सदक़ा करते हैं। **139 :** मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उन का दीन तर्क करने और इस्लाम क़बूल करने पर गालियां देते और बुरा कहते, येह ह़ज़रात उन की बेहूदा बातें सुन कर ए'राज़ फ़रमाते **140 :** या'नी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियां न देंगे। **141 :** उन के साथ मेलजोल निशस्त व बरख़ास्त नहीं चाहते, हमें जाहिलाना ह़रकात गवारा नहीं। (نُسِخَ ذٰلِكَ بِالْقِتَالِ)। **142 :** जिन के लिये उस

اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰۤى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَیْءٍ

ले जाएंगे[143] क्या हम ने उन्हें जगह न दी अमान वाली ह़रम में[144] जिस की त़रफ़ हर चीज़ के फल

رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ

लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उन में अक्सर को इ़ल्म नहीं[145] और कितने शहर हम ने हलाक

قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا

कर दिये जो अपने ऐ़श पर इतरा गए थे[146] तो येह हैं उन के मकान[147] कि उन के बा'द इन में सुकूनत न हुई मगर

قَلِيْلًا ؕ وَ كُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى

कम[148] और हमीं वारिस हैं[149] और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक

يَبْعَثَ فِیْۤ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَ مَا كُنَّا مُهْلِكِی الْقُرٰۤى

उन के अस्ल मरजअ़ में रसूल न भेजे[150] जो उन पर हमारी आयतें पढ़े[151] और हम शहरों को हलाक नहीं करते

اِلَّا وَ اَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

मगर जब कि उन के साकिन सितम गार हों[152] और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का बरतावा

ने हिदायत मुक़द्दर फ़रमाई, जो दलाइल से पन्द पज़ीर होने और ह़क़ बात मानने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि येह आयत अबू त़ालिब के ह़क़ में नाज़िल हुई, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से उन की मौत के वक़्त फ़रमाया : ऐ चचा ! कह ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ'' मैं तुम्हारे लिये रोज़े क़ियामत शाहिद होउंगा। उन्हों ने कहा कि अगर मुझे कुरैश के आ़र देने का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर ईमान ला कर तुम्हारी आंख ठन्डी करता। इस के बा'द उन्हों ने येह शे'र पढ़े ''وَلَقَدْ عَلِمْتُ بِاَنَّ دِيْنَ مُحَمَّدٍ مِنْ خَيْرِ اَدْيَانِ الْبَرِيَّةِ دِيْنًا لَوْ لَا الْمَلَامَةُ اَوْ حِذَارُ مُسَبَّةٍ لَوَجَدْتَنِیْ سَمْحًا بِذَاكَ مُبِيْنًا'' या'नी मैं यक़ीन से जानता हूं कि मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन तमाम जहानों के दीनों से बेहतर है अगर मलामत व बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को क़बूल करता। इस के बा'द अबू त़ालिब का इन्तिक़ाल हो गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी सर ज़मीने अ़रब से एक दम निकाल देंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ारिस बिन उ़स्मान बिन नौफ़ल बिन अ़ब्दे मनाफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई। उस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि येह तो हम यक़ीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वोह ह़क़ है लेकिन अगर हम आप के दीन का इत्तिबाअ़ करें तो हमें डर है कि अ़रब के लोग हमें शह्र बदर कर देंगे और हमारे वत़न में न रहने देंगे। इस आयत में इस का जवाब दिया गया। **144 :** जहां के रहने वाले क़त्लो ग़ारत से अम्न में हैं और जहां जानवरों और सब्ज़ों तक को अम्न है। **145 :** और वोह अपनी जहालत से नहीं जानते कि येह रोज़ी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है अगर येह समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ व अम्न भी उसी की त़रफ़ से है और ईमान लाने में शह्र बदर किये जाने का ख़ौफ़ न करते। **146 :** और उन्हों ने तुग़्यान इख़्तियार किया था कि **अल्लाह** तआ़ला की दी हुई रोज़ी खाते और पूजते बुतों को, अहले मक्का को ऐसी क़ौम के ख़राब अन्जाम से ख़ौफ़ दिलाया जाता है जिन का ह़ाल उन की त़रह़ था कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें पाते और शुक्र न करते, उन ने'मतों पर इतराते, वोह हलाक कर दिये गए। **147 :** जिन के आसार बाक़ी हैं और अ़रब के लोग अपने सफ़रों में उन्हें देखते हैं। **148 :** कि कोई मुसाफ़िर या रहरव (राह चलता) इन में थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं। **149 :** इन मकानों के। या'नी वहां के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उन के बा'द उन का कोई जा नशीन बाक़ी न रहा, अब **अल्लाह** के सिवा इन मकानों का कोई वारिस नहीं, ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द वोही सब का वारिस है। **150 :** या'नी मर्कज़ी मक़ाम में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उम्मुल क़ुरा से मुराद मक्कए मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **151 :** और उन्हें तब्लीग़ करे और ख़बर दे कि अगर वोह ईमान न लाएंगे तो उन पर अ़ज़ाब किया जाएगा ताकि उन पर ह़ुज्जत लाज़िम हो और उन के लिये उ़ज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रहे। **152 :** रसूल की तक्ज़ीब करते हों, अपने कुफ़्र पर मुसिर (डटे हुए) हों और इस सबब से अ़ज़ाब के

www.dawateislami.net

وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ ع ٦ ٩

और उस का सिंगार है[153] और जो अल्लाह के पास है[154] वोह बेहतर और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[155] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[156] तो क्या वोह जिसे हम ने

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ

अच्छा वा'दा दिया[157] तो वोह उस से मिलेगा उस जैसा है जिसे हम ने दुन्यवी ज़िन्दगी का बरताव बरत्ने दिया फिर वोह क़ियामत

الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ

के दिन गिरिफ़्तार कर के हाज़िर लाया जाएगा[158] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा[159] तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

वोह शरीक जिन्हें तुम[160] गुमान करते थे कहेंगे वोह जिन पर बात साबित हो चुकी[161] ऐ हमारे रब

هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ مَا كَانُوْٓا

येह हैं वोह जिन्हें हम ने गुमराह किया हम ने उन्हें गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे[162] हम उन से बेज़ार हो कर तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाते हैं वोह

اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا

हम को न पूजते थे[163] और उन से फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो[164] तो वोह पुकारेंगे तो वोह उन की न

لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ

सुनेंगे और देखेंगे अ़ज़ाब क्या अच्छा होता अगर वोह राह पाते[165] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा

فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ

तो फ़रमाएगा[166] तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया[167] तो उस दिन उन पर ख़बरें अन्धी

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

हो जाएंगी[168] तो वोह कुछ पूछगछ न करेंगे[169] तो वोह जिस ने तौबा की[170] और ईमान लाया[171] और अच्छा काम किया

मुस्तह़िक़ हों। **153 :** जिस की बक़ा बहुत थोड़ी और जिस का अन्जाम फ़ना। **154 :** या'नी आख़िरत के मनाफ़ेअ़ **155 :** तमाम कदूरतों से ख़ाली और दाइम, ग़ैर मुन्क़तअ़। **156 :** कि इतना समझ सको कि बाक़ी फ़ानी से बेहतर है, इसी लिये कहा गया है कि जो शख़्स आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ न दे वोह नादान है। **157 :** सवाबे जन्नत का। **158 :** येह दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते, इन में पहला जिसे अच्छा वा'दा दिया गया मोमिन है और दूसरा काफ़िर। **159 :** अल्लाह तआ़ला ब त़रीक़े तौबीख़ **160 :** दुन्या में मेरा शरीक **161 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो चुका और वोह लोग अहले ज़लालत (गुमराहों) के सरदार और अइम्मए कुफ़्र हैं। **162 :** या'नी वोह लोग हमारे बहकाने से ब इख़्तियारे ख़ुद गुमराह हुए हमारी उन की गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं हम ने उन्हें मजबूर न किया था। **163 :** बल्कि वोह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार और अपनी शहवात के मुतीअ़ थे। **164 :** या'नी कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो वोह तुम्हें अ़ज़ाब से बचाएं **165 :** दुन्या में ताकि आख़िरत में अ़ज़ाब न देखते। **166 :** या'नी कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाएगा **167 :** जो तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए थे और ह़क़ की दा'वत देते थे। **168 :** और कोई उ़ज़्र और हुज्जत उन्हें नज़र न आएगी **169 :** और ग़ायते दहशत से साकित रह जाएंगे या कोई

www.dawateislami.net

فَعَسٰۤی اَنْ یَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِیْنَ ﴿٦٧﴾ وَ رَبُّكَ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ وَ

क़रीब है कि वोह राहयाब हो और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और

یَخْتَارُؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِیَرَةُؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰی عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

पसन्द फ़रमाता है[172] उन का[173] कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है अल्लाह को उन के शिर्क से

وَ رَبُّكَ یَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا یُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَ هُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है[174] और जो ज़ाहिर करते हैं[175] और वोही है अल्लाह कि

اِلَّا هُوَؕ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاُوْلٰی وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ

कोई ख़ुदा नहीं उस के सिवा उसी की ता'रीफ़ है दुन्या और आख़िरत में[176] और उसी का हुक्म है[177] और उसी की त़रफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ الَّیْلَ سَرْمَدًا اِلٰی

फिर जाओगे तुम फ़रमाओ[178] भला देखो तो अगर अल्लाह हमेशा तुम पर

یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِضِیَآءٍؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

क़ियामत तक रात रखे[179] तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रोशनी ला दे[180] तो क्या तुम सुनते नहीं[181] तुम फ़रमाओ

اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ

भला देखो तो अगर अल्लाह क़ियामत तक हमेशा दिन रखे[182]

مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِلَیْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِیْهِؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَ

तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिस में आराम करो[183] तो क्या तुम्हें सूझता नहीं[184] और

किसी से इस लिये न पूछेगा कि जवाब से आ़जिज़ होने में सब के सब बराबर हैं ताबेअ़ हों या मत्बूअ़ काफ़िर हों या काफ़िर गर। **170 :** शिर्क से **171 :** अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की त़रफ़ से आया **172 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के जवाब में नाज़िल हुई, जिन्हों ने कहा था कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत के लिये क्यूं बरगुज़ीदा किया ? येह क़ुरआन मक्का व त़ाइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यूं न उतारा ? इस कलाम का क़ाइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी को मुराद लेता था। उस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है अल्लाह तआ़ला की मरज़ी है अपनी ह़िक्मत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़्ल की क्या मजाल। **173 :** या'नी मुश्रिकीन का **174 :** या'नी कुफ़्र और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत जिस को येह लोग छुपाते हैं **175 :** अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ जैसे कि नुबुव्वत में त़ा'न करना और क़ुरआने पाक की तक्ज़ीब। **176 :** कि उस के औलिया दुन्या में भी उस की ह़म्द करते हैं और आख़िरत में भी उस की ह़म्द से लज़्ज़त उठाते हैं। **177 :** उसी की क़ज़ा हर चीज़ में नाफ़िज़ व जारी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अपने फ़रमां बरदारों के लिये मग़्फ़िरत का और ना फ़रमानों के लिये शफ़ाअ़त का हुक्म फ़रमाता है। **178 :** ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से **179 :** और दिन निकाले ही नहीं **180 :** जिस में तुम अपनी मआ़श के काम कर सको। **181 :** गोशे होश से कि शिर्क से बाज़ आओ। **182 :** रात होने ही न दे **183 :** और दिन में जो काम और मेह़नत की थी उस की तकान दूर करो। **184 :** कि तुम कितनी बड़ी ग़लत़ी में हो जो उस के साथ और को शरीक करते हो।

مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ

उस ने अपनी मेहर (रहमत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल

فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ

ढूंडो[185] और इस लिये कि तुम हक़ मानो[186] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَ نَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا

वोह शरीक जो तुम बकते थे और हर गुरोह में से हम एक गवाह निकाल कर[187] फ़रमाएंगे अपनी

بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ ع اِنَّ

दलील लाओ[188] तो जान लेंगे कि[189] हक़ अल्लाह का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे[190] बेशक

قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ص وَ اٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ

क़ारून मूसा की क़ौम से था[191] फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये

اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِي الْقُوَّةِ ق اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ

जिन की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर भारी थीं जब उस से उस की क़ौम[192] ने कहा इतरा नहीं[193]

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿۷۶﴾ وَ ابْتَغِ فِيْمَاۤ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर[194]

وَ لَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَ اَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَ لَا

और दुन्या में अपना हि़स्सा न भूल[195] और एह़सान कर[196] जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया और[197]

185 : कस्बे मआ़श करो 186 : और उस की ने'मतों का शुक्र बजा लाओ। 187 : यहां गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्हों ने इन्हें रब के पयाम पहुंचाए और नसीह़तें कीं। 188 : या'नी शिर्क और रसूलों की मुख़ालफ़त जो तुम्हारा शेवा था, इस पर क्या दलील है ? पेश करो। 189 : इलाहिय्यत व मा'बूदिय्यत ख़ास 190 : दुन्या में कि अल्लाह तआला के साथ शरीक ठहराते थे। 191 : क़ारून ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा "यस्हर" का बेटा था, निहायत ख़ूब सूरत शकील आदमी था, इसी लिये इस को मुनव्वर कहते थे और बनी इसराईल में तौरैत का सब से बेहतर क़ारी था, नादारी के ज़माने में निहायत मुतवाज़ेअ़ व बा अख़्लाक़ था, दौलत हाथ आते ही इस का ह़ाल मुतग़य्यिर हुवा और सामिरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो गया। कहा गया है कि फ़िरऔन ने इस को बनी इसराईल पर ह़ाकिम बना दिया था। 192 : या'नी मोमिनीने बनी इसराईल 193 : कस्रते माल पर 194 : अल्लाह की ने'मतों का शुक्र कर के और माल को ख़ुदा की राह में ख़र्च कर के। 195 : या'नी दुन्या में आख़िरत के लिये अ़मल कर कि अ़ज़ाब से नजात पाए, इस लिये कि दुन्या में इन्सान का ह़क़ीक़ी हि़स्सा येह है कि आख़िरत के लिये अ़मल करे, सदक़ा दे कर, सिलए रेह़्मी कर के और आ'माले ख़ैर के साथ। और इस की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि अपनी सिह़्ह़त व क़ुव्वत व जवानी व दौलत को न भूल इस से कि इन के साथ आख़िरत त़लब करे। ह़दीस में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़राग़त को शग़्ल से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले। 196 : अल्लाह के बन्दों के साथ। 197 : मआ़सी और गुनाहों का इरतिकाब कर के और ज़ुल्म व बग़ावत कर के।

www.dawateislami.net

تَبۡغِ الۡفَسَادَ فِی الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الۡمُفۡسِدِیۡنَ ﴿۷۷﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ

ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता बोला येह[198]

اُوۡتِیۡتُهٗ عَلٰی عِلۡمٍ عِنۡدِیۡ ؕ اَوَ لَمۡ یَعۡلَمۡ اَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَهۡلَكَ مِنۡ قَبۡلِهٖ

तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है[199] और क्या इसे येह नहीं मा'लूम कि अल्लाह ने इस से पहले वोह

مِنَ الۡقُرُوۡنِ مَنۡ هُوَ اَشَدُّ مِنۡهُ قُوَّةً وَّ اَكۡثَرُ جَمۡعًا ؕ وَ لَا یُسۡـَٔلُ عَنۡ

संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं जिन की कुव्वतें इस से सख़्त थीं और जम्अ़ इस से ज़ियादा[200] और मुजरिमों से

ذُنُوۡبِهِمُ الۡمُجۡرِمُوۡنَ ﴿۷۸﴾ فَخَرَجَ عَلٰی قَوۡمِهٖ فِیۡ زِیۡنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِیۡنَ

उन के गुनाहों की पूछ नहीं[201] तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में[202] बोले वोह जो

یُرِیۡدُوۡنَ الۡحَیٰوةَ الدُّنۡیَا یٰلَیۡتَ لَنَا مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِیَ قَارُوۡنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوۡ

दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी त़रह़ हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का

حَظٍّ عَظِیۡمٍ ﴿۷۹﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ وَیۡلَكُمۡ ثَوَابُ اللّٰهِ خَیۡرٌ لِّمَنۡ

बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया[203] ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिये जो

اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَ لَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوۡنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفۡنَا بِهٖ وَ بِدَارِهِ

ईमान लाए और अच्छे काम करे[204] और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं[205] तो हम ने उसे[206] और उस के घर को

الۡاَرۡضَ ۟ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنۡ فِئَةٍ یَّنۡصُرُوۡنَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ٭ وَ مَا كَانَ

ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि अल्लाह से बचाने में उस की मदद करती[207] और न वोह

198 : या'नी क़ारून ने कहा कि येह माल **199 :** इस इल्म से मुराद इल्मे तौरैत है या इल्मे कीमिया जो उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से ह़ासिल किया था और उस के ज़रीए़ से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था। या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़िराअ़त या और पेशों का इल्म। सह्ल ने फ़रमाया : जिस ने ख़ुदबीनी की, फ़लाह़ न पाई। **200 :** या'नी कुव्वत व माल में इस से ज़ियादा थे और बड़ी जमाअ़तें रखते थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया। फिर येह क्यूं कुव्वत व माल की कसरत पर ग़ुरूर करता है। वोह जानता है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हलाक है। **201 :** उन से दरयाफ़्त करने की ह़ाजत नहीं क्यूं कि अल्लाह तआ़ला उन का ह़ाल जानने वाला है, लिहाज़ा इस्ति'लाम के लिये सुवाल न होगा, तौबीख़ व ज़ज्र (डांट डपट) के लिये होगा। **202 :** बहुत से सुवार जिलौ में (हमराह) लिये हुए ज़ेवरों से आरास्ता, ह़रीरी (रेशमी) लिबास पहने आरास्ता घोड़ों पर सुवार। **203 :** या'नी बनी इसराईल के उ़लमा। **204 :** उस दौलत से जो दुन्या में क़ारून को मिली। **205 :** या'नी अ़मले सालेह़ साबिरीन ही का ह़िस्सा हैं और इस का सवाब वोही पाते हैं। **206 :** या'नी क़ारून को **207 :** क़ारून और उस के घर के धंसाने का वाक़िआ़ उ़लमाए सियर व अख़्बार ने येह ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को दरिया के पार ले जाने के बा'द मज़्बह़ की रियासत ह़ज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام को तफ़्वीज़ की। बनी इसराईल अपनी कुरबानियां ह़ज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام के पास लाते और वोह मज़्बह़ में रखते, आग आस्मान से उतर कर उन को खा लेती। क़ारून को ह़ज़रते हारून के इस मन्सब पर रश्क हुवा, उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से कहा कि रिसालत तो आप की हुई और कुरबानी की सरदारी ह़ज़रते हारून की, मैं कुछ भी न रहा बा वुजूदे कि मैं तौरैत का बेहतरीन क़ारी हूं, मैं इस पर सब्र नहीं कर सकता। ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि येह मन्सब ह़ज़रते हारून को मैं ने नहीं

مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

बदला ले सका[208] और कल जिस ने उस के मर्तबे की आरज़ू की थी सुब्ह[209] कहने लगे

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ

अ़जब बात है अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ करता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[210] अगर

مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع تِلْكَ الدَّارُ

अल्लाह हम पर एह्सान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अ़जब काफ़िरों का भला नहीं येह आख़िरत

दिया अल्लाह ने दिया है। क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं आप की तस्दीक़ न करूंगा जब तक आप इस का सुबूत मुझे दिखा न दें। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रुअसाए बनी इसराईल को जम्अ़ कर के फ़रमाया : अपनी लाठियां ले आओ। उन्हें सब को अपने कुब्बे में जम्अ़ किया, रात भर बनी इसराईल उन लाठियों का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा सर सब्ज़ो शादाब हो गया, उस में पत्ते निकल आए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया ऐ क़ारून तू ने येह देखा ? क़ारून ने कहा येह आप के जादू से कुछ अ़जीब नहीं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की मुदारात करते थे और वोह आप को हर वक़्त ईज़ा देता था और उस की सरकशी और तकब्बुर और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ अ़दावत दम बदम तरक़्क़ी पर थी। उस ने एक मकान बनाया जिस का दरवाज़ा सोने का था और उस की दीवारों पर सोने के तख़्ते नस्ब किये। बनी इसराईल सुब्ह़ो शाम उस के पास आते खाने खाते बातें बनाते उसे हंसाते। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो क़ारून मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया तो उस ने आप से तै किया कि दिरहम व दीनार व मवेशी वग़ैरा में से हज़ारवां हिस्सा ज़कात देगा, लेकिन घर जा कर हिसाब किया तो उस के माल में से इतना भी बहुत कसीर होता था, उस के नफ़्स ने इतनी भी हिम्मत न की और उस ने बनी इसराईल को जम्अ़ कर के कहा कि तुम ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हर बात में इत़ाअ़त की अब वोह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें हुक्म दीजिये। कहने लगा कि फ़ुलानी बद चलन औ़रत के पास जाओ और उस से एक मुआ़वज़ा मुक़र्रर करो कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर तोहमत लगाए, ऐसा हुवा तो बनी इसराईल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को छोड़ देंगे। चुनान्चे क़ारून ने उस औ़रत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपिया और बहुत से मवाईद कर के येह तोहमत लगाने पर तै किया और दूसरे रोज़ बनी इसराईल को जम्अ़ कर के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया और कहने लगा कि बनी इसराईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाएं। ह़ज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इसराईल में खड़े हो कर आप ने फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल जो चोरी करेगा उस के हाथ काटे जाएंगे, जो बोहतान लगाएगा उस के अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे और जो ज़िना करेगा उस के अगर बीबी नहीं है तो सो कोड़े मारे जाएंगे और अगर बीबी है तो उस को संगसार किया जाएगा यहां तक कि मर जाए। क़ारून कहने लगा कि येह हुक्म सब के लिये है ख़्वाह आप ही हों ? फ़रमाया : ख़्वाह मैं ही क्यूं न होउं। कहने लगा कि बनी इसराईल का ख़याल है कि आप ने फ़ुलां बदकार औ़रत के साथ बदकारी की है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उसे बुलाओ। वोह आई तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया उस की क़सम जिस ने बनी इसराईल के लिये दरिया फाड़ा और उस में रस्ते बनाए और तौरैत नाज़िल की ! सच कह दे। वोह औ़रत डर गई और अल्लाह के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुरअत उसे न हुई और उस ने अपने दिल में कहा कि इस से तौबा करना बेहतर है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम येह झूट है और इस ने आप पर तोहमत लगाने के इ़वज़ में मेरे लिये बहुत माले कसीर मुक़र्रर किया है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब के हुज़ूर रोते हुए सज्दे में गिरे और येह अ़र्ज़ करने लगे, या रब अगर मैं तेरा रसूल हूं तो मेरी वज्ह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आप की फ़रमां बरदारी करने का हुक्म दिया है आप इस को जो चाहें हुक्म दें। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल से फ़रमाया : ऐ बनी इसराईल अल्लाह तआ़ला ने मुझे क़ारून की त़रफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा था, जो क़ारून का साथी हो उस के साथ उस की जगह ठहरा रहे जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए। सब लोग क़ारून से जुदा हो गए, सिवाए दो शख़्सों के कोई उस के साथ न रहा। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि इन्हें पकड़ ले तो वोह घुटनों तक धंस गए, फिर आप ने येही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, आप येही फ़रमाते रहे ह़त्ता कि वोह लोग गरदनों तक धंस गए। अब वोह बहुत मिन्नत, लजाजत करते थे और क़ारून आप को अल्लाह की क़समें और रिश्ता व क़राबत के वासित़े देता था, मगर आप ने इल्तिफ़ात न फ़रमाया, यहां तक कि वोह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई। क़तादा ने कहा कि वोह क़ियामत तक धंसते ही चले जाएंगे। बनी इसराईल ने कहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ाइन व अम्वाल की वज्ह से उस के लिये बद दुआ़ की। येह सुन कर आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो उस का मकान और उस के ख़ज़ाने व अम्वाल सब ज़मीन में धंस गए। **208 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से। **209 :** अपनी उस आरज़ू पर नादिम हो कर **210 :** जिस के लिये चाहे।

www.dawateislami.net

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ

का घर[211] हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और

الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَیْرٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ

आक़िबत परहेज़ गारों ही की है[212] जो नेकी लाए उस के लिये उस से बेहतर है[213] और जो

بِالسَّیِّئَةِ فَلَا یُجْزَى الَّذِیْنَ عَمِلُوا السَّیِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

बदी लाए तो बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ

बेशक जिस ने तुम पर क़ुरआन फ़र्ज़ किया[214] वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो[215] तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है

مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۸۵﴾ وَ مَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ

उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है[216] और तुम उम्मीद न रखते थे कि

یُّلْقٰۤى اِلَیْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا

किताब तुम पर भेजी जाएगी[217] हां तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की

لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۶﴾ وَ لَا یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ وَ ادْعُ

पुश्ती (मदद) न करना[218] और हरगिज़ वोह तुम्हें **अल्लाह** की आयतों से न रोकें बा'द इस के कि वोह तुम्हारी त़रफ़ उतारी गईं[219] और अपने रब

اِلٰى رَبِّكَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۸۷﴾ ۚ وَ لَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ

وقف لازم

की त़रफ़ बुलाओ[220] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना[221] और **अल्लाह** के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उस के

211 : या'नी जन्नत **212 :** महमूद। **213 :** दस गुना सवाब। **214 :** या'नी उस की तिलावत व तब्लीग़ और उस के अह़काम पर अ़मल लाज़िम किया **215 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा में। मुराद येह है कि **अल्लाह** तआ़ला आप को फ़त्ह़े मक्का के दिन मक्कए मुकर्रमा में बड़े शानो शकोह और इ़ज़्ज़तो वक़ार और ग़लबा व इक़्तिदार के साथ दाख़िल करेगा, वहां के रहने वाले सब आप के ज़ेरे फ़रमान होंगे, शिर्क और उस के ह़ामी ज़लीलो रुस्वा होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयते करीमा जुह़फ़ा में नाज़िल हुई। जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीने की त़रफ़ हिजरत करते हुए वहां पहुंचे और आप को अपनी और अपने आबा की जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा का शौक़ हुवा तो जिब्रीले अमीन आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि क्या हुज़ूर को अपने शहर मक्कए मुकर्रमा का शौक़ है, फ़रमाया : हां उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है और येह आयते करीमा पढ़ी। معاد की तफ़्सीर मौत व क़ियामत व जन्नत से भी की गई है। **216 :** या'नी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये इस का अज्रो सवाब है और मुश्रिकीन गुमराही में हैं और सख़्त अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहा था "اِنَّكَ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ" या'नी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं। (مَعَاذَ الله)। **217 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह ख़ित़ाब ज़ाहिर में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को है और मुराद इस से मोमिनीन हैं। **218 :** उन के मुईनो मददगार न होना। **219 :** या'नी कुफ़्फ़ार की गुमराह कुन बातों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करना और उन्हें ठुकरा देना। **220 :** ख़ल्क़ को **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद और उस की इ़बादत की दा'वत दो। **221 :** उन की इआ़नत व मुवाफ़क़त न करना।

www.dawateislami.net

ع ٦ ١٢

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۸﴾ ع

सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे[222]

ایاتها ٦٩ | ٢٩ سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ ٨٥ | ركوعاتها ٧

सूरए अन्कबूत मक्किय्या है, इस में उन्हत्तर आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾

क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी[2]

وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَ

और बेशक हम ने उन से अगलों को जांचा[3] तो ज़रूर **अल्लाह** सच्चों को देखेगा और

لَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ

ज़रूर झूटों को देखेगा[4] या येह समझे हुए हैं वोह जो बुरे काम करते हैं[5] कि

یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ مَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ

हम से कहीं निकल जाएंगे[6] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं जिसे **अल्लाह** से मिलने की उम्मीद हो[7] तो बेशक **अल्लाह** की

222 : आख़िरत में और वोही आ'माल की जज़ा देगा। **1 :** सूरए अन्कबूत मक्किय्या है, इस में सात रुकूअ़, उन्हत्तर आयतें, नव सो अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** शदाइद, तकालीफ़ और अन्वाअ़ मसाइब और ज़ौक़े त़ाआ़त व तर्के शहवात व बज़्ले जान व माल से उन की ह़क़ीक़ते ईमान ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिने मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन ह़ज़रात के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्हों ने इस्लाम का इक़रार किया तो अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें लिखा कि मह़्ज़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो। उन साहिबों ने हिजरत की और ब क़स्दे मदीना रवाना हुए। मुश्रिकीन उन के दरपै हुए और उन से क़िताल किया। बा'ज़ ह़ज़रात उन में से शहीद हो गए बा'ज़ बच आए। उन के ह़क़ में येह दो आयतें नाज़िल हुईं। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हिशाम और अ़याश बिन अबी रबीआ़ और वलीद बिन वलीद और अ़म्मार बिन यासिर वग़ैरा हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए। और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते अ़म्मार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा परस्ती की वज्ह से सताए जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त ईज़ाएं पहुंचाते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयतें ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ग़ुलाम ह़ज़रते मिहजअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह के ह़क़ में नाज़िल हुईं जो बद्र में सब से पहले शहीद होने वाले हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन की निस्बत फ़रमाया कि मिहजअ़ सय्यिदुश्शुहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्नत की त़रफ़ पहले वोह पुकारे जाएंगे। इन के वालिदैन और इन की बीबी को इन का बहुत सदमा हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की फिर उन की तसल्ली फ़रमाई। **3 :** त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों में डाला, बा'ज़ उन में से वोह हैं जो आरे से चीर डाले गए, बा'ज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए और मक़ामे सिद्क़ो वफ़ा में साबित व क़ाइम रहे। **4 :** हर एक का ह़ाल ज़ाहिर फ़रमा देगा। **5 :** शिर्क व मआ़सी में मुब्तला हैं **6 :** और हम उन से इन्तिक़ाम न लेंगे। **7 :** बअ़्स व हिसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे।

اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝۵ وَ مَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا یُجَاهِدُ

मीआद ज़रूर आने वाली है[8] और वोही सुनता जानता है[9] और जो **अल्लाह** की राह में कोशिश करे[10] तो अपने ही

لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ۝۶ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

भले को कोशिश करता है[11] बेशक **अल्लाह** बे परवाह है सारे जहान से[12] और जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَ لَنَجْزِیَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِیْ كَانُوْا

काम किये हम ज़रूर उन की बुराइयां उतार देंगे[13] और ज़रूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उन के सब

یَعْمَلُوْنَ ۝۷ وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ حُسْنًا ؕ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ

कामों में अच्छा था[14] और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की[15] और अगर वोह तुझ से कोशिश करें

لِتُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ

कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहा न मान[16] मेरी ही त़रफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۸ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ

जो तुम करते थे[17] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें नेकों

فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝۹ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی

में शामिल करेंगे[18] और बा'ज़ आदमी कहते हैं हम **अल्लाह** पर ईमान लाए फिर जब **अल्लाह** की राह में उन्हें कोई तक्लीफ़ दी

8 : उस ने सवाब व अ़ज़ाब का जो वा'दा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है, चाहिये कि उस के लिये तय्यार रहे और अ़मले सालेह़ में जल्दी करे। **9 :** बन्दों के अक़्वाल व अफ़्आ़ल को। **10 :** ख़्वाह आ'दाए दीन से मुह़ारबा (जंग) कर के या नफ़्सो शैत़ान की मुख़ालफ़त कर के और त़ाअ़ते इलाही पर साबिर व क़ाइम रह कर **11 :** इस का नफ़्अ़ व सवाब पाएगा। **12 :** इन्स व जिन्न व मलाएका और उन के आ'माल व इ़बादात से, उस का अम्र व नह्य फ़रमाना बन्दों पर रह़मत व करम के लिये है। **13 :** नेकियों के सबब। **14 :** या'नी अ़मले नेक पर। **15 :** एह़सान और नेक सुलूक की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत और सूरए लुक़्मान और सूरए अह़क़ाफ़ की आयतें सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़क़ में व बक़ौले इब्ने इस्ह़ाक़ सा'द बिन मालिक ज़ोहरी के ह़क़ में नाज़िल हुईं, इन की मां ह़म्ना बिन्ते अबी सुफ़्यान बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स थी। ह़ज़रते सा'द साबिक़ीने अव्वलीन में से थे और अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करते थे। जब आप इस्लाम लाए तो आप की वालिदा ने कहा कि तू ने येह क्या नया काम किया, ख़ुदा की क़सम अगर तू इस से बाज़ न आया तो न मैं खाऊं न पियूं यहां तक कि मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिये बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाए। फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया न पिया न साए में बैठी, इस से ज़ईफ़ हो गई। फिर एक रात दिन और इसी त़रह़ रही तब ह़ज़रते सा'द उस के पास आए और आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ मां ! अगर तेरी सो 100 जानें हों और एक एक कर के सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं, तू चाहे खा चाहे मत खा। जब वोह ह़ज़रते सा'द की त़रफ़ से मायूस हो गई कि येह अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो खाने पीने लगी। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालिदैन के साथ नेक सुलूक किया जाए और अगर वोह कुफ़्रो शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाए। **16 :** क्यूं कि जिस चीज़ का इल्म न हो उस को किसी के कहे से मान लेना तक़्लीद है। मा'ना येह हुए कि वाक़ेअ़ में मेरा कोई शरीक नहीं तो इल्म व तह़क़ीक़ से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता, मुह़ाल है। रहा तक़्लीदन बिग़ैर इल्म के मेरे लिये शरीक मान लेना येह निहायत क़बीह़ है, इस में वालिदैन की हरगिज़ इत़ाअ़त न कर। **मस्अला :** ऐसी इत़ाअ़त किसी मख़्लूक़ की जाइज़ नहीं जिस में ख़ुदा की ना फ़रमानी हो। **17 :** तुम्हारे किरदार की जज़ा दे कर **18 :** कि उन के साथ ह़श्र फ़रमाएंगे, और सालिह़ीन से मुराद अम्बिया व औलिया हैं।

www.dawateislami.net

اللهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

जाती है[19] तो लोगों के फ़ितने को अल्लाह के अ़ज़ाब के बराबर समझते हैं[20] और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए[21]

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे[22] क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जहां भर के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿۱۱﴾

दिलों में है[23] और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को[24] और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िक़ों को[25]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ

और काफ़िर मुसल्मानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे[26]

وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ

हालां कि वोह उन के गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे बेशक वोह झूटे हैं और

لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا

बेशक ज़रूर अपने[27] बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ[28] और ज़रूर क़ियामत के दिन पूछे जाएंगे जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ ع ۱۳ ۱۲

कुछ बोहतान उठाते थे[29] और बेशक हम ने नूह को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो वोह उन में

اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

पचास साल कम हज़ार बरस रहा[30] तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वोह ज़ालिम थे[31]

19 : या'नी दीन के सबब से कोई तक्लीफ़ पहुंचती है जैसे कि कुफ़्फ़ार का ईज़ा पहुंचाना **20 :** और जैसा अल्लाह के अ़ज़ाब से डरना चाहिये था ऐसा ख़ल्क़ की ईज़ा से डरते हैं, ह़त्ता कि ईमान तर्क कर देते हैं और कुफ़्र इख़्तियार कर लेते हैं, येह ह़ाल मुनाफ़िक़ीन का है। **21 :** मसलन मुसल्मानों की फ़त्ह़ हो या उन्हें दौलत मिले **22 :** ईमान व इस्लाम में और तुम्हारी त़रह़ दीन पर साबित थे तो हमें उस में शरीक करो। **23 :** कुफ़्र या ईमान। **24 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाए और बला व मुसीबत में अपने ईमान व इस्लाम पर साबित व क़ाइम रहे। **25 :** और दोनों फ़रीक़ों को जज़ा देगा। **26 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने मोमिनीने क़ुरैश से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन इख़्तियार करो तुम्हें अल्लाह की त़रफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उस के हम कफ़ील हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गरदन पर। या'नी अगर हमारे त़रीक़े पर रहने से अल्लाह तआ़ला ने तुम को पकड़ा और अ़ज़ाब किया तो तुम्हारा अ़ज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे। अल्लाह तआ़ला ने उन की तक्ज़ीब फ़रमाई। **27 :** कुफ़्र व मआ़सी के **28 :** उन के गुनाहों के जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया और राहे ह़क़ से रोका। ह़दीस शरीफ़ में है : जिस ने इस्लाम में कोई बुरा त़रीक़ा निकाला उस पर उस त़रीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़ियामत तक जो लोग उस पर अ़मल करें उन के गुनाह भी, बिग़ैर इस के कि उन पर से उन के बारे गुनाह में कुछ भी कमी हो। (مسلم شریف) **29 :** अल्लाह तआ़ला उन के आ'माल व इफ़्तिरा (बोहतान) सब का जानने वाला है लेकिन येह सुवाल तौबीख़ के लिये है। **30 :** इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौह़ीद व ईमान की दा'वत जारी रखी और उन की ईज़ाओं पर सब्र किया, इस पर भी वोह क़ौम बाज़ न आई और तक्ज़ीब करती रही। **31 :** तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले अम्बिया के साथ उन की क़ौमों ने बहुत सख़्तियां की हैं ह़ज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام

www.dawateislami.net

فَاَنْجَیْنٰهُ وَ اَصْحٰبَ السَّفِیْنَةِ وَ جَعَلْنٰهَاۤ اٰیَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اِبْرٰهِیْمَ

तो हम ने उसे[32] और कश्ती वालों को[33] बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहां के लिये निशानी किया[34] और इब्राहीम को[35]

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوْهُؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उस से डरो इस में तुम्हारा भला है अगर तुम

تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًاؕ

जानते तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो[36]

اِنَّ الَّذِیْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا یَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

बेशक वोह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ وَ اشْكُرُوْا لَهٗؕ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنْ

के पास रिज़्क़ ढूंडो[37] और उस की बन्दगी करो और उस का एह़सान मानो तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है[38] और अगर

تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْؕ وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ

तुम झुटलाओ[39] तो तुम से पहले कितने ही गुरोह झुटला चुके हैं[40] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़

الْمُبِیْنُ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا كَیْفَ یُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗؕ اِنَّ

पहुंचा देना और क्या उन्हों ने न देखा अल्लाह क्यूंकर ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है[41] फिर उसे दोबारा बनाएगा[42] बेशक

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرٌ ﴿۱۹﴾ قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ بَدَاَ

येह अल्लाह को आसान है[43] तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो[44] अल्लाह क्यूंकर पहले

الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ یُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

बनाता है[45] फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है[46] बेशक अल्लाह सब कुछ

पचास कम हज़ार (950) बरस दा'वत फ़रमाते रहे और इस त़वील मुद्दत में उन की क़ौम के बहुत क़लील लोग ईमान लाए, तो आप कुछ ग़म न करें क्यूं कि بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی आप की क़लील मुद्दत की दा'वत से ख़ल्क़े कसीर मुशर्रफ़ ब ईमान हो चुकी है। **32 :** या'नी ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام को **33 :** जो आप के साथ थे, उन की ता'दाद अठत्तर थी, निस्फ़ मर्द निस्फ़ औरतें। उन में ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द साम व ह़ाम व याफ़िस और उन की बीबियां भी शामिल हैं **34 :** कहा गया है कि वोह कश्ती "जूदी" पहाड़ पर मुद्दते दराज़ तक बाक़ी रही। **35 :** याद करो ! **36 :** कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो। **37 :** वोही राज़िक़ है। **38 :** आख़िरत में। **39 :** और मुझे न मानो तो इस से मेरा कोई ज़रर नहीं। मैं ने राह दिखा दी, मो'जिज़ात पेश कर दिये, मेरा फ़र्ज़ अदा हो गया। इस पर भी अगर तुम न मानो **40 :** अपने अम्बिया को। जैसे कि क़ौमे नूह व आद व समूद वग़ैरा। उन के झुटलाने का अन्जाम येही हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। **41 :** कि पहले उन्हें नुत़्फ़ा बनाता है, फिर ख़ून बस्ता की सूरत देता है, फिर गोश्त पारा बनाता है, इस त़रह तदरीजन उन की ख़िल्क़त को मुकम्मल करता है। **42 :** आख़िरत में बअ़्स के वक़्त। **43 :** या'नी पहली बार पैदा करना और मरने के बा'द फिर दोबारा बनाना। **44 :** गुज़श्ता क़ौमों के दियार व आसार को कि

www.dawateislami.net

قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ اِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

कर सकता है अज़ाब देता है जिसे चाहे[47] और रहम फ़रमाता है जिस पर चाहे[48] और तुम्हें उसी की तरफ़ फिरना है

وَ مَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِي السَّمَآءِ ۫ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

और न तुम ज़मीन में[49] क़ाबू से निकल सको और न आस्मान में[50] और तुम्हारे लिये **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ لِقَآئِهٖۤ ع ٢ ١٤

न कोई काम बनाने वाला और न मददगार और वोह जिन्हों ने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना[51]

اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ

वोह हैं जिन्हें मेरी रहमत की आस नहीं और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है[52] तो उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

क़ौम को कुछ जवाब बन न आया मगर येह बोले उन्हें क़त्ल कर दो या जला दो[53] तो **अल्लाह** ने उसे[54] आग से बचा लिया[55]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ قَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[56] और इब्राहीम ने[57] फ़रमाया तुम ने तो **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ

येह बुत बना लिये हैं जिन से तुम्हारी दोस्ती येही दुन्या की ज़िन्दगी तक है[58] फिर क़ियामत के दिन तुम में

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّ يَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ

एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर ला'नत डालेगा[59] और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है[60] और तुम्हारा

45 : मख़्लूक़ को फिर उसे मौत देता है **46 :** या'नी जब येह यक़ीन से जान लिया कि पहली मरतबा **अल्लाह** ही ने पैदा किया तो मा'लूम हो गया कि उस ख़ालिक़ का मख़्लूक़ को मौत देने के बा'द दोबारा पैदा करना कुछ भी मुतअ़ज़्ज़िर (मुश्किल) नहीं। **47 :** अपने अ़द्ल से **48 :** अपने फ़ज़्ल से **49 :** अपने रब के **50 :** उस से बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं। या येह मा'ना हैं कि न ज़मीन वाले उस के हुक्म व क़ज़ा से कहीं भाग सकते हैं न आस्मान वाले। **51 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ और बअ़्स पर ईमान न लाए। **52 :** इस पन्दो मौइज़त के बा'द फिर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि जब आप ने अपनी क़ौम को ईमान की दा'वत दी और दलाइल क़ाइम किये और नसीहतें फ़रमाईं **53 :** येह उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने मुत्तबिईन से। बहर हाल कुछ कहने वाले थे, कुछ इस पर राज़ी होने वाले, थे सब मुत्तफ़िक़। इस लिये वोह सब क़ाइलीन के हुक्म में हैं। **54 :** या'नी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जब कि उन की क़ौम ने आग में डाला। **55 :** उस आग को ठन्डा कर के और हज़रते इब्राहीम के लिये सलामती बना कर। **56 :** अ़जीब अ़जीब निशानियां, आग का इस कसरत के बा वुजूद असर न करना और सर्द हो जाना और उस की जगह गुलशन पैदा हो जाना और येह सब पल भर से भी कम में होना। **57 :** अपनी क़ौम से **58 :** फिर मुन्क़तअ़ हो जाएगी और आख़िरत में कुछ काम न आएगी। **59 :** बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर ला'नत करेंगे। **60 :** बुतों का भी और पुजारियों का भी, उन में के सरदारों का भी और उन के फ़रमां बरदारों का भी।

www.dawateislami.net

وقف لازم

مِّنۡ نّٰصِرِیۡنَ ﴿۲۵﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوۡطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیۡ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیۡ ؕ اِنَّهٗ

कोई मददगार नहीं[61] तो लूत़ उस पर ईमान लाया[62] और इब्राहीम ने कहा मैं[63] अपने रब की त़रफ़ हिजरत करता हूं[64] बेशक

هُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۲۶﴾ وَوَهَبۡنَا لَهٗۤ اِسۡحٰقَ وَیَعۡقُوۡبَ وَجَعَلۡنَا فِیۡ

वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है और हम ने उसे[65] इस्ह़ाक़ और या'क़ूब अ़त़ा फ़रमाए और हम ने उस की

ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالۡکِتٰبَ وَاٰتَیۡنٰهُ اَجۡرَهٗ فِی الدُّنۡیَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الۡاٰخِرَةِ

औलाद में नुबुव्वत[66] और किताब रखी[67] और हम ने दुन्या में उस का सवाब उसे अ़त़ा फ़रमाया[68] और बेशक आख़िरत में वोह

لَمِنَ الصّٰلِحِیۡنَ ﴿۲۷﴾ وَلُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّکُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ ۫

हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है[69] और लूत़ को नजात दी जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बे ह़याई का काम करते हो

مَا سَبَقَکُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۲۸﴾ اَئِنَّکُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ وَ

कि तुम से पहले दुन्या भर में किसी ने न किया[70] क्या तुम मर्दों से बद फ़े'ली करते हो और

تَقۡطَعُوۡنَ السَّبِیۡلَ ۬ۙ وَتَاۡتُوۡنَ فِیۡ نَادِیۡکُمُ الۡمُنۡکَرَ ؕ فَمَا کَانَ جَوَابَ

राह मारते हो[71] और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो[72] तो उस की क़ौम का कुछ

قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوا ائۡتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنۡ کُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِیۡنَ ﴿۲۹﴾

जवाब न हुवा मगर येह कि बोले हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो[73]

61 : जो तुम्हें अ़ज़ाब से बचाए। और जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات आग से सलामत निकले और उस ने आप को कोई ज़रर न पहुंचाया **62 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह मो'जिज़ा देख कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत की तस्दीक़ की। आप ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के सब से पहले तस्दीक़ करने वाले हैं। ईमान से तस्दीक़े रिसालत ही मुराद है क्यूं कि अस्ल तौह़ीद का ए'तिक़ाद तो उन को हमेशा से ह़ासिल है, इस लिये कि अम्बिया हमेशा ही मोमिन होते हैं और कुफ़्र उन से किसी ह़ाल में मुतसव्वर नहीं। **63 :** अपनी क़ौम को छोड़ कर **64 :** जहां उस का हुक्म हो। चुनान्चे, आप ने सवादे इ़राक़ से सर ज़मीने शाम की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई, इस हिजरत में आप के साथ आप की बीबी सारह और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام थे। **65 :** बा'द ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام के **66 :** कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जितने अम्बिया हुए सब आप की नस्ल से हुए। **67 :** किताब से तौरैत, इन्जील, ज़बूर, क़ुरआन शरीफ़ मुराद हैं। **68 :** कि पाक ज़ुर्रिय्यत अ़त़ा फ़रमाई, पैग़म्बरी उन की नस्ल में रखी, किताबें उन पैग़म्बरों को अ़त़ा कीं जो उन की औलाद में हैं और उन को ख़ल्क़ में मह़बूब व मक़्बूल किया कि तमाम अहले मिलल व अद्यान उन से मह़ब्बत रखते हैं और उन की त़रफ़ निस्बते फ़ख़्र जानते हैं और उन के लिये इख़्तितामे दुन्या तक दुरूद मुक़र्रर कर दिया। येह तो वोह है जो दुन्या में अ़त़ा फ़रमाया **69 :** जिन के लिये बड़े बुलन्द दरजे हैं। **70 :** इस बे ह़याई की तफ़्सीर इस से अगली आयत में बयान होती है। **71 :** राहगीरों को क़त्ल कर के उन के माल लूट कर। और येह भी कहा गया है कि वोह लोग मुसाफ़िरों के साथ बद फ़े'ली करते थे ह़त्ता कि लोगों ने उस त़रफ़ गुज़रना मौक़ूफ़ कर दिया था। **72 :** जो अ़क़्लन व उ़र्फ़न क़बीह़ व मम्नूअ़ है जैसे गाली देना, फ़ोह़्श बकना, ताली और सीटी बजाना एक दूसरे के कंकरियां मारना, रस्ता चलने वालों पर कंकरी वग़ैरा फेंकना, शराब पीना, तमस्ख़ुर और गन्दी बातें करना एक दूसरे पर थूकना वग़ैरा ज़लील अफ़्आ़ल व ह़रकात जिन की क़ौमे लूत़ आ़दी थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने इस पर उन्हें मलामत की **73 :** इस बात में कि येह अफ़्आ़ल क़बीह़ हैं और ऐसा करने वाले पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। येह उन्हों ने बराहे इस्तिह्ज़ा (बत़ौरे मज़ाक़) कहा। जब ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को उस क़ौम के राहे रास्त पर आने की कुछ उम्मीद न रही तो आप ने बारगाहे इलाही में।

www.dawateislami.net

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ ع وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ ع ٣ ٨ ١٥

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर[74] इन फ़सादी लोगों पर[75] और जब हमारे फ़िरिश्ते

اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا

इब्राहीम के पास मुज़्दा ले कर आए[76] बोले हम ज़रूर उस शहर वालों को हलाक करेंगे[77] बेशक उस के बसने वाले

كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ۭ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا وقفة

सितम गार हैं कहा[78] उस में तो लूत़ है[79] फ़िरिश्ते बोले हमें ख़ूब मा'लूम है जो कुछ उस में है

لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّآ اَنْ

ज़रूर हम उसे[80] और उस के घर वालों को नजात देंगे मगर उस की औ़रत को वोह रह जाने वालों में है[81] और जब हमारे

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ

फ़िरिश्ते लूत़ के पास[82] आए उन का आना उसे ना गवार हुवा और उन के सबब दिलतंग हुवा[83] और उन्हों ने कहा न डरिये[84]

وَلَا تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

और न ग़म कीजिये[85] बेशक हम आप को और आप के घर वालों को नजात देंगे मगर आप की औ़रत वोह रह जाने वालों में है

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

बेशक हम इस शहर वालों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारने वाले हैं बदला इन की

يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى

ना फ़रमानियों का और बेशक हम ने इस से रोशन निशानी बाक़ी रखी अ़क़्ल वालों के लिये[86] मद्यन

مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ

की त़रफ़ उन के हमक़ौम शुऐ़ब को भेजा तो उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की

74 : नुज़ूले अ़ज़ाब के बारे में मेरी बात पूरी कर के 75 : अल्लाह तआ़ला ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाई। 76 : उन के बेटे और पोते ह़ज़रते इस्हाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام का। 77 : उस शहर का नाम सदूम था। 78 : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने 79 : और लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام तो अल्लाह के नबी और उस के बरगुज़ीदा बन्दे हैं। 80 : या'नी लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 81 : अ़ज़ाब में। 82 : ख़ूब सूरत मेहमानों की शक्ल में 83 : क़ौम के अफ़्आ़ल व ह़रकात और उन की ना लाइक़ी का ख़याल कर के। उस वक़्त फ़िरिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वोह अल्लाह के भेजे हुए हैं। 84 : क़ौम से 85 : हमारा कि क़ौम के लोग हमारे साथ कोई बे अदबी या गुस्ताख़ी करें, हम फ़िरिश्ते हैं, हम लोगों को हलाक करेंगे और 86 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह रोशन निशानी क़ौमे लूत़ के वीरान मकान हैं।

الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ

उम्मीद रखो[87] और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें ज़ल्ज़ले

الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ

ने आ लिया तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए[88] और आ़द और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें[89]

لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

उन की बस्तियां मा'लूम हो चुकी हैं[90] और शैतान ने उन के कौतक (करतूत)[91] उन की निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह

السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَ

से रोका और उन्हें सूझता था[92] और क़ारून और फ़िरऔ़न और हामान को[93] और

لَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

बेशक उन के पास मूसा रोशन निशानियां ले कर आया तो उन्हों ने ज़मीन में तकब्बुर किया और वोह हम से

سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ

निकल जाने वाले न थे[94] तो उन में हर एक को हम ने उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में किसी पर हम ने पथराव भेजा[95]

وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ

और उन में किसी को चिंघाड़ ने आ लिया[96] और उन में किसी को ज़मीन में धंसा दिया[97] और

مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

उन में किसी को डुबो दिया[98] और अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करे[99] हां वोह ख़ुद ही[100] अपनी जानों पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ

ज़ुल्म करते थे उन की मिसाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं[101]

87 : या'नी रोज़े क़ियामत की, ऐसे अफ़्आ़ल बजा ला कर जो सवाबे आख़िरत का बाइस हों। 88 : मुर्दे बेजान। 89 : ऐ अहले मक्का ! 90 : हिज्र और यमन में, जब तुम अपने सफ़रों में वहां गुज़रे हो। 91 : कुफ़्रो मआ़सी 92 : साहिबे अ़क़्ल थे, हक़ व बातिल में तमीज़ कर सकते थे लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया। 93 : अल्लाह तआ़ला ने हलाक फ़रमाया। 94 : कि हमारे अ़ज़ाब से बच सकते। 95 : और वोह क़ौमे लूत़ थी जिन को छोटे छोटे संगरेज़ों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उन पर लगते थे। 96 : या'नी क़ौमे समूद कि होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक की गई। 97 : या'नी क़ारून और उस के साथियों को 98 : जैसे क़ौमे नूह को और फ़िरऔ़न को और उस की क़ौम को। 99 : वोह किसी को बिग़ैर गुनाह के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार नहीं करता। 100 : ना फ़रमानियां कर के और कुफ़्र व तुग़यान (सरकशी) इख़्तियार कर के 101 : या'नी बुतों को मा'बूद ठहराया है, उन के साथ उम्मीदें वाबस्ता कर रखी हैं और वाक़ेअ़ में उन के इज्ज़ व बे इख़्तियारी की मिसाल येह है जो आगे ज़िक्र फ़रमाई जाती है।

www.dawateislami.net

الْعَنْكَبُوْتِ ۖۚ اِتَّخَذَتْ بَیْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُیُوْتِ لَبَیْتُ
मकड़ी की त़रह़ है उस ने जाले का घर बनाया[102] और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी

الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ۝٤١ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
का घर[103] क्या अच्छा होता अगर जानते[104] अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उस के सिवा पूजा

مِنْ شَیْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝٤٢ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ
करते हैं[105] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[106] और येह मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं

وَ مَا یَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ۝٤٣ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
और उन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले[107] अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۝٤٤ ع
बेशक इस में निशानी है[108] मुसल्मानों के लिये

وقف لازم

102 : अपने रहने के लिये। न उस से गरमी दूर हो न सरदी, न गर्दो ग़ुबार व बारिश किसी चीज़ से ह़िफ़ाज़त। ऐसे ही बुत हैं कि अपने पुजारियों को न दुन्या में नफ़्अ़ पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई ज़रर पहुंचा सकें। **103 :** ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का दीन है। **फ़ाएदा :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है आप ने फ़रमाया : अपने घरों से मकड़ियों के जाले दूर करो येह नादारी का बाइ़स होते हैं। **104 :** कि उन का दीन इस क़दर निकम्मा है। **105 :** कि वोह कुछ ह़क़ीक़त नहीं रखती। **106 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले क़ादिर मुख़्तार की इ़बादत छोड़ कर बे इ़ल्म बे इख़्तियार पथ्थरों की पूजा करे। **107 :** या'नी उन के ह़ुस्नो ख़ूबी और उन के नफ़्अ़ और फ़ाएदे और उन की ह़िक्मत को इ़ल्म वाले समझते हैं, जैसा कि इस मिसाल ने मुश्रिक और मुवह़्ह़िद का ह़ाल ख़ूब अच्छी त़रह़ ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ वाज़ेह़ फ़रमा दिया। क़ुरैश के कुफ़्फ़ार ने त़न्ज़ के त़ौर पर कहा था कि अल्लाह तआ़ला मख्खी और मकड़ी की मिसालें बयान फ़रमाता है और इस पर उन्हों ने हंसी बनाई थी। इस आयत में उन का रद कर दिया गया कि वोह जाहिल हैं, तम्सील की ह़िक्मत को नहीं जानते, मिसाल से मक़्सूद तफ़्हीम होती है और जैसी चीज़ हो उस की शान ज़ाहिर करने के लिये वैसी ही मिसाल मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है। तो बात़िल और कमज़ोर दीन के ज़ो'फ़ व बुत़लान के इज़्हार के लिये येह मिसाल निहायत ही नाफ़ेअ़ है, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल व इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया वोह समझते हैं। **108 :** उस की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की तौह़ीद व यक्ताई पर दलालत करने वाली।

اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى

ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी तरफ़ वह्य की गई[109] और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है

عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا

बे हयाई और बुरी बात से[110] और बेशक अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा[111] और अल्लाह जानता है जो

تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۗۖ اِلَّا

तुम करते हो और ऐ मुसल्मानो ! किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर तरीक़े पर[112] मगर

الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ اُنْزِلَ

वोह जिन्हों ने उन में से ज़ुल्म किया[113] और कहो[114] हम ईमान लाए उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा और जो तुम्हारी

اِلَیْكُمْ وَ اِلٰهُنَا وَ اِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ

तरफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मा'बूद है और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं[115] और ऐ महबूब यूंही तुम्हारी

109 : या'नी कुरआन शरीफ़ कि इस की तिलावत इबादत भी है और इस में लोगों के लिये पन्दो नसीहत भी और अह़काम व आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम भी । **110 :** या'नी मम्नूआ़ते शरइय्या से । लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इस को अच्छी तरह अदा करता है नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था । ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इरतिकाब करता था, हुज़ूर से उस की शिकायत की गई । फ़रमाया : उस की नमाज़ किसी रोज़ उस को इन बातों से रोक देगी । चुनान्चे बहुत ही क़रीब ज़माने में उस ने तौबा की और उस का ह़ाल बेहतर हो गया । ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि जिस की नमाज़ उस को बे हयाई और मम्नूआ़त से न रोके वोह नमाज़ ही नहीं । **111 :** कि वोह अफ़्ज़ले त़ाआ़त है । तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें न बताऊं वोह अ़मल जो तुम्हारे आ'माल में बेहतर और रब के नज़्दीक पाकीज़ा तर निहायत बुलन्द रुत्बा और तुम्हारे लिये सोने चांदी देने से बेहतर और जिहाद में लड़ने और मारे जाने से बेहतर है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : बेशक या रसूलल्लाह ! फ़रमाया : वोह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है । तिरमिज़ी ही की दूसरी ह़दीस में है कि सह़ाबा ने हुज़ूर से दरयाफ़्त किया था कि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक किन बन्दों का दरजा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : ब कसरत ज़िक्र करने वालों का । सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : और ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला ? फ़रमाया : अगर वोह अपनी तलवार से कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को यहां तक मारे कि तलवार टूट जाए और वोह ख़ून में रंग जाए जब भी ज़ाकिरीन ही का दरजा उस से बुलन्द है । ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने इस आयत की तफ़्सीर येह फ़रमाई है कि अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दों को याद करना बहुत बड़ा है । और एक क़ौल इस की तफ़्सीर में येह है कि अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र बड़ा है, बे हयाई और बुरी बातों से रोकने और मन्अ़ करने में । **112 :** अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ उस की आयात से दा'वत दे कर और हुज्जतों पर आगाह कर के । **113 :** ज़ियादती में ह़द से गुज़र गए, इनाद इख़्तियार किया, नसीह़त न मानी नरमी से नफ़्अ़ न उठाया, उन के साथ ग़िल्ज़त (शिद्दत) और सख़्ती इख़्तियार करो । और एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि जिन लोगों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को ईज़ा दी या जिन्हों ने अल्लाह तआ़ला के लिये बेटा और शरीक बताया उन के साथ सख़्ती करो । या येह मा'ना हैं कि ज़िम्मी जिज़्या अदा करने वालों के साथ अह़्सन त़रीक़े पर मुजादला करो, मगर जिन्हों ने ज़ुल्म किया और ज़िम्मा से निकल गए और जिज़्ये को मन्अ़ किया उन से मुजादला तलवार के साथ है । **मस्अला :** इस आयत से कुफ़्फ़ार के साथ दीनी उमूर में मुनाज़रा करने का जवाज़ साबित होता है और ऐसे ही इल्मे कलाम सीखने का जवाज़ भी । **114 :** अहले किताब से जब वोह तुम से अपनी किताबों का कोई मज़्मून बयान करें **115 :** ह़दीस शरीफ़ में है : जब अहले किताब तुम से कोई मज़्मून बयान करें तो तुम न उन की तस्दीक़ करो न तक्ज़ीब करो, येह कह दो कि हम अल्लाह तआ़ला पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए, तो अगर वोह मज़्मून उन्हों ने ग़लत़ बयान किया है तो उस की तस्दीक़ के गुनाह से तुम बचे रहोगे और अगर मज़्मून सह़ीह़ था तो तुम उस की तक्ज़ीब से मह़फ़ूज़ रहोगे ।

www.dawateislami.net

إِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۤءِ

तरफ़ किताब उतारी[116] तो वोह जिन्हें हम ने किताब अता फ़रमाई[117] उस पर ईमान लाते हैं और कुछ उन में से हैं[118]

مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا

जो उस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों से मुन्किर नहीं होते मगर काफ़िर[119] और इस[120] से पहले

مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता[121] तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते[122]

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ

बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इल्म दिया गया[123] और हमारी आयतों का

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ

इन्कार नहीं करते मगर ज़ालिम[124] और बोले[125] क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां इन पर इन के रब की तरफ़ से[126] तुम फ़रमाओ

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ

निशानियां तो **अल्लाह** ही के पास हैं[127] और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं[128] और क्या येह उन्हें बस नहीं

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى

कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है[129] बेशक इस में रहमत और नसीहत है

116 : कुरआने पाक जैसे उन की तरफ़ तौरैत वग़ैरा उतारी थीं। **117 :** या'नी जिन्हें तौरैत दी जैसे कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब। **फ़ाएदा :** येह सूरत मक्किय्या है और हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्हाब मदीने में ईमान लाए, **अल्लाह** तआला ने इस से पहले उन की ख़बर दी, येह ग़ैबी ख़बरों में से है। (جمل) **118 :** या'नी अहले मक्का में से **119 :** जो कुफ़्र में निहायत सख़्त हैं। "जुहूद" उस इन्कार को कहते हैं जो मा'रिफ़त के बा'द हो या'नी जानबूझ कर मुकरना। और वाक़िआ भी येही था कि यहूद ख़ूब पहचानते थे कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** तआला के सच्चे नबी हैं और कुरआन हक़ है, येह सब कुछ जानते हुए उन्हों ने इनादन इन्कार किया। **120 :** कुरआन के नाज़िल होने **121 :** या'नी आप लिखते पढ़ते होते **122 :** या'नी अहले किताब कहते कि हमारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की सिफ़त येह मज़्कूर है कि वोह उम्मी होंगे। न लिखेंगे, न पढ़ेंगे। मगर उन्हें इस शक का मौक़अ ही न मिला। **123 :** ज़मीर هُوَ का मरजअ कुरआन है, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम रोशन आयतें हैं जो उलमा और हुफ़्फ़ाज़ के सीनों में महफ़ूज़ हैं। रोशन आयत होने के येह मा'ना कि वोह ज़ाहिरुल ए'जाज़ हैं और येह दोनों बातें कुरआने पाक के साथ ख़ास हैं और कोई ऐसी किताब नहीं जो मो'जिज़ा हो और न ऐसी कि हर ज़माने में सीनों में महफ़ूज़ रही हो। और हज़रते इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने هُوَ की ज़मीर का मरजअ सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को क़रार दे कर आयत के येह मा'ना बयान फ़रमाए कि सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم साहिब हैं उन आयाते बय्यिनात के जो उन लोगों के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें अहले किताब में से इल्म दिया गया क्यूं कि वोह अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त पाते हैं। (خازن) **124 :** या'नी यहूदे अनूद कि बा'द ज़ुहूरे मो'जिज़ात के जान पहचान कर इनादन मुन्किर होते हैं। **125 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **126 :** मिस्ल नाक़ए हज़रते सालेह व असाए हज़रते मूसा और माइदए हज़रते ईसा के عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **127 :** हस्बे हिक्मत जो चाहता है नाज़िल फ़रमाता है **128 :** ना फ़रमानी करने वालों को अज़ाब का और इसी का मुकल्लफ़ हूं। इस के बा'द **अल्लाह** तआला कुफ़्फ़ारे मक्का के इस क़ौल का जवाब इर्शाद फ़रमाता है : **129 :** मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम मो'जिज़ा है अम्बियाए मुतक़द्दिमीन के मो'जिज़ात से अतम्मो अक्मल और तमाम निशानियों से तालिबे हक़ को बे नियाज़ करने वाला क्यूं कि जब तक ज़माना है कुरआने करीम बाक़ी

www.dawateislami.net

ع ٥/٧

لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا

ईमान वालों के लिये तुम फ़रमाओ **अल्लाह** बस (काफ़ी) है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह[130] जानता है जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ

कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोह जो बातिल पर यक़ीन लाए और **अल्लाह** के मुन्किर हुए

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ لَوْ لَاۤ اَجَلٌ

वोही घाटे में हैं और तुम से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं[131] और अगर एक ठहराई

مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَ لَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾

मुद्दत न होती[132] तो ज़रूर उन पर अ़ज़ाब आ जाता[133] और ज़रूर उन पर अचानक आएगा जब वोह बे ख़बर होंगे

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ۙ يَوْمَ

तुम से अ़ज़ाब की जल्दी मचाते हैं और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को[134] जिस दिन

يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَ يَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا

उन्हें ढांपेगा अ़ज़ाब उन के ऊपर और उन के पाउं के नीचे से और फ़रमाएगा चखो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ

अपने किये का मज़ा[135] ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो

فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَ

मेरी ही बन्दगी करो[136] हर जान को मौत का मज़ा चखना है[137] फिर हमारी ही त़रफ़ फिरोगे[138] और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाख़ानों पर जगह देंगे जिन के

व साबित रहेगा और दूसरे मो'जिज़ात की त़रह ख़त्म न होगा। **130 :** मेरे सिद्क़े रिसालत और तुम्हारी तक्ज़ीब का मो'जिज़ात से मेरी ताईद फ़रमा कर। **131 :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थरों की बारिश कराइये। **132 :** जो **अल्लाह** तआ़ला ने मुअ़य्यन की है और उस मुद्दत तक अ़ज़ाब का मुअख़्ख़र फ़रमाना मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है **133 :** और ताख़ीर न होती **134 :** इस से उन में का कोई भी न बचेगा। **135 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा। **136 :** जिस ज़मीन में ब सहूलत इ़बादत कर सको। मा'ना येह हैं कि जब मोमिन को किसी सर ज़मीन में अपने दीन पर क़ाइम रहना और इ़बादत करना दुश्वार हो तो चाहिये कि वोह ऐसी सर ज़मीन की त़रफ़ हिजरत करे जहां आसानी से इ़बादत कर सके और दीन की पाबन्दी में दुश्वारियां दरपेश न हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ुअ़फ़ाए मुस्लिमीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हें वहां रह कर इस्लाम के इज़्हार में ख़त़रे और तक्लीफ़ें थीं और निहायत ज़ीक़ (तंगी) में थे, उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो ज़रूर है, यहां रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ वोह वसीअ़ है वहां अम्न है। **137 :** और इस दारे फ़ानी को छोड़ना ही है। **138 :** सवाब व अ़ज़ाब और जज़ाए आ'माल के लिये, तो लाज़िम

www.dawateislami.net

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾ الَّذِيْنَ

नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उन में रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का[139] वोह जिन्हों ने

صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۤ

सब्र किया[140] और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं[141] और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते[142]

اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ

अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें[143] और वोही सुनता जानता है[144] और अगर तुम उन से पूछो[145] किस ने

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ

बनाए आस्मान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चांद तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने

فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ

तो कहां औंधे जाते हैं[146] **अल्लाह** कुशादा करता है रिज़्क़ अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस

لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ

के लिये चाहे बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है और जो तुम उन से पूछो किस ने उतारा आस्मान से

مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ

पानी तो इस के सबब ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरे पीछे ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने[147] तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां

لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ

अल्लाह को बल्कि उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं[148] और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल

है कि हमारे दीन पर क़ाइम रहो और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत करो। **139 :** जो **अल्लाह** तआ़ला की इताअ़त बजा लाए। **140 :** सख़्तियों पर और किसी शिद्दत में अपने दीन को न छोड़ा, मुश्रिकीन की ईज़ा सही, हिजरत इख़्तियार कर के दीन की ख़ातिर वत़न को छोड़ना गवारा किया। **141 :** तमाम उमूर में। **142 शाने नुज़ूल :** मक्कए मुकर्रमा में मोमिनीन को मुश्रिकीन शबो रोज़ त़रह त़रह की ईज़ाएं देते रहते थे। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने उन से मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उन में से बा'ज़ ने कहा कि हम मदीना शरीफ़ को कैसे चले जाएं न वहां हमारा घर न माल, कौन हमें खिलाएगा कौन पिलाएगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि बहुत से जानदार ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते इस की उन्हें क़ुव्वत नहीं और न वोह अगले दिन के लिये कोई ज़ख़ीरा जम्अ़ करते हैं जैसे कि बहाइम (चौपाए) हैं तुयूर (परिन्दे) हैं। **143 :** तो जहां होगे वोही रोज़ी देगा तो येह क्या पूछना कि हमें कौन खिलाएगा कौन पिलाएगा, सारी ख़ल्क़ का **अल्लाह** रज़्ज़ाक़ है, ज़ईफ़ और क़वी, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वोही रोज़ी देता है। **144 :** तुम्हारे अक़्वाल और तुम्हारे दिल की बातों को। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया : अगर तुम **अल्लाह** तआ़ला पर तवक्कुल करो जैसा चाहिये तो वोह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी परिन्दों को देता है कि सुब्ह़ भूके ख़ाली पेट उठते हैं शाम को सेर (पेट भरे) वापस होते हैं। (ترمذی) **145 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **146 :** और बा वुजूद इस इक़रार के किस त़रह **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद से मुन्ह़रिफ़ होते हैं। **147 :** इस के मुक़िर हैं। **148 :** कि बा वुजूद इस इक़रार के तौह़ीद के मुन्किर हैं।

وقف لازم

لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا

कूद[149] और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है[150] क्या अच्छा था अगर जानते[151] फिर जब

رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى

कश्ती में सुवार होते हैं[152] अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अक़ीदा ला कर[153] फिर जब वोह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़

الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِیَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ۚۛ وَ لِیَتَمَتَّعُوْا ٙ فَسَوْفَ

बचा लाता है[154] जभी शिर्क करने लगते हैं[155] कि नाशुक्री करें हमारी दी हुई ने'मत की[156] और बरतें[157] तो अब

یَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ یُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ

जाना चाहते हैं[158] और क्या उन्हें ने[159] येह न देखा कि हम ने[160] हुरमत वाली ज़मीन पनाह बनाई[161] और उन के आस पास वाले लोग उचक लिये

حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ یَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ

जाते हैं[162] तो क्या बातिल पर यक़ीन लाते हैं[163] और अल्लाह की दी हुई ने'मत से[164] नाशुक्री करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَیْسَ فِیْ

जो अल्लाह पर झूट बांधे[165] या हक़ को झुटलाए[166] जब वोह उस के पास आए क्या जहन्नम में

جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۶۸﴾ وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ

काफ़िरों का ठिकाना नहीं[167] और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते

الربع

سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۶۹﴾ ع

दिखा देंगे[168] और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है[169]

149 : कि जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़ कर चल देते हैं, येही हाल दुन्या का है, निहायत सरीउज़्ज़वाल (जल्दी मिटने वाली) है और मौत यहां से ऐसे ही जुदा कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे मुन्तशिर हो जाते हैं। 150 : कि वोह ज़िन्दगी पाएदार है दाइमी है उस में मौत नहीं, ज़िन्दगानी कहलाने के लाइक़ वोही है। 151 : दुन्या और आख़िरत की हक़ीक़त तो दुन्याए फ़ानी को आख़िरत की जाविदानी ज़िन्दगी पर तरजीह न देते। 152 : और डूबने का अन्देशा होता है तो बा वुजूद अपने शिर्को इनाद के बुतों को नहीं पुकारते बल्कि 153 : कि इस मुसीबत से नजात वोही देगा। 154 : और डूबने का अन्देशा और परेशानी जाती रहती है इत्मीनान हासिल होता है 155 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बहूरी सफ़र करते वक़्त बुतों को साथ ले जाते थे, जब हवा मुख़ालिफ़ चलती और कश्ती ख़तरे में आती तो बुतों को दरिया में फेंक देते और या रब या रब पुकारने लगते और अम्न पाने के बा'द फिर उसी शिर्क की तरफ़ लौट जाते 156 : या'नी उस मुसीबत से नजात की। 157 : और इस से फ़ाएदा उठाएं ब ख़िलाफ़ मोमिनीने मुख़्लिसीन के कि वोह अल्लाह तआ़ला की ने'मतों के इख़्लास के साथ शुक्र गुज़ार रहते हैं और जब ऐसी सूरत पेश आती है और अल्लाह तआ़ला उस से रिहाई देता है तो उस की ताअ़त में और ज़ियादा सरगर्म हो जाते हैं, मगर काफ़िरों का हाल इस के बिल्कुल बर ख़िलाफ़ है। 158 : नतीजा अपने किरदार का। 159 : या'नी अहले मक्का ने 160 : उन के शहर मक्कए मुकर्रमा की 161 : उन के लिये जो इस में हों 162 : क़त्ल किये जाते हैं, गिरिफ़्तार किये जाते हैं। 163 : या'नी बुतों पर 164 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से और इस्लाम से कुफ़्र कर के 165 : उस के लिये शरीक ठहराए 166 : सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और कुरआन को न माने। 167 : बेशक तमाम काफ़िरों

www.dawateislami.net

اٰیاتہا ٦٠	٣٠ سُوْرَۃُ الرُّوْمِ مَکِّیَّۃٌ ٨٤	رکوعاتہا ٦

सूरए रूम मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ﴿٢﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ

[2]रूमी मग्लूब हुए पास की ज़मीन में[3] और अपनी मग्लूबी के बा'द

سَیَغۡلِبُوۡنَ ﴿٣﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ

अ़न्क़रीब ग़ालिब होंगे[4] चन्द बरस में[5] हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे[6] और

یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٤﴾ بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ ہُوَ

उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे अल्लाह की मदद से[7] वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है

का ठिकाना जहन्नम ही है **168 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे। ह़ज़रते जुनैद ने फ़रमाया : जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़्लास की राह देंगे। ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ ने फ़रमाया : जो त़लबे इ़ल्म में कोशिश करेंगे उन्हें अ़मल की राह देंगे। ह़ज़रते सा'द बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया : जो इक़ामते सुन्नत में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। **169 :** उन की मदद और नुसरत फ़रमाता है। **1 :** सूरए रूम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, साठ आयतें, आठ सो उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पांच सो चोंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** फ़ारस और रूम के दरमियान जंग थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिये मुश्रिकीने अ़रब उन का ग़लबा पसन्द करते थे, रूमी अहले किताब थे इस लिये मुसल्मानों को इन का ग़लबा अच्छा मा'लूम होता था। ख़ुस्रव परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और क़ैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा, येह लश्कर सर ज़मीने शाम के क़रीब मुक़ाबिल हुए, अहले फ़ारस ग़ालिब हुए, मुसल्मानों को येह ख़बर गिरां गुज़री, कुफ़्फ़ारे मक्का इस से ख़ुश हो कर मुसल्मानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाइयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और इन में ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएंगे। येह आयतें सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ारे मक्का में जा कर ए'लान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम रूमी ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पाएंगे, ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से ख़ुश मत हो, हमें हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़बर दी है। उबय्य बिन ख़लफ़ काफ़िर आप के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त़ हो गई अगर नव साल में अहले फ़ारस ग़ालिब आ जाएं तो ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उबय्य को सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सो ऊंट देगा, उस वक़्त तक क़िमार की ह़ुरमत नाज़िल न हुई थी। **मस्अला :** और ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा व इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के नज़्दीक ह़र्बी कुफ़्फ़ार के साथ उ़क़ूदे फ़ासिदा रिबा वग़ैरा जाइज़ हैं और येही वाक़िआ़ इन की दलील है। अल क़िस्सा सात साल के बा'द इस ख़बर का सिद्क़ ज़ाहिर हुवा और जंगे हुदैबिया या बद्र के दिन रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आए और रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इराक़ में रूमिया नामी एक शह्र की बिना रखी और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शर्त़ के ऊंट उबय्य की औलाद से वुसूल कर लिये क्यूं कि वोह इस दरमियान में मर चुका था। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि शर्त़ के माल को सदक़ा कर दें। येह ग़ैबी ख़बर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत और कुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। (خازن ومدارک) **3 :** या'नी शाम की उस सर ज़मीन में जो फ़ारस के क़रीब तर है। **4 :** अहले फ़ारस पर **5 :** जिन की ह़द नव बरस है। **6 :** या'नी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उस के बा'द भी। मुराद येह है कि पहले अहले फ़ारस का ग़ालिब होना और दोबारा अहले रूम का येह सब अल्लाह के अम्र व इरादे और उस के क़ज़ा व क़दर से है। **7 :** कि उस ने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर ग़लबा दिया और उसी रोज़ बद्र में मुसल्मानों को मुश्रिकों पर और मुसल्मानों का सिद्क़ और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और कुरआने करीम की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई।

www.dawateislami.net

الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान अल्लाह का वा'दा[8] अल्लाह अपना वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता लेकिन बहुत

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ

लोग नहीं जानते[9] जानते हैं आंखों के सामने की दुन्यवी ज़िन्दगी[10] और वोह

عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ

आख़िरत से पूरे बे ख़बर हैं क्या उन्हों ने अपने जी में न सोचा कि अल्लाह ने

اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَ

पैदा न किये आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर ह़क़[11] और एक मुक़र्रर मीआ़द से[12] और

اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي

बेशक बहुत से लोग अपने रब से मिलने का इन्कार रखते हैं[13] और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوْٓا اَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते कि उन से अगलों का अन्जाम कैसा हुवा[14] वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَ

ज़ियादा ज़ोर आवर थे और ज़मीन जोती और आबाद की उन[15] की आबादी से ज़ियादा और

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۖ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا

उन के रसूल उन के पास रोशन निशानियां लाए[16] तो अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करता[17] हां वोह

اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى

ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे[18] फिर जिन्हों ने ह़द भर की बुराई की उन का अन्जाम येह हुवा

8 : जो उस ने फ़रमाया था कि रूमी चन्द बरस में फिर ग़ालिब होंगे। 9 : या'नी बे इ़ल्म हैं। 10 : तिजारत ज़िराअ़त ता'मीर वग़ैरा दुन्यवी धन्दे। इस में इशारा है कि दुन्या की भी ह़क़ीक़त नहीं जानते इस का भी ज़ाहिर ही जानते हैं। 11 : या'नी आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है अल्लाह तआ़ला ने इन को अ़बस और बाति़ल नहीं बनाया, इन की पैदाइश में बे शुमार ह़िक्मतें हैं। 12 : या'नी हमेशा के लिये नहीं बनाया बल्कि एक मुद्दत मुअ़य्यन कर दी है जब वोह मुद्दत पूरी हो जावेगी तो येह फ़ना हो जाएंगे और वोह मुद्दत क़ियामत क़ाइम होने का वक़्त है। 13 : या'नी बअ़्से बा'दल मौत पर ईमान नहीं लाते। 14 : कि रसूलों की तक्ज़ीब के बाइ़स हलाक किये गए, उन के उजड़े हुए दियार और उन की बरबादी के आसार देखने वालों के लिये मूजिबे इ़ब्रत हैं। 15 : अहले मक्का 16 : तो वोह उन पर ईमान न लाए। पस अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक किया। 17 : उन के हु़क़ूक़ कम कर के और उन्हें बिग़ैर जुर्म के हलाक कर के। 18 : रसूलों की तक्ज़ीब कर के अपने आप को मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब बना कर।

اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا بِهَا یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع اَللّٰهُ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ

कि **अल्लाह** की आयतें झुटलाने लगे और उन के साथ तमस्ख़ुर करते **अल्लाह** पहले बनाता है

ثُمَّ یُعِیْدُهٗ ثُمَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یُبْلِسُ

फिर दोबारा बनाएगा[19] फिर उस की त़रफ़ फिरोगे[20] और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी मुजरिमों की

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَ كَانُوْا بِشُرَكَآىٕهِمْ

आस टूट जाएगी[21] और उन के शरीक[22] उन के सिफ़ारिशी न होंगे और वोह अपने शरीकों से

كٰفِرِیْنَ ﴿۱۳﴾ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یَوْمَىٕذٍ یَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا

मुन्किर हो जाएंगे और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन अलग हो जाएंगे[23] तो वोह

الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِیْ رَوْضَةٍ یُّحْبَرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اَمَّا

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ की क्यारी में उन की ख़ात़िर दारी होगी[24] और वोह

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ لِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىٕكَ فِی الْعَذَابِ

जो काफ़िर हुए और हमारी आयतें और आख़िरत का मिलना झुटलाया[25] वोह अ़ज़ाब में ला धरे (डाले)

مُحْضَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِیْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِیْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ لَهُ

जाएंगे[26] तो **अल्लाह** की पाकी बोलो[27] जब शाम करो[28] और जब सुब्ह़ हो[29] और उसी की

الْحَمْدُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ عَشِیًّا وَّ حِیْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ یُخْرِجُ

ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में[30] और कुछ दिन रहे[31] और जब तुम्हें दोपहर हो[32] वोह ज़िन्दा को

19 : या'नी बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। **20 :** तो आ'माल की जज़ा देगा। **21 :** और किसी नफ़्अ़ और भलाई की उम्मीद बाक़ी न रहेगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि उन का कलाम मुन्क़त़अ़ हो जाएगा वोह साकित रह जाएंगे क्यूं कि उन के पास पेश करने के क़ाबिल कोई हुज्जत न होगी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि वोह रुस्वा होंगे **22 :** या'नी बुत जिन्हें वोह पूजते थे **23 :** मोमिन और काफ़िर फिर कभी जम्अ़ न होंगे। **24 :** या'नी बुस्ताने जन्नत में उन का इक्राम किया जाएगा जिस से वोह ख़ुश होंगे, येह ख़ात़िर दारी जन्नती ने'मतों के साथ होगी। एक क़ौल येह भी है कि इस से मुराद समाअ़ है कि उन्हें नग़माते त़रब अंगेज़ सुनाए जाएंगे जो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की तस्बीह़ पर मुश्तमिल होंगे। **25 :** बअ़्स व ह़श्र के मुन्किर हुए। **26 :** न उस अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो न उस से कभी निकलें। **27 :** पाकी बोलने से या तो **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व सना मुराद है और इस की अह़ादीस में बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हैं या इस से नमाज़ मुराद है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से दरयाफ़्त क्या गया कि क्या पन्जगाना नमाज़ों का बयान क़ुरआने पाक में है? फ़रमाया : हां और येह आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया कि इन में पांचों नमाज़ें और इन के अवक़ात मज़्कूर हैं। **28 :** इस में मग़रिब व इ़शा की नमाज़ें आ गईं। **29 :** येह नमाज़े फ़ज्र हुई। **30 :** या'नी आस्मान और ज़मीन वालों पर उस की ह़म्द लाज़िम है। **31 :** या'नी तस्बीह़ करो कुछ दिन रहे, येह नमाज़े अ़स्र हुई। **32 :** येह नमाज़े ज़ोहर हुई। **ह़िक्मत :** नमाज़ के लिये येह पन्जगाना अवक़ात मुक़र्रर फ़रमाए गए इस लिये कि अफ़्ज़ले आ'माल वोह है जो मुदाम हो और इन्सान येह क़ुदरत नहीं रखता कि अपने तमाम अवक़ात नमाज़ में सर्फ़ करे क्यूं कि इस के साथ खाने पीने वग़ैरा के ह़वाइज व ज़रूरिय्यात हैं तो **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दे पर इ़बादत में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाई और दिन के अव्वल व औसत़ व

www.dawateislami.net

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ

निकालता है मुर्दे से[33] और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से[34] और ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ो शादाब करता) है उस के

مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ ع وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ

ع ٥ ٢٠

मरे पीछे[35] और यूं ही तुम निकाले जाओगे[36] और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से[37]

ثُمَّ اِذَاۤ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ

फिर जभी तुम इन्सान हो दुन्या में फैले हुए और उस की निशानियों से है कि तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से

اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में महब्बत और रहमत रखी[38] बेशक इस में

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिये और उस की निशानियों से है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश

وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَ

और तुम्हारी ज़बानों और रंगतों का इख़्तिलाफ़[39] बेशक इस में निशानियां हैं जानने वालों के लिये और

مِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ

उस की निशानियों में से है रात और दिन में तुम्हारा सोना[40] और उस का फ़ज़्ल तलाश करना[41] बेशक इस

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ

में निशानियां हैं सुनने वालों के लिये[42] और उस की निशानियों से है कि तुम्हें बिजली दिखाता है डराती[43] और

طَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ

उम्मीद दिलाती[44] और आस्मान से पानी उतारता है तो उस से ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के मरे पीछे बेशक

आख़िर में और रात के अव्वल व आख़िर में नमाज़ें मुक़र्रर कीं ताकि इन अवक़ात में मश्ग़ूले नमाज़ रहना दाइमी इबादत के हुक्म में हो। (مدارک وخازن) **33 :** जैसे कि परिन्द को अन्डे से और इन्सान को नुत्फ़े से और मोमिन को काफ़िर से। **34 :** जैसे कि अन्डे को परिन्द से, नुत्फ़े को इन्सान से, काफ़िर को मोमिन से **35 :** या'नी ख़ुश्क हो जाने के बा'द मींह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर। **36 :** क़ब्रों से बअ़्स व हिसाब के लिये। **37 :** तुम्हारा जद्दे आ'ला और तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **38 :** कि बिग़ैर किसी पहली मा'रिफ़त और बिग़ैर किसी क़राबत के एक को दूसरे के साथ महब्बत व हमदर्दी है। **39 :** ज़बानों का इख़्तिलाफ़ तो येह है कि कोई अ़रबी बोलता है कोई अ़जमी, कोई और कुछ, और रंगतों का इख़्तिलाफ़ येह है कि कोई गोरा है कोई काला कोई गन्दुमी और येह इख़्तिलाफ़ निहायत अ़जीब है क्यूं कि सब एक अस्ल से हैं और सब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद हैं। **40 :** जिस से तकान दूर होती है और राहत हासिल होती है। **41 :** फ़ज़्ल तलाश करने से कस्बे मआ़श मुराद है। **42 :** जो गोशे होश से सुनें। **43 :** गिरने और नुक़्सान पहुंचाने से **44 :** बारिश की।

www.dawateislami.net

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ

इस में निशानियां हैं अ़क्ल वालों के लिये[45] और उस की निशानियों से है कि उस के हुक्म से आस्मान

الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَاۤ اَنْتُمْ

और ज़मीन क़ाइम हैं[46] फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा[47] जभी तुम

تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ

निकल पड़ोगे[48] और उसी के हैं जो कोई आस्मानों और ज़मीन में हैं सब उस के ज़ेरे हुक्म हैं और

هُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَ هُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَ لَهُ الْمَثَلُ

वोही है कि अव्वल बनाता है फिर उसे दोबारा बनाएगा[49] और येह तुम्हारी समझ में इस पर ज़ियादा आसान होना चाहिये[50] और उसी के लिये है

الْاَعْلٰى فِى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ ع ضَرَبَ ع ٣/٨/٦

सब से बरतर शान आस्मानों और ज़मीन में[51] और वोही इ़ज़्ज़तो हि़क्मत वाला है तुम्हारे लिये[52] एक

لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ

कहावत बयान फ़रमाता है ख़ुद तुम्हारे अपने ह़ाल से[53] क्या तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ के माल ग़ुलामों में से कुछ शरीक हैं[54]

فِىْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ

उस में जो हम ने तुम्हें रोज़ी दी[55] तो तुम सब इस में बराबर हो[56] तुम उन से डरो[57] जैसे आपस में एक दूसरे से डरते हो[58]

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا

हम ऐसी मुफ़स्सल निशानियां बयान फ़रमाते हैं अ़क्ल वालों के लिये बल्कि ज़ालिम[59] अपनी ख़्वाहिशों

45 : जो सोचें और क़ुदरते इलाही पर ग़ौर करें। 46 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنھم ने फ़रमाया कि वोह दोनों बिग़ैर किसी सहारे के क़ाइम हैं। 47 : या'नी तुम्हें क़ब्रों से बुलाएगा इस त़रह़ कि ह़ज़रते इसराफ़ील علیہ السلام क़ब्र वालों के उठाने के लिये सूर फूंकेंगे तो अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई ऐसा न होगा जो न उठे। चुनान्चे इस के बा'द ही इर्शाद फ़रमाता है : 48 : या'नी क़ब्रों से ज़िन्दा हो कर। 49 : हलाक होने के बा'द। 50 : क्यूं कि इन्सानों का तजरिबा और इन की राय येही बताती है कि शै का इआ़दा (दोबारा बनाना) उस की इब्तिदा से सह्ल (आसान) होता है और अल्लाह तआ़ला के लिये कुछ भी दुश्वार नहीं। 51 : कि उस जैसा कोई नहीं, वोह मा'बूदे बरह़क़ है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। 52 : ऐ मुश्रिको ! 53 : वोह मसल (कहावत) येह है 54 : या'नी क्या तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारे साझी हैं 55 : मालो मताअ़ वग़ैरा 56 : या'नी आक़ा और ग़ुलाम को उस मालो मताअ़ में यक्सां इस्तिह़्क़ाक़ हो, ऐसा कि 57 : अपने मालो मताअ़ में बिग़ैर उन ग़ुलामों की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने से 58 : मुद्दआ़ येह है कि तुम किसी त़रह़ अपने मम्लूकों को अपना शरीक बनाना गवारा नहीं कर सकते तो कितना ज़ुल्म है कि अल्लाह तआ़ला के मम्लूकों को उस का शरीक क़रार दो। ऐ मुश्रिकीन तुम अल्लाह तआ़ला के सिवा जिन्हें अपना मा'बूद क़रार देते हो वोह उस के बन्दे और मम्लूक हैं। 59 : जिन्हों ने शिर्क कर के अपनी जानों पर ज़ुल्मे अ़ज़ीम किया है।

www.dawateislami.net

اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ

के पीछे हो लिये बे जाने[60] तो उसे कौन हिदायत करे जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया[61] और उन का कोई

نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًاؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ

मददगार नहीं[62] तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इत़ाअ़त के लिये एक अकेले उसी के हो कर[63] अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर

النَّاسَ عَلَيْهَاؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُۙ وَلٰكِنَّ

लोगों को पैदा किया[64] अल्लाह की बनाई चीज़ न बदलना[65] येही सीधा दीन है मगर

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَۙ ﴿۳۰﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

बहुत लोग नहीं जानते[66] उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाते हुए[67] और उस से डरो और नमाज़ क़ाइम रखो

وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَۙ ﴿۳۱﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا

और मुश्रिकों से न हो उन में से जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया[68] और हो गए

شِيَعًاؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

गुरोह गुरोह हर गुरोह जो उस के पास है उस पर ख़ुश है[69] और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है[70]

دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ

तो अपने रब को पुकारते हैं उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाते हुए फिर जब वोह उन्हें अपने पास से रह़मत का मज़ा देता है[71] जभी उन में से

مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَۙ ﴿۳۳﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْؕ فَتَمَتَّعُوْا وقفة فَسَوْفَ

एक गुरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि हमारे दिये की नाशुक्री करें तो बरत लो[72] अब क़रीब

تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ

जानना चाहते हो[73] या हम ने उन पर कोई सनद उतारी[74] कि वोह उन्हें हमारे शरीक

60 : जहालत से 61 : या'नी कोई उस का हिदायत करने वाला नहीं। 62 : जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके 63 : या'नी ख़ुलूस के साथ दीने इलाही पर ब इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल क़ाइम रहो। 64 : "फ़ित़रत" से मुराद दीने इस्लाम है, मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को ईमान पर पैदा किया जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर बच्चा फ़ित़रत पर पैदा किया जाता है या'नी उसी अ़हद पर जो "اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ" फ़रमा कर लिया गया है। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है : फिर उस के मां बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। इस आयत में हुक्म दिया गया कि दीने इलाही पर क़ाइम रहो जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ल्क़ को पैदा किया है। 65 : या'नी दीने इलाही पर क़ाइम रहना। 66 : इस की ह़क़ीक़त को तो इस दीन पर क़ाइम रहो। 67 : या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ तौबा और त़ाअ़त के साथ। 68 : मा'बूद के बाब में इख़्तिलाफ़ कर के 69 : और अपने बात़िल को ह़क़ गुमान करता है। 70 : मरज़ की या क़ह़त़ की या इस के सिवा और कोई 71 : उस तक्लीफ़ से ख़लासी इनायत करता है और राह़त अ़त़ा फ़रमाता है 72 : दुन्यवी ने'मतों को चन्द रोज़। 73 : कि आख़िरत में तुम्हारा क्या ह़ाल होता है और इस दुन्या त़लबी का क्या नतीजा निकलने वाला है। 74 : कोई हुज्जत या कोई किताब।

www.dawateislami.net

يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ اِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ

बता रही है[75] और जब हम लोगों को रह़मत का मज़ा देते हैं[76] इस पर ख़ुश हो जाते हैं[77] और अगर उन्हें कोई

سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿۳۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

बुराई पहुंचे[78] बदला उस का जो उन के हाथों ने भेजा[79] जभी वोह ना उम्मीद हो जाते हैं[80] और क्या उन्हों ने न देखा कि **अल्लाह**

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे बेशक इस में निशानियां हैं

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ

ईमान वालों के लिये तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो[81] और मिस्कीन और मुसाफ़िर को[82] येह

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَ مَاۤ

बेहतर है उन के लिये जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हैं[83] और उन्हीं का काम बना और

اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاۡ فِیْۤ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَ مَاۤ

तुम जो चीज़ ज़ियादा लेने को दो कि देने वाले के माल बढ़ें तो वोह **अल्लाह** के यहां न बढ़ेगी[84] और जो

اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿۳۹﴾ اَللّٰهُ

तुम ख़ैरात दो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हुए[85] तो उन्हीं के दूने हैं[86] **अल्लाह** है

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ

जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी फिर तुम्हें मारेगा फिर तुम्हें जिलाए (जि़न्दा करे) गा[87] क्या

شُرَكَآىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا

तुम्हारे शरीकों में[88] भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ करे[89] पाकी और बरतरी है उसे

75 : और शिर्क करने का हुक्म देती है, ऐसा नहीं है न कोई हुज्जत है न कोई सनद। **76 :** या'नी तन्दुरुस्ती और वुस्अ़ते रिज़्क़ का **77 :** और इतराते हैं। **78 :** क़ह़त़ या ख़ौफ़ या और कोई बला **79 :** या'नी उन की मा'सियतों और उन के गुनाहों का **80 :** **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से और येह बात मोमिन की शान के ख़िलाफ़ है क्यूं कि मोमिन का ह़ाल येह है कि जब उसे ने'मत मिलती है तो शुक्र गुज़ारी करता है और जब सख़्ती होती है तो **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहता है। **81 :** उस के साथ सुलूक और एह़सान करो **82 :** उन के ह़क़ दो सदक़ा दे कर और मेहमान नवाज़ी कर के। **मस्अला :** इस आयत से मह़ारिम के नफ़क़े का वुजूब साबित होता है। (مدارک) **83 :** और **अल्लाह** तआ़ला से सवाब के त़ालिब हैं। **84 :** लोगों का दस्तूर था कि वोह दोस्त अह़बाब और आश्नाओं को या और किसी शख़्स को इस निय्यत से हदिय्या देते थे कि वोह उन्हें इस से ज़ियादा देगा, येह जाइज़ तो है लेकिन इस पर सवाब न मिलेगा, इस में बरकत न होगी क्यूं कि येह अ़मल ख़ालिसन लिल्लाहि तआ़ला नहीं हुवा। **85 :** न इस से बदला लेना मक़्सूद हो न नामो नुमूद **86 :** उन का अज्रो सवाब ज़ियादा होगा, एक नेकी का दस गुना ज़ियादा दिया जाएगा। **87 :** पैदा करना, रोज़ी देना, मारना, जिलाना येह सब काम **अल्लाह** ही के हैं।

www.dawateislami.net

ع يُشْرِكُوْنَ ۝٤٠ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ

उन के शिर्क से चमकी ख़राबी ख़ुश्की और तरी में[90] उन बुराइयों से जो लोगों के हाथों ने कमाई

لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٤١ قُلْ سِيْرُوْا فِي

ताकि उन्हें उन के बा'ज़ कौतकों (बुरे कामों) का मज़ा चखाए कहीं वोह बाज़ आएं[91] तुम फ़रमाओ ज़मीन

الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ

में चल कर देखो कैसा अन्जाम हुवा अगलों का उन में बहुत

مُّشْرِكِيْنَ ۝٤٢ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا

मुश्रिक थे[92] तो अपना मुंह सीधा कर इबादत के लिये[93] क़ब्ल इस के कि वोह दिन आए जिसे अल्लाह

مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝٤٣ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ

की तरफ़ से टलना नहीं[94] उस दिन अलग फट जाएंगे[95] जो कुफ़्र करे उस के कुफ़्र का वबाल उसी पर और जो

عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ۝٤٤ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

अच्छा काम करें वोह अपने ही लिये तय्यारी कर रहे हैं[96] ताकि सिला दे[97] उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝٤٥ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ

काम किये अपने फ़ज़्ल से बेशक वोह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता और उस की निशानियों से है कि

يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

हवाएं भेजता है मुज़्दा सुनाती[98] और इस लिये कि तुम्हें अपनी रहमत का ज़ाएक़ा दे और इस लिये कि कश्ती[99] उस

بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٤٦ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

के हुक्म से चले और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[100] और इस लिये कि तुम हक़ मानो[101] और बेशक हम ने तुम

88 : या'नी बुतों में जिन्हें तुम अल्लाह तआ़ला का शरीक ठहराते हो उन में 89 : इस के जवाब से मुश्रिकीन आ़जिज़ हुए और उन्हें दम मारने की मजाल न हुई तो फ़रमाता है 90 : शिर्क व मआ़सी के सबब से क़हत़ और इम्साके बारां (बारिश का रुक जाना) और क़िल्लते पैदावार और खेतियों की ख़राबी और तिजारतों के नुक़्सान और आदमियों और जानवरों में मौत और कस्रते आतश ज़दगी और ग़र्क़ और हर शै में बे बरकती 91 : कुफ़्र व मआ़सी से और ताइब हों। 92 : अपने शिर्क के बाइस हलाक किये गए, उन के मनाज़िल और मसाकिन वीरान पड़े हैं, उन्हें देख कर इब्रत ह़ासिल करो। 93 : या'नी दीने इस्लाम पर मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहो। 94 : या'नी रोज़े क़ियामत। 95 : या'नी हिसाब के बा'द मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे, जन्नती जन्नत की त़रफ़ जाएंगे और दोज़ख़ी दोज़ख़ की त़रफ़। 96 : कि मनाज़िले जन्नत में राह़त व आराम पाएं 97 : और सवाब अ़ता फ़रमाए अल्लाह तआ़ला 98 : बारिश और कस्रते पैदावार का 99 : दरिया में उन हवाओं से 100 : या'नी दरियाई तिजारतों से कस्बे मआ़श करो 101 : उन ने'मतों का और अल्लाह की तौह़ीद क़बूल करो।

www.dawateislami.net

مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ

से पहले कितने रसूल उन की क़ौम की तरफ़ भेजे तो वोह उन के पास खुली निशानियां लाए[102] फिर हम ने

الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

मुजरिमों से बदला लिया[103] और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना[104] अल्लाह है कि

يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ

भेजता है हवाएं कि उभारती हैं बादल फिर उसे फैला देता है आस्मान में जैसा चाहे[105] और

يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ

उसे पारा पारा करता है[106] तो तू देखे कि उस के बीच में से मींह निकल रहा है फिर जब उसे पहुंचाता है[107]

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ

अपने बन्दों में जिस की तरफ़ चाहे जभी वोह खुशियां मनाते हैं अगर्चे उस के उतारने

يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ

से पहले आस तोड़े हुए थे तो अल्लाह की रहमत के असर देखो[108] क्यूंकर

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

ज़मीन को जिलाता (सर सब्ज़ करता) है उस के मरे पीछे[109] बेशक वोह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ

कर सकता है और अगर हम कोई हवा भेजें[110] जिस से वोह खेती को ज़र्द देखें[111] तो ज़रूर इस के बा'द

يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا

नाशुक्री करने लगें[112] इस लिये कि तुम मुर्दों को नहीं सुनाते[113] और न बहरों को पुकारना सुनाओ जब वोह पीठ

102 : जो उन रसूलों के सिद्क़े रिसालत पर दलीले वाज़ेह थीं तो उस क़ौम में से बा'ज़ ईमान लाए और बा'ज़ ने कुफ़्र किया। **103 :** कि दुन्या में उन्हें अ़ज़ाब कर के हलाक कर दिया। **104 :** या'नी उन्हें नजात देना और काफ़िरों को हलाक करना। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को आख़िरत की काम्याबी और आ'दा पर फ़त्हो नुसरत की बिशारत दी गई है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : जो मुसल्मान अपने भाई की आबरू बचाएगा अल्लाह तआ़ला उसे रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग से बचाएगा। येह फ़रमा कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई ''كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ'' **105 :** क़लील या कसीर **106 :** या'नी कभी तो अल्लाह तआ़ला अब्रे मुहीत़ भेज देता है जिस से आस्मान घिरा मा'लूम होता है और कभी मुतफ़र्रिक़ टुकड़े अ़लाहदा अ़लाहदा। **107 :** या'नी मींह को **108 :** या'नी बारिश के असर जो उस पर मुरत्तब होते हैं कि बारिश ज़मीन को सैराब करती है, उस से सब्ज़ा निकलता है, सब्ज़े से फल पैदा होते हैं, फलों में ग़िज़ाइय्यत होती है और इस से जानदारों के अज्साम के क़िवाम को मदद पहुंचती है और येह देखो कि अल्लाह तआ़ला येह सब्ज़े और फल पैदा कर के **109 :** और ख़ुश्क मैदान को सब्ज़ा ज़ार बना देता है, जिस की येह क़ुदरत है **110 :** ऐसी जो खेती और सब्ज़े के लिये मुज़िर हो **111 :** बा'द इस

مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ

दे कर फिरें[114] और न तुम अन्धों को[115] उन की गुमराही से राह पर लाओ तुम तो उसी को सुनाते हो जो

يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ

हमारी आयतों पर ईमान लाए तो वोह गरदन रखे हुए हैं **अल्लाह** है जिस ने तुम्हें इब्तिदा में कमज़ोर बनाया[116] फिर

جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ

तुम्हें ना तुवानी से ताक़त बख़्शी[117] फिर कुव्वत के बा'द[118] कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ

बनाता है जो चाहे[119] और वोही इल्म व कुदरत वाला है और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी

يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾

मुजरिम क़सम खाएंगे कि न रहे थे मगर एक घड़ी[120] वोह ऐसे ही औंधे जाते थे[121]

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى

और बोले वोह जिन को इल्म और ईमान मिला[122] बेशक तुम रहे **अल्लाह** के लिखे हुए में[123]

ع ٥ / ٨ — قرء حفص بفتح الضاد وضمها في الثلاثة لكن الضم مختار

के कि वोह सर सब्ज़ो शादाब थी। 112 : या'नी खेती ज़र्द होने के बा'द नाशुक्री करने लगें और पहली ने'मत से भी मुकर जाएं। मा'ना येह हैं कि उन लोगों की हालत येह है कि जब उन्हें रहमत पहुंचती है रिज़्क़ मिलता है ख़ुश हो जाते हैं और जब कोई सख़्ती आती है खेती ख़राब होती है तो पहली ने'मतों से भी मुकर जाते हैं। चाहिये तो येह था कि **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करते और जब ने'मत पहुंचती शुक्र बजा लाते और जब बला आती सब्र करते और दुआ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल होते। इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआला अपने हबीबे अकरम सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि आप उन लोगों की महरूमी और उन के ईमान न लाने पर रन्जीदा न हों 113 : या'नी जिन के दिल मर चुके और उन से किसी तरह क़बूले हक़ की तवक़्क़ोअ़ नहीं रही। 114 : या'नी हक़ के सुनने से बहरे हों और बहरे भी ऐसे कि पीठ दे कर फिर गए, उन से किसी तरह समझने की उम्मीद नहीं। 115 : यहां अन्धों से भी दिल के अन्धे मुराद हैं। इस आयत से बा'ज़ लोगों ने मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल किया है, मगर येह इस्तिद्लाल सहीह नहीं क्यूं कि यहां मुर्दों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं जो दुन्यवी ज़िन्दगी तो रखते हैं मगर पन्दो मौइज़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते, इस लिये उन्हें अम्वात से तश्बीह दी गई जो दारुल अ़मल से गुज़र गए और वोह पन्दो नसीहत से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते, लिहाज़ा आयत से मुर्दों के न सुनने पर सनद लाना दुरुस्त नहीं और ब कसरत अहादीस से मुर्दों का सुनना और अपनी क़ब्रों पर ज़ियारत के लिये आने वालों को पहचानना साबित है। 116 : इस में इन्सान के अहवाल की तरफ़ इशारा है कि पहले वोह मां के पेट में जनीन था, फिर बच्चा हो कर पैदा हुवा, शीर ख़्वार रहा, येह अहवाल निहायत ज़ो'फ़ के हैं। 117 : या'नी बचपन के ज़ो'फ़ के बा'द जवानी की कुव्वत अ़ता फ़रमाई 118 : या'नी जवानी की कुव्वत के बा'द 119 : ज़ो'फ़ और कुव्वत और जवानी और बुढ़ापा येह सब **अल्लाह** के पैदा किये से हैं 120 : या'नी आख़िरत को देख कर उस को दुन्या या क़ब्र में रहने की मुद्दत बहुत थोड़ी मा'लूम होगी, इस लिये वोह इस मुद्दत को एक घड़ी से ता'बीर करेंगे। 121 : या'नी ऐसे ही दुन्या में ग़लत़ और बातिल बातों पर जमते और हक़ से फिरते थे और बअ़्स का इन्कार करते थे जैसे कि अब क़ब्र या दुन्या में ठहरने की मुद्दत को क़सम खा कर एक घड़ी बता रहे हैं, उन की इस क़सम से **अल्लाह** तआला उन्हें तमाम अहले महशर के सामने रुस्वा करेगा और सब देखेंगे कि ऐसे मज्मए आम में क़सम खा कर ऐसा सरीह झूट बोल रहे हैं। 122 : या'नी अम्बिया और मलाएका और मोमिनीन इन का रद करेंगे और फ़रमाएंगे कि तुम झूट कहते हो 123 : या'नी जो **अल्लाह** तआला ने अपने साबिक़ इल्म में लौहे महफ़ूज़ में लिखा उसी के मुताबिक़ तुम क़ब्रों में रहे।

www.dawateislami.net

يَوۡمِ الۡبَعۡثِ ۫ فَهٰذَا يَوۡمُ الۡبَعۡثِ وَلٰكِنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٥٦﴾

उठने के दिन तक तो येह है वोह दिन उठने का[124] लेकिन तुम न जानते थे[125]

فَيَوۡمَئِذٍ لَّا يَنۡفَعُ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مَعۡذِرَتُهُمۡ وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿٥٧﴾

तो उस दिन ज़ालिमों को नफ़्अ़ न देगी उन की मा'ज़िरत और न उन से कोई राज़ी करना मांगे[126]

وَلَقَدۡ ضَرَبۡنَا لِلنَّاسِ فِيۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنۡ جِئۡتَهُمۡ

और बेशक हम ने लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसाल बयान फ़रमाई[127] और अगर तुम इन के पास कोई

بِاٰيَةٍ لَّيَقُوۡلَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا مُبۡطِلُوۡنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

निशानी लाओ तो ज़रूर काफ़िर कहेंगे तुम तो नहीं मगर बातिल पर यूं ही

يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٥٩﴾ فَاصۡبِرۡ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ

मोहर कर देता है अल्लाह जाहिलों के दिलों पर[128] तो सब्र करो[129] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[130]

وَّلَا يَسۡتَخِفَّنَّكَ الَّذِيۡنَ لَا يُوۡقِنُوۡنَ ﴿٦٠﴾ ع

और तुम्हें सबुक न कर दें वोह जो यक़ीन नहीं रखते[131]

ركوع ٦ ٩

اٰياتها ٣٤ ﴿٣١ سُوۡرَةُ لُقۡمٰنَ مَكِّيَّةٌ ٥٧﴾ ركوعاتها ٤

सूरए लुक़्मान मक्किय्या है, इस में चोंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡحَكِيۡمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحۡمَةً لِّلۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٣﴾

येह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं हिदायत और रह़मत हैं नेकों के लिये

124 : जिस के तुम दुन्या में मुन्किर थे 125 : दुन्या में कि वोह ह़क़ है ज़रूर वाक़ेअ़ होगा, अब तुम ने जाना कि वोह दिन आ गया और उस का आना ह़क़ था तो उस वक़्त का जानना तुम्हें नफ़्अ़ न देगा जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : 126 : या'नी न उन से येह कहा जाए कि तौबा कर के अपने रब को राज़ी करो जैसा कि दुन्या में उन से तौबा त़लब की जाती थी। 127 : ताकि उन्हें तम्बीह हो और इन्ज़ार अपने कमाल को पहुंचे, लेकिन उन्हों ने अपनी सियाह बात़िनी और सख़्त दिली के बाइ़स कुछ भी फ़ाएदा न उठाया, बल्कि जब कोई आयते क़ुरआन आई उस को झुटला दिया और उस का इन्कार किया। 128 : जिन्हें जानता है कि वोह गुमराही इख़्तियार करेंगे और ह़क़ वालों को बात़िल पर बताएंगे। 129 : उन की ईज़ा व अ़दावत पर 130 : आप की मदद फ़रमाने का और दीने इस्लाम को तमाम दीनों पर ग़ालिब करने का। 131 : या'नी येह लोग जिन्हें आख़िरत का यक़ीन नहीं है और बअ़्स व ह़िसाब के मुन्किर हैं उन की शिद्दतें और उन के इन्कार और उन की ना लाइक़ ह़रकात आप के लिये तैश और क़लक़ (रन्जिश) का बाइ़स न हों और ऐसा न हो कि आप उन के ह़क़ में अ़ज़ाब की दुआ़ करने में जल्दी फ़रमाएं। 1 : सूरए लुक़्मान मक्किय्या है सिवाए दो आयतों के जो "وَلَوۡ اَنَّ مَا فِي الۡاَرۡضِ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में चार रुकूअ़, चोंतीस आयतें, पांच सो अड़तालीस कलिमे, दो हज़ार एक सो दस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और आख़िरत पर

یُوْقِنُوْنَؕ(۴) اُولٰٓىٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۵)

यक़ीन लाएं वोही अपने रब की हिदायत पर हैं और उन्हीं का काम बना

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ

और कुछ लोग खेल की बात ख़रीदते हैं[2] कि अल्लाह की राह से बहका दें

بِغَیْرِ عِلْمٍ ﳓ وَّ یَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ(۶) وَ اِذَا

बे समझे[3] और उसे हंसी बना लें उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है और जब

تُتْلٰى عَلَیْهِ اٰیٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ یَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِیْۤ اُذُنَیْهِ وَقْرًا ۚ

उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं तो तकब्बुर करता हुवा फिरे[4] जैसे उन्हें सुना ही नहीं जैसे उस के कानों में टेंट (रूई) है[5]

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ(۷) اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

तो उसे दर्दनाक अ़ज़ाब का मुज़्दा दो बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये

جَنّٰتُ النَّعِیْمِۙ(۸) خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ

चैन के बाग़ हैं हमेशा उन में रहेंगे अल्लाह का वा'दा है सच्चा और वोही इ़ज़्ज़त व

الْحَكِیْمُ(۹) خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِی الْاَرْضِ

हिक्मत वाला है उस ने आस्मान बनाए बे ऐसे सुतूनों के जो तुम्हें नज़र आएं[6] और ज़मीन में डाले

رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ

लंगर[7] कि तुम्हें ले कर न कांपे और इस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए और हम ने आस्मान

2 : लह्व या'नी खेल हर उस बातिल को कहते हैं जो आदमी को नेकी से और काम की बातों से ग़फ़्लत में डाले कहानियां, अफ़्साने इसी में दाख़िल हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस बिन कल्दा के ह़क़ में नाज़िल हुई जो तिजारत के सिल्सिले में दूसरे मुल्कों में सफ़र किया करता था, उस ने अ़जमियों की किताबें ख़रीदीं जिन में क़िस्से कहानियां थीं, वोह क़ुरैश को सुनाता और कहता कि सय्यिदे काएनात (मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) तुम्हें आ़द व समूद के वाक़िआ़त सुनाते हैं और मैं रुस्तम व इस्फ़न्दियार और शाहाने फ़ारस की कहानियां सुनाता हूं। कुछ लोग उन कहानियों में मश्ग़ूल हो गए और क़ुरआने पाक सुनने से रह गए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **3 :** या'नी बराहे जहालत लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने और क़ुरआने करीम सुनने से रोकें और आयाते इलाहिय्यह के साथ तमस्ख़ुर करें **4 :** और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करे **5 :** और वोह बहरा है **6 :** या'नी कोई सुतून नहीं है, तुम्हारी नज़र ख़ुद इस की शाहिद है। **7 :** बुलन्द पहाड़ों के।

السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِیْمٍ ﴿۱۰﴾ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ

से पानी उतारा[8] तो ज़मीन में हर नफ़ीस जोड़ा उगाया[9] येह तो अल्लाह का बनाया हुवा है[10]

فَاَرُوْنِیْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِیْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ ضَلٰلٍ

मुझे वोह दिखाओ[11] जो उस के सिवा औरों ने बनाया[12] बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही

مُّبِیْنٍ ﴿۱۱﴾ وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ یَّشْكُرْ

में हैं और बेशक हम ने लुक़्मान को हिक्मत अ़ता फ़रमाई[13] कि अल्लाह का शुक्र कर[14] और जो शुक्र करे

فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَ

वोह अपने भले को शुक्र करता है[15] और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बे परवा है सब ख़ूबियों सराहा और याद करो जब

لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ یَعِظُهٗ یٰبُنَیَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ

लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा और वोह नसीह़त करता था[16] ऐ मेरे बेटे अल्लाह का किसी को शरीक न करना बेशक शिर्क बड़ा

عَظِیْمٌ ﴿۱۳﴾ وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰی وَهْنٍ

ज़ुल्म है[17] और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई[18] उस की मां ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झेलती हुई[19]

وَّ فِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیْكَ ؕ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ﴿۱۴﴾ وَ اِنْ

और उस का दूध छूटना दो बरस में है येह कि ह़क़ मान मेरा और अपने मां बाप का[20] आख़िर मुझी तक आना है और अगर

ع ۸ | وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم | النصف

8 : अपने फ़ज़्ल से बारिश की 9 : उ़म्दा अक़्साम के नबातात पैदा किये। 10 : जो तुम देख रहे हो। 11 : ऐ मुश्रिको ! 12 : या'नी बुतों ने जिन्हें तुम मुस्तह़िक़े इ़बादत क़रार देते हो। 13 : मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने कहा कि लुक़्मान का नसब येह है : लुक़्मान बिन बाऊ़र बिन नाहूर बिन तारिख़। वह्ब का क़ौल है कि ह़ज़रते लुक़्मान, ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام के भान्जे थे। मुक़ातिल ने कहा कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْهِ السَّلَام की ख़ाला के फ़रज़न्द थे। वाक़िदी ने कहा कि बनी इसराईल में क़ाज़ी थे और येह भी कहा गया है कि आप हज़ार साल ज़िन्दा रहे और ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ السَّلَام का ज़माना पाया और इन से इ़ल्म अख़्ज़ किया और इन के ज़माने में फ़तवा देना तर्क कर दिया अगर्चे पहले से फ़तवा देते थे, आप की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है, अक्सर उ़लमा इसी की त़रफ़ हैं कि आप ह़कीम थे नबी न थे। ह़िक्मत अ़क़्लो फ़ह्म को कहते हैं और कहा गया है कि ह़िक्मत वोह इ़ल्म है जिस के मुत़ाबिक़ अ़मल किया जाए। बा'ज़ ने कहा कि "ह़िक्मत" मा'रिफ़त और इसाबत फ़िल उमूर को कहते हैं और येह भी कहा गया है कि ह़िक्मत ऐसी शै है कि अल्लाह तआ़ला इस को जिस के दिल में रखता है उस के दिल को रोशन कर देती है। 14 : इस ने'मत पर कि अल्लाह तआ़ला ने ह़िक्मत अ़त़ा की। 15 : क्यूं कि शुक्र से ने'मत ज़ियादा होती है और सवाब मिलता है। 16 : ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام के उन साह़िब ज़ादे का नाम अन्अ़म या अश्कम था और इन्सान का आ'ला मर्तबा येह है कि वोह ख़ुद कामिल हो और दूसरे की तक्मील करे तो ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ السَّلَام का कामिल होना तो "اٰتَیْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ" में बयान फ़रमा दिया और दूसरे की तक्मील करना "وَهُوَ یَعِظُهٗ" से ज़ाहिर फ़रमाया और नसीह़त बेटे को की। इस से मा'लूम हुवा कि नसीह़त में घर वालों और क़रीब तर लोगों को मुक़द्दम करना चाहिये और नसीह़त की इब्तिदा मन्ए़ शिर्क से फ़रमाई। इस से मा'लूम हुवा कि येह निहायत अहम है। 17 : क्यूं कि इस में ग़ैर मुस्तह़िक़े इ़बादत को मुस्तह़िक़े इ़बादत के बराबर क़रार देना है और इ़बादत को उस के मह़ल के ख़िलाफ़ रखना येह दोनों बातें ज़ुल्मे अ़ज़ीम हैं। 18 : कि उन का फ़रमां बरदार रहे और उन के साथ नेक सुलूक करे (जैसा कि इसी आयत में आगे इर्शाद है) 19 : या'नी इस का ज़ो'फ़ दम ब दम तरक़्क़ी पर होता है जितना ह़म्ल बढ़ता जाता है बार ज़ियादा होता है और ज़ो'फ़ तरक़्क़ी करता है, औ़रत को ह़ामिला होने के बा'द ज़ो'फ़ और तअ़ब और मशक़्क़तें पहुंचती रहती हैं, ह़म्ल ख़ुद ज़ईफ़ करने वाला है, दर्दे ज़ेह ज़ो'फ़ पर ज़ो'फ़ है और

www.dawateislami.net

جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ

वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं[21] तो उन का कहना न मान[22] और

صَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا٘ وَّ اتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ

दुन्या में अच्छी त़रह़ उन का साथ दे[23] और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया[24] फिर मेरी ही

مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ

त़रफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे[25] ऐ मेरे बेटे बुराई अगर राई

حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ

के दाने बराबर हो फिर वोह पथ्थर की चटान में या आस्मानों में या ज़मीन में कहीं हो[26]

یَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۶﴾ یٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَ اْمُرْ

अल्लाह उसे ले आएगा[27] बेशक **अल्लाह** हर बारीकी का जानने वाला ख़बरदार है[28] ऐ मेरे बेटे नमाज़ बरपा रख और अच्छी

بِالْمَعْرُوْفِ وَ انْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ اصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ

बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो उफ़्ताद (मुसीबत) तुझ पर पड़े[29] उस पर सब्र कर बेशक येह

عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾ وَ لَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَ لَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ

हिम्मत के काम हैं[30] और किसी से बात करने में[31] अपना रुख़्सारा कज न कर[32] और ज़मीन में इतराता

वज़्अ़ (बच्चा जनना) इस पर और मज़ीद शिद्दत है, दूध पिलाना इन सब पर मज़ीद बरआं है। **20 :** येह वोह ताकीद है जिस का ज़िक्र ऊपर फ़रमाया था। सुफ़्यान बिन उ़यैना ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि जिस ने पन्जगाना नमाज़ें अदा कीं वोह **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र बजा लाया और जिस ने पन्जगाना नमाज़ों के बा'द वालिदैन के लिये दुआ़एं कीं उस ने वालिदैन की शुक्र गुज़ारी की। **21 :** या'नी इल्म से तो किसी को मेरा शरीक ठहरा ही नहीं सकते क्यूं कि मेरा शरीक मुह़ाल है हो ही नहीं सकता, अब जो कोई भी कहेगा तो बे इल्मी ही से किसी चीज़ के शरीक ठहराने को कहेगा, ऐसा अगर मां बाप भी कहें **22 :** नख़ई ने कहा कि वालिदैन की त़ाअ़त वाजिब है लेकिन अगर वोह शिर्क का हुक्म करें तो उन की इत़ाअ़त न कर क्यूं कि ख़ालिक़ की ना फ़रमानी करने में किसी मख़्लूक़ की त़ाअ़त रवा नहीं। **23 :** हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक और एह़सान व तह़म्मुल के साथ। **24 :** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब की राह, इसी को मज़्हबे सुन्नत व जमाअ़त कहते हैं। **25 :** तुम्हारे आ'माल की जज़ा दे कर। ''وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ'' से यहां तक जो मज़्मून है येह ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام का नहीं है बल्कि उन्हों ने अपने साह़िब ज़ादे को **अल्लाह** तआ़ला के शुक्रे ने'मत का हुक्म दिया था और शिर्क की मुमानअ़त की थी तो **अल्लाह** तआ़ला ने वालिदैन की त़ाअ़त और इस का मह़ल इर्शाद फ़रमा दिया, इस के बा'द फिर ह़ज़रते लुक़्मान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام का मक़ूला ज़िक्र किया जाता है कि इन्हों ने अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : **26 :** कैसी ही पोशीदा जगह हो **अल्लाह** तआ़ला से नहीं छुप सकती **27 :** रोज़े क़ियामत और उस का ह़िसाब फ़रमाएगा **28 :** या'नी हर सग़ीर व कबीर उस के इह़ात़ए इल्मी में है। **29 :** امربالمعروف ونهى عن المنكر करने से **30 :** इन का करना लाज़िम है। इस आयत से मा'लूम हुवा कि नमाज़ और امربالمعروف और نهى عن المنكر और सब्र बर ईज़ा (तक्लीफ़ पर सब्र करना) येह ऐसी त़ाअ़तें हैं जिन का तमाम उम्मतों में हुक्म था। **31 :** बराहे तकब्बुर **32 :** या'नी जब आदमी बात करें तो उन्हें ह़क़ीर जान कर उन की त़रफ़ से रुख़ फेरना जैसा कि मुतकब्बिरीन का त़रीक़ा है इख़्तियार न करना, ग़नी व फ़क़ीर सब के साथ ब तवाज़ोअ़ पेश आना।

www.dawateislami.net

مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ﴿۱۸﴾ وَ اقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ وَ

न चल बेशक **अल्लाह** को नहीं भाता कोई इतराता फ़ख़्र करता और मियाना चाल चल[33] और

اغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ۠﴿۱۹﴾ اَلَمْ

अपनी आवाज़ कुछ पस्त कर[34] बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़, गधे की आवाज़[35] क्या

تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ

तुम ने न देखा कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये काम में लगाए जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में हैं[36] और तुम्हें

عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ

भरपूर दीं अपनी ने'मतें ज़ाहिर और छुपी[37] और बा'ज़े आदमी **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं यूं कि

بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًی وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ﴿۲۰﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ

न इल्म न अ़क़्ल न कोई रोशन किताब[38] और जब उन से कहा जाए उस की पैरवी करो जो

اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ

अल्लाह ने उतारा तो कहते हैं बल्कि हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया[39] क्या अगर्चे

الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیْرِ ﴿۲۱﴾ وَ مَنْ یُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَی

शैतान उन को अ़ज़ाबे दोज़ख़ की त़रफ़ बुलाता हो[40] और जो अपना मुंह **अल्लाह** की त़रफ़

ع ۲ / ۸

33 : न बहुत तेज़ न बहुत सुस्त कि येह दोनों बातें मज़्मूम हैं, एक में शाने तकब्बुर है और एक में छिछोरा पन। ह़दीस शरीफ़ में है कि बहुत तेज़ चलना मोमिन का वक़ार खोता है। **34 :** या'नी शोरो शग़ब और चीख़ने चिल्लाने से एह़तिराज़ कर। **35 :** मुद्दआ़ येह है कि शोर मचाना और आवाज़ बुलन्द करना मक्रूह व ना पसन्दीदा है और इस में कुछ फ़ज़ीलत नहीं है, गधे की आवाज़ बा वुजूद बुलन्द होने के मक्रूह और वह़्शत अंगेज़ है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नर्म आवाज़ से कलाम करना पसन्द था और सख़्त आवाज़ से बोलने को ना पसन्द रखते थे। **36 :** आस्मानों में मिस्ले सूरज चांद तारों के जिन से तुम नफ़्अ़ उठाते हो और ज़मीनों में दरिया, नहरें, कानें, पहाड़, दरख़्त, फल, चौपाए वग़ैरा जिन से तुम फ़ाएदे ह़ासिल करते हो। **37 :** ज़ाहिरी ने'मतों से दुरुस्तिये आ'ज़ा व ह़वासे ख़म्सा ज़ाहिरा और हुस्न व शक्लो सूरत मुराद हैं और बात़िनी ने'मतों से इल्मे मा'रिफ़त व मलकाते फ़ाज़िला वग़ैरा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा तो इस्लाम व क़ुरआन है और ने'मते बात़िना येह है कि तुम्हारे गुनाहों पर पर्दे डाल दिये, तुम्हारा इफ़्शाए ह़ाल न किया, सज़ा में जल्दी न फ़रमाई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ने'मते ज़ाहिरा दुरुस्तिये आ'ज़ा और हुस्ने सूरत है और ने'मते बात़िना ए'तिक़ादे क़ल्बी। एक क़ौल येह भी है कि ने'मते ज़ाहिरा रिज़्क़ है और बात़िना हुस्ने ख़ुल्क़। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा अह़कामे शरइय्या का हलका होना है और ने'मते बात़िना शफ़ाअ़त। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा इस्लाम का ग़लबा और दुश्मनों पर फ़त्ह़ याब होना है और ने'मते बात़िना मलाएका का इमदाद के लिये आना। एक क़ौल येह है कि ने'मते ज़ाहिरा रसूल का इत्तिबाअ़ है और ने'मते बात़िना इन की मह़ब्बत "رَزَقَنَا اللّٰهُ تَعَالٰی اِتِّبَاعَهٗ وَمَحَبَّتَهٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم" **38 :** तो जो कहेंगे जहल व नादानी होगा और शाने इलाही में इस त़रह़ की जुरअत व लब कुशाई निहायत बे जा व गुमराही है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस व उबय बिन ख़लफ़ वग़ैरा कुफ़्फ़ार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बा वुजूद बे इल्म व जाहिल होने के नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ झगड़े किया करते थे। **39 :** या'नी अपने बाप दादा के त़रीक़े ही पर रहेंगे इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **40 :** जब भी वोह अपने बाप दादा ही की पैरवी किये जाएंगे।

اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ

झुका दे[41] और हो नेकूकार तो बेशक उस ने मज़्बूत़ गिरह थामी और **अल्लाह** ही की त़रफ़ है सब

الْاُمُوْرِ ﴿۲۲﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ

कामों की इन्तिहा और जो कुफ़्र करे तो तुम[42] उस के कुफ़्र से ग़म न खाओ उन्हें हमारी ही त़रफ़ फिरना है हम उन्हें बता देंगे

بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۳﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ

जो करते थे[43] बेशक **अल्लाह** दिलों की बात जानता है हम उन्हें कुछ बरत्ने देंगे[44] फिर

نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿۲۴﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ

उन्हें बेबस कर के सख़्त अ़ज़ाब की त़रफ़ ले जाएंगे[45] और अगर तुम उन से पूछो किस ने बनाए आस्मान और

الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾

ज़मीन तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां **अल्लाह** को[46] बल्कि उन में अक्सर जानते नहीं

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ اَنَّ

अल्लाह ही का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[47] बेशक **अल्लाह** ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा और अगर

مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ

ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब क़लमें हो जाएं और समुन्दर उस की सियाही हो उस के पीछे सात

اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۷﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا

समुन्दर और[48] तो **अल्लाह** की बातें ख़त्म न होंगी[49] बेशक **अल्लाह** इ़ज़्ज़तो ह़िक्मत वाला है तुम सब का पैदा करना और

41 : दीन ख़ालिस उस के लिये क़बूल करे, उस की इ़बादत में मश्ग़ूल हो, अपने काम उस पर तफ़्वीज़ करे, उसी पर भरोसा रखे **42 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **43 :** या'नी हम उन्हें उन के आ'माल की सज़ा देंगे। **44 :** या'नी थोड़ी मोहलत देंगे कि वोह दुन्या के मज़े उठाएं **45 :** आख़िरत में और वोह दोज़ख़ का अ़ज़ाब है जिस से वोह रिहाई न पाएंगे। **46 :** येह उन के इक़रार पर उन्हें इल्ज़ाम देना है कि जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये वोह **अल्लाह** वाह़िद لَاشَرِيْكَ لَهٗ है तो वाजिब हुवा कि उस की ह़म्द की जाए। उस का शुक्र अदा किया जाए और उस के सिवा किसी और की इ़बादत न की जाए। **47 :** सब उस की मम्लूक, मख़्लूक़ और बन्दे हैं तो उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इ़बादत नहीं। **48 :** और सारी ख़ल्क़ **अल्लाह** तआ़ला के कलिमात को लिखे और वोह तमाम क़लम और उन तमाम समुन्दरों की सियाही ख़त्म हो जाए। **49 :** क्यूं कि मा'लूमाते इलाहिय्यह ग़ैर मुतनाही हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ लाए तो यहूद के उ़लमा व अह़बार ने आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहा कि हम ने सुना है कि आप फ़रमाते हैं "وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا" या'नी तुम्हें थोड़ा इल्म दिया गया तो इस से आप की मुराद हम लोग हैं या सिर्फ़ अपनी क़ौम ? फ़रमाया : सब मुराद हैं। उन्हों ने कहा : क्या आप की किताब में येह नहीं है कि हमें तौरैत दी गई है, इस में हर शै का इ़ल्म है। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया कि हर शै का इ़ल्म भी इ़ल्मे इलाही के ह़ुज़ूर क़लील है और तुम्हें तो **अल्लाह** तआ़ला ने इतना इ़ल्म दिया है कि उस पर अ़मल करो तो नफ़्अ़ पाओ। उन्हों ने कहा : आप कैसे येह ख़याल फ़रमाते हैं आप का क़ौल तो येह है कि जिसे ह़िक्मत दी गई उसे ख़ैरे कसीर दी गई तो इ़ल्मे क़लील और ख़ैरे कसीर कैसे जम्अ़ हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस तक़्दीर पर येह आयत मदनी होगी। एक क़ौल येह भी है कि यहूद ने क़ुरैश

www.dawateislami.net

بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

क़ियामत में उठाना ऐसा ही है जैसा एक जान का[50] बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है ऐ सुनने वाले क्या तू ने न देखा कि **अल्लाह**

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ

रात लाता है दिन के हिस्से में और दिन करता है रात के हिस्से में[51] और उस ने सूरज और चांद

الْقَمَرَ ؗ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿۲۹﴾

काम में लगाए[52] हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द तक चलता है[53] और येह कि **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ

येह इस लिये कि **अल्लाह** ही ह़क़ है[54] और उस के सिवा जिन को पूजते हैं सब बाति़ल हैं[55] और इस लिये कि

اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿۳۰﴾ ع اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ ع ۳

अल्लाह ही बुलन्द बड़ाई वाला है क्या तू ने न देखा कि कश्ती दरिया में चलती है **अल्लाह** के फ़ज़्ल से[56]

اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا

ताकि तुम्हें वोह अपनी[57] कुछ निशानियां दिखाए बेशक इस में निशानियां हैं हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार को[58] और जब

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ

उन पर[59] आ पड़ती है कोई मौज पहाड़ों की त़रह तो **अल्लाह** को पुकारते हैं निरे उसी पर अ़क़ीदा रखते हुए[60] फिर जब उन्हें ख़ुश्की

اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

की त़रफ़ बचा लाता है तो उन में कोई ए'तिदाल पर रहता है[61] और हमारी आयतों का इन्कार न करेगा मगर हर बड़ा बेवफ़ा नाशुक्रा

से कहा था कि मक्के में जा कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस त़रह़ का कलाम करें। एक क़ौल येह है कि मुश्रिकीन ने येह कहा था कि क़ुरआन और जो कुछ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم लाते हैं येह अ़न्क़रीब तमाम हो जाएगा फिर क़िस्सा ख़त्म। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **50 :** **अल्लाह** पर कुछ दुश्वार नहीं, उस की क़ुदरत येह है कि एक कुन से सब को पैदा कर दे। **51 :** या'नी एक को घटा कर दूसरे को बढ़ा कर और जो वक़्त एक में से घटाता है दूसरे में बढ़ा देता है। **52 :** बन्दों के नफ़्अ़ के लिये। **53 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक या अपने अपने अवक़ाते मुअ़य्यना तक, सूरज आख़िरे साल तक और चांद आख़िरे माह तक। **54 :** वोही इन अश्याए मज़्कूरा पर क़ादिर है तो वोही मुस्तह़िक़्के इबादत है। **55 :** फ़ना होने वाले उन में से कोई मुस्तह़िक़्के इबादत नहीं हो सकता। **56 :** उस की रह़मत और उस के एह़सान से **57 :** अ़जाइबे क़ुदरत की **58 :** जो बलाओं पर सब्र करे और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों का शुक्र गुज़ार हो, सब्रो शुक्र येह दोनों सिफ़तें मोमिन की हैं। **59 :** या'नी कुफ़्फ़ार पर **60 :** और उस के ह़ुज़ूर तज़र्रोअ़ और ज़ारी करते हैं और उसी से दुआ़ व इल्तिजा, उस वक़्त मा सिवा को भूल जाते हैं **61 :** अपने ईमान व इख़्लास पर क़ाइम रहता है, कुफ़्र की त़रफ़ नहीं लौटता। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत इक्रिमा बिन अबी जहल के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिस साल मक्कए मुकर्रमा की फ़त्ह़ हुई तो वोह समुन्दर की त़रफ़ भाग गए, वहां बादे मुख़ालिफ़ ने घेरा और ख़त़रे में पड़ गए तो इक्रिमा ने कहा कि अगर **अल्लाह** तआ़ला हमें इस ख़त़रे से नजात दे तो मैं ज़रूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर हाथ में हाथ दे दूंगा या'नी इत़ाअ़त करूंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने करम किया, हवा ठहर गई और इक्रिमा मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ आ गए और इस्लाम लाए और बड़ा मुख़्लिसाना इस्लाम लाए और बा'ज़ उन में ऐसे

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَ اخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫

ऐ लोगो[62] अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा

وَ لَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا

और न कोई कामी बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़्अ़ दे[63] बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है[64] तो हरगिज़

تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٙ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٣٣ اِنَّ اللّٰهَ

तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी[65] और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के हिल्म पर धोका न दे वोह बड़ा फ़रेबी[66] बेशक **अल्लाह**

عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَ

के पास है क़ियामत का इ़ल्म[67] और उतारता है मींह और जानता है जो कुछ माओं के पेट में है और

مَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

कोई जान नहीं जानती कि कल क्या कमाएगी और कोई जान नहीं जानती कि किस ज़मीन में

تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝٣٤ ع

मरेगी बेशक **अल्लाह** जानने वाला बताने वाला है[68]

ع ١٣

थे जिन्हों ने अ़हद वफ़ा न किया, उन की निस्बत अगले जुम्ले में इर्शाद होता है। **62 :** या'नी ऐ अहले मक्का ! **63 :** रोज़े क़ियामत हर इन्सान नफ़्सी नफ़्सी कहता होगा और बाप बेटे के और बेटा बाप के काम न आ सकेगा, न काफ़िरों की मुसल्मान औलाद उन्हें फ़ाएदा पहुंचा सकेगी न मुस्लमान मां बाप काफ़िर औलाद को। **64 :** ऐसा दिन ज़रूर आना और बअ़्स व हिसाब व जज़ा का वा'दा ज़रूर पूरा होना है **65 :** जिस की तमाम ने'मतें और लज़्ज़तें फ़ानी, कि इन के शेफ़्ता हो कर ने'मते ईमान से महरूम रह जाओ **66 :** या'नी शैतान दूरो दराज़ की उम्मीदों में डाल कर मा'सियतों में मुब्तला न कर दे। **67 शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ारिस बिन अ़म्र के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया था और येह कहा था कि मैं ने खेती बोई है ख़बर दीजिये मींह कब आएगा और मेरी औ़रत हामिला है मुझे बताइये कि उस के पेट में क्या है लड़का या लड़की ? येह तो मुझे मा'लूम है कि कल मैं ने क्या किया, येह मुझे बताइये कि आयिन्दा कल को क्या करूंगा ? येह भी जानता हूं कि मैं कहां पैदा हुवा, मुझे येह बताइये कि कहां मरूंगा ? इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **68 :** जिस को चाहे अपने औलिया और अपने मह़बूबों में से उन्हें ख़बरदार करे। इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इल्म की ख़ुसूसिय्यत **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के साथ बयान फ़रमाई गई उन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इर्शाद हुवा ''عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ'' ग़रज़ येह कि बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के बताए इन चीज़ों का इल्म किसी को नहीं और **अल्लाह** तआ़ला अपने महबूबों में से जिसे चाहे बताए और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर ख़ुद उस ने सूरए जिन्न में दी है। ख़ुलासा येह कि इल्मे ग़ैब **अल्लाह** तआ़ला के साथ खास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इल्म **अल्लाह** तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीक़े मो'जिज़ा व करामत अ़ता होता है, येह इस इख़्तिसास के मुनाफ़ी नहीं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल को क्या करे और कहां मरेगा इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने दी हैं और क़ुरआनो ह़दीस से साबित हैं। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते मरयम को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो उन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि उन ह़म्लों में क्या है और उन ह़ज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्तिलाएं दी थीं और उन सब का जानना क़ुरआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त्अ़न येही हैं कि बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के बताए कोई नहीं जानता। इस के येह मा'ना लेना कि **अल्लाह** तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता मह़ज़ बात़िल और सदहा आयात व अहादीस के ख़िलाफ़ है। (خازن، بیضاوی، احمدی، روح البیان وغیرہ)

www.dawateislami.net

اٰیاتها ٣٠ ٣٢ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ ٧٥ رکوعاتها ٣

सूरए सज्दह मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِیْلُ الْكِتٰبِ لَا رَیْبَ فِیْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٢﴾ اَمْ

किताब का उतारना[2] बेशक परवर्दगारे आ़लम की त़रफ़ से है क्या

یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ

कहते हैं[3] उन की बनाई हुई है[4] बल्कि वोही ह़क़ है तुम्हारे रब की त़रफ़ से कि तुम डराओ ऐसे लोगों को जिन के पास

مِّنْ نَّذِیْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[5] इस उम्मीद पर कि वोह राह पाएं अल्लाह है जिस ने आस्मान

وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا

और ज़मीन और जो कुछ इन के बीच में है छ[6] दिन में बनाए फिर अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया[6] उस से

لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا شَفِیْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ یُدَبِّرُ

छूट कर (ला तअ़ल्लुक़ हो कर) तुम्हारा कोई ह़िमायती न सिफ़ारिशी[7] तो क्या तुम ध्यान नहीं करते काम की तदबीर

الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ یَعْرُجُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ

फ़रमाता है आस्मान से ज़मीन तक[8] फिर उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा[9] उस दिन कि जिस की मिक़्दार

اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِیْزُ

हज़ार बरस है तुम्हारी गिनती में[10] येह[11] है हर निहां और इयां का जानने वाला इ़ज़्ज़तो

1 : सूरए सज्दह मक्किय्या है सिवा तीन आयतों के जो ''اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا'' से शुरूअ़ होती है। इस सूरत में तीस आयतें और तीन सो अस्सी कलिमे और एक हज़ार पांच सो अठ्ठारह ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने करीम का मो'जिज़ा कर के इस त़रह़ कि इस के मिस्ल एक सूरत या छोटी सी इ़बारत बनाने से तमाम फ़ुसह़ा व बुलग़ा आ़जिज़ रह गए। **3 :** मुश्रिकीन कि येह किताबे मुक़द्दस **4 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की **5 :** ऐसे लोगों से मुराद ज़मानए फ़ित्रत के लोग हैं, वोह ज़माना कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द से सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत तक था कि उस ज़माने में अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से कोई रसूल नहीं आया। **6 :** जैसा इस्तिवा कि उस की शान के लाइक़ है। **7 :** या'नी ऐ गुरौहे कुफ़्फ़ार जब तुम अल्लाह तआ़ला की राहे रिज़ा इख़्तियार न करो और ईमान न लाओ तो न तुम्हें कोई मददगार मिलेगा जो तुम्हारी मदद कर सके न कोई शफ़ीअ़ जो तुम्हारी शफ़ाअ़त करे। **8 :** या'नी दुन्या के क़ियामत तक होने वाले कामों की अपने हुक्म व अम्र और अपने क़ज़ा व क़दर से। **9 :** अम्र व तदबीर, फ़नाए दुन्या के बा'द। **10 :** या'नी अय्यामे दुन्या के ह़िसाब से और वोह दिन रोज़े क़ियामत है, रोज़े क़ियामत की दराज़ी बा'ज़ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस के बराबर होगी और बा'ज़ के लिये पचास हज़ार

www.dawateislami.net

الرَّحِيْمُ ۙ﴿۶﴾ الَّذِيْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ

रह़मत वाला वोह जिस ने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई[12] और पैदाइशे इन्सान की इब्तिदा

طِيْنٍ ۚ﴿۷﴾ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۚ﴿۸﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ

मिट्टी से फ़रमाई[13] फिर उस की नस्ल रखी एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासे से[14] फिर उसे ठीक किया और

نَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ

उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी[15] और तुम्हें कान और आंखें और दिल अ़त़ा फ़रमाए[16]

قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۹﴾ وَقَالُوْۤا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ

क्या ही थोड़ा ह़क़ मानते हो और बोले[17] क्या जब हम मिट्टी में मिल जाएंगे[18] क्या फिर

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۰﴾ قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ

नए बनेंगे बल्कि वोह अपने रब के हुज़ूर ह़ाज़िरी से मुन्किर हैं[19] तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का

ع ۱۴ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ ع وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ

फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है[20] फिर अपने रब की त़रफ़ वापस जाओगे[21] और कहीं तुम देखो जब

الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا

मुजरिम[22] अपने रब के पास सर नीचे डाले होंगे[23] ऐ हमारे रब अब हम ने देखा[24] और सुना[25]

فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ

हमें फिर भेज कि नेक काम करें हम को यक़ीन आ गया[26] और अगर हम चाहते हर जान को उस की हिदायत

बरस के बराबर जैसे कि सूरए मआ़रिज में है ''تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ'' और मोमिन पर येह दिन एक नमाज़े फ़र्ज़ के वक़्त से भी हलका होगा जो दुन्या में पढ़ता था जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। 11 : ख़ालिक़े मुदब्बिर جَلَّ جَلَالُهٗ 12 : ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत बनाई, हर जानदार को वोह सूरत दी जो उस के लिये बेहतर है और उस को ऐसे आ'ज़ा अ़त़ा फ़रमाए जो उस के मआ़श के लिये मुनासिब हैं। 13 : ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से बना कर। 14 : या'नी नुत़्फ़े से 15 : और उस को बे ह़िस बेजान होने के बा'द ह़स्सास और जानदार किया 16 : ताकि तुम सुनो और देखो और समझो। 17 : मुन्किरीने बअ़्स 18 : और मिट्टी हो जाएंगे और हमारे अज्ज़ा मिट्टी से मुमताज़ न रहेंगे 19 : या'नी मौत के बा'द उठने और ज़िन्दा किये जाने का इन्कार कर के वोह उस इन्तिहा तक पहुंचे कि आ़क़िबत (आख़िरत) के तमाम उमूर के मुन्किर हैं ह़त्ता कि रब के हुज़ूर ह़ाज़िर होने के भी। 20 : उस फ़िरिश्ते का नाम इज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام है और वोह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से रूहें क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं, अपने काम में कुछ ग़फ़्लत नहीं करते, जिस का वक़्त आ जाता है बे दरंग उस की रूह़ क़ब्ज़ कर लेते हैं। मरवी है कि मलकुल मौत के लिये दुन्या मिस्ल कफ़े दस्त (हथेली की मानिन्द) कर दी गई है तो वोह मशारिक़ व मग़ारिब की मख़्लूक़ की रूहें बे मशक़्क़त उठा लेते हैं और रह़मत व अ़ज़ाब के बहुत फ़िरिश्ते उन के मा तह़त हैं। 21 : और ह़िसाब व जज़ा के लिये ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। 22 : या'नी कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन 23 : अपने अफ़्आ़ल व किरदार से शरमिन्दा व नादिम हो कर और अ़र्ज़ करते होंगे 24 : मरने के बा'द उठने को और तेरे वा'दए वईद के सिद्क़ को जिन के हम दुन्या में मुन्किर थे। 25 : तुझ से तेरे रसूलों की सच्चाई को तो अब दुन्या में 26 : और अब हम ईमान ले आए। लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना उन्हें कुछ काम न देगा।

هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

अ़ता फ़रमाते[27] मगर मेरी बात क़रार पा चुकी कि ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा उन जिन्नों और आदमियों

اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۳﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَ

सब से[28] अब चखो बदला उस का कि तुम अपने इस दिन की हाज़िरी भूले थे[29] हम ने तुम्हें छोड़ दिया[30]

ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا

अब हमेशा का अ़ज़ाब चखो अपने किये का बदला हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا

कि जब वोह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सज्दे में गिर जाते हैं[31] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और

يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۱۵﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ السجدة ٩

तकब्बुर नहीं करते उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से[32] और अपने रब को पुकारते हैं

خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ

डरते और उम्मीद करते[33] और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक

لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا

उन के लिये छुपा रखी है[34] सिला उन के कामों का[35] तो क्या जो ईमान वाला है

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿۱۸﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وقف غفران

वोह उस जैसा हो जाएगा जो बे हुक्म है[36] येह बराबर नहीं जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

27 : और उस पर ऐसा लुत्फ़ करते कि अगर वोह उस को इख़्तियार करता तो राहयाब होता, लेकिन हम ने ऐसा न किया क्यूं कि हम काफ़िरों को जानते थे कि वोह कुफ़्र ही इख़्तियार करेंगे। **28 :** जिन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और जब वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन से कहेंगे **29 :** और दुन्या में ईमान न लाए थे। **30 :** अ़ज़ाब में, अब तुम्हारी त़रफ़ इल्तिफ़ात न होगा। **31 :** तवाज़ोअ़ और ख़ुशूअ़ से और ने'मते इस्लाम पर शुक्र गुज़ारी के लिये। **32 :** या'नी ख़्वाबे इस्तिराहत के बिस्तरों से उठते हैं और अपने राहतो आराम को छोड़ते हैं **33 :** या'नी उस के अ़ज़ाब से डरते हैं और उस की रह़मत की उम्मीद करते हैं, येह तहज्जुद अदा करने वालों की ह़ालत का बयान है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह आयत हम अन्सारियों के ह़क़ में नाज़िल हुई कि हम मग़रिब पढ़ कर अपनी क़ियाम गाहों को वापस न आते थे जब तक कि रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के साथ नमाज़े इ़शा न पढ़ लेते। **34 :** जिस से वोह राह़तें पाएंगे और उन की आंखें ठन्डी होंगी **35 :** या'नी उन त़ाअ़तों का जो उन्हों ने दुन्या में अदा कीं **36 :** या'नी काफ़िर है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم से वलीद बिन उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ किसी बात में झगड़ रहा था। दौराने गुफ़्त्गू कहने लगा ख़ामोश हो जाओ, तुम लड़के हो मैं बूढ़ा हूं, मैं बहुत ज़बान दराज़ हूं, मेरी नोके सिनान तुम से ज़ियादा तेज़ है, मैं तुम से ज़ियादा बहादुर हूं, मैं बड़ा जथ्थेदार हूं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم ने फ़रमाया : चुप ! तू फ़ासिक़ है। मुराद येह थी कि जिन बातों पर तू नाज़ करता है इन्सान के लिये उन में से कोई क़ाबिले मद्ह़ नहीं, इन्सान का फ़ज़्ल व शरफ़ ईमान व तक़्वा में है, जिसे येह दौलत नसीब नहीं वोह इन्तिहा का रज़ील है, काफ़िर मोमिन

فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के कामों के सिले में मेहमान दारी[37] रहे वोह जो बे हुक्म हैं[38]

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَ قِيْلَ

उन का ठिकाना आग है जब कभी उस में से निकलना चाहेंगे फिर उसी में फेर दिये जाएंगे और उन से फ़रमाया

لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَ لَنُذِيْقَنَّهُمْ

जाएगा चखो उस आग का अ़ज़ाब जिसे तुम झुटलाते थे और ज़रूर हम उन्हें चखाएंगे

مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ

कुछ नज़्दीक का अ़ज़ाब[39] उस बड़े अ़ज़ाब से पहले[40] जिसे देखने वाला उम्मीद करे कि अभी बाज़ आएंगे और

مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ

उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से नसीहत की गई फिर उस ने उन से मुंह फेर लिया[41] बेशक हम मुजरिमों से

ع ۲ ۱۵ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ

बदला लेने वाले हैं और बेशक हम ने मूसा को किताब[42] अ़ता फ़रमाई तो तुम उस के मिलने में शक न करो[43]

وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۳﴾ وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ

और हम ने उसे[44] बनी इसराईल के लिये हिदायत किया और हम ने उन में से[45] कुछ इमाम बनाए कि हमारे हुक्म

بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ۫ وَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ

से बताते[46] जब कि उन्हों ने सब्र किया[47] और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन लाते थे बेशक तुम्हारा रब

के बराबर नहीं हो सकता। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की तस्दीक़ में येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **37 :** या'नी मोमिनीने सालिह़ीन की जन्नते मावा में इ़ज़्ज़तो इकराम के साथ मेहमान दारी की जाएगी। **38 :** ना फ़रमान काफ़िर हैं **39 :** दुन्या ही में क़त्ल और गिरिफ़्तारी और क़ह़त़ व अमराज़ वग़ैरा में मुब्तला कर के। चुनान्चे ऐसा ही पेश आया कि ह़ुज़ूर की हिजरत से क़ब्ल क़ुरैश अमराज़ व मसाइब में गिरिफ़्तार हुए और बा'दे हिजरत बद्र में मक़्तूल हुए गिरिफ़्तार हुए और सात बरस क़ह़त़ की ऐसी सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे कि हड्डियां और मुर्दार और कुत्ते तक खा गए। **40 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत से **41 :** और आयात में ग़ौर न किया और उन के वुजूह व इर्शाद से फ़ाएदा न उठाया और ईमान से बहरा अन्दोज़ न हुवा। **42 :** या'नी तौरैत **43 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को किताब के मिलने में, या येह मा'ना हैं कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मिलने और इन से मुलाक़ात होने में शक न करो। चुनान्चे शबे मे'राज ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात हुई, जैसा कि अह़ादीस में वारिद है। **44 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को या तौरैत को **45 :** या'नी बनी इसराईल में से **46 :** लोगों को ख़ुदा की त़ाअ़त और उस की फ़रमां बरदारी और **अल्लाह** तआ़ला के दीन और उस की शरीअ़त का इत्तिबाअ़, तौरैत के अह़काम की ता'मील, और येह इमाम अम्बियाए बनी इसराईल थे या अम्बिया के मुत्तबिईन। **47 :** अपने दीन पर और दुश्मनों की त़रफ़ से पहुंचने वाली मुसीबतों पर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि सब्र का समरा इमामत और पेश्वाई है।

www.dawateislami.net

يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَوَلَمْ

उन में फ़ैसला कर देगा[48] क़ियामत के दिन जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते थे[49] और क्या

يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ

उन्हें[50] इस पर हिदायत न हुई कि हम ने उन से पहले कितनी संगतें[51] हलाक कर दीं कि आज येह उन के घरों में चल फिर रहे हैं[52]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं तो क्या सुनते नहीं[53] और क्या नहीं देखते कि हम पानी भेजते हैं

اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़[54] फिर उस से खेती निकालते हैं कि उस में से उन के चौपाए और वोह ख़ुद खाते हैं[55]

اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾ الثلثة

तो क्या उन्हें सूझता नहीं[56] और कहते हैं येह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो[57]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۲۹﴾

तुम फ़रमाओ फ़ैसले के दिन[58] काफ़िरों को उन का ईमान लाना नफ़्अ़ न देगा और न उन्हें मोहलत मिले[59]

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع ۳ ع ۸ ۱۲

तो उन से मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो[60] बेशक उन्हें भी इन्तिज़ार करना है[61]

---

48 : या'नी अम्बिया में और उन की उम्मतों में या मोमिनीन व मुश्रिकीन में **49 :** उमूरे दीन में से और हक़ व बातिल वालों को जुदा जुदा मुमताज़ कर देगा। **50 :** या'नी अहले मक्का को **51 :** कितनी उम्मतें मिस्ले आ़द, समूद व क़ौमे लूत़ के **52 :** या'नी अहले मक्का जब ब सिल्सिलए तिजारत शाम के सफ़र करते हैं तो उन लोगों के मनाज़िल व बिलाद में गुज़रते हैं और उन की हलाकत के आसार देखते हैं। **53 :** जो इब्रत हासिल करें और पन्द पज़ीर हों। **54 :** जिस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं **55 :** चौपाए भूसा और वोह ख़ुद ग़ल्ला **56 :** कि वोह येह देख कर **अल्लाह** तआ़ला के कमाले क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करें और समझें कि जो क़ादिरे बरहक़ ख़ुश्क ज़मीन से खेती निकालने पर क़ादिर है मुर्दों का ज़िन्दा करना उस की क़ुदरत से क्या बईद। **57 :** मुसल्मान कहा करते थे कि **अल्लाह** तआ़ला हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा और फ़रमां बरदार और ना फ़रमान को उन के ह़स्बे अ़मल जज़ा देगा। इस से उन की मुराद येह थी कि हम पर रह़मत व करम करेगा और कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन को अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। इस पर काफ़िर बतौरे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहते थे कि येह फ़ैसला कब होगा उस का वक़्त कब आएगा ? **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब से इर्शाद फ़रमाता है : **58 :** जब अ़ज़ाबे इलाही नाज़िल होगा **59 :** तौबा व मा'ज़िरत की। फ़ैसले के दिन से या रोज़े क़ियामत मुराद है या रोज़े फ़त्ह़े मक्का या रोज़े बद्र, बर तक़्दीरे अव्वल अगर रोज़े क़ियामत मुराद हो तो ईमान का नाफ़ेअ़ न होना ज़ाहिर है क्यूं कि ईमान वोही मक़्बूल है जो दुन्या में हो और दुन्या से निकलने के बा'द न ईमान मक़्बूल होगा न ईमान लाने के लिये दुन्या में वापस आना मुयस्सर आएगा और अगर फ़ैसले के दिन से रोज़े बद्र या रोज़े फ़त्ह़े मक्का मुराद हो तो मा'ना येह हैं कि जब कि अ़ज़ाब आ जाए और वोह लोग क़त्ल होने लगें तो ह़ालते क़त्ल में उन का ईमान लाना क़बूल न किया जाएगा और न अ़ज़ाब मुअख़्ख़र कर के उन्हें मोहलत दी जाए। चुनान्चे जब मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ हुवा तो क़ौमे बनी किनाना भागी, ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद ने जब उन्हें घेरा और उन्हों ने देखा कि अब क़त्ल सर पर आ गया कोई उम्मीद जां बरी की नहीं तो उन्हों ने इस्लाम का इज़्हार किया, ह़ज़रते ख़ालिद ने क़बूल न फ़रमाया और उन्हें क़त्ल कर दिया। (جمل وغیرہ)
60 : उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होने का। **61 :** बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रोज़े जुमुआ़ नमाज़े फ़ज्र में येह सूरत या'नी सूरए सज्दह और सूरए दहर पढ़ते थे। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि जब तक हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ایاتها ٧٣ ﴿٣٣﴾ سُورَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ ﴿٩٠﴾ رکوعاتها ٩

सूरए अह़्ज़ाब मदनिय्या है, इस में तिहत्तर आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी)[2] अल्लाह का यूं ही ख़ौफ़ रखना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की न सुनना[3] बेशक अल्लाह

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۱﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ

इल्मो ह़िक्मत वाला है और उस की पैरवी रखना जो तुम्हारे रब की त़रफ़ से तुम्हें वह़्य होती है ऐ लोगो अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿۲﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۳﴾ مَا

तुम्हारे काम देख रहा है और ऐ मह़बूब तुम अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह बस (काफ़ी) है काम बनाने वाला

جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِ

अल्लाह ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे[4] और तुम्हारी उन औ़रतों को जिन्हें तुम मां के बराबर

येह सूरत और सूरए "تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ" पढ़ न लेते ख़्वाब (नींद) न फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि सूरए सज्दह अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखती है। (خازن ومدارک) **1 :** सूरए अह़्ज़ाब मदनिय्या है। इस में नव रुकूअ़, तिहत्तर आयतें और एक हज़ार दो सो अस्सी कलिमे और पांच हज़ार सात सो नव्वे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हमारी त़रफ़ से ख़बरें देने वाले, हमारे असरार के अमीन, हमारा ख़िताब हमारे प्यारे बन्दों को पहुंचाने वाले। अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ के साथ ख़िताब फ़रमाया जिस के येह मा'ना हैं जो ज़िक्र किये गए। नामे पाक के साथ या मुह़म्मद ! ज़िक्र फ़रमा कर ख़िताब न किया जैसा कि दूसरे अम्बिया علیہم السلام को ख़िताब फ़रमाया है। इस से मक़्सूद आप की तक्रीम और आप का एह़तिराम और आप की फ़ज़ीलत का ज़ाहिर करना है। (مدارک) **3 शाने नुज़ूल :** अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और इक्रिमा बिन अबी जह्ल और अबुल आ'वर सुलमी जंगे उहुद के बा'द मदीनए त़य्यिबा में आए और मुनाफ़िक़ीन के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल के यहां मुक़ीम हुए। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से गुफ़्तगू के लिये अमान ह़ासिल कर के उन्हों ने येह कहा कि आप लात, उ़ज़्ज़ा, मनात वग़ैरा बुतों को जिन्हें मुश्रिकीन अपना मा'बूद समझते हैं कुछ न फ़रमाइये और येह फ़रमा दीजिये कि इन की शफ़ाअ़त इन के पुजारियों के लिये है और हम लोग आप को और आप के रब को कुछ न कहेंगे। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को उन की येह गुफ़्तगू बहुत ना गवार हुई और मुसल्मानों ने उन के क़त्ल का इरादा किया, सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ने क़त्ल की इजाज़त न दी और फ़रमाया कि मैं इन्हें अमान दे चुका हूं इस लिये क़त्ल न करो, मदीने शरीफ़ से निकाल दो। चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने निकाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई, इस में ख़िताब तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के साथ है और मक़्सूद है आप की उम्मत से फ़रमाना कि जब नबी صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने अमान दी तो तुम उस के पाबन्द रहो और नक़्ज़े अ़ह्द (अ़ह्द तोड़ने) का इरादा न करो और कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन की ख़िलाफ़े शरअ़ बात न मानो। **4 :** कि एक में अल्लाह का ख़ौफ़ हो दूसरे में किसी और का, जब एक ही दिल है तो अल्लाह ही से डरे। **शाने नुज़ूल :** अबू मा'मर हुमैद फ़िह्री की याद दाश्त अच्छी थी जो सुनता था याद कर लेता था। क़ुरैश ने कहा कि इस के दो दिल हैं जभी तो इस का ह़ाफ़िज़ा इतना क़वी है। वोह ख़ुद भी कहता था कि इस के दो दिल हैं और हर एक में ह़ज़रते सय्यिद आ़लम (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) से ज़ियादा दानिश है। जब बद्र में मुश्रिक भागे तो अबू मा'मर इस शान से भागा कि एक जूती हाथ में, एक पाउं में। अबू सुफ़्यान से मुलाक़ात हुई तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : क्या ह़ाल है ? कहा : लोग भाग गए। तो अबू सुफ़्यान ने पूछा : एक जूती हाथ में एक पाउं में क्यूं है ? कहा : इस की मुझे ख़बर नहीं मैं तो येही समझ रहा हूं कि दोनों जूतियां पाउं में हैं। उस वक़्त क़ुरैश को मा'लूम हुवा कि दो दिल होते तो जूती जो हाथ में लिये हुए था भूल न जाता। और एक क़ौल येह भी है कि मुनाफ़िक़ीन सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के लिये

www.dawateislami.net

تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَ مَا جَعَلَ اَدْعِیَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ

कह दो तुम्हारी मां न बनाया[5] और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया[6] येह

قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَقُوْلُ الْحَقَّ وَ هُوَ یَهْدِی السَّبِیْلَ ﴿۴﴾

तुम्हारे अपने मुंह का कहना है[7] और अल्लाह हक़ फ़रमाता है और वोही राह दिखाता है[8]

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآىٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ

उन्हें उन के बाप ही का कह कर पुकारो[9] येह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा ठीक है फिर अगर तुम्हें उन के बाप मा'लूम न हों[10]

فَاِخْوَانُكُمْ فِی الدِّیْنِ وَ مَوَالِیْكُمْ ؕ وَ لَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ فِیْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ

तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और बशरिय्यत में तुम्हारे चचाज़ाद[11] और तुम पर उस में कुछ गुनाह नहीं जो ना दानिस्ता तुम से सादिर

بِهٖ ۙ وَ لٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۵﴾

हुवा[12] हां वोह गुनाह है जो दिल के क़स्द से करो[13] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَ اُولُوا

येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है[14] और उस की बीबियां उन की माएं हैं[15] और रिश्ते

दो दिल बताते और कहते थे कि इन का एक दिल हमारे साथ है और एक अपने अस्हाब के साथ। नीज़ ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कोई अपनी औरत से ज़िहार करता था तो लोग उस ज़िहार को त़लाक़ कहते और उस औरत को उस की मां क़रार देते थे और जब कोई शख़्स किसी को बेटा कह देता तो उस को ह़क़ीक़ी बेटा क़रार दे कर शरीके मीरास ठहराते और उस की ज़ौजा को बेटा कहने वाले के लिये सुल्बी बेटे की बीबी की त़रह़ ह़राम जानते, इन सब के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **5 :** या'नी ज़िहार से औरत मां के मिस्ल ह़राम नहीं हो जाती। **ज़िहार :** मन्कूह़ा को ऐसी औरत से तश्बीह देना जो हमेशा के लिये ह़राम हो और येह तश्बीह ऐसे उ़ज़्व में हो जिस को देखना और छूना जाइज़ नहीं है। मसलन किसी ने अपनी बीबी से येह कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पीठ या पेट के मिस्ल है तो वोह मुज़ाहिर हो गया। **मस्अला :** ज़िहार से निकाह़ बात़िल नहीं होता लेकिन कफ़्फ़ारा अदा करना लाज़िम हो जाता है और कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले औरत से अ़लाह़दा रहना और उस से तमत्तोअ़ न करना लाज़िम है। **मस्अला :** ज़िहार का कफ़्फ़ारा एक गुलाम का आज़ाद करना और येह मुयस्सर न हो तो मुतवातिर दो महीने के **रोज़े** और येह भी न हो सके तो **साठ मिस्कीनों** को खाना खिलाना है। **मस्अला :** कफ़्फ़ारा अदा करने के बा'द औरत से क़ुर्बत और तमत्तोअ़ ह़लाल हो जाता है। (ہدایہ) **6 :** ख़्वाह उन्हें लोग तुम्हारा बेटा कहते हों। **7 :** या'नी बीबी को मां के मिस्ल कहना और ले पालक को बेटा कहना बे ह़क़ीक़त बात है, न बीबी मां हो सकती है न दूसरे का "फ़रज़न्द" अपना बेटा। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श से निकाह़ किया तो यहूद व मुनाफ़िक़ीन ने ज़बाने ता'न खोली और कहा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपने बेटे ज़ैद की बीबी से शादी कर ली। क्यूं कि पहले ह़ज़रते ज़ैनब ज़ैद के निकाह़ में थीं और ह़ज़रते ज़ैद उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़र ख़रीद थे। इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में उन्हें हिबा कर दिया, हुज़ूर ने उन्हें आज़ाद कर दिया तब भी वोह अपने बाप के पास न गए हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहे, हुज़ूर उन पर शफ़्क़त व करम फ़रमाते थे इस लिये लोग उन्हें हुज़ूर का फ़रज़न्द कहने लगे। इस से वोह ह़क़ीक़तन हुज़ूर के बेटे न हो गए और यहूद व मुनाफ़िक़ीन का ता'ना मह़ज़ ग़लत़ और बे जा हुवा। अल्लाह तआ़ला ने यहां उन त़ाइनीन (ता'ना देने वालों) की तक्ज़ीब फ़रमाई और उन्हें झूटा क़रार दिया। **8 :** ह़क़ की। लिहाज़ा ले पालकों को उन के पालने वालों का बेटा न ठहराओ बल्कि **9 :** जिन से वोह पैदा हुए। **10 :** और इस वज्ह से तुम उन्हें उन के बापों की त़रफ़ निस्बत न कर सको **11 :** तो तुम उन्हें भाई कहो और जिस के ले पालक हैं उस का बेटा न कहो। **12 :** मुमानअ़त से पहले। या येह मा'ना हैं कि अगर तुम ने ले पालकों को ख़त़ाअन बे इरादा उन के परवरिश करने वालों का बेटा कह दिया या किसी ग़ैर की औलाद को मह़ज़ ज़बान की सब्क़त से बेटा कहा तो इन सूरतों में गुनाह नहीं। **13 :** मुमानअ़त के बा'द। **14 :** दुन्या व दीन के तमाम उमूर में और नबी का हुक्म उन पर नाफ़िज़ और नबी की

الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ

वाले **अल्लाह** की किताब में एक दूसरे से ज़ियादा क़रीब हैं[16] ब निस्बत और मुसल्मानों और

الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي

मुहाजिरों के[17] मगर येह कि तुम अपने दोस्तों पर कोई एह्सान करो[18] येह किताब

الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۶﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ

में लिखा है[19] और ऐ मह्बूब याद करो जब हम ने नबियों से अह्द लिया[20] और तुम से[21] और

مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ

नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से और हम ने उन से

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

गाढ़ा अ़ह्द लिया ताकि सच्चों से[22] उन के सच का सुवाल करे[23] और उस ने काफ़िरों के लिये दर्दनाक

ع ۸ ۱۷ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ

अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एह्सान अपने ऊपर याद करो[24] जब

جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ كَانَ

तुम पर कुछ लश्कर आए[25] तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए[26] और

ताअ़त वाजिब और नबी के हुक्म के मुक़ाबिल नफ़्स की ख़्वाहिश वाजिबुत्तर्क। या येह मा'ना हैं कि नबी मोमिनीन पर उन की जानों से ज़ियादा राफ़्तो रह्मत और लुत्फ़ो करम फ़रमाते हैं और नाफ़ेअ़ तर हैं। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर मोमिन के लिये दुन्या व आख़िरत में मैं सब से ज़ियादा औला हूं अगर चाहो तो येह आयत पढ़ो ''اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ''। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़िराअत में ''مِنْ اَنْفُسِهِمْ'' के बा'द ''وَهُوَ اَبٌ لَّهُمْ'' भी है। मुजाहिद ने कहा कि तमाम अम्बिया अपनी उम्मत के बाप होते हैं और इसी रिश्ते से मुसल्मान आपस में भाई कहलाते हैं कि वोह अपने नबी की दीनी औलाद हैं। **15 :** ता'ज़ीमे ह़ुरमत में और निकाह़ के हमेशा के लिये ह़राम होने में और इस के इ़लावा दूसरे अह़काम में मिस्ले विरासत और पर्दा वग़ैरा के उन का वोही हुक्म है जो अजनबी औ़रतों का। और इन की बेटियों को मोमिनीन की बहनें और इन के भाइयों और बहनों को मोमिनीन के मामूं ख़ाला न कहा जाएगा। **16 :** तवारुस में **17 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि ''اُولِي الْاَرْحَام'' एक दूसरे के वारिस होते हैं, कोई अजनबी दीनी बिरादरी के ज़रीए़ से वारिस नहीं होता **18 :** इस त़रह़ कि जिस के लिये चाहो कुछ वसिय्यत करो तो वसिय्यत सुलुस माल के क़द्र में तवारुस पर मुक़द्दम की जाएगी। **ख़ुलासा** येह है कि अव्वल माल ज़विल फ़ुरूज़ को दिया जाएगा फिर अ़सबात को फिर नसबी ज़विल फ़ुरूज़ पर रद किया जाएगा फिर ज़विल अरह़ाम को दिया जावेगा फिर मौलल मुवालात को (تفسیر احمدی) **19 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में। **20 :** रिसालत की तब्लीग़ और दीने ह़क़ की दा'वत देने का **21 :** ख़ुसूसिय्यत के साथ। **मस्अला :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ज़िक्र दूसरे अम्बिया पर मुक़द्दम करना उन सब पर आप की अफ़्ज़लिय्यत के इज़्हार के लिये है। **22 :** या'नी अम्बिया से या उन की तस्दीक़ करने वालों से **23 :** या'नी जो उन्हों ने अपनी क़ौम से फ़रमाया और उन्हें तब्लीग़ की वोह दरयाफ़्त फ़रमाए या मोमिनीन से उन की तस्दीक़ का सुवाल करे या येह मा'ना हैं कि अम्बिया को जो उन की उम्मतों ने जवाब दिये वोह दरयाफ़्त फ़रमाए और इस सुवाल से मक़्सूद कुफ़्फ़ार की तज़्लील व तब्कीत है। **24 :** जो उस ने जंगे अह़ज़ाब के दिन फ़रमाया जिस को ग़ज़्वए ख़न्दक़ कहते हैं जो जंगे उहुद से एक साल बा'द था, जब कि मुसल्मानों का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मदीनए त़य्यिबा में मुह़ासरा कर लिया गया था। **25 :** क़ुरैश और ग़त़फ़ान और यहूदे क़ुरैज़ा व नज़ीर के **26 :** या'नी मलाएका के लश्कर।

www.dawateislami.net

اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرًا ۚ﴿۹﴾ اِذۡ جَآءُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ وَمِنۡ اَسۡفَلَ

अल्लाह तुम्हारे काम देखता है[27] जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे

مِنۡكُمۡ وَاِذۡ زَاغَتِ الۡاَبۡصَارُ وَبَلَغَتِ الۡقُلُوۡبُ الۡحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوۡنَ بِاللّٰهِ

से[28] और जब कि ठिटक कर रह गईं निगाहें[29] और दिल गलों के पास आ गए[30] और तुम अल्लाह पर त़रह़ त़रह़ के

الظُّنُوۡنَا ؕ﴿۱۰﴾ هُنَالِكَ ابۡتُلِىَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَزُلۡزِلُوۡا زِلۡزَالًا شَدِيۡدًا ﴿۱۱﴾ وَ

गुमान करने लगे[31] वोह जगह थी कि मुसल्मानों की जांच हुई[32] और ख़ूब सख़्ती से झंझोड़े गए और

ग़ज़्वए अह़ज़ाब का मुख़्तसर बयान : येह ग़ज़्वा शव्वाल 4 या 5 सिने हिजरी में पेश आया। जब यहूदे बनी नज़ीर को जिला वत़न किया गया तो उन के अकाबिर मक्कए मुकर्रमा में क़ुरैश के पास पहुंचे और उन्हें सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जंग की तरग़ीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे यहां तक कि मुसल्मान नेस्तो नाबूद हो जाएं, अबू सुफ़्यान ने इस तह़रीक की बहुत क़द्र की और कहा कि हमें दुन्या में वोह सब से प्यारा है जो मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की अ़दावत में हमारा साथ दे। फिर क़ुरैश ने उन यहूदियों से कहा कि तुम पहली किताब वाले हो बताओ तो हम ह़क़ पर हैं या मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ? यहूद ने कहा तुम्हीं ह़क़ पर हो। इस पर क़ुरैश ख़ुश हुए, इसी पर आयत ''اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ'' नाज़िल हुई। फिर यहूदी क़बाइल ग़त़फ़ान व क़ैस व ग़ीलान वग़ैरा में गए वहां भी येही तह़रीक की वोह सब इन के मुवाफ़िक़ हो गए। इस त़रह़ इन्हों ने जा बजा दौरे किये और अ़रब के क़बीले क़बीले को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ तय्यार कर लिया। जब सब लोग तय्यार हो गए तो क़बीलए ख़ुज़ाआ़ के चन्द लोगों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार की इन ज़बर दस्त तय्यारियों की इत्तिलाअ़ दी। येह इत्तिलाअ़ पाते ही हुज़ूर ने ब मश्वरा ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़न्दक़ खुदवानी शुरूअ़ कर दी, उस ख़न्दक़ में मुसल्मानों के साथ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुद भी काम किया। मुसल्मान ख़न्दक़ तय्यार कर के फ़ारिग़ हुए ही थे कि मुश्रिकीन बारह हज़ार का लश्करे गिरां ले कर इन पर टूट पड़े और मदीनए त़य्यिबा का मुह़ासरा कर लिया। ख़न्दक़ मुसल्मानों के और उन के दरमियान ह़ाइल थी उस को देख कर मुतह़य्यिर हुए और कहने लगे कि येह ऐसी तदबीर है जिस से अ़रब लोग अब तक वाक़िफ़ न थे। अब उन्हों ने मुसल्मानों पर तीर अन्दाज़ी शुरूअ़ की और इस मुह़ासरे को पन्दरह रोज़ या चौबीस रोज़ गुज़रे मुसल्मानों पर ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा और वोह बहुत घबराए और परेशान हुए तो अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और उन पर तेज़ हवा भेजी निहायत सर्द और अंधेरी रात में उस हवा ने उन के ख़ैमे गिरा दिये, त़नाबें तोड़ दीं, खूंटे उखाड़ दिये, हांडियां उलट दीं, आदमी ज़मीन पर गिरने लगे और अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्ते भेज दिये जिन्हों ने कुफ़्फ़ार को लरज़ा दिया, उन के दिलों में दहशत डाल दी, मगर इस जंग में मलाएका ने क़िताल नहीं किया। फिर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हु़ज़ैफ़ा बिन यमान को ख़बर लेने के लिये भेजा, वक़्त निहायत सर्द था येह हथियार लगा कर रवाना हुए। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने रवाना होते वक़्त उन के चेहरे और बदन पर दस्ते मुबारक फेरा जिस से उन पर सरदी असर न कर सकी और येह दुश्मन के लश्कर में पहुंच गए। वहां तेज़ हवा चल रही थी और संगरेज़े उड़ उड़ कर लोगों के लग रहे थे, आंखों में गर्द पड़ रही थी, अ़जब परेशानी का आ़लम था, लश्करे कुफ़्फ़ार के सरदार अबू सुफ़्यान हवा का येह आ़लम देख कर उठे और उन्हों ने क़ुरैश को पुकार कर कहा कि जासूसों से होशियार रहना हर शख़्स अपने बराबर वाले को देख ले। येह ए'लान होने के बा'द हर एक शख़्स ने अपने बराबर वाले को टटोलना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा ने दानाई से अपने दाहने शख़्स का हाथ पकड़ कर पूछा तू कौन है ? उस ने कहा मैं फुलां बिन फुलां हूं। इस के बा'द अबू सुफ़्यान ने कहा : ऐ गुरोहे क़ुरैश तुम ठहरने के मक़ाम पर नहीं हो, घोड़े और ऊंट हलाक हो चुके, बनी क़ुरैज़ा अपने अ़ह्द से फिर गए और हमें उन की त़रफ़ से अन्देशा नाक ख़बरें पहुंची हैं, हवा ने जो ह़ाल किया है वोह तुम देख ही रहे हो, बस अब यहां से कूच कर दो मैं कूच करता हूं। अबू सुफ़्यान येह कह कर अपनी ऊंटनी पर सुवार हो गए और लश्कर में अर्रह़ील अर्रह़ील या'नी कूच कूच का शोर मच गया, हवा हर चीज़ को उलटे डालती थी मगर येह हवा उस लश्कर से बाहर न थी। अब येह लश्कर भाग निकला और सामान का बार कर के ले जाना उस को शाक़ (मुश्किल) हो गया इस लिये कसीर सामान छोड़ गया। (جمل) **27 :** या'नी तुम्हारा ख़न्दक़ खोदना और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में साबित क़दम रहना। **28 :** या'नी वादी की बालाई जानिब मशरिक़ से क़बीलए असद व ग़त़फ़ान के लोग मालिक बिन औ़फ़ नस्री व उ़यैना बिन ह़सन फ़ज़ारी की सरकर्दगी में एक हज़ार की जम्इय्यत ले कर और उन के साथ तुलैह़ा बिन ख़ुवैलिद असदी बनी असद की जम्इय्यत ले कर और हुय्य बिन अख़्त़ब यहूदे बनी क़ुरैज़ा की जम्इय्यत ले कर और वादी की ज़ेरीं जानिब मग़रिब से क़ुरैश और किनाना ब सरकर्दगी अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब। **29 :** और शिद्दते रो'ब व हैबत से ह़ैरत में आ गईं **30 :** ख़ौफ़ व इज़्तिराब इन्तिहा को पहुंच गया **31 :** मुनाफ़िक़ तो येह गुमान करने लगे कि मुसल्मानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा, कुफ़्फ़ार की इतनी बड़ी जम्इय्यत सब को फ़ना कर डालेगी और मुसल्मानों को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से मदद आने और अपने फ़त्ह़ याब होने की उम्मीद थी। **32 :** और उन का सब्र व इख़्लास मिह़क (कसोटिये) इम्तिह़ान पर लाया गया।

اِذْ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ

जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और जिन के दिलों में रोग था[33] हमें अल्लाह व रसूल

رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىٕفَةٌ مِّنْهُمْ یٰۤاَهْلَ یَثْرِبَ لَا

ने वा'दा न दिया था मगर फ़रेब का[34] और जब उन में से एक गुरौह ने कहा[35] ऐ मदीने वालो ![36] यहां तुम्हारे

مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ یَسْتَاْذِنُ فَرِیْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِیَّ یَقُوْلُوْنَ اِنَّ

ठहरने की जगह नहीं[37] तुम घरों को वापस चलो और उन में से एक गुरौह[38] नबी से इज़्न मांगता था येह कह कर कि

معٓ
بُیُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَ مَا هِیَ بِعَوْرَةٍ ۛۚ اِنْ یُّرِیْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ

हमारे घर बे हिफ़ाज़त हैं और वोह बे हिफ़ाज़त न थे वोह तो न चाहते थे मगर भागना और अगर

دُخِلَتْ عَلَیْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا تَلَبَّثُوْا

उन पर फ़ौजें मदीने के अत्राफ़ से आतीं फिर उन से कुफ़्र चाहतीं तो ज़रूर उन का मांगा दे बैठते[39] और इस में देर न

بِهَاۤ اِلَّا یَسِیْرًا ﴿۱۴﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا یُوَلُّوْنَ

करते मगर थोड़ी और बेशक इस से पहले वोह अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि पीठ न

الْاَدْبَارَ ؕ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّنْ یَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ

फेरेंगे और अल्लाह का अ़हद पूछा जाएगा[40] तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम्हें भागना नफ़्अ़ न देगा अगर

فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۱۶﴾ قُلْ مَنْ

मौत या क़त्ल से भागो[41] और जब भी दुन्या न बरत्ने दिये जाओगे मगर थोड़ी[42] तुम फ़रमाओ वोह

ذَا الَّذِیْ یَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ

कौन है जो अल्लाह का हुक्म तुम पर से टाल दे अगर वोह तुम्हारा बुरा चाहे[43] या तुम पर मेहर (रह़्म) फ़रमाना चाहे[44]

33 : या'नी ज़ो'फ़े ए'तिक़ाद **34 :** येह बात मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर ने कुफ़्फ़ार के लश्कर देख कर कही थी कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तो हमें फ़ारस व रूम की फ़त्ह़ का वा'दा देते हैं और ह़ाल येह है कि हम में से किसी की येह मजाल भी नहीं कि अपने डेरे से बाहर निकल सके तो येह वा'दा निरा धोका है। **35 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन के एक गुरौह ने **36 :** येह मक़ूला मुनाफ़िक़ीन का है, उन्हों ने मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहा। **मस्अला :** मुसल्मानों को यसरिब न कहना चाहिये। ह़दीस शरीफ़ में मदीनए त़य्यिबा को यसरिब कहने की मुमानअ़त आई है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ना गवार था कि मदीनए पाक को यसरिब कहा जाए क्यूं कि यसरिब के मा'ना अच्छे नहीं हैं। **37 :** या'नी रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लश्कर में **38 :** या'नी बनी ह़ारिसा व बनी सलमा। **39 :** या'नी इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो जाते **40 :** या'नी आख़िरत में अल्लाह तआ़ला इस को दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि क्यूं वफ़ा नहीं किया गया। **41 :** क्यूं कि जो मुक़द्दर है वोह ज़रूर हो कर रहेगा। **42 :** या'नी अगर वक़्त नहीं आया है तो भी भाग कर थोड़े ही दिन जितनी उ़म्र बाक़ी है उतने ही दुन्या को बरतोगे और येह एक क़लील मुद्दत है। **43 :** या'नी उस को तुम्हारा क़त्ल व हलाक मन्ज़ूर हो तो उस को कोई दफ़्अ़ नहीं कर सकता। **44 :** अम्नो आ़फ़िय्यत

www.dawateislami.net

وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ

और वोह अल्लाह के सिवा कोई हामी न पाएंगे न मददगार बेशक अल्लाह जानता है

الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ

तुम्हारे उन को जो औरों को जिहाद से रोकते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं हमारी त़रफ़ चले आओ[45] और लड़ाई में

الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ

नहीं आते मगर थोड़े[46] तुम्हारी मदद में गई (कोताही) करते हैं फिर जब डर का वक़्त आए तुम उन्हें

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا

देखोगे तुम्हारी त़रफ़ यूं नज़र करते हैं कि उन की आंखें घूम रही हैं जैसे किसी पर मौत छाई हो फिर जब

ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ

डर का वक़्त निकल जाए[47] तुम्हें त़ा'ने देने लगें तेज़ ज़बानों से माले ग़नीमत के लालच में[48] येह लोग

لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

ईमान लाए ही नहीं[49] तो अल्लाह ने इन के अ़मल अकारत कर दिये[50] और येह अल्लाह को आसान है

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا

वोह समझ रहे हैं कि काफ़िरों के लश्कर अभी न गए[51] और अगर लश्कर दोबारा आएं तो उन की[52] ख़्वाहिश होगी

لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

कि किसी त़रह गाउं में निकल कर[53] तुम्हारी ख़बरें पूछते[54] और अगर वोह तुम में रहते

अ़त़ा फ़रमा कर। **45 :** और सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को छोड़ दो, इन के साथ जिहाद में न रहो, इस में जान का ख़त़रा है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन के पास यहूद ने पयाम भेजा था कि तुम क्यूं अपनी जानें अबू सुफ़्यान के हाथों से हलाक कराना चाहते हो, उस के लश्करी इस मरतबा अगर तुम्हें पा गए तो तुम में से किसी को बाक़ी न छोड़ेंगे, हमें तुम्हारा अन्देशा है, तुम हमारे भाई और हमसाए हो, हमारे पास आ जाओ, येह ख़बर पा कर अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उस के साथी मोमिनीन को अबू सुफ़्यान और उस के साथियों से डरा कर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का साथ देने से रोकने लगे और इस में उन्हों ने बहुत कोशिश की लेकिन जिस क़दर उन्हों ने कोशिश की मोमिनीन का सबाते इस्तिक़्लाल और बढ़ता गया। **46 :** रियाकारी और दिखावट के लिये। **47 :** और अम्नो ग़नीमत ह़ासिल हो **48 :** और येह कहें हमें ज़ियादा ह़िस्सा दो हमारी ही वज्ह से तुम ग़ालिब हुए हो। **49 :** ह़क़ीक़त में। अगर्चे इन्हों ने ज़बानों से ईमान का इज़्हार किया **50 :** या'नी चूंकि ह़क़ीक़त में वोह मोमिन न थे इस लिये उन के तमाम ज़ाहिरी अ़मल जिहाद वग़ैरा सब बात़िल कर दिये। **51 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन अपनी बुज़दिली व ना मर्दी से अभी तक येह समझ रहे हैं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश व ग़त़फ़ान व यहूद वग़ैरा अभी तक मैदान छोड़ कर भागे नहीं हैं अगर्चे ह़क़ीक़ते ह़ाल येह है कि वोह भाग चुके। **52 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन की अपनी ना मर्दी के बाइ़स येही आरज़ू और **53 :** मदीनए त़य्यिबा के आने जाने वालों से **54 :** कि मुसल्मानों का क्या अन्जाम हुवा कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में उन की क्या ह़ालत रही।

www.dawateislami.net

ع ۲ | ۱۲ | ۱۸

مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۲۰﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

जब भी न लड़ते मगर थोड़े[55] बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है[56]

لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِیْرًا ﴿۲۱﴾ وَ لَمَّا رَاَ

उस के लिये कि अल्लाह और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और अल्लाह को बहुत याद करे[57] और जब मुसल्मानों

الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ

ने काफ़िरों के लश्कर देखे बोले येह है वोह जो हमें वा'दा दिया था अल्लाह और उस के रसूल ने[58] और सच फ़रमाया

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ٘ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِیْمَانًا وَّ تَسْلِیْمًا ﴿۲۲﴾ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ

अल्लाह और उस के रसूल ने[59] और इस से उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और अल्लाह की रिज़ा पर राज़ी होना मुसल्मानों में कुछ

رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ

वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था[60] तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका[61] और कोई

مَّنْ یَّنْتَظِرُ ۖ٘ وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا ﴿۲۳﴾ لِّیَجْزِیَ اللّٰهُ الصّٰدِقِیْنَ بِصِدْقِهِمْ

राह देख रहा है[62] और वोह ज़रा न बदले[63] ताकि अल्लाह सच्चों को उन के सच का सिला दे

وَ یُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِیْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ یَتُوْبَ عَلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا

और मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब करे अगर चाहे या उन्हें तौबा दे बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

55 : रियाकारी और उ़ज़्र रखने के लिये ताकि येह कहने का मौक़अ़ मिल जाए कि हम भी तो तुम्हारे साथ जंग में शरीक थे। **56 :** इन की अच्छी तरह इत्तिबाअ़ करो और दीने इलाही की मदद करो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का साथ न छोड़ो और मसाइब पर सब्र करो और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलो येह बेहतर है। **57 :** हर मौक़अ़ पर उस का ज़िक्र करे, ख़ुशी में भी रन्ज में भी, तंगी में भी फ़राख़ी में भी। **58 :** कि तुम्हें शिद्दत व बला पहुंचेगी और तुम आज़्माइश में डाले जाओगे और पहलों की तरह तुम पर सख़्तियां आएंगी और लश्कर जम्अ़ हो हो कर तुम पर टूटेंगे और अन्जामे कार तुम ग़ालिब होगे और तुम्हारी मदद फ़रमाई जाएगी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है ''اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَ لَمَّا یَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ'' الاٰیة और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्हाब से फ़रमाया कि पिछली नव या दस रातों में लश्कर तुम्हारी त़रफ़ आने वाले हैं। जब उन्हों ने देखा कि इस मीआ़द पर लश्कर आ गए तो कहा : येह है वोह जो हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वा'दा दिया था। **59 :** या'नी जो उस के वा'दे हैं सब सच्चे हैं, सब यक़ीनन वाक़ेअ़ होंगे, हमारी मदद भी होगी, हमें ग़लबा भी दिया जाएगा और मक्कए मुकर्रमा और रूम व फ़ारस भी फ़त्ह होंगे। **60 :** हज़रते उ़स्माने ग़नी और हज़रते त़ल्हा और हज़रते सईद बिन ज़ैद और हज़रते हम्ज़ा और हज़रते मुस्अ़ब वग़ैरहुम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने नज़्र की थी कि वोह जब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद का मौक़अ़ पाएंगे तो साबित रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं। उन की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा कि उन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिया। **61 :** जिहाद पर साबित रहा यहां तक कि शहीद हो गया जैसे कि हज़रते हम्ज़ा व मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا। **62 :** और शहादत का इन्तिज़ार कर रहा है जैसे कि हज़रते उ़स्मान और हज़रते त़ल्हा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا। **63 :** अपने अ़हद पर वैसे ही साबित क़दम रहे शहीद हो जाने वाले भी और शहादत का इन्तिज़ार करने वाले भी, उन मुनाफ़िक़ीन और मरीज़ुल क़ल्ब लोगों पर ता'रीज़ है जो अपने अ़हद पर क़ाइम न रहे।

www.dawateislami.net

رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾ وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى

मेहरबान है और अल्लाह ने काफ़िरों को[64] उन के दिलों की जलन के साथ पलटाया कि कुछ भला न पाया[65] और अल्लाह ने

اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ

मुसल्मानों को लड़ाई की किफ़ायत दी[66] और अल्लाह ज़बर दस्त इ़ज़्ज़त वाला है और जिन अहले किताब

ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

ने उन की मदद की थी[67] उन्हें उन के क़ल्ओं से उतारा[68] और उन के दिलों में

الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ

रो'ब डाला उन में एक गुरौह को तुम क़त्ल करते हो[69] और एक गुरौह को क़ैद[70] और हम ने तुम्हारे हाथ लगाए उन की ज़मीन और

دِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

उन के मकान और उन के माल[71] और वोह ज़मीन जिस पर तुम ने अभी क़दम नहीं रखा है[72] और अल्लाह हर चीज़ पर

قَدِيْرًا ﴿۲۷﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ ع ٣ ٧ ١٩

क़ादिर है ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दे अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और

64 : या'नी कुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरा के लश्करों को जिन का ऊपर ज़िक्र हो चुका है। 65 : नाकामो ना मुराद वापस हुए। 66 : कि दुश्मन फ़िरिश्तों की तक्बीरों और हवा की सख़्तियों से भाग निकले। 67 : या'नी बनी क़ुरैज़ा ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मुक़ाबिल कुरैश व ग़तफ़ान वग़ैरा अह़ज़ाब की मदद की थी 68 : इस में ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा का बयान है, येह आख़िरे ज़ी क़ादा 4 सि.हि. या 5 सि.हि. में हुवा जब ग़ज़्वए ख़न्दक़ में शब को मुख़ालिफ़ीन के लश्कर भाग गए जिस का ऊपर की आयात में ज़िक्र हो चुका है, उस शब की सुब्ह़ को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और सहाबए किराम मदीनए त़य्यिबा में तशरीफ़ लाए और हथियार उतार दिये, उस रोज़ ज़ोहर के वक़्त जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का सरे मुबारक धोया जा रहा था जिब्रीले अमीन ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ने हथियार रख दिये फ़िरिश्तों ने चालीस रोज़ से हथियार नहीं रखे हैं, अल्लाह तआ़ला आप को बनी क़ुरैज़ा की त़रफ़ जाने का हुक्म फ़रमाता है। हुज़ूर ने हुक्म फ़रमाया कि निदा कर दी जाए कि जो फ़रमां बरदार हो वोह अ़स्र की नमाज़ न पढ़े मगर बनी क़ुरैज़ा में जा कर। हुज़ूर येह फ़रमा कर रवाना हो गए और मुसल्मान चलने शुरूअ़ हुए और यके बा'द दीगरे हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचते रहे यहां तक कि बा'ज़ ह़ज़रात नमाज़े इशा के बा'द पहुंचे लेकिन उन्हों ने उस वक़्त तक अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी क्यूं कि हुज़ूर ने बनी क़ुरैज़ा में पहुंच कर अ़स्र की नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया था इस लिये उस रोज़ उन्हों ने अ़स्र बा'दे इशा पढ़ी और इस पर न अल्लाह तआ़ला ने उन की गिरिफ़्त फ़रमाई न रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। लश्करे इस्लाम ने पच्चीस रोज़ तक बनी क़ुरैज़ा का मुह़ासरा रखा, इस से वोह तंग आ गए और अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों में रो'ब डाला। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि तुम मेरे हुक्म पर क़ल्ओं से उतरोगे ? उन्हों ने इन्कार किया तो फ़रमाया क्या क़बीलए औस के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ के हुक्म पर उतरोगे ? इस पर वोह राज़ी हुए और सा'द बिन मुआ़ज़ को उन के बारे में हुक्म देने पर मामूर फ़रमाया। ह़ज़रते सा'द ने हुक्म दिया कि मर्द क़त्ल कर दिये जाएं, औ़रतें और बच्चे क़ैद किये जाएं, फिर बाज़ारे मदीना में ख़न्दक़ खोदी गई और वहां ला कर उन सब की गरदनें मारी गईं। उन लोगों में क़बीलए बनी नज़ीर का सरदार हुय्य बिन अख़्तब और बनी क़ुरैज़ा का सरदार का'ब बिन असद भी था और येह लोग छ[6] सो या सात सो जवान थे जो गरदनें काट कर ख़न्दक़ में डाल दिये गए। (مدارک وجمل) 69 : या'नी मुक़ातिलीन को। 70 : औ़रतों और बच्चों को। 71 : नक़्द और सामान और मवेशी सब मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आए। 72 : इस ज़मीन से मुराद ख़ैबर है जो फ़त्ह़े क़ुरैज़ा के बा'द मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आया या वोह हर ज़मीन मुराद है जो क़ियामत तक फ़त्ह़ हो कर मुसल्मानों के क़ब्ज़े में आने वाली है।

www.dawateislami.net

الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾ وَ اِنْ

इस की आराइश चाहती हो[73] तो आओ मैं तुम्हें माल दूं[74] और अच्छी त़रह छोड़ दूं[75] और अगर

كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ

तुम अल्लाह और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम्हारी नेकी वालियों

مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ

के लिये बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है ऐ नबी की बीबियो जो तुम में सरीह़ ह़या के ख़िलाफ़ कोई

مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

जुरअत करे[76] उस पर औरों से दूना (दुगना) अ़ज़ाब होगा[77] और येह अल्लाह को आसान है

73 : या'नी अगर तुम्हें माले कसीर और अस्बाबे ऐश दरकार है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने आप से दुन्यावी सामान त़लब किये और नफ़क़ा में ज़ियादती की दरख़्वास्त की। यहां तो कमाले ज़ोहद था सामाने दुन्या और इस का जम्अ़ करना गवारा ही न था, इस लिये येह ख़ात़िरे अक़्दस पर गिरां हुवा और येह आयत नाज़िल हुई और अज़्वाजे मुत़ह्हरात को तख़्यीर दी गई उस वक़्त हुज़ूर की नव बीबियां थीं। **पांच क़ुरैशिया :** (1) ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, (2) ह़फ़्सा बिन्ते फ़ारूक़, (3) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान, (4) उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमय्या, (5) सौदह बिन्ते ज़म्अ़ा और **चार ग़ैर क़ुरैशिया :** (1) ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया, (2) मैमूना बिन्ते ह़ारिस हिलालिया, (3) सफ़िय्या बिन्ते हुयय बिन अख़्त़ब ख़ैबरिया, (4) जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस मुस्त़लिक़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सब से पहले ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह आयत सुना कर इख़्तियार दिया और फ़रमाया कि जल्दी न करो अपने वालिदैन से मश्वरा कर के जो राय हो उस पर अ़मल करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर के मुआ़मले में मश्वरा कैसा मैं अल्लाह को और उस के रसूल को और दारे आख़िरत को चाहती हूं और बाक़ी अज़्वाज ने भी येही जवाब दिया। **मस्अला :** जिस औ़रत को इख़्तियार दिया जाए वोह अगर अपने ज़ौज को इख़्तियार करे तो त़लाक़ वाक़ेअ़ नहीं होती और अगर अपने नफ़्स को इख़्तियार करे तो हमारे नज़्दीक त़लाक़े बाइन वाक़ेअ़ होती है। **74 :** जिस औ़रत के साथ बा'दे निकाह़ दुख़ूल या ख़ल्वते सह़ीह़ा हुई हो उस को त़लाक़ दी जाए तो कुछ सामान देना मुस्तह़ब है और वोह सामान तीन कपड़ों का जोड़ा होता है। यहां माल से वोही मुराद है। **मस्अला :** जिस औ़रत का महर मुक़र्रर न किया गया हो उस को क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दी तो येह जोड़ा देना वाजिब है। **75 :** बिग़ैर किसी ज़रर के। **76 :** जैसे कि शोहर की इत़ाअ़त में कोताही करना और उस के साथ कज ख़ुल्क़ी से पेश आना क्यूं कि बदकारी से तो अल्लाह तआ़ला अम्बिया की बीबियों को पाक रखता है। **77 :** क्यूं कि जिस शख़्स की फ़ज़ीलत ज़ियादा होती है उस से अगर क़ुसूर वाक़ेअ़ हो तो वोह क़ुसूर भी दूसरों के क़ुसूर से ज़ियादा सख़्त क़रार दिया जाता है। **मस्अला :** इसी लिये आ़लिम का गुनाह जाहिल के गुनाह से ज़ियादा क़बीह़ होता है और इसी लिये आज़ादों की सज़ा शरीअ़त में गुलामों से ज़ियादा मुक़र्रर है और नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीबियां तमाम जहान की औ़रतों से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती हैं इस लिये इन की अदना बात सख़्त गिरिफ़्त के क़ाबिल है। **फ़ाएदा :** लफ़्ज़ फ़ाह़िशा जब मा'रिफ़ा हो कर वारिद हो तो उस से ज़िना और लिवात़त मुराद होती है और अगर नकिरए ग़ैर मौसूफ़ा हो कर लाया जाए तो इस से तमाम गुनाह मुराद होते हैं और जब मौसूफ़ हो कर वारिद हो तो इस से शोहर की ना फ़रमानी और फ़सादे मा'शरत मुराद होता है, इस आयत में नकिरए मौसूफ़ा है इसी लिये इस से शोहर की इत़ाअ़त में कोताही और कज ख़ुल्क़ी मुराद है जैसा कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है। (جمل وغیرہ)

www.dawateislami.net

وَ مَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا

और[78] जो तुम में फ़रमां बरदार रहे अल्लाह और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना (दुगना)

مَرَّتَيْنِ ۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ

सवाब देंगे[79] और हम ने उस के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है[80] ऐ नबी की बीबियो तुम और औ़रतों

مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ

की त़रह़ नहीं हो[81] अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी कुछ

قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾ وَ قَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ

लालच करे[82] हां अच्छी बात कहो[83] और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो

تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ

जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी[84] और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और अल्लाह और

اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ

उस के रसूल का हुक्म मानो अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर

الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۳﴾ وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ

फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे[85] और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं

78 : ऐ नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीबियो ! **79 :** या'नी अगर औरों को एक नेकी पर दस गुना सवाब देंगे तो तुम्हें बीस गुना क्यूं कि तमाम जहान की औ़रतों में तुम्हें शरफ़ व फ़ज़ीलत है और तुम्हारे अ़मल में भी दो जिहतें हैं एक अदाए इत़ाअ़त दूसरे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिज़ाजोई और क़नाअ़त व हुस्ने मुआ़शरत के साथ हुज़ूर को ख़ुश्नूद करना। **80 :** जन्नत में। **81 :** तुम्हारा मर्तबा सब से ज़ियादा है और तुम्हारा अज्र सब से बढ़ कर, जहान की औ़रतों में कोई तुम्हारी हमसर नहीं। **82 :** इस में ता'लीमे आदाब है कि अगर ब ज़रूरत ग़ैर मर्द से पसे पर्दा गुफ़्तगू करनी पड़े तो क़स्द करो कि लहजे में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच न हो, बात निहायत सादगी से की जाए, इ़फ़्फ़त मआब (पाक दामन) ख़वातीन के लिये येही शायां है। **83 :** दीन व इस्लाम की और नेकी की ता'लीम और पन्दो नसीह़त की अगर ज़रूरत पेश आए मगर बे लोच लहजे से। **84 :** अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें और पिछली जाहिलिय्यत से अख़ीर ज़माना मुराद है जिस में लोगों के अफ़्आ़ल पहलों की मिस्ल हो जाएंगे। **85 :** या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत साबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मन्क़ूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नसीह़त फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचें और तक़्वा व परहेज़ गारी के पाबन्द रहें। गुनाहों को नापाकी से और परहेज़ गारी को पाकी से इस्तिआ़रा फ़रमाया गया क्यूं कि गुनाहों का मुरतकिब उन से ऐसा ही मुलव्वस होता है जैसा जिस्म नजासतों से, इस त़र्ज़े कलाम से मक़्सूद येह है कि अरबाबे उ़क़ूल को गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाए और तक़्वा व परहेज़ गारी की तरग़ीब दी जाए।

ع ٤

اٰيٰتِ اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۠﴿۳۴﴾ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَ

अल्लाह की आयतें और हिक्मत[86] बेशक अल्लाह हर बारीकी जानता ख़बरदार है बेशक मुसल्मान मर्द और

الْمُسْلِمٰتِ وَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَ الْقٰنِتِيْنَ وَ الْقٰنِتٰتِ وَ الصّٰدِقِيْنَ

मुसल्मान औ़रतें[87] और ईमान वाले और ईमान वालियां और फ़रमां बरदार और फ़रमां बरदारें और सच्चे

وَ الصّٰدِقٰتِ وَ الصّٰبِرِيْنَ وَ الصّٰبِرٰتِ وَ الْخٰشِعِيْنَ وَ الْخٰشِعٰتِ وَ

और सच्चियां[88] और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और

الْمُتَصَدِّقِيْنَ وَ الْمُتَصَدِّقٰتِ وَ الصَّآئِمِيْنَ وَ الصّٰٓئِمٰتِ وَ الْحٰفِظِيْنَ

ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह

فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ

रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये अल्लाह

لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾ وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى

ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है और किसी मुसल्मान मर्द न मुसल्मान औ़रत को पहुंचता है कि जब अल्लाह व

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَ مَنْ

रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे[89] और जो

86 : या'नी सुन्नत। **87 शाने नुज़ूल :** अस्मा बिन्ते उ़मैस जब अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी ता़लिब के साथ ह़ब्शा से वापस आई तो अज़्वाजे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मिल कर उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि क्या औ़रतों के बाब में भी कोई आयत नाज़िल हुई है ? उन्हों ने फ़रमाया : नहीं, तो अस्मा ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर औ़रतें बड़े टोटे में हैं। फ़रमाया : क्यूं ? अ़र्ज़ किया कि इन का ज़िक्र ख़ैर के साथ होता ही नहीं जैसा कि मर्दों का होता है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन के दस मरातिब मर्दों के साथ ज़िक्र किये गए और उन के साथ इन की मद्ह़ फ़रमाई गई। और मरातिब में से **पहला** मर्तबा "इस्लाम" है जो ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी है। **दूसरा** "ईमान" कि वोह ए'तिक़ादे सह़ीह़ और ज़ाहिरो बातिन का मुवाफ़िक़ होना है। **तीसरा** मर्तबा "क़ुनूत" या'नी ता़अ़त है। **88 :** इस में **चौथे** मर्तबे का बयान है कि वोह "सिद्क़े निय्यात व सिद्क़े अक़्वाल व अफ़्आ़ल" है। इस के बा'द **पांचवें** मर्तबे सब्र का बयान है कि ता़अ़तों की पाबन्दी करना और मम्नूआ़त से एह़तिराज़ रखना ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही शाक़ और गिरां हो, रिज़ाए इलाही के लिये इख़्तियार किया जाए। इस के बा'द फिर **छटे** मर्तबे "ख़ुशूअ़" का बयान है जो ता़अ़तों और इबादतों में क़ुलूब व जवारेह़ के साथ मुतवाज़ेअ़ होना है। इस के बा'द **सातवें** मर्तबे "सदक़ा" का बयान है जो अल्लाह तआ़ला के अ़ता़ किये हुए माल में से उस की राह में ब त़रीक़े फ़र्ज़ व नफ़्ल देना है। फिर **आठवें** मर्तबे "सौम" का बयान है येह भी फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है। मन्क़ूल है कि जिस ने हर हफ़्ते एक दिरहम सदक़ा किया वोह मुतसद्दिक़ीन में और जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (चांद की 13, 14, 15) के तीन रोज़े रखे वोह साइमीन में शुमार किया जाता है। इस के बा'द **नवें** मर्तबे "इफ़्फ़त" का बयान है और वोह येह है कि अपनी पारसाई को मह़फ़ूज़ रखे और जो ह़लाल नहीं है उस से बचे। सब से आख़िर में **दसवें** मर्तबे "कस्रते ज़िक्र" का बयान है, ज़िक्र में तस्बीह़, तह़मीद, तह्लील, तक्बीर, क़िराअते क़ुरआन, इल्मे दीन का पढ़ना पढ़ाना, नमाज़, वा'ज़, नसीह़त, मीलाद शरीफ़, ना'त शरीफ़ पढ़ना सब दाख़िल हैं। कहा गया है कि बन्दा ज़ाकिरीन में तब शुमार होता है जब कि वोह खड़े, बैठे, लैटे, हर ह़ाल में अल्लाह का ज़िक्र करे। **89 शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया और उन के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श और उन की वालिदा उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़क़ में नाज़िल हुई, उमैमा हुज़ूर सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

يَّعۡصِ اللّٰهَ وَ رَسُوۡلَهٗ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيۡنًا ؕ﴿۳۶﴾ وَ اِذۡ تَقُوۡلُ لِلَّذِیۡۤ

हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से

اَنۡعَمَ اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِ اَمۡسِكۡ عَلَيۡكَ زَوۡجَكَ وَ اتَّقِ اللّٰهَ

जिसे **अल्लाह** ने ने'मत दी[90] और तुम ने उसे ने'मत दी[91] कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे[92] और **अल्लाह** से डर[93]

وَ تُخۡفِیۡ فِیۡ نَفۡسِكَ مَا اللّٰهُ مُبۡدِيۡهِ وَ تَخۡشَى النَّاسَ ۚ وَ اللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ

और तुम अपने दिल में रखते थे वोह जिसे **अल्लाह** को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था[94] और तुम्हें लोगों के ता'ने का अन्देशा था[95] और **अल्लाह** ज़ियादा सज़ावार है कि

تَخۡشٰهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيۡدٌ مِّنۡهَا وَطَرًا زَوَّجۡنٰكَهَا لِكَىۡ لَا يَكُوۡنَ عَلَى

उस का ख़ौफ़ रखो[96] फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई[97] तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी[98] कि मुसल्मानों पर कुछ

الۡمُؤۡمِنِيۡنَ حَرَجٌ فِىۡۤ اَزۡوَاجِ اَدۡعِيَآئِهِمۡ اِذَا قَضَوۡا مِنۡهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ

ह़रज न रहे उन के ले पालकों (मुंह बोले बेटों) की बीबियों में जब उन से उन का काम ख़त्म हो जाए[99] और

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की फूफी थीं। वाक़िआ़ येह था कि ज़ैद बिन ह़ारिसा जिन को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने आज़ाद किया था और वोह हुज़ूर ही की ख़िदमत में रहते थे, हुज़ूर ने ज़ैनब के लिये उन का पयाम दिया, उस को ज़ैनब ने और उन के भाई ने मन्ज़ूर नहीं किया। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और ह़ज़रते ज़ैनब और उन के भाई इस हुक्म को सुन कर राज़ी हो गए और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ उन के साथ कर दिया और हुज़ूर ने उन का महर दस दीनार साठ दिरहम, एक जोड़ा कपड़ा, पचास मुद (एक पैमाना है) खाना, तीस साअ़ खजूरें दीं। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि आदमी को रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की ताअ़त हर अम्र में वाजिब है और नबी عَلَيۡهِ السَّلَام के मुक़ाबले में कोई अपने नफ़्स का भी खुद मुख़्तार नहीं। **मस्अला :** इस आयत से येह भी साबित हुवा कि अम्र वुजूब के लिये होता है। **फ़ाएदा :** बा'ज़ तफ़ासीर में ह़ज़रते ज़ैद को गुलाम कहा गया है मगर येह ख़ाली अज़ तसामोह (ख़ता से ख़ाली) नहीं क्यूं कि वोह हुर (आज़ाद) थे, गिरिफ़्तारी से बिल खुसूस क़ब्ले बि'सत शरअ़न कोई शख़्स मरक़ूक़ या'नी मम्लूक नहीं हो जाता और वोह ज़माना फ़ित्रत का था और अहले फ़ित्रत को ह़र्बी नहीं कहा जाता। (كذا في الجمل) **90 :** इस्लाम की जो बड़ी जलील ने'मत है। **91 :** आज़ाद फ़रमा कर, मुराद इस से ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा हैं कि हुज़ूर ने इन्हें आज़ाद किया और इन की परवरिश फ़रमाई। **92 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते ज़ैद का निकाह़ ह़ज़रते ज़ैनब से हो चुका तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّم के पास **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वह़्य आई कि ज़ैनब आप की अज़्वाजे त़ाहिरात में दाख़िल होंगी, **अल्लाह** तआ़ला को येही मन्ज़ूर है। इस की सूरत येह हुई कि ह़ज़रते ज़ैद और ज़ैनब के दरमियान मुवाफ़क़त न हुई और ह़ज़रते ज़ैद ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते ज़ैनब की सख़्त गुफ़्तारी, तेज़ ज़बानी, अ़दमे इत़ाअ़त और अपने आप को बड़ा समझने की शिकायत की। ऐसा बार बार इत्तिफ़ाक़ हुवा, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ह़ज़रते ज़ैद को समझा देते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **93 :** ज़ैनब पर किब्र व ईज़ाए शोहर के इल्ज़ाम लगाने में। **94 :** या'नी आप येह ज़ाहिर नहीं फ़रमाते थे कि ज़ैनब से तुम्हारा निबाह नहीं हो सकेगा और त़लाक़ ज़रूर वाक़ेअ़ होगी और **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अज़्वाजे मुत़ह्हरात में दाख़िल करेगा और **अल्लाह** तआ़ला को इस का ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था। **95 :** या'नी जब ह़ज़रते ज़ैद ने ज़ैनब को त़लाक़ दे दी तो आप को लोगों के ता'न का अन्देशा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म तो है ह़ज़रते ज़ैनब के साथ निकाह़ करने का और ऐसा करने से लोग ता'ना देंगे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने ऐसी औ़रत के साथ निकाह़ कर लिया जो उन के मुंहबोले बेटे के निकाह़ में रही थी। मक़्सूद येह है कि अम्रे मुबाह़ में बे जा ता'न करने वालों का कुछ अन्देशा न करना चाहिये। **96 :** और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم सब से ज़ियादा **अल्लाह** का ख़ौफ़ रखने वाले और सब से ज़ियादा तक़्वा वाले हैं, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। **97 :** और ह़ज़रते ज़ैद ने ह़ज़रते ज़ैनब को त़लाक़ दे दी और इद्दत गुज़र गई **98 :** ह़ज़रते ज़ैनब की इद्दत गुज़रने के बा'द उन के पास ह़ज़रते ज़ैद रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم का पयाम ले कर गए और उन्हों ने सर झुका कर कमाले शर्मो अदब से उन्हें येह पयाम पहुंचाया, उन्हों ने कहा कि इस मुआ़मले में, मैं अपनी राय को कुछ भी दख़्ल नहीं देती, जो मेरे रब को मन्ज़ूर हो उस पर राज़ी हूं, येह कह कर वोह बारगाहे इलाही में मुतवज्जेह हुईं और उन्हों ने नमाज़ शुरूअ़ कर दी और येह आयत नाज़िल हुई। ह़ज़रते ज़ैनब को इस निकाह़ से बहुत ख़ुशी और फ़ख़्र हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने इस शादी का वलीमा बहुत वुस्अ़त के साथ किया। **99 :** या'नी ताकि येह मा'लूम हो जाए कि ले पालक की बीबी से निकाह़ जाइज़ है।

www.dawateislami.net

كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ

अल्लाह का हुक्म हो कर रहना नबी पर कोई हरज नहीं इस बात में जो अल्लाह ने उस के लिये

اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا

मुक़र्रर फ़रमाई[100] अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है उन में जो पहले गुज़र चुके[101] और अल्लाह का काम मुक़र्रर

مَّقْدُوْرَا ۨ ﴿۳۸﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ

तक़्दीर है वोह जो अल्लाह के पयाम पहुंचाते और उस से डरते और अल्लाह के सिवा

اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ

किसी का ख़ौफ़ न करते और अल्लाह बस (काफ़ी) है हिसाब लेने वाला[102] मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के

مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ

बाप नहीं[103] हां अल्लाह के रसूल हैं[104] और सब नबियों में पिछले[105] और अल्लाह सब

ع ٥ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿۴۱﴾ وَّ

कुछ जानता है ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद करो और

سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

सुब्ह व शाम उस की पाकी बोलो[106] वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते[107]

100 : या'नी अल्लाह तआला ने जो उन के लिये मुबाह किया और बाबे निकाह में जो वुस्अत उन्हें अ़ता फ़रमाई इस पर इक़्दाम करने में कुछ हरज नहीं। **101 :** या'नी अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को बाबे निकाह में वुस्अ़तें दी गईं कि दूसरों से ज़ियादा औरतें इन के लिये हलाल फ़रमाईं जैसा कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सो बीबियां और हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की तीन सो बीबियां थीं। येह इन के ख़ास अहकाम हैं, इन के सिवा दूसरों को रवा नहीं, न कोई इस पर मो'तरिज़ हो सकता है। अल्लाह तआला अपने बन्दों में जिस के लिये जो हुक्म फ़रमाए उस पर किसी को ए'तिराज़ की क्या मजाल। इस में यहूद का रद है जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर चार से ज़ियादा निकाह करने पर ता'न किया था, इस में उन्हें बताया गया कि येह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये ख़ास है जैसा कि पहले अम्बिया के लिये ता'दादे अज़्वाज में ख़ास अहकाम थे। **102 :** तो उसी से डरना चाहिये। **103 :** तो हज़रते ज़ैद के भी आप हक़ीक़त में बाप नहीं कि इन की मन्कूहा आप के लिये हलाल न होती। क़ासिम व तृय्यिब व ताहिर व इब्राहीम हुज़ूर के फ़रज़न्द थे मगर वोह इस उम्र को न पहुंचे कि उन्हें मर्द कहा जाए, उन्हों ने बचपन में वफ़ात पाई। **104 :** और सब रसूल नासेह शफ़ीक़ और वाजिबुत्तौक़ीर व लाज़िमुत्ताअ़त होने के लिहाज़ से अपनी उम्मत के बाप कहलाते हैं, बल्कि इन के हुक़ूक़ हक़ीक़ी बाप के हुक़ूक़ से बहुत ज़ियादा हैं लेकिन इस से उम्मत हक़ीक़ी औलाद नहीं हो जाती और हक़ीक़ी औलाद के तमाम अहकाम विरासत वग़ैरा उस के लिये साबित नहीं होते। **105 :** या'नी आख़िरुल अम्बिया कि नुबुव्वत आप पर ख़त्म हो गई, आप की नुबुव्वत के बा'द किसी को नुबुव्वत नहीं मिल सकती हत्ता कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नाज़िल होंगे तो अगर्चे नुबुव्वत पहले पा चुके हैं मगर नुज़ूल के बा'द शरीअ़ते मुहम्मदिय्यह पर आ़मिल होंगे और इसी शरीअ़त पर हुक्म करेंगे और आप ही के क़िब्ले या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे। हुज़ूर का आख़िरुल अम्बिया होना क़त्ई है नस्से क़ुरआनी भी इस में वारिद है और सिहाह की ब कसरत अहादीस जो हद्दे तवातुर तक पहुंचती हैं, उन सब से साबित है कि हुज़ूर सब से पिछले नबी हैं, आप के बा'द कोई नबी होने वाला नहीं। जो हुज़ूर की नुबुव्वत के बा'द किसी और को नुबुव्वत मिलना मुम्किन जाने वोह ख़त्मे नुबुव्वत का मुन्किर और काफ़िर ख़ारिज अज़ इस्लाम है। **106 :** क्यूं कि सुब्ह और शाम के अवक़ात मलाइकए रोज़ो शब के जम्अ़ होने के वक़्त हैं। और येह भी कहा गया है कि अत्राफ़े लैलो नहार का ज़िक्र

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿۴۳﴾

कि तुम्हें अंधेरियों से उजाले की त़रफ़ निकाले[108] और वोह मुसल्मानों पर मेह्रबान है

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿۴۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

उन के लिये मिलते वक़्त की दुआ़ सलाम है[109] और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब तय्यार कर रखा है ऐ ग़ैब की ख़बरें

النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۴۵﴾ۙ وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ

बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर[110] और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता[111] और **अल्लाह** की त़रफ़

بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا

उस के हुक्म से बुलाता[112] और चमका देने वाला आफ़्ताब[113] और ईमान वालों को ख़ुश ख़बरी दो कि उन के लिये **अल्लाह** का बड़ा

كَبِيْرًا ﴿۴۷﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى

फ़ज़्ल है और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की ख़ुशी न करो और उन की ईज़ा पर दर गुज़र फ़रमाओ[114] और **अल्लाह** पर

اللّٰهِؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۴۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ

भरोसा करो और **अल्लाह** बस (काफ़ी) है कारसाज़ ऐ ईमान वालो जब तुम मुसल्मान औ़रतों से निकाह़ करो

करने से ज़िक्र की मुदावमत की त़रफ़ इशारा फ़रमाया गया है। **107 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब आयत "اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ" नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْکَ وَسَلَّم जब आप को **अल्लाह** तआ़ला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अ़त़ा फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के त़ुफ़ैल में नवाज़ता है, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **108 :** या'नी कुफ़्रो मा'सियत और नाख़ुदा शनासी की अंधेरियों से ह़क़ व हिदायत और मा'रिफ़त व ख़ुदा शनासी की रोशनी की त़रफ़ हिदायत फ़रमाए। **109 :** मिलते वक़्त से मुराद या मौत का वक़्त है या क़ब्रों से निकलने का या जन्नत में दाख़िल होने का। मरवी है कि ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام किसी मोमिन की रूह़ को सलाम किये बिग़ैर क़ब्ज़ नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब मलकुल मौत मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं कि तेरा रब तुझे सलाम फ़रमाता है। और येह भी वारिद हुवा है कि मोमिनीन जब क़ब्रों से निकलेंगे तो मलाएका सलामती की बिशारत के त़ौर पर उन्हें सलाम करेंगे। (جمل وخازن) **110 :** शाहिद का तरजमा ह़ाज़िर व नाज़िर बहुत बेहतरीन तरजमा है, मुफ़्रदाते राग़िब में है : "اَلشُّهُوْدُ وَالشَّهَادَةُ اَلْحُضُوْرُ مَعَ الْمُشَاهَدَةِ اِمَّا بِالْبَصَرِ اَوْ بِالْبَصِيْرَةِ" या'नी शुहूद और शहादत के मा'ना हैं ह़ाज़िर होना मअ़ नाज़िर होने के बसर के साथ हो या बसीरत के साथ और गवाह को भी इसी लिये शाहिद कहते हैं कि वोह मुशाहदे के साथ जो इ़ल्म रखता है उस को बयान करता है, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम आ़लम की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं, आप की रिसालत आ़म्मा है जैसा कि सूरए फ़ुरक़ान की पहली आयत में बयान हुवा तो ह़ुज़ूर पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم क़ियामत तक होने वाली सारी ख़ल्क़ के शाहिद हैं और इन के आ'माल व अफ़्आ़ल व अह़्वाल, तस्दीक़, तक्ज़ीब, हिदायत, ज़लाल सब का मुशाहदा फ़रमाते हैं। (ابوالسعود وجمل) **111 :** या'नी ईमानदारों को जन्नत की ख़ुश ख़बरी और काफ़िरों को अ़ज़ाबे जहन्नम का डर सुनाता। **112 :** या'नी ख़ल्क़ को त़ाअ़ते इलाही की दा'वत देता। **113 :** सिराज का तरजमा आफ़्ताब क़ुरआने करीम के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है कि इस में आफ़्ताब को सिराज फ़रमाया गया है। जैसा कि सूरए नूह़ में "وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا" और आख़िर पारह की पहली सूरत में है "وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا" और दर ह़क़ीक़त हज़ारों आफ़्ताबों से ज़ियादा रोशनी आप के नूरे नुबुव्वत ने पहुंचाई और कुफ़्रो शिर्क के ज़ुल्माते शदीदा को अपने नूरे ह़क़ीक़त अफ़्रोज़ से दूर कर दिया और ख़ल्क़ के लिये मा'रिफ़त व तौह़ीदे इलाही तक पहुंचने की राहें रोशन और वाज़ेह़ कर दीं और ज़लालत की वादिये तारीक में राह गुम करने वालों को अपने अन्वारे हिदायत से राहयाब फ़रमाया और अपने नूरे नुबुव्वत से ज़माइर व बसाइर और क़ुलूबो अरवाह़ को मुनव्वर किया। ह़क़ीक़त में आप का वुजूदे मुबारक ऐसा आफ़्ताबे आ़लम ताब है जिस ने हज़ारहा आफ़्ताब बना दिये, इसी लिये इस की सिफ़त में "मुनीर" इर्शाद फ़रमाया गया। **114 :** जब तक कि इस बारे में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कोई हुक्म दिया जाए।

www.dawateislami.net

ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ

फिर उन्हें बे हाथ लगाए छोड़ दो तो तुम्हारे लिये कुछ इद्दत नहीं

تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ

जिसे गिनो[115] तो उन्हें कुछ फ़ाएदा दो[116] और अच्छी त़रह़ से छोड़ दो[117] ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)

اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِیْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

हम ने तुम्हारे लिये ह़लाल फ़रमाईं तुम्हारी वोह बीबियां जिन को तुम महर दो[118] और तुम्हारे हाथ का माल कनीज़ें

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَ

जो **अल्लाह** ने तुम्हें ग़नीमत में दीं[119] और तुम्हारे चचा की बेटियां और फुप्पियों की बेटियां और मामूं की बेटियां और

بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِیْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ

ख़ालाओं की बेटियां जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिजरत की[120] और ईमान वाली औ़रत अगर वोह अपनी जान

نَفْسَهَا لِلنَّبِیِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِیُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ

नबी की नज़्र करे अगर नबी उसे निकाह़ में लाना चाहे[121] येह ख़ास़ तुम्हारे लिये है उम्मत

الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِیْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

के लिये नहीं[122] हमें मा'लूम है जो हम ने मुसलमानों पर मुक़र्रर किया है उन की बीबियों और उन के हाथ के

115 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि अगर औ़रत को क़ब्ले क़ुर्बत त़लाक़ दी तो उस पर इद्दत वाजिब नहीं। **मस्अला :** ख़ल्वते सह़ीह़ा क़ुर्बत के हुक्म में है तो अगर ख़ल्वते सह़ीह़ा के बा'द त़लाक़ वाक़ेअ़ हो तो इद्दत वाजिब होगी अगर्चे मुबाशरत (हम बिस्तरी) न हुई हो। **मस्अला :** येह हुक्म मोमिना और किताबिया दोनों को आ़म है लेकिन आयत में मोमिनात का ज़िक्र फ़रमाना इस त़रफ़ मुशीर (इशारा करता) है कि निकाह़ करना मोमिना से औला है। **116 मस्अला :** या'नी अगर उन का महर मुक़र्रर हो चुका था तो क़ब्ले ख़ल्वत त़लाक़ देने से शोहर पर निस्फ़ महर वाजिब होगा और अगर महर मुक़र्रर नहीं हुवा था तो एक जोड़ा देना वाजिब है जिस में तीन कपड़े होते हैं **117 :** अच्छी त़रह़ से छोड़ना येह है कि उन के हुक़ूक़ अदा कर दिये जाएं और उन को कोई ज़रर न दिया जाए और उन्हें रोका न जाए क्यूं कि उन पर इद्दत नहीं है। **118 :** महर की ता'जील और अ़क़्द में तअ़य्युन अफ़्ज़ल है शर्त़ें ह़िल्लत नहीं क्यूं कि महर को मुअ़ज्जल त़रीक़े पर देना या उस को मुक़र्रर करना औला और बेहतर है वाजिब नहीं। (तफ़्सीरे अह़मदी) **119 :** मिस्ल ह़ज़रते सफ़िय्या व ह़ज़रते जुवैरिया के जिन को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आज़ाद फ़रमाया और इन से निकाह़ किया। **मस्अला :** ग़नीमत में मिलने का ज़िक्र भी फ़ज़ीलत के लिये है क्यूं कि मम्लूकात ब मिल्के यमीन ख़्वाह ख़रीद से मिल्क में आई हों या हिबा से या विरासत से या वसिय्यत से वोह सब ह़लाल हैं। **120 :** साथ हिजरत करने की क़ैद भी अफ़्ज़ल का बयान है क्यूं कि बिग़ैर साथ हिजरत करने के भी इन में से हर एक ह़लाल है और येह भी हो सकता है कि ख़ास़ हुज़ूर के ह़क़ में इन औ़रतों की ह़िल्लत इस क़ैद के साथ मुक़य्यद हो जैसा कि उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब की रिवायत इस त़रफ़ मुशीर है। **121 :** मा'ना येह हैं कि हम ने आप के लिये उस मोमिना औ़रत को ह़लाल किया जो बिग़ैर महर और बिग़ैर शुरूत़े निकाह़ अपनी जान आप को हिबा करे बशर्त़े कि आप उसे निकाह़ में लाने का इरादा फ़रमाएं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस में आयिन्दा के हुक्म का बयान है क्यूं कि वक़्ते नुज़ूले आयत हुज़ूर की अज़्वाज में से कोई भी ऐसी न थीं जो हिबा के ज़रीए से मुशर्रफ़ ब ज़ौजिय्यत हुई हों और जिन मोमिना बीबियों ने अपनी जानें हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को नज़्र कर दीं वोह मैमूना बिन्ते ह़ारिस और ख़ौला बिन्ते ह़कीम और उम्मे शरीक और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं। (तफ़्सीरे अह़मदी) **122 :** या'नी निकाह़ बे महर ख़ास़ आप के लिये जाइज़ है

www.dawateislami.net

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

माल कनीज़ों में[123] येह खुसूसिय्यत तुम्हारी[124] इस लिये कि तुम पर कोई तंगी न हो और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

पीछे हटाओ इन में से जिसे चाहो और अपने पास जगह दो जिसे चाहो[125] और जिसे तुम ने कनारे कर दिया था

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا

उसे तुम्हारा जी चाहे तो उस में भी तुम पर कुछ गुनाह नहीं[126] येह अम्र इस से नज़्दीक तर है कि उन की आंखें ठन्डी हों और

يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ

ग़म न करें और तुम उन्हें जो कुछ अ़ता फ़रमाओ इस पर वोह सब की सब राज़ी रहें[127] और अल्लाह जानता है जो तुम सब के दिलों में है और

كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ

अल्लाह इल्मो हिल्म वाला है इन के बा'द[128] और औ़रतें तुम्हें ह़लाल नहीं[129] और न येह कि इन के इवज़

بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَ

और बीबियां बदलो[130] अगर्चे तुम्हें उन का हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल[131] और

उम्मत के लिये नहीं, उम्मत पर बहर ह़ाल महर वाजिब है ख़्वाह वोह महर मुअ़य्यन न करें या क़स्दन महर की नफ़ी करें। **मस्अला :** निकाह़ ब लफ़्ज़े हिबा जाइज़ है। **123 :** या'नी बीबियों के ह़क़ में जो कुछ मुक़र्रर फ़रमाया है महर और गवाह और बारी का वाजिब होना और चार ह़ुर्रा औ़रतों तक को निकाह़ में लाना। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि शरअ़न महर की मिक़्दार अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक मुक़र्रर है और वोह दस दिरहम हैं जिस से कम करना मम्नूअ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। **124 :** जो ऊपर ज़िक्र हुई कि औ़रतें आप के लिये मह्ज़ हिबा से बिग़ैर महर के ह़लाल की गईं। **125 :** या'नी आप को इख़्तियार दिया गया है कि जिस बीबी को चाहें पास रखें और बीबियों में बारी मुक़र्रर करें या न करें। लेकिन बा वुजूद इस इख़्तियार के सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ अ़द्ल फ़रमाते और उन की बारियां बराबर रखते बजुज़ ह़ज़रते सौदह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के जिन्हों ने अपनी बारी का दिन ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दे दिया था और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया था कि मेरे लिये येही काफ़ी है कि मेरा ह़श्र आप की अज़्वाज में हो। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि येह आयत उन औ़रतों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपनी जानें हुज़ूर को नज़्र कीं और हुज़ूर को इख़्तियार दिया गया कि इन में से जिस को चाहें क़बूल करें उस के साथ तज़व्वुज फ़रमाएं और जिस को चाहें इन्कार फ़रमा दें। **126 :** या'नी अज़्वाज में से आप ने जिस को मा'ज़ूल या साक़ितुल क़िस्मत कर दिया हो (बारी तर्क कर दी हो) आप जब चाहें उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात फ़रमाएं और उस को नवाज़ें, इस का आप को इख़्तियार दिया गया है। **127 :** क्यूं कि जब वोह येह जानेंगी कि येह तफ़्वीज़ और येह इख़्तियार आप को अल्लाह की त़रफ़ से अ़ता हुवा है तो उन के क़ुलूब मुत़्मइन हो जाएंगे। **128 :** या'नी उन नव बीबियों के बा'द जो आप के निकाह़ में हैं जिन्हें आप ने इख़्तियार दिया तो उन्हों ने अल्लाह तआ़ला और रसूल को इख़्तियार किया। **129 :** क्यूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये अज़्वाज का निसाब नव है जैसे कि उम्मत के लिये चार। **130 :** या'नी इन्हें त़लाक़ दे कर इन की जगह दूसरी औ़रतों से निकाह़ कर लो ऐसा भी न करो। येह एह़तिराम इन अज़्वाज का इस लिये है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हें इख़्तियार दिया था तो इन्हों ने अल्लाह व रसूल को इख़्तियार किया और आसाइशे दुन्या को ठुकरा दिया, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन्हीं पर इक्तिफ़ा फ़रमाया और अख़ीर तक येही बीबियां हुज़ूर की ख़िदमत में रहीं। ह़ज़रते आ़इशा व उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि आख़िर में हुज़ूर के लिये ह़लाल कर दिया गया था कि जितनी औ़रतों से चाहें निकाह़ फ़रमाएं। इस तक़्दीर पर आयत मन्सूख़ है और इस का नासिख़ आयए "اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ" الآيه है। **131 :** कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है और इस के बा'द ह़ज़रत मारिया क़िब्त़िया हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मिल्क में आईं और उन से हुज़ूर के फ़रज़न्द ह़ज़रते इब्राहीम पैदा हुए जिन्हों ने छोटी उ़म्र में वफ़ात पाई।

www.dawateislami.net

كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝۵۲ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا

अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है ऐ ईमान वालो नबी के घरों में[132]

بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ

न हाज़िर हो जब तक इज़्न न पाओ[133] मसलन खाने के लिये बुलाए जाओ न यूं कि ख़ुद उस के पकने की राह तको[134]

لٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ

हां जब बुलाए जाओ तो हाज़िर हो और जब खा चुको तो मुतफ़र्रिक़ हो जाओ न येह कि बैठे बातों में

لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ؗ وَ اللّٰهُ لَا

दिल बहलाओ[135] बेशक इस में नबी को ईज़ा होती थी तो वोह तुम्हारा लिहाज़ फ़रमाते थे[136] और अल्लाह

يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ

हक़ फ़रमाने में नहीं शरमाता और जब तुम उन से[137] बरत्ने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के

حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا

बाहर से मांगो इस में ज़ियादा सुथराई है तुम्हारे दिलों और उन के दिलों की[138] और तुम्हें नहीं पहुंचता कि

132 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि घर मर्द का होता है और इसी लिये इस से इजाज़त हासिल करना मुनासिब है। शोहर के घर को औरत का घर भी कहा जाता है इस लिहाज़ से कि वोह इस में सुकूनत का हक़ रखती है इस वज्ह से "وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ" में घरों की निस्बत औरतों की तरफ़ की गई है। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मकानात जिन में हुज़ूर की अज़्वाजे मुतहहरात की सुकूनत थी और हुज़ूर के पर्दा फ़रमाने के बा'द भी वोह अपनी हयात तक उन्हीं में रहीं वोह हुज़ूर की मिल्क थे और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अज़्वाजे ताहिरात को हिबा न फ़रमाए थे बल्कि सुकूनत की इजाज़त दी थी, इसी लिये अज़्वाजे मुतहहरात की वफ़ात के बा'द उन के वारिसों को न मिले बल्कि मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल कर दिये गए जो वक़्फ़ है और जिस का नफ़्अ़ तमाम मुसल्मानों के लिये आम है। **133 :** इस से मा'लूम हुवा कि औरतों पर पर्दा लाज़िम है और ग़ैर मर्दों को किसी घर में बे इजाज़त दाख़िल होना जाइज़ नहीं। आयत अगर्चे ख़ास अज़्वाजे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हक़ में वारिद है लेकिन हुक्म इस का तमाम मुसल्मान औरतों के लिये आम है। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हज़रते ज़ैनब से निकाह किया और वलीमे की आम दा'वत फ़रमाई तो जमाअ़तों की जमाअ़तें आती थीं और खाने से फ़ारिग़ हो कर चली जाती थीं, आख़िर में तीन साहिब ऐसे थे जो खाने से फ़ारिग़ हो कर बैठे रह गए और उन्हों ने गुफ़्तगू का तवील सिल्सिला शुरूअ़ कर दिया और बहुत देर तक ठहरे रहे, मकान तंग था इस से घर वालों को तक्लीफ़ हुई और हरज हुवा कि वोह उन की वज्ह से अपना कामकाज कुछ न कर सके। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उठे और अज़्वाजे मुतहहरात के हुजरों में तशरीफ़ ले गए और दौरा फ़रमा कर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त तक येह लोग अपनी बातों में लगे हुए थे। हुज़ूर फिर वापस हो गए, येह देख कर वोह लोग रवाना हुए। तब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दौलत सराए में दाख़िल हुए और दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। इस से सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की कमाले हया और शाने करम व हुस्ने अख़्लाक़ मा'लूम होती है कि बा वुजूद ज़रूरत के अस्हाब से येह न फ़रमाया कि अब आप चले जाइये बल्कि जो तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया वोह हुस्ने अदब का आ'ला तरीन मुअ़ल्लिम है। **134 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि बिग़ैर दा'वत किसी के यहां खाने न जाए। **135 :** कि येह अहले ख़ाना की तक्लीफ़ और उन के हरज का बाइस है। **136 :** और उन से चले जाने के लिये नहीं फ़रमाते थे। **137 :** या'नी अज़्वाजे मुतहहरात से **138 :** कि वसाविस और ख़तरात से अम्न रहता है।

www.dawateislami.net

رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ

रसूलुल्लाह को ईज़ा दो[139] और न येह कि इन के बा'द कभी इन की बीबियों से निकाह़ करो[140] बेशक येह

كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِیْمًا ﴿٥٣﴾ اِنْ تُبْدُوْا شَیْــٴًـا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी सख़्त बात है[141] अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या छुपाओ तो बेशक अल्लाह सब

بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿٥٤﴾ لَا جُنَاحَ عَلَیْهِنَّ فِیْۤ اٰبَآىٕهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآىٕهِنَّ وَ

कुछ जानता है उन पर मुज़ायक़ा नहीं[142] उन के बाप और बेटों और

لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَ لَا نِسَآىٕهِنَّ

भाइयों और भतीजों और भान्जों[143] और अपने दीन की औ़रतों[144]

وَ لَا مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُنَّ ۚ وَ اتَّقِیْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

और अपनी कनीज़ों में[145] और अल्लाह से डरती रहो बेशक हर चीज़ अल्लाह के

شَهِیْدًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

सामने है बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो

اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ

उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो[146] बेशक जो ईज़ा देते हैं अल्लाह और

139 : और कोई काम ऐसा न करो जो ख़ातिरे अक़्दस पर गिरां हो। **140 :** क्यूं कि जिस औ़रत से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़क़्द फ़रमाया वोह हुज़ूर के सिवा हर शख़्स पर हमेशा के लिये ह़राम हो गई, इसी त़रह़ वोह कनीज़ें जो बारयाबे ख़िदमत हुईं और क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाई गईं वोह भी इसी त़रह़ सब के लिये ह़राम हैं। **141 :** इस में ए'लाम है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत बड़ी अ़ज़्मत अ़त़ा फ़रमाई और आप की हुरमत हर ह़ाल में वाजिब की। **142 :** या'नी उन बीबियों पर कुछ गुनाह नहीं इस में कि वोह उन लोगों से पर्दा न करें जिन का आयत में आगे ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **शाने नुज़ूल :** जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुवा तो औ़रतों के बाप बेटों और क़रीब के रिश्तेदारों ने रसूले करीम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क्या हम अपनी माओं बेटियों के साथ पर्दे के बाहर से गुफ़्तगू करें ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी इन अक़ारिब के सामने आने और इन से कलाम करने में कोई ह़रज नहीं। **144 :** या'नी मुसल्मान बीबियों के सामने आना जाइज़ है और काफ़िरा औ़रतों से पर्दा करना और अपने जिस्म छुपाना लाज़िम है सिवाए जिस्म के उन ह़िस्सों के जो घर के कामकाज के लिये खोलने ज़रूरी होते हैं। (جمل) **145 :** यहां चचा और मामूं का सराह़तन ज़िक्र नहीं किया गया क्यूं कि वोह वालिदैन के हुक्म में हैं। **146 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजना वाजिब है, हर एक मजलिस में आप का ज़िक्र करने वाले पर भी और सुनने वाले पर भी एक मरतबा और इस से ज़ियादा मुस्तह़ब है येही क़ौल मो'तमद है और इस पर जुम्हूर हैं और नमाज़ के क़ा'दए अख़ीरा में बा'दे तशह्हुद दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है और आप के ताबेअ़ कर के आप के आल व अस्ह़ाब व दूसरे मोमिनीन पर भी दुरूद भेजा जा सकता है या'नी दुरूद शरीफ़ में आप के नामे अक़्दस के बा'द उन को शामिल किया जा सकता है और मुस्तक़िल त़ौर पर हुज़ूर के सिवा इन में से किसी पर दुरूद भेजना मक्रूह है। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ में आल व अस्ह़ाब का ज़िक्र मुतवारिस है और येह भी कहा गया है कि आल के ज़िक्र के बिग़ैर मक़्बूल नहीं। दुरूद शरीफ़ अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तकरीम है। उ़लमा ने "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ" के मा'ना येह बयान किये हैं कि या रब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़ज़्मत अ़त़ा फ़रमा, दुन्या में इन का दीन बुलन्द और इन की दा'वत ग़ालिब फ़रमा कर और

www.dawateislami.net

رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۵۷﴾ وَ

उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में[147] और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[148] और

الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ

जो ईमान वाले मर्दों और औ़रतों को बे किये सताते हैं उन्हों

احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۵۸﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ

ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया[149] ऐ नबी अपनी बीबियों और साहिब ज़ादियों

بَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ

और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुंह पर डाले रहें[150] येह इस से

اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۹﴾ لَئِنْ

नज़्दीक तर है कि उन की पहचान हो[151] तो सताई न जाएं[152] और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है अगर

لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي

बाज़ न आए मुनाफ़िक़[153] और जिन के दिलों में रोग है[154] और मदीने में झूट

الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۰﴾

उड़ाने वाले[155] तो ज़रूर हम तुम्हें उन पर शह (हौसला) देंगे[156] फिर वोह मदीने में तुम्हारे पास न रहेंगे मगर थोड़े दिन[157]

इन की शरीअ़त को बक़ा इनायत कर के और आख़िरत में इन की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा कर और इन का सवाब ज़ियादा कर के और अव्वलीन व आख़िरीन पर इन की फ़ज़ीलत का इज़्हार फ़रमा कर और अम्बिया, मुर्सलीन व मलाएका और तमाम ख़ल्क़ पर इन की शान बुलन्द कर के। **मस्अला :** दुरूद शरीफ़ की बहुत बरकतें और फ़ज़ीलतें हैं हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दुरूद भेजने वाला मुझ पर दुरूद भेजता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं। मुस्लिम की हदीस शरीफ़ में है : जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस बार भेजता है। तिरमिज़ी की हदीस शरीफ़ में है : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा ज़िक्र किया जाए और वोह दुरूद न भेजे। **147 :** वोह ईज़ा देने वाले कुफ़्फ़ार हैं जो शाने इलाही में ऐसी बातें कहते हैं जिन से वोह मुनज़्ज़ा और पाक है और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं उन पर दारैन में ला'नत। **148 :** आख़िरत में। **149 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ईज़ा देते थे और उन के हक़ में बदगोई करते थे। हज़रते फुज़ैल ने फ़रमाया कि कुत्ते और सुवर को भी नाहक़ ईज़ा देना हलाल नहीं तो मोमिनीन व मोमिनात को ईज़ा देना किस क़दर बद तरीन जुर्म है। **150 :** और सर और चेहरे को छुपाएं जब किसी हाजत के लिये उन को निकलना हो। **151 :** कि येह हुर्रा (आज़ाद) हैं। **152 :** और मुनाफ़िक़ीन उन के दरपै न हों। मुनाफ़िक़ीन की आ़दत थी कि वोह बांदियों को छेड़ा करते थे। इस लिये हुर्रा औ़रतों को हुक्म दिया कि वोह चादर से जिस्म ढांक कर सर और मुंह छुपा कर बांदियों से अपनी वज़्अ़ मुमताज़ कर दें। **153 :** अपने निफ़ाक़ से **154 :** और जो बुरे ख़याल रखते हैं या'नी फ़ाजिर बदकार हैं वोह अगर अपनी बदकारी से बाज़ न आए **155 :** जो इस्लामी लश्करों के मुतअ़ल्लिक़ झूटी ख़बरें उड़ाया करते थे और येह मश्हूर किया करते थे कि मुसल्मानों को हज़ीमत हो गई, वोह क़त्ल कर डाले गए, दुश्मन चढ़ा चला आ रहा है औ इस से उन का मक़्सद मुसल्मानों की दिल शिकनी और उन को परेशानी में डालना होता था। उन लोगों के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया जाता है कि अगर वोह इन हरकात से बाज़ न आए **156 :** और तुम्हें उन पर मुसल्लत् करेंगे। **157 :** फिर मदीनए तृय्यिबा उन से ख़ाली करा लिया जाएगा और वहां से निकाल दिये जाएंगे।

www.dawateislami.net

مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَ قُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ۝٦١ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي
फिटकारे हुए जहां कहीं मिलें पकड़े जाएं और गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं अल्लाह का दस्तूर चला आता है उन

الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٦٢ يَسْئَلُكَ
लोगों में जो पहले गुज़र गए[158] और तुम अल्लाह का दस्तूर हरगिज़ बदलता न पाओगे लोग तुम से

النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ
क़ियामत को पूछते हैं[159] तुम फ़रमाओ इस का इल्म तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानो

السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ۝٦٣ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَ اَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ۝٦٤
शायद क़ियामत पास ही हो[160] बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर ला'नत फ़रमाई और उन के लिये भड़क्ती आग तय्यार कर रखी है

خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ۚ ۝٦٥ يَوْمَ تُقَلَّبُ
उस में हमेशा रहेंगे उस में न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार[161] जिस दिन उन के मुंह उलट उलट

وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَ اَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝٦٦ وَ
कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाए किसी तरह हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता[162] और

قَالُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝٦٧ رَبَّنَاۤ
कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले[163] तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब

اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَ الْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۠ ۝٦٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
उन्हें आग का दूना (दुगना) अज़ाब दे[164] और उन पर बड़ी ला'नत कर ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَ كَانَ
वालो[165] उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया[166] तो अल्लाह ने उसे बरी फ़रमा दिया उस बात से जो उन्हों ने कही[167] और मूसा

158 : या'नी पहली उम्मतों के मुनाफ़िक़ीन जो ऐसी हरकात करते थे उन के लिये भी सुन्नते इलाहिय्यह येही रही कि जहां पाए जाएं मार डाले जाएं। **159 :** कि कब क़ाइम होगी। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन तो तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा के तौर पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़ियामत का वक़्त दरयाफ़्त किया करते थे गोया उन को बहुत जल्दी है और यहूद इस को इम्तिहानन पूछते थे क्यूं कि तौरैत में इस का इल्म मख़्फ़ी रखा गया था तो अल्लाह तआला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाया : **160 :** इस में जल्द करने वालों को तहदीद और इम्तिहानन सुवाल करने वालों को इस्कात (चुप कराना) और उन की दहन दोज़ी (मुंह बन्द करना) है। **161 :** जो उन्हें अज़ाब से बचा सके। **162 :** दुन्या में, तो हम आज इस अज़ाब में गिरिफ़्तार न होते। **163 :** या'नी क़ौम के सरदारों और बड़ी उम्र के लोगों और अपनी जमाअत के आलिमों के, उन्हों ने हमें कुफ़्र की तल्क़ीन की। **164 :** क्यूं कि वोह ख़ुद भी गुमराह हुए और उन्हों ने दूसरों को भी गुमराह किया। **165 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अदबो एहतिराम बजा लाओ और कोई काम ऐसा न करना जो उन के रन्जो मलाल का बाइस हो और **166 :** या'नी उन बनी इसराईल की तरह न होना जो नंगे नहाते थे और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ता'न करते थे कि हज़रत हमारे साथ क्यूं नहीं नहाते

www.dawateislami.net

عِنۡدَ اللّٰهِ وَجِیۡهًا ﴿٦٩﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوۡلُوۡا قَوۡلًا

अल्लाह के यहां आबरू वाला है[168] ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात

سَدِیۡدًا ﴿٧٠﴾ یُّصۡلِحۡ لَکُمۡ اَعۡمَالَکُمۡ وَ یَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَ مَنۡ یُّطِعِ

कहो[169] तुम्हारे आ'माल तुम्हारे लिये संवार देगा[170] और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और

اللّٰهَ وَ رَسُوۡلَهٗ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِیۡمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضۡنَا الۡاَمَانَۃَ عَلَی

उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी काम्याबी पाई बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई[171]

السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ الۡجِبَالِ فَاَبَیۡنَ اَنۡ یَّحۡمِلۡنَهَا وَ اَشۡفَقۡنَ مِنۡهَا

आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गए[172]

وَ حَمَلَهَا الۡاِنۡسَانُ ؕ اِنَّهٗ کَانَ ظَلُوۡمًا جَهُوۡلًا ﴿٧٢﴾ لِّیُعَذِّبَ اللّٰهُ الۡمُنٰفِقِیۡنَ

और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला बड़ा नादान है ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَ الۡمُنٰفِقٰتِ وَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ وَ الۡمُشۡرِکٰتِ وَ یَتُوۡبَ اللّٰهُ عَلَی الۡمُؤۡمِنِیۡنَ

और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को[173] और अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमाए मुसल्मान मर्दों

उन्हें बरस वग़ैरा की कोई बीमारी है। **167 :** इस त़रह़ कि जब एक रोज़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ग़ुस्ल के लिये एक तन्हाई की जगह में पथ्थर पर कपड़े उतार कर रखे और ग़ुस्ल शुरूअ़ किया तो पथ्थर आप के कपड़े ले कर भागा, आप कपड़े लेने के लिये उस की त़रफ़ बढ़े तो बनी इस्राईल ने देख लिया कि जिस्मे मुबारक पर कोई दाग़ और कोई ऐ़ब नहीं है। **168 :** साह़िबे जाह और साह़िबे मन्ज़िलत और मुस्तजाबुद्दा'वात। **169 :** या'नी सच्ची और दुरुस्त ह़क़ व इन्साफ़ की और अपनी ज़बान और कलाम की ह़िफ़ाज़त रखो। येह भलाइयों की अस्ल है, ऐसा करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम पर करम फ़रमाएगा और **170 :** तुम्हें नेकियों की तौफ़ीक़ देगा और तुम्हारी त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाएगा। **171 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद त़ाअ़त व फ़राइज़ हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर पेश किया। इन्हीं को आस्मानों, ज़मीनों, पहाड़ों पर पेश किया था कि अगर वोह इन्हें अदा करेंगे तो सवाब दिये जाएंगे न अदा करेंगे तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि अमानत नमाज़ें अदा करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, ख़ानए का'बा का ह़ज, सच बोलना, नाप और तोल में और लोगों की वदीअ़तों में अ़द्ल करना है। बा'ज़ों ने कहा कि अमानत से मुराद वोह तमाम चीज़ें हैं जिन का हुक्म दिया गया और जिन की मुमानअ़त की गई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने फ़रमाया कि तमाम आ'ज़ा कान हाथ पाउं वग़ैरा सब अमानत हैं, उस का ईमान ही क्या जो अमानत दार न हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अमानत से मुराद लोगों की वदीअ़तें और अ़हदों का पूरा करना है तो हर मोमिन पर फ़र्ज़ है कि न किसी मोमिन की ख़ियानत करे न काफ़िर मुआ़हिद की, न क़लील में न कसीर में। अल्लाह तआ़ला ने येह अमानत आ'याने समावातो अर्द व जिबाल (आस्मान व ज़मीन और पहाड़ों) पर पेश फ़रमाई फिर उन से फ़रमाया : क्या तुम इन अमानतों को मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठाओगे ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ज़िम्मेदारी क्या है ? फ़रमाया : येह कि अगर तुम इन्हें अच्छी त़रह़ अदा करो तो तुम्हें जज़ा दी जाएगी और अगर ना फ़रमानी करो तो तुम्हें अ़ज़ाब किया जाएगा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : नहीं, ऐ रब ! हम तेरे हुक्म के मुत़ीअ़ हैं, न सवाब चाहें न अ़ज़ाब। और उन का येह अ़र्ज़ करना बराहे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत था और अमानत बत़ौरे तख़्यीर पेश की गई थी या'नी उन्हें इख़्तियार दिया गया था कि अपने में क़ुव्वत व हिम्मत पाएं तो उठाएं वरना मा'ज़िरत कर दें, इस का उठाना लाज़िम नहीं किया गया था और अगर लाज़िम किया जाता तो वोह इन्कार न करते। **172 :** कि अगर अदा न कर सके तो अ़ज़ाब किये जाएंगे। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह अमानत आदम عَلَيْهِ السَّلَام के सामने पेश की और फ़रमाया कि मैं ने आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश की थी वोह न उठा सके, क्या तू मअ़ इस की ज़िम्मेदारी के उठा सकेगा ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने इक़रार किया। **173 :** कहा गया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अमानत पेश की ताकि मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ और मुश्रिकीन का

www.dawateislami.net

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۟ ﴿٧٣﴾

और मुसल्मान औ़रतों की और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्‌रबान है

اٰيَاتُهَا ٥٤ ﴿٣٤﴾ سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ ﴿٥٨﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٦

सूरए सबा मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्‌रबान रह़्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي

सब ख़ूबियां अल्लाह को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[2] और आख़िरत में उसी की

الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۟ ﴿١﴾ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا

ता'रीफ़ है[3] और वोही ह़िक्मत वाला ख़बरदार जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है[4] और जो

يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ

ज़मीन से निकलता है[5] और जो आस्मान से उतरता है[6] और जो उस में चढ़ता है[7] और वोही है मेह्‌रबान

الْغَفُوْرُ ۟ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ

बख़्शिश वाला और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी[8] तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम

لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ

बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला[9] उस से ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आस्मानों में

शिर्क ज़ाहिर हो और अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उन के ईमान का इज़्हार हो और अल्लाह तबारक व तआ़ला उन की तौबा क़बूल फ़रमाए और उन पर रह़मत व मग़्फ़िरत करे अगर्चे उन से बा'ज़ ताआ़त में कुछ तक़्सीर भी हुई हो। (خازن) **1 :** सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत "وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ" इस में छ[6] रुकूअ़, चव्वन आयतें और आठ सो तेंतीस कलिमे, एक हज़ार पांच सो बारह ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक़ और ह़ाकिम अल्लाह तआ़ला है और हर ने'मत उसी की त़रफ़ से है तो वोही ह़म्दो सना का मुस्तह़िक़ और सज़ावार है **3 :** या'नी जैसा दुन्या में ह़म्द का मुस्तह़िक़ अल्लाह तआ़ला है वैसा ही आख़िरत में भी ह़म्द का मुस्तह़िक़ वोही है क्यूं कि दोनों जहान उसी की ने'मतों से भरे हुए हैं, दुन्या में तो बन्दों पर उस की ह़म्दो सना वाजिब है क्यूं कि येह दारुत्तक्लीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्नत ने'मतों के सुरूर और राह़तों की ख़ुशी में उस की ह़म्द करेंगे। **4 :** या'नी ज़मीन के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ीने **5 :** जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और ब वक़्ते ह़श्र मुर्दे **6 :** जैसे कि बारिश, बर्फ़, ओले, और त़रह़ त़रह़ की बरकतें और फ़िरिश्ते **7 :** जैसे कि फ़िरिश्ते और दुआएं और बन्दों के अ़मल **8 :** या'नी उन्हों ने क़ियामत के आने का इन्कार किया। **9 :** या'नी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उस से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं तो क़ियामत का आना और उस के क़ाइम होने का वक़्त भी उस के इ़ल्म में है।

وَ لَا فِي الْاَرْضِ وَ لَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَ لَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ

और न ज़मीन में और न उस से छोटी न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली

مُّبِيْنٍ ﴿۳﴾ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

किताब में है[10] ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये येह हैं जिन के लिये

مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۴﴾ وَ الَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ

बख़्शिश है और इज़्ज़त की रोज़ी[11] और जिन्हों ने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की[12] उन

لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿۵﴾ وَ يَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ

के लिये सख़्त अज़ाबे दर्दनाक में से अज़ाब है और जिन्हें इल्म मिला[13] वोह जानते हैं कि जो

اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَ يَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

कुछ तुम्हारी त़रफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा[14] वोही ह़क़ है और इ़ज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे की

الْحَمِيْدِ ﴿۶﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا

राह बताता है और काफ़िर बोले[15] क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें[16] जो तुम्हें ख़बर दे कि जब

مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۷﴾ ج اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

तुम पुर्ज़े हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है क्या **अल्लाह** पर उस ने झूट

كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ

बांधा या उसे सौदा (जुनून) है[17] बल्कि वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[18] अ़ज़ाब

وَ الضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿۸﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ مِّنَ

और दूर की गुमराही में हैं तो क्या उन्हों ने न देखा जो उन के आगे और पीछे है

السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ

आस्मान और ज़मीन[19] हम चाहें तो उन्हें[20] ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान

10 : या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़ में **11 :** जन्नत में। **12 :** और उन में त़ा'न कर के और उन को शे'रो सेह़र वग़ैरा बता कर लोगों को उन से रोकना चाहा (इस का मज़ीद बयान इसी सूरत के आख़िर रुकूअ़ पांच में आएगा।) **13 :** या'नी अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या मोमिनीने अहले किताब मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथियों के **14 :** या'नी क़ुरआने मजीद **15 :** या'नी काफ़िरों ने आपस में मुतअ़ज्जिब हो कर कहा : **16 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। **17 :** जो वोह ऐसी अ़जीबो ग़रीब बातें कहते हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाया कि येह दोनों बातें नहीं, ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन दोनों से मुबर्रा हैं। **18 :** या'नी

www.dawateislami.net

ع ۷

كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ ﴿۹﴾ وَ لَقَدْ

का टुकड़ा गिरा दें बेशक इस[21] में निशानी है हर रुजूअ़ लाने वाले बन्दे के लिये[22] और बेशक

اٰتَیْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ یٰجِبَالُ اَوِّبِیْ مَعَهٗ وَ الطَّیْرَ ۚ وَ اَلَنَّا لَهُ الْحَدِیْدَ ﴿۱۰﴾

हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़्ल दिया[23] ऐ पहाड़ो उस के साथ अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ करो और ऐ परिन्दो[24] और हम ने उस के लिये लोहा नर्म किया[25]

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّ قَدِّرْ فِی السَّرْدِ وَ اعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

कि वसीअ़ ज़िरहें बना और बनाने में अन्दाज़े का लिह़ाज़ रख[26] और तुम सब नेकी करो बेशक मैं तुम्हारे काम

بَصِیْرٌ ﴿۱۱﴾ وَ لِسُلَیْمٰنَ الرِّیْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَ اَسَلْنَا

देख रहा हूं और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह़ की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह[27] और हम ने उस

لَهٗ عَیْنَ الْقِطْرِ ؕ وَ مِنَ الْجِنِّ مَنْ یَّعْمَلُ بَیْنَ یَدَیْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَ

के लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया[28] और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से[29] और

काफ़िर बअ़्स व ह़िसाब का इन्कार करने वाले। **19 :** या'नी क्या वोह अन्धे हैं कि उन्हों ने आस्मान व ज़मीन की त़रफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मा'लूम होता कि वोह हर त़रफ़ से इह़ाते़ में हैं और ज़मीन व आस्मान के अक़्तार से बाहर नहीं जा सकते और मुल्के ख़ुदा से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं, उन्हों ने आयात और रसूल की तक्ज़ीब व इन्कार के दहशत अंगेज़ जुर्म का इरतिकाब करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इसी ह़ालत का ख़याल कर के न डरे। **20 :** उन की तक्ज़ीब व इन्कार की सज़ा में क़ारून की त़रह़ **21 :** नज़र व फ़िक्र **22 :** जो दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला बअ़्स पर और इस के मुन्किर के अ़ज़ाब पर और हर शै पर क़ादिर है। **23 :** या'नी नुबुव्वत और किताब और कहा गया है मुल्क और एक क़ौल येह है कि हुस्ने सौत वग़ैरा तमाम चीज़ें जो आप को ख़ुसूसिय्यत के साथ अ़त़ा फ़रमाई गईं और अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों और परिन्दों को हुक्म दिया : **24 :** जब वोह तस्बीह़ करें उन के साथ तस्बीह़ करो। चुनान्चे, जब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ों से भी तस्बीह़ सुनी जाती और परिन्द झुक आते, येह आप का मो'जिज़ा था। **25 :** कि आप के दस्ते मुबारक में आ कर मिस्ल मोम या गूंधे हुए आटे के नर्म हो जाता और आप उस से जो चाहते बिग़ैर आग के और बिग़ैर ठोंके पीटे बना लेते। इस का सबब येह बयान किया गया है कि जब आप बनी इसराईल के बादशाह हुए तो आप का त़रीक़ा येह था कि आप लोगों के ह़ालात की जुस्तजू के लिये इस त़रह़ निकलते कि लोग आप को न पहचानें और जब कोई मिलता और आप को न पहचानता तो उस से आप दरयाफ़्त करते कि दावूद कैसा शख़्स है ? सब लोग ता'रीफ़ करते। अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता ब सूरते इन्सान भेजा, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से भी ह़स्बे आ़दत येही सुवाल किया तो फ़िरिश्ते ने कहा कि दावूद हैं तो बहुत ही अच्छे आदमी काश उन में एक ख़स्लत न होती। इस पर आप मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि बन्दए ख़ुदा कौन सी ख़स्लत ? उस ने कहा कि वोह अपना और अपने अहलो इ़याल का ख़र्च बैतुल माल से लेते हैं। येह सुन कर आप के ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़ियादा बेहतर होता, इस लिये आप ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि इन के लिये कोई ऐसा सबब कर दे जिस से आप अपने अहलो इ़याल का गुज़ारा करें और बैतुल माल से आप को बे नियाज़ी हो जाए। आप की येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और अल्लाह तआ़ला ने आप के लिये लोहे को नर्म किया और आप को सन्अ़ते ज़िरह साज़ी का इल्म दिया। सब से पहले ज़िरह बनाने वाले आप ही हैं, आप रोज़ाना एक ज़िरह बनाते थे वोह चार हज़ार को बिकती थी, उस में से अपने और अपने अहलो इ़याल पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़ुक़रा व मसाकीन पर भी सदक़ा करते। इस का बयान आयत में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहा नर्म कर के उन से फ़रमाया **26 :** कि उस के ह़ल्क़े यक्सां और मुतवस्सित़ हों, न बहुत तंग न फ़राख़। **27 :** चुनान्चे आप सुब्ह़ को दिमश्क़ से रवाना होते तो दोपहर को क़ैलूला इस्तख़्र में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दिमश्क़ से एक महीने की राह पर है और शाम को इस्तख़्र से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते येह भी तेज़ सुवार के लिये एक महीने का रास्ता है। **28 :** जो तीन रोज़ सर ज़मीने यमन में पानी की त़रह़ जारी रहा। और एक क़ौल येह है कि हर महीने में तीन रोज़ जारी रहता था। और एक क़ौल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये लोहे को नर्म किया था। **29 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया

www.dawateislami.net

مَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ

जो उन में हमारे हुक्म से फिरे[30] हम उसे भड़क्ती आग का अ़ज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते

لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَ تَمَاثِيْلَ وَ جِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَ قُدُوْرٍ

जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल[31] और तस्वीरें[32] और बड़े हौज़ों के बराबर लगन[33] और लंगर दार

رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾

देगें[34] ऐ दावूद वालो शुक्र करो[35] और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ

फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा[36] जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने

تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ

कि उस का अ़सा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की ह़क़ीक़त खुल गई[37] अगर ग़ैब जानते होते[38]

مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ

तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते[39] बेशक सबा[40] के लिये उन की आबादी में[41] निशानी थी[42]

कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये जिन्नात को मुत़ीअ़ किया। **30 :** और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की फ़रमां बरदारी न करे **31 :** और आ़लीशान इमारतें और मस्जिदें और उन्हीं में से बैतुल मक़्दिस भी है **32 :** दरिन्दों और परिन्दों वग़ैरा की तांबे और बिल्लोर और पथ्थर वग़ैरा से और उस शरीअ़त में तस्वीर बनाना ह़राम न था। **33 :** इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार आदमी खाते। **34 :** जो अपने पायों पर क़ाइम थीं और बहुत बड़ी थीं ह़त्ता कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं सीढ़ियां लगा कर उन पर चढ़ते थे येह यमन में थीं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने फ़रमाया कि **35 :** अल्लाह तआ़ला का उन ने'मतों पर जो उस ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाईं उस की इत़ाअ़त बजा ला कर। **36 :** ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की थी कि उन की वफ़ात का ह़ाल जिन्नात पर ज़ाहिर न हो ताकि इन्सानों को मा'लूम हो जाए कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते। फिर आप मेह़राब में दाख़िल हुए और ह़स्बे आ़दत नमाज़ के लिये अपने अ़सा पर तक्या लगा कर खड़े हो गए। जिन्नात ह़स्बे दस्तूर अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे और येह समझते रहे कि ह़ज़रत ज़िन्दा हैं और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का अ़र्सए दराज़ तक इसी ह़ालत पर रहना उन के लिये कुछ ह़ैरत का बाइ़स नहीं हुवा क्यूं कि वोह बारहा देखते थे कि आप एक माह दो दो माह और इस से ज़ियादा अ़र्से तक इ़बादत में मश्ग़ूल रहते हैं और आप की नमाज़ बहुत दराज़ होती है ह़त्ता कि आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्त़लअ़ न हुए और अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का अ़सा खा लिया और आप का जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ाइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इ़ल्म हुवा। **37 :** कि वोह ग़ैब नहीं जानते **38 :** तो ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात से मुत्त़लअ़ होते **39 :** और एक साल तक इमारत के कामों में तक्लीफ़ शाक़्क़ा उठाते न रहते। मरवी है कि ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बैतुल मक़्दिस की बिना (बुन्याद) उस मक़ाम पर रखी थी जहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ख़ैमा नस्ब किया गया था, उस इमारत के पूरा होने से क़ब्ल ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आप ने अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को इस की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्चे, आप ने शयात़ीन को इस की तक्मील का हुक्म दिया। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब पहुंचा तो आप ने दुआ़ की, कि आप की वफ़ात शयात़ीन पर ज़ाहिर न हो ताकि वोह इमारत की तक्मील तक मसरूफ़े अ़मल रहें और उन्हें जो इ़ल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह बात़िल हो जाए। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई, तेरह साल की उ़म्र शरीफ़ में आप सरीर आराए सल्त़नत हुए, चालीस साल हुक्मरानी फ़रमाई। **40 :** सबा अ़रब का एक क़बीला है जो अपने जद के नाम से मश्हूर है और वोह जद सबा बिन यश्जुब बिन या'रुब बिन क़ह़्त़ान है। **41 :** जो हुदूदे यमन में वाक़ेअ़ थी **42 :** अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत व क़ुदरत पर दलालत करने

جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ

दो बाग़ दहने और बाएं[43] अपने रब का रिज़्क़ खाओ[44] और उस का शुक्र अदा करो[45]

بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ

पाकीज़ा शहर[46] बख़्शने वाला रब[47] तो उन्हों ने मुंह फेरा[48] तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब)

الْعَرِمِ وَ بَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّ اَثْلٍ وَّ شَيْءٍ

भेजा[49] और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बुक्टा मेवा[50] और झाउ (झाड़ी) और कुछ

مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَ هَلْ نُجٰزِيْۤ اِلَّا

थोड़ी सी बेरियां[51] हम ने उन्हें येह बदला दिया उन की नाशुक्री[52] की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं

الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾ وَ جَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى

उसी को जो नाशुक्रा है और हम ने किये थे उन में[53] और उन शहरों में जिन में हम ने बरकत रखी[54] सरे राह

ظَاهِرَةً وَّ قَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَ اَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾

कितने शहर[55] और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा[56] उन में चलो रातों और दिनों अम्नो अमान से[57]

वाली और वोह निशानी क्या थी उस का आगे बयान होता है। **43 :** या'नी उन की वादी के दाहने और बाएं दूर तक चले गए और उन से कहा गया था **44 :** बाग़ ऐसे कसीरुस्समर (बहुत फलदार) थे कि जब कोई शख़्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिग़ैर हाथ लगाए क़िस्म क़िस्म के मेवों से उस का टोकरा भर जाता। **45 :** या'नी इस ने'मत पर उस की ताअ़त बजा लाओ। **46 :** लतीफ़ आबो हवा, साफ़ सुथरी सर ज़मीन, न उस में मच्छर न मख्खी न खटमल न सांप न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी का येह आ़लम कि अगर कहीं और का कोई शख़्स उस शहर में गुज़र जाए और उस के कपड़ों में जूएं हों तो सब मर जाएं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि शहरे सबा सन्आ़ से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर था। **47 :** या'नी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और इताअ़त बजा लाओ तो वोह बख़्शिश फ़रमाने वाला है। **48 :** उस की शुक्र गुज़ारी से और अम्बिया عَلَیۡہِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की। वह्ब का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला ने उन की त़रफ़ तेरह नबी भेजे जिन्हों ने उन को ह़क़ की दा'वतें दीं और अल्लाह तआ़ला की ने'मतें याद दिलाईं और उस के अ़ज़ाब से डराया मगर वोह ईमान न लाए और उन्हों ने अम्बिया को झुटला दिया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर ख़ुदा की कोई भी ने'मत हो, तुम अपने रब से कह दो कि उस से हो सके तो वोह इन ने'मतों को रोक ले। **49 :** अ़ज़ीम सैलाब जिस से उन के बाग़ अम्वाल सब डूब गए और उन के मकानात रैत में दफ़्न हो गए और इस त़रह तबाह हुए कि उन की तबाही अ़रब के लिये मसल बन गई। **50 :** निहायत बद मज़ा **51 :** जैसी वीरानों में जम आती हैं, इस त़रह की झाड़ियों और वह्शत नाक जंगल को जो उन के ख़ुशनुमा बाग़ों की जगह पैदा हो गया था ब त़रीक़े मुशाकलत बाग़ फ़रमाया। **52 :** और उन के कुफ़्र **53 :** या'नी शहरे सबा में **54 :** कि वहां के रहने वालों को वसीअ़ ने'मतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये, मुराद इन से शाम के शहर हैं। **55 :** क़रीब क़रीब, सबा से शाम तक सफ़र करने वालों को इस राह में तोशा और पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न होती। **56 :** कि चलने वाला एक मक़ाम से सुब्ह चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाए जहां ज़रूरिय्यात के तमाम सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाए, यमन से शाम तक का तमाम सफ़र उसी आसाइश के साथ तै हो सके और हम ने उन से कहा कि **57 :** न रातों में कोई खटका न दिनों में कोई तक्लीफ़, न दुश्मन का अन्देशा न भूक प्यास का ग़म। मालदारों में ह़सद पैदा हुवा कि हमारे और ग़रीबों के दरमियान कोई फ़र्क़ ही नहीं रहा, क़रीब क़रीब की मन्ज़िलें हैं, लोग ख़िरामां ख़िरामां हवा ख़ोरी करते चले जाते हैं, थोड़ी देर के बा'द दूसरी आबादी आ जाती है, वहां आराम करते हैं न सफ़र में तकान (थकन) है न कोफ़्त, अगर मन्ज़िलें दूर होतीं, सफ़र की मुद्दत दराज़ होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता तो हम तोशा साथ लेते पानी के इन्तिज़ाम करते सुवारियां और ख़ुद्दाम साथ रखते, सफ़र का लुत्फ़ आता और अमीरो ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता, येह ख़याल कर के उन्हों ने कहा।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَیْنَ اَسْفَارِنَا وَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِیْثَ

तो बोले ऐ हमारे रब हमें सफ़र में दूरी डाल[58] और उन्हों ने ख़ुद अपना ही नुक़्सान किया तो हम ने उन्हें कहानियां कर दिया[59]

وَ مَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾ وَ

और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया[60] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये[61] और

لَقَدْ صَدَّقَ عَلَیْهِمْ اِبْلِیْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِیْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۲۰﴾

बेशक इब्लीस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया[62] तो वोह उस के पीछे हो लिये मगर एक गुरोह कि मुसल्मान था[63]

وَ مَا كَانَ لَهٗ عَلَیْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ یُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ

और शैतान का उन पर[64] कुछ क़ाबू न था मगर इस लिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन

ع ۲/۸ هُوَ مِنْهَا فِیْ شَكٍّؕ وَ رَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَفِیْظٌ ﴿۲۱﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِیْنَ

इस से शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है तुम फ़रमाओ[65] पुकारो उन्हें जिन्हें

زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِۚ لَا یَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِی

अल्लाह के सिवा[66] समझे बैठे हो[67] वोह ज़र्रा भर के मालिक नहीं आस्मानों में और न

الْاَرْضِ وَ مَا لَهُمْ فِیْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّ مَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِیْرٍ ﴿۲۲﴾ وَ لَا

ज़मीन में और न उन का इन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उन में से कोई मददगार और

تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ

उस के पास शफ़ाअ़त काम नहीं देती मगर जिस के लिये वोह इज़्न फ़रमाए यहां तक कि जब इज़्न दे कर उन के दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है

قَالُوْا مَاذَاۙ قَالَ رَبُّكُمْؕ قَالُوا الْحَقَّۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ ﴿۲۳﴾ قُلْ مَنْ

एक दूसरे से[68] कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वोह कहते हैं जो फ़रमाया हक़ फ़रमाया[69] और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन

58 : या'नी हमारे और शाम के दरमियान जंगल और बयाबान कर दे कि बिग़ैर तोशा और सुवारी के सफ़र न हो सके। 59 : बा'द वालों के लिये कि उन के अह्वाल से इब्रत हासिल करें। 60 : क़बीला क़बीला मुन्तशिर हो गया, वोह बस्तियां ग़र्क़ हो गईं और लोग बे ख़ानमां (बे सरो सामान) हो कर जुदा जुदा बिलाद में पहुंचे, ग़स्सान शाम में और अज़्द उम्मान में और ख़ुज़ाआ तिहामा में और आले ख़ुज़ैमा इराक़ में और औस व ख़ज़रज का जद अम्र बिन आमिर मदीना में। 61 : और सब्रो शुक्र मोमिन की सिफ़त है कि जब वोह बला में मुब्तला होता है सब्र करता है और जब ने'मत पाता है शुक्र बजा लाता है। 62 : या'नी इब्लीस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वोह शह्वत व हिर्स और ग़ज़ब के ज़रीए गुमराह कर देगा, येह गुमान उस ने अहले सबा पर बल्कि तमाम काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वोह उस के मुत्तबेअ़ हो गए और उस की इताअ़त करने लगे। हसन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि शैतान ने न किसी पर तलवार खींची न किसी पर कोड़े मारे झूटे वा'दों और बातिल उम्मीदों से अहले बातिल को गुमराह कर दिया। 63 : उन्हों ने उस का इत्तिबाअ़ न किया। 64 : जिन के हक़ में उस का गुमान पूरा हुवा 65 : ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के काफ़िरों से 66 : अपना मा'बूद 67 : कि वोह तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि किसी नफ़्अ़ व ज़रर में 68 : ब तरीक़े इस्तिब्शार।

www.dawateislami.net

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى

जो तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों और ज़मीन से[70] तुम खुद ही फ़रमाओ **अल्लाह**[71] और बेशक हम या तुम[72] या तो ज़रूर

هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۴﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ

हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में[73] तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उस की तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कौतकों

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ

(करतूतों) का हम से सुवाल[74] तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जम्अ़ करेगा[75] फिर हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा देगा[76] और वोही है

الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۶﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ

बड़ा न्याव चुकाने वाला (दुरुस्त फ़ैसला करने वाला) सब कुछ जानता तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वोह शरीक जो तुम ने उस से मिलाए हैं[77] हिश्त (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि

هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا

वोही है **अल्लाह** इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है[78] खुश ख़बरी देता[79]

وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

और डर सुनाता[80] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते[81] और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा[82]

69 : या'नी शफ़ाअ़त करने वालों को ईमानदारों की शफ़ाअ़त का इज़्न दिया। **70 :** या'नी आस्मान से मींह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर। **71 :** क्यूं कि इस सुवाल का बजुज़ इस के और कोई जवाब ही नहीं। **72 :** या'नी दोनों फ़रीक़ों में से हर एक के लिये इन दोनों हालों में से एक हाल ज़रूरी है **73 :** और येह ज़ाहिर है कि जो शख़्स सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला को रोज़ी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक ज़र्रा भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर आयात में बयान हो चुका) वोह यक़ीनन खुली गुमराही में है। **74 :** बल्कि हर शख़्स से उस के अ़मल का सुवाल होगा और हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। **75 :** रोज़े क़ियामत **76 :** तो अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में दाख़िल करेगा। **77 :** या'नी जिन बुतों को तुम ने इबादत में शरीक किया है मुझे दिखाओ तो किस क़ाबिल हैं, क्या वोह कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं ? और जब येह कुछ नहीं तो उन को खुदा का शरीक बनाना और उन की इबादत करना कैसी अ़ज़ीम ख़ता है, इस से बाज़ आओ। **78 :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रिसालत आ़म्मा है, तमाम इन्सान इस के इहाते में हैं गोरे हों या काले, अ़रबी हों या अ़जमी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वोह सब आप के उम्मती। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है : सय्यिदे आ़लम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : मुझे पांच चीज़ें ऐसी अ़ता फ़रमाई गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न दी गईं : (1) एक माह की मसाफ़त के रो'ब से मेरी मदद की गई, (2) तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहां मेरे उम्मती को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और (3) मेरे लिये ग़नीमतें ह़लाल की गईं जो मुझ से पहले किसी के लिये ह़लाल न थीं और (4) मुझे मर्तबए शफ़ाअ़त अ़ता किया गया और (5) अम्बिया ख़ास अपनी क़ौम की त़रफ़ मब्ऊ़स होते थे और मैं तमाम इन्सानों की त़रफ़ मब्ऊ़स फ़रमाया गया। ह़दीस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के फ़ज़ाइले मख़्सूसा का बयान है जिन में से एक आप की रिसालते आ़म्मा है जो तमाम जिन्नो इन्स को शामिल है। **खुलासा** येह कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ के रसूल हैं और येह मर्तबा ख़ास आप का है जो कुरआने करीम की आयात और अह़ादीसे कसीरा से साबित है। सूरए फ़ुरक़ान की इब्तिदा में भी इस का बयान गुज़र चुका है (خازن) **79 :** ईमान वालों को **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल की **80 :** काफ़िरों को उस के अ़द्ल का। **81 :** और अपने जहल की वज्ह से आप की मुख़ालफ़त करते हैं **82 :** या'नी क़ियामत का वा'दा।

www.dawateislami.net

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ

अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वा'दा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे

سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

हट सको न आगे बढ़ सको[83] और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस

النصف ٢ ع

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ط وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ

कुरआन पर न उन किताबों पर जो इस से आगे थीं[84] और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास

عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

खड़े किये जाएंगे उन में एक दूसरे पर बात डालेगा वोह जो दबे थे[85]

اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ

उन से कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे[86] अगर तुम न होते[87] तो हम ज़रूर ईमान ले आते वोह जो ऊंचे

الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى

खिंचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا

बा'द इस के कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम ख़ुद मुजरिम थे और कहेंगे वोह जो दबे हुए थे

لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ

उन से जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाउं (फ़रेब) था[88] जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि अल्लाह का

بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ط وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ط وَ

इन्कार करें और उस के बराबर वाले ठहराएं और दिल ही दिल में पचताने लगे[89] जब अ़ज़ाब देखा[90] और

جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

हम ने तौक़ डाले उन की गरदनों में जो मुन्किर थे[91] वोह क्या बदला पाएंगे मगर वोही

83 : या'नी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताख़ीर मुम्किन नहीं और अगर जल्दी चाहो तो तक़दुम मुम्किन नहीं, बहर तक़्दीर इस वा'दे का अपने वक़्त पर पूरा होना। 84 : तौरैत और इन्जील वग़ैरा। 85 : या'नी ताबेअ़ और पैरव थे 86 : या'नी अपने सरदारों से 87 : और हमें ईमान लाने से न रोकते 88 : या'नी तुम शबो रोज़ हमारे लिये मक्र करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे 89 : दोनों फ़रीक़ ताबेअ़ भी और मत्बूअ़ भी, पैरव भी और उन के बहकाने वाले भी, ईमान न लाने पर 90 : जहन्नम का। 91 : ख़्वाह बहकाने वाले हों या उन के कहने में

www.dawateislami.net

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ

जो कुछ करते थे[92] और हम ने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों

مُتْرَفُوْهَاۤ اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا

(अमीरों) ने येही कहा कि तुम जो ले कर भेजे गए हम उस के मुन्किर हैं[93] और बोले हम माल और

وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अ़ज़ाब होना नहीं[94] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ करता है जिस के

يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع وَمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ

लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[95] लेकिन बहुत लोग नहीं जानते और तुम्हारे माल और

لَاۤ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰۤى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ

तुम्हारी औलाद इस क़ाबिल नहीं कि तुम्हें हमारे क़ुर्ब तक पहुंचाएं मगर वोह जो ईमान लाए और नेकी

صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ

की[96] उन के लिये दूना दून (कई गुना) सिला[97] उन के अ़मल का बदला और वोह बालाख़ानों में

आने वाले, तमाम कुफ़्फ़ार की येही सज़ा है। **92 :** दुन्या में कुफ़्र और मा'सियत। **93 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर फ़रमाई गई कि आप इन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से रन्जीदा न हों, कुफ़्फ़ार का अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही दस्तूर रहा है और मालदार लोग इसी त़रह़ अपने माल और औलाद के ग़ुरूर में अम्बिया की तक्ज़ीब करते रहे हैं। **शाने नुज़ूल :** दो शख़्स शरीके तिजारत थे, उन में से एक मुल्के शाम को गया और एक मक्कए मुकर्रमा में रहा। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मब्ऊ़स हुए और उस ने मुल्के शाम में हुज़ूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त़ लिखा और उस से हुज़ूर का मुफ़स्सल ह़ाल दरयाफ़्त किया। उस शरीक ने जवाब में लिखा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान तो किया है लेकिन सिवाए छोटे दरजे के ह़क़ीर व ग़रीब लोगों के और किसी ने उन का इत्तिबाअ़ नहीं किया। जब येह ख़त़ उस के पास पहुंचा तो वोह अपने तिजारती काम छोड़ कर मक्कए मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का पता बताओ और मा'लूम कर के हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया आप दुन्या को क्या दा'वत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं? फ़रमाया : बुत परस्ती छोड़ कर एक **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करना, और आप ने अह़कामे इस्लाम बताए। येह बातें उस के दिल में असर कर गईं और वोह शख़्स पिछली किताबों का आ़लिम था, कहने लगा कि मैं गवाही देता हूं कि आप बेशक **अल्लाह** तआ़ला के रसूल हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने येह कैसे जाना? उस ने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया पहले छोटे दरजे के ग़रीब लोग ही उस के ताबेअ़ हुए, येह सुन्नते इलाहिय्यह हमेशा ही जारी रही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई **94 :** या'नी जब दुन्या में हम ख़ुशहाल हैं तो हमारे आ'माल व अफ़्आ़ल **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द होंगे और ऐसा हुवा तो आख़िरत में अ़ज़ाब नहीं होगा। **अल्लाह** तआ़ला ने उन के इस ख़याले बात़िल का इब्त़ाल फ़रमा दिया कि सवाबे आख़िरत को मईशते दुन्या पर क़ियास करना ग़लत़ है। **95 :** ब त़रीक़े इब्तिला व इम्तिह़ान। तो दुन्या में रोज़ी की कशाइश रिज़ाए इलाही की दलील नहीं और ऐसे ही इस की तंगी **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी की दलील नहीं। कभी गुनहगार पर वुस्अ़त करता है, कभी फ़रमां बरदार पर तंगी, येह उस की ह़िक्मत है, सवाबे आख़िरत को इस पर क़ियास करना ग़लत़ व बे जा है। **96 :** या'नी माल किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए मोमिने सालेह़ के जो उस को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे और औलाद किसी के लिये सबबे क़ुर्ब नहीं सिवाए उस मोमिन के जो उन्हें नेक इल्म सिखाए दीन की ता'लीम दे और सालेह़ व मुत्तक़ी बनाए। **97 :** एक नेकी के बदले दस से ले कर सात सो गुना तक और इस से भी ज़ियादा जितना ख़ुदा चाहे।

اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الَّذِیْنَ یَسْعَوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓىٕكَ فِی الْعَذَابِ

अम्नो अमान से हैं[98] और वोह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं[99] वोह अ़ज़ाब में

مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ

ला धरे जाएंगे[100] तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और

یَقْدِرُ لَهٗؕ وَ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗۚ وَ هُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ﴿۳۹﴾

तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे[101] और जो चीज़ तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा[102] और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला[103]

وَ یَوْمَ یَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا ثُمَّ یَقُوْلُ لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اَهٰۤؤُلَآءِ اِیَّاكُمْ كَانُوْا

और जिस दिन उन सब को उठाएगा[104] फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा क्या येह तुम्हें

یَعْبُدُوْنَ ﴿۴۰﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِیُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْۚ بَلْ كَانُوْا

पूजते थे[105] वोह अ़र्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वोह[106] बल्कि वोह

یَعْبُدُوْنَ الْجِنَّۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿۴۱﴾ فَالْیَوْمَ لَا یَمْلِكُ

जिन्नों को पूजते थे[107] उन में अक्सर उन्हीं पर यक़ीन लाए थे[108] तो आज तुम में एक दूसरे

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّ لَا ضَرًّاؕ وَ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا

के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा[109] और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से उस आग

عَذَابَ النَّارِ الَّتِیْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا

का अ़ज़ाब चखो जिसे झुटलाते थे[110] और जब उन पर हमारी रोशन आयतें[111]

98 : या'नी जन्नत के मनाज़िले बाला में। **99 :** या'नी क़ुरआने करीम पर ज़बाने ता'न खोलते हैं और येह गुमान करते हैं कि अपनी इन बातिल कारियों से वोह लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे और उन का येह मक्र इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वोह हमारे अ़ज़ाब से बच रहेंगे, क्यूं कि उन का ए'तिक़ाद येह है कि मरने के बा'द उठना ही नहीं है तो अ़ज़ाब सवाब कैसा। **100 :** और उन की मक्कारियां उन्हें कुछ काम न आएंगी। **101 :** अपने हस्बे हिक्मत। **102 :** दुन्या में या आख़िरत में। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ख़र्च करो तुम पर ख़र्च किया जाएगा। दूसरी ह़दीस में है : सदक़े से माल कम नहीं होता, मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है, तवाज़ोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं। **103 :** क्यूं कि उस के सिवा जो कोई किसी को देता है ख़्वाह बादशाह लश्कर को या आक़ा ग़ुलाम को या साहिबे ख़ाना अपने इ़याल को वोह अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई और उस की अ़ता फ़रमाई हुई रोज़ी में से देता है। रिज़्क़ और उस से मुन्तफ़ेअ़ होने के अस्बाब का ख़ालिक़ सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं, वोही रज़्ज़ाक़े ह़क़ीक़ी है। **104 :** या'नी उन मुश्रिकीन को **105 :** दुन्या में **106 :** या'नी हमारी इन से कोई दोस्ती नहीं तो हम किस त़रह इन के पूजने से राज़ी हो सकते थे, हम इस से बरी हैं। **107 :** या'नी शयात़ीन को कि उन की इत़ाअ़त के लिये ग़ैरे ख़ुदा को पूजते थे। **108 :** या'नी शयात़ीन पर। **109 :** और वोह झूटे मा'बूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़्अ़ नुक़्सान न पहुंचा सकेंगे। **110 :** दुन्या में। **111 :** या'नी आयाते क़ुरआन ज़बाने सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से।

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ

पढ़ी जाएं तो कहते हैं[112] येह तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा

اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

के मा'बूदों से[113] और कहते हैं[114] येह तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुवा और काफ़िरों ने हक़ को

لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴۳﴾ وَمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ

कहा[115] जब उन के पास आया येह तो नहीं मगर खुला जादू और हम ने उन्हें कुछ किताबें

كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿۴۴﴾ ؕ وَكَذَّبَ

न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया[116] और इन से

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ قف

अगलों ने[117] झुटलाया और येह उस के दसवें को भी न पहुंचे जो हम ने उन्हें दिया था[118] फिर उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۵﴾ ع قُلْ اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ ع

तो कैसा हुवा मेरा इन्कार करना[119] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक ही नसीहत करता हूं[120] कि अल्लाह के लिये खड़े रहो[121]

مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا قف مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا

दो दो[122] और अकेले अकेले[123] फिर सोचो[124] कि तुम्हारे उन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वोह तो नहीं मगर तुम्हें

112 : हज़रते सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत **113 :** या'नी बुतों से। **114 :** कुरआन शरीफ़ की निस्बत **115 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को **116 :** या'नी आप से पहले मुश्रिकीने अ़रब के पास न कोई किताब आई न रसूल जिस की त़रफ़ अपने दीन की निस्बत कर सकें तो येह जिस ख़याल पर हैं उन के पास उस की कोई सनद नहीं वोह उन के नफ़्स का फ़रेब है। **117 :** या'नी पहली उम्मतों ने मिस्ल कुरैश के रसूलों की तक्ज़ीब की और उन को **118 :** या'नी जो कुव्वत व कस्रते माल व औलाद व तूले उम्र पहलों को दी गई थी मुश्रिकीने कुरैश के पास तो उस का दसवां हिस्सा भी नहीं, इन के पहले तो उन से त़ाक़त व कुव्वत, मालो दौलत में दस गुना से ज़ियादा थे। **119 :** या'नी उन को ना पसन्द रखना और अ़ज़ाब देना और हलाक फ़रमाना या'नी पहले मुकज़्ज़िबीन ने जब मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अ़ज़ाब से उन्हें हलाक किया और उन की त़ाक़त व कुव्वत और मालो दौलत कोई चीज़ भी काम न आई, इन लोगों की क्या हक़ीक़त है इन्हें डरना चाहिये। **120 :** अगर तुम ने इस पर अ़मल किया तो तुम पर हक़ वाज़ेह हो जाएगा और तुम वसाविस व शुबुहात और गुमराही की मुसीबत से नजात पाओगे, वोह नसीहत येह है **121 :** मह्ज़ त़लबे हक़ की निय्यत से, अपने आप को त़रफ़ दारी और तअ़स्सुब से ख़ाली कर के **122 :** ताकि बाहम मश्वरा कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सके और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें **123 :** ताकि मज्मअ़ और इज़्दिहाम से त़बीअ़त मुतवह्हिश न हो और तअ़स्सुब और त़रफ़ दारी व मुक़ाबला व लिहाज़ वग़ैरा से त़बीअ़तें पाक रहें और अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़अ़ मिले। **124 :** और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत ग़ौर करो कि क्या जैसा कि कुफ़्फ़ार आप की त़रफ़ जुनून की निस्बत करते हैं इस में सच्चाई का कुछ शाएबा भी है ? तुम्हारे अपने तजरिबे में, कुरैश में या नौए इन्सान में कोई शख़्स भी इस मर्तबे का आ़क़िल नज़र आया है ? क्या ऐसा ज़हीन ऐसा साइबुर्राए देखा है ? ऐसा सच्चा ऐसा पाक नफ़्स कोई और भी पाया है ? जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म (फ़ैसला) कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इन औसाफ़ में यक्ता हैं तो तुम यक़ीन जानो।

www.dawateislami.net

نَذِيۡرٌ لَّكُمۡ بَيۡنَ يَدَىۡ عَذَابٍ شَدِيۡدٍ ﴿۴۶﴾ قُلۡ مَا سَاَلۡتُكُمۡ مِّنۡ اَجۡرٍ

डर सुनाने वाले[125] एक सख़्त अ़ज़ाब के आगे[126] तुम फ़रमाओ मैं ने तुम से इस पर कुछ अज्र मांगा हो

فَهُوَ لَكُمۡ ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ﴿۴۷﴾ قُلۡ

तो वोह तुम्हीं को[127] मेरा अज्र तो **अल्लाह** ही पर है और वोह हर चीज़ पर गवाह है तुम फ़रमाओ

اِنَّ رَبِّىۡ يَقۡذِفُ بِالۡحَـقِّ ۚ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ ﴿۴۸﴾ قُلۡ جَآءَ الۡحَـقُّ وَمَا

बेशक मेरा रब हक़ का इल्क़ा फ़रमाता है[128] बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का तुम फ़रमाओ हक़ आया[129] और

يُبۡدِئُ الۡبَاطِلُ وَمَا يُعِيۡدُ ﴿۴۹﴾ قُلۡ اِنۡ ضَلَلۡتُ فَاِنَّمَاۤ اَضِلُّ عَلٰى نَفۡسِىۡ ۚ

बात़िल न पहल करे और न फिर (लौट) कर आए[130] तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका[131]

وَاِنِ اهۡتَدَيۡتُ فَبِمَا يُوۡحِىۡۤ اِلَىَّ رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ سَمِيۡعٌ قَرِيۡبٌ ﴿۵۰﴾ وَلَوۡ تَرٰٓى

और अगर मैं ने राह पाई तो उस के सबब जो मेरा रब मेरी त़रफ़ वह्य फ़रमाता है[132] बेशक वोह सुनने वाला नज़्दीक है[133] और किसी त़रह तू देखे[134]

اِذۡ فَزِعُوۡا فَلَا فَوۡتَ وَاُخِذُوۡا مِنۡ مَّكَانٍ قَرِيۡبٍ ۙ ﴿۵۱﴾ وَّقَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَ

जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे[135] और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे[136] और कहेंगे हम इस पर ईमान लाए[137] और

اَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ ۚ ﴿۵۲﴾ وَّقَدۡ كَفَرُوۡا بِهٖ مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَ

अब वोह इसे क्यूंकर पाएं इतनी दूर जगह से[138] कि पहले[139] तो इस से कुफ़्र कर चुके थे और

125 : **अल्लाह** तआ़ला के नबी **126 :** और वोह अ़ज़ाबे आख़िरत है। **127 :** या'नी मैं नसीह़त व हिदायत और तब्लीग़ व रिसालत पर तुम से कोई अज्र नहीं त़लब करता **128 :** अपने अम्बिया की त़रफ़। **129 :** या'नी क़ुरआन व इस्लाम **130 :** या'नी शिर्क व कुफ़्र मिट गया, न उस की इब्तिदा रही न उस का इआ़दा, मुराद येह है कि वोह हलाक हो गया। **131 :** कुफ़्फ़ारे मक्का हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहते थे कि आप गुमराह हो गए। (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى) **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुक्म दिया कि आप उन से फ़रमा दें कि अगर येह फ़र्ज़ किया जाए कि मैं बहका तो इस का वबाल मेरे नफ़्स पर है। **132 :** हि़क्मत व बयान की, क्यूं कि राहयाब होना उसी की तौफ़ीक़ व हिदायत पर है। अम्बिया सब मा'सूम होते हैं गुनाह उन से नहीं हो सकता और हुज़ूर तो सय्यिदुल अम्बिया हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ल्क़ को नेकियों की राहें आप के इत्तिबाअ़ से मिलती हैं, बा वुजूद जलालते मन्ज़िलत और रिफ़्अ़ते मर्तबत के आप को हुक्म दिया गया कि ज़लालत की निस्बत अ़ला सबीलिल फ़र्ज़ अपने नफ़्स की त़रफ़ फ़रमाएं ताकि ख़ल्क़ को मा'लूम हो कि ज़लालत का मन्शा इन्सान का नफ़्स है, जब इस को उस पर छोड़ दिया जाता है इस से ज़लालत पैदा होती है और हिदायत ह़ज़रते ह़क़ عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व मौहिबत से ह़ासिल होती है, नफ़्स उस का मन्शा नहीं। **133 :** हर राहयाब और गुमराह को जानता है और उन के अ़मल व किरदार से बा ख़बर है, कोई कितना ही छुपाए किसी का ह़ाल उस से छुप नहीं सकता। अ़रब के एक मायानाज़ शाइ़र इस्लाम लाए तो कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि क्या तुम अपने दीन से फिर गए और इतने बड़े शाइ़र और ज़बान के माहिर हो कर मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए ? उन्हों ने कहा : हां वोह मुझ पर ग़ालिब आ गए, क़ुरआने करीम की तीन आयतें मैं ने सुनीं और चाहा कि उन के क़ाफ़िये पर तीन शे'र कहूं, हर चन्द कोशिश की, मेह़नत उठाई, अपनी तमाम क़ुव्वत सर्फ़ कर दी मगर येह मुम्किन न हो सका, तब मुझे यक़ीन हो गया कि येह बशर का कलाम नहीं वोह आयतें ''قُلْ اِنَّ رَبِّىْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ'' से ''سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ'' तक हैं। (روح البیان) **134 :** कुफ़्फ़ार को मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन **135 :** और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे **136 :** जहां भी होंगे क्यूं कि कहीं भी हों **अल्लाह** तआ़ला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते, उस वक़्त ह़क़ की मा'रिफ़त के लिये मुज़्त़र होंगे। **137 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर। **138 :** या'नी अब मुकल्लफ़ होने के मह़ल से दूर हो कर तौबा व ईमान कैसे पा सकेंगे **139 :** या'नी अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

يَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۵۳﴾ وَ حِيْلَ بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ مَا

बे देखे फेंक मारते हैं[140] दूर मकान से[141] और रोक कर दी गई उन में और उस में

يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِیْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿۵۴﴾ ع

जिसे चाहते हैं[142] जैसे उन के पहले गुरौहों से किया गया था[143] बेशक वोह धोका डालने वाले शक में थे[144]

اٰياتها ۴۵ ﴿۳۵﴾ سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ ﴿۴۳﴾ رکوعاتها ۵

सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓىِٕكَةِ رُسُلًا اُولِیْۤ

सब ख़ूबियां अल्लाह को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला[2] जिन के

اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِی الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى

दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे[3] बेशक अल्लाह

كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ

हर चीज़ पर क़ादिर है अल्लाह जो रह़मत लोगों के लिये खोले[4] उस का कोई रोकने वाला नहीं

وَ مَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ يٰۤاَيُّهَا

और जो कुछ रोक ले तो उस की रोक के बा'द उस का कोई छोड़ने वाला नहीं और वोही इ़ज़्ज़तो ह़िक्मत वाला है ऐ

النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ

लोगो ! अपने ऊपर अल्लाह का एह़सान याद करो[5] क्या अल्लाह के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ कि आस्मान और

देखने से पहले **140 :** या'नी बे जाने कह गुज़रते हैं, जैसा कि उन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कहा था कि वोह शाइ़र हैं, साह़िर हैं, काहिन हैं हालां कि उन्हों ने कभी हु़ज़ूर से शे'रो सेह़्र व कहानत का सुदूर न देखा था। **141 :** या'नी सिद्क़ो वाक़िइय्यत से दूर, कि उन के उन मत़ाइन (त़ा'नों) को सिद्क़ से क़ुर्ब व नज़्दीकी भी नहीं। **142 :** या'नी तौबा व ईमान में। **143 :** कि उन की तौबा व ईमान वक़्ते यास क़बूल न फ़रमाई गई। **144 :** ईमानिय्यात के मुतअ़ल्लिक़। **1 :** सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, नव सो सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सो तीस हुरूफ़ हैं। **2 :** अपने अम्बिया की त़रफ़। **3 :** फ़िरिश्तों में और इन के सिवा और मख़्लूक़ में। **4 :** मिस्ल बारिश व रिज़्क़ व सिह़्ह़त वग़ैरा के। **5 :** कि उस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिग़ैर किसी सुतून के क़ाइम किया, अपनी राह बताने और ह़क़ की दा'वत देने के लिये रसूलों को भेजा, रिज़्क़ के दरवाज़े खोले।

www.dawateislami.net

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۳﴾ وَاِنْ

ज़मीन से[6] तुम्हें रोज़ी दे उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम कहां औंधे जाते हो[7] और अगर

يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

येह तुम्हें झुटलाएं[8] तो बेशक तुम से पहले कितने ही रसूल झुटलाए गए[9] और सब काम अल्लाह ही की तरफ़

الْاُمُوْرُ ﴿۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ

फिरते हैं[10] ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह का वा'दा सच है[11] तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या

الدُّنْيَا ٚ وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۵﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

की ज़िन्दगी[12] और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हिल्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी[13] बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ﴿۶﴾

तो तुम भी उसे दुश्मन समझो[14] वोह तो अपने गुरौह को[15] इसी लिये बुलाता है कि दोज़ख़ियों में हों[16]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

काफ़िरों के लिये[17] सख़्त अ़ज़ाब है और जो ईमान लाए और अच्छे

ع ١٣ ٧ الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۷﴾ ع اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

काम किये[18] उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है तो क्या वोह जिस की निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया

فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ۖ فَلَا

कि उस ने उसे भला समझा हिदायत वाले की तरह हो जाएगा[19] इस लिये अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और राह देता है जिसे चाहे तो

6 : मींह बरसा कर और तरह तरह के नबातात पैदा कर के **7 :** और येह जानते हुए कि वोही ख़ालिक़ व राज़िक़ है ईमान व तौहीद से क्यूं फिरते हो ? इस के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली के लिये फ़रमाया जाता है **8 :** ऐ मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और तुम्हारी नुबुव्वत व रिसालत को न मानें और तौहीद व बअ़्स व हिसाब और अ़ज़ाब का इन्कार करें **9 :** उन्हों ने सब्र किया, आप भी सब्र फ़रमाइये, कुफ़्फ़ार का अम्बिया के साथ क़दीम से येह दस्तूर चला आता है। **10 :** वोह झुटलाने वालों को सज़ा देगा और रसूलों की मदद फ़रमाएगा। **11 :** क़ियामत ज़रूर आनी है, मरने के बा'द ज़रूर उठना है, आ'माल का हिसाब यक़ीनन होगा, हर एक को उस के किये की जज़ा बेशक मिलेगी। **12 :** कि इस की लज़्ज़तों में मश्ग़ूल हो कर आख़िरत को भूल जाओ। **13 :** या'नी शैतान तुम्हारे दिलों में येह वस्वसा डाल कर कि गुनाहों से मज़ा उठा लो अल्लाह तआ़ला हिल्म फ़रमाने वाला है वोह दर गुज़र करेगा। अल्लाह तआ़ला बेशक हिल्म वाला है लेकिन शैतान की फ़रेब कारी येह है कि वोह बन्दों को इस तरह तौबा व अ़मले सालेह से रोकता है और गुनाह व मा'सियत पर जरी करता है, उस के फ़रेब से होशियार रहो। **14 :** और उस की इताअ़त न करो और अल्लाह तआ़ला की ताअ़त में मश्ग़ूल रहो। **15 :** या'नी अपने मुत्तबिईन को कुफ़्र की तरफ़ **16 :** अब शैतान के मुत्तबिईन और उस के मुख़ालिफ़ीन का हाल तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया जाता है **17 :** जो शैतान के गुरौह में से हैं **18 :** और शैतान के फ़रेब में न आए और उस की राह पर न चले। **19 :** हरगिज़ नहीं। बुरे काम को अच्छा समझने वाला राहयाब की तरह क्या हो सकता है ! वोह उस बदकार से ब दरजहा बदतर है जो अपने ख़राब अ़मल को बुरा जानता हो और हक़ को हक़

www.dawateislami.net

تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَ

तुम्हारी जान उन पर ह़सरतों में न जाए[20] अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वोह करते हैं और

اللّٰهُ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّیِّتٍ

अल्लाह है जिस ने भेजीं हवाएं कि बादल उभारती हैं फिर हम उसे किसी मुर्दा शहर की त़रफ़ रवां करते हैं[21]

فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ

तो उस के सबब हम ज़मीन को ज़िन्दा फ़रमाते हैं उस के मरे पीछे[22] यूंही ह़श्र में उठना है[23] जिसे इ़ज़्ज़त की

الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ

चाह हो तो इ़ज़्ज़त तो सब अल्लाह के हाथ है[24] उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम[25] और जो नेक काम है

يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ

वोह उसे बुलन्द करता है[26] और वोह जो बुरे दाउं (फ़रेब) करते हैं उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[27] और उन्हीं

اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

का मक्र बरबाद होगा[28] और अल्लाह ने तुम्हें बनाया[29] मिट्टी से फिर[30] पानी की बूंद से फिर तुम्हें किया

और बात़िल को बात़िल समझता हो। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल वग़ैरा मुश्रिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपने शिर्को कुफ़्र जैसे क़बीह़ अफ़्आ़ल को शैत़ान के बहकाने और भला समझाने से अच्छा समझते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयत अस्ह़ाबे बिदअ़त व हवा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन में रवाफ़िज़ व ख़वारिज वग़ैरा दाख़िल हैं जो अपनी बद मज़्हबियों को अच्छा जानते हैं और इन्हीं के ज़ुमरे में दाख़िल हैं तमाम बद मज़्हब, ख़्वाह वहाबी हों या ग़ैर मुक़ल्लिद या मिरज़ाई या चकड़ाली। और कबीरा गुनाह वाले जो अपने गुनाहों को बुरा जानते हैं और ह़लाल नहीं समझते इस में दाख़िल नहीं। **20 :** कि अफ़्सोस वोह ईमान न लाए और ह़क़ को क़बूल करने से मह़रूम रहे। मुराद येह है कि आप उन के कुफ़्र व हलाकत का ग़म न फ़रमाएं। **21 :** जिस में सब्ज़ा और खेती नहीं और ख़ुश्क साली से वहां की ज़मीन बेजान हो गई है। **22 :** और उस को सर सब्ज़ो शादाब कर देते हैं इस से हमारी क़ुदरत ज़ाहिर है। **23 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला मुर्दे किस त़रह़ ज़िन्दा फ़रमाएगा ? ख़ल्क़ में इस की कोई निशानी हो तो इर्शाद फ़रमाइये। फ़रमाया कि क्या तेरा किसी ऐसे जंगल में गुज़र हुवा है जो ख़ुश्क साली से बेजान हो गया हो और वहां सब्ज़ा का नामो निशान न रहा हो फिर कभी उसी जंगल में गुज़र हुवा हो और उस को हरा भरा लहलहाता पाया हो ? उन सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया : बेशक ऐसा देखा है। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : ऐसे ही अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और ख़ल्क़ में येह उस की निशानी है। **24 :** दुन्या व आख़िरत में वोही इ़ज़्ज़त का मालिक है जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे तो जो इ़ज़्ज़त का त़लब गार हो वोह अल्लाह तआ़ला से इ़ज़्ज़त त़लब करे क्यूं कि हर चीज़ उस के मालिक ही से त़लब की जाती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि रब तआ़ला हर रोज़ फ़रमाता है जिसे इ़ज़्ज़ते दारैन की ख़्वाहिश हो चाहिये कि वोह ह़ज़रते अ़ज़ीज़ جَلَّتْ عِزَّتُهٗ (या'नी अल्लाह तआ़ला) की इत़ाअ़त करे और ज़रीआ़ त़लबे इ़ज़्ज़त का ईमान और आ'माले सालिह़ा हैं। **25 :** या'नी उस के मह़ल्ले क़बूल व रिज़ा तक पहुंचता है। और पाकीज़ा कलाम से मुराद कलिमए तौह़ीद व तस्बीह़ व तह़मीद व तक्बीर वग़ैरा हैं जैसा कि ह़ाकिम व बैहक़ी ने रिवायत किया और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कलिमए त़य्यिब की तफ़्सीर "ज़िक्र" से फ़रमाई और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने क़ुरआन और दुआ़ भी मुराद ली है। **26 :** नेक काम से मुराद वोह अ़मल व इ़बादत है जो इख़्लास से हो और मा'ना येह हैं कि कलिमए त़य्यिबा अ़मल को बुलन्द करता है क्यूं कि अ़मल बे तौह़ीद व ईमान मक़्बूल नहीं। या येह मा'ना हैं कि अ़मले सालेह़ को अल्लाह तआ़ला रिफ़्अ़ते क़बूल अ़त़ा फ़रमाता है। या येह मा'ना हैं कि अ़मले नेक अ़मल करने वाले का मर्तबा बुलन्द करते हैं तो जो इ़ज़्ज़त चाहे उस को लाज़िम है कि नेक अ़मल करे। **27 :** मुराद उन मक्र करने वालों से वोह क़ुरैश हैं जिन्हों ने "दारुन्नदवा" में जम्अ़ हो कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत क़ैद करने और क़त्ल करने और जला वत़न करने के मश्वरे किये थे जिस का तफ़्सीली बयान सूरए अन्फ़ाल में हो चुका है। **28 :** और वोह अपने दाउं व फ़रेब में काम्याब न होंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ

जोड़े जोड़े[31] और किसी मादा को पेट नहीं रहता और न वोह जनती है मगर उस के इल्म से और जिस बड़ी उ़म्र वाले को

مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

उ़म्र दी जाए या जिस किसी की उ़म्र कम रखी जाए येह सब एक किताब में है[32] बेशक येह **अल्लाह** को

يَسِيْرٌ ﴿۱۱﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَ

आसान है[33] और दोनों समुन्दर एक से नहीं[34] येह मीठा है ख़ूब मीठा पानी ख़ुश गवार और

هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

येह खारी है तल्ख़ और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त[35] और निकालते हो

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ

पहनने का एक गहना[36] और तू कश्तियों को उस में देखे कि पानी चीरती हैं[37] ताकि तुम उस का फ़ज़्ल तलाश करो[38] और

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ

किसी त़रह ह़क़ मानो[39] रात लाता है दिन के हि़स्से में[40] और दिन लाता है रात के हि़स्से में[41]

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

और उस ने काम में लगाए सूरज और चांद हर एक एक मुक़र्रर मीआ़द चलता है[42] येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब

لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿۱۳﴾ ؕ

उसी की बादशाही है और उस के सिवा जिन्हें तुम पूजते हो[43] दानए ख़ुरमा के छिल्के तक के मालिक नहीं

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ

तुम उन्हें पुकारो तो वोह तुम्हारी पुकार न सुनें[44] और बिलफ़र्ज़ सुन भी लें तो तुम्हारी ह़ाजत रवा न कर सकें[45]

उन के शर से मह़फ़ूज़ रहे और उन्हों ने अपनी मक्कारियों की सज़ाएं पाईं कि बद्र में क़ैद भी हुए क़त्ल भी किये गए और मक्कए मुकर्रमा से निकाले भी गए। **29 :** या'नी तुम्हारी अस्ल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **30 :** उन की नस्ल को **31 :** मर्द व औ़रत **32 :** या'नी लौह़े मह़फ़ूज़ में। ह़ज़रते क़तादा से मरवी है कि मुअ़म्मर वोह है जिस की उ़म्र साठ साल को पहुंचे और कम उ़म्र वाला वोह जो इस से क़ब्ल मर जाए। **33 :** या'नी अ़मल व अजल का मक्तूब फ़रमाना। **34 :** बल्कि दोनों में फ़र्क़ है। **35 :** या'नी मछली **36 :** गौहर व मरजान। **37 :** दरिया में चलते हुए और एक ही हवा में आती भी हैं जाती भी हैं **38 :** तिजारतों में नफ़्अ़ ह़ासिल कर के। **39 :** और **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों की शुक्र गुज़ारी करो। **40 :** तो दिन बढ़ जाता है **41 :** तो रात बढ़ जाती है यहां तक कि बढ़ने वाले दिन या रात की मिक़्दार पन्दरह घन्टे तक पहुंचती है और घटने वाला नव घन्टे का रह जाता है। **42 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक कि जब क़ियामत आ जाएगी तो इन का चलना मौक़ूफ़ हो जाएगा और येह निज़ाम बाक़ी न रहेगा। **43 :** या'नी बुत **44 :** क्यूं कि जमादे बेजान हैं। **45 :** क्यूं कि अस्लन क़ुदरत व इख़्तियार नहीं रखते।

www.dawateislami.net

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَيُّهَا

और क़ियामत के दिन वोह तुम्हारे शिर्क से मुन्किर होंगे[46] और तुझे कोई न बताएगा उस बताने वाले की त़रह[47] ऐ

النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ

लोगो ! तुम सब अल्लाह के मोहताज[48] और अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा वोह चाहे

يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾ وَلَا

तो तुम्हें ले जाए[49] और नई मख़्लूक़ ले आए[50] और येह अल्लाह पर कुछ दुश्वार नहीं और कोई

تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ

बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ न उठाएगी[51] और अगर कोई बोझ वाली अपना बोझ बटाने को किसी को बुलाए तो उस के बोझ

مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ

में से कोई कुछ न उठाएगा अगर्चे क़रीब रिश्तेदार हो[52] ऐ महबूब तुम्हारा डर सुनाना तो उन्हीं को काम देता है जो बे देखे अपने

بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى

रब से डरते और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो सुथरा हुवा[53] तो अपने ही भले को सुथरा हुवा[54] और अल्लाह ही

اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿۱۹﴾ ۙ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا

की त़रफ़ फिरना है और बराबर नहीं अन्धा और अंख्यारा[55] और न अंधेरियां[56] और

النُّوْرُ ﴿۲۰﴾ ۙ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿۲۱﴾ ۚ وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا

उजाला[57] और न साया[58] और न तेज़ धूप[59] और बराबर नहीं ज़िन्दे और

46 : और बेज़ारी का इज़्हार करेंगे और कहेंगे तुम हमें न पूजते थे। 47 : या'नी दारैन के अह़्वाल और बुत परस्ती के मआल की जैसी ख़बर अल्लाह तआ़ला देता है और कोई नहीं दे सकता। 48 : या'नी उस के फ़ज़्ल व एह़सान के ह़ाजत मन्द हो और तमाम ख़ल्क़ उस की मोहताज है। ह़ज़रते ज़ुन्नून ने फ़रमाया कि ख़ल्क़ हर दम और हर लह़्ज़ा अल्लाह तआ़ला की मोहताज है और क्यूं न होगी उन की हस्ती और उन की बक़ा सब उस के करम से है। 49 : या'नी तुम्हें मा'दूम कर दे क्यूं कि वोह बे नियाज़ और ग़नी बिज़्ज़ात है। 50 : बजाए तुम्हारे जो मुत़ीअ़ और फ़रमां बरदार हो 51 : मा'ना येह हैं कि रोज़े क़ियामत हर एक जान पर उसी के गुनाहों का बार होगा जो उस ने किये हैं और कोई जान किसी दूसरे के इ़वज़ न पकड़ी जाएगी अलबत्ता जो गुमराह करने वाले हैं उन के गुमराह करने से जो लोग गुमराह हुए उन की तमाम गुमराहियों का बार उन गुमराहों पर भी होगा और उन गुमराह करने वालों पर भी जैसा कि कलामे करीम में इर्शाद हुवा "وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ" और दर ह़क़ीक़त येह उन की अपनी कमाई है दूसरे की नहीं। 52 : बाप या मां, बेटा या भाई कोई किसी का बोझ न उठाएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मां बाप बेटे को लिपटेंगे और कहेंगे ऐ हमारे बेटे हमारे कुछ गुनाह उठा ले। वोह कहेगा : मेरे इम्कान में नहीं, मेरा अपना बार क्या कम है। 53 : या'नी बदियों से बचा और नेक अ़मल किये 54 : उस नेकी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। 55 : या'नी जाहिल और आ़लिम या काफ़िर और मोमिन 56 : या'नी कुफ़्र 57 : या'नी ईमान 58 : या'नी ह़क़ या जन्नत 59 : या'नी बात़िल या दोज़ख़।

الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي

मुर्दे[60] बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे चाहे[61] और तुम नहीं सुनाने वाले उन्हें जो क़ब्रों

الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ

में पड़े हैं[62] तुम तो येही डर सुनाने वाले हो[63] ऐ महबूब बेशक हम ने तुम्हें हक़ के साथ भेजा ख़ुश ख़बरी देता[64] और

نَذِيْرًا ؕ وَ اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ

डर सुनाता[65] और जो कोई गुरौह था सब में एक डर सुनाने वाला गुज़र चुका[66] और अगर येह[67] तुम्हें झुटलाएं तो

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ بِالزُّبُرِ وَ

इन से अगले भी झुटला चुके हैं[68] उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलीलें[69] और सहीफ़े और

بِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾ ع

ع ۳ ۱۲ ۱۵

चमक्ती किताब[70] ले कर फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ा[71] तो कैसा हुवा मेरा इन्कार[72]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा[73] तो हम ने उस से फल निकाले रंग

اَلْوَانُهَا ؕ وَ مِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَ غَرَابِيْبُ

बरंग[74] और पहाड़ों में रास्ते हैं सफ़ेद और सुर्ख़ रंग रंग के और कुछ काले

سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَ مِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ

भुचंग (सियाह काले) और आदमियों और जानवरों और चारपायों के रंग यूंही त़रह त़रह के हैं[75]

60 : या'नी मोमिनीन और कुफ़्फ़ार या उ़लमा और जुहहाल। **61 :** या'नी जिस की हिदायत मन्ज़ूर हो उस को तौफ़ीक़े क़बूल अ़ता फ़रमाता है। **62 :** या'नी कुफ़्फ़ार को। इस आयत में कुफ़्फ़ार को मुर्दों से तश्बीह दी गई कि जिस त़रह मुर्दे सुनी हुई बात से नफ़्अ़ नहीं उठा सकते और पन्द पज़ीर नहीं होते बद अन्जाम कुफ़्फ़ार का भी येही ह़ाल है कि वोह हिदायत व नसीह़त से मुन्तफ़ेअ़ नहीं होते। इस आयत से मुर्दों के न सुनने पर इस्तिद्लाल करना सह़ीह़ नहीं है क्यूं कि आयत में क़ब्र वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं न कि मुर्दे और सुनने से मुराद वोह सुनना है जिस पर राहयाबी का नफ़्अ़ मुरत्तब हो। रहा मुर्दों का सुनना वोह अह़ादीसे कसीरा से साबित है, इस मस्अले का बयान बीसवें पारे के दूसरे रुकूअ़ में गुज़रा। **63 :** तो अगर सुनने वाला आप के इन्ज़ार (डराने) पर कान रखे और बगोशे क़बूल सुने तो नफ़्अ़ पाए और अगर मुसिर्रीन मुन्किरीन में से हो और आप की नसीह़त से पन्द पज़ीर न हो (सबक़ न सीखे) तो आप का कुछ ह़रज नहीं वोही मह़रूम है। **64 :** ईमानदारों को जन्नत की **65 :** काफ़िरों को अ़ज़ाब का। **66 :** ख़्वाह वोह नबी हो या आ़लिमे दीन जो नबी की त़रफ़ से ख़ल्के ख़ुदा को अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दिलाए। **67 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **68 :** अपने रसूलों को। कुफ़्फ़ार का क़दीम (ज़माने) से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही बरताव रहा है। **69 :** या'नी नुबुव्वत पर दलालत करने वाले मो'जिज़ात **70 :** तौरैत व इन्जील व ज़बूर **71 :** त़रह त़रह के अ़ज़ाबों से ब सबब उन की तक्ज़ीबों के **72 :** मेरा अ़ज़ाब देना। **73 :** बारिश नाज़िल की **74 :** सब्ज़, सुर्ख़, ज़र्द, वग़ैरा त़रह त़रह के अनार, सेब, इन्जीर, अंगूर, खजूर वग़ैरा बे शुमार। **75 :** जैसे फलों और पहाड़ों में, यहां अल्लाह तआ़ला ने अपनी आयतें और अपने निशानहाए क़ुदरत और आसारे सन्अ़त जिन से उस की ज़ात व सिफ़ात पर इस्तिद्लाल किया जाए ज़िक्र कीं, इस के बा'द फ़रमाया।

www.dawateislami.net

إِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾ إِنَّ

अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं[76] बेशक **अल्लाह** इज़्ज़त वाला बख़्शने वाला बेशक

الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا

वोह जो **अल्लाह** की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा

وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُونَ تِجٰرَةً لَّنْ تَبُورَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَ

और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं[77] जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और

يَزِيدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ

अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है और वोह किताब जो हम ने तुम्हारी

مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ

तरफ़ वह्य भेजी[78] वोही ह़क़ है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई बेशक **अल्लाह** अपने बन्दों से ख़बरदार

بَصِيرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ

देखने वाला है[79] फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को[80] तो उन में कोई

ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ

अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो **अल्लाह** के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त

اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ

ले गया[81] येही बड़ा फ़ज़्ल है बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वोह[82] उन में

76 : और उस की सिफ़ात जानते और उस की अ़ज़मत को पहचानते हैं, जितना इल्म ज़ियादा उतना ख़ौफ़ ज़ियादा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मुराद येह है कि मख़्लूक़ में **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ उस को है जो **अल्लाह** तआ़ला के जबरूत और उस की इ़ज़्ज़तो शान से बा ख़बर है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : क़सम **अल्लाह** عزوجل की, कि मैं **अल्लाह** तआ़ला को सब से ज़ियादा जानने वाला हूं और सब से ज़ियादा उस का ख़ौफ़ रखने वाला हूं। **77 :** या'नी सवाब के **78 :** या'नी क़ुरआने मजीद **79 :** और उन के ज़ाहिर व बातिन का जानने वाला। **80 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की उम्मत को येह किताब अ़ता फ़रमाई जिन्हें तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी और सय्यिदे रुसुल صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की गुलामी व नियाज़ मन्दी की करामत व शराफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इस उम्मत के लोग मुख़्तलिफ़ मदारिज व मरातिब रखते हैं। **81 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि सब्क़त ले जाने वाला मोमिन मुख़्लिस है और "मुक़्तसिद" या'नी मियाना रवी करने वाला वोह जिस के अ़मल रिया से हों और ज़ालिम से मुराद यहां वोह है जो ने'मते इलाही का मुन्किर तो न हो लेकिन शुक्र बजा न लाए। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया कि हमारा "साबिक़" तो साबिक़ ही है और "मुक़्तसिद" नाजी और "ज़ालिम" मग़्फ़ूर। एक और ह़दीस में है हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : नेकियों में सब्क़त ले जाने वाला जन्नत में बे ह़िसाब दाख़िल होगा और मुक़्तसिद से ह़िसाब में आसानी की जाएगी और ज़ालिम मक़ामे ह़िसाब में रोका जाएगा उस को परेशानी पेश आएगी फिर जन्नत में दाख़िल होगा। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने फ़रमाया कि **साबिक़** अ़ह्दे रिसालत के वोह मुख़्लिसीन हैं जिन के लिये रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

www.dawateislami.net

فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا
सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन की पोशाक रेशमी है और कहेंगे

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾
सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमारा ग़म दूर किया[83] बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है[84]

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا
वोह जिस ने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें उस में न कोई तक्लीफ़ पहुंचे न हमें उस में कोई

فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
तकान लाहिक़ हो और जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिये जहन्नम की आग है न उन की क़ज़ा आए

فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾
कि मर जाएं[85] और न उन पर उस का[86] अज़ाब कुछ हलका किया जाए हम ऐसी ही सज़ा देते हैं हर बड़े नाशुक्रे को

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا
और वोह उस में चिल्लाते होंगे[87] ऐ हमारे रब हमें निकाल[88] कि हम अच्छा काम करें उस के ख़िलाफ़ जो पहले

نَعْمَلُ ۚ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ
करते थे[89] और क्या हम ने तुम्हें वोह उम्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला[90] तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था[91]

فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٣٧﴾ إِنَّ اللَّهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمَاوَاتِ وَ
तो अब चखो[92] कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं बेशक **अल्लाह** जानने वाला है आस्मानों और ज़मीन की

الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ
हर छुपी बात का बेशक वोह दिलों की बात जानता है वोही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में अगलों का

ने जन्नत की बिशारत दी और **मुक़्तसिद** वोह अस्हाब हैं जो आप के त़रीक़े पर आ़मिल रहे और **ज़ालिम** लि नफ़्सिही हम तुम जैसे लोग हैं। येह कमाल इन्किसार था ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन رضی اللہ تعالٰی عنہا का कि अपने आप को इस तीसरे त़ब्क़े में शुमार फ़रमाया बा वुजूद उस जलालते मन्ज़िलत व रिफ़्अ़ते दरजात के जो **अल्लाह** तआला ने आप को अ़ता फ़रमाई थी और भी इस की तफ़्सीर में बहुत अक़्वाल हैं जो तफ़ासीर में मुफ़स्सलन मज़्कूर हैं। **82 :** तीनों गुरौह **83 :** इस ग़म से मुराद या दोज़ख़ का ग़म है या मौत का या गुनाहों का या त़ाअ़तों के ग़ैर मक़्बूल होने का या अह्वाले क़ियामत का, ग़रज़ उन्हें कोई ग़म न होगा और वोह इस पर **अल्लाह** की ह़म्द करेंगे। **84 :** कि गुनाहों को बख़्शता है और त़ाअ़तें क़बूल फ़रमाता है। **85 :** और मर कर अ़ज़ाब से छूट सकें **86 :** या'नी जहन्नम का **87 :** या'नी जहन्नम में चीख़ते और फ़रियाद करते होंगे कि **88 :** या'नी दोज़ख़ से निकाल और दुन्या में भेज **89 :** या'नी हम बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत व ना फ़रमानी के तेरी इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी करें। इस पर उन्हें जवाब दिया जाएगा **90 :** या'नी रसूले अकरम सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم **91 :** तुम ने उस रसूले मोह़तरम की दा'वत क़बूल न की और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी बजा न लाए। **92 :** अ़ज़ाब का मज़ा।

www.dawateislami.net

فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

जा नशीन किया[93] तो जो कुफ़्र करे[94] उस का कुफ़्र उसी पर पड़े[95] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र उन के

عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿۳۹﴾

रब के यहां नहीं बढ़ाएगा मगर बेज़ारी[96] और काफ़िरों को उन का कुफ़्र न बढ़ाएगा मगर नुक़्सान[97]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا

तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अपने वोह शरीक[98] जिन्हें अल्लाह के सिवा पूजते हो मुझे दिखाओ

خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ

उन्हों ने ज़मीन में से कौन सा हिस्सा बनाया या आस्मानों में कुछ उन का साझा है[99] या हम ने उन्हें कोई किताब दी है

عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۴۰﴾

कि वोह उस की रोशन दलीलों पर हैं[100] बल्कि ज़ालिम आपस में एक दूसरे को वा'दा नहीं देते मगर फ़रेब का[101]

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ۬ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ

बेशक अल्लाह रोके हुए है आस्मानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करे[102] और अगर वोह हट जाएं तो

اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾ وَاَقْسَمُوْا

उन्हें कौन रोके अल्लाह के सिवा बेशक वोह हिल्म वाला बख़्शने वाला है और उन्हों ने

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ

अल्लाह की क़सम खाई अपनी क़समों में हद की कोशिश से कि अगर उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया तो वोह ज़रूर किसी न किसी

اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۙ ﴿۴۲﴾ لا

गुरौह से ज़ियादा राह पर होंगे[103] फिर जब उन के पास डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[104] तो उस ने उन्हें न बढ़ाया मगर नफ़रत करना[105]

93 : और उन की अम्लाक व मक्बूज़ात का मालिक व मुतसर्रिफ़ बनाया और उन के मनाफ़ेअ़ तुम्हारे लिये मुबाह किये ताकि तुम ईमान व ताअ़त इख़्तियार कर के शुक्र गुज़ारी करो। 94 : और इन ने'मतों पर शुक्रे इलाही न बजा लाए 95 : या'नी अपने कुफ़्र का वबाल उसी को बरदाश्त करना पड़ेगा 96 : या'नी ग़ज़बे इलाही 97 : आख़िरत में। 98 : या'नी बुत 99 : कि आस्मानों के बनाने में उन्हें कुछ दख़्ल हो, किस सबब से उन्हें मुस्तहिक़े इबादत क़रार देते हो 100 : इन में से कोई भी बात नहीं। 101 : कि उन में जो बहकाने वाले हैं वोह अपने मुत्तबिईन को धोका देते हैं और बुतों की त़रफ़ से उन्हें बातिल उम्मीदें दिलाते हैं। 102 : वरना आस्मान व ज़मीन के दरमियान शिर्क जैसी मा'सियत हो तो आस्मान व ज़मीन कैसे क़ाइम रहें। 103 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से पहले क़ुरैश ने यहूदो नसारा के अपने रसूलों को न मानने और उन को झुटलाने की निस्बत कहा था कि अल्लाह तआ़ला उन पर ला'नत करे और उन के पास अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से रसूल आए और उन्हों ने उन्हें झुटलाया और न माना ख़ुदा की क़सम अगर हमारे पास कोई रसूल आए तो हम उन से ज़ियादा राह पर होंगे और उस रसूल को मानने में उन के बेहतर गुरौह पर सब्क़त ले जाएंगे। 104 : या'नी सय्यिदुल मुर्सलीन ख़ातमुन्नबिय्यीन हबीबे ख़ुदा मुहम्मद

www.dawateislami.net

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا

अपनी जान को ज़मीन में ऊंचा खींचना और बुरा दाउं[106] और बुरा दाउं (फ़रेब) अपने चलने वाले ही

بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ

पर पड़ता है[107] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर उसी के जो अगलों का दस्तूर हुवा[108] तो तुम हरगिज़ **अल्लाह** के दस्तूर को

اللّٰهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي

बदलता न पाओगे और हरगिज़ **अल्लाह** के क़ानून को टलता न पाओगे और क्या उन्हों ने ज़मीन में

الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ

सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा[109] और वोह उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي

ज़ोर में सख़्त थे[110] और **अल्लाह** वोह नहीं जिस के क़ाबू से निकल सके कोई शै आस्मानों और

الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا

ज़मीन में बेशक वोह इल्मो कुदरत वाला है और अगर **अल्लाह** लोगों को उन के किये

كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ

पर पकड़ता[111] तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता लेकिन एक मुक़र्रर मीआ़द[112] तक उन्हें ढील

٥/٢٨ ع مُّسَمًّى ۚ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾ ع

देता है फिर जब उन का वा'दा आएगा तो बेशक **अल्लाह** के सब बन्दे उस की निगाह में हैं[113]

اٰيَاتُهَا ٨٣ | ٣٦ سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ ٤١ | رُكُوْعَاتُهَا ٥

सूरए यासीन मक्किय्या है, इस में तिरासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रोनक़ अफ़रोज़ी व जल्वा आराई हुई **105 :** हक़ व हिदायत से और **106 :** बुरे दाउं से मुराद या तो शिर्क व कुफ़्र है या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्रो फ़रेब करना। **107 :** या'नी मक्कार पर। चुनान्चे फ़रेब कारी करने वाले बद्र में मारे गए। **108 :** कि उन्हों ने तक्ज़ीब की और उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हुए। **109 :** या'नी क्या उन्हों ने शाम और इ़राक़ और यमन के सफ़रों में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करने वालों की हलाकत व बरबादी के अ़ज़ाब और तबाही के निशानात नहीं देखे कि उन से इ़ब्रत ह़ासिल करते। **110 :** या'नी वोह तबाह शुदा क़ौमें इन अहले मक्का से ज़ोरो कुव्वत में ज़ियादा थीं बा वुजूद इस के इतना भी तो न हो सका कि वोह अ़ज़ाब से भाग कर कहीं पनाह ले सकतीं। **111 :** या'नी उन के मआ़सी पर **112 :** या'नी रोज़े क़ियामत **113 :** उन्हें उन के आ'माल की जज़ा देगा, जो अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हैं उन्हें अ़ज़ाब फ़रमाएगा और जो लाइक़े करम हैं उन पर रह़मो करम करेगा।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

يٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰى صِرَاطٍ

हिक्मत वाले कुरआन की क़सम बेशक तुम[2] सीधी राह पर

مُّسْتَقِيْمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ

भेजे गए हो[3] इ़ज़्ज़त वाले मेह्रबान का उतारा हुवा ताकि तुम उस क़ौम को डर सुनाओ

اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۶﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا

जिस के बाप दादा न डराए गए[4] तो वोह बे ख़बर हैं बेशक उन में अक्सर पर बात साबित हो चुकी है[5] तो वोह

يُؤْمِنُوْنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ

ईमान न लाएंगे[6] हम ने उन की गरदनों में त़ौक़ कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को

مُّقْمَحُوْنَ ﴿۸﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا

मुंह उठाए रह गए[7] और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और उन के पीछे एक दीवार

1 : सूरए "यासीन" मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, तिरासी आयतें, सात सो उन्तीस कलिमे, तीन हज़ार हुरूफ़ हैं। तिरमिज़ी की ह़दीस शरीफ़ में है कि हर चीज़ के लिये क़ल्ब है और कुरआन का क़ल्ब "यासीन" है और जिस ने "यासीन" पढ़ी अल्लाह तआ़ला उस के लिये दस बार कुरआन पढ़ने का सवाब लिखता है। येह ह़दीस ग़रीब है और इस की अस्नाद में एक रावी मज्हूल है। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अम्वात पर "यासीन" पढ़ो। इसी लिये क़रीबे मौत ह़ालते नज़्अ़ में मरने वालों के पास "यासीन" पढ़ी जाती है। **2 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **3 :** जो मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंचाने वाली है, येह राह तौह़ीदो हिदायत की राह है। तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام इसी राह पर रहे हैं। इस आयत में कुफ़्फ़ार का रद है जो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहते थे "لَسْتَ مُرْسَلًا" तुम रसूल नहीं हो। इस के बा'द कुरआने करीम की निस्बत इर्शाद फ़रमाया **4 :** या'नी उन के पास कोई नबी न पहुंचे और क़ौमे कुरैश का येही ह़ाल है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले उन में कोई रसूल नहीं आया **5 :** या'नी हुक्मे इलाही व क़ज़ाए अज़ली उन के अ़ज़ाब पर जारी हो चुकी है और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद "لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ" उन के ह़क़ में साबित हो चुका है और अ़ज़ाब का उन के लिये मुक़र्रर हो जाना इस सबब से है कि वोह कुफ़्र व इन्कार पर अपने इख़्तियार से मुसिर रहने वाले हैं। **6 :** इस के बा'द उन के कुफ़्र में पुख़्ता होने की एक तम्सील इर्शाद फ़रमाई **7 :** येह तम्सील है उन के कुफ़्र में ऐसे रासिख़ होने की कि आयात व नज़्र, पन्दो हिदायत किसी से वोह मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते जैसे कि वोह शख़्स जिन की गरदनों में ग़िल की क़िस्म का त़ौक़ पड़ा हो जो ठोड़ी तक पहुंचता है और इस की वज्ह से वोह सर नहीं झुका सकते येही ह़ाल उन का है कि किसी त़रह उन को ह़क़ की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं होता और उस के हुज़ूर सर नहीं झुकाते। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि येह उन की ह़क़ीक़ते ह़ाल है जहन्नम में उन्हें इसी त़रह का अ़ज़ाब किया जाएगा जैसा की दूसरी आयत में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया "اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْۤ اَعْنَاقِهِمْ" **शाने नुज़ूल :** येह आयत अबू जह्ल और उस के दो मख़्ज़ूमी दोस्तों के ह़क़ में नाज़िल हुई। अबू जह्ल ने क़सम खाई कि अगर वोह सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ते देखेगा तो पथ्थर से सर कुचल डालेगा। जब उस ने हुज़ूर को नमाज़ पढ़ते देखा तो वोह इसी इरादए फ़ासिदा से एक भारी पथ्थर ले कर आया, जब उस पथ्थर को उठाया तो उस के हाथ गरदन में चिपके रह गए और पथ्थर हाथ को लिपट गया, येह ह़ाल देख कर अपने दोस्तों की त़रफ़ वापस हुवा और उन से वाक़िआ़ बयान किया तो उस के दोस्त वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा कि येह काम मैं करूंगा और मैं उन का सर कुचल कर ही आऊंगा। चुनान्चे वोह पथ्थर ले कर आया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अभी नमाज़ ही पढ़ रहे थे, जब येह क़रीब पहुंचा तो अल्लाह तआ़ला ने उस की बीनाई सल्ब कर ली, हुज़ूर की आवाज़ सुनता था आंखों से नहीं देख सकता था

فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ

और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता[8] और उन्हें एक सा है तुम उन्हें डराओ या न

تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِیَ

डराओ वोह ईमान लाने के नहीं तुम तो उसी को डर सुनाते हो[9] जो नसीहत पर चले और रहमान से

الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ

बे देखे डरे तो उसे बख़्शिश और इ़ज़्ज़त के सवाब की बिशारत दो[10] बेशक हम मुर्दों को जिलाएं (ज़िन्दा करें)

الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۣؕ وَكُلَّ شَیْءٍ اَحْصَیْنٰهُ فِیْۤ اِمَامٍ

وقف غفران

गे और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा[11] और जो निशानियां पीछे छोड़ गए[12] और हर चीज़ हम ने गिन रखी है एक बताने

येह भी परेशान हो कर अपने यारों की त़रफ़ लौटा वोह भी नज़र न आए, उन्हों ने ही उसे पुकारा और उस से कहा : तू ने क्या किया ? कहने लगा कि मैं ने उन की आवाज़ तो सुनी मगर वोह मुझे नज़र ही नहीं आए। अब अबू जहल के दूसरे दोस्त ने दा'वा किया कि वोह इस काम को अन्जाम देगा और बड़े दा'वे के साथ वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ चला था कि उल्टे पाउं ऐसा बद ह़वास हो कर भागा कि औंधे मुंह गिर गया। उस के दोस्तों ने ह़ाल पूछा तो कहने लगा कि मेरा ह़ाल बहुत सख़्त है मैं ने एक बहुत बड़ा सांड देखा जो मेरे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के दरमियान ह़ाइल हो गया, लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ता तो वोह मुझे खा ही जाता, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। (خازن وجمل) **8 :** येह भी तम्सील है कि जैसे किसी शख़्स के लिये दोनों त़रफ़ दीवारें हों और हर त़रफ़ से रास्ता बन्द कर दिया गया हो वोह किसी त़रह मन्ज़िले मक़्सूद तक नहीं पहुंच सकता येही ह़ाल उन कुफ़्फ़ार का है कि उन पर हर त़रफ़ से ईमान की राह बन्द है, सामने उन के ग़ुरूरे दुन्या (दुन्या के धोके) की दीवार है और उन के पीछे तक्ज़ीबे आख़िरत की और वोह जहालत के क़ैदख़ाने में मह़बूस हैं, आयात व दलाइल में नज़र करना उन्हें मुयस्सर नहीं। **9 :** या'नी आप के डर सुनाने और ख़ौफ़ दिलाने से वोही नफ़्अ़ उठाता है **10 :** या'नी जन्नत की। **11 :** या'नी दुन्या की ज़िन्दगानी में जो नेकी या बदी की ताकि उस पर जज़ा दी जाए। **12 :** या'नी और हम उन की वोह निशानियां वोह त़रीक़े भी लिखते हैं जो वोह अपने बा'द छोड़ गए ख़्वाह वोह त़रीक़े नेक हों या बद। जो नेक त़रीक़े उम्मती निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते ह़सना** कहते हैं और इस त़रीक़े के निकालने वालों और अ़मल करने वालों दोनों को सवाब मिलता है और जो बुरे त़रीक़े निकालते हैं उन को **बिद्अ़ते सय्यिआ** कहते हैं इस त़रीक़े के निकालने वाले और अ़मल करने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने इस्लाम में नेक (अच्छा) त़रीक़ा निकाला उस को त़रीक़ा निकालने का भी सवाब मिलेगा और उस पर अ़मल करने वालों का भी सवाब बिग़ैर इस के कि अ़मल करने वालों के सवाब में कुछ कमी की जाए और जिस ने इस्लाम में बुरा त़रीक़ा निकाला तो उस पर वोह त़रीक़ा निकालने का भी गुनाह और उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों के भी गुनाह बिग़ैर इस के कि उन अ़मल करने वालों के गुनाहों में कुछ कमी की जाए। इस से मा'लूम हुवा कि सदहा उमूरे ख़ैर मिस्ले फ़ातिह़ा, ग्यारहवीं व तीजा व चालीसवां व उ़र्स व तोशा व ख़त्म व मह़ाफ़िले ज़िक्रे मीलाद व शहादत जिन को बद मज़हब लोग बिद्अ़त कह कर मन्अ़ करते हैं और लोगों को इन नेकियों से रोकते हैं येह सब दुरुस्त और बाइ़से अज्रो सवाब हैं और इन को बिद्अ़ते सय्यिआ बताना ग़लत़ व बात़िल है, येह त़ाआ़त और आ'माले सालिह़ा जो ज़िक्रो तिलावत और सदक़ा व ख़ैरात पर मुश्तमिल हैं बिद्अ़ते सय्यिआ नहीं, बिद्अ़ते सय्यिआ वोह बुरे त़रीक़े हैं जिन से दीन को नुक़्सान पहुंचता है और जो सुन्नत के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया कि जो क़ौम बिद्अ़त निकालती है उस से एक सुन्नत उठ जाती है तो बिद्अ़ते सय्यिआ वोही है जिस से सुन्नत उठती हो जैसे कि रिफ़्ज़, ख़ुरूज, वहाबिय्यत येह सब इन्तिहा दरजे की ख़राब सय्यिआ बिद्अ़तें हैं। रिफ़्ज़ व ख़ुरूज जो अस्ह़ाब व अहले बैते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत पर मब्नी हैं, इन से अस्ह़ाब व अहले बैत के साथ मह़ब्बत व नियाज़ मन्दी रखने की सुन्नत उठ जाती है जिस के शरीअ़त में ताकीदी हुक्म हैं। वहाबिय्यत की अस्ल मक़्बूलाने ह़क़ ह़ज़राते अम्बिया व औलिया की जनाब में बे अदबी व गुस्ताख़ी और तमाम मुसल्मानों को मुश्रिक क़रार देना है, इस से बुज़ुर्गाने दीन की हुरमत व इ़ज़्ज़त और अदबो तक्रीम और मुसल्मानों के साथ अख़ुव्वत व मह़ब्बत की सुन्नतें उठ जाती हैं जिन की बहुत शदीद ताकीदें हैं और जो दीन में बहुत ज़रूरी चीज़ें हैं। और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि आसार से मुराद वोह क़दम हैं जो नमाज़ी मस्जिद की त़रफ़ चलने में रखता है और इस मा'ना पर आयत का **शाने नुज़ूल** येह बयान किया गया है कि बनी सलमा मदीनए त़य्यिबा के कनारे पर रहते थे, उन्हों ने चाहा कि मस्जिद शरीफ़ के क़रीब आ बसें, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

مُّبِيۡنٍ ﴿١٢﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ ۘ اِذۡ جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٣﴾

वाली किताब में[13] और उन से मिसाल बयान करो उस शहर वालों की[14] जब उन के पास फ़िरिस्तादे आए[15]

اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ

जब हम ने उन की त़रफ़ दो भेजे[16] फिर उन्हों ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया[17] अब उन सब ने कहा[18] कि

اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿١٤﴾ قَالُوۡا مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ

बेशक हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रह़मान

الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَیۡءٍ ۙ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٥﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ اِنَّاۤ

ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हारे क़दम लिखे जाते हैं तुम मकान तब्दील न करो या'नी जितनी दूर से आओगे उतने ही क़दम ज़ियादा पड़ेंगे और अज्रो सवाब ज़ियादा होगा। **13 :** या'नी लौहे मह़फ़ूज़ में। **14 :** उस शहर से मुराद अन्त़ाकिया है, येह एक बड़ा शहर है, इस में चश्मे हैं, कई पहाड़ हैं, एक संगीन शहर पनाह है, बारह मील के दौर में बसता है। **15 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के वाक़िए का मुख़्तसर बयान येह है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने दो ह़वारियों सादिक़ व सदूक़ को अन्त़ाकिया भेजा ताकि वहां के लोगों को जो बुत परस्त थे दीने ह़क़ की दा'वत दें, जब येह दोनों शहर के क़रीब पहुंचे तो उन्हों ने एक बूढ़े शख़्स को देखा कि बकरियां चरा रहा है उस का नाम ह़बीब नज्जार था, उस ने उन का ह़ाल दरयाफ़्त किया, उन दोनों ने कहा कि हम ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के भेजे हुए हैं, तुम्हें दीने ह़क़ की दा'वत देने आए हैं कि बुत परस्ती छोड़ कर ख़ुदा परस्ती इख़्तियार करो। ह़बीब नज्जार ने निशानी दरयाफ़्त की। उन्हों ने कहा कि निशानी येह है कि हम बीमारों को अच्छा करते हैं, अन्धों को बीना करते हैं, बरस वाले का मरज़ दूर कर देते हैं। ह़बीब नज्जार का एक बेटा दो साल से बीमार था उन्हों ने उस पर हाथ फेरा और वोह तन्दुरुस्त हो गया, ह़बीब ईमान लाए और इस वाक़िए की ख़बर मश्हूर हो गई ता आंकि एक ख़ल्क़े कसीर ने उन के हाथों अपने अमराज़ से शिफ़ा पाई, येह ख़बर पहुंचने पर बादशाह ने उन्हें बुला कर कहा : क्या हमारे मा'बूदों के सिवा और कोई मा'बूद भी है? उन दोनों ने कहा : हां वोही जिस ने तुझे और तेरे मा'बूदों को पैदा किया, फिर लोग उन के दरपै हुए और उन्हें मारा और येह दोनों क़ैद कर लिये गए। फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने शम्ऊन को भेजा वोह अजनबी बन कर शहर में दाख़िल हुए और बादशाह के मुसाहिबीन व मुक़र्रबीन से रस्मो राह पैदा कर के बादशाह तक पहुंचे और उस पर अपना असर पैदा कर लिया, जब देखा कि बादशाह इन से ख़ूब मानूस हो गया है तो एक रोज़ बादशाह से ज़िक्र किया कि दो आदमी जो क़ैद किये गए हैं क्या उन की बात सुनी गई थी वोह क्या कहते थे ? बादशाह ने कहा : नहीं जब उन्हों ने नए दीन का नाम लिया फ़ौरन ही मुझे ग़ुस्सा आ गया। शम्ऊन ने कहा कि अगर बादशाह की राय हो तो उन्हें बुलाया जाए देखें उन के पास क्या है। चुनान्चे वोह दोनों बुलाए गए। शम्ऊन ने उन से दरयाफ़्त किया तुम्हें किस ने भेजा है ? उन्हों ने कहा कि उस **अल्लाह** ने जिस ने हर चीज़ को पैदा किया और हर जानदार को रोज़ी दी और जिस का कोई शरीक नहीं। शम्ऊन ने कहा कि उस की मुख़्तसर सिफ़त बयान करो। उन्हों ने कहा : वोह जो चाहता है करता है, जो चाहता है हुक्म देता है। शम्ऊन ने कहा : तुम्हारी निशानी क्या है? उन्हों ने कहा : जो बादशाह चाहे। तो बादशाह ने एक अन्धे लड़के को बुलाया, उन्हों ने दुआ की वोह फ़ौरन बीना हो गया। शम्ऊन ने बादशाह से कहा कि अब मुनासिब येह है कि तू अपने मा'बूदों से कह कि वोह भी ऐसा ही कर के दिखाएं ताकि तेरी और उन की इ़ज़्ज़त ज़ाहिर हो। बादशाह ने शम्ऊन से कहा कि तुम से कुछ छुपाने की बात नहीं है, हमारा मा'बूद न देखे न सुने न कुछ बिगाड़ सके, न बना सके फिर बादशाह ने उन दोनों ह़वारियों से कहा कि अगर तुम्हारे मा'बूद को मुर्दे के ज़िन्दा कर देने की क़ुदरत हो तो हम उस पर ईमान ले आएं। उन्हों ने कहा कि हमारा मा'बूद हर शै पर क़ादिर है। बादशाह ने एक दिहक़ान (दीहाती) के लड़के को मंगाया जिस को मरे हुए सात दिन हो गए थे और जिस्म ख़राब हो चुका था, बदबू फैल रही थी, उन की दुआ से **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और उठ खड़ा हुवा और कहने लगा कि मैं मुश्रिक मरा था, मुझ को जहन्नम की सात वादियों में दाख़िल किया गया, मैं तुम्हें आगाह करता हूं कि जिस दीन पर तुम हो बहुत नुक़्सान देह है, ईमान लाओ और कहने लगा कि आस्मान के दरवाज़े खुले और एक ह़सीन जवान मुझे नज़र आया जो इन तीनों शख़्सों की सिफ़ारिश करता है। बादशाह ने कहा : कौन तीन? उस ने कहा : एक शम्ऊन और दो येह। बादशाह को तअ़ज्जुब हुवा, जब शम्ऊन ने देखा कि उस की बात बादशाह में असर कर गई तो उस ने बादशाह को नसीह़त की, वोह ईमान लाया और उस की क़ौम के कुछ लोग ईमान लाए और कुछ ईमान न लाए और अ़ज़ाबे इलाही से हलाक किये गए। **16 :** या'नी दो ह़वारी। वहब ने कहा कि उन के नाम यूह़न्ना और बूलिस थे और का'ब का क़ौल है कि सादिक़ व सदूक़। **17 :** या'नी शम्ऊन से तक़्वियत और ताईद पहुंचाई। **18 :** या'नी तीनों फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) ने।

اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَ مَا عَلَيْنَاۤ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّا

हम तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए हैं और हमारे ज़िम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना[19] बोले हम

تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ

तुम्हें मन्हूस समझते हैं[20] बेशक तुम अगर बाज़ न आए[21] तो ज़रूर तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की

اَلِيْمٌ ﴿۱۸﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

मार पड़ेगी उन्हों ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है[22] क्या इस पर बिदक्ते हो कि तुम समझाए गए[23] बल्कि तुम ह़द से

مُّسْرِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ جَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ

बढ़ने वाले लोग हो[24] और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया[25] बोला ऐ मेरी क़ौम

اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۰﴾ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۲۱﴾

भेजे हुओं की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अज्र) नहीं मांगते और वोह राह पर हैं[26]

19 : अदिल्लए वाज़िह़ा के साथ और वोह अन्धों और बीमारों को अच्छा करना और मुर्दों को ज़िन्दा करना है। **20 :** जब से तुम आए हो बारिश ही नहीं हुई। **21 :** अपने दीन की तब्लीग़ से **22 :** या'नी तुम्हारा कुफ़्र **23 :** और तुम्हें इस्लाम की दा'वत दी गई **24 :** ज़लाल व तुग़्यान में और येही बड़ी नुहूसत है। **25 :** या'नी ह़बीब नज्जार जो पहाड़ के ग़ार में मसरूफ़े इ़बादते इलाही था, जब उस ने सुना कि क़ौम ने उन फ़िरिस्तादों (क़ासिदों) की तक्ज़ीब की। **26 :** ह़बीब नज्जार की येह गुफ़्तगू सुन कर क़ौम ने कहा कि क्या तू इन के दीन पर है और तू इन के मा'बूद पर ईमान ले आया ? इस के जवाब में ह़बीब नज्जार ने कहा।

www.dawateislami.net

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ

और मुझे क्या है कि उस की बन्दगी न करूं जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की त़रफ़ तुम्हें पलटना है[27] क्या अल्लाह के सिवा

دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّ

और खुदा ठहराऊं[28] कि अगर रह़मान मेरा कुछ बुरा चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आए और

لَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْۤ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ

न वोह मुझे बचा सकें बेशक जब तो मैं खुली गुमराही में हूं[29] मुक़र्रर (यक़ीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया

فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾ قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا

तो मेरी सुनो[30] उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाखिल हो[31] कहा किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती जैसी

غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ

मेरे रब ने मेरी मग़्फ़िरत की और मुझे इ़ज़्ज़त वालों में किया[32] और हम ने इस के बा'द उस की क़ौम पर

بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً

आस्मान से कोई लश्कर न उतारा[33] और न हमें वहां कोई लश्कर उतारना था वोह तो बस एक

وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ

ही चीख़ थी जभी वोह बुझ कर रह गए[34] और कहा गया कि हाए अफ़्सोस उन बन्दों पर[35] जब उन के पास कोई

رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ

रसूल आता है तो उस से ठठ्ठा ही करते हैं क्या उन्हों ने न देखा[36] हम ने उन से पहले कितनी संगतें

वक़्फ़ ग़ुफ़रान

27 : या'नी इब्तिदाए हस्ती से जिस की हम पर ने'मतें हैं और आख़िर कार भी उसी की त़रफ़ रुजूअ़ करना है उस मालिके ह़क़ीक़ी की इ़बादत न करना क्या मा'ना ! और उस की निस्बत ए'तिराज़ कैसा ! हर शख़्स अपने वुजूद पर नज़र कर के उस के ह़क़्क़े ने'मत व एह़सान को पहचान सकता है। 28 : या'नी क्या बुतों को मा'बूद बनाऊं 29 : जब ह़बीब नज्जार ने अपनी क़ौम से ऐसा नसीह़त आमेज़ कलाम किया तो वोह लोग उन पर यक्बारगी टूट पड़े और उन पर पथराव शुरूअ़ किया और पाउं से कुचला यहां तक कि क़त्ल कर डाला, क़ब्र उन की अन्त़ाकिया में है। जब क़ौम ने उन पर ह़म्ला शुरूअ़ किया तो उन्हों ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़िरिस्तादों से बहुत जल्दी कर के येह कहा : 30 : या'नी मेरे ईमान के शाहिद रहो ! जब वोह क़त्ल हो चुके तो ब त़रीक़े इक्राम 31 : जब वोह जन्नत में दाख़िल हुए और वहां की ने'मतें देखीं 32 : ह़बीब नज्जार ने येह तमन्ना की, कि उन की क़ौम को मा'लूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला ने ह़बीब की मग़्फ़िरत की और इक्राम फ़रमाया ताकि क़ौम को मुर्सलीन के दीन की त़रफ़ रग़बत हो। जब ह़बीब क़त्ल कर दिये गए तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का उस क़ौम पर ग़ज़ब हुवा और उन की उ़क़ूबत व सज़ा में ताख़ीर न फ़रमाई गई, ह़ज़रते जिब्रील को हुक्म हुवा और उन की एक ही होलनाक आवाज़ से सब के सब मर गए। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाया जाता है : 33 : उस क़ौम की हलाकत के लिये 34 : फ़ना हो गए जैसे आग बुझ जाती है। 35 : उन पर और उन की मिस्ल और सब पर जो रसूलों की तक्ज़ीब कर के हलाक हुए 36 : या'नी अहले मक्का ने जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं कि।

www.dawateislami.net

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَیْهِمْ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِیْعٌ لَّدَیْنَا

हलाक फ़रमाई कि वोह अब उन की त़रफ़ पलटने वाले नहीं[37] और जितने भी हैं सब के सब हमारे हुज़ूर हाज़िर

مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۲﴾ ع وَ اٰیَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَیْتَةُ ۚۖ اَحْیَیْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا

ع ۲

लाए जाएंगे[38] और उन के लिये एक निशानी मुर्दा ज़मीन है[39] हम ने उसे ज़िन्दा किया[40] और फिर उस से अनाज

حَبًّا فَمِنْهُ یَاْكُلُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ جَعَلْنَا فِیْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا

निकाला तो उस में से खाते हैं और हम ने उस में[41] बाग़ बनाए खजूरों और अंगूरों के और हम ने

فِیْهَا مِنَ الْعُیُوْنِ ﴿۳۴﴾ لِیَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَیْدِیْهِمْ ؕ اَفَلَا

उस में कुछ चश्मे बहाए कि उस के फलों में से खाएं और येह उन के हाथ के बनाए नहीं तो क्या

یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ سُبْحٰنَ الَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ

ह़क़ न मानेंगे[42] पाकी है उसे जिस ने सब जोड़े बनाए[43] उन चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है[44]

وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ اٰیَةٌ لَّهُمُ الَّیْلُ ۚۖ نَسْلَخُ مِنْهُ

और खुद उन से[45] और उन चीज़ों से जिन की उन्हें ख़बर नहीं[46] और उन के लिये एक निशानी[47] रात है हम उस पर से दिन

النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ

खींच लेते हैं[48] जभी वोह अंधेरे में हैं और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये[49] येह

تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ﴿۳۸﴾ وَ الْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ

हुक्म है ज़बर दस्त इल्म वाले का[50] और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं[51] यहां तक कि फिर हो गया जैसे खजूर की पुरानी

37 : या'नी दुन्या की त़रफ़ लौटने वाले नहीं। क्या येह लोग उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। 38 : या'नी तमाम उम्मतें रोज़े क़ियामत हमारे हुज़ूर ह़िसाब के लिये मौक़िफ़ में ह़ाज़िर की जाएंगी। 39 : जो इस पर दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला मुर्दो को ज़िन्दा फ़रमाएगा। 40 : पानी बरसा कर 41 : या'नी ज़मीन में 42 : और अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का शुक्र बजा न लाएंगे। 43 : या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम। 44 : ग़ल्ले फल वग़ैरा 45 : औलादे ज़ुकूर व उनास (मुज़क्कर और मुअन्नस औलाद) 46 : बहूरो बर की अ़जीबो ग़रीब मख़्लूक़ात में से जिस की इन्सानों को ख़बर भी नहीं है। 47 : हमारी क़ुदरते अ़ज़ीमा पर दलालत करने वाली। 48 : तो बिल्कुल तारीक रह जाती है जिस त़रह़ काले भुजंगे (इन्तिहाई काले) ह़ब्शी का सफ़ेद लिबास उतार लिया जाए तो फिर वोह सियाह ही सियाह रह जाता है। इस से मा'लूम हुवा कि आस्मान व ज़मीन के दरमियान की फ़ज़ा अस्ल में तारीक है आफ़्ताब की रोशनी उस के लिये एक सफ़ेद लिबास की त़रह़ है, जब आफ़्ताब ग़ुरूब हो जाता है तो येह लिबास उतर जाता है और फ़ज़ा अपनी अस्ल ह़ालत में तारीक रह जाती है। 49 : या'नी जहां तक उस की सैर की निहायत (ह़द) मुक़र्रर फ़रमाई गई है और वोह रोज़े क़ियामत है उस वक़्त तक वोह चलता ही रहेगा या येह मा'ना हैं कि वोह अपनी मन्ज़िलों में चलता है और जब सब से दूर वाले मग़रिब में पहुंचता है तो फिर लौट पड़ता है क्यूं कि येही उस का मुस्तक़र है। 50 : और येह निशानी है जो उस की क़ुदरते कामिला और ह़िक्मते बालिग़ा पर दलालत करती है। 51 : चांद की अठ्ठाईस मन्ज़िलें हैं, हर शब एक मन्ज़िल में होता है और पूरी मन्ज़िल तै कर लेता है, न कम चले न ज़ियादा, तुलूअ़ की तारीख़ से अठ्ठाईसवीं तारीख़ तक तमाम मन्ज़िलें तै कर लेता है और अगर महीना तीस का हो तो दो शब और उन्तीस हो तो एक शब छुपता है और जब अपने आख़िर मनाज़िल में पहुंचता है तो बारीक

الْقَدِیْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ یَنْۢبَغِیْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَ لَا الَّیْلُ سَابِقُ

डाल (टहनी)[52] सूरज को नहीं पहुंचता कि चांद को पकड़ ले[53] और न रात दिन पर

النَّهَارِؕ وَ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَ اٰیَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّیَّتَهُمْ فِی

सब्क़त ले जाए[54] और हर एक एक घेरे में पेर रहा है और उन के लिये एक निशानी येह है कि उन्हें उन के बुज़ुर्गों की पीठ में हम

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَ خَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا یَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَ اِنْ نَّشَاْ

ने भरी कश्ती में सुवार किया[55] और उन के लिये वैसी ही कश्तियां बना दीं जिन पर सुवार होते हैं और हम चाहें तो

نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِیْخَ لَهُمْ وَ لَا هُمْ یُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَ مَتَاعًا

उन्हें डुबो दें[56] तो न कोई उन की फ़रियाद को पहुंचने वाला हो और न वोह बचाए जाएं मगर हमारी त़रफ़ की रह़मत और एक वक़्त

اِلٰى حِیْنٍ ﴿٤٤﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَیْنَ اَیْدِیْكُمْ وَ مَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ

तक बरत्ने देना[57] और जब उन से फ़रमाया जाता है डरो तुम उस से जो तुम्हारे सामने है[58] और जो तुम्हारे पीछे आने वाला है[59] इस उम्मीद पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ مَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

कि तुम पर मेहर हो तो मुंह फेर लेते हैं और जब कभी उन के रब की निशानियों से कोई निशानी उन के पास आती है तो मुंह

مُعْرِضِیْنَ ﴿٤٦﴾ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِیْنَ

ही फेर लेते हैं[60] और जब उन से फ़रमाया जाए अल्लाह के दिये में से कुछ उस की राह में ख़र्च करो तो काफ़िर

كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ یَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗۤ ۖۗ اِنْ اَنْتُمْ

मुसल्मानों के लिये कहते हैं कि क्या हम उसे खिलाएं जिसे अल्लाह चाहता तो खिला देता[61] तुम तो नहीं

और कमान की त़रह़ ख़मीदा और ज़र्द हो जाता है। **52 :** जो सूख कर पतली और ख़मीदा और ज़र्द हो गई हो। **53 :** या'नी शब में जो उस के ज़ुहूरे शौकत का वक़्त है उस के साथ जम्अ़ हो कर उस के नूर को मग़्लूब करे, क्यूं कि सूरज और चांद में से हर एक के ज़ुहूरे शौकत के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है, सूरज के लिये दिन और चांद के लिये रात। **54 :** कि दिन का वक़्त पूरा होने से पहले आ जाए। ऐसा भी नहीं बल्कि रात और दिन दोनों मुअ़य्यन हिसाब के साथ आते जाते हैं, कोई उन में से अपने वक़्त से क़ब्ल नहीं आता और नय्यरैन या'नी आफ़्ताब व महताब में से कोई दूसरे के ह़ुदूदे शौकत में दाख़िल नहीं होता, न आफ़्ताब रात में चमके न माहताब दिन में। **55 :** जो सामाने अस्बाब वग़ैरा से भरी हुई थी। मुराद इस से कश्तिये नूह़ है जिस में उन के पहले अज्दाद सुवार किये गए थे और येह उन की ज़ुर्रिय्यतें उन की पुश्त में थीं। **56 :** बा वुजूद कश्तियों के **57 :** जो उन की ज़िन्दगानी के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है। **58 :** या'नी अ़ज़ाबे दुन्या **59 :** या'नी अ़ज़ाबे आख़िरत **60 :** या'नी उन का दस्तूर और त़रीक़ए कार ही येह है कि वोह हर आयत व मौइ़ज़त से ए'राज़ व रूगर्दानी किया करते हैं। **61 : शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन से मुसल्मानों ने कहा था कि तुम अपने मालों का वोह हिस्सा मिस्कीनों पर ख़र्च करो जो तुम ने ब ज़ो'मे ख़ुद अल्लाह तआ़ला के लिये निकाला है। इस पर उन्हों ने कहा कि क्या हम उन को खिलाएं जिन्हें अल्लाह तआ़ला खिलाना चाहता तो खिला देता, मत़लब येह था कि ख़ुदा ही को मिस्कीनों का मोह़ताज रखना मन्ज़ूर है तो उन्हें खाने को देना उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ होगा। येह बात उन्हों ने बख़ीली और कन्जूसी से बत़ौर तमस्ख़ुर के कही थी और निहायत बात़िल थी क्यूं कि दुन्या "दारुल इम्तिह़ान" (इम्तिह़ान की जगह) है। फ़क़ीरी और अमीरी दोनों आज़्माइशें हैं : फ़क़ीर की आज़्माइश सब्र से और ग़नी की

إِلَّا فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٨﴾

मगर खुली गुमराही में और कहते हैं कब आएगा येह वा'दा[62] अगर तुम सच्चे हो[63]

مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَا

राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[64] कि उन्हें आ लेगी जब वोह दुन्या के झगड़े में फंसे होंगे[65] तो न

يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَآ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾ ع وَنُفِخَ فِي الصُّورِ

वसिय्यत कर सकेंगे और न अपने घर पलट कर जाएं[66] और फूंका जाएगा सूर[67]

فَإِذَا هُم مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنسِلُونَ ﴿٥١﴾ قَالُوا يَٰوَيْلَنَا مَنۢ

जभी वोह क़ब्रों से[68] अपने रब की त़रफ़ दौड़ते चलेंगे कहेंगे हाए हमारी ख़राबी किस ने

بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۜ سكتة هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

وقف منزل وقف غفران وقف لازم

हमें सोते से जगा दिया[69] येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया[70]

إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَٰحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़[71] जभी वोह सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर हो जाएंगे[72]

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

तो आज किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और तुम्हें बदला न मिलेगा मगर अपने किये का

"इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह" (राहे ख़ुदा में ख़र्च करने) से। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि मक्कए मुकर्रमा में ज़िन्दीक़ लोग थे जब उन से कहा जाता था कि मिस्कीनों को सदक़ा दो तो कहते थे हरगिज़ नहीं येह कैसे हो सकता है कि जिस को **अल्लाह** तआ़ला मोह़ताज करे हम खिलाएं। **62 :** बअ़्स व क़ियामत का **63 :** अपने दा'वे में। इन का येह ख़िताब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब से था। **अल्लाह** तआ़ला इन के ह़क़ में फ़रमाता है : **64 :** या'नी सूर के पहले नफ़्ख़े की जो ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام फूंकेंगे। **65 :** ख़रीदो फ़रोख़्त में और खाने पीने में और बाज़ारों और मजलिसों में, दुन्या के कामों में कि अचानक क़ियामत क़ाइम हो जाएगी। ह़दीस शरीफ़ में है नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़रीदार और बाएअ़ के दरमियान कपड़ा फैला होगा न सौदा तमाम होने पाएगा न कपड़ा लिपट सकेगा कि क़ियामत क़ाइम हो जाएगी या'नी लोग अपने अपने कामों में मश्ग़ूल होंगे और वोह काम वैसे ही ना तमाम रह जाएंगे, न उन्हें ख़ुद पूरा कर सकेंगे न किसी दूसरे से पूरा करने को कह सकेंगे और जो घर से बाहर गए हैं वोह वापस न आ सकेंगे। चुनान्चे इर्शाद होता है : **66 :** वहीं मर जाएंगे और क़ियामत फ़ुरसत व मोहलत न देगी। **67 :** दूसरी मरतबा। येह नफ़्ख़ए सानिया है जो मुर्दों के उठाने के लिये होगा और उन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़ासिला होगा। **68 :** ज़िन्दा हो कर **69 :** येह मक़ूला कुफ़्फ़ार का होगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह येह बात इस लिये कहेंगे कि **अल्लाह** तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान उन से अ़ज़ाब उठा देगा और इतना ज़माना वोह सोते रहेंगे और नफ़्ख़ए सानिया के बा'द जब उठाए जाएंगे और अह्वाले क़ियामत देखेंगे तो इस त़रह़ चीख़ उठेंगे और येह भी कहा गया है कि जब कुफ़्फ़ार जहन्नम और उस के अ़ज़ाब देखेंगे तो उस के मुक़ाबले में अ़ज़ाबे क़ब्र उन्हें सहल मा'लूम होगा इस लिये वोह वैल (हाए हमारी ख़राबी) व अफ़्सोस पुकार उठेंगे और उस वक़्त कहेंगे : **70 :** और उस वक़्त का इक़्रार उन्हें कुछ नाफ़ेअ़ न होगा। **71 :** या'नी "नफ़्ख़ए अख़ीरा" एक होलनाक आवाज़ होगी। **72 :** ह़िसाब के लिये। फिर उन से कहा जाएगा।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْیَوْمَ فِیْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِیْ

बेशक जन्नत वाले आज दिल के बहलावों में चैन करते हैं[73] वोह और उन की बीबियां

ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآىٕكِ مُتَّكِـٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِیْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَّا یَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾

सायों में हैं तख़्तों पर तक्या लगाए उन के लिये उस में मेवा है और उन के लिये है उस में जो मांगें

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ ﴿۵۸﴾ وَ امْتَازُوا الْیَوْمَ اَیُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾

उन पर सलाम होगा मेहरबान रब का फ़रमाया हुवा[74] और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो[75]

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَیْكُمْ یٰبَنِیْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّیْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम क्या मैं ने तुम से अ़ह्द न लिया था[76] कि शैत़ान को न पूजना[77] बेशक वोह तुम्हारा खुला

مُّبِیْنٌ ﴿۶۰﴾ وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِیْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ﴿۶۱﴾ وَ لَقَدْ اَضَلَّ

दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना[78] येह सीधी राह है और बेशक उस ने तुम में

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِیْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ كُنْتُمْ

से बहुत सी ख़ल्क़त को बहका दिया तो क्या तुम्हें अ़क़्ल न थी[79] येह है वोह जहन्नम जिस का तुम से

تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْیَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾ اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى

वा'दा था आज इस में जाओ बदला अपने कुफ़्र का आज हम उन के मूंहों पर मोहर्

اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَیْدِیْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

कर देंगे[80] और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे[81]

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْیُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى یُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَ

और अगर हम चाहते तो उन की आंखें मिटा देते[82] फिर लपक कर रस्ते की त़रफ़ जाते तो उन्हें कुछ न सूझता[83] और

وقف غفران

73 : त़रह़ त़रह़ की ने'मतें और क़िस्म क़िस्म के सुरूर और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से ज़ियाफ़्त, जन्नती नहरों के कनारे बिहिश्ती अश्जार की दिल नवाज़ फ़ज़ाएं, त़रब अंगेज़ नग़मात, ह़सीनाने जन्नत का क़ुर्ब और क़िस्म क़िस्म की ने'मतों से इल्तिज़ाज़ (लज़्ज़त ह़ासिल करना) येह उन के शग़्ल होंगे। 74 : या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर सलाम फ़रमाएगा ख़्वाह ब वासित़ा या बे वासित़ा और येह सब से बड़ी और प्यारी मुराद है, मलाएका अहले जन्नत के पास हर दरवाज़े से आ कर कहेंगे तुम पर तुम्हारे रह़मत वाले रब का सलाम। 75 : जिस वक़्त मोमिन जन्नत की त़रफ़ रवाना किये जाएंगे उस वक़्त कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा कि अलग फट जाओ मोमिनीन से अ़लाह़दा हो जाओ और एक क़ौल येह भी है कि येह हुक्म कुफ़्फ़ार को होगा कि अलग अलग जहन्नम में अपने अपने मक़ाम पर जाएं। 76 : अपने अम्बिया की मा'रिफ़त 77 : उस की फ़रमां बरदारी न करना। 78 : और किसी को इबादत में मेरा शरीक न करना। 79 : कि तुम उस की अ़दावत और गुमराह गरी को समझते और जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उन से कहा जाएगा : 80 : कि वोह बोल न सकें और येह मोहर् करना उन के येह कहने के सबब होगा कि हम मुश्रिक न थे, न हम ने रसूलों को झुटलाया। 81 : उन के आ'ज़ा बोल उठेंगे और जो कुछ उन से सादिर हुवा है सब बयान कर देंगे। 82 : कि निशान भी बाक़ी

www.dawateislami.net

لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ ع

अगर हम चाहते तो उन के घर बैठे उन की सूरतें बदल देते[84] कि न आगे बढ़ सकते न पीछे लौटते[85]

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَ

और जिसे हम बड़ी उ़म्र का करें उसे पैदाइश में उलटा फेरें[86] तो क्या वोह समझते नहीं[87] और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया[88] और

مَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا

न वोह उन की शान के लाइक़ है वोह तो नहीं मगर नसीह़त और रोशन क़ुरआन[89] कि उसे डराए जो ज़िन्दा हो[90]

وَّ يَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ

और काफ़िरों पर बात साबित हो जाए[91] और क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने अपने हाथ के

اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾ وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ

बनाए हुए चौपाए उन के लिये पैदा किये तो येह उन के मालिक हैं और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया[92] तो किसी पर सुवार होते हैं और

न रहता, इस त़रह़ का अन्धा कर देते। **83 :** लेकिन हम ने ऐसा न किया और अपने फ़ज़्लो करम से "ने'मते बसर" उन के पास बाक़ी रखी तो अब उन पर ह़क़ येह है कि वोह शुक्र गुज़ारी करें कुफ़्र न करें। **84 :** और उन्हें बन्दर या सुवर बना देते **85 :** और उन के जुर्म इस के मुस्तद्ई थे लेकिन हम ने अपनी रह़मत व ह़िक्मत के ह़स्बे इक़्तिज़ा अ़ज़ाब में जल्दी न की और उन के लिये मोहलत रखी। **86 :** कि वोह बचपन के से ज़ो'फ़ व नातुवानी की त़रफ़ वापस होने लगे और दम बदम इस की त़ाक़तें क़ुव्वतें और जिस्म और अ़क़्ल घटने लगे। **87 :** कि जो अह़वाल के बदलने पर ऐसा क़ादिर हो कि बचपन के ज़ो'फ़ व नातुवानी और सिग़्रे जिस्म व नादानी के बा'द शबाब की क़ुव्वतें व तुवानाई और जिस्मे क़वी व दानाई अ़त़ा फ़रमाता है और फिर किब्र सिन और आख़िर उ़म्र में इसी क़वी हैकल जवान को दुबला और ह़क़ीर कर देता है, अब न वोह जिस्म बाक़ी है न क़ुव्वतें, निशस्त बरख़ास्त में मजबूरियां दरपेश हैं, अ़क़्ल काम नहीं करती, बात याद नहीं रहती, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को पहचान नहीं सकता, जिस परवर्दगार ने येह तग़य्युर किया वोह क़ादिर है कि आंखें देने के बा'द उन्हें मिटा दे और अच्छी सूरतें अ़त़ा करने के बा'द उन को मस्ख़ कर दे और मौत देने के बा'द फिर ज़िन्दा कर दे। **88 :** मा'ना येह हैं कि हम ने आप को शे'रगोई का मलका न दिया या येह कि क़ुरआन ता'लीमे शे'र नहीं है और शे'र से कलामे काज़िब मुराद है ख़्वाह मौज़ूं हो या ग़ैर मौज़ूं। इस आयत में इशारा है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उ़लूमे अव्वलीन व आख़िरीन ता'लीम फ़रमाए गए जिन से कश्फ़े ह़क़ाइक़ होता है और आप की मा'लूमात वाक़ेई व नफ़्सुल अम्री हैं, किज़्बे शे'री नहीं जो ह़क़ीक़त में जह्ल है वोह आप की शान के लाइक़ नहीं और आप का दामने तक़द्दुस इस से पाक है। इस में शे'र ब मा'ना कलामे मौज़ूं के जानने और इस के सह़ीह़ व सक़ीम जय्यद व रदी को पहचानने की नफ़ी नहीं। इ़ल्मे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में ता'न करने वालों के लिये येह आयत किसी त़रह़ सनद नहीं हो सकती **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ुज़ूर को उ़लूमे काएनात अ़त़ा फ़रमाए। इस के इन्कार में इस आयत को पेश करना मह़्ज़ ग़लत़ है। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने कहा था कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) शाइ़र हैं और जो वोह फ़रमाते हैं या'नी क़ुरआने पाक वोह शे'र है। इस से उन की मुराद येह थी कि (مَعَاذَ الله) येह कलाम काज़िब है जैसा कि क़ुरआने करीम में उन का मक़ूला नक़्ल फ़रमाया गया है بَلِ افْتَرٰهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ। इसी का इस आयत में रद फ़रमाया गया कि हम ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ऐसी बात़िल गोई का मलका ही नहीं दिया और येह किताब अश्आ़र या'नी अकाज़ीब पर मुश्तमिल नहीं। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ज़बान से ऐसे बदज़ौक़ और नज़्मे अ़रूज़ी से ऐसे ना वाक़िफ़ न थे कि नस्र को नज़्म कह देते और कलामे पाक को शे'रे अ़रूज़ी बता बैठते और कलाम का मह़्ज़ वज़्ने अ़रूज़ी पर होना ऐसा भी न था कि इस पर ए'तिराज़ किया जा सके। इस से साबित हो गया कि उन बे दीनों की मुराद शे'र से कलामे काज़िब थी। (مدارک وجمل وروح البیان) और ह़ज़रत शैख़े अक्बर قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया है कि मा'ना येह हैं कि हम ने अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुअ़म्मे और इज्माल के साथ ख़िता़ब नहीं फ़रमाया जिस में मुराद के मख़्फ़ी रहने का एह़तिमाल हो बल्कि साफ़ सरीह़ कलाम फ़रमाया है जिस से तमाम ह़िजाब उठ जाएं और उ़लूम रोशन हो जाएं, चूंकि शे'र लुग़ज़ व तोरिया और रम्ज़ व इज्माल का मह़ल होता है इस लिये शे'र की नफ़ी फ़रमा कर इस मा'ना को बयान फ़रमा दिया। **89 :** साफ़ सरीह़ ह़क़ व हिदायत। कहां वोह पाक आस्मानी किताब तमाम उ़लूम की जामेअ़ और कहां शे'र जैसा कलामे काज़िब چہ نسبت خاک را با عالم پاک. (घटिया को आ'ला से क्या निस्बत ?) (الکبریت الاحمر للشیخ الاکبر) **90 :** दिल ज़िन्दा रखता हो कलाम व ख़िता़ब को समझे और येह शान मोमिन की है। **91 :** या'नी ह़ुज्जते अ़ज़ाब क़ाइम हो जाए। **92 :** या'नी मुसख़्ख़र व ज़ेरे ह़ुक्म कर दिया।

www.dawateislami.net

مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ

किसी को खाते हैं और उन के लिये उन में कई त़रह़ के नफ़्अ़[93] और पीने की चीज़ें हैं[94] तो क्या शुक्र न करेंगे[95] और

اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۷۴﴾ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ

उन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और ख़ुदा ठहरा लिये[96] कि शायद उन की मदद हो[97] वोह उन की मदद नहीं कर सकते[98]

وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

وقف لازم

और वोह उन के लश्कर सब गिरिफ़्तार ह़ाज़िर आएंगे[99] तो तुम उन की बात का ग़म न करो[100] बेशक हम जानते हैं जो वोह छुपाते हैं

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

और ज़ाहिर करते हैं[101] और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह़

مُّبِيْنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّ نَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَ

झगड़ालू है[102] और हमारे लिये कहावत कहता है[103] और अपनी पैदाइश भूल गया[104] बोला ऐसा कौन है कि हड्डियों को ज़िन्दा करे

هِيَ رَمِيْمٌ ﴿۷۸﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ

जब वोह बिल्कुल गल गईं तुम फ़रमाओ उन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार उन्हें बनाया और उसे हर पैदाइश

عَلِيْمُۨ ﴿۷۹﴾ لا الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنْتُمْ مِّنْهُ

का इ़ल्म है[105] जिस ने तुम्हारे लिये हरे पेड़ में से आग पैदा की जभी तुम उस से

93 : और फ़ाएदे हैं कि उन की खालों बालों और ऊन वग़ैरा काम में लाते हैं। **94 :** दूध और दूध से बनने वाली चीज़ें दही मठ्ठा वग़ैरा। **95 :** **अल्लाह** तआ़ला की इन ने'मतों का। **96 :** या'नी बुतों को पूजने लगे **97 :** और मुसीबत के वक़्त काम आएं और अ़ज़ाब से बचाएं और ऐसा मुम्किन नहीं। **98 :** क्यूं कि जमाद बेजान बे क़ुदरत बे शुऊर हैं। **99 :** या'नी काफ़िरों के साथ उन के बुत भी गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर किये जाएंगे और सब जहन्नम में दाख़िल होंगे बुत भी और उन के पुजारी भी। **100 :** येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से और उन की ईज़ाओं और जफ़ाकारियों से आप ग़मगीन न हों। **101 :** हम उन्हें उन के किरदार की जज़ा देंगे। **102 शाने नुज़ूल :** येह आयत आ़स बिन वाइल या अबू जहल और बक़ौले मश्हूर उबय बिन ख़लफ़ जुमह़ी के ह़क़ में नाज़िल हुई जो इन्कारे बअ़्स में या'नी मरने के बा'द उठने के इन्कार में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से बह़्स व तकरार करने आया था, उस के हाथ में एक गली हुई हड्डी थी, उस को तोड़ता जाता था और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहता जाता था कि क्या आप का ख़याल है कि इस हड्डी को गल जाने और रेज़ा रेज़ा हो जाने के बा'द भी **अल्लाह** तआ़ला ज़िन्दा करेगा ? हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां और तुझे भी मरने के बा'द उठाएगा और जहन्नम में दाख़िल फ़रमाएगा। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस के जह्ल का इज़्हार फ़रमाया गया कि गली हुई हड्डी का बिखरने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दगी क़बूल करना अपनी नादानी से ना मुम्किन समझता है, कितना अह़मक़ है, अपने आप को नहीं देखता कि इब्तिदा में एक गन्दा नुत़्फ़ा था गली हुई हड्डी से भी ह़क़ीर तर **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरते कामिला ने उस में जान डाली, इन्सान बनाया तो ऐसा मग़रूर व मुतकब्बिर इन्सान हुवा कि उस की क़ुदरत ही का मुन्किर हो कर झगड़ने आ गया, इतना नहीं देखता कि जो क़ादिरे बरह़क़ पानी की बूंद को क़वी और तुवाना इन्सान बना देता है उस की क़ुदरत से गली हुई हड्डी को दोबारा ज़िन्दगी बख़्श देना क्या बई़द है और इस को ना मुम्किन समझना कितनी खुली हुई जहालत है। **103 :** या'नी गली हुई हड्डी को हाथ से मल कर मसल बनाता है कि येह तो ऐसी बिखर गई कैसे ज़िन्दा होगी। **104 :** कि क़त़्रए मनी से पैदा किया गया है। **105 :** पहली का भी और मौत के बा'द वाली का भी।

تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَ لَیْسَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى

सुलगाते हो[106] और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

اَنْ یَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰىۗ وَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِیْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ

और नहीं बना सकता[107] क्यूं नहीं[108] और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

اَرَادَ شَیْـًٔا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِیْ بِیَدِهٖ

किसी चीज़ को चाहे[109] तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है[110] तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

हर चीज़ का क़ब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे[111]

وقف غفران

ركوعاتها ٥ | ٣٧ سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ ٥٦ | اٰياتها ١٨٢

सूरए صٰفّٰت मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَ الصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ﴿٢﴾ فَالتّٰلِیٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿٣﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ

क़सम उन की कि बा क़ाइदा सफ़ बांधें[2] फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं[3] फिर उन जमाअ़तों की कि क़ुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوَاحِدٌ ؕ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا وَ رَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ﴿٥﴾

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिक़ों का[4]

106 : अ़रब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख़ है दूसरे का अ़फ़ार। उन की ख़ासिय्यत येह है कि जब उन की सब्ज़ शाख़ें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपक्ता होता है, इस में क़ुदरत की कैसी अ़जीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस क़ादिरे मुत्लक़ की येह हिक्मत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द ज़िन्दगी वारिद करे तो उस की क़ुदरत से क्या अ़जीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे क़ुदरत देख कर जाहिलाना व मुआ़निदाना इन्कार करना है। 107 : या उन्हीं को बा'दे मौत ज़िन्दा नहीं कर सकता ? 108 : बेशक वोह इस पर क़ादिर है। 109 : कि पैदा करे 110 : या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ़ है। 111 : आख़िरत में। 1 : सूरए وَالصّٰفّٰت मक्किय्या है, इस में पांच रुकूअ़, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस हर्फ़ हैं। 2 : इस आयत में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरौहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरौह हैं जो नमाज़ियों की त़रह सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुन्तज़िर रहते हैं या उ़लमाए दीन के गुरौह जो तहज्जुद और तमाम नमाज़ों में सफ़ें बांध कर मसरूफ़े इबादत रहते हैं या ग़ाज़ियों के गुरौह जो राहे ख़ुदा में सफ़ें बांध कर दुश्मनाने हक़ के मुक़ाबिल होते हैं। (مدارک) 3 : पहली तक़्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुक़र्रर हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक़्दीर पर वोह उ़लमा जो वा'ज़ व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूरत में वोह ग़ाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। 4 : या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और

اِنَّا زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِزِیْنَةِ ِۣالْكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾ وَ حِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَیْطٰنٍ

बेशक हम ने नीचे के आस्मान[5] को तारों के सिंगार से आरास्ता किया और निगाह रखने को हर शैतान

مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾ لَا یَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَ یُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿۸﴾

सरकश से[6] आ़लमे बाला की त़रफ़ कान नहीं लगा सकते[7] और उन पर हर त़रफ़ से मार फेंक होती है[8]

دُحُوْرًا وَّ لَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ

उन्हें भगाने को और उन के लिये[9] हमेशा का अ़ज़ाब मगर जो एकआध बार उचक ले चला[10] तो रोशन अंगारा

ثَاقِبٌ ﴿۱۰﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ

उस के पीछे लगा[11] तो उन से पूछो[12] क्या उन की पैदाइश ज़ियादा मज़बूत़ है या हमारी और मख़्लूक़ आस्मानों और फ़िरिश्तों वग़ैरा की[13] बेशक हम ने उन को

طِیْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَ یَسْخَرُوْنَ ۪﴿۱۲﴾ وَ اِذَا ذُكِّرُوْا لَا یَذْكُرُوْنَ ۪﴿۱۳﴾

चिपक्ती मिट्टी से बनाया[14] बल्कि तुम्हें अचम्बा आया[15] और वोह हंसी करते हैं[16] और समझाए नहीं समझते

وَ اِذَا رَاَوْا اٰیَةً یَّسْتَسْخِرُوْنَ ۪﴿۱۴﴾ وَ قَالُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۚۖ﴿۱۵﴾

और जब कोई निशानी देखते हैं[17] ठठ्ठा करते हैं और कहते हैं येह तो नहीं मगर खुला जादू

ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿۱۶﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا

क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे क्या हम ज़रूर उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले

الْاَوَّلُوْنَ ﴿۱۷﴾ قُلْ نَعَمْ وَ اَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ۚ﴿۱۸﴾ فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ

बाप दादा भी[18] तुम फ़रमाओ हां यूं कि ज़लील हो के तो वोह[19] तो एक ही झिड़क है[20]

तमाम हुदूद व जिहात सब का मालिक वोही है तो कोई दूसरा किस त़रह मुस्तह़िक़्क़े इबादत हो सकता है, लिहाज़ा वोह शरीक से मुनज़्ज़ा है। **5 :** जो ज़मीन के ब निस्बत और आस्मानों से क़रीब तर है। **6 :** या'नी हम ने आस्मान को हर एक ना फ़रमान शैत़ान से मह़फ़ूज़ रखा कि जब शयात़ीन आस्मान पर जाने का इरादा करें तो फ़िरिश्ते शिहाब मार कर उन को दफ़्अ़ कर दें। लिहाज़ा शयात़ीन आस्मान पर नहीं जा सकते और **7 :** और आस्मान के फ़िरिश्तों की गुफ़्तगू नहीं सुन सकते। **8 :** अंगारों की। जब वोह इस निय्यत से आस्मान की त़रफ़ जाएं। **9 :** आख़िरत में **10 :** या'नी अगर कोई शैत़ान मलाएका का कोई कलिमा कभी ले भागा **11 :** कि उसे जलाए और ईज़ा पहुंचाए। **12 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **13 :** तो जिस क़ादिरे बरह़क़ को आस्मान व ज़मीन जैसी अ़ज़ीम मख़्लूक़ का पैदा कर देना कुछ भी मुश्किल और दुश्वार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उस पर क्या मुश्किल हो सकता है। **14 :** येह उन के ज़ो'फ़ की एक और शहादत है कि उन की पैदाइश का अस्ल माद्दा मिट्टी है जो कोई शिद्दत व क़ुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और बुरहान क़ाइम फ़रमाई गई है कि चिपक्ती मिट्टी उन का माद्दए पैदाइश है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और ग़ायत येह है कि मिट्टी हो जाने के बा'द उस मिट्टी से फिर दोबारा पैदाइश को वोह क्यूं ना मुम्किन जानते हैं ! माद्दा मौजूद और सानेअ़ मौजूद फिर दोबारा पैदाइश कैसे मुह़ाल हो सकती है ! **15 :** उन की तक्ज़ीब करने से कि ऐसी वाज़ेहुद्दलालह आयात व बय्यिनात के बा वुजूद वोह किस त़रह तक्ज़ीब करते हैं। **16 :** आप से और आप के तअ़ज्जुब से या मरने के बा'द उठने से। **17 :** मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा के **18 :** जो हम से ज़माने में मुक़द्दम हैं। कुफ़्फ़ार के नज़्दीक उन के बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना ख़ुद उन के ज़िन्दा किये जाने से ज़ियादा बईद था इस लिये उन्हों ने येह कहा। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाता है : **19 :** या'नी बअ़्स **20 :** एक ही होलनाक आवाज़ है नफ़्ख़ए सानिया की

فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿۲۰﴾ هٰذَا يَوْمُ

जभी वोह[21] देखने लगेंगे और कहेंगे हाए हमारी ख़राबी उन से कहा जाएगा येह इन्साफ़ का दिन है[22] येह है वोह

الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۱﴾ ع اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ ع ٥ / ٢١

फ़ैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे[23] ज़ालिमों और उन के जोड़ों को[24]

وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿۲۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿۲۳﴾ الربع

और जो कुछ वोह पूजते थे अल्लाह के सिवा उन सब को हांको राहे दोज़ख़ की त़रफ़

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿۲۴﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

और उन्हें ठहराओ[25] उन से पूछना है[26] तुम्हें क्या हुवा एक दूसरे की मदद क्यूं नहीं करते[27] बल्कि वोह आज

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّكُمْ

गरदन डाले हैं[28] और उन में एक ने दूसरे की त़रफ़ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले[29] तुम

كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَمَا

हमारे दहनी त़रफ़ से बहकाने आते थे[30] जवाब देंगे तुम ख़ुद ही ईमान न रखते थे[31] और

كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

हमारा तुम पर कुछ क़ाबू न था[32] बल्कि तुम सरकश लोग थे तो साबित हो गई हम पर

قَوْلُ رَبِّنَاۤ ۖ اِنَّا لَذَآىِٕقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمْ

हमारे रब की बात[33] हमें ज़रूर चखना है[34] तो हम ने तुम्हें गुमराह किया कि हम ख़ुद गुमराह थे तो

21 : ज़िन्दा हो कर अपने अफ़्आल और पेश आने वाले अह़वाल 22 : या'नी फ़िरिश्ते कहेंगे कि येह इन्साफ़ का दिन है येह हिसाब व जज़ा का दिन है 23 : दुन्या में और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा : 24 : ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं और उन के जोड़ों से मुराद उन के शयात़ीन जो दुन्या में उन के जलीस व क़रीन रहते थे, हर एक काफ़िर अपने शैत़ान के साथ एक ही ज़न्जीर में जकड़ दिया जाएगा और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अश्बाह व अम्साल हैं या'नी हर काफ़िर अपने ही क़िस्म के कुफ़्फ़ार के साथ हांका जाएगा, बुत परस्त बुत परस्तों के साथ और आतश परस्त आतश परस्तों के साथ, وَعَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس । 25 : सिरात़ के पास 26 : ह़दीस शरीफ़ में है कि रोज़े क़ियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं **एक** उस की उ़म्र कि किस काम में गुज़री । **दूसरे** उस का इ़ल्म कि उस पर क्या अ़मल किया । **तीसरे** उस का माल कि कहां से कमाया कहां ख़र्च किया । **चौथे** उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया । 27 : येह उन से जहन्नम के ख़ाज़िन ब त़रीक़े तौबीख़ कहेंगे कि दुन्या में तो एक दूसरे की इमदाद पर बहुत ग़र्रा रखते थे, आज देखो कैसे आ़जिज़ हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता । 28 : आ़जिज़ व ज़लील हो कर । 29 : अपने सरदारों से जो दुन्या में बहकाते थे । 30 : या'नी बज़ोरे कुव्वत हमें गुमराही पर आमादा करते थे । इस पर कुफ़्फ़ार के सरदार कहेंगे और 31 : पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से ब इख़्तियारे ख़ुद ए'राज़ कर चुके थे । 32 : कि हम तुम्हें अपनी इत्तिबाअ़ पर मजबूर करते 33 : जो उस ने फ़रमाई कि मैं ज़रूर जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों से भरूंगा । लिहाज़ा 34 : उस का अ़ज़ाब । गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी ।

www.dawateislami.net

یَوْمَىٕذٍ فِی الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۳۴﴾

उस दिन[35] वोह सब के सब अ़ज़ाब में शरीक हैं[36] मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ یَقُوْلُوْنَ

बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) थे[37] और कहते थे

اَىٕنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَ صَدَّقَ

क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शाइ़र के कहने से[38] बल्कि वोह तो ह़क़ लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की

الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّكُمْ لَذَآىٕقُوا الْعَذَابِ الْاَلِیْمِ ﴿۳۸﴾ وَ مَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

तस्दीक़ फ़रमाई[39] बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है तो तुम्हें बदला न मिलेगा मगर

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۴۰﴾ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ رِزْقٌ

अपने किये का[40] मगर जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं[41] उन के लिये वोह रोज़ी है

مَّعْلُوْمٌ ﴿۴۱﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَ هُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۴۲﴾ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿۴۳﴾ عَلٰى سُرُرٍ

जो हमारे इ़ल्म में है मेवे[42] और उन की इ़ज़्ज़त होगी चैन के बाग़ों में तख़्तों पर

مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿۴۴﴾ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِیْنٍ ﴿۴۵﴾ بَیْضَآءَ لَذَّةٍ

होंगे आमने सामने[43] उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का[44] सफ़ेद रंग[45] पीने वालों

لِّلشّٰرِبِیْنَ ﴿۴۶﴾ لَا فِیْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ عِنْدَهُمْ

के लिये लज़्ज़त[46] न उस में ख़ुमार है[47] और न उस से उन का सर फिरे[48] और उन के पास हैं जो

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِیْنٌ ﴿۴۸﴾ كَاَنَّهُنَّ بَیْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۴۹﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى

शोहरों के सिवा दूसरी त़रफ़ आंख उठा कर न देखेंगी[49] बड़ी आंखों वालियां गोया वोह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए[50] तो उन में[51] एक ने दूसरे की

35 : या'नी रोज़े क़ियामत **36 :** गुमराह भी और उन के गुमराह करने वाले सरदार भी क्यूं कि येह सब दुन्या में गुमराही में शरीक थे। **37 :** और तौह़ीद क़बूल न करते थे, शिर्क से बाज़ न आते थे **38 :** या'नी सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के फ़रमाने से। **39 :** दीन व तौह़ीद व नफ़्िये शिर्क में। **40 :** उस शिर्क और तक्ज़ीब का जो दुन्या में कर आए हो। **41 :** ईमान और इख़्लास वाले **42 :** और नफ़ीस व लज़ीज़ ने'मतें, ख़ुश ज़ाएक़ा, ख़ुश्बूदार, ख़ुश मन्ज़र। **43 :** एक दूसरे से मानूस और मसरूर। **44 :** जिस की पाकीज़ा नहरें निगाहों के सामने जारी होंगी। **45 :** दूध से भी ज़ियादा सफ़ेद **46 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जो बदबूदार और बद ज़ाएक़ा होती है और पीने वाला इस को पीते वक़्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है। **47 :** जिस से अ़क़्ल में ख़लल आए **48 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जिस में बहुत से फ़सादात और ऐ़ब हैं, इस से पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पेशाब में भी तक्लीफ़ हो जाती है, त़बीअ़त मालिश करती है, क़ै आती है, सर चकराता है, अ़क़्ल ठिकाने नहीं रहती। **49 :** कि उस के नज़्दीक उस का शोहर ही साह़िबे ह़ुस्न और प्यारा है। **50 :** गर्दो ग़ुबार से पाक साफ़ दिलकश रंग। **51 :** या'नी अहले जन्नत में से।

بَعْضٍ یَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۵۰﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّیْ كَانَ لِیْ قَرِیْنٌ ﴿۵۱﴾ یَّقُوْلُ

तरफ़ मुंह किया पूछते हुए[52] उन में से कहने वाला बोला मेरा एक हम नशीन था[53] मुझ से कहा करता

اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِیْنَ ﴿۵۲﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا

क्या तुम इसे सच मानते हो[54] क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें

لَمَدِیْنُوْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿۵۴﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِیْ سَوَآءِ

जज़ा सज़ा दी जाएगी[55] कहा क्या तुम झांक कर देखोगे[56] फिर झांका तो उसे बीच भड़क्ती

الْجَحِیْمِ ﴿۵۵﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِیْنِ ﴿۵۶﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّیْ

आग में देखा[57] कहा ख़ुदा की क़सम क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर दे[58] और मेरा रब फ़ज़्ल न करे[59]

لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِیْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَیِّتِیْنَ ﴿۵۸﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰی

तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता[60] तो क्या हमें मरना नहीं मगर हमारी पहली मौत[61]

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ﴿۵۹﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۶۰﴾ لِمِثْلِ هٰذَا

और हम पर अज़ाब न होगा[62] बेशक येही बड़ी काम्याबी है ऐसी ही बात के लिये

فَلْیَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَذٰلِكَ خَیْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿۶۲﴾ اِنَّا

कामियों को काम करना चाहिये तो येह मेहमानी भली[63] या थोहड़ का पेड़[64] बेशक हम ने

جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۳﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِیْۤ اَصْلِ الْجَحِیْمِ ﴿۶۴﴾

उसे ज़ालिमों की जांच किया है[65] बेशक वोह एक पेड़ है कि जहन्नम की जड़ में निकलता है[66]

52 : कि दुन्या में क्या हालात व वाक़िआत पेश आए ? **53 :** दुन्या में। जो मरने के बा'द उठने का मुन्किर था और इस की निस्बत तन्ज़ के तरीक़े पर **54 :** या'नी मरने के बा'द उठने को **55 :** और हम से हिसाब लिया जाएगा। येह बयान कर के उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से **56 :** कि मेरे उस हम नशीन का जहन्नम में क्या हाल है ? **57 :** कि अज़ाब के अन्दर गिरिफ़्तार है तो उस जन्नती ने उस से **58 :** राहे रास्त से बहका कर **59 :** और अपने रहमत व करम से मुझे तेरे इग़वा से महफ़ूज़ न रखता और इस्लाम पर क़ाइम रहने की तौफ़ीक़ न देता **60 :** तेरे साथ जहन्नम में। और जब मौत ज़ब्ह कर दी जाएगी तो अहले जन्नत फ़िरिश्तों से कहेंगे : **61 :** वोही जो दुन्या में हो चुकी **62 :** फ़िरिश्ते कहेंगे : नहीं। और अहले जन्नत का येह दरयाफ़्त करना **अल्लाह** तआला की रहमत के साथ तलज़्ज़ुज़ और दाइमी हयात की ने'मत और अज़ाब से मामून होने के एहसान पर उस की ने'मत का ज़िक्र करने के लिये है और इस ज़िक्र से उन्हें सुरूर हासिल होगा। **63 :** या'नी जन्नती ने'मतें और लज़्ज़तें और वहां के नफ़ीस और लतीफ़ मआकिल व मशारिब और दाइमी ऐश और बे निहायत राहतो सुरूर **64 :** निहायत तल्ख़, इन्तिहा का बदबूदार, हद दरजे का बद मज़ा, सख़्त ना गवार जिस से दोज़ख़ियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को इस के खाने पर मजबूर किया जाएगा। **65 :** कि दुन्या में काफ़िर इस का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा। **66 :** और उस की शाख़ें जहन्नम के दरकात में पहुंचती हैं।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿۶۵﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ

उस का शिगूफ़ा जैसे देवों के सर[67] फिर बेशक वोह उस में से खाएंगे[68] फिर उस से

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿۶۶﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۶۷﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ

पेट भरेंगे फिर बेशक उन के लिये उस पर खौलते पानी की मिलोनी (मिलावट) है[69] फिर उन की बाज़गश्त (वापसी)

لَاِلَى الْجَحِيْمِ ﴿۶۸﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿۶۹﴾ فَهُمْ عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ

ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है[70] बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा गुमराह पाए तो वोह उन्हीं के निशाने क़दम पर

يُهْرَعُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا

दौड़े जाते हैं[71] और बेशक उन से पहले बहुत से अगले गुमराह हुए[72] और बेशक हम ने

فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۷۳﴾ اِلَّا عِبَادَ

उन में डर सुनाने वाले भेजे[73] तो देखो डराए गयों का कैसा अन्जाम हुवा[74] मगर अल्लाह

اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَنَجَّيْنٰهُ ع ۲ ۵۳

के चुने हुए बन्दे[75] और बेशक हमें नूह ने पुकारा[76] तो हम क्या ही अच्छे क़बूल फ़रमाने वाले[77] और हम ने उसे

وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَتَرَكْنَا

और उस के घर वालों को बड़ी तक्लीफ़ से नजात दी और हम ने उसी की औलाद बाक़ी रखी[78] और हम ने

عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۷۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۹﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी[79] नूह पर सलाम हो जहान वालों में[80] बेशक हम ऐसा ही

67 : या'नी निहायत बद हैअत और क़बीहुल मन्ज़र। 68 : शिद्दत की भूक से मजबूर हो कर 69 : या'नी जहन्नमी थोहड़ से उन के पेट भरेंगे वोह जलता होगा पेटों को जलाएगा उस की सोज़िश से प्यास का ग़लबा होगा और मुद्दत तक तो प्यास की तक्लीफ़ में रखे जाएंगे, फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस की गरमी और सोज़िश उस थोहड़ की गरमी और जलन से मिल कर और तक्लीफ़ व बेचैनी बढ़ाएगी। 70 : क्यूं कि ज़क़्क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उन को अपने दरकात से दूसरे दरकात में ले जाया जाएगा, इस के बा'द फिर अपने दरकात की तरफ़ लौटाए जाएंगे। इस के बा'द उन के मुस्तहिक़्क़े अ़ज़ाब होने की इल्लत इर्शाद फ़रमाई जाती है 71 : और गुमराही में उन का इत्तिबाअ़ करते हैं और हक़ के दलाइले वाज़ेहा से आंखें बन्द कर लेते हैं। 72 : इसी वज्ह से कि उन्हों ने अपने बाप दादा की ग़लत़ राह न छोड़ी और हुज्जत व दलील से फ़ाएदा न उठाया। 73 : या'नी अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام जिन्हों ने उन को गुमराही और बद अ़मली के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ दिलाया। 74 : कि वोह अ़ज़ाब से हलाक किये गए। 75 : ईमानदार जिन्हों ने अपने इख़्लास के सबब नजात पाई। 76 : और हम से अपनी क़ौम के अ़ज़ाब व हलाक की दरख़्वास्त की। 77 : कि हम ने उन की दुआ़ क़बूल की और उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की और उन से पूरा इन्तिक़ाम लिया कि उन्हें ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया। 78 : तो अब दुन्या में जितने इन्सान हैं सब हज़रते नूह عَلَيۡهِ السَّلَام की नस्ल से हैं। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि हज़रते नूह عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कश्ती से उतरने के बा'द उन के हमराहियों में जिस क़दर मर्द व औ़रत थे सभी मर गए सिवाए आप की औलाद और उन की औ़रतों के, उन्हीं से दुन्या की नस्लें चलीं,

www.dawateislami.net

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَ اِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ

डुबो दिया[81] और बेशक उसी के गुरौह से इब्राहीम है[82] जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुवा ग़ैर से

وقف لازم

سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ

सलामत दिल ले कर[83] जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया[84] तुम क्या पूजते हो क्या बोहतान से अल्लाह के सिवा

اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي

और ख़ुदा चाहते हो तो तुम्हारा क्या गुमान है रब्बुल आ़लमीन पर[85] फिर उस ने एक निगाह सितारों

النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى

को देखा[86] फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूं[87] तो वोह उस पर पीठ दे कर फिर गए[88] फिर उन के ख़ुदाओं की त़रफ़

اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते[89] तुम्हें क्या हुवा कि नहीं बोलते[90] तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें

अ़रब और फ़ारस और रूम आप के फ़रज़न्द साम की औलाद से हैं और सूडान के लोग आप के बेटे ह़ाम की नस्ल से और तुर्क और याजूज माजूज वग़ैरा आप के साहिब ज़ादे याफ़िस की औलाद से। **79 :** या'नी उन के बा'द वाले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन की उम्मतों में ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्रे जमील बाक़ी रखा। **80 :** या'नी मलाएका और जिन्नो इन्स सब उन पर क़ियामत तक सलाम भेजा करें। **81 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के काफ़िरों को। **82 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के दीनो मिल्लत और उन्ही के त़रीक़ व सुन्नत पर हैं। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान दो हज़ार छ[6] सो चालीस बरस का ज़मानी फ़र्क़ है और दोनों ह़ज़रात के दरमियान जो अ़हद गुज़रा उस में सिर्फ़ दो नबी हुए : ह़ज़रते हूद व ह़ज़रते सालेह عَلَيْهِمَا السَّلَام। **83 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने क़ल्ब को अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया। **84 :** ब त़रीक़े तौबीख़ **85 :** कि जब तुम उस के सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वोह तुम्हें बे अ़ज़ाब छोड़ देगा ? बा वुजूदे कि तुम जानते हो कि वोही मुन्इमे ह़क़ीक़ी मुस्तह़िक़्क़े इबादत है। क़ौम ने कहा कि कल को हमारी ईद है, जंगल में मेला लगेगा, हम नफ़ीस खाने पका कर बुतों के पास रख जाएंगे और मेले से वापस हो कर तबर्रुक के त़ौर पर उन को खाएंगे, आप भी हमारे साथ चलें और मज्मअ़ और मेले की रौनक़ देखें, वहां से वापस हो कर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उन का बनाव सिंगार देखें, येह तमाशा देखने के बा'द हम समझते हैं कि आप बुत परस्ती पर हमें मलामत न करेंगे। **86 :** जैसे कि सितारा शनास नुजूम के माहिर सितारों के मवाक़ेए इत्तिसालात व इन्सिराफ़ात को देखा करते हैं। **87 :** क़ौम नुजूम की बहुत मो'तक़िद थी, वोह समझी कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने सितारों से अपने बीमार होने का ह़ाल मा'लूम कर लिया, अब येह किसी मुतअ़द्दी मरज़ में मुब्तला होने वाले हैं, मुतअ़द्दी मरज़ से वोह लोग बहुत डरते थे। **मस्अला :** इल्मे नुजूम ह़क़ है और सीखने में मश्ग़ूल होना मन्सूख़ हो चुका। **मस्अला :** शरअ़न कोई मरज़ मुतअ़द्दी नहीं होता या'नी एक शख़्स का मरज़ बि ऐनिही दूसरे में नहीं पहुंच जाता, माद्दों के फ़साद और हवा वग़ैरा की सम्तों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक त़रह़ के मरज़ हो सकते हैं, लेकिन ह़ुदूस मरज़ का हर एक में जुदागाना है, किसी का मरज़ किसी दूसरे में नहीं पहुंचता। **88 :** अपनी ईद की त़रफ़ और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को छोड़ गए, आप बुतख़ाने में आए। **89 :** या'नी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है, बुतों ने इस का कुछ जवाब न दिया और वोह जवाब ही क्या देते तो आप ने फ़रमाया : **90 :** इस पर भी बुतों की त़रफ़ से कुछ जवाब न हुवा, वोह बेजान पथ्थर थे जवाब क्या देते।

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ۝٩٣ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ۝٩٤ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا

दहने हाथ से मारने लगा[91] तो काफ़िर उस की तरफ़ जल्दी करते आए[92] फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों

تَنْحِتُوْنَ ۝٩٥ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٦ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

को पूजते हो और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को[93] बोले इस के लिये एक इमारत चुनो[94]

فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ۝٩٧ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ۝٩٨ وَ

फिर इसे भड़क्ती आग में डाल दो तो उन्हों ने उस पर दाउं चलना (फ़रेब करना) चाहा हम ने उन्हें नीचा दिखाया[95] और

قَالَ اِنِّيْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝٩٩ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠٠

कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूं[96] अब वोह मुझे राह देगा[97] इलाही मुझे लाइक़ औलाद दे

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ۝١٠١ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي

तो हम ने उसे ख़ुश ख़बरी सुनाई एक अक़्ल मन्द लड़के की फिर जब वोह उस के साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब

الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫

देखा कि मैं तुझे ज़ब्ह करता हूं[98] अब तू देख तेरी क्या राय है[99] कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है

سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٠٢ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ۝١٠٣ ج

ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त का हाल न पूछ[100]

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝١٠٤ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई[101] हम ऐसा ही सिला देते हैं

91 : और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने बुतों को मार मार कर पारा पारा कर दिया। जब काफ़िरों को इस की ख़बर पहुंची **92 :** और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो **93 :** तो पूजने का मुस्तहिक़ वोह है न कि बुत। इस पर वोह हैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया। **94 :** पथ्थर की तीस गज़ लम्बी बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी, फिर उस को लकड़ियों से भर दो और उन में आग लगा दो, यहां तक कि आग ज़ोर पकड़े। **95 :** हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को उस आग में सलामत रख कर। चुनान्चे आग से आप सलामत बरआमद हुए **96 :** इस दारुल कुफ़्र से हिजरत कर के, जहां जाने का मेरा रब हुक्म दे **97 :** चुनान्चे ब हुक्मे इलाही आप सर ज़मीने शाम में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आप ने अपने रब से दुआ की : **98 :** या'नी तेरे ज़ब्ह का इन्तिज़ाम कर रहा हूं और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की ख़्वाब हक़ होती है और उन के अफ़्आल ब हुक्मे इलाही हुवा करते हैं। **99 :** येह आप ने इस लिये कहा था कि फ़रज़न्द को ज़ब्ह से वह्शत न हो और इत़ाअ़ते अम्रे इलाही के लिये वोह ब रग़बत तय्यार हों। चुनान्चे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द ने रिज़ाए इलाही पर फ़िदा होने का कमाले शौक़ से इज़्हार किया। **100 :** येह वाक़िआ मिना में वाक़ेअ़ हुवा और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई, क़ुदरते इलाही कि छुरी ने कुछ भी काम न किया। **101 :** इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी कमाल को पहुंचा दी, फ़रज़न्द को ज़ब्ह के लिये बे दरेग़ पेश कर दिया, बस अब इतना काफ़ी है।

www.dawateislami.net

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ

नेकों को बेशक येह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के सदके़ में दे कर

عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ

उसे बचा लिया[102] और हम ने पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो इब्राहीम पर[103] हम ऐसा ही

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और हम ने उसे ख़ुश ख़बरी दी

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ

इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरें बताने वाला हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में[104] और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्हाक़ पर[105] और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿۱۱۳﴾ ع وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَ

औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला[106] और कोई अपनी जान पर सरीह़ ज़ुल्म करने वाला[107] और बेशक हम ने मूसा और हारून

هٰرُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ ج وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۱۵﴾ ج وَنَصَرْنٰهُمْ

पर एह़सान फ़रमाया[108] और उन्हें और उन की क़ौम[109] को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी[110] और उन की हम ने मदद फ़रमाई[111]

فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ ج وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ ج وَهَدَيْنٰهُمَا

तो वोही ग़ालिब हुए[112] और हम ने उन दोनों को रोशन किताब अ़ता फ़रमाई[113] और उन को

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۱۸﴾ ج وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ لا سَلٰمٌ عَلٰى

सीधी राह दिखाई और पिछलों में उन की ता'रीफ़ बाक़ी रखी सलाम हो

مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ اِنَّهُمَا مِنَ

मूसा और हारून पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह दोनों

102 : इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह फ़रज़न्द ह़ज़रते इस्माईल हैं या ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِمَا السَّلَام लेकिन दलाइल की क़ुव्वत येही बताती है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल ही हैं عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िदये में जन्नत से बकरी भेजी गई थी जिस को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ब्ह़ फ़रमाया। **103 :** हमारी त़रफ़ से **104 :** वाक़िअ़ए ज़ब्ह़ के बा'द ह़ज़रते इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी इस की दलील है कि ज़बीह़ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام हैं। **105 :** हर त़रह़ की बरकत, दीनी भी और दुन्यवी भी और ज़ाहिरी बरकत येह है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद में कसरत की और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से बहुत से अम्बिया किये, ह़ज़रते या'क़ूब से ले कर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक। **106 :** या'नी मोमिन **107 :** या'नी काफ़िर। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि किसी बाप के साह़िबे फ़ज़ाइले कसीरा होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं, येह **अल्लाह** तआ़ला की शानें हैं कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक, न औलाद का बद होना आबा के लिये ऐब हो न आबा की बदी औलाद के लिये। **108 :** कि उन्हें नुबुव्वत व रिसालत इनायत फ़रमाई। **109 :** या'नी बनी इसराईल **110 :** कि फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों के मज़ालिम से रिहाई दी। **111 :** क़िब्त़ियों के मुक़ाबिल **112 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर। **113 :** जिस का बयान बलीग़

www.dawateislami.net

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ اِنَّ اِلْیَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۲۳﴾ؕ اِذْ قَالَ

हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है[114] जब उस ने

لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّ تَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِیْنَ ﴿۱۲۵﴾ۙ

अपनी क़ौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं[115] क्या बअ़्ल को पूजते हो[116] और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ رَبَّ اٰبَآىٕكُمُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۲۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ۙ

अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का[117] फिर उन्हों ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आएंगे[118]

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَ تَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۲۹﴾ۙ سَلٰمٌ عَلٰۤى

मगर **अल्लाह** के चुने हुए बन्दे[119] और हम ने पिछलों में उस की सना बाक़ी रखी सलाम हो

اِلْ یَاسِیْنَ ﴿۱۳۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۳۱﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا

इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल

الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَ اِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۳﴾ؕ اِذْ نَجَّیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ

ईमान बन्दों में है और बेशक लूत़ पैग़म्बरों में है जब कि हम ने उसे और उस के सब घर वालों

اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳۴﴾ۙ اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ

को नजात बख़्शी मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई[120] फिर दूसरों को हम ने हलाक फ़रमा दिया[121] और

اِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَیْهِمْ مُّصْبِحِیْنَ ﴿۱۳۷﴾ۙ وَ بِالَّیْلِؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ع وَ ع ۲۵/۸

बेशक तुम[122] उन पर गुज़रते हो सुब्ह को और रात में[123] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[124] और

اِنَّ یُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۳۹﴾ؕ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿۱۴۰﴾ۙ

बेशक यूनुस पैग़म्बरों से है जब कि भरी कश्ती की त़रफ़ निकल गया[125]

और वोह हुदूद व अह़काम वग़ैरा की जामेअ़ । इस किताब से मुराद तौरैत शरीफ़ है । **114 :** जो बअ़्लबक्क और उस के नवाह़ के लोगों की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए । **115 :** या'नी क्या तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं । **116 :** "**बअ़्ल**" उन के बुत का नाम था जो सोने का था, उस की लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे, उस की बहुत ता'ज़ीम करते थे, जिस मक़ाम में वोह था उस जगह का नाम "बक्क" था इसी से बअ़्लबक्क मुरक्कब हुवा, येह बिलादे शाम में है । **117 :** उस की इबादत तर्क करते हो । **118 :** जहन्नम में **119 :** या'नी उस क़ौम में से **अल्लाह** तआ़ला के बरगुज़ीदा बन्दे जो ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए, उन्हों ने अ़ज़ाब से नजात पाई । **120 :** अ़ज़ाब के अन्दर । **121 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के कुफ़्फ़ार को । **122 :** ऐ अहले मक्का ! **123 :** या'नी अपने सफ़रों में रोज़ो शब तुम उन के आसार व मनाज़िल पर गुज़रते हो । **124 :** कि उन से इब्रत ह़ासिल करो । **125 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास और वह्ब का क़ौल है कि ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम से अ़ज़ाब का वा'दा किया था, इस में ताख़ीर हुई तो आप उन से छुप कर निकल गए और आप ने दरियाई सफ़र का क़स्द किया, कश्ती पर सुवार हुए, दरिया के दरमियान में कश्ती ठहर गई और उस के ठहरने का कोई सबबे ज़ाहिर मौजूद न था, मल्लाहों ने कहा इस कश्ती में

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْ

तो कुरआ डाला तो धकेले हुओं में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था[126] तो अगर

النصف

لَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

वोह तस्बीह करने वाला न होता[127] ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे[128]

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

फिर हम ने उसे[129] मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था[130] और हम ने उस पर[131] कद्दू का पेड़ उगाया[132]

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى

और हम ने उसे[133] लाख आदमियों की तरफ़ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए[134] तो हम ने उन्हें एक वक़्त

حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا

तक बरतने दिया[135] तो उन से पूछो क्या तुम्हारे रब के लिये बेटियां हैं[136] और उन के बेटे[137] या हम ने मलाएका

الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

को औरतें पैदा किया और वोह हाज़िर थे[138] सुनते हो बेशक वोह अपने बोहतान से कहते हैं

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا

कि **अल्लाह** की औलाद है और बेशक ज़रूर वोह झूटे हैं क्या उस ने बेटियां पसन्द कीं बेटे छोड़ कर तुम्हें

अपने मौला से भागा हुवा कोई गुलाम है, कुरआ डालने से ज़ाहिर हो जाएगा, कुरआ डाला गया तो आप ही के नाम निकला, तो आप ने फ़रमाया : मैं ही वोह गुलाम हूं और आप पानी में डाल दिये गए क्यूं कि दस्तूर येही था कि जब तक भागा हुवा गुलाम दरिया में ग़र्क़ न कर दिया जाए उस वक़्त तक कश्ती चलती न थी। **126 :** कि क्यूं निकलने में जल्दी की और क़ौम से जुदा होने में अम्रे इलाही का इन्तिज़ार न किया **127 :** या'नी ज़िक्रे इलाही की कसरत करने वाला और मछली के पेट में ''لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ'' पढ़ने वाला **128 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक। **129 :** मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बा'द **130 :** या'नी मछली के पेट में रहने के बाइस आप ऐसे ज़ईफ़ नहीफ़ और नाज़ुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है, जिस्म की खाल नर्म हो गई और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था **131 :** साया करने और मख्खियों से महफ़ूज़ रखने के लिये **132 :** कद्दू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है, मगर येह आप का मो'जिज़ा था कि येह कद्दू का दरख़्त क़द वाले दरख़्तों की तरह शाख़ रखता था और उस के बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के दहने मुबारक में दे कर आप को सुब्हो शाम दूध पिला जाती, यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी खाल मज़बूत हुई और अपने मौक़अ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई। **133 :** पहले की तरह सर ज़मीने मौसिल में क़ौमे नैनवा के **134 :** आसारे अ़ज़ाब देख कर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रुकूअ में गुज़र चुका है और इस वाक़िए का बयान सूरए अम्बियाअ के छटे रुकूअ में भी आ चुका है) **135 :** या'नी उन की आख़िरी उम्र तक उन्हें आसाइश के साथ रखा। इस वाक़िए के बयान फ़रमाने के बा'द **अल्लाह** तआला अपने हबीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से फ़रमाता है कि आप कुफ़्फ़ारे मक्का से इन्कारे बअ्स की वज्ह दरयाफ़्त कीजिये। चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है : **136 :** जैसा कि जुहैना और बनी सलमा वग़ैरा कुफ़्फ़ार का ए'तिक़ाद है कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं **137 :** या'नी अपने लिये तो बेटियां गवारा नहीं करते बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को ख़ुदा की तरफ़ निस्बत करते हैं। **138 :** देख रहे थे, क्यूं ऐसी बेहूदा बात कहते हैं।

www.dawateislami.net

لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ ج اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

क्या है कैसा हुक्म लगाते हो[139] तो क्या ध्यान नहीं करते[140] या तुम्हारे लिये कोई

مُّبِيْنٌ ﴿۱۵۶﴾ لا فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ

खुली सनद है तो अपनी किताब लाओ[141] अगर सच्चे हो और उस में और जिन्नों में

الْجِنَّةِ نَسَبًا ط وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ لا سُبْحٰنَ اللّٰهِ

रिश्ता ठहराया[142] और बेशक जिन्नों को मा'लूम है कि वोह[143] ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे[144] पाकी है **अल्लाह** को

عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ لا اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۶۰﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ لا

उन बातों से कि येह बताते हैं मगर **अल्लाह** के चुने हुए बन्दे[145] तो तुम और जो कुछ तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो[146]

مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ لا اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿۱۶۳﴾ وَمَا مِنَّاۤ

तुम उस के ख़िलाफ़ किसी को बहकाने वाले नहीं[147] मगर उसे जो भड़क्ती आग में जाने वाला है[148] और फ़िरिश्ते कहते हैं

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿۱۶۴﴾ لا وَّ اِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿۱۶۵﴾ ج وَاِنَّا لَنَحْنُ

हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है[149] और बेशक हम पर फैलाए हुक्म के मुन्तज़िर हैं और बेशक हम

الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿۱۶۶﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۱۶۷﴾ لا لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ

उस की तस्बीह करने वाले हैं और बेशक वोह कहते थे[150] अगर हमारे पास अगलों की कोई

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۶۸﴾ لا لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ

नसीहत होती[151] तो ज़रूर हम **अल्लाह** के चुने बन्दे होते[152] तो उस के मुन्किर हुए तो अ़न्क़रीब

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ صلے ج اِنَّهُمْ لَهُمُ

जान लेंगे[153] और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये कि बेशक उन्हीं

139 : फ़ासिद व बातिल **140 :** और इतना नहीं समझते कि **अल्लाह** तआ़ला औलाद से पाक और मुनज़्ज़ा है। **141 :** जिस में येह सनद हो **142 :** जैसा कि बा'ज़ मुश्रिकीन ने कहा था कि **अल्लाह** ने जिन्नों में शादी की इस से फ़िरिश्ते पैदा हुए (مَعَاذَ اللہ) कैसे अ़ज़ीम कुफ़्र के मुर्तकिब हुए। **143 :** या'नी इस बेहूदा बात के कहने वाले **144 :** जहन्नम में अ़ज़ाब के लिये। **145 :** ईमानदार। **अल्लाह** तआ़ला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से जो येह कुफ़्फ़ारे ना बकार कहते हैं। **146 :** या'नी तुम्हारे बुत सब के सब वोह और **147 :** गुमराह नहीं कर सकते **148 :** जिस की क़िस्मत ही में येह है कि वोह अपने किरदारे बद से मुस्तहिक़्क़े जहन्नम हो। **149 :** जिस में अपने रब की इ़बादत करता है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि आस्मानों में बालिश्त भर भी जगह ऐसी नहीं है जिस में कोई फ़िरिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह़ न करता हो। **150 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले कहा करते थे कि **151 :** कोई किताब मिलती **152 :** उस की इत़ाअ़त करते और इख़्लास के साथ इ़बादत बजा लाते। फिर जब तमाम किताबों से अफ़्ज़ल व अशरफ़ मो'जिज़ किताब उन्हें मिली या'नी कुरआने मजीद नाज़िल हुवा **153 :** अपने कुफ़्र का अन्जाम।

www.dawateislami.net

الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰی

की मदद होगी और बेशक हमारा ही लश्कर[154] ग़ालिब आएगा तो एक वक़्त तक तुम उन से

حِیْنٍ ﴿۱۷۴﴾ وَّ اَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ یُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۵﴾ اَفَبِعَذَابِنَا یَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۷۶﴾

मुंह फेर लो[155] और उन्हें देखते रहो कि अ़न्क़रीब वोह देखेंगे[156] तो क्या हमारे अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِیْنَ ﴿۱۷۷﴾ وَ تَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰی

फिर जब उतरेगा उन के आंगन में तो डराए गयों की क्या ही बुरी सुब्ह़ होगी और एक वक़्त तक उन से

حِیْنٍ ﴿۱۷۸﴾ وَّ اَبْصِرْ فَسَوْفَ یُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا

मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो कि वोह अ़न्क़रीब देखेंगे पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को

ع ۵ یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾

उन की बातों से[157] और सलाम है पैग़म्बरों पर[158] और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहां का रब है

اٰیاتها ۸۸ ﴿۳۸ سُوْرَةُ صٓ مَکِّیَّةٌ ۳۸﴾ رکوعاتها ۵

सूरए صٓ मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

صٓ وَ الْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ﴿۱﴾ بَلِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ﴿۲﴾

इस नामवर क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि काफ़िर तकब्बुर और ख़िलाफ़ में हैं[3]

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ لَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾ وَ

हम ने उन से पहले कितनी संगतें खपाईं[4] तो अब वोह पुकारें[5] और छूटने का वक़्त न था[6] और

---

154 : या'नी अहले ईमान। **155 :** जब तक कि तुम्हें उन के साथ क़िताल करने का हुक्म दिया जाए। **156 :** त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत में, जब येह आयत नाज़िल हुई तो कुफ़्फ़ार ने बराहे तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा कहा कि येह अ़ज़ाब कब नाज़िल होगा ? इस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई। **157 :** जो काफ़िर उस की शान में कहते हैं और उस के लिये शरीक और औलाद ठहराते हैं। **158 :** जिन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौह़ीद और एह़कामे शरअ़ पहुंचाए। इन्सानी मरातिब में सब से आ'ला मर्तबा येह है कि ख़ुद कामिल हो और दूसरों की तक्मील करे। येह शान अम्बिया की है عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो हर एक पर उन ह़ज़रात की इत्तिबाअ़ और उन की इक़्तिदा लाज़िम है।
1 : "सूरए صٓ" इस का नाम "सूरए दावूद" भी है, येह सूरत मक्की है, इस में पांच रुकूअ़, अठासी आयतें और सात सो बत्तीस कलिमे और तीन हज़ार सड़सठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** जो शरफ़ वाला है कि येह कलामे मो'जिज़ है। **3 :** और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़दावत रखते हैं इस लिये ह़क़ का ए'तिराफ़ नहीं करते। **4 :** या'नी आप की क़ौम से पहले कितनी उम्मतें हलाक कर दीं इसी इस्तिक्बार और अम्बिया की मुख़ालफ़त के बाइस **5 :** या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त उन्हों ने फ़रियाद की। **6 :** कि ख़लास पा सकते, उस वक़्त की फ़रियाद बेकार थी,

عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ٘ وَ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि इन के पास उन्हीं में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[7] और काफ़िर बोले येह जादूगर है

كَذَّابٌۖۚ ﴿۴﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾

बड़ा झूटा क्या इस ने बहुत ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया[8] बेशक येह अ़जीब बात है

وَ انْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَ اصْبِرُوْا عَلٰۤى اٰلِهَتِكُمْ ۚۖ اِنَّ هٰذَا

और उन में के सरदार चले[9] कि इस के पास से चल दो और अपने ख़ुदाओं पर साबिर रहो बेशक उस में

لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۚ﴿۶﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا

इस का कोई मत़लब है येह तो हम ने सब से पिछले दीन नसरानियत में भी न सुनी[10] येह तो निरी नई

اخْتِلَاقٌ ۚۖ﴿۷﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْ

गढ़त है क्या इन पर क़ुरआन उतारा गया हम सब में से[11] बल्कि वोह शक में हैं मेरी

ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ؕ﴿۸﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىٕنُ رَحْمَةِ

किताब से[12] बल्कि अभी मेरी मार नहीं चखी है[13] क्या वोह तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ान्ची

رَبِّكَ الْعَزِیْزِ الْوَهَّابِ ۚ﴿۹﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا

हैं[14] वोह इ़ज़्ज़त वाला बहुत अ़ता फ़रमाने वाला[15] क्या इन के लिये है सल्त़नत आस्मानों और ज़मीन की और जो

कुफ़्फ़ारे मक्का ने उन के ह़ाल से इ़ब्रत ह़ासिल न की। **7 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **8 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाए तो मुसल्मानों को ख़ुशी हुई और काफ़िरों को निहायत रन्ज हुवा, वलीद बिन मुग़ीरा ने क़ुरैश के अ़माइद और सरबर आवरदा (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) पच्चीस आदमियों को जम्अ़ किया और उन्हें अबू त़ालिब के पास लाया और उन से कहा कि तुम हमारे सरदार हो और बुज़ुर्ग हो, हम तुम्हारे पास इस लिये आए हैं कि तुम हमारे और अपने भतीजे के दरमियान फ़ैसला कर दो, उन की जमाअ़त के छोटे दरजे के लोगों ने जो शोरिश बरपा कर रखी है वोह तुम जानते हो। अबू त़ालिब ने ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बुला कर अ़र्ज़ किया कि येह आप की क़ौम के लोग हैं और आप से सुल्ह़ चाहते हैं, आप इन की त़रफ़ से यक लख़्त इन्ह़िराफ़ न कीजिये। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह मुझ से क्या चाहते हैं ? उन्हों ने कहा कि हम इतना चाहते हैं कि आप हमें और हमारे मा'बूदों के ज़िक्र को छोड़ दीजिये, हम आप के और आप के मा'बूद की बदगोई के दरपै न होंगे। ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : क्या तुम एक कलिमा क़ुबूल कर सकते हो ? जिस से अ़रबो अ़जम के मालिक व फ़रमां रवा हो जाओ। अबू जह्ल ने कहा कि एक क्या हम दस कलिमे क़ुबूल कर सकते हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कहो "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" इस पर वोह लोग उठ गए और कहने लगे कि क्या इन्हों ने बहुत से ख़ुदाओं का एक ख़ुदा कर दिया, इतनी बहुत सी मख़्लूक़ के लिये एक ख़ुदा कैसे काफ़ी हो सकता है। **9 :** अबू त़ालिब की मजलिस से आपस में येह कहते : **10 :** नसरानी भी तीन ख़ुदाओं के क़ाइल थे, येह तो एक ही ख़ुदा बताते हैं। **11 :** अहले मक्का को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मन्सबे नुबुव्वत पर ह़सद आया और उन्हों ने येह कहा कि हम में साहिबे शरफ़ो इ़ज़्ज़त आदमी मौजूद थे उन में से किसी पर क़ुरआन न उतरा ख़ास ह़ज़रत सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर उतरा। **12 :** कि इस के लाने वाले ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं। **13 :** अगर मेरा अ़ज़ाब चख लेते तो येह शक व तक्ज़ीब व ह़सद कुछ भी बाक़ी न रहता और नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ करते लेकिन उस वक़्त की तस्दीक़ मुफ़ीद न होती। **14 :** और क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं जिसे चाहें दें अपने आप को क्या समझते हैं, **अल्लाह** तआ़ला और उस की मालिकिय्यत को नहीं जानते। **15 :** ह़स्बे

بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ

कुछ इन के दरमियान है   तो रस्सियां लटका कर चढ़ न जाएं[16]   येह एक ज़लील लश्कर है उन्हीं लश्करों में से जो

الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾

वहीं भगा दिया जाएगा[17]   इन से पहले झुटला चुके हैं नूह़ की क़ौम और आ़द और चौमेख़ा करने वाला फ़िरऔ़न[18]

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا

और समूद और लूत़ की क़ौम और बन वाले[19]   येह हैं वोह गुरौह[20]   इन में कोई ऐसा नहीं

ع ١
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً

जिस ने रसूलों को न झुटलाया हो तो मेरा अ़ज़ाब लाज़िम हुवा[21]   और येह राह नहीं देखते मगर एक चीख़ की[22]

مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ

जिसे कोई फेर नहीं सकता   और बोले ऐ हमारे रब हमारा हि़स्सा हमें जल्द दे दे हि़साब के दिन

الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ

से पहले[23]   तुम इन की बातों पर सब्र करो और हमारे बन्दे दावूद ने'मतों वाले को याद करो[24]   बेशक वोह बड़ा रुजूअ़

اَوَّابٌ ﴿١٧﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

करने वाला है[25]   बेशक हम ने उस के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह़ करते[26] शाम को और सूरज चमकते[27]

इक़्तिज़ाए हि़क्मत जिसे जो चाहे अ़त़ा फ़रमाए उस ने अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई तो किसी को इस में दख़्ल देने और चूं व चरा की क्या मजाल। **16 :** और ऐसा इख़्तियार हो तो जिसे चाहें वह़्य के साथ ख़ास करें और आ़लम की तदबीर अपने हाथ में लें और जब येह कुछ नहीं है तो उमूरे रब्बानिय्या व तदाबीरे इलाहिय्यह में दख़्ल क्यूं देते हैं, उन्हें इस का क्या ह़क़ है। कुफ़्फ़ार को येह जवाब देने के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से नुसरत व मदद का वा'दा फ़रमाया है। **17 :** या'नी इन क़ुरैश की जमाअ़त उन्हीं लश्करों में से एक है जो आप से पहले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़ाबिल गुरौह बांध बांध कर आया करते थे और ज़ियादतियां किया करते थे इस सबब से हलाक कर दिये गए, **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़बर दी कि येही ह़ाल इन का है इन्हें भी हज़ीमत होगी। चुनान्चे बद्र में ऐसा वाक़ेअ़ हुवा इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर के लिये पिछले अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन की क़ौमों का ज़िक्र फ़रमाया। **18 :** जो किसी पर ग़ुस्सा करता था तो उसे लिटा कर उस के चारों हाथ पाउं खींच कर चारों त़रफ़ खूंटों में बंधवा देता था फिर उस को पिटवाता था और उस पर त़रह़ त़रह़ की सख़्तियां करता था। **19 :** जो शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम से थे। **20 :** जो अम्बिया के मुक़ाबिल जथ्थे बांध कर आए, मुश्रिकीने मक्का उन्हीं गुरौहों में से हैं। **21 :** या'नी उन गुज़री हुई उम्मतों ने जब अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब की तो उन पर अ़ज़ाब लाज़िम हो गया तो इन जई़फ़ों का क्या ह़ाल होगा जब इन पर अ़ज़ाब उतरेगा। **22 :** या'नी क़ियामत के नफ़्ख़ए ऊला की जो इन के अ़ज़ाब की मीआ़द है **23 :** येह नज़्र बिन ह़ारिस ने बत़ौरे तमस्ख़ुर कहा था, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि **24 :** जिन को इबादत की बहुत क़ुव्वत दी गई थी। आप का त़रीक़ा था कि एक दिन रोज़ा रखते एक दिन इफ़्त़ार फ़रमाते और रात के पहले निस्फ़ हि़स्से में इबादत करते इस के बा'द शब की एक तिहाई आराम फ़रमाते फिर बाक़ी छटा हि़स्सा इबादत में गुज़ारते। **25 :** अपने रब की त़रफ़ **26 :** ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की तस्बीह़ के साथ। **27 :** इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के लिये पहाड़ों को ऐसा मुसख़्ख़र किया था कि

www.dawateislami.net

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ

और परिन्दे जम्अ़ किये हुए[28] सब उस के फ़रमां बरदार थे[29] और हम ने उस की सल्त़नत को मज़बूत़ किया[30] और उसे

الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا

हिक्मत[31] और क़ौले फ़ैसल दिया[32] और क्या तुम्हें[33] उस दा'वे वालों की भी ख़बर आई जब वोह दीवार कूद कर

وقف لازم

الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ

दावूद की मस्जिद में आए[34] जब वोह दावूद पर दाख़िल हुए तो वोह उन से घबरा गया उन्हों ने अ़र्ज़ की डरिये नहीं

خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَاۤ

हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है[35] तो हम में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दीजिये और ख़िलाफ़े ह़क़ न कीजिये[36] और हमें

اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ هٰذَاۤ اَخِیْ ۫ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِیَ

सीधी राह बताइये बेशक येह मेरा भाई है[37] इस के पास निनानवे दुम्बियां हैं और मेरे

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۫ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ لَقَدْ

पास एक दुम्बी अब येह कहता है वोह भी मुझे ह़वाले कर दे और बात में मुझ पर ज़ोर डालता है दावूद ने फ़रमाया बेशक

जहां आप चाहते उन्हें अपने साथ ले जाते। (مدارک) **28 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام तस्बीह़ करते तो पहाड़ भी आप के साथ तस्बीह़ करते और परिन्दे आप के पास जम्अ़ हो कर तस्बीह़ करते। **29 :** पहाड़ भी और परिन्द भी। **30 :** फ़ौज व लश्कर की कसरत अ़त़ा फ़रमा कर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रूए ज़मीन के बादशाहों में ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की सल्त़नत बड़ी मज़बूत़ और क़वी सल्त़नत थी, छत्तीस हज़ार मर्द आप के मेह़राब के पहरे पर मुक़र्रर थे। **31 :** या'नी नुबुव्वत। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने ह़िक्मत की तफ़्सीर अ़द्ल की है, बा'ज़ ने किताबुल्लाह का इ़ल्म, बा'ज़ ने फ़िक़्ह, बा'ज़ ने सुन्नत। (جمل) **32 :** क़ौले फ़ैसल से इ़ल्मे क़ज़ा मुराद है जो ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ व तमीज़ कर दे। **33 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **34 :** येह आने वाले बक़ौले मश्हूर मलाएका थे जो ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की आज़्माइश के लिये आए थे। **35 :** उन का येह क़ौल एक मस्अले की फ़र्ज़ी शक्ल पेश कर के जवाब ह़ासिल करना था और किसी मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म मा'लूम करने के लिये फ़र्ज़ी सूरतें मुक़र्रर कर ली जाती हैं और मुअ़य्यन अश्ख़ास की त़रफ़ उन की निस्बत कर दी जाती है ताकि मस्अले का बयान बहुत वाज़ेह़ त़रीक़े पर हो और इब्हाम बाक़ी न रहे। यहां जो सूरते मस्अला उन फ़िरिश्तों ने पेश की इस से मक़्सूद ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام को तवज्जोह दिलाना थी उस अम्र की त़रफ़ जो उन्हें पेश आया था और वोह येह था कि आप की निनानवे बीबियां थीं इस के बा'द आप ने एक और औ़रत को पयाम दे दिया जिस को एक मुसल्मान पहले से पयाम दे चुका था लेकिन आप का पयाम पहुंचने के बा'द औ़रत के अइ़ज़्ज़ा व अक़ारिब दूसरे की त़रफ़ इल्तिफ़ात करने वाले कब थे ? आप के लिये राज़ी हो गए और आप से निकाह़ हो गया। एक क़ौल येह भी है कि उस मुसल्मान के साथ निकाह़ हो चुका था, आप ने उस मुसल्मान से अपनी रग़बत का इज़्हार किया और चाहा कि वोह अपनी औ़रत को त़लाक़ दे दे, वोह आप के लिह़ाज़ से मन्अ़ न कर सका और उस ने त़लाक़ दे दी, आप का निकाह़ हो गया और उस ज़माने में ऐसा मा'मूल था कि अगर किसी शख़्स को किसी की औ़रत की त़रफ़ रग़बत होती तो उस से इस्तिद्आ़ कर के त़लाक़ दिलवा लेता और बा'दे इ़द्दत निकाह़ कर लेता, येह बात न तो शरअ़न ना जाइज़ है न उस ज़माने के रस्म व आ़दत के ख़िलाफ़ लेकिन शाने अम्बिया बहुत अर्फ़अ़ो आ'ला होती है, इस लिये येह आप के मन्सबे आ़ली के लाइक़ न था तो मर्ज़िये इलाही येह हुई कि आप को इस पर आगाह किया जाए और इस का सबब येह पैदा किया कि मलाएका मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह की शक्ल में आप के सामने पेश हुए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि अगर बुज़ुर्गों से कोई लग़्ज़िश सादिर हो और कोई अम्र ख़िलाफ़े शान वाक़ेअ़ हो जाए तो अदब येह है कि मो'तरिज़ाना ज़बान न खोली जाए बल्कि उस वाक़िए की मिस्ल एक वाक़िआ़ मुतसव्वर कर के उस की निस्बत साइलाना व मुस्तफ़्तियाना व मुस्तफ़ीदाना सुवाल किया जाए और उन की अ़ज़्मत व एह़तिराम का लिह़ाज़ रखा जाए और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला عَزَّوَجَلَّ मालिको मौला अपने अम्बिया की ऐसी इ़ज़्ज़त फ़रमाता है कि उन को किसी बात पर आगाह करने के लिये मलाएका को इस त़रीक़े अदब के साथ ह़ाज़िर होने का हुक्म देता है। **36 :** जिस की ग़लती हो बे रू रिआ़यत फ़रमा दीजिये। **37 :** या'नी दीनी भाई।

www.dawateislami.net

ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ

येह तुझ पर ज़ियादती करता है कि तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है और बेशक अक्सर साझे वाले एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ قَلِيْلٌ مَّا

दूसरे पर ज़ियादती करते हैं मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और वोह बहुत थोड़े

السجدۃ ۱۰ هُمْ ؕ وَ ظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۩ السجدة ﴿۲۴﴾

हैं[38] अब दावूद समझा कि हम ने येह उस की जांच की थी[39] तो अपने रब से मुआफ़ी मांगी और सज्दे में गिर पड़ा[40] और रुजूअ़ लाया

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا

तो हम ने उसे येह मुआफ़ फ़रमा दिया और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छा ठिकाना है ऐ दावूद बेशक हम ने

جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعِ

तुझे ज़मीन में नाइब किया[41] तो लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के

الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

पीछे न जाना कि तुझे **अल्लाह** की राह से बहका देगी बेशक वोह जो **अल्लाह** की राह से बहकते हैं

ع ۲۰ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾ ع وَ مَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस पर कि वोह हिसाब के दिन को भूल बैठे[42] और हम ने आस्मान और

وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ

ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है बेकार न बनाए येह काफ़िरों का गुमान है[43] तो काफ़िरों

لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿۲۷﴾ ط اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

की ख़राबी है आग से क्या हम उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे

38 : हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की येह गुफ़्तगू सुन कर फ़िरिश्तों में से एक ने दूसरे की त़रफ़ देखा और तबस्सुम कर के वोह आस्मान की त़रफ़ रवाना हो गए। **39 :** और दुम्बी एक किनाया था जिस से मुराद औ़रत थी, क्यूं कि निनानवे औ़रतें आप के पास होते हुए एक और औ़रत की आप ने ख़्वाहिश की थी, इस लिये दुम्बी के पैराए में येह सुवाल किया गया। जब आप ने येह समझा **40 मस्अला :** इस आयत से साबित होता है कि नमाज़ में रुकूअ़ करना सज्दए तिलावत के क़ाइम मक़ाम हो जाता है जब कि निय्यत की जाए **41 :** ख़ल्क़ की तदबीर पर आप को मामूर किया और आप का हुक्म उन में नाफ़िज़ फ़रमाया। **42 :** और इस वज्ह से ईमान से महरूम रहे अगर उन्हें रोज़े हिसाब का यक़ीन होता तो दुन्या ही में ईमान ले आते। **43 :** अगर्चे वोह सराहतन येह न कहें कि आस्मान व ज़मीन और तमाम दुन्या बेकार पैदा की गई लेकिन जब कि बअ़्स व जज़ा के मुन्किर हैं तो नतीजा येही है कि आ़लम की ईजाद को अ़बस और बे फ़ाएदा मानें।

www.dawateislami.net

الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ٘ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿۲۸﴾

काम किये उन जैसा कर दें जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं या हम परहेज़ गारों को शरीर बे हुक्मों के बराबर ठहरा दें[44]

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْۤا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۹﴾

येह एक किताब है कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी[45] बरकत वाली ताकि इस की आयतों को सोचें और अ़क़्ल मन्द नसीह़त मानें

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ؕ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ

और हम ने दावूद को[46] सुलैमान अ़त़ा फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला[47] जब कि उस पर पेश किये गए

بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿۳۱﴾ۙ فَقَالَ اِنِّيْۤ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ

तीसरे पहर को[48] कि रोकिये तो तीन पाउं पर खड़े हों चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुए और चलाइये तो हवा हो जाएं[49] तो सुलैमान ने कहा मुझे इन

رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾ قف رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

घोड़ों की मह़ब्बत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये[50] फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए[51] फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे

وَالْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ

पास वापस लाओ तो उन की पिंडलियों और गरदनों पर हाथ फेरने लगा[52] और बेशक हम ने सुलैमान को जांचा[53] और उस के तख़्त पर एक बेजान बदन डाल दिया[54] फिर

44 : येह बात बिल्कुल ह़िक्मत के ख़िलाफ़ है और जो शख़्स जज़ा का क़ाइल नहीं वोह ज़रूर मुफ़्सिद व मुस्लेह़ और फ़ाजिर व मुत्तक़ी को बराबर क़रार देगा और इन में फ़र्क़ न करेगा कुफ़्फ़ार इस जहल में गिरिफ़्तार हैं। **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे कुरैश ने मुसल्मानों से कहा था कि आख़िरत में जो ने'मतें तुम्हें मिलेंगी वोही हमें भी मिलेंगी इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि नेक व बद मोमिन व काफ़िर को बराबर कर देना मुक़्तज़ाए ह़िक्मत नहीं, कुफ़्फ़ार का ख़याल बात़िल है। **45 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **46 :** फ़रज़न्दे अरजुमन्द **47 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ और तमाम अवक़ात तस्बीह़ व ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाला। **48 :** बा'दे ज़ोह्र ऐसे घोड़े **49 :** येह हज़ार घोड़े थे जो जिहाद के लिये ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मुलाह़ज़ा में बा'दे ज़ोह्र पेश किये गए। **50 :** या'नी मैं इन से रिज़ाए इलाही और तक़्वियत व ताईदे दीन के लिये मह़ब्बत करता हूं, मेरी मह़ब्बत इन के साथ दुन्यवी ग़रज़ से नहीं है। (تفسیر کبیر) **51 :** या'नी नज़र से ग़ाइब हो गए **52 :** और इस हाथ फेरने के चन्द बाइस थे : **एक** तो घोड़ों की इ़ज़्ज़तो शरफ़ का इज़्हार कि वोह दुश्मन के मुक़ाबले में बेहतर मुईन हैं। **दूसरे** उमूरे सल्त़नत की ख़ुद निगरानी फ़रमाना कि तमाम उ़म्माल मुस्तइ़द रहें। **सिवुम** येह कि आप घोड़ों के अह़वाल और उन के अमराज़ व उ़यूब के आ'ला माहिर थे, उन पर हाथ फेर कर उन की ह़ालत का इम्तिह़ान फ़रमाते थे। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इन आयात की तफ़्सीर में बहुत से वाही (फ़ुज़ूल) अक़्वाल लिख दिये हैं जिन की सिह़्ह़त पर कोई दलील नहीं और वोह मह़ज़ ह़िकायात हैं जो दलाइले क़विय्या के सामने किसी त़रह़ क़ाबिले क़बूल नहीं और येह तफ़्सीर जो ज़िक्र की गई येह इबारत कुरआन से बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। (تفسیر کبیر) وَلِلّٰهِ الْحَمْد
53 : बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ह़दीस है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था कि मैं आज रात में अपनी नव्वे बीबियों पर दौरा करूंगा, हर एक ह़ामिला होगी और हर एक से राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाला सुवार पैदा होगा, मगर येह फ़रमाते वक़्त ज़बाने मुबारक से اِنْ شَآءَ اللّٰه न फ़रमाया (ग़ालिबन ह़ज़रत किसी ऐसे शुग़्ल में थे कि इस का ख़याल न रहा) तो कोई भी औ़रत ह़ामिला न हुई सिवाए एक के और उस के भी नाक़िसुल ख़िल्क़त बच्चा पैदा हुवा। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने اِنْ شَآءَ اللّٰه फ़रमाया होता तो उन सब औ़रतों के लड़के ही पैदा होते और वोह राहे ख़ुदा में जिहाद करते। (بخاری پارہ تیرہ کتاب الانبیاء) **54 :** या'नी ग़ैर ताम्मुल ख़िल्क़त बच्चा।

www.dawateislami.net

اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَهَبْ لِیْ مُلْكًا لَّا یَنْۢبَغِیْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ

रुजूअ़ लाया[55] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्त़नत अ़त़ा कर कि मेरे बा'द किसी को

بَعْدِیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّیْحَ تَجْرِیْ بِاَمْرِهٖ

लाइक़ न हो[56] बेशक तू ही है बड़ी देन वाला तो हम ने हवा उस के बस में कर दी कि उस के हुक्म से नर्म नर्म

رُخَآءً حَیْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَ الشَّیٰطِیْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّ اٰخَرِیْنَ

चलती[57] जहां वोह चाहता और देव बस में कर दिये हर मि'मार[58] और ग़ोत़ा ख़ोर[59] और दूसरे

مُقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَیْرِ

और बेड़ियों में जकड़े हुए[60] येह हमारी अ़त़ा है अब तू चाहे तो एह़सान कर[61] या रोक रख[62] तुझ पर कुछ

حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰی وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَ اذْكُرْ عَبْدَنَاۤ

हिसाब नहीं और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है और याद करो हमारे बन्दे

اَیُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الشَّیْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّ عَذَابٍ ﴿٤١﴾

अय्यूब को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैत़ान ने तक्लीफ़ और ईज़ा लगा दी[63]

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ

हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार[64] येह है ठन्डा चश्मा नहाने और पीने को[65] और हम ने उसे उस के घर वाले

وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰی لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَ خُذْ بِیَدِكَ

और उन के बराबर और अ़त़ा फ़रमा दिये अपनी रह़मत करने[66] और अ़क़्ल मन्दों की नसीह़त को और फ़रमाया कि अपने हाथ में

ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَ لَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ

एक झाड़ू ले कर उस से मार दे[67] और क़सम न तोड़ बेशक हम ने उसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा[68] बेशक वोह बहुत

ربع ۱۰ — وقف لازم

55 : अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ इस्तिग़्फ़ार कर के اِنْ شَآءَ اللّٰهُ कहने की भूल पर और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में 56 : इस से येह मक़्सूद था कि ऐसा मुल्क आप के लिये मो'जिज़ा हो। 57 : फ़रमां बरदाराना त़रीक़े पर 58 : जो आप के हुक्म से ह़स्बे मरज़ी अ़जीबो ग़रीब इमारतें ता'मीर करता 59 : जो आप के लिये समुन्दर से मोती निकालता। दुन्या में सब से पहले समुन्दर से मोती निकलवाने वाले आप ही हैं। 60 : सरकश शैत़ान भी आप के मुसख़्ख़र कर दिये गए जिन को आप तादीब और फ़साद से रोकने के लिये बेड़ियों और ज़न्जीरों में जकड़वा कर क़ैद करते थे। 61 : जिस पर चाहे 62 : जिस किसी से चाहे या'नी आप को देने और न देने का इख़्तियार दिया गया जैसी मरज़ी हो करें। 63 : जिस्म और माल में, इस से आप का मरज़ और उस के शदाइद मुराद हैं। (इस वाक़िए का मुफ़स्सल बयान सूरए अम्बियाअ के रुकूअ़ छ[6] में गुज़र चुका है) 64 : चुनान्चे आप ने ज़मीन में पाउं मारा और उस से आबे शीरीं का एक चश्मा ज़ाहिर हुवा और आप से कहा गया : 65 : चुनान्चे आप ने उस से पिया और ग़ुस्ल किया और तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी मरज़ और तक्लीफ़ें दफ़्अ़ हो गईं। 66 : चुनान्चे मरवी है कि जो औलाद आप की मर चुकी थी अल्लाह तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और अपने फ़ज़्लो रह़मत से इतने ही और अ़त़ा फ़रमाए। 67 : अपनी बीबी को जिस

أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ

रुजूअ़ लाने वाला है और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब क़ुदरत और

وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ج وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا

इ़ल्म वालों को[69] बेशक हम ने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वोह उस घर की याद है[70] और बेशक वोह हमारे नज़्दीक

لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ط وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ط

चुने हुए पसन्दीदा हैं और याद करो इस्माईल और यसअ़ और ज़ुल किफ़्ल को[71]

وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ط هٰذَا ذِكْرٌ ط وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ لا

और सब अच्छे हैं येह नसीहत है और बेशक[72] परहेज़ गारों का ठिकाना भला

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ج مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا

बसने के बाग़ उन के लिये सब दरवाज़े खुले हुए उन में तक्या लगाए[73] उन में बहुत से

بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

मेवे और शराब मांगते हैं और उन के पास वोह बीबियां हैं कि अपने शोहर के सिवा और की त़रफ़ आंख नहीं उठातीं एक उ़म्र की[74]

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ الثلثة اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ الثلثة

येह है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ह़िसाब के दिन बेशक येह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म

نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ صلے هٰذَا ط وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ لا جَهَنَّمَ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ

न होगा[75] उन को तो येह है[76] और बेशक सरकशों का बुरा ठिकाना जहन्नम कि उस में जाएंगे तो क्या ही

الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا لا فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ لا وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ

बुरा बिछोना[77] उन को येह है तो इसे चखें खौलता पानी और पीप[78] और इसी शक्ल के

को सो ज़र्बें मारने की क़सम खाई थी देर से ह़ाज़िर होने के बाइस **68 :** या'नी अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام **69 :** जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने ह़िक्मते इ़ल्मिय्या व अ़मलिय्या अ़त़ा फ़रमाई और अपनी मा'रिफ़त और त़ाआ़त पर क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई। **70 :** या'नी दारे आख़िरत की, कि वोह लोगों को उसी की याद दिलाते हैं और कसरत से उस का ज़िक्र करते हैं, मह़ब्बते दुन्या ने उन के क़ुलूब में जगह नहीं पाई। **71 :** या'नी उन के फ़ज़ाइल और उन के सब्र को ताकि उन की पाक ख़स्लतों से लोग नेकियों का ज़ौक़ो शौक़ ह़ासिल करें और ज़ुल किफ़्ल की नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। **72 :** आख़िरत में **73 :** मुरस्सअ़ तख़्तों पर **74 :** या'नी सब सिन में बराबर ऐसे ही हुस्न व जवानी में, आपस में मह़ब्बत रखने वाली, न एक को दूसरे से बुग़्ज़ न रश्क न ह़सद। **75 :** हमेशा बाक़ी रहेगा वहां जो चीज़ ली जाएगी और ख़र्च की जाएगी वोह अपनी जगह वैसी ही हो जाएगी, दुन्या की चीज़ों की त़रह फ़ना और नेस्तो नाबूद न होगी। **76 :** या'नी ईमान वालों को **77 :** भड़क्ने वाली आग, कि वोही फ़र्श होगी। **78 :** जो जहन्नमियों के जिस्मों और उन के सड़े हुए ज़ख़्मों और नजासत के मक़ामों से बहेगी जलती बदबूदार।

www.dawateislami.net

اَزْوَاجٌ ﴿۵۸﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا

और जोड़े[79] उन से कहा जाएगा येह एक और फ़ौज तुम्हारे साथ धंसी पड़ती है जो तुम्हारी थी[80] वोह कहेंगे इन को खुली जगह न मिलो आग में तो इन को

النَّارِ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ

जाना ही है वहां भी तंग जगह में रहें ताबेअ़ बोले बल्कि तुम्हीं खुली जगह न मिलो येह मुसीबत तुम हमारे आगे लाए[81]

فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا

तो क्या ही बुरा ठिकाना[82] वोह बोले ऐ हमारे रब जो येह मुसीबत हमारे आगे लाया उसे आग में दूना

فِی النَّارِ ﴿۶۱﴾ وَ قَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰی رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ ؕ

अ़ज़ाब बढ़ा और[83] बोले हमें क्या हुवा हम उन मर्दों को नहीं देखते जिन्हें बुरा समझते थे[84]

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِیًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

क्या हम ने उन्हें हंसी बना लिया[85] या आंखें उन की त़रफ़ से फिर गईं[86] बेशक येह ज़रूर ह़क़ है

ع ۲۲ / ۱۳ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿۶۴﴾ ع قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنْذِرٌ ۖۗ وَّ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ

दोज़ख़ियों का बाहम झगड़ा तुम फ़रमाओ[87] मैं डर सुनाने वाला ही हूं[88] और मा'बूद कोई नहीं मगर एक

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۶۵﴾ ج رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا الْعَزِیْزُ

अल्लाह सब पर ग़ालिब मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है साहिबे इ़ज़्ज़त

الْغَفَّارُ ﴿۶۶﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِیْمٌ ﴿۶۷﴾ لا اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿۶۸﴾ مَا كَانَ لِیَ

बड़ा बख़्शने वाला तुम फ़रमाओ वोह[89] बड़ी ख़बर है तुम उस से ग़फ़्लत में हो[90] मुझे

مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰۤی اِذْ یَخْتَصِمُوْنَ ﴿۶۹﴾ اِنْ یُّوْحٰۤی اِلَیَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا

आ़लमे बाला की क्या ख़बर थी जब वोह झगड़ते थे[91] मुझे तो येही वह़्य होती है कि मैं नहीं मगर

79 : क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाब **80 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों के सरदार जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन के पीछे पीछे उन की इत्तिबाअ़ करने वाले तो जहन्नम के ख़ाज़िन उन सरदारों से कहेंगे, येह तुम्हारे मुत्तबिईन की फ़ौज है जो तुम्हारी त़रह तुम्हारे साथ जहन्नम में धंसी पड़ती है। **81 :** कि तुम ने पहले कुफ़्र इख़्तियार किया और हमें इस राह पर चलाया। **82 :** या'नी जहन्नम निहायत ही बुरा ठिकाना है। **83 :** कुफ़्फ़ार के अ़माइद और सरदार (बड़े बड़े असरो रुसूख़ वाले) **84 :** या'नी ग़रीब मुसल्मानों को और उन्हें वोह अपने दीन का मुख़ालिफ़ होने के बाइस शरीर कहते थे और ग़रीब होने की वज्ह से ह़क़ीर समझते थे, जब कुफ़्फ़ार जहन्नम में उन्हें न देखेंगे तो कहेंगे वोह हमें क्यूं नज़र नहीं आते। **85 :** और दर ह़क़ीक़त वोह ऐसे न थे, दोज़ख़ में आए ही नहीं, हमारा उन के साथ इस्तिहज़ा करना और उन की हंसी बनाना बात़िल था। **86 :** इस लिये वोह हमें नज़र न आए या येह मा'ना हैं कि उन की त़रफ़ से आंखें फिर गईं और दुन्या में हम उन के मर्तबे और बुज़ुर्गी को न देख सके। **87 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मक्का के कुफ़्फ़ार से **88 :** तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता हूं। **89 :** या'नी क़ुरआन या क़ियामत या मेरा रसूले मुन्ज़िर होना या अल्लाह तआ़ला का وَاحِدٌ لَا شَرِیْكَ لَهٗ होना **90 :** कि

www.dawateislami.net

نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِیْنٍ ﴿٧١﴾

रोशन डर सुनाने वाला[92] जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाऊंगा[93]

فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿٧٢﴾

फिर जब मैं उसे ठीक बना लूं[94] और उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकूं[95] तो तुम उस के लिये सज्दे में गिरना

فَسَجَدَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَ كَانَ

तो सब फ़िरिश्तों ने सज्दा किया एक एक ने कि कोई बाक़ी न रहा मगर इब्लीस ने[96] उस ने ग़ुरूर किया और वोह था

مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ یٰۤاِبْلِیْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ

ही काफ़िरों में[97] फ़रमाया ऐ इब्लीस तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उस के लिये सज्दा करे जिसे मैं ने अपने

بِیَدَیَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِیْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ؕ

हाथों से बनाया क्या तुझे ग़ुरूर आ गया या तू था ही मग़रूरों में[98] बोला मैं इस से बेहतर हूं[99]

मुझ पर ईमान नहीं लाते और क़ुरआने पाक और मेरे दीन को नहीं मानते। **91 :** या'नी फ़िरिश्ते ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बाब में। येह ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की एक दलील है। मुद्दआ येह है कि आ़लमे बाला में फ़िरिश्तों का ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बाब में सुवाल व जवाब करना मुझे क्या मा'लूम होता अगर मैं नबी न होता, इस की ख़बर देना मेरी नुबुव्वत और मेरे पास वह्य आने की दलील है। **92 :** दारिमी और तिरमिज़ी की ह़दीसों में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं अपने बेहतरीन ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ हुवा (ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे ख़याल में येह वाक़िआ ख़्वाब का है) हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَعَلَا व तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) आ़लमे बाला के मलाएका किस बह़्स में हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रब तू ही दाना है। हुज़ूर ने फ़रमाया : फिर रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपना दस्ते रह़मत व करम मेरे दोनों शानों के दरमियान रखा और मैं ने उस के फ़ैज़ का असर अपने क़ल्बे मुबारक में पाया तो आस्मान व ज़मीन की तमाम चीज़ें मेरे इ़ल्म में आ गईं, फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : या मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या तुम जानते हो कि आ़लमे बाला के मलाएका किस अम्र में बह़्स कर रहे हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : हां ! ऐ रब मैं जानता हूं, वोह कफ़्फ़ारात में बह़्स कर रहे हैं और कफ़्फ़ारात येह हैं नमाज़ों के बा'द मस्जिद में ठहरना और पियादा पा जमाअ़तों के लिये जाना और जिस वक़्त सरदी वग़ैरा के बाइ़स पानी का इस्ति'माल ना गवार हो उस वक़्त अच्छी त़रह़ वुज़ू करना, जिस ने येह किया उस की ज़िन्दगी भी बेहतर और मौत भी बेहतर और गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ निकलेगा जैसा अपनी विलादत के दिन था। और फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) नमाज़ के बा'द येह दुआ़ किया करो ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ فِعْلَ الْخَیْرَاتِ وَتَرْکَ الْمُنْکَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاکِیْنِ وَاِذَا اَرَدْتَّ بِعِبَادِکَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِیْ اِلَیْکَ غَیْرَ مَفْتُوْن'' बा'ज़ रिवायतों में येह है कि ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर हर चीज़ रोशन हो गई और मैं ने पहचान ली और एक रिवायत में है कि जो कुछ मशरिक़ व मग़रिब में है सब मैं ने जान लिया। इमाम अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद इब्ने इब्राहीम बग़दादी मा'रूफ़ ब ख़ाज़िन अपनी तफ़्सीर में इस के मा'ना येह बयान फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का सीनए मुबारक खोल दिया और क़ल्बे शरीफ़ को मुनव्वर कर दिया और जो कोई न जाने उस सब की मा'रिफ़त आप को अ़त़ा कर दी ता आंकि आप ने ने'मत व मा'रिफ़त की सरदी अपने क़ल्बे मुबारक में पाई और जब क़ल्बे शरीफ़ मुनव्वर हो गया और सीनए पाक खुल गया तो जो कुछ आस्मानों और ज़मीनों में है ब ए'लामे इलाही जान लिया। **93 :** या'नी (ह़ज़रत) आदम को पैदा करूंगा। **94 :** या'नी उस की पैदाइश तमाम कर दूं **95 :** और उस को ज़िन्दगी अ़त़ा कर दूं **96 :** सज्दा न किया। **97 :** या'नी इ़ल्मे इलाही में **98 :** या'नी उस क़ौम में से जिन का शेवा ही तकब्बुर है। **99 :** इस से उस की मुराद येह थी कि अगर आदम आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं इन्हें सज्दा न करता चे जाए कि इन से बेहतर हो कर इन्हें सज्दा करूं।

خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ﴿۷۶﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ

तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा कि तू रांधा

رَجِیْمٌ ﴿۷۷﴾ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ لَعْنَتِیْۤ اِلٰى یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿۷۸﴾ قَالَ رَبِّ

(ला'नत किया) गया[100] और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है क़ियामत तक[101] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۷۹﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿۸۰﴾ اِلٰى

ऐसा है तो मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[102] फ़रमाया तो तू मोहलत वालों में है उस

یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۸۱﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِیَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۸۲﴾ اِلَّا

जाने हुए वक़्त के दिन तक[103] बोला तो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ज़रूर मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा मगर

عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿۸۳﴾ قَالَ فَالْحَقُّ ؗ وَ الْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿۸۴﴾ لَاَمْلَئَنَّ

जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं फ़रमाया तो सच येह है और मैं सच ही फ़रमाता हूं बेशक मैं ज़रूर जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ

भर दूंगा तुझ से[104] और उन में से[105] जितने तेरी पैरवी करेंगे सब से तुम फ़रमाओ मैं इस क़ुरआन पर तुम से कुछ

مِنْ اَجْرٍ وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِیْنَ ﴿۸۶﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۸۷﴾

अज्र नहीं मांगता और मैं बनावट वालों में नहीं वोह तो नहीं मगर नसीहत सारे जहान के लिये

٥ ع ٢٢ ١٢ وَ لَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِیْنٍ ﴿۸۸﴾

और ज़रूर एक वक़्त के बा'द तुम उस की ख़बर जानोगे[106]

اٰیاتها ٧٥ ٣٩ سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّیَّةٌ ٥٩ رکوعاتها ٨

सूरए ज़ुमर मक्किय्या है, इस में पछत्तर आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

100 : अपनी सरकशी व ना फ़रमानी व तकब्बुर के बाइ़स, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस की सूरत बदल दी, वोह पहले ह़सीन था बद शक्ल रू सियाह कर दिया गया। और उस की नूरानिय्यत सल्ब कर दी गई। 101 : और क़ियामत के बा'द ला'नत भी और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब भी 102 : आदम عَلَیْهِ السَّلَام और इन की ज़ुर्रिय्यत अपने फ़ना होने के बा'द जज़ा के लिये और इस से उस की मुराद येह थी कि वोह इन्सानों को गुमराह करने के लिये फ़राग़त पाए और इन से अपना बुग़्ज़ ख़ूब निकाले और मौत से बिल्कुल बच जाए क्यूं कि उठने के बा'द मौत नहीं है। 103 : या'नी नफ़्ख़ए ऊला तक जिस को ख़ल्क़ की फ़ना के लिये मुअ़य्यन फ़रमाया गया। 104 : मअ़ तेरी ज़ुर्रिय्यत के 105 : या'नी इन्सानों में से 106 : ह़ज़रते इब्ने

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ① اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ

किताब[2] उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़[3] येह किताब

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ② اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ

ह़क़ के साथ उतारी तो अल्लाह को पूजो निरे उस के बन्दे हो कर हां ख़ालिस अल्लाह ही की

الْخَالِصُ ؕ وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا

वक़्फ़ लाज़िम

बन्दगी है[4] और वोह जिन्हों ने उस के सिवा और वाली बना लिये[5] कहते हैं हम तो इन्हें[6] सिर्फ़ इतनी

لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

बात के लिये पूजते हैं कि येह हमें अल्लाह के पास नज़्दीक कर दें अल्लाह उन में फ़ैसला कर देगा उस बात का जिस में

يَخْتَلِفُوْنَ ؕ۬ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ③ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं[7] बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो झूटा बड़ा नाशुक्रा हो[8] अल्लाह अपने लिये

اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ

बच्चा बनाता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता[9] पाकी है उसे[10] वोही है

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ④ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ

एक अल्लाह[11] सब पर ग़ालिब उस ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए रात को दिन

عَلَى النَّهَارِ وَ يُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है[12] और उस ने चांद और सूरज को काम में लगाया हर एक एक

अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मौत के बा'द और एक क़ौल येह है कि क़ियामत के रोज़। **1 :** "सूरए ज़ुमर" मक्किय्या है सिवा आयत "قُلْ یٰعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ" और आयत "اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ" के। इस सूरत में आठ रुकूअ़ और पछत्तर आयतें और एक हज़ार एक सो बहत्तर कलिमे और चार हज़ार नव सो आठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** किताब से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है। **3 :** ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **4 :** उस के सिवा कोई इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं। **5 :** मा'बूद ठहरा लिये। मुराद उन लोगों से बुत परस्त हैं। **6 :** या'नी बुतों को **7 :** ईमानदारों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा कर **8 :** झूटा इस बात में कि बुतों को अल्लाह तआ़ला से नज़्दीक करने वाला बताए और ख़ुदा के लिये औलाद ठहराए और नाशुक्रा ऐसा कि बुतों को पूजे। **9 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ अल्लाह तआ़ला के लिये औलाद मुम्किन होती वोह जिसे चाहता औलाद बनाता न कि येह तज्वीज़ कुफ़्फ़ार पर छोड़ता कि वोह जिसे चाहें ख़ुदा की औलाद क़रार दें (مَعَاذَ اللّٰه) **10 :** औलाद से और हर उस चीज़ से जो उस की शाने अक़्दस के लाइक़ नहीं। **11 :** न उस का कोई शरीक न उस की कोई औलाद **12 :** या'नी कभी रात की तारीकी से दिन के एक हिस्से को छुपाता है और कभी दिन की रोशनी से रात के हिस्से को। मुराद येह है कि कभी दिन का वक़्त घटा कर रात को बढ़ाता है कभी रात घटा कर दिन को ज़ियादा करता है और रात और दिन में से घटने वाला घटते घटते दस घन्टे का रह जाता है और बढ़ने वाला बढ़ते बढ़ते चौदह घन्टे का हो जाता है।

يَجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ठहराई मीआ़द के लिये चलता है[13] सुनता है वोही साहिबे इ़ज़्ज़त बख़्शने वाला है उस ने तुम्हें एक

وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ

जान से बनाया[14] फिर उसी से उस का जोड़ा पैदा किया[15] और तुम्हारे लिये चौपायों से[16] आठ जोड़े

اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ

उतारे[17] तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट में बनाता है एक त़रह के बा'द और त़रह[18] तीन अंधेरियों

ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

में[19] येह है अल्लाह तुम्हारा रब उसी की बादशाही है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं फिर कहां फेरे जाते हो[20]

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ

अगर तुम नाशुक्री करो तो बेशक अल्लाह बे नियाज़ है तुम से[21] और अपने बन्दों की नाशुक्री उसे पसन्द नहीं और अगर

تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

शुक्र करो तो उसे तुम्हारे लिये पसन्द फ़रमाता है[22] और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ नहीं उठाएगी[23] फिर तुम्हें अपने रब ही

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ

की त़रफ़ फिरना है[24] तो वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे[25] बेशक वोह दिलों की

الصُّدُوْرِ ۝٧ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا

बात जानता है और जब आदमी को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है[26] अपने रब को पुकारता है उसी त़रफ़ झुका हुवा[27] फिर जब

خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

अल्लाह ने उसे अपने पास से कोई ने'मत दी तो भूल जाता है जिस लिये पहले पुकारा था[28] और अल्लाह के लिये बराबर वाले

13 : या'नी क़ियामत तक वोह अपने मुक़र्रर निज़ाम पर चलते रहेंगे। 14 : या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से 15 : या'नी ह़ज़रते ह़व्वा को 16 : या'नी ऊंट, गाय, बकरी, भेड़ से 17 : या'नी पैदा किये। जोड़ों से मुराद नर और मादा हैं। 18 : या'नी नुत़्फ़ा फिर अ़लक़ह (ख़ूने बस्ता) फिर मुज़ग़ा (गोश्त पारा) 19 : **एक** अंधेरी पेट की, **दूसरी** रहि़म की, **तीसरी** बच्चादान की। 20 : और त़रीक़े ह़क़ से दूर होते हो कि उस की इ़बादत छोड़ कर ग़ैर की इ़बादत करते हो। 21 : या'नी तुम्हारी त़ाअ़त व इ़बादत से और तुम ही उस के मोह़ताज हो, ईमान लाने में तुम्हारा ही नफ़्अ़ और काफ़िर हो जाने में तुम्हारा ही ज़रर है। 22 : कि वोह तुम्हारी काम्याबी का सबब है, इस पर तुम्हें सवाब देगा और जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा। 23 : या'नी कोई शख़्स दूसरे के गुनाह में माख़ूज़ न होगा। 24 : आख़िरत में 25 : दुन्या में और उस की तुम्हें जज़ा देगा। 26 : यहां आदमी से मुत़्लक़न काफ़िर या ख़ास अबू जह्ल या उ़त्बा बिन रबीआ़ मुराद है। 27 : उसी से फ़रियाद करता है। 28 : या'नी उस शिद्दत व तक्लीफ़ को फ़रामोश कर देता है जिस के लिये अल्लाह से फ़रियाद की थी।

اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ

ठहराने लगता है[29] ताकि उस की राह से बहका दे तुम फ़रमाओ[30] थोड़े दिन अपने कुफ़्र के साथ बरत ले[31] बेशक तू

اَصْحٰبِ النَّارِ ۝۸ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ

दोज़ख़ियों में है क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में[32] आख़िरत

الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ

से डरता और अपने रब की रहमत की आस लगाए[33] क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۹ ع قُلْ يٰعِبَادِ

अन्जान नसीहत तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं तुम फ़रमाओ ऐ मेरे बन्दो

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ

जो ईमान लाए अपने रब से डरो जिन्हों ने भलाई की[34] उन के लिये इस दुन्या में भलाई है[35]

وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰

और **अल्लाह** की ज़मीन वसीअ़ है[36] साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती[37]

29 : या'नी ह़ाजत बरआरी के बा'द फिर बुत परस्ती में मुब्तला हो जाता है। **30 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! इस काफ़िर से **31 :** और दुन्या की ज़िन्दगी के दिन पूरे कर ले **32 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की शान में नाज़िल हुई और ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह है कि ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द और ह़ज़रते अ़म्मार और ह़ज़रते सलमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ के ह़क़ में नाज़िल हुई। **फ़ाएदा :** इस आयत से साबित हुवा कि रात के नवाफ़िल व इ़बादत दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं इस की **एक** वज्ह तो येह है कि रात का अ़मल पोशीदा होता है इस लिये वोह रिया से बहुत दूर होता है। **दूसरे** येह कि दुन्या के कारोबार बन्द होते हैं इस लिये क़ल्ब ब निस्बत दिन के बहुत फ़ारिग़ होता है और तवज्जोह इलल्लाह और ख़ुशूअ़ दिन से ज़ियादा रात में मुयस्सर आता है। **तीसरे** रात चूंकि राह़त व ख़्वाब का वक़्त होता है इस लिये इस में बेदार रहना नफ़्स को बहुत मशक़्क़त व तअ़ब में डालता है तो सवाब भी इस का ज़ियादा होगा। **33 :** इस से साबित हुवा कि मोमिन के लिये लाज़िम है कि वोह बैनल ख़ौफ़ व रजा (ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान) हो, अपने अ़मल की तक़्सीर पर नज़र कर के अ़ज़ाब से डरता रहे और **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत का उम्मीद वार रहे, दुन्या में बिल्कुल बे ख़ौफ़ होना या **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से मुत़्लक़न मायूस होना, येह दोनों क़ुरआने करीम में कुफ़्फ़ार की ह़ालतें बताई गई हैं قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: "فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ" وَقَالَ تَعَالٰى: "لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ" **34 :** त़ाअ़त बजा लाए और अच्छे अ़मल किये। **35 :** या'नी सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत **36 :** इस में हिजरत की तरग़ीब है कि जिस शहर में मआ़सी की कसरत हो और वहां रहने से आदमी को अपनी दीनदारी पर क़ाइम रहना दुश्वार हो जाए चाहिये कि उस जगह को छोड़ दे और वहां से हिजरत कर जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुहाजिरीने ह़ब्शा के ह़क़ में नाज़िल हुई और येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और उन के हमराहियों के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने मुसीबतों और बलाओं पर सब्र किया और हिजरत की और अपने दीन पर क़ाइम रहे इस को छोड़ना गवारा न किया। **37 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़्न किया जाएगा सिवाए सब्र करने वालों के कि उन्हें बे अन्दाज़ा और बे ह़िसाब दिया जाएगा और येह भी मरवी है कि "अस्ह़ाबे मुसीबत व बला" ह़ाज़िर किये जाएंगे न उन के लिये मीज़ान क़ाइम की जाए न उन के लिये दफ़्तर खोले जाएं, उन पर अज्रो सवाब की बे ह़िसाब बारिश होगी यहां तक कि दुन्या में आ़फ़िय्यत की ज़िन्दगी बसर करने वाले उन्हें देख कर आरज़ू करेंगे कि काश वोह अहले मुसीबत में से होते और उन के जिस्म क़ैंचियों से काटे गए होते कि आज येह सब्र का अज्र पाते।

www.dawateislami.net

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَۙ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرْتُ لِاَنْ

तुम फ़रमाओ[38] मुझे हुक्म है कि अल्लाह को पूजूं निरा उस का बन्दा हो कर और मुझे हुक्म है

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ

कि मैं सब से पहले गरदन रखूं[39] तुम फ़रमाओ बिलफ़र्ज़ अगर मुझ से ना फ़रमानी हो जाए तो मुझे भी अपने रब से एक

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْۙ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا

बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है[40] तुम फ़रमाओ मैं अल्लाह ही को पूजता हूं निरा उस का बन्दा हो कर तो तुम उस के

شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ

सिवा जिसे चाहो पूजो[41] तुम फ़रमाओ पूरी हार उन्हें जो अपनी जान और अपने

اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ

घर वाले क़ियामत के दिन हार बैठे[42] हां हां येही खुली हार है उन के

فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

ऊपर आग के पहाड़ हैं और उन के नीचे पहाड़[43] इस से अल्लाह डराता है अपने

عِبَادَهٗؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا

बन्दों को[44] ऐ मेरे बन्दो तुम मुझ से डरो[45] और वोह जो बुतों की पूजा से बचे

وَ اَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰىۚ فَبَشِّرْ عِبَادِۙ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ

और अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ़ हुए उन्हीं के लिये खुश ख़बरी है तो ख़ुशी सुनाओ मेरे उन बन्दों को जो कान लगा कर

الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمْ

बात सुनें फिर उस के बेहतर पर चलें[46] येह हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई और येह हैं जिन को

38 : ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! **39 :** और अहले त़ाअ़त व इख़्लास में मुक़द्दम व साबिक़ होउं। अल्लाह तआ़ला ने पहले इख़्लास का हुक्म दिया जो अ़मले क़ल्ब है, फिर इत़ाअ़त या'नी आ'माले जवारेह़ का। चूं कि अह़कामे शरइय्या रसूल से ह़ासिल होते हैं, वोही उन के पहुंचाने वाले हैं तो वोह उन के शुरूअ़ करने में सब से मुक़द्दम और अव्वल हुए। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को येह हुक्म दे कर तम्बीह की, कि दूसरों पर इस की पाबन्दी निहायत ज़रूरी है और दूसरों की तरग़ीब के लिये नबी عَلَیْہِ السَّلَام को येह हुक्म दिया गया **40 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि आप अपनी क़ौम के सरदारों और अपने रिश्तेदारों को नहीं देखते जो लात व उ़ज़्ज़ा की परस्तिश करते हैं, उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **41 :** ब त़रीक़े तहदीद व तौबीख़ फ़रमाया। **42 :** या'नी गुमराही इख़्तियार कर के हमेशा के लिये मुस्तह़िक़्क़े जहन्नम हो गए और जन्नत की उन ने'मतों से मह़रूम हो गए जो ईमान लाने पर उन्हें मिलतीं। **43 :** या'नी हर त़रफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। **44 :** कि ईमान लाएं और मम्नूआ़त से बचें। **45 :** वोह काम न करो जो मेरी नाराज़ी का सबब हो। **46 :** जिस में उन की बेहबूद हो।

أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾ أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۗ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ

अक़्ल है[47] तो क्या वोह जिस पर अ़ज़ाब की बात साबित हो चुकी नजात वालों के बराबर हो जाएगा तो क्या तुम हिदायत दे कर

مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِنْ فَوْقِهَا

आग के मुस्तहि़क़ को बचा लोगे[48] लेकिन जो अपने रब से डरे[49] उन के लिये बालाख़ाने हैं उन पर

غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ

बालाख़ाने बने[50] उन के नीचे नहरें बहें अल्लाह का वा'दा अल्लाह वा'दा ख़िलाफ़

الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي

नहीं करता क्या तू ने न देखा कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा फिर उस से ज़मीन में

الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ

चश्मे बनाए फिर उस से खेती निकालता है कई रंगत की[51] फिर सूख जाती है तो तू देखे कि वोह[52]

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٢ ١٦

पीली पड़ गई फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर देता है बेशक इस में ध्यान की बात है अ़क़्ल मन्दों को[53]

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ

तो क्या वोह जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया[54] तो वोह अपने रब की त़रफ़ से नूर पर है[55] उस जैसा हो जाएगा

لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ نَزَّلَ

जो संगदिल है तो ख़राबी है उन की जिन के दिल यादे ख़ुदा की त़रफ़ से सख़्त हो गए हैं[56] वोह खुली गुमराही में हैं अल्लाह ने उतारी

47 शाने नुज़ूल : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ईमान लाए तो आप के पास ह़ज़रते उ़स्मान और अ़ब्दुर्रहमान इब्ने औ़फ़ और त़ल्हा व ज़ुबैर व सा'द बिन अबी वक़्क़ास व सईद बिन ज़ैद आए और उन से हाल दरयाफ़्त किया, उन्हों ने अपने ईमान की ख़बर दी, येह ह़ज़रात भी सुन कर ईमान ले आए, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई "فَبَشِّرْ عِبَادِ......الآية"। **48 :** जो अज़ली बद बख़्त और इ़ल्मे इलाही में जहन्नमी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुराद इस से अबू लहब और उस के लड़के हैं। **49 :** और उन्हों ने अल्लाह तआ़ला की फ़रमां बरदारी की **50 :** या'नी जन्नत के मनाज़िले रफ़ीआ़ जिन के ऊपर और अरफ़अ़ मनाज़िल हैं। **51 :** ज़र्द, सब्ज़, सुर्ख़, सफ़ेद, क़िस्म क़िस्म की गेहूं जव और त़रह त़रह के ग़ल्ले। **52 :** सर सब्ज़ो शादाब होने के बा'द **53 :** जो इस से अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत व क़ुदरत पर दलीलें क़ाइम करते हैं। **54 :** और उस को क़बूले ह़क़ की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। **55 :** या'नी यक़ीन व हिदायत पर। **ह़दीस :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जब येह आयत तिलावत फ़रमाई तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) सीने का खुलना किस त़रह होता है? फ़रमाया कि जब नूर क़ल्ब में दाख़िल होता है तो वोह खुलता है और उस में वुस्अ़त होती है। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : इस की क्या अ़लामत है? फ़रमाया : दारुल ख़ुलूद (हमेशा रहने वाले घर जन्नत) की त़रफ़ मुतवज्जेह होना और दारुल ग़ुरूर (फ़ना होने वाले घर या'नी दुन्या से) दूर रहना और मौत के लिये उस के आने से क़ब्ल आमादा होना। **56 :** नफ़्स जब ख़बीस होता है तो क़बूले ह़क़ से उस को बहुत दूरी हो जाती है और ज़िक्रुल्लाह के सुनने से उस की सख़्ती और कदूरत बढ़ती है, जैसे कि आफ़्ताब की गरमी से मोम नर्म होता है और नमक सख़्त होता है ऐसे ही ज़िक्रुल्लाह से मोमिनीन के क़ुलूब नर्म

www.dawateislami.net

اَحۡسَنَ الۡحَدِیۡثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖۗ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُوۡدُ الَّذِیۡنَ

सब से अच्छी किताब[57] कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है[58] दोहरे बयान वाली[59] इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो

یَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ۚ ثُمَّ تَلِیۡنُ جُلُوۡدُهُمۡ وَ قُلُوۡبُهُمۡ اِلٰی ذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की त़रफ़ रग़बत में[60] येह

هُدَی اللّٰهِ یَهۡدِیۡ بِهٖ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ مَنۡ یُّضۡلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ هَادٍ ﴿۲۳﴾

अल्लाह की हिदायत है राह दिखाए उसे जिसे चाहे और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं

اَفَمَنۡ یَّتَّقِیۡ بِوَجۡهِهٖ سُوۡٓءَ الۡعَذَابِ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ ؕ وَ قِیۡلَ لِلظّٰلِمِیۡنَ

तो क्या वोह जो क़ियामत के दिन बुरे अ़ज़ाब की ढाल न पाएगा अपने चेहरे के सिवा[61] नजात वाले की त़रह़ हो जाएगा[62]

ذُوۡقُوۡا مَا كُنۡتُمۡ تَكۡسِبُوۡنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَاَتٰىهُمُ

और ज़ालिमों से फ़रमाया जाएगा अपना कमाया चखो[63] इन से अगलों ने झुटलाया[64] तो उन्हें

الۡعَذَابُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الۡخِزۡیَ فِی الۡحَیٰوةِ

अ़ज़ाब आया जहां से उन्हें ख़बर न थी[65] और **अल्लाह** ने उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी में रुस्वाई का मज़ा

الدُّنۡیَا ۚ وَ لَعَذَابُ الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ ۘ لَوۡ كَانُوۡا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۲۶﴾ وَ لَقَدۡ ضَرَبۡنَا وقف لازم

चखाया[66] और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से बड़ा क्या अच्छा था अगर वोह जानते[67] और बेशक हम ने

لِلنَّاسِ فِیۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمۡ یَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۲۷﴾ ۚ قُرۡاٰنًا

लोगों के लिये इस क़ुरआन में हर क़िस्म की कहावत बयान फ़रमाई कि किसी त़रह़ उन्हें ध्यान हो[68] अ़रबी ज़बान

होते हैं और काफ़िरों के दिलों की सख़्ती और बढ़ती है। **फ़ाएदा :** इस आयत से उन लोगों को इ़ब्रत पकड़ना चाहिये जिन्हों ने ज़िक्रुल्लाह को रोकना अपना शिआ़र बना लिया है, वो सूफ़ियों के ज़िक्र को भी मन्अ़ करते हैं, नमाज़ों के बा'द ज़िक्रुल्लाह करने वालों को भी रोकते और मन्अ़ करते हैं, ईसाले सवाब के लिये क़ुरआने करीम और कलिमा पढ़ने वालों को भी बिद्अ़ती बताते हैं और इन ज़िक्र की मह़फ़िलों से निहायत घबराते और भागते हैं। **अल्लाह** तआ़ला हिदायत दे। **57 :** क़ुरआन शरीफ़, जो इ़बारत में ऐसा फ़सीह़ो बलीग़ कि कोई कलाम इस से कुछ निस्बत ही नहीं रख सकता, मज़्मून निहायत दिल पज़ीर, बा वुजूदे कि न नज़्म है न शे'र निराले ही उस्लूब पर है और मा'ना में ऐसा बुलन्द मर्तबा कि तमाम उ़लूम का जामेअ़ और मा'रिफ़ते इलाही जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत का रहनुमा। **58 :** ह़ुस्नो ख़ूबी में **59 :** कि इस में वा'दा के साथ वई़द और अम्र के साथ नही और अख़्बार के साथ अह़काम हैं। **60 :** ह़ज़रते क़तादा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि येह औलियाउल्लाह की सिफ़त है कि ज़िक्रे इलाही से उन के बाल खड़े होते जिस्म लरज़ते हैं और दिल चैन पाते हैं। **61 :** वोह काफ़िर है जिस के हाथ गरदन के साथ मिला कर बांध दिये जाएंगे और उस की गरदन में गन्धक का एक जलता हुवा पहाड़ पड़ा होगा जो उस के चेहरे को भूने डालता होगा, इस ह़ाल से औंधा कर के आतशे जहन्नम में गिराया जाएगा। **62 :** या'नी उस मोमिन की त़रह़ जो अ़ज़ाब से मामून व मह़फ़ूज़ हो। **63 :** या'नी दुन्या में जो कुफ़्र व सरकशी इख़्तियार की थी अब उस का वबाल व अ़ज़ाब बरदाश्त करो। **64 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से पहले काफ़िरों ने रसूलों को झुटलाया **65 :** अ़ज़ाब आने का ख़त़रा भी न था, ग़फ़्लत में पड़े हुए थे। **66 :** किसी क़ौम की सूरतें मस्ख़ कीं किसी को ज़मीन में धंसाया। **67 :** और ईमान ले आते तक्ज़ीब न करते। **68 :** और वोह नसीह़त क़बूल करें।

www.dawateislami.net

عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

का क़ुरआन[69] जिस में अस्लन कजी नहीं[70] कि कहीं वोह डरें[71] अल्लाह एक मिसाल बयान फ़रमाता है[72] एक गुलाम

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ

में कई बद ख़ू आक़ा शरीक और एक निरे एक मौला का क्या इन दोनों का हाल

مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

एक सा है[73] सब ख़ूबियां अल्लाह को[74] बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते[75] बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और इन को

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ١٧ ٣

भी मरना है[76] फिर तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे[77]

69 : ऐसा फ़सीह जिस ने फ़ुसहा व बुलग़ा को आ़जिज़ कर दिया **70 :** या'नी तनाक़ुज़ व इख़्तिलाफ़ से पाक। **71 :** और कुफ़्र व तक्ज़ीब से बाज़ आएं। **72 :** मुश्रिक और मुवह्हिद की **73 :** या'नी एक जमाअ़त का गुलाम निहायत परेशान होता है कि हर एक आक़ा उसे अपनी त़रफ़ खींचता है और अपने अपने काम बताता है, वोह हैरान है कि किस का हुक्म बजा लाए और किस त़रह़ तमाम आक़ाओं को राज़ी करे और ख़ुद उस गुलाम को जब कोई ह़ाजत व ज़रूरत पेश हो तो किस आक़ा से कहे, ब ख़िलाफ़ उस गुलाम के जिस का एक ही आक़ा हो वोह उस की ख़िदमत कर के उसे राज़ी कर सकता है और जब कोई ह़ाजत पेश आए तो उसी से अ़र्ज़ कर सकता है, उस को कोई परेशानी पेश नहीं आती। येह ह़ाल मोमिन का है जो एक मालिक का बन्दा है, उसी की इ़बादत करता है और मुश्रिक जमाअ़त के गुलाम की त़रह़ है कि उस ने बहुत से मा'बूद क़रार दे दिये हैं। **74 :** जो अकेला है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **75 :** कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं। **76 :** इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्तिज़ार किया करते थे, उन्हें फ़रमाया गया कि ख़ुद मरने वाले हो कर दूसरे की मौत का इन्तिज़ार करना ह़माक़त है, कुफ़्फ़ार तो ज़िन्दगी में भी मरे हुए हैं और अम्बिया की मौत एक आन के लिये होती है फिर उन्हें ह़यात अ़त़ा फ़रमाई जाती है। इस पर बहुत सी शरई बुरहानें क़ाइम हैं। **77 :** अम्बिया उम्मत पर हुज्जत क़ाइम करेंगे कि उन्हों ने रिसालत की तब्लीग़ की और दीन की दा'वत देने में जोहदे बलीग़ सर्फ़ फ़रमाई और काफ़िर बे फ़ाएदा मा'ज़िरतें पेश करेंगे। येह भी कहा गया है कि मुराद इख़्तिसामे आ़म है कि लोग दुन्यवी ह़ुक़ूक़ में मुख़ासमा करेंगे और हर एक अपना ह़क़ त़लब करेगा।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[78] और हक़ को झुटलाए[79] जब उस के पास आए

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ

क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए[80] और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़

بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا

की[81] येही डर वाले हैं उन के लिये है जो वोह चाहें अपने रब के पास नेकों का येही

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ ۚۖ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ

सिला है ताकि अल्लाह उन से उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्हों ने किया और उन्हें उन के सवाब का

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ

सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर[82] जो वोह करते थे क्या अल्लाह अपने बन्दों को काफ़ी नहीं[83]

وَ يُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ

और तुम्हें डराते हैं उस के सिवा औरों से[84] और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस की कोई हिदायत करने

هَادٍ ﴿٣٦﴾ ۚ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي

वाला नहीं और जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई बहकाने वाला नहीं क्या अल्लाह इज़्ज़त वाला बदला लेने

انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ

वाला नहीं ?[85] और अगर तुम उन से पूछो आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए ? तो ज़रूर कहेंगे

اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

अल्लाह ने[86] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[87] अगर अल्लाह मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे[88]

78 : और उस के लिये शरीक और औलाद क़रार दे **79 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को या रसूल عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत को। **80 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जो तौहीदे इलाही लाए। **81 :** या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه या तमाम मोमिनीन **82 :** या'नी उन की बदियों पर गिरिफ़्त न करे और नेकियों की बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए। **83 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये और एक क़िराअत में "عِبَادَهٗ" भी आया है इस सूरत में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام मुराद हैं जिन के साथ उन की क़ौमों ने ईज़ा रसानी के इरादे किये अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखा और उन की किफ़ायत फ़रमाई। **84 :** या'नी बुतों से। **वाक़िआ़** येह था कि कुफ़्फ़ारे अ़रब ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को डराना चाहा और आप से कहा कि आप हमारे मा'बूदों या'नी बुतों की बुराई बयान करने से बाज़ आइये वरना वोह आप को नुक़्सान पहुंचाएंगे, हलाक कर देंगे या अ़क़्ल को फ़ासिद कर देंगे। **85 :** बेशक वोह अपने दुश्मनों से इन्तिक़ाम लेता है। **86 :** या'नी येह मुश्रिकीन ख़ुदाए क़ादिर, अ़लीम, हकीम की हस्ती के तो मुक़िर (मानने वाले) हैं और येह बात तमाम ख़ल्क़ के नज़्दीक मुसल्लम है और ख़ल्क़ की फ़ित्रत इस की शाहिद है और जो शख़्स आस्मानो ज़मीन के अ़जाइब में नज़र करे उस को यक़ीनी

هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِیْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ

तो क्या वोह उस की भेजी तक्लीफ़ टाल देंगे या वोह मुझ पर मेहर (रहम) फ़रमाना चाहे तो क्या वोह उस की मेहर (रहम) को रोक

رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِیَ اللّٰهُ ؕ عَلَیْهِ یَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ یٰقَوْمِ

रखेंगे[89] तुम फ़रमाओ अल्लाह मुझे बस है[90] भरोसे वाले उस पर भरोसा करें तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ لا مَنْ یَّاْتِیْهِ

अपनी जगह काम किये जाओ[91] मैं अपना काम करता हूं[92] तो आगे जान जाओगे किस पर आता है

عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَ یَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ

वोह अज़ाब कि उसे रुस्वा करेगा[93] और किस पर उतरता है अज़ाब कि रह पड़ेगा[94] बेशक हम ने तुम पर येह

الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا

किताब लोगों की हिदायत को हक़ के साथ उतारी[95] तो जिस ने राह पाई तो अपने भले को[96] और जो बहका वोह

یَضِلُّ عَلَیْهَا ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۴۱﴾ع اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ ع

अपने ही बुरे को बहका[97] और तुम कुछ उन के ज़िम्मेदार नहीं[98] अल्लाह जानों को वफ़ात देता है

حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰى عَلَیْهَا

उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक

الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ

रखता है[99] और दूसरी[100] एक मीआ़द मुक़र्रर तक छोड़ देता है[101] बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं

तौ़र पर मा'लूम हो जाता है कि येह मौजूदात एक क़ादिर ह़कीम की बनाई हुई हैं। अल्लाह तआ़ला अपने नबी عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म देता है कि आप उन मुशरिकीन पर हुज्जत क़ाइम कीजिये चुनान्चे फ़रमाता है : **87 :** या'नी बुतों को। येह भी तो देखो कि वोह कुछ भी क़ुदरत रखते हैं और किसी काम भी आ सकते हैं। **88 :** किसी त़रह की मरज़ की या क़हत़ की या नादारी की या और कोई **89 :** जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने मुशरिकीन से येह सुवाल फ़रमाया तो वोह ला जवाब हुए और साकित रह गए, अब हुज्जत तमाम हो गई और उन के सुकूती इक़रार से साबित हो गया कि बुत मह़ज़ बे क़ुदरत हैं, न कोई नफ़्अ़ पहुंचा सकते हैं न कुछ ज़रर, इन की इबादत करना निहायत ही जहालत है। इस लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया **90 :** मेरा उसी पर भरोसा है और जिस का अल्लाह तआ़ला पर भरोसा हो वोह किसी से भी नहीं डरता, तुम जो मुझे बुत जैसी बे क़ुदरत व बे इख़्तियार चीज़ों से डराते हो येह तुम्हारी निहायत ही बे वुक़ूफ़ी व जहालत है। **91 :** और जो जो मक्र व ह़ीले तुम से हो सकें, मेरी अ़दावत में सब ही कर गुज़रो। **92 :** जिस पर मामूर हूं या'नी दीन का क़ाइम करना और अल्लाह तआ़ला मेरा मुईन व नासिर है और उसी पर मेरा भरोसा है। **93 :** चुनान्चे, रोज़े बद्र वोह रुस्वाई के अ़ज़ाब में मुब्तला हुए। **94 :** या'नी दाइम होगा और वोह अ़ज़ाबे जहन्नम है। **95 :** ताकि इस से हिदायत ह़ासिल करें। **96 :** कि इस राहयाबी का नफ़्अ़ वोही पाएगा। **97 :** उस की गुमराही का ज़रर और वबाल उसी पर पड़ेगा। **98 :** तुम से उन की तक़्सीर का मुआख़ज़ा न होगा। **99 :** या'नी उस जान को उस के जिस्म की त़रफ़ वापस नहीं करता **100 :** जिस की मौत मुक़द्दर नहीं फ़रमाई उस को **101 :** या'नी उस की मौत के वक़्त तक।

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَلَوْ

सोचने वालों के लिये[102] क्या उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल कुछ सिफ़ारिशी बना रखे हैं[103] तुम फ़रमाओ क्या अगर्चे

كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ

वोह किसी चीज़ के मालिक न हों[104] और न अ़क़्ल रखें तुम फ़रमाओ शफ़ाअ़त तो सब अल्लाह के हाथ में है[105]

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا ذُكِرَ

उसी के लिये है आस्मानों और ज़मीन की बादशाही फिर तुम्हें उसी की त़रफ़ पलटना है[106] और जब एक

اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا

अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उन के जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते[107] और जब

ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ

उस के सिवा औरों का ज़िक्र होता है[108] जभी वोह ख़ुशियां मनाते हैं तुम अ़र्ज़ करो ऐ अल्लाह आस्मानों

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

और ज़मीन के पैदा करने वाले निहां (पोशीदा) और इयां (ज़ाहिर) के जानने वाले तू अपने बन्दों में फ़ैसला

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي

फ़रमाएगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ रखते थे[109] और अगर ज़ालिमों के लिये होता जो कुछ

الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ

ज़मीन में है सब और इस के साथ उस जैसा[110] तो येह सब छुड़ाई में देते रोज़े क़ियामत के बड़े

الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَبَدَا لَهُمْ

अ़ज़ाब से[111] और उन्हें अल्लाह की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी[112] और उन पर अपनी

102 : जो सोचें और समझें कि जो इस पर क़ादिर है वोह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। 103 : या'नी बुत जिन की निस्बत वोह कहते थे कि येह अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ़ हैं। 104 : न शफ़ाअ़त के न और किसी चीज़ के 105 : जो उस का माज़ून (इजाज़त दिया गया) हो वोही शफ़ाअ़त कर सकता है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहे शफ़ाअ़त का इज़्न देता है, बुतों को उस ने शफ़ीअ़ नहीं बनाया और इबादत तो ख़ुदा के सिवा किसी की भी जाइज़ नहीं शफ़ीअ़ हो या न हो। 106 : आख़िरत में। 107 : और वोह बहुत तंगदिल और परेशान होते हैं और ना गवारी का असर उन के चेहरों पर ज़ाहिर हो जाता है। 108 : या'नी बुतों का 109 : या'नी अम्रे दीन में। इब्ने मुसय्यब से मन्क़ूल है कि येह आयत पढ़ कर जो दुआ मांगी जाए क़बूल होती है। 110 : या'नी अगर बिलफ़र्ज़ काफ़िर तमाम दुन्या के अम्वाल व ज़ख़ाइर के मालिक होते और इतना ही और भी उन के मिल्क में होता 111 : कि किसी त़रह़ येह अम्वाल दे कर उन्हें इस अ़ज़ाबे अ़ज़ीम से रिहाई मिल जाए। 112 : या'नी ऐसे ऐसे अ़ज़ाबे शदीद जिन का उन्हें ख़याल भी न था, और इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि वोह गुमान करते होंगे कि उन के पास नेकियां हैं और जब नामए आ'माल खुलेंगे तो बदियां ज़ाहिर होंगी।

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ

कमाई हुई बुराइयां खुल गईं[113] और उन पर आ पड़ा वोह जिस की हंसी बनाते थे[114] फिर जब आदमी

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ

को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो हमें बुलाता है फिर जब उसे हम अपने पास से कोई ने'मत अ़ता फ़रमाएं कहता है येह तो मुझे एक इ़ल्म की

عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا

बदौलत मिली है[115] बल्कि वोह तो आज़्माइश है[116] मगर उन में बहुतों को इ़ल्म नहीं[117] उन से अगले

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ

भी ऐसे ही कह चुके[118] तो उन का कमाया उन के कुछ काम न आया तो उन पर पड़ गईं

سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

उन की कमाइयों की बुराइयां[119] और वोह जो उन में ज़ालिम हैं अ़न्क़रीब उन पर पड़ेंगी उन की

مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

कमाइयों की बुराइयां और वोह क़ाबू से नहीं निकल सकते[120] क्या उन्हें मा'लूम नहीं कि अल्लाह रोज़ी कुशादा

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع ع ٥ ٢

करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की[121] अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَ

न हो बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है[122] बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है और

113 : जो उन्हों ने दुन्या में की थीं, **अल्लाह** तआ़ला के साथ शरीक करना और उस के दोस्तों पर ज़ुल्म करना वग़ैरा। **114 :** या'नी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़बर देने पर, वोह जिस अ़ज़ाब की हंसी बनाया करते थे वोह नाज़िल हो गया और उस में घिर गए। **115 :** या'नी मैं मआ़श का जो इ़ल्म रखता हूं उस के ज़रीए से मैं ने येह दौलत कमाई जैसा कि क़ारून ने कहा था। **116 :** या'नी येह ने'मत **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आज़्माइश व इम्तिह़ान है कि बन्दा इस पर शुक्र करता है या नाशुक्री। **117 :** कि येह ने'मत व अ़त़ा इस्तिद्राज (मोहलत) व इम्तिह़ान है। **118 :** या'नी येह बात क़ारून ने भी कही थी कि येह दौलत मुझे अपने इ़ल्म की बदौलत मिली और उस की क़ौम उस की इस बेहूदा गोई पर राज़ी रही थी तो वोह भी क़ाइलों में शुमार हुई। **119 :** या'नी जो बदियां उन्हों ने की थीं उन की सज़ाएं। **120 :** चुनान्चे वोह सात बरस क़ह़त़ की मुसीबत में मुब्तला रखे गए। **121 :** गुनाहों और मा'सियतों में मुब्तला हो कर। **122 :** उस के जो कुफ़्र से बाज़ आए। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन में से चन्द आदमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने हुज़ूर से अ़र्ज़ किया कि आप का दीन तो बेशक ह़क़ और सच्चा है लेकिन हम ने बड़े बड़े गुनाह किये हैं बहुत सी मा'सियतों में मुब्तला रहे हैं क्या किसी त़रह

www.dawateislami.net

اَنِیْبُوْۤا اِلٰى رَبِّكُمْ وَ اَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا

अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ[123] और उस के हुज़ूर गरदन रखो[124] क़ब्ल इस के कि तुम पर अ़ज़ाब आए फिर तुम्हारी

تُنْصَرُوْنَ ۝٥٤ وَ اتَّبِعُوْۤا اَحْسَنَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ

मदद न हो और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब से तुम्हारी त़रफ़ उतारी गई[125] क़ब्ल इस के

اَنْ یَّاْتِیَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٥٥ۙ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ

कि अ़ज़ाब तुम पर अचानक आ जाए और तुम्हें ख़बर न हो[126] कि कहीं कोई जान येह न कहे

یّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِیْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَ اِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِیْنَ ۝٥٦ۙ

कि हाए अफ़्सोस उन तक़्सीरों पर जो मैं ने अल्लाह के बारे में कीं[127] और बेशक मैं हंसी बनाया करता था[128]

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِیْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ۝٥٧ۙ اَوْ تَقُوْلَ حِیْنَ

या कहे अगर अल्लाह मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता या कहे जब

تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِیْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِیْنَ ۝٥٨ بَلٰى قَدْ

अ़ज़ाब देखे किसी त़रह मुझे वापसी मिले[129] कि मैं नेकियां करूं[130] हां क्यूं नहीं बेशक

جَآءَتْكَ اٰیٰتِیْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ اسْتَكْبَرْتَ وَ كُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝٥٩ وَ

तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तू ने उन्हें झुटलाया और तकब्बुर किया और तू काफ़िर था[131] और

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ تَرَى الَّذِیْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ

क़ियामत के दिन तुम देखोगे उन्हें जिन्हों ने अल्लाह पर झूट बांधा[132] कि उन के मुंह काले हैं

اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِیْنَ ۝٦٠ وَ یُنَجِّی اللّٰهُ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا

क्या मग़रूर का ठिकाना जहन्नम में नहीं[133] और अल्लाह बचाएगा परहेज़ गारों को

हमारे वोह गुनाह मुआ़फ़ हो सकते हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 123 : ताइब हो कर। 124 : और इख़्लास के साथ त़ाअ़त बजा लाओ। 125 : वोह अल्लाह की किताब क़ुरआने मजीद है। 126 : तुम ग़फ़्लत में पड़े रहो। इस लिये चाहिये कि पहले से होशियार रहो। 127 : कि उस की इत़ाअ़त बजा न लाया और उस के ह़क़ को न पहचाना और उस की रिज़ाजूई की फ़िक्र न की। 128 : अल्लाह तआ़ला के दीन की और उस की किताब की। 129 : और दोबारा दुन्या में जाने का मौक़अ़ दिया जाए 130 : इन बात़िल उ़ज़्रों का जवाब अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से वोह है जो अगली आयत में इर्शाद होता है। 131 : या'नी तेरे पास क़ुरआने पाक पहुंचा और ह़क़ व बात़िल की राहें वाज़ेह़ कर दी गईं और तुझे ह़क़ व हिदायत इख़्तियार करने की क़ुदरत दी गई, बा वुजूद इस के तू ने ह़क़ को छोड़ा और उस को क़बूल करने से तकब्बुर किया गुमराही इख़्तियार की, जो हुक्म दिया गया उस की ज़िद व मुख़ालफ़त की, तो अब तेरा येह कहना ग़लत़ है कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझे राह दिखाता तो मैं डर वालों में होता और तेरे तमाम उ़ज़्र झूटे हैं। 132 : और शाने इलाही में ऐसी बात कही जो उस के लाइक़ नहीं, उस के लिये शरीक तज्वीज़ किये, औलाद बताई, उस की सिफ़ात का इन्कार किया, इस का नतीजा येह है 133 : जो बराहे तकब्बुर ईमान न लाए।

بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ

उन की नजात की जगह[134] न उन्हें अ़ज़ाब छूए और न उन्हें ग़म हो **अल्लाह** हर चीज़ का पैदा करने

شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ

वाला है और वोह हर चीज़ का मुख़्तार है उसी के लिये हैं आस्मानों और

الْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع قُلْ ع ٦ ١١ ٣

ज़मीन की कुन्जियां[135] और जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतों का इन्कार किया वोही नुक़्सान में हैं तुम फ़रमाओ[136]

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَ

तो क्या **अल्लाह** के सिवा दूसरे के पूजने को मुझ से कहते हो ऐ जाहिलो[137] और बेशक वह्‌य की गई तुम्हारी त़रफ़ और

اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ

तुम से अगलों की त़रफ़ कि ऐ सुनने वाले अगर तू ने **अल्लाह** का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा और ज़रूर तू

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا

हार में रहेगा बल्कि **अल्लाह** ही की बन्दगी कर और शुक्र वालों से हो[138] और उन्हों ने **अल्लाह** की क़द्र

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖۗ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

न की जैसा कि उस का ह़क़ था[139] और वोह क़ियामत के दिन सब ज़मीनों को समेट देगा और उस की क़ुदरत से

مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ

सब आस्मान लपेट दिये जाएंगे[140] और उन के शिर्क से पाक और बरतर है और सूर फूंका जाएगा

134 : उन्हें जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा। **135 :** या'नी ख़ज़ाइने रह़मत व रिज़्क़ व बारिश वग़ैरा की कुन्जियां उसी के पास हैं, वोही इन का मालिक है। येह भी कहा गया है कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से इस आयत की तफ़्सीर दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि मक़ालीदे समावातो अर्द़ (आस्मान व ज़मीन की कुन्जियां) येह हैं : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَهُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ" मुराद येह है कि इन कलिमात में **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद व तम्जीद है, येह आस्मान व ज़मीन की भलाइयों की कुन्जियां हैं जिस मोमिन ने येह कलिमे पढ़े दारैन की बेहतरी पाएगा। **136 :** ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! इन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से जो आप को अपने दीन या'नी बुत परस्ती की त़रफ़ बुलाते हैं। **137 :** जाहिल इस वासित़े फ़रमाया कि उन्हें इतना भी मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और कोई मुस्तह़िक़्क़े इबादत नहीं बा वुजूदे कि इस पर क़त़ई दलीलें क़ाइम हैं। **138 :** जो ने'मतें **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ को अ़त़ा फ़रमाईं उस की त़ाअ़त बजा ला कर उन की शुक्र गुज़ारी कर। **139 :** जभी तो शिर्क में मुब्तला हुए अगर अ़ज़्मते इलाही से वाक़िफ़ होते और उस का मर्तबा पहचानते तो ऐसा क्यूं करते। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मतो जलाल का बयान है। **140 :** ह़दीसे बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रोजे़ क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला आस्मानों को लपेट कर अपने दस्ते क़ुदरत में लेगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह, कहां हैं जब्बार, कहां हैं मुतकब्बिर, मुल्क व ह़ुकूमत के दा'वेदार, फिर ज़मीनों को लपेट कर अपने दूसरे दस्ते मुबारक में लेगा और येही फ़रमाएगा, फिर फ़रमाएगा : मैं हूं बादशाह कहां हैं ज़मीन के बादशाह।

www.dawateislami.net

فَصَعِقَ مَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنۡ فِی الۡاَرۡضِ اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ

तो बेहोश हो जाएंगे[141] जितने आस्मानों में हैं और जितने ज़मीन में मगर जिसे **अल्लाह** चाहे[142] फिर

نُفِخَ فِیۡهِ اُخۡرٰی فَاِذَا هُمۡ قِیَامٌ یَّنۡظُرُوۡنَ ﴿۶۸﴾ وَ اَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ

वोह दोबारा फूंका जाएगा[143] जभी वोह देखते हुए खड़े हो जाएंगे[144] और ज़मीन जगमगा उठेगी[145]

بِنُوۡرِ رَبِّهَا وَ وُضِعَ الۡکِتٰبُ وَ جِایۡٓءَ بِالنَّبِیّٖنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ قُضِیَ

अपने रब के नूर से[146] और रखी जाएगी किताब[147] और लाए जाएंगे अम्बिया और येह नबी और इस की उम्मत कि उन पर गवाह होंगे[148] और लोगों में

بَیۡنَهُمۡ بِالۡحَقِّ وَ هُمۡ لَا یُظۡلَمُوۡنَ ﴿۶۹﴾ وَ وُفِّیَتۡ کُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَ

सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा और हर जान को उस का किया भरपूर दिया जाएगा और

٧ ع ٧ ٢ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَا یَفۡعَلُوۡنَ ﴿۷۰﴾ وَ سِیۡقَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اِلٰی جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ

उसे ख़ूब मा'लूम है जो वोह करते थे[149] और काफ़िर जहन्नम की त़रफ़ हांके जाएंगे[150] गुरोह गुरोह[151]

حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوۡهَا فُتِحَتۡ اَبۡوَابُهَا وَ قَالَ لَهُمۡ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمۡ یَاۡتِکُمۡ

यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उस के दरवाज़े खोले जाएंगे[152] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे क्या तुम्हारे पास

141 : येह पहले नफ़्ख़े का बयान है, इस नफ़्ख़े से जो बेहोशी त़ारी होगी उस का येह असर होगा कि मलाएका और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे जिन पर मौत न आई होगी वोह इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ह़यात इनायत की वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसे कि अम्बिया व शुहदा उन पर इस नफ़्ख़े से बेहोशी की सी कैफ़िय्यत त़ारी होगी और जो लोग क़ब्रों में मरे पड़े हैं उन्हें इस नफ़्ख़े का शुऊर भी न होगा। (جمل وغیرہ) **142 :** इस इस्तिस्ना में कौन कौन दाख़िल है इस में मुफ़स्सिरीन के बहुत अक़्वाल हैं, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि नफ़्ख़ए सइक़ से तमाम आस्मान और ज़मीन वाले मर जाएंगे सिवाए जिब्रील व मीकाईल व इसराफ़ील व मलकुल मौत के, फिर **अल्लाह** तआ़ला दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान जो चालीस बरस की मुद्दत है उस में इन फ़िरिश्तों को भी मौत देगा। **दूसरा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना शुहदा हैं जिन के लिये कुरआने मजीद में "بَلۡ اَحۡیَآءٌ" आया है। ह़दीस शरीफ़ में भी है कि वोह शुहदा हैं जो तलवारें ह़माइल किये गिर्दे अ़र्श ह़ाज़िर होंगे। **तीसरा** क़ौल ह़ज़रते जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि मुस्तस्ना ह़ज़रते मूसा علیہ السلام हैं, चूं कि आप तूर पर बेहोश हो चुके हैं इस लिये इस नफ़्ख़े से आप बेहोश न होंगे, बल्कि आप मुतयक़्क़िज़ (बेदार) व होशियार रहेंगे। **चौथा** क़ौल येह है कि मुस्तस्ना जन्नत की हूरें और अ़र्श व कुरसी के रहने वाले हैं। ज़ुह़ाक का क़ौल है कि मुस्तस्ना रिज़वान और हूरें और वोह फ़िरिश्ते जो जहन्नम पर मामूर हैं वोह और जहन्नम के सांप बिच्छू हैं। (تفسیر کبیر و جمل) **143 :** येह नफ़्ख़ए सानिया है जिस से मुर्दे ज़िन्दा किये जाएंगे। **144 :** अपनी क़ब्रों से और देखते हुए खड़े होने से या तो येह मुराद है कि वोह ह़ैरत में आ कर मब्हूत की त़रह़ हर त़रफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे या येह मा'ना हैं कि वोह येह देखते होंगे कि अब उन्हें क्या मुआ़मला पेश आएगा और मोमिनीन की क़ब्रों पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से सुवारियां ह़ाज़िर की जाएंगी जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया है : "یَوۡمَ نَحۡشُرُ الۡمُتَّقِیۡنَ اِلَی الرَّحۡمٰنِ وَفۡدًا" **145 :** बहुत तेज़ रोशनी से यहां तक कि सुर्ख़ी की झलक नुमूदार होगी, येह ज़मीन दुन्या की ज़मीन न होगी बल्कि नई ही ज़मीन होगी जो **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत की मह़फ़िल के लिये पैदा फ़रमाएगा। **146 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि येह चांद सूरज का नूर न होगा बल्कि येह और ही नूर होगा जिस को **अल्लाह** तआ़ला पैदा फ़रमाएगा इस से ज़मीन रोशन हो जाएगी। (جمل) **147 :** या'नी आ'माल की किताब, ह़िसाब के लिये इस से मुराद या तो लौह़े मह़फ़ूज़ है जिस में दुन्या के जमीअ़ अह़वाल क़ियामत तक शर्ह़ व बस्त़ के साथ सब्त हैं या हर शख़्स का आ'माल नामा जो उस के हाथ में होगा। **148 :** जो रसूलों की तब्लीग़ की गवाही देंगे। **149 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं न उस को शाहिद व कातिब की ह़ाजत, येह सब ह़ुज्जत तमाम करने के लिये होंगे। (جمل) **150 :** सख़्ती के साथ क़ैदियों की त़रह़। **151 :** हर हर जमाअ़त और उम्मत अ़लाह़दा अ़लाह़दा। **152 :** या'नी जहन्नम के सातों दरवाज़े खोले जाएंगे जो पहले से बन्द थे।

www.dawateislami.net

رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَ يُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
तुम्हीं में से वोह रसूल न आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन के मिलने से डराते

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٧١ قِيْلَ
थे कहेंगे क्यूं नहीं[153] मगर अ़ज़ाब का क़ौल काफ़िरों पर ठीक उतरा[154] फ़रमाया जाएगा

ادْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٢
दाखि़ल हो जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना मुतकब्बिरों का

وَ سِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْهَا وَ
और जो अपने रब से डरते थे उन की सुवारियां[155] गुरौह गुरौह जन्नत की त़रफ़ चलाई जाएंगी यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे और

فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا
उस के दरवाज़े खुले होंगे[156] और उस के दारोग़ा उन से कहेंगे सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ

خٰلِدِيْنَ ۝٧٣ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَ اَوْرَثَنَا
हमेशा रहने और वोह कहेंगे सब खूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें इस ज़मीन का

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝٧٤ وَ
वारिस किया कि हम जन्नत में रहें जहां चाहें तो क्या ही अच्छा सवाब कामियों का[157] और

تَرَى الْمَلٰٓىِٕكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ
तुम फ़िरिश्तों को देखोगे अ़र्श के आस पास ह़ल्क़ा किये अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते

وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٥ ع
और लोगों में सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[158] और कहा जाएगा कि सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब[159]

153 : बेशक अम्बिया तशरीफ़ भी लाए और उन्हों ने अल्लाह तआ़ला के अह़काम भी सुनाए और इस दिन से भी डराया। 154 : कि हम पर हमारी बद नसीबी ग़ालिब हुई और हम ने गुमराही इख़्तियार की और ह़स्बे इर्शादे इलाही जहन्नम में भरे गए। 155 : इ़ज़्ज़तो एह़तिराम और लुत़्फ़ो करम के साथ 156 : उन की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के लिये और जन्नत के दरवाज़े आठ हैं। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि दरवाज़ए जन्नत के क़रीब एक दरख़्त है उस के नीचे से दो चश्मे निकलते हैं, मोमिन वहां पहुंच कर एक चश्मे में ग़ुस्ल करेगा इस से उस का जिस्म पाको साफ़ हो जाएगा और दूसरे चश्मे का पानी पियेगा इस से उस का बात़िन पाकीज़ा हो जाएगा, फिर फ़िरिश्ते दरवाज़ए जन्नत पर इस्तिक़्बाल करेंगे। 157 : या'नी अल्लाह और रसूल की इत़ाअ़त करने वालों का। 158 : कि मोमिनों को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में दाखि़ल किया जाएगा। 159 : अहले जन्नत जन्नत में दाखि़ल हो कर अदाए शुक्र के लिये ह़म्दे इलाही अ़र्ज़ करेंगे।

اٰیاتُها ٨٥ ﴿٤٠﴾ سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ ٦٠ رکوعاتها ٩

सूरए मुअमिन मक्किय्या है, इस में पचासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ

येह किताब उतारना है अल्लाह की त़रफ़ से जो इ़ज़्ज़त वाला इ़ल्म वाला गुनाह बख़्शने वाला और

قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ

तौबा क़बूल करने वाला[2] सख़्त अ़ज़ाब करने वाला[3] बड़े इन्आ़म वाला[4] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी की त़रफ़

الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ

फिरना है[5] अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर[6] तो ऐ सुनने वाले तुझे धोका न दे

تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ الْاَحْزَابُ مِنْۢ

इन का शहरों में अहले गहले फिरना[7] इन से पहले नूह़ की क़ौम और उन के बा'द के गुरौहों[8]

بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ

ने झुटलाया और हर उम्मत ने येह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें[9] और बात़िल के साथ झगड़े

لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ

कि उस से ह़क़ को टाल दें[10] तो मैं ने उन्हें पकड़ा फिर कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[11] और यूंही

1 : "सूरए मुअमिन" इस का नाम सूरए ग़ाफ़िर भी है, येह सूरत मक्किय्या है, सिवाए दो आयतों के जो "اَلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में नव रुकूअ़ और पचासी आयतें और एक हज़ार एक सो निनानवे कलिमे और चार हज़ार नव सो साठ ह़ुरूफ़ हैं। 2 : ईमानदारों की। 3 : काफ़िरों पर। 4 : आ़रिफ़ों (अहले मा'रिफ़त) पर। 5 : बन्दों को आख़िरत में। 6 : या'नी कु़रआने पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मोमिन का काम नहीं। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कु़रआन में झगड़ा करना कुफ़्र है। झगड़े और जिदाल से मुराद आयाते इलाहिय्यह में त़ा'न करना और तक्ज़ीब व इन्कार के साथ पेश आना है और ह़ल्ले मुश्किलात व कश्फ़े मो'ज़िलात के लिये इ़ल्मी व उसूली बह़सें जिदाल नहीं बल्कि आ'ज़म त़ाआ़त में से हैं। कुफ़्फ़ार का झगड़ा करना आयात में येह था कि वोह कभी कु़रआने पाक को सेह़्र कहते कभी शे'र कभी कहानत कभी दास्तान। 7 : या'नी काफ़िरों का सिह़ह़तो सलामती के साथ मुल्क मुल्क तिजारतें करते फिरना और नफ़्अ़ पाना तुम्हारे लिये बाइसे तरद्दुद न हो कि येह कुफ़्र जैसा अ़ज़ीम जुर्म करने के बा'द भी अ़ज़ाब से अम्न में रहे क्यूं कि इन का अन्जामे कार ख़्वारी और अ़ज़ाब है, पहली उम्मतों में भी ऐसे ह़ालात गुज़र चुके हैं। 8 : आ़द व समूद व क़ौमे लूत़ वग़ैरा 9 : और उन्हें क़त्ल और हलाक कर दें। 10 : जिस को अम्बिया लाए हैं। 11 : क्या उन में का कोई इस से बच सका।

حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۟ۘ (٦) وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم / وقف لازم

तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वोह दोज़ख़ी हैं

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ

वोह जो अ़र्श उठाते हैं12 और जो उस के गिर्द हैं13 अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते14 और

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

उस पर ईमान लाते15 और मुसल्मानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं16 ऐ रब हमारे तेरे रह़मत व इ़ल्म में

رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ

हर चीज़ की समाई है17 तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले18 और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से

الْجَحِيْمِ (٧) رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ

बचा ले ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों

مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ (٨)

उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में19 बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

وَ قِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَ مَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ

और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तू ने उस पर रह़्म फ़रमाया और येही

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (٩) ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ع

बड़ी काम्याबी है बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया उन को निदा की जाएगी20 कि ज़रूर तुम से **अल्लाह** की बेज़ारी इस से बहुत ज़ियादा है

مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ (١٠) قَالُوْا رَبَّنَاۤ

जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जब कि तुम21 ईमान की त़रफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते कहेंगे ऐ हमारे रब

12 : या'नी मलाएका ह़ामिलीने अ़र्श जो अस्ह़ाबे क़ुर्ब और मलाएका में अशरफ़ व अफ़्ज़ल हैं। 13 : या'नी जो मलाएका कि अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले हैं उन्हें करूबी कहते हैं और येह मलाएका में साह़िबे सियादत (अ़ज़्मतो शरफ़ वाले) हैं। 14 : और "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" कहते। 15 : और उस की वह़दानिय्यत की तस्दीक़ करते। शहर बिन ह़ौशब ने कहा कि ह़ामिलीने अ़र्श आठ हैं उन में से चार की तस्बीह़ येह है : "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى عَفْوِكَ بَعْدَ قُدْرَتِكَ" । और चार की येह : "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى حِلْمِكَ بَعْدَ عِلْمِكَ" 16 : और बारगाहे इलाही में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते हैं : 17 : या'नी तेरी रह़मत और तेरा इ़ल्म हर चीज़ को वसीअ़ है। **फ़ाएदा :** दुआ़ से पहले अ़र्ज़े सना से मा'लूम हुवा कि आदाबे दुआ़ में से येह है कि पहले **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना की जाए फिर मुराद अ़र्ज़ की जाए। 18 : या'नी दीने इस्लाम पर। 19 : उन्हें भी दाख़िल कर। 20 : रोज़े क़ियामत, जब कि वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन की बदियां उन पर पेश की जाएंगी और वोह अ़ज़ाब देखेंगे तो फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : 21 : दुन्या में।

اَمَتَّنَا اثْنَتَیْنِ وَ اَحْیَیْتَنَا اثْنَتَیْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तू ने हमें दो बार मुर्दा किया और दो बार ज़िन्दा किया[22] अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए तो आग से

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِیْلٍ ﴿۱۱﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِیَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَ

निकलने की भी कोई राह है[23] येह इस पर हुवा कि जब एक **अल्लाह** पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते[24] और

اِنْ یُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِیِّ الْكَبِیْرِ ﴿۱۲﴾ هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمْ

उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते[25] तो हुक्म **अल्लाह** के लिये है जो सब से बुलन्द बड़ा वोही है कि तुम्हें अपनी निशानियां

اٰیٰتِهٖ وَ یُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَ مَا یَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ یُّنِیْبُ ﴿۱۳﴾

दिखाता है[26] और तुम्हारे लिये आस्मान से रोज़ी उतारता है[27] और नसीहत नहीं मानता[28] मगर जो रुजूअ़ लाए[29]

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ رَفِیْعُ

तो **अल्लाह** की बन्दगी करो निरे उस के बन्दे हो कर[30] पड़े बुरा मानें काफ़िर बुलन्द दरजे

الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ یُلْقِی الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ

देने वाला[31] अ़र्श का मालिक ईमान की जान (या'नी) वह्य डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे[32]

لِیُنْذِرَ یَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ یَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا یَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ

कि वोह मिलने के दिन से डराए[33] जिस दिन वोह बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएंगे[34] **अल्लाह** पर उन का कुछ ह़ाल छुपा

شَیْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلْیَوْمَ تُجْزٰى

न होगा[35] आज किस की बादशाही है[36] एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब की[37] आज हर जान

22 : क्यूं कि पहले नुत्फ़ए बेजान थे, इस मौत के बा'द उन्हें जान दे कर ज़िन्दा किया फिर उ़म्र पूरी होने पर मौत दी फिर बअ़्स के लिये ज़िन्दा किया। **23 :** इस का जवाब येह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने की कोई सबील नहीं और तुम जिस ह़ाल में हो जिस अ़ज़ाब में मुब्तला हो इस से रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते। **24 :** या'नी इस अ़ज़ाब और इस के दवाम व ख़ुलूद (हमेशा रहने) का सबब तुम्हारा येह फ़े'ल है कि जब तौह़ीदे इलाही का ए'लान होता और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा जाता तो तुम उस का इन्कार करते और कुफ़्र इख़्तियार करते। **25 :** और उस शिर्क की तस्दीक़ करते। **26 :** या'नी अपनी मस्नूआ़त के अ़जाइब जो उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं मिस्ल हवा और बादल और बिजली वग़ैरा के। **27 :** मींह बरसा कर। **28 :** और इन निशानियों से पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाला) नहीं होता। **29 :** तमाम उमूर में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ और शिर्क से ताइब हो। **30 :** शिर्क से कनारा कश हो कर। **31 :** अम्बिया व औलिया व उ़लमा को जन्नत में। **32 :** या'नी अपने बन्दों में से जिस को चाहता है मन्सबे नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है और जिस को नबी बनाता है उस का काम होता है **33 :** या'नी ख़ल्क़े ख़ुदा को रोज़े क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन अहले आस्मान और अहले ज़मीन और अव्वलीनो आख़िरीन मिलेंगे और रूहें जिस्मों से और हर अ़मल करने वाला अपने अ़मल से मिलेगा। **34 :** क़ब्रों से निकल कर और कोई इमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पाएंगे। **35 :** न आ'माल न अक़्वाल न दूसरे अह़वाल और **अल्लाह** तआ़ला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन येह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिये कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिस के ज़रीए से वोह अपने ख़याल में भी अपने ह़ाल को छुपा सकें और ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा **36 :** अब कोई न होगा कि जवाब दे ख़ुद ही जवाब में

www.dawateislami.net

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝١٧

अपने किये का बदला पाएगी[38] आज किसी पर ज़ियादती नहीं बेशक **अल्लाह** जल्द हिसाब लेने वाला है

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا

और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से[39] जब दिल गलों के पास आ जाएंगे[40] ग़म में भरे और

لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ ۝١٨ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا

ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए[41] **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह[42] और जो कुछ

تُخْفِي الصُّدُوْرُ ۝١٩ وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ

सीनों में छुपा है[43] और **अल्लाह** सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उस के सिवा जिन

دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝٢٠ ع اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا ع ١١ / ٢

को[44] पूजते हैं वोह कुछ फ़ैसला नहीं करते[45] बेशक **अल्लाह** ही सुनता देखता है[46] तो क्या उन्हों ने

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अन्जाम हुवा उन से अगलों का[47]

كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ

उन की कुव्वत और ज़मीन में जो निशानियां छोड़ गए[48] उन से ज़ाइद तो **अल्लाह** ने उन्हें

بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝٢١ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ

उन के गुनाहों पर पकड़ा और **अल्लाह** से उन का कोई बचाने वाला न हुवा[49] येह इस लिये कि उन

फ़रमाएगा कि **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन हाज़िर होंगे तो एक निदा करने वाला निदा करेगा, आज किस की बादशाही है? तमाम ख़ल्क़ जवाब देगी : ''لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ'' **अल्लाह** वाहिदे क़हहार की, जैसा कि आगे इर्शाद होता है : **37 :** मोमिन तो येह जवाब बहुत लज़्ज़त के साथ अ़र्ज़ करेंगे क्यूं कि वोह दुन्या में येही ए'तिक़ाद रखते थे येही कहते थे और इसी की बदौलत उन्हें मर्तबे मिले और कुफ़्फ़ार ज़िल्लतो नदामत के साथ इस का इक़्रार करेंगे और दुन्या में अपने मुन्किर रहने पर शरमिन्दा होंगे। **38 :** नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का। **39 :** इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **40 :** शिद्दते ख़ौफ़ से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें। **41 :** या'नी काफ़िर शफ़ाअ़त से महरूम होंगे। **42 :** या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और मम्नूआ़त पर नज़र डालना। **43 :** या'नी दिलों के राज़। सब चीज़ें **अल्लाह** तआ़ला के इल्म में हैं। **44 :** या'नी जिन बुतों को येह मुश्रिकीन **45 :** क्यूं कि न वोह इल्म रखते हैं न क़ुदरत तो उन की इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही खुला बातिल है। **46 :** अपनी मख़्लूक़ के अक़्वाल व अफ़्आ़ल और जुम्ला अह़वाल को। **47 :** जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की थी। **48 :** क़ल्ए और महल और नहरें और हौज़ और बड़ी बड़ी इमारतें। **49 :** कि अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता, आ़क़िल का काम है कि दूसरे के हाल से इब्रत हासिल करे। इस अ़ह्द (ज़माने) के काफ़िर येह हालात देख कर क्यूं इब्रत हासिल नहीं करते, क्यूं नहीं सोचते कि पिछली क़ौमें इन से ज़ियादा क़वी व तुवाना और साहिबे सरवत व इक़्तिदार होने के बा वुजूद इस इब्रत नाक तरीक़े पर तबाह कर दी गईं, येह क्यूं हुवा।

تَاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ

के पास उन के रसूल रोशन निशानियां ले कर आए[50] फिर वोह कुफ़्र करते तो **अल्लाह** ने उन्हें पकड़ा बेशक **अल्लाह** ज़बर दस्त सख़्त अ़ज़ाब

الْعِقَابِ ۝٢٢ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٣ اِلٰى

वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ भेजा

فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ قَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٢٤ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

फ़िरऔ़न और हामान और क़ारून की त़रफ़ तो वोह बोले जादूगर है बड़ा झूटा[51] फिर जब वोह उन पर

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْۤا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَ اسْتَحْيُوْا

हमारे पास से ह़क़ लाया[52] बोले जो इस पर ईमान लाए उन के बेटे क़त्ल करो और औ़रतें

نِسَآءَهُمْ ؕ وَ مَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝٢٥ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْۤ

ज़िन्दा रखो[53] और काफ़िरों का दाव नहीं मगर भटकता फिरता[54] और फ़िरऔ़न बोला[55] मुझे छोड़ो

اَقْتُلْ مُوْسٰى وَ لْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ

मैं मूसा को क़त्ल करूं[56] और वोह अपने रब को पुकारे[57] मैं डरता हूं कहीं वोह तुम्हारा दीन बदल दे[58] या

يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝٢٦ وَ قَالَ مُوْسٰۤى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَ رَبِّكُمْ

ज़मीन में फ़साद चमकाए[59] और मूसा ने[60] कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं

50 : मो'जिज़ात दिखाते। **51 :** और उन्हों ने हमारी निशानियों और बुरहानों को जादू बताया। **52 :** या'नी नबी हो कर पयामे इलाही लाए तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी **53 :** ताकि लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से बाज़ आएं। **54 :** कुछ भी कारआमद नहीं बिल्कुल निकम्मा और बेकार। पहले भी फ़िरऔ़नियों ने ब हुक्मे फ़िरऔ़न हज़ारहा क़त्ल किये मगर क़ज़ाए इलाही हो कर रही और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को परवर्दगारे आ़लम ने फ़िरऔ़न के घरबार में पाला, इस से ख़िदमतें कराईं, जैसा वोह दाउं फ़िरऔ़नियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिये फिर दोबारा क़त्ल शुरूअ़ करना बेकार है। ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیْمَات के दीन का रवाज **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर है इसे कौन रोक सकता है। **55 :** अपने गुरौह से **56 :** फ़िरऔ़न जब कभी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल करने का इरादा करता तो उस की क़ौम के लोग उस को इस से मन्अ़ करते और कहते कि येह वोह शख़्स नहीं है जिस का तुझे अन्देशा है, येह तो एक मा'मूली जादूगर है इस पर तो हम अपने जादू से ग़ालिब आ जाएंगे और अगर इस को क़त्ल कर दिया तो आ़म लोग शुबे में पड़ जाएंगे कि वोह शख़्स सच्चा था ह़क़ पर था, तू दलील से उस का मुक़ाबला करने में आ़जिज़ हुवा जवाब न दे सका तो तू ने उसे क़त्ल कर दिया लेकिन ह़क़ीक़त में फ़िरऔ़न का येह कहना कि मुझे छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूं ख़ालिस धम्की ही थी, उस को ख़ुद आप के नबिय्ये बरह़क़ होने का यक़ीन था और वोह जानता था कि जो मो'जिज़ात आप लाए हैं वोह आयाते इलाहिय्यह हैं सेह़्र नहीं, लेकिन येह समझता था कि अगर आप के क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उस को हलाक करने में जल्दी फ़रमाएंगे, इस से येह बेहतर है कि तूल बह़्स में ज़ियादा वक़्त गुज़ार दिया जाए, अगर फ़िरऔ़न अपने दिल में आप को नबिय्ये बरह़क़ न समझता और येह न जानता कि रब्बानी ताईदें जो आप के साथ हैं उन का मुक़ाबला ना मुम्किन है तो आप के क़त्ल में हरगिज़ तअम्मुल न करता क्यूं कि वोह बड़ा ख़ूंख़ार सफ़्फ़ाक ज़ालिम बे दर्द था, अदना सी बात में हज़ारहा ख़ून कर डालता था। **57 :** जिस का अपने आप को रसूल बताता है ताकि उस का रब उस को हम से बचाए। फ़िरऔ़न का येह मक़ूला इस पर शाहिद है कि उस के दिल में आप का और आप की दुआ़ओं का ख़ौफ़ था, वोह अपने दिल में आप से डरता था, ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त बनी रखने के लिये येह ज़ाहिर करता था कि वोह क़ौम के मन्अ़ करने के बाइ़स ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल नहीं करता। **58 :** और तुम से फ़िरऔ़न परस्ती और बुत परस्ती छुड़ा दे **59 :** जिदाल व क़िताल कर के। **60 :** फ़िरऔ़न की धम्कियां सुन कर।

www.dawateislami.net

مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ع ٤ ٨

हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता[61] और बोला फ़िरऔन वालों

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ

में से एक मर्द मुसल्मान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है मेरा रब **अल्लाह** है

وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ

और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से लाए[62] और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत् कहते हैं तो उन की ग़लत् गोई का वबाल उन पर

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِیْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِیْ

और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं[63] बेशक **अल्लाह** राह नहीं देता

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِی

उसे जो हद से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो[64] ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा

الْاَرْضِ ؗ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَاۤ

रखते हो[65] तो **अल्लाह** के अज़ाब से हमें कौन बचाएगा अगर हम पर आए फ़िरऔन बोला मैं

اُرِيْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰی وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

तो तुम्हें वोही सुझाता हूं जो मेरी सूझ है[66] और मैं तुम्हें वोही बताता हूं जो भलाई की राह है और वोह

الَّذِیْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ

ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मुझे तुम पर[67] अगले गुरोहों के दिन का सा ख़ौफ़ है[68] जैसा

61 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔन की सख़्तियों के जवाब में अपनी तरफ़ से कोई कलिमा तअ़ल्ली का न फ़रमाया बल्कि **अल्लाह** तआ़ला से पनाह चाही और उस पर भरोसा किया। येही ख़ुदा शनासों का तरीक़ा है और इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर एक बला से महफ़ूज़ रखा, इन मुबारक जुम्लों में कैसी नफ़ीस हिदायतें हैं, येह फ़रमाना कि मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं और इस में हिदायत है रब एक ही है, येह भी हिदायत है कि जो उस की पनाह में आए उस पर भरोसा करे और वोह उस की मदद फ़रमाए कोई उस को ज़रर नहीं पहुंचा सकता, येह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करना शाने बन्दगी है और "तुम्हारे रब" फ़रमाने में येह भी हिदायत है कि अगर तुम उस पर भरोसा करो तो तुम्हें भी सआ़दत नसीब हो। 62 : जिन से उन का सिद्क़ ज़ाहिर हो गया या'नी नुबुव्वत साबित हो गई। 63 : मत़लब येह है कि दो हाल से ख़ाली नहीं या येह सच्चे होंगे या झूटे, अगर झूटे हों तो ऐसे मुआ़मले में झूट बोल कर इस के वबाल से बच ही नहीं सकते हलाक हो जाएंगे और अगर सच्चे हैं तो जिस अ़ज़ाब का तुम्हें वा'दा देते हैं उस में से बिलफ़े'ल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा, कुछ पहुंचना इस लिये कहा कि आप का वा'दए अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत दोनों को आ़म था। उस में से बिलफ़े'ल अ़ज़ाबे दुन्या ही पेश आना था। 64 : कि ख़ुदा पर झूट बांधे। 65 : या'नी मिस्र में। तो ऐसा काम न करो कि **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आए, अगर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आया 66 : या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर देना। 67 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने और इन के दरपै होने से 68 : जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की।

دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْؕ وَ مَا اللّٰهُ يُرِيْدُ

दस्तूर गुज़रा नूह की क़ौम और आद और समूद और उन के बा'द औरों का[69] और अल्लाह बन्दों पर

ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝٣١ وَ يٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝٣٢ يَوْمَ

ज़ुल्म नहीं चाहता[70] और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूं जिस दिन पुकार मचेगी[71] जिस दिन

تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍۚ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

पीठ दे कर भागोगे[72] अल्लाह से[73] तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं और जिसे अल्लाह गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣ وَ لَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا

उस का कोई राह दिखाने वाला नहीं और बेशक इस से पहले[74] तुम्हारे पास यूसुफ़ रोशन निशानियां ले कर आए तो

زِلْتُمْ فِیْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ

तुम उन के लाए हुए से शक ही में रहे यहां तक कि जब उन्हों ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब अल्लाह

مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًاؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝٣٤

कोई रसूल न भेजेगा[75] अल्लाह यूंही गुमराह करता है उसे जो हद से बढ़ने वाला शक लाने वाला है[76]

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ

वोह जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं[77] बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो किस क़दर सख़्त बेज़ारी की बात है अल्लाह के

اللّٰهِ وَ عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْاؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ

नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक अल्लाह यूं ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे

69 : कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करते रहे और हर एक को अज़ाबे इलाही ने हलाक किया। 70 : बिग़ैर गुनाह के उन पर अज़ाब नहीं फ़रमाता और बिग़ैर इक़ामते हुज्जत के उन को हलाक नहीं करता। 71 : वोह क़ियामत का दिन होगा, क़ियामत के दिन को "يَوْمُ التَّنَاد" या'नी पुकार का दिन इस लिये कहा जाता है कि उस रोज़ तरह तरह की पुकारें मची होंगी, हर शख़्स अपने सर गुरौह के साथ और हर जमाअ़त अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी, जन्नती दोज़ख़ियों को और दोज़ख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे, सआदत व शक़ावत की निदाएं की जाएंगी कि फ़ुलां सईद हुवा अब कभी शक़ी न होगा और फ़ुलां शक़ी हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस वक़्त मौत ज़ब्ह की जाएगी उस वक़्त निदा की जाएगी कि ऐ अहले जन्नत ! अब दवाम (यहां हमेशा रहना) है मौत नहीं और ऐ अहले दोज़ख़ ! अब दवाम है मौत नहीं। 72 : मौक़िफ़े हिसाब (मैदाने महशर) से दोज़ख़ की तरफ़। 73 : या'नी उस के अ़ज़ाब से 74 : या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से क़ब्ल 75 : येह बे दलील बात तुम ने या'नी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद घड़ी ताकि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब करो और उन्हें झुटलाओ तो तुम कुफ़्र पर क़ाइम रहे, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत में शक करते रहे और बा'द वालों की नुबुव्वत के इन्कार के लिये तुम ने येह मन्सूबा बना लिया कि अब अल्लाह तआ़ला कोई रसूल ही न भेजेगा। 76 : उन चीज़ों में जिन पर रोशन दलीलें शाहिद हैं। 77 : उन्हें झुटला कर।

جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْۤ اَبْلُغُ

दिल पर[78] और फ़िरऔन बोला[79] ऐ हामान मेरे लिये ऊंचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊं

الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ

रास्तों तक काहे के रास्ते आस्मानों के तो मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूं और बेशक मेरे गुमान में तो वोह

كَاذِبًا ؕ وَ كَذٰلِكَ زُیِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَ صُدَّ عَنِ السَّبِیْلِ ؕ وَ مَا

झूटा है[80] और यूंही फ़िरऔन की निगाह में उस का बुरा काम[81] भला कर दिखाया गया[82] और वोह रास्ते से रोका गया और

كَیْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِیْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ وَ قَالَ الَّذِیْۤ اٰمَنَ یٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ

फ़िरऔन का दाव[83] हलाक होने ही को था और वोह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो

اَهْدِكُمْ سَبِیْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ یٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا مَتَاعٌ ؗ وَّ

मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊं ऐ मेरी क़ौम येह दुन्या का जीना तो कुछ बरत्ना ही है[84] और

اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِیَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَیِّئَةً فَلَا یُجْزٰۤى اِلَّا

बेशक वोह पिछला हमेशा रहने का घर है[85] जो बुरा काम करे तो उसे बदला न मिलेगा मगर

مِثْلَهَا ۚ وَ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औरत और हो मुसल्मान[86] तो वोह

یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ یُرْزَقُوْنَ فِیْهَا بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَ یٰقَوْمِ مَا لِیْۤ

जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पाएंगे[87] और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुवा

اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَ تَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ ؕ تَدْعُوْنَنِیْ لِاَكْفُرَ

मैं तुम्हें बुलाता हूं नजात की त़रफ़[88] और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख़ की त़रफ़[89] मुझे इस त़रफ़ बुलाते हो कि **अल्लाह** का

78 : कि उस में हिदायत क़बूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता। **79 :** बराहे जहल व फ़रेब अपने वज़ीर से। **80 :** या'नी मूसा मेरे सिवा और ख़ुदा बताने में और येह बात फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को फ़रेब देने के लिये कही क्यूं कि वोह जानता था कि मा'बूदे बरहक़ सिर्फ़ **अल्लाह** तआला है और फ़िरऔन अपने आप को फ़रेब कारी के लिये मा'बूद ठहराता है (इस वाक़िए का बयान सूरए क़सस में गुज़र चुका) **81 :** या'नी **अल्लाह** तआला के साथ शिर्क करना और उस के रसूल को झुटलाना। **82 :** या'नी शैतानों ने वस्वसे डाल कर उस की बुराइयां उस की नज़र में भली कर दिखाईं। **83 :** जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की आयात को बातिल करने के लिये उस ने इख़्तियार किया। **84 :** या'नी थोड़ी मुद्दत के लिये ना पाएदार नफ़्अ़ है जिस को बक़ा नहीं। **85 :** मुराद येह है कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी व जाविदानी और जाविदानी ही बेहतर। इस के बा'द नेक और बद आ'माल और उन के अन्जाम बताए। **86 :** क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत ईमान पर मौक़ूफ़ है। **87 :** येह **अल्लाह** का फ़ज़्ले अज़ीम है। **88 :** जन्नत की त़रफ़ ईमान व त़ाअ़त की तल्क़ीन कर के। **89 :** कुफ़्रो शिर्क की दा'वत दे कर।

بِاللّٰهِ وَ اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ٘ وَّ اَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِیْزِ

इन्कार करूं और ऐसे को उस का शरीक करूं जो मेरे इल्म में नहीं और मैं तुम्हें उस इ़ज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले की त़रफ़

الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَیْهِ لَیْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِی الدُّنْیَا وَ

बुलाता हूं आप ही साबित हुवा कि जिस की त़रफ़ मुझे बुलाते हो[90] उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुन्या में

لَا فِی الْاٰخِرَةِ وَ اَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَنَّ الْمُسْرِفِیْنَ هُمْ اَصْحٰبُ

न आख़िरत में[91] और येह हमारा फिरना अल्लाह की त़रफ़ है[92] और येह कि ह़द से गुज़रने वाले[93] ही

النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ١ؕ وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِ١ؕ اِنَّ

दोज़ख़ी हैं तो जल्द वोह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूं उसे याद करोगे[94] और मैं अपने काम अल्लाह को सोंपता हूं बेशक

اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ حَاقَ بِاٰلِ

अल्लाह बन्दों को देखता है[95] तो अल्लाह ने उसे बचा लिया उन के मक्र की बुराइयों से[96] और फ़िरऔ़न

فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ یُعْرَضُوْنَ عَلَیْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِیًّا١ۚ وَ

वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा[97] आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं[98] और

یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ١۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَ اِذْ

जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो और[99] जब

یَتَحَآجُّوْنَ فِی النَّارِ فَیَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِیْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا

वोह आग में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर उन से कहेंगे जो बड़े बनते थे हम

90 : या'नी बुत की त़रफ़ **91 :** क्यूं कि वोह जमादे बेजान है। **92 :** वोही हमें जज़ा देगा। **93 :** या'नी काफ़िर **94 :** या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त तुम मेरी नसीह़तें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न देगा, येह सुन कर उन लोगों ने उस मोमिन को धम्काया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरे पेश आएंगे, इस के जवाब में उस ने कहा **95 :** और उन के आ'माल व अह़वाल को जानता है, फिर वोह मोमिन उन से निकल कर पहाड़ की त़रफ़ चला गया और वहां नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया, फ़िरऔ़न ने हज़ार आदमी उस की जुस्तजू में भेजे अल्लाह तआ़ला ने दरिन्दे उस की ह़िफ़ाज़त पर मामूर कर दिये जो फ़िरऔ़नी उस की त़रफ़ आया दरिन्दों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उस ने फ़िरऔ़न से ह़ाल बयान किया फ़िरऔ़न ने उस को सूली दे दी ताकि येह ह़ाल मश्हूर न हो। **96 :** और उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ हो कर नजात पाई अगर्चे वोह फ़िरऔ़न की क़ौम का था। **97 :** दुन्या में तो येह अ़ज़ाब कि वोह फ़िरऔ़न के साथ ग़र्क़ हो गए और आख़िरत में दोज़ख़। **98 :** उस में जलाए जाते हैं। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : फ़िरऔ़नियों की रूहें सियाह परिन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मरतबा सुब्ह़ो शाम आग पर पेश की जाती हैं और उन से कहा जाता है कि येह आग तुम्हारा मक़ाम है। और क़ियामत तक उन के साथ येही मा'मूल रहेगा। **मस्अला :** इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत पर इस्तिद्लाल किया जाता है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर मरने वाले पर उस का मक़ाम सुब्ह़ो शाम पेश किया जाता है, जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का और उस से कहा जाता है कि येह तेरा ठिकाना है ता आंकि रोज़े क़ियामत अल्लाह तआ़ला तुझ को इस की त़रफ़ उठाए। **99 :** ज़िक्र फ़रमाइये ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर कुफ़्फ़ार के आपस में झगड़ने का ह़ाल कि।

www.dawateislami.net

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيْنَ
तुम्हारे ताबेअ़ थे[100] तो क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा घटा लोगे वोह तकब्बुर

اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَاۤ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ
वाले बोले[101] हम सब आग में हैं[102] बेशक **अल्लाह** बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका[103] और जो

الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
आग में हैं उस के दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ़ करो हम पर अ़ज़ाब का एक दिन हलका

الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوْۤا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ
कर दे[104] उन्हों ने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल निशानियां न लाते थे[105] बोले क्यूं नहीं[106]

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ ع اِنَّا لَنَنْصُرُ ع ١٣ ٥ ١٠
बोले तो तुम्हीं दुआ़ करो[107] और काफ़िरों की दुआ़ नहीं मगर भटकते फिरने को बेशक ज़रूर हम

رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ ۙ
अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की[108] दुन्या की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे[109]

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾
जिस दिन ज़ालिमों को उन के बहाने कुछ काम न देंगे[110] और उन के लिये ला'नत है और उन के लिये बुरा घर[111]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾ ۙ هُدًى
और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अ़ता फ़रमाई[112] और बनी इसराईल को किताब का वारिस किया[113] अ़क़्ल मन्दों

وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ
की हिदायत और नसीहत को तो ऐ महबूब तुम सब्र करो[114] बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है[115] और अपनों के गुनाहों की

100 : दुन्या में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने **101 :** या'नी काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे **102 :** हर एक अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार, हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता। **103 :** ईमानदारों को उस ने जन्नत में दाख़िल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में, जो होना था हो चुका। **104 :** या'नी दुन्या के एक दिन की मिक़्दार तक हमारे अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहे। **105 :** क्या उन्हों ने ज़ाहिर मो'जिज़ात पेश न किये थे या'नी अब तुम्हारे लिये जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **106 :** या'नी काफ़िर। अम्बिया के तशरीफ़ लाने और अपने कुफ़्र करने का इक़्रार करेंगे। **107 :** हम काफ़िर के हक़ में दुआ़ न करेंगे और तुम्हारा दुआ़ करना भी बेकार है। **108 :** उन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर और हुज्जते क़विय्या दे कर और उन के दुश्मनों से इन्तिक़ाम ले कर। **109 :** वोह क़ियामत का दिन है कि मलाएका रसूलों की तब्लीग़ और कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की शहादत देंगे। **110 :** और काफ़िरों का कोई उ़ज़्र क़बूल न किया जाएगा। **111 :** या'नी जहन्नम। **112 :** या'नी तौरैत व मो'जिज़ात। **113 :** या'नी तौरैत का या उन के अम्बिया पर नाज़िल शुदा तमाम किताबों का। **114 :** अपनी क़ौम की ईज़ा पर। **115 :** वोह आप की मदद फ़रमाएगा, आप के दीन को ग़ालिब करेगा, आप के दुश्मनों को हलाक करेगा। कल्बी ने कहा कि आयते सब्र आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गई।

www.dawateislami.net

لِذَنْۢبِكَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِیِّ وَ الْاِبْكَارِ ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ

मुआ़फ़ी चाहो[116] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए सुब्ह़ और शाम उस की पाकी बोलो[117] वोह जो

یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا

अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो[118] उन के दिलों में नहीं मगर एक

كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۵۶﴾

बड़ाई की हवस[119] जिसे न पहुंचेंगे[120] तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो[121] बेशक वोही सुनता देखता है

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी[122] लेकिन बहुत लोग

لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ مَا یَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَ الْبَصِیْرُ ۙ۬ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

नहीं जानते[123] और अन्धा और अंख्यारा बराबर नहीं[124] और न वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَ لَا الْمُسِیْٓءُ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ

काम किये और बदकार[125] कितना कम ध्यान करते हो बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है

لَّا رَیْبَ فِیْهَا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ

इस में कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते[126] और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो

اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ

मैं क़बूल करूंगा[127] बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न्क़रीब जहन्नम

116 : या'नी अपनी उम्मत के (مدارک) **117 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत पर मुदावमत रखो। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस से पांचों नमाज़ें मुराद हैं। **118 :** उन झगड़ा करने वालों से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं। **199 :** और उन का येही तकब्बुर उन के तक्ज़ीब व इन्कार और कुफ़्र के इख़्तियार करने का बाइ़स हुवा कि उन्हों ने येह गवारा न किया कि कोई उन से ऊंचा हो, इस लिये सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से अ़दावत की, ब ई ख़याले फ़ासिद कि अगर आप को नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हवस रखते हैं बड़े बनने की। **120 :** और बड़ाई मुयस्सर न आएगी बल्कि हु़ज़ूर की मुख़ालफ़त व इन्कार उन के ह़क़ में ज़िल्लत और रुस्वाई का सबब होगा। **121 :** ह़ासिदों के मक्र व कैद से। **122 :** येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के रद में नाज़िल हुई, उन पर हु़ज्जत क़ाइम की गई कि जब तुम आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर बा वुजूद इन की इस अ़ज़मत और बड़ाई के **अल्लाह** तआ़ला को क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा कर देना उस की क़ुदरत से क्यूं बई़द समझते हो। **123 :** बहुत लोगों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं और उन के इन्कारे बअ़्स का सबब उन की बे इ़ल्मी है कि वोह आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर क़ादिर होने से बअ़्स पर इस्तिद्लाल नहीं करते, तो वोह मिस्ल अन्धे के हैं और जो मख़्लूक़ात के वुजूद से ख़ालिक़ की क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करते हैं वोह मिस्ल बीना के हैं। **124 :** या'नी जाहिल व आ़लिम यक्सां नहीं। **125 :** या'नी मोमिने सालेह़ और बदकार येह दोनों भी बराबर नहीं। **126 :** मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते। **127 :** **अल्लाह** तआ़ला बन्दों की दुआ़एं अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमाता है और इन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : **एक** इख़्लास दुआ़ में। **दूसरे** येह कि क़ल्ब ग़ैर की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो। **तीसरे** येह कि वोह दुआ़ किसी अम्रे मम्नूअ़ पर मुश्तमिल न हो। **चौथे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत पर यक़ीन रखता हो। **पांचवें** येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ़ मांगी क़बूल न हुई। जब इन शर्तों से दुआ़ की जाती है क़बूल होती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल

www.dawateislami.net

جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ

में जाएंगे ज़लील हो कर अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उस में आराम पाओ और दिन बनाया

مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

आंखें खोलता[128] बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र

يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى

नहीं करते वोह है अल्लाह तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां

تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

औंधे जाते हो[129] यूंही औंधे होते हैं[130] वोह जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं[131]

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ

अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन ठहराव बनाई[132] और आस्मान छत[133] और तुम्हारी तस्वीर की

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ

तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं[134] और तुम्हें सुथरी चीज़ें[135] रोज़ी दीं येह है अल्लाह तुम्हारा रब

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَيُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ

तो बड़ी बरकत वाला है अल्लाह रब सारे जहान का वोही ज़िन्दा है[136] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ

निरे उसी के बन्दे हो कर सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब तुम फ़रमाओ मैं मन्अ़ किया गया हूं

اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ

कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[137] जब कि मेरे पास रोशन दलीलें[138] मेरे रब की तरफ़

होती है या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या उस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है। आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि दुआ से मुराद इबादत है और क़ुरआने करीम में दुआ ब मा'ना इबादत बहुत जगह वारिद है। ह़दीस शरीफ़ में है "اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ" (ابوداود وترمذی) इस तक़्दीर पर आयत के मा'ना येह होंगे कि तुम मेरी इबादत करो मैं तुम्हें सवाब दूंगा। **128 :** कि उस में अपने काम ब इत्मीनान अन्जाम दो। **129 :** कि उस को छोड़ कर बुतों की इबादत करते हो और उस पर ईमान नहीं लाते बा वुजूदे कि दलाइल क़ाइम हैं। **130 :** और ह़क़ से फिरते हैं बा वुजूद दलाइल क़ाइम होने के। **131 :** और उन में ह़क़ जोयाना (ह़क़ के मुतलाशी हो कर) नज़र व तअम्मुल नहीं करते। **132 :** कि वोह तुम्हारी क़रार गाह हो ज़िन्दगी में भी और बा'दे मौत भी। **133 :** कि उस को मिस्ल क़ुब्बा के बुलन्द फ़रमाया। **134 :** कि तुम्हें रास्त क़ामत पाकीज़ा रू मुतनासिबुल आ'ज़ा किया, बहाइम की त़रह़ न बनाया कि औंधे चलते। **135 :** नफ़ीस मआकिल व मशारिब (खाने पीने की अश्या) **136 :** कि उस की फ़ना मुह़ाल है। **137 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने बकार ने बराहे जहालत व गुमराही अपने दीने बात़िल की त़रफ़ हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को दा'वत

رَبِّيۡ ۫ وَ اُمِرۡتُ اَنۡ اُسۡلِمَ لِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ الَّذِيۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ

से आईं और मुझे हुक्म हुवा है कि रब्बुल आलमीन के हुज़ूर गरदन रखूं वोही है जिस ने तुम्हें[139] मिट्टी

تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ مِنۡ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخۡرِجُكُمۡ طِفۡلًا ثُمَّ لِتَبۡلُغُوۡۤا

से बनाया फिर[140] पानी की बूंद से[141] फिर खून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी

اَشُدَّكُمۡ ثُمَّ لِتَكُوۡنُوۡا شُيُوۡخًا ۚ وَ مِنۡكُمۡ مَّنۡ يُّتَوَفّٰى مِنۡ قَبۡلُ وَ لِتَبۡلُغُوۡۤا

को पहुंचो[142] फिर इस लिये कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है[143] और इस लिये कि तुम एक मुक़र्रर वा'दे

اَجَلًا مُّسَمًّى وَّ لَعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾ هُوَ الَّذِيۡ يُحۡيٖ وَ يُمِيۡتُ ۚ فَاِذَا

तक पहुंचो[144] और इस लिये कि समझो[145] वोही है कि जिलाता (ज़िन्दा करता) है और मारता है फिर जब

٧ ع ٨ ١٢ قَضٰۤى اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۶۸﴾ ع اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ

कोई हुक्म फ़रमाता है तो उस से येही कहता है कि हो जा जभी वोह हो जाता है[146] क्या तुम ने उन्हें न देखा जो

يُجَادِلُوۡنَ فِيۡۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصۡرَفُوۡنَ ﴿۶۹﴾ ۛ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِالۡكِتٰبِ وَ

अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं[147] कहां फेरे जाते हैं[148] वोह जिन्हों ने झुटलाई किताब[149] और

معانقة ١٣ بِمَاۤ اَرۡسَلۡنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ قف فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۷۰﴾ ۙ اِذِ الۡاَغۡلٰلُ فِيۡۤ اَعۡنَاقِهِمۡ

जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा[150] वोह अन्क़रीब जान जाएंगे[151] जब उन की गरदनों में तौक़ होंगे

وَ السَّلٰسِلُ ؕ يُسۡحَبُوۡنَ ﴿۷۱﴾ ۙ فِي الۡحَمِيۡمِ ۬ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسۡجَرُوۡنَ ﴿۷۲﴾ ۚ ثُمَّ

और ज़न्जीरें[152] घसीटे जाएंगे खौलते पानी में फिर आग में दहकाए जाएंगे[153] फिर

قِيۡلَ لَهُمۡ اَيۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تُشۡرِكُوۡنَ ﴿۷۳﴾ ۙ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوۡا ضَلُّوۡا عَنَّا

उन से फ़रमाया जाएगा कहां गए वोह जो तुम शरीक बताते थे[154] **अल्लाह** के मुक़ाबिल कहेंगे वोह तो हम से गुम गए[155]

दी थी और आप से बुत परस्ती की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **138 :** अ़क़्ल व वह़्य की, तौह़ीद पर दलालत करने वाली। **139 :** या'नी तुम्हारे अस्ल और तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **140 :** बा'द ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के उन की नस्ल को **141 :** या'नी क़त़रए मनी से **142 :** और तुम्हारी कुव्वत कामिल हो। **143 :** या'नी बुढ़ापे या जवानी को पहुंचने से क़ब्ल ही, येह इस लिये किया कि तुम ज़िन्दगानी करो। **144 :** ज़िन्दगानी के वक़्ते मह़दूद तक। **145 :** दलाइले तौह़ीद को और ईमान लाओ। **146 :** या'नी अश्या का वुजूद उस के इरादे का ताबेअ़ है कि उस ने इरादा फ़रमाया और शै मौजूद हुई न कोई कुल्फ़त (तक्लीफ़) है न कोई मशक़्क़त है न किसी सामान की ह़ाजत। येह उस के कमाले क़ुदरत का बयान है। **147 :** या'नी क़ुरआने पाक में। **148 :** ईमान और दीने ह़क़ से। **149 :** या'नी कुफ़्फ़ार जिन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ की तक्ज़ीब की। **150 :** उस की भी तक्ज़ीब की और उस के रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी इस से मुराद या तो वोह किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वोह अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा जो तमाम अम्बिया ने पहुंचाए मिस्ले तौह़ीदे इलाही, और बअ़्स बा'दे मौत के। **151 :** अपनी तक्ज़ीब का अन्जाम। **152 :** और उन ज़न्जीरों से **153 :** और वोह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उन

بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾

बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे[156] अल्लाह यूंही गुमराह करता है काफ़िरों को

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ

येह[157] उस का बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर खुश होते थे[158] और उस का बदला है जो तुम

تَمْرَحُوْنَ ﴿۷۵﴾ اُدْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

इतराते थे जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ

मग़रूरों का[159] तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वा'दा[160] सच्चा है तो अगर हम तुम्हें दिखा दें[161] कुछ वोह चीज़ जिस का

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا

उन्हें वा'दा दिया जाता है[162] या तुम्हें पहले ही वफ़ात दें बहर ह़ाल उन्हें हमारी ही त़रफ़ फिरना[163] और बेशक हम ने

مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ

तुम से पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिन में किसी का अह़वाल तुम से बयान फ़रमाया[164] और किसी का अह़वाल न बयान

عَلَيْكَ ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ

फ़रमाया[165] और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए बे हुक्म खुदा के फिर जब अल्लाह

اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَ خَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۷۸﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ ع

का हुक्म आएगा[166] सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[167] और बातिल वालों का वहां ख़सारा अल्लाह है जिस ने

के अन्दर भी भरी होगी। (अल्लाह तआ़ला की पनाह) 154 : या'नी वोह बुत क्या हुए जिन की तुम इबादत करते थे 155 : कहीं नज़र ही नहीं आते। 156 : बुतों की परस्तिश का इन्कार कर जाएंगे। फिर बुत ह़ाज़िर किये जाएंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे येह मा'बूद सब जहन्नम का ईंधन हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि जहन्नमियों का येह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इस के येह मा'ना हैं कि अब हमें ज़ाहिर हो गया कि जिन्हें हम पूजते थे वोह कुछ न थे कि कोई नफ़्अ़ या नुक़्सान पहुंचा सकते। 157 : या'नी येह अ़ज़ाब जिस में तुम मुब्तला हो 158 : या'नी शिर्क व बुत परस्ती व इन्कारे बअ़्स पर। 159 : जिन्हों ने तकब्बुर किया और ह़क़ को क़बूल न किया। 160 : कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब फ़रमाने का 161 : तुम्हारी वफ़ात से पहले 162 : अन्वाए अ़ज़ाब से, मिस्ल बद्र में मारे जाने के जैसा कि येह वाक़ेअ़ हुवा। 163 : और अ़ज़ाबे शदीद में गिरिफ़्तार होना। 164 : इस क़ुरआन में सराह़त के साथ 165 : क़ुरआन शरीफ़ में तफ़्सीलन व सराह़तन (مرقاة) और उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को अल्लाह तआ़ला ने निशानी और मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए और उन की क़ौमों ने उन से मुजादला (झगड़ा) किया और उन्हें झुटलाया इस पर उन ह़ज़रात ने सब्र किया। इस तज़्किरे से मक़्सूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि जिस त़रह़ के वाक़िआ़त क़ौम की त़रफ़ से आप को पेश आ रहे हैं और जैसी ईज़ाएं पहुंच रही हैं पहले अम्बिया के साथ भी येही ह़ालात गुज़र चुके हैं, उन्हों ने सब्र किया आप भी सब्र फ़रमाएं। 166 : कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब नाज़िल करने की बाबत 167 : रसूलों के और उन की तक्ज़ीब करने वालों के दरमियान।

www.dawateislami.net

جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ لَكُمْ فِيْهَا

तुम्हारे लिये चौपाए बनाए कि किसी पर सुवार हो और किसी का गोश्त खाओ और तुम्हारे लिये उन में कितने ही

مَنَافِعُ وَ لِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَيْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ

फ़ाएदे हैं[168] और इस लिये कि तुम उन की पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो[169] और उन पर[170] और कश्तियों पर[171]

تُحْمَلُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿۸۱﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

सुवार होते हो और वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है[172] तो अल्लाह की कौन सी निशानी का इन्कार करोगे[173] तो क्या उन्हों ने

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा वोह

اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَ اَشَدَّ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

उन से बहुत थे[174] और उन की कुव्वत[175] और ज़मीन में निशानियां उन से ज़ियादा[176] तो उन के क्या काम आया जो

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ

उन्हों ने कमाया[177] तो जब उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें लाए तो वोह उसी पर ख़ुश रहे जो उन के पास

مِّنَ الْعِلْمِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۸۳﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

दुन्या का इल्म था[178] और उन्हीं पर उलट पड़ा जिस की हंसी बनाते थे[179] फिर जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देखा

قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَ كَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَلَمْ يَكُ

बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उस के शरीक करते थे उन से मुन्किर हुए[180] तो उन के

يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ

ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उस के बन्दों

168 : कि उन के दूध और ऊन वग़ैरा काम में लाते हो और उन की नस्ल से नफ़्अ़ उठाते हो। **169 :** या'नी अपने सफ़रों में अपने वज़्नी सामान उन की पीठों पर लाद कर एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम पर ले जाते हो। **170 :** ख़ुश्की के सफ़रों में **171 :** दरियाई सफ़रों में **172 :** जो उस की क़ुदरत व वहदानिय्यत पर दलालत करती हैं। **173 :** या'नी वोह निशानियां ऐसी ज़ाहिरो बाहिर हैं कि उन के इन्कार की कोई सूरत ही नहीं। **174 :** ता'दाद उन की कसीर थी। **175 :** और जिस्मानी त़ाक़त भी उन से ज़ियादा थी। **176 :** या'नी उन के महल और इमारतें वग़ैरा। **177 :** मा'ना येह हैं कि अगर येह लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मा'लूम हो जाता कि मुन्किरीने मुतमर्रिदीन (सरकशी करने वालों) का क्या अन्जाम हुवा और वोह किस त़रह हलाक व बरबाद हुए और उन की ता'दाद उन के ज़ोर और उन के माल कुछ भी उन के काम न आ सके। **178 :** और उन्हों ने इल्मे अम्बिया की त़रफ़ इल्तिफ़ात न किया, उस की तहसील और उस से इन्तिफ़ाअ़ की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुए बल्कि उस को हक़ीर जाना और उस की हंसी बनाई और अपने दुन्यवी इल्म को जो हक़ीक़त में जहल है पसन्द करते रहे। **179 :** या'नी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब। **180 :** या'नी जिन बुतों को उस के सिवा पूजते थे उन से बेज़ार हुए।

عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨٥

में गुज़र चुका[181] और वहां काफ़िर घाटे में रहे[182]

اٰیاتها ٥٤ | ٤١ سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ ٦١ | رکوعاتها ٦

सूरए حٰمٓ السجدہ मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

येह उतारा है बड़े रह़्म वाले मेह़रबान का एक किताब है जिस की आयतें मुफ़स्सल फ़रमाई गईं[2] अ़रबी

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

कुरआन अ़क़्ल वालों के लिये ख़ुश ख़बरी देता[3] और डर सुनाता[4] तो उन में अक्सर ने मुंह फेरा तो वोह

لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٤ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ وَفِيْۤ اٰذَانِنَا

सुनते ही नहीं[5] और बोले[6] हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं उस बात से जिस की त़रफ़ तुम हमें बुलाते हो[7] और हमारे कानों में

وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٥ قُلْ اِنَّمَاۤ

टेंट (रूई) है[8] और हमारे और तुम्हारे दरमियान रोक है[9] तो तुम अपना काम करो हम अपना काम करते हैं[10] तुम फ़रमाओ[11] आदमी

اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰۤى اِلَيَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْۤا اِلَيْهِ

होने में तो मैं तुम्हीं जैसा हूं[12] मुझे वह़्य होती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो उस के हुज़ूर सीधे रहो[13]

181 : येही है कि नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त ईमान लाना नाफ़ेअ़ नहीं होता उस वक़्त ईमान क़बूल नहीं किया जाता और येह भी **अल्लाह** तआ़ला की सुन्नत है कि रसूलों के झुटलाने वालों पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है। **182 :** या'नी उन का घाटा और टोटा अच्छी त़रह़ ज़ाहिर हो गया। **1 :** इस सूरत का नाम "सूरए फ़ुस्सिलत" भी है और "सूरए सज्दह व सूरए मसाबीह़" भी है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ चव्वन आयतें और सात सो छियानवे कलिमे और तीन हज़ार तीन सो पचास ह़र्फ़ हैं। **2 :** अह़काम व इम्साल व मवाइज़ व वा'दो वई़द वग़ैरा के बयान में। **3 : अल्लाह** तआ़ला के दोस्तों को सवाब की। **4 : अल्लाह** तआ़ला के दुश्मनों को अ़ज़ाब का। **5 :** तवज्जोह से क़बूल का सुनना। **6 :** मुश्रिकीन। ह़ज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **7 :** हम उस को समझ ही नहीं सकते या'नी तौह़ीद व ईमान को। **8 :** हम बहरे हैं आप की बात हमारे सुनने में नहीं आती, इस से उन की मुराद येह थी कि आप हम से ईमान व तौह़ीद के क़बूल करने की तवक़्क़ोअ़ न रखिये, हम किसी त़रह़ मानने वाले नहीं और न मानने में हम ब मन्ज़िला उस शख़्स के हैं जो न समझता हो न सुनता हो। **9 :** या'नी दीनी मुख़ालफ़त। तो हम आप की बात मानने वाले नहीं। **10 :** या'नी तुम अपने दीन पर रहो हम अपने दीन पर क़ाइम हैं या येह मा'ना हैं कि तुम से हमारा काम बिगाड़ने की जो कोशिश हो सके वोह करो हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ जो हो सकेगा करेंगे। **11 :** ऐ अक्रमुल ख़ल्क़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बराहे तवाज़ोअ़ उन लोगों के इर्शादात व हिदायात के लिये कि **12 :** ज़ाहिर में कि मैं देखा भी जाता हूं मेरी बात भी सुनी जाती है और मेरे तुम्हारे दरमियान में ब ज़ाहिर कोई जिन्सी मुग़ायरत (तब्दीली) भी नहीं है तो तुम्हारा येह कहना कैसे सह़ीह़ हो सकता है कि मेरी बात न तुम्हारे दिल तक पहुंचे न तुम्हारे सुनने में आए और मेरे तुम्हारे दरमियान कोई रोक हो, बजाए मेरे कोई ग़ैर जिन्स

وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ﴿۶﴾ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ

और उस से मुआफ़ी मांगो[14] और ख़राबी है शिर्क वालों को वोह जो ज़कात नहीं देते[15] और

هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۷﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वोह आख़िरत के मुन्किर हैं[16] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿۸﴾ ع قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ ع ۱۵

उन के लिये बे इन्तिहा सवाब है[17] तुम फ़रमाओ क्या तुम लोग उस का इन्कार रखते हो जिस ने दो दिन

فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ﴿۹﴾ وَجَعَلَ

में ज़मीन बनाई[18] और उस के हमसर ठहराते हो[19] वोह है सारे जहान का रब[20] और इस में[21]

فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِيْۤ اَرْبَعَةِ

इस के ऊपर से लंगर (भारी बोझ) डाले[22] और इस में बरकत रखी[23] और इस में इस के बसने वालों की रोज़ियां मुक़र्रर कीं येह सब मिला कर चार

اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

दिन में[24] ठीक जवाब पूछने वालों को फिर आस्मान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धूआं था[25] तो उस

"जिन्न या फ़िरिश्ता" आता तो तुम कह सकते थे कि न वोह हमारे देखने में आएं न उन की बात सुनने में आए न हम उन के कलाम को समझ सकें हमारे उन के दरमियान तो जिन्सी मुख़ालफ़त ही बड़ी रोक है, लेकिन यहां तो ऐसा नहीं क्यूं कि मैं बशरी सूरत में जल्वा नुमा हुवा तो तुम्हें मुझ से मानूस होना चाहिये और मेरे कलाम के समझने और इस से फ़ाएदा उठाने की बहुत कोशिश करना चाहिये क्यूं कि मेरा मर्तबा बहुत बुलन्द है और मेरा कलाम बहुत आ़ली है, इस लिये कि मैं वोही कहता हूं जो मुझे वह्य होती है। **फ़ाएदा :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ब लिहाज़े ज़ाहिर "اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ" फ़रमाना हिक्मते हिदायत व इर्शाद (रुश्दो हिदायत की हिक्मत) के लिये ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है और जो कलिमात तवाज़ोअ़ के लिये कहे जाएं वोह तवाज़ोअ़ करने वाले के उ़लुव्वे मन्सब की दलील होते हैं, छोटों का उन कलिमात को उस की शान में कहना या इस से बराबरी ढूंडना तर्के अदब और गुस्ताख़ी होता है, तो किसी उम्मती को रवा (जाइज़) नहीं कि वोह हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुमासिल होने का दा'वा करे। येह भी मल्हूज़ रहना चाहिये कि आप की बशरिय्यत भी सब से आ'ला है हमारी बशरिय्यत को इस से कुछ भी निस्बत नहीं। **13 :** उस पर ईमान लाओ उस की इताअ़त इख़्तियार करो उस की राह से न फिरो **14 :** अपने फ़सादे अ़क़ीदा व अ़मल की। **15 :** येह मन्ए़ ज़कात से ख़ौफ़ दिलाने के लिये फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि ज़कात को मन्अ़ करना ऐसा बुरा है कि क़ुरआने करीम में मुश्रिकीन के औसाफ़ में ज़िक्र किया गया और इस की वज्ह येह है कि इन्सान को माल बहुत प्यारा होता है तो माल का राहे ख़ुदा में ख़र्च कर डालना उस के सबात व इस्तिक़्लाल और सिद्क़ व इख़्लासे निय्यत की क़वी दलील है और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि ज़कात से मुराद है तौह़ीद का मो'तक़िद होना और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहना इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि जो तौह़ीद का इक़्रार कर के अपने नफ़्सों को शिर्क से बाज़ नहीं रखते और क़तादा ने इस के मा'ना येह लिये हैं कि जो लोग ज़कात को वाजिब नहीं जानते। इस के इलावा और भी अक़्वाल हैं। **16 :** कि मरने के बा'द उठने और जज़ा के मिलने के क़ाइल नहीं। **17 :** जो मुन्क़तअ़ न होगा। येह भी कहा गया है कि आयत बीमारों अपाहजों और बूढ़ों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अ़मल व त़ाअ़त के क़ाबिल न रहें उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो तन्दुरुस्ती में अ़मल करते थे। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस है कि जब बन्दा कोई अ़मल करता है और किसी मरज़ या सफ़र के बाइ़स वोह आ़मिल उस अ़मल से मजबूर हो जाता है तो तन्दुरुस्ती और इक़ामत की ह़ालत में जो करता था वैसा ही उस के लिये लिखा जाता है। **18 :** उस की ऐसी क़ुदरते कामिला है और चाहता तो एक लम्ह़े से भी कम में बना देता। **19 :** या'नी शरीक। **20 :** और वोही इबादत का मुस्तह़िक़ है, उस के सिवा कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं, सब उस के ममलूक व मख़्लूक़ हैं। इस के बा'द फिर उस की क़ुदरत का बयान फ़रमाया जाता है। **21 :** या'नी ज़मीन में **22 :** पहाड़ों के। **23 :** दरिया और नहरें और दरख़्त व फल और क़िस्म क़िस्म के हैवानात वग़ैरा पैदा कर के। **24 :** या'नी दो दिन ज़मीन की पैदाइश और दो दिन में येह सब। **25 :** या'नी बुख़ार बुलन्द होने वाला।

لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِیَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَیْنَا طَآىٕعِیْنَ ﴿۱۱﴾

से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो ख़ुशी से चाहे नाख़ुशी से दोनों ने अर्ज़ की कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِیْ یَوْمَیْنِ وَ اَوْحٰى فِیْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ

तो उन्हें पूरे सात आस्मान कर दिया दो दिन में[26] और हर आस्मान में उसी के काम के अह़काम भेजे[27]

وَ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ ۖۗ وَ حِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ

और हम ने नीचे के आस्मान को[28] चराग़ों से आरास्ता किया[29] और निगहबानी के लिये[30] येह उस इ़ज़्ज़त वाले इ़ल्म वाले का ठहराया

الْعَلِیْمِ ﴿۱۲﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ

हुवा है फिर अगर वोह मुंह फेरें[31] तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द

وَّ ثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ

और समूद पर आई थी[32] जब रसूल उन के आगे पीछे फिरते थे[33]

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓىٕكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ

कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो बोले[34] हमारा रब चाहता तो फ़िरिश्ते उतारता[35] तो जो कुछ

اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ

तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[36] तो वोह जो आ़द थे उन्हों ने ज़मीन में नाह़क़ तकब्बुर किया[37]

26 : येह कुल छ[6] दिन हुए इन में सब से पिछला जुमुआ़ है। **27 :** वहां के रहने वालों को त़ाआ़त व इ़बादात व अम्र व नही के। **28 :** जो ज़मीन से क़रीब है। **29 :** या'नी रोशन सितारों से। **30 :** शयात़ीने मुस्तरिक़ा (चोरी छुपे आस्मानों की ख़बरें सुनने वाले शयात़ीन) से। **31 :** या'नी अगर येह मुश्रिकीन इस बयान के बा'द भी ईमान लाने से ए'राज़ करें **32 :** या'नी अ़ज़ाबे मोहलिक से, जैसा उन पर आया था। **33 :** या'नी क़ौमे आ़द व समूद के रसूल हर त़रफ़ से आते थे और उन की हिदायत की हर तदबीर अ़मल में लाते थे और उन्हें हर त़रह़ नसीह़त करते थे **34 :** उन की क़ौम के काफ़िर उन के जवाब में कि **35 :** बजाए तुम्हारे, तुम तो हमारी मिस्ल आदमी हो। **36 :** येह ख़िताब उन का ह़ज़रते हूद और ह़ज़रते सालेह़ और तमाम अम्बिया से था जिन्हों ने ईमान की दा'वत दी। इमाम बग़वी ने ब इस्नादे सा'लबी ह़ज़रते जाबिर से रिवायत की, कि जमाअ़ते क़ुरैश ने जिन में अबू जह्ल वग़ैरा सरदार भी थे येह तज्वीज़ किया कि कोई ऐसा शख़्स जो शे'र, सेह़र, कहानत में माहिर हो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कलाम करने के लिये भेजा जाए, चुनान्चे उ़त्बा बिन रबीआ़ का इन्तिख़ाब हुवा, उ़त्बा ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से आ कर कहा कि आप बेहतर हैं या हाशिम, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल मुत्त़लिब, आप बेहतर हैं या अ़ब्दुल्लाह, आप क्यूं हमारे मा'बूदों को बुरा कहते हैं, क्यूं हमारे बाप दादा को गुमराह बताते हैं, ह़ुकूमत का शौक़ हो तो हम आप को बादशाह मान लें आप के फरेरे उड़ाएं (झन्डे लहराएं), औ़रतों का शौक़ हो तो क़ुरैश की जिन लड़कियों में से आप पसन्द करें हम दस आप के अ़क़्द में दें, माल की ख़्वाहिश हो तो इतना जम्अ़ कर दें जो आप की नस्लों से भी बच रहे। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم येह तमाम गुफ़्तगू ख़ामोश सुनते रहे, जब उ़त्बा अपनी तक़रीर कर के ख़ामोश हुवा तो हुज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येही सूरत "حٰمٓ السجدہ" पढ़ी, जब आप आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ" (फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी) पर पहुंचे तो उ़त्बा ने जल्दी से अपना हाथ हुज़ूर के दहन मुबारक पर रख दिया और आप को रिश्ता व क़राबत के वासित़े से क़सम दिलाई और डर कर अपने घर भाग गया। जब क़ुरैश उस के मकान पर पहुंचे तो उस ने तमाम वाक़िआ़ बयान कर के कहा कि ख़ुदा की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ

और बोले हम से ज़ियादा किस का ज़ोर और क्या उन्हों ने न जाना कि अल्लाह जिस ने उन्हें बनाया उन से

مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَجْحَدُوْنَ ﴿۱۵﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا

ज़ियादा क़वी है और हमारी आयतों का इन्कार करते थे तो हम ने उन पर एक आंधी भेजी सख़्त

صَرْصَرًا فِیْۤ اَیَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِیْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ

गरज की[38] उन की शामत के दिनों में कि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुन्या की

الدُّنْیَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰی وَهُمْ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ

ज़िन्दगी में और बेशक आख़िरत के अ़ज़ाब में सब से बड़ी रुस्वाई है और उन की मदद न होगी और रहे समूद

فَهَدَیْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰی عَلَی الْهُدٰی فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ

उन्हें हम ने राह दिखाई[39] तो उन्हों ने सूझने पर अन्धे होने को पसन्द किया[40] तो उन्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब की कड़क

ع ٢ ١٢ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۷﴾ ج وَنَجَّیْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۱۸﴾ ع

ने आ लिया[41] सज़ा उन के किये की[42] और हम ने[43] उन्हें बचा लिया जो ईमान लाए[44] और डरते थे[45]

وَیَوْمَ یُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَی النَّارِ فَهُمْ یُوْزَعُوْنَ ﴿۱۹﴾ حَتّٰۤی اِذَا مَا

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन[46] आग की त़रफ़ हांके जाएंगे तो उन के अगलों को रोकेंगे यहां तक कि

جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَیْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا

पिछले आ मिलें[47] यहां तक कि जब वहां पहुंचेंगे उन के कान और उन की आंखें और उन के चमड़े सब उन पर उन के किये की

یَعْمَلُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَیْنَا ؕ قَالُوْۤا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

गवाही देंगे[48] और वोह अपनी खालों से कहेंगे तुम ने हम पर क्यूं गवाही दी वोह कहेंगी हमें अल्लाह ने बुलवाया

जो कहते हैं न वोह शे'र है न सेह्र है न कहानत, मैं इन चीज़ों को ख़ूब जानता हूं। मैं ने उन का कलाम सुना, जब उन्हों ने आयत "فَاِنْ اَعْرَضُوْا" पढ़ी तो मैं ने उन के दहने मुबारक पर हाथ रख दिया और उन्हें क़सम दी कि बस करें। और तुम जानते ही हो वोह जो कुछ फ़रमाते हैं वोही हो जाता है, उन की बात कभी झूटी नहीं होती, मुझे अन्देशा हो गया कि कहीं तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल न होने लगे। **37 :** क़ौमे आ़द के लोग बड़े क़वी और शहज़ोर थे जब ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ السَّلَام ने उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराया तो उन्हों ने कहा कि हम अपनी त़ाक़त से अ़ज़ाब को हटा सकते हैं। **38 :** निहायत ठन्डी बिग़ैर बारिश के। **39 :** और नेकी और बदी के त़रीक़े उन पर ज़ाहिर फ़रमाए। **40 :** और ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र इख़्तियार किया। **41 :** और होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक किये गए। **42 :** या'नी उन के शिर्क व तक्ज़ीबे पैग़म्बर और मआ़सी की। **43 :** साइक़ा (कड़क) के उस ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से **44 :** ह़ज़रते सालेह عَلَیْهِ السَّلَام पर **45 :** शिर्क और आ'माले ख़बीसा से। **46 :** या'नी कुफ़्फ़ार अगले और पिछले **47 :** फिर सब को दोज़ख़ में हांक दिया जाएगा। **48 :** आ'ज़ा ब हुक्मे इलाही बोल उठेंगे और जो जो अ़मल किये थे बता देंगे।

الَّذِیْۤ اَنْطَقَ كُلَّ شَیْءٍ وَّ هُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۱﴾
जिस ने हर चीज़ को गोयाई बख़्शी और उस ने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है

وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ یَّشْهَدَ عَلَیْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَاۤ اَبْصَارُكُمْ وَ لَا
और तुम[49] उस से कहां छुप कर जाते कि तुम पर गवाही दें तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और

جُلُوْدُكُمْ وَ لٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا یَعْلَمُ كَثِیْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۲﴾ وَ
तुम्हारी खालें[50] लेकिन तुम तो येह समझे बैठे थे कि **अल्लाह** तुम्हारे बहुत से काम नहीं जानता[51] और

ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾
येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया[52] तो अब रह गए हारे हुओं में

فَاِنْ یَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ یَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ
फिर अगर वोह सब्र करें[53] तो आग उन का ठिकाना है[54] और अगर वोह मनाना चाहें तो कोई उन का

الْمُعْتَبِیْنَ ﴿۲۴﴾ وَ قَیَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَیَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا
मनाना न माने[55] और हम ने उन पर कुछ साथी तअ़य्युनात किये[56] उन्हों ने उन्हें भला कर दिखाया जो उन के आगे है[57] और जो

خَلْفَهُمْ وَ حَقَّ عَلَیْهِمُ الْقَوْلُ فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ
उन के पीछे[58] और उन पर बात पूरी हुई[59] उन गुरौहों के साथ जो उन से पहले गुज़र चुके जिन्न

وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِیْنَ ﴿۲۵﴾ ع وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا ع ۳ ۱۷
और आदमियों के बेशक वोह ज़ियांकार (नुक़्सान में) थे और काफ़िर बोले[60] येह कुरआन

لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ الْغَوْا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿۲۶﴾ فَلَنُذِیْقَنَّ الَّذِیْنَ
न सुनो और इस में बेहूदा गु़ल (शोर) करो[61] शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ[62] तो बेशक ज़रूर हम

49 : गुनाह करते वक़्त 50 : तुम्हें तो इस का गुमान भी न था बल्कि तुम तो बअ़्स व जज़ा के सिरे ही से क़ाइल न थे। 51 : जो तुम छुपा कर करते हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार येह कहते थे कि **अल्लाह** तआ़ला ज़ाहिर की बातें जानता है और जो हमारे दिलों में है उस को नहीं जानता। (مَعَاذَاللّٰہ) 52 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि तुम्हें जहन्नम में डाल दिया। 53 : अ़ज़ाब पर 54 : येह सब्र भी कारआमद नहीं। 55 : या'नी ह़क़ तआ़ला उन से राज़ी न हो चाहे कितना ही मिन्नत करें किसी त़रह़ अ़ज़ाब से रिहाई नहीं। 56 : शयात़ीन में से। 57 : या'नी दुन्या की ज़ैबो ज़ीनत और ख़्वाहिशाते नफ़्स का इत्तिबाअ़। 58 : या'नी अम्रे आख़िरत। येह वस्वसा डाल कर कि न मरने के बा'द उठना है न ह़िसाब न अ़ज़ाब, चैन ही चैन है। 59 : अ़ज़ाब की। 60 : या'नी मुश्रिकीने क़ुरैश। 61 : और शोर मचाओ। कुफ़्फ़ार एक दूसरे से कहते थे कि जब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) कुरआन शरीफ़ पढ़ें तो ज़ोर ज़ोर से शोर करो ख़ूब चिल्लाओ ऊंची ऊंची आवाज़ें निकाल कर चीख़ो बे मा'ना कलिमात से शोर करो तालियां और सीटियां बजाओ ताकि कोई कुरआन न सुनने पाए और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم परेशान हों। 62 : और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

काफ़िरों को सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे और बेशक हम उन के बुरे से बुरे काम का उन्हें बदला देंगे[63]

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا

येह है **अल्लाह** के दुश्मनों का बदला आग इस में उन्हें हमेशा रहना है सज़ा इस

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَاۤ اَرِنَا الَّذَيْنِ

की कि हमारी आयतों का इन्कार करते थे और काफ़िर बोले[64] ऐ हमारे रब हमें दिखा वोह

اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ

दोनों जिन्न और आदमी जिन्हों ने हमें गुमराह किया[65] कि हम उन्हें अपने पाउं तले डालें[66] कि वोह हर नीचे से

الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ

नीचे रहें[67] बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है फिर इस पर क़ाइम रहे[68] उन पर

عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِىْ

फ़िरिश्ते उतरते हैं[69] कि न डरो[70] और न ग़म करो[71] और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिस का

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ ۚ

तुम्हें वा'दा दिया जाता था[72] हम तुम्हारे दोस्त हैं दुन्या की ज़िन्दगी में[73] और आख़िरत में[74]

وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْۤ اَنْفُسُكُمْ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ ؕ نُزُلًا مِّنْ

और तुम्हारे लिये है इस में[75] जो तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये इस में जो मांगो मेहमानी बख़्शने

क़िराअत मौक़ूफ़ कर दें। **63 :** या'नी कुफ़्र का बदला सख़्त अ़ज़ाब। **64 :** जहन्नम में। **65 :** या'नी हमें वोह दोनों शैतान दिखा जिन्नी भी और इन्सी भी। शैतान दो क़िस्म के होते हैं एक जिन्नों में से एक इन्सानों में से जैसा कि क़ुरआने पाक में है : "شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ" (आदमियों और जिन्नों में के शैतान) जहन्नम में कुफ़्फ़ार इन दोनों के देखने की ख़्वाहिश करेंगे। **66 :** आग में **67 :** दरके अस्फ़ल (दोज़ख़ के सब से निचले तबक़े) में हम से ज़ियादा सख़्त अ़ज़ाब में। **68 :** हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से दरयाफ़्त किया गया इस्तिक़ामत क्या है ? फ़रमाया : येह कि **अल्लाह** तआला के साथ किसी को शरीक न करे। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अम्र व नही पर क़ाइम रहे। हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि अ़मल में इख़्लास करे। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : इस्तिक़ामत येह है कि फ़राइज़ अदा करे और इस्तिक़ामत के मा'ना में येह भी कहा गया है कि **अल्लाह** तआला के अम्र को बजा लाए और मआसी से बचे। **69 :** मौत के वक़्त या वोह जब क़ब्रों से उठेंगे और येह भी कहा गया है कि मोमिन को तीन बार बिशारत दी जाती है **एक** वक़्ते मौत। **दूसरे** क़ब्र में। **तीसरे** क़ब्रों से उठने के वक़्त। **70 :** मौत से और आख़िरत में पेश आने वाले हालात से। **71 :** अहल व औलाद के छूटने का या गुनाहों का। **72 :** और फ़िरिश्ते कहेंगे : **73 :** तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे **74 :** तुम्हारे साथ रहेंगे और जब तक तुम जन्नत में दाख़िल हो तुम से जुदा न होंगे। **75 :** या'नी जन्नत में वोह करामत और ने'मत व लज़्ज़त।

ع ٧/١٨

غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا

वाले मेहरबान की त़रफ़ से और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए[76] और नेकी करे[77]

وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ

और कहे मैं मुसल्मान हूं[78] और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ

बुराई को भलाई से टाल[79] जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि

وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ

गहरा दोस्त[80] और येह दौलत[81] नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े

عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

नसीब वाला और अगर तुझे शैत़ान का कोई कोंचा (वार) पहुंचे[82] तो **अल्लाह** की पनाह मांग[83] बेशक वोही

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ

सुनता जानता है और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चांद[84]

لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ

सज्दा न करो सूरज को और न चांद को[85] और **अल्लाह** को सज्दा करो जिस ने उन्हें पैदा किया[86] अगर

76 : उस की तौह़ीद व इ़बादत की त़रफ़। कहा गया है कि इस दा'वत देने वाले से मुराद हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हैं और येह भी कहा गया है कि वोह मोमिन मुराद है जिस ने नबी عَلَیْہِ السَّلَام की दा'वत को क़बूल किया और दूसरों को नेकी की दा'वत दी। 77 **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मेरे नज़्दीक येह आयत मुअज़्ज़िनों के ह़क़ में नाज़िल हुई और एक क़ौल येह भी है कि जो कोई किसी त़रीक़े पर भी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ दा'वत दे वोह इस में दाख़िल है। दा'वत इलल्लाह के कई मर्तबे हैं **अव्वल** दा'वते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मो'जिज़ात और हुजज व बराहीन व सैफ़ के साथ, येह मर्तबा अम्बिया ही के साथ ख़ास है। **दुवुम** दा'वते उ़लमा, फ़क़त़ हुजज व बराहीन के साथ और उ़लमा कई त़रह के हैं : **एक आ़लिम बिल्लाह। दूसरे आ़लिम बि सिफ़ातिल्लाह। तीसरे आ़लिम बि अह़कामिल्लाह। मर्तबए सिवुम** दा'वते मुजाहिदीन है, येह कुफ़्फ़ार को सैफ़ के साथ होती है यहां तक कि वोह दीन में दाख़िल हों और त़ाअ़त क़बूल कर लें। **मर्तबए चहारुम** मुअज़्ज़िनीन की दा'वत नमाज़ के लिये। अ़मले सालेह़ की दो क़िस्में हैं : **एक** वोह जो क़ल्ब से हो वोह मा'रिफ़ते इलाही है। **दूसरे** जो आ'ज़ा से हो वोह तमाम त़ाअ़ात हैं। 78 : और येह फ़क़त़ क़ौल न हो बल्कि दीने इस्लाम का दिल से मो'तक़िद हो कर कहे कि सच्चा कहना येही है। 79 : मसलन ग़ुस्से को सब्र से और जह्ल को ह़िल्म से और बद सुलूकी को अ़फ़्व से कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो तू मुआ़फ़ कर। 80 : या'नी इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ मह़ब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के ह़क़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साहिब ज़ादी को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादिक़ुल मह़ब्बत जां निसार हो गए। 81 : या'नी बदियों को नेकियों से दफ़्अ़ करने की ख़स्लत 82 : या'नी शैत़ान तुझ को बुराइयों पर उभारे और इस ख़स्लते नेक से और इस के इ़लावा और नेकियों से मुन्ह़रिफ़ करे 83 : उस के शर से और अपनी नेकियों पर क़ाइम रह, शैत़ान की राह न इख़्तियार कर **अल्लाह** तआ़ला तेरी मदद फ़रमाएगा। 84 : जो उस की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की रुबूबिय्यत व वह़दानिय्यत पर दलालत करते हैं। 85 : क्यूं कि वोह मख़्लूक़ हैं और हुक्मे ख़ालिक़ से मुसख़्ख़र हैं और जो ऐसा हो मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत नहीं हो सकता। 86 : वोही सज्दे और इ़बादत का मुस्तह़िक़ है।

www.dawateislami.net

كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ
तुम उस के बन्दे हो तो अगर येह तकब्बुर करें[87] तो वोह जो तुम्हारे रब के पास हैं[88] रात दिन

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ
उस की पाकी बोलते हैं और उक्ताते नहीं और उस की निशानियों से है कि तू ज़मीन को देखे

خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْۤ اَحْيَاهَا
बे क़द्र पड़ी[89] फिर हम ने जब उस पर पानी उतारा[90] तरो ताज़ा हुई और बढ़ चली बेशक जिस ने उसे जिलाया ज़रूर

لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ
मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा बेशक वोह सब कुछ कर सकता है बेशक वोह जो हमारी आयतों में टेढ़े

اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْۤ اٰمِنًا
चलते हैं[91] हम से छुपे नहीं[92] तो क्या जो आग में डाला जाएगा[93] वोह भला या जो क़ियामत में अमान से

يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ
आएगा[94] जो जी में आए करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ ۙ لَّا يَاْتِيْهِ
जो ज़िक्र से मुन्किर हुए[95] जब वोह उन के पास आया उन की ख़राबी का कुछ हाल न पूछ और बेशक वोह इ़ज़्ज़त वाली किताब है[96] बातिल को उस की त़रफ़

الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾
राह नहीं न उस के आगे से न उस के पीछे से[97] उतारा हुवा है हिक्मत वाले सब ख़ूबियों सराहे का

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ
तुम से न फ़रमाया जाएगा[98] मगर वोही जो तुम से अगले रसूलों को फ़रमाया गया कि बेशक तुम्हारा रब बख़्शिश

مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا
वाला[99] और दर्दनाक अ़ज़ाब वाला है[100] और अगर हम उसे अ़जमी ज़बान का क़ुरआन करते[101] तो ज़रूर कहते कि इस की

87 : सिर्फ़ **अल्लाह** को सज्दा करने से 88 : मलाएका वोह 89 : सूखी कि उस में सब्ज़े का नामो निशान नहीं। 90 : बारिश नाज़िल की। 91 : और तावीले आयात में सिह़्ह़त व इस्तिक़ामत से उ़दूल व इन्ह़िराफ़ करते हैं। 92 : हम उन्हें इस की सज़ा देंगे। 93 : या'नी काफ़िर मुल्ह़िद। 94 : मोमिन सादिक़ुल अ़क़ीदा, बेशक वोही बेहतर है। 95 : या'नी क़ुरआने करीम से और उन्हों ने इस में त़ा'न किये। 96 : बे अ़दील व बे नज़ीर जिस की एक सूरत का मिस्ल बनाने से तमाम ख़ल्क़ आ़जिज़ है। 97 : या'नी किसी त़रह़ और किसी जिहत से भी बातिल

فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَ اَعْجَمِیٌّ وَّ عَرَبِیٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّ

आयतें क्यूं न खोली गईं[102] क्या किताब अ़जमी और नबी अ़रबी[103] तुम फ़रमाओ वोह[104] ईमान वालों के लिये हिदायत और

شِفَآءٌ ؕ وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّ هُوَ عَلَیْهِمْ عَمًی ؕ

शिफ़ा है[105] और वोह जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में टेंट (रूई) है[106] और वोह उन पर अन्धा पन है[107]

اُولٰٓئِكَ یُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۴۴﴾ ع وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ

गोया वोह दूर जगह से पुकारे जाते हैं[108] और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109]

فَاخْتُلِفَ فِیْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ

तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया[110] और अगर एक बात तुम्हारे रब की त़रफ़ से गुज़र न चुकी होती[111] तो जभी उन का फ़ैसला हो जाता[112] और बेशक वोह[113]

لَفِیْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِیْبٍ ﴿۴۵﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ج وَ مَنْ اَسَآءَ

ज़रूर उस की त़रफ़ से एक धोका डालने वाले शक में हैं जो नेकी करे वोह अपने भले को और जो बुराई करे

فَعَلَیْهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۴۶﴾

तो अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता

قف ٤ حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

ع ٥ ٢ ١٩

उस तक राह नहीं पा सकता, वोह तग़यीर व तब्दील व कमी व ज़ियादती से मह़फ़ूज़ है, शैत़ान उस में तसर्रुफ़ की क़ुदरत नहीं रखता। **98 :** **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से **99 :** अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के लिये और उन पर ईमान लाने वालों के लिये **100 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के दुश्मनों और तक्ज़ीब करने वालों के लिये। **101 :** जैसा कि येह कुफ़्फ़ार ब त़रीक़े ए'तिराज़ कहते हैं कि येह क़ुरआन अ़जमी ज़बान में क्यूं न उतरा **102 :** और ज़बाने अ़रबी में बयान न की गईं कि हम समझ सकते। **103 :** या'नी किताब नबी की ज़बान के ख़िलाफ़ क्यूं उतरी ? ह़ासिल येह है कि क़ुरआने पाक अ़जमी ज़बान में होता तो येह काफ़िर ए'तिराज़ करते अ़रबी में आया तो मो'तरिज़ हुए बात येह है कि خُوئے بد را بہانہ بسیار (बद निय्यत के लिये बहाने बहुत)। ऐसे ए'तिराज़ त़ालिबे ह़क़ की शान के लाइक़ नहीं। **104 :** क़ुरआन शरीफ़ **105 :** कि ह़क़ की राह बताता है, गुमराही से बचाता है, जह्ल व शक वग़ैरा क़ल्बी अमराज़ से शिफ़ा देता है और जिस्मानी अमराज़ के लिये भी इस का पढ़ कर दम करना दफ़्ए़ मरज़ के लिये मुअस्सिर है। **106 :** कि वोह क़ुरआने पाक के सुनने की ने'मत से मह़रूम हैं। **107 :** कि शुकूको शुबुहात की ज़ुल्मतों में गिरिफ़्तार हैं। **108 :** या'नी वोह अपने अ़दमे क़बूल से इस ह़ालत को पहुंच गए हैं जैसा कि किसी को दूर से पुकारा जाए तो वोह पुकारने वाले की बात न सुने न समझे। **109 :** या'नी तौरैते मुक़द्दस **110 :** बा'ज़ों ने उस को माना और बा'ज़ों ने न माना। बा'ज़ों ने उस की तस्दीक़ की और बा'ज़ों ने तक्ज़ीब। **111 :** या'नी ह़िसाब व जज़ा को रोज़े क़ियामत तक मुअख़्ख़र न फ़रमा दिया होता **112 :** और दुन्या ही में उन्हें इस की सज़ा दे दी जाती। **113 :** या'नी किताबे इलाही की तक्ज़ीब करने वाले।

www.dawateislami.net

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا
क़ियामत के इल्म का उसी पर ह़वाला है[114] और कोई फल अपने ग़िलाफ़ से नहीं निकलता और न
تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ
किसी मादा को पेट रहे और न जने मगर उस के इल्म से[115] और जिस दिन उन्हें निदा फ़रमाएगा[116] कहां हैं मेरे शरीक[117]
قَالُوْۤا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ﴿۴۷﴾ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ
कहेंगे हम तुझ से कह चुके कि हम में कोई गवाह नहीं[118] और गुम गया उन से जिसे पहले
مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۴۸﴾ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ
पूजते थे[119] और समझ लिये कि उन्हें कहीं[120] भागने की जगह नहीं आदमी भलाई मांगने से नहीं
الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿۴۹﴾ وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا
उक्ताता[121] और कोई बुराई पहुंचे[122] तो ना उम्मीद आस टूटा[123] और अगर हम उसे कुछ अपनी रह़मत का मज़ा दें[124]
مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ
उस तक्लीफ़ के बा'द जो उसे पहुंची थी तो कहेगा येह तो मेरी है[125] और मेरे गुमान में क़ियामत क़ाइम न होगी
وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْۤ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ
और अगर[126] मैं रब की त़रफ़ लौटाया भी गया तो ज़रूर मेरे लिये उस के पास भी ख़ूबी ही है[127] तो ज़रूर हम बता देंगे

114 : तो जिस से वक़्ते क़ियामत दरयाफ़्त किया जाए उस को लाज़िम है कि कहे अल्लाह तआ़ला जानने वाला है। 115 : या'नी अल्लाह तआ़ला फल के ग़िलाफ़ से बरआमद होने से क़ब्ल उस के अह़वाल को जानता है और मादा के ह़म्ल को और उस की साअ़तों को और वज़्अ़ (पैदाइश) के वक़्त को और उस के नाक़िस व ग़ैर नाक़िस और अच्छे और बुरे और नर व मादा होने को सब को जानता है इस का इल्म भी उसी की त़रफ़ ह़वाला करना चाहिये। अगर येह ए'तिराज़ किया जाए कि औलियाए किराम अस्ह़ाबे कश्फ़ बसा अवक़ात इन उमूर की ख़बरें देते हैं और वोह सह़ीह़ वाक़ेअ़ होती हैं बल्कि कभी मुनज्जिम (सितारों का इल्म जानने वाले) और काहिन भी ख़बरें देते हैं। इस का जवाब येह है कि नुजूमियों और काहिनों की ख़बरें तो मह़ज़ अट्कल की बातें हैं जो अक्सर व बेश्तर ग़लत़ हो जाया करती हैं वोह इल्म ही नहीं है बे ह़क़ीक़त बातें हैं और औलिया की ख़बरें बेशक सह़ीह़ होती हैं और वोह इल्म से फ़रमाते हैं और येह इल्म उन का ज़ाती नहीं अल्लाह तआ़ला का अ़त़ा फ़रमाया हुवा है तो ह़क़ीक़त में येह उसी का इल्म हुवा ग़ैर का नहीं। (خازن) 116 : या'नी अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीन से फ़रमाएगा कि 117 : जो तुम ने दुन्या में घड़ रखे थे जिन्हें तुम पूजा करते थे, इस के जवाब में मुश्रिकीन 118 : जो आज येह बात़िल गवाही दे कि तेरा कोई शरीक है या'नी हम सब मोमिन मुवह़्ह़िद हैं। येह मुश्रिकीन अ़ज़ाब देख कर कहेंगे और अपने बुतों से बरी होने का इज़्हार करेंगे। 119 : दुन्या में या'नी बुत। 120 : अ़ज़ाबे इलाही से बचने और 121 : हमेशा अल्लाह तआ़ला से माल और तवंगरी व तन्दुरुस्ती मांगता रहता है। 122 : या'नी कोई सख़्ती व बला व मआ़श की तंगी। 123 : अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो रह़मत से मायूस हो जाता है। येह और इस के बा'द जो ज़िक्र फ़रमाया जाता है वोह काफ़िर का ह़ाल है और मोमिन अल्लाह तआ़ला की रह़मत से मायूस नहीं होते "لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ" (अल्लाह की रह़मत से मायूस नहीं होते मगर काफ़िर लोग) 124 : सिह़्ह़त व सलामत व मालो दौलत अ़त़ा फ़रमा कर। 125 : ख़ालिस मेरा ह़क़ है, मैं अपने अ़मल से इस का मुस्तह़िक़ हूं। 126 : बिलफ़र्ज़ जैसा कि मुसल्मान कहते हैं : 127 : या'नी वहां भी मेरे लिये दुन्या की त़रह़ ऐशो राह़त व इ़ज़्ज़तो करामत है।

كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾ وَ اِذَاۤ اَنْعَمْنَا عَلَى
काफ़िरों को जो उन्हों ने किया[128] और ज़रूर उन्हें गाढ़ा अज़ाब चखाएंगे[129] और जब हम आदमी पर एहसान

الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾
करते हैं तो मुंह फेर लेता है[130] और अपनी त़रफ़ दूर हट जाता है[131] और जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है[132] तो चौड़ी दुआ़ वाला है[133]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ
तुम फ़रमाओ[134] भला बताओ अगर येह कुरआन अल्लाह के पास से है[135] फिर तुम इस के मुन्किर हुए तो उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो

فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى
दूर की ज़िद में है[136] अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में[137] और खुद उन के आपे में[138] यहां तक कि

يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾
उन पर खुल जाए कि बेशक वोह ह़क़ है[139] क्या तुम्हारे रब का हर चीज़ पर गवाह होना काफ़ी नहीं

اَلَاۤ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾ ع
सुनो उन्हें ज़रूर अपने रब से मिलने में शक है[140] सुनो वोह हर चीज़ को मुह़ीत़ है[141]

ع ٦

اٰيَاتُهَا ٥٣ ﴿٤٢﴾ سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ ٦٢ رُكُوْعَاتُهَا ٥

सूरए शूरा मक्किय्या है, इस में तिरपन आयतें और पांच रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

128 : या'नी उन के आ'माले क़बीह़ा और उन के आ'माल के नताइज और जिस अ़ज़ाब के वोह मुस्तहि़क़ हैं उस से उन्हें आगाह कर देंगे। 129 : या'नी निहायत सख़्त। 130 : और उस एह़सान का शुक्र बजा नहीं लाता और उस ने'मत पर इतराता है और ने'मत देने वाले परवर्दगार को भूल जाता है। 131 : यादे इलाही से तकब्बुर करता है। 132 : किसी क़िस्म की परेशानी बीमारी या नादारी वग़ैरा पेश आती है 133 : खूब दुआ़एं करता है रोता है गिड़गिड़ाता है और लगातार दुआ़एं मांगे जाता है। 134 : ऐ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के कुफ़्फ़ार से 135 : जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं और बराहीने क़त़्इय्या साबित करती हैं। 136 : ह़क़ की मुख़ालफ़त करता है। 137 : आस्मान व ज़मीन के अक़्त़ार में, सूरज, चांद, सितारे, नबातात, ह़ैवान येह सब उस की क़ुदरत व हि़क्मत पर दलालत करने वाले हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इन आयात से मुराद गुज़री हुई उम्मतों की उजड़ी हुई बस्तियां हैं जिन से अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का ह़ाल मा'लूम होता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इन निशानियों से मशरिक़ो मग़रिब की वोह फ़ुतूह़ात मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के नियाज़ मन्दों को अ़न्क़रीब अ़त़ा फ़रमाने वाला है। 138 : उन की हस्तियों में लाखों लत़ाइफ़े सन्अ़त और बे शुमार अ़जाइबे हि़क्मत हैं, या येह मा'ना हैं कि बद्र में कुफ़्फ़ार को मग़्लूब व मक़्हूर कर के खुद उन के अपने अह़वाल में अपनी निशानियों का मुशाहदा करा दिया, या येह मा'ना हैं कि मक्कए मुकर्रमा फ़त्ह़ फ़रमा कर उन में अपनी निशानियां ज़ाहिर कर देंगे। 139 : या'नी इस्लाम व कुरआन की सच्चाई और ह़क़्क़ानिय्यत उन पर ज़ाहिर हो जाए। 140 : क्यूं कि वोह बअ़्स व क़ियामत के क़ाइल नहीं हैं। 141 : कोई चीज़ उस के इह़ात़ए इल्मी से बाहर नहीं और उस के मा'लूमात ग़ैर मुतनाही हैं। 1 : सूरए शूरा जुम्हूर के नज़्दीक

www.dawateislami.net

حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْۤ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ

यूंही वह्य फ़रमाता है तुम्हारी तरफ़[2] और तुम से अगलों की तरफ़[3]

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ هُوَ

अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ

बुलन्दी व अ़ज़मत वाला है क़रीब होता है कि आस्मान अपने ऊपर से शक़ हो जाएं[4] और फ़िरिश्ते

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ

अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और ज़मीन वालों के लिये मुआ़फ़ी मांगते हैं[5] सुन लो बेशक

اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ

अल्लाह ही बख़्शने वाला मेहरबान है और जिन्हों ने **अल्लाह** के सिवा और वाली बना रखे हैं[6]

اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ

वोह **अल्लाह** की निगाह में हैं[7] और तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं[8] और यूंही हम ने

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا وَ تُنْذِرَ يَوْمَ

तुम्हारी तरफ़ अ़रबी क़ुरआन वह्य भेजा कि तुम डराओ सब शहरों की अस्ल मक्का वालों को और जितने उस के गिर्द हैं[9] और तुम डराओ इकट्ठे

الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَ فَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿٧﴾ وَ لَوْ

होने के दिन से जिस में कुछ शक नहीं[10] एक गुरोह जन्नत में है और एक गुरोह दोज़ख़ में और

شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

अल्लाह चाहता तो उन सब को एक दीन पर कर देता लेकिन **अल्लाह** अपनी रह़मत में लेता है जिसे चाहे[11]

मक्किय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के एक क़ौल में इस की चार आयतें मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुईं जिन में की पहली ''قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا'' है। इस सूरत में पांच रुकूअ़ तिरपन आयतें आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार पांच सो अठासी ह़र्फ़ हैं। **2 :** ग़ैबी ख़बरें। (خازن) **3 :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में से वह्य फ़रमा चुका। **4 :** **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत और उस के उ़लुव्वे शान से। **5 :** या'नी ईमानदारों के लिये। क्यूं कि काफ़िर इस लाइक़ नहीं हैं कि मलाएका उन के लिये इस्तिग़फ़ार करें, येह हो सकता है कि काफ़िरों के लिये येह दुआ़ करें कि उन्हें ईमान दे कर उन की मग़्फ़िरत फ़रमा। **6 :** या'नी बुत जिन को वोह पूजते और मा'बूद समझते हैं। **7 :** उन के आ'माल, अफ़्आ़ल उस के सामने हैं, वोह उन्हें बदला देगा। **8 :** तुम से उन के अफ़्आ़ल का मुआख़ज़ा न होगा। **9 :** या'नी तमाम आ़लम के लोग उन सब को। **10 :** या'नी रोज़े क़ियामत से डराओ जिस में **अल्लाह** तआ़ला अव्वलीन व आख़िरीन और अहले आस्मान व ज़मीन सब को जम्अ़ फ़रमाएगा और इस जम्अ़ के बा'द फिर सब मुतफ़र्रिक़ होंगे। **11 :** उस को इस्लाम की तौफ़ीक़ देता है।

www.dawateislami.net

وَ الظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیْرٍ ﴿۸﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ

और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न मददगार[12] क्या अल्लाह के सिवा और वाली

اَوْلِیَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِیُّ وَ هُوَ یُحْیِ الْمَوْتٰی٘ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۹﴾ ع

ठहरा लिये हैं[13] तो अल्लाह ही वाली है और वोह मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे)गा और वोह सब कुछ कर सकता है[14]

وَ مَا اخْتَلَفْتُمْ فِیْهِ مِنْ شَیْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَی اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّیْ عَلَیْهِ

तुम जिस बात में[15] इख़्तिलाफ़ करो तो उस का फ़ैसला अल्लाह के सिपुर्द है[16] येह है अल्लाह मेरा रब मैं ने

تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَ اِلَیْهِ اُنِیْبُ ﴿۱۰﴾ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ

उस पर भरोसा किया और मैं उस की तरफ़ रुजूअ़ लाता हूं[17] आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला तुम्हारे लिये

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ مِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ یَذْرَؤُكُمْ فِیْهِ ؕ

तुम्हीं में से[18] जोड़े बनाए और नर व मादा चौपाए इस से[19] तुम्हारी नस्ल फैलाता है

لَیْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ۚ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۱۱﴾ لَهٗ مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ

उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है उसी के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन

وَ الْاَرْضِ ۚ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ

की कुन्जियां[20] रोज़ी वसीअ़ करता है जिस के लिये चाहे और तंग फ़रमाता है[21] बेशक वोह सब कुछ

عَلِیْمٌ ﴿۱۲﴾ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّیْنِ مَا وَصّٰی بِهٖ نُوْحًا وَّ الَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ

जानता है तुम्हारे लिये दीन की वोह राह डाली जिस का हुक्म उस ने नूह़ को दिया[22] और जो हम ने तुम्हारी तरफ़

اِلَیْكَ وَ مَا وَصَّیْنَا بِهٖۤ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰی وَ عِیْسٰۤی اَنْ اَقِیْمُوا الدِّیْنَ وَ

वह़्य की[23] और जिस का हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा को दिया[24] कि दीन ठीक रखो[25] और

12 : या'नी काफ़िरों को कोई अ़ज़ाब से बचाने वाला नहीं। 13 : या'नी कुफ़्फ़ार ने अल्लाह तआ़ला को छोड़ कर बुतों को अपना वाली बना लिया है, येह बातिल है। 14 : तो उसी को वाली बनाना सज़ावार है। 15 : दीन की बातों में से कुफ़्फ़ार के साथ 16 : रोज़े क़ियामत तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा, तुम उन से कहो 17 : हर अम्र में। 18 : या'नी तुम्हारी जिन्स में से 19 : या'नी इस तज़्वीज (जोड़े जोड़े बनाने) से (خازن) 20 : मुराद येह है कि आस्मान व ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुन्जियां ख़्वाह मींह के ख़ज़ाने हों या रिज़्क़ के। 21 : जिस के लिये चाहे। वोह मालिक है, रिज़्क़ की कुन्जियां उस के दस्ते क़ुदरत में हैं। 22 : नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام साहिबे शरअ़ अम्बिया में सब से पहले नबी हैं। 23 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم 24 : मा'ना येह हैं कि ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से आप तक ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم जितने अम्बिया हुए सब के लिये हम ने दीन की एक ही राह मुक़र्रर की जिस में वोह सब मुत्तफ़िक़ हैं, वोह राह येह है 25 : मुराद दीन से इस्लाम है। मा'ना येह हैं कि अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की इत़ाअ़त और उस पर और उस के रसूलों पर और उस की किताबों पर और रोज़े जज़ा पर और बाक़ी तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाना लाज़िम करो कि येह उमूर तमाम अम्बिया

لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ

इस में फूट न डालो[26] मुश्रिकों पर बहुत ही गिरां है वोह[27] जिस की त़रफ़ तुम उन्हें बुलाते हो और **अल्लाह**

يَجْتَبِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْۤ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ وَ مَا تَفَرَّقُوْۤا

अपने क़रीब के लिये चुन लेता है जिसे चाहे[28] और अपनी त़रफ़ राह देता है उसे जो रुजूअ़ लाए[29] और उन्हों ने फूट न डाली

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ

मगर बा'द इस के कि उन्हें इ़ल्म आ चुका था[30] आपस के ह़सद से[31] और अगर तुम्हारे रब की एक बात

رَّبِّكَ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ

गुज़र न चुकी होती[32] एक मुक़र्रर मीआद तक[33] तो कब का उन में फ़ैसला कर दिया होता[34] और बेशक वोह जो उन के बा'द किताब के वारिस हुए[35]

مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَاۤ

वोह इस से एक धोका डालने वाले शक में हैं[36] तो इसी लिये बुलाओ[37] और साबित क़दम रहो[38] जैसा

اُمِرْتَ ۚ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَ قُلْ اٰمَنْتُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ

तुम्हें हुक्म हुवा है और उन की ख़्वाहिशों पर न चलो और कहो कि मैं ईमान लाया उस पर जो कोई किताब **अल्लाह**

كِتٰبٍ ۚ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ؕ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا

ने उतारी[39] और मुझे हुक्म है कि मैं तुम में इन्साफ़ करूं[40] **अल्लाह** हमारा तुम्हारा सब का रब है[41] हमारे लिये हमारा अ़मल

وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَ اِلَيْهِ

और तुम्हारे लिये तुम्हारा किया[42] कोई हु़ज्जत नहीं हम में और तुम में[43] **अल्लाह** हम सब को जम्अ़ करेगा[44] और उसी की

की उम्मतों के लिये यक्सां लाज़िम हैं। **26 :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया कि जमाअ़त रह़मत और फ़ुर्क़त अ़ज़ाब है। ख़ुलासा येह है कि उसूले दीन में तमाम मुसल्मान ख़्वाह वोह किसी अ़ह्द या किसी उम्मत के हों यक्सां हैं इन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, अलबत्ता अह़काम में उम्मतें ब ए'तिबार अपने अह़वाल व ख़ुसूसिय्यात के जुदागाना हैं, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا" (हम ने तुम सब के लिये एक एक शरीअ़त और रास्ता रखा) **27 :** या'नी बुतों को छोड़ना और तौह़ीद इख़्तियार करना। **28 :** अपने बन्दों में से उसी को तौफ़ीक़ देता है। **29 :** और उस की इत़ाअ़त क़बूल करे। **30 :** या'नी अहले किताब ने अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के बा'द जो दीन में इख़्तिलाफ़ डाला कि किसी ने तौह़ीद इख़्तियार की कोई काफ़िर हो गया वोह इस से पहले जान चुके थे कि इस त़रह़ इख़्तिलाफ़ करना और फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हो जाना गुमराही है लेकिन बा वुजूद इस के इन्हों ने येह सब कुछ किया **31 :** और रियासत व नाह़क़ की हुकूमत के शौक़ में। **32 :** अ़ज़ाब के मुअख़्ख़र फ़रमाने की **33 :** या'नी रोज़े क़ियामत तक **34 :** काफ़िरों पर दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा कर। **35 :** या'नी यहूदो नसारा **36 :** या'नी अपनी किताब पर मज़बूत़ ईमान नहीं रखते या येह मा'ना हैं कि वोह क़ुरआन की त़रफ़ से या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से शक में पड़े हैं। **37 :** या'नी उन कुफ़्फ़ार के इस इख़्तिलाफ़ व परागन्दगी की वज्ह से उन्हें तौह़ीद और मिल्लते ह़नीफ़िय्यह पर मुत्तफ़िक़ होने की दा'वत दो। **38 :** दीन पर और दीन की दा'वत देने पर। **39 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की तमाम किताबों पर, क्यूं कि मुतफ़र्रिक़ीन बा'ज़ पर ईमान लाते थे और बा'ज़ से कुफ़्र करते थे। **40 :** तमाम चीज़ों में और जमीअ़ अह़वाल में और हर फ़ैसले में। **41 :** और हम सब उस के बन्दे। **42 :** हर एक अपने अ़मल की जज़ा पाएगा। **43 :** क्यूं कि ह़क़ ज़ाहिर

الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ

तरफ़ फिरना है और वोह जो **अल्लाह** के बारे में झगड़ते हैं बा'द इस के कि मुसल्मान उस की दा'वत क़बूल कर चुके[45]

حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾

उन की दलील महूज़ बे सबात है उन के रब के पास और उन पर ग़ज़ब है[46] और उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब है[47]

اَللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ

अल्लाह है जिस ने हक़ के साथ किताब उतारी[48] और इन्साफ़ की तराज़ू[49] और तुम क्या जानो शायद

السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ

क़ियामत क़रीब ही हो[50] इस की जल्दी मचा रहे हैं वोह जो इस पर ईमान नहीं रखते[51] और जिन्हें

اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ

उस पर ईमान है वोह उस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वोह हक़ है सुनते हो बेशक जो

يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ

क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं **अल्लाह** अपने बन्दों पर लुत्फ़ फ़रमाता है[52] जिसे चाहे

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ ع ٢

रोज़ी देता है[53] और वोही कुव्वत व इ़ज़्ज़त वाला है जो आख़िरत की खेती चाहे[54]

نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ

हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं[55] और जो दुन्या की खेती चाहे[56] हम उसे उस में से कुछ देंगे[57] और आख़िरत

हो चुका "وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **44 :** रोज़े क़ियामत। **45 :** मुराद उन झगड़ने वालों से यहूद हैं, वोह चाहते थे कि मुसल्मानों को फिर कुफ़्र की त़रफ़ लौटाएं इस लिये झगड़ा करते थे और कहते थे कि हमारा दीन पुराना हमारी किताब पुरानी हमारे नबी पहले, हम तुम से बेहतर हैं। **46 :** ब सबब उन के कुफ़्र के। **47 :** आख़िरत में। **48 :** या'नी क़ुरआने पाक जो क़िस्म क़िस्म के दलाइल व अहकाम पर मुश्तमिल है। **49 :** या'नी उस ने अपनी कुतुबे मुनज़्ज़ला (नाज़िल कर्दा किताबों) में अ़द्ल का हुक्म दिया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुराद मीज़ान से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी है। **50 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया तो मुश्रिकीन ने ब त़रीक़े तक्ज़ीब कहा कि क़ियामत कब होगी ? इस के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई। **51 :** और येह गुमान करते हैं कि क़ियामत आने वाली ही नहीं, इसी लिये ब त़रीक़े तमस्ख़ुर जल्दी मचाते हैं। **52 :** बे शुमार एहसान करता है नेकों पर भी और बदों पर भी हत्ता कि बन्दे गुनाहों में मश्ग़ूल रहते हैं और वोह उन्हें भूक से हलाक नहीं करता। **53 :** और फ़राख़िये ऐ़श अ़त़ा फ़रमाता है मोमिन को भी और काफ़िर को भी हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत। ह़दीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है मेरे बा'ज़े मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि तवंगरी उन के कुव्वते ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें फ़क़ीर मोहताज कर दूं तो उन के अ़क़ीदे फ़ासिद हो जाएं और बा'ज़े बन्दे ऐसे हैं कि तंगी और मोहताजी उन के कुव्वते ईमान का बाइस है अगर मैं उन्हें ग़नी मालदार कर दूं तो उन के अ़क़ीदे ख़राब हो जाएं। **54 :** या'नी जिस को अपने आ'माल से नफ़्ए आख़िरत मक़्सूद हो **55 :** उस को नेकियों की तौफ़ीक़ दे कर और उस के

www.dawateislami.net

فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ

में उस का कुछ हिस्सा नहीं[58] या उन के लिये कुछ शरीक हैं[59] जिन्हों ने उन के लिये[60] वोह दीन निकाल दिया है[61]

مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ

कि **अल्लाह** ने उस की इजाज़त न दी[62] और अगर एक फ़ैसले का वा'दा न होता[63] तो यहीं उन में फ़ैसला कर दिया जाता[64] और बेशक

الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا

ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[65] तुम ज़ालिमों को देखोगे कि अपनी कमाइयों से सहमे हुए होंगे[66]

وَ هُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ

और वोह उन पर पड़ कर रहेंगी[67] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोह जन्नत की

الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿۲۲﴾

फुलवारियों में हैं उन के लिये उन के रब के पास हैं जो चाहें येही बड़ा फ़ज़्ल है

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

येह है वोह जिस की खुश ख़बरी देता है **अल्लाह** अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये

قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَ مَنْ يَّقْتَرِفْ

तुम फ़रमाओ मैं इस[68] पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता[69] मगर क़राबत की महब्बत[70] और जो नेक

लिये ख़ैरात व ताआ़त की राहें सह्ल कर के और उस की नेकियों का सवाब बढ़ा कर। **56 :** या'नी जिस का अ़मल महूज़ दुन्या हासिल करने के लिये हो और वोह आख़िरत पर ईमान न रखता हो (مدارک) **57 :** या'नी दुन्या में जितना उस के लिये मुक़द्दर किया है। **58 :** क्यूं कि उस ने आख़िरत के लिये अ़मल किया ही नहीं। **59 :** मा'ना येह हैं कि क्या कुफ़्फ़ारे मक्का उस दीन को क़बूल करते हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के लिये मुक़र्रर फ़रमाया या उन के कुछ ऐसे शुरका हैं शयातीन वग़ैरा **60 :** कुफ़्री दीनों में से **61 :** जो शिर्क व इन्कारे बअ़्स पर मुश्तमिल है। **62 :** या'नी वोह दीने इलाही के ख़िलाफ़ है। **63 :** और जज़ा के लिये रोज़े क़ियामत मुअ़य्यन न फ़रमा दिया गया होता **64 :** और दुन्या ही में तक्ज़ीब करने वालों को गिरिफ़्तारे अ़ज़ाब कर दिया जाता। **65 :** आख़िरत में और ज़ालिमों से मुराद यहां काफ़िर हैं। **66 :** या'नी कुफ़्र व आ'माले ख़बीसा से जो उन्हों ने दुन्या में कमाए थे। इस अन्देशे से कि अब उन की सज़ा मिलने वाली है। **67 :** ज़रूर उन से किसी तरह बच नहीं सकते डरें या न डरें। **68 :** तब्लीग़े रिसालत और इर्शाद व हिदायत **69 :** और तमाम अम्बिया का येही त़रीक़ा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अन्सार ने देखा कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़िम्मे मसारिफ़ बहुत हैं और माल कुछ भी नहीं है तो उन्हों ने आपस में मश्वरा किया और हुज़ूर के हुक़ूक़ व एह़सानात याद कर के हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जम्अ़ किया और उस को ले कर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर की बदौलत हमें हिदायत हुई, हम ने गुमराही से नजात पाई, हम देखते हैं कि हुज़ूर के मसारिफ़ बहुत ज़ियादा हैं, इस लिये हम येह माल ख़ुद्दामे आस्ताना की ख़िदमत में नज़्र के लिये लाए हैं क़बूल फ़रमा कर हमारी इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई की जाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और हुज़ूर ने वोह अम्वाल वापस फ़रमा दिये। **70 :** तुम पर लाज़िम है क्यूं कि मुसल्मानों के दरमियान मुवद्दत व महब्बत वाजिब है जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "اَلْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ" और ह़दीस शरीफ़ में है कि मुसल्मान मिस्ल एक इमारत के हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्से को कुव्वत और मदद पहुंचाता है। जब मुसल्मानों में बाहम एक दूसरे के साथ महब्बत वाजिब हुई तो सय्यिदे आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ किस क़दर महब्बत फ़र्ज़ होगी। मा'ना येह हैं कि मैं हिदायत व इर्शाद पर

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِیْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ

काम करे[71] हम उस के लिये उस में और खूबी बढ़ाएं बेशक अल्लाह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है या[72] येह कहते हैं कि

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَ یَمْحُ اللّٰهُ

उन्हों ने अल्लाह पर झूट बांध लिया[73] और अल्लाह चाहे तो तुम्हारे दिल पर अपनी रहमत व हिफ़ाज़त की मोहर फ़रमा दे[74] और मिटाता है

الْبَاطِلَ وَ یُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾ وَ هُوَ

बातिल को[75] और हक़ को साबित फ़रमाता है अपनी बातों से[76] बेशक वोह दिलों की बातें जानता है और वोही है

الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ یَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَ یَعْلَمُ مَا

जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है[77] और जानता है जो कुछ

تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ لا وَ یَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ یَزِیْدُهُمْ

तुम करते हो और दुआ क़बूल फ़रमाता है उन की जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उन्हें अपने फ़ज़्ल से

مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ الْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ﴿۲۶﴾ وَ لَوْ بَسَطَ اللّٰهُ

और इन्आम देता है[78] और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है और अगर अल्लाह अपने

الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ؕ

सब बन्दों का रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर ज़मीन में फ़साद फैलाते[79] लेकिन वोह अन्दाज़े से उतारता है जितना चाहे

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ﴿۲۷﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

बेशक वोह अपने बन्दों से ख़बरदार है[80] उन्हें देखता है और वोही है कि मींह उतारता है उन के ना उम्मीद

कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुक़ूक़ तो तुम पर वाजिब हैं उन का लिहाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं उन्हें ईज़ा न दो। हज़रते सईद बिन जुबैर से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की आले पाक है। (بخاری) **मस्अला :** अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इस में कई क़ौल हैं एक तो येह कि मुराद इस से हज़रते अ़ली व हज़रते फ़ातिमा व हसनैन करीमैन हैं رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم। एक क़ौल येह है कि आले अ़ली व आले अ़क़ील व आले जा'फ़र व आले अ़ब्बास मुराद हैं और एक क़ौल येह है कि हुज़ूर के वोह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर सदक़ा हराम है और वोह मुख़्लिसीने बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब हैं, हुज़ूर की अज़्वाजे मुत़हहरात हुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं। **मस्अला :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की महब्बत और हुज़ूर के अक़ारिब की महब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (جمل وخازن وغیرہ) **71 :** यहां नेक काम से मुराद या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की आले पाक की महब्बत है या तमाम उमूरे ख़ैर। **72 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कुफ़्फ़ारे मक्का **73 :** नुबुव्वत का दा'वा कर के या क़ुरआने करीम को किताबे इलाही बता कर। **74 :** कि आप को उन की बद गोइयों से ईज़ा न हो। **75 :** जो कुफ़्फ़ार कहते हैं। **76 :** जो अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाईं। चुनान्चे ऐसा ही किया कि उन के बातिल को मिटाया और कलिमए इस्लाम को ग़ालिब किया। **77 मस्अला :** तौबा हर एक गुनाह से वाजिब है और तौबा की हक़ीक़त येह है कि आदमी बदी व मा'सियत से बाज़ आए और जो गुनाह उस से सादिर हुवा उस पर नादिम हो और हमेशा गुनाह से मुज्तनिब रहने का पुख़्ता इरादा करे और अगर गुनाह में किसी बन्दे की हक़ तलफ़ी भी थी तो उस से ब त़रीक़े शरई ओ़हदा बरआ हो। **78 :** या'नी जितना दुआ मांगने वाले ने त़लब किया था उस से ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाता है। **79 :** तकब्बुर व ग़ुरूर में मुब्तला हो कर। **80 :** जिस के लिये

قَنَطُوْا وَ یَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَ هُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِیْدُ ﴿۲۸﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ

होने पर और अपनी रह़मत फैलाता है[81] और वोही काम बनाने वाला है सब ख़ूबियों सराहा और उस की निशानियों से

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا

है आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और जो चलने वाले इन में फैलाए और वोह उन के इकठ्ठा करने पर[82] जब

ع ۳ یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾ وَ مَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَ

चाहे क़ादिर है और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया[83] और

یَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ؕ ﴿۳۰﴾ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ

बहुत कुछ तो मुआ़फ़ फ़रमा देता है और तुम ज़मीन में क़ाबू से नहीं निकल सकते[84] और न

دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ لَا نَصِیْرٍ ﴿۳۱﴾ وَ مِنْ اٰیٰتِهِ الْجَوَارِ فِی الْبَحْرِ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारा कोई दोस्त न मददगार[85] और उस की निशानियों से हैं[86] दरिया में चलने वालियां

كَالْاَعْلَامِ ؕ ﴿۳۲﴾ اِنْ یَّشَاْ یُسْكِنِ الرِّیْحَ فَیَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ

जैसे पहाड़ियां वोह चाहे तो हवा थमा दे[87] कि उस की पीठ पर[88] ठहरी रह जाएं[89]

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۙ ﴿۳۳﴾ اَوْ یُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े साबिर शाकिर को[90] या उन्हें तबाह कर दे[91] लोगों के गुनाहों के सबब[92] और

یَعْفُ عَنْ كَثِیْرٍ ۙ ﴿۳۴﴾ وَّ یَعْلَمَ الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ

बहुत कुछ मुआ़फ़ फ़रमा दे[93] और जान जाएं वोह जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उन्हें[94] कहीं भागने की

जितना मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है उस को उतना अ़त़ा फ़रमाता है। **81 :** और मींह से नफ़्अ़ देता है और क़ह़त़ को दफ़्अ़ फ़रमाता है। **82 :** ह़श्र के लिये। **83 :** येह ख़ित़ाब मोमिनीने मुकल्लफ़ीन से है जिन से गुनाह सरज़द होते हैं, मुराद येह है कि दुन्या में जो तक्लीफ़ें और मुसीबतें मोमिनीन को पहुंचती हैं अक्सर उन का सबब उन के गुनाह होते हैं, उन तक्लीफ़ों को अल्लाह तआला उन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तक्लीफ़ उस के रफ़्ए दरजात के लिये होती है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में वारिद है। अम्बिया عَلَیْهِمُ السَّلَام जो गुनाहों से पाक हैं और छोटे बच्चे जो मुकल्लफ़ नहीं हैं इस आयत के मुख़ात़ब नहीं। **फ़ाएदा :** बा'ज़े गुमराह फ़िर्क़े जो तनासुख़ के क़ाइल हैं इस आयत से इस्तिद्लाल करते हैं कि छोटे बच्चों को जो तक्लीफ़ पहुंचती है इस आयत से साबित होता है कि वोह उन के गुनाहों का नतीजा हो और अभी तक उन से कोई गुनाह हुवा नहीं तो लाज़िम आया कि इस ज़िन्दगी से पहले कोई और ज़िन्दगी हो जिस में गुनाह हुए हों। येह बात बात़िल है क्यूं कि बच्चे इस कलाम के मुख़ात़ब ही नहीं जैसा कि बिल उ़मूम तमाम ख़ित़ाब आ़क़िलीन बालिग़ीन को होते हैं, पस तनासुख़ वालों का इस्तिद्लाल बात़िल हुवा। **84 :** जो मुसीबतें तुम्हारे लिये मुक़द्दर हो चुकी हैं उन से कहीं भाग नहीं सकते बच नहीं सकते। **85 :** कि उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें मुसीबत व तक्लीफ़ से बचा सके। **86 :** बड़ी बड़ी कश्तियां **87 :** जो कश्तियों को चलाती है। **88 :** या'नी दरिया के ऊपर **89 :** चलने न पाएं। **90 :** साबिर शाकिर से मोमिने मुख़्लिस मुराद है जो सख़्ती व तक्लीफ़ में सब्र करता है और राह़तो ऐ़श में शुक्र। **91 :** या'नी कश्तियों को ग़र्क़ कर दे **92 :** जो उस में सुवार हैं। **93 :** गुनाहों में से कि उन पर अ़ज़ाब न करे। **94 :** हमारे अ़ज़ाब से।

مَّحِیۡصٍ ﴿۳۵﴾ فَمَاۤ اُوۡتِیۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَمَتَاعُ الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚ وَ مَا عِنۡدَ
जगह नहीं तुम्हें जो कुछ मिला है[95] वोह जीती दुन्या में बरत्ने का है[96] और वोह जो **अल्लाह** के

اللّٰہِ خَیۡرٌ وَّ اَبۡقٰی لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَلٰی رَبِّہِمۡ یَتَوَکَّلُوۡنَ ﴿ۚ۳۶﴾ وَ الَّذِیۡنَ
पास है[97] बेहतर है और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला उन के लिये जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं[98] और वोह जो

یَجۡتَنِبُوۡنَ کَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَ الۡفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوۡا ہُمۡ یَغۡفِرُوۡنَ ﴿ۚ۳۷﴾
बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआफ़ कर देते हैं

وَ الَّذِیۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّہِمۡ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ ۪ وَ اَمۡرُہُمۡ شُوۡرٰی
और वोह जिन्हों ने अपने रब का हुक्म माना[99] और नमाज़ क़ाइम रखी[100] और उन का काम उन के आपस के मश्वरे

بَیۡنَہُمۡ ۪ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ﴿ۚ۳۸﴾ وَ الَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَہُمُ الۡبَغۡیُ ہُمۡ
से है[101] और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं और वोह कि जब उन्हें बग़ावत पहुंचे

یَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ وَ جَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثۡلُہَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَ اَصۡلَحَ فَاَجۡرُہٗ
बदला लेते हैं[102] और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है[103] तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र

عَلَی اللّٰہِ ؕ اِنَّہٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۴۰﴾ وَ لَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ ظُلۡمِہٖ فَاُولٰٓئِکَ
अल्लाह पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को[104] और बेशक जिस ने अपनी मज़्लूमी पर बदला लिया उन पर

مَا عَلَیۡہِمۡ مِّنۡ سَبِیۡلٍ ﴿ؕ۴۱﴾ اِنَّمَا السَّبِیۡلُ عَلَی الَّذِیۡنَ یَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ
कुछ मुआख़ज़े की राह नहीं मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो[105] लोगों पर ज़ुल्म करते हैं

95 : दुन्यवी मालो अस्बाब। **96 :** सिर्फ़ चन्द रोज़, उस को बक़ा नहीं। **97 :** या'नी सवाब वोह **98 शाने नुज़ूल :** येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के हक़ में नाज़िल हुई जब आप ने अपना कुल माल सदक़ा कर दिया और इस पर अ़रब के लोगों ने आप को मलामत की। **99 शाने नुज़ूल :** येह आयत अन्सार के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने अपने रब की दा'वत क़बूल कर के ईमान व ताअ़त को इख़्तियार किया। **100 :** इस पर मुदावमत की। **101 :** वोह जल्दी और ख़ुदराई नहीं करते। हज़रते हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : जो क़ौम मश्वरा करती है वोह सहीह राह पर पहुंचती है। **102 :** या'नी जब उन पर कोई ज़ुल्म करे तो इन्साफ़ से बदला लेते हैं और बदले में हद से तजावुज़ नहीं करते। इब्ने ज़ैद का क़ौल है कि मोमिन दो तरह के हैं **एक** वोह जो ज़ुल्म को मुआफ़ करते हैं पहली आयत में उन का ज़िक्र फ़रमाया गया, **दूसरे** वोह जो ज़ालिम से बदला लेते हैं उन का इस आयत में ज़िक्र है। अ़ता ने कहा कि येह वोह मोमिनीन हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा से निकाला और उन पर ज़ुल्म किया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें इस सर ज़मीन में तसल्लुत दिया और उन्हों ने ज़ालिमों से बदला लिया। **103 :** मा'ना येह हैं कि बदला क़दरे जिनायत होना चाहिये इस में ज़ियादती न हो और बदले को बुराई कहना मजाज़ है कि सूरतन मुशाबेह होने के सबब से कहा जाता है और जिस को वोह बदला दिया जाए उसे बुरा मा'लूम होता है और बुराई के साथ ता'बीर करने में येह भी इशारा है कि अगर्चे बदला लेना जाइज़ है लेकिन "अ़फ़्व" इस से बेहतर है। **104 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि ज़ालिमों से वोह मुराद हैं जो ज़ुल्म की इब्तिदा करें। **105 :** इब्तिदाअन।

www.dawateislami.net

وَ يَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ وَ

और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं[106] उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और

لَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

बेशक जिस ने सब्र किया[107] और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِیٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ

उस का कोई रफ़ीक़ नहीं **अल्लाह** के मुक़ाबिल[108] और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब अ़ज़ाब देखेंगे[109]

يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾ ج وَ تَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

कहेंगे क्या वापस जाने का कोई रास्ता है[110] और तुम उन्हें देखोगे कि आग पर पेश किये जाते हैं

خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِیٍّ ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

ज़िल्लत से दबे लचे छुपी निगाहों देखते हैं[111] और ईमान वाले कहेंगे

اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ

बेशक हार में वोह हैं जो अपनी जानें और अपने घर वाले हार बैठे क़ियामत के दिन[112] सुनते हो

اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِیْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ

बेशक ज़ालिम[113] हमेशा के अ़ज़ाब में हैं और उन के कोई दोस्त न हुए कि **अल्लाह** के मुक़ाबिल

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾ ط اِسْتَجِيْبُوْا

उन की मदद करते[114] और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उस के लिये कहीं रास्ता नहीं[115] अपने रब का

لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِیَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ

हुक्म मानो[116] उस दिन के आने से पहले जो **अल्लाह** की त़रफ़ से टलने वाला नहीं[117] उस दिन तुम्हें कोई

106 : तकब्बुर और मआ़सी का इरतिकाब कर के। **107 :** ज़ुल्म व ईज़ा पर और बदला न लिया **108 :** कि उसे अ़ज़ाब से बचा सके। **109 :** रोज़े क़ियामत **110 :** या'नी दुन्या में, ताकि वहां जा कर ईमान ले आएं। **111 :** या'नी ज़िल्लत व ख़ौफ़ के बाइस आग को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाहों से देखेंगे जैसे कोई गरदन ज़दनी (जिस के सर को क़लम करने का हुक्म हो वोह) अपने क़त्ल के वक़्त तेग़ ज़न (तलवार चलाने वाले) की तलवार को दुज़्दीदा (तिरछी) निगाह से देखता है। **112 :** जानों का हारना तो येह है कि वोह कुफ़्र इख़्तियार कर के जहन्नम के दाइमी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए और घर वालों का हारना येह है कि ईमान लाने की सूरत में जन्नत की जो हूरें उन के लिये नामज़द थीं उन से महरूम हो गए। **113 :** या'नी काफ़िर **114 :** और उस के अ़ज़ाब से बचा सकते। **115 :** ख़ैर का न वोह दुन्या में हक़ तक पहुंच सके न आख़िरत में जन्नत तक। **116 :** और सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी कर के तौहीद व इबादते इलाही इख़्तियार करो **117 :** इस से मुराद या मौत का दिन है या क़ियामत का।

www.dawateislami.net

يَّوۡمَئِذٍ وَّ مَا لَكُمۡ مِّنۡ نَّكِيۡرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنۡ اَعۡرَضُوۡا فَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ عَلَيۡهِمۡ

पनाह न होगी न तुम्हें इन्कार करते बने[118] तो अगर वोह मुंह फेरें[119] तो हम ने तुम्हें उन पर निगहबान बना कर

حَفِيۡظًا ؕ اِنۡ عَلَيۡكَ اِلَّا الۡبَلٰغُ ؕ وَ اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنَّا رَحۡمَةً

नहीं भेजा[120] तुम पर तो नहीं मगर पहुंचा देना[121] और जब हम आदमी को अपनी त़रफ़ से किसी रह़मत का मज़ा देते हैं[122]

فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنۡ تُصِبۡهُمۡ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ فَاِنَّ الۡاِنۡسَانَ

इस पर ख़ुश हो जाता है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचे[123] बदला उस का जो उन के हाथों ने आगे भेजा[124] तो इन्सान बड़ा

كَفُوۡرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ

नाशुक्रा है[125] अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत[126] पैदा करता है जो चाहे जिसे चाहे

لِمَنۡ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنۡ يَّشَآءُ الذُّكُوۡرَ ﴿٤٩﴾ اَوۡ يُزَوِّجُهُمۡ

बेटियां अ़त़ा फ़रमाए[127] और जिसे चाहे बेटे दे[128] या दोनों मिला दे

ذُكۡرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجۡعَلُ مَنۡ يَّشَآءُ عَقِيۡمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ﴿٥٠﴾ وَ مَا

बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे[129] बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है और किसी

كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحۡيًا اَوۡ مِنۡ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوۡ يُرۡسِلَ

आदमी को नहीं पहुंचता कि अल्लाह उस से कलाम फ़रमाए मगर वह़्य के त़ौर पर[130] या यूं कि वोह बशर पर्दए अ़ज़मत के उधर हो[131] या कोई

118 : अपने गुनाहों का या'नी उस दिन कोई रिहाई की सूरत नहीं न अ़ज़ाब से बच सकते हो न अपने आ'माले क़बीह़ा का इन्कार कर सकते हो जो तुम्हारे आ'माल नामों में दर्ज हैं। 119 : ईमान लाने और इत़ाअ़त करने से 120 : कि तुम पर उन के आ'माल की ह़िफ़ाज़त लाज़िम हो। 121 : और वोह तुम ने अदा कर दिया। (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) 122 : ख़्वाह वोह दौलतो सरवत हो या सिह़ह़तो आ़फ़िय्यत या अम्नो सलामत या जाहो मर्तबत 123 : या और कोई मुसीबत व बला मिस्ल क़ह़त़ व बीमारी व तंगदस्ती वग़ैरा के रूनुमा हो। 124 : या'नी उन की ना फ़रमानियों और मा'सियतों के सबब से। 125 : ने'मतों को भूल जाता है। 126 : जैसा चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है, कोई दख़्ल देने और ए'तिराज़ करने की मजाल नहीं रखता। 127 : बेटा न दे। 128 : दुख़्तर न दे 129 : कि उस की औलाद ही न हो, वोह मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَا السَّلَام की सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां और ह़ज़रते यह़्या और ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام के कोई औलाद ही नहीं। 130 : या'नी बे वासित़ा इस के दिल में "इल्क़ा" फ़रमा कर और "इल्हाम" कर के बेदारी में या ख़्वाब में इस में वह़्य का वुसूल बे वासित़ा सम्अ़ के है और आयत में "اِلَّا وَحْيًا" से येही मुराद है, इस में येह क़ैद नहीं कि इस ह़ाल में सामेअ़ मुतकल्लिम को देखता हो या न देखता हो। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के सीनए मुबारक में ज़बूर की वह़्य फ़रमाई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ब्हे फ़रज़न्द की ख़्वाब में वह़्य फ़रमाई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मे'राज में उसी त़रह़ की वह़्य फ़रमाई जिस का "فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى" में बयान है। येह सब इसी क़िस्म में दाख़िल हैं। अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़्वाब ह़क़ होते हैं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि अम्बिया के ख़्वाब वह़्य हैं। (تفسیر ابی السعود و کبیر و مدارک و زرقانی علی المواہب وغیرہ) 131 : या'नी रसूल पसे पर्दा उस का कलाम सुने, इस त़रीक़े वह़्य में भी कोई वासित़ा नहीं मगर सामेअ़ को इस ह़ाल में मुतकल्लिम का दीदार नहीं होता। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इसी त़रह़

www.dawateislami.net

رَسُوْلًا فَيُوْحِیَ بِاِذْنِهٖ مَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِیٌّ حَكِیْمٌ ﴿۵۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَیْنَاۤ

फ़िरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे[132] बेशक वोह बुलन्दी व हिक्मत वाला है और यूंही हम ने तुम्हें वह्य

اِلَیْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِیْ مَا الْكِتٰبُ وَ لَا الْاِیْمَانُ وَ

भेजी[133] एक जांफ़िज़ा चीज़[134] अपने हुक्म से उस से पहले न तुम किताब जानते थे न अह़कामे शर्अ़ की तफ़्सील

لٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِیْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّكَ لَتَهْدِیْۤ

हां हम ने उसे[135] नूर किया जिस से हम राह दिखाते हैं अपने बन्दों से जिसे चाहते हैं और बेशक तुम ज़रूर

اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿ۙ۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی

सीधी राह बताते हो[136] अल्लाह की राह[137] कि उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

ع ۵

الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾ ع

ज़मीन में सुनते हो सब काम अल्लाह ही की त़रफ़ फिरते हैं

آیاتها ۸۹ | ٤٣ سورۃ الزخرف مکیۃ ٦٣ | رکوعاتها ۷

सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

مع

حٰمٓ ﴿ۚ۱﴾ وَ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿ۙ۲﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ

रोशन किताब की क़सम[2] हम ने उसे अ़रबी क़ुरआन उतारा कि

تَعْقِلُوْنَ ﴿ۚ۳﴾ وَ اِنَّهٗ فِیْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَیْنَا لَعَلِیٌّ حَكِیْمٌ ﴿ؕ۴﴾ اَفَنَضْرِبُ

तुम समझो[3] और बेशक वोह अस्ल किताब में[4] हमारे पास ज़रूर बुलन्दी व हिक्मत वाला है तो क्या हम तुम

के कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। **शाने नुज़ूल :** यहूद ने हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो अल्लाह तआ़ला से कलाम करते वक़्त उस को क्यूं नहीं देखते जैसा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام देखते थे ? हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने जवाब दिया कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام नहीं देखते थे और अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **मस्अला :** अल्लाह तआ़ला इस से पाक है कि उस के लिये कोई ऐसा पर्दा हो जैसा जिस्मानिय्यात के लिये होता है, इस पर्दे से मुराद सामेअ़ का दुन्या में दीदार से मह़जूब होना है। **132 :** इस त़रीक़े वह्य में रसूल की त़रफ़ फ़िरिश्ते की वसात़त है। **133 :** ऐ सय्यिदे आ़लम ख़ातमुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ! **134 :** या'नी क़ुरआने पाक जो दिलों में ज़िन्दगी पैदा करता है। **135 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को **136 :** या'नी दीने इस्लाम। **137 :** जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाई। **1 :** सूरए ज़ुख़रुफ़ मक्किय्या है, इस सूरत में सात रुकूअ़, नवासी आयतें और तीन हज़ार चार सो ह़र्फ़ हैं **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जिस में हिदायत व ज़लालत की राहें जुदा जुदा और वाज़ेह़ कर दीं और उम्मत के तमाम शरई ज़रूरिय्यात को बयान फ़रमा दिया। **3 :** उस के मआ़नी व अह़काम को। **4 :** अस्ल किताब से मुराद लौहे

عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝٥ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ

से ज़िक्र का पहलू फेर दें इस पर कि तुम लोग हद से बढ़ने वाले हो[5] और हम ने कितने ही

نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧

ग़ैब बताने वाले (नबी) अगलों में भेजे और उन के पास जो ग़ैब बताने वाला (नबी) आया उस की हंसी ही बनाया किये[6]

فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

तो हम ने वोह हलाक कर दिये जो उन से भी पकड़ में सख़्त थे[7] और अगलों का हाल गुज़र चुका है और अगर तुम उन से पूछो[8]

مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩

कि आस्मान और ज़मीन किस ने बनाए तो ज़रूर कहेंगे उन्हें बनाया उस इज़्ज़त वाले इल्म वाले ने[9]

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ

जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये उस में रास्ते किये कि

تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ

तुम राह पाओ[10] और वोह जिस ने आस्मान से पानी उतारा एक अन्दाज़े से[11] तो हम ने उस से एक

بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١ وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ

मुर्दा शहर ज़िन्दा फ़रमा दिया यूंही तुम निकाले जाओगे[12] और जिस ने सब जोड़े बनाए[13] और

جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ

तुम्हारे लिये कश्तियों और चौपायों से सुवारियां बनाईं कि तुम उन की पीठों पर ठीक बैठो[14]

महफ़ूज़ है, कुरआने करीम इस में सब्त है। **5 :** या'नी तुम्हारे कुफ़्र में हद से बढ़ने की वज्ह से क्या हम तुम्हें मुहमल छोड़ दें और तुम्हारी तरफ़ से वह्ये कुरआन का रुख़ फेर दें और तुम्हें अम्र व नही कुछ न करें। मा'ना येह हैं कि हम ऐसा न करेंगे, हज़रते क़तादा ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम ! अगर येह कुरआने पाक उठा लिया जाता उस वक़्त जब कि इस उम्मत के पहले लोगों ने इस से ए'राज़ किया था तो वोह सब हलाक हो जाते लेकिन उस ने अपनी रहमत व करम से इस कुरआन का नुज़ूल जारी रखा। **6 :** जैसा आप की क़ौम के लोग करते हैं, कुफ़्फ़ार का क़दीम से येह मा'मूल चला आया है। **7 :** और हर तरह का ज़ोर व कुव्वत रखते थे, आप की उम्मत के लोग जो पहले कुफ़्फ़ार की चाल चलते हैं उन्हें डरना चाहिये कि कहीं इन का भी वोही अन्जाम न हो जो उन का हुवा कि ज़िल्लतो रुस्वाई की उ़क़ूबतों से हलाक किये गए। **8 :** या'नी मुश्रिकीन से **9 :** या'नी इक़रार करेंगे कि आस्मान व ज़मीन को **अल्लाह** तआ़ला ने बनाया और येह भी इक़रार करेंगे कि वोह इज़्ज़त व इल्म वाला है, बा वुजूद इस इक़रार के बअ़्स का इन्कार कैसी इन्तिहा दरजे की जहालत है। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने इज़्हारे कुदरत के लिये अपनी मस्नूआ़त का ज़िक्र फ़रमाता है और अपने औसाफ़ व शान का इज़्हार करता है। **10 :** सफ़रों में अपने मनाज़िल व मक़ासिद की तरफ़। **11 :** तुम्हारी हाजतों की क़दर, न इतना कम कि उस से तुम्हारी हाजतें पूरी न हों न इतना ज़ियादा कि क़ौमे नूह की तरह तुम्हें हलाक कर दे। **12 :** अपनी क़ब्रों से ज़िन्दा कर के। **13 :** या'नी तमाम अस्नाफ़ व अन्वाअ़। कहा गया है कि **अल्लाह** तआ़ला "फ़र्द" (अकेला) है, ज़िद्द (शरीक होने) और निद्द (मिस्ल होने) और ज़ौजिय्यत (जोड़ा होने) से मुनज़्ज़ा व पाक है, उस के सिवा ख़ल्क़ में जो हे ज़ौज (जोड़ा) है। **14 :** ख़ुश्की और तरी के सफ़र में।

www.dawateislami.net

ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ

फिर अपने रब की ने'मत याद करो जब उस पर ठीक बैठ लो और यूं कहो पाकी है

الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا

उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़

لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَ جَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ

पलटना है[15] और उस के लिये उस के बन्दों से टुकड़ा ठहराया[16] बेशक आदमी[17] खुला

مُّبِیْنٌ ؕ﴿۱۵﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا یَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّ اَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِیْنَ ﴿۱۶﴾ وَ اِذَا

नाशुक्रा है[18] क्या उस ने अपने लिये अपनी मख़्लूक़ में से बेटियां लीं और तुम्हें बेटों के साथ ख़ास किया[19] और जब

بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ

उन में किसी को खुश ख़बरी दी जाए उस चीज़ की[20] जिस का वस्फ़ रह़मान के लिये बता चुका है[21] तो दिन भर उस का मुंह काला रहे और

كَظِیْمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَ مَنْ یُّنَشَّؤُا فِی الْحِلْیَةِ وَ هُوَ فِی الْخِصَامِ غَیْرُ مُبِیْنٍ ﴿۱۸﴾ وَ

ग़म खाया करे[22] और क्या[23] वोह जो गहने (ज़ेवर) में परवान चढ़े[24] और बह़्स में साफ़ बात न करे[25] और

جَعَلُوا الْمَلٰٓىٕكَةَ الَّذِیْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ

उन्हों ने फ़िरिश्तों को कि रह़मान के बन्दे हैं औ़रतें ठहराया[26] क्या इन के बनाते वक़्त येह ह़ाज़िर थे[27]

15 : आख़िरे कार। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाते तो अपनी नाक़ा पर सुवार होते वक़्त पहले "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" पढ़ते फिर "سُبْحٰنَ اللّٰه" और "اَللّٰهُ اَكْبَر" येह सब तीन तीन बार, फिर येह आयत पढ़ते "سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ" और इस के बा'द और दुआ़एं पढ़ते और जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कश्ती में सुवार होते तो फ़रमाते : "بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ" 16 : या'नी कुफ़्फ़ार ने इस इक़रार के बा वुजूद कि **अल्लाह** तआ़ला आस्मान व ज़मीन का ख़ालिक़ है येह सितम किया कि मलाएका को **अल्लाह** तआ़ला की बेटियां बताया और औलाद साह़िबे औलाद का जुज़ होती है, ज़ालिमों ने **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये जुज़ क़रार दिया, कैसा अ़ज़ीम जुर्म है। 17 : जो ऐसी बातों का क़ाइल है। 18 : उस का कुफ़्र ज़ाहिर है। 19 : अदना अपने लिये और आ'ला तुम्हारे लिये, कैसे जाहिल हो क्या बकते हो। 20 : या'नी बेटी की कि तेरे घर में बेटी पैदा हुई है 21 : कि مَعَاذَ اللّٰه वोह बेटी वाला है। 22 : और बेटी का होना इस क़दर ना गवार समझे बा वुजूद इस के ख़ुदाए पाक के लिये बेटियां बताए (تَعَالَى اللّٰهُ عَنْ ذٰلِكَ) (**अल्लाह** को बरतरी है इस से) 23 : काफ़िर ह़ज़रते रह़मान के लिये औलाद की क़िस्मों में से तज्वीज़ करते हैं। 24 : या'नी ज़ेवरों की ज़ैबो ज़ीनत में नाज़ो नज़ाकत के साथ परवरिश पाए। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ज़ेवर से तज़य्युन (ज़ैबो ज़ीनत करना) दलीले नुक़्सान है तो मर्दों को इस से इज्तिनाब चाहिये, परहेज़ गारी से अपनी ज़ीनत करें। अब आगे आयत में लड़की की एक और कमज़ोरी का इज़्हार फ़रमाया जाता है। 25 : या'नी अपने ज़ो'फ़े ह़ाल और क़िल्लते अ़क़्ल की वज्ह से। ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि औ़रत जब गुफ़्तगू करती है और अपनी ताईद में कोई दलील पेश करना चाहती है तो अक्सर ऐसा होता है कि वोह अपने ख़िलाफ़ दलील पेश कर देती है। 26 : ह़ासिल येह है कि फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां बताने में बे दीनों ने तीन कुफ़्र किये **एक** तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ औलाद की निस्बत **दूसरे** उस ज़लील चीज़ का उस की त़रफ़ मन्सूब करना जिस को वोह ख़ुद बहुत ही ह़क़ीर समझते हैं और अपने लिये गवारा नहीं करते **तीसरे** मलाएका की तौहीन उन्हें बेटियां बताना। (مدارک) अब इस का रद फ़रमाया जाता है। 27 : फ़िरिश्तों का मुज़क्कर या मुअन्नस होना ऐसी चीज़ तो है नहीं जिस पर कोई अ़क़्ली दलील क़ाइम हो सके और उन के पास ख़बर

سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ

अब लिख ली जाएगी उन की गवाही[28] और उन से जवाब त़लब होगा[29] और बोले अगर रह़मान चाहता हम उन्हें न पूजते[30]

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا یَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَیْنٰهُمْ كِتٰبًا

उन्हें उस की ह़क़ीक़त कुछ मा'लूम नहीं[31] यूंही अट्कलें दौड़ाते हैं[32] या इस से क़ब्ल हम ने उन्हें

مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى

कोई किताब दी है जिसे वोह थामे हुए हैं[33] बल्कि बोले हम ने अपने बाप दादा को एक दीन

اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

पर पाया और हम उन की लकीर पर चल रहे हैं[34] और ऐसे ही हम ने तुम से पहले जब किसी शहर में

فِیْ قَرْیَةٍ مِّنْ نَّذِیْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ

कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों (मालदारों) ने येही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक दीन पर पाया

وَّ اِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ

और हम उन की लकीर के पीछे हैं[35] नबी ने फ़रमाया और क्या जब भी कि मैं तुम्हारे पास वोह[36] लाऊं जो सीधी राह हो उस से[37] जिस

عَلَیْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

पर तुम्हारे बाप दादा थे बोले जो कुछ तुम ले कर भेजे गए हम उसे नहीं मानते[38] तो हम ने उन से बदला लिया[39]

कोई आई नहीं तो जो कुफ़्फ़ार इन को मुअन्नस क़रार देते हैं उन का ज़रीअ़ए इल्म क्या है क्या इन की पैदाइश के वक़्त मौजूद थे ? और उन्हों ने मुशाहदा कर लिया है ? जब येह भी नहीं तो मह़ज़ जाहिलाना गुमराही की बात है। **28 :** या'नी कुफ़्फ़ार का फ़िरिश्तों के मुअन्नस होने पर गवाही देना लिख लिया जाएगा **29 :** आख़िरत में और इस पर सज़ा दी जाएगी। सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां किस त़रह़ कहते हो तुम्हारा ज़रीअ़ए इल्म क्या है ? उन्हों ने कहा : हम ने अपने बाप दादा से सुना है और हम गवाही देते हैं वोह सच्चे थे। इस गवाही को **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि लिखी जाएगी और इस पर जवाब त़लब होगा। **30 :** या'नी मलाएका को। मत़लब येह था कि अगर मलाएका की परस्तिश करने से **अल्लाह** तआ़ला राज़ी न होता तो हम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता और जब अ़ज़ाब न आया तो हम समझते हैं कि वोह येही चाहता है। येह उन्हों ने ऐसी बात़िल बात कही जिस से लाज़िम आए कि तमाम जुर्म जो दुन्या में होते हैं उन से ख़ुदा राज़ी है। **अल्लाह** तआ़ला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है। **31 :** वोह रिज़ाए इलाही के जानने वाले ही नहीं। **32 :** झूट बकते हैं। **33 :** और उस में ग़ैरे ख़ुदा की परस्तिश की इजाज़त है ? ऐसा नहीं येह बात़िल है और इस के सिवा भी उन के पास कोई हु़ज्जत नहीं है। **34 :** आंखें मीच कर बे सोचे समझे उन का इत्तिबाअ़ करते हैं, वोह मख़्लूक़ परस्ती किया करते थे। मत़लब येह है कि इस की कोई दलील बजुज़ इस के नहीं है कि येह काम वोह बाप दादा की पैरवी में करते हैं, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि इन से पहले भी ऐसा ही कहा करते थे। **35 :** इस से मा'लूम हुवा कि बाप दादा की अन्धे बन कर पैरवी करना कुफ़्फ़ार का क़दीमी मरज़ है और उन्हें इतनी तमीज़ नहीं कि किसी की पैरवी करने के लिये येह देख लेना ज़रूरी है कि वोह सीधी राह पर हो। चुनान्चे **36 :** दीने ह़क़ **37 :** या'नी उस दीन से **38 :** अगर्चे तुम्हारा दीन ह़क़ व सवाब (दुरुस्त) हो मगर हम अपने बाप दादा का दीन छोड़ने वाले नहीं चाहे वोह कैसा ही हो, इस पर **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है **39 :** या'नी रसूलों के न मानने वालों और उन्हें झुटलाने वालों से।

ع ٨ / ٢

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ع ۲۵ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَ

तो देखो झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी

قَوْمِهٖۤ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ۲۶ لا اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ

क़ौम से फ़रमाया मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवा उस के जिस ने मुझे पैदा किया कि ज़रूर वोह बहुत जल्द

سَيَهْدِيْنِ ۲۷ وَ جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۲۸

मुझे राह देगा और उसे[40] अपनी नस्ल में बाक़ी कलाम रखा[41] कि कहीं वोह बाज़ आएं[42]

بَلْ مَتَّعْتُ هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۲۹ وَ

बल्कि मैं ने उन्हें[43] और उन के बाप दादा को दुन्या के फ़ाएदे दिये[44] यहां तक कि उन के पास हक़[45] और साफ़ बताने वाला रसूल तशरीफ़ लाया[46] और

لَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۳۰ وَ قَالُوْا لَوْ لَا

जब उन के पास हक़ आया बोले येह जादू है और हम इस के मुन्किर हैं और बोले क्यूं न

نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۳۱ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ

उतारा गया येह कुरआन इन दो शहरों[47] के किसी बड़े आदमी पर[48] क्या तुम्हारे रब की

رَحْمَتَ رَبِّكَ ط نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ

रहमत वोह बांटते हैं[49] हम ने उन में उन की ज़ीस्त (ज़िन्दगी गुज़ारने) का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा[50] और

40 : या'नी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने इस तौहीदी कलिमे को जो फ़रमाया था कि मैं बेज़ार हूं तुम्हारे मा'बूदों से सिवाए उस के जिस ने मुझ को पैदा किया। **41 :** तो आप की औलाद में मुवह्हिद (एक ख़ुदा को मानने वाले) और तौहीद के दाई हमेशा रहेंगे। **42 :** शिर्क से और येह दीने बरहक़ क़बूल करें, यहां हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाने में तम्बीह है कि ऐ अहले मक्का अगर तुम्हें अपने बाप दादा का इत्तिबाअ़ करना ही है तो तुम्हारे आबा में जो सब से बेहतर हैं हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उन का इत्तिबाअ़ करो और शिर्क छोड़ दो और येह भी देखो कि उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम को राहे रास्त पर नहीं पाया तो उन से बेज़ारी का ए'लान फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि जो बाप दादा राहे रास्त पर हों दीने हक़ रखते हों उन का इत्तिबाअ़ किया जाए और जो बातिल पर हों गुमराही में हों उन के तरीक़े से बेज़ारी का ए'लान किया जाए। **43 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का को **44 :** दराज़ उम्रें अ़ता फ़रमाईं और उन के कुफ़्र के बाइस उन पर अ़ज़ाब नाज़िल करने में जल्दी न की। **45 :** या'नी कुरआन शरीफ़ **46 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोशन तरीन आयात व मो'जिज़ात के साथ रौनक़ अफ़्रोज़ हुए और आप ने शरई अहकाम वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाए और हमारे इस इन्आ़म का हक़ येह था कि इस रसूले मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इताअ़त करते लेकिन उन्हों ने ऐसा न किया। **47 :** मक्कए मुकर्रमा व ताइफ़ **48 :** जो कसीरुल माल जथ्थेदार हो जैसे कि मक्कए मुकर्रमा में वलीद बिन मुग़ीरा और ताइफ़ में उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी अल्लाह तआ़ला उन की इस बात का रद फ़रमाता है। **49 :** या'नी क्या नुबुव्वत की कुन्जियां उन के हाथ में हैं कि जिस को चाहें दे दें ? किस क़दर जाहिलाना बात कहते हैं। **50 :** तो किसी को ग़नी किया किसी को फ़क़ीर किसी को क़वी किसी को ज़ईफ़, मख़्लूक़ में कोई हमारे हुक्म को बदलने और हमारी तक़्दीर से बाहर निकलने की क़ुदरत नहीं रखता तो जब दुन्या जैसी क़लील चीज़ में किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं तो नुबुव्वत जैसे मन्सबे आ़ली में क्या किसी को दम मारने का मौक़अ़ है ? हम जिसे चाहते हैं ग़नी करते हैं, जिसे चाहते हैं मख़्दूम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं फ़क़ीर करते हैं, जिसे चाहते हैं ख़ादिम बनाते हैं, जिसे चाहते हैं नबी बनाते हैं, जिसे चाहते हैं उम्मती बनाते हैं, अमीर क्या कोई अपनी क़ाबिलिय्यत से हो जाता है ? हमारी अ़ता है जिसे जो चाहें करें।

www.dawateislami.net

رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में एक दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[51] कि उन में एक दूसरे की

سُخْرِيًّا ؕ وَ رَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ

हंसी बनाए[52] और तुम्हारे रब की रह़मत[53] उन की जम्अ़ जथ्था से बेहतर[54] और अगर येह न होता कि

النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ

सब लोग एक दीन पर हो जाएं[55] तो हम ज़रूर रह़मान के मुन्किरों के लिये चांदी

فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا

की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते और उन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त

يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ زُخْرُفًا ؕ وَ اِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ

जिन पर तक्या लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश[56] और येह जो कुछ है जीती दुन्या ही का अस्बाब है और

الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ ع وَ مَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ ع

आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है[57] और जिसे रतोंद (अन्धा बनना) आए रह़मान के ज़िक्र से[58]

نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿۳۶﴾ وَ اِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

हम उस पर एक शैत़ान तअ़य्युनात करें कि वोह उस का साथी रहे और बेशक वोह शयात़ीन उन को[59] राह से रोकते हैं

51 : क़ुव्वत व दौलत वग़ैरा दुन्यवी ने'मत में **52 :** या'नी मालदार फ़क़ीर की हंसी करे। येह क़ुरत़ुबी की तफ़्सीर के मुत़ाबिक़ है और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने "سُخْرِيًّا" हंसी बनाने के मा'ना में नहीं लिया है बल्कि आ'माल व इश्ग़ाल के मुसख़्ख़र बनाने के मा'ना में लिया है, इस सूरत में मा'ना येह होंगे कि हम ने दौलत व माल में लोगों को मुतफ़ावत किया ताकि एक दूसरे से माल के ज़रीए ख़िदमत ले और दुन्या का निज़ाम मज़बूत हो, ग़रीब को ज़रीअ़ए मआ़श हाथ आए और मालदार को काम करने वाले बहम पहुंचें तो इस पर कौन ए'तिराज़ कर सकता है कि फ़ुलां को क्यूं ग़नी किया और फ़ुलां को फ़क़ीर और जब दुन्यवी उमूर में कोई शख़्स दम नहीं मार सकता तो नुबुव्वत जैसे रुत्बए आ़ली में किसी को क्या ताबे सुख़न व ह़क़्क़े ए'तिराज़ ? उस की मरज़ी जिस को चाहे सरफ़राज़ फ़रमाए। **53 :** या'नी जन्नत **54 :** या'नी उस माल से बेहतर है जिस को दुन्या में कुफ़्फ़ार जम्अ़ कर के रखते हैं। **55 :** या'नी अगर इस का लिह़ाज़ न होता कि काफ़िरों को फ़राख़िये ऐ़श में देख कर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे **56 :** क्यूं कि दुन्या और इस के सामान की हमारे नज़्दीक कुछ क़द्र नहीं वोह सरीउ़ज़्ज़वाल (जल्द ख़त्म होने वाला) है। **57 :** जिन्हें दुन्या की चाहत नहीं। तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक दुन्या मच्छर के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को इस से एक प्यास पानी न देता। (قَالَ التِّرمِذِیُّ حَدِیثٌ حَسَنٌ غَرِیبٌ) दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم नियाज़ मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जाते थे, रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी, फ़रमाया : देखते हो इस के मालिकों ने इसे बहुत बे क़द्री से फेंक दिया, दुन्या की **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस मरी बकरी की हो। (اَخرَجَهُ التِّرمِذی وَقَالَ حَدِیثٌ حَسَنٌ) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुन्या से ऐसा बचाता है जैसा कि तुम अपने बीमार को पानी से बचाते हो। (اَلتِّرمِذِیُّ وَ قَالَ حَسَنٌ غَرِیبٌ) **ह़दीस :** दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। **58 :** या'नी क़ुरआने पाक से अन्धा बन जाए कि इस की हिदायतों को न देखे और उन से फ़ाएदा न उठाए। **59 :** या'नी अन्धा बनने वालों को।

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٣٧ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَ

और[60] समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं यहां तक कि जब[61] काफ़िर हमारे पास आएगा अपने शैत़ान से कहेगा हाए किसी त़रह़ मुझ में

بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝٣٨ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ

तुझ में पूरब पश्चिम (मशरिक़ व मग़रिब) का फ़ासिला होता तो क्या ही बुरा साथी है और हरगिज़ तुम्हारा इस[62] से भला न होगा आज जब

ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝٣٩ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي

कि[63] तुम ने ज़ुल्म किया कि तुम सब अ़ज़ाब में शरीक हो तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे[64] या अन्धों को राह

الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٤٠ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ

दिखाओगे[65] और उन्हें जो खुली गुमराही में हैं[66] तो अगर हम तुम्हें ले जाएं[67] तो उन से हम

مُّنْتَقِمُوْنَ ۝٤١ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝٤٢

ज़रूर बदला लेंगे[68] या तुम्हें दिखा दें[69] जिस का उन्हें हम ने वा'दा दिया है तो हम उन पर बड़ी क़ुदरत वाले हैं

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤٣ وَ

तो मज़बूत़ थामे रहो उसे जो तुम्हारी त़रफ़ वह़्य की गई[70] बेशक तुम सीधी राह पर हो और

اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ۝٤٤ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

बेशक वोह[71] शरफ़ है तुम्हारे लिये[72] और तुम्हारी क़ौम के लिये[73] और अ़न्क़रीब तुम से पूछा जाएगा[74] और उन से पूछो जो हम

ع

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝٤٥

ने तुम से पहले रसूल भेजे क्या हम ने रह़मान के सिवा कुछ और ख़ुदा ठहराए जिन को पूजा हो[75]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ

और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔ़न और उस के सरदारों की त़रफ़ भेजा तो उस ने फ़रमाया बेशक मैं उस का रसूल

60 : वोह अन्धा बनने वाले बा वुजूद गुमराह होने के 61 : रोज़े क़ियामत 62 : ह़स्रतो नदामत 63 : ज़ाहिर व साबित हो गया कि दुन्या में शिर्क कर के 64 : जो गोशे क़बूल नहीं रखते। 65 : जो चश्मे ह़क़ बीं (ह़क़ देखने वाली आंख) से मह़रूम हैं। 66 : जिन के नसीब में ईमान नहीं। 67 : या'नी उन्हें अ़ज़ाब करने से पहले तुम्हें वफ़ात दें 68 : आप के बा'द। 69 : तुम्हारे ह़यात में उन पर अपना वोह अ़ज़ाब 70 : हमारी किताब क़ुरआने मजीद। 71 : क़ुरआन शरीफ़ 72 : कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें नुबुव्वत व ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई। 73 : या'नी उम्मत के लिये कि उन्हें इस से हिदायत फ़रमाई। 74 : रोज़े क़ियामत कि तुम ने क़ुरआन का क्या ह़क़ अदा किया, इस की क्या ता'ज़ीम की, इस ने'मत का क्या शुक्र बजा लाए ? 75 : रसूलों से सुवाल करने के मा'ना येह हैं कि उन के अद्यान व मिलल को तलाश करो ! कहीं भी किसी नबी की उम्मत में बुत परस्ती रवा रखी गई है ? और अक्सर मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह बयान किये हैं कि मोमिनीने अहले किताब से दरयाफ़्त करो कि क्या कभी किसी नबी ने ग़ैरुल्लाह की इबादत की इजाज़त दी ? ताकि मुश्रिकीन पर साबित हो जाए कि मख़्लूक़ परस्ती न किसी रसूल ने बताई न किसी किताब में आई। येह भी एक रिवायत है कि शबे मे'राज सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बैतुल मक़्दिस में

www.dawateislami.net

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَ

हूं जो सारे जहां का मालिक है फिर जब वोह उन के पास हमारी निशानियां लाया[76] जभी वोह उन पर हंसने लगे[77] और

مَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا٘ وَ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ

हम उन्हें जो निशानी दिखाते वोह पहले से बड़ी होती[78] और हम ने उन्हें मुसीबत में गिरिफ़्तार किया

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ

कि वोह बाज़ आएं[79] और बोले[80] कि ऐ जादूगर[81] हमारे लिये अपने रब से दुआ कर उस अ़हद के सबब जो उस

عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ

का तेरे पास है[82] बेशक हम हिदायत पर आएंगे[83] फिर जब हम ने उन से वोह मुसीबत टाल दी जभी वोह

يَنْكُثُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ

अ़हद तोड़ गए[84] और फ़िरऔन अपनी क़ौम में[85] पुकारा कि ऐ मेरी क़ौम क्या मेरे लिये मिस्र की

مِصْرَ وَ هٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۱﴾ؕ اَمْ اَنَا

सल्तनत नहीं और येह नहरें कि मेरे नीचे बहती हैं[86] तो क्या तुम देखते नहीं[87] या मैं

خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ۬ وَّ لَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿۵۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اُلْقِيَ عَلَيْهِ

बेहतर हूं[88] इस से कि ज़लील है[89] और बात साफ़ करता मा'लूम नहीं होता[90] तो इस पर क्यूं न डाले गए

तमाम अम्बिया की इमामत फ़रमाई, जब हुज़ूर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया कि ऐ सरवरे अकरम ! अपने से पहले अम्बिया से दरयाफ़्त फ़रमा लीजिये कि क्या अल्लाह तआ़ला ने अपने सिवा किसी और की इबादत की इजाज़त दी ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस सुवाल की कुछ ह़ाजत नहीं या'नी इस में कोई शक ही नहीं कि तमाम अम्बिया तौह़ीद की दा'वत देते आए सब ने मख़्लूक़ परस्ती की मुमानअ़त फ़रमाई। **76 :** जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत पर दलालत करती थीं। **77 :** और उन को जादू बताने लगे। **78 :** या'नी हर एक निशानी अपनी ख़ुसूसिय्यत में दूसरी से बढ़ी चढ़ी थी, मुराद येह है कि एक से एक आ'ला थी। **79 :** कुफ़्र से ईमान की त़रफ़ और येह अ़ज़ाब क़ह़्त साली और तूफ़ान व टिड्डी वग़ैरा से किये गए, येह सब हज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की निशानियां थीं जो इन की नुबुव्वत पर दलालत करती थीं और उन में एक से एक बुलन्द बाला थी। **80 :** अ़ज़ाब देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से **81 :** येह कलिमे उन के उ़र्फ़ और मुहावरे में बहुत ता'ज़ीमो तकरीम का था वोह आ़लिम व माहिर व ह़ाज़िक़ कामिल को जादूगर कहा करते थे और इस का सबब येह था कि उन की नज़र में जादू की बहुत अ़ज़मत थी और वोह इस को सिफ़ते मद्ह़ समझते थे, इस लिये उन्हों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को ब वक़्ते इल्तिजा इस कलिमे से निदा की, कहा : **82 :** वोह अ़हद या तो येह है कि आप की दुआ़ मुस्तजाब है या नुबुव्वत या ईमान लाने वालों और हिदायत क़बूल करने वालों पर से अ़ज़ाब उठा लेना। **83 :** ईमान लाएंगे। चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की और उन पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। **84 :** ईमान न लाए कुफ़्र पर मुसिर रहे। **85 :** बहुत इफ़्तिख़ार के साथ **86 :** येह दरियाए नील से निकली हुई बड़ी बड़ी नहरें थीं जो फ़िरऔन के क़स्र (मह़ल) के नीचे जारी थीं। **87 :** मेरी अ़ज़मतो क़ुव्वत और शानो सत्वत (शौकत)। अल्लाह तआ़ला की अ़जीब शान है ! ख़लीफ़ा रशीद ने जब येह आयत पढ़ी और हुकूमते मिस्र पर फ़िरऔन का ग़ुरूर देखा तो कहा कि मैं वोह मिस्र अपने अदना ग़ुलाम को दे दूंगा। चुनान्चे उन्हों ने "मिस्र" ख़ुसैब को दे दिया जो उन का ग़ुलाम था और वुज़ू कराने की ख़िदमत पर मामूर था। **88 :** या'नी क्या तुम्हारे नज़्दीक साबित हो गया और तुम ने समझ लिया कि मैं बेहतर हूं **89 :** येह उस बे ईमान मुतकब्बिर ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शान में कहा। **90 :** ज़बान में गिरह होने की वज्ह से जो बचपन में आग मुंह में रखने से पड़ गई थी और येह

www.dawateislami.net

اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿۵۳﴾ فَاسْتَخَفَّ

सोने के कंगन[91] या इस के साथ फ़िरिश्ते आते कि इस के पास रहते[92] फिर उस ने अपनी क़ौम को

قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۴﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا

कम अ़क़्ल कर लिया[93] तो वोह उस के कहने पर चले[94] बेशक वोह बे हुक्म लोग थे फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब

ع ۵ مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۵﴾ۙ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ مَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ ع

उन पर आया हम ने उन से बदला लिया तो हम ने उन सब को डुबो दिया उन्हें हम ने कर दिया अगली दास्तान और कहावत पिछलों के लिये[95]

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿۵۷﴾ وَقَالُوْۤا

और जब इब्ने मरयम की मिसाल बयान की जाए जभी तुम्हारी क़ौम उस से हंसने लगते हैं[96] और कहते हैं

ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

क्या हमारे मा'बूद बेहतर हैं या वोह[97] उन्हों ने तुम से येह न कही मगर नाहक़ झगड़े को[98] बल्कि वोह हैं ही

خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْۤ

झगड़ालू लोग[99] वोह तो नहीं मगर एक बन्दा जिस पर हम ने एह़सान फ़रमाया[100] और उसे हम ने बनी इसराईल के लिये

उस मल्ऊ़न ने झूट कहा क्यूं कि आप की दुआ़ से **अल्लाह** तआ़ला ने ज़बाने अक़्दस की वोह गिरह ज़ाइल कर दी थी लेकिन फ़िरऔ़नी पहले ही ख़याल में थे, आगे फिर इसी फ़िरऔ़न का कलाम ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **91 :** या'नी अगर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सच्चे हैं और **अल्लाह** तआ़ला ने इन को वाजिबुल इत़ाअ़त सरदार बनाया है तो इन्हें सोने का कंगन क्यूं नहीं पहनाया। येह बात उस ने अपने ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ कही कि उस ज़माने में जिस किसी को सरदार बनाया जाता था उस को सोने के कंगन और सोने का त़ौक़ पहनाया जाता था। **92 :** और इस के सिद्क़ की गवाही देते। **93 :** उन जाहिलों की अ़क़्ल ख़ब्त़ (ख़राब) कर दी उन्हें बहला फुसला लिया **94 :** और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने लगे **95 :** कि बा'द वाले उन के ह़ाल से नसीह़त व इ़ब्रत ह़ासिल करें। **96 शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने क़ुरैश के सामने येह आयत "وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ" पढ़ी जिस के मा'ना येह हैं कि ऐ मुश्रिकीन ! तुम और जो चीज़ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो सब जहन्नम का ईंधन है। येह सुन कर मुश्रिकीन को बहुत ग़ुस्सा आया और इब्ने ज़िबा'रा कहने लगा : या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या येह ख़ास हमारे और हमारे मा'बूदों ही के लिये है या हर उम्मत व गुरौह के लिये ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तुम्हारे और तुम्हारे मा'बूदों के लिये भी है और सब उम्मतों के लिये भी। इस पर उस ने कहा कि आप के नज़्दीक ई़सा बिन मरयम नबी हैं और आप उन की और उन की वालिदा की ता'रीफ़ करते हैं और आप को मा'लूम है कि नसारा इन दोनों को पूजते हैं और ह़ज़रते उ़ज़ैर और फ़िरिश्ते भी पूजे जाते हैं या'नी यहूद वग़ैरा उन को पूजते हैं तो अगर येह ह़ज़रात (مَعَاذَ اللّٰه) जहन्नम में हों तो हम राज़ी हैं कि हम और हमारे मा'बूद भी उन के साथ हों और येह कह कर कुफ़्फ़ार ख़ूब हंसे, इस पर येह आयत **अल्लाह** तआ़ला ने नाज़िल फ़रमाई : "اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ" और येह आयत नाज़िल हुई : "وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ......الآية" जिस का मत़लब येह है कि जब इब्ने ज़िबा'रा ने अपने मा'बूदों के लिये ह़ज़रते ई़सा बिन मरयम की मिसाल बयान की और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुजादला किया कि नसारा उन्हें पूजते हैं तो क़ुरैश उस की इस बात पर हंसने लगे। **97 :** या'नी ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام। मत़लब येह था कि आप के नज़्दीक ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام बेहतर हैं तो अगर (مَعَاذَ اللّٰه) वोह जहन्नम में हुए तो हमारे मा'बूद या'नी बुत भी हुवा करें कुछ परवाह नहीं, इस पर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **98 :** येह जानते हुए कि वोह जो कुछ कह रहे हैं बात़िल है और आयए करीमा "اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ" (बेशक तुम और जो कुछ **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो) से सिर्फ़ बुत मुराद हैं, ह़ज़रते ई़सा व ह़ज़रते उ़ज़ैर

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِى الۡاَرۡضِ
अ़जीब नमूना बनाया[101] और अगर हम चाहते तो[102] ज़मीन में तुम्हारे बदले फ़िरिश्ते

يَخۡلُفُوۡنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا
बसाते[103] और बेशक ईसा क़ियामत की ख़बर है[104] तो हरगिज़ क़ियामत में शक न करना और मेरे पैरव होना[105] येह

صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٢﴾
सीधी राह है और हरगिज़ शैतान तुम्हें न रोक दे[106] बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है

وَلَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ
और जब ईसा रोशन निशानियां[107] लाया उस ने फ़रमाया मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया[108] और इस लिये मैं तुम से बयान कर दूं

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ
बा'ज़ वोह बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ रखते हो[109] तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो बेशक **अल्लाह**

هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخۡتَلَفَ
मेरा रब और तुम्हारा रब तो उसे पूजो येह सीधी राह है[110] फिर वोह

الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿٦٥﴾
गुरौह आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए[111] तो ज़ालिमों की ख़राबी है[112] एक दर्दनाक दिन के अ़ज़ाब से[113]

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٦٦﴾
काहे के इन्तिज़ार में हैं मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए और उन्हें ख़बर न हो

और मलाएका कोई मुराद नहीं लिये जा सकते। इब्ने ज़िबा'रा अ़रब था अ़रबी ज़बान का जानने वाला था, येह उस को ख़ूब मा'लूम था कि "مَاتَعۡبُدُوۡنَ" में जो "مَا" है इस के मा'ना चीज़ के हैं, इस से ग़ैर ज़वील उ़क़ूल मुराद होते हैं लेकिन बा वुजूद इस के उस का ज़बाने अ़रब के उसूल से जाहिल बन कर हज़रते ईसा और हज़रते उ़ज़ैर और मलाएका को इस में दाख़िल करना कठ हुज्जती और जह्ल परवरी है। **99 :** बातिल के दरपै होने वाले। अब हज़रते ईसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत इर्शाद फ़रमाया जाता है : **100 :** नुबुव्वत अ़ता फ़रमा कर। **101 :** अपनी क़ुदरत का कि बिग़ैर बाप के पैदा किया। **102 :** ऐ अहले मक्का ! हम तुम्हें हलाक कर देते और **103 :** जो हमारी इ़बादत व इताअ़त करते। **104 :** या'नी हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का आस्मान से उतरना अ़लामाते क़ियामत में से है। **105 :** या'नी मेरी हिदायत व शरीअ़त का इत्तिबाअ़ करना। **106 :** शरीअ़त के इत्तिबाअ़ या क़ियामत के यक़ीन या दीने इलाही पर क़ाइम रहने से। **107 :** या'नी मो'जिज़ात **108 :** या'नी नुबुव्वत और इन्जीली अह़काम। **109 :** तौरैत के अह़काम में से। **110 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام का कलामे मुबारक तमाम हो चुका, आगे नसरानियों के शिर्कों का बयान फ़रमाया जाता है **111 :** हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बा'द उन में से किसी ने कहा कि ईसा ख़ुदा थे। किसी ने कहा : ख़ुदा के बेटे। किसी ने कहा : तीन में के तीसरे। ग़रज़ नसरानी फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए : या'क़ूबी, नुस्तूरी, मल्कानी, शम्ऊ़नी। **112 :** जिन्हों ने हज़रते ईसा عَلَيۡهِ السَّلَام के बारे में कुफ़्र की बातें कहीं। **113 :** या'नी रोज़े क़ियामत के।

ع ٦/١٢

اَلۡاَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذٍۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا

गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़ गार[114] उन से फ़रमाया जाएगा

خَوۡفٌ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ

ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो वोह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और

كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿٦٩﴾ اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَاَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾

मुसल्मान थे दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियां तुम्हारी ख़ातिरें होतीं[115]

يُطَافُ عَلَيۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّاَكۡوَابٍ ۚ وَفِيۡهَا مَا تَشۡتَهِيۡهِ

उन पर दौरा होगा सोने के पियालों और जामों का और उस में जो

الۡاَنۡفُسُ وَتَلَذُّ الۡاَعۡيُنُ ۚ وَاَنۡتُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَتِلۡكَ الۡجَنَّةُ

जी चाहे और जिस से आंख को लज़्ज़त पहुंचे[116] और तुम उस में हमेशा रहोगे और येह है वोह जन्नत

الَّتِيۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمۡ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ كَثِيۡرَةٌ

जिस के तुम वारिस किये गए अपने आ'माल से तुम्हारे लिये इस में बहुत मेवे हैं

مِّنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الۡمُجۡرِمِيۡنَ فِيۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿٧٤﴾

कि उन में से खाओ[117] बेशक मुजरिम[118] जहन्नम के अ़ज़ाब में हमेशा रहने वाले हैं

لَا يُفَتَّرُ عَنۡهُمۡ وَهُمۡ فِيۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰكِنۡ كَانُوۡا هُمُ

वोह कभी उन पर से हलका न पड़ेगा और वोह उस में बे आस रहेंगे[119] और हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म न किया हां वोह ख़ुद ही

114 : या'नी दीनी दोस्ती और वोह महब्बत जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये है बाक़ी रहेगी। ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है आप ने फ़रमाया : दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफ़िर, मोमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी का और नेकी करने का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना है, या रब ! उस को मेरे बा'द गुमराह न कर और उस को हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और उस का इक्राम कर जैसा मेरा इक्राम फ़रमाया। जब उस का मोमिन दोस्त मर जाता है तो **अल्लाह** तआ़ला दोनों को जम्अ़ करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे तो हर एक कहता है कि येह अच्छा भाई है, अच्छा दोस्त है, अच्छा रफ़ीक़ है और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ़ करता है : या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी से मन्अ़ करता था और बदी का हुक्म देता था, नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना नहीं, तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे, तो उन में से एक दूसरे को कहता है : बुरा भाई, बुरा दोस्त, बुरा रफ़ीक़। **115 :** या'नी जन्नत में तुम्हारा इक्राम होगा ने'मतें दी जाएंगी ऐसे ख़ुश किये जाओगे कि तुम्हारे चेहरों पर ख़ुशी के आसार नुमूदार होंगे। **116 :** अन्वाओ़ अक़्साम की ने'मतें। **117 :** जन्नती दरख़्त समर दार सदा बहार हैं उन की ज़ैबो ज़ीनत में फ़र्क़ नहीं आता। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर कोई उन से एक फल लेगा तो दरख़्त में उस की जगह दो फल नुमूदार हो जाएंगे। **118 :** या'नी काफ़िर **119 :** रह़मत की उम्मीद भी न होगी।

www.dawateislami.net

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ

ज़ालिम थे[120] और वोह पुकारेंगे[121] ऐ मालिक तेरा रब हमें तमाम कर चुके[122] वोह फ़रमाएगा[123] तुम्हें

مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾

तो ठहरना है[124] बेशक हम तुम्हारे पास हक़ लाए[125] मगर तुम में अक्सर को हक़ ना गवार है

اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ

क्या उन्हों ने[126] अपने ख़याल में कोई काम पक्का कर लिया है[127] तो हम अपना काम पक्का करने वाले हैं[128] क्या इस घमन्ड में हैं कि हम उन की आहिस्ता बात

سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

और उन की मश्वरत नहीं सुनते हां क्यूं नहीं[129] और हमारे फ़िरिश्ते उन के पास लिख रहे हैं तुम फ़रमाओ ब फ़र्ज़े मुहाल

لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖۗ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ

रहमान के कोई बच्चा होता तो सब से पहले मैं पूजता[130] पाकी है आस्मानों और ज़मीन

الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا

के रब को अ़र्श के रब को उन बातों से जो येह बनाते हैं[131] तो तुम उन्हें छोड़ो कि बेहूदा बातें करें और खेलें[132]

حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ

यहां तक कि अपने उस दिन को पाएं जिस का उन से वा'दा है[133] और वोही आस्मान वालों का ख़ुदा और

فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ

ज़मीन वालों का ख़ुदा[134] और वोही हिक्मत व इल्म वाला है और बड़ी बरकत वाला है वोह कि उसी के लिये है सल्तनत

120 : कि सरकशी व ना फ़रमानी कर के इस हाल को पहुंचे। **121 :** जहन्नम के दारोग़ा को कि **122 :** या'नी मौत दे दे। मालिक से दरख़्वास्त करेंगे कि वोह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से उन की मौत की दुआ़ करे। **123 :** हज़ार बरस बा'द। **124 :** अ़ज़ाब में हमेशा, कभी इस से रिहाई न पाओगे न मौत से न और किसी त़रह़, इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का से ख़ित़ाब फ़रमाता है **125 :** अपने रसूलों की मा'रिफ़त। **126 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ने **127 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मक्र करने और फ़रेब से ईज़ा पहुंचाने का और दर ह़क़ीक़त ऐसा ही था कि कुरैश दारुन्नद्वा में जम्अ़ हो कर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी के लिये ह़ीले सोचते थे। **128 :** उन के इस मक्रो फ़रेब का बदला जिस का अन्जाम उन की हलाकत है। **129 :** हम ज़रूर सुनते हैं और पोशीदा ज़ाहिर हर बात जानते हैं, हम से कुछ नहीं छुप सकता। **130 :** लेकिन उस के बच्चा नहीं और उस के लिये औलाद मुह़ाल है, येह नफ़्यि वलद में मुबालग़ा है। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था कि फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई तो नज़्र कहने लगा : देखते हो क़ुरआन में मेरी तस्दीक़ आ गई। वलीद ने कहा कि तेरी तस्दीक़ नहीं हुई बल्कि येह फ़रमाया गया कि रह़मान के वलद नहीं है और मैं अहले मक्का में से पहला मुवह़्ह़िद हूं उस से वलद की नफ़ी करने वाला। इस के बा'द **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की तन्ज़ीह (पाकी) का बयान है। **131 :** और उस के लिये औलाद क़रार देते हैं। **132 :** या'नी जिस लग़्व व बात़िल में हैं उसी में पड़े रहें। **133 :** जिस में अ़ज़ाब किये जाएंगे और वोह रोज़े क़ियामत है। **134 :** या'नी वोही मा'बूद है, आस्मान व ज़मीन में उसी की इबादत की जाती है, उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ
आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन के दरमियान है और उसी के पास है क़ियामत का इल्म और तुम्हें

تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا
उसी की तरफ़ फिरना और जिन को येह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते हां शफ़ाअ़त का इख़्तियार उन्हें है

مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ
जो हक़ की गवाही दें[135] और इल्म रखें[136] और अगर तुम उन से पूछो[137] कि उन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे

وقف لازم اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ لا وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾
अल्लाह ने[138] तो कहां औंधे जाते हैं[139] मुझे रसूल[140] के इस कहने की क़सम[141] कि ऐ मेरे रब येह लोग ईमान नहीं लाते

ع ۷ ۱۳ ۲۲ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ ع
तो उन से दर गुज़र करो[142] और फ़रमाओ बस सलाम है[143] कि आगे जान जाएंगे[144]

اٰیاتھا ۵۹ | ۴۴ سُوْرَۃُ الدُّخَانِ مَکِّیَّۃٌ ۶۴ | رکوعاتھا ۳

सूरए दुख़ान मक्किय्या है, इस में उन्सठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

مع ۱۲ حٰمٓ ﴿۱﴾ ۚ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ ۙ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
क़सम उस रोशन किताब की[2] बेशक हम ने उसे बरकत वाली रात में उतारा[3] बेशक हम

مُنْذِرِيْنَ ﴿۳﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿۴﴾ لا اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا
डर सुनाने वाले हैं[4] उस में बांट दिया जाता है हर हिक्मत वाला काम[5] हमारे पास के हुक्म से बेशक

135 : या'नी तौह़ीदे इलाही की। **136 :** इस का कि **अल्लाह** उन का रब है, ऐसे मक़्बूल बन्दे ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे। **137 :** या'नी मुशिरकीन से। **138 :** और **अल्लाह** तआ़ला के ख़ालिक़े आ़लम होने का इक़्रार करेंगे। **139 :** और बा वुजूद इस इक़्रार के उस की तौह़ीद व इ़बादत से फिरते हैं। **140 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **141 :** **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ौले मुबारक की क़सम फ़रमाना हु़ज़ूर के इकराम और हु़ज़ूर की दुआ़ व इल्तिजा के एह़तिराम का इज़्हार है। **142 :** और उन्हें छोड़ दो **143 :** येह सलामे मुतारकत है, इस के मा'ना येह हैं कि हम तुम्हें छोड़ते हैं और तुम से अम्न में रहना चाहते हैं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْجِهَادِ) **144 :** अपना अन्जामे कार। **1 :** सूरए दुख़ान मक्किय्या है इस में तीन रुकूअ़ और सत्तावन या उन्सठ आयतें और तीन सो छियालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो इक्तीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने पाक की जो ह़लाल व ह़राम वग़ैरा अह़काम का बयान फ़रमाने वाला है। **3 :** इस रात से या शबे क़द्र मुराद है या शबे बराअत, इस शब में क़ुरआने पाक बि तमामिही लौह़े मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया फिर वहां से ह़ज़रते जिब्रील तेईस साल के अ़र्से में थोड़ा थोड़ा ले कर नाज़िल हुए, इस शब को शबे मुबारका

www.dawateislami.net

كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾

हम भेजने वाले हैं[6] तुम्हारे रब की त़रफ़ से रह़मत बेशक वोही सुनता जानता है

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ لَاۤ اِلٰهَ

वोह जो रब है आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन हो[7] उस के सिवा

وقف لازم

اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ

किसी की बन्दगी नहीं वोह जिलाए और मारे तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का रब बल्कि वोह

فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾

शक में पड़े खेल रहे हैं[8] तो तुम उस दिन के मुन्तज़िर रहो जब आस्मान एक ज़ाहिर धूआं लाएगा

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا

कि लोगों को ढांप लेगा[9] येह है दर्दनाक अ़ज़ाब उस दिन कहेंगे ऐ हमारे रब हम पर से अ़ज़ाब खोल दे हम

مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ ثُمَّ

ईमान लाते हैं[10] कहां से हो उन्हें नसीह़त मानना[11] ह़ालां कि उन के पास साफ़ बयान फ़रमाने वाला रसूल तशरीफ़ ला चुका[12] फिर

وقف لازم

تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾ ۘ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ

उस से रूगर्दां हुए और बोले सिखाया हुवा दीवाना है[13] हम कुछ दिनों को अ़ज़ाब खोले देते हैं तुम फिर

इस लिये फ़रमाया गया कि इस में कुरआने पाक नाज़िल हुवा और हमेशा इस शब में ख़ैरो बरकत नाज़िल होती है, दुआ़एं क़बूल की जाती हैं। **4 :** अपने अ़ज़ाब का। **5 :** साल भर के अरज़ाक़ व आजाल (अम्वात) व अह़काम। **6 :** अपने रसूल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और इन से पहले अम्बिया को। **7 :** कि वोह आस्मान व ज़मीन का रब है तो यक़ीन करो कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के रसूल हैं। **8 :** उन का इक़रार इल्मो यक़ीन से नहीं बल्कि उन की बात में हंसी और तमस्ख़ुर शामिल है और वोह आप के साथ इस्तिहज़ा करते हैं तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन पर दुआ़ की, कि या रब ! इन्हें ऐसी हफ़्त सालह क़ह़्त़ की मुसीबत में मुब्तला कर जैसे सात साल का क़ह़्त़ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में भेजा था। येह दुआ़ मुस्तजाब हुई और ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से इर्शाद फ़रमाया गया **9 :** चुनान्चे कुरैश पर क़ह़्त़ साली आई और यहां तक इस की शिद्दत हुई कि वोह लोग मुर्दार खा गए और भूक से इस ह़ाल को पहुंच गए कि जब ऊपर को नज़र उठाते आस्मान की त़रफ़ देखते तो उन को धूआं ही धूआं मा'लूम होता या'नी ज़ो'फ़ से निगाहों में ख़ीरगी (धुंदलाहट) आ गई थी और क़ह़्त़ से ज़मीन ख़ुश्क हो गई ख़ाक उड़ने लगी ग़ुबार ने हवा को मुकद्दर (मैला) कर दिया। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि धूएं से मुराद वोह धूआं है जो अ़लामाते क़ियामत में से है और क़रीबे क़ियामत ज़ाहिर होगा, मशरिक़ो मग़रिब उस से भर जाएंगे, चालीस रोज़ो शब रहेगा, मोमिन की ह़ालत तो उस से ऐसी हो जाएगी जैसे ज़ुकाम हो जाए और काफ़िर मदहोश होंगे। उन के नथनों और कानों और बदन के सूराख़ों से धूआं निकलेगा। **10 :** और तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करते हैं। **11 :** या'नी इस ह़ालत में वोह कैसे नसीह़त मानेंगे **12 :** और मो'जिज़ाते ज़ाहिरात और आयाते बय्यिनात पेश फ़रमा चुका। **13 :** जिस को वह़्य की ग़शी त़ारी होने के वक़्त जिन्नात येह कलिमात तल्क़ीन कर जाते हैं। (مَعَاذَاللّٰه تَعَالٰى)

وقف لازم

عَآىِٕدُوۡنَ ﴿۱۵﴾ يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدۡ

वोही करोगे[14] जिस दिन हम सब से बड़ी पकड़ पकड़ेंगे[15] बेशक हम बदला लेने वाले हैं और बेशक

فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَجَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ كَرِيۡمٌ ﴿۱۷﴾ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ

हम ने इन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को जांचा और उन के पास एक मुअ़ज़्ज़ज़ रसूल तशरीफ़ लाया[16] कि अल्लाह के बन्दों को

عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ﴿۱۸﴾ وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىۡۤ

मुझे सिपुर्द कर दो[17] बेशक मैं तुम्हारे लिये अमानत वाला रसूल हूं और अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो मैं

اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۹﴾ وَاِنِّىۡ عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ﴿۲۰﴾

तुम्हारे पास एक रोशन सनद लाता हूं[18] और मैं पनाह लेता हूं अपने रब और तुम्हारे रब की इस से कि तुम मुझे संगसार करो[19]

وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿۲۱﴾ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ قَوۡمٌ

और अगर तुम मेरा यक़ीन न लाओ तो मुझ से कनारे हो जाओ[20] तो उस ने अपने रब से दुआ़ की कि येह

الثلثة

مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ﴿۲۳﴾ وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ

मुजरिम लोग हैं हम ने हुक्म फ़रमाया कि मेरे बन्दों[21] को रातों रात ले निकल ज़रूर तुम्हारा पीछा किया जाएगा[22] और दरिया को यूंही जगह जगह से

رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۴﴾ كَمۡ تَرَكُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ

खुला छोड़ दे[23] बेशक वोह लश्कर डुबोया जाएगा[24] कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और

زُرُوۡعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيۡمٍ ﴿۲۶﴾ وَّنَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿۲۷﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَ

खेत और उ़म्दा मकानात[25] और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे[26] हम ने यूंही किया और

14 : जिस कुफ़्र में थे उसी की त़रफ़ लौटोगे, चुनान्चे ऐसा ही हुवा, अब फ़रमाया जाता है कि उस दिन को याद करो 15 : उस दिन से मुराद रोज़े क़ियामत है या रोज़े बद्र। 16 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام। 17 : या'नी बनी इसराईल को मेरे ह़वाले कर दो और जो शिद्दतें और सख़्तियां उन पर करते हो उस से रिहाई दो। 18 : अपने सिद्क़े नुबुव्वत व रिसालत की, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने येह फ़रमाया तो फ़िरऔ़नियों ने आप को क़त्ल की धम्की दी और कहा कि हम तुम्हें संगसार कर देंगे तो आप ने फ़रमाया 19 : या'नी मेरा तवक्कुल व ए'तिमाद उस पर है, मुझे तुम्हारी धम्की की कुछ परवा नहीं अल्लाह तआ़ला मेरा बचाने वाला है। 20 : मेरी ईज़ा के दरपै न हो, उन्हों ने इस को भी न माना। 21 : या'नी बनी इसराईल 22 : या'नी फ़िरऔ़न मअ़ अपने लश्करों के तुम्हारे दरपै होगा। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام रवाना हुए और दरिया पर पहुंच कर आप ने अ़सा मारा, उस में बारह रस्ते ख़ुश्क पैदा हो गए, आप मअ़ बनी इसराईल के दरिया में से गुज़र गए, पीछे फ़िरऔ़न और उस का लश्कर आ रहा था आप ने चाहा कि फिर अ़सा मार कर दरिया को मिला दें ताकि फ़िरऔ़न उस में से गुज़र न सके तो आप को हुक्म हुवा 23 : ताकि फ़िरऔ़नी उन रास्तों से दरिया में दाख़िल हो जाएं। 24 : ह़ज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام को इत्मीनान हो गया और फ़िरऔ़न और उस के लश्कर दरिया में ग़र्क़ हो गए और उन का तमाम मालो मताअ़ और सामान यहीं रह गया। 25 : आरास्ता पैरास्ता मुज़य्यन। 26 : ऐश करते इतराते।

www.dawateislami.net

اَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَ الۡاَرۡضُ وَمَا

उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया[27] तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए[28] और उन्हें

كَانُوۡا مُنۡظَرِيۡنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدۡ نَجَّيۡنَا بَنِيۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿٣٠﴾ ع ٢٩ ١٤

मोहलत न दी गई[29] और बेशक हम ने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अ़ज़ाब से नजात बख़्शी[30]

مِنۡ فِرۡعَوۡنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخۡتَرۡنٰهُمۡ عَلٰى

फ़िरऔ़न से बेशक वोह मुतकब्बिर ह़द से बढ़ने वालों में से था और बेशक हम ने उन्हें[31]

عِلۡمٍ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنَ الۡاٰيٰتِ مَا فِيۡهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيۡنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ

दानिस्ता चुन लिया उस ज़माने वालों से और हम ने उन्हें वोह निशानियां अ़त़ा फ़रमाईं जिन में सरीह़ इन्आ़म था[32] बेशक

هٰۤؤُلَآءِ لَيَقُوۡلُوۡنَ ﴿٣٤﴾ اِنۡ هِىَ اِلَّا مَوۡتَتُنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُنۡشَرِيۡنَ ﴿٣٥﴾

येह[33] कहते हैं वोह तो नहीं मगर हमारा एक दफ़्आ़ का मरना[34] और हम उठाए न जाएंगे[35]

فَاۡتُوۡا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمۡ خَيۡرٌ اَمۡ قَوۡمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيۡنَ

तो हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो[36] क्या वोह बेहतर हैं[37] या तुब्बअ़ की क़ौम[38] और जो

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقۡنَا

उन से पहले थे[39] हम ने उन्हें हलाक कर दिया[40] बेशक वोह मुजरिम लोग थे[41] और हम ने न बनाए

27 : या'नी बनी इसराईल को जो न उन के हम मज़्हब थे न रिश्तेदार न दोस्त। **28 :** क्यूं कि वोह ईमानदार न थे और ईमानदार जब मरता है तो उस पर आस्मान व ज़मीन चालीस रोज़ तक रोते हैं जैसा कि तिरमिज़ी की ह़दीस में है, मुजाहिद से कहा गया कि क्या मोमिन की मौत पर आस्मान व ज़मीन रोते हैं ? फ़रमाया : ज़मीन क्यूं न रोए उस बन्दे पर जो ज़मीन को अपने रुकूअ़ व सुजूद से आबाद रखता था और आस्मान क्यूं न रोए उस बन्दे पर जिस की तस्बीह़ व तक्बीर आस्मान में पहुंचती थी। ह़सन का क़ौल है कि मोमिन की मौत पर आस्मान वाले और ज़मीन वाले रोते हैं। **29 :** तौबा वग़ैरा के लिये अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार करने के बा'द। **30 :** या'नी ग़ुलामी और शाक़्क़ा ख़िदमतों और मेह़नतों से और औलाद के क़त्ल किये जाने से जो उन्हें पहुंचता था **31 :** या'नी बनी इसराईल को **32 :** कि उन के लिये दरिया में ख़ुश्क रस्ते बनाए, अब्र को साएबान किया, मन्न व सल्वा उतारा, इस के इलावा और ने'मतें दीं। **33 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **34 :** या'नी इस ज़िन्दगानी के बा'द सिवाए एक मौत के हमारे लिये और कोई ह़ाल बाक़ी नहीं, इस से उन का मक़्सूद बअ़्स या'नी मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने का इन्कार करना था जिस को अगले जुम्ले में वाज़ेह़ कर दिया। (کبیر) **35 :** बा'दे मौत ज़िन्दा कर के। **36 :** इस बात में कि हम बा'द मरने के ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। कुफ़्फ़ारे मक्का ने येह सुवाल किया था कि क़ुसय बिन किलाब को ज़िन्दा कर दो अगर मौत के बा'द किसी का ज़िन्दा होना मुम्किन हो और येह उन की जाहिलाना बात थी क्यूं कि जिस काम के लिये वक़्त मुअ़य्यन हो उस का उस वक़्त से क़ब्ल वुजूद में न आना उस के ना मुम्किन होने की दलील नहीं होता और न उस का इन्कार सह़ीह़ होता है, अगर कोई शख़्स किसी नए जमे हुए दरख़्त या पौदे को कहे कि इस में से अब फल निकालो वरना हम नहीं मानेंगे कि इस दरख़्त से फल निकल सकता है तो उस को जाहिल क़रार दिया जाएगा और उस का इन्कार मह़ज़ हुमक़ (बे वुक़ूफ़ी) या मुकाबरह होगा। **37 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का ज़ोर व क़ुव्वत में **38 :** तुब्बए़ ह़िम्यरी बादशाहे यमन साह़िबे ईमान थे और उन की क़ौम काफ़िर थी जो निहायत क़वी ज़ोरआवर और कसीरुत्ता'दाद थी। **39 :** काफ़िर उम्मतों में से **40 :** उन के कुफ़्र के बाइस। **41 :** काफ़िर मुन्किरे बअ़्स।

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ उन के दरमियान है खेल के तौर पर[42] हम ने उन्हें न बनाया मगर हक़ के साथ[43]

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾

लेकिन उन में अक्सर जानते नहीं[44] बेशक फ़ैसले का दिन[45] उन सब की मीआद है

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْــًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा[46] और न उन की मदद होगी[47] मगर जिस पर अल्लाह

اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ

रह्म करे[48] बेशक वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है बेशक थोहड़ का पेड़[49] गुनहगारों

الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ

की ख़ूराक है[50] गले हुए तांबे की त़रह़ पेटों में जोश मारे जैसा खौलता पानी जोश मारे[51] उसे पकड़ो[52]

فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ

ठीक भड़कती आग की त़रफ़ ब ज़ोर घसीटते ले जाओ फिर उस के सर के ऊपर खौलते पानी का

الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

अ़ज़ाब डालो[53] चख[54] हां हां तू ही बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला है[55] बेशक येह है वोह[56] जिस में तुम

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

शुबा करते थे[57] बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं[58] बाग़ों और चश्मों में

42 : अगर मरने के बा'द उठना और ह़िसाब व सवाब न हो तो ख़ल्क़ की पैदाइश मह़्ज़ फ़ना के लिये होगी और येह अ़बस व लग़्व है, तो इस दलील से साबित हुवा कि इस दुन्यवी ज़िन्दगी के बा'द उख़्रवी ज़िन्दगी ज़रूर है जिस में ह़िसाब व जज़ा हो। **43 :** कि त़ाअ़त पर सवाब दें और मा'सियत पर अ़ज़ाब करें। **44 :** कि पैदा करने की ह़िक्मत येह है और ह़कीम का फ़े'ल अ़बस नहीं होता। **45 :** या'नी रोज़े क़ियामत जिस में अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में फ़ैसला फ़रमाएगा। **46 :** और क़राबत व मह़ब्बत नफ़्अ़ न देगी। **47 :** या'नी काफ़िरों की। **48 :** या'नी सिवाए मोमिनीन के कि वोह ब इज़्ने इलाही एक दूसरे की शफ़ाअ़त करेंगे। (جمل) **49 :** थोहड़ एक ख़बीस निहायत कड़वा दरख़्त है जो अहले जहन्नम की ख़ूराक होगा। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर एक क़त़रा उस थोहड़ का दुन्या में टपका दिया जाए तो अहले दुन्या की ज़िन्दगानी ख़राब हो जाए। **50 :** अबू जह्ल की और उस के साथियों की जो बड़े गुनहगार हैं। **51 :** जहन्नम के फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि **52 :** या'नी गुनहगार को **53 :** और उस वक़्त दोज़ख़ी से कहा जाएगा कि **54 :** इस अ़ज़ाब को। **55 :** मलाएका येह कलिमा इहानत और तज़्लील के लिये कहेंगे क्यूं कि अबू जह्ल कहा करता था कि "बत़्ह़ा" में मैं बड़ा इ़ज़्ज़त वाला करम वाला हूं, उस को अ़ज़ाब के वक़्त येह त़ा'ना दिया जाएगा और कुफ़्फ़ार से येह भी कहा जाएगा कि **56 :** अ़ज़ाब जो तुम देखते हो। **57 :** और उस पर ईमान नहीं लाते थे। इस के बा'द परहेज़ गारों का ज़िक्र फ़रमाया जाता है। **58 :** जहां कोई ख़ौफ़ नहीं।

www.dawateislami.net

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿۵۳﴾ كَذٰلِكَ ۟ وَزَوَّجْنٰهُمْ

पहनेंगे करेब और क़नादीज़[59] आमने सामने[60] यूंही है और हम ने उन्हें बियाह दिया

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۵۴﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे[61] अम्न व अमान से[62] उस में पहली

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۵۶﴾ فَضْلًا

मौत के सिवा[63] फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[64] तुम्हारे

مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۵۷﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ

रब के फ़ज़्ल से येही बड़ी काम्याबी है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में[65] आसान किया कि

يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع

वोह समझें[66] तो तुम इन्तिज़ार करो[67] वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं[68]

اٰيَاتُهَا ٣٧ | ٤٥ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ ٦٥ | رُكُوْعَاتُهَا ٤

सूरए जासियह मक्किय्या है, इस में सैंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

حٰمٓ ﴿۱﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

किताब का उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक आस्मानों

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۳﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

और ज़मीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[2] और तुम्हारी पैदाइश में[3] और जो जो जानवर वोह फैलाता है

59 : या'नी रेशम के बारीक व दबीज़ लिबास। 60 : कि किसी की पुश्त किसी की त़रफ़ न हो। 61 : या'नी जन्नत में अपने जन्नती ख़ादिमों को मेवे हाज़िर करने का हुक्म देंगे 62 : कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा न मेवे के कम होने का न ख़त्म हो जाने का न ज़रर करने का न और कोई। 63 : जो दुन्या में हो चुकी 64 : उस से नजात अ़त़ा फ़रमाई। 65 : या'नी अ़रबी में 66 : और नसीह़त क़बूल करें और ईमान लाएं, लेकिन लाएंगे नहीं। 67 : उन के हलाक व अ़ज़ाब का। 68 : तुम्हारी मौत के। (قِيْلَ هٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ السَّيْفِ) 1 : येह सूरए जासियह है, इस का नाम सूरए शरीअ़ह भी है, येह सूरत मक्किय्या है सिवाए आयत "قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا" के। इस सूरत में चार रुकूअ़, सैंतीस आयतें, चार सो अठासी कलिमे, दो हज़ार एक सो इक्यानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला की कुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली। 3 : या'नी तुम्हारी पैदाइश में भी उस की कुदरत व हिक्मत की निशानियां हैं कि नुत़्फ़े को खून बनाता है, खून को बस्ता (जम्अ़ हुवा) करता है, ख़ूने बस्ता को गोश्त पारा (गोश्त का टुकड़ा) यहां तक कि पूरा इन्सान बना देता है।

www.dawateislami.net

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۙ﴿۴﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
इन में निशानियां हैं यक़ीन वालों के लिये और रात और दिन की तब्दीलियों में[4] और इस में कि अल्लाह
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ
ने आस्मान से रोज़ी का सबब मींह उतारा तो उस से ज़मीन को उस के मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की
الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۵﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ
गर्दिश में[5] निशानियां हैं अ़क़्ल मन्दों के लिये येह अल्लाह की आयतें हैं कि हम तुम पर ह़क़ के साथ
بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ
पढ़ते हैं फिर अल्लाह और उस की आयतों को छोड़ कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे ख़राबी है हर बड़े
اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ﴿۷﴾ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ
बोहतान हाए गुनहगार के लिये[6] अल्लाह की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है[7] गुरूर करता[8] गोया
يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۸﴾ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا
उन्हें सुना ही नहीं तो उसे खुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ़ पाए उस की
هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ؕ﴿۹﴾ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ
हंसी बनाता है उन के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब उन के पीछे जहन्नम है[9] और उन्हें कुछ काम
عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ
न देगा उन का कमाया हुवा[10] और न वोह जो अल्लाह के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे[11] और उन के लिये
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ؕ﴿۱۰﴾ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ
बड़ा अ़ज़ाब है येह[12] राह दिखाना है और जिन्हों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिये
ع عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ
दर्दनाक अ़ज़ाब में से सख़्त तर अ़ज़ाब है अल्लाह है जिस ने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उस में उस के

4 : कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है। 5 : कि कभी गर्म चलती हैं कभी सर्द कभी जुनूबी कभी शिमाली कभी शर्क़ी कभी ग़र्बी। 6 : या'नी नज़्र बिन ह़ारिस के लिये। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत नज़्र बिन ह़ारिस के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अ़जम के क़िस्से कहानियां सुना कर लोगों को क़ुरआने पाक सुनने से रोकता था और आयत हर ऐसे शख़्स के लिये आ़म है जो दीन को ज़रर पहुंचाए और ईमान लाने और क़ुरआन सुनने से तकब्बुर करे। 7 : या'नी अपने कुफ़्र पर। 8 : ईमान लाने से। 9 : या'नी बा'दे मौत उन का अन्जामे कार और मआल (ठिकाना) दोज़ख़ है। 10 : माल जिस पर वोह बहुत नाज़ां हैं। 11 : या'नी बुत जिन को पूजा करते थे। 12 : क़ुरआन शरीफ़।

فِيهِ بِأَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ

हुक्म से कश्तियां चलें और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[13] और इस लिये कि हक़ मानो[14] और तुम्हारे लिये काम में लगाए

مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

जो कुछ आस्मानों में हैं[15] और जो कुछ ज़मीन में[16] अपने हुक्म से बेशक इस में निशानियां हैं

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ

सोचने वालों के लिये ईमान वालों से फ़रमाओ दर गुज़रें उन से जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं

اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ

रखते[17] ताकि अल्लाह एक क़ौम को उस की कमाई का बदला दे[18] जो भला काम करे तो अपने लिये

وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ

और बुरा करे तो अपने बुरे को[19] फिर अपने रब की त़रफ़ फेरे जाओगे[20] और बेशक हम ने बनी

اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ

इसराईल को किताब[21] और हुकूमत और नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई[22] और हम ने उन्हें सुथरी रोज़ियां दीं[23] और

فَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا

उन्हें उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हम ने उन्हें इस काम की[24] रोशन दलीलें दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया[25]

13 : बह़री सफ़रों से और तिजारतों से और ग़व्वासी (ग़ोत़ा ख़ोरी) करने और मोती वग़ैरा निकालने से। **14 :** उस के ने'मतो करम और फ़ज़्लो एह़सान का। **15 :** सूरज चांद सितारे वग़ैरा। **16 :** चौपाए दरख़्त नहरें वग़ैरा। **17 :** जो दिन कि उस ने मोमिनीन की मदद के लिये मुक़र्रर फ़रमाए या "अल्लाह तआ़ला के दिनों" से वोह वक़ाएअ़ (वाक़िआ़त) मुराद हैं जिन में वोह अपने दुश्मनों को गिरिफ़्तार करता है, बहर ह़ाल इन उम्मीद न रखने वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं और मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार से जो ईज़ा पहुंचे और उन के कलिमात जो तक्लीफ़ पहुंचाएं मुसल्मान उन से दर गुज़र करें मुनाज़अ़त (झगड़ा) न करें। (وَقِيْلَ اِنَّ الْاٰيَةَ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ)। **शाने नुज़ूल :** इस आयत की शाने नुज़ूल में कई क़ौल हैं : **एक** येह कि ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में मुसल्मान बीरे मुरैसीअ़ पर उतरे, येह एक कूंवां था, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने ग़ुलाम को पानी के लिये भेजा, वोह देर में आया तो उस से सबब दरयाफ़्त किया, उस ने कहा कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कूंएं के कनारे पर बैठे थे, जब तक नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मश्कें न भर गईं उस वक़्त तक उन्हों ने किसी को पानी भरने न दिया। येह सुन कर उस बद बख़्त ने इन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ाना कलिमे कहे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस की ख़बर हुई तो आप तलवार ले कर तय्यार हुए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत मदनी होगी। मुक़ातिल का क़ौल है कि क़बीलए बनी ग़िफ़ार के एक शख़्स ने मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गाली दी तो आप ने उस को पकड़ने का इरादा किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **एक** क़ौल येह है कि जब आयत "مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا" नाज़िल हुई तो फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) का रब मोह़ताज हो गया (مَعَاذَ اللّٰہ تَعَالٰی) इस को सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तलवार खींची और उस की तलाश में निकले। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आदमी भेज कर उन्हें वापस बुलवा लिया। **18 :** या'नी उन के आ'माल का। **19 :** नेकी और बदी का सवाब और अ़ज़ाब उस के करने वाले पर है। **20 :** वोह नेकों और बदों को उन के आ'माल की जज़ा देगा। **21 :** या'नी तौरैत **22 :** उन में ब कसरत अम्बिया पैदा कर के। **23 :** ह़लाल कशाइश के साथ फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के अम्वाल व दियार का मालिक कर के और मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमा कर। **24 :** या'नी अम्रे दीन और बयाने ह़लाल

اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡيًۢا بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ

मगर बा'द इस के कि इल्म उन के पास आ चुका[26] आपस के ह़सद से[27] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۷﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰكَ عَلٰى شَرِيۡعَةٍ

उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं फिर हम ने इस काम के[28]

مِّنَ الۡاَمۡرِ فَاتَّبِعۡهَا وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۸﴾ اِنَّهُمۡ

उ़म्दा रास्ते पर तुम्हें किया[29] तो इसी राह चलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो[30] बेशक वोह

لَنۡ يُّغۡنُوۡا عَنۡكَ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के

بَعۡضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِىُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۹﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحۡمَةٌ

दोस्त हैं[31] और डर वालों का दोस्त अल्लाह[32] येह लोगों की आंखें खोलना है[33] और ईमान वालों के लिये

لِّقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ﴿۲۰﴾ اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ اجۡتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَهُمۡ

हिदायत व रह़मत क्या जिन्हों ने बुराइयों का इरतिकाब किया[34] येह समझते हैं कि हम उन्हें उन

كَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحۡيَاهُمۡ وَمَمَاتُهُمۡ ؕ سَآءَ

जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इन की उन की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए[35] क्या ही

ع ١٨ ٢ مَا يَحۡكُمُوۡنَ ﴿۲۱﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ وَلِتُجۡزٰى

बुरा हुक्म लगाते हैं[36] और अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ बनाया[37] और इस लिये कि

व ह़राम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मब्ऊ़स होने की **25 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत में। **26 :** और इल्म ज़वाले इख़्तिलाफ़ का सबब होता है और यहां उन लोगों के लिये इख़्तिलाफ़ का सबब हुवा, इस का बाइ़स येह है कि इल्म उन का मक़्सूद न था बल्कि मक़्सूद उन का जाह व रियासत की त़लब थी, इसी लिये उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया। **27 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की जल्वा अफ़रोज़ी के बा'द अपने जाह व रियासत के अन्देशे से आप के साथ ह़सद और दुश्मनी की और काफ़िर हो गए। **28 :** या'नी दीन के **29 :** ऐ ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **30 :** या'नी रुअसाए क़ुरैश की जो अपने दीन की दा'वत देते हैं। **31 :** सिर्फ़ दुन्या में और आख़िरत में उन का कोई दोस्त नहीं। **32 :** दुन्या में भी और आख़िरत में भी। डर वालों से मुराद मोमिनीन हैं और आगे क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है **33 :** कि इस से उन्हें उमूरे दीन में बीनाई ह़ासिल होती है। **34 :** कुफ़्र व मआ़सी का **35 :** या'नी ईमानदारों और काफ़िरों की मौत व ह़यात बराबर हो जाए, ऐसा हरगिज़ नहीं होगा क्यूं कि ईमानदार ज़िन्दगी में त़ाअ़त पर क़ाइम रहे और काफ़िर बदियों में डूबे रहे तो इन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई, ऐसे ही मौत भी यक्सां नहीं कि मोमिन की मौत बिशारत व रह़मत व करामत पर होती है और काफ़िर की रह़मत से मायूसी और नदामत पर। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का की एक जमाअ़त ने मुसल्मानों से कहा था : अगर तुम्हारी बात ह़क़ हो और मरने के बा'द उठना हो तो भी हम ही अफ़्ज़ल रहेंगे जैसा कि दुन्या में हम तुम से बेहतर रहे। उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **36 :** मुख़ालिफ़ सरकश, मुख़्लिस फ़रमां बरदार के बराबर कैसे हो सकता है ? मोमिनीन जन्नाते आ़लियात में इ़ज़्ज़तो करामत और ऐशो राह़त पाएंगे और कुफ़्फ़ार अस्फ़लुस्साफ़िलीन में ज़िल्लत व इहानत के साथ सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तला

www.dawateislami.net

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ

हर जान अपने किये का बदला पाए[38] और उन पर ज़ुल्म न होगा भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश

اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ

को अपना ख़ुदा ठहरा लिया[39] और **अल्लाह** ने उसे बा वस्फ़ इल्म के गुमराह किया[40] और उस के कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की

عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ

आंखों पर पर्दा डाला[41] तो **अल्लाह** के बा'द उसे कौन राह दिखाए तो क्या तुम ध्यान नहीं करते और

قَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ

बोले[42] वोह तो नहीं मगर येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[43] मरते हैं और जीते हैं[44] और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना[45]

وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

और उन्हें इस का इल्म नहीं[46] वोह तो निरे गुमान दौड़ाते हैं[47] और जब उन पर हमारी रोशन

اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ

आयतें पढ़ी जाएं[48] तो बस उन की हुज्जत येही होती है कि कहते हैं हमारे बाप दादा को ले आओ[49] तुम अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ

सच्चे हो[50] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** तुम्हें जिलाता है[51] फिर तुम को मारेगा[52] फिर तुम सब को इकठ्ठा करेगा[53] क़ियामत

होंगे। **37 :** कि उस की क़ुदरत व वह्दानिय्यत की दलील हो। **38 :** नेक नेकी का और बद, बदी का। इस आयत से मा'लूम हुवा कि इस आ़लम की पैदाइश से इज़्हारे अ़द्ल व रह़मत मक़्सूद है और येह पूरी त़रह़ क़ियामत ही में हो सकता है कि अहले ह़क़ और अहले बात़िल में इम्तियाज़े कामिल हो, मोमिने मुख़्लिस दरजाते जन्नत में हों और काफ़िर ना फ़रमान दरकाते जहन्नम (दोज़ख़ के त़बक़ात) में। **39 :** और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हो गया, जिसे नफ़्स ने चाहा पूजने लगा, मुश्रिकीन का येही ह़ाल था कि वोह पथ्थर और सोने और चांदी वग़ैरा को पूजते थे, जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मा'लूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फेंक देते दूसरी को पूजने लगते। **40 :** कि इस गुमराह ने ह़क़ को जान पहचान कर बे राही इख़्तियार की। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस के अन्जामे कार और इस के शक़ी होने को जानते हुए इसे गुमराह किया या'नी **अल्लाह** तआ़ला पहले से जानता था कि येह अपने इख़्तियार से राहे ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होगा और गुमराही इख़्तियार करेगा। **41 :** तो उस ने हिदायत व मौइज़त (नसीह़त) को न सुना और न समझा और राहे ह़क़ को न देखा। **42 :** मुन्किरीने बअ़्स **43 :** या'नी इस ज़िन्दगी के इलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं। **44 :** या'नी बा'ज़े मरते हैं और बा'ज़े पैदा होते हैं। **45 :** या'नी रोज़ो शब का दौरा, वोह इसी को मुअस्सिर ए'तिक़ाद करते थे और मलकुल मौत का और ब हुक्मे इलाही रूहें क़ब्ज़ किये जाने का इन्कार करते थे और हर एक ह़ादिसे को दहर और ज़माने की त़रफ़ मन्सूब करते थे **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **46 :** या'नी वोह येह बात बे इल्मी से कहते हैं। **47 :** ख़िलाफ़े वाक़ेअ़। **मस्अला :** ह़वादिस को ज़माने की त़रफ़ निस्बत करना और ना गवार ह़वादिस रूनुमा होने से ज़माने को बुरा कहना मम्नूअ़ है, अह़ादीस में इस की मुमानअ़त आई है। **48 :** या'नी क़ुरआने पाक की आयतें जिन में **अल्लाह** तआ़ला के बअ़्से बा'दल मौत पर क़ादिर होने की दलीलें मज़्कूर हैं, जब कुफ़्फ़ार उन के जवाब से आ़जिज़ होते हैं **49 :** ज़िन्दा कर के **50 :** इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। **51 :** दुन्या में बा'द इस के कि तुम बेजान नुत़्फ़ा थे। **52 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने के वक़्त। **53 :** ज़िन्दा कर के। तो जो परवर्दगार ऐसी क़ुदरत वाला है वोह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी बिल यक़ीन क़ादिर है, वोह सब को ज़िन्दा करेगा।

٣ ع ١٩ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

के दिन जिस में कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते[54] और अल्लाह ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّخْسَرُ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी बातिल वालों की उस

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ

दिन हार है[55] और तुम हर गुरौह[56] को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए हर गुरौह अपने नामए आ'माल की तरफ़ बुलाया जाएगा[57]

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा हमारा येह नविश्ता तुम पर हक़

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

बोलता है हम लिखते रहे थे[58] जो तुम ने किया तो वोह जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

और अच्छे काम किये उन का रब उन्हें अपनी रहमत में लेगा[59] येही खुली

الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

काम्याबी है और जो काफ़िर हुए उन से फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

तो तुम तकब्बुर करते थे[60] और तुम मुजरिम लोग थे और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वा'दा[61] सच्चा है

وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا

और क़ियामत में शक नहीं[62] तुम कहते हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें तो यूंही कुछ गुमान सा

ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ

होता है और हमें[63] यक़ीन नहीं और उन पर खुल गईं[64] उन के कामों की बुराइयां[65] और उन्हें घेर लिया

54 : इस को कि अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उन का न जानना दलाइल की तरफ़ मुल्तफ़ित न होने और ग़ौर न करने के बाइस है। 55 : या'नी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा। 56 : या'नी हर दीन वाले 57 : और फ़रमाया जाएगा 58 : या'नी हम ने फ़िरिश्तों को तुम्हारे अ़मल लिखने का हुक्म दिया था 59 : जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। 60 : और उन पर ईमान न लाते थे। 61 : मुर्दों को ज़िन्दा करने का 62 : वो ज़रूर आएगी तो 63 : क़ियामत के आने का 64 : या'नी कुफ़्फ़ार पर आख़िरत में 65 : जो

www.dawateislami.net

مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَقِيۡلَ الۡيَوۡمَ نَنۡسٰٮكُمۡ كَمَا نَسِيۡتُمۡ لِقَآءَ

उस अ़ज़ाब ने जिस की हंसी बनाते थे और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे[66] जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को

يَوۡمِكُمۡ هٰذَا وَمَاۡوٰٮكُمُ النَّارُ وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمۡ بِاَنَّكُمُ

भूले हुए थे[67] और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं[68] येह इस लिये कि तुम

اتَّخَذۡتُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتۡكُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا‌ ۚ فَالۡيَوۡمَ لَا يُخۡرَجُوۡنَ

ने अल्लाह की आयतों का ठठ्ठा (मज़ाक़) बनाया और दुन्या की ज़िन्दगी ने तुम्हें फ़रेब दिया[69] तो आज न वोह आग से निकाले

مِنۡهَا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿۳۵﴾ فَلِلّٰهِ الۡحَمۡدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ

जाएं और न उन से कोई मनाना चाहे[70] तो अल्लाह ही के लिये सब ख़ूबियां हैं आस्मानों का रब और ज़मीन

الۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۳۶﴾ وَلَهُ الۡكِبۡرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ۖ

का रब और सारे जहां का रब और उसी के लिये बड़ाई है आस्मानों और ज़मीन में

وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۳۷﴾ ع

और वोही इ़ज़्ज़त व हि़क्मत वाला है

उन्हों ने दुन्या में किये थे और उन की सज़ाएं। **66 :** अ़ज़ाबे दोज़ख़ में **67 :** कि ईमान व ता़अ़त छोड़ बैठे। **68 :** जो तुम्हें इस अ़ज़ाब से बचा सके। **69 :** कि तुम उस के मफ़्तूं (फ़ित्ने में मुब्तला) हो गए और तुम ने बअ़्स व हि़साब का इन्कार कर दिया। **70 :** या'नी अब उन से येह भी मत़लूब नहीं कि वोह तौबा कर के और ईमान व ता़अ़त इख़्तियार कर के अपने रब को राज़ी करें क्यूं कि उस रोज़ कोई उ़ज़्र और तौबा क़बूल नहीं।

اٰياتها ٣٥ ۞ ﴿٤٦﴾ سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ ﴿٦٦﴾ ۞ رکوعاتها ٤

सूरए अह्क़ाफ़ मक्किय्या है, इस में पेंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ مَا خَلَقْنَا

येह किताब[2] उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाले की त़रफ़ से हम ने न बनाए

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَ

आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है मगर ह़क़ के साथ[3] और एक मुक़र्रर मीआ़द पर[4] और

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّاۤ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا

काफ़िर उस चीज़ से कि डराए गए[5] मुंह फेरे हैं[6] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो वोह जो

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ

तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो[7] मुझे दिखाओ उन्हों ने ज़मीन का कौन सा ज़र्रा बनाया या

شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَاۤ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ

आस्मान में उन का कोई हिस्सा है मेरे पास लाओ इस से पहली कोई किताब[8] या कुछ बचा खुचा इ़ल्म[9]

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾ وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ

अगर तुम सच्चे हो[10] और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजे[11] जो

لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَ هُمْ عَنْ دُعَآىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾ وَ

क़ियामत तक उस की न सुनें और उन्हें उन की पूजा की ख़बर तक नहीं[12] और

1 : सूरए अह्क़ाफ़ मक्किय्या है मगर बा'ज़ के नज़्दीक इस की चन्द आयतें मदनी हैं जैसे कि आयत ''قُلْ اَرَءَيْتُمْ'' और आयत ''فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ'' और तीन[3] आयतें وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ। इस सूरत में चार रुकूअ़ और पेंतीस आयतें और छ[6] सो चवालीस कलिमे और दो हज़ार पांच सो पचानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी कुरआन शरीफ़ 3 : कि हमारी कुदरत व वह़दानिय्यत पर दलालत करें 4 : वोह मुक़र्रर मीआ़द रोज़े क़ियामत है जिस के आ जाने पर आस्मान व ज़मीन फ़ना हो जाएंगे। 5 : उस चीज़ से मुराद या अ़ज़ाब है या रोज़े क़ियामत की वह़्शत या कुरआने पाक जो बअ़्स व ह़िसाब का ख़ौफ़ दिलाता है। 6 : कि उस पर ईमान नहीं लाते। 7 : या'नी बुत जिन्हें मा'बूद ठहराते हो। 8 : जो अल्लाह तआ़ला ने कुरआन से पहले उतारी हो, मुराद येह है कि येह किताब या'नी कुरआने मजीद तौह़ीद और इब्त़ाले शिर्क पर नात़िक़ है और जो किताब भी इस से पहले अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आई उस में येही बयान है, तुम कुतुबे इलाहिय्यह में से कोई एक किताब तो ऐसी ले आओ जिस में तुम्हारे दीन (बुत परस्ती) की शहादत हो। 9 : पहलों का 10 : अपने इस दा'वे में कि ख़ुदा का कोई शरीक है जिस की इ़बादत का उस ने तुम्हें हुक्म दिया है। 11 : या'नी बुतों को 12 : क्यूं कि वोह जमादे बेजान हैं।

www.dawateislami.net

إِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِينَ ﴿٦﴾ وَ

जब लोगों का ह़श्र होगा वोह उन के दुश्मन होंगे[13] और उन से मुन्किर हो जाएंगे[14] और

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ

जब उन पर[15] पढ़ी जाएं हमारी रोशन आयतें तो काफ़िर अपने पास आए हुए ह़क़ को[16] कहते हैं

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا

येह खुला जादू है[17] क्या कहते हैं इन्हों ने इसे जी से बनाया[18] तुम फ़रमाओ अगर मैं ने इसे जी से बना लिया होगा

تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفٰى بِهِ

तो तुम अल्लाह के सामने मेरा कुछ इख़्तियार नहीं रखते[19] वोह ख़ूब जानता है जिन बातों में तुम मश्ग़ूल हो[20] और वोह काफ़ी है

شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٨﴾ قُلْ مَا كُنْتُ

मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है[21] तुम फ़रमाओ मैं कोई

بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا

अनोखा रसूल नहीं[22] और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या[23] मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं

13 : या'नी बुत अपने पुजारियों के। **14 :** और कहेंगे कि हम ने इन्हें अपनी इबादत की दा'वत नहीं दी, दर ह़क़ीक़त येह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार थे। **15 :** या'नी अहले मक्का पर **16 :** या'नी कुरआन शरीफ़ को बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये और अच्छी त़रह़ सुने **17 :** कि इस के जादू होने में शुबा नहीं और इस से भी बदतर बात कहते हैं जिस का आगे ज़िक्र है। **18 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने। **19 :** या'नी अगर बिलफ़र्ज़ मैं दिल से बनाता और इस को **अल्लाह** तआ़ला का कलाम बताता तो वोह **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तिरा होता और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ऐसे इफ़्तिरा करने वाले को जल्द उ़क़ूबत में गिरिफ़्तार करता है, तुम्हें तो येह कुदरत नहीं कि तुम उस की उ़क़ूबत से बचा सको या उस के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ कर सको तो किस त़रह़ हो सकता है कि मैं तुम्हारी वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तिरा करता। **20 :** और जो कुछ कुरआने पाक की निस्बत कहते हो। **21 :** या'नी अगर तुम कुफ़्र से तौबा कर के ईमान लाओ तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाएगा और तुम पर रह़मत करेगा। **22 :** मुझ से पहले भी रसूल आ चुके हैं तो तुम क्यूं नुबुव्वत का इन्कार करते हो ? **23 :** इस के मा'ना में मुफ़स्सिरीन के चन्द क़ौल हैं, एक तो येह कि क़ियामत में जो मेरे और तुम्हारे साथ किया जाएगा वोह मुझे मा'लूम नहीं, येह मा'ना हों तो येह आयत मन्सूख़ है, मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो मुश्रिक ख़ुश हुए और कहने लगे कि लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक हमारा और मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का यक्सां ह़ाल है, उन्हें हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत नहीं, अगर येह कुरआन उन का अपना बनाया हुवा न होता तो उन का भेजने वाला उन्हें ज़रूर ख़बर देता कि उन के साथ क्या करेगा, तो **अल्लाह** तआ़ला ने आयत لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ नाज़िल फ़रमाई, सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! हुज़ूर को मुबारक हो आप को तो मा'लूम हो गया कि आप के साथ क्या किया जाएगा, येह इन्तिज़ार है कि हमारे साथ क्या करेगा, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई : ''لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ'' और येह आयत नाज़िल हुई ''بَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيرًا'' तो **अल्लाह** तआ़ला ने बयान फ़रमा दिया कि हुज़ूर के साथ क्या करेगा और मोमिनीन के साथ क्या। **दूसरा क़ौल** आयत की तफ़्सीर में येह है कि आख़िरत का ह़ाल तो हुज़ूर को अपना भी मा'लूम है, मोमिनीन का भी, मुकज़्ज़िबीन का भी। मा'ना येह हैं कि दुन्या में क्या किया जाएगा ? येह मा'लूम नहीं। अगर येह मा'ना लिये जाएं तो भी आयत मन्सूख़ है, **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को येह भी बता दिया ''لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ'' और ''مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيهِمْ'' बहर ह़ाल **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को हुज़ूर के साथ और हुज़ूर की उम्मत के साथ पेश आने वाले उमूर पर मुत्त़लअ़ फ़रमा दिया ख़्वाह वोह दुन्या के हों या आख़िरत के और अगर दिरायत ब मा'ना इदराक बिल क़ियास या'नी अ़क़्ल से जानने के मा'ना में लिया जाए तो मज़्मून और

www.dawateislami.net

مَا يُوحٰۤى اِلَیَّ وَ مَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ

जो मुझे वह्य होती है[24] और मैं नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर वोह कुरआन

عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ

अल्लाह के पास से हो और तुम ने उस का इन्कार किया और बनी इसराईल का एक गवाह[25] इस पर गवाही दे चुका[26]

ع ١

فَاٰمَنَ وَ اسْتَكْبَرْتُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَ قَالَ

तो वोह ईमान लाया और तुम ने तकब्बुर किया[27] बेशक अल्लाह राह नहीं देता ज़ालिमों को और

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَیْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَیْهِؕ وَ اِذْ

काफ़िरों ने मुसल्मानों को कहा अगर इस में[28] कुछ भलाई होती तो येह[29] हम से आगे इस तक न पहुंच जाते[30] और जब

لَمْ یَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَیَقُوْلُوْنَ هٰذَاۤ اِفْكٌ قَدِیْمٌ ﴿۱۱﴾ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ

उन्हें उस की हिदायत न हुई तो अब[31] कहेंगे कि येह पुराना बोहतान है और इस से पहले मूसा की

مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّ رَحْمَةًؕ وَ هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِیًّا لِّیُنْذِرَ

किताब[32] है पेशवा और मेहरबानी और येह किताब है तस्दीक़ फ़रमाती[33] अ़रबी ज़बान में कि ज़ालिमों

الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ

को डर सुनाए * और नेकों को बिशारत बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है

ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ اُولٰٓىٕكَ اَصْحٰبُ

फिर साबित क़दम रहे[34] न उन पर ख़ौफ़[35] न उन को ग़म[36] वोह जन्नत

الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ

वाले हैं हमेशा उस में रहेंगे उन के आ'माल का इन्आम और हम ने आदमी को हुक्म किया

भी ज़ियादा साफ़ है और आयत का इस के बा'द वाला जुम्ला इस का मुअय्यिद है। अ़ल्लामा नैशापूरी ने इस आयत के तह़त फ़रमाया : "मैं" कि इस में नफ़ी अपनी ज़ात से जानने की है "مِنْ جِهَةِ الْوَحْيِ" जानने की नफ़ी नहीं। **24 :** या'नी मैं जो कुछ जानता हूं अल्लाह तआ़ला की ता'लीम से जानता हूं। **25 :** वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए और आप की सिह़्ह़ते नुबुव्वत की शहादत दी। **26 :** कि वोह कुरआन अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है। **27 :** और ईमान से मह़रूम रहे तो इस का नतीजा क्या होना है ? **28 :** या'नी दीने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم में **29 :** ग़रीब लोग **30 :** **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुशरिकीने मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो कहते थे कि अगर दीने मुह़म्मदी ह़क़ होता तो फुलां फुलां इस को हम से पहले कैसे क़बूल कर लेते। **31 :** इनाद से कुरआन शरीफ़ की निस्बत **32 :** तौरैत **33 :** पहली किताबों की **34 :** अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शरीअ़त पर दमे आख़िर तक **35 :** क़ियामत में **36 :** मौत के वक़्त।

www.dawateislami.net

بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَ

कि अपने मां बाप से भलाई करे उस की मां ने उसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी उस को तक्लीफ़ से और उसे उठाए फिरना और

فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ

उस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है[37] यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा[38] और चालीस बरस का हुवा[39]

قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की[40]

وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ؕۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ

और मैं वोह काम करूं जो तुझे पसन्द आए[41] और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह़ (नेकी) रख[42] मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया[43]

وَ اِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا

और मैं मुसल्मान हूं[44] येह हैं वोह जिन की नेकियां हम क़बूल

37 मस्अला : इस आयत से साबित होता है कि अक़ल मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह है क्यूं कि जब दूध छुड़ाने की मुद्दत दो साल हुई जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया ''حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ'' तो ह़म्ल के लिये छ[6] माह बाक़ी रहे, येही क़ौल है इमाम अबू यूसुफ़ व इमाम मुह़म्मद رحمهما الله تعالى का और ह़ज़रत इमाम साहिब رضى الله تعالى عنه के नज़्दीक इस आयत से रज़ाअ़ की मुद्दत ढाई साल साबित होती है। मस्अले की तफ़ासील मअ़ दलाइल कुतुबे उसूल में मज़्कूर हैं। **38 :** और अ़क़्ल व क़ुव्वत मुस्तह़कम हुई और येह बात तीस से चालीस साल तक की उ़म्र में ह़ासिल होती है। **39 :** येह आयत ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप की उ़म्र सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم से दो साल कम थी, जब ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه की उ़म्र अठ्ठारह साल की हुई तो आप ने सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم की सोह़बत इख़्तियार की, उस वक़्त हुज़ूर की उ़म्र शरीफ़ बीस साल की थी, हुज़ूर عليه الصلوة والسلام की हमराही में ब ग़रज़े तिजारत मुल्के शाम का सफ़र किया, एक मन्ज़िल पर ठहरे वहां एक बेरी का दरख़्त था हुज़ूर सय्यिदे आ़लम عليه الصلوة والسلام उस के साए में तशरीफ़ फ़रमा हुए, क़रीब ही एक राहिब रहता था, ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه उस के पास चले गए, राहिब ने आप से कहा : येह कौन साह़िब हैं जो इस बेरी के साए में जल्वा फ़रमा हैं ? ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि येह मुह़म्मद (صلى الله تعالى عليه وسلم) इब्ने अ़ब्दुल्लाह हैं, अ़ब्दुल मुत्तलिब के पोते। राहिब ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! येह नबी हैं, इस बेरी के साए में ह़ज़रते ईसा عليه السلام के बा'द से आज तक इन के सिवा कोई नहीं बैठा, येही नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान हैं। राहिब की येह बात ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه के दिल में असर कर गई और नुबुव्वत का यक़ीन आप के दिल में जम गया और आप ने सोह़बत शरीफ़ की मुलाज़मत इख़्तियार की, सफ़रो ह़ज़र में आप से जुदा न होते। जब सय्यिदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم की उ़म्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को अपनी नुबुव्वत व रिसालत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया तो ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه आप पर ईमान लाए, उस वक़्त ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه की उ़म्र अड़तीस साल की थी, जब ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه की उ़म्र चालीस साल की हुई तो उन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला से येह दुआ़ की : **40 :** कि हम सब को हिदायत फ़रमाई और इस्लाम से मुशर्रफ़ किया। ह़ज़रते सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه के वालिद का नाम अबू क़ुह़ाफ़ा और वालिदा का नाम उम्मुल ख़ैर है। **41 :** आप की येह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ह़ुस्ने अ़मल की वोह दौलत अ़ता फ़रमाई कि तमाम उम्मत के आ'माल आप के एक अ़मल के बराबर नहीं हो सकते, आप की नेकियों में से एक येह है कि नौ मोमिन जो ईमान की वज्ह से सख़्त ईज़ाओं और तक्लीफ़ों में मुब्तला थे उन को आप ने आज़ाद किया उन्हीं में से हैं ह़ज़रते बिलाल رضى الله تعالى عنه और आप ने येह दुआ़ की : **42 :** येह दुआ़ भी मुस्तजाब हुई **अल्लाह** तआ़ला ने आप की औलाद में सलाह़ रखी, आप की तमाम औलाद मोमिन है और उन में ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رضى الله تعالى عنها का मर्तबा किस क़दर बुलन्दो बाला है कि तमाम औ़रतों पर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें फ़ज़ीलत दी है, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضى الله تعالى عنه के वालिदैन भी मुसल्मान और आप के साह़िब ज़ादे मुह़म्मद और अ़ब्दुल्लाह और अ़ब्दुर्रह़मान और आप की साह़िब ज़ादियां ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते अस्मा और आप के पोते मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान येह सब मोमिन और सब शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़ सह़ाबा हैं, आप के सिवा कोई ऐसा नहीं है जिस को येह फ़ज़ीलत ह़ासिल हो कि उस के वालिदैन भी सह़ाबी हों ख़ुद भी सह़ाबी औलाद भी सह़ाबी पोते भी सह़ाबी, चार पुश्तें शरफ़े सह़ाबिय्यत से मुशर्रफ़। **43 :** हर अम्र में जिस में तेरी रिज़ा हो। **44 :** दिल से भी और ज़बान से भी।

www.dawateislami.net

عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ

फ़रमाएंगे[45] और उन की तक़्सीरों से दर गुज़र फ़रमाएंगे जन्नत वालों में सच्चा वा'दा

الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ

जो उन्हें दिया जाता था[46] और वोह जिस ने अपने मां बाप से कहा[47] उफ़ तुम से दिल पक गया क्या मुझे येह वा'दा देते हो

اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ

कि फिर ज़िन्दा किया जाऊंगा हालां कि मुझ से पहले संगतें (क़ौमें) गुज़र चुकीं[48] और वोह दोनों[49] अल्लाह से फ़रियाद करते हैं

وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖۗ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚۖ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ

तेरी ख़राबी हो ईमान ला बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[50] तो कहता है येह तो नहीं मगर अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ

कहानियां येह वोह हैं जिन पर बात साबित हो चुकी[51] उन गुरौहों में जो इन से

مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ

पहले गुज़रे जिन्न और आदमी बेशक वोह ज़ियांकार (नुक़्सान वाले) थे और हर एक के लिये[52]

دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ

अपने अपने अ़मल के दरजे हैं[53] और ताकि अल्लाह उन के काम उन्हें पूरे भर दे[54] और उन पर ज़ुल्म न होगा और

يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ

जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उन से फ़रमाया जाएगा तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में

الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ

फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके[55] तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा सज़ा

45 : इन पर सवाब देंगे। 46 : दुन्या में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से। 47 : मुराद इस से कोई ख़ास शख़्स नहीं है बल्कि हर काफ़िर जो बअ़्स का मुन्किर हो और वालिदैन का ना फ़रमान और उस के वालिदैन उस को दीने हक़ की दा'वत देते हों और वोह इन्कार करता हो। 48 : उन में से कोई मर कर ज़िन्दा न हुवा। 49 : मां बाप 50 : मुर्दे ज़िन्दा फ़रमाने का। 51 : अ़ज़ाब की 52 : मोमिन हो या काफ़िर 53 : या'नी मनाज़िल व मरातिब हैं अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक रोज़े क़ियामत जन्नत के दरजात बुलन्द होते चले जाते हैं और जहन्नम के दरजात पस्त होते चले जाते हैं तो जिन के अ़मल अच्छे हों वोह जन्नत के ऊंचे दरजे में होंगे और जो कुफ़्रो मा'सियत में इन्तिहा को पहुंच गए हों वोह जहन्नम के सब से नीचे दरजे में होंगे। 54 : या'नी मोमिनों और काफ़िरों को फ़रमां बरदारी और ना फ़रमानी की पूरी जज़ा दे। 55 : या'नी लज़्ज़तो ऐ़श जो तुम्हें पाना था वोह सब दुन्या में तुम ने ख़त्म कर दिया अब तुम्हारे लिये आख़िरत में कुछ भी बाक़ी न रहा और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि तय्यिबात से कुवाए जिस्मानिया और जवानी मुराद है और मा'ना येह हैं कि तुम ने अपनी जवानी और अपनी कुव्वतों को दुन्या के अन्दर कुफ़्रो मा'सियत में ख़र्च कर दिया।

www.dawateislami.net

ع ٢

تَسْتَكْبِرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۠ (٢٠) وَ اذْكُرْ

उस की कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और सज़ा उस की कि हुक्म उदूली करते थे[56] और याद करो

اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَ قَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَیْنِ

आद के हमक़ौम[57] को जब उस ने उन को सर ज़मीने अह्क़ाफ़ में डराया[58] और बेशक उस से पहले डर सुनाने वाले

یَدَیْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ

गुज़र चुके और उस के बा'द आए कि **अल्लाह** के सिवा किसी को न पूजो बेशक मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का

یَوْمٍ عَظِیْمٍ (٢١) قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ

अन्देशा है बोले क्या तुम इस लिये आए कि हमें हमारे मा'बूदों से फेर दो तो हम पर लाओ[59] जिस का हमें वा'दा देते हो

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ (٢٢) قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖؗ وَ اُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ

अगर तुम सच्चे हो[60] उस ने फ़रमाया[61] इस की ख़बर तो **अल्लाह** ही के पास है[62] मैं तो तुम्हें अपने रब के

اُرْسِلْتُ بِهٖ وَ لٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ (٢٣) فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا

पयाम पहुंचाता हूं हां हां मेरी दानिस्त में तुम निरे जाहिल लोग हो[63] फिर जब उन्हों ने अ़ज़ाब को देखा बादल की त़रह

مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِیَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا

आस्मान के कनारे में फैला हुवा उन की वादियों की त़रफ़ आता[64] बोले येह बादल है कि हम पर बरसेगा[65] बल्कि येह तो वोह है

اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِیْحٌ فِیْهَا عَذَابٌ اَلِیْمٌ (٢٤) ۙ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ

जिस की तुम जल्दी मचाते थे एक आंधी है जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब हर चीज़ को तबाह कर डालती है

بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا یُرٰۤى اِلَّاۤ مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْقَوْمَ

अपने रब के हुक्म से[66] तो सुब्ह रह गए कि नज़र न आते थे मगर उन के सूने (वीरान) मकान हम ऐसी ही सज़ा देते हैं

56 : इस आयत में **अल्लाह** तआला ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्हाब ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की वफ़ात तक हुज़ूर के अहले बैत ने कभी जव की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराए अक़्दस में आग न जलती थी चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है आप फ़रमाते थे कि मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐशो राह़त अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं। **57 :** ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ السَّلَام **58 :** शिर्क से और अह्क़ाफ़ एक रेगिस्तानी वादी है जहां क़ौमे आ़द के लोग रहते थे। **59 :** वोह अ़ज़ाब **60 :** इस बात में कि अ़ज़ाब आने वाला है। **61 :** या'नी हूद عَلَیْهِ السَّلَام ने **62 :** कि अ़ज़ाब कब आएगा **63 :** जो अ़ज़ाब में जल्दी करते हो और अ़ज़ाब को जानते नहीं हो कि क्या चीज़ है। **64 :** और मुद्दत दराज़ से उन की सर ज़मीन में बारिश न हुई थी, इस काले बादल को देख कर ख़ुश हुए। **65 :** ह़ज़रते हूद عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : **66 :** चुनान्चे,

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا

मुजरिमों को और बेशक हम ने उन्हें वोह मक्दूर दिये थे जो तुम को न दिये[67] और उन के लिये कान

وَّ اَبْصَارًا وَّ اَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ

और आंख और दिल बनाए[68] तो उन के कान और आंखें और दिल कुछ

اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا

काम न आए जब कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उन्हें घेर लिया उस अ़ज़ाब ने

ربع كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَ

जिस की हंसी बनाते थे और बेशक हम ने हलाक कर दीं[69] तुम्हारे आस पास की बस्तियां[70] और

صَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

त़रह त़रह की निशानियां लाए कि वोह बाज़ आएं[71] तो क्यूं न मदद की उन की[72] जिन को

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا

उन्हों ने अल्लाह के सिवा क़ुर्ब ह़ासिल करने को ख़ुदा ठहरा रखा था[73] बल्कि वोह उन से गुम गए[74] और येह उन का

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ

बोहतान व इफ़्तिरा है[75] और जब कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ कितने जिन्न फेरे[76] कान लगा कर

الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ

क़ुरआन सुनते फिर जब वहां ह़ाज़िर हुए आपस में बोले ख़ामोश रहो[77] फिर जब पढ़ना हो चुका अपनी क़ौम की त़रफ़

उस आंधी के अ़ज़ाब ने उन के मर्दों, औरतों, छोटों, बड़ों को हलाक कर दिया, उन के अम्वाल आस्मान व ज़मीन के दरमियान उड़ते फिरते थे, चीज़ें पारा पारा हो गईं, ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने और अपने ऊपर ईमान लाने वालों के गिर्द एक ख़त़ खींच दिया था, हवा जब उस ख़त़ के अन्दर आती तो निहायत नर्म पाकीज़ा फ़रह़त अंगेज़ सर्द और वोही हवा क़ौम पर शदीद सख़्त मोहलिक और येह ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام का एक मो'जिज़ए अ़ज़ीमा था। **67 :** ऐ अहले मक्का ! वोह क़ुव्वतो माल और तूले उ़म्र में तुम से ज़ियादा थे। **68 :** ताकि दीन के काम में लाएं मगर उन्हों ने सिवाए दुन्या की त़लब के इन ख़ुदादाद ने'मतों से दीन का काम ही नहीं लिया। **69 :** ऐ क़ुरैश ! **70 :** मिस्ल समूद व आ़द व क़ौमे लूत़ के **71 :** कुफ़्रो तुग़यान से लेकिन वोह बाज़ न आए तो हम ने उन्हें उन के कुफ़्र के सबब हलाक कर दिया। **72 :** उन कुफ़्फ़ार की उन बुतों ने **73 :** और जिन की निस्बत येह कहा करते थे कि इन बुतों के पूजने से अल्लाह का क़ुर्ब ह़ासिल होता है। **74 :** और नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त काम न आए। **75 :** कि वोह बुतों को मा'बूद कहते हैं और बुत परस्ती को क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ ठहराते हैं। **76 :** या'नी ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस वक़्त को याद कीजिये जब हम ने आप की त़रफ़ जिन्नों की एक जमाअ़त को भेजा, उस जमाअ़त की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि सात जिन्न थे जिन्हें रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन की क़ौम की त़रफ़ पयाम रसां बनाया। बा'ज़ रिवायात में आया है कि नव थे, उ़लमाए मुह़क़्क़िक़ीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि जिन्न सब के सब मुकल्लफ़ हैं। अब उन जिन्नों का ह़ाल इर्शाद होता है कि जब आप बत़्ने नख़्ला में मक्कए मुकर्रमा और त़ाइफ़ के दरमियान मक्कए मुकर्रमा को आते हुए अपने अस्ह़ाब के साथ नमाज़े फ़ज्र पढ़ रहे थे उस वक़्त जिन्न **77 :** ताकि अच्छी त़रह ह़ज़रत

مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى

डर सुनाते पलटे[78] बोले ऐ हमारी क़ौम हम ने एक किताब सुनी[79] कि मूसा के बा'द उतारी गई[80]

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ وَ اِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हक़ और सीधी राह दिखाती

يٰقَوْمَنَاۤ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُجِرْكُمْ

ऐ हमारी क़ौम **अल्लाह** के मुनादी[81] की बात मानो और उस पर ईमान लाओ कि वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श दे[82] और तुम्हें

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَ مَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي

दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले और जो **अल्लाह** के मुनादी की बात न माने वोह ज़मीन में क़ाबू से निकल कर

الْاَرْضِ وَ لَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓىٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

जाने वाला नहीं[83] और **अल्लाह** के सामने उस का कोई मददगार नहीं[84] वोह[85] खुली गुमराही में हैं

اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ لَمْ يَعْيَ

क्या उन्हों ने[86] न जाना कि वोह **अल्लाह** जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और उन के

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰۤى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

बनाने में न थका क़ादिर है कि मुर्दे जिलाए (ज़िन्दा करे) क्यूं नहीं बेशक वोह सब कुछ कर सकता है

وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

और जिस दिन काफ़िर आग पर पेश किये जाएंगे उन से फ़रमाया जाएगा क्या येह हक़ नहीं कहेंगे

بَلٰى وَ رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

क्यूं नहीं हमारे रब की क़सम फ़रमाया जाएगा तो अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का[87] तो तुम सब्र करो

की क़िराअत सुन लें। **78 :** या'नी रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم पर ईमान ला कर हुज़ूर के हुक्म से अपनी क़ौम की त़रफ़ ईमान की दा'वत देने गए और उन्हें ईमान न लाने और रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की मुख़ालफ़त से डराया। **79 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ **80 :** अ़त़ा ने कहा चूं कि वोह जिन्न दीने यहूदिय्यत पर थे इस लिये उन्हों ने ह़ज़रते मूसा علیہ السلام का ज़िक्र किया और ह़ज़रते ईसा علیہ السلام की किताब का नाम न लिया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा ह़ज़रते ईसा علیہ السلام की किताब का नाम न लेने का बाइस येह है कि इस में सिर्फ़ मवाइज़ हैं अह़काम बहुत ही कम हैं। **81 :** सय्यिदे आ़लम ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ علیہ وسلم **82 :** जो इस्लाम से पहले हुए और जिन में ह़क़्क़ुल इबाद नहीं। **83 :** **अल्लाह** तआ़ला से कहीं भाग नहीं सकता और उस के अ़ज़ाब से बच नहीं सकता। **84 :** जो उसे अ़ज़ाब से बचा सके। **85 :** जो **अल्लाह** तआ़ला के मुनादी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की बात न मानें **86 :** या'नी मुन्किरीने बअ़्स ने **87 :** जिस के तुम दुन्या में मुरतकिब हुए थे, इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से ख़ित़ाब फ़रमाता है।

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ

जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया[88] और उन के लिये जल्दी न करो[89] गोया वोह जिस दिन

يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ

देखेंगे[90] जो उन्हें वा'दा दिया जाता है[91] दुन्या में न ठहरे थे मगर दिन की एक घड़ी भर यह पहुंचाना है[92] तो कौन

يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ ع

हलाक किये जाएंगे मगर बे हुक्म लोग[93]

ايَاتُهَا ٣٨ ﴿٤٧ سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ ٩٥﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٤

सूरए मुहम्मद मदनिय्या है, इस में अड़तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾ وَ

जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से रोका[2] अल्लाह ने उन के अ़मल बरबाद किये[3] और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ

जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया[4] और वोही

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

उन के रब के पास से हक़ है अल्लाह ने उन की बुराइयां उतार दीं और उन की हालतें संवार दीं[5] यह इस लिये

الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ

कि काफ़िर बातिल के पैरव हुए और ईमान वालों ने हक़ की पैरवी की जो उन के रब की तरफ़

88 : अपनी क़ौम की ईज़ा पर। 89 : अ़ज़ाब त़लब करने में क्यूं कि अ़ज़ाब उन पर ज़रूर नाज़िल होने वाला है। 90 : अ़ज़ाबे आख़िरत को 91 : तो उस की दराज़ी और दवाम के सामने दुन्या में ठहरने की मुद्दत को बहुत क़लील समझेंगे और ख़याल करेंगे कि 92 : या'नी यह क़ुरआन और वोह हिदायत व बय्यिनात जो इस में हैं यह अल्लाह तआला की तरफ़ से तब्लीग़ है। 93 : जो ईमान व ताअ़त से ख़ारिज हैं। 1 : सूरए मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़ और अड़तीस आयतें और पांच सो अठावन कलिमे, दो हज़ार चार सो पचत्तर हर्फ़ हैं। 2 : या'नी जो लोग ख़ुद इस्लाम में दाख़िल न हुए और दूसरों को उन्हों ने इस्लाम से रोका 3 : जो कुछ भी उन्हों ने किये हों ख़्वाह भूकों को खिलाया हो या असीरों को छुड़ाया हो या ग़रीबों की मदद की हो या मस्जिदे हराम या'नी ख़ानए का'बा की इमारत में कोई ख़िदमत की हो सब बरबाद हुई, आख़िरत में इस का कुछ सवाब नहीं। ज़ह्हाक का क़ौल है कि मुराद यह है कि कुफ़्फ़ार ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये जो मक्र सोचे थे और हीले बनाए थे अल्लाह तआला ने उन के वोह तमाम काम बातिल कर दिये। 4 : या'नी क़ुरआने पाक 5 : उमूरे दीन में तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर और दुन्या में उन के दुश्मनों के मुक़ाबिल

www.dawateislami.net

رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ

से है[6] अल्लाह लोगों से उन के अह़वाल यूंही बयान फ़रमाता है[7] तो जब काफ़िरों से तुम्हारा

كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ

सामना हो[8] तो गरदनें मारना है[9] यहां तक कि जब उन्हें ख़ूब क़त्ल कर लो[10] तो मज़बूत़ बांधो

فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛۚ ذٰلِكَ ۛؕ وَلَوْ

फिर इस के बा'द चाहे एह़सान कर के छोड़ दो चाहे फ़िदया ले लो[11] यहां तक कि लड़ाई अपना बोझ रख दे[12] बात येह है और अल्लाह

يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ

चाहता तो आप ही उन से बदला लेता[13] मगर इस लिये[14] कि तुम में एक को दूसरे से जांचे[15] और जो

قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤ سَيَهْدِيْهِمْ وَ يُصْلِحُ

अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह हरगिज़ उन के अ़मल ज़ाएअ़ न फ़रमाएगा[16] जल्द उन्हें राह देगा[17] और उन का काम

بَالَهُمْ ۝٥ وَ يُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ

बना देगा और उन्हें जन्नत में ले जाएगा उन्हें उस की पहचान करा दी है[18] ऐ ईमान वालो अगर

تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَ يُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा[19] और तुम्हारे क़दम जमा देगा[20] और जिन्हों ने कुफ़्र किया

فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٨ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ

तो उन पर तबाही पड़े और अल्लाह उन के आ'माल बरबाद करे येह इस लिये कि उन्हें ना गवार हुवा जो अल्लाह ने उतारा[21]

उन की मदद फ़रमा कर। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि उन के अय्यामे ह़यात में उन की हि़फ़ाज़त फ़रमा कर कि उन से इस्यां वाक़ेअ़ न हो। **6 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **7 :** या'नी फ़रीक़ैन के कि काफ़िरों के अ़मल अकारत और ईमानदारों की लग़्ज़िशें भी मग़्फ़ूर। **8 :** या'नी जंग हो **9 :** या'नी उन को क़त्ल करो **10 :** या'नी कसरत से क़त्ल कर चुको और बाक़ी मांदों को क़ैद करने का मौक़अ़ आ जाए **11 :** दोनों बातों का इख़्तियार है। **मस्अला :** मुश्रिकीन के असीरों का हुक्म हमारे नज़्दीक येह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या मम्लूक बना लिया जाए और एह़सानन छोड़ना और फ़िदया लेना जो इस आयत में मज़्कूर है वोह सूरए बराअत की आयत "اُقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ" से मन्सूख़ हो गया। **12 :** या'नी जंग ख़त्म हो जाए इस त़रह कि मुश्रिकीन इत़ाअ़त क़बूल करें और इस्लाम लाएं। **13 :** बिग़ैर क़िताल के उन्हें ज़मीन में धंसा कर या उन पर पथ्थर बरसा कर या और किसी त़रह **14 :** तुम्हें क़िताल का हुक्म दिया **15 :** क़िताल में ताकि मुसल्मान मक़्तूल सवाब पाएं और काफ़िर अ़ज़ाब। **16 :** उन के आ'माल का सवाब पूरा पूरा देगा। **शाने नुज़ूल :** येह आयत रोज़े उहुद नाज़िल हुई जब कि मुसल्मान ज़ियादा मक़्तूल व मजरूह़ हुए। **17 :** दरजाते आ़लियात की त़रफ़। **18 :** वोह मनाज़िले जन्नत में नौ वारिद ना आश्ना की त़रह न पहुंचेंगे जो किसी मक़ाम पर जाता है तो उस को हर चीज़ के दरयाफ़्त करने की ह़ाजत दरपेश होती है, बल्कि वोह वाक़िफ़ काराना दाख़िल होंगे अपने मनाज़िल और मसाकिन पहचानते होंगे अपनी ज़ौजा और ख़ुद्दाम को जानते होंगे हर चीज़ का मौक़अ़ उन के इ़ल्म में होगा गोया कि वोह हमेशा से यहीं के रहने बसने वाले हैं। **19 :** तुम्हारे दुश्मन के मुक़ाबिल। **20 :** मा'रिकए जंग में और हुज्जते इस्लाम पर और पुल सिरात़ पर। **21 :** या'नी क़ुरआने पाक इस लिये कि इस में शहवात व लज़्ज़ात के तर्क और त़ाआ़त व इ़बादात में मशक़्क़तें उठाने के अह़काम हैं जो नफ़्स पर शाक़ होते हैं।

www.dawateislami.net

فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ

तो **अल्लाह** ने उन का किया धरा अकारत किया तो क्या उन्हों ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उन से

عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾

अगलों का[22] कैसा अन्जाम हुवा **अल्लाह** ने उन पर तबाही डाली[23] और इन काफ़िरों के लिये भी वैसी कितनी ही हैं[24]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾ ع

येह[25] इस लिये कि मुसल्मानों का मौला **अल्लाह** है और काफ़िरों का कोई मौला नहीं

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

बेशक **अल्लाह** दाख़िल फ़रमाएगा उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये बाग़ों में जिन के

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ

नीचे नहरें रवां और काफ़िर बरत्ते हैं और खाते हैं[26] जैसे चौपाए

الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ

खाएं[27] और आग में उन का ठिकाना है और कितने ही शहर कि इस शहर से[28] कुव्वत में ज़ियादा थे

قَرْيَتِكَ الَّتِيْۤ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿١٣﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى

जिस ने तुम्हें तुम्हारे शहर से बाहर किया हम ने उन्हें हलाक फ़रमाया तो उन का कोई मददगार नहीं[29] तो क्या जो अपने रब की त़रफ़ से

بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾

रोशन दलील पर हो[30] उस[31] जैसा होगा जिस के बुरे अ़मल उसे भले दिखाए गए और वोह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चले[32]

22 : या'नी पिछली उम्मतों का **23 :** कि उन्हें और उन की औलाद और उन के अम्वाल को सब को हलाक कर दिया। **24 :** या'नी अगर येह काफ़िर सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान न लाएं तो इन के लिये पहले जैसी बहुत सी तबाहियां हैं। **25 :** या'नी मुसल्मानों का मन्सूर (मदद किया हुवा) होना और काफ़िरों का मक़्हूर (ग़ज़ब किया हुवा) होना **26 :** दुन्या में चन्द रोज़ ग़फ़्लत के साथ, अपने अन्जाम व मआल को फ़रामोश किये हुए **27 :** और उन्हें तमीज़ न हो कि इस खाने के बा'द वोह ज़ब्ह़ किये जाएंगे, येही ह़ाल कुफ़्फ़ार का है जो ग़फ़्लत के साथ दुन्या त़लबी में मश्ग़ूल हैं और आने वाली मुसीबतों का ख़याल भी नहीं करते। **28 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा वालों से **29 :** जो अ़ज़ाब व हलाक से बचा सके। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत की और ग़ार की त़रफ़ तशरीफ़ ले चले तो मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला के शहरों में तू **अल्लाह** तआ़ला को बहुत प्यारा है और **अल्लाह** तआ़ला के शहरों में तू मुझे बहुत प्यारा है, अगर मुश्रिकीन मुझे न निकालते तो मैं तुझ से न निकलता, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई। **30 :** और वोह मोमिनीन हैं कि वोह क़ुरआने मो'जिज़ और मो'जिज़ाते नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बुरहाने क़वी से अपने दीन पर यक़ीने कामिल और जज़्मे सादिक़ रखते हैं। **31 :** उस काफ़िर मुश्रिक **32 :** और उन्हों ने कुफ़्र व बुत परस्ती इख़्तियार की, हरगिज़ वोह मोमिन और येह काफ़िर एक से नहीं हो सकते और इन दोनों में कुछ भी निस्बत नहीं।

www.dawateislami.net

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِیْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَیْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ

अह़वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़ गारों से है उस में ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़े[33] और

اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ یَتَغَیَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ ۚ۬ وَ

ऐसे दूध की नहरें हैं जिस का मज़ा न बदला[34] और ऐसी शराब की नहरें हैं जिस के पीने में लज़्ज़त है[35] और

اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَ مَغْفِرَةٌ مِّنْ

ऐसी शहद की नहरें हैं जो साफ़ किया गया[36] और उन के लिये उस में हर क़िस्म के फल हैं और अपने रब की

رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِی النَّارِ وَ سُقُوْا مَآءً حَمِیْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَ

मग़्फ़िरत[37] क्या ऐसे चैन वाले उन के बराबर हो जाएंगे जिन्हें हमेशा आग में रहना और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े

هُمْ ﴿۱۵﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُ اِلَیْكَ ۚ حَتّٰۤی اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ

कर दे और उन[38] में से बा'ज़ तुम्हारे इर्शाद सुनते हैं[39] यहां तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं[40]

قَالُوْا لِلَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۫ قف اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ طَبَعَ اللّٰهُ

इल्म वालों से कहते हैं[41] अभी उन्हों ने क्या फ़रमाया[42] येह हैं वोह जिन के दिलों पर **अल्लाह** ने

عَلٰی قُلُوْبِهِمْ وَ اتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًی

मोहर कर दी[43] और अपनी ख़्वाहिशों के ताबेअ़ हुए[44] और जिन्हों ने राह पाई[45] **अल्लाह** ने उन की हिदायत[46] और ज़ियादा फ़रमाई

وَّ اٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿۱۷﴾ فَهَلْ یَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِیَهُمْ بَغْتَةً ۚ

और उन की परहेज़ गारी उन्हें अ़ता फ़रमाई[47] तो काहे के इन्तिज़ार में हैं[48] मगर क़ियामत के कि उन पर अचानक आ जाए

33 : या'नी ऐसा लत़ीफ़ कि न सड़े न उस की बू बदले न उस के ज़ाएक़ा में फ़र्क़ आए। **34 :** ब ख़िलाफ़ दुन्या के दूध के कि ख़राब हो जाते हैं। **35 :** ख़ालिस लज़्ज़त ही लज़्ज़त न दुन्या की शराबों की त़रह़ उस का ज़ाएक़ा ख़राब न उस में मैल कुचैल न ख़राब चीज़ों की आमेज़िश न वोह सड़ कर बनी न उस के पीने से अ़क़्ल ज़ाइल हो न सर चकराए न ख़ुमार आए न दर्दे सर पैदा हो, येह सब आफ़तें दुन्या ही की शराब में हैं, वहां की शराब इन सब उ़यूब से पाक निहायत लज़ीज़ मुफ़र्रिह़ ख़ुश गवार। **36 :** पैदाइश में या'नी साफ़ ही पैदा किया गया, दुन्या के शह्द की त़रह़ नहीं जो मख्खी के पेट से निकलता है और उस में मोम वग़ैरा की आमेज़िश होती है। **37 :** कि वोह रब उन पर एह़सान फ़रमाता है और उन से राज़ी है और उन पर से तमाम तक्लीफ़ी अह़काम उठा लिये गए, जो चाहें खाएं जितना चाहें खाएं, न ह़िसाब न इ़क़ाब। **38 :** कुफ़्फ़ार **39 :** ख़ुत़्बे वग़ैरा में निहायत बे इल्तिफ़ाती के साथ **40 :** येह मुनाफ़िक़ लोग तो **41 :** या'नी उ़लमाए सह़ाबा से मिस्ल इब्ने मस्ऊ़द व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मस्ख़रगी (मज़ाक़) के त़ौर पर **42 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने। **अल्लाह** तआ़ला उन मुनाफ़िक़ों के ह़क़ में फ़रमाता है : **43 :** या'नी जब उन्हों ने ह़क़ का इत्तिबाअ़ तर्क किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के क़ुलूब को मुर्दा कर दिया। **44 :** और उन्हों ने निफ़ाक़ इख़्तियार किया। **45 :** या'नी वोह अहले ईमान जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का कलाम ग़ौर से सुना और उस से नफ़्अ़ उठाया। **46 :** या'नी बसीरत व इल्म, शर्हे सद्र **47 :** या'नी परहेज़ गारी की तौफ़ीक़ दी और इस पर मदद फ़रमाई या येह मा'ना हैं कि उन्हें परहेज़ गारी की जज़ा दी और इस का सवाब अ़ता फ़रमाया। **48 :** कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन।

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿۱۸﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ

कि इस की अ़लामतें तो आ ही चुकी हैं[49] फिर जब वोह आ जाएगी तो कहां वोह और कहां उन का समझना तो जान लो कि

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ

अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और ऐ महबूब अपने ख़ासों और आ़म मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो[50] और **अल्लाह**

ع ٢/٨ یَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿۱۹﴾ ع وَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ

जानता है दिन को तुम्हारा फिरना[51] और रात को तुम्हारा आराम लेना[52] और मुसल्मान कहते हैं कोई सूरत क्यूं न

سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِیْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَیْتَ

उतारी गई[53] फिर जब कोई पुख़्ता सूरत उतारी गई[54] और उस में जिहाद का हुक्म फ़रमाया गया तो तुम देखोगे

الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ یَّنْظُرُوْنَ اِلَیْكَ نَظَرَ الْمَغْشِیِّ عَلَیْهِ مِنَ

उन्हें जिन के दिलों में बीमारी है[55] कि तुम्हारी त़रफ़[56] उस का देखना देखते हैं जिस पर

الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿۲۰﴾ ۚ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫

मुर्दनी छाई हो तो उन के ह़क़ में बेहतर येह था कि फ़रमां बरदारी करते[57] और अच्छी बात कहते फिर जब हुक्म नात़िक़ हो चुका[58]

فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْ ﴿۲۱﴾ ۚ فَهَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ تَوَلَّیْتُمْ اَنْ

तो अगर **अल्लाह** से सच्चे रहते[59] तो उन का भला था तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो

تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ

ज़मीन में फ़साद फैलाओ[60] और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह[61] लोग जिन पर **अल्लाह** ने

اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾ اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى

ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं[62] तो क्या वोह क़ुरआन को सोचते नहीं[63] या बा'ज़े

49 : जिन में से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सते मुबारका और क़मर का शक़ होना है। **50 :** येह इस उम्मत पर **अल्लाह** तआ़ला का इक्राम है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से फ़रमाया कि इन के लिये मग़्फ़िरत त़लब फ़रमाएं और आप शफ़ीए़ मक़्बूलुश्शफ़ाअ़ह हैं, इस के बा'द मोमिनीन व ग़ैर मोमिनीन सब से आ़म ख़ित़ाब है। **51 :** अपने अश्ग़ाल (मश्ग़लों) में और मआ़श (रोज़ी) के कामों में। **52 :** या'नी वोह तुम्हारे तमाम अह़वाल का जानने वाला है, उस से कुछ भी मख़्फ़ी नहीं। **53 शाने नुज़ूल :** मोमिनीन को जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह तआ़ला का बहुत ही शौक़ था, वोह कहते थे कि ऐसी सूरत क्यूं नहीं उतरती जिस में जिहाद का हुक्म हो ताकि हम जिहाद करें, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **54 :** जिस में साफ़ ग़ैर मोह़्तमल बयान हो और उस का कोई हुक्म मन्सूख़ होने वाला न हो **55 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन को **56 :** परेशान हो कर **57 :** **अल्लाह** तआ़ला और रसूल की **58 :** और जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया **59 :** ईमान व त़ाअ़त पर क़ाइम रह कर **60 :** रिश्वतें लो, ज़ुल्म करो, आपस में लड़ो, एक दूसरे को क़त्ल करो **61 :** मुफ़्सिद **62 :** कि राहे ह़क़ नहीं देखते। **63 :** जो ह़क़ को पहचानें।

قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿۲۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا

दिलों पर उन के कुफ़्ल लगे हैं[64] बेशक वोह जो अपने पीछे पलट गए[65] बा'द इस के कि हिदायत

تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿۲۵﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

उन पर खुल चुकी थी[66] शैतान ने उन्हें फ़रेब दिया[67] और उन्हें दुन्या में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई[68] येह इस लिये कि

قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚۖ وَاللّٰهُ

उन्हों ने[69] कहा उन लोगों से[70] जिन्हें **अल्लाह** का उतारा हुवा[71] ना गवार है एक काम में हम तुम्हारी मानेंगे[72] और **अल्लाह**

يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿۲۶﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ

उन की छुपी हुई जानता है तो कैसा होगा जब फ़िरिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे उन के मुंह

وَاَدْبَارَهُمْ ﴿۲۷﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَاۤ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ

और उन की पीठें मारते हुए[73] येह इस लिये कि वोह ऐसी बात के ताबेअ़ हुए जिस में **अल्लाह** की नाराज़ी है[74] और उस की ख़ुशी[75] उन्हें गवारा न हुई

فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ع ﴿۲۸﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ ع ٣ ٩ ٧

तो उस ने उन के आ'माल अकारत कर दिये क्या जिन के दिलों में बीमारी है[76] इस घमन्ड में हैं कि

يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ

अल्लाह उन के छुपे बैर (छुपी दुश्मनी) ज़ाहिर न फ़रमाएगा[77] और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन को दिखा दें कि तुम उन की सूरत से पहचान लो[78]

وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۰﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ

और ज़रूर तुम उन्हें बात के उस्लूब में पहचान लोगे[79] और **अल्लाह** तुम्हारे अ़मल जानता है[80] और ज़रूर हम तुम्हें जांचेंगे[81]

---

64 : कुफ़्र के, कि ह़क़ बात उन में पहुंचने ही नहीं पाती। **65 :** निफ़ाक़ से। **66 :** और त़रीक़े हिदायत वाज़ेह़ हो चुका था। ह़ज़रते क़तादा ने कहा कि येह कुफ़्फ़ारे अहले किताब का ह़ाल है जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को पहचाना और आप की ना'त व सिफ़त अपनी किताब में देखी, फिर बा वुजूद जानने पहचानने के कुफ़्र इख़्तियार किया। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا और ज़ह़्ह़ाक व सुद्दी का क़ौल है कि इस से मुनाफ़िक़ मुराद हैं जो ईमान ला कर कुफ़्र की त़रफ़ फिर गए। **67 :** और बुराइयों को उन की नज़र में ऐसा मुज़य्यन किया कि उन्हें अच्छा समझें **68 :** कि अभी बहुत उ़म्र पड़ी है ख़ूब दुन्या के मज़े उठा लो और उन पर शैत़ान का फ़रेब चल गया। **69 :** या'नी अहले किताब या मुनाफ़िक़ीन ने पोशीदा त़ौर पर **70 :** या'नी मुश्रिकीन से **71 :** कुरआन और अह़कामे दीन **72 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत और हुज़ूर के ख़िलाफ़ उन के दुश्मनों की इमदाद करने में और लोगों को जिहाद से रोकने में। **73 :** लोहे के गुर्ज़ों से **74 :** और वोह बात रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मइय्यत में जिहाद को जाने से रोकना और काफ़िरों की मदद करना है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह बात तौरैत के उन मज़ामीन का छुपाना है जिन में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त शरीफ़ है। **75 :** ईमान व त़ाअ़त और मुसल्मानों की मदद और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ जिहाद में ह़ाज़िर होना **76 :** निफ़ाक़ की **77 :** या'नी उन की वोह अ़दावतें जो वोह मोमिनीन के साथ रखते हैं। **78 ह़दीस :** ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि इस आयत के नाज़िल होने के बा'द रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कोई मुनाफ़िक़ मख़्फ़ी न रहा, आप सब को उन की सूरतों से पहचानते थे। **79 :** और वोह अपने ज़मीर का ह़ाल उन से छुपा न सकेंगे

www.dawateislami.net

حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۠ اَخْبَارَكُمْ ﴿۳۱﴾ اِنَّ

यहां तक कि देख लें[82] तुम्हारे जिहाद करने वालों और साबिरों को और तुम्हारी ख़बरें आज़्मा लें[83] बेशक

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** की राह से[84] रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की बा'द इस के

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿۳۲﴾

कि हिदायत उन पर ज़ाहिर हो चुकी थी वोह हरगिज़ **अल्लाह** को कुछ नुक़्सान न पहुंचाएंगे और बहुत जल्द **अल्लाह** उन का किया धरा अकारत कर देगा[85]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

ऐ ईमान वालो **अल्लाह** का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो[86] और अपने अ़मल बातिल

اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا

न करो[87] बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया और **अल्लाह** की राह से रोका फिर काफ़िर

وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿۳۴﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَ

ही मर गए तो **अल्लाह** हरगिज़ उन्हें न बख़्शेगा[88] तो तुम सुस्ती न करो[89] और आप सुल्ह की त़रफ़ न बुलाओ[90] और

चुनान्चे, इस के बा'द जो मुनाफ़िक़ लब हिलाता था हुज़ूर उस के निफ़ाक़ को उस की बात से और उस के फ़ह्वाए कलाम (अन्दाज़े गुफ़्त्गू) से पहचान लेते थे। **फ़ाएदा :** **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को बहुत से वुजूहे इ़ल्म अ़ता फ़रमाए, इन में से सूरत से पहचानना भी है और बात से पहचानना भी। **80 :** या'नी अपने बन्दों के तमाम आ'माल। हर एक को उस के लाइक़ जज़ा देगा। **81 :** आज़्माइश में डालेंगे **82 :** या'नी ज़ाहिर फ़रमा दें **83 :** ताकि ज़ाहिर हो जाए कि त़ाअ़त व इख़्लास के दा'वे में तुम में से कौन अच्छा है। **84 :** उस के बन्दों को **85 :** और वोह सदक़ा वग़ैरा किसी चीज़ का सवाब न पाएंगे क्यूं कि जो काम **अल्लाह** तआ़ला के लिये न हो उस का सवाब ही क्या। **शाने नुज़ूल :** जंगे बद्र के लिये जब कुरैश निकले तो वोह साल क़ह़्त़ का था, लश्कर का खाना कुरैश के दौलत मन्दों ने नौबत ब नौबत (बारी बारी) अपने ज़िम्मे ले लिया था, मक्कए मुकर्रमा से निकल कर सब से पहला खाना अबू जह्ल की त़रफ़ से था जिस के लिये इस ने दस ऊंट ज़ब्ह़ किये थे, फिर सफ़्वान ने मक़ामे उ़स्फ़ान में नव ऊंट, फिर सह्ल ने मक़ामे क़दीद में दस, यहां से वोह लोग समुन्दर की त़रफ़ फिर गए और रस्ता गुम हो गया, एक दिन ठहरे वहां शैबा की त़रफ़ से खाना हुवा नव ऊंट ज़ब्ह़ हुए फिर मक़ामे अब्वा में पहुंचे, वहां मुक़य्यस जुमह़ी ने नव ऊंट ज़ब्ह़ किये। ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की त़रफ़ से भी दा'वत हुई उस वक़्त तक आप मुशर्रफ़ ब इस्लाम न हुए थे, आप की त़रफ़ से दस ऊंट ज़ब्ह़ किये गए, फिर ह़ारिस की त़रफ़ से नव और अबुल बख़्तरी की त़रफ़ से बद्र के चश्मे पर दस ऊंट। इन खाना देने वालों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **86 :** या'नी ईमान व त़ाअ़त पर क़ाइम रहो **87 :** रिया या निफ़ाक़ से। **शाने नुज़ूल :** बा'ज़ लोगों का ख़याल था कि जैसे शिर्क की वज्ह से तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो जाती हैं इसी त़रह़ ईमान की बरकत से कोई गुनाह ज़रर नहीं करता, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल फ़रमाई गई और बताया गया कि मोमिन के लिये इत़ाअ़ते ख़ुदा व रसूल ज़रूरी है, गुनाहों से बचना लाज़िम है। **मस्अला :** इस आयत में अ़मल के बात़िल करने की मुमानअ़त फ़रमाई गई तो आदमी जो अ़मल शुरूअ़ करे ख़्वाह वोह नफ़्ल ही हो नमाज़ या रोज़ा या और कोई लाज़िम है कि उस को बात़िल न करे। **88 शाने नुज़ूल :** येह आयत अहले क़लीब के ह़क़ में नाज़िल हुई, क़लीब बद्र में एक कूंवां है जिस में मक़्तूले कुफ़्फ़ार डाले गए थे, अबू जह्ल और उस के साथी, और हुक्म आयत का हर काफ़िर के लिये आ़म है जो कुफ़्र पर मरा हो **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़्फ़िरत न फ़रमाएगा, इस के बा'द अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है और हुक्म में तमाम मुसल्मान शामिल हैं। **89 :** या'नी दुश्मन के मुक़ाबिल में कमज़ोरी न दिखाओ **90 :** कुफ़्फ़ार को। कुरतुबी में है कि इस आयत के हुक्म में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ ने कहा कि येह आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا" की नासिख़ है क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुसल्मानों के सुल्ह़ की त़रफ़ माइल होने को मन्अ़ फ़रमाया जब कि सुल्ह़ की ह़ाजत न हो और बा'ज़ उ़लमा ने कहा कि येह आयत मन्सूख़ है और आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا"

www.dawateislami.net

أَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ ۖ وَٱللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا ٱلْحَيَوٰةُ

तुम ही ग़ालिब आओगे और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ तुम्हारे आ'माल में तुम्हें नुक़्सान न देगा[91] दुन्या की ज़िन्दगी

ٱلدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۚ وَإِن تُؤْمِنُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ

तो येही खेलकूद है[92] और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़ गारी करो तो वोह तुम को तुम्हारे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और कुछ तुम से तुम्हारे माल

أَمْوَٰلَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِن يَسْـَٔلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا۟ وَيُخْرِجْ أَضْغَٰنَكُمْ ﴿٣٧﴾

न मांगेगा[93] अगर उन्हें[94] तुम से त़लब करे और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़्ल करोगे और वोह बुख़्ल तुम्हारे दिलों के मैल ज़ाहिर कर देगा

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ

हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो[95] तो तुम में कोई बुख़्ल करता है

وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ

और जो बुख़्ल करे[96] वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और अल्लाह बे नियाज़ है[97] और तुम सब मोह़ताज[98]

وَإِن تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَٰلَكُم ﴿٣٨﴾ ع ٨

और अगर तुम मुंह फेरो[99] तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे[100]

رکوعاتها ٤ ﴿٤٨ سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ ١١١﴾ اٰیاتها ٢٩

सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ ٱللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنۢبِكَ

बेशक हम ने तुम्हारे लिये रोशन फ़त्ह़ फ़रमा दी[2] ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के

इस की नासिख़ और एक क़ौल येह है कि येह आयत मोह़कम है और दोनों आयतें दो मुख़्तलिफ़ वक़्तों और मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में नाज़िल हुईं और एक क़ौल येह है कि आयत "وَاِنْ جَنَحُوْا" का हुक्म एक मुअ़य्यन क़ौम के साथ ख़ास है और येह आयत आ़म है कि कुफ़्फ़ार के साथ मुआ़हदा जाइज़ नहीं मगर इन्दज़्ज़रूरत जब कि मुसल्मान ज़ईफ़ हों और मुक़ाबला न कर सकें। **91 :** तुम्हें आ'माल का पूरा पूरा अज्र अ़ता फ़रमाएगा। **92 :** निहायत जल्द गुज़रने वाली और इस में मश्ग़ूल होना कुछ नाफ़ेअ़ नहीं। **93 :** हां राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का हुक्म देगा ताकि तुम्हें इस का सवाब मिले। **94 :** या'नी अम्वाल को **95 :** जहां ख़र्च करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है। **96 :** सदक़ा देने और फ़र्ज़ अदा करने में। **97 :** तुम्हारे सदक़ात और त़ाआ़त से **98 :** उस के फ़ज़्लो रह़मत के। **99 :** उस की और उस के रसूल की इत़ाअ़त से **100 :** बल्कि निहायत मुत़ीओ फ़रमां बरदार होंगे। **1 :** सूरए फ़त्ह़ मदनिय्या है, इस में चार रुकूअ़, उन्तीस आयतें, पांच सो अड़सठ कलिमे, दो हज़ार पांच सो उन्सठ ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** "اِنَّا فَتَحْنَا" हुदैबिया से वापस होते हुए हुज़ूर पर नाज़िल हुई, हुज़ूर को इस के नाज़िल होने से बहुत ख़ुशी ह़ासिल हुई और सह़ाबा ने हुज़ूर को मुबारक बादें दीं। (بخاری ومسلم وترمذی) हुदैबिया

www.dawateislami.net

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲﴾ وَّ
और तुम्हारे पिछलों के[3] और अपनी ने'मतें तुम पर तमाम कर दे[4] और तुम्हें सीधी राह दिखा दे[5] और

يَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ
अल्लाह तुम्हारी ज़बर दस्त मदद फ़रमाए[6] वोही है जिस ने ईमान वालों के दिलों में

الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْۤا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ
इत्मीनान उतारा ताकि उन्हें यक़ीन पर यक़ीन बढ़े[7] और **अल्लाह** ही की मिल्क हैं तमाम लश्कर आस्मानों

وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۴﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
और ज़मीन के[8] और **अल्लाह** इल्मो हिक्मत वाला है[9] ताकि ईमान वाले मर्दों और

एक कूंवां है मक्कए मुकर्रमा के नज़्दीक, **मुख़्तसर वाक़िआ** येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़्वाब देखा कि हुज़ूर मअ़ अपने अस्हाब के अम्न के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए, कोई ह़ल्क़ किये हुए (या'नी सर मुंडाए) कोई क़स्र किये हुए (या'नी बाल कम कराए हुए है) और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, का'बे की कुन्जी ली, त़वाफ़ फ़रमाया, उ़म्रह किया। अस्ह़ाब को इस ख़्वाब की ख़बर दी, सब ख़ुश हुए फिर हुज़ूर ने उ़म्रे का क़स्द फ़रमाया और एक हज़ार चार सो अस्ह़ाब के साथ यकुम ज़िल क़ा'दा सिने 6 हिजरी को रवाना हो गए, ज़ुल हुलैफ़ा में पहुंच कर वहां मस्जिद में दो रक्अ़तें पढ़ कर उ़म्रे का एह़राम बांधा और हुज़ूर के साथ अक्सर अस्ह़ाब ने भी। बा'ज़ अस्ह़ाब ने "जुह़फ़ा" से एह़राम बांधा, राह में पानी ख़त्म हो गया, अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया कि पानी लश्कर में बिल्कुल बाक़ी नहीं है सिवाए हुज़ूर के आफ़्ताबे के कि इस में थोड़ा सा है, हुज़ूर ने आफ़्ताबे में दस्ते मुबारक डाला तो अंगुश्त हाए मुबारक से चश्मे जोश मारने लगे, तमाम लश्कर ने पिया वुज़ू किये, जब मक़ामे उ़स्फ़ान में पहुंचे तो ख़बर आई कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बड़े सरो सामान के साथ जंग के लिये तय्यार हैं, जब हुदैबिया पर पहुंचे तो इस का पानी ख़त्म हो गया, एक क़त़रा न रहा, गरमी बहुत शदीद थी, हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने कूंएं में कुल्ली फ़रमाई, इस की बरकत से कूंवां पानी से भर गया सब ने पिया ऊंटों को पिलाया यहां कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रफ़ से ह़ाल मा'लूम करने के लिये कई शख़्स भेजे गए सब ने जा कर येही बयान किया कि हुज़ूर उ़म्रे के लिये तशरीफ़ लाए हैं, जंग का इरादा नहीं है लेकिन उन्हें यक़ीन न आया, आख़िर कार उन्हों ने उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी को जो त़ाइफ़ के बड़े सरदार और अ़रब के निहायत मुतमव्विल (मालदार) शख़्स थे तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये भेजा, उन्हों आ कर देखा कि हुज़ूर दस्ते मुबारक धोते हैं तो सह़ाबा तबर्रुक के लिये ग़साला (हाथों का धोवन) शरीफ़ ह़ासिल करने के लिये टूटे पड़ते हैं, अगर कभी थूकते हैं तो लोग इस के ह़ासिल करने की कोशिश करते हैं और जिस को वोह ह़ासिल हो जाता है वोह अपने चेहरों और बदन पर बरकत के लिये मलता है, कोई बाल जिस्मे अक़्दस का गिरने नहीं पाता, अगर इह़्यानन (कभी) जुदा हुवा तो सह़ाबा उस को बहुत अदब के साथ लेते और जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते हैं, जब हुज़ूर कलाम फ़रमाते हैं तो सब साकित हो जाते हैं, हुज़ूर के अदब व ता'ज़ीम से कोई शख़्स नज़र ऊपर को नहीं उठा सकता। उ़र्वह ने क़ुरैश से जा कर येह सब ह़ाल बयान किया और कहा कि मैं बादशाहाने फ़ारस व रूम व मिस्र के दरबारों में गया हूं मैं ने किसी बादशाह की येह अ़ज़्मत नहीं देखी जो मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की उन के अस्ह़ाब में है, मुझे अन्देशा है कि तुम उन के मुक़ाबिल काम्याब न हो सकोगे। क़ुरैश ने कहा : ऐसी बात मत कहो, हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे, वोह अगले साल आएं। उ़र्वह ने कहा : मुझे अन्देशा है कि तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे, येह कह कर वोह मअ़ अपने हमराहियों के त़ाइफ़ वापस चले गए और इस वाक़िए के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मुशर्रफ़ ब इस्लाम किया, यहीं हुज़ूर ने अपने अस्ह़ाब से बैअ़त ली इस को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, बैअ़त की ख़बर से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुए और उन के अहलुराय ने येही मुनासिब समझा कि सुल्ह़ कर लें। चुनान्चे, सुल्ह़ नामा लिखा गया और साले आयिन्दा हुज़ूर का तशरीफ़ लाना क़रार पाया और येह सुल्ह़ मुसल्मानों के ह़क़ में बहुत नाफ़ेअ़ हुई बल्कि नताइज के ए'तिबार से फ़त्ह़ साबित हुई, इसी लिये अक्सर मुफ़स्सिरीन फ़त्ह़ से सुल्ह़े हुदैबिया मुराद लेते हैं और बा'ज़ तमाम फ़ुतूह़ाते इस्लाम जो आयिन्दा होने वाली थीं और माज़ी के सीग़े से ता'बीर उन के यक़ीनी होने की वज्ह से है। (خازن وروح البیان) 3 : और तुम्हारी बदौलत उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए। (خازن وروح البیان) 4 : दुन्यवी भी और उख़्रवी भी 5 : तब्लीग़े रिसालत व इक़ामत मरासिमे रियासत में। (بیضاوی) 6 : दुश्मनों पर कामिल ग़लबा अ़त़ा कर के। 7 : और बा वुजूद अ़क़ीदए रासिख़ा के इत्मीनाने नफ़्स ह़ासिल हो। 8 : वोह क़ादिर है जिस से चाहे अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाए आस्मान व ज़मीन के लश्करों से या तो आस्मान और ज़मीन के फ़िरिश्ते मुराद हैं या आस्मानों के फ़िरिश्ते और ज़मीन के ह़ैवानात। 9 : उस ने मोमिनीन के दिलों की तस्कीन और वा'दए फ़त्ह़ो नुस्रत इस लिये फ़रमाया।

الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا وَ یُكَفِّرَ عَنْهُمْ

ईमान वाली औ़रतों को बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और उन की बुराइयां

سَیِّاٰتِهِمْؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِیْمًاۙ(۵) وَّ یُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِیْنَ

उन से उतार दे और येह **अल्लाह** के यहां बड़ी काम्याबी है और अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों

وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْمُشْرِكِیْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّیْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِؕ

और मुनाफ़िक़ औ़रतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औ़रतों को जो **अल्लाह** पर बुरा गुमान रखते हैं[10]

عَلَیْهِمْ دَآىٕرَةُ السَّوْءِۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ لَعَنَهُمْ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَؕ

उन्हीं पर है बुरी गर्दिश[11] और **अल्लाह** ने उन पर ग़ज़ब फ़रमाया और उन्हें ला'नत की और उन के लिये जहन्नम तय्यार फ़रमाया

وَ سَآءَتْ مَصِیْرًا(۶) وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

और वोह क्या ही बुरा अन्जाम है और **अल्लाह** ही की मिल्क हैं आस्मानों और ज़मीन के सब लश्कर और **अल्लाह**

عَزِیْزًا حَكِیْمًا(۷) اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًاۙ(۸)

इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर[12] और खुशी और डर सुनाता[13]

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ

ताकि ऐ लोगो तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की

اَصِیْلًا(۹) اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ

पाकी बोलो[14] वोह जो तुम्हारी बैअ़त करते हैं[15] वोह तो **अल्लाह** ही से बैअ़त करते हैं[16] उन के हाथों पर[17]

اَیْدِیْهِمْۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا یَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖۚ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ

अल्लाह का हाथ है तो जिस ने अ़हद तोड़ा उस ने अपने बड़े अ़हद को तोड़ा[18] और जिस ने पूरा किया वोह अ़हद जो उस ने

10 : कि वोह अपने रसूल सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन पर ईमान लाने वालों की मदद न फ़रमाएगा। **11 :** अ़ज़ाब व हलाक की। **12 :** अपनी उम्मत के आ'माल व अह़वाल का ताकि रोज़े क़ियामत इन की गवाही दो। **13 :** या'नी मोमिनीने मुक़िर्रीन को जन्नत की ख़ुशी और ना फ़रमानों को अ़ज़ाबे दोज़ख़ का डर सुनाता। **14 :** सुब्ह़ की तस्बीह़ में नमाज़े फ़ज्र और शाम की तस्बीह़ में बाक़ी चारों नमाज़ें दाख़िल हैं। **15 :** मुराद इस बैअ़त से बैअ़ते रिज़्वान है जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने हुदैबिया में ली थी। **16 :** क्यूं कि रसूल से बैअ़त करना **अल्लाह** तआ़ला ही से बैअ़त करना है जैसे कि रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त है। **17 :** जिन से उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बैअ़त का शरफ़ ह़ासिल किया। **18 :** इस अ़हद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा।

www.dawateislami.net

عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٠ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

अल्लाह से किया था तो बहुत जल्द अल्लाह उसे बड़ा सवाब देगा[19] अब तुम से कहेंगे जो गंवार (दीहाती) पीछे रह

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَاۤ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ

गए थे[20] कि हमें हमारे माल और हमारे घर वालों ने जाने से मश्गूल रखा[21] अब हुज़ूर हमारी मग़फ़िरत चाहें[22] अपनी ज़बानों से वोह बात कहते हैं

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ

जो उन के दिलों में नहीं[23] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के सामने किसे तुम्हारा कुछ इख़्तियार है अगर वोह तुम्हारा बुरा

ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١١ بَلْ

चाहे या तुम्हारी भलाई का इरादा फ़रमाए बल्कि अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है बल्कि

ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ

तुम तो येह समझे हुए थे कि रसूल और मुसल्मान हरगिज़ घरों को वापस न आएंगे[24] और इसी को

ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ۝١٢ وَ مَنْ لَّمْ

अपने दिलों में भला समझे हुए थे और तुम ने बुरा गुमान किया[25] और तुम हलाक होने वाले लोग थे[26] और जो

يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ۝١٣ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ

ईमान न लाए अल्लाह और उस के रसूल पर[27] तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिये भड़कती आग तय्यार कर रखी है और अल्लाह ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ

आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब करे[28] और

كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٤ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى

अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है अब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले[29] जब तुम ग़नीमतें

19 : या'नी हुदैबिया से तुम्हारी वापसी के वक़्त। 20 : क़बीलए गिफ़ार व मुज़ैना व जुहैना व अश्जअ़ व अस्लम के जब कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने साले हुदैबिया ब निय्यते उ़म्रह मक्कए मुकर्रमा का इरादा फ़रमाया तो हवालिये मदीना के गाउं वाले और अहले बादिया ब ख़ौफ़े क़ुरैश आप के साथ जाने से रुके बा वुजूदे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उ़म्रह का एहराम बांधा था और क़ुरबानियां साथ थीं और इस से साफ़ ज़ाहिर था कि जंग का इरादा नहीं है फिर भी बहुत से आ'राब पर जाना बार हुवा और वोह काम का हीला कर के रह गए और उन का गुमान येह था कि क़ुरैश बहुत ताक़त वर हैं मुसल्मान उन से बच कर न आएंगे सब वहीं हलाक हो जाएंगे, अब जब कि मददे इलाही से मुआ़मला उन के ख़याल के बिल्कुल ख़िलाफ़ हुवा तो उन्हें अपने न जाने पर अफ़्सोस होगा और मा'ज़िरत करेंगे 21 : क्यूं कि औ़रतें और बच्चे अकेले थे और उन का कोई ख़बर गीरां न था इस लिये हम क़ासिर रहे। 22 : अल्लाह तआ़ला उन की तक्ज़ीब फ़रमाता है : 23 : या'नी वोह ए'तिज़ार व त़लबे इस्तिग़फ़ार में झूटे हैं। 24 : दुश्मन इन सब का वहीं ख़ातिमा कर देंगे। 25 : कुफ़्रो फ़साद के गलबे का और वा'दए इलाही के पूरा न होने का। 26 : अ़ज़ाबे इलाही के मुस्तहिक़। 27 : इस आयत

www.dawateislami.net

مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ

लेने चलो[30] तो हमें भी अपने पीछे आने दो[31] वोह चाहते हैं अल्लाह का कलाम बदल दें[32]

قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ

तुम फ़रमाओ हरगिज़ तुम हमारे साथ न आओ अल्लाह ने पहले से यूंही फ़रमा दिया है[33] तो अब कहेंगे बल्कि

تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۱۵ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ

तुम हम से जलते हो[34] बल्कि वोह बात न समझते थे[35] मगर थोड़ी[36] उन पीछे रह गए हुए

الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ

गंवारों से फ़रमाओ[37] अन्क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की त़रफ़ बुलाए जाओगे[38] कि उन से लड़ो या

يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا

वोह मुसल्मान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा[39] और अगर फिर जाओगे जैसे

تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۱۶ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ

पहले फिर गए[40] तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा अन्धे पर तंगी नहीं[41]

وَّ لَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ

और न लंगड़े पर मुज़ायक़ा और न बीमार पर मुआख़ज़ा[42] और जो अल्लाह और उस के

में ए'लाम है कि जो अल्लाह तआ़ला पर और उस के रसूल पर ईमान न लाए इन में से किसी एक का भी मुन्किर हो वोह काफ़िर है। **28 :** येह सब उस की मशिय्यत व हिक्मत पर है **29 :** जो हुदैबिया की ह़ाज़िरी से क़ासिर रहे, ऐ ईमान वालो ! **30 :** ख़ैबर की। इस का वाक़िआ़ येह था कि जब मुसल्मान सुल्हे हुदैबिया से फ़ारिग़ हो कर वापस हुए तो अल्लाह तआ़ला ने उन से फ़त्हे ख़ैबर का वा'दा फ़रमाया और वहां की ग़नीमतें हुदैबिया में ह़ाज़िर होने वालों के लिये मख़्सूस कर दी गईं, जब मुसल्मानों के ख़ैबर की त़रफ़ रवाना होने का वक़्त आया तो उन लोगों को लालच आया और उन्हों ने ब त़मए ग़नीमत कहा **31 :** या'नी हम भी ख़ैबर को तुम्हारे साथ चलें और जंग में शरीक हों अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **32 :** या'नी अल्लाह तआ़ला का वा'दा जो अहले हुदैबिया के लिये फ़रमाया था कि ख़ैबर की ग़नीमत ख़ास उन के लिये है। **33 :** या'नी हमारे मदीना आने से पहले। **34 :** और येह गवारा नहीं करते कि हम तुम्हारे साथ ग़नीमतें पाएं अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **35 :** दीन की **36 :** या'नी मह़ज़ दुन्या की ह़त्ता कि उन का ज़बानी इक़रार भी दुन्या ही की ग़रज़ से था और उमूरे आख़िरत को बिल्कुल नहीं समझते थे। (جمل) **37 :** जो मुख़्तलिफ़ क़बाइल के लोग हैं और उन में बा'ज़ ऐसे भी हैं जिन के ताइब होने की उम्मीद की जाती है। बा'ज़ ऐसे भी हैं जो निफ़ाक़ में बहुत पुख़्ता और सख़्त हैं, उन्हें आज़्माइश में डालना मन्ज़ूर है ताकि ताइब व ग़ैर ताइब में फ़र्क़ हो जाए इस लिये हुक्म हुवा कि उन से फ़रमा दीजिये **38 :** इस क़ौम से बनी ह़नीफ़ा यमामा के रहने वाले जो मुसैलमा कज़्ज़ाब की क़ौम के लोग हैं वोह मुराद हैं जिन से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने जंग फ़रमाई और येह भी कहा गया है कि उन से मुराद अहले फ़ारस व रूम हैं जिन से जंग के लिये ह़ज़रते उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने दा'वत दी। **39 मस्अला :** येह आयत शैख़ैने जलीलैन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہما के सिह़्ह़ते ख़िलाफ़त की दलील है कि इन ह़ज़रात की इत़ाअ़त पर जन्नत का और इन की मुख़ालफ़त पर जहन्नम का वा'दा दिया गया। **40 :** हुदैबिया के मौक़अ़ पर **41 :** जिहाद से रह जाने में। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई तो जो लोग अपाहज व साहिबे उ़ज़्र थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم हमारा क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **42 :** कि येह उ़ज़्र ज़ाहिर हैं और जिहाद में ह़ाज़िर न होना इन लोगों के लिये जाइज़ है क्यूं कि न येह लोग दुश्मन पर ह़म्ला करने की त़ाक़त रखते हैं न उस के

رَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां और जो फिर जाएगा[43]

ربع النصف ۲

يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ

उसे दर्दनाक अ़ज़ाब फ़रमाएगा बेशक अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ

तुम्हारी बैअ़त करते थे[44] तो अल्लाह ने जाना जो उन के दिलों में है[45] तो उन पर इत्मीनान उतारा और

فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا

उन्हें जल्द आने वाली फ़त्ह़ का इन्आ़म दिया[46] और बहुत सी ग़नीमतें[47] जिन को लें और अल्लाह इ़ज़्ज़त व

حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ

हिक्मत वाला है और अल्लाह ने तुम से वा'दा किया है बहुत सी ग़नीमतों का कि तुम लोगे[48] तो तुम्हें येह जल्द अ़ता फ़रमा दी

ह़म्ले से बचने और भागने की, उन्हीं के हुक्म में दाख़िल हैं। वोह बुढ्ढे ज़ईफ़ जिन्हें निशस्तो बरख़ास्त की ताक़त नहीं या जिन्हें दमा और खांसी है या जिन की तिल्ली बहुत बढ़ गई है और उन्हें चलना फिरना दुश्वार है, ज़ाहिर है कि येह उ़ज़्र जिहाद से रोकने वाले हैं इन के इलावा और भी आ'ज़ार हैं मसलन ग़ायत दरजे की मोहताजी और सफ़र के ज़रूरी ह़वाइज पर क़ुदरत न रखना या ऐसे अश्ग़ाले ज़रूरिय्या जो सफ़र से मानेअ़ हों जैसे किसी ऐसे मरीज़ की ख़िदमत जिस की ख़िदमत इस पर लाज़िम है और इस के सिवा कोई उस का अन्जाम देने वाला नहीं। **43 :** ताअ़त से ए'राज़ करेगा और कुफ़्रो निफ़ाक़ पर रहेगा **44 :** ह़ुदैबिया में। चूंकि इन बैअ़त करने वालों को रिज़ाए इलाही की बिशारत दी गई इस लिये इस बैअ़त को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, इस बैअ़त का सबब ब अस्बाबे ज़ाहिर येह पेश आया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने ह़ुदैबिया से ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अशराफ़े क़ुरैश के पास मक्कए मुकर्रमा भेजा कि उन्हें ख़बर दें कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم बैतुल्लाह की ज़ियारत के लिये ब क़स्दे उ़म्रह तशरीफ़ लाए हैं, आप का इरादा जंग का नहीं है और येह भी फ़रमा दिया था कि जो कमज़ोर मुसल्मान वहां हैं उन्हें इत्मीनान दिला दें कि मक्कए मुकर्रमा अ़न्क़रीब फ़त्ह़ होगा और अल्लाह तआ़ला अपने दीन को ग़ालिब फ़रमाएगा। क़ुरैश इस बात पर मुत्तफ़िक़ रहे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم इस साल तो तशरीफ़ न लाएं और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि अगर आप का'बए मुअ़ज़्ज़मा का त़वाफ़ करना चाहें तो करें, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि ऐसा नहीं हो सकता कि मैं बिग़ैर रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के त़वाफ़ करूं, यहां मुसल्मानों ने कहा कि उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बड़े ख़ुश नसीब हैं जो का'बए मुअ़ज़्ज़मा पहुंचे और त़वाफ़ से मुशर्रफ़ हुए। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : मैं जानता हूं कि वोह हमारे बिग़ैर त़वाफ़ न करेंगे, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मक्कए मुकर्रमा के ज़ईफ़ मुसल्मानों को ह़स्बे हुक्म फ़त्ह़ की बिशारत भी पहुंचाई, फिर क़ुरैश ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को रोक लिया यहां येह ख़बर मश्हूर हो गई कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहीद कर दिये गए, इस पर मुसल्मानों को बहुत जोश आया और रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने सह़ाबा से कुफ़्फ़ार के मुक़ाबिल जिहाद में साबित रहने पर बैअ़त ली, येह बैअ़त एक बड़े ख़ारदार दरख़्त के नीचे हुई जिस को अ़रब में ''समुरह'' कहते हैं, ह़ुज़ूर ने अपना बायां दस्ते मुबारक दाहने दस्ते अक़्दस में लिया और फ़रमाया कि येह उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) की बैअ़त है और फ़रमाया : या रब ! उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) तेरे और तेरे रसूल (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم) के काम में हैं इस वाक़िए से मा'लूम होता है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم को नूरे नुबुव्वत से मा'लूम था कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहीद नहीं हुए जभी तो उन की बैअ़त ली, मुश्रिकीन इस बैअ़त का ह़ाल सुन कर ख़ाइफ़ हुए और उन्हों ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भेज दिया। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी उन में से कोई भी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा। (مسلم شریف) और जिस दरख़्त के नीचे बैअ़त की गई थी अल्लाह तआ़ला ने उस को ना पदीद (ना पैद) कर दिया, साले आयिन्दा सह़ाबा ने हर चन्द तलाश किया किसी को उस का पता भी न चला। **45 :** सिद्क़ व इख़्लास व वफ़ा। **46 :** या'नी फ़त्ह़े ख़ैबर का जो ह़ुदैबिया से वापस हो कर छ[6] माह बा'द ह़ासिल हुई। **47 :** ख़ैबर की और अहले ख़ैबर के अम्वाल कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने तक़्सीम फ़रमाए। **48 :** और तुम्हारी फ़ुतूह़ात होती रहेंगी।

www.dawateislami.net

وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ

और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये[49] और इस लिये कि ईमान वालों के लिये निशानी हो[50] और तुम्हें

صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲۰﴾ وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ

सीधी राह दिखा दे[51] और एक और[52] जो तुम्हारे बल (बस) की न थी[53] वोह **अल्लाह** के क़ब्ज़े

بِهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

में है और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है और अगर काफ़िर तुम से लड़ें[54]

لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ

तो ज़रूर तुम्हारे मुक़ाबले से पीठ फेर देंगे[55] फिर न कोई हिमायती पाएंगे न मददगार **अल्लाह** का दस्तूर है कि

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

पहले से चला आता है[56] और हरगिज़ तुम **अल्लाह** का दस्तूर बदलता न पाओगे और वोही है जिस ने

كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ

उन के हाथ[57] तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिये वादिये मक्का में[58] बा'द इस के कि तुम्हें उन पर क़ाबू

عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۲۴﴾ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ

दे दिया था और **अल्लाह** तुम्हारे काम देखता है वोह[59] वोह हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और

صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ

तुम्हें मस्जिदे हराम से[60] रोका और क़ुरबानी के जानवर रुके पड़े अपनी जगह पहुंचने से[61] और

49 : कि वोह ख़ाइफ़ हो कर तुम्हारे अहलो इयाल को ज़रर न पहुंचा सके। इस का वाक़िआ येह था कि जब मुसल्मान जंगे ख़ैबर के लिये रवाना हुए तो अहले ख़ैबर के हलीफ़ बनी असद व ग़त्फ़ान ने चाहा कि मदीनए तय्यिबा पर हम्ला कर के मुसल्मानों के अहलो इयाल को लूट लें **अल्लाह** तआला ने उन के दिलों में रो'ब डाला और उन के हाथ रोक दिये। **50 :** येह ग़नीमत देना और दुश्मनों के हाथ रोक देना। **51 :** **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करने और काम उस पर मुफ़व्वज़ (के सिपुर्द) करने की जिस से बसीरत व यक़ीन ज़ियादा हो। **52 :** फ़त्ह **53 :** मुराद इस से या मग़ानिमे फ़ारिस व रूम (फ़ारस व रूम की ग़नीमतें) हैं या ख़ैबर जिस का **अल्लाह** तआला ने पहले से वा'दा फ़रमाया था और मुसल्मानों को उम्मीदे काम्याबी थी **अल्लाह** तआला ने उन्हें फ़त्ह दी और एक क़ौल येह है कि वोह फ़त्हे मक्का है और एक क़ौल है कि वोह हर फ़त्ह है जो **अल्लाह** तआला ने मुसल्मानों को अ़ता फ़रमाई। **54 :** या'नी अहले मक्का या अहले ख़ैबर के हुलफ़ा असद व ग़त्फ़ान। **55 :** मग़्लूब होंगे और उन्हें हज़ीमत होगी **56 :** कि वोह मोमिनीन की मदद फ़रमाता है और काफ़िरों को मक़्हूर (रुस्वा) करता है। **57 :** या'नी कुफ़्फ़ार के **58 :** रोज़े फ़त्हे मक्का। और एक क़ौल येह है कि "बत्ने मक्का" से हुदैबिया मुराद है और इस के **शाने नुज़ूल** में हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अहले मक्का में से अस्सी हथियार बन्द जवान "जबले तन्ईम" से मुसल्मानों पर हम्ला करने के इरादे से उतरे, मुसल्मानों ने उन्हें गिरिफ़्तार कर के सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर किया। हुज़ूर ने मुआ़फ़ फ़रमाया और छोड़ दिया। **59 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **60 :** वहां पहुंचने से और उस का त़वाफ़ करने से **61 :** या'नी मक़ामे ज़ब्ह से जो हरम में है।

www.dawateislami.net

لَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ

अगर येह न होता कुछ मुसल्मान मर्द और कुछ मुसल्मान औरतें[62] जिन की तुम्हें ख़बर नहीं[63] कहीं तुम उन्हें रौंद डालो[64]

فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ

तो तुम्हें उन की त़रफ़ से अन्जानी में कोई मकरूह (ना पसन्दीदा शै) पहुंचे तो हम तुम्हें उन के क़िताल की इजाज़त देते उन का येह बचाव इस लिये है कि अल्लाह अपनी रहमत में

يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ

दाख़िल करे जिसे चाहे अगर वोह जुदा हो जाते[65] तो हम ज़रूर उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब देते[66] जब

جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ

कि काफ़िरों ने अपने दिलों में अड़ (ज़िद) रखी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत की अड़[67] तो अल्लाह ने अपना

سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ

इत़्मीनान अपने रसूल और ईमान वालों पर उतारा[68] और परहेज़ गारी का कलिमा उन पर लाज़िम फ़रमाया[69] और

كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ اَهْلَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۲۶﴾ ع لَقَدْ صَدَقَ

वोह इस के ज़ियादा सज़ावार और इस के अह्ल थे[70] और अल्लाह सब कुछ जानता है[71] बेशक अल्लाह

اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब[72] बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे

اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ

अम्नो अमान से अपने सरों के[73] बाल मुंडाते या[74] तरश्वाते बे ख़ौफ़ तो उस ने जाना जो तुम्हें

62 : मक्कए मुकर्रमा में हैं 63 : तुम उन्हें पहचानते नहीं 64 : कुफ़्फ़ार से क़िताल करने में 65 : या'नी मुसल्मान काफ़िरों से मुमताज़ हो जाते 66 : तुम्हारे हाथ से क़त्ल करा के और तुम्हारी क़ैद में ला कर। 67 : कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्ह़ाब को का'बए मुअ़ज़्ज़मा से रोका 68 : कि उन्हों ने साले आयिन्दा आने पर सुल्ह़ की अगर वोह भी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रह़ ज़िद करते तो ज़रूर जंग हो जाती। 69 : कलिमए तक़्वा से मुराद ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ'' है। 70 : क्यूं कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपने दीन और अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सोह़बत से मुशर्रफ़ फ़रमाया। 71 : काफ़िरों का ह़ाल भी जानता है मुसल्मानों का भी, कोई चीज़ उस से मख़्फ़ी नहीं। 72 **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हुदैबिया का क़स्द फ़रमाने से क़ब्ल मदीनए त़य्यिबा में ख़्वाब देखा था कि आप मअ़ अस्ह़ाब के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ब अम्न दाख़िल हुए और अस्ह़ाब ने सर के बाल मुंडाए बा'ज़ ने तरश्वाए, येह ख़्वाब आप ने अपने अस्ह़ाब से बयान फ़रमाया तो उन्हें ख़ुशी हुई और उन्हों ने ख़याल किया कि इसी साल वोह मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होंगे, जब मुसल्मान हुदैबिया से बा'द सुल्ह़ के वापस हुए और उस साल मक्कए मुकर्रमा में दाख़िला न हुवा तो मुनाफ़िक़ीन ने तमस्ख़ुर (त़न्ज़) किया त़ा'न किये और कहा कि वोह ख़्वाब क्या हुवा, इस पर अल्लाह तआला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और इस ख़्वाब के मज़्मून की तस्दीक़ फ़रमाई कि ज़रूर ऐसा होगा। चुनान्चे, अगले साल ऐसा ही हुवा और मुसल्मान अगले साल बड़े शानो शकोह के साथ मक्कए मुकर्रमा में फ़ातेह़ाना दाख़िल हुए। 73 : तमाम 74 : थोड़े से।

www.dawateislami.net

تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۲۷﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ

मा'लूम नहीं[75] तो इस से पहले[76] एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह़ रखी[77] वोही है जिस ने अपने रसूल को

بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे[78] और **अल्लाह** काफ़ी है

شَهِيْدًا ﴿۲۸﴾ ؕ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ

गवाह[79] मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और उन के साथ वाले[80] काफ़िरों पर सख़्त हैं[81]

رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ

और आपस में नर्म दिल[82] तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में गिरते[83] **अल्लाह** का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते

سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۖۚ وَ معانقة ١٥

उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सज्दों के निशान से[84] येह उन की सिफ़त तौरैत में है और

مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ۫ۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ

उन की सिफ़त इन्जील में[85] जैसे एक खेती उस ने अपना पठ्ठा निकाला फिर उसे त़ाक़त दी फिर दबीज़ हुई

فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ

फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है[86] ताकि उन से काफ़िरों के दिल जलें **अल्लाह** ने वा'दा किया

75 : या'नी येह कि तुम्हारा दाख़िल होना अगले साल है और तुम इसी साल समझे थे और तुम्हारे लिये येह ताख़ीर बेहतर थी कि इस के बाइस वहां के ज़ईफ़ मुसल्मान पामाल होने से बच गए। **76 :** या'नी दुख़ूले ह़रम से क़ब्ल **77 :** फ़त्ह़े ख़ैबर कि फ़त्ह़े मौऊ़द (वा'दा की गई फ़त्ह़) के ह़ासिल होने तक, मुसल्मानों के दिल इस से राह़त पाएं, इस के बा'द जब अगला साल आया तो **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर के ख़्वाब का जल्वा दिखलाया और वाक़िआत इस के मुत़ाबिक़ रूनुमा हुए चुनान्चे, इर्शाद फ़रमाता है : **78 :** ख़्वाह वोह मुश्रिकीन के दीन हों या अहले किताब के, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने येह ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और इस्लाम को तमाम अद्यान पर ग़ालिब फ़रमा दिया। **79 :** अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत पर जैसा कि फ़रमाता है : **80 :** या'नी उन के अस्ह़ाब **81 :** जैसा कि शेर शिकार पर और सह़ाबा का तशद्दुद कुफ़्फ़ार के साथ इस ह़द पर था कि वोह लिह़ाज़ रखते थे कि उन का बदन किसी काफ़िर के बदन से न छू जाए और उन के कपड़े से किसी काफ़िर का कपड़ा न लगने पाए। (مدارک) **82 :** एक दूसरे पर मह़ब्बत व मेहरबानी करने वाले ऐसे कि जैसे बाप बेटे में हो और येह मह़ब्बत इस ह़द तक पहुंच गई कि जब एक मोमिन दूसरे को देखे तो फ़र्त़े मह़ब्बत से मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करे। **83 :** कसरत से नमाज़ें पढ़ते, नमाज़ों पर मुदावमत करते **84 :** और येह अ़लामत वोह नूर है जो रोज़े क़ियामत उन के चेहरों से ताबां होगा इस से पहचाने जाएंगे कि इन्हों ने दुन्या में **अल्लाह** तआ़ला के लिये बहुत सज्दे किये हैं और येह भी कहा गया है कि उन के चेहरों में सज्दे का मक़ाम माहे शब चहार दहुम (चौदहवीं रात के चांद) की त़रह़ चमक्ता दमक्ता होगा। अ़त़ा का क़ौल है कि शब की दराज़ नमाज़ों से उन के चेहरों पर नूर नुमायां होता है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जो रात को नमाज़ की कसरत करता है सुब्ह़ को उस का चेहरा ख़ूब सूरत हो जाता है और येह भी कहा गया है कि गर्द का निशान भी सज्दे की अ़लामत है। **85 :** येह मज़्कूर है कि **86 :** येह मिसाल इब्तिदाए इस्लाम और इस की तरक़्क़ी की बयान फ़रमाई गई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तन्हा उठे फिर **अल्लाह** तआ़ला ने आप को आप के मुख़्लिसीन अस्ह़ाब से तक़्विय्यत दी। क़तादा ने कहा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की मिसाल इन्जील में येह लिखी है कि एक क़ौम खेती की त़रह़ पैदा होगी वोह नेकियों का हुक्म करेंगे बदियों से मन्अ़ करेंगे, कहा गया है कि खेती हुज़ूर हैं और इस की शाख़ें अस्ह़ाब और मोमिनीन।

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं[87] बख़्शिश और बड़े सवाब का

اٰيَاتُهَا ۱۸ ﴿۴۹﴾ سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ ﴿۱۰۶﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۲

सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا

ऐ ईमान वालो **अल्लाह** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो[2] और **अल्लाह** से

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا

डरो बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ

ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से[3] और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के

لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो[4] बेशक वोह जो

87 : सह़ाबा सब के सब साह़िबे ईमान व अ़मले सालेह़ हैं इस लिये येह वा'दा सभी से है। **1 :** सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में दो रुकूअ़ अठ्ठारह आयतें, तीन सो तेंतालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो छिहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी तुम्हें लाज़िम है कि अस्लन तुम से तक़्दीम वाक़ेअ़ न हो न क़ौल में न फ़े'ल में कि तक़्दीम करना रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अदबो एह़तिराम के ख़िलाफ़ है, बारगाहे रिसालत में नियाज़ मन्दी व आदाब लाज़िम हैं। **शाने नुज़ूल :** चन्द शख़्सों ने ईदुद्दुह़ा के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले क़ुरबानी कर ली तो उन को हुक्म दिया गया कि दोबारा क़ुरबानी करें और ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि बा'ज़े लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरूअ़ कर देते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से तक़द्दुम न करो। (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **3 :** या'नी जब हुज़ूर (बारगाहे रिसालत) में कुछ अ़र्ज़ करो तो आहिस्ता पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ करो, येही दरबारे रिसालत का अदबो एह़तिराम है। **4 :** इस आयत में हुज़ूर का इज्लालो इक्राम व अदबो एह़तिराम ता'लीम फ़रमाया गया और हुक्म दिया गया कि निदा करने में अदब का पूरा लिह़ाज़ रखें, जैसे आपस में एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हैं इस त़रह़ न पुकारें, बल्कि कलिमाते अदबो ता'ज़ीम व तौसीफ़ो तक्रीम व अल्क़ाबे अ़ज़मत के साथ अ़र्ज़ करो जो अ़र्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन्हें सिक़्ले समाअ़त था (या'नी ऊंची आवाज़ से सुनते थे) और आवाज़ इन की ऊंची थी बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी, जब येह आयत नाज़िल हुई तो ह़ज़रते साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूं। हुज़ूर ने ह़ज़रते सा'द से उन का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई, फिर आ कर ह़ज़रते साबित से इस का ज़िक्र किया साबित ने कहा : येह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूं तो मैं जहन्नमी हो गया। ह़ज़रते सा'द ने येह ह़ाल ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वोह अहले जन्नत से हैं।

يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ
अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास[5] वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़ गारी

قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ
के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के

مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى
बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं[6] और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि

تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾ يٰۤاَيُّهَا
तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते[7] तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है[8] ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا
ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो[9] कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा

بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۶﴾ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ
न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ और जान लो कि तुम में

رَسُوْلَ اللّٰهِؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ
अल्लाह के रसूल हैं[10] बहुत मुआ़मलों में अगर येह तुम्हारी ख़ुशी करें[11] तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन **अल्लाह** ने तुम्हें

5 : बराहे अदबो ता'ज़ीम। **शाने नुज़ूल :** आयए ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ'' के नाज़िल होने के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और बा'ज़ और सह़ाबा ने बहुत एह़तियात़ लाज़िम कर ली और ख़िदमते अक़्दस में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ मा'रूज़ करते, उन ह़ज़रात के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **6 शाने नुज़ूल :** येह आयत वफ़्दे बनी तमीम के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में दोपहर के वक़्त पहुंचे जब कि हुज़ूर आराम फ़रमा रहे थे, उन लोगों ने हुजरों के बाहर से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को पुकारना शुरूअ़ किया, हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, उन लोगों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और इज्लाले शाने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का बयान फ़रमाया गया कि बारगाहे अक़्दस में इस त़रह़ पुकारना जहल व बे अ़क़्ली है और उन लोगों को अदब की तल्क़ीन की गई। **7 :** उस वक़्त वोह अ़र्ज़ करते जो उन्हें अ़र्ज़ करना था, येह अदब उन पर लाज़िम था, इस को बजा लाते। **8 :** उन में से उन के लिये जो तौबा करें। **9 :** कि सह़ीह़ है या ग़लत़। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन उ़क़्बा के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन को बनी मुस्त़लिक़ से सदक़ात वुसूल करने भेजा था और ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के और उन के दरमियान अ़दावत थी, जब वलीद उन के दियार के क़रीब पहुंचे और उन्हें ख़बर हुई तो इस ख़याल से कि वोह रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के भेजे हुए हैं बहुत से लोग ता'ज़ीमन उन के इस्तिक़्बाल के वासित़े आए, वलीद ने गुमान किया कि येह पुरानी अ़दावत से मुझे क़त्ल करने आ रहे हैं, येह ख़याल कर के वलीद वापस हो गए और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ कर दिया कि हुज़ूर उन लोगों ने सदक़ा को मन्अ़ कर दिया और मेरे क़त्ल के दरपै हो गए, हुज़ूर ने ख़ालिद बिन वलीद को तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये भेजा, ह़ज़रते ख़ालिद ने देखा कि वोह लोग अज़ानें कहते हैं नमाज़ पढ़ते हैं और उन लोगों ने सदक़ात पेश कर दिये, ह़ज़रते ख़ालिद येह सदक़ात ले कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह आयत आ़म है इस बयान में नाज़िल हुई है कि फ़ासिक़ के क़ौल पर ए'तिमाद न किया जाए। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि एक शख़्स अगर आ़दिल हो तो उस की ख़बर मो'तबर है। **10 :** अगर तुम झूट बोलोगे

www.dawateislami.net

اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ

ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म उ़दूली और ना फ़रमानी

وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ

तुम्हें ना गवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं[12] अल्लाह का फ़ज़्ल और एह़सान और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۸﴾ وَاِنْ طَآىٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا

इ़ल्मो हिक्मत वाला है और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़

بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى

कराओ[13] फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे[14] तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहां तक कि

تَفِيْٓءَ اِلٰۤى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ

वोह अल्लाह के हुक्म की त़रफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उन में इस्लाह़ कर दो और अ़द्ल करो

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا

बेशक अ़द्ल वाले अल्लाह को प्यारे हैं मुसल्मान मुसल्मान भाई हैं[15] तो अपने दो भाइयों

ع ۱۳
بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

में सुल्ह़ करो[16] और अल्लाह से डरो कि तुम पर रह़मत हो[17] ऐ ईमान वालो

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ

न मर्द मर्दों से हंसें[18] अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों[19] और न औरतें

तो अल्लाह तआ़ला के ख़बरदार करने से वोह तुम्हारा इफ़्शाए ह़ाल कर के तुम्हें रुस्वा कर देंगे। **11 :** और तुम्हारी राय के मुत़ाबिक़ हुक्म दे दें **12 :** कि त़रीक़े ह़क़ पर क़ाइम रहे। **13 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दराज़ गोश पर सुवार तशरीफ़ ले जा रहे थे, अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुवा, वहां थोड़ा सा तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय ने नाक बन्द कर ली, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि ह़ुज़ूर के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है, हुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए, इन दोनों में बात बढ़ गई और इन दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई तक नौबत पहुंची तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और उन में सुल्ह़ करा दी, इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई। **14 :** ज़ुल्म करे और सुल्ह़ से मुन्किर हो जाए। **मस्अला :** बाग़ी गुरौह का येही हुक्म है उस से क़िताल किया जाए यहां तक कि वोह जंग से बाज़ आए। **15 :** कि आपस में दीनी राबित़ा और इस्लामी मह़ब्बत के साथ मरबूत़ (जुड़े हुए) हैं, येह रिश्ता तमाम दुन्यवी रिश्तों से क़वी तर है। **16 :** जब कभी उन में निज़ाअ़ (रन्जिश) वाक़ेअ़ हो। **17 :** क्यूं कि अल्लाह तआ़ला से डरना और परहेज़ गारी इख़्तियार करना मोमिनीन की बाहमी मह़ब्बत व मुवद्दत का सबब है और जो अल्लाह तआ़ला से डरता है अल्लाह तआ़ला की रह़मत उस पर होती है। **18 शाने नुज़ूल :** इस आयत का नुज़ूल कई वाक़िओं में हुवा **पहला वाक़िआ़** येह है कि साबित इब्ने क़ैस बिन शम्मास को सिक़्ले समाअ़त था, जब वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो सह़ाबा उन्हें आगे बिठाते और उन के लिये जगह ख़ाली कर देते ताकि वोह हुज़ूर के क़रीब ह़ाज़िर रह कर कलामे मुबारक सुन सकें, एक रोज़ उन्हें ह़ाज़िरी में देर हो गई और मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई, उस वक़्त साबित आए और क़ाइदा येह था कि जो शख़्स ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहां

نِسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا

औरतों से दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों[20] और आपस में ता'ना न करो[21] और एक दूसरे के बुरे

بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ

नाम न रखो[22] क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना[23] और जो तौबा न करें

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ

तो वोही ज़ालिम हैं ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से

الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ

बचो[24] बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है[25] और ऐब न ढूंढो[26] और एक दूसरे की

होता खड़ा रहता। साबित आए तो वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़रीब बैठने के लिये लोगों को हटाते हुए येह कहते चले कि जगह दो जगह दो यहां तक कि वोह हुज़ूर के क़रीब पहुंच गए और उन के और हुज़ूर के दरमियान में सिर्फ़ एक शख़्स रह गया, उन्हों ने उस से भी कहा कि जगह दो, उस ने कहा कि तुम्हें जगह मिल गई बैठ जाओ, साबित गुस्से में आ कर उस के पीछे बैठ गए और जब दिन ख़ूब रोशन हुवा तो साबित ने उस का जिस्म दबा कर कहा कि कौन? उस ने कहा कि मैं फ़ुलां शख़्स हूं। साबित ने उस की मां का नाम ले कर कहा : फ़ुलानी का लड़का। इस पर उस शख़्स ने शर्म से सर झुका लिया और उस ज़माने में ऐसा कलिमा आ़र दिलाने के लिये कहा जाता था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **दूसरा वाक़िआ़** ज़हहाक ने बयान किया कि येह आयत बनी तमीम के हक़ में नाज़िल हुई जो ह़ज़रते अ़म्मार व ख़ब्बाब व बिलाल व सुहैब व सलमान व सालिम वग़ैरा ग़रीब सह़ाबा की ग़ुरबत देख कर उन के साथ तमस्ख़ुर करते थे, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें या'नी मालदार ग़रीबों की हंसी न बनाएं, न आ़ली नसब ग़ैर ज़ी नसब की, न तन्दुरुस्त अपाहज की, न बीना उस की जिस की आंख में ऐब हो। **19 :** सिद्क़ो इख़्लास में। **20 : शाने नुज़ूल :** येह आयत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते हुयय رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हक़ में नाज़िल हुई। इन्हें मा'लूम हुवा था कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा ने इन्हें यहूदी की लड़की कहा, इस पर इन्हें रन्ज हुवा और रोईं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से शिकायत की तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम नबी ज़ादी और नबी की बीबी हो तुम पर वोह क्या फ़ख़्र करती हैं और ह़ज़रते ह़फ़्सा से फ़रमाया : ऐ ह़फ़्सा! ख़ुदा से डरो। (الترمذی وقال حسن صحيح غريب) **21 :** एक दूसरे पर ऐब न लगाओ अगर एक मोमिन ने दूसरे मोमिन पर ऐब लगाया तो गोया अपने ही आप को ऐब लगाया। **22 :** जो उन्हें ना गवार मा'लूम हों। **मसाइल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नही में दाख़िल और मम्नूअ़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसल्मान को कुत्ता या गधा या सुअर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो, लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ और ह़ज़रते उ़मर का फ़ारूक़ और ह़ज़रते उ़स्मान का ज़ुन्नूरैन और ह़ज़रते अ़ली का अबू तुराब और ह़ज़रते ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम हो गए और साह़िबे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं जैसा कि आ'मश, आ'रज। **23 :** तो ऐ मुसल्मानो किसी मुसल्मान की हंसी बना कर या उस को ऐब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ। **24 :** क्यूं कि हर गुमान सह़ीह़ नहीं होता **25 मस्अला :** मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान मम्नूअ़ है इसी त़रह़ इस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद मा'ना मुराद लेना बा वुजूदे कि उस के दूसरे सह़ीह़ मा'ना मौजूद हों और मुसल्मान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो येह भी गुमाने बद में दाख़िल है। सुफ़्यान सौरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : गुमान दो त़रह़ का है **एक** वोह कि दिल में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए, येह अगर मुसल्मान पर बदी के साथ है गुनाह है। **दूसरा** येह कि दिल में आए और ज़बान से न कहा जाए येह अगर्चे गुनाह नहीं मगर इस से भी दिल ख़ाली करना ज़रूर है। **मस्अला :** गुमान की कई क़िस्में हैं : **एक वाजिब** है वोह **अल्लाह** के साथ अच्छा गुमान रखना। **एक मुस्तह़ब** वोह मोमिने सालेह़ के साथ नेक गुमान। **एक मम्नूअ़ ह़राम** वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बुरा गुमान करना और मोमिन के साथ बुरा गुमान करना **एक जाइज़** वोह फ़ासिके मो'लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे अफ़्आ़ल उस से ज़ुहूर में आते हों। **26 :** या'नी मुसल्मानों की ऐबजूई न करो और उन के छुपे ह़ाल की जुस्तजू में न रहो जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया। ह़दीस शरीफ़ में है : गुमान से बचो गुमान बड़ी झूटी बात है और मुसल्मानों की ऐबजूई न करो उन के साथ ह़िर्स व ह़सद बुग़्ज़ बे मुरव्वती न करो, ऐ **अल्लाह** तआ़ला के बन्दो! भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म

www.dawateislami.net

بَعْضًا ؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ

ग़ीबत न करो[27] क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा[28]

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है ऐ लोगो ! हम ने तुम्हें एक मर्द[29]

مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ

और एक औ़रत[30] से पैदा किया[31] और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो[32] बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में

عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۳﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ

ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है[33] बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है गंवार बोले हम ईमान लाए[34]

दिया गया मुसल्मान मुसल्मान का भाई है इस पर ज़ुल्म न करे इस को रुस्वा न करे इस की तह़क़ीर न करे (फिर अपने सीने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया) तक़्वा यहां है तक़्वा यहां है तक़्वा यहां है। आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर देखे, हर मुसल्मान मुसल्मान पर ह़राम है इस का ख़ून भी इस की आबरू भी इस का माल भी **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है। (بخاری و مسلم) **ह़दीस :** जो बन्दा दुन्या में दूसरे की पर्दापोशी करता है **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा। **27 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ग़ीबत येह है कि मुसल्मान भाई की पीठ पीछे ऐसी बात कही जाए जो उसे ना गवार गुज़रे अगर वोह बात सच्ची है तो ग़ीबत है वरना बोहतान। **28 :** तो मुसल्मान भाई की ग़ीबत भी गवारा न होनी चाहिये क्यूं कि इस को पीठ पीछे बुरा कहना इस के मरने के बा'द इस का गोश्त खाने के मिस्ल है क्यूं कि जिस त़रह़ किसी का गोश्त काटने से उस को ईज़ा होती है इसी त़रह़ उस को बदगोई से क़ल्बी तक्लीफ़ होती है और दर ह़क़ीक़त आबरू गोश्त से ज़ियादा प्यारी है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब जिहाद के लिये रवाना होते और सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदारों के साथ एक ग़रीब मुसल्मान को कर देते कि वोह ग़रीब उन की ख़िदमत करे वोह इसे खिलाएं पिलाएं हर एक का काम चले, इसी त़रह़ ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दो आदमियों के साथ किये गए थे, एक रोज़ वोह सो गए और खाना तय्यार न कर सके तो उन दोनों ने इन्हें खाना त़लब करने के लिये रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, ह़ुज़ूर के ख़ादिमे मत़्बख़ ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, उन के पास कुछ रहा न था, उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं। ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येही आ कर कह दिया तो उन दोनों रफ़ीक़ों ने कहा कि ह़ज़रते उसामा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने बुख़्ल किया, जब वोह ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, फ़रमाया : मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूं, उन्हों ने अ़र्ज़ किया हम ने गोश्त खाया ही नहीं, फ़रमाया : तुम ने ग़ीबत की और जो मुसल्मान की ग़ीबत करे उस ने मुसल्मान का गोश्त खाया। **मस्अला :** ग़ीबत बिल इत्तिफ़ाक़ कबाइर (कबीरा गुनाहों) में से है, ग़ीबत करने वाले को तौबा लाज़िम है। एक ह़दीस में येह है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा येह है कि जिस की ग़ीबत की है उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करे। **मस्अला :** फ़ासिक़े मो'लिन के ऐ़ब का बयान ग़ीबत नहीं। ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ाजिर के ऐ़ब बयान करो कि लोग उस से बचें। **मस्अला :** ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि तीन शख़्सों की ह़ुर्मत नहीं : **एक** साह़िबे हवा (बद मज़्हब)। **दूसरा** फ़ासिक़े मो'लिन। **तीसरा** बादशाहे ज़ालिम या'नी इन के उ़यूब बयान करना ग़ीबत नहीं। **29 :** ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام **30 :** ह़ज़रते ह़व्वा **31 :** नसब के इस इन्तिहाई दरजे पर जा कर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में तफ़ाख़ुर और तफ़ाज़ुल की कोई वज्ह नहीं, सब बराबर हो एक जद्दे आ'ला की औलाद। **32 :** और "एक" "दूसरे" का नसब जाने और कोई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की त़रफ़ अपनी निस्बत न करे, न येह कि नसब पर फ़ख़्र करे और दूसरों की तह़क़ीर करे, इस के बा'द उस चीज़ का बयान फ़रमाया जाता है जो इन्सान के लिये शराफ़त व फ़ज़ीलत का सबब और जिस से उस को बारगाहे इलाही में इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है। **33 :** इस से मा'लूम हुवा कि मदार इ़ज़्ज़तो फ़ज़ीलत का परहेज़ गारी है न कि नसब। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बाज़ारे मदीना में एक ह़बशी ग़ुलाम मुलाह़ज़ा फ़रमाया जो येह कह रहा था कि जो मुझे ख़रीदे उस से मेरी येह शर्त़ है कि मुझे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की इक़्तिदा में पांचों नमाज़ें अदा करने से मन्अ़ न करे, उस ग़ुलाम को एक शख़्स ने ख़रीद लिया फिर वोह ग़ुलाम बीमार हो गया तो सय्यिदे आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, फिर उस की वफ़ात हो गई और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उस के दफ़्न में तशरीफ़ लाए, इस पर लोगों ने कुछ कहा, इस पर येह आयते

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا یَدْخُلِ الْاِیْمَانُ فِیْ

तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए[35] हां यूं कहो कि हम मुतीअ़ हुए[36] और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में

قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَا یَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَیْـًٔا ؕ

कहां दाख़िल हुवा[37] और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे[38] तो तुम्हारे किसी अ़मल का तुम्हें नुक़्सान न देगा[39]

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ईमान वाले तो वोही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर

رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ یَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ

ईमान लाए फिर शक न किया[40] और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में

اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِیْنِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

जिहाद किया वोही सच्चे हैं[41] तुम फ़रमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह

یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۶﴾

जानता है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है[42] और अल्लाह सब कुछ जानता है[43]

یَمُنُّوْنَ عَلَیْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَیَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ

ऐ महबूब वोह तुम पर एह़सान जताते हैं कि मुसल्मान हो गए तुम फ़रमाओ अपने इस्लाम का एह़सान मुझ पर न रखो बल्कि अल्लाह

یَمُنُّ عَلَیْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِیْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ

तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो[44] बेशक अल्लाह

करीमा नाज़िल हुई। **34 शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी असद बिन ख़ुज़ैमा की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुश्क साली के ज़माने में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने इस्लाम का इज़्हार किया और ह़क़ीक़त में वोह ईमान न रखते थे, उन लोगों ने मदीने के रस्ते में गन्दगियां कीं और वहां के भाव गिरां कर दिये, सुब्ह़ो शाम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ कर अपने इस्लाम लाने का एह़सान जताते और कहते हमें कुछ दीजिये, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **35 :** सिद्क़े दिल से **36 :** ज़ाहिर में **37 मस्अला :** मह़ज़ ज़बानी इक़रार जिस के साथ क़ल्बी तस्दीक़ न हो मो'तबर नहीं इस से आदमी मोमिन नहीं होता, इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी इस्लाम के लुग़वी मा'ना हैं और शरई मा'ना में इस्लाम और ईमान एक हैं कोई फ़र्क़ नहीं। **38 :** ज़ाहिरन व बात़िनन सिद्क़ो इख़्लास के साथ, निफ़ाक़ को छोड़ कर **39 :** तुम्हारी नेकियों का सवाब कम न करेगा **40 :** अपने दीन व ईमान में **41 :** ईमान के दा'वे में। **शाने नुज़ूल :** जब येह दोनों आयतें नाज़िल हुईं तो आ'राब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने क़समें खाईं कि हम मोमिने मुख़्लिस हैं, इस पर अगली आयत नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाया गया : **42 :** उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं **43 :** मोमिन का ईमान भी और मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ भी, तुम्हारे बताने और ख़बर देने की ह़ाजत नहीं। **44 :** अपने दा'वे में।

يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع

जानता है आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[45]

اٰیاتها ٤٥ | ٥٠ سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ ٣٤ | رکوعاتها ٣

सूरए ق मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ

इज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि उन के पास उन्ही में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[3] तो

الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَیْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ

काफ़िर बोले येह तो अ़जीब बात है क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएंगे फिर जियेंगे यह पलटना

بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ

दूर है[4] हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उन में से घटाती है[5] और हमारे पास एक याद रखने वाली

حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِیْۤ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾ اَفَلَمْ

किताब है[6] बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया[7] जब वोह उन के पास आया तो वोह एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं[8] तो क्या

يَنْظُرُوْۤا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾

उन्हों ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा[9] हम ने उसे कैसा बनाया[10] और संवारा[11] और उस में कहीं रख़्ना नहीं[12]

45 : उस से तुम्हारा कोई हाल छुपा नहीं न ज़ाहिर न मख़्फ़ी। **1 :** "सूरए قٓ" मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, तीन सो सत्तावन कलिमे और एक हज़ार चार सो चोरानवे हर्फ़ हैं। **2 :** हम जानते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान नहीं लाए। **3 :** जिस की अ़दालत व अमानत और सिद्क़ व रास्त बाज़ी को वोह ख़ूब जानते हैं और येह भी उन के दिल नशीन है कि ऐसे सिफ़ात का शख़्स सच्चा नासेह होता है बा वुजूद इस के उन का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के इन्ज़ार (डराने) से तअ़ज्जुब व इन्कार करना क़ाबिले हैरत है। **4 :** उन की इस बात के रद व जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **5 :** या'नी उन के जिस्म के जो हिस्से गोश्त ख़ून हड्डियां वग़ैरा ज़मीन खा जाती है, उन में से कोई चीज़ हम से छुपी नहीं तो हम उन को वैसे ही ज़िन्दा करने पर क़ादिर हैं जैसे कि वोह पहले थे। **6 :** जिस में उन के अस्मा आ'दाद और जो कुछ उन में से ज़मीन ने खाया सब साबित व मक्तूब व महफ़ूज़ है। **7 :** बिग़ैर सोचे समझे और हक़ से मुराद या नुबुव्वत है जिस के साथ मो'जिज़ाते बाहिरात हैं या क़ुरआने मजीद। **8 :** तो कभी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को शाइर, कभी साहिर, कभी काहिन और इसी तरह क़ुरआने पाक को शे'र व सेहर व कहानत कहते हैं किसी एक बात पर क़रार नहीं। **9 :** चश्मे बीना व नज़रे ए'तिबार से कि इस की आफ़रीनिश में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायां हैं। **10 :** बिग़ैर सुतून के बुलन्द किया **11 :** कवाकिब के रोशन अजराम से। **12 :** कोई ऐ़ब व क़ुसूर नहीं।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ
और ज़मीन को हम ने फैलाया[13] और उस में लंगर डाले[14] और उस में हर बा रौनक़
بَهِيْجٍ ۙ﴿۷﴾ تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿۸﴾ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ
जोड़ा उगाया सूझ और समझ[15] हर रुजूअ़ वाले बन्दे के लिये[16] और हम ने आस्मान से बरकत वाला
مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّ حَبَّ الْحَصِيْدِ ۙ﴿۹﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا
पानी उतारा[17] तो उस से बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है[18] और खजूर के लम्बे दरख़्त जिन का
طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ﴿۱۰﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَ اَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ
पक्का गाभा (पका हुवा ताज़ा फल) बन्दों की रोज़ी के लिये और हम ने उस[19] से मुर्दा (वीरान) शहर जिलाया (सर सब्ज़ किया)[20] यूंही
الْخُرُوْجُ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَ ثَمُوْدُ ۙ﴿۱۲﴾ وَ
क़ब्रों से तुम्हारा निकलना है[21] इन से पहले झुटलाया[22] नूह़ की क़ौम और रस्स वालों[23] और समूद और
عَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ وَ اِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَ قَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ
आ़द और फ़िरऔ़न और लूत़ के हम क़ौमों और बन वालों और तुब्बअ़ की क़ौम ने[24] उन में हर
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ
एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अ़ज़ाब का वा'दा साबित हो गया[25] तो क्या हम पहली बार बना कर थक गए[26] बल्कि वोह
فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؑ﴿۱۵﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا ع ٥ / ١٥
नए बनने से[27] शुबे में हैं और बेशक हम ने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो

13 : पानी तक। **14 :** पहाड़ों के कि क़ाइम रहे। **15 :** कि इस से बीनाई व नसीह़त ह़ासिल हो **16 :** जो **अल्लाह** तआ़ला के बदाइए़ सन्अ़त व अ़जाइबे ख़ल्क़त में नज़र कर के उस की त़रफ़ रुजूअ़ करे। **17 :** या'नी बारिश जिस से हर चीज़ की ज़िन्दगी और बहुत ख़ैरो बरकत है। **18 :** त़रह़ त़रह़ का गेहूं, जव, चना वग़ैरा। **19 :** बारिश के पानी **20 :** जिस के नबातात ख़ुश्क हो चुके थे फिर उस को सब्ज़ा ज़ार कर दिया। **21 :** तो **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत के आसार देख कर मरने के बा'द फिर ज़िन्दा होने का क्यूं इन्कार करते हो। **22 :** रसूलों को **23 :** रस्स एक कूंवां है जहां येह लोग मअ़ अपने मवेशियों के मुक़ीम थे और बुतों को पूजते थे, येह कूंवां ज़मीन में धंस गया और उस के क़रीब की ज़मीन भी, येह लोग और उन के अम्वाल उस के साथ धंस गए। **24 :** इन सब के तज़्किरे सूरए फ़ुरक़ान व ह़जर व दुख़ान में गुज़र चुके हैं। **25 :** इस में क़ुरैश को तहदीद और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप क़ुरैश के कुफ़्र से तंगदिल न हों हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाते और उन के दुश्मनों पर अ़ज़ाब करते रहे हैं। इस के बा'द मुन्किरीने बअ़्स के इन्कार का जवाब इर्शाद होता है **26 :** जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो, इस में मुन्किरीने बअ़्स के कमाले जह्ल का इज़्हार है कि बा वुजूद इस इक़रार के कि ख़ल्क़ **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा की इस के दोबारा पैदा करने को मुह़ाल और मुस्तब्अ़द समझते हैं। **27 :** या'नी मौत के बा'द पैदा किये जाने से।

www.dawateislami.net

تُوَسۡوِسُ بِهٖ نَفۡسُهٗ ۚۖ وَ نَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَیۡهِ مِنۡ حَبۡلِ الۡوَرِیۡدِ ﴿۱۶﴾ اِذۡ

वस्वसा उस का नफ़्स डालता है[28] और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं[29] जब

یَتَلَقَّی الۡمُتَلَقِّیٰنِ عَنِ الۡیَمِیۡنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ قَعِیۡدٌ ﴿۱۷﴾ مَا یَلۡفِظُ مِنۡ

उस से लेते हैं दो लेने वाले[30] एक दाहने बैठा और एक बाएं[31] कोई बात वोह ज़बान से

قَوۡلٍ اِلَّا لَدَیۡهِ رَقِیۡبٌ عَتِیۡدٌ ﴿۱۸﴾ وَ جَآءَتۡ سَکۡرَۃُ الۡمَوۡتِ بِالۡحَقِّ ؕ

नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो[32] और आई मौत की सख़्ती[33] हक़ के साथ[34]

ذٰلِکَ مَا کُنۡتَ مِنۡهُ تَحِیۡدُ ﴿۱۹﴾ وَ نُفِخَ فِی الصُّوۡرِ ؕ ذٰلِکَ یَوۡمُ الۡوَعِیۡدِ ﴿۲۰﴾

येह है जिस से तू भागता था और सूर फूंका गया[35] येह है वा'दए अ़ज़ाब का दिन[36]

وَ جَآءَتۡ کُلُّ نَفۡسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّ شَهِیۡدٌ ﴿۲۱﴾ لَقَدۡ کُنۡتَ فِیۡ غَفۡلَۃٍ

और हर जान यूं हाज़िर हुई कि उस के साथ एक हांकने वाला[37] और एक गवाह[38] बेशक तू इस से ग़फ़्लत

مِّنۡ هٰذَا فَکَشَفۡنَا عَنۡکَ غِطَآءَکَ فَبَصَرُکَ الۡیَوۡمَ حَدِیۡدٌ ﴿۲۲﴾ وَ قَالَ

में था[39] तो हम ने तुझ पर से पर्दा उठाया[40] तो आज तेरी निगाह तेज़ है[41] और उस का हम नशीन

28 : हम से उस के सराइर व ज़माइर छुपे नहीं। **29 :** येह कमाले इ़ल्म का बयान है कि हम बन्दे के ह़ाल को ख़ुद उस से ज़ियादा जानने वाले हैं, "वरीद" वोह रग है जिस में ख़ून जारी हो कर बदन के हर हर जुज़ में पहुंचता है, येह रग गरदन में है, मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं। **30 :** फ़िरिश्ते और वोह इन्सान का हर अ़मल और उस की हर बात लिखने पर मामूर हैं। **31 :** दाहनी त़रफ़ वाला नेकियां लिखता है और बाईं त़रफ़ वाला बदियां, इस में इज़्हार है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों के लिखने से भी ग़नी है, वोह अख़्फ़ल ख़फ़िय्यात (बारीक पोशीदगियों) का जानने वाला है, ख़त़राते नफ़्स तक उस से छुपे नहीं, फ़िरिश्तों की किताबत हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत है कि रोज़े क़ियामत नामहाए आ'माल हर शख़्स के उस के हाथ में दे दिये जाएं। **32 :** ख़्वाह वोह कहीं हो सिवाए वक़्ते क़ज़ाए ह़ाजत और वक़्ते जिमाअ़ के, इस वक़्त येह फ़िरिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं। **मस्अला :** इन दोनों ह़ालतों में आदमी को बात करना जाइज़ नहीं ताकि उस के लिखने के लिये फ़िरिश्तों को इस ह़ालत में उस से क़रीब होने की तक्लीफ़ न हो, येह फ़िरिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं, बीमारी का कराहना तक और येह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वोही चीज़ें लिखते हैं जिन में अज्रो सवाब या गिरिफ़्त व अ़ज़ाब हो। इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दहनी त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता दस लिखता है और जब बदी करता है तो दहनी त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता बाईं जानिब वाले फ़िरिश्ते से कहता है कि अभी तवक़्क़ुफ़ कर शायद येह शख़्स इस्तिग़फ़ार कर ले, मुन्किरीने बअ़्स का रद फ़रमाने और अपने क़ुदरत व इ़ल्म से उन पर ह़ुज्जतें क़ाइम करने के बा'द उन्हें बताया जाता है कि वोह जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वोह अ़न्क़रीब उन की मौत और क़ियामत के वक़्त पेश आने वाली है और सीग़ए माज़ी से उन की आमद की ता'बीर फ़रमा कर उस के क़ुर्ब का इज़्हार किया जाता है। चुनान्चे, इर्शाद होता है : **33 :** जो अ़क़्ल व ह़वास को मुख़्तल व मुकद्दर कर देती है। **34 :** ह़क़ से मुराद या ह़क़ीक़ते मौत है या अम्रे आख़िरत जिस को इन्सान ख़ुद मुआयना करता है या अन्जामे कार सआ़दत व शक़ावत और सकरात की ह़ालत में मरने वाले से कहा जाता है कि मौत **35 :** बअ़्स के लिये **36 :** जिस का **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से वा'दा फ़रमाया था। **37 :** फ़िरिश्ता जो उसे मह़शर की त़रफ़ हांके। **38 :** जो उस के अ़मलों की गवाही दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हांकने वाला फ़िरिश्ता होगा और गवाह ख़ुद उस का अपना नफ़्स। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि हांकने वाला फ़िरिश्ता है और गवाह अपने आ'ज़ाए बदन हाथ पाउं वग़ैरा। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया कि हांकने वाला भी फ़िरिश्ता है और गवाह भी फ़िरिश्ता। (جمل) फिर काफ़िर से कहा जाएगा : **39 :** दुन्या में **40 :** जो तेरे दिल और कानों और आंखों पर पड़ा था **41 :** कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिन का दुन्या में इन्कार करता था।

www.dawateislami.net

قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝٢٣ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝٢٤

फ़िरिश्ता[42] बोला येह है[43] जो मेरे पास हाज़िर है हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुक्रे हटधर्म को

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ۝٢٥ الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ

जो भलाई से बहुत रोकने वाला हद से बढ़ने वाला शक करने वाला[44] जिस ने अल्लाह के साथ कोई और मा'बूद ठहराया तुम दोनों

فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝٢٦ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ

उसे सख़्त अ़ज़ाब में डालो उस के साथी शैत़ान ने कहा[45] हमारे रब मैं ने इसे सरकश न किया[46] हां येह आप ही

ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ۝٢٧ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ

दूर की गुमराही में था[47] फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो[48] मैं तुम्हें पहले ही अ़ज़ाब का

بِالْوَعِيْدِ ۝٢٨ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٢٩ ع ٢ ١٦

डर सुना चुका था[49] मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝٣٠ وَ

जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई[50] वोह अ़र्ज़ करेगी कुछ और ज़ियादा है[51] और

اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝٣١ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ

पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के कि उन से दूर न होगी[52] येह है वोह जिस का तुम वा'दा दिये जाते हो[53] हर रुजूअ़ लाने

اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝٣٢ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝٣٣

वाले निगह्दाश्त वाले के लिये[54] जो रह्मान से बे देखे डरता है और रुजूअ़ करता हुवा दिल लाया[55]

42 : जो उस के आ'माल लिखने वाला और उस पर गवाही देने वाला है। (مدارک وخازن) **43 :** इस का नामए आ'माल (مدارک) **44 :** दीन में **45 :** जो दुन्या में उस पर मुसल्लत़ था। **46 :** येह शैत़ान की त़रफ़ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्नम में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैत़ान ने वर्ग़लाया, इस पर शैत़ान कहेगा कि मैं ने इसे गुमराह न किया। **47 :** मैं ने इसे गुमराही की त़रफ़ बुलाया इस ने क़बूल कर लिया, इस पर इर्शादे इलाही होगा अल्लाह तआ़ला **48 :** कि दारुल जज़ा और मौक़िफ़े हिसाब में झगड़ा कुछ नाफ़ेअ़ नहीं **49 :** अपनी किताबों में और अपने रसूलों की ज़बानों पर मैं ने तुम्हारे लिये कोई हुज्जत बाक़ी न छोड़ी **50 :** अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम से वा'दा फ़रमाया है कि इसे जिन्नों और इन्सानों से भरेगा इस वा'दे की तह़क़ीक़ के लिये जहन्नम से येह सुवाल फ़रमाया जाएगा **51 :** इस के मा'ना येह भी हो सकते हैं कि अब मुझ में गुन्जाइश बाक़ी नहीं मैं भर चुकी और येह भी हो सकते हैं कि अभी और भी गुन्जाइश है **52 :** अ़र्श के दहनी त़रफ़ जहां से अहले मौक़िफ़ उस को देखेंगे और उन से कहा जाएगा **53 :** रसूलों की मा'रिफ़त दुन्या में **54 :** रुजूअ़ लाने वाले से वोह मुराद है जो मा'सियत को छोड़ कर त़ाअ़त इख़्तियार करे, सईद बिन मुसय्यिब ने फ़रमाया "اَوَّاب" वोह है जो गुनाह करे फिर तौबा करे, फिर उस से गुनाह सादिर हो फिर तौबा करे और निगाह दाश्त वाला वोह जो अल्लाह के हुक्म का लिहाज़ रखे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया : जो अपने आप को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखे और उन से इस्तिग़्फ़ार करे और येह भी कहा गया है कि जो अल्लाह तआ़ला की अमानतों और उस के हुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त करे और येह भी बयान किया गया है कि जो त़ाआ़त का पाबन्द हो, ख़ुदा और रसूल के हुक्म बजा लाए और अपने नफ़्स की निगहबानी करे या'नी एक दम भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल न हो, पासे अन्फ़ास करे :

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿۳۴﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَ

उन से फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ[56] येह हमेशगी का दिन है[57] उन के लिये है उस में जो चाहें और

لَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿۳۵﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا

हमारे पास इस से भी ज़ियादा है[58] और उन से पहले[59] हम ने कितनी संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं कि गिरिफ़्त में उन से सख़्त थीं[60]

فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ

तो शहरों में काविशें कीं[61] है कहीं भागने की जगह[62] बेशक इस में नसीहत है उस के लिये जो

كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿۳۷﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ

दिल रखता हो[63] या कान लगाए[64] और मुतवज्जेह हो और बेशक हम ने आस्मानों

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖۗ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿۳۸﴾

और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छ[6] दिन में बनाया और तकान हमारे पास न आई[65]

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ

तो उन की बातों पर सब्र करो और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और

قَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿۳۹﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿۴۰﴾ وَاسْتَمِعْ

डूबने से पहले[66] और कुछ रात गए उस की तस्बीह करो[67] और नमाज़ों के बा'द[68] और कान लगा कर सुनो

اگر تو پاسداری پاسِ انفاس   بسلطانی رسانندت ازیں پاس
ترا یک پند بس در ہر دو عالم   زجانت بر نیاید بے خدا دم

(तरजमा : "अगर तू अपने सांसों की हिफ़ाज़त करे तो लोग तुझे इस के सबब बादशाह बना लेंगे, दुन्या व आख़िरत में तेरे लिये येह एक ही नसीहत काफ़ी है। बे हुक्मे ख़ुदा तू सांस भी नहीं ले सकता।")

55 : या'नी इख़्लास मन्द ताअत पज़ीर सहीहुल अक़ीदा दिल **56 :** बे ख़ौफ़ो ख़तर अम्नो इत्मीनान के साथ, न तुम्हें अज़ाब हो न तुम्हारी ने'मतें ज़ाइल हों। **57 :** अब न फ़ना है न मौत। **58 :** जो वोह तलब करें और वोह दीदारे इलाही व तजल्लिये रब्बानी है जिस से हर जुमुआ को दारे करामत में नवाज़े जाएंगे। **59 :** या'नी आप के ज़माने के कुफ़्फ़ार से क़ब्ल **60 :** या'नी वोह उम्मतें इन से क़वी और ज़बर दस्त थीं। **61 :** और जुस्तजू में जा बजा फिरा किये। **62 :** मौत और हुक्मे इलाही से, मगर कोई ऐसी जगह न पाई। **63 :** दिले दाना। शिब्ली قُدِّسَ سِرُّهٗ ने फ़रमाया कि क़ुरआनी नसाएह से फ़ैज़ हासिल करने के लिये क़ल्बे हाज़िर चाहिये जिस में तरफ़्फ़ुल ऐन (लम्हा भर) के लिये भी ग़फ़्लत न आए। **64 :** क़ुरआन और नसीहत पर **65 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो येह कहते थे कि **अल्लाह** तआला ने आस्मान व ज़मीन और इन के दरमियानी काएनात को छ[6] रोज़ में बनाया जिन में से **पहला** यकशम्बा (इतवार) है और **पिछला** जुमुआ, फिर वोह مَعَاذَ الله थक गया और सनीचर (हफ़्ता) को उस ने अ़र्श पर लैट कर आराम लिया। इस आयत में उन का रद है कि **अल्लाह** तआला इस से पाक है कि थके, वोह क़ादिर है कि एक आन में सारा आलम बना दे, हर चीज़ को हस्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत हस्ती अता फ़रमाता है। शाने इलाही में यहूद का येह कलिमा सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ना गवार हुवा और शिद्दते ग़ज़ब से चेहरए मुबारक पर सुर्ख़ी नुमूदार हो गई तो **अल्लाह** तआला ने आप की तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब हुवा। **66 :** या'नी फ़ज्र व ज़ोहर व अ़स्र के वक़्त **67 :** या'नी वक़्ते

www.dawateislami.net

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ

जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा[69] एक पास जगह से[70] जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे[71]

بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا

हक़ के साथ येह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी

الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا

तरफ़ फिरना है[72] जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे[73] येह हश्र है हम को

يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ قف

आसान हम ख़ूब जान रहे हैं जो वोह कह रहे हैं[74] और कुछ तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं[75]

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ ع ٣ ١٧

तो क़ुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे

اٰياتها ٦٠ ﴿٥١﴾ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ﴿٦٧﴾ رکوعاتها ٣

सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾

क़सम उन की जो बिखेर कर उड़ाने वालियां[2] फिर बोझ उठाने वालियां[3] फिर नर्म चलने वालियां[4]

मग़रिब व इशा व तहज्जुद **68** **ह़दीस :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तमाम नमाज़ों के बा'द तस्बीह़ करने का हुक्म फ़रमाया। (بخاری) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द तेंतीस 33 मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَللّٰہُ اَکْبَر" और एक मरतबा "لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ، لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْر" पढ़े उस के गुनाह बख़्शे जाएंगे चाहे समुन्दर के झागों के बराबर हों या'नी बहुत ही कसीर हों। (مسلم شریف) **69 :** या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام **70 :** या'नी सख़रए बैतुल मक़्दिस से जो आस्मान की त़रफ़ ज़मीन का सब से क़रीब मक़ाम है, ह़ज़रते इसराफ़ील की निदा येह होगी : ऐ गली हुई हड्डियो ! बिखरे हुए जोड़ो ! रेज़ा रेज़ा शुदा गोश्तो ! परागन्दा बालो ! अल्लाह तआ़ला तुम्हें फ़ैसले के लिये जम्अ़ होने का हुक्म देता है। **71 :** सब लोग। मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर फूंका जाना) है। **72 :** आख़िरत में। **73 :** मुर्दे मेह़शर की त़रफ़। **74 :** या'नी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश। **75 :** कि उन्हें बज़ोर इस्लाम में दाख़िल करो, आप का काम दा'वत देना और समझा देना है। (وکان ھذاقبل الامربالقتال)

1 : सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, साठ आयतें, तीन सो साठ कलिमे, एक हज़ार दो सो उन्तालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी वोह हवाएं जो ख़ाक वग़ैरा को उड़ाती हैं। **3 :** या'नी वोह घटाएं और बदलियां जो बारिश का पानी उठाती हैं। **4 :** वोह कश्तियां जो पानी में ब सहूलत चलती हैं।

www.dawateislami.net

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ﴿۴﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ﴿۵﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ

फिर हुक्म से बांटने वालियां[5] बेशक जिस बात का तुम्हें वा'दा दिया जाता है[6] ज़रूर सच है और बेशक इन्साफ़

لَوَاقِعٌ ؕ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ﴿۸﴾

ज़रूर होना[7] आराइश वाले आस्मान की क़सम[8] तुम मुख़्तलिफ़ बात में हो[9]

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ﴿۹﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

इस कुरआन से वोही औंधा किया जाता है जिस की क़िस्मत ही में औंधाया जाना हो[10] मारे जाएं दिल से तराश्ने वाले जो नशे में

سَاهُوْنَ ۙ﴿۱۱﴾ يَسْــَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۲﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ

भूले हुए हैं[11] पूछते हैं[12] इन्साफ़ का दिन कब होगा[13] उस दिन होगा जिस दिन वोह आग पर

يُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾

तपाए जाएंगे[14] और फ़रमाया जाएगा चखो अपना तपना येह है वोह जिस की तुम्हें जल्दी थी[15]

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾ اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

बेशक परहेज़ गार बाग़ों और चश्मों में हैं[16] अपने रब की अ़ताएं लेते हुए बेशक वोह

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

इस से पहले[17] नेकोकार थे वोह रात में कम सोया करते[18]

5 : या'नी फ़िरिश्तों की वोह जमाअ़तें जो ब हुक्मे इलाही बारिश व रिज़्क़ वग़ैरा तक़्सीम करती हैं और जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने मुदब्बिरातुल अम्र किया है और आ़लम में तदबीर व तसर्रुफ़ का इख़्तियार अ़ता फ़रमाया है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि येह तमाम सिफ़तें हवाओं की हैं कि वोह ख़ाक भी उड़ाती हैं बादलों को भी उठाए फिरती हैं फिर उन्हें ले कर ब सहूलत चलती हैं, फिर **अल्लाह** तआ़ला के बिलाद (शहरों) में उस के हुक्म से बारिश को तक़्सीम करती हैं। क़सम का मक़्सूदे अस्ली उस चीज़ की अ़ज़मत बयान करना है जिस के साथ क़सम फ़रमाई गई क्यूं कि येह चीज़ें कमाले कुदरते इलाही पर दलालत करने वाली हैं, अरबाबे दानिश को मौक़अ़ दिया जाता है कि वोह उन में नज़र कर के बअ़्स व जज़ा पर इस्तिद्लाल करें कि जो क़ादिरे बरहक़ ऐसे उमूरे अ़जीबा पर कुदरत रखता है वोह अपनी पैदा की हुई चीज़ों को फ़ना करने के बा'द दोबारा हस्ती (ज़िन्दगी) अ़ता फ़रमाने पर बेशक क़ादिर है। **6 :** या'नी बअ़्स व जज़ा। **7 :** और हिसाब के बा'द नेकी बदी का बदला ज़रूर मिलना। **8 :** जिस को सितारों से मुज़य्यन फ़रमाया है कि ऐ अहले मक्का ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में और कुरआने पाक के बारे में **9 :** कभी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को साहिर कहते हो कभी शाइर कभी काहिन कभी मज्नून (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰى) इसी त़रह़ कुरआने करीम को कभी सेह़र बताते हो कभी शे'र कभी कहानत कभी अगलों की दास्तानें। **10 :** और जो मह़रूमे अज़ली है इस सआ़दत से मह़रूम रहता है और बहकाने वालों के बहकाए में आता है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने के कुफ़्फ़ार जब किसी को देखते कि ईमान लाने का इरादा करता है तो उस से नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहते कि उन के पास क्यूं जाता है वोह तो शाइर हैं साहिर हैं काज़िब हैं (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰى) और इसी त़रह़ कुरआने पाक को कहते हैं कि वोह शे'र है सेह़र है किज़्ब है (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰى) **11 :** या'नी नशए जहालत में आख़िरत को भूले हुए हैं। **12 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से तमस्ख़ुर और तक्ज़ीब के त़ौर पर कि **13 :** उन के जवाब में फ़रमाया जाता है : **14 :** और उन्हें अ़ज़ाब दिया जाएगा। **15 :** और दुन्या में तमस्ख़ुर से कहा करते थे कि वोह अ़ज़ाब जल्दी लाओ जिस का वा'दा देते हो। **16 :** या'नी अपने

www.dawateislami.net

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآىِٕلِ وَ

और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते[19] और उन के मालों में हक़ था मंगता और

الْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ وَفِی الْاَرْضِ اٰیٰتٌ لِّلْمُوْقِنِیْنَ ﴿۲۰﴾ وَفِیْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا

बे नसीब का[20] और ज़मीन में निशानियां हैं यक़ीन वालों को[21] और ख़ुद तुम में[22] तो क्या

تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِی السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَ

तुम्हें सूझता नहीं और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है[23] और जो तुम्हें वा'दा दिया जाता है[24] तो आस्मान और ज़मीन के

الْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ ع ۲۳/۱۸

रब की क़सम बेशक येह कुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास

ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ الْمُكْرَمِیْنَ ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ وقف لازم

इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर आई[25] जब वोह उस के पास आ कर बोले सलाम कहा

سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ فَرَاغَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِیْنٍ ﴿۲۶﴾

सलाम ना शनासा लोग हैं[26] फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया[27]

فَقَرَّبَهٗۤ اِلَیْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِیْفَةً ؕ قَالُوْا

फिर उसे उन के पास रखा[28] कहा क्या तुम खाते नहीं तो अपने जी में उन से डरने लगा[29] वोह बोले

لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِیْ صَرَّةٍ

डरिये नहीं[30] और उसे एक इल्म वाले लड़के की बिशारत दी इस पर उस की बीबी[31] चिल्लाती आई

रब की ने'मत में हैं बाग़ों के अन्दर जिन में लतीफ़ चश्मे जारी हैं। **17 :** दुन्या में **18 :** और ज़ियादा हिस्सा शब का नमाज़ में गुज़ारते। **19 :** या'नी रात तहज्जुद और शब बेदारी में गुज़ारते हैं और बहुत थोड़ी देर सोते हैं और शब का पिछला हिस्सा इस्तिग़्फ़ार में गुज़ारते हैं और इतने सो जाने को भी तक़्सीर समझते हैं **20 :** मंगता तो वोह जो अपनी हाजत के लिये लोगों से सुवाल करे और महरूम वोह कि हाजत मन्द हो और हयाअन (शरमिन्दगी के बाइस) सुवाल भी न करे। **21 :** जो **अल्लाह** तआला की वहदानिय्यत और उस की कुदरत व हिक्मत पर दलालत करती हैं। **22 :** तुम्हारी पैदाइश में और तुम्हारे तग़य्युरात में और तुम्हारे ज़ाहिरो बातिन में **अल्लाह** तआला की कुदरत के ऐसे बे शुमार अजाइबो ग़राइब हैं जिन से बन्दे को उस की शाने ख़ुदाई मा'लूम होती है। **23 :** कि उसी तरफ़ से बारिश कर के ज़मीन को पैदावार से मालामाल किया जाता है। **24 :** आख़िरत के सवाब व अ़ज़ाब का वोह सब आस्मान में मक्तूब है। **25 :** जो दस या बारह फ़िरिश्ते थे। **26 :** येह बात आप ने अपने दिल में फ़रमाई **27 :** नफ़ीस भुना हुवा **28 :** कि खाएं और येह मेज़बान के आदाब में से है कि मेहमान के सामने खाना पेश करे। जब उन फ़िरिश्तों ने न खाया तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने **29 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि आप के दिल में बात आई कि येह फ़िरिश्ते हैं और अ़ज़ाब के लिये भेजे गए हैं। **30 :** हम **अल्लाह** तआला के भेजे हुए हैं। **31 :** या'नी हज़रते सारह।

فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ

फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ[32] उन्हों ने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है

اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

और वोही हकीम दाना है

32 : जिस के कभी बच्चा नहीं हुवा और नव्वे या निनानवे साल की उम्र हो चुकी, मतलब येह था कि ऐसी उम्र और ऐसी हालत में बच्चा होना निहायत तअज्जुब की बात है।

www.dawateislami.net

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَیُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ

इब्राहीम ने फ़रमाया तो ऐ फ़िरिश्तो तुम किस काम से आए[33] बोले हम एक मुजरिम क़ौम की त़रफ़

مُّجْرِمِیْنَ ﴿۳۲﴾ لِنُرْسِلَ عَلَیْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِیْنٍ ﴿۳۳﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ

भेजे गए हैं[34] कि उन पर गारे के बनाए हुए पथ्थर छोड़ें जो तुम्हारे रब के पास ह़द से

رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِیْنَ ﴿۳۴﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِیْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳۵﴾ فَمَا

बढ़ने वालों के लिये निशान किये रखे हैं[35] तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिये तो

وَجَدْنَا فِیْهَا غَیْرَ بَیْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۳۶﴾ وَ تَرَكْنَا فِیْهَاۤ اٰیَةً لِّلَّذِیْنَ

हम ने वहां एक ही घर मुसल्मान पाया[36] और हम ने उस में[37] निशानी बाक़ी रखी

یَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ ﴿۳۷﴾ وَ فِیْ مُوْسٰۤى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ

उन के लिये जो दर्दनाक अ़ज़ाब से डरते हैं[38] और मूसा में[39] जब हम ने उसे रोशन सनद ले कर

بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۳۸﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَ قَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿۳۹﴾ فَاَخَذْنٰهُ

फ़िरऔ़न के पास भेजा[40] तो अपने लश्कर समेत फिर गया[41] और बोला जादूगर है या दीवाना तो हम ने उसे

وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِی الْیَمِّ وَ هُوَ مُلِیْمٌ ﴿۴۰﴾ وَ فِیْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا

और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में डाल दिया इस ह़ाल में कि वोह अपने आप को मलामत कर रहा था[42] और आ़द में[43] जब हम ने

عَلَیْهِمُ الرِّیْحَ الْعَقِیْمَ ﴿۴۱﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَیْءٍ اَتَتْ عَلَیْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ

उन पर ख़ुश्क आंधी भेजी[44] जिस चीज़ पर गुज़रती उसे गली हुई चीज़ की त़रह

كَالرَّمِیْمِ ﴿۴۲﴾ وَ فِیْ ثَمُوْدَ اِذْ قِیْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِیْنٍ ﴿۴۳﴾ فَعَتَوْا

कर छोड़ती[45] और समूद में[46] जब उन से फ़रमाया गया एक वक़्त तक बरत लो[47] तो उन्हों ने

33 : या'नी सिवाए इस बिशारत के तुम्हारा और क्या काम है ? 34 : या'नी क़ौमे लूत़ की त़रफ़ 35 : उन पथ्थरों पर निशान थे जिन से मा'लूम होता था कि येह दुन्या के पथ्थरों में से नहीं हैं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हर एक पथ्थर पर उस का नाम मक्तूब था जो उस से हलाक किया जाने वाला था। 36 : या'नी एक ही घर के लोग और वोह ह़ज़रते लूत़ عَلَیْهِ السَّلَام और आप की दोनों साह़िब ज़ादियां हैं। 37 : या'नी क़ौमे लूत़ के उस शहर में काफ़िरों को हलाक करने के बा'द 38 : ताकि वोह इ़ब्रत ह़ासिल करें और उन के जैसे अफ़्आ़ल से बाज़ रहें और वोह निशानी उन के उजड़े हुए दियार थे या वोह पथ्थर जिन से वोह हलाक किये गए या वोह काला बदबूदार पानी जो उस सर ज़मीन से निकला था। 39 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के वाक़िए में भी निशानी रखी 40 : रोशन सनद से मुराद ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात हैं जो आप ने फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों पर पेश फ़रमाए 41 : या'नी फ़िरऔ़न ने मअ़ अपनी जमाअ़त के ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर ईमान लाने से ए'राज़ किया 42 : कि क्यूं वोह ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर ईमान न लाया और क्यूं उन पर त़ा'न किये। 43 : या'नी क़ौमे आ़द के हलाक करने में भी क़ाबिले इ़ब्रत निशानियां हैं 44 : जिस में कुछ भी ख़ैरो बरकत न थी येह हलाक करने वाली हवा थी 45 : ख़्वाह वोह आदमी

www.dawateislami.net

عَنۡ اَمۡرِ رَبِّهِمۡ فَاَخَذَتۡهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمۡ يَنۡظُرُوۡنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسۡتَطَاعُوۡا

अपने रब के हुक्म से सरकशी की[48] तो उन की आंखों के सामने उन्हें कड़क ने आ लिया[49] तो वोह न खड़े

مِنۡ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوۡا مُنۡتَصِرِيۡنَ ﴿٤٥﴾ وَقَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ

हो सके[50] और न वोह बदला ले सकते थे और उन से पहले क़ौमे नूह़ को हलाक फ़रमाया बेशक

كَانُوۡا قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ ﴿٤٦﴾ وَالسَّمَآءَ بَنَيۡنٰهَا بِاَيۡٮدٍ وَّاِنَّا لَمُوۡسِعُوۡنَ ﴿٤٧﴾

वोह फ़ासिक़ लोग थे और आस्मान को हम ने हाथों से बनाया[51] और बेशक हम वुस्अ़त देने वाले हैं[52]

وَالۡاَرۡضَ فَرَشۡنٰهَا فَنِعۡمَ الۡمٰهِدُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ خَلَقۡنَا

और ज़मीन को हम ने फ़र्श किया तो हम क्या ही अच्छे बिछाने वाले और हम ने हर चीज़ के दो

زَوۡجَيۡنِ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوۡۤا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ

जोड़ बनाए[53] कि तुम ध्यान करो[54] तो अल्लाह की त़रफ़ भागो[55] बेशक मैं उस की त़रफ़ से तुम्हारे लिये सरीह़

مُّبِيۡنٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجۡعَلُوۡا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّىۡ لَكُمۡ مِّنۡهُ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿٥١﴾

डर सुनाने वाला हूं और अल्लाह के साथ और मा'बूद न ठहराओ बेशक मैं उस की त़रफ़ से तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं

كَذٰلِكَ مَاۤ اَتَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا قَالُوۡا سَاحِرٌ اَوۡ

यूंही[56] जब इन से अगलों के पास कोई रसूल तशरीफ़ लाया तो येही बोले कि जादूगर है या

مَجۡنُوۡنٌ ﴿٥٢﴾ اَتَوَاصَوۡا بِهٖ ۚ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٌ طَاغُوۡنَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنۡهُمۡ فَمَاۤ

दीवाना क्या आपस में एक दूसरे को येह बात कह मरे हैं बल्कि वोह सरकश लोग हैं[57] तो ऐ मह़बूब तुम उन से मुंह फेर लो तो

हों या जानवर या और अम्वाल जिस चीज़ को छू गई उस को हलाक कर के ऐसा कर दिया गोया कि वोह मुद्दतों की हलाक शुदा गली हुई है। **46 :** या'नी क़ौमे समूद के हलाक में भी निशानियां हैं **47 :** या'नी वक़्ते मौत तक दुन्या में ज़िन्दगानी कर लो येही ज़माना तुम्हारी मोहलत का है। **48 :** और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيۡهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और नाक़ा की कूंचें काटीं **49 :** और होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक कर दिये गए। **50 :** वक़्ते नुज़ूले अ़ज़ाब न भाग सके। **51 :** अपने दस्ते क़ुदरत से। **52 :** उस को इतनी कि ज़मीन मअ़ अपनी फ़ज़ा के इस के अन्दर इस त़रह़ आ जाए जैसे कि एक मैदाने वसीअ़ में गेंद पड़ी हो या येह मा'ना हैं कि हम अपनी ख़ल्क़ पर रिज़्क़ वसीअ़ करने वाले हैं। **53 :** मिस्ल आस्मान और ज़मीन और सूरज और चांद और रात और दिन और ख़ुश्की व तरी और गरमी व सरदी और जिन्न व इन्स और रोशनी व तारीकी और ईमान व कुफ़्र और सआ़दत व शक़ावत और ह़क़ व बात़िल और नर व मादा के **54 :** और समझो कि इन तमाम जोड़ों का पैदा करने वाला फ़र्दे वाहिद है, न उस की नज़ीर है न शरीक न ज़िद न निद, वोही मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत है। **55 :** उस के मा सिवा को छोड़ कर उस की इ़बादत इख़्तियार करो। **56 :** जैसे कि इन कुफ़्फ़ार ने आप की तक्ज़ीब की और आप को साह़िर व मजनून कहा ऐसे ही **57 :** या'नी पहले कुफ़्फ़ार ने अपने पिछलों को येह वसिय्यत तो नहीं की, कि तुम अम्बिया की तक्ज़ीब करना और उन की शान में इस त़रह़ की बातें बनाना, लेकिन चूंकि सरकशी और तुग़यान की इ़ल्लत दोनों में है इस लिये गुमराही में एक दूसरे के मुवाफ़िक़ रहे।

اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿۵۴﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَا

तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं[58] और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है और

خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ مَاۤ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ

मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें[59] मैं उन से कुछ रिज़्क़ नहीं मांगता[60]

وَّمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿۵۸﴾

और न येह चाहता हूं कि वोह मुझे खाना दें[61] बेशक **अल्लाह** ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला कुव्वत वाला कुदरत वाला है[62]

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۵۹﴾

तो बेशक उन ज़ालिमों के लिये[63] अज़ाब की एक बारी है[64] जैसे उन के साथ वालों के लिये एक बारी थी[65] तो मुझ से जल्दी न करें[66]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع

तो काफ़िरों की ख़राबी है उन के उस दिन से जिस का वा'दा दिये जाते हैं[67]

اٰيَاتُهَا ۴۹ ﴿۵۲﴾ سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ ﴿۷۶﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۲

सूरए तूर मक्किय्या है, इस में उन्चास आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالطُّوْرِ ﴿۱﴾ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿۲﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿۳﴾ وَّالْبَيْتِ

तूर की क़सम[2] और उस निविश्ते की[3] जो खुले दफ़्तर में लिखा है और बैते

58 : क्यूं कि आप रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा चुके और दा'वत व इर्शाद में जहदे बलीग़ सर्फ़ कर चुके और आप ने अपनी सई में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा। **शाने नुज़ूल :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ग़मगीन हुए और आप के अस्हाब को बहुत रन्ज हुवा कि जब रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को ए'राज़ करने का हुक्म हो गया तो अब वह्य क्यूं आएगी और जब नबी ने उम्मत को तब्लीग़ ब तरीक़े अतम फ़रमा दी और उम्मत सरकशी से बाज़ न आई और रसूल को उन से ए'राज़ का हुक्म मिल गया तो वक़्त आ गया कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल हो, इस पर वोह आयते करीमा नाज़िल हुई जो इस आयत के बा'द है और इस में तस्कीन दी गई कि सिल्सिलए वह्य मुन्तक़तअ़ नहीं हुवा है, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नसीहत सआ़दत मन्दों के लिये जारी रहेगी, चुनान्चे इर्शाद हुवा **59 :** और मेरी मा'रिफ़त हो। **60 :** कि मेरे बन्दों को रोज़ी दें या सब की नहीं तो अपनी ही रोज़ी ख़ुद पैदा करें क्यूं कि रज़्ज़ाक़ मैं हूं और सब की रोज़ी का मैं ही कफ़ील हूं। **61 :** मेरी ख़ल्क़ के लिये। **62 :** सब को वोही देता वोही पालता है। **63 :** जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब कर के अपनी जानों पर ज़ुल्म किया **64 :** हिस्सा है नसीब है **65 :** या'नी उममे साबिक़ा (गुज़श्ता उम्मतों) के कुफ़्फ़ार के लिये जो अम्बिया की तक्ज़ीब में उन के साथी थे उन का अ़ज़ाब व हलाक में हिस्सा था **66 :** अ़ज़ाब नाज़िल करने की। **67 :** और वोह रोज़े क़ियामत है। **1 :** सूरए तूर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, उन्चास 49 आयतें, तीन सो बारह 312 कलिमे, एक हज़ार पांच सो 1500 हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस पहाड़ की क़सम जिस पर **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को शरफ़े कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया। **3 :** इस निविश्ते से मुराद या तौरैत है या कुरआन या लौहे महफ़ूज़ या आ'माल नवीस फ़िरिश्तों के दफ़्तर।

الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ﴿٦﴾ اِنَّ عَذَابَ

मा'मूर[4] और बुलन्द छत[5] और सुलगाए हुए समुन्दर की[6] बेशक तेरे रब

رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَّ

का अ़ज़ाब ज़रूर होना है[7] उसे कोई टालने वाला नहीं जिस दिन आस्मान हिलना सा हिलना हिलेंगे[8] और

تَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾ الَّذِيْنَ هُمْ

पहाड़ चलना सा चलना चलेंगे[9] तो उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है[10] वोह जो

فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هٰذِهِ

वक़्फ़ लाज़िम

मश्ग़ले में[11] खेल रहे हैं जिस दिन जहन्नम की त़रफ़ धक्का दे कर धकेले जाएंगे[12] येह

النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا

है वोह आग जिसे तुम झुटलाते थे[13] तो क्या येह जादू है या तुम्हें

تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا

सूझता नहीं[14] इस में जाओ अब चाहे सब्र करो या न करो सब तुम पर एक सा है[15]

تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾

तुम्हें उसी का बदला जो तुम करते थे[16] बेशक परहेज़ गार बाग़ों और चैन में हैं

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَ

अपने रब की देन पर शाद शाद[17] और उन्हें उन के रब ने आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[18] खाओ और

4 : बैतुल मा'मूर सातवें आस्मान में अ़र्श के सामने का'बा शरीफ़ के बिल्कुल मुक़ाबिल है, येह आस्मान वालों का क़िब्ला है, हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते इस में त़वाफ़ व नमाज़ के लिये ह़ाज़िर होते हैं फिर कभी उन्हें लौटने का मौक़अ़ नहीं मिलता, हर रोज़ नए सत्तर हज़ार ह़ाज़िर होते हैं। ह़दीसे मे'राज में ब सिह़्ह़त साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सातवें आस्मान में बैतुल मा'मूर को मुलाह़ज़ा फ़रमाया। **5 :** इस से मुराद आस्मान है जो ज़मीन के लिये ब मन्ज़िला छत के है या अ़र्श जो जन्नत की छत है। (قرطبی عن ابن عباس) **6 :** मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत तमाम समुन्दरों को आग कर देगा जिस से जहन्नम की आग में और भी ज़ियादती हो जाएगी। (خازن) **7 :** जिस का कुफ़्फ़ार को वा'दा दिया गया है **8 :** चक्की की त़रह़ घूमेंगे और इस त़रह़ ह़रकत में आएंगे कि उन के अज्ज़ा मुख़्तलिफ़ व मुन्तशिर हो जाएं। **9 :** जैसे कि ग़ुबार हवा में उड़ता है, येह दिन क़ियामत का दिन होगा। **10 :** जो रसूलों को झुटलाते थे। **11 :** कुफ़्र व बात़िल के **12 :** और जहन्नम के ख़ाज़िन काफ़िरों के हाथ गरदनों से और पाउं पेशानियों से मिला कर बांधेंगे और उन्हें मुंह के बल जहन्नम में धकेल देंगे और उन से कहा जाएगा **13 :** दुन्या में **14 :** येह उन से इस लिये कहा जाएगा कि वोह दुन्या में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ सेह़र की निस्बत करते थे और कहते थे कि हमारी नज़र बन्दी कर दी है। **15 :** न कहीं भाग सकते हो न अ़ज़ाब से बच सकते हो और येह अ़ज़ाब **16 :** दुन्या में कुफ़्र व तक्ज़ीब **17 :** उस के अ़त़ा व ने'मत व ख़ैरो करामत पर। **18 :** और उन से कहा जाएगा।

اشْرَبُوْا وَ هَنِیْٓــٴًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۹﴾ مُتَّكِـٕیْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍۚ وَ

पियो ख़ुश गवारी से सिला अपने आ'माल का[19] तख़्तों पर तक्या लगाए जो क़ितार लगा कर बिछे हैं और

زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِیْنٍ ﴿۲۰﴾ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّیَّتُهُمْ بِاِیْمَانٍ

हम ने उन्हें बियाह दिया बड़ी आंखों वाली हूरों से और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की

اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ مَاۤ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَیْءٍؕ كُلُّ امْرِئٍۭ

हम ने उन की औलाद उन से मिला दी[20] और उन के अ़मल में उन्हें कुछ कमी न दी[21] सब आदमी अपने

بِمَا كَسَبَ رَهِیْنٌ ﴿۲۱﴾ وَ اَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّ لَحْمٍ مِّمَّا یَشْتَهُوْنَ ﴿۲۲﴾

किये में गिरिफ़्तार हैं[22] और हम ने उन की मदद फ़रमाई मेवे और गोश्त से जो चाहें[23]

یَتَنَازَعُوْنَ فِیْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِیْهَا وَ لَا تَاْثِیْمٌ ﴿۲۳﴾ وَ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ

एक दूसरे से लेते हैं वोह जाम जिस में न बेहूदगी और न गुनहगारी[24] और उन के ख़िदमत गार

غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۲۴﴾ وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ

लड़के उन के गिर्द फिरेंगे[25] गोया वोह मोती हैं छुपा कर रखे गए[26] और उन में एक ने दूसरे की त़रफ़ मुंह

یَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِیْۤ اَهْلِنَا مُشْفِقِیْنَ ﴿۲۶﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ

किया पूछते हुए[27] * बोले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे[28] तो **अल्लाह** ने हम पर

عَلَیْنَا وَ وَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُؕ اِنَّهٗ هُوَ

एह़सान किया[29] और हमें लू के अ़ज़ाब से बचा लिया[30] बेशक हम ने अपनी पहली ज़िन्दगी में[31] उस की इबादत की थी बेशक वोही

19 : जो तुम ने दुन्या में किये कि ईमान लाए और ख़ुदा और रसूल की त़ाअ़त इख़्तियार की। **20 :** जन्नत में, अगर्चे बाप दादा के दरजे बुलन्द हों तो भी उन की ख़ुशी के लिये उन की औलाद उन के साथ मिला दी जाएगी और **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उस औलाद को भी वोह दरजे अ़त़ा फ़रमाएगा। **21 :** उन्हें उन के आ'माल का पूरा सवाब दिया और औलाद के दरजे अपने फ़ज़्लो करम से बुलन्द किये। **22 :** या'नी हर काफ़िर अपने कुफ़्री अ़मल में दोज़ख़ के अन्दर गिरिफ़्तार है। (خازن) **23 :** या'नी अहले जन्नत को हम ने अपने एह़सान से दम ब दम मज़ीद ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं। **24 :** जैसा कि दुन्या की शराब में क़िस्म क़िस्म के मफ़ासिद थे क्यूं कि शराबे जन्नत के पीने से न अ़क़्ल ज़ाइल होती है न ख़स्लतें ख़राब होती हैं न पीने वाला बेहूदा बकता है न गुनहगार होता है। **25 :** ख़िदमत के लिये और उन के ह़ुस्न व सफ़ा व पाकीज़गी का येह आ़लम है **26 :** जिन्हें कोई हाथ ही न लगा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने फ़रमाया कि किसी जन्नती के पास ख़िदमत में दौड़ने वाले ग़ुलाम हज़ार से कम न होंगे और हर ग़ुलाम जुदा जुदा ख़िदमत पर मुक़र्रर होगा। **27 :** या'नी जन्नती जन्नत में एक दूसरे से दरयाफ़्त करेंगे कि दुन्या में किस ह़ाल में थे और क्या अ़मल करते थे और येह दरयाफ़्त करना ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ के लिये होगा। **28 : अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से और इस अन्देशे से कि नफ़्सो शैत़ान ख़लले ईमान का बाइस न हों और नेकियों के रोके जाने और बदियों पर गिरिफ़्त किये जाने का भी अन्देशा था। **29 :** रह़मत और मग़्फ़िरत फ़रमा कर। **30 :** या'नी आतशे जहन्नम के अ़ज़ाब से जो जिस्मों में दाख़िल होने की वज्ह से समूम या'नी लू के नाम से मौसूम की गई। **31 :** या'नी दुन्या में इख़्लास के साथ सिर्फ़।

www.dawateislami.net

ع ٤٨/٢

الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾

एह्सान फ़रमाने वाला मेहरबान है तो ऐ महबूब तुम नसीहत फ़रमाओ[32] कि तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हो न मज्नून

اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ

या कहते हैं[33] येह शाइर हैं हमें इन पर हवादिसे ज़माना का इन्तिज़ार है[34] तुम फ़रमाओ इन्तिज़ार किये जाओ[35]

مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ

मैं भी तुम्हारे इन्तिज़ार में हूं[36] क्या उन की अ़क़्लें उन्हें येही बताती हैं[37] या वोह सरकश

طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا

लोग हैं[38] या कहते हैं उन्हों ने[39] येह कुरआन बना लिया बल्कि वोह ईमान नहीं रखते[40] तो इस जैसी

بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ

एक बात तो ले आएं[41] अगर सच्चे हैं क्या वोह किसी अस्ल से न बनाए गए[42] या

هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾

वोही बनाने वाले हैं[43] या आस्मान और ज़मीन उन्हों ने पैदा किये[44] बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं[45]

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ

या उन के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं[46] या वोह कड़ोड़े (हाकिमे आ'ला) हैं[47] या उन के पास कोई ज़ीना है[48]

32 : कुफ़्फ़ारे मक्का को और उन के काहिन और मज्नूं कहने की वज्ह से आप नसीहत से बाज़ न रहें, इस लिये **33 :** येह कुफ़्फ़ारे मक्का आप की शान में **34 :** कि जैसे इन से पहले शाइर मर गए और उन के जथ्थे टूट गए येही हाल इन का होना है (مَعَاذَاللّٰہ) और वोह कुफ़्फ़ार येह भी कहते थे कि इन के वालिद की मौत जवानी में हुई है इन की भी ऐसी ही होगी **अल्लाह** तआ़ला अपने हबीब से फ़रमाता है **35 :** मेरी मौत का **36 :** कि तुम पर अ़ज़ाबे इलाही आए, चुनान्चे येह हुवा और वोह कुफ़्फ़ार बद्र में क़त्ल व क़ैद के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये गए। **37 :** जो वोह हुज़ूर की शान में कहते हैं शाइर, साहिर, काहिन, मज्नून। ऐसा कहना बिल्कुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल है और तुर्रा येह कि मज्नून भी कहते जाएं और शाइर, साहिर, काहिन भी और फिर अपने आ़क़िल होने का दा'वा **38 :** कि इनाद में अन्धे हो रहे हैं और कुफ़्रो तुग़यान में हद से गुज़र गए। **39 :** या'नी सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने दिल से **40 :** और दुश्मनी व ख़ुब्से नफ़्स से ऐसे ता'न करते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन पर हुज्जत क़ाइम फ़रमाता है कि अगर उन के ख़याल में कुरआन जैसा कलाम कोई इन्सान बना सकता है **41 :** जो हुस्नो ख़ूबी और फ़साहतो बलाग़त में इस के मिस्ल हो **42 :** या'नी क्या वोह मां बाप से पैदा न हुए, जमादे बे अ़क़्ल हैं जिन पर हुज्जत क़ाइम न की जाएगी ? ऐसा नहीं या येह मा'ना हैं कि क्या वोह नुत्फ़े से पैदा नहीं हुए और क्या उन्हें ख़ुदा ने नहीं बनाया ? **43 :** कि उन्हों ने अपने आप को ख़ुद ही बना लिया हो, येह भी मुहाल है तो ला मुहाला उन्हें इक़रार करना पड़ेगा कि उन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा किया, फिर क्या सबब है कि वोह उस की इबादत नहीं करते और बुतों को पूजते हैं। **44 :** येह भी नहीं और **अल्लाह** तआ़ला के सिवा आस्मान व ज़मीन पैदा करने की कोई क़ुदरत नहीं रखता तो क्यूं उस की इबादत नहीं करते। **45 :** **अल्लाह** तआ़ला की तौहीद और उस की क़ुदरत व ख़ालिक़िय्यत का, अगर इस का यक़ीन होता तो ज़रूर उस के नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ईमान लाते। **46 :** नुबुव्वत और रिज़्क़ वग़ैरा के, कि उन्हें इख़्तियार हो जहां चाहें ख़र्च करें और जिसे चाहें दें। **47 :** ख़ुद मुख़्तार जो चाहें करें कोई पूछने वाला न हो। **48 :** आस्मान की त़रफ़ लगा हुवा।

يَسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ؕ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ

जिस में चढ़ कर सुन लेते हैं[49] तो उन का सुनने वाला कोई रोशन सनद लाए क्या उस को बेटियां

وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ؕ ﴿٣٩﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ؕ ﴿٤٠﴾ اَمْ

और तुम को बेटे[50] या तुम उन से[51] कुछ उजरत मांगते हो तो वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं[52] या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ؕ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ؕ فَالَّذِيْنَ

उन के पास ग़ैब हैं जिस से वोह हुक्म लगाते हैं[53] या किसी दाउं (फ़रेब) के इरादे में हैं[54] तो

كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ؕ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

काफ़िरों ही पर दाउं (फ़रेब) पड़ना है[55] या **अल्लाह** के सिवा उन का कोई और ख़ुदा है[56] **अल्लाह** को पाकी उन के

يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ

शिर्क से और अगर आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता देखें तो कहेंगे तह ब तह

مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ۙ ﴿٤٥﴾

बादल है[57] तो तुम उन्हें छोड़ दो यहां तक कि वोह अपने उस दिन से मिलें जिस में बेहोश होंगे[58]

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ؕ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ

जिस दिन उन का दाउं (फ़रेब) कुछ काम न देगा और न उन की मदद हो[59] और बेशक

ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ

ज़ालिमों के लिये उस से पहले एक अ़ज़ाब है[60] मगर उन में अक्सर को ख़बर नहीं[61] और ऐ महबूब तुम अपने रब के

49 : और उन्हें मा'लूम हो जाता है कि कौन पहले हलाक होगा और किस की फ़त्ह होगी अगर उन्हें इस का दा'वा हो **50 :** येह उन की सफ़ाहत और बे वुक़ूफ़ी का बयान है कि अपने लिये तो बेटे पसन्द करते हैं और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ बेटियों की निस्बत करते हैं जिन को बुरा जानते हैं। **51 :** दीन की ता'लीम पर **52 :** और तावान की ज़ेरबारी के बाइस इस्लाम नहीं लाते, येह भी तो नहीं है फिर इस्लाम लाने में उन्हें क्या उ़ज़्र है ? **53 :** कि मरने के बा'द न उठेंगे और उठे भी तो अ़ज़ाब न किये जाएंगे, येह बात भी नहीं। **54 :** दारुन्नद्वा में जम्अ़ हो कर **अल्लाह** तआ़ला के नबी हादिये बरहक़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रर व क़त्ल के मश्वरे करते हैं **55 :** उन के मक्रो कैद का वबाल उन्हीं पर पड़ेगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन के मक्र से महफ़ूज़ रखा और उन्हें बद्र में हलाक किया। **56 :** जो उन्हें रोज़ी दे और अ़ज़ाबे इलाही से बचा सके। **57 :** येह जवाब है कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का जो कहते थे कि हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर अ़ज़ाब कीजिये **अल्लाह** तआ़ला इसी के जवाब में फ़रमाता है कि इन का कुफ़्रो इनाद इस ह़द पर पहुंच गया है कि अगर इन पर ऐसा ही किया जाए कि आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दिया जाए और आस्मान से इसे गिरते हुए देखें तो भी कुफ़्र से बाज़ न आएं और बराहे इनाद (दुश्मनी की वज्ह) येही कहें कि येह तो अब्र है इस से हम सैराब होंगे। **58 :** मुराद इस से नफ़्ख़ए ऊला का दिन है। **59 :** ग़रज़ किसी त़रह अ़ज़ाबे आख़िरत से बच न सकेंगे। **60 :** उन के कुफ़्र के सबब अ़ज़ाबे आख़िरत से पहले और वोह अ़ज़ाब या तो बद्र में क़त्ल होना है या भूक व क़ह़त़ की हफ़्त सालह मुसीबत या अ़ज़ाबे क़ब्र **61 :** कि वोह अ़ज़ाब में मुब्तला होने वाले हैं।

رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۴۸﴾ وَمِنَ

हुक्म पर ठहरे रहो[62] कि बेशक तुम हमारी निगहदाश्त में हो[63] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो जब तुम खड़े हो[64] और कुछ

الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿۴۹﴾ ع

रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते[65]

اٰياتها ٦٢ ﴿٥٣ سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ ٢٣﴾ ركوعاتها ٣

सूरए नज्म मक्किय्या है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿۱﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿۲﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

इस प्यारे चमकते तारे मुहम्मद की क़सम जब येह मे'राज से उतरे[2] तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले[3] और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से

الْهَوٰى ﴿۳﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿۵﴾

नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह्य जो उन्हें की जाती है[4] उन्हें[5] सिखाया[6] सख़्त क़ुव्वतों वाले ताक़त वर ने[7]

62 : और जो मोहलत उन्हें दी गई है इस पर दिलतंग न हो 63 : तुम्हें वोह कुछ ज़रर नहीं पहुंचा सकते। 64 : नमाज़ के लिये इस से तक्बीरे ऊला के बा'द "سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ" पढ़ना मुराद है या येह मा'ना हैं कि जब सो कर उठो तो **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द व तस्बीह़ किया करो या येह मा'ना हैं कि हर मजलिस से उठते वक़्त ह़म्द व तस्बीह़ बजा लाया करो। 65 : या'नी तारों के छुपने के बा'द, मुराद येह है कि इन अवक़ात में **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व तह़मीद करो, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि तस्बीह़ से मुराद नमाज़ है। 1 : सूरतुन्नज्म मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, बासठ 62 आयतें, तीन सो साठ 360 कलिमे, एक हज़ार चार सो पांच 1405 ह़र्फ़ हैं, येह वोह पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुश्रिकीन के रू बरू पढ़ी। 2 : नज्म की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के बहुत से क़ौल हैं बा'ज़ ने सुरय्या मुराद लिया है अगर्चे सुरय्या कई तारे हैं लेकिन नज्म का इत़्लाक़ इन पर अ़रब की आ़दत है, बा'ज़ ने नज्म से जिन्से नुजूम मुराद ली है, बा'ज़ ने वोह नबातात जो साक़ नहीं रखते ज़मीन पर फैलते हैं, बा'ज़ ने नज्म से क़ुरआन मुराद लिया है लेकिन सब से लज़ीज़ तफ़्सीर वोह है जो ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि नज्म से मुराद है ज़ाते गिरामी हादिये बरह़क़ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की। (خازن) 3 : صَاحِبُكُمْ से मुराद सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं, मा'ना येह हैं कि ह़ुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने कभी त़रीक़े ह़क़ व हिदायत से उ़दूल न किया हमेशा अपने रब की तौह़ीद व इ़बादत में रहे, आप के दामने इ़स्मत पर कभी किसी अम्रे मक्रूह की गर्द न आई और बे राह न चलने से येह मुराद है कि ह़ुज़ूर हमेशा रुश्दो हिदायत की आ'ला मन्ज़िल पर मुतमक्किन रहे, ए'तिक़ादे फ़ासिद का शाएबा भी कभी आप के ह़ाशियए बिसात़ तक न पहुंच सका। 4 : येह जुम्लए ऊला की दलील है कि ह़ुज़ूर का बहक्ना और बे राह चलना मुम्किन व मुतसव्वर ही नहीं क्यूं कि आप अपनी ख़्वाहिश से कोई बात फ़रमाते ही नहीं जो फ़रमाते हैं वह़्ये इलाही होती है और इस में ह़ुज़ूर के ख़ुल्क़े अ़ज़ीम और आप की आ'ला मन्ज़िलत का बयान है, नफ़्स का सब से आ'ला मर्तबा येह है कि वोह अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे। (كبير) और इस में येह भी इशारा है कि नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला के ज़ात व सिफ़ात व अफ़्आ़ल में फ़ना के उस आ'ला मक़ाम पर पहुंचे कि अपना कुछ बाक़ी न रहा तजल्लिये रब्बानी का येह इस्तीलाए ताम हुवा कि जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह़्ये इलाही होती है। (روح البيان) 5 : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को 6 : जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाया और इस ता'लीम से मुराद क़ल्बे मुबारक तक पहुंचा देना है। 7 : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन इस त़रफ़ गए हैं कि सख़्त क़ुव्वतों वाले त़ाक़त वर से मुराद ह़ज़रते जिब्रील हैं और सिखाने से मुराद ब ता'लीमे इलाही सिखाना या'नी वह़्ये इलाही का पहुंचाना है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि "شَدِيْدُ الْقُوٰى ذُوْمِرَّةٍ" से मुराद **अल्लाह** तआ़ला है उस ने अपनी ज़ात को इस वस्फ़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया, मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने बे वासित़ा ता'लीम फ़रमाई। (تفسير روح البيان)

www.dawateislami.net

ذُوْ مِرَّةٍؕ فَاسْتَوٰىۙ ﴿۶﴾ وَ هُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰىؕ ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰىۙ ﴿۸﴾

फिर उस जल्वे ने क़स्द फ़रमाया[8] और वोह आस्माने बरीं के सब से बुलन्द कनारे पर था[9] फिर वोह जल्वा नज़्दीक हुवा[10] फिर ख़ूब उतर आया[11]

فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰىۚ ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰىؕ ﴿۱۰﴾ مَا

तो उस जल्वे और उस महबूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम[12] अब वह्य फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह्य फ़रमाई[13] दिल

كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا یَرٰى ﴿۱۲﴾ وَ لَقَدْ رَاٰهُ

ने झूट न कहा जो देखा[14] तो क्या तुम उन से उन के देखे हुए पर झगड़ते हो[15] और उन्हों ने तो वोह

8 : आम मुफ़स्सिरीन ने "فَاسْتَوٰى" का फ़ाइल भी हज़रते जिब्रील को क़रार दिया है और येह मा'ना लिये हैं कि हज़रत जिब्रीले अमीन अपनी अस्ली सूरत पर क़ाइम हुए और इस का सबब येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें उन की अस्ली सूरत में मुलाहज़ा फ़रमाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई थी तो हज़रते जिब्रील जानिबे मशरिक़ में हुज़ूर के सामने नुमूदार हुए और उन के वुजूद से मशरिक़ से मग़रिब तक भर गया, येह भी कहा गया है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सिवा किसी इन्सान ने हज़रते जिब्रील को उन की अस्ली सूरत में नहीं देखा। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते जिब्रील को देखना तो सहीह है और हदीस से साबित है लेकिन येह हदीस में नहीं है कि इस आयत में हज़रते जिब्रील को देखना मुराद है बल्कि ज़ाहिर तफ़्सीर में येह है कि मुराद "فَاسْتَوٰى" से सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का मकाने आली और मन्ज़िलते रफ़ीआ में इस्तिवा फ़रमाना है। (تفسیر کبیر) तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उफ़ुक़े आ'ला या'नी आस्मानों के ऊपर इस्तिवा फ़रमाया और हज़रते जिब्रील सिद्रतुल मुन्तहा पर रुक गए आगे न बढ़ सके उन्हों ने कहा कि अगर मैं ज़रा भी आगे बढ़ूं तो तजल्लियाते जलाल मुझे जला डालें और हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आगे बढ़ गए और मुस्तवाए अर्श से भी गुज़र गए और हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّهٗ का तरजमा इस तरफ़ मुशीर है कि इस्तिवा की अस्नाद हज़रते रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ है और येही क़ौल हसन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का है। **9 :** यहां भी आम मुफ़स्सिरीन इसी तरफ़ गए हैं कि येह हाल जिब्रीले अमीन का है लेकिन इमाम राज़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَه फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर येह है कि येह हाल सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का है कि आप उफ़ुक़े आ'ला या'नी फ़ौक़े समावात थे जिस तरह कहने वाला कहता है कि मैं ने छत पर चांद देखा पहाड़ पर चांद देखा इस के येह मा'ना नहीं होते कि चांद छत पर या पहाड़ पर था बल्कि येही मा'ना होते हैं कि देखने वाला छत या पहाड़ पर था। इसी तरह यहां मा'ना हैं कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़ौक़े समावात पर पहुंचे तो तजल्लिये रब्बानी आप की तरफ़ मुतवज्जेह हुई। **10 :** इस के मा'ना में भी मुफ़स्सिरीन के कई क़ौल हैं **एक** क़ौल येह है कि हज़रते जिब्रील का सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से क़रीब होना मुराद है कि वोह अपनी सूरते अस्ली दिखा देने के बा'द हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ुर्ब में हाज़िर हुए **दूसरे** मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हज़रते हक़ के क़ुर्ब से मुशर्रफ़ हुए **तीसरे** येह कि **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अपने क़ुर्ब की ने'मत से नवाज़ा और येही सहीह तर है। **11 :** इस में भी चन्द क़ौल हैं **एक** तो येह कि नज़्दीक होने से हुज़ूर का उरूज व वुसूल मुराद है और उतर आने से नुज़ूल व रुजूअ़ तो हासिले मा'ना येह है कि हक़ तआला के क़ुर्ब में बारयाब हुए फिर विसाल की ने'मतों से फ़ैज़याब हो कर ख़ल्क़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए **दूसरा** क़ौल येह है कि हज़रते रब्बुल इज़्ज़त अपने लुत्फ़ो रहमत के साथ अपने हबीब से क़रीब हुवा और उस क़ुर्ब में ज़ियादती फ़रमाई, **तीसरा** क़ौल येह है कि सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुक़र्रबे दरगाहे रबूबिय्यत हो कर सज्दए ताअ़त अदा किया। (روح البیان) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि क़रीब हुवा जब्बार रब्बुल इज़्ज़त....الخ (خازن) **12 :** येह इशारा है ताकीदे क़ुर्ब की तरफ़ कि क़ुर्ब अपने कमाल को पहुंचा और बा अदब अहिब्बा में जो नज़्दीकी मुतसव्वर हो सकती है वोह अपनी ग़ायत को पहुंची। **13 :** अक्सर उलमाए मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस के मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआला ने अपने बन्दए ख़ास हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को वह्य फ़रमाई। (جمل) हज़रत जा'फ़रे सादिक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने अपने बन्दे को वह्य फ़रमाई जो वह्य फ़रमाई येह वह्य बे वासिता थी कि **अल्लाह** तआला और उस के हबीब के दरमियान कोई वासिता न था और येह ख़ुदा और रसूल के दरमियान के असरार हैं जिन पर उन के सिवा किसी को इत्तिलाअ़ नहीं। बक़्ली ने कहा कि **अल्लाह** तआला ने इस राज़ को तमाम ख़ल्क़ से मख़्फ़ी रखा और न बयान फ़रमाया कि अपने हबीब को क्या वह्य फ़रमाई और मुहिब व महबूब के दरमियान ऐसे राज़ होते हैं जिन को उन के सिवा कोई नहीं जानता। (روح البیان) उलमा ने येह भी बयान किया है कि उस शब में जो आप को वह्य फ़रमाई गई वोह कई क़िस्म के उलूम थे **एक** तो इल्मे शराएअ़ व अहकाम जिन की सब को तब्लीग़ की जाती है **दूसरे** मआरिफ़े इलाहिय्यह जो ख़वास को बताए जाते हैं **तीसरे** हक़ाइक़ व नताइज उलूमे ज़ौक़िय्या जो सिर्फ़ अख़स्सुल ख़वास को तल्क़ीन किये जाते हैं और **एक** क़िस्म वोह असरार जो **अल्लाह** तआला और उस के रसूल के साथ ख़ास हैं कोई उन का तहम्मुल नहीं कर सकता। (روح البیان) **14 :** आंख ने या'नी सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक ने उस की तस्दीक़ की जो चश्मे मुबारक ने देखा मा'ना येह हैं कि आंख से देखा दिल से पहचाना और इस

نَزْلَةً اُخْرٰی ۙ﴿۱۳﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰی ﴿۱۴﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰی ؕ﴿۱۵﴾

जल्वा दो बार देखा[16] सिद्‌रतुल मुन्तहा के पास[17] उस के पास जन्नतुल मावा है

اِذْ یَغْشَی السِّدْرَةَ مَا یَغْشٰی ۙ﴿۱۶﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی ﴿۱۷﴾ لَقَدْ رَاٰی

जब सिदरा पर छा रहा था जो छा रहा था[18] आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी[19] बेशक अपने रब

مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰی ﴿۱۸﴾ اَفَرَءَیْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰی ۙ﴿۱۹﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ

की बहुत बड़ी निशानियां देखीं[20] तो क्या तुम ने देखा लात और उ़ज़्ज़ा और उस तीसरी

الْاُخْرٰی ﴿۲۰﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰی ﴿۲۱﴾ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِیْزٰی ﴿۲۲﴾

मनात को[21] क्या तुम को बेटा और उस को बेटी[22] जब तो येह सख़्त भोंडी (बुरी) तक़्सीम है[23]

रूयत व मा'रिफ़त में शक व तरदुद ने राह न पाई, अब येह बात कि क्या देखा बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल येह है कि ह़ज़रते जिब्रील को देखा लेकिन मज़्हबे सह़ीह़ येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने रब तबारक व तआ़ला को देखा और येह देखना किस त़रह़ था चश्मे सर से या चश्मे दिल से इस में मुफ़स्सिरीन के दोनों क़ौल पाए जाते हैं, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ौल है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ को अपने क़ल्बे मुबारक से दोबारा देखा। (رواہ مسلم) एक जमाअ़त इस त़रफ़ गई है कि आप ने रब عَزَّوَجَلَّ को ह़क़ीक़तन चश्मे मुबारक से देखा येह क़ौल ह़ज़रते अनस बिन मालिक और ह़सन व इ़क्रिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम को ख़ुल्लत और ह़ज़रते मूसा को कलाम और सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा को अपने दीदार से इम्तियाज़ बख़्शा (صَلَوَاتُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم)। का'ब ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दो बार कलाम फ़रमाया और ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने **अल्लाह** तआ़ला को दो मरतबा देखा। (ترمذی) लेकिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दीदार का इन्कार किया और आयत को ह़ज़रते जिब्रील के दीदार पर मह़मूल किया और फ़रमाया कि जो कोई कहे कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपने रब को देखा उस ने झूट कहा और सनद में ''لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ'' तिलावत फ़रमाई। यहां चन्द बातें क़ाबिले लिह़ाज़ हैं : एक येह कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का क़ौल नफ़ी में है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का इस्बात में और मुस्बत ही मुक़द्दम होता है क्यूं कि नाफ़ी किसी चीज़ की नफ़ी इस लिये करता है कि उस ने सुना नहीं और मुस्बत इस्बात इस लिये करता है कि उस ने सुना और जाना तो इ़ल्म मुस्बत के पास है इलावा बरीं ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह कलाम ह़ुज़ूर से नक़्ल नहीं किया बल्कि आयत से अपने इस्तिम्बात़ पर ए'तिमाद फ़रमाया येह ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की राय है और आयत में इदराक या'नी इह़ात़ा की नफ़ी है न रूयत की। **मस्अला :** सह़ीह़ येही है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ फ़रमाए गए। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीसे मरफ़ूअ़ से भी येही साबित है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जो ह़िब्रुल उम्मह (उम्मत के आ़लिम) हैं वोह भी इसी पर हैं, मुस्लिम की ह़दीस है : ''رَأَيْتُ رَبِّي بِعَيْنِي وَبِقَلْبِي'' मैं ने अपने रब को अपनी आंख और अपने दिल से देखा। ह़ज़रते ह़सन बसरी عَلَیْہِ الرَّحْمَہ क़सम खाते थे कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अपने रब को देखा। ह़ज़रते इमाम अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने फ़रमाया कि मैं ह़दीसे ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का क़ाइल हूं ह़ुज़ूर ने अपने रब को देखा उस को देखा उस को देखा, इमाम साह़िब येह फ़रमाते ही रहे यहां तक कि सांस ख़त्म हो गया। **15 :** येह मुश्रिकीन को ख़ित़ाब है जो शबे मे'राज के वाक़िआ़त का इन्कार करते और इस में झगड़ते थे। **16 :** क्यूं कि (नमाज़ की) तख़्फ़ीफ़ की दरख़्वास्तों के लिये चन्द बार उ़रूज व नुज़ूल हुवा, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ को अपने क़ल्बे मुबारक से दो मरतबा देखा और उन्हीं से येह भी मरवी है कि ह़ुज़ूर ने रब عَزَّوَجَلَّ को आंख से देखा। **17 :** सिद्‌रतुल मुन्तहा एक दरख़्त है जिस की अस्ल (जड़) छटे आस्मान में है और उस की शाख़ें सातवें आस्मान में फैली हैं और बुलन्दी में वोह सातवें आस्मान से भी गुज़र गया मलाएका और अरवाह़े शुहदा व अत्क़िया इस से आगे नहीं बढ़ सकतीं। **18 :** या'नी मलाएका और अन्वार। **19 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है कि उस मक़ाम में जहां अ़क़्लें ह़ैरत ज़दा हैं आप साबित रहे और जिस नूर का दीदार मक़्सूद था उस से बहरा अन्दोज़ हुए दाएं बाएं किसी त़रफ़ मुल्तफ़ित न हुए, न मक़्सूद की दीद से आंख फेरी न ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ बेहोश हुए बल्कि उस मक़ामे अ़ज़ीम में साबित रहे। **20 :** या'नी ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शबे मे'राज अ़जाइब मलक व मलकूत का मुलाह़ज़ा फ़रमाया और आप का इ़ल्म तमाम मा'लूमाते ग़ैबिय्या मलकूतिय्या

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا

वोह तो नहीं मगर कुछ नाम कि तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं[24] अल्लाह ने उन की कोई सनद

مِن سُلْطَانٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ

नहीं उतारी वोह तो निरे गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे हैं[25] हालां कि बेशक

جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ

उन के पास उन के रब की त़रफ़ से हिदायत आई[26] क्या आदमी को मिल जाएगा जो कुछ वोह ख़याल बांधे[27] तो आख़िरत और दुन्या सब का

وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾ ۞ وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا ع ٢٥ ٥

मालिक अल्लाह ही है[28] और कितने ही फ़िरिश्ते हैं आस्मानों में कि उन की सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती मगर

مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ﴿٢٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا

जब कि अल्लाह इजाज़त दे दे जिस के लिये चाहे और पसन्द फ़रमाए[29] बेशक वोह जो

يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُم

आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हैं[30] मलाएका का नाम औरतों का सा रखते हैं[31] और उन्हें

بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ

इस की कुछ ख़बर नहीं वोह तो निरे गुमान के पीछे हैं और बेशक गुमान यक़ीन की जगह कुछ काम

पर मुहीत़ हो गया, जैसा कि ह़दीसे इख़्तिसामे मलाएका में वारिद हुवा है और दूसरी और अह़ादीस में आया है। (روح البيان) **21 :** लात व उ़ज़्ज़ा और मनात बुतों के नाम हैं जिन्हें मुश्रिकीन पूजते थे, इस आयत में इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम ने इन बुतों को देखा या'नी ब नज़रे तह़क़ीक़ व इन्साफ़ अगर इस त़रह़ देखा हो तो तुम्हें मा'लूम हो गया होगा कि येह मह़ज़ बे क़ुदरत (बेजान) हैं और अल्लाह तआ़ला क़ादिरे बरह़क़ को छोड़ कर इन बे क़ुदरत बुतों को पूजना और उस का शरीक ठहराना किस क़दर ज़ुल्मे अ़ज़ीम और ख़िलाफ़े अ़क़्ल व दानिश है और मुश्रिकीने मक्का येह कहा करते थे कि येह बुत और फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं इस पर अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : **22 :** जो तुम्हारे नज़्दीक ऐसी बुरी चीज़ है कि जब तुम में से किसी को बेटी पैदा होने की ख़बर दी जाती है तो उस का चेहरा बिगड़ जाता है और रंग तारीक हो जाता है और लोगों से छुपता फिरता है ह़त्ता कि तुम बेटियों को ज़िन्दा दरगोर कर डालते हो फिर भी अल्लाह तआ़ला की बेटियां बताते हो **23 :** कि जो चीज़ बुरी समझते हो वोह ख़ुदा के लिये तज्वीज़ करते हो। **24 :** या'नी इन बुतों का नाम इलाह और मा'बूद तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने बिल्कुल बे जा और ग़लत़ त़ौर पर रख लिया है न येह ह़क़ीक़त में इलाह हैं न मा'बूद। **25 :** या'नी उन का बुतों को पूजना अ़क़्ल व इल्म व ता'लीमे इलाही के ख़िलाफ़ इत्तिबाए़ नफ़्स व हवा और वह्म परस्ती की बिना पर है। **26 :** या'नी किताबे इलाही और ख़ुदा के रसूल जिन्हों ने सराह़त के साथ बार बार बताया कि बुत मा'बूद नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी इ़बादत का मुस्तह़िक़ नहीं। **27 :** या'नी काफ़िर जो बुतों के साथ झूटी उम्मीदें रखते हैं कि वोह उन के काम आएंगे येह उम्मीदें बात़िल हैं। **28 :** जिसे जो चाहे दे, उसी की इ़बादत करना और उसी को राज़ी रखना काम आएगा। **29 :** या'नी मलाएका बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में क़ुर्बो मन्ज़िलत रखते हैं बा'द अज़ां सिर्फ़ उस के लिये शफ़ाअ़त करेंगे जिस के लिये अल्लाह तआ़ला की मरज़ी हो या'नी मोमिन मुवह़्ह़िद के लिये तो बुतों से शफ़ाअ़त की उम्मीद रखना निहायत बात़िल है कि न उन्हें बारगाहे ह़क़ में क़ुर्ब ह़ासिल न कुफ़्फ़ार शफ़ाअ़त के अह्ल। **30 :** या'नी कुफ़्फ़ार मुन्किरीने बअ़्स। **31 :** कि उन्हें ख़ुदा की बेटियां बताते हैं।

www.dawateislami.net

شَيْـًٔا ﴿۲۸﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ

नहीं देता[32] तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा[33] और उस ने न चाही मगर दुन्या की

الدُّنْيَا ﴿۲۹﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

ज़िन्दगी[34] यहां तक उन के इल्म की पहुंच है[35] बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿۳۰﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

से बहका और वोह ख़ूब जानता है जिस ने राह पाई और **अल्लाह** ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ

الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ

ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उन के किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत

اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿۳۱﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا

अच्छा सिला अ़ता फ़रमाए वोह जो बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं[36] मगर इतना कि गुनाह के पास गए

اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ

और रुक गए[37] बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है[38] तुम्हें मिट्टी

الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ

से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में हम्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ[39]

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿۳۲﴾ ع اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿۳۳﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ

वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं[40] तो क्या तुम ने देखा जो फिर गया[41] और कुछ थोड़ा सा दिया और

32 : अम्रे वाक़ेई और ह़क़ीक़ते ह़ाल इल्म व यक़ीन से मा'लूम होती है न कि वहमो गुमान से। **33 :** या'नी क़ुरआन पर ईमान से। **34 :** आख़िरत पर ईमान न लाया कि उस का त़ालिब होता। **35 :** या'नी वोह इस क़दर कम अ़क़्ल व कम इल्म हैं कि उन्हों ने आख़िरत पर दुन्या को तरजीह़ दी है या येह मा'ना हैं कि उन के इल्म की इन्तिहा वहमो गुमान हैं जो उन्हों ने बांध रखे हैं कि (مَعَاذَاللّٰه) फ़िरिश्ते ख़ुदा की बेटियां हैं उन की शफ़ाअ़त करेंगे और इस वहमे बात़िल पर भरोसा कर के उन्हों ने ईमान और क़ुरआन की परवाह न की। **36 :** गुनाह वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो और बा'ज़ अहले इल्म ने फ़रमाया कि गुनाह वोह है जिस का करने वाला सवाब से मह़रूम हो, बा'ज़ का क़ौल है ना जाइज़ काम करने को गुनाह कहते हैं, बहर ह़ाल गुनाह की दो क़िस्में हैं : सग़ीरा और कबीरा, कबीरा वोह जिस का अ़ज़ाब सख़्त हो और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि सग़ीरा वोह जिस पर वईद न हो कबीरा वोह जिस पर वईद हो और फ़्वाहिश वोह जिन पर ह़द हो। **37 :** कि इतना तो कबाइर से बचने की बरकत से मुआ़फ़ हो जाता है। **38 शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नेकियां करते थे और अपने अ़मलों की ता'रीफ़ करते थे और कहते थे हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे ह़ज। **39 :** या'नी तफ़ाख़ुरन अपनी नेकियों की ता'रीफ़ न करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों के ह़ालात का ख़ुद जानने वाला है, वोह उन की इब्तिदाए हस्ती से आख़िरे अय्याम के जुम्ला अह़वाल जानता है। **मस्अला :** इस आयत में रिया और ख़ुद नुमाई और ख़ुद सराई की मुमानअ़त फ़रमाई गई, लेकिन अगर ने'मते इलाही के ए'तिराफ़ और इत़ाअ़त व इ़बादत पर मसर्रत और उस के अदाए शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है। **40 :** और उसी का जानना काफ़ी, वोही जज़ा देने वाला है, दूसरों पर इज़्हार और नामो नुमूद से क्या फ़ाएदा **41 :** इस्लाम से। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन

www.dawateislami.net

اَكْدٰى ﴿۳۴﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۵﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ

रोक रखा[42] क्या उस के पास ग़ैब का इल्म है तो वोह देख रहा है[43] क्या उसे उस की ख़बर न आई जो

صُحُفِ مُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَ اِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰۤى ﴿۳۷﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

सहीफ़ों में है मूसा के[44] और इब्राहीम के जो अह़काम पूरे बजा लाया[45] कि कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरी का बोझ नहीं

اُخْرٰى ﴿۳۸﴾ وَ اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ وَ اَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ

उठाती[46] और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश[47] और येह कि उस की कोशिश अ़न्क़रीब देखी

يُرٰى ﴿۴۰﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿۴۱﴾ وَ اَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿۴۲﴾

जाएगी[48] फिर उस का भरपूर बदला दिया जाएगा और येह कि बेशक तुम्हारे रब ही की त़रफ़ इन्तिहा है[49]

मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का दीन में इत्तिबाअ़ किया था, मुश्रिकों ने उस को आ़र दिलाई और कहा कि तू ने बुज़ुर्गों का दीन छोड़ दिया और तू गुमराह हो गया, उस ने कहा : मैं ने अ़ज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से ऐसा किया, तो आ़र दिलाने वाले काफ़िर ने उस से कहा कि अगर तू शिर्क की त़रफ़ लौट आए और इस क़दर माल मुझ को दे तो तेरा अ़ज़ाब मैं अपने ज़िम्मे लेता हूं, इस पर वलीद इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ व मुरतद हो कर फिर शिर्क में मुब्तला हो गया और जिस शख़्स को माल देना ठहरा था उस को थोड़ा सा दिया और बाक़ी से मन्अ़ कर दिया। **42 :** बाक़ी। **शाने नुज़ूल :** येह भी कहा गया है कि येह आयत आ़स बिन वाइल सहमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह अक्सर उमूर में नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ताईद व मुवाफ़क़त किया करता था और येह भी कहा गया है कि येह आयत अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई कि उस ने कहा था **अल्लाह** तआ़ला की क़सम मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) हमें बेहतरीन अख़्लाक़ का हुक्म फ़रमाते हैं, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि थोड़ा सा इक़रार किया और ह़क़्क़े लाज़िम में से क़दरे क़लील अदा किया और बाक़ी से बाज़ रहा या'नी ईमान न लाया। **43 :** कि दूसरा शख़्स इस का बारे गुनाह उठा लेगा और इस के अ़ज़ाब को अपने ज़िम्मे लेगा। **44 :** या'नी अस्फ़ारे तौरैत में **45 :** येह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की सिफ़त है कि उन्हें जो कुछ हुक्म दिया गया था वोह उन्हों ने पूरे त़ौर पर अदा किया, इस में बेटे का ज़ब्ह़ भी है और अपना आग में डाला जाना भी और इस के इ़लावा और मामूरात (अह़कामात) भी। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उस मज़्मून का ज़िक्र फ़रमाता है जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की किताब और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के सह़ीफ़ों में मज़्कूर फ़रमाया गया था। **46 :** और कोई दूसरे के गुनाह पर नहीं पकड़ा जाता, इस में उस शख़्स के क़ौल का इब्त़ाल है जो वलीद बिन मुग़ीरा के अ़ज़ाब का ज़िम्मेदार बना था और उस के गुनाह अपने ज़िम्मे लेने को कहता था, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ज़मानए ह़ज़रते इब्राहीम से पहले लोग आदमी को दूसरे के गुनाह पर भी पकड़ लेते थे, अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया होता तो बजाए उस क़ातिल के उस के बेटे या भाई या बीबी या ग़ुलाम को क़त्ल कर देते थे, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का ज़माना आया तो आप ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई और **अल्लाह** तआ़ला का येह हुक्म पहुंचाया कि कोई किसी के बारे गुनाह में माख़ूज़ नहीं। **47 :** या'नी अ़मल। मुराद येह है कि आदमी अपनी ही नेकियों से फ़ाएदा पाता है, येह मज़्मून भी सुह़ुफ़े इब्राहीम व मूसा का है عَلَیْہِمَا السَّلَام और कहा गया है कि इन ही उम्मतों के लिये ख़ास था। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह हुक्म हमारी शरीअ़त में आयत "اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ" से मन्सूख़ हो गया। ह़दीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरी मां की वफ़ात हो गई अगर मैं उस की त़रफ़ से सदक़ा दूं क्या नाफ़ेअ़ होगा ? फ़रमाया : हां। **मसाइल :** और ब कसरत अह़ादीस से साबित है कि मय्यित को सदक़ात व त़ाआ़त से जो सवाब पहुंचाया जाता है पहुंचता है और इस पर उ़लमाए उम्मत का इज्माअ़ है और इसी लिये मुसल्मानों में मा'मूल है कि वोह अपने अम्वात (मुर्दों) को फ़ातिह़ा, सिवुम, चेहलम, बरसी, उ़र्स वग़ैरा में त़ाआ़त व सदक़ात से सवाब पहुंचाते रहते हैं, येह अ़मल अह़ादीस के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है, इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि यहां इन्सान से काफ़िर मुराद है और मा'ना येह हैं कि काफ़िर को कोई भलाई न मिलेगी बजुज़ उस के जो उस ने की हो कि दुन्या ही में वुस्अ़ते रिज़्क़ या तन्दुरुस्ती वग़ैरा से उस का बदला दे दिया जाएगा ताकि आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा बाक़ी न रहे और एक मा'ना आयत के मुफ़स्सिरीन ने येह भी बयान किये हैं कि आदमी ब मुक़्तज़ाए अ़द्ल वोही पाएगा जो उस ने किया हो और **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्ल से जो चाहे अ़त़ा फ़रमाए और एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि मोमिन के लिये दूसरा मोमिन जो नेकी करता है वोह नेकी ख़ुद उसी मोमिन की शुमार की जाती है जिस के लिये की गई क्यूं कि उस का करने वाला मिस्ल नाइब व वकील के उस का क़ाइम मक़ाम होता है। **48 :** आख़िरत में **49 :** आख़िरत में उसी की त़रफ़ रुजूअ़ है वोही आ'माल की जज़ा देगा।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿۴۳﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿۴۴﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ

और येह कि वोह ही है जिस ने हंसाया और रुलाया[50] और येह कि वोही है जिस ने मारा और जिलाया[51] और येह कि उसी ने

الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۴۵﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿۴۶﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ

दो जोड़े बनाए नर और मादा नुत्फ़े से जब डाला जाए[52] और येह कि उसी के

النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿۴۷﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿۴۸﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ

ज़िम्मे है पिछला उठाना[53] और येह कि उसी ने ग़ना दी और क़नाअ़त दी और येह कि वोही सितारा शि'रा

الشِّعْرٰى ﴿۴۹﴾ وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ﴿نِ﴾ الْاُوْلٰى ﴿۵۰﴾ وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿۵۱﴾ وَ

का रब है[54] और येह कि उसी ने पहली आ़द को हलाक फ़रमाया[55] और समूद को[56] तो कोई बाक़ी न छोड़ा और

قَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿۵۲﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ

उन से पहले नूह की क़ौम को[57] बेशक वोह उन से भी ज़ालिम और सरकश थे[58] और उस ने उलटने वाली बस्ती

اَهْوٰى ﴿۵۳﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿۵۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾ هٰذَا

को नीचे गिराया[59] तो उस पर छाया जो कुछ छाया[60] तो ऐ सुनने वाले अपने रब की कौन सी ने'मतों में शक करेगा येह[61]

نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿۵۷﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ

एक डर सुनाने वाले हैं अगले डराने वालों की तरह[62] पास आई पास आने वाली[63] अल्लाह के सिवा उस का कोई

اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿۵۸﴾ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا

खोलने वाला नहीं[64] तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो[65] और हंसते हो और

50 : जिसे चाहा खु़श किया जिसे चाहा ग़मगीन किया। 51 : या'नी दुन्या में मौत दी और आख़िरत में ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाई या येह मा'ना कि बाप दादा को मौत दी और उन की औलाद को ज़िन्दगी बख़्शी या येह मुराद कि काफ़िरों को मौते कुफ़्र से हलाक किया और ईमानदारों को ईमानी ज़िन्दगी बख़्शी। 52 : रेहूम में 53 : या'नी मौत के बा'द ज़िन्दा फ़रमाना 54 : जो कि शिद्दते गर्मा में "जौज़ा" के बा'द त़ालेअ़ (तुलूअ़) होता है, अहले जाहिलिय्यत उस की इ़बादत करते थे, इस आयत में बताया गया कि सब का रब अल्लाह ही है, इस सितारे का रब भी अल्लाह है, लिहाज़ा उसी की इ़बादत करो। 55 : बादे सरसर (तेज़ हवा) से। आ़द दो हैं : एक तो क़ौमे हूद इन को पहली आ़द कहते हैं और इन के बा'द वालों को दूसरी आ़द कि वोह उन्हीं के आ'क़ाब (बा'द की नस्ल) थे। 56 : जो सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम थी। 57 : ग़र्क़ कर के हलाक किया। 58 : कि ह़ज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام उन में हज़ार बरस के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा रहे मगर उन्हों ने दा'वत क़बूल न की और उन की सरकशी कम न हुई। 59 : मुराद इस से क़ौमे लूत़ की बस्तियां हैं जिन्हें ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ब हुक्मे इलाही उठा कर औंधा डाल दिया और ज़ेरो ज़बर कर दिया। 60 : या'नी निशान किये हुए पथ्थर बरसाए। 61 : या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم। 62 : जो अपनी क़ौमों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे। 63 : या'नी क़ियामत 64 : या'नी वोही उस को ज़ाहिर फ़रमाएगा या येह मा'ना हैं कि उस के अह़वाल और शदाइद को अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई नहीं दफ़्अ़ कर सकता और अल्लाह तआ़ला दफ़्अ़ न फ़रमाएगा। 65 : या'नी कुरआने मजीद से मुन्किर होते हो।

السجدة ٧ ع ٣ السجدة ١٣

تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿٦٢﴾

रोते नहीं[66] और तुम खेल में पड़े हो तो अल्लाह के लिये सज्दा और उस की बन्दगी करो[67]

اٰیاتھا ۵۵ ﴿٥٤﴾ سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ ﴿٣٧﴾ رکوعاتھا ٣

सूरए क़मर मक्किय्या है, इस में पचपन आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ

पास आई क़ियामत और[2] शक़ हो गया चांद[3] और अगर देखें[4] कोई निशानी तो मुंह फेरते[5] और

يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ

कहते हैं येह तो जादू है चला आता और उन्हों ने झुटलाया[6] और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए[7] और हर काम क़रार

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِیْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ

पा चुका है[8] और बेशक उन के पास वोह ख़बरें आईं[9] जिन में काफ़ी रोक थी[10] इन्तिहा को पहुंची हुई

وقف لازم

بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَیْءٍ

हिक्मत फिर क्या काम दें डर सुनाने वाले तो तुम उन से मुंह फेर लो[11] जिस दिन बुलाने वाला[12] एक सख़्त बे पहचानी बात की त़रफ़

66 : उस के वा'दा वईद सुन कर। 67 : कि उस के सिवाए कोई इबादत का मुस्तह़िक़ नहीं। 1 : सूरए क़मर मक्किय्या है सिवाए आयत "سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ" के, इस में तीन 3 रुकूअ़, पचपन 55 आयतें और तीन सो बियालीस 342 कलिमे और एक हज़ार चार सो तेईस 1423 हर्फ़ हैं। 2 : उस के नज़्दीक होने की निशानी ज़ाहिर हुई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़े से 3 : दो पारा हो कर। शक़्क़ुल क़मर जिस का इस आयत में बयान है नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात बाहिरा में से है, अहले मक्का ने हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से एक मो'जिज़े की दरख़्वास्त की थी तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने चांद शक़ कर के दिखाया, चांद के दो हिस्से हो गए और एक हिस्सा दूसरे से जुदा हो गया और फ़रमाया कि गवाह रहो, क़ुरैश ने कहा मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने जादू से हमारी नज़र बन्दी कर दी है, इस पर उन्हीं की जमाअ़त के लोगों ने कहा कि अगर येह नज़र बन्दी है तो बाहर कहीं भी किसी को चांद के दो हिस्से नज़र न आए होंगे अब जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उन की जुस्तजू रखो और मुसाफ़िरों से दरयाफ़्त करो अगर दूसरे मक़ामात से भी चांद शक़ होना देखा गया है तो बेशक मो'जिज़ा है, चुनान्चे सफ़र से आने वालों से दरयाफ़्त किया उन्हों ने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चांद के दो हिस्से हो गए थे, मुश्रिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही और वोह जाहिलाना तौर पर जादू ही जादू कहते रहे। सिहाह की अहादीसे कसीरा में इस मो'जिज़ए अ़ज़ीमा का बयान है और ख़बर इस दरजए शोहरत को पहुंच गई है कि इस का इन्कार करना अ़क़्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है। 4 : अहले मक्का नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिद्क़ व नुबुव्वत पर दलालत करने वाली 5 : उस की तस्दीक़ और नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान लाने से 6 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को और उन मो'जिज़ात को जो अपनी आंखों से देखे 7 : उन अबातील (बातिल ख़्वाहिशों) के जो शैतान ने उन के दिल नशीन की थीं कि अगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की तस्दीक़ की तो उन की सरदारी तमाम आलम में मुसल्लम हो जाएगी और क़ुरैश की कुछ भी इ़ज़्ज़तो क़द्र बाक़ी न रहेगी। 8 : वोह अपने वक़्त पर होने ही वाला है कोई उस को रोकने वाला नहीं, सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दीन ग़ालिब हो कर रहेगा। 9 : पिछली उम्मतों की जो अपने रसूलों की तक्ज़ीब करने के सबब हलाक किये गए। 10 : कुफ़्रो तक्ज़ीब से और इन्तिहा दरजे की नसीहत। 11 : क्यूं कि वोह नसीहत व इन्ज़ार से पन्द पज़ीर होने वाले नहीं (وَكَانَ هٰذَا قَبْلَ الْاَمْرِ بِالْقِتَالِ ثُمَّ نُسِخَ) 12 : या'नी हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام सख़रए बैतुल

www.dawateislami.net

نُّكُرٍ ۙ﴿۶﴾ خُشَّعًا اَبۡصَارُهُمۡ یَخۡرُجُوۡنَ مِنَ الۡاَجۡدَاثِ کَاَنَّهُمۡ جَرَادٌ

बुलाएगा[13] नीची आंखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया वोह टीड़ी (टिड्डी) हैं

مُّنۡتَشِرٌ ۙ﴿۷﴾ مُّهۡطِعِیۡنَ اِلَی الدَّاعِ ؕ یَقُوۡلُ الۡکٰفِرُوۡنَ هٰذَا یَوۡمٌ عَسِرٌ ﴿۸﴾

फैली हुई[14] बुलाने वाले की त़रफ़ लपकते हुए[15] काफ़िर कहेंगे येह दिन सख़्त है

کَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ فَکَذَّبُوۡا عَبۡدَنَا وَ قَالُوۡا مَجۡنُوۡنٌ وَّ ازۡدُجِرَ ﴿۹﴾

इन से[16] पहले नूह़ की क़ौम ने झुटलाया तो हमारे बन्दे[17] को झूटा बताया और बोले वोह मज्नून है और उसे झिड़का[18]

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّیۡ مَغۡلُوۡبٌ فَانۡتَصِرۡ ﴿۱۰﴾ فَفَتَحۡنَاۤ اَبۡوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ

तो उस ने अपने रब से दुआ़ की कि मैं मग़लूब हूं तू मेरा बदला ले तो हम ने आस्मान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के

مُّنۡهَمِرٍ ﴿۱۱﴾ ۫ۖ وَّ فَجَّرۡنَا الۡاَرۡضَ عُیُوۡنًا فَالۡتَقَی الۡمَآءُ عَلٰۤی اَمۡرٍ قَدۡ قُدِرَ ﴿۱۲﴾ ۚ

बहते पानी से[19] और ज़मीन चश्मे कर के बहा दी[20] तो दोनों पानी[21] मिल गए उस मिक़्दार पर जो मुक़द्दर थी[22]

وَ حَمَلۡنٰهُ عَلٰی ذَاتِ اَلۡوَاحٍ وَّ دُسُرٍ ﴿۱۳﴾ ۙ تَجۡرِیۡ بِاَعۡیُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنۡ کَانَ

और हम ने नूह़ को सुवार किया तख़्तों और कीलों वाली[23] पर कि हमारी निगाह के रू बरू बहती[24] उस के सिले में[25] जिस के साथ

کُفِرَ ﴿۱۴﴾ وَ لَقَدۡ تَّرَکۡنٰهَاۤ اٰیَةً فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّکِرٍ ﴿۱۵﴾ فَکَیۡفَ کَانَ عَذَابِیۡ

कुफ़्र किया गया था ❋ और हम ने उसे[26] निशानी छोड़ा तो है कोई ध्यान करने वाला[27] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब

وَ نُذُرِ ﴿۱۶﴾ وَ لَقَدۡ یَسَّرۡنَا الۡقُرۡاٰنَ لِلذِّکۡرِ فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّکِرٍ ﴿۱۷﴾ کَذَّبَتۡ

और मेरी धम्कियां और बेशक हम ने क़ुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला[28] आ़द ने

मक़्दिस (बैतुल मक़्दिस की चट्टान) पर खड़े हो कर **13 :** जिस की मिस्ल सख़्ती कभी न देखी होगी और वोह होले क़ियामत व ह़िसाब है। **14 :** हर त़रफ़ ख़ौफ़ से हैरान, नहीं जानते कहां जाएं। **15 :** या'नी ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام की आवाज़ की त़रफ़। **16 :** या'नी क़ुरैश से **17 :** नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام **18 :** और धम्काया कि अगर तुम अपने पन्दो नसीह़त और वा'ज़ो दा'वत से बाज़ न आए तो हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे संगसार कर डालेंगे। **19 :** जो चालीस रोज़ तक न थमा **20 :** या'नी ज़मीन से इस क़दर पानी निकला कि तमाम ज़मीन मिस्ल चश्मों के हो गई। **21 :** आस्मान से बरसने वाले और ज़मीन से उबलने वाले **22 :** और लौहे़ मह़फ़ूज़ में मक्तूब थी कि तूफ़ान इस ह़द तक पहुंचेगा। **23 :** एक कश्ती **24 :** हमारी ह़िफ़ाज़त में। **25 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام के **26 :** या'नी इस वाक़िए को कि कुफ़्फ़ार ग़र्क़ कर के हलाक कर दिये गए और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام को नजात दी गई और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक ''تَرَکۡنٰهَا'' की ज़मीर कश्ती की त़रफ़ रुजूअ़ करती है। क़तादा से मरवी है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस कश्ती को सर ज़मीने जज़ीरा में और बा'ज़ के नज़्दीक ''जूदी'' पहाड़ पर मुद्दतों बाक़ी रखा यहां तक कि हमारी उम्मत के पहले लोगों ने उस को देखा। **27 :** जो पन्द पज़ीर हो और इ़ब्रत ह़ासिल करे। **28 :** इस आयत में क़ुरआने करीम की ता'लीम व तअ़ल्लुम और इस के साथ इश्तिग़ाल रखने और इस को ह़िफ़्ज़ करने की तरग़ीब है और येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि क़ुरआन याद करने वाले की **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से मदद होती है और इस का ह़िफ़्ज़ सहल व आसान फ़रमा देने ही का समरा है कि बच्चे तक इस को याद कर लेते हैं, सिवाए इस के कोई मज़्हबी किताब ऐसी नहीं है जो याद की जाती हो और सहूलत से याद हो जाती हो।

www.dawateislami.net

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

झुटलाया[29] तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब और मेरे डर दिलाने के फ़रमान[30] बेशक हम ने उन पर एक सख़्त आंधी भेजी[31]

فِىْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

ऐसे दिन में जिस की नुहूसत उन पर हमेशा के लिये रही[32] लोगों को यूं दे मारती थी कि गोया वोह उखड़ी हुई खजूरों के डन्ड (सूखे तने) हैं

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ

तो कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब और डर के फ़रमान और बेशक हम ने आसान किया कुरआन याद करने के लिये तो है कोई

مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا ع ٢٢ ٨

याद करने वाला समूद ने रसूलों को झुटलाया[33] तो बोले क्या हम अपने में के एक आदमी की

نَّتَّبِعُهٗۤ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾ ءَاُلْقِىَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا

ताबेअ़ दारी करें[34] जब तो हम ज़रूर गुमराह और दीवाने हैं[35] क्या हम सब में से इस पर[36] ज़िक्र उतारा गया[37]

بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

बल्कि येह सख़्त झूटा इतरौना (शैख़ी बाज़) है[38] बहुत जल्द कल जान जाएंगे[39] कौन था बड़ा झूटा इतरौना (शैख़ी बाज़)

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ

हम नाक़ा भेजने वाले हैं उन की जांच को[40] तो ऐ सालेह़ तू राह देख[41] और सब्र कर[42] और उन्हें ख़बर दे दे कि

الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى

पानी उन में हिस्सों से है[43] हर हिस्से पर वोह हाज़िर हो जिस की बारी है[44] तो उन्हों ने अपने साथी को[45] पुकारा तो उस ने[46] ले कर

29 : अपने नबी ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को, इस पर वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब किये गए। **30 :** जो नुज़ूले अ़ज़ाब से पहले आ चुके थे। **31 :** बहुत तेज़ चलने वाली, निहायत ठन्डी, सख़्त सन्नाटे वाली **32 :** ह़त्ता कि उन में कोई न बचा सब हलाक हो गए और वोह दिन महीने का पिछला बुध था। **33 :** अपने नबी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की दा'वत का इन्कार कर के और उन पर ईमान न ला कर **34 :** या'नी हम बहुत से हो कर एक आदमी के ताबेअ़ हो जाएं ? हम ऐसा न करेंगे क्यूं कि अगर ऐसा करें **35 :** येह उन्हों ने ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام का कलाम लौटाया, आप ने उन से फ़रमाया था कि अगर तुम ने मेरा इत्तिबाअ़ न किया तो तुम गुमराह व बे अ़क़्ल हो। **36 :** या'नी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर **37 :** वह्य नाज़िल की गई और कोई हम में इस क़ाबिल ही न था **38 :** कि नुबुव्वत का दा'वा कर के बड़ा बनना चाहता है **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है **39 :** जब अ़ज़ाब में मुब्तला किये जाएंगे। **40 :** येह इस पर फ़रमाया गया कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम ने आप से येह कहा था कि आप पथ्थर से एक नाक़ा (ऊंटनी) निकाल दीजिये, आप ने उन के ईमान की शर्त़ कर के येह बात मन्ज़ूर कर ली थी, चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने नाक़ा भेजने का वा'दा फ़रमाया और ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام से इर्शाद किया **41 :** कि वोह क्या करते हैं और उन के साथ क्या किया जाता है **42 :** उन की ईज़ा पर **43 :** एक दिन उन का एक दिन नाक़ा का **44 :** जो दिन नाक़ा का है उस दिन नाक़ा ह़ाज़िर हो और जो दिन क़ौम का है उस दिन क़ौम पानी पर ह़ाज़िर हो। **45 :** या'नी क़ुदार बिन सालिफ़ को नाक़ा के क़त्ल करने के लिये **46 :** तेज़ तलवार।

www.dawateislami.net

فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

उस की कूचें काट दीं[47] फिर कैसा हुवा मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान[48] बेशक हम ने उन पर एक चिंघाड़

وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ

भेजी[49] जभी वोह हो गए जैसे घेरा बनाने वाले की बची हुई घास सूखी रौंदी हुई[50] और बेशक हम ने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है

مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

कोई याद करने वाला लूत़ की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया बेशक हम ने उन पर[51] पथराव

حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ

भेजा[52] सिवाए लूत़ के घर वालों के[53] हम ने उन्हें पिछले पहर[54] बचा लिया अपने पास की ने'मत फ़रमा कर हम यूंही

نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

सिला देते हैं उसे जो शुक्र करे[55] और बेशक उस ने[56] उन्हें हमारी गिरिफ़्त से[57] डराया तो उन्हों ने डर के फ़रमानों में शक किया[58]

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

उन्हों ने उसे उस के मेहमानों से फुस्लाना चाहा[59] तो हम ने उन की आंखें मेट दीं (बिल्कुल मिटा दीं)[60] फ़रमाया चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान[61]

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَ

और बेशक सुब्ह़ तड़के (सुब्ह़ सवेरे) उन पर ठहरने वाला अज़ाब आया[62] तो चखो मेरा अज़ाब और डर के फ़रमान और

ع ٢ ١٨ لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ

बेशक हम ने आसान किया क़ुरआन याद करने के लिये तो है कोई याद करने वाला और बेशक फ़िरऔन वालों के पास

47 : और उस को क़त्ल कर डाला 48 : जो नुज़ूले अज़ाब से पहले मेरी त़रफ़ से आए थे और अपने मौक़अ़ पर वाक़ेअ़ हुए। 49 : या'नी फ़िरिश्ते की होलनाक आवाज़ 50 : या'नी जिस त़रह़ चरवाहे जंगल में अपनी बकरियों की ह़िफ़ाज़त के लिये घास कांटों का इह़ात़ा बना लेते हैं उस में से कुछ घास बची रह जाती है और वोह जानवरों के पाउं में रौंद कर रेज़ा रेज़ा हो जाती है, येह ह़ालत उन की हो गई। 51 : इस तक्ज़ीब की सज़ा में 52 : या'नी उन पर छोटे छोटे संगरेज़े बरसाए 53 : या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام और उन की दोनों साह़िब ज़ादियां इस अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहीं। 54 : या'नी सुब्ह़ होने से पहले 55 : अल्लाह तआ़ला की ने'मतों का और शुक्र गुज़ार वोह है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए और उन की इत़ाअ़त करे। 56 : या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने 57 : हमारे अ़ज़ाब से 58 : और उन की तस्दीक़ न की। 59 : और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप हमारे और अपने मेहमानों के दरमियान दख़ील (मुख़िल) न हों, उन्हें हमारे ह़वाले कर दें और येह उन्हों ने निय्यते फ़ासिद और ख़बीस इरादे से कहा था और मेहमान फ़िरिश्ते थे, उन्हों ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप इन्हें छोड़ दीजिये, घर में आने दीजिये, जभी (जूंही) वोह घर में आए तो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने एक दस्तक दी। 60 : फ़ौरन वोह अन्धे हो गए और आंखें ऐसी नापैद हो गईं कि निशान भी बाक़ी न रहा, चेहरे सपाट (बराबर) हो गए, ह़ैरत ज़दा मारे मारे फिरते थे, दरवाज़ा हाथ न आता था, ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें दरवाज़े से बाहर किया। 61 : जो तुम्हें ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सुनाए थे। 62 : जो अ़ज़ाबे आख़िरत तक बाक़ी रहेगा।

النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

रसूल आए[63] उन्हों ने हमारी सब निशानियां झुटलाईं[64] तो हम ने उन पर[65] गिरिफ़्त की जो एक इ़ज़्ज़त वाले और अ़ज़ीम क़ुदरत वाले की शान थी

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

क्या[66] तुम्हारे काफ़िर उन से बेहतर हैं[67] या किताबों में तुम्हारी छुट्टी लिखी हुई है[68] या येह कहते हैं[69]

نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ

कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे[70] अब भगाई जाती है येह जमाअ़त[71] और पीठें फेर देंगे[72] बल्कि

السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ

इन का वा'दा क़ियामत पर है[73] और क़ियामत निहायत कड़ी और सख़्त कड़वी[74] बेशक मुजरिम

ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ

وقف لازم

गुमराह और दीवाने हैं[75] जिस दिन आग में अपने मुंहों पर घसीटे जाएंगे और फ़रमाया जाएगा चखो दोज़ख़

سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَاۤ اَمْرُنَاۤ اِلَّا وَاحِدَةٌ

की आंच बेशक हम ने हर चीज़ एक अन्दाज़े से पैदा फ़रमाई[76] और हमारा काम तो एक बात की बात है

كَلَمْحٍۭ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَاۤ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ

जैसे पलक मारना[77] और बेशक हम ने तुम्हारी वज़्अ़ के[78] हलाक कर दिये तो है कोई ध्यान करने वाला[79] और उन्हों

شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ

ने जो कुछ किया सब किताबों में है[80] और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है[81] बेशक

63 : ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام तो फ़िरऔ़नी उन पर ईमान न लाए। **64 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दी गईं थीं। **65 :** अ़ज़ाब के साथ **66 :** ऐ अहले मक्का ! **67 :** या'नी उन क़ौमों से ज़ियादा क़वी व तुवाना हैं या कुफ़्रो इनाद में कुछ उन से कम हैं ? **68 :** कि तुम्हारे कुफ़्र की गिरिफ़्त न होगी और तुम अ़ज़ाबे इलाही से अम्न में रहोगे। **69 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **70 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से। **71 :** कुफ़्फ़ारे मक्का की। **72 :** और इस त़रह़ भागेंगे कि एक भी क़ाइम न रहेगा। **शाने नुज़ूल :** रोज़े बद्र जब अबू जह्ल ने कहा कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे येह आयते करीमा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़िरह पहन कर येह आयत तिलावत फ़रमाई, फिर ऐसा ही हुवा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़त्ह़ हुई और कुफ़्फ़ार को हज़ीमत (शिकस्त) हुई। **73 :** या'नी इस अ़ज़ाब के बा'द इन्हें रोज़े क़ियामत के अ़ज़ाब का वा'दा है **74 :** दुन्या के अ़ज़ाब से उस का अ़ज़ाब बहुत ज़ियादा अशद। **75 :** न समझते हैं न राहयाब होते हैं। (تفسیر کبیر) **76 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत। **शाने नुज़ूल :** येह आयत क़दरियों के रद में नाज़िल हुई जो क़ुदरते इलाही के मुन्किर हैं और ह़वादिस को कवाकिब वग़ैरा की त़रफ़ मन्सूब करते हैं। **मसाइल :** अह़ादीस में उन्हें इस उम्मत का मजूस फ़रमाया गया और उन के पास बैठने और उन के साथ कलाम शुरूअ़ करने और वोह बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत करने और मर जाएं तो उन के जनाज़े में शरीक होने की मुमानअ़त फ़रमाई गई और उन्हें दज्जाल का साथी फ़रमाया गया, वोह बद तरीन ख़ल्क़ हैं। **77 :** जिस चीज़ के पैदा करने का इरादा हो वोह हुक्म के साथ ही हो जाती है। **78 :** कुफ़्फ़ार पहली उम्मतों के **79 :** जो इ़ब्रत ह़ासिल करें और पन्द पज़ीर हों। **80 :** या'नी बन्दों के तमाम अफ़्आ़ल ह़ाफ़िज़े आ'माल फ़िरिश्तों के नविश्तों में हैं **81 :** लौहे़ मह़फ़ूज़ में।

www.dawateislami.net

الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿۵۴﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۵۵﴾

परहेज़ गार बाग़ों और नहर में हैं सच की मजलिस में अ़ज़ीम कुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर[82]

اٰیاتها ٧٨ | ٥٥ سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَكِّيَّةٌ ٩٧ | ركوعاتها ٣

सूरए रह़मान मक्किय्या है, इस में अठत्तर आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اَلرَّحْمٰنُ ﴿۱﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿۲﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿۴﴾

रह़मान ने अपने मह़बूब को कुरआन सिखाया[2] इन्सानिय्यत की जान मुह़म्मद को पैदा किया مَا كَانَ وَمَا يَكُوْن का बयान उन्हें सिखाया[3]

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿۵﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ

सूरज और चांद हिसाब से हैं[4] और सब्ज़े और पेड़ सज्दा करते हैं[5] और

السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿۷﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿۸﴾ وَ

आस्मान को **अल्लाह** ने बुलन्द किया[6] और तराज़ू रखी[7] कि तराज़ू में बे ए'तिदाली (ना इन्साफ़ी) न करो[8] और

اَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿۹﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

इन्साफ़ के साथ तोल क़ाइम करो और वज़्न न घटाओ और ज़मीन रखी

لِلْاَنَامِ ﴿۱۰﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ

मख़्लूक़ के लिये[9] इस में मेवे और ग़िलाफ़ वाली खजूरें[10] और भुस

82 : या'नी उस की बारगाह के मुक़र्रब हैं। **1 :** सूरए रह़मान मक्किय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़ और छिहत्तर 76 या अठत्तर 78 आयतें, तीन सो इक्यावन 351 कलिमे, एक हज़ार छ[6] सो छत्तीस 1636 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** जब आयत "اُسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ" नाज़िल हुई कुफ़्फ़ार ने कहा रह़मान क्या है हम नहीं जानते, इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने अर्रह़मान नाज़िल फ़रमाई कि रह़मान जिस का तुम इन्कार करते हो वोही है जिस ने कुरआन नाज़िल फ़रमाया और एक क़ौल येह है कि अहले मक्का ने जब कहा कि मुह़म्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को कोई बशर सिखाता है तो येह आयत नाज़िल हुई और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि रह़मान ने कुरआन अपने ह़बीब मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सिखाया। (خازن) **3 :** इन्सान से इस आयत में सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुराद हैं और बयान से "مَا كَانَ وَمَا يَكُوْنُ" का बयान, क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अव्वलीन व आख़िरीन की ख़बरें देते थे। (خازن) **4 :** कि तक़्दीरे मुअ़य्यन के साथ अपने बुरूज व मनाज़िल में सैर करते हैं और इस में ख़ल्क़ के लिये मनाफ़ेअ़ हैं अवक़ात के हिसाब, सालों और महीनों का शुमार इन्हीं पर है। **5 :** हुक्मे इलाही के मुत़ीअ़ हैं। **6 :** और अपने मलाएका का मस्कन और अपने अह़काम का जाए सुदूर बनाया। **7 :** जिस से अश्या का वज़्न किया जाए और उन की मिक़्दारें मा'लूम हों ताकि लेन देन में अ़द्ल क़ाइम रखा जाए। **8 :** ताकि किसी की ह़क़ तलफ़ी न हो। **9 :** जो इस में रहती बसती है ताकि इस में आराम करें और फ़ाएदे उठाएं। **10 :** जिन में बहुत बरकत है।

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٣﴾ خَلَقَ

के साथ अनाज[11] और ख़ुश्बू के फूल तो ऐ जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे[12] उस ने

الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَارِجٍ مِنْ

आदमी को बनाया बजती मिट्टी से जैसे ठीकरी[13] और जिन्न को पैदा फ़रमाया आग के

نَارٍ ﴿١٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ

लूके से[14] तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे दोनों पूरब का रब और दोनों

الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

पश्चिम का रब[15] तो तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उस ने दो समुन्दर बहाए[16] कि देखने

يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

में मा'लूम हों मिले हुए[17] और है उन में रोक[18] कि एक दूसरे पर बढ़ नहीं सकता[19] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبَانِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन में से मोती और मूंगा निकलता है तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبَانِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِأَيِّ

झुटलाओगे और उसी की हैं वोह चलने वालियां कि दरिया में उठी हुई हैं जैसे पहाड़[20] तो अपने

آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ع ٢٥ النصف

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है[21] और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात

11 : मिस्ल गेहूं, जव वग़ैरा के 12 : इस सूरए शरीफ़ा में येह आयत इकत्तीस 31 बार आई है, बार बार ने'मतों का ज़िक्र फ़रमा कर येह इर्शाद फ़रमाया गया है कि अपने रब की कौन सी ने'मत को झुटलाओगे, येह हिदायत व इर्शाद का बेहतरीन उस्लूब है ताकि सामेअ़ के नफ़्स को तम्बीह हो और उसे अपने जुर्म और ना सिपासी (नाशुक्री) का हाल मा'लूम हो जाए कि उस ने किस क़दर ने'मतों को झुटलाया है और उसे शर्म आए और वोह अदाए शुक्र व ताअ़त की तरफ़ माइल हो और येह समझ ले कि **अल्लाह** तआ़ला की बे शुमार ने'मतें उस पर हैं। **हदीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सूरत मैं ने जिन्नात को सुनाई वोह तुम से अच्छा जवाब देते थे जब मैं आयत ''فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ'' पढ़ता वोह कहते : ऐ रब हमारे ! हम तेरी किसी ने'मत को नहीं झुटलाते तुझे हम्द (رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ غَرِيْبٌ) 13 : या'नी ख़ुश्क मिट्टी से जो बजाने से बजे और कोई चीज़ खनखनाती आवाज़ दे, फिर उस मिट्टी को तर किया कि वोह मिस्ल गारे के हो गई, फिर उस को गलाया कि वोह मिस्ल सियाह कीचड़ के हो गई। 14 : या'नी ख़ालिस बे धूएं वाले शो'ले से 15 : दोनों पूरब और दोनों पश्चिम से मुराद आफ़्ताब के तुलूअ़ होने के दोनों मक़ाम हैं, गरमी के भी और जाड़े के भी, इसी तरह ग़ुरूब होने के भी दोनों मक़ाम हैं। 16 : शीरीं और शोर 17 : न उन के दरमियान ज़ाहिर में कोई फ़ासिल न हाइल। 18 : **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से 19 : हर एक अपनी हद पर रहता है और किसी का ज़ाएक़ा तब्दील नहीं होता। 20 : जिन चीज़ों से वोह कश्तियां बनाई गईं वोह भी **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा कीं और उन को तरकीब देने और कश्ती बनाने और सनाई करने की अ़क़्ल भी **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा की और दरियाओं में उन कश्तियों का चलना और तैरना येह सब **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत से है। 21 : हर जानदार वग़ैरा हलाक होने वाला है।

ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ یَسْـَٔلُهٗ مَنْ

अज़्मत और बुज़ुर्गी वाला[22] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उसी के मंगता हैं जितने

فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ كُلَّ یَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

आस्मानों और ज़मीन में हैं[23] उसे हर दिन एक काम है[24] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَیُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे जल्द सब काम निबटा कर हम तुम्हारे हिसाब का क़स्द फ़रमाते हैं ऐ दोनों भारी गुरोह[25] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ

झुटलाओगे ऐ जिन्नो इन्सान के गुरोह अगर तुम से हो सके कि

اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْاؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾

आस्मानों और ज़मीन के कनारों से निकल जाओ तो निकल जाओ जहां निकल कर जाओगे उसी की सल्तनत है[26]

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ یُرْسَلُ عَلَیْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ۬ وَّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे तुम पर[27] छोड़ी जाएगी बे धूएं की आग की लपट और

نُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ

बे लपट का काला धूआं[28] तो फिर बदला न ले सकोगे[29] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे फिर जब आस्मान

22 : कि वोह ख़ल्क़ के फ़ना के बा'द उन्हें ज़िन्दा करेगा और अबदी हयात अता फ़रमाएगा और ईमानदारों पर लुत्फ़ो करम करेगा। 23 : फ़िरिश्ते हों या जिन्न या इन्सान या और कोई मख़्लूक़ कोई भी उस से बे नियाज़ नहीं सब उस के फ़ज़्ल के मोहताज हैं और ज़बाने हाल व क़ाल से उस के हुज़ूर साइल। 24 : या'नी वोह हर वक़्त अपनी क़ुदरत के आसार ज़ाहिर फ़रमाता है, किसी को रोज़ी देता है, किसी को मारता है किसी को जिलाता (पैदा करता) है, किसी को इ़ज़्ज़त देता है किसी को ज़िल्लत, किसी को ग़नी करता है किसी को मोहताज, किसी के गुनाह बख़्शता है किसी की तक्लीफ़ रफ़्अ़ करता है। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो कहते थे कि **अल्लाह** तआला सनीचर के रोज़ कोई काम नहीं करता, उन के क़ौल का बुतूलान ज़ाहिर फ़रमाया गया। मन्क़ूल है कि एक बादशाह ने अपने वज़ीर से इस आयत के मा'ना दरयाफ़्त किये, उस ने एक रोज़ की मोहलत चाही और निहायत मुतफ़क्किर व मग़्मूम हो कर अपने मकान पर आया, उस के एक ह़बशी ग़ुलाम ने वज़ीर को परेशान देख कर कहा कि ऐ मेरे आक़ा आप को क्या मुसीबत पेश आई बयान कीजिये, वज़ीर ने बयान किया तो ग़ुलाम ने कहा कि इस के मा'ना बादशाह को मैं समझा दूंगा, वज़ीर ने उस को बादशाह के सामने पेश किया तो ग़ुलाम ने कहा कि ऐ बादशाह **अल्लाह** की शान येह है कि वोह रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में और मुर्दे से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दे से मुर्दा और बीमार को तन्दुरुस्ती देता है और तन्दुरुस्त को बीमार करता है, मुसीबत ज़दा को रिहाई देता है और बे ग़मों को मुसीबत में मुब्तला करता है, इ़ज़्ज़त वालों को ज़लील करता है ज़लीलों को इ़ज़्ज़त देता है, मालदारों को मोहताज करता है मोहताजों को मालदार, बादशाह ने ग़ुलाम का जवाब पसन्द किया और वज़ीर को हुक्म दिया कि इस ग़ुलाम को ख़िल्अ़ते वज़ारत पहनाए, ग़ुलाम ने वज़ीर से कहा : ऐ आक़ा येह भी **अल्लाह** तआला की एक शान है। 25 : जिन्नो इन्स के 26 : तुम उस से कहीं भाग नहीं सकते। 27 : रोज़े क़ियामत जब तुम क़ब्रों से निकलोगे 28 : हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने फ़रमाया : लपट में धूआं हो तो उस के सब अज्ज़ा जलाने वाले न होंगे कि ज़मीन के अज्ज़ा शामिल हैं जिन से धूआं बनता है और धूएं में लपट हो तो वोह पूरा सियाह और अंधेरा न होगा कि लपट की रंगत शामिल है, उन पर बे धूएं की लपट भेजी जाएगी जिस के सब अज्ज़ा जलाने वाले और बे लपट का धूआं जो सख़्त काला अंधेरा और उसी के वज्हे करीम की पनाह। 29 : उस अ़ज़ाब

السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

फट जाएगा तो गुलाब के फूल सा हो जाएगा[30] जैसे सुर्ख़ नरी (सुर्ख़ रंगा हुवा चमड़ा) तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

فَیَوْمَىٕذٍ لَّا یُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

तो उस दिन[31] गुनहगार के गुनाह की पूछ न होगी किसी आदमी और जिन्न से[32] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ یُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِیْمٰهُمْ فَیُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِیْ وَ

झुटलाओगे मुजरिम अपने चेहरे से पहचाने जाएंगे[33] तो माथा और पाउं पकड़ कर जहन्नम में डाले

الْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ

जाएंगे[34] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे[35] येह है वोह जहन्नम जिसे

یُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ یَطُوْفُوْنَ بَیْنَهَا وَ بَیْنَ حَمِیْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَیِّ

(margin: وقف لازم)

मुजरिम झुटलाते हैं फेरे करेंगे इस में और इन्तिहा के जलते खौलते पानी में[36] तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَ لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَیِّ

(margin: ع ٢/١٢)

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे[37] उस के लिये दो जन्नतें हैं[38] तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बहुत सी डालों वालियां[39] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾

झुटलाओगे उन में दो चश्मे बहते हैं[40] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

से न बच सकोगे और आपस में एक दूसरे की मदद न कर सकोगे, बल्कि येह लपट और धूआं तुम्हें मह़शर की त़रफ़ ले जाएंगे, पहले से इस की ख़बर दे देना येह भी **अल्लाह** तआ़ला का लुत़्फ़ो करम है ताकि उस की ना फ़रमानी से बाज़ रह कर अपने आप को इस बला से बचा सको। **30 :** कि जगह जगह से शक़ और रंगत का सुर्ख़। (ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ) **31 :** या'नी जब कि क़ब्रों से उठाए जाएंगे और आस्मान फटेगा। **32 :** उस रोज़ मलाएका मुजरिमीन से दरयाफ़्त न करेंगे, उन की सूरतें ही देख कर पहचान लेंगे और सुवाल दूसरे वक़्त होगा जब कि लोग मौक़िफ़ में जम्अ़ होंगे। **33 :** कि उन के मुंह काले और आंखें नीली होंगी **34 :** पाउं पीठ के पीछे से ला कर पेशानियों से मिला दिये जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाले जाएंगे और येह भी कहा गया है कि बा'ज़े पेशानियों से घसीटे जाएंगे बा'ज़े पाउं से। **35 :** और उन से कहा जाएगा **36 :** कि जब जहन्नम की आग से जल भुन कर फ़रियाद करेंगे तो उन्हें जलता खौलता पानी पिलाया जाएगा और इस के अ़ज़ाब में मुब्तला किये जाएंगे, ख़ुदा की ना फ़रमानी के इस अन्जाम से आगाह फ़रमा देना **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत है। **37 :** या'नी जिसे अपने रब के हुज़ूर रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ में ह़िसाब के लिये खड़े होने का डर हो और वोह मआ़सी तर्क करे और फ़राइज़ बजा लाए **38 :** जन्नते अ़द्न और जन्नते नईम और येह भी कहा गया है कि एक जन्नत रब से डरने का सिला और एक शहवात तर्क करने का सिला। **39 :** और हर डाली में क़िस्म क़िस्म के मेवे। **40 :** एक आबे शीरीं का और एक शराबे पाक का या एक तस्नीम दूसरा सल्सबील।

فِيۡهِمَا مِنۡ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوۡجٰنِ ۚ﴿۵۲﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۳﴾

उन में हर मेवा दो दो क़िस्म का तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे

مُتَّكِـِٕيۡنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآٮِٕنُهَا مِنۡ اِسۡتَبۡرَقٍ ؕ وَجَنَا الۡجَـنَّتَيۡنِ دَانٍ ۚ﴿۵۴﴾

ऐसे बिछोनों पर तक्या लगाए जिन का अस्तर क़नादीज़ का[41] और दोनों के मेवे इतने झुके हुए कि नीचे से चुन लो[42]

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۵﴾ فِيۡهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرۡفِ ۙ لَمۡ يَطۡمِثۡهُنَّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन बिछोनों पर वोह औरतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं[43]

اِنۡسٌ قَبۡلَهُمۡ وَلَا جَآنٌّ ۚ﴿۵۶﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۷﴾ كَاَنَّهُنَّ

उन से पहले उन्हें न छुवा किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे गोया वोह

الۡيَاقُوۡتُ وَالۡمَرۡجَانُ ۚ﴿۵۸﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۹﴾ هَلۡ جَزَآءُ

ला'ल और मूंगा हैं[44] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे नेकी का बदला

الۡاِحۡسَانِ اِلَّا الۡاِحۡسَانُ ۚ﴿۶۰﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۱﴾ وَمِنۡ

क्या है मगर नेकी[45] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे और

دُوۡنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۚ﴿۶۲﴾ فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ﴿۶۳﴾ مُدۡهَآمَّتٰنِ ۚ﴿۶۴﴾

इन के सिवा दो जन्नतें और हैं[46] तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे निहायत सब्ज़ी से सियाही की झलक दे रही हैं

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۚ﴿۶۵﴾ فِيۡهِمَا عَيۡنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۚ﴿۶۶﴾ فَبِاَىِّ

तो अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में दो चश्मे हैं छलकते हुए तो अपने

اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۷﴾ فِيۡهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخۡلٌ وَّرُمَّانٌ ۚ﴿۶۸﴾ فَبِاَىِّ

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में मेवे और खजूरें और अनार हैं तो अपने

---

41 : या'नी संगीन रेशम का, जब अस्तर का येह हाल है तो अब्रा कैसा होगा سُبْحٰنَ اللّٰه **42 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि दरख़्त इतना क़रीब होगा कि **अल्लाह** तआला के प्यारे खड़े बैठे उस का मेवा चुन लेंगे। **43 :** जन्नती बीबियां अपने शोहर से कहेंगी मुझे अपने रब के इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम जन्नत में मुझे कोई चीज़ तुझ से ज़ियादा अच्छी नहीं मा'लूम होती तो उस ख़ुदा की ह़म्द जिस ने तुझे मेरा शोहर किया और मुझे तेरी बीबी बनाया। **44 :** सफ़ाई और ख़ुशरंगी में, ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नती हूरों के सफ़ाए अबदान का येह आ़लम है कि उन की पिंडली का मग़्ज़ इस त़रह़ नज़र आता है जिस त़रह़ आबगीने की सुराही में शराबे सुर्ख़। **45 :** या'नी जिस ने दुन्या में नेकी की उस की जज़ा आख़िरत में एह़साने इलाही है, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जो "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" का क़ाइल हो और शरीअ़ते मुह़म्मदिय्यह पर आ़मिल, उस की जज़ा जन्नत है। **46 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि दो जन्नतें तो ऐसी हैं जिन के ज़ुरूफ़ और सामान चांदी के हैं और दो जन्नतें ऐसी कि जिन के ज़ुरूफ़ व अस्बाब सोने के और एक क़ौल येह भी है कि पहली दो जन्नतें सोने और चांदी की और दूसरी याक़ूत व ज़बर जद की।

www.dawateislami.net

الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे उन में औरतें हैं आ़दत की नेक सूरत की अच्छी तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿۷۲﴾ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन[47] तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾ فَبِاَيِّ الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا

झुटलाओगे उन से पहले उन्हें हाथ न लगाया किसी आदमी और न जिन्न ने तो अपने रब की कौन सी ने'मत

تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿۷۶﴾ فَبِاَيِّ

झुटलाओगे[48] तक्या लगाए हुए सब्ज़ बिछोनों और मुनक़्क़श ख़ूब सूरत चांदनियों पर तो अपने

الْاٰۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۷﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۷۸﴾ ع ۳

रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे बड़ी बरकत वाला है तुम्हारे रब का नाम जो अ़ज़मत वाला बुज़ुर्गी वाला

اٰيَاتُهَا ۹۶ ﴿۵۶﴾ سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ ﴿۴۶﴾ رُكُوْعَاتُهَا ۳

सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है, इस में छियानवे आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿۱﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿۲﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿۳﴾ وقف لازم

जब हो लेगी वोह होने वाली[2] उस वक़्त उस के होने में किसी को इन्कार की गुन्जाइश न होगी किसी को पस्त करने वाली[3] किसी को बुलन्दी देने वाली[4]

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿۴﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿۵﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً

जब ज़मीन कांपेगी थरथरा कर[5] और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे चूरा हो कर तो हो जाएंगे जैसे रोज़न (सूराख़) की धूप में ग़ुबार के

47 : कि उन ख़ैमों से बाहर नहीं निकलतीं, येह उन की शराफ़त व करामत है। ह़दीस शरीफ़ में है अगर जन्नती औ़रतों में से ज़मीन की त़रफ़ किसी की एक झलक पड़ जाए तो आस्मान व ज़मीन के दरमियान की तमाम फ़ज़ा रोशन हो जाए और ख़ुश्बू से भर जाए और उन के ख़ैमे मोती और ज़बर जद के होंगे। **48 :** और उन के शोहर जन्नत में ऐ़श करेंगे **1 :** सूरए वाक़िअ़ह मक्किय्या है सिवाए आयत "اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ" और आयत "ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ" के, इस सूरत में तीन 3 रुकूअ़ और छियानवे या सत्तानवे या निनानवे आयतें और तीन सो अठत्तर 378 कलिमे और एक हज़ार सात सो तीन 1703 ह़र्फ़ हैं। इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरए वाक़िअ़ह को हर शब पढ़े वोह फ़ाक़े से हमेशा मह़फ़ूज़ रहेगा। (خازن) **2 :** या'नी जब क़ियामत क़ाइम हो जो ज़रूर होने वाली है। **3 :** जहन्नम में गिरा कर **4 :** दुख़ूले जन्नत के साथ। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जो लोग दुन्या में ऊंचे थे क़ियामत उन्हें पस्त करेगी और जो दुन्या में पस्ती में थे उन के मर्तबे बुलन्द करेगी और येह भी कहा गया है कि अहले मा'सियत को पस्त करेगी और अहले त़ाअ़त को बुलन्द। **5 :** ह़त्ता कि इस की तमाम इमारतें गिर जाएंगी।

مُّنۡۢبَثًّا ۙ﴿۶﴾ وَّ كُنۡتُمۡ اَزۡوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿۷﴾ فَاَصۡحٰبُ الۡمَيۡمَنَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصۡحٰبُ

बारीक ज़र्रे फैले हुए   और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे   तो दहनी त़रफ़ वाले[6]   कैसे दहनी

الۡمَيۡمَنَةِ ؕ﴿۸﴾ وَ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ۙ۬ مَاۤ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ؕ﴿۹﴾ وَ السّٰبِقُوۡنَ

त़रफ़ वाले[7]   और बाईं त़रफ़ वाले[8]   कैसे बाईं त़रफ़ वाले[9]   और जो सब्क़त ले गए[10]

السّٰبِقُوۡنَ ۚ﴿۱۰﴾ اُولٰٓئِكَ الۡمُقَرَّبُوۡنَ ۚ﴿۱۱﴾ فِىۡ جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ﴿۱۲﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ

वोह तो सब्क़त ही ले गए[11]   वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं   चैन के बाग़ों में   अगलों में से

الۡاَوَّلِيۡنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَ قَلِيۡلٌ مِّنَ الۡاٰخِرِيۡنَ ؕ﴿۱۴﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوۡضُوۡنَةٍ ۙ﴿۱۵﴾

एक गुरोह   और पिछलों में से थोड़े[12]   जड़ाउ तख़्तों पर होंगे[13]

مُّتَّكِـِٕيۡنَ عَلَيۡهَا مُتَقٰبِلِيۡنَ ﴿۱۶﴾ يَطُوۡفُ عَلَيۡهِمۡ وِلۡدَانٌ مُّخَلَّدُوۡنَ ۙ﴿۱۷﴾

उन पर तक्या लगाए हुए आमने सामने[14]   उन के गिर्द लिये फिरेंगे[15] हमेशा रहने वाले लड़के[16]

بِاَكۡوَابٍ وَّ اَبَارِيۡقَ ۙ۬ وَ كَاۡسٍ مِّنۡ مَّعِيۡنٍ ۙ﴿۱۸﴾ لَّا يُصَدَّعُوۡنَ عَنۡهَا وَ لَا

कूज़े और आफ़्ताबे   और जाम आंखों के सामने बहती शराब के   उस से न उन्हें दर्दे सर हो

يُنۡزِفُوۡنَ ۙ﴿۱۹﴾ وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوۡنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَ لَحۡمِ طَيۡرٍ مِّمَّا

न होश में फ़र्क़ आए[17]   और मेवे जो पसन्द करें   और परिन्दों का गोश्त

6 : या'नी जिन के नामए आ'माल उन के दहने हाथों में दिये जाएंगे। **7 :** येह उन की ता'ज़ीमे शान के लिये फ़रमाया, वोह बड़ी शान रखते हैं, सईद हैं, जन्नत में दाख़िल होंगे। **8 :** जिन के नामहाए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे। **9 :** येह उन की तह़क़ीरे शान के लिये फ़रमाया कि वोह शक़ी हैं जहन्नम में दाख़िल होंगे। **10 :** नेकियों में **11 :** दुख़ूले जन्नत में। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि वोह हिजरत में सब्क़त करने वाले हैं कि आख़िरत में जन्नत की त़रफ़ सब्क़त करेंगे। **एक** क़ौल येह है कि वोह इस्लाम की त़रफ़ सब्क़त करने वाले हैं और **एक** क़ौल येह है कि वोह मुहाजिरीन व अन्सार हैं जिन्हों ने दोनों क़िब्लों की त़रफ़ नमाज़ें पढ़ीं **12 :** या'नी साबिक़ीन अगलों में से बहुत हैं और पिछलों में से थोड़े और अगलों में से मुराद या तो पहली उम्मतें हैं ज़मानए ह़ज़रते आदम से हमारे सरकार सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक तक की, जैसा कि अक्सर मुफ़स्सिरीन का क़ौल है, लेकिन येह क़ौल निहायत ज़ईफ़ है अगर्चे मुफ़स्सिरीन ने इस के वुजूहे ज़ो'फ़ के जवाब में बहुत सी तौजीहात भी की हैं, क़ौले सह़ीह़ तफ़्सीर में येह है कि अगलों से उम्मते मुह़म्मदिय्यह ही के पहले लोग मुहाजिरीन व अन्सार में से जो साबिक़ीने अव्वलीन हैं वोह मुराद हैं और पिछलों से उन के बा'द वाले, अह़ादीस से भी इस की ताईद होती है। ह़दीसे मरफ़ूअ़ में है कि अव्वलीनो आख़िरीन यहां इसी उम्मत के पहले और पिछले हैं और येह भी मरवी है कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दोनों गुरोह मेरी ही उम्मत के हैं। (تفسیر کبیر و بحر العلوم وغیرہ) **13 :** जिन में ला'ल, याक़ूत, मोती वग़ैरा जवाहिरात जड़े होंगे **14 :** ह़ुस्ने इ़शरत के साथ बा शानो शकोह एक दूसरे को देख कर मसरूर दिलशाद होंगे **15 :** आदाबे ख़िदमत के साथ **16 :** जो न मरें न बूढ़े हों न उन में तग़य्युर आए, येह **अल्लाह** तआ़ला ने अहले जन्नत की ख़िदमत के लिये जन्नत में पैदा फ़रमाए। **17 :** ब ख़िलाफ़ शराबे दुन्या के कि इस के पीने से ह़वास मुख़्तल हो जाते हैं (बिगड़ जाते हैं)।

www.dawateislami.net

يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ حُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ

जो चाहें[18] और बड़ी आंख वालियां हूरें[19] जैसे छुपे रखे हुए मोती[20] सिला

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّ لَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا

उन के आ'माल का[21] उस में न सुनेंगे कोई बेकार बात न गुनहगारी[22] हां

قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ

येह कहना होगा सलाम सलाम[23] और दहनी त़रफ़ वाले कैसे दहनी त़रफ़ वाले[24] बे कांटे

سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّ طَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّ ظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾ وَّ مَآءٍ

की बेरियों में और केले के गुच्छों में[25] और हमेशा के साए में और हमेशा

مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّ فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّ لَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَّ

जारी पानी में और बहुत से मेवों में जो न ख़त्म हों[26] और न रोके जाएं[27] और

فُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

बुलन्द बिछोनों में[28] बेशक हम ने उन औ़रतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कुंवारियां अपने शोहर पर प्यारियां

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ع ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَ ثُلَّةٌ ع ٣١ ١٤

उन्हें प्यार दिलातियां एक उ़म्र वालियां[29] दहनी त़रफ़ वालों के लिये अगलों में से एक गुरौह और पिछलों

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ۬ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾ فِيْ

में से एक गुरौह[30] और बाईं त़रफ़ वाले[31] कैसे बाईं त़रफ़ वाले[32] जलती

18 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अगर जन्नती को परिन्दों के गोश्त की ख़्वाहिश होगी तो उस के ह़स्बे मरज़ी परिन्द उड़ता हुवा सामने आएगा और रिकाबी में आ कर सामने पेश होगा उस में से जितना चाहेगा जन्नती खाएगा फिर वोह उड़ जाएगा। (خازن) **19 :** उन के लिये होंगी **20 :** या'नी जैसा मोती सदफ़ में छुपा होता है कि न तो उसे किसी के हाथ ने छुवा न धूप और हवा लगी उस की सफ़ाई अपनी निहायत पर है, इसी त़रह़ वोह हूरें अछूती होंगी, येह भी मरवी है कि हूरों के तबस्सुम से जन्नत में नूर चमकेगा और जब वोह चलेंगी तो उन के हाथों और पाउं के ज़ेवरों से तक़्दीस व तम्जीद की आवाज़ें आएंगी और याक़ूती हार उन की गरदनों के हुस्नो ख़ूबी से हंसेंगे। **21 :** कि दुन्या में उन्हों ने फ़रमां बरदारी की। **22 :** या'नी जन्नत में कोई ना गवार और बात़िल बात सुनने में न आएगी। **23 :** जन्नती आपस में एक दूसरे को सलाम करेंगे, मलाएका अहले जन्नत को सलाम करेंगे **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की त़रफ़ से उन की त़रफ़ सलाम आएगा, येह ह़ाल तो साबिक़ीने मुक़र्रबीन का था, इस के बा'द जन्नतियों के दूसरे गुरौह अस्ह़ाबे यमीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है : **24 :** उन की अ़जीब शान है कि **अल्लाह** के ह़ुज़ूर में मुअ़ज़्ज़ज़ो मुकर्रम हैं। **25 :** जिन के दरख़्त जड़ से चोटी तक फलों से भरे होंगे। **26 :** जब कोई फल तोड़ा जाए फ़ौरन उस की जगह वैसे ही दो मौजूद। **27 :** अहले जन्नत फलों के लेने से। **28 :** जो मुरस्सअ़ ऊंचे ऊंचे तख़्तों पर होंगे और येह भी कहा गया है कि बिछोनों से मुराद औ़रतें हैं इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि औ़रतें फ़ज़्लो जमाल में बुलन्द दरजा रखती होंगी। **29 :** जवान और उन के शोहर भी जवान और येह जवानी हमेशा क़ाइम रहने वाली। **30 :** येह अस्ह़ाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है कि वोह इस उम्मत

www.dawateislami.net

سَمُوْمٍ وَّ حَمِیْمٍ ﴿۴۲﴾ وَّ ظِلٍّ مِّنْ یَّحْمُوْمٍ ﴿۴۳﴾ لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِیْمٍ ﴿۴۴﴾

हवा और खौलते पानी में और जलते धूएं की छाउं में[33] जो न ठन्डी न इ़ज़्ज़त की

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِیْنَ ﴿۴۵﴾ وَ كَانُوْا یُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ

बेशक वोह इस से पहले[34] ने'मतों में थे और उस बड़े गुनाह की[35] हट (ज़िद)

الْعَظِیْمِ ﴿۴۶﴾ وَ كَانُوْا یَقُوْلُوْنَ اَىِٕذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا

रखते थे और कहते थे क्या जब हम मर जाएं और हड्डियां और मिट्टी हो जाएं तो क्या ज़रूर हम

لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۴۷﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِیْنَ وَ

उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले बाप दादा भी तुम फ़रमाओ कि बेशक सब अगले और

الْاٰخِرِیْنَ ﴿۴۹﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِیْقَاتِ یَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۵۰﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ

पिछले ज़रूर इकट्ठे किये जाएंगे एक जाने हुए दिन की मीआ़द पर[36] फिर बेशक तुम

اَیُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿۵۱﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿۵۲﴾

ऐ गुमराहो[37] झुटलाने वालो ज़रूर थूहड़ के पेड़ में से खाओगे

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَیْهِ مِنَ الْحَمِیْمِ ﴿۵۴﴾ فَشٰرِبُوْنَ

फिर उस से पेट भरोगे फिर उस पर खौलता पानी पियोगे फिर ऐसा पियोगे

شُرْبَ الْهِیْمِ ﴿۵۵﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ یَوْمَ الدِّیْنِ ﴿۵۶﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْ

जैसे सख़्त प्यासे ऊंट पियें[38] येह उन की मेहमानी है इन्साफ़ के दिन हम ने तुम्हें पैदा किया[39] तो तुम क्यूं

لَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ

नहीं सच मानते[40] तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो[41] क्या तुम उस का आदमी बनाते हो या हम

के पहलों पिछलों दोनों गुरौहों में से होंगे, पहले गुरौह तो अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह हैं (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और पिछले उन के बा'द वाले, इस से पहले रुकूअ़ में साबिक़ीने मुक़र्रबीन की दो जमाअ़तों का ज़िक्र था और इस आयत में अस्ह़ाबे यमीन के दो गुरौहों का बयान है। **31 :** जिन के नामए आ'माल बाएं हाथों में दिये जाएंगे। **32 :** उन का ह़ाल शक़ावत में अ़जीब है, उन के अ़ज़ाब का बयान फ़रमाया जाता है कि वोह इस ह़ाल में होंगे : **33 :** जो निहायत तारीक व सियाह होगा **34 :** दुन्या के अन्दर **35 :** या'नी शिर्क की **36 :** वोह रोज़े क़ियामत है। **37 :** राहे ह़क़ से बहकने वालो और ह़क़ को **38 :** उन पर ऐसी भूक मुसल्लत़ की जाएगी कि वोह मुज़्त़र हो कर जहन्नम का जलता थूहड़ खाएंगे, फिर जब उस से पेट भर लेंगे तो उन पर प्यास मुसल्लत़ की जाएगी जिस से मुज़्त़र हो कर ऐसा खौलता पानी पियेंगे जो आंतें काट डालेगा। **39 :** नेस्त से हस्त किया **40 :** मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को। **41 :** औ़रतों के रेह़्म में।

www.dawateislami.net

الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَیْنَكُمُ الْمَوْتَ وَ مَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِیْنَ ﴿۶۰﴾

बनाने वाले हैं[42] हम ने तुम में मरना ठहराया[43] और हम इस से हारे नहीं

عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَ نُنْشِئَكُمْ فِیْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ لَقَدْ عَلِمْتُمُ

कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें ख़बर नहीं[44] और बेशक तुम जान चुके हो

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْ لَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾

पहली उठान[45] फिर क्यूं नहीं सोचते[46] तो भला बताओ तो जो बोते हो

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं[47] हम चाहें तो[48] उसे रौंदन (पामाल) कर दें[49]

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾

फिर तुम बातें बनाते रह जाओ[50] कि हम पर चट्टी (तावान) पड़ी[51] बल्कि हम बे नसीब रहे

اَفَرَءَیْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ

तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या

نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْ لَا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾

हम हैं उतारने वाले[52] हम चाहें तो उसे खारी कर दें[53] फिर क्यूं नहीं शुक्र करते[54]

اَفَرَءَیْتُمُ النَّارَ الَّتِیْ تُوْرُوْنَ ﴿۷۱﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ

तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो[55] क्या तुम ने उस का पेड़ पैदा किया[56] या हम हैं

الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿۷۲﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ مَتَاعًا لِّلْمُقْوِیْنَ ﴿۷۳﴾ فَسَبِّحْ

पैदा करने वाले हम ने उसे[57] जहन्नम की यादगार बनाया[58] और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाएदा[59] तो ऐ महबूब तुम पाकी बोलो

42 : कि नुत्फ़े को सूरते इन्सानी देते हैं, जिन्दगी अ़ता फ़रमाते हैं, तो मुर्दों को ज़िन्दा करना हमारी क़ुदरत से क्या बईद। **43 :** ह़स्बे इक़्तिज़ाए हिक्मत व मशिय्यत और उ़म्रें मुख़्तलिफ़ रखीं, कोई बचपन ही में मर जाता है कोई जवान हो कर, कोई अधेड़ उ़म्र में, कोई बुढ़ापे तक पहुंचता है, जो हम मुक़द्दर करते हैं वोही होता है। **44 :** या'नी मस्ख़ कर के बन्दर सुअर वग़ैरा की सूरत बना दें, येह सब हमारी क़ुदरत में है। **45 :** कि हम ने तुम्हें नेस्त से हस्त किया। **46 :** कि जो नेस्त को हस्त कर सकता है वोह बिल यक़ीन मुर्दे को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है। **47 :** इस में शक नहीं कि बालें बनाना और उस में दाने पैदा करना **अल्लाह** तआ़ला ही का काम है और किसी का नहीं। **48 :** जो तुम बोते हो **49 :** ख़ुश्क घास चूरा चूरा जो किसी काम की न रहे **50 :** मुतह़य्यिर और नादिम व ग़मगीन **51 :** हमारा माल बेकार ज़ाएअ़ हो गया **52 :** अपनी क़ुदरते कामिला से **53 :** कि कोई पी न सके। **54 :** **अल्लाह** तआ़ला की ने'मत और उस के एह़सान व करम का। **55 :** दो तर लकड़ियों से जिन को ज़न्द व ज़न्दा कहते हैं उन के रगड़ने से आग निकलती है। **56 :** मर्ख़ व अ़फ़ार (दो दरख़्त) जिन से ज़न्द व ज़न्दा (तर लकड़ियां) ली जाती है। **57 :** या'नी आग को **58 :** कि देखने वाला उस को देख कर जहन्नम की बड़ी आग को याद करे और **अल्लाह** तआ़ला से और उस

ع ٢ ٣٦ ١٥ آياتها

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَ اِنَّهٗ لَقَسَمٌ

अपने अ़ज़्मत वाले रब के नाम की तो मुझे क़सम है उन जगहों की जहां तारे डूबते हैं[60] और तुम समझो

لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا

तो येह बड़ी क़सम है बेशक येह इ़ज़्ज़त वाला क़ुरआन है[61] मह़फ़ूज़ नविश्ते में[62] इसे न

يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا

छूएं मगर बा वुज़ू[63] उतारा हुवा है सारे जहान के रब का तो क्या

الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

इस बात में तुम सुस्ती करते हो[64] और अपना ह़िस्सा येह रखते हो कि झुटलाते हो[65]

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾ وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ

फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम[66] उस वक़्त देख रहे हो और हम[67]

اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ

उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं[68] तो क्यूं न हुवा अगर तुम्हें

مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ

बदला मिलना नहीं[69] कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो[70] फिर वोह मरने वाला अगर

الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ

मुक़र्रबों से है[71] तो राह़त है और फूल[72] और चैन के बाग़[73] और अगर[74]

के अ़ज़ाब से डरे। **59 :** कि अपने सफ़रों में उस से नफ़्अ़ उठाते हैं। **60 :** कि वोह मक़ाम हैं ज़ुहूरे क़ुदरत व जलाले इलाही के। **61 :** जो सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया गया, क्यूं कि येह कलामे इलाही और वह़्ये रब्बानी है। **62 :** जिस में तब्दील व तह़रीफ़ मुम्किन नहीं। **63 मसाइल :** जिस को ग़ुस्ल की ह़ाजत हो या जिस का वुज़ू न हो या ह़ाइज़ा औ़रत या निफ़ास वाली इन में से किसी को क़ुरआने मजीद का बिग़ैर ग़िलाफ़ वग़ैरा किसी कपड़े के छूना जाइज़ नहीं, बे वुज़ू को याद पर (ज़बानी) क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है लेकिन बे ग़ुस्ल और ह़ैज़ वाली को येह भी जाइज़ नहीं। **64 :** और नहीं मानते **65 :** ह़ज़रते ह़सन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया वोह बन्दा बड़े टोटे (ख़सारे) में है जिस का ह़िस्सा किताबुल्लाह की तक्ज़ीब हो। **66 :** ऐ अहले मय्यित ! **67 :** अपने इ़ल्मो क़ुदरत के साथ **68 :** तुम बसीरत नहीं रखते तुम नहीं जानते। **69 :** मरने के बा'द उठ कर **70 :** कुफ़्फ़ार से फ़रमाया गया कि अगर ब ख़याल तुम्हारे मरने के बा'द उठना और आ'माल का ह़िसाब किया जाना और जज़ा देने वाला मा'बूद येह कुछ भी न हो तो फिर क्या सबब है कि जब तुम्हारे प्यारों की रूह़ ह़ल्क़ में पहुंचती है तो तुम उसे लौटा क्यूं नहीं लाते और जब येह तुम्हारे इख़्तियार में नहीं तो समझो कि काम **अल्लाह** तआ़ला के इख़्तियार में है उस पर ईमान लाओ, इस के बा'द मख़्लूक़ के त़बक़ात के अह़वाल वक़्ते मौत और उन के दरजात का बयान फ़रमाया। **71 :** साबिक़ीन में से जिन का ज़िक्र ऊपर हो चुका तो उस के लिये **72 :** अबुल आ़लिया ने कहा कि मुक़र्रबीन से जो कोई दुन्या से मुफ़ारक़त करता है उस के पास जन्नत के फूलों की डाली लाई जाती है, उस की ख़ुश्बू लेता है तब रूह़ क़ब्ज़ होती है। **73 :** आख़िरत में **74 :** मरने वाला।

www.dawateislami.net

مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۱﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ

दहनी तरफ़ वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दहनी तरफ़ वालों से[75] और अगर[76]

كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصْلِيَةُ

झुटलाने वालों गुमराहों में से हो[77] तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़क्ती आग

جَحِيْمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۹۶﴾ ع ۳ ۲۲ ۱۶

में धंसाना[78] येह बेशक आ'ला दरजे की यक़ीनी बात है तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो[79]

اٰيَاتُهَا ۲۹ (۵۷) سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ (۹۴) رُكُوْعَاتُهَا ۴

सूरए ह़दीद मदनिय्या है, इस में उन्तीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह़रबान रह़म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱﴾ لَهٗ

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है[2] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है उसी के लिये है

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत जिलाता है[3] और मारता[4] और वोह सब कुछ

قَدِيْرٌ ﴿۲﴾ هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

कर सकता है वोही अव्वल[5] वोही आख़िर[6] वोही ज़ाहिर[7] वोही बात़िन[8] और वोही सब कुछ

---

75 : मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप उन का सलाम क़बूल फ़रमाएं और उन के लिये ग़मगीन न हों, वोह **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब से सलामत व मह़फ़ूज़ रहेंगे और आप उन को उसी ह़ाल में देखेंगे जो आप को पसन्द हो। 76 : मरने वाला 77 : या'नी अस्ह़ाबे शिमाल में से 78 : जहन्नम की और मरने वालों के अह़वाल और जो मज़ामीन इस सूरत में बयान किये गए 79 **ह़दीस :** जब येह आयत नाज़िल हुई : ''فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ'' तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया इस को अपने रुकूअ़ में दाख़िल करो और जब ''سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى'' नाज़िल हुई तो फ़रमाया इसे अपने सज्दों में दाख़िल करो। (ابوداؤد) **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात क़ुरआने करीम से माख़ूज़ हैं। 1 : सूरए ह़दीद मक्किय्या है या मदनिय्या, इस में चार 4 रुकूअ़, उन्तीस 29 आयतें, पांच सो चवालीस 544 कलिमे, दो हज़ार चार सो छिहत्तर 2476 ह़र्फ़ हैं। 2 : जानदार हो या बेजान। 3 : मख़्लूक़ को पैदा कर के या येह मा'ना हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करता है 4 : या'नी मौत देता है ज़िन्दों को 5 : क़दीम, हर शै से क़ब्ल, अव्वले बे इब्तिदा कि वोह था और कुछ न था। 6 : हर शै के हलाक व फ़ना होने के बा'द रहने वाला, सब फ़ना हो जाएंगे और वोह हमेशा रहेगा उस के लिये इन्तिहा नहीं। 7 : दलाइल व बराहीन से या येह मा'ना कि ग़ालिब हर शै पर। 8 : ह़वास उस के इदराक से आ़जिज़ या येह मा'ना कि हर शै का जानने वाला।

عَلِيمٌ ③ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ

जानता है वोही है जिस ने आस्मान और ज़मीन छ[6] दिन में पैदा किये[9] फिर

اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَ

अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है जानता है जो ज़मीन के अन्दर जाता है[10] और जो उस से बाहर निकलता है[11] और

مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَ

जो आस्मान से उतरता है[12] और जो उस में चढ़ता[13] और वोह तुम्हारे साथ है[14] तुम कहीं हो और

اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ④ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى

अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[15] उसी की है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और अल्लाह

اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ⑤ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي

ही की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ रात को दिन के हिस्से में लाता है[16] और दिन को रात के हिस्से

الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑥ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ

में लाता है[17] और वोह दिलों की जानता है[18] अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और

اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ

उस की राह (में) कुछ वोह ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा नशीन किया[19] तो जो तुम में ईमान लाए और

اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑦ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ

उस की राह में ख़र्च किया उन के लिये बड़ा सवाब है और तुम्हें क्या है कि अल्लाह पर ईमान न लाओ हालां कि येह रसूल

يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑧

तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने रब पर ईमान लाओ[20] और बेशक वोह[21] तुम से पहले ही अ़हद ले चुका है[22] अगर तुम्हें यक़ीन हो

9 : अय्यामे दुन्या से, कि पहला इन का यक शम्बा (इतवार) और पिछला जुमुआ़ है। हसन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि वोह अगर चाहता तो त़रफ़तुल ऐन (पलक झपक्ने) में पैदा कर देता लेकिन उस की हिक्मत इसी को मुक़्तज़ा हुई कि छ[6] को अस्ल बनाए और इन पर मदार रखे। **10 :** ख़्वाह वोह दाना हो या क़त़रा या ख़ज़ाना हो या मुर्दा **11 :** ख़्वाह वोह नबात हो या धात या और कोई चीज़ **12 :** रह़मत व अ़ज़ाब और फ़िरिश्ते और बारिश **13 :** आ'माल और दुआ़एं। **14 :** अपने इ़ल्म व क़ुदरत के साथ उ़मूमन और फ़ज़्लो रह़मत के साथ ख़ुसूसन **15 :** तो तुम्हें तुम्हारे ह़स्बे आ'माल जज़ा देगा। **16 :** इस त़रह़ कि रात को घटाता है और दिन की मिक़्दार बढ़ाता है **17 :** दिन घटा कर और रात की मिक़्दार बढ़ा कर **18 :** दिल के अ़क़ीदे और क़ल्बी असरार सब को जानता है। **19 :** जो तुम से पहले थे और तुम्हारा जा नशीन करेगा तुम्हारे बा'द वालों को, मा'ना येह हैं कि जो माल तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं सब अल्लाह तआ़ला के हैं, उस ने तुम्हें नफ़्अ़ उठाने के लिये दे दिये हैं, तुम ह़क़ीक़तन उन के मालिक नहीं हो ब मन्ज़िला नाइब व वकील के हो, उन्हें राहे ख़ुदा में ख़र्च करो और जिस त़रह़ नाइब और वकील को मालिक के हुक्म से ख़र्च करने में कोई तअम्मुल नहीं होता तो तुम्हें भी कोई तअम्मुल व तरद्दुद न हो। **20 :** और बुरहानें और ह़ुज्जतें पेश करते

هُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ عَلٰی عَبْدِهٖۤ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ لِّیُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی

वोही है कि अपने बन्दे पर[23] रोशन आयतें उतारता है कि तुम्हें[24] अंधेरियों से उजाले की तरफ़

النُّوْرِؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۹﴾ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِیْ

ले जाए[25] और बेशक अल्लाह तुम पर ज़रूर मेहरबान रहम वाला और तुम्हें क्या है कि अल्लाह की राह में

سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِیْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ لَا یَسْتَوِیْ مِنْكُمْ

ख़र्च न करो हालां कि आस्मानों और ज़मीन सब का वारिस अल्लाह ही है[26] तुम में बराबर नहीं

مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ

वोह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया[27] वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं

الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰیؕ وَ اللّٰهُ بِمَا

जिन्हों ने बा'द फ़त्ह के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से[28] अल्लाह जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका[29] और अल्लाह को

تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۱۰﴾ع مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ ع ١٧

तुम्हारे कामों की ख़बर है कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़[30] तो वोह उस के लिये

لَهٗ وَ لَهٗۤ اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾ج یَوْمَ تَرَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰی

दूने करे और उस को इज़्ज़त का सवाब है जिस दिन तुम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को[31] देखोगे कि उन का नूर[32]

نُوْرُهُمْ بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ بِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ

उन के आगे और उन के दहने दौड़ता है[33] उन से फ़रमाया जा रहा है कि आज तुम्हारी सब से ज़ियादा ख़ुशी की बात वोह जन्नतें हैं जिन के नीचे

हैं और किताबे इलाही सुनाते हैं तो अब तुम्हें क्या उज़्र हो सकता है। **21 :** या'नी अल्लाह तआला **22 :** जब उस ने तुम्हें पुश्ते आदम عَلَیْهِ السَّلَام से निकाला था कि अल्लाह तआला तुम्हारा रब है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं। **23 :** सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर **24 :** कुफ़्रो शिर्क की **25 :** या'नी नूरे ईमान की तरफ़। **26 :** तुम हलाक हो जाओगे और माल उसी की मिल्क में रह जाएंगे और तुम्हें ख़र्च करने का सवाब भी न मिलेगा और अगर तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करो तो सवाब भी पाओ। **27 :** जब कि मुसल्मान कम और कमज़ोर थे, उस वक़्त जिन्हों ने ख़र्च किया और जिहाद किया वोह मुहाजिरीन व अन्सार में से साबिक़ीने अव्वलीन हैं, उन के हक़ में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दे तो भी उन के एक मुद के बराबर न हो न निस्फ़ मुद के। मुद एक पैमाना है जिस से जव नापे जाते हैं। **शाने नुज़ूल :** कल्बी ने कहा कि येह आयत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हक़ में नाज़िल हुई क्यूं कि आप पहले वोह शख़्स हैं जो इस्लाम लाए और पहले वोह शख़्स हैं जिस ने राहे ख़ुदा में माल ख़र्च किया और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की हिमायत की। **28 :** या'नी पहले ख़र्च करने वालों से भी और फ़त्ह के बा'द ख़र्च करने वालों से भी **29 :** अलबत्ता दरजात में तफ़ावुत है क़ब्ले फ़त्ह ख़र्च करने वालों का दरजा आ'ला है। **30 :** या'नी ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च करे, इस इन्फ़ाक़ को इस मुनासबत से क़र्ज़ फ़रमाया गया है कि इस पर जन्नत का वा'दा फ़रमाया गया है। **31 :** पुल सिरात़ पर **32 :** या'नी उन के ईमान व त़ाअ़त का नूर **33 :** और जन्नत की त़रफ़ उन की रहनुमाई करता है।

www.dawateislami.net

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ۚ يَوْمَ يَقُوْلُ

नहरें बहें तुम उन में हमेशा रहो येही बड़ी कामयाबी है जिस दिन मुनाफ़िक़

الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ

मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसल्मानों से कहेंगे कि हमें एक निगाह देखो हम तुम्हारे नूर से कुछ हिस्सा लें

قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ

कहा जाएगा अपने पीछे लौटो[34] वहां नूर ढूंडो वोह लौटेंगे जभी उन के[35] दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी[36] जिस में एक

بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ؕ

दरवाज़ा है[37] उस के अन्दर की तरफ़ रहमत[38] और उस के बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब मुनाफ़िक़[39]

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ

मुसल्मानों को पुकारेंगे क्या हम तुम्हारे साथ न थे[40] वोह कहेंगे क्यूं नहीं मगर तुम ने तो अपनी जानें फ़ितने में डालीं[41] और

تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ

मुसल्मानों की बुराई तकते और शक रखते[42] और झूटी त़मअ़ ने तुम्हें फ़रेब दिया[43] यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया[44] और तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ

उस बड़े फ़रेबी ने मग़रूर रखा[45] तो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाए[46] और न खुले

كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ يَاْنِ

काफ़िरों से तुम्हारा ठिकाना आग है वोह तुम्हारी रफ़ीक़ है और क्या ही बुरा अन्जाम क्या ईमान वालों को

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ

अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस ह़क़ के लिये जो उतरा[47]

34 : जहां से आए थे या'नी मौक़िफ़ की त़रफ़ जहां हमें नूर दिया गया वहां नूर त़लब करो या येह मा'ना हैं कि तुम हमारा नूर नहीं पा सकते, नूर की त़लब के लिये पीछे लौट जाओ, फिर वोह नूर की तलाश में वापस होंगे और कुछ न पाएंगे तो दोबारा मोमिनीन की त़रफ़ फिरेंगे। **35 :** या'नी मोमिनीन और मुनाफ़िक़ीन के **36 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोही आ'राफ़ है। **37 :** उस से जन्नती जन्नत में दाख़िल होंगे। **38 :** या'नी उस दीवार के अन्दरूनी जानिब जन्नत **39 :** उस दीवार के पीछे से **40 :** दुन्या में नमाज़ें पढ़ते रोज़ा रखते **41 :** निफ़ाक़ व कुफ़्र इख़्तियार कर के **42 :** दीने इस्लाम में **43 :** और तुम बात़िल उम्मीदों में रहे कि मुसल्मानों पर ह़वादिस आएंगे वोह तबाह हो जाएंगे **44 :** या'नी मौत **45 :** या'नी शैत़ान ने धोका दिया कि अल्लाह तआ़ला बड़ा ह़लीम है तुम पर अ़ज़ाब न करेगा और न मरने के बा'द उठना न हिसाब, तुम उस के इस फ़रेब में आ गए। **46 :** जिस को दे कर तुम अपनी जान अ़ज़ाब से छुड़ा सको, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : मा'ना येह हैं कि आज न तुम से ईमान क़बूल किया जाए न तौबा। **47 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ وسلَّم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसल्मानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं।

www.dawateislami.net

وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ

और उन जैसे न हों जिन को पहले किताब दी गई[48] फिर उन पर मुद्दत दराज़ हुई[49]

فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ

तो उन के दिल सख़्त हो गए[50] और उन में बहुत फ़ासिक़ हैं[51] जान लो कि अल्लाह ज़मीन को ज़िन्दा

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ

करता है उस के मरे पीछे[52] बेशक हम ने तुम्हारे लिये निशानियां बयान फ़रमा दीं कि तुम्हें समझ हो बेशक

الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ

सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और वोह जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया[53] उन के दूने हैं

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ

और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब है[54] और वोह जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाएं वोही हैं

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَ

कामिल सच्चे और औरों पर[55] गवाह अपने रब के यहां उन के लिये उन का सवाब[56] और उन का नूर है[57] और

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾ ع اِعْلَمُوْۤا ع ۱۸/۲

जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह दोज़ख़ी हैं जान लो

اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي

कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद[58] और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद

الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना[59] उस मींह की त़रह़ जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा[60]

फ़रमाया : तुम हंसते हो अभी तक तुम्हारे रब की त़रफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाज़िल हुई, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इस हंसी का कफ़्फ़ारा क्या है ? फ़रमाया : इतना ही रोना। और उतरने वाले ह़क़ से मुराद क़ुरआने मजीद है। **48 :** या'नी यहूदो नसारा के त़रीक़े इख़्तियार न करें। **49 :** या'नी वोह ज़माना जो उन के और उन के अम्बिया के दरमियान था **50 :** और यादे इलाही के लिये नर्म न हुए, दुन्या की त़रफ़ माइल हो गए और मवाइज़ से उन्हों ने ए'राज़ किया **51 :** दीन से ख़ारिज होने वाले। **52 :** मींह बरसा कर सब्ज़ा उगा कर, बा'द इस के कि ख़ुश्क हो गई थी, ऐसे ही दिलों को सख़्त हो जाने के बा'द नर्म करता है और उन्हें इ़ल्मो ह़िक्मत से ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाता है, बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह तम्सील है ज़िक्र के दिलों में असर करने की, जिस त़रह़ बारिश से ज़मीन को ज़िन्दगी ह़ासिल होती है ऐसे ही ज़िक्रे इलाही से दिल ज़िन्दा होते हैं। **53 :** या'नी ख़ुशदिली और निय्यते सालेह़ा के साथ मुस्तह़िक़्क़ीन को सदक़ा दिया और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया **54 :** और वोह जन्नत है। **55 :** गुज़री हुई उम्मतों में से **56 :** जिस का वा'दा किया गया **57 :** जो ह़श्र में उन के साथ होगा। **58 :** जिस में वक़्त ज़ाएअ़ करने के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं **59 :** और इन चीज़ों में मश्ग़ूल रहना

www.dawateislami.net

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ

कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन (पामाल किया हुवा) हो गया[61] और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है[62] और

مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾

अल्लाह की त़रफ़ से बख़्शिश और उस की रिज़ा[63] और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल[64]

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ

बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की त़रफ़[65] जिस की चौड़ाई जैसे आस्मान और

الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

ज़मीन का फैलाव[66] तय्यार हुई है उन के लिये जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए येह अल्लाह का फ़ज़्ल है

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾ مَاۤ اَصَابَ مِنْ

जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है नहीं पहुंचती कोई

مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ

मुसीबत ज़मीन में[67] और न तुम्हारी जानों में[68] मगर वोह एक किताब में है[69] क़ब्ल इस के कि

نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۲۲﴾ۚ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا

हम उसे पैदा करें[70] बेशक येह[71] अल्लाह को आसान है इस लिये कि ग़म न खाओ उस[72] पर जो हाथ से जाए और

تَفْرَحُوْا بِمَاۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿۲۳﴾ۙ الَّذِيْنَ

ख़ुश न हो[73] उस पर जो तुम को दिया[74] और अल्लाह को नहीं भाता कोई इतरौना (मुतकब्बिर) बड़ाई मारने वाला वोह जो

और इन से दिल लगाना दुन्या है लेकिन त़ाअ़तें और इ़बादतें और जो चीज़ें कि त़ाअ़त पर मुअ़य्यन हों और वोह उमूरे आख़िरत से हैं। अब इस ज़िन्दगानिये दुन्या की एक मिसाल इर्शाद फ़रमाई जाती है **60 :** उस की सब्ज़ी जाती रही पीला पड़ गया, किसी आफ़ते समावी या अर्ज़ी से **61 :** रेज़ा रेज़ा, येही हाल दुन्या की ज़िन्दगी का है जिस पर त़ालिबे दुन्या बहुत ख़ुश होता है और उस के साथ बहुत सी उम्मीदें रखता है वोह निहायत जल्द गुज़र जाती है। **62 :** उस के लिये जो दुन्या का त़ालिब हो और ज़िन्दगी लह्वो लअ़ब में गुज़ारे और वोह आख़िरत की परवाह न करे, ऐसा ह़ाल काफ़िर का होता है। **63 :** जिस ने दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ न दी। **64 :** येह उस के लिये है जो दुन्या ही का हो जाए और उस पर भरोसा कर ले और आख़िरत की फ़िक्र न करे और जो शख़्स दुन्या में आख़िरत का त़ालिब हो और अस्बाबे दुन्यवी से भी आख़िरत ही के लिये अ़लाक़ा रखे तो उस के लिये दुन्या की काम्याबी आख़िरत का ज़रीआ़ है। ह़ज़रते ज़ुन्नून رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि ऐ गुरौहे मुरीदीन ! दुन्या त़लब न करो और अगर त़लब करो तो इस से मह़ब्बत न करो, तोशा यहां से लो आराम गाह और है। **65 :** रिज़ाए इलाही के त़ालिब बनो, उस की त़ाअ़त इख़्तियार करो और उस की फ़रमां बरदारी बजा ला कर जन्नत की त़रफ़ बढ़ो **66 :** या'नी जन्नत का अ़र्ज़ ऐसा है कि सातों आस्मान और सातों ज़मीनों के वरक़ बना कर बाहम मिला दिये जाएं तो जितने वोह हों उतना जन्नत का अ़र्ज़, फिर तूल की क्या इन्तिहा। **67 :** क़ह़त़ की, इम्साके बारां (बारिश रुकने) की, अ़दमे पैदावार की, फलों की कमी की, खेतियों के तबाह होने की **68 :** अमराज़ की और औलाद के ग़मों की **69 :** लौह़े मह़फ़ूज़ में। **70 :** या'नी ज़मीन को या जानों को या मुसीबत को **71 :** या'नी इन उमूर का बा वुजूद कसरत के लौह़ में सब्त फ़रमाना **72 :** मताए दुन्या **73 :** या'नी न इतराओ **74 :** दुन्या का मालो मताअ़, और येह समझ लो कि

يَّبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ

आप बुख़्ल करें[75] और औरों से बुख़्ल को कहें[76] और जो मुंह फेरे[77] तो बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है

الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَ

सब ख़ूबियों सराहा बेशक हम ने अपने रसूलों को रोशन दलीलों के साथ भेजा और उन के साथ किताब[78] और

الْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ

अद्ल की तराज़ू उतारी[79] कि लोग इन्साफ़ पर क़ाइम हों[80] और हम ने लोहा उतारा[81] इस में सख़्त

شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ

आंच[82] और लोगों के फ़ाएदे[83] और इस लिये कि अल्लाह देखे उस को जो बे देखे उस की[84] और उस के रसूलों की मदद करता है

اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۲۵﴾ ع وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ع ۲ ۱۹

बेशक अल्लाह कुव्वत वाला ग़ालिब है[85] और बेशक हम ने इब्राहीम और नूह को भेजा और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۶﴾

औलाद में नुबुव्वत और किताब रखी[86] तो उन में[87] कोई राह पर आया और उन में बहुतेरे फ़ासिक़ हैं

जो अल्लाह तआला ने मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होना है, न ग़म करने से कोई ज़ाएअ़ शुदा चीज़ वापस मिल सकती है न फ़ना होने वाली चीज़ इतराने के लाइक़ है, तो चाहिये कि ख़ुशी की जगह शुक्र और ग़म की जगह सब्र इख़्तियार करो, ग़म से मुराद यहां इन्सान की वोह हालत है जिस में सब्र और रिज़ा ब क़ज़ाए इलाही और उम्मीदे सवाब बाक़ी न रहे और ख़ुशी से वोह इतराना मुराद है जिस में मस्त हो कर आदमी शुक्र से ग़ाफ़िल हो जाए और वोह ग़म व रन्ज जिस में बन्दा अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो और उस की रिज़ा पर राज़ी हो ऐसे ही वोह ख़ुशी जिस पर हक़ तआला का शुक्र गुज़ार हो मम्नूअ़ नहीं। हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्दे आदम ! किसी चीज़ के फ़ुक़्दान पर क्यूं ग़म करता है येह उस को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं इतराता है मौत इस को तेरे हाथ में न छोड़ेगी। **75 :** और राहे ख़ुदा और उमूरे ख़ैर में ख़र्च न करें और हुक़ूक़े मालिय्या की अदा से क़ासिर रहें। **76 :** इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह भी है कि येह यहूद के हाल का बयान है और बुख़्ल से मुराद उन का सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के उन औसाफ़ को छुपाना है जो कुतुबे साबिक़ा में मज़्कूर थे। **77 :** ईमान से या माल ख़र्च करने से या ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी से **78 :** अहकाम व शराएअ़ की बयान करने वाली **79 :** तराज़ू से मुराद अद्ल है मा'ना येह हैं कि हम ने अद्ल का हुक्म दिया और एक क़ौल येह है कि तराज़ू से वज़्न का आला ही मुराद है। मरवी है कि हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام के पास तराज़ू लाए और फ़रमाया कि अपनी क़ौम को हुक्म दीजिये कि इस से वज़्न करें **80 :** और कोई किसी की हक़ तलफ़ी न करे। **81 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि उतारना यहां पैदा करने के मा'ना में है, मुराद येह है कि हम ने लोहा पैदा किया और लोगों के लिये मआ़दिन से निकाला और उन्हें इस की सन्अ़त का इल्म दिया और येह भी मरवी है : अल्लाह तआला ने चार बा बरकत चीज़ें आस्मान से ज़मीन की तरफ़ उतारीं लोहा, आग, पानी, नमक। **82 :** और निहायत कुव्वत कि इस से अस्लहा और आलाते जंग बनाए जाते हैं **83 :** कि सन्अ़तों और हिर्फ़तों में वोह बहुत काम आता है, ख़ुलासा येह कि हम ने रसूलों को भेजा और उन के साथ इन चीज़ों को नाज़िल फ़रमाया कि लोग हक़ व अद्ल का मुआ़मला करें। **84 :** या'नी उस के दीन की **85 :** उस को किसी की मदद दरकार नहीं, दीन की मदद करने का जो हुक्म दिया गया येह उन्ही लोगों के नफ़्अ़ के लिये है। **86 :** या'नी तौरैत व इन्जील व ज़बूर और क़ुरआन **87 :** या'नी उन की ज़ुर्रिय्यत में जिन में नबी और किताबें भेजीं।

www.dawateislami.net

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ

फिर हम ने उन के पीछे[88] इसी राह पर अपने और रसूल भेजे और उन के पीछे ईसा बिन मरयम को भेजा और उसे

الْاِنْجِيْلَ ۙ۬ وَ جَعَلْنَا فِیْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ

इन्जील अ़ता फ़रमाई और उस के पैरवों के दिल में नरमी और रह़मत रखी[89] और

رَهْبَانِيَّةَ ۣ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ

राहिब बनना[90] तो येह बात उन्हों ने दीन में अपनी त़रफ़ से निकाली हम ने उन पर मुक़र्रर न की थी हां येह बिद्अ़त उन्हों ने **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को पैदा की

فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَ

फिर उसे न निबाहा जैसा उस के निबाहने का ह़क़ था[91] तो उन के ईमान वालों को[92] हम ने उन का सवाब अ़ता किया और

كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۷﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اٰمِنُوْا

उन में बहुतेरे[93] फ़ासिक़ हैं ऐ ईमान वालो[94] **अल्लाह** से डरो और उस के रसूल[95]

بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ

पर ईमान लाओ वोह अपनी रह़मत के दो ह़िस्से तुम्हें अ़ता फ़रमाएगा[96] और तुम्हारे लिये नूर कर देगा[97] जिस में चलो

وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۸﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا

और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है येह इस लिये कि किताब वाले काफ़िर जान जाएं कि

88 : या'नी ह़ज़रते नूह़ व इब्राहीम عَلَيْهِمَا السَّلَام के बा'द ता ज़मानए ह़ज़रत ईसा عَلَيْهِ السَّلَام यके बा'दे दीगरे **89 :** कि वोह आपस में एक दूसरे के साथ मह़ब्बत व शफ़्क़त रखते। **90 :** पहाड़ों और ग़ारों और तन्हा मकानों में ख़ल्वत नशीन होना और सौमआ़ बनाना और अहले दुन्या से मुख़ालत़त (मेलजोल) तर्क करना और इबादतों में अपने ऊपर ज़ाइद मशक़्क़तें बढ़ा लेना, तारिक हो जाना, निकाह़ न करना, निहायत मोटे कपड़े पहनना, अदना ग़िज़ा निहायत कम मिक़्दार में खाना **91 :** बल्कि उस को ज़ाएअ़ कर दिया और तस्लीस व इल्ह़ाद में मुब्तला हुए और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दीन से कुफ़्र कर के अपने बादशाहों के दीन में दाख़िल हुए और कुछ लोग उन में से दीने मसीह़ी पर क़ाइम और साबित भी रहे और जब ज़मानए पाक हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पाया तो हुज़ूर पर भी ईमान लाए। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बिद्अ़त या'नी दीन में किसी बात का निकालना अगर वोह बात नेक हो और उस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो तो बेहतर है, उस पर सवाब मिलता है और उस को जारी रखना चाहिये, ऐसी बिद्अ़त को बिद्अ़ते ह़सना कहते हैं, अलबत्ता दीन में बुरी बात निकालना बिद्अ़ते सय्यिआ कहलाता है, वोह मम्नूअ़ और ना जाइज़ है और बिद्अ़ते सय्यिआ ह़दीस शरीफ़ में वोह बताई गई है जो ख़िलाफ़े सुन्नत हो, उस के निकालने से कोई सुन्नत उठ जाए। इस से हज़ारहा मसाइल का फ़ैसला हो जाता है जिन में आज कल लोग इख़्तिलाफ़ करते हैं और अपनी हवाए नफ़्सानी से ऐसे उमूरे ख़ैर को बिद्अ़त बता कर मन्अ़ करते हैं जिन से दीन की तक़्वियत व ताईद होती है और मुसल्मानों को उख़रवी फ़वाइद पहुंचते हैं और वोह ताआ़त व इबादात में ज़ौक़ो शौक़ के साथ मश्ग़ूल रहते हैं, ऐसे उमूर को बिद्अ़त बताना क़ुरआने मजीद के इस आयत के सरीह़ ख़िलाफ़ है। **92 :** जो दीन पर क़ाइम रहे थे **93 :** जिन्हों ने रुहबानिय्यत को तर्क किया और दीने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुन्ह़रिफ़ हो गए **94 :** ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते ईसा पर عَلَيْهِمَا السَّلَام। येह ख़ित़ाब अहले किताब को है, उन से फ़रमाया जाता है **95 :** सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **96 :** या'नी तुम्हें दूना (दो गुना) अज्र देगा क्यूं कि तुम पहली किताब और पहले नबी पर भी ईमान लाए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआने पाक पर भी। **97 :** (पुल) सिरात़ पर।

www.dawateislami.net

يَقۡدِرُوۡنَ عَلٰى شَىۡءٍ مِّنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الۡفَضۡلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤۡتِيۡهِ

अल्लाह के फ़ज़्ल पर उन का कुछ क़ाबू नहीं[98] और येह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ है देता है

مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِيۡمِ ﴿۲۹﴾ ع

जिसे चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है

ربع

98 : वोह उस में से कुछ नहीं पा सकते न दूना अज्र न नूर न मग़्फ़िरत, क्यूं कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो उन का पहले अम्बिया पर ईमान लाना भी मुफ़ीद न होगा। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयत नाज़िल हुई और इस में मोमिनीने अहले किताब को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ऊपर ईमान लाने पर दूने अज्र का वा'दा दिया गया तो कुफ़्फ़ारे अहले किताब ने कहा कि अगर हम हुज़ूर पर ईमान लाएं तो दूना अज्र मिले और अगर न लाएं तो एक अज्र जब भी रहेगा, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन के इस ख़याल का इब्त़ाल कर दिया गया।

www.dawateislami.net

ایاتها ٢٢ ﴿٥٨﴾ سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ ﴿١٠٥﴾ رکوعاتها ٣

सूरए मुजादलह मदनिय्या है, इस में बाईस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ﳓ وَ

बेशक **अल्लाह** ने सुनी उस की बात जो तुम से अपने शोहर के मुआ़मले में बह़स करती है[2] और **अल्लाह** से शिकायत करती है और

اللّٰهُ یَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ① اَلَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ

अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है बेशक **अल्लाह** सुनता देखता है वोह जो तुम में अपनी बीबियों को

مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآىٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَهُمْ ؕ

अपनी मां की जगह कह बैठते हैं[3] वोह उन की माएं नहीं[4] उन की माएं तो वोही हैं जिन से वोह पैदा हैं[5]

وَ اِنَّهُمْ لَیَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ

और वोह बेशक बुरी और निरी झूट बात कहते हैं[6] और बेशक **अल्लाह** ज़रूर मुआ़फ़ करने वाला

1 : सूरए मुजादलह मदनिय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, बाईस 22 आयतें, चार सो तिहत्तर 473 कलिमे, एक हज़ार सात सो बानवे 1792 ह़र्फ़ हैं। **2 :** वोह ख़ौला बिन्ते सा'लबा थीं औस बिन साबित की बीबी। **शाने नुज़ूल :** किसी बात पर औस ने उन से कहा कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है, येह कहने के बा'द औस को नदामत हुई, येह कलिमा ज़मानए जाहिलिय्यत में त़लाक़ था, औस ने कहा मेरे ख़याल में तू मुझ पर ह़राम हो गई, ख़ौला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर तमाम वाक़िआ़त अ़र्ज़ किये और अ़र्ज़ किया कि मेरा माल ख़त्म हो चुका मां बाप गुज़र गए उ़म्र ज़ियादा हो गई बच्चे छोटे छोटे हैं उन के बाप के पास छोड़ूं तो हलाक हो जाएं अपने साथ रखूं तो भूके मर जाएं, क्या सूरत है कि मेरे और मेरे शोहर के दरमियान जुदाई न हो ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तेरे बाब में मेरे पास कोई हुक्म नहीं या'नी अभी तक ज़िहार के मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्मे जदीद नाज़िल नहीं हुवा, दस्तूरे क़दीम येही है कि ज़िहार से औ़रत ह़राम हो जाती है, औ़रत ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم औस ने त़लाक़ का लफ़्ज़ न कहा, वोह मेरे बच्चों का बाप है और मुझे बहुत ही प्यारा है, इसी त़रह़ वोह बार बार अ़र्ज़ करती रही और जवाब ह़स्बे ख़्वाहिश न पाया तो आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर कहने लगी या **अल्लाह** तआ़ला ! मैं तुझ से अपनी मोह़ताजी व बे कसी और परेशान ह़ाली की शिकायत करती हूं, अपने नबी पर मेरे ह़क़ में ऐसा हुक्म नाज़िल फ़रमा जिस से मेरी मुसीबत रफ़्अ़ हो, ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया ख़ामोश हो, देख चेहरए मुबारके रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर आसारे वह़्य ज़ाहिर हैं, जब वह़्य पूरी हो गई तो फ़रमाया अपने शोहर को बुला, औस ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूर ने येह आयतें पढ़ कर सुनाईं। **3 :** या'नी ज़िहार करते हैं। **ज़िहार** इस को कहते हैं कि अपनी बीबी को मह़रमाते नसबी या रज़ाई के किसी ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह दी जाए जिस को देखना ह़राम है मसलन बीबी से कहे कि तू मुझ पर मेरी मां की पुश्त की मिस्ल है या बीबी के ऐसे उ़ज़्व को जिस से वोह ता'बीर की जाती हो या उस के जुज़्वे शाएअ़ को मह़रमात के ऐसे उ़ज़्व से तश्बीह दे जिस का देखना ह़राम है मसलन येह कहे कि तेरा सर या तेरा निस्फ़ बदन मेरी मां की पीठ या उस के पेट या उस की रान या मेरी बहन या फूफी या दूध पिलाने वाली की पीठ या पेट के मिस्ल है तो ऐसा कहना ज़िहार कहलाता है। **4 :** येह कहने से वोह माएं नहीं हो गईं। **5 मस्अला :** और दूध पिलाने वालियां ब सबबे दूध पिलाने के माओं के हुक्म में हैं और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात ब सबबे कमाल हुरमत माएं बल्कि माओं से आ'ला हैं। **6 :** जो बीबी को मां कहते हैं, उस को किसी त़रह़ मां के साथ तश्बीह देना ठीक नहीं।

www.dawateislami.net

غَفُوْرٌ ۝٢ وَالَّذِیْنَ یُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآىٕهِمْ ثُمَّ یَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا

और बख़्शने वाला है   और वोह जो अपनी बीबियों को अपनी मां की जगह कहें[7] फिर वोही करना चाहें जिस पर इतनी बड़ी बात कह चुके[8]

فَتَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

तो उन पर लाज़िम है[9] एक बर्दा (ग़ुलाम) आज़ाद करना[10] क़ब्ल इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं[11]   येह है जो नसीहत तुम्हें की जाती है   और **अल्लाह** तुम्हारे

تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝٣ فَمَنْ لَّمْ یَجِدْ فَصِیَامُ شَهْرَیْنِ مُتَتَابِعَیْنِ مِنْ

कामों से ख़बरदार है   फिर जिसे बर्दा न मिले तो[12] लगातार दो महीने के रोज़े[13] क़ब्ल

قَبْلِ اَنْ یَّتَمَآسَّا ؕ فَمَنْ لَّمْ یَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّیْنَ مِسْكِیْنًا ؕ ذٰلِكَ

इस के कि एक दूसरे को हाथ लगाएं[14]   फिर जिस से रोज़े भी न हो सकें[15] तो साठ मिस्कीनों का पेट भरना[16]   येह

لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ

इस लिये कि तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान रखो[17]   और येह **अल्लाह** की हदें हैं[18]   और काफ़िरों के लिये दर्दनाक

اَلِیْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِیْنَ یُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ

अ़ज़ाब है   बेशक वोह जो मुख़ालफ़त करते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल की ज़लील किये गए जैसे

الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابٌ

उन से अगलों को ज़िल्लत दी गई[19] और बेशक हम ने रोशन आयतें उतारीं[20]   और काफ़िरों के लिये ख़्वारी का

7 : या'नी उन से ज़िहार करें **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बांदी से ज़िहार नहीं होता अगर उस को महरमात से तश्बीह दे तो मुज़ाहिर (ज़िहार करने वाला) न होगा। **8 :** या'नी इस ज़िहार को तोड़ देना और हुरमत को उठा देना। **9 :** कफ़्फ़ारा ज़िहार का, लिहाज़ा उन पर ज़रूरी है **10 :** ख़्वाह वोह मोमिन हो या काफ़िर सग़ीर हो या कबीर मर्द हो या औरत अलबत्ता मुदब्बर और उम्मे वलद और ऐसा मुकातब जाइज़ नहीं जिस ने बदले किताबत में से कुछ अदा किया हो। **11 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि इस कफ़्फ़ारे के देने से पहले वती और इस के दवाई (अस्बाब) हराम हैं। **12 :** इस का कफ़्फ़ारा **13 :** मुत्तसिल इस तरह कि न उन दो महीनों के दरमियान रमज़ान आए न उन पांच दिनों में से कोई दिन आए जिन का रोज़ा मम्नूअ़ है और न किसी उ़ज़्र से या बिग़ैर उ़ज़्र के दरमियान से कोई रोज़ा छोड़ा जाए, अगर ऐसा हुवा तो अज़ सरे नौ रोज़े रखने पड़ेंगे। **14 मसाइल :** या'नी रोज़ों से जो कफ़्फ़ारा दिया जाए उस का भी जिमाअ़ और दवाइये जिमाअ़ से मुक़द्दम होना ज़रूरी है और जब तक वोह रोज़े पूरे हों ख़ावन्द बीवी में से कोई किसी को हाथ न लगाए। **15 :** या'नी उसे रोज़े रखने की कुव्वत ही न हो बुढ़ापे या मरज़ वग़ैरा के बाइस या रोज़े तो रख सकता हो मगर मुतवातिर व मुत्तसिल न रख सकता हो **16 :** या'नी साठ मिस्कीनों को खाना देना और येह इस तरह कि हर मिस्कीन को निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ खजूर या जव दे और अगर मिस्कीनों को इस की क़ीमत दी या सुब्हो शाम दोनों वक़्त उन्हें पेट भर कर खिला दिया जब भी जाइज़ है। **मस्अला :** इस कफ़्फ़ारे में येह शर्त नहीं कि एक दूसरे को हाथ लगाने से क़ब्ल हो हत्ता कि अगर खाना खिलाने के दरमियान में शोहर और बीबी में क़ुर्बत वाक़ेअ़ हुई तो नया कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। **17 :** और ख़ुदा और रसूल की फ़रमां बरदारी करो और जाहिलिय्यत के तरीक़े छोड़ो। **18 :** इन को तोड़ना और इन से तजावुज़ करना जाइज़ नहीं। **19 :** रसूलों की मुख़ालफ़त करने के सबब। **20 :** रसूलों के सिद्क़ पर दलालत करने वाली।

www.dawateislami.net

مُّهِيْنٌ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰهُ

अज़ाब है जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा[21] फिर उन्हें उन के कौतक (करतूत) जता देगा[22] अल्लाह ने उन्हें गिन

ع اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

रखा है और वोह भूल गए[23] और हर चीज़ अल्लाह के सामने है ऐ सुनने वाले क्या तू ने न देखा कि अल्लाह जानता है

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ

जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में[24] जहां कहीं तीन शख़्सों की सरगोशी हो[25] तो चौथा

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ

वोह मौजूद है[26] और पांच की[27] तो छटा वोह[28] और न इस से कम[29] और न इस से ज़ियादा की

اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ

मगर येह कि वोह उन के साथ है[30] जहां कहीं हों फिर उन्हें क़ियामत के दिन बता देगा जो कुछ उन्हों ने किया बेशक

اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ

अल्लाह सब कुछ जानता है क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मश्वरत (मुशावरत) से मन्अ़ फ़रमाया गया था फिर

يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ

वोही करते हैं[31] जिस की मुमानअ़त हुई थी और आपस में गुनाह और हद से बढ़ने[32] और रसूल की ना फ़रमानी के

الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ

मश्वरे करते हैं[33] और जब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं तो उन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा (सलाम) करते हैं जो लफ़्ज़ अल्लाह ने तुम्हारे ए'ज़ाज़ में न कहे[34]

21 : किसी एक को बाक़ी न छोड़ेगा। 22 : रुस्वा और शरमिन्दा करने के लिये। 23 : अपने आ'माल जो दुन्या में करते थे। 24 : उस से कुछ पोशीदा नहीं। 25 : और अपने राज़ आपस में गोश दर गोश कहें और अपनी मुशावरत पर किसी को मुत्तलअ़ न करें 26 : या'नी अल्लाह तआ़ला उन्हें मुशाहदा करता है उन के राज़ों को जानता है। 27 : सरगोशी हो 28 : या'नी अल्लाह तआ़ला 29 : या'नी पांच और तीन से 30 : अपने इल्मो क़ुदरत से 31 **शाने नुज़ूल :** येह आयत यहूद और मुनाफ़िक़ीन के हक़ में नाज़िल हुई जो आपस में सरगोशियां करते और मुसल्मानों की त़रफ़ देखते जाते और आंखों से उन की त़रफ़ इशारे करते जाते ताकि मुसल्मान समझें कि उन के ख़िलाफ़ कोई पोशीदा बात है और इस से उन्हें रन्ज हो, उन की इस ह़रकत से मुसल्मानों को ग़म होता था और वोह कहते थे कि शायद इन लोगों को हमारे उन भाइयों की निस्बत क़त्ल या हज़ीमत (शिकस्त) की कोई ख़बर पहुंची जो जिहाद में गए हैं और येह उसी के मुतअ़ल्लिक़ बातें बनाते और इशारे करते हैं, जब येह ह़रकात मुनाफ़िक़ीन की बहुत ज़ियादा हुई और मुसल्मानों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में इस की शिकायतें कीं तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सरगोशी करने वालों को मन्अ़ फ़रमा दिया लेकिन वोह बाज़ न आए और येह ह़रकत करते ही रहे, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 32 : गुनाह और हद से बढ़ना येह कि मक्कारी के साथ सरगोशियां कर के मुसल्मानों को रन्जो ग़म में डालते हैं। 33 : और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी येह कि बा वुजूद मुमानअ़त के बाज़ नहीं आते और येह भी कहा गया है कि उन में एक दूसरे को राय देते थे कि रसूल की ना फ़रमानी करो। 34 : यहूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास आते तो "اَلسَّامُ عَلَيْكَ" कहते, साम मौत को कहते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के जवाब में "عَلَيْكُمْ" फ़रमा देते।

فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْ لَا یُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ یَصْلَوْنَهَا ۚ

और अपने दिलों में कहते हैं हमें अल्लाह अ़ज़ाब क्यूं नहीं करता हमारे इस कहने पर[35] उन्हें जहन्नम बस (काफ़ी) है उस में धंसेंगे

فَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۸﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَیْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا

तो क्या ही बुरा अन्जाम ऐ ईमान वालो तुम जब आपस में मश्वरत करो तो

بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ مَعْصِیَتِ الرَّسُوْلِ وَ تَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَ التَّقْوٰی ؕ

गुनाह और ह़द से बढ़ने और रसूल की ना फ़रमानी की मश्वरत न करो[36] और नेकी और परहेज़ गारी की मश्वरत करो

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا النَّجْوٰی مِنَ الشَّیْطٰنِ

और अल्लाह से डरो जिस की त़रफ़ उठाए जाओगे वोह मश्वरत तो शैत़ान ही की त़रफ़ से है[37]

لِیَحْزُنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَیْسَ بِضَآرِّهِمْ شَیْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ

इस लिये कि ईमान वालों को रन्ज दे और वोह उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता बे हुक्मे ख़ुदा और

عَلَی اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِیْلَ لَكُمْ

मुसल्मानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये[38] ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए

تَفَسَّحُوْا فِی الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا یَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَ اِذَا قِیْلَ انْشُزُوْا

मजलिसों में जगह दो तो जगह दो अल्लाह तुम्हें जगह देगा[39] और जब कहा जाए उठ खड़े हो[40]

فَانْشُزُوْا یَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

तो उठ खड़े हो अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया[41] दरजे

دَرَجٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۱۱﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

बुलन्द फ़रमाएगा और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है ऐ ईमान वालो जब

35 : इस से उन की मुराद येह थी कि अगर ह़ज़रत नबी होते तो हमारी इस गुस्ताख़ी पर अल्लाह तआ़ला हमें अ़ज़ाब करता अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **36 :** और जो त़रीक़ा यहूद और मुनाफ़िक़ीन का है उस से परहेज़ करो **37 :** जिस में गुनाह और ह़द से बढ़ना और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी हो और शैत़ान अपने दोस्तों को इस पर उभारता है **38 :** कि अल्लाह पर भरोसा करने वाला टोटे (ख़सारे) में नहीं रहता। **39 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बद्र में ह़ाज़िर होने वाले अस्ह़ाब की इ़ज़्ज़त करते थे, एक रोज़ चन्द बद्री अस्ह़ाब ऐसे वक़्त पहुंचे जब कि मजलिस शरीफ़ भर चुकी थी, उन्हों ने हु़ज़ूर के सामने खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, हु़ज़ूर ने जवाब दिया फिर उन्हों ने ह़ाज़िरीन को सलाम किया उन्हों ने जवाब दिया, फिर वोह इस इन्तिज़ार में खड़े रहे कि उन के लिये मजलिस शरीफ़ में जगह की जाए मगर किसी ने जगह न दी, येह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़रा तो हु़ज़ूर ने अपने क़रीब वालों को उठा कर उन के लिये जगह की, उठने वालों को उठना शाक़ हुवा इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **40 :** नमाज़ के या जिहाद के या और किसी नेक काम के लिये और इसी में दाख़िल है ता'ज़ीमे ज़िक्रे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये खड़ा होना। **41 :** अल्लाह और उस के रसूल

www.dawateislami.net

نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ

तुम रसूल से कोई बात आहिस्ता अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो[42] येह तुम्हारे लिये

لَّكُمْ وَ اَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ

बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हें मक्दूर न हो तो **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है क्या तुम इस से डरे

اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَ تَابَ

कि तुम अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़े दो[43] फिर जब तुम ने येह न किया और **अल्लाह** ने अपनी मेहर से

اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ

तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई[44] तो नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** और उस के रसूल के फ़रमां बरदार रहो

وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ ع ۲ ۴

और **अल्लाह** तुम्हारे कामों को जानता है क्या तुम ने उन्हें न देखा जो ऐसों के दोस्त हुए जिन पर

اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لَا مِنْهُمْ ۙ وَ يَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَ هُمْ

अल्लाह का ग़ज़ब है[45] वोह न तुम में से न उन में से[46] वोह दानिस्ता झूटी क़सम

يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾ ج اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

खाते हैं[47] **अल्लाह** ने उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है बेशक वोह बहुत ही बुरे

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इताअ़त के बाइस **42 :** कि इस में बारयाबी बारगाहे रिसालत पनाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और फ़ुक़रा का नफ़्अ़ है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बारगाह में जब अग़्निया ने अ़र्ज़ो मा'रूज़ का सिल्सिला दराज़ किया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि फ़ुक़रा को अपनी अ़र्ज़ पेश करने का मौक़अ़ कम मिलने लगा तो अ़र्ज़ पेश करने वालों को अ़र्ज़ पेश करने से पहले सदक़ा देने का हुक्म दिया गया और इस हुक्म पर ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़मल किया एक दीनार सदक़ा कर के दस मसाइल दरयाफ़्त किये, अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! वफ़ा क्या है ? फ़रमाया : तौह़ीद और तौह़ीद की शहादत देना, अ़र्ज़ किया : फ़साद क्या है ? फ़रमाया : कुफ़्रो शिर्क, अ़र्ज़ किया : ह़क़ क्या है ? फ़रमाया : इस्लाम व क़ुरआन और विलायत जब तुझे मिले, अ़र्ज़ किया : ह़ीला क्या है या'नी तदबीर ? फ़रमाया : तर्के ह़ीला, अ़र्ज़ किया : मुझ पर क्या लाज़िम है ? फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल की ताअ़त, अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** तआ़ला से कैसे दुआ़ मांगूं ? फ़रमाया : सिद्क़ो यक़ीन के साथ, अ़र्ज़ किया क्या मांगूं ? फ़रमाया : आ़क़िबत, अ़र्ज़ किया : अपनी नजात के लिये क्या करूं ? फ़रमाया : ह़लाल खा और सच बोल, अ़र्ज़ किया : सुरूर क्या है ? फ़रमाया : जन्नत, अ़र्ज़ किया : राह़त क्या है ? फ़रमाया : **अल्लाह** का दीदार, जब ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इन सुवालों से फ़ारिग़ हो गए तो येह हुक्म मन्सूख़ हो गया और रुख़्सत नाज़िल हुई और सिवाए ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के और किसी को इस पर अ़मल करने का वक़्त नहीं मिला। (مدارک وخازن) ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने फ़रमाया : येह इस की अस्ल है जो मज़ाराते औलिया पर तसद्दुक़ के लिये शीरीनी वग़ैरा ले जाते हैं। **43 :** ब सबब अपनी ग़रीबी व नादारी के। **44 :** और तर्के तक़्दीमे सदक़ा का मुआख़ज़ा तुम पर से उठा लिया और तुम को इख़्तियार दे दिया **45 :** जिन लोगों पर **अल्लाह** तआ़ला का ग़ज़ब है उन से मुराद यहूद हैं और इन से दोस्ती करने वाले मुनाफ़िक़ीन। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने यहूद से दोस्ती की और उन की ख़ैर ख़्वाही में लगे रहते और मुसल्मानों के राज़ उन से कहते। **46 :** या'नी न मुसल्मान न यहूदी बल्कि मुनाफ़िक़ हैं मुज़ब्ज़ब। **47 शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस में ह़ाज़िर रहता और यहां की बात यहूद के पास पहुंचाता, एक रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ

काम करते हैं उन्हों ने अपनी क़समों को[48] ढाल बना लिया है[49] तो अल्लाह की राह से रोका[50] तो उन के लिये

عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

ख़्वारी का अ़ज़ाब है[51] उन के माल और उन की औलाद अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम

شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ

न देंगे[52] वोह दोज़ख़ी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना जिस दिन अल्लाह उन सब को

جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَیْءٍ ؕ

उठाएगा तो उस के हुज़ूर भी ऐसे ही क़समें खाएंगे जैसी तुम्हारे सामने खा रहे हैं[53] और वोह येह समझते हैं कि उन्हों ने कुछ किया[54]

اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ

सुनते हो बेशक वोही झूटे हैं[55] उन पर शैतान ग़ालिब आ गया तो उन्हें अल्लाह की याद

اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

भुला दी वोह शैतान के गुरोह हैं सुनता है बेशक शैतान ही का गुरोह हार में है[56]

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓىِٕكَ فِی الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ

बेशक वोह जो अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वोह सब से ज़ियादा ज़लीलों में हैं अल्लाह

اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

लिख चुका[57] कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल[58] बेशक अल्लाह क़ुव्वत वाला इ़ज़्ज़त वाला है तुम न पाओगे उन लोगों को

يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ

जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की[59] अगर्चे

दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ फ़रमा थे, हुज़ूर ने फ़रमाया इस वक़्त एक आदमी आएगा जिस का दिल निहायत सख़्त और वोह शैतान की आंखों से देखता है, थोड़ी ही देर बा'द अ़ब्दुल्लाह बिन नब्तल आया उस की आंखें नीली थीं, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया तू और तेरे साथी क्यूं हमें गालियां देते हैं ? वोह क़सम खा गया कि ऐसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया उन्हों ने भी क़सम खाई कि हम ने आप को गाली नहीं दी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **48 :** जो झूटी हैं **49 :** कि अपना जान व माल महफ़ूज़ रहे। **50 :** या'नी मुनाफ़िक़ीन ने अपनी इस ह़ीला साज़ी से लोगों को जिहाद से रोका और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मा'ना येह हैं कि लोगों को इस्लाम में दाख़िल होने से रोका **51 :** आख़िरत में **52 :** और रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से न बचा सकेंगे **53 :** कि दुन्या में मोमिने मुख़्लिस थे। **54 :** या'नी वोह अपनी इन झूटी क़समों को कारआमद समझते हैं। **55 :** अपनी क़समों में और ऐसे झूटे कि दुन्या में भी झूट बोलते रहे और आख़िरत में भी, रसूल के सामने भी और ख़ुदा के सामने भी। **56 :** कि जन्नत की दाइमी ने'मतों से महरूम और जहन्नम के अबदी अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार। **57 :** लौहे महफ़ूज़ में **58 :** हुज्जत के साथ या तलवार के साथ। **59 :** या'नी मोमिनीन से येह हो

www.dawateislami.net

كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓىِٕكَ

वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों[60] येह हैं

كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की[61] और उन्हें बाग़ों में

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा रहें अल्लाह उन से राज़ी[62] और वोह अल्लाह से

عَنْهُ ؕ اُولٰٓىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۠ ﴿۲۲﴾ ع

राज़ी[63] येह अल्लाह की जमाअ़त है सुनता है अल्लाह ही की जमाअ़त काम्याब है

ایاتها ٢٤ | ٥٩ سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ ١٠١ | ركوعاتها ٣

सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱﴾

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[2]

ही नहीं सकता और उन की येह शान ही नहीं और ईमान इस को गवारा ही नहीं करता कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन से दोस्ती करे। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बद दीनों और बद मज़्हबों और ख़ुदा व रसूल की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी करने वालों से मुवद्दत व इख़्तिलात़ जाइज़ नहीं। **60 :** चुनान्चे ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ ने जंगे उह़ुद में अपने बाप जर्राह़ को क़त्ल किया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रोज़े बद्र अपने बेटे अ़ब्दुर्रह़मान को मुबारज़त के लिये त़लब किया लेकिन रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और मुस्अ़ब बिन उ़मैर ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर को क़त्ल किया और ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा को रोज़े बद्र क़त्ल किया और ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब व ह़म्ज़ा व अबू उ़बैदा ने रबीआ़ के बेटों उ़त्बा और शैबा को और वलीद बिन उ़त्बा को बद्र में क़त्ल किया जो उन के रिश्तेदार थे, ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास। **61 :** इस रूह़ से या अल्लाह की मदद मुराद है या ईमान या क़ुरआन या जिब्रील या रह़मते इलाही या नूर। **62 :** ब सबब उन के ईमान व इख़्लास व त़ाअ़त के **63 :** उस के रह़मो करम से **1 :** सूरए ह़श्र मदनिय्या है, इस में तीन 3 रुकूअ़, चौबीस 24 आयतें, चार सो पैंतालीस 445 कलिमे, एक हज़ार नव सो तेरह 1913 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** येह सूरत बनी नज़ीर के ह़क़ में नाज़िल हुई, येह लोग यहूदी थे, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा में रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो इन्हों ने ह़ुज़ूर से इस शर्त़ पर सुल्ह़ की कि न आप के साथ हो कर किसी से लड़ें न आप से जंग करें, जब जंगे बद्र में इस्लाम की फ़त्ह़ हुई तो बनी नज़ीर ने कहा येह वोही नबी हैं जिन की सिफ़त तौरैत में है, फिर जब उह़ुद में मुसल्मानों को हज़ीमत की सूरत पेश आई तो येह शक में पड़े और इन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और ह़ुज़ूर के नियाज़ मन्दों के साथ अ़दावत का इज़्हार किया और जो मुआ़हदा किया था वोह तोड़ दिया और इन का एक सरदार का'ब बिन अशरफ़ यहूदी चालीस यहूदी सुवारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचा और का'बए मुअ़ज़्ज़मा के पर्दे थाम कर क़ुरैश के सरदारों से रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ मुआ़हदा किया अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म देने से ह़ुज़ूर इस ह़ाल पर मुत्तलअ़ थे और बनी नज़ीर से एक ख़ियानत और भी वाक़ेअ़ हो चुकी थी कि इन्हों ने क़ल्ए के ऊपर से सय्यिदे आ़लम

www.dawateislami.net

هُوَ الَّذِيْۤ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ

वोही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को[3] उन के घरों से निकाला[4]

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ

उन के पहले ह़श्र के लिये[5] तुम्हें गुमान न था कि वोह निकलेंगे[6] और वोह समझते थे कि उन के क़ल्ए

وقف النبی عليه السلام

حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَ قَذَفَ فِيْ

उन्हें **अल्लाह** से बचा लेंगे तो **अल्लाह** का हुक्म उन के पास आया जहां से उन का गुमान भी न था[7] और उस ने उन

قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَ اَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ

के दिलों में रो'ब डाला[8] कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों[9] और मुसलमानों के हाथों[10]

فَاعْتَبِرُوْا يٰۤاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۲﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ

तो इ़ब्रत लो ऐ निगाह वालो और अगर न होता कि **अल्लाह** ने उन पर घर से उजड़ना लिख दिया था

لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿۳﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ

तो दुन्या ही में उन पर अ़ज़ाब फ़रमाता[11] और उन के लिये[12] आख़िरत में आग का अ़ज़ाब है यह इस लिये कि वोह

شَآقُّوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ۚ وَ مَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۴﴾

अल्लाह से और उस के रसूल से फटे रहे[13] और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से फटा रहे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है

صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ब इरादए फ़ासिद एक पथ्थर गिराया था **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर को ख़बरदार कर दिया और बि फ़ज़्लिही तआ़ला हुज़ूर मह़फ़ूज़ रहे, ग़रज़ जब यहूदे बनी नज़ीर ने ख़ियानत की और अ़ह्द शिकनी की और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से हुज़ूर के ख़िलाफ़ अ़ह्द किया तो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुह़म्मद बिन मस्लमा अन्सारी को हुक्म दिया और उन्हों ने का'ब बिन अशरफ़ को क़त्ल कर दिया, फिर हुज़ूर मअ़ लश्कर के बनी नज़ीर की त़रफ़ रवाना हुए और उन का मुह़ासरा कर लिया, येह मुह़ासरा इक्कीस रोज़ रहा, इस दरमियान में मुनाफ़िक़ीन ने यहूद से हमदर्दी व मुवाफ़क़त के बहुत मुआ़हदे किये लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने उन सब को नाकाम किया, यहूद के दिलों में रो'ब डाला, आख़िर कार उन्हें हुज़ूर के हुक्म से जला वत़न होना पड़ा और वोह शाम व उरैह़ा व ख़ैबर की त़रफ़ चले गए। **3 :** या'नी यहूदे बनी नज़ीर को **4 :** जो मदीनए त़य्यिबा में थे। **5 :** येह जला वत़नी उन का पहला ह़श्र है और दूसरा ह़श्र उन का येह है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ैबर से शाम की त़रफ़ निकाला या आख़िर ह़श्र रोज़े क़ियामत का ह़श्र है कि आग सब लोगों को सर ज़मीने शाम की त़रफ़ ले जाएगी और वहीं उन पर क़ियामत क़ाइम होगी। इस के बा'द अहले इस्लाम से ख़ित़ाब फ़रमाया जाता है : **6 :** मदीने से क्यूं कि वोह साह़िबे क़ुव्वत साह़िबे लश्कर थे, मज़बूत़ क़ल्ए रखते थे, उन की ता'दाद कसीर थी, जागीर दार साह़िबे माल। **7 :** या'नी ख़त़रा भी न था कि मुसल्मान उन पर ह़म्ला आवर हो सकते हैं। **8 :** उन के सरदार का'ब बिन अशरफ़ के क़त्ल से। **9 :** और उन को ढाते हैं ताकि जो लकड़ी वग़ैरा उन्हें अच्छी मा'लूम हो वोह जला वत़न होते वक़्त अपने साथ ले जाएं। **10 :** कि उन के मकानों के जो ह़िस्से बाक़ी रह जाते थे उन्हें मुसल्मान गिरा देते थे ताकि जंग के लिये मैदान साफ़ हो जाए। **11 :** और उन्हें क़त्ल व क़ैद में मुब्तला करता जैसा कि यहूदे बनी क़ुरैज़ा के साथ किया। **12 :** हर ह़ाल में ख़्वाह जला वत़न किये जाएं या क़त्ल किये जाएं **13 :** या'नी बर सरे मुख़ालफ़त रहे।

www.dawateislami.net

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآىِٕمَةً عَلٰۤى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَ

जो दरख़्त तुम ने काटे या उन की जड़ों पर क़ाइम छोड़ दिये येह सब अल्लाह की इजाज़त से था[14] और

لِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۵﴾ وَ مَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَاۤ اَوْجَفْتُمْ

इस लिये कि फ़ासिक़ों को रुस्वा करे[15] और जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को उन से[16] तो तुम ने उन पर

عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّ لَا رِكَابٍ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ

न अपने घोड़े दौड़ाए थे न ऊंट[17] हां अल्लाह अपने रसूलों के क़ाबू में दे देता है जिसे चाहे[18]

وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۶﴾ مَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ

और अल्लाह सब कुछ कर सकता है जो ग़नीमत दिलाई अल्लाह ने अपने रसूल को शहर

الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ

वालों से[19] वोह अल्लाह और रसूल की है और रिश्तेदारों[20] और यतीमों और मिस्कीनों और

السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَ مَاۤ اٰتٰىكُمُ

मुसाफ़िरों के लिये कि तुम्हारे अग़निया का माल न हो जाए[21] और जो कुछ तुम्हें रसूल

14 शाने नुज़ूल : जब बनी नज़ीर अपने क़ल्ओं में पनाह गुज़ीन हुए तो सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन के दरख़्त काट डालने और उन्हें जला देने का हुक्म दिया, इस पर वोह दुश्मनाने ख़ुदा बहुत घबराए और रन्जीदा हुए और कहने लगे कि क्या तुम्हारी किताब में इस का हुक्म है ? मुसल्मान इस बाब में मुख़्तलिफ़ हो गए बा'ज़ ने कहा : दरख़्त न काटो येह ग़नीमत है जो अल्लाह तआला ने हमें अ़ता फ़रमाई, बा'ज़ ने कहा : इस से कुफ़्फ़ार को रुस्वा करना और उन्हें ग़ैज़ में डालना मन्ज़ूर है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस में बताया गया कि मुसल्मानों में जो दरख़्त काटने वाले हैं उन का अ़मल भी दुरुस्त है और जो काटना नहीं चाहते वोह भी ठीक कहते हैं क्यूं कि दरख़्तों का काटना और छोड़ देना येह दोनों अल्लाह तआला के इज़्न व इजाज़त से हैं। **15 :** या'नी यहूद को ज़लील करे दरख़्त काटने की इजाज़त दे कर। **16 :** या'नी यहूदे बनी नज़ीर से **17 :** या'नी इस के लिये तुम्हें कोई मशक़्क़त और कोफ़्त उठाना नहीं पड़ी, सिर्फ़ दो मील का फ़ासिला था, सब लोग पियादा पा चले गए सिर्फ़ रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सुवार हुए। **18 :** अपने दुश्मनों में से, मुराद येह है कि बनी नज़ीर से जो ग़नीमतें हासिल हुईं उन के लिये मुसल्मानों को जंग करना नहीं पड़ी अल्लाह तआला ने अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन पर मुसल्लत़ कर दिया तो येह माल हुज़ूर की मरज़ी पर है जहां चाहें ख़र्च करें, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने येह माल मुहाजिरीन पर तक़्सीम कर दिया और अन्सार में से सिर्फ़ तीन साहिबे हाजत लोगों को दिया और वोह अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा और सहल बिन हुनैफ़ और हारिस बिन सिम्मा हैं। **19 :** पहली आयत में ग़नीमत का जो हुक्म मज़्कूर हुवा उस आयत में इसी की तफ़्सील है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस क़ौल की मुख़ालफ़त की और फ़रमाया कि पहली आयत अम्वाले बनी नज़ीर के बाब में नाज़िल हुई इन को अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिये ख़ास किया और येह आयत हर उस शहर की ग़नीमतों के बाब में है जिस को मुसल्मान अपनी कुव्वत से हासिल करें। (مدارک)
20 : रिश्तेदारों से मुराद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अहले क़राबत हैं या'नी बनी हाशिम व बनी मुत्तलिब। **21 :** और ग़ुरबा और फ़ुक़रा नुक़्सान में रहें जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि ग़नीमत में से एक चहारुम तो सरदार ले लेता था बाक़ी क़ौम के लिये छोड़ देता था उस में से मालदार लोग बहुत ज़ियादा ले लेते थे और ग़रीबों के लिये बहुत ही थोड़ा बचता था, इसी मा'मूल के मुताबिक़ लोगों ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ग़नीमत में से चहारुम लें बाक़ी हम बाहम तक़्सीम कर लेंगे अल्लाह तआला ने इस का रद फ़रमा दिया और तक़्सीम का इख़्तियार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को दिया और इस का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमाया।

www.dawateislami.net

الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अ़ता फ़रमाएं वोह लो[22] और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो और अल्लाह से डरो[23] बेशक अल्लाह

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۘ﴿۷﴾ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ

का अ़ज़ाब सख़्त है[24] उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों

وقف لازم

دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ

और मालों से निकाले गए[25] अल्लाह का फ़ज़्ल[26] और उस की रिज़ा चाहते और अल्लाह व रसूल

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿۸﴾ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ

की मदद करते[27] वोही सच्चे हैं[28] और जिन्हों ने पहले से[29] इस शहर[30]

الْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ

और ईमान में घर बना लिया[31] दोस्त रखते हैं उन्हें जो उन की त़रफ़ हिजरत कर के गए[32] और अपने दिलों में

صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

कोई ह़ाजत नहीं पाते[33] उस चीज़ की जो दिये गए[34] और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं[35] अगर्चे उन्हें शदीद

خَصَاصَةٌ ؕ قف وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۹﴾ وَ

मोह़ताजी हो[36] और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया[37] तो वोही काम्याब हैं और

22 : ग़नीमत में से क्यूं कि वोह तुम्हारे लिये ह़लाल है या येह मा'ना हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तुम्हें जो हुक्म दें उस का इत्तिबाअ़ करो क्यूं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इताअ़त हर अम्र में वाजिब है। **23 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त न करो और इन के ता'मीले इर्शाद में सुस्ती न करो **24 :** उन पर जो रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी करें और माले ग़नीमत में जैसा कि ऊपर ज़िक्र किये हुए लोगों का ह़क़ है ऐसा ही **25 :** और उन के घरों और मालों पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने क़ब्ज़ा कर लिया। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि कुफ़्फ़ार इस्तीलाअ (क़ब्ज़ा करने) से अम्वाले मुस्लिमीन के मालिक हो जाते हैं। **26 :** या'नी सवाबे आख़िरत **27 :** अपने जान व माल से दीन की ह़िमायत में **28 :** ईमान व इख़्लास में। क़तादा ने फ़रमाया कि इन मुहाजिरीन ने घर और माल और कुम्बे अल्लाह तआ़ला और रसूल की मह़ब्बत में छोड़े और इस्लाम को क़बूल किया और उन तमाम शिद्दतों और सख़्तियों को गवारा किया जो इस्लाम क़बूल करने की वज्ह से उन्हें पेश आईं, उन की ह़ालतें यहां तक पहुंचीं कि भूक की शिद्दत से पेट पर पथ्थर बांधते थे और जाड़ों में कपड़ा न होने के बाइस गढ़ों और ग़ारों में गुज़ारा करते थे। ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ुक़राए मुहाजिरीन अग़्निया से चालीस साल क़ब्ल जन्नत में जाएंगे। **29 :** या'नी मुहाजिरीन से पहले या इन की हिजरत से पहले बल्कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले **30 :** मदीनए पाक **31 :** या'नी मदीनए पाक को वत़न और ईमान को अपना मुस्तक़र बनाया और इस्लाम लाए और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से दो साल पहले मस्जिदें बनाईं उन का येह ह़ाल है कि **32 :** चुनान्चे अपने घरों में उन्हें उतारते हैं अपने मालों में उन्हें निस्फ़ का शरीक करते हैं **33 :** या'नी उन के दिलों में कोई ख़्वाहिश व त़लब नहीं पैदा होती। **34 :** मुहाजिरीन, या'नी मुहाजिरीन को जो अम्वाले ग़नीमत दिये गए अन्सार के दिल में उन की कोई ख़्वाहिश नहीं पैदा होती रश्क तो क्या होता सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बरकत ने क़ुलूब ऐसे पाक कर दिये कि अन्सार मुहाजिरीन के साथ येह सुलूक करते हैं **35 :** या'नी मुहाजिरीन को **36** **शाने नुज़ूल :** ह़दीस शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक भूका शख़्स आया ह़ुज़ूर ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात के हुजरों पर मा'लूम कराया

www.dawateislami.net

الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا
वोह जो उन के बा'द आए[38] अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को
الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख[39]
رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۰﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़म वाला है क्या तुम ने मुनाफ़िक़ों को न देखा[40] कि अपने भाइयों
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ
काफ़िर किताबियों[41] से कहते हैं कि अगर तुम निकाले गए[42] तो ज़रूर हम तुम्हारे साथ निकल
مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ
जाएंगे और हरगिज़ तुम्हारे बारे में कभी किसी की न मानेंगे[43] और तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह
يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ
गवाह है कि वोह झूटे हैं[44] अगर वोह निकाले गए[45] तो येह उन के साथ न निकलेंगे और उन से
قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا
लड़ाई हुई तो येह उन की मदद न करेंगे[46] और अगर उन की मदद की भी तो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे फिर[47]

क्या खाने की कोई चीज़ है, मा'लूम हुवा किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है, तब हुज़ूर ने अस्ह़ाब से फ़रमाया जो इस शख़्स को मेहमान बनाए अल्लाह तआ़ला उस पर रह़मत फ़रमाए, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर से इजाज़त ले कर मेहमान को अपने घर ले गए, घर जा कर बीबी से दरयाफ़्त किया कुछ है ? उन्हों ने कहा कुछ नहीं सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा ने फ़रमाया बच्चों को बहला कर सुला दो और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि वोह अच्छी त़रह़ खा ले, येह इस लिये तज्वीज़ की कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं खा रहे हैं क्यूं कि उस को येह मा'लूम होगा तो वोह इसरार करेगा और खाना कम है भूका रह जाएगा, इस त़रह़ मेहमान को खिलाया और आप उन साहिबों ने भूके रात गुज़ारी, जब सुब्ह़ हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया रात फ़ुलां फ़ुलां लोगों में अ़जीब मुआ़मला पेश आया अल्लाह तआ़ला उन से बहुत राज़ी है और येह आयत नाज़िल हुई। **37 :** या'नी जिस के नफ़्स को लालच से पाक किया गया **38 :** या'नी मुहाजिरीन व अन्सार के। इस में क़ियामत तक पैदा होने वाले मुसल्मान दाख़िल हैं **39 :** या'नी अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ से। **मस्अला :** जिस के दिल में किसी सह़ाबी की त़रफ़ से बुग़्ज़ या कदूरत हो और वोह उन के लिये दुआ़ए रह़मत व इस्तिग़्फ़ार न करे वोह मोमिनीन की अक़्साम से ख़ारिज है क्यूं कि यहां मोमिनीन की तीन क़िस्में फ़रमाई गईं। मुहाजिरीन अन्सार और उन के बा'द वाले जो उन के ताबेअ़ हों और उन की त़रफ़ से दिल में कोई कदूरत न रखें और उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करें तो जो सह़ाबा से कदूरत रखे राफ़िज़ी हो या ख़ारिजी वोह मुसल्मानों की इन तीनों क़िस्मों से ख़ारिज है। ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने फ़रमाया कि लोगों को हुक्म तो येह दिया गया कि सह़ाबा के लिये इस्तिग़्फ़ार करें और करते येह हैं कि गालियां देते हैं। **40 :** अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ और उस के रफ़ीक़ों को **41 :** या'नी यहूदे बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर **42 :** मदीने शरीफ़ से **43 :** या'नी तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी का कहा न मानेंगे न मुसल्मानों का न रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का **44 :** या'नी यहूद से मुनाफ़िक़ीन के येह सब वा'दे झूटे हैं इस के बा'द अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ीन के ह़ाल की ख़बर देता है। **45 :** या'नी यहूद **46 :** चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि यहूद निकाले गए और मुनाफ़िक़ीन उन के साथ न निकले और यहूद से मुक़ातला हुवा और मुनाफ़िक़ीन ने यहूद की मदद न की। **47 :** जब येह मददगार भाग

www.dawateislami.net

یُنۡصَرُوۡنَ ﴿۱۲﴾ لَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ رَهۡبَةً فِیۡ صُدُوۡرِهِمۡ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

मदद न पाएंगे बेशक[48] उन के दिलों में **अल्लाह** से ज़ियादा तुम्हारा डर है[49] येह इस लिये

بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا یَفۡقَهُوۡنَ ﴿۱۳﴾ لَا یُقَاتِلُوۡنَكُمۡ جَمِیۡعًا اِلَّا فِیۡ قُرًی مُّحَصَّنَةٍ

कि वोह ना समझ लोग हैं[50] येह सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़ल्अ़ा बन्द शहरों में

اَوۡ مِنۡ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاۡسُهُمۡ بَیۡنَهُمۡ شَدِیۡدٌ ؕ تَحۡسَبُهُمۡ جَمِیۡعًا وَّ

या धुसों (दीवारों) के पीछे आपस में उन की आंच सख़्त है[51] तुम उन्हें एक जथ्था (जमाअ़त) समझोगे और

قُلُوۡبُهُمۡ شَتّٰی ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا یَعۡقِلُوۡنَ ﴿ۚ۱۴﴾ كَمَثَلِ الَّذِیۡنَ مِنۡ

उन के दिल अलग अलग हैं येह इस लिये कि वोह बे अ़क़्ल लोग हैं[52] उन की सी कहावत जो अभी क़रीब

قَبۡلِهِمۡ قَرِیۡبًا ذَاقُوۡا وَبَالَ اَمۡرِهِمۡ ۚ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿ۚ۱۵﴾ كَمَثَلِ

ज़माने में उन से पहले थे[53] उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा[54] और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[55] शैत़ान

الشَّیۡطٰنِ اِذۡ قَالَ لِلۡاِنۡسَانِ اكۡفُرۡ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیۡ بَرِیۡٓءٌ مِّنۡكَ اِنِّیۡۤ

की कहावत जब उस ने आदमी से कहा कुफ़्र कर फिर जब उस ने कुफ़्र कर लिया बोला मैं तुझ से अलग हूं मैं

اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۶﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَاۤ اَنَّهُمَا فِی النَّارِ

अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब[56] तो उन दोनों का[57] अन्जाम येह हुवा कि वोह दोनों आग में हैं

خَالِدَیۡنِ فِیۡهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِیۡنَ ﴿ع۱۷﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا ٢ ع ٧ ٥

हमेशा उस में रहें और ज़ालिमों की येही सज़ा है ऐ ईमान वालो

اتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह से डरो[58] और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा[59] और **अल्लाह** से डरो[60] बेशक **अल्लाह**

निकलेंगे तो मुनाफ़िक़ **48 :** ऐ मुसल्मानो ! **49 :** कि तुम्हारे सामने तो इज़्हारे कुफ़्र से डरते हैं और येह जानते हुए भी कि **अल्लाह** तआ़ला दिलों की छुपी बातें जानता है दिल में कुफ़्र रखते हैं। **50 :** **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़्मत को नहीं जानते वरना जैसा उस से डरने का ह़क़ है डरते। **51 :** या'नी जब वोह आपस में लड़ें तो बहुत शिद्दत और क़ुव्वत वाले हैं लेकिन मुसल्मानों के मुक़ाबिल बुज़दिल और नामर्द साबित होंगे। **52 :** इस के बा'द यहूद की एक मसल इर्शाद फ़रमाई। **53 :** या'नी उन का ह़ाल मुश्रिकीने मक्का का सा है कि बद्र में **54 :** या'नी रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के साथ अ़दावत रखने और कुफ़्र करने का कि ज़िल्लतो रुस्वाई के साथ हलाक किये गए। **55 :** और मुनाफ़िक़ीन का यहूदे बनी नज़ीर के साथ सुलूक ऐसा है जैसे **56 :** ऐसे ही मुनाफ़िक़ीन ने यहूदे बनी नज़ीर को मुसल्मानों के ख़िलाफ़ उभारा जंग पर आमादा किया उन से मदद के वा'दे किये और जब उन के कहे से वोह अहले इस्लाम से बर सरे जंग हुए तो मुनाफ़िक़ बैठ रहे उन का साथ न दिया। **57 :** या'नी उस शैत़ान व इन्सान का **58 :** और उस के हुक्म की मुख़ालफ़त न करो **59 :** या'नी रोज़े क़ियामत के लिये क्या आ'माल किये **60 :** उस की त़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में सरगर्म रहो।

خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

को तुम्हारे कामों की ख़बर है और उन जैसे न हो जो अल्लाह को भूल बैठे[61] तो अल्लाह ने उन्हें बला में डाला कि अपनी

اَنْفُسَهُمْؕ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْۤ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ

जानें याद न रहीं[62] वोही फ़ासिक़ हैं दोज़ख़ वाले[63] और जन्नत वाले[64]

الْجَنَّةِؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآىِٕزُوْنَ ﴿۲۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى

बराबर नहीं जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे अगर हम येह कुरआन किसी पहाड़ पर

جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ

उतारते[65] तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुवा पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से[66] और येह मिसालें

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ

लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वोह सोचें वोही अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ

हर निहां व इयां (छुपी व ज़ाहिर) का जानने वाला[67] वोही है बड़ा मेहरबान रहमत वाला वोही है अल्लाह जिस के सिवा

اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ

कोई मा'बूद नहीं बादशाह[68] निहायत पाक[69] सलामती देने वाला[70] अमान बख़्शने वाला[71] हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ

अज़्मत वाला तकब्बुर वाला[72] अल्लाह को पाकी है उन के शिर्क से वोही है अल्लाह बनाने वाला

الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰىؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

पैदा करने वाला[73] हर एक को सूरत देने वाला[74] उसी के हैं सब अच्छे नाम[75] उस की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों

---

61 : उस की ताअ़त तर्क की 62 : कि उन के लिये फ़ाएदा देने वाले और काम आने वाले अ़मल कर लेते 63 : जिन के लिये दाइमी अ़ज़ाब है। 64 : जिन के लिये ऐशे मुख़ल्लद व राहते सरमद (हमेशा की ऐशो इ़शरत) है। 65 : और उस को इन्सान की सी तमीज़ अ़ता करते 66 : या'नी कुरआन की अ़ज़्मतो शान ऐसी है कि पहाड़ को अगर इदराक होता तो वोह बा वुजूद इतना सख़्त और मज़बूत होने के पाश पाश हो जाता, इस से मा'लूम होता है कि कुफ़्फ़ार के दिल कितने सख़्त हैं कि ऐसे बा अ़ज़्मत कलाम से असर पज़ीर नहीं होते। 67 : मौजूद का भी और मा'दूम का भी दुन्या का भी और आख़िरत का भी। 68 : मिल्क व हुकूमत का हक़ीक़ी मालिक कि तमाम मौजूदात उस के तहते मिल्क व हुकूमत है और उस की मालिकिय्यत व सल्तनत दाइमी है जिसे ज़वाल नहीं। 69 : हर ऐब से और तमाम बुराइयों से 70 : अपनी मख़्लूक़ को, 71 : अपने अ़ज़ाब से अपने फ़रमां बरदार बन्दों को, 72 : या'नी अ़ज़्मत और बड़ाई वाला अपनी ज़ात और तमाम सिफ़ात में और अपनी बड़ाई का इज़्हार उसी के शायां और लाइक़ है कि उस का हर कमाल अ़ज़ीम है और हर सिफ़त आ़ली, मख़्लूक़ में किसी को नहीं पहुंचता कि तकब्बुर या'नी अपनी बड़ाई का इज़्हार करे। बन्दे के लिये इज्ज़ व इन्किसार शायां है। 73 : नेस्त से हस्त करने वाला। 74 : जैसी चाहे। 75 : निनानवे 99 जो ह़दीस में वारिद हैं।

www.dawateislami.net

وَالۡاَرۡضِ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۲۴﴾ ع

और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

ایاتھا ۱۳ | ٦٠ سُوۡرَةُ الۡمُمۡتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ ٩١ | رکوعاتھا ٢

सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में तेरह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوۡا عَدُوِّىۡ وَعَدُوَّكُمۡ اَوۡلِيَآءَ تُلۡقُوۡنَ

ऐ ईमान वालो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ[2] तुम उन्हें ख़बरें

اِلَيۡهِمۡ بِالۡمَوَدَّةِ وَقَدۡ كَفَرُوۡا بِمَا جَآءَكُمۡ مِّنَ الۡحَقِّ ۚ يُخۡرِجُوۡنَ

पहुंचाते हो दोस्ती से ह़ालां कि वोह मुन्किर हैं उस ह़क़ के जो तुम्हारे पास आया[3] घर से जुदा करते हैं[4]

1 : सूरए मुम्तह़िनह मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, तेरह 13 आयतें, तीन सो अड़तालीस 348 कलिमे, एक हज़ार पांच सो दस 1510 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी कुफ़्फ़ार को। **शाने नुज़ूल :** बनी हाशिम के ख़ानदान की एक बांदी सारह मदीनए त़य्यिबा में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم के हुज़ूर में ह़ाज़िर हुई जब कि हुज़ूर फ़त्ह़े मक्का का सामान फ़रमा रहे थे, हुज़ूर ने उस से फ़रमाया : क्या तू मुसल्मान हो कर आई ? उस ने कहा : नहीं, फ़रमाया : क्या हिजरत कर के आई ? अ़र्ज़ किया : नहीं, फ़रमाया : फिर क्यूं आई ? उस ने कहा : मोह़्ताजी से तंग हो कर। बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब ने उस की इमदाद की कपड़े बनाए सामान दिया, ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه उस से मिले, उन्हों ने उस को दस दीनार दिये एक चादर दी और एक ख़त़ अहले मक्का के पास उस की मा'रिफ़त भेजा जिस का मज़्मून येह था कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم तुम पर ह़म्ले का इरादा रखते हैं तुम से अपने बचाव की जो तदबीर हो सके करो, सारह येह ख़त़ ले कर रवाना हो गई अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीब को इस की ख़बर दी, हुज़ूर ने अपने चन्द अस्ह़ाब को जिन में ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه भी थे घोड़ों पर रवाना किया और फ़रमाया मक़ाम रौज़ा ख़ाख़ पर तुम्हें एक मुसाफ़िर औ़रत मिलेगी उस के पास ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ का ख़त़ है जो अहले मक्का के नाम लिखा गया है, वोह ख़त़ उस से ले लो और उस को छोड़ दो, अगर इन्कार करे तो उस की गरदन मार दो, येह ह़ज़रात रवाना हुए और औ़रत को ठीक उसी मक़ाम पर पाया जहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया था, उस से ख़त़ मांगा वोह इन्कार कर गई और क़सम खा गई, सह़ाबा ने वापसी का क़स्द किया ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه ने ब क़सम फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की ख़बर ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकती और तलवार खींच कर औ़रत से फ़रमाया या ख़त़ निकाल या गरदन रख, जब उस ने देखा कि ह़ज़रत बिल्कुल आमादए क़त्ल हैं तो अपने जूड़े में से ख़त़ निकाला, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ात़िब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه को बुला कर फ़रमाया कि ऐ ह़ात़िब ! इस का क्या बाइ़स ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم मैं जब से इस्लाम लाया कभी मैं ने कुफ़्र नहीं किया और जब से हुज़ूर की नियाज़ मन्दी मुयस्सर आई कभी हुज़ूर की ख़ियानत न की और जब से अहले मक्का को छोड़ा कभी उन की मह़ब्बत न आई। लेकिन वाक़िआ़ येह है कि मैं क़ुरैश में रहता था और उन की क़ौम से न था, मेरे सिवाए और जो मुहाजिरीन हैं उन के मक्कए मुकर्रमा में रिश्तेदार हैं जो उन के घरबार की निगरानी करते हैं, मुझे अपने घर वालों का अन्देशा था, इस लिये मैं ने येह चाहा कि मैं अहले मक्का पर कुछ एह़सान रख दूं ताकि वोह मेरे घर वालों को न सताएं और येह मैं यक़ीन से जानता हूं कि अल्लाह तआ़ला अहले मक्का पर अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाने वाला है, मेरा ख़त़ उन्हें बचा न सकेगा, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم ने उन का येह उ़ज़्र क़बूल फ़रमाया और उन की तस्दीक़ की। ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये इस मुनाफ़िक़ की गरदन मार दूं, हुज़ूर ने फ़रमाया : ऐ उ़मर ! (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه) अल्लाह तआ़ला ख़बरदार है जब ही उस ने अहले बद्र के ह़क़ में फ़रमाया कि जो चाहो करो मैं ने तुम्हें बख़्श दिया, येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه के आंसू जारी हो गए और येह आयात नाज़िल हुई। 3 : या'नी इस्लाम और क़ुरआन 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा से।

www.dawateislami.net

الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا

रसूल को और तुम्हें इस पर कि तुम अपने रब **अल्लाह** पर ईमान लाए अगर तुम निकले हो मेरी राह में

فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ

जिहाद करने और मेरी रिज़ा चाहने को तो उन से दोस्ती न करो तुम उन्हें ख़ुफ़्या पयाम महब्बत का भेजते हो और मैं ख़ूब जानता हूं

بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ

जो तुम छुपाओ और जो ज़ाहिर करो और तुम में जो ऐसा करे वोह बेशक सीधी राह

السَّبِيْلِ ﴿۱﴾ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ

से बहका अगर तुम्हें पाएं[5] तो तुम्हारे दुश्मन होंगे और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ[6]

اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ ﴿۲﴾ لَنْ تَنْفَعَكُمْ

और अपनी ज़बानें[7] बुराई के साथ दराज़ करेंगे और उन की तमन्ना है कि किसी तरह तुम काफ़िर हो जाओ[8] हरगिज़ काम न आएंगे

اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚۛ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚۛ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا

तुम्हें तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद[9] क़ियामत के दिन तुम्हें उन से अलग कर देगा[10] और **अल्लाह**

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳﴾ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ

तुम्हारे काम देख रहा है बेशक तुम्हारे लिये अच्छी पैरवी थी[11] इब्राहीम और उस के साथ

مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ

वालों में[12] जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा[13] बेशक हम बेज़ार हैं तुम से और उन से जिन्हें **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا

पूजते हो हम तुम्हारे मुन्किर हुए[14] और हम में और तुम में दुश्मनी और अ़दावत ज़ाहिर हो गई हमेशा के लिये

حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ

जब तक तुम एक **अल्लाह** पर ईमान न लाओ मगर इब्राहीम का अपने बाप से कहना कि मैं ज़रूर तेरी मग़्फ़िरत

معانقة ۱۲ السباع الوقف على القيٰمة ۱۲

5 : या'नी अगर कुफ़्फ़ार तुम पर मौक़अ़ पा जाएं 6 : ज़ब्र व क़त्ल के साथ 7 : सब्बो शत्म और 8 : तो ऐसे लोगों को दोस्त बनाना और उन से भलाई की उम्मीद रखना और उन की अ़दावत से ग़ाफ़िल रहना हरगिज़ न चाहिये। 9 : जिन की वज्ह से तुम कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मुवालात करते हो 10 : कि फ़रमां बरदार जन्नत में होंगे और काफ़िर ना फ़रमान जहन्नम में। 11 : हज़रते हातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे मोमिनीन को ख़िताब है और सब को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की इक़्तिदा करने का हुक्म है कि दीन के मुआमले में अहले क़राबत के साथ उन का तरीक़ा इख़्तियार करें। 12 : साथ वालों से अहले ईमान मुराद हैं। 13 : जो मुश्रिक थी 14 : और हम ने तुम्हारे दीन की मुख़ालफ़त

www.dawateislami.net

لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَیْكَ

चाहूंगा[15] और मैं अल्लाह के सामने तेरे किसी नफ़्अ़ का मालिक नहीं[16] ऐ हमारे रब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़

اَنَبْنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ ④ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ

रुजूअ़ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है[17] ऐ हमारे रब हमें काफ़िरों की आज़्माइश में न डाल[18] और

اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ⑤ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْهِمْ

हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है बेशक तुम्हारे लिये[19] उन में

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْیَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَلَّ

अच्छी पैरवी थी[20] उसे जो अल्लाह और पिछले दिन का उम्मीद वार हो[21] और जो मुंह फेरे[22]

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ⑥ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّجْعَلَ بَیْنَكُمْ وَ بَیْنَ ع

तो बेशक अल्लाह ही बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा क़रीब है कि अल्लाह तुम में और उन में जो उन

الَّذِیْنَ عَادَیْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَ اللّٰهُ قَدِیْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ⑦

में से[23] तुम्हारे दुश्मन हैं दोस्ती कर दे[24] और अल्लाह क़ादिर है[25] और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

لَا یَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِیْنَ لَمْ یُقَاتِلُوْكُمْ فِی الدِّیْنِ وَ لَمْ یُخْرِجُوْكُمْ

अल्लाह तुम्हें उन से[26] मन्अ़ नहीं करता जो तुम से दीन में न लड़े और तुम्हें तुम्हारे

مِّنْ دِیَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْۤا اِلَیْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ

घरों से न निकाला कि उन के साथ एहसान करो और उन से इन्साफ़ का बरताव बरतो बेशक इन्साफ़ वाले

इख़्तियार की। **15 :** येह क़ाबिले इत्तिबाअ़ नहीं है क्यूं कि वोह एक वा'दे की बिना पर था और जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ज़ाहिर हो गया कि वोह कुफ़्र पर मुस्तक़िल है तो आप ने उस से बेज़ारी की, लिहाज़ा येह किसी के लिये जाइज़ नहीं कि अपने बे ईमान रिश्तेदार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करे। **16 :** अगर तू उस की ना फ़रमानी करे और शिर्क पर क़ाइम रहे। (خازن) **17 :** येह भी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की और उन मोमिनीन की दुआ़ है जो आप के साथ थे और मा क़ब्ल इस्तिस्ना के साथ मुत्तसिल है लिहाज़ा मोमिनीन को इस दुआ़ में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की इत्तिबाअ़ करनी चाहिये। **18 :** उन्हें हम पर ग़लबा न दे कि वोह अपने आप को ह़क़ पर गुमान करने लगें। **19 :** ऐ उम्मते ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **20 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथ वालों में। **21 :** अल्लाह तआ़ला की रह़मत व सवाब और राह़ते आख़िरत का त़ालिब हो और अ़ज़ाबे इलाही से डरे। **22 :** ईमान से और कुफ़्फ़ार से दोस्ती करे **23 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का में से **24 :** इस त़रह़ कि उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ दे, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने ऐसा किया और बा'दे फ़त्ह़े मक्का उन में से कसीरुत्ता'दाद लोग ईमान ले आए और मोमिनीन के दोस्त और भाई बन गए और बाहमी मह़ब्बतें बढ़ीं। **शाने नुज़ूल :** जब ऊपर की आयात नाज़िल हुईं तो मोमिनीन ने अपने अहले क़राबत की अ़दावत में तशद्दुद किया उन से बेज़ार हो गए और इस मुआ़मले में बहुत सख़्त हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर उन्हें उम्मीद दिलाई कि उन कुफ़्फ़ार का ह़ाल बदलने वाला है और येह आयत नाज़िल हुई। **25 :** दिल बदलने और ह़ाल तब्दील करने पर **26 :** या'नी उन काफ़िरों से। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयत ख़ुज़ाआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से इस शर्त़ पर सुल्ह़ की थी कि न आप से

www.dawateislami.net

الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٨﴾ اِنَّمَا یَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِیْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِی الدِّیْنِ وَ

अल्लाह को मह़बूब हैं अल्लाह तुम्हें उन्ही से मन्अ़ करता है जो तुम से दीन में लड़े या

اَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِیَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰۤى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَ مَنْ

तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला या तुम्हारे निकालने पर मदद की कि उन से दोस्ती करो[27] और जो

یَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ

उन से दोस्ती करे तो वोही सितमगार हैं ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास

الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِیْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ

मुसल्मान औ़रतें कुफ़्रिस्तान से अपने घर छोड़ कर आएं तो उन का इम्तिह़ान कर लो[28] अल्लाह उन के ईमान का ह़ाल बेहतर जानता है फिर अगर

عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَ

वोह तुम्हें ईमान वालियां मा'लूम हों तो उन्हें काफ़िरों को वापस न दो न येह[29] उन्हें ह़लाल[30]

لَا هُمْ یَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَ اٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اَنْ

न वोह इन्हें ह़लाल[31] और उन के काफ़िर शोहरों को दे दो जो उन का ख़र्च हुवा[32] और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि

क़िताल करेंगे न आप के मुख़ालिफ़ को मदद देंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन लोगों के साथ सुलूक करने की इजाज़त दी। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने फ़रमाया कि येह आयत उन की वालिदा अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन (ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की वालिदा मदीनए त़य्यिबा में उन के लिये तोह़फ़े ले कर आई थीं और थीं मुश्रिका तो ह़ज़रते अस्मा ने उन के हदाया क़बूल न किये और उन्हें अपने घर में आने की इजाज़त न दी और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क्या हुक्म है ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इजाज़त दी कि उन्हें घर में बुलाएं, उन के हदाया क़बूल करें, उन के साथ अच्छा सुलूक करें। **27 :** या'नी ऐसे काफ़िरों से दोस्ती मम्नूअ़ है। **28 :** कि उन की हिजरत ख़ालिस दीन के लिये है, ऐसा तो नहीं है कि उन्हों ने शोहरों की अ़दावत में घर छोड़ा हो, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि उन औ़रतों को क़सम दी जाए कि वोह न शोहरों की अ़दावत में निकली हैं और न किसी दुन्यवी वज्ह से, उन्हों ने सिर्फ़ अपने दीन व ईमान के लिये हिजरत की है। **29 :** मुसल्मान औ़रतें **30 :** या'नी काफ़िरों को **31 :** या'नी न काफ़िर मर्द मुसल्मान औ़रतों को ह़लाल। **मस्अला :** औ़रत मुसल्मान हो कर काफ़िर मर्द की ज़ौजिय्यत से ख़ाली हो गई। **32 :** या'नी जो महर उन्हों ने उन औ़रतों को दिये थे वोह उन्हें वापस कर दो, येह हुक्म अहले ज़िम्मा के लिये है जिन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई, लेकिन ह़र्बी औ़रतों के महर वापस करना न वाजिब न सुन्नत (وَ اِنْ كَانَ الْاَمْرُ بِاِیْتَآءِ مَا اَنْفَقُوْا لِلْوُجُوْبِ فَهُوَ مَنْسُوْخٌ وَّ اِنْ كَانَ لِنُدْبٍ كَمَا هُوَ قَوْلُ الشَّافِعِیِّ فَلَا) **मस्अला :** और येह महर देना उस सूरत में है जब कि औ़रत का काफ़िर शोहर उस को त़लब करे और अगर न त़लब करे तो उस को कुछ न दिया जाएगा। **मस्अला :** इसी त़रह़ अगर काफ़िर ने उस मुहाजिरा को महर नहीं दिया था तो भी वोह कुछ न पाएगा। **शाने नुज़ूल :** येह आयत सुल्ह़े हुदैबिया के बा'द नाज़िल हुई, सुल्ह़ में येह शर्त़ थी कि मक्का वालों में से जो शख़्स ईमान ला कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो उस को अहले मक्का वापस ले सकते हैं, इस आयत में येह बयान फ़रमा दिया गया कि येह शर्त़ सिर्फ़ मर्दों के लिये है औ़रतों की तसरीह़ अ़ह्द नामे में नहीं न औ़रतें इस क़रार दाद में दाख़िल हो सकती हैं क्यूं कि मुसल्मान औ़रत काफ़िर के लिये ह़लाल नहीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत हुक्मे अव्वल की नासिख़ है येह इस तक़्दीर पर है कि औ़रतें अ़ह्दे सुल्ह़ में दाख़िल हों, मगर औ़रतों का इस अ़ह्द में दाख़िल होना सह़ीह़ नहीं क्यूं कि ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़ह्द नामे के येह अल्फ़ाज़ मरवी हैं (لَا یَاْتِیْکَ مِنَّا رَجُلٌ وَّاِنْ کَانَ عَلٰی دِیْنِکَ اِلَّا رَدَدْتَّہٗ) या'नी हम में से जो मर्द आप के पास पहुंचे ख़्वाह वोह आप के दीन ही पर हो आप उस को वापस देंगे।

www.dawateislami.net

تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَاۤ اٰتَیْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَ لَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ

उन से निकाह़ कर लो[33] जब उन के महर उन्हें दो[34] और काफ़िरनियों के निकाह़ पर जमे न रहो[35]

وَ سْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقْتُمْ وَ لْیَسْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ یَحْكُمُ

और मांग लो जो तुम्हारा ख़र्च हुवा[36] और काफ़िर मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया[37] येह अल्लाह का हुक्म है वोह तुम में

بَیْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ﴿۱۰﴾ وَ اِنْ فَاتَكُمْ شَیْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى

फ़ैसला फ़रमाता है और अल्लाह इल्मो ह़िक्मत वाला है और अगर मुसल्मानों के हाथ से उन की कुछ औ़रतें काफ़िरों की त़रफ़

الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِیْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ

निकल जाएं[38] फिर तुम काफ़िरों को सज़ा दो[39] तो जिन की औ़रतें जाती रही थीं[40] ग़नीमत में से उन्हें उतना दे दो जो उन का ख़र्च हुवा था[41]

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِذَا جَآءَكَ

और अल्लाह से डरो जिस पर तुम्हें ईमान है ऐ नबी जब तुम्हारे ह़ुज़ूर मुसल्मान

الْمُؤْمِنٰتُ یُبَایِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا یُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَیْـًٔا وَّ لَا یَسْرِقْنَ وَ لَا

औ़रतें ह़ाज़िर हों इस पर बैअ़त करने को कि अल्लाह का शरीक कुछ न ठहराएंगी और न चोरी करेंगी और न

یَزْنِیْنَ وَ لَا یَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا یَاْتِیْنَ بِبُهْتَانٍ یَّفْتَرِیْنَهٗ بَیْنَ

बदकारी और न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी[42] और न वोह बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों

33 : या'नी मुहाजिरा औ़रतों से, अगर्चे दारुल ह़र्ब में उन के शोहर हों क्यूं कि इस्लाम लाने से वोह उन शोहरों पर ह़राम हो गईं और उन की ज़ौजिय्यत में न रहीं। **मस्अला :** وَاحْتَجَّ بِهٖ اَبُوْ حَنِیْفَةَ عَلٰی اَنْ لَّاعِدَّةَ عَلَی الْمُهَاجِرَةِ فَیَجُوْزُلَهَا التَّزَوُّجُ مِنْ غَیْرِ عِدَّةٍ خِلَافًا لَّهُمَا **34 :** महर देने से मुराद इस को अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लेना है अगर्चे बिलफ़े'ल न दिया जाए। **मस्अला :** इस से येह भी साबित हुवा कि उन औ़रतों से निकाह़ करने पर नया महर वाजिब होगा उन के शोहरों को जो अदा कर दिया गया वोह उस में मुजरा व मह़सूब (शुमार) न होगा। **35 :** या'नी जो औ़रतें दारुल ह़र्ब में रह गईं या मुरतद्दा हो कर दारुल ह़र्ब में चली गईं उन से ज़ौजिय्यत का अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़) न रखो, चुनान्चे येह आयत नाज़िल होने के बा'द अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उन काफ़िरा औ़रतों को त़लाक़ दे दी जो मक्कए मुकर्रमा में थीं। **मस्अला :** अगर मुसल्मान की औ़रत (مَعَاذَ اللّٰه) मुरतद हो जाए तो इस के क़ैदे निकाह़ से बाहर न होगी (عَلَیْهِ الْفَتْوٰی زَجْرًا وَّ تَیَسُّرًا) **36 :** या'नी उन औ़रतों को तुम ने जो महर दिये थे वोह उन काफ़िरों से वुसूल कर लो जिन्हों ने उन से निकाह़ किया। **37 :** अपनी औ़रतों पर जो हिजरत कर के दारुल इस्लाम में चली आईं उन के मुसल्मान शोहरों से जिन्हों ने उन से निकाह़ किया। **38 शाने नुज़ूल :** इस आयत के नाज़िल होने के बा'द मुसल्मानों ने तो मुहाजिरा औ़रतों के महर उन के काफ़िर शोहरों को अदा कर दिये और काफ़िरों ने मुरतद्दात के महर मुसल्मानों को अदा करने से इन्कार किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **39 :** जिहाद में और उन से ग़नीमत पाओ। **40 :** या'नी मुरतद्दा हो कर दारुल ह़र्ब में चली गई थीं। **41 :** उन औ़रतों के महर देने में। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मोमिनीने मुहाजिरीन की औ़रतों में से छ[6] औ़रतें ऐसी थीं जिन्हों ने दारुल ह़र्ब को इख़्तियार किया और मुश्रिकीन के साथ लाह़िक़ हुईं और मुरतद हो गईं, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने उन के शोहरों को माले ग़नीमत से उन के महर अ़त़ा फ़रमाए। **फ़ाएदा :** इन आयतों में मुहाजिरात के इम्तिह़ान और कुफ़्फ़ार ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वोह बा'दे हिजरत उन्हें देना और मुसल्मानों ने जो अपनी बीबियों पर ख़र्च किया हो वोह उन के मुरतद हो कर काफ़िरों से मिल जाने के बा'द उन से मांगना और जिन की बीबियां मुरतद हो कर चली गई हों उन्हों ने जो उन पर ख़र्च किया था वोह उन्हें माले ग़नीमत में से देना येह तमाम

www.dawateislami.net

اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ

और पाउं के दरमियान या'नी मौज़ुए विलादत में उठाएं[43] और किसी नेक बात में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी[44] तो उन से बैअ़त लो और अल्लाह से

لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا

उन की मग़्फ़िरत चाहो[45] बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ऐ ईमान वालो उन लोगों

تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا

से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है[46] वोह आख़िरत से आस तोड़ बैठे हैं[47] जैसे

يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿۱۳﴾ ع

काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से[48]

ع ٧ سُوْرَةُ الصَّفّ ٨

अह़काम मन्सूख़ हो गए आयते सैफ़ या आयते ग़नीमत या सुन्नत से क्यूं कि येह अह़काम जभी तक बाक़ी रहे जब तक येह अ़हद रहा और जब वोह अ़हद उठ गया तो अह़काम भी न रहे। **42 :** जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि लड़कियों को ब ख़याले आ़र व ब अन्देशए नादारी ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे, इस से और हर क़त्ले नाहक़ से बाज़ रहना इस अ़हद में शामिल है। **43 :** या'नी पराया बच्चा ले कर शोहर को धोका दें और उस को अपने पेट से जना हुवा बताएं जैसा कि जाहिलिय्यत के ज़माने में दस्तूर था। **44 :** नेक बात अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी है। **45 :** मरवी है कि जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रोज़े फ़त्हे मक्का मर्दों की बैअ़त ले कर फ़ारिग़ हुए तो कोहे सफ़ा पर औ़रतों से बैअ़त लेना शुरूअ़ की और हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه नीचे खड़े हुए हुज़ूर का कलामे मुबारक औ़रतों को सुनाते जाते थे, हिन्द बिन्ते उ़त्बा अबू सुफ़्यान की बीवी ख़ौफ़ज़दा बुर्क़अ़ पहन कर इस त़रह़ ह़ाज़िर हुई कि पहचानी न जाए, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअ़त लेता हूं कि तुम अल्लाह तआ़ला के साथ किसी चीज़ को शरीक न करो, हिन्द ने सर उठा कर कहा कि आप हम से वोह अ़हद लेते हैं जो हम ने आप को मर्दों से लेते नहीं देखा और उस रोज़ मर्दों से सिर्फ़ इस्लाम व जिहाद पर बैअ़त ली गई थी, फिर हुज़ूर ने फ़रमाया : और चोरी न करेंगी, तो हिन्द ने अ़र्ज़ किया कि अबू सुफ़्यान बख़ील आदमी हैं और मैं ने उन का माल ज़रूर लिया है मैं नहीं समझी मुझे ह़लाल हुवा या नहीं, अबू सुफ़्यान ह़ाज़िर थे उन्हों ने कहा जो तू ने पहले लिया और जो आइन्दा ले सब ह़लाल, इस पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया और इर्शाद किया : तू हिन्द बिन्ते उ़त्बा है, अ़र्ज़ किया : जी हां जो कुछ मुझ से क़ुसूर हुए हैं मुआ़फ़ फ़रमाइये फिर हुज़ूर ने फ़रमाया : और न बदकारी करेंगी, तो हिन्द ने कहा क्या कोई आज़ाद औ़रत बदकारी करती है, फिर फ़रमाया : न अपनी औलाद को क़त्ल करें। हिन्द ने कहा : हम ने छोटे छोटे पाले जब बड़े हो गए तुम ने उन्हें क़त्ल कर दिया, तुम जानो और वोह जानें, उस का लड़का ह़न्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान बद्र में क़त्ल कर दिया गया था, हिन्द की येह गुफ़्तगू सुन कर हज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बहुत हंसी आई फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ पाउं के दरमियान कोई बोहतान न घड़ेंगी, हिन्द ने कहा बख़ुदा बोहतान बहुत बुरी चीज़ है और हुज़ूर हम को नेक बातों और बरतर ख़स्लतों का हुक्म देते हैं, फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि किसी नेक बात में रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी न करेंगी, इस पर हिन्द ने कहा कि इस मजलिस में हम इस लिये ह़ाज़िर ही नहीं हुए कि अपने दिल में आप की ना फ़रमानी का ख़याल आने दें औ़रतों ने इन तमाम उमूर का इक़रार किया और चार सो सत्तावन औ़रतों ने बैअ़त की, इस बैअ़त में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मुसाफ़ह़ा न फ़रमाया और औ़रतों को दस्ते मुबारक छूने न दिया, बैअ़त की कैफ़िय्यत में येह भी बयान किया गया है कि एक क़दह़ पानी में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक डाला फिर उसी में औ़रतों ने अपने हाथ डाले और येह भी कहा गया है कि बैअ़त कपड़े के वासित़े से ली गई और बई़द नहीं है कि दोनों सूरतें अ़मल में आई हों। **मसाइल :** बैअ़त के वक़्त मिक़राज़ का इस्ति'माल मशाइख़ का त़रीक़ा है, येह भी कहा गया है कि येह हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सुन्नत है। ख़िलाफ़त के साथ टोपी देना मशाइख़ का मा'मूल है और कहा गया है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मन्क़ूल है। औ़रतों की बैअ़त में अजनबिय्या का हाथ छूना ह़राम है। या बैअ़त ज़बान से हो या कपड़े वग़ैरा के वासित़े से। **46 :** उन लोगों से मुराद यहूद हैं। **47 :** क्यूं कि उन्हें कुतुबे साबिक़ा से मा'लूम हो चुका था और वोह ब यक़ीन जानते थे कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और यहूद ने इस की तक्ज़ीब की है, इस लिये उन्हें अपनी मग़्फ़िरत की उम्मीद नहीं। **48 :** फिर दुन्या में वापस आने की, या येह मा'ना हैं कि यहूद सवाबे आख़िरत से ऐसे ना उम्मीद हुए जैसा कि मरे हुए काफ़िर अपनी क़ब्रों में अपने ह़ाल को जान कर सवाबे आख़िरत से बिल्कुल मायूस हैं।

www.dawateislami.net

اٰیاتُها ١٤ | ٦١ سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ ١٠٩ | رکوعاتها ٢

सूरए सफ़ मदनिय्या है, इस में चौदह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ② كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ

ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते[2] कितनी सख़्त ना पसन्द है

اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ

अल्लाह को वोह बात कि वोह कहो जो न करो बेशक अल्लाह दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में

فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ

लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इमारत हैं रांगा (सीसा) पिलाई[3] और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा

يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا

ऐ मेरी क़ौम मुझे क्यूं सताते हो[4] ह़ालां कि तुम जानते हो[5] कि मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं[6] फिर जब

زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤ وَاِذْ

वोह[7] टेढ़े हुए अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े कर दिये[8] और फ़ासिक़ लोगों को अल्लाह राह नहीं देता[9] और याद करो जब

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ

ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी त़रफ़ अल्लाह का रसूल हूं

1 : सूरए सफ़ मक्किय्या है और बक़ौले ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما व जुम्हूर मुफ़स्सिरीन मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चौदह 14 आयतें, दो सो इक्कीस 221 कलिमे, और नव सो 900 ह़र्फ़ हैं। 2 **शाने नुज़ूल :** सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त गुफ़्तगूएं कर रही थी येह वोह वक़्त था जब तक कि हुक्मे जिहाद नाज़िल नहीं हुवा था, उस जमाअ़त में येह तज़्किरा था कि अल्लाह तआ़ला को सब से ज़ियादा क्या अ़मल प्यारा है ? हमें मा'लूम होता तो हम वोही करते चाहे उस में हमारे माल और हमारी जानें काम आ जातीं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, इस आयत के शाने नुज़ूल में और भी कई क़ौल हैं। मिन जुम्ला उन के एक येह है कि येह आयत मुनाफ़िक़ीन के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुसल्मानों से मदद का झूटा वा'दा करते थे। 3 : एक से दूसरा मिला हुवा, हर एक अपनी अपनी जगह जमा हुवा, दुश्मन के मुक़ाबिल सब के सब मिस्ल शै वाहिद के। 4 : आयात का इन्कार कर के और मेरे ऊपर झूटी तोहमतें लगा कर 5 : यक़ीन के साथ 6 : और रसूल वाजिबुत्ता'ज़ीम होते हैं, उन की तौक़ीर और उन का एह़तिराम लाज़िम है, उन्हें ईज़ा देना सख़्त ह़राम और इन्तिहा दरजे की बद नसीबी है। 7 : ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को ईज़ा दे कर राहे ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ और 8 : उन्हें इत्तिबाए ह़क़ की तौफ़ीक़ से मह़रूम कर के। 9 : जो उस के इ़ल्म में ना फ़रमान हैं। इस

www.dawateislami.net

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ

अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुवा[10] और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा'द तशरीफ़

بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ

लाएंगे उन का नाम अहमद है[11] फिर जब अहमद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला

مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى

जादू है और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[12] हालां कि उसे इस्लाम की त़रफ़

الْاِسْلَامِؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا

बुलाया जाता हो[13] और ज़ालिम लोगों को अल्लाह राह नहीं देता चाहते हैं कि अल्लाह का नूर[14]

نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ

अपने मूंहों से बुझा दें[15] और अल्लाह को अपना नूर पूरा करना पड़े बुरा मानें काफ़िर वोही है

الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब

ع ١ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى

करे[16] पड़े बुरा मानें मुश्रिक ऐ ईमान वालो[17] क्या मैं बता दूं वोह सौदागरी

आयत में तम्बीह है कि रसूलों को ईज़ा देना शदीद तरीन जुर्म है और इस के वबाल से दिल टेढ़े हो जाते हैं और आदमी हिदायत से महरूम हो जाता है। **10 :** और तौरैत व दीगर कुतुबे इलाहिय्यह का इक़्रार व ए'तिराफ़ करता हुवा और तमाम पहले अम्बिया को मानता हुवा। **11 हदीस :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुक्म से अस्हाबे किराम नजाशी बादशाह के पास गए तो नजाशी बादशाह ने कहा मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं और वोही रसूल हैं जिन की हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बिशारत दी, अगर उमूरे सल्तनत की पाबन्दियां न होतीं तो मैं उन की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कफ़्श बरदारी (ना'लैने शरीफ़ैन उठाने) की ख़िदमत बजा लाता। (ابوداؤد) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है तौरैत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिफ़त मज़्कूर है और येह भी कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप के पास मदफ़ून होंगे। अबू दावूद मदनी ने कहा कि रौज़ए अक़्दस में एक क़ब्र की जगह बाक़ी है। (ترمذی) हज़रते का'ब अह़बार से मरवी है कि ह़वारियों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया : या रूहल्लाह ! क्या हमारे बा'द और कोई उम्मत भी है ? फ़रमाया : हां अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मत वोह लोग हुकमा, उ़लमा, अबरार व अत्क़िया हैं और फ़िक़्ह में नाइबे अम्बिया हैं अल्लाह तआ़ला से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी और अल्लाह तआ़ला उन से थोड़े अ़मल पर राज़ी। **12 :** उस की त़रफ़ शरीक और वल्द की निस्बत कर के और उस की आयात को जादू बता कर। **13 :** जिस में सआ़दते दारैन है। **14 :** या'नी दीने बरहक़ इस्लाम **15 :** क़ुरआने पाक को शे'र व सेह़र व कहानत बता कर। **16 :** चुनान्चे हर एक दीन ब इनायते इलाही इस्लाम से मग़लूब हो गया। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे तो रूए ज़मीन पर सिवाए इस्लाम के और कोई दीन न होगा। **17 शाने नुज़ूल :** मोमिनीन ने कहा था कि अगर हम जानते कि अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल बहुत पसन्द है तो हम वोही करते इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इस आयत में उस अ़मल को तिजारत से ता'बीर फ़रमाया गया क्यूं कि जिस त़रह़ तिजारत से नफ़्अ़ की उम्मीद होती है इसी त़रह़ उन आ'माल से बेहतरीन नफ़्अ़ रिज़ाए इलाही और जन्नत व नजात ह़ासिल होती है।

تِجَارَةٍ تُنْجِیْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۱۰﴾ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ

जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले[18] ईमान रखो अल्लाह और उस के रसूल पर और

تُجَاهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो येह तुम्हारे लिये बेहतर है[19] अगर

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ یُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ

तुम जानो[20] वोह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ مَسٰكِنَ طَیِّبَةً فِیْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

नहरें रवां और पाकीज़ा महल्लों में जो बसने के बाग़ों में हैं येही बड़ी

الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾ وَ اُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَتْحٌ قَرِیْبٌ ؕ وَ بَشِّرِ

काम्याबी है और एक ने'मत तुम्हें और देगा[21] जो तुम्हें प्यारी है अल्लाह की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह[22] और ऐ महबूब

الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۳﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ

मुसल्मानों को ख़ुशी सुना दो[23] ऐ ईमान वालो दीने ख़ुदा के मददगार हो जैसे[24]

عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ لِلْحَوَارِیّٖنَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ

ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा था कौन हैं जो अल्लाह की तरफ़ हो कर मेरी मदद करें हवारी

الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ وَ

बोले[25] हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं तो बनी इसराईल से एक गुरौह ईमान लाया[26] और

كَفَرَتْ طَّآىِٕفَةٌ ۚ فَاَیَّدْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِیْنَ ﴿۱۴﴾ ع ۲ ع ١٠

एक गुरौह ने कुफ़्र किया[27] तो हम ने ईमान वालों को उन के दुश्मनों पर मदद दी तो ग़ालिब हो गए[28]

18 : अब वोह तिजारत बताई जाती है। 19 : जान और माल और हर एक चीज़ से 20 : और ऐसा करो तो 21 : इस के इलावा जल्द मिलने वाली 22 : इस फ़त्ह से या फ़त्हे मक्का मुराद है या बिलादे फ़ारस व रूम की फ़त्ह। 23 : दुन्या में फ़त्ह की और आख़िरत में जन्नत की। 24 : हवारियों ने दीने इलाही की मदद की थी जब कि 25 : **हवारी** हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुख़्लिसीन को कहते हैं, येह बारह हज़रात थे जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर अव्वल ईमान लाए, इन्हों ने अर्ज़ किया : 26 : हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर 27 : इन दोनों में क़िताल हुवा 28 : ईमान वाले। इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर उठा लिये गए तो उन की क़ौम तीन फ़िर्क़ों में मुन्क़सिम हो गई **एक** फ़िर्क़े ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत कहा कि वोह अल्लाह था आस्मान पर चला गया **दूसरे** फ़िर्क़े ने कहा वोह अल्लाह तआला का बेटा था उस ने अपने पास बुला लिया **तीसरे** फ़िर्क़े ने कहा कि वोह अल्लाह तआला के बन्दे और उस के रसूल थे उस ने उठा लिया, येह तीसरे फ़िर्क़े वाले मोमिन थे, इन की उन दोनों फ़िर्क़ों से जंग रही और काफ़िर गुरौह इन पर ग़ालिब रहे, यहां तक कि सय्यिदे अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़ुहूर फ़रमाया उस वक़्त ईमानदार गुरौह उन काफ़िरों पर ग़ालिब हुवा, इस तक़्दीर पर

www.dawateislami.net

اٰیاتها ١١ ﴿٦٢ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ ١١٠﴾ رکوعاتها ٢

सूरए जुमुअ़ह मदनिय्या है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ
अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है[2] बादशाह कमाल पाकी वाला इ़ज़्ज़त वाला

الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ
हिक्मत वाला वोही है जिस ने अनपढ़ों में उन्ही में से एक रसूल भेजा[3] कि उन पर उस की आयतें पढ़ते

اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ
हैं[4] और उन्हें पाक करते हैं[5] और उन्हें किताब और हिक्मत का इ़ल्म अ़ता फ़रमाते हैं[6] और बेशक वोह इस से पहले[7]

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
ज़रूर खुली गुमराही में थे[8] और उन में से[9] औरों को[10] पाक करते और इ़ल्म अ़ता फ़रमाते हैं जो उन अगलों से न मिले[11] और वोही इ़ज़्ज़त व

الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ
हिक्मत वाला है येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े

मत़लब येह है कि ह़ज़रते ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने वालों की हम ने मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करने से मदद फ़रमाई । **1 :** सूरए जुमुअ़ह मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, ग्यारह 11 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, सात सो बीस 720 ह़र्फ़ हैं । **2 :** तस्बीह़ तीन त़रह़ की है **एक** तस्बीहे़ ख़िल्क़त कि हर शै की ज़ात और उस की पैदाइश ह़ज़रत ख़ालिक़े क़दीर جَلَّ جَلَالُهٗ की क़ुदरत व हिक्मत और उस की वह़दानिय्यत और तन्ज़ीह पर दलालत करती है **दूसरी** तस्बीहे़ मा'रिफ़त कि अल्लाह तआ़ला अपने लुत़्फ़ो करम से मख़्लूक़ में अपनी मा'रिफ़त पैदा करे **तीसरी** तस्बीहे़ ज़रूरी वोह येह है कि अल्लाह तआ़ला हर एक जौहर पर अपनी तस्बीह़ जारी फ़रमाता है, येह तस्बीहे़ मा'रिफ़त पर मुरत्तब नहीं । **3 :** जिस के नसब व शराफ़त को वोह अच्छी त़रह़ जानते पहचानते हैं उन का नामे पाक मुह़म्मद मुस्त़फ़ा है صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हुज़ूर सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सिफ़त नबिय्ये उम्मी है इस की बहुत वुजूह हैं : **एक :** उन में से येह है कि आप उम्मते उम्मिय्यह की त़रफ़ मब्ऊ़स हुए । किताब शिअ़्या में है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं उम्मियों में एक उम्मी भेजूंगा और उस पर नुबुव्वत ख़त्म कर दूंगा और **एक** वज्ह येह है कि आप की बि'सत उम्मुल क़ुरा या'नी मक्कए मुकर्रमा में हुई और **एक** वज्ह येह भी है कि हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام लिखते और किताब से कुछ पढ़ते न थे और येह आप की फ़ज़ीलत थी कि ग़ायते हुज़ूरे इ़ल्म से इस की ह़ाजत न थी, ख़त़ एक सन्अ़ते ज़ेहनिय्या है जो आलए जिस्मानिय्या से सादिर होती है तो जो ज़ात ऐसी हो कि क़लमे आ'ला उस के ज़ेरे फ़रमान हो उस को इस किताबत की क्या ह़ाजत, फिर हुज़ूर का किताबत न फ़रमाना और किताबत का माहिर होना एक मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है, कातिबों को इ़ल्मे ख़त़ और रस्मे किताबत की ता'लीम फ़रमाते और अहले ह़िर्फ़त (अहले फ़न) को ह़िर्फ़तों (फ़ुनून) की ता'लीम देते और हर कमाले दुन्यवी व उख़्रवी में अल्लाह तआ़ला ने आप को तमाम ख़ल्क़ से आ'लम किया । **4 :** या'नी क़ुरआने पाक सुनाते हैं **5 :** अ़क़ाइदे बात़िला व अख़्लाक़े रज़ीला व ख़बाइसे जाहिलिय्यत व क़बाइहे़ आ'माल से **6 :** किताब से मुराद क़ुरआन और हिक्मत से सुन्नत व फ़िक़्ह है या अह़कामे शरीअ़त और असरारे त़रीक़त । **7 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल **8 :** कि शिर्क व अ़क़ाइदे बात़िला व ख़बाइसे आ'माल में गिरिफ़्तार थे उन्हें मुर्शिदे कामिल की शदीद ह़ाजत थी । **9 :** या'नी उम्मियों में से **10 :** औरों से मुराद या तो अ़जम हैं या वोह तमाम लोग जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के बा'द क़ियामत तक इस्लाम में दाख़िल हों उन

www.dawateislami.net

الْعَظِيمِ ④ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ

फ़ज़्ल वाला है[12] उन की मिसाल जिन पर तौरैत रखी गई थी[13] फिर उन्हों ने उस की हुक्म बरदारी न की[14] गधे की

الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۭ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ

मिसाल है जो पीठ पर किताबें उठाए[15] क्या ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने **अल्लाह** की आयतें

اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ⑤ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوْٓا

झुटलाईं और **अल्लाह** ज़ालिमों को राह नहीं देता तुम फ़रमाओ ऐ यहूदियो !

اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَاۗءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ

अगर तुम्हें येह गुमान है कि तुम **अल्लाह** के दोस्त हो और लोग नहीं[16] तो मरने की आरज़ू करो[17] अगर

كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ⑥ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيهِمْ ۭ وَاللّٰهُ

तुम सच्चे हो[18] और वोह कभी इस की आरज़ू न करेंगे उन कौतकों (आ'माल) के सबब जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं[19] और **अल्लाह**

عَلِيمٌۢ بِالظّٰلِمِينَ ⑦ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ

ज़ालिमों को जानता है तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो वोह तो ज़रूर

مُلٰقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

तुम्हें मिलनी है[20] फिर उस की तरफ़ फेरे जाओगे जो छुपा और ज़ाहिर सब कुछ जानता है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो कुछ

تَعْمَلُوْنَ ⑧ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ ع ١

तुम ने किया था ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो

الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

जुमुआ के दिन[21] तो **अल्लाह** के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो[22] और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो[23] येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम

को **11 :** उन का ज़माना न पाया उन के बा'द आए या फ़ज़्लो शरफ़ में उन के दरजे को न पहुंचे क्यूं कि सहाबा के बा'द के लोग ख़्वाह ग़ौसो कुतुब हो जाएं मगर फ़ज़ीलते सहाबिय्यत नहीं पा सकते। **12 :** अपने ख़ल्क़ पर, उस ने उन की हिदायत के लिये अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को मब्ऊस फ़रमाया। **13 :** और उस के अह़काम का इत्तिबाअ़ उन पर लाज़िम किया गया था वोह लोग यहूद हैं। **14 :** और उस पर अ़मल न किया और उस में सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की ना'त व सिफ़त देखने के बा वुजूद हुज़ूर पर ईमान न लाए। **15 :** और बोझ के सिवा उन से कुछ भी नफ़्अ़ न पाए और जो उ़लूम उन में हैं उन से अस्लन वाक़िफ़ न हो, येही हाल उन यहूद का है जो तौरैत उठाए फिरते हैं इस के अल्फ़ाज़ रटते हैं और इस से नफ़्अ़ नहीं उठाते इस के मुताबिक़ अ़मल नहीं करते और येही मिसाल उन लोगों पर सादिक़ आती है जो क़ुरआने करीम के मआ़नी को न समझें और इस पर अ़मल न करें और इस से ए'राज़ करें। **16 :** जैसा कि तुम कहते हो कि हम **अल्लाह** के बेटे और उस के प्यारे हैं **17 :** कि मौत तुम्हें उस तक पहुंचाए **18 :** अपने इस दा'वे में **19 :** या'नी उस कुफ़्र व तक्ज़ीब के बाइस जो उन से सादिर हुई है। **20 :** किसी तरह उस से बच नहीं सकते। **21 :** रोज़े जुमुआ, इस दिन का नाम

www.dawateislami.net

تَعْلَمُوْنَ ﴿۹﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا

जानो फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** का

مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَاِذَا رَاَوْا

फ़ज़्ल तलाश करो[24] और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ और जब उन्हों ने

تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآىِٕمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

कोई तिजारत या खेल देखा उस की तरफ़ चल दिये[25] और तुम्हें खुत्बे में खड़ा छोड़ गए[26] तुम फ़रमाओ वोह जो **अल्लाह** के पास है[27]

۲ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱﴾ ع

खेल से और तिजारत से बेहतर है और **अल्लाह** का रिज़्क़ सब से अच्छा

اٰياتها ١١ ｜ ٦٣ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ ١٠٤ ｜ رکوعاتها ٢

सूरए मुनाफ़िक़ून मदनिय्या है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

अ़रबी ज़बान में **अ़रूबा** था, जुमुआ़ इस को इस लिये कहा जाता है कि नमाज़ के लिये जमाअ़तों का इज्तिमाअ़ होता है वज्हे तस्मिया में और भी अक़्वाल हैं, सब से पहले जिस शख़्स ने इस दिन का नाम जुमुआ़ रखा वोह का'ब बिन लुई हैं, पहला जुमुआ़ जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अपने अस्हाब के साथ पढ़ा अस्हाबे सियर का बयान है कि हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام जब हिजरत कर के मदीनए तय्यिबा तशरीफ़ लाए तो बारहवीं रबीउ़ल अव्वल रोज़े दो शम्बा (पीर) को चाश्त के वक़्त मक़ामे कुबा में इक़ामत फ़रमाई दो शम्बा, सेह शम्बा (मंगल), चहार शम्बा (बुध), पंज शम्बा (जुमे'रात) यहां क़ियाम फ़रमाया और मस्जिद की बुन्याद रखी, रोज़े जुमुआ़ मदीनए तय्यिबा का अ़ज़्म फ़रमाया, बनी सालिम इब्ने औ़फ़ के बत़्ने वादी में जुमुआ़ का वक़्त आया, उस जगह को लोगों ने मस्जिद बनाया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वहां जुमुआ़ पढ़ाया और खुत्बा फ़रमाया। जुमुआ़ का दिन सय्यिदुल अय्याम है जो मोमिन इस रोज़ मरे ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला उस को शहीद का सवाब अ़ता फ़रमाता है और फ़ित्नए क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है। अज़ान से मुराद अज़ाने अव्वल है न अज़ाने सानी जो खुत्बे से मुत्तसिल होती है, अगर्चे अज़ाने अव्वल ज़मानए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه में इज़ाफ़ा की गई मगर वुजूबे सअ़्य और तर्के बैअ़ व शिराअ इसी से मुतअ़ल्लिक़ है। (كذا فى الدر المختار) **22 :** दौड़ने से भागना मुराद नहीं है बल्कि मक़्सूद येह है कि नमाज़ के लिये तय्यारी शुरूअ़ करो और "ज़िक्रुल्लाह" से जुम्हूर के नज़्दीक खुत्बा मुराद है। **23 मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि जुमुआ़ की अज़ान होते ही ख़रीदो फ़रोख़्त ह़राम हो जाती है और दुन्या के तमाम मशाग़िल जो ज़िक्रे इलाही से ग़फ़्लत का सबब हों इस में दाख़िल हैं, अज़ान होने के बा'द सब को तर्क करना लाज़िम है। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़े जुमुआ़ की फ़र्ज़िय्यत और बैअ़ वग़ैरा मशाग़िले दुन्यविय्या की हुरमत और सई या'नी एहतिमामे नमाज़ का वुजूब साबित हुवा और खुत्बा भी साबित हुवा। **मस्अला :** जुमुआ़ मुसल्मान मर्द, मुकल्लफ़, आज़ाद व तन्दुरुस्त, मुक़ीम पर शहर में वाजिब होता है, नाबीना और लंगड़े पर वाजिब नहीं होता, सिह़्ह़ते जुमुआ़ के लिये सात शर्तें हैं (1) शहर, जहां फ़ैसलए मुक़द्दमात का इख़्तियार रखने वाला कोई ह़ाकिम मौजूद हो या फ़िनाए शहर जो शहर से मुत्तसिल हो और अहले शहर उस को अपने ह़वाइज के काम में लाते हों। (2) ह़ाकिम (3) वक़्ते ज़ोहर (4) खुत्बा वक़्त के अन्दर (5) खुत्बे का क़ब्ले नमाज़ होना इतनी जमाअ़त में जो जुमुआ़ के लिये ज़रूरी है (6) जमाअ़त और इस की अक़ल मिक़्दार तीन मर्द हैं सिवाए इमाम के (7) इज़्ने आ़म कि नमाज़ियों को मक़ामे नमाज़ में आने से रोका न जाए। **24 :** या'नी अब तुम्हारे लिये जाइज़ है कि मआ़श के कामों में मश्ग़ूल हो या त़लबे इल्म या इयादते मरीज़ या शिर्कते जनाज़ा या ज़ियारते उ़लमा और इस के मिस्ल कामों में मश्ग़ूल हो कर नेकियां ह़ासिल करो। **25 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मदीनए तय्यिबा में रोज़े जुमुआ़ खुत्बा फ़रमा रहे थे इस ह़ाल में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और ह़स्बे दस्तूर ए'लान के लिये त़ब्ल बजाया गया, ज़माना बहुत तंगी और गिरानी (महंगाई) का था, लोग ब ईं ख़याल उस की त़रफ़ चले गए कि ऐसा न हो कि देर करने से अज्नास ख़त्म हो जाएं और हम न पा सकें और मस्जिद शरीफ़ में सिर्फ़ बारह आदमी रह गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **26 मस्अला :** इस से साबित हुवा कि ख़त़ीब को खड़े हो कर खुत्बा पढ़ना चाहिये। **27 :** या'नी नमाज़ का अज्रो सवाब और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहने की बरकत व सआ़दत।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وقف لازم

जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर होते हैं[2] कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾ اِتَّخَذُوْۤا

कि तुम उस के रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं[3] उन्हों ने अपनी

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

क़समों को ढाल ठहरा लिया[4] तो अल्लाह की राह से रोका[5] बेशक वोह बहुत ही बुरे काम

يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا

करते हैं[6] येह इस लिये कि वोह ज़बान से ईमान लाए फिर दिल से काफ़िर हुए तो उन के दिलों पर मोहर कर दी गई तो अब

يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ

वोह कुछ नहीं समझते और जब तू उन्हें देखे[7] उन के जिस्म तुझे भले मा'लूम हों और अगर बात करें तो तू उन की बात

لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ

ग़ौर से सुने[8] गोया वोह कड़ियां हैं दीवार से टिकाई हुई[9] हर बुलन्द आवाज़ अपने ही ऊपर ले जाते हैं[10]

هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾ وَاِذَا قِيْلَ

वोह दुश्मन हैं[11] तो उन से बचते रहो[12] अल्लाह उन्हें मारे कहां औंधे जाते हैं[13] और जब उन से

---

1 : सूरए मुनाफ़िक़ून मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, ग्यारह 11 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, और नव सो छिहत्तर 976 ह़र्फ़ हैं। 2 : तो अपने ज़मीर के ख़िलाफ़ 3 : उन का बात़िन ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ नहीं जो कहते हैं उस के ख़िलाफ़ ए'तिक़ाद रखते हैं। 4 : कि उन के ज़रीए से क़त्ल व क़ैद से मह़फ़ूज़ रहें। 5 : लोगों को या'नी जिहाद से या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाने से त़रह़ त़रह़ के वस्वसे और शुब्हे डाल कर। 6 : कि ब मुक़ाबला ईमान के कुफ़्र इख़्तियार करते हैं। 7 : या'नी मुनाफ़िक़ीन को मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल वग़ैरा के 8 : इब्ने उबय जसीम, सबीह़, ख़ूबरू व ख़ुश बयान आदमी था और उस के साथ वाले मुनाफ़िक़ीन क़रीब क़रीब वैसे ही थे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में जब येह लोग ह़ाज़िर होते तो ख़ूब बातें बनाते जो सुनने वाले को अच्छी मा'लूम होतीं। 9 : जिन में बेजान तस्वीर की त़रह़ न ईमान की रूह़ न अन्जाम सोचने वाली अ़क़्ल। 10 : कोई किसी को पुकारता हो या अपनी गुमी चीज़ ढूंडता हो या लश्कर में किसी मक़्सद के लिये कोई बात बुलन्द आवाज़ से कहें तो येह अपने ख़ुब्से नफ़्स और सूए ज़न से येही समझते हैं कि उन्हें कुछ कहा गया और उन्हें येह अन्देशा रहता है कि उन के ह़क़ में कोई ऐसा मज़्मून नाज़िल हुवा जिस से उन के राज़ फ़ाश हो जाएं। 11 : दिल में शदीद अ़दावत रखते हैं और कुफ़्फ़ार के पास यहां की ख़बरें पहुंचाते हैं उन के जासूस हैं। 12 : और उन के ज़ाहिर ह़ाल से धोका न खाओ। 13 : और रोशन बुरहानें क़ाइम होने के बा वुजूद ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होते हैं।

www.dawateislami.net

لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَ رَاَيْتَهُمْ

कहा जाए कि आओ[14] रसूलुल्लाह तुम्हारे लिये मुआफ़ी चाहें तो अपने सर घुमाते हैं और तुम उन्हें देखो

يَصُدُّوْنَ وَ هُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ

कि गुरूर करते हुए मुंह फेर लेते हैं[15] उन पर एक सा है तुम उन की मुआफ़ी चाहो या न

تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

चाहो **अल्लाह** उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा[16] बेशक **अल्लाह** फ़ासिक़ों को

الْفٰسِقِيْنَ ﴿۶﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

राह नहीं देता वोही हैं जो कहते हैं उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं

حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَ لِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

यहां तक कि परेशान हो जाएं और **अल्लाह** ही के लिये हैं आस्मानों और ज़मीन के ख़ज़ाने[17] मगर मुनाफ़िक़ों को

لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۷﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ

समझ नहीं कहते हैं हम मदीने फिर कर गए[18] तो ज़रूर जो बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है वोह उस में से निकाल देगा

مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

उसे जो निहायत ज़िल्लत वाला है[19] और इ़ज़्ज़त तो **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसल्मानों ही के लिये है मगर मुनाफ़िक़ों

14 : मुआफ़ी चाहने के लिये **15 शाने नुज़ूल :** ग़ज़्वए मुरैसीअ़ से फ़ारिग़ हो कर जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने सरे चाह (एक कूंएं के पास) नुज़ूल फ़रमाया तो वहां येह वाक़िआ़ पेश आया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के अजीर जहजाह ग़िफ़ारी और इब्ने उबय के ह़लीफ़ सिनान बिन वबर जुहनी के दरमियान जंग हो गई, जहजाह ने मुहाजिरीन को और सिनान ने अन्सार को पुकारा, उस वक़्त इब्ने उबय मुनाफ़िक़ ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में बहुत गुस्ताख़ाना और बेहूदा बातें बकीं और येह कहा कि मदीनए त़य्यिबा पहुंच कर हम में से इ़ज़्ज़त वाले ज़लीलों को निकाल देंगे और अपनी क़ौम से कहने लगा कि अगर तुम इन्हें अपना झूटा खाना न दो तो येह तुम्हारी गरदनों पर सुवार न हों अब इन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि येह मदीने से भाग जाएं, उस की येह ना शाइस्ता गुफ़्त्गू सुन कर ज़ैद बिन अरक़म को ताब न रही, उन्हों ने उस से फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम तू ही ज़लील है अपनी क़ौम में बुग़्ज़ डालने वाला और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर मे'राज का ताज है, ह़ज़रते रह़मान ने उन्हें इ़ज़्ज़तो क़ुव्वत दी है, इब्ने उबय कहने लगा : चुप मैं तो हंसी से कह रहा था, ज़ैद बिन अरक़म ने येह ख़बर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुंचाई, ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने इब्ने उबय के क़त्ल की इजाज़त चाही सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया और इर्शाद किया कि लोग कहेंगे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अपने अस्ह़ाब को क़त्ल करते हैं, हुज़ूरे अन्वर ने इब्ने उबय से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तू ने येह बातें कही थीं ? वोह मुकर गया और क़सम खा गया कि मैं ने कुछ भी नहीं कहा, उस के साथी जो मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर थे वोह अ़र्ज़ करने लगे कि इब्ने उबय बूढ़ा बड़ा शख़्स है येह जो कहता है ठीक ही कहता है, ज़ैद बिन अरक़म को शायद धोका हुवा हो और बात याद न रही हो, फिर जब ऊपर की आयतें नाज़िल हुईं और इब्ने उबय का झूट ज़ाहिर हो गया तो उस से कहा गया कि जा सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरख़्वास्त कर हुज़ूर तेरे लिये **अल्लाह** तआ़ला से मुआ़फ़ी चाहें, तो गरदन फेरी और कहने लगा कि तुम ने कहा ईमान ला तो मैं ईमान ले आया तुम ने कहा ज़कात दे तो मैं ने ज़कात दी अब येही बाक़ी रह गया है कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को सज्दा करूं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **16 :** इस लिये कि वोह निफ़ाक़ में रासिख़ और पुख़्ता हो चुके हैं। **17 :** वोही सब का राज़िक़ है **18 :** इस ग़ज़्वे से लौट कर **19 :** मुनाफ़िक़ीन ने अपने को इ़ज़्ज़त वाला कहा

www.dawateislami.net

لَا يَعْلَمُوْنَ ۟۸ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ ع ١ ٨ ١٣

को ख़बर नहीं[20] ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के

عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۟۹ وَ اَنْفِقُوْا

ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे[21] और जो ऐसा करे[22] तो वोही लोग नुक़्सान में हैं[23] और हमारे दिये में

مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो[24] क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब

لَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۟۱۰

तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता

وَ لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۟۱۱ ع ع ٢ ٣ ١٤

और हरगिज़ **अल्लाह** किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए[25] और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है

اٰياتها ١٨ ۝ ٦٤ سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٨ ۝ رکوعاتها ٢

सूरए तग़ाबुन मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ ز

अल्लाह की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में उसी का मुल्क है और उसी की ता'रीफ़[2]

وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۟۱ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّ مِنْكُمْ

और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोही है जिस ने तुम्हें पैदा किया तो तुम में कोई काफ़िर और तुम में

और मोमिनीन को ज़िल्लत वाला। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **20 :** इस आयत के नाज़िल होने के चन्द ही रोज़ बा'द इब्ने उबय मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ की हालत पर मर गया। **21 :** पंजगाना नमाज़ों से या क़ुरआन शरीफ़ से **22 :** कि दुन्या में मश्ग़ूल हो कर दीन को फ़रामोश कर दे और माल की महब्बत में अपने हाल की परवा न करे और औलाद की ख़ुशी के लिये राहते आख़िरत से ग़ाफ़िल रहे **23 :** कि उन्हों ने दुन्याए फ़ानी के पीछे दारे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ने'मतों की परवा न की। **24 :** या'नी जो सदक़ात वाजिब हैं वोह अदा करो। **25 :** जो लौहे महफ़ूज़ में मक्तूब है। **1 :** सूरए तग़ाबुन अक्सर के नज़्दीक मदनिय्या है और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि मक्किय्या है सिवाए तीन 3 आयतों के जो ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ'' से शुरूअ़ होती हैं, इस सूरत में दो 2 रुकूअ़, अठ्ठारह 18 आयतें, दो सो इक्तालीस 241 कलिमे, एक हज़ार सत्तर 1070 हर्फ़ हैं। **2 :** अपने मुल्क में मुतसर्रिफ़ है जो चाहता है जैसा चाहता है करता है, न कोई शरीक न साझी, सब ने'मतें उसी की हैं।

www.dawateislami.net

مُؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

कोई मुसल्मान[3] और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है उस ने आस्मान और ज़मीन हक़

بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ يَعْلَمُ مَا فِي

के साथ बनाए और तुम्हारी तस्वीर की तो तुम्हारी अच्छी सूरत बनाई[4] और उसी की तरफ़ फिरना है[5] जानता है जो कुछ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

आस्मानों और ज़मीन में है और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो और अल्लाह दिलों

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤﴾ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا

की जानता है क्या तुम्हें[6] उन की ख़बर न आई जिन्हों ने तुम से पहले कुफ़्र किया[7] और अपने

وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ

काम का वबाल चखा[8] और उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है[9] येह इस लिये कि उन के पास

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْۤا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

उन के रसूल रोशन दलीलें लाते[10] तो बोले क्या आदमी हमें राह बताएंगे[11] तो काफ़िर हुए[12] और फिर गए[13] और अल्लाह ने बे नियाज़ी को

اللّٰهُ ۚ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٦﴾ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۚ

काम फ़रमाया और अल्लाह बे नियाज़ है सब ख़ूबियों सराहा काफ़िरों ने बका कि वोह हरगिज़ न उठाए जाएंगे

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर तुम्हारे कौतक (आ'माल) तुम्हें जता दिये जाएंगे और येह अल्लाह को

يَسِيْرٌ ﴿٧﴾ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْۤ اَنْزَلْنَا ۚ وَاللّٰهُ بِمَا

आसान है तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल और उस नूर पर[14] जो हम ने उतारा और अल्लाह तुम्हारे कामों

تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۚ

से ख़बरदार है जिस दिन तुम्हें इकठ्ठा करेगा सब जम्अ होने के दिन[15] वोह दिन है हार वालों की हार खुलने का[16]

3 : हदीस शरीफ़ में है कि इन्सान की सआदत व शक़ावत फ़िरिश्ता ब हुक्मे इलाही उसी वक़्त लिख देता है जब कि वोह अपनी मां के पेट में होता है। 4 : तो लाज़िम है कि तुम अपनी सीरत भी अच्छी रखो। 5 : आख़िरत में। 6 : ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! 7 : या'नी क्या तुम्हें गुज़री हुई उम्मतों के अह़वाल मा'लूम नहीं जिन्हों ने अम्बिया की तक्ज़ीब की 8 : दुन्या में अपने कुफ़्र की सज़ा पाई 9 : आख़िरत में 10 : मो'जिज़े दिखाते। 11 : या'नी उन्हों ने बशर के रसूल होने का इन्कार किया और येह कमाले बे अक़्ली व ना फ़हमी है, फिर बशर का रसूल होना तो न माना और पथ्थर का ख़ुदा होना तस्लीम कर लिया। 12 : रसूलों का इन्कार कर के 13 : ईमान से। 14 : नूर से मुराद क़ुरआन शरीफ़ है

www.dawateislami.net

وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ

और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बाग़ों में

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें कि वोह हमेशा उन में रहें यही बड़ी

الْعَظِيْمُ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ

कामयाबी है और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतें झुटलाईं वोह आग वाले हैं

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠ مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ ع ٢ ١٥

हमेशा उस में रहें और क्या ही बुरा अन्जाम कोई मुसीबत नहीं पहुंचती[17] मगर अल्लाह के

اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١ وَ

हुक्म से और जो अल्लाह पर ईमान लाए[18] अल्लाह उस के दिल को हिदायत फ़रमा देगा[19] और अल्लाह सब कुछ जानता है और

اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا

अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो फिर अगर तुम मुंह फेरो[20] तो जान लो कि हमारे रसूल पर सिर्फ़

الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٢ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣

सरीह़ पहुंचा देना है[21] अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ

ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं[22]

فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

तो उन से एह़तियात़ रखो[23] और अगर मुआ़फ़ करो और दर गुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला

क्यूं कि इस की बदौलत गुमराही की तारीकियां दूर होती हैं और हर शै की ह़क़ीक़त वाज़ेह़ होती है। 15 : या'नी रोज़े क़ियामत जिस में सब अव्वलीन व आख़िरीन जम्अ़ होंगे। 16 : या'नी काफ़िरों की मह़रूमी ज़ाहिर होने का। 17 : मौत की या मरज़ की या नुक़्साने माल की या और कोई 18 : और जाने कि जो कुछ होता है अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत और उस के इरादे से होता है और वक़्ते मुसीबत ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़े और अल्लाह तआ़ला की अ़ता पर शुक्र और बला पर सब्र करे 19 : कि वोह और ज़ियादा नेकियों और ताअ़तों में मश्ग़ूल हो। 20 : अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी से 21 : चुनान्चे उन्हों ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया और कामिल त़ौर पर दीन की तब्लीग़ फ़रमा दी। 22 : कि तुम्हें नेकी से रोकते हैं 23 : और उन के कहने में आ कर नेकी से बाज़ न रहो। **शाने नुज़ूल :** चन्द मुसल्मानों ने मक्कए मुकर्रमा से हिजरत का इरादा किया तो उन की बीबी और बच्चों ने उन्हें रोका और कहा हम तुम्हारी जुदाई पर सब्र न कर सकेंगे तुम चले जाओगे हम तुम्हारे पीछे हलाक हो जाएंगे, येह बात उन पर असर कर गई और वोह ठहर गए, कुछ अ़र्से के बा'द जब उन्हों ने हिजरत की तो उन्हों ने अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा कि वोह दीन में बड़े माहिर और

www.dawateislami.net

رَّحِیْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ

मेह्रबान है तुम्हारे माल और तुम्हारे बच्चे जांच ही हैं[24] और अल्लाह के पास बड़ा

عَظِیْمٌ ﴿۱۵﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَ اسْمَعُوْا وَ اَطِیْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا

सवाब है[25] तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके[26] और फ़रमान सुनो और हुक्म मानो[27] और अल्लाह की राह में ख़र्च करो

خَیْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۶﴾

अपने भले को और जो अपनी जान की लालच से बचाया गया[28] तो वोही फ़लाह पाने वाले हैं

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا یُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ

अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे[29] वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह

ع ۲ ۱۸ شَكُوْرٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۷﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۱۸﴾ ع

क़द्र फ़रमाने वाला हिल्म वाला है हर निहां और इयां का जानने वाला इ़ज़्ज़त वाला हिक्मत वाला

اٰیاتها ۱۲ ۶۵ سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِیَّةٌ ۹۹ رکوعاتها ۲

सूरए त़लाक़ मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَ اَحْصُوا

ऐ नबी[2] जब तुम लोग औरतों को त़लाक़ दो तो उन की इद्दत के वक़्त पर उन्हें त़लाक़ दो और इद्दत

الْعِدَّةَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُیُوْتِهِنَّ وَ لَا یَخْرُجْنَ

का शुमार रखो[3] और अपने रब अल्लाह से डरो इद्दत में उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वोह आप निकलें[4]

फ़क़ीह हो गए हैं, येह देख कर उन्हों ने अपनी बीबी बच्चों को सज़ा देने का इरादा किया और येह क़स्द किया कि उन का ख़र्च बन्द कर दें क्यूं कि वोही लोग उन्हें हिजरत से मानेअ़ हुए थे जिस का येह नतीजा हुवा कि ह़ुज़ूर के साथ हिजरत करने वाले अस्ह़ाब इ़ल्म व फ़िक़्ह में उन से मन्ज़िलों आगे निकल गए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें अपने बीबी बच्चों से दर गुज़र करने और मुआ़फ़ करने की तरग़ीब फ़रमाई गई, चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया जाता है : **24** : कि कभी आदमी इन की वज्ह से गुनाह और मा'सियत में मुब्तला हो जाता है और इन में मश्ग़ूल हो कर उमूरे आख़िरत के सर अन्जाम से ग़ाफ़िल हो जाता है। **25** : तो लिहाज़ रखो ऐसा न हो कि अम्वाल व औलाद में मश्ग़ूल हो कर सवाबे अ़ज़ीम खो बैठो। **26** : या'नी ब क़द्रे अपनी वुस्अ़त व त़ाक़त के त़ाअ़त व इ़बादत बजा लाओ येह तफ़्सीर है "اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ" की **27** : अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का **28** : और उस ने अपने माल को इत़्मीनान के साथ हुक्मे शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ख़र्च किया **29** : या'नी ख़ुशदिली से नेक निय्यती के साथ माले ह़लाल से सदक़ा दोगे, सदक़ा देने को बराहे लुत़्फ़ो करम क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया, इस में सदक़े की तरग़ीब है कि सदक़ा देने वाला नुक़्सान में नहीं है बिल यक़ीन इस की जज़ा पाएगा। **1** : सूरए त़लाक़ मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बारह 12 आयतें और दो सो उन्चास 249 कलिमे और

اِلَّاۤ اَنۡ یَّاۡتِیۡنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَیِّنَةٍ ؕ وَ تِلۡكَ حُدُوۡدُ اللّٰهِ ؕ وَ مَنۡ یَّتَعَدَّ

मगर येह कि कोई सरीह़ बे हयाई की बात लाएं[5] और येह अल्लाह की ह़दें हैं और जो अल्लाह की ह़दों

حُدُوۡدَ اللّٰهِ فَقَدۡ ظَلَمَ نَفۡسَهٗ ؕ لَا تَدۡرِیۡ لَعَلَّ اللّٰهَ یُحۡدِثُ بَعۡدَ

से आगे बढ़ा बेशक उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया तुम्हें नहीं मा'लूम शायद अल्लाह इस के बा'द कोई

ذٰلِكَ اَمۡرًا ﴿۱﴾ فَاِذَا بَلَغۡنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمۡسِكُوۡهُنَّ بِمَعۡرُوۡفٍ اَوۡ

नया हुक्म भेजे[6] तो जब वोह अपनी मीआ़द तक पहुंचने को हों[7] तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या

فَارِقُوۡهُنَّ بِمَعۡرُوۡفٍ وَّ اَشۡهِدُوۡا ذَوَیۡ عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ وَ اَقِیۡمُوا الشَّهَادَةَ

भलाई के साथ जुदा कर दो[8] और अपने में दो सिक़ह को गवाह कर लो और अल्लाह के लिये गवाही

لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمۡ یُوۡعَظُ بِهٖ مَنۡ كَانَ یُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ ۬ؕ وَ مَنۡ

क़ाइम करो[9] इस से नसीह़त फ़रमाई जाती है उसे जो अल्लाह और पिछले दिन पर ईमान रखता हो[10] और जो

एक हज़ार साठ 1060 ह़र्फ़ हैं। **2 :** अपनी उम्मत से फ़रमा दीजिये **3 शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई, उन्हों ने अपनी बीबी को औ़रतों के अय्यामे मख़्सूसा में त़लाक़ दी थी। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्हें हुक्म दिया कि रज्अ़त करें, फिर अगर त़लाक़ देना चाहें तो त़ुहर या'नी पाकी के ज़माने में त़लाक़ दें, इस आयत में औ़रतों से मुराद मदख़ूल बिहा औ़रतें हैं (जो अपने शोहरों के पास गई हों) सग़ीरा, ह़ामिला और आइसा न हों (आइसा वोह औ़रत है जिस के अय्याम बुढ़ापे की वज्ह से बन्द हो गए हों उन का वक़्त न रहा हो) **मस्अला :** ग़ैर मदख़ूल बिहा पर इ़द्दत नहीं है बाक़ी तीनों क़िस्म की औ़रतें जो ज़िक्र की गई थीं उन्हें अय्याम नहीं होते तो उन की इ़द्दत ह़ैज़ से शुमार न होगी। **मस्अला :** ग़ैर मदख़ूल बिहा को ह़ैज़ में त़लाक़ देना जाइज़ है। आयत में जो हुक्म दिया गया इस से मुराद ऐसी मदख़ूल बिहा औ़रतें हैं जिन की इ़द्दत ह़ैज़ से शुमार की जाए उन्हें त़लाक़ देना हो तो ऐसे त़ुहर में त़लाक़ दें जिस में उन से जिमाअ़ न किया गया हो, फिर इ़द्दत गुज़रने तक उन से तअ़र्रुज़ न करें इस को **त़लाक़े अह़सन** कहते हैं, **त़लाक़े ह़सन** ग़ैर मौत़ूअह औ़रत या'नी जिस से शोहर ने क़ुरबत न की हो उस को एक त़लाक़ देना त़लाक़े ह़सन है ख़्वाह येह त़लाक़ ह़ैज़ में हो और मौत़ूअह औ़रत अगर साहि़बे ह़ैज़ हो तो उसे तीन त़लाक़ें ऐसे तीन त़ुहरों में देना जिन में उस से क़ुरबत न की हो त़लाक़े ह़सन है और अगर मौत़ूअह साहि़बे ह़ैज़ न हो तो उस को तीन त़लाक़ें तीन महीनों में देना त़लाक़े ह़सन है, **त़लाक़े बिद्ई** ह़ालते ह़ैज़ में त़लाक़ देना या ऐसे त़ुहर में त़लाक़ देना जिस में क़ुरबत की गई हो त़लाक़े बिद्ई है, ऐसे ही एक त़ुहर में तीन या दो त़लाक़ें यकबारगी या दो मरतबा में देना त़लाक़े बिद्ई है अगर्चे इस त़ुहर में वत़ी न की गई हो। **मस्अला :** त़लाक़े बिद्ई मक्रूह है मगर वाक़ेअ़ हो जाती है और ऐसी त़लाक़ देने वाला गुनहगार होता है। **4 मस्अला :** औ़रत को इ़द्दत शोहर के घर पूरी करनी लाज़िम है, न शोहर को जाइज़ कि मुत़ल्लक़ा को इ़द्दत में घर से निकाले, न उन औ़रतों को वहां से ख़ुद निकलना रवा **5 :** उन से कोई फ़िस्क़े ज़ाहिर सादिर हो जिस पर ह़द आती है मिस्ल ज़िना और चोरी के इस के लिये उन्हें निकालना ही होगा। **मस्अला :** अगर औ़रत फ़ोह़्श बके और घर वालों को ईज़ा दे तो उस को निकालना जाइज़ है क्यूं कि वोह नाशिज़ा (ना फ़रमान) के हुक्म में है। **मस्अला :** जो औ़रत त़लाक़े रज्ई या बाइन की इ़द्दत में हो उस को घर से निकलना बिल्कुल जाइज़ नहीं और जो मौत की इ़द्दत में हो वोह ह़ाजत पड़े तो दिन में निकल सकती है लेकिन शब गुज़ारना उस को शोहर के घर ही में ज़रूरी है। **मस्अला :** जो औ़रत त़लाक़े बाइन की इ़द्दत में हो उस के और शोहर के दरमियान पर्दा ज़रूरी है और ज़ियादा बेहतर येह है कि कोई और औ़रत उन दोनों के दरमियान ह़ाइल हो। **मस्अला :** अगर शोहर फ़ासिक़ हो या मकान बहुत तंग हो तो शोहर को उस मकान से चला जाना बेहतर है। **6 :** रज्अ़त का **7 :** या'नी इ़द्दत आख़िर (ख़त्म) होने के क़रीब हो **8 :** या'नी तुम्हें इख़्तियार है अगर तुम उन के साथ ब ह़ुस्ने मुआ़शरत व मुराफ़क़त रहना चाहो तो रज्अ़त कर लो और दिल में फिर दोबारा त़लाक़ देने का इरादा न रखो और अगर तुम्हें उन के साथ ख़ूबी से बसर कर सकने की उम्मीद न हो तो महर वग़ैरा उन के ह़क़ अदा कर के उन से जुदाई कर लो और उन्हें ज़रर न पहुंचाओ इस त़रह़ कि आख़िर इ़द्दत में रज्अ़त कर लो फिर त़लाक़ दे दो और इस त़रह़ उन्हें उन की इ़द्दत दराज़ कर के परेशानी में डालो ऐसा न करो और ख़्वाह रज्अ़त करो या फ़ुर्क़त इख़्तियार करो दोनों सूरतों में दफ़्ए़ तोहमत और रफ़्ए़ निज़ाअ़ के लिये दो मुसल्मानों को गवाह कर लेना मुस्तह़ब है, चुनान्चे इर्शाद होता है : **9 :** मक़्सूद इस से उस की रिज़ाजूई हो और इक़ामते ह़क़ व ता'मीले हुक्मे इलाही के सिवा अपनी कोई फ़ासिद ग़रज़ इस में न हो। **10 मस्अला :** इस से इस्तिदलाल किया जाता है कि

www.dawateislami.net

يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

अल्लाह से डरे[11] अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा[12] और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो

وَ مَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ

और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है[13] बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने

اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾ وَ الّٰٓـىِٕيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ

हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है और तुम्हारी औरतों में जिन्हें हैज़ की उम्मीद न रही[14] अगर

ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّ الّٰٓـىِٕيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَ اُولَاتُ الْاَحْمَالِ

तुम्हें कुछ शक हो[15] तो उन की इद्दत तीन महीने है और उन की जिन्हें अभी हैज़ न आया[16] और हम्ल वालियों

اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ

की मीआद येह है कि वोह अपना हम्ल जन लें[17] और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के काम में आसानी

يُسْرًا ﴿۴﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ

फ़रमा देगा येह[18] अल्लाह का हुक्म है कि उस ने तुम्हारी त़रफ़ उतारा और जो अल्लाह से डरे[19] अल्लाह उस की बुराइयां

سَيِّاٰتِهٖ وَ يُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ﴿۵﴾ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ

उतार देगा और उसे बड़ा सवाब देगा औरतों को वहां रखो जहां ख़ुद रहते हो अपनी

कुफ़्फ़ार शराएअ़ व अह़काम के साथ मुख़ात़ब नहीं। **11 :** और त़लाक़ दे तो त़लाक़े सुन्नी दे और मो'तद्दा (इद्दत वाली) को ज़रर न पहुंचाए न उसे मस्कन (घर) से निकाले और ह़स्बे हुक्मे इलाही मुसल्मानों को गवाह कर ले। **12 :** जिस से वोह दुन्या व आख़िरत के ग़मों से ख़लास पाए और हर तंगी और परेशानी से मह़फ़ूज़ रहे, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से मरवी है कि जो शख़्स इस आयत को पढ़े अल्लाह तआ़ला उस के लिये शुबुहाते दुन्या ग़मराते मौत व शदाइदे रोज़े क़ियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग मह़फ़ूज़ कर लें तो उन की हर ज़रूरत व ह़ाजत के लिये काफ़ी है। **शाने नुज़ूल :** औ़फ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया तो औ़फ़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने येह भी अ़र्ज़ किया कि मेरा बेटा मुश्रिकीन ने क़ैद कर लिया है और इसी के साथ अपनी मोह़ताजी व नादारी की शिकायत की, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का डर रखो और सब्र करो और कसरत से ''لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ'' पढ़ते रहो, औ़फ़ ने घर आ कर अपनी बीबी से येह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरूअ़ किया, वोह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खटखटाया, दुश्मन ग़ाफ़िल हो गया था उस ने मौक़अ़ पाया क़ैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया औ़फ़ ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि क्या येह बकरियां इन के लिये ह़लाल हैं? हु़ज़ूर ने इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल हुई। **13 :** दोनों जहान में। **14 :** बूढ़ी हो जाने की वज्ह से कि वोह सिने अयास को पहुंच गई हों। सिने अयास एक क़ौल में पचपन और एक क़ौल में साठ साल की उ़म्र है और असह़ह़ येह है कि जिस उ़म्र में भी हैज़ मुन्क़त़अ़ हो जाए वोही सिने अयास है। **15 :** इस में कि उन का हुक्म क्या है। **शाने नुज़ूल :** सह़ाबा ने रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि हैज़ वाली औ़रतों की इद्दत तो हमें मा'लूम हो गई जो हैज़ वाली न हों उन की इद्दत क्या है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **16 :** या'नी वोह सग़ीरा हैं या उ़म्र तो बुलूग़ की आ गई मगर अभी हैज़ न शुरूअ़ हुवा उन की इद्दत भी तीन माह है। **17 मस्अला :** ह़ामिला औ़रतों की इद्दत वज़्ए़ हम्ल है ख़्वाह वोह इद्दत त़लाक़ की हो या वफ़ात की। **18 :** अह़काम जो मज़्कूर हुए **19 :** और अल्लाह तआ़ला के नाज़िल फ़रमाए हुए अह़काम

www.dawateislami.net

وُّجْدِكُمْ وَ لَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ كُنَّ اُولَاتِ

ताक़त भर[20] और उन्हें ज़रर न दो कि उन पर तंगी करो[21] और अगर[22] हम्ल वालियां

حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ

हों तो उन्हें नान नफ़क़ा दो यहां तक कि उन के बच्चा पैदा हो[23] फिर अगर वोह तुम्हारे लिये बच्चे को दूध पिलाएं

فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَ اْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَ اِنْ تَعَاسَرْتُمْ

तो उन्हें इस की उजरत दो[24] और आपस में मा'कूल तौर पर मश्वरा करो[25] फिर अगर बाहम मुज़ायक़ा करो (दुश्वार समझो)[26]

فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ؕ﴿۶﴾ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ مَنْ قُدِرَ

तो क़रीब है कि उसे और दूध पिलाने वाली मिल जाएगी मक़्दूर वाला[27] अपने मक़्दूर के क़ाबिल नफ़क़ा दे और जिस पर

عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ

उस का रिज़्क़ तंग किया गया वोह उस में से नफ़क़ा दे जो उसे **अल्लाह** ने दिया **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल

اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿۷﴾ ع وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ ع ١٧

जितना उसे दिया है क़रीब है कि **अल्लाह** दुश्वारी के बा'द आसानी फ़रमा देगा[28] और कितने ही शहर थे जिन्हों ने अपने रब के

عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَ رُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّ عَذَّبْنٰهَا عَذَابًا

हुक्म और उस के रसूलों से सरकशी की तो हम ने उन से सख़्त हिसाब लिया[29] और उन्हें बुरी

نُّكْرًا ﴿۸﴾ فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَ كَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿۹﴾ اَعَدَّ

मार दी[30] तो उन्हों ने अपने किये का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम घाटा हुवा **अल्लाह** ने

पर अ़मल करे और अपने ऊपर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उन्हें ब एहतियात़ अदा करे **20 मस्अला :** त़लाक़ दी हुई औ़रत को ता इ़द्दत रहने के लिये अपने हस्बे हैसिय्यत मकान देना शोहर पर वाजिब है और इस ज़माने में नफ़क़ा देना भी वाजिब है। **21 :** जगह में उन के मकान को घेर कर या किसी ना मुवाफ़िक़ को उन के शरीके मस्कन कर के या और कोई ऐसी ईज़ा दे कर कि वोह निकलने पर मजबूर हों। **22 :** वोह मुत़ल्लक़ात **23 :** क्यूं कि उन की इ़द्दत जब ही तमाम होगी। **मस्अला :** नफ़क़ा जैसा ह़ामिला को देना वाजिब है ऐसा ही ग़ैरे ह़ामिला को भी, ख़्वाह उस को त़लाक़े रज्ई दी हो या बाइन। **24 मस्अला :** बच्चे को दूध पिलाना मां पर वाजिब नहीं बाप के ज़िम्मे है कि उजरत दे कर दूध पिलवाए लेकिन अगर बच्चा मां के सिवा किसी और औ़रत का दूध न पिये या बाप फ़क़ीर हो इस ह़ालत में मां पर दूध पिलाना वाजिब हो जाता है, बच्चे की मां जब तक उस के बाप के निकाह़ में हो या त़लाक़े रज्ई की इ़द्दत में ऐसी ह़ालत में उस को दूध पिलाने की उजरत लेना जाइज़ नहीं बा'दे इ़द्दत जाइज़ है। **मस्अला :** किसी औ़रत को मुअ़य्यन उजरत पर दूध पिलाने के लिये मुक़र्रर करना जाइज़ है। **मस्अला :** ग़ैर औ़रत की ब निस्बत उजरत पर दूध पिलाने की मां ज़ियादा मुस्तह़िक़ है। **मस्अला :** अगर मां ज़ियादा उजरत त़लब करे तो फिर ग़ैर ज़ियादा औला। **मस्अला :** दूध पिलाई पर बच्चे को नहलाना उस के कपड़े धोना उस के तेल लगाना उस की ख़ूराक का इन्तिज़ाम रखना लाज़िम है लेकिन इन सब चीज़ों की क़ीमत उस के वालिद पर है। **मस्अला :** अगर दूध पिलाई ने बच्चे को बजाए अपने बकरी का दूध पिलाया या खाने पर रखा तो वोह उजरत की मुस्तह़िक़ नहीं। **25 :** न मर्द औ़रत के ह़क़ में कोताही करे न औ़रत मुआ़मले में सख़्ती। **26 :** मसलन मां ग़ैर औ़रत के बराबर उजरत पर राज़ी न हो और बाप ज़ियादा देना न चाहे **27 :** मुत़ल्लक़ा औ़रतों को और दूध पिलाने वाली औ़रतों को **28 :** या'नी तंगिये मआ़श के बा'द। **29 :** इस से ह़िसाबे आख़िरत मुराद है जिस का वुक़ूअ़

www.dawateislami.net

مع

اللّٰہُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛۚ

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है तो **अल्लाह** से डरो ऐ अ़क़्ल वालो वोह जो ईमान लाए हो

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ ﴿۱۰﴾ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ

बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये इ़ज़्ज़त उतारी है वोह रसूल[31] कि तुम पर **अल्लाह** की रोशन आयतें

مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى

पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[32] अंधेरियों से[33] उजाले की त़रफ़

النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

ले जाए और जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वोह उसे बाग़ों में ले जाएगा

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿۱۱﴾ اَللّٰهُ

जिन के नीचे नहरें बहें जिन में हमेशा हमेशा रहें बेशक **अल्लाह** ने उस के लिये अच्छी रोज़ी रखी[34] **अल्लाह** है

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ

जिस ने सात आस्मान बनाए[35] और उन्ही के बराबर ज़मीनें[36] हुक्म इन के दरमियान उतरता

بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ۬ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ

है[37] ताकि तुम जान लो कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** का इ़ल्म

بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿۱۲﴾ ع

ع ١٨ ٢

हर चीज़ को मुह़ीत़ है

اٰياتها ١٢ ﴿٦٦ سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٧﴾ ركوعاتها ٢

सूरए तह़रीम मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

यक़ीनी है इस लिये सीग़ए माज़ी से इस की ता'बीर फ़रमाई गई। **30 :** अ़ज़ाबे जहन्नम की या दुन्या में क़ह़त़ व क़त्ल वग़ैरा बलाओं में मुब्तला कर के **31 :** या'नी वोह इ़ज़्ज़त रसूले करीम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं **32 :** कुफ़्र व जहल की **33 :** ईमान व इ़ल्म के **34 :** जन्नत जिस की ने'मतें हमेशा बाक़ी रहेंगी कभी मुन्क़त़अ़ न होंगी। **35 :** एक के ऊपर एक हर एक की मोटाई पांच सो बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासिला पांच सो बरस की राह। **36 :** या'नी सात ही ज़मीनें। **37 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म इन सब में जारी व नाफ़िज़

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَؕ

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) तुम अपने ऊपर क्यूं ह़राम किये लेते हो वोह चीज़ जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल की[2] अपनी बीबियों की मरज़ी चाहते हो

وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْۚ وَ اللّٰهُ

और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये तुम्हारी क़समों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया[3] और **अल्लाह**

مَوْلٰىكُمْۚ وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢ وَ اِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ

तुम्हारा मौला है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और जब नबी ने अपनी एक बीबी[4] से

اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًاۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ

एक राज़ की बात फ़रमाई[5] फिर जब वोह[6] उस का ज़िक्र कर बैठी और **अल्लाह** ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया

وَ اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَاؕ قَالَ

और कुछ से चश्म पोशी फ़रमाई[7] फिर जब नबी ने उसे इस की ख़बर दी बोली[8] हुज़ूर को किस ने बताया फ़रमाया

है या येह मा'ना हैं कि जिब्रीले अमीन आस्मान से वह्य ले कर ज़मीन की त़रफ़ उतरते हैं। **1 :** सूरए तह़रीम मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बारह 12 आयतें, दो सो सेंतालीस 247 कलिमे, एक हज़ार साठ 1060 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मह़ल में रौनक़ अफ़रोज़ हुए, वोह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गईं, हुज़ूर ने ह़ज़रते मारिया क़िब्त़िया को सरफ़राज़े ख़िदमत किया, येह ह़ज़रते ह़फ़्सा पर गिरां गुज़रा, हुज़ूर ने उन की दिलजूई के लिये फ़रमाया कि मैं ने मारिया को अपने ऊपर ह़राम किया और मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी देता हूं कि मेरे बा'द उमूरे उम्मत के मालिक अबू बक्र व उ़मर होंगे (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) वोह इस से ख़ुश हो गईं और निहायत ख़ुशी में उन्हों ने येह तमाम गुफ़्त्गू ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को सुनाई, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ **अल्लाह** तआ़ला ने आप के लिये ह़लाल की या'नी मारिया क़िब्त़िया आप उन्हें अपने लिये क्यूं ह़राम किये लेते हैं अपनी बीबियों ह़फ़्सा व आ़इशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की रिज़ाजूई के लिये और एक क़ौल इस आयत की शाने नुज़ूल में येह भी है कि उम्मुल मुअमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह़्श के यहां जब हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते तो वोह शह्द पेश करतीं इस ज़रीए़ से उन के यहां कुछ ज़ियादा देर तशरीफ़ फ़रमा रहते, येह बात ह़ज़रते आ़इशा व ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا वग़ैरहुमा को ना गवार गुज़री और उन्हें रश्क हुवा, उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अ़र्ज़ किया जाए कि दहने मुबारक से मग़ाफ़ीर (एक क़िस्म के मशरूब) की बू आती है और मग़ाफ़ीर की बू हुज़ूर को ना पसन्द थी, चुनान्चे ऐसा किया गया, हुज़ूर को उन का मन्शा मा'लूम था, फ़रमाया : मग़ाफ़ीर तो मेरे क़रीब नहीं आया ज़ैनब के यहां शह्द मैं ने पिया है उस को मैं अपने ऊपर ह़राम करता हूं, मक़्सूद येह कि ह़ज़रते ज़ैनब के यहां शह्द का शुग़्ल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शह्द ही तर्क फ़रमाए देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **3 :** या'नी कफ़्फ़ारा तो मारिया को ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाइये या शह्द नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से येह मुराद है कि क़सम के बा'द اِنْ شَآءَ اللّٰہ कहा जाए ताकि उस के ख़िलाफ़ करने से ह़िन्स न हो (या'नी क़सम न टूटे)। मुक़ातिल से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मारिया की तह़रीम के कफ़्फ़ारे में एक ग़ुलाम आज़ाद किया और ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया क्यूं कि आप मग़फ़ूर हैं कफ़्फ़ारे का हुक्म ता'लीमे उम्मत के लिये है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि ह़लाल को अपने ऊपर ह़राम कर लेना यमीन या'नी क़सम है। **4 :** या'नी ह़ज़रते ह़फ़्सा **5 :** मारिया को अपने ऊपर ह़राम कर लेने की और उस के साथ येह फ़रमाया कि इस का किसी पर इज़्हार न करना। **6 :** या'नी ह़ज़रते ह़फ़्सा ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से **7 :** या'नी तह़रीमे मारिया और ख़िलाफ़ते शैख़ैन के मुतअ़ल्लिक़ जो दो बातें फ़रमाई थीं उन में से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुम ने येह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात को ज़िक्र न फ़रमाया, येह शाने करीमी थी कि गिरिफ़्त फ़रमाने में बा'ज़ से चश्म पोशी फ़रमाई। **8 :** ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।

نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۳﴾ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ

मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया[9] नबी की दोनों बीबियो ! अगर **अल्लाह** की त़रफ़ तुम रुजूअ़ करो तो[10] ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं[11]

وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ

और अगर उन पर ज़ोर बांधो[12] तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले

وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ﴿۴﴾ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ

और इस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं उन का रब क़रीब है अगर वोह तुम्हें त़लाक़ दे दें कि उन्हें तुम से

اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓىٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓىٕحٰتٍ

बेहतर बीबियां बदल दे इत़ाअ़त वालियां ईमान वालियां अदब वालियां[13] तौबा वालियां बन्दगी वालियां[14] रोज़ादारें

ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ﴿۵﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ

बियाहियां और कुंवारियां[15] ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को

نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا

उस आग से बचाओ[16] जिस के ईंधन आदमी[17] और पत्थर हैं[18] इस पर सख़्त कर्रे फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं[19] जो

یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं[20] ऐ काफ़िरो !

ع ١٩ ٧ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْیَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۷﴾ ع

आज बहाने न बनाओ[21] तुम्हें वोही बदला मिलेगा जो करते थे

9 : जिस से कुछ भी छुपा नहीं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते आ़इशा व ह़फ़्सा رضی اللہ تعالٰی عنہما को ख़िताब फ़रमाता है : **10 :** येह तुम पर वाजिब है। **11 :** कि तुम्हें वोह बात पसन्द आई जो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को गिरां है या'नी तह़रीमे मारिया। **12 :** और बाहम मिल कर ऐसा त़रीक़ा इख़्तियार करो जो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को ना गवार हो **13 :** जो **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की फ़रमां बरदार और उन की रिज़ा जू हों। **14 :** या'नी कसीरुल इबादत **15 :** येह तख़्वीफ़ है अज़्वाजे मुत़ह्हरात को कि अगर उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को आज़ुर्दा किया और ह़ुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने उन्हें त़लाक़ दी तो ह़ुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को **अल्लाह** तआ़ला अपने लुत़्फ़ो करम से और बेहतर बीबियां अ़त़ा फ़रमाएगा, इस तख़्वीफ़ से अज़्वाजे मुत़ह्हरात मुतअस्सिर हुईं और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم के शरफ़े ख़िदमत को हर ने'मत से ज़ियादा समझा और ह़ुज़ूर की दिलजूई और रिज़ा त़लबी मुक़द्दम जानी, लिहाज़ा आप ने उन्हें त़लाक़ न दी। **16 :** **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के इबादतें बजा ला कर गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त कर के और उन्हें इल्मो अदब सिखा कर। **17 :** या'नी काफ़िर **18 :** या'नी बुत वग़ैरा, मुराद येह है कि जहन्नम की आग बहुत ही शदीदुल ह़रारत है और जिस त़रह़ दुन्या की आग लकड़ी वग़ैरा से जलती है जहन्नम की आग उन चीज़ों से जलती है जिन का ज़िक्र किया गया। **19 :** जो निहायत क़वी और ज़ोर आवर हैं और उन की त़बीअ़तों में रह़्म नहीं। **20 :** काफ़िरों से वक़्ते दुख़ूले दोज़ख़ कहा जाएगा जब कि वोह आतशे दोज़ख़ की शिद्दत और उस का अ़ज़ाब देखेंगे : **21 :** क्यूं कि अब तुम्हारे लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रही न आज कोई उ़ज़्र क़बूल किया जाए।

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए[22] क़रीब है कि तुम्हारा रब[23]

يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ

तुम्हारी बुराइयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें बहें

يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और उन के साथ के ईमान वालों को[24] उन का नूर दौड़ता होगा

اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ اغْفِرْ لَنَا ۚ

उन के आगे और उन के दहने[25] अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे[26] और हमें बख़्श दे

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۸﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ

बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)[27] काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर[28] जिहाद करो

وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۹﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ

और उन पर सख़्ती फ़रमाओ और उन का ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा अन्जाम अल्लाह काफ़िरों की

مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ

मिसाल देता है[29] नूह़ की औ़रत और लूत़ की औ़रत वोह हमारे बन्दों में

عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ

दो सज़ावारे क़ुर्ब (मुक़र्रब) बन्दों के निकाह़ में थीं फिर उन्हों ने उन से दग़ा की[30] तो वोह अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम

---

22 : या'नी तौबए सादिक़ा जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो और उस की ज़िन्दगी त़ाअ़तों और इबादतों से मा'मूर हो जाए और वोह गुनाहों से मुज्तनिब रहे, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने और दूसरे अस्ह़ाब ने फ़रमाया तौबए नसूह़ वोह है कि तौबा के बा'द आदमी फिर गुनाह की त़रफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुवा दूध फिर थन में वापस नहीं होता। 23 : तौबा क़बूल फ़रमाने के बा'द 24 : इस में कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है कि वोह दिन उन की रुस्वाई का होगा और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और हुज़ूर के साथ वालों की इ़ज़्ज़त का। 25 : सिरात़ पर और जब मोमिन देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ गया 26 : या'नी इस को बाक़ी रख कि दुख़ूले जन्नत तक बाक़ी रहे 27 : तलवार से 28 : क़ौले ग़लीज़ और वा'ज़े बलीग़ और हुज्जते क़वी से 29 : इस बात में कि उन्हें उन के कुफ़्र और मोमिनीन की अ़दावत पर अ़ज़ाब किया जाएगा और इस कुफ़्रो अ़दावत के होते हुए उन का नसब और मोमिनीन और मुक़र्रबीन के साथ उन की क़राबत व रिश्तेदारी उन्हें कुछ नफ़्अ़ न देगी। 30 : दीन में कि कुफ़्र इख़्तियार किया, ह़ज़रते नूह़ की औ़रत वाहिला अपनी क़ौम से ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की निस्बत कहती थी कि वोह मज्नून हैं और ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की औ़रत वाइला अपना निफ़ाक़ छुपाती थी और जो मेहमान आप के यहां आते थे आग जला कर अपनी क़ौम को उन के आने से ख़बरदार करती थी।

www.dawateislami.net

شَيْـًٔا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ

न आए और फ़रमा दिया गया[31] कि तुम दोनों औ़रतें जहन्नम में जाओ जाने वालों के साथ[32] और **अल्लाह** मुसल्मानों की मिसाल

وقف لازم

اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ

बयान फ़रमाता है[33] फ़िरऔ़न की बीबी[34] जब उस ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना[35]

وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾ لا وَ

और मुझे फ़िरऔ़न और इस के काम से नजात दे[36] और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श[37] और

مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

इमरान की बेटी मरयम जिस ने अपनी पारसाई की हि़फ़ाज़त की तो हम ने उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी

ركوع ٢

وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ وَ كَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿۱۲﴾ ع

और उस ने अपने रब की बातों[38] और उस की किताबों[39] की तस्दीक़ की और फ़रमां बरदारों में हुई

31 : उन से वक़्ते मौत या रोज़े क़ियामत (और ता'बीरे सीग़ए माज़ी से) ब लिहाज़ तह़क़्क़ुक़े वुक़ूअ़ के है। **32 :** या'नी अपनी क़ौमों के कुफ़्फ़ार के साथ क्यूं कि तुम्हारे और उन अम्बिया के दरमियान तुम्हारे कुफ़्र के बाइस अ़लाक़ा बाक़ी न रहा। **33 :** कि इन्हें दूसरे की मा'सियत ज़रर नहीं देती। **34 :** जिन का नाम आसिया बिन्ते मुज़ाहि़म है, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जादूगरों को मग़लूब किया तो येह आसिया आप पर ईमान ले आईं, फ़िरऔ़न को ख़बर हुई तो इस ने उन पर सख़्त अ़ज़ाब किये उन्हें चौमेख़ा किया (या'नी उन के हाथ पाउं में कीलें ठोक दीं) और भारी चक्की सीने पर रखी और धूप में डाल दिया, जब फ़िरऔ़नी उन के पास से हटते तो फ़िरिश्ते उन पर साया करते। **35 :** **अल्लाह** तआ़ला ने उन का मकान जो जन्नत में है उन पर ज़ाहिर फ़रमाया और इस की मसर्रत में फ़िरऔ़न की सख़्तियों की शिद्दत उन पर सहल हो गई। **36 :** फ़िरऔ़न के काम से या उस का शिर्क व कुफ़्र व ज़ुल्म मुराद है या उस का क़ुर्ब। **37 :** या'नी फ़िरऔ़न के दीन वालों से, चुनान्चे येह दुआ़ उन की क़बूल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाई और इब्ने कैसान ने कहा कि वोह ज़िन्दा उठा कर जन्नत में दाख़िल की गईं। **38 :** रब की बातों से शराएअ़ व अह़काम मुराद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाए। **39 :** किताबों से वोह किताबें मुराद हैं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल हुई थीं।

www.dawateislami.net

ايـاتها ٣٠ ٦٧ سورة الملك مكية ٧٧ ركوعاتها ٢

सूरए मुल्क मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

تَبٰرَكَ الَّذِىۡ بِيَدِهِ الۡمُلۡكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرُ ۙ ﴿۱﴾ الَّذِىۡ

बड़ी बरकत वाला है वोह जिस के क़ब्ज़े में सारा मुल्क[2] और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोह जिस

خَلَقَ الۡمَوۡتَ وَالۡحَيٰوةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ اَيُّكُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ

ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो[3] तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है[4] और वोही इ़ज़्ज़त वाला

الۡغَفُوۡرُ ۙ ﴿۲﴾ الَّذِىۡ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِىۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ

बख़्शिश वाला है जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर दूसरा तो रह़मान के बनाने में क्या फ़र्क़

مِنۡ تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَ ۙ هَلۡ تَرٰى مِنۡ فُطُوۡرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارۡجِعِ

देखता है[5] तो निगाह उठा कर देख[6] तुझे कोई रख़्ना (ख़राबी व ऐब) नज़र आता है फिर दोबारा

الۡبَصَرَ كَرَّتَيۡنِ يَنۡقَلِبۡ اِلَيۡكَ الۡبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيۡرٌ ﴿۴﴾ وَلَقَدۡ زَيَّنَّا

निगाह उठा[7] नज़र तेरी त़रफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी[8] और बेशक हम ने

السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِمَصَابِيۡحَ وَجَعَلۡنٰهَا رُجُوۡمًا لِّلشَّيٰطِيۡنِ وَاَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ

नीचे के आस्मान को[9] चराग़ों से आरास्ता किया[10] और उन्हें शैत़ानों के लिये मार किया[11] और उन के लिये[12] भड़क्ती आग

1 : सूरतुल मुल्क मक्किय्या है इस में दो 2 रुकूअ़, तीस 30 आयतें, तीन सो तीस 330 कलिमे, एक हज़ार तीन सो तेरह 1313 ह़र्फ़ हैं। ह़दीस में है कि सूरए मुल्क शफ़ाअ़त करती है। (ترمذی،ابوداود) एक और ह़दीस में है अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक जगह ख़ैमा नस्ब किया वहां एक क़ब्र थी और उन्हें ख़याल न था कि वोह साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते रहे यहां तक कि तमाम की तो ख़ैमे वाले सह़ाबी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया मुझे ख़याल न था कि यहां क़ब्र है और थी वहां क़ब्र और साहिबे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहां तक कि ख़त्म किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सूरत मानिअ़ा मुन्जियह है अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाती है। (الترمذی وقال غریب) 2 : जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत। 3 : दुन्या की ज़िन्दगी में। 4 : या'नी कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ व मुख़्लिस है। 5 : या'नी आस्मानों की पैदाइश से क़ुदरते इलाही ज़ाहिर है कि उस ने कैसे मुस्तह़्कम, उस्तुवार, मुस्तक़ीम, मुस्तवी, मुतनासिब बनाए। 6 : आस्मान की त़रफ़ बारे दिगर (दूसरी मरतबा) 7 : और बार बार देख 8 : कि बार बार की जुस्तजू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी। 9 : जो ज़मीन की त़रफ़ सब से ज़ियादा क़रीब है। 10 : या'नी सितारों से 11 : कि जब शयात़ीन आस्मान की त़रफ़ उन की गुफ़्तगू सुनने और बातें चुराने पहुंचें तो कवाकिब से शो'ले और चिंगारियां निकलें जिन से उन्हें मारा जाए। 12 : या'नी शयात़ीन के लिये।

www.dawateislami.net

عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ

का अ़ज़ाब तय्यार फ़रमाया[13] और जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया[14] उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही

الْمَصِيْرُ ﴿٦﴾ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ﴿٧﴾ تَكَادُ

बुरा अन्जाम जब उस में डाले जाएंगे उस का रेंकना (चिंघाड़ना) सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता है कि

تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गुरोह उस में डाला जाएगा उस के दारोग़ा[15] उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर

نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

सुनाने वाला न आया था[16] कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए[17] फिर हम ने झुटलाया और कहा **अल्लाह** ने कुछ

مِنْ شَيْءٍ ۚۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ

नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में और कहेंगे अगर हम सुनते या

نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا

समझते[18] तो दोज़ख़ वालों में न होते अब अपने गुनाह का इक़रार किया[19] तो फिटकार

لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ

हो दोज़ख़ियों को बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं[20]

مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है[21] और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वोह तो

ع ١٤ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ ع

दिलों की जानता है[22] क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया[23] और वोही है हर बारीकी जानता ख़बरदार

13 : आख़िरत में **14 :** ख़्वाह वोह इन्सानों में से हों या जिन्नों में से **15 :** मालिक और उन के आ'वान ब तरीक़े तौबीख़ **16 :** या'नी **अल्लाह** का नबी जो तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता **17 :** और उन्हों ने अहकामे इलाही पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराया। **18 :** रसूलों की हिदायत और उस को मानते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि तक्लीफ़ का मदार अदिल्लए सम्इया व अ़क़्लिया दोनों पर है और दोनों हुज्जतें मुल्ज़िमा हैं। **19 :** कि रसूलों की तक्ज़ीब करते थे और उस वक़्त का इक़रार कुछ नाफ़ेअ़ नहीं **20 :** और उस पर ईमान लाते हैं **21 :** उन की नेकियों की जज़ा। **22 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन आपस में कहते थे चुपके चुपके बात करो मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का ख़ुदा सुन न पाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती, येह कोशिश फ़ुज़ूल है **23 :** अपनी मख़्लूक़ के अहवाल को।

www.dawateislami.net

هُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الۡاَرۡضَ ذَلُوۡلًا فَامۡشُوۡا فِیۡ مَنَاکِبِهَا وَ کُلُوۡا مِنۡ

वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में

رِّزۡقِهٖ ؕ وَ اِلَیۡهِ النُّشُوۡرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یَّخۡسِفَ بِکُمُ

से खाओ[24] और उसी की त़रफ़ उठना है[25] क्या तुम उस से निडर हो गए जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में

الۡاَرۡضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوۡرُ ﴿ۙ۱۶﴾ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ مَّنۡ فِی السَّمَآءِ اَنۡ یُّرۡسِلَ

धंसा दे[26] जभी वोह कांपती रहे[27] या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि

عَلَیۡکُمۡ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعۡلَمُوۡنَ کَیۡفَ نَذِیۡرِ ﴿۱۷﴾ وَ لَقَدۡ کَذَّبَ الَّذِیۡنَ

तुम पर पथराव भेजे[28] तो अब जानोगे[29] कैसा था मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَکَیۡفَ کَانَ نَکِیۡرِ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمۡ یَرَوۡا اِلَی الطَّیۡرِ فَوۡقَهُمۡ صٰٓفّٰتٍ

झुटलाया[30] तो कैसा हुवा मेरा इन्कार[31] और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते[32]

وَّ یَقۡبِضۡنَ ؕ مَا یُمۡسِکُهُنَّ اِلَّا الرَّحۡمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِکُلِّ شَیۡءٍۭ بَصِیۡرٌ ﴿۱۹﴾

وقف لازم اختلافی
وقف منزل
وقف غفران

और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता[33] सिवा रह़मान के[34] बेशक वोह सब कुछ देखता है

اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ هُوَ جُنۡدٌ لَّکُمۡ یَنۡصُرُکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ ؕ اِنِ

या वोह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रह़मान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे[35] काफ़िर

الۡکٰفِرُوۡنَ اِلَّا فِیۡ غُرُوۡرٍ ﴿ۚ۲۰﴾ اَمَّنۡ هٰذَا الَّذِیۡ یَرۡزُقُکُمۡ اِنۡ اَمۡسَکَ

नहीं मगर धोके में[36] या कौन सा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी

رِزۡقَهٗ ۚ بَلۡ لَّجُّوۡا فِیۡ عُتُوٍّ وَّ نُفُوۡرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنۡ یَّمۡشِیۡ مُکِبًّا عَلٰی وَجۡهِهٖۤ

रोक ले[37] बल्कि वोह सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं[38] तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले[39]

24 : जो उस ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाई। 25 : क़ब्रों से जज़ा के लिये। 26 : जैसा क़ारून को धंसाया। 27 : ताकि तुम उस के अस्फ़ल में पहुंचो (या'नी सब से नीचे पहुंचो)। 28 : जैसा लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम पर भेजा था 29 : या'नी अ़ज़ाब देख कर 30 : या'नी पहली उम्मतों ने 31 : जब मैं ने उन्हें हलाक किया। 32 : हवा में उड़ते वक़्त 33 : पर फैलाने और समेटने की ह़ालत में गिरने से 34 : या'नी बा वुजूदे कि परिन्दे बोझल, मोटे, जसीम होते हैं और शैए सक़ील त़ब्अ़न पस्ती की त़रफ़ माइल होती है वोह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती, अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत है कि वोह ठहरे रहते हैं, ऐसे ही आस्मानों को जब तक वोह चाहे रुके हुए हैं और वोह न रोके तो गिर पड़ें। 35 : अगर वोह तुम्हें अ़ज़ाब करना चाहे। 36 : या'नी काफ़िर शैत़ान के इस फ़रेब में हैं कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। 37 : या'नी उस के सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं। 38 : कि ह़क़ से क़रीब नहीं होते, इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर व मोमिन के लिये एक मसल बयान फ़रमाई 39 : न आगे देखे न पीछे न दाएं न बाएं।

www.dawateislami.net

اَهْدٰۤى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْۤ

ज़ियादा राह पर है या वोह जो सीधा चले[40] सीधी राह पर[41] तुम फ़रमाओ[42] वोही है जिस ने

اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا

तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंख और दिल बनाए[43] कितना कम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

हक़ मानते हो[44] तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे[45]

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ

और कहते हैं[46] येह वा'दा[47] कब आएगा अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ येह इल्म

عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ

तो **अल्लाह** के पास है और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला[48] फिर जब उसे[49] पास देखेंगे

وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ قِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ

काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे[50] और उन से फ़रमाया जाएगा[51] येह है जो तुम मांगते थे[52] तुम फ़रमाओ[53]

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

भला देखो तो अगर **अल्लाह** मुझे और मेरे साथ वालों को[54] हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए[55] तो वोह कौन सा है जो काफ़िरों को

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

दुख के अज़ाब से बचा लेगा[56] तुम फ़रमाओ वोही रहमान है[57] हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया

40 : रास्ते को देखता **41 :** जो मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाने वाली है। मक़्सूद इस मसल का येह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस तरह हैरान व सरगर्दां जाता है कि न उसे मन्ज़िल मा'लूम न राह पहचाने और मोमिन आंखें खोले राहे हक़ देखता पहचानता चलता है। **42 :** ऐ मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَسَلَّم मुशरिकीन से कि जिस ख़ुदा की तरफ़ मैं तुम्हें दा'वत देता हूं वोह **43 :** जो आलाते इल्म हैं लेकिन तुम ने इन क़ुवा (क़ुव्वतों) से फ़ाएदा न उठाया, जो सुना वोह न माना, जो देखा उस से इब्रत हासिल न की, जो समझा उस में ग़ौर न किया **44 :** कि **अल्लाह** तआला के अता फ़रमाए हुए क़ुवा और आलाते इदराक से वोह काम नहीं लेते जिस के लिये वोह अता हुए, येही सबब है कि शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला होते हो। **45 :** रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिये **46 :** मुसल्मानों से तमस्ख़ुर व इस्तिहज़ा के तौर पर **47 :** अज़ाब या क़ियामत का **48 :** या'नी अज़ाब व क़ियामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूं, इतने ही का मामूर हूं, इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है, वक़्त का बताना मेरे ज़िम्मे नहीं। **49 :** या'नी अज़ाबे मौऊद को **50 :** चेहरे सियाह पड़ जाएंगे वहशत व ग़म से सूरतें ख़राब हो जाएंगी **51 :** जहन्नम के फ़िरिश्ते कहेंगे **52 :** और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से कहते थे कि वोह अज़ाब कहां है जल्दी लाओ, अब देख लो येह है वोह अज़ाब जिस की तुम्हें तलब थी **53 :** ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ारे मक्का से जो आप की मौत की आरज़ू रखते हैं **54 :** या'नी मेरे अस्हाब को **55 :** और हमारी उम्रें दराज़ कर दे। **56 :** तुम्हें तो अपने कुफ़्र के सबब ज़रूर अज़ाब में मुब्तला होना (है), हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ाएदा देगी ? **57 :** जिस की तरफ़ हम तुम्हें दा'वत देते हैं।

www.dawateislami.net

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तो अब जान जाओगे[58] कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह़ को

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿۳۰﴾ ع ۲

तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए[59] तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता[60]

اٰیاتها ۵۲ | ۶۸ سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّیَّةٌ ۲ | رکوعاتها ۲

सूरए क़लम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا یَسْطُرُوْنَ ﴿۱﴾ مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿۲﴾ وَ اِنَّ

क़लम[2] और उन के लिखे की क़सम[3] तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मज्नून नहीं[4] और ज़रूर

لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿۳﴾ وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبْصِرُ وَ

तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है[5] और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है[6] तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख

یُبْصِرُوْنَ ﴿۵﴾ بِاَیِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

लोगे और वोह भी देख लेंगे[7] कि तुम में कौन मज्नून था बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

سَبِیْلِهٖ ۪ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿۷﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۸﴾ وَدُّوْا لَوْ

से बहके और वोह ख़ूब जानता है जो राह पर है तो झुटलाने वालों की बात न सुनना वोह तो इस आरज़ू में हैं कि

58 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब 59 : और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरा से हाथ न आ सके 60 : कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके, येह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यूं इबादत में उस क़ादिरे बरह़क़ का शरीक करते हो। 1 : इस सूरत का नाम सूरए नून व सूरए क़लम है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, तीन सो 300 कलिमे, एक हज़ार दो सो छप्पन 1256 ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई, उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिन से दीनी दुन्यवी मसालेह़ व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आ'ला मुराद है जो नूरी क़लम है और उस का तूल फ़ासिलए ज़मीनो आस्मान के बराबर है। उस ने ब हुक्मे इलाही लौहे़ मह़फ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। 3 : या'नी आ'माल। बनी आदम के निगहबान फ़िरिश्तों के लिखे की क़सम 4 : उस का लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले ह़ाल है, उस ने तुम पर इन्आ़म व एह़सान फ़रमाए, नुबुव्वत और ह़िक्मत अ़ता की, फ़साहते ताम्मा, अ़क़्ले कामिल, पाकीज़ा ख़साइल, पसन्दीदा अख़्लाक़ अ़ता किये, मख़्लूक़ के लिये जिस क़दर कमालात इम्कान में हैं सब अ़ला वज्हिल कमाल अ़ता फ़रमाए, हर ऐब से ज़ाते आ़ली सिफ़ात को पाक रखा, इस में कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का रद है जो उन्हों ने कहा था "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ"। 5 : तब्लीग़े रिसालत व इज़्हारे नुबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ दा'वत देने और कुफ़्फ़ार की उन बेहूदा बातों और इफ़्तिराओं और त़ा'नों पर सब्र करने का। 6 : ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आइशा رضی اللہ تعالٰی عنہا से दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم का ख़ुल्क़ क़ुरआन है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व मह़ासिने अफ़्आ़ल की तक्मील व तत्मीम के लिये मब्ऊ़स फ़रमाया। 7 : या'नी अहले मक्का भी जब

www.dawateislami.net

تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿۹﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ

किसी त़रह़ तुम नरमी करो[8] तो वोह भी नर्म पड़ जाएं और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला[9] ज़लील बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता

بِنَمِيْمٍ ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿۱۲﴾ عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿۱۳﴾

फिरने वाला[10] भलाई से बड़ा रोकने वाला[11] ह़द से बढ़ने वाला गुनहगार[12] दुरुश्त ख़ू[13] इस सब पर तुर्रा येह कि उस की अस्ल में ख़त़ा[14]

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِيْنَ ﴿۱۴﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

इस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाएं[15] कहता है अगलों की

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۵﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿۱۶﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَاۤ

कहानियां हैं[16] क़रीब है कि हम उस की सुअर की सी थूथनी पर दाग़ लगा देंगे[17] बेशक हम ने उन्हें जांचा[18] जैसा उस बाग़

اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ﴿۱۸﴾

वालों को जांचा था[19] जब उन्हों ने क़सम खाई कि ज़रूर सुब्ह़ होते उस के खेत काट लेंगे[20] और اِنْ شَآءَ اللّٰہ न कहा[21]

उन पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा **8 :** दीन के मुआ़मले में उन की रिआ़यत कर के **9 :** कि झूटी और बात़िल बातों पर क़समें खाने में दिलेर है। मुराद इस से या वलीद बिन मुग़ीरा है या अस्वद बिन यग़ूस या अख़्नस बिन शुरैक़, आगे उस की सिफ़तों का बयान होता है **10 :** ताकि लोगों के दरमियान फ़साद डाले **11 :** बख़ील, न ख़ुद ख़र्च करे न दूसरे को नेक कामों में ख़र्च करने दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस के मा'ना में येह फ़रमाया है कि भलाई से रोकने से मक़्सूद इस्लाम से रोकना है क्यूं कि वलीद बिन मुग़ीरा अपने बेटों और रिश्तेदारों से कहता था कि अगर तुम में से कोई इस्लाम में दाख़िल हुवा तो मैं उसे अपने माल में से कुछ न दूंगा। **12 :** फ़ाजिर बदकार **13 :** बद मिज़ाज बद ज़बान **14 :** या'नी बद गोहर, तो उस से अफ़्आ़ले ख़बीसा का सुदूर क्या अ़जब। मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुग़ीरा ने अपनी मां से जा कर कहा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने मेरे ह़क़ में दस बातें फ़रमाई हैं, नव को तो मैं जानता हूं कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात अस्ल में ख़त़ा होने की इस का ह़ाल मुझे मा'लूम नहीं या तू मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गरदन मार दूंगा, इस पर उस की मां ने कहा कि तेरा बाप नामर्द था, मुझे अन्देशा हुवा कि वोह मर जाएगा तो उस का माल ग़ैर ले जाएंगे तो मैं ने एक चरवाहे को बुला लिया, तू उस से है। **फ़ाएदा :** वलीद ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की शान में एक झूटा कलिमा कहा था मज्नून, उस के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने उस के दस वाक़ेई उ़यूब ज़ाहिर फ़रमा दिये, इस से सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत और शाने मह़बूबिय्यत मा'लूम होती है। **15 :** या'नी क़ुरआने मजीद **16 :** और इस से उस की मुराद येह होती है कि झूट है और उस का येह कहना इस का नतीजा है कि हम ने उस को माल और औलाद दी। **17 :** या'नी उस का चेहरा बिगाड़ देंगे और उस की बद बात़िनी की अ़लामत उस के चेहरे पर नुमूदार कर देंगे ताकि उस के लिये सबबे आ़र हो, आख़िरत में तो येह सब कुछ होगा ही मगर दुन्या में भी येह ख़बर पूरी हो कर रही और उस की नाक दग़ीली (ऐबदार) हो गई, कहते हैं कि बद्र में उस की नाक कट गई। (كَذَا قِيْلَ خَازِن وَمَدَارِك وَجَلَالَيْن) "وَاعْتُرِضَ عَلَيْهِ بِاَنَّ وَلِيْدًا كَانَ مِنَ الْمُسْتَهْزِئِيْنَ الَّذِيْنَ مَاتُوْا قَبْلَ بَدْر" **18 :** या'नी अहले मक्का को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की दुआ़ से जो आप ने फ़रमाई थी कि या रब ! इन्हें ऐसी क़ह़त़ साली में मुब्तला कर जैसी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने में हुई थी, चुनान्चे अहले मक्का क़ह़त़ की ऐसी मुसीबत में मुब्तला किये गए कि वोह भूक की शिद्दत में मुर्दार और हड्डियां तक खा गए और इस त़रह़ आज़्माइश में डाले गए। **19 :** उस बाग़ का नाम ज़रवान था, येह बाग़ सन्आ़ यमन से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर सरे राह था, उस का मालिक एक मर्दे सालेह़ था जो बाग़ के मेवे कसरत से फ़ुक़रा को देता था, जब बाग़ में जाता फ़ुक़रा को बुला लेता तमाम गिरे पड़े मेवे फ़ुक़रा ले लेते और बाग़ में बिस्तर बिछा दिये जाते जब मेवे तोड़े जाते तो जितने मेवे बिस्तरों पर गिरते वोह भी फ़ुक़रा को दे दिये जाते और जो ख़ालिस अपना ह़िस्सा होता उस से भी दसवां ह़िस्सा फ़ुक़रा को दे देता, इसी त़रह़ खेती काटते वक़्त भी उस ने फ़ुक़रा के ह़ुक़ूक़ बहुत ज़ियादा मुक़र्रर किये थे, इस के बा'द उस के तीन बेटे वारिस हुए, उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि माल क़लील है कुम्बा बहुत है अगर वालिद की त़रह़ हम भी ख़ैरात जारी रखें तो तंगदस्त हो जाएंगे, आपस में मिल कर क़समें खाईं कि सुब्ह़ तड़के लोगों के उठने से पहले बाग़ चल कर मेवे तोड़ लें, चुनान्चे इर्शाद होता है **: 20 :** ताकि मिस्कीनों को ख़बर न हो। **21 :** येह लोग तो क़समें खा कर सो गए।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾ فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾ لا

तो उस पर[22] तेरे रब की त़रफ़ से एक फेरी करने वाला फेरा कर गया[23] और वोह सोते थे तो सुब्ह़ रह गया[24] जैसे फल टूटा हुवा[25]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾ لا اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

फिर उन्हों ने सुब्ह़ होते आपस में एक दूसरे को पुकारा कि तड़के (सुब्ह़ सवेरे) अपनी खेती को चलो अगर तुम्हें काटनी है

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾ لا اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ

तो चले और आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहते जाते थे कि हरगिज़ आज कोई मिस्कीन तुम्हारे बाग़ में

مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ لا وَّ غَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْۤا اِنَّا

आने न पाए और तड़के चले अपने इस इरादे पर कुदरत समझते[26] फिर जब उसे देखा[27] बोले बेशक हम

لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ لا بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

रास्ता बहक गए[28] बल्कि हम बे नसीब हुए[29] उन में जो सब से ग़नीमत था बोला क्या मैं तुम से नहीं कहता था

لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقْبَلَ

कि तस्बीह़ क्यूं नहीं करते[30] बोले पाकी है हमारे रब को बेशक हम ज़ालिम थे अब एक

بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

दूसरे की त़रफ़ मलामत करता मुतवज्जेह हुवा[31] बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम सरकश थे[32]

عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की त़रफ़ रग़बत लाते हैं[33] मार

الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ ع اِنَّ وقف لازم ع ١ ٣٣ ٢

ऐसी होती है[34] और बेशक आख़िरत की मार सब से बड़ी क्या अच्छा था अगर वोह जानते[35] बेशक

22 : या'नी बाग़ पर 23 : या'नी एक बला आई ब हुक्मे इलाही आग नाज़िल हुई और बाग़ को तबाह कर गई 24 : वोह बाग़ 25 : और उन लोगों को कुछ ख़बर नहीं, येह सुब्ह़ तड़के उठे 26 : कि किसी मिस्कीन को न आने देंगे और तमाम मेवे अपने क़ब्ज़े में लाएंगे। 27 : या'नी बाग़ को कि उस मेवे का नामो निशान नहीं 28 : या'नी किसी और बाग़ पर पहुंच गए, हमारा बाग़ तो बहुत मेवादार है, फिर जब ग़ौर किया और उस के दरो दीवार को देखा और पहचाना कि अपना ही बाग़ है तो बोले 29 : इस के मनाफ़ेअ़ से मिस्कीनों को न देने की निय्यत कर के। 30 : और इस इरादए बद से तौबा क्यूं नहीं करते और अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र क्यूं नहीं बजा लाते 31 : और आख़िर कार उन सब ने ए'तिराफ़ किया कि हम से ख़त़ा हुई और हम ह़द से मुतजाविज़ हो गए। 32 : कि हम ने अल्लाह तआ़ला की ने'मत का शुक्र न किया और बाप दादा के नेक त़रीक़े को छोड़ा 33 : उस के अ़फ़्वो करम की उम्मीद रखते हैं, उन लोगों ने सिद्क़ो इख़्लास से तौबा की तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस के इ़वज़ इस से बेहतर बाग़ अ़त़ा फ़रमाया जिस का नाम बाग़े ह़यवान था और उस में कस्रते पैदावार और लत़ाफ़ते आबो हवा का येह आ़लम था कि उस के अंगूरों का एक ख़ोशा एक गधे पर बार किया जाता था। 34 : ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! होश में आओ येह तो दुन्या की मार है 35 : अ़ज़ाबे आख़िरत को और उस से बचने

www.dawateislami.net

لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ

डर वालों के लिये उन के रब के पास[36] चैन के बाग़ हैं[37] क्या हम मुसल्मानों को

كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۫ وقفة كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ ج اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ

मुजरिमों सा कर दें[38] तुम्हें क्या हुवा कैसा हुक्म लगाते हो[39] क्या तुम्हारे लिये कोई किताब है

تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ج اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا

जिस में पढ़ते हो कि तुम्हारे लिये उस में जो तुम पसन्द करो या तुम्हारे लिये हम पर कुछ क़समें हैं

بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ ج سَلْهُمْ اَيُّهُمْ

क़ियामत तक पहुंचती हुई[40] कि तुम्हें मिलेगा जो कुछ दा'वा करते हो[41] तुम उन से पूछो[42] उन में

بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾ ج اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا مع ١٥

कौन सा इस का ज़ामिन है[43] या उन के पास कुछ शरीक हैं[44] तो अपने शरीकों को ले कर आएं अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا

सच्चे हैं[45] जिस दिन एक साक़ खोली जाएगी (जिस के मा'ना अल्लाह ही जानता है)[46] और सज्दे को बुलाए जाएंगे[47] तो न

يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾ ۙ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا

कर सकेंगे[48] नीची निगाहें किये हुए[49] उन पर ख़्वारी चढ़ रही होगी और बेशक दुन्या

يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا

में सज्दे के लिये बुलाए जाते थे[50] जब तन्दुरुस्त थे[51] तो जो इस बात को[52] झुटलाता है उसे मुझ पर

के लिये अल्लाह तआला और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करते। **36 :** या'नी आख़िरत में **37 शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने मुसल्मानों से कहा था कि अगर मरने के बा'द फिर हम उठाए भी गए तो वहां भी हम तुम से अच्छे रहेंगे और हमारा ही दरजा बुलन्द होगा जैसे कि दुन्या में हमें आसाइश है, इस पर येह आयत नाज़िल हुई जो आगे आती है। **38 :** और इन मुख़्लिस फ़रमां बरदारों को उन मुआनिद बाग़ियों पर फ़ज़ीलत न देंगे, हमारी निस्बत ऐसा गुमान फ़ासिद (है) **39 :** जहालत से **40 :** जो मुन्क़तअ़ न हों, इस मज़्मून की **41 :** अपने लिये अल्लाह तआला के नज़्दीक ख़ैरो करामत का। अब अल्लाह तआला अपने हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़िताब फ़रमाता है **42 :** या'नी कुफ़्फ़ार से **43 :** कि आख़िरत में उन्हें मुसल्मानों से बेहतर या उन के बराबर मिलेगा **44 :** जो इस दा'वे में उन की मुवाफ़क़त करें और ज़िम्मेदार बनें **45 :** हक़ीक़त में वोह बातिल पर हैं, न उन के पास कोई किताब जिस में येह मज़्कूर हो जो वोह कहते हैं, न अल्लाह तआला का कोई अ़हद, न कोई उन का ज़ामिन न मुवाफ़िक़। **46 :** जुम्हूर के नज़्दीक कश्फ़े साक़ शिद्दत व सुऊबते अम्र से इबारत है जो रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिये पेश आएगी। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि क़ियामत में वोह बड़ा सख़्त वक़्त है। सलफ़ का येही तरीक़ा है कि वोह इस के मा'ना में कलाम नहीं करते और येह फ़रमाते हैं कि हम इस पर ईमान लाते हैं और इस से जो मुराद है वोह अल्लाह तआला की तरफ़ तफ़्वीज़ करते हैं। **47 :** या'नी कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन ब तरीक़े इम्तिहान व तौबीख़। **48 :** उन की पुश्तें तांबे के तख़्ते की तरह सख़्त हो जाएंगी। **49 :** कि उन पर ज़िल्लत व नदामत छाई हुई होगी। **50 :** और अज़ानों और तक्बीरों में ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ'' के साथ उन्हें नमाज़ व सज्दे की दा'वत दी जाती थी **51 :** बा वुजूद इस के सज्दा न करते थे उसी का

www.dawateislami.net

الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۴۴﴾ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ

छोड़ दो[53] क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे[54] जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा

اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾

बेशक मेरी ख़ुफ़्या तदबीर बहुत पक्की है[55] या तुम उन से उजरत मांगते हो[56] कि वोह चट्टी (तावान) के बोझ में दबे हैं[57]

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ لَا تَكُنْ

या उन के पास ग़ैब है[58] कि वोह लिख रहे हैं[59] तो तुम अपने रब के हुक्म का इन्तिज़ार करो[60] और उस

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَ هُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿۴۸﴾ؕ لَوْ لَاۤ اَنْ تَدٰرَكَهٗ وقف لازم

मछली वाले की तरह न होना[61] जब इस हाल में पुकारा कि उस का दिल घुट रहा था[62] अगर उस के रब की ने'मत

نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿۴۹﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ

उस की ख़बर को न पहुंच जाती[63] तो ज़रूर मैदान पर फेंक दिया जाता इल्ज़ाम दिया हुवा[64] तो उसे उस के रब ने चुन लिया

فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ

और अपने क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों (हक़दारों) में कर लिया और ज़रूर काफ़िर तो ऐसे मा'लूम होते हैं कि गोया अपनी बद नज़र लगा कर

بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۘ﴿۵۱﴾ وَ مَا هُوَ وقف لازم

तुम्हें गिरा देंगे जब क़ुरआन सुनते हैं[65] और कहते हैं[66] येह ज़रूर अ़क़्ल से दूर हैं और वोह[67] तो नहीं

नतीजा है जो यहां सज्दे से महरूम रहे। **52 :** या'नी क़ुरआने मजीद को **53 :** मैं उस को सज़ा दूंगा। **54 :** अपने अ़ज़ाब की त़रफ़, इस त़रह कि बा वुजूद मा'सियतों और ना फ़रमानियों के उन्हें सिह़्ह़त व रिज़्क़ सब कुछ मिलता रहेगा और दम बदम अ़ज़ाब क़रीब होता जाएगा **55 :** मेरा अ़ज़ाब शदीद है। **56 :** रिसालत की तब्लीग़ पर **57 :** और तावान का उन पर ऐसा बारे गिरां है जिस की वज्ह से ईमान नहीं लाते **58 :** ग़ैब से मुराद यहां लौहे़ मह़फ़ूज़ है **59 :** इस से जो कुछ कहते हैं। **60 :** जो वोह उन के ह़क़ में फ़रमाए और चन्दे उन की ईज़ाओं पर सब्र करो। "قِيلَ اِنَّهُ مَنْسُوْخٌ بِآيَةِ السَّيْفِ" **61 :** क़ौम पर ता'जीले ग़ज़ब में और मछली वाले से मुराद ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام हैं। **62 :** मछली के पेट में ग़म से। **63 :** और **अल्लाह** तआ़ला उन के उ़ज़्र व दुआ़ को क़बूल फ़रमा कर उन पर इन्आ़म न फ़रमाता **64 :** लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने रह़मत फ़रमाई **65 :** और बुग़्ज़ो अ़दावत की निगाहों से घूर घूर कर देखते हैं। **शाने नुज़ूल :** मन्क़ूल है कि अ़रब में बा'ज़ लोग नज़र लगाने में शोहरए आफ़ाक़ थे और उन की येह ह़ालत थी कि दा'वा कर कर के नज़र लगाते थे और जिस चीज़ को उन्हों ने गज़न्द (नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से देखा देखते ही हलाक हो गई, ऐसे बहुत वाक़िआ़त उन के तजरिबे में आ चुके थे, कुफ़्फ़ार ने उन से कहा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नज़र लगाएं तो उन लोगों ने हुज़ूर को बड़ी तेज़ निगाहों से देखा और कहा कि हम ने अब तक न ऐसा आदमी देखा न ऐसी दलीलें देखीं और उन का किसी चीज़ को देख कर ह़ैरत करना ही सितम होता था, लेकिन उन की येह तमाम जिद्दो जहद कभी मिस्ल उन के और मकाइद (मक्रो फ़रेब) के जो रात दिन वोह करते रहते थे बेकार गई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा और येह आयत नाज़िल हुई। ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया जिस को नज़र लगे उस पर येह आयत पढ़ कर दम कर दी जाए। **66 :** बराहे ह़सद व इ़नाद और लोगों को नफ़रत दिलाने के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में जब आप को क़ुरआने करीम पढ़ते देखते हैं **67 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ या सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم।

ع ٢ ١٩

اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

मगर नसीहत सारे जहां के लिये[68]

اٰیاتھا ٥٢ ٦٩ سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ ٧٨ رکوعاتھا ٢

सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ

वोह हक़ होने वाली[2] कैसी वोह हक़ होने वाली[3] और तुम ने क्या जाना कैसी वोह हक़ होने वाली[4] समूद और आ़द ने

ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ

इस सख़्त सदमा देने वाली को झुटलाया तो समूद तो हलाक किये गए हद से गुज़री हुई चिंघाड़ से[5] और रहे आ़द

فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ

वोह हलाक किये गए निहायत सख़्त गरजती आंधी से वोह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ

اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ

दिन[6] लगातार तो उन लोगों को उन में[7] देखो पिछड़े (मरे) हुए[8] गोया वोह खजूर के डंड (सूखे तने)

خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

हैं गिरे हुए तो तुम उन में किसी को बचा हुवा देखते हो[9] और फ़िरऔ़न और उस से अगले[10]

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً

और उलटने वाली बस्तियां[11] ख़ता लाए[12] तो उन्हों ने अपने रब के रसूलों का हुक्म न माना[13] तो उस ने उन्हें बढ़ी चढ़ी

68 : जिन्नों के लिये भी और इन्सानों के लिये भी या ज़िक्र ब मा'ना फ़ज़्लो शरफ़ के है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم तमाम जहानों के लिये शरफ़ हैं इन की त़रफ़ जुनून की निस्बत करना कूर बात़िनी है। (مدارک) 1 : सूरए हाक़्क़ह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, दो सो छप्पन 256 कलिमे, एक हज़ार चार सो तेईस 1423 हर्फ़ हैं। 2 : या'नी क़ियामत जो हक़ व साबित है और इस का वुक़ूअ़ यक़ीनी व क़त़ई है जिस में कोई शक नहीं। 3 : या'नी वोह निहायत अ़जीब व अ़ज़ीमुश्शान है। 4 : जिस के अहवाल व अहवाल और शदाइद तक फ़िक्रे इन्सानी का त़ाइर परवाज़ नहीं कर सकता। 5 : या'नी सख़्त होलनाक आवाज़ से 6 : चहार शम्बा से चहार शम्बा (बुध से बुध) तक, आख़िर माहे शव्वाल में निहायत तेज़ सरदी के मौसिम में 7 : या'नी उन दिनों में 8 : कि मौत ने उन्हें ऐसा ढा दिया 9 : कहा गया है कि आठवें रोज़ जब सुब्ह को वोह सब लोग हलाक हो गए तो हवाओं ने उन्हें उड़ा कर समुन्दर में फेंक दिया और एक भी बाक़ी न रहा। 10 : उस से भी पहली उम्मतों के कुफ़्फ़ार 11 : ना फ़रमानियों की शामत से मिस्ल क़ौमे लूत़ की बस्तियों के, येह सब 12 : अफ़्आ़ले क़बीहा व मआ़सी व शिर्क के मुरतकिब हुए 13 : जो उन की त़रफ़ भेजे गए थे।

www.dawateislami.net

رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ

गिरिफ़्त से पकड़ा बेशक जब पानी ने सर उठाया था[14] हम ने तुम्हें[15] कश्ती में सुवार किया[16] कि इसे[17] तुम्हारे लिये

تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ

यादगार करें[18] और इसे मह़फ़ूज़ रखे वोह कान कि सुन कर मह़फ़ूज़ रखता हो[19] फिर जब सूर फूंक दिया जाए

وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

एक दम और ज़मीन और पहाड़ उठा कर दफ़्अ़तन चूरा कर दिये जाएं

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ

वोह दिन है कि हो पड़ेगी वोह होने वाली[20] और आस्मान फट जाएगा तो उस दिन उस का पतला

وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۭ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ

ह़ाल होगा[21] और फ़िरिश्ते उस के कनारों पर खड़े होंगे[22] और उस दिन तुम्हारे रब का अ़र्श अपने ऊपर

يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا

आठ फ़िरिश्ते उठाएंगे[23] उस दिन तुम सब पेश होगे[24] कि तुम में कोई छुपने वाली जान छुप न सकेगी तो वोह

مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّيْ ظَنَنْتُ

जो अपना नामए आ'माल दह्ने हाथ में दिया जाएगा[25] कहेगा लो मेरे नामए आ'माल पढ़ो मुझे यक़ीन था

اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

कि मैं अपने ह़िसाब को पहुंचूंगा[26] तो वोह मन मानते चैन में है बुलन्द बाग़ में

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ

जिस के ख़ोशे झुके हुए[27] खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में

14 : और वोह दरख़्तों, इमारतों, पहाड़ों और हर चीज़ से बुलन्द हो गया था, येह बयान तूफ़ाने नूह़ का है। عَلَيْهِ السَّلَام **15 :** जब कि तुम अपने आबा के अस्लाब (पीठों) में थे, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की **16 :** और ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام को और उन के साथ वालों को जो उन पर ईमान लाए थे नजात दी और बाक़ियों को ग़र्क़ किया **17 :** या'नी मोमिनीन को नजात देने और काफ़िरों के हलाक फ़रमाने को **18 :** कि सबबे इ़ब्रत व नसीह़त हो **19 :** काम की बातों को ताकि उन से नफ़्अ़ उठाए। **20 :** या'नी क़ियामत क़ाइम हो जाएगी **21 :** या'नी वोह निहायत कमज़ोर होगा बा वुजूद इस के कि पहले बहुत मज़बूत़ व मुस्तह़कम था। **22 :** या'नी जिन फ़िरिश्तों का मस्कन आस्मान है वोह उस के फटने पर उस के कनारों पर खड़े होंगे, फिर ब हुक्मे इलाही उतर कर ज़मीन का इह़ात़ा करेंगे। **23 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ामिलीने अ़र्श आज कल चार हैं, रोज़े क़ियामत उन की ताईद के लिये चार का और इज़ाफ़ा किया जाएगा आठ हो जाएंगे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि इस से मलाएका की आठ सफ़ें मुराद हैं जिन की ता'दाद **अल्लाह** तआ़ला ही जाने। **24 :** **अल्लाह** तआ़ला के ह़ुज़ूर ह़िसाब के लिये **25 :** येह समझ लेगा कि वोह नजात पाने वालों में है और निहायत फ़रह़ व सुरूर के साथ अपनी जमाअ़त और अपने अहलो

الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ۬ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ

आगे भेजा[28] और वोह जो अपने नामए आ'माल बाएं हाथ में दिया जाएगा[29] कहेगा हाए किसी तरह मुझे अपना नविश्ता (नामए आ'माल)

كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ ۚ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ ۚ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ ۚ مَاۤ

न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है हाए किसी तरह मौत ही क़िस्सा चुका जाती[30] मेरे

اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ ۚ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ ۚ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ۙ ثُمَّ

कुछ काम न आया मेरा माल[31] मेरा सब ज़ोर जाता रहा[32] उसे पकड़ो फिर उसे तौक़ डालो[33] फिर

الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ ؕ

उसे भड़कती आग में धंसाओ फिर ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है[34] उसे पिरो दो[35]

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ ۙ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ ؕ

बेशक वोह अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान न लाता था[36] और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता[37]

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾

तो आज यहां[38] उस का कोई दोस्त नहीं[39] और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप

ع ٢٤ ٥

لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ ۧ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ۙ وَمَا لَا

इसे न खाएंगे मगर ख़ताकार[40] तो मुझे क़सम उन चीज़ों की जिन्हें तुम देखते हो और जिन्हें तुम

تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ ۙ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ ۚۙ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ

नहीं देखते[41] बेशक येह कुरआन एक करम वाले रसूल[42] से बातें हैं[43] और वोह किसी शाइर की बात नहीं[44]

अक़ारिब से **26 :** या'नी मुझे दुन्या में यक़ीन था कि आख़िरत में मुझ से हिसाब लिया जाएगा। **27 :** कि खड़े बैठे लैटे हर हाल में ब आसानी ले सकें और उन लोगों से कहा जाएगा **28 :** या'नी जो आ'माले सालेहा कि दुन्या में तुम ने आख़िरत के लिये किये। **29 :** जब अपने नामए आ'माल को देखेगा और उस में अपने बद आ'माल मक्तूब पाएगा तो शरमिन्दा व रुस्वा हो कर **30 :** और हिसाब के लिये न उठाया जाता और येह ज़िल्लतो रुस्वाई पेश न आती **31 :** जो मैं ने दुन्या में जम्अ किया था वोह ज़रा भी मेरा अ़ज़ाब टाल न सका **32 :** और मैं ज़लील व मोहताज रह गया। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस से उस की मुराद येह होगी कि दुन्या में जो हुज्जतें मैं किया करता था वोह सब बातिल हो गईं अब अल्लाह तआला जहन्नम के ख़ाज़िनों को हुक्म देगा **33 :** इस तरह कि उस के हाथ उस की गरदन से मिला कर तौक़ में बांध दो **34 :** फ़िरिश्तों के हाथ से **35 :** या'नी वोह ज़न्जीर उस में इस तरह दाख़िल कर दो जैसे किसी चीज़ में डोरा पिरोया जाता है। **36 :** उस की अ़ज़मत व वहदानिय्यत का मो'तक़िद न था। **37 :** न अपने नफ़्स को न अपने अहल को न दूसरों को। इस में इशारा है कि वोह बअ्स का क़ाइल न था क्यूं कि मिस्कीन का खाना देने वाला मिस्कीन से तो किसी बदले की उम्मीद रखता ही नहीं, महज़ रिज़ाए इलाही व सवाबे आख़िरत की उम्मीद पर मिस्कीन को देता है और जो बअ्स व आख़िरत पर ईमान ही न रखता हो उसे मिस्कीन को खिलाने की क्या ग़रज़। **38 :** या'नी आख़िरत में **39 :** जो उसे कुछ नफ़्अ पहुंचाए या शफ़ाअ़त करे **40 :** कुफ़्फ़ारे बद अत्वार। **41 :** या'नी तमाम मख़्लूक़ात की क़सम जो तुम्हारे देखने में आए उस की भी जो न आए उस की भी। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ''مَا تُبْصِرُوْنَ'' से दुन्या और ''مَا لَا تُبْصِرُوْنَ'' से आख़िरत मुराद है, इस की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन के और भी कई क़ौल हैं। **42 :** मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबे ख़ुदा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم **43 :** जो उन के रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाई। **44 :** जैसा कि कुफ़्फ़ार कहते हैं।

www.dawateislami.net

قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

कितना कम यक़ीन रखते हो[45] और न किसी काहिन की बात[46] कितना कम ध्यान करते हो[47]

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

उस ने उतारा है जो सारे जहान का रब है और अगर वोह हम पर एक बात भी बना कर कहते[48]

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ

ज़रूर हम उन से ब कुव्वत बदला लेते फिर हम उन की रगे दिल काट देते[49] फिर तुम में कोई

مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنَّا

उन का बचाने वाला न होता और बेशक येह कुरआन डर वालों को नसीहत है और ज़रूर हम

لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ

जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं और बेशक वोह काफ़िरों पर हसरत है[50] और

اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ع

बेशक वोह यक़ीनी हक़ है[51] तो ऐ महबूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब की पाकी बोलो[52]

اٰياتها ٤٤ | ٧٠ سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ ٧٩ | ركوعاتها ٢

सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में चवालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ

एक मांगने वाला वोह अ़ज़ाब मांगता है जो काफ़िरों पर होने वाला है उस का कोई टालने वाला नहीं[2] वोह होगा अल्लाह की

45 : बिल्कुल बे ईमान हो, इतना भी नहीं समझते कि न येह शे'र है न इस में शे'रिय्यत की कोई बात पाई जाती है 46 : जैसा कि तुम में से बा'ज़े काफ़िर इस किताबे इलाही की निस्बत कहते हैं। 47 : न इस किताब की हिदायात को देखते हो न इस की ता'लीमों पर ग़ौर करते हो कि इस में कैसी रूह़ानी ता'लीम है न इस की फ़साह़तो बलाग़त और ए'जाज़े बे मिसाली पर ग़ौर करते हो जो येह समझो कि येह कलाम 48 : जो हम ने न फ़रमाई होती तो 49 : जिस के काटते ही मौत वाक़ेअ़ हो जाती है। 50 : कि वोह रोज़े क़ियामत जब कुरआन पर ईमान लाने वालों का सवाब और इस के इन्कार करने वालों और झुटलाने वालों का अ़ज़ाब देखेंगे तो अपने ईमान न लाने पर अफ़्सोस करेंगे और ह़सरत व नदामत में गिरिफ़्तार होंगे। 51 : कि इस में कोई शको शुबा नहीं। 52 : और उस का शुक्र करो कि उस ने तुम्हारी त़रफ़ अपने इस कलामे जलील की वह़्य फ़रमाई। 1 : सूरए मआ़रिज मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चवालीस 44 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो उन्तीस 929 ह़र्फ़ हैं। 2 : **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब अहले मक्का को अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाया तो वोह आपस में कहने लगे कि इस अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ कौन लोग हैं और येह किन पर आएगा ? सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ذِی الْمَعَارِجِ ۳ؕ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ اِلَيْهِ فِیْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ

तरफ़ से जो बुलन्दियों का मालिक है[3] मलाएका और जिब्रील[4] उस की बारगाह की तरफ़ उरूज करते हैं[5] वोह अज़ाब उस दिन होगा

خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۴ۚ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۵ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ

जिस की मिक्दार पचास हज़ार बरस है[6] तो तुम अच्छी तरह सब्र करो वोह उसे[7] दूर

بَعِيْدًا ۶ۙ وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ۷ؕ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۸ۙ وَ تَكُوْنُ

समझ रहे हैं[8] और हम उसे नज़्दीक देख रहे हैं[9] जिस दिन आस्मान होगा जैसी गली चांदी और

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۹ۙ وَ لَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۱۰ۚۖ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

पहाड़ ऐसे हलके हो जाएंगे जैसे ऊन[10] और कोई दोस्त किसी दोस्त की बात न पूछेगा[11] होंगे उन्हें देखते हुए[12] मुजरिम[13]

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِیْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىٕذٍۭ بِبَنِيْهِ ۱۱ۙ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ

आरज़ू करेगा काश इस दिन के अज़ाब से छुटने के बदले में दे दे अपने बेटे और अपनी जोरू और

اَخِيْهِ ۱۲ۙ وَ فَصِيْلَتِهِ الَّتِیْ تُـْٔوِيْهِ ۱۳ۙ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ

अपना भाई और अपना कुम्बा जिस में उस की जगह है और जितने ज़मीन में हैं सब फिर येह बदला

يُنْجِيْهِ ۱۴ۙ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ۱۵ۙ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۱۶ۚۖ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ

देना उसे बचा ले हरगिज़ नहीं[14] वोह तो भड़क्ती आग है खाल उतार लेने वाली बुला रही है[15] उस को जिस ने पीठ दी और

تَوَلّٰى ۱۷ۙ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ۱۸ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۱۹ۙ اِذَا مَسَّهُ

मुंह फेरा[16] और जोड़ कर सैंत रखा (महफ़ूज़ कर रखा)[17] बेशक आदमी बनाया गया है बड़ा बे सब्रा हरीस जब उसे बुराई

से पूछो, तो उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया, इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और हुज़ूर से सुवाल करने वाला नज़्र बिन हारिस था, उस ने दुआ की थी कि या रब ! अगर येह कुरआन हक़ हो और तेरा कलाम हो तो हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थर बरसा या दर्दनाक अज़ाब भेज, इन आयतों में इर्शाद फ़रमाया गया कि काफ़िर तलब करें या न करें अज़ाब जो उन के लिये मुक़द्दर है ज़रूर आना है, उसे कोई टाल नहीं सकता **3 :** या'नी आस्मानों का। **4 :** जो फ़िरिश्तों में मख़्सूस फ़ज़्लो शरफ़ रखते हैं **5 :** या'नी उस मक़ामे कुर्ब की तरफ़ जो आस्मान में उस के अवामिर का जाए नुज़ूल है। **6 :** वोह रोज़े क़ियामत है जिस के शदाइद काफ़िरों की निस्बत तो इतने दराज़ होंगे और मोमिन के लिये एक फ़र्ज़ नमाज़ से भी सुबुक तर (कमतर) होगा। **7 :** या'नी अज़ाब को **8 :** और येह ख़याल करते हैं कि वाक़ेअ होने वाला ही नहीं **9 :** कि ज़रूर होने वाला है। **10 :** और हवा में उड़ते फिरेंगे। **11 :** हर एक को अपनी ही पड़ी होगी **12 :** कि एक दूसरे को पहचानेंगे लेकिन अपने हाल में ऐसे मुब्तला होंगे कि न उन से हाल पूछेंगे न बात कर सकेंगे। **13 :** या'नी काफ़िर **14 :** येह कुछ उस के काम न आएगा और किसी तरह वोह अज़ाब से बच न सकेगा **15 :** नाम ले ले कर कि ऐ काफ़िर मेरे पास आ ऐ मुनाफ़िक़ ! मेरे पास आ। **16 :** हक़ के क़बूल करने और ईमान लाने से। **17 :** माल को और उस के हुक़ूक़े वाजिबा अदा न किये।

الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢٠﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢١﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٢﴾

पहुंचे[18] तो सख़्त घबराने वाला और जब भलाई पहुंचे[19] तो रोक रखने वाला[20] मगर नमाज़ी

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं[21] और वोह जिन के माल में एक मा'लूम

مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ

हक़ है[22] उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो महरूम रहे[23] और वोह जो इन्साफ़ का दिन सच

الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ

जानते हैं[24] और वोह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डर रहे हैं बेशक उन के

رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِلَّا عَلٰٓى

रब का अ़ज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं[25] और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी

اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى

बीबियों या अपने हाथ के माल कनीज़ों से कि इन पर कुछ मलामत नहीं तो जो इन दो[26]

وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿٣١﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

के सिवा और चाहे वोही हद से बढ़ने वाले हैं[27] और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की

رٰعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى

हिफ़ाज़त करते हैं[28] और वोह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम हैं[29] और वोह जो

18 : तंगदस्ती व बीमारी वग़ैरा की **19 :** दौलत मन्दी व माल **20 :** या'नी इन्सान की ह़ालत येह है कि उसे कोई ना गवार ह़ालत पेश आती है तो उस पर सब्र नहीं करता और जब माल मिलता है तो उस को ख़र्च नहीं करता। **21 :** कि फ़राइज़े पन्जगाना को उन के अवक़ात में पाबन्दी से अदा करते हैं या'नी मोमिन हैं **22 :** मुराद इस से ज़कात है जिस की मिक़्दार मा'लूम है या वोह सदक़ा जो आदमी अपने नफ़्स पर मुअ़य्यन करे तो उसे मुअ़य्यन अवक़ात में अदा किया करे। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि सदक़ाते मुस्तह़ब्बा के लिये अपनी त़रफ़ से वक़्त मुअ़य्यन करना शरअ़ में जाइज़ और क़ाबिले मद्ह़ है। **23 :** या'नी दोनों क़िस्म के मोह़ताजों को दे, उन्हें भी जो ह़ाजत के वक़्त सुवाल करते हैं और उन्हें भी जो शर्म से सुवाल नहीं करते और उन की मोह़ताजी ज़ाहिर नहीं होती। **24 :** और मरने के बा'द उठने और ह़श्रो नश्र व जज़ा व क़ियामत सब पर ईमान रखते हैं। **25 :** चाहे आदमी कितना ही नेक पारसा कसीरुत्ताअ़त वल इ़बादत हो मगर उसे अ़ज़ाबे इलाही से बे ख़ौफ़ होना न चाहिये। **26 :** या'नी ज़ौजात व मम्लूकात **27 :** कि ह़लाल से ह़राम की त़रफ़ तजावुज़ करते हैं। **मस्अला :** इस आयत से मुत्अ़ा, लिवात़त, जानवरों के साथ क़ज़ाए शह्वत और हाथ से इस्तिम्ना की ह़ुरमत साबित होती है। **28 :** शरई अमानतों की भी और बन्दों की अमानतों की भी और ख़ल्क़ के साथ जो अ़ह्द हैं उन की भी और ह़क़ के जो अ़ह्द हैं उन की भी, नज़्रें और क़समें भी इस में दाख़िल हैं। **29 :** सिद्क़ो इन्साफ़ के साथ, न उस में रिश्तेदारी का पास करते हैं न ज़बर दस्त को कमज़ोर पर तरजीह़ देते हैं न किसी साह़िबे ह़क़ का तलफ़े ह़क़ गवारा करते हैं।

ع ۱/۳۵/۷ صَلَاتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ﴿۳۴﴾ اُولٰٓئِكَ فِیْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَمَالِ الَّذِیْنَ

अपनी नमाज़ की मुहाफ़ज़त करते हैं[30] येह हैं जिन का बाग़ों में ए'ज़ाज़ होगा[31] तो उन काफ़िरों

كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِیْنَ ﴿۳۶﴾ عَنِ الْیَمِیْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ عِزِیْنَ ﴿۳۷﴾

को क्या हुवा तुम्हारी तरफ़ तेज़ निगाह से देखते हैं[32] दहने और बाएं गुरौह के गुरौह

اَیَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ یُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِیْمٍ ﴿۳۸﴾ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ

क्या उन में हर शख़्स येह तमअ़ करता है कि[33] चैन के बाग़ में दाख़िल किया जाए हरगिज़ नहीं बेशक हम ने उन्हें उस चीज़

مِّمَّا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَ الْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿۴۰﴾

से बनाया जिसे जानते हैं[34] तो मुझे क़सम है उस की जो सब पूरबों सब पश्चिमों का मालिक है[35] कि ज़रूर हम क़ादिर हैं

عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ خَیْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَ مَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِیْنَ ﴿۴۱﴾ فَذَرْهُمْ یَخُوْضُوْا

कि उन से अच्छे बदल दें[36] और हम से कोई निकल कर नहीं जा सकता[37] तो उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगियों में पड़े

وَ یَلْعَبُوْا حَتّٰى یُلٰقُوْا یَوْمَهُمُ الَّذِیْ یُوْعَدُوْنَ ﴿۴۲﴾ یَوْمَ یَخْرُجُوْنَ

और खेलते हुए यहां तक कि अपने उस[38] दिन से मिलें जिस का उन्हें वा'दा दिया जाता है जिस दिन क़ब्रों से

مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ یُّوْفِضُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَاشِعَةً

निकलेंगे झपटते हुए[39] गोया वोह निशानों की तरफ़ लपक रहे हैं[40] आंखें

ع ۲/۹/۸ اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْیَوْمُ الَّذِیْ كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ ﴿۴۴﴾

नीची किये हुए उन पर ज़िल्लत सुवार येह है उन का वोह दिन[41] जिस का उन से वा'दा था[42]

30 : नमाज़ का ज़िक्र मुकर्रर फ़रमाया गया इस में येह इज़्हार है कि नमाज़ बहुत अहम है या येह कि एक जगह फ़राइज़ मुराद हैं दूसरी जगह नवाफ़िल और हिफ़ाज़त से मुराद येह है कि इस के अरकान और वाजिबात और सुन्नतों और मुस्तहब्बात को कामिल तौर पर अदा करते हैं। **31 :** बिहिश्त के। **32 शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ार की उस जमाअ़त के हक़ में नाज़िल हुई जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم के गिर्द हल्क़े बांध कर गुरौह के गुरौह जम्अ़ होते थे और आप का कलामे मुबारक सुनते और उस को झुटलाते और इस्तिहज़ा करते और कहते कि अगर येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे जैसा कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं तो हम ज़रूर इन से पहले उस में दाख़िल होंगे, उन के हक़ में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि उन काफ़िरों का क्या हाल है कि आप के पास बैठते भी हैं और गरदनें उठा उठा कर देखते भी हैं फिर भी जो आप से सुनते हैं उस से नफ़्अ़ नहीं उठाते। **33 :** ईमान वालों की तरह **34 :** या'नी नुत़्फ़े से, जैसे सब आदमियों को पैदा किया तो इस सबब से कोई जन्नत में दाख़िल न होगा, जन्नत में दाख़िल होना ईमान पर मौक़ूफ़ है। **35 :** या'नी आफ़्ताब के हर जाए तुलूअ़ और हर जाए ग़ुरूब का या हर हर सितारे के मशरिक़ो मग़रिब का, मक़्सद अपनी रुबूबिय्यत की क़सम याद फ़रमाना है। **36 :** इस तरह कि उन्हें हलाक कर दें और बजाए उन के अपनी फ़रमां बरदार मख़्लूक़ पैदा करें **37 :** और हमारी क़ुदरत के इहाते से बाहर नहीं हो सकता **38 :** अ़ज़ाब के **39 :** महशर की तरफ़ **40 :** जैसे झन्डे वाले अपने झन्डे की तरफ़ दौड़ते हैं **41 :** या'नी रोज़े क़ियामत **42 :** दुन्या में और वोह इस को झुटलाते थे।

www.dawateislami.net

ایاتها ٢٨ | ٧١ سورة نوح مكية ٧١ | ركوعاتها ٢

सूरए नूह़ मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़म वाला[1]

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ

बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा कि उन को डरा इस से पहले कि उन पर

عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّىْ لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٢ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

दर्दनाक अ़ज़ाब आए[2] उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं कि अल्लाह की बन्दगी करो[3]

وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝٣ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ

और उस से डरो[4] और मेरा हुक्म मानो वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा[5] और एक मुक़र्रर मीआ़द तक[6] तुम्हें

مُّسَمًّى ط إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٤ قَالَ وقف لازم

मोहलत देगा[7] बेशक अल्लाह का वा'दा जब आता है हटाया नहीं जाता किसी त़रह़ तुम जानते[8] अ़र्ज़ की[9]

رَبِّ إِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝٥ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا

ऐ मेरे रब मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया[10] तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना

فِرَارًا ۝٦ وَإِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا أَصَابِعَهُمْ فِىٓ اٰذَانِهِمْ

ही बढ़ा[11] और मैं ने जितनी बार उन्हें बुलाया[12] कि तू उन को बख़्शे उन्हों ने अपने कानों में उंगलियां दे लीं[13]

وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧ ثُمَّ إِنِّىْ دَعَوْتُهُمْ

और अपने कपड़े ओढ़ लिये[14] और हट (ज़िद) की[15] और बड़ा ग़ुरूर किया[16] फिर मैं ने उन्हें

1 : सूरए नूह़ मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, अठाईस 28 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो निनानवे 999 ह़र्फ़ हैं। 2 : दुन्या व आख़िरत का 3 : और उस का किसी को शरीक न बनाओ 4 : ना फ़रमानियों से बच कर ताकि वोह ग़ज़ब न फ़रमाए 5 : जो तुम से वक़्ते ईमान तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ न होंगे 6 : या'नी वक़्ते मौत तक 7 : कि इस दौरान में तुम पर अ़ज़ाब न फ़रमाएगा। 8 : उस को और ईमान ले आते। 9 : ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने 10 : ईमान व त़ाअ़त की त़रफ़ 11 : और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरग़ीब दी गई उतनी ही उन की सरकशी बढ़ती गई 12 : तुझ पर ईमान लाने की त़रफ़ 13 : ताकि मेरी दा'वत को न सुनें 14 : और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्यूं कि उन्हें दीने इलाही की त़रफ़ नसीह़त करने वाले को देखना भी गवारा न था। 15 : अपने कुफ़्र पर 16 : और मेरी दा'वत को क़ुबूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना।

www.dawateislami.net

جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّیْۤ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ

अ़लानिया बुलाया[17] फिर मैं ने उन से ब ए'लान भी कहा[18] और आहिस्ता ख़ुफ़्या भी कहा[19] तो मैं ने कहा

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो[20] बेशक वोह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है[21] तुम पर शर्राटे का मींह

مِّدْرَارًا ﴿١١﴾ وَّ یُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِیْنَ وَ یَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ

(मूस्लाधार बारिश) भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा[22] और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और

یَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ وَ قَدْ خَلَقَكُمْ

तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा[23] तुम्हें क्या हुवा अल्लाह से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की उम्मीद नहीं करते[24] हालां कि उस ने तुम्हें त़रह़

اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّ جَعَلَ

त़रह़ बनाया[25] क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने क्यूंकर सात आस्मान बनाए एक पर एक और उन में

الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَ اللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ

चांद को रोशनी किया[26] और सूरज को चराग़[27] और अल्लाह ने तुम्हें सब्ज़े की त़रह़

الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ فِیْهَا وَ یُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَ اللّٰهُ

ज़मीन से उगाया[28] फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा[29] और दोबारा निकालेगा[30] और अल्लाह

17 : बबांगे बुलन्द मह़फ़िलों में **18 :** और दा'वत बिल ए'लान की तकरार भी की **19 :** एक एक से और कोई दक़ीक़ा दा'वत का उठा न रखा। क़ौम ज़मानए दराज़ तक ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब ही करती रही तो अल्लाह तआ़ला ने उन से बारिश रोक दी और उन की औ़रतों को बांझ कर दिया, चालीस साल तक उन के माल हलाक हो गए, जानवर मर गए, जब येह ह़ाल हुवा तो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। **20 :** कुफ़्रो शिर्क से और ईमान ला कर मग़िफ़रत त़लब करो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपनी रह़मतों के दरवाज़े खोले क्यूं कि त़ाआ़त में मश्ग़ूल होना ख़ैरो बरकत और वुस्अ़ते रिज़्क़ का सबब होता है। **21 :** तौबा करने वालों को, अगर तुम ईमान लाए और तुम ने तौबा की तो वोह **22 :** माल व औलाद ब कसरत अ़त़ा फ़रमाएगा **23 :** ह़ज़रते ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक शख़्स आप के पास आया और उस ने क़िल्लते बारिश की शिकायत की, आप ने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। दूसरा आया उस ने तंगदस्ती की शिकायत की, उसे भी येही हुक्म फ़रमाया। फिर तीसरा आया उस ने क़िल्लते नस्ल की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया। फिर चौथा आया उस ने अपनी ज़मीन की क़िल्लते पैदावार की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया, रबीअ़ बिन सबीह़ जो ह़ाज़िर थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया : चन्द लोग आए क़िस्म क़िस्म की ह़ाजतें उन्हों ने पेश कीं आप ने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो तो आप ने येह आयत पढ़ी (इन ह़वाइज के लिये येह क़ुरआनी अ़मल है)। **24 :** इस त़रह़ की उस पर ईमान लाओ **25 :** कभी नुत़्फ़ा, कभी अ़लक़ा, कभी मुज़्ग़ा, यहां तक कि तुम्हारी ख़िल्क़त कामिल की, उस की आफ़रीनिश में नज़र करना उस की ख़ालिक़िय्यत व क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर ईमान लाने को वाजिब करता है। **26 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मरवी है कि आफ़्ताब व माहताब के चेहरे तो आस्मानों की त़रफ़ हैं और हर एक की पुश्त ज़मीन की त़रफ़ तो आस्मानों की लत़ाफ़त के बाइ़स इन की रोशनी तमाम आस्मानों में पहुंचती है अगर्चे चांद आस्माने दुन्या में है। **27 :** कि दुन्या को रोशन करता है और उस की रोशनी चांद के नूर से क़वी तर है और आफ़्ताब चौथे आस्मान में है। **28 :** तुम्हारे बाप ह़ज़रते आदम को उस से पैदा कर के **29 :** मौत के बा'द **30 :** उस से, रोज़े क़ियामत।

www.dawateislami.net

جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿۱۹﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۰﴾ قَالَ ع

ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना बनाया कि उस के वसीअ़ रास्तों में चलो नूह ने

نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَ اتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ یَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इन्हों ने मेरी ना फ़रमानी की[31] और[32] ऐसे के पीछे हो लिये जिसे उस के माल और औलाद ने नुक़्सान ही

خَسَارًا ﴿۲۱﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿۲۲﴾ وَ قَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَ لَا

बढ़ाया[33] और[34] बहुत बड़ा दाउं खेले[35] और बोले[36] हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को[37] और हरगिज़ न

تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّ لَا یَغُوْثَ وَ یَعُوْقَ وَ نَسْرًا ﴿۲۳﴾ وَ قَدْ اَضَلُّوْا

छोड़ना वद्द और न सुवाअ़ और यग़ूस और यऊ़क़ और नस्र को[38] और बेशक उन्हों ने बहुतों

كَثِیْرًا ۬ۚ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۴﴾ مِمَّا خَطِیْٓــٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا

को बहकाया[39] और तू ज़ालिमों को[40] ज़ियादा न करना मगर गुमराही[41] अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए[42]

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ۬ فَلَمْ یَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۵﴾ وَ قَالَ

फिर आग में दाख़िल किये गए[43] तो उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया[44] और नूह ने

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ﴿۲۶﴾ اِنَّكَ اِنْ

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ बेशक अगर

تَذَرْهُمْ یُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ لَا یَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿۲۷﴾ رَبِّ

तू इन्हें रहने देगा[45] तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और इन के औलाद होगी तो वोह भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक्र[46] ऐ मेरे रब

31 : और मैं ने जो ईमान व इस्तिग़्फ़ार का हुक्म दिया था उस को इन्हों ने न माना 32 : इन के अ़वाम, ग़ुरबा और छोटे लोग, सरकश रुअसा और अस्हाबे अम्वाल व औलाद के ताबेअ़ हुए 33 : और वोह ग़ुरूरे माल में मस्त हो कर कुफ़्रो तुग़यान में बढ़ता रहा 34 : वोह रुअसा 35 : कि उन्हों ने हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और उन्हें और उन के मुत्तबिईन को ईज़ाएं पहुंचाईं 36 : रुअसाए कुफ़्फ़ार अपने अ़वाम से 37 : या'नी उन की इबादत तर्क न करना 38 : येह उन के बुतों के नाम हैं जिन्हें वोह पूजते थे, बुत तो उन के बहुत थे मगर येह पांच उन के नज़्दीक बड़ी अ़ज़्मत वाले थे, वद्द तो मर्द की सूरत पर था और सुवाअ़ औरत की सूरत पर और यग़ूस शेर की शक्ल और यऊ़क़ घोड़े की और नस्र करगस (गिध) की, येह बुत क़ौमे नूह से मुन्तक़िल हो कर अ़रब में पहुंचे और मुश्रिकीन के क़बाइल से एक एक ने एक एक को अपने लिये ख़ास कर लिया। 39 : या'नी येह बुत बहुत से लोगों के लिये गुमराही का सबब हुए या येह मा'ना हैं कि रुअसाए क़ौम ने बुतों की इबादत का हुक्म कर के बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया। 40 : जो बुतों को पूजते हैं 41 : येह हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ है जब उन्हें वह्य से मा'लूम हुवा कि जो लोग ईमान ला चुके क़ौम में उन के सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आप ने येह दुआ़ की। 42 : तूफ़ान में 43 : बा'द ग़र्क़ होने के 44 : जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता। 45 : और हलाक न फ़रमाएगा 46 : येह हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को वह्य से मा'लूम हो चुका था और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने और अपने वालिदैन और मोमिनीन व मोमिनात के लिये दुआ़ फ़रमाई।

www.dawateislami.net

اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَ

मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[47] और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और

الْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾ ع

النصف

सब मुसलमान औरतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही[48]

اٰیاتها ٢٨ ۔ (٧٢) سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (٤٠) ۔ رکوعاتها ٢

सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا

तुम फ़रमाओ[2] मुझे वह्य हुई कि कुछ जिन्नों ने[3] मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना[4] तो बोले[5] हम ने एक अ़जीब

عَجَبًا ﴿١﴾ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ﴿٢﴾ وَ

कुरआन सुना[6] कि भलाई की राह बताता है[7] तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे और

أَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ

येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औ़रत इख़्तियार की और न बच्चा[8] और येह कि हम में का

سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ

बे वुक़ूफ़ **अल्लाह** पर बढ़ कर बात कहता था[9] और येह कि हमें ख़याल था कि हरगिज़ जिन्न और आदमी

عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ

अल्लाह पर झूट न बांधेंगे[10] और येह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह

47 : कि वोह दोनों मोमिन थे 48 : **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उन की क़ौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया। 1 : सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, अठाईस 28 आयतें, दो सो पचास 250 कलिमे, आठ सो सत्तर 870 ह़र्फ़ हैं। 2 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 3 : नसीबैन के जिन की ता'दाद मुफ़स्सिरीन ने नव 9 बयान की। 4 : नमाज़े फ़ज्र में ब मक़ामे नख़्ला मक्कए मुकर्रमा व त़ाइफ़ के दरमियान 5 : वोह जिन्न अपनी क़ौम में जा कर 6 : जो अपनी फ़साह़तो बलाग़त व ख़ूबिये मज़ामीन व उ़लुव्वे मा'ना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक़ का कोई कलाम उस से कोई निस्बत नहीं रखता और उस की येह शान है 7 : या'नी तौह़ीद व ईमान की। 8 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे जिन्नो इन्स कहते हैं। 9 : झूट बोलता था बे अदबी करता था कि उस के लिये शरीक व औलाद और बीबी बताता था। 10 : और उस पर इफ़्तिरा न करेंगे, इस लिये हम उन की बातों की तस्दीक़ करते थे जो कुछ वोह शाने इलाही में कहते थे और ख़ुदावन्दे आ़लम की त़रफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे, यहां तक कि कुरआने करीम की हिदायत से हमें उन का किज़्ब व बोहतान ज़ाहिर हो गया।

www.dawateislami.net

الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّ اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ

लेते थे[11] तो इस से और भी उन का तकब्बुर बढ़ा   और येह कि उन्हों ने[12] गुमान किया जैसा तुम्हें गुमान है[13] कि अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल

اَحَدًا ۙ﴿۷﴾ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا

न भेजेगा   और येह कि हम ने आस्मान को छुवा[14] तो उसे पाया कि[15] सख़्त पहरे और आग की चिंगारियों से

وَّ شُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ

भर दिया गया है[16]   और येह कि हम[17] पहले आस्मान में सुनने के लिये कुछ मौक़ओं पर बैठा करते थे   फिर अब[18] जो कोई सुने

يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي

वोह अपनी ताक में आग का लूका (लपट) पाए[19]   और येह कि हमें नहीं मा'लूम कि[20] ज़मीन वालों से कोई बुराई का

الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا

इरादा फ़रमाया गया है या उन के रब ने कोई भलाई चाही है   और येह कि हम में[21] कुछ नेक हैं[22] और कुछ

دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي

दूसरी त़रह़ के हैं   हम कई राहें फटे हुए हैं[23]   और येह कि हम को यक़ीन हुवा कि हरगिज़ ज़मीन में अल्लाह के क़ाबू

الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ

से न निकल सकेंगे और न भाग कर उस के क़ब्ज़े से बाहर हों   और येह कि हम ने जब हिदायत सुनी[24] उस पर ईमान लाए   तो जो

يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّ لَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا

अपने रब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का ख़ौफ़[25] न ज़ियादती का[26]   और येह कि हम में कुछ मुसल्मान हैं और कुछ

الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ

ज़ालिम[27] तो जो इस्लाम लाए उन्हों ने भलाई सोची[28] और रहे ज़ालिम[29]

11 : जब सफ़र में किसी ख़ौफ़नाक मक़ाम पर उतरते तो कहते हम इस जगह के सरदार की पनाह चाहते हैं यहां के शरीरों से 12 : या'नी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने 13 : ऐ जिन्नात ! 14 : या'नी अहले आस्मान का कलाम सुनने के लिये आस्माने दुन्या पर जाना चाहा 15 : फ़िरिश्तों के 16 : ताकि जिन्नात को अहले आस्मान की बातें सुनने के लिये आस्मान तक पहुंचने से रोका जाए 17 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत से 18 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत के बा'द 19 : जिस से उस को मारा जाए 20 : हमारी इस बन्दिश और रोक से 21 : क़ुरआने करीम सुनने के बा'द 22 : मोमिन, मुख़्लिस, मुत्तक़ी व अबरार 23 : फ़िर्क़े फ़िर्क़े मुख़्तलिफ़ 24 : या'नी क़ुरआने पाक 25 : या'नी नेकियों या सवाब की कमी का 26 : बदियों की 27 : ह़क़ से फिरे हुए काफ़िर 28 : और हिदायत व राहे ह़क़ को अपना मक़्सूद ठहराया । 29 : काफ़िर राहे ह़क़ से फिरने वाले ।

www.dawateislami.net

فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّ اَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ

वोह जहन्नम के ईंधन हुए[30] और फ़रमाओ कि मुझे येह वह्य हुई कि अगर वोह[31] राह पर सीधे रहते[32] तो ज़रूर हम उन्हें

مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ

वाफ़िर पानी देते[33] कि इस पर उन्हें जांचें[34] और जो अपने रब की याद से मुंह फेरे[35] वोह उसे चढ़ते

عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّ اَنَّهٗ

अ़ज़ाब में डालेगा[36] और येह कि मस्जिदें[37] **अल्लाह** ही की हैं तो **अल्लाह** के साथ किसी की बन्दगी न करो[38] और येह कि

ع ١٩ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ

जब **अल्लाह** का बन्दा[39] उस की बन्दगी करने खड़ा हुवा[40] तो क़रीब था कि वोह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जाएं[41] तुम फ़रमाओ मैं तो

اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا

अपने रब ही की बन्दगी करता हूं और किसी को उस का शरीक नहीं ठहराता तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारे किसी बुरे भले का

رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ

मालिक नहीं तुम फ़रमाओ हरगिज़ मुझे **अल्लाह** से कोई न बचाएगा[42] और हरगिज़ उस के सिवा कोई पनाह न

مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

पाऊंगा मगर **अल्लाह** के पयाम पहुंचाना और उस की रिसालतें[43] और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म न माने[44]

فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ

तो बेशक उन के लिये जहन्नम की आग है जिस में हमेशा हमेशा रहें यहां तक कि जब देखेंगे[45] जो वा'दा दिया जाता है

30 : इस आयत से साबित होता है कि काफ़िर जिन्न आतशे जहन्नम के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किये जाएंगे। **31 :** या'नी इन्सान **32 :** या'नी दीने हक़ व त़रीक़ए इस्लाम पर **33 :** कसीर, मुराद वुस्अ़ते रिज़्क़ है और येह वाक़िआ़ उस वक़्त का है जब कि सात बरस तक वोह बारिश से महरूम कर दिये गए थे, मा'ना येह हैं कि अगर वोह लोग ईमान लाते तो हम दुन्या में उन पर रिज़्क़ वसीअ़ करते और उन्हें कसीर पानी और फ़राख़िये ऐ़श इनायत फ़रमाते **34 :** कि वोह कैसी शुक्र गुज़ारी करते हैं। **35 :** क़ुरआन से या तौह़ीद या इबादत से **36 :** जिस की शिद्दत दम बदम बढ़ेगी। **37 :** या'नी वोह मकान जो नमाज़ के लिये बनाए गए **38 :** जैसा कि यहूदो नसारा का त़रीक़ा था कि वोह अपने गिर्जाओं और इबादत ख़ानों में शिर्क करते थे। **39 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم बत़्ने नख़्ला में वक़्ते फ़ज्र **40 :** या'नी नमाज़ पढ़ने **41 :** क्यूं कि उन्हें नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इबादत व तिलावत और आप के अस्ह़ाब की इक़्तिदा निहायत अ़जीब और पसन्दीदा मा'लूम हुई, इस से पहले उन्हों ने कभी ऐसा मन्ज़र न देखा था और ऐसा बे मिस्ल कलाम न सुना था। **42 :** जैसा कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया था। "فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ" (तो मुझे उस से कौन बचाएगा अगर मैं उस की ना फ़रमानी करूं) **43 :** येह मेरा फ़र्ज़ है जिस को अन्जाम देता हूं **44 :** और उन पर ईमान न लाए **45 :** वोह अ़ज़ाब।

www.dawateislami.net

فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِیْۤ

तो अब जान जाएंगे कि किस का मददगार कमज़ोर किस की गिनती कम[46] तुम फ़रमाओ मैं नहीं जानता

اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا

आया नज़्दीक है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है या मेरा रब उसे कुछ वक़्फ़ा देगा[47] ग़ैब का जानने वाला तो

یُظْهِرُ عَلٰى غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ یَسْلُكُ

अपने ग़ैब पर[48] किसी को मुसल्लत़ नहीं करता[49] सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के[50] कि उन के

مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿۲۷﴾ لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا

आगे पीछे पहरा मुक़र्रर कर देता है[51] ताकि देख ले कि उन्हों ने अपने रब के

رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَیْهِمْ وَ اَحْصٰى كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾ ع ۲

पयाम पहुंचा दिये और जो कुछ उन के पास सब उस के इ़ल्म में है और उस ने हर चीज़ की गिनती शुमार कर रखी है[52]

اٰیاتها ۲۰ | (۷۳) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّیَّةٌ (۳) | رکوعاتها ۲

सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में बीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿۱﴾ قُمِ الَّیْلَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ

ऐ झुरमट मारने वाले[2] रात में क़ियाम फ़रमा[3] सिवा कुछ रात के[4] आधी रात या इस से कुछ

46 : काफ़िर की या मोमिन की या'नी उस रोज़ काफ़िर का कोई मददगार न होगा और मोमिन की मदद अल्लाह तआ़ला और उस के अम्बिया और मलाएका सब फ़रमाएंगे। **शाने नुज़ूल :** नज़्र बिन ह़ारिस ने कहा था कि येह वा'दा कब पूरा होगा ? उस के जवाब में अगली आयत नाज़िल हुई 47 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब का इ़ल्म ग़ैब है जिसे अल्लाह तआ़ला ही जाने 48 : या'नी अपने ग़ैबे ख़ास पर जिस के साथ वोह मुन्फ़रिद है। (خازن وبیضاوی وغیرہ) 49 : या'नी इत्त़िलाए कामिल नहीं देता जिस से ह़क़ाइक़ का कश्फ़े ताम आ'ला दरजए यक़ीन के साथ ह़ासिल हो 50 : तो उन्हें ग़ुयूब पर मुसल्लत़ करता है और इत्त़िलाए कामिल और कश्फ़े ताम अ़त़ा फ़रमाता है और येह इ़ल्मे ग़ैब उन के लिये मो'जिज़ा होता है, औलिया को भी अगर्चे ग़ुयूब पर इत्त़िलाअ़ दी जाती है मगर अम्बिया का इ़ल्म ब ए'तिबारे कश्फ़ व इन्जिला औलिया के इ़ल्म से बहुत बुलन्दो बाला व अर्फ़ओ आ'ला है और औलिया के उ़लूम अम्बिया ही के वसात़त और उन्ही के फ़ैज़ से होते हैं। मो'तज़िला एक गुमराह फ़िर्क़ा है, वोह औलिया के लिये इ़ल्मे ग़ैब का क़ाइल नहीं, उस का ख़याल बात़िल और अह़ादीसे कसीरा के ख़िलाफ़ है और इस आयत से उन का तमस्सुक (दलील पकड़ना) सह़ीह़ नहीं, बयाने मज़्कूरा बाला में इस का इशारा कर दिया गया है। सय्यिदुर्रुसुल ख़ातमुल अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मुर्तज़ा रसूलों में सब से आ'ला हैं अल्लाह तआ़ला ने आप को तमाम अश्या के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए जैसा कि सिह़ाह़ की मो'तबर अह़ादीस से साबित है और येह आयत हुज़ूर के और तमाम मुर्तज़ा रसूलों के लिये ग़ैब का इ़ल्म साबित करती है। 51 : फ़िरिश्तों को जो उन की ह़िफ़ाज़त करते हैं 52 : इस से साबित हुवा कि जमीअ़ अश्या मह़दूद व मह़सूर व मुतनाही हैं। 1 : सूरए मुज़्ज़म्मिल मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बीस 20 आयतें, दो सो पचासी 285 कलिमे, आठ सो अड़तीस 838 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी

www.dawateislami.net

قَلِيْلًا ﴿۳﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿۴﴾ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ

कम करो या इस पर कुछ बढ़ाओ[5] और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो[6] बेशक अन्क़रीब हम तुम पर एक

قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿۵﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿۶﴾ اِنَّ

भारी बात डालेंगे[7] बेशक रात का उठना[8] वोह ज़ियादा दबाव डालता है[9] और बात ख़ूब सीधी निकलती है[10] बेशक

لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿۷﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ

दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं[11] और अपने रब का नाम याद करो[12] और सब से टूट कर

تَبْتِيْلًا ﴿۸﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿۹﴾

उसी के हो रहो[13] वोह पूरब का रब और पच्छिम का रब उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं तो तुम उसी को अपना कारसाज़ बनाओ[14]

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿۱۰﴾ وَذَرْنِيْ وَ

और काफ़िरों की बातों पर सब्र फ़रमाओ और उन्हें अच्छी त़रह छोड़ दो[15] और मुझ पर छोड़ो

الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿۱۱﴾ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿۱۲﴾

उन झुटलाने वाले मालदारों को और उन्हें थोड़ी मोहलत दो[16] बेशक हमारे पास[17] भारी बेड़ियां हैं और भड़क्ती आग

अपने कपड़ों से लिपटने वाले, इस के **शाने नुज़ूल** में कई क़ौल हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि इब्तिदाए ज़मानए वह्य में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ख़ौफ़ से अपने कपड़ों में लिपट जाते थे ऐसी ह़ालत में आप को ह़ज़रते जिब्रील ने "يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ" कह कर निदा की। एक क़ौल येह है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم चादर शरीफ़ में लिपटे हुए आराम फ़रमा रहे थे इस ह़ालत में आप को निदा की गई "يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ" बहर ह़ाल येह निदा बताती है कि मह़बूब की हर अदा प्यारी है और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह हैं कि रिदाए नुबुव्वत व चादरे रिसालत के ह़ामिल व लाइक़। **3 :** नमाज़ और इ़बादत के साथ **4 :** या'नी थोड़ा ह़िस्सा आराम के लिये हो बाक़ी शब इ़बादत में गुज़ारिये, अब वोह बाक़ी कितनी हो उस की तफ़्सील आगे इर्शाद फ़रमाई जाती है **5 :** मुराद येह है कि आप को इख़्तियार दिया गया है कि ख़्वाह क़ियाम निस्फ़ शब से कम हो या निस्फ़ शब या इस से ज़ियादा हो। (بیضاوی) मुराद इस क़ियाम से तहज्जुद है जो इब्तिदाए इस्लाम में वाजिब व बक़ौले फ़र्ज़ था, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब शब को क़ियाम फ़रमाते और लोग न जानते कि तिहाई रात या आधी रात या दो तिहाई रात कब हुई तो वोह तमाम शब क़ियाम में रहते और सुब्ह़ तक नमाज़ें पढ़ते, इस अन्देशे से कि क़ियाम क़दरे वाजिब से कम न हो जाए, यहां तक कि उन ह़ज़रात के पाउं सूज जाते थे, फिर येह हुक्म एक साल के बा'द मन्सूख़ हो गया और इस का नासिख़ भी इसी सूरत में है "فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ" **6 :** रिआ़यते वुक़ूफ़ और अदाए मख़ारिज के साथ और ह़ुरूफ़ को मख़ारिज के साथ ता ब इम्कान सह़ीह़ अदा करना नमाज़ में फ़र्ज़ है। **7 :** या'नी निहायत जलील व बा अ़ज़मत, मुराद इस से क़ुरआने मजीद है, येह भी कहा गया है कि मा'ना येह हैं कि हम आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाएंगे जिस में अवामिर नवाही और तकालीफ़े शाक़्क़ा हैं जो मुकल्लफ़ीन पर भारी होंगी। **8 :** सोने के बा'द **9 :** ब निस्बत दिन की नमाज़ के **10 :** क्यूं कि वोह वक़्त सुकून व इत़्मीनान का है शोरो शग़ब से अम्न होती है, इख़्लास ताम व कामिल होता है, रिया व नुमाइश का मौक़अ़ नहीं होता। **11 :** शब का वक़्त इ़बादत के लिये ख़ूब फ़राग़त का है **12 :** रात व दिन के जुम्ला अवक़ात में तस्बीह़, तह्लील, नमाज़, तिलावते क़ुरआन शरीफ़, दर्से इ़ल्म वग़ैरा के साथ और येह भी कहा गया है कि इस के मा'ना येह हैं कि अपनी क़िराअत की इब्तिदा में "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ो। **13 :** या'नी इ़बादत में इन्क़िताअ़ की सिफ़त हो कि दिल **अल्लाह** तआ़ला के सिवा और किसी की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो, सब अ़लाक़ा क़त्अ़ (तअ़ल्लुक़ ख़त्म) हो जाएं, उसी की त़रफ़ तवज्जोह रहे। **14 :** और अपने काम उसी की त़रफ़ तफ़्वीज़ करो **15 :** "وَهٰذَا مَنْسُوْخٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" (और येह हुक्म जिहाद की आयत से मन्सूख़ हो चुका है) **16 :** बद्र तक या रोज़े क़ियामत तक **17 :** आख़िरत में।

www.dawateislami.net

وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۳﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ الْجِبَالُ

और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब[18] जिस दिन थरथराएंगे ज़मीन और पहाड़[19]

وَ كَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿۱۴﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۬ۙ شَاهِدًا

और पहाड़ हो जाएंगे रेते का टीला बहता हुवा बेशक हम ने तुम्हारी त़रफ़ एक रसूल भेजे[20] कि तुम पर

عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ؕ﴿۱۵﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ

हाज़िर नाज़िर हैं[21] जैसे हम ने फ़िरऔ़न की त़रफ़ रसूल भेजे[22] तो फ़िरऔ़न ने उस रसूल का

الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿۱۶﴾ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا

हुक्म न माना तो हम ने उसे सख़्त गिरिफ़्त से पकड़ा फिर कैसे बचोगे[23] अगर[24] कुफ़्र करो उस दिन से[25]

يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ﴿ۗ۱۷﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿۱۸﴾

जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा[26] आस्मान उस के सदमे से फट जाएगा **अल्लाह** का वा'दा हो कर रहना

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۱۹﴾ع اِنَّ رَبَّكَ ع

बेशक येह नसीह़त है तो जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह ले[27] बेशक तुम्हारा रब

يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ وَ طَآىِٕفَةٌ مِّنَ

जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के क़रीब कभी आधी रात कभी तिहाई और एक जमाअ़त

الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَ اللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ

तुम्हारे साथ वाली[28] और **अल्लाह** रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है उसे मा'लूम है कि ऐ मुसल्मानो तुम से रात का शुमार न हो सकेगा[29]

فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

तो उस ने अपनी मेहर से तुम पर रुजूअ़ फ़रमाई अब क़ुरआन में से जितना तुम पर आसान हो उतना पढ़ो[30] उसे मा'लूम है कि अ़न्क़रीब कुछ तुम में

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ

बीमार होंगे और कुछ ज़मीन में सफ़र करेंगे **अल्लाह** का फ़ज़्ल तलाश

18 : उन के लिये जिन्हों ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब की 19 : वोह क़ियामत का दिन होगा । 20 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 21 : मोमिन के ईमान और काफ़िर के कुफ़्र को जानते हैं 22 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام 23 : अ़ज़ाबे इलाही से 24 : दुन्या में 25 : या'नी क़ियामत के दिन जो निहायत होलनाक होगा 26 : अपने शिद्दते दहशत से 27 : ईमान व त़ाअ़त इख़्तियार कर के 28 : तुम्हारे अस्ह़ाब की, वोह भी क़ियामे लैल में आप का इत्तिबाअ़ करते हैं । 29 : और ज़ब्त़े अवक़ात न कर सकोगे 30 : या'नी शब का क़ियाम मुआ़फ़

www.dawateislami.net

اللّٰهِ ۙ وَ اٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَ

करने[31] और कुछ अल्लाह की राह में लड़ते होंगे[32] तो जितना क़ुरआन मुयस्सर हो पढ़ो[33] और

اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَ مَا

नमाज़ क़ाइम रखो[34] और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो[35] और

تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ؕ

अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे अल्लाह के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे

ع ٢ وَ اسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۠ ﴿٢٠﴾

और अल्लाह से बख़्शिश मांगो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है

اٰياتها ٥٦ | ٧٤ سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ ٤ | رکوعاتها ٢

सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में छप्पन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۙ ﴿١﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ۪ ﴿٢﴾ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ ۪ ﴿٣﴾ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۪ ﴿٤﴾

ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले[2] खड़े हो जाओ[3] फिर डर सुनाओ[4] और अपने रब ही की बड़ाई बोलो[5] और अपने कपड़े पाक रखो[6]

फ़रमाया। **मस्अला :** इस आयत से नमाज़ में मुत्लक़ क़िराअत की फ़र्ज़िय्यत साबित हुई। **मस्अला :** अक़्ल दरजए क़िराअते मफ़रूज़ एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें हैं। **31 :** या'नी तिजारत या तलबे इल्म के लिये **32 :** इन सब पर रात का क़ियाम दुश्वार होगा **33 :** इस से पहला हुक्म मन्सूख़ किया गया और येह भी पन्जगाना नमाज़ों से मन्सूख़ हो गया। **34 :** यहां नमाज़ से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद हैं। **35 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है सिलए रेहमी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी तरह माले हलाल से ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाए। **1 :** सूरए मुद्दस्सिर मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, छप्पन 56 आयतें, दो सो पचपन 255 कलिमे, एक हज़ार दस 1010 हर्फ़ हैं। **2 :** येह ख़िताब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को है। **शाने नुज़ूल :** हज़रते जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : मैं कोहे हिरा पर था कि मुझे निदा की गई "يَا مُحَمَّدُ اِنَّکَ رَسُوْلُ اللّٰہِ" मैं ने अपने दाएं बाएं देखा कुछ न पाया, ऊपर देखा एक शख़्स आस्मान ज़मीन के दरमियान बैठा है (या'नी वोही फ़िरिश्ता जिस ने निदा की थी) येह देख कर मुझ पर रो'ब हुवा और मैं ख़दीजा के पास आया और मैं ने कहा कि मुझे बाला पोश उढ़ाओ, उन्हों ने उढ़ा दिया तो जिब्रील आए और उन्हों ने कहा : "يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ" **3 :** अपनी ख़्वाब गाह से **4 :** क़ौम को अ़ज़ाबे इलाही का ईमान न लाने पर **5 :** जब येह आयत नाज़िल हुई तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने अल्लाहु अक्बर फ़रमाया, हज़रते ख़दीजा ने भी हुज़ूर की तक्बीर सुन कर तक्बीर कही और ख़ुश हुईं और उन्हें यक़ीन हुवा कि वह्य आई। **6 :** हर तरह की नजासत से क्यूं कि नमाज़ के लिये तहारत ज़रूरी है और नमाज़ के सिवा और हालतों में भी कपड़े पाक रखना बेहतर है या येह मा'ना हैं कि अपने कपड़े कोताह कीजिये ऐसे दराज़ न हों जैसी कि अ़रबों की आदत है क्यूं कि बहुत ज़ियादा दराज़ होने से चलने फिरने में नजिस होने का एहतिमाल रहता है।

www.dawateislami.net

وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۪ۙ(۵) وَ لَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۪ۙ(۶) وَ لِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ؕ(۷) فَاِذَا نُقِرَ

और बुतों से दूर रहो और ज़ियादा लेने की निय्यत से किसी पर एह़सान न करो[7] और अपने रब के लिये सब्र किये रहो[8] फिर जब सूर

فِی النَّاقُوْرِ ۙ(۸) فَذٰلِكَ یَوْمَىٕذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ۙ(۹) عَلَى الْكٰفِرِیْنَ غَیْرُ

फूंका जाएगा[9] तो वोह दिन कर्रा (सख़्त) दिन है काफ़िरों पर आसान

یَسِیْرٍ (۱۰) ذَرْنِیْ وَ مَنْ خَلَقْتُ وَحِیْدًا ۙ(۱۱) وَّ جَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ(۱۲)

नहीं[10] उसे मुझ पर छोड़ जिसे मैं ने अकेला पैदा किया[11] और उसे वसीअ़ माल दिया[12]

وَّ بَنِیْنَ شُهُوْدًا ۙ(۱۳) وَّ مَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِیْدًا ۙ(۱۴) ثُمَّ یَطْمَعُ اَنْ اَزِیْدَ ۗ(۱۵)

और बेटे दिये सामने ह़ाज़िर रहते[13] और मैं ने उस के लिये त़रह़ त़रह़ की तय्यारियां कीं[14] फिर येह त़मअ़ करता है कि मैं और ज़ियादा दूं[15]

كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰیٰتِنَا عَنِیْدًا ؕ(۱۶) سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ(۱۷) اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ

हरगिज़ नहीं[16] वोह तो मेरी आयतों से इ़नाद रखता है क़रीब है कि मैं उसे आग के पहाड़ सऊ़द पर चढ़ाऊं बेशक वोह सोचा और

قَدَّرَ ۙ(۱۸) فَقُتِلَ كَیْفَ قَدَّرَ ۙ(۱۹) ثُمَّ قُتِلَ كَیْفَ قَدَّرَ ۙ(۲۰) ثُمَّ نَظَرَ ۙ(۲۱)

दिल में कुछ बात ठहराई तो उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर उस पर ला'नत हो कैसी ठहराई फिर नज़र उठा कर देखा

ثُمَّ عَبَسَ وَ بَسَرَ ۙ(۲۲) ثُمَّ اَدْبَرَ وَ اسْتَكْبَرَ ۙ(۲۳) فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ

फिर तेवरी चढ़ाई (माथे पर बल डाले) और मुंह बिगाड़ा फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया फिर बोला येह तो वोही जादू है अगलों

یُّؤْثَرُ ۙ(۲۴) اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ؕ(۲۵) سَاُصْلِیْهِ سَقَرَ (۲۶) وَ مَاۤ

से सीखा येह नहीं मगर आदमी का कलाम[17] कोई दम जाता है कि मैं उसे दोज़ख़ में धंसाता हूं और

7 : या'नी जैसे कि दुन्या में हदिये और न्योते (शादी वग़ैरा में रक़म या दूसरे तह़ाइफ़) देने का दस्तूर है कि देने वाला येह ख़याल करता है कि जिस को मैं ने दिया है वोह इस से ज़ियादा मुझे दे देगा, इस क़िस्म के न्योते और हदिय्ये शरअ़न जाइज़ हैं मगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को इस से मन्अ़ फ़रमाया गया क्यूं कि शाने नुबुव्वत बहुत अर्फ़अ़ो आ'ला है और इस मन्सबे आ़ली के लाइक़ येही है कि जिस को जो दें वोह मह़ज़ करम हो, उस से लेने या नफ़्अ़ ह़ासिल करने की निय्यत न हो। **8 :** अवामिर व नवाही और उन ईज़ाओं पर जो दीन की ख़ात़िर आप को बरदाश्त करनी पड़ीं। **9 :** मुराद इस से बक़ौले सह़ीह़ नफ़्ख़ए सानिया है। **10 :** इस में इशारा है कि वोह दिन ब फ़ज़्ले इलाही मोमिनीन पर आसान होगा। **11 :** उस की मां के पेट में बिग़ैर माल व औलाद के। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई, वोह अपनी क़ौम में वह़ीद के लक़ब से मुलक़्क़ब था। **12 :** खेतियां और कसीर मवेशी और तिजारतें। मुजाहिद से मन्क़ूल है कि वोह एक लाख दीनार नक़्द की ह़ैसिय्यत रखता था और त़ाइफ़ में इस का ऐसा बड़ा बाग़ था जो साल के किसी वक़्त फलों से ख़ाली न होता था। **13 :** जिन की ता'दाद दस थी और चूं कि मालदार थे उन्हें कस्बे मआ़श के लिये सफ़र की ह़ाजत न थी, इस लिये सब बाप के सामने रहते, उन में से तीन मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए ख़ालिद और हिशाम और वलीद इब्ने वलीद। **14 :** जाह भी दिया और रियासत भी अ़त़ा फ़रमाई, ऐश भी दिया और तूले उ़म्र भी **15 :** बा वुजूद नाशुक्री के **16 :** येह न होगा, चुनान्चे, इस आयत के नुज़ूल के बा'द वलीद के माल व औलाद व जाह में कमी शुरूअ़ हुई यहां तक कि हलाक हो गया। **17** **शाने नुज़ूल :** जब ''حٰمٓ تَنْزِیْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ'' नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिद में तिलावत फ़रमाई, वलीद ने सुना और उस क़ौम की मजलिस में आ कर उस ने कहा

www.dawateislami.net

اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾ عَلَيْهَا

तुम ने क्या जाना दोज़ख़ क्या है न छोड़े न लगी रखे[18] आदमी की खाल उतार लेती है[19] उस पर

تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۪ وَّمَا جَعَلْنَا

उन्नीस दारोग़ा हैं[20] और हम ने दोज़ख़ के दारोग़ा न किये मगर फ़िरिश्ते और हम ने

عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ

उन की येह गिनती न रखी मगर काफ़िरों की जांच को[21] इस लिये कि किताब वालों को यक़ीन आए[22] और

يَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

ईमान वालों का ईमान बढ़े[23] और किताब वालों और मुसल्मानों को कोई

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ

शक न रहे और दिल के रोगी[24] और काफ़िर कहें

مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ

इस अचम्बे (तअ़ज्जुब) की बात में अल्लाह का क्या मत़लब है यूंही अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहे और हिदायत फ़रमाता है

कि ख़ुदा की क़सम मैं ने मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अभी एक कलाम सुना न वोह आदमी का न जिन्न का, बख़ुदा उस में अ़जीब शीरीनी और ताज़गी और फ़वाइद व दिलकशी है, वोह कलाम सब पर ग़ालिब रहेगा। क़ुरैश को उस की इन बातों से बहुत ग़म हुवा और उन में मश्हूर हो गया कि वलीद आबाई दीन से बरगश्ता हो गया (फिर गया), अबू जह्ल ने वलीद को हमवार करने का ज़िम्मा लिया और उस के पास आ कर बहुत ग़मज़दा सूरत बना कर बैठ गया, वलीद ने कहा : क्या ग़म है ? अबू जह्ल ने कहा : ग़म कैसे न हो तू बूढ़ा हो गया है, क़ुरैश तेरे ख़र्च के लिये रुपिया जम्अ़ कर देंगे, उन्हें ख़याल है कि तू ने मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के कलाम की ता'रीफ़ इस लिये की है कि तुझे उन के दस्तर ख़्वान का बचा खाना मिल जाए, इस पर उसे बहुत त़ैश आया और कहने लगा कि क्या क़ुरैश को मेरे मालो दौलत का ह़ाल मा'लूम नहीं है और क्या मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) और उन के अस्ह़ाब ने कभी सेर हो कर खाना भी खाया है ? उन के दस्तर ख़्वान पर क्या बचेगा ? फिर अबू जह्ल के साथ उठा और क़ौम में आ कर कहने लगा तुम्हारा ख़याल है कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) मज्नून हैं क्या तुम ने उन में कभी दीवानगी की कोई बात देखी ? सब ने कहा : हरगिज़ नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें काहिन समझते हो, क्या तुम ने उन्हें कभी कहानत करते देखा है ? सब ने कहा : नहीं, कहा : तुम उन्हें शाइ़र गुमान करते हो, क्या तुम ने कभी उन्हें शे'र कहते पाया ? सब ने कहा : नहीं, कहने लगा : तुम उन्हें कज़्ज़ाब कहते हो, क्या तुम्हारे तजरिबे में कभी उन्हों ने झूट बोला ? सब ने कहा : नहीं और क़ुरैश में आप का सिद्क़ व दियानत ऐसा मश्हूर था कि क़ुरैश आप को अमीन कहा करते थे, येह सुन कर क़ुरैश ने कहा फिर बात क्या है ? तो वलीद सोच कर बोला कि बात येह है कि वोह जादूगर हैं, तुम ने देखा होगा कि उन की बदौलत रिश्तेदार रिश्तेदार से बाप बेटे से जुदा हो जाते हैं, बस येही जादूगर का काम है और जो क़ुरआन वोह पढ़ते हैं वोह दिल में असर कर जाता है इस का बाइ़स येह है कि वोह जादू है, इस आयते करीमा में इस का ज़िक्र फ़रमाया गया। **18 :** या'नी न किसी मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब को छोड़े न किसी के जिस्म पर गोश्त पोस्त खाल लगी रहने दे बल्कि मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब को गिरिफ़्तार करे और गिरिफ़्तार को जलाए और जब जल जाएं फिर वैसे ही कर दिये जाएं। **19 :** जला कर। **20 :** फ़िरिश्ते। एक मालिक और अठ्ठारह उन के साथी। **21 :** कि ह़िक्मते इलाही पर ए'तिमाद न कर के इस ता'दाद में कलाम करें और कहें उन्नीस क्यूं हुए ? **22 :** या'नी यहूद को येह ता'दाद अपनी किताबों के मुवाफ़िक़ देख कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के सिद्क़ का यक़ीन ह़ासिल हो **23 :** या'नी अहले किताब में से जो ईमान लाए उन का ए'तिक़ाद सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ और ज़ियादा हो और जान लें कि हुज़ूर जो कुछ फ़रमाते हैं वोह वह़्ये इलाही है इस लिये कुतुबे साबिक़ा से मुत़ाबिक़ होती है **24 :** जिन के दिलों में निफ़ाक़ है।

www.dawateislami.net

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى

जिसे चाहे और तुम्हारे रब के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता और वोह[25] तो नहीं मगर आदमी

لِلْبَشَرِ ٣١ع كَلَّا وَالْقَمَرِ ٣٢ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ٣٣ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ٣٤ ع ١٥

के लिये नसीहत हां हां चांद की क़सम और रात की जब पीठ फेरे और सुब्ह की जब उजाला डाले[26]

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ٣٥ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ٣٦ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ

बेशक दोज़ख़ बहुत बड़ी चीज़ों में की एक है आदमियों को डराओ उसे जो तुम में चाहे कि

يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ٣٧ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ٣٨ اِلَّآ اَصْحٰبَ

आगे आए[27] या पीछे रहे[28] हर जान अपनी करनी में गिरवी है मगर दहनी

الْيَمِيْنِ ٣٩ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ٤٠ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ٤١ مَا سَلَكَكُمْ مع

तरफ़ वाले[29] बाग़ों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दोज़ख़

فِيْ سَقَرَ ٤٢ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ٤٣ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ٤٤

में ले गई वोह बोले हम[30] नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे[31]

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ٤٥ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ٤٦

और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे और हम इन्साफ़ के दिन को[32] झुटलाते रहे

حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ٤٧ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ٤٨ فَمَا لَهُمْ

यहां तक कि हमें मौत आई तो उन्हें सिफ़ारिशियों की सिफ़ारिश काम न देगी[33] तो उन्हें क्या हुवा

عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ٤٩ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ٥٠ فَرَّتْ مِنْ

नसीहत से मुंह फेरते हैं[34] गोया वोह भड़के हुए गधे हों कि शेर से

قَسْوَرَةٍ ٥١ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ٥٢

भागे हों[35] बल्कि उन में का हर शख़्स चाहता है कि खुले सहीफ़े उस के हाथ में दे दिये जाएं[36]

25 : या'नी जहन्नम और उस की सिफ़त या आयाते क़ुरआन 26 : ख़ूब रोशन हो जाए 27 : ख़ैर या जन्नत की तरफ़ ईमान ला कर 28 : कुफ़्र इख़्तियार कर के और बुराई व अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो। 29 : या'नी मोमिनीन, वोह गिरवी नहीं, वोह नजात पाने वाले हैं और उन्हों ने नेकियां कर के अपने आप को आज़ाद करा लिया है, वोह अपने रब की रह़मत से मुन्तफ़ेअ़ हैं। 30 : दुन्या में 31 : या'नी मसाकीन पर सदक़ा न करते थे 32 : जिस में आ'माल का हिसाब होगा और जज़ा दी, जाएगी मुराद इस से रोज़े क़ियामत है 33 : या'नी अम्बिया, मलाएका, शुहदा

www.dawateislami.net

كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ

हरगिज़ नहीं बल्कि उन को आखि़रत का डर नहीं[37] हां हां बेशक वोह[38] नसीहत है तो जो चाहे

ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى

उस से नसीहत ले और वोह क्या नसीहत मानें मगर जब अल्लाह चाहे वोही है डरने के लाइक़

وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

और उसी की शान है मग़्फ़िरत फ़रमाना

اٰیاتها ٤٠ ﴿٧٥﴾ سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ ٣١ رکوعاتها ٢

सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

لَاۤ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ﴿١﴾ وَلَاۤ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾ اَيَحْسَبُ

रोज़े क़ियामत की क़सम याद फ़रमाता हूं और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे[2] क्या आदमी[3]

الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰۤى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾

येह समझता है कि हम हरगिज़ उस की हड्डियां जम्अ़ न फ़रमाएंगे क्यूं नहीं हम क़ादिर हैं कि उस के पोर ठीक बना दें[4]

सालिहीन जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने शाफ़ेअ़ किया है वोह ईमानदारों की शफ़ाअ़त करेंगे काफ़िरों की शफ़ाअ़त न करेंगे तो जो ईमान नहीं रखते उन्हें शफ़ाअ़त भी मुयस्सर न आएगी। **34 :** या'नी मवाइज़े क़ुरआन से ए'राज़ करते हैं। **35 :** या'नी मुश्रिकीन नादानी व बे वुक़ूफ़ी में गधे की मिस्ल हैं जिस त़रह़ शेर को देख कर वोह भागता है इसी त़रह़ येह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तिलावते क़ुरआन सुन कर भागते हैं **36 :** कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि हम हरगिज़ आप की इत्तिबाअ़ न करेंगे जब तक कि हम में से हर एक के पास अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से एक एक किताब न आए जिस में लिखा हो कि येह अल्लाह तआ़ला की किताब है फ़ुलां बिन फ़ुलां के नाम, हम इस में तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के इत्तिबाअ़ का हुक्म देते हैं। **37 :** क्यूं कि अगर उन्हें आखि़रत का ख़ौफ़ होता तो अदिल्ला क़ाइम होने और मो'जिज़ात ज़ाहिर होने के बा'द इस क़िस्म की सरकशाना ह़ीला बाज़ियां न करते। **38 :** क़ुरआन शरीफ़ **1 :** सूरए क़ियामह मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, चालीस 40 आयतें, एक सो निनानवे 199 कलिमे, छ[6] सो बानवे 692 ह़र्फ़ हैं। **2 :** बा वुजूद मुत्तक़ी व कसीरुत्ताअ़त होने के कि तुम मरने के बा'द ज़रूर उठाए जाओगे। **3 :** यहां आदमी से मुराद काफ़िर मुन्किरे बअ़्स है। **शाने नुज़ूल :** येह आयत अ़दी बिन रबीआ के ह़क़ में नाज़िल हुई जिस ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि अगर मैं क़ियामत का दिन देख भी लूं जब भी न मानूं और आप पर ईमान न लाऊं, क्या अल्लाह तआ़ला बिखरी हुई हड्डियां जम्अ़ कर देगा ? इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिस के मा'ना येह हैं कि क्या इस काफ़िर का येह गुमान है कि हड्डियां बिखरने और गलने और रेज़ा रेज़ा हो कर मिट्टी में मिलने और हवाओं के साथ उड़ कर दूर दराज़ मक़ामात में मुन्तशिर हो जाने से ऐसी हो जाती हैं कि उन का जम्अ़ करना काफ़िर हमारी क़ुदरत से बाहर समझता है, येह ख़याले फ़ासिद उस के दिल में क्यूं आया और उस ने क्यूं नहीं जाना कि जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वोह मरने के बा'द दोबारा पैदा करने पर ज़रूर क़ादिर है। **4 :** या'नी उस की उंगलियां जैसी थीं बिग़ैर फ़र्क़ के वैसी ही कर दें और उन की हड्डियां उन के मौक़अ़ पर पहुंचा दें, जब छोटी छोटी हड्डियां इस त़रह़ तरतीब दे दी जाएं तो बड़ी का क्या कहना।

www.dawateislami.net

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۚ﴿۵﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا

बल्कि आदमी चाहता है कि उस की निगाह के सामने बदी करे[5] पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा फिर जिस दिन

بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ﴿۷﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ﴿۸﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ﴿۹﴾ يَقُوْلُ

आंख चुंधयाएगी[6] और चांद गहेगा[7] और सूरज और चांद मिला दिये जाएंगे[8] उस दिन

الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿۱۱﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ

आदमी कहेगा किधर भाग कर जाऊं[9] हरगिज़ नहीं कोई पनाह नहीं उस दिन तेरे रब ही की त़रफ़ जा कर

الْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿۱۲﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿۱۳﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ

ठहरना है[10] उस दिन आदमी को उस का सब अगला पिछला जता दिया जाएगा[11] बल्कि आदमी

عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ

खुद ही अपने ह़ाल पर पूरी निगाह रखता है और अगर उस के पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा तुम याद करने की जल्दी में कुरआन

لِتَعْجَلَ بِهٖ ؕ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۚۖ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

के साथ अपनी ज़बान को ह़रकत न दो[12] बेशक उस का मह़फ़ूज़ करना[13] और पढ़ना[14] हमारे ज़िम्मे है तो जब हम उसे पढ़ चुकें[15] उस वक़्त उस

قُرْاٰنَهٗ ۚ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ؕ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ﴿۲۰﴾ وَ

पढ़े हुए की इत्तिबाअ़ करो[16] फिर बेशक उस की बारीकियों का तुम पर ज़ाहिर फ़रमाना हमारे ज़िम्मे है कोई नहीं बल्कि ऐ काफ़िरो तुम पाउं तले की दोस्त रखते हो[17] और

تَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿۲۲﴾ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ﴿۲۳﴾

आख़िरत को छोड़े बैठे हो कुछ मुंह उस दिन[18] तरो ताज़ा होंगे[19] अपने रब को देखते[20]

5 : इन्सान का इन्कारे बअ़्स इश्तिबाह और अ़दम दलील के बाइस नहीं है बल्कि ह़ाल येह है कि वोह बह़ाले सुवाल भी अपने फ़ुजूर पर क़ाइम रहना चाहता है कि ब त़रीक़े इस्तिह्ज़ा पूछता है क़ियामत का दिन कब होगा। (जुमल) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस आयत के मा'ना में फ़रमाया कि आदमी बअ़्स व ह़िसाब को झुटलाता है जो उस के सामने है, सईद बिन जुबैर ने कहा कि आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र, येही कहता रहता है अब तौबा करूंगा अब अ़मल करूंगा यहां तक कि मौत आ जाती है और वोह अपनी बदियों में मुब्तला होता है। **6 :** और ह़ैरत दामन गीर होगी **7 :** तारीक हो जाएगा और रोशनी ज़ाइल हो जाएगी। **8 :** येह मिला देना या तुलूअ़ में होगा दोनों मग़रिब से तुलूअ़ करेंगे या बे नूर होने में। **9 :** जो इस ह़ाल व दह्शत से रिहाई मिले **10 :** तमाम ख़ल्क़ उस के हुज़ूर ह़ाज़िर होगी, ह़िसाब किया जाएगा, जज़ा दी जाएगी, जिसे चाहेगा अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसे चाहेगा अपने अ़द्ल से जहन्नम में डालेगा। **11 :** जो उस ने किया है **12 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जिब्रीले अमीन के वह़्य पहुंचा कर फ़ारिग़ होने से क़ब्ल याद फ़रमाने की सई फ़रमाते थे और जल्द जल्द पढ़ते और ज़बाने अक़्दस को ह़रकत देते **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की मशक़्क़त गवारा न फ़रमाई और क़ुरआने करीम का सीनए पाक में मह़फ़ूज़ करना और ज़बाने अक़्दस पर जारी फ़रमाना अपने ज़िम्मए करम पर लिया और येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमा कर हुज़ूर को मुत़्मइन फ़रमा दिया। **13 :** आप के सीनए पाक में **14 :** आप का **15 :** या'नी आप के पास वह़्य आ चुके **16 :** इस आयत के नाज़िल होने के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم वह़्य को ब इत़्मीनान सुनते और जब वह़्य तमाम हो जाती तब पढ़ते थे। **17 :** या'नी तुम्हें दुन्या की चाहत है। **18 :** या'नी रोज़े क़ियामत **19 : अल्लाह** तआ़ला के ने'मत व

www.dawateislami.net

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿۲۵﴾ كَلَّاۤ اِذَا

और कुछ मुंह उस दिन बिगड़े हुए होंगे[21] समझते होंगे कि उन के साथ वोह की जाएगी जो कमर को तोड़ दे[22] हां हां जब

بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿۲۶﴾ وَقِيْلَ مَنْ ٚ سكتة رَاقٍ ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾ وَ

जान गले को पहुंच जाएगी[23] और लोग कहेंगे[24] कि है कोई झाड़ फूंक करे[25] और वोह[26] समझ लेगा कि येह जुदाई की घड़ी है[27] और

ع ۱ ۳۰ ۱۷ الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِ ࣙالْمَسَاقُ ﴿۳۰﴾ فَلَا صَدَّقَ

पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी[28] उस दिन तेरे रब ही की त़रफ़ हांकना है[29] उस ने[30] न तो सच माना[31]

وَلَا صَلّٰى ﴿۳۱﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿۳۲﴾ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰۤى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿۳۳﴾

और न नमाज़ पढ़ी हां झुटलाया और मुंह फेरा[32] फिर अपने घर को अकड़ता चला[33]

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۴﴾ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿۳۵﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी[34] क्या आदमी इस घमन्ड में है कि आज़ाद छोड़

سُدًى ﴿۳۶﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿۳۷﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ

दिया जाएगा[35] क्या वोह एक बूंद न था उस मनी का कि गिराई जाए[36] फिर ख़ून की फटक हुवा तो उस ने पैदा फ़रमाया[37]

करम पर मसरूर चेहरों से अन्वार ताबां, येह मोमिनीन का ह़ाल है। **20 :** उन्हें दीदारे इलाही की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि आख़िरत में मोमिनीन को दीदारे इलाही मुयस्सर आएगा, येही अहले सुन्नत का अ़क़ीदा, कुरआन व ह़दीस व इज्माअ़ के दलाइले कसीरा इस पर क़ाइम हैं और येह दीदार बे कैफ़ और बे जिहत होगा। **21 :** सियाह, तारीक, ग़मज़दा, मायूस, येह कुफ़्फ़ार का ह़ाल है। **22 :** या'नी वोह शिद्दते अ़ज़ाब और होलनाक मसाइब में गिरिफ़्तार किये जाएंगे। **23 :** वक़्ते मौत **24 :** जो उस के क़रीब होंगे **25 :** ताकि इस को शिफ़ा ह़ासिल हो **26 :** या'नी मरने वाला **27 :** कि अहले मक्का और दुन्या सब से जुदाई होती है। **28 :** या'नी मौत का कर्ब व सख़्ती से पाउं बाहम लिपट जाएंगे या येह मा'ना हैं कि दोनों पाउं कफ़न में लपेटे जाएंगे या येह मा'ना हैं कि शिद्दत पर शिद्दत होगी एक दुन्या की जुदाई की सख़्ती उस के साथ मौत का कर्ब या एक मौत की सख़्ती और इस के साथ आख़िरत की सख़्तियां। **29 :** या'नी बन्दों का रुजूअ़ उसी की त़रफ़ है वोही उन में फ़ैसला फ़रमाएगा। **30 :** या'नी इन्सान ने, मुराद इस से अबू जहल है। **31 :** रिसालत और कुरआन को **32 :** ईमान लाने से **33 :** मुतकब्बिराना शान से, अब इस से ख़िताब फ़रमाया जाता है **34 :** जब येह आयत नाज़िल हुई नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बत़्हा में अबू जहल के कपड़े पकड़ कर उस से फ़रमाया ''اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى'' या'नी तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी फिर तेरी ख़राबी आ लगी अब आ लगी तो अबू जहल ने कहा ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या तुम मुझे धम्काते हो ? तुम और तुम्हारा रब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मक्का के पहाड़ों के दरमियान मैं सब से ज़ियादा, क़वी, ज़ोर आवर, साह़िबे शौकतो क़ुव्वत हूं, मगर कुरआनी ख़बर ज़रूर पूरी होनी थी और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमान ज़रूर पूरा होने वाला था, चुनान्चे ऐसा ही हुवा और जंगे बद्र में अबू जहल ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ बुरी त़रह़ मारा गया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर उम्मत में एक फ़िरऔन होता है मेरी उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल है, इस आयत में उस की ख़राबी का ज़िक्र चार मरतबा फ़रमाया गया **पहली** ख़राबी बे ईमानी की ह़ालत में ज़िल्लत की मौत। **दूसरी** ख़राबी क़ब्र की सख़्तियां और वहां की शिद्दतें। **तीसरी** ख़राबी मरने के बा'द उठने के वक़्त गिरिफ़्तारे मसाइब होना। **चौथी** ख़राबी अ़ज़ाबे जहन्नम। **35 :** कि न उस पर अम्र व नही वग़ैरा के अह़काम हों, न वोह मरने के बा'द उठाया जाए, न उस से आ'माल का ह़िसाब लिया जाए, न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाए, ऐसा नहीं **36 :** रेह़्म में, तो जो ऐसे गन्दे पानी से पैदा किया गया उस का तकब्बुर करना इतराना और पैदा करने वाले की ना फ़रमानी करना निहायत बे जा है। **37 :** इन्सान बनाया।

www.dawateislami.net

فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ

फिर ठीक बनाया[38] तो उस से[39] दो जोड़े बनाए[40] मर्द और औ़रत क्या जिस ने येह

بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع

कुछ किया वोह मुर्दे न जिला सकेगा

اٰيَاتُهَا ٣١ ۝ ٧٦ سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ ٩٨ ۝ رُكُوْعَاتُهَا ٢

सूरए दह्‌र मदनिय्या है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾ اِنَّا

बेशक आदमी पर[2] एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था[3] बेशक हम ने

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٢﴾

आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से[4] कि उसे जांचें[5] तो उसे सुनता देखता कर दिया[6]

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا

बेशक हम ने उसे राह बताई[7] या ह़क़ मानता[8] या नाशुक्री करता[9] बेशक हम ने काफ़िरों

لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

के लिये तय्यार कर रखी हैं ज़न्जीरें[10] और तौ़क़[11] और भड़कती आग[12] बेशक नेक पियेंगे उस जाम में से

كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا

जिस की मिलौनी (आमेज़िश) काफ़ूर है वोह काफ़ूर क्या? एक चश्मा है[13] जिस में से अल्लाह के निहायत ख़ास बन्दे पियेंगे अपने महल्लों में उसे जहां चाहें

38 : उस के आ'ज़ा को कामिल किया उस में रूह़ डाली 39 : या'नी मनी से या इन्सान से 40 : दो सिफ़तें पैदा कीं 1 : सूरए दह्‌र इस का नाम सूरए इन्सान भी है। मुजाहिद व क़तादा और जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है, बा'ज़ ने इस को मक्किय्या कहा है। इस में दो 2 रुकूअ़, इक्तीस 31 आयतें, दो सो चालीस 240 कलिमे और एक हज़ार चव्वन 1054 ह़र्फ़ हैं। 2 : या'नी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नफ़्ख़े रूह़ से पहले चालीस साल का 3 : क्यूं कि वोह एक मिट्टी का ख़मीर था, न कहीं उस का ज़िक्र था, न उस को कोई जानता था, न किसी को उस की पैदाइश की ह़िक्मतें मा'लूम थीं, इस आयत की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है इन्सान से जिन्स मुराद है और वक़्त से उस के ह़म्ल में रहने का ज़माना। 4 : मर्द व औ़रत की 5 : मुकल्लफ़ कर के अपने अम्र व नही से। 6 : ताकि दलाइल का मुशाहदा और आयात का इस्तिमाअ़ कर सके। 7 : दलाइल क़ाइम कर के, रसूल भेज कर, किताबें नाज़िल फ़रमा कर, ताकि हो 8 : या'नी मोमिन सईद 9 : काफ़िर शक़ी। 10 : जिन्हें बांध कर दोज़ख़ की त़रफ़ घसीटे जाएंगे 11 : जो गलों में डाले जाएंगे 12 : जिस में जलाए जाएंगे। 13 : जन्नत में।

www.dawateislami.net

تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ يَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾

बहा कर ले जाएंगे[14] अपनी मन्नतें पूरी करते हैं[15] और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई[16] फैली हुई है[17]

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

और खाना खिलाते हैं उस की महब्बत पर[18] मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا

अल्लाह के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन

يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَ لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً

का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है[19] तो उन्हें **अल्लाह** ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी

وَّ سُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّ حَرِيْرًا ﴿١٢﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا

और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये जन्नत में तख़्तों पर

عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَ دَانِيَةً

तक्या लगाए होंगे न उस में धूप देखेंगे न ठिठर[20] और उस के[21]

عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾ وَ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ

साए उन पर झुके होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे[22] और उन पर चांदी के बरतनों

14 : अबरार के सवाब बयान फ़रमाने के बा'द उन के आ'माल का ज़िक्र फ़रमाया जाता है जो इस सवाब का सबब हुए। **15 : मन्नत** येह है कि जो चीज़ आदमी पर वाजिब नहीं है वोह किसी शर्त़ से अपने ऊपर वाजिब करे, मसलन येह कहे कि अगर मेरा मरीज़ अच्छा हो या मेरा मुसाफ़िर बख़ैर वापस आए तो मैं राहे ख़ुदा में इस क़दर सदक़ा दूंगा या इतनी रक्अ़तें नमाज़ पढूंगा, इस नज़्र की वफ़ा वाजिब होती है, मा'ना येह हैं कि वोह लोग त़ाआ़त व इबादात और शरअ़ के वाजिबात के आ़मिल हैं ह़त्ता कि जो त़ाआ़ते ग़ैर वाजिबा अपने ऊपर नज़्र से वाजिब कर लेते हैं उस को भी अदा करते हैं। **16 :** या'नी शिद्दत और सख़्ती **17 :** क़तादा ने कहा कि उस दिन की शिद्दत इस क़दर फैली हुई है कि आस्मान फट जाएंगे, सितारे गिर पड़ेंगे, चांद सूरज बे नूर हो जाएंगे, पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे, कोई इमारत बाक़ी न रहेगी। इस के बा'द येह बताया जाता है कि उन के आ'माल रिया व नुमाइश से ख़ाली हैं। **18 :** या'नी ऐसी ह़ालत में जब कि ख़ुद उन्हें खाने की ह़ाजत व ख़्वाहिश हो और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना लिये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की महब्बत में खिलाते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ और ह़ज़रते फ़ात़िमा رضی اللہ تعالٰی عنہا और इन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई, ह़सनैने करीमैन رضی اللہ تعالٰی عنہما बीमार हुए, इन ह़ज़रात ने उन की सिह़्ह़त पर तीन रोज़ों की नज़्र मानी **अल्लाह** तआ़ला ने सिह़्ह़त दी, नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया सब साहिबों ने रोज़े रखे, ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ एक यहूदी से तीन साअ़ (साअ़ एक पैमाना है) जव लाए, ह़ज़रत ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ तीनों दिन पकाया, लेकिन जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक रोज़ मिस्कीन एक रोज़ यतीम एक रोज़ असीर आया और तीनों रोज़ येह सब रोटियां उन लोगों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया। **19 :** लिहाज़ा हम अपने अ़मल की जज़ा या शुक्र गुज़ारी तुम से नहीं चाहते, येह अ़मल इस लिये है कि हम उस दिन ख़ौफ़ से अम्न में रहें **20 :** या'नी गरमी या सरदी की कोई तक्लीफ़ वहां न होगी **21 :** या'नी बिहिश्ती दरख़्तों के **22 :** कि खड़े बैठे लैटे हर ह़ाल में ख़ोशे ब आसानी ले सकें।

www.dawateislami.net

مِنۡ فِضَّةٍ وَّ اَكۡوَابٍ كَانَتۡ قَوَارِيۡرَا۟ ﴿۱۵﴾ قَوَارِيۡرَا۟ مِنۡ فِضَّةٍ قَدَّرُوۡهَا

और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे कैसे शीशे चांदी के[23] साक़ियों ने उन्हें पूरे

تَقۡدِيۡرًا ﴿۱۶﴾ وَيُسۡقَوۡنَ فِيۡهَا كَاۡسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنۡجَبِيۡلًا ۚ﴿۱۷﴾ عَيۡنًا

अन्दाज़े पर रखा होगा[24] और उस में वोह जाम पिलाए जाएंगे[25] जिस की मिलौनी अदरक होगी[26] वोह अदरक क्या है

فِيۡهَا تُسَمّٰى سَلۡسَبِيۡلًا ﴿۱۸﴾ وَيَطُوۡفُ عَلَيۡهِمۡ وِلۡدَانٌ مُّخَلَّدُوۡنَ ۚ اِذَا

जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल्सबील कहते हैं[27] और उन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के[28] जब

رَاَيۡتَهُمۡ حَسِبۡتَهُمۡ لُـؤۡلُـؤًا مَّنۡثُوۡرًا ﴿۱۹﴾ وَاِذَا رَاَيۡتَ ثَمَّ رَاَيۡتَ نَعِيۡمًا وَّ

तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखरे हुए[29] और जब तू इधर नज़र उठाए एक चैन देखे[30] और

مُلۡكًا كَبِيۡرًا ﴿۲۰﴾ عٰلِيَهُمۡ ثِيَابُ سُنۡدُسٍ خُضۡرٌ وَّاِسۡتَبۡرَقٌ ۫ وَّحُلُّوۡۤا

बड़ी सल्तनत[31] उन के बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े[32] और क़नादीज़ के[33] और उन्हें

اَسَاوِرَ مِنۡ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰٮهُمۡ رَبُّهُمۡ شَرَابًا طَهُوۡرًا ﴿۲۱﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ

चांदी के कंगन पहनाए गए[34] और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई[35] उन से फ़रमाया जाएगा

لَكُمۡ جَزَآءً وَّكَانَ سَعۡيُكُمۡ مَّشۡكُوۡرًا ﴿۲۲﴾ ع اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ

येह तुम्हारा सिला है[36] और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी[37] बेशक हम ने तुम पर[38]

قرء حفص بغیر الالف فی الوصل فیھما و رقف علی الاول بالالف وعلی الثانی بغیر الالف۔

ع ٢٢ ١٩

23 : जन्नती बरतन चांदी के होंगे और चांदी के रंग और उस के हुस्न के साथ मिस्ल आबगीना के साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होंगे कि उन में जो चीज़ पी जाएगी वोह बाहर से नज़र आएगी। **24 :** या'नी पीने वालों की रग़बत की क़दर न उस से कम न ज़ियादा, येह सलीक़ा जन्नती ख़ुद्दाम के साथ ख़ास है, दुन्या के साक़ियों को मुयस्सर नहीं। **25 :** शराबे तहूर के **26 :** उस की आमेज़िश से शराब की लज़्ज़त और ज़ियादा हो जाएगी। **27 :** मुक़र्रबीन तो ख़ालिस उसी को पियेंगे और बाक़ी अहले जन्नत की शराबों में उस की आमेज़िश होगी, येह चश्मा ज़ेरे अ़र्श से जन्नते अ़दन होता हुवा तमाम जन्नतों में गुज़रता है। **28 :** जो न कभी मरेंगे न बूढ़े होंगे न उन में कोई तग़य्युर आएगा न ख़िदमत से उक्ताएंगे, उन के हुस्न का येह आ़लम होगा **29 :** या'नी जिस त़रह़ फ़र्शे मुसफ़्फ़ा पर गौहरे आबदार ग़लत़ान हो इस हुस्नो सफ़ा के साथ जन्नती ग़िल्मान मश्ग़ूले ख़िदमत होंगे। **30 :** जिस का वस्फ़ बयान में नहीं आ सकता **31 :** जिस की हद व निहायत नहीं, न उस को ज़वाल न जन्नती को वहां से इन्तिक़ाल, वुस्अ़त का येह आ़लम कि अदना मर्तबे का जन्नती जब अपने मुल्क में नज़र करेगा तो हज़ार बरस की राह तक ऐसे ही देखेगा जैसे अपने क़रीब की जगह देखता हो, शौकतो शिकोह येह होगा कि मलाएका बे इजाज़त न आएंगे। **32 :** या'नी बारीक रेशम के **33 :** या'नी दबीज़ रेशम के **34 :** ह़ज़रते इब्ने मुसय्यिब رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि हर एक जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे, एक चांदी का एक सोने का एक मोती का। **35 :** जो निहायत पाक साफ़, न उसे किसी का हाथ लगा न किसी ने छुवा न वोह पीने के बा'द शराबे दुन्या की त़रह़ जिस्म के अन्दर सड़ कर बौल (पेशाब) बने, बल्कि उस की सफ़ाई का येह आ़लम है कि जिस्म के अन्दर उतर कर पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर जिस्म से निकलती है, अहले जन्नत को खाने के बा'द शराब पेश की जाएगी, उस को पीने से उन के पेट साफ़ हो जाएंगे और जो उन्हों ने खाया है वोह पाकीज़ा ख़ुश्बू बन कर उन के जिस्मों से निकलेगा और उन की ख़्वाहिशें और रग़बतें फिर ताज़ा हो जाएंगी। **36 :** या'नी तुम्हारी इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी का। **37 :** कि तुम से तुम्हारा रब राज़ी हुवा और उस ने तुम्हें सवाबे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाया। **38 :** ऐ सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم।

www.dawateislami.net

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ

कुरआन ब तदरीज उतारा[39] तो अपने रब के हुक्म पर साबिर रहो[40] और इन में किसी गुनहगार या नाशुक्रे की

كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ

बात न सुनो[41] और अपने रब का नाम सुब्ह व शाम याद करो[42] और कुछ रात में उसे सज्दा करो[43]

لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ

और बड़ी रात तक उस की पाकी बोलो[44] बेशक येह लोग[45] पाउं तले की अ़ज़ीज़ रखते हैं[46]

وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَاۤ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا

और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़े बैठे हैं[47] हम ने उन्हें पैदा किया और उन के जोड़ बन्द मज़बूत किये और हम जब

شِئْنَا بَدَّلْنَاۤ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ

चाहें[48] उन जैसे और बदल दें[49] बेशक येह नसीहत है[50] तो जो चाहे

اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ

अपने रब की त़रफ़ राह ले[51] और तुम क्या चाहो मगर येह कि **अल्लाह** चाहे[52] बेशक

اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَ

वोह इल्मो हिक्मत वाला है अपनी रह़मत में लेता है[53] जिसे चाहे[54] और

٢ ع ٩ ٢٠ الظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

ज़ालिमों के लिये उस ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है[55]

39 : आयत आयत कर के और इस में **अल्लाह** तआ़ला की बड़ी ह़िक्मतें हैं। **40 :** रिसालत की तब्लीग़ फ़रमा कर और इस में मशक़्क़तें उठा कर और दुश्मनाने दीन की ईज़ाएं बरदाश्त कर के **41 शाने नुज़ूल :** उ़त्बा बिन रबीआ़ और वलीद इब्ने मुग़ीरा येह दोनों नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के पास आए और कहने लगे : आप इस काम से बाज़ आइये या'नी दीन से, उ़त्बा ने कहा कि आप ऐसा करें तो मैं अपनी बेटी आप को बियाह दूं और बिग़ैर महर के आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर दूं, वलीद ने कहा कि मैं आप को इतना माल दे दूं कि आप राज़ी हो जाएं, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **42 :** नमाज़ में, सुब्ह़ के ज़िक्र से नमाज़े फ़ज्र और शाम के ज़िक्र से ज़ोहर और अ़स्र मुराद हैं। **43 :** या'नी मग़रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो, इस आयत में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया। **44 :** या'नी फ़राइज़ के बा'द नवाफ़िल पढ़ते रहो, इस में नमाज़े तहज्जुद आ गई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मुराद ज़िक्रे लिसानी है, मक़्सूद येह है कि रोज़ो शब के तमाम अवक़ात में दिल और ज़बान से ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहो। **45 :** या'नी कुफ़्फ़ार **46 :** या'नी मह़ब्बते दुन्या में गिरिफ़्तार हैं **47 :** या'नी रोज़े क़ियामत को जिस के शदाइद कुफ़्फ़ार पर बहुत भारी होंगे, न उस पर ईमान लाते हैं न उस दिन के लिये अ़मल करते हैं। **48 :** उन्हें हलाक कर दें और बजाए उन के **49 :** जो इत़ाअ़त शिआ़र हों। **50 :** मख़्लूक़ के लिये **51 :** उस की इत़ाअ़त बजा ला कर और उस के रसूल की इत्तिबाअ़ कर के। **52 :** क्यूं कि जो कुछ होता है उसी की मशिय्यत से होता है **53 :** या'नी जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है **54 :** ईमान अ़त़ा फ़रमा कर। **55 :** ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं।

www.dawateislami.net

ایاتها ٥٠ | ٧٧ سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ ٣٣ | ركوعاتها ٢

सूरए मुर्सलात मक्किय्या है, इस में पचास आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ﴿۱﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾

क़सम उन की जो भेजी जाती हैं लगातार[2] फिर ज़ोर से झोंका देने वालियां फिर उभार कर उठाने वालियां[3]

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾ اِنَّمَا

फिर हक़ नाहक़ को ख़ूब जुदा करने वालियां फिर उन की क़सम जो ज़िक्र का इल्क़ा करती हैं[4] हुज्जत तमाम करने या डराने को बेशक

تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾

जिस बात का तुम वा'दा दिये जाते हो[5] ज़रूर होनी है[6] फिर जब तारे मह्व कर दिये जाएं और जब आस्मान में रख़्ने पड़ें

وَ اِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾ وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾ لِاَیِّ یَوْمٍ

और जब पहाड़ ग़ुबार कर के उड़ा दिये जाएं और जब रसूलों का वक़्त आए[7] किस दिन के लिये

اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾ لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا یَوْمُ الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾ وَیْلٌ

ठहराए गए थे रोज़े फ़ैसला के लिये और तू क्या जाने वोह रोज़े फ़ैसला कैसा है[8] झुटलाने वालों

1 : सूरए मुर्सलात मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, पचास 50 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, आठ सो सोलह 816 हर्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** हज़रते इब्ने मस्ऊद رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि वल मुर्सलात शबे जिन्न में नाज़िल हुई, हम सय्यिदे आलम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की रिकाबे सआदत में थे जब मिना की ग़ार में पहुंचे वल मुर्सलात नाज़िल हुई, हम हुज़ूर से इस को पढ़ते थे और हुज़ूर इस की तिलावत फ़रमाते थे, अचानक एक सांप ने जस्त की हम उस को मारने के लिये लपके वोह भाग गया, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम उस की बुराई से बचाए गए वोह तुम्हारी बुराई से। येह ग़ार मिना में ग़ारे वल मुर्सलात के नाम से मश्हूर है। **2 :** इन आयतों में जो क़िस्में मज़्कूर हैं वोह पांच सिफ़ात हैं जिन के मौसूफ़ात ज़ाहिर में मज़्कूर नहीं, इसी लिये मुफ़स्सिरीन ने इन की तफ़्सीर में बहुत वुजूह ज़िक्र की हैं, बा'ज़ ने येह पांचों सिफ़तें हवाओं की क़रार दी हैं, बा'ज़ ने मलाएका की, बा'ज़ ने आयाते कुरआन की, बा'ज़ ने नुफ़ूसे कामिला की जो इस्तिक्माल के लिये अब्दान की तरफ़ भेजे जाते हैं, फिर वोह रियाज़तों के झोंकों से मा सिवाए हक़ को उड़ा देते हैं, फिर तमाम आ'ज़ा में उस असर को फैलाते हैं, फिर हक़ बिज़्ज़ात और बातिल फ़ी नफ़्सिही में फ़र्क़ करते हैं और ज़ाते इलाही के सिवा हर शै को हालिक देखते हैं, फिर ज़िक्र का इल्क़ा करते हैं इस तरह कि दिलों में और ज़बानों पर अल्लाह तआला का ज़िक्र ही होता है और एक वज्ह येह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़तों से हवाएं मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़िरिश्ते, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि क़सम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झोंके देती हैं, इन से मुराद अ़ज़ाब की हवाएं हैं (خازن و جمل وغیرہ) **3 :** या'नी वोह रहमत की हवाएं जो बादलों को उठाती हैं, इस के बा'द जो सिफ़तें मज़्कूर हैं वोह क़ौले अख़ीर पर जमाअ़ते मलाएका की हैं। इब्ने कसीर ने कहा कि فَارِقَات و مُلْقِیَات से जमाअ़ते मलाएका मुराद होने पर इज्माअ़ है। **4 :** अम्बिया व मुरसलीन के पास वह्य ला कर **5 :** या'नी बअ़्स व अ़ज़ाब और क़ियामत के आने का **6 :** कि उस के होने में कुछ भी शक नहीं। **7 :** वोह उम्मतों पर गवाही देने के लिये जम्अ़ किये जाएं। **8 :** और उस के होल व शिद्दत का क्या आ़लम है।

www.dawateislami.net

يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ
की उस दिन ख़राबी[9] क्या हम ने अगलों को हलाक न फ़रमाया[10] फिर पिछलों को उन के

الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
पीछे पहुंचाएंगे[11] मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं उस दिन झुटलाने

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ
वालों की ख़राबी क्या हम ने तुम्हें एक बे क़दर पानी से पैदा न फ़रमाया[12] फिर उसे एक महफ़ूज़

مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَيْلٌ
जगह में रखा[13] एक मा'लूम अन्दाज़े तक[14] फिर हम ने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम क्या ही अच्छे क़ादिर[15] उस दिन

يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ اَحْيَآءً وَّ
झुटलाने वालों की ख़राबी क्या हम ने ज़मीन को जम्अ़ करने वाली न किया तुम्हारे ज़िन्दों और

اَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾
मुर्दों की[16] और हम ने उस में ऊंचे ऊंचे लंगर डाले[17] और हम ने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया[18]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾
उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी[19] चलो उस की तरफ़[20] जिसे झुटलाते थे

اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ
चलो उस धूएं के साए की तरफ़ जिस की तीन शाख़ें[21] न साया दे[22] न लपट से

اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ
बचाए[23] बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है[24] जैसे ऊंचे महल गोया वोह ज़र्द रंग के ऊंट हैं उस दिन

9 : जो दुन्या में तौहीद व नुबुव्वत और रोज़े आख़िरत और बअ़स व हिसाब के मुन्किर थे। **10 :** दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल कर के जब उन्हों ने रसूलों को झुटलाया **11 :** या'नी जो पहली उम्मतों के मुकज़्ज़िबीन की राह इख़्तियार कर के सय्यिदे आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं उन्हें भी पहलों की तरह हलाक फ़रमाएंगे। **12 :** या'नी नुत्फ़े से **13 :** या'नी रेहूम में **14 :** वक़्ते विलादत तक जिस को **अल्लाह** तआ़ला जानता है। **15 :** अन्दाज़ा फ़रमाने पर। (جمل) **16 :** कि ज़िन्दे उस की पुश्त पर जम्अ़ रहते हैं और मुर्दे उस के बत़्न में। **17 :** बुलन्द पहाड़ों के। **18 :** ज़मीन में चश्मे और मम्बअ़ पैदा कर के, येह तमाम बातें मुर्दों को ज़िन्दा करने से ज़ियादा अ़जीब हैं। **19 :** और रोज़े क़ियामत काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उस की तरफ़ जाओ। **20 :** या'नी उस अ़ज़ाब की तरफ़ **21 :** इस से जहन्नम का धूआं मुराद है जो ऊंचा हो कर तीन शाख़ें हो जाएगा, एक कुफ़्फ़ार के सरों पर एक उन के दाएं और एक उन के बाएं और हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उन्हें उसी धूएं में रहने का हुक्म होगा, जब कि **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे बन्दे उस के अ़र्श के साए में होंगे। इस के बा'द जहन्नम के धूएं की शान बयान फ़रमाई जाती है कि वोह ऐसा है कि **22 :** जिस से उस दिन की गरमी

یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۴﴾ هٰذَا یَوْمُ لَا یَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ لَا یُؤْذَنُ لَهُمْ
झुटलाने वालों की ख़राबी येह दिन है कि वोह न बोल सकेंगे[25] और न उन्हें इजाज़त मिले

فَیَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۳۷﴾ هٰذَا یَوْمُ الْفَصْلِ ج
कि उज़्र करें[26] उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी येह है फ़ैसले का दिन

جَمَعْنٰكُمْ وَ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۸﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَیْدٌ فَكِیْدُوْنِ ﴿۳۹﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ
हम ने तुम्हें जम्अ़ किया[27] और सब अगलों को[28] अब अगर तुम्हारा कोई दाउं हो तो मुझ पर चल लो[29] उस दिन झुटलाने

لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۴۰﴾ ع اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ ظِلٰلٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿۴۱﴾ وَّ فَوَاكِهَ مِمَّا ع ۲
वालों की ख़राबी बेशक डर वाले[30] सायों और चश्मों में हैं और मेवों में से जो कुछ

یَشْتَهُوْنَ ﴿۴۲﴾ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِیْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّا
उन का जी चाहे[31] खाओ और पियो रचता हुवा[32] अपने आ'माल का सिला[33] बेशक

كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۴۴﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۴۵﴾ كُلُوْا
नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी[34] कुछ दिन खा लो

وَ تَمَتَّعُوْا قَلِیْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۴۷﴾ وَ
और बरत लो[35] ज़रूर तुम मुजरिम हो[36] उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी और

से कुछ अम्न पा सकें **23 :** आतशे जहन्नम की **24 :** इतनी इतनी बड़ी **25 :** न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रोजे़ क़ियामत बहुत से मौक़अ़ होंगे बा'ज़ में कलाम करेंगे बा'ज़ में कुछ बोल न सकेंगे। **26 :** और दर हक़ीक़त उन के पास कोई उ़ज़्र ही न होगा क्यूं कि दुन्या में हुज्जतें तमाम कर दी गई और आख़िरत के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रखी गई, अलबत्ता उन्हें येह ख़याले फ़ासिद आएगा कि कुछ ह़ीले बहाने बनाएं, येह ह़ीले पेश करने की इजाज़त न होगी। जुनैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि उस को उ़ज़्र ही क्या है जिस ने ने'मत देने वाले से रू गर्दानी की, उस की ने'मतों को झुटलाया, उस के एह़सानों की ना सिपासी (नाशुक्री) की। **27 :** ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करने वालो ! **28 :** जो तुम से पहले अम्बिया की तक्ज़ीब करते थे, तुम्हारा उन का सब का ह़िसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हें सब को अ़ज़ाब किया जाएगा **29 :** और किसी त़रह़ अपने आप को अ़ज़ाब से बचा सको तो बचा लो। येह इन्तिहा दरजे की तौबीख़ है क्यूं कि येह तो वोह यक़ीनी जानते होंगे कि न आज कोई मक्र चल सकता है न कोई ह़ीला काम दे सकता है। **30 :** जो अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ रखते थे जन्नती दरख़्तों के **31 :** उस से लज़्ज़त उठाते हैं, इस आयत से साबित हुवा कि अहले जन्नत को उन के ह़स्बे मरज़ी ने'मतें मिलेंगी, ब ख़िलाफ़ दुन्या के कि यहां आदमी को जो मुयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है और अहले जन्नत से कहा जाएगा **32 :** लज़ीज़ ख़ालिस जिस में ज़रा भी तनग़ुस (बद मज़गी) का शाएबा नहीं **33 :** उन त़ाआ़त का जो तुम दुन्या में बजा लाए थे **34 :** इस के बा'द तह्दीद के त़ौर पर कुफ़्फ़ार को ख़ित़ाब किया जाता है कि ऐ दुन्या में तक्ज़ीब करने वालो ! तुम दुन्या में **35 :** अपनी मौत के वक़्त तक **36 :** काफ़िर हो, दाइमी अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हो।

وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا یَرْكَعُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۴۹﴾

जब उन से कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी

فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع

फिर इस[37] के बा'द कौन सी बात पर ईमान लाएंगे[38]

ع ۲ ۲۲

37 : क़ुरआन शरीफ़ **38 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ कुतुबे इलाहिय्यह में सब से आख़िर किताब है और बहुत ज़ाहिर मो'जिज़ा है, इस पर ईमान न लाए तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं।

www.dawateislami.net

ركوعاتها ٢ ٧٨ سُورَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ ٨٠ اٰیاتها ٤٠

सूरए नबा मक्किय्या है, इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ ﴿۱﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ ﴿۲﴾ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ

येह[2] आपस में काहे की पूछगछ कर रहे हैं[3] बड़ी ख़बर की[4] जिस में वोह

مُخْتَلِفُوْنَ ؕ ﴿۳﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿۴﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿۵﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ

कई राह हैं[5] हां हां अब जान जाएंगे फिर हां हां जान जाएंगे[6] क्या हम ने

الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ ﴿۶﴾ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۪ۙ ﴿۷﴾ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ ﴿۸﴾ وَّجَعَلْنَا

ज़मीन को बिछौना न किया[7] और पहाड़ों को मेखें[8] और तुम्हें जोड़े बनाया[9] और तुम्हारी

نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ ﴿۹﴾ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ ﴿۱۰﴾ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪ ﴿۱۱﴾

नींद को आराम किया[10] और रात को पर्दापोश किया[11] और दिन को रोज़गार के लिये बनाया[12]

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ ﴿۱۲﴾ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪ۙ ﴿۱۳﴾ وَّاَنْزَلْنَا

और तुम्हारे ऊपर सात मज़्बूत़ चुनाइयां चुनीं (ता'मीर कीं)[13] और उन में एक निहायत चमक्ता चराग़ रखा[14] और भरी

1 : सूरए नबा : इस को सूरए तसाउल और सूरए "عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ" भी कहते हैं, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो रुकूअ़, चालीस या इक्तालीस आयतें, एक सो तिहत्तर कलिमे, नव सो सत्तर ह़र्फ़ हैं। 2 : कुफ़्फ़ारे कुरैश 3 : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जब अहले मक्का को तौह़ीद की दा'वत दी और मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने की ख़बर दी और कुरआने करीम की तिलावत फ़रमा कर उन्हें सुनाया तो उन में बाहम गुफ़्तगूएं शुरूअ़ हुईं और एक दूसरे से पूछने लगे कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم क्या दीन लाए हैं ? इस आयत में उन की गुफ़्तगूओं का बयान है और तफ़्ख़ीमे शान के लिये इस्तिफ़्हाम के पैराए में बयान फ़रमाया या'नी वोह क्या अ़ज़ीमुश्शान बात है जिस में येह लोग एक दूसरे से पूछगछ कर रहे हैं, इस के बा'द वोह बात बयान फ़रमाई जाती है 4 : "बड़ी ख़बर" से मुराद या कुरआन है या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और आप का दीन या मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने का मस्अला। 5 : कि बा'ज़े तो क़त़्ई इन्कार करते हैं बा'ज़े शक में हैं और कुरआने करीम को उन में से कोई तो सेह़र कहता है, कोई शे'र कोई कहानत और कोई और कुछ, इसी त़रह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कोई साह़िर कहता है, कोई शाइ़र, कोई काहिन। 6 : इस तक्ज़ीब व इन्कार के नतीजे को। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़जाइबे कुदरत में से चन्द चीज़ें ज़िक्र फ़रमाईं ताकि येह लोग उन की दलालत से अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद को जानें और येह समझें कि अल्लाह तआ़ला आ़लम को पैदा करने और इस के बा'द इस को फ़ना करने और बा'दे फ़ना फिर ह़िसाब व जज़ा के लिये पैदा करने पर क़ादिर है। 7 : कि तुम इस में रहो और वोह तुम्हारी क़रार गाह हो। 8 : जिन से ज़मीन साबित व क़ाइम रहे 9 : मर्द व औ़रत 10 : तुम्हारे जिस्मों के लिये ताकि इस से कोफ़्त और तकान दूर हो और राह़त ह़ासिल हो। 11 : जो अपनी तारीकी से हर चीज़ को छुपाती है 12 : कि तुम इस में अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और अपनी रोज़ी तलाश करो। 13 : जिन पर ज़माना गुज़रने का असर नहीं होता और कोहनगी (पुराना पन) व बोसीदगी उन तक राह नहीं पाती, मुराद इन चुनाइयों से सात आस्मान हैं। 14 : या'नी आफ़्ताब जिस में रोशनी भी है और गरमी भी।

مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿۱۴﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿۱۵﴾ وَّ جَنّٰتٍ

बदलियों से ज़ोर का पानी उतारा कि उस से पैदा फ़रमाएं अनाज और सब्ज़ा और घने

اَلْفَافًا ﴿۱۶﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿۱۷﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ

बाग़[15] बेशक फ़ैसले का दिन[16] ठहरा हुवा वक़्त है जिस दिन सूर फूंका जाएगा[17]

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿۱۸﴾ وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿۱۹﴾ وَّ سُيِّرَتِ

तो तुम चले आओगे[18] फ़ौजों की फ़ौजें और आस्मान खोला जाएगा कि दरवाज़े हो जाएगा[19] और पहाड़ चलाए

الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿۲۰﴾ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿۲۱﴾ لِّلطّٰغِيْنَ

जाएंगे कि हो जाएंगे जैसे चमक्ता रेता दूर से पानी का धोका देता बेशक जहन्नम ताक में है सरकशों का

مَاٰبًا ﴿۲۲﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿۲۳﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ﴿۲۴﴾

ठिकाना उस में क़रनों (मुद्दतों) रहेंगे[20] उस में किसी त़रह़ की ठन्डक का मज़ा न पाएंगे और न कुछ पीने को

اِلَّا حَمِيْمًا وَّ غَسَّاقًا ﴿۲۵﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿۲۶﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ

मगर खौलता पानी और दोज़ख़ियों का जलता पीप जैसे को तैसा बदला[21] बेशक उन्हें ह़िसाब का ख़ौफ़

حِسَابًا ﴿۲۷﴾ وَّ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿۲۸﴾ وَ كُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿۲۹﴾

न था[22] और हमारी आयतें ह़द भर झुटलाईं और हम ने[23] हर चीज़ लिख कर शुमार कर रखी है[24]

ع

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿۳۰﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿۳۱﴾ حَدَآئِقَ

अब चखो कि हम तुम्हें न बढ़ाएंगे मगर अ़ज़ाब बेशक डर वालों को काम्याबी की जगह है[25] बाग़ हैं[26]

وَ اَعْنَابًا ﴿۳۲﴾ وَّ كَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿۳۳﴾ وَّ كَاْسًا دِهَاقًا ﴿۳۴﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا

और अंगूर और उठते जोबन वालियां एक उ़म्र की और छलक्ता जाम[27] जिस में न कोई

15 : तो जिस ने इतनी चीज़ें पैदा कर दीं वोह इन्सान को मरने के बा'द ज़िन्दा करे तो क्या तअ़ज्जुब ! नीज़ इन अश्या का पैदा करना ह़कीम का फ़े'ल है और ह़कीम का फ़े'ल हरगिज़ अ़बस और बेकार नहीं होता और मरने के बा'द उठने और सज़ा व जज़ा के इन्कार करने से लाज़िम आता है कि मुन्किर के नज़्दीक तमाम अफ़्आ़ल अ़बस हों और अ़बस होना बात़िल तो बअ़्स व जज़ा का इन्कार भी बात़िल, इस बुरहाने क़वी से साबित हो गया कि मरने के बा'द उठना और ह़िसाब व जज़ा ज़रूर है इस में शक नहीं। 16 : सवाब व अ़ज़ाब के लिये 17 : मुराद इस से नफ़्ख़ए अख़ीरा है। 18 : अपनी क़ब्रों से ह़िसाब के लिये मौक़िफ़ की त़रफ़ 19 : और उस में राहें बन जाएंगी उन से मलाएका उतरेंगे। 20 : जिन की निहायत नहीं या'नी हमेशा रहेंगे। 21 : जैसे अ़मल वैसी जज़ा या'नी जैसा कुफ़्र बद तरीन जुर्म है वैसा ही सख़्त तरीन अ़ज़ाब उन को होगा। 22 : क्यूं कि वोह मरने के बा'द उठने के मुन्किर थे। 23 : लौहे मह़फ़ूज़ में 24 : उन के तमाम नेक व बद आ'माल हमारे इ़ल्म में हैं, हम उन पर जज़ा देंगे और आख़िरत में वक़्ते अ़ज़ाब उन से कहा जाएगा 25 : जन्नत में जहां उन्हें अ़ज़ाब से नजात होगी और हर मुराद ह़ासिल होगी। 26 : जिन में क़िस्म क़िस्म के नफ़ीस फलों वाले दरख़्त 27 : शराबे नफ़ीस का।

www.dawateislami.net

لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿۳۵﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿۳۶﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ

बेहूदा बात सुनें और न झुटलाना[28] सिला तुम्हारे रब की त़रफ़ से[29] निहायत काफ़ी अ़त़ा वोह जो रब है आस्मानों का

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿۳۷﴾ يَوْمَ

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है रह़मान कि उस से बात करने का इख़्तियार न रखेंगे[30] जिस दिन

يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙۗ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ

जिब्रील खड़ा होगा और सब फ़िरिश्ते परा बांधे (सफ़ें बनाए) कोई न बोल सकेगा[31] मगर जिसे रह़मान ने इज़्न दिया[32] और

قَالَ صَوَابًا ﴿۳۸﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿۳۹﴾

उस ने ठीक बात कही[33] वोह सच्चा दिन है अब जो चाहे अपने रब की त़रफ़ राह बना ले[34]

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَ

हम तुम्हें[35] एक अ़ज़ाब से डराते हैं कि नज़्दीक आ गया[36] जिस दिन आदमी देखेगा जो कुछ उस के हाथों ने आगे भेजा[37] और

يَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿۴۰﴾ ع ۲

काफ़िर कहेगा हाए मैं किसी त़रह ख़ाक हो जाता[38]

اٰيَاتُهَا ۴۶ ﴿۷۹﴾ سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ ۸۱ رُكُوْعَاتُهَا ۲

सूरए नाज़िआ़त मक्किय्या है, इस में छियालीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

28 : या'नी जन्नत में न कोई बेहूदा बात सुनने में आएगी न वहां कोई किसी को झुटलाएगा। 29 : तुम्हारे आ'माल का 30 : ब सबब उस के ख़ौफ़ के। 31 : उस के रो'ब व जलाल से 32 : कलाम या शफ़ाअ़त का 33 : दुन्या में और उसी के मुत़ाबिक़ अ़मल किया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि ठीक बात से कलिमए त़य्यिबा "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" मुराद है। 34 : अ़मले सालेह़ कर के ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहे। 35 : ऐ काफ़िरो ! 36 : मुराद इस से अ़ज़ाबे आख़िरत है। 37 : या'नी हर नेकी बदी उस के नामए आ'माल में दर्ज होगी जिस को वोह रोज़े क़ियामत देखेगा। 38 : ताकि अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहता। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत जब जानवरों और चौपायों को उठाया जाएगा और उन्हें एक दूसरे से बदला दिलाया जाएगा, अगर सींग वाले ने बे सींग वाले को मारा होगा तो उसे बदला दिलाया जाएगा, इस के बा'द वोह सब ख़ाक कर दिये जाएंगे। येह देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश मैं भी ख़ाक कर दिया जाता। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना बयान किये हैं कि मोमिनीन पर अल्लाह तआ़ला के इन्आ़म देख कर काफ़िर तमन्ना करेगा कि काश वोह दुन्या में ख़ाक होता या'नी मुतवाज़ेअ़ होता, मुतकब्बिर व सरकश न होता। एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का येह भी है कि काफ़िर से मुराद इब्लीस है जिस ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर त़ा'ना किया था कि वोह मिट्टी से पैदा किये गए और अपने आग से पैदा किये जाने पर इफ़्तिख़ार किया था, जब वोह ह़ज़रते आदम और उन की ईमानदार औलाद के सवाब को देखेगा और अपने आप को शिद्दते अ़ज़ाब में मुब्तला पाएगा तो कहेगा काश मैं मिट्टी होता या'नी ह़ज़रते आदम की त़रह मिट्टी से पैदा किया हुवा होता। 1 : सूरए اَلنَّازِعَات मक्किय्या है, इस में दो रुकूअ़, छियालीस आयतें, एक सो सत्तानवे कलिमे, सात सो तिरपन ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

وَ النّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّ النّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّ السّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

क़सम उन की[2] कि सख़्ती से जान खींचें[3] और नरमी से बन्द खोलें[4] और आसानी से पेरें (चलें)[5]

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿٥﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾

फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुंचें[6] फिर काम की तदबीर करें[7] कि काफ़िरों पर ज़रूर अ़ज़ाब होगा जिस दिन थरथराएगी थरथराने वाली[8]

وقف لازم

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَىٕذٍ وَّاجِفَةٌ ﴿٨﴾ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾

उस के पीछे आएगी पीछे आने वाली[9] कितने दिल उस दिन धड़क्ते होंगे आंख ऊपर न उठा सकेंगे[10]

وقف لازم

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِی الْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾

काफ़िर[11] कहते हैं क्या हम फिर उलटे पाउं पलटेंगे[12] क्या जब गली हड्डियां हो जाएंगे[13]

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾ فَاِنَّمَا هِیَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَاِذَا هُمْ

बोले यूं तो येह पलटना निरा नुक़्सान है[14] तो वोह[15] नहीं मगर एक झिड़की[16] जभी वोह खुले मैदान

وقف لازم

بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِیْثُ مُوْسٰی ﴿١٥﴾ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ

में आ पड़े होंगे[17] क्या तुम्हें मूसा की ख़बर आई[18] जब उसे उस के रब ने पाक जंगल

وقف لازم

الْمُقَدَّسِ طُوًی ﴿١٦﴾ اِذْهَبْ اِلٰی فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰی ﴿١٧﴾ فَقُلْ هَلْ لَّكَ

तुवा में[19] निदा फ़रमाई कि फ़िरऔ़न के पास जा उस ने सर उठाया[20] उस से कह क्या तुझे रग़बत

اِلٰۤی اَنْ تَزَكّٰی ﴿١٨﴾ وَ اَهْدِیَكَ اِلٰی رَبِّكَ فَتَخْشٰی ﴿١٩﴾ فَاَرٰىهُ الْاٰیَةَ

इस त़रफ़ है कि सुथरा हो[21] और तुझे तेरे रब की त़रफ़[22] राह बताऊं कि तू डरे[23] फिर मूसा ने उसे बहुत बड़ी निशानी

2 : या'नी उन फ़िरिश्तों की 3 : काफ़िरों की 4 : या'नी मोमिनीन की जानें नरमी के साथ क़ब्ज़ करें। 5 : जिस्म के अन्दर या आस्मान व ज़मीन के दरमियान मोमिनीन की रूहें ले कर। كَمَارُوِیَ عَنْ عَلِیٍّ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ। 6 : अपनी ख़िदमत पर, जिस के मामूर हैं। (روح البیان) 7 : या'नी उमूरे दुन्यविय्या के इन्तिज़ाम जो उन से मुतअ़ल्लिक़ हैं उन के सर अन्जाम करें। येह क़सम इस पर है 8 : ज़मीन और पहाड़ और हर चीज़ नफ़्ख़ए ऊला से इज़्तिराब में आ जाएगी और तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी। 9 : या'नी नफ़्ख़ए सानिया होगा जिस से हर शै बि इज़्ने इलाही ज़िन्दा कर दी जाएगी, इन दोनों नफ़्ख़ों के दरमियान चालीस साल का फ़ासिला होगा। 10 : उस दिन के होल और दह्शत से, येह हाल कुफ़्फ़ार का होगा। 11 : जो मरने के बा'द उठने के मुन्किर हैं जब उन से कहा जाता है कि तुम मरने के बा'द उठाए जाओगे तो 12 : या'नी मौत के बा'द फिर ज़िन्दगी की त़रफ़ वापस किये जाएंगे। 13 : रेज़ा रेज़ा बिखरी हुई, फिर भी ज़िन्दा किये जाएंगे ? 14 : या'नी अगर मौत के बा'द ज़िन्दा किया जाना सह़ीह़ है और हम मरने के बा'द उठाए गए तो इस में हमारा बड़ा नुक़्सान है क्यूं कि हम दुन्या में इस की तक्ज़ीब करते रहे, येह मक़ूला उन का बत़रीक़े इस्तिहज़ा था, इस पर उन्हें बताया गया कि तुम मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने को येह न समझो कि अल्लाह तआ़ला के लिये कुछ दुश्वार है, क्यूं कि क़ादिरे बरह़क़ पर कुछ भी दुश्वार नहीं। 15 : नफ़्ख़ए अख़ीरा। 16 : जिस से सब जम्अ़ कर लिये जाएंगे और जब नफ़्ख़ए अख़ीरा होगा 17 : ज़िन्दा हो कर। 18 : येह ख़िताब है सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को जब क़ौम का तक्ज़ीब करना आप को शाक़ और ना गवार गुज़रा तो अल्लाह तआ़ला ने आप की तस्कीन के लिये ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया जिन्हों ने अपनी क़ौम से बहुत तक्लीफ़ें पाई थीं, मुराद येह है कि अम्बिया को येह बातें पेश आती रहती हैं, आप इस से ग़मगीन न हों। 19 : जो मुल्के

الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾

दिखाई[24] इस पर उस ने झुटलाया[25] और ना फ़रमानी की फिर पीठ दी[26] अपनी कोशिश में लगा[27] तो लोगों को जम्अ़ किया[28] फिर पुकारा

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

फिर बोला मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं[29] तो अल्लाह ने उसे दुन्या व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा[30]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٢٦﴾ ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ع ٢٦

बेशक इस में सीख (सबक़) मिलता है उसे जो डरे[31] क्या तुम्हारी समझ के मुताबिक़ तुम्हारा बनाना[32] मुश्किल या आस्मान का

بَنٰهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰهَا ﴿٢٨﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰهَا ﴿٢٩﴾ وَ

अल्लाह ने उसे बनाया उस की छत ऊंची की[33] फिर उसे ठीक किया[34] उस की रात अंधेरी की और उस की रोशनी चमकाई[35] और

الْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰهَا ﴿٣١﴾ وَ

इस के बा'द ज़मीन फैलाई[36] उस में से[37] उस का पानी और चारा निकाला[38] और

الْجِبَالَ اَرْسٰهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

पहाड़ों को जमाया[39] तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाएदे को फिर जब आएगी वोह आ़म मुसीबत

الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ

सब से बड़ी[40] उस दिन आदमी याद करेगा जो कोशिश की थी[41] और जहन्नम हर देखने वाले पर ज़ाहिर की

يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ

जाएगी[42] तो वोह जिस ने सरकशी की[43] और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह दी[44] तो बेशक जहन्नम ही उस का

الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾

ठिकाना है और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा[45] और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका[46]

शाम में तूर के क़रीब है। **20 :** और वोह कुफ़्र व फ़साद में हद से गुज़र गया **21 :** कुफ़्रो शिर्क और मा'सियत व ना फ़रमानी से **22 :** या'नी उस की ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त की तरफ़ **23 :** उस के अ़ज़ाब से **24 :** यदे बैज़ा और अ़सा **25 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को **26 :** या'नी ईमान से ए'राज़ किया। **27 :** फ़साद अंगेज़ी की **28 :** या'नी जादूगरों को और अपने लश्करों को **29 :** या'नी मेरे ऊपर और कोई रब नहीं। **30 :** दुन्या में ग़र्क़ किया और आख़िरत में दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमाएगा। **31 :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से। इस के बा'द मुन्किरीने बअ़्स को इताब फ़रमाया जाता है। **32 :** तुम्हारे मरने के बा'द **33 :** बिग़ैर सुतून के **34 :** ऐसा कि उस में कहीं कोई ख़लल नहीं **35 :** नूरे आफ़्ताब को ज़ाहिर फ़रमा कर **36 :** जो पैदा तो आस्मान से पहले फ़रमाई गई थी मगर फैलाई न गई थी। **37 :** चश्मे जारी फ़रमा कर **38 :** जिसे जानदार खाते हैं। **39 :** रूए ज़मीन पर ताकि उस को सुकून हो **40 :** या'नी नफ़्ख़ए सानिया होगा जिस में मुर्दे उठाए जाएंगे। **41 :** दुन्या में नेक या बद **42 :** और तमाम ख़ल्क़ इस को देखेगी। **43 :** हद से गुज़रा और कुफ़्र इख़्तियार किया **44 :** आख़िरत पर और शहवात का ताबेअ़ हुवा **45 :** और इस ने जाना कि इसे रोज़े क़ियामत अपने रब के हुज़ूर हिसाब के लिये हाज़िर होना है **46 :** हराम चीज़ों की।

فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰی ﴿۴۱﴾ یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿۴۲﴾

तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है[47] तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब के लिये ठहरी हुई है

فِیْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿۴۳﴾ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿۴۴﴾ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ

तुम्हें उस के बयान से क्या तअ़ल्लुक़[48] तुम्हारे रब ही तक उस की इन्तिहा है तुम तो फ़क़त् उसे डराने वाले हो

مَنْ یَّخْشٰىهَا ﴿۴۵﴾ كَاَنَّهُمْ یَوْمَ یَرَوْنَهَا لَمْ یَلْبَثُوْۤا اِلَّا عَشِیَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿۴۶﴾

जो उस से डरे गोया जिस दिन वोह उसे देखेंगे[49] दुन्या में न रहे थे मगर एक शाम या उस के दिन चढ़े

اٰیاتها ۴۲ | ۸۰ سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ ۲۴ | رکوعها ۱

सूरए अ़बस मक्किय्या है, इस में बियालीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

عَبَسَ وَتَوَلّٰۤى ﴿۱﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿۲﴾ وَمَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّهٗ یَزَّكّٰۤى ﴿۳﴾

तेवरी चढ़ाई और मुंह फेरा[2] इस पर कि उस के पास वोह नाबीना ह़ाज़िर हुवा[3] और तुम्हें क्या मा'लूम शायद वोह सुथरा हो[4]

اَوْ یَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿۴﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿۵﴾ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿۶﴾

या नसीह़त ले तो उसे नसीह़त फ़ाएदा दे वोह जो बे परवाह बनता है[5] तुम उस के तो पीछे पड़ते हो[6]

وَمَا عَلَیْكَ اَلَّا یَزَّكّٰى ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ یَسْعٰى ﴿۸﴾ وَهُوَ یَخْشٰى ﴿۹﴾

और तुम्हारा कुछ ज़ियां नहीं इस में कि वोह सुथरा न हो[7] और वोह जो तुम्हारे हुज़ूर मलक्ता (नाज़ से दौड़ता हुवा) आया[8] और वोह डर रहा है[9]

47 : ऐ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! मक्का के काफ़िर **48 :** और उस का वक़्त बताने से क्या ग़रज़ **49 :** या'नी काफ़िर क़ियामत को जिस का इन्कार करते हैं तो उस के होल व दहशत से अपनी ज़िन्दगानी की मुद्दत भूल जाएंगे और ख़याल करेंगे कि **1 :** ''सूरए अ़बस'' मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बियालीस आयतें, एक सो तीस कलिमे, पांच सो तेंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने **3 :** या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम। **शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उ़त्बा बिन रबीआ़, अबू जहल बिन हिशाम और अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब और उबय बिन ख़लफ़ और उमय्या बिन ख़लफ़ अशराफ़े क़ुरैश को इस्लाम की दा'वत फ़रमा रहे थे, इस दरमियान में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम नाबीना ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बार बार निदा कर के अ़र्ज़ किया कि जो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को सिखाया है मुझे ता'लीम फ़रमाइये ! इब्ने उम्मे मक्तूम ने येह न समझा कि हुज़ूर दूसरों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं, इस से क़त्ए कलाम होगा। येह बात हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को गिरां गुज़री और आसारे ना गवारी चेहरए अक़्दस पर नुमायां हुए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अपनी दौलत सराए अक़्दस की त़रफ़ वापस हुए। इस पर येह आयात नाज़िल हुईं। और ''नाबीना'' फ़रमाने में अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की मा'ज़ूरी की त़रफ़ इशारा है कि क़त्ए कलाम उन से इस वज्ह से वाक़ेअ़ हुवा। इस आयत के नुज़ूल के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम का इक्राम फ़रमाते थे। **4 :** गुनाहों से। आप का इर्शाद सुन कर **5 :** **अल्लाह** तआ़ला से और ईमान लाने से ब सबब अपने माल के **6 :** और उस के ईमान लाने की त़मअ़ में उस के दरपै होते हो। **7 :** ईमान ला कर और हिदायत पा कर, क्यूं कि आप के ज़िम्मे दा'वत देना और पयामे इलाही पहुंचा देना है। **8 :** या'नी इब्ने उम्मे मक्तूम **9 :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से।

وقف لازم

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۚ﴿١٠﴾ كَلَّاۤ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۚ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ﴿١٢﴾ فِیْ

तो उसे छोड़ कर और त़रफ़ मश्ग़ूल होते हो यूं नहीं[10] येह तो समझाना है[11] तो जो चाहे उसे याद करे[12] उन

صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ﴿١٣﴾ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭ ۙ﴿١٤﴾ بِاَیْدِیْ سَفَرَةٍ ۙ﴿١٥﴾ كِرَامٍۭ

सह़ीफ़ों में कि इ़ज़्ज़त वाले हैं[13] बुलन्दी वाले[14] पाकी वाले[15] ऐसों के हाथ लिखे हुए जो करम वाले

بَرَرَةٍ ؕ﴿١٦﴾ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَكْفَرَهٗ ؕ﴿١٧﴾ مِنْ اَیِّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ ؕ﴿١٨﴾ مِنْ

निकोई वाले[16] आदमी मारा जाइयो क्या नाशुक्र है[17] उसे काहे से बनाया पानी की

نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِیْلَ یَسَّرَهٗ ۙ﴿٢٠﴾ ثُمَّ اَمَاتَهٗ

बूंद से उसे पैदा फ़रमाया फिर उसे त़रह़ त़रह़ के अन्दाज़ों पर रखा[18] फिर उसे रास्ता आसान किया[19] फिर उसे मौत दी

فَاَقْبَرَهٗ ۙ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ؕ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا یَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ؕ﴿٢٣﴾ فَلْیَنْظُرِ

फिर क़ब्र में रखवाया[20] फिर जब चाहा उसे बाहर निकाला[21] कोई नहीं उस ने अब तक पूरा न किया जो उसे हुक्म हुवा था[22] तो आदमी

الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ۙ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ

को चाहिये अपने खानों को देखे[23] कि हम ने अच्छी त़रह़ पानी डाला[24] फिर ज़मीन को खूब

شَقًّا ۙ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِیْهَا حَبًّا ۙ﴿٢٧﴾ وَّ عِنَبًا وَّ قَضْبًا ۙ﴿٢٨﴾ وَّ زَیْتُوْنًا وَّ نَخْلًا ۙ﴿٢٩﴾ وَّ

चीरा तो उस में उगाया अनाज और अंगूर और चारा और ज़ैतून और खजूर और

حَدَآىٕقَ غُلْبًا ۙ﴿٣٠﴾ وَّ فَاكِهَةً وَّ اَبًّا ۙ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَ لِاَنْعَامِكُمْ ؕ﴿٣٢﴾ فَاِذَا

घने बाग़ीचे और मेवे और दूब (घास) तुम्हारे फ़ाएदे को और तुम्हारे चौपायों के फिर जब

جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾ یَوْمَ یَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِیْهِ ۙ﴿٣٤﴾ وَ اُمِّهٖ وَ اَبِیْهِ ۙ﴿٣٥﴾

आएगी वोह कान फाड़ने वाली चिंघाड़[25] उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और मां और बाप

10 : ऐसा न कीजिये **11 :** या'नी आयाते क़ुरआन मख़्लूक़ के लिये नसीह़त हैं। **12 :** और उस से पन्द पज़ीर हो। **13 :** **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक **14 :** रफ़ीउ़ल क़द्र **15 :** कि उन्हें पाकों के सिवा कोई न छूए **16 :** **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमां बरदार और वोह फ़िरिश्ते हैं जो इस को लौह़े मह़फ़ूज़ से नक़्ल करते हैं। **17 :** कि **अल्लाह** तआ़ला की कसीर ने'मतों और बे निहायत एह़सानों के बा वुजूद कुफ़्र करता है। **18 :** कभी नुत़्फ़ा की शक्ल में, कभी अ़लक़ा की सूरत में, कभी मुज़्ग़ा की शान में तक्मीले आफ़रीनिश तक। **19 :** मां के पेट से बरआमद होने का। **20 :** कि बा'दे मौत बे इ़ज़्ज़त न हो। **21 :** या'नी बा'दे मौत ह़िसाब व जज़ा के लिये, फिर उस के वासित़े ज़िन्दगानी मुक़र्रर की। **22 :** उस के रब का या'नी काफ़िर ईमान ला कर हुक्मे इलाही को बजा न लाया। **23 :** जिन्हें खाता है और जो उस की ह़यात का सबब हैं कि उन में उस के रब की क़ुदरत ज़ाहिर है, किस त़रह़ जुज़्वे बदन होते हैं और किस निज़ामे अ़जीब से काम में आते हैं और किस त़रह़ रब عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाता है। इन ह़िक्मतों का बयान फ़रमाया जाता है : **24 :** बादल से **25 :** या'नी क़ियामत के नफ़्ख़ए सानिया की होलनाक आवाज़ जो मख़्लूक़ को बहरा कर देगी।

www.dawateislami.net

وَصَاحِبَتِهٖ وَ بَنِيۡهِ ﴿۳۶﴾ لِكُلِّ امۡرِیًٔ مِّنۡهُمۡ يَوۡمَئِذٍ شَاۡنٌ يُّغۡنِيۡهِ ﴿۳۷﴾

और जोरू (बीवी) और बेटों से[26] इन में से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वोही उसे बस है[27]

وُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍ مُّسۡفِرَةٌ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسۡتَبۡشِرَةٌ ﴿۳۹﴾ وَ وُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍ

कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे[28] हंसते खुशियां मनाते[29] और कितने मूंहों पर उस दिन

عَلَيۡهَا غَبَرَةٌ ﴿۴۰﴾ تَرۡهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿۴۱﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡكَفَرَةُ الۡفَجَرَةُ ﴿۴۲﴾

गर्द पड़ी होगी उन पर सियाही चढ़ रही है[30] येह वोही हैं काफ़िर बदकार

ع ۵

اٰياتها ۲۹ | ۸۱ سُوۡرَةُ التَّكۡوِيۡرِ مَكِّيَّةٌ ۷ | رکوعها ۱

सूरए तक्वीर मक्किय्या है, इस में उन्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا الشَّمۡسُ كُوِّرَتۡ ﴿۱﴾ وَ اِذَا النُّجُوۡمُ انۡكَدَرَتۡ ﴿۲﴾ وَ اِذَا الۡجِبَالُ

जब धूप लपेटी जाए[2] और जब तारे झड़ पड़ें[3] और जब पहाड़

سُيِّرَتۡ ﴿۳﴾ وَ اِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ ﴿۴﴾ وَ اِذَا الۡوُحُوۡشُ حُشِرَتۡ ﴿۵﴾ وَ

चलाए जाएं[4] और जब थलकी (गाभन) ऊंटनियां[5] छूटी फिरें[6] और जब वह़शी जानवर जम्अ़ किये जाएं[7] और

اِذَا الۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ﴿۶﴾ وَ اِذَا النُّفُوۡسُ زُوِّجَتۡ ﴿۷﴾ وَ اِذَا الۡمَوۡءٗدَةُ

जब समुन्दर सुलगाए जाएं[8] और जब जानें के जोड़ बनें[9] और जब ज़िन्दा दबाई हुई से

26 : इन में से किसी की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न होगा अपनी ही पड़ी होगी। 27 : क़ियामत का ह़ाल और उस के अहवाल बयान फ़रमाने के बा'द मुकल्लफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह दो क़िस्म हैं सईद और शक़ी, जो सईद हैं उन का ह़ाल इर्शाद होता है : 28 : नूरे ईमान से या शब की इबादतों से या वुज़ू के आसार से 29 : अल्लाह तआ़ला के ने'मत व करम और उस की रिज़ा पर। इस के बा'द अश्क़िया का ह़ाल बयान फ़रमाया जाता है : 30 : ज़लील ह़ाल वह़शत ज़दा सूरत। 1 : "सूरए कुव्विरत" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस आयतें, एक सो चार कलिमे, पांच सो तीस ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वोह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए "اِذَا الشَّمۡسُ كُوِّرَتۡ" और सूरए "اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ" और सूरए اِذَا السَّمَآءُ انۡشَقَّتۡ पढ़े। (ترمذی) 2 : या'नी आफ़्ताब का नूर ज़ाइल हो जाए 3 : बारिश की त़रह़ आस्मान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे 4 : और ग़ुबार की त़रह़ हवा में उड़ते फिरें 5 : जिन के ह़म्ल को दस महीने गुज़र चुके हों और बियाहने का वक़्त क़रीब आ गया हो 6 : न उन का कोई चराने वाला हो न निगरान, उस रोज़ की दहशत का येह आ़लम हो, और लोग अपने ह़ाल में ऐसे मुब्तला हों कि उन की परवाह करने वाला कोई न हो। 7 : रोज़े क़ियामत बा'दे बअ़्स कि एक दूसरे से बदला लें, फिर ख़ाक कर दिये जाएं। 8 : फिर वोह ख़ाक हो जाएं 9 : इस त़रह़ कि नेक नेकों के साथ हों और बद बदों के साथ या येह मा'ना कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जाएं या येह कि अपने अ़मलों से मिला दी जाएं या येह कि ईमानदारों की जानें ह़ूरों के और काफ़िरों की जानें शयात़ीन के साथ मिला दी जाएं।

www.dawateislami.net

سُئِلَتْ ۝۸ بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝۹ وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝۱۰ وَ اِذَا السَّمَآءُ

पूछा जाए[10] किस ख़ता पर मारी गई[11] और जब नामए आ'माल खोले जाएं और जब आस्मान जगह से

كُشِطَتْ ۝۱۱ وَ اِذَا الْجَحِیْمُ سُعِّرَتْ ۝۱۲ وَ اِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ۝۱۳ عَلِمَتْ

खींच लिया जाए[12] और जब जहन्नम को भड़काया जाए[13] और जब जन्नत पास लाई जाए[14] हर जान को मा'लूम

نَفْسٌ مَّاۤ اَحْضَرَتْ ۝۱۴ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝۱۵ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝۱۶

हो जाएगा जो ह़ाज़िर लाई[15] तो क़सम है उन[16] की जो उलटे फिरें सीधे चलें थम रहें[17]

وَ الَّیْلِ اِذَا عَسْعَسَ ۝۱۷ وَ الصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ۝۱۸ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ

और रात की जब पीठ दे[18] और सुब्ह़ की जब दम ले[19] बेशक येह[20] इ़ज़्ज़त वाले रसूल[21] का

كَرِیْمٍ ۝۱۹ ذِیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِیْنٍ ۝۲۰ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِیْنٍ ۝۲۱

पढ़ना है जो कुव्वत वाला है मालिके अ़र्श के हुज़ूर इ़ज़्ज़त वाला वहां उस का हुक्म माना जाता है[22] अमानत दार है[23]

وَ مَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ۝۲۲ وَ لَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِیْنِ ۝۲۳ وَ مَا هُوَ

और तुम्हारे साह़िब[24] मज्नून नहीं[25] और बेशक उन्हों ने उसे[26] रोशन कनारे पर देखा[27] और येह नबी

عَلَى الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ ۝۲۴ وَ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَیْطٰنٍ رَّجِیْمٍ ۝۲۵ فَاَیْنَ

ग़ैब बताने में बख़ील नहीं और कुरआन मरदूद शैत़ान का पढ़ा हुवा नहीं फिर किधर

تَذْهَبُوْنَ ۝۲۶ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝۲۷ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ

जाते हो[28] वोह तो नसीह़त ही है सारे जहां के लिये उस के लिये जो तुम में

یَّسْتَقِیْمَ ۝۲۸ وَ مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۲۹ ع ۲۹

सीधा होना चाहे[29] और तुम क्या चाहो मगर येह कि चाहे अल्लाह सारे जहान का रब

10 : या'नी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़्न की गई हो, जैसा कि अ़रब का दस्तूर था कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे। 11 : येह सुवाल क़ातिल की तौबीख़ के लिये है ताकि वोह लड़की जवाब दे कि मैं बे गुनाह मारी गई। 12 : जैसे ज़ब्ह़ की हुई बकरी के जिस्म से खाल खींच ली जाती है। 13 : दुश्मनाने ख़ुदा के लिये 14 : अल्लाह तआ़ला के प्यारों के 15 : नेकी या बदी। 16 : सितारों 17 : येह पांच सितारे हैं जिन्हें ख़म्सए मुतह़य्यरह कहते हैं : (1) ज़ुह़ल, (2) मुश्तरी, (3) मिर्रीख़, (4) ज़ुहरा, (5) उ़त़ारिद (كَذَا رُوِیَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِي طَالِبٍ رضی اللہ تعالی عنہ-) 18 : और उस की तारीकी हलकी पड़े 19 : और उस की रोशनी ख़ूब फैले 20 : कुरआन शरीफ़ 21 : ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام 22 : या'नी आस्मानों में फ़िरिश्ते उस की इत़ाअ़त करते हैं। 23 : वह़ये इलाही का 24 : ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم 25 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहते हैं 26 : या'नी जिब्रीले अमीन को उन की अस्ली सूरत में 27 : या'नी आफ़्ताब के जाए तुलूअ़ पर 28 : और क्यूं कुरआन से ए'राज़ करते हो 29 : या'नी जिस को ह़क़ का इत्तिबाअ़ और इस पर क़ियाम मन्ज़ूर हो।

آیاتها ١٩ | ٨٢ سُورَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ ٨٢ | رکوعها ١

सूरए इन्फ़ितार मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ (١) وَ اِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ (٢) وَ اِذَا الْبِحَارُ

जब आस्मान फट पड़े और जब तारे झड़ पड़ें और जब समुन्दर बहा

فُجِّرَتْ (٣) وَ اِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ (٤) عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ

दिये जाएं[2] और जब क़ब्रें कुरेदी जाएं[3] हर जान जान लेगी जो उस ने आगे भेजा[4] और

اَخَّرَتْ (٥) یٰۤاَیُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِیْمِ (٦) الَّذِیْ

जो पीछे[5] ऐ आदमी तुझे किस चीज़ ने फ़रेब दिया अपने करम वाले रब से[6] जिस ने

خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ (٧) فِیْۤ اَیِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ (٨) كَلَّا بَلْ

तुझे पैदा किया[7] फिर ठीक बनाया[8] फिर हमवार फ़रमाया[9] जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया[10] कोई नहीं[11] बल्कि

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّیْنِ (٩) وَ اِنَّ عَلَیْكُمْ لَحٰفِظِیْنَ (١٠) كِرَامًا كَاتِبِیْنَ (١١)

तुम इन्साफ़ होने को झुटलाते हो[12] और बेशक तुम पर कुछ निगहबान हैं[13] मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले[14]

یَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ (١٢) اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍ (١٣) وَ اِنَّ الْفُجَّارَ

कि जानते हैं जो कुछ तुम करो[15] बेशक नेकोकार[16] ज़रूर चैन में हैं[17] और बेशक बदकार[18]

لَفِیْ جَحِیْمٍ (١٤) یَّصْلَوْنَهَا یَوْمَ الدِّیْنِ (١٥) وَ مَا هُمْ عَنْهَا بِغَآىٕبِیْنَ (١٦)

ज़रूर दोज़ख़ में हैं इन्साफ़ के दिन उस में जाएंगे और उस से कहीं छुप न सकेंगे

1 : सूरए "इन्फ़ितार" मक्की है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, अस्सी कलिमे, तीन सो सत्ताईस ह़र्फ़ हैं। 2 : और शीरीं व शोर (मीठे और कड़वे) सब मिल कर एक हो जाएं। 3 : और उन के मुर्दे ज़िन्दा कर के निकाले जाएं। 4 : अ़मले नेक या बद 5 : छोड़ी, नेकी या बदी और एक क़ौल येह है कि जो आगे भेजा उस से सदक़ात मुराद हैं और जो पीछे छोड़ा उस से मीरास। 6 : कि तू ने बा वुजूद उस के ने'मतो करम के उस का ह़क़ न पहचाना और उस की ना फ़रमानी की 7 : और नेस्त से हस्त किया। 8 : सालिमुल आ'ज़ा सुनता देखता 9 : आ'ज़ा में मुनासबत रखी 10 : लम्बा या ठिंगना, ख़ूब रू, या कम रू, गोरा या काला, मर्द या औ़रत 11 : तुम्हें अपने रब के करम पर मग़रूर न होना चाहिये 12 : और रोज़े जज़ा के मुन्किर हो 13 : तुम्हारे आ'माल व अक़्वाल के और वोह फ़िरिश्ते हैं 14 : तुम्हारे अ़मलों के 15 : नेकी या बदी, उन से तुम्हारा कोई अ़मल छुपा नहीं। 16 : या'नी मोमिनीन सादिक़ुल ईमान 17 : जन्नत में 18 : काफ़िर।

www.dawateislami.net

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾

और तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन फिर तू क्या जाने कैसा इन्साफ़ का दिन

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

जिस दिन कोई जान किसी जान का कुछ इख़्तियार न रखेगी[19] और सारा हुक्म उस दिन अल्लाह का है

آياتها ٣٦ | سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ ٨٣ ٨٦ | رکوعها ١

सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन मक्किय्या है, इस में छत्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

कम तोलने वालों की ख़राबी है वोह कि जब औरों से माप (नाप कर) लें पूरा लें

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

और जब उन्हें माप या तोल कर दें कम कर दें क्या उन लोगों को गुमान नहीं कि उन्हें

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾

उठना है एक अ़ज़मत वाले दिन के लिये[2] जिस दिन सब लोग[3] रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर खड़े होंगे

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾

बेशक काफ़िरों की लिखत[4] सब से नीची जगह सिज्जीन में है[5] और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है[6]

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ

वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है[7] उस दिन[8] झुटलाने वालों की ख़राबी है जो इन्साफ़ के

19 : या'नी कोई काफ़िर किसी काफ़िर को नफ़्अ़ न पहुंचा सकेगा। (خازن) 1 : "सूरए मुत़फ़्फ़िफ़ीन" एक क़ौल में मक्किय्या है और एक में मदनिय्या और एक क़ौल येह है कि ज़मानए हिजरत में मक्कए मुकर्रमा व मदीनए त़य्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई, इस सूरत में एक रुकूअ़, छत्तीस आयतें, एक सो उन्हत्तर कलिमे और सात सो तीस ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब मदीनए त़य्यिबा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यहां के लोग पैमाने में ख़ियानत करते थे, बिल ख़ुसूस एक शख़्स अबू जुहैना ऐसा था कि वोह दो पैमाने रखता था लेने का और, देने का और। उन लोगों के ह़क़ में येह आयतें नाज़िल हुईं और उन्हें पैमाने में अ़द्ल करने का हुक्म दिया गया। 2 : या'नी रोज़े क़ियामत, उस रोज़ ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब किया जाएगा। 3 : अपनी क़ब्रों से उठ कर 4 : या'नी उन के आ'माल नामे। 5 : सिज्जीन सातवीं ज़मीन के अस्फ़ल में एक मक़ाम है जो इब्लीस और उस के लश्करों का मह़ल है। 6 : या'नी वोह निहायत ही होल व हैबत का मक़ाम है। 7 : जो न मिट सकता है न बदल सकता है। 8 : जब कि वोह नविश्ता (लिखा हुवा) निकाला जाएगा।

www.dawateislami.net

بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى

दिन को झुटलाते हैं[9] और इसे न झुटलाएगा मगर हर सरकश गुनहगार[10] जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ۜ سكتة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

पढ़ी जाएं कहे[11] अगलों की कहानियां हैं कोई नहीं[12] बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है

مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

उन की कमाइयों ने[13] हां हां बेशक वोह उस दिन[14] अपने रब के दीदार से महरूम हैं[15]

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ

फिर बेशक उन्हें जहन्नम में दाख़िल होना फिर कहा जाएगा येह है वोह[16] जिसे तुम

تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ

झुटलाते थे[17] हां हां बेशक नेकों की लिखत[18] सब से ऊंचे महल इल्लिय्यीन में है[19] और तू क्या जाने

مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ

इल्लिय्यीन कैसी है[20] वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है[21] कि मुक़र्रब[22] जिस की ज़ियारत करते हैं बेशक नेकोकार

لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ

ज़रूर चैन में हैं तख़्तों पर देखते हैं[23] तो उन के चेहरों में चैन की ताज़गी

النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ

पहचाने[24] निथरी (ख़ालिस व पाक) शराब पिलाए जाएंगे जो मोहर की हुई रखी है[25] उस की मोहर मुश्क पर है और इसी पर

9 : और रोज़े जज़ा या'नी क़ियामत के मुन्किर हैं। 10 : ह़द से गुज़रने वाला। 11 : उन की निस्बत कि येह 12 : उस का कहना ग़लत है। 13 : उन मआसी और गुनाहों ने जो वोह करते हैं या'नी अपने आ'माले बद की शामत से उन के दिल ज़ंग ख़ुर्दा और सियाह हो गए। ह़दीस शरीफ़ में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब बन्दा कोई गुनाह करता है उस के दिल में एक नुक़्तए सियाह पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि तमाम क़ल्ब सियाह हो जाता है। और येही रैन या'नी वोह ज़ंग है जिस का आयत में ज़िक्र हुवा। (ترمذی)
14 : या'नी रोज़े क़ियामत 15 : जैसा कि दुन्या में उस की तौह़ीद से महरूम रहे। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि मोमिनीन को आख़िरत में दीदारे इलाही की ने'मत मुयस्सर आएगी, क्यूं कि महरूमी दीदार से कुफ़्फ़ार की वईद में ज़िक्र की गई और जो चीज़ कुफ़्फ़ार के लिये वईद व तह्दीद हो वोह मुसल्मान के ह़क़ में साबित हो नहीं सकती तो लाज़िम आया कि मोमिनीन के ह़क़ में येह महरूमी साबित न हो। ह़ज़रते इमाम मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि जब उस ने अपने दुश्मनों को अपने दीदार से महरूम किया तो दोस्तों को अपनी तजल्ली से नवाज़ेगा और अपने दीदार से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। 16 : अ़ज़ाब 17 : दुन्या में 18 : या'नी मोमिनीने सादिक़ीन के आ'माल नामे 19 : इल्लिय्यीन सातवें आस्मान में ज़ेरे अ़र्श है। 20 : या'नी उस की शान अ़जीब अ़ज़मत वाली है। 21 : इल्लिय्यीन में। उस में उन के आ'माल लिखे हैं। 22 : फ़िरिश्ते 23 : अल्लाह तआ़ला के इक्राम और उस की ने'मतों को जो उस ने उन्हें अ़ता फ़रमाईं और अपने दुश्मनों को जो त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं। 24 : कि वोह ख़ुशी से चमकते दमकते होंगे और सुरूरे क़ल्ब के आसार उन चेहरों पर नुमायां होंगे। 25 : कि अबरार ही उस की मोहर तोड़ेंगे।

www.dawateislami.net

فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ

चाहिये कि ललचाएं ललचाने वाले[26] और उस की मिलौनी (मिलावट) तस्नीम से है[27] वोह चश्मा जिस से

بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मुक़र्रबाने बारगाह पीते हैं[28] बेशक मुजरिम लोग[29] ईमान वालों से[30]

يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَ اِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى

हंसा करते थे और जब वोह[31] इन पर गुज़रते तो येह आपस में उन पर आंखों से इशारे करते[32] और जब[33] अपने घर

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَ اِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ

पलटते खुशियां करते पलटते[34] और जब मुसलमानों को देखते कहते बेशक येह लोग

لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَ مَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ

बहके हुए हैं[35] और येह[36] कुछ उन पर निगहबान बना कर न भेजे गए[37] तो आज[38] ईमान

اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ

वाले काफ़िरों से हंसते हैं[39] तख़्तों पर बैठे देखते हैं[40] क्यूं

ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع ٨

कुछ बदला मिला काफ़िरों को अपने किये का[41]

26 : त़ाअ़त की त़रफ़ सब्क़त कर के और बुराइयों से बाज़ रह कर। **27 :** जो जन्नत की शराबों में आ'ला है। **28 :** या'नी मुक़र्रबीन ख़ालिस शराबे तस्नीम पीते हैं और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम मिलाई जाती है। **29 :** मिस्ल अबू जहल और वलीद बिन मुग़ीरा और आ़स बिन वाइल वग़ैरा रुअसाए कुफ़्फ़ार के **30 :** मिस्ल हज़रते अ़म्मार व ख़ब्बाब व सुहैब व बिलाल वग़ैरा फ़ुक़राए मोमिनीन के। **31 :** मोमिनीन **32 :** ब त़रीक़े त़ा'न व ऐब के। **शाने नुज़ूल :** मन्क़ूल है कि ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ मुसलमानों की एक जमाअ़त में तशरीफ़ ले जा रहे थे, मुनाफ़िक़ीन ने उन्हें देख कर आंखों से इशारे किये और मस्ख़रगी से हंसे और आपस में उन ह़ज़रात के ह़क़ में बेहूदा कलिमात कहे तो इस से पहले कि अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की ख़िदमत में पहुंचें येह आयतें नाज़िल हुईं। **33 :** कुफ़्फ़ार **34 :** या'नी मुसल्मानों को बुरा कह कर आपस में उन की हंसी बनाते और ख़ुश होते हुए। **35 :** कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم पर ईमान लाए और दुन्या की लज़्ज़तों को आख़िरत की उम्मीदों पर छोड़ दिया। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **36 :** कुफ़्फ़ार **37 :** कि उन के अह़वाल व आ'माल पर गिरिफ़्त करें, बल्कि उन्हें अपनी इस्लाह़ का हुक्म दिया गया है, वोह अपना ह़ाल दुरुस्त करें दूसरों को बे वुक़ूफ़ बताने और उन की हंसी उड़ाने से क्या फ़ाएदा उठा सकते हैं। **38 :** या'नी रोज़े क़ियामत **39 :** जैसा काफ़िर दुन्या में मुसल्मानों की ग़ुर्बत व मेह़नत पर हंसते थे, यहां मुआ़मला बर अ़क्स है : मोमिन दाइमी ऐशो राह़त में हैं और काफ़िर ज़िल्लतो ख़्वारी के दाइमी अ़ज़ाब में, जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है, काफ़िर उस से निकलने के लिये दरवाज़े की त़रफ़ दौड़ते हैं, जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचते हैं दरवाज़ा बन्द हो जाता है, बार बार ऐसा ही होता है। काफ़िरों की येह ह़ालत देख कर मुसल्मान उन से हंसी करते हैं और मुसल्मानों का ह़ाल येह है कि वोह जन्नत में जवाहिरात के **40 :** कुफ़्फ़ार की ज़िल्लतो रुस्वाई और शिद्दते अ़ज़ाब को और उस पर हंसते हैं। **41 :** या'नी उन आ'माल का जो उन्हों ने दुन्या में किये थे।

رکوعها ١ ﴿٨٤﴾ سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ ﴿٨٣﴾ اٰياتها ٢٥

सूरए इन्शिक़ाक़ मक्किय्या है, इस में पच्चीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह्म वाला[1]

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿۱﴾ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ﴿۲﴾ وَ اِذَا الْاَرْضُ

जब आस्मान शक़ हो[2] और अपने रब का हुक्म सुने[3] और उसे सज़ावार ही येह है और जब ज़मीन

مُدَّتْ ﴿۳﴾ وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ ﴿۴﴾ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ﴿۵﴾

दराज़ की जाए[4] और जो कुछ उस में है[5] डाल दे और ख़ाली हो जाए और अपने रब का हुक्म सुने[6] और उसे सज़ावार ही येह है[7]

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿۶﴾ فَاَمَّا مَنْ

ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की त़रफ़[8] यक़ीनी दौड़ना है फिर उस से मिलना[9] तो वोह जो

اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿۷﴾ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿۸﴾ وَّ يَنْقَلِبُ

अपना नामए आ'माल दहने हाथ में दिया जाए[10] उस से अ़न्क़रीब सहल हिसाब लिया जाएगा[11] और अपने घर वालों

اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿۹﴾ وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿۱۰﴾ فَسَوْفَ

की त़रफ़[12] शाद शाद पलटेगा[13] और वोह जिस का नामए आ'माल उस की पीठ के पीछे दिया जाए[14] वोह अ़न्क़रीब

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿۱۱﴾ وَّ يَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿۱۳﴾

मौत मांगेगा[15] और भड़कती आग में जाएगा बेशक वोह अपने घर में[16] खु़श था[17]

1 : "सूरए इन्शक़्क़त" जिस को "सूरए इन्शिक़ाक़" भी कहते हैं मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पच्चीस आयतें, एक सो सात कलिमात, चार सो तीस ह़र्फ़ हैं। 2 : क़ियामत क़ाइम होने के वक़्त 3 : अपने शक़ होने के मुतअ़ल्लिक़ और उस की इत़ाअ़त करे। 4 : और उस पर कोई इमारत और पहाड़ बाक़ी न रहे। 5 : या'नी उस के बत़्न में ख़ज़ाने और मुर्दे सब को बाहर 6 : अपने अन्दर की चीज़ें बाहर फेंक देने के मुतअ़ल्लिक़ और उस की इत़ाअ़त करे 7 : उस वक़्त इन्सान अपने अ़मल के नताइज देखेगा। 8 : या'नी उस के हुज़ूर हाज़िरी के लिये, मुराद इस से मौत है। (مدارک) 9 : और अपने अ़मल की जज़ा पाना 10 : और वोह मोमिन है 11 : सहल हिसाब येह है कि उस पर उस के आ'माल पेश किये जाएं, वोह अपनी त़ाअ़त व मा'सियत को पहचाने, फिर त़ाअ़त पर सवाब दिया जाए और मा'सियत से तजावुज़ फ़रमाया जाए, येह सहल हिसाब है न इस में शिद्दते मुनाक़शा (हर हर काम का हिसाब), न येह कहा जाए कि ऐसा क्यूं किया न उ़ज़्र की त़लब हो न इस पर हुज्जत क़ाइम की जाए, क्यूं कि जिस से मुत़ालबा किया गया उसे कोई उ़ज़्र हाथ न आएगा और वोह कोई हुज्जत न पाएगा रुस्वा होगा (अल्लाह तआला मुनाक़शए हिसाब से पनाह दे) 12 : घर वालों से जन्नती घर वाले मुराद हैं ख़्वाह हूरों में से हों या इन्सानों में से। 13 : अपनी इस काम्याबी पर। 14 : और वोह काफ़िर है जिस का दाहना हाथ तो उस की गरदन के साथ मिला कर त़ौक़ में बांध दिया जाएगा और बायां हाथ पसे पुश्त कर दिया जाएगा, उस में उस का नामए आ'माल दिया जाएगा, इस ह़ाल को देख कर वोह जान लेगा कि वोह अहले नार में से है तो 15 : और "या सुबूराह" कहेगा "सुबूर" के मा'ना हलाकत के हैं। 16 : दुन्या के अन्दर 17 : अपनी ख़्वाहिशों और शह्वतों में और मुतकब्बिर व मग़रूर।

www.dawateislami.net

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰٓى إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَآ معانقة

वोह समझा कि उसे फिरना नहीं[18] हां क्यूं नहीं[19] बेशक उस का रब उसे देख रहा है तो मुझे

أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾

क़सम है शाम के उजाले की[20] और रात की और जो चीज़ें उस में जम्अ़ होती हैं[21] और चांद की जब पूरा हो[22]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قُرِئَ

ज़रूर तुम मन्ज़िल ब मन्ज़िल चढ़ोगे[23] तो क्या हुवा ईमान नहीं लाते[24] और जब क़ुरआन

عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾ السجدة بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ السجدة ١٣

पढ़ा जाए सज्दा नहीं करते[25] बल्कि काफ़िर झुटला रहे हैं[26]

وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ إِلَّا الَّذِيْنَ

और **अल्लाह** ख़ूब जानता है जो अपने जी में रखते हैं[27] तो तुम उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की बिशारत दो[28] मगर जो ईमान

18 : अपने रब की त़रफ़ और वोह मरने के बा'द उठाया न जाएगा **19 :** ज़रूर अपने रब की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा और मरने के बा'द उठाया जाएगा और ह़िसाब किया जाएगा। **20 :** जो सुर्ख़ी के बा'द नुमूदार होता है और जिस के ग़ाइब होने पर इमाम साह़िब के नज़्दीक वक़्ते इशा शुरूअ़ होता है, येही क़ौल है कसीर सह़ाबा का और बा'ज़ उ़लमा "शफ़क़" से सुर्ख़ी मुराद लेते हैं। **21 :** मिस्ल जानवरों के जो दिन में मुन्तशिर होते हैं और शब में अपने आशियानों और ठिकानों की त़रफ़ चले आते हैं और मिस्ल तारीकी के और सितारों और उन आ'माल के जो शब में किये जाते हैं मिस्ल तहज्जुद के **22 :** और उस का नूर कामिल हो जाए और येह अय्यामे बैज़ या'नी तेरहवीं चौदहवीं पन्दरहवीं तारीख़ों में होता है। **23 :** येह ख़ित़ाब या तो इन्सानों को है इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि तुम्हें ह़ाल के बा'द ह़ाल पेश आएगा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने फ़रमाया कि मौत के शदाइद व अहवाल फिर मरने के बा'द उठना फिर मौक़िफ़े ह़िसाब में पेश होना, और येह भी कहा गया है कि इन्सान के ह़ालात में तदरीज है, एक वक़्त दूध पीता बच्चा होता है, फिर दूध छूटता है फिर लड़क पन का ज़माना आता है, फिर जवान होता है, फिर जवानी ढलती है, फिर बूढ़ा होता है और एक क़ौल येह है कि येह ख़ित़ाब नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को है कि आप शबे मे'राज एक आस्मान पर तशरीफ़ ले गए फिर दूसरे पर इसी त़रह़ दरजा ब दरजा मर्तबा ब मर्तबा मनाज़िले क़ुर्ब में वासिल हुए। बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से मरवी है कि इस आयत में नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم का ह़ाल बयान फ़रमाया गया है, मा'ना येह हैं कि आप को मुश्रिकीन पर फ़त्ह़ो ज़फ़र ह़ासिल होगी और अन्जाम बहुत बेहतर होगा, आप कुफ़्फ़ार की सरकशी और उन की तक्ज़ीब से ग़मगीन न हों। **24 :** या'नी अब ईमान लाने में क्या उ़ज़्र है बा वुजूद दलाइल ज़ाहिर होने के क्यूं ईमान नहीं लाते ? **25 :** मुराद इस से सज्दए तिलावत है। **शाने नुज़ूल :** जब सूरत "इक़्रअ" में "وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ" नाज़िल हुवा तो सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने येह आयत पढ़ कर सज्दा किया, मोमिनीन ने आप के साथ सज्दा किया और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सज्दा न किया, उन के इस फ़े'ल की बुराई में येह आयत नाज़िल हुई कि कुफ़्फ़ार पर जब क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वोह सज्दए तिलावत नहीं करते। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि सज्दए तिलावत वाजिब है सुनने वाले पर, और ह़दीस से साबित है कि पढ़ने वाले सुनने वाले दोनों पर सज्दा वाजिब हो जाता है। क़ुरआने करीम में सज्दे की चौदह आयतें हैं जिन को पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है ख़्वाह सुनने वाले ने सुनने का इरादा किया हो या न किया हो। **मस्अला :** सज्दए तिलावत के लिये भी वोही शर्तें हैं जो नमाज़ के लिये मिस्ल त़हारत और क़िब्ला रू होने और सत्रे औ़रत वग़ैरा के। **मस्अला :** सज्दे के अव्वलो आख़िर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिये। **मस्अला :** इमाम ने आयते सज्दा पढ़ी तो उस पर और मुक़्तदियों पर और जो शख़्स नमाज़ में न हो और सुन ले उस पर सज्दा वाजिब है। **मस्अला :** सज्दे की जितनी आयतें पढ़ी जाएंगी उतने ही सज्दे वाजिब होंगे अगर एक ही आयत एक मजलिस में बार बार पढ़ी गई तो एक ही सज्दा वाजिब हुवा। (تفسیر احمدی) والتفصيل فی كتب الفقه **26 :** क़ुरआन को और मरने के बा'द उठने को। **27 :** कुफ़्र और नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की तक्ज़ीब **28 :** उन के कुफ़्रो इनाद पर।

www.dawateislami.net

ع ۴۵ ۹

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾

लाए और अच्छे काम किये उन के लिये वोह सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा

اٰياتها ٢٢ ﴿٨٥﴾ سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ ﴿٢٧﴾ ركوعها ١

सूरए बुरूज मक्किय्या है, इस में बाईस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾

क़सम आस्मान की जिस में बुर्ज हैं[2] और उस दिन की जिस का वा'दा है[3] और उस दिन की जो गवाह है[4] और उस दिन की जिस में हाज़िर होते हैं[5]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾ اِذْ هُمْ عَلَيْهَا

खाई वालों पर ला'नत हो[6] वोह उस भड़क्ती आग वाले जब वोह उस के कनारों पर

1 : "सूरए बुरूज" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बाईस आयतें, एक सो नव कलिमे, चार सो पेंसठ हर्फ़ हैं। 2 : जिन की ता'दाद बारह है और इन में अ़जाइबे हिक्मते इलाही नुमूदार हैं, आफ़्ताब महताब और कवाकिब की सैर इन में मुअ़य्यन अन्दाज़े पर है जिस में इख़्तिलाफ़ नहीं होता। 3 : वोह रोज़े क़ियामत है। 4 : मुराद इस से रोज़े जुमुआ़ है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है। 5 : आदमी और फ़िरिश्ते, मुराद इस से रोज़े अ़रफ़ा है। 6 : मरवी है कि पहले ज़माने में एक बादशाह था जब उस का जादूगर बूढ़ा हुवा तो उस ने बादशाह से कहा कि मेरे पास एक लड़का भेज जिसे मैं जादू सिखा दूं, बादशाह ने एक लड़का मुक़र्रर कर दिया, वोह जादू सीखने लगा। राह में एक राहिब रहता था उस के पास बैठने लगा और उस का कलाम उस के दिल नशीन होता गया, अब आते जाते उस ने राहिब की सोह़बत में बैठना मुक़र्रर कर लिया, एक रोज़ रास्ते में एक मुहीब जानवर मिला, लड़के ने एक पथ्थर हाथ में ले कर येह दुआ़ की, कि या रब अगर राहिब तुझे प्यारा हो तो मेरे पथ्थर से इस जानवर को हलाक कर दे, वोह जानवर उस के पथ्थर से मर गया, इस के बा'द लड़का मुस्तजाबुद्दा'वत हुवा और उस की दुआ़ से कोढ़ी और अन्धे अच्छे होने लगे। बादशाह का एक मुसाहिब नाबीना हो गया था वोह आया लड़के ने दुआ़ की वोह अच्छा हो गया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आया और बादशाह के दरबार में पहुंचा। उस ने कहा : तुझे किस ने अच्छा किया? कहा : मेरे रब ने। बादशाह ने कहा : मेरे सिवा और भी कोई रब है! येह कह कर इस ने उस पर सख़्तियां शुरूअ़ कीं यहां तक कि उस ने लड़के का पता बताया, लड़के पर सख़्तियां कीं, उस ने राहिब का पता बताया, राहिब पर सख़्तियां कीं और उस से कहा अपना दीन तर्क कर। उस ने इन्कार किया तो उस के सर पर आरा रख कर चिरवा दिया, फिर मुसाहिब को भी चिरवाया दिया, फिर लड़के को हुक्म दिया कि पहाड़ की चोटी से गिरा दिया जाए। सिपाही उस को पहाड़ की चोटी पर ले गए, उस ने दुआ़ की, पहाड़ में ज़ल्ज़ला आया, सब गिर कर हलाक हो गए, लड़का सहीह सलामत चला आया। बादशाह ने कहा : सिपाही क्या हुए? कहा : सब को ख़ुदा ने हलाक कर दिया। फिर बादशाह ने लड़के को समुन्दर में ग़र्क़ करने के लिये भेजा। लड़के ने दुआ़ की, कश्ती डूब गई, तमाम शाही आदमी डूब गए, लड़का सहीहो सलामत बादशाह के पास आ गया। बादशाह ने कहा : वोह आदमी क्या हुए? कहा : सब को अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया और तू मुझे क़त्ल कर ही नहीं सकता जब तक वोह काम न करे जो मैं बताऊं! कहा : वोह क्या? लड़के ने कहा एक मैदान में सब लोगों को जम्अ़ कर और मुझे खजूर के ढुन्ड (सूखे तने) पर सूली दे, फिर मेरे तरकश से एक तीर निकाल कर "بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ الْغُلَامِ" कह कर मार, ऐसा करेगा तो मुझे क़त्ल कर सकेगा। बादशाह ने ऐसा ही किया, तीर लड़के की कनपट्टी पर लगा, उस ने अपना हाथ उस पर रखा और वासिल बह़क़ हो गया। येह देख कर तमाम लोग ईमान ले आए, इस से बादशाह को और ज़ियादा सदमा हुवा और उस ने एक ख़न्दक़ खुदवाई और उस में आग जलवाई और हुक्म दिया : जो दीन से न फिरे उसे इस आग में डाल दो। लोग डाले गए यहां तक कि एक औ़रत आई, उस की गोद में बच्चा था, वोह ज़रा झिजकी, बच्चे ने कहा : ऐ मां! सब्र कर, न झिजक, तू सच्चे दीन पर है। वोह बच्चा और मां भी आग में डाल दिये गए। येह ह़दीस सहीह है, मुस्लिम ने इस की तख़्रीज की, इस से औलिया की करामतें साबित होती हैं, आयत में इस वाक़िए का ज़िक्र है।

www.dawateislami.net

قُعُوۡدٌ ۙ﴿۶﴾ وَّ هُمۡ عَلٰی مَا یَفۡعَلُوۡنَ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ شُهُوۡدٌ ؕ﴿۷﴾ وَ مَا نَقَمُوۡا
बैठे थे[7] और वोह ख़ुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे[8] और उन्हें मुसलमानों का
مِنۡهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ یُّؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَمِیۡدِ ۙ﴿۸﴾ الَّذِیۡ لَهٗ مُلۡكُ
क्या बुरा लगा येही ना कि वोह ईमान लाए अल्लाह इज़्ज़त वाले सब ख़ूबियों सराहे पर कि उसी के लिये
السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ شَهِیۡدٌ ؕ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ
आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है बेशक जिन्हों ने
فَتَنُوا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ الۡمُؤۡمِنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَتُوۡبُوۡا فَلَهُمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ
ईज़ा दी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को[9] फिर तौबा न की[10] उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है[11] और
لَهُمۡ عَذَابُ الۡحَرِیۡقِ ؕ﴿۱۰﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ
उन के लिये आग का अ़ज़ाब[12] बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उन के लिये
جَنّٰتٌ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ۬ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡكَبِیۡرُ ؕ﴿۱۱﴾ اِنَّ بَطۡشَ
बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां येही बड़ी काम्याबी है बेशक तेरे रब की
رَبِّكَ لَشَدِیۡدٌ ؕ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ هُوَ یُبۡدِئُ وَ یُعِیۡدُ ۚ﴿۱۳﴾ وَ هُوَ الۡغَفُوۡرُ
गिरिफ़्त बहुत सख़्त है[13] बेशक वोह पहले करे और फिर करे[14] और वोही है बख़्शने वाला
الۡوَدُوۡدُ ۙ﴿۱۴﴾ ذُو الۡعَرۡشِ الۡمَجِیۡدُ ۙ﴿۱۵﴾ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیۡدُ ؕ﴿۱۶﴾ هَلۡ اَتٰىكَ
अपने नेक बन्दों पर प्यारा अ़र्श का मालिक इ़ज़्ज़त वाला हमेशा जो चाहे कर लेने वाला क्या तुम्हारे पास
حَدِیۡثُ الۡجُنُوۡدِ ۙ﴿۱۷﴾ فِرۡعَوۡنَ وَ ثَمُوۡدَ ؕ﴿۱۸﴾ بَلِ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا فِیۡ
लश्करों की बात आई[15] वोह लश्कर कौन फ़िरऔ़न और समूद[16] बल्कि[17] काफ़िर झुटलाने में

آية حصبية ١٢

7 : कुरसियां बिछाए और मुसल्मानों को आग में डाल रहे थे **8 :** शाही लोग बादशाह के पास आ कर एक दूसरे के लिये गवाही देते थे कि उन्हों ने ता'मीले हुक्म में कोताही नहीं की, ईमानदारों को आग में डाल दिया। मरवी है कि जो मोमिन आग में डाले गए अल्लाह तआ़ला ने उन के आग में पड़ने से क़ब्ल उन की रूहें क़ब्ज़ फ़रमा कर उन्हें नजात दी और आग ने ख़न्दक़ के कनारों से बाहर निकल कर कनारे पर बैठे हुए कुफ़्फ़ार को जला दिया। **फ़ाएदा :** इस वाक़िए में मोमिनीन को सब्र और अहले मक्का की ईज़ा रसानियों पर तहम्मुल करने की तरग़ीब फ़रमाई गई। **9 :** आग में जला कर **10 :** और अपने कुफ़्र से बाज़ न आए **11 :** आख़िरत में बदला उन के कुफ़्र का **12 :** दुन्या में कि उसी आग ने उन्हें जला डाला, येह बदला है मुसल्मानों को आग में डालने का। **13 :** जब वोह ज़ालिमों को अ़ज़ाब में पकड़े। **14 :** या'नी पहले दुन्या में पैदा करे फिर क़ियामत में आ'माल की जज़ा देने के लिये मौत के बा'द दोबारा ज़िन्दा करे। **15 :** जिन को काफ़िर, अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुक़ाबिल लाए। **16 :** जो अपने कुफ़्र के सबब हलाक किये गए। **17 :** ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आप की उम्मत के।

www.dawateislami.net

تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾

हैं[18] और अल्लाह उन के पीछे से उन्हें घेरे हुए है[19] बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कुरआन है

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾

लौहे महफ़ूज़ में

اٰيَاتُهَا ١٧ سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ ٣٦ ٨٦ رُكُوْعُهَا ١

सूरए तारिक़ मक्किय्या है, इस में सतरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾

आस्मान की क़सम और रात को आने वाले की[2] और कुछ तुम ने जाना वोह रात को आने वाला क्या है खूब चमकता तारा

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ

कोई जान नहीं जिस पर निगहबान न हो[3] तो चाहिये कि आदमी ग़ौर करे कि किस चीज़ से बनाया गया[4] जस्त

مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾ يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى

करते (उछलते हुए) पानी से[5] जो निकलता है पीठ और सीनों के बीच से[6] बेशक अल्लाह उस के

رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا

वापस कर देने पर[7] क़ादिर है जिस दिन छुपी बातों की जांच होगी[8] तो आदमी के पास न कुछ ज़ोर होगा न

18 : आप को और कुरआने पाक को जैसा कि पहले काफ़िरों का दस्तूर था **19 :** उस से उन्हें कोई बचाने वाला नहीं। **1 :** "सूरतुत्तारिक़" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, सतरह आयतें, इक्सठ कलिमे, दो सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी सितारे की जो रात को चमकता है। **शाने नुज़ूल :** एक शब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में अबू तालिब कुछ हदिय्या लाए, हुज़ूर उस को तनावुल फ़रमा रहे थे इस दरमियान में एक तारा टूटा और तमाम फ़ज़ा आग से भर गई, अबू तालिब घबरा कर कहने लगे : येह क्या है ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह सितारा है जिस से शयातीन मारे जाते हैं और येह कुदरते इलाही की निशानियों में से है। अबू तालिब को इस से तअ़ज्जुब हुवा और येह सूरत नाज़िल हुई। **3 :** उस के रब की तरफ़ से जो उस के आ'माल की निगहबानी करे और उस की नेकी बदी सब लिख ले। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद इस से फ़िरिश्ते हैं। **4 :** ताकि वोह जाने कि इस का पैदा करने वाला इस को बा'दे मौत जज़ा के लिये ज़िन्दा करने पर क़ादिर है, पस इस को रोज़े जज़ा के लिये अ़मल करना चाहिये। **5 :** या'नी मर्द व औ़रत के नुत्फ़ों से जो रेह़म में मिल कर एक हो जाते हैं। **6 :** या'नी मर्द की पुश्त से और औ़रत के सीने के मक़ाम से। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : सीने के उस मक़ाम से जहां हार पहना जाता है और इन्हीं से मन्क़ूल है कि औ़रत की दोनों छातियों के दरमियान से। येह भी कहा गया है कि मनी इन्सान के तमाम आ'ज़ा से बरआमद होती है और इस का ज़ियादा हिस्सा दिमाग़ से मर्द की पुश्त में आता है और औ़रत के बदन के अगले हिस्से की बहुत सी रगों में जो सीने के मक़ाम पर हैं नाज़िल होता है, इसी लिये इन दोनों मक़ामों का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से फ़रमाया गया। **7 :** या'नी मौत के बा'द ज़िन्दगी की तरफ़ लौटा देने पर **8 :** छुपी बातों से

نَاصِرٍ ۝۱۰ وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝۱۱ وَ الْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝۱۲ اِنَّهٗ

कोई मददगार[9] आस्मान की क़सम जिस से मींह उतरता है[10] और ज़मीन की जो उस से खुलती है[11] बेशक क़ुरआन

لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝۱۳ وَّ مَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝۱۴ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۝۱۵ وَّ

ज़रूर फ़ैसले की बात है[12] और कोई हंसी की बात नहीं[13] बेशक काफ़िर अपना सा दाउं चलते हैं[14] और

اَكِيْدُ كَيْدًا ۝۱۶ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝۱۷ ع

मैं अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता हूं[15] तो तुम काफ़िरों को ढील दो[16] उन्हें कुछ थोड़ी मोहलत दो[17]

ایاتها ۱۹ ۝ ۸۷ سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ ۸ ۝ ركوعها ۱

सूरए आ'ला मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝۱ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝۲ وَ الَّذِيْ قَدَّرَ

अपने रब के नाम की पाकी बोलो जो सब से बुलन्द है[2] जिस ने बना कर ठीक किया[3] और जिस ने अन्दाज़े पर रख कर

فَهَدٰى ۝۳ وَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝۴ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۝۵

राह दी[4] और जिस ने चारा निकाला फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۝۶ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَ مَا

अब हम तुम्हें पढ़ाएंगे कि तुम न भूलोगे[5] मगर जो **अल्लाह** चाहे[6] बेशक वोह जानता है हर खुले और

मुराद अक़ाइद और निय्यतें और वोह आ'माल हैं जिन को आदमी छुपाता है, रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला उन सब को ज़ाहिर कर देगा। **9 :** या'नी जो आदमी मुन्किरे बअ़्स है न उस को ऐसी क़ुव्वत होगी जिस से अ़ज़ाब को रोक सके न उस का कोई ऐसा मददगार होगा जो उसे बचा सके। **10 :** जो अर्ज़ी पैदावार नबात व अश्जार के लिये मिस्ल बाप के है। **11 :** और नबातात के लिये मिस्ल मां के है और येह दोनों **अल्लाह** तआ़ला की अ़जीब ने'मतें हैं और इन में क़ुदरते इलाही के बे शुमार आसार नुमूदार हैं जिन में ग़ौर करने से आदमी को बअ़्से बा'दल मौत के बहुत से दलाइल मिलते हैं। **12 :** कि ह़क़्क़ो बातिल में फ़र्क़ व इम्तियाज़ कर देता है। **13 :** जो निकम्मी और बेकार हो। **14 :** और दीने इलाही के मिटाने और नूरे ह़क़ को बुझाने और सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ईज़ा पहुंचाने के लिये तरह़ तरह़ के दाउं करते हैं। **15 :** जिस की उन्हें ख़बर नहीं **16 :** ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **17 :** चन्द रोज़ कि वोह अ़न्क़रीब हलाक किये जाएंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और बद्र में उन्हें अ़ज़ाबे इलाही ने पकड़ा "وَنُسِخَ الْاِمْهَالُ بِاٰيَةِ السَّيْفِ" **1 :** "सूरतुल आ'ला" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, बहत्तर कलिमे, दो सो इकानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी उस का ज़िक्र अ़ज़मतो एह़तिराम के साथ करो। ह़दीस में है : जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को अपने सज्दे में दाख़िल करो या'नी सज्दे में "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى" कहो। (ابوداؤد) **3 :** या'नी हर चीज़ की पैदाइश ऐसी मुनासिब फ़रमाई जो पैदा करने वाले के इल्मो ह़िक्मत पर दलालत करती है। **4 :** या'नी उ़म्र को अजल में मुक़द्दर किया और उस की त़रफ़ राह दी या येह मा'ना हैं कि रोज़ियां मुक़द्दर कीं और उन के त़रीक़े कस्ब की राह बताई। **5 :** येह **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से अपने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बिशारत है कि आप को ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की ने'मत

www.dawateislami.net

يَخۡفٰى ؕ﴿۷﴾ وَ نُيَسِّرُكَ لِلۡيُسۡرٰى ۚ﴿۸﴾ فَذَكِّرۡ اِنۡ نَّفَعَتِ الذِّكۡرٰى ؕ﴿۹﴾

छुपे को और हम तुम्हारे लिये आसानी का सामान कर देंगे[7] तो तुम नसीहत फ़रमाओ[8] अगर नसीहत काम दे[9] अन्क़रीब

سَيَذَّكَّرُ مَنۡ يَّخۡشٰى ۙ﴿۱۰﴾ وَ يَتَجَنَّبُهَا الۡاَشۡقَى ۙ﴿۱۱﴾ الَّذِىۡ يَصۡلَى النَّارَ

नसीहत मानेगा जो डरता है[10] और इस[11] से वोह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में

الۡكُبۡرٰى ۚ﴿۱۲﴾ ثُمَّ لَا يَمُوۡتُ فِيۡهَا وَلَا يَحۡيٰى ؕ﴿۱۳﴾ قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ تَزَكّٰى ۙ﴿۱۴﴾

जाएगा[12] फिर न उस में मरे[13] और न जिये[14] बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा[15]

وَ ذَكَرَ اسۡمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ﴿۱۵﴾ بَلۡ تُؤۡثِرُوۡنَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ۚ﴿۱۶﴾ وَ

और अपने रब का नाम ले कर[16] नमाज़ पढ़ी[17] बल्कि तुम जीती दुन्या को तरजीह़ देते हो[18] और

الۡاٰخِرَةُ خَيۡرٌ وَّ اَبۡقٰى ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الۡاُوۡلٰى ۙ﴿۱۸﴾

आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली बेशक येह[19] अगले सह़ीफ़ों में है[20]

صُحُفِ اِبۡرٰهِيۡمَ وَمُوۡسٰى ع ﴿۱۹﴾

इब्राहीम और मूसा के सह़ीफ़ों में

ع ١٩ / ١٢

اٰيَاتُهَا ٢٦ ﴿٨٨ سُوۡرَةُ الۡغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ ٦٨﴾ رُكُوۡعُهَا ١

सूरए ग़ाशियह मक्किय्या है, इस में छब्बीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

बे मेह़नत अ़ता हुई और येह आप का मो'जिज़ा है कि इतनी बड़ी किताबे अ़ज़ीम बिग़ैर मेह़नतो मशक़्क़त और बिग़ैर तकरार व दौर के आप को ह़िफ़्ज़ हो गई। (جمل) **6 :** मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना वाक़ेअ़ न हुवा और अल्लाह तआ़ला ने न चाहा कि आप कुछ भूलें। (جمل) **7 :** कि वह़्य तुम्हें बे मेह़नत याद रहेगी। मुफ़स्सिरीन का एक क़ौल येह है कि आसानी के सामान से शरीअ़ते इस्लाम मुराद है जो निहायत सहल व आसान है। **8 :** इस क़ुरआने मजीद से **9 :** और कुछ लोग इस से मुन्तफ़ेअ़ हों। **10 :** अल्लाह तआ़ला से **11 :** पन्दो नसीह़त **12 शाने नुज़ूल :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा और उ़त्बा बिन रबीआ़ के ह़क़ में नाज़िल हुई। **13 :** कि मर कर ही अ़ज़ाब से छूट सके **14 :** ऐसा जीना जिस से कुछ भी आराम पाए। **15 :** ईमान ला कर या येह मा'ना हैं कि उस ने नमाज़ के लिये त़हारत की, इस तक़्दीर पर आयत से नमाज़ के लिये वुज़ू और ग़ुस्ल साबित होता है। (تفسیر احمدی) **16 :** या'नी तक्बीरे इफ़्तिताह़ कह कर **17 :** पन्जगाना। **मस्अला :** इस आयत से तक्बीरे इफ़्तिताह़ साबित हुई और येह भी साबित हुवा कि वोह नमाज़ का जुज़्व नहीं है, क्यूं कि नमाज़ का इस पर अ़त़्फ़ किया गया है और येह भी साबित हुवा कि इफ़्तिताह़ नमाज़ का अल्लाह तआ़ला के हर नाम से जाइज़ है। इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा गया है कि تَزَكّٰى से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (تفسیر مدارک واحمدی) **18 :** आख़िरत पर। इसी लिये वोह अ़मल नहीं करते जो वहां काम आएं। **19 :** या'नी सुथरों का मुराद को पहुंचना और आख़िरत का बेहतर होना **20 :** जो क़ुरआने करीम से पहले नाज़िल हुए **1 :** "सूरए ग़ाशियह" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छब्बीस आयतें, बानवे कलिमे, तीन सो इक्यासी ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ؕ﴿۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۙ﴿۲﴾ عَامِلَةٌ

बेशक तुम्हारे पास[2] उस मुसीबत की ख़बर आई जो छा जाएगी[3] कितने ही मुंह उस दिन ज़लील होंगे काम करें

نَّاصِبَةٌ ۙ﴿۳﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ﴿۴﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ﴿۵﴾ لَيْسَ

मशक़्क़त झेलें जाएं भड़क्ती आग में[4] निहायत जलते चश्मे का पानी पिलाए जाएं उन के लिये

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ﴿۶﴾ لَّا يُسْمِنُ وَ لَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ؕ﴿۷﴾

कुछ खाना नहीं मगर आग के कांटे[5] कि न फ़रबही लाएं और न भूक में काम दें[6]

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ﴿۸﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ﴿۹﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ﴿۱۰﴾ لَّا

कितने ही मुंह उस दिन चैन में हैं[7] अपनी कोशिश पर राज़ी[8] बुलन्द बाग़ में कि

تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ؕ﴿۱۱﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ﴿۱۲﴾ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ وَّ

وقف لازم

उस में कोई बेहूदा बात न सुनेंगे उस में रवां चश्मा है उस में बुलन्द तख़्त हैं और

اَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّ نَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ﴿۱۵﴾ وَّ زَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ؕ﴿۱۶﴾

चुने हुए कूज़े[9] और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन और फैली हुई चांदनियां[10]

اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿۱۷﴾ وقفة وَ اِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ

तो क्या ऊंट को नहीं देखते कैसा बनाया गया और आस्मान को कैसा

رُفِعَتْ ﴿۱۸﴾ وقفة وَ اِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿۱۹﴾ وقفة وَ اِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ

ऊंचा किया गया[11] और पहाड़ों को कैसे क़ाइम किये गए और ज़मीन को कैसे

2 : ऐ सय्यिदे आलम ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **3 :** ख़ल्क़ पर। मुराद इस से क़ियामत है जिस के शदाइद व अहवाल हर चीज़ पर छा जाएंगे। **4 :** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इस से वोह लोग मुराद हैं जो दीने इस्लाम पर न थे बुत परस्त थे या किताबी काफ़िर मिस्ल राहिबों और पुजारियों के, उन्हों ने मेहनतें भी उठाईं मशक़्क़तें भी झेलीं और नतीजा येह हुवा कि जहन्नम में गए। **5 :** अज़ाब तरह तरह का होगा और जो लोग अज़ाब दिये जाएंगे उन के बहुत तब्क़े होंगे, बा'ज़ को ज़क़्क़ूम खाने को दिया जाएगा, बा'ज़ को ग़िस्लीन (दोज़ख़ियों की पीप), बा'ज़ को आग के कांटे। **6 :** या'नी उन से ग़िज़ा का नफ़्अ़ हासिल न होगा क्यूं कि ग़िज़ा के दो ही फ़ाएदे हैं : **एक** येह कि भूक की तक्लीफ़ रफ़्अ़ करे। **दूसरे** येह कि बदन को फ़र्बा करे। येह दोनों वस्फ़ जहन्नमियों के खाने में नहीं, बल्कि वोह शदीद अज़ाब है। **7 :** ऐश व ख़ुशी में और ने'मत व करामत में **8 :** या'नी उस अ़मल व ताअ़त पर जो दुन्या में बजा लाए थे। **9 :** चश्मे के कनारों पर। जिन के देखने से भी लज़्ज़त हासिल हो और जब पीना चाहें तो वोह भरे मिलें। **10 :** इस सूरत में जन्नत की ने'मतों का ज़िक्र सुन कर कुफ़्फ़ार ने तअ़ज्जुब किया और झुटलाया तो **अल्लाह** तआ़ला उन्हें अपने अ़जाइबे सन्अ़त में नज़र करने की हिदायत फ़रमाता है ताकि वोह समझें कि जिस क़ादिरे हकीम ने दुन्या में ऐसी अ़जीबो ग़रीब चीज़ें पैदा की हैं उस की क़ुदरत से जन्नती ने'मतों को पैदा फ़रमाना किस तरह क़ाबिले तअ़ज्जुब और लाइक़े इन्कार हो सकता है ? चुनान्चे इर्शाद फ़रमाता है **11 :** बिग़ैर सुतून के।

سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾ فَذَكِّرْ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

बिछाई गई तो तुम नसीहत सुनाओ[12] तुम तो येही नसीहत सुनाने वाले हो तुम कुछ उन पर कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[13]

إِلَّا مَنْ تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ إِلَيْنَا

हां जो मुंह फेरे[14] और कुफ़्र करे[15] तो उसे अल्लाह बड़ा अ़ज़ाब देगा[16] बेशक हमारी ही त़रफ़

إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

उन का फिरना है[17] फिर बेशक हमारी ही त़रफ़ उन का हिसाब है

ايـاتها ٣٠ | ٨٩ سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ ١٠ | ركوعها ١

सूरए फ़ज्र मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾

उस सुब्ह़ की क़सम[2] और दस रातों की[3] और जुफ़्त और त़ाक़ की[4] और रात की जब चल दे[5]

هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾

क्यूं इस में अ़क़्ल मन्द के लिये क़सम हुई[6] क्या तुम ने न देखा[7] तुम्हारे रब ने आ़द के साथ कैसा किया

12 : अल्लाह तआ़ला की ने'मतों और उस के दलाइले क़ुदरत बयान फ़रमा कर। 13 : कि जब्र करो। "هٰذِهِ الْاٰيَةُ نُسِخَتْ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ" या'नी येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है 14 : ईमान लाने से 15 : बा'द नसीह़त के 16 : आख़िरत में कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेगा 17 : बा'द मौत के। 1 : "सूरतुल फ़ज्र" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस या तीस आयतें, एक सो उन्तालीस कलिमे, पांच सो सत्तानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इस से या यकुम मुह़र्रम की सुब्ह़ है जिस से साल शुरूअ़ होता है या यकुम ज़िल ह़िज्जा की जिस से दस रातें मिली हुई हैं या ईदुल अज़्ह़ा की सुब्ह़ और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि मुराद इस से हर दिन की सुब्ह़ है क्यूं कि वोह रात के गुज़रने और रोशनी के ज़ाहिर होने और तमाम जानदारों के त़लबे रिज़्क़ के लिये मुन्तशिर होने का वक़्त है और येह मुर्दों के क़ब्रों से उठने के वक़्त के साथ मुशाबहत व मुनासबत रखता है। 3 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मुराद इन से ज़िल ह़िज्जा की पहली दस रातें हैं क्यूं कि येह ज़माना आ'माले ह़ज में मश्ग़ूल होने का ज़माना है और ह़दीस शरीफ़ में इस अ़शरे की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं और येह भी मरवी है कि रमज़ान के अ़शरए अख़ीरा की रातें मुराद हैं या मुह़र्रम के पहले अ़शरे की। 4 : हर चीज़ के या उन रातों के या नमाज़ों के और येह भी कहा गया है कि जुफ़्त से मुराद ख़ल्क़ और त़ाक़ से मुराद अल्लाह तआ़ला है। 5 : या'नी गुज़रे, येह पांचवीं क़सम है आ़म रात की, इस से पहले दस ख़ास रातों की क़सम ज़िक्र फ़रमाई गई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि इस से ख़ास शबे मुज़्दलिफ़ा मुराद है जिस में बन्दगाने ख़ुदा त़ाअ़ते इलाही के लिये जम्अ़ होते हैं। एक क़ौल येह है कि इस से शबे क़द्र मुराद है जिस में रह़मत का नुज़ूल होता है और जो कस्रते सवाब के लिये मख़्सूस है। 6 : या'नी येह उमूर अरबाबे अ़क़्ल के नज़्दीक ऐसी अ़ज़मत रखते हैं कि ख़बरों को इन से साथ मुअक्कद करना शायां है क्यूं कि येह ऐसे अ़जाइब व दलाइल पर मुश्तमिल हैं जो अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की रबूबिय्यत पर दलालत करते हैं और जवाबे क़सम येह है कि काफ़िर ज़रूर अ़ज़ाब किये जाएंगे, इस जवाब पर अगली आयतें दलालत करती हैं। 7 : ऐ सय्यिदे आ़लम ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم।

www.dawateislami.net

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧ الَّتِیْ لَمْ یُخْلَقْ مِثْلُهَا فِی الْبِلَادِ ۝٨ وَ ثَمُوْدَ

वोह इरम हद से ज़ियादा तूल वाले[8] कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा[9] और समूद

الَّذِیْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩ وَ فِرْعَوْنَ ذِی الْاَوْتَادِ ۝١٠ الَّذِیْنَ

जिन्हों ने वादी में[10] पथ्थर की चट्टानें काटीं[11] और फ़िरऔन कि चौमेख़ा करता (सख़्त सज़ाएं देता)[12] जिन्हों ने

طَغَوْا فِی الْبِلَادِ ۝١١ فَاَكْثَرُوْا فِیْهَا الْفَسَادَ ۝١٢ فَصَبَّ عَلَیْهِمْ رَبُّكَ

शहरों में सरकशी की[13] फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया[14] तो उन पर तुम्हारे रब ने

سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٣ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ

अज़ाब का कोड़ा ब कुव्वत मारा बेशक तुम्हारे रब की नज़र से कुछ ग़ाइब नहीं लेकिन आदमी तो जब उसे उस का रब

رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ نَعَّمَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَكْرَمَنِ ۝١٥ وَ اَمَّاۤ اِذَا مَا

आज़्माए कि उस को जाह और ने'मत दे जब तो कहता है मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी और अगर आज़्माए

ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَیْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَهَانَنِ ۝١٦ كَلَّا بَلْ لَّا

और उस का रिज़्क़ उस पर तंग करे तो कहता है मेरे रब ने मुझे ख़्वार किया यूं नहीं[15] बल्कि तुम यतीम

8 : जिन के क़द बहुत दराज़ थे, उन्हें आदे इरम और आदे ऊला कहते हैं, मक़्सूद इस से अहले मक्का को ख़ौफ़ दिलाना है कि आदे ऊला जिन की उम्रें बहुत ज़ियादा और क़द बहुत तवील और निहायत क़वी और तुवाना थे उन्हें अल्लाह तआला ने हलाक कर दिया तो येह काफ़िर अपने आप को क्या समझते हैं और अज़ाबे इलाही से क्यूं बे ख़ौफ़ हैं। **9 :** ज़ोर व कुव्वत और तूले क़ामत में। आद के बेटों में से शद्दाद भी है जिस ने दुन्या पर बादशाहत की और तमाम बादशाह इस के मुतीअ़ हो गए और इस ने जन्नत का ज़िक्र सुन कर बराहे सरकशी दुन्या में जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक शहरे अ़ज़ीम बनाया जिस के मह़ल सोने चांदी की ईंटों से ता'मीर किये गए और ज़बर जद और याक़ूत के सुतून उस की इमारतों में नस्ब हुए और ऐसे ही फ़र्श मकानों और रस्तों में बनाए गए, संगरेज़ों की जगह आबदार मोती बिछाए गए, हर महल के गिर्द जवाहिरात पर नहरें जारी की गईं, क़िस्म क़िस्म के दरख़्त हुस्ने तज़ईन के साथ लगाए गए, जब येह शहर मुकम्मल हुवा तो शद्दाद बादशाह अपने आ'याने सल्तनत के साथ उस की त़रफ़ रवाना हुवा, जब एक मन्ज़िल फ़ासिला बाक़ी रहा तो आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से अल्लाह तआला ने उन सब को हलाक कर दिया। ह़ज़रते अमीरे मुआविया के अ़हद में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा सहराए अ़दन में अपने गुमे हुए ऊंट को तलाश करते हुए उस शहर में पहुंचे और उस की तमाम ज़ैबो ज़ीनत देखी और कोई रहने बसने वाला न पाया, थोड़े से जवाहिरात वहां से ले कर चले आए। येह ख़बर अमीरे मुआविया को मा'लूम हुई, इन्हों ने उन्हें बुला कर ह़ाल दरयाफ़्त किया ? उन्हों ने तमाम क़िस्सा सुनाया। तो अमीरे मुआविया ने का'ब अह़बार को बुला कर दरयाफ़्त किया कि क्या दुन्या में कोई ऐसा शहर है ? उन्हों ने फ़रमाया : हां जिस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में भी आया है, येह शहर शद्दाद बिन आद ने बनाया था, वोह सब अ़ज़ाबे इलाही से हलाक हो गए, उन में से कोई बाक़ी न रहा और आप के ज़माने में एक मुसल्मान सुर्ख़ रंग, कबूद चश्म, क़सीरुल क़ामत (नीली आंखों, छोटे क़द वाला) जिस की अब्रू पर एक तिल होगा, अपने ऊंट की तलाश में दाख़िल होगा। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन क़िलाबा को देख कर फ़रमाया : बख़ुदा वोह शख़्स येही है। **10 :** या'नी वादियुल क़ुरा में **11 :** और मकान बनाए। उन्हें अल्लाह तआला ने किस त़रह़ हलाक किया **12 :** उस को जिस पर ग़ज़ब नाक होता था। अब आद व समूद व फ़िरऔन इन सब की निस्बत इर्शाद होता है : **13 :** और मा'सियत व गुमराही में इन्तिहा को पहुंचे और अ़ब्दिय्यत की ह़द से गुज़र गए। **14 :** कुफ़्र और क़त्ल और ज़ुल्म कर के **15 :** या'नी इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत दौलत व फ़क़्र पर नहीं, येह उस की हिक्मत है कभी दुश्मन को दौलत देता है कभी बन्दए मुख़्लिस को फ़क़्र में मुब्तला करता है, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत त़ाअ़त व मा'सियत पर है, कुफ़्फ़ार इस ह़क़ीक़त को नहीं समझते।

تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿۱۷﴾ وَ لَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿۱۸﴾ وَ تَاْكُلُوْنَ

की इज़्ज़त नहीं करते[16] और आपस में एक दूसरे को मिस्कीन के खिलाने की रग़बत नहीं देते और मीरास

التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿۱۹﴾ وَّ تُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿۲۰﴾ كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ

का माल हप हप खाते हो[17] और माल की निहायत महब्बत रखते हो[18] हां हां जब ज़मीन टकरा

الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿۲۱﴾ وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿۲۲﴾ وَ جِایْٓءَ

कर पाश पाश कर दी जाए[19] और तुम्हारे रब का हुक्म आए और फ़िरिश्ते क़ितार क़ितार और उस दिन

يَوْمَىٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ۬ يَوْمَىٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَ اَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿۲۳﴾

जहन्नम लाई जाए[20] उस दिन आदमी सोचेगा[21] और अब उसे सोचने का वक़्त कहां[22]

يَقُوْلُ يٰلَیْتَنِیْ قَدَّمْتُ لِحَیَاتِیْ ﴿۲۴﴾ فَیَوْمَىٕذٍ لَّا یُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ

कहेगा हाए किसी त़रह़ मैं ने जीते जी नेकी आगे भेजी होती तो उस दिन उस का सा अ़ज़ाब[23]

اَحَدٌ ﴿۲۵﴾ وَّ لَا یُوْثِقُ وَثَاقَهٗۤ اَحَدٌ ﴿۲۶﴾ یٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾

कोई नहीं करता और उस का सा बांधना कोई नहीं बांधता ऐ इत़्मीनान वाली जान[24]

ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾

अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो

وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾ ع

और मेरी जन्नत में आ

16 : और बा वुजूद दौलत मन्द होने के उन के साथ अच्छे सुलूक नहीं करते और उन्हें उन के हुक़ूक़ नहीं देते जिन के वोह वारिस हैं। मुक़ातिल ने कहा कि उमय्या बिन ख़लफ़ के पास कुदामा बिन मज़ऊन यतीम थे, वोह उन्हें उन का हक़ नहीं देता था। 17 : और ह़लाल व ह़राम का इम्तियाज़ नहीं करते और औ़रतों और बच्चों को विरसा नहीं देते, उन के हिस्से खुद खा जाते हो, जाहिलिय्यत में येही दस्तूर था। 18 : इस को ख़र्च करना ही नहीं चाहते। 19 : और उस पर पहाड़ और इमारत किसी चीज़ का नामो निशान न रहे 20 : जहन्नम की सत्तर हज़ार बागें होंगी, हर बाग पर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते जम्अ़ हो कर उस को खींचेंगे और वोह जोश व ग़ज़ब में होगी, यहां तक कि फ़िरिश्ते उस को अ़र्श के बाईं जानिब लाएंगे, उस रोज़ सब "नफ़्सी नफ़्सी" कहते होंगे, सिवाए हुज़ूरे पुरनूर ह़बीबे ख़ुदा सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के कि हुज़ूर "या रब्बि उम्मती उम्मती" फ़रमाते होंगे, जहन्नम हुज़ूर से अ़र्ज़ करेगी कि ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! आप का मेरा क्या वासित़ा अल्लाह तआ़ला ने आप को मुझ पर ह़राम किया है। (جمل) 21 : और अपनी तक़्सीर को समझेगा 22 : उस वक़्त का सोचना समझना कुछ भी मुफ़ीद नहीं। 23 : या'नी अल्लाह का सा 24 : जो ईमान व ईक़ान पर साबित रही और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के हुज़ूर सरे त़ाअ़त ख़म करती रही। येह मोमिन से वक़्ते मौत कहा जाएगा जब दुन्या से उस के सफ़र करने का वक़्त आएगा।

www.dawateislami.net

اٰیاتها ۲۰	۹۰ سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ ۳۵	رکوعها ۱

सूरए बलद मक्किय्या है, इस में बीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝۱ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝۲ وَوَالِدٍ وَّمَا

मुझे इस शहर की क़सम[2] कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो[3] और तुम्हारे बाप इब्राहीम की क़सम और उस

وَلَدَ ۝۳ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝۴ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ

की औलाद की कि तुम हो[4] बेशक हम ने आदमी को मशक़्क़त में रहता पैदा किया[5] क्या आदमी येह समझता है कि हरगिज़ उस पर

عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝۵ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝۶ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ

وقف لازم

कोई क़ुदरत नहीं पाएगा[6] कहता है मैं ने ढेरों माल फ़ना कर दिया[7] क्या आदमी येह समझता है कि उसे किसी ने न

اَحَدٌ ۝۷ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝۸ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝۹ وَهَدَيْنٰهُ

देखा[8] क्या हम ने उस की दो आंखें न बनाईं[9] और ज़बान[10] और दो होंट[11] और उसे दो उभरी चीज़ों

النَّجْدَيْنِ ۝۱۰ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝۱۱ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝۱۲ فَكُّ

की राह बताई[12] फिर बे तअम्मुल घाटी में न कूदा[13] और तू ने क्या जाना वोह घाटी क्या है[14] किसी बन्दे

1 : सूरए बलद मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, बीस आयतें, बियासी कलिमे, तीन सो बीस हर्फ़ हैं। 2 : या'नी मक्कए मुकर्रमा की 3 : इस आयत से मा'लूम हुवा कि येह अ़ज़मत मक्कए मुकर्रमा को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रौनक़ अफ़रोज़ी की बदौलत हासिल हुई। 4 : एक क़ौल येह भी है कि वालिद से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और औलाद से आप की उम्मत मुराद है। (حسینی) 5 : कि हम्ल में एक तंगो तारीक मकान में रहे, विलादत के वक़्त तक्लीफ़ उठाए, दूध पीने दूध छोड़ने कस्बे मआ़श और हयात व मौत की मशक़्क़तों को बरदाश्त कर ले। 6 : येह आयत अबुल अशद उसैद बिन किल्दा के हक़ में नाज़िल हुई, वोह निहायत क़वी और ज़ोर आवर था और उस की ताक़त का येह आ़लम था कि चमड़ा पाउं के नीचे दबा लेता था दस दस आदमी उस को खींचते और वोह फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाता मगर जितना उस के पाउं के नीचे होता हरगिज़ न निकल सकता और एक क़ौल येह है कि येह आयत वलीद बिन मुग़ीरा के हक़ में नाज़िल हुई। मा'ना येह हैं कि येह काफ़िर अपनी क़ुव्वत पर मग़रूर मुसल्मानों को कमज़ोर समझता है। किस गुमान में है ! अल्लाह क़ादिरे बरहक़ की क़ुदरत को नहीं जानता ! इस के बा'द उस का मक़ूला नक़्ल फ़रमाया : 7 : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत में लोगों को रिश्वतें दे दे कर ताकि हुज़ूर को आज़ार पहुंचाएं। 8 : या'नी क्या उस का येह गुमान है कि उसे अल्लाह तआ़ला ने नहीं देखा और अल्लाह तआ़ला उस से नहीं सुवाल करेगा कि उस ने येह माल कहां से हासिल किया किस काम में ख़र्च किया। इस के बा'द अल्लाह तआ़ला अपनी ने'मतों का ज़िक्र फ़रमाता है ताकि उस को इब्रत हासिल करने का मौक़अ़ मिले 9 : जिन से देखता है 10 : जिस से बोलता है और अपने दिल की बात बयान में लाता है 11 : जिन से मुंह को बन्द करता है और बात करने और खाने और पीने और फूंकने में उन से काम लेता है 12 : या'नी छातियों की कि पैदा होने के बा'द उन से दूध पीता और गिज़ा हासिल करता रहा। मुराद येह है कि अल्लाह तआ़ला की ने'मतें ज़ाहिर व वाफ़िर हैं, उन का शुक्र लाज़िम। 13 : या'नी आ'माले सालिहा बजा ला कर इन जलील ने'मतों का शुक्र अदा न किया, इस को घाटी में कूदने से ता'बीर फ़रमाया इस मुनासबत से कि इस राह में चलना नफ़्स पर शाक़ है। (ابوالسعود) 14 : और उस में कूदना क्या, या'नी इस से इस के ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं बल्कि इस की तफ़्सीर वोह है जो अगली आयतों में इर्शाद होती है।

www.dawateislami.net

رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوْ

की गरदन छुड़ाना[15] या भूक के दिन खाना देना[16] रिश्तेदार यतीम को या

مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

ख़ाक नशीन मिस्कीन को[17] फिर हुवा उन से जो ईमान लाए[18] और उन्हों ने आपस में सब्र की वसिय्यतें कीं[19]

وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और आपस में मेहरबानी की वसिय्यतें कीं[20] येह दहनी त़रफ़ वाले हैं[21] और जिन्हों ने हमारी आयतों

بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾ ع

से कुफ़्र किया वोह बाईं त़रफ़ वाले[22] उन पर आग है कि उस में डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई[23]

ركوع ١٥

اٰياتها ١٥ | سُوْرَةُ الشَّمْسِ ٩١ مَكِّيَّةٌ ٢٦ | رکوعها ١

सूरए शम्स मक्किय्या है, इस में पन्दरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿٣﴾

सूरज और उस की रोशनी की क़सम और चांद की जब उस के पीछे आए[2] और दिन की जब उसे चमकाए[3]

15 : ग़ुलामी से। ख़्वाह इस त़रह़ हो कि किसी ग़ुलाम को आज़ाद कर दे या इस त़रह़ कि मुकातब को इतना माल दे जिस से वोह आज़ादी ह़ासिल कर सके या किसी ग़ुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या मद्यून के रिहा कराने में इआ़नत करे और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि आ'माले सालिह़ा इख़्तियार कर के अपनी गरदन अ़ज़ाबे आख़िरत से छुड़ाए। (روح البیان) **16 :** या'नी क़ह़त़ व गिरानी के वक़्त कि इस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अ़ज़ीम का मूजिब होता है। **17 :** जो निहायत तंगदस्त और दरमांदा (नाचार), न उस के पास ओढ़ने को हो न बिछाने को। ह़दीस शरीफ़ में है : यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला जिहाद में सई करने वाले और बे तकान शब बेदारी करने वाले और मुदाम (पाबन्दी के साथ) रोज़ा रखने वाले की मिस्ल है। **18 :** या'नी येह तमाम अ़मल जब मक़्बूल हैं कि अ़मल करने वाला ईमानदार हो और जब ही उस को कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं सब अ़मल बेकार। **19 :** मा'सियतों से बाज़ रहने और त़ाअ़तों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बरदाश्त करने पर जिन में मोमिन मुब्तला हो। **20 :** कि मोमिनीन एक दूसरे के साथ शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव करें। **21 :** जिन्हें उन के नामए आ'माल दाहने हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के दाहने जानिब से जन्नत में दाख़िल होंगे। **22 :** कि उन्हें उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के बाईं जानिब से जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **23 :** कि न उस में बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धूआं बाहर जा सके। **1 :** "सूरतुश्शम्स" मक्किय्या है इस में एक रुकूअ़, पन्दरह आयतें, चव्वन कलिमे, दो सो सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द त़ुलूअ़ करे, येह क़मरी महीने के पहले पन्दरह दिन में होता है। **3 :** या'नी आफ़्ताब को ख़ूब वाज़ेह़ करे क्यूं कि दिन नूरे आफ़्ताब का नाम है तो जितना दिन ज़ियादा रोशन होगा उतना ही आफ़्ताब का ज़ुहूर ज़ियादा होगा क्यूं कि असर की क़ुव्वत और उस का कमाल मुअस्सिर के क़ुव्वतो कमाल पर दलालत करता है या येह मा'ना हैं कि जब दिन दुन्या को या ज़मीन को रोशन करे या शब की तारीकी को दूर करे।

www.dawateislami.net

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰىهَا ۙ﴿۴﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۙ﴿۵﴾ وَالۡاَرۡضِ وَمَا

और रात की जब उसे छुपाए[4] और आस्मान और उस के बनाने वाले की क़सम और ज़मीन और उस के

طَحٰىهَا ۙ﴿۶﴾ وَنَفۡسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۙ﴿۷﴾ فَاَلۡهَمَهَا فُجُوۡرَهَا وَتَقۡوٰىهَا ۙ﴿۸﴾

फैलाने वाले की क़सम और जान की और उस की जिस ने उसे ठीक बनाया[5] फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़ गारी दिल में डाली[6]

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا ۙ﴿۹﴾ وَقَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰىهَا ؕ﴿۱۰﴾ كَذَّبَتۡ ثَمُوۡدُ

बेशक मुराद को पहुंचा जिस ने उसे[7] सुथरा किया[8] और ना मुराद हुवा जिस ने उसे मा'सियत में छुपाया समूद ने अपनी

بِطَغۡوٰىهَاۤ ۙ﴿۱۱﴾ اِذِ انۡۢبَعَثَ اَشۡقٰىهَا ۙ﴿۱۲﴾ فَقَالَ لَهُمۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ نَاقَةَ

सरकशी से झुटलाया[9] जब कि उस का सब से बद बख़्त[10] उठ खड़ा हुवा तो उन से अल्लाह के रसूल[11] ने फ़रमाया अल्लाह के

اللّٰهِ وَسُقۡيٰهَا ؕ﴿۱۳﴾ فَكَذَّبُوۡهُ فَعَقَرُوۡهَا ۙ۬ فَدَمۡدَمَ عَلَيۡهِمۡ رَبُّهُمۡ

नाक़ा[12] और उस की पीने की बारी से बचो[13] तो उन्हों ने उसे झुटलाया फिर नाक़ा की कूचें काट दीं (पाउं काट दिये) तो उन पर उन के रब ने उन के

بِذَنۡۢبِهِمۡ فَسَوّٰىهَا ۙ﴿۱۴﴾ وَلَا يَخَافُ عُقۡبٰهَا ﴿۱۵﴾ ع ۱۵ / ۱۶ ع

गुनाह के सबब[14] तबाही डाल कर वोह बस्ती बराबर कर दी[15] और उस के पीछा करने का उसे ख़ौफ़ नहीं[16]

آیاتها ۲۱ — ۹۲ سورۃ الّیل مکیّۃ ۹ — رکوعها ۱

सूरए लैल मक्किय्या है, इस में इक्कीस आयतें और एक रुकूअ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ۙ﴿۱﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

और रात की क़सम जब छाए[2] और दिन की जब चमके[3] और उस[4] की जिस ने नर

4 : या'नी आफ़्ताब को और आफ़ाक़ ज़ुल्मत व तारीकी से भर जाएं या येह मा'ना कि जब रात दुन्या को छुपाए। **5 :** और क़ुवाए कसीरा (कसीर क़ुव्वतें) अ़ता फ़रमाए। (जैसे) नुत्क़, सम्अ़, बसर, फ़िक्र, ख़याल, इ़ल्म, फ़ह्म सब कुछ अ़ता फ़रमाया। **6 :** ख़ैरो शर और त़ाअ़त व मा'सियत से उसे बा ख़बर कर दिया और नेक व बद बता दिया। **7 :** या'नी नफ़्स को **8 :** बुराइयों से। **9 :** अपने रसूल ह़ज़रते सालेह عَلَیْہِ السَّلَام को **10 :** क़ुदार बिन सालिफ़ उन सब की मरज़ी से नाक़ा की कूंचें काटने के लिये **11 :** ह़ज़रते सालेह عَلَیْہِ السَّلَام **12 :** के दरपै होने **13 :** या'नी जो दिन उस के पीने का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में तअ़र्रुज़ न करो ताकि तुम पर अ़ज़ाब न आए **14 :** या'नी ह़ज़रते सालेह عَلَیْہِ السَّلَام की तक्ज़ीब और नाक़ा की कूंचें काटने के सबब **15 :** और सब को हलाक कर दिया, उन में से कोई न बचा **16 :** जैसा बादशाहों को होता है क्यूं कि वोह मालिकुल मुल्क है जो चाहे करे, किसी को मजाले दम ज़दन (कुछ कहने की त़ाक़त) नहीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह भी बयान किये हैं कि ह़ज़रते सालेह عَلَیْہِ السَّلَام को उन में से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द उन्हें ईज़ा पहुंचा सके। **1 :** "सूरए वल्लैल" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, इक्कीस आयतें, इक्हत्तर कलिमे, तीन सो दस ह़र्फ़ हैं। **2 :** जहान पर अपनी तारीकी से

وَالْاُنْثٰۤى ﴿۳﴾ اِنَّ سَعْیَكُمْ لَشَتّٰى ﴿۴﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿۵﴾ وَ

व मादा बनाए[5] बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ है[6] तो वोह जिस ने दिया[7] और परहेज़ गारी की[8] और

صَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿۶﴾ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْیُسْرٰى ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿۸﴾

सब से अच्छी को सच माना[9] तो बहुत जल्द हम उसे आसानी मुहय्या कर देंगे[10] और वोह जिस ने बुख़्ल किया[11] और बे परवाह बना[12]

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ﴿۹﴾ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ﴿۱۰﴾ وَمَا یُغْنِیْ عَنْهُ مَالُهٗۤ

और सब से अच्छी को झुटलाया[13] तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी मुहय्या कर देंगे[14] और उस का माल उसे काम न आएगा

اِذَا تَرَدّٰى ﴿۱۱﴾ اِنَّ عَلَیْنَا لَلْهُدٰى ﴿۱۲﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿۱۳﴾

जब हलाकत में पड़ेगा[15] बेशक हिदायत फ़रमाना[16] हमारे ज़िम्मे है और बेशक आख़िरत और दुन्या दोनों के हमीं मालिक हैं

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿۱۴﴾ لَا یَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿۱۵﴾ الَّذِیْ كَذَّبَ

तो मैं तुम्हें डराता हूं उस आग से जो भड़क रही है न जाएगा उस में[17] मगर बड़ा बद बख़्त जिस ने झुटलाया[18]

وَتَوَلّٰى ﴿۱۶﴾ وَسَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿۱۷﴾ الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَكّٰى ﴿۱۸﴾ وَمَا

और मुंह फेरा[19] और बहुत जल्द उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़ गार जो अपना माल देता है कि सुथरा हो[20] और किसी

कि वोह वक़्त है ख़ल्क़ के सुकून का, हर जानदार अपने ठिकाने पर आता है और हरकत व इज़्तिराब से साकिन होता है और मक़्बूलाने हक़ सिद्क़े नियाज़ से मश्ग़ूले मुनाजात होते हैं। **3 :** और रात के अंधेरे को दूर करे कि वोह वक़्त है सोतों के बेदार होने का और जानदारों के हरकत करने का और तलबे मआश में मश्ग़ूल होने का। **4 :** क़ादिर अ़ज़ीमुल क़ुदरत **5 :** एक ही पानी से **6 :** या'नी तुम्हारे आ'माल जुदागाना हैं, कोई ताअ़त बजा ला कर जन्नत के लिये अ़मल करता है, कोई ना फ़रमानी कर के जहन्नम के लिये। **7 :** अपना माल राहे ख़ुदा में और **अल्लाह** तआ़ला के हक़ को अदा किया। **8 :** मम्नूआ़त व मुहर्रमात से बचा **9 :** या'नी मिल्लते इस्लाम को **10 :** जन्नत के लिये और उसे ऐसी ख़स्लत की तौफ़ीक़ देंगे जो उस के लिये सबबे आसानी व राहत हो और वोह ऐसे अ़मल करे जिन से उस का रब राज़ी हो। **11 :** और माल नेक कामों में ख़र्च न किया और **अल्लाह** तआ़ला के हक़ अदा न किये **12 :** सवाब और ने'मते आख़िरत से **13 :** या'नी मिल्लते इस्लाम को। **14 :** या'नी ऐसी ख़स्लत जो उस के लिये दुश्वारी व शिद्दत का सबब हो और उसे जहन्नम में पहुंचाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयतें हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और उमय्या बिन ख़लफ़ के हक़ में नाज़िल हुईं जिन में से एक हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "अत्क़ा" हैं और दूसरा उमय्या "अश्क़ा" उमय्या बिन ख़लफ़ हज़रते बिलाल को जो उस की मिल्क में थे दीन से मुन्हरिफ़ करने के लिये त़रह त़रह की तक्लीफ़ें देता था और इन्तिहाई ज़ुल्म और सख़्तियां करता था, एक रोज़ हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने देखा कि उमय्या ने हज़रते बिलाल को गर्म ज़मीन पर डाल कर तपते हुए पथ्थर उन के सीने पर रखे हैं और इस ह़ाल में कलिमए ईमान उन की ज़बान पर जारी है, आप ने उमय्या से फ़रमाया : ऐ बद नसीब एक ख़ुदा परस्त पर येह सख़्तियां ? उस ने कहा आप को इस की तक्लीफ़ ना गवार हो तो ख़रीद लीजिये, आप ने गिरां क़ीमत पर उन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया, इस पर येह सूरत नाज़िल हुई, इस में बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं या'नी हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कोशिश और उमय्या की, और हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिज़ाए इलाही के त़ालिब हैं उमय्या हक़ की दुश्मनी में अन्धा। **15 :** मर कर गोर (क़ब्र) में जाएगा या क़ा'रे जहन्नम (जहन्नम की गहराइयों) में पहुंचेगा। **16 :** या'नी हक़ और बात़िल की राहों को वाज़ेह कर देना और हक़ पर दलाइल क़ाइम करना और अह़काम बयान फ़रमाना **17 :** ब त़रीक़े लुज़ूमो दवाम **18 :** रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को **19 :** ईमान से। **20 :** **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक या'नी उस का ख़र्च करना रिया व नुमाइश से पाक है।

www.dawateislami.net

لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿۲۰﴾

का उस पर कुछ एह़सान नहीं जिस का बदला दिया जाए[21] सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿۲۱﴾

और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा[22]

ایاتها ۱۱ | ۹۳ سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ ۱۱ | رکوعها ۱

सूरए दुह़ा मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالضُّحٰى ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿۳﴾ وَ

चाश्त की क़सम[2] और रात की जब पर्दा डाले[3] कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना और

لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿۵﴾

बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है[4] और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें[5] इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे[6]

21 शाने नुज़ूल : जब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को ह़ैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऐसा क्यूं किया, शायद बिलाल का उन पर कोई एह़सान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह फ़े'ल मह़ज़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये है किसी के एह़सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल वग़ैरा का कोई एह़सान है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बहुत से लोगों को उन के इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया। **22 :** उस ने'मतो करम से जो **अल्लाह** तआ़ला उन को जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा। **1 :** "सूरए वद्दुह़ा" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सो बहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि चन्द रोज़ वह़्य न आई तो कुफ़्फ़ार ने ब तरीक़े त़ा'न कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को उन के रब ने छोड़ दिया और मकरूह जाना इस पर "وَالضُّحٰی" नाज़िल हुई। **2 :** जिस वक़्त कि आफ़्ताब बुलन्द हो क्यूं कि येह वक़्त वोही है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे। **मस्अला :** चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इस का वक़्त आफ़्ताब के बुलन्द होने से क़ब्ले ज़वाल तक है, इमाम साह़िब के नज़्दीक चाश्त की नमाज़ दो रक्अ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दुह़ा से दिन मुराद है। **3 :** और उस की तारीकी आ़म हो जाए। इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वोह चाश्त है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कलाम फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ और शब किनाया है आप के गेसूए अम्बरीन से। (روح البیان) **4 :** या'नी आख़िरत दुन्या से बेहतर, क्यूं कि वहां आप के लिये मक़ामे मह़मूद व ह़ौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊ़द और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आप की उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आप की शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दरजे बुलन्द होना और बे इन्तिहा इ़ज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान फ़रमाए हैं कि आने वाले अह़वाल आप के लिये गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि ह़क़ तआ़ला का वा'दा है कि वोह रोज़ बरोज़ आप के दरजे बुलन्द करेगा और इ़ज़्ज़त पर इ़ज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़ियादा फ़रमाएगा और साअ़त ब साअ़त आप के मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। **5 :** दुन्या व आख़िरत में **6 : अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से येह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अ़ता फ़रमाईं, कमाले नफ़्स और उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन और ज़ुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूह़ात जो अ़ह्दे मुबारक में हुईं और अ़ह्दे सह़ाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसल्मानों को होती रहेंगी और

www.dawateislami.net

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪ ⑥ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪ ⑦ وَوَجَدَكَ

क्या उस ने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी[7] और तुम्हें अपनी महब्बत में खुद रफ़्ता पाया तो अपनी तरफ़ राह दी[8] और तुम्हें

عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ ⑧ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ؕ ⑨ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا

हाजत मन्द पाया फिर ग़नी कर दिया[9] तो यतीम पर दबाव न डालो[10] और मंगता को न

ع ۱۸ ۱

تَنْهَرْ ؕ ⑩ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ع ⑪

झिड़को[11] और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो[12]

दा'वत का आम होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आप की उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आप के वोह करामात व कमालात जिन का **अल्लाह** ही आलिम है, और आख़िरत की इज़्ज़तो तक्रीम को भी शामिल है कि **अल्लाह** तआला ने आप को शफ़ाअते आम्मा व ख़ास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरा जलील ने'मतें अता फ़रमाईं। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के हक़ में रो कर दुआ फ़रमाई और अर्ज़ किया "اَللّٰهُمَّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ" **अल्लाह** तआला ने जिब्रील को हुक्म दिया कि मुहम्मद (मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में जा कर दरयाफ़्त करो रोने का क्या सबब है, बा वुजूदे कि **अल्लाह** तआला दाना है, जिब्रील ने हस्बे हुक्म हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया। सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें तमाम हाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़्हार फ़रमाया। जिब्रीले अमीन ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि तेरे हबीब येह फ़रमाते हैं, बा वुजूदे कि वोह ख़ूब जानने वाला है। **अल्लाह** तआला ने जिब्रील को हुक्म दिया जाओ और मेरे हबीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से कहो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में अन्क़रीब राज़ी करेंगे और आप को गिरां ख़ातिर न होने देंगे, हदीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे मैं राज़ी न होउंगा। आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि **अल्लाह** तआला वोही करेगा जिस में रसूल राज़ी हों और अहादीसे शफ़ाअत से साबित है कि रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जाएं, तो आयत व अहादीस से क़त्ई तौर पर येह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअत मक़्बूल और हस्बे मरज़िय्ये मुबारक गुनहगाराने उम्मत बख़्शे जाएंगे, سُبْحٰنَ اللّٰه क्या रुत्बए उल्या है कि जिस परवर्दगार को राज़ी करने के लिये तमाम मुक़र्रबीन तक्लीफ़ें बरदाश्त करते और मेहनतें उठाते हैं, वोह इस हबीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को राज़ी करने के लिये अता आम करता है। इस के बा'द **अल्लाह** तआला ने उन ने'मतों का ज़िक्र फ़रमाया जो आप के इब्तिदाए हाल से आप पर फ़रमाईं। **7 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अभी वालिदए माजिदा के बत्न में थे, हम्ल दो माह का था कि आप के वालिद साहिब ने मदीनए शरीफ़ा में वफ़ात पाई और न कुछ माल छोड़ा, न कोई जगह छोड़ी, आप की ख़िदमत के मुतकफ़्फ़िल आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब हुए, जब आप की उम्र शरीफ़ चार या छ साल की हुई तो वालिदा साहिबा ने भी वफ़ात पाई, जब उम्र शरीफ़ आठ साल की हुई तो आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने भी वफ़ात पाई, उन्हों ने अपनी वफ़ात से पहले अपने फ़रज़न्द अबू तालिब को जो आप के हक़ीक़ी चचा थे आप की ख़िदमत व निगरानी की वसिय्यत की। अबू तालिब आप की ख़िदमत में सरगर्म रहे, यहां तक कि आप को **अल्लाह** तआला ने नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया। इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने एक मा'ना येह बयान किये हैं कि यतीम ब मा'ना यक्ता व बे नज़ीर के है जैसे कि कहा जाता है : "दुर्रे यतीमा"। इस तक्दीर पर आयत के मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआला ने आप को इज़्ज़ो शरफ़ में यक्ता व बे नज़ीर पाया और आप को मक़ामे कुर्ब में जगह दी और अपनी हिफ़ाज़त में आप के दुश्मनों के अन्दर आप की परवरिश फ़रमाई और आप को नुबुव्वत व इस्तिफ़ा (चुनने) व रिसालत के साथ मुशर्रफ़ किया। (خازن وجمل وروح البیان) **8 :** और ग़ैब के असरार आप पर खोल दिये और उलूमे ماكان وما يكون अता किये, अपनी ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त में सब से बुलन्द मर्तबा इनायत किया। मुफ़स्सिरीन ने एक मा'ना इस आयत के येह भी बयान किये हैं कि **अल्लाह** तआला ने आप को ऐसा वारफ़्ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने मरातिब की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आप को आप के ज़ातो सिफ़ात और मरातिबो दरजात की मा'रिफ़त अता फ़रमाई। **मस्अला :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام सब मा'सूम होते हैं नुबुव्वत से क़ब्ल भी, नुबुव्वत से बा'द भी और **अल्लाह** तआला की तौहीद और उस के सिफ़ात के हमेशा से आरिफ़ होते हैं। **9 :** दौलते क़नाअत अता फ़रमा कर। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि तवंगरी कस्रते माल से हासिल नहीं होती, हक़ीक़ी तवंगरी नफ़्स का बे नियाज़ होना। **10 :** जैसा कि अहले जाहिलिय्यत का तरीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उन पर ज़ियादती करते थे। हदीस शरीफ़ में सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसल्मानों के घरों में वोह बहुत अच्छा घर है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वोह बहुत बुरा घर है जिस में यतीम के साथ बुरा बरताव किया जाता है।" **11 :** या कुछ दे दो या हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी के साथ उज़्र कर दो। येह भी कहा गया है कि साइल से तालिबे इल्म मुराद है, उस का इक्राम करना चाहिये और जो उस की हाजत हो उस का पूरा करना और उस के साथ तुर्शरूई व बद ख़ुल्क़ी न करना चाहिये। **12 :** ने'मतों से मुराद वोह ने'मतें हैं जो **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अता

www.dawateislami.net

ایاتها ٨ ﴿٩٤ سُورَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ ١٢﴾ رکوعها ١

सूरए अलम नशरह् मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿١﴾ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ﴿٢﴾ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ

क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया[2] और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ

ظَهْرَكَ ۙ﴿٣﴾ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ﴿٤﴾ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ﴿٥﴾ اِنَّ مَعَ

तोड़ी थी[3] और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया[4] तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक दुश्वारी

الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ﴿٦﴾ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ﴿٧﴾ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾ ع ٨/١٩

के साथ और आसानी है[5] तो जब तुम नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो दुआ़ में[6] मेहनत करो[7] और अपने रब ही की त़रफ़ रग़बत करो[8]

ایاتها ٨ ﴿٩٥ سُورَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ ٢٨﴾ رکوعها ١

सूरए तीन मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

फ़रमाई और वोह भी जिन का हुज़ूर से वा'दा फ़रमाया। ने'मतों के ज़िक्र का इस लिये हुक्म फ़रमाया कि ने'मत का बयान करना शुक्र गुज़ारी है। **1 :** "सूरए अलम नशरह्" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें और सत्ताईस कलिमे, एक सो तीन हर्फ़ हैं। **2 :** या'नी हम ने आप के सीने को कुशादा और वसीअ़ किया हिदायतो मा'रिफ़त और मौइज़तो नुबुव्वत और इल्मो हिक्मत के लिये, यहां तक कि आ़लमे ग़ैबो शहादत उस की वुस्अ़त में समा गए और अ़लाइके़ जिस्मानिय्या, अन्वारे रूहा़निय्या के लिये मानेअ़ न हो सके और उ़लूमे लदुन्निय्या व हुक्मे इलाहिय्यह व मआ़रिफ़े रब्बानिय्या व ह़क़ाइक़े रह़मानिय्या सीनए पाक में जल्वा नुमा हुए। और ज़ाहिरी शर्हे़ सद्र भी बार बार हुवा, इब्तिदाए उ़म्र शरीफ़ में और इब्तिदाए नुज़ूले वह़्य के वक़्त और शबे मे'राज जैसा कि अह़ादीस में आया है, इस की शक्ल येह थी कि जिब्रीले अमीन ने सीनए पाक को चाक कर के क़ल्बे मुबारक निकाला और ज़र्रीं त़श्त में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूर व ह़िक्मत से भर कर उस को उस की जगह रख दिया। **3 :** इस बोझ से मुराद या वोह ग़म है जो आप को कुफ़्फ़ार के ईमान न लाने से रहता था या उम्मत के गुनाहों का ग़म जिस में क़ल्बे मुबारक मश्ग़ूल रहता था, मुराद येह है कि हम ने आप को मक़्बूलुश्शफ़ाअ़त कर के वोह बारे ग़म दूर कर दिया। **4 :** ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्रील से इस आयत को दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हों ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि जब मेरा ज़िक्र किया जाए मेरे साथ आप का भी ज़िक्र किया जाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मुराद इस से येह है कि अज़ान में, तक्बीर में, तशह्हुद में, मिम्बरों पर, ख़ुत़्बों में। तो अगर कोई **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करे हर बात में उस की तस्दीक़ करे और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही न दे तो येह सब बेकार, वोह काफ़िर ही रहेगा। क़तादा ने कहा कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप का ज़िक्र दुन्या व आख़िरत में बुलन्द किया, हर ख़त़ीब, हर तशह्हुद पढ़ने वाला, اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के साथ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ पुकारता है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि आप के ज़िक्र की बुलन्दी येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया से आप पर ईमान लाने का अ़हद लिया। **5 :** या'नी जो शिद्दत व सख़्ती कि आप कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में बरदाश्त फ़रमा रहे हैं इस के साथ ही आसानी है कि हम आप को इन पर ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएंगे। **6 :** या'नी आख़िरत की **7 :** कि दुआ़ बा'दे नमाज़ मक़्बूल होती है, इस दुआ़ से मुराद आख़िरे नमाज़ की वोह दुआ़ है जो नमाज़ के अन्दर हो या वोह दुआ़ जो सलाम के बा'द हो, इस में इख़्तिलाफ़ है। **8 :** उसी के फ़ज़्ल के त़ालिब रहो और उसी पर तवक्कुल करो।

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالتِّيۡنِ وَالزَّيۡتُوۡنِ ۙ﴿۱﴾ وَطُوۡرِ سِيۡنِيۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَهٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِيۡنِ ۙ﴿۳﴾

इन्जीर की क़सम और ज़ैतून[2] और तूरे सीना[3] और इस अमान वाले शहर की[4]

لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِيۡمٍ ﴿۴﴾ ثُمَّ رَدَدۡنٰهُ اَسۡفَلَ

बेशक हम ने आदमी को अच्छी सूरत पर बनाया फिर उसे हर नीची से नीची सी हालत

سٰفِلِيۡنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ

की त़रफ़ फेर दिया[5] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि उन्हें

مَمۡنُوۡنٍ ؕ﴿۶﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعۡدُ بِالدِّيۡنِ ؕ﴿۷﴾ اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِاَحۡكَمِ

बेह़द सवाब है[6] तो अब[7] क्या चीज़ तुझे इन्साफ़ के झुटलाने पर बाइस है[8] क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बढ़ कर

الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸﴾

ह़ाकिम नहीं

ايَاتُهَا ١٩ ﴿٩٦﴾ سُوۡرَةُ الۡعَلَقِ مَكِّيَّةٌ ﴿١﴾ رُكُوۡعُهَا ١

सूरए अ़लक़ मक्किय्या है, इस में उन्नीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

1 : "सूरए वत्तीन" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोंतीस कलिमे, एक सो पांच ह़र्फ़ हैं। 2 : इन्जीर निहायत उ़म्दा मेवा है जिस में फ़ुज़्ला नहीं, सरीउ़ल हज़्म, कसीरुन्नफ़्अ़, मुलय्यिन, मुह़ल्लिल, दाफ़ेए रेग, मुफ़त्तिहे सुद्दए जिगर, बदन का फ़र्बा करने वाला, बल्ग़म को छांटने वाला। ज़ैतून एक मुबारक दरख़्त है इस का तेल रोशनी के काम में भी लाया जाता है और बजाए सालन के भी खाया जाता है, येह वस्फ़ दुन्या के किसी तेल में नहीं, इस का दरख़्त ख़ुश्क पहाड़ों में पैदा होता है जिन में दुहनिय्यत (चिक्नाहट) का नामो निशान नहीं, बिग़ैर ख़िदमत के परवरिश पाता है, हज़ारों बरस रहता है, इन चीज़ों में क़ुदरते इलाही के आसार ज़ाहिर हैं। 3 : येह वोह पहाड़ है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को कलाम से मुशर्रफ़ फ़रमाया और "सीना" उस जगह का नाम है जहां येह पहाड़ वाक़ेअ़ है या ब मा'ना ख़ुश मन्ज़र के है जहां कसरत से फलदार दरख़्त हों। 4 : या'नी मक्कए मुकर्रमा की 5 : या'नी बुढ़ापे की त़रफ़ जब कि बदन ज़ईफ़, आ'ज़ा नाकारा, अ़क़्ल नाक़िस, पुश्त ख़म, बाल सफ़ेद हो जाते हैं, जिल्द में झुर्रियां पड़ जाती हैं, अपने ज़रूरिय्यात अन्जाम देने में मजबूर हो जाता है या येह मा'ना हैं कि जब उस ने अच्छी शक्ल व सूरत की शुक्र गुज़ारी न की और ना फ़रमानी पर जमा रहा और ईमान न लाया तो जहन्नम के अस्फ़ल तरीन दरकात (सब से नीचे वाले त़ब्क़ों) को हम ने उस का ठिकाना कर दिया। 6 : अगर्चे ज़ो'फ़े पीरी के बाइस वोह जवानी की त़रह़ कसीर त़ाअ़तें बजा न ला सकें और उन के अ़मल कम हो जाएं लेकिन करमे इलाही से उन्हें वोही अज्र मिलेगा जो शबाब और क़ुव्वत के ज़माने में अ़मल करने से मिलता था और इतने ही अ़मल उन के लिखे जाएंगे। 7 : इस बयाने क़ातेअ़ व बुरहाने सातेअ़ के बा'द ऐ काफ़िर ! 8 : और तू अल्लाह तआ़ला की येह क़ुदरतें देखने के बा वुजूद क्यूं बअ़्स व ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है। 1 : "सूरए इक़्रअ"

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ

पढ़ो अपने रब के नाम से[2] जिस ने पैदा किया[3] आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो[4]

وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ

और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया[5] आदमी को सिखाया जो न

یَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۙ﴿۶﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ؕ﴿۷﴾ اِنَّ اِلٰی

जानता था[6] हां हां बेशक आदमी सरकशी करता है इस पर कि अपने आप को ग़नी समझ लिया[7] बेशक तुम्हारे

رَبِّكَ الرُّجْعٰی ؕ﴿۸﴾ اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یَنْهٰی ۙ﴿۹﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ؕ﴿۱۰﴾

रब ही की तरफ़ फिरना है[8] भला देखो तो जो मन्अ़ करता है बन्दे को जब वोह नमाज़ पढ़े[9]

اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤی ۙ﴿۱۱﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ؕ﴿۱۲﴾ اَرَءَیْتَ اِنْ

भला देखो तो अगर वोह हिदायत पर होता या परहेज़ गारी बताता तो क्या ख़ूब था भला देखो तो अगर

كَذَّبَ وَ تَوَلّٰی ؕ﴿۱۳﴾ اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰی ؕ﴿۱۴﴾ كَلَّا لَىٕنْ لَّمْ یَنْتَهِ ۙ۬

झुटलाया[10] और मुंह फेरा[11] तो क्या ह़ाल होगा क्या न जाना[12] कि **अल्लाह** देख रहा है[13] हां हां अगर बाज़ न आया[14]

इस को "सूरए अ़लक़" भी कहते हैं। येह सूरत मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्नीस आयतें, बानवे कलिमे, दो सो अस्सी ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक येह सूरत सब से पहले नाज़िल हुई और इस की पहली पांच आयतें "مَالَمْ یَعْلَمْ" तक ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई। फ़िरिश्ते ने आ कर ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "اِقْرَاْ" या'नी पढ़िये ! फ़रमाया : हम पढ़े नहीं। उस ने सीने से लगा कर बहुत ज़ोर से दबाया, फिर छोड़ कर "اِقْرَاْ" कहा, फिर आप ने वोही जवाब दिया, तीन मरतबा ऐसा ही हुवा फिर उस के साथ साथ आप ने "مَالَمْ یَعْلَمْ" तक पढ़ा। **2 :** या'नी क़िराअत की इब्तिदा अदबन **अल्लाह** तआ़ला के नाम से हो। इस तक़्दीर पर आयत से साबित होता है कि क़िराअत की इब्तिदा "بِسْمِ اللّٰه" के साथ मुस्तह़ब है। **3 :** तमाम ख़ल्क़ को **4 :** दोबारा पढ़ने का हुक्म ताकीद के लिये है और येह भी कहा गया है कि दोबारा क़िराअत के हुक्म से मुराद येह है कि तब्लीग़ और उम्मत के ता'लीम के लिये पढ़िये। **5 :** इस से किताबत की फ़ज़ीलत साबित हुई और दर ह़क़ीक़त किताबत में बड़े मनाफ़ेअ़ हैं, किताबत ही से उ़लूम ज़ब्त में आते हैं, गुज़रे हुए लोगों की ख़बरें और उन के अह़वाल और उन के कलाम मह़फ़ूज़ रहते हैं। किताबत न होती तो दीन व दुन्या के काम क़ाइम न रह सकते। **6 :** आदमी से मुराद यहां ह़ज़रते आदम हैं और जो उन्हें सिखाया उस से मुराद "इल्मे अस्मा"। और एक क़ौल येह है कि इन्सान से मुराद यहां सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं कि आप को **अल्लाह** तआ़ला ने जमीअ़ अश्या के उ़लूम अ़ता फ़रमाए। (معالم وخازن) **7 :** या'नी ग़फ़्लत का सबब दुन्या की मह़ब्बत और माल पर तकब्बुर है। येह आयतें अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुईं, उस को कुछ माल हाथ आ गया था तो उस ने लिबास और सुवारी और खाने पीने में तकल्लुफ़ात शुरूअ़ किये और उस का ग़ुरूर और तकब्बुर बहुत बढ़ गया। **8 :** या'नी इन्सान को येह बात पेशे नज़र रखनी चाहिये और समझना चाहिये कि उसे **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ करना है तो सरकशी व तुग़यान और ग़ुरूरो तकब्बुर का अन्जाम अ़ज़ाब होगा। **9 शाने नुज़ूल :** येह आयत भी अबू जह्ल के ह़क़ में नाज़िल हुई उस ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ किया था और लोगों से कहा था कि अगर मैं उन्हें ऐसा करता देखूंगा तो (مَعَاذَ اللّٰه) गरदन पाउं से कुचल डालूंगा और चेहरा ख़ाक में मिला दूंगा, फिर वोह इसी इरादए फ़ासिदा से ह़ुज़ूर के नमाज़ पढ़ते में आया और ह़ुज़ूर के क़रीब पहुंच कर उल्टे पाउं पीछे भागा हाथ आगे बढ़ाए हुए जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिये हाथ आगे बढ़ाता है, चेहरे का रंग उड़ गया, आ'ज़ा कांपने लगे। लोगों ने कहा : क्या ह़ाल है ? कहने लगा : मेरे और मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के दरमियान एक ख़न्दक़ है जिस में आग भरी हुई है और दहशत नाक परिन्द बाज़ू फैलाए हुए हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर वोह मेरे क़रीब आता तो फ़िरिश्ते उस का उ़ज़्व उ़ज़्व जुदा कर डालते। **10 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को **11 :** ईमान लाने से **12 :** अबू जह्ल ने **13 :** उस के फ़े'ल को, पस जज़ा देगा **14 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ईज़ा और आप की तक्ज़ीब से।

www.dawateislami.net

لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿۱۵﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿۱۶﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿۱۷﴾

तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे[15] कैसी पेशानी झूटी ख़ताकार अब पुकारे अपनी मजलिस को[16]

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿۱۸﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿۱۹﴾ السجدة

ع ١٩ / ٢١ السجدة ١٣

अभी हम सिपाहियों को बुलाते हैं[17] हां हां उस की न सुनो और सज्दा करो[18] और हम से क़रीब हो जाओ

ايَاتُهَا ٥ ﴿۹۷﴾ سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ ٢٥ رُكُوْعُهَا ١

सूरए क़द्र मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿۱﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿۲﴾

बेशक हम ने इसे[2] शबे क़द्र में उतारा[3] और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर[4] इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं[5]

15 : और उस को जहन्नम में डालेंगे। **16 शाने नुज़ूल :** जब अबू जहल ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नमाज़ से मन्अ़ किया तो हुज़ूर ने उस को सख़्ती से झिड़क दिया, इस पर उस ने कहा कि आप मुझे झिड़क्ते हैं, ख़ुदा की क़सम मैं आप के मुक़ाबिल नौ जवान सुवारों और पैदलों से इस जंगल को भर दूंगा, आप जानते हैं कि मक्कए मुकर्रमा में मुझ से ज़ियादा बड़े जथ्थे और मजलिस वाला कोई नहीं है। **17 :** या'नी अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों को। ह़दीस शरीफ़ में है कि अगर वोह अपनी मजलिस को बुलाता तो फ़िरिश्ते उस को बिल ए'लान गिरिफ़्तार करते। **18 :** या'नी नमाज़ पढ़ते रहो **1 :** "सूरतुल क़द्र" मदनिय्या व बक़ौले मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तीस कलिमे, एक सो बारह ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी क़ुरआने मजीद को लौहे मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ यकबारगी **3 :** शबे क़द्र शरफ़ो बरकत वाली रात है। इस को शबे क़द्र इस लिये कहते हैं कि इस शब में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और मलाएका को साल भर के वज़ाइफ़ व ख़िदमात पर मामूर किया जाता है। येह भी कहा गया है कि इस रात की शराफ़त व क़द्र के बाइस इस को शबे क़द्र कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में आ'माले सालिह़ा मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को शबे क़द्र कहते हैं। अह़ादीस में इस शब की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं : बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि जिस ने इस रात में ईमान व इख़्लास के साथ शब बेदारी कर के इबादत की **अल्लाह** तआ़ला उस के साल भर के गुनाह बख़्श देता है। आदमी को चाहिये कि इस शब में कसरत से इस्तिग़्फ़ार करे और रात इबादत में गुज़ारे। साल भर में शबे क़द्र एक मरतबा आती है और रिवायाते कसीरा से साबित है कि वोह रमज़ानुल मुबारक के अ़शरए अख़ीरा में होती है और अक्सर इस की भी त़ाक़ रातों में से किसी रात में। बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र होती है, येही ह़ज़रत इमामे आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है। इस रात के फ़ज़ाइले अ़ज़ीमा अगली आयतों में इर्शाद फ़रमाए जाते हैं : **4 :** जो शबे क़द्र से ख़ाली हों, इस एक रात में नेक अ़मल करना हज़ार रातों के अ़मल से बेहतर है। ह़दीस शरीफ़ में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उम्मे गुज़श्ता के एक शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो तमाम रात इबादत करता था और तमाम दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था, इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, मुसल्मानों को इस से तअ़ज्जुब हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को शबे क़द्र अ़त़ा फ़रमाई और येह आयत नाज़िल की, कि शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। (اخرجه ابن جرير عن طريق مجاهد) येह **अल्लाह** तआ़ला का अपने ह़बीब पर करम है कि आप के उम्मती शबे क़द्र की एक रात इबादत करें तो इन का सवाब पिछली उम्मत के हज़ार माह इबादत करने वालों से ज़ियादा हो। **5 :** ज़मीन की त़रफ़, और जो बन्दा खड़ा या बैठा यादे इलाही में मश्ग़ूल होता है उस को सलाम करते हैं और उस के ह़क़ में दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करते हैं।

www.dawateislami.net

بِاِذۡنِ رَبِّهِمۡ ۚ مِنۡ كُلِّ اَمۡرٍ ۛ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۛ هِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ﴿۵﴾ ع

अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये[6] वोह सलामती है सुब्ह चमक्ने तक[7]

ایاتها ٨ ﴿٩٨ سُوۡرَةُ الۡبَیِّنَةِ مَدَنِیَّةٌ ١٠٠﴾ رکوعها ١

सूरए बय्यिनह मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

لَمۡ یَكُنِ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَ الۡمُشۡرِكِیۡنَ مُنۡفَكِّیۡنَ

किताबी काफ़िर[2] और मुश्रिक[3] अपना दीन छोड़ने को न थे

حَتّٰی تَاۡتِیَهُمُ الۡبَیِّنَةُ ۙ﴿۱﴾ رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ یَتۡلُوۡا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿۲﴾

जब तक उन के पास रोशन दलील न आए[4] वोह कौन वोह अल्लाह का रसूल[5] कि पाक सहीफ़े पढ़ता है[6]

فِیۡهَا كُتُبٌ قَیِّمَةٌ ؕ﴿۳﴾ وَ مَا تَفَرَّقَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا

उन में सीधी बातें लिखी हैं[7] और फूट न पड़ी किताब वालों में मगर बा'द इस के कि वोह

جَآءَتۡهُمُ الۡبَیِّنَةُ ؕ﴿۴﴾ وَ مَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِیَعۡبُدُوا اللّٰهَ مُخۡلِصِیۡنَ لَهُ

रोशन दलील[8] उन के पास तशरीफ़ लाए[9] और उन लोगों को तो[10] येही हुक्म हुवा कि अल्लाह की बन्दगी करें निरे उसी पर

الدِّیۡنَ ۬ۙ حُنَفَآءَ وَ یُقِیۡمُوا الصَّلٰوةَ وَ یُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ وَ ذٰلِكَ دِیۡنُ

अ़क़ीदा लाते[11] एक त़रफ़ के हो कर[12] और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा

الۡقَیِّمَةِ ؕ﴿۵﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَ الۡمُشۡرِكِیۡنَ فِیۡ

दीन है बेशक जितने काफ़िर हैं किताबी और मुश्रिक सब जहन्नम की

6 : जो अल्लाह तआ़ला ने इस साल के लिये मुक़द्दर फ़रमाया। 7 : बलाओं और आफ़तों से। 1 : "सूरए लम यकुन" इस को "सूरए बय्यिनह" भी कहते हैं, जुम्हूर के नज़्दीक येह सूरत मदनिय्या है और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की एक रिवायत येह है कि मक्किय्या है, इस सूरत में एक रुकूअ़, आठ आयतें, चोरानवे कलिमे, तीन सो निनानवे हु़रूफ़ हैं। 2 : यहूदो नसारा 3 : बुत परस्त 4 : या'नी सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़रोज़ हों, क्यूं कि हु़ज़ूरे अक़्दस عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسۡلِیۡمَات की तशरीफ़ आवरी से पहले येह तमाम येही कहते थे कि हम अपना दीन छोड़ने वाले नहीं जब तक कि वोह "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ फ़रमा न हों जिन का ज़िक्र तौरैत व इन्जील में है। 5 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 6 : या'नी कु़रआने मजीद 7 : ह़क़ व अ़द्ल की 8 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم 9 : मुराद येह है कि पहले से तो सब इस पर मुत्तफ़िक़ थे कि जब "नबिय्ये मौऊ़द" तशरीफ़ लाएं तो हम उन पर ईमान लाएंगे, लेकिन जब वोह नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم जल्वा अफ़रोज़ हुए तो बा'ज़ तो आप पर ईमान लाए और बा'ज़ ने ह़सदन व इनादन कुफ़्र इख़्तियार किया। 10 : तौरैत व इन्जील में 11 : इख़्लास के साथ शिर्क व निफ़ाक़ से दूर रह कर 12 : या'नी तमाम दीनों को छोड़ कर

www.dawateislami.net

نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

आग में हैं हमेशा उस में रहेंगे वोही तमाम मख़्लूक़ में बदतर हैं बेशक जो

اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۷﴾ جَزَآؤُهُمْ

ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं उन का सिला

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ

उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बहें उन में हमेशा हमेशा

ع ٨ ٢٢ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۧ﴿۸﴾

रहें अल्लाह उन से राज़ी[13] और वोह उस से राज़ी[14] येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे[15]

اٰیاتها ٨ ﴿٩٩ سُوْرَۃُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ ٩٣﴾ رکوعها ١

सूरए ज़िल्ज़ाल मदनिय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَ

जब ज़मीन थरथरा दी जाए[2] जैसा उस का थरथराना ठहरा है[3] और ज़मीन अपने बोझ बाहर फेंक दे[4] और

قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ

आदमी कहे इसे क्या हुवा[5] उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी[6] इस लिये कि तुम्हारे रब

اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۬ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾

ने उसे हुक्म भेजा[7] उस दिन लोग अपने रब की त़रफ़ फिरेंगे[8] कई राह हो कर[9] ताकि अपना किया[10] दिखाए जाएं

ख़ालिस इस्लाम के मुत्तबेअ़ हो कर **13 :** और उन के इत़ाअ़त व इख़्लास से **14 :** उस के करम व अ़त़ा से **15 :** और उस की ना फ़रमानी से बचे। **1 :** सूरए "اِذَا زُلْزِلَتْ" जिस को "सूरए ज़ल्ज़ला" भी कहते हैं, मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, पेंतीस कलिमे और एक सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। **2 :** क़ियामत क़ाइम होने के नज़्दीक या रोज़े क़ियामत **3 :** और ज़मीन पर कोई दरख़्त कोई इमारत कोई पहाड़ बाक़ी न रहे, हर चीज़ टूट फूट जाए। **4 :** या'नी ख़ज़ाने और मुर्दे जो उस में हैं वोह सब निकल कर बाहर आ पड़ें। **5 :** कि ऐसी मुज़्तरिब हुई और इतना शदीद ज़ल्ज़ला आया कि जो कुछ इस के अन्दर था सब बाहर फेंक दिया। **6 :** और जो नेकी बदी उस पर की गई सब बयान करेगी। ह़दीस शरीफ़ में है कि हर मर्द व औ़रत ने जो कुछ इस पर किया उस की गवाही देगी कहेगी : फ़ुलां रोज़ येह किया फ़ुलां रोज़ येह। (ترمذی) **7 :** कि अपनी ख़बरें बयान करे और जो अ़मल उस पर किये गए हैं उन की ख़बरें दे **8 :** मौक़िफ़े ह़िसाब से **9 :** कोई दहनी त़रफ़ से हो कर जन्नत की त़रफ़ जाएगा कोई बाईं जानिब से दोज़ख़ की त़रफ़। **10 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा।

www.dawateislami.net

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿۷﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे

شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾ ع

उसे देखेगा[11]

اٰیاتھا ۱۱ ﴿۱۰۰ سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ۱۴﴾ رکوعھا ۱

सूरए आ़दियात मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿۱﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿۲﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿۳﴾

क़सम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई[2] फिर पथ्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर[3] फिर सुब्ह़ होते ताराज करते हैं[4]

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿۴﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿۵﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

फिर उस वक़्त गुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का

لَكَنُوْدٌ ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ

बड़ा नाशुक्रा है[5] और बेशक वोह इस पर[6] ख़ुद गवाह है और बेशक वोह माल की चाहत में ज़रूर

لَشَدِيْدٌ ﴿۸﴾ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ مَا فِي

कर्रा है[7] तो क्या नहीं जानता जब उठाए जाएंगे[8] जो क़ब्रों में हैं और खोल दी जाएगी[9] जो

11 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما ने फ़रमाया कि हर मोमिन व काफ़िर को रोज़े क़ियामत उस के नेक व बद आ'माल दिखाए जाएंगे, मोमिन को उस की नेकियां और बदियां दिखा कर अल्लाह तआ़ला बदियां बख़्श देगा और नेकियों पर सवाब अ़ता फ़रमाएगा और काफ़िर की नेकियां रद कर दी जाएंगी क्यूं कि कुफ़्र के सबब अकारत हो चुकीं और बदियों पर उस को अ़ज़ाब किया जाएगा। मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी ने फ़रमाया कि काफ़िर ने ज़र्रा भर नेकी की होगी तो वोह उस की जज़ा दुन्या ही में देख लेगा यहां तक कि जब दुन्या से निकलेगा तो उस के पास कोई नेकी न होगी और मोमिन अपनी बदियों की सज़ा दुन्या में पाएगा तो आख़िरत में उस के साथ कोई बदी न होगी। इस आयत में तरग़ीब है कि नेकी थोड़ी सी भी कारआमद है और तरहीब (डराना) है कि गुनाह छोटा सा भी वबाल है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह फ़रमाया है कि पहली आयत मोमिनीन के ह़क़ में है और पिछली कुफ़्फ़ार के। 1 : "सूरए وَالْعٰدِيٰت" बक़ौले ह़ज़रते इब्ने मस्ऊद رضی اللہ تعالیٰ عنہ मक्किय्या है और बक़ौले इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما मदनिय्या। इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे और एक सो त्रेसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इन से ग़ाज़ियों के घोड़े हैं जो जिहाद में दौड़ते हैं तो उन के सीनों से आवाज़ें निकलती हैं। 3 : जब पथरीली ज़मीन पर चलते हैं। 4 : दुश्मन को 5 : कि उस की ने'मतों से मुकर जाता है। 6 : अपने अ़मल से 7 : निहायत क़वी व तुवाना है और इबादत के लिये कमज़ोर। 8 : मुर्दे 9 : वोह ह़क़ीक़त या वोह नेकी व बदी।

www.dawateislami.net

ع ٢٥

الصُّدُوۡرِ ﴿١٠﴾ اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَئِذٍ لَّخَبِيۡرٌ ﴿١١﴾

सीनों में है बेशक उन के रब को उस दिन[10] उन की सब ख़बर है[11]

اٰیاتها ١١ | ١٠١ سُوۡرَةُ الۡقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ ٣٠ | رکوعها ١

सूरए क़ारिअ़ह मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلۡقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٣﴾

दिल दहलाने वाली क्या वोह दहलाने वाली और तू ने क्या जाना क्या है दहलाने वाली[2]

يَوۡمَ يَكُوۡنُ النَّاسُ كَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوۡنُ الۡجِبَالُ كَالۡعِهۡنِ

जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे[3] और पहाड़ होंगे जैसे धुन्की (धुनी हुई)

الۡمَنۡفُوۡشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٦﴾ فَهُوَ فِيۡ عِيۡشَةٍ

ऊन[4] तो जिस की तोलें भारी हुईं[5] वोह तो मन मानते ऐश में

رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٨﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَاۤ

हैं[6] और जिस की तोलें हलकी पड़ीं[7] वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है[8] और तू

ع ٢٦

اَدۡرٰىكَ مَا هِيَهۡ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली एक आग शो'ले मारती[9]

10 : या'नी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसले का दिन है। **11 :** जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें आ'माले नेक व बद का बदला देगा। **1 :** सूरए "अल क़ारिअ़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सो बावन ह़र्फ़ हैं। **2 :** मुराद इस से क़ियामत है जिस की होल व हैबत से दिल दहलेंगे और "क़ारिअ़ह" क़ियामत के नामों से एक नाम है। **3 :** या'नी जिस त़रह पतंगे शो'ले पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उन के लिये कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है, येही ह़ाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तिशार का होगा। **4 :** जिस के अज्ज़ा मुतफ़र्रिक़ हो कर उड़ते हैं, येही ह़ाल क़ियामत के होल व दहशत से पहाड़ों का होगा। **5 :** और वज़्न दार अ़मल या'नी नेकियां ज़ियादा हुईं **6 :** या'नी जन्नत में। मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी तो अगर वोह ग़ालिब हुईं तो उस के लिये जन्नत है और काफ़िर की बुराइयां बद तरीन सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी और तोल हलकी पड़ेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बात़िल हैं, उन का कुछ वज़्न नहीं, तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। **7 :** ब सबब इस के कि वोह बात़िल का इत्तिबाअ़ करता था **8 :** या'नी उस का मस्कन आतशे दोज़ख़ है। **9 :** जिस में इन्तिहा की सोज़िश व तेज़ी है। अल्लाह तआ़ला उस से पनाह में रखे।

www.dawateislami.net

اٰياتها ٨ | ١٠٢ سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ ١٦ | رکوعها ١

सूरए तकासुर मक्किय्या है, इस में आठ आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ ﴿١﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿٣﴾ ثُمَّ

तुम्हें ग़ाफ़िल रखा[2] माल की ज़ियादा त़लबी ने[3] यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा[4] हां हां जल्द जान जाओगे[5] फिर

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ ﴿٦﴾

हां हां जल्द जान जाओगे[6] हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की मह़ब्बत न रखते[7] बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे[8]

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ ﴿٧﴾ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ع ﴿٨﴾

फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी[9]

اٰياتها ٣ | ١٠٣ سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ ١٣ | رکوعها ١

सूरए अ़स्र मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالْعَصْرِ ۙ ﴿١﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ ﴿٢﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उस ज़मानए मह़बूब की क़सम[2] बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है[3] मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम

1 : "सूरए तकासुर" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, अठ्ठाईस कलिमे, एक सो बीस ह़र्फ़ हैं। 2 : **अल्लाह** तआ़ला की त़ाअ़त से 3 : इस से मा'लूम हुवा कि कस्रते माल की ह़िर्स और इस पर मुफ़ाख़रत मज़्मूम है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़्रविय्या से मह़रूम रह जाता है। 4 : या'नी मौत के वक़्त तक ह़िर्स तुम्हारे दामन गीरे ख़ात़िर रही। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुर्दे के साथ तीन होते हैं दो लौट आते हैं एक उस के साथ रह जाता है। एक माल एक उस के अहलो अक़ारिब एक उस का अ़मल, अ़मल साथ रह जाता है बाक़ी दोनों वापस हो जाते हैं। (بخاری) 5 : नज़्अ़ के वक़्त अपने इस ह़ाल के नतीजए बद को 6 : क़ब्रों में। 7 : और ह़िर्से माल में मुब्तला हो कर आख़िरत से ग़ाफ़िल न होते। 8 : मरने के बा'द 9 : जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं, सिह़्ह़तो फ़राग़ व अम्नो ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे। पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र पर अ़ज़ाब किया जाएगा। 1 : "सूरए वल अ़स्र" जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, चौदह कलिमे, अड़सठ ह़र्फ़ हैं। 2 : "अ़स्र" ज़माने को कहते हैं और ज़माना चूंकि अ़जाइबात पर मुश्तमिल है, इस में अह़वाल का तग़य्युरो तबद्दुल नाज़िर के लिये इ़ब्रत का सबब होता है और येह चीज़ें ख़ालिक़े ह़कीम की क़ुदरतो ह़िक्मत और उस की वह़्दानिय्यत पर दलालत करती हैं। इस लिये हो सकता है कि ज़माने की क़सम मुराद हो और "अ़स्र" उस वक़्त को भी कहते हैं जो ग़ुरूब से क़ब्ल होता है। हो सकता है कि ख़ासिर के ह़क़ में इस वक़्त की क़सम याद फ़रमाई जाए जैसा कि राबेह़ के ह़क़ में "ज़ुह़ा" या'नी "वक़्ते चाश्त की क़सम" ज़िक्र फ़रमाई गई और एक क़ौल येह भी है कि अ़स्र से नमाज़े अ़स्र मुराद हो सकती है जो दिन की इ़बादतों

www.dawateislami.net

ع ٢٨

الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣ ع

किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की[4] और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की[5]

اٰيَاتُهَا ٩ | (١٠٤) سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٢) | رُكُوْعُهَا ١

सूरए हुमज़ह मक्किय्या है, इस में नव आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢ يَحْسَبُ

ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे[2] जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या येह समझता है

اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا

कि उस का माल उसे दुन्या में हमेशा रखेगा[3] हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा[4] और तू ने क्या जाना क्या

الْحُطَمَةُ ۝٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧ اِنَّهَا

रौंदने वाली अल्लाह की आग कि भड़क रही है[5] वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी[6] बेशक वोह

ع ٢٩

عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩ ع

उन पर बन्द कर दी जाएगी[7] लम्बे लम्बे सुतूनों में[8]

में सब से पिछली इबादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह तफ़्सीर वोही है जो हज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माने से "मख़्सूस ज़माना" सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का मुराद है जो बड़ी ख़ैरो बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलतो शरफ़ वाला है। अल्लाह तआला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि "لَآ اُقْسِمُ بِھٰذَا الْبَلَد" में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि "لَعَمْرُکَ" में आप की उम्र शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और इस में शाने महबूबिय्यत का इज़्हार है। **3 :** कि उस की उम्र जो उस का रासुल माल है और अस्ल पूंजी है वोह हर दम घट रही है। **4 :** या'नी ईमान व अमले सालेह की। **5 :** उन तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं, येह लोग ब फ़ज़्ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्यूं कि उन की जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअ़त में गुज़री तो वोह नफ़्अ़ पाने वाले हैं। **1 :** "सूरए हुमज़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, नव आयतें, तीस कलिमे, एक सो तीस हर्फ़ हैं। **2 :** येह आयतें उन कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुईं जो सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और आप के अस्हाब पर ज़बाने ता'न खोलते थे और इन हज़रात की ग़ीबत करते थे मिस्ल अख़्नस बिन शुरैक़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुग़ीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर ग़ीबत करने वाले के लिये आम है। **3 :** मरने न देगा जो वोह माल की महब्बत में मस्त है और अमले सालेह की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं करता। **4 :** या'नी जहन्नम के उस दरके (तब्क़े) में जहां आग हड्डियां पस्लियां तोड़ डालेगी। **5 :** और कभी सर्द नहीं होती। हदीस शरीफ़ में है : जहन्नम की आग हज़ार बरस धोंकी गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ता आं कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई हत्ता कि सियाह हो गई तो वोह सियाह है अंधेरी। (ترمذی) **6 :** या'नी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी। दिल ऐसी चीज़ हैं जिन को ज़रा सी भी गरमी की ताब नहीं, तो जब आतशे जहन्नम का उन पर इस्तीला (ग़लबा) होगा और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा ! "दिलों को जलाना" इस लिये है कि वोह मक़ाम हैं कुफ़्र और अक़ाइदे बातिला व निय्याते फ़ासिदा के। **7 :** या'नी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे **8 :** या'नी दरवाज़ों की बन्दिश आतिशीं लोहे के सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किये हैं कि

www.dawateislami.net

اٰياتها ٥ | ١٠٥ سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ ١٩ | رکوعها ١

सूरए फ़ील मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۟ؕ ١ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ
ऐ मह्बूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया[2] क्या उन का दाउं तबाही
تَضْلِيْلٍ ۙ ٢ وَّ اَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ٣ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ
में न डाला और उन पर परिन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं[3] कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से
مِّنْ سِجِّيْلٍ ۪ۙ ٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۠ ٥ ع ١ ٥ ٣٠
मारते[4] तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)[5]

اٰياتها ٤ | ١٠٦ سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَّكِّيَّةٌ ٢٩ | رکوعها ١

सूरए कुरैश मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

दरवाज़े बन्द कर के आतिशीं सुतूनों से उन के हाथ पाउं बांध दिये जाएंगे। **1 :** "सूरतुल फ़ील" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, छियानवे हर्फ़ हैं। **2 :** हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है। अब्रहा यमन और ह़ब्शा का बादशाह था, उस ने सन्आ़ में एक कनीसा (यहूदो नसारा का इबादत ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि ह़ज करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के यहीं आएं और इसी कनीसा का त़वाफ़ करें, अ़रब के लोगों को येह बात बहुत शाक़ थी, क़बीलए बनी किनाना के एक शख़्स ने मौक़अ़ पा कर उस कनीसा में क़ज़ाए ह़ाजत की और उस को नजासत से आलूदा कर दिया, इस पर अब्रहा को बहुत तै़श आया और उस ने का'बे को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर जिस में बहुत से हाथी थे और उन का "पेशरव" एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा कोह पैकर हाथी था जिस का नाम मह़मूद था। अब्रहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर अहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये, उन में दो सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्त़लिब के भी थे, अ़ब्दुल मुत्त़लिब अब्रहा के पास आए थे बहुत जसीम व बा शकोह अब्रहा ने उन की ता'ज़ीम की और अपने पास बिठाया और मत़लब दरयाफ़्त किया। आप ने फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि मेरे ऊंट वापस किये जाएं। अब्रहा ने कहा : मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए का'बा को ढाने के लिये आया हूं और वोह तुम्हारा तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम मक़ाम है ! तुम उस के लिये तो कुछ नहीं कहते अपने ऊंटों के लिये कहते हो ! आप ने फ़रमाया : मैं ऊंटों ही का मालिक हूं उन्ही के लिये कहता हूं और का'बे का जो मालिक है वोह ख़ुद उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। अब्रहा ने आप के ऊंट वापस कर दिये, अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने कुरैश को ह़ाल सुनाया और उन्हें मश्वरा दिया कि वोह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाह गुज़ीन हों। चुनान्चे क़ुरैश ने ऐसा ही किया और अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने दरवाज़ए का'बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में का'बे की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप अपनी क़ौम की त़रफ़ चले गए। अब्रहा ने सुब्ह़ तड़के अपने लश्करों को तय्यारी का हुक्म दिया और हाथियों को तय्यार किया लेकिन मह़मूद हाथी न उठा और का'बे की त़रफ़ न चला, जिस त़रफ़ चलाते थे चलता था, जब का'बे की त़रफ़ उस का रुख़ करते थे बैठ जाता था। अल्लाह तआ़ला ने छोटे छोटे परिन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े (पथ्थर) गिराते थे जिन से वोह हलाक हो जाते थे। **3 :** जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज आईं, हर एक के पास तीन कंकरियां थीं, दो दोनों पाउं में एक मिन्क़ार (चोंच) में। **4 :** जिस पर वोह परिन्द संगरेज़ा छोड़ते वोह संगरेज़ा उस के ख़ोद (जंगी टोपी) को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में गुज़र कर ज़मीन में पहुंचता, हर संगरेज़े पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़े से हलाक किया गया। **5 :** जिस साल येह वाक़िआ़ हुवा उसी साल इस वाक़िए के पचास रोज़ बा'द सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत हुई।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّيْفِ ۚ﴿۲﴾ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ

इस लिये कि कु़रैश को मैल दिलाया उन के जाड़े और गरमी दोनों के कूच में मैल दिलाया (रग़बत दिलाई)[2] तो उन्हें चाहिये इस घर

ع ١/٣١

هٰذَا الْبَيْتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِيْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ﴿۴﴾ ع

के[3] रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में[4] खाना दिया और उन्हें एक बड़े ख़ौफ़ से अमान बख़्शा[5]

اٰياتها ٧ ۞ ١٠٧ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ ١٧ ۞ ركوعها ١

सूरए माऊ़न मक्किय्या है, इस में सात आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ﴿۲﴾

भला देखो तो जो दीन को झुटलाता है[2] फिर वोह वोह है जो यतीम को धक्के देता है[3]

وَ لَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ

और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत नहीं देता[4] तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से

1 : "सूरतुल कु़रैश" बक़ौले असह़ह़ मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार आयतें, सतरह कलिमे, तिहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें बे शुमार हैं, उन में से एक ने'मते ज़ाहिरा येह है कि उस ने कु़रैश को हर साल में दो सफ़रों की त़रफ़ रग़बत दिलाई, उन की मह़ब्बत उन में डाली, जाड़े के मौसिम में यमन का सफ़र और गरमी के मौसिम में शाम का कि कु़रैश तिजारत के लिये इन मौसिमों में येह सफ़र करते थे और हर जगह के लोग इन्हें अहले ह़रम कहते थे और इन की इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत करते थे। येह अम्न के साथ तिजारतें करते और फ़ाएदे उठाते और मक्कए मुकर्रमा में इक़ामत करने के लिये सरमाया बहम पहुंचाते, जहां न खेती है न और अस्बाबे मआ़श, **अल्लाह** तआ़ला की येह ने'मत ज़ाहिर है और इस से फ़ाएदा उठाते हैं। **3 :** या'नी का'बए शरीफ़ा के **4 :** जिस में इन सफ़रों से पहले अपने वत़न में खेती न होने के बाइ़स मुब्तला थे, इन सफ़रों के ज़रीए से **5 :** ब सबब ह़रम शरीफ़ के और ब सबब अहले मक्का होने के कि कोई उन से तअ़र्रुज़ नहीं करता बा वुजूदे कि अत़राफ़ो ह़वाली (आस पास के अ़लाक़ों) में क़त्लो ग़ारत होते रहते हैं, क़ाफ़िले लुटते हैं, मुसाफ़िर मारे जाते हैं या येह मा'ना हैं कि उन्हें जुज़ाम से अम्न दी कि उन के शह्‌र में उन्हें कभी जुज़ाम न होगा या येह मुराद कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बरकत से उन्हें ख़ौफ़े अ़ज़ीम से अमान अ़त़ा फ़रमाई। **1 :** "सूरतुल माऊ़न" मक्किय्या है और येह भी कहा गया है कि निस्फ़ मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई, आ़स बिन वाइल के बारे में, और निस्फ़ मदीनए त़य्यिबा में अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल मुनाफ़िक़ के ह़क़ में। इस में एक रुकूअ़, सात आयतें, पच्चीस कलिमे, एक सो पच्चीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ह़िसाब व जज़ा का इन्कार करता है बा वुजूद दलाइल वाज़ेह़ होने के। **शाने नुज़ूल :** येह आयतें आ़स बिन वाइल सहमी या वलीद बिन मुग़ीरा के ह़क़ में नाज़िल हुईं। **3 :** और उस पर शिद्दत व सख़्ती करता है और उस का ह़क़ नहीं देता। **4 :** या'नी न ख़ुद देता है न दूसरे से दिलाता है, इन्तिहा दरजे का बख़ील है।

صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ﴿۵﴾ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ﴿۶﴾ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ﴿۷﴾ ع

भूले बैठे हैं[5] वोह जो दिखावा करते हैं[6] और बरत्ने की चीज़[7] मांगे नहीं देते[8]

ايـاتها ٣ ﴿١٠٨ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ ١٥﴾ ركوعها ١

सूरए कौसर मक्किय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَكَ

ऐ मह्बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं[2] तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो[3] और क़ुरबानी करो[4] बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है

هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿۳﴾ ع

वोही हर ख़ैर से मह्रूम है[5]

ايـاتها ٦ ﴿١٠٩ سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ ١٨﴾ ركوعها ١

सूरए काफ़िरून मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

---

5 : मुराद इस से मुनाफ़िक़ीन हैं जो तन्हाई में नमाज़ नहीं पढ़ते क्यूं कि इस के मो'तक़िद नहीं और लोगों के सामने नमाज़ी बनते हैं और अपने आप को नमाज़ी ज़ाहिर करते हैं और दिखाने के लिये उठ बैठ लेते हैं और ह़क़ीक़त में नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। **6 :** इबादतों में। आगे उन के बुख़्ल का बयान फ़रमाया जाता है **7 :** मिस्ल सूई व हांडी व पियाले के **8 मस्अला :** उ़लमा ने फ़रमाया कि मुस्तह़ब है कि आदमी अपने घर में ऐसी चीज़ें अपनी ह़ाजत से ज़ियादा रखे जिन की हमसायों को ह़ाजत होती है और उन्हें आ़रिय्यतन दिया करे। **1 :** ''सूरतुल कौसर'' जुम्हूर के नज़्दीक मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, दस कलिमे, बियालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** और फ़ज़ाइले कसीरा इनायत कर के तमाम ख़ल्क़ पर अफ़्ज़ल किया। ह़ुस्ने ज़ाहिर भी दिया ह़ुस्ने बातिन भी, नसबे आ़ली भी, नुबुव्वत भी, किताब भी, ह़िक्मत भी, इ़ल्म भी, शफ़ाअ़त भी, ह़ौज़े कौसर भी, मक़ामे मह़मूद भी, कस्रते उम्मत भी, आ'दाए दीन पर ग़लबा भी, कस्रते फ़ुतूह़ भी और बे शुमार ने'मतें और फ़ज़ीलतें जिन की निहायत नहीं। **3 :** जिस ने तुम्हें इ़ज़्ज़तो शराफ़त दी **4 :** उस के लिये उस के नाम पर, ब ख़िलाफ़ बुत परस्तों के जो बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ करते हैं। इस आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि नमाज़ से नमाज़े ई़द मुराद है। **5 :** न आप। क्यूं कि आप का सिल्सिला क़ियामत तक जारी रहेगा, आप की औलाद में भी कसरत होगी और आप के मुत्तबिईन से दुन्या भर जाएगी, आप का ज़िक्र मिम्बरों पर बुलन्द होगा, क़ियामत तक पैदा होने वाले आ़लिम और वाइ़ज़ **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र करते रहेंगे, बे नामो निशान और हर भलाई से मह़रूम तो आप के दुश्मन हैं। **शाने नुज़ूल :** जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के फ़रज़न्द ह़ज़रते क़ासिम का विसाल हुवा तो कुफ़्फ़ार ने आप को ''अब्तर'' या'नी मुन्क़त़ड़न्नस्ल कहा और येह कहा कि अब इन की नस्ल नहीं रही, इन के बा'द अब इन का ज़िक्र भी न रहेगा, येह सब चरचा ख़त्म हो जाएगा, इस पर सूरए करीमा नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की और उन का बालिग़ रद फ़रमाया। **1 :** ''सूरतुल काफ़िरून'' मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, छ[6] आयतें, छब्बीस कलिमे, चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** क़ुरैश की एक जमाअ़त ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा कि आप हमारे दीन का इत्तिबाअ़ कीजिये हम आप के दीन की इत्तिबाअ़ करेंगे, एक साल आप हमारे मा'बूदों की इबादत करें एक साल हम आप के मा'बूद की इबादत करेंगे, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो[2] न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ

पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न तुम

عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَ لِىَ دِيْنِ ﴿۶﴾ ع

पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन[3]

اياتها ٣ ۞ ١١٠ سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ ١١٤ ۞ ركوعها ١

सूरए नस्र मदनिय्या है, इस में तीन आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِىْ دِيْنِ

जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आए[2] और लोगों को तुम देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज

اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾ ع

दाख़िल होते हैं[3] तो अपने रब की सना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो[4] बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है[5]

अल्लाह की पनाह कि मैं उस के साथ ग़ैर को शरीक करूं, कहने लगे तो आप हमारे किसी मा'बूद को हाथ ही लगा दीजिये हम आप की तस्दीक़ कर देंगे और आप के मा'बूद की इ़बादत करेंगे, इस पर येह सूरए शरीफ़ा नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए, वहां क़ुरैश की वोह जमाअ़त मौजूद थी, ह़ुज़ूर ने येह सूरत उन्हें पढ़ कर सुनाई तो वोह मायूस हो गए और ह़ुज़ूर के और ह़ुज़ूर के अस्ह़ाब के दरपै ईज़ा हुए। **2 :** मुख़ात़ब यहां मख़्सूस काफ़िर हैं जो इ़ल्मे इलाही में ईमान से मह़रूम हैं। **3 :** या'नी तुम्हारे लिये तुम्हारा कुफ़्र और मेरे लिये मेरी तौह़ीद और मेरा इख़्लास और मक़्सूद इस से तहदीद है। ''وَهٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ'' (या'नी और येह आयत क़िताल की आयत से मन्सूख़ है) **1 :** ''सूरए नस्र'' मदनिय्या है इस में एक रुकूअ़, तीन आयतें, सतरह कलिमे, सतत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये दुश्मनों के मुक़ाबले में। इस से या आ़म फ़ुतूह़ाते इस्लाम मुराद हैं या ख़ास फ़त्ह़े मक्का। **3 :** जैसा कि बा'दे फ़त्ह़े मक्का हुवा कि लोग अक़्तारे अर्ज़ से शौक़े ग़ुलामी में चले आते थे और शरफ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ होते थे। **4 :** उम्मत के लिये **5 :** इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ'' की बहुत कसरत फ़रमाई। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह सूरत ह़ज्जतुल वदाअ़ में ब मक़ामे मिना नाज़िल हुई, इस के बा'द आयत ''اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ'' नाज़िल हुई, इस के नाज़िल होने के बा'द अस्सी रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुन्या में तशरीफ़ रखी, फिर आयत ''الكلالة'' नाज़िल हुई, इस के बा'द ह़ुज़ूर पचास रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर आयत ''وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ'' नाज़िल हुई, इस के बा'द ह़ुज़ूर इक्कीस रोज़ या सात रोज़ तशरीफ़ फ़रमा रहे। इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सह़ाबा ने समझ लिया था कि दीन कामिल और तमाम हो गया तो अब ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दुन्या में ज़ियादा तशरीफ़ न रखेंगे, चुनान्चे ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ येह सूरत सुन कर इसी ख़याल से रोए, इस सूरत के नाज़िल होने के बा'द सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे में फ़रमाया कि एक बन्दे को **अल्लाह** तआ़ला ने इख़्तियार दिया,

www.dawateislami.net

اٰیاتها ٥ | ١١١ سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ ٦ | رکوعها ١

सूरए लहब मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

تَبَّتْ یَدَاۤ اَبِیْ لَهَبٍ وَّ تَبَّؕ ﴿۱﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَ مَا كَسَبَؕ ﴿۲﴾

तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया[2] उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो कमाया[3]

سَیَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍۚۖ ﴿۳﴾ وَّ امْرَاَتُهٗؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِۚ ﴿۴﴾ فِیْ

अब धंसता है लपट मारती आग में वोह और उस की जोरू[4] लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए उस

جِیْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ۠ ﴿۵﴾ ع ١ ٥ ٣٦

के गले में खजूर की छाल का रस्सा[5]

اٰیاتها ٤ | ١١٢ سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ ٢٢ | رکوعها ١

सूरए इख़्लास मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

चाहे दुन्या में रहे, चाहे उस की लिक़ा क़बूल फ़रमाए। उस बन्दे ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे आबा, हमारी औलादें सब क़ुरबान। **1 :** "सूरए अबी लहब" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, सतत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर अ़रब के लोगों को दा'वत दी हर त़रफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उन से अपने सिद्क़ो अमानत की शहादतें लेने के बा'द फ़रमाया : "اِنِّیْ لَکُمْ نَذِیْرٌ بَیْنَ یَدَیْ عَذَابٍ شَدِیْدٍ" इस पर अबू लहब ने हुज़ूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुम ने हमें इस लिये जम्अ़ किया था। इस पर येह सूरत शरीफ़ नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ से जवाब दिया : **2 :** अबू लहब का नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा है। येह अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का चचा था, बहुत गोरा ख़ूब सूरत आदमी था, इसी लिये इस की कुन्यत अबू लहब है और इसी कुन्यत से वोह मश्हूर था। दोनों हाथों से मुराद इस की ज़ात है। **3 :** या'नी उस की औलाद। मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये अपने माल व औलाद को फ़िदया कर दूंगा, इस आयत में इस का रद फ़रमाया गया कि येह ख़याल ग़लत़ है, उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। **4 :** उम्मे जमील बिन्ते ह़र्ब बिन उमय्या अबू सुफ़्यान की बहन जो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से निहायत इ़नाद व अ़दावत रखती थी और बा वुजूदे कि बहुत दौलत मन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अ़दावत में इन्तिहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गठ्ठा ला कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के रास्ते में डालती ताकि हुज़ूर को और हुज़ूर के अस्ह़ाब को ईज़ा व तक्लीफ़ हो और हुज़ूर की ईज़ा रसानी उस को इतनी प्यारी थी कि वोह इस काम में किसी दूसरे से मदद लेना भी गवारा न करती थी। **5 :** जिस से कांटों का गठ्ठा बांधती थी, एक रोज़ येह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पथ्थर पर बैठ गई, एक फ़िरिश्ते ने ब हुक्मे इलाही उस के पीछे से उस के गठ्ठे को खींचा वोह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वोह मर गई। **1 :** "सूरए इख़्लास" मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार या पांच आयतें, पन्दरह कलिमे, सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। अह़ादीस

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَ لَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿۳﴾ وَلَمْ

तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है[2] **अल्लाह** बे नियाज़ है[3] न उस की कोई औलाद[4] और न वोह किसी से पैदा हुवा[5] और न

يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

उस के जोड़ का कोई[6]

اٰياتها ٥ | ١١٣ سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ ٢٠ | ركوعها ١

सूरए फ़लक़ मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है[2] उस की सब मख़्लूक़ के शर से[3] और अंधेरी डालने वाले के शर से जब

में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं, इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया या'नी तीन मरतबा इस को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले, एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मह़ब्बत है फ़रमाया इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी। (ترمذی) **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये, कोई कहता था कि **अल्लाह** का नसब क्या है? कोई कहता था कि वोह सोने का है या चांदी का है? या लोहे का है या लकड़ी का है? किस चीज़ का है? किसी ने कहा वोह क्या खाता है, क्या पीता है? रबूबिय्यत उस ने किस से विरसे में पाई? और उस का कौन वारिस होगा? उन के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ातो सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मा'रिफ़त की राह वाज़ेह़ की और जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ातो सिफ़ात के अन्वार के बयान से मुज़्महिल कर दिया। **2 :** रबूबिय्यत व उलूहिय्यत में सिफ़ाते अ़ज़्मतो कमाल के साथ मौसूफ़ है, मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है, उस का कोई शरीक नहीं। **3 :** हर चीज़ से। न खाए न पिये, हमेशा से है हमेशा रहे। **4 :** क्यूं कि कोई उस का मुजानिस नहीं। **5 :** क्यूं कि वोह क़दीम है और पैदा होना ह़ादिस की शान है। **6 :** या'नी कोई उस का हम्ता व अ़दील नहीं। इस सूरत की चन्द आयतों में इल्मे इलाहिय्यात के नफ़ीस व आ'ला मत़ालिब बयान फ़रमा दिये गए जिन की तफ़्सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जाएं। **1 :** "सूरए फ़लक़" मदनिय्या है और एक क़ौल येह है कि मक्किय्या है। "وَالْاَوَّلُ اَصَحُّ" (या'नी मदनिय्या वाला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है) इस सूरत में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तेईस कलिमे, चोहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरत और सूरतुन्नास जो इस के बा'द है येह उस वक़्त नाज़िल हुईं जब कि लबीद बिन आ'सम यहूदी और उस की बेटियों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आ'ज़ाए ज़ाहिरा पर इस का असर हुवा, क़ल्ब व अ़क़्ल व ए'तिक़ाद पर कुछ असर न हुवा। चन्द रोज़ के बा'द जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फ़ुलां कूंएं में एक पथ्थर के नीचे दाब दिया है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को भेजा, उन्हों ने कूंएं का पानी निकालने के बा'द पथ्थर उठाया, उस के नीचे से खजूर के गाभे की थैली बरआमद हुई, उस में हुज़ूर के मूए शरीफ़ जो कंघी से बरआमद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिस में ग्यारह गिरहें थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभी थीं, येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया। **अल्लाह** तआ़ला ने येह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं, इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरए फ़लक़ में, हर एक आयत के पढ़ने के साथ ही एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए। **मस्अला :** ता'वीज़ और अ़मल जिस में कोई कलिमा कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है, ख़ास कर वोह अ़मल जो आयाते क़ुरआनिय्या से किये जाएं या अह़ादीस में वारिद हुए हों, ह़दीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते उ़मैस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जा'फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उन के लिये अ़मल करूं? हुज़ूर ने इजाज़त दी। (ترمذی) **2 :** तअ़व्वुज़ में **अल्लाह** तआ़ला का इस वस्फ़

وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾ ع

वोह डूबे[4] और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं[5] और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले[6]

آیاتها ٦ | ١١٤ سُوْرَةُ النَّاسِ مَکِّیَّةٌ ٢١ | رکوعها ١

सूरए नास मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब[2] सब लोगों का बादशाह[3] सब लोगों का ख़ुदा[4] उस के शर से जो दिल

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾

में बुरे ख़त़रे डाले[5] और दबक रहे[6] वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿٦﴾ ع

जिन्न और आदमी[7]

दुआ़ए ख़त्मुल कुरआन

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْۤ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً ط اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَانَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ اللَّیْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

(الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث: ٥٧١، ص ٤١، دار الکتب العلمیة بیروت وتفسیر روح البیان، سورة الاسراء، تحت الآیة: ١٠، ج٥، ص١٣٦، کوئٹه)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِیْ جَمِیْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا۔

(تفسیر روح البیان، سورة الاحزاب، تحت الآیة: ٥٦، ج٧، ص٢٣٥، کوئٹه)

تـمـت بـالـخـیـر

के साथ ज़िक्र इस लिये है (कि) अल्लाह तआ़ला सुब्ह़ पैदा कर के शब की तारीकी दूर फ़रमाता है तो वोह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन ह़ालात से ख़ौफ़ है उन को दूर फ़रमाए, नीज़ जिस त़रह़ शबे तार में आदमी तुलूए सुब्ह़ का इन्तिज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्नो राह़त का मुन्तज़िर रहता है, इलावा बरीं सुब्ह़ अहले इज़्तिरार व इज़्तिराब की दुआ़ओं का और उन के क़बूल होने का वक़्त है, तो मुराद येह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे करम व ग़म को कशाइश दी जाती हैं और दुआ़एं क़बूल की जाती हैं, मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं। एक क़ौल येह भी है कि "फ़लक़" जहन्नम में एक वादी है। **3 :** जानदार हो या बेजान, मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद ख़ास इब्लीस है जिस से बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल इस की और इस के आ'वान व लश्कर की मदद से पूरे होते हैं। **4 :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आइशा رضی اللہ تعالٰی عنہا से मरवी है कि रसूले करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने चांद की त़रफ़ नज़र कर के उन से फ़रमाया : ऐ आइशा ! अल्लाह की पनाह लो इस के शर से, येह अंधेरी डालने वाला है जब डूबे। (ترمذی) या'नी आख़िरे माह में जब चांद छुप जाए तो जादू के वोह अ़मल जो बीमार करने के लिये हैं उसी वक़्त में किये जाते हैं। **5 :** या'नी जादूगर औ़रतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उन में जादू के मन्तर पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं, जैसे कि लबीद की लड़कियां।

मस्अला : गन्डे बनाना और उन पर गिरह लगाना, आयाते क़ुरआन या अस्माए इलाहिय्यह दम करना जाइज़ है, जुम्हूर सहाबा व ताबिईन इसी पर हैं और ह़दीसे आ़इशा رضی اللہ تعالٰی عنہا में है कि जब हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अहल में से कोई बीमार होता तो हुज़ूर मुअ़व्वज़ात पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते। **6 :** ह़सद वाला वोह है जो दूसरे के ज़वाले ने'मत की तमन्ना करे। यहां ह़ासिद से यहूद मुराद हैं जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से ह़सद करते थे या ख़ास लबीद बिन आ'सम यहूदी। ह़सद बद तरीन सिफ़त है और येही सब से पहला गुनाह है जो आस्मान में इब्लीस से सरज़द हुवा और ज़मीन में क़ाबील से। **1 :** "सूरतुन्नास" बक़ौले असह़ह़ मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़, छ[6] आयतें, बीस कलिमे, उनासी ह़र्फ़ हैं। **2 :** सब का ख़ालिक़ व मालिक। ज़िक्र में इन्सानों की तख़्सीस इन की तशरीफ़ के लिये है कि इन्हें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात किया। **3 :** उन के कामों की तदबीर फ़रमाने वाला **4 :** कि इलाह और मा'बूद होना उसी के साथ ख़ास है। **5 :** मुराद इस से शैत़ान है। **6 :** येह उस की आ़दत ही है कि इन्सान जब ग़ाफ़िल होता है तो उस के दिल में वस्वसे डालता है और जब इन्सान **अल्लाह** का ज़िक्र करता है तो शैत़ान दबक रहता है और हट जाता है। **7 :** येह बयान है वस्वसे डालने वाले शैत़ान का कि वोह जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी, जैसा शयात़ीने जिन्न इन्सानों को वस्वसे में डालते हैं ऐसे ही शयात़ीने इन्स भी नासेह़ बन कर आदमी के दिल में वस्वसे डालते हैं, फिर अगर आदमी उन वस्वसों को मानता है तो इस का सिलसिला बढ़ जाता है और ख़ूब गुमराह करते हैं और अगर इस से मुतनफ़्फ़िर होता है तो हट जाते हैं और दबक रहते हैं। आदमी को चाहिये कि शयात़ीने जिन्न के शर से भी पनाह मांगे और शयात़ीने इन्स के शर से भी। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم शब को जब बिस्तरे मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों दस्ते मुबारक जम्अ़ फ़रमा कर उन में दम करते और सूरह "قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ व قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" पढ़ कर अपने मुबारक हाथों को सरे मुबारक से ले कर तमाम जिस्मे अक़्दस पर फेरते जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते, येह अ़मल तीन मरतबा फ़रमाते।

"وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ بِمُرَادِهٖ وَاَسْرَارِ كِتَابِهٖ وَاٰخِرُدَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَاَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَاَزْكَى السَّلَامِ عَلٰی حَبِيْبِهٖ وَسَيِّدِ اَنْبِيَآئِهٖ وَرُسُلِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ۔"

दुआए ख़त्मुल क़ुरआन

صَدَقَ اللّٰهُ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ٥ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ ٥ وَنَحْنُ عَلٰی ذٰلِكَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ٥ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا بِكُلِّ حَرْفٍ مِّنَ الْقُرْاٰنِ حَلَاوَةً وَّ بِكُلِّ جُزْءٍ مِّنَ الْقُرْاٰنِ جَزَآءً اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا بِالْاَلِفِ اُلْفَةً وَّ بِالْبَآءِ بَرَكَةً وَّ بِالتَّآءِ تَوْبَةً وَّ بِالثَّآءِ ثَوَابًا وَّبِالْجِيْمِ جَمَالًا وَّبِالْحَآءِ حِكْمَةً وَّبِالْخَآءِ خَيْرًا وَّبِالدَّالِ دَلِيْلًا وَّبِالذَّالِ ذَكَآءً وَّبِالرَّآءِ رَحْمَةً وَّبِالزَّآءِ زَكٰوةً وَّبِالسِّيْنِ سَعَادَةً وَّبِالشِّيْنِ شِفَآءً وَّبِالصَّادِ صِدْقًا وَّبِالضَّادِ ضِيَآءً وَّبِالطَّآءِ طَرَاوَةً وَّبِالظَّآءِ ظَفْرًا وَّبِالْعَيْنِ عِلْمًا وَّبِالْغَيْنِ غِنًى وَّبِالْفَآءِ فَلَاحًا وَّبِالْقَافِ قُرْبَةً وَّبِالْكَافِ كَرَامَةً وَّبِاللَّامِ لُطْفًا وَّبِالْمِيْمِ مَوْعِظَةً وَّبِالنُّوْنِ نُوْرًا وَّبِالْوَاوِ وُصْلَةً وَّبِالْهَآءِ هِدَايَةً وَّبِالْيَآءِ يَقِيْنًا اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ ٥ وَارْفَعْنَا بِالْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ٥ وَتَقَبَّلْ مِنَّا قِرَآءَتَنَا وَتَجَاوَزْعَنَّا مَا كَانَ فِيْ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ مِنْ خَطَاٍ اَوْنِسْيَانٍ اَوْتَحْرِيْفِ كَلِمَةٍ عَنْ مَّوَاضِعِهَآ اَوْتَقْدِيْمٍ اَوْتَاْخِيْرٍ اَوْزِيَادَةٍ اَوْ نُقْصَانٍ اَوْتَاْوِيْلٍ عَلٰی غَيْرِ مَآ اَنْزَلْتَهٗ عَلَيْهِ اَوْرَيْبٍ اَوْشَكٍّ اَوْ سَهْوٍ اَوْسُوْٓءِ اِلْحَانٍ اَوْتَعْجِيْلٍ عِنْدَ تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ اَوْكَسْلٍ اَوْ سُرْعَةٍ اَوْزَيْغِ لِسَانٍ اَوْوَقْفٍ بِغَيْرِ وُقُوْفٍ اَوْاِدْغَامٍ بِغَيْرِ مُدْغَمٍ اَوْاِظْهَارٍ بِغَيْرِ بَيَانٍ اَوْ مَدٍّ اَوْ تَشْدِيْدٍ اَوْهَمْزَةٍ اَوْ جَزْمٍ اَوْ اِعْرَابٍ بِغَيْرِ مَا كَتَبَهٗ اَوْقِلَّةِ رَغْبَةٍ وَّرَهْبَةٍ عِنْدَ اٰيَاتِ الرَّحْمَةِ وَاٰيَاتِ الْعَذَابِ فَاغْفِرْلَنَا رَبَّنَا وَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ ٥ اَللّٰهُمَّ نَوِّرْ قُلُوْبَنَا بِالْقُرْاٰنِ وَزَيِّنْ اَخْلَاقَنَا بِالْقُرْاٰنِ وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ بِالْقُرْاٰنِ وَاَدْخِلْنَا فِي الْجَنَّةِ بِالْقُرْاٰنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلِ الْقُرْاٰنَ لَنَا فِي الدُّنْيَا قَرِيْنًا وَّفِي الْقَبْرِ مُوْنِسًا وَّعَلَى الصِّرَاطِ نُوْرًا وَّفِي الْجَنَّةِ رَفِيْقًا وَّمِنَ النَّارِ سِتْرًا وَّحِجَابًا وَّاِلَى الْخَيْرَاتِ كُلِّهَا دَلِيْلًا فَاكْتُبْنَا عَلَى التَّمَامِ وَارْزُقْنَا اَدَآءً بِالْقَلْبِ وَاللِّسَانِ وَحُبَّ الْخَيْرِ وَالسَّعَادَةَ وَالْبِشَارَةَ مِنَ الْاِيْمَانِ ٥ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ مَّظْهَرِ لُطْفِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا۔

www.dawateislami.net

रुमूज़े अवक़ाफ़े क़ुरआने मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्त्गू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़ियादा, इस ठहरने और न ठहरने को बात के सह़ीह़ बयान करने और उस का सह़ीह़ मत़लब समझने में बहुत दख़्ल है। क़ुरआने मजीद की इबारत भी गुफ़्त्गू के अन्दाज़ में वाक़ेअ़ हुई है। इसी लिये अहले इल्म ने इस के ठहरने न ठहरने की अ़लामात मुक़र्रर कर दी हैं जिन को "**रुमूज़े अवक़ाफ़े क़ुरआने मजीद**" कहते हैं। ज़रूरी है कि क़ुरआने मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ को मल्ह़ूज़ रखें, और वोह येह हैं :

O जहां बात पूरी हो जाती है, वहां छोटा सा दाएरा बना देते हैं। येह ह़क़ीक़त में गोल "ت" है। जो ब सूरत "ة" लिखी जाती है और येह **वक़्फ़े ताम** की अ़लामत है या'नी इस पर ठहरना चाहिये, अब "ة" तो नहीं लिखी जाती अलबत्ता छोटा सा दाएरा बना दिया जाता है, इसी को आयत कहते हैं।

م येह अ़लामत **वक़्फ़े लाज़िम** की है। इस पर ज़रूर ठहरना चाहिये, अगर न ठहरा जाए तो एह़तिमाल है कि मत़लब कुछ का कुछ हो जाए। इस की मिसाल उर्दू में यूं समझनी चाहिये कि मसलन किसी को येह कहना हो कि "उठो, मत बैठो" जिस में उठने का अम्र और बैठने की नही है तो "उठो" पर ठहरना लाज़िम है, अगर न ठहरा जाए तो "उठो मत बैठो" हो जाएगा। जिस में उठने की नही और बैठने के अम्र का एह़तिमाल है और येह क़ाइल के मत़लब के ख़िलाफ़ हो जाएगा।

ط येह **वक़्फ़े मुत़्लक़** की अ़लामत है। इस पर ठहरना चाहिये मगर येह अ़लामत वहां होती है जहां मत़लब तमाम नहीं होता और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता है।

ج येह **वक़्फ़े जाइज़** की अ़लामत है। यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना जाइज़ है।

ز येह **वक़्फ़े मुजव्वज़** की अ़लामत है। यहां न ठहरना बेहतर है।

ص येह **वक़्फ़े मुरख़्ख़स** की अ़लामत है। यहां मिला कर पढ़ना चाहिये, लेकिन अगर कोई थक कर ठहर जाए तो रुख़्सत है। मा'लूम रहे कि "ص" पर मिला कर पढ़ना "ز" की निस्बत ज़ियादा तरजीह़ रखता है।

صلے येह "اَلْوَصْلُ اَوْلٰی" का इख़्तिसार है, या'नी यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।

ق येह "قِيْلَ عَلَيْهِ الْوَقْفُ" का ख़ुलासा है। यहां ठहरना नहीं चाहिये।

صل येह "قَدْ يُوْصَلُ" की अ़लामत है। या'नी यहां कभी ठहरा भी जाता है और कभी नहीं भी ठहरा जाता, लेकिन ठहरना बेहतर है।

قف येह लफ़्ज़े "قِفْ" है जिस के मा'ना हैं "ठहर जाओ" और येह अ़लामत वहां इस्ति'माल की जाती है जहां पढ़ने वाले के मिला कर पढ़ने का एह़तिमाल हो।

س या سکتہ येह दोनों सक्ते की अ़लामात हैं। यहां इस त़रह़ ठहरना चाहिये कि आवाज़ टूट जाए मगर सांस न टूटने पाए।

وقفة येह भी सक्ते की अ़लामत है, अलबत्ता यहां मा क़ब्ल दोनों अ़लामात "س या سکتہ" की निस्बत ज़ियादा ठहरना चाहिये और सांस भी न टूटे। सक्ते और वक़्फ़े में येही फ़र्क़ है कि सक्ते में कम और वक़्फ़े में ज़ियादा ठहरा जाता है।

لا "لا" के मा'ना "नहीं" हैं, येह अ़लामत कहीं आयत के ऊपर इस्ति'माल की जाती है और कहीं इबारत के अन्दर। इबारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिये अलबत्ता आयत के ऊपर हो तो इस पर ठहरने या न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है लेकिन ठहरा जाए या न ठहरा जाए इस से मत़लब में ख़लल वाक़ेअ़ नहीं होता।

ك येह "كَذٰلِكَ" की अ़लामत है। या'नी इस से पहले जो अ़लामते वक़्फ़ है यहां भी वोही समझी जाए।

∴ ∴ अगर कोई इबारत इन तीन तीन नुक़्तों के दरमियान हो तो पढ़ने वाले को इख़्तियार है कि पहले तीन नुक़्तों पर वक़्फ़ कर के दूसरे तीन नुक़्तों पर वक़्फ़ न करे या पहले तीन नुक़्तों पर वक़्फ़ न कर के दूसरे तीन नुक़्तों पर वक़्फ़ करे। इस क़िस्म की इबारत को मुआनक़ा या मुराक़बा कहते हैं।

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

कुरआने मजीद की सूरतों की फ़ेहरिस्त

सफ़हा	सूरत का नाम	नम्बर शुमार	सफ़हा	सूरत का नाम	नम्बर शुमार	सफ़हा	सूरत का नाम	नम्बर शुमार	सफ़हा	सूरत का नाम	नम्बर शुमार
١٠٩٩	سُوْرَةُ الْغَاشِيَة	88	١٠٠٧	سُوْرَةُ الْحَشْر	59	٧٤٨	سُوْرَةُ الرُّوْم	30	٢	سُوْرَةُ الْفَاتِحَة	1
١١٠١	سُوْرَةُ الْفَجْر	89	١٠١٤	سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَة	60	٧٥٨	سُوْرَةُ لُقْمٰن	31	٤	سُوْرَةُ الْبَقَرَة	2
١١٠٤	سُوْرَةُ الْبَلَد	90	١٠٢٠	سُوْرَةُ الصَّف	61	٧٦٦	سُوْرَةُ السَّجْدَة	32	١٠٢	سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰن	3
١١٠٥	سُوْرَةُ الشَّمْس	91	١٠٢٣	سُوْرَةُ الْجُمُعَة	62	٧٧١	سُوْرَةُ الْاَحْزَاب	33	١٥١	سُوْرَةُ النِّسَآء	4
١١٠٦	سُوْرَةُ الَّيْل	92	١٠٢٥	سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْن	63	٧٩٢	سُوْرَةُ سَبَا	34	٢٠٥	سُوْرَةُ الْمَآئِدَة	5
١١٠٨	سُوْرَةُ الضُّحٰى	93	١٠٢٨	سُوْرَةُ التَّغَابُن	64	٨٠٤	سُوْرَةُ فَاطِر	35	٢٤٥	سُوْرَةُ الْاَنْعَام	6
١١١٠	سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَح	94	١٠٣١	سُوْرَةُ الطَّلَاق	65	٨١٣	سُوْرَةُ یٰسٓ	36	٢٨٥	سُوْرَةُ الْاَعْرَاف	7
١١١٠	سُوْرَةُ التِّیْن	95	١٠٣٥	سُوْرَةُ التَّحْرِیْم	66	٨٢٥	سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰت	37	٣٣٣	سُوْرَةُ الْاَنْفَال	8
١١١١	سُوْرَةُ الْعَلَق	96	١٠٤٠	سُوْرَةُ الْمُلْك	67	٨٣٧	سُوْرَةُ صٓ	38	٣٥٣	سُوْرَةُ التَّوْبَة	9
١١١٣	سُوْرَةُ الْقَدْر	97	١٠٤٤	سُوْرَةُ الْقَلَم	68	٨٤٧	سُوْرَةُ الزُّمَر	39	٣٩٠	سُوْرَةُ یُوْنُس	10
١١١٤	سُوْرَةُ الْبَیِّنَة	98	١٠٤٩	سُوْرَةُ الْحَآقَّة	69	٨٦٣	سُوْرَةُ الْمُؤْمِن	40	٤١٥	سُوْرَةُ هُوْد	11
١١١٥	سُوْرَةُ الزِّلْزَال	99	١٠٥٢	سُوْرَةُ الْمَعَارِج	70	٨٧٨	سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَة	41	٤٣٩	سُوْرَةُ یُوْسُف	12
١١١٦	سُوْرَةُ الْعٰدِیٰت	100	١٠٥٦	سُوْرَةُ نُوْح	71	٨٨٨	سُوْرَةُ الشُّوْرٰى	42	٤٦٦	سُوْرَةُ الرَّعْد	13
١١١٧	سُوْرَةُ الْقَارِعَة	101	١٠٥٩	سُوْرَةُ الْجِنّ	72	٨٩٩	سُوْرَةُ الزُّخْرُف	43	٤٧٨	سُوْرَةُ اِبْرٰهِیْم	14
١١١٨	سُوْرَةُ التَّكَاثُر	102	١٠٦٢	سُوْرَةُ الْمُزَّمِّل	73	٩١١	سُوْرَةُ الدُّخَان	44	٤٨٩	سُوْرَةُ الْحِجْر	15
١١١٨	سُوْرَةُ الْعَصْر	103	١٠٦٥	سُوْرَةُ الْمُدَّثِّر	74	٩١٦	سُوْرَةُ الْجَاثِیَة	45	٤٩٩	سُوْرَةُ النَّحْل	16
١١١٩	سُوْرَةُ الْهُمَزَة	104	١٠٦٩	سُوْرَةُ الْقِیٰمَة	75	٩٢٣	سُوْرَةُ الْاَحْقَاف	46	٥٢٥	سُوْرَةُ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْل	17
١١٢٠	سُوْرَةُ الْفِیْل	105	١٠٧٢	سُوْرَةُ الدَّهْر	76	٩٣١	سُوْرَةُ مُحَمَّد	47	٥٤٧	سُوْرَةُ الْكَهْف	18
١١٢٠	سُوْرَةُ قُرَیْش	106	١٠٧٦	سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰت	77	٩٣٨	سُوْرَةُ الْفَتْح	48	٥٦٩	سُوْرَةُ مَرْیَم	19
١١٢١	سُوْرَةُ الْمَاعُوْن	107	١٠٨٠	سُوْرَةُ النَّبَا	78	٩٤٧	سُوْرَةُ الْحُجُرٰت	49	٥٨٣	سُوْرَةُ طٰهٰ	20
١١٢٢	سُوْرَةُ الْكَوْثَر	108	١٠٨٢	سُوْرَةُ النّٰزِعٰت	79	٩٥٣	سُوْرَةُ قٓ	50	٦٠١	سُوْرَةُ الْاَنْبِیَآء	21
١١٢٢	سُوْرَةُ الْكَافِرُوْن	109	١٠٨٥	سُوْرَةُ عَبَس	80	٩٥٨	سُوْرَةُ الذّٰرِیٰت	51	٦١٧	سُوْرَةُ الْحَجّ	22
١١٢٣	سُوْرَةُ النَّصْر	110	١٠٨٧	سُوْرَةُ التَّكْوِیْر	81	٩٦٤	سُوْرَةُ الطُّوْر	52	٦٣٤	سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْن	23
١١٢٤	سُوْرَةُ اللَّهَب	111	١٠٨٩	سُوْرَةُ الْاِنْفِطَار	82	٩٦٩	سُوْرَةُ النَّجْم	53	٦٤٨	سُوْرَةُ النُّوْر	24
١١٢٤	سُوْرَةُ الْاِخْلَاص	112	١٠٩٠	سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِیْن	83	٩٧٦	سُوْرَةُ الْقَمَر	54	٦٦٧	سُوْرَةُ الْفُرْقَان	25
١١٢٥	سُوْرَةُ الْفَلَق	113	١٠٩٣	سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاق	84	٩٨١	سُوْرَةُ الرَّحْمٰن	55	٦٨٠	سُوْرَةُ الشُّعَرَآء	26
١١٢٦	سُوْرَةُ النَّاس	114	١٠٩٥	سُوْرَةُ الْبُرُوْج	85	٩٨٦	سُوْرَةُ الْوَاقِعَة	56	٦٩٨	سُوْرَةُ النَّمْل	27
١١٢٦	دعائے ختم القرآن (اول)		١٠٩٧	سُوْرَةُ الطَّارِق	86	٩٩٢	سُوْرَةُ الْحَدِیْد	57	٧١٤	سُوْرَةُ الْقَصَص	28
١١٢٧	دعائے ختم القرآن (ثانی)		١٠٩٨	سُوْرَةُ الْاَعْلٰى	87	١٠٠١	سُوْرَةُ الْمُجَادَلَة	58	٧٣٤	سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْت	29

www.dawateislami.net

मत़ालिबुल क़ुरआन

अज़ : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

मदनी फूल : ۞ इख़्तिसार के पेशे नज़र आयतों का कुछ हिस्सा ज़िक्र किया गया है, मौज़ूअ़ को समझने के लिये पूरी आयत मअ़ तरजमा व तफ़्सीर मुलाहज़ा फ़रमाइये।
۞ मौज़ूअ़ और इस के तह़्त लाई गई आयात में कुतुबे तफ़्सीर को भी पेशे नज़र रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٦٣	البقرة	٢	وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ
٢٥٥	البقرة	٣	اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ
١٨	ال عمرٰن	٣	شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّـهٗ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا
١٧١	النسآء	٦	اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ
٦٥	الاعراف	٨	مَالَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ
١٤	هود	١٢	وَاَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ
١٦	الرعد	١٣	وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ
٥١	النحل	١٤	اِنَّمَا هُوَ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ
٦٥	صٓ	٢٣	وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ
٨٤	الزخرف	٢٥	وَهُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ اِلٰـهٌ
٤٣	الطور	٢٧	اَمْ لَهُمْ اِلٰـهٌ غَيْرُ اللّٰهِ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शरीक से पाक है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٨	النسآء	٥	وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ
١١٦	النسآء	٥	وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ
٢	الفرقان	١٨	وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ
١٣	لقمٰن	٢١	اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ
٢٣	الحشر	٢٨	سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

वोही हर चीज़ का ख़ालिक़ है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١٧	البقرة	١	بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
١٦٤	البقرة	٢	اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
١	الانعام	٧	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ
٩٥	الانعام	٧	اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ
١٠٢	الانعام	٧	لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج خَالِقُ كُلِّ
٥٤	الاعراف	٨	اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ
١٨٩	الاعراف	٩	هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
٦	يونس	١١	وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ
٢	الرعد	١٣	اَللّٰهُ الَّذِىْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ
٣	الرعد	١٣	وَهُوَ الَّذِىْ مَدَّ الْاَرْضَ
٤	الرعد	١٣	وَفِى الْاَرْضِ قِطَعٌ
٢٢	الحجر	١٤	وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ
٨٦	الحجر	١٤	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ
٥٠	طٰهٰ	١٦	قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى
٤٥	النور	١٨	وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ
٢٤	الحشر	٢٨	هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
٣	التغابن	٢٨	خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
١	العلق	٣٠	اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ

हर चीज़ का मालिक वोही है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣	الفاتحة	١	مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ
١٠٧	البقرة	١	اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
١١٥	البقرة	١	وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ
٢٦	ال عمرٰن	٣	قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ
١٠٩	ال عمرٰن	٤	وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
١١٦	التوبة	١١	اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
٢١	الحجر	١٤	وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا
٤٠	مريم	١٦	اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ
٢٣	الحشر	٢٨	اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
١	التغابن	٢٨	لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
١	الملك	٢٩	تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ

क़ुदरते इलाही

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠٦	البقرة	١	اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ
١٦٥	البقرة	٢	اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا
٢٥٣	البقرة	٣	وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ
٢٦	ال عمرٰن	٣	قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ
١٥٦	ال عمرٰن	٤	وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
٥٦	هود	١٢	مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ
٣٥	مريم	١٦	اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
٢٣	الانبيآء	١٧	لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
٢٨	لقمٰن	٢١	مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ
٤٣	النجم	٢٧	وَاَنَّـهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى
٤٨	النجم	٢٧	وَاَنَّـهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى

रह़मत व मग़्फ़िरते इलाही

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢	الفاتحة	١	اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
٥٤	البقرة	١	اِنَّـهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
١٧٣	البقرة	٢	اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
٣١	ال عمرٰن	٣	وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
١٢	الانعام	٧	كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ
١٤٧	الانعام	٨	فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ
١٦٠	الانعام	٨	مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ
٩٠	هود	١٢	اِنَّ رَبِّىْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ
٦	الرعد	١٣	وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ
٤٩	الحجر	١٤	نَبِّئْ عِبَادِىْٓ اَنِّىْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ
٢١	النور	١٨	وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
١	الرحمٰن	٢٧	اَلرَّحْمٰنُ
٥٦	المدثر	٢٩	هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى
١٤	البروج	٣٠	وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ

हिदायत किस को मिलती है ?

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠١	ال عمرٰن	٤	وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِىَ

www.dawateislami.net

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
يَهْدِىْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ	٦	المآئدة	١٦
فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ	٨	الانعام	١٢٥
وَيَهْدِىْۤ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ	١٣	الرعد	٢٧
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا	١٧	الحج	٥٤

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किस को हिदायत नहीं देता?

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ	١	البقرة	٢٦
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ	٣	البقرة	٢٦٤
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ	٣	ال عمرٰن	٨٦
فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ يُّضِلُّ	١٤	النحل	٣٧

इल्मे इलाही

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ	١	البقرة	٢٩
اِنِّىْۤ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ	١	البقرة	٣٣
اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	١٠	الانفال	٤٣
وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ	١١	يونس	٦١
وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا	١٢	هود	٦
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا	١٢	هود	١٢٣
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ	١٤	الحجر	٢٤
فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى	١٦	طٰه	٧
يٰبُنَىَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ	٢١	لقمٰن	١٦
يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ	٢٧	الحديد	٤

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुआ क़बूल फ़रमाने वाला है

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا	٢	البقرة	١٨٦
اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا	٢٠	النمل	٦٢
فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ	٢٤	الزمر	٤٩

दुआ मांगने की तरग़ीब

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ	٥	النسآء	٣٢
قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِىْۤ	٢٤	المؤمن	٦٠

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही रज़्ज़ाक़ हक़ीक़ी है

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ	٢	البقرة	٢١٢
وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ	٧	المآئدة	٨٨
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ	١٢	هود	٦
اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ	١٣	الرعد	٢٦
وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ	٢١	العنكبوت	٦٠
يُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا	٢٤	المؤمن	١٣
وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ	٢٥	الشورٰى	٢٧
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ	٢٧	الذّٰريٰت	٥٨
اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ يَرْزُقُكُمْ	٢٩	الملك	٢١

ज़िक्रे इलाही

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَاذْكُرُوْنِىْۤ اَذْكُرْكُمْ	٢	البقرة	١٥٢
وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ	١٠	الانفال	٤٥
اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ	١٣	الرعد	٢٨

मीलादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	٤	ال عمرٰن	١٦٤
وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ	٦	المآئدة	٧
لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ	١١	التوبة	١٢٨
قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ	١١	يونس	٥٨
وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ	٢٨	الصف	٦
وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ	٣٠	الضحٰى	١١

मद्हे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बि हम्दे रब्बिल उ़ला عَزَّوَجَلَّ

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ	٢٨	الصف	٩

ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا	١	البقرة	١٠٤
فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى	٥	النسآء	٦٥
وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِىْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ	٦	المآئدة	١٢
وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا	٩	الاعراف	١٥٧
اِسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ	٩	الانفال	٢٤
لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ	١٨	النور	٦٣
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ	٢٢	الاحزاب	٣٦
وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ	٢٦	الفتح	٩
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا	٢٦	الحجرات	١-٥
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا	٢٨	المجادلة	١٢

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ	٦	المآئدة	٣
اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا	٩	الاعراف	١٥٨
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ	١٠	التوبة	٣٣
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً	١٧	الانبيآء	١٠٧
لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا	١٨	الفرقان	١
رَسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ	٢٢	الاحزاب	٤٠
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً	٢٢	سبا	٢٨
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ	٢٦	الفتح	٢٨
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ	٢٨	الصف	٩

आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا	٣	البقرة	٢٥٣
ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ	٣	ال عمرٰن	٨١
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ	٧	الانعام	٩٠
تَبٰرَكَ الَّذِىْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ	١٨	الفرقان	١
مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ	٢٢	الاحزاب	٤٠
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً	٢٢	سبا	٢٨

महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ	٣	ال عمرٰن	٣١
قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ	١٠	التوبة	٢٤

इताअ़त व इत्तिबाए रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ	٣	ال عمرٰن	٣١
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ	٣	ال عمرٰن	٣٢
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ	٤	ال عمرٰن	١٣٢
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	٤	النسآء	١٣
اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ	٥	النسآء	٥٩
وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ	٥	النسآء	٦٤

www.dawateislami.net

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَعَلَّمَکَ مَا لَمْ تَکُنْ تَعْلَمُ	٥	النسآء	١١٣
مَا فَرَّطْنَا فِی الْکِتٰبِ مِنْ	٧	الانعام	٣٨
وَلَارَطْبٍ وَّ لَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ	٧	الانعام	٥٩
وَتَفْصِیْلَ الْکِتٰبِ لَا رَیْبَ	١١	یونس	٣٧
وَنَزَّلْنَا عَلَیْکَ الْکِتٰبَ تِبْیَانًا	١٤	النحل	٨٩
اَلرَّحْمٰنُ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ	٢٧	الرحمٰن	٢،١
عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی	٢٩	الجن	٢٦
وَمَا هُوَعَلَی الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ	٣٠	التکویر	٢٤

अ़त़ाए किब्रिया ब वसीलए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ	٥	النسآء	٦٤
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْکُمْ	٥	النسآء	٨٣
وَمَا کَانَ اللّٰهُ لِیُعَذِّبَهُمْ	٩	الانفال	٣٣
وَلَسَوْفَ یُعْطِیْکَ رَبُّکَ	٣٠	الضحٰی	٥

ह़दीसे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का सुबूत

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
قُلْ اِنْ کُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ	٣	ال عمرٰن	٣١
مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ	٥	النسآء	٨٠
لَقَدْکَانَ لَکُمْ فِیْ رَسُوْلِ	٢١	الاحزاب	٢١
وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	٢٢	الاحزاب	٧١
وَمَا یَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰی	٢٧	النجم	٤،٣
وَمَآ اٰتٰـکُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ	٢٨	الحشر	٧

मुन्किरीने ह़दीस का रद

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
قُلْ اِنْ کُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ	٣	ال عمرٰن	٣١
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ	٥	النسآء	٦٤
اِنَّـآ اَنْزَلْنَآ اِلَیْکَ الْکِتٰبَ	٥	النسآء	١٠٥
یٰٓاَیُّهَاالَّذِیْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِیْبُوْا	٩	الانفال	٢٤
وَلَا یُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ	١٠	التوبة	٢٩
یٰقَوْمَنَآ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ	٢٦	الاحقاف	٣١
وَمَا یَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰی	٢٧	النجم	٤،٣
وَمَآ اٰتٰـکُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ	٢٨	الحشر	٧

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ	١٥	بنیٓ اسرآءیل	١
وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰی	٢٧	النجم	١
ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی	٢٧	النجم	٨
فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی	٢٧	النجم	٩
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی	٢٧	النجم	١٧
اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ	٢٧	القمر	١
وَاِنْ یَّرَوْا اٰیَةً یُّعْرِضُوْا	٢٧	القمر	٢
اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَیْکَ	٢٩	الدهر	٢٣

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़े अ़ज़ीम

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ	٤	ال عمرٰن	١٥٩
لَقَدْ جَآءَکُمْ رَسُوْلٌ	١١	التوبة	١٢٨
فَقَدْ لَبِثْتُ فِیْکُمْ عُمُرًا	١١	یونس	١٦
لَقَدْ کَانَ لَکُمْ فِیْ رَسُوْلِ	٢١	الاحزاب	٢١
وَاِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ	٢٩	القلم	٤

ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم नूर भी हैं और बशर भी

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ	٦	المآئدة	١٥
یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّطْفِئُوْا نُوْرَاللّٰهِ	١٠	التوبة	٣٢
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ	١٦	الکهف	١١٠
مَثَلُ نُوْرِهٖ کَمِشْکٰوةٍ فِیْهَا	١٨	النور	٣٥
وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ	٢٢	الاحزاب	٤٦
وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰی	٢٧	النجم	١
یُرِیْدُوْنَ لِیُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ	٢٨	الصف	٨

ह़ाज़िरो नाज़िर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَیَکُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَیْکُمْ	٢	البقرة	١٤٣
وَجِئْنَا بِکَ عَلٰی هٰٓؤُلَآءِ	٥	النسآء	٤١
اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ	٢١	الاحزاب	٦
اِنَّـآ اَرْسَلْنَآ اِلَیْکُمْ رَسُوْلًا	٢٩	المزمل	١٥

इ़ल्मे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ब अ़त़ाए किब्रिया

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَمَا کَانَ اللّٰهُ لِیُطْلِعَکُمْ	٤	ال عمرٰن	١٧٩

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ	٥	النسآء	٦٩
مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ	٥	النسآء	٨٠
اَطِیْعُوااللّٰهَ وَاَطِیْعُواالرَّسُوْلَ	٧	المآئدة	٩٢
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ	٩	الانفال	١
یٰٓاَیُّهَاالَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِیْعُوا	٩	الانفال	٢٠
یٰٓاَیُّهَاالَّذِیْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِیْبُوْا	٩	الانفال	٢٤
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	١٠	الانفال	٤٦
وَیُطِیْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	١٠	التوبة	٧١
وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	١٨	النور	٥٢
قُلْ اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوا	١٨	النور	٥٤
وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّکُمْ	١٨	النور	٥٦
وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	٢٢	الاحزاب	٣٣
وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ	٢٢	الاحزاب	٧١
اَطِیْعُوااللّٰهَ وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ	٢٦	محمد	٣٣
وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	٢٦	الفتح	١٧
لَا تُقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیِ اللّٰهِ	٢٦	الحجرات	١
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ	٢٨	المجادلة	١٣
اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوا	٢٨	التغابن	١٢

ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के सब से क़रीब हैं

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ	٨	الاعراف	٥٦

शफ़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ	٥	النسآء	٦٤
عَسٰٓی اَنْ یَّبْعَثَکَ رَبُّکَ	١٥	بنیٓ اسرآءیل	٧٩
وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِکَ	٢٦	محمد	١٩
وَلَسَوْفَ یُعْطِیْکَ رَبُّکَ	٣٠	الضحٰی	٥

आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के मो'जिज़ात

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِنْ کُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا	١	البقرة	٢٣
وَنَزَّلْنَا عَلَیْکَ الْکِتٰبَ	١٤	النحل	٨٩

अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ السَّلَام का तज़्किरा

इत़ाअ़त व इत्तिबाए़ अम्बिया عَلَیۡهِمُ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَاتَّبِعُوْنِیْ وَاَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ	١٦	طٰهٰ	٩٠
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ	١٩	الشعرآء	١٠٨

ह़ज़रते आदम عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً	١	البقرة	٣٠
وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا	١	البقرة	٣١
قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ	١	البقرة	٣٣
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا	١	البقرة	٣٤
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا	٣	ال عمرٰن	٣٣
قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا	٨	الاعراف	١١
وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ	١٦	طٰهٰ	١١٥
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا	١٦	طٰهٰ	١١٦

ह़ज़रते नूह़ عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِیّٖنَ	٦	النسآء	١٦٣
لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ	٨	الاعراف	٥٩
وَاتْلُ عَلَیْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ	١١	یونس	٧١
قِیْلَ یٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ	١٢	هود	٤٨
وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ	١٦	مریم	٥٨
فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ	١٧	الحج	٤٢
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا	٢٠	العنكبوت	١٤
سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِی الْعٰلَمِیْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	٧٩
اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ	٢٩	نوح	١
رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ	٢٩	نوح	٢٨

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ	١	البقرة	١٢٤
وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ	١	البقرة	١٢٥
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ	١	البقرة	١٢٦
وَاِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ	١	البقرة	١٢٧
اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ	١	البقرة	١٤٠
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ	٣	البقرة	٢٥٨
مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا	٣	ال عمرٰن	٦٧
فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا	٤	ال عمرٰن	٩٥
وَاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا	٥	النسآء	١٢٥
وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ	٦	النسآء	١٦٣
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ اٰزَرَ	٧	الانعام	٧٤
اٰتَیْنٰهَاۤ اِبْرٰهِیْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ	٧	الانعام	٨٣
وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِیْمَ	١١	التوبة	١١٤
وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِیْمَ	١٢	هود	٦٩
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ	١٣	ابراهیم	٣٥
وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ	١٤	الحجر	٥١
وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِبْرٰهِیْمَ	١٦	مریم	٤١
قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى یَّذْكُرُهُمْ	١٧	الانبیآء	٦٠
قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا	١٧	الانبیآء	٦٩
سَلٰمٌ عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٠٩

ह़ज़रते इस्माईल عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ	١	البقرة	١٢٧
اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ	١	البقرة	١٤٠
فَقَدْ اٰتَیْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِیْمَ	٥	النسآء	٥٤
وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ	٦	النسآء	١٦٣
فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِیْمٍ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٠١

ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ	١	البقرة	١٤٠
وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ	٦	النسآء	١٦٣
وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ	٢٠	العنكبوت	٢٧
وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِیًّا	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١١٢
وَبٰرَكْنَا عَلَیْهِ وَعَلٰۤى اِسْحٰقَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١١٣

ह़ज़रते लूत़ عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ﹰالْمُرْسَلُوْنَ	١٤	الحجر	٦١
وَنَجَّیْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ	١٧	الانبیآء	٧١
وَلُوْطًا اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا	١٧	الانبیآء	٧٤
فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ	٢٠	العنكبوت	٢٦
وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٣٣

ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ	١	البقرة	١٣٣
اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ	١	البقرة	١٤٠
فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ	١٢	هود	٧١
قَالَ اِنِّیْ لَیَحْزُنُنِیْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا	١٢	یوسف	١٣
قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ	١٣	یوسف	٨٦
اِذْهَبُوْا بِقَمِیْصِیْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ	١٣	یوسف	٩٣
وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ	١٧	الانبیآء	٧٢
وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِیْمَ	٢٣	صٓ	٤٥

ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
سورة یوسف	١٢	یوسف	مکمل سورۃ

ह़ज़रते इदरीस عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِدْرِیْسَ	١٦	مریم	٥٦
وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِدْرِیْسَ	١٧	الانبیآء	٨٥

ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَیۡهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا	٨	الاعراف	٨٥
اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا	٩	الاعراف	٩٢
وَاِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا	١٢	هود	٨٤
اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَیْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ	١٩	الشعرآء	١٧٧
وَاِلٰى مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا	٢٠	العنكبوت	٣٦

ह़ज़रते मूसा व हारून عَلَیۡهِمَا السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِیْنَ	١	البقرة	٥١
وَاٰتَیْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِیْنًا	٦	النسآء	١٥٣
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى	٩	الاعراف	١٠٣
وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِیْهِ هٰرُوْنَ	٩	الاعراف	١٤٢
وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِیْنَ	٩	الاعراف	١٥٥

www.dawateislami.net

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ	٢٣	صٓ	٤٨

ह़ज़रते ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِدْرِيْسَ وَذَاالْكِفْلِ	١٧	الانبيآء	٨٥
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ	٢٣	صٓ	٤٨

ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا	٣	ال عمرٰن	٣٧
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ	٣	ال عمرٰن	٣٨
فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ	٣	ال عمرٰن	٣٩
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً	٣	ال عمرٰن	٤١
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى	٧	الانعام	٨٥
عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا	١٦	مريم	٢
رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ	١٦	مريم	٤
يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ	١٦	مريم	٧
فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ	١٦	مريم	١١

ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى	٧	الانعام	٨٥
بِغُلٰمِ نِ اسْمُهٗ يَحْيٰى	١٦	مريم	٧
يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ	١٦	مريم	١٢
وَحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً	١٦	مريم	١٣
وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا	١٧	الانبيآء	٩٠

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ	٣	ال عمرٰن	٤٦
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ	٣	ال عمرٰن	٤٨
اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ	٣	ال عمرٰن	٤٩
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ	٦	النسآء	١٦٣
قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى	٦	المآئدة	٤٦

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ	١٥	الكهف	٦٥
قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ	١٥	الكهف	٦٦

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٣٩
وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٤٧
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ	٢٩	القلم	٤٨
فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ	٢٩	القلم	٥٠

ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ	٦	النسآء	١٦٣
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ	٧	الانعام	٨٤
وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ	١٧	الانبيآء	٨٣
وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ	٢٣	صٓ	٤١
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ	٢٣	صٓ	٤٣

ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا	٨	الاعراف	٦٥
وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ	١٢	هود	٥٢
قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا	١٢	هود	٥٣
اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ	١٢	هود	٥٦
اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ	١٩	الشعرآء	١٢٤
اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ	١٩	الشعرآء	١٣٥
اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ	٢٤	حٰمٓ السجدة	١٤
فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا	٢٤	حٰمٓ السجدة	١٥
وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ	٢٦	الاحقاف	٢١

ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ	٧	الانعام	٨٥
وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٢٣
سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٣٠
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ	٢٣	الصّٰٓفّٰت	١٣٢

ह़ज़रते यसअ़ عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ	٧	الانعام	٨٦
وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ	٧	الانعام	٨٧
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ	٧	الانعام	٩٠

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ	١١	يونس	٧٦
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا	١٢	هود	٩٦
وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ	١٥	بنیٓ اسرآءيل	٢
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى	١٦	مريم	٥١
مَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى	١٦	طٰهٰ	١٧
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ	١٧	الانبيآء	٤٨
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ	١٩	الفرقان	٣٥
نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى	٢٠	القصص	٣
اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ	٢٠	القصص	٣٢
هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى	٣٠	النّٰزعٰت	١٥
صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى	٣٠	الاعلٰى	١٩

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ	٢	البقرة	٢٥١
وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا	٦	النسآء	١٦٣
وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا	١٥	بنیٓ اسرآءيل	٥٥
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ	١٩	النمل	١٥
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا	٢٢	سبا	١٠
اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ	٢٣	صٓ	٢٢
وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ	٢٣	صٓ	٢٤
وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ	٢٣	صٓ	٣٠

ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ	١٧	الانبيآء	٧٩
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ	١٩	النمل	١٥
وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا	٢٢	سبا	١٢
وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ	٢٣	صٓ	٣٠

ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ	٧	الانعام	٨٦
فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ	١١	يونس	٩٨
وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا	١٧	الانبيآء	٨٧

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
बा 'ज़	अम्बिया	عَلَیۡہِمُ السَّلَام	की क़ौमों का बयान

क़ौमे आ़द (हूद عَلَیۡہِ السَّلَام की क़ौम)

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦٦	الاعراف	٨	قَالَ الۡمَلَاُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا
٦٧	الاعراف	٨	قَالَ یٰقَوۡمِ لَیۡسَ بِیۡ سَفَاهَةٌ
٧١	الاعراف	٨	قَالَ قَدۡ وَقَعَ عَلَیۡکُمۡ
١٣٠	الشعرآء	١٩	وَاِذَا بَطَشۡتُمۡ بَطَشۡتُمۡ
١٣٦	الشعرآء	١٩	قَالُوۡا سَوَآءٌ عَلَیۡنَاۤ اَوَعَظۡتَ
١٥	حٰمٓ السجدة	٢٤	فَاَمَّا عَادٌ فَاسۡتَکۡبَرُوۡا
٦	الفجر	٣٠	اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ فَعَلَ رَبُّکَ

क़ौमे नूह़ عَلَیۡہِ السَّلَام

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٩	الاعراف	٨	فَقَالَ یٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ
٦٤	الاعراف	٨	فَکَذَّبُوۡهُ فَاَنۡجَیۡنٰهُ
٧١	یونس	١١	اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖ یٰقَوۡمِ
٢٨	هود	١٢	قَالَ یٰقَوۡمِ اَرَءَیۡتُمۡ
٣٢	هود	١٢	قَالُوۡا یٰنُوۡحُ قَدۡ جٰدَلۡتَنَا
٤٠	هود	١٢	حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَمۡرُنَا
٢٤	المؤمنون	١٨	فَقَالَ الۡمَلَؤُا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا

क़ौमे समूद (सालेह़ عَلَیۡہِ السَّلَام की क़ौम)

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧٤	الاعراف	٨	وَاذۡکُرُوۡۤا اِذۡ جَعَلَکُمۡ
٧٨	الاعراف	٨	فَاَخَذَتۡهُمُ الرَّجۡفَةُ
٦١	هود	١٢	وَاِلٰی ثَمُوۡدَ اَخَاهُمۡ
٦٤	هود	١٢	وَیٰقَوۡمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ
٨٠	الحجر	١٤	لَقَدۡ کَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ
٨٢	الحجر	١٤	وَکَانُوۡا یَنۡحِتُوۡنَ
١٤٩	الشعرآء	١٩	وَتَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ
١٥٢	الشعرآء	١٩	اَلَّذِیۡنَ یُفۡسِدُوۡنَ
١٥٥	الشعرآء	١٩	قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا
١٥٨	الشعرآء	١٩	فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ
٤٥	النمل	١٩	وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی ثَمُوۡدَ
٥١	النمل	١٩	فَانۡظُرۡ کَیۡفَ کَانَ عَاقِبَةُ
٢٦	القمر	٢٧	سَیَعۡلَمُوۡنَ غَدًا مَّنِ الۡکَذَّابُ
٥	الحآقّة	٢٩	فَاَمَّا ثَمُوۡدُ فَاُهۡلِکُوۡا بِالطَّاغِیَةِ
٩	الفجر	٣٠	وَثَمُوۡدَ الَّذِیۡنَ جَابُوا الصَّخۡرَ
١٤	الشمس	٣٠	فَکَذَّبُوۡهُ فَعَقَرُوۡهَا

क़ौमे लूत़ عَلَیۡہِ السَّلَام

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨١	الاعراف	٨	اِنَّکُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ
٨٢	الاعراف	٨	وَمَا کَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ
٧٨	هود	١٢	وَجَآءَهٗ قَوۡمُهٗ یُهۡرَعُوۡنَ
٧٩	هود	١٢	قَالُوۡا لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَا لَنَا
٨٢	هود	١٢	فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا جَعَلۡنَا
٥٨	الحجر	١٤	قَالُوۡۤا اِنَّاۤ اُرۡسِلۡنَاۤ اِلٰی قَوۡمٍ
٧٤	الحجر	١٤	فَجَعَلۡنَا عَالِیَهَا سَافِلَهَا
١٦١	الشعرآء	١٩	اِذۡ قَالَ لَهُمۡ اَخُوۡهُمۡ لُوۡطٌ
١٦٥	الشعرآء	١٩	اَتَاۡتُوۡنَ الذُّکۡرَانَ
١٦٧	الشعرآء	١٩	قَالُوۡا لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهِ یٰلُوۡطُ
١٧٢	الشعرآء	١٩	ثُمَّ دَمَّرۡنَا الۡاٰخَرِیۡنَ
٥٥	النمل	١٩	اَئِنَّکُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الرِّجَالَ
٢٨	العنکبوت	٢٠	وَلُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ
٣٤	العنکبوت	٢٠	اِنَّا مُنۡزِلُوۡنَ عَلٰۤی اَهۡلِ هٰذِهِ
٣٣	القمر	٢٧	کَذَّبَتۡ قَوۡمُ لُوۡطٍۭ بِالنُّذُرِ
٣٧	القمر	٢٧	وَلَقَدۡ رَاوَدُوۡهُ عَنۡ ضَیۡفِهٖ

अस्ह़ाबुल ऐका व अस्ह़ाबे मद्यन (ह़ज़रते शुऐब عَلَیۡہِ السَّلَام की क़ौम)

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٥	الاعراف	٨	وَاِلٰی مَدۡیَنَ اَخَاهُمۡ شُعَیۡبًا
٩٠	الاعراف	٩	وَقَالَ الۡمَلَاُ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا
٩١	الاعراف	٩	فَاَخَذَتۡهُمُ الرَّجۡفَةُ
٨٤	هود	١٢	وَلَا تَنۡقُصُوا الۡمِکۡیَالَ
٨٥	هود	١٢	وَیٰقَوۡمِ اَوۡفُوا الۡمِکۡیَالَ
٨٧	هود	١٢	قَالُوۡا یٰشُعَیۡبُ اَصَلٰوتُکَ
٩١	هود	١٢	قَالُوۡا یٰشُعَیۡبُ مَا نَفۡقَهُ
٩٣	هود	١٢	یٰقَوۡمِ اعۡمَلُوۡا عَلٰی
٩٤	هود	١٢	وَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّیۡنَا شُعَیۡبًا
٧٩	الحجر	١٤	فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ
١٧٦	الشعرآء	١٩	کَذَّبَ اَصۡحٰبُ لۡئَیۡکَةِ
١٨٣	الشعرآء	١٩	وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ
١٨٥	الشعرآء	١٩	اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مِنَ الۡمُسَحَّرِیۡنَ
١٤	قٓ	٢٦	وَاَصۡحٰبُ الۡاَیۡکَةِ

अस्ह़ाबुल क़र्यह

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٣	یٰسٓ	٢٢	مَثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡیَةِ
١٤	یٰسٓ	٢٢	اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡهِمُ اثۡنَیۡنِ
٢٨	یٰسٓ	٢٣	وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰی قَوۡمِهٖ

अस्ह़ाबे ख़न्दक़

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤	البروج	٣٠	قُتِلَ اَصۡحٰبُ الۡاُخۡدُوۡدِ
٦	البروج	٣٠	اِذۡ هُمۡ عَلَیۡهَا قُعُوۡدٌ

क़ौमे सबा

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٥	سبا	٢٢	لَقَدۡ کَانَ لِسَبَاٍ فِیۡ مَسۡکَنِهِمۡ
١٦	سبا	٢٢	فَاَرۡسَلۡنَا عَلَیۡهِمۡ سَیۡلَ الۡعَرِمِ

क़ौमे फ़िरऔ़न

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٢	الانفال	١٠	کَدَاۡبِ اٰلِ فِرۡعَوۡنَ
٥٤	الانفال	١٠	وَاَغۡرَقۡنَاۤ اٰلَ فِرۡعَوۡنَ
١٠٣	بنیٓ اسرآءیل	١٥	فَاَغۡرَقۡنٰهُ وَمَنۡ مَّعَهٗ جَمِیۡعًا
٧٨	طٰهٰ	١٦	فَاَتۡبَعَهُمۡ فِرۡعَوۡنُ بِجُنُوۡدِهٖ
٦٤	الشعرآء	١٩	وَاَزۡلَفۡنَا ثَمَّ الۡاٰخَرِیۡنَ

फ़िरऔ़न और उस के साथियों का अन्जाम

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٨	هود	١٢	یَقۡدُمُ قَوۡمَهٗ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ
٩٩	هود	١٢	وَاُتۡبِعُوۡا فِیۡ هٰذِهٖ لَعۡنَةً
٤٦	المؤمن	٢٤	اَلنَّارُ یُعۡرَضُوۡنَ عَلَیۡهَا غُدُوًّا

www.dawateislami.net

तज़्किरए सालिहीन व मुक़र्रबीन

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
			हज़रते लुक़मान رضی اللہ تعالٰی عنہ
١٢	لقمن	٢١	لَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ
١٣	لقمن	٢١	وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ
			हज़रते ज़ुल क़रनैन رضی اللہ تعالٰی عنہ
٨٣	الكهف	١٦	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِی الْقَرْنَيْنِ
٩٤	الكهف	١٦	قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
			हज़रते हव्वा رضی اللہ تعالٰی عنہا
٣٥	البقرة	١	وَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ
٣٦	البقرة	١	فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا
١٩	الاعراف	٨	اُسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ
٢٢	الاعراف	٨	فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ
١١٧	طٰه	١٦	يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
١٢١	طٰه	١٦	فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا
			हज़रते मरयम رضی اللہ تعالٰی عنہا
٣٣	ال عمرٰن	٣	اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ
٣٧	ال عمرٰن	٣	فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ
٤٣	ال عمرٰن	٣	يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ
١٦	مريم	١٦	وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مَرْيَمَ
٩١	الانبيآء	١٧	وَالَّتِیْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
			हज़रते तालूत رضی اللہ تعالٰی عنہ
٢٤٧	البقرة	٢	قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا
٢٤٩	البقرة	٢	فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ
			हज़रते आसिया رضی اللہ تعالٰی عنہا
١١	التحريم	٢٨	وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ

फ़ज़ाइले खुलफ़ाए राशिदीन رضی اللہ تعالٰی عنہم

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
			हज़रते अबू बक्र رضی اللہ تعالٰی عنہ
٢٧٤	البقرة	٣	اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
٤٣	الاعراف	٨	وَنَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ
٤٠	التوبة	١٠	ثَانِیَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ
٢٢	النور	١٨	وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ
٤٣	الاحزاب	٢٢	هُوَ الَّذِیْ يُصَلِّیْ عَلَيْكُمْ
٣٣	الزمر	٢٤	جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ
٣	الحجرات	٢٦	اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ
١٠	الحديد	٢٧	لَا يَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ
٤	التحريم	٢٨	فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ
١٧	الليل	٣٠	وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى
			आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की ख़िलाफ़त का सुबूत
٥٥	النور	١٨	وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ
١٦	الفتح	٢٦	سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ
			हज़रते उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ
٦٤	الانفال	١٠	وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
٢٩	الفتح	٢٦	وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ
٨	البينة	٣٠	رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
			हज़रते उस्माने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ
٢٦٢	البقرة	٣	اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
٩	الزمر	٢٣	اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ
١٠	الفتح	٢٦	اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ
٨	البينة	٣٠	رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
			हज़रते अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ
١٢	المجادلة	٢٨	اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ
٨	الدهر	٢٩	وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ
٨	البينة	٣٠	رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

फ़ज़ाइले सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٣	البقرة	١	اٰمِنُوْا كَمَاۤ اٰمَنَ النَّاسُ
١٣٧	البقرة	١	فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ
١٥٢	ال عمرٰن	٤	وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ
٧	المآئدة	٦	اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
١٠٠	التوبة	١١	وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ
١١٧	التوبة	١١	وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ
٤	سبا	٢٢	اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
٢٩	الفتح	٢٦	وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ
٣	الحجرات	٢٦	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ
			फ़ज़ाइले अज़्वाजे मुतह्हरात رضی اللہ تعالٰی عنہن
٦	الاحزاب	٢١	وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ
٣٢	الاحزاب	٢٢	يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ
٣٣	الاحزاب	٢٢	لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
			हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا के फ़ज़ाइल
٤٣	النسآء	٥	فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
١١	النور	١٨	اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ
٣٢	الاحزاب	٢٢	يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ
			फ़ज़ाइले अहले बैत رضی اللہ تعالٰی عنہم
٦١	ال عمرٰن	٣	فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا
٨٢	طٰه	١٦	وَاِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ
٣٣	الاحزاب	٢٢	لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
٢٣	الشورٰى	٢٥	اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰى
			फ़ज़ाइले औलियाए किराम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم
٢٤٨	البقرة	٢	فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
٣٧	ال عمرٰن	٣	وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا
٣٤	الانفال	٩	اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ
٦٢	يونس	١١	اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ
٥	ابراهيم	١٣	وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ
١٨	الكهف	١٥	وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا
			औलियाउल्लाह رحمہم اللہ की करामात का सुबूत
٣٧	ال عمرٰن	٣	كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
٧١	الكهف	١٥	فَانْطَلَقَا حَتّٰۤى اِذَا رَكِبَا

www.dawateislami.net

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى إِذَا لَقِيَا	١٥	الكهف	٧٤
هُزِّيْٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ	١٦	مريم	٢٥
أَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ أَنْ يَّرْتَدَّ	١٩	النمل	٤٠

बुज़ुर्गों के तबर्रुकात से मुसीबतें टल जाती हैं

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ	٢	البقرة	٢٤٨
فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا	١٦	مريم	٢٦
فَقَبَضْتُ قَبْضَةً	١٦	طٰه	٩٦

अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलिया رَحِمَهُمُ الله के क़ुर्ब में दुआ क़बूल होती है

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ	٣	ال عمران	٣٨
وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوْٓا	٥	النسآء	٦٤
إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ	٨	الاعراف	٥٦

अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलिया رَحِمَهُمُ الله दूर से सुनते, देखते और मदद भी करते हैं

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ إِبْرٰهِيْمَ	٧	الانعام	٧٥
فَأَرَدْنَآ أَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا	١٦	الكهف	٨١
لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا	١٦	مريم	١٩
أَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ أَنْ يَّرْتَدَّ	١٩	النمل	٤٠

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना जाइज़ है

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ	٢	البقرة	١٥٣
وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوْٓا	٥	النسآء	٦٤
تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى	٦	المآئدة	٢
يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ	١٠	الانفال	٦٤
إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ	٢٦	محمد	٧
فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ	٢٨	التحريم	٤

फ़ज़ाइले शुहदाए किराम

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ	٢	البقرة	١٥٤
قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	٤	ال عمران	١٥٧
بَلْ أَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ	٤	ال عمران	١٦٩
فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ	٥	النسآء	٦٩

फ़ज़ाइले इल्म व उ़लमा

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيْلَهٗٓ إِلَّا اللّٰهُ	٣	ال عمران	٧
أُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ	٣	ال عمران	١٨
لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ	٦	النسآء	١٦٢
مِنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا	١١	التوبة	١٢٢
يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ	١١	يونس	٥
وَإِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ	١٣	يوسف	٦٨
وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ	١٣	يوسف	٧٦
قَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ	١٤	النحل	٢٧
يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ أُنَاسٍ	١٥	بنی اسرآءیل	٧١
مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيْلٌ	١٥	الكهف	٢٢
وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ	١٧	الحج	٥٤
عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ	١٩	النمل	٤٠
وَمَا يَعْقِلُهَآ إِلَّا الْعٰلِمُوْنَ	٢٠	العنكبوت	٤٣
هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ	٢٣	الزمر	٩

ता'लीम व तअ़ल्लुम की फ़ज़ीलत

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ	٧	الانعام	٨٣
قَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ	٢٠	القصص	٨٠
خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ	٢٧	الرحمٰن	٣،٤
يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا	٢٨	المجادلة	١١

त़ालिबे ह़क़ के लिये मुनाज़रा जाइज़ है

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ	١٤	النحل	١٢٥

इब्तिदा में दीन की ता'लीम दी जाए

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ	١٦	طٰه	١٣٢
قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ	٢١	لقمٰن	١٣

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ	١	البقرة	٢،٣
إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ	٢	البقرة	١٩٥
إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ	٢	البقرة	٢٢٢
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ	٤	ال عمران	١٤٦
إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ	٦	المآئدة	٤٢
يَأْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ	٦	المآئدة	٥٤
إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ	١٠	التوبة	٤
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ	١١	التوبة	١٠٨
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا	١٦	مريم	٩٦
يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ	٢٨	الصف	٤

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ना पसन्दीदा बन्दे

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ	٢	البقرة	١٩٠
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ	٢	البقرة	٢٠٥
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ	٣	البقرة	٢٧٦
فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ	٣	ال عمران	٣٢
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ	٣	ال عمران	٥٧
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ	٥	النسآء	٣٦
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ	٥	النسآء	١٠٧
لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ	٦	النسآء	١٤٨
إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ	٨	الاعراف	٣١
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ	١٠	الانفال	٥٨
إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ	١٤	النحل	٢٣
إِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا إِخْوَانَ	١٥	بنی اسرآءیل	٢٧
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ	٢٠	القصص	٧٦
إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ	٢٥	الشورٰی	٤٠

फ़िरिश्तों का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ	١٤	الحجر	٨
وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا	١٩	الفرقان	٢٥
وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ	٢٧	النجم	٢٦
وَالْمَلَكُ عَلٰٓى أَرْجَآئِهَا	٢٩	الحآقة	١٧

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٨	النبا	٣٠	وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا

फ़िरिश्तों के मक़ाम मुक़र्रर हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٦٤	الصّٰٓفّٰت	٢٣	وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ

फ़िरिश्ते भी मदद करते हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤	التحريم	٢٨	هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ

आ'माल लिखने पर मामूर फ़िरिश्ते

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢١	يونس	١١	اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ
١١	الانفطار	٣٠	كِرَامًا كَاتِبِيْنَ

फ़िरिश्ते रूह़ क़ब्ज़ करते हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٧	النسآء	٥	اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
١١	السجدة	٢١	يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ

फ़िरिश्ते ता'मीले हुक्म में कोताही नहीं करते

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦١	الانعام	٧	وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ

फ़िरिश्ते तस्बीह़ करते हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٦٦	الصّٰٓفّٰت	٢٣	وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ
٧٥	الزمر	٢٤	يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
٥	الشورٰى	٢٥	وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

फ़िरिश्तों का पेशवाई करना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠٣	الانبيآء	١٧	وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

फ़िरिश्तों का दुरूद भेजना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٣	الاحزاب	٢٢	يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ
٥٦	الاحزاب	٢٢	اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ

फ़िरिश्तों का दुआ़ए मग़्फ़िरत करना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧	المؤمن	٢٤	يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जिन्नात का बयान

जिन्नात आग से बने हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢	الاعراف	٨	خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ
٢٧	الحجر	١٤	وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ
١٥	الرحمٰن	٢٧	وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ

जिन्नात भी मुकल्लफ़ हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٤	الجن	٢٩	وَاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ

जिन्नात के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١	الجن	٢٩	وَاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ

जिन्नात के आ़जिज़ होने का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢	الجن	٢٩	وَاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ

इब्लीस जिन्नात में से है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٠	الكهف	١٥	كَانَ مِنَ الْجِنِّ

शैत़ान की पैरवी न करो

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٦٨	البقرة	٢	لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ
٢١	النور	١٨	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا

शैत़ान तुम्हारा खुला दुश्मन है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥	يوسف	١٢	اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ
١٥	القصص	٢٠	اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ
٦	فاطر	٢٢	اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

शैत़ान से दोस्ती का अन्जाम

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١٩	النسآء	٥	وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ
٦٠	المآئدة	٦	وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ
٢٧	الاعراف	٨	اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ
٢١	النور	١٨	مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ

शैत़ान के धोके से बचो

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٧	الاعراف	٨	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ
٣٦	النحل	١٤	وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ
١٩	المجادلة	٢٨	اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ

शैत़ान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٠٠	الاعراف	٩	اِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ
٩٨	النحل	١٤	فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ
٩٧	المؤمنون	١٨	وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ
٣٦	حٰمٓ السجدة	٢٤	اِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ

काफ़िरों के ह़िमायती शैत़ान हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٥٧	البقرة	٣	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ
٨٣	مريم	١٦	اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى

शैत़ान के वा'दे धोका हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢٠	النسآء	٥	وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ
٤٨	الانفال	١٠	قَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ
٢٢	ابراهيم	١٣	وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ
٢٩	الفرقان	١٩	وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ
٣٨	الزخرف	٢٥	قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ

शैत़ान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٧	بنیٓ اسرآءيل	١٥	كَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا
٤٤	مريم	١٦	اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ

शयात़ीन आस्मान पर नहीं जा सकते

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٧	الحجر	١٤	حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

शैत़ान मरदूद है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٤	الحجر	١٤	فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ
٩٨	النحل	١٤	مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
٢٥	التكوير	٣٠	بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ

आ़लमे बरज़ख़

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠٠	المؤمنون	١٨	وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ

मौत का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٨	البقرة	١	كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ
٢٥٨	البقرة	٣	رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
١٨٥	ال عمرٰن	٤	كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ
١٠٠	النسآء	٥	وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ
٥٨	الحج	١٧	وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦	الجاثية	٢٥	اَللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ
٨	الجمعة	٢٨	اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ

हर जानदार को मरना है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٨٥	ال عمرٰن	٤	كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ
١١	السجدة	٢١	قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ
٨١	الشعرآء	١٩	وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ

मौत के लिये वक़्त मुक़र्रर है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٤٥	ال عمرٰن	٤	وَمَاكَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ

मौत से फ़िरार ना मुम्किन है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧٨	النسآء	٥	اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ
٦١	الانعام	٧	حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ
١٦	الاحزاب	٢١	قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ
٦٠	الواقعة	٢٧	نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ
٨	الجمعة	٢٨	قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ

मौत के लिये सख़्तियां

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٩	قٓ	٢٦	وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ

मोमिन व काफ़िर की मौत यक्सां नहीं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢١	الجاثية	٢٥	اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا

मरने के बा'द ज़िन्दा होना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧٣	البقرة	١	يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى
٧	هود	١٢	وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ
٣٨	النحل	١٤	وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
٥١	بنی اسرآءیل	١٥	فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا
١٦	المؤمنون	١٨	ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
٢٠	العنكبوت	٢٠	فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ

मआ़द व हश्र

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٥	الحجر	١٤	وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ
٢١	الكهف	١٥	اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢	الروم	٢١	تَقُوْمُ السَّاعَةُ
١٧	الشورٰى	٢٥	اَلسَّاعَةَ قَرِيْبٌ
١	القمر	٢٧	اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ

क़ियामत का इल्म अल्लाह عزوجل के पास है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٨٧	الاعراف	٩	قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا
٣٤	لقمٰن	٢١	اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ
٤٧	حٰمٓ السجدة	٢٥	اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ

याजूज व माजूज

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٤	الكهف	١٦	اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ

याजूज व माजूज का महबूस होना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٧	الكهف	١٦	فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ

याजूज व माजूज का निकलना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٨	الكهف	١٦	فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ
٩٦	الانبيآء	١٧	حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ

दाब्बतुल अर्द

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٢	النمل	٢٠	اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً

मीज़ाने अ़मल

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٧	الانبيآء	١٧	نَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ

पुल सिरात़

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧١	مريم	١٦	اِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا
٢٤	الصّٰٓفّٰت	٢٣	وَقِفُوْهُمْ

जन्नत का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١١	التوبة	١١	بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ
٩٠	الشعرآء	١٩	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ

जन्नत में दाख़िला बड़ी काम्याबी है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٨٥	ال عمرٰن	٤	فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ
١٣	النسآء	٤	وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
١٦	الانعام	٧	مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ
١٢	الحديد	٢٧	ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
١٢	الصف	٢٨	ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
١١	البروج	٣٠	ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ

जन्नत के लिये कमर बस्ता हो जाओ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٣٣	ال عمرٰن	٤	وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

जन्नत की वुस्अ़त

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٣٣	ال عمرٰن	٤	عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ

जन्नत की सिफ़ात

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٧	النسآء	٥	جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
٣٥	الرعد	١٣	مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ
٥٨	العنكبوت	٢١	لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا
١٥	محمد	٢٦	مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ

जन्नत के वारिस

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٣	الاعراف	٨	وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ
٦٣	مريم	١٦	تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ
٧٢	الزخرف	٢٥	وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْۤ

फ़िरिश्तों की त़रफ़ से जन्नतियों को सलाम

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٤	الرعد	١٣	سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ

दारोग़ए जन्नत की त़रफ़ से जन्नतियों को सलाम

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧٣	الزمر	٢٤	قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ

जहन्नम का बयान

दोज़ख़ बहुत बुरा ठिकाना है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٠٦	البقرة	٢	وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ
١٨	الرعد	١٣	وَبِئْسَ الْمِهَادُ
٢٩	ابراهيم	١٣	وَبِئْسَ الْقَرَارُ

दोज़ख़ भड़कती आग है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٥	النسآء	٥	وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا
١٤	الليل	٣٠	فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى

खौलते हुए पानी का अ़ज़ाब

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٧٢	المؤمن	٢٤	فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
जहन्नमियों का लिबास			
٥٠	ابراهيم	١٣	سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ
١٩	الحج	١٧	قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ
दोज़ख़ बहुत बड़ी आफ़त है			
٣٥	المدثر	٢٩	اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ
अल्लाह के ना फ़रमानों और काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम है			
١٦٢	ال عمران	٤	وَمَاْوٰهُ جَهَنَّمُ
١٩٧	ال عمران	٤	ثُمَّ مَاْوٰهُمْ جَهَنَّمُ
١٤٠	النسآء	٥	اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ
٤٩	التوبة	١٠	اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ
١٠٦	الكهف	١٦	ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ
٥٤	العنكبوت	٢١	اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ
٦٨	الصّٰفّٰت	٢٣	اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ
٢٦	المدثر	٢٩	سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ
٤٢	المدثر	٢٩	مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ
٢٢	النبا	٣٠	لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا
١٦	المطففين	٣٠	اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ
तहारत का बयान			
वुज़ू			
٦	المآئدة	٦	اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
गुस्ल			
٢٢٢	البقرة	٢	لَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ
٤٣	النسآء	٥	وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ
٦	المآئدة	٦	وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا
इस्तिन्जा			
٤٣	النسآء	٥	جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ
١٠٨	التوبة	١١	رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا
तयम्मुम			
٦	المآئدة	٦	فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
नमाज़ का बयान			
नमाज़ की फ़र्ज़िय्यत			
١٠٣	النسآء	٥	اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى
नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म			
١١٤	هود	١٢	وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ
٧٨	بنیٓ اسرآءیل	١٥	اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ
١٣٠	طٰهٰ	١٦	وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
١٧	الروم	٢١	فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ
٢٥	الدهر	٢٩	وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
नमाज़ तर्क करना बाइसे हलाकत है			
٤	الماعون	٣٠	فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ
नमाज़ों की मुहाफ़ज़त करना			
٢٣٨	البقرة	٢	حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ
٩٢	الانعام	٧	وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ
٩	المؤمنون	١٨	عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ
٢٣	المعارج	٢٩	هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ
नमाज़ के लिये सत्रे औरत			
٣١	الاعراف	٨	خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
नमाज़ में क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना			
١١٥	البقرة	١	فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ
١٤٤	البقرة	٢	فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ
١٥٠	البقرة	٢	فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ
नमाज़ में क़िराअत का हुक्म			
١١٠	بنیٓ اسرآءیل	١٥	لَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ
٢٠	المزمل	٢٩	فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ
इमामत का ज़िक्र			
١٠٢	النسآء	٥	اِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का हुक्म			
٤٣	البقرة	١	وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ
١٠٢	النسآء	٥	فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से रोकती है			
٤٥	العنكبوت	٢١	اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى
नमाज़े मुसाफ़िर का बयान			
١٠١	النسآء	٥	اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ
नमाज़े जुमुआ			
٩	الجمعة	٢٨	اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ
नमाज़े ख़ौफ़			
٢٣٩	البقرة	٢	فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا
١٠٢	النسآء	٥	اِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ
नमाज़े ईदैन			
١٨٥	البقرة	٢	وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا
٢	الكوثر	٣٠	فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ
नमाज़े जनाज़ा			
٨٤	التوبة	١٠	لَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ
नफ़्ल नमाज़ों का बयान			
٧٩	بنیٓ اسرآءیل	١٥	وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً
١٦	السجدة	٢١	تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ
٤٩	الطور	٢٧	وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ
रोज़े का बयान			
रोज़े की फ़र्ज़िय्यत			
١٨٣	البقرة	٢	كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
١٨٥	البقرة	٢	فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
मुसाफ़िर और मरीज़ पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं			
١٨٥	البقرة	٢	مَنْ كَانَ مَرِيْضًا
मुसाफ़िर व मरीज़ का रोज़ा रखना अफ़्ज़ल है			
١٨٤	البقرة	٢	اَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
रोजे़ का वक़्त सुब्हे़ सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है			
١٨٧	البقرة	٢	حَتّٰی یَتَبَیَّنَ لَـکُمُ
रमज़ान की रातों में बीवी से मुजामअ़त जाइज़ है			
١٨٧	البقرة	٢	اُحِلَّ لَکُمۡ لَیۡلَةَ الصِّیَامِ
रोज़ा रखने की त़ाक़त न होने की सूरत में कफ़्फ़ारा वाजिब है			
١٨٤	البقرة	٢	وَعَلَی الَّذِیۡنَ یُطِیۡقُوۡنَهٗ
क़सम के कफ़्फ़ारे में रोज़ा			
٨٩	المآئدة	٧	فَکَفَّارَتُـهٗۤ اِطۡعَامُ عَشَرَةِ
ज़िहार के कफ़्फ़ारे में रोज़ा			
٤	المجادلة	٢٨	فَمَنۡ لَّمۡ یَجِدۡ فَصِیَامُ
ह़ज के कफ़्फ़ारे में रोज़ा			
١٩٦	البقرة	٢	فَفِدۡیَةٌ مِّنۡ صِیَامٍ
٩٥	المآئدة	٧	اَوۡعَدۡلُ ذٰلِکَ صِیَامًا
शबे क़द्र			
٣	الدخان	٢٥	اِنَّـآاَنۡزَلۡنٰـهُ فِیۡ لَیۡلَةٍ مُّبٰـرَکَةٍ
١	القدر	٣٠	اِنَّـآ اَنۡزَلۡنٰـهُ فِیۡ لَیۡلَةِ الۡقَدۡرِ
ए'तिकाफ़ का बयान			
١٨٧	البقرة	٢	وَاَنۡتُمۡ عٰکِفُوۡنَ
٢٦	الحج	١٧	لِلطَّآئِفِیۡنَ وَالۡقَآئِمِیۡنَ
क़ुरआन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का उतारा हुवा है			
٨٠	الواقعة	٢٧	تَنۡزِیۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ
क़ुरआने मजीद हिदायत है			
٢	البقرة	١	هُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ
١٣٨	ال عمرٰن	٤	هٰذَا بَیَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًی
क़ुरआन में शको शुबा नहीं			
٢	البقرة	١	ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
क़ुरआन में इख़्तिलाफ़ नहीं			
٨٢	النسآء	٥	وَلَوۡکَانَ مِنۡ عِنۡدِ غَیۡرِاللّٰهِ
क़ुरआन नूर व बुरहान है			
١٧٤	النسآء	٦	وَاَنۡزَلۡنَاۤاِلَیۡکُمۡ نُوۡرًامُّبِیۡنًا
٥٢	الشورٰی	٢٥	وَلٰـکِنۡ جَعَلۡنٰـهُ نُوۡرًا
क़ुरआन मुबारक किताब है			
١٥٥	الانعام	٨	هٰذَاکِتٰبٌ اَنۡزَلۡنٰـهُ مُبٰرَکٌ
٥٠	الانبیآء	١٧	هٰذَا ذِکۡرٌ مُّبٰرَکٌ اَنۡزَلۡنٰهُ
٢٩	صٓ	٢٣	اَنۡزَلۡنٰـهُ اِلَیۡکَ مُبٰـرَکٌ
क़ुरआन एक मुफ़स्सल किताब है			
١١٤	الانعام	٨	اِلَیۡکُمُ الۡکِتٰبَ مُفَصَّلًا
٥٢	الاعراف	٨	لَقَدۡ جِئۡنٰهُمۡ بِکِتٰبٍ فَصَّلۡنٰهُ
١١١	یوسف	١٣	وَتَفۡصِیۡلَ کُلِّ شَیۡءٍ
क़ुरआन बाइसे शिफ़ा है			
٥٧	یونس	١١	وَشِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوۡرِ
٨٢	بنیۡۤ اسرآءیل	١٥	مَا هُوَ شِفَآءٌ
क़ुरआने पाक में हर चीज़ का बयान है			
٨٩	النحل	١٤	تِبۡیَانًا لِّکُلِّ شَیۡءٍ
क़ुरआन तमाम जहान के लिये नसीह़त है			
٥٢	القلم	٢٩	وَمَا هُوَ اِلَّا ذِکۡرٌ لِّلۡعٰلَمِیۡنَ
٢٧	التکویر	٣٠	اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِکۡرٌ لِّلۡعٰلَمِیۡنَ
क़ुरआन एक इ़ज़्ज़त वाला सह़ीफ़ा है			
١٣	عبس	٣٠	فِیۡ صُحُفٍ مُّکَرَّمَةٍ
क़ुरआन नसीह़त है			
١٩	المزمل	٢٩	اِنَّ هٰذِهٖ تَذۡکِرَةٌ
٥٤	المدثر	٢٩	کَلَّاۤ اِنَّهٗ تَذۡکِرَةٌ
٢٩	الدهر	٢٩	اِنَّ هٰذِهٖ تَذۡکِرَةٌ
क़ुरआन आसान किताब है			
١٧	القمر	٢٧	وَلَقَدۡ یَسَّرۡنَا الۡقُرۡاٰنَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
क़ुरआन अगली किताबों की तस्दीक़ करता है			
٣	ال عمرٰن	٣	مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیۡهِ
٩٢	الانعام	٧	اَنۡزَلۡنٰـهُ مُبٰـرَکٌ مُّصَدِّقُ
٣٧	یونس	١١	وَلٰـکِنۡ تَصۡدِیۡقَ الَّذِیۡ
٣١	فاطر	٢٢	اَوۡحَیۡنَـآ اِلَیۡکَ
١٢	الاحقاف	٢٦	وَهٰذَا کِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ
क़ुरआन बरगुज़ीदा है			
١	قٓ	٢٦	وَالۡقُرۡاٰنِ الۡمَجِیۡدِ
٢١	البروج	٣٠	بَلۡ هُوَقُرۡاٰنٌ مَّجِیۡدٌ
क़ुरआन करीम है			
٧٧	الواقعة	٢٧	اِنَّهٗ لَقُرۡاٰنٌ کَرِیۡمٌ
क़ुरआन ह़िक्मत वाला है			
٢	یٰسٓ	٢٢	وَالۡقُرۡاٰنِ الۡحَکِیۡمِ
क़ुरआन रोशन किताब है			
١	النمل	١٩	وَکِتَابٍ مُّبِیۡنٍ
٢	الدخان	٢٥	وَالۡکِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ
बे वुज़ू क़ुरआन को न छूए			
٧٩	الواقعة	٢٧	لَا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ
क़ुरआन जांफ़िज़ा है			
٥٢	الشورٰی	٢٥	رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا
क़ुरआन का मिस्ल मुम्किन नहीं			
٨٨	بنیۡۤ اسرآءیل	١٥	لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ
क़ुरआन में मुतशाबिहात भी हैं			
٧	ال عمرٰن	٣	وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ
क़ुरआन बार बार पढ़ी जाने वाली किताब है			
٢٣	الزمر	٢٣	اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحۡسَنَ الۡحَدِیۡثِ
क़ुरआन अ़रबी ज़बान में है			
٢	یوسف	١٢	اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰـهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِیًّا
١٠٣	النحل	١٤	وَهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِیٌّ مُّبِیۡنٌ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٩٥	الشعرآء	١٩	بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ
			क़ुरआने पाक में मिसालें बयान की गई हैं
٥٨	الروم	٢١	هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
			क़ुरआने पाक में कजी नहीं
٢٨	الزمر	٢٣	قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ
			क़ुरआन दुरुस्त त़रीक़े से पढ़ा जाए
٤	المزمل	٢٩	وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا
			क़ुरआने पाक ख़ामोशी से सुना जाए
٢٠٤	الاعراف	٩	وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا
			क़ुरआन लौहे मह़फ़ूज़ में मरक़ूम है
٢٢	البروج	٣٠	فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ
			हज का बयान
			ख़ानए का'बा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पहला घर है
٩٦	ال عمران	٤	اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ
			ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام के हाथों ख़ानए का'बा की ता'मीर
١٢٧	البقرة	١	وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ
			हज की फ़र्ज़िय्यत
٩٧	ال عمران	٤	وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ
١٩٦	البقرة	٢	وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ
			हज साहिबे इस्तित़ाअ़त पर फ़र्ज़ है
٩٧	ال عمران	٤	حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ
			हज में फ़िस्क़ो फ़ुजूर और झगड़ा न हो
١٩٧	البقرة	٢	فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ
			ह़ज्जे तमत्तोअ़ का बयान
١٩٦	البقرة	٢	فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ
			मुह़सर क़ुरबानी का जानवर ह़रम में भेजेगा
١٩٦	البقرة	٢	فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
			हज व उ़मरह में तोशा साथ ले कर जाए
١٩٧	البقرة	٢	وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ
			एह़राम का बयान
١٩٧	البقرة	٢	فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ
١	المآئدة	٦	غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ
٩٥	المآئدة	٧	لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ
			हालते एह़राम में शिकार मन्अ़ है
٩٤	المآئدة	٧	لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ
٩٥	المآئدة	٧	لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ
			हालते एह़राम में पानी का शिकार मन्अ़ नहीं
٩٦	المآئدة	٧	اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ
١٤	النحل	١٤	لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا
			क़िरान का बयान
١٩٦	البقرة	٢	اَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ
			त़वाफ़ का बयान
١٢٥	البقرة	١	اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ
			मक़ामे इब्राहीम
١٢٥	البقرة	١	مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ
			सफ़ा व मर्वह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से हैं
١٥٨	البقرة	٢	اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ
			वुक़ूफ़े अ़रफ़ात
١٩٨	البقرة	٢	فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ
			वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा
١٩٨	البقرة	٢	فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ
			मिना में ह़ाज़िरी और इस के आ'माल
٢٠٠	البقرة	٢	فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ
٢٠٣	البقرة	٢	وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ
٢٨	الحج	١٧	وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
			क़ुरबानी, सर के बाल मुंडाने और कतरवाने का बयान
١٩٦	البقرة	٢	وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ
٢٩	الحج	١٧	ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ
٢٧	الفتح	٢٦	مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ
			त़वाफ़े फ़र्ज़
٢٩	الحج	١٧	وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ
			जुर्म और उस के कफ़्फ़ारे
١٩٦	البقرة	٢	فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا
٩٥	المآئدة	٧	لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
			रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़ाज़िरी
٦٤	النسآء	٥	وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
			क़ुरबानी का बयान
١٤٢	الانعام	٨	وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً
١٦٢	الانعام	٨	قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ
٢	الكوثر	٣٠	فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ
			ऊंट और गाय की क़ुरबानी शआइरिल्लाह से है
٣٤	الحج	١٧	وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
٣٧	الحج	١٧	لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
			बकरी की क़ुरबानी
٢٧	المآئدة	٦	اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ
			दुम्बे की क़ुरबानी
١٠٧	الصّٰفّٰت	٢٣	وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ
			परहेज़गारों की त़रफ़ से क़ुरबानी
٢٧	المآئدة	٦	قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ
			ज़कात का बयान
			ज़कात अदा करने का हुक्म
٤٣	البقرة	١	وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٣	البقرة	١	وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
١١٠	البقرة	١	وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
٥٦	النور	١٨	وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا

ज़कात माल को पाक करती है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠٣	التوبة	١١	خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً

ज़कात अदा करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुगना सवाब देता है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦١	البقرة	٣	مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ
٣٩	الروم	٢١	وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ
٣٩	سبا	٢٢	وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ

ज़कात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये दें

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٩	الروم	٢١	تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ

ज़कात में उ़म्दा चीज़ दें

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٧	البقرة	٣	وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ

ज़कात दे कर एह़सान न जतलाएं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٤	البقرة	٣	لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ

ज़कात पाक माल से दी जाए

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٧	البقرة	٣	اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

ज़कात न देने वाले पर अ़ज़ाब है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٨٠	ال عمرٰن	٤	لَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
٣٤	التوبة	١٠	وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ

बाग़ और खेत पर ज़कात

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٧	البقرة	٣	وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ
١٤١	الانعام	٨	وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ

माले तिजारत पर ज़कात

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٧	البقرة	٣	مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ

मसारिफ़े ज़कात

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦٠	التوبة	١٠	اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ

जिहाद का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١١	التوبة	١١	مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ
١٢٠	التوبة	١١	كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ
٤	الصف	٢٨	اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ

राहे जिहाद में हर अ़मल पर सवाब है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢٠	التوبة	١١	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ

जिहाद में ख़र्च करने पर अ़ज़ीम अज्र है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٩٥	البقرة	٢	وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
٦٠	الانفال	١٠	يُوَفَّ اِلَيْكُمْ
١٢١	التوبة	١١	كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ

जिहाद फ़र्ज़े किफ़ाया है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢١٦	البقرة	٢	كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ
٩٥	النسآء	٥	لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ

ज़रूरत के वक़्त जिहाद फ़र्ज़े ऐन है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤١	التوبة	١٠	اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا

किन लोगों पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩١	التوبة	١٠	لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ
١٧	الفتح	٢٦	لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى

किन से जिहाद किया जाए

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٩٠	البقرة	٢	وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
١٩٣	البقرة	٢	فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ

जिहाद के लिये भरपूर तय्यारी रखो

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦٠	الانفال	١٠	وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ

जंग फ़ितने को ख़त्म करने के लिये है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٩٣	البقرة	٢	قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ

अ़ह्द तोड़ने की मज़म्मत

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠	الفتح	٢٦	فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ

जिहाद में बुख़्ल मज़्मूम है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٨	محمد	٢٦	فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ

जिहाद में मौत ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٥٤	البقرة	٢	بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ
١٦٩	ال عمرٰن	٤	بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ

मुजाहिदीन के लिये सवाबे अ़ज़ीम है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٧٢	ال عمرٰن	٤	اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ
١٩٥	ال عمرٰن	٤	وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ
٧٤	النسآء	٥	فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا
٩٥	النسآء	٥	وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ

मैदाने जंग से भागना ह़राम है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٥	الانفال	٩	فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ
٤٥	الانفال	١٠	اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا

मुजाहिदीन के लिये बहुत सी ग़नीमतों का वा'दा

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٤	النسآء	٥	فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ
٦٩	الانفال	١٠	فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ
٢٧	الاحزاب	٢١	وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
١٥	الفتح	٢٦	اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ
١٨	الفتح	٢٦	اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا

जिहाद की मह़ब्बत तिजारत से बेहतर है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٤	التوبة	١٠	وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

जिहाद में कसरत से ज़िक्रे इलाही करें

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٥	الانفال	١٠	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ

जिहाद में सुस्ती न की जाए

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٣٩	ال عمرٰن	٤	وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا
١٤٦	ال عمرٰن	٤	وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ

जंग में सफ़ बन्दी का हुक्म

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤	الصف	٢٨	اَلَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
शराब और जूए की मज़म्मत			
٩٠	المآئدة	٧	اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
शराब और जूए के ज़रीए शैत़ान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से रोकता है			
٩١	المآئدة	٧	اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ
नशे की ह़ालत में नमाज़ की मुमानअ़त			
٤٣	النسآء	٥	لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ
नाप तोल में कमी की मुमानअ़त			
١٥٢	الانعام	٨	وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ
١	المطففين	٣٠	وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ
अमानत में ख़ियानत से मुमानअ़त			
٢٧	الانفال	٩	لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ
झूट का बयान			
झूट बोलना ज़ुल्मे अ़ज़ीम है			
٧	الصف	٢٨	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
झूट सुनने की मुमानअ़त			
٤١	المآئدة	٦	سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ
झूट सुनना यहूदियों की आ़दत है			
٤١	المآئدة	٦	مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۚۛ سَمّٰعُوْنَ
झूट बोलने वाले काम्याब नहीं			
٦٩	يونس	١١	عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ
١١٦	النحل	١٤	عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ
चुग़ली की मुमानअ़त			
١٠	القلم	٢٩	وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ
गाली देने की मुमानअ़त			
١٠٨	الانعام	٧	وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
तजस्सुस की मुमानअ़त			
١٢	الحجرات	٢٦	وَلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
लिवात़त की ह़ुरमत			
٨٠	الاعراف	٨	اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ
٧	المؤمنون	١٨	فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ
सूद की ह़ुरमत			
٢٧٥	البقرة	٣	اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا
सूद से माल में बरकत नहीं			
٢٧٦	البقرة	٣	يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا
सूद दर सूद भी ह़राम है			
١٣٠	ال عمرٰن	٤	لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا
सूद में उख़रवी फ़ाएदा नहीं			
٣٩	الروم	٢١	وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاْ
सूद खाने वालों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जंग है			
٢٧٩	البقرة	٣	فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ
सूद के नुक़्सानात			
٢٧٥	البقرة	٣	اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا
١٦١	النسآء	٦	وَاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا
रिश्वत की मुमानअ़त			
١٨٨	البقرة	٢	وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ
٤٢	المآئدة	٦	اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ
रिश्वत ख़ोरी यहूदियों की आ़दत है			
٤٢	المآئدة	٦	اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ
गवाही छुपाने की मुमानअ़त			
١٤٠	البقرة	١	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ
٢٨٣	البقرة	٣	وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ
बुरे नाम से पुकारने की मुमानअ़त			
١١	الحجرات	٢٦	وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ
लहवो लइब की मज़म्मत			
٦	لقمٰن	٢١	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
बाग़ी का हुक्म			
٣٣	المآئدة	٦	اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا
٣٤	المآئدة	٦	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا
जंग में क़ैदियों का हुक्म			
٤	محمد	٢٦	فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
ज़िना का बयान			
٣٣	الاعراف	٨	اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ
٣٢	بنیٓ اسرآءیل	١٥	وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ
ज़िना की शरई सज़ा			
٢	النور	١٨	اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا
बाप की मन्कूह़ा से निकाह़ ह़राम है			
٢٢	النسآء	٤	وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ
ज़ानिया लौंडी की सज़ा			
٢٥	النسآء	٥	فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
ज़िना से बचने का हुक्म			
٣٢	بنیٓ اسرآءیل	١٥	وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى
ज़िना की तोहमत लगाने की सज़ा			
٤	النور	١٨	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ
ज़िना की तोहमत लगाने वाले की गवाही हमेशा के लिये मरदूद है			
٤	النور	١٨	وَلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا
बीवी पर तोहमत लगाने का हुक्म			
٦	النور	١٨	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ
ज़िना की तोहमत लगाने वालों पर ला'नत			
٢٣	النور	١٨	اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
ज़िना की तोहमत लगाने वाला अ़ज़ाब का ह़क़दार है			
٢٣	النور	١٨	وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
हसद की मुमानअत			
٣٢	النسآء	٥	وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ
٥	الفلق	٣٠	مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ
अहले किताब का मुसल्मानों से हसद करना			
١٠٩	البقرة	١	وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
तकब्बुर की मुमानअत			
٣٧	بنیٓ اسرآءیل	١٥	وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا
١٨	لقمٰن	٢١	وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا
तकब्बुर करने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द हैं			
٣٦	النسآء	٥	لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
١٨	لقمٰن	٢١	لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ
तकब्बुर करने वाले जहन्नमी हैं			
٣٦	الاعراف	٨	وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ
तकब्बुर वालों के लिये दर्दनाक अज़ाब			
١٧٣	النسآء	٦	وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ
रियाकारी की मुमानअत			
٤٧	الانفال	١٠	وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
दिखावे के सदक़े की मुमानअत			
٢٦٤	البقرة	٣	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا
٣٨	النسآء	٥	وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
रिया मुनाफ़िक़ों की सिफ़त है			
١٤٢	النسآء	٥	اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ
٦	الماعون	٣٠	الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ
ज़ुल्म का बयान			
शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म है			
١٣	لقمٰن	٢١	اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ
ज़ालिम को क़ियामत के दिन अफ़्सोस होगा			
٢٧	الفرقان	١٩	وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
हुदूदे इलाही से तजावुज़ करने वाला ज़ालिम है			
٢٢٩	البقرة	٢	وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ
ज़ुल्म की शिकायत जाइज़ है			
١٤٨	النسآء	٦	لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ
٢٢	صٓ	٢٣	خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا
ज़ालिमीन का ठिकाना			
١٥١	اٰل عمرٰن	٤	وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ
١٧	الحشر	٢٨	فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ
ज़ालिम काम्याब नहीं			
٢٣	يوسف	١٢	اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ
काफ़िरों से दोस्ती रखने वाला ज़ालिम है			
٢٣	التوبة	١٠	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
बदला लेना जाइज़ मुआफ़ करना अफ़्ज़ल है			
٤٠	الشورٰى	٢٥	وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا
ज़ालिमों के लिये अज़ाब			
٢٩	الكهف	١٥	اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا
٢١	الشورٰى	٢٥	اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
ग़स्ब की मुमानअत			
٢٩	النسآء	٥	لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
क़त्ल का बयान			
क़त्ल की मुमानअत			
٩٣	النسآء	٥	وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
٦٨	الفرقان	١٩	وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ
एक इन्सान का क़त्ल सारी इन्सानिय्यत के क़त्ल के मुतरादिफ़ है			
٣٢	المآئدة	٦	مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ
ज़मीन में फ़साद फैलाने की सज़ा क़त्ल है			
٣٣	المآئدة	٦	اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
क़ातिल को सूली देना जाइज़ है			
٣٣	المآئدة	٦	اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ
जान का बदला जान है			
٤٥	المآئدة	٦	اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ
क़त्ले ख़ता की सज़ा			
٩٢	النسآء	٥	وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَئًا
क़त्ले अ़म्द की सज़ा जहन्नम है			
٩٣	النسآء	٥	وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا
ज़िम्मी के क़त्ल की सज़ा			
٩٢	النسآء	٥	وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ
मुन्जियात			
ज़िक्रुल्लाह			
١٥٢	البقرة	٢	فَاذْكُرُوْنِیْٓ اَذْكُرْكُمْ
١٩١	اٰل عمرٰن	٤	اَلَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا
١٠٣	النسآء	٥	فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ
٢٠٠	الاعراف	٩	وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ
٢	الانفال	٩	اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ
٢٨	الرعد	١٣	اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ
٢٨	الكهف	١٥	وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ
٤٦	الكهف	١٥	اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ
٣٦	النور	١٨	يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ
١٧	الروم	٢١	فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ
٤١	الاحزاب	٢٢	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا
٣٥	الاحزاب	٢٢	وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
١٠	فاطر	٢٢	اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ
١٠	الجمعة	٢٨	وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत			
١٣٥	اٰل عمرٰن	٤	فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ

www.dawateislami.net

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ	١٨	المؤمنون	٣
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ	١٨	المؤمنون	٥
قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا	١٨	النور	٣٠
وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ	٢٢	الاحزاب	٣٥
وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى	٣٠	النّٰزعٰت	٤٠

तक़्वा व परहेज़ गारी

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ	٤	ال عمران	١٣٤
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ	٣	ال عمران	١٥
وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا	١٩	الفرقان	٧٤

ज़ोहद का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
زُيِّنَ لِلنَّاسِ	٣	ال عمران	١٤
وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ	٧	الانعام	٣٢
فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا	١٠	التوبة	٣٨
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا	١٤	النحل	٩٦
اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ	١٥	الكهف	٧
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ	١٥	الكهف	٤٥
وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ	٢٠	القصص	٦٠
اَلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ	٢٠	القصص	٧٩
تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ	٢٠	القصص	٨٣
وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ	٢١	العنكبوت	٦٤
فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ	٢٢	فاطر	٥

फ़क़्र का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ	٢٢	فاطر	١٥
وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ	٢٦	محمد	٣٨

अच्छी सोहबत

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ	١٥	الكهف	٢٨
كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ	١١	التوبة	١١٩

बुरी सोहबत

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ	٥	النسآء	١٤٠

रज़ा का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ	٢٤	الزمر	٥٣
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي	٢٥	الشورٰى	٥

मह़ब्बत, शौक़ और रिज़ाए इलाही का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا	٢	البقرة	١٦٥
يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ	٦	المآئدة	٥٤
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ	٧	المآئدة	١١٩
اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ	١٠	التوبة	٢٤
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ	١٠	التوبة	٧٢

तवक्कुल का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ	٤	ال عمران	١٥٩
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ	٥	النسآء	٨١
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ	١٠	الانفال	٤٩
اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ	١٢	هود	٥٦
وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ	١٩	الفرقان	٥٨
وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ	١٩	الشعرآء	٢١٧
فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ	٢٠	النمل	٧٩

तफ़क्कुर का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ	٢	البقرة	٢١٩
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ	٤	ال عمران	١٩٠
وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ	٤	ال عمران	١٩١
هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى	٧	الانعام	٥٠
اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ	٢١	الروم	٨
مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا	٢٢	سبا	٤٦

मुसल्मान मर्द व औरत के औसाफ़

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ	٢٢	الاحزاب	٣٥

गुनाहों से इज्तिनाब

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ	٥	النسآء	٣١
وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ	١٥	بنی اسرآءیل	٣٢

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ	٥	النسآء	٦٤
وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ	٩	الانفال	٣٣
وَاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ	١١	هود	٣
وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ	١٢	هود	٥٢
بِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ	٢٦	الذّٰريٰت	١٨
فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ	٢٩	نوح	١٠

तौबा का बयान

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ	٢	البقرة	٢٢٢
اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ	٤	النسآء	١٧
فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ	٦	المآئدة	٣٩
ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا	٩	الاعراف	١٥٣
ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ	١١	هود	٣
اِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ	١٦	طٰه	٨٢
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ	١٩	الفرقان	٧٠
وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ	٢٥	الشورٰى	٢٥
تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا	٢٨	التحريم	٨
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ	١٦	مريم	٦٠
فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا	٢٤	المؤمن	٧
وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ	٢٦	الحجرات	١١

ख़ौफ़े ख़ुदा

आयत	पारह	सूरह	अल आयह
اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ	٩	الانفال	٢
هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ	١٨	المؤمنون	٥٧
يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ	١٤	النحل	٥٠
يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ	١٨	النور	٣٧
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا	٢١	السجدة	١٦
وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ	١٨	النور	٥٢
مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ	٢٦	ق	٣٣
اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ	٢٧	الطور	٢٦
اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا	٢٩	الدهر	١٠

सलाम व जवाब के आदाब

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٦	النسآء	٥	وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا

घर में दाख़िले के आदाब

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٧	النور	١٨	لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ
٦١	النور	١٨	فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا

इख़्लास का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٦٥	البقرة	٣	وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
١٤٦	النسآء	٥	اَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ
٣	الزمر	٢٣	اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ
٥	البينة	٣٠	اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ

सब्र का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٥	البقرة	١	وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ
١٥٣	البقرة	٢	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا

सब्र हिम्मत वाले कामों में से है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤٣	الشورٰى	٢٥	وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ

सब्र का बदला जन्नत है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢	الدهر	٢٩	جَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً

सब्र करने पर दुगना अज्र मिलता है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٤	القصص	٢٠	اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ

सब्र करने वाले कामयाब हैं

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١١	المؤمنون	١٨	اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों के साथ है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٥٣	البقرة	٢	اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों की मदद फ़रमाता है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٤	الانعام	٧	فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا

सब्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हो

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٢	الرعد	١٣	وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ

सब्र करने वालों के लिये बख़्शिश

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١	هود	١٢	اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٤	الرعد	١٣	سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ
٩٦	النحل	١٤	صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
٤٦	الكهف	١٥	خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
٦٤	العنكبوت	٢١	اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ
٢٠	المزمل	٢٩	تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا
٧	الزلزال	٣٠	فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

नेकों की रफ़ाक़त

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥٢	الانعام	٧	وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ

नेकी व परहेज़ गारी पर इआनत

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢	المآئدة	٦	تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى

वुस्अ़ते रिज़्क़

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٩	سبا	٢٢	اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

कस्बे हलाल

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٠	الجمعة	٢٨	فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ

अख़ुव्वत

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١	الانفال	٩	اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ
١٠	الحجرات	٢٦	اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ

बुराई को भलाई से टाल

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٤	حٰم السجدة	٢٤	اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

मुसलमान की ऐबपोशी

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٢	الحجرات	٢٦	لَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ

गुफ़्तगू के आदाब

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٨٣	البقرة	١	وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
٢٦٣	البقرة	٣	قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ
٦٣	الفرقان	١٩	اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ
١٨	لقمٰن	٢١	وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

ज़बान की हिफ़ाज़त (ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना)

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٨	قٓ	٢٦	مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ

सच का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١٩	المآئدة	٧	يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ
٣٥	الاحزاب	٢٢	وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦٨	الانعام	٧	فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى
٢٢	المجادلة	٢٨	لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

कुफ़्फ़ार से दोस्ती की मुमानअ़त

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٥١	المآئدة	٦	لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰى

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये दोस्ती करना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٦٧	الزخرف	٢٥	اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ

दोस्ती का नुस्ख़ा

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٣٤	حٰم السجدة	٢٤	اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये दुश्मनी करना

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢٣	التوبة	١٠	لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ
٢٢	المجادلة	٢٨	لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

नेकों से दुश्मनी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुश्मनी है

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١	الممتحنة	٢٨	لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ

सुल्ह का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١١٤	النسآء	٥	لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ
١٢٨	النسآء	٥	وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا
١	الانفال	٩	اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ
٩	الحجرات	٢٦	وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
١٠	الحجرات	٢٦	اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ

निय्यत का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٩٢	ال عمرٰن	٤	فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ
١٠٠	النسآء	٥	فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ का बयान

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٢	المؤمنون	١٨	هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ
٦٣	الفرقان	١٩	عِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ

नेकियों का अज्र

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
١٤	ال عمرٰن	٣	وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ
١١٥	ال عمرٰن	٤	وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ
١١٥	هود	١٢	لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
सब्र का बदला सलामती है			
٢٤	الرعد	١٣	سَلٰمٌ عَلَیْکُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ
शुक्र का बयान			
١٥٢	البقرة	٢	وَاشْکُرُوْا لِیْ وَلَا تَکْفُرُوْنِ
١٧٢	البقرة	٢	وَاشْکُرُوْا لِلّٰہِ اِنْ کُنْتُمْ
٧	ابراهيم	١٣	لَئِنْ شَکَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّکُمْ
١١٤	النحل	١٤	وَاشْکُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰہِ
٩	السجدة	٢١	قَلِیْلًا مَّا تَشْکُرُوْنَ
١٥	سبا	٢٢	وَاشْکُرُوْا لَہٗ
١٥	الاحقاف	٢٦	اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْکُرَ
आ़जिज़ी का सवाब			
٢٩	الفتح	٢٦	رُحَمَآءُ بَیْنَھُمْ تَرٰىھُمْ رُکَّعًا
गुस्सा पीने व ह़िल्म करने का बयान			
١٣٤	ال عمرٰن	٤	وَالْکٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ
٢٢	الرعد	١٣	صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْہِ رَبِّہِمْ
٣٧	الشورٰى	٢٥	اِذَا مَا غَضِبُوْا ھُمْ یَغْفِرُوْنَ
١٤	التغابن	٢٨	اِنْ تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا
٣٤	حٰمٓ السجدة	٢٤	اِدْفَعْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ
दर गुज़र का बयान			
٢٦٣	البقرة	٣	مَغْفِرَۃٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَۃٍ
١٣٤	ال عمرٰن	٤	وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ
٤٠	الشورٰى	٢٥	فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُہٗ
सुवाल की मज़म्मत			
٢٧٣	البقرة	٣	لَا یَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا
٨	الم نشرح	٣٠	وَاِلٰی رَبِّکَ فَارْغَبْ
तोहमत से बचना			
٤	النور	١٨	وَالَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ
٢٣	النور	١٨	اِنَّ الَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
मज़ाक़ उड़ाने की मुमानअ़त			
١١	الحجرات	٢٦	لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ
त़ा'ना देने की मुमानअ़त			
١١	الحجرات	٢٦	وَلَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَکُمْ
एक दूसरे के बुरे नाम न रखो			
١١	الحجرات	٢٦	لَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ
ग़ीबत की मज़म्मत			
١٢	الحجرات	٢٦	وَلَا یَغْتَبْ بَّعْضُکُمْ بَعْضًا
बद गुमानी से इज्तिनाब			
١٢	النور	١٨	لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْہُ ظَنَّ
١٢	الحجرات	٢٦	اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ
कसरते गुमान की मुमानअ़त			
١٢	الحجرات	٢٦	اِجْتَنِبُوْا کَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ
निगाहों की हि़फ़ाज़त			
٣٠	النور	١٨	یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِھِمْ
वफ़ाए अ़हद			
١	المآئدة	٦	یٰۤاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا
٢٠	الرعد	١٣	اَلَّذِیْنَ یُوْفُوْنَ بِعَھْدِ اللّٰہِ
मिस्कीन से हुस्ने सुलूक			
٨٣	البقرة	١	وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ
٢١٥	البقرة	٢	وَالْمَسٰکِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ
٣٦	النسآء	٥	وَالْمَسٰکِیْنِ وَالْجَارِ
यतीमों का एह़तिराम			
٨٣	البقرة	١	وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ
٢١٥	البقرة	٢	وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ
٣٦	النسآء	٥	وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ
यतीम का माल ज़ुल्मन खाने की मुमानअ़त			
٢	النسآء	٤	وَاٰتُوا الْیَتٰمٰۤی اَمْوَالَھُمْ
١٠	النسآء	٤	اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْکُلُوْنَ اَمْوَالَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
यतीम को झिड़कने की मुमानअ़त			
٩	الضحٰى	٣٠	فَاَمَّا الْیَتِیْمَ فَلَا تَقْھَرْ
हुक़ूक़ का बयान			
वालिदैन के हुक़ूक़			
٨٣	البقرة	١	وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا
٢١٥	البقرة	٢	مِّنْ خَیْرٍ فَلِلْوَالِدَیْنِ
٣٦	النسآء	٥	وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا
٢٣	بنیۤ اسرآءیل	١٥	وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا
٨	العنکبوت	٢٠	وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْہِ
١٤	لقمٰن	٢١	وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْہِ
١٥	لقمٰن	٢١	صَاحِبْھُمَا فِی الدُّنْیَا
١٥	الاحقاف	٢٦	وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْہِ
औलाद के हुक़ूक़			
٣١	بنیۤ اسرآءیل	١٥	وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَکُمْ خَشْیَۃَ
٦	التحریم	٢٨	قُوْۤا اَنْفُسَکُمْ وَاَھْلِیْکُمْ
ज़ौजा के हुक़ूक़			
١٩	النسآء	٤	وَعَاشِرُوْھُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
٣٦	النسآء	٥	وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ
रिश्तेदारों के हुक़ूक़			
٨٣	البقرة	١	وَذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی
٢١٥	البقرة	٢	فَلِلْوَالِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ
١	النسآء	٤	تَسَآءَلُوْنَ بِہٖ وَالْاَرْحَامَ
٧٥	الانفال	١٠	اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُھُمْ
٢١	الرعد	١٣	یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰہُ
क़त्ए़ रेह़मी की मुमानअ़त			
٢٧	البقرة	١	وَیَقْطَعُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰہُ بِہٖ
٢٢	محمد	٢٦	وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَکُمْ
पड़ोसियों के हुक़ूक़			
٣٦	النسآء	٥	وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
हक़्क़े सोहबत			
٣٦	النسآء	٥	وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ
विरासत के मसाइल			
मां बाप का हिस्सा			
١١	النسآء	٤	وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ
ख़ावन्द का हिस्सा			
١٢	النسآء	٤	وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ
١٢	النسآء	٤	فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ
अख़्याफ़ी (मां शरीक) भाई का हिस्सा			
١٢	النسآء	٤	وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ
١٢	النسآء	٤	فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ
बीवी का हिस्सा			
١٢	النسآء	٤	وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ
١٢	النسآء	٤	فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
बेटी का हिस्सा			
١١	النسآء	٤	وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا
١١	النسآء	٤	لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ
हक़ीक़ी बहन का हिस्सा			
١٧٦	النسآء	٦	وَلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ
निकाह़ का बयान			
٣	النسآء	٤	فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ
٢٤	النسآء	٥	اُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ
٣٢	النور	١٨	وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ
मह़रमात का बयान			
٢٢١	البقرة	٢	وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ
٢٢	النسآء	٤	وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ
रज़ाअ़त का बयान			
٢٣	النسآء	٤	وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْۤ اَرْضَعْنَكُمْ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
निकाह़ सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام है			
٢٦	النسآء	٥	سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
٣٨	الرعد	١٣	وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً
٣٨	الاحزاب	٢٢	سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيْنَ خَلَوْا
٣٩	الاحزاب	٢٢	يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ
वली का बयान			
٢٣٢	البقرة	٢	فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ
٣٢	النور	١٨	وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ
मह्र का बयान			
٢٣٧	البقرة	٢	وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً
٤	النسآء	٤	وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ
٢٠	النسآء	٤	وَاٰتَيْتُمْ اِحْدٰهُنَّ قِنْطَارًا
٥	المآئدة	٦	اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
٥٠	الاحزاب	٢٢	قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
अगर इन्साफ़ न कर सके तो सिर्फ़ एक औ़रत से निकाह़ करे			
٣	النسآء	٤	فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا
औ़रत पर किसी का जब्र जाइज़ नहीं			
١٩	النسآء	٤	لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ
औ़रत अगर ना फ़रमानी करे तो उस को नसीह़त की जाए			
٣٤	النسآء	٥	فَعِظُوْهُنَّ
अगर बाज़ न आए तो उन के साथ सोना तर्क कर दो			
٣٤	النسآء	٥	وَاهْجُرُوْهُنَّ فِى الْمَضَاجِعِ
अगर फिर भी बाज़ न आए तो हलकी मार की इजाज़त है			
٣٤	النسآء	٥	وَاضْرِبُوْهُنَّ
अगर बीवी पसन्द न भी हो तो नेकी के साथ रखो			
١٩	النسآء	٤	وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
मर्द और औ़रत अपनी कमाई में ख़ुद मुख़्तार हैं			
٣٢	النسآء	٥	لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا
त़लाक़ का बयान			
٢٢٩	البقرة	٢	اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ص فَاِمْسَاكٌ
١	الطلاق	٢٨	فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ
दो त़लाक़ के बा'द उसी शोहर से निकाह़ जाइज़ है			
٢٣١	البقرة	٢	وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
٢٣٢	البقرة	٢	وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
तीन त़लाक़ के बा'द रुजूअ़ नहीं			
٢٣٠	البقرة	٢	فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ
त़लाक़ पर गवाही मुस्तह़ब है			
٢	الطلاق	٢٨	وَاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ
त़लाक़ सिपुर्द करने का बयान			
٢٨	الاحزاب	٢١	اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ
ईलाअ का बयान			
٢٢٦	البقرة	٢	لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ
रज्अ़त का बयान			
٢٢٨	البقرة	٢	وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ
٢٢٩	البقرة	٢	فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ
٢٣٠	البقرة	٢	فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ
٢٣١	البقرة	٢	فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
रज्अ़त में गवाह बनाना मुस्तह़ब है			
٢	الطلاق	٢٨	وَاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ
ख़ुलअ़ का बयान			
٢٢٩	البقرة	٢	فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا
ज़िहार का बयान			
٢	المجادلة	٢٨	اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ
٣	المجادلة	٢٨	وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ

www.dawateislami.net

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
ज़िहार का कफ़्फ़ारा			
٤	المجادلة	٢٨	فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
लिआन का बयान			
٤	النور	١٨	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ
٦	النور	١٨	فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ
٨	النور	١٨	اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ
इद्दत का बयान			
١	الطلاق	٢٨	اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ
त़लाक़ वाली की इद्दत			
٢٢٨	البقرة	٢	وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ
٤	الطلاق	٢٨	فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ
बेवा औरतों की इद्दत			
٢٣٤	البقرة	٢	وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ
ख़ल्वत से पहले त़लाक़ देने पर इद्दत नहीं			
٤٩	الاحزاب	٢٢	اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ
सोग का बयान			
٢٣٥	البقرة	٢	وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
नफ़क़ा का बयान			
٢٣٣	البقرة	٢	اَلْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ
٦	الطلاق	٢٨	اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
٧	الطلاق	٢٨	لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ
ज़ीनत का बयान			
١٤	ال عمرٰن	٣	زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ
٣١	الاعراف	٨	خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
पर्दे का बयान			
٣٠	النور	١٨	يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ
٣١	النور	١٨	قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ
٥٩	الاحزاب	٢٢	يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
पर्दे के अह़काम			
٣١	النور	١٨	وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ
٣٣	الاحزاب	٢٢	وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ
٥٣	الاحزاب	٢٢	وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا
٥٩	الاحزاب	٢٢	قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ
बूढ़ी औरतों का पर्दे में रहना बेहतर है			
٦٠	النور	١٨	وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ
औरतों को घरों में रहने का हुक्म है			
٣٣	الاحزاب	٢٢	وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ
किन लोगों से पर्दे का हुक्म नहीं			
٣١	النور	١٨	وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ
घर में आने जाने के आदाब			
٢٧	النور	١٨	لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ
٢٩	النور	١٨	لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
٥٨	النور	١٨	لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ
٥٩	النور	١٨	وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ
अमानत का बयान			
٢٨٣	البقرة	٣	فَلْيُؤَدِّ الَّذِی اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
٥٨	النسآء	٥	اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا
٢٧	الانفال	٩	الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا
٨	المؤمنون	١٨	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ
इजारे का बयान			
٢٧	القصص	٢٠	اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ
इकराह का बयान			
١٠٦	النحل	١٤	مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ
٣٣	النور	١٨	وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ
हज्र (तसर्रुफ़ात से रोकने) का बयान			
٥	النسآء	٤	لَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
ग़स्ब का बयान			
١٨٨	البقرة	٢	وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ
ज़ब्ह़ का बयान			
٣	المآئدة	٦	وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ
١١٨	الانعام	٨	فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ
١٢١	الانعام	٨	وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ
वोह जानवर जो ह़राम हैं			
١٧٣	البقرة	٢	اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ
٣	المآئدة	٦	حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ
ग़ैरे ख़ुदा की त़रफ़ निस्बत करने से जानवर ह़राम नहीं होते			
١٠٣	المآئدة	٧	مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ
जान बचाने की ख़ात़िर ह़राम चीज़ें खा सकते हैं			
١٧٣	البقرة	٢	فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
١٤٥	الانعام	٨	فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
١١٥	النحل	١٤	فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
क़सम का बयान			
٢٢٤	البقرة	٢	وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً
٢٢٥	البقرة	٢	لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ
٧٧	ال عمرٰن	٣	اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ
٨٩	المآئدة	٧	لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ
٩١	النحل	١٤	وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ
٩٤	النحل	١٤	وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ
٢٢	النور	١٨	وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ
١٦	المجادلة	٢٨	اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً
झूटी क़सम की मज़म्मत			
٧٧	ال عمرٰن	٣	يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
नेकी न करने पर क़सम खाने की मुमानअ़त			
٢٢٤	البقرة	٢	وَلَا تَجۡعَلُوا اللّٰهَ عُرۡضَةً
٢٢	النور	١٨	وَلَا يَاۡتَلِ اُولُوا الۡفَضۡلِ
क़सम पूरी करने का हुक्म			
٩١	النحل	١٤	وَاَوۡفُوۡا بِعَهۡدِ اللّٰهِ
क़सम का कफ़्फ़ारा			
٨٩	المآئدة	٧	فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطۡعَامُ عَشَرَةِ
٢	التحريم	٢٨	قَدۡ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمۡ تَحِلَّةَ
मन्नत का बयान			
٢٧٠	البقرة	٣	وَمَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ مِّنۡ نَّفَقَةٍ
٢٣	الاحزاب	٢١	صَدَقُوۡا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ
रोज़ी कमाने का बयान			
٢٧٥	البقرة	٣	وَاَحَلَّ اللّٰهُ الۡبَيۡعَ وَحَرَّمَ
٨٨	المآئدة	٧	وَكُلُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
٣٧	النور	١٨	لَا تُلۡهِيۡهِمۡ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيۡعٌ
तिजारत के लिये ज़मीनी व समुन्दरी सफ़र करना जाइज़ है			
١٤	النحل	١٤	سَخَّرَ الۡبَحۡرَ لِتَاۡكُلُوۡا مِنۡهُ
٦٦	بنیٓ اسرآءِيل	١٥	يُزۡجِىۡ لَكُمُ الۡفُلۡكَ
٧٣	القصص	٢٠	وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ
तिजारत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है			
١٢	بنیٓ اسرآءِيل	١٥	لِتَبۡتَغُوۡا فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكُمۡ
١٠	الجمعة	٢٨	وَابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ
मर्द व औ़रत दोनों तिजारत कर सकते हैं			
٣٢	النسآء	٥	لِلرِّجَالِ نَصِيۡبٌ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
लेन देन के मुआ़मलात में लिखने की तरग़ीब			
٢٨٢	البقرة	٣	اِذَا تَدَايَنۡتُمۡ بِدَيۡنٍ
क़ज़ा का बयान			
٥٨	النسآء	٥	وَاِذَا حَكَمۡتُمۡ بَيۡنَ النَّاسِ
٤٥	المآئدة	٦	وَمَنۡ لَّمۡ يَحۡكُمۡ بِمَاۤ اَنۡزَلَ
٢٦	صٓ	٢٣	فَاحۡكُمۡ بَيۡنَ النَّاسِ بِالۡحَقِّ
गवाही का बयान			
٢٨٢	البقرة	٣	وَاسۡتَشۡهِدُوۡا شَهِيۡدَيۡنِ
٢٨٣	البقرة	٣	وَلَا تَكۡتُمُوا الشَّهَادَةَ
वकालत का बयान			
١٩	الكهف	١٥	فَابۡعَثُوۡۤا اَحَدَكُمۡ بِوَرِقِكُمۡ
कफ़ालत का बयान			
٤٤	اٰل عمرٰن	٣	اَيُّهُمۡ يَكۡفُلُ مَرۡيَمَ
١٢	القصص	٢٠	يَكۡفُلُوۡنَهٗ لَكُمۡ وَهُمۡ لَهٗ
ख़ुदकुशी की मुमानअ़त			
٢٩	النسآء	٥	وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ
दम करने का बयान			
٤٩	اٰل عمرٰن	٣	فَاَنۡفُخُ فِيۡهِ فَيَكُوۡنُ
अपने नफ़्स का मुहासबा (फ़िक्रे मदीना)			
٣٦	بنیٓ اسرآءِيل	١٥	اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔوۡلًا
١٨	الحشر	٢٨	وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ
٩	الشمس	٣٠	قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰهَا
नेकी की दा'वत			
١١٠	اٰل عمرٰن	٤	تَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ
٧١	التوبة	١٠	يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ
١٢٥	النحل	١٤	اُدۡعُ اِلٰى سَبِيۡلِ رَبِّكَ

अल आयह	सूरह	पारह	आयत
٤١	الحج	١٧	وَاَمَرُوۡا بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَهَوۡا
राहे ख़ुदा में सफ़र करना			
١٠٠	النسآء	٥	مَنۡ يَّخۡرُجۡ مِنۡۢ بَيۡتِهٖ
١٢٢	التوبة	١١	فَلَوۡلَا نَفَرَ مِنۡ كُلِّ فِرۡقَةٍ
नेकी की तरग़ीब दिलाना (इन्फ़िरादी कोशिश)			
١٢٥	النحل	١٤	جَادِلۡهُمۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ
٥٥	الذّٰريٰت	٢٧	ذَكِّرۡ فَاِنَّ الذِّكۡرٰى تَنۡفَعُ
अमीर की इत़ाअ़त			
٥٩	النسآء	٥	وَاُولِى الۡاَمۡرِ مِنۡكُمۡ
बैअ़त की अहम्मिय्यत			
٧١	بنیٓ اسرآءِيل	١٥	نَدۡعُوۡا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمۡ
١٠	الفتح	٢٦	اِنَّ الَّذِيۡنَ يُبَايِعُوۡنَكَ
١٨	الفتح	٢٦	يُبَايِعُوۡنَكَ تَحۡتَ الشَّجَرَةِ
١٢	الممتحنة	٢٨	يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اِذَا جَآءَكَ
मश्वरा करना			
١٥٩	اٰل عمرٰن	٤	وَشَاوِرۡهُمۡ فِى الۡاَمۡرِ
٣٨	الشورٰى	٢٥	اَمۡرُهُمۡ شُوۡرٰى بَيۡنَهُمۡ
चोरी की सज़ा			
٣٨	المآئدة	٦	وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
डकेती की सज़ा			
٣٣	المآئدة	٦	اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيۡنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

"कन्ज़ुल ईमान" और "दा'वते इस्लामी"

क़ुरआने मजीद व फ़ुरक़ाने ह़मीद के तराजिम का सिलसिला फ़ारसी ज़बान से शुरूअ़ हुवा जो ता दमे तह़रीर उर्दू, इंग्लिश, फ़्रान्सीसी, बंगला, हिन्दी, सिन्धी, गुजराती, पश्तो, पंजाबी समेत 100 से ज़ाइद ज़बानों तक फैल चुका है। कई ज़बानें तो ऐसी हैं कि उन में एक से ज़ाइद तराजिम मौजूद हैं, सिर्फ़ उर्दू ज़बान में अब तक मुतअ़द्दिद तराजिम मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं, और इन तराजिम में जो फ़ज़्लो कमाल चौदहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के तरजमए क़ुरआन "कन्ज़ुल ईमान" को ह़ासिल है वोह किसी और को ह़ासिल नहीं। तरजमा करना इतना आसान नहीं जितना समझा जाता है क्यूं कि तरजमा अस्ल किताब का गोया वुजूदे सानी होता है, फिर "किताबुल्लाह" का तरजमा करना तो और भी मुश्किल है। "तरजमए क़ुरआन" को मो'तबर क़रार देने के लिये उ़मूमन इन उमूर को पेशे नज़र रखा जाता है : (1) मुतर्जिम की वजाहते इल्मी (2) अन्दाज़े बयान की शुस्तगी (3) ह़क़्क़े तरजुमानी की अदाएगी (4) शरीअ़त की पासदारी, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **कन्ज़ुल ईमान** में येह सब ख़ूबियां ब दरजए अतम मौजूद हैं। साहि़बे कन्ज़ुल ईमान आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अ़क़ाइद, कलाम, तफ़्सीर, ह़दीस, उसूले ह़दीस, फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह, तसव्वुफ़, सुलूक, अदब, लुग़त, तारीख़, मुनाज़रा, तक्सीर, तौक़ीत, हैअत जैसे कमो बेश 55 उ़लूम पर उ़बूर रखने वाले माहिर आ़लिम व मुफ़्ती और फ़क़ीह थे कि दरजनों उ़लूमो फ़ुनून पर आप की सेंकड़ों तसानीफ़ मौजूद हैं, आप की तसानीफ़े मुबारका में आप की इल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत और तह़क़ीक़ी बसीरत के जल्वे दिखाई देते हैं, बिल ख़ुसूस 30 ज़ख़ीम जिल्दों, तक़रीबन बाईस हज़ार (22000) सफ़ह़ात, छ[6] हज़ार आठ सो सैंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात और दो सो छ (206) रसाइल पर मुश्तमिल आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़तावा का मज्मूआ़ "**फ़तावा रज़विय्या**" तो बह़्रे फ़िक़्ह में ग़ोत़ा लगाने वालों के लिये ऑक्सीजन का काम देता है। आ'ला ह़ज़रत رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **कन्ज़ुल ईमान** में क़ुरआने पाक के मत़ालिब व मआ़नी को उर्दू ज़बान में मुन्तक़िल करने के लिये उन अल्फ़ाज़ व मुहा़वरात का ख़ुसूसिय्यत के साथ इस्ति'माल किया जो आप के दौर में राइज थे। तरजमे का मक़्सद मुरादे मुतकल्लिम (या'नी कलाम करने वाले की मुराद) को वाज़ेह़ करना है न कि मह़्ज़ एक ज़बान के जुम्ले को दूसरी ज़बान में बदल देना, **कन्ज़ुल ईमान** इस ह़ुस्ने मा'नवी से ब ख़ूबी आरास्ता है। अपने तो एक त़रफ़ रहे ग़ैरों ने भी सख़्त मुख़ालफ़त के बा वुजूद ए'तिराफ़ किया है कि अव्वल ता आख़िर कन्ज़ुल ईमान में एक भी लफ़्ज़ ख़िलाफ़े शरीअ़त नहीं बल्कि इस बात का ख़ास ख़याल रखा गया है कि जब आयत में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का ज़िक्रे पाक आया तो तरजमा करते वक़्त उस की अ़ज़मतो किब्रियाई पेशे नज़र रही, और जब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام का तज़्किरा हुवा तो मक़ामे रिसालत के शायाने शान अल्फ़ाज़ लिखे गए।

तरजमए कन्ज़ुल ईमान कब और कैसे लिखा गया ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ़ 52 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह" सफ़्हा 17 पर शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कुछ यूं लिखते हैं : सह़ीह़ और अग़लात़ से मुबर्रा, अह़ादीसे नबविय्या व अक़्वाले अइम्मा के मुत़ाबिक़ एक तरजमए क़ुरआन की ज़रूरत मह़सूस करते हुए आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के मुरीद व ख़लीफ़ा सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ग़ालिबन सिने 1330 हिजरी में तरजमए क़ुरआने पाक के लिये आ'ला ह़ज़रत की बारगाहे अ़ज़्मत में दरख़्वास्त पेश की तो इर्शाद फ़रमाया : "येह तो बहुत ज़रूरी है मगर छपने की क्या सूरत होगी ? इस की त़बाअ़त का कौन एहतिमाम करेगा ? बा वुज़ू कॉपियों को लिखना, बा वुज़ू कॉपियों और ह़ुरूफ़ों की तस्ह़ीह़ करना और तस्ह़ीह़ भी ऐसी हो कि ए'राब नुक़्ते़ या अ़लामतों की भी ग़लत़ी न रह जाए फिर येह सब चीज़ें हो जाने के बा'द सब से बड़ी मुश्किल तो येह है कि प्रेस मेन हमा वक़्त बा वुज़ू रहे, बिग़ैर वुज़ू न पथ्थर को छूए और न काटे, पथ्थर काटने में भी एह़तियात़ की जाए और छपने में जो जोड़ियां निकली हैं उन को भी बहुत एह़तियात़ से रखा जाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : "اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो बातें ज़रूरी हैं उन को पूरी करने की कोशिश की जाएगी, बिलफ़र्ज़ मान लिया जाए कि हम से ऐसा न हो सका तो जब एक चीज़ मौजूद है तो हो सकता है आयिन्दा कोई शख़्स इस के त़ब्अ़ करने का इन्तिज़ाम करे और मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ाएदा पहुंचाने में कोशिश करे और अगर इस वक़्त येह काम न हो सका तो आयिन्दा इस के न होने का हम को बड़ा अफ़्सोस होगा।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस मा'रूज़ के बा'द तरजमे का काम शुरूअ़ कर दिया गया। तरजमे का त़रीक़ा येह था कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ज़बानी त़ौर पर आयाते करीमा का तरजमा बोलते जाते और सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस को लिखते रहते लेकिन येह तरजमा इस त़रह़ पर नहीं था कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पहले कुतुबे तफ़्सीर व लुग़त को मुलाह़ज़ा फ़रमाते बा'दहू आयत के मा'ना को सोचते फिर तरजमा बयान करते बल्कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़ुरआने मजीद का फ़िल बदीह बरजस्ता (बिग़ैर सोचे) तरजमा ज़बानी त़ौर पर इस त़रह़ बोलते जाते जैसे कोई पुख़्ता याद दाश्त का ह़ाफ़िज़ अपनी क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा पर बिग़ैर ज़ोर डाले क़ुरआन शरीफ़ रवानी से पढ़ता जाता है। फिर जब ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह और दीगर उ़लमाए ह़ाज़िरीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तरजमे का कुतुबे तफ़ासीर से तक़ाबुल करते तो येह देख कर ह़ैरान रह जाते कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का येह बरजस्ता फिल बदीह तरजमा तफ़ासीरे मो'तबरा के बिल्कुल मुत़ाबिक़ है। अल ग़रज़ इसी क़लील वक़्त में येह तरजमे का काम होता रहा। بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰى सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मसाइये जमीला से

www.dawateislami.net

ख़ातिर ख़्वाह काम्याबी हुई और एक साल से भी कम मुद्दत में "तरजमए कन्ज़ुल ईमान" मुकम्मल हो गया, यूं मुसल्मानों की कसीर ता'दाद मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के लिखे हुए कुरआने पाक के सहीह़ तरजमे "कन्ज़ुल ईमान" से मुस्तफ़ीद हो कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (या'नी सदरुश्शरीअ़ह) की आज भी मम्नून है।

आज की दुन्या

आज ज़राइए इब्लाग़ इतने तेज़ रफ़्तार हो चुके हैं कि सारी दुन्या गोया एक घराने की मिस्ल हो गई है, इस के किसी भी गोशे में कोई वाक़िआ़ हो, पूरी दुन्या के लोग उसी वक़्त उस से आगाह हो जाते हैं जैसे कि एक घर के दो कमरों का मुआ़मला हो। सुब्ह़ के वक़्त पैदा होने वाला फ़ितना शाम तक पल कर ऐसा जवान हो चुका होता है कि उस से मुक़ाबला दुश्वार हो जाता है। ऐसे ना गुफ़्ता बेह ह़ालात में जब कि इस्लाम का लबादा ओढ़ कर इस्लाम दुश्मन अ़नासिर मुसल्मानों को इल्मे दीन सिखाने के नाम पर ईमान की दौलत को लूटने और किरदार की अ़ज़्मत को दाग़दार करने की मज़्मूम कोशिशों में मसरूफ़ हैं, नीज़ कुरआन फ़ह्मी के नाम पर मुसल्मानों को कुरआनी ता'लीमात से दूर से दूर करते चले जा रहे हैं लिहाज़ा बात़िल को मिटाने के लिये और ह़क़ का उजाला फैलाने के लिये जिद्दो जह्द करने की आज अशद ज़रूरत है। इस लिये जिस से जो बन पड़े एह़क़ाक़े ह़क़ के लिये कोशिशें करे। उर्दू बोलने वाले मुसल्मानों को कुरआने पाक समझ कर पढ़ने के लिये "कन्ज़ुल ईमान" पढ़ने की तरग़ीब दी जाए। आज की दुन्या दलाइल की दुन्या है इस लिये कन्ज़ुल ईमान के इम्तियाज़ी औसाफ़ का चरचा किया जाए ताकि लोगों के दिलो दिमाग़ में इस की अहम्मिय्यत रासिख़ हो जाए। इस की अहम्मिय्यत को आ़म करने के साथ साथ कन्ज़ुल ईमान के नुस्ख़ों को भी आ़म किया जाए, जिन ज़बानों में कन्ज़ुल ईमान का तरजमा हो चुका है उन की भी तश्हीर होनी चाहिये।

कन्ज़ुल ईमान को आ़म करने के ज़राएअ़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इश्क़ो महब्बत, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तरजमए कुरआन कन्ज़ुल ईमान को लोगों तक पहुंचाने और उन में मक़्बूले आ़म बनाने के लिये येह ज़राएअ़ इस्ति'माल किये जा सकते हैं : (1) बयानात (2) तह़रीरात (3) इन्फ़िरादी कोशिश (4) मसाजिद व मज़ारात में रख कर (5) वेब साइट्स (6) तोह़फ़े (7) जहेज़ (8) स्कूल्ज़ व कॉलेजिज़ और जामिआ़त (यूनीवर्सिटीज़) में आ़म करना (9) फ़तावा (10) जेलख़ाना जात में आ़म करना (11) टीवी चेनल (12) माहनामे (13) जराइद (14) किताबों की दुकानें।

www.dawateislami.net

﴾1﴿.....बयानात

मुबल्लिग़ीन या वाइज़ीन जब भी बयान करें तो दौराने बयान पढ़ी जाने वाली आयात का तरजमा "कन्ज़ुल ईमान" से पेश करें और येह वज़ाहत भी कर दें कि आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن कन्ज़ुल ईमान में इस आयत का तरजमा कुछ यूं करते हैं या कम अज़् कम तरजमा बोलने से पहले इतना ज़रूर कह दे : "तरजमए कन्ज़ुल ईमान" । इस का फ़ाएदा येह होगा कि सुनने वालों को इस का तआ़रुफ़ हो जाएगा । अगर दौराने बयान मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में कन्ज़ुल ईमान हदिय्यतन ले कर पढ़ने की तरग़ीब दिला दी जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ न कुछ इस्लामी भाई इसे ह़ासिल कर ही लेंगे और यूं कन्ज़ुल ईमान को आ़म करने में मदद मिलेगी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى का बरसहा बरस से मा'मूल है कि अपने बयानात में आयाते क़ुरआनिया का तरजमा उ़मूमन कन्ज़ुल ईमान ही से पेश करते हैं और सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का ज़िक्रे ख़ैर कुछ इस अन्दाज़ में करते हैं कि सुनने वाले के दिल की गहराइयों में उतर जाए और तरजमे और मुतर्जिम (या'नी तरजमा करने वाले) की अहम्मिय्यत व अ़ज़्मत उस पर रोशन हो जाए, इन के तरजमा बयान करने का अन्दाज़ बारहा येह सुना गया है मसलन "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 25, सूरतुश्शूरा, आयत नम्बर 30 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ﴾ मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोह्रए आफ़ाक़ तरजमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" में इस का तरजमा कुछ यूं करते हैं : "और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस के सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआ़फ़ फ़रमा देता है ।" इलावा अज़ीं आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात में कन्ज़ुल ईमान हदिय्यतन ह़ासिल करने की तरग़ीब कुछ यूं सुनी गई है "आप तरजमए क़ुरआन लें और ज़रूर लें मगर जब भी लें सिर्फ़ो सिर्फ़ कन्ज़ुल ईमान लें कि येह एक आ़शिक़े रसूल और वलिय्ये कामिल का तरजमा है ।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन भी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नक़्शे क़दम पर चलते हुए इसी त़रह़ कन्ज़ुल ईमान का डंका बजाने में सरगर्मे अ़मल हैं ।

﴾2﴿.....तह़रीरात

किताब, रिसाला, मक़ाला, किसी किताब का तरजमा या कोई सा मज़्मून लिखते वक़्त तह़रीर की जाने वाली आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लिखने का इल्तिज़ाम कर लिया जाए तो इस क़लमी

www.dawateislami.net

काविश को पढ़ने वाला हर शख़्स कन्ज़ुल ईमान से मुतआ़रिफ़ हो जाएगा लेकिन येह बात पेशे नज़र रहे कि तरजमे की इब्तिदा में या उस आयत का ह़वाला देते वक़्त तरजमए कन्ज़ुल ईमान लिख दिया जाए ताकि पढ़ने वाला आसानी से समझ जाए कि इस आयत का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से लिया गया है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कन्ज़ुल ईमान से मह़ब्बत सद करोड़ मरह़बा ! तह़रीर में भी आप का मा'मूल है कि आयाते क़ुरआनिया का तरजमा इल्तिज़ामन कन्ज़ुल ईमान ही से पेश करते हैं और इसे वाज़ेह़ भी कर देते हैं। इसी त़रह़ सुन्नी उ़लमा पर मुश्तमिल दा'वते इस्लामी के इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी कामों पर मामूर मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" की तमाम कुतुब में भी आयात का तरजमा कन्ज़ुल ईमान से मअ़ तस्रीहे़ नाम पेश किया जाता है।[1]

﴾3﴿.....इन्फ़िरादी कोशिश

अपने साथ तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाइयों को क़ुरआने पाक का तरजमा "कन्ज़ुल ईमान" पढ़ने की तरग़ीब दी जाए इस त़रह़ "कन्ज़ुल ईमान" का तआ़रुफ़ इन्तिहाई मुअस्सिर अन्दाज़ में होगा।

﴾4﴿.....मसाजिद व मज़ारात में रखना

मुम्किना सूरत में मसाजिद व मज़ारात के अन्दर कन्ज़ुल ईमान होना चाहिये इस त़रह़ नमाज़ी और ज़ाइर इस्लामी भाई भी कन्ज़ुल ईमान पढ़ने की सआ़दत पाते रहेंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में हर ज़ैली ह़ल्क़े[2] में "अल मदीना लाएब्रेरी" के क़ियाम का हदफ़ है, इस लाएब्रेरी की मुजव्वज़ा कुतुबो रसाइल में कन्ज़ुल ईमान सरे फ़ेहरिस्त है, कई अ़लाक़ों में इन का क़ियाम भी अ़मल में आ चुका है।

﴾5﴿.....वेब साइट्स

जदीद टेक्नॉलोजी के इस दौर में इन्टरनेट ने दुन्या को राबिते़ की लड़ी में पिरो दिया है। इस के ज़रीए़ हम अपना पैग़ाम इन्तिहाई कम वक़्त में दुन्या के कोने कोने तक पहुंचा सकते हैं। कन्ज़ुल ईमान की तश्हीर के लिये इन्टरनेट का इस्ति'माल भी बहुत मुफ़ीद है, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ैज़ से इस मुआ़मले में भी दा'वते इस्लामी ने अच्छी पेश रफ़्त की है, दुन्या भर में "फ़ैज़े रज़ा" और "फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान" की धूमें मचाने के मुक़द्दस जज़्बे के पेशे नज़र दा'वते इस्लामी ने अपनी वेब

---

1 .....اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मजलिस के तह़त 8 शो'बाजात हैं जिन की त़रफ़ से ता दमे तह़रीर 192 से ज़ाइद कुतुब त़बाअ़त के मराह़िल से गुज़र कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं जिन में "जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार" और "बहारे शरीअ़त" (तख़रीज शुदा) सरे फ़ेहरिस्त हैं और 19 कुतुब अ़न्क़रीब मन्ज़रे आ़म पर आ जाएंगी। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

2 .....ज़ैली ह़ल्क़ा दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ है, उ़मूमन हर मस्जिद एक ह़ल्क़ा होता है जिसे ज़ैली ह़ल्क़ा कहते हैं, जहां मस्जिद न हो वहां कोई मकान या दुकान किराए पर ले कर या मालिक की इजाज़त से मदनी काम की तरकीब बनाई जाती है, हर ज़ैली ह़ल्क़े में रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द मदनी ह़ल्क़ा क़ाइम कर के इज्तिमाई त़ौर पर तीन आयात की तिलावत मअ़ तरजमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का हदफ़ है।

www.dawateislami.net

साइट www.dawateislami.net पर कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ और ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی का तफ़्सीरी ह़ाशिया "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" यूनीकोड(1) में पेश किया है, इस के इलावा दा'वते इस्लामी की "मजलिसे आई टी" ने कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान की एक सॉफ़्टवेर CD भी मक्तबतुल मदीना से जारी की है।

﴾6﴿.....तोह़फ़ा

जब भी किसी इस्लामी भाई को तोह़फ़ा देने की तरकीब हो तो उस में दीगर तह़ाइफ़ के इलावा कन्ज़ुल ईमान भी तोह़फ़े में पेश किया जाए इस त़रह़ आप के नामए आ'माल में नेकियों का ख़ज़ाना मुन्दरिज होने के साथ साथ **कन्ज़ुल ईमान** का तआ़रुफ़ भी हो जाएगा।

﴾7﴿.....जहेज़

हमारे हां उ़मूमन जहेज़ में क़ुरआने पाक भी दिया जाता है, अगर तरजमे वाला क़ुरआने करीम कन्ज़ुल ईमान दिया जाए तो इस की बरकतें सुसराल वालों को भी मिलेंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों में मदनी काम के सिलसिले में दा'वते इस्लामी के दुन्या भर में मदनी ह़ल्क़े, हफ़्तावार इज्तिमाआ़त और मुतअ़द्दद जामिअ़तुल मदीना लिल बनात और मद्रसतुल मदीना लिल बनात क़ाइम हैं। इस काम के लिये "इस्लामी बहनों की मजलिसे मुशावरत" भी क़ाइम है। अगस्त 2009 ईसवी की कारकर्दगी के मुत़ाबिक़ मुल्क में तक़्रीबन 2511 इज्तिमाआ़त होते हैं और शुरका की ता'दाद तक़्रीबन 162367 है जिन में वक़्तन फ़ वक़्तन तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान का मुत़ालआ़ करने और जहेज़ में देने की तरग़ीब दिलाई जाती है।

﴾8﴿.....स्कूल्ज़ व कॉलेजिज़ और जामिआ़त में आ़म करना

बा असर शख़्सिय्यात को चाहिये कि स्कूल्ज़ व कॉलेजिज़ और जामिआ़त (यूनीवर्सिटीज़) की लाएब्रेरियों में कन्ज़ुल ईमान रखवाने की तरकीब करें। स्कूल्ज़ व कॉलेजिज़ और जामिआ़त (यूनीवर्सिटीज़) में तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम देने वाले असातिज़ा प्रोफ़ेसर ह़ज़रात अगर दौराने तदरीस कन्ज़ुल ईमान के मह़ासिन बयान कर के इसे पढ़ने की तरग़ीब दिलाएं तो जहां त़लबा क़ुरआने पाक की सह़ीह़ तरजुमानी पाएंगे वहीं येह सिल्सिला कन्ज़ुल ईमान की तश्हीर में भी बहुत मुआ़विन होगा। स्कूल्ज़ व कॉलेजिज़ में दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने वाली मजलिस "शो'बए ता'लीम" है जो कि कॉलेजिज़ और यूनीवर्सिटीज़ के त़लबा और असातिज़ा को दा'वते इस्लामी के मदनी कामों से मुतआ़रिफ़ कराती है जिस में मद्रसुतल मदीना बालिग़ान का इन्इ़क़ाद भी है जिस के ज़रीए क़ुरआने पाक सह़ीह़ क़िराअत के साथ

1..... कम्प्यूटर की इस्त़िलाह़ में यूनीकोड टेक्स्ट Unicode Text उस लिखाई को कहते हैं जिसे उ़मूमन किसी भी लिखाई वाले सोफ़्टवेर में Copy / Paste किया जा सके।

सिखाया जाता है नीज़ मौक़अ़ की मुनासबत से कॉलेज व यूनीवर्सिटीज़ के प्रिन्सिपल, प्रोफ़ेसर, लेक्चरार, दफ़्तरी अ़मला और त़लबा को कन्ज़ुल ईमान का तआ़रुफ़ भी करवाया जाता और तोह़्फ़तन भी पेश किया जाता है इस के इ़लावा मुल्क भर में दर्से निज़ामी के लिये 112 से ज़ाइद क़ाइम जामिआ़तुल मदीना में दीगर दरजात के हज़ारों त़लबा व त़ालिबात को बिल उ़मूम और दरजए सानिया वालों को बिल ख़ुसूस तरजमए कन्ज़ुल ईमान पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है।

﴾9﴿.....फ़तावा

मुसल्मानों की कसीर ता'दाद दीनी मसाइल में शरई रहनुमाई के लिये दारुल इफ़्ता से रुजूअ़ करती है, अगर हमारे मुफ़्तियाने किराम इन फ़तावा में क़ुरआनी आयात को पेश करते हुए उन्हें तरजमए कन्ज़ुल ईमान से मुज़य्यन कर दें तो इस से भी कन्ज़ुल ईमान के आ़म होने को तरवीज मिलेगी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त मुल्क के कई शहरों में दारुल इफ़्ता बनाम ''दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत'' क़ाइम हैं जिन में जारी होने वाले फ़तावा में उ़मूमन क़ुरआनी आयात के तह़्त तरजमए कन्ज़ुल ईमान लिखा जाता है, इस के इ़लावा तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) करने वाले उ़लमा के निसाबी मुत़ालए़ में तरजमए कन्ज़ुल ईमान मअ़ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान को भी शामिल किया गया है।

﴾10﴿.....जेलख़ानों में आ़म करना

मुआ़शरे में पाए जाने वाले मुख़्तलिफ़ त़बक़ात में एक त़बक़ा जेलों में बन्द क़ैदियों का भी है और येह बात किसी से मख़्फ़ी नहीं कि जेलों में ऐसे लोगों की कसरत होती है जो उ़मूमन क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम से बे बहरा होते हैं, इसी वज्ह से नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर क़त्लो ग़ारत, फ़ायरिंग, दहशत गर्दी, तोड़फोड़, चोरी, डकेती, ज़िनाकारी, मुनश्शिय्यात फ़रोशी, जूआ और न जाने कैसे कैसे जराइम में मुब्तला हो कर बिल आख़िर जेलों में बन्द होते हैं, इन की ता'लीमो तरबियत की त़रफ़ तवज्जोह देने की सख़्त ज़रूरत है, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की ''मजलिस बराए जेलख़ाना जात'' की कोशिश है कि इन क़ैदियों में अच्छे अख़्लाक़ियात व नज़रिय्यात फ़रोग़ पाएं। इस सिल्सिले में बहुत कम मुद्दत में इस मजलिस ने ता दमे तह़रीर मुल्क भर की 53 जेलों में मदनी ह़ल्क़े क़ाइम किये हैं, येह मजलिस मुख़्तलिफ़ जेलों में बेरकों और मसाजिद का क़ियाम भी अ़मल में ला रही है। इन मसाजिद और बेरकों में मद्रसतुल मदीना बालिग़ान और मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ मसलन क़ाइदा कोर्स, शरीअ़त कोर्स, मुदर्रिस कोर्स वग़ैरा हैं जिन में तज्वीद के साथ क़ुरआने पाक पढ़ाने के साथ साथ कन्ज़ुल ईमान के ह़ल्क़े लगाए जाते हैं जब कि ता दमे तह़रीर 25 जेलों के अन्दर ''**अल मदीना लाएब्रेरी**'' का क़ियाम अ़मल में लाया जा चुका है जिन में तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान भी रखा गया है।

﴾11﴿.....टीवी चेनल के ज़रीए

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **मदनी चेनल** पर दीगर सिल्सिलों (प्रोग्राम्ज़) के साथ साथ "फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान" के नाम से एक सिलसिला भी पेश किया जा रहा है।

﴾12-13﴿.....माहनामे व जराइद

मुख़्तलिफ़ सुन्नी जामिआ़त व इदारों की त़रफ़ से माहनामे व जराइद शाएअ़ किये जाते हैं, मुदीर ह़ज़रात को चाहिये कि ह़स्बे मौक़अ़ कन्ज़ुल ईमान पर मज़ामीन लिखवा कर शाएअ़ किया करें इस त़रह़ क़ारिईन कभी तो कन्ज़ुल ईमान की तारीख़ी ह़ैसिय्यत से वाक़िफ़ होंगे तो कभी ख़ुसूसिय्यात से, कभी इस के बेहतरीन उस्लूब की मा'रिफ़त मिलेगी तो कभी इस के फ़िक्री असरात से क़ल्बो दिमाग़ मुअ़त्तर करेंगे।

﴾14﴿.....किताबों की दुकानें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के सिर्फ़ मुल्क में 300 से ज़ाइद मकातिब व बस्ते हैं जिन के ज़रीए कन्ज़ुल ईमान के लाखों नुस्ख़े फ़रोख़्त हो चुके हैं जब कि बैरूने मुल्क में मक्तबतुल मदीना की ता'दाद और कन्ज़ुल ईमान की फ़रोख़्त इस के इ़लावा है। दा'वते इस्लामी के मुल्क और बैरूने मुल्क बे शुमार हफ़्तावार और ला ता'दाद तरबियती इज्तिमाआ़त होते हैं जिन में कन्ज़ुल ईमान हदिय्यतन फ़रोख़्त करने की कोशिश की जाती है, दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में कन्ज़ुल ईमान के नुस्ख़े काफ़ी ता'दाद में हदिय्यतन फ़रोख़्त होते हैं, आज कल कुतुब मेलों का भी रवाज है, ऐसे मक़ामात पर मक्तबतुल मदीना का बस्ता लगा कर कन्ज़ुल ईमान और उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब हदिय्यतन फ़रोख़्त करने की कोशिश की जाती है।

दा'वते इस्लामी की मज़ीद काविशें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "कन्ज़ुल ईमान" को आ़म करने के सिल्सिले में "दा'वते इस्लामी" ने मज़्कूरा बाला ज़राएअ़ के इ़लावा और भी कई इक़्दामात किये हैं। इसी मुक़द्दस सिल्सिले की एक सुनहरी कड़ी रोज़ाना कम अज़ कम तीन आयात की तिलावत मअ़ तरजमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पढ़ने वाला "मदनी इन्आ़म" भी है। तफ़्सील इस इज्माल की येह है कि आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने लोगों को नेकियों का ख़ूगर बनाने और गुनाहों से उन का पीछा छुड़ाने के लिये "मदनी इन्आ़मात" के नाम से सुवालन जवाबन एक निज़ामुल ह़यात तरतीब दिया है जो कसीर मुसल्मानों में राइज है। उन में से बा'ज़ सुवालात का तअ़ल्लुक़ रोज़ाना के मा'मूलात से, बा'ज़ का हफ़्ते से, बा'ज़ का माहाना से और बा'ज़ का सालाना से है। इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, त़ुलबए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और मदनी मुन्नों और मदनी

www.dawateislami.net

मुन्नियों के लिये 40 जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27 मदनी इन्आमात हैं। इन में मुतालए के लिये सरकारे आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की तस्नीफ़े लतीफ़ "**तम्हीदुल ईमान**", उलमाए हरमैने तय्यिबैन के फ़तावा का मज्मूआ "**हुसामुल हरमैन**", ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत सदरुश्शरीअह मौलाना अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की "**बहारे शरीअत**" के मख़्सूस अब्वाब और इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की "**मिन्हाजुल आबिदीन**" के मुन्तख़ब अब्वाब शामिल हैं। किसी मुस्तनद सुन्नी आलिमे दीन की इस्लामी किताब के बारह (12) मिनट मुतालए के इलावा कन्ज़ुल ईमान से कम अज़ कम तीन आयात (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) की तिलावत का तअ़ल्लुक़ रोज़ाना के मदनी इन्आमात से है।

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है" के मदनी मक़्सद के हुसूल के लिये मदनी क़ाफ़िले 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये एक क़रिये से दूसरे क़रिये, एक शहर से दूसरे शहर और एक मुल्क से दूसरे मुल्क सफ़र करते रहते हैं उन के जद्वल में रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द इज्तिमाई तौर पर तीन आयात की तिलावत मअ़ तरजमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान होती है।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

कन्ज़ुल ईमान के सद सालह जश्न के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत का एक अहम मक्तूब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط सगे मदीना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी عُفِىَ عَنْهُ की जानिब से दा'वते इस्लामी (हिन्द) की 12 काबीनाओं के अराकीन नीज़ तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ की फ़ज़ाओं में घूमता हुवा, मज़ारे आ'ला हज़रत को चूमता हुवा, झूमता हुवा, ख़ुश गवार व पुर बहार सलाम,

اَلسَّلامُ عَلَيكُم وَرَحمةُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ ۔ اَلْحمدُ لِلّٰه رَبِّ العٰلمِينَ عَلٰى كُلِّ حال۔

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

ख़ुरशीदे इल्म उन का दरख़्शां है आज भी

जुम्ला इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को 25 मरतबा "यौमे रज़ा" मुबारक हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इम्साल सद सालह जश्ने कन्ज़ुल ईमान की धूमधाम है। यक़ीनन मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आलिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इश्क़ो महब्बत,

www.dawateislami.net

बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का "तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल ईमान" उर्दू के तमाम तराजिम पर फ़ाइक़ है। येह तरजमा तहतुल्लफ़्ज़ होने के साथ साथ मुख़्तलिफ़ मुस्तनद तफ़ासीर का मज्मूआ़ भी है, जहां कन्ज़ुल ईमान के हर हर लफ़्ज़ से रब्बुल अरबाब عَزَّوَجَلَّ के एहतिराम व आदाब के सोंते फूटते हैं, वहां शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व इक्राम के चश्मे भी उबल रहे हैं, मआ़रिफ़े क़ुरआनी और उल्फ़ते रब्बानी व शहन्शाहे ज़मानी से अपने क़ुलूब को नूरानी बनाने के लिये कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ का मुतालआ़ बेहद मुफ़ीद है। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की तरफ़ से बा अ़मल बनाने के लिये इस्लामी भाइयों को 72, इस्लामी बहनों को 63 नीज़ तलबा को दिये हुए 92 "मदनी इन्आ़मात" में से मदनी इन्आ़म नम्बर 20 के मुताबिक़ हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली को कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ से रोज़ाना कम अज़ कम तीन आयात का तरजमा और ख़ज़ाइनुल इरफ़ान या नूरुल इरफ़ान से इस की तफ़्सीर पढ़नी होती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में कई ऐसे इस्लामी भाई और इस्लामी बहन मिलेंगे जो कि कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ मअ़ तफ़्सीर के मुकम्मल मुतालए से मुशर्रफ़ होंगे। जिन्हों ने अभी तक मुकम्मल मुतालआ़ नहीं किया उन सब की ख़िदमतों में मदनी इल्तिजा है कि सद सालह जश्ने कन्ज़ुल ईमान के मुबारक मौक़अ़ पर हुसूले सवाब की निय्यत से मुतालए की तक्मील का मुसम्मम अ़ज़्म फ़रमा लें। दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान سَلَّمَهُ الرَّحْمٰن को भी मैं ने दरख़्वास्त की है कि मुख़य्यर हज़रात से तरकीब बना कर हदिय्यए मुअय्यना से आधी क़ीमत पर इस सद सालह जश्ने कन्ज़ुल ईमान के मुबारक मौक़अ़ पर घर घर कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ को दाख़िल करने की मुहिम चलाएं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह इस अम्र में साई हो चुके हैं। हमें येह मदनी काम सारी दुन्या में आ़म करना है कि हमारा मदनी मक़्सद भी है : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर दा'वते इस्लामी का मदनी पैग़ाम दुन्या के कमो बेश 66 मुमालिक में पहुंच चुका है। हर हर मुल्क में मुम्किना हद तक कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ मुसल्मानों के घरों में दाख़िल करना है। इसी ज़िम्न में हिन्द के इस्लामी भाइयों की ख़िदमतों में भी मदनी इल्तिजा है कि आप भी उठिये, हिम्मत कीजिये और सद सालह जश्ने कन्ज़ुल ईमान के इस मदनी मौक़अ़ पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ को घर घर आ़म करने पर कमर बस्ता हो जाइये। कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ मुअय्यना हदिय्ये से आधे दाम में फ़रोख़्त कर के माली कमी मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से इसी मद में चन्दा ले कर पूरी कीजिये। मेरी ख़्वाहिश है कि उ़र्से रज़वी के बा बरकत मौक़अ़ पर मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की जानिब से बहुत बड़ा बस्ता

लगाया जाए और उस पर कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ आधे हदिय्ये बल्कि सिर्फ़ "डबल 25" (या'नी 50) रुपै में फ़राहम किया जाए। रिआ़यती हदिय्ये पर फ़रोख़्त किये जाने वाले कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ के हर नुस्ख़े पर बराए करम ! इस जुम्ले की मोहर बनवा कर कम अज़ कम तीन जगह लगवा दीजिये, (चिट छाप कर भी लगाई जा सकती है) : "सद सालह जश्ने कन्ज़ुल ईमान के मौक़अ़ पर दिया जाने वाला कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ का नुस्ख़ा रिआ़यत पर ख़रीद कर ज़ियादा दाम पर फ़रोख़्त मत कीजिये।" येह ज़ेहन में रहे कि अगर्चे कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ का घर में तशरीफ़ फ़रमा होना बाइ़से बरकत है मगर इस को पढ़ना सआ़दत बालाए सआ़दत, ईमान की त़रावत, सुन्नियत पर इस्तिक़ामत, आ'माले ह़सना पर मुदावमत, सुवालाते क़ब्र में इस्तिक़ामत और नजाते आख़िरत और दुख़ूले जन्नत का ज़रीआ़ है। लिहाज़ा पढ़ने की भी बराबर तरग़ीब जारी रखिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का सुन्नियों का इक्लौता और मक़्बूले आ़म मदनी चेनल भी बिल ख़ुसूस "माहे रज़ा" में फ़ैज़ाने रज़ा के उ़न्वान से आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पाकीज़ा ह़ालात, आप के सीरत के रूह़ परवर वाक़िआ़त और ईमान अफ़रोज़ इर्शादात के मदनी फूल लिये बयक वक़्त रोज़ाना दुन्या के हज़ारों घरों में TV और इन्टरनेट के ज़रीए़ दाख़िल हो कर लाखों मुसल्मानों के क़ुलूबो अज़्हान को महका रहा है और यूं दुन्या में हर त़रफ़ मस्लके आ'ला ह़ज़रत की धूमें मचा रहा है।

والسّلام مع الکرام

ग़ीबत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है

हम तो ग़ीबत करें न सुनें

एक चुप सो सुख

तालिबे ग़मे
मदीना
व
बक़ीअ़
व
मग़्फ़िरत

17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1430 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तिलावत के ख़ुश्बूदार मदनी फूल

अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

शैत़ान इस रिसाले से बहुत रोकेगा मगर आप पढ़ लीजिये

اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का बेश बहा ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर **अस्सी** बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر لِلسُّيُوْطِىّ،ص٣٢٠،حديث ٥١٩١، دار الكتب العلمية بيروت)

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए

हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वाह क्या बात है आ़शिके क़ुरआन की

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى रोज़ाना एक बार **ख़त्मे क़ुरआने** पाक फ़रमाते थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **हमेशा दिन को रोज़ा** रखते और सारी रात क़ियाम (इ़बादत) फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रक्अ़त (तहिय्यतुल मस्जिद) ज़रूर पढ़ते । तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास **क़ुरआने पाक** का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है । नमाज़ और **तिलावते क़ुरआन** के साथ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़ुसूसी मह़ब्बत थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन **अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि आप** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं !** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साह़िबा ने बताया : वालिदे मोह़तरम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم रोज़ाना दुआ़ किया करते थे : "**या अल्लाह** ! अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना ।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो क़ब्रे अन्वर से **तिलावते क़ुरआन** की आवाज़ आ रही होती ।

(حِلْيَةُ الْاَولياء، ج٢، ص٣٦٢-٣٦٦ مُلتقطاً، دار الكتب العلمية)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता

ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक ह़र्फ़ पर दस नेकियां

क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाह** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब सवाब का काम है । क़ुरआने पाक का एक **ह़र्फ़** पढ़ने पर **10 नेकियों** का सवाब मिलता है, चुनान्चे, ख़ातमुल मुरसलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी । मैं येह नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि **अलिफ़** एक ह़र्फ़, **लाम** एक ह़र्फ़ और **मीम** एक ह़र्फ़ है ।" (سُنَنُ التِّرمِذی، ج ٤، ص٤١٧، حدیث ٢٩١٩)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन शख़्स

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : **خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने क़ुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया ।** (صَحِیحُ البُخاری، ج٣، ص٤١٠، حدیث ٥٠٢٧) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में **क़ुरआने पाक** पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीसे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है । (فَیضُ القَدیر، ج٣، ص٦١٨، تحتَ الحدیث ٣٩٨٣)

अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने

www.dawateislami.net

क़ुरआने पाक सीखा और सिखाया और जो कुछ क़ुरआने पाक में है उस पर अ़मल किया, क़ुरआन शरीफ़ उस की **शफ़ाअ़त** करेगा और जन्नत में ले जाएगा।

(تاریخ دمشق لابن عساکِر، ج ٤١، ص٣،اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرَانی، ج١٠، ص١٩٨، حدیث ١٠٤٥٠)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ क़ुरआं की तिलावत का

शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आयत या सुन्नत सिखाने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जिस शख़्स ने **क़ुरआने मजीद** की एक आयत या दीन की कोई **सुन्नत** सिखाई क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये ऐसा सवाब तय्यार फ़रमाएगा कि इस से बेहतर सवाब किसी के लिये भी नहीं होगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی، ج٧، ص٢٨١، حدیث ٢٢٤٥٤)

तिलावत करूं हर घड़ी या इलाही

बकूं न कभी भी मैं वाही तबाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

एक आयत सिखाने वाले के लिये क़ियामत तक सवाब !

जुन्नूरैन, जामिउ़ल क़ुरआन हज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने **क़ुरआने मुबीन** की एक आयत सिखाई उस के लिये सीखने वाले से दुगना सवाब है। एक और ह़दीसे पाक में **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ख़ातमुल मुरसलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस ने **क़ुरआने अ़ज़ीम** की एक आयत सिखाई जब तक उस आयत की तिलावत होती रहेगी उस के लिये सवाब जारी रहेगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع، ج٧، ص٢٨٢، حدیث ٢٢٤٥٥-٢٢٤٥٦)

तिलावत का जज़्बा अ़ता कर इलाही

मुआ़फ़ फ़रमा मेरी ख़त़ा हर इलाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अल्लाह तआला क़ियामत तक अज्र बढ़ाता रहेगा

एक ह़दीस शरीफ़ में है : जिस शख़्स ने किताबुल्लाह की एक आयत या इल्म का एक बाब सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत उस का अज्र बढ़ाता रहेगा। (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۹، ص ۲۹۰)

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का

ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मां के पेट में 15 पारे ह़िफ़्ज़ कर लिये

"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" से एक मुफ़ीद **अ़र्ज़** और ईमान अफ़रोज़ **इर्शाद** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

अ़र्ज़ : हुज़ूर ! "तक़रीबे बिस्मिल्लाह" की कोई उ़म्र शरअ़न मुक़र्रर है ?

इर्शाद : शरअ़न कुछ मुक़र्रर नहीं, हां मशाइख़े किराम (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام) के यहां **चार बरस चार महीने चार दिन** मुक़र्रर हैं। ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत़्बुल ह़क़्क़े वद्दीन **बख़्तियार काकी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र जिस दिन चार बरस चार महीने चार दिन की हुई (तो) "तक़रीबे बिस्मिल्लाह" मुक़र्रर हुई, लोग बुलाए गए। **ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी तशरीफ़ फ़रमा हुए। बिस्मिल्लाह पढ़ाना चाही मगर इल्हाम हुवा कि ठहरो ! **ह़मीदुद्दीन नागोरी** आता है वोह पढ़ाएगा। इधर नागोर में **क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन साहि़ब** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को इल्हाम हुवा कि जल्द जा मेरे एक बन्दे को "बिस्मिल्लाह" पढ़ा। क़ाज़ी साहि़ब फ़ौरन तशरीफ़ लाए और आप से फ़रमाया : साहि़ब ज़ादे पढ़िये ! بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ○ आप ने पढ़ा : اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ○ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ○ **और शुरूअ़ से ले कर पन्दरह पारे ह़िफ़्ज़ सुना दिये।** ह़ज़रत क़ाज़ी साहि़ब और ख़्वाजा साहि़ब ने फ़रमाया : साहि़ब ज़ादे आगे पढ़िये ! फ़रमाया : **मैं ने अपनी मां के शिकम** (पेट) **में इतने ही सुने थे और इसी क़दर उन** (या'नी अम्मीजान) **को याद थे, वोह मुझे भी याद हो गए !"** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 481, मक्तबतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ुदा अपनी उल्फ़त में सादिक़ बना दे

मुझे मुस्त़फ़ा का तू आ़शिक़ बना दे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अफ़्सोस ! इस्लामी मा'लूमात की कमी की वज्ह से आज मुसल्मानों की बहुत बड़ी ता'दाद क़ुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने, सुनने सुनाने और छूने उठाने वग़ैरा के शरई अह़काम से ना बलद है। इशाअ़ते इल्म का सवाब पाने और मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने की निय्यत से क़ुरआने पाक के बारे में रंग बरंगे **मदनी फूलों** का गुलदस्ता पेश करता हूं।

www.dawateislami.net

“क़ुरआन तमाम ही कुतुब से अफ़्ज़ल है”
के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से तिलावत के 21 मदनी फूल

﴾1﴿ अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना **उ़मर** फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना सुब्ह़ **क़ुरआने मजीद को चूमते थे** और फ़रमाते : “येह मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का अ़ह्द और उस की किताब है।” (دُرِّ مُختار، ج۹، ص٦٣٤، دارالمعرفة بیروت) ﴾2﴿ तिलावत के आग़ाज़ में **اَعُوْذُ** पढ़ना मुस्तह़ब है और इब्तिदाए सूरत में بِسۡمِ اللّٰہ सुन्नत, वरना मुस्तह़ब (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 550, मक्तबतुल मदीना) ﴾3﴿ सूरए बराअत (सूरए तौबह) से अगर तिलावत शुरूअ़ की तो اَعُوْذُ بِاللّٰہ (और) بِسۡمِ اللّٰہ (दोनों) कह लीजिये और जो इस के पहले से तिलावत शुरूअ़ की और **सूरए तौबह** (दौराने तिलावत) आ गई तो तस्मिया (या'नी بِسۡمِ اللّٰہ शरीफ़) पढ़ने की ह़ाजत नहीं। और इस की इब्तिदा में नया तअ़व्वुज़ जो आज कल के ह़ाफ़िज़ों ने निकाला है, **बे अस्ल** है और येह जो मश्हूर है कि **सूरए तौबह** इब्तिदाअन भी पढ़े जब भी بِسۡمِ اللّٰہ न पढ़े येह मह़्ज़ ग़लत़ है (ऐज़न, स. 551) ﴾4﴿ बा वुज़ू, क़िब्ला रू, अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करना मुस्तह़ब है (ऐज़न, स. 550) ﴾5﴿ क़ुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम **इबादत** हैं। (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلِّی، ص٤٩٥) ﴾6﴿ क़ुरआने मजीद को निहायत **अच्छी आवाज़** से पढ़ना चाहिये, अगर आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे, मगर **लह़्न** के साथ पढ़ना कि हुरूफ़ में **कमी बेशी** हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं येह ना जाइज़ है, बल्कि पढ़ने में **क़वाइदे तज्वीद** की रिआ़यत कीजिये (دُرِّ مختار، رَدُّالْمُحتار، ج۹، ص٦٩٤) ﴾7﴿ क़ुरआने मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **अफ़्ज़ल** है जब कि किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे (غُنْیَۃُ الْمُتَمَلِّی، ص٤٩٧) ﴾8﴿ जब क़ुरआने पाक की सूरतें या आयतें पढ़ी जाती हैं उस वक़्त बा'ज़ लोग चुप तो रहते हैं मगर इधर उधर देखने और दीगर ह़रकात व इशारात वग़ैरा से बाज़ नहीं आते, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि चुप रहने के साथ साथ ग़ौर से सुनना भी लाज़िमी है। जैसा कि **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 352 पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : क़ुरआने मजीद पढ़ा जाए उसे कान लगा कर ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना **फ़र्ज़** है। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया) : وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (پ۹ الاعراف ٢٠٤) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो) ﴾9﴿ **जब** बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पढ़ा जाए तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना **फ़र्ज़** है, जब कि वोह मज्मअ़ सुनने के लिये ह़ाज़िर हो वरना **एक** का सुनना काफ़ी है, अगर्चे और (लोग) अपने काम में हों। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा,

www.dawateislami.net

जि. 23, स. 353, मुलख़्ख़सन) «10» **मज्मअ़** में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह **ह़राम** है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह **ह़राम** है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि **आहिस्ता** पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 552) «11» मस्जिद में दूसरे लोग हों, नमाज़ या अपने विर्दो वज़ाइफ़ पढ़ रहे हों उस वक़्त फ़क़त़ इतनी आवाज़ से तिलावत कीजिये कि सिर्फ़ आप ख़ुद सुन सकें, बराबर वाले को आवाज़ न पहुंचे «12» बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **ना जाइज़** है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है। अगर काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढ़ना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस (या'नी पढ़ने वाले) पर गुनाह (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى، ص٤٩٧) «13» जहां कोई शख़्स इल्मे दीन पढ़ा रहा है या त़ालिबे इल्म इल्मे दीन की तकरार करते या मुत़ालआ़ देखते हों, वहां भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ना मन्अ़ है। (اَيضاً) «14» **लैट** कर क़ुरआन पढ़ने में ह़रज नहीं जब कि पाउं **सिमटे** हों और मुंह खुला हो, यूंही चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मक्रूह है। (اَيضاً ص٤٩٦) «15» **ग़ुस्ल** ख़ाने और नजासत की जगहों में क़ुरआने मजीद पढ़ना, **ना जाइज़** है (اَيضاً) «16» **क़ुरआने** मजीद सुनना, तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से **अफ़्ज़ल** है (اَيضاً ص٤٩٧) «17» जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते़ कि बताने की वज्ह से कीना व ह़सद पैदा न हो। (اَيضاً ص٤٩٨) «18» इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) अपने पास आ़रिय्यत (या'नी वक़्ती त़ौर पर लिया हुवा) है, अगर उस में किताबत की ग़लत़ी देखे, (तो जिस का है उसे) बता देना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 553) «19» **गर्मियों** में सुब्ह़ को **क़ुरआने मजीद** ख़त्म करना **बेहतर** है और **सर्दियों** में अव्वल शब को कि ह़दीस में है : "जिस ने शुरूअ़ दिन में **क़ुरआन ख़त्म** किया, शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हैं और जिस ने इब्तिदाए शब में **ख़त्म** किया, सुब्ह़ तक इस्तिग़्फ़ार करते हैं।" गर्मियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के वक़्त ख़त्म करने में इस्तिग़्फ़ारे मलाएका ज़ियादा होगी और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूअ़ रात में **ख़त्म** करने से इस्तिग़्फ़ार ज़ियादा होगी। (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى، ص٤٩٦) «20» जब क़ुरआने पाक **ख़त्म** हो तो तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ना **बेहतर** है। अगर्चे **तरावीह़** में हो, अलबत्ता अगर फ़र्ज़ नमाज़ में ख़त्म करे तो एक बार से ज़ियादा न पढ़े। (غُنْيَةُ الْمُتَمَلِّى، ص٤٩٦) «21» **ख़त्मे क़ुरआन का त़रीक़ा** येह है कि सूरए नास पढ़ने के बा'द सूरए फ़ातिह़ा और **सूरए बक़रह** से وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝ तक पढ़िये और इस के बा'द दुआ़ मांगिये कि येह **सुन्नत** है चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं : "**नबिय्ये**

www.dawateislami.net

करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ" पढ़ते तो सूरए फ़ातिहा शुरूअ़ फ़रमाते फिर सूरए बक़रह से "وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝" तक पढ़ते फिर ख़त्मे क़ुरआन की दुआ़ पढ़ कर खड़े होते।" (اَلْاِتقان فِی عُلُوْمِ الْقُرْاٰن، ج١، ص١٥٨)

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा

दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुहम्मद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी मुन्ने ने राज़ फ़ाश कर दिया !

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना **अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन अस्लम तूसी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपनी **नेकियां छुपाने** का बेहद ख़याल फ़रमाते यहां तक कि एक बार फ़रमाने लगे : अगर मेरा बस चले तो मैं **किरामन कातिबीन** (आ'माल लिखने वाले दोनों बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) से भी छुप कर इबादत करूं ! रावी कहते हैं : मैं **बीस बरस** से ज़ियादा अ़र्सा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सोह़बत में रहा मगर जुमुअ़तुल मुबारक के इलावा कभी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दो रक्अ़त नफ़्ल भी पढ़ते नहीं देख सका। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पानी का कूज़ा ले कर अपने कमरए ख़ास में तशरीफ़ ले जाते और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते थे। मैं कभी भी न जान सका कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमरे में क्या करते हैं, यहां तक कि एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का **मदनी मुन्ना ज़ोर ज़ोर से रोने लगा**। उस की अम्मीजान चुप करवाने की कोशिश कर रही थीं, मैं ने कहा : **मदनी मुन्ना** आख़िर इस क़दर क्यूं रो रहा है ? बीबी साहिबा ने फ़रमाया : इस के अब्बू (हज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى) **इस कमरे में दाख़िल हो कर तिलावते क़ुरआन करते हैं और रोते हैं तो येह भी उन की आवाज़ सुन कर रोने लगता है** ! शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (रियाकारियों की तबाह कारियों से बचने की ख़ातिर) नेकियां छुपाने की इस क़दर सई फ़रमाते थे कि अपने उस कमरए ख़ास से इबादत करने के बा'द बाहर निकलने से पहले अपना मुंह धो कर आंखों में सुरमा लगा लेते ताकि चेहरा और आंखें देख कर किसी को अन्दाज़ा न होने पाए कि येह रोए थे ! (حِلْيَةُ الاولیاء، ج٩، ص٢٥٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो

कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ ! एक त़रफ़ नेकियां छुपाने वाले वोह मुख़्लिस सालेह़ इन्सान और आह ! दूसरी त़रफ़ अपनी नेकियों का बढ़ा चढ़ा कर ढंडोरा पीटने वाले हम जैसे इख़्लास से आ़री नादान ! कि अव्वल तो नेकी हो नहीं पाती है, कभी हो भी गई तो रियाकारी लागू पड़ जाती है। हाए ! हाए !

नफ़्से बदकार ने दिल पर येह क़ियामत तोड़ी
अ़मले नेक किया भी तो छुपाने न दिया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआने करीम के ह़ुरूफ़ की दुरुस्त मख़ारिज से अदाएगी और ग़लत़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़े ऐ़न है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''बिला शुबा इतनी **तज्वीद** जिस से तस्ह़ीहे़ ह़ुरूफ़ हो (या'नी क़वाइदे तज्वीद के मुत़ाबिक़ ह़ुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके), और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, **फ़र्ज़े ऐ़न** है।'' (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 343)

क़ुरआन पढ़ने वाले मदनी मुन्नों की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन वालों पर अ़ज़ाब करने का इरादा फ़रमाता है लेकिन जब बच्चों को **क़ुरआने पाक** पढ़ते सुनता है तो अ़ज़ाब को रोक लेता है।

(سُنَنِ دارمی، ج۲، ص۵۳۰، حدیث ۳۳۴۵، دارالکتاب العربی بیروت)

*हो करम **अल्लाह** ! ह़ाफ़िज़ मदनी मुन्नों के त़ुफ़ैल*
जगमगाते गुम्बदे ख़ज़रा की किरनों के त़ुफ़ैल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के तह़त दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में बे शुमार मदारिस बनाम **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम हैं। जिन में ता दमे तह़रीर सिर्फ़ मुल्क में पचास हज़ार मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं, नीज़ ला ता'दाद मसाजिद व मक़ामात पर **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) का भी एहतिमाम होता है, जिन में दिन के अन्दर कामकाज में मसरूफ़ रहने वालों को उ़मूमन नमाज़े इ़शा के बा'द तक़रीबन 40 मिनट के लिये दुरुस्त **क़ुरआने मजीद** पढ़ना सिखाया जाता, मुख़्तलिफ़ दुआ़एं याद करवाई जातीं और सुन्नतें भी सिखाई जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के लिये भी **मदारिसुल मदीना** (बालिग़ात) क़ाइम हैं।

www.dawateislami.net

"ख़ूब क़ुरआने पाक पढ़ो" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से

सज्दए तिलावत के 14 मदनी फूल

《1》 **आयते** सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (اَلْهِدَایه، ج۱، ص۷۸، دار احیاء التراث العربی بیروت) 《2》 फ़ारसी या किसी और ज़बान में (भी अगर) आयत का तरजमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सज्दा का तरजमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह **आयते सज्दा** का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को **आयते सज्दा** होना बताया गया हो। (فتاوٰی عالمگیری، ج۱، ص۱۳۳، کوئٹہ) 《3》 **पढ़ने** में येह **शर्त़** है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद **सुन** सके। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 728) 《4》 **सुनने** वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द (या'नी इरादतन) सुनी हो, बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) सुनने से भी सज्दा **वाजिब** हो जाता है। (اَلْهِدَایه، ج۱، ص۷۸) 《5》 अगर इतनी आवाज़ से आयत पढ़ी कि सुन सकता था मगर शोरो ग़ुल या बहरा होने की वज्ह से न सुनी तो **सज्दा** वाजिब हो गया और अगर महज़ होंट हिले आवाज़ पैदा न हुई तो वाजिब न हुवा। (فتاوٰی عالمگیری، ج۱، ص۱۳۲) 《6》 **सज्दा** वाजिब होने के लिये **पूरी आयत** पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में **सज्दे का माद्दा** पाया जाता है और उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है। (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۶۹۴) 《7》 **सज्दए तिलावत का त़रीक़ा :** सज्दे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰی कहे, फिर اَللّٰهُ اَكْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना **सुन्नत** है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब। (دُرِّ مُختار، ج۲، ص۶۹۹) 《8》 **सज्दए तिलावत** के लिये اَللّٰهُ اَكْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद (या'नी अत्तह़िय्यात) है न सलाम। (تَنوِیرُالْاَبصار، ج۲، ص۷۰۰) 《9》 इस की निय्यत में येह शर्त़ नहीं कि फ़ुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत़्लक़न **सज्दए तिलावत** की निय्यत काफ़ी है। (دُرِّ مُختار، رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۶۹۹) 《10》 आयते सज्दा बैरूने नमाज़ (या'नी नमाज़ के बाहर) पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना **वाजिब** नहीं हां **बेहतर** है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर **मक्रूहे तन्ज़ीही।** (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۰۳) 《11》 उस वक़्त अगर किसी वज्ह से **सज्दा न** कर सके तो तिलावत करने वाले और सामेअ़ (या'नी सुनने वाले) को येह कह लेना मुस्तह़ब है : سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿۲۸۵﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने सुना और माना, तेरी मुआ़फ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही त़रफ़ फिरना है। (پ ۳، البقرة: ۲۸۵)) (رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۰۳) 《12》 एक मजलिस में सज्दे की एक आयत को बार बार

www.dawateislami.net

पढ़ा या सुना तो एक ही सज्दा **वाजिब** होगा, अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से सुनी जब भी **एक** ही **सज्दा** वाजिब होगा। (دُرِّ مُختار،رَدُّ الْمُحتار، ج۲، ص۷۱۲)

﴾13﴿ पूरी सूरत पढ़ना और **आयते सज्दा** छोड़ देना **मक्रूहे तह़रीमी** है और सिर्फ़ **आयते सज्दा** के पढ़ने में कराहत नहीं, मगर बेहतर येह है कि दो एक आयत पहले या बा'द की मिला ले।

(دُرِّ مُختار، ج۲، ص۷۱۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाजत पूरी होने के लिये

﴾14﴿ (अह़नाफ़ या'नी ह़नफ़िय्यों के नज़्दीक क़ुरआने पाक में सज्दे की 14 आयतें हैं) जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर सज्दे करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का **मक़्सद** पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 738)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

14 आयाते सज्दा

(١)﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَ لَهٗ یَسْجُدُوْنَ ۩ ﴾ (پ۹ اعراف ۲۰۶)

(٢)﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ ۩ ﴾ (پ۱۳ رعد ۱۵)

(٣)﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۹﴾ یَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ
وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴾ (پ۱۴ نحل ۴۹)

(٤)﴿ قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖۤ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ
سُجَّدًا ﴿۱۰۷﴾ وَّ یَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾ وَ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ یَبْكُوْنَ وَ یَزِیْدُهُمْ خُشُوْعًا ۩ ﴾

(پ۱۵ بنی اسرائیل ۱۰۷-۱۰۹)

(٥)﴿ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ مِنْ ذُرِّیَّةِ اٰدَمَ ۗ وَ مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّ مِنْ ذُرِّیَّةِ اِبْرٰهِیْمَ وَ
اِسْرَآءِیْلَ ۫ وَ مِمَّنْ هَدَیْنَا وَ اجْتَبَیْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِیًّا ۩ ﴾ (پ۱۶ مریم ۵۸)

(٦)﴿ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ
الدَّوَآبُّ وَ كَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِیْرٌ حَقَّ عَلَیْهِ الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ
۩ ﴾ (پ۱۷ حج ۱۸)

www.dawateislami.net

(۷) ﴿وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا ۝﴾ (پ ۱۹ فرقان ۶۰)

(۸) ﴿اَلَّا یَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ یُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ یَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ۝﴾ (پ۱۹ نمل ۲۵-۲۶)

(۹) ﴿اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۝﴾
(پ۲۱ سجدہ ۱۵)

(۱۰) ﴿قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَیَبْغِیْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ قَلِیْلٌ مَّا هُمْ وَ ظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ ۝﴾ (پ۲۳ ص ۲۴-۲۵)

(۱۱) ﴿وَ مِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَ النَّهَارُ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ
اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ هُمْ لَا یَسْـٴَـمُوْنَ ۝﴾
(پ۲۴ حٰمۤ السجدہ ۳۷-۳۸)

(۱۲) ﴿فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَ اعْبُدُوْا ۝﴾ (پ۲۷ نجم ۶۲)

(۱۳) ﴿وَ اِذَا قُرِئَ عَلَیْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا یَسْجُدُوْنَ ۝﴾ (پ۳۰ انشقاق ۲۰-۲۱)

(۱۴) ﴿كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَ اسْجُدْ وَ اقْتَرِبْ ۝﴾ (پ۳۰ علق ۱۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"फ़रमाने हमीद" के नव हुरूफ़ की निस्बत से
कुरआने पाक को छूने के 9 मदनी फूल

﴾1﴿ अगर वुज़ू न हो तो कुरआने अज़ीम छूने के लिये **वुज़ू** करना फ़र्ज़ है। (نُوْرُ الْاِیْضَاح، ص۱۸) ﴾2﴿ **बे छूए** ज़बानी देख कर (बे वुज़ू) पढ़ने में कोई **हरज** नहीं ﴾3﴿ कुरआने मजीद छूने के लिये या **सज्दए तिलावत या सज्दए शुक्र** के लिये **तयम्मुम** जाइज़ नहीं जब कि पानी पर कुदरत हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 352) ﴾4﴿ जिस पर **गुस्ल** फ़र्ज़ हो उस को **कुरआने मजीद** छूना अगर्चे इस का सादा हाशिया या जिल्द या चोली छूए या बे छूए देख कर या ज़बानी पढ़ना या किसी आयत का लिखना या आयत का ता'वीज़ लिखना या ऐसा ता'वीज़ छूना या ऐसी अंगूठी छूना या पहनना जैसे मुक़त्तआ़त की अंगूठी **हराम** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 326) ﴾5﴿ अगर कुरआने अज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर **हाथ** लगाने में हरज नहीं यूंही रुमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न कुरआने मजीद का तो **जाइज़** है, कुरते की आस्तीन, दोपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के

www.dawateislami.net

मूंढे (या'नी कन्धे) पर है दूसरे कोने से छूना **ह़राम** है कि येह सब इस के ताबेअ़ हैं जैसे चोली क़ुरआने मजीद के ताबेअ़ थी। (دُرِّ مُختار، رَدُّ المُحتار، ج۱، ص۳٤٨) ❀6❀ **क़ुरआन** का **तरजमा** फ़ारसी या उर्दू या किसी और ज़बान में हो उस के छूने और पढ़ने में क़ुरआने मजीद ही का सा **हुक्म** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 327) ❀7❀ किताब या अख़्बार में आयत लिखी हो तो उस आयत पर नीज़ उस आयत वाले ह़िस्सए काग़ज़ के ऐन पीछे बे वुज़ू और बे ग़ुस्ले को हाथ लगाना जाइज़ नहीं ❀8❀ जिस काग़ज़ पर सिर्फ़ आयत लिखी हो और कुछ भी न लिखा हो उस को आगे पीछे या कोने वग़ैरा किसी भी जगह पर बे वुज़ू और बे ग़ुस्ला हाथ नहीं लगा सकता।

कलामे पाक के मौला मुझे आदाब सिखला दे
मुझे का'बा दिखा दे गुम्बदे ख़ज़रा भी दिखला दे

किताबें छापने वालों की ख़िदमतों में मदनी इल्तिजा

❀9❀ दीनी किताबें और माहनामे वग़ैरा छापने वालों की ख़िदमतों में दर्द भरी मदनी इल्तिजा है कि सरे वरक़ (TITLE) के चारों सफ़्ह़ों में से किसी भी सफ़्ह़े पर आयाते मुबारका या इन के तरजमे न छापा करें कि किताब या रिसाला लेते उठाते हुए बे शुमार मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने में मुब्तला हो सकते हैं। इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़्ह़ा 393 पर फ़रमाते हैं : आयते करीमा को अख़्बार की त़ब्लक़ (या'नी अख़्बार या रिसाले के बन्डल, पुलन्दे या गड्डी के गिर्द लिपटे हुए काग़ज़) या कार्ड या लिफ़ाफ़ों पर छपवाना बे अदबी को मुस्तल्ज़िम (या'नी लाज़िम करता) और **ह़राम** की त़रफ़ मुन्जिर (या'नी ले जाने वाला) है उस पर चिठ्ठी रसानों (या'नी डाकियों) वग़ैरहुम बे वुज़ू बल्कि जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ल) बल्कि कुफ़्फ़ार के हाथ लगेंगे जो हमेशा जुनुब (या'नी बे ग़ुस्ले) रहते हैं और येह **ह़राम** है। قَالَ تَعَالٰی (**अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया) لَّا یَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुज़ू)। मोहरें लगाने के लिये ज़मीन पर रखे जाएंगे, फाड़ कर रद्दी में फेंके जाएंगे। इन बे ह़ुरमतियों पर आयत का पेश करना इस (या'नी छापने या लिखने वाले) का फ़े'ल हुवा।

کردم از عقل سُوالے کہ بگہ ایمان چیست　　عقل در گوشِ دِلم گفت کہ ایمان ادب ست

(मैं ने अ़क़्ल से येह सुवाल किया तू येह बता दे कि ईमान क्या है, अ़क़्ल ने मेरे दिल के कानों में कहा कि ईमान अदब का नाम है)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगर किसी किताब के सरे वरक़ (TITLE) पर आयते क़ुरआनी छपी हुई देखें तो दरख़्वास्त है कि अच्छी अच्छी निय्यतें कर के किताब छापने वाले को मुन्दरिजए बाला तह़रीर दिखाइये या इस की फ़ोटो

www.dawateislami.net

कोपी ब ज़रीअ़ए डाक इरसाल फ़रमाइये और साथ में येह भी लिखिये कि आप की फ़ुलां किताब के सरे वरक़ पर आयते करीमा देखी तो तहरीरी तौर पर हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि बराए करम ! सरे वरक़ पर आयाते मुबारका और इन के तरजमे न छापिये ताकि मुसल्मान बे ख़याली में बे वुज़ू छूने से मह़फ़ूज़ रहें। جَزَاکَ اللّٰہُ خَیْراً । अगर पब्लीशर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का आशिक़ हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को दुआ़ओं से नवाज़ते हुए आयिन्दा एह़तियात़ की निय्यत का इज़्हार करेगा।

मह़फ़ूज़ ख़ुदा रखना सदा बे अदबों से

और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"क़ुरआन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से तरजमए क़ुरआन के 4 मदनी फूल

﴾1﴿ बिग़ैर तफ़्सीर सिर्फ़ तरजमए क़ुरआन न पढ़ा जाए। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुबारक फ़तवे के एक जुज़ (या'नी ह़िस्से) का ख़ुलासा है : बिग़ैर इल्मे कसीर के सिर्फ़ तरजमए क़ुरआन पढ़ कर समझ लेना मुम्किन नहीं, बल्कि इस में नफ़्अ़ के मुक़ाबले में नुक़्सान ज़ियादा है। तरजमा पढ़ना है तो किसी आ़लिमे माहिर कामिल सुन्नी दीनदार से पढ़े। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 382, मुलख़्ख़सन) ﴾2﴿ क़ुरआने पाक को समझने के लिये मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, वलिय्ये ने'मत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का शोहरए आफ़ाक़ तरजमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" मअ़ तफ़्सीर "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" (अज़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی) ह़ासिल कीजिये ﴾3﴿ रोज़ाना क़ुरआने पाक की कम अज़ कम 3 आयात (मअ़ तरजमा व तफ़्सीर) की **तिलावत** के **मदनी इन्आ़म** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें आप ख़ुद ही देख लेंगे ﴾4﴿ दा'वते इस्लामी के तन्ज़ीमी अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ हर मस्जिद को एक ज़ैली ह़ल्क़ा क़रार दिया गया है। तमाम ज़ैली ह़ल्क़ों में रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द इज्तिमाई तौर पर **तीन आयात** की तिलावत मअ़ तरजमए कन्ज़ुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के **मदनी ह़ल्क़े** का हदफ़ है। अगर मुयस्सर हो तो इस्लामी भाई इस में **शिर्कत** की सआ़दत पाएं।

"कन्ज़ुल ईमान" ऐ ख़ुदा मैं काश ! रोज़ाना पढ़ूं

पढ़ के तफ़्सीर इस की फिर उस पर अ़मल करता रहूं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

“रब” के दो हुरूफ़ की निस्बत से मुक़द्दस अवराक़ को दफ़्न करने या ठन्डे करने के 2 मदनी फूल

﴾1﴿ अगर मुस्ह़फ़ (या'नी क़ुरआन) शरीफ़ पुराना हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि इस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह **दफ़्न** किया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये **लह़द बनाई जाए** (या'नी गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस अवराक़ समा जाएं) ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि उस पर मिट्टी न पड़े, **मुस्ह़फ़ शरीफ़** पुराना हो जाए तो उस को जलाया न जाए। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 138, मक्तबतुल मदीना)

﴾2﴿ **मुक़द्दस अवराक़** कम गहरे समुन्दर, दरिया या नहर में न डाले जाएं कि उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते और सख़्त बे अदबियां होती हैं। **ठन्डा करने का त़रीक़ा** येह है कि किसी थैली या ख़ाली बोरी में भर कर उस में वज़्नी पथ्थर डाल दिया जाए नीज़ थैली या बोरी पर चन्द जगह इस त़रह चीरे लगाए जाएं कि उस में फ़ौरन पानी भर जाए और वोह तह में चली जाए वरना पानी अन्दर न जाने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात मीलों तक तैरती हुई कनारे पहुंच जाती है और कभी गंवार या कुफ़्फ़ार ख़ाली बोरी ह़ासिल करने के लालच में मुक़द्दस अवराक़ कनारे ही पर ढेर कर देते हैं और फिर इतनी सख़्त बे अदबियां होती हैं कि सुन कर उ़श्शाक़ का कलेजा कांप उठे ! मुक़द्दस अवराक़ की बोरी गहरे पानी तक पहुंचाने के लिये मुसल्मान कश्ती वाले से भी तआ़वुन ह़ासिल किया जा सकता है मगर बोरी में चीरे हर ह़ाल में डालने होंगे।

मैं अदब क़ुरआन का हर ह़ाल में करता रहूं
हर घड़ी ऐ मेरे मौला तुझ से मैं डरता रहूं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“कलामुल्लाह” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से मुतफ़र्रिक़ 8 मदनी फूल

﴾1﴿ क़ुरआने मजीद को **जुज़्दान व ग़िलाफ़** में रखना अदब है। सह़ाबा व ताबिई़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن के ज़माने से इस पर मुसल्मानों का अ़मल है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 139)

﴾2﴿ क़ुरआने मजीद के **आदाब** में येह भी है कि इस की त़रफ़ **पीठ** न की जाए, न **पाउं** फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि ख़ुद **ऊंची** जगह पर हो और क़ुरआने मजीद नीचे हो। (ऐज़न)

﴾3﴿ **लुग़त** व **नह़्व** व **सर्फ़** (तीनों उ़लूम) का एक (ही) मर्तबा है, इन में हर एक (इ़ल्म) की किताब को दूसरे की किताब पर रख सकते हैं और इन से ऊपर **इ़ल्मे कलाम** की किताबें रखी जाएं इन के ऊपर

www.dawateislami.net

फ़िक़्ह और **अहा़दीस व मवाइज़ व दा'वाते मासूरा** (या'नी कुरआनो अहा़दीस से मन्कूल दुआ़एं) फ़िक़्ह से ऊपर और **तफ़्सीर** को इन के ऊपर और **कु़रआने मजीद** को सब के ऊपर रखिये। कु़रआने मजीद जिस सन्दूक़ में हो उस पर **कपड़ा** वग़ैरा न रखा जाए। (فتاوی عالمگیری، ج٥، ص٣٢٣-٣٢٤) ﴿4﴾ किसी ने मह्ज़ **ख़ैरो बरकत** के लिये अपने मकान में कु़रआने मजीद रख छोड़ा है और तिलावत नहीं करता तो गुनाह नहीं बल्कि उस की येह निय्यत बाइसे **सवाब** है। (فتاوی قاضی خان، ج٢، ص٣٧٨) ﴿5﴾ बे ख़याली में कु़रआने करीम अगर हाथ से छूट कर या ता़क़ वग़ैरा पर से ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया (या'नी गिर पड़ा) तो न गुनाह है न कोई कफ़्फ़ारा ﴿6﴾ गुस्ताख़ी की निय्यत से किसी ने مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ कु़रआने पाक ज़मीन पर दे मारा या ब निय्यते तौहीन इस पर पाउं रख दिया तो **काफ़िर** हो गया ﴿7﴾ अगर कु़रआने मजीद हाथ में उठा कर या इस पर हाथ रख कर ह़ल्फ़ या क़सम का लफ़्ज़ बोल कर कोई बात की तो येह बहुत "सख़्त क़सम" हुई और अगर ह़ल्फ़ या क़सम का लफ़्ज़ न बोला तो सिर्फ़ कु़रआने करीम हाथ में उठा कर या उस पर हाथ रख कर बात करना न क़सम है न इस का कोई कफ़्फ़ारा। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 13, स. 574, 575 मुलख़्ख़सन) ﴿8﴾ अगर मस्जिद में बहुत सारे कु़रआने पाक जम्अ़ हो गए और सब इस्ति'माल में नहीं आ रहे, रखे रखे बोसीदा हो रहे हैं तब भी उन्हें हदिय्यतन दे कर (या'नी बेच कर) उन की क़ीमत मस्जिद में सर्फ़ नहीं कर सकते। अलबत्ता ऐसी सूरत में वोह कु़रआने पाक दीगर मसाजिद व मदारिस में रखने के लिये तक़्सीम किये जा सकते हैं। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 16, स. 164, मुलख़्ख़सन)

हर रोज़ मैं कु़रआन पढ़ूं काश ख़ुदाया
अल्लाह ! तिलावत में मेरे दिल को लगा दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से ईसाले सवाब के 5 मदनी फूल

﴿1﴾ **सरकारे** नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : **मुर्दे** का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से **इन्तिज़ार** करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की **दुआ़** उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा **सवाब** पहाड़ों की मानिन्द अ़ता़ फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना है।" (شُعَبُ الْاِیمان، ج٦، ص٢٠٣، حدیث ٧٩٠٥) ﴿2﴾ **त़बरानी** में है :

www.dawateislami.net

"**जब** कोई शख़्स मय्यित को **ईसाले सवाब** करता है तो जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरानी त़बाक़ में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो जाते हैं और कहते हैं : **"ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (तोह़फ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर ।" येह सुन कर वोह **ख़ुश** होता है और उस के पड़ोसी अपनी मह़रूमी पर ग़मगीन होते हैं । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی، ج٥، ص٣٧، حديث ٦٥٠٤، دارالفكر بيروت)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है

फ़ज़्ल से कर दे चांदना या रब !

《3》 **तिलावते क़ुरआन** के साथ साथ **फ़र्ज़,** वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ालआ़, मदनी कामों के लिये इन्फ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का **ईसाले सवाब** कर सकते हैं ।

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

《4》 "ईसाले सवाब" कोई मुश्किल काम नहीं सिर्फ़ इतना कह देना या दिल में निय्यत कर लेना भी काफ़ी है कि मसलन **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मैं ने जो क़ुरआने पाक पढ़ा (या फ़ुलां फ़ुलां अ़मल किया) इस का सवाब मेरी वालिदए मर्ह़ूमा को पहुंचा ।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा ।

फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

《5》 **आज** कल मुसल्मानों में ख़ुसूसन खाने पर जो **फ़ातिह़ा का त़रीक़ा** राइज है वोह भी बहुत अच्छा है, इस दौरान तिलावत वग़ैरा का भी ईसाले सवाब किया जा सकता है। जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये । अब "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝" पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝

وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

www.dawateislami.net

एक बार

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ

الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

एक बार

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ﴿۳﴾

اِیَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ﴿۴﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ

الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ﴿۷﴾

एक बार

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الۡكِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡهِ ۚۛ هُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ

بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ

اُنۡزِلَ اِلَیۡكَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰی هُدًی

مِّنۡ رَّبِّهِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿۱﴾ وَ اِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲ البقرة:۱۶۳)

﴿۲﴾ اِنَّ رَحۡمَتَ اللّٰهِ قَرِیۡبٌ مِّنَ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸ الاعراف:۵۶)

﴿۳﴾ وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیآء:۱۰۷)

﴿٤﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنۡ رِّجَالِكُمۡ وَ لٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ

النَّبِیّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۴۰)

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡهِ

وَ سَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

www.dawateislami.net

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

इस के बा'द पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ (پ٢٣ الصّٰفّٰت ١٨٠-١٨٢)

अब हाथ उठा कर फ़ातिहा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से **''अल फ़ातिहा''** कहे। सब लोग आहिस्ता से सूरए फ़ातिहा पढ़ें। अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला इस तरह ए'लान करे **:** ''आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये।'' तमाम हाज़िरीन कह दें **:** ''आप को दिया।'' अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला **ईसाले सवाब** कर दे।

ईसाले सवाब के लिये दुआ का तरीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ पढ़ा गया ! (अगर खाना वग़ैरा है तो इस तरह से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है इस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्हमत फ़रमा। और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे महबूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत से सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात **मुसल्मान** हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा। इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये। अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी **ईसाले सवाब** कीजिये। (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी हासिल होती है)। अब हस्बे मा'मूल दुआ ख़त्म कर दीजिये। (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह खानों और पानी में वापस डाल दीजिये)

सवाब आ'माल का मेरे तू पहुंचा सारी उम्मत को

मुझे भी बख़्श या रब बख़्श उन की प्यारी उम्मत को

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मेरी ज़िन्दगी का पहला रिसाला

अज़ : सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْہُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे बचपन ही से आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से मह़ब्बत हो गई थी । "तज़्किरए अह़मद रज़ा ब सिलसिलए यौमे रज़ा" मेरी ज़िन्दगी का पहला रिसाला है । जो कि मैं ने 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1393 हि. (ब मुत़ाबिक़ 31-3-1973) को "यौमे रज़ा" के मौक़अ़ पर जारी किया था । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के बहुत सारे एडीशन शाएअ़ हुए हैं, वक़्तन फ़ वक़्तन इस में तरामीम की हैं, रौज़ए रसूल عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की याद दिलाने वाले दस्त ख़त़ भी उन दिनों नहीं थे बा'द में ज़ेह्न बना मगर आख़िरी सफ़ह़े पर बत़ौरे यादगार तारीख़ पुरानी रखी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी इस काविश को क़बूल फ़रमाए और इस मुख़्तसर से रिसाले को आ़शिक़ाने रसूल के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए । अल्लाह तबारक व तआ़ला ब त़ुफ़ैले आ'ला ह़ज़रत मेरी और रिसाले के हर सुन्नी क़ारी की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत करे । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा का पड़ोस

25 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 सि. हि.
21-12-2011

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

तज़्किरए इमाम अहमद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर ब निय्यते सवाब येह रिसाला पूरा पढ़ कर अपनी दुन्या व आख़िरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शफ़ीए उमम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : "जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा ।"

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص ٢٦١ مؤسسة الريان بيروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

विलादते बा सआ़दत

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की विलादते बा सआ़दत बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला जसूली में 10 **शव्वालुल मुकर्रम** 1272 सि.हि. बरोज़ हफ़्ता ब वक़्ते ज़ोहर मुत़ाबिक़ 14 जून 1856 ई. को हुई। सने पैदाइश के ए'तिबार से आप का नाम **अल मुख़्तार** (1272 हि.) है।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 58, मक्तबतुल मदीना)

आ'ला ह़ज़रत का सने विलादत

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना सने विलादत पारह 28 **सूरतुल मुजादलह** की आयत नम्बर 22 से निकाला है। इस आयते करीमा के **इल्मे अब्जद** के ए'तिबार के मुत़ाबिक़ 1272 अ़दद हैं और हिजरी साल के ह़िसाब से येही आप का सने विलादत है। चुनान्चे **मक्तबतुल मदीना** की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मत़्बूआ़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत सफ़ह़ा 410 पर है : विलादत की तारीख़ों का ज़िक्र था और इस पर (सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने) इर्शाद फ़रमाया : بِحَمْدِ اللهِ تعالی मेरी विलादत की तारीख़ इस आयते करीमा में है :

أُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَاَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ (پ۲۸، المجادلہ:۲۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से इन की मदद की।

आप का नामे मुबारक **मुह़म्मद** है और आप के दादा ने **अह़मद रज़ा** कह कर पुकारा और इसी नाम से मश्हूर हुए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ैरत अंगेज़ बचपन

उ़मूमन हर ज़माने के बच्चों का वोही ह़ाल होता है जो आज कल बच्चों का है कि सात आठ साल तक तो उन्हें किसी बात का होश नहीं होता और न ही वोह किसी बात की तह तक पहुंच सकते हैं, मगर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बचपन बड़ी अहम्मिय्यत का ह़ामिल था। कमसिनी, ख़ुर्द साली (या'नी बचपन) और कम उ़म्री में होशमन्दी और क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा का येह आ़लम था कि साढ़े **चार साल** की नन्ही सी उ़म्र में क़ुरआने मजीद नाज़िरा मुकम्मल पढ़ने की ने'मत से बारयाब हो गए। **छ[6] साल** के थे कि रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने में मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मौज़ूअ़ पर एक बहुत बड़े इज्तिमाअ़ में निहायत पुर मग़्ज़ तक़रीर फ़रमा कर उ़लमाए किराम और मशाइख़े इ़ज़ाम से तह़्सीनो आफ़रीन की दाद वुसूल की। इसी उ़म्र में आप ने **बग़दाद शरीफ़** के बारे में सम्त मा'लूम कर ली फिर ता दमे ह़यात बल्दए मुबारकए ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم (या'नी ग़ौसे आ'ज़म के मुबारक शहर) की त़रफ़ पाउं न फैलाए। नमाज़ से तो इ़श्क़ की ह़द तक लगाव था चुनान्चे, नमाज़े पंजगाना बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला का तह़फ़्फ़ुज़ करते हुए मस्जिद में जा कर अदा फ़रमाया करते, जब कभी किसी ख़ातून का सामना होता तो फ़ौरन नज़रें नीची करते हुए सर झुका लिया करते, गोया कि सुन्नते मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ التَّحِيَّةُ وَالثَّنَاء का आप पर ग़लबा था जिस का इज़्हार करते हुए हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लिया में यूं सलाम पेश करते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

नीची आंखों की शर्मो ह़या पर दुरूद

ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने लड़क पन में तक़्वे को इस क़दर अपना लिया था कि चलते वक़्त क़दमों की आहट तक सुनाई न देती थी। सात साल के थे कि माहे **रमज़ानुल मुबारक** में रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये। (दीबाचा फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 16)

बचपन की एक ह़िकायत

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बचपन में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को घर पर एक मौलवी साह़िब कुरआने मजीद पढ़ाने आया करते थे। एक रोज़ का ज़िक्र है कि मौलवी साह़िब किसी आयते करीमा में बार बार एक लफ़्ज़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बताते थे मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से नहीं निकलता था वोह "ज़बर" बताते थे आप "ज़ेर" पढ़ते थे येह कैफ़िय्यत जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दादाजान ह़ज़रते मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने देखी तो हुज़ूर (या'नी आ'ला ह़ज़रत) को अपने पास बुलाया और कलामे पाक मंगवा कर देखा तो उस में कातिब ने ग़लती से ज़ेर की जगह ज़बर लिख दिया था, या'नी जो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बान से निकलता था वोह सह़ीह़ था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दादा ने पूछा कि बेटे जिस त़रह़ मौलवी साह़िब पढ़ाते थे तुम उसी त़रह़ क्यूं नहीं पढ़ते थे? अ़र्ज़ की : मैं इरादा करता था मगर ज़बान पर क़ाबू न पाता था।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद फ़रमाते थे कि मेरे उस्ताद जिन से मैं इब्तिदाई किताब पढ़ता था, जब मुझे सबक़ पढ़ा दिया करते, एक दो मरतबा मैं देख कर किताब बन्द कर देता, जब सबक़ सुनते तो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सुना देता। रोज़ाना येह ह़ालत देख कर सख़्त तअ़ज्जुब करते। एक दिन मुझ से फ़रमाने लगे कि अह़मद मियां! येह तो कहो तुम आदमी हो या जिन्न? कि मुझ को पढ़ाते देर लगती है मगर तुम को याद करते देर नहीं लगती! **आप ने फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र है मैं इन्सान ही हूं, हां अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल है।**

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 68)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहला फ़तवा

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सिर्फ़ तेरह13 साल दस10 माह चार4 दिन की उ़म्र में तमाम मुरव्वजा उ़लूम की तक्मील अपने वालिदे माजिद **रईसुल मुतकल्लिमीन** मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان से कर के सनदे फ़राग़त ह़ासिल कर ली। इसी दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक सुवाल के जवाब में पहला **फ़तवा** तह़रीर फ़रमाया था। फ़तवा सह़ीह़ पा कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद ने मस्नदे इफ़्ता आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सिपुर्द कर दी और आख़िर वक़्त तक फ़तावा तह़रीर फ़रमाते रहे। (ऐज़न, स. 279) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'ला ह़ज़रत की रियाज़ी दानी

अल्लाह तआ़ला ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बे अन्दाज़ा उ़लूमे जलीला से नवाज़ा था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कमो बेश पचास उ़लूम में क़लम उठाया और क़ाबिले क़द्र कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को हर फ़न में काफ़ी दस्तरस ह़ासिल थी। इ़ल्मे तौक़ीत में इस क़दर कमाल ह़ासिल था कि दिन को सूरज और रात को सितारे देख कर घड़ी मिला लेते। वक़्त बिल्कुल सह़ीह़ होता और कभी एक मिनट का भी फ़र्क़ न हुवा। इ़ल्मे रियाज़ी में आप यगानए रूज़गार थे। चुनान्चे, अ़लीगढ़ यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सेलर डॉक्टर ज़ियाउद्दीन जो कि रियाज़ी में ग़ैर मुल्की डिग्रियां और तमग़ा जात ह़ासिल किये हुए थे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में रियाज़ी का एक मस्अला पूछने आए। इर्शाद हुवा : फ़रमाइये ! उन्हों ने कहा : वोह ऐसा मस्अला नहीं जिसे इतनी आसानी से अ़र्ज़ करूं। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : कुछ तो फ़रमाइये। वाइस चान्सेलर साहिब ने सुवाल पेश किया तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसी वक़्त उस का तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब दे दिया। उन्हों ने इन्तिहाई

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

ह़ैरत से कहा कि मैं इस मस्अले के लिये जर्मन जाना चाहता था इत्तिफ़ाक़न हमारे दीनियात के प्रोफ़ेसर मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ साह़िब ने मेरी राहनुमाई फ़रमाई और मैं यहां ह़ाज़िर हो गया। यूं मा'लूम होता है कि आप इसी मस्अले को किताब में देख रहे थे। डॉक्टर साह़िब बसद फ़रह़तो मसर्रत वापस तशरीफ़ ले गए और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शख़्सिय्यत से इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि दाढ़ी रख ली और सौमो सलात के पाबन्द हो गए। (ऐज़न, स. 223, 229) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

इलावा अज़ीं मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इल्मे तक्सीर, इल्मे हैअत, इल्मे जफ़र वग़ैरा में भी काफ़ी महारत रखते थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ैरत अंगेज़ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा

ह़ज़रते अबू ह़ामिद सय्यिद मुह़म्मद मुह़द्दिस कछौछवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जब **दारुल इफ़्ता** में काम करने के सिल्सिले में मेरा बरेली शरीफ़ में क़ियाम था तो रात दिन ऐसे वाक़िआ़त सामने आते थे कि **आ'ला ह़ज़रत की ह़ाज़िर जवाबी** से लोग हैरान हो जाते। इन ह़ाज़िर जवाबियों में हैरत में डाल देने वाले वाक़िआ़त और वोह इल्मी **ह़ाज़िर जवाबी** थी जिस की मिसाल सुनी भी नहीं गई। मसलन इस्तिफ़्ता (सुवाल) आया, **दारुल इफ़्ता** में काम करने वालों ने पढ़ा और ऐसा मा'लूम हुवा कि नई क़िस्म का ह़ादिसा दरयाफ़्त किया गया (या'नी नए क़िस्म का मुआ़मला पेश आया है) और जवाब जुज़्इये की शक्ल में न मिल सकेगा, फ़ुक़हाए किराम के उसूले आ़म्मा से इस्तिम्बात़ करना पड़ेगा। (या'नी फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के बताए हुए उसूलों से मस्अला निकालना पड़ेगा) आ'ला ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, अ़र्ज़ किया : अ़जब नए नए क़िस्म के सुवालात आ रहे हैं ! अब हम लोग क्या त़रीक़ा इख़्तियार करें ? फ़रमाया : येह तो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

बड़ा पुराना सुवाल है। इब्ने हुमाम ने "**फ़त्हुल क़दीर**" के फ़ुलां सफ़ह़े में, इब्ने आ़बिदीन ने "**रद्दुल मुह़तार**" की फ़ुलां जिल्द और फ़ुलां सफ़ह़े पर (लिखा है), "**फ़तावा हिन्दिय्या**" में, "**ख़ैरिया**" में येह येह इ़बारत साफ़ साफ़ मौजूद है अब जो किताबों को खोला तो **सफ़्ह़ा, सत़्र और बताई गई इ़बारत** में एक नुक़्ते का फ़र्क़ नहीं। इस ख़ुदादाद फ़ज़्लो कमाल ने उ़लमा को हमेशा ह़ैरत में रखा। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 210) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

किस त़रह इतने इ़ल्म के दरिया बहा दिये
उ़लमाए ह़क़ की अ़क़्ल तो ह़ैरां है आज भी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिर्फ़ एक माह में ह़िफ़्ज़े क़ुरआन

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि एक रोज़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया कि बा'ज़ ना वाक़िफ़ ह़ज़रात मेरे नाम के आगे **ह़ाफ़िज़** लिख दिया करते हैं, ह़ालां कि मैं इस लक़ब का अह्ल नहीं हूं। सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसी रोज़ से दौर शुरूअ़ कर दिया जिस का वक़्त ग़ालिबन इ़शा का वुज़ू फ़रमाने के बा'द से जमाअ़त क़ाइम होने तक मख़्सूस था। रोज़ाना एक पारह याद फ़रमा लिया करते थे, यहां तक कि तीसवें रोज़ तीसवां पारह याद फ़रमा लिया।

एक मौक़अ़ पर फ़रमाया कि मैं ने कलामे पाक बित्तरतीब ब कोशिश याद कर लिया और येह इस लिये कि उन बन्दगाने ख़ुदा का (जो मेरे नाम के आगे ह़ाफ़िज़ लिख दिया करते हैं) कहना ग़लत़ साबित न हो। (ऐज़न, स. 208) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सर ता पा नमूना थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ना'तिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़**" इस अम्र का शाहिद है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की नोके क़लम बल्कि गहराइये क़ल्ब से निकला हुवा हर मिस्रअ़ा मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बे पायां अ़क़ीदतो मह़ब्बत की शहादत देता है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कभी किसी दुन्यवी ताजदार की ख़ुशामद के लिये क़सीदा नहीं लिखा, इस लिये कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व ग़ुलामी को दिलो जान से क़बूल कर लिया था। और इस में मर्तबए कमाल को पहुंचे हुए थे, इस का इज़्हार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शे'र में इस त़रह़ फ़रमाया :

इन्हें जाना इन्हें माना न रखा ग़ैर से काम

लिल्लाहिल ह़म्द मैं दुन्या से मुसल्मान गया

हुक्काम की ख़ुशामद से इज्तिनाब

एक मरतबा रियासत नानपारा (ज़िलअ़ बहराइच यूपी हिन्द) के नवाब की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) में शुअ़रा ने क़साइद लिखे। कुछ लोगों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी गुज़ारिश की, कि ह़ज़रत आप भी नवाब साह़िब की मद्ह़ (ता'रीफ़) में कोई क़सीदा लिख दें। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस के जवाब में एक ना'त शरीफ़ लिखी जिस का मत़्लअ़[1] येह है :

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं

येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धूआं नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : कमाल = पूरा होना। नक़्स = ख़ामी। ख़ार = कांटा

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुस्नो जमाल दरजए कमाल तक पहुंचता है या'नी हर त़रह़ से कामिल व मुकम्मल है इस में कोई ख़ामी होना तो दूर की बात है,

1 : ग़ज़ल या क़सीदे के शुरूअ़ का शे'र जिस के दोनों मिस्रओं में क़ाफ़िये हों वोह **मत़्लअ़** कहलाता है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

ख़ामी का तसव्वुर तक नहीं हो सकता, हर फूल की शाख़ में कांटे होते हैं मगर गुलशने आमिना का एक येही महकता फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसा है जो कांटों से पाक है, हर शम्अ़ में येह ऐब होता है कि वोह धूआं छोड़ती है मगर आप बज़्मे रिसालत की ऐसी रोशन शम्अ़ हैं कि धूएं या'नी हर तृरह के ऐब से पाक हैं।

और मक़्तअ़[1] में "नानपारा" की बन्दिश कितने लतीफ़ इशारे में अदा करते हैं :

करूं मद्हे अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला

मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन "पारए नां" नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : मद्ह = ता'रीफ़। दुवल = दौलत की जम्अ़। पारए नां = रोटी का टुकड़ा

शर्हे कलामे रज़ा : मैं अहले दौलतो सरवत की मद्ह सराई या'नी ता'रीफ़ो तौसीफ़ क्यूं करूं ! मैं तो अपने आक़ाए करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم के दर का फ़क़ीर हूं। मेरा दीन "पारए नान" नहीं। "नान" का मा'ना रोटी और "पारा" या'नी टुकड़ा। मतृलब येह कि मेरा दीन "रोटी का टुकड़ा" नहीं है कि जिस के लिये मालदारों की ख़ुशामदें करता फिरूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेदारी में दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه दूसरी बार हज के लिये हाज़िर हुए तो मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की आरज़ू लिये रौज़ए अत्हर के सामने देर तक सलातो सलाम पढ़ते रहे, मगर पहली रात क़िस्मत में येह सआ़दत न थी। इस मौक़अ़ पर वोह मा'रूफ़ ना'तिया ग़ज़ल लिखी जिस के मत्लअ़ में दामने रहमत से वाबस्तगी की उम्मीद दिखाई है :

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं

तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

शर्हे कलामे रज़ा : ऐ बहार झूम जा ! कि तुझ पर बहारों की बहार आने वाली है। वोह देख ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सूए लालाज़ार या'नी जानिबे गुलज़ार तशरीफ़ ला रहे हैं !

---

1 : कलाम का आख़िरी शे'र जिस में शाइर का तख़ल्लुस हो वोह **मक़्तअ़** कहलाता है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

मक्तअ़ में बारगाहे रिसालत में अपनी आ़जिज़ी और बे मायगी (या'नी मिस्कीनी) का नक़्शा यूं खींचा है :

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा

तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मिस्रए़ सानी में बत़ौरे आ़जिज़ी अपने लिये "कुत्ते" का लफ़्ज़ इस्ति'माल फ़रमाया है मगर अदबन यहां "शैदा" लिखा है)

शर्ह़े कलामे रज़ा : इस मक्तअ़ में आ़शिक़े माहे रिसालत सरकारे आ'ला ह़ज़रत कमाले इन्किसारी का इज़्हार करते हुए अपने आप से फ़रमाते हैं : ऐ अह़मद रज़ा ! तू क्या और तेरी ह़क़ीक़त क्या ! तुझ जैसे तो हज़ारों सगाने मदीना गलियों में यूं फिर रहे हैं !

येह ग़ज़ल अ़र्ज़ कर के दीदार के इन्तिज़ार में मुअद्दब बैठे हुए थे कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और चश्माने सर (या'नी सर की खुली आंखों) से बेदारी में ज़ियारते मह़बूबे बारी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशर्रफ़ हुए। (ऐज़न, स. 92) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالى عليه واٰله وسلّم

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरबान जाइये उन आंखों पर कि जो आ़लमे बेदारी में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़ याब हुईं। क्यूं न हो कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के अन्दर इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कूट कूट कर भरा हुवा था और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "**फ़नाफ़िर्रसूल**" के आ'ला मन्सब पर फ़ाइज़ थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ना'तिया कलाम इस अम्र का शाहिद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सीरत की बा'ज़ झल्कियां

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई मेरे दिल के दो टुकड़े कर दे तो एक पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه और दूसरे पर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه लिखा हुवा पाएगा।

(सवानेहे इमाम अह़मद रज़ा, स. 96, मक्तबए नूरिया रज़विय्या, सख्खर)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **"सामाने बख़्शिश"** में फ़रमाते हैं :

ख़ुदा एक पर हो तो इक पर मुह़म्मद

अगर क़ल्ब अपना दो पारा करूं मैं

मशाइख़े ज़माना की नज़रों में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वाक़ेई फ़नाफ़िर्रसूल थे। अक्सर फ़िराक़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। पेशावर गुस्ताख़ों की गुस्ताख़ाना इबारात को देखते तो आंखों से आंसूओं की झड़ी लग जाती और प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िमायत में गुस्ताख़ों का सख़्ती से रद करते ताकि वोह झुंझला कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुरा कहना और लिखना शुरूअ़ कर दें। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर इस पर फ़ख़्र किया करते कि बारी तआ़ला ने इस दौर में मुझे नामूसे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ढाल बनाया है। त़रीक़े इस्ति'माल येह है कि बद गोयों का सख़्ती और तेज़ कलामी से रद करता हूं कि इस त़रह़ वोह मुझे बुरा भला कहने में मसरूफ़ हो जाएं। उस वक़्त तक के लिये आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करने से बचे रहेंगे। ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा

दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

ग़ुरबा को कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे, हमेशा ग़रीबों की इमदाद करते रहते। बल्कि आख़िरी वक़्त भी अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को वसिय्यत की, कि ग़ुरबा का ख़ास ख़याल रखना। इन को ख़ात़िर दारी से अच्छे अच्छे और लज़ीज़ खाने अपने घर से खिलाया करना और किसी ग़रीब को मुत़्लक़ न झिड़कना।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर तस्नीफ़ो तालीफ़ में लगे रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़ बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ूराक बहुत कम थी।

दौराने मीलाद बैठने का अन्दाज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिये खड़े होते बाक़ी शुरूअ़ से आख़िर तक अदबन दो ज़ानू बैठे रहते। यूं ही वा'ज़ फ़रमाते, चार[4] पांच[5] घन्टे कामिल दो[2] ज़ानू ही मिम्बर शरीफ़ पर रहते। (ऐज़न, स. 119, ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 98) काश ! हम ग़ुलामाने आ'ला ह़ज़रत को भी तिलावते क़ुरआन करते या सुनते वक़्त नीज़ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात, मदनी मुज़ाकरात, दर्स व मदनी ह़ल्क़ों वग़ैरा में अदबन दो ज़ानू बैठने की सआ़दत मिल जाए।

सोने का मुन्फ़रिद अन्दाज़

सोते वक़्त हाथ के अंगूठे को शहादत की उंगली पर रख लेते ताकि उंगलियों से लफ़्ज़ "**अल्लाह** (اللہ)" बन जाए। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पैर फैला कर कभी न सोते बल्कि दाहनी (या'नी सीधी) करवट लैट कर दोनों हाथों को मिला कर सर के नीचे रख लेते और पाउं मुबारक समेट लेते, इस त़रह़ जिस्म से लफ़्ज़ "**मुह़म्मद** (محمد)" बन जाता। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 99 वग़ैरा) येह हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के चाहने वालों और रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ों की अदाएं

नामे ख़ुदा है हाथ में नामे नबी है ज़ात में

मोहरे ग़ुलामी है पड़ी, लिखे हुए हैं नाम दो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ट्रेन रुकी रही !

जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअ़ए रेल जा रहे थे। रास्ते में नवाब

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

गन्ज के स्टेशन पर जहां गाड़ी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठहरती है, मग़रिब का वक़्त हो चुका था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने गाड़ी ठहरते ही तक्बीरे इक़ामत फ़रमा कर गाड़ी के अन्दर ही निय्यत बांध ली, ग़ालिबन पांच शख़्सों ने इक़्तिदा की उन में मैं भी था लेकिन अभी शरीके जमाअ़त नहीं होने पाया था कि मेरी नज़र ग़ैर मुस्लिम गार्ड पर पड़ी जो प्लेट फ़ॉर्म पर खड़ा सब्ज़ झन्डी हिला रहा था, मैं ने खिड़की से झांक कर देखा कि लाइन क्लियर थी और गाड़ी छूट रही थी, मगर गाड़ी न चली और हुज़ूर आ'ला ह़ज़रत ने ब इत़्मीनाने तमाम बिला किसी इज़्तिराब के तीनों फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा कीं और जिस वक़्त दाईं जानिब सलाम फेरा था गाड़ी चल दी। मुक़्तदियों की ज़बान से बे साख़्ता سُبْحٰنَ الله سُبْحٰنَ الله سُبْحٰنَ الله निकल गया। इस **करामत** में क़ाबिले ग़ौर येह बात थी कि अगर जमाअ़त प्लेट फ़ॉर्म पर खड़ी होती तो येह कहा जा सकता था कि गार्ड ने एक बुज़ुर्ग हस्ती को देख कर गाड़ी रोक ली होगी ऐसा न था बल्कि नमाज़ गाड़ी के अन्दर पढ़ी थी। इस थोड़े वक़्त में गार्ड को क्या ख़बर हो सकती थी कि एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बन्दा फ़रीज़ए नमाज़ गाड़ी में अदा करता है। (ऐज़न, जि. 3, स. 189, 190)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई

वोह कि इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्ह़े कलामे रज़ा : जो कोई सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत़ीअ़ो फ़रमां बरदार हुवा मख़्लूक़े परवर दगार उस की इत़ाअ़त गुज़ार हो गई और जो कोई दरबारे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर हुवा वोह बारगाहे रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ से भी दूर हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तसानीफ़

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर कमो बेश एक हज़ार किताबें लिखी हैं। यूं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 1286 सि.हि. से 1340 सि.हि. तक लाखों फ़तवे दिये होंगे, लेकिन

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा।

अफ़्सोस ! कि सब नक़्ल न किये जा सके, जो नक़्ल कर लिये गए थे उन का नाम **"अल अ़तायन्नबविय्यह फ़िल फ़तावर्रज़विय्यह"** रखा गया। **फ़तावा रज़विय्या** (मुख़र्रजा) की 30 जिल्दें हैं जिन के कुल सफ़ह़ात : 21656, कुल सुवालात व जवाबात : 6847 और कुल रसाइल : 206 हैं।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 30, स. 10, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

क़ुरआनो ह़दीस, फ़िक़्ह, मन्तिक़ और कलाम वग़ैरा में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वुस्अ़ते नज़री का अन्दाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तावा के मुत़ालए़ से ही हो सकता है। क्यूं कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हर फ़तवे में दलाइल का समुन्दर मोजज़न है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सात रसाइल के नाम मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ **"सुब्ह़ानस्सुब्बूह़ अ़न ऐ़बि किज़्बिन मक़्बूह़"** सच्चे ख़ुदा पर झूट का बोहतान बांधने वालों के रद में येह रिसाला तह़रीर फ़रमाया जिस ने मुख़ालिफ़ीन के दम तोड़ दिये और क़लम निचोड़ दिये ﴾2﴿ **मक़ामिउ़ल ह़दीद** ﴾3﴿ **अल अम्नु वल उ़ला** ﴾4﴿ **तजल्लिय्युल यक़ीन** ﴾5﴿ **अल कौकबतुश्शहाबियह** ﴾6﴿ **सिल्लुस्सुयूफ़िल हिन्दिय्यह** ﴾7﴿ **ह़यातुल मवात।**

इ़ल्म का चश्मा हुवा है मोजज़न तह़रीर में
जब क़लम तूने उठाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 536)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरजमए क़ुरआने करीम

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़ुरआने करीम का तरजमा किया जो उर्दू के मौजूदा तराजिम में सब पर फ़ाइक़ (या'नी फ़ौक़िय्यत रखता) है। तरजमे का नाम **"कन्ज़ुल ईमान"** है जिस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ा ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बनाम "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" और **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने "नूरुल इरफ़ान" के नाम से ह़ाशिया लिखा है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

वफ़ाते ह़सरत आयात

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी वफ़ात से 4 माह 22 दिन पहले ख़ुद अपने विसाल की ख़बर दे कर पारह 29 **सूरतुद्दह्र** की आयत 15 से साले इन्तिक़ाल का **इस्तिख़राज** फ़रमा दिया था। इस आयते शरीफ़ा के **इल्मे अब्जद** के ह़िसाब से 1340 अ़दद बनते हैं और येही हिजरी साल के ए'तिबार से सने वफ़ात है। वोह आयते मुबारका येह है :

وَ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِاٰنِیَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ (پ۲۹، الدھر:۱۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन पर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा।

(सवानेहे इमाम अह़मद रज़ा, स. 384)

25 **सफ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1340 हि. मुत़ाबिक़ 28 अक्तूबर 1921 ई. को **जुमुअ़तुल मुबारक** के दिन हिन्दूस्तान के वक़्त के मुत़ाबिक़ 2 बज कर 38 मिनट पर, ऐन अज़ाने जुमुआ़ के वक़्त **आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने दाइये अजल को **लब्बैक** कहा। اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ ؕ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे पुर अन्वार मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में आज भी ज़ियारत गाहे ख़ासो आ़म है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तुम क्या गए कि रौनक़े मह़फ़िल चली गई

शे'रे अदब की ज़ुल्फ़ परेशां है आज भी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। (طبرانی)

दरबारे रिसालत में इन्तिज़ार

25 **सफ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1340 हि. को बैतुल मुक़द्दस में एक शामी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में अपने आप को दरबारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पाया। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان दरबार में ह़ाज़िर थे, लेकिन मजलिस में सुकूत त़ारी था और ऐसा मा'लूम होता था कि किसी आने वाले का इन्तिज़ार है, शामी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान हों किस का इन्तिज़ार है ? सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **हमें अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है।** शामी बुज़ुर्ग ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अह़मद रज़ा कौन हैं ? इर्शाद हुवा : हिन्दूस्तान में बरेली के बाशिन्दे हैं। बेदारी के बा'द वोह शामी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मौलाना अह़मद रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तलाश में हिन्दूस्तान की त़रफ़ चल पड़े और जब वोह बरेली शरीफ़ आए तो उन्हें मा'लूम हुवा कि इस आ़शिक़े रसूल का उसी रोज़ (या'नी 25 **सफ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1340 हि.) को विसाल हो चुका है। जिस रोज़ उन्हों ने ख़्वाब में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह कहते सुना था कि "हमें अह़मद रज़ा का इन्तिज़ार है।" (सवानेहे इमाम अह़मद रज़ा, स. 391) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इ़श्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सगे ग़ौसो रज़ा

मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी रज़वी عُفِيَ عَنْهُ

हफ़्ता 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1393 हि.

(ब मुत़ाबिक़ 31-3-1973)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَادِل

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह तज़्किरा मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दिल उ़लमाए अहले सुन्नत की महब्बत से लबरेज़ हो जाएगा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और हि़साब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे।

(فردوس الاخبار ج۲ ص ۳۷۵ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

होन्हार मदनी मुन्ना

एक इल्मी घराने से तअ़ल्लुक़ रखने वाले चार[4] सालह मदनी मुन्ने की ''तक़्रीबे बिस्मिल्लाह'' बड़ी धूमधाम से अदा की गई और इस के बा'द उस मदनी मुन्ने ने हि़फ़्ज़े कुरआन शुरूअ़ कर दिया। पढ़ाने वाले हाफ़िज़ साहिब एक रोज़ सख़्त अन्दाज़ में ता'लीम दे रहे थे कि एक रोशन ज़मीर बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वहां से गुज़र हुवा, उन्हों ने फ़रमाया : हाफ़िज़ साहिब ! आप को दिखता नहीं कि येह मुन्ना बड़ा होन्हार (या'नी ज़हीन व क़ाबिल) है, इस पर इतनी सख़्ती न कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मन्ज़िल पर बहुत जल्द पहुंचेगा।'' इस के बा'द हाफ़िज़ साहिब ने अपनी रविश में तब्दीली फ़रमाई और नरमी व शफ़्क़त से सबक़ पढ़ाना शुरूअ़ कर दिया। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमाने बिशारत निशान के मुताबिक़ एक वक़्त आया कि येह मदनी मुन्ना आस्माने इल्मो अ़मल का सितारा बन कर चमका और एक आ़लम इस से रहनुमाई हासिल करने लगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं कि वोह होन्हार मदनी मुन्ना कौन था ? वोह ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, बदरुल अमासिल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى थे। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالى عليه واٰله وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل के इब्तिदाई ह़ालात

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی की विलादते मुबारक 21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1300 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ यकुम जनवरी 1883 ईसवी बरोज़ पीर शरीफ़ """हिन्द" के शहर "मुरादआबाद" हुई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम "मुह़म्मद नईमुद्दीन" रखा गया जब कि इ़ल्मे अब्जद के ए'तिबार से तारीख़ी नाम "ग़ुलाम मुस्त़फ़ा" (1300 सि.हि.) तज्वीज़ हुवा। आप के वालिदे माजिद ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मुईनुद्दीन नुज़्हत और जद्दे अमजद (या'नी दादाजान) ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अमीनुद्दीन रासिख़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا अपने अपने दौर में उर्दू और फ़ारसी के उस्ताज़ माने गए हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिद ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मुईनुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن के कई फ़रज़न्द क़ुरआन के ह़ाफ़िज़ होने के बा'द वफ़ात पा चुके थे। सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل की पैदाइश पर आप के वालिदे मोह़तरम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने नज़्र मानी कि मौला तआ़ला ने इसे ज़िन्दगी बख़्शी तो ख़िदमते दीन के लिये इस फ़रज़न्द को वक़्फ़ कर दूंगा।

ता'लीमो तरबियत

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل ने उर्दू और फ़ारसी की ता'लीम वालिदे गिरामी ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मुईनुद्दीन नुज़्हत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ह़ासिल की फिर ह़ज़रत मौलाना अबुल फ़ज़्ल फ़ज़्ल अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد से अ़रबी की चन्द कुतुब पढ़ीं। ह़ज़रत मौलाना अबुल फ़ज़्ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ना'ते सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ था। चुनान्चे, हर जुमुआ़ को बा'द नमाज़े जुमुआ़ मस्जिद चोकी ह़सन ख़ान मुरादआबाद में ना'त शरीफ़ की मह़फ़िल करवाते जिस में शहर भर से कसीर लोग शरीक हुवा करते।

दर्से निज़ामी की तक्मील

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रत मौलाना अबुल फ़ज़्ल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَدْل आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को साथ ले कर शैख़ुल ह़दीस, इमामुल उ़लमा जामिउ़ल मा'क़ूल वल मन्क़ूल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद गुल क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ले कर ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "येह साह़िब ज़ादे निहायत ज़की व फ़हीम (या'नी निहायत ज़हीन व समझदार) हैं, मेरी ख़्वाहिश है कि बक़िय्या दर्से निज़ामी की आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से तक्मील करें।" ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़बूल फ़रमाया। चुनान्चे सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل ने उस्ताज़ुल असातिज़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा

मौलाना सय्यिद मुह़म्मद गुल क़ादिरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से मन्तिक़, फ़ल्सफ़ा, रियाज़ी, उक़्लीदस, तौक़ीत व हैअत, अ़रबी ब हुरूफ़े ग़ैर मन्क़ूता (बिग़ैर नुक़्तों के ह़र्फ़ों वाली अ़रबी), तफ़्सीर, ह़दीस और फ़िक़्ह वग़ैरा बहुत से मुरव्वजा दर्से निज़ामी और ग़ैर दर्से निज़ामी उ़लूमो फ़ुनून की अस्नाद ह़ासिल फ़रमाईं और बहुत से सलासिले अह़ादीस व उ़लूमे इस्लामिय्या की सनदें भी तफ़्वीज़ हुईं (या'नी दी गईं)। आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه का सिल्सिलए सनदे ह़दीस क़ुद्वतुल फ़ुज़ला, उ़म्दतुल मुह़क़्क़िक़ीन ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मुह़म्मद मक्की عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ख़त़ीब व मुदर्रिसे मस्जिदुल ह़राम के ज़रीए मुह़श्शिये दुर्रे मुख़्तार ख़ातमुल मुह़क़्क़िक़ीन सय्यिद अह़मद त़ह़त़ावी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی से मिलता है जिन की सनद अ़रबो अ़जम में मश्हूर है। फिर एक साल तक फ़तवा नवीसी की मश्क़ फ़रमाई। 1320 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1902 सि.ई. में 20 साल की उ़म्र में अ़ज़ीमुश्शान जल्से में उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیۡه की दस्तार बन्दी फ़रमाई, इस मौक़अ़ पर आप के वालिदे गिरामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने तारीख़ कही

है मेरे पिसर को त़लबा पर वोह तफ़ज़्ज़ुल — सय्यारों में रखता है जो मिर्रीख़ फ़ज़ीलत

नुज़्हत ! नईमुद्दीन को येह कह के सुना दे — दस्तारे फ़ज़ीलत की है तारीख़ "फ़ज़ीलत"

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इ़ल्मे त़िब की तह़सील

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡعَادِل ने इ़ल्मे त़िब ह़कीमे ह़ाज़िक़ ह़ज़रत मौलाना ह़कीम फ़ैज़ अह़मद साह़िब अमरोहवी से ह़ासिल किया। जिस त़रह़ से आप को उ़लूमे मन्क़ूलिया व उ़लूमे मा'क़ूलिया में हम अ़स्र उ़लमा में नुमायां ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी इसी त़रह़ मैदाने त़िब में भी आप कमाल महारत रखते थे कि उ़मूमन मरीज़ का चेहरा देख कर ही मरज़ पकड़ लिया करते थे, नब्बाज़ी (या'नी नब्ज़ देख कर मरज़ शनाख़्त करने) में भी यक्ताए ज़माना थे। मुफ़र्रदाते अदविया के ख़्वास अज़्बर (या'नी ज़बानी) थे, मुरक्कबात में भी ख़ासी सलाह़िय्यतों के मालिक थे। जामिआ़ नईमिय्या से फ़ारिग़ होने वाले बहुत से उ़लमा ने आप से इ़ल्मे त़िब भी ह़ासिल किया। आप का जो वक़्त तब्लीग़ व तदरीस से बचता था उस में त़िब व ह़िक्मत के ज़रीए ख़िदमते ख़ल्क़ फ़ी सबीलिल्लाह फ़रमाया करते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मुर्शिद की तलाश

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل पीर की जुस्तुजू में "पीलीभीत" हज़रत शाह जी मुहम्मद शेर मियां साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاهِب की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत शाह साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاهِب बड़ी महब्बत व करम से पेश आए और इस से पहले कि सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل कुछ कहें, फ़रमाया : "मियां ! मुरादआबाद में मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुल क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बड़ी अच्छी सूरत हैं, मैं मुरादआबाद जाता हूं तो उन की ख़िदमत में हाज़िर होता हूं, आप जिस इरादे से आए हैं आप का हिस्सा वहीं है।" चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل मुरादआबाद वापस आए तो हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुल क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने देखते ही इर्शाद फ़रमाया : "शाह जी ! मियां साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاهِب के हां हो आए, अच्छा ! परसों जुमुआ़ है, नमाज़े फ़ज्र के बा'द आइये तो आप का जो हिस्सा है, अ़ता किया जाएगा।" तीसरे रोज़ जुमुआ़ को बा'द नमाज़े फ़ज्र हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद गुल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَدْل ने क़ादिरी सिल्सिले में बैअ़त फ़रमाया और जो हिस्सा था अ़ता किया।

दो शहज़ादों की विलादत

हज़रत शाह जी मुहम्मद शेर मियां साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاهِب ने चलते वक़्त दुआ़ दी थी कि **अल्लाह** तआ़ला आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को दुश्मनाने दीन पर फ़त्ह मन्द रखे और बच्चे अ़ता फ़रमाए, मुरादआबाद आने के बा'द एक हफ़्ता गुज़रा था कि एक साथ दो फ़रज़न्द पैदा हुए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से पहली मुलाक़ात

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, इमामे इश्क़ो महब्बत, बाइसे ख़ैरो बरकत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मुहक़्क़िक़ाना तसानीफ़ के मुतालए से हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل के दिल में ग़ाइबाना तौर पर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की गहरी महब्बत व अ़क़ीदत पैदा हो गई थी। एक दफ़्आ़ किसी बद मज़्हब ने एक अख़्बार में आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के ख़िलाफ़ मज़्मून लिखा जिस में दिल खोल कर दुश्नाम त़राज़ी का मुज़ाहरा किया। हज़रते सदरुल

अफ़ाज़िल عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡعَادِل ने जब उस मज़्मून को देखा तो सख़्त सदमा पहुंचा, हाथों हाथ उस के जवाब में एक वज़ाहती मज़्मून तह़रीर फ़रमाया और किसी तरकीब से उसी अख़्बार में शाएअ़ करवा दिया। आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت को पता चला तो मुरादआबाद में अपने एक अ़क़ीदत मन्द हाजी मुह़म्मद अशरफ़ शाज़िली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَلِى को तह़रीर फ़रमाया कि मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡمُبِيۡن को साथ ले कर बरेली आएं। पहली ही मुलाक़ात में ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡعَادِل, आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت की शफ़्क़तो मह़ब्बत से इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि फिर कोई महीना बरेली शरीफ़ की ह़ाज़िरी से ख़ाली न जाता। आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ख़ुद फ़रमाते हैं : "आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت के आस्ताने के सफ़र के लिये कभी मेरा बिस्तर खुला ही नहीं, मैं लाज़िमी हर पीर और जुमे'रात को आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت की ख़िदमत में जाता था।" मश्हूर है कि "सदरुल अफ़ाज़िल" का लक़ब आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه को आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت ही ने दिया। आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت ने भी आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه को ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बीस साल की उ़म्र में पहली तस्नीफ़

दौराने त़ालिबे इल्मी सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡعَادِل ने सह़ाफ़ती त़रीक़े से तब्लीग़े दीन के लिये मुख़्तलिफ़ रसाइल व जराइद में मज़ामीन लिखने का सिल्सिला शुरूअ़ किया। येह मज़ामीन कलकत्ता (अल हिन्द) के "अल हिलाल" और "अल बलाग़" में शाएअ़ होते रहे। इसी दौरान आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने येह ख़याल फ़रमाया कि मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के "इ़ल्मे ग़ैब" पर एक ऐसी जामेअ़ किताब होनी चाहिये, जिस से मो'तरिज़ीन के तमाम अवहाम व शुकूक और बात़िल नज़रिय्यात का शाफ़ी व वाफ़ी मुहज़्ज़ब पैराए में जवाब हो। चुनान्चे, आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने एक मुस्तक़िल किताब लिखनी शुरूअ़ की। उस वक़्त चूंकि आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के पास ऐसा जामेअ़ कुतुब ख़ाना न था कि जिस में हर क़िस्म की किताबें मौजूद होतीं, लिहाज़ा आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ने मुस्त़फ़ाआबाद (रामपूर, हिन्द) के कुतुब ख़ाने की त़रफ़ रुजूअ़ किया। आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيۡه सफ़र कर के "मुस्त़फ़ाआबाद" जाते, वहां के कुतुब ख़ाने से ह़वाला जात देख कर आते और मुरादआबाद में किताब लिखते। जब

www.dawateislami.net

बीस साल की उ़म्र में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की दस्तार बन्दी हुई तो वोह किताब भी मुकम्मल हो गई जिस का नाम "अल कलिमतुल उ़ल्या लि ए'लाए इल्मिल मुस्त़फ़ा" है।

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का ख़िराजे तह़सीन

जब येह किताब शाएअ़ हुई तो ह़ाजी मुह़म्मद अशरफ़ शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی इस किताब को ले कर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने इस को मुलाह़ज़ा कर के फ़रमाया : مَاشَآءَاللّٰه बड़ी उ़म्दा नफ़ीस किताब है, येह नौ उ़म्री और इतने अह़सन दलाइल के साथ इतनी बुलन्द किताब मुसन्निफ़ के होन्हार होने पर दाल (या'नी दलालत करती) है।"

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़ास़ इनायत

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ए'जाज़ वली रज़वी क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : फ़िरक़े बात़िला (या'नी बात़िल फ़िर्क़ों) और मुआ़निदीन (या'नी मुख़ालिफ़ीन) से गुफ़्तगू व मुनाज़िरात में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने बारहा ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل को अपना वकीले ख़ास़ बनाया, चुनान्चे, इसी ख़ुसूसिय्यत की बिना पर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने "ज़िक्रे अह़बाब" में इर्शाद फ़रमाया :

मेरे नईमुद्दीं को ने'मत दे — इस से बला में समाते येह हैं

मश्वरों की क़द्र फ़रमाते

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के उन मुमताज़ ख़ुलफ़ा में से हैं जिन्हें इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के मिज़ाजे आ़ली में बड़ा दख़्ल था। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل के मश्वरों को क़बूल भी फ़रमाते और इज़्हारे मसर्रत व शादमानी फ़रमाते। "अत्तारिय्युद्दारी" की तस्नीफ़ पर मुसव्वदा ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل को दिखाया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस में से कसीर मज़्मून के बारे में आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से दरख़्वास्त की, कि येह निकाल दिया जाए। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने बिला तअम्मुल उसे काट दिया और सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل से येह भी न फ़रमाया कि क्यूं येह तरमीम पेश की ! सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل की आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से मह़ब्बतो अ़क़ीदत का येह आ़लम था

www.dawateislami.net

कि उन की इजाज़त के बिग़ैर कोई सफ़र न फ़रमाते । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل की तदरीसी महारत

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل ने 1328 सि.हि. में मुरादआबाद (हिन्द) में मद्रसए अन्जुमने अहले सुन्नत व जमाअ़त की बुन्याद रखी जिस में मा'क़ूलात व मन्क़ूलात की ता'लीम का आ'ला पैमाने पर इन्तिज़ाम किया गया । 1352 सि.हि. में ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل के इस्मे गिरामी "नईमुद्दीन" की निस्बत से इस का नाम **जामिआ़ नईमिया** रखा गया । सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَادِل को **अल्लाह** तआ़ला ने बे शुमार ख़ूबियों से नवाज़ा था । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बेहतरीन मुक़र्रिर, बा अ़मल मुबल्लिग़, मंझे हुए मुफ़्ती और पुर असर मुसन्निफ़ होने के साथ साथ क़ाबिल तरीन मुदर्रिस भी थे । इल्मे ह़दीस में तो आप मश्हूरे ख़ासो आ़म थे । बड़े बड़े उ़लमाए किराम इस बात का ए'तिराफ़ किया करते थे कि जिस त़रह़ ह़दीस की ता'लीम आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ देते हैं इन के कानों ने कभी और कहीं इस की समाअ़त नहीं की । इस जामेइय्यत से मुख़्तसर अल्फ़ाज़ बयान फ़रमाते थे कि मफ़्हूम ज़ेह्न की गहराइयों में उतर जाता था फ़ुनूने अ़क़्लिया की किताबों की पुर मग़्ज़ मुदल्लल तक़ारीर ज़बानी किया करते थे । दर्स के वक़्त अपने सामने फ़ुनूने अ़क़्लिया की किताब न रखते थे । त़लबा इबारत पढ़ चुकते तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिस किताब पर तक़्रीर फ़रमाते तो गुमान येह होता था कि शायद सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही इस किताब के मुसन्निफ़ हैं जो किताब की गहराइयों और इबारत के रुमूज़ो असरार की वज़ाह़त फ़रमा रहे हैं । इल्मुत्तौक़ीत जिसे इल्मे हैअत भी कहते हैं इस में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ुदादाद महारत ह़ासिल थी । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुतअ़द्दद कुर्रए फ़लकी तय्यार कराए जिस में सब्आ़ सवाबित (या'नी सात आस्मानों) और सय्यारगान को कुर्रे में चांदी के नुक़्तों से वाज़ेह़ फ़रमाया । जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इल्मे हैअत की ता'लीम देते थे तो वोह कुर्रा सामने रख कर त़लबा को गोया आस्मान की सैर करा देते थे । तदरीस में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बे मिसाल महारत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि "मैं ने मुदर्रिस दो ही देखे हैं एक सदरुश्शरीअ़ह और दूसरे सदरुल अफ़ाज़िल (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِما), फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस शो'बे से ज़ियादा वाबस्ता रहे और सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़रा कम ।" आप के मशाहीर तलामिज़ा में ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अबुल बरकात अह़मद क़ादिरी

www.dawateislami.net

(बानिये दारुल उ़लूम हिज़्बुल अह़नाफ़), मुफ़स्सिरे कुरआन अ़ल्लामा सय्यिद अबुल ह़सनात मुह़म्मद अह़मद अशरफ़ी, ताजुल उ़लमा मुफ़्ती मुह़म्मद उ़मर नईमी, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी (गुजरात), फ़क़ीहे आ'ज़म मुफ़्ती मुह़म्मद नूरुल्लाह नईमी, मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी, मुफ़्ती मुह़म्मद हुसैन नईमी संभली (बानिये जामिआ़ नईमिया), ख़लीफ़ए कुत़्बे मदीना मौलाना ग़ुलाम क़ादिरी अशरफ़ी, मुफ़्ती मुह़म्मद ह़बीबुल्लाह नईमी (शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ नईमिया मुरादआबाद) رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علَيهِم शामिल हैं। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दारुल इफ़्ता

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل अपनी गूनागूं मस्रूफ़िय्यात के बा वुजूद **दारुल इफ़्ता** भी बड़ी ख़ूबी और बा क़ाइदगी के साथ चलाते, हिन्द और बैरूने हिन्द नीज़ मुरादआबाद के अत़राफ़ व अक्नाफ़ से बे शुमार इस्तिफ़्ता और इस्तिफ़्सारात आते और तमाम जवाबात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुद इनायत फ़रमाते। بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی फ़िक़्ही जुज़्इय्यात इस क़दर मुस्तह़्ज़र (या'नी ज़ेह्न में रहते) थे कि जवाबात लिखने के लिये कुतुबहाए फ़िक़्ह की त़रफ़ मुराजअ़त (रुजूअ़ करने) की ज़रूरत बहुत ही कम पेश आती। शहज़ादए सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इख़्तिसासुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِين फ़रमाया करते थे कि मीरास व फ़राइज़ के फ़तवे कसरत से आते मगर ह़ज़रत को जवाब लिखने के लिये किताब देखते हुए नहीं देखा। आज तो एक बत़्न दो बत़्न चार बत़्न के फ़तवे अगर दारुल इफ़्ता में आ जाएं तो घन्टों किताबें देखी जाती हैं तब कहीं जा कर फ़तवे का जवाब लिखा जाता है मगर ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل का येह ह़ाल था कि बीस बीस इक्कीस इक्कीस बुत़ून (पेढ़ियों) के फ़तवे भी दारुल इफ़्ता में आ गए मगर ह़ज़रत बिग़ैर किताब देखे जवाब तह़रीर फ़रमा देते थे अलबत्ता उंग्लियों पर कुछ शुमार करते ज़रूर देखा जाता और आप के फ़तवे के इस्तिर्दाद (रद करने) की कभी नौबत नहीं आई।

ख़ुश नवीसी

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل की ख़त्त़ात़ी ऐसी उ़म्दा और क़वाइद के मुत़ाबिक़ थी कि सेंकड़ों ख़ुश नवीस इस फ़न में आप के शागिर्द हैं। मज़ीद बरआं आप ख़त्त़ात़ी के सातों त़र्ज़े तह़रीर में बे मिसाल कमाल रखते थे।

तरजमए "कन्ज़ुल ईमान" की पहली इशाअ़त

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के शोहरए आफ़ाक़ तरजमए कु़रआन **"कन्ज़ुल ईमान"** की अव्वलीन इशाअ़त का सेहरा भी सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی के सर है। कन्ज़ुल ईमान की अव्वलीन, उ़म्दा और ख़ूब सूरत त़बाअ़त के लिये सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ने जामिआ़ नईमिया मुरादआबाद में ज़ाती प्रेस लगवाया। जिस में काम करने वाले सारे अफ़राद ख़ुश अ़क़ीदा मुसल्मान थे जो बा वुज़ू हो कर कन्ज़ुल ईमान की किताबत से ले कर जिल्द साज़ी तक के तमाम मराहि़ल बड़े इन्हिमाक और अ़क़ीदत से तै करते थे। इस सारे अ़मल की निगरानी सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ख़ुद करते थे। आज दुन्या में जो कन्ज़ुल ईमान दस्तयाब है येह वोही "कन्ज़ुल ईमान" है जिसे सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ने शाएअ़ कराया था। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कन्ज़ुल ईमान पर तफ़्सीरी ह़ाशिया बनाम "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरिल कु़रआन" लिखा जो अपनी नोइ़य्यत के ए'तिबार से पहला मुकम्मल ह़ाशिया है और इस की मक़्बूलिय्यत का अन्दाज़ा सिर्फ़ इस एक बात से ही लगाया जा सकता है कि आज **कन्ज़ुल ईमान और ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** दोनों लाज़िम व मल्ज़ूम हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **"मक्तबतुल मदीना"** ने भी **कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** बहुत ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ करने की सआ़दत पाई है। इलावा अज़ीं दा'वते इस्लामी की मजलिसे आई टी (I.T) ने एक सॉफ़्टवेर सी.डी (c.d) मक्तबतुल मदीना के ज़रीए पेश की है जिस पर तिलावत सुनने के साथ साथ तरजमए कन्ज़ुल ईमान और तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का मुत़ालआ़ भी किया जा सकता है नीज़ सर्च ऑपशन (Search Option) के ज़रीए मत़लूबा आयत, तरजमा या तफ़्सीर भी तलाश की जा सकती है, येह सॉफ़्टवेर दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर भी मौजूद है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वालिद साहि़ब की रिह़्लत और आ'ला ह़ज़रत का ता'ज़ियत नामा

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل के वालिदे बुज़ुर्ग वार उस्ताज़ुश्शुअ़रा ह़ज़रत मौलाना मुईनुद्दीन साहि़ब नुज़्हत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के मुरीद थे, एक शे'र में अपनी अ़क़ीदत का इज़्हार यूं करते हैं :

फिरा हूं मैं उस गली से नुज़्हत, हों जिस में गुमराह शैख़ो क़ाज़ी

रिज़ाए अह़मद इसी में समझूं कि मुझ से अह़मद रज़ा हों राज़ी

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 80 साल की उ़म्र में चार दिन बुख़ार में मुब्तला रह कर कलिमए पाक का विर्द करते हुए इस दुन्या से रुख़्सत हुए। ह़ज़रत के इन्तिक़ाले पुर मलाल की ख़बर जब आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت को ''कोहे भवाली'' में पहुंची तो आप ने जो मक्तूबे गिरामी ता'ज़ियत में इरसाल फ़रमाया उस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

مَوْلٰنَا الْمُبَجَّلُ الْمُكَرَّمُ ذِی الْمَجْدِ وَالْكَرَمِ حَامِي السُّنَنْ مَاحِي الْفِتَنْ جُعِلَ كَاِسْمِهٖ نَعِيْمُ الدِّيْنْ۔ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ، اِنَّ لِلّٰهِ مَا اَخَذَ وَمَا اَعْطٰى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ وَاِنَّمَا الْمَحْرُوْمُ مَنْ حُرِمَ الثَّوَابْ، غَفَرَ اللّٰهُ لِمَوْلٰنَا مُعِيْنِ الدِّيْنْ وَرَفَعَ كِتَابَهٗ فِيْ عِلِّيِّيْنْ، وَبَيَّضَ وَجْهَهٗ يَوْمَ الدِّيْنْ، وَاَلْحَقَهٗ بِنَبِيِّهٖ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَاَجْمَلَ صَبْرَكُمْ وَاَجْزَلَ اَجْرَكُمْ وَجَبَرَ كَسْرَكُمْ وَرَفَعَ قَدْرَكُمْ۔ اٰمِيْن

(या'नी : السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ बेशक **अल्लाह** तआ़ला ही का है जो वोह अ़त़ा करता है और जो वापस ले लेता है, बेशक उस के यहां वक़्त हर शै का मुक़र्रर है, सब्र करने वालों को बे ह़िसाब अज्र मिलता है, **अल्लाह** तआ़ला मौलाना मुईनुद्दीन की मग़्फ़िरत फ़रमाए, उन के नामए आ'माल को इल्लिय्यीन में रखे, बरोज़े मह़शर उन का चेहरा रोशन फ़रमाए और उन्हें सय्यिदिल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَبَارَکَ وَسَلَّم से मुलाक़ात का शरफ़ बख़्शे, **अल्लाह** तआ़ला आप को सब्रे जमील और अज्रे जज़ील बख़्शे और आप के अधूरे कामों को मुकम्मल फ़रमाए और आप को मज़ीद इ़ज़्ज़त बख़्शे। आमीन)

(आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद लिखते हैं :) येह पुर मलाल कार्ड रोज़े ईद आया, मैं नमाज़े ईद पढ़ने ''नैनीताल'' गया हुवा था, शब को बे ख़्वाब रहा था और दिन को बे ख़ोरो ख़्वाब (या'नी खाए और सोए बिग़ैर) और आते जाते डांडी[1] में चौदह मील का सफ़र ! दूसरे दिन बा'द नमाज़े सुब्ह़ सो रहा, सो कर उठा तो येह कार्ड पाया। उसी रोज़ से मौलाना मर्हूम का नाम ता बक़ाए ह़यात, اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی रोज़ ईसाले सवाब के लिये दाख़िले वज़ीफ़ा कर लिया। वोह اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی बहुत अच्छे गए, मगर दुन्या में उन से मिलने की ह़सरत रह गई। मौला तआ़ला आख़िरत में ज़ेरे लिवाए सरकारे ग़ौसिय्यत (या'नी ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के झन्डे तले) मिलाए। اٰمِیْن اَللّٰھُمَّ اٰمِیْن

1 : एक पहाड़ी सुवारी जिस के दोनों त़रफ़ लकड़ी और दरमियान में दरी लगी होती है।

www.dawateislami.net

یک شہادت وفات دررمضان | مرگِ جمعہ شہادتِ دگرست
مرضِ تپ شہادتِ سومیں | بہرِ ہرسہ شہادتِ خبرست
درمزارست چشمِ وا یعنی | پئے دیدارِ یار منتظرست
مردہ ہرگز نہ معین الدین | کہ تراچوں نعیم دیں پسرست

(या'नी : रमज़ान में मरना शहादत की एक क़िस्म है, जुमुआ़ के दिन मरना शहादत की दूसरी क़िस्म है। बुख़ार में मरना शहादत की तीसरी क़िस्म है, इन तीनों शहादतों का ज़िक्र ह़दीस में मौजूद है। मज़ार में भी आंख खुली है, इस लिये कि दीदारे यार के मुन्तज़िर हैं। मुईनुद्दीन (आप) हरगिज़ मुर्दा नहीं, इस लिये कि आप का बेटा नईमुद्दीन जैसा है।)

फ़सादियों की तौबा

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَادِل का अन्दाज़े बयान ऐसा मस्हूर कुन था कि अपने तो दाद देते ही थे मुख़ालिफ़ीन भी दम बख़ुद रह जाते थे। एक मरतबा "राना धोलपूर" के अ़लाक़े में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान था, लोगों को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने जूक़ दर जूक़ शिर्कत की। जब बयान शुरूअ़ हुवा तो शर पसन्दों का एक टोला आया और बैठ गया। जब उन्हों ने ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَادِل का ख़ित़ाब सुना तो वोह मस्हूर हो कर रह गए, उन की तुर्की तमाम हो गई और उन्हें अपने तही दामन होने का एह़सास हो गया। सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَادِل ने बयान के बा'द आ़म ए'लान फ़रमाया : "अगर किसी को मेरी तक़रीर पर कोई इश्काल (व ए'तिराज़) हो तो बयान करे, उस को मुत़्मइन किया जाएगा।" तो येह पूरी जमाअ़त खड़ी हो गई और कहा : हुज़ूर ! इश्काल तो कोई नहीं पर इतनी अ़र्ज़ है कि हम फ़साद के लिये आए थे, लेकिन आप की तक़रीर ने हमारी आंखें खोल दी हैं, अब इतना करम फ़रमाइये कि हमें तौबा कराएं और आज शाम इसी मौज़ूअ़ पर हमारे मह़ल्ले में भी बयान फ़रमाएं। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दाढ़ी रखने के लिये ख़ामोश इन्फ़िरादी कोशिश

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَادِل के एक ख़िदमत गुज़ार का बयान है : शुरूअ़ में मेरी दाढ़ी ख़श्ख़शी होती थी और सदरुल अफ़ाज़िल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَادِل इस बात को पसन्द नहीं फ़रमाते थे। एक दिन

www.dawateislami.net

बड़े प्यार भरे अन्दाज़ में मेरे चेहरे को अपने दोनों हाथों में ले कर बड़े मा'ना खे़ज़ अन्दाज़ में मुस्कुराते हुए फ़रमाने लगे : "मौलाना ! क्या हाल है ?" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस अन्दाज़े नसीहत से मैं इतना मुतअस्सिर हुवा कि आज 60 बरस से ज़ाइद होने को आए हैं कभी दाढ़ी ह़द्दे शर्अ़ (या'नी एक मुठ्ठी) से कम नहीं हुई।

इमाम बनाने से पहले क़िराअत दुरुस्त करवाई

ख़लीफ़ए सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی का बयान है कि जब से सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل को मरज़े ज़ियाबैतुस (शूगर) ने जमाअ़त कराने से रोका हुवा था, उस वक़्त से मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मुझे ही फ़रमाते थे। अगर्चे मेरी क़िराअते क़ुरआन की तस्ह़ीह़ मेरे वालिद साहिब ने शुरूअ़ ही में करा दी थी, फिर क़वाइदे तज्वीद भी सीखे थे लेकिन ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ने इस के बा वुजूद रातों को मश्क़ करवा कर मेरी क़िराअत की तस्ह़ीह़ कराई। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नज़र में मेरी क़िराअत दुरुस्त हुई तो मुझे आगे बढ़ा दिया। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل की शाइरी

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل को शे'रगोई का बड़ा पाकीज़ा ज़ौक़ बख़्शा था। अ़रबी, फ़ारसी, और उर्दू में बड़ी रवानी से शे'र कहते थे, बुलन्दो बाला तख़य्युलात को इस उ़म्दगी और ख़ूबी से अदा करते कि सुनने वाला झूम झूम जाए, लेकिन आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का सरमायए शाइरी ह़म्दो ना'त, मन्क़बत और नसीह़त आमोज़ अश्आ़र तक मह़दूद है। सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل की शाइरी के मज्मूए़ का नाम "रियाज़ुन्नईम" है। फ़िक्रे आख़िरत से मा'मूर चन्द अश्आ़र मुलाह़ज़ा हों।

फ़साह़त से कहते हैं मूए सफ़ेद — कि हुश्यार हो, अब सह़र हो गई
ख़ुदी से गुज़र, चल ख़ुदा की त़रफ़ — कि उ़म्रे गिरामी, बसर हो गई
ग़मो ख़ूने दिल खाते पीते रहे — ग़रीबों की अच्छी गुज़र हो गई
नईमे ख़त़ाकार मग़फ़ूर हो — जो शाहे जहां की नज़र हो गई

एक ना'त शरीफ़ के चन्द अश्आ़र मुलाह़ज़ा हों।

देखिये सीमाए अन्वर, देखिये रुख़ की बहार — मेहरे ताबां देखिये, माहे दरख़्शां देखिये
देखिये वोह आ़रिज़ और वोह ज़ुल्फ़े मुश्कीं देखिये — सुब्हे रोशन देखिये, शामे ग़रीबां देखिये
जल्वा फ़रमा हैं जबीने पाक में आयाते ह़क़ — मुस्ह़फ़े रुख़ देखिये तफ़्सीरे क़ुरआं देखिये
येह नईमे ज़ार कैसा हिज्र में बेताब है — देखिये इस की त़रफ़, ऐ शाहे शाहां देखिये

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तस्नीफ़ो तालीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَادِل ने बे पनाह दीनी व मिल्ली मस्रूफ़िय्यात के बा वुजूद तस्नीफ़ो तालीफ़ का बड़ा ज़ख़ीरा यादगार छोड़ा। आप ने 1343 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 1924 ई. में मुरादआबाद से माहनामा "अस्सवादुल आ'ज़म" जारी फ़रमाया जिस में मुसल्मानों की ख़ूब तरबियत फ़रमाई, आप की यादगार कुतुब येह हैं :

﴾1﴿ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान ﴾2﴿ नईमुल बयान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन ﴾3﴿ अल कलिमतुल उ़ल्या लि ए'लाए इ़ल्मिल मुस्त़फ़ा ﴾4﴿ अत़्यबुल बयान दर रद्दे तक़्वियतुल ईमान ﴾5﴿ अस्वातुल अ़ज़ाब अ़ला क़वामिइ़ल क़ुबाब ﴾6﴿ आदाबुल ख़ियार ﴾7﴿ सवानेह़े करबला ﴾8﴿ सीरते सह़ाबा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ﴾9﴿ अत्तह़क़ीक़ात लि दफ़्इ़त्तल्बीसात ﴾10﴿ इर्शादुल अनाम फ़ी मह़फ़िलि लि मौलूदिन वल क़ियाम ﴾11﴿ किताबुल अ़क़ाइद ﴾12﴿ ज़ादुल ह़रमैन ﴾13﴿ अल मुवालात ﴾14﴿ गुलबुने ग़रीब नवाज़ ﴾15﴿ शर्ह़ शर्ह़े मिअते आ़मिल ﴾16﴿ प्राचीन काल ﴾17﴿ शर्ह़े बुख़ारी (ना मुकम्मल ग़ैर मत़्बूअ़) ﴾18﴿ शर्ह़े क़ुत़्बी (ना मुकम्मल ग़ैर मत़्बूअ़) ﴾19﴿ रियाज़े नईम (मज्मूअ़ए कलाम) ﴾20﴿ कश्फ़ुल ह़िजाब अ़न मसाइले ईसाले सवाब ﴾21﴿ फ़राइदुन्नूर फ़ी जराइदिल क़ुबूर।

ख़ैर ख़्वाही

ख़लीफ़ए सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي का बयान है कि सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَادِل के विसाल से तीन रोज़ क़ब्ल का वाक़िआ़ है कि मेरे कान में शदीद दर्द था और बे साख़्ता सोते जागते कान पर हाथ जाता था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सुब्ह़ के वक़्त इशारे से क़लम दवात त़लब फ़रमाई। हुक्म की ता'मील कर दी गई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बीमारी की ह़ालत में लिखा : मैं रात को देखता हूं कि बे इख़्तियार बार बार तुम्हारा हाथ कान पर जाता है जाओ! डॉक्टर मुश्ताक़ को दिखाओ।"

www.dawateislami.net

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दत

इन्ही का बयान है : सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل का मा'मूल था कि उठते बैठते حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْر पढ़ते थे। अ़लालत के ज़माने में येह शौक़ मज़ीद बढ़ गया था। अपनी वफ़ात से कुछ अय्याम क़ब्ल कलिमए शहादत اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ पढ़ते रहते थे। एक रोज़ मुझ से फ़रमाया : "शाह जी ! गवाह रहना जब मुझे इफ़ाक़ा होता है, तो मैं कलिमए शहादत पढ़ता हूं।" ग़ालिबन येह اَنْتُمْ شُهَدَاءُ اللّٰهِ فِى الْاَرْض (या'नी तुम ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला के गवाह हो) इर्शादे नबवी के मा तह़्त अ़मल फ़रमाया गया, वरना कहां मैं और कहां इस बुक़्अ़ए नूर के लिये शहादत (या'नी गवाही) !

वक़्ते रुख़्सत के ह़ालात

इन्ही का बयान है : ग्यारह बजे का वक़्त था, सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ने अपनी सह्दरी के तीनों दरवाज़े बन्द करा दिये। कमरे में मेरे और ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सिवा कोई न था। थोड़ी देर मुझ से गुफ़्तगू फ़रमाई, इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ामोश हो गए। तक़रीबन साढ़े ग्यारह बजे फ़रमाया, पंखा खोल दो, मैं ने खोल दिया, फिर फ़रमाया : कम कर दो, मैं ने उस की रफ़्तार नम्बर 2 पर कर दी, फिर फ़रमाया और कम कर दो, मैं ने नम्बर 3 पर रफ़्तार कर दी, कुछ वक़्फ़े के बा'द फ़रमाया और कम कर दो, अब मैं ने पंखे का रुख़ दीवार की त़रफ़ कर दिया, ताकि दीवार से टकरा कर हवा पहुंचे कुछ वक़्फ़े के बा'द फ़रमाया : बन्द कर दो। इस के बा'द फ़रमाने लगे : मेरा बाज़ू दबाओ। चुनान्चे मैं चारपाई की दाह्नी जानिब बैठ कर बाज़ू और कमर दबाने लगा, देखा कि ज़बाने अक़्दस से कुछ फ़रमा रहे हैं और चेह्रए अक़्दस पर बेह़द पसीना है। मैं ने रुमाल से चेहरे का पसीना ख़ुश्क किया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नज़्रे मुबारक उठा कर मेरी त़रफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया, फिर आवाज़ से कलिमए पाक لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पढ़ना शुरूअ़ किया। लेकिन दम बदम आवाज़ पस्त से पस्त होती चली गई, ठीक बारह बज कर 25 मिनट पर मुझे फेफड़ों की ह़रकत बन्द होती मा'लूम हुई, ख़ुद ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रू ब क़िब्ला हो कर अपने हाथ पैर सीधे कर लिये थे यूं 19 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1367 सि.हि. को कलिमा शरीफ़ पढ़ते हुए जाने पाक, जाने आफ़्रीं के सिपुर्द हुई। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मेरे जनाज़े की नुमाइश न करना

हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का बयान है कि सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل ने मुझ से फ़रमाया : मेरे जनाज़े की नुमाइश न करना, अगर लोग ज़ियादा इसरार करें तो सिर्फ़ मह़ल्ला चोकी ह़सन ख़ान तह़सीली स्कूल, नई सड़क और काठ दरवाज़े से होते हुए मद्रसे के सह़्न में नमाज़े जनाज़ा अदा करना, वहां से सीधा मेरी आख़िरी आराम गाह ले जाना।

ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब

हज़रते सय्यिदुना सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل की वफ़ात से पहले हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने एक ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब देखा कि एक निहायत आ़लीशान बुक़्अ़ए नूर कमरा है, चारों त़रफ़ क़ालीन पर गाउ तक्ये लगे हुए हैं, एक त़रफ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रौनक़ अफ़्रोज़ हैं, एक त़रफ़ हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़ुन्नूरैन, एक त़रफ़ हज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक त़रफ़ हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और दीगर सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم तक्ये लगाए रौनक़ अफ़्रोज़ हैं, आख़िर में एक कोने पर एक निशस्त ख़ाली है, कमरे के दरवाज़े पर हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه किसी के इन्तिज़ार में खड़े हैं कि एक त़रफ़ से सफ़ेद इमामा बांधे सफ़ेद मलमल की अच्कन पहने हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى आ रहे हैं। हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : तुम्हारी निशस्त अन्दर ख़ाली है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अ़र्ज़ की : मेरे लिये येही बड़ी सआ़दत है कि जूतियों में जगह मिल जाए, मगर हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हाथ पकड़ कर अन्दर ले गए, हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह कह कर अन्दर दाख़िल हो गए : اَلْاَمْرُ فَوْقَ الْاَدَبِ (या'नी हुक्म अदब पर फ़ौक़िय्यत रखता है)। उस ख़ाली निशस्त में आप को ले जा कर बिठाया गया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अभी पूरे बैठे भी नहीं थे कि मेरी आंख किसी वज्ह से खुल गई। सुब्ह़ मैं ने हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने अपना ख़्वाब बयान किया, जिसे सुन कर हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों से ख़ुशी के आंसू निकल आए, फ़रमाया : "मेरा इन्तिज़ार है, अब मैं जा रहा हूं, येही इस की ता'बीर है।" इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी ग़ैर मन्क़ूला जाएदाद को अपने चारों साह़िब ज़ादों को मुन्तक़िल फ़रमाया। मन्क़ूला जाएदाद को तक़्सीम किया, सिर्फ़ आठ सो रुपिया अपने तज्हीज़ो तक्फ़ीन और इ़लाज वग़ैरा के लिये बाक़ी रखा।

www.dawateislami.net

मदीने का मुसाफ़िर

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان हज्जे बैतुल्लाह पर तशरीफ़ ले गए। जब वोह मदीनए मुनव्वरह में सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार में हाज़िर हुए तो सुन्हरी जालियों के क़रीब देखा कि हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل भी मज्मअ़ में मौजूद हैं। मुलाक़ात की हिम्मत न हुई क्यूं कि बा अदब लोग तो वहां बातचीत नहीं करते। सलातो सलाम से फ़ारिग़ होने के बा'द बाहर तलाश किया मगर मुलाक़ात न हुई। हज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, शैख़ुल अ़रबे वल अ़जम क़ुत़्बे मदीना सय्यिदी व मौलाई ज़ियाउद्दीन अहमद क़ादिरी रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के दरबारे फ़ैज़ आसार पर हाज़िर हुए कि अ़रबो अ़जम के तमाम उ़लमाए हक़ और मशाइख़े किराम हरमैने त़य्यिबैन की हाज़िरी के दौरान हज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ियारत के लिये ज़रूर हाज़िर होते थे। वहां भी हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل के मुतअ़ल्लिक़ कोई मा'लूमात हासिल न हुई। हैरान थे कि सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل अगर तशरीफ़ लाए हैं तो कहां गए? दरीं अस्ना मुरादआबाद (हिन्द) से तार हज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आस्ताने अ़र्श निशान पर आया कि फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का मुरादआबाद में विसाल हो गया है। मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने जब वक़्त मिलाया तो वोही वक़्त था जिस वक़्त सुन्हरी जालियों के क़रीब सदरुल अफ़ाज़िल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَادِل नज़र आए थे, फ़ौरन समझ गए कि जैसे ही इन्तिक़ाल फ़रमाया, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सलातो सलाम के लिये हाज़िर हो गए।

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

मज़ार शरीफ़

जामिअ़ा नईमिया (मुरादआबाद, हिन्द) की मस्जिद के बाएं गोशे में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की आख़िरी आराम गाह है। **अल्लाह** तआ़ला हमें आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के फ़ुयूज़ात से मुस्तफ़ीज़ होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : इस रिसाले का बेश्तर मवाद हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यिद ग़ुलाम मुईनुद्दीन नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की किताब ''हयाते सदरुल अफ़ाज़िल'' से माख़ूज़ है।

www.dawateislami.net

क़ुरआने पाक तज्वीद के साथ पढ़ने की अहम्मिय्यत

क़ुरआने पाक को **तज्वीद** या'नी हुरूफ़ को उन के **मख़ारिज** और **सिफ़ात** के साथ पढ़ना **फ़र्ज़** है। आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा रज़विय्या"** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "इतनी **तज्वीद** (सीखना) कि हर हर्फ़ दूसरे हर्फ़ से सहीह मुमताज़ हो **फ़र्ज़े ऐन** है और बिग़ैर इस के **नमाज़ क़त्अन बातिल है।"** (फ़तावा रज़विय्या, जि. 3, स. 253, रज़ा फ़ाउन्डेशन) सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीक़ह, मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद **अमजद अ़ली** आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی **"बहारे शरीअ़त"** में फ़रमाते हैं : "ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम "मद" का जो दरजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना हराम है। इस लिये कि तरतील से क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है, आज कल के अक्सर हुफ़्फ़ाज़ इस तरह पढ़ते हैं कि "मद" का अदा होना तो बड़ी बात है "يَعْلَمُوْنَ تَعْلَمُوْنَ" के सिवा किसी लफ़्ज़ का पता भी नहीं चलता न तस्हीहे हुरूफ़ होती, बल्कि जल्दी में लफ़्ज़ के लफ़्ज़ खा जाते हैं और इस पर तफ़ाख़ुर होता है कि फ़ुलां इस क़दर जल्द पढ़ता है हालां कि इस तरह क़ुरआने मजीद पढ़ना हराम व सख़्त हराम है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए सिवुम, जि. 1, स. 547, मक्तबतुल मदीना) मज़ीद सफ़्हा 570 पर फ़रमाते हैं : "जिस से हुरूफ़ सहीह अदा नहीं होते (उस के लिये थोड़ी देर मश्क़ कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि) इस पर वाजिब है कि तस्हीहे हुरूफ़ में रात दिन पूरी कोशिश करे और अगर सहीह ख़्वां (दुरुस्त पढ़ने वाले) की इक़्तिदा कर सकता हो तो जहां तक मुम्किन हो उस की इक़्तिदा करे या वोह आयतें पढ़े जिस के हुरूफ़ सहीह अदा कर सकता हो और येह दोनों सूरतें ना मुम्किन हों तो ज़मानए कोशिश में उस की अपनी नमाज़ हो जाएगी, आज कल आम लोग इस में मुब्तला हैं कि ग़लत पढ़ते हैं और कोशिश नहीं करते उन की नमाज़ें बातिल हैं।"

तज्वीद का बुन्यादी उसूल येह है कि हर हर्फ़ की अदाएगी दूसरे हर्फ़ से मुमताज़ हो बिल ख़ुसूस ऐसे हुरूफ़ जिन की आवाज़ें आपस में मिलती जुलती हैं। सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीक़ह मौलाना **अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ط،ت،س،ث،ص،ذ،ز،ظ،ا،ء،ع،ہ،ح،ض،ظ،د इन हर्फ़ों में सहीह तौर पर इम्तियाज़ रखें वरना **मा'ना फ़ासिद होने की सूरत में नमाज़ न होगी** और बा'ज़ तो "س،ش،ز،ج،ق،ک" में भी फ़र्क़ नहीं करते।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सए सिवुम, जि. 1, स. 570, मक्तबतुल मदीना) ऐसे (मिलती जुलती आवाज़ों वाले) हुरूफ़ की अदाएगी में इम्तियाज़ न होने की सूरत में, मा'ना में तब्दीली से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक से चन्द मिसालें मुलाहज़ा फ़रमाएं :

"ط" और "ت" की मिसाल (طِیْن और تِیْن)

خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ﴿۱۲﴾ (پ۸،الاعراف:۱۲) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया

وَالتِّیْنِ وَالزَّیْتُوْنِ ﴿۱﴾ (پ۳۰،التین:۱) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** इन्जीर की क़सम और ज़ैतून

طِیۡنٌ के मा'ना : मिट्टी और تِیۡنٌ के मा'ना : इन्जीर । अगर पहली आयत में طِیۡنٌ की जगह تِیۡنٌ पढ़ा जाए तो मा'ना होंगे : तू ने मुझे आग से बनाया और इसे इन्जीर से बनाया । इसी त़रह़ तमाम मिसालों में ऐसे अल्फ़ाज़ के साथ उन के मा'ना भी लिख दिये गए हैं ताकि अन्दाज़ा हो जाए कि एक ह़र्फ़ की आवाज़ के बजाए दूसरे ह़र्फ़ की आवाज़ निकले तो किस क़दर मा'नवी फ़साद लाज़िम आता है ।

"ث" और "س" की मिसाल (ثُبَاتٌ और سُبَاتٌ)

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا خُذُوۡا حِذۡرَکُمۡ فَانۡفِرُوۡا ثُبَاتٍ اَوِ انۡفِرُوۡا جَمِیۡعًا ﴿۷۱﴾ (پ۵، النسآء: ۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो होशियारी से काम लो फिर दुश्मन की त़रफ़ थोड़े थोड़े हो कर निकलो या इकठ्ठे चलो

وَ ہُوَ الَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الَّیۡلَ لِبَاسًا وَّ النَّوۡمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّہَارَ نُشُوۡرًا ﴿۴۷﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۴۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने रात को तुम्हारे लिये पर्दा किया और नींद को आराम और दिन बनाया उठने के लिये

ثُبَاتٌ के मा'ना : थोड़े थोड़े और سُبَاتٌ के मा'ना : आराम ।

"ص" और "س" की मिसाल (صَدِیۡدٌ और سَدِیۡدٌ)

مِّنۡ وَّرَآئِہٖ جَہَنَّمُ وَ یُسۡقٰی مِنۡ مَّآءٍ صَدِیۡدٍ ﴿۱۶﴾ (پ۱۳، ابراھیم: ۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जहन्नम उस के पीछे लगी और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा

فَلۡیَتَّقُوا اللّٰہَ وَ لۡیَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِیۡدًا ﴿۹﴾ (پ۴، النسآء: ۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो चाहिये कि अल्लाह से डरें और सीधी बात करें

صَدِیۡدٌ के मा'ना : पीप और سَدِیۡدٌ के मा'ना : सीधा ।

"ح" और "ه" की मिसाल (مَحۡجُوۡرٌ और مَهۡجُوۡرٌ)

وَ جَعَلَ بَیۡنَہُمَا بَرۡزَخًا وَّ حِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۵۳﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۵۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के बीच में पर्दा रखा और रोकी हुई आड़

وَ قَالَ الرَّسُوۡلُ یٰرَبِّ اِنَّ قَوۡمِی اتَّخَذُوۡا ہٰذَا الۡقُرۡاٰنَ مَہۡجُوۡرًا ﴿۳۰﴾ (پ۱۹، الفرقان: ۳۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और रसूल ने अ़र्ज़ की, कि ऐ मेरे रब मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ने के क़ाबिल ठहरा लिया

مَحۡجُوۡرٌ के मा'ना : रुका हुवा और مَهۡجُوۡرٌ के मा'ना : छोड़ा हुवा

"د" और "ض" की मिसाल (دَلَّ और ضَلَّ)

فَلَمَّا قَضَیۡنَا عَلَیۡہِ الۡمَوۡتَ مَا دَلَّہُمۡ عَلٰی مَوۡتِہٖۤ اِلَّا دَآبَّۃُ الۡاَرۡضِ (پ۲۲، سبا: ۱۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने

مَا ضَلَّ صَاحِبُکُمۡ وَ مَا غَوٰی ﴿۲﴾ (پ۲۷، النجم: ۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे साहिब न बहके न बे राह चले

دَلَّ के मा'ना : बताया और ضَلَّ के मा'ना : बहका

www.dawateislami.net

"ذ" और "ز" की मिसाल (ذَرْعٌ और زَرْعٌ)

ثُمَّ فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ (پ۲۹،الحاقة:۳۲) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है इसे पिरो दो

ثُمَّ یُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ (پ۲۳،الزمر:۲۱) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर उस से खेती निकालता है कई रंगत की

ذَرْعٌ के मा'ना : नाप और زَرْعٌ के मा'ना : खेती

"ذ" और "ظ" की मिसाल (ذَلَّلَ और ظَلَّلَ)

وَ ذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ مِنْهَا یَاْكُلُوْنَ (پ۲۳،یٰس:۷۲) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें उन के लिये नर्म कर दिया तो किसी पर सुवार होते और किसी को खाते हैं

وَ ظَلَّلْنَا عَلَیْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَیْكُمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى (پ۱،البقرة:۵۷) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने अब्र को तुम्हारा साएबान किया और तुम पर मन्न और सल्वा उतारा

ذَلَّلَ के मा'ना : नर्म किया और ظَلَّلَ के मा'ना : साएबान किया

"ق" और "ک" की मिसाल (قَلْبٌ और كَلْبٌ)

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ (پ۱۹،الشعرآء:۸۹) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर वोह जो अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ اِنْ تَحْمِلْ عَلَیْهِ یَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ یَلْهَثْ (پ۹،الاعراف:۱۷۶) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस का हाल कुत्ते की तरह है तू उस पर हम्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले

قَلْبٌ के मा'ना : दिल और كَلْبٌ के मा'ना : कुत्ता

"ء" और "ع" की मिसाल (اَلِیْمٌ और عَلِیْمٌ)

وَ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ (پ۲۵،الشورٰى:۲۱) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक ज़ालिमों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है

وَ اللّٰهُ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (پ۷،المآئدة:۷۶) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह ही सुनता जानता है

اَلِیْمٌ के मा'ना : दर्दनाक और عَلِیْمٌ के मा'ना : जानने वाला

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**नमाज़ के अह़काम**" में फ़रमाते हैं : वाक़ेई वोह मुसल्मान बड़ा बद नसीब है जो दुरुस्त क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना नहीं सीखता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के बे शुमार मदारिस बनाम "**मद्रसतुल मदीना**" क़ाइम हैं इन में मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को

क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है नीज़ बालिग़ान को उ़मूमन बा'द नमाज़े इशा हुरूफ़ की सही़ह़ अदाएगी के साथ साथ **सुन्नतों की तरबियत** दी जाती है। **काश ! ता'लीमे क़ुरआन** की घर घर धूम पड़ जाए। **काश !** हर वोह इस्लामी भाई जो सही़ह़ **क़ुरआन शरीफ़** पढ़ना जानता है वोह दूसरे इस्लामी भाई को सिखाना शुरूअ़ कर दे। इस्लामी बहनें भी येही करें या'नी जो दुरुस्त पढ़ना जानती हैं वोह दूसरी इस्लामी बहनों को पढ़ाएं और न जानने वालियां उन से सीखें إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फिर तो हर त़रफ़ **ता'लीमे क़ुरआन की बहार** आ जाएगी और सीखने सिखाने वालों के लिये إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए

तिलावत शौक़ से करना हमारा काम हो जाए

(नमाज़ के अह़काम, स. 211, मक्तबतुल मदीना)

ज़रूरी हिदायात

क़ुरआने पाक की तिलावत करते वक़्त जहां बा'ज़ जगहों पर हुरूफ़ की तब्दीली से मा'ना में तब्दीली वाक़ेअ़ हो जाती है यूंही ज़बर, ज़ेर और पेश की तब्दीली भी मा'ना बदल जाने का बाइस होती है, जिस में बा'ज़ अवक़ात नौबत कुफ़्र तक भी पहुंच जाती है। ज़ैल में चन्द मिसालें ज़िक्र की जा रही हैं इन्हें पढ़ कर आप को अन्दाज़ा होगा कि ज़रा सी ग़लत़ी से मा'ना किस ह़द तक बदल जाता है।

नम्बर शुमार	मक़ाम	सही़ह़	सही़ह़ तरजमा	ग़लत़	ग़लत़ तरजमा
1	पारह 1, सूरतुल फ़ातिह़ा, आयत 6	أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ	जिन पर तू ने एह़सान किया	أَنْعَمْتُ عَلَيْهِمْ	जिन पर मैं ने एह़सान किया
2	पारह 1, सूरतुल बक़रह, आयत 124	وَإِذِ ابْتَلَىٰٓ إِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ	और जब इब्राहीम को उस के रब ने कुछ बातों से आज़्माया	وَإِذِ ابْتَلَىٰٓ إِبْرٰهٖمُ رَبَّهٗ	और जब इब्राहीम ने अपने रब को कुछ बातों से आज़्माया
3	पारह 2, सूरतुल बक़रह, आयत 251	قَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ	क़त्ल किया दावूद ने जालूत को	قَتَلَ دَاوٗدَ جَالُوْتُ	क़त्ल किया जालूत ने दावूद को
4	पारह 16, सूरए त़ाहा, आयत 121	وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ	और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई	وَعَصٰٓى اٰدَمَ رَبُّهٗ	और आदम के रब से आदम के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

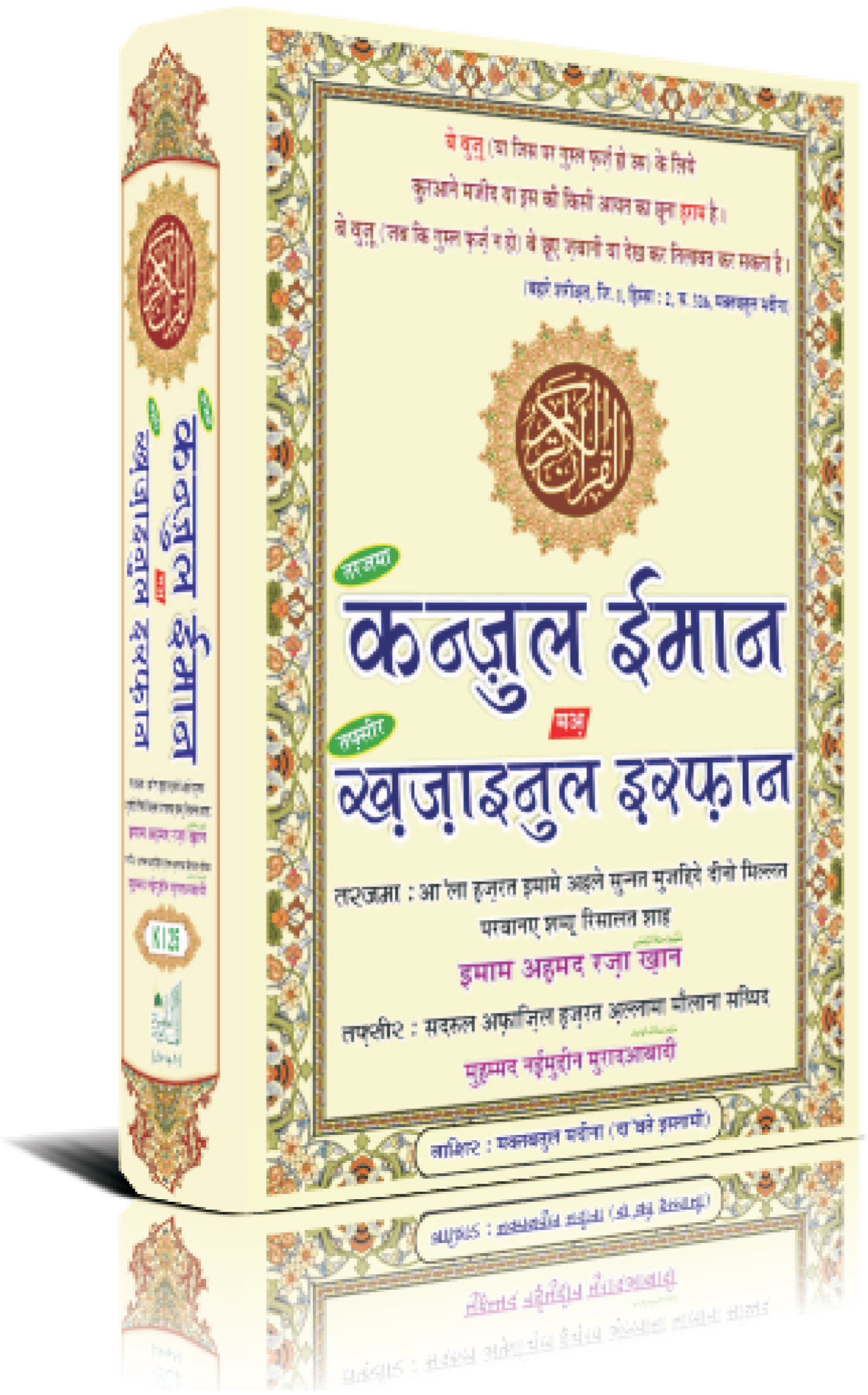
तर्जमा
कन्ज़ुल ईमान
मअ
तफ़्सीर
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
तरजमा : आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
परवानए शम्अ़ रिसालत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान
तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद
मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी
नाशिर : मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

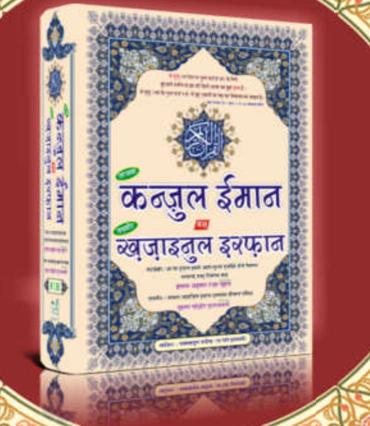

01140081

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- **देहली** :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली 011-23284560
- **अह़मदाबाद** :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद, गुजरात 9327168200
- **मुम्बई** :- फ़ैज़ाने मदीना, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र 09022177997
- **ह़ैदराबाद** :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना (040) 2 45 72 786

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net